# हिन्दी
# विश्वकोष


बंगला विश्वकोषके सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव,

सिद्धान्त वारिधि, शब्दरत्नाकर, तत्त्वचिन्तामणि, एम, आर, ए, एस

तथा हिन्दीके विद्वानों द्वारा सङ्कलित।


———※———

पञ्चदश भाग

प्रेतशिला—भवानन्द मजूमदार

# THE
# ENCYCLOPÆDIA INDICA

**VOL XV**

COMPILED WITH THE HELP OF HINDI EXPERTS

BY


NAGENDRANATH VASU, Prâchyavidyâmahârnava,

Siddhânta vâridhi, Sabda ratnâkara, Tattva chintâmani, M R A S

Compiler of the Bengali Encyclopædia the late Editor of Bangiya Sâhitya Parishad
and Kâyastha Patrikâ author of Castes & Sects of Bengal, Mayura
bhanja Archæological Survey Reports and Modern Buddhism
Hony Archæological Secretary, Indian Research Society,
Associate Member of the Asiatic
Society of Bengal &c &c &c



Printed by B Basu at the Visvakosha Press.

Published by

**Nagendranath Vasu and Visvanath Vasu**

*9 Visvakosha Lane, Baghbazar, Calcutta*

1928

# हिन्दी
# विश्वकोष

( पञ्चदश भाग )

प्रेतशिला ( स० स्त्री० ) प्रेताना प्रेतेभ्यो वा या शिला। पिण्डदानार्थं गयास्थित प्रस्तरविशेष, गयाकी वह शिला जिस पर प्रेतोंके उद्देश्यसे पिण्डदान किया जाता है।

गरुड़ पुराण-गयामाहात्म्यमें लिखा है, कि गयामें जो प्रेतशिला कहलाती है, वह तीन स्थानोंमें अवस्थित है,—प्रभासमें, प्रेतकुण्डमें और गयासुरके मस्तक पर। यह प्रेतशिला समस्त देवस्वरूपिणी और धर्म कर्तृक धारित है। पितृ प्रभृति और बान्धवादि यदि कोई प्रेतभावापन्न हो, तो गयासुरके मस्तक पर जो प्रेतशिला है, उस पर पिण्डदान करनेसे उनकी प्रेतयोनि नष्ट होती है। प्रेतत्व दूर करनेके लिये प्रेतशिला ही सर्व श्रेष्ठ है। इस प्रेतशिला पर जो कोई पिण्डदान करता है उसका प्रेतत्व दूर होता है और श्राद्धादि करनेसे उसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। गयासुरका जो मुण्ड है, उसकी पीठ पर यह शिला अवस्थित है। इस शिला, पर विष्णुपादपद्ममें पिण्डदान करना होता है। गया देखो। हिन्दूमात्रको ही गयाश्राद्ध अवश्य करना चाहिये। गयाक्षेत्रमें प्रेतशिला पर निम्नलिखित मन्त्रसे पिण्डदान करना होता है। मन्त्र यथा—

"स्नात्वा प्रेतशिलादौ तु चरणाम्बुसुतेन च।
पिण्ड दद्यादिमैर्मन्त्रैरावाह्य च पितॄन् परान्॥
अस्मत्कुले मृता ये च गतिर्येषा न विद्यते।
तेषामावाहयिष्यामि दर्भपृष्ठे तिलोदकै॥
पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे च ये मृता।
तेषामुद्धरणार्थाय इम पिण्ड ददाम्यहम्॥
मातामहकुले ये च गतिर्येषा न जायते।
तेषामुद्धरणार्थाय इम पिण्डं ददाम्यहम्॥
अजातदन्ता ये केचित् ये च गर्भेषु पीडिता।
तेषामुद्धरणार्थाय इम पिण्ड ददाम्यहम्॥
उद्बन्धनैर्मृता ये च विषशस्त्रहताश्च ये।
आत्मोपघातिनो ये च तेभ्य पिण्ड ददाम्यहम्॥
बन्धुवर्गाश्च ये केचित् नामगोत्रविवर्जिता।
स्वगोत्रे परगोत्रे वा गतिर्येषा न विद्यते।
तेषामुद्धरणार्थाय इम पिण्ड ददाम्यहम्॥
अग्निदाहे मृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये।
दंष्ट्रीभि शृङ्गिभिर्वापि तेषा पिण्ड ददाम्यहम्।
अग्निदग्धाश्च ये केचित् नाग्निदग्धास्तथा परे।
विद्युच्चौरहता ये च तेषा पिण्ड ददाम्यहम्॥
रौरवे चान्धतामिस्रे कालसूत्रे च ये गता।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्ड ददाम्यहम्॥
असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गता।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्ड ददाम्यहम्॥

अन्येषां यातनास्थानां प्रेतलोकनिवासिनाम् ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥
पशुयोनिगता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः ।
अथवा वृक्षयोनिस्थास्तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥
असंख्ययातनासंस्था ये नीता यमशासने ।
तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥
जात्यन्तरसहस्राणि भ्रमन्तः स्वेन कर्मणा ।
मानुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥
ये बान्धवाबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डदानेन सर्वदा ॥
ये केचित् प्रेतरूपेण वर्त्तन्ते पितरो मम ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डदानेन सर्वदा ॥
ये मे पितृकुले जाताः कुले मातुस्तथैव च ।
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः ॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ।
क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥
विरूपा आमगर्भा ये ज्ञाताज्ञाताः कुले मम ।
तेषां पिण्डं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥
साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा ।
मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता ॥
आगतोऽहं गयां देव पितृकार्ये गदाधर ।
त्वं मे साक्षी भवस्वाद्य अनृणोऽहमृणत्रयात् ॥"

(गयामा० ८६ अ०)

इस मन्त्रसे प्रेतशिला पर विष्णुपादपद्ममें पिण्डदान करे। इस प्रकार गयामें पिण्ड देनेसे सभी पाप और तीन प्रकारके ऋण अपनोदित होते हैं। जब तक पितादिके उद्देशसे प्रेतशिला पर पिण्डदान न किया जाय, तब तक पितृऋणसे मुक्तिलाभ नहीं हो सकता। इसीसे सबसे पहले पितादिके उद्देशसे प्रेतशिला पर श्राद्ध करना हर व्यक्तिका अवश्य कर्त्तव्य है।

प्रेताशौच (सं० क्ली०) प्रेते सति प्रेतस्य वा शौचं। मृत व्यक्तिके निमित्त अशौच, मरणाशौच। दो वर्षके लड़कोंकी मृत्यु होनेसे उसे गड्ढेमें गाड़ देना होता है और इसके ऊपर होनेसे दाह कर्म करना होता है। इस प्रकार प्रेतसंस्कार करके जिससे शुद्धि विधान हो उसका अनुष्ठान करनेका नाम प्रेताशौच है। ज्ञाति बन्धुओंके साथ श्मशानसे लौट कर स्नान कर ले, पीछे यमसूक्त जप और उसके उद्देशसे तर्पणादि करने होते हैं। संसार अनित्य है, एक न एक दिन सबोंकी मृत्यु होगी ही, ऐसा सोच कर मृत व्यक्तियोंके लिये रोना धोना उचित नहीं। अनन्तर घर आ कर दरवाजे पर रखे हुए नीमकी पत्तीको दांतसे काट कर जलसे हाथ धो डाले। पीछे आचमन और अग्निस्पर्श करके घरमें प्रवेश करे। घरको चारों ओर गोबरसे पोत देना आवश्यक है। घर जिससे पवित्र रहे उस पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

"प्रेतशौचं प्रवक्ष्यामि तच्छृणुष्व खगेश्वर ।
ऊनद्विवर्षं निखनेन्न कुर्यादुदकं ततः ॥" इत्यादि ॥

(गरुड़पु० १०६ अ०)

ज्ञाति भिन्न जो सब व्यक्ति प्रेतके अग्निकार्यके लिये श्मशान गये थे, उन्हें केवल एक दिन तक अशौच होता है। एक दिनके बाद उनकी शुद्धि होती है। जो ज्ञाति हैं, उन्हें पूरा अशौच मानना पड़ता है।

अशौचका विषय प्रेताशौचमें देखो।

प्रेतश्राद्ध (सं० क्ली०) प्रेताय प्रेतोद्देश्यक वा श्राद्ध। प्रेतोद्देश्यक श्राद्ध, किसीके मरनेकी तिथिसे एक वर्षके अन्दर होनेवाले सोलह श्राद्ध जिनमें सपिण्डी, मासिक और षाण्मासिक आदि श्राद्ध सम्मिलित हैं।

"द्वादश प्रतिमास्यानि आद्यं षाण्मासिके तथा ।
सपिण्डीकरणञ्चैव इत्येतत् श्राद्ध षोडशम् ॥"

(श्राद्धतत्त्व)

आद्य प्रेतश्राद्धके दिन अर्थात् आद्यैकोद्दिष्ट श्राद्धके दिन प्रेतका प्रेतत्व दूर होने और उसके स्वर्गलोक जानेकी कामनासे वृषोत्सर्ग करना होता है। यदि किसी कारणवश आद्यैकोद्दिष्ट श्राद्ध न किया जाय, तो कृष्णा एकादशीके दिन यह श्राद्ध करना होता है। धर्मशास्त्रकारोंका अभिप्राय यह है, कि कृष्णा एकादशी और अमावस्या दोनों ही दिन पतित श्राद्धका काल है। प्रेतश्राद्ध हो चाहे सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध उक्त दोनों ही दिन किया जा सकता है। प्रेतके उद्देशसे नवश्राद्ध सामिषसे करना कर्त्तव्य है। यह श्राद्ध चतुर्थ, पञ्चम, नवम या एकादश दिनमें करना होता है। यथा—

"चतुर्थे पञ्चमे चैव नवमैकादशे तथा ।
तदत्र दीयते जन्तोस्तन्नवश्राद्धमुच्यते ॥"
( श्राद्धविवेक-यम )

पहले जिन सोलह श्राद्धोंकी कथा लिखी गई हैं, वह साग्निक और निरग्निक दोनोंके ही कर्त्तव्य हैं । प्रेतके उद्देशसे अभ्युदय श्राद्धको भी प्रेतश्राद्ध कहते हैं। सम्वत्सर पर्यन्त प्रेतके उद्देशसे प्रतिदिन अन्न जलदान रूप श्राद्धका नाम अभ्युदयश्राद्ध है। ( श्राद्धविवेक )

प्रेतहार ( सं० पु० ) मृत शरीरको उठा कर श्मशान आदि तक ले जानेवाला, मुरदा उठानेवाला ।

प्रेता ( सं० स्त्री० ) १ स्त्री प्रेत, पिशाची । २ भगवती कात्यायिनीका एक नाम ।

प्रेताधिप ( सं० पु० ) प्रेतानां अधिपः । प्रेताधिपति, यमराज ।

प्रेतान्न ( सं० क्ली० ) प्रेताय देय अन्न । प्रेतोद्देश्यक देय अन्न, वह अन्न जो प्रेतके उद्देशसे दिया जाय ।

प्रेताशिनी ( सं० स्त्री० ) १ भगवतीका एक नाम । २ मृतकोंको खानेवाली ।

प्रेताशौच ( सं० क्ली० ) प्रेते सति अशौच । प्रेतनिमित्त अशौच । मृत्युके बाद जो अशौच होता है, उसका नाम प्रेताशौच या मरणाशौच है । शुद्धितत्त्वमें लिखा है,—

सपिण्डकी मृत्यु होने पर मृत्यु दिनसे ले कर ब्राह्मणके १० दिन, क्षत्रियके १२ दिन, वैश्यके १५ दिन और शूद्रके ३० दिन अशौच होता है, यही पूर्णाशौच है। इससे न्यूनकालव्यापक अशौचको खण्डाशौच कहते हैं। जननाशौचमें ही खण्डाशौच होता है । दूरस्थ ज्ञातिके मरण पर तीन दिन और समानोदक ज्ञातिके मरण पर पक्षिणी अशौच होता है। यह पक्षिणी अशौच दिनको हो चाहे रातको, उस समयसे ले कर सूर्यास्तकाल पर्यन्त रहता है। पूर्वोक्त चतुर्वर्णके पूर्वपुरुषको जन्म नाम स्मरण पर्यन्त एक दिन अशौच होता है। उसके बाद सगोतके जनन या मरणमें स्नानमात्रसे ही शुद्धि होती है।

पहले जिस समानोदकादिका उल्लेख किया गया है, उसका अर्थ यों है—सप्तमपुरुष पर्यन्त ज्ञाति सपिण्ड, दशमपुरुष पर्यन्त साकुल्य, पीछे चतुर्दशपुरुष समानोदक कहलाता है ।

अविवाहिता कन्याके तीन पुरुष पर्यन्त सापिण्ड्य रहता है । अविवाहिता कन्याके त्रैपुरुषिक ज्ञातिके जनन या मरणमें पूर्णाशौच होता है । उसके बाद साकुल्य पर्यन्त तीन दिन अशौच रहता है। ब्राह्मणादि चतुर्वर्ण यदि अपने अपने जात्युक्ताशौचकालके मध्य यह अशौच सुने, तो पूर्वोक्त दशाहादि अशौच होता है। किन्तु वह अशौचकाल बीत जाने पर यदि एक वर्षके भीतर सुननेमें आवे, तो सपिण्डज्ञातिके तीन दिन अशौच होता है। एक वर्षके बाद सुननेसे स्नानमात्रसे ही शुद्धि होती है। किन्तु महागुरुनिपातमें अर्थात् पुत्र यदि पितृमातृमरण और स्त्री स्वामिमरण एक वर्षके बाद सुने, तो एक दिन अशौच और यदि उसके बाद सुने, तो स्नानमात्रसे ही शुद्धि होती है। खण्डाशौचके बहुत समय बाद सुननेसे भी अशौच नहीं होता ।

गर्भस्रावाशौच ।—६ मासके भीतर गर्भस्राव होनेसे उस स्त्रीके माससमसंख्यक दिन अशौच होता है, अर्थात् एक मासका गर्भस्राव होनेसे एक दिन, दो मासका होनेसे दो दिन इसी प्रकार छ मास तक जानना चाहिये। किन्तु दैवकार्यमें द्वितीयमासावधि ब्राह्मणीके पक्षमें एक एक दिन अधिक होता है। अर्थात् द्वितीय मासमें तीन दिन, तृतीय मासमें चार दिन, चतुर्थ मासमें पांच दिन, पञ्चममासमें ६ दिन और षष्ठ मासमें ७ दिन अशौच होता है। क्षत्रियाके द्वितीय मासावधि पूर्वोक्तरूपसे दो दो दिन करके और वैश्याके तीन दिन करके और शूद्राके ६ दिन करके उस अशौचकी वृद्धि होगी। उस वर्द्धित शौचमें केवल दैव या पैतकार्य करना निषिद्ध है, पर लौकिक सभी कार्य कर सकते हैं। किन्तु मास संख्यक दिनमें लौकिक वा वैदिक किसी भी कार्यमें अधिकार नहीं है। सप्तम वा अष्टम मासमें गर्भस्राव होनेसे स्वजात्युक्त पूर्णाशौच तथा निर्गुण सपिण्डके एक दिन अशौच होता है। यह बालक जीवित प्रसूत हो कर यदि उसी दिन मर जाय, तो भी उसी प्रकारका अशौच होता है। द्वितीय दिनमें मरनेसे पितामाताके सिवा और किसीको अशौच नहीं होता है।

बालाद्यशौचव्यवस्था।—नवम और दशममासजात बालककी अशौचकालके मध्य मृत्यु होनेसे यह जानना

शौच अस्पृश्यत्वयुक्त हो कर केवल पितामाताके रहेगा, दूसरेके नहीं। सभी वर्णोंके लिये इसमें एक-सी व्यवस्था दी गई है। ब्राह्मणके पक्षमें जात बालक यदि छः महीनेके भीतर, दन्तोद्गम न हुआ हो, मर जाय, तो पितामाता और निर्गुण सहोदरके एक दिन अशौच और सपिण्डके सद्यःशौच होता है। छः मासके भीतर यदि दांत निकल आये हों, तो पितामाताके तीन दिन और सपिण्डके एक दिन अशौच होता है। छः माससे ले कर दो वर्षके भीतर यदि जातबालकको बिना चूड़ाकरणके ही मृत्यु हो जाय, तो पितामाताके तीन दिन तथा सपिण्डके एक दिन और यदि चूड़ाकरण हो गया हो, तो सपिण्डोंके भी तीन दिन अशौच होगा। दो वर्षसे ले कर छः वर्ष तीन मासके मध्य मृत्यु होनेसे पितादि सपिण्डवर्गके तीन दिन और उसके बाद होनेसे पूर्णाशौच होता है। छः वर्ष और तीन मासके मध्य उपनीत हो कर मरनेसे सम्पूर्णाशौच होता है।

क्षत्रियजातिके जननाशौचकालके बाद ६ मासके भीतर जातबालकको मृत्यु होनेसे सद्यःशौच, उसके बाद दो वर्षके भीतर होनेसे तीन दिन, ६ वर्षके भीतर होनेसे छः दिन अशौच होता है। यदि छः वर्षके बाद उसकी मृत्यु हो, तो पूर्णाशौच होगा।

वैश्यजातिके जननाशौचकालके बाद छः मासके भीतर जातबालकको मृत्यु होनेसे सद्यःशौच, उसके बाद २ वर्षके मध्य होनेसे ५ दिन, दो वर्षके बाद छः वर्षके मध्य होनेसे पूर्णाशौच होता है।

शूद्रोंके जननाशौचके बाद ६ मासके मध्य अजातदन्त बालककी मृत्यु होनेसे पितादि सपिण्डवर्गके लिये तीन दिन अशौच और ६ मासके मध्य जातदन्त हो कर तथा ६ मासके बादसे ले कर २ वर्षके मध्य मरनेसे सपिण्डवर्गके लिये ५ दिन अशौच, दो वर्षके मध्य कृतचूड़ हो कर तथा दो वर्षके बादसे ले कर छः वर्षके मध्य मरनेसे पितादि सपिण्डके लिये १२ दिन अशौच होता है। ६ वर्षके मध्य विवाहित हो कर या ६ वर्षके बाद मरनेसे सम्पूर्णाशौच होता है।

*कन्याके मरणाशौच व्यवस्था।*—जन्मकालसे ले कर दो वर्षके मध्य कन्याकी मृत्यु होनेसे पिता, माता और सपिण्डोंके सद्यःशौच, दो वर्षके बाद वाग्दान पर्यन्त एक दिन, वाग्दानके बाद विवाह पर्यन्त भर्तृकुलमें तथा पितृकुलमें तीन दिन अशौच होता है। विवाहके बाद भर्तृकुलमें पूर्णाशौच होता है, पितृकुलमें अशौच नहीं रहता। परन्तु यहां पर सहोदर भाईके लिये विशेषता यही है, कि अजातदन्ता मरनेसे सद्यःशौच, जातदन्ता हो कर चूड़ा पर्यन्त मरनेसे एक दिन, चूड़ाके बाद विवाह पर्यन्त मरनेसे तीन दिन अशौच होता है। विवाहिता कन्या पिताके घरमें यदि सन्तान प्रसव करे, या मरे, तो पिता माताके तीन दिन और सहोदर भ्रात्यादि बन्धुवर्गके एक दिन अशौच होता है। उस कन्याका यदि पिताके घर या अन्यस्थलमें प्रसव या मरण हो, तो सहोदर भ्राता और उसके पुत्रके पक्षिणी अशौच होता है। उस कन्याके श्राद्धाधिकारी यदि पितामाता हों, तो उस कन्याकी कहीं भी मृत्यु क्यों न हो, पितामाताके तीन दिन अशौच होता है।

*असपिण्ड शौच व्यवस्था।*—गायत्रीदाता और मन्त्रदाता, गुरु तथा मातामहके मरने पर तीन दिन अशौच होता है। भगिनी, मातुलानी, मातुल, पितृष्वसा, मातृष्वसा, गुरुपत्नी, मातामही, मातृष्वस्रीय, पितृष्वस्रीय, पितामही, भगिनीपुत्र, पिताके मातुलपुत्र, पितामहके भगिनीपुत्र, मातुलपुत्र, भागिनेय और दौहित्र इन सबकी मृत्यु होनेसे पक्षिणी अशौच होता है। श्वश्रू और श्वशुरके भिन्न ग्राममें मरनेसे तीन दिन अशौच रहेगा। आचार्यपत्नी, आचार्यपुत्र, अध्यापक, माताके वैमात्रेय भाई, श्यालक, सहाध्यायी, शिष्य, मातामहीके भगिनीपुत्र, मातामहके भगिनीपुत्र, मातामहीके भ्रातृपुत्र और एक ग्रामवासी सगोत्रज व्यक्तिके मरनेसे एक दिन अशौच होता है। मातृष्वसा, पितृष्वसा, मातुल और भागिनेय, ये सब एक घरमें रह कर यदि मरें, तो तीन दिन अशौच माना जाता है। विवाहिता कन्याके पितृमरणमें तीन दिन और अशौच सम्बन्धि भिन्न कुलज अर्थात् मृत मातुलादिको दहन या वहन करनेसे तीन दिन अशौच होता है।

*अपमृत्युविषयेऽशौच व्यवस्था*—अवैध आत्मघातीका अशौच नहीं होता। शास्त्रीय अनशनादि द्वारा मृत्यु होनेसे

तथा जलमें मज्जन, उच्चस्थानसे पतन, शृङ्गी, दंष्ट्री और नखी द्वारा हत, सर्पदंशन, विषप्रयोग और चण्डाल या चोर द्वारा हत तथा वज्राहत और अग्निमें पतित हो कर मरनेसे तीन दिन अशौच होता है। पक्षी, मत्स्य, मृग, व्याध, दंष्ट्री, शृङ्गी और नखी द्वारा हत होनेसे, उच्च स्थानसे गिरनेसे, अनशन और प्रायोपवेशनसे, वज्र, अग्नि, विष, बन्धन और जलप्रवेशसे, क्षतव्यतिरिक्त शस्त्राघातसे यदि किसीकी तीन दिनके मध्य मृत्यु हो जाय, तो तीन दिन और यदि छ दिनके बाद हो, तो सम्पूर्णाशौच होता है। यदि किसी प्रकार क्षत द्वारा ७ दिनके मध्य मृत्यु हो, तो तीन दिन अशौच और यदि ७ दिनके बाद हो, तो पूर्णाशौच होता है। अकृतप्राय श्चित्त महापातकी और अतिपातकीके मरनेसे अशौच नहीं होता।

दत्तकपुत्र सम्बन्धीय अशौचव्यवस्था—सपिण्डज्ञाति यदि दत्तकपुत्र हो और उसकी मृत्यु हो जाय, तो दत्तकग्रहण कारी पितादि सपिण्डोंके पूर्णाशौच तथा सपिण्डके जनन-मरणमें भी उस दत्तकके पूर्णाशौच होता है। एत द्भिन्न दत्तकके अर्थात् सपिण्ड ज्ञाति भिन्न दत्तकके मरने-से पितादि सपिण्डके तीन दिन और पितादि सपिण्डके भी मरनेसे उसे उतना ही दिन अशौच होता है। किन्तु दत्तकके पुत्र आदिके पूर्णाशौच होता है। दत्तककी स्त्रीके अशौच-सम्बन्धमें मतभेद दिखाई देता है। किसी मतसे दत्तककी स्त्रीका पूर्णाशौच होगा, फिर कोई कहते हैं, कि दत्तककी तरह उसका भी तीन दिन अशौच होता है।

अशौच-संकरकी व्यवस्था—तुल्य मरणाशौचके मध्य यदि अपर तुल्य मरणाशौच हो, तो पूर्वाशौचकालमें ही ज्ञातियोंकी शुद्धि होती है। किन्तु यदि पूर्वाशौचके शेष दिनमें अपर पूर्ण मरणाशौच हो, तो पूर्वाशौच फिर दो दिन बढ जाता है तथा उसे शेष दिनके सवेरे सूर्योदयसे ले कर दूसरे दिनके सूर्योदय तकके मध्य यदि पुन पूर्ण समानाशौच हो जाय, तो पूर्वाशौच तीन दिन और बढ जाता है। उन वर्द्धित दो या तीन दिनोंके मध्य अपर ज्ञाति, पिता, माता अथवा भर्त्ताकी मृत्यु होनेसे उस वर्द्धित पूर्णाशौचकाल द्वारा शुद्धि होती है, अब उसकी शुद्धि नहीं होती। परन्तु उस अशौचके शेष दिनमें या पूर्वोक्त प्रभातमें यदि पिता, माता या भर्त्ताकी मृत्यु हो जाय, तो तभीसे पूर्णाशौच होता है, दो या तीन दिनकी शुद्धि नहीं होती। ज्ञाति मरणाशौचके पूर्वार्द्धमें पिता, माता या भर्त्ताकी मृत्यु होनेसे पूर्वाशौचकाल द्वारा ही शुद्धि होती है। अपरार्द्धमें मरनेसे पूर्णाशौच होता है।

सपुत्र जननाशौचके शेष दिनमें या पूर्वोक्त प्रभातमें ज्ञातिके जन्म लेनेसे तथा पिता माता या भर्त्ताके मरणा शौचके शेष दिनमें या यह प्रभातमें ज्ञातिका मरण होनेसे पहलेकी तरह दो या तीन दिन अशौच नहीं बढता। किन्तु सपुत्र-जननाशौचके शेष दिनमें या तत्प्रभातमें स्वपुत्रके जन्म लेनेसे पिताके तीन दिन अशौच और बढ जाता है तथा पितृमरणाशौचके शेष दिनमें या पूर्वोक्त प्रभातमें मातृमरण होनेसे अथवा मातृमरणाशौचके शेष दिनमें या तत्प्रभातमें पितृमरण होनेसे पहलेकी तरह दो या तीन दिन अशौच बढ जाता है।

जननाशौचके मध्य यदि अपर जननाशौच हो, और पूर्वजात बालक यदि अशौचकालके मध्य ही मर जाय, तो उस मृत बालकके पितामाताके सम्पूर्णाशौच और सपिण्डियोंके सद्यःशौच होता है तथा उस सद्य शौच द्वारा परजात बालकका अशौच भी निवृत्त होता है। केवल परजातके मातापिताके पूर्णाशौच रहता है और इसी प्रकार यदि परजात बालककी मृत्यु हो, तो वैसा नहीं होता। क्योंकि, अशौच पूर्वजात अशौचकाल तक रहता है। अतएव यहा पर सबो को पूर्वजातका अशौच भोगना पडता है। यहा पर विशेषता इतनी ही है, कि यह परजात बालक यदि पूर्वजाताशौचके पूर्वार्द्धमें जन्म ले कर मर जाय, तो उसके मातापिताके उस पूर्वाशौचकाल तक अङ्गास्पृश्ययुक्त अशौच रहता है। तुल्यकालव्यापक—सामान्य जननाशौच अथवा मरणाशौचके मिलनेसे मरणाशौचकाल द्वारा ही शुद्धि होती है।

एक दिनमें यदि दो ज्ञातिकी मृत्यु हो, तो सर्वगोत्र के अशौचकालावधि अङ्गास्पृश्यत्व रहता है। सुतरां उस अशौचके शेष दिनमें या तत्प्रभातमें यदि किसी अन्य ज्ञातिकी मृत्यु घटे, तो पूर्वोक्त दो या तीन दिनकी वृद्धि नहीं होती, केवल महागुरुनिपातमें वृद्धि होती

है। दोनो प्रकारके अशौच मिलनेसे गुरु अशौच द्वारा ही शुद्धि होती है। विदेशश्रुत ज्ञातिके त्रिरात्राशौच की अपेक्षा विदेशश्रुत मातापिता और भर्त्ताके त्रिरात्र शौच होता है। अतएव यहां पर गुरु अशौच ही बलवान है। तुल्य त्रिरात्राशौच एक साथ होनेसे पूर्वाशौच द्वारा और जनन या मरण त्रिरात्राशौच एक साथ होनेसे मरणाशौच द्वारा शुद्धि होती है। (शुद्धितत्त्व)

यही सब अशौच प्रेताशौच है। जब तक यह अशौच दूर नहीं होता, तब तक शरीरकी शुद्धि नहीं होती। शरीरकी शुद्धि होनेसे ही दैव या पैत्र कर्मोंमें अधिकार होता है। अशौचके रहनेसे शरीर अपवित्र रहता है, इसीसे अशौचयुक्त व्यक्तिके साथ एकत्र उपवेशन या भोजन आदि निन्दनीय बतलाया गया है।

प्रेतास्थि (स० स्त्री०) मृतव्यक्तिकी अस्थि, मुर्देकी हड्डी।

प्रेतास्थिधारी (सं० पु०) १ मुर्दोंकी हड्डियोंकी माला पहननेवाला। २ रुद्रका एक नाम।

प्रेति (स० पु०) प्रकर्षेण इतिर्गमन देहोऽस्य। १ अन्न, अनाज। २ मरण, मरना। ३ प्रगमन, आगे बढ़ना

प्रेतिक (स० पु०) मृतव्यक्ति, प्रेत।

प्रेतिनी (हिं० स्त्री०) प्रेतकी स्त्री, पिशाचिनी।

प्रेतिषत् (स० स्त्री०) प्रेति देखो।

प्रेती (हिं० पु०) प्रेतपूजक, प्रेतकी उपासना करनेवाला।

प्रेतीपाल (हिं० पु०) वह मनुष्य जो कभी काम अपने लिये और कभी अपने मालिकके लिये काम करे।

प्रेतौषधि (स० स्त्री०) १ प्रातगमन। २ अग्निका एक नाम।

प्रेतेश (स० पु०) प्रेतानामीशः ६-तत्। यमराज।

प्रेतोन्माद (सं० पु०) एक प्रकारका उन्माद या पागलपन। इसके विषयमें ऐसा लोगोंका ख्याल है, कि यह प्रेतोंके कोपसे होता है। इसमें रोगीका शरीर कांपता है और वह कुछ भी खाता पीता नहीं है। लम्बी लम्बी सांसें आती हैं। वह घरसे निकल कर भागनेकी चेष्टा करता है। लोगोंको गालियां देता है और बहुत चिल्लाता है।

प्रेत्य (सं० पु०) प्र-इ-ल्यप्। लोकान्तर, परलोक।

प्रेत्यजाति (सं० स्त्री०) प्रेत्य मृत्वा जाति जन्म। पुनर्जन्म।

प्रेत्यभाज् (सं० त्रि०) मृत्युके बाद परलोकमें फलभागी।

प्रेत्यभाव (स० पु०) प्रेत्य मृत्वा भावः। मरणोत्तर पुनर्जन्म। एक बार मृत्यु, फिर जन्म, इसीका नाम प्रेत्यभाव है। दर्शनशास्त्रमें इसका विषय बहुत बढ़ा चढ़ा कर लिखा है, पर विस्तार हो जानेके भयसे यहां पर उसका संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। हम लोग जितने प्रकारके दुःखभोग करते हैं उनमेंसे जन्म मृत्यु ही प्रधान है। इस जन्ममृत्युके हाथसे पिण्ड छुटे, उसीके लिये मोक्षशास्त्रका उपदेश है। महर्षि गौतमने प्रेत्यभावका लक्षण इस प्रकार निर्दिष्ट किया है। प्रेत्यभाव शब्दसे जन्म हो कर मरण और मरण हो कर जन्म, इस प्रकार जीवका धारावाहिक जन्म मरण समझा जाता है। जब तक जीवात्माकी मुक्ति नहीं होती, तब तक जीवात्माका धारावाहिक जन्म और मरण हुआ करता है। मुक्ति होनेसे जन्म और मरण कुछ भी नहीं होता। जन्म शब्दसे शरीरका आत्माके साथ प्रथम सम्बन्ध समझा जाता है। आत्माके साथ जब शरीरका प्रथम सम्बन्ध होता है, उस समय देवदत्त पैदा करता है, ऐसा व्यवहार हुआ करता है। मरण शब्दसे भी जिस सम्बन्धके होनेसे आत्मा शरीरी है, ऐसा व्यवहार हुआ है उस सम्बन्धका नाशक समझा जाता है। यही जन्म और मृत्यु जीवके अशेष दुःखभोगका मूलकारण है, इस मूल कारणका जब तक नाश नहीं होता, तब तक अशेष दुःखसे बचना बिलकुल असम्भव है। जब तक इसका मूल नहीं काटा जायगा, तब तक जन्म और मरण धारावाहिकरूपमें होता ही रहेगा, एक बार जन्म और फिर जन्मके बाद मृत्यु अवश्य होगी। जब जीवके आत्मतत्त्वज्ञानका सञ्चार होगा, तब यह जन्ममरण धारा समूल नष्ट हो जायेगी। परन्तु बिना आत्मतत्त्वज्ञानके जन्म-मृत्यु अपरिहार्य है।

मरणके बाद जन्म, जनके बाद मरण, ऐसे जन्ममरण प्रवाहका नाम प्रेत्यभाव है। प्रेत्यभाव और जन्मान्तर दोनोंका एक ही अर्थ है। परन्तु शास्त्रमें कहा गया है, कि आत्मा अजर और अमर है, आत्माके जरा मृत्यु या

जन्म कुछ भी नहीं है, तब जो यह जन्ममृत्यु होती है, सो किसकी? मनुष्य मरा, शरीर रह गया, अशरीर आत्मा रही या चली गई, कहां गई? कहां रही? यह ले कर विवाद करना निष्प्रयोजन है। एकमात्र यही देखना चाहिये, कि शरीर परिच्युत आत्मा आकाशकी तरह सुखदुःख-वर्जित हुई? या इहलोककी तरह अथवा इहलोककी अपेक्षा अधिकतर भोगभागी हुई? भोगभागी हुई, ऐसा कह ही नहीं सकते। चाहे इसमें तर्क भी क्यों नहीं लड़ाया जाय, तो भी यह प्रमाणित नहीं हो सकता। कारण, बिना शरीरके सुखदुःखका भोग हो सकता है, यह बिलकुल असम्भव है। शरीरोत्पत्ति नहीं होती अथच आत्माके अनन्त सुख और अनन्त उन्नति होती है, इसका कोई भी प्रमाण नहीं है। आत्मा अजर और अमर है, यदि इसे विश्वास करे, तो अमरताके अनुरूप सुखदुःख भोगभागिता पर भी जरूर विश्वास करना पड़ेगा। रूप देखना चाहता हूं, अथच चक्षु देखना नहीं चाहता, ऐसा हो ही नहीं सकता।

सांख्यकारिकामें लिखा है—

"स सरति निरुपभोग भावैरधिवासित लिङ्ग ॥"

भोगस्थान यदि स्थूलशरीर न हो, तो सूक्ष्मशरीरमें भी परिस्फुट भोग सम्भव नहीं। अतएव आत्मा लिङ्ग शरीरविशिष्ट रह कर पुनः पुनः स्थूलशरीरको ग्रहण करती और पुनः पुनः उसे छोड़ देती है। यद्यपि सुख-दुःख आत्माके नहीं है, तो भी अमुक आत्माके सुख दुःख विहीन होनेकी सम्भावना नहीं। (किन्तु केवल नैयायिकोंके मतसे सुखदुःख जीवात्माके हैं।) इस कारण यह अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा, कि आत्माके कभी तिर्यक्-शरीर, कभी मनुष्यशरीर, कभी देवशरीर और कभी पशु-शरीर हुआ करता है।

मनुष्य इस शरीरमें जिस प्रकारके कर्म और ज्ञानमें निमग्न रहता है, मरने पर तदनुसार वह देहधारण करता है। कर्म हीसे स्थावर शरीर, कर्म हीसे पश्वादि शरीर और कर्म हीसे देव शरीरको प्राप्त होता है। इस विषयमें जन्मान्तर अस्वीकारवादी आस्तिक इन दोनों सम्प्रदायमें विशेष मतभेद देखा जाता है।

आत्मा अजर और अमर है। सुतरां इस आत्माने पहले इसी प्रकारका एक शरीर पाया था। यह यदि सत्य हो, तो उसका स्मरण क्यों नहीं होता? जब जन्मान्तरीय कोई भी विषय स्मरणमें नहीं आता, तब किस प्रकार विश्वास होगा, कि मैं था और मेरा पूर्वजन्म था? इसका उत्तर यही है, कि शैशवकालकी घटना जब युवावस्थामें याद नहीं आती, शैशवकी बात तो दूर रहे, कलकी कुल बातें आज याद नहीं आती, तब जन्मान्तरकी बात याद आयेगी, यह कहां तक सम्भव है। इस प्रकार स्मरण नहीं होनेके कई कारण दिखाई देते हैं। अनेक दिन उस विषयको ख्याल नहीं करनेसे, भय, त्रास और यन्त्रणादि द्वारा अभिभूत होनेसे तथा रोगविशेषके आक्रमणसे मनुष्यके पूर्वाभ्यस्त ज्ञानका विलोप होते देखा जाता है। मनुष्य जब इसी शरीरमें सामान्य कारणोंसे पूर्वानुभूत विस्मृत होते हैं और अति अल्प यातनासे अभिभूत हो उपार्जित ज्ञानराशिको खो बैठते हैं, तब जो यह उत्कट मरण यन्त्रणा, पीछे उस शरीरका परित्याग और तब एक नूतन शरीर-ग्रहण इत्यादि कारणोंसे पूर्वजन्मवृत्तान्त विस्मृत होगा, इसमें आश्चर्य ही क्या!

जीव इस देहमें यदि मरणकाल पर्यन्त कर्मज्ञानादिको समानरूपमें अटल और अव्याहत रख सके, तो सभी कर्म और ज्ञान जन्मान्तरमें भी अनुवृत्त होते हैं, लोप नहीं होता। वैसा जीव जातिस्मर नामसे प्रसिद्ध है।

जन्मान्तरवादियोंमेंसे कोई कोई कहते हैं, कि मनुष्य मर कर अश्व हो सकता है, यह बात विश्वसनीय नहीं है। अश्वसे अश्व ही होता है, मनुष्य नहीं होता। मनुष्य हमेशा मनुष्य ही रहता है। इसके उत्तरमें यही कहना है, कि शरीरोत्पत्तिका बीज आत्मा नहीं है। शरीरोत्पत्तिका बीज कर्माशय है अर्थात् अनुष्ठित ज्ञान और कर्मका पुञ्जीभूत संस्कार है। इस कारण मानवदेह पा कर जीव यदि निरन्तर अश्वध्यान करे अथवा अश्वशरीर पानेका अन्य विध कारणकूट संग्रह करे, तो भावी जन्ममें उसके अश्व शरीर क्यों नहीं होगा? इस पर कोई कोई इस प्रकार आपत्ति करते हैं,—मान लिया पूर्वजन्ममें वह मनुष्य था, कर्मबलसे इस जन्ममें अश्व हुआ है। परन्तु उसका पूर्वाभ्यस्त मनुष्योचित ज्ञान कहां गया और अश्वशरीरोचित ज्ञान ही कहांसे आया? इसका उत्तर यह है,—

"कारणानुविधायित्वात् कार्याणां तत्स्वभावता।
नानायोन्याकृतीः सत्त्वो धत्तेऽतो द्रुतलोहवत्॥"
( वेदान्तभा० )

जो जिससे उत्पन्न होता है वह उसीका स्वभाव ग्रहण करता है। इसी नियमके अनुगुणसे नाना योनिसे नाना आकारका जीव उत्पन्न होता है। गलाया हुआ लोहा सांचेका आकार धारण करता है, दूसरेका नहीं। जीव जब जिस योनिमें उत्पन्न होता है, तब उसी योनिके अनुरूप आकार वा स्वभावको प्राप्त होता है। प्राक्तन संस्कार अधिक परिमाणमें अभिभूत हुआ करता है। इसी कारण मानवीय ज्ञान लुप्त रहता है और घोड़ेके आकार तथा स्वभाव व्यतीत मानवका आकार और स्वभाव नहीं होता।

संसारी जीव स्वोपार्जित ज्ञान और कर्मके अनुसार कभी उत्पन्न होता है और कभी अवनत, कभी उत्कृष्ट देह पाता है और कभी निकृष्ट। जो कहते हैं, कि जन्मान्तर नहीं है, उनके लिये कोई सत्यपूर्ण सद्युक्ति नहीं है। वरन् जन्मान्तरके अस्तित्वके पक्षमें सद्युक्तियां देखनेमें आती हैं।

१। प्राणिमात्रके ही एक नित्य और नियमित अभिनिवेश है अर्थात् स्वाभाविक प्रार्थना है। जीवमात्र ही मरना नहीं चाहता, मरणके प्रति उनका विशेष विद्वेष देखा जाता है। जितने प्रकारके भय वा त्रास हैं, सबों-पेक्षा मरणत्रास अधिक बलवान् और अनिवार्य है। मरणत्रास सद्योजात शिशुमें भी देखा जाता है। जो कभी भी मरण यातनाका अनुभव नहीं करता, वैसे व्यक्तिके अन्तरमें भी मारक वस्तु देखनेसे त्रास उत्पन्न होता है। मरणमें यदि क्लेश रहे और उसका यदि कभी भी अनुभव होवे, तो उसी हालतमें मारक वस्तु देखनेसे त्रास कम्पादि उत्पन्न हो सकता है अन्यथा नहीं। सुतरां यह विश्वास करना उचित है, कि जन्मान्तरीय मरणदुःख भोग या अनुभवका संस्कार उसकी अन्तरिन्द्रियमें छिपा था, आज उसी प्रकार मौतसे उद्बुद्ध हो कर उसे भीत और कम्पित कर डाला है। विशेषतः सद्योजात बालकके मरणत्रासके साथ इहजन्मका सम्बन्ध नहीं देखा जाता। इससे भी जन्मान्तरका होना अनुमान किया जा सकता है। इस सम्बन्धमें त्रिकालदर्शी सभी ऋषि अनुभव करते हैं और कहते भी हैं, कि जीवके जीवस्वभावके अन्तर्गत मरणत्रास ही पूर्वजन्म रहनेका चिह्न है।

२। इच्छा एक आत्मगुण वा आत्मलग्न शक्तिविशेष है। थोड़ा गौर कर देखो, किसी प्रकार इसका उदय होता है। इच्छाका जनक सौन्दर्यज्ञान है। अच्छी तरह अनुभव नहीं होनेसे तथा यह मेरा अनुकूल वा उपकारक है, ऐसा ज्ञान नहीं होनेसे उस विषयमें किसी हालतसे इच्छाका उद्रेक नहीं होगा। इच्छाकी तरह भय, त्रास, प्रवृत्ति आदि समस्त अन्तःप्रवृत्तिके प्रति यही नियम चिरप्रतिष्ठित है। अतएव सद्यःप्रसूत शिशुकी इच्छा, प्रवृत्ति और त्रास आदिके साथ जब इहजन्मका वैसा कोई सम्बन्ध नहीं देखा जाता है, तब यह अवश्य कह सकते हैं, कि उन सबके साथ पूर्वजन्मका सम्बन्ध है। पूर्वजन्मार्जित ये सब संस्कार उसे उन सब विषयोंमें रुचि, इच्छा और प्रवृत्ति आदि उत्पन्न कर चरितार्थ होते हैं। अतएव सद्योजात शिशुकी स्तन्यपान प्रवृत्ति भी जन्मान्तर रहनेका दूसरा चिह्न है।

३। सौ वर्षका वृद्ध भी शरीरनिरपेक्षभावसे अपना वृद्धत्व अनुभव नहीं करता। वह जब अपने शरीर और इन्द्रियके प्रति लक्ष्य करता है, तब ही वह समझता है, कि मैं वृद्ध हो गया हूं। यह नियम बालकमें भी विद्यमान है। आत्माके अजर अमर होनेसे ही ऐसी घटना हुआ करती है। आत्मा वृद्ध नहीं होती और न मरती ही है, तदाश्रित शरीर ही वृद्ध होता और मरता है। सुतरां आत्माके अमरत्व और देहके परिवर्त्तन द्वारा भी जन्मान्तरका रहना अनुमित होता है।

४। विद्याबुद्धि सबोंको समान नहीं होना भी जन्मान्तर रहनेका अन्यतम चिह्न है। ऐसे बहुतसे मनुष्य हैं जो थोड़ी उमरमें ही वेदवेदाङ्गपारग हो जाते हैं। फिर कुछ ऐसे भी हैं जो जीवन भर खर्च करके भी उसका कुछ भी हृदयङ्गम नहीं कर सकते।

५। आग्रह अर्थात् हठ। इसका दूसरा नाम प्रवृत्ति विशेष है। यह आग्रह भी जन्मान्तर साबित करनेका अनुमापक है। एक एक विषयमें एक एक मनुष्यका ऐसा एक अनिवार्य हठ रहता है, कि उसे

मारने पर भी वह उससे निवृत्त नही होता। ऐसा आग्रह वा हठ पूर्वजन्मका संस्कार वा अभ्यास छोड कर और कुछ भी नही है।

६। जीवविशेषका स्वभाव और कर्मविशेष पूर्वजन्मकी अवस्थिति साबित करता है। सद्य प्रसूत शाखामृगकी शाखाका आक्रमण और सद्य प्रसूत गण्डार शिशुका पलायन वृत्तान्त अच्छी तरह जाननेसे मालूम पडेगा पूर्वजन्म है, इसमें कुछ सन्देह नही। इत्यादि।

जो कहते हैं, कि पूर्वजन्म नहीं है, उनका मत नितान्त अश्रद्धेय और युक्तिविगर्हित है।

जन्म, मरण और जीवन—आत्मा जब अजर अमर है, तब मरता कौन है? इस प्रश्नकी मीमासा करनेमें एक साथ जन्म, मरण और जीवन तीनोंका ही वर्णन और मीमासा आ जाती है। ऋषिमात्रका कहना है, कि 'नाय हन्ति न हन्यते' आत्मा न किसीको मारती है और न स्वय मरती ही है। कारण, मरण नामक कोई स्वतन्त्र पदार्थ नही है। जो घटना मरण कहलाती है उसके प्रति लक्ष्य करनेसे, सूक्ष्मानुसूक्ष्मरूप विवेकबुद्धिको परिचालना करनेसे समझमें आ जायगा, कि कौन मरता है। मरण क्या है, पहले यही जानना आवश्यक है। कुछ घास, लकडी और रस्सी ले कर एक अवयवी (गृहादि) बनाया। जल, वायु और मृत्तिका आहारण करके एक दूसरा अवयवी (घटादि) प्रस्तुत किया। क्षिति, जल और बीज एक साथ मिल गया, उससे अकुर निकला, उससे शाखापल्लवादि उत्पन्न हुए। अब वह कहने लगा, कि वृक्ष उत्पन्न हुआ है। कुछ दिन बाद उन सबोंका वह पूर्व अवयव विश्लिष्ट हुआ अथवा यों कहिये, कि उन सब अवयवोंका सयोग विध्वस्त हुआ। अब उसने कहा, कि गृह भग्न हो गया, घट विध्वस्त हुआ और वृक्ष मर गया है। सोच कर देखो, किस प्रकार घटनाके ऊपर भग्न, ध्वस्त और मरण शब्दका व्यवहार हुआ है। अवयवका शैथिल्य, विकार अथवा सयोग ध्वस इस अन्यतमके ऊपर ही मरणादि शब्द प्रयुक्त हुए थे। उसे निर्जीव पदार्थसे सजीव पदार्थमें उठा कर लानेसे समझमें आयेगा, कि जीवन्त पदार्थका मरण कौन है? जन्म मरण और कुछ भी नहीं है, अवयवका अपूर्व सयोगभाव जन्म और उसका वियोगभाव मरण है। 'मृत्युरत्य तविस्मृति' मरण और आत्यन्तिक विस्मरण दोनों एक ही बात है। जिस कारण कूटने जीवको देहपिञ्जरमें आबद्ध रखा था, उसी कारण कूट या सयोगविशेषके विनष्ट होनेसे अत्यन्त विस्मरण वा महाविस्मरण नामक मरण होता है। मरण होनेसे देहादिमें अन्य प्रकारका विकार उपस्थित होता है। अतएव सभी अवयवोंके अपूर्व सयोगका नाम जन्म और वियोग विशेषका नाम मरण है। इसीसे साख्याचार्यने कहा है—

"अपूर्वदेहेन्द्रियादिसघातविशेषेण सयोगश्च वियोगश्च।"

(साख्य)

इससे मालूम होता है, कि सावयव वस्तुका ही मरण होता है निरवयव वस्तुका नहीं। आत्मा निरवयव है, इसीसे आत्माका मरण नही है। नितान्त सूक्ष्म और निरवयव इन्द्रियोंकी भी मृत्यु नही है। आत्मा नहीं मरती और न इन्द्रिय ही मरती है, यह सिद्धान्त यदि सत्य हो, तो अमुक मरा है, मैं मरूगा, मैं मरा, ऐसा न कह कर देह मरी है, देह मरेगी ऐसा ही कहना उचित है, पर ऐसा जो कोई भी नही कहता है, उसका कारण क्या? कारण है। मनुष्य इस दृश्यमान सघातका अर्थात् देह, इन्द्रिय, प्राण, मन इनके सम्मिलन भावका विनाश देख कर ही 'मरण' शब्दका प्रयोग करते हैं। यथार्थमें प्राण सयोगका ध्वस ही उक्त शब्दका प्रधान लक्ष्य है। प्राणव्यापारके निवृत्त नही होनेसे दूसरेके सम्बन्धकी निवृत्ति नहीं होती। 'जीवन' 'मरण' इन दो शब्दके धातव अर्थका अन्वेषण करने पर भी कथित अर्थ प्रतीत होता है। जीव धातुसे जीवन और मृ-धातुसे मरण, जीव धातुका अर्थ प्राणधारण और मृ धातुका अर्थ प्राणपरित्याग है। सुतरा यह मालूम होता है, कि प्राण जब तक देहेन्द्रिय सघातमें मिलित रहते हैं, तभी तक उसका जीवन है, विच्छेद होनेसे ही मरण होता है। अत यह कहना होगा, कि मरणसे आत्माका विनाश नहीं होता, देहके साथ उसका केवल विच्छेद होता है। मैं मरा और अमुक मरा, इन सब शब्दोंका अर्थ औपचारिक है। आत्माका अध्यास रहनेसे ही देहादि सघात अह-

प्रत्यवगत होता है और इसी कारण उस प्रकारके औपचारिक प्रयोग हुआ करता है। किन्तु प्राणसंयोग का ध्वंस ही यथार्थ मरण है।

तृणकाष्ठादिको संहत करके उसमें जो दृढ़ता और व्यवहारोपयोगिता सम्पादन की जाती है, उसका नाम गृहका जीवन है। उस दृढ़ता और व्यवहारोपयोगिताका जो अवस्थानकाल है, वह उसकी आयु है, जीवदेहका जीवन या आयु उसीके अनुरूप है। श्वास प्रश्वास जिसका कार्य है, वह प्राण कहलाता है। यथार्थमें प्राण कौन-सा पदार्थ है, उसका निर्णय करनेमें शास्त्रियोंमें मतभेद पैदा हो गया है। कोई कहते हैं, कि यह वायु है, कोई कहते हैं, कि वह इन्द्रियसमष्टिका व्यापारविशेष है और कोई इसे एक प्रकारका स्वतन्त्र पदार्थ बतलाते हैं। पहले मतका सिद्धान्त इस प्रकार है—शरीरमें जो तेज, ऊष्मा, जल या आकाश है, निश्वास प्रश्वास उन तीनोंका सांयोगिक कार्य है। दैहिक ऊष्मा या ताप रसरक्तादिरूप जलको उत्तेजित करता है। दोनों की संघर्षजनित क्रियाविशेष उदरकन्दरस्थ आकाशमें जा कर परिपुष्ट होती है। यह परिपुष्ट संयोगिक क्रिया फुसफुस् नामक सङ्कोचविकाशशील यन्त्रको संकुचित और विकसित करती है। विकाश-क्रियासे बाह्यवायुका परिग्रह या पूरण होता है, पीछे सङ्कोचक्रियासे उसका त्याग या बहिर्गति उत्पन्न होती है। प्राणयन्त्रकी ऐसी क्रियासे भुक्तद्रव्य परिपक्व होता और रसरक्तादि सारे शरीरमें संचित होता है। देहकी अवनति, वृद्धि, जन्म और मरणादि जो कुछ घटना है वे सभी उसी प्राणयन्त्रके अधीन हैं। इन्द्रियकी कार्यशक्ति प्राण द्वारा उत्पन्न और रक्षित होती है। प्राण जब तक सतेज रहेंगे, तभी तक इन्द्रियां कार्य कर सकेंगी। प्राण ही उत्क्रान्ति का कारण है अर्थात् मनुष्य जब मरता है तब प्राण इन्द्रियको ले कर उत्क्रान्त अर्थात् शरीरसे निकल जाते हैं। विशेष विवरण प्राण शब्दमें देखो।

सूक्ष्म शरीर और परलोकगति—जो सर्वव्यापी या पूर्ण है उसकी फिर गति ही क्या? पूर्णकी गति अर्थात् यातायात करनेका स्थान ही कहां है? जिसे यातायात करनेका स्थान रहता है, वह पूर्ण नहीं है। जो वस्तु पूर्णस्वभाव युक्त है, उसका गमनागमन असम्भव है। परिच्छिन्न या खण्ड पदार्थका ही यातायात है, परिपूर्णपदार्थका नहीं। आत्मा पूर्णस्वभावयुक्त है, इस कारण उसकी गति नहीं है।

परन्तु यातायात जो करता है सो कौन? अथवा जन्ममरण प्रवाहका ही कौन भोग करता है? स्थूल शरीर तो पड़ा रहता है, आत्मा न जाती है और न आती है, तब जाता है कौन? अथवा आता ही है कौन? इस प्रश्नके उत्तरमें सभी सांख्यवेदान्तादिने एक स्वरसे कहा है, दृश्यमान स्थूलके अभ्यन्तर सूक्ष्मशरीर है, वही सूक्ष्म शरीर बार बार जाता आता है। जब तक मुक्ति नहीं होती या प्राकृतिक प्रलय उपस्थित होता, तब तक वह रहता है और इहलोकमें गमनागमन करता है।

"उपात्तमुपात्तं षाट्कौशिकं शरीरं हायं हायञ्चोपादत्ते।"

(तत्त्वकौमुदी)

जीव जो बार बार षाट्कौशिक शरीरको ग्रहण और बार बार त्याग करता है, वही जीवका यातायात और इह परलोक सञ्चरण है। दृश्यमान स्थूलशरीरका शास्त्र में षाट्कौशिकशरीर नाम रखा है। त्वक्, रक्त, मांस, स्नायु, अस्थि और मज्जा ये छः कोष हैं अर्थात् आत्माके आवरण हैं, इसीसे षट्कोषात्मक स्थूल देहको षाट्कौशिक कहा गया है। यह षाट्कौशिक शरीर शुक्रशोणितके परिणामसे उत्पन्न होता है, परन्तु सूक्ष्मशरीर उस प्रकार नहीं होता। सूक्ष्म शरीर अन्तःकरण अर्थात् बुद्धीन्द्रियनिचयकी समष्टि या सङ्घात रचित है। यह बहुत सूक्ष्म है, इसीसे अच्छेद्य, अभेद्य, अदाह्य, अक्लेद्य और अदृश्य है। जिसकी मूर्ति नहीं है, अवयव नहीं है, केवल ज्ञानमय पदार्थ है, उसे कौन देख सकता है, कौन उसे छेद, भेद, या दाह ही कर सकता है? सांख्यके मतसे आदि सृष्टि कालमें प्रकृतिसे प्रत्येक आत्माके निमित्त एक एक सूक्ष्म शरीर उत्पन्न हुआ था। प्रकृतिकी पुनः साम्यावस्था या जीवकी मुक्ति नहीं होने तक यह सूक्ष्म शरीर रहेगा और बार बार षाट्कौशिक शरीर उत्पन्न होगा।

सूक्ष्मशरीरका दूसरा नाम लिङ्गशरीर है। किसीके मतसे इसके सत्तरह अवयव, किसीके मतसे सोलह और किसीके मतसे पन्द्रह हैं। सभीके मतसे यह सूक्ष्मशरीर

प्राण, मन, बुद्धि और इन्द्रिय द्वारा रचित है। वेदान्त चैतन्याधिष्ठित सूक्ष्मशरीरको ही जीव कहते हैं।

दृश्यमान देहके अभ्यन्तर एक सूक्ष्म देह है, उसका प्रमाण क्या? इस पर सांख्य कहते हैं, कि योगियोंका अनुभव और योगियोंका अद्भुत कार्यकलाप ही उसका प्रमाण है। कार्यकलाप किस प्रकार सूक्ष्मशरीरका अस्तित्व-साधक है, यह योगी हुए विना समझमें नहीं आ सकता। योगी योगसाधन करके सूक्ष्म शरीरको इस प्रकार उत्पन्न कर सकते हैं, कि मांसपिण्ड अस्थि पिञ्जर दृश्य शरीरसे बहिर्गत हो कर वे स्वेच्छानुसार विचरण और परशरीरमें प्रवेश करते हैं। इस समय केवल युक्ति द्वारा सूक्ष्म शरीरसद्भाव बोधगम्य किया जाता है। शास्त्रमें इसकी युक्तिका विषय इस प्रकार लिखा है—धर्माधर्म, ज्ञानाज्ञान, वैराग्यावैराग्य, ऐश्वर्या नैश्वर्य और लज्जा भय आदि जो सब गुण मानवीय आत्माको वस्त्रकुसुम (वस्त्रमें पुष्पका स्पर्श होनेसे जिस प्रकार वस्त्र सुवासित होता है, उसी प्रकार)-की तरह निरन्तर अधिवासित करते हैं, वे सभी बुद्धिपदार्थमें गिने जाते हैं। इसका कारण यह, कि बुद्धिकी हो विशेष विशेष अवस्था धर्माधर्मादि विविध नामोंकी नामी हैं। बुद्धि ऐसी चीज नहीं जो निराश्रयमें रहे, अवश्य उसका आश्रय है। थोड़ा ध्यानपूर्वक विचार करनेसे प्रतीत होगा, कि बुद्धि मांसलिप्त अस्थिपिञ्जरमें अवस्थित नहीं है और न निरुपाधिक आत्मामें ही अवस्थित है। निरुपाधिक आत्मा, निर्गुण, निष्क्रिय और निर्धर्मक है। सुतरां बुद्धिका पृथक् आश्रय कल्पनीय या अनुमेय है। जो बुद्धिके आश्रय हैं, वही सूक्ष्मशरीर है। सूक्ष्मशरीरमें ही बुद्धिकी स्थिति और उत्पत्ति है।

सांख्यकार कहते हैं, कि चित्र जिस प्रकार विना आश्रयके स्थित नहीं रह सकता, छाया जिस प्रकार मूर्त्ति पदार्थके विना नहीं रह सकती, उसी प्रकार लिङ्ग अर्थात् नाना प्रभेदवती बुद्धि भी विना किसी एक उपयुक्त आश्रय या आधारके नहीं रह सकती।

"चित्रं यथाश्रयमृते स्थाण्वादिभ्यो विना यथा छाया।
तद्वद्विना विशेषैर्न तिष्ठति निराश्रयं लिङ्गम्॥"
(सांख्यका० ४१)

इसी कारण मांसलिप्त अस्थिरचित दृश्यदेहके अन्तरालमें सूक्ष्म इन्द्रियातीत शरीरका रहना अनुमित होता है। स्थूलशरीरावस्थामें सभी कर्मज्ञान उस शरीरकी सहायतासे उत्पन्न होता है और दोनोंका संस्कार उसीसे स्थितिलाभ करता है। जन्ममरणकी अन्तराल अवस्था में अर्थात् स्थूलशरीर वियुक्त हुआ है, अथच अभिनव स्थूल शरीर उत्पन्न नहीं हुआ। वैसी अवस्थामें भी धर्माधर्मादिका संस्कार उसमें आबद्ध रहता है। इहजन्ममें जिन सब बुद्धिवृत्तियोंका आविर्भाव हुआ है, तत्तावस्था संस्कार लिङ्गशरीरमें आबद्ध होता है और रह जाता है। बुद्धिके आविर्भावप्रभावसे दृश्य देह केवल स्पन्दित होती है और उसके संस्कारके सिवा अन्य कोई संस्कार इसमें आबद्ध नहीं होता। यही कारण है, कि स्थूलदेहका ध्वंस होने पर धर्माधर्मादिका संस्कार विलुप्त नहीं होता। तथा इहजन्मकी कार्यरुचि पूर्वजन्मके संस्कारानुरूप हुआ करती है।

"सूक्ष्मास्तेषां नियता माता पितृजा निवर्त्तन्ते।"
(सांख्यका० ३९)

मातापितृजात अर्थात् शुक्रशोणित द्वारा उत्पन्न यह षाट्कौषिक देह पड़ी रहती है, सड़ जाती है, मट्टी हो जाती है, भस्म बन जाती है, गीदड़ कुत्ते उसे खाते हैं, तथा यह विष्ठा भी हो जाती है। किन्तु 'सूक्ष्मास्तेषां नियताः' अर्थात् उसके मध्य सूक्ष्मशरीर नियतकालवर्त्ती है। यह मोक्ष अथवा प्रलय नहीं होने तक रहता है। सूक्ष्मशरीर बार बार षाट्कौषिक शरीरको ग्रहण करता है और बार बार उससे विमुक्त होता है। षाट्कौषिक शरीरके उत्पन्न होनेको जन्म और उससे विमुक्त होनेको ही मरण कहते हैं।

जन्ममरणका अन्तराल।—अन्तराल शब्दका अर्थ मध्यकाल है। मरण हुआ है, अथच शरीरोत्पत्ति नहीं हुई। इस मध्यवर्त्ती अवस्थाविषयमें वेदान्तादि शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है—

अभिनिवेश, ध्यान और मध्यान इन सबका फलाफल अनुसन्धान करनेसे अन्तरालमें अवस्थाका सुस्पष्ट चित्र मालूम हो सकता है। किसी आदमीकी अन्तिम ६ दण्ड रातमें ही नींद टूट जाती है, उसने उसी प्रकार

अभ्यास किया है। अभ्यासके बलसे वह चाहे जिस समय बिछावन पर जाय, पर उसकी नींद ठीक उसी समय टूटती है। अथवा वह व्यक्ति यदि चाहे, कि मैं कल ठीक ६ घण्टे रात रहते उठूंगा, तो यह निश्चय है, कि उसकी नींद ठीक उसी समय टूट जायगी। इससे जानना चाहिये, कि ध्यान या अभिनिवेश अभ्यासको अतिक्रमण करके प्रभुत्व करनेमें समर्थ है। आहार, विहार, विसर्ग (मलमूत्रत्याग) और अन्यान्य दैहिकक्रिया सभी अभ्यास, ध्यान और अभिनिवेशके प्रभावसे हमेशा नियमित होती है। शरीरके रहते जो सब ध्यान, अभिनिवेश और अभ्यास किया जाता है, शरीरपात होने पर वे सब ध्यान, अभिनिवेश और अभ्यास संस्कारीभावको प्राप्त हो कर जीवको अनुरूप नियमके अधीन रखते और परिचालित करते हैं। इस शरीरमें किसी एक विषयका निरन्तर ध्यान करके शरीर परित्याग करने पर भी वह कभी न कभी पुनरुदित होगा ही। उस उदयका बीज अनुष्ठित कार्यमें ही संस्कार है। जो संस्कार सूक्ष्म शरीरमें रहता है, पीछे उसीके बलसे वह उद्बुद्ध होता है। स्थिर संस्कारके उद्बुद्ध होनेसे स्मरण और प्रत्यभिज्ञा नामका ज्ञान उत्पन्न होता है। उसके साथ मनोभाव और अवस्था परिवर्तित होती है। इस जन्ममें जो जन्मान्तरीय संस्कार उद्बुद्ध होता है, वह उद्बोध इहलोकमें स्वभाव और प्रकृति इत्यादि नामोंसे परिचित है। मरणकालमें स्थूलदेह पतित रहता है, किन्तु उस देहका अर्जित संस्कार सूक्ष्मशरीरके अवलम्बन पर विद्यमान रहता है, इसका नाश नहीं होता। यही कारण है, कि मरनेके बाद उस देहका अर्जितकामकर्म अर्थात् धर्माधर्मादि उसकी भविष्य अवस्थाको उपस्थापित करता है। मृत्युयन्त्रणा उस देहकी परिचित सभी वस्तुओंको भुला देती है और भविष्यत् देह तथा भविष्यत् देहका भोग्य एवं भोगसम्बन्धीय भावना चित्तमें पर्यवसित करती है।

यातना चाहे कितने प्रकारकी क्यों न हो, मरण यातना सबसे उत्कट है। किसी प्रकारका उत्कट रोग होनेसे अथवा मूर्छादि दूसरा असाधारण भोग होनेसे जिस प्रकार पूर्वसञ्चित ज्ञानकी अन्यथा होती है, पूर्वाभ्यस्त विषय भूल जाता है, उसी प्रकार मृत्युयन्त्रणा भी मुमुर्षुके विद्यमान सभी भावोंको विस्मृतिसागरमें निमग्न और अभिनव भावनाका उत्थापन करती है। जीवने जीवन भरमें जो सब कर्म ध्यान या अभिनिवेश किया है, मृत्युकालमें उसीके अनुरूप एक नूतन-परिवर्त्तन अर्थात् एक नूतन भावना उपस्थित होती है। शास्त्रमें इसीको भावनामय शरीर बतलाया है। मृत्युकालमें भावनामय शरीर होता है, इसका अर्थ यह, कि भविष्यमें जो व्याघ्रयोनिमें जन्म लेगा, मरणकालमें उसे 'व्याघ्रोऽहं' ऐसी भावना उत्पन्न होती है। उत्कट मरणयन्त्रणा उसके स्थूलशरीरके समान ज्ञानको विलुप्त कर भावनामय विधान उत्पन्न करती है। यह भावना विधान या भावशरीर स्वप्नशरीरके अनुरूप है। हम लोग जिस प्रकार स्वप्न देखते हैं, उसी प्रकार स्थूलदेहच्युत भावदेही पहले अन्तर परजन्मका स्फुरण सन्दर्शन करता है, पीछे यथाकालमें उसका पाञ्चभौतिक शरीर उत्पन्न होता है। शास्त्रमें जन्म और मरणको जो तृणजलौकाकी तरह बतलाया, वह भावनामय शरीर ही एक अर्थात् जलौका जिस प्रकार एक तृणको छोड़ कर दूसरे तृणको पकड़ती है अथवा अन्य तृण बिना पकड़े गृहीत तृण नहीं छोड़ती है, उसी प्रकार जीव भी अन्य शरीरको बिना ग्रहण किये इस शरीरका त्याग नहीं करता। यह अन्य पाञ्चभौतिक शरीर नहीं है, परन्तु यह भावनामय शरीर है। पाञ्चभौतिक शरीरलाभ सबोंके भाग्यमें बदा नहीं रहता।

"योनिमन्ये प्रपद्यन्त शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्॥"

(श्रुति)

भावनामय देहका दूसरा नाम आतिवाहिक देह है। आतिवाहिक देह थोड़े समय तक रहती है। पीछे पूर्व प्रज्ञाके अनुसार पाञ्चभौतिक भोगदेह उत्पन्न होती है।

कोई भी मानवदेह, कोई तिर्यग्देह, अथवा कोई देव देह पाता है। पुण्याधिक्य रहनेसे पुण्यशरीर अर्थात् देवादि शरीर, पापाधिक्य रहनेसे तिर्यक्शरीर, पापपुण्य का बल समान रहनेसे मानवशरीर उत्पन्न होता है। जब तक स्थूलशरीर उत्पन्न नहीं होता, तब तक भावना

मय शरीरमें अर्थात् आतिवाहिक भावदेहमें सुखदुःखका भोग करता होगा। वह भोग स्वप्नभोगकी तरह अस्पष्ट है। स्वप्न और भावनामय है। मृत्युकालमें जिस भावकी स्फूर्त्ति होगी, वह भाव प्रबल हो कर उसे तदनु रूप गति प्रदान करता है। जीवके मुमूर्षु होनेसे लोग उसके कानमें विष्णुका नाम इस लिये सुनाते हैं, कि इस समय भी उसके मनका भाव ईश्वरकी ओर जाय। परन्तु इससे कोई फल पानेकी सम्भावना नहीं। चैतन्य प्रतिबिम्बित सूक्ष्मदेह कथित प्रकारसे षाट्कौषिक शरीरसे निकल कर पहले आतिवाहिक शरीरमें आकाशस्थित, आलम्बनहीन, वायुभूत और आश्रयशून्य अवस्थाको प्राप्त होती है। पीछे यथाकालमें जन्मग्रहण करती है। जो अत्यन्त पापाचारी हैं वे मरनेके बाद इस पृथ्वी पर आतिवाहिक शरीरमें कुछ दिन रह कर पीछे तमःप्रधान वृक्ष-लतादि जड़ सहित ग्रहण करते हैं। जो ऋषि, तपस्वी और ज्ञानी हैं, वे देवयानपथसे ऊर्द्ध्वलोक गामी हो कर धीरे धीरे ब्रह्मलोकमें जा उत्पन्न होते हैं। जो सत्कर्मनिष्ठ हैं वे पितृयानपथसे ऊर्द्ध्वगामी हो पितृलोकमें जा कर जन्म लेते हैं। अनन्तर सुखभोगके बाद वे पुनः पितृयानपथसे इहलोकमें उतरते और अपने कर्मानुसार मानवशरीर पाते हैं। जो मनुष्य पशुशरीर पाता है, उसे आकाशमें, पृथ्वी पर, पीछे पार्थिवरसके साथ शस्यादिके मध्य, उसके बाद खाद्यरूपमें मनुष्य या अन्य किसी जीवके शरीरमें कुछ दिन रहना पड़ता है। पुंशरीरमें प्रवेश करनेसे रसरक्तादि क्रमसे शुक्रधातुमें और स्त्रीशरीरमें प्रवेश करनेसे आर्त्तवरक्तमें अवस्थान करता है। अनन्तर वह स्त्रीपुरुषसंयोगके उपलक्ष्यमें गर्भयन्त्रमें प्रविष्ट हो कर षाट्कौषिक देह पाता है।

जीव पापके साथ जिस शरीरमें प्रवेश करता है, उस समय उसे उसी शरीरके अनुरूप संस्कार होता है। जो पहले मानवदेहमें था, कर्मकी प्रेरणासे वह यदि वानरयोनिमें उत्पन्न हुआ हो, तो वानरशरीरमें प्रवेश करते ही उसका मानवोचित संस्कार जाता रहता है और वानरोचित संस्कारका सञ्चार होता है।

पुरुषोंके संयोगसे जीव गर्भमें प्रविष्ट होता है। पीछे गर्भस्थ देही नवम या दशममासमें अङ्गप्रत्यङ्गादिका पुष्टि भाव लाभ करके प्रबल प्रसववायु द्वारा धनुर्मुक्त वाणकी तरह योनिछिद्रसे बाहर निकल आता है।

योगशास्त्रमें लिखा है,—अष्टम मासमें जब मनका प्रादुर्भाव होता है, तभीसे ले कर जब तक भूमिष्ठ नहीं होता, तब तक जीव पूर्वजन्मका वृत्तान्त स्मरण और गर्भावासकी कठोर यन्त्रणाका अनुभव करके क्लेश पाता रहता है। वह बेचारा क्या करे, मुख जरायुसे आच्छन्न है, कण्ठ कफपूर्ण है, वायुका पथ निरुद्ध है, इत्यादि कारणोंसे वह रोदनादि नहीं कर सकता। सुतरां पूर्वानुभूत नाना जन्मकी नाना प्रकारकी यन्त्रणा याद करके अति उद्वेगके साथ उसे सह कर रह जाता है।

"जातः स वायुना स्पृष्टो न स्मरति।
पूर्वं जन्ममरणं कर्म च शुभाशुभम्॥"

ज्योंही वह भूमिष्ठ होता है, त्योंही सभी बातें भूल जाता है। वाह्यवायु ही उसकी पुरातन स्मृतिको विनाश कर डालती है। इसी नियमसे जन्म और मृत्यु हुआ करती है।

दर्शनशास्त्रमें जीवका जन्म और मृत्यु विषय इस प्रकार निर्दिष्ट हुआ है। जन्म और जन्मके बाद मृत्यु, यह अवश्य होगी ही। इस प्रकारका जन्म और मृत्यु ही जीवका प्रेत्यभाव है। जब तक मुक्ति नहीं होगी, तब तक पूर्वोक्त प्रकारसे जन्म और मरण-क्लेशका भोग करना ही पड़ेगा। मुक्ति होनेसे फिर प्रेत्यभाव नहीं होगा। सभी दर्शनशास्त्रोंमें जिससे यह प्रेत्यभाव अर्थात् जन्ममृत्यु न हो, उसका विषय समझा गया है।

प्रेत्यभाविक (सं० त्रि०) प्रेत्यभाव सम्बन्धीय, इहलोक सम्बन्धी।

प्रेत्वन् (सं पु०) प्र इ क्वनिप्। १ इन्द्र। २ वात, हवा।

प्रेप्सु (सं० त्रि०) प्राप्तुमिच्छुः प्र आप्-सन्-उ। जो पानेमें इच्छुक हो, जो कोई चीज पानेकी ख्वाहिश करता हो।

प्रेम (सं० पु० क्ली०) प्रियस्य भावः प्रिय (पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा। पा ५।१।१२२) इति इमनिच् (प्रियस्थिरेति। पा ६।४।१५७) इति प्रादेशः, वा प्री-तर्पणे मनिन्। १ सौहार्द। पर्याय—प्रेमा, प्रियता, हार्द, स्नेह।

प्रेमके प्रियता, हार्द, स्नेह आदि कतिपय पर्याय

रहने पर भी इसका स्वरूप निर्णय करना असाध्य है। इसी कारण नारदीय-भक्तिसूत्रमें लिखा है—"अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम् ।"

अतएव प्रेम क्या पदार्थ है उसे वाक्य द्वारा व्यक्तिविशेषको समझाया नहीं जा सकता है। इसका दृष्टान्त भी उसी नारदसूत्रमें लिखा है, "मूकास्वादनवत्" अर्थात् जिस प्रकार कोई मूक व्यक्ति किसी द्रव्यका आस्वादन करनेसे उसका कटु, तिक्त और कषाय गुण किसीके भी सामने व्यक्त नहीं कर सकता, केवल वही उसका आस्वादन अनुभव करता है, प्रेम भी उसी प्रकार है, प्रेमी व्यक्ति भिन्न अन्य कोई भी उसका स्वरूप नहीं जान सकता। इसी कारण उक्त सूत्रमें कहा गया है "यथा गोपिकानाम्" गोपियोंका श्रीकृष्णके प्रति जो प्यार है, उसीको प्रेम कहते हैं। श्रीमद्भागवतके तृतीय स्कन्धमें लिखा है, कि पहले सत्सङ्ग, पीछे तत्परता, उसके बाद भागवतकथामें प्रवृत्ति, बादमें श्रद्धा, पीछे रति अर्थात् भावभक्ति और सबके अन्तमें भक्ति अर्थात् प्रेम होता है।

भीष्म, प्रह्लाद, उद्धव, नारद आदिने ध्वंसकारण रहित भगवान्में जो ममता है, उसीको प्रेम बतलाया है। यह प्रेम भावोत्थ और अतिप्रसादोत्थके भेदसे दो प्रकारका है। निरन्तर अन्तरङ्ग भावसमूहके सेवन द्वारा भाव जब परमोत्कर्षको प्राप्त होता है, तब उसे भावोत्थ प्रेम और हरिके स्वीय सङ्गदानादिको ही अतिप्रसादोत्थ प्रेम कहते हैं।

एक दिन श्रीकृष्णने उद्धवसे कहा था—

"तेनाधीतश्रुतिगणा नोपासितमहत्तमाः ।
अव्रतातप्ततपसो मत्सङ्गान्मामुपागताः ॥"
(भाग० ११ स्कन्ध)

उन गोपियोंने मुझे पानेके लिये वेदाध्ययन नहीं किया, सत्सङ्ग भी नहीं किया और न कोई व्रत या तपस्या ही की, केवल मेरे सङ्गप्रभावसे ही उन्होंने मेरा प्रेमलाभ करके मुझे पा लिया है।

यह अतिप्रसादोत्थ प्रेमके भी फिर दो भेद हैं, माहात्म्य ज्ञानयुक्त और केवल (माधुर्य) ज्ञानयुक्त। विधिमार्गके भक्तवादियोंके प्रेमको महात्म्यज्ञानयुक्त और रागानुगभक्ति मार्गमें प्रेमका केवल (माधुर्य) ज्ञानयुक्त कहते हैं।

वैष्णवाचार्योंका कहना है—

"धन्यस्यायं नवः प्रेमा यस्योन्मीलति चेतसि ।
अन्तर्वाणिभिरप्यस्य मुद्रा सुष्ठु सुदुर्गमा ॥"

जिस धन्य व्यक्तिके चित्तमें इस नवीन प्रेमका उदय होता है, शास्त्रज्ञ होने पर भी वे सहसा प्रेमकी परिपाटी समझ नहीं सकते। यह प्रेम शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुरके भेदसे पाँच प्रकारका है।

शान्त प्रेम।

शान्तरसका विषय आलम्बन चतुर्भुज विष्णुमूर्ति और आश्रयालम्बन सनकादि शान्तगण हैं।

महोपनिषद्का श्रवण, निर्जनस्थान-सेवन, शुद्धसत्त्वमय भगवान्की स्फूर्ति, तत्त्वविचार, ज्ञानशक्तिका प्राधान्य, विश्वरूपदर्शन, ज्ञानिभक्तका संसर्ग और समविद्यगणके साथ उपनिषद्विचार शान्तरसके उद्दीपन हैं। नासाग्रमें दृष्टि, अवधूतकी तरह चेष्टा, चार हाथ स्थान देख कर पीछे पादविक्षेप, ज्ञानमुद्राधारण, हरिद्वेषीके प्रति द्वेषराहित्य, भगवान्के प्रियभक्तमें भक्तिकी अल्पता, संसारक्षय और जीवन्मुक्तिके प्रति बहु आदर, निरपेक्ष, निर्ममता, निरहङ्कारिता और मौन इत्यादि अनुभाव हैं। स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभेद, वेपथु, वैवर्ण्य और अश्रु ये सात सात्त्विक भाव हैं। निर्वेद, धैर्य, हर्ष, मति, स्मृति, उत्सुक, आवेग और वितर्क आदि इस शान्तरसमें सञ्चारीभाव हैं। शान्तिरति स्थायीभाव है।

दास्यप्रेम।

इसे शास्त्रकारोंने प्रीतभक्तिरस बतलाया है। इस रसमें द्विभुज और चतुर्भुज दोनों रूप ही विषयालम्बन और हरिदासगण आश्रयालम्बन हैं।

विषयालम्बन श्रीकृष्ण वृन्दावनमें द्विभुज, अन्यत्र द्विभुज और चतुर्भुज भेदसे तीन प्रकारके हैं। आश्रयालम्बन हरिदास भी अधिक, शरणागती, विश्वस्त और सद्बुद्धिके भेदसे चार प्रकारका है। इन चार प्रकारके दासोंका नाम अधिकृत, आश्रित, पारिषद और अनुग है। ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि देवगण अधिकृत दास हैं। आश्रितदास शरणागत, ज्ञानी और सेवानिष्ठ भेदसे तीन प्रकारका है।

कालीयनाग और जरासन्ध कारारुद्ध राजगण शरणागत हैं। जो मुक्तिकी इच्छाका परित्याग करके

केवल हरिको ही आश्रय किये हुए हैं, वे ही (शौनकादि ऋषि) ज्ञानी दास हैं। जो पहलेसे ही भजन विषयमें आसक्त हैं उन्हें सेवानिष्ठ कहते हैं—चन्द्रध्वज, हरिहर, बहुलाश्व, इक्ष्वाकु, श्रुतदेव और पुण्डरीकादि ये ही सेवानिष्ठदास हैं।

उद्धव, दारुक, सात्यकि, श्रुतदेव, शत्रुजित्, नन्द, उपनन्द और भद्र आदि पारिषद हैं। इनके मन्त्रकार्य और सारथ्य कार्यमें नियुक्त रहने पर भी कभी कभी अवसर पा कर ये परिचर्यादि कार्यमें नियुक्त होते हैं।

कौरवोंके मध्य भीष्म, परीक्षित् और विदुरादिकी भी उन पार्षदोंमें गिनती होती है। पारिषदोंमें उद्धव ही श्रेष्ठ हैं।

अनुगदास—पुरस्थ और व्रजस्थके भेदसे अनुग दो प्रकारका है—सुचन्द्र, मण्डन, स्तम्ब और सुस्तम्बादिको पुरस्थ अनुग दास और रक्तक, पत्रक, पत्री, मधुमत, रसाल, सुविलास, प्रेमकन्द, मरन्दक, आनन्द, चन्द्रहास, पयोद, बकुल, रम्भद और शारदको व्रजस्थ अनुगदास कहते हैं।

इस रसमें श्रीकृष्णकी मुरलीध्वनि, शृङ्गरव, हास्य युक्तावलोकन, गुणोत्कर्षश्रवण, पद्म, पदचिह्न, नूतन मेघ और अङ्गसौरभ उद्दीपन है।

सर्वतोभावमें भगवदाज्ञाका प्रतिपालन, भगवत् परिचर्यामें ईर्षाशून्यता, कृष्णदासके साथ मित्रता और प्रीतमात्र निष्ठता दास्य प्रेमरसका अनुभाव है।

स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभेद, वेपथु, वैवर्ण, अश्रु और प्रलय ये आठ सात्त्विकभाव ही इसमें सात्त्विक हैं।

हर्ष, गर्व, धृति, निर्वेद, विषण्णता, दैन्य, चिन्ता, स्मृति, शङ्का, मति, औत्सुक्य, चपलता, वितर्क, आवेग, लज्जा, जडता, मोह, उन्माद, अवहित्था, बोध, स्वप्न, व्याधि और मृति ये सब व्यभिचारी भाव हैं। सम्भ्रम प्रीतिको इसका स्थायीभाव कहते हैं। इस सम्भ्रम प्रीतिके वृद्धिप्राप्त होनेसे पहले प्रेम, पीछे स्नेह, उसके बाद राग पर्यन्त हुआ करता है। शान्तप्रेममें स्नेह और राग नहीं होनेके कारण शान्तसे दास्यप्रेम श्रेष्ठ है।

यह दास्यप्रेम पुनः अयोग और योगभेदसे दो प्रकारका है। हरिके सङ्गाभावको अयोग कहते हैं। इसमें हरिके प्रति मन समर्पण और उनके गुणादिका अनुसंधान किया जाता है। फिर इस अयोगके भी दो भेद हैं, उत्कण्ठता और वियोगता। अदृष्टपूर्व हरिकी दर्शनेच्छाको उत्कण्ठित कहते हैं। इसमें समस्त व्यभिचारी-सम्भावना होने पर भी औत्सुक्य, दैन्य, निर्वेद, चिन्ता, चपलता, जडता, उन्माद और मोह इन सब व्यभिचारी-भावकी अधिकता होती है। औत्सुक्यका उदाहरण कर्णामृतमें इस प्रकार है—

"अमून्यधन्यानि दिनान्तराणि हरे त्वदालोकनमन्तरेण।
अनाथबन्धो करुणैकसिंधो हा हन्त हा हन्त कथं नयामि॥"

बिल्वमङ्गलने कहा है,—हाय! हाय! हे हरे! हे अनाथबन्धो! हे करुणासिंधो! बिना आपके दर्शनके किस प्रकार यह अधन्य दिन यापन करूंगा।

हरिके साथ सङ्गलाभ करके फिरसे उसके विच्छेद होनेको वियोग कहते हैं। इस वियोगके अङ्गमें ताप, कृशता, जागर्या, आलस्यशून्यता, अधैर्य, जडता, व्याधि, उन्माद, मूर्च्छा और मृति ये दश दशाए होती हैं। इनमें से केवल एकका उदाहरण नीचे दिया जाता है—

"दनुजदमनयाते जीवने त्वय्यकस्मात्
प्रचुरविरहतापैर्ध्वस्तहृत्पङ्कजाया।
व्रजममिपरितस्ते दासकासारपङ्क्तौ
न किल वसतिमार्त्ता कर्तुमिच्छन्ति हंसा॥"

हे कृष्ण! जीवनस्वरूप तुम जो वृन्दावनसे चले गये हो उससे व्रजभूमिके चतुर्दिकस्थ तुम्हारे दासरूप सरोवर श्रेणीके अकस्मात् प्रबल विरहानल द्वारा हृद् पद्म सूख गये हैं। प्राणरूपी हंस आर्त्त हो कर अब उसमें रहनेकी इच्छा नहीं करते।

कृष्णके साथ मिलनको योग कहते हैं। यह योग सिद्धि, तुष्टि और स्थितिके भेदसे तीन प्रकारका है। उत्कण्ठितावस्थामें कृष्णप्राप्तिको सिद्धि, विच्छेदके बाद श्रीकृष्णप्राप्तिको तुष्टि और श्रीकृष्णके साथ एकत्र वास को स्थिति कहते हैं।

गौरव-प्रीतिमें भी यही सब भाव हुआ करते हैं। गौरवप्रीतिका विषयालम्बन कृष्ण हैं, आश्रयालम्बन उनके लालनीय सारण, गद, प्रद्युम्न आदि कुमारगण हैं।

सम्भ्रम, प्रीति और गौरवप्रीतिशाली द्वारकाके दासों

प्रेमसे जो निरन्तर वात्सल्य बुद्धिसे सेवा करते हैं, उन्हें ऐश्वर्यज्ञानकी प्रधानता है और जो व्रजके हैं उन्हें सर्वतो भावसे श्रीकृष्णके साथ स्नेह सम्बन्धस्फूर्ति होती है। प्रश्रय इन सब दासगणोंके ऐश्वर्यज्ञान नहीं रहने पर भी गोपराज नन्दन होनेके कारण यह ऐश्वर्यज्ञान है।

सख्य-प्रेम।

इस सख्यरसमें द्विभुजधारी श्रीकृष्ण विषयालम्बन और उनके वयस्यगण आश्रयालम्बन हैं। व्रजस्थ द्विभुज और अन्य स्थानस्थ द्विभुज कृष्णभेदसे आलम्बन दो प्रकारका है। फिर वयस्यगणके भी पुरसम्बन्धी और व्रजसम्बन्धीके भेदसे दो भेद हैं। अर्जुन, भीम, द्रौपदी, श्रीदामविप्र आदि पुरसम्बन्धि सखा हैं। इन सखाओंमें अर्जुन ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

व्रजसम्बन्धि सखा—जो सर्वदा कृष्णके साथ विहार करते हैं, जिनका जीवन कृष्णगत है और क्षणमात्र भी बिना कृष्णके नहीं रह सकते, वे ही व्रजस्थ सखा हैं। वे ही सभी सखाओंसे श्रेष्ठ हैं।

व्रजवयस्यगणका प्रेम,—

"इत्थं सतां ब्रह्मसुखानुभूत्या दास्यं गतानां परदैवतेन।
मायाश्रितानां नरदारकेण साकं विजह्रुः कृतपुण्यपुञ्जाः॥"

(भागवत १०म स्कन्ध)

शुकदेवने कहा,—भगवान् हरि विज्ञजनोंके लिये स्वप्रकाश परम सुखस्वरूप, भक्तजनोंके लिये भगवद् परम दैवत और मायाश्रित जनोंके लिये मनुष्यबालकरूपसे प्रतीयमान होते हैं। उन भगवानके साथ गोपबालकगण जब इस प्रकार विहार करने लगे, तब यह अवश्य मालूम होता है, कि उन सब बालकोंके पुण्यपुञ्ज था।

वयस्योंके प्रति श्रीकृष्णका प्रेम —

"सहचरनिकुरम्बं भ्रातरार्य! प्रविष्टं
द्रुतमघजठरान्तः कोटरे प्रेक्षमाणः॥
स्खलदतिनिरपायः क्षालिताक्षामगात्रः
क्षणमनयमीदृक् कृष्णविकारदशाम्॥"

श्रीकृष्णने बलरामसे कहा,—हे आर्य! हे भ्रातः! सहचरोंको अघासुरके जठरकोटरमें प्रविष्ट होते देख शोकसन्तप्त हो उस क्षण मैं मोहसे आक्रान्त होकर होश खो बैठा था। इस कारण मैं हतज्ञान कृष्ण-चित्त हो अचेतन हो पड़ा था। इन गोकुलस्थ सखाओंके भी फिर चार भेद देखे जाते हैं। यथा—सुहृत्, सखा, प्रियसखा और प्रियनर्मसखा।

सुहृत् सखागण श्रीकृष्णसे उमरमें कुछ बड़े और वात्सल्यगन्धयुक्त थे। वे अस्त्रादि धारणपूर्वक श्रीकृष्णकी सर्वदा रक्षा करते थे। सुभद्र, मण्डलीभद्र, भद्रवर्द्धन, गोभट, यक्ष, इन्द्रभट, भद्राङ्ग, वीरभद्र, महागुण, विजय और बलभद्र आदि सुहृत् हैं। इनमेंसे मण्डलीभद्र और बलभद्र श्रेष्ठ हैं।

बलभद्रका प्रेम, यथा—

"अभितिथिरिति पुत्रं मत्समीतवाद
स्नपयितुमिह सम्यगारब्धया रामिलोऽस्मि।
इति सुबल! गिरा मे सन्दिशन्य मुकुन्द
फणिपतिहृदकच्छे मा यगन्तोः कदापि॥"

बलरामने कहा,—सुबल! कृष्णसे जा कहो, कि 'आज उनकी जन्मतिथि है, इस कारण उनकी माताके साथ मैं उन्हें स्नान करानेके लिये घरमें ठहरा हूँ, वे कभी भी आज कालियहृदकी ओर न जाय।'

जो उमरमें कुछ कम, दास्यगन्धयुक्त, सख्य और प्रेमवाले हैं, वे ही सखा कहलाते हैं।

विशाल, वृषभ, ओजस्वी, देवप्रस्थ, वरूथप, मरन्द, कुसुमापीड, मणिबन्ध और करन्धम आदि श्रीकृष्णके सखा थे। इन सखाओंमें देवप्रस्थ ही श्रेष्ठ थे। देवप्रस्थका सख्य प्रेम, यथा —

किसी सखीने पालिकासे श्रीराधाने कहा, 'सुन्दरि! श्रीकृष्ण कन्दगुहामें श्रीदामकी जङ्घाओं पर मस्तक और वाम भागमें सुबलकी भुजाको अपनी छाती पर रख कर सो रहे हैं तथा देवप्रस्थ नामक सखा प्रेमके साथ उनका पैर दबा कर उस विश्रामको सुख पहुँचा रहे हैं।

तुल्यवयस और केवल सख्यभावी सखाओंको प्रिय सखा कहते हैं। श्रीदाम, सुदाम, दाम, वसुदाम, किङ्किणी, स्तोककृष्ण, अंशु, भद्रसेन, विलासी, पुण्डरीक, विटङ्क और कलविङ्क आदि गोप बालकगण श्रीकृष्णके प्रिय सखा थे। इनमेंसे श्रीदाम ही श्रेष्ठ थे। श्रीदामका प्रेम, यथा—

श्रीदामने श्रीकृष्णसे कहा, 'ऐ कठोर ! तू अकस्मात् हम लोगोंका परित्याग कर यमुनाके किनारे क्यों चला गया था ? अदृष्टवशत यदि फिरसे तुम्हारे दर्शन हुए, तो आओ, हमें दृढ़ आलिङ्गन करके सन्तुष्ट करो। सच कहता हूं, क्षण भरके लिये भी जब तुम अलग हो जाते हो, तो क्या धेनुगुण, क्या सखागुण, क्या गोष्ठ, क्या अभीष्ट थोड़े ही समयमें विपर्य्यस्त हो जाता है।

प्रिय-नर्मसख ।—सुहृत्, सखा और प्रियसखासे जो श्रेष्ठ, विशेष भाग्यशाली और अतिशय रहस्य कार्यमें नियुक्त हैं, उन्हें प्रिय-नर्मसखा कहते हैं। सुबल, अर्जुन, गन्धर्व, वसन्तक और उज्ज्वल नामक सखा प्रियनर्म-सखा थे। इनमेंसे सुबल और उज्ज्वल ही सर्वप्रधान थे।

श्रीकृष्णका वयस्, रूप, शृङ्ग, वेणु, शङ्ख, विनोद, नर्म, विक्रम, गुण, प्रेष्ठजन और राजा, देवता तथा अवतारोंकी चेष्टाके अनुकरण प्रभृति सख्यरसके उद्दीपन हैं। बाहुयुद्ध, कन्दुकक्रीडा, द्यूतक्रीडा, स्कन्ध पर आरोहण, स्कन्ध द्वारा वहन, परस्पर यष्टिक्रीडा, पर्यङ्क, आसन, एक साथ शयन और उपवेशन, परिहास और जलाशयमें विहारादि ये सब रसके अनुभाव हैं । स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभेद, अश्रु आदि सात्त्विक भाव हैं । निर्वेद, विषाद, दैन्य, ग्लानि, श्रम, मद, गर्व, शङ्का, आवेग, उन्माद, अपस्मृति, व्याधि, मोह, मृति, जाड्य, व्रीडा, अवहित्था, स्मृति, वितर्क, चिन्ता, मति, धृति, हर्ष, औत्सुक्य, अमर्ष, असूया, चापल्य, निद्रा, सुप्ति और बोध ये तीस इस रसके व्यभिचारी भाव होते हैं। इनमेंसे मद, हर्ष, गर्व, निद्रा, और धृति अमिलनावस्थामें तथा मृति, क्लम, व्याधि, अपस्मृति और दैन्य मिलन अवस्थामें प्रकाश नहीं पाता। इस सख्यरसमें रति, प्रणय, प्रेम, स्नेह और राग तककी वृद्धि होती है।

वात्सल्य प्रेम ।

इस वात्सल्य-रसमें द्विभुज श्रीकृष्ण विषयावलम्बन और उनके गुरुगण आश्रयालम्बन हैं। श्रीकृष्णका रूप—

"नवकुवलयदामश्यामलं कोमलाङ्गं ।
विचलदलकभृङ्ग-क्रान्तनेत्राम्बुजान्तं ॥
व्रजभुवि विहरन्तं पुत्रमालोकयन्ती ।
व्रजपतिदयितासीत् प्रस्नवोत्पीडदिग्धा ॥"



नूतन नील कमलसदृश श्यामवर्ण, कोमलाङ्ग, विचलित चूर्ण कुन्तलरूप भृङ्गद्वारा नयन-कमलके प्रान्तभाग आक्रान्त ऐसे श्रीकृष्णको व्रजभूमिमें विहार करते देख नन्दगेहिणी स्वयं स्नुत दुग्ध द्वारा लिप्ताङ्गी हुई थी। श्यामाङ्ग, रुचिर, सर्वसल्लक्षणयुत, मृदु, प्रियवाक्, सरल, बुद्धिमान, विनयी, मान्यव्यक्तियोंके सम्बन्धमें मानद तथा दाता ये सब इसके विभाव हैं। यशोदा, नन्द, रोहिणी, जिनके पुत्रोंको ब्रह्माने हर लिया था, वे सब गोपियां, देवकी और उनकी सपत्नीगण, कुन्ती, वसुदेव, सान्दीपन मुनि और श्रीकृष्णकी पितृव्यपत्नी आदि आश्रयालम्बन गुरुगण हैं। इनमेंसे यशोदा और नन्द श्रेष्ठ हैं।

मधुरप्रेम ।

नायक नायिका सम्बन्धीय प्रेमको मधुर प्रेम कहते हैं। श्रीकृष्ण और गोपियोंमें जो प्रेम था, वही प्रेम श्रेष्ठ है। साधारण नायक-नायिकाका जो प्रेम है, वह कामज मोहमात्र है। इस मधुर रसमें मुरलीध्वनि आदि उद्दीपन विभाव हैं। कटाक्ष और ईषद्धास्य प्रभृति अनुभाव हैं। स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभेद, कम्प, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय ये सब सात्त्विकभाव हैं।

२ स्त्री जाति और पुरुषजातिके ऐसे जीवोंका पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण, स्वभाव, सान्निध्य अथवा कामवासनाके कारण होता है। ३ माया और लोभ। ४ केशवके अनुसार एक अलङ्कार।

प्रेमकर्त्ता ( सं० पु० ) प्रीति करनेवाला, प्रेमी।

प्रेमकलह ( सं० पु० ) प्रेमके कारण हंसी दिल्लगी या झगड़ा करना।

प्रेमकिशोरदास—युक्तप्रदेशवासी एक कवि । आप भागवतपुराणके द्वादश स्कन्धका हिन्दी भाषामें अनुवाद कर गये हैं।

प्रेमगर्विता ( सं० स्त्री० ) १ साहित्यमें वह नायिका जो अपने पतिके अनुरागका अहङ्कार रखती है। २ वह स्त्री जिसे इस बातका अभिमान हो, कि मेरा पति मुझे बहुत चाहता है।

प्रेमचांद तर्कवागीश—बङ्गदेशके एक नानाशास्त्रवित् पण्डित और प्रसिद्ध कवि। ख्यातनामा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि अनेक महानुभाव इनके छात्र थे।

... शाकनाडा ग्राममें १७२८ शकको इनका जन्म हुआ था। बचपनसे ही इन्हें कविता लिखनेकी बड़ी चाह थी। ... कर ये अति मधुर और सुललित कविता लिखने लगे। थोड़े ही दिनोंमें इन्होंने अलङ्कारशास्त्रमें व्युत्पत्तिलाभ कर अपने गुरुको चमत्कृत कर दिया था। १७५८ शकमें इन्होंने कलकत्ते आ कर संस्कृत कालेजमें प्रवेश किया। उपयुक्त पण्डितोंकी अध्यापनाके गुणसे ये संस्कृत साहित्य, अलङ्कार और न्यायशास्त्रमें सुपण्डित हो गये। १८३६ ई०में इनका अध्ययन शेष हुआ। इस समय इन्हें तर्कवागीशकी उपाधि प्राप्त हुई।

संस्कृत कालेजमें प्रवेश करनेके कुछ दिन बाद ही ईश्वरचन्द्र गुप्तके साथ इनकी मित्रता हुई। अब दोनोंकी ही बङ्गभाषाकी उन्नतिमें यथेष्ट चेष्टा थी। इन्होंके यत्नसे 'संवादप्रभाकर' और 'संवादभास्कर' नामक संवादपत्र निकले थे।

१८४० ई०में प्रेमचन्दने संस्कृत कालेजके तत्कालीन अध्यापक इ० वि० कौवेल साहबके आदेशसे व्याख्या समेत अभिज्ञान शकुन्तलाका एक संस्करण प्रकाशित किया। इसके कुछ दिन बाद इन्होंने स्वरचित व्याख्याके साथ मुरारिमिश्रका अनर्घराघव नाटक, उत्तररामचरित और रुद्रटका काव्यालङ्कार तथा नैषधचरितका पूर्वार्द्ध टीका समेत प्रकाशित किया। काव्यादर्शकी टीकामें आपने जो पाण्डित्य और अलङ्कारशास्त्रमें पाण्डित्य दिखलाया है, वह अति प्रशंसनीय है। अलावा इसके शान्तिशतक, शब्दार्थसंग्रह नामक अभिधान और कुछ अलङ्कार ग्रन्थ भी लिखना आरम्भ कर दिया था, पर उन्हें वे पूरा न कर सके।

६१ वर्षकी अवस्थामें आप इस लोकको छोड़ स्वर्गधामको सिधार गये। ... भी आपकी ... से प्राप्त हुआ था। कालेजसे विदाई ले कर आप १८६४ ई०में काशीवासी हुए थे। यहां आपने अपना समय शास्त्रानुशीलन, देवाराधन और विद्यादानमें बिताया।

प्रेमजल (सं० क्ली०) १ प्रमोद, ... । २ प्रेमाश्रु, वह अश्रु जो प्रेमके कारण आंखोंसे निकलते हैं।

प्रेमतरु (सं० पुं०) प्रीतिरूप [illegible]।

प्रेमतोली—बङ्गालके राजशाही जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २४° ४८' ३०" उ० और देशा० ८८° २६' पू०के मध्य अवस्थित है। प्राचीनकालमें यह नगर दक्षिणबङ्गकी राजधानीरूपमें गिना जाता है। वैष्णवग्रन्थोंमें लिखा है कि श्रीचैतन्य महाप्रभु जब गौड़नगर पधारे, तब इसी स्थानमें कुछ काल तक ठहरे थे। महाप्रभुके आगमनके उपलक्ष्यमें प्रति कार्त्तिकमासमें महासमारोहसे एक धर्मोत्सव होता है।

प्रेमदास—एक भागवतटीकाके रचयिता। इस टीकामें कहीं कहीं इन्होंने प्रेमानन्द कह कर भी आत्मपरिचय दिया है।

२ श्यामानन्दपन्थी एक पदकर्त्ता। इन्होंने वंशीशिक्षा नामसे एक ग्रन्थ लिखा है जो बङ्गसाहित्यके आदरका धन है। चैतन्यचन्द्रोदयमें ग्रन्थकारने लिखा है, कि जब उनकी अवस्था १६ वर्षकी थी, तब वे वृन्दावन गये। उस समय वृन्दावनके गोविन्दजीके मन्दिराधिकारी श्रीकृष्णचरण गोस्वामी थे। गोस्वामीने प्रेमदास पर बड़ी कृपा दर्शायी, उन्हें गोविन्दके पाकशालेमें नियुक्त किया। यहां वे कई वर्ष ठहरे। पीछे उनके बड़े भाई वृन्दावन गये और उन्हें घर ले आये। घर आते ही प्रेमदास शान्तिपुर चले गये और वहांसे फिर नवद्वीप पधारे। नवद्वीपमें रहते समय एक रातको इन्हें स्वप्नावस्थामें महाप्रभुके दर्शन हुए। उसी समय चैतन्यलीला वर्णन करनेकी उनकी प्रबल इच्छा हुई। फलतः चैतन्यचन्द्रोदयकी उत्पत्ति हुई।

यह ग्रन्थ पढ़नेसे मालूम होता है, कि इनके पहले रचना कार्यमें इनकी इच्छा बड़ी थी और इन्हें अवसर भी नहीं मिलता था। ये हमेशा सेवा कार्यमें लगे रहते थे। चार वर्षके मध्य इन्होंने दो ग्रन्थ रचे।

प्रेमदेवी—एक हिन्दू-शासिका। मुसलमानी शासनके पहले इन्होंने दिल्लीका सिंहासन अलंकृत किया था।

प्रेमधरशर्मा—एक प्रसिद्ध पण्डित। इन्होंने रामायणकी टीका लिखी है।

प्रेमनाथ—अयोध्या प्रदेशके [illegible] जिलान्तर्गत [illegible] ग्रामवासी एक पण्डित। ये जातिके ब्राह्मण थे और इन्होंने अकबर [illegible] १७५० ई०को दिग-

मान थे। इन्होंने हिन्दी भाषामें प्रश्नोत्तरखण्डका अनुवाद किया।

प्रेमनारायण (सं० पु०) कोचविहारके एक राजा। कोचविहार देखो।

प्रेमनिधि—आगरा निवासी एक साधु। ये रात दिन कृष्णसेवामें मत्त रहते थे। मुसलमानी अमलमें जब आगरा शहर मुसलमानोंके हाथ आया, तब ये मुसलमानस्पर्शसे जल नष्ट न हो जाय, इस भयसे प्रतिदिन दोपहर रातको जल लानेके लिये यमुना जाते थे। प्रवाद है, कि एक दिन रातको काली घनघटासे आकाश छा गया। रास्ता दिखाई नहीं पड़ने लगा। अब भक्त प्रेमनिधि बड़े सङ्कट में पड़ गये। अन्तर्यामी श्रीभगवान् जलाभावसे भक्त कष्ट पावेगा, यह समझ मशालची हो कर उन्हें राह दिखाते गये थे।

आस पासके स्त्री-पुरुष प्रतिदिन सन्ध्या समय श्रीभागवत सुननेके लिये उनके घर आया करते थे। किसी दुष्ट व्यक्तिने बादशाहसे चुगली खाई, कि प्रेमनिधि पर स्त्रीको अपने घरमें बलात्कार करते हैं। यह सुनते ही सम्राट्ने उन्हें कैद कर रखा। पीछे स्वप्नमें उनके प्रति देवप्रभाव जान कर उन्हें कारामुक्त कर दिया। (भक्तमाल)

प्रेमनिधिपन्थ—एक विख्यात तान्त्रिक पण्डित। इनके पिताका नाम उमापति था। इन्होंने अन्तर्यागरत्न, काम्य दीप-दानपद्धति, घृतदानपद्धति, मुद्रालीना नामक तन्त्रराज टीका, दीपदानरत्न, प्रयोगरत्नाकर, प्रयोगरत्नकोट, प्रयोगरत्न-सस्कार, बहिर्यागरत्न, भक्तमतसंतोषक, भक्तितरङ्गिणी, मल्लादर्श, लवणदानरत्न, शक्तिसङ्गमतन्त्रटीका, शब्दार्थचिन्तामणि नामक शारदातिलकटीका और १७५५ ई०में शब्दप्रकाश तथा उसकी टीका लिखी है।

प्रेमनिधिशर्मा—मिथिलाके एक प्रसिद्ध स्मार्त्त पण्डित, रुद्रपतिके पुत्र। इन्होंने पृथ्वीप्रमोदय और १३५४ ई०में धर्माधर्मप्रबोधिनी नामक स्मार्त्तग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

प्रेमनीर (स० पु०) प्रेमके कारण आखोंसे निकलनेवाले आसू, प्रेमाश्रु।

प्रेमपातन (स० क्ली० ) प्रेम्न स्नेहस्य पातन यस्मात्, प्रेम्ना पातन यस्येति वा। १ रोदन, प्रेमके आवेगमें रोना। २ वह आसू जो प्रेमके कारण आखोंसे निकले।

प्रेमपात्र (स० पु० ) वह जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमपास (स० स्त्री०) प्रेमका फंदा या जाल।

प्रेमपुत्तलिका (स० स्त्री० ) १ प्यारी स्त्री। २ पत्नी, भार्या।

प्रेमपुलक (स० स्त्री० ) वह रोमाञ्च जो प्रेमके कारण होता है।

प्रेमप्रत्यय (स० पु० ) वीणा आदिके शब्दोंसे जिनसे राग रागिणी निकलती है, प्रेम करना।

प्रेमबन्ध (स० पु० ) प्रेम बन्ध ६-तत्। गाढानुराग, गहरा प्रेम।

प्रेमवत् (स० वि० ) प्रेम अस्त्यर्थे मतुप्, मस्य व। प्रेमयुक्त।

प्रेमभक्ति (स० स्त्री०) प्रेम्न भक्ति। स्नेहयुक्त श्रीकृष्ण सेवा, पुराणानुसार श्रीकृष्णकी वह भक्ति जो बहुत प्रेमके साथ की जाय।

प्रेमराज—गाथाकोषटीका और कर्पूरमञ्जरीटीकाके रचयिता।

प्रेमलक्षणाभक्ति (स० स्त्री०) प्रेमपूर्वक श्रीकृष्णके चरणों की भक्ति करना।

प्रेमलेश्या (स० स्त्री०) जैनियोंके अनुसार एक प्रकारकी वृत्ति। इसके अनुसार मनुष्य विद्वान्, दयालु, विवेकी होता और निस्वार्थभावसे प्रेम करता है।

प्रेमवारि (स० पु०) वह आसू जो प्रेमके कारण निकले, प्रेमाश्रु।

प्रेमा (स० पु० ) १ स्नेह। २ स्नेही। ३ वासव, इन्द्र। ४ वायु। ५ उपजातिवृत्तका ग्यारहवां भेद।

प्रेमामृत (स० क्ली० ) प्रेम एव अमृत। प्रेमरूप सुधा।

प्रेमाक्षेप (स० पु० ) केशवके अनुसार आक्षेप अलङ्कारका एक भेद। इसमें प्रेमका वर्णन करनेमें ही उसमें बाधा पड़ती दिखाई जाती है। (कविप्रिया)

प्रेमामृत (स० क्ली० ) प्रेम एव अमृत। प्रेमरूप सुधा।

प्रेमालाप (स० पु० ) वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो।

प्रेमालिङ्गन (स० पु० ) १ प्रेमपूर्वक गले लगाना। २ कामशास्त्रके अनुसार नायक और नायिकाका एक विशेष प्रकारका आलिङ्गन।

प्रेमिक (सं० पु०) वह जो प्रेम करता हो, प्रेम करने वाला।

प्रेमिन् (सं० त्रि०) प्रेम अस्त्यस्येति इनि। प्रेमी देखो।

प्रेमी (सं० पु०) १ वह जो प्रेम करता हो, प्रेम करने वाला। २ आशिक, आसक्त।

प्रेमीखमार— हिन्दीभाषी एक मुसलमान ग्रन्थकार। इन्होंने 'अभिरामं' और नाममाला नामक दो उत्कृष्ट अभिधान ग्रन्थ बनाये हैं। इनका जन्मकाल १७४१ ई० माना जाता है।

प्रेयस्मार्ग (सं० पु०) वह मार्ग जो मनुष्यको सांसारिक विषयोंमें फंसाता है, अविद्यामार्ग।

प्रेय (सं० पु०) १ एक प्रकारका अलङ्कार। इसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायीका अङ्ग होता है। (त्रि०) २ प्रिय, प्यारा।

प्रेयर (अं० स्त्री०) १ प्रार्थना, स्तुति। २ ईश्वरप्रार्थना।

प्रेयस (सं० पु०) अयमनयोरतिशयेन प्रिय प्रिय ईयसुन्, प्रादेशः। १ पति, स्वामी। संस्कृत पर्याय—दयित, कान्त, प्राणेश, वल्लभ, प्रिय, हृदयेश। २ प्यारा व्यक्ति, प्रियतम। (त्रि०) ३ प्रिय, सबसे प्यारा।

प्रेयसी (सं० स्त्री०) प्रेयस स्त्रियां ङीप्। प्रियतमा, प्यारी स्त्री। पर्याय—दयिता, कान्ता, प्राणेशा, वल्लभा, हृदयेशा प्राणसमा प्रेष्ठा, प्राणप्रिया।

प्रेयस्ता (सं० स्त्री०) प्रेयसो भाव तल् टाप्। प्रियता, प्रेयस्त्व।

प्रेयोपत्य (सं० पु०) क्रौञ्च पक्षी।

प्रेरक (सं० त्रि०) प्रेरणा करनेवाला, किसी काममें प्रवृत्त करनेवाला।

प्रेरण (सं० क्ली०) प्र ईर णिच् ल्युट्। १ किसीको किसी काममें लगाना, कार्यमें प्रवृत्त करना। २ प्रेषण, भेजना।

प्रेरणा (सं० स्त्री०) प्र ईर णिच् (ण्यासश्रन्थो युच्। पा ३।३।१०७) इति युच्। १ उत्तेजना देना, दबाव डाल कर या जोर दे कर काममें लगाना। २ कर्मबोधिका शक्ति। ३ दबाव, जोर।

प्रेरणार्थक क्रिया (सं० स्त्री०) क्रियाका वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि वह कार्य प्रेरकके द्वारा हुआ है।

प्रेरणीय (सं० त्रि०) प्र ईर अनीयर्। १ प्रेषणीय, भेजने योग्य। २ प्रेरणा करने योग्य। किसी कामके लिये प्रवृत्त या नियुक्त करने लायक।

प्रेरयिता (सं० पु०) १ प्रेरणा करनेवाला उभाड़नेवाला। २ भेजनेवाला। ३ आज्ञा देनेवाला।

प्रेरित (सं० त्रि०) प्र ईर क्त। १ प्रेषित, भेजा हुआ। २ उत्तेजित, जो किसी कामके लिये उभाड़ा गया हो। ३ धक्का दिया हुआ, ढकेला हुआ।

प्रेरिन् (सं० त्रि०) प्र ईर णिनि। प्रेरक, प्रेरणाकारी।

प्रेर्षन् (सं० पु०) प्रकर्षेण ईर्ते प्र ईर गतौ (श्वन्नुक्षन्पूषन् इत्यादि। उण् १।१५९) इति कनिन्, गुणागमश्च। समुद्र।

प्रेर्षणी (सं० स्त्री०) प्रेर्षन (वनो र च। पा ४।१।७) इति ङीप् रकारान्तादेश। नदी।

प्रेष (सं० पु०) प्र ईष घञ्। १ प्रेषण, भेजना। २ पीड़न, दुःख देना।

प्रेषक (सं० त्रि०) प्र ईष ण्वुल्। प्रेरक, भेजनेवाला।

प्रेषण (सं० क्ली०) प्रेष भावे ल्युट्। १ प्रेरण करना। २ भेजना, रवाना करना।

प्रेषयितृ (सं० त्रि०) प्रेष णिच् तृच्। प्रेषक, भेजनेवाला।

प्रेषित (सं० त्रि०) प्रेष क्त। १ प्रेरित, भेजा हुआ। २ प्रेरणा किया हुआ, उभाड़ा हुआ। (क्ली०) ३ स्वर साधनकी एक प्रणाली। यह इस प्रकार है— सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसा। सानि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा।

प्रेषितव्य (सं० त्रि०) प्रेष तव्य। प्रेषणीय, भेजने योग्य।

प्रेष्ठ (सं० त्रि०) अयमेषामतिशयेन प्रिय इति इष्ठन् प्रादेश। अतिशय प्रिय, बहुत प्यारा।

प्रेष्ठा (सं० स्त्री०) १ प्रेयसी प्यारी स्त्री। २ जङ्घा, जांघ।

प्रेष्य (सं० त्रि०) प्र ईष कर्मणि ण्यत्। १ प्रेषणीय, जो प्रेषण करने योग्य हो। (पु०) २ दास, नौकर। ३ दूत।

प्रेष्यकर (सं० त्रि०) प्रेष्य करोति कृ ट। निर्देशकारक, निर्देशानुसारकारी।

प्रेष्यता (सं० स्त्री०) १ दासत्व। २ दूतत्व।

प्रेस ( अ० पु० ) १ वह कल जिससे कोई चीज दबाई या कसी जाय, पेंच। २ छापनेकी कल। ३ छापाखाना। मुद्रायन्त्र देखो।

प्रेस ऐक्ट ( अ० पु० ) वह कानून जिसके द्वारा छापे खानेवालोंके अधिकारों और स्वतन्त्रता आदिका नियन्त्रण होता है। जो छापेखाने ऐसे नियमोंका भंग करते हैं, उन्हें इसी कानूनके द्वारा दण्ड दिया जाता है।

प्रेसमैन ( अ० पु० ) वह जो प्रेस पर कागज छापता हो।

प्रेसिडेंट ( अ० पु० ) किसी सभा या समिति आदिका प्रधान, सभापति।

प्रेसिडेन्सी ( स० स्त्री० ) १ प्रेसिडेण्टका पद या कार्य, सभापतिका ओहदा। २ वृटिश भारतमें शासनकी सुविधाके लिये कुछ निश्चित प्रदेशों या प्रांतोंका किया हुआ विभाग। यह विभाग एक गवर्नर या लाटकी अधीनतामें होता है। बङ्गाल प्रेसिडेंसी, मन्द्राज प्रेसिडेंसी और बम्बई प्रेसिडेंसी, ये तीन प्रेसिडेंसियां इस समय भारतमें हैं।

प्रैय ( स० पु० ) प्रियका भाव, स्नेह, प्रेम।

प्रैयव्रत ( स० पु० ) वह जो प्रियव्रतके वशमें हो।

प्रैष (स० पु०) प्र-इष घञ् (प्र दृढोढ़ ैष्यैषेषु। पा ६।१।८९) इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या वृद्धि। १ क्लेश, दुःख। २ मर्दन। ३ उन्माद, पागलपन। ४ प्रेषण, भेजना। ५ वह शब्द या वाक्य जिसमें किसी प्रकारकी आज्ञा हो।

प्रैष्य ( स० पु० ) १ दास, सेवक। २ दासत्व। ३ प्रेष्यका भाव, दासकर्म।

प्रोक्त ( स० त्रि० ) प्रकर्षेण उच्यते स्मेति क्त। १ कथित, कहा हुआ। (क्ली०) २ कहा हुआ वचन, कहना।

प्रोक्षण ( स० क्ली० ) प्र उक्ष सेचने ल्युट्। १ यज्ञार्थ पशु हनन। यज्ञमें वधके पहले बलि पशु पर पानी छिड़क कर तब उसे वध करना होता है। २ श्राद्धादिमें उचित संस्कार, श्राद्ध आदिमें होनेवाला एक संस्कार। ३ वध, हिंसा। ४ सेचन, पानी छिड़कना। ५ पानीका छींटा। ६ विवाहकी परिछन नामक रीति।

प्रोक्षणी ( स० पु० ) १ यज्ञका वह पात्र जिसमें पशु पर छिड़कनेवाला जल रहता है। २ कुशकी मुद्रिका जो होमादिके समय अनामिकामें पहनी जाती है।

प्रोक्षणीय ( स० त्रि० ) प्र उक्ष अनीयर्। प्रोक्षणयोग्य।

प्रोक्षित ( स० त्रि० ) प्र उक्ष-क्त। १ निहत, मारा हुआ। २ सिक्त, सींचा हुआ। ३ जलका छींटा मारा हुआ। ४ बलिदान किया हुआ। ( पु० ) ५ वह मांस जो यज्ञके लिये संस्कृत किया गया हो। ऐसा मांस खानेमें किसी प्रकारका दोष नहीं माना जाता।

"भक्षयेत् प्रोक्षितं मांसं सकृत् ब्राह्मणकाम्यया।
दैवे नियुक्तः श्राद्धे वा नियमे तु विवर्जयेत्॥"
( तिथितत्त्व )

आरण्यक मृगादिपशुका प्रोक्षण आवश्यक नहीं है अर्थात् वन्यपशु अयज्ञीय होने पर भी उसका मांस खाया जा सकता है।

"आरण्याः सर्वदैवत्याः प्रोक्षिताः सर्वशो मृगाः।
अगस्त्येन पुरा राजन् मृगया येन पूज्यते॥"
( तिथितत्त्व )

प्रोक्षितव्य ( स० त्रि० ) प्र-उक्ष तव्य। प्रोक्षणयोग्य, जो प्रोक्षणके योग्य हो।

प्रोग्राम ( अ० पु० ) १ कार्यक्रम, होनेवाले कार्यों आदिका निश्चित क्रम। २ वह पत्र जिसमें इस प्रकारका कोई क्रम या सूची हो, कार्य क्रम-सूचक पत्र।

प्रोच्चैस् ( स० अव्य० ) अत्यन्त उच्च।

प्रोज्जासन ( स० क्ली० ) प्र-उद् जस णिच्-ल्युट्। मारण।

प्रोज्झित ( स० त्रि० ) प्र उज्झ-कर्मणि क्त। त्यक्त, छोड़ा हुआ।

प्रोञ्छन ( स० क्ली० ) प्र उञ्छ-ल्युट्। प्रवर्जन, लोपन, मार्जन।

प्रोटेस्टेण्ट ( अ० पु० ) ईसाइयोंका एक सम्प्रदाय। इसका आरम्भ यूरोपके १६वीं शताब्दीमें उस समय हुआ था जब लूथरने ईसाई धर्मका संस्कार शुरू किया था। इस सम्प्रदायके लोग रोमन कैथोलिक सम्प्रदायवालोंका और साथ ही पोपके प्रबल अधिकारोंका विरोध और मूर्त्ति-पूजा आदिका निषेध करते हैं। कुछ दिनों तक यह मत खूब बढ़ा चढ़ा था। अब भी ईसाई देशोंमें इस सम्प्रदायके लोगोंकी संख्या अधिक है।

प्रोग्राज—काश्मीरके प्रसिद्ध वंशके एक अधिपति, मुस्सलवंशीय हिन्दुराज विजयराजके पुत्र और रत्नदेवके पिता। इन्होंने ११११से ११२७ ई० तक राज्य किया था। इनकी कीर्ति समुद्रके अन्दर बसी भाग पर स्थापित प्रगति मंडपी गढ़ रही प्रसिद्ध है। इन्होंने पश्चिम चातुर्वर्ण्य १७ बैलगाड़ी राज्य सुसज्ज कर १४ गैर भाग धारण किया।

प्रोञ्छा (सं० स्त्री०) प्रोञ्छा देखो।

प्रोञ्छ (सं० पुं०) प्रकर्षेण उञ्छति निर्गतपातादिकं प्राणी प्रीति प्र अति यती भव। गतप्रपद, पीकदान, उगाल दान।

प्रोत (सं० क्ली०) प्र वेञ् गुणौ-क्त यजादित्वात् सम्प्रसारणं। १ वस्त्र, कपड़ा। (त्रि०) २ खचित, जिसमें अच्छी तरह सिला हुआ। ३ स्यूत, सीया हुआ। ४ गुम्फित, गूँथा हुआ। ५ ग्रथित, गांठ दिया हुआ। ६ अन्तर्हित। ७ गर्भनिहित, छिपा हुआ।

प्रोतोत्सादन (सं० क्ली०) प्रोतेन्द्रके स्वपि प्रोतानां वस्त्राणां वा उत्सादन उत्तोलन उपादान वा यत्र। १ वस्त्रकुटिम, तंबू, खेमा। २ छत्र, छाता।

प्रोत्कट (सं० त्रि०) १ प्रकृष्टरूपसे उत्कट, बहुत कठिन। (पुं०) २ शिव या श्रेष्ठ पुरुष।

प्रोत्कण्ठ (सं० पुं०) १ उच्चकण्ठ, मुक्तकण्ठ।

प्रोत्कर्ष (सं० स्त्री०) खींचना, उतरना।

प्रोत्कूज (सं० स्त्री०) ऊंचे स्वर, गरजना।

प्रोत्खात (सं० त्रि०) खोदा हुआ, गड्ढा किया हुआ।

प्रोत्तान (सं० त्रि०) प्रकृष्टरूपसे उत्तान, जिसके मुँह ऊपर किया हुआ।

प्रोत्तुङ्ग (सं० त्रि०) अत्युच्च, बहुत ऊँचा।

प्रोत्तेजित (सं० त्रि०) अत्यन्त उत्तेजित किया हुआ, खूब भड़काया हुआ।

प्रोत्थित (सं० त्रि०) ऊपरको उठा या निकला हुआ, ऊँचा किया हुआ।

प्रोत्फाल (सं० पुं०) प्रकर्षेण उत्फालित प्र उत् फल अच्। पुनर्विनीत, माफका उर्भिका एक पुत्र। पर्याय—विदुम्ण गुल, छडी, छड़, दिशा।

प्रोत्फुल्ल (सं० त्रि०) प्रकर्षेण उत्फुल्लं प्र उत् फुल्ल विकसने कर्त्तरि अच् वा। विकसित, अच्छी तरह खिला हुआ।

प्रोत्साह (सं० पुं०) प्र उत् सह घञ्। अतिशय उत्साह, बहुत अधिक उमंग।

प्रोत्साहक (सं० पुं०) उत्साह बढ़ानेवाला, हिम्मत बंधाने वाला।

प्रोत्साहन (सं० क्ली०) प्रकर्षेण उत्साहनं। १ कार्य-कर्ममें अतिशय यत्न सम्पादन, किसीके कर्त्तव्य कार्यमें हिम्मत बढ़ाना या उत्तेजित करना। २ आश्वासनपूर्वक प्रेरणा।

प्रोत्साहित (सं० त्रि०) प्रोत्साह तारकादित्वादितच्। १ उत्साहयुक्त, जिसका उत्साह खूब बढ़ाया गया हो। २ उत्तेजित, जो खूब उत्तेजित किया गया हो। ३ प्रवर्तित, लगा हुआ, लगाया हुआ।

प्रोथ (सं० पुं०) प्रोथति इति प्रोथ पर्याप्तौ। पुंसि अजादेश। पा ३।३।११८ इति घ, वा पुरु गती (पिबूष गुणपूर्वपोथा। उण् १।१४१) इति थक्, निपातनात् गुणः। १ कटी, कमर। २ स्फिक्, स्त्रीका गर्भाशय। ३ गर्त, गड्ढा। ४ अश्वमुख, घोड़े का मुह। ५ नासापोथा, घोड़ेकी नाकके आगेका भाग। ६ पथिक, मुसाफिर। ७ शूकरका मुख, सूअरका थूथन। ८ त्रासक, भिषता। ९ कूल्हेका अग्र भाग। १० नासिकेके सीधेका भाग, पेट। (त्रि०) ११ स्थापित, रखा हुआ। १२ प्रसिद्ध, मशहूर। १३ विख्यात, मश-हूर।

प्रोथथ (सं० पुं०) प्रोथ बाहुलकात् अथ। अश्वमुखनिर्गत ध्वनि या शब्द, घोड़े का हिनहिनाना।

प्रोथित (सं० त्रि०) प्रोथ क्त। भूगर्भनिहित, जमीनके अन्दर गाड़ा या छिपाया हुआ।

प्रोथिन् (सं० पुं०) अश्व, घोड़ा।

प्रोद्गीत (सं० पुं०) प्रकृष्टरूपसे उद्गीत। उद्गम, जो आसमानकी बाहर आता हो।

प्रोद्घोषणा (सं० स्त्री०) ऊंचे स्वरसे घोषणा।

प्रोद्दुर—मन्द्राज प्रदेशके कडप्पा जिलान्तर्गत एक उप-विभाग। भूपरिमाण ४३८ वर्गमील है। यहां प्रधानतः धान और कपासकी खेती होती है। पेन्नार और कुन्दा नदीके किनारे धान भी अच्छा लगता है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० १४.४४ उ० और देशा० ७८ ३३ पू०के मध्य अवस्थित

है। जनसंख्या चौदह हजारसे ऊपर है। यहां जिला मुन्सिफकी अदालत और दो रुईके कारखाने हैं। अलावा इसके तीन प्राचीन मन्दिर भी देखे जाते हैं। नील ही यहांका प्रधान व्यवसाय है।

प्रपोज़ (अ० क्रि०) १ तजवीज करना। २ प्रस्ताव करना।

प्रोपोज़ल (अ० पु०) प्रस्ताव।

प्रोप्राइटर (अ० पु०) स्वामी, मालिक।

प्रोफेसर (अ० पु० १ किसी विषयका पूर्ण ज्ञाता, भारी पण्डित। २ किसी विश्वविद्यालय आदिका अध्यापक।

प्रोबेशन (अ० पु०) काम करनेकी योग्यताके सम्बन्धमें जांच।

प्रोबेशनरी (अ० वि०) १ योग्यताकी जांचसे सम्बन्ध रखनेवाला। २ जो इस शर्त पर रखा जाय, कि यदि संतोष जनक कार्य करेगा, तो स्थायी रूपमें रख लिया जायगा।

प्रोम—निम्नब्रह्मके पेगू जिलान्तर्गत एक जिला। यह इरावती नदीकी विस्तीर्ण उपत्यकाभूमि पर अक्षा० १८ १८´ से १६ ११´ उ० और देशा० ६४ ४१´ से ६५ ५३´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २६१५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें थयेत्‌म्यो, पूर्वमें पेगुयोमा पर्वतमाला, दक्षिणमें हेनजादा और इरावती तथा पश्चिममें आराकन गिरिश्रेणी है।

इरावती नदीके उत्तरसे दक्षिणकी ओर बहनेके कारण जिला दो भागोंमें विभक्त हुआ है। दोनों ही भाग घन मालासे समाच्छन्न हैं और बीच बीचमें पर्वतमालानि सृत छोटी छोटी स्रोतस्विनीके बहनेसे यहांकी शोभा देखते बन आती है। इन सब नदियोंमेंसे दक्षिण पश्चिममें प्रवाहित ना विन्‌ नामक नदी ही सबसे बड़ी है।

प्राचीनकालमें प्रोमराज्य विशेष समृद्धिशाली था। ब्रह्म ऐतिहासिकोंका कहना है, कि गौतम बुद्ध प्रोमराज्य देखने आये और अपना धर्ममत प्रचार कर गये। उन्होंने सनुम्पक्ष पर गोमय देख कर कहा था, कि एक समय (१०१ वर्ष बाद) उस स्थान पर थरे-क्षेत्र (श्रीक्षेत्र) नगर बसाया जायगा और उस महानगरीमें बौद्धधर्म पूर्ण प्रतिष्ठालाभ करेगा।' आगे चल कर यथार्थमें ऐसा ही हुआ। वर्त्तमान प्रोम नगरसे ३ कोस पूर्व उस महासमृद्धिशाली नगरीके ध्वंसावशेषके निदर्शन पागोदा आदि आज भी धान्यक्षेत्र और दलदल स्थानोंमें दृष्टिगोचर होते हैं। ऐतिहासिकोंका कहना है, कि थरे खेत्र नगरके चारों किनारे प्राय: २० कोस परिधियुक्त प्राचीर था जिसमें ३२ बड़े और २३ छोटे दरवाजे थे। २री शताब्दीमें यह नगर श्मशानमें परिणत हो गया।

फार्बेश साहब (Captain C D F. Forbes)ने लिखा है, कि ब्रह्मके इतिहासानुसार मालूम होता है, कि प्रोम राजवंशने ४४४ खृ०पू०से १०७ ई० तक राज्य किया था। उस राजवंशके तृतीय राजाके शासनकालमें भारत इतिहासमें भी दो प्रसिद्ध घटनाएं घटीं। एक ३२५ खृ०पू०में महावीर अलेकसन्दर कर्तृक भारत आक्रमण और दूसरी सम्राट् अशोकके राज्याशासनके समय महत् मोग्गलि पुत्रकी अधिनायकतामें ३०८ खृ०पू०की तृतीय महाबौद्धसङ्घ।

इसके बाद १०० खृ०पू०के निकटवर्ती समयसे ही विभिन्न देशोंकी ऐतिहासिक घटनावलीके साथ यहांका ऐतिहासिक युग निर्णीत होता है। उस समय सिंहल द्वीपमें बौद्धशास्त्र देश भाषामें लिखे गये। तालपत्रमें लिखित ब्रह्मके इतिहासमें घटनाका क्षेत्र राजाके १७वें वर्षमें संघटित होना लिखा है। यह राजा पहले बौद्ध-मठमें धर्मालोचना करते थे। पूर्ववर्ती राजाके कोई सन्तान न रहनेके कारण उन्होंने इस बालकको गोद लिया था। इस राजाका सिंहासनारोहणकाल १०० खृ०पू०के किसी समय होगा। ये ही श्रीक्षेत्र-राजवंशके ११वें राजा थे।

उस क्षेत्र-राजवंशने प्राय: २०२ वर्ष तक थरे खेत्रका शासन किया। इसके बाद गृहविवादसे राज्य उजाड़ सा हो गया था। इसी समय आराकनवासी कनरन लोगोंने उस पर अपना अधिकार जमा लिया। उस समय थु पन्य राजा थे।

वैदेशिकोंकी आगमनवार्त्ता सुनते ही राजाके भतीजे थ मुनद वित्‌ प्रोमके दक्षिण पूर्व तौङ्ग गुनामक स्थानको भाग चले। किन्तु कनरनोंने उनका पीछा किया, तब वे इरावती नदी पार कर उत्तर मिन्दून नामक स्थानमें जा छिपे। कनरनोंने उन्हें वहांसे खदेड़ा। अब वे

रिक्त स्थानमें शरणार्थी बसा कर रहने लगे। न मौद्र पंगोल विजयी शासकोंके दिनमें तथा अन्य स्थानोंमें बाहरी मदद पहुँचाई गई। इस समुद्रतटमें ६ बड़े नगर और सात बन्दर स्थापित किये गये।

१४वीं शताब्दीके मध्यभागसे ले कर १५वीं शताब्दीके आरम्भ तक यहाँ शान्ति स्थापित रही। पर पीछे १५४० ई०में बर्मी राजाओंने इसपर पुनः अधिकार किया। किन्तु इस बार वे अधिक काल तक शासन स्थापित न कर सके।

१७४० ई०में पेगूके ... राजाने स्मिथ पर आक्रमण कर दिया जिससे मोनराज्य बहुत कुछ उजाड़ सा हो गया। १७३० ई०में पाम सरदार फिर नाम ... सिंहासन पर बैठे। उन्होंने पाँच वर्षके बाद (१७३५ ई०में) उपर्युक्त ही बातके आक्रमणमें पेगू राज्यको तंग तंग कर डाला और आखिर उन्हें सिंहासन च्युत भी कर दिया। ... मोनको भाग आये। यहाँ उन्होंने आवा और ... मिल कर उसके विरुद्ध युद्ध ठान दिया। परन्तु १७४७ ई०में वे आन्तरिक कलहोंसे नष्ट हुए। फिर नाम पुर्तगीज दस्यु-के हाथमें १५५० ई०में आये गये। बीस वर्षके भीतर ही एक सामान्य ... एक छत्राधिपति हो गये थे। पेगू, मर्तबान और ... उसके अधिकारमें आ गया था। ... और ... उन्हें ... दिया करते थे।

फिर आवाके राजाके बाद ... अधिकारी हुए। ... ... ... ... ... ... १५८१ ई०में पुर्तगालकी मृत्यु ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...।

आवा नगरमें इस द्वितीय राजवंशने प्रायः पचास वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद पेगूराज्यके बार बार आक्रमणोंसे ये राजवंश कमजोर हुए। ... धर्मपालियोंके ... ही मोन विद्रोही हो गये। उन्होंने ... घोषणा करते हुए अपने द्वितीय राजा ... और आवा नगर प्राप्त कर के यहाँके राजाको बन्दी भावमें पेगू नगर लाये। सभी सामन्तोंने ... पर कुछ ही दिनोंके अधिकारमें पेगूराज्यके ... होता न चला। उन्होंने अपनी फौज और ... सभी ... उभाड़ा और ... इस समय से ... लगे।

१७०२ ई०में पुनः तृतीय वंशकी प्रतिष्ठा हुई। १७५८ ई०में ये पेगूराज्यको जीत कर ... कर लाये।

इस समयसे ले कर १८५२ ई०में द्वितीय ब्रह्मयुद्धके बाद ... पेगूके अधिकार पर्यन्त ... रहा।

जिलेमें ३५ शहर और १३६१ ग्राम हैं। जनसंख्या चार लाखके करीब है। ... ... ... ११०५० ... ... ८० फुट हैं। ... ... मन्दिर ... मूर्ति प्रतिष्ठित है। ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... ...।

जिलेमें १६ ... १३८ ... और ४१० ... हैं। मोन और पेगूके ... यहाँ ... [illegible] ... होती है।

२ पेगू विभागके प्रोम जिलेकी राजधानी और नगर। यह इरावती नदीके बाएं किनारे अक्षा० १८ ४´उ० और देशा० ९५ १३´ पू०के मध्य अवस्थित है। विन मुके उत्तर विख्यात श्वे सान् द पागोदा है। प्रवाद है, कि सात थाल सोनेके ऊपर एक मरकत वकुलके मध्य गौतम बुद्धके तीन बाल हैं, उसीके ऊपर यह मन्दिर बनाया गया है। १८६२ ई०में भीषण अग्निसे यह नगर बिलकुल भस्मीभूत हो गया था।

ईसा जन्मके पहलेसे प्रोमनगर राजधानीरूपमें गण्य होता आ रहा है। थ रे-खेत्र (श्रीक्षेत्र) नगरका ध्वसावशेष आज भी अभ्यन्तर भागमें दृष्टिगोचर होता है। १ली शताब्दीके शेषभागमें थ रे खेतके परित्यक्त होनेके बाद प्रोम कुछ समयके लिये आवा और कुछ समयके लिये पेगूके शासनाधीन रहा। फिर कुछ समय तक यह स्वाधीन भी था। इसके बाद भारतके बड़े लाट डलहौसीने इसे भारत-राज्यकी सीमामें मिला लिया।

१८७४ ई०में यहां म्युनिसिपलिटी स्थापित हुई है। शहरमें एक म्युनिसिपल हाई स्कूल भी है। यहांका जो अस्पताल है उसका भी खर्च म्युनिसिपलिटी देती है।

प्रोमिसरीनोट—प्रामिसरीनोट देखो।

प्रोमोशन (अं० पु०) १ किसी पदाधिकारीका अपने पदसे ऊंचे पद पर नियुक्त किया जाना, तरक्की। २ विद्यार्थीका किसी कक्षामेंसे आगेकी कक्षामें भेजा जाना, दर्जा चढना।

प्रोम्भण (स० क्ली०) प्रकृष्टरूपसे पूरण।

प्रोर्णुनविषु (स० त्रि०) प्र उर्णु ञ् आच्छादने सन्-उ। आच्छादनाभिलाषी।

प्रोर्णुभाव (स० पु०) सन्निपात ज्वरविशेष।

प्रोल्लाघित (स० त्रि०) रोगमुक्त।

प्रोष (स० पु०) प्र उष-दाहे भावे घञ्। सन्ताप, बहुत अधिक दुःख या कष्ट।

प्रोषक (स० पु०) महाभारतके अनुसार एक देशका नाम।

प्रोषित (स० त्रि०) वस-क्त, इट्, सम्प्रसारण, प्रकृष्टदूर उषितः। प्रवासगत, जो विदेश गया हो।

प्रोषितनायक (स० पु०) वह जो विदेशमें अपनी पत्नीके वियोगमें विकल हो।

प्रोषितपतिका (स० स्त्री०) पतिके विदेश जानेसे दुःखित स्त्री। प्रोषितभर्तृका देखो।

प्रोषितप्रेयसी (स० स्त्री०) प्रोषितभर्तृका देखो।

प्रोषितभर्तृका (स० स्त्री०) प्रोषितो विदेशगतो भर्त्ता यस्याः, समासान्तकप् प्रत्ययः। विदेशस्थ पतिका। जिस स्त्रीका स्वामी विदेशमें रहता है, उसे प्रोषितभर्तृका कहते हैं।

"नानाकार्यवशाद्यस्या दूरदेशं गतः पतिः।
सा मनोभवदुःखार्त्ता भवेत् प्रोषितभर्तृका॥"
(सा० ३।११८)

नाना प्रकार कार्यवशतः जिसका पति दूर देश गया हो, उस कन्दर्पपीड़िता नारीको प्रोषितभर्तृका कहते हैं। प्रोषितभर्तृका नारीके लिये हंसना, दूसरे घर जाना, समाजोत्सव देखना, क्रीड़ा और शरीरसंस्कार करना वर्जनीय है।

"हास्यं परगृहे यानं समाजोत्सवदर्शनम्।
क्रीड़ां शरीरसंस्कारं त्यजेत् प्रोषितभर्तृका॥"
(चिन्तामणि)

जिस स्त्रीका पति परदेश गया हो, उसे परपुरुषके साथ आलाप, केशादिका संस्कार और सब प्रकारका प्रमोदजनक विषय परित्याग करना चाहिये।

रसमञ्जरीमें लिखा है, कि प्रोषितभर्तृका स्त्रियोंके दश प्रकारकी अनङ्ग दशा अर्थात् पतिविषयक चेष्टा होती है। यथा—१ पत्यभिलाष, २ पतिचिन्ता, ३ स्मृति, ४ गुणोत्कीर्त्तन, ५ उद्वेग, ६ विलाप, ७ उन्माद, ८ व्याधि, ९ जड़ता, १० मृत्यु। पतिके विदेश जाने पर पहले उस विषयमें अतिशय अभिलाष होता है, पीछे चिन्ता आदि उपस्थित हो जाती हैं। यहां तक, कि आखिरमें उसकी मृत्यु भी हो जाया करती है। रसमञ्जरीके मतसे यह प्रोषितभर्तृका नायिका दो प्रकारकी है, प्रोषितभर्तृका और प्रोष्यत्भर्तृका। जिस स्त्रीका पति विदेश गया हो उसे प्रोषितभर्तृका और जिसका पति जानेवाला हो, उसे प्रोष्यत्भर्तृका कहते हैं।

प्रोषितभार्यानायक (सं० पु०) प्रोषिता-भार्या यस्य प्रोषितभार्या तादृश नायकः कर्मधा०। नायकभेद। जिसकी पत्नी विदेशमें रहती हो, उसे प्रोषितभार्यानायक कहते हैं।

प्रोष्ठपदीनागर (सं० पु०) नागरविशेष। जिसकी [illegible] इसे भाद्रकी प्रोष्ठपदीको आरम्भ करते हैं।

प्रोष्ठ (सं० पु०) प्रकृष्ट ओष्ठो यस्येति (ओत्वोष्ठयोः समासे वा। पा ६।१।९४) इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या साधुः। १ प्रोष्ठ मत्स्य, सौरी मछली। २ गो, गाय। ३ [illegible] आकार [illegible] नाम [illegible]।

प्रोष्ठपद (सं० पु०) प्रोष्ठ गोस्तस्येव पादौ यस्य स (सुप्रातसुश्वसुदिवेति। पा ५।४।१२०) इति अच् प्रत्ययेन साधुः, प्रोष्ठपदा नक्षत्रविशेषस्तद्युक्ता पौर्णमासी यत्र मासे [illegible] वृद्धिः। १ भाद्रमास, भादोंका महीना। २ नक्षत्रविशेष, पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद नक्षत्र। (त्रि०) ३ गोतुल्य पदयुक्त, गायके जैसा पांववाला।

प्रोष्ठपदा (सं० स्त्री०) प्रोष्ठ गोस्तस्येव पादा यस्या सा [illegible] निपातितः। पूर्वभाद्रपद नक्षत्र, उत्तरभाद्रपद नक्षत्र।

प्रोष्ठपदी (सं० स्त्री०) प्रोष्ठपदाभिर्युक्ता पौर्णमासी अण्, ङीप्। भाद्रमासकी पूर्णिमा।

प्रोष्ठपाद (सं० त्रि०) १ भाद्रपदामें जात, जो पूर्वभाद्रपद उत्तरभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ हो। २ बालक। पु० ३ पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद नक्षत्र।

प्रोष्ठिल— एक [illegible]। आप [illegible] में परिगणित हैं। महावीरस्वामीके मुक्ति पानेके [illegible] वर्ष बाद आप ११ वर्ष तक आचार्यपदपर प्रतिष्ठित रहे।

(जैनहरिवंशपुराण)

प्रोष्ठी (सं० पु० स्त्री०) प्रोष्ठमाविष्कृत्य [illegible] इति [illegible] मत्स्य। सफरीमीन, सौरी नामकी मछली। पर्याय— शफरी, शफर, श्वेतकोलक। गुण— स्निग्ध, मधुर, स्वादु, गुरु, वातघ्न, [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible]।

प्रोष्य (सं० त्रि०) [illegible] जो [illegible] हो।

प्रोह (सं० [illegible]) [illegible] [illegible] हा कर।

प्रोह (सं० पु०) [illegible] [illegible] [illegible] १ [illegible], [illegible]। २ [illegible], [illegible]। ३ [illegible], [illegible]। ४ [illegible]। (त्रि०) ५ निपुण, चतुर।

प्रौक्षकर्दा (सं० स्त्री०) प्रौक्षकर्द इत्युक्ते यस्या क्रियायां समासे। करदगायत्र्यादित्वात् [illegible] निपातित।

प्रौहकर्दमा (सं० स्त्री०) प्रौह कर्दम इत्युक्ते यस्यां क्रियायां मयूरव्यंसकादित्वात् समास। कर्दम इत्याद्यतृतीया [illegible] निपातित।

प्रौहण (सं० क्ली०) प्र ऊह-ल्युट्। प्रोह, तर्क।

प्रौहपदि (सं० अव्य०) प्रौढ़ौ पादौ यत्र प्रहरणे इति पदशब्दे समास इच् तत् पद्भाव। दो पैरोंसे अच्छी तरह मारना।

प्रौढ़ (सं० त्रि०) प्रोढ़ते स्मेति, प्र-वह क्त, वत्ससम्प्रवतों वृद्धिः। १ वर्द्धित, अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २ प्रगल्भ, पुष्ट, सम्पन्न। ३ निपुण, चतुर, होशियार। ४ प्रकर्षरूपसे ऊढ़, यथाविधि विवाहित। ५ जिसकी अवस्था अधिक हो गई हो, जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ६ पुराना, अपात। ७ पुराना, पुराना। ८ गम्भीर, गूढ़। (पु०) ९ तान्त्रिकोंके पौर्वान्त मन्त्रोंका एक भेद।

प्रौढ़ता (सं० स्त्री०) प्रौढ़ होनेका भाव, प्रौढ़त्व।

प्रौढ़त्व (सं० क्ली०) प्रौढ़स्य भावः त्व। प्रौढ़का भाव या धर्म, प्रौढ़ावस्था।

प्रौढ़पाद (सं० पु०) प्रौढ़ः पादो यस्य। आसनारोहित पादयुक्त, जिसने दोनों पैरोंको आसन पर रख कर बैठा। शास्त्रमें इस प्रकार बैठ कर शौचकर्म, स्नान, भोजन, पूजन, अध्ययन आदि करना वर्जित कहा गया है।

प्रौढ़ा (सं० स्त्री०) प्रौढ़ टाप्। नायिकाभेद। पर्याय— विलासिनी, मुग्धाङ्गी, श्यामा, [illegible]। नायिका चार प्रकारकी हैं, बाला, तरुणी, प्रौढ़ा और वृद्धा। साधारणतः ३० वर्षसे ५० या ५५ वर्षकी उम्रकी स्त्री प्रौढ़ा मानी जाती है। कामशास्त्रके अनुसार ऐसी स्त्री बैठकर रति और आलिंगन आदिमें सन्तोष प्राप्त करती है और जिसकी [illegible] नहीं। साहित्यमें इसके [illegible] और [illegible] [illegible] किए हुए भेद माने गये हैं। इनके भेदानुसार [illegible] और [illegible] ये तीन भेद तथा स्वभावके अनुसार [illegible], [illegible] और [illegible] आदि कई भेद माने गये हैं। [illegible] इसके स्वकीया,

परकीया और सामान्या ये तीन भेद इसमें लगते हैं। २ वह स्त्री जिसे जवान हुए बहुत दिन हो चुके हों।

प्रौढा अधीरा ( सं० स्त्री० ) वह प्रौढा नायिका जो अपने नायकमें विलाससूचक चिह्न देखने पर प्रत्यक्ष कोप करे, अधीरा नायिकाका-लक्षणसम्पन्न प्रौढा।

प्रौढाधीरा ( सं० स्त्री० ) वह प्रौढा नायिका जो नायकमें विलाससूचक चिह्न देखने पर प्रत्यक्ष कोप न करके व्यंग्यसे कोप प्रकट करे, ताना मार कर क्रोध प्रकट करनेवाली प्रौढा।

प्रौढाधीराधीरा (सं० स्त्री०) वह प्रौढा जिसमें धीराधीराके गुण हों, वह नायिका जो अपने नायकमें पर-स्त्रीगमन के चिह्न देखने पर कुछ प्रत्यक्ष और कुछ व्यंग्यपूर्वक कोप प्रकट करे।

प्रौढि ( सं० स्त्री० ) प्र-वह क्तिन्, सम्प्रसारण प्रादूहेति वृद्धिः। १ सामर्थ्य, शक्ति। पर्याय—उत्साह, प्रगल्भता, अभियोग, उद्योग, उद्यम, कियदेतिका, अध्यवसाय, ऊर्ज। २ धृष्टता, ढिठाई। ३ प्रौढता। ४ वादविवाद।

प्रौढोक्ति ( सं० स्त्री० ) १ अलङ्कारविशेष। इसमें जिसके उत्कर्षका जो हेतु नहीं है, वह हेतु कल्पित किया जाता है। २ गूढरचना, किसी बातको खूब बढा कर कहना।

प्रौण ( सं० त्रि० ) प्र उण् अपनयने अच्। १ निपुण। २ प्रकर्षरूपसे अपसारक।

प्रौष्ठ ( सं० पु० ) प्रकृष्ट ओष्ठोऽस्य वा बाहु० वृद्धि। मत्स्यभेद, सौरी मछली।

प्रौष्ठपद ( सं० पु० ) प्रोष्ठो गौस्तस्येव पादा यासामिति प्रोष्ठपदा नक्षत्रविशेषा, तद्युक्ता पौर्णमासी, प्रोष्ठपद ( नक्षत्रेण युक्तः कालः। पा ४।२।३ ) इति अण् ङीप्। सोऽस्मिन् पौर्णमासीति। पा ४।२।२१ ) इति अण्। १ भाद्र मास। इस मासमें जो एकादार रहते हैं, वे समस्त ऐश्वर्य लाभ करते हैं। २ कुवेरके निधिरक्षकोंमेंसे एकका नाम। (त्रि०) ३ प्रोष्ठपदामें अर्थात् उत्तरभाद्रपद तथा पूर्वभाद्रपद नक्षत्रमें जात।

प्रौष्ठपदिक ( सं० पु० ) भाद्रपद, भादों।

प्रौष्ठपदी ( सं० स्त्री० ) भाद्रमासकी पूर्णिमा।

प्रौष्ठिक ( सं० त्रि० ) उत्तम ओष्ठयुक्त।

प्रौह ( सं० पु० ) प्र ऊह-घञ्, प्रादूहेति वृद्धि। प्रकर्षरूपसे ऊह, यथाविधि विवाह।

प्लक ( सं० पु० ) प्र-कै-क, रस्य ल। स्त्रियोंका अधोऽङ्ग-भेद, स्त्रियोंका कमरके नीचेका भाग।

प्लक्ष ( सं० पु० ) प्लक्षते भक्ष्यते विहगादिभिरिति प्लक्ष कर्मणि घञ्। १ वृक्षविशेष, पाकर नामका वृक्ष। इसे तेलङ्गमें गड्डरजुवि और तामिलमें पोरिशरावो कहते हैं। वृहत् प्लक्षका संस्कृत पर्याय—जटी, पर्कटी, पर्कटि, प्लक्षा, प्लोक्षा, जटि, कपीतन, क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, शृङ्गी, अवरोहशाखी, गर्दभाण्ड, कपीतक, दृढप्ररोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल। छोटे प्लक्षका पर्याय—सूक्ष्म, सुशीत, शीतवीर्यक, पुण्ड्र, महावरोह, ह्रस्वपर्ण, पिम्परि, भिदुर, मङ्गलच्छाय। गुण—कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोष, मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापनाशक तथा भावप्रकाशके मतसे योनिदोष, दाह, पित्त, कफ, शोथ और रक्तपित्तनाशक। २ अश्वत्थवृक्ष, पीपल। ३ सात कल्पित द्वीपोंमेंसे एक द्वीपका नाम। भागवतमें लिखा है, कि यह जम्बूद्वीपके चारों ओर है और दो लाख योजन विस्तृत है। यहां एक प्रकाण्ड प्लक्षका वृक्ष है। यह वृक्ष जम्बूद्वीपमें जो जामुन का वृक्ष है उसीके समान उन्नत और विस्तृत है। इसी प्लक्षवृक्षसे इस द्वीपका नामकरण हुआ है। यह वृक्ष हिरण्यमय है और इस पर सप्तजिह्वअग्नि सदा अवस्थित हैं। प्रियव्रतके पुत्र इध्मजिह्व इस द्वीपके अधिपति माने जाते हैं। वे इस द्वीपको सात वर्षोंमें विभक्त कर सात पुत्रोंके नाम पर जिनके नाम थे, उन्हें वे सात वर्ष समर्पण कर आप तपस्यामें लग गये। उक्त सात वर्षोंके नाम ये हैं— शिव, यवस, सुभद्र, शान्त, क्षेम, अमृत और अभय। उक्त सात वर्षोंमें मणिकूट, वज्रकूट, इन्द्रसेन, ज्योतिष्मान्, सुवर्ण, हिरण्यष्ठीव और मेघमाल नामके सात पर्वत और अरुणा, नृमणा, आङ्गिरसी, सावित्री, सुप्रभाता, ऋतम्भरा और सत्यम्भरा नामकी सात नदियां हैं। इन सब नदियोंका जल स्पर्श करनेसे रजःतमोगुण-रहित हो कर यथाक्रम ब्राह्मणादि चार वर्णोंके हंस, पतङ्ग, ऊर्द्धायन और सत्याङ्ग नामक चार व्यक्ति हजार वर्षकी परमायुलाभ करते हैं। ये लोग आत्मविद्यालाभ करके देवताके सदृश हो अवस्थान करते हैं। ( भाग० ५।२० अ० )

विष्णुपुराणमें लिखा है,—जम्बूद्वीप जिस प्रकार लवण-समुद्र द्वारा परिवेष्टित है, उसी प्रकार प्लक्षद्वीप भी इक्षुरससमुद्रसे घेरे हुए है। जम्बूद्वीपका विस्तार लाख योजन है, पर इसका विस्तार उससे दूना है। प्लक्षद्वीपके अधिपति मेधातिथिके सात पुत्र हैं। उनके नाम यथाक्रम ये हैं—शान्तहय, शिशिर, सुखोदय, आनन्द, शिव, क्षेमक और ध्रुव। इन्हींके नाम पर क्रमशः शान्तहय वर्ष, शिशिरवर्ष, सुखोदयवर्ष, आनन्दवर्ष, शिववर्ष, क्षेमकवर्ष और ध्रुववर्ष कहलाये। इन द्वीपोंमें जो ७ प्रधान पर्वत हैं उनके नाम ये हैं, गोमेद, चन्द्र, नारद, दुन्दुभि, सोमक, सुमना और वैभ्राज। इन सब रमणीय पर्वतों पर देव और गन्धर्वके साथ समस्त प्रजा सुखसे रहती है। इन सब पर्वतोंके ऊपर पवित्र जनपद बसे हुए हैं। यहांके मनुष्योंकी परमायु पांच हजार वर्ष है। यहां आधिव्याधि कुछ नहीं है, निरवच्छिन्न केवल आनन्द है। इन सब वर्षोंमें समुद्रगामिनी ७ प्रधान नदियां बहती हैं। इन सब नदियोंके नाम हैं—अनुतप्ता, शिखी, विपाशा, त्रिदिवा, क्रमु, अमृता और सुकृता। इन सब वर्षोंमें दो भी अनेक पर्वत और नदी हैं, पर स्थान संक्षेपके कारण यहां उनका उल्लेख नहीं किया गया। यहांके लोग उन नदियोंके जलका व्यवहार करके सुख और पवित्र हो गये हैं। इन सात स्थानोंमें युगावस्था नहीं है, त्रेतायुग होकर समभावमें वर्त्तमान रहता है। यहां वर्णाश्रम विभागानुसार चार प्रकारके वर्ण हैं, यथा—आर्यक, कुरुर, विविंश और भावी। इन सब वर्णोंमें चातुर्वर्ण्य नियम प्रतिष्ठित है। यहांका भी प्लक्ष वृक्ष, जिसका यह द्वीप नाम पड़ा है, वे ही यहां उनमें प्रधान, शक्ति विशेष और गुरु कहलाता है। जम्बूद्वीपमें जो जम्बूवृक्ष है उसीके जैसा यहां एक प्लक्ष महावृक्ष है। इसी प्लक्षवृक्षसे इसका प्लक्षद्वीप नाम पड़ा है। इस द्वीप पर जगत्स्रष्टा आर्यकादि वर्णोंसे पूजित होते हैं। (विष्णुपु० २।४ अ०)

कूर्मपुराणमें भुवनविन्यासके प्रसंगमें इस प्लक्षद्वीप का विस्तृत विवरण लिखा है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां नहीं लिखा गया। २ बड़ी खिड़की या दरवाजा। ३ एक प्रकारका।

प्लक्षतीर्थ (सं० क्लि०) प्लक्षप्रस्रवणादि महातीर्थम्। प्लक्षके निकटका, प्लक्षके समीप।

प्लक्षजाता (सं० स्त्री०) प्लक्षात् तन्मूलात् जाता। सरस्वती नदीका एक नाम।

प्लक्षतीर्थ (सं० क्ली०) प्लक्षसमीपस्थं तीर्थं मध्यपदलोपि०। तीर्थभेद, हरिवंशके अनुसार एक तीर्थका नाम।

प्लक्षप्रस्रवण (सं० क्ली०) प्लक्षस्य सरस्वत्याः प्रस्रवणं। सरस्वती नदीका उत्पत्तिस्थान।

(भारत वनपर्व० ५० अ०)

प्लक्षराज (सं० पु०) प्लक्षाणां राजा, टच् समासान्तः। १ सोमतीर्थस्थित प्लक्षवृक्ष। २ सरस्वतीका उत्पत्तिस्थान।

प्लक्षादि (सं० पु०) प्लक्ष आदि करके पाणिन्युक्त शब्दगण। यथा—प्लक्ष, न्यग्रोध, अश्वत्थ, इङ्गुदी, शिग्रु, रुरु, कक्षतु, बृहती।

प्लक्षादेवी (सं० स्त्री०) सरस्वती नदी।

प्लक्षावतरण (सं० क्ली०) अवतरत्यस्मात् अव-तृ भावे ल्युट्। महाभारतके अनुसार एक स्थानका नाम जहांसे सरस्वती नदी निकलती है।

प्लति (सं० पु०) ऋषिविशेष, एक वैदिक ऋषिका नाम।

प्लव (सं० पु०) प्लवते इति प्लु-अच्। १ कैवर्तीमुस्तक, केवटी मोथा। २ जलकौआ। ३ गन्धतृण एक सुगन्धित तृण। ४ उडुप, बाढ़। ५ प्लवग, प्लवगामिपक्षी। ६ भेड़। ७ भेक, मेंढक। ८ कपि, बंदर। ९ श्वपच, चाण्डाल। १० कपि, बन्दर। ११ जलकाक, एक प्रकारका जलचर पक्षी। १२ प्लक्ष, पकरी नामका वृक्ष। १३ प्लवन, उछाल कूद। १४ पर्कटी वृक्ष, पाकर। १५ कारण्डव पक्षी। १६ शब्द, आवाज। १७ प्रतिकृति, प्रतिरूप, पानीका बहाव। १८ प्रेम भरोसा। १९ डुब, डूबना। २० दम्भ, मछली पकड़नेका जाल। २१ नरकुम्भड़, कुम्भी। २२ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। २३ साठ या चालीसमें से ३५वां संवत्सर। २४ उतरे तट या हट कर आनेवाली नदी। २५ ग्राम, गहरा। २६ लेपन, मैला। २७ एक प्रकारका छन्द। २८ भाग जाना। २९ तैरना। ३० जल, मकान। ३१ उत्साह परिचालन, नाव। मिश्रित, या विविदा। आपत्कालमें स्नानीय द्रव्य, गायत्र

कारण्डव, बक, क्रौञ्च, सरारिका, नन्दीमुखी, कादम्ब और बलाकादि जलचर पक्षियोंको प्लव कहते हैं। ये सब जलमें प्लवन अर्थात् तैरते हैं, इसीसे इनका प्लव नाम पड़ा है। इनके मांसका गुण—पित्तनाशक, स्निग्ध, मधुर, गुरु, शीतल, वातश्लेष्मनाशक, बल और शुक्रवर्द्धक।

सुश्रुतके मतसे हंस, सारस, क्रौञ्च, चक्रवाक, कुरर, कादम्ब, कारण्डव, जीवञ्जीवक, बक, बलाका, पुण्डरीक, प्लव, शरारीमुख, नन्दीमुख, मद्गु, उत्क्रोश, काचाक्ष, मल्लिकाक्ष, शुक्लाक्ष, पुष्करशायी, काकोनाल, काम्बु, कुक्कुटिका, मेघराव और श्वेतचरण प्रभृति पक्षी प्लव कहलाते हैं। ये सब जलमें उछलते कूदते और तैरते हैं, इसीसे यह नाम पड़ा है। इस प्रकारके पक्षी संघात चारी होते अर्थात् दल बांध कर चरने निकलते हैं। इनके मांसका गुण—रक्तपित्तनाशक, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, वायुदमनकारी, मलमूत्रका वर्द्धक, रस और पाकमें मधुर माना गया है। (त्रि०) ३२ तैरता हुआ। ३३ कुदता हुआ। ३४ क्षणमङ्गुर।

प्लवक (सं० पु०) प्लवते इवेति प्लु अच्, तत स्वार्थे संज्ञायां वा कन्। १ खड्ग धारादि पर नर्त्तक, तलवारकी धार पर नाच करनेवाला पुरुष। संस्कृत पर्याय—केलक, कैकल, मत्तु, केलिकोष, कलायन। २ चण्डाल। ३ संतरणोपजीवी, वह जो तैर कर अपना गुजारा चलाता हो। ४ भेक, मेढक। ५ प्लक्ष, पाकर। (त्रि०) ६ तैरनेवाला, पैराक।

प्लवग (सं० पु०) प्लवेन प्लुतगत्या गच्छतीति गम (अन्येष्वपि दृश्यते। पा ३।२।१०१) इति ड। १ बन्दर। २ भेक, मेंढक। ३ सूर्यसारथि। ४ प्लवपक्षी, जल पक्षी। ५ शिरीषवृक्ष, सिरसका पेड़। ६ मृग, हरिण। (त्रि०) ७ कूदनेवाला, उछलनेवाला। ८ तैरनेवाला।

प्लवगति (सं० पु०) प्लवेन गतिर्यस्य। १ भेक, मेंढक। (स्त्री०) प्लवस्य भेकस्य गति। २ भेकादिकी गति, मेंढक आदिकी चाल। ३ प्लुतगति, कूद कूद कर जानेकी चाल।

प्लवङ्ग (सं० पु०) प्लवेन प्लुतगत्या गच्छतीति गम (गमश्च। पा ३।२।४७) इति खच् 'खच डिद्वा वाच्य' इति डित् डित्वात् टेलोपः मुमागम। १ वानर, बन्दर। २ मृग, हिरन। ३ प्लक्ष, पाकर। ४ साठ संवत्सरोंमें इकतालीसवां संवत्सर।

प्लवङ्गम (सं० पु०) प्लवेन गच्छतीति गम (गमश्च। पा ३।२।४७) १ भेक, मेंढक। २ वानर, बन्दर। ३ एक छन्द। इसके प्रत्येक पादमें ८।१३के विराममें २१ मात्राएं होती हैं। आदिका वर्ण गुरु और अन्तमें १ जगण और १ गुरु होता है। (त्रि०) ४ प्लुतगतियुक्त, कूद कूद कर चलनेवाला।

प्लवन (सं० पु०) १ उछलना, कूदना। २ सन्तरण, तैरना। ३ प्रवण, उतार।

प्लवाक (सं० पु०) १ अग्नि, आग। २ जलपक्षी।

प्लववत् (सं० त्रि०) प्लव मतुप् मस्य व। प्लवयुक्त।

प्लविक (सं० पु०) प्लवेन तरति ठन्। प्लवद्वारा तरण कारी, जो बेड़े के सहारे तैरता हो।

प्लविता (सं० त्रि०) प्लव-तृच्। प्लव द्वारा तरणकारी, बेड़े द्वारा तैरनेवाला, तैराक।

प्लांचेट (अं० पु०) मेस्मेरेजम पर विश्वास रखनेवालोंके काममें एक छोटी तख्ती। इसका आकार पान सा होता है। इसके विस्तृत भागके नीचे दो पाये मढ़े हुए होते हैं। इन पायोंके नीचे छोटे छोटे पहिए सलग्न होते हैं। उस छेदमें एक पेंसिल लगा दी जाती है। कहते हैं, कि जब एक या दो मनुष्य उस तख्ती पर धीरे धीरे अपनी उंगलियां रखते हैं, तब वह खसकने लगती है और उसमें लगी हुई पेंसिलसे लकीरें, अक्षर, शब्द और वाक्य बनते हैं। उन्हीं प्रश्नोंसे लोग अपने प्रश्नोंका उत्तर निकाला करते हैं अथवा गुप्त भेदों का पता लगाया करते हैं। यह १८५५ ई०में आविष्कृत हुआ था और इसके सम्बन्धमें कुछ दिनों तक लोगोंमें बहुतसे झूठे विश्वास थे।

प्लाक्ष (सं० क्ली०) प्लक्षस्य फल (प्लक्षादिभ्योऽण्। पा ४।३।१६४) इत्यण्विधानसामर्थ्यात् तस्य फले न लुक्। १ प्लक्ष वृक्षका फल, पाकरका फल। २ प्लक्षका विकार। ३ प्लक्ष समूह। ४ प्लक्षका भाव। ५ प्लक्षका हितकर। (त्रि०) ६ प्लक्ष सम्बन्धी।

प्लाक्षकि (सं० पु०) प्लक्षभव, प्लक्षका गोत्रापत्य।

प्लाक्षायन (सं० पु०) प्लाक्षिके गोत्रमें उत्पन्न।

विष्णुपुराणमें लिखा है,—जम्बूद्वीप जिस प्रकार लवण-समुद्र द्वारा परिवेष्टित है, उसी प्रकार प्लक्षद्वीप भी लवणसमुद्रको घेरे हुए है। जम्बूद्वीपका विस्तार लाख योजन है, पर इसका विस्तार उससे दूना है। प्लक्षद्वीपके अधिपति मेधातिथिके सात पुत्र हैं। इनके नाम यथाक्रम ये हैं—शान्तमय, शिशिर, सुखोदय, आनन्द, शिव, क्षेमक और ध्रुव। इन्हींके नाम पर क्रमशः शान्तमय वर्ष, शिशिरवर्ष, सुखोदयवर्ष, आनन्दवर्ष, शिववर्ष, क्षेमकवर्ष और ध्रुववर्ष कहलाये। इस द्वीपमें जो ७ प्रधान पर्वत हैं उनके नाम ये हैं—गोमेद, चन्द्र, नारद, दुन्दुभि, सोमक, सुमना और वैभ्राज। इन सब रमणीय वर्षाचलों पर देव और गन्धर्वोंके साथ समस्त प्रजा सुखसे रहती हैं। इन सब पर्वतोंके ऊपर पवित्र जनपद बसे हुए हैं। यहांके मनुष्योंकी परमायु पांच हजार वर्ष है। यहां आधिव्याधिजनित दुःख नहीं है, निरवच्छिन्न केवल आनन्द है। इन सब वर्षोंमें समुद्रगामिनी ७ प्रधान नदियां बहती हैं। इन सब नदियोंके नाम हैं—अनुतप्ता, शिखी, विपाशा, त्रिदिवा क्रमु, अमृता और सुकृता। इन सब वर्षोंमें यों तो अनेक पर्वत और नदी हैं, पर अप्रधान रहनेके कारण यहां उनका उल्लेख नहीं किया गया। यहांके लोग उक्त नदियोंके जलका व्यवहार करके धन्य और पवित्र हो गये हैं। इन सात स्थानोंमें युगावस्था नहीं है, त्रेतायुग हमेशा समभावमें वर्त्तमान रहता है। यहां वर्णाश्रम विभागानुसार पांच प्रकारके धर्म हैं, यथा—ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह। इन सब वर्षोंमें चातुवर्ण्य नियम प्रतिष्ठित हैं। यहांकी जो आर्यक, कुरु, विविंश और भावी जाति हैं, वे ही मर्त्य लोकमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहलाती हैं। जम्बूद्वीपमें जो जम्बूवृक्ष है उसीके जैसा यहां एक महान् प्लक्षवृक्ष है। उसी प्लक्षवृक्षसे इसका प्लक्षद्वीप नाम पड़ा है। इस वृक्ष पर जगत्स्रष्टा भगवान्‌विष्णु लोगोंसे पूजित होते हैं। (विष्णुपु० २।४ अ०)

कूर्मपुराणके भुवनकोषके ४८वें अध्यायमें इस प्लक्षद्वीप का विस्तृत विवरण लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां नहीं लिखा गया। ५ बड़ी खिड़की या दरवाजा। ५ एक तीर्थका नाम।

प्लक्षकीय (सं० त्रि०) प्लक्षस्यादूरदेशादि नडादित्वात् छ। प्लक्षके निकटवर्त्ती, प्लक्षके समीप।

प्लक्षजाता (सं० स्त्री०) प्लक्षात् तत्समीपस्थप्रस्रवणात् जाता। सरस्वती नदीका एक नाम।

प्लक्षतीर्थ (सं० क्ली०) प्लक्षसमीपस्थं तीर्थं मध्यपदलोपि०। तीर्थभेद, हरिवंशके अनुसार एक तीर्थका नाम।

प्लक्षप्रस्रवण (सं० क्ली०) प्लक्षस्य समीपस्थं प्रस्रवणं। सरस्वती नदीका उत्पत्तिस्थान।

(भारत शल्यप० ५४ अ०)

प्लक्षराज (सं० पु०) प्लक्षाणां राजा, टच्समासान्तः। १ सोमतीर्थस्थित प्लक्षवृक्ष। २ सरस्वतीका उत्पत्तिस्थान।

प्लक्षादि (सं० पु०) प्लक्ष आदि करके पाणिन्युक्त शब्दगण। यथा—प्लक्ष, न्यग्रोध, अश्वत्थ, इंगुदी, शिग्रु, रुरु, कक्षतु, बृहती।

प्लक्षादेवी (सं० स्त्री०) सरस्वती नदी।

प्लक्षावतरण (सं० क्ली०) अवतरत्यस्मात् अव-तॄ अपादाने ल्युट्। महाभारतके अनुसार एक स्थानका नाम जहांसे सरस्वती नदी निकलती है।

प्लति (सं० पु०) ऋषिभेद, एक वैदिक ऋषिका नाम।

प्लव (सं० क्ली०) प्लवते इति प्लु अच्। १ कैवर्त्तीमुस्तक, केवटी मोथा। २ नागरमोथा। ३ गन्धतृण, एक प्रकारकी सुगन्धित घास। ४ प्लवन, बाढ़। ५ प्लुतग, प्लुतगतियुक्त। ६ बेड़ा। ७ भेक, मेंढक। ८ अवि, भेड़ा। ९ श्वपच, चण्डाल। १० कपि, बन्दर। ११ जलकाक, एक जलकौआ नामका पक्षी। १२ कुलक, मकरतेंदुआ नामका वृक्ष। १३ प्रवण, उतार, ढाल। १४ पर्कटीद्रुम, पाकर। १५ कारण्डव पक्षी। १६ शब्द, आवाज। १७ प्रतिगति, लौटना, वापस आना। १८ प्रेरण, भेजना। १९ शत्रु, दुश्मन। २० पलव, मछली पकड़नेका काठका टापा। २१ जलकुक्कुट, जलमुर्गा। २२ बकविशेष, एक प्रकारका बगला। २३ साठ संवत्सरोंमें से पैंतीसवां संवत्सर। २४ उछल कर या उड़ कर जानेवाले पक्षी। २५ स्नान, नहाना। २६ प्लवन, तैरना। २७ एक प्रकारका छन्द। २८ गज, हाथी। २९ गोपाल करञ्ज। ३० अग्न, अलात। ३१ जलचर पक्षिमात्र, जलमें तैरनेवाली चिड़िया। भावप्रकाशके मतसे हंस, सारस,

कारण्डव, बक, क्रौञ्च, सरारिका, नन्दीमुखी, कादम्ब और बलाकादि जलचर पक्षियोंको प्लव कहते हैं। ये सब जलमें प्लवन अर्थात् तैरते हैं, इसीसे इनका प्लव नाम पड़ा है। इनके मांसका गुण—पित्तनाशक, स्निग्ध, मधुर, गुरु, शीतल, वातश्लेष्मनाशक, बल और शुक्रवर्द्धक।

सुश्रुतके मतसे [illegible]स, सारस, क्रौञ्च, चक्रवाक, कुरर, कादम्ब, कारण्डव, जीवञ्जीवक, बक, बलाका, पुण्डरीक, प्लव, शरीरमुख, नन्दीमुख, मद्गु, उत्क्रोश, काचाक्ष, मल्लिकाक्ष, शुक्लाक्ष, पुष्करशायी, काकोनाल, काम्बु, कुक्कुटिका, मेघराव और श्वेतचरण प्रभृति पक्षी प्लव कहलाते हैं। ये सब जलमें उछलते कूदते और तैरते हैं, इसीसे यह नाम पड़ा है। इस प्रकारके पक्षी संघात चारी होते अर्थात् दल बांध कर चरने निकलते हैं। इनके मांसका गुण—रक्तपित्तनाशक, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, वायुदमनकारी, मलमूत्रका वर्द्धक, रस और पाकमें मधुर माना गया है। (त्रि०) ३२ तैरता हुआ। ३३ झुकता हुआ। ३४ क्षणभ गुर।

प्लवक (सं० पु०) प्लवते इवेति प्लु अच्, ततः स्वार्थे संज्ञायां वा कन्। १ खड्‌ग धारादि पर नर्त्तक, तलवारको धार पर नाच करनेवाला पुरुष। संस्कृत पर्याय—कैलक, केल्ल, नसु, केलिकोप, कलायन। २ चण्डाल। ३ प्लवनोपजीवी, वह जो तैर कर अपना गुजारा चलाता हो। ४ भेक, मेढक। ५ प्लक्ष, पाकर। (त्रि०) ६ तैरनेवाला, पैराक।

प्लवग (सं० पु०) प्लवेन प्लुतगत्या गच्छतीति गम-(अन्येष्वपि दृश्यते। पा ३।२।१०१) इति ड। १ बन्दर। २ भेक, मेंढक। ३ सूर्यसारथि। ४ प्लवपक्षी, जल पक्षी। ५ शिरीषवृक्ष, सिरसका पेड़। ६ मृग, हरिण। (त्रि०) ७ कूदनेवाला, उछलनेवाला। ८ तैरनेवाला।

प्लवगति (सं० पु०) प्लवेन गतिर्यस्य। १ भेक, मेंढक। (स्त्री०) प्लवस्य भेकस्य गति। २ भेकादिकी गति, मेंढक आदिकी चाल। ३ प्लुतगति, कूद कूद कर जानेकी चाल।

प्लवङ्ग (सं० पु०) प्लवेन प्लुतगत्या गच्छतीति गम (गमश्च। पा ३।२।४७) इति खच् 'खच्च डिद्वा वाच्य' इति डित् डित्वात् टेलोपः मुमागम। १ वानर, बन्दर। २ मृग, हिरन। ३ प्लक्ष, पाकर। ४ साठ संवत्सरोंमें इकतालीसवां संवत्सर।

प्लवङ्गम (सं० पु०) प्लवेन गच्छतीति गम (गमश्च। पा ३।२।४७) १ भेक, मेंढक। २ वानर, बन्दर। ३ एक छन्द। इसके प्रत्येक पादमें ८।१३के विरामसे २१ मात्राएं होती हैं। आदिका वर्ण गुरु और अन्तमें १ जगण और १ गुरु होता है। (त्रि०) ४ प्लुतगतियुक्त, कूद कूद कर चलनेवाला।

प्लवन (सं० पु०) १ उछलना, कूदना। २ सन्तरण, तैरना। ३ प्रवण, उतार।

प्लवगं (सं० पु०) १ अग्नि, आग। २ जलपक्षी।

प्लववत् (सं० त्रि०) प्लव मतुप्-मस्य व। प्लवयुक्त।

प्लविक (सं० पु०) प्लवेन तरति ठन्। पद्मद्वारा तरण कारी, जो बेड़े के सहारे तैरता हो।

प्लुवित्ता (सं० त्रि०) प्लव-तृच्। प्लव द्वारा तरणकारी, बेड़े द्वारा तैरनेवाला, तैराक।

प्लाचेट (अ० पु०) मेस्मेरेजम पर विश्वास रखनेवालोंके कामकी एक छोटी तख्ती। इसका आकार पान सा होता है। इसके विस्तृत भागके नीचे दो पाये मढ़े हुए होते हैं। इन पायोंके नीचे छोटे छोटे पहिए संलग्न होते हैं। उस छेदमें एक पेंसल लगा दी जाती है। कहते हैं, कि जब एक या दो मनुष्य उस तख्ती पर धीरे धीरे अपनी उँगलियां रखते हैं, तब वह खसकने लगती है और उसमें लगी हुई पेंसिलसे लकीरें, अक्षर, शब्द और वाक्य बनते हैं। उन्हीं प्रश्नोंसे लोग अपने प्रश्नोंका उत्तर निकाला करते हैं अथवा गुप्त भेदों का पता लगाया करते हैं। यह १८५५ ई०में आविष्कृत हुआ था और इसके सम्बन्धमें कुछ दिनों तक लोगोंमें बहुतसे झूठे विश्वास थे।

प्लाक्ष (सं० क्ली०) प्लक्षस्य फल (प्लक्षादिभ्योऽण्। पा ४।३।१६४) इत्यण्विधानसामर्थ्यात् तस्य फले न लुक्। १ प्लक्ष वृक्षका फल, पाकरका फल। २ प्लक्षका विकार। ३ प्लक्ष समूह। ४ प्लक्षका भाव। ५ प्लक्षका हितकर। (त्रि०) ६ प्लक्ष सम्बन्धी।

प्लाक्षकि (सं० पु०) प्लक्षज, प्लक्षका गोत्रापत्य।

प्लाक्षायन (सं० पु०) प्लाक्षिके गोत्रमें उत्पन्न।

प्लाक्षि ( स ० पु० ) १ प्लक्षका गोत्रापत्य । ( स्त्री० ) २ प्लाक्षी ।

प्लाट ( अं ० पु०) १ इमारत बनाने या खेती आदि करनेके लिये जमीनका टुकड़ा । २ षड्यन्त्र, साजिश । ३ उपन्यास, नाटक या काव्य आदिकी वस्तु या मुख्य कथाभाग, वस्तु । ४ इमारत बनानेका नकशा । ५ कोई कार्य करनेका निश्चित किया हुआ ढंग, मनसूबा ।

प्लाटफार्म ( हि ० पु० ) प्लेटफार्म देखो ।

प्लायोगि ( स ० पु० ) प्रयोगनाम्न राज्ञ पुत्र इञ् वेदे रस्य ल । प्रयोग नामक राजाका पुत्र ।

प्लाव ( स ० पु० ) १ परिपूर्णता । २ गोता, डुबकी ।

प्लावगा ( स ० पु० ) मर्कट, बन्दर ।

प्लावन ( स ० क्ली० ) प्लु णिच् ल्युट् । १ द्रवद्रव्यका अद्धर्वप्रापण, तरल पदार्थको ऊपर फेंकना । २ मज्जन, खूब अच्छी तरह धोना, बोर । ३ बन्या, बाढ़ । ४ सन्तरण, तैरना ।

प्लावित ( स ० पु० ) प्लु णिच् क्त । जो जलमें डूब गया हो, पानीमें डूबा हुआ ।

प्लाव्य (स ० त्रि०) प्लु ण्यत् । जलमें डुबानेके योग्य, जो जलमें डुबाया जाय ।

प्लाशि ( स ० स्त्री० ) प्रकर्षेण अश्नाति भुङ्क्ते ऽनया प्र अश् करणे इ, वेदे रस्य ल । शिश्नमूलस्थ नाडी, पुरुषके मूत्रेन्द्रियकी जड़के पासकी नाडी ।

प्लाशुक ( स० त्रि० ) प्रकर्षेण आशु पच्यति कैन्क, वेदे रस्य ल । प्रकर्षरूपसे आशु पच्यमान, जो शीघ्र पक जाये ।

प्लाशुचित् ( स ० अव्य० ) शीघ्र, जल्दी ।

प्लास्टर ( अं ० पु० ) १ एक डाकृरी औषध । यह औषध शरीरके किसी दग्ध अङ्ग पर उसे अच्छा करनेके लिये लगाई जाती है । २ इंटों आदिकी दीवारों पर लगानेके लिये सुर्खी चूने आदिका गाढ़ा लेप, पलस्तर ।

प्लास्टर आफ पेरिस ( अ ० पु० ) एक प्रकारका ठोस और कड़ा अङ्गरेजी मसाला । यह धातु, चीनी, पत्थर और शीशे आदिके पदार्थोंको जोड़ने और मूर्त्तियां आदि बनानेके काममें आता है । जलमें मिला कर किसी स्थान पर लगाते ही यह दृढतापूर्वक बैठ जाता और फैल कर मन्दिरों आदिको भरने लगता है ।

प्लिनि—जगद्विख्यात रोमक पण्डित । इनका पूरा नाम था कायस प्लिनियस सिकण्डस ( Caius Plinius Secundus ) । इनका अभ्युदय होने पर प्लिनि वंशका मुख उज्ज्वल हुआ था । जनसाधारण इन्हें 'दि एल्डर' कहा करते थे ।(१) यौवनकालमें इन्होंने युद्धविद्यामें पारदर्शिता प्राप्त की । इसके बाद शकुनशास्त्र पढ़नेके लिये ये विद्यालय ( college of augurs )-में भर्त्ती हुए जर्मनयुद्धका इतिहास शेष कर इन्होंने धर्म्मशास्त्र ( Jurisprudence )-का अभ्यास किया था । सम्राट् भेसपिसियनके आदेशसे ये स्पेन-राज्यके प्रतिनिधि नियुक्त हुए । यहां रहते समय ये दिनको तो राजकार्य चलाते और रातको पाठाभ्यास करते थे । उनका स्पेन शासन साधुता और निरपेक्षतासे पूर्ण था । एक दिन नौसेनापति रूपमें ये नेपलस् उपसागरवर्त्ती मिसेनियम् नगरके सामने जहाज पर दलबल समेत ठहरे हुए थे । इसी समय भिसुभियस् पर्वतसे इन्होंने मेघरव देखा । अब ये इसका कारण जाननेके लिये बड़े उत्सुक हुए और इसी उद्देश्यसे समुद्रकी राहसे उक्त पर्वत पर पहुंचे । यहां आते ही दग्ध गन्धककी गन्धसे इनकी श्वास रुक गई । आखिर इनका कुल रहस्य इनको समझमें आ गया । इन्हो ने जितनी पुस्तकें बनाई हैं उनमें 'जगतितिहास' ( Natural History ) नामक ग्रन्थ प्राचीनतम ऐतिहासिकतत्त्वसे पूर्ण है । यह ग्रन्थ एक महाकोषके जैसा है और ३७ भागों में समाप्त हुआ है । इसका शेष छठा भाग मृत्युके दो वर्ष पहले

(१) अपने भतीजे प्लिनि दि यङ्गरको अपने गोद लिया था । यह बालक भी पालक-पिताकी तरह प्रतिभाशाली निकला । इन्होंने तेरह वर्षकी अवस्थामें एक उत्कृष्ट नाटक ग्रीक भाषामें लिखा । रोम सम्राट् ट्राजनके राज्याभिषेक कालमें उनकी कीर्त्तिवर्णना करते हुए जो वक्तृता दी थी, वह साहित्य-जगत्में 'Panegyric on Trajan' नामसे प्रसिद्ध है । राजाके अनुग्रहसे आप पण्टस और बिथनियाके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए । इनका जन्म ६२ ई० और मरण ११६ ई०में हुआ था ।

सम्पादित हुआ था। उक्त पुस्तकमें आप ज्योतिष, जलवायुतत्त्व ( Meteorology ), पृथ्वीतत्त्व, भूगोल, उद्भिद्विद्या, जीवतत्त्व, कृषिविद्या, आयुर्वेद, धातुविद्या ( Mineralogy ), भास्करविद्या, चित्रविद्या आदि विषयोंमें गभीर आलोचना कर गये हैं। पेरिप्लसकी भौगोलिक वर्णनाके साथ इनका बहुत कुछ मिलता जुलता है। आपका जन्म २३ ई० और मृत्यु ७९ ई०में हुआ था।

प्लिहन् (स ० पु०) प्लेहति वृद्धिं गच्छतीति प्लिह कनिन्। प्लीहरोग। प्लीहन् देखो।

प्लीडर ( अं ० पु०) १ वह जो वकालत करता हो, वकील। २ वह जो किसीका पक्ष ले कर वाद विवाद करता हो।

प्लीहघ्न ( स ० पु० ) प्लीहानं हन्तीति हन टक्। वृक्षविशेष, रोहड़ावृक्ष। संस्कृत पर्याय—रोही, रोहितक, प्लीहशत्रु, दाड़िमपुष्पक, मांसदलन, यकृद्वैरी, चलच्छद, रौहितेय, रोहित, रोहीतक, रौही।

प्लीहन् (प्लीहा) (स ० पु०) प्लिहन् ( श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहमिति। उण् १।१५८ ) इति कनिन् प्रत्ययेन साधु। कुक्षि-वामपार्श्वस्थित मांसखण्ड, पेटकी तिल्ली। संस्कृत पर्याय—गुल्म, प्लिहन्।

प्लीहा शरीरका एक अवयव है। यह हृदयसे अधो-देशमें रक्तसे उत्पन्न होता है। रक्तवाही सभी शिराओं का प्लीहा ही मूल है। यह सभीके शरीरमें विद्यमान है। उसके बढ़नेसे रोगमें उसकी गिनती होती है। वैद्यकशास्त्रमें इस प्लीहरोगके लक्षण और चिकित्सादिका विषय इस प्रकार लिखा है—

प्लीहरोगका निदान।—विदाही द्रव्य अर्थात् कुल्थी, कलाय और सरसोंका साग तथा अभिष्यन्दी ( भैंसका दधि आदि ) द्रव्य सेवन करनेसे रक्त और कफ अत्यन्त दूषित हो जाता है जिससे प्लीहा धीरे धीरे बढ़ने लगती है। प्लीहाकी वृद्धि होनेसे ही जानना चाहिये, कि उसे रोग हो गया है। प्लीहा उदरके वाम पार्श्वमें होती है। इस रोगमें रोगीका शरीर पाण्डुवर्ण, अवसन्न, अल्प ज्वर, अग्निमान्द्य और बलका ह्रास होता है तथा श्लैष्मिक और पैत्तिक उपद्रव भी पहुंच जाते हैं। इसके चार भेद हैं रक्त, वात, पित्त और श्लेष्मज।

रक्तज प्लीहामें क्लान्ति, भ्रम, विदाह, विवर्णता, शरीरका गुरुत्व और उदरकी रक्तवर्णता होती है। पैत्तिक प्लीहामें ज्वर, पिपासा, दाह, मोह और दैहिक पीत-वर्णता दिखाई देती है। श्लेष्मज प्लीहामें अतिशय वेदना, प्लीहा, स्थूलाकार, कठिन और गुरुतर होता तथा इसमें रोगीके अरुचि उत्पन्न होती है। वातज प्लीहारोगमें सर्वदा कोष्ठबद्धता और उदावर्त्तरोग तथा प्लीहामें सर्वदा वेदनाका अनुभव होता है। प्लीहा रोगमें ये सब लक्षण होनेसे उसे असाध्य समझना चाहिये।

ज्वर रोगके अधिक दिन तक शरीरमें रहनेसे, मलेरिया ज्वर होनेसे अथवा मलेरिया दूषित स्थानमें वास करनेसे वा मधुरस्निग्धादि आहारजन्य रक्तके बढ़नेसे प्लीहाकी वृद्धि होती है। अलावा इसके अतिरिक्त भोजनके बाद किसी द्रुतयानादिसे गमन वा व्यायामादिमें परिश्रमजनक कार्य करनेसे भी प्लीहा स्वस्थानच्युत हो कर बढ़ती है। उदरके वामपार्श्वमें ऊपरकी ओर प्लीहाका स्थान है। अविकृत अवस्थामें हाथसे उसका पता नहीं लगाया जा सकता, किन्तु जब वह बढ़ती है, तब कुक्षिके वामपार्श्वमें हाथ द्वारा उसका पता लग जाता है। इस रोगमें हमेशा मृदुज्वर रहता है और प्रति दिन किसी न किसी समय वह ज्वर चढ़ आता है अथवा एक दिनके बाद कंपकंपी दे कर अधिक ज्वर प्रकाशित होता है। अलावा इसके प्लीहामें वेदना, पेटमें वा ज्वाला, कोष्ठबद्धता, अल्पमूत्र वा रक्तवर्णमूत्र, श्वास, कास, अग्निमान्द्य, शरीरकी अवसन्नता, कृशता, दुर्बलता, पिपासा, वमन, मुखवैरस्य, चक्षु, हस्ताङ्गुलि और ओष्ठ आदि स्थानोंकी रक्तहीनता, अन्धकार दर्शन और मूर्च्छा आदि लक्षण होते हैं।

कष्टसाध्य प्लीहाका लक्षण।—प्लीहाके अधिक बढ़ जानेसे जब रोग कष्टसाध्य हो जाता है, तब नासिका और दन्तमाड़ीसे रक्तस्राव अथवा रक्तवमन, रक्तभेद, उदरामय, दन्तमूलमें क्षत, दोनों पैर और दोनों चक्षु अथवा सर्वाङ्गमें शोथ तथा पाण्डु और कामला आदि लक्षण दिखाई देते हैं। ये सब लक्षण होनेसे आरोग्यकी सम्भावना बहुत थोड़ी रहती है। प्लीहा अत्यन्त वर्द्धित हो कर जब उदरकी वृद्धि होती है, तब उसे प्लीहोदर कहते हैं। यह केवल वामपार्श्वमें बढ़ता जाता है।

प्लीहरोगका दोषनिरूपण।—प्लीहरोगमें मलबद्धता, वायुका ऊर्द्ध गमन और वेदना अधिक रहनेसे वायुकी अधिकता। प्लीहाके अतिशय कठिन, भारीपन गुरुत्व और अरुचि रहनेसे श्लेष्माकी अधिकता समझी जायगी। रक्तकी अधिकता रहनेसे पित्ताधिक्यके लक्षण और उनसे भी बढ़ कर तृष्णा मालूम होती है। तीनों दोषकी अधिकता रहनेसे मिलित लक्षण दिखाई देते हैं।

इसकी चिकित्सा।—प्लीहारोगमें जिससे पहले रोगीका कोष्ठ परिष्कार हो, उसीका उपाय करना आवश्यक है। पुराना गुड़ और हरीतकीचूर्ण अथवा विट्लवण और हरीतकीचूर्ण समान भाग ले कर रोग और रोगीके अवस्थानुसार गरम् जलके साथ सेवन करानेसे प्लीहा और यकृत् दोनों ही रोग थोड़े ही दिनोंके मध्य जाते रहते हैं। पीपल प्लीहारोगकी एक उत्तम औषध है। दो या तीन पीपलको जलमें घिस कर पुराने गुड़के साथ उपयुक्त मात्रामें सेवन करनेसे भी प्लीहा प्रशमित होती है। हींग, सोंठ, पीपल, मिर्च, कुट, यवक्षार और सैन्धवलवण इनके समान समान भाग चूर्णको एकत्र कर नीबूके रसमें मिला कर दोसे चार आना मात्रामें सेवन करनेसे भारी उपकार होता है। अजवायन, चितामूल, यवक्षार, पिपरामूल, पीपर और दन्ती इनके समान भाग चूर्णको आध तोला मात्रामें उष्ण जल, दहीके पानी, या आसवके साथ सेवन करनेसे यह रोग बहुत जल्द जाता रहता है। चितामूलको पीस कर एक रत्तीकी गोली बनावे। पीछे उस गोलीको तीन पकके केलेमें भर कर सेवन करे। लहसुन, पिपरामूल और हरीतकी खाने तथा गोमूत्र पीनेसे भी प्लीहरोग प्रशमित होता है। चितामूल, हरिद्रा, पकके अरयमकर पत्ता अथवा धाइफूलका चूर्ण पुराने गुड़के साथ सेवन करनेसे विशेष उपकार होता है। शरपुङ्खवटिका आध तोला मात्रामें मधु के साथ सेवन करनेमें प्लीहाका उपशम होता है। आध तोला शङ्खनाभिके चूर्णको बिजौरा नीबूके रसके साथ सेवन करानेसे अति प्रकाण्ड प्लीहा दूर हो जाती है। समुद्रजात घोंघेकी भस्म प्लीहरोगनाशक है। देवदारु, सैन्धवलवण और गन्धक-ए समान भागको भस्म कर सेवन करनेसे प्लीहा और यकृतादि विनष्ट होते हैं। रोहित और हरीतकीके क्वाथमें दो आना भर पीपल चूर्ण मिला कर सेवन करनेसे प्लीहरोग जाता रहता है। शालपाणि, पिठवन, वृहती, कण्टकारी, गोक्षुर, हरीतकी और रोहितक छालका क्वाथ प्लीहरोगमें विशेष उपकारी है।

उत्कृष्ट पकके आमके रसको मधुके साथ पान करनेसे प्लीहा रोग अवश्य दूर होता है। सीयर पुष्पको सुसिद्ध कर एक दिन रख छोड़े, पीछे उसे सरसोंके चूर्णके साथ भक्षण करे। थोड़े ही दिनोंमें प्लीहा नष्ट होती है। यवायन, चिता, यवक्षार, पिपरामूल, दन्ती, पिप्पली इनका समान समान भाग चूर्ण ले कर गरम जल अथवा दधिके पानी या मांसरस अथवा आसवके साथ यथामात्रामें सेवन करनेसे यह बहुत जल्द जाता रहता है।

( भावप्र० प्लीहरोगा० )

इनके अतिरिक्त यमानिकादि चूर्ण, माणकादिगुड़िका त्रिलकादिलौह, अभयालवण, गुड़पिप्पलीघृत, पिप्पलीघृत, चित्रकघृत, रोहितकघृत, महारोहितकघृत, प्लीहारिरस, वासुकिभरणरस, विद्याधररस, रसराज, प्लीहान्तकरस, लोकनाथरस, बृहल्लोकनाथरस, रोहितकलौह, यकृत्प्लीहारिलौह, यकृत्प्लीहोदरहरलौह, रोहितकाद्यचूर्ण, महाद्रावकरस, महाद्रावक, शङ्खद्रावक, शङ्खद्रावकरस, महाशङ्खद्रावक और रोहितकारिष्ट ये सब औषध प्लीहा और यकृत्रोगमें विशेष उपकारी हैं।

( भैषज्यरत्ना० प्लीहयकृताधि० )

चिकित्सक रोगीके बलाबल और धातुकी विवेचना कर उक्त औषधोंमेंसे किसी औषधका प्रयोग कर सकते हैं। प्लीहरोगके साथ ज्वरकी प्रबलता रहनेसे अथवा ज्वरके हठात् प्रबल वेगमें बढ़ जानेसे उक्त औषधोंमेंसे जो सब औषध ज्वरके उपकारक हैं उन औषधोंका तथा प्लीहा रोगकी औषधका मिलित भावमें प्रयोग करना होगा। जरूरत पड़ने पर प्लीहाकी औषध बन्द करके केवल ज्वरकी चिकित्सा की जा सकती है। ज्वरका प्रकोप कुछ घटनेसे पुनः प्लीहाकी औषधका सेवन कराना उचित है।

जीर्णप्लीहरोगमें विरेचक औषधका प्रयोग न करे। क्योंकि उससे यदि दैवात् उदरामय हो जाय, तो पीछे आरोग्य होना कठिन है। उदरामय होनेसे पुटपाककी

विषम ज्वरान्तकलौह आदि ग्राहक औषध विशेष उपकारक है। रक्तामाशय, शोथ, पाण्डु और कामला आदि पीडा इसके साथ रहनेसे उस रोगनाशक औषधको मिश्रितभावमें व्यवस्था करे। प्लीहरोगीके ग्रहणी होनेसे उसका आरोग्य होना मुश्किल हो जाता है। प्लीहरोगीके मुहमें यदि क्षत हो जाय, तो खदिरादिवटिकाको जलमें घोल कर क्षतस्थान पर लगावे और बकुलकी छाल, जामुनकी छाल, मालतीकी छाल तथा अमरूदके पत्तेको सिद्ध कर उसमें थोडा फिटकरीका चूर्ण डाल दे। पीछे कुछ गरम रहते उससे कुल्ली करनेसे मुखक्षतका विशेष उपकार होता है

प्लीहामें वेदना रहनेसे वन अदरकको पीस कर उसका प्रलेप तथा गोमूत्रको गरम कर अथवा गरम जलका स्वेद दे। बहुत हल्केसे फ्लानलको उदरमें बांधनेसे भी उपकार होता है।

प्लीहरोगीका पथ्यापथ्य।—ज्वररोगमें जो सब द्रव्य निषिद्ध बतलाये गये हैं, प्लीहामें भी वे सब द्रव्य विशेष अनिष्टप्रद हैं। इसमें केवल दूध न पी कर उसके साथ ३।४ पीपल सिद्ध करके सेवन करनेसे प्लीहाका विशेष उपकार होता है। इस रोगमें सब प्रकारका बघारा हुआ पदार्थ, गुरुपाक द्रव्य और तीक्ष्णवीर्य द्रव्यभोजन तथा अधिक परिश्रम, रात्रिजागरण, दिवानिद्रा और मैथुनादि बिलकुल निषिद्ध है।

डाक्टरी मतसे प्लीहा शरीराभ्यन्तरस्थ यन्त्रविशेष (Spleen) है,—उदरगह्वरकी वामकुक्षिमें पाकाशयके प्रशस्त अंशके उत्तर अवस्थित है। इसकी आकृति सिपक-की सी और वर्ण घोर बैंगनी है। रक्तके न्यूनाधिक्यानुसार इसके भी आयतनकी ह्रासवृद्धि होती है। वृद्धावस्थामें इसका आयतन और भार घटता और सविराम तथा कम्पज्वरमें बढ जाता है।

साधारणतः मानवमात्रके प्लीहा होती है। कभी कभी छोटी अतिरिक्त प्लीहा भी देखी जाती है। इस प्लीहाका मूलभाग प्लीहाके नीचे संयुक्त रहता है। उसका आयतन मटरसे ले कर अखरोटके जैसा भी हो सकता है।

प्लीहाका प्रकृत कार्य क्या है, उसका आज तक भी ठीक ठीक पता नहीं लगा है। परन्तु इतना तो अवश्य कहा जा सकता है, कि भुक्तद्रव्यका अण्डलाल परिपाक कालमें प्लीहाके मध्य सञ्चित होता है। उस समय प्लीहाका कलेवर वर्द्धित होते देखा जाता है। फिर कुछ समय बाद ही जब वह रस शोणितमें चूस लिया जाता है, तब प्लीहा पुनः पूर्वावस्थाको प्राप्त होती है अर्थात् छोटी हो जाती है। अलावा इसके प्लीहासे ही रक्तका श्वेत और लालकणिकाओंकी उत्पत्ति हुआ करती है।

पहले कहा जा चुका है, कि ज्वररोगमें साधारणतः इसकी वृद्धि होती है। इस समय इसमें रक्ताधिक्य, प्रदाह, स्फोटक और विवर्द्धनादि लक्षण देखे जाते हैं।

प्लीहाका रक्ताधिक्य (congestion) प्रबल और अल्पभेदसे दो प्रकारका है। मलेरिया और टाइफेड ज्वरमें प्लीहाका प्रबल रक्ताधिक्य होता है। कभी कभी टाइफस, सूतिकावस्था, वसन्त, विसर्प और पाइमिया आदि रोगोंमें भी रक्ताधिक्य होते देखा जाता है। आघात आदि भी इसका दूसरा कारण है। यकृद्धमनीमें रक्तके सञ्चालनकी अवरुद्धता और हृत्पिण्ड तथा फुसफुसीय पुरातन रोग ही अप्रबल रक्ताधिक्यका कारण समझा जाता है।

इस समय प्लीहा आयतनमें बडी, कृष्णाभ, आरक्त, स्वाभाविककी अपेक्षा भारी और उसका कैपस्यूल (Capsule) मसृण तथा विस्तृत होता है। पेशीके सभी विधान कोमल और कहीं कहीं तरल या फलके गूदेके सदृश नरम मालूम होता है। काटनेसे उसमेंसे काफी लाल रक्त निकलता है। प्रदाह अधिक दिन रहनेसे प्लीहा बडी और कडी हो जाती है। प्लीहा स्थानमें सामान्य वेदना, छूनेसे अधिक यन्त्रणा और रक्ताल्पताके लक्षणादि देखे जाते हैं। प्लीहा-स्थानमें गरमजलका सेक, ब्लिष्टर या माष्टर्ड प्लष्टरका आवश्यकतानुसार प्रयोग विधेय है। आभ्यन्तरिक लवणयुक्त मृदु विरेचक भी उपकारी है। यकृच्छिराकी अवरुद्धता रहनेसे उसीके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये।

पाइमिया, सेप्टिसिमिया, आघात, मलेरियाके स्थानमें वास और शैत्य सलग्न हेतु इससे प्लीहा (Splenitis or Haemorrhagic Infarction) उत्पन्न होती है। रोग दिखाई देनेसे बहुत कुछ शारीरिक परिवर्त्तन होता है।

प्लीहामें इस समय आरसेनाइड आवद्ध रहती है और इसीसे उसके चारों तरफ हिमरेजिक इनफार्क्ट दिखाई देती है। इनफार्क्टकी आकृति कीलसी होती और उसका मध्य स्थान पीतवर्ण और पार्श्वदेशमें रक्ताधिक्य रहता है। आरसेनाइडके विगलित होनेसे प्रदाह उत्पन्न होता है। कभी यह आरसेनाइड चूर्णापकृष्टतामें परिणत होती है। इस प्रकार शोणित या अपकृष्टतामें परिणत नहीं होनेसे उसकी उत्तेजनासे स्फोटक उत्पन्न हुआ करता है। निकटवर्ती पेरिटोनियममें प्रदाहका लक्षण दिखाई देता है। मलेरिया और शैत्यजनित प्रदाहमें प्लीहा वृहत् और कृष्ण वर्ण तथा स्पर्शमें कोमल मालूम होती है। रक्ताधिक्यसे प्रदाहको पृथक् करना बहुत मुश्किल है। स्फोटक रहनेसे प्रदाह हुआ है, ऐसा मालूम होता है।

आघातादि द्वारा स्थानिक प्रदाह उपस्थित होनेसे सामान्य वेदनाका अनुभव होता है। स्फोटक होनेसे अत्यन्त वेदना, शीत, कम्पज्वर, वमन और दुर्बलता तथा स्फोटकके अभ्यन्तरमें विदीर्ण होनेसे मूर्च्छा और हिमाङ्ग आदि लक्षण उत्पन्न देखे जाते हैं। स्फोटक बाहरकी ओर भी प्रकाशित हो सकता है; किन्तु उस समय उसमें फ्लक्चुयेसन मालूम होता है।

स्फोटक होनेसे पहले एस्पिरेटर द्वारा पीप निकाल ले। पुष्टाइन, सुरा और बलकारक आहार खानेको दे। स्फोटकमें रोगका भावी फल अशुभ जानना चाहिये, ऐसी अवस्थामें रोगका आरोग्य होना बहुत कठिन है।

प्लीहाकी विवृद्धि (Hypertrophy of the spleen) शैशिक कोषसमूह रक्तस्रोत द्वारा अपसारित न हो कर यदि प्लीहामें अवरुद्ध रहे, तो प्लीहाकी वृद्धि होती है। इस पीडामें विविध स्थान और यन्त्रका लिम्फाटिक सिस्टम बढ़ता जाता है तथा इससे श्वेतरक्तकणिका द्विगुण परिमाणमें उत्पन्न होती है। वे नियमितरूपसे लोहितकणिका में परिवर्तित नहीं हो सकती। इसके द्वारा रक्ताल्पताके सभी लक्षण उपस्थित होते हैं।

प्लीहामें बहुकालव्यापी या बार बार रक्ताधिक्य (Congestion) मलेरिया पूर्ण स्थानमें वास, पुनः पुनः सविराम ज्वर और पटकमनीके रक्तस्रोतमें रक्ताधिक्य ही प्लीहा विवृद्धिका प्रधानतम कारण है।

इस समय प्लीहा वृहदाकार और वजनमें प्रायः ८।१० पौंड तक भारी होती है। कभी कभी अग्रपार्श्वमें छूनेसे खात सा मालूम होता है। प्लीहा प्रदेश स्पंजाकार और बीच बीचमें निकटवर्ती पैशिक विधानके साथ संयुक्त है। रक्त तरल और श्वेतरक्तकणिकायुक्त तथा रक्तमें उसका भाग बढ़ता है।

रोगी धीरे धीरे शीर्ण हो जाता है। मुखमण्डल, ओष्ठ और कञ्जनटाइभा रक्तशून्य; चर्म शुष्क और उत्तप्त, नाडी द्रुत और दुर्बल; मूत्र स्वल्प और लोहिताभ, क्षुधामान्द्य, कोष्ठबद्ध, प्लीहास्थानमें भार और वेदनादिलक्षण उपस्थित होते हैं। पीडाके तरुण होनेसे ज्वरका विराम नहीं देखा जाता। रोग कठिन होनेसे रोगीका वर्ण मृत्तिकावत्, नासिका और दन्तमाढ़ीसे रक्तस्राव, चमड़ेके नीचे सूक्ष्मरक्त चिह्नविगलित मुखरोग (Cancrum Oris) अक्षिपल्लव और पदकी स्फीतता तथा समय समय पर सार्वाङ्गिक शोथ दृष्टिगोचर होता है। विवर्द्धित प्लीहामें चाप द्वारा श्वास, कृच्छ्र, काशि, फुसफुसका रक्ताधिक्य और वमन उपस्थित हो सकता है।

प्लीहाके वृहत् होनेसे उदरके वामपार्श्वस्थ दक्षिण विकुसे ले कर नाभि तकका स्थान ऊँचा दिखाई देता देता है, छूनेसे एक अग्रधार पतला और खातयुक्त अर्बुद सा बोध होता है। कभी कभी उसमें फ्लक्चुयेसन भी पाया जाता है। प्रातिघातिक शब्द मलशब्द (Dull), उसके नीचे नाभि तथा ऊपर ५म पर्शुका पर्यन्त फैल सकता है। पार्श्वपरिवर्त्तनमें प्लीहा अपने स्थानसे कुछ हट जाता और दीर्घश्वासमें नीचेकी ओर चला जाता है। प्लीहास्थानमें कभी कभी एक मर्मरध्वनि सुनाई देती है जिसे स्प्लेनिक् मर्मर (Splenic murmur) कहते हैं।

नासिका और दन्तमाढ़ीसे रक्तस्राव, पाण्डुरोग, उदरामय, आमाशय, शोथ और पैनक्रमोरिस् आदि इसके उपसर्ग हैं। रोग आराम नहीं होनेसे दुर्बलता, शोथ, आमाशय, रक्तस्राव और कभी कभी अचैतन्य हो कर मृत्यु हो जाती है।

निम्नलिखित कुछ पीडाके साथ इसका भ्रम हो सकता है—पाकाशयके वामदिक छिद्रमें कर्कटरोग,

यकृत्के वामभाग या वाममूत्रयन्त्रका विवर्द्धन, अन्त्रावरकमें कोई अर्बुद और रक्तमें श्वेतकणाधिक्य ( Leucocythemia )। व्याधिके तरुण होनेसे आरोग्य होनेकी सम्भावना है, पर प्लीहाके अधिक बढ़ने और रोगके पुराने होनेसे आरोग्यता लाभ करनेकी कोई आशा नहीं।

वायुपरिवर्त्तन, किनाइन, आर्सेनिक और लौहघटित औषधोंका सेवन विधेय है। अन्यान्य औषधोंके मध्य आइओडाइड्स, ब्रोमाइड्स और फ्लुराइड्स विशेष कार्यकारी है। आहारार्थ लघुपाक और बलकारक द्रव्यादिसे प्लीहाके ऊपर लिंचर तथा टिंचर वा अङ्गुयेण्टम् आइओडिन्का लेपन आवश्यक है। पुरातन प्लीहाके ऊपर अङ्गुयेण्टम् हाइड्राजिराई बिनाइओडिम मालिश करनेसे प्लीहा छोटी हो सकती है, पर दो बारसे अधिक मालिश न करे। एलोपैथिक मतसे स्पिनमिक्श्चर —

| | |
|---|---|
| R क्विनिसलफस | २ ग्रेन |
| एसिड सालफ्युरिक डिल | ६ बुंद |
| फेरि सल्फ् | १ ग्रेन |
| मेगनिसिया सलफस् | ॥० ड्राम |
| टि जिञ्जर | १० बुंद |
| जल | १ औंस |

ज्वरके समय दिनमें एक मात्रा २।३ बार।

यकृत्का कञ्जेश्चन रहनेसे लीभरके ऊपर नाइट्रो हाइड्रोक्लोरिक एसिड डिल्का लेप देनेके बाद फोमेण्ट करे और निम्नलिखित औषधका सेवन करावे।

| | |
|---|---|
| R क्विनि म्युरियेट | ३ ग्रेन |
| एसिड हाइड्रोरिक डिल | ६ बुंद |
| टि न्युसिस् भ मिश्रि | ५ बुंद |
| R कलम्बा | १ औंस |

दिनमें २।३ बार।

पुरातन प्लीहामें सामान्य ज्वर रहनेसे—

| | |
|---|---|
| R पोटाशि ब्रोमाइड | ५ ग्रेन |
| टि सिङ्कोना कम्पा | २० बुंद |
| टिं जेनसियन कम्पा | २० बुंद |
| टि डिजिटेलिस् | २ बुंद |
| इन्फ्युजन सार्पेण्टरि | १ औंस |

एक मात्रा दिनमें ३ बार।

| | |
|---|---|
| R लाइकर एमन फ्लुराइड | ५ बुंद |
| एकोयामेन्थलिप् | १ औंस |

खानेके बाद १ मात्रा दिनमें दो बार।

प्लीहामें एमिलयेड् अपकृष्टता, उपदंश, कर्कट, टाइफायेड और हाइमेटिम आदि रोग उत्पन्न होते हैं। उन सब रोगोंसे भी प्लीहाका विवर्द्धन और दुर्बलताका लक्षण दिखाई देता है। ऐसी अवस्थामें होमिओपाथी चिकित्सा विशेष उपकारी है।

प्लीहशत्रु ( स ० पु० ) प्लीहघ्न, रोहड़ा वृक्ष।

प्लीहा ( हिं० स्त्री० ) प्लीहन् देखो।

प्लीहाकर्ण ( स ० क्ली० ) कर्णदेशजात रोगविशेष, एक रोग जो कानके पास होता है।

प्लीहान्तकरस ( स ० पु० ) अन्तयतीति अन्तकः प्लीहाया अन्तकः। प्लीहारोगोक्त एक औषध। प्रस्तुत प्रणाली—ताम्र, रौप्य, त्रिकटु, रास्ना, जयपालबीज, त्रिफला, कटकी, दन्तीमूल, चोपामूल, सैन्धव, निसोथ और यवक्षार इन सब द्रव्योंको रेंडीके तेलमें घोंट कर रत्ती भरकी गोली बनावे। इसका अनुपात रोगीका बलाबल देख कर स्थिर करना होता है। यह औषध पाण्डु और शोथ आदि रोगोंमें भी हितकर है। (भैषज्यरत्ना० प्लीहयकृदधि०)

प्लीहार्णवरस ( स ० पु० ) प्लीहरोगोक्त औषधविशेष। पारद, गन्धक, सोहागा, अभ्रक और विष आठ आठ तोले ले कर उसमें चार चार तोला मिर्च और पीपल मिला दे। पीछे [illegible] छ रत्तीको गोली बनावे। इसका अनुपान निर्गुंडीका रस और मधु है। इस औषधका सेवन करनेसे ज्वर, मन्दाग्नि, कास, श्वास, वमि, भ्रम और सब प्रकारकी प्लीहा दूर होती है। (रसेन्द्रसारसं० प्लीहारोगाधि०)

प्लीहारि ( स ० पु० ) प्लीहाया अरि शत्रुस्तन्नाशकत्वात्। १ अश्वत्थवृक्ष, पीपलका पेड़। २ प्लीहनाशक वटिकौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—हरिताल २ तोला, स्वर्ण अर्द्ध तोला, ताम्र ४ तोला, मृगचर्मभस्म और नीबूका मूलचूर्ण प्रत्येक दो २ तोला, इन सब द्रव्योंको एकत्र कर ६ रत्ती भरका गोली बनावे। इसका अनुपान मधु और चिताचूर्ण है। इस औषधका सेवन करनेसे असाध्य प्लीहा, यकृत्, पाण्डु, गुल्म और भगन्दररोग

आता रहता है। यह औषध प्लीहारिरस नामसे प्रसिद्ध है।

इसके अलावा प्लीहारिरस एक और प्रकारका भी है जिसकी प्रस्तुत प्रणाली यों है—लौह ४ तोला, मृग शृङ्गभस्म ८ तोला, मीठा नीबूका मूल ८ तोला इन सब द्रव्योंको एकत्र कर १ रत्ती भरकी गोली बनावे। इसके सेवनसे प्लीहा, यकृत् और गुल्म अति शीघ्र प्रशमित होते हैं। (रसेन्द्रसारसं०)

प्लीहाशत्रु (सं० पु०) प्लीहाया शत्रुः। प्लीहशत्रु, रोहितकवृक्ष।

प्लीहाशार्दूलरस (सं० पु०) प्लीहाया शार्दूल इव रसः। प्लीहारोगनाशक औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारद, गन्धक और त्रिकटु प्रत्येक बराबर बराबर भाग मिला कर जितना हो उतनी ही ताम्र भस्म, मनःशिला, कौड़ी, तूतिया, हींग, लोहा, जयन्ती, रहेणा, यवक्षार, सोहागा, सैन्धव लवण, विट लवण, चिता और जयपाल। प्रत्येक पारेके समान, इन सब द्रव्योंको एकत्र कर निसोथ, चिते, अदरक और धतूरेके रसमें भावना दे। पीछे रत्ती भरकी गोली बनावे। इसका अनुपान मधु और पीपल है। रोगभेद बलाबलके अनुसार सेवन करनेसे प्लीहा, अग्रमांस, यकृत्, गुल्म, आमाशय, उदरी शोथ, विद्रधि, अग्निमान्द्य और ज्वर आदि रोग थोड़े ही दिनोंके अन्दर जाते रहते हैं।

(रस इन्द्रसारसं० प्लीहारोगाधि०)

प्लीहोदर (सं० क्ली०) उदररोगभेद, तिल्ली। जो विदाही और अभिष्यन्दजनक द्रव्य बहुत खाते हैं उनका रक्त और श्लेष्मा कुपित हो कर प्लीहाकी वृद्धि करती है, इसीका नाम प्लीहोदर है। यह प्लीहा वाम पार्श्वमें बढ़ती है। इस से रोगी अत्यन्त क्षीण हो जाता है। (सुश्रुत नि० ७ अ०)

उदररोग और प्लीहा शब्द देखो।

प्लीहोदरिन् (सं० त्रि०) प्लीहोदर अस्त्यर्थे इनि। प्लीहो दर रोगाक्रान्त, जिसे प्लीहारोग हुआ हो।

प्लुषि (सं० पु०) प्लुष्यति दहतीति प्लुष दाहे (प्लुषि कुषिशुषिभ्यः क्सि। उण् ३।१५५) इति क्सि। १ अग्नि, आग। २ स्नेह, प्रेम। ३ शुष्क, पर जलना।

प्लुत (सं० क्ली०) प्लु क्त। १ अश्वगतिविशेष, घोड़े की एक चालका नाम जिसे पोई कहते हैं। २ तिर्यक् गति, टेढ़ी चाल। (पु०) प्लुतं प्लुतवद् गति रस्या स्तीति प्लुत अच्। ३ त्रिमात्रस्वर, स्वरका एक भेद जो दीर्घसे भी बड़ा और तीन मात्राका होता है।

"एक मात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनञ्चार्द्ध मात्रकम्॥"
(प्राचीनका०)

जिसकी मात्रा एक है, वह ह्रस्व, जिसकी दो, वह दीर्घ और जिसकी मात्रा तीन है, वही प्लुत कहलाता है। पाणिनिमें, किस स्थान पर कौन शब्द प्लुत होगा और कहां नहीं होगा, इसका विशेष विवरण लिखा है। मुग्धबोधटीकामें दुर्गादासने लिखा है, कि दूराह्वान, गान और रोदन इन सब स्थानोंमें प्लुतस्वर होगा। ४ वह ताल जो तीन मात्राओंका हो। (त्रि०) ५ कम्प गतियुक्त, जो कांपता हुआ चले। ६ प्लावित। ७ सारा चोर। ८ जिसमें तीन मात्राएं हों।

प्लुतगति (सं० स्त्री०) प्लुता गति कर्मधा०। १ प्लुत गमन। (त्रि०) २ शशक, खरहा। प्लुता गतिर्यस्य। २ प्लुतगमनयुक्त, जो कूद कूद कर चलता है।

प्लुतार्क—एक ग्रीक जीवनी लेखक और नीतिशास्त्रज्ञ। ५० ई०में त्रियोसियाके अन्तर्गत चिरोनिया ग्राममें इनका जन्म हुआ था। इन्होंने डेल्फोके आमेनियस प्रति ष्ठित वि द्यालयमें दर्शनशास्त्र पढ़ा था। इसके बादसे ये रोम महानगरीमें रहने लगे थे। यहां रोमके सम्भ्रान्तमें कई बार वक्तृताएं दी। धीरे धीरे ट्रजन, यहूद, प्लिनि और मारीन आदिके साथ इनकी मित्रता हो गई। वृद्धा वस्थामें ये अपनी जन्मभूमि लौटे। इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमें विद्वज्जीवनी (Lives of illustrious men) और नीति ग्रन्थ सर्वोत्कृष्ट हैं। उनका ग्रन्थ पढ़नेसे प्राचीनकालमें यूरोपमें नरबलि प्रथा प्रचलित थी, इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। १२० ई०में इनकी जीवन लीला समाप्त हुई।

प्लुति (सं० स्त्री०) प्लु भावे क्तिन्। १ प्लवन, उछल कूदकी चाल। २ पोर। ३ वह पद जो तीन मात्राओंमें बोला गया हो।

प्लुष (सं० पु०) १ दाह, जलना। २ पूर्त्ति। ३ स्नेह, प्रेम।

प्लुषि ( सं० पु० ) प्लुष बाहुल्यात् कि। १ वन्तुल्य तुण्डयुक्त खगभेद, बगलेके जैसा एक प्रकारका पक्षी। २ दाहक सर्पभेद। ३ अन्य परिमाण पुत्तिकादि।

प्लुष्ट ( सं० त्रि० ) दग्ध, जला हुआ। सुश्रुतमें इसका लक्षण इस प्रकार लिखा है--

"यत्र यद्विवर्ण प्लुष्यतेऽतिमात्र तत् प्लुष्ट।"

( सुश्रुत सू० ११ अ० )

पीडित स्थानमें क्षारका प्रयोग करनेसे जो विवर्णता होती है, उसे प्लुष्ट कहते हैं।

प्लेग ( अ० पु० ) भयङ्कर रूप धारण कर जाड़े में फैलने वाला संक्रामक रोग। इसके फैलने पर बहुसंख्यक व्यक्तियोंकी मृत्यु होती है। इसमें रोगीको बहुत तेज ज्वर आता है और जांघ या बगलमें गिलटी निकल आती है। यह रोग प्राय तीन चार दिनमें ही रोगीके प्राण हर लेता है। प्रवाद है, कि छठी शताब्दीमें यह रोग पहले पहल लेवांटसे यूरोपमें गया था और वहींसे अनेक देशोंमें फैला। १६०० ई०से भारतवर्षमें इसका विशेष प्रकोप था, पर अब कुछ कम हो गया है।

प्लेट ( अ० पु० ) १ किसी धातुका पत्तर या पतला चौड़ा हुआ टुकड़ा, चादर। २ धातुका बना हुआ वह चौड़ा पत्तर जिस पर कोई लेख आदि खुदा या बना हो। ३ छिछली थाली, तश्तरी। ४ सोने चांदी आदिका बना हुआ प्याला जैसे घुड़दौड़का प्लेट, क्रिकेटका प्लेट। ५ फोटो लेनेका वह शीशा जो प्रकाशमें पहुंचते ही उस छायाको स्थायी रूपसे ग्रहण करता है जो उस पर पड़ती है। पीछेसे इसी शीशेसे फोटो चित्र छापे और तैयार किये जाते हैं।

प्लेटफार्म ( अ० पु० ) १ कोई चौकोर और समतल चबूतरा। यह किसी इमारत आदिमें इस उद्देशसे बनाया जाता है कि उस पर खड़े हो कर लोग वक्ता या उपदेश दे सकें। २ रेल्वे स्टेशनों पर बना हुआ वह ऊंचा और बहुत लम्बा चबूतरा जिसके सामने आ कर रेलगाड़ी खड़ी होती है और जिस परसे हो कर यात्री रेल पर चढ़ते या उससे उतरते हैं।

प्लेटो—ग्रीक देशीय एक विख्यात दार्शनिक। अरबोंके निकट ये 'अफलातुन' नामसे प्रसिद्ध थे। इनके पिताका नाम अरिष्टोन और माताका नाम पेरिक्टिउनि था। ४२६ ई०सन्के पहले मई मासमें आथेन्स नगरमें इन्होंने जन्म ग्रहण किया। जब इनकी उमर बीस वर्षकी थी उस समयसे ले कर आठ वर्ष तक इन्होंने सक्रेटिस नामक प्रसिद्ध दार्शनिकके निकट पाठाध्ययन किया। सक्रेटिससे इन्हें जो कुछ उपदेश मिलता था, उन्हें वे लिपिबद्ध करते जाते थे। पीछे मिस्र, इटली आदि स्थानोंमें कुछ काल ठहर कर ये पुनः आथेन्स लौटे। यहां इन्होंने परिषद् ( Academy ) में पढ़ना आरम्भ कर दिया। नये डयुनिसियसने इन्हें अपनी सभामें बुलाया था। किन्तु ये खुशामदी टट्टू थे नहीं, कि जहां तहां बुलाने पर चले जायं। ये बड़े ही स्पष्टवक्ता थे। कठोर हृदयके डयुनिसियस इन पर हमेशा रञ्ज रहा करते थे। इस कारण उन्होंने प्लेटोको कैद कर क्रीतदासरूपमें किरिनी (Cyrene) वासी आनिकेरसके यहां बेच डाला। आनिकेरसने इनके गुण पर मुग्ध हो इन्हें मुक्तिदान दिया। अनन्तर जन्मभूमि लौट कर ये अपने दर्शनतत्त्वके प्रचारमें लग गये। इनके उपदेश गुरुशिष्यके प्रश्नोत्तरके ढंग पर लिखे हुए हैं। उसमें गुरु सक्रेटिस ही वक्ता हैं। उन उपदेशोंमें बहुतसे वेदान्तिक भाव मिश्रित हैं। प्लेटोका आदि नाम आरिष्टोक्लिस था। किन्तु प्रशस्त ललाट रहनेके कारण इनका 'प्लेटो' नाम रखा गया। ८२ वर्षकी अवस्थामें ई०सन्के ३४८ वर्ष पहले इनका देहान्त हुआ। दार्शनिक आरिष्टटल इन्होंके छात्र थे।

प्लैटिनम (अ० पु०) चांदीके रंगकी एक मशहूर कीमती धातु। यह धातु १८वीं शताब्दीके मध्य दक्षिण अमेरिकासे यूरोप गई थी। इस धातुमें कई धातुओंका कुछ न कुछ मेल अवश्य रहता है। जितनी धातु हैं, सबोंसे यह अधिक भारी होता है और इसके पत्तर पीटे या तार खींचे जा सकते हैं। यह आगसे नहीं गल सकती। बिजली अथवा कुछ रासायनिक क्रियाओंकी सहायतासे गलाई जाती है। इसमें न तो मोरचा लगता और न तेजाबों आदिका कोई प्रभाव ही पड़ता है। यही कारण है, कि लोग बिजली तथा अनेक रासायनिक कार्योंमें इसका व्यवहार करते हैं। रूसमें कुछ दिनों तक इसके सिक्के भी चलते थे। यह केवल दक्षिण अमेरिकामें ही

जहाँ, बङ्गाल पर्यन्त सभी बोर्नियो द्वीपमें भी पाई जाती है।

प्लोत (सं० क्ली०) प्र वै क्त, सम्प्रसारण लस्य ल। १ मुखरतीत प्रान्तस्थापरणभेद। प्रपल्ल देखो। २ पित्तविकारविशेष, पित्तका विकार जो मुंहमें गिरता है। ३ कर्पट, गुदड़, लत्ता। ४ पट्टी।

प्लोष (सं० पु०) प्लुष भावे घञ्। १ दाह। भावे ल्युट्। (क्ली०) २ प्लोषण, दाह।

प्सा (सं० स्त्री०) प्सा-भावे अङ्। भक्षण, खाना।

प्सात (सं० त्रि०) प्सा कर्मणि क्त। भक्षित, जो खाया गया हो।

प्सान (सं० क्ली०) प्सा भावे-ल्युट्। भोजन।

प्सु (सं० पु०) प्सा बाहुल्कात् कु। रूप, चेहरा।

प्सुर (सं० त्रि०) प्सु-बाहु० अस्त्यर्थे र। रूपयुक्त, रूपवान्।

## फ

फ—हिन्दी वर्णमालामें बाईसवां व्यञ्जन और पवर्गका दूसरा वर्ण। इसके उच्चारणका स्थान ओष्ठ है और इसके उच्चारणमें आभ्यन्तर प्रयत्न होता है। इसे उच्चारण करनेमें जीभका अगला भाग होंठोंसे लगता है। इसलिये इसे स्पर्शवर्ण कहते हैं। इसके बाह्यप्रयत्न, विवार, श्वास और अघोष हैं। इसकी गिनती महाप्राणमें होती है।

फ-कार रक्तविद्युल्लतासदृश, चतुर्वर्गप्रद, पञ्चदेव स्वरूप, पञ्चप्राणमय, त्रिगुण और आत्मादि तत्त्वसंयुक्त तथा त्रिगुण सहित है। इसकी कुण्डली ब्रह्मा, विष्णु और रुद्ररूपिणी है। इसके वाचक शब्द ये सब हैं—सखी, दुर्गिणी धूम्रा, वामपार्श्व, जनार्द्दन, जया, पाद, शिखा, रौद्री, फेत्कार, शाखिनीप्रिय, उमा, विहङ्गम, फाल, कुब्जिनी, प्रियपावक, प्रलयाग्नि, नीलपाद, अक्षर, पशुपति, शशी, फुत्कार, यामिनी, व्यक्ता, पावन, मोहवर्द्धन, निष्कल्याण, अहङ्कार, प्रयाग, ग्रामणी और फल।

(नाना तन्त्रशास्त्र)

"प्रत्यग्रारुणवर्णाभां लोलजिह्वां चतुर्भुजाम्।
भक्ताभयप्रदां नित्यां नानालङ्कारभूषिताम्॥
एवं ध्यात्वा फकारन्तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्॥"

(वर्णोद्धारतन्त्र)

इस प्रकार ध्यान करके फकारका दस बार जप करना होता है। मातृकान्यासमें इस वर्ण द्वारा वाम पार्श्वमें न्यास किया जाता है। काव्यके आदिमें इस वर्णका प्रयोग नहीं करना चाहिये, करनेसे दुःखलाभ होता है।

फ (सं० क्ली०) फल अन्यत्रापहारे ड। १ रूक्षोक्ति, रूखा वचन। २ फुत्कृति, फुफकार। ३ निष्फल भाषण। ४ वर्द्धापन। ५ झञ्झावात, अन्धड़। ६ जृम्भानिस्सार, जम्हाई। ७ यक्षक। ८ रफान। ९ स्फुट। १० फललाभ। ११ मुग्धबोधोक्त संज्ञाविशेष।

फक (हिं० स्त्री०) फांक देखो।

फक्का (हिं० पु०) सूखे दाने या बुकनीकी मात्रा जितनी एक बार मुंहमें फांकी जा सके। २ खण्ड, टुकड़ा।

फकी (सं० स्त्री०) १ सूखी फांकनेकी चूर्ण आदिकी पुड़िया, फांकनेकी दवा। उतनी दवा जितनी एक बारमें फांकी जाय।

फग (हिं० पु०) १ बन्धन, फन्दा। २ अनुराग, राग।

फण्ड (अं० पु०) वह धन या सम्पत्ति जो किसी नियत काममें लगानेके लिये एकत्र की जाय।

फन्द (हिं० पु०) १ बंध, बंधन। २ दुःख, कष्ट। ३ नाथ की कड़ी फंसानेका फन्दा, गुंज। ४ रहस्य, मर्म। ५ छल, धोखा। ६ जाल, फांस।

फन्दना (हिं० क्रि०) १ फन्देमें पड़ना, फंसना। २ उल्लङ्घन करना, लांघना।

फन्दरा (हिं० पु०) फन्दा देखो।

फन्दवार (हिं० वि०) फन्दा लगानेवाला।

फन्दा (हिं० पु०) १ रस्सी तागे आदिका घेरा जो किसी को फंसानेके लिये बनाया गया हो, फांद। २ पाश, जाल। ३ कष्ट, दुःख।

फन्दाना (हिं० क्रि०) १ जालमें फंसाना, फंदेमें लाना। २ कुदाना, उछालना।

फंफाना (हिं० क्रि०) १ शब्द उच्चारणके समय जिह्वाका कांपना, हकलाना। २ आग पर खौलने दूधका फेन छोड़ कर ऊपर उठना।

फंसना (हिं० क्रि०) १ बंधनमें पड़ना, पकड़ा जाना। २ अटकना, उलझना।

फंसनी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी हथौड़ी जिससे कसेरे लोटे, गगरे आदिका गला बनाते हैं।

फसाना ( हिं० क्रि० ) १ वशीभूत करना, अपने जाल या वशमें लाना। २ फदेमें लाना, बझाना। ३ अटकाना।

फँसिहारा ( हिं० वि० ) फदयार, फँसानेवाला।

फक ( हिं० वि० ) स्वच्छ, सफेद। २ बदरंग। ( स्त्री० ) ३ दो मिली हुई चीजोंका अलग अलग होना, मोक्ष।

फकडी ( हिं० स्त्री० ) दुर्गति, दुर्दशा।

फकत ( अ० वि० ) १ पर्याप्त, अलम्, बस। २ केवल, सिर्फ।

फकीर ( अ० पु० ) १ भीख मांगनेवाला, भिखमगा। २ साधु, संसारत्यागी। ३ निर्धन मनुष्य, वह मनुष्य जिसके पास कुछ न हो।

फकीर—मुसलमान भिक्षुक-सम्प्रदाय। भिक्षावृत्तिसे ही ये जीवनधारण करते हैं। फकीरोंके मध्य भिन्न भिन्न श्रेणियां हैं। भारतवर्षमें इस प्रकारकी केवल दश श्रेणी देखी जाती हैं। जलालउद्दीन मुलानी सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता थे। यूरोपीय तुरष्कके मध्य फकीरकी प्राय ६० विभिन्न श्रेणियां हैं। इनमेंसे कनस्तान्तिनोपलके वतासीगण निरीश्वरवादी हैं। ये महम्मदको नहीं मानते और न उनके बनाये कुरान शास्त्र पर ही विश्वास रखते हैं। सभी सुफी और अलीप्रवर्त्तित सिया-सम्प्रदायभुक्त हैं। यहांके रफाइ दरवेशगण शारीरिक कष्टको ही मोक्षलाभका प्रधान उपाय समझते हैं। भारतवर्षमें एक श्रेणीके फकीर हैं जो हमेशा मुसलमान तीर्थोंमें घूमा करते हैं। प्रायः सभी फकीर बहुत दूर पश्चिम हाङ्गेरि राज्यमें जा कर तुर्कस न्यासो गुल्बावाके पवित्र क्षेत्रका दर्शन करते हैं। पूर्व दक्षिण सिंहल आदि स्थानोंमें भी दौड़ लगाते हैं। साधारणतः भारतवासी फकीर धर्मप्रभावहीन और नीच समझे जाते हैं। ये सभी प्रायः 'बे सेरा' हो गये हैं अर्थात् कोई भी महम्मदके उपदेशानुसार कार्य नहीं करता। जो अब भी 'बासेरा' हैं अर्थात् धर्मका पालन करते आ रहे हैं उन्हें 'सालिक' कहते हैं।

फकीर साधारणतः कब्रिस्तान, आस्तानामें रहना पसन्द करते हैं, या यों कहिये, कि फकीरको जहां रात हो गई वहीं सराय है। कादिरिया या बनावागण अपनेको घोग्दादवासी सैयद अबदुल कादेर जिलानीके शिष्य बतलाते हैं। चिस्तिगण बन्दनवाजको अपना धर्मगुरु मानते हैं। आज भी कुलवर्गामें उन महात्माका पवित्र क्षेत्र विद्यमान है। ये सभी सिया-सम्प्रदायभुक्त हैं। सुतारियागण अबदुल्ल सुतार इ नाकके शिष्य और तत्मतावलम्बी हैं। तबकातिया या मदारियागण अपनेको शाह मदारके शिष्य बतलाते हैं। मलङ्गगण शाह मदारके पादानुध्यात जामन यतिके और रफाई या गुर्जमारगण सैयद अहमद फकीर रफाईके शिष्य हैं। इनका ईश्वर पर ऐसा विश्वास है कि ये अपना हाथ काट कर पुनः उसे जोड़ सकते हैं। इसी विश्वासके बल पे स्वेच्छासे अपना अंग प्रत्यंग काट डालते हैं। जलालियागण सैयद जलालउद्दीन बोखारीके शिष्य हैं। सोहागियागण मूसा सोहागके अनुचर बतलाते हैं। ये लोग सब समय स्त्रियोंकी तरह वेशभूषा पहनते तथा गीतवाद्य और नृत्यादि करते हैं। नक्सबन्दियागण नक्सबन्दी बासी वहा-उद्दीनके शिष्य हैं। ये लोग रातको अपने हाथमें चिराग ले कर भीख मांगने निकलते हैं। बेओया पियादीगण साधारणतः श्वेत वस्त्र पहना करते हैं। जिस प्रकार हिन्दू लोग साधु सन्यासिका सम्मान करते हैं उसी प्रकार मुसलमान लोग फकीरका। कहावत है—फकीरको तीन चीजें चाहिये, फाका, कनात और रियाज, अर्थात् फारसीमें फकीर हरफोंसे लिखा जाता है, फे से फाका ( व्रत ), काफसे कनात ( सन्तोष ) और रे से रियाज ( मेहनत )।

फकीर—एक धर्मसम्प्रदाय। कुछ दिन हुए, बङ्गालके गोआड़ी कृष्णनगरके अञ्चलमें फकीर नामक एक उपासक सम्प्रदाय प्रवर्त्तित हुआ है। इस सम्प्रदायमें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही जातिके लोग हैं। अधिकांश मुसलमान हैं, हिन्दूकी संख्या थोड़ी है। हिन्दूफकीर सभी गृहस्थ हैं, मुसलमानोंमें भी उदासीनकी संख्या बहुत थोड़ी है। ये लोग पीर पैगम्बर आदि कुछ भी नहीं मानते।

सेरिं साहबने भी एक श्रेणीके हिन्दू फकीरकी कथाका उल्लेख किया है।* ये लोग साधारण गोसाईं-सम्प्रदायके हैं। इनमेंसे बहुतेरे मूर्ख हैं और देवताविशेषके उपासक हैं। जो विद्वान् हैं वे ब्रह्मचर्यका अवलम्बन करके मन्दिरमें पूजापाठमें अपना समय बिताते हैं। परन्तु सभी

* Mr Sherring's Hindu Tribe and Caste

फकीर तीर्थयात्रा करते और दर दर भीख मांगते हैं। पीत वस्त्र ही इनका पहनावा है। स्फटिकादिकी एक माला गलेमें और एक हाथमें पहन कर इधर उधर घूमते फिरते हैं। ये कपालमें, नाकमें, दोनों हाथोंमें और छातीमें तिलक लगाते हैं।

फकीर—बिलग्रामवासी एक मुसलमान कवि, मीर तथा ऊौम अमीरी उपाधि। १७०४ ई०में उनकी मृत्यु हुई।

फकीर अलीबेग—बुलन्दशहरके शासनकर्त्ता। ये सम्राट् हुमायू के शासनकालमें (१५३८ ई०में) वर्त्तमान थे।

फकीरगञ्ज—बङ्गालके दिनाजपुरके अन्तर्गत एक वाणिज्य स्थान और गण्डग्राम। यहां चावल और पटसन आदिका बड़ा कारोबार है।

फकीर, मीर समसुद्दीन—दिल्लीनिवासी एक मुसलमान कवि। ये 'मफतून' नामसे ही विशेष परिचित थे। १७६५ ई०में ये दिल्लीका त्याग कर लखनऊ शहरमें बस गये। यहीं पर १७६७ ई०में उनकी मृत्यु हुई। यों तो ये और कविताएं लिख गये हैं, पर 'दीवान' और ताम्बूल व्यवसायीके पुत्र रामचांदके इतिहासके आधार पर लिखित 'तसवीरमुहब्बत नामक मसनवी ही प्रसिद्ध है।

फकीरहाट—बङ्गालके खुलना जिलेके अन्तर्गत एक थाना और गण्डग्राम। यहां चावल, सुपारी, नारियल और चीनीकी काफी आमदनी होती है। सुन्दरवनके मध्य यह स्थान सबसे ऊंचा है। यहां खजूरके रसमे गुड़ और चीनी बनाई जाती है।

फकीराना—मुसलमान साधु या फकीरोंके भरण पोषणार्थ दी हुई निष्कर भूमि आदि।

फकीरी (हिं० स्त्री०) १ भिखमंगापन। २ साधुता। ३ दरिद्रता। ४ एक प्रकारका अंगूर।

फक्त—शूरसेनके एक राजा।

फक्किका (सं० स्त्री०) फक्क 'धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्' इति वार्त्तिकोक्त्या ण्वुल्, टापि अत इत्वं। १ असद्व्यवहार, अनुचित व्यवहार। २ धोखेबाजी। ३ यह जो शास्त्रार्थमें दूसरे पक्षको स्पष्ट करनेके लिये पूर्वपक्षरूपसे कहा जाय गूढ़ प्रश्न।

फखर (फा० पु०) गौरव, अभिमान।

फखरी—हीरातवासी एक मुसलमान ग्रन्थकार। ये मीरजा सुल्तान महम्मद अमीरीके पुत्र थे। उन्होंने स्त्रीकवियों की जीवनी पर 'जवाहिर उल् अजायब' नामक एक ग्रन्थ लिखा है। ये शाह तहमास्प तथा उनके शासनकालमें सिन्धु प्रदेश आये थे। तहफा-उल हबीब नामक उनका बनाया हुआ एक दूसरा गजलसंग्रह भी पाया जाता है। १५६० ई०में ये विद्यमान थे।

फखर उद्दीन आबू महम्मद बिन् अली आउबैले—एक धार्मिक मुसलमान पण्डित। उन्होंने तबाइन उल् हकायक नामक 'कज़ल् उद्दकायक' नामक पुस्तककी एक टीका लिखी है। उसमें ये सूफी मतका खण्डन करके हनिफी मतकी पोषकता की है। यह पुस्तक भारतवासी मुसलमानोंकी बड़ी ही रोचक है। १३४२ ई०में उनकी जीवन-लीला शेष हुई।

फखरउद्दीन जुनान—सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक शाह के बड़े लड़के। पिताके राज्यारोहणके बाद ये दिल्लीके युवराज पदपर प्रतिष्ठित हुए। १३२५ ई०में जब इनके पिता इस लोकसे चल बसे, तब इन्होंने महम्मदशाह तुगलक १म नाम धारण कर दिल्लीके सिंहासन पर अधिकार किया। महम्मदशाह तुगलक देखो।

फखर उद्दीन मालिक—बङ्गालके एक मुसलमान राजा।

फखर उद्दीन मौलाना—दिल्लीवासी एक मुसलमान कवि, निज़ाम उल् हकके पुत्र। निज़ाम उल अकायद और रिसाला मार्जिया नामक दो ग्रन्थोंके अलावा और भी कितने ग्रन्थ इनके बनाये हुए मिलते हैं। इनकी काव्योपाधि सैया उन सुभारा थी। १७८५ ई०को ७३ वर्षकी अवस्थामें उनकी मृत्यु हुई। दिल्लीके कुतुबुद्दीन बख्तियारकी दरगाहके द्वारदेश पर इनकी कब्र आज भी देखनेमें आती है। मुसलमान समाजमें ये धार्मिक समझे जाते थे।

फखरउद्दीन सुल्तान—बङ्गालके अन्तर्गत सुवर्णग्रामके मुसलमान अधिपति। ये १३५६ ई०में लक्ष्मणावतीके मुसलमानराज समसुद्दीनसे यमालय भेजे गए और उनका राज्य लक्ष्मणावतीके अन्तर्भुक्त कर लिया गया।

फखर उद्दौला—एक उन्नतमना मुसलमान शासनकर्त्ता। १७३५ ई०में दिल्लीश्वर महम्मदशाहके शासनकालमें इन्होंने पटनाका शासन भार ग्रहण किया

फखरपुर—१ अयोध्या प्रदेशके बहराइच जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यहां सरयू, भकोशा, घघरा आदि नदियां बहती हैं। भूपरिमाण ३८३ वर्गमील है। इस सम्पत्तिके वर्त्तमान सत्त्वाधिकारी कपूरथलाके महाराज हैं। लाहोर-राज रणजितसिंहके ख्यातिनामा दो पौत्र सरदार फते सिंह और जगज्योतिसिंहने चाहलारिराजको यह स्थान दान किया था। नृ दीरानके विद्रोही होने पर यह स्थान उनसे छीन कर कपूरथलाके राजाको दे दिया गया।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान ग्राम। यह अक्षा० २७ २५´ उ० और देशा० ८१ ३१´ पू०के मध्य अवस्थित है। पहले यह अहीरोंके अधिकारमें था। सम्राट् अकबरने इस स्थानको उक्त परगनेका सदर बनाया और यहां एक दुर्गका भी निर्माण किया। राजस्व संग्रहके लिये एक तहसील स्थापित हुई। १८१८ ई० तक यह दुर्ग और धनागार तहसीलदारके अधीन रहा। पीछे जबसे यह नृ दीराजके इलाकेमें आया तबसे उक्त दुर्ग जनहीन हो गया है। यहां शोरा तैयार होता है।

फगवाड़ा—१ पञ्जाबके कपूरथला राज्यकी तहसील। यह अक्षा० ३१ ६´ से ३१ ३१´ उ० और देशा० ७५ ४४´ से ७५ ५६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ११८ वर्गमील है। इसमें १ शहर और ८८ ग्राम लगते हैं। राजस्व दो लाख रुपयेसे ऊपर है।

२ उक्त तहसीलका प्रधान शहर। यह अक्षा० ३१ १४´ उ० और देशा० ७५ ४७´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या पन्द्रह हजारके करीब है। यहां वाणिज्य-व्यवसाय जोरों चलता है, इस कारण जनसंख्या भी धीरे धीरे बढ़ती जा रही है। शहरमें एक हाई स्कूल और चिकित्सालय है।

फगु—पञ्जाबके अन्तर्गत केउथल राज्यके अधिकृत एक स्थान। यह सिमला पर्वतसे ६ कोस पूर्व कोटगड़ जानेके रास्ते पर अक्षा० ३१ ६´ उ० और देशा० ७७ २१´ पू०के मध्य अवस्थित है। यह सुरम्य स्थान अङ्गरेजोंको अतिप्रिय है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ६ हजार फुट है। सिमलाके अङ्गरेज अधिवासी और वैदेशिक भ्रमणकारियोंके लिये वृटिश सरकारने एक विश्राम भवन बनवा रखा है। पर्वतके ढालुप्रदेशस्थ वनको जला कर लोग यहां आलूकी खेती करते हैं।

फगुआ (हिं० पु०) १ होलिकोत्सवका दिन। होली देखो। २ फागुनके महीनेमें लोगोंका वह आमोद प्रमोद जो वसन्तऋतुके आगमनके उपलक्षमें माना जाता है। इसमें लोग परस्पर एक दूसरे पर रंग कीच आदि डालते हैं और अनेक प्रकारके विशेषतः अश्लील गीत गाते हैं। होल देखो। ३ वह वस्तु जो किसीको फागके उपलक्षमें दी जाय। ४ फागुनके महीनेमें गाये जानेवाले गीत, विशेषतः अश्लील गीत।

फगुआना (हिं० क्रि०) किसीके ऊपर फागुनके महीनेमें रंग छोड़ना या उसे सुना कर अश्लील गीत गाना।

फगुन (स० पु०) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

फगुनहट (हिं० स्त्री०) १ फागुनमें चलनेवाली तेज हवा। इस हवाके साथ बहुत-सी धूल और वृक्षोंकी पत्तियां आदि भी मिली रहती हैं। २ फागुनमें होनेवाली वर्षा।

फगुनियाँ (हिं० पु०) तिलसन्धि नामक फूल।

फगुहरा (हिं० पु०) फगुहारा देखो।

फगुहारा (हिं० पु०) १ फगुआ गानेवाला पुरुष। २ वह जो फाग खेलनेके लिये होलीमें किसीके यहां जाय।

फजर (अ० स्त्री०) प्रातःकाल, सवेरा।

फजल (अ० पु०) अनुग्रह, मेहरबानी।

फजल उल्ला खाँ—१ महिसुरराज हैदरअलीका विख्यात सेनापति। इसने १७६४ ६५ ई०के मध्य सदाशिवगढ़, धारवार आदि स्थानोंमें कई बार महाराष्ट्र-सेनाको विपर्यस्त कर डाला था। महाराष्ट्र देखो।

२ सम्राट् बाबरके सभास्थ एक अमीर। १५८६ ई०में बनाई हुई इनकी एक मसजिद आज भी विद्यमान है।

फजल हक—एक मुसलमान ग्रन्थकार। ये खैराबादवासी फजल इमामके पुत्र थे। अपने पिताके जैसे ये भी अनेक गद्य पद्यकी रचना कर गये हैं। १८५७ ई०के गदरमें आपने बन्दाके विद्रोही नवाबके साथ मिल कर अङ्गरेजोंके विरुद्ध युद्ध किया था। १८५८ ई०के दिसम्बरमासमें

जेनरल पेरिगरके विरुद्ध गोद युद्धमें आप मारे गये ।०

फजिर ( हि ० स्त्री० ) फजर देखो ।

फजिल ( हि ० पु० ) फजल देखो ।

फजीलत ( अ ० स्त्री० ) उत्कृष्टता, श्रेष्ठता ।

फजीहत ( अ ० स्त्री० ) दुर्दशा, दुर्गति ।

फजीहती ( हि ० स्त्री० ) फजीहत देखो ।

फजूल ( अ ० वि० ) व्यर्थ, निरर्थक ।

फजूलखर्च (फा० वि०) अपव्ययी, बहुत खर्च करनेवाला ।

फजूलखर्ची ( फा० स्त्री० ) अपव्यय, व्यर्थ व्यय करना ।

फञ्जिका ( स ० स्त्री० ) भाजिः रोगानिति भञ्ज आमर्दने ण्वुल् पृषोदरादित्वात् भस्य फ, टापि अत इत्व । १ ब्राह्मणयष्टिका, भारगी नामका क्षुप । २ देवताड । ३ दुरालभा, जवासा । ४ दन्तिवृक्ष ।

फञ्जिपत्रिका ( स ० स्त्री० ) फञ्जिरोगहारक पत्र यस्याः कप्, टाप् अतो इत्व । १ आखुपर्णी, मूसाकानी । २ वनस्पतिभेद ।

फञ्जी ( स ० स्त्री० ) भञ्ज भञ्ज, पृषोदरादित्वात् भस्य फ, गौरादित्वात् ङीष् । १ भार्गी, ब्रह्मनेटि नामक क्षुप । २ गुल्मावृक्ष । ३ वृक्षदारकवृक्ष । ४ योजनवल्ली ।

फञ्जीरक ( स ० पु० ) फञ्जी ।

फञ्जाकादिपञ्चक (स ० पु०) फञ्जी आदि करके पांच प्रकार का साग, फञ्जी, जीवन्ती, पद्म, तण्डुली और क्षुद्रक यही पांच प्रकारके साग । इसका गुण वातहारक, ग्राहक, दीपन, रुचिकर, त्रिदोषनाशक, पथ्य, ग्राहक और बलकर माना गया है ।

फट् ( स ० अव्य० ) १ अनुकरणशब्द । २ अस्त्रबीज, मन्त्रोंका अस्त्र नामक मन्त्रभेद । इस मन्त्रका शान्ति कुम्भस्थापन, अर्घ्यपात्रस्थापन, अर्घ्यजल द्वारा पूजोपकरण में अभ्युक्षण, भूततरोपगत विघ्नोत्सारण, दिग्विक्षेपण, गन्धपुष्प द्वारा करशोधन, अघमर्षण, पार्ष्णिघातताडन, परावृत्यास भूमिप्रोक्षण, होमाग्निके क्रव्यादांशपरित्याग, होमाग्निमें आघात, तदग्नि प्रोक्षण आदिमें प्रयोग होता है । ( त्रि० ) ३ विशीर्णादि ।

---

० सिद्धान्तमें लिखा है, कि चित्तौरके सिंहलवंशमुख राजा [illegible] और [illegible] फजल [illegible] दीपावली [illegible] किया था ।

फट ( स ० पु० स्त्री० ) स्फुट् विकसने पचाद्यच्, पृषोदरादित्वात् साधु । १ फणा । २ दम्भ, पाखण्ड । ३ विनय, छल, धोखा ।

फट ( हि ० स्त्री० ) १ किसी फैले तलकी हलकी पतली चीजके हिलने या गिरने पड़नेका शब्द । २ फट् देखो ।

फटक ( हि ० पु० ) १ स्फटिक, बिल्लौर पत्थर । (वि०) २ तत्क्षण, झट ।

फटकन ( हि ० स्त्री० ) वह जो फटक कर निकाला जाय ।

फटकना (हि ० क्रि०) १ हिल कर फट फट शब्द करना । २ सूप पर अन्न आदिको हिला कर साफ करना । ३ रुई आदिको फटकेसे धुनना । ४ फेंकना, पटकना । ५ चलाना, मारना । ६ पहुंचना, जाना । ७ अलग होना, दूर होना । ८ श्रम करना, हाथ पैर हिलाना । ९ तड़फड़ाना, हाथ पैर पटकना ।

फटकरी ( हि ० स्त्री० ) फिटकरी देखो ।

फटका ( हि ० पु० ) १ रुई धुननेकी धुनियेकी धुनकी । २ तड़फड़ाहट । ३ रस और गुणसे हीन कविता, कोरी तुकबन्दी । ४ वह लकड़ी जो फले हुए पेड़ोंमें इसलिये बांधी जाती है, कि रस्सीके हिलानेसे वह उठ कर गिरे और फटफटका शब्द हो जिससे चिड़ियां उड़ जायं अथवा पेड़के पास न आयें । ५ एक प्रकारकी ऊसर भूमि । ऐसी भूमिमें पत्थरके टुकड़े भी होते हैं जिससे वह उपजाऊ नहीं होती ।

फटकाना ( हि० क्रि०) १ अलग करना, फेंकना । २ फट कनेका काम किसी दूसरेसे कराना ।

फटकार ( हि ० स्त्री ० ) १ दुतकार, झिड़की । २ शाप । धिक्कार देखो ।

फटकारना (हि ० क्रि०) १ शस्त्र आदि मारना, चलाना । २ झटका दे कर फेंकना । ३ अलग करना, दूर करना । ४ एकमें मिला हुई बहुत सी चीजोंको एक साथ हिलाना या झटका मारना जिसमें वे छितरा जांय । जैसे, दाढ़ी फटकारना । ५ लाभ उठाना, लेना । ६ कपड़ेको अच्छी तरह पटक पटक कर धोना । ७ खरी और कड़ी बात कह कर चुप करना ।

फटकिया ( हि ० पु० ) मोंठा नामक एक प्रकारका विष ।

यह गोवरियासे कम चिपैला होता है और उससे छोटा भी होता है।

फटकी (स० स्त्री०) स्फटिकारी, फिटकरी।

फटकी (हि० स्त्री०) १ एक प्रकारका पिंजड़ा जो टोकरी-के आकारका होता है। इसमें चिड़ीमार चिड़ियोंको पकड़ कर रखते हैं। २ फटका देखो।

फटना (हि० क्रि०) १ आघात लगनेके कारण अथवा यों ही किसी पोली चीजका इस प्रकार टूटना या खंडित होना अथवा उसमें दरार पड़ जाना जिसमें भीतरकी चीजें बाहर निकल पड़ें अथवा दिखाई देने लगे। २ किसी घने तरल पदार्थमें कोई ऐसा विकार उत्पन्न होना जिससे उसका पानी और सार भाग दोनों अलग अलग हो जायँ। ३ किसी बातका बहुत अधिक होना। ४ झटका लगनेके कारण या और किसी प्रकार किसी वस्तुका कोई भाग अलग हो जाना। ५ किसी पदार्थका बीचसे फट कर छिन्न भिन्न हो जाना। ६ पृथक् हो जाना, अलग हो जाना। ७ असह्य वेदना होना, बहुत अधिक पीड़ा होना।

फटफट (हि० स्त्री०) १ फटफट शब्द होना। २ व्यर्थकी बात, बकवाद। ३ जूते आदिके पटकनेका शब्द।

फटफटाना (हि० क्रि०) १ व्यर्थ बकवाद करना। २ हिला कर फट फट शब्द करना। ३ टक्कर मारना, इधर उधर फिरना। ४ प्रयास करना, हाथ पैर मारना। ५ फट फट शब्द होना।

फटा (स० स्त्री०) फट क्रिया टाप्। १ फणा, सांपका फन।

"निर्विषेणापि सर्पेण कर्त्तव्या महती फटा।
विष भवति मा वास्तु फटाटोपो भयङ्करः॥"
(पञ्चतन्त्र ३।८२)

२ दम्भ, घमंड, गरूर। ३ छल, धोखा।

फटा (हि० पु०) छिद्र, छेद।

फटिक (पा० पु०) १ कांचकी तरह सफेद रंगका पार-दर्शक पत्थर, बिल्लौर। २ सङ्ग-मरमर, मरमर पत्थर।

फटिका (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी शराब। यह जौ आदिसे खमीरको उठा कर बिना खींचे बनाई जाती है।

फटिकारी (स० स्त्री०) समामख्यात क्षारविशेष, फिटकरी (Alumen, Alum), भिन्न भिन्न देशमें यह भिन्न भिन्न नाम से प्रसिद्ध है,—तैलङ्ग—पटिकुरम, तामिल—पडिका रम, दाक्षिणात्य—फटकी, गुजरात—फटकरी, बम्बई—फटिकी, बङ्गाल—फटकिरी। इसका गुण—मलग्राही, सङ्कोचक, अपूतिकर, बालविसूची, उदरामय और नासा रक्तस्रावमें हितकर, तथा कटु, स्निग्ध और कषाय एवं प्रदररोग, मेहकृच्छ्र, वमन और शोथनाशक है।

विशेष विवरण फिटकरी शब्दमें देखो।

फट्टा (हि० पु०) १ चीरी हुई बाँसकी छड़, फल्टा। २ टाट।

फट्टी (हि० स्त्री०) बांसकी चिरी हुई पतली छड़।

फड़ (हि० स्त्री०) १ जूआ खेलनेकी एक रीति। एक चौकू टी गोलीकी एक एक पीठ पर कुछ शून्य चिह्न बने होते हैं। एक ओर ५ और दूसरी ओर ७ आदि चिह्न रहते हैं। अब उस गोलीको किसी एक बरतनमें रख कर जमीन पर औंधे रख देते हैं। जुआरी उस गोटीके शून्यचिह्नके अनुसार ५, ७, ३, २ आदि जिसे जैसा सूझता है, उसीके अनुसार बाजी रखता है। बाजी रखनेके बाद उस बरतनको हाथसे अलग कर लेते हैं। अब उस जमीन पर पड़ी हुई गोटीके ऊपर जो चिह्न रहता है उसीके अनु-सार हार जीत होती है, अर्थात् उस गोटीके ऊपरवाले चिह्न पर बाजी रखी है उसकी जीत और और सबोंकी हार मानी जाती है। पहले इस खेलका बहुत प्रचार था। पर अब आईनके अनुसार दण्डनीय हो गया है।

२ जूएका दाँव जिस पर जुआरी बाजी लगा कर जूआ खेलते हैं। ३ पक्ष, दल। ४ वह स्थान जहां जुआरी एकत्र हो कर जूआ खेलते हों, जूएका अड्डा। ५ वह स्थान जहां दूकानदार बैठ कर माल खरीदता या बेचता हो। ६ वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है, चरख। ७ गाड़ीका हरसा। ८ फर देखो।

फड़क (हि० स्त्री० फड़कनेकी क्रिया या भाव।

फड़कन (हि० स्त्री०) १ फड़कनेकी क्रिया या भाव, फड़-फड़ाहट। २ धड़कन। ३ उत्सुकता, लालसा। (वि०) ४ भड़कनेवाला। ५ तेज, चंचल।

फड़कना (हि० स्त्री०) १ फड़ फड़ करना, फड़फड़ाना। २ गति होना, हिलना डोलना। ३ स्थिर रहना, तड़

फड़ाना। ४ पक्षियोंका पर हिलना। ५ किसी अंगमें गति उत्पन्न होना।

फड़वाना (हिं० क्रि०) १ दूसरेको फड़कनेमें प्रवृत्त करना। २ विचलित करना, हिलाना। ३ उत्सुक बनाना, उमंग दिलाना।

फड़कापेल्न (हिं० पु०) एक प्रकारका बैल। इसका एक सींग तो सीधा ऊपरको होता है और दूसरा नीचेको झुका होता है।

फड़नवीस—महाराष्ट्र राज्यकर्मचारीविशेषका पद। पहले यह पद बहुत ऊंचोंका माना जाता था जो राजसभामें रह कर साधारण लेखकोंका काम करते थे। पर पीछे यह पद उन लोगोंका माना जाने लगा जो दीवानी या मालविभागके प्रधान कर्मचारी होते थे। ये लोग लगान वसूल करनेवालोंका हिसाब जांचा और लिया करते थे। बड़े बड़े इनाम और जागीर देनेकी व्यवस्था ये ही लोग किया करते थे।

महाराष्ट्रराज-सरकारमें बहुतोंने फड़नवीसपदका भोग किया है, पर उनमेंसे नानाफड़नवीसका नाम भारतके इतिहासमें विशेष प्रसिद्ध है। नाना फड़नवीस देखो।

फड़फड़ाना (हिं० क्रि०) १ फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना, हिलाना। २ फड़फड़ शब्द होना। ३ घबराना। ४ तड़फड़ाना। ५ उत्सुक होना।

फड़िङ्गा (सं० स्त्री०) फडिति शब्द इङ्गति गच्छतीति इङ्ग गतौ अच् टाप्। १ झिल्लीरव, झींगुर। २ पतङ्ग, पतिंगा।

फड़िया (हिं० पु०) १ सामान्य द्रव्यविक्रेता, वह बनिया जो फुटकर अन्न बेचता हो। २ वह पुरुष जो जुआ खेलनेका व्यापार करता हो, जुएके अड्डेका मालिक।

फड़ी (हिं० स्त्री०) एक गज चौड़ी एक गज ऊंची और सौ गज लम्बी पत्थरों या ईंटों आदिकी ढेरी।

फड़ोल्ना (हिं० क्रि०) किसी चीजको उलटना पलटना, इधर उधर या ऊपर नीचे करना।

फण (सं० पु०) फणति विस्तृतिं गच्छतीति फण अच्। १ सर्पका विस्तृत मस्तक, सांपका फन। पर्याय—फणा, फट, स्फटा, फट, स्फट, स्फटा, स्फी, भोग, स्फुट, स्फुटा, दर्वी, फटी। इस शब्दके अन्तमें धर, कर, भृत्, वत् शब्द लगा कर बनाया हुआ समस्त पद सांपका बोधक बनाता है। २ प्राणमार्गके दोनों ओर स्रोतोमार्ग प्रतिरुद्ध मर्मद्वय। मर्मन् देखो। ३ रस्सीका फंदा, मुद्दी। ४ नावमें ऊपरके तख्तेकी वह जगह जो सामने [illegible]के पास होती है, नावका ऊपरी अगला भाग।

फणकर (सं० पु०) फणं करं करोतीति, फणस्य करो या। भुजङ्ग, सर्प।

फणधर (सं० पु०) धरतीति धृ अच् फणस्य धर। सर्प, सांप।

फणधरधर (सं० पु०) फणधरस्य सर्पस्य धरः। शिव, महादेव।

फणभृत् (सं० पु०) फणं बिभर्ति इति भृ क्विप् तुक् च। सर्प।

फणवत् (सं० पु०) फणोऽस्यास्तीति फण मतुप्, मस्य व। सर्प।

फणा (सं० स्त्री०) फणति प्रसारसङ्कोचं गच्छतीति फण गतौ अच् टाप्। सर्पफणा, सांपका फन।

फणाकर (सं० पु०) करोतीति कृ अच्, फणायाः करः। सर्प।

फणाधर (सं० पु०) धरतीति धृ अच्, फणायाः धरः। सर्प।

फणाभर (सं० पु०) बिभर्त्ति धरतीति भृ पचाद्यच्। सर्प।

फणावत् (सं० पु०) फणा अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व। सर्प।

फणि (सं० पु०) विष।

फणिक (हिं० पु०) नाग, सांप।

फणिका (सं० स्त्री०) फणोत्पुष्पविरिका, वाले गुन्दका पेड़।

फणिकार (सं० पु०) वृहत्संहितोक्त देशभेद, एक प्राचीन देशका नाम जो वृहत्संहिताके अनुसार दक्षिणमें था।

फणिकेशर (सं० क्ली०) फणीव केशरोऽस्य नागकेशर। नागकेसर।

फणिखेल (सं० पु० फणिना सह खेलतीति खेल अच्। भारतपक्षी।

फणिचक्र (सं० क्ली०) फण्याकारं चक्रं। फलित ज्योतिषके अनुसार नाड़ीचक्रका नाम। यह एक सर्पाकार चक्र

होता है। इसमें भिन्न भिन्न स्थानों पर नक्षत्रोंके नाम लिखे रहते हैं। इन सब नक्षत्रोंका वेध देख कर विवाहका शुभाशुभ निर्णय किया जाता है। इस चक्रके पृष्ठमें १, ६, ७, १२, १३, १८, १९, २४, २५ नक्षत्र और मध्यमें २, ५, ८, ११, १४, १७, २०, २३ और २६ नक्षत्र तथा कोडमें ३, ४, ६ १०, १५, १६, २१, २२, २३ नक्षत्र सरिथत हैं। इस चक्रसे विवाहके समय वर और कन्याकी नाडीका मिलान किया जाता है। पर यदि वर और कन्या दोनों एक ही राशिके हों, तो इस चक्रका मिलान नहीं होता।

फणिचम्पक ( स० पु० ) वनचम्पकवृक्ष, जगली चम्पा।

फणिजा ( स ० स्त्री० ) फणीव जायते जन-ड। फणिमनसावृक्ष, एक प्रकारकी तुलसी जिसकी पत्तियां बहुत छोटी होती हैं।

फणिजिह्वा ( स ० स्त्री० ) फणिजिह्वेन आकृतिरस्त्यस्य इति अच्। १ महाशतावरी, बडी सतावर। २ महासमङ्गा, कगहिया नामक ओषधि।

फणिजिह्विका ( स ० स्त्री० ) १ श्वेत शारिवा, कगहिया नामक ओषधि। २ महाशतावरी, बडी सतावर।

फणिज्झक ( स० पु० ) फणिनामुज्झकः, बहिष्कारक उत्पादक इति यावत् पृषोदरादित्वात् साधु, फणितुल्य बहुपत्रपुष्पवत्त्वात् यथात्व। १ क्षुद्रपत्र तुलसी, छोटे पत्तेकी तुलसी। २ श्यामा तुलसी। ३ मधुर जम्बीर, मीठा नीबू। ४ पलाशवृक्ष।

फणित ( स० त्रि० ) फण-गतौ-क्त। १ गत। २ निःस्नेहित।

फणितल्पग ( स० पु० ) फणी शेष इव तल्प फणितल्प तस्मिन् गच्छतीति गम-ड। विष्णु। भगवान् विष्णु। कल्पान्तमें अनन्तशय्या पर सोते हैं, इसीसे उनका फणितल्पग नाम पडा है।

फणिन् ( सं० पु० ) फणास्त्यस्येति फणा ( व्रीह्यादिभ्यश्च। पा ५।२।११६ ) इति इनि। १ सर्प, साप। २ सर्पिणी नामक ओषधि। ३ केतु नामक ग्रह। ४ सीसक, सीसा। ५ मरुवक नामक ओषधि, मरुआ।

फणिपति ( स ० पु० ) फणीन्द्र देखो।

फणिप्रिय ( स० पु० ) वायु, हवा।

फणिफेन ( स ० पु० ) फणिना फेन-इव उग्रगुणत्वात्। अहिफेन, अफीम।

फणिभारिका ( स ० स्त्री० ) कृष्णोदुम्बरवृक्ष, काले गूलरका पेड।

फणिभुज ( स ० पु० ) फणिम भुङ्क्ते भुज क्विप्। पन्नगाशन, गरुड।

फणिमुक्ता ( स ० स्त्री० ) मुक्ताभेद, सापकी मणि। मुक्ता देखो।

फणिमुख ( स ० क्ली० ) फणिन इव मुखमस्य। प्राचीन कालका चोरोंका एक प्रकारका औजार जिससे वे सेंध लगानेके समय मट्टी खोद कर फेंकते थे।

फणिलता ( स ० स्त्री० ) नागवल्लीलता, पान।

फणिवल्ली ( स ० स्त्री० ) फणीव दीर्घा वल्ली। नागवल्ली।

फणिसम्भारा ( स ० स्त्री० ) कृष्ण उदुम्बर, काला गूलर।

फणिहन्त्री (स ० स्त्री०) फणिनो हन्तीति हन् तृच, ङीप्। गन्धनाकुली, नेउरकन्द।

फणिहारी ( स ० पु० ) कपिकच्छु।

फणिहृत् ( स ० स्त्री० ) फणिनो हरति सगन्धेन अपसारयतीति हृ क्विप् तुगागमश्च। क्षुद्र दुरालभा, जवासा।

फणी ( स ० पु० ) फणिन् देखो।

फणीन्द्र (स ० पु०) फणिना इन्द्र। १ शेष। २ वासुकि। ३ बड़ा साप।

फणीयम् ( स ० क्ली० ) पद्मकाष्ठ।

फणीश ( स ० पु० ) फणिनामीशः। सर्पेश्वर। फणीन्द्र देखो।

फण्ड ( स ० पु० ) फणति फण गतौ ड ( ञमन्ताड्डः। उण् १।११३ ) उदर।

फतनाराज—गुजरोंका एक प्रसिद्ध दलपति। सिपाही विद्रोहके समय साहारनपुर अञ्चलमें इन्होंने अङ्गरेजोंको तंग तंग कर डाला था। आखिर १८५७ ई०के जूनमासमें ये अङ्गरेजोंसे अच्छी तरह परास्त हुए।

फतवा (अ० पु०) मुसलमानोंके धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो उस धर्मके आचार्य या मौलवी आदि किसी कर्मके अनुकूल या प्रतिकूल होनेके विषयमें देते हैं।

फतवा —फतुआ देखो।

फतह (अ० स्त्री०) १ विजय, जीत। २ कृतकार्यता, सफलता।

फतहमंद (अ० वि०) जिसे फतह मिली हो जिसकी जीत हुई हो।

फतहाबाद—फतेहाबाद देखो।

फतिंगा (हिं० पु०) एक प्रकारका उड़नेवाला कीड़ा। यह कीड़ा विशेषतः बरसातके दिनोंमें अग्नि या प्रकाशके आस पास मँडराता हुआ अन्तमें उसीमें गिर पड़ता है, पतिंगा।

फतीलसोज (फा० पु०) १ पीतल या और किसी धातु की दीवट। इसमें एक या अनेक दीये ऊपर नीचे बने होते हैं। इसमें तेल भर कर बत्तियां जलाई जाती हैं। उन दीयोंमें किसीमें एक, किसीमें दो और किसीमें चार चार बत्तियां जलती हैं। इसे चौमुखी भी कहते हैं। २ कोई साधारण दीवट, चिरागदान।

फतीला (अ० पु०) १ जरदोजीका काम करनेवालोंकी लकड़ीकी तीली। इस पर बेलबूटा और फूलोंकी डालियां बनानेके लिये कारीगर तारको लपेटते हैं।

फतुआ—पटना जिलेका एक नगर और रेल स्टेशन। यह अक्षा० २५° ३०´ उ० और देशा० ८५° २१´ पू० पटना शहरसे ८ मील दूर पुनपुन और गङ्गाके सङ्गम पर अवस्थित है। गङ्गा सङ्गम पर बसे रहनेके कारण यह तीर्थस्थानरूपमें गिना जाता है। यहां वर्षमें ५ मेले लगते हैं। जिसमेंसे वारुणीउपलक्षको स्नानोपलक्षमें जो मेला लगता है, वह सबसे बड़ा है। इस समय लाख से ऊपर मनुष्य एकत्र होते हैं।

फतूर (अ० पु०) १ दोष, विकार। २ उपद्रव, खुराफात। ३ विघ्न, बाधा। ४ हानि, नुकसान।

फतूरिया (अ० वि०) जो किसी प्रकारका फतूर या उत्पात करे, उपद्रवी।

फतूह (अ० स्त्री०) १ विजय, जीत। २ लूटका माल। ३ विजयसे प्राप्त धन आदि, वह धन जो लड़ाई जीतने पर मिला हो।

फतूही (अ० स्त्री०) १ एक प्रकारकी पहननेकी कुरती। यह सिर्फ कमर तक होती है और इसके सामने बटन या घुंडी लगाई जाती है। आस्तीन इसमें नहीं होती। २ बंडी, सलूका। ३ विजय या लूटका धन, लड़ाई या लूटमें मिलाहुआ माल।

फतेअली—तलपुरमीरोंके एक सरदार। सिन्धुदेशमें कल्होराओंने कुछ दिन तक राज्य किया। पीछे फतेअली ने अपरापर बलूचियोंकी सहायतासे उन्हें भगा कर सिन्धु प्रदेश पर अधिकार जमाया। वे एकच्छत्र अधिपति होना चाहते थे। पर ऐसा नहीं हुआ। आत्मीय विच्छेद और रक्तपातका सूत्रपात हुआ। अब फतेअली मीरपुर आदि कुछ स्थानोंका परित्याग कर तीनों भाइयोंके साथ हैदराबादमें राज्य करने लगे।

सिन्धुप्रदेश देखो।

फते खाँ—निजामशाही राज्यके एक सर्वमय कर्त्ता, मालिक अम्बरके ज्येष्ठ पुत्र। मालिक अम्बरकी मृत्युके बाद १६२६ ई०में फते खाँ निजामशाही राज्यके अभिभावक हुए थे। पदलाभके बाद ही उन्होंने निजाम उल मुल्क की सलाहसे मुगलोंके साथ युद्ध ठान दिया। इधर श्रेष्ठ क्षमता हाथमें आ जानेसे वे धीरे धीरे अत्याचारी हो गये। १६२९ ई०में सुलतान निजामशाह (२य) बालिग हुए। फते खाँके हाथ कुल अधिकार छीनना ही उनका पहला काम था। उनका उद्देश्य भी फलीभूत हुआ। मकरिब खाँकी सहायतासे उन्होंने फते खाँ को कैद कर लिया। मूर्तजा भी उपयुक्त बुद्धिशक्तिके अभावसे सबोंके अप्रिय हो उठे। शाहजी भोंसलेने उनका पक्ष छोड़ कर मुगलोंका पक्ष लिया। दुर्भिक्ष और शत्रुके आक्रमणसे वे तङ्ग तङ्ग आ गये। इस समय मुगलसेनापति आजम खाँकी उत्तेजनासे मूर्तजाने पुनः फते खाँको पूर्वाधिकार प्रदान किया। इस भलाई का फल उलटा ही निकला। फते खाँ सारी हाथमें सारी क्षमता पा कर मूर्तजा निजामके विरुद्ध खड़े हो गये। विजयपुरके शाहने मुगलोंके विरुद्ध लड़ाई ठान दी। फते खाँने उनका साथ दिया। इस युद्धमें वे कभी विजयपुरका और कभी मुगलोंका साथ देते थे इस कारण दोनोंहीकी निगाहमें वे विश्वासघातक ठहराये गये। आखिर १६३, ई०में मुगलसेनापति महब्बतखाँने दौलताबादमें फते खाँको सारी फौजसे घेर लिया। निजामशाही राज्यका पतन आसन्न समझ कर फते खाँ मुगल

सेनापतिके निकट आत्मसमर्पण करनेको बाध्य हुए। इसके बादसे ये मुगलोंके अधीन काम करने लगे।

फतेगञ्ज ( पूर्व )—युक्तप्रदेशके बरेली जिलान्तर्गत एक ग्राम। इसके दो विभाग हैं, पूर्व और पश्चिम। यह अक्षा० २८ ४´ उ० और देशा० ७६ ४२´ पू० बरेलीसे शाहजहानपुर जानेके रास्ते पर अवस्थित है। १७७४ ई०में यह स्थान अङ्गरेज-रोहिला-युद्धकी रङ्गभूमि हो गया था। इस युद्धमें रोहिला-सरदार हाफिज रहमत् खाँकी मृत्यु हुई। अयोध्याके नवाब वजीर सुजाउद्दौलाने अङ्गरेजोंको जय घोषणाके लिये यहां वर्त्तमान ग्राम बसाया। इसके बाद ये सब स्थान उनके दखलमें आ गये।

फतेगञ्ज ( पश्चिम )—उक्त बरेली जिलेका एक ग्राम। यहां भी १७६४ ई०के अक्तूबर मासमें अङ्गरेजों और रोहिलोंका युद्ध हुआ। इस बार भी रोहिलोंकी ही हार हुई थी। इस युद्धक्षेत्रमें दो रोहिला-सरदारोंकी कब्र और मृत-अङ्गरेजसेनाकी समाधिके ऊपर जो स्मृति स्तम्भ स्थापित हुआ था वह आज भी देखनेमें आता है।

फतेगढ—१ पञ्जाबके पतियाला राज्यके अन्तर्गत अमरगढ निजामतकी एक तहसील। यह अक्षा० ३० ३३´से ३० ५६´ उ० और देशा० ७६ १७´से ७६ ४२´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २४३ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे उपर है। इसमें बसी और सरहिन्द नामके २ शहर और २४७ ग्राम लगते हैं।

फतेगढ—युक्तप्रदेशके फर्रुखाबाद जिलेका सदर। यह अक्षा० २७ २४´ उ० और देशा० ७६ ३५´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या सोलह हजारसे ऊपर है।

पहले यह स्थान अयोध्याके नवाब-वजीरोंके अधिकारमें था। १८०० ई०में जब यह अङ्गरेजोंको सुपुर्द किया गया, तब यहां गवर्नर जेनरलके एजेण्ट साहबका सदर स्थापित हुआ। १८०४ ई०में होलकररावने फतेपुर दुर्ग पर धावा बोल दिया। पीछे लार्ड लेकके आने पर वे हार खा कर भागे। अनन्तर १८५७ ई०में सिपाही-विद्रोहके समय यह स्थान अङ्गरेजोंके खूनसे तर हो गया था। अङ्गरेज लोग अवरोधके समय दुर्गकी रक्षा करके भी अपनेको न बचा सके। पलातकोंमेंसे कुछ तो नदीमें विद्रोहियोंके हाथ डुबोये गये और कुछ कानपुर भागते समय नाना साहबके शिकार बन गये थे। जो आश्रय पानेके लिये इधर उधर भटक रहे थे, वे भी धृत हो कर तीन मास कारागारमें रखे गये और पीछे यमराजके मेहमान बने। उन मृत देहको एक कूपमें डाल कर ऊपरसे एक स्मृति-स्तम्भ खड़ा कर दिया गया है।

आज भी यहां मीरटविभागका सेनावास है। १८१८ ई०में यहां वृटिश गवर्मेण्टकी गन कैरेज फैकृरी ( Gun-Carriage Factory ) स्थापित हुई। १८३० ई०में काशीपुर ( कलकत्तेके उत्तर ) की सेण्ट्रल फैकृरीके उठ जानेके बादसे सेनाविभागके कमानगाडी थानादि यहां पर ही बनाये जाते हैं।

ईसाइयोंने यहां अनाथ बालक बालिकाओंके लिए एक मकान बनवा दिया है। यहांके लोग कृषिकार्य द्वारा अपना गुजारा चलाते हैं। यहां गन-कैरेज फैकृरीके अलावा एक मिडिल स्कूल, बहुतसे प्राइमरी स्कूल, एक बालिका स्कूल तथा एक ऐसा स्कूल है जिसमें केवल यूरोपियन तथा यूरोपियनके लड़के पढते हैं।

२ पञ्जाबके गुरुदासपुर जिलान्तर्गत फतेगढ तहसीलका एक नगर। यहां कामीरी शालका विस्तृत कारबार होता है।

फतेजङ्ग—१ पञ्जाबके अन्तर्गत रावलपिण्डी जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३३ १´से ३३ ४५´ उ० और देशा० ७२ २३´से ७३ १´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ८६६ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान नगर। इसका प्राचीन हिन्दुनाम खास है। यहां अति प्राचीन और पूर्वतन ग्रीक राजाओंके समयकी मुद्रा पाई गई है। यहां जलाभाव होने पर भी नगरकी अवस्था खराब नहीं है। कालाबाग और खुसालगढ तक दो बडी बडी सड़कें चली गई हैं जिससे वाणिज्य व्यवसायको विशेष सुविधा है। नगरसे आध कोस दूर २२५ फुट लम्बा, १६० फुट चौडा और २६। फुट ऊँचा मट्टीका एक टीला है। इस स्तूप परके प्रस्तरादिका गठन देखनेसे मालूम होता है, कि हिन्दूप्रभावकालमें यहां एक बड़ा दुर्ग था। उसके

उत्तर पथ स्तुप्त मन्दिरका भग्नावशेष नजर आता है। इस स्थानको यहाँके लोग चामरेरी कहते हैं। इसके पूर्वमें और भी कितने छोटे छोटे स्तूप देखे जाते हैं जिनका व्यास ३० फुट है। प्रवाद है कि चार राजाके इस वृहत् स्तूपमें प्रचुर धन गड़ा हुआ है। किस उपाय से उस स्तूपमेंसे यह धन निकाला जा सकता है वह शायल्पिण्डोंके मुसल्मानसाधियोंके पास एक पुस्तकमें लिखा है, किन्तु कोई भी इस ओर ध्यान नहीं देते।

फतेमहम्मद खाँ नायक—विख्यात महिसुरराज हैदरअलीके पिता। है० अली देखो।

फते पञ्जाल—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक गिरिमाला। इसके दक्षिण काश्मीरकी उपत्यका भूमि है। यह अक्षा० ३३ ३४ उ० और देशा० ७४ ४० पू०के मध्य अवस्थित है। इसकी ऊँचाई १७ हजार फुट और लम्बाई ४० मील है।

फतेपुर—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद विभागके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २५ २६´ से २६ १६´ उ० और देशा० ८०° १४´ से ८१ २०´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें गङ्गानदी, पश्चिममें कानपुर, दक्षिणमें यमुना और पूर्वमें इलाहाबाद जिला है। भूपरिमाण १६१८ वर्गमील है।

उत्तर और दक्षिणमें गङ्गा तथा यमुना नदीके बहनेसे यह जिला दोआबके अन्तर्भुक्त हुआ है। पहले बहुत-सी स्रोतस्वती हिमालय पर्वतसे निकल कर इस स्थान हो कर बहती थी। आज भी उनका निदर्शन पाया जाता है। समन्त्रिय पाण्डु, सिन्द और पुन नदी प्रवाहित भूभागकी दृश्यावली अतीव मनोहर है। जिलेके मध्य भागमें कुछ झीलें भी हैं जिनसे कृषिकार्यमें विशेष सुविधा होती है। पश्चिममें पर्वतसम्भव बबूलवन है।

बहुत प्राचीनकालसे ही यहां भील नामक असभ्य जातिका वास है। रामायणमें लिखा है, कि रामचन्द्र यहां पर गुहकके अतिथि हुए थे। यह स्थान बहुत समय तक अर्गल राजवंशके अधिकारमें रहा।(१) इस वंशके राजाओंने कन्नौजराजके दलमें मुसलमानोंके विरुद्ध युद्ध किया था। कन्नौजराजकी पराजय होने पर भी सम्राट् अकबरशाहके शासनकाल पर्यन्त इन्होंने स्वाधीनता अक्षुण्ण रखी थी। अकबरने सामान्य कारणोंसे असन्तुष्ट हो कर अर्गलराज्यके विरुद्ध सेना भेजी। युद्धमें हिन्दूराज मारे गये और उनका दुर्ग तथा प्रासाद भूमिसात् कर डाला गया। इसके बाद मुगल-सम्राट्ने राजस्व वसूल करनेके लिये यह प्रदेश असोथरके ठाकुर राजाओंके हाथ सौंपा।

इसके समीप ही स्नेपा नगरका ध्वंसावशेष प्राचीनता का परिचायक है। राजा कुशध्वजने इसे बनाया था।

विस्तृत विवरण कुश् वा नगरमें देखो।

११९५ ई०में शाहबुद्दीन गोरीने इस स्थानको लूटा। तभीसे यह स्थान दिल्लीके शासनाधीन हुआ। १३९५ ई०में फतेपुर, कोरा और महोबा नामक स्थान मालिक उल शर्क नामक किसी शासनकर्ताके अधीन था। उन्होंने अपने बाहुबलसे तैमुरके भीषण आक्रमणसे देशरक्षा की थी। उन्हींके सुशासनसे राज्य भर शान्ति विराजती थी। मुगलसाम्राज्यके अधिष्ठानके पहले भी यह नष्ट नहीं हुआ। १५२९ ई०में बाबरने इस स्थानको दखल किया। उस समय भी यह स्थान पठानराजाओंका केन्द्र स्थल था। उन्होंने बड़े साहससे युद्ध करके मुगलोंके राज्यस्थापनकी आशा धूलमें मिला दी थी। हुमायूनके सिंहासन पर अधिरूढ़ होने पर भी शेरशाहने यहां सैन्य संग्रह करके उन्हें मार भगाया था। दिल्ली राजवंशकी शासनक्षमता जब घुण्ढी पर आई, तब फतेपुरका शासन अयोध्याराजके हाथ सौंपा गया। कोराके जमींदार भगवन्तके बुलाने पर १७३६ ई०में मराठोंने इस प्रदेशको लूटा और १७५० ई० तक यह उन्हींके दखलमें रहा। पीछे फर्रुखाबादके पठानोंने यह स्थान मराठोंके हाथसे छीन लिया। इसके तीन वर्ष बाद अयोध्याके स्वाधीन वजीर सफदरजङ्गने उसे जीत कर निज राज्यभुक्त किया।

१७६१ ई०में अयोध्याके नवाब दिल्लीके अधीनताका पाश को तोड़ कर स्वाधीन हो गये। १७६५ ई०में अंगरेज राजने उन्हें स्वतन्त्र राजाके जैसा स्वीकार किया। उसी सालकी सन्धिके अनुसार फतेपुर सम्राट् शाह आलमके दखलमें हुआ। परन्तु १७७४ ई०में उक्त सम्राट्के मराठोंके हाथ आत्म…

(१) कन्नौजसे इलाहाबाद पर्यन्त इनका राज्य विस्तृत था।

पर उनके पूर्वदेशीय राज्य नवाव वजीरने ५० लाख रुपयेमें अंगरेजोंसे खरीद लिये। १७९८ ई०में यहांकी पूर्वसमृद्धिका ह्रास हुआ। वजीरके यहां राज-कर बाकी पड़ जानेके कारण १८०१ ई०में इलाहाबाद और कोरा अंगरेजोंके हाथ लगा। इस समय फतेपुरका कुछ अंश इलाहाबादमें और कुछ कानपुरमें मिला दिया गया तथा १८१४ ई०में गङ्गाके किनारे बिठुर नगरमें नई राजधानी बसाई गई।

१८५७ ई०के जूनमासमें सिपाही-विद्रोहके समय इस स्थानके गृहादि जला दिये गये और अङ्गरेज अधिवासियोंका यथासर्वस्व लूटा गया था। निराश्रय रमणियों और बालिकाओंमें हाहाकार मच गया था। विद्रोहीदल अङ्गरेजको देखते ही जानसे मार डालते थे। प्रायः एक मास तक फतेपुर सिपाहियोंके अधिकारमें रहा। ३०वीं जूनको जेनरल नीलने मेजर रेणडको इलाहाबादसे कानपुर भेजा। ११वीं जुलाईको जेनरल हेवलकने वागामें जा कर रेणडका साथ दिया। १२वीं जुलाईको विद्रोहीदल अच्छी तरह परास्त हुए। इसके बाद अङ्गरेजोंकी गोलावृष्टिसे विद्रोहियोंको फतेपुरसे भागना पड़ा। १५वीं जुलाईको हेवलकने औङ्गकी ओर अग्रसर हो कर विद्रोहियोंको पाण्डुनदीके उस पार मार भगाया। इस नदीके किनारे दूसरी बार दोनों पक्षमें लड़ाई छिड़ी। पीछे सिपाही-दल कानपुरको भाग गये, लेकिन तो भी अङ्गरेजराज इस स्थानको अपने दखलमें न कर सके। जब तक लखनऊ नगरका पतन नहीं हुआ और लार्ड क्लाइवकी सेनाने ग्वालियरके विद्रोही सेनादलको मार न भगाया, तब तक सभी लोग अङ्गरेज शासनकी उपेक्षा करते रहे थे।

इस जिलेमें ५ शहर और १४०३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या सात लाखके करीब है। गङ्गातीरवर्ती शिवराजपुरका तीर्थक्षेत्र हिन्दूका एक पवित्र स्थान है। शस्यके अलावा यहां तमाकू और पीतलके बरतन तथा सोडेका विस्तृत कारबार है। शिवराजपुरमें कार्त्तिकमासमें एक मेला लगता है। इस समय नाना स्थानोंके पण्यद्रव्यके अलावा मवेशी, छागल, भेड़, घोड़े आदि भी बिकने आते हैं। यहां १८३७ और १८६८ ई०में घोर अकाल पड़ा था।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछे पड़ा हुआ है। जिले भरमें १७७ सरकारी और १८० खानगी स्कूल हैं। स्कूलके अतिरिक्त यहां ६ अस्पताल हैं जहां रोगियोंकी अच्छी चिकित्सा की जाती है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५ ४३´से २६ ४´ उ० और देशा० ८० ३८´से ८१ ४ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ३५६ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसमें इसी नामका एक शहर और ३७४ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका प्रधान नगर। यह अक्षा० २५´ २६´ उ० और देशा० ८० ५० पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय १६२८१ है। बहुत प्राचीनकालसे यह नगर स्थापित है। सम्राट् बाबरने अपने इतिवृत्तमें इसका उल्लेख कर गये हैं। औरङ्गजेबके शासनकालमें इसकी बहुत कुछ उन्नति हुई थी। अयोध्याके सचिव नवाब बाकरअली खांका समाधिस्तम्भ और मसजिद तथा कीरामली हाकीम अबदुल हुसेनका धर्ममन्दिर ही उल्लेख योग्य है। यहां चमड़े, साबुन, चाबुक और अनाजका विस्तृत कारबार है।

फतेपुर—१ अयोध्याके बारवांकी जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २६ ५८ से २७ २१´उ० और देशा० ८० ५६ से ८१ ३५´पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५२१ वर्गमील और जनसंख्या प्राय ३३५४०७ है। इसमें २ शहर और ६५३ ग्राम लगते हैं। फतेपुर, कुर्सी, महम्मदपुर, बिठोली, रामनगर और बादोसराय आदि परगने इसके अन्तर्गत हैं।

२ उक्त तहसीलका एक परगना। भूमिपरिमाण १५४ वर्गमील है। यह प्रसिद्ध खानजादान शेखों आदि वासस्थान है। लखनऊके ख्यातनामा सेखजादागण फतेपुरके सेखजादा वंशसम्भूत हैं।

३ उक्त बारवांकी जिलेका प्रधान नगर। यह अक्षा० २७ १०´ उ० देशा० ८१ १४´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या लगभग ८१८० है। मुगलसाम्राज्यकी उन्नतिके साथ साथ इस नगरकी श्रीवृद्धि हुई थी। आज भी उन सब मुसलमान निर्मित अट्टालिकादिका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है। नसिरउद्दीन हैदरके कर्मचारी मौलवी

उत्तर एक सुमहत् मन्दिरका भग्नावशेष नजर आता है। इस स्थानको यहाके लोग चामधेरी कहते हैं। इसके पूर्वमें और भी कितने छोटे छोटे स्तूप देखे जाते हैं जिनका व्यास २० फुट है। प्रवाद है, कि चास नगर-के इस वृहत् स्तूपमें प्रचुर रत्न गडा हुआ है। किस उपाय से उस स्तूपमेंसे यह अर्थ निकाला जा सकता है वह रावलपिण्डीके मुद्राव्यवसायियोंके पास एक पुस्तकमें लिखा है, किन्तु कोई भी इस ओर ध्यान नहीं देते।

फतेमहम्मद खाँ नायक—विख्यात महिसुरराज हैदरअलीके पिता। है १ अ ी देखो।

फते पञ्जाल—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक गिरिमाला। इसके दक्षिण काश्मीरकी उपत्यका भूमि है। यह अक्षा० ३३ ३४´ उ० और देशा० ७४ ४० पू०के मध्य अवस्थित है। इसकी ऊ चाई १७ हजार फुट और लम्बाई ४० मील है।

फतेपुर—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद विभागके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २५ २६´ से २६ १६´ उ० और देशा० ८० १४´ से ८१ २०´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें गङ्गा नदी, पश्चिममें कानपुर, दक्षिणमें यमुना और पूर्वमें इलाहाबाद जिला है। भूपरिमाण १६१८ वर्गमील है।

उत्तर और दक्षिणमें गङ्गा तथा यमुना नदीके बहनेसे यह जिला दोआबके अन्तर्भुक्त हुआ है। पहले बहुत-सी स्रोतस्वती हिमालय पर्वतसे निकल कर इस स्थान हो कर बहती थी। आज भी उनका निदर्शन पाया जाता है। एतद्भिन्न पाण्ड, रिन्द और नुन नदी प्रवाहित भूभागकी दृश्यावली अतीव मनोहर है। जिलेके मध्य भागमें कुछ झीलें भी हैं जिनसे कृषिकार्यमें विशेष सुविधा होती है। पश्चिममें पर्वतसलग्न बबूलका वन है।

बहुत प्राचीनकालसे ही यहा भील नामक अनार्य जातिका वास है। रामायणमें लिखा है, कि रामचन्द्र यहा पर गुहकके अतिथि हुए थे। यह स्थान बहुत समय तक अर्गल राजवंशके अधिकारमें रहा (१) इन सब राजा ओंने कन्नौजराजके पक्षसे मुसलमानोंके विरुद्ध युद्ध किया था। कन्नौजराजकी पराजय होने पर भी सम्राट् अकबरशाहके राज्यकाल पर्यन्त इन्होंने स्वाधीनता अक्षुण्ण रखी थी। अकबरने सामान्य कारणोंसे अप्रसन्न हो कर अर्गलराज्यके विरुद्ध सेना भेजी। युद्धमें हिन्दूराज मारे गये और उनका दुर्ग तथा प्रासाद भूमिसात् कर डाला गया। इसके बाद मुगल सम्राट्ने राजस्व वसूल करनेके लिये यह प्रदेश असोथरके ठाकुर रा ाओंके हाथ सौंपा।

इसके समीप ही हसवा नगरका ध्वंसावशेष प्राचीनत्व का परिचायक है। राजा कुशध्वजने इसे बसाया था। विस्तृत विवरण [illegible]वा शब्दमें देखो।

११९४ ई०में शाहबुद्दीन घोरीने इस स्थानको लूटा। तभीसे यह स्थान दिल्लीके शासनाधीन हुआ। १३७६ ई० में फतेपुर, कोरा और महोबा नामक स्थान मालिक उल सार्क नामक किसी शासनकर्त्ताके अधीन था। उन्होंने अपने बाहुबलसे तैमुरके भीषण आक्रमणसे देशरक्षा की थी। उन्हींके सुशासनसे राज्य भर शान्ति विराजती थी। मुगलराजवंशके अधिष्ठानके पहले भी यह नष्ट नहीं हुआ। १५२६ ई०में बाबरने इस स्थानको दखल किया। उस समय भी यह स्थान पठानराजाओंका केन्द्र स्थल था। उन्होंने बडे साहससे युद्ध करके मुगलोंके राज्यस्थापनकी आशा धूलमें मिला दी थी। हुमायुनके सिंहासन पर अधिरूढ होने पर भी शेरशाहने यहा बल संग्रह करके उन्हें मार भगाया था। दिल्ली-राजवंशकी शासनप्रभा जब बुझने पर आई, तब फतेपुरका शासन अयोध्याराजके हाथ सौंपा गया। कोराके जमींदार भगवन्तके बुलाने पर १७३६ ई०में मराठोंने इस प्रदेशको लूटा और १७५० ई० तक यह उन्हींके दखलमें रहा। पीछे फतेगढके पठानोंने यह स्थान मराठोंके हाथसे छीन लिया। इसके तीन वर्ष बाद अयोध्याके स्वाधीन वजीर सफदरजङ्गने उसे जीत कर निज राज्यभुक्त किया।

१७ १ ई०में अयोध्याके वजीर दिल्लीके अधीनता पाश को तोड कर स्वाधीन हो गये। १७६५ ई०में अगरेज-राजने उन्हें स्वतन्त्र राजाके जैसा स्वीकार किया। उसी सालकी सन्धिके अनुसार फतेपुर सम्राट शाह आलमके हस्तगत हुआ। परन्तु १७७४ ई०में उक्त सम्राट्के मराठोंके हाथ आत्म-समर्पण करने

(१) कन्नौजसे इलाहाबाद पर्यन्त इनका राज्य विस्तृत था।

पर उनके पूर्वदेशीय राज्य नवाब वजीरने ७० लाख रुपयेमें अंगरेजोंसे खरीद लिये। १७६८ ई०में यहाकी पूर्वसमृद्धिका ह्रास हुआ। वजीरके यहा राज-कर बाकी पड जानेके कारण १८०१ ई०में इलाहाबाद और कोरा अंगरेजोंके हाथ लगा। इस समय फतेपुरका कुछ अंश इलाहाबादमें और कुछ कानपुरमें मिला दिया गया तथा १८१४ ई०में गङ्गाके किनारे विठुर नगरमें नई राजधानी बसाई गई।

१८५७ ई०के जूनमासमें सिपाही-विद्रोहके समय इस स्थानके गृहादि जला दिये गये और अङ्गरेज अधिवासियोंका यथासर्वस्व लूटा गया था। निराश्रय रमणियों और बालिकाओंमें हाहाकार मच गया था। विद्रोहीदल अङ्गरेजको देखते ही जानसे मार डालते थे। प्रायः एक मास तक फतेपुर सिपाहियोंके अधिकारमें रहा। ३०वीं, जूनको जेनरल नीलने मेजर रेण्डको इलाहाबादसे कानपुर भेजा। ११वीं जुलाईको जेनरल हेवलकने खागामें जा कर रेणडका साथ दिया। १२वीं जुलाईको विद्रोहीदल अच्छी तरह परास्त हुए। इसके बाद अङ्गरेजोंकी गोलावृष्टिसे विद्रोहियोंको फतेपुरसे भागना पड़ा। १५वीं जुलाईको हैवलकने औङ्गकी और अग्रसर हो कर विद्रोहियोंको पाण्डुनदीके उस पार मार भगाया। इस नदीके किनारे दूसरी बार दोनों पक्षमें लड़ाई छिड़ी। पीछे सिपाही-दल कानपुरको भाग गये, लेकिन तो भी अङ्गरेजराज इस स्थानको अपने दखलमें न कर सके। जब तक लखनऊ नगरका पतन नहीं हुआ और लार्ड क्लाइवकी सेनाने ग्वालियरके विद्रोही सेनादलको मार न भगाया, तब तक सभी लोग अङ्गरेज शासनकी उपेक्षा करते रहे थे।

इस जिलेमें ५ शहर और १४०३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या सात लाखके करीब है। गङ्गातीरवर्त्ती शिवराजपुरका तीर्थक्षेत्र हिन्दूका एक पवित्र स्थान है। शस्यके अलावा यहा तमाकू और पीतलके बरतन तथा सोडेका विस्तृत कारबार है। शिवराजपुरमें कार्त्तिकमासमें एक मेला लगता है। इस समय नाना स्थानोंके पण्यद्रव्यके अलावा मवेशी, छागल, भेड़, घोड़े आदि भी बिकने आते हैं। यहा १८३७ और १८६८ ई०में घोर अकाल पड़ा था।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछे पड़ा हुआ है। जिले भरमें १७७ सरकारी और १८० खानगी स्कूल हैं। स्कूलके अतिरिक्त यहा ६ अस्पताल हैं जहा रोगियोंकी अच्छी चिकित्सा की जाती है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५ ४३´से २६ ४´ उ० और देशा० ८० ३८´से ८१ ४ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ३१६ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसमें इसी नामका एक शहर और ३७४ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका प्रधान नगर। यह अक्षा० २५ २६´ उ० और देशा० ८० ५० पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय १६२८१ है। बहुत प्राचीनकालसे यह नगर स्थापित है। सम्राट् बाबरने अपने इतिवृत्तमें इसका उल्लेख कर गये हैं। औरङ्गजेबके शासनकालमें इसकी बहुत कुछ उन्नति हुई थी। अयोध्याके सचिव नवाब बाकरअली खांका समाधिस्तम्भ और मसजिद तथा कोराबनी हाकीम अबदुल हुसेनका धर्ममन्दिर ही उल्लेख योग्य है। यहा चमड़े, साबुन, चाबुक और अनाजका विस्तृत कारबार है।

फतेपुर—१ अयोध्याके बारबाकी जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २६ ५८´से २७ २१´ उ० और देशा० ८० ५६´से ८१ ३५´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५२१ वर्गमील और जनसंख्या प्राय ३३५४०७ है। इसमें २ शहर और ६६३ ग्राम लगते हैं। फतेपुर, कुर्सी, महम्मदपुर, बिठोली, रामनगर और बादोसराय आदि परगने इसके अन्तर्गत हैं।

२ उक्त तहसीलका एक परगना। भूमिपरिमाण १५४ वर्गमील है। यह प्रसिद्ध खानजादाय शका आदि वासस्थान है। लखनऊके ख्यातनामा सेखजादागण फतेपुरके सेखजादा-वंशसम्भूत हैं।

३ उक्त बारबाँकी जिलेका प्रधान नगर। यह अक्षा० २७ १०´ उ० देशा० ८१ १४´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या लगभग ८१८० है। मुगलसाम्राज्यकी उन्नतिके साथ साथ इस नगरकी श्रीवृद्धि हुई थी। आज भी उन सब मुसलमान निर्मित अट्टालिकादिका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है। नसिरउद्दीन हैदरके कर्मचारी मौलवी

करमत् अलीका बनाया हुआ इमामबाडा ही यहाका प्रधान गृह है। सम्राट् अकबर शाहके समयकी बनी हुई एक मसजिद् आज भी विद्यमान है। उसके अधिकारीके निकट अकबरप्रदत्त सनद देखनेमें आती है। अलावा इसके यहा और भी कितने देवमन्दिर हैं। यहा सरकारी अदालत, अस्पताल और एक स्कूल हैं।

४ मध्यप्रदेशके होसेङ्गाबाद जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २२ ३८´उ० और देशा० ७८ ३४´पू०के मध्य अवस्थित है। मण्डलाके राजवंशके बाद यहा गोंड राजगण अर्द्धस्वाधीन भावमें राज्य करते आ रहे हैं। १८५८ ई०में तातियातोपी इसी स्थान हो कर सतपुरा पहाड पर भागे थे।

५ मध्यप्रदेशके दमोह जिलान्तर्गत एक गण्डग्राम।

६ राजपूतानेके जयपुर राज्यके अन्तर्गत शेखावटी जिलेका प्रधान नगर। यह अक्षा० २८ ०० और देशा० ७४ ५८´पू० जयपुर शहरसे ९५ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या लगभग १६३१३ है। यहा १४ स्कूल और १ डाकघर हैं।

फतेपुर चौरासी—१अयोध्याके उनाव जिलेका एक परगना। यह फद्गरशके दक्षिण गङ्गाके किनारे अवस्थित है। यहा पहले ठठेरा नामक आदिमजातिका वास था। प्राय तीन सौ वर्ष हुए, जानवार नामक राजपूत जातिने उन्हे भगा कर अपना धाम स्थापन कर लिया है।

१८५७ ई०के गदरमें यहाके अन्तिम सरदार विद्रोही दलमें मिल गये थे। फतेगढसे पलातक अंगरेजोंको पकड़कर उन्होंने कानपुरमें नाना साहबके निकट भेज दिया। उनावके युद्धमें ये मारे गये। अंगरेज सरकारने उनके एक लडकोंको फासी दी थी।

२ उक्त जिलेका एक प्रधान नगर। यह सफीपुरसे ३ कोस पश्चिममें अवस्थित है। यह स्थान क्रमानुसार ठठेरा, सैयद और जानवारोंके अधिकारमें रहा। सिपाहीयुद्धके बाद यह नगर वृटिश शासनमें मिला लिया गया। प्रतिवर्षके दशहरा उत्सवमें यहा एक मेला लगता है।

फतेपुर सिकरी—युक्तप्रदेशके आगरा जिलेका एक विभाग। भूपरिमाण २७२ वर्गमील है। उत्तङ्गन और खारी नदी तथा आगराकी नहर इस विभागमें बहती है जिससे यहाके कृषकोंको खेतीबारीमें बहुत सुविधा है। फसल भी अच्छी लगती है। मथुरा, आगरा आदि नगरोंमें जाने आनेके लिये लम्बी चौडी सडक चली गई हैं।

२ उक्त जिलेका प्रधान नगर। यहा अक्षा० २७ ५´ उ० और देशा० ७७ ४०´पू० आगरा शहरसे २३ मील अवस्थित है। जनसंख्या सात हजारसे ऊपर है। भारत इतिहास प्रसिद्ध सिकरीयुद्ध इस स्थानके पास ही हुआ था। पानीपत युद्धके बाद जब बाबरने दिल्लीमें राज्यकी प्रतिष्ठा की, तब राणा सग्रामकी आँखे खुलीं। उनका ख्याल था, कि बाबर अपने पूर्वपुरुषोंकी तरह दिल्ली लूटकर स्वदेश जायगे, पर ऐसा नहीं हुआ। वे रणजयके बाद दिल्लीमें चिरस्थायी बन्दोबस्त द्वारा मुगलराज्यकी जड मजबूत करनेकी कोशिश करने लगे। अब हिन्दू राजत्व की पुन प्रतिष्ठा करनेकी राणाकी जो इच्छा थी, उस पर पानी फेर गया। तो भी राणा जरा भी विचलित न हुए। वे वीर पुरुष थे, अपने बाहुबलसे उन्होंने मुगलोंको भारतसे मार भगानेका सकल्प किया। इस उद्देश्यसे उन्होंने कुछ राजपूतों और पठान राजकी सहायतासे बाबरके विरुद्ध युद्धघोषणा कर दी। १५२७ ई०में फतेपुर सिकरीमें दोनों पक्षमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें राजपूत और पठान-सेना मुगलोंके हाथसे अच्छी तरह परास्त हुई और उत्तर भारतमें बाबरके मुगल साम्राज्यकी भित्ति दृढरूपसे प्रतिष्ठित हुई। इसी समय हिन्दूराजाकी भाग्यलक्ष्मी सदाके लिये विदा हो गई।

सम्राट् बाबरके प्रपौत्र अकबरने १५७० ई०में मुगल दरबारकी स्थापनाके अभिप्रायसे उक्त प्रसिद्ध स्थानके पास ही इस नगरको बसाया। उनके तथा उनके पुत्र जहागीरके समय यह स्थान अनेक सुरम्य अट्टालिकाओंसे सुशोभित था। परन्तु ५० वर्ष यहा रहनेके बाद मुगल राजगण दिल्लीको चले गये। आज भी प्राचीरपरिवेष्टित पाच मील तक उस प्राचीन नगरका ध्वसावशेष दृष्टिगोचर होता है। यहा सबसे बड़ा मुसलमान मन्दिरका 'बुलन्द दरवाजा' नामक द्वारपथ देखने योग्य है। उस मन्दिरमें फकीरोंके रहनेके लिये बहुतसे घर बने हैं।

यहा मुसलमान साधु शेख सलीम चिस्तीकी कब्र

आज भी विद्यमान है। इन्हींकी कृपासे अकबरने पुत्र लाभ किया था, इस कारण उनके पुत्रका नाम सलीम रखा गया। दरगाहके उत्तर अबुल फजल और उनके भाई फैजीका आवासभवन है। अभी उस अट्टालिकामें स्कूल लगता है। पूर्वकी ओर अकबरकी प्रधान महिषीका प्रासाद है। सोपानसयुक्त उच्च स्थानमें बीरबल और खृष्टान कुमारीका आवास भवन है। प्रवाद है, कि अकबरने बीबी मरियम नाम्नी जिस पुर्तगीजकन्याका पाणिग्रहण किया था, उसके रहनेके लिये उन्होंने यह सुन्दर अट्टालिकादि बनवा दी थी। एतद्भिन्न दिवानी खास और दीवान इ आम (विचारगृह और मन्त्रणागार) नामक अट्टालिका विशेष चित्तहारी है। हस्तिद्वारका हस्तिमुण्ड सम्राट् अकबरसे नष्ट हुआ था। हिरण मिनार नामक स्मृतिस्तम्भ प्राय ७० फुट ऊंचा है। अलावा इसके और भी कितनी प्राचीन अट्टालिकायें विद्यमान हैं।

आगरेसे आज भी बहुतेरे यह श्रीहीन सौन्दर्य देखने आया करते हैं। गत सौन्दर्यके साथ साथ यह स्थान जनहीन हो गया है। १८५७ ई०में नीमच और नसीराबादके विद्रोही दलने इस स्थानको अधिकार किया था। पीछे नवम्बरमासमें यह फिरसे अङ्गरेजोंके हाथ लगा।

वर्त्तमान फतेपुर नगर उक्त ध्वसावशेषके दक्षिण पश्चिम और सिकरी ग्रामके उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। किन्तु ये दोनों ही स्थान अकबरकी प्राचीर-सीमाके अन्तर्भुक्त है। १५६६ ई०में आईन इ अकबरीमें सिकरी ग्राम मुगल राज्यका एक प्रधान स्थानके जैसा उल्लिखित हुआ है। अकबरके समय यहा बाल, रेशम और पत्थरके तरह तरहके कारुकार्य सम्पादित होते थे। अभी सूती कालीन और सफीका पार ही प्रधान व्यवसाय समझा जाता है। शहरमें केवल दो स्कूल हैं। जिनमें अङ्गरेजी और हिन्दी दोनों ही पढ़ाई जाती है।

फतेसिंह अहलूवालिया—पञ्जाबकी अहलूवालिया मिसलके एक सरदार। भागसिंहके बाद १८०१ ई०में ये ही दलपति पद पर नियुक्त हुए। इसके बाद इन्होंने सुकर्चिया दलके अधिपति ख्यातनामा रणजित्सिंहके साथ पवित्र ग्रन्थ छू कर मेल कर लिया और आपसमें पगड़ी बदल कर ली। अब दोनोंने ही मिल कर कसुरके पठानोंके विरुद्ध युद्ध यात्रा कर दी। किन्तु अकृतकार्य हो वे वितस्ता (Bea) पार कर पुन अपने दलकी पुष्टि करने लगे।

१८०५ ई०में यशोवन्तराव होल्करने अङ्गरेजोंको मार भगानेके लिये पञ्जाब सरदारसे मेल करना चाहा, पर इसी बीच १८०६ ई०में अङ्गरेजोंके साथ फतेसिंह और रणजित्‌को सन्धि हो गई। उस सन्धिके बलसे लार्ड लेकने मराठा सरदारको वितस्ताके पार मार भगाया था।

फतेसिंहके साथ रणजित्‌की मित्रता दिनों दिन गहरी होती गई। १८०६ ई०में दोनों ही शतद्रु के दक्षिण और झङ्ग प्रदेश जीतनेके लिये अग्रसर हुए। १८०७ ई०में झङ्गके सियाल सरदार अहमद खाँ विताड़ित हुए और उनका दुर्ग अधिकृत किया गया। १८०८ ई०में अङ्गरेज प्रतिनिधि सर चार्ल्स मेटकाफ जब पञ्जाब पधारे तब फतेसिंह दो हजार सेना ले कर मोहमचाँदके साथ उनके स्वागतमें आगे बढ़े। फतेसिंहकी धीर और विनय नम्र प्रकृति देख कर मेटकाफने लिखा है, कि फतेसिंहमें यदि ऐसी उदारता न रहती, तो रणजित कभी भी ऐसे उच्चमार्ग पर न पहुच सकते थे। ये किसी भी अशमें रणजित्‌से न्यून थे, मेटकाफ साहबने स्वीकार नहीं किया है।

अमृतसरमें राज्यसीमा ले कर अङ्गरेजबहादुर और महाराज रणजितसिंहमें जो सन्धि हुई थी, उस उपलक्षमें ये भी वहा उपस्थित थे। १८०६ ई०में उन दोनोंने काङ्गड़ाकी ओर युद्ध यात्रा की। १८१० ई०में रणजित्‌के मूल्तान जाने पर लाहोर और अमृतसरका रक्षाभार इन्हींके ऊपर सुपुर्द था। १८११ ई०में ये दोनों शाह सुजाके भाई सुलतान महमूदसे मिलनेके लिये रावल पिण्डी गये। उसी साल फतेसिंहने जलन्धरराज-सरदार बुधसिंहका राज्य जीत कर उनकी सारी सम्पत्ति छीन ली। काबुलके वजीर फते खाँके साथ उन्होंने १८१३ ई०को हरदे युद्धमें जो वीरता दिखलाई थी, उससे काबुली सेनापतिको जान ले कर भाग जाना पड़ा था। बहवलपुर, रजौरी, भीमवर आदि अभियानमें तथा १८१८ ई०के मूल्तान अवरोधकालमें उन्होंने भीषण युद्ध किया

था। १८१९ ई०में काश्मीर अभियानकालमें राजधानी की रक्षाका कुल दारमदार इन्हींके हाथ था। १८२१ ई०में इन्होंने मनखेरा दुर्ग फतह किया था।

बन्धुवर फतेसिंहकी वीरता पर रणजित्सिंह मन ही मन जलते थे। उनकी इच्छा थी, कि यदि वे किसी तरह फतेसिंहको इस संसारसे विदा कर सकें, तो उन्हें भविष्यमें कोई डर न रहेगा, रास्ता बिलकुल साफ हो जायगा। इसी अभिप्रायसे उन्होंने लाहोरदरबारस्थित फतेसिंहके विश्वस्त कर्मचारी कादिर बक्सके साथ षड़यन्त्र करके फकीर आजीज-उद्दीन और आनन्दराम पिण्डारीको अहलूवालिया राज्य जीतनेके लिये जलन्धर भेजा। यह संवाद पाते ही फतेसिंह जान ले कर भागे (१८२५ ई०में)। अब उन्होंने अंगरेजोंसे सहायता मांगी। किन्तु रणजित् अंगरेजराजके दोस्त थे, इस कारण उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई करना अच्छा नहीं समझा। फलतः फतेसिंह निःसहाय हो राज्य खो बैठे। पीछे दोनोंमें मेल हो गया। नवनेहाल सिंह और देशासिंहने उन्हें खोया हुआ अधिकार वापस दिया। इसके बाद फतेसिंहने विश्वासघातक कादिरबक्सके लड़कोंको कैद कर उनसे कुछ रुपये वसूल किये।

अनन्तर फतेसिंह कपूरथला जा कर सच्छन्दसे रहने लगे। १८३७ ई०के अगस्तमासमें उनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके बड़े लड़के नेहालसिंह कपूरथलाके सिंहासन पर बैठे।

फतेसिंह आजीवन सदालापी और उदारहृदयके थे। मेटकाफसाहबने लिखा है, "वे नम्र, विनयी, सत्स्वभावापन्न, सरलप्रकृतियुक्त और असीम शौर्यवान् थे।"

फतेसिंह—बड़ोदाके गायकवाड़-राजभ्राता। जब बड़ोदाका सिंहासन ले कर नाना षड़यन्त्र चलने लगा, तब इन्होंने राजकार्य चलानेका भार ग्रहण किया। गङ्गाधर शास्त्री उनके मन्त्री थे। मराठोंके साथ उन्हें अनेक बार युद्ध करने पड़े थे। प्रत्येक बार उन्होंको हार होनी गई थी। आखिर उन्होंने १७८० ई०में अंगरेजोंकी सहायता ली। परन्तु १७८० ई०में डभोई अधिकारके बाद उनकी बुद्धि बिलकुल पलट गई। उन्होंने अंगरेजोंसे अहमदाबाद नगरके लिये प्रार्थना की और उसके बदलेमें ३ हजार अश्वारोही सेनासे मदद पहुंचानेका वचन दिया। १८१३ ई०में भी अंगरेजोंने उनकी सहायता की थी, किन्तु अब भी मराठोंका क्रोध शान्त नहीं हुआ था। पेशवा उनसे ७ लाख रुपये आयकी सम्पत्ति मांगी। फतेसिंहने अपना सारा राज्य छोड़ देना चाहा। कारण, गङ्गाधर शास्त्री पहले ही पेशवाको खुश रखनेके लिये विवाह और राज्य दानके सम्बन्धमें पत्र दे चुके थे। पत्र पा कर पेशवा विवाहोल्लाससे अग्रसर हुए। गङ्गाधर इस बार बड़ी मुश्किलमें पड़ गये। इस कारण उन्हें असली बात प्रकट करनी ही पड़ी। पेशवाने क्रोधसे अन्ध हो बड़ोदाकी यात्रा की और छलसे गङ्गाधरकी बड़ी निष्ठुरतासे हत्या कर पाशव चरित्रकी पराकाष्ठा दिखलाई। कहते हैं, कि इस हत्याकाण्डमें फतेसिंहके शेष दो भाइयोंकी भी सलाह थी।

फतेह (अ० स्त्री०) विजय, जीत।

फतेहाबाद—पञ्जाबप्रदेशके हिसार जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २९° ३´ से २९° ४८´ उ० देशा० ७५° १३´ से ७६° ०´ पू० के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ११७८ वर्ग मील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसमें १ शहर और २६१ ग्राम लगते हैं। घघरीसे एक नहर काट कर तहसीलके उत्तर हो कर निकल गई है।

२ उक्त तहसीलका सदर। यह अक्षा० २९° ३१´ उ० और देशा० ७५° २७´ पू० हिसारसे ३० मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या लगभग २७८६ है। १३५२ ई०में सम्राट् फिरोजशाह अपने लड़के फतेखांके नाम पर इस नगरको बसाया। १९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें यह स्थान भट्टिसरदार खाँ बहादुरखाँके अधिकारमें था। घर्घरासे ले कर इस नगर पर्यन्त फिरोजशाहकी एक नहर दौड़ गई है। यहां देशावल, घृत और चमड़ेका भारी कारवार है।

३ उक्त तहसीलका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० २१° १´ उ० और देशा० ७८° २०´ पू० के मध्य अवस्थित है। पहले यह स्थान जाफरनगर नाम से प्रसिद्ध था। औरङ्गजेबने दाराको परास्त कर इसका फतेहाबाद नाम रखा। युद्धके बाद थकावट दूर करनेके लिये सम्राट्ने जहां विश्राम किया था वहां उन्होंने एक धर्ममन्दिर बनवा दिया जो आज भी विद्यमान है।

४ युक्तप्रदेशके आगरा जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २६° ५६´ से २७° ८´ ३० और देशा० ७७° ५५´ से ७८° २६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २४१ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें १ शहर और १६१ ग्राम लगते हैं।

फयअली हुसेनी—एक मुसलमान जीवनी लेखक। इन्होंने 'ताजकिरात् उस सुआरे हिन्दी' नामक ग्रन्थमें १०८ हिन्दी और दक्षिणदेशवासी कवियोंकी आख्यायिका लिखी है और उनकी रचना भी उद्धृत की है।

फयअली शाह—पारस्यके अधिपति। ये कजार जातिके अफगान थे, १७९७ ई०में मामाके सिंहासनके अधिकारी हुए। अफगानशत्रु जमानशाहका दमन करने और बोनापार्टीका भारतप्रवेश रोकनेके लिये कलकत्तेसे लार्ड वेलसलीने सर जान मैल्कमको दूत बना कर उक्त पारस्य राजसभामें भेज दिया।

फयउल्ला इमादशाह—बरारके शासनकर्त्ता। पहले ये दाक्षिणात्यके बाहमनी राज्यके सुलतान २य महम्मदशाह के अधीन काम करते थे। १४८४ ई०में इन्होंने दिल्लीका अधीनता पाश तोड डाला और अपनेको स्वाधीन बतला कर तमाम घोषणा कर दी। १५१३ ई०में उनकी मृत्यु हुई।

फय् उल्ला सिराजी—सिराजवासी एक पण्डित। ये दाक्षिणात्यमें बीजापुरके राजा सुल्तान अली आदिलशाहकी राजसभामें काम करते थे। आदिलकी मृत्युके बाद ये दाक्षिणात्यका परित्याग कर १५८२ ई०में दिल्ली पहुंचे।

सम्राट् अकबरशाहने उन्हें अपने साथ रखा और उच्च पद दे कर सम्मानित किया। १५८६ ई०में काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरमें उनकी मृत्यु हुई। इस समय भी सम्राट अकबरशाह उनके साथ थे।

फयखाँ (फतेखाँ)—अहमदनगरके आबिसिनिया देशीय सेनापति मालिक अम्बरके पुत्र। १६२६ ई०में पिताकी मृत्युके बाद ये दाक्षिणात्यके निजामशाही राज्यके सर्वेसर्वा हो गये। इस प्रकार असन्तुष्ट हो मुर्त्तजा निजाम शाहने उन्हें बडी चातुरीसे भैरव दुर्गमें आबद्ध रखा। वहां से किसी प्रकार भाग कर उन्होंने फिरसे राजाके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। इस बार भी बन्दीभावमें ये दौलता बाद भेज दिये गये। जो कुछ हो, कुछ समय बाद उन्हें मुक्ति मिली और निमेली (निजाम शाहकी माता) के आदेशसे सेनाध्यक्ष नियुक्त किये गये। परन्तु पीछे वे फिरसे पदच्युत न होवें, इस भयसे उन्होंने सुल्तानको उन्मादग्रस्त बतला कर कैद कर रखा और उनके सहचर उमराव आदिको यमपुर भेज दिया। इस हत्याकाण्डके विषयमें इन्होंने सम्राट् शाहजहान्को सूचित किया कि, 'उमराव-दल दिल्लीसिंहासनकी अधीनता उच्छेद करनेकी कोशिश कर रहे थे, इस कारण मैंने उन्हें यमपुर भेज कर सम्राट् की गौरवरक्षा की है।'

सम्राट् फयखाँकी सहानुभूति पर बड़े प्रसन्न हुए और सुलतानकी भी हत्या करनेको उन्होंने हुक्म दे दिया। बस! फिर क्या था, फयखाँको यह चाहते ही थे, उन्होंने १६२७ ई०में बन्दीराजको मार कर उनके लडके हुसेनको राजा बनाया। १६३४ ई०में फय खाँ आत्मसमर्पण करनेको बाध्य हुए और हुसेन निजामशाह ग्वालियरके दुर्गमें कैद रखे गये। पीछे फयखा सम्राट्का अनुग्रह लाभ कर लाहोर चले गये और वहीं जीवनके शेष पर्यन्त उन्हें २० लाख रुपया मासिक मिलता रहा।

फयशाह—बङ्गालके शासनकर्त्ता। १४८२ ई०में युसुफ शाहकी मृत्युके बाद ये सिंहासन पर बैठे। १४९१ ई०में खोजा सुल्तान साहजादाके हाथ उनकी मृत्यु हुई।

फदकना (हिं क्रि०) १ फद फद शब्द करना, खदबद करना। २ फुदकना देखो।

फदका (हिं० पु०) गुडका वह पाग जो अधिक गाढ़ा न हो गया हो।

फदिया (हिं० स्त्री०) फरिया देखो।

फन (हिं० पु०) १ सांपका उस समयका सिर जब कि वह अपनी गर्दनके दोनों ओरकी नलियोंमें वायु भर कर उसे फैला कर छत्रके आकारका बना लेता है। २ बाल। ३ मटवास। ४ फन देखो।

फन (फा० पु०) १ गुण, खूबी। २ विद्या। ३ दस्त कारी। ४ छलनेका ढंग, मकर।

फनकना (हिं० क्रि०) हवामें सन सन करते हुए हिलना, डोलना या चलना, फनफनाना।

फनकार (हिं० स्त्री०) फनफन होनेका शब्द, वैसा शब्द

जैसा सांपके फूत्करने या बैल आदिके सांस लेनेसे होता है।

फनगना (हि० क्रि०) नये नये अंकुरोंका निकलना, कल्ला फूटना।

फनगा (हि० पु०) १ नई और कोमल डाली, कल्ला। २ घास आदिकी तीली। ३ फतिंगा।

फनना (हि० क्रि०) कामका आरम्भ होना, काममें हाथ लगाया जाना।

फनफनाना (हि० क्रि०) १ हवा छोड़ कर या चीर कर फनफन शब्द उत्पन्न करना। २ चंचलताके कारण हिलना या इधर उधर करना।

फनस (हि० पु०) कटहल।

फनिधर (हि० पु०) सर्प, सांप।

फनिपति (हि० पु०) फणिपति देखो।

फनियाला (हि० पु०) १ गज डेढ़ गज लंबी करघेकी एक लकड़ी जिस पर तानी लपेटी जाती है। इसके दोनों सिरों पर दो चूले और चार छेद होते हैं। २ नाग, सांप।

फनिराज (हि० पु०) फणीन्द्र।

फन्नी (हि० स्त्री) १ लकड़ी आदिका वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीजकी जड़में उसे कसने या दृढ़ करनेके लिये ठोंका जाता है, पच्चर। २ जुलाहोंका एक औजार जो कंघीकी तरहका होता है और घासकी तीलियोंका बना होता है। इससे दबा कर बुना हुआ बाना ठीक किया जाता है।

फफदना (हि० क्रि०) १ किसी गीले पदार्थका बढ़ कर फैलना। २ फैलना, बढ़ना।

फफसा (हि० पु०) १ फुसफुस, फेफड़ा। (वि०) २ फूला हुआ पर भीतरसे खाली, पोला। ३ स्वादहीन, फीका।

फफूंदी (हि० स्त्री०) काईकी तरहकी पर सफेद तह जो बरसातके दिनोंमें फल, लकड़ी आदि पर लग जाती है, भुकड़ी। यह यथार्थमें खुमी या कुकुरमुत्तेकी जातिके बहुत सूक्ष्म उद्भिद हैं। यह खास कर जन्तुओं या पेड़ पौधों, मृत या जीवित शरीर पर ही पल सकते हैं और उद्भिदोंके समान मट्टी आदि द्रव्योंको शरीरद्रव्यमें परिणत करनेकी शक्ति इनमें नहीं होती।

फफोर (हि० पु०) एक प्रकारका जंगली प्याज। यह हिमालयमें छ हजार फुटकी ऊँचाई तक होता है और प्रायः प्याजकी जगह काममें आता है।

फफोला (हि० पु०) आगमें जलनेसे चमड़े परका पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है, छाला।

फबकना (हि० क्रि०) १ मोटा होना। २ फफदना देखो।

फबती (हि० स्त्री०) १ देशकालानुसार सूक्ति, वह बात जो समयके अनुकूल हो। २ हंसीकी बात जो किसी पर घटती हो, चुटकी।

फबन (हि० स्त्री०) शोभा, छवि।

फबना (हि० क्रि०) उचित स्थान पर रखना, ऐसी जगह लगाना या रखना जहां अच्छा जान पड़े।

फबीला (हि० वि०) जो फबता या भला जान पड़ता हो, शोभा देनेवाला।

फम्फण (स० पु०) सन्निपात।

फर (स० क्ली०) फलतीति फल अच्, लस्य र। फलक।

फरक (हि० स्त्री०) १ फरकनेका भाव। २ फरकनेकी क्रिया। ३ फुरतीसे उछलने कूदनेकी चेष्टा।

फरक (अ० पु०) १ पार्थक्य, अलगाव। २ दो वस्तुओंके बीचका अन्तर, दूरी। ३ कमी, कसर। ४ अन्यता, परायापन। ५ भेद, अन्तर।

फरकन (हि० पु०) १ फड़कनेका भाव। २ फरकनेकी क्रिया।

फरकना (हि० क्रि०) १ फड़कना, उड़ना। २ स्फुरित होना, उभड़ना। ३ उड़ना।

फरका (हि० पु०) १ छप्पर जो अलग छा कर बंडेर पर चढ़ाया जाता है। २ टट्टर जो द्वार पर लगाया जाता है। ३ बंडेरके एक ओरकी छाजन, पल्ला।

फरकाना (हि० क्रि०) १ सचालित करना, हिलाना। २ फड़फड़ाना, बार बार हिलाना। ३ विलग करना, अलग करना।

फरका (हि० पु०) गाड़ीका वह खूंटा जो हरसेके बाहर पटरीमें लगाया जाता है। इस पर लकड़ी, बांस या बल्ले रख कर रस्सियोंसे कस कर ढांचा बनाया जाता है।

फरकी (हि० स्त्री०) १ बांसकी पतली तीली। इसमें

लासा लगा कर चिडीमार चिड़िया फसाते हैं। २ वह बड़ा पत्थर जो दीवारोंकी चुनाईमें दूर दूर पर खड़े बलमें लगाया जाता है।

फरकीला ( हि० पु० ) फरकिल्ला देखो।

फरजन्द ( फा० पु० ) पुत्र, लड़का, बेटा।

फरजिंद ( हि० पु० ) फरजन्द देखो।

फरजी ( फा० पु० ) शतरजका एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं। खेलमें जितने मोहरे हैं सबोंमें यह बड़ा उपयोगी माना जाता है। शतरजके किसी किसी खेलमें यह टेढ़ा चलता है और शेषमें प्राय यह सीधा और टेढ़ा दोनों प्रकारकी चाल आगे और पीछे दोनों ओर चलता है। ( वि० ) २ बनावटी, नकली।

फरजीबन्द ( फा० पु० ) शतरजके खेलमें एक योग। इसमें फरजी किसी प्यादेके बल पर बादशाहको ऐसी शह देता है जिससे विपक्षकी हार होती है।

फरद ( अ० स्त्री० ) १ लेखा या वस्तुओंकी सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी कागज पर अलग लिखी गई हो। २ एक प्रकारका लपका कबूतर। इसके सिर पर टीका होता है। ३ बरफीले पहाड़ों पर होनेवाला एक प्रकारका पक्षी। इसके विषयमें वैसी ही बातें प्रसिद्ध हैं जैसा चकवा और चकईके विषयमें। ४ वह कविता जिसमें केवल दो पद रहते हैं। ५ रजाई या दुलाइका ऊपरी पल्ला। ६ एक ही तरहके, एक साथ बनानेवाले अथवा एक साथ काममें आनेवाले कपड़ोंके जोड़ेमेंसे एक कपड़ा, पल्ला। ( वि० ) ७ अनुपम, बेजोड़।

फरफन्द ( हि० पु० ) १ छल कपट, दाँव पेच। २ नखरा, चोचला।

फरफर ( हि० पु० ) किसी पदार्थके उड़ने या फड़कनेसे उत्पन्न शब्द।

फरफराना ( हि० क्रि० ) 'फरफर' शब्द उत्पन्न होना, फड़फड़ाना।

फरमाँबरदार ( फा० वि० ) आज्ञाकारी, हुक्म माननेवाला।

फरमा ( अ० पु० ) १ ढाँचा, डौल। २ लकड़ी आदिका बना हुआ ढाँचा या साँचा जिस पर रख कर चमार जूता बनाते हैं, कालबूत। ३ कोई चीज ढालनेका साँचा। ४ कागजका पूरा तख्ता जो एक बारमें प्रेसमें छापा जाता है। फार्म देखो।

फरमाइश ( फा० स्त्री० ) आज्ञा, विशेषत वह आज्ञा जो कोई चीज लाने या बनाने आदिके लिये दी जाय।

फरमाइशी ( फा० वि० ) विशेषरूपसे आज्ञा दे कर मगाया या तैयार कराया हुआ।

फरमान ( फा० पु० ) राजकीय आज्ञापत्र, अनुशासनपत्र।

फरमाना ( फा० क्रि० ) आज्ञा देना, हुकुम देना। इस शब्दका प्रयोग प्राय बड़ोंके सम्बन्धमें उनके प्रति आदर सूचित करनेके लिये होता है।

फरयाद ( हि० स्त्री० ) फरियाद देखो।

फरयारी ( हि० स्त्री० ) हलके जाधेमें लगी हुई वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है, चौंपी।

फरलाग ( अ० पु० ) भूमिकी लम्बाइका एक अंगरेजी माप। यह एक मीलका आठवाँ भाग और चालीस राड या पोल (लट्ठे)-के बराबर होता है।

फरलो ( अ० स्त्री० ) एक प्रकारकी छुट्टी जो सरकारी नौकरोंको आधे वेतन पर मिलती है।

फरवरी ( अ० पु० ) अंगरेजी सनका दूसरा महीना। यह महीना प्राय अट्ठाइस दिनका होता है, परन्तु जब लीपियर आता है अर्थात् जब सन् इसवी ४से पूरा पूरा विभक्त हो जाता है, उस वर्ष यह २६ दिनका होता है। जब सनमें दहाई और इकाई दोनों अंकोंके स्थानमें शून्य होता है, उस अवस्थामें यह तब तक २६ दिनका नहीं होता जब तक सैकड़े और हजारका अंक ४से पूरा पूरा विभाजित न हो।

फरवार ( हि० पु० ) खलिहान।

फरवारी ( हि० स्त्री० ) अन्नका वह भाग जो किसान अपने खलिहानमेंसे राशि उठानेके समय बढ़ई, धोबी ब्राह्मण, नाई आदिके निकाल कर देते हैं।

फरही ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारका भूना हुआ चावल जो भुनने पर भीतरसे पोला हो जाता है, लाई। २ पट्टी देखो।

फरश (अ० पु०) १ बैठनेके लिये बिछानेका वस्त्र, बिछावन। २ घर या कोठरीके भीतरकी वह समतल भूमि जो पत्थर या ईंटे बिछा कर या चूने गारेसे बराबर की गई हो। ३ समतलभूमि, धरातल।

फरशन्द (फा० पु०) वह ऊंचा और समतल स्थान जहां फरश बना हो।

फरशी (फा० स्त्री०) १ फूल, पीतल आदिका बना हुआ बरतन। इसका मुंह पतला और संकरा होता है। इस पर लोग नैचा, सटक आदि लगा कर तमाकू पीते हैं। २ वह हुक्का जो उक्त बरतन पर नैचा आदि लगा कर बनाया गया हो।

फरसा (हिं० पु०) १ तेज और चौड़ी धारकी एक प्रकारकी कुल्हाड़ी। यह प्राचीनकालमें युद्धमें काम आती थी।

फरसी (हिं० स्त्री०) फरशी देखो।

फरहटा (हिं० पु०) चौड़ी और पतली पटरियां जो चरखी आदिके बीचकी नाभिसे बांध कर या गाड़ कर खड़े बलमें लगाई जाती हैं, फरेहा।

फरहत (अ० स्त्री०) १ आनन्द, प्रसन्नता। २ मन शुद्धि।

फरहद (हिं० पु०) बङ्गालमें समुद्रके किनारे होनेवाला एक पेड़। यह पेड़ थोड़े दिनमें बढ़ कर तैयार हो जाता है और न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा, मध्यम आकारका होता है। इसमें पहले कांटे निकलते हैं, पर जब यह बड़ा होता, तब उससे जो छिलके उतरते हैं उसीके साथ सभी कांटे जाते रहते हैं। अन्तमें स्कन्ध बिलकुल चिकना हो जाता है। परन्तु डालियोंके कांटे दूर नहीं होते, वे सब दिन रह जाते हैं। जिस प्रकार ढाक पेड़की एक नालमें तीन तीन पत्तियां होती हैं, उसी प्रकार इसमें भी। इसके फूल लाल और सुन्दर होते हैं। फूलोंके झड़ने ही फलियां लगती हैं। फूलों तथा छालसे लाल रंग निकाला जाता है। छालको कूट कर रस्सी भी बटी जाती है। इसकी लकड़ी फटती या चिटकती नहीं और नरम तथा साफ होती है। पुराणोंमें इसे पञ्च देवतरुमें माना है। पारिभद्र देखो।

फरहर (हिं० वि०) १ जो एकमें लिपटा या मिला हुआ न हो, अलग अलग हो। २ शुद्ध, निर्मल। ३ तेज, चालाक। ४ जो कुछ दूर दूर पर हो। ५ स्पष्ट, साफ। ६ प्रसन्न, हराभरा।

फरहरना (हिं० क्रि०) १ फरफराना, फरकना। २ फहराना, उड़ना।

फरहरा (हिं० पु०) १ पताका, झंडा। २ कपड़े आदिका वह तिकोना वा चौकोना टुकड़ा जिसे छड़के सिरे लगा कर झंडी बनाते हैं और जो हवाके झोंकेसे उड़ता रहता है। (वि०) ३ स्पष्ट, अलग अलग। ४ शुद्ध, निर्मल। ५ प्रसन्न, खिला हुआ।

फरहरी (हिं० स्त्री०) फल।

फरहा (हिं० पु०) धुनियोंकी कमानका वह भाग जो चौड़ा होता है और जिस परसे हो कर तांत दूसरी छोर तक जाती है। इसका आकार बेनेसा होता है और धुनते समय आगे बढ़ता है।

फरही (हिं० स्त्री०) लकड़ीका वह चौड़ा टुकड़ा जिस पर ठठेरे बरतन रख कर रेतीसे रेतते हैं।

फरा—मथुराजिलेका एक नगर। यह अक्षा० २७ ११´ उ० और देशा० ७७ ४१´ पू० यमुना किनारेसे प्रायः १ मील दूर तथा मथुरासे १३ मील दक्षिणपूर्वमें अवस्थित है। पहले यहां तहसीलका सदर था।

फरा (हिं० पु०) एक प्रकारका व्यञ्जन। इसके बनानेके लिये पहले चावलके आटेको गरम पानीमें गूंध कर उसकी पतली पतली बत्तियां बटते हैं और फिर उन बत्तियोंको उबलते हुए पानीकी भापमें पकाते हैं।

फराक्त (फा० वि०) १ विस्तृत, आयत। २ फरागत। फरागत देखो।

फराख (फा० वि०) विस्तृत, लम्बा चौड़ा।

फराखी (फा० स्त्री०) १ विस्तार, चौड़ाई। २ आढ्यता, सम्पन्नता। ३ घोड़ेका तंग। यह उसकी पीठ पर कम्बल नमदा आदि डाल कर या यों ही उस पर लगाया जाता है। यह चौड़ा तसमा या फीता होता है और उसके दोनों सिरों पर कड़े लगे रहते हैं।

फरागत (अ० स्त्री०) १ मुक्ति, छुटकारा। २ निश्चिन्तता, बेफिक्री। ३ मलत्याग, पाखाना फिरना।

फराज (फा० वि०) ऊंचा।

फराजी—मुसलमानोंका धर्मसम्प्रदायविशेष। फरिदपुरके अन्तर्गत दौलतपुरनिवासी हाजी सरियतुल्लाने इस नये मतका प्रवर्त्तन किया। महम्मदीय कुरान शास्त्रके प्रसिद्ध

टीकाकार अबूहनीफका मतानुसरण करके ये लोग जगत् क्रिया और ईश्वरतत्त्व सम्बन्धमें विशेष भक्ति प्रदर्शन करते हैं। सुन्नी सम्प्रदायके अन्तर्भुक्त होने पर भी ये पूर्वप्रचलित अशास्त्रीय कुराचारको नहीं मानते। उन लोगोंका कहना है, कि कुरान शास्त्र ही मोक्ष साधनका प्रधान अवलम्बन है।

फरीदपुर शब्दमें लिखा है, कि गङ्गा (पद्मा) और ब्रह्मपुत्र नदीके मध्यवर्त्ती जो डेल्टा अवस्थित है, वहांके प्राय सभी मुसलमान उस देशके आदिम अधिवासी हैं। अफगान और मुगलोंके आक्रमणके समय डरके मारे उन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण करने पर भी उनके हृदयसे अभ्यस्त हिन्दूभाव और आचार व्यवहार दूर नहीं हुआ, ज्योंके त्यों बना रहा। हाजी सरितुला मुसलमान समाजकी अवनति देख कर बड़े दुःखित हुए। उन्होंने इस विषयमें असम्मति प्रकट कर जनसाधारणको देवपूजाके बदलेमें कुरान-वर्णित एकेश्वरोपासना और सरल तथा साधु आचारोंका अनुष्ठान करनेके लिये अनुयोग किया। उन्होंने विवाहमें जो फजूल खर्च होता था उसे बंद कर दिया और सबको सुन्नत करनेके लिये फरमाया। उनके आचरित धर्ममतके कुछ प्रधान नियम ये हैं—१ धर्मयुद्ध (जिहाद)-की कर्त्तव्यता, २ विश्वासहन्ता, पापण्ड और नास्तिकोंका पाप, ३ ईश्वरपूजामें क्रियाकलापादिका अनुष्ठान और ४ सबोंको उस एक ईश्वरका अवदान। फराजी लोग काछ नहीं देते, धोतीको कमरमें एक बार लपेट कर पेटके सामने खोंस लेते हैं, घुटनेको जमीनमें टेक कर नमाज पढ़ते हैं, इत्यादि कुछ बाहरी आचार देखनेसे ही पता लग जाता है, कि ये फराजी हैं। प्रवर्त्तक जब तक जीते रहे, तब तक इस मतका बहुत प्रचार था। प्राय पचास वर्षके अन्दर सैकड़ों मुसलमान उनके शिष्य हो गये। अभी पश्चिम बङ्ग और विहार आदि स्थानोंमें भी फराजी मतावलम्बी सैकड़ों मुसलमान देखनेमें आते हैं।

हाजीकी मृत्युके बाद उनके बड़े लड़के दादूमिया फराजीदलके धर्मगुरु बने, किन्तु स्वभावदोषसे ये मुसलमान समाजके अप्रियभाजन हो गये। उनकी इस असत् प्रवृत्तिके लिये वृटिश-सरकारने उन्हें कई बार कैद किया। १८६२ ई०में ढाका नगरमें उनकी मृत्यु हुई। उनके दो पुत्र आज भी फराजीदलकी धर्मनायकता करते हैं। अभी उनमें वैसा धर्मोन्माद नहीं है। वे अभी राजभक्त, निरीह और शान्तस्वभावके हो गये हैं।

मुसलमान जातिकी धर्मोन्नति, धर्ममें उत्साह और प्रस्तावित नीति पालनके विषयमें उनका विशेष लक्ष्य है। वे अपने धर्ममें इतने कट्टर हैं, कि जब कभी कोई उनके धर्मकी निन्दा करता, तभी वे उस पर टूट पड़ते हैं।

फरामोश (फा० वि०) १ विस्मृत, भूला हुआ, चित्तसे गिरा हुआ। (पु०) २ लड़कोंका एक खेल। इसमें वे आपसमें कुछ समयके लिये यह बद लेते हैं, कि यदि एक दूसरेको कोइ चीज दे, तो वह फौरन 'फरामोश' कह दे। यदि चीज पाने पर पानेवाला 'फरामोश' न कहे, तो वह हार जाता।

फरामूगिरि—आसामप्रदेशके गारो पहाड़के दक्षिण पूर्वमें अवस्थित एक ग्राम। यह समुद्रपृष्ठसे ३६५२ फुट ऊँचा है।

फरार (अ० वि०) जो भाग गया हो, भागा हुआ।

फराल (हि० स्त्री०) १ फैलाव, विस्तार। २ तस्ता।

फरासडङ्गा—इसका देशीय नाम चन्द्रनगर या चन्दरनगर है। जबसे फरासीसियोंने यहां एक कोठी खोली, तभीसे यह फरासडङ्गा नामसे मशहूर हुआ है।

चन्दननगर और फरासी। देखो।

फरासी—फ्रान्सदेशके अधिवासी।

फ्रान्स और पण्डिचेरी शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

१६वीं शताब्दीमें जो सब यूरोपीय शक्तियां वाणिज्य करनेकी इच्छासे भारतवर्ष आई थीं, उनमेंसे फरासीगण चतुर्थ थे। पुर्त्तगीज, ओलन्दाज और अङ्गरेजोंके बाद फरासी लोग भारतवर्ष आये हैं।

१५०३ ई०में फ्रान्सपति १२वें लुईके समय रौयन नामक स्थानके वणिकोंने पूर्वसागरमें वाणिज्य करनेका पहले पहल आयोजन किया। १५३७ और १५४३ ई०में १२वें लुईके उत्तराधिकारी १म फ्रान्सिसने अपनी प्रजाको सुदूरदेशमें जा कर वाणिज्य करनेका हुक्म दिया। किन्तु नाना विघ्नोंसे उनका उद्देश्य सिद्ध न हो सका।

१६०१ ई०में सेंटमालोसे दो जहाज स्पर्टेनाएट बाद

फरशन्द (फा० पु०) वह ऊंचा और समतल स्थान जहां फरश बना हो।

फरशी (फा० स्त्री०) १ फूल, पीतल आदिका बना हुआ बरतन। इसका मुंह पतला और मंभरा होता है। इस पर लोग नैचा, सटक आदि लगा कर तमाकू पीते हैं। २ वह हुक्का जो उक्त बरतन पर नैचा आदि लगा कर बनाया गया हो।

फरसा (हि० पु०) १ तेज़ और चौड़ी धारकी एक प्रकारकी कुल्हाड़ी। यह प्राचीनकालमें युद्धमें काम आती थी।

फरसी (हि० स्त्री०) फरशी देखो।

फरहटा (हि० पु०) चौड़ी और पतली पटरियां जो चरखी आदिके बीचकी नाभिसे बांध कर या गाड़ कर उसके चक्रमें लगाई जाती हैं, फरेहा।

फरहत (अ० स्त्री०) १ आनन्द, प्रसन्नता। २ मन शुद्धि।

फरहद (हि० पु०) बङ्गालमें समुद्रके किनारे होनेवाला एक पेड़। यह पेड़ थोड़े दिनमें बढ़ कर तैयार हो जाता है और न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा, मध्यम आकारका होता है। इसमें पहले कांटे निकलते हैं, पर जब यह बड़ा होता, तब उससे जो छिलके उतरते हैं उसीके साथ सभी कांटे जाते रहते हैं। अन्तमें स्कन्ध बिलकुल चिकना हो जाता है। परन्तु डालियोंके कांटे दूर नहीं होते, वे सब दिन रह जाते हैं। जिस प्रकार ढाक पेड़की एक नालमें तीन तीन पत्तियां होती हैं, उसी प्रकार इसमें भी। इसके फूल लाल और सुन्दर होते हैं। फूलोंके झड़ते ही फलियां लगती हैं। फूलों तथा छालसे लाल रंग निकाला जाता है। छालको कूट कर रस्सी भी बटी जाती है। इसकी लकड़ी फटती या चिटकती नहीं और नरम तथा साफ होती है। पुराणोंमें इसे पञ्च देवतरुमें माना है। पारिभद्र देखो।

फरहर (हि० वि०) १ जो एकमें लिपटा या मिला हुआ न हो, अलग अलग हो। २ शुद्ध, निर्मल। ३ तेज, चालाक। ४ जो कुछ दूर दूर पर हो। ५ स्पष्ट, साफ। ६ प्रसन्न, हराभरा।

फरहरना (हि० क्रि०) १ फरफराना, फरकना। २ फहराना, उड़ना।

फरहरा (हि० पु०) १ पताका, झंडा। २ कपड़े आदिका वह तिकोना या चौकोना टुकड़ा जिसे छड़के सिरे लगा कर झंडी बनाते हैं और जो हवाके झोंकेसे उड़ता रहता है। (वि०) ३ स्पष्ट, अलग अलग। ४ शुद्ध, निर्मल। ५ प्रसन्न, खिला हुआ।

फरहरी (हि० स्त्री०) फल।

फरहा (हि० पु०) धुनियोंकी कमानका वह भाग जो चौड़ा होता है और जिस परसे हो कर तांत दूसरी छोर तक जाती है। इसका आकार बेंने सा होता है और धुनते समय आगे बढ़ता है।

फरही (हि० स्त्री०) लकड़ीका वह चौड़ा टुकड़ा जिस पर ठठेरे बरतन रख कर रेतीसे रेतते हैं।

फरा—मथुराजिलेका एक नगर। यह अक्षा० २७° १९´ उ० और देशा० ७७ ४६´ पू० यमुना किनारेसे प्राय १ मील दूर तथा मथुरासे १३ मील दक्षिणपूर्वमें अवस्थित है। पहले यहां तहसीलका सदर था।

फरा (हि० पु०) एक प्रकारका व्यञ्जन। इसके बनानेके लिये पहले चावलके आटेको गरम पानीमें गूंध कर उसकी पतली पतली बत्तियां बटते हैं और फिर उन बत्तियोंको उबलते हुए पानीकी भापमें पकाते हैं।

फराक्त (फा० वि०) १ विस्तृत, आयत। २ फरागत। फरागत देखो।

फराख (फा० वि०) विस्तृत, लम्बा चौड़ा।

फराखी (फा० स्त्री०) १ विस्तार, चौड़ाई। २ आढ्यता, सम्पन्नता। ३ घोड़ेका तंग। यह उसकी पीठ पर कंबल गरदनी आदि डाल कर या यों ही उस पर लगाया जाता है। यह चौड़ा तसमा या फीता होता है और उसके दोनों सिरों पर कड़े लगे रहते हैं।

फरागत (अ० स्त्री०) १ मुक्ति, छुटकारा। २ निश्चिन्तता, बेफिक्री। ३ मलत्याग, पाखाना फिरना।

फराज (फा० वि०) ऊंचा।

फराजी—मुसलमानोंका धर्मसम्प्रदायविशेष। फरिदपुरके अन्तर्गत दौलतपुरनिवासी हाजी सरियतुल्लाने इस नये मतका प्रवर्त्तन किया। महम्मदीय कुरान शास्त्रके प्रसिद्ध

टीकाकार अबूहनीफका मतानुसरण करके वे लोग जगत् क्रिया और ईश्वरतत्व सम्बन्धमें विशेष भक्ति प्रदर्शन करते हैं। सुन्नी सम्प्रदायके अन्तर्भुक्त होने पर भी वे पूर्वप्रचलित अशास्त्रीय कुलाचारको नहीं मानते। उन लोगोंका कहना है, कि कुरान शास्त्र ही मोक्ष साधनका प्रधान अवलम्बन है।

फरीदपुर शब्दमें लिखा है, कि गङ्गा (पद्मा) और ब्रह्मपुत्र नदीके मध्यवर्त्ती जो डेल्टा अवस्थित है, वहांके प्राय: सभी मुसलमान उस देशके आदिम अधिवासी हैं। अफगान और मुगलोंके आक्रमणके समय डरके मारे उन्होंने इसलाम धर्म ग्रहण करने पर भी उनके हृदयसे अभ्यस्त हिन्दूभाव और आचार व्यवहार दूर नहीं हुआ, ज्योंके त्यों बना रहा। हाजी सरियतुल्ला मुसलमान समाजकी अवनति देख कर बड़े दुःखित हुए। उन्होंने इस विषयमें असम्मति प्रकट कर जनसाधारणको देवपूजाके बदलेमें कुरान-वर्णित एकेश्वरोपासना और सरल तथा साधु आचारोंका अनुष्ठान करनेके लिये अनुयोग किया। उन्हों १८६२ ई०में ढाका नगरमें उनकी मृत्यु हुई। उनके दो पुत्र आज भी फराजीदलकी धर्मनायकता करते हैं। अभी उनमें वैसा धर्मोन्माद नहीं है। वे अभी राजभक्त, निरीह और शान्तस्वभावके हो गये हैं।

मुसलमान जातिकी धर्मोन्नति, धर्ममें उत्साह और प्रस्तावित नीति पालनके विषयमें उनका विशेष लक्ष्य है। वे अपने धर्ममें इतने कट्टर हैं, कि जब कभी कोई उनके धर्मकी निन्दा करता, तभी वे उस पर टूट पड़ते हैं।

फरामोश (फा० वि०) १ विस्मृत, भूला हुआ, निकाले गिरा हुआ। (पु०) २ लड़कोंका एक खेल। इसमें वे आपसमें कुछ समयके लिये यह तय कर लेते हैं, कि यदि एक दूसरेको कोई चीज दे, तो वह फौरन 'फरामोश' कह दे। यदि चीज पाने पर पानेवाला 'फरामोश' न कहे, तो वह हार जाना।

फरामुर्गिरि—आसामदेशके गारो पहाड़के समीप पूर्वमें अवस्थित एक ग्राम। यह समुद्रपृष्ठसे [illegible] फुट

फरशबंद ( फा० पु० ) वह ऊंचा और समतल स्थान जहां फरश बना हो।

फरशी ( फा० स्त्री० ) १ फूल, पीतल आदिका बना हुआ बरतन। इसका मुंह पतला और संकरा होता है। इस पर लोग नैचा, मटक आदि लगा कर तमाकू पीते हैं। २ वह हुक्का जो उक्त बरतन पर नैचा आदि लगा कर बनाया गया हो।

फरसा ( हि० पु० ) १ तेज और चौड़ी धारकी एक प्रकारकी कुल्हाड़ी। यह प्राचीनकालमें युद्धमें काम आती थी।

फरसी ( हि० स्त्री० ) फरशी देखो।

फरहटा ( हि० पु० ) चौड़ी और पतली पटरियां जो चरखी आदिके बीचकी नाभिसे बांध कर या गाड़ कर खड़े बलमें लगाई जाती हैं, फरेहा।

फरहत ( अ० स्त्री० ) १ आनन्द, प्रसन्नता। २ मन शुद्धि।

फरहद ( हि० पु० ) बङ्गालमें समुद्रके किनारे होनेवाला एक पेड़। यह पेड़ थोड़े दिनमें बढ़ कर तैयार हो जाता है और न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा, मध्यम आकारका होता है। इसमें पहले कांटे निकलते हैं, पर जब यह बड़ा होता, तब उससे जो छिलके उतरते हैं उन्हींके साथ सभी कांटे जाते रहते हैं। अन्तमें स्कन्ध बिलकुल चिकना हो जाता है। परन्तु डालियों के कांटे दूर नहीं होते, वे सब दिन रह जाते हैं। जिस प्रकार ढाक पेड़में एक नालमें तीन तीन पत्तियां होती हैं, उसी प्रकार इसमें भी। इसके फूल लाल और सुन्दर होते हैं। फूलोंके झड़ते ही कलियां लगती हैं। फूलों तथा छालसे लाल रंग निकाला जाता है। छालको कूट कर रस्सी भी बटी जाती है। इसकी लकड़ी फटती या चिटकती नहीं और नरम तथा साफ होती है। पुराणोंमें इसे एक देवतरु माना है। पारिभद्र देखो।

फरहर ( हि० वि० ) १ जो एकमें लिपटा या मिला हुआ न हो, अलग अलग हो। २ शुद्ध, निर्मल। ३ तेज, चालाक। ४ जो कुछ दूर दूर पर हो। ५ स्पष्ट, साफ। ६ प्रसन्न, हराभरा।

फरहरना ( हि० क्रि० ) १ फरफराना, फरकना। २ फहराना, उड़ना।

फरहरा ( हि० पु० ) १ पताका, झंडा। २ कपड़े आदिका वह तिकोना या चौकोना टुकड़ा जिसे छड़के सिरे लगा कर झंडी बनाते हैं और जो हवाके झोंकेसे उड़ता रहता है। ( वि० ) ३ स्पष्ट, अलग अलग। ४ शुद्ध, निर्मल। ५ प्रसन्न, खिला हुआ।

फरहरी ( हि० स्त्री० ) फल।

फरहा ( हि० पु० ) धुनियोंकी कमानका वह भाग जो चौड़ा होता है और जिस परसे हो कर तांत दूसरी छोर तक जाती है। इसका आकार पत्ते सा होता है और धुनते समय आगे बढ़ता है।

फरहीं ( हि० स्त्री० ) लकड़ीका वह चौड़ा टुकड़ा जिस पर ठठेरे बरतन रख कर रेतीसे रेतते हैं।

फरा—मथुराजिलेका एक नगर। यह अक्षा० २७ १९´ उ० और देशा० ७७ ४९´ पू० यमुना किनारेसे प्रायः १ मील दूर तथा मथुरासे १३ मील दक्षिणपूर्वमें अवस्थित है। पहले यहां तहसीलका सदर था।

फरा ( हि० पु० ) एक प्रकारका व्यञ्जन। इसके बनानेके लिये पहले चावलके आटेको गरम पानीमें गूंध कर उसकी पतली पतली बत्तियां बटते हैं और फिर उन बत्तियोंको उबलते हुए पानीकी भापमें पकाते हैं।

फराख ( फा० वि० ) १ विस्तृत, आयत। २ फरागत। फरागत देखो।

फराख ( फा० वि० ) विस्तृत, लम्बा चौड़ा।

फराखी ( फा० स्त्री० ) १ विस्तार, चौड़ाई। २ आढ्यता, सम्पन्नता। ३ घोड़ेका तंग। यह उसकी पीठ पर मखमल गद्दी आदि डाल कर या यों ही उस पर लगाया जाता है। यह चौड़ा तसमा या फीता होता है और उसके दोनों सिरों पर कड़े लगे रहते हैं।

फरागत ( अ० स्त्री० ) १ मुक्ति, छुटकारा। २ निश्चिन्तता, बेफिक्री। ३ मलत्याग, पाखाना फिरना।

फराज ( फा० वि० ) ऊंचा।

फराजी—मुसलमानोंका धर्मसम्प्रदायविशेष। फरिदपुरके अन्तर्गत दौलतपुरनिवासी हाजी सरियतुल्लाने इस नये मतका प्रवर्त्तन किया। महम्मदीय कुरान शास्त्रके प्रसिद्ध

टीकाकार अबूहनीफका मतानुसरण करके वे लोग जगत्-क्रिया और ईश्वरतत्त्व सम्बन्धमें विशेष भक्ति प्रदर्शन करते हैं। सुन्नी सम्प्रदायके अन्तर्भुक्त होने पर भी वे पूर्वप्रचलित अशास्त्रीय कुराचारको नहीं मानते। उन लोगोंका कहना है, कि कुरान शास्त्र ही मोक्ष साधनका प्रधान अवलम्बन है।

फरीदपुर गजेटमें लिखा है, कि गङ्गा (पद्मा) और ब्रह्मपुत्र नदीके मध्यवर्त्ती जो डेल्टा अवस्थित है, वहाके प्राय सभी मुसलमान उस देशके आदिम अधिवासी हैं। अफगान और मुगलोंके आक्रमणके समय डरके मारे उन्होंने इसलाम धर्म ग्रहण करने पर भी उनके हृदयसे अभ्यस्त हिन्दूभाव और आचार व्यवहार दूर नहीं हुआ, ज्योंके त्यों बना रहा। हाजी सरितुल्ला मुसलमान समाजकी अवनति देख कर बड़े दुःखित हुए। उन्होंने इस विषयमें असम्मति प्रकट कर जनसाधारणको देवपूजाके बदलेमें कुरान-वर्णित एकेश्वरोपासना और सरल तथा साधु आचारोंका अनुष्ठान करनेके लिये अनुयोग किया। उन्होंने विवाहमें जो फजूल खर्च होता था उसे बंद कर दिया और सबको सुन्नत करनेके लिये फरमाया। उनके आचरित धर्ममतके कुछ प्रधान नियम ये हैं—१ धर्मयुद्ध (जिहाद)-की कर्त्तव्यता, २ विश्वासहन्ता, पाषण्ड और नास्तिकोंका पाप, ३ ईश्वरपूजामें क्रियाकलापादिका अनुष्ठान और ४ सबोंको उस एक ईश्वरका आश्रदान। फराजी लोग काछ नहीं देते, धोतीको कमरमें एक बार लपेट कर पेटके सामने खोंस लेते हैं, घुटनेको जमीनमें टेक कर नमाज पढ़ते हैं, इत्यादि कुछ बाहरी आचार देखनेसे ही पता लग जाता है, कि ये फराजी हैं। प्रवर्त्तक जब तक जीते रहे, तब तक इस मतका बहुत प्रचार था। प्राय पचास वर्षके अन्दर सैकड़ों मुसलमान उनके शिष्य हो गये। अभी पश्चिम बङ्ग और बिहार आदि स्थानोंमें भी फराजी मतावलम्बी सैकड़ों मुसलमान देखनेमें आते हैं।

हाजीकी मृत्युके बाद उनके बड़े लड़के दादूमिया फराजीदलके धर्मगुरु बने, किन्तु स्वभावदोषसे वे मुसलमान समाजके अप्रियभाजन हो गई। उनकी इस असत् प्रवृत्तिके लिये वृटिश-सरकारने उन्हें कई बार कैद किया। १८६२ ई०में ढाका नगरमें उनकी मृत्यु हुई। उनके दो पुत्र आज भी फराजीदलकी धर्मनायकता करते हैं। अभी उनमें वैसा धर्मोन्माद नहीं है। वे अभी राजभक्त, निरीह और शान्तस्वभावके हो गये हैं।

मुसलमान-जातिकी धर्मोन्नति, धर्ममें उत्साह और प्रस्तावित नीति पालनके विषयमें उनका विशेष लक्ष्य है। वे अपने धर्ममें इतने कट्टर हैं, कि जब कभी कोई उनके धर्मकी निन्दा करता, तभी वे उस पर टूट पड़ते हैं।

फरामोश (फा० वि०) १ विस्मृत, भूला हुआ, चित्तसे गिरा हुआ। (पु०) २ लड़कोंका एक खेल। इसमें वे आपसमें कुछ समयके लिये यह बद लेते हैं, कि यदि एक दूसरेको कोई चीज दे, तो वह फौरन 'फरामोश' कह दे। यदि चीज पाने पर पानेवाला 'फरामोश' न कहे, तो वह हार जाता है।

फरामुंगिरि—आसामप्रदेशके गारो पहाड़के दक्षिण पूर्वमें अवस्थित एक ग्राम। यह समुद्रपृष्ठसे ३६७२ फुट ऊँचा है।

फरार (अ० वि०) जो भाग गया हो, भागा हुआ।

फराल (हि० स्त्री०) १ फैलाव, विस्तार। २ तख्ता।

फरासडङ्गा—इसका देशीय नाम चन्द्रनगर या चन्दर नगर है। जबसे फरासीसियोंने यहा एक कोठी खोली, तभीसे यह फरासडङ्गा नामसे मशहूर हुआ है।

चन्दननगर और फरासी। देखो।

फरासी—फ्रान्सदेशके अधिवासी।

फ्रान्स और पण्डुचेरी शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

१६वीं शताब्दीमें जो सब यूरोपीय शक्तियां वाणिज्य करनेकी इच्छासे भारतवर्ष आई थीं, उनमेंसे फरासीगण चतुर्थ थे। पुर्त्तगीज, ओलन्दाज और अङ्गरेजोंके बाद फरासी लोग भारतवर्ष आये हैं।

१५०३ ई०में फ्रान्सपति १२वें लुईके समय रौयन नामक स्थानके वणिकोंने पूर्वसागरमें वाणिज्य करनेका पहले पहल आयोजन किया। १५३७ और १५४३ ई०में १२वें लुईके उत्तराधिकारी १म फ्रांसिस्ने अपनी प्रजाको सुदूरदेशमें जा कर वाणिज्य करनेका हुक्म दिया। किन्तु नाना विघ्नोंसे उनका उद्देश्य सिद्ध न हो सका।

१६०१ ई०में सेंटमालोसे दो महान् लफ्टेनाएट याद-

ल्यु-की अधिनायकतामें भारतकी ओर भेजे गये थे, किन्तु दुर्भाग्यक्रमसे ये दोनों ही जहाज माल्द्वीपके समीप डूबो गये।

४र्थ हेनरीके शान्तिमय राज्यकालमें १६०४ ई०की १ली जूनको एक बार फिर चेष्टा की गई थी। किन्तु इस बार भी यह चेष्टा व्यर्थ निकली। आखिर १६१६ ई०में एक दूसरा दल राजाका अनुज्ञापत्र ले कर कार्यक्षेत्र में उतरा। इस दलका नाम रखा गया 'फरासी इष्ट इण्डिया कम्पनी'। फरासी मन्त्री कोलवार्टने १६६४ ई०में उन्हें अव्याहतभावमें खास तौर पर वाणिज्य करने के लिये ५० वर्षका समय दिया था।

१६६८ ई०में फरासी वणिकोंने पहले पहल सूरत आ कर एक कोठी खोली। इसके बाद मसलीपत्तनमें दूसरी कोठी खोली गई। अनन्तर उन्होंने ओलन्दाजोंसे त्रिन कमली नगर छीन लिया, किन्तु कुछ दिन बाद ही ओल न्दाजोंने फिरसे इस पर अपना कब्जा किया। १६७२ ई०में फरासियोंने मन्द्राजके निकट सेण्टटोमे नामक स्थान ओलन्दाजोंसे जीता। १६७४ ई०में ओलन्दाजों ने फरासियों को यहांसे मार भगाया। अब वे पु डिचेरी में आ कर रहने लगे।

ओलन्दाजोंने यहांसे भी फरासियोंको खदेरा था। इसके बाद वे कुछ दिन तक सूरतमें रह कर वाणिज्य चलाने लगे। किन्तु यूरोपीय प्रतिद्वन्द्वियोंकी प्रतिबन्धकतासे उनका मनोरथ सिद्ध न होने पाया। वे सूरतका परित्याग करनेको वाध्य किये गये। इसके बाद उन्होंने चन्दननगरमें कोठी खोली।

१६८८ ई०में बादशाह औरङ्गजेबने उन्हें चन्दननगर-का अधिकार प्रदान किया। बादमें फरासी कम्पनीने माही पर आक्रमण करके उसे अपने दखलमें कर लिया। १७३० ई०में डुप्ले चन्दननगरके गवर्नर हुए। इसके बाद १७४२ और १७४६ ई०में उन्होंने पु डीचेरीका शासन भार पाया। १७३९ ई०में फरासियोंने तञ्जोर राजसे कारिकल खरीदा।

पहले तो केवल ओलन्दाजोंकी ही फरासियोंसे शत्रुता थी, अब वाणिज्यक्षेत्रमें अङ्गरेज लोग भी फरा सियोंके शत्रु हो गये। नाना स्थानोंमें युद्ध विग्रहकी खबर आने लगी। १७५० ई०में फरासियोंने यानम् और मसलीपत्तन पर अधिकार किया था। १७५२ ई०में तञ्जोरराजको कुछ रुपये दे कर उक्त स्थानका पक्का कर लिया। अब वे अङ्गरेजोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये देशीय राजाओंको उभाड़ने लगे।

१७३५से १७५४ ई०के मध्य डुप्ले और बुसीकी चेष्टासे भारतवर्षमें फरासियो को धाक बहुत कुछ जम गई थी। नागपत्तनमें अङ्गरेजोंके ज गी जहाजको नष्ट भ्रष्ट करके उन्होंने मन्द्राज पर दखल किया। इसके बाद सदुसे मफूजखाँ भी उनसे परास्त हुए। किन्तु कुड्डालूरमें जो युद्ध हुआ था, उसमें फरासियो की दो बार हार हुई थी। अङ्गरेजोंने फरासियो को पु डीचेरीमें अव रोध किया, पर पीछे उन्हें ही पीठ दिखानी पड़ी थी। अम्बुरके युद्धमें भी उन्हींकी विजय हुई। इस युद्धमें अनवर-उद्दीन् मारे गये। अनन्तर फरासियो ने मुरारि राजके शिविर पर आक्रमण कर उन्हें चकित किया था। अनवर-उद्दीन्के लड़के महम्मद अलीने भी फरासियो का शासन करनेके लिये उनसे घोर युद्ध किया था, पर आखिर वे भी परास्त हुए। अनन्तर फरासियोंने गिञ्जी पर धावा बोल दिया। नासिर पराजित हुए, बोल काण्डाक्षेत्रमें अङ्गरेज लोग भी पीठ दिखानेको बाध्य हुए थे। क्लाइवके कौशलसे त्रिचिनपल्लीमें फरासीगण अवरुद्ध हुए थे और दो बार उन्होंने क्लाइवसे पराजय भी स्वीकार की थी। अब फरासी यहांसे श्रीरङ्ग क्षेत्रको चले आये। यहां भी वे अङ्गरेजोंके निकट आत्म समर्पण करनेको बाध्य हुए। विक्रवाडी नामक स्थानमें फरासियोंने अङ्गरेजोंको परास्त किया, किन्तु बहार नामक स्थानमें जो युद्ध हुआ उसमें फरासियोंकी ही हार हुई।

बुसीकी अधिनायकतामें फरासीगण यथेष्ट प्रभाव शाली हो उठे थे। उन्होंने महाराष्ट्रोंको कई बार परास्त किया और भारतके पूर्व उपकूलस्थ चार विस्तृत प्रदेश दखल किये। तिरुवाडी नामक स्थानमें अङ्गरेजोंने फरासीके हाथसे हदसे ज्यादा कष्ट भोगा था। किन्तु स्वर्णाचल और सर्कराचलमें फरासी लोग हार खा कर श्रीरङ्गको भाग गये थे। फिर त्रिचिनपल्लीमें दोनोंकी

मुठभेड़ हुई। यहां फरासियोंके भग्न मनोरथ होने पर भी उन्होंने काटापाडामें अङ्गरेजों पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद दोनोंमें सन्धि स्थापित हुई। फरासियोंने अङ्गरेजोंके विरुद्ध सिराजुद्दौलाको सहायता देना नामञ्जूर किया। अनन्तर नागपत्तनमें फिरसे युद्ध छिड़ा। इस समय फरासियोंने कुद्दालूर और सेराटडेभियाके किले पर अधिकार किया। किन्तु शीघ्र ही वे उक्त स्थानको छोड़ कर तञ्जोरमें आश्रय लेनेको वाध्य हुए थे। वाण्डेवश, पन्दूर, सेराटडेभेड और वन्दिवास इस सब स्थानोंमें जो युद्ध हुए थे उनमें फरासीका प्रभाव बहुत कुछ जाता रहा। यहां तक, कि वे अङ्गरेजों को १७६१ ई०में पुदिचेरी अर्पण करनेको वाध्य हुए। १७४९ ई०में डुप्लेके बुद्धिकौशलसे फरासीका जो प्रभाव एक समय इतना बढ़ा चढ़ा था, वह आज पुदीचेरी-समर्पणके साथ साथ तिरोहित हुआ। १७६३ ई०में सन्धिके अनुसार अङ्गरेजों ने फरासियों को पुदिचेरी लौटा दिया। १७७८ ई०में सर हेक्टर मनरोने पुनः पुदिचेरीको दखल किया, पर १७८३ ई०में सन्धि हुई, उसके अनुसार उक्त स्थान पुनः लौटा दिया गया। १७९३ ई०में यह फिर अङ्गरेजोंके हाथ लगा और १८०१ ई०में आमीनकी सन्धिके अनुसार प्रत्यर्पित हुआ। परन्तु १८०३ ई०में अङ्गरेजोंने उक्त स्थान पुनः छीन लिया था। आखिर १८१४ ई०में सदाके लिये फरासियोंको दे दिया गया। अभी चन्दननगर, करिकाल, पुदिचेरी, फणम् और माही ये सब स्थान फरासीके अधिकारमें हैं।

एक समय सारे भारतवर्षमें फरासीप्रभाव फैल गया था। फरासियोंने ही सबसे पहले विपुल मुगल साम्राज्य अङ्गरेजोंके अधीन करनेकी चेष्टा की थी। फरासियोंने पहले देशीलोगोंके साथ मिल कर उनकी सहायतासे भारत अधिकारमें प्रयास पाया था। फरासियोंने ही देशी राजाओंके सेनादलमें घुस कर देशी सेनाको यूरोपीय प्रथासे रणशिक्षा दी थी। यदि यह वैगुण्य न घटता, तो कह नहीं सकते, कि फरासी अधिकार आज भारतमें कहां तक फैला होता। जो सब महावीर भारतवर्षमें फरासी अधिकार फैलानेमें उद्योगी हुए थे, उनमेंसे डुप्ले, वूसी, काउण्ट लाली और लाबोर्दनेका नाम प्रधान है। इन पांचोंके साथ भारतमें फरासीका इतिहास जड़ित है। डुप्ले वूसी, लाली लाबर्दन और फ्रांस शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

फरासीस—फरासी देखो।

फरासीसी (हिं० वि०) १ फ्रांसका रहनेवाला। २ फ्रांस का बना हुआ। ३ फ्रांसदेशमें उत्पन्न, फ्रांसका।

फरासीसांवेग—एक ग्रन्थकार। इन्होंने अ-नुलिपुराण और इञ्जीलपुराणकी रचना की थी।

फरिया (हिं० स्त्री०) १ वह लहँगा जो सामनेकी ओर सिला नहीं रहता। यह कपड़ेका चौकोर टुकड़ा होता है जिसे एक किनारेकी ओर चुन लेते हैं। इसे लड़कियां या स्त्रियां अपनी कमरमें बांध लेती हैं। (पु०) २ रहटके चरखे या चक्करमें लगी हुई वे लकड़ियां जिन पर मट्टीकी हँड़ियोंकी माला लटकती रहती हैं। ३ मिट्टी की नाद। यह नाद चीनीके कारखानोंमें इसलिये रखी जाती है, कि उसमें पाग छोड़ कर चीनी बनाई जाय, हौद।

फरियाद (फा० पु०) १ दुःखित या पीड़ित प्राणियोंका अपने परित्राणके लिये चिल्लाना, शिकायत, नालिश। २ प्रार्थना, विनती।

फरियादी (फा० वि०) फरियाद करनेवाला, नालिश करनेवाला।

फरियाना (हिं० क्रि०) १ छांट कर अलग करना। २ पक्ष निर्णय करना, तै करना। ३ साफ करना, गोलमाल दूर करना। ४ निर्णय होना, निबटना। ५ सूझ पड़ना, साफ साफ दिखाई पड़ना।

फरिश्ता (फा० पु०) १ मुसलमानी धर्मग्रन्थोंके अनुसार ईश्वरका वह दूत जो उसकी आज्ञाके अनुसार कोई काम करता हो। २ देवता।

फरी (हिं० स्त्री०) १ फाल, कुशी। २ गाड़ीका हरसा, फड़। ३ एक प्रकारकी छोटी ढाल जो चमड़ेकी बनी होती है। इसे गतकेके साथ उसकी मारको रोकनेके लिये ले कर खेलते चलते हैं। ४ फली देखो।

फरीक (अ० पु०) १ प्रतिद्वन्द्वी, मुकाबला। २ पक्षका मनुष्य, तरफदार। ३ दो पक्षोंमेंसे किसी पक्षका मनुष्य।

फरीदकोट—पञ्जाबके शतद्रुके अन्तर्भुक्त एक सिख-राज्य।

यह अक्षा० ३० १३ से ३० ५० उ० और देशा० ७४ ३१ से ७५ ५ पू० फिरोजपुर जिलेके दक्षिणमें अवस्थित है। भूपरिमाण ६४२ वर्गमील और जनसंख्या सवा लाखके करीब है। इसमें फरीदकोट और कोटकपुर नामके २ शहर और १६७ ग्राम लगते हैं। राज्य इसके उत्तर पश्चिममें पड़ता है। राज्यका पश्चिमांश अनुर्वर है। पर पूर्वांशमें अच्छी फसल लगती है।

जलाभाव होनेसे खेती-बारीमें भारी नुकसान पहुंचता है। एकमात्र वृष्टि ही प्रजाका भरोसा है। किसी किसी वर्ष जब बिलकुल पानी नहीं बरसता, तब प्रजाके कष्टकी सीमा नहीं रहती। इस कारण यहाका राजस्व समय पर वसूल नहीं होता समयानुसार वह घटा बढ़ा भी दिया जाता है।

यहांके सरदार बराड़जाटवंशीय हैं। भल्ला नामक उस वंशके पूर्वतन कोई व्यक्ति सम्राट् अकबर शाहके शासनकालमें अपने कुल गौरवकी रक्षा कर गये हैं। उनके भतीजेने कोटकपुरा नामक दुर्ग बनवाया और स्वयं स्वाधीनभावमें राज्य करने लगे। १९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें पञ्जाब केशरी महाराज रणजित्सिंहने कोटकपुरा और पीछे फरीदकोट दखल कर लिया। उन्होंने १८०८ और १८०९ ई०के मध्य शतद्रुके वामकूलवर्त्ती सब विभागोंको दखल किया था, वृटिशगवर्मेण्टने उन्हें प्रत्यर्पण कर देनेके लिये प्रार्थना की। आखिर नितान्त अनिच्छा रहते हुए भी महाराज केवल फरीदकोट लौटा देनेको बाध्य हुए।

१८४५ ई०में सिख युद्धके समय सरदार पहाड़सिंहने अङ्गरेजोंका पक्ष लिया था, इस प्रत्युपकारमें उन्हें राजाकी उपाधि मिली थी। इसी समय उन्होंने नाभा अधिकृत राज्यका कुछ अंश तथा निज पैतृक सम्पत्ति कोटकपुर प्राप्त किया।

१८४९ ई०में द्वितीय सिखयुद्धके समय पहाड़सिंहके लड़के वजीरसिंहने अङ्गरेजोंको काफी मदद पहुंचाई थी। १८५७ ई०के गदरमें ये विद्रोह दमनमें भी अङ्गरेजोंके साथ थे। यहां तक, कि ये उन विद्रोहियोंके मारके गांव जला देनेसे भी बाज न आये। उनके कामसे प्रसन्न हो कर वृटिश गवर्मेण्टने उन्हें यथेष्ट पारितोषिक दिया। १८७४ ई०में उनकी मृत्यु हुई। बाद उनके लड़के विक्रमसिंह राजा हुए। १८६२ ई०की सनदके अनुसार अधिकारियोंने इस राजसम्पत्तिका पुत्रपौत्रादिक्रमसे भोग करनेका अधिकार पाया है। उन्हें दत्तक लेनेका भी अधिकार है। राज्यमें जितने द्रव्य आते हैं, उन पर किसी प्रकारका कर निर्द्धारित नहीं है। वर्त्तमान राजाका नाम ब्रिज इन्द्रसिंह जी है। इन्हें सरकारकी ओरसे ११ सलामी तोपें मिलती हैं। इनके पास ४१ घुड़सवार, १२७ पदाति, २० गोलन्दाज और ६ कमान हैं। फरीदकोट शहरमें एक हाई-स्कूल और एक दातव्य चिकित्सालय है जिसका खर्च राज्यकी ओरसे दिया जाता है।

२ उक्त राज्यकी राजधानी, यह अक्षा० ३० ४० उ० और देशा० ७४ ४६ पू०, फिरोजपुरसे २० मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १०४०५ है। प्रायः सात सौ वर्ष हुए, बाबा फरीदके समय मञ्ज राजपूतराज मोकलसीने अपने नाम पर यहां एक दुर्ग बनवाया था। इसी शहरमें फरीदकोटका राजप्रासाद अवस्थित है। यहां एक हाई स्कूल और दातव्य चिकित्सालय है।

फरीदनगर—मीरट जिलेकी गाजियाबाद तहसीलका एक शहर यह अक्षा० २८ ४६ उ० और देशा० ७७ ४१ पू० मीरट शहरसे १६ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या ५६२० है। सम्राट् अकबरके समय फरीद उद्दीन खांने इसे बसाया। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

फरीदपुर—बङ्गालके ढाका विभागान्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २२ ५१ से २३ ५५ उ० तथा देशा० ८९ १९ से ९० ३९ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २२६१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें पद्मानदी, पूर्वमें मेघना, पश्चिममें मधुई नदी और दक्षिणमें वाखरगञ्ज है।

जिलेके उत्तरांशवर्ती स्थान अपेक्षाकृत ऊंचा है। फरीदपुर नगरसे यह क्रमशः ऊंचा होता आया है। वाखरगञ्जके निकटवर्ती स्थान प्रायः जलमग्न रहते हैं। यहां तक, कि नावके सिवा वहां आने जानेका कोई दूसरा उपाय नहीं है। यहांके लोग प्रायः नदी किनारे दूरदूरके निकटस्थ उच्चस्थान पर ही वासगृह बनाते हैं। प्रबल वर्षामें यह स्थान प्रायः समुद्र दिखाई

देता है। कभी कभी जलस्रोतमें नदीतीरवर्त्ती कितने ग्राम बह जाते हैं। स्थानीय प्रवाद है, कि गङ्गा नदीके पहले सलीमपुरके पास हो कर बहती थी। अभी यह कानाईपुरकी ओर गति पलट कर पूर्वकी ओर पद्मा नामसे बहती है।

नदीके पङ्कसे धीरे धीरे इस जिलेकी उत्पत्ति हुई है। क्रमशः प्रजावृन्दके आग्रहसे जबसे यहां विचार अदालत आदि स्थापित हुई, तबसे यह सम्पूर्ण स्वाधीन जिला रूपमें गिना जाने लगा है। १५८२ ई०में मुगलसम्राट् अकबरशाहने जब बङ्गालका बन्दोबस्त किया, उस समय यह स्थान महम्मदाबाद सरकारके अन्तर्निविष्ट था। १२वीं शताब्दीमें यहां मघदस्युगण भारी उत्पात मचाने लगे और आसामवासियोंने इस स्थानमें लूटपाट आरम्भ कर दिया। अंगरेजी शासनके आरम्भमें १७६५ से १८११ ई० तक यह स्थान ढाकाविभागके अन्तर्भुक्त था और लोग इसे ढाका जलालपुर कहा करते थे। उस समय ढाका नगरमें ही फरीदपुरका विचार सदर था जिससे लोगोंको उतनी दूर आने जानेमें बहुत कष्ट होता था १८११ ई०में इस अभावको दूर करनेके लिये यहां स्वतन्त्र विचारगृहादि स्थापित हुए। तभीसे यह स्थान एक स्वतन्त्र जिलारूपमें गण्य होता आ रहा है।

इस जिलेमें २ शहर और ५२८३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या बीस लाखके करीब है। मुसलमान और चण्डालगण ही यहांके मुख्य अधिवासी हैं। इन्हींकी संख्या अन्यान्य जातियोंसे अधिक है। मुसलमान सिया और सुन्नी सम्प्रदायके हैं। उनमें अधिकांश मनुष्य खेती बारी करके अपना गुजारा चलाते हैं।

मुसलमानोंके फराजी मतके प्रवर्त्तयिता हाजी सरिजुल्लाने इसी जिलेके अन्तर्गत दौलतपुर ग्राममें जन्मग्रहण किया था। पचास वर्षके भीतर उनका मत क्रमशः सारे पूर्ववङ्गालमें फैल गया। फराजीगण सुन्नी हैं और आबू हनीफा (१) के मतानुसार चलते हैं। यहांके जो चाण्डाल हैं उनमेंसे अनेक मुगल और अफगान शासनकालमें दीक्षित हुए थे। उनका कहना है, कि वे पहले हिन्दू समाजभुक्त थे। उनमें ब्राह्मणादि नाना वर्ण भी था। किसी ब्राह्मणके शापसे वे ढाकाका परित्याग कर यशोर, फरीदपुर और वाखरगञ्ज अञ्चलोंमें आ कर बस गये और इस प्रकार आचारभ्रष्ट हुए हैं। जो कुछ हो इनका अध्यवसाय, कष्टसहिष्णुता और स्वदेशप्रियता आश्चर्यजनक है।

जिलेकी प्रधान उपज धान, पटसन, तेलहन, दलहन, गेहूं और बाजरा है। राजकार्यकी सुविधाके लिये यह फरीदपुर, गोआलन्दो, मदारीपुर नामक तीन उपविभागोंमें विभक्त है। यहांकी घर्घरा नदीके किनारे प्रति चैत्र संक्रान्तिमें गङ्गा और कालीपूजाके उपलक्षमें एक मेला लगता है। हिन्दू मुसलमान ईसाई आदि अपने अपने अभीष्टकी सिद्धिके लिये उक्त नदीमें स्नान और मानसिक पूजा दान करते हैं।

विद्याशिक्षामें और लोगोंका उतना ध्यान नहीं है। सैकड़े पीछे छः मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। जिले भरमें अभी कुल १०५ सेकण्डरी, १६५६ प्राइमरी और २०७ स्पेसल स्कूल हैं। शिक्षाविभागमें कुल खर्च ढाई लाख रुपयेसे ज्यादा है। स्कूलके अलावा जिले भरमें १६ अस्पताल हैं।

२ फरीदपुर जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २३ ८´ से २३ १७´ उ० तथा देशा० ८९ ३०´ से ९० १२ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ८६० वर्गमील और जनसंख्या सात लाखसे ऊपर है। इस विभागमें १ शहर और २२१८ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त जिलेका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २३ ३७´ उ० और देशा० ८९ ५१´ पू० मरा-पद्माके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या लगभग ११६४१ है। फकीर फरीदशाहके नाम पर इसका फरीदपुर नाम पड़ा है। नगरके दक्षिण ढोलसमुद्र है। इसका जल स्वच्छ, सुमिष्ट और स्वास्थ्यकर है। प्रति वर्षके जनवरीमें यहां एक कृषि-प्रदर्शनी मेला लगता है। उस मेलेकी प्रतिष्ठा पहले पहल १८६४ ई०में हुई। अभी उसी मेलेके प्रताप जनसाधारणमें शिल्पकी उन्नति देखी जाती है।

फरीदपुर—१ युक्तप्रदेशके बरेली जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २८ १´ से २८ २२´ उ० तथा ७९ २३´ और ७९ ४५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २४१

(१) कुरानके प्रसिद्ध टीकाकार।

वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १३०००० है। इसमें १ शहर और ३१४ ग्राम लगते हैं। जिलेभरमें यह तहसील पर्वतमय और अनुर्वर है। केवल रामगङ्गा, बाघुल और बैंगासनदीके किनारे सामान्यतः खेती बारी देखी जाती है। यहां अयोध्या रोहिलखण्ड रेलपथके दो स्टेशन हैं।

२ उक्त तहसीलका प्रधान शहर। यह अक्षा० २८ १३´ उ० और देशा० ७६ ३३´ पू०के मध्य बरेलीसे शाहजहान्पुर जानेके रास्ते पर अवस्थित है। जनसंख्या सात हजारके करीब है। इसका प्राचीन नाम पुर था। राजद्रोही किसी कठोरिया राजपूतने इस नगरको बसाया। १७वीं शताब्दीके मध्यमें कठोरियागण बरेलीसे भगाये गये। किसीका मत है, कि मुसलमान साधु शेख फरीदके नामानुसार इसका वर्तमान नाम पड़ा है। फिर किसीका कहना है, कि १७४८-७४ ई०के रोहिला अधिकारकालमें जिस शासनकर्त्ताने यहां दुर्ग बनवाया था, उन्हींके नामानुसार फरीदपुर नाम रखा गया है। प्राचीन हिन्दूराजत्वके गौरवस्वरूप यहां कितने मन्दिर विद्यमान हैं।

फरीदबूटी (अ० खो०) एक वनस्पतिका नाम। इसकी पत्तियां धनियांके आकारकी छोटी छोटी होती हैं। इन पत्तियोंको जलमें डाल कर मलनेसे लबाब निकलता है। यह ठंडी होती है और गर्मीको शान्त करनेके लिये लोग इसे पीते हैं।

फरीदाबाद—पञ्जाबके दिल्ली जिलेकी बल्लभगढ़ तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २८ २५´ उ० तथा देशा० ७२ २०´ पू० दिल्लीसे १६ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ५३१० है। जहांगीरके खजानची शेख फरीदने १६०७ ई०में इस नगरको बसाया था। शहरमें विक्टोरिया एङ्गलो वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल, वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और मिडिल इङ्गलिश स्कूल है। अलावा इसके एक सरकारी अस्पताल भी है।

फरुखनगर—पञ्जाबके गुड़गांव जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २८´ २७´ उ० और देशा० ८६ ५०´ गुड़गांव शहरसे १४ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या लगभग ८ः हजार है। नगर अष्टकोण और प्राचीरपरिवेष्टित है। चारों ओर चार द्वार हैं। मध्य भागमें दो बाजार हैं। नगरकी शोभा देखनेसे यह सचमुच समृद्धिशाली प्रतीत होता है। पहले लवण प्रस्तुत और विक्रय करना यहांका प्रधान व्यवसाय था। अभी रेलपथके खुल जानेसे शम्बर लवणकी विशेष आमदनी होती है जिससे स्थानीय लवणका कारबार प्रायः बन्द-सा हो गया है। यहां जो कुछ उत्पन्न होता है, उसकी प्रायः अन्य स्थानों में रफ्तनी होती है। दिल्ली द्वार, सीसमहल नामक नवाबका प्रासाद, मसजिद आदि प्रधान अट्टालिकायें देखने योग्य हैं।

१७१३ ई०में इस प्रदेशके शासनकर्त्ता बेलूचसरदार फौजदार खाँ (दलेल खाँ) ने सम्राट् फरुखसियरके नाम पर इसका नाम रखा। १७५७ ई० तक यही वंश यहांके अधिकारी रहे। पीछे भरतपुरके जाटोंने उनसे छीन लिया। १२ वर्षके बाद फौजदारके पौत्रने पुनः पितृसिंहासन पर अधिकार जमाया। १८५७ ई० तक उन्होंने यहां राज्य किया था। सिपाहीविद्रोहके समय यहांके नवाब अहमद अली खाँने विद्रोहियोंका साथ दिया था जिससे वे अंगरेजोंके हाथसे यमपुरके मेहमान बने। तफुज्जुल हुसेन खाँ नामक एक मुसलमानने उक्त सम्पत्ति पारितोषिकमें पाई। सिपाही विद्रोहकालमें उसने अंगरेजोंको खासी मदद पहुँचाई थी। उनके वंशधर ग़ुलाम उद्दीन हैदर आज भी उस प्रदेशका शासन करते हैं। राजस्व छह हजार रुपयेसे अधिक है। शहरमें एक अस्पताल है।

फरुखसियर—एक मुसलमान बादशाह, आजिम उस् शान के मध्यम पुत्र तथा सम्राट् बहादुरशाहके पौत्र। ये विशेषतः फरुकसे और फेरोकशियर नामसे ही मशहूर थे। कुमार आजिम उस शान् जब औरङ्गजेब बादशाहके आदेशसे बङ्गालका परित्याग कर दक्षिणप्रदेशको गये, उस समय उन्होंने अपने मध्यम पुत्र फरुखसियरको बङ्गालका नायब सूबेदार बनाया। जब तक दाक्षिणात्यसे लौट कर लाहोर न पहुँचे तब तक फरुखसियर बेरोकटोक बङ्गाल की सूबेदारी करते रहे। १७२२ ई० (१७१० ई०में) उनकी जगह पर आजम-उद्दीन खानखाना बङ्गालके सूबेदार बनाये गये और फरुखसियरको दिल्ली-सभामें लौट आनेको कहा गया।

फरुखसियर अजीमाबाद (पटनामें) आ कर आगे

भाव और वर्षाका आगमन देख कर नगरके निकट अपेक्षा करने लगे। इसी समय उन्हें बहादुरशाहकी मृत्यु सम्वाद मिला। उन्होंने झटसे अपने पिताके नाम पर खुतवापाठ और मुद्राका प्रचार कर दिया। उस समय पटनाके सैयद हुसेन अलीखाँ बाड़ा आजिम उस शानके नायब थे। सैयदका साहस और प्रतिभा देख कर फर्रुखसियरने उन्हें अपने पक्षमें खींच लिया। फर्रुख सियरकी माताने भी हुसेनअलीको पुत्र पक्षावलम्बन करनेके लिये विशेष अनुरोध किया था।

इसके बाद आजिम उस शानकी मृत्यु और जहान दार शाहकी विजयवार्त्ता पटना पहुंची। अभी (११२३ हिजरी, रवि उल् अव्वल) फर्रुखसियरने अपने नाम पर मुद्रा प्रचार और खुतवा पाठ करनेका हुक्म दिया। हुसेन अलीके भाई सैयद अबदुल्ला खाँ उस समय इलाहाबादके सूबादार थे। उन्होंने भी फर्रुखसियरका साथ दिया। इस समय बङ्गालका समस्त राजकोष फर्रुख सियरने अपना लिया।

फर्रुखसियरने विश्वस्त सेनापति और २५००० अश्वारोहीके साथ दिल्लीकी ओर यात्रा कर दी। सैयद भाई उनकी यथेष्ट सहायता कर रहे थे। इलाहाबादमें बहुत सी सेना इकट्ठी करके फर्रुखसियरने आगरेमें जहानदारशाह पर एकाएक हमला कर दिया। इस भीषण युद्धमें हुसेनअली गुरुतररूपसे आहत हुए थे, किन्तु जहानदारको ही पराजय स्वीकार करनी पड़ी।

रात तो जहानदारने किसी तरह आगरेमें ही बिताई, सबेरे होते ही वे जुल्फिकर खाँके साथ बड़े सतर्कसे दिल्ली आये। उनका भाग्य परिवर्त्तन हुआ जान आसद उद्दौलाने उन्हें दुर्गमें कैद कर लिया।

सात दिन विश्रामके बाद फर्रुखसियरने दिल्लीकी ओर यात्रा की। ११२४ हिजरी (१७१२ ई०में) ११वीं महर्रमको वे दिल्लीमें आ धमके। जहानदारशाह निहत हुए। २०वीं जेल्हज्जको फर्रुखसियर दिल्लीके सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। सैयद अबदुल्लाखाँने 'कुतब उल्-मुल्क'-की उपाधि और सात हजारी मनसब (दो असपस् और से असपस्) हुसेन अली खाने 'अमीर उल् उमरा फिरोज जङ्ग'की उपाधि और सात हजारी तथा इसीके साथ साथ मीर-बक्सीका पद प्राप्त किया।

फर्रुखसियरका कोई स्वाधीन मत नहीं था। उनका लालन पालन बङ्गालमें ही हुआ था। वहां दूसरेके इच्छानुसार ही उन्हें सभी कार्य करने होते थे, इस कारण उनकी स्वाधीन प्रवृत्तिका आभास प्रकट होने नहीं पाता था। कच्ची उमरमें वे दिल्लीके सिंहासन पर अधिष्ठित हुए थे, राजकार्यमें उनकी उतनी दक्षता न थी। सैयद अबदुल्लाको वजीर बना कर उन्होंने राजकार्यका कुल दारमदार उसी पर सौंप दिया था। इस अविमृश्यकारिताका फल उन्हें पीछे अच्छी तरह भुगताना पड़ा।

मीरजुमला बादशाहके अतिप्रिय पात्र हो उठे थे। वे एक विचक्षण, कर्मदक्ष और उदारपुरुष थे। सैयद भाई आ कर एक प्रकारसे मुगल साम्राज्यको ग्रास कर रहे हैं, यह देख कर उन्हें भारी दुःख हुआ था। अब वे ही सैयद भाइयोंको जन साधारणके निकट हेय और अपदस्थ करनेके लिये कौशलक्रमसे उन्हींके द्वारा दिल्लीके प्राचीन अमीर और उमराव लोगोंकी हत्या करने लगे। इस समय दुर्वृत्त सैयदोंके हाथसे अमीर उल उमरा जुलफिकर खाँ आदि सम्भ्रान्त व्यक्तिगण अति घृणित भावसे मारे गये। अमीर उल-उमराके दीवान राजा शुभचाँदकी जीभ काट डाली गई, जहानदार शाहके पुत्र अजीजउद्दीन, आजिमशाहके पुत्र अली तवर और फर्रुख-सियरके कनिष्ठ हुमायुन बख्त्‌ उत्तप्त लौहशलाका द्वारा नेत्रहीन किये गये थे।

सैयद अबदुल्लाने रतनचाँद नामक एक शस्यविक्रेताको दीवान बनाया। यह व्यक्ति तथा सैयद भाइयोंकी उदरपूर्त्ति किये बिना किसीका भी कोई काम नहीं करता था। फर्रुखसियर सैयदके आचरणसे अच्छी तरह जान कार थे। उन्होंने मीरजुमलाको अपना प्रतिनिधि बनाया। सही मोहर आदि कुल बादशाही कामका भार उसी पर सौंपा गया इसीसे वजीरकी क्षमता बहुत कुछ ह्रास हो गई। अब सैयद बादशाह और मीरजुमलाके अनिष्ट साधनमें लग गये। मीरजुमला सैयद भाइयोंको कैद करनेके लिये बादशाहसे बार बार अनुरोध करने लगे। बादशाहकी माता सैयद अबदुल्लाको बहुत चाहती थी। उन्होंने सैयदको किसी तरह इन सब बातोंसे सतर्क कर दिया।

इस समय अमीर उल उमरा हुसेन अलीने बादशाह-से दाक्षिणात्यकी सूबेदारी माग ली। उनकी इच्छा थी, कि वे दाउद खाँ नामक एक व्यक्तिको प्रतिनिधि बना कर सूबेदारी चलायेंगे और आप दिल्लीके दरबारमें रहेंगे। इस सूबेदारीसे उन्हें अच्छा रकम मिलनेकी आशा थी। किन्तु मीरजुमलाके परामर्शसे बादशाहने हुसेनको कहला भेजा, कि दाक्षिणात्यकी सूबेदारी मिलेगी सही, पर दाक्षिणात्यमें रह कर कार्य निबाह करना पड़ेगा। अमीर उल उमरा भाईको दरबारमें अकेला रख कर दाक्षिणात्य जानेको राजी न हुए। फलत सैयदोके साथ बादशाहका मनोमालिन्य होनेका सूत्रपात हुआ। सैयद भाइयो ने दरबारमें आना बन्द कर दिया और अपने अपने मकानको सशस्त्र सैन्य द्वारा सुरक्षित कर रखा। फरुख सियरकी माता पहलेसे ही सैयदो के पक्षमें थी। उन्होंने पुत्रको कह सुन कर सैयदो को दरबारमें बुलाया और आपसमें मेल करा दिया। मीरजुमला पटनाका सूबेदार बन कर आये। फरुखसियरके अभिषेकके २रे वर्षमें यह घटना घटी।

३रे वर्ष, गुजरातके अहमदाबादमें मुसलमानो के हिन्दूधर्ममें आक्षेप और गोहत्याका आयोजन करनेके कारण दोनो में घोरतर दगा हुआ था। इस समय सूबेदार दाउद खाँ हिन्दूके पक्षमें थे।

जिस समय दिल्लीका सिंहासन ले कर भाई भाईमें युद्ध चल रहा था, नाना स्थानोंमें अराजकता फैलनेकी नौबत आ गई थी, उस समय पञ्जाबमें सिख लोग गुरु बदाकी अधिनायकतामें स्वाधीन होनेकी चेष्टा कर रहे थे। फरुखसियरके चौथे वर्षमें (१७१४ ई०में) अब दुस्समद दिलेर जङ्ग लाहोरके सूबेदार हो कर गये। यहां उन्होंने सिखोंको परास्त कर उनके गुरुको बन्दी रूपमें भेज दिया। मीरजुमलाको पटनेकी सूबेदारी पसन्दमें न आई। उनकी सेनाने आपसमें सलाह कर वेतन वृद्धिकी दरखास्त पेश की। यहां तक, कि उनकी उसे जनासे मीरजुमला पटनामें और अधिक दिन तक ठहर न सके। वे फौरन दिल्लीमें आ धमके। उनके ऐसे आचरणसे बादशाह बड़े विरक्त हुए। मीरजुमलाने आखिर बादशाहका अनुग्रह पानेकी आशासे सैयद भाइयो का आश्रय लिया। किन्तु लोगोंने समझा, कि यह सैयदको बन्दी करनेका बहाना मात्र है। इस समय ७।८ हजार अश्वारोहीने बाकी तनख्वाह वसूल करनेके लिये महम्मद अमीर खाँ बख्सी, अमीर उल् उमराके प्रतिनिधि खाँ दौरान और मीरजुमलाके मकानमें उत्पात मचाना आरम्भ कर दिया। यहा तक, कि दिल्लीका पथ विपज्जनक हो उठा। सैयद अली अबदुल्लाने बहुसंख्यक सशस्त्र अश्वारोही और सिपाही रख कर उन लोगो का गतिरोध किया है।

बादशाहने मीर जुमलाके प्रति नितान्त असन्तुष्ट हो उन्हें पञ्जाब भेज दिया और उनकी जगह सर बुलन्द खाँ पटनाके सूबेदार बनाये गये। मीर जुमलाके पञ्जाब जाने पर सभी कानाफूसी करने लगे, कि यह राजाकी चालबाजी है, सैयद भाइयोंको बन्दी करनेका ही आयोजन हो रहा है। आखिर ऐसा हुआ, कि अब दुल्ला अपना वजीरी-काम भी खो बैठे। चारों ओर गोलमाल उपस्थित हो गया। बहुतेरे दूसरोंकी जागीर या मनसब आत्मसात् करने लगे। इस समय हुसेन अली दाक्षिणात्यमें दाऊद खाँ और महाराष्ट्रोंकी क्षमता ह्रास करनेकी चेष्टा कर रहे थे, नाना स्थानोंमें युद्ध विग्रह चल रहा था। इस समय बालाजी विश्व नाथके प्रभावसे मुगल-सेनाने कई जगह हार खाई थी। हुसेन अलीने महाराष्ट्रपति शाहुके साथ सन्धि करनेकी सनद भेजी थी। किन्तु बादशाहने उनके प्रस्तावको ग्राह्य नहीं किया। पेशवा शब्द देखो।

दिल्लीके दरबारमें महम्मद मुराद नामक एक नीच वंशीय काश्मीरी बादशाहका प्रियपात्र हो सैयदोंके दमन की चेष्टा कर रहा था।

योधपुरके राणा अजितसिंहकी कन्या अति रूपवती थी। बादशाहने उससे विवाह करना चाहा। परन्तु वे एकाएक ऐसे बीमार पड़े, कि उनकी आशा पूरी न हो सकी। इस रोगमें यथासाध्य चिकित्सा चली रही थी। इसी समय अङ्गरेजवणिक् मेदोकरोक वाणिज्य करनेका फरमान लेनेकी आशासे कई हजार रुपये उप ढौकनके साथ राजदरबारमें उपस्थित थे। उनमेंसे एकका नाम डाक्टर हामिल्टन था। हामिल्टनकी

कौशिशसे बादशाह रोगमुक्त हुए और शीघ्र ही महा समारोहसे राजपूतबालाके साथ उनका परिणयकार्य सम्पन्न हुआ। (१७१६ ई०में) अङ्गरेज चिकित्सकके प्रार्थनानुसार अङ्गरेजवणिक्ने बादशाहसे बङ्गालमें बेरोक टोक वाणिज्य करनेका फरमान और ३७ ग्राम खरीदनेकी अनुमति पाई थी। इधर सैयद भाइयोंके साथ उनका विरोध धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था। अबदुल्ला हुसेन अलीको दिल्ली आनेके लिये बार बार पत्र लिखा करते थे। अजितसिंह आदि बड़े बड़े मनुष्य बादशाहके सहायक थे। यदि ये चाहते, तो कब उस कण्टकको दूर कर सकते थे। पर अपनी निर्बुद्धिता और अल सतासे उन्होंने ऐसा किया नहीं, जिससे पीछे उन्हें हाथ मल मल कर रहना पड़ा। हुसेन भाईके साथ आ मिले। दोनोंके कौशलसे अनुचरोंने राजान्तःपुरसे बादशाहको बाहर कर उनकी दोनों आंखें निकल लीं और पीछे उन्हें कारागारमें कैद कर रखा (१७१६ ई०की १८वीं फरवरी)। दोनों सैयद भाइयोंने तैमुरवंशीय एक बालकको बादशाह खड़ा कर ११३१ हिजरी, ६ रजब (१७१६ ई० १६वीं मई) को नृशंसरूपसे फरुखसियरके प्राण ले लिये। दिल्लीस्थ हुमायुनके समाधिमन्दिरमें उनकी कब्र हुई। सैयदोंने पहले जिस बालकको बादशाही दी थी, उसका नाम था रफी उद् दर्जात।

फर्रुखाबाद (फरक्काबाद)—युक्त प्रदेशके आगरा विभाग का एक जिला। यह अक्षा० २६° ५६´ से २७° ४३´ उ० और देशा० ७६° ८´ से ८०° १´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६८५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें शाहजहान पुर और बदाऊं, पूर्वमें हरदोई जिला, दक्षिणमें कानपुर और इटावा तथा पश्चिममें मैनपुरी और एटा है। फते गढ़ नगर इसका विचार विभागीय सदर है, किन्तु गङ्गाके पश्चिम कूलवर्त्ती फर्रुखाबाद नगरमें ही लोगोंका वास अधिक है।

दोआबके मध्यभागमें यह जिला अवस्थित है। मध्यभाग और मार्गोंसे निम्न है। इस कारण प्रति वर्ष बाढ़से यह स्थान जलमग्न हो जाता है। गङ्गाके तीर-वर्त्ती भूमि पर पंक पड़ जानेके कारण फसल अच्छी लगती है। शेष सभी स्थान जङ्गलसे पूर्ण हैं।

प्राचीन कन्नौजराज्य इस जिलेके अन्तर्भुक्त होनेके कारण यह स्थान प्रत्नतत्त्वविदोंका हृदयग्राही हुआ है। कान्यकुब्ज देखो। वर्त्तमान फरुखाबाद नगर मुसलमान राजाओंके समय बसाया गया। नगरके भीतर और बाहर स्थपति किया (भग्नावशेष अट्टालि कादिके)-के जो सब निदर्शन देखनेमें आते हैं, वे मुसलमानी ढंग पर बने हुए हैं। वर्त्तमानकालमें गङ्गासे २ कोस(१) दूर कालीनदीके वामकूल पर फर्रुखाबादनगर बसा हुआ था। प्राचीन नगरके ध्वंसा वशेषमें प्राय ५ ग्राम विस्तृत हैं। चारों ओर ईंटोंकी दीवार पड़ी हुई हैं। यहाके लोग उस ध्वंसस्तूपमेंसे ईंट ले कर अपना घर द्वार बनाते हैं। प्राचीन नगरकी गौरव कीर्त्ति धीरे धीरे लोप होती जा रही है।

हिन्दूकीर्त्तियोंमें एक मात्र राजा अजयपालका पवित्र क्षेत्र देखने लायक है। आज भी बहुत सी मुस लमानकीर्त्तियां विद्यमान हैं।

गुप्तराजाओंने ३११से ५७५ ई० तक इस स्थानका शासन किया था। उनकी प्रचलित मुद्रा और अपरापर कीर्त्तिस्तम्भ आज भी इस जिलेके मध्य इधर उधर पड़े दिखाई देते हैं। भारजाति ही यहाकी आदिम अधिवासी है। ठाकुरगण शायद उनका उच्छेदसाधन करके आर्य उपनिवेश बसा गये हैं। कन्नौजराज जयचान्दके अधि कारकालमें कालीनदीका दक्षिणांश लोगोंसे परिपूर्ण हो गया। मुसलमान कर्तृक उक्त राजाओंके पराजित होनेके बहुत बाद इसका उत्तरांश वर्त्तमान अधिवासि योंके हाथ लगा। १८वीं शताब्दीमें फर्रुखाबादके नवाब ही यहाके सर्वमय कर्त्ता हुए। १७५१ ई०में रोहिला-सरदार अली महम्मदकी मृत्यु हुई। सम्राट्ने हाफिज रहमत खांको अलीका उत्तराधिकारी कबूल नहीं किया। सम्राट्के आदेशसे फर्रुखाबादके नवाब दलबलके साथ हाफिजका दमन करनेके लिये अग्रसर हुए। युद्धमें नवाब साहब पराजित और निहत हुए। इसी समय अयोध्याके वजीर सफदर जङ्गने फर्रुखाबादको लूटा, इस कारण फरक्काबादी रोहिला और बरेलीके दलमें एकत्र

(१) पहले गङ्गा नदी फर्रुखाबादके निम्न हो कर बहती थी।

हो कर सफदरके हाथसे फरुखाबाद छीन लिया और इलाहाबादमें घेरा डाला। विस्तृत विवरण रोहिलखण्ड और बरेली शब्दमें देखो।

रोहिलाओंको १७७४ ई०में परास्त करके सुजा उद्दौलाने यह स्थान अपने अधिकारमें कर लिया। इसके बाद १८०१ ई०में यह अङ्गरेजोंके हाथ लगा। १८५७ ई०में यहां विद्रोहानल खूब जोरसे धधक उठा।

फतेगढ़में बहुतसे अङ्गरेज मारे गये। फतेगढ़ देखो। मईसे जनवरी मास तक यह जिला नवाब और बङ्गश खाँके अधीन रहा। १८५८ ई०में जब ब्रिगेडियाकी फौजने विद्रोहियोंको परास्त किया, तब नवाब और फिरोजशाह जान ले कर बरेलीको भाग गये। पीछे मई मासमें विद्रोहियोंने आ कर फिरसे कायमगञ्जको घेर लिया। किन्तु इस बार वे यहां अधिक दिन ठहर न सके।

इस जिलेमें फर्रुखाबाद, फतेगढ़, कायमगञ्ज, शमसाबाद, कन्नौज, छिबरामौ, तिरवा और तेलोग्राम नामके ८ शहर और १६८० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या नौ लाखसे ऊपर है। सैकड़े पीछे ८८ हिन्दू और १२ मुसलमान हैं। अयोध्या, रोहिलखण्ड, कानपुर, कलकत्ते आदि स्थानोंमें यहांसे चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, तेल आदि जात द्रव्योंकी रफ्तनी होती है। रेलपथके खुल जानेसे वाणिज्यकी विशेष सुविधा हो गई है। १८७०से १९०० ई० तकके अभ्यन्तर प्रायः दश बार दुर्भिक्ष पड़ा था।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत गिरा हुआ है, सैकड़े पीछे चार मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। पर अब इस ओर लोगोंका ध्यान कुछ कुछ आकृष्ट होता जा रहा है। सारा जिले भरमें २५० ऐसे स्कूल हैं जिनमें सरकारसे कुछ कुछ सहायता मिलती है, ५० प्राइवेट स्कूल हैं जिनमें गवर्मेण्टसे कुछ भी सहायता नहीं मिलती और ४ खास गवर्मेण्टके स्कूल हैं। स्कूलके अलावा अस्पताल भी हैं।

२ युक्तप्रदेशके फर्रुखाबाद जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २७ १´ से २७ २८´ उ० और देशा० ७९ १०´ से ७९ ४५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३३६ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः २५०२५२ है। इसमें १ शहर और ३८७ ग्राम लगते हैं। बाजरा, आलू और तमाकू यहांकी प्रधान उपज है। यहां आम भी बहुतायतसे मिलता है। भोजपुर, मुहम्मदाबाद, पहाड़ा और शमसाबाद परगने ले कर यह तहसील गठित हुई है।

३ उक्त जिलेका प्रधान नगर। यह अक्षा० २७ २४´ उ० और देशा० ७९ ३४´ पू० गङ्गाके पश्चिम कूलसे प्रायः १॥ कोसकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या पचास हजारके करीब है। १७१४ ई०में नवाब मुहम्मद खाने सम्राट फर्रुखसियरके नाम पर यह नगर बसाया। यहां एक किला है। कहते हैं, कि पहले उसीमें नवाबका प्रासाद था। यहांसे गङ्गागर्भका दृश्य अति मनोरम लगता है। पहले यह नगर युक्तप्रदेशका वाणिज्य केन्द्र था। इष्टइण्डिया और कानपुर फर्रुखाबाद लाइट रेलपथके खुल जानेसे नगरका वाणिज्य गौरव घट गया है। भिन्न भिन्न मालोंकी रफ्तनी रेल द्वारा ही होती है। यहांकी ऐतिहासिक घटना जिलेके साथ सम्मिलित रहनेके कारण उसी जगह वर्णित हुई है। शहर चारों ओर मट्टीकी दीवारसे घिरा हुआ है। शहरके बाहर नवाबका समाधि मन्दिर है जो अभी भग्नावस्थामें पड़ा है। शहरमें एक हाईस्कूल, American Presbyteian mission स्कूल, एक मिडिल स्कूल तथा बहुतसे प्राइमरी स्कूल हैं। अलावा इसके एक चिकित्सालय और एक जनाना अस्पताल है। हालमें एक सैदेका कारखाना भी खुला है।

फरुखि—खान्देशके मुसलमान राजवंश। १३७० ई०में मालिकराज फरुखिने दिल्लीश्वरसे दक्षिण सिमाका शासनभार ग्रहण किया। ताप्ती नदीके उपत्यका तक वे राज्य फैला कर परलोक सिधारे, पीछे उनके लड़के नासिर खांने अपनेको स्वाधीन राजा बना कर तमाम घोषणा कर दी और १३९९ ई०को खान्देश राज्यमें फरुखि राजवंशकी प्रतिष्ठा की। उन्होंने असीरगढ़ जीत कर पीछे ताप्तीके दूसरे किनारे बुर्हानपुर और जैनाबाद नगर बसाया। बुर्हानपुर नगरमें उनकी राजधानी थी। यहां खान्देश राजवंशने १३९९से १६०० ई० तक शासन किया। किन्तु उनकी स्वाधीनता सदाके लिये अक्षुण्ण न रही। गुजरात और मालवराजके अधीन वे सामन्तरूप। राज्य

करते थे। समय समय पर उन्होंने स्वाधीन होनेकी कोशिश भी की थी जिससे ये अधिराजके हाथ कई बार अच्छी तरह शासित हुए थे। विभिन्न आक्रमणकारियोंके हाथमें पड़ कर बुर्हानपुर तबाह हो गया था और फरुखिगणने असीरगढ़ जा कर आश्रय ग्रहण किया। पञ्चम राजा आदिल खाँ (शाह ईफरखन्द) के राज्यकालमें इस वंशकी विशेष श्रीवृद्धि दिखाई दी थी। उन्होंने गढ़ा मण्डल तक राज्य जीत कर गोंडोंसे कर वसूल किया था। उनकी बनाई हुई जमा मसजिद् इद्गा आदि आज भी बुर्हानपुरमें देखनेमें आती है। १६०० ई०में सम्राट् अकबरशाहने फरुखिवंशके शेष राजा बहादुर खाँको असीरगढ़के युद्धमें परास्त कर खान्देश अपने साम्राज्यमें मिला लिया था।

फरुवक (सं० क्ली०) पूगपात्र।

फरुहा (हिं० पु०) फावड़ा देखो।

फरुही (हिं० स्त्री०) १ छोटा फावड़ा। २ लकड़ीका एक प्रकारका औजार जो फावड़ेके आकारका होता है। यह घोड़ेकी लीद हटानेमें काम आती है। क्यारी बनानेके लिये गृहस्थ खेतकी मिट्टी इससे हटाते हैं। ३ मथानी। ४ एक प्रकारका भूना हुआ चावल जो भुनने पर फूल कर भीतरसे खोखला हो जाता है, लाई।

फरुहरी (हिं० स्त्री०) फुरहरी देखो।

फरेंद (हिं० पु०) जामुनकी एक जातिका नाम। इसके फल बहुत बड़े बड़े और गूदेदार होते हैं। इसकी पत्तियाँ जामुनकी पत्तियोंसे अधिक चौड़ी और बड़ी होती है। फल आषाढ़में पकते हैं और मीठे होते हैं। जामुनके समान यह पाचक होता है। जामुन देखो।

फरेन्द्र (सं० पु०) जम्बू वृक्ष, जामुनका पेड़।

फरेब (फा० पु०) कपट, धोखा।

फरेरा (हिं० पु०) फरहरा देखो।

फरेरी (हिं० स्त्री०) जंगलके फल, जंगली मेवा।

फरैंदा (फा० पु०) एक प्रकारका तोता।

फरो (फा० वि०) तिरोहित, दबा हुआ।

फरोख्त (फा० स्त्री०) विक्रय, बिक्री।

फरोदस्त (फा० पु०) १ गौरी, कान्हड़ा और पूरबीके मेलसे बना हुआ एक प्रकारका संकर राग। कहते हैं, कि यह राग अमीर खुसरोने निकाला था। २१४ मात्राओंका एक ताल। इसमें ५ आघात और २ खाली होते हैं। इसके तबलेके बोल यों हैं—१ धिने धिन, २ धाकेटे, ३ तागधिन् धा गगे ता, तेटेकता, गदिघेन। धा।

फर्क (हि० पु०) फरक देखो।

फर्च (हि० वि०) फरच देखो।

फर्चा (हि० पु०) फरचा देखो।

फर्जंद (हि० पु०) फरजंद देखो।

फर्ज (अ० पु०) १ मुसलमानी धर्मानुसार विधिनिर्दिष्ट कर्म जिसके नहीं करने प्रायश्चित्त करना पड़ता है। २ कल्पना, मान लेना। ३ कर्त्तव्यकर्म। ४ उत्तरदायित्व।

फर्जी (फा० वि०) १ कल्पित, माना हुआ। २ सत्ताहीन, नाममात्रका। (पु०) ३ फरजी देखो।

फर्द (फा० स्त्री०) १ कागज या कपड़े आदिका टुकड़ा जो किसीके साथ जुड़ा या लगा न हो। २ रजाई शाल आदिका ऊपरीपल्ला जो अलग बनता और बिकता है। ३ कागजका टुकड़ा जिस पर किसी वस्तुका विवरण, सूची या सूचना आदि लिखी गई हों या लिखी जाय। ४ परत। ५ वह पशु या पक्षी जो जोड़के साथ न रह कर अलग और अकेला रहता है। (वि०) फरद देखो।

फर्दूसी—फिर्दौसी देखो।

फर्फर (सं० लि०) स्फुर अच् पृषोदरादित्वात् साधु। अत्यन्त चञ्चल।

फर्फरी (सं० स्त्री०) कराग्र, पंजा।

फर्फरीक (सं० पु०) स्फुरतीति स्फुरणे (फर्फरीकाद यश्च। उण् ४।२०) इति ईकन्, धातो फर्फरादेशश्च। १ कराग्र, पंजा। २ उपानत्, जूता। ३ मार्दव, सरलता। ४ कोंपल।

फर्फरीका (सं० स्त्री०) फर्फरीक टाप्। १ पादुका, जूता। २ मदन।

फर्माना (फा० क्रि०) फरमाना देखो।

फर्याद (फा० स्त्री०) फरियाद देखो।

फर्रा (हि० पु०) गेहूँ या धानकी फसलका एक रोग। यह रोग उस अवस्थामें उत्पन्न होता है जब फूलोंके समय तेज हवा बहती है। इसमें फूल गिर जानेसे बालोंमें दाने नहीं पड़ते।

फरांस (हि० पु०) १ शिकजा, नेनी। २ फरांस देखो।

फरांश (अ० पु०) १ वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, सफाई करना, फर्श बिछाना, दीपक जलाना और इसी प्रकारके दूसरे काम करना होता है। २ नौकर, खिदमतगार।

फरांशी (फा० वि०) फर्श या फरांशके कामोंसे सम्बन्ध रखनेवाला। (स्त्री०) २ फरांशका काम। ३ फरांशका पद।

फर्मों (अ० स्त्री०) फरमो देखो।

फर्श (अ० स्त्री०) १ बिछावन, बिछानेका कपड़ा। २ फरश देखो।

फर्रुखविगार।

फर्हत खाँ—सम्राट् हुमायूँके एक क्रीतदास। इसने किसी युद्धमें बेगमावाके हाथसे हुमायूँको बचाया था। इस प्रत्युपकारसे सम्राट्ने सरहिन्द जानेके समय इसे लाहोरका शिकदार बना दिया। कुछ समय बाद यह अकबर शाहके साथ मिल गया। अकबरने सिंहासन पा कर इसे कोराके तुजल्दारका पद प्रदान किया। अहमदाबादके समीप इसने महम्मद हुसेन मिर्जाको परास्त कर विशेष सुख्याति प्राप्त की। उक्त सम्राट्के शासनके १९वें वर्षमें यह पुनः युद्ध करनेके लिये विहार भेजा गया। इस बार भी इसने सफलता प्राप्त की जिससे सम्राट्ने प्रसन्न हो कर इसे जागीरदार बना दिया। पीछे राजा गजपतिके साथ जो इसका युद्ध हुआ उसीमें यह मारा गया।

फर्हो—युक्तप्रदेशके मैनपुर जिलेका एक नगर। यह मुस्त फाबादसे ४ कोस दूरमें अवस्थित है। यहाँ चीनी, गेहूँ और शस्यादिका कारबार है।

फलक (फा० पु०) अन्तरिक्ष, आकाश।

फल (सं० क्ली०) फलतीति फल-निष्पत्तौ अच् फल्यते विस्तार्यते वा अच्। १ लाभ। २ वनस्पतिमें होनेवाला वह बीज अथवा पोषक द्रव्य या गूदेसे परिपूर्ण बीजकोश जो किसी विशिष्ट ऋतुमें फूलोंके आनेके बाद उत्पन्न होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिसे बीज (दाने या अनाज आदि) और बीजकोश (साधारण बोलचालमें अर्थात् फल) में विशेष नहीं माना जाता। परन्तु व्यवहारमें यह विभेद बहुत ही प्रत्यक्ष है। यद्यपि वैज्ञानिक दृष्टिसे गेहूँ, चना, जौ, मटर, आम, कटहल, अंगूर, अनार, सेब, बादाम, किशमिश आदि सभी फल हैं, परन्तु व्यवहारमें लोग गेहूँ, चने, जौ, मटर आदिको गिनती बीज या अनाजमें और आम, कटहल, अनार, सेब आदिकी गिनती फलोंमें करते हैं। फल प्रायः मनुष्यों और पशु-पक्षियोंके खानेके काममें आते हैं। इसके भेद भी अनेक होते हैं। कुछमें केवल एक ही बीज या गुठली रहती है, कुछमें अनेक। इसी प्रकार कुछके ऊपर बहुत ही मुलायम और हलका आवरण या छिलका और कुछके ऊपर बहुत कड़ा या कांटेदार रहता है।

३ गुण, प्रभाव। ४ प्रतिफल, बदला। ५ प्रयत्न या क्रियाका परिणाम, नतीजा। ६ धर्म या परलोककी दृष्टिसे कर्मका परिणाम जो सुख और दुःख है, कर्मभोग। ७ शुभ कर्मोंके परिणाम जो संख्यामें चार माने जाते हैं। इन चारोंके नाम हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ८ हलकी फाल। ९ ढाल। १० फलक। ११ बाण, भाले, छुरी आदिका तेज अगला भाग। यह भाग लोहेका बना होता है और उससे आघात किया जाता है। १२ गणितमें किसी क्रियाका परिणाम। १३ पासे परकी बिन्दी या चिह्न। १४ उद्देश्यकी सिद्धि। १५ त्रैराशिककी तीसरी राशि या निष्पत्तिमें प्रथम निष्पत्तिका द्वितीय पद। १६ मूलका ब्याज या वृद्धि, सूद। १७ क्षेत्रफल। १८ फलित ज्योतिषमें ग्रहोंके योगका परिणाम जो सुख दुःख आदिके रूपमें होता है। १९ जायफल, जावफल। २० प्रयोजन, दरकार। २१ त्रिफला। २२ कंकोल, ककोल। २३ कुटज वृक्ष, कोरैयाका पेड़। २४ शर। २५ पुष्प। २६ व्यय। २७ स्त्री रज। २८ सर्वतोभद्ररस। २९ मदनफल। ३० वमन। ३१ महर्षि गौतमोक्त प्रमेय भेद। महर्षि गौतमने न्याय सूत्रमें इसका लक्षण इस प्रकार बतलाया है—

प्रवृत्ति और दोषजनित जो अर्थ है वही फल पदार्थ है। इस विषयकी कुछ विशदरूपसे यहाँ आलोचना करनी चाहिये। आत्मीयका गमन, शरीर या मानसिक क्रिया आदि चाहे जो कोई व्यापार क्यों न हो, उसके परिणामसे सुख अथवा दुःख भोग उत्पन्न होता है।

अर्थात् सुख या दुःखभोग व्यतीत कार्यमात्रका और कोई परिणाम फल ही नहीं है। सभी कार्योंके अन्तमें सुख अथवा दुःख हुआ करता है। इसीसे महर्षि गौतमादि ऋषियोंने सुख और दुःखको ही कार्यका फलस्वरूप स्वीकार किया है, सुख अथवा दुःख साक्षात्कारके बाद और कोई भी फल उत्पन्न नहीं होता, यही सुखदुःख भोगकार्यमात्रका चरमफल है। इस कारण सुख अथवा दुःखभोगको ही मुख्यफल कहना चाहिये। जीवके आहार विहार आदि व्यापारोंका मूल कारण प्रवृत्ति और दोष है। प्रवृत्ति शब्दसे यत्न और दोष शब्दसे राग, द्वेष तथा मोह ये तीनों ही समझे जाते हैं। रागका अर्थ इच्छा अर्थात् अनुराग और द्वेषका आत्मगुणविशेष है। द्वेष होनेसे अनिष्टाचरणमें प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। मोहका अर्थ अयथार्थ-ज्ञान है अर्थात् दुःखकर कार्यमें सुखकर और कामिनी आदिमें मनोहरत्वादि बुद्धि है। ये तीनों प्रथमतः जीवात्माको आच्छन्न करते हैं। इसीसे उपार्जन प्रभृति व्यापार अति दुःखकर होने पर भी उसमें उक्त दोष मोहित आत्माकी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। उस प्रवृत्तिके होनेसे ही व्यापारधारा उत्पन्न हुआ करती है। यही व्यापारधारा आखिरमें सुख या दुःख उत्पादन करती है। इसी कारण दोष और प्रवृत्ति इस सुख अथवा दुःखभोगका मूल कारण होती है। महर्षि गौतमने प्रवृत्ति और दोष द्वारा उत्पन्न पदार्थको ही फल बतलाया है। अतएव सुख अथवा दुःखभोग ही मुख्य फल है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। भोजनादि क्रिया भी शरीरादि इन्द्रियके सुख और दुःखभोग सम्पादन करती है, इस कारण यह गौणफल है। अतएव सुख और दुःख इन दोनोंके अन्यतरका साक्षात्कारत्व ही मुख्यफलका लक्षण है तथा सुखदुःख भिन्न वर्त्तमान अन्यतर गौणफलका लक्षण और अन्यतरत्व ही सामान्य फलका लक्षण है। (न्यायदर्शन)

अनिष्ट इष्ट और मिश्रके भेदसे कर्मके तीन फल होते हैं। चाहे जिस किसी कार्यका अनुष्ठान क्यों न किया जाय उसके उक्त तीन प्रकारके फलके सिवा और किसी प्रकारका फल नहीं होगा।

मानव इस जगत्में (गीता १८ अ०) या परलोकमें सुख दुःखादि या स्वर्ग नरकादि जो कोई फलभोग करते हैं, वह कर्मजन्य है। शुभकर्मका फल सुख और अशुभ या पाप कर्मका फल दुःख है। जीव बार बार कर्मफलका भोग करते हैं, किन्तु आत्मा निर्लिप्त है, उसके ये सब फल नहीं होते।

जब तक आत्माका मायिकबन्धन छिन्न नहीं होता, तब तक इस प्रकारका फल अवश्यम्भावी है।

कलिमें दान ही एकमात्र शुभफलप्रद है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणमें प्रकृतिखण्डके ३४वें अध्यायमें तथा हेमाद्रिमें दानफलका विशेष विवरण लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां नहीं लिखा गया।

फलक (सं० पु० क्ली०) फलं संज्ञायां कन्। १ चर्म, ढाल। २ अस्थिखण्ड। ३ नागकेशर। ४ काष्ठादि फलक, तख्ता, पट्टी। ५ नितम्ब, चूतड़। ६ जलपात्र रखनेका आधारविशेष। ७ रजकपट्ट, धोबीका पाट। ८ चादर। ९ पृष्ठ, वरक। १० हथेली। ११ कान। १२ चौकी, मेज। १३ नावकी तुरन जिस पर लोग बैठते हैं।

फलक (अ० पु०) १ आकाश। २ स्वर्ग।

फलकक्ष (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक यक्षका नाम।

फलकण्टक (सं० पु०) फले कण्टकं यस्य। १ कण्टकि फलवृक्ष। २ पनस, कटहल। ३ पर्पटक, खेतपापड़ा। ४ इन्दीवरा।

फलकण्टकी (सं० स्त्री०) इन्दीवरा।

फलकर्कशा (सं० स्त्री०) वनबदर वृक्ष, जङ्गली बेर।

फलकना (हिं० क्रि०) १ छलकना, उमगना। २ फ[illegible]ना देखो।

फलकपाणि (सं० पु०) फलकं पाणौ यस्य। चर्मी, हाथमें ढाल ले कर लड़नेवाला योद्धा।

फलकपुर (सं० क्ली०) भारतके पूर्ववर्ती पुरभेद। (पाणिनि ४।२।१०१)

फलकयन्त्र (सं० क्ली०) ज्योतिषोक्त यन्त्रभेद। इसके अनुसार ज्या आदिका निर्णय किया जाता है। सिद्धान्त-शिरोमणिमें इस यन्त्रकी प्रस्तुत प्रणाली आदिका विशेष विवरण लिखा है।

फलकर (हिं० पु०) वह कर जो वृक्षोंके फल पर लगाया जाता है।

फलकसक्थ (सं० त्रि०) फलकमिव सक्थि यस्य बहु० समासान्त। फलकतुल्य सक्थियुक्त। (स्त्री०) फलकमिव सक्थि।

फलका (अ० पु०) १ नाव या जहाजकी पाटनमें वह दरवाजा जिसमेंसे हो कर नीचेसे लोग ऊपर आते और ऊपरसे नीचे उतरते हैं। २ फफोला, छाला।

फलकाम (सं० त्रि०) फलं कामयते इति कम अण्। कर्म फलकामी, जो कर्मके फलकी कामना करता हो। शास्त्रमें फलकामी हो कर कार्य करनेको विशेष निन्दित बत लाया है।

शास्त्रमें सभी जगह निष्काम कर्मका विधान देखनेमें आता है, इस कारण सबोंको फलकामनाशून्य हो कर कर्मानुष्ठान करना विधेय है। अज्ञानान्ध जीवोंका चित्त बहुत मलिन है, इस कारण वे हमेशा नाना प्रकारकी कामना द्वारा अभिभूत रहते हैं। जब तक उनका चित्त मलिन रहेगा, तब तक वे पुनः पुनः सकाम कर्मका अनुष्ठान करेंगे। किन्तु इस प्रकार कर्म करते करते जिस परिमाणमें चित्त मलिनता दूर होगी उसी परिमाणमें चित्त भी कामशून्य होगा। भगवान् विष्णुकी प्रीतिकी कामना करके यदि किसी कर्मका अनुष्ठान किया जाय, वह दोष नहीं होता।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" (गीता)

भगवान् विष्णुने अर्जुनको निष्काम कर्म करनेका उपदेश दिया था। जीवदेह धारण करनेसे, इच्छापूर्वक हो चाहे अनिच्छापूर्वक, कर्म करना ही होगा। निष्कर्म हो कर कोई भी नहीं रह सकता। जब कर्म जीवका अवश्यम्भावी है, तब जिससे जीवगण फलकामनाशून्य हो कर कर्मका अनुष्ठान करे, उसीके लिये शास्त्रमें बार बार फलकामना त्यागका विषय वर्णित हुआ है। सकाम कर्मका फल बन्धन और निष्काम कर्मका फल मुक्ति है। यही सकाम और निष्काममें प्रभेद है।

फलकायन (सं० पुं०) एक कल्पित वनका नाम जिसके सम्बन्धमें यह प्रसिद्ध है, कि यह महात्माओंको बहुत प्रिय है।

फलकिन (सं० पु०) फलक फलकाकारोऽस्त्यस्येति फलक इनि। १ मत्स्यभेद, चीतल नामकी मछली। (त्रि०) २ फलकान्वित। फलक कण्टकिवृक्ष एव स्वार्थे क, फलका तेन चतुरर्थ्यां प्रेक्षादित्वात् इनि। ३ तद्युक्त भूमि आदि।

फलकी (सं० स्त्री०) फलकिन् देखो।

फलकीवन (सं० क्ली०) महाभारतके अनुसार एक वनका नाम जो किसी समय तीर्थ माना जाता था।

फलकृच्छ्र (सं० पु०) एक प्रकारका कृच्छ्र व्रत। इसमें बेल आदि फलोंके काढ़ेको पी कर एक मास तक रहना पड़ता है।

फलकृष्ण (सं० पु०) फले फलावच्छेदे कृष्णः। १ पानीयामलक, जल आँवला। २ करञ्जवृक्ष। (त्रि०) फले कृष्णं यस्य। ३ कृष्णफलयुक्त।

फलकेशर (सं० पु०) फले केशरा इवास्य। नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़।

फलकोष (सं० पु०) फलस्य मुष्कस्य कोष इव। १ मुष्कावरक चर्मयुक्त अण्डकोष। २ पुरुषकी इन्द्रिय लिङ्ग।

फलकोषक (सं० पु०) फलं मुष्क एव कोषो यत्र, ततः कन्। मुष्क, अण्डकोष।

फलग्रहि (सं० त्रि०) फलं गृह्णातीति ग्रह इन्। उपयुक्त समयमें फलित वृक्ष।

फलग्राही (सं० पु०) फलं गृह्णातीति ग्रह णिनि। १ वृक्ष, पेड़। (त्रि०) २ फलग्रहणकर्त्ता, फल लेनेवाला।

फलघृत (सं० क्ली०) घृतौषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—गव्यघृत ४ सेर, शतमूलीका रस ८ सेर, दुग्ध ८ सेर। कल्कार्थ—मंजिष्ठा, यष्टिमधु, कुट, त्रिफला, चीनी, विजयन्दकी जड़, मेदा, क्षीरकाकोली, अश्वगन्धामूल, वनयमानी, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, हिंगु, कटकी, नीलोत्पल, कुमुद, द्राक्षा, काकोली, क्षीरकाकोली, श्वेतचन्दन, रक्तचन्दन, रास्ना मूल (मतान्तरमें श्वेतअपराजिताका मूल) प्रत्येक दो तोला। इन सब द्रव्योंसे नियमपूर्वक घृत प्रस्तुत करना होता है। पुरुष यदि इस घृतका सेवन करे, तो उनकी शक्ति बढ़ती है और स्त्रियोंके सब प्रकारके योनिदोष तथा गर्भदोष दूर हो कर आयु और बलशाली पुत्र उत्पन्न

होता है। यह स्त्रीरोगाधिकारमें एक उत्कृष्ट औषध है। स्वयं अश्विनीकुमारने इस घृतका उपदेश दिया है। इसे फलकल्याणघृत भी कहते हैं। (भैषज्यरत्ना० स्त्रीरोगाधि)

फलचमस (सं० पु०) दधिमिश्रित वटत्वक् चूर्ण, एक प्रकारका पुराना व्यञ्जन जो वड़की छालको कूट कर उसके चूर्णको दहीमें मिला कर बनाया जाता था।

फलचारक (सं० पु०) १ फलविभाजक फलविभागकारी। २ बौद्धमतके अनुसार प्राचीनकालके एक कर्मचारीके पदका नाम।

फलचोरक (सं० पु०) फले चोर इव यस्य कन्। चोरक नामक गन्ध द्रव्य।

फलच्छदन (सं० क्ली०) काष्ठनिर्मित गृह।

फलजलवासुदेव (सं० पु०) एक प्राचीन कवि।

फलजाति (सं० स्त्री०) जातीफलवृक्ष।

फलत (सं० अव्य०) फलस्वरूप, इसलिये।

फलता—बङ्गालके २४ परगनेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २२ १८´ उ० और देशा० ८८ १०´ पू०, हुगली नदीके किनारे अवस्थित है। इसके ठीक दूसरे किनारे दामोदरनदी आ कर गङ्गामें मिल गई है। पहले यहां ओलन्दाजोंकी एक कोठी थी। नवाब सिराज उद्दौलाने जब कलकत्ते पर आक्रमण किया, तब अङ्गरेज रणतरी ले कर ड्रेक साहब यहीं पर रहते थे। यहां पहले एक छोटा दुर्ग था जो अभी छोड़ दिया गया है।

फलतान—दाक्षिणात्यके सातारा अधिकारभुक्त एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० १७ ५६´से १८ १´ उ० और देशा० ७४ १६´से ७४ ४४´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर पूना जिला और तीन ओर सातारा-राज्य है। भूपरिमाण ३९७ वर्गमील है। उत्पन्न शस्यादिके अलावा यहां तेल, कपास और रेशमी वस्त्र बुनने तथा पत्थरकी मूर्त्ति बनानेका विस्तृत कारबार है।

यहांके सरदार राजपूत हैं। इस वंशके पदकला जगद्देव नामक कोई व्यक्ति दिल्लीदरबारमें नौकरी करते थे। १३२० ई०के युद्धमें उनकी मृत्यु हुई। विश्वासी भृत्यकी मृत्युसे व्यथित हो सम्राट्ने उनके लड़के निम्ब राजको नायककी उपाधि और जागीर दी। १३४६ ई० में निम्बराजका देहान्त हुआ। इसके बाद १८२५ ई०में सातारांके राजाने इस पर अधिकार किया। १८२७ ई० में उन्होंने नजराना ले कर बालाजी नायकको पितृसिंहासन पर बैठनेकी अनुमति दी। १८२८से १८४१ ई० तक फलतान फिरसे साताराके शासनाधीन रहा। पीछे मृत राजाकी विधवा पत्नीने गोद लेनेका अधिकार पाया। ये हिन्दू और जातिके क्षत्रिय हैं। इन्हें दत्तक लेनेका अधिकार है। बड़े लड़के ही राज्यके उत्तराधिकारी होते हैं।

२ उक्त सामन्तराज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० १७ ५६´ उ० और देशा० ७४ २८´ पू० सातारासे ३७ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या दश हजारके लगभग है। १८वीं शताब्दीमें राजा निम्बराजने यह नगर बसाया। यहांकी सड़क परिष्कार, परिच्छन्न और वृक्षच्छायायुक्त है। १८६८ ई०में म्युनिसिपलिटी स्थापित हुई।

फलत्रय (सं० क्ली०) फलस्य त्रय ६-तत्। १ द्राक्षा, परुष और काश्मर्य ये तीनों फल। २ हड़ बहेड़ा और आंवला इन तीनोंका समूह।

फलत्रिक (सं० क्ली०) फलस्य त्रिकम्। १ भावप्रकाशके अनुसार सोंठ, पीपल और काली मिर्च। २ त्रिफला, हड़, बहेड़ा और आंवला।

फलद (सं० पु०) फलं ददातीति दा (आतोऽनुपसर्गे। पा ३।२।३) इति-क। वृक्ष, पेड़। (त्रि०) २ फलदाता, फल देनेवाला।

फलदान (हिं० पु०) १ हिन्दुओंकी एक रीति जो विवाह होनेके पहले उस समय होती है जब कोई व्यक्ति अपनी कन्याका विवाह किसीके लड़केके साथ करना निश्चित करता है। इसमें कन्याका पिता रुपये, मिठाई, अक्षत, फूल आदि लोक प्रथाके अनुसार शुभ मुहूर्त्तमें वरके घर भेजता है। उस समय विवाह निश्चित मान लिया जाता है। इसका दूसरा नाम बररक्षा भी है। २ विवाह सम्बन्धी टीकेकी रसम।

फलदार (हिं० वि०) १ फलवाला, जिसमें फल लगे हों। २ जो फले, जिसमें फल लगे।

फलदू (हिं० पु०) धौली नामका एक वृक्ष।

फलद्रुम (सं० पु०) फलितवृक्ष, फला हुआ पेड़।

फलना (हिं० क्रि०) १ फलसे युक्त होना, फल लाना।

फलांग (हिं० स्त्री०) १ एक स्थानसे उछल कर दूसरे स्थान पर जानेकी क्रिया या उसका भाव। २ मालखम्बकी एक कसरत। यह एक प्रकारकी उड़ान है। इसमें दोनों हाथोंसे ज़मीन पर टेक कर पैरोंसे उड़ाने और चक्कर लगाते हुए दूसरी ओर भूमि पर गिरते हैं। ३ वह दूरी जो फलांगनेसे तै की जाय।

फलांगना (हिं० क्रि०) एक स्थानसे उछल कर दूसरे स्थान पर जाना या गिरना।

फलाना (हिं० पु०) तात्पर्य, मायना, असल मतलब।

फला (सं० स्त्री०) १ भिण्डिभिण्डी क्षुप, झिंझिरीटा। २ शमी। ३ प्रियंगु। ४ कर्कोटक।

फलागम (सं० पु०) १ शरत्काल। २ फलके आनेका काल।

फलाढ्या (सं० स्त्री०) फलैन आढ्या सम्पन्ना। काष्ठकदली, कठकेला, जंगली केला।

फलाध्यक्ष (सं० स्त्री०) कारवेल्ली, करेली।

फलादन (सं० पु०) फलानामदनः भक्षक यस्य फलाना अदन भक्षण यस्य। १ शुकपक्षी, तोता। (त्रि०) २ फल भक्षक, फल खानेवाला।

फलादेश (सं० पु०) १ किसी बातका फल या परिणाम बतलाना, फल कहना। २ जन्मकुण्डली आदि देख कर या और किसी प्रकार ग्रहों आदिका फल कहना।

फलाध्यक्ष (सं० पु०) फलानामध्यक्षमिव। १ राजादनवृक्ष, खिरनीका पेड़। २ फलदेनेवाला, ईश्वर। ३ वह जो फलोंका मालिक हो।

फलाना (अ० पु०) अमुक, कोई अनिश्चित।

फलापाक (सं० पु०) पन्यार।

फलानुबन्ध (सं० पु०) कर्मफलकी प्रणाली।

फलानेखोर (अ० पु०) अदालतका एक तिकोना पाल जो आगेकी ओर होता है।

फलान्त (सं० पु०) फलेषु सत्सु अन्तो नाशो यस्य। १ वंश, बांस। फलस्य अन्त इत्। २ फलका अन्त, शेष।

फलाम्ल (सं० क्ली०) फलेऽम्लस्य वृक्षाम्ल। यह रोचक, गुरु और पक्वहृदय गुणयुक्त माना गया है। (वैद्यक०) २ वृक्षाम्ल।

फलाफल (सं० क्ली०) फल और अफल, अच्छा और बुरा।

फलाफलिका (सं० स्त्री०) फलसहित अफल तदस्ति अस्य ठन्, टाप, कापि अत-इत्व। फलसहित अफलयुक्ता स्त्री।

फलारण्य (सं० पु०) फलेन अरण्यः। फलयोग्य वृक्ष।

फलाम्ल (सं० क्ली०) फलमम्ल यस्य। १ वृक्षाम्ल, लट्टा फल। २ अम्लवेतस, अमलवेत। ३ चिंचापत्री, चिंच पिल।

फलाम्लपञ्चक (सं० क्ली०) अम्ल पञ्चक, बेर, अनार, चिंचापिल, अमलवेत और बिजौरा ये पांच खट्टे फल।

फलाम्लिक (सं० पु०) एक प्रकारकी इमलीकी चटनी।

फलायोषित (सं० स्त्री०) पतङ्ग स्त्री, मादा फतिंगा।

फलाराम (सं० पु०) फलका बगीचा।

फलारिष्ट (सं० पु०) अर्शरोगाधिकारोक्त अरिष्ट औषध विशेष। एक प्रकारका अरिष्ट जो बवासीरके रोगीको दिया जाता है।

फलार्थिन् (सं० त्रि०) फल अर्थयते इति अर्थ णिनि। फलकामी, फलकी कामना करनेवाला।

फलालीन (अ० पु०) एक प्रकारका ऊनी वस्त्र जो बहुत कोमल और ढीली बुनावटका होता है।

फलालुट—दार्जिलिङ्ग जिलेके अन्तर्गत हिमालय पर्वतकी सिङ्गलीला श्रेणीका एक शिखर। यह अक्षा० २७ १२´ ३०´´उ० और देशा० ८८ ३´ पू०के मध्य समुद्रपृष्ठसे १२०४२ फुट ऊंचा है। दार्जिलिङ्गमें खड़ा हो कर देखनेसे इस पहाड़का बर्फावृत दृश्य अतीव मनोहर लगता है।

फलाशन (सं० पु०) फलमश्नातीति अश-ल्यु। शुकपक्षी, तोता। (त्रि०) २ फलाहारी, फल खानेवाला।

फलाशिन् (सं० त्रि०) फलमश्नाति अश णिनि। फलभोजी, फल खानेवाला।

फलासङ्ग (सं० पु०) फलेषु आसङ्गः। फलाकांक्षा, यह आसक्ति जो किसी कार्यके फल पर हो।

फलासव (सं० पु०) फलोंके अनुसार द्राक्ष, खजूर आदि फलोंके आसव जो २६ प्रकारके होते हैं।

फलास्थि (सं० पु०) नारिकेल वृक्ष, नारियलका पेड़।

फलाहार ( सं० पु० ) फलाना आहार। फलभोजन, केवल फल खाना।

फलाहारी ( हिं० पु० ) १ वह जो फल खा कर निर्वाह करता हो। ( वि० ) २ फलाहार सम्बन्धी, जो केवल फलोंसे बना हो।

फलि ( सं० पु० ) फल इन्। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। इसका मांस भारी, चिकना, बलकारक और स्वादिष्ट होता है।

फलिका ( सं० स्त्री० ) फलमस्या अस्तीति फल ठन् टाप्। १ एक प्रकारकी निष्पावो जो हरे रंगकी होती है। २ शरादिका अग्रभाग, सरपत आदिके आगेका नुकीला भाग।

फलित ( सं० वि० ) फलमस्य जात अस्त्यर्थे तारकादित्वादि तच्। १ फलवान्, फला हुआ। २ सम्पूर्ण, पूर्ण। ( पु० ) ३ वृक्ष, पेड़। ४ पत्थर फूल, छरीला।

फलितव्य ( सं० क्ली० ) फल-तव्य। जो फलनेके योग्य हो, फलने लायक।

फलिन् ( सं० वि० ) फलमस्यास्तीति फल इनि। फलयुक्त वृक्षादि, वह वृक्ष जिसमें फल लगते हों।

फलिन ( सं० वि० ) फलानि सन्त्यस्येति फल ( बहुमन्यत्रापि। उण् २।४८ ) इति इनच्। १ फलवान्, फला हुआ। (पु०) २ फलवान्‌वृक्ष, वह पेड़ जिसमें फल लगते हों। ३ पनस वृक्ष, कटहल। ४ श्योनाकवृक्ष। ५ रीठा।

फलिनी ( सं० स्त्री० ) फलिन् स्त्रियां ङीप्। १ प्रियंगु वृक्ष। २ अग्निशिखावृक्ष। ३ मुषली, मूसली। ४ लक्ष्मणाकन्द। ५ एलादि, इलायची। ६ द्राक्षासव, दाखका बना हुआ आसव। ७ नागकेशर वृक्ष, मेंहदी। ८ लाङ्गलीवृक्ष, जल पीपल। ९ त्रायमाणा लता। १० दुग्धिका, दूधी।

फली ( सं० स्त्री० ) फलमस्त्यस्या इति अर्श आदिभ्योऽच् स्त्रियां ङीप्। १ प्रियंगुवृक्ष। २ फलिमत्स्य। ३ मुषली, मूसली। ४ चर्मकषा, चमरखा। ५ आम्रातक वृक्ष। आमला। ६ फलयुक्त वृक्षादि, वह वृक्ष जिसमें फल लगते हों। ७ श्योनाक। ८ पनस, कटहल।

फली ( हिं० स्त्री० ) छोटे छोटे पौधों में लगनेवाले एक प्रकारके फल। ये लम्बे और चिपटे होते हैं। गूदा कुछ भी नहीं होता, बल्कि उसके स्थान पर एक पंक्तिमें कई छोटे छोटे बीज होते हैं। लोग इन्हें खाते नहीं, बच्चे हो तरकारी आदिके काममें लाते हैं। प्रायः सभी फलियां खानेमें पौष्टिक होती है और सूख जाने पर पशुओं के भी खानेके काममें आती हैं।

फलेकार ( सं० पु० ) फल चि ष्ट कर्मणि अप्। फलेच्छा, फलकी कामना। वितुषीकरण। ३ अफल का फलसम्पादन।

फलीता (अ० पु०) १ बड़ आदिके बरोह या छाल आदिके रेशोंसे बटी हुई रस्सीका टुकड़ा। इसमें तोड़ेदार बन्दूक दागनेके लिये आग लगा कर रखी जाती है। २ वर्त्ति, बत्ती। ३ पत्ती डोर जो गोट लगाते समय सुन्दरताके लिये कपड़ेके भीतरका किनारा छोड़ कर ऊपरसे बखिया की जाती है।

फलीभूत ( सं० वि० ) फलदायक, लाभदायक।

फलीय ( सं० वि० ) फल उत्करादित्वात् चतुरर्थ्यां छ। १ फलयुक्त, जिसमें फल लगा हो। २ फलसन्निकृष्टादि।

फलेंदा ( हिं० पु० ) एक प्रकारका जामुन। इसका फल बड़ा, गूदेदार और मीठा होता है। इसके पेड़ और पत्ते भी जामुनसे बड़े होते हैं।

फलेग्रहि ( सं० पु० ) फल गृह्णातीति फल-ग्रह ( फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च। पा ३।२।२६ ) इति उपपदस्य एदन्तत्व ग्रहेरिन् प्रत्ययश्च निपात्यते। यथासमयमें फलधरवृक्ष, वह वृक्ष जो उपयुक्त समयमें फलता है।

फलेग्राहि ( सं० पु० ) फले गृह्णातीति ग्रह इन्, पृषोदरादित्वात् वृद्धि निपातनात् सप्तम्या अलुक्।

फलेग्रहि देखो।

फलेच्छुक (सं० पु०) १ यज्ञभेद। (वि०) २ फलकाम।

फलेन्द्र ( सं० पु०) फलेन इन्द्र ऐश्वर्यशालीव वृहत् फलत्वादेवास्य तथात्व। वृहज्जम्बु, बड़ा जामुन। पर्याय—नन्द, राजजम्बु, महाफल, सुरभिपत्रा, महाजम्बू। गुण—स्वादु, विष्टम्भी, गुरु और रुचिकर।

फलेपाकी ( सं० स्त्री० ) गन्धमुस्त, गन्धमुस्ता।

फलेपुष्पा ( सं० स्त्री० ) फले फलमुखे पुष्पं यस्याः, सप्तम्या अलुक्। क्षुद्र क्षुपविशेष, गूमा। पर्याय—गुरु, स्वादु, रूक्ष, उष्ण, वातपित्तकारक, क्षार, लवण, स्वादुपाक,

वस्तु, भेषक और फल, आम, कामरा, शोध और श्वास नाशक।

फलेरुहा ( सं० स्त्री० ) फले रोहतीति रुह-क अमप्या अलुक्। पाटलिवृक्ष, पाडरका पेड़।

फलेग्राहि ( सं० पु० ) औषधवृक्ष।

फलेसक ( सं० त्रि० ) फले सक्त आसक्त। फलासक्त, फलकामी।

फलोत्तमा ( सं० स्त्री० ) फलेषु उत्तमा। १ काकलीद्राक्षा, काकली दाख। २ दुग्धिका, दुधिया। ३ त्रिफला।

फलोत्पत्ति (सं० पु०) फलाय उत्पत्तिरस्य, प्रशस्त फलस्य उत्पत्तिर्यस्य वा। आम्रवृक्ष, आमका पेड़।

फलोदक ( सं० पु० ) १ यक्षभेद। २ फलस्पृष्ट जल।

फलोदय ( सं० पु० ) फलस्य उदयो यत्र। १ लाभ। २ सुरालय, देवलोक। ३ हर्ष, आनन्द। फलस्य उदयः। ४ फलोत्पत्ति।

फलोद्भव ( सं० त्रि० ) जो फलसे उत्पन्न हुआ हो।

फलोपजीविन् ( सं० त्रि० ) फलेन उपजीवयति उप-जीव णिनि। जो केवल फल द्वारा अपनी जीविका निर्वाह करता हो।

फलौद -युक्तप्रदेशके मीरट जिलान्तर्गत एक नगर। सुर्यवंशीय फल्गु नामक किसी राजपूतने इस नगरकी प्रतिष्ठा की। मुसलमानोंके आक्रमण तक यह स्थान फल्गु वंशधरोंके हाथ रहा। फकीर मुसलमानके अभिसम्पातसे बादमें प्रायः दो शताब्दी तक यह स्थान जनशून्य हो गया। १८३६ ई०में वृटिशगवर्मेण्टने इस स्थानको इजारा देना चाहा, पर अभिशापके भयसे किसीने ग्रहण नहीं किया। आखिरकार जाटोंने उस स्थानको ठेके पर ले लिया।

फल्क ( सं० पु० ) फल निष्पत्तौ ( इण्भीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन्। उण् ३।४० ) इति कन्। विस्तारितांग।

फल्गु ( सं० त्रि० ) फल निष्पत्तौ ( फलिपाटिनमिमनिजनां गुक्पटि। उण् १।१८ ) इति उ, गुगागमश्च। १ असार, जिसमें कुछ सार न हो। २ निरर्थक वाक्य। ३ सामान्य साधारण। ४ क्षुद्र, छोटा। ( स्त्री० ) ५ गयास्थ नदीभेद। गयातीर्थमें स्नान कर पितृपुरुषगणको पिण्डदान करना होता है। पृथ्वी पर जितने तीर्थ, समुद्र और सरोवर हैं वे सभी इस फल्गुनदीमें हैं अर्थात् सभी तीर्थादिमें स्नानदान करनेसे जो फल होता है, एक मात्र इस फल्गुनदीमें स्नानदानसे वही फल प्राप्त होता है। गया तीर्थ इसी नदीके किनारे अवस्थित है, इस कारण यह फल्गुतीर्थ नामसे भी प्रसिद्ध है।

( गरुड़पु० ८३ अ० )

गरुड़पुराण और अग्निपुराणादिके मतसे गयाशिर ही फल्गुतीर्थ है। गया देखो। ६ काकडुम्बर। ७ रेणुभेद। ८ मिथ्यावाक्य। ९ वसन्त ऋतु।

फल्गुता ( सं० स्त्री० ) फल्गु-तल् टाप्। असारार्थता, असम्भुता।

फल्गुदा ( सं० स्त्री० ) फल्गुरिति नाम ददाति धारयतीति दा-धारणे क। गयानदी। ( बृहद्धर्मपु० ५८ अ० )

फल्गुन ( सं० पु० ) फलति कार्यादिकमस्मादिति फल निष्पत्तौ ( फलेर्गुक्च। उण् ३।५६ ) इति उनन्, गुगागमश्च, फल्गुन्या फाल्गुनीनक्षत्रे जातः इति वा ( श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधेति। पा ४।३।३४ ) इति जातार्थप्रत्ययस्य लुक् ( लुक् तद्धितलुकि। पा १।२।४९ ) इति स्त्रीप्रत्ययस्य च लुक्। १ अर्जुन। २ फाल्गुनमास। ( त्रि० ) ३ फाल्गुनीनक्षत्र सम्बन्धी।

फल्गुलक ( सं० पु० ) अग्निविशेष।

( मार्कण्डेयपुराण ५८।३८ )

फल्गुनाल ( सं० पु० ) फल्गुनेन अलतीति अल-अण्। फाल्गुनमास।

फल्गुनी ( सं० स्त्री० ) फल्गुन गौरादित्वात् ङीष्। १ नक्षत्रविशेष, पूर्वफल्गुनी और उत्तरफल्गुनी नक्षत्र। २ काकोडुम्बरिका। ३ फल्गुनी नक्षत्रमें उत्पन्न।

फल्गुनीभव ( सं० पु० ) बृहस्पतिका एक नाम।

फल्गुफल ( सं० क्ली० ) काकोडुम्बरिकाफल।

फल्गुमूल ( सं० क्ली० ) काकोडुम्बरिकामूल।

फल्गुरुका ( सं० पु० ) वायुकोणस्थित नदीभेद।

( हरवंश० १४।२६ )

फल्गुवाटिका (सं० स्त्री०) फल्गुनी वाटीव यस्याः फल। काकोडुम्बरिका, कठूमर।

फल्गुवृन्त ( सं० पु० ) १ पाडरीवृक्ष। २ श्योनाक विशेष।

फल्गुवृन्ताक (सं० पु०) फल्गुना वृन्तेन आकायति शोभते इति आ-कै-क। श्योनाकभेद।

फल्गुहस्तिनी (सं० स्त्री०) एक स्त्री-कवि।

फल्गूत्सव (सं० पु०) फल्गु फल्गूनामुत्सव ६ तत्। फल्गुकरणक गोविन्दोत्सव, दोलयात्रा।

दोलयात्राके विधानानुसार श्रीकृष्णकी पूजा करके फल्गुचूर्ण भगवानको चढ़ाया जाता और उसीसे उत्सव किया जाता है, इसीसे इसको फल्गूत्सव या फाग-खेलना कहते हैं। यह उत्सव तीन या पांच दिन करना होता है।

फल्य (सं० क्ली०) फलाय हितमिति फल-यत्। कुसुम, फूल।

फल्लकिन् (सं० पु०) फल्लकः फलकस्तदाकारोऽस्त्यस्येति इनि। मत्स्यविशेष, फलुई नामकी मछली।

फल्लफल (सं० पु०) सूर्पवात, वह हवा जो सूपसे की जाती है।

फल्ला (हिं० पु०) एक प्रकारका रेशम जो बङ्गालके राम-पुरहाट नामक स्थानसे आता है। इसका रंग पीला पन लिये सफेद होता है।

फल्स पैण्ट—कटक जिलान्तर्गत एक अन्तरीप। यह महा नदीके उत्तरमुख पर अवस्थित है। यहां जहाजादिके लंगर डालनेके लिये सुन्दर बन्दर और आलोक गृह निर्मित है। बम्बईसे ले कर हुगलीनदीके मुहाने पर्यन्त ऐसा बन्दर और कहीं भी देखनेमें नहीं आता। इसके पास ही लङ्, और डोहेसयेल द्वीप, भीतरमें शुआइन द्वीप नामक मनुष्य वनभूमि है। जब जहाज इस बन्दरमें प्रवेश करता है, तब तूफान आदिका कुछ भी भय नहीं रहता है। इच्छानुसार जहाज आ जा सकता है, कहीं भी जमीनमें नहीं अटकता। इस बन्दरके सामने हो कर जम्बू, धामरा, ब्राह्मणी और देवीनदी तथा महानदीकी वाकूदनाला बह गई है। नाव द्वारा वाणिज्य द्रव्यकी रफ्तनी और आमदनी होती है। सभी ऋतुओंमें इस बन्दरमें जहाज आ सकता है।

पचास वर्ष पहले कोई भी इस बन्दरकी उपयोगिता समझ न सके थे। पश्चात मन्द्राजके देशीय वणिक लोग ही यहांसे चावल आदि ले जाया करते थे। १८६० ई०में इसे बन्दर कायम किया गया। कलकत्तेके रहने वाले किसी एक फरासीसी वणिकने यहां आ कर रफ्तनीका अड्डा खोला। पीछे इष्ट इण्डिया-इरिगेशन-कम्पनी नाना द्रव्य ले कर यहां बेचनेको आई। १८६६ ई०में उड़ीसामें घोर अकाल पड़ा। अङ्गरेज-गवर्मेण्ट उक्त प्रदेशके सभी स्थानोंमें इसी बन्दर हो कर चावल आदि भेजने लगी। जबसे केन्द्रापाड़ा नहर इस बन्दरमें मिला दी गई है, तबसे यह स्थान पर वाणिज्य-केन्द्ररूपमें गिना जाने लगा है। मिर्च शहर, हेमरवोर्दो आदि फरासीसी बन्दरसे माल लेनेके लिये यहां जहाज आते हैं।

फसकड़ा (हिं० पु०) पालथी, पलथी।

फसकना (हिं० क्रि०) १ कपड़ेका मसकना। २ बैठना। धंसना। (वि०) ३ जो जल्दी मसक या फट जाय। ४ जो जल्दी धंसे या बैठ जाय।

फसकाना (हिं० क्रि०) १ कपड़ेको मसकाना या दबा कर कुछ फाड़ना। २ धसाना, बैठाना।

फसल (अ० स्त्री०) १ ऋतु, मौसम। २ समय, काल। ३ शस्य, खेतकी उपज। ४ वह अन्नकी उपज जो वर्षके प्रत्येक अयनमें होती है। अन्नके लिये वर्षके दो अयन माने गये हैं, खरीफ और रब्बी। सावनसे पूस तकमें उत्पन्न होनेवाले अन्नोंको खरीफ और माघसे आषाढ़ तकमें उपजनेवालेको रब्बी कहते हैं।

फसली (हिं० पु०) १ एक प्रकारका सवत्। इसे दिल्ली के सम्राट् अकबरने हिजरी सवत्को जिसका प्रचार मुसलमानोंमें था और जिसमें चान्द्रमासकी रीतिसे वर्ष की गणना थी, बदल कर सौरमासमें परिवर्त्तन करके चलाया था। अब ईसवी सवत्से यह ५९३ वर्ष कम होता है। इसका प्रचार उत्तराय भारतमें फसल या खेती-बारी आदिके कामोंमें होता है। २ हैजा। (वि०) ३ ऋतुसम्बन्धी, ऋतुका।

फसाद (अ० पु०) १ बिगाड़, विकार। २ विद्रोह, बलवा। ३ ऊधम, उपद्रव। ४ लड़ाई, झगड़ा। ५ विवाद।

फसादी (फा० वि०) १ फसाद खड़ा करनेवाला, उपद्रवी। २ लड़ाका, झगड़ालू। ३ नटखट, पाजी।

फांसिल (हिं० स्त्री०) फाउल देखो।

फस्त (अ० स्त्री) फस्द देखो।

फस्द (अ॰ स्त्री॰) नसको छेद कर शरीरका दूषित रक्त निकालनेकी क्रिया।

फस्फोरस—फासफरस देखो।

फहम (अ॰ स्त्री॰) ज्ञान, समझ, विवेक।

फहमाइश (फा॰ स्त्री॰) १ शिक्षा, सीख। २ आज्ञा, हुक्म।

फहरना (हि॰ क्रि॰) फहरानाका अकर्मकरूप, वायुमें उड़ना।

फहरान (हि॰ स्त्री॰) फहरानेका भाव या क्रिया।

फहराना (हि॰ क्रि॰) १ उड़ाना, कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवामें हिलने और उड़ने लगे। २ वायुमें पसरना, हवामें रह रह कर हिलना या उड़ना।

फहरिस्त (हि॰ स्त्री॰) फेहरिस्त देखो।

फहश (अ॰ वि॰) फूहड़, अश्लील।

फहीम कवि—एक भाषा कवि। सम्वत् १६८०में इन्होंने जन्मग्रहण किया था। ये अकबर बादशाहके वजीर थे। इनके असली नाम अबुल्फजल फैजी था। इनके किसी ग्रन्थका तो पता नहीं है परन्तु इनके कुछ मनोहर और शिक्षाप्रद दोहे पाये जाते हैं।

फाँक (हि॰ स्त्री॰) १ खण्ड, टुकड़ा। २ किसी फलका एक सिरा, एक सिरेसे दूसरे सिरे तक काट कर अलग किया हुआ टुकड़ा। ३ किसी गोल या पिण्डाकार वस्तुका काटा या चीरा हुआ टुकड़ा, छुरी, आरी आदिसे अलग किया हुआ खण्ड। ४ लकीरें जिनसे कोई गोल या पिण्डाकार वस्तु मानो टुकड़ोंमें बँटी दिखाई दे।

फाँकड़ा (हि॰ वि॰) १ तिरछा, बाँका। २ हृष्टपुष्ट, तगड़ा।

फाँकना (हि॰ क्रि॰) चूर, दाने या बुकनाके रूपकी वस्तु को दूरसे मुहमें डालना।

फाँका (हि॰ पु॰) १ किसी वस्तुको दूरसे फेंक कर मुहमें डालनेकी क्रिया या भाव। २ उतनी वस्तु जो एक बारमें फाँका जाय।

फाँकी (हि॰ स्त्री॰) फाँक देखो।

फाँग (हि॰ स्त्री॰) एक प्रकारका साग।

फाँट (हि॰ स्त्री॰) १ बराबर कई भागोंमें बाँटनेकी क्रिया या भाव। २ हिस्सा पड़ता जिसके अनुसार कोई वस्तु बाँटी जाय। ३ क्रमसे बाँटा हुआ भाग, अलग अलग किये हुए कई भागोंमेंसे एक भाग। ४ औषधिको गरम पानीमें औटाना। ५ क्वाथ, काढ़ा आदिको पानीमें औटाना, काढ़ा करना।

फाँटना (हि॰ क्रि॰) १ किसी वस्तुको कई भागोंमें बाँटना, विभाग करना। २ जड़ी बूटी आदिको पानीमें औटाना, काढ़ा करना।

फाँटपरी (हि॰ स्त्री॰) वह कागज जिसमें किसी गाँवमें नामुश्तमल पट्टीदारोंके हिस्सोंके अनुसार उस गाँवकी आमदनी आदिकी बाँट लिखी रहती है।

फाँटा (हि॰ पु॰) लोहे या लकड़ीका वह झुका हुआ खण्ड जो मिल कर कोण बनाती हुई दो वस्तुओंको परस्पर जकड़े रखनेके लिये जोड़ पर जड़ दिया जाता है, कोनिया।

फाँड़ (हि॰ पु॰) फाँड़ा देखो।

फाँड़ा (हि॰ पु॰) दुपट्टे या धोतीका कमरमें बँधा हुआ हिस्सा।

फाँद (हि॰ स्त्री॰) १ उछाल, उछलनेका भाव। २ चिड़िया आदि फसानेका फंदा या जाल। ३ रस्सी, बाल, सूत आदिका फंदा जिसमें पड़ कर कोई वस्तु बँध जाय। कवियोंने इस शब्दको प्रायः पुलिंग ही माना है।

फाँदना (हि॰ क्रि॰) १ जोरके साथ शरीरको ऊपर उठा कर एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जा पड़ना, कूदना। २ गर्भयुक्त मादा पर जोड़ खानेके लिये जाना। ३ उछल कर पार करना, कूद कर लाँघना। ४ फंदेमें डालना, फसाना।

फाँदा (हि॰ पु॰) फंदा देखो।

फाँदी (हि॰ स्त्री॰) १ वह रस्सी जिससे कई वस्तुओंको एक साथ रख कर बाँधते हैं, गट्ठर बाँधनेकी रस्सी। २ ऊखोंका गट्ठा, एकमें बँधे हुए बहुतसे गन्नोंका बोझ।

फाँफी (हि॰ स्त्री॰) १ बहुत बारीक झिल्ली। २ दूधके ऊपर पड़ी हुई मलाईकी बहुत पतली तह। ३ आँखकी सफेद झिल्ली जो आँखकी पुतली पर पड़ जाती है, जाला।

फाँस (हिं० स्त्री०) १ पाश, बंधन। २ वह रस्सी जिसका फँदा डाल कर शिकारी पशु पक्षी फाँसते हैं। ३ बांस या काठका कड़ा रेशा जिसकी नोक काँटेकी तरह हो जाती है, महीन काटा। ४ बांस, बेंत आदिको चीर कर बनाई हुई पतली तीली, पतली कमाची।

फाँसना (हिं० क्रि०) १ बन्धनमें डालना, पकड़ना। २ किसी पर ऐसा प्रभाव डालना कि वह वशमें हो कर कुछ करनेके लिये प्रस्तुत हो जाय। ३ धोखेमें डालना, वशीभूत करना।

फाँसी (हिं० स्त्री०) १ पाश, फँसानेका फंदा। २ रेशम या रस्सीका फंदा जो ऊँचे खंभे गाड़ कर ऊपरसे लट-काया जाता है और जिसे गलेमें डाल कर अपराधियोंको प्राणदण्ड दिया जाता है। ३ पाश द्वारा प्राणदण्ड, मौत की सजा जो गलेमें फंदा डाल कर दी जाय। ४ वह रस्सी या रेशमका फँदा जिसमें गला फँसानेसे घुट जाता है और फसनेवाला मर जाता है।

फाइल (अं० स्त्री०) १ नत्थी, मिसिल। २ लोहेका तार जिसमें कागज या चिट्ठियां नत्थी की जाती हैं। ३ सामयिक पत्रों आदिके कुछ पूरे अंकोंका समूह।

फा (सं० पु०) १ सन्ताप। २ निष्फल भाषण।

फाका (अ० पु०) उपवास, निराहार रहना।

फाकामस्त (फा० वि०) जो खाने पीनेका कष्ट उठा कर भी कुछ चिन्ता न करता हो, जो पैसा पास न रख कर भी बेपरवाह रहता हो।

फाकेमस्त (फा० वि०) फाकामस्त देखो।

फाख्तई (हिं० वि०) १ पण्डुकके रंगका, भूरापन लिये हुए लाल। (पु०) २ एक रंगका नाम। यह रंग ललाई लिये भूरे रंगका होता है। आठ माशे वायोलेटको आध सेर मजीठके काढ़ेमें मिला कर यह बनाया जाता है।

फाख्ता (अ० स्त्री०) पंडुक, धवँरखा।

फाग (हिं० पु०) १ एक उत्सव जो फागुनके महीनेमें होता है। इस उत्सवमें लोग एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते और वसन्त ऋतुके गीत गाते हैं। २ वह गीत जो फागके उत्सवमें गाया जाता है।

फागुन (हिं० पु०) शिशिर ऋतुका दूसरा महीना, माघके बादका महीना। यद्यपि इस महीनेकी गिनती पतझड़ या शिशिरमें है, पर वसन्तका आभास इसमें दिखाई देने लगता है। इस महीनेकी पूर्णिमाको होलिका-दहन होता है। यह आनन्दका महीना माना जाता है। इस महीने में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें फाग कहते हैं।

फाल्गुन देखो।

फागुनी (हिं० वि०) फाल्गुन सम्बन्धी, फागुनका।

फाजिल (अ० वि०) १ आवश्यकतासे अधिक, जरूरतसे ज्यादा। २ विद्वान्।

फाजिल्का—पञ्जाबके फिरोजाबाद जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २९° ५५′से ३०° ३४′ उ० और देशा० ७३° ५२′ से ७४° ४३′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १३५५ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसके उत्तर पश्चिममें सतलज नदी पड़ती है। इसमें इसी नामका १ शहर और ३१६ ग्राम लगते हैं। राजस्व दो लाखसे ऊपर है।

२ उक्त तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० ३०° ३३′ उ० और देशा० ७४° ३′ पू०के मध्य अवस्थित है। पहले यहां वट्टू सरदार फाजिल्का वास था। १८४६ ई०में उन्हीं के नामानुसार आलिभर (Mr Oliver) साहबने इस स्थानका नाम 'फाजिल्का' रखा। उक्त महोदयके यत्न और अध्यवसायसे यह जनशून्य ग्राम बहुजनाकीर्ण हो गया। अभी यह नगर पञ्जाबका एक वाणिज्य केन्द्र हो गया है। यहां जो शस्यादि और पशम दूसरे देशोंसे आता है उसकी रफ्तनी कराची, भागलपुर, बीकानेर और मूलतान आदि देशोंमें होती है। शहरमें एक सरकारी अस्पताल और म्युनिसिपल एङ्ग्लो वर्नेक्युलर मिडिल स्कूल है।

फाजिलनगर—युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलान्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। अभी यह फाजिल्ना नामसे मशहूर है। इधर उधर जो ईंटोंका राशि पड़ी हुई है वही इस जन पदकी पूर्वस्मृति दिलाती है।

फाटक (हिं० पु०) १ तोरण, बड़ा द्वार। २ दरवाजे परकी बैठक। २ फटकन, पछोड़न।

फाटकी (सं० स्त्री०) फिटकरी।

फाटना (हिं० क्रि०) फटना देखो।

फाड़न (हिं० पु०) १ कागज या कपड़े आदिका टुकड़ा जो

फाड़ोंमें निकले। २ हड्डीके साथ मज्जाकी छांछ जो आग पर मर्त्तामें निकले।

फाड़ना (हिं० क्रि०) १ किसी पैनी या नुकीली चीजको किसी सतह पर इस प्रकार मारना या खींचना, कि सतहका कुछ भाग हट जाय या उसमें दरार पड़ जाय, चीरना। २ किसी गाढ़े द्रव पदार्थको इस प्रकार करना, कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जाय। ३ खण्ड करना, टुकड़े करना। ४ सन्धि या जोड़ फैला कर खोलना।

फाणि (स० स्त्री०) गुड़।

फाणित (सं० क्ली०) फण गतौ णिच्-क्त। १ अर्द्ध पक्व इक्षुरस, आग पर औटा कर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्नेका रस, राब। इसका गुण—गुरु, अभिष्यन्दी, बृंहण, कफ और पित्तकारक, वात, पित्त और श्रम नाशक एवं मूत्र और वस्ति शोधक माना गया है। सौभाग्यकामी व्यक्तिको पूर्वफल्गुनी नक्षत्रमें उपवास करके ब्राह्मणोंको भक्ष्यद्रव्य फाणित संयुक्त करके दान करना चाहिये। २ शीरा।

फाण्ट (स० त्रि०) फण्यते स्मेति फण गतौ क्षुब्ध स्वान्तध्वान्तेति। (पा ७।२।१८) इति निपातनात् साधु। १ अनायास कृत, जो सहजमें बनाया गया हो। (क्ली०) २ कषायभेद। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—एक पल कुट्टितद्रव्य को ४ पल गरम जलमें डाल कर कुछ समय तक ढक रखे। पीछे उसे मुदित और वस्त्र पूत कर ले। इसीका नाम फाण्ट है। (वैद्यकपरिभाषा)

फाण्टाहृत (स० पु०) १ फाण्टाहृतिका अपत्य। २ उसके छात्रादि।

फाण्टाहृतायन (स० पु०) फाण्टाहृतिका अपत्य।

फाण्ड (स० क्ली०) गर्भ।

फाण्डिहृत (स० पु०) मानभेद।

फातहा दुआज दहुम—मुसलमानसम्प्रदायका अनुष्ठित महोत्सव-विशेष। इस समय ये लोग महम्मदके जन्म और मृत्युके उपलक्षमें मसजिद अथवा अपने घरमें मौलूद शरीफका पाठ और भजन करते हैं।

फातिहा (अ० पु०) १ प्रार्थना। २ वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगोंके नाम पर दिया जाय।

फानना (हिं० क्रि०) १ रूईको फटकना, धुनना। २ अनुष्ठान करना, कोई काम हाथमें लेना।

फानूस (फा० पु०) १ एक प्रकारका दीपाधार। इसके चारों ओर महीन कपड़े या कागजका मंडप-सा होता है। २ समुद्रके किनारेका वह ऊंचा स्थान जहां रातको इसलिये प्रकाश जलाया जाता है, कि जहाज उसे देख कर बच कर आगे जाय। ३ शीशेकी मृदंगी, कमल या गिलास आदि जिसमें बत्तियां जलाई जाती हैं। ४ ईंटों आदिकी भट्ठी। इसमें आग सुलगाई जाती है और उसके तापसे अनेक प्रकारके काम लिये जाते हैं।

फासेफाड़ो—दाक्षिणात्यवासी एक नीच जाति। शोलापुर बीजापुर आदि अञ्चलोंमें इनका वास है। किन्तु घर भी घेर बांध कर अथवा खेतीबारी करके स्थायी रूपसे नहीं रहता। फंदेसे पशुपक्षी पकड़ना ही इनका जातीय व्यवसाय है। ये लोग नीच प्रकृतिके होते हैं, कभी भी सिरके बाल या मूंछ दाढ़ी नहीं मुड़वाते हैं। इनकी भाषामें गुजराती, मराठी, कनाड़ी और हिन्दुस्तानी भाषा मिश्रित है।

गांवके बाहर ये साधारणतः झोपड़ी बना कर रहते और गो, महिष, छाग तथा गदहा आदि पोसते हैं। ये स्वभावतः शान्तिप्रिय, डरपोक और निष्ठुर हैं। छोटी बातोंमें उत्तेजित होते और बदला लिये बिना उसका पिण्ड नहीं छोड़ते हैं। घोड़ेकी पूंछके बालसे ऐसा फंदा बनाते हैं, कि उससे सब प्रकारके पक्षी और छोटे छोटे पशु पकड़े जा सकते हैं।

ये लोग भवानीयायी, खण्डोबा, मारिमाई और नाना ग्रामदेवताकी पूजा करते हैं। 'दसेरा' और '[illegible]' ही इनका प्रधान उत्सव है। विवाहमें कन्याकी मांगमें सिन्दूर और हाथमें गढ़ चोली पहनाते हैं। इस समय इनमें सरदार (नायक) को उपस्थित रहना जरूरी है, क्योंकि, उसे भी कुछ मिलता है। यहां साधारणतः विवाहके बाद खूब उत्सव होते हैं। [illegible] या कन्या पक्की हो जाने पर विवाहके दिन वरकन्या एकत्र की जाती है। गांवके बाहर ला कर 'गांठ' बांध देते और [illegible] करते हैं। विवाह हो जाने पर [illegible] वरकन्याको आशीर्वाद दे कर चले जाते हैं। पीछे भोज शुरू

होता है। नायक सरदार ही इनके समाजके मालिक हैं। जब कोई व्यभिचार या उसी प्रकारका अन्य जघन्य पापाचरण करता है, तब उत्तप्त तेलके कड़ाहेमेंसे पैसा निकाल कर उसे पापका प्रायश्चित्त करना होता है। यदि हाथ न जले, तभी उसकी निष्कृति है। किन्तु यदि हाथ जले अथवा हाथ देनेसे इनकार करे तो उनकी जाति च्युति होती है। इनका कदर्य स्वभाव जान कर पुलिसकी इन पर कड़ी नजर रहती है।

बीजापुरमें ये लोग अड्विचिञ्चर चिग्रिवेन्कार नामसे पुकारे जाते हैं। धोंगड़, फर्दलिगार और राजपूत नामक इनके तीन स्वतन्त्र थाक हैं। किन्तु ये सब थाक बिलकुल स्वतन्त्र हैं। कोई भी दूसरेको पुत्र कन्याका विवाह नहीं देता और एक साथ बैठ कर खाता ही है। धांगड़ोंमें ह्वाउन्द्भुल और उणिवङ्गल नामक दो विभाग हैं। ये लोग आपसमें खाते और आदान प्रदान करते हैं। राजपूतगण भी अपने दलमें विवाह नहीं करते हैं।

पुलिसकी इन पर कड़ा नजर रहती है। यह पहले ही कहा जा चुका है। जब कभी उनके साथ विवाद होता है, तब ये अपने पुत्र या कन्याकी हत्या कर पुलिस-के विरुद्ध अदालतमें अभियोग लाते हैं। ब्राह्मणोंके प्रति इनकी भक्ति है। यल्लमा, तुल्जा भवानी और वेङ्कटेश आदि देवदेवियोंकी मूर्त्तिको ये लोग कपड़ेमें लपेट रखते हैं। आश्विनमासकी शुक्ला नवमी (महा-नवमी)-को मूर्त्तिको बाहर निकाल कर पूजा करते हैं। प्रति वर्ष दीवाली उपलक्षमें ये नग्नगात्र-परिहिता स्त्रियों-की सतीत्वकी परीक्षा करते हैं। इस समय रमणी-कुलको निष्ठुर स्वामीके हाथमें पड़ कर उत्तप्त तेलमें उंगली डुबानी पड़ती है। इन लोगोंमें विधवा विवाह प्रचलित है। जात बालककी कोई क्रिया नहीं है। लकड़ी मिलने पर शवको जलाते हैं, नहीं तो जमीनमें गाड़ देते हैं।

फाफर (हि० पु०) कुन्दू, कूटू। कूटू देखो।

फाफा (हि० स्त्री०) दांत गिर जानेसे 'फा फा' करके बोलनेवाली बुढ़िया, पोपली बुढ़िया।

फाफुएड—युक्त प्रदेशके इटावा जिलान्तर्गत एक तहसील। भूपरिमाण २२८ वर्गमील है। १८८३ ई०में यहां स्वतन्त्र विचार अदालत स्थापित हुई।

२ उक्त तहसीलका प्रधान नगर। यह अक्षा० २६° ३६´ उ० और देशा० ७९° २८´ पू० इटावा शहरसे ३६ मील दक्षिणपूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या आठ हजारके लगभग है। अंगरेजोंके अधिकारमें आनेके पहले यह स्थान विशेष समृद्धशाली था। ध्वंसावशिष्ट मन्दिर, जलाशयादि और मसजिद आदि जो इधर उधर पड़े हैं, इसके पूर्व गौरवके निदर्शन हैं। १८५७ ई०के गदरमें यह नगर दो बार लूटा और जलाया गया था। शाह बुखारी नामक मुसलमान फकीर (जिनकी मृत्यु १७४६ ई०में हुई) कब्रके पास प्रतिवर्ष मेला लगता है। यहां एक स्कूल और अस्पताल है।

फायदा (अ० पु०) १ लाभ, नफा। २ अच्छा फल, भला परिणाम। ३ प्रयोजनसिद्धि, मतलब पूरा करना। ४ उत्तम प्रभाव, अच्छा असर।

फायदेमंद (फा० पु०) उपकारक, लाभदायक।

फायर (अं० पु०) १ आग। २ फैर देखो।

फायरमैन (अं० पु०) वह कर्मचारी जो इंजनमें कोयला झोंकनेका काम करता है।

फाया (हि० पु०) फाहा देखो।

फारखती (अ० स्त्री०) वह कागज या लेख जो इस बात का प्रमाण दे, कि किसीके जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया, चुकती।

फारबिसगञ्ज—बिहार और उड़ीसाके पूर्णिया जिलान्तर्गत अररिया उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २६° १६´ उ० तथा देशा० ८७° १६´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। यहां पाट, अनाज आदिका विस्तृत कारबार होता है। पाटकी दो कलें भी चलती हैं। यहां एक गुरुट्रेनिङ्ग स्कूल है।

फारम (अं० पु०) १ दरखास्त, बही खाते रसीद आदिके नमूने जिनमें यह दिखाया रहता है कि कहां कौन बात लिखनी चाहिये। २ छापनेके बैठाए हुए उतने अक्षर जितने एक तख्ता छापनेके लिये पूरे हों। ३ छपाईमें एक पूरा तख्ता जो एक बार एक साथ छापा जाता हो।

फारस—पारस देखो।

फारसी (फा० स्त्री०) फारस देशकी भाषा।

फारा (हिं० पु०) १ फाल, कतरा। २ फाहा देखो।

फाल (सं० क्ली०) फलाय शस्याय हितं फल-अण्‌। १ कृषिकार्यका अस्त्र। २ कार्पासफल। ... लोहेका बना हुआ नुकीला और चौड़ा होता है। यह हलमें नीचेकी ओर लगा रहता है। इससे जमीन खुदती है। हिन्दीमें यह प्रायः पुंलिङ्ग माना गया है। संस्कृत पर्याय—कृषिक, ईशक, ... हलिक, कुशिक। ३ महादेव। ४ बलदेव। ५ कार्पासवस्त्र, रुईका कपड़ा। ६ फावड़ा। ७ नौ प्रकारकी दैवपरीक्षाओं या दिव्योंमेंसे एक। विज्ञानेश्वर लिखते हैं कि जो चोरी करते हैं, उन्हें यह दिव्य करना होता है। बारह पल लोहेका एक फाल बना कर उसे अच्छी तरह तप्त कर ले। विचारक यथाविधान धर्म और अग्निकी पूजा करके आसामीके मस्तक पर निम्नलिखित मन्त्रोंका एक जयपत्र लिख दे।

मन्त्र यथा—

"त्वमग्ने सर्वभूतानामन्तश्चरसि पावक।
साक्षिवत् पुण्यपापेभ्यो ब्रूहि सत्यं कवे मम॥"

यह मन्त्रलिखित जयपत्र उसके मस्तक पर दे कर विचारक उससे कहे, 'तुम तप्त की हुई फालको जीभसे चाटो, यदि जीभ जल जायेगी तो तुम दोषी और यदि न जलेगी, तो निर्दोष समझे जाओगे।' अनन्तर उसके फलानुसार विचारक अपराधीको दण्ड देवे।

फाल (हिं० स्त्री०) १ किसी ठोस चीजका काटा या कतरा हुआ टुकड़ा जिसका रूप पतला होता है। २ कतरी सुपारी, छालिया। (पु०) ३ डग, कदम। ४ कदम भरका फासला, पैंड़।

फालदारराय अमात्य—ग्वालियरवासी एक महाराष्ट्र ब्राह्मण। इनका जन्म संवत् ११०० में हुआ था। ये संस्कृत, व्रजभाषाके ज्ञाता थे तथा भाषाके अच्छे कवि थे। इन्होंने केशवदास विरचित कविप्रियाकी सुन्दर टीका लिखी थी।

फालकृष्ट (सं० त्रि०) फालेन कृष्टः ३-तत्। १ फाल द्वारा कृष्ट, हलसे जोता हुआ।

"न फालकृष्टं न जले न चिन्वते न च पर्वते।
न ग्रामजातान्यार्त्तोऽपि मूलानि च फलानि च॥'

(मनु ६।१६)

फालकृष्ट स्थान पर पेशाब नहीं करना चाहिये। २ कर्षितभूमिमें उत्पन्न, जो हलसे जोते हुए खेतमें उत्पन्न हो। वानप्रस्थोंको फालकृष्ट पदार्थ नहीं खाने चाहिये।

फालकिन्ना (सं० स्त्री०) आमला वृक्ष।

फालगुर (सं० पु०) बलरामका एक नाम।

फालजुर—श्रीहट्टजिलेमें अवस्थित एक गण्डग्राम और पीठस्थान।

श्रीहट्टजिलेके उत्तरपूर्वमें जयन्ती राज्य है। यह राज्य १८ परगनोंमें विभक्त है। जिनमेंसे फालजुर एक परगना है। इसकी गिनती एक प्रधान पीठस्थानमें है। यहां देवीकी वामजङ्घा गिरी थी। इस कारण इसे वामजङ्घापीठ भी कहते हैं। वामजङ्घापीठका माहात्म्य सब फालजुरकी कालीवाड़ी है। तन्त्रचूड़ामणिके मतसे,—

"जयन्त्यां वामजङ्घा च जयन्ती क्रमदीश्वरः।"

यहांकी देवीका नाम जयन्ती है। इन्हींके नामानुसार यह स्थान जयन्तिया नामसे प्रसिद्ध है। यहांके भैरवका नाम क्रमदीश्वर है। तन्त्र कहते हैं—

"वैष्णवी दक्षजङ्घायां जयन्त्या पञ्चलक्षतः।'

अर्थात् पञ्चलक्षमात्र मन्त्रके जपसे ही यहां सिद्धि होती है।

श्रीहट्ट नगरसे उत्तर पूर्व पर्वतके नीचे एक पत्थर भग्नभूमि है जहां ईंटोंकी एक प्रकाण्ड भित्तिके मध्यस्थित एक चतुष्कोण गड्ढा है, उसी गड्ढेमें यह महापीठ एक चतुष्कोण पत्थर पर अवस्थित है। शिव भी प्रत्यक्ष हो कर देवीके साथ एकत्र अवस्थान करते हैं। १८३५ ई० तक इस मन्दिरके सामने नरबलि जारी रही थी। वृटिश गवर्मेण्टने यह कुत्सित प्रथा उठा देनेके लिये जयन्ती राज्यको अपने दखलमें कर लिया है। तभीसे नरबलि बन्द हो गई है।

देवी मन्दिरके पूरब एक अति प्राचीन पुष्करिणी है। वर्षा समय भी इसका जल परिष्कार और स्वच्छ एक आश्चर्य रहता है। कभी भी घटता बढ़ता नहीं देखनेसे चमत्कृत होना पड़ता है।

जयन्तीकी स्वाधीनताके समय दक्षिणापथ भारतमें ही देवीकी सेवा होती थी। राजा कहते थे "भारतके उपास्य देवी देवीमाता हैं—उनके लिये नित्य नूतन, सजीव

देनेकी जरूरत ही क्या ?" यस्तुत इसी कारण कोई प्रश्नोत्तर निर्दिष्ट नहीं है। अयन्तीके पतनके साथ ही साथ इस पीठकी भी दुरवस्था हो गई है। अभी देवी एक जीर्ण कुटीरमें विराजती हैं।

फालत् ( हि ० वि० ) १ आवश्यकतासे अधिक, जरूरतसे ज्यादा। २ जो किसी कामके लायक न हो, निकम्मा।

फालदती ( स ० स्त्री० ) फालकी तरह दन्तयुक्ता एक राक्षसी।

फालसई ( फा० वि० ) फालसेके रंगका, ललाई लिये हुए हलका ऊदा। इस रंगके लिये कपड़ेको तीन बार देने पड़ते हैं। पहले तो कपड़ेको नील रंगमें रंगते हैं, फिर कुसुमके पहले उतारके रंगमें रंगते हैं जो जेठा रंग होता है। फिर फिटकरी या खटाई मिले पानीमें बोर कर निखार देनेसे रंग साफ निकल आता है।

फालसा ( फा० पु० ) एक छोटा पेड़। इसका धड़ ऊपर नहीं जाता और इसमें छड़ीके आकारकी सीधी सीधी डालियां चारों ओर निकलती हैं। डालियोंके दोनों तरफ सात आठ अङ्गुल लम्बे चौड़े गोल पत्ते लगते हैं। इन पत्तों पर महीन रोइयांसी होती है। पत्तेके ऊपरी तलकी अपेक्षा पीठेके तलका रंग हलका होता है। डालियोंमें फूल लगते हैं। जब ये सब फूल झड़ जाते, तब मोतीके दानेके बराबर छोटे छोटे फल लगते हैं। पकने पर फलोंका रंग ललाई लिए ऊदा और स्वाद खटमीठा होता है। बीज एक या दो होते हैं। फालसेकी तासीर ठंढी है। इस कारण गरमीके दिनोंमें लोग इसका शरबत बना कर पीते हैं। परूक देखो।

२ शिकारियोंकी बोलीमें यह जंगली जानवर जो जंगलसे निकल कर मैदानमें चरनेको आवे।

फाल्ग ( स ० पु० ) फालयन्तीति फल णिच्। जम्बीर वृक्ष, जमीरी नीबूका पेड़।

फालाकाटा—उत्तर बङ्गाल प्रदेशके जलपाईगुड़ी जिलेके अन्तर्गत अलीपुर उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २६°३१' उ० तथा देशा० ८९°१३' पू० मुजनैय नदीके पूर्वी किनारे पर अवस्थित है। जनसंख्या तीन सौके करीब है। यहां फरवरी मासमें एक महीना तक मेला लगता है।

फालिज ( अ० पु० ) पक्षाघात रोग। इसमें प्राणीका आधा अङ्ग सुन्न या बेकार हो जाता है। पक्षाघात देखो।

फालिया—पञ्जावके गुजरात जिलेका तहसील। यह अक्षा० ३२°१०' उ० तथा देशा० ७३°१७' पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ७२२ वर्ग मील है। झेलम नदी इसके उत्तर-पश्चिम और चनाव दक्षिण पूर्व में बह गई है। जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है। इसमें फालिया नामका एक शहर और ३१० ग्राम लगते हैं। लार्ड गफ और सिक्खका चिलियनवालाका युद्ध इसी तहसीलमें हुआ था।

फालूदा ( फा० पु० ) पीनेके लिये बनाई हुई एक चीज। इसका व्यवहार प्रायः मुसलमान लोग करते हैं। गेहूंके सत्तसे बने हुए नशास्तेको बारीक काट कर शरबतमें मिला कर रखते हैं और ठण्डा हो जाने पर पीते हैं। यह गरमीके दिनोंमें पिया जाता है।

फाल्गुन ( स ० पु० ) फलति निष्पादयतीति फल ( फले गुँक् च। उण् ३।५६ ) इति उनन् ततो गुक् नत प्रज्ञादित्वादण् वा फल्गु या फल्गुनी। फल्गुनी नक्षत्रे जात अण्। १ अर्जुन। अर्जुनके दश नाम हैं जिनमें फाल्गुन एक है। अर्जुनने फल्गुनीनक्षत्रमें जन्म ग्रहण किया था, इस कारण उनका फाल्गुन नाम पड़ा है।

"उत्तराभ्याञ्च पूर्वाभ्यां फल्गुनीभ्यामहं दिवा।
जातो हिमवतः पृष्ठे तेन मां फाल्गुनं विदुः॥"
( भारत ४।४२।१६ )

२ नदीजवृक्ष। ३ अर्जुनवृक्ष। ४ तपस्यमास। ५ चैत्रादि द्वादश मासके अन्तर्गत एकादश मास। इस मासकी पूर्णिमामें फल्गुनी नक्षत्र होता है, इसीसे इस मासका नाम फाल्गुन पड़ा है। यह तीन प्रकारका है। मुख्यचान्द्र, गौणचान्द्र और सौर अर्थात् मुख्यचान्द्र फाल्गुन, गौणचान्द्र फाल्गुन तथा सौर फाल्गुन। सूर्यके कुम्भराशिमें आनेसे शुक्ल प्रतिपदसे ले कर अमावस्या तक जो मास पड़ता है, उसे मुख्यचान्द्र फाल्गुन और कृष्णप्रतिपदसे ले कर मुख्यचान्द्र फाल्गुनमासीय पौर्णमासी पर्यन्तको गौणचान्द्र फाल्गुन तथा कुम्भराशिस्थ रविभोगोपलक्षित कालात्मक मासको ही सौर फाल्गुन कहते हैं। मासके मुख्यचान्द्र और गौणचान्द्रादि

विज्ञान द्वारा विहित कार्यका केवल पवित्र समय निर्धारित हुआ है अर्थात् कोई काम गौणचान्द्रमें करना लगता है। (ब्रह्मपुराण) कृत्यारत्नमें फाल्गुनकृत्यका विषय इस प्रकार लिखा है—फाल्गुनमासकी कृष्णाष्टमी में पार्वणश्राद्ध और यान्वष्टकाश्राद्ध द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे श्राद्ध करना होता है। गौणचान्द्र फाल्गुन मासकी कृष्णा चतुर्दशीको शिवरात्रि व्रत करना हर एकका आवश्यक कर्तव्य है। इसके अवधारणादि विषय शिवरात्रि शब्दमें देखो। मुख्यचान्द्र फाल्गुनमासका शुक्लाद्वादशीके दिन गोविन्दद्वादशी होती है। इस द्वादशीके दिन महा-पातक नाशकी कामना करके गङ्गास्नान करना होता है। इस दिन गङ्गास्नान करके निम्न लिखित मन्त्र पढ़ना होता है। मन्त्र यथा—

"महापातक संज्ञानि यानि पापानि सन्ति मे।
गोविन्दद्वादशीं प्राप्य तानि मे हर जाह्नवि॥"

पीछे फाल्गुनमासकी पौर्णमासीको यथाविधान होलिकायागका अनुष्ठान आवश्यक है। इस दिन भगवान् विष्णुका दोलयात्रा देखनेसे अन्तकालमें विष्णुपुरको गति होती है। (कृत्यतत्त्व) फाल्गुनमासमें जन्म होनेसे विद्वान्, साधुजनका प्यारा, परोपकारी, निर्मलकाय, धनी और प्रमोदशीलताका होता है। (कोष्ठीप्रदीप)

५ पूर्वाभाद्र, पूर्वा फाल्गुन नक्षत्र। शतपथ ब्राह्मण में इसी भी प्रकारका लिखा है। ६ लौहित्यवृक्ष। ७ नद सार्थका नाम। ८ पूर्णिमानिका वह वर्ष जिसमें बृहस्पति उदय फाल्गुनी नक्षत्रमें होता है।

फाल्गुनप्रिय (सं॰ पु॰) वायु।

फाल्गुनानुज (सं॰ पु॰) फाल्गुनात् अनु पश्चात् जायते इति अनु-जन-ड। १ वसन्तकाल, चैत्रमास। २ अर्जुनके कनिष्ठ भ्राता।

फाल्गुनि (सं॰ पु॰) अर्जुन।

फाल्गुनिक (सं॰ पु॰) फाल्गुनी पौर्णमास्यस्मिन् मासे ठञ्। (पा ४।२।२३) फाल्गुन मास।

फाल्गुनी (सं॰ स्त्री॰) फाल्गुनी युक्ता पौर्णमासी अण्-ङीप् ... इति ... १ फाल्गुनमासकी पूर्णिमा। २ पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र। ३ उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र।

फाल्गुनीभव (सं॰ पु॰) बृहस्पति नामका ग्रहविशेष।

फावड़ा (हिं॰ पु॰) एक प्रकारका लोहेका औजार जो मट्टी खोदने और हटानेके काममें आता है। इसमें लकड़ीका दस्ता लम्बा बेंट लगा रहता है। इसे फरसा भी कहते हैं।

फावड़ी (हिं॰ स्त्री॰) १ छोटा फावड़ा। २ फावड़ेके आकारकी काठकी एक वस्तु। इससे घोड़ोंके आगेका घास, लीद तथा मैला आदि हटाया जाता है।

फाश (फा॰ वि॰) प्रकट, ज्ञात।

फासफरस (Phosphorus)—दीपकपदार्थविशेष, एक अत्यन्त उज्ज्वलतायुक्त मूलद्रव्य। इसमें धातुका कोई गुण नहीं होता और यह धरातल विशुद्धरूपमें कहीं नहीं मिलता—आक्सिजन, कार्बनिक और क्षारीयद्रव्योंके साथ मिला हुआ पाया जाता है। यह मिश्रित पदार्थ Apatite phosphorite, coprolites आदि विभिन्न आकरपदार्थों में मिलता है। प्रत्येक उद्भिदकी वीजराशि ही फासफरस है। इसके नहीं रहनेसे वृक्षादि सतेज हो कर जीवन रक्षा नहीं कर सकता है। खेत या फलमें फासफरस रहनेके कारण ही निम्नश्रेणीके दुर्गन्ध अम्बिका और दीर्घ प्रमाण पञ्चमिश्रणको ही सुगन्ध फल ... पैदाया देते हैं। फासफरस जो मस्तिष्ककी ... दूर कर उसे स्वाभाविक अवस्थामें लाता है यह किसीसे छिपा नहीं है।

आयुर्वेदमें इसकी व्याप्ति देखी जाती है। रक्तमें, मूत्रमें, रोमादिमें, अस्थिमें तथा स्नायविक शिराओंमें (Nervous tissues) फासफेट आव लाइम अधिक परिमाणमें मिश्रित है। १६६९ ई॰में ब्रान्ड (Brand)ने मूत्रसे फासफरस निकाला। किन्तु अभी अस्थिसे ही प्रचुर परिमाणमें निकलने लगा है। प्रस्तुत प्रणाली—अस्थिका चूर्ण ३ भाग, २ भाग जल तथा सल्फ्यूरिक (Concentrated sulphuric acid) इसे ३० भाग जलमें २ या ३ दिन तक रखें। पीछे इसमें गरम ... डाल कर ... निकालते हैं। फिल्टर ... द्वारा छानकर, उसमें परिस्रुत फासफेट आव लाइम अवशेष रहता है। इसमें ... (Charcoal) मिला कर ... तक गरम करें। पीछे ... को चूर्ण कर अग्नि पर चढ़ावें, जब कीचड़ का ... हो जाय, तब उसे ...

ले। अनन्तर सूख जाने पर उस पिण्डको मट्टीके बने हुए वकयन्त्र ( Retort ) में डाल कर चुआवे। ऐसा करनेसे उत्तप्त हो कर एक मुखसे वाष्पाज उड़ जायगा और दूसरे मुखसे फास्फरस हल्दी रंगकी बुंदमें टपक टपक कर एक जलपूर्ण पात्रमें जमा होगा। जल और अमोनियाके योगसे अथवा बाइक्रोमेट आव पटासयुक्त सल्फ्युरिक एसिड द्रावकमें उसे जलानेसे शोधित होता है। बहुत थोड़ी गरमी या रगड़ पा कर यह जलता है। हवामें खुला रहनेसे यह धीरे धीरे जलता है। यही कारण है, कि रासायनिकगण उसे जलमें रख देते हैं। उसमें लहसुनकी सी गन्ध निकलती है। अंधेरेमें देखने से उसमें सफेद लपट दिखाई पड़ती है। यदि गरमी अधिक न हो, तो यह मोमकी तरह जमा रहता है और छूरीसे काटा या खुरचा जा सकता है। यदि कोई भूलसे उसे कपड़ेमें रखे, तो कपड़ा सहजमें दग्ध हो सकता है।

इसका आपेक्षिक गुरुत्व (५० डिग्री फारनहीटके उत्तापमें) १.८३ और आणविक गुरुत्व ३१ है। रसायन-शास्त्रमें 'पी' ( p ) नाम देखनेसे ही उसे फास्फरस जानना चाहिये। १११.५ डिग्री उत्तापसे यह जल जाता है। किसी आवद्ध पात्रमें ५५० डिग्री उत्तापसे उसे चुआनेसे पुन यह उसी अवस्थामें आ जाता है। जलमें यह नहीं घुलता, लेकिन इथर या तैलमें बहुत कुछ घुल जाता है, बाइसलफाइड आव कार्बन या क्लोराइड आव सल्फरसे यह बिलकुल गल जाता है। हवामें खुला रखनेसे थोड़ा थोड़ा करके जलता और उसमें सफेद लपट दिखाई देती है। इस समय उससे लगातार धुआं निकलता रहता है।

प्रस्फुरक हाथमें लेनेके पहले विशेष सावधान रहना उचित है। कारण, शुष्कावस्थामें थोड़ी रगड़ लगनेसे ही यह जल सकता है और इससे शरीरमें छाला पड़ने की सम्भावना है। जलमें रख कर इसे इच्छानुसार काट सकते और हाथमें भी ले सकते हैं, इससे शारीरिक कोई भी अनिष्ट नहीं होता। इसी कारण वैज्ञानिक लोग इसे जलमें काट कर व्यवहारके लिये बाहर निकालते हैं। प्रस्फुरक तरह तरहकी अवस्था ( Allotropic forms ) में पलट सकता है। इनमेंसे Amorphous Phosphorus ही सर्वप्रधान है। भियेनादेशीय रसायनविद् स्क्रोटर (Professor Schrotter) इस प्रथाके उद्भावक हैं। उन्होंने कार्वनिक एसिडमें ३०।४० घंटे तक ४५० या ४६० डिग्री तापमें साधारण फास्फरस गरम कर एमर्फस उत्पादन किया था। उत्तापके विभिन्नतानुसार इसका वर्ण कभी लाल, कभी उजला और कभी घना पाटल ( Dark purple ) होता है। पूर्वोक्त फास्फरसके साथ इसका प्रभेद इतना ही है, कि अधिक घिसनेसे भी यह जलता नहीं है, गन्धहीन है, वायु लगनेसे इसमें कोई परिवर्त्तन नहीं होता और न साधारण प्रस्फुरककी तरह द्रावकमें गलता ही है। किन्तु यदि क्लोरेट आव पटाश, पेरक्साइड आव लेड या पेरक्साइड आव मङ्गानिसके साथ थोड़ा भी संघर्ष हो, तो यह शीघ्र ही जल जाता है। पीछे ४५० या ४६० डिग्री उत्तापमें गरम करनेसे यह पुन पूर्वावस्थाको प्राप्त होता है। इसे तेल या चरबीमें घोलने पर ऐसा तेल तैयार हो जाता है जो अंधेरेमें चमकता है, दिया सलाई बनानेमें इसका बहुत प्रयोग होता है। अलावा इसके और भी कई चीजें बनानेमें काम आता है। औषधके रूपमें भी यह बहुत दिया जाता है, क्योंकि डाकृर लोग इसे बुद्धिका उद्दीपक और पुष्ट मानते हैं। तापके मात्राभेदसे फासफरसका गहरा रूपान्तर भी हो जाता है।

आक्सिजनके साथ प्रस्फुरक चार विभिन्न भागोंमें मिलाया जा सकता है। उससे अक्साइड आव प्रस्फुरक ( Oxide of phosphorus), उपस्फुरद्रावक ( Hypophosphorous acid ), स्फुरद्रावक ( Phosphorous acid ) और स्फुरकद्रावक (*Phosphoric acid*) आदि उत्पन्न होते हैं। जलके तारतम्यानुसार *Phosphoric acid* तीन प्रकारका है। यथा—१ Orthophosphoric acid स्फुरकद्रावक, २ Metaphosphoric acid अभिस्फुरकद्रावक और *Pyrophosphoric acid* अधिस्फुरकद्रावक। हरिणस्फुरक ( *Chlorides of Phosphorus* ) हरिण ( *Chlorine* )-के योगसे प्रस्फुरक के टायक्लोराइड और पेण्टा क्लोराइड नामक दो अवस्थान्तर होते हैं। आयोडिनके योगसे भी इसके दिआयोडाइड और टाय आयोडाइड नामक दो परिवर्त्तन होते हैं। गन्धकके साथ मिलानेसे कुछ यौगिक पदार्थोंकी

उत्पत्ति होती है। फास्फुरेटेड हाइड्रोजन ( [illegible] ) नामक एक पदार्थ प्रज्वलित है। [illegible], आलू और [illegible] भेदसे उसकी तीन अवस्था [illegible] है।

कुछ पदार्थ ऐसे हैं जिनमें आलोक [illegible] शक्ति है। दो [illegible] पत्थरको आपसमें घिसने से आलोक उत्पन्न होता है। उन पत्थरोंमें [illegible] की अवस्थिति ही इसका कारण है। [illegible] और [illegible] के छिलकेमें इसी प्रकार कभी कभी [illegible] देखने में आता है।

फासला ( अ० पु० ) अन्तर, दूरी।

फास्ट ( अं० वि० ) १ तेज। २ जल्द चलनेवाला, वेग वान।

फाहा ( हि० पु० ) १ फाया, फाहा। २ मरहमसे तर पट्टी जो घाव, फोड़े आदि पर रखा जाता है।

फाहियान एक चा० परिव्राजक। चीनोंमें ये ही सबसे पहले बौद्धधर्मग्रन्थोंकी खोजमें भारतवर्ष आये थे।

[illegible] प्रदेशके [illegible] नगरमें इनका जन्म हुआ था। बचपनमें ये [illegible] नामसे परिचित थे। [illegible] बौद्ध धर्मके अनुराग रहनेके कारण ये थोड़ी ही उमरमें संसार धर्म छोड़ देनेको बाध्य हुए। तीन ही वर्षकी उमरमें ये श्रमण हो गये थे। [illegible] प्रथानुसार उन्होंने पूर्व नामका परित्याग कर [illegible] 'फा हियान' और 'सिंह' ( [illegible] ) की उपाधि प्राप्त की। [illegible] प्राप्त कर जब ये [illegible] राजधानी [illegible] नगर में धर्मानुशीलनमें व्याप्त थे, उस समय '[illegible]' ग्रन्थकी अपूर्णता देख कर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। इस कारण उन्होंने हिन्दुस्थानमें विनयपिटक उद्धार करनेके लिये कुछ साथियोंके साथ भारतवर्ष जानेका संकल्प किया। [illegible] लिखते हैं, कि [illegible] भारतमें पहुँचे थे।

[illegible] अनुराग रहनेके कारण बौद्ध [illegible] देखनेकी इच्छा बढ़ा हुई। इस उद्देश्यको सिद्ध करनेके लिये ये ३९९ ई०में [illegible] आदि [illegible] यात्रा किया। [illegible] प्रधान [illegible] पार कर ये [illegible] और [illegible] हुए। उस समय [illegible] प्रायः सारे [illegible] देशोंमें फैला हुआ था। राहमें उन्हें अनेकों बौद्धमठ मिलते जाते थे। उनमें [illegible] कर ये [illegible] उपस्थित हुए।* राजाके [illegible] उन्हें यहाँके [illegible] रहना पड़ा। यहाँ [illegible] बौद्ध [illegible] है। यहाँ [illegible] उन्होंने बुद्धदेवकी [illegible] देखी थी। इसके बाद ये लोग [illegible] हो गये। [illegible] थोड़े से साथी ले कर [illegible] की ओर [illegible] दिये। यहाँ भी उन्होंने [illegible] बौद्धधर्म [illegible] हुआ देखा था। अब ये यहाँसे [illegible] ( [illegible] ) राज्यमें पहुँचे।[illegible] यहाँके राजाके '[illegible]' था और सभी बौद्ध [illegible] थे। इसके बाद ये [illegible] [illegible] पार कर [illegible] उपत्यकामें पहुँचे।" यहाँसे [illegible] की ओर [illegible] कर ये [illegible] पार हुए। यहाँ उद्यान-राज्यमें प्रवेश कर उन्होंने बौद्धधर्मका पूर्ण प्रभाव देखा। इसके बाद ये भारतके उत्तर [illegible] गन्धार, तक्षशिला, [illegible], पुरुषपुर आदि [illegible] में बौद्धधर्म और [illegible] विस्तार देख कर प्रसन्न हुए थे।

[illegible] उन्होंने जो जो [illegible] देखे उन्हें [illegible] '[illegible]' नामक ग्रन्थमें लिपिबद्ध कर गये हैं। उन [illegible] और [illegible] पुरातत्त्वके [illegible] सहायता [illegible]

---

* [illegible]

[illegible]

" [illegible]

भारतके पूर्वतन इतिहास, भूगोल और बौद्धकीर्त्ति प्रभृतिके स्थाननिर्णयमें बहुत कुछ सुविधा हुई है।

फाहियान पश्चिम भारतवर्षसे क्रमागत पूर्वकी ओर कपिलवस्तु, राजगृह और गयादि बौद्धक्षेत्रोंके दर्शन करते हुए चम्पाराजधानीमें उपस्थित हुए। पीछे वहांसे समुद्रकी ओर ताम्रलिप्ति नगरमें पहुंच कर उन्होंने सैकड़ों सूत्र ग्रन्थादिकी नकल कर ली। इस स्थानसे जहाज पर चढ़ कर वे सिंहलद्वीप गये। वहां उन्होंने विनयपिटक, दीर्घागम और संयुक्तागम आदि संग्रह कर फिरसे समुद्रकी राहसे पूर्वकी ओर यात्रा की। कुछ दिन तूफानमें समुद्रकी राहसे विचरण कर कमण्डलुके साथ वे जलमें कूद पड़े। आखिर यवद्वीप (ये पो ति)-में उत्तीर्ण हो वहां उन्होंने ब्राह्मण्यधर्मका विस्तार देखा। पीछे वहांसे वे चीनदेशके कङ्ग-चाउ नगरमें पहुंचे।

चाङ्ग-अन राजधानीका परित्याग कर ५ वर्ष परिभ्रमण करनेके बाद वे मध्य भारतमें उपस्थित हुए। वहां प्राय ६ वर्ष तक रह कर उन्होंने करीब ३० विभिन्न राज्यों में परिभ्रमण किया था। चौदह वर्षके बाद वे स्वदेशके सुसिद्ध चाऊ नगरमें पहुंचे। पीछे नाकि शहरवासी भारतीय बौद्ध श्रमण बुद्धभद्रकी सहायतासे उन्होंने अनेक धर्म ग्रन्थों का अनुवाद और निज भ्रमण विवरण प्रकाशित किया। ८६ वर्षकी उमरमें उनकी मृत्यु हुई।

फ़ाहिशा ( अ० वि० ) पुंश्चली, छिनाल।

फिकरना ( हिं० क्रि० ) फेंकना देखो।

फिकवाना (हिं० क्रि०) फेंकनेका प्रेरणार्थक रूप, फेंकनेका काम कराना।

फिंगा (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी जो सिंधुसे आसाम तकके बड़े बड़े मैदानोंमें पाया जाता है। इसके पर भूरे, चोंच पीली और पंजे लाल होते हैं। ये छोटे छोटे झुंडोंमें इधर उधर उड़ते हैं। विशेषतः ये हरियालीमें चरना पसन्द करते हैं। इसके झुण्डमेंसे जहां एक पक्षी उड़ता है वहां बाकी सब भी उसीका अनुसरण करते हैं। इसकी लम्बाई प्राय डेढ़ बालिश्त होती है। वर्षाऋतुमें इसकी मादा एक साथ तीन अण्डे देती है।

फि ( स० पु० ) १ पाप। २ निष्फल वाक्य। ३ कोप।

फिंगई ( हि० स्त्री० ) चेनेकी तरहका एक मोटा अन्न जो बुंदेलखण्डमें होता है।

फिकार ( हि० पु० ) फिङ्ग देखो।

फिक्र ( अ० स्त्री० ) १ चिन्ता, सोच। २ उपायकी उद्भावना, उपायका विचार। ३ ध्यान, विचार।

फिक्रमंद ( फा० वि० ) चिन्ताग्रस्त।

फिङ्गक ( स० पु० ) फिङ्ग इति शब्देन कायति शब्दायते इति कै-क। फिंगा नामक पक्षी। पर्याय—कुलिङ्ग, कलिङ्ग, धूम्याट, भृङ्ग।

फिङ्गेश्वर—मध्य प्रदेशके रायपुर जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य। भूपरिमाण २०८ वर्गमील है। यहांके सरदार अपनेको राजगोंड बतलाते हैं। १८७३ ई०में दी हुई सनदके अनुसार ये राज्यसम्पदका भोग करते आ रहे हैं। फिङ्गेश्वर ग्राम यहांका प्रधान स्थान है।

फिचकुर (हि० पु०) वह फेन जो मूर्च्छा या बेहोशी आने पर मुंहसे निकलता है।

फिट ( हि० अव्य० ) छिः, छी।

फिटकरी ( हि० स्त्री० ) फिटकिरी देखो।

फिटकार ( हि० पु० ) १ धिक्कार, लानत। २ शाप, बद-दुआ। ३ हल्की मिलावट, भावना।

फिटकिरी—सनामख्यात खनिज पदार्थ विशेष जो सल्फेट आफ पोटाश और सल्फेट आफ अलमोनियमके पानीमें जमनेसे बनता है। भारतवर्षमें बिहार, सिन्ध, कच्छ और पञ्जाबमें फिटकिरी पाई जाती है। मैलके या अन्यान्य द्रव्योंके योगसे यह लाल पीली और काली भी होती है। भिन्न भिन्न देशोंमें यह भिन्न भिन्न नामोंसे प्रसिद्ध है, यथा बङ्गाल—फटकिरि, संस्कृत—स्फटिकारी, अरब—शिब, आज, पारस्य—जाक, आबे सफेद, महाराष्ट्र—फकरी, तुर्टि, पटकि, तामिल—पटिकारम, तेलगु—पटिकराम, मलयालम्—पटिक्करम, ब्रह्म—किओगिन्।

पर्वतके मध्यस्थित किसी स्थानमें यह मिट्टीके साथ मिली देखी जाती है। उस समय इसका रंग कृष्णधूसर वर्णकी मछलीके छिलकेके जैसा रहता है। वैज्ञानिकोंने इसे अग्निप्रस्तरसम्बन्धीय निरूपण किया है। उनमें सब-माम्मुलिटिक ( Sub nammulitic group )-को जगह

उत्पत्ति होती है। फस्फुरेटेड हाइड्रोजन ( *Phosphuretted* Hydrogen ) नामक एक पदार्थ प्रचलित है। दृढ ( Solid ), तरल और वाष्पीयके भेदसे उसकी तीन अवस्थाएं हैं।

कुछ पदार्थ ऐसे हैं जिनमें आलोक-विकिरणकी शक्ति है। दो खण्ड कोयार्टज पत्थरको आपसमें घिसने से आलोक उत्पन्न होता है। उस पत्थरमें फास्फरस-की अवस्थिति ही इसका कारण है। जुगनू और मछली के छिलकेमें इसी प्रकार कभी कभी प्रस्फुरकालोक देखने-में आता है।

फासला ( अ० पु० ) अनन्तर, दूरी।

फास्ट ( अ० वि० ) १ तेज। २ शीघ्र चलनेवाला, वेग वान्।

फाहा ( हि० पु० ) १ फाया, नाया। २ मरहमसे तर पट्टी जो घाव, फोड़े आदि पर रखी जाती है।

फाहियान—एक चीन परिव्राजक। चीनोंमें ये ही सबसे पहले बौद्धधर्मतत्त्वकी खोजमें भारतवर्ष आये थे।

सान सि प्रदेशके वु-यङ्ग नगरमें इनका जन्म हुआ था। बचपनमें ये कुङ्ग नामसे परिचित थे। चीनोंका बौद्ध-धर्ममें अनुराग रहनेके कारण ये थोड़ी ही उमरमें संसारा श्रम छोड़ देनेको वाध्य हुए। तीन ही वर्षकी उमरमें ये श्रमण हो गये थे। स्वदेशीय प्रथानुसार उन्होंने पूर्व नामका परित्याग कर धर्मनाम 'फा हियान' और 'सिह' ( *शाक्यपुत्र* ) की उपाधि प्राप्त की। यतिधर्मका ग्रहण कर जब ये लि-गन् फु प्रदेशकी राजधानी चाङ्ग-अन् नगर में धर्मानुशीलनमें व्यापृत थे, उस समय 'विनयपिटक' ग्रन्थको अधूरा देख कर उन्हे भारी दुःख हुआ। इस कारण उन्होंने विनयशास्त्रके नियमादिका उद्धार करनेके लिये कुछ साथियोंके साथ भारतवर्ष आनेका संकल्प किया। जनसाधारणके निकट ये सुङ्गवंशके शाक्य नामसे प्रसिद्ध थे।

बौद्धधर्ममें विशेष अनुराग रहनेके कारण बौद्ध ग्रन्थ पढ़नेकी उनकी बड़ी इच्छा हुई। इस उद्देश्यकी सिद्धि करनेके लिये ये ३९९ ई०में दलवलके साथ चाङ्ग अन नगरसे निकल पड़े। चीन राज्यका विख्यात प्राचीर पार कर ये क्रमागत पश्चिमकी ओर अग्रसर हुए। उस समय बौद्धप्रभाव प्रायः सारे उत्तर देशोंमें फैला हुआ था। राहमें उन्हे अनेकों बौद्धमठ मिलते जाते थे। उन्हीं मठोंमें वर्षा विता कर ये खोटानमें उपस्थित हुए।* राजाके आदेशसे उन्हे यहाके गोमती सङ्घाराम रहना पड़ा। यहां महायान मतावलम्बी बौद्ध सम्प्रदायका वास है। यहा रह कर ही उन्होंने बुद्धदेवकी रथयात्रा देखी थी। इसके बाद वे लोग छत्रभङ्ग हो गये। फाहियान थोड़े से साथी ले कर इयारकन्दकी ओर चल दिये। यहां भी उन्होंने महायान बौद्धमत फैला हुआ देखा था। अब ये यहासे लौट कर कि श ( काशगर ) राज्यमें पहुंचे।† यहाके राजाने 'पञ्चवर्षपरिषद्' था और सभी बौद्ध हीनयानमतावलम्बी थे। इसके बाद ये तुषारावृत सुसुङ्ग लिङ्ग पर्वतमाला पार कर दरदराज्यके दारिल उपत्यकामें पहुंचे।‡ यहासे क्रमागत दक्षिणपश्चिमकी ओर पैदल चल कर ये सबके सब स्वात्नदी पार हुए। यहां उद्यान राज्यमें प्रवेश कर उन्होंने बौद्धधर्मका पूर्ण प्रभाव देखा। इसके बाद ये भारतके उत्तर सीमावर्ती गन्धार, तक्षशिला, नगरहार, पुरुषपुर आदि जनपदोंमें भी बौद्धधर्म और कीर्त्तिसमूहका विस्तार देख कर प्रसन्न हुए थे।

भारतगमनकालमें उन्होंने जो जो जनपद देखे उन्हें स्वरचित 'फो-को की' नामक ग्रन्थमें लिपिबद्ध कर गये हैं। उक्त प्राचीन ग्रन्थ और परवर्त्ती चीनपरिव्राजक यूएनचुवङ्गके लिखित भ्रमणवृत्तान्तका सामञ्जस्य करके

---

* उनके लिखित वर्णनानुसार कोई कोई इस जनपदको वक्षु या राज्य अनुमान करते हैं। फाहियानने इस नगरसे कोस भर पश्चिम जिस नये संघारामका उल्लेख किया है, यूएन-चुवङ्ग उसीको वाह्लीक राज्यके अन्तर्भुक्त बतला गये हैं।

† यूएनचुवङ्गने इस किश नामसे काशगर जनपदका उल्लेख किया है। बहुतेरे इसे मनु लिखित खश या विष्णुपुराणके खशाकोंका देश बतलाते हैं। सम्भवतः टलेमी लिखित कोशाइयो ( Kossaioi ) और वृहत्संहितालिखित कुशादर ये दोनों इसी जनपदके अधिवासी बतलाये गये हैं।

‡ सिन्धुनदीके पश्चिम कूलवर्त्ती उपत्यका भूमि। यहां दारिल नदी बहती है।

भारतके पूर्वतन इतिहास, भूगोल और बौद्धकीर्ति अन पदादिके स्थाननिर्णयमें बहुत कुछ सुविधा हुई है।

फाहियान पश्चिम भारतवर्षसे क्रमागत पूर्वको ओर कपिलवस्तु, राजगृह और गयादि बौद्धक्षेत्रोंके दर्शन करते हुए चम्पाराजधानीमें उपस्थित हुए। पीछे यहांसे समुद्रकी ओर ताम्रलिप्ति नगरमें पहुंच कर उन्होंने सैकड़ों सूत्र ग्रन्थादिकी नकल कर ली। इस स्थानसे जहाज पर चढ़ कर ये सिंहलद्वीप गये। यहां उन्होंने विनयपिटक, दीर्घागम और संयुक्तागम आदि संग्रह कर फिरसे समुद्रकी राहसे पूर्वकी ओर यात्रा की। कुछ दिन तूफानमें समुद्रकी राहसे विचरण कर कमण्डलुके साथ ये जलमें कूद पड़े। आखिर यवद्वीप (ये-पो-ति)-में उत्तीर्ण हो यहां उन्होंने ब्राह्मणधर्मका विस्तार देखा। पीछे यहांसे ये चीनदेशके चङ्ग-चाउ नगरमें पहुंचे।

चाङ्ग अन राजधानीका परित्याग कर ५ वर्ष परिभ्रमण करनेके बाद ये मध्य भारतमें उपस्थित हुए। यहां प्रायः ६ वर्ष तक रह कर उन्होंने करीब ३० विभिन्न राज्योंमें परिभ्रमण किया था। चौदह वर्षके बाद ये स्वदेशके तृसिङ्ग-चाऊ नगरमें पहुंचे। पीछे नाकि शहरवासी भारतीय बौद्ध श्रमण बुद्धभद्रकी सहायतासे उन्होंने अनेक धर्म ग्रन्थोंका अनुवाद और निज भ्रमण विवरण प्रकाशित किया। ८६ वर्षकी उमरमें उनकी मृत्यु हुई।

फाहिशा (अ० वि०) पुंश्चली, छिनाल।

फिंकरना (हिं० क्रि०) फेंकरना देखो।

फिंकवाना (हिं० क्रि०) फेंकनेका प्रेरणार्थक रूप, फेंकनेका काम कराना।

फिंगा (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी जो सिन्धुसे आसाम तकके बड़े बड़े मैदानोंमें पाया जाता है। इसके पर भूरे, चोंच पीली और पंजे लाल होते हैं। ये छोटे छोटे झुंडोंमें इधर उधर उड़ते हैं। विशेषतः ये हरियालीमें चरना पसन्द करते हैं। इसके झुंडमेंसे जहां एक पक्षी उड़ता है वहां बाकी सब भी उसीका अनुसरण करते हैं। इसकी लम्बाई प्रायः डेढ़ बालिश्त होती है। वर्षाऋतुमें इसकी मादा एक साथ तीन अण्डे देती है।

फि (स० पु०) १ पाप। २ निष्फल वाक्य। ३ कोप।

फिकई (हिं० स्त्री०) चेनेकी तरहका एक मोटा अन्न जो बुन्देलखण्डमें होता है।

फिकार (हिं० पु०) फिकइ देखो।

फिक्र (अ० स्त्री०) १ चिन्ता, सोच। २ उपायकी उद्भावना, उपायका विचार। ३ ध्यान, विचार।

फिक्रमंद (फा० वि०) चिन्ताग्रस्त।

फिङ्गक (स० पु०) फिङ्ग इति शब्देन कायति शब्दायते इति कै-क। फिंगा नामक पक्षी। पर्याय—कुलिङ्ग, कलिङ्ग, धूम्याट, भृङ्ग।

फिङ्गेश्वर—मध्य प्रदेशके रायपुर जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य। भूपरिमाण २०८ वर्गमील है। यहांके सरदार अपनेको राजगोंड़ बतलाते हैं। १८७१ ई०में दी हुई सनदके अनुसार ये राज्यसम्पदका भोग करते आ रहे हैं। फिङ्गेश्वर ग्राम यहांका प्रधान स्थान है।

फिचकुर (हिं० पु०) वह फेन जो मूर्च्छा या बेहोशी आने पर मुंहसे निकलता है।

फिट (हिं० अव्य०) छिः, छी।

फिटकरी (हिं० स्त्री०) फिटकिरी देखो।

फिटकार (हिं० पु०) १ धिक्कार, लानत। २ शाप, बद्दुआ। ३ हलकी मिलावट, भावना।

फिटकिरी—खनामख्यात खनिज पदार्थ विशेष जो सलफेट आफ पोटाश और सलफेट आफ अलमोनियमके पानीमें जमनेसे बनता है। भारतवर्षमें विहार, सिन्ध, कच्छ और पञ्जाबमें फिटकिरी पाई जाती है। मैलके या अन्यान्य द्रव्योंके योगसे यह लाल पीली और काली भी होती है। भिन्न भिन्न देशोंमें यह भिन्न भिन्न नामोंसे प्रसिद्ध है, यथा बङ्गाल—फटकिरि, मन्द्राज—स्फाटिकारी, अरब—शिब्, आजः पारसः—जाक, जाके सफेद; महाराष्ट्र—फटकी, तुर्ति, तुरटि; तामिल—पटिकारम, तेलगु—पटिकराम; मलयालम्—पटिक्कारम; ब्रह्म—किओसिन्।

पर्वतके मध्यस्थित किसी स्थानमें यह मिट्टीके साथ मिली देखी जाती है। उस समय इसका रंग कृष्णधूसर वर्णका सछल्मीक छिलकेके जैसा रहता है। वैज्ञानिकोंने इसे अम्लिप्रस्तरसम्भाव निरूपण किया है। उसमें सब नाम्मुलिटिक (Sub-nummulitic group)-की जगह

उत्पत्ति होती है। फस्फुरेटेड हाइड्रोजन ( Phosphuretted Hydrogen ) नामक एक पदार्थ प्रचलित है। दृढ़ ( Solid ), तरल और वाष्पीयके भेदसे उसकी तीन अवस्थाएं हैं।

कुछ पदार्थ ऐसे हैं जिनमें आलोक विकिरणकी शक्ति है। दो खण्ड कोयार्टज पत्थरको आपसमें घिसने से आलोक उत्पन्न होता है। उस पत्थरमें फास्फरसकी अवस्थिति ही इसका कारण है। जुगनू और मछली के छिलकेमें इसी प्रकार कभी कभी प्रस्फुरकालोक देखने में आता है।

फासला ( अ० पु० ) अनन्तर, दूरी।

फास्ट ( अ० वि० ) १ तेज़। २ शीघ्र चलनेवाला, वेग वान्।

फाहा ( हि० पु० ) १ फाया, साया। २ मरहमसे तर पट्टी जो घाव, फोड़े आदि पर रखी जाती है।

फाहियान—एक चीन परिव्राजक। चीनोंमें ये ही सबसे पहले बौद्धधर्मतत्त्वकी खोजमें भारतवर्ष आये थे।

सान सि प्रदेशके वु-यङ्ग नगरमें इनका जन्म हुआ था। बचपनमें ये कुङ्ग नामसे परिचित थे। चीनोंका बौद्धधर्ममें अनुराग रहनेके कारण ये थोड़ी ही उमरमें ससाराश्रम छोड़ देनेको बाध्य हुए। तीन ही वर्षकी उमरमें ये श्रमण हो गये थे। स्वदेशीय प्रथानुसार उन्होंने पूर्व नामका परित्याग कर धर्मनाम 'फा हियान' और 'सिह' ( शाक्यपुत्र )-की उपाधि प्राप्त की। यतिधर्मका ग्रहण कर जब ये सि गन् फु प्रदेशकी राजधानी चाङ्ग-अन् नगर में धर्मानुशीलनमें व्यापृत थे, उस समय 'विनयपिटक' ग्रन्थको अधूरा देख कर उन्हें भारी दुःख हुआ। इस कारण उन्होंने विनयशास्त्रके नियमादिका उद्धार करनेके लिये कुछ साथियोंके साथ भारतवर्ष आनेका सङ्कल्प किया। जनसाधारणके निकट ये सुङ्ग शके शाक्य नामसे प्रसिद्ध थे।

बौद्धधर्ममें विशेष अनुराग रहनेके कारण बौद्ध ग्रन्थ पढ़नेकी उनकी बड़ी इच्छा हुई। इस उद्देश्यको सिद्ध करनेके लिये वे ३६६ ई०में दलबलके साथ चाङ्ग अन नगरसे निकल पड़े। चीन राज्यका विख्यात प्राचीर पार कर वे क्रमागत पश्चिमकी ओर अग्रसर हुए। उस समय बौद्धप्रभाव प्रायः सारे उत्तर देशोंमें फैला हुआ था। राहमें उन्हें अनेकों बौद्धमठ मिलते जाते थे। उन्हीं मठोंमें वर्षा बिता कर वे खोटानमें उपस्थित हुए।* राजाके आदेशसे उन्हें यहाके गोमती सङ्घाराम रहना पड़ा। यहा महायान मतावलम्बी बौद्ध सम्प्रदायका वास है। यहा रह कर ही उन्होंने बुद्धदेवकी रथयात्रा देखी थी। इसके बाद वे लोग छत्रभङ्ग हो गये। फाहियान थोड़े से साथी ले कर इयारकन्दकी ओर चल दिये। यहा भी उन्होंने महायान बौद्धमत फैला हुआ देखा था। अब वे यहासे लौट कर कि श ( कासगर ) राज्यमें पहुंचे।† यहाके राजाके 'पञ्चवर्षपरिषद्' था और सभी बौद्ध हीनयानमतावलम्बी थे। इसके बाद वे तुषारावृत त्सुङ्ग लिङ्ग पर्वतमाला पार कर दरदराज्यके दारिल उपत्यकामें पहुंचे।‡ यहासे क्रमागत दक्षिणपश्चिमकी ओर पैदल चल कर वे सबके सब सातनदी पार हुए। यहा उद्यान राज्यमें प्रवेश कर उन्होंने बौद्धधर्मका पूर्ण प्रभा देखा। इसके बाद वे भारतके उत्तर सीमावर्ती गन्धार, तक्षशिला, नगरहार, पुरुषपुर आदि जनपदोंमें भी बौद्धधर्म और कीर्त्तिसमूहका विस्तार देख कर प्रसन्न हुए थे।

भारतगमनकालमें उन्होंने जो जो जनपद देखे उन्हें स्वरचित 'फो-को की' नामक ग्रन्थमें लिपिबद्ध कर गये हैं। उक्त प्राचीन ग्रन्थ और परवर्त्ती चीनपरिव्राजक यूएनचुवङ्गके लिखित भ्रमणवृत्तान्तका सामञ्जस्य करके

*उनके लिखित वर्णानुसार कोई कोई इस जनपदको बल्खिया राज्य अनुमान करते हैं। फाहियानने इस नगरके कोष मर पश्चिम जिस नये सेघारामका उल्लेख किया है, यूएनचुवंग उसीको वाह्लीक राज्यके अन्तर्भुक्त बतला गये हैं।

†यूएनचुवंगने इस किश नामसे काशगर जनपदका उल्लेख किया है। बहुतेरे इसे मनु लिखित खश वा विष्णुपुराणके खशाकोश देश बतलाते हैं। सम्भवतः टलेमी लिखित कोसाइयो ( Kossaioi ) और पुरुषमंत्राप्रलिखित कुशाइटगण दोनों इसी जनपदके अधिवासी बतला गये हैं।

‡ सिन्धुनदीके पश्चिम कूलवर्ती उपत्यका भूमि। यहा दारिल नदी बहती है।

भारतके पूर्वतन इतिहास, भूगोल और बौद्धकीर्त्ति जन पदादिके स्थाननिर्णयमें बहुत कुछ सुविधा हुई है।

फाहियान पश्चिम भारतवर्षसे क्रमागत पूर्वकी ओर कपिलवस्तु, राजगृह और गयादि बौद्धक्षेत्रोंके दर्शन करते हुए चम्पाराजधानीमें उपस्थित हुए। पीछे वहांसे समुद्रकी ओर ताम्रलिप्ति नगरमें पहुंच कर उन्होंने सैकड़ों सूत्र ग्रन्थादिकी नकल कर ली। इस स्थानसे जहाज पर चढ़ कर वे सिंहलद्वीप गये। वहां उन्होंने विनयपिटक, दीर्घागम और संयुक्तागम आदि संग्रह कर फिरसे समुद्रको राहसे पूर्वकी ओर यात्रा की। कुछ दिन तूफानमें समुद्रकी राहसे विचरण कर कमण्डलुके साथ वे जलमें कूद पड़े। आखिर यवद्वीप (ये पो ति) में उत्तीर्ण हो वहां उन्होंने ब्राह्मण्यधर्मका विस्तार देखा। पीछे वहांसे वे चीनदेशके क्वङ्ग चाउ नगरमें पहुंचे।

चाङ्ग अन राजधानीका परित्याग कर ५ वर्ष परिभ्रमण करनेके बाद वे मध्य भारतमें उपस्थित हुए। यहां प्रायः ६ वर्ष तक रह कर उन्होंने करीब ३० विभिन्न राज्यों में परिभ्रमण किया था। चौदह वर्षके बाद वे स्वदेशके सुसिङ्ग-चाऊ नगरमें पहुंचे। पीछे नाकि शहर वासी भारतीय बौद्ध श्रमण बुद्धभद्रकी सहायतासे उन्होंने अनेक धर्म ग्रन्थों का अनुवाद और निज भ्रमण विवरण प्रकाशित किया। ८६ वर्षकी उमरमें उनकी मृत्यु हुई।

फाहिशा (अ० वि०) पुंश्चली, छिनाल।

फिंकरना (हिं० क्रि०) फेंकना देखो।

फिंकवाना (हिं० क्रि०) फेंकनेका प्रेरणार्थक रूप, फेंकनेका काम कराना।

फिंगा (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी जो सिन्धुसे आसाम तकके बड़े बड़े मैदानोंमें पाया जाता है। इसके पर भूरे, चोंच पीली और पंजे लाल होते हैं। ये छोटे छोटे झुंडोंमें इधर उधर उड़ते हैं। विशेषतः ये हरियालीमें चरना पसन्द करते हैं। इसके झुण्डमेंसे जहां एक पक्षी उड़ता है वहां बाकी सब भी उसीका अनुसरण करते हैं। इसकी लम्बाई प्रायः डेढ़ बालिश्त होती है। वर्षाऋतुमें इसकी मादा एक साथ तीन अण्डे देती है।

फि (स० पु०) १ पाप। २ निष्फल वाक्य। ३ कोप।

फिकई (हिं० स्त्री०) चेनेकी तरहका एक मोटा अन्न जो बुंदेलखण्डमें होता है।

फिकार (हिं० पु०) फिकई देखो।

फिक्र (अ० स्त्री०) १ चिन्ता, सोच। २ उपायकी उद्भावना, उपायका विचार। ३ ध्यान, विचार।

फिक्रमंद (फा० वि०) चिन्ताग्रस्त।

फिङ्गक (स० पु०) फिङ्ग इति शब्देन कायति शब्दायते इति कै-क। फिंगा नामक पक्षी। पर्याय—कुलिङ्ग, कलिङ्ग, धूम्याट, भृङ्ग।

फिङ्गेश्वर—मध्य प्रदेशके रायपुर जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य। भूपरिमाण २०८ वर्गमील है। यहांके सरदार अपनेको राजगोंड बतलाते हैं। १८७१ ई०में दी हुई सनदके अनुसार ये राज्यसम्पदका भोग करते आ रहे हैं। फिङ्गेश्वर ग्राम यहांका प्रधान स्थान है।

फिचकुर (हिं० पु०) वह फेन जो मूर्च्छा या बेहोशी आने पर मुंहसे निकलता है।

फिट (हिं० अव्य०) छिः, छी।

फिटकरी (हिं० स्त्री०) फिटकिरी देखो।

फिटकार (हिं० पु०) १ धिक्कार, लानत। २ शाप, बद-दुआ। ३ हलकी मिलावट, भावना।

फिटकिरी—खनामख्यात खनिज पदार्थ विशेष जो सलफेट आफ पोटाश और सलफेट आफ अलमोनियमके पानीमें जमनेसे बनता है। भारतवर्षमें बिहार, सिन्ध, कच्छ और पञ्जाबमें फिटकिरी पाई जाती है। मैलके या अन्यान्य द्रव्योंके योगसे यह लाल पीली और काली भी होती है। भिन्न भिन्न देशोंमें यह भिन्न भिन्न नामोंसे प्रसिद्ध है, यथा बङ्गाल—फटकिरि, संस्कृत—स्फटिकारी, अरब—सिब्, आब, पारसी—जाक, आबे सफेद, महाराष्ट्र—फवरी, तुर्ति, पटकि, तामिल—पटिकारम, तेलगु—पटिकराम। मलयालम्—पटिकारम। ब्रह्म—किओसिन्।

पर्वतके मध्यस्थित किसी स्थानमें यह मिट्टीके साथ मिली देखी जाती है। उस समय इसका रंग कृष्णधूसर वर्णकी मछलीके छिलकेके जैसा रहता है। वैज्ञानिकोंने इसे अनिम्ललरसबन्धीय निरूपण किया है। उसमें सब साम्मुलिटिक (Sub-nummulitic group)-की जगह

सञ्चित फिटकिरीयुक्त कृत्रिम धातु (Pedo breccia) मिली रहती है।

इस प्रकारकी मिश्रित फिटकिरी-संयुक्त मट्टीको ला कर छिछले हौदोंमें बिछा देते और ऊपरसे पानी डाल देते हैं। अलमीनियम सलफेट पानीमें घुल कर नीचे बैठ जाता है जिसे फिटकिरीका बीज कहते हैं। इस बीज (अलमीनम् सलफेट) को गरम पानीमें घोल कर ६ भाग सलफेट आफ पोटाश मिला देते हैं। फिर दोनोंको आग पर गरम करके गाढ़ा करते हैं। पांच छः दिनमें फिटकिरी जम जाती है।

सिन्धुनदके किनारे कालाबाग और उछली घाटीके पास फोटकिल फिटकिरी निकलनेके प्रसिद्ध स्थान हैं। इङ्गलैण्ड या चीनदेशजात फिटकिरीकी अपेक्षा कच्छ देशोत्पन्न फिटकिरी ही उत्तम है। कालाबागकी फिटकिरीके क्षारांशमें सोडा पाया जाता है, परन्तु इङ्गलैण्ड-देशज फिटकिरीमें पटाश रहता है। मञ्जिष्ठा, हरिद्रा, नील आदि रंगोंको पक्का करनेके लिये उसमें फिटकिरी मिलाई जाती है।

आयुर्वेदके मतसे इसका गुण धारक, रक्तरोधक और पचननिवारक है। निस्तेज उदरामय, क्षयशील प्रदरादि, रक्तस्राव, बच्चोंकी विसूचिका, औदरिक छर्दि, जलवत् श्लेष्मास्राव, हिक्का आदि रोगोंमें इसका आभ्यन्तरिक प्रयोगमें व्यवहार किया जाता है। चक्षुरोग, श्वेतप्रदर (Leucorrhœa), प्रमेह (Gonorrhœa), असृग्दर (Menorrhagia) गुदभ्रंश वा जरायुभ्रंश (*Prolapsus of the uteri and rectum*) तथा अन्यान्य क्षतरोगोंमें जलमिश्रित फिटकिरी विशेष उपकारजनक मानी गई है। कसायके कारण इसमें सङ्कोचनका गुण बहुत अधिक है। शरीरमें पड़ते ही यह तन्तुओं और रक्तकी नलियोंको सिकोड़ देती है जिससे रक्तस्राव आदि कम या बंद हो जाता है। गरम पानीमें फिटकिरी डाल कर ४।५ दिन तक उससे मुंह धोनेसे जिह्वा और मुखविवरके फोड़े जाते रहते हैं। फिटकिरीके चूर और आइडोफर्मको मिला कर विस्फोटकादि पर लगानेसे घाव सहजमें सूख जाता है।

फिटकिरीके पानीसे कुल्ली करनेसे दन्तक्षत और गलक्षत दोषादि नष्ट होते हैं। फिटकिरीको जला कर उसके चूरकी नास लेनेसे नासास्राव निवारित होता है। बिच्छू ने जहां डंक मारा हो, वहां पर इसके चूरका लेप देनेसे विष बातकी बातमें उतर आता है। प्रसूत शिशुकी नाभिरज्जु काटनेके बाद यदि नाभि पक जाय, तो जली हुई फिटकिरीका चूर देनेसे विशेष उपकार होता है। कपड़ेकी रँगाईमें तो यह बड़े कामकी चीज है। इससे कपड़े पर रंग अच्छी तरह चढ़ जाता है। इसीसे कपड़ेको रँगनेके पहले फिटकिरीके पानीमें बोर देते हैं। रँगनेके पीछे भी कभी कभी रँग निखारने और बराबर करनेके लिये कपड़े फिटकिरीके पानीमें बोरे जाते हैं।

फिटकी (हि० स्त्री०) १ छींटा। २ सूतके छोटे छोटे फुचरे जो कपड़ेकी बुनावटमें निकले रहते हैं।

फिटन (अ० स्त्री०) चार पहियेकी एक प्रकारकी खुली गाड़ी जिसे एक या दो घोड़े खींचते हैं।

फिट्टा (हि० वि०) अपमानित, फटकार खाया हुआ।

फितना (अ० पु०) १ झगड़ा, दंगा फसाद। २ एक फूलका नाम। ३ एक प्रकारका इत्र।

फितरती (अ० वि०) १ चालाक, चतुर। २ मायावी, फितूरी।

फितूर (अ० पु०) १ न्यूनता, घाटा। २ विपर्यय, खराबी। ३ उपद्रव, झगड़ा।

फितूरी (हि० वि०) १ झगड़ालू, लड़ाका। २ उपद्रवी, फसादी।

फिदवी (फा० वि०) १ स्वामिभक्त, आज्ञाकारी। (पु०) २ दास।

फिद्दा (फा० पु०) पिद्दा पक्षी।

फिनिकीय—फिनिस (*Phoenicia*) देशके प्राचीन अधिवासी (Phœnician)। ईसा जन्मके बहुत पहले से ये लोग विदेशीय वाणिज्यकी उन्नति द्वारा जगतमें प्रतिष्ठालाभ कर गये हैं। ये लोग सेमितिक या अरमियान जातिके थे। पहले ये लोहितसागर या पारस्य उपसागरके किनारे रहते थे। (१) किस समय इन्होंने भूमध्य सागरके सिरिया उपकूलमें उपनिवेश बसाया उसका

(१) Herod, vii 8।

कोई प्रमाण नहीं मिलता। (२) जो कुछ हो, प्राचीन सिरीया राज्यके दक्षिण और पश्चिम तथा भूमध्य उपसागरके पूर्वी किनारे आ कर ये लोग पश्चिम यूरोप के साथ व्यवसाय वाणिज्यमें लिप्त हुए थे। इस समय फिनिस राज्यकी लम्बाई २०० मील और चौड़ाई २० मील थी। सिदोन और टायर नगरमें उनकी राजधानी थी। बाइबल पढ़नेसे मालूम होता है, कि अलुमाके राज्यकालमें यह सिदोन नगर महासमृद्धिशाली था।(३) सिरिया आ कर उन्होंने पश्चिममें ब्रिटेन तक अपना वाणिज्य फैला लिया था। वाणिज्योन्नतिके लिये उन्होंने अरब, बाबिलोनिया, आफ्रिकाके उत्तरी उपकूल, स्पेन, सिसली, मल्टा आदि स्थानोंमें सैकड़ों उपनिवेश बसाये थे। इन सब देशोंमें ये पूर्व दिशासे माल लाते थे। अफ्रिका और सिसलीका उपनिवेश धीरे धीरे स्वतन्त्र राज्यमें परिणत हो गया। उन्होंने बहुत समय तक विशेष दक्षताके साथ रोमकोंका मुकाबला किया था।

जगत्‌के वर्त्तमान इतिहासमें यही प्राचीन वणिक् जाति सबसे पहले वाणिज्य द्वारा उन्नतिकी चरमसीमा तक पहुंच गई थी। भिन्न भिन्न देशों और जातियोंके साथ इनका वाणिज्य होनेके कारण उन्होंने इनसे वर्ण-माला ग्रहण की थी। सिन्धुनदके उत्तर ग्रीक अक्षर प्रचलित होनेके पहले ५वीं खृष्टपूर्वाब्दमें भारतवासी फिनिक-वर्णमालासे अवगत थे। भारतमें वणि नामसे प्रसिद्ध, प्राच्यभारतमें इन लोगोंने पाश्चात्य जगत्‌में सभ्यतालोक विस्तार किया था। (४) सलोमनके राज्यकालमें ये लोग जहाज पर चढ़ कर अरबदेश के दक्षिण अफिर नगरमें आये थे। वहांसे बे-रोकटोक भारतीय पण्य द्रव्य ले कर ये बहुत दूर पश्चिम चले जाते थे।(५) ५८६ और ३३१ खृष्टपूर्वाब्दमें अलेक्सन्दरके द्वारा दूसरी बार टायर नगर विध्वस्त होने पर भी उनके वाणिज्यमें जरा भी धक्का न पहुंचा था। ३४६ खृष्ट पूर्वाब्दमें कार्थेजके अधःपतन पर भी उनका वाणिज्य ज्योंका त्यों बना रहा। किन्तु अरटीयाम जलयुद्धके बाद उनकी वाणिज्य आशा पर पानी फेर गया। अनन्तर अरबोंने फिनिकियोंका वाणिज्यक्षेत्र अपना लिया। दूसरे वर्ष पुर्त्तगीज-वणिकोंने जगत्‌का वाणिज्यभण्डार अपने हाथ कर लिया।

(२) कोई कोई अनुमान करते हैं, कि २ हजारसे २५०० खृष्ट पूर्वाब्दके मध्य ये लोग पूर्व-वासका परित्याग कर लिबनके किनारे बस गये थे, क्योंकि पारस्यके किनारेसे ले कर लोहितसागर तक उनका वाणिज्य फैला हुआ था।

(३) Jor p xiv 26

(४) The Social History of Kamarup by N Vasu, Vol 1

(५) Cheroni VII 17 18 Kings 127-28



फिनिया (हिं० स्त्री०) कानमें पहननेका एक गहना।

फिमीज (हिं० स्त्री०) दो मस्तूलवाली एक छोटी नाव। यह दो डांडेसे चलाई जाती है।

फिरंग—फिरङ्ग देखो।

फिरगवात (हिं० पु०) वातज फिरङ्ग। फिरङ्ग देखो।

फिरंगी (हिं० वि०) फिरङ्गी देखो।

फिरट (हिं० वि०) १ विरुद्ध, खिलाफ। २ विरोध या लड़ाई पर उद्यत, बिगड़ा हुआ।

फिर (हिं० क्रि० वि०) १ पुन, दोबारा। २ अनन्तर, उपरान्त। ३ भविष्यमें किसी समय, और वक्त। ४ देशसम्बन्धमें आगे बढ़ कर, और चल कर। ५ उस हालतमें, उस अवस्थामें। ६ इसके अतिरिक्त, इसके सिवाय।

फिरक (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी छोटी गाड़ी। इस पर गांवके लोग चीजोंको लाद कर इधर उधर ले जाते हैं।

फिरकना (हिं० क्रि०) १ थिरकना, नाचना। २ किसी गोल वस्तुका एक ही स्थान पर घूमना।

फिरका (अ० पु०) १ जाति। २ जत्था। ३ सम्प्रदाय, पन्थ।

फिरकी (हिं० स्त्री०) १ लड़कोंके नचानेका एक खिलौना। २ मालखम्भकी एक कसरत। इसमें जिधरके हाथसे मालखम्भ लपेटते हैं, उसी ओर गर्दन झुका कर फुरतीसे दूसरे हाथके कंधे पर मालखम्भको लेते हुए उड़ान करते हैं। ३ लकड़ी, धातु या दफ्ती के छिल्लेके आदिका गोल टुकड़ा जो तागा बटनेके तकवेके नीचे लगा रहता है। ४ चकई नामका खिलौना। ५ कुश्तीका एक पेंच। जब जोड़के दोनों हाथ गर्दन पर हों अथवा एक हाथ गर्दन

पर और पर भुजदण्ड पर हो, तब एक हाथ जोडकी गर्दन पर रख कर दूसरे हाथसे उसके लंगोटको पकडे और उसे सामने झोंका देते हुए बाहरी टांग मार कर गिरा दे। ६ चमडे का गोल टुकडा जो तकलेमें लगा कर चरखेमें लगाया जाता है। चरखेमें जब सूत कातते हैं, तब उसके लच्छेको इसीके दूसरे पार लपेटते हैं। ७ वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीचकी कीलीसे एक स्थान पर टिका कर घूमता हो।

फिरङ्ग (स० पु०) १ स्वनामख्यात यूरोपीयभेद। २ यूरोपका देश, गोरोंका मुल्क, फिरंगिस्तान।

फ्रान्क नामका जर्मन जातियोंका एक जत्था था। यह जत्था ईसाकी ३री शताब्दीमें तीन दलोंमें विभक्त हुआ। इनमेंसे एक दल दक्षिणकी ओर बढा और गाल (फ्रान्सका पुराना नाम)-से रोमकराज्य उठा कर उसने वहां अपनी गोटी जमाई। तभीसे फ्रान्स नाम पडा। १०९६ और १२५० ई०के मध्य यूरोपके ईसाइयो ने ईसा की जन्मभूमिको तुर्कोंके हाथसे निकालनेके लिये कई बार आक्रमण किये। फ्रान्क शब्दका परिचय तभीसे तुर्कोंको हुआ और वे यूरोपसे आनेवालोंको फिरङ्गी कहने लगे। क्रमशः यह शब्द अरब, फारस आदि होता हुआ भारतवर्षमें आया। भारतवर्षमें पहले पहल पुर्त्तगाल आये, इससे इस शब्दका प्रयोग बहुत दिनों तक उन्हींके लिये होता रहा। फिर यूरोपियन मात्रको फिरङ्गी कहने लगे।

२ रोगविशेष, गरमी, आतशक। केवल भावप्रकाश में ही इस रोगका विवरण देखनेमें आता है। चरक, सुश्रुत, हारीत आदि प्राचीन किसी भी ग्रन्थमें इस रोगका उल्लेख नहीं है। अतः यह निःसन्देह कहा जा सकता है, कि पहले इस देशमें इस रोगका नाम निशान भी न था, पीछे फिरङ्गियो के इस देशमें बस जानेसे फिरंग रोगकी सृष्टि हुई है। यह भी स्पष्ट कहा गया है, कि फिरङ्ग रोग फिरङ्गी स्त्रीके साथ सम्भोग करनेसे ही जाता है। (भाव-प्र[illegible] फिर[illegible]गी [illegible]प्रकरणमें देखो।) इस रोगकी नामनिरुक्ति भी [illegible] ग्रन्थमें लिखा है—

"फिरङ्गसंज्ञके देशे बाहुल्येनैव यद्भवेत।
तस्मात् फिरङ्ग इत्युक्तो व्याधिर्व्याधिविशारदैः ॥"
(भावप्र०)

फिरङ्गियो के देशमें यह रोग बहुत होता है, इसीसे इस रोगको फिरङ्ग कहते हैं। इस रोगका दूसरा नाम गन्धरोग भी है।

फिरङ्गरोगग्रस्त व्यक्तिका गात्रस्पर्श करनेसे, विशेषतः फिरङ्गरोगग्रस्ता फिरङ्गिनीके साथ संसर्ग करनेसे यह रोग उत्पन्न होता है। इस आगन्तुक रोगमें पश्चात् दोषादिके लक्षण दिखाई पडते हैं। अतएव वे सब दोष देख कर वात, पित्त और कफका विषय स्थिर करना होगा। दोषमें वायुका लक्षण रहनेसे वातज फिरङ्ग, इसी प्रकार पित्त और कफके सम्बन्धमें भी जानना चाहिये। फिरङ्गिणीका संसर्ग ही इस रोगका प्रधान कारण है। यह रोग तीन प्रकारका होता है—बाह्यफिरङ्ग, आभ्यन्तर फिरङ्ग और बहिरन्तर्भवफिरङ्ग।

बाह्यफिरङ्ग विस्फोटकके समान शरीरमें फूट फूट कर निकलता है और घाव या व्रण हो जाते हैं। यह बाह्य फिरङ्ग सुखसाध्य है अर्थात् अल्प आयाससे ही यह दूर हो जाता है। आभ्यन्तर फिरङ्गमें सन्धि स्थानोंमें आमवातके समान शोथ और वेदना होती है। यह कष्टसाध्य है। जो बाहर और भीतर दोनों ही जगह होता है उसे बहिरन्तर्भव फिरङ्ग कहते हैं। यह भी दुःखसाध्य है। इस रोगमें कृशता, बलक्षय, नासाभङ्ग, अग्निमान्द्य, अस्थिशोष और अस्थिकी वक्रता आदि उपद्रव होते हैं।

बाह्यफिरङ्ग नवोत्थित और उपद्रवरहित होनेसे सुखसाध्य, आभ्यन्तर फिरङ्ग कष्टसाध्य और बहिरन्तर्भव फिरङ्ग उपद्रवयुक्त तथा अधिक दिनका होनेसे असाध्य होता है।

चिकित्सा।—रसकर्पूर फिरङ्गरोगकी एक उत्कृष्ट औषध है। इसके सेवनसे फिरङ्गरोग निश्चय ही आरोग्य होता है।

रसकर्पूरका निम्नलिखित प्रकारसे सेवन करना पडता है। विहित विधानसे यदि सेवन किया जाय, तो मुखशोथ नहीं होता।

पहले गोधूम चूर्ण द्वारा एक छोटी कूपिका प्रस्तुत कर उसमें ४ रत्ती शोधित पारा डाल दे। पीछे उस कूपिका द्वारा पारदके आवरक स्वरूप एक ऐसा गोल

पिण्ड बनाये कि उसमें पारद जरा भी दिखाई न दे। अनन्तर लवङ्गचूर्ण उसके चारों तरफ लगावे। अब उस गोलीको जलके साथ निगल जावे, पर याद रहे, निगलते समय वह दाँतसे छू न जाय। इस प्रकार रस कपूरका सेवन करके पीछे पान चबाना उचित है। इस औषधका सेवन करनेके बाद शाक, अम्ल, लवण, परिश्रम, रौद्रसेवन, पथपर्यटन और स्त्रीसङ्ग बिलकुल निषिद्ध है। इन सब निषिद्ध द्रव्योंके सेवनसे रोग बढ़ जाता है।

पारद आध तोला, खदिर आध तोला, आकरकरा एक तोला इन सब द्रव्योंको एक साथ खलमें पीस कर सात गोली बनाये। प्रतिदिन सवेरे जलके साथ एक एक गोली सेवन करनेसे फिरङ्गरोगका आठवें दिनमें कहीं पता न रहेगा। इस औषधका सेवन करके अम्ल और लवणका बिलकुल परित्याग करना पड़ता है। इस औषधका नाम सप्तशालिवटी है। इस रोगमें धूमप्रयोग भी हितकर बतलाया गया है। पारद २ तोला, गन्धक १ तोला और विड़ङ्ग २ तोला इन सब द्रव्योंको एक साथ पीस कर कज्जली करे, पीछे उससे सात गोली बनाये। प्रतिदिन एक एक गोली द्वारा धूम प्रयोग करने से फिरङ्गरोग अवश्य दूर हो जाता है। अलावा इसके आध तोला पारदको बड़ेलाके रसमें घिसे, जब तक पारद दिखाई न दे, तब तक घिसते रहे। अनन्तर इसके द्वारा ७ दिन पाणिस्वेद देनेसे फिरङ्गरोग नष्ट हो जाता है। यह स्वेद देकर अम्ल और लवणका बिलकुल व्यवहार न करे।

पतञ्जिन नीमकी पत्तियोंका चूर्ण आठ तोला, हरी तकी चूर्ण एक तोला, आमलकी चूर्ण एक तोला और हरिद्रा चूर्ण आध तोला इन सबको एक साथ मिला कर जल या मधुके साथ आध तोला तोबचीनीका चूर्ण खाने से फिरङ्गरोग जाता रहता है। इस औषधके सेवनमें लवणका परित्याग करना पड़ता है। यदि पथ्य में लवणका परित्याग नहीं कर सकनेसे सैन्धव-सेवन किया जा सकता है। पारद दो तोला, गन्धक दो तोला, और खदिरकाष्ठ दो तोला इन सबको एक साथ पीस कर कज्जली बनाये। पीछे हरिद्रा, नागकेशर, त्रिकटु, स्थूलजीरा, कृष्णजीरा यवानी, रक्तचन्दन, श्वेतचन्दन, पिप्पली, वंशलोचन, जटामासी और तेजपत्र प्रत्येकका चूर्ण एक एक तोला, मधु एक पाव और घी एक पाव, सबको एकत्र पीस कर एक एक तोलेका इक्कीस गुटका बनावे। प्रतिदिन एक एक गुटका खानेसे सब प्रकारके फिरङ्ग रोग नष्ट होते हैं। इन इक्कीस दिनों तक नमकका बिलकुल व्यवहार न करे। फिरङ्गरोगमें जितने प्रकार-की औषधोंका व्यवहार बतलाया गया है, उनमेंसे पारद ही प्रधान है। (भावप्रकाश)

फिरङ्गरोटी (स० स्त्री०) फिरङ्गप्रिया रोटी, फिरङ्गाणां रोटीति वा। रोटिकाविशेष, पावरोटी। यह रोटी फिर ङ्गियों को अतिशय प्रिय है अथवा फिरङ्गदेशमें ही ज्यादा कर प्रस्तुत होता है, इसीसे इसको फिरङ्गरोटी कहते हैं। पाकराजेश्वरमें इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस प्रकार लिखी है—गेहूंके चूरमें ताल या खजूरका रस और सौंफ का पानी डाल कर उसे कुछ समय तक गूंधते हैं। पीछे मोटी मोटी लिट्टी बना कर तन्दूरपात्रमें पकाते हैं। इस प्रकार जो रोटी बनती है, उसीका नाम फिरङ्गरोटी है।

फिरङ्गिणी (स० स्त्री०) फिरङ्गदेशोऽस्त्यस्यास्तस्या स्त्रियाः इति फिरङ्ग-इनि, ङीप्। फिरङ्गदेशोद्भव नारी, मेम।

"गन्धरोग फिरङ्गोऽयं जायते देहिनां ध्रुव।
फिरङ्गिणोऽतिसंसर्गात् फिरङ्गिण्याः प्रसङ्गतः॥"
(भावप्रकाश)

फिरङ्गी (हिं० वि०) १ फिरंगदेशमें उत्पन्न। २ फिरंग देशमें रहनेवाला, गोरा। ३ फिरंग देशका। (स्त्री०) ४ यूरोपदेशकी बनी तलवार, विलायती तलवार।

फिरङ्गीपुर—दाक्षिणात्यके कृष्णा जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह गुण्टूरसे ६॥ कोस पश्चिममें अवस्थित है। निकटवर्ती कोण्डविडु पर्वतमाला पर एक प्राचीन दुर्ग देखनेमें आता है। रेड्डीसरदारगण उक्त दुर्गका निर्माण कर गये हैं। पर्वतके नीचे बहुतसे प्राचीन हिन्दू देव मन्दिर और मसजिद विद्यमान हैं।

फिरङ्गीबाजार—ढाका जिलेमें अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह अक्षा० २३ ३३´ उ० तथा देशा० ९० ३३´ पू०के मध्य इच्छामती नदीकी एक शाखा पर अवस्थित है। यहां शायस्ता खांके शासनकालमें १६६३ ई०को पुर्तगीजोंने

पहले पहल यहां उपनिवेश बसाया। ये लोग पहले आराकनके अधीन सैनिकवृत्ति करते थे। मुगल सेनापति हुसेनबेगने जब आराकनराजधानी चट्टग्राममें घेरा डाला, तब ये लोग नौकरी छोड़ कर बङ्गाल भाग आये। फिरङ्गियोंके यहां बस जानेके कारण इस स्थानका फिरङ्गी बाजार नाम पड़ा है। वाणिज्यकी उन्नतिके कारण एक समय यह नगर विशेष समृद्धिशाली हो उठा था। उस समय इसका आयतन भी छोटा नहीं था। ढाकाके वाणिज्यकी अवनतिके साथ साथ यह स्थान भी श्रीहीन हो गया है।

फिरता (हिं० पु०) १ वापसी। २ अस्वीकार। (वि०) ३ वापस, लौटाया हुआ।

फिरदौसी—एक प्रसिद्ध महाकवि। इनका असल नाम अबुल्कासीम हसन बिन शरफशाह था। गजनीके सुल्तान महमूदके आदेशसे 'शाहनामा' नामक फारसी ग्रन्थ लिख कर ये जगद्विख्यात हो गये हैं। शाहनामाकी रचना किस प्रकार हुई और फिरदौसीने किस प्रकार प्रसिद्धि प्राप्त की, उसका विषय शाहनामाके मुख बन्धमें इस प्रकार लिखा है—

पारस्यके शासनीय राजा यजदेजार्दने कैमरवंशसे अनुसरो व शीय राजाओंका विवरण संग्रह करके अपने उद्यम और तत्त्वावधानसे 'सियारउल् मुलक' या वास्तान नामा नामक एक इतिहास सङ्कलन कराया था। महम्मद के शिष्योंने जब पारस्य राज्यको निर्दलित करनेकी चेष्टा की, उस समय यजदेजार्दके पुस्तकागारमें यह ग्रन्थ पाया गया था। १०वीं शताब्दीमें शामनव शीय किसी राजाने दकीकी नामक एक कविको उक्त महाग्रन्थका उद्धार करनेका भार सौंपा। किन्तु १००० श्लोक लिखने के बाद ही ये अपने क्रीतदासके हाथके शिकार बने। इसके बाद किसीने भी उक्त ग्रन्थके उद्धारकी चेष्टा न की। आखिर सयोगवशतः एक खण्ड वास्तानामा गजनीपति सुल्तान महमूदके हाथ लगा। गजनीपतिने उस ग्रन्थसे सात विषय ले कर सात कवियोंको एक एक कविता ग्रन्थ लिखनेका हुक्म दिया। उन कवियोंमेंसे कौन प्रधान हैं, इसकी परीक्षा करना ही सुल्तानका उद्देश्य था। उनमेंसे कवि अनसारिको पुरस्कार मिला। और ये ही पहले पहल उस वृहत् ग्रन्थको कवितामें ग्रथित करनेके लिये नियोजित हुए।

इस समय फिरदौसी अपनी जन्मभूमि तुस नगरमें कवितादेवीकी सेवा करके प्रशंसा और यशोलाभ कर रहे थे। ये कवि दकीकीकी चेष्टासे अच्छी तरह जान कार थे। सुल्तान महमूदका महदभिप्राय भी उन्होंने सुना था। अभी सौभाग्यक्रमसे उन्हें एक वास्ताननामा हाथ लगा। कठोर परिश्रम करके उन्होंने समस्त ग्रन्थ भली भांति समझ लिये। थोड़े ही दिनोंके अन्दर जुहाक और फरिदून युद्धके आधार पर उन्होंने एक खण्डकाव्य निकाला जिसका आदर घर घर होने लगा। उस खण्डकाव्यकी सुख्याति सुलतान महमूदके कानों में पहुंची। उन्होंने फिरदौसीको बुलवा भेजा। सुलतान का आज्ञापालन कर फिरदौसी गजनी पहुंचे। उनके आग मनसे सुल्तानने अपनेको धन्य, कृतार्थ और उनके पाद स्पर्शसे राजधानीको पवित्र हुआ समझा। कविकी सम्बर्द्धना किससे करेंगे, ऐसी उन्हें एक भी चीज न मिली। सुलतानने कविवरको वास्तान नामाके आधार पर अपने पूर्वपुरुषोंकी अनुपम कीर्त्ति कवितामें लिखनेका आदेश किया और प्रति हजार स्वर्णमुद्रा देनेका वचन दिया। कविने भी कहा था, कि जब तक वे ग्रन्थको शेष न कर लेंगे तब तक एक कौड़ी भी ग्रहण न करेंगे।

तीस वर्षके परिश्रमके बाद ६०००० श्लोकोंमें उनकी शाहनामा सम्पूर्ण हुई। किन्तु इस समय सुलतानका वह उत्साह, अनुराग और प्रतिभा कहां गई! पुस्तक सम्पूर्ण तो हो गई, पर सुल्तानने अपना वचन पूरा न किया, आशा दे कर चिर निराशामें कविवरको बहा दिया। कविने सुल्तानके आचरण पर कटाक्ष करके मर्मभेदी आक्षेपमें ग्रन्थका उपसंहार लिखा। सुल्तानने शाहनामा में अपने चरित्रकी समालोचना देख आखिर ६० हजार स्वर्णमुद्राके बदलेमें ६० हजार रौप्य दिरहम भेज दिया। जिस समय उनका आदमी रुपयेकी गठरी बांध कर फिरदौसीके यहां पहुंचा, उस समय वे स्नानागारमें थे। उन्होंने उस मुद्राको स्वयं ग्रहण न किया, क्रोध और घृणासे अपने भृत्योंके बीच छिड़क दिया। वजीरके परामर्शसे सुलतानने ऐसा काम किया है, जब यह उन्हें मालूम हुआ,

तब वजीरके उद्देश्यसे उन्होंने एक निन्दात्मक ग्रन्थ लिख कर सुलतानके पास भेज दिया और आप मासन्दराण देशको भाग गये। जाते समय उन्होंने यह भी कहा था, कि जब कभी सुलतानका मन किसी राजकीय व्यापारसे निपीड़ित होवे तब वे उस ग्रन्थका अवश्य पाठ करें। पीछे वह ग्रन्थ पढ़नेसे महमूदको मालूम हुआ, कि उन्होंने सदाके लिये अपना सम्भ्रम खो दिया है। वजीर को उन्होंने दरबारसे निकाल भगाया और फिरदौसीकी खोजमें आदमी भेजा। इधर फिरदौसी निरापद होनेके लिये बोगदादकी सभामें उपस्थित हुए। यहां आ कर उन्होंने शाहनामाके शेषमें खलीफाके प्रशस्तिमूलक १००० श्लोक और जोड़ दिये। खलीफाने प्रसन्न हो कर उन्हें साठ हजार स्वर्णमुद्रा प्रदान की। इधर सुलतान महमूदने भी सम्मानसूचक परिच्छदके साथ प्रति श्लोक ६० हजार स्वर्णमुद्रा भेज दीं। किन्तु वह कविके निकट पहुंचनेके पहले ही वे इहलोकसे चल बसे थे। जन्मभूमि तुष (वर्त्तमान मसद) नगरमें ही १०२० ई०को ८९ वर्षकी अवस्थामें उनकी मृत्यु हुई। शाहनामाके अलावा उन्होंने 'अयियात् फिरदौसी' नामक एक और भी काव्य लिखा था।

फिरना (हिं० क्रि०) १ विचरना, टहलना। २ चक्कर लगाना, बार बार फेरे खाना। ३ भ्रमण करना, इधर उधर चलना। ४ प्रत्यावर्त्तित होना, पलटना। ५ मरोड़ा जाना, ऐंठा जाना। ६ किसी ओर जाते हुए दूसरी ओर चल पड़ना, मुड़ना। ७ परिवर्त्तित होना, विपरीत होना। ८ लीप या पोत कर फैलाया जाना, चढ़ाया जाना। ९ यहांसे वहां तक स्पर्श करते हुए जाना, रखा जाना। १० वापस होना। ११ एक ही स्थान पर रह कर स्थिति बदलना, सामना दूसरी तरफ हो जाना। १२ विरुद्ध हो पड़ना, लड़ने या मुकाबला करनेके लिये तैयार हो जाना। १३ प्रतिज्ञा आदिसे विचलित होना, बात पर दृढ़ न रहना। १४ सीधी वस्तुका किसी ओर मुड़ना, झुकना। १५ घोषित होना, चारों ओर प्रचारित होना।

फिरवा (हिं० पु०) १ गलेमें पहननेका सोनेका एक आभूषण। २ सोनेकी अंगूठी जो तारको कई फेरे लपेट कर बनाई गई हो।



फिरवाना (हिं० क्रि०) १ फेरनेका काम कराना। २ फिराने का काम कराना।

फिराक (अ० पु०) १ वियोग, बिछोह। २ चिन्ता, खटका। ३ खोज, टोह।

फिराना (हिं० क्रि०) १ इधर उधर चलाना, ऐसा चलाना कि कोई एक निश्चित दिशा न रहे। २ चक्कर देना, नचाना या परिक्रमण कराना। ३ एक ही स्थान पर रख कर स्थिति बदलना। ४ सैर कराना, टहलाना। ५ ऐंठन, मरोड़ना। ६ किसी ओर जाते हुएको दूसरी ओर चला देना, घुमाना। ७ लौटाना, पलटाना। ८ परिवर्त्तन करना, बदला देना। ९ विचलित करना, बात पर दृढ़ न रहने देना।

फिरार (अ० पु०) भागना, भाग जाना।

फिरारी (फा० वि०) १ भागनेवाला, भगोड़ा। २ वह अपराधी जो दण्ड पानेके भयसे भागता फिरता हो।

फिरिङ्गी—चट्टग्रामके प्रधान अधिवासी पुर्त्तगीजके वंशधर। ये लोग पुर्त्तगीज गौरवके समय धनशाली वणिक् समझे जाते थे। वाणिज्य और दस्युवृत्तिके लिये ये जहाज रखते थे। अभी चट्टग्राममें जो सब पुर्त्तगीज रहते हैं वे रोमन कैथलिक हैं। बहुतेरे खेती वारी करके अपना गुजारा चलाते हैं। पुर्त्तगाल और चट्टग्राम देखो।

इन लोगोंकी प्रकृति अति जघन्य है। १६वीं शताब्दीके आरम्भमें ये क्रीतदासकन्या रखते थे। उन दास कन्याओंको उपपत्नीरूपमें भाड़े पर दे कर अर्थ सञ्चय करते थे। वर्त्तमान फिरिङ्गी ऐसी सन्तानोत्पत्तिसे बिलकुल वञ्चित है। परिच्छदके सिवा इनके और कोई पैतृक अवलम्बन नहीं है। धर्म और आकृतिमें भी ये देशी लोगोंकेसे हैं। इनमें मग और मुसलमान रक्त मिला हुआ है। पत्नी या उपपत्नीजात दोनों ही प्रकारके पुत्रोंका पितृ नाम रखा जाता है। पहले इनका डाक नाम और पदवी पुर्त्तगीजोंसी थी। अभी बहुतोंने अंगरेजी डाकनामका अनुकरण करना सीख लिया है। उस देशके लोग इन्हें 'मेटेफिरिङ्गी' या 'काला फिरिङ्गी' कह कर घृणा करते हैं। विद्याशिक्षाके अभावसे ये लोग अभी अति हीन हो रहे हैं। बहुत दिनों तक देशीय सहवासमें रहने तथा मातृकुल मग या मुसलमान होनेके कारण ये

तद्देशवासी हिन्दू मुसलमान आदिके आचार व्यवहारका अनुकरण करने लग गये हैं। इनका विवाह चटकी तरह तृतीय व्यक्ति द्वारा निष्पन्न होता है। ये लोग साधारणतः स्त्रीके प्रति निष्ठुर व्यवहार करते हैं।

२ दक्षिण भारतमें पुरागोनोंका प्रचलित शाखविशेष।

फिरिश्ता ( फा० पु० ) देवदूत।

फिरिश्ता—विख्यात मुसलमान ऐतिहासिक। इनका पूरा नाम था महम्मद कासिम हिन्दूशाह। फिरिश्ता इनकी उपाधि थी और इसी नामसे ये तमाम परिचित हैं। इनके पहले और कोई भी मुसलमान ऐसे विशदभावमें इतिहास सङ्कलन करनेमें समर्थ नहीं हुए हैं। कास्पियन सागरतीरवर्त्ती अष्टाबाद नगरमें इनका जन्म हुआ। इनके पिता गुलाम अली हिन्दूशाह एक विशेष शिक्षित व्यक्ति थे। किसी कारणसे वे अपने पुत्रको साथ ले जन्मभूमिका परित्याग कर भारतवर्ष आये। यहां अहमदनगरके अधिपति मुर्त्तजाने इन पर बड़ी कृपा दरसाई और इन्हें अपने पुत्र मीरन हुसेनको पारसी भाषा सिखानेके लिये नियुक्त किया। किन्तु उस राजप्रसादका वे अधिक दिन भोग करने न पाये। अकाल ही वे कराल कालके गालमें पतित हुए।

फिरिश्ता अनाथ हो गये सही, पर स्वयं मुर्त्तजा निजाम उनके प्रतिपालक हुए। निजाम गुलामके सद्गुण भूले नहीं थे। उन्हों ने एक दिन फिरिश्ताको राजसभामें बुलाया और अति विश्वस्त ( गुप्त ) मन्त्रिपद पर नियुक्त किया। इसके बाद फिरिश्ता राजरक्षी सेनापति दलके अधिनायक हो गये। इस समय पूर्व राजाके अमात्य वर्ग विद्रोहियोंके हाथसे मारे गये, एक मात्र फिरिश्ताने ही युवराज मीरन हुसेनकी आड़में अपनी प्राण रक्षा की। पिताको राज्यच्युत करके मीरन स्वयं गद्दी पर बैठे, पर वे अधिक दिन तक राज्यभोग न कर सके। १५८८ ई०के राष्ट्रविप्लवमें वे भी निष्ठुरभावसे निहत हुए। इस समय वहां सुन्नियोंकी तूती बोलती थी। फिरिश्ता शिया थे, इस कारण उन्नतिकी कोई आशा न देख वे बीजापुरकी ओर अग्रसर हुए।

१५८९ ई० में बीजापुर पहुंचने पर राजमन्त्री दिलावर खांने उनका यथेष्ट आदर किया और उन्हींके अनुग्रहसे ये बीजापुरराज इब्राहिम आदिलशाहके निकट परिचित हुए। १५९२ ई०में अहमदनगरके युद्धमें इन्होंने बीजापुरकी ओरसे सैन्यचालना की थी। उस युद्धमें ये जामल गाँवमें आहत और बन्दी हुए। आखिर बीजापुर भाग कर उन्होंने आत्मरक्षा की। इसके बाद इब्राहिम शाहने इन्हें एक इतिहास लिखनेका अनुरोध किया और अन्यान्य लेखकोंकी तरह उन्हें भी आरोपित अंश बाद दे कर प्रकृत घटनाका अवलम्बन करनेका हुकुम मिला। १५९४ ई०में ये बेगम सुलतानके विवाहमें उपस्थित थे और उन्हें साथ ले कर सुलताना बुर्हानपुर अपने स्वामीके घर आई। १५९६ ई०में उनका बीजापुर-राजइतिहास समाप्त हुआ। १६०१ ई० में सम्राट् अकबर शाहकी मृत्यु पर शोक प्रकाश करने और सान्त्वना देनेके लिये बीजापुरराजने उन्हें दिल्ली भेजा। १६०६ ई०में लाहोरमें जहाङ्गीरके साथ इनकी भेंट हुई। लौटते समय ये बदकशान, रोहतस आदि स्थानोंमें परिभ्रमण कर अपने इतिहासके उपकरण संग्रह कर लाये। उनकी मृत्यु कब हुई, ठीक ठीक मालूम नहीं। पहले उन्होंने उस पुस्तकका गुलशन इ इब्राहिमी या नौरसनामा नामसे प्रचार किया। जनसाधारणके निकट यह ग्रन्थ *तारिख इ इब्राहिमी वा तारिख इ फिरिस्ता* नामसे मशहूर है। पुस्तककी उपक्रमणिकामें उन्होंने *हिन्दू और भारतमें मुसलमान आगमन लिपिबद्ध किया है।* पीछे पर्यायक्रमसे लाहोर, गजनी, दिल्ली और दाक्षिणात्यके मुसलमानराजवंश (कुल्वर्गा, बीजापुर, अहमदनगर, तैलङ्ग, बेराहर, बिदार ) गुजरात, मुलतान, मालव, खान्देश, बङ्गाल और बिहार, सिन्धु और काश्मीर राजवंशका इतिहास प्रकाशित किया तथा शेष दो खण्डोंमें उन्हों ने मलबार और भारतीय साधुओंकी जीवनी लिखी है। उपसंहार भागमें भारतवर्षका प्राकृतिक और भौगोलिक विवरण लिपिबद्ध किया गया है।

फिरिहरा ( हिं० पु० ) एक प्रकारका पक्षी। इसकी छाती लाल और पीठ काले रंगकी होती है।

फिरिहरी ( हिं० स्त्री० ) बच्चोंका एक खिलौना जिसे फिरकी भी कहते हैं।

फिरोज—आगरा-वासी एक विख्यात सुफी पण्डित। इन्होंने

१६९०. ई०में 'अकामत् सुफिया' नामक फारसी भाषामें ईश्वरतत्त्वके सम्बन्धमें एक पुस्तक लिखी है।

फिरोजपुर—पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत जालन्धर विभागका एक जिला। यह अक्षा० २९° ५५´ से ३१° ९´ पू० और देशा० ७३° ५२´ से ७५° २६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४३०२ वर्गमील है। शतद्रु और विपाशा नदी आपसमें मिल कर जिलेके मध्यसे बह गई हैं। इसके दक्षिण पश्चिम और दक्षिणमें बहावलपुर तथा बीकानेर राज्य और पूर्वमें लुधियाना जिला है।

जिलेमें जगह जगह अनेक अट्टालिकाओं और कूपों का भग्नावशेष देखनेमें आता है। इन सबसे प्रतीत होता है, कि एक समय इस जनहीन प्रदेशमें भी लोगों का अधिक संख्यामें वास था। शुष्कप्राय नालेके समीपवर्ती (अभी जिसे जनमानवशून्य मरुभूमि कहनेमें भी कोई अत्युक्ति नहीं) भूभागमें आज भी उस प्रकारके अनेक निदर्शन पाये जाते हैं। किस समय इस जनपदकी समृद्धिका ह्रास हुआ था, उसका कोई निश्चय नहीं है। किन्तु आईन-इ-अकबरी पढ़नेसे मालूम होता है, कि सम्राट् अकबरशाहके समय शतद्रु नदी फिरोजपुर नगरके पूर्व ओर बहती थी। नदीके गतिपरिवर्तनसे जलाभाव होने तथा १६वीं शताब्दीके शेषमें घोरतर युद्धके कारण यह स्थान जनशून्य हो गया है। प्राय दो शताब्दी तक यह स्थान मरुभूमि सा पड़ा रहा। पीछे दोसी जातीय राजपूत लोग भट्टियोंसे खदेड़ कर पाकपत्तनके निकट बस गये। धीरे धीरे शतद्रु उपत्यका पार कर उन्होंने १७४० ई०में फिरोजपुर नगरमें ही राजधानी बनाई। इस प्रदेशमें कोई आमदनी न रहनेके कारण मुगल-सम्राट्ने इस पर हस्तक्षेप नहीं किया। परन्तु शतद्रुके पश्चिमवर्ती कसुर नगरमें उनका एक फौजदार था जो सदा जंगलकी देख रेख करता था।

१७६३ ई०में गुजर सिंहके अधीन भङ्गिमिसलोंके सिक्खोंने फिरोजपुर पर अधिकार किया। पीछे यह स्थान गुजरके भतीजे गुरुबख्श सिंहके हाथ लगा। इस सर्दार सरदारने यहां एक दुर्ग बनवाया था। १७९२ ई०में उनके द्वितीय पुत्र धन्नासिंह यहांके शासनकर्त्ता हुए। १८१८ ई०में उनकी मृत्यु होनेसे उनकी पत्नी राज्यकी सब सभी कर्मचारियोंसे राजकार्यकी पर्यालोचना करने लगी। रानीके परलोकगत होने पर वृटिश-सरकारने अपने हाथ कार्यभार ग्रहण किया और सर हेनरी लारेन्स यहां रहने लगे।

१८४५ ई०का प्रथम सिक्ख-युद्ध (मुदकी, फिरोज शहर, अलिवाल और सोबराउन नामक स्थानके कुछ युद्ध) इसी जिलेमें हुआ था। १८५७ ई०के गदरमें अंगरेजोंको यहां भी अनेक कष्ट भुगतने पड़े थे।

इस जिलेमें ८ शहर और १७०३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या दस लाखके करीब है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ४७ मुसलमान, २९ हिन्दू और शेष २४ सिक्ख हैं। यहांकी भाषा पंजाबी है। गेहूं, चना, ज्वार जिलेकी प्रधान उपज है। गेहूं तथा धान बहुत कम उपजता है। जो सब अनाज यहां उपजता है उसकी रफ्तनी लुधियाना, अमृतसर, बहावलपुर, लाहोर, जालन्धर, हिसार, होशियारपुर आदि स्थानोंमें होती है तथा आमदनीमें चीनी, रुई, शीशम, धातु, नील, तमाकू, नमक, धान और मसाला प्रधान है। फिरोजपुर शहर वाणिज्यका एक प्रधान केन्द्र है। १७५९-६० और १७८३-८४ ई०में यहां घोर अकाल पड़ा था। उस समय गेहूं रुपयेमें सवा सेर मिलता था। अलावा इसके यहां और कई बार दुर्भिक्ष का प्रकोप देखा गया है।

डिप्टी कमिश्नर छह सहकारी कमिश्नर द्वारा शासन कार्य चलाते हैं। इसकी सुविधाके लिये जिला पांच तहसीलोंमें विभक्त है यथा—फिरोजपुर, जीरा, मोगा, मुक्तसर और फाजिल्का। एक एक तहसीलदार और नायब तहसीलदारके अधीन है। इस प्रदेशके अट्ठाईस जिलोंमेंसे फिरोजपुर विद्या शिक्षामें चौदहवां है। सैकड़े पीछे ४ मनुष्य लिख पढ़ सकते हैं। अभी जिले भरमें १० सेकण्डरी, २०० प्राइमरी, १०० एलिमेण्टरी स्कूल और एक एङ्ग्लो वर्नाक्युलर हाई स्कूल है जिसका खर्च म्युनिसपलिटीकी ओरसे दिया जाता है। अलावा इसके दो और अन्य साहाय्य हाई स्कूल हैं, एक हर भगवान् दास मेमोरियल हाई स्कूल फिरोजपुर शहरमें और दूसरा 'देवधर्म हाई-स्कूल' मोगामें। स्कूलके अलावा यहां सरकारी अस्पताल भी है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३० ४४´ से ३१ ७´ उ० और देशा० ७४ २५´ से ७४ ५७´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४८६ वर्गमील और जन सख्या प्राय १६५८७१ है। इसके उत्तर पश्चिममें शतद्रु नदी बहती है जो तहसीलको लाहोर जिलेसे पृथक करती है, इसमें फिरोजपुर और मुदकी नामके २ शहर और ३२० ग्राम लगते हैं। आय दो लाखसे ऊपर है। युद्धस्थान फिरोजशाह इसी तहसीलके अन्तर्गत है।

३ उक्त तहसीलका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० ३०´ ५४´ उ० और देशा० ७४ ३७´ पू० शतद्रुके पुरातन किनारे अवस्थित है। यह रेलगाडीके द्वारा बम्बईसे १०८०, कराचीसे ७८८ और कलकत्तेसे ११६४ मील दूर पडता है। जनसख्या पचास हजारके लगभग है। मुसलमान और हिन्दूकी सख्या करीब करीब बराबर है। लोगोंका विश्वास है, कि दिल्लीश्वर फिरोजशाहने (१३५१ १३५७) इस नगरको बसाया। सरदार लक्ष्मणकुँवर की मृत्युके बाद वृटिश गवर्मेण्टने इसे १३२५ ई०में अपने साम्राज्य भुक्त किया। अंगरेजोंके हाथ आनेसे अर्थात् १८३५-५१ ई०के मध्य व्यवसाय वाणिज्यमें यह शहर विशेष समृद्धिशाली हो उठा था। १८४५-४६ ई०में शतद्रु-युद्धमें जो अंगरेजी सेना मारी गई थी, उनकी स्मृतिमें एक गिरजा बनाया गया था जिसे गदरके समय उद्धत सिपाही दलने तहस नहस कर डाला।

नगरसे एक कोस दक्षिण सेना निवास है। इसके आर्सेनल वा अस्त्रागारमें प्रचुर युद्धोपकरण रखे हुए हैं। पञ्जाब भरमें ऐसा और कहीं भी नहीं है। १८६७ ई०में म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। शहरमें दो ऐङ्गलो वर्नाक्युलर हाई-स्कूल, एक एङ्गलो-वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और एक सरकारी अस्पताल है।

फिरोजपुर—पञ्जाबके गुड़गाँव जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २७ २६´ से २८ १३´ उ० और देशा० ७६ ५३´ से ७७ २०´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या डेढ लाखके करीब है। इसमें १ शहर और २३० ग्राम लगते हैं। भूपरिमाण ३१७ वर्गमील है।

२ उक्त गुड़गाँव जिलेका प्रधान नगर और फिरोजपुर तहसीलका सदर। इसका दूसरा नाम फिरोजपुर झिरका भी है। यह अक्षा० २७ ४६´ ३०´´ उ० और देशा० ७६ ५६´ ३०´´ पू०के मध्य अवस्थित है। सम्राट् फिरोजशाहने निकटवर्ती पार्वतीय जातिका दमन करनेके लिये इस नगरको दुर्गसे सुरक्षित कर दिया था। १८०३ ई०में अंगरेजराजने इस स्थानको हस्तगत कर अहमद बक्स खाँको जागीर स्वरूप प्रदान किया। उनके पुत्र नवाब सामसुद्दीन खाँ दिल्लीके कमिश्नर फ्रेजर साहबकी हत्याके अपराधमें १८३६ ई०को अंगरेजोंसे मार डाले गये। तभीसे यह नगर उक्त तहसीलका सदर चला आ रहा है।

फिरोजमुल्ला—बम्बईवासी कदोमी पारसियोंका प्रधान धर्म याजक। ये काउसके पुत्र थे। इन्होंने पुर्तगीज आगमनसे ले कर १८१७ ई०में अंगरेजी अधिकार पर्यन्त समस्त घटनाओंका उल्लेख कर 'जार्जनामा' नामक एक ग्रन्थकी रचना की।

फिरोजशाह—दिल्लीश्वर सलीमशाह सूरके एकलौते। पिताकी मृत्युके बाद बारह वर्षके बालक दिल्लीके सिंहासन पर बैठे। किन्तु तीन मास भी राज्य करने न पाया था, कि उनके मामा मुबारिक खाँने बडी निठुरतासे उनकी हत्या (१५५४ ई०में) की और स्वय मुहम्मदशाह आदिल नाम धारण कर दिल्लीकी मसनद पर बैठे।

फिरोजशाह—पञ्जाबके फिरोजाबाद तहसील और जिलेका एक प्रसिद्ध युद्धस्थल। सिख युद्धके लिये यह स्थान बहुत मशहूर है। १८४५ ई०के दिसम्बर मासमें सर ह्यु गफ और हेनरी हार्डिजने सिखसेनाओं पर आक्रमण किया। दो दीन भीषण युद्धके बाद सिख लोग भाग जानेको बाध्य हुए। युद्धके समय सिखोंने जो दुर्ग खाइ बनवाई थी, उसका बिलकुल लोप हो गया। केवल मृत सेनापतियों की स्मृतिके लिये जो स्तम्भ खड़ा किया गया था, वही विद्यमान है। इस स्थानका आदि नाम फेरूशहर है। ऐतिहासिक घटनाके लिये इसका फिरोजशाह नाम पडा है।

फिरोजशाह—दिल्लीके शेष मुगलसम्राट् २य बहादुरशाहके पुत्र। १८५७ ई०के गदरमें उन्होंने असीम उत्साहसे विद्रोहीदलका नेतृत्व किया था। युद्धके बाद अंगरेजोंके भयसे ये अरबदेश भाग ले कर भागे। वहाँ

भिक्षावृत्ति द्वारा उन्होंने जीवनयापन किया था।
फिरोजशाह पूरबी—एक हबसी सरदार। इसका पहला नाम मालिक शाहिद था। १४९१ ई०में खोजा सुलतान शाहजादाको मार कर ये फिरोज नामसे बङ्गालके सिंहासन पर बैठे। इन्होंने पुत्रकी तरह हिन्दू मुसलमान प्रजा मात्रका ही पालन किया था। गौड़नगर (लक्ष्मणावती) का पुन: संस्कार उनकी एक गौरव कीर्त्ति है। १४९४ ई०में उनकी मृत्यु हुई।
फिरोजशाह बाहमनी सुलतान—दाक्षिणात्यके एक मुसलमान राजा, सुलतान दाऊदके पुत्र। बाहमनीराज सुलतान समसुद्दीनको राज्यच्युत और कारारुद्ध करके ये १३९७ ई०में सुलतान फिरोजशाह रोज्‌अफजुन नाम धारण कर सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। इनके प्रभावसे बाहमनी राजवंश उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुंच गया था। सिंहासन पर बैठते ही इन्होंने अपने भाई अहमद खाँको (खानखाना) अमीर-उल उमरावके पद पर नियुक्त किया और निज उपदेश-दाता मीर फैजुल्लाको 'मालिक नायब' उपाधिसे भूषित कर वजीर उस् सुल्तानतका कार्यभार सौंपा। अपने भाई अहमदको बाहमनी सिंहासन देनेके १० दिन बाद ही १४२२ ई०में ये मृत्यु मुखमें पतित हुए।
फिरोजशाह तुगलक सुलतान—दिल्लीके पठानवंशीय अधिपति। सुलतान गयासुद्दीन तुगलकके भाई सिपासलारके औरस और दिपालपुरपति रणमलभट्टिकी कन्या (सुलताना बीबी कदबानू)के गर्भसे ७०१ हिजरीमें इनका जन्म हुआ था। ७ वर्षकी अवस्थामें इनके पिताकी मृत्यु हुई। अनाथा राजकन्याको अपने एकमात्र पुत्रको पढ़ानेकी बड़ी फिक्र हुई। तुगलकशाहको बालक पर बड़ा तरस आया और वे निज पुत्रवत् उसका लालन पालन करने लगे। तुगलककी कृपासे उन्होंने राजकीय सभी शिक्षा पा ली। १४ वर्षकी उमरमें वे उन्हींके अनुग्रहसे ४ वर्ष तक राज्यके समस्त स्थानोंमें परिभ्रमण करते रहे। जब वे १८ वर्षके हुए, तब महम्मदशाह दिल्लीके सिंहासन पर बैठे। दो राजाका राज्यशासन देख कर उन्हें बहुत कुछ ज्ञान हो गया था। महम्मदने उन्हें १२ हजार अश्वारोही सेनाका अध्यक्ष और नायब इ अमीर हाजिब ( Deputy of the Lord chamberlain )-की उपाधि दी। फिरोज राजकार्यमें उन्हें हमेशा सलाह दिया करते थे। महम्मदने दिल्ली प्रदेशको चार भागोंमें विभक्त कर एक भागका शासन भार फिरोजशाहके ऊपर सौंपा था। महम्मदशाहके अधीन राजकीय शिक्षामें इनमें ४५ वर्ष बीत गये।

१३५१ ई०को ठट्टनगरमें महम्मदकी मृत्यु हुई। राज अमात्यों और कर्मचारियोंके अनुरोध तथा सम्मतिसे फिरोज ही राजा बनाये गये। किन्तु पीछे राजकीय परिचालनमें कोई त्रुटी न हो जाय, इसकी उन्हें भारी चिन्ता हुई। ईश्वरमें उनकी अचला भक्ति थी। उसी धर्मके बलसे वे भविष्यमें दया और दाक्षिण्यके साथ प्रजापालन करनेमें समर्थ हुए थे। महम्मदकी मृत्युके लिये परिधृत शोक परिच्छदके ऊपर ही उन्हें राज परिच्छद धारण करना पड़ा, क्योंकि वे किसी हालत से शोक परिच्छद त्याग करनेमें राजी न हुए। हाथीकी पीठ पर सवार हो वे राजान्तःपुरमें गये और खोदावन्द् जादा (महम्मदकी बहन) के सामने जा कर शोकाभिभूत हो पड़े। उस रमणीने उनके सरल स्वभाव पर मोहित हो अपने हाथसे सुलतान तुगलकका मुकुट उन्हें पहना दिया।

महम्मदके मृत्युकालमें मुगलोंने भारत पर आक्रमण किया और इसे लूटा भी था। बिना राजाके राज्य रक्षा करना दुरूह समझ कर उमरावोंने फिरोजशाहको राज सिंहासन प्रदान किया। मुगल लोग फिरोजके हाथसे पराजित हो भी दो ग्यारह हुए। इस समय दिल्लीमें झूठी खबर फैली, कि फिरोजशाह मुगलोंसे बन्दी और हत हुए। सुतरां दुःखसे अभिभूत हो ख्वाजाजहानने महम्मदके पुत्रको राजसिंहासन पर बिठाया। जब उन्होंने सुना, कि फिरोज जीवित हैं, तब वे इस विषम भ्रमकी चिन्ता करने लगे। उनका यह भ्रम दूसरा शायद ही समझेगा, यह सोच कर उन्होंने आत्मरक्षाके लिये २० हजार अश्वारोही संग्रह किया। फिरोज यह संवाद पाते ही दिल्लीको दौड़ पड़े। पीछे कुल रहस्य मालूम हो जाने पर एक दूसरेके गले मिले।

राजपद पर अधिष्ठित हो फिरोजशाहने बहुतसे नये नये कानून निकाले। इससे प्रजावर्गका दुःख बहुत कुछ

जाता रहा। पूर्ववर्ती राजाओंकी तरह ये अयथा कर वसूल नहीं करते थे। उन्होंने नियम चलाया, कि जो किन्हें अधिक कर वसूल करेगा उसे उचित दण्ड मिलेगा और राजाके आवश्यकीय सभी द्रव्य उपयुक्त मूल्यमें खरीदा जायगा।

उन्होंने दलबलके साथ लक्ष्मणावती, जाजनगर और नगरकोटकी ओर अभियान किया। वङ्गपति शमसुद्दीन उनसे पराजित हुए। पीछे लाखसे ऊपर वङ्गवासी इस युद्धमें खेत रहे। उन्होंने दो बार वङ्गमें और कई बार सिन्धु, गुजरात, कांगड़ा आदि प्रदेशोंमें युद्ध किया था।

१३८७ ई०में उन्होंने अपने पुत्र नासिरउद्दीन महम्मदको सिंहासन दे कर फुरसत पाई। किन्तु युवराजका राज-कार्यमें जरा भी ध्यान न था। रात दिन वे आमोद प्रमोदमें मत्त रहते थे, इस कारण वे पुन राज्य परिचालन भार ग्रहण करनेको बाध्य हुए। युवराजने विताड़ित हो कर सिरमूरके पार्वत्य प्रदेशमें जा आश्रय लिया।

फिरोजको बनाई हुई अनेक अट्टालिकाएँ, नहरें और दुर्गादि आज भी देखनेमें आते हैं। बहुत दिन सुशासनसे राज्य करके वे ७९० हिजरीमें (१३८८ ई०में) परलोक सिधार गये। पुरानी दिल्लीके समीप यमुनाके किनारे उनके बनाये हुए 'हौज खासमें' उनकी समाधि हुई। मृत्युके बाद पौत्र गयासुद्दीन राज-सिंहासन पर बैठे। उनके समय लक्ष्मणावती, पाण्डुआ (फिरोजाबाद), सोनारगाँव आदि स्थानोंमें टकसाल खोली गई। उन्होंने स्वयं जो सब युद्ध किये थे, उन्हें वे स्वरचित 'फतुहत फिरोजशाही' नामक ग्रन्थमें लिख गये हैं। (१)

फिरोजशाह सुलतान—खिलजी वंशीय प्रथम दिल्लीश्वर कायेम खाँके पुत्र। ये सुलतान मुइजुद्दीन कैकोबादकी हत्या कर ६८८ हिजरी (१२८९ ई० में) में दिल्लीके सिंहासन पर बैठे। इनका दूसरा नाम जलालउद्दीन था। इनके शासनकालके आठवें वर्ष इलाहाबादके शासनकर्त्ता उनके भतीजे और जमाई अलाउद्दीन बागी हो गये। फिरोजने उन्हें शास्ति देनेके लिये कड़ा मानिकपुरकी ओर यात्रा कर दी। अलाउद्दीन दलबल समेत गंगाके दूसरे किनारे भाग गये और वहीं छावनी डाली। फिरोजशाहके उपस्थित होने पर वे अपने अनुचरोंके साथ नदीके किनारे आये और चचाके पैरों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना की। फिरोजशाहको बड़ी दया आई, उन्होंने अपराध क्षमा कर उन्हें प्रेमपूर्वक आलिङ्गन किया। इसी समय इशारा पा कर अलाउद्दीनके अनुचर जो कुछ दूर ही खड़े थे आये और दिल्लीश्वरके प्राण ले लिये। अलाउद्दीन चचाके छिन्न मुण्डको बरछेमें गाथ कर नगर ले गये। १२९६ ई०में यह घटना घटी। इसके बाद अलाउद्दीन दिल्ली गये और सिकन्दर सनी नाम धारण कर सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। खिजिराबादसे ले कर सफिदून पर्यन्त एक विस्तृत नहर उन्हींके यत्नसे खोदवाई गई थी।

फिरोजाबाद—१ युक्तप्रदेशके आगरा जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २६° ५६' से २७° २२' उ० और देशा० ७८° १६' से ७८° ३२' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २०३ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें फिरोजाबाद नामका १ शहर और १८६ ग्राम लगते हैं। राजस्व तीन लाख रुपयेके लगभग है। तहसील यमुनाके उत्तर पड़ती है।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २७° ९' उ० और देशा० ७८° २३' पू० आगरासे मैनपुर जानेके रास्ते पर अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १६८४९ है। यह शहर बहुत प्राचीन है। कहते हैं, कि यहांके अधिवासियोंने टोडरमलका भारी अपमान किया था। इस पर अकबर बड़े बिगड़े और उन्होंने मालिक फिरोजको नगर ध्वंस करनेका हुकुम दिया। आज्ञा पाते ही फिरोजने नगरको ऐसा उजाड़ डाला कि आज तक वह सुधरने नहीं पाया है। यहां बड़ी बड़ी अट्टालिकाओंका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है। यही इसके पूर्व गौरवका निदर्शनस्वरूप है। चिकित्सालयके अलावा शहरमें एक पुरानी मसजिद और अनेक मन्दिर हैं।

फिरोजाबाद—अयोध्याप्रदेशके खेरी जिलान्तर्गत एक परगना। यह चौका, कौरियाला और दहवार इन तीन नदियोंसे घिरा सम्राट् है। फिरोजशाह यहां प्रायः

(१) तारीख इ-फिरोजशाही नामक इतिहास ग्रन्थमें विस्तृत विवरण लिखा है।

शिकारमें आया करते थे। इसी कारण उन्हींके नाम पर इसका नामकरण हुआ है। पहले यह बिसेन जातिके अधिकारमें था। पीछे बंजारगणने उपर्युपरि युद्धके बाद उन्हें मार भगाया। १७७६ ई०में बंजारानके पराजित और मृत होने पर उनका राज्य छीन लिया गया। १७६२ ई०में भरण पोषणके लिये उनके वंशधरने निष्कर ग्राम पाये। यही अभी ईशानगर सामन्त राज्य कहलाता है। इसके उत्तर राइकवाड़ सामान्तराज्य पड़ता है।

फिकी (हिं० पु०) फिरकी देखो।

फिलौर—पञ्जाब प्रदेशके जालन्धर जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३०°५७´से ३१°१३´ उ० और देशा० ७५°३१´से ७५°५०´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २६१ वर्ग मील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसमें फिलौर, नूरमहल और जनदियाल नामके ३ शहर और २२२ ग्राम लगते हैं। शतद्रु नदी तहसीलकी उत्तरी सीमामें बहती है।

२ उक्त तहसीलका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० ३१°१´ उ० और देशा० ७५°४८´ पू० शतद्रु नदीके उत्तरी किनारे अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ६६८६ है। पहले यह नगर समृद्धिसम्पन्न था। आईन-इ अकबरी पढ़नेसे मालूम होता है, कि वैराम खाँने इसके निकटवर्ती स्थानमें युद्ध किया था। इसके बाद यह नगर ध्वंसाव शेषमें परिणत हुआ। सम्राट् शाहजहान्‌ने दिल्लीसे लाहोर जानेके समय यहांके ध्वंसावशेषसे एक विश्राम भवन (सराय) बनाना चाहा। क्रमशः उन्हींके उद्यमसे नगरकी श्रीवृद्धि हुई थी। सिख प्रभावकालमें यह नगर सुधासिंहके हाथ लगा। उन्होंने यहां राजधानी बसाई। १८०७ ई०में रणजित्‌ने इस स्थान पर अधिकार जमाया। उक्त महावीरने शतद्रुपारकी रक्षा करनेके लिये उस सरायको दुर्गरूपमें परिवर्त्तित किया। अङ्गरेजोंके अधिकारमें आनेसे यहां कमान, गोला, बारूद आदि रखी जाने लगीं। १८५७ ई०के गदरमें विद्रोहियोंने इस पर अधिकार किया था। १८६१ ई०में यहां एक किला बनाया गया जिसमें अभी पुलिस ट्रेनिंग स्कूल लगता है। १८६७ ई०में म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई। शहरमें एक म्युनिसिपल एङ्ग्लोवर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और एक सरकारी अस्पताल है।

फिल्ली (हिं० स्त्री०) १ लोहेकी छड़का एक टुकड़ा जो जुलाहोंके करघेमें तूरमें लगाया जाता है। २ पिंडली देखो।

फिश् (हिं० अव्य०) घृणासूचक अव्यय, धिक्, छिः।

फिस (हिं० वि०) कुछ नहीं। जब कोई आदमी बड़े ठाटबाटसे कोई काम करने चलता है और उससे नहीं हो सकता तब तिरस्कार रूपमें यह शब्द कहा जाता है।

फिसड्डी (हिं० वि०) १ जो काममें पीछे रहे, जो किसी बातमें बढ़ न सके। २ जो काम हाथमें ले कर उसे पूरा न कर सके, जिसका कुछ किया न हो।

फिसफिसाना (हिं० क्रि०) १ फिस होना। २ शिथिल होना, ढीला पड़ना।

फिसलन (हिं० स्त्री०) १ फिसलनेकी क्रिया या भाव, रपटन। २ चिकनी जगह जहां पड़नेसे कोई वस्तु न ठहरे, सरक जाय।

फिसलना (हिं० क्रि०) १ चिकनाहट और गीलेपनके कारण पैर आदिका न जमना। २ प्रवृत्त होना, झुकना।

फिसलाना (हिं० क्रि०) किसीको ऐसा करना कि वह फिसल जाय।

फिहरिस्त (फा० स्त्री०) सूची, बीजक।

फी (अ० अव्य०) प्रति एक, हर एक।

फीका (हिं० वि०) १ नीरस, स्वादहीन। २ जो चटकीला न हो, मलिन। ३ प्रभावहीन, व्यर्थ। ४ कान्तिहीन, बिना तेजका।

फीता (हिं० पु०) १ नेवारकी पतली पट्टी, सूत आदि जो किसी वस्तुको लपेटने या बांधनेके काममें आता है। २ पतला किनारा या कोर।

फीफरी (हिं० स्त्री०) पेफरी देखो।

फीरनी (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी खीर जो दूधमें चावल का बारीक आटा पका कर बनाई जाती है। इसे मुसलमान अधिक खाते हैं।

फीरोजा (फा० पु०) एक प्रकारका नग या बहुमूल्य पत्थर। यह हरापन लिए नीले रंगका होता है। इसमें अल्मोनियम फासफेट और कुछ लोहे तथा तांबेका भाग रहता है। उत्कृष्ट फीरोजा फारसकी पहाड़ियोंमें पाया जाता है। यहांसे पहले यह रूस और तब यूरोप आता है। अमेरिकासे भी फिरोजा बहुत आता है। उसकी

जाता रहा। पूर्ववर्त्ती राजाओंकी तरह वे अयथा कर वसूल नहीं करते थे। उन्होंने नियम चलाया, कि जो सिपाही अधिक कर वसूल करेगा उसे उचित दण्ड मिलेगा और राजाके आवश्यकीय सभी द्रव्य उपयुक्त मूल्यमें खरीदा जायगा।

उन्होंने दलबलके साथ लक्ष्मणावती, जाजनगर और नगरकोटकी ओर अभियान किया। बङ्गपति शमसुद्दीन् उनसे पराजित हुए। पीछे लागसे ऊपर बङ्गस्वामी इस युद्धमें खेत रहे। उन्होंने दो बार बङ्गमें और कई बार सिन्धु, गुजरात, कांगड़ा आदि प्रदेशोंमें युद्ध किया था।

१३८७ ई०में उन्होंने अपने पुत्र नासिरउद्दीन महम्मद को सिंहासन दे कर फुरसत पाई। किन्तु युवराजका राज-कार्यमें जरा भी ध्यान न था। रात दिन वे आमोद प्रमोदमें मस्त रहते थे, इस कारण वे पुनः राज्य परिचालन भार ग्रहण करनेको बाध्य हुए। युवराजने निताड़ित हो कर सिरमूरके पार्वत्य प्रदेशमें जा आश्रय लिया।

फिरोजकी बनाई हुई अनेक अट्टालिकाएँ, नहरें और दुर्गादि आज भी देखनेमें आते हैं। बहुत दिन सुशासन से राज्य करके वे ७९० हिजरीमें (१३८८ ई०में) परलोक सिधार गये। पुरानी दिल्लीके समीप यमुनाके किनारे उनके बनाये हुए 'हौज खासमें' उनकी समाधि हुई। मृत्युके बाद पौत्र गयासुद्दीन् राज-सिंहासन पर बैठे। उनके समय लक्ष्मणावती, पाण्डुआ (फिरोजाबाद), सोनारगाँव आदि स्थानोंमें टकसाल खोली गई। उन्होंने स्वयं जो सब युद्ध किये थे, उन्हें वे स्वरचित 'फतुहत फिरोज शाही' नामक ग्रन्थमें लिख गये हैं। (१)

फिरोजशाह सुल्तान—खिलजी वंशीय प्रथम दिल्लीश्वर कायेम खाँके पुत्र। ये सुल्तान मुइज़ुद्दीन कैकोबादकी हत्या कर ६८८ हिजरी (१२८९ ई० में) में दिल्लीके सिंहासन पर बैठे। इनका दूसरा नाम जलालुद्दीन था। इनके शासनकालके आठवें वर्ष इलाहाबादके शासनकर्त्ता उनके भतीजे और जमाई अलाउद्दीन बागी हो गये। फिरोजने उन्हें शासित करनेके लिये कड़ा माणिकपुरकी ओर यात्रा कर दी। अलाउद्दीन दलबल समेत गंगाके दूसरे किनारे भाग गये और वहाँ छावनी डाली। फिरोज शाहके उपस्थित होने पर वे अपने अनुचरोंके साथ नदीके किनारे आये और चचाके पैरों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना की। फिरोजशाहको बड़ी दया आई, उन्होंने अपराध क्षमा कर उन्हें प्रेम पूर्वक आलिङ्गन किया। इसी समय इशारा पा कर अलाउद्दीनके अनुचर जो कुछ दूर ही खड़े थे आये और दिल्लीश्वरके प्राण ले लिये। अलाउद्दीन चचाके छिन्न मुण्डको बरछेमें गाथ कर … ले गये। १२९६ ई०में यह घटना घटी। इसके बाद … उद्दीन दिल्ली गये और सिकन्दर सानी नाम … सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। खिजिराबादसे ले … हून पर्यन्त एक विस्तृत नहर उन्होंके … गई थी।

फिरोजाबाद—१ युक्तप्रदेशके आगरा जिले… यह अक्षा० २६ ५१´से २७ २२´ उ० और … ७८ ३२´ पू०के मध्य अवस्थित है। … परिमाण और जनसंख्या लागसे ऊप… बाद नामका १ शहर और १८६ ग्रा… तीन लाख रुपयेके लगभग है। … पड़ती है।

२ उक्त तहसीलका एक … उ० और देशा० ७८´२३´पू… रास्ते पर अवस्थित है। … यह शहर बहुत प्राची… वासियोंने टोडरमल… अकबर बड़े विगड़े … नगर ध्वंस करने… नगरको ऐसा उ… नहीं पाया है। … देखनेमें आता … है। चिकि… और अने…

फिरोजाबा…
परगन…
नहि…

---

(१) तारीख इ-फिरोज़ शाह नामक इतिहास ग्रन्थमें विस्तृत विवरण लिखा है।

फुटकी ( हि० स्त्री० ) १ एक प्रकारकी छोटी चिड़िया, फुल्की। २ किसी वस्तुके छोटे लच्छे या जमे हुए कण जो पानी, दूध आदिमें अलग अलग दिखाई पड़ते हैं, बहुत छोटी बूटी। ३ खून, पीब आदिका छींटा जो किसी वस्तुमें दिखाई दे।

फुटनोट ( अ० स्त्री० ) वह टिप्पणी जो किसी लेख या पुस्तकके पृष्ठमें नीचेकी ओर दी जाती है।

फुटपाथ ( अ० पु० ) १ पगडंडी। २ शहरोंमें सड़कके की पटरी परका वह मार्ग जिस पर मनुष्य पैदल चलते हैं।

फुटबाल (अ० पु० बड़ा गेंद जिसे पैरकी ठोकरसे उछाल कर खेलते हैं।

फुटेहरा ( हि० पु० ) १ मटर या चनेका दाना जो भूननेसे ऐसा खिल गया हो, कि छिलका फट गया हो। २ चनेका भुना हुआ चबैना।

फुटैल ( हि० वि० ) फुटैल देखो।

फुट ( हि० वि० ) फुट देखो।

फुड्ड ( सं० क्ली० ) यज्ञविशेष।

फुटैल ( हि० वि०) १ भुण्ड या समूहसे अलग, अकेला रहनेवाला। २ जिसका जोड़ न हो, जो जोड़ेसे अलग हो। ३ अभागा, फूटे भाग्यका।

फुत् ( स० अव्य ) १ अनुकरण शब्द। २ तुच्छ भाषण।

फुत्कर (स० पु०) फुदित्यव्यक्तशब्दं करोतीति कृ ट। अग्नि।

फुत्कार (स० पु०) कृ भावे घञ्, फुत् इत्यव्यक्तशब्दस्य करणं। मुंहसे हवा छोड़नेका शब्द, फूंक। होमाग्नि यदि बुझ जाय, तो उसे फुत्कार द्वारा बाल कर पुनः होम नहीं करना चाहिये। (तिथितत्त्व)

फुत्कृति (स० स्त्री०) फुदित्यव्यक्तशब्दस्य कृतिः करण। फुत्कार।

फुदकना ( हि० क्रि० ) १ उछल उछल कर कूदना। २ उमगमें आना, फूले न समाना।

फुदकी ( हि० स्त्री० ) १ छोटी चिड़िया जो उछल उछल कर फुदकती हुई चलती है।

फुनग (हि० स्त्री०) वृक्ष या शाखाका अग्र भाग या अंकुर।

फुन ( हि० अव्य० ) पुनः, फिर।

फुनगी ( हि० स्त्री ) वृक्ष और पौधोंकी शाखाओंका अग्र भाग, फुनग।

फुनना ( हि० पु० ) फुंदना देखो

फुप्फुस (स० पु०) कोष्ठविशेष, फेफड़ा। हृदयके वाम पार्श्वमें फुप्फुस अवस्थित है। इसका दूसरा नाम पुप्फुस भी है। सुश्रुतमें लिखा है, कि शोणित और कफके मेलसे हृदय उत्पन्न होता है। उसी हृदयमें प्राणवाहिनी सभी धमनियां आश्रय की हुई हैं। हृदयके अधोभागमें बाई ओर प्लीहा और फुप्फुस तथा दाहिनी ओर यकृत् और क्लोम है। (सुश्रुत शा० ४ अ०) शार्ङ्गधरने लिखा है, कि फुप्फुस उदान वायुका आधार है और हृदयके बाई ओर रहता है। (शार्ङ्गधर ५ अ०)

फुफदी ( हि० स्त्री० ) लहंगेके इजारबंद या स्त्रियोंकी साड़ी बसनेकी डोरीकी गांठ यह गांठ कमर पर सामने की ओर रहती है और इसके खींचनेसे लहंगा या धोती खुल जाती है। इसे नीवी भी कहते हैं।

फुफकाना ( हि० क्रि० ) फुफकारना।

फुफकार ( हि० पु० ) फूत्कार, सांपके मुंहसे निकली हुई हवाका शब्द।

फुफकारना ( हि० क्रि० ) सांपका मुंहसे फूंक निकालना, फूत्कार करना।

फुफुनी ( हि० स्त्री०) फुंदी देखो।

फुफेरा ( हि वि० ) फूफासे उत्पन्न।

फुर (हि० स्त्री०) १ उड़नेमें परोंका शब्द, परा फड़फड़ानेकी आवाज। ( वि० ) २ सत्य, सच्चा।

फुरकना ( हि० क्रि० ) जुलाहोंकी बोलीमें किसी वस्तुको मुंहमें चबा कर सांसके जोरसे थूकना।

फुरकाना ( हि० क्रि० ) फड़काना देखो।

फुरती ( हि० स्त्री० ) शीघ्रता, तेजी।

फुरतीला (हि० वि०) जिसमें फुरती हो, जो सुस्त न हो।

फुरना ( हि० क्रि० ) स्फुटित होना, उदय होना। २ फड़कना, हिलना। ३ उच्चरित होना, मुंहसे शब्द निकलना। ४ प्रकाशित होना, चमक उठना। ५ सफल होना, सोचा हुआ परिणाम उत्पन्न करना। ६ प्रभाव उत्पन्न करना, असर करना। ७ सत्य ठहरना, पूरा उतरना।

फुरफुर ( हि० स्त्री० ) १ वह शब्द जो पर आदिकी रगड़से

गिनती रत्नोंमें है। लोग इसे आभूषणोंमें जड़ते हैं। कम दामके पत्थर पच्चीकारीमें भी काम आते हैं। वैद्यलोग इसका व्यवहार औषधके रूपमें भी करते हैं। यह कसैला, मीठा और दीपन कहा गया है।

फीरोजी (फा० वि०) फीरोजेके रंगका, हरापन लिये नीला। इस रंगमें रंगाते समय पहले कपड़ेको तूतिये के पानीमें रंगते हैं, फिर तूतियेसे चौगुना चूना मिले पानीमें उसे बोर देते हैं और तब पानीमें निथारते हैं। इस प्रकार तीन बार करते हैं।

फील (फा० पु०) हाथी।

फीलखाना (फा० पु०) हस्तिशाला, हथिसार।

फीलपा (फा० पु०) एक प्रकारका रोग इसमें पैर फूल कर हाथीके पैरकी तरह हो जाता है। यह रोग शरीर-के दूसरे अंगों पर भी आक्रमण करता है।

फीलपाया (फा० पु०) १ ईंटका बना हुआ मोटा खंभा जिस पर छत ठहराई जाती है। २ फीलपा देखो।

फीलवान (फा० पु०) हाथीवान।

फीली (हि० स्त्री०) घुटनेके नीचे पड़ी तकका भाग, पिंडली।

फीलड (अं० पु०) १ मैदान, खेत। २ गेंद खेलनेका मैदान।

फीस (अं० स्त्री०) १ शुल्क, कर। २ मेहनताना, उजरत।

फुंकना (हि० क्रि०) १ जलना, भस्म होना। २ मुंहकी हवा भर कर निकाला जाना। ३ नष्ट होना, बरबाद होना। (पु०) ४ बांस, पीतल आदिकी नली। इसमें मुंहकी हवा भर कर आग पर छोड़ते हैं, फुंकनी। ५ प्राणियोंके शरीरका मूत्र रहनेका अवयव। यह पेड़ूके पास होता है।

फुंकनी (हि० स्त्री०) १ बांस, पीतल आदिकी नली। इसमें मुंहकी हवा भर कर आगको दहकानेके लिये उस पर छोड़ते हैं। २ भाथी।

फुंकरना (हि० क्रि०) फूत्कार छोड़ना, मुंहसे हवा छोड़ना।

फुंकवाना (हि० क्रि०) १ फूंकनेका काम किसी दूसरेसे कराना। २ मुंहसे हवा ओंका निकलवाना। ३ भस्म करवाना, जलवाना।

फुंकाना (हि० क्रि०) फूंकनेका काम कराना।

फुंकार (हि० पु०) सांप बैल आदिके मुंह या नाकके नथनोंसे बलपूर्वक वायुके बाहर निकलनेसे उत्पन्न शब्द, फूत्कार।

फुंदना (हि० पु०) १ फूलके आकारकी गांठ। धंद, इजार बंद चोटी बांधने या घोती कसनेकी डोरी, झालर आदिके छोर पर शोभाके लिये इसे बनाते हैं। इसे फुलरा और झब्बा भी कहते हैं। २ वह गांठ जो कोट्टकी डोरीके छोर पर रहती है। ३ वह गांठ जो तराजूकी डंडीके बांधी रस्सीमें दी जाती है।

फुंदी (हि० स्त्री०) फंदा, गांठ।

फुंसी (हि० स्त्री०) छोटी फोड़िया।

फुआरा (हि० पु०) फुहारा देखो।

फु (सं० पु०) फल-डु। १ मन्त्रोच्चारणपूर्वक फूत्कार। २ तुच्छ वाक्य।

फुक (सं० पु०) फुना अस्पष्टवाक्येन कायति शब्दायते इति फु-कै-क। पक्षी।

फुकना (हि० क्रि०) फुंकना देखो।

फुकाना (हि० क्रि०) फुंकाना देखो।

फुक्की—जहग्रामके पार्वत्य जातिका पुरोहित। ये लोग प्रायः बालकोंको लिखाना पढ़ाना सीखलाते हैं।

फुचड़ा (हि० पु०) वह सूत या रेशा जो कपड़े, दरी कालीन, चटाई आदि बुनी हुई वस्तुओंमें बाहर निकला रहता है।

फुट (सं० पु०) स्फुटतीति स्फुट-क, पृषोदरादित्वात् साधु। सर्प-फणा, सांपका फन।

फुट (हि० वि०) १ अयुग्म, जिसका जोड़ा न हो। २ जिसका संबंध किसी क्रम या परम्परासे न हो पृथक्।

फुट (अं० पु०) लम्बाई नापनेका एक अंगरेजी मान जो १२ इंच या ३६ जौके बराबर होता है।

फुटकर (हि० वि०) १ अयुग्म, जिसका जोड़ा न हो। २ भिन्न, भिन्न, कई प्रकारका। ३ थोड़ा थोड़ा, इकट्ठा नहीं। ४ जिसका सम्बन्ध किसी क्रम या परम्पराके साथ न हो, जिसका कोई सिलसिला न हो।

फुटकल (हि० वि०) फुटकर देखो।

फुटका (हि० पु०) १ फफोला, छाला। २ धान, मकई, ज्वार आदिका लावा। ३ गन्नेका रस पकानेका लोहे का बड़ा कड़ाह।

फुटकी (हि० स्त्री०) १ एक प्रकारकी छोटी चिड़िया, फुदकी। २ किसी वस्तुके छोटे लच्छे या जमे हुए कण आ जाना, दूध आदिमें अलग अलग दिखाई पड़ते हैं, बहुत छोटी बूंदी। ३ खून, पीब आदिका छींटा जो किसी वस्तुमें दिखाई दे।

फुटनोट (अ० स्त्री०) वह टिप्पणी जो किसी लेख या पुस्तकके पृष्ठमें नीचेकी ओर दी जाती है।

फुटपाथ (अ० पु०) १ पगडण्डी। २ शहरोंमें सड़ककी पटरी परका वह मार्ग जिस पर मनुष्य पैदल चलते हैं।

फुटबाल (अ० पु० बड़ा गेंद जिसे पैरकी ठोकरसे उछाल कर खेलते हैं।

फुटेहरा (हि० पु०) १ मटर या चनेका दाना जो भूननेसे ऐसा खिल गया हो, कि छिलका फट गया हो। २ चनेका भुना हुआ बचन।

फुटैल (हि० वि०) फुटैल देखो।

फुट्ट (हि० वि०) फुट देखो।

फुट्टक (सं० क्ली०) वस्त्रविशेष।

फुट्टैल (हि० वि०) १ झुण्ड या समूहमें अलग, अकेला रहनेवाला। २ जिसका जोड़ न हो, जो जोड़ेमें अलग हो। ३ अभागा, फूटे भाग्यका।

फुत् (सं० अव्य) १ अनुकरण शब्द। २ तुच्छ भाषण।

फुत्कर (सं० पु०) फुदित्यव्यक्तशब्दं करोतीति कृ ट। अग्नि।

फुत्कार (सं० पु०) कृ भावे घञ्, फुत् इत्यव्यक्तशब्दस्य करण। मुंहसे हवा छोड़नेका शब्द, फूंक। होमाग्नि यदि बुझ जाय, तो उसे फुत्कार द्वारा बाल कर पुनः होम नहीं करना चाहिये। (तिथितत्त्व)

फुत्कृति (सं० स्त्री०) फुदित्यव्यक्तशब्दस्य कृति करण। फुत्कार।

फुदकना (हि० क्रि०) १ उछल उछल कर कूदना। २ उमंगमें आना, फूले न समाना।

फुदकी (हि० स्त्री०) १ छोटी चिड़िया जो उछल उछल कर फुदकती हुई चलती है।

फुनग (हि० स्त्री०) वृक्ष या शाखाका अग्र भाग या अंकुर।

फुन (हि० अव्य०) पुनः, फिर।

फुनगी (हि० स्त्री) वृक्ष और वृक्षकी शाखाओंका अग्र भाग, फुनग।

फुनना (हि० पु०) फुंदना देखो

फुप्फुस (सं० पु०) कोष्ठविशेष, फेफड़ा। हृदयके वाम पार्श्वमें फुप्फुस अवस्थित है। इसका दूसरा नाम फुप्फुस भी है। सुश्रुतमें लिखा है, कि शोणित और कफके मेलसे हृदय उत्पन्न होता है। उसी हृदयमें प्राणवाहिनी सभी धमनियां आश्रय की हुई हैं। हृदयके अधोभागमें बाईं ओर प्लीहा और फुप्फुस तथा दाहिनी ओर यकृत् और क्लोम है। (सुश्रुत शा० ४ अ०) शार्ङ्गधरने लिखा है, कि फुप्फुस उदान वायुका आधार है और हृदयके बाईं ओर रहता है। (शार्ङ्गधर ५ अ०)

फुफदी (हि० स्त्री०) लहंगेके इजारबंद या स्त्रियोंकी साड़ी कसनेकी डोरीकी गांठ यह गांठ कमर पर सामने की ओर रहती है और इसके खींचनेसे लहंगा या धोती खुल जाती है। इसे नीवी भी कहते हैं।

फुफकाना (हि० क्रि०) फुफकारना।

फुफकार (हि० पु०) फूत्कार, सांपके मुंहसे निकली हुई हवाका शब्द।

फुफकारना (हि० क्रि०) सांपका मुंहसे फूंक निकालना, फूत्कार करना।

फुफुली (हि० स्त्री०) फुरहरी देखो।

फुफेरा (हि वि०) फूफासे उत्पन्न।

फुर (हि० स्त्री०) १ उड़नेमें परोंका शब्द, पर फड़फड़ानेकी आवाज। (वि०) २ सत्य, सच्चा।

फुरकना (हि० क्रि०) जुलाहोंकी बोलीमें किसी वस्तुको मुंहमें चबा कर सामनेकी ओरसे थूकना।

फुरकाना (हि० क्रि०) फड़कना देखो।

फुरती (हि० स्त्री०) शीघ्रता, तेजी।

फुरतीला (हि० वि०) जिसमें फुरती हो, जो सुस्त न हो।

फुरना (हि० क्रि०) स्फुरित होना, उदय होना। २ फड़कना, हिलना। ३ ध्वनित होना, मुंहसे शब्द निकलना। ४ प्रकाशित होना, चमक उठना। ५ सफल होना, सोचा हुआ परिणाम उत्पन्न करना। ६ प्रभाव उत्पन्न करना, असर करना। ७ सत्य ठहरना, पूरा उतरना।

फुरफुर (हि० स्त्री०) १ वह शब्द जो पर आदिकी रगड़से

गिनती रत्नोंमें है। लोग इसे आभूषणोंमें जड़ते हैं। कम दामके पत्थर पच्चीकारीमें भी काम आते हैं। वैद्यलोग इसका व्यवहार औषधके रूपमें भी करते हैं। यह कसैला, मीठा और दीपन कहा गया है।

फीरोजी (फा० वि०) फीरोजेके रंगका, हरापन लिये नीला। इस रंगमें रंगाते समय पहले कपड़ेको तूतियेके पानीमें रंगाते हैं, फिर तूतियेसे चौगुना चूना मिले पानीमें उसे बोर देते हैं और तब पानीमें निथारते हैं। इस प्रकार तीन बार करते हैं।

फील (फा० पु०) हाथी।

फीलखाना (फा० पु०) हस्तिशाला, हथिसार।

फीलपा (फा० पु०) एक प्रकारका रोग इसमें पैर फूल कर हाथीके पैरकी तरह हो जाता है। यह रोग शरीरके दूसरे अंगों पर भी आक्रमण करता है।

फीलपाया (फा० पु०) १ ईंटका बना हुआ मोटा खंभा जिस पर छत ठहराई जाती है। २ फीलपा देखो।

फीलवान (फा० पु०) हाथीवान।

फीली (हिं० स्त्री०) घुटनेके नीचे एड़ी तकका भाग, पिंडली।

फीलड़ (अं० पु०) १ मैदान, खेत। २ गेंद खेलनेका मैदान।

फीस (अं० स्त्री०) १ शुल्क, कर। २ मेहनताना, उजरत।

फुंकना (हिं० क्रि०) १ जलना, भस्म होना। २ मुँहकी हवा भर कर निकाला जाना। ३ नष्ट होना, बरबाद होना। (पु०) ४ बांस, पीतल आदिकी नली। इसमें मुँहकी हवा भर कर आग पर छोड़ते हैं, फुँकनी। ५ प्राणियोंके शरीरका मूत्र रहनेका अवयव। यह पेड़ूके पास होता है।

फुंकनी (हिं० स्त्री०) १ बांस, पीतल आदिकी नली। इसमें मुंहसे हवा भर कर आगको दहकानेके लिये उस पर छोड़ते हैं। २ भाथी।

फूंकना (हिं० क्रि०) फूत्कार छोड़ना, मुंहसे हवा छोड़ना।

फुँकवाना (हिं० क्रि०) १ फूँकनेका काम किसी दूसरेसे कराना। २ मुंहसे हवाका झोंका निकलवाना। ३ भस्म करवाना, जलवाना।

फुंकाना (हिं० क्रि०) फूंकनेका काम कराना।

फुंकार (हिं० पु०) सांप बैल आदिके मुंह या नाकके नथनोंसे बलपूर्वक वायुके बाहर निकलनेसे उत्पन्न शब्द, फूत्कार।

फुंदना (हिं० पु०) १ फूलके आकारकी गांठ। यह, इजार बंद चोटी बांधने या धोती कसनेकी डोरी, झालर आदिके छोर पर शोभाके लिये इसे बनाते हैं। इसे फुलरा और झब्बा भी कहते हैं। २ वह गांठ जो कोड़ेकी डोरीके छोर पर रहती है। ३ वह गांठ जो तराजूकी डंडीके बांधनेकी रस्सीमें दी जाती है।

फुंदी (हिं० स्त्री०) फंदा, गांठ।

फुंसी (हिं० स्त्री०) छोटी फोड़िया।

फुआरा (हिं० पु०) फुहारा देखो।

फु (सं० पु०) फल-फु। १ मन्त्रोच्चारणपूर्वक फूत्कार। २ तुच्छ वाक्य।

फुक (सं० पु०) फु इति अस्पष्टवाक्येन कायति शब्दायते इति फु-कै-क। पक्षी।

फुकना (हिं० क्रि०) फुंकना देखो।

फुकाना (हिं० क्रि०) फुंकाना देखो।

फुक्की—चट्टग्रामके पार्वत्य जातिका पुरोहित। ये लोग प्राय बालकोंको लिखाना पढ़ाना सीखलाते हैं।

फुचड़ा (हिं० पु०) वह सूत या रेशा जो कपड़े, दरी कालीन, चटाई आदि बुनी हुई वस्तुओंमें बाहर निकला रहता है।

फुट (सं० पु०) स्फुटतीति स्फुट-क, पृषोदरादित्वात् साधु। सर्प फणा, सांपका फन।

फुट (हिं० वि०) १ अयुग्म, जिसका जोड़ा न हो। २ जिसका संबंध किसी क्रम या परम्परासे न हो पृथक्।

फुट (अं० पु०) आहत विस्तारका एक अंगरेजी मान जो १२ इंच या ३६ जौके बराबर होता है।

फुटकर (हिं० वि०) १ अयुग्म, जिसका जोड़ा न हो। २ भिन्न, भिन्न, कई प्रकारका। ३ थोड़ा थोड़ा, इकट्ठा नहीं। ४ जिसका सम्बन्ध किसी क्रम या परम्परासे साथ न हो, जिसका कोई सिलसिला न हो।

फुटकल (हिं० वि०) फुटकर देखो।

फुटका (हिं० पु०) १ फफोला, छाला। २ धान, मकई, ज्वार आदिका लावा। ३ गन्नेका रस पकानेका लोहे का बड़ा कड़ाह।

लड़के करमसिंह राजा हुए। इस समय समरूकी बेगम और मराठोंने पतियाला पर चढ़ाई कर दी। प्रथम युद्ध में अमरकी बहन रानी राजेन्द्र, और द्वितीय युद्धमें साहेब की बहन रानी साहेबकुमारीने विशेष वीरताका परिचय दे कर मुसलमानोंको परास्त किया था। करमसिंहकी मृत्युके बाद उनके लड़के नरेन्द्रसिंह पतियाला सिंहासन पर बैठे। इन्होंने गदरके समय अङ्गरेजोंका पक्ष लिया था, इस कारण इन्हें कुछ सम्पत्ति जागीर और 'फर्जन्द खास दौलत् इङ्गलिशिया मनसुरी जमान अमीर उल उमरा महाराजाधिराज राजेश्वर श्री महाराज इन्द्रगण नरेन्द्रसिंह महेन्द्र बहादुर'की उपाधि मिली थी। राजा नरेन्द्रके बाद राजा महेन्द्र और पीछे महाराज राजेन्द्र राजा हुए। नाभा और झिन्दके फुलकिया राजवंशका विवरण अन्यत्र दिया गया है। अन्यान्य विवरण पतियाला, झिन्द और नाभा शब्दमें देखो।

फुलचुही (हिं० स्त्री०) नीलापन लिये काले रंगकी एक चमकती चिड़िया। यह हमेशा फूलों पर उड़ती फिरती है। इसकी चोंच पतली और कुछ लम्बी होती है। इस चोंचसे यह फूलोंका रस चूसती है।

फुलचोरा—नैपालके अन्तर्गत एक पर्वत शिखर। यहां लक्ष्मीमूर्त्ति प्रतिष्ठित है।

फुलझड़ी (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी आतशबाजी जिसमें फूलझड़ी-सी चिनगारियां निकलती हैं। २ आग लगाने वाली बात, ऐसी बातका कहना जिसमें विवाद या और कोई उपद्रव हो जाय।

फुलझरी—मध्यप्रदेशके सम्बलपुर जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य। यह पहाड़ी राज्य १८ गढ़जातके अन्तर्गत है। क्षेत्रफल ७८७ वर्गमील है। समूचा राज्य फुलझरगढ़, केलिन्दा, बोड़सरा, बामना, बलाद, पार्मरा, सिवोरा और शङ्करा आदि विभागों में विभक्त है। यहांके सरदार राजगोंड़ हैं। तीन सौ वर्ष पहले यह सम्पत्ति पटनाके राजासे उन्हें मिली है।

फुलधर—पूर्वबङ्गाल और आसाममें प्रवाहित एक नदी। यह बागरा जिलेके करतोया और इलहाबिया नदीसे उत्पन्न हो कर यमुनामें गिरी है।

फुलभरी (हिं० स्त्री०) फुलवाड़ी देखो।

फुलनी (हिं० स्त्री०) ऊसर भूमिमें होनेवाली एक बारह मासी घास।

फुलपुर—१ युक्तप्रदेशके इलाहाबाद जिलेकी एक तहसील यह अक्षा० ५ १८ से २५ १०´ पू० गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण २८६ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसमें १ शहर और ४८६ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका शहर। यह अक्षा० २५ ३३´ उ० और देशा० ८२ ६´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ७६११ है। कहते हैं, कि यह शहर १७वीं शताब्दीमें बसाया गया है। यहां दीवानी और फौजदारी अदालतके अलावा एक अस्पताल, पुलिस स्टेशन, डाकघर, और एक स्कूल है। राजस्व १३०० रु०का है।

फुलमती (सं० स्त्री०) रागिणीविशेष।

फुलरा (हिं० पु०) फुंदना देखो।

फुलवर (हिं० पु०) एक कपड़ा जिस पर रेशमके बेल बूटे बुने या कढ़े होते हैं।

फुलवड़िया—बाराणसी विभागके आजमगढ़ जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। उसके भग्नावशेषके ऊपर आजम खाँ आजमगढ़ नगर बसा गये हैं।

फुलवाड़ी—बङ्गालके अन्तर्गत एक प्राचीन जनपद। यहां एक दुर्गका ध्वंसावशेष है।

फुलवाड़ी—पटना जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २५ ३४ उ० और देशा० ८५ ५´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ३४१५के करीब है।

फुलवाड़ी (हिं० स्त्री०) फुलवारी देखो।

फुलवारी (हिं० स्त्री०) १ पुष्पवाटिका, उद्यान। २ कागज के बने हुए फूल और वृक्षादि जो टाट पर लगा कर विवाहमें बरातके साथ निकाले जाते हैं।

फुलसरा (हिं० पु०) काले रंगका एक चिड़िया। इसके सिर पर सफेद छींटे होते हैं।

फुलसुंघी (हिं० स्त्री०) एक चिड़िया, फुलचुही।

फुलहारा (हिं० पु०) माली।

फुलाग (हिं० पु०) एक प्रकारकी आग।

फुलाई (हिं० स्त्री०) १ फुलाई। २ पञ्जाबमें सिन्धु और सतलज नदियोंके बीचकी पहाड़ियों पर होनेवाला

उत्पन्न हो। ५ उड़नेमें परोंकी फरफराहटसे उत्पन्न शब्द।

फुरफुराना ( हिं० क्रि० ) १ फुर फुर करना, उड़ कर परों-का शब्द करना। २ हलकी वस्तुका लहराना। ३ पर या और कोई हलकी वस्तु हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो। ४ कानमें रूईकी फुरेरी फिराना।

फुरफुराहट (हिं० स्त्री०) फुर फुर शब्द होनेका भाव। पर फड़फड़ानेका भाव।

फुरफुरी ( हिं० स्त्री० ) फुरफुराहट देखो।

फुरमान (फा० पु०) १ राजाज्ञा, अनुशासनपत्र। २ आज्ञा, आदेश। ३ मानपत्र, सनद।

फुरसत ( अ० स्त्री० ) १ अवसर, समय। २ निवृत्ति, अव काश। ३ बीमारीसे छुटकारा, आराम।

फुरहरी ( हिं० स्त्री० ) १ परको फुला कर फड़फड़ाना। कपड़े आदिके हवामें हिलनेकी क्रिया या शब्द, फरफरा हट। ३ फड़कनेका भाव, फड़कना। ४ फुरेरी देखो। ५ कम्प और रोमाञ्च, कंपकपी।

फुराना ( हिं० क्रि० ) १ सच्चा ठहराना। २ प्रमाणित करना।

फुरेरी (हिं० स्त्री०) १ रोमाञ्चयुक्त कम्प, सरदी, भय आदि के कारण थरथराहट होना और रोंगटे खड़े होना। २ सींक जिसके सिरे पर हलकी रूई लपेटी हो और जो तेल, रस, दवा आदिमें डुबा कर काममें लाई जाय।

फुर्ती ( हिं० स्त्री० ) फुरती देखो।

फुर्सत ( अ० स्त्री० ) फुरसत देखो।

फुलका ( हिं० पु० ) १ फफोला, छाला। २ एक छोटा कड़ाह जो नीलके कारखानेमें काम आता है। ३ हलकी और पतली रोटिया, चपाती।

फुलकिया एक सिख सिरदार या दल। सिन्धुप्रदेशवासी आदर्शवंशीय(१) फूल नामक एक सरदारसे यह दल प्रति ष्ठित हुआ। ये रूपचन्दके ज्येष्ठ पुत्र थे। १६१९ ई०में मेह राज ग्राममें उनका जन्म हुआ था। सम्राट् शाहजहान्के फरमान मुताबिक ये पितृपद पर अधिष्ठित हुए। इन्होंने अपने नाम पर एक नगर बसाया।(२) अनन्तर इसन् खाँ और इस्माइल नामक दो मुसलमान सरदारोंसे पराजित हो ये अपने मेहराज राज्यका परित्याग करनेको बाध्य हुए। समय निज गुरुकी स्तुति करके उन्होंने इसाके पुत्र दौलत खाँ और भाटाके सरदार इसन् खाँको हराया और निज राज्यका पुनः उद्धार किया। अब ये प्रताप शाली सरदार हो दिल्लीकी अधीनताकी उपेक्षा करने लगे। शाहजहांके शासनकर्त्ताओंने राजकर न दे कर उन्हें उन्हें युद्धमें परास्त और बन्द कर दिया था। किन्तु इसके सिवा उन्हें और किसी प्रकारका कष्ट नहीं दिया गया।

गुरु हरगोविन्दकी भविष्यवाणी सत्य निकली, वास्तविक ये प्रतापशाली हो उठे। उनके सात पुत्र पतियाला, झिन्द, नाभा, भदौर, मलौद, लन्दघरिया और जियान्दन वंशके प्रतिष्ठाता हो फुलकिया नामसे परिचित हुए।

१६५२ ई०को ७० वर्षकी उमरमें फूलकी मृत्यु हुई। कोई कहते हैं, कि वे योगाभ्यास करते थे। सरहिन्दके शासनकर्त्ताने जब समय पर कर नहीं मिला, तब उन्होंने फूलको अवरुद्ध किया। उस समय वे ईश्वरचिन्तामें योगमग्न हो गये और लोगोंने उसीको मृत्यु ऐसा कल्पना कर ली। फिर किसीका कहना है, कि अवरोधके समय सरदी गरमीके मारे उनकी मृत्यु हुई थी।

मृत्युके बाद उनके द्वितीय पुत्र रामचन्द फुलकिया दलके सरदार बनाये गये। इन्होंने इसन खाँको परास्त कर शहू राज्यको लूट लिया। पीछे इसा खाँ और काटवा मुसलमानोंने राज्य जीत कर मोटी रकम इकट्ठी की। १७१४ ई०में ८० वर्षकी उमरमें ये अपने सरदार चैनसिंहके पुत्रोंसे मारे गए। इसके बाद रामके तृतीय पुत्र आला सिंह सरदार बने। ये पतियालावंशके प्रतिष्ठाता थे। १६९५ ई०में उनका जन्म हुआ था। आलासिंहकी मृत्युके बाद १७६५ ई०में अमरसिंह राजा हुए। उन्होंने मुसलमानोंको परास्त कर भटिण्डा और फरीदकोट पर अधिकार किया। १७८१ ई०में उनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके लड़के साहेब सिंह और साहेबके बाद उनके

(१) यह क्षत्रिय राजपूतानेके जैसलमेरके राजवंश शाखाके अधिष्ठाता महाराजा जैसलकी १३ पीढ़ी नीचे थे।

(२) यही स्थान बाद फूल नामसे प्रसिद्ध हो गया है।

फुल्ल (स० त्रि०) फुल्लतीति फुल-अच्, या फल्लतीति फल-क्त (आदितश्च। पा ७।२।१६) इति इडभाव (ति च। पा ७।४।८९) इति उत्व, अनुपसर्गात्। (फुल्ल क्षीवेति। ८।२।५५) इति निष्ठा तस्य ल। १ विकसित, फूला हुआ। (पु०) २ पुष्प, फूल।

फुल्लकुसुम—मानभूमके अन्तर्गत एक छोटी सम्पत्ति।

फुल्लग्राम—वीरभूमके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह सिउडीनगरसे ४ कोस अग्निकोणमें अवस्थित है। यहां फुल्लरादेवीका मन्दिर विद्यमान है।

फुल्लतुवरी (स० स्त्री०) स्फटिकारिका।

फुल्लदाम (स० पु०) फुल्लानां पुष्पाणां दाम-इव। उन्नीस वर्णकी एक वृत्ति। इसके प्रत्येक चरणमें ६, ७, ८, ९, १०, ११, और १७वां वर्ण लघु होता है।

फुल्लन (स० त्रि०) वायुसे परिपूर्ण।

फुल्लपुर (स० क्ली०) नगरभेद।

फुल्लफाल (स० पु०, फुल्ल फालतीति फल-अण्।) सूपवात, वह हवा जो सूपसे की जाती है।

फुल्लरा—चण्डीकाव्योक्त कालकेतु व्याधकी स्त्री। द्विज जनार्दन, माधवाचार्य, बलराम कविकङ्कण आदि चण्डी काव्यलेखकोंने फुल्लराचरित्रका जो रेखापात किया था, मुकुन्दरामने उसका सम्पूर्ण विकाश किया है। मुकुन्द रामके हाथसे यह चरित्र अति सुन्दररूपसे चित्रित हुआ है। तद्वर्णित फुल्लराकी सहिष्णुता और पातिव्रत्य आदर्श स्थानीय है।

फुल्लरीक (स० पु०) फल (फर्फरीकादयश्च। उण् ४।२०) इति ईकन् प्रत्ययेन निपातनात् साधु। १ देश। २ सर्प।

फुल्ललोचन (स० पु०) फुल्ले विकसिते लोचने यस्य। १ मृगविशेष। (त्रि०) २ प्रफुल्ल नेत्रयुक्त।

फुल्लवत् (स० त्रि०) प्रस्फुटनके योग्य।

फुल्ला—चन्द्रद्वीपके अन्तर्गत एक नदी।

फुल्लारण्य—दाक्षिणात्य प्रदेशमें रामेश्वरके निकटवर्त्ती एक पवित्र तीर्थ। यह समुद्रके किनारे वनके मध्य अवस्थित है। फुल्ल नामक किसी योगीके नाम पर इसका नामकरण हुआ है। यह क्षेत्र वैष्णवोंका प्रियतम है। फुल्लारण्य माहात्म्यमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है।

फुल्लारविन्द (स० क्ली०) प्रस्फुटित पद्म, खिला हुआ कमल।

फुल्लि (स० स्त्री०) विकाश।

फुल्ली (हि० स्त्री०) १ फुलिया। २ फूलके आकारका कोई आभूषण या उसका कोई भाग।

फुवारा (हि० पु०) फुहारा देखो।

फुस (हि० स्त्री०) अतिशय मन्द स्वर, बहुत धीमी आवाज।

फुसड़ा (हि० पु०) फुचड़ा देखो।

फुसफुसा (हि० वि०) १ नरम, ढीला। २ कमजोर, फुससे टूट जानेवाला। ३ जो तीक्ष्ण न हो, मन्दा।

फुसफुसाना (हि० क्रि०) फुसफुस करना, इतना धीरे धीरे कहना, कि शब्द व्यक्त न हो।

फुसलाना (हि० क्रि०) १ भुलावा देकर शान्त और चुप करना, बहलाना। २ मीठी मीठी बातें कह कर अनुकूल करना, भुलावा दे कर अपने मतलब पर लाना। ३ सन्तुष्ट करनेके लिये प्रिय और विनीत वचन कहना। ४ किसी बातके पक्षमें या किसी ओर प्रवृत्त करनेके लिये इधर उधरकी बातें करना, चकमा देना।

फुहार (हि० पु०) १ जलकण, पानीका महीन छींटा। २ महीन बूदोंकी झड़ी, कींसी।

फुहारा (हि० पु०) १ जलकी वह टोंटी जिसमेंसे दबावके कारण जलकी महीन धार या छींटे वेगसे ऊपरकी ओर उठ कर गिरा करते हैं। साधारणतः जो फुहारे देखनेमें आते हैं वे कृत्रिम हैं। मनुष्य हम लोगोंके लिये यह फुहारा बनाते हैं। जड़जगतमें भी हम लोग ऐसी जलधारा उठती देखते हैं। जिस प्रकार यह ऊर्द्ध्वगामी जलस्रोत समान वेग और अविश्रान्त गतिसे शून्यमार्गमें उठता है वह नीचे देते हैं।

प्राकृतिक नियमवशसे भूगर्भके मध्य अन्तर्निहित जलस्रोत थोड़ा थोड़ा करके एक जगह जमा होता है। पीछे वह गर्भ जब भर जाता है, तब जल आपसे आप वेगवान् गतिसे अपना रास्ता निकाल लेता है। पहाड़ी प्रदेशकी कड़ी मट्टीको भेद कर वह अपनी राहसे नीचे जाता है। भूपृष्ठसे संलग्न होनेसे वह पृष्ठावरणको भेद कर ऊपरकी ओर उठता है।

एक प्रकारका वृक्ष। इसके पेड़ मझोले होते हैं और विशेष कर गलियोंके बाजूँ पर लगाए जाते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत और ठोस होती है। इसे लोग कोल्हूकी जाट और गाड़ियोंके पहिये आदि बनानेके काममें लाते हैं। इसके छेदने पर एक प्रकारका गोंद निकलता है जो औषधमें काम आता है। यह गोंद अमृतसरका गोंद नामसे प्रसिद्ध है। ३ गरफूल ३ देखो।

फुलागुडी—आसाम प्रदेशके नौगाँव जिलान्तर्गत एक प्रसिद्ध स्थान। यहाँ प्रतिवर्षके चैत्रमासमें एक मेला लगता है।

फुलाना (हि० क्रि०) १ किसी वस्तुके विस्तार या फैलाव को उसके भीतर वायु आदिका दबाव पहुंचा कर बढ़ाना, भीतरके दबावसे बाहरकी ओर फैलाना। २ कुसुमित करना, फूलोंसे युक्त करना। ३ घमण्ड बढ़ाना, गर्वित करना। ४ किसीमें इतना आनन्द उत्पन्न करना कि वह आपेके बाहर हो जाय।

फुलाव (हि० पु०) फूलनेकी क्रिया या भाव, फूलनेकी अवस्था।

फुलावट (हि० स्त्री०) फूलनेकी क्रिया या भाव, उभार या सूजन।

फुलावा (हि० पु०) स्त्रियोंके सिरके बालोंको गूंथनेकी डोरी जिसमें फूल या फुंदने लगे रहते हैं।

फुलिंग (हि० पु०) चिनगारी।

फुलिया (हि० स्त्री०) १ कील या काँटा जिसका सिरा फूलकी तरह फैला हुआ, गोल और मोटा हो। २ किसी धातु या लकड़ीके आधारकी वस्तुका फूलकी तरह उभरा और फैला हुआ गोल सिरा। ३ कानमें पहननेका एक प्रकारका लौंग नामक गहना।

फुलिस्केप (अं० पु०) एक प्रकारका चिकना सफेद कागज जिसके भीतर हल्की लकीरें पड़ी रहती हैं। पहले इसके कागजोंमें मनुष्यके सिरका चित्र बना रहता था जिस पर नोकदार टोपी होती थी। इसी कारण इसे 'फूलसकेप' कहने लगे जिसका अर्थ बेवकूफकी टोपी होता है। अब इस कागजमें और चिह्न बनाये जाते हैं।

फुलुरिया (हि० स्त्री०) कपड़ेका वह टुकड़ा जो छोटे बच्चोंके मूतड़के नीचे इस लिये बिछाया या रखा जाता है कि उनका मल दूसरी जगह न लगे, गँदला।

फुलेरा (हि० पु०) देवताओंके ऊपर लगानेकी फूलकी बनी हुई छतरी।

फुलेल (हि० पु०) १ सुगन्धयुक्त तेल, फूलोंकी महकसे बना हुआ तेल जो सिरमें लगानेके काममें आता है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस प्रकार है—पहले तिलको परिष्कार कर छिलका अलग कर देते हैं। उसके बाद ताजे फूलोंकी कलियोंको जमीन पर बिछा कर उनके ऊपर तिल छितरा देते हैं। तिलोंके ऊपर फिर फूलोंकी कलियाँ बिछाई जाती हैं। जब कलियाँ खिल जाती हैं, तब फूलोंकी महक तिलोंमें आ जाती है। इस प्रकार एक बार नहीं, कई बार तिलोंको फूलोंकी तह पर फैलाते हैं। जितना ही अधिक तिल फूलोंमें बासा जाता है, उतनी ही अधिक सुगन्ध उसके तेलमें होती है। अनन्तर उन सुवासित तिलोंको पेर कर कई प्रकार के तेल तैयार होते हैं।

२ हिमालय पर कुमाऊँमें ले कर दार्जिलिङ्ग तक होनेवाला एक पेड़। इसके फलकी गिरी खाई जाती है। इससे जो तेल निकलता है वह साबुन और मोमबत्ती बनानेके काममें आता है। लकड़ी हल्के भूरे रंगकी होती है जिसकी मेज, कुरसी आदि बनती हैं।

फुलेली (हि० स्त्री०) फुलेल रखनेका काँच आदिका बना बरतन।

फुलेहरा (हि० पु०) उत्सवोंमें द्वार पर लगानेके सूत, रेशम आदिके बने हुए झब्बेदार बन्दनवार।

फुलोच्च—नेपाल राज्यकी प्राचीन राजधानी। यह ललित पाटनके समीप गोदावरीके किनारे अवस्थित है। सोमवंशी राजपूतोंके आक्रमणसे राज्यकी रक्षा करनेके लिये गस्तिराजने यहाँ एक दुर्ग बनवाया था।

फुलौरा (हि० पु०) बड़ी फुलौरी, पकौड़ा।

फुलौरी (हि० स्त्री०) चने या मटर आदिके बेसनकी बरी, बेसनकी पकौड़ी।

फुल्ल (सं० त्रि०) फल-आरम्भे क्त वा फुल-विकसने अच्। फलारम्भयुक्त, जो फलने पर हो।

फुल्लि (सं० स्त्री०) फल क्तिन्, ( पा ३।४।८८ ) इति अत-उत्। फलन। (सुपद्म ४४।१०)

दूसरे मुख हो कर बाहर गिर पड़ता है और प्रथम मुखकी ऊँचाईके साथ अपर मुखके जलके ऊपरी तलका ऊँचाई समान पड़ती है। इस प्रणालीके आधार पर फुहारा सहज ही प्रस्तुत हो जाता है।

उद्यानमें साधारणतः इसी उपायसे कृत्रिम फुहारे बनाये जाते हैं। अट्टालिकाकी छत पर एक टैंक (जल रखनेका लोहेका चहबच्चा) रख कर उसमें जल भर लिया जाता है। पीछे उस टैंकसे एक नल (जलकी कलका पाइप) लगा कर नीचेकी ओर मट्टीमें उसे फैला देते हैं। उस संयोगस्थल पर जो एक टैप (चाबी) रहता है, उसे घुमानेसे जल नलमुख हो कर बहने लगता है और जरूरत पड़ने पर उसे बन्द भी कर सकते हैं। अब उस नलको बराबर ला कर यथास्थान पर निर्मित कर उत्कृष्ट चहबच्चेके मध्यस्थ मनोहर दृश्य स्तम्भ वा पुतलोंमें प्रवेश करावे। अब ऊपरवाला टैप खोल देनेसे फुहारेके मुखसे जल निकलने लगेगा।

स्वभावसिद्ध गुणसे जल नलके मुखसे निकल कर उपरिस्थित टैंकके जलतलके साथ समतारक्षणमें क्रियाशील देखा जाता है। इसी कारण स्वभावतः ही फुहारेका जल सङ्कीर्ण मुखसे बड़ी तेजी और वेगके साथ निकलता है। किन्तु नलका मुख अपेक्षाकृत मोटा होनेसे जलका वेग कम होते देखा जाता है। चाप भी (*Pressure*) जलकी ऊर्द्ध्वगतिका अन्यतम कारण है। उपरिस्थित जलकी चापसे नीचेका जल अधिक चापयुक्त हो वेगवान् गतिको प्राप्त होता है। इस चापके प्रभावसे नीचेका जल भी ऊपर उठता है। पम्प (*Pump*) नामक यन्त्रकी प्रक्रियाके बलसे जल चापयुक्त हो नलके मुखसे बाहर निकलता है। चापके बलसे जल स्वभावतः ही ३० फुट ऊपर उठता है। इस कारण ऊपरमें जल नहीं रखनेसे भी चाप द्वारा फुहारेका कार्य सम्पन्न हो सकता है।

आज कल बहुतसे शौकीन मनुष्य घरको सजानेके लिये अपने घरमें फुहारा बनाते हैं। जगतिमके लिये नूतन नूतन मुख भी आविष्कृत हुआ है। बहुतसे लोगोंने धर्म कर्मोंकी कामनासे राहमें, घाटमें इस प्रकारके अनेक फुहारे बना दिये हैं। कलकत्ता, श्रीरामपुर, लण्डन आदि शहरोंमें सड़कको बगलमें ऐसे अनेक फुहारे देखनेमें आते हैं। श्रीवृन्दावन, दिल्ली आदि नगरोंमें भी बहुत पुराने समयके बने हुए फुहारे दृष्टिगोचर होते हैं। कृत्रिम उपायसे नाना प्रकारके फुहारे बनाये जाते हैं।

प्रस्रवणका जो ऊपर उल्लेख किया गया है, बहुत प्राचीनकालसे उसे पवित्र मानते आ रहे हैं। सीताकुण्ड आदि तीर्थोंमें आज भी पूजा देनेकी विधि है। यूरोपमें भी पहले प्रस्रवणके सामने बलि और पूजा होती थी। होरेसने 'फन्सब्लान्डुसी' नामक रोमनगरीके एक फुहारेकी पवित्रताका उल्लेख किया है। ग्रीक राजधानियोंमें (विशेषतः करिन्थमें) हार्कुलेनियम और पम्पियके ध्वंसावशेषके मध्य यह निदर्शन पाया जाता है। रोम, फ्रेंका, पालिन, सानपिट्रो, पारी, भासल और सेन्टक्लुभ नगर तथा इङ्गलैण्डके स्फटिक प्रासादका अति अद्भुत शिल्पमय भास्करकीर्त्तियुक्त फुहारे जगत्में अतुलनीय हैं।

२ जलका महीन छींटा।

फुही (हि० स्त्री०) १ सूक्ष्म जलकण, पानीका महीन छींटा। २ महीन महीन बूंदोंकी झड़ी।

फूंक (हि० स्त्री०) १ वह हवा जो ओठोंको चारों ओरसे दबा कर जोरसे निकाली जाय। २ मन्त्र पढ़ कर मुंहसे छोड़ी हुई वायु जो उस मनुष्यकी ओर छोड़ी जाती है जिस पर मन्त्रका प्रभाव डालना होता है। ३ सांस, मुंहकी हवा।

फूंकना (हिं० क्रि०) १ ओठोंको चारों ओरसे दबा कर जोरसे हवा छोड़ना। २ प्रकाशित कर देना, चारों ओर फैला देना। ३ दुःख देना, सताना। ४ नष्ट करना, व्यय व्यय कर देना। ५ शंख, बांसुरी आदि मुंहसे बजाए जानेवाले बाजोंको फूंक कर बजाना। ६ मन्त्र आदि पढ़ कर किसी पर फूंक मारना। ७ फूंक कर प्रज्वलित करना। ८ भस्म करना, जलाना। ९ धातुओंको रसायनकी रीतिसे जड़ी बूटियोंकी सहायतासे भस्म करना।

फूंका (हि० पु०) १ भाथी या नलीसे आग पर फूंक मारना, फूंक मारनेकी क्रिया। २ फोड़ा फफोला। ३ बांस आदिकी नली जिससे फूंका मारा जाता है। ४ बांसकी नलीमें जलन पैदा करनेवाली ओषधियां

कुछ ऐसे पत्थर ( pervious ) हैं जिनमेंसे जल निकल सकता है। बालुकामय मट्टीमें भी इस प्रकार जल निर्गम हुआ करता है, किन्तु चट्टी मट्टी हो कर जल नहीं जा सकता (impervious)।

भूपृष्ठ या पर्वत पर वृष्टि पड़नेसे कुछ जल तो ढालवें मार्गसे गिर कर नदीमें मिल जाता है और कुछ मट्टीमें प्रवेश करता है। जो जल मट्टीमें प्रवेश करता है, वह जमीनके भीतर छेददार स्तरों ( Pervious Strata ) से प्रवाहित हो कर एक जगह जा जमा होता है। पीछे उस स्थानके भर जानेसे वह जल दूसरी राहसे निकलनेकी कोशिश करता है। क्रमशः सछिद्र मृत्तिका-स्तरसे होता हुआ जब वह कठिन स्तरमें पहुंचता है तब फिरसे जलके समतारक्षणके लिये दूसरी ओर उठता है। इस प्रकार उठते समय यदि उसे किसी पर्वत, उपत्यका या निम्नभूमिमें छिद्र मिल जाय, तो वह उसी मुखसे निकलना शुरू करता है। पर्वत का शृङ्ग पर सञ्चित जलराशि क्रमशः नीचेकी ओर उतर कर निम्नस्थ रास्तेसे बह जाता है और वह जल धारारूपमें उत्थित हो कर पूर्वसञ्चित जलराशिकी समता रक्षणमें समर्थ होता है। कभी वह निर्झरकी तरह पर्वत परसे झर झर करके नीचे गिरता है। इस प्राकृतिक जलोद्गमको प्रस्रवण ( Springs ) कहते हैं। प्रस्रवण साधारणतः दो प्रकारका है - शीतल जलवाही प्रस्रवण और उष्ण प्रस्रवण। जिन सब प्रस्रवणोंसे उष्ण जल निकलता है, उसे ही उष्ण प्रस्रवण कहते हैं।(१) भूगर्भस्थ जलनाली (Subterranean Channels) होकर प्रवाहित जलराशि प्रस्रवणाकारमें प्रकाशित हो कर नदी आदिके उत्पत्ति-स्थानमें परिणत हुआ है। जिन सब प्रस्रवणोंसे नदी, ह्रद या नदीनाला आदिकी उत्पत्ति होती है उसका जल पहले बुद बुदमें बाहर होता है। पीछे वह एक स्थानमें सञ्चित हो कर क्रमशः नीचेकी ओर बह जाता है। राहमें वह जल जब किसी पर्वतगह्वरमें रुक जाता है, तब उसे भेद कर वह प्रचण्ड वेगसे प्रपाताकारमें पतित होता है।(२)

पर्वत या पार्वत्यभूमिमें ही अधिक प्रस्रवण निकलते देखे जाते हैं। कारण, यहांका जल बहुत ऊपरसे सछिद्र पथ हो कर नीचे आता है, जहां उसका अधिक भाग कठिन स्तरों पर ही ( Impervious Stratum ) जमा हो जाता है। वह जल वहां अधिक देर तक नहीं ठहरता, बल्कि झट दूसरी राहसे निकल आता है। कुआं खनकाल में हम लोग कूपमें जलस्रोत देखते हैं। वह जल कहांसे आया, सब समझ सकते हैं।

प्रस्रवणका जल स्वभावतः ही सुस्वादु और बलकारक है। भूगर्भस्थ धातवपदार्थ ( Minerals ) मिले रहनेके कारण उसका औषधकी तरह पानीयरूपमें व्यवहार होता है। धातुदौर्बल्यादि रोगोंमें वह विशेष स्वास्थ्यप्रद है। इस कारण चिकित्सकगण मस्तिष्क, हृदय और औदरिक रोगग्रस्त व्यक्तिमात्रको ही स्वास्थ्य परिवर्त्तनके लिये पार्वतीय प्रदेशमें जानेकी सलाह देते हैं। जिन सब प्रदेशोंका प्रस्रवण या नदी प्रवाहित जल धातव योगसे बलकर है, वही सब स्थान स्वास्थ्यप्रद माने गये हैं। उष्ण प्रस्रवण जलमें स्नान सर्वतोभावमें विधेय है। क्टेसियस् ( Ktesius )ने लिखा है, कि इथिओपिया राज्यमें एक प्रस्रवणसे लाल जल निकलता था जिसे पीनेसे ही मनुष्य उन्मादग्रस्त हो जाते थे। ग्रिसके इतिहासमें हम लोग आर्मेनिया राज्यमें एक प्रस्रवणका उल्लेख पाते हैं। उस प्रस्रवणमें जो मछली रहती है उसे खानेसे तत्क्षणात् मृत्यु हो जाती है।

स्वभावजात प्रस्रवणकी उत्पत्ति देख कर विज्ञानविदोंने कृत्रिम उपायसे फुहारे ( Fountain ) का आविष्कार किया है। जलमें एक ऐसा स्वभावसिद्ध गुण है, कि उसका ऊपरी तल हमेशा समतारक्षणशील रहता है। एक 'इउ' की तरह वक्रमुखवाले नल ( Tube ) के एक मुख हो कर जल डालनेसे वह स्वभावतः ही

(१) युरोपका [illegible] और [illegible] आदि [illegible] उष्ण प्रस्रवणके लिये प्रसिद्ध है।

(२) नायेगरा, गोडुला, [illegible] आदि प्रपातोंकी भी इसी प्रकार उत्पत्ति हुई है।

दूसरे मुख हो कर बाहर गिर पड़ता है और प्रथम मुखकी ऊँचाइके साथ अपर मुखके जलके ऊपरी तलकी ऊँचाई समान पड़ती है। इस प्रणालीके आधार पर फुहारा सहजमें प्रस्तुत हो जाता है।

उद्यानमें साधारणतः इसी उपायसे कृत्रिम फुहारे बनाये जाते हैं। अट्टालिकाकी छत पर एक टैंक (जल रखनेका लोहेका बहुवा) रख कर उसमें जल भर दिया जाता है। पीछे उस टैंकसे एक नल (जलकी नलका पाइप) लगा कर नीचेकी ओर मट्टीमें उसे फैला देते हैं। उस संयोगस्थल पर जो एक टेप (चाबी) रहता है, उसे घुमानेसे जल नलमुख हो कर बहने लगता है और जरूरत पड़ने पर उसे बन्द भी कर सकते हैं। अब उस नलको बराबर ला कर यथास्थान पर निर्मित एक उत्कृष्ट बहबच्चेके मध्यस्थ मनोहर दृश्य स्तम्भ या पुतलीमें प्रवेश कराये। अब ऊपरवाला टेप खोल देनेसे फुहारेके मुखसे जल निकलने लगेगा।

स्वभावसिद्ध गुणसे जल नलके मुखसे निकल कर उपरिस्थित टैंकके जलतलके साथ समताकर्षणमें क्रियाशील देखा जाता है। इसी कारण स्वभावतः ही फुहारेका जल सकीर्ण मुखसे बड़ी तेजी और वेगके साथ निकलता है। किन्तु नलका मुख अपेक्षाकृत मोटा होनेसे जलका वेग कम होते देखा जाता है। चाप भी (Pressure), जलकी ऊर्ध्वगतिका अन्यतम कारण है। उपरिस्थित जलकी चापसे नीचेका जल अधिक चापयुक्त हो वेगवान् गतिको प्राप्त होता है। इस चापके प्रभावसे नीचेका जल भी ऊपर उठता है। पम्प (*Pump*) नामक यन्त्रकी प्रक्रियाके बलसे जल चापयुक्त हो नलके मुखसे बाहर निकलता है। चापके बलसे जल स्वभावतः ही ३० फुट ऊपर उठता है। इस कारण ऊपरमें जल नहीं रहनेसे भी चाप द्वारा फुहारेका कार्य सम्पन्न हो सकता है।

आज कल बहुतसे शौकीन मनुष्य घरको सजानेके लिये अपने घरमें फुहारा बनाते हैं। जलनिर्गमके लिये नूतन नूतन मुख भी आविष्कृत हुआ है। बहुतसे लोगोंने धर्म कमानेकी कामनासे राहमें, घाटमें इस प्रकारके अनेक फुहारे बना दिये हैं। कलकत्ता, लीवरपुल, लण्डन आदि शहरोंमें सड़ककी बगलमें ऐसे अनेक फुहारे देखनेमें आते हैं। श्रीवृन्दावन, दिल्ली आदि नगरोंमें भी बहुत पुराने समयके बने हुए फुहारे दृष्टिगोचर होते हैं। कृत्रिम उपायसे नाना प्रकारके फुहारे बनाये जाते हैं।

प्रस्रवणका जो ऊपर उल्लेख किया गया है, बहुत प्राचीनकालसे उसे पवित्र मानते आ रहे हैं। सीताकुण्ड आदि तीर्थोंमें आज भी पूजा देनेकी विधि है। यूरोपमें भी पहले प्रस्रवणके सामने बलि और पूजा होता थी। होरेसने 'फन्सब्लान्दुसी' नामक रोमनगरीके एक फुहारेकी पवित्रताका उल्लेख किया है। ग्रीक-राजधानियोंमें (विशेषतः करिन्थमें) हार्कुलेनियम और पम्पिके ध्वंसावशेषके मध्य यह निदर्शन पाया जाता है। रोम, ट्रेको, पालिन, सानपिट्रो, पारी, भार्सेल और सेन्टक्लुभ नगर तथा इङ्गलैण्डके स्फटिक प्रासादका अति अद्भुत शिल्पमय मालाकारीशिल्पयुक्त फुहारे जगत्में अतुलनीय हैं।

२ जलका महीन छींटा।

फुही (हिं० स्त्री०) १ सूक्ष्म जलकण, पानीका महीन छींटा। २ महीन महीन बूंदोंकी झड़ी।

फूँक (हिं० स्त्री०) १ वह हवा जो ओठोंको चारों ओरसे दबा कर ओंठसे निकाली जाय। २ मन्त्र पढ़ कर मुहसे छोड़ी हुई वायु जो उस मनुष्यकी ओर छोड़ी जाती है जिस पर मन्त्रका प्रभाव डालना होता है। ३ साँस, मुहकी हवा।

फूँकना (हिं० क्रि०) १ ओठोंको चारों ओरसे दबा कर ओंठसे हवा छोड़ना। २ प्रकाशित कर देना, चारों ओर फैला देना। ३ दुःख देना, सताना। ४ नष्ट करना, व्यर्थ व्यय कर देना। ५ शंख, बाँसुरी आदि मुहसे बजाए जानेवाले बाजोंको फूंक कर बजाना। ६ मन्त्र आदि पढ़ कर किसी पर फूंक मारना। ७ फूंक कर प्रज्वलित करना। ८ भस्म करना, जलाना। ९ धातुओंको रसायनकी रीतिसे जड़ी बूटियोंकी सहायतासे भस्म करना।

फूंका (हिं० पु०) १ भाथी या नलीसे मार कर फूंक मारना, फूंक मारनेकी क्रिया। २ फोड़ा फफोला। ३ बांस आदिकी नली जिससे फूंका मारा जाता है। ४ बाँसकी नलीमें चलन पैदा करनेवाली ओषधिया

भर कर और उन्हें स्तनमें लगा कर फूंकना। ऐसा करनेसे गायें स्तनमें दूध चुरा नहीं सकती, सारा दूध बाहर निकाल देती हैं।

फूंस ( हिं० स्त्री० ) फुनगा, भुस्सा।

फूई ( हिं० स्त्री० ) १ थोड़ा फूल या बुलबुलोंका समूह जो पकाते समय ऊपर आ जाता है। २ फफूंदी, भुकड़ी।

फूट ( हिं० स्त्री० ) फूटने की क्रिया या भाव। २ बैर, अनबन। ३ एक प्रकारकी बड़ी ककड़ी जो खेतमें होती है और पकने पर फट जाती है।

फूटन ( हिं० स्त्री० ) १ वह टुकड़ा जो फूट कर अलग हो गया हो। २ शरीरके जोड़में होनेवाली पीड़ा।

फूटना ( हिं० क्रि० ) १ भग्न होना, खरी वस्तुओंका नष्ट भ्रष्ट होना। २ पक्ष छोड़ना, दूसरे पक्षमें हो जाना। ३ शाखाके रूपमें अलग हो कर किसी सीधमें जाना। ४ संघ या समूहसे अलग होना, साथ छोड़ना। ५ छिद्र कर निकलना, भीतरसे वेगके साथ बाहर आना। ६ व्यक्त होना, प्रकाशित होना। ७ बोलना, मुंहसे शब्द निकलना। ८ ऐसी वस्तुका फटना जिसके ऊपर छिलका हो और भीतर या तो पोला हो अथवा मुलायम या पतली चीज भरी हो। ९ नष्ट होना, बिगड़ना। १० शरीर पर दाने या घावके रूपमें प्रकट होना। ११ अंकुर, ओठ या वृद्धिके रूपमें प्रकट होना, अंकुर, शाखा आदिका निकलना। १२ अंकुरित होना, फट कर अंकुआ निकलना। १३ व्याप्त होना, फैलना। १४ संयुक्त न रहना, मिलावटकी दशामें न रहना। १५ प्रस्फुटित होना, कलीका खिलना। १६ सहसा मुंहसे निकलना। १७ जोड़ोंमें दर्द होना। १८ पानी या और किसी तरल चीजका रस कर इस पारसे उस पार निकल जाना। १९ गुप्त बातका प्रकट होना, किसी भेदका खुल जाना। २० पानीका इतना खौल जाना, कि उसमें छोटे छोटे बुलबुलोंके समूह दिखाई दें। इसे पानीका गड़गड़ाने लगना। २१ रोग या दरदेका दबावके कारण हट जाना।

फूटा ( हिं० वि० ) १ भग्न, फूटा हुआ। २ जोड़ोंका दर्द।

फूत्कार ( सं० पुं० ) मुंहसे हवा छोड़नेका शब्द, फुत्कार।

फूफा ( हिं० पुं० ) बापका बहनोई, फूफीका पति।

फूफी ( हिं० स्त्री० ) बापकी बहन, बूआ।

फूफू ( हिं० स्त्री० ) फूफी देखो।

फूल ( हिं० पुं० ) गर्भाधानवाले पौधोंमें वह ग्रन्थि जिसमें फल उत्पन्न करनेकी शक्ति होती है, पुष्प, कुसुम। बड़े फूलोंके चार भाग होते हैं—कटोरी, दलपुट, दल ( पंखड़ी ), गर्भकेसर और परागकेसर। नालके जिस सिरे छोर पर फूलका सारा ढांचा रहता है उसे कटोरी कहते हैं। उस कटोरीके चारों ओर जो हरी पत्तियां सी होती हैं उनके पुटके भीतर कलीकी दशामें फूल बन्द रहता है। ये आवरण सब फूलोंमें नहीं होते, भिन्न भिन्न पौधोंमें भिन्न भिन्न आकार प्रकारके होते हैं। पुटोंके आवरणका जो मध्यभाग होता है उसके चारों ओर रंग बिरंगे दल खिले होते हैं। ये सब दल पंखड़ी कहलाते हैं। फूलोंकी शोभा इन्हीं रंगीली पंखड़ियोंके कारण होती है। परन्तु फूलमें प्रधान वस्तु बीचकी कुछ ही है जिन पर परागकेसर और गर्भकेसर होता है। परागकेसरके सिरे पर एक छोटी डिबिया सी होती है इसी डिबियामें पराग या धूल रहती है। यह परागकेसर पुंजननेन्द्रिय है। गर्भकेसर ठीक मध्यमें होते हैं। इनका निचला भाग या आधार फूलके आकारका होता है जिसके अन्दर गर्भाण्ड बन्द रहते हैं और उनका छोर कुछ चौड़ा सा होता है। जब परागकेसरका पराग झड़ कर गर्भकेसरके इस मुंह पर पड़ता है तब भीतर ही भीतर यह नालियोंमें जा कर गर्भाण्डको गर्भित करता है जिससे धीरे धीरे वह बीजके रूपमें होता जाता है और फलकी उत्पत्ति होती है। पुष्प देखो।

२ होम पुष्प, मरीन्द्र भाग। ३ वह मद्य जो पहली बारका उतारा हो, कड़ी तेज शराब। ४ स्त्रियोंका वह रज जो मासिक धर्ममें निकलता है। पुष्प देखो। ५ पीतल आदिकी गोल गांठ या घुंडी जिसे जड़ावके लिये ढाला, किवाड़ में जड़ते आदि पर जड़ते हैं, फुलिया। ६ फूलके आकारके बेल बूटे या नक्काशी। ७ स्त्रियोंके पहननेका फूलके आकारका गहना। ८ दीयेकी जलती बत्ती पर पड़े हुए गोल दाने जो उसमें फूल मालूम होते हैं, गुल। ९ आगकी चिनगारी। १० कांट मांसी आदि का

उत्तम भेद। ११ मस्त, मार। १२ वह अस्थि जो शव जलानेके पीछे बच रहती है और जिसे हिन्दू किसी तीर्थ या गङ्गामें फेंकनेके लिये ले जाते हैं। १३ गर्भाशय। १४ घुटने या पैरकी गोल हड्डी, टिकिया। १५ वह पत्तर या वरक जो किसी पतले या द्रव पदार्थको सुखा कर जमाया जाता है। १६ सूखे हुए भाग या भांगकी पत्तियां। १७ तांबे और रांगेके मेलसे प्रस्तुत एक मिश्र या मिली जुली धातु। यह धातु चांदीकी तरह उज्ज्वल और स्वच्छ होती है। इसमें दही या और खट्टी चीजें रखनेसे वह बिगड़ती नहीं। उत्कृष्ट फूलको बेधा कहते हैं। साधारण फूलमें चार भाग तांबा और एक भाग रांगा तथा बेधा फूलमें १०० भाग तांबा और २० भाग रांगा होता है। बेधा फूलमें कुछ चांदी भी पड़ती है। यह धातु बहुत खरी होती है और आघात लगाने पर चट टूट जाती है। इससे लोटे, कटोरे, गिलास, आबखोरे आदि बनाये जाते हैं। यह धातु कांसेसे बहुत मिलती जुलती है। प्रभेद केवल इतना ही है, कि कांसेमें तांबेके साथ जस्तेका मेल रहता है और इसमें खट्टी चीजें रखनेसे बिगड़ जाती हैं।

फूल (हिं० स्त्री०) १ प्रफुल्ल होनेका भाव, उत्साह। २ प्रसन्नता आनन्द।

फूलकारी (हिं० स्त्री०) बेलबूटे बनानेका काम।

फूलगोभी (हिं० स्त्री०) गोभीकी एक जाति। इसमें मंजरियोंका बंधा हुआ ठोस पिण्ड होता है जो तरकारीके काममें आता है। इसके बीज आषाढ़से कुआर तक बोते हैं। पहले इसके बीजकी पनीरी तैयार करते हैं। जब पौधे कुछ बड़े होते हैं, तब उन्हें उखाड़ उखाड़ कर क्यारियोंमें लगाते हैं। कहीं कहीं कई बार एक स्थानसे उखाड़ दूसरे स्थानमें लगाए जाते हैं। दो ढाई महीने पीछे फूलोंकी घुंडियां नजर आती हैं। उस समय कीड़ोंसे बचानेके लिये पौधों पर राख छिनराई जाती है। कलियोंके फूट कर अलग होनेके पहले ही पौधोंको काट लेते हैं।

फूलडोल (हिं० पु०) चैत्र शुक्ल एकादशीके दिन होनेवाला एक उत्सव। इस दिन भगवान् रामचन्द्रके उद्देश्यसे फूलोंका डोल या झूला सजाया जाता है। यह उत्सव विशेषतः मथुरा और उसके आसपासके स्थानोंमें मनाया जाता है।

फूलडोंक (हिं० पु०) भारतके सभी प्रान्तोंमें मिलनेवाली एक जातिकी मछली। यह हाथ भर लम्बी होती है।

फूलदान (हिं० पु०) १ पीतल आदिका बना हुआ बरतन। इसमें फूल सजा कर देवताओंके सामने रखा जाता है। २ गुलदस्ता रखनेका एक बरतन। यह कांच, पीतल, चीनी मिट्टी आदिका गिलासके आकारका होता है।

फूलदार (हिं० वि०) जिस पर फूल पत्ते और बेलबूटे काढ़ कर या और प्रकारसे बनाये गये हों।

फूलना (हिं० क्रि०) १ पुष्पित होना, फूलोंसे युक्त होना। २ आस पासकी सतहसे उठा हुआ होना, सतहका उभरना। ३ विकसित होना, खिलना। ४ भीतर किसी वस्तुके भर जानेसे अधिक फैल या बढ़ जाना। जैसे हवा भरनेसे गेंद फूलना, गाल फूलना आदि। ५ आनन्दित होना, प्रफुल्ल होना। ६ मुंह फुलाना, रूठना। ७ शरीरके किसी भागका आस पासकी सतहसे उभरा हुआ होना, सूजना। ८ स्थूल होना, मोटा होना। ९ घमण्ड करना, गर्व करना।

फूलबिरंज (हिं० पु०) कुआरके प्रारम्भमें होनेवाला एक प्रकारका धान। इसका चावल अच्छा होता है।

फूलमती (हिं० स्त्री०) एक देवीका नाम। यह शीतला रोगके एक भेदकी अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। कहते हैं, कि यह राजा वेणुकी कन्या है। नीच जातिके लोग इसकी उपासना करते हैं। २ एक प्रकारकी रागिणी।

फूलमाली—युक्तप्रदेशवासी माली जातिकी एक शाखा। फूल बेचने और फुलवाड़ीकी रक्षा करना इनका जातीय व्यवसाय है। तैलङ्ग देशके फूलमाली बचपनमें ही पुत्र कन्याका विवाह करते हैं।

फूलवारा (हिं० पु०) चिउरी नामका पेड़।

फूलसँपेल (हिं० वि०) जिस बैल या गायका एक सींग दहनी ओर और दूसरा बाईं ओरको गया हो।

फूलसिंह—एक विख्यात अकाली सरदार। मालव देशमें ये महावीर रणजित्के विरुद्ध खड़े हुए थे। पीछे १८१४ ई०में ये दीवान मोतीरामसे धृत हो लाहौर लाये गये। इन्होंने मित्र युद्धमें अच्छा नाम कमाया था। १८२३ ई०को नौशहरके युद्धमें ये मारे गये।

फूला (हिं० पु०) १ फोला, छाला। २ गन्नेका एक प्रकारका रोग या उसकी गांठ पर पड़ा फफूंद। ३ पशुओंका एक रोग। इसमें उनका सारा शरीर सूज जाता है और मुंहमें कांटे निकल आते हैं जिससे वह मर जाता है। ४ आंखका एक रोग। इसमें काली पुतली पर सफेद दाग या छींटा सा पड़ जाता है, फूली।

फूली (हिं० स्त्री०) १ सफेद दाग जो आंखकी पुतली पर पड़ जाता है। इससे मनुष्यकी आंखकी दृष्टि कुछ कम हो जाती है। यदि यह दाग सारी पुतली पर या उसके तिल पर हो, तो दृष्टि बिलकुल मारी जाती है। २ एक प्रकारकी मछली। ३ मथुराके आसपास होनेवाली एक प्रकारकी घास।

फूस (हिं० पु०) १ छप्पर आदि छानेकी सूखी हुई लम्बी घास। २ सूखा तृण, खर, तिनका।

फूहड़ (हिं० वि०) १ जो किसी कामको सुचारुरूपसे न कर सके, जिसकी चाल ढाल बेढंगी हो। २ जो देखनेमें मनोहर न हो, भद्दा।

फूहर (हिं० वि०) फूहड़ देखो।

फूहा (हिं० पु०) फाहा, गाला।

फूही (हिं० स्त्री०) १ पानीकी महीन बूंद। २ महीन बूंदोंकी झड़ी, फुहारी।

फेंक (हिं० स्त्री०) फेंकनेकी क्रिया या भाव।

फेंकना (हिं० क्रि०) १ इस प्रकारकी गति देना कि दूर जा गिरे, झोंकेसे दूर गिराना। २ एक स्थानसे ले जा कर और स्थान पर डालना। ३ कुश्ती आदिमें पटकना, दूर गिर गिराना। ४ अपव्यय करना, फजूल खर्च करना। ५ चलाना, ले कर घुमाना या हिलाना डुलाना। ६ उछालना। ७ परित्याग करना, छोड़ना। ८ द्यूत आदिके खेलमें कौड़ी, पासा गोटी आदिको हाथमें ले कर इस लिये जमीन पर डालना कि उनकी स्थितिके अनुसार हार जीतका निर्णय हो। ९ गंवाना, खोना। १० असावधानीसे इधर उधर छोड़ना या रखना। ११ अपना पाला पूरा कर दूसरे पर भार डाल देना।

फेंकवाना (हिं० क्रि०) फेंकनेका काम कराना।

फेंकर (हिं० पु०) [illegible]

फेंट (हिं० स्त्री०) १ कमरका घेरा, कमरका फेरा। २ कमरमें बांधा हुआ धोतीका कपड़ा, कमरबन्द। ३ फेरा, लपेट।

फेंटना (हिं० क्रि०) १ लेप या गीली वस्तु, घोलको हाथ या उंगलियोंसे मथना। २ ताशके पत्तोंको उलट पलट कर अच्छी तरह मिलाना। ३ उंगलियोंसे मिला कर खूब मिलाना।

फेंटा (हिं० पु०) १ कमरका घेरा। २ कमरबंद, पटुका। ३ धोतीका वह भाग जो कमरमें लपेट कर बांधा गया हो। ४ सूतकी पट्टी या टी, अटेरन पर लपेटा हुआ सूत। ५ सिर पर लपेट कर बांधनेका वस्त्र, छोटा पगड़ी।

फेंटी (हिं० स्त्री०) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत, सूतका पोला।

फेंसी (अं० वि०) फैंसी देखो।

फेकरना (हिं० क्रि०) आच्छादनरहित होना, नंगा होना।

फेकारना (हिं० क्रि०) खोलना, या नंगा करना।

फेण (सं० पु०) स्फायते वर्द्धते इति स्फाय (फेनमीनौ। उण् ३।३) इति नक्, फ आदेशश्च, मतान्तरे णत्वं। महीन महीन बुलबुलोंका वह गठा हुआ समूह जो पानी या और किसी द्रव पदार्थके खूब हिलने, खौलने या सड़नेसे उसके ऊपर दिखाई पड़ता है। फेन देखो।

फेत्कार (सं० पु०) अव्यक्त वायु शब्द या शृगालध्वनि।

फेत्कारिणी (सं० स्त्री०) फेत्करोतीति फ णिनि, ङीप्। तन्त्रविशेष।

फेत्कारीय (सं० पु०) तन्त्रविशेष।

फेन (सं० पु०) स्फायते वर्द्धते इति स्फाय (फेनमीनौ। उण् ३।३) इति नक् फेनादेशश्च। १ जलके ऊपर उठा हुआ बुलबुला। फेण देखो। संस्कृत पर्याय—डिण्डिर, अब्धिकफ, डिण्डीर, समुद्रफेन, जलमल, फेनक। फेन शब्दका णकार दन्त्य होगा। कोई कोई मूर्द्धन्य भी व्यवहार करते हैं।

फाणित, गणन, फेन और ऊन इनका णकार दन्त्य न होगा। किन्तु इनमें वैकल्पिक भावसे मूर्द्धन्य भी होता है। २ मांडका झाग, मैल।

फेनक (सं० पु०) फेन स्वार्थे कन्। १ फेन, झाग। २ पिष्टकविशेष, टिकियाके आकारका एक पकवान या मिठाई। ३ गात्रमार्जनद्रव्य, विशेषकर शरीर धोने या मलनेका द्रव्य।

फेनका (सं० स्त्री०) फेनेन कायतीति कै-क-टाप्। १ अल्पक तण्डुलचूर्ण, पानीमें पका हुआ चावलका चूर। २ अरिष्टवृक्ष, रीठेका पेड़।

फेनगिरि—सिन्धुनदीके मुहानावर्त्ती एक पर्वत।

फेनदुग्ध (सं० स्त्री०) फेन इव दुग्धं यस्याः। दुग्ध फेनीक्षुप, दूधफेनी नामका पौधा जो दवाके काममें आता है। यह एक प्रकारकी दुधिया घास है।

फेनप (सं० पु०) १ स्वयं पतित फलादिभोजी मुनि विशेष। फेन पिबतीति फेन पा-क। (त्रि०) २ फेनपान कर्त्ता, फेन पीनेवाला।

फेनमेह (सं० पु०) प्रमेहभेद। इसमें वीर्य फेनकी तरह थोड़ा थोड़ा गिरता है। यह श्लेष्मज प्रमेह है।

प्रमेह देखो।

फेनमेहिन् (सं० त्रि०) फेनमेह अस्त्यर्थे इनि। प्रमेहरोग युक्त।

फेनल (सं० त्रि०) फेनोऽस्त्यस्येति फेन (फेनादि लच्च। पा ५।२।९९) इति चात् लच्। फेनयुक्त, फेनिल।

फेनवत् (सं० त्रि०) फेनोऽस्त्यस्येति (फेनादिलच्च। पा ५।२।९९) इत्यत्र अन्यतरस्यामित्यनुवृत्तेः पक्षे मतुप् मस्य वः। फेनिल, फेनयुक्त।

फेनवाहिन् (सं० पु०) फेनवत् शुभ्रता वहतीति वह णिनि। वस्त्र, कपड़ा।

फेना (सं० स्त्री०) फेनोऽस्मिन् धातुत्वेनास्त्या फेन अच् टाप्। १ मातलापुष। २ शेलुण्डभेद।

फेनाग्र (सं० क्ली०) फेनस्याग्र। बुदबुद, बुलबुला।

फेनायमान (सं० त्रि०) फेनमुद्वमतीति फेन (फेनाच्चेति वाच्य। पा ३।१।१७) इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या क्यङ् ततः शानच्। १ उत्थित फेन दुग्धादि। फेनइव आचरति क्यङ् शानच्। २ फेनकी भांति आचरणयुक्त।

फेनाशनि (सं० पु०) फेन एव अशनिर्वज्रं यस्य। इन्द्र। इन्द्रने फेन द्वारा वृत्रासुरका वध किया था, इसीसे इनका यह नाम पड़ा है। देवीभागवतमें लिखा है, कि वृत्रासुरके साथ जब इन्द्रका घोर संग्राम छिड़ा, तब इन्द्र युद्धस्थलमें शत्रु वध करनेका उपाय सोचने लगे। इसी समय इन्द्रको समुद्रमें पर्वतके समान ऊंची फेनराशि दिखाई दी। इन्द्रने अतिशय भक्तिपूर्वक उस फेनको ले कर परमाराध्या भगवतीका स्मरण किया। भगवतीने भी प्रसन्न हो कर उस फेनमें आत्मसंस्थापन किया। इधर वज्र भी उस फेनपिण्ड द्वारा आवृत हुआ। अब इन्द्रने उस फेनावृत वज्रको वृत्रके ऊपर फेंका जिससे वृत्र उसी समय धड़ामसे पृथ्वी पर गिरा और मर गया। इसी प्रकार फेनावृत अशनि द्वारा इन्द्रने वृत्रका संहार किया था। (देवीभाग० ६।६।५५-५६)

फेनिका (सं० स्त्री०) फेन इव आकृतिरस्त्यस्याः फेन ठन्-टाप्। पक्वान्नविशेष, फेनी नामकी मिठाई। इसकी प्रस्तुत प्रणाली — होले गुंधे हुए मैदेको थालीमें रख कर घीके साथ चारों ओर गोल बढ़ावे। फिर उसे कई बार लपेट कर बढ़ावें। इस प्रकार बढ़ाता और लपेटता चला जाय। आखिर घीमें तल कर चाशनीमें पागते या यों ही काममें लाते हैं। यह मिठाई दूधमें भिगो कर खाई जाती है।

फेनिल (सं० क्ली०) फेनोऽस्त्यस्येति (फेनादिलच्च। पा ५।२।९९) १ कोलिफल, बेरका फल। २ मदनफल, मैनफल। ३ अरिष्टवृक्ष रीठेका पेड़। ४ बदरीवृक्ष, बेरका पेड़। ५ जलयाली, हिलमोचिका। (त्रि०) ६ फेन युक्त, फेनवाला।

फेनी—१ नोआखालीके जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ३४३ वर्गमील है।

२ पूर्ववङ्गमें प्रवाहित एक नदी। यह त्रिपुराके पहाड़ी प्रदेशसे निकल कर दक्षिण पश्चिमकी ओर बह गई है। यह नदी चट्टग्राम और त्रिपुराके पार्वत्यप्रदेशके बीच हो कर बहती हुई वङ्गोपसागरमें मिल गई है।

फेनी (हिं० स्त्री०) लपेटे हुए सूतके लच्छेके आकारकी मिठाई। फेनिका देखो।

फेन्य (सं० त्रि०) फेन यत्। फेनभव, जो फेनसे निकले।

फेफड़ा (हिं० पु०) शरीरके भीतर थैलीके आकारका वह अवयव जिसकी क्रियासे जीव सांस लेते हैं।

वक्षाशयके अभ्यन्तर वायुनालमें थोड़ी दूर नीचे दो शाखाएं इधर उधर फूटे रहते हैं। इन शाखाओंसे संलग्न मांसका एक एक लोथड़ा दोनों ओर रहता है। ये थैलीके आकारके और छिद्रमय होते हैं। ये ही दोनों लोथड़े

कहते हैं और बायें फेफड़ेमें दो खण्ड होते हैं। दाहिना फेफड़ा बायें फेफड़ेसे चौड़ा और भारी होता है। फेफड़ेकी आकृति शंकुसे कटी हुई शाखाओंके समान भी होती है। जिसका नुकीला शीर्ष भाग ऊपरकी ओर होता है। फेफड़ेका निचला चौड़ा भाग उदरपटलके गुम्बजाकार अन्य पसलियोंके घेरे पर टिका रहता है। दाहिने फेफड़ेमें तीन दरारें होती हैं। इन दरारोंके कारण यह तीन भागोंमें विभक्त दिखाई पड़ता है। बायें फेफड़े-में एक ही दरार होती है जिससे यह दो ही भागोंमें बंटा दिखाई देता है। फेफड़े चिकने और चमकीले होते हैं और उन पर कुछ चित्तियां भी पड़ी रहती हैं। युवावस्थामें मनुष्यके फेफड़ेका रंग कुछ नीलापन लिये धूसर होता है। गर्भस्थ शिशुके फेफड़ेका रंग गहरा लाल होता है। जो जन्मके उपरान्त गुलाबी रहता है। दोनों फेफड़ोंका वजन सवा सेरके लगभग होता है। स्वस्थ मनुष्यके फेफड़े वायुसे भरे रहनेके कारण जलसे हल्के होते हैं और जलमें नहीं डूबते। परन्तु जिन्हें न्यूमोनिया, क्षय आदि रोग होते हैं उनके फेफड़ेका रुग्ण भाग ठोस हो जाता है और जलमें डालनेसे डूब जाता है। गर्भके अभ्यन्तर शिशु श्वास नहीं लेता, इस कारण उसका फेफड़ा जलमें डूब जायगा। परन्तु जो शिशु उत्पन्न हो कर कुछ भी जीवित रहा है, उसका फेफड़ा जलमें नहीं डूबता। प्राणी श्वास द्वारा जो वायु भीतर लेते हैं वह श्वास नाल द्वारा फेफड़ेमें पहुंचती है। श्वासनाल गलेसे थोड़ी दूर जा कर श्वासनालके इधर उधर दो शाखाएं फूट जाती हैं जिन्हें दाहिनी और बाईं वायुप्रणालियां कहते हैं। फेफड़ेके भीतर प्रवेश करते ही ये वायुप्रणालियां उत्तरोत्तर बहुतसी शाखाओंमें बंट जाती हैं। फेफड़ेमें जानेके बाद वायुप्रणाली वृक्षकी डालीके समान रहती है पर आगे जा कर ज्यों ज्यों शाखाओंका विभाग होता जाता है त्यों त्यों शाखाएं पतली और सूक्ष्म होती जाती हैं। यहां तक कि ये शाखाएं फेफड़ेके सब भागोंमें जालके समान फैली रहती हैं। इन्हींके द्वारा आकर्षित वायु फेफड़ेके सब भागोंमें पहुंचती है। फेफड़ेके बहुतसे छोटे छोटे छिद्र होते हैं। जो वायु नासिका द्वारा भीतर जाती उसे श्वास और जो बाहर निकाली जाती है, उसे प्रश्वास कहते हैं। जो वायु भीतर खींची जाती है, उसमें कारबन, जलवाष्प और हानिकारक पदार्थ बहुत कम मात्रामें होते हैं, तथा आक्सिजन गैस जो प्राणियोंके लिये आवश्यक है अधिक मात्रामें होती है। परन्तु प्रश्वासमें कारबन या अङ्गारक वायु अधिक और आक्सिजन कम रहती है। शरीरके मध्य जो अनेक रासायनिक क्रियाएं होती रहती हैं उनके कारण अङ्गारकी कारबन गैस बनती रहती है। इस गैसके संयोगसे रक्तमें कुछ कालापन आ जाता है। यह काला रक्त शरीरके सब भागोंसे जमा हो कर दो महाशिराओंके द्वारा हृदयके दक्षिण कोष्ठमें पहुंचता है। हृदयसे यह दूषित रक्त फिर फुप्फुसीय धमनी द्वारा दोनों फेफड़ोंमें आ जाता है। यहां रक्तकी अङ्गारक कारबन गैस बाहर निकल जाती है और उसके स्थानमें आक्सिजन आ जाता है, इस प्रकार फेफड़ोंमें रक्त शुद्ध हो जाता है।

फेफड़ी (हिं० स्त्री०) गरमी या खुश्कीसे ओठोंके ऊपर चमड़ेकी सूखी तह, प्यास या गरमीसे सूखे हुए ओंठ का चमड़ा।

फेफरी (हिं० स्त्री०) फेफड़ी देखो।

फेरु (सं० पु०) फे इति शब्दं रौति रु बाहुलकात् डु। शृगाल, गीदड़।

फेर (हिं० पु०) १ चक्कर, घुमाव। २ परिवर्तन, उलट पुलट। ३ मोड़, झुकाव। ४ असमंजस, उलझन। ५ भ्रम, संशय। ६ षड्यन्त्र, चालबाजी। ७ बल, अन्तर। ८ प्रपंच, जंजाल। ९ हानि, टोटा। १० भूत प्रेतका प्रभाव। ११ युक्ति, उपाय। (अव्य०) दुबारा, फिर।

फेरण्ड (सं० पु०) फे इत्यव्यक्तं शब्दं रण्डति अण्। शृगाल, गीदड़।

फेरना (हिं० क्रि०) १ भिन्न दिशामें प्रवृत्त करना, गति बदलना। २ मण्डलाकार गति देना, चक्कर देना। ३ लौटाना, वापस करना। ४ ऐंठना, मरोड़ना। ५ सहारेसे धीरे धीरे स्पर्श कराना, किसी वस्तु पर धीरेसे रख कर इधर उधर ले जाना। ६ पीछे लौटाना, जिधरसे आया हो, उसी ओर भेजना या चलाना। ७ जिसके पाससे आया हो उसीके पास पुनः भेजना। ८ [illegible]

ठीक चलनेकी शिक्षा देना, चाल चढ़ाना। ९ सबके सामने ले आ कर रखना, घुमाना। १० प्रचारित करना, घोषित करना। ११ पलटना, बदलना। १२ पीतना, तह चढ़ाना। १३ पार्श्व परिवर्तन करना, एक ही स्थान पर स्थिति बदलना। १४ स्थान या क्रम बदलना। १५ अभ्यस्त करना, बार बार दोहराना।

फेर पलटा (हिं० पु०) द्विरागमन, गौना।

फेरफार (हिं० पु०) १ परिवर्तन, उलट फेर। २ चक्कर, घुमाव फिराव। ३ अन्तर, बीच। ४ टालमटूल, बहाना।

फेरव (सं० पु०) फे इति रवो यस्य। १ शृगाल, गीदड़। २ राक्षस। (त्रि०) ३ धूर्त्त, चालबाज। ४ हिंस्र, दुःख पहुंचानेवाला।

फेरवट (हिं० स्त्री०) १ फिरनेका भाव। २ लपेटनेमें एक एक बारका घुमाव। ३ घुमाव फिराव, पेच। ४ अन्तर, फर्क।

फेरवा (हिं० पु०) सोनेका वह छल्ला जो तारको दो तीन बार लपेट कर बनाया जाता है, लपेटुआ।

फेरा (हिं० पु०) १ परिभ्रमण, चक्कर। २ लौट कर फिर आना, पलट कर आना। ३ इधर उधरसे आगमन। ४ लपेट, मोड़। ५ बार बार आना जाना।

फेराफेरी (हिं० स्त्री०) हेरा फेरी, इधरका उधर।

फेरी (हिं० स्त्री०) १ प्रदक्षिण, परिक्रमा। २ फेरा देखो। ३ फेरा देखो। ४ वह चरखी जिस पर रस्सी पर पेठन चढ़ाई जाती है। ५ योगी या फकीरका किसी बस्तीमें भिक्षाके लिये बराबर आना। ६ कई बार आना जाना, चक्कर।

फेरीवाला (हिं० पु०) घूम घूम कर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेरु (सं० पु०) फे इति शब्देन रौतीति रु मितद्र्वा दित्वात् डु। शृगाल, गीदड़।

फेरुआ (हिं० पु०) फेरवा देखो।

फेरोक—मन्द्राज प्रदेशके मलबार जिलेका एक नगर। यह अक्षा० ११°१´ उ० तथा देशा० ७५°२५´ पू०के मध्य अव स्थित है। जनसंख्या चार हजारके करीब है। १७८८ ई०में महिसुरराज टीपूसुल्तान इस नगरको उक्त जिलेकी राजधानी कायम कर वहांके वासियोंको वहां ले गये थे। १७९० ई०में अङ्गरेजोंने इस नगरको अधिकार कर धर्म्म कर डाला। यहां खपड़ेका एक बड़ा कारखाना है।

फेरौरी (हिं० स्त्री०) टूटे फूटे खपरैलोंको छाजनसे निकाल कर उनके स्थानमें नये नये खपरैले रखनेकी क्रिया।

फेल (सं० क्ली०) फेल्यते दूरे निक्षिप्यते इति फेल घञ्। भुक्त समुज्झित, उच्छिष्ट द्रव्य, जूठा।

फेल (अ० पु०) कार्य, काम।

फेल (अं० पु०) अकृतकार्य, जिसे कामकी सफलता न हुई हो।

फेलक (सं० पु०) फेल स्वार्थे संज्ञायां कन्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेला (सं० स्त्री०) फेल्यते इति फेल (गुरोश्च हलः। पा ३।३।१०३) इति अ, टाप्। उच्छिष्ट वस्तु, जूठा पदार्थ।

फेलि (सं० स्त्री०) फल-इन्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेलिका (सं० स्त्री०) फेलिरेव स्वार्थे कन् टाप्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेली (सं० स्त्री०) फेलि ङीष्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेलो (अं० पु०) सभासद, सभ्य।

फेल्ट (अं० पु०) जमाया हुआ ऊन, नमदा।

फेस (अं० पु०) १ चेहरा, मुंह। २ सामना। ३ टाईपका सामना भाग जिस पर मुंह और अक्षर रहते हैं। ४ टाइपका वह ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है।

फेहरिस्त (हिं० स्त्री०) फिहरिस्त देखो।

फैंसी (अं० स्त्री०) १ देखनेमें सुन्दर, रूप रङ्गमें मनोहर। २ दिखाऊ, तड़क भड़क का।

फैक्टरी (अं० स्त्री०) कारखाना।

फैज़ (अ० पु०) १ वृद्धि, लाभ। २ परिणाम फल।

फैज़ अली—१ दिल्लीवासी एक मुसलमान कवि। इनका नाम मीर फैजअली है। इनके पिता मीर महम्मद तकि भी एक विख्यात कवि थे। दोनों ही १७८५ ई०को दिल्ली नगरमें विद्यमान थे।

२ दीवान फैज़ नामक पारस्य-भाषाके संगीतग्रन्थ रचयिता। ये लखनऊ-राज महम्मद अली शाहके सम सामयिक थे।

दहिने और बाएँ फेफड़े कहलाते हैं। दहिना फेफड़ा बाएँ फेफड़ेसे चौड़ा और भारी होता है। फेफड़ेकी आकृति बीचसे कटी हुई नारंगीकी फांक सी होती है। जिसका नुकीला शीर्ष भाग ऊपरकी ओर होता है। फेफड़ाका निचला चौड़ा भाग उदराशयको वक्षाशयसे अलग करनेवाले परदे पर रखा रहता है। दहिने फेफड़ेमें दो दरारें होती हैं। इन दरारोंके कारण वह तीन भागों में विभक्त दिखाई पड़ता है। बाएँ फेफड़े में एक ही दरार होती है जिससे वह दो ही भागों में बंटा दिखाई देता है। फेफड़े चिकने और चमकीले होते हैं और उन पर कुछ चित्तियां सी पड़ी रहती हैं। युवावस्थामें मनुष्यके फेफड़ेका रंग कुछ नीलापन लिये भूरा होता है। गर्भस्थ शिशुके फेफड़ेका रंग गहरा लाल होता है। जो जन्मके उपरान्त गुलाबी रहता है। दोनों फेफड़ोंका वजन सेर सवा सेरके लगभग होता है। स्वस्थ मनुष्यके फेफड़े वायुसे भरे रहनेके कारण जलसे हलके होते हैं और जलमें नहीं डूबते। परन्तु जिन्हें न्युमोनिया, क्षय आदि रोग होते हैं उनके फेफड़ेका रुग्ण भाग ठोस हो जाता है और जलमें डालनेसे डूब जाता है। गर्भके अभ्यन्तर शिशु श्वास नहीं लेता, इस कारण उसका फेफड़ा जलमें डूब जायगा। परन्तु जो शिशु उत्पन्न हो कर कुछ भी जीवित रहा है, उसका फेफड़ा जलमें नहीं डूबता। प्राणी श्वास द्वारा जो वायु खींचते हैं वह श्वास नाल द्वारा फेफड़ेमें पहुँचती है। इस टेटुवेके नीचे थोड़ी दूर जा कर श्वासनालके इधर उधर दो नालये फूटे रहते हैं जिन्हें दहनी और बाईं वायुप्रणालियां कहते हैं। फेफड़ेके भीतर प्रवेश करते ही ये वायुप्रणालियाँ उत्तरोत्तर बहुत सी शाखाओंमें बँट जाती हैं। फेफड़ेमें जानेके पहले वायुप्रणाली लचीली हड्डीके छल्लोंके रूपमें रहती है, पर भीतर जा कर ज्यों ज्यों शाखाओंमें विभक्त होती जाती हैं त्यों त्यों शाखाएँ पतली और सूतके रूपमें होती जाती हैं। यहां तक, कि ये शाखाएं फेफड़ेके सब भागोंमें जालके सदृश फैली रहती हैं। इन्हींसे श्वास द्वारा आकर्षित वायु फेफड़े-के सब भागोंमें पहुँचती है। फेफड़ेके बहुतसे छोटे छोटे विभाग होते हैं। जो वायु नासिका द्वारा भीतर जाती उसे श्वास और जो बाहर निकाली जाती है उसे प्रश्वास कहते हैं। जो वायु भीतर खींची जाती है उसमें कारबन, जलवाष्प और हानिकारक पदार्थ बहुत कम मात्रामें होते हैं, तथा आक्सिजन गैस जो प्राणियोंके लिये आवश्यक है अधिक मात्रामें होती है। परन्तु प्रश्वासमें कारबन या अङ्गारक वायु अधिक और आक्सिजन कम रहती है। शरीरके मध्य जो अनेक रासायनिक क्रियाएँ होती रहती हैं उनके कारण जहरीली कारबन गैस बनती रहती है। इस गैसके सबबसे रक्तमें कुछ कालापन आ जाता है। यह काला रक्त शरीरके सब भागोंसे जमा हो कर दो महाशिराओंके द्वारा हृदयके दक्षिण कोष्ठमें पहुँचता है। हृदयसे यह दूषित रक्त फिर फुप्फुसीय धमनी द्वारा दोनों फेफड़ोंमें आ जाता है। यहां रक्तकी बहुतसी कारबन गैस बाहर निकल जाती है और उसके स्थानमें आक्सिजन आ जाता है, इस प्रकार फेफड़ोंमें जा कर रक्त शुद्ध हो जाता है।

फेफड़ी (हिं० स्त्री०) गरमी या खुश्कीसे ओठोंके ऊपर चमड़ेकी सूखी तह, *प्यास या गरमीसे सूखे हुए ओठ* का चमड़ा।

फेफरी (हिं० स्त्री०) फेफड़ी देखो।

फेर (सं० पु०) फे इति शब्दं राति गृह्णातीति रा ग्रहणे क। शृगाल, गीदड़।

फेर (हिं० पु०) १ चक्कर, घुमाव। २ परिवर्त्तन, उलट पुलट। ३ मोड़, झुकाव। ४ असमञ्जस, उलझन। ५ भ्रम, संशय। ६ षट्चक्र, चालबाजी। ७ बल, अन्तर। ८ प्रपंच, जंजाल। ९ हानि, टोटा। १० भूत प्रेतका प्रभाव। ११ युक्ति, उपाय। अदला बदला, पलटा।

फेरण्ड (सं० पु०) फे इत्यव्यक्त शब्देन रण्डतीति रण्ड अच्। शृगाल, गीदड़।

फेरना (हिं० क्रि०) १ भिन्न दिशामें प्रवृत्त करना, गति बदलना। २ मण्डलाकार गति होना, चक्कर देना। ३ लौटना, वापस करना। ४ ऐंठना, मरोड़ना। ५ यहांसे वहां तक स्पर्श कराना, किसी वस्तु पर धीरेसे रख कर इधर उधर ले जाना। ६ पीछे चलाना, जिधरसे आता हो, उसी ओर भेजना या चलाना। ७ जिसके पाससे आया हो उसीके पास पुनः भेजना। ८ घोड़े आदिको

टीक चलनेकी शिक्षा देना, चाल चलाना। ६ सबके सामने ले जा कर रखना, घुमाना। १० प्रचारित करना, घोषित करना। ११ पलटना, बदलना। १२ पोतना, तह चढ़ाना। १३ पार्श्व परिवर्त्तन करना, एक ही स्थान पर स्थिति बदलना। १४ स्थान या क्रम बदलना। १५ अभ्यस्त करना, बार बार दोहराना।

फेर-पलटा (हिं० पु०) द्विरागमन, गौना।

फेरफार (हिं० पु०) १ परिवर्त्तन, उलट फेर। २ चक्कर, घुमाव फिराव। ३ अन्तर, बीच। ४ टालमटूल, बहाना।

फेरव (सं० पु०) फे इति रवि यस्य। १ शृगाल, गीदड़। २ राक्षस। (त्रि०) ३ धूर्त्त, चालबाज। ४ हिंस्र, दुःख पहुंचानेवाला।

फेरवट (हिं० स्त्री०) १ फिरनेका भाव। २ लपेटनेमें एक एक बारका घुमाव। ३ घुमाव फिराव, पेच। ४ अन्तर, फर्क।

फेरवा (हिं० पु०) सोनेका वह छल्ला जो तारको दो तीन बार लपेट कर बनाया जाता है, लपेटुआ।

फेरा (हिं० पु०) १ परिक्रमण, चक्कर। २ लौट कर फिर आना, पलट कर आना। ३ इधर उधरसे आगमन। ४ लपेट, मोड़। ५ बार बार आना जाना।

फेराफेरी (हिं० स्त्री०) हेरा फेरी, इधरका उधर।

फेरी (हिं० स्त्री०) १ प्रदक्षिण, परिक्रमा। २ फेरा देखो। ३ फेर देखो। ४ वह चरखी जिस पर रस्सी पर बटे चढ़ाई जाती है। ५ योगी या फकीरका किसी बस्तीमें भिक्षाके लिये बराबर आना। ६ कई बार आना जाना, चक्कर।

फेरीवाला (हिं० पु०) घूम घूम कर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेरु (सं० पु०) फे इति शब्देन रौति रु मितद्रु वा दित्वात् डु। शृगाल, गीदड़।

फेरुआ (हिं० पु०) फेरवा देखो।

फेरोग—मन्द्राज प्रदेशके मलबार जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २३ १´ उ० तथा देशा० ६० २५´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या चार हजारके करीब है। १७८६ ई०में महिसुरराज टीपूसुलतान इस नगरको उस जिलेकी राजधानी कायम कर कलिकट वासियोंको यहां ले गये थे। १७६० ई०में अङ्गरेजोंने इस नगरको अधिकार कर ध्वंस कर डाला। यहां लकड़ीका एक बड़ा कारखाना है।

फेरौरी (हिं० स्त्री०) टूटे फूटे खपरैलोंको छाजनसे निकाल कर उनके स्थानमें नये नये खपरैले रखनेकी क्रिया।

फेल (सं० क्ली०) फेल्यते दूरे निक्षिप्यते इति फेल घञ्। भुक्त समुज्झित, उच्छिष्ट द्रव्य, जूठा।

फेल (अ० पु०) कार्य्य, काम।

फेल (अं० पु०) असफलकार्य्य, जिसे काममें सफलता न हुई हो।

फेलक (सं० पु०) फेल स्वार्थे संज्ञायां कन्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेला (सं० स्त्री०) फेल्यते इति फेल (गुरोश्च हलः। पा ३।३।१०६) इति अ, टाप्। उच्छिष्ट वस्तु, जूठा पदार्थ।

फेलि (सं० स्त्री०) फल-इन्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेलिका (सं० स्त्री०) फेलिरेव स्वार्थे कन् टाप्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेली (सं० स्त्री०) फेलि ङीष्। उच्छिष्ट, जूठा।

फेली (अ० पु०) सभासद, सभ्य।

फेल्ट (अं० पु०) जमाया हुआ ऊन, नमदा।

फेस (अं० पु०) १ चेहरा, मुँह। २ सामना। ३ घड़ीका सामना भाग जिस पर सुई और अङ्क रहते हैं। ४ टाइपका वह ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है।

फेहरिस्त (हिं० स्त्री०) फिहरिस्त देखो।

फैंसी (अं० स्त्री०) १ देखनेमें सुन्दर, रूप रंगमें मनोहर। २ दिखाऊ, तड़क भड़क का।

फैक्टरी (अं० स्त्री०) कारखाना।

फैज (अ० पु०) १ वृद्धि, लाभ। २ परिणाम फल।

फैज अली—१ दिल्लीवासी एक मुसलमान कवि। इनका नाम मीर फैजअली है। इनके पिता मीर महम्मद तकि मी एक विख्यात कवि थे। दोनों ही १७८५ ई०को दिल्ली नगरमें विद्यमान थे।

२ दीवान फैज नामक पारस्य भाषाके संगीतग्रन्थ रचयिता। ये लखनऊ-राज महम्मद अली शाहके सम सामयिक थे।

**फैजपुर**—बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २१° १०´ उ० और देशा० ७५° ५२´ पू० धूलियासे ५२ मील उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या दश हजारसे ऊपर है। सूती कपड़ेकी छींट तथा नील और लाल रंग प्रस्तुत होनेके कारण यह स्थान प्रसिद्ध है। प्रायः ३०० घर इसी काममें अपना गुजारा चलाते हैं। नगरमें रुई और काठकी भी अच्छी बिक्री होती है। यहां कुल मिला कर पांच स्कूल हैं।

**फैजाबाद**—१ युक्तप्रदेशके अयोध्या प्रदेशके अन्तर्गत एक विभाग। यह अक्षा० २५° ३४´ से २८° २४´ उ० और देशा० ८०° ५६´ से ८३° ८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १२११३ और जनसंख्या सात लाखके लगभग है। इसमें फैजाबाद, गोण्डा और बहराइच नामक तीन जिले लगते हैं।

२ उक्त विभागका एक जिला। यह अक्षा० २६° ९´ से २६° ५०´ उ० और देशा० ८१° ४१´ से ८३° ८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १७४० वर्गमील है। इसके उत्तर पूर्वमें गोगरा नदी, दक्षिण पूर्वमें आजमगढ़ और सुलतानपुर तथा पश्चिममें बराबंकी है। जिलेकी प्रधान नदी गोगरा है जो उत्तरी सीमामें ९५ मील तक बह गई है। यहां पलाशवृक्षके घने जङ्गल नजर आते हैं जिनमें नीलगाय बहुतायतसे पाई जाती है। पलाशवृक्षके सिवा आम्रकानन भी अनेक हैं।

इस जिलेका पुरावृत्त अयोध्याके इतिहासके साथ मिला हुआ है। अयोध्या और श्रावस्ती देखो। रामचन्द्र और उनके वंशधरोंके शासनके बाद हम बौद्धधर्मका पूर्णप्रभाव और अवनति देखते हैं। उज्जयिनीराज विक्रमादित्यके समय ब्राह्मण्यधर्मका पुनः आविर्भाव देखा गया। पीछे दोनों मतावलम्बी राजाओंका संघर्ष हुआ और ८वीं शताब्दीमें हिन्दुधर्मका फिरसे प्रभाव जमा। किन्तु उक्त समयका कोई धारावाहिक इतिहास नहीं मिलता। ११वीं शताब्दीमें मुसलमानी आक्रमणसे यहांका प्रकृत इतिहास लिपिबद्ध किया जाता है। १०३० ई०में सुलतान महमूदके सेनानायक सैयदसलार मसाउद्ने अयोध्या आक्रमणकालमें फैजाबादको लूटा था। उस युद्धमें सैयदसलार राजपूतोंके हाथसे पराजित और निहत हुए थे। कन्नौज युद्धके बाद यहां मुसलमानी-शासन प्रतिष्ठित हुआ। १८वीं शताब्दीके प्रथम भागमें नवाबोंने अयोध्यासे राजधानी उठा कर फैजाबाद लाई। १७६६ ई०में अयोध्याके शासनकर्त्ता सुजाउद्दौलाने यहां चिरस्थायी वासका बन्दोबस्त किया। उनकी मृत्युके बाद (१७८० ई० में) राजधानी लखनऊ नगर लाई गई। अनन्तर १८५७ ई०का गदर ही यहांका प्रधानतम ऐतिहासिक घटना है। सिपाहीविद्रोह देखो।

इस जिलेमें ६ शहर और २६६० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या दश लाखसे ज्यादा है। सैकड़े पीछे ९० हिन्दू और १० मुसलमान हैं। फैजाबाद, अकबरपुर, बीकापुर, और टाण्डा नामकी इसमें चार तहसील लगती हैं। यहां धानकी अच्छी फसल लगती है और यही जिलेका प्रधान खाद्य है। धानके अलावा चना, गेहूं, मटर, मसूर, जौ, अरहर, कोदों भी उपजता है। अनाज (खास कर चावल), चीनी, कपड़े, तेलहन, अफीम, चमड़े, और तमाकूकी रफतनी तथा धान, धातु और नमककी आमदनी होती है। बनारससे लखनऊ तक जानेवाली अवधरोहिलखण्ड रेलवेकी लूप लाइन इसी जिले हो कर गई है। इस जिलेको दुर्भिक्षसे कई बार मुकाबला करना पड़ा था जिससे इसकी बहुती क्षति हुई थी। यों तो कई बार दुर्भिक्ष पड़े हैं, पर १८७७के दुर्भिक्षने भयङ्कर रूप धारण किया था। डिपटी कमिश्नर इण्डियन सिभिल्सर्विसके एक या दो सदस्य और चार डिपटी कलेक्टरकी सहायतासे राजकार्य चलाते हैं।

इस जिलेके अधिकांश मनुष्य विद्याशिक्षासे वञ्चित हैं। सैकड़े पीछे ४ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। फिलहाल यहां ३० प्राइमरी और सेकेण्डरी स्कूल, ३ सरकारी तथा १०० म्युनिसिपल स्कूल हैं। स्कूलके अलावा ११ अस्पताल हैं। जिले भरमें दो म्युनिसिपलिटियां हैं, एक फैजाबादमें और दूसरी टाण्डामें। आबहवा बहुत अच्छी है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २६° ३२´ से २६° ५०´ और देशा० ८१° ४८´ से ८२° २१´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ३७१ वर्गमील और जनसंख्या साढ़े तीन लाखके करीब है। इसमें ४ शहर और ४४८ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २६° ४७´ उ० और देशा० ८२° १०´ पू०के मध्य गोगरा नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या लगभग ७०८०० है। इसके पश्चिममें वर्तमान अयोध्यानगर पड़ता है। ये दोनों ही नगर प्राचीन अयोध्या महानगरीके ऊपर बसे हैं। १७३२ ई०में मनसुर अली खाँ यहां आये थे। उनका अधिकांश समय इसी शहरमें व्यतीत होता था। किन्तु उनके वंशधर सुजाउद्दौलाने १७६० ई०में इस नगरको राजधानीमें परिणत किया था। १७७० ई०में जब सुजाउद्दौलाकी मृत्यु हुई, तब आसफ उद्दौलाने १७८० ई०में राजधानीको लखनऊ उठा लाये। १७६८ ई०से बहू बेगम इस नगरका निष्कंटभोग कर रही थी। १८१६ ई०में उनकी मृत्युके बादसे यह नगर श्रीहीन हो गया है। उनका समाधिमन्दिर और तत्संलग्न 'दिल खुस' प्रासाद अयोध्या प्रदेशके मध्य देखने लायक है। कहते हैं, कि इसके बनानेमें तीन लाख रुपये खर्च हुए थे। यहां रोहिलखण्ड रेलपथका स्टेशन है। शहरके उत्तर पश्चिम गोगराके किनारे सेनानिवास है। यहां पुरुष और स्त्रीके लिये पृथक् पृथक् अस्पताल हैं।

फैजी सेख—अकबरशाहके प्रधान मन्त्री सेख अबुल फजलके बड़े भाई और नागरवासी सेख मुबारिकके पुत्र। ९५४ हिजरीमें उनका जन्म हुआ। उनका असल नाम अबुल फैज था, पर फैजी नामसे ही जनसाधारणमें परिचित थे। ये उक्त सम्राट्के राज्यारोहणके १२ वर्ष बाद राजसभामें पहुंचे और 'मालिक उस सुअरा' उपाधिसे भूषित हुए। इतिहास, न्याय, आयुर्वेद तथा गद्य और पद्य रचनामें ये विशेष पारदर्शी थे। उस समय उनके मुकाबलेमें दिल्ली भरमें और कोई न था। प्रथम रचनाओंमें उनका फैजी नाम लिखा है, पर पीछे उन्होंने फैयाजी नामसे अपनेको सम्मानित किया था। उन्होंने निसामी लिखित खिमसान पांच सामसा कविताके प्रतिद्वन्द्वी हो 'मकज अदवर' 'सुलेमान और बिलकाइस' 'नलदमन' 'हफ किसूवर' और अकबरनामाकी रचना की। छद्मवेशमें एक ब्राह्मण पण्डितके घर रह कर उन्होंने हिन्दू साहित्य और विज्ञानकी आलोचना की थी। संस्कृत काव्य और दर्शन छोड़ ये भास्कराचार्य प्रणीत बीजगणित और लीलावतीका अनुवाद करके अपनी विद्याबुद्धिका परिचय दे गये हैं।

उन्होंने कुरान शास्त्रका भी एक अति बृहत् व्याख्या ग्रन्थ लिखा है। उस ग्रन्थमें उन्होंने २८ अक्षरोंके मध्य नुक्ता संयुक्त अक्षरोंको बाद दे कर केवलमात्र १३ अक्षरमें शब्दयोजना करते हुए उसे जनसाधारणके पाठयोग्य बनाया था। कुछ लोगोंका कहना है, कि अल्लोपनिषद् इन्होंका बनाया हुआ है। भाषामें भी इन्होंने बहुतसे दोहे बनाये हैं।

एक बार अकबरने इनसे हिन्दुस्तानकी सभी भाषाएं सीखनेके लिये कहा। ये कई वर्षों तक भारतवर्षके सभी प्रान्तोंमें घूम घूम कर वहांकी भाषाएं सीखते रहे। जब घर लौटे और दरबारमें हाजिर हुए तब बादशाहने कहा, 'फैजी! किस प्रान्तमें कौनसी भाषा बोली जाती है, उदाहरण सहित कहो।' फैजी सब देशोंकी बोलियां बादशाहको सुनाने लगे। अन्तमें ये अपनी जेबसे एक शीशी जिसमें कुछ कंकड़ भरे हुए थे निकाल कर खड़खड़ाने लगे। अकबरने हंस कर पूछा, 'फैजी! यह किस मुल्ककी बोली है।' फैजीने उत्तर दिया, 'खुदावन्द! यह तैलङ्गी है और तैलङ्ग देशमें बोली जाती है।' यह सुन कर बादशाह और सब सभासद हँसने लगे। इस प्रकार ये दरबारमें प्रायः हँसाते ही रहते थे। इस कारण अकबरकी इन पर बड़ी कृपा रहती थी। १००४ हिजरी (१५९६ ई०) में दमारोगसे इनकी मृत्यु हुई। यह एक एकेश्वरवादी थे। इस कारण इस्लाम् धर्मावलम्बिगण इन्हें विधर्मी समझ कर तिरस्कार करते थे। फैजी एक असाधारण धीशक्तिसम्पन्न पण्डित थे। अरबी साहित्यमें, काव्यमें और दर्शनों विद्यामें इनकी विशेष पारदर्शिता थी। ये कुल मिला कर १०१ ग्रन्थ लिख गये हैं। इनकी ऐसी तीव्र बुद्धि थी, कि जो पुस्तक एक बार पढ़ लेते थे, वह इन्हें याद हो जाती थी। इनकी तनख्वाहका अधिक भाग पुस्तकें खरीदनेमें ही खर्च होता था। कहते हैं, कि ४६०० पुस्तकें इनके पुस्तकालयमें रक्खी थीं।

फतउल्ला अमीर—एक मुसलमान काजी। ये दाक्षिणात्यके बाहमनीराज सुलतान महमूदके शासन

कालमें ( १३७८ १३८७० ई०में ) न्यायाधीशका काम करते थे। आप एक सुकवि और विख्यात ख्वाजा हाफिजके समसामयिक थे।

फैजउल्ला खाँ—एक रोहिला सरदार और रामपुरके जागीरदार। ये रोहिला सरदार अली महम्मद खाँके पुत्र थे।

१७७४ ई०को कटराकी लड़ाईमें हार खा कर ये कुमायूनके पहाड़ी प्रदेशमें भाग गये। पीछे अंगरेजों से सन्धि हो जाने पर इन्हें १३ लाखकी सम्पत्ति मिली। अब इन्होंने रामपुरमें राजप्रासाद और राजधानी बसाई। २० वर्ष तक सुचारुरूपसे राज्य करके ये १७९४ ई०में परलोकको सिधार गये।

फैजुलपुरिया—सिख सम्प्रदायका एक मिसल या दल। ये लोग सिंहपुरिया नामसे भी प्रसिद्ध हैं। कपूरसिंह नामक एक जाट भूम्यधिकारी इस दलके नेता थे। जो खालसा सेना दल फरुखसियरके राजत्वकालमें प्रतिष्ठित हुआ उसने इन्हीं कपूरसिंहकी अधिनायकतामें सिख धर्मका सर्वोच्च स्थान अधिकार किया। उन्होंने अपने बलवीर्यप्रभावसे सिख जातिका भविष्योन्नति पथ परिष्कार कर दिया था। इस उन्नति पथ पर आरूढ़ हो कर ही सिख लोग एक समय स्वाधीनभावमें राजत्व करनेमें समर्थ हुए थे।

उनके अधीनस्थ सिख दलने उन्हें नवाबकी उपाधि दी। उन्हों ने अपने बाहुबलसे सैकड़ों जाट, बढ़ई, ताती, क्षत्रिय आदिको गुरुगोविन्दका धर्ममत ग्रहण करनेको बाध्य किया। उस समय जनसाधारणके निकट ये धार्मिक समझे जाते थे। उनके हाथसे 'पाहुल' ग्रहण भी सब कोई सम्मानसूचक समझते थे। उनके अधीनस्थ ढाई हजार सिख बड़े ही दुर्द्धर्ष और धर्मोन्मत्त थे। इतनी ही सामान्य सेनाको ले कर उन्होंने दिल्लीकी सीमा तक धावा बोल दिया था।

१७५३ ई०को अमृतसरमें उनकी मृत्यु हुई। मरते समय ये अपना खालसा दल अहलूवालिया सरदार यश सिंहके हाथ सौंप गये।

यशकी मृत्युके बाद खुशालसिंह सम्पत्तिके उत्तराधिकारी हुए। ये अपने चचाकी तरह वीर्यवान् और बुद्धिमान् थे। शतद्रु के किनारे तक उन्होंने अपना राज्य फैला लिया था। जालन्धर, नूरपुर, बहरमपुर, भरतगढ़, पट्टी और बनोर आदि स्थान उनके राज्यभुक्त हुए। ये भी बहुतोंको अपने मतमें लाये थे, यहां तक कि पतियाला राज अलासिंहने भी उनके निकट गोविन्दका पाहुल ग्रहण किया था। १७९५ ई०में उनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके लड़के बुद्धसिंह राजा हुए। पञ्जाबकेशरी रणजित्के समय यह दल विच्छिन्न हो गया और सरदार बुद्धसिंह अंगरेजी आश्रयमें रहनेको बाध्य हुए।

फैदम ( अ० पु० ) गहराईकी एक माप जो छः फुटकी होती है, पुरसा।

फैर (अ० स्त्री०) बन्दूक तोप आदि हथियारोंका दगना।

फैल ( हिं० स्त्री० ) १ विस्तृत, लम्बा चौड़ा। २ फैला हुआ।

फैलना ( हिं० क्रि० ) १ लगातार स्थान घेरना, यहांसे वहां तक बराबर रहना। २ प्रचार पाना, बहुतायतसे मिलना। ३ पूरा तन कर किसी ओर बढ़ना, मुड़ा न रहना। ४ बिखरना, इकट्ठा न रहना। ५ वृद्धि होना, संख्या बढ़ना। ६ अधिक खुलना, किसी छेद या गड्ढेका और बड़ा हो जाना। ७ स्थूल होना, मोटाना। ८ आवृत करना, व्यापक होना। ९ विस्तृत होना पसरना। १० आग्रह करना, जिद करना। ११ प्रसिद्ध होना, बहुत दूर तक विदित होना। १२ इधर उधर दूर तक पहुंचना।

फैलसूफ ( हिं० वि० ) फजूल खर्च।

फैलसूफी ( हिं स्त्री० ) फजूलखर्ची।

फैलाना ( हिं० क्रि० ) १ लगातार स्थान घिरवाना। २ इधर उधर दूर तक पहुंचाना। ३ किसी छेद या गड्ढेको और बड़ा करना या बढ़ाना। ४ पूरा तान कर किसी ओर बढ़ाना, मुड़ा न रखना। ५ अलग अलग दूर तक कर देना, बिखेरना। ६ संकुचित न रखना, पसारना। ७ प्रचलित करना, किसी वस्तु या बातको इस स्थितिमें करना, कि वह जनताके बीच पाई जाय। ८ विस्तृत करना, पसारना। ९ व्यापक करना, भर देना। १० वृद्धि करना, बढ़ाना। ११ गुणा भागके ठीक होनेकी परीक्षा करना। १२ हिसाब किताब करना लेखा लगाना। १३ आयोजन करना, उपक्रम करना। १४ प्रसिद्ध करना, चारों ओर प्रकट करना। १५ गणितकी क्रियाका प्रचार करना।

फैलाव ( हिं० स्त्री० ) १ विस्तार, प्रसार। २ प्रचार। ३ लम्बाई चौड़ाई।

फैशन ( अं० पु० ) १ चाल, ढंग। २ रीति, प्रथा।

फैसला ( अं० पु० ) १ दो पक्षोंमें किसकी बात ठीक है इसका निपटेरा। २ किसी मुकदमेमें अदालतकी आखिरी राय।

फोंक ( हिं० पु० ) १ तीरके पीछेकी नोक जिसके पास पर लगाए जाते हैं। इस नोक पर गड्ढा या खड्डी बनी रहती है जिसमें धनुषकी डोरी बैठ जाती है। ( वि० )२ ग्वालोंकी बोलीमें 'चार'।

फोकटाय ( हिं० वि० ) ग्वालोंकी बोलीमें 'चौदह'।

फोंका ( हिं० पु० ) १ लम्बा और पोला चोंगा। २ मटर आदि पौधों डठलवाले शस्योंकी फुनगी। ३ फफोला।

फोंकागोला ( हिं० पु० ) तोपका लम्बा गोला।

फोंकर ( हिं० वि० ) १ सारकाश, पोला। २ निःसार। फोंक।

फोंफी ( हिं० स्त्री० ) १ गोल लम्बी नली, छोटा चोंगा। २ वह चांदी सोनेकी नाकमें पहनी जाती है, छुछी। ३ सोनार लोहार आदिकी आग धौंकनेकी नली जो धातु की बनी होती है।

फोक ( हिं० पु० ) १ सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश, सीठी। २ तुष, भूसी। ३ स्वादहीन वस्तु, फीकी या नीरस चीज। ४ सूक्ष्म पुष्पी, एक तृण जिसका साग बना कर लोग खाते हैं। यह साग मारवाड़की ओर होता है। वैद्यकमें इसे रक्त पित्त और कफनाशक तथा रेचक और ठंढा बतलाया है।

फोकट ( हिं० वि० ) तुच्छ, व्यर्थ।

फोकला (हिं० पु०) किसी फल आदिके ऊपरका छिलका।

फोकस ( अं० पु० ) १ वह बिन्दु जहां पर प्रकाशकी किरणें छाई हुई किरणें एकत्र हों। २ फोटो लेनेके लिये लेंस द्वारा उस वस्तुकी छायाको जिसका छायाचित्र लेना है, नियत स्थान पर स्थिर रूपसे लानेकी क्रिया।

फोग ( हिं० पु० ) साकविशेष।

फोट ( हिं० पु० ) फोट देखो।

फोटो ( अं० पु० ) फोटोग्राफीके यन्त्र द्वारा उतारा हुआ चित्र, छाया चित्र।

फोटोग्राफ ( अं० पु० ) छायाचित्र, फोटो।

फोटोग्राफर ( अं० पु० ) फोटोग्राफीका काम करनेवाला।

फोटोग्राफी ( Photography )-चित्रविद्याविशेष। आज कल इस चित्रविद्याके प्रभावसे हम लोग मनुष्यमात्रकी प्रतिकृति, पशुपक्षी आदि जीवमूर्त्ति और ग्रेय मन्दिरादि बड़ी बड़ी अट्टालिकाओंकी प्रतिच्छवि बातकी बातमें अङ्कित कर ले सकते हैं। यह हस्तगाय्य चित्रविद्यासे स्वतन्त्र है। चित्रविद्या देखो।

इस कला विद्याकी सहायतासे जो चित्र उतारा जाता है, उसे 'फोटोग्राफ' कहते हैं। किस प्रकार प्रतिबिम्बित चित्रको देखते ही आधार पर यह प्रतिफलित होता है, उसकी आलोचनासे ही इस विद्याका उद्भव हुआ है। सूर्यरश्मिकी शक्तिसे किसी किसी वस्तुमें रासायनिक विपर्यय हुआ करता है। सूर्यालोकको ऐसी परिवर्त्तनशील शक्ति ( Actinic influence ) रहनेसे तथा रासायनिक प्रक्रियासे प्रस्तुत आधारविशेषसे यह आलोकचालित प्रतिकृति प्रतिभात हो कर विकाश पाती है। इस तत्त्वका विशेष अनुशीलन ही फोटोग्राफीका उन्नति का प्रधानतम कारण है।

आलोककी सहायतासे चित्र उतारा या लिया जा सकता है, इसी कारण उसे कलाविद्याके अन्तर्निविष्ट किया गया है। जीवित या मृत, खनिज, उद्भिद् और जीव प्रभृति जागतिक पदार्थोंमें आलोककी कार्यकारिता का लक्ष्य करके हम लोग अनुसन्धित्सु होते हैं, यही उक्त विद्याका वैज्ञानिक लक्षण है।

अभी फोटोग्राफी विद्याको एक शौकीन कलामें गिनती की गई है। इसे मनस्तृप्तिकर चित्रोंकी आवश्यकता है इस कारण फोटोग्राफरकी शरण लेनी पड़ती है। इस प्रकार आवश्यक समय पर बहुतोंने वर्त्तमान समयमें इस विद्याको बड़े चावसे सीख लिया है। परन्तु प्राचीनकालमें सिले (Sel clee), रीटर ( Ritter ), सीबेक ( Seebeck ), बरथोलेट (Bertl ollet), बेकरेल (Bequerel ), उलस्टन ( Wollaston ), डेभी ( Sir Humphrey Davy ), वेजउड (Thomas Wedgwood), यंग (T Young) और हर्शेल (J W Herschel) आदि महापुरुषगण बड़े परिश्रमसे इसकी वैज्ञानिक भित्तिको

मजबूत कर गये हैं। इस कलाविद्यामें अनुकूलदृष्टिका विशेष कारण यह है, कि इसके अनुशीलन द्वारा रसायन दृष्टिविज्ञान और पदार्थविद्या ( Physics )-के विषयमें बहुत कुछ उन्नति हुई है और इस लोगोंके शिल्पनैपुण्य की उन्नतिके साथ ही साथ कार्यदक्षताका भी विकाश हुआ है। अभ्यस्त कार्यके परिपक्वतानुसार जब यह विकाश धीरे धीरे पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है, तब उससे दृष्टिविज्ञान और रसायनशास्त्रके अनेक समवाय विषय निर्द्धारित होते हैं और अन्तमें एक आनन्दका उपादान हो जाता है।

जिस प्रकार विज्ञानविदोंके यत्न और उत्साहसे इस विद्याकी उत्पत्ति और उन्नति हुई है उसका संक्षिप्त विवरण नीचे लिखा जाता है।

पहले 'केमेरा अबसक्युरा' ( Camera obscura ) नामक चित्रप्रदर्शन यन्त्रका आविष्कार हुआ। पदुआ वासी वैप्तिस्ता पोर्टा ( *Baptista Porta* ) नामक कोई व्यक्ति ( १५८९ ई०में ) इसके गठनादिका निरूपण कर गये। सर हाम्फ्र डेभी, विजउड आदिने उत्साहसे अनुप्राणित हो 'Camera obscura' यन्त्रके द्वारा फिरसे इसकी परीक्षा करना आरम्भ कर दिया। उसके फलसे यह प्रतिफलित चित्र 'सेन्सेटिभ पेपर' के ऊपर अति क्षीणभावमें प्रतिबिम्बित हो चित्ररूपमें प्रकाशित हुआ। पर्याप्त आलोचनासे यह यन्त्र बिलकुल ठीक किया गया। सच पूछिये, तो यही फोटोग्राफीकी उत्पत्तिका मूलकारण बतलाया गया है। १६वीं शताब्दीके उत्तरार्द्ध में पोर्टाको वृक्षसे सघन पत्तोंमेंसे हो कर सूर्यकी किरणोंका प्रकाश छनते देख कर उत्सुकता हुई। उन्होंने अपने घरकी कोठरीकी दीवारमें एक छोटासा छिद्र किया। फिर बाहरकी ओर दीपक जला कर वे दूसरी ओर एक पर्दा टांग कर परीक्षा करने लगे। दीपशिखा उसे पर्दे पर उलटी रूपकी दिखाई पड़ी। वे इस प्रकार दूसरे पदार्थों की प्रतिछवियां भी पर्देमें लानेका यत्न करने लगे। सुभीतेके लिये उन्होंने एक नतोदर शीशा ( Lens ) उस छेदमें लगा दिया। उनका कमरा नलाकार और अन्तर्भाग काला था। उस शीशेके द्वारा ही वे आलोकका अधिश्रयण (Focus) ठीक कर लेते थे। उसी समय फ्रान्स देशके एक और वैज्ञानिकने परीक्षा करके नाइट्रेट आफ सिल्वर (Nitrate of silver) नामक रासायनिक मिश्रण बनाया। यह मिश्रण यद्यपि सफेद होता है पर सूर्यकी किरण पड़ते ही धीरे धीरे काला होने लगता है। सन् १८२० ई०में स्विजरलैण्डके एक विद्वान् चार्ल्सने अंधेरी कोठरीमें नाइट्रेट आफ सिल्वरके सहारेसे चित्र बनानेकी चेष्टा की। चित्र तो खिंच गया, पर स्थायी न हो सका। बहुतसे वैज्ञानिक चित्रको स्थायी करनेकी चेष्टा करते रहे। अन्तको सौ वर्ष पीछे, एमन्योपस नामक एक वैज्ञानिककी सहायतासे डगर साहबने पारेके रासायनिक मिश्रण द्वारा चित्रको स्थायी करनेमें सफलता प्राप्त की। १८५८ ई०में जान डोलण्डने वर्णविहीन शीशे ( *Achromatic lens* )-का आविष्कार किया जिससे परिष्कार चित्र उतरने लगा। इसके बाद कमरेके यन्त्रादि और आकृतिक परिवर्त्तनमें डवल आब्जेक्टिभ लेन्सका व्यवहार करनेसे सूक्ष्म अधिश्रयण ग्रहण आदि विषयों में बहुत उन्नति हुई है। इस प्रकार अनुशीलन करनेसे ही चित्र ग्रहणके लिये बक्स ( Box *Camera* )-से बेलो ( Bellows *Camera* ) पीछे स्टेरोस्कोपिक ( Stereoscopic ) और ओसवर्णस् कपि कमरा तथा टेवल ( Osborne's *Copying* *Camera* and Table ) आदिका आविष्कार हुआ है। इसके बाद १७९८ ई०में काउण्ट रामफोर्ड ( *Count Rumford* ) ) तारको ही इन सब परिवर्त्तनका कारण समझ कर प्रबन्ध लिखा।

१८०१ ई०में रीटरने काच प्रतिफलित विभिन्न वर्णों के सौरप्रतिबिम्ब पर आलोकमालाका अवस्थान प्रमाणित करके क्लोराइड आफ सिल्वरका वर्णान्तर निरूपण किया है। इसी अनुसन्धानसे एम् एम् बेराडें, सियेर, वार्थोलेट, सर उल्ट्र हर्सेल, सर एच एङ्गलफिल्ड, वालेन, डेभी आदिका चित्र आरम्भ हुआ। वे लोग भी परीक्षा द्वारा जीवदेहके ऊपर आलोकको इस विशिष्ट शक्तिका प्रभाव स्थिर कर गये हैं।

प्राचीनकालमें फोटोग्राफी विद्याकी नींव डालनेमें अदृष्ट परिश्रम किया गया था। सिव्रे, सेनिवायर, इङ्गेनहाउज, डि कण्डोले, ससार और रीटर आदि

मनीषियोंने उद्भिदादिके ऊपर आलोकशक्तिके प्रभाव निर्णयमें भी वैसी ही चेष्टा की थी।

शीलर और वालेष्टनके बाद १८०२ ई०में टोमस विज उड और सर हाम्फ्रे डेभीने फोटोग्राफी विद्याकी उन्नतिके लिये अच्छी आलोचना की। रासायनिक प्रक्रियासे नाइट्रेट आफ सिल्वरके प्रलेप द्वारा प्रस्तुत कागज, चम, कांच या पत्रादिके ऊपर ( sensitive surface ) सूर्यालोकसे आलोकित प्राकृतिक पदार्थोंका पूर्ण चित्र कमरा अबस्कियुरा और सौर अणुवीक्षण (solar microscope) यन्त्रकी सहायतासे वे अङ्कित करनेमें समर्थ हुए थे। चित्र तो खिंच गया पर स्थायी न हो सका। इसके बाद चित्रको पहले पोटास ब्रोमाइडमें डुबा डुबा कर देखा, पर अन्तमें उन्हें हाइपो सल्फाइट सोडा द्वारा पूरी सफलता हुई। इसी समय एक अंगरेजने गैलिक एसिड और नाइट्रेट आफ सिल्वरकी मददसे कागज पर चित्र छापनेका तरीका निकाला। क्रमशः यह क्रिया उन्नति करती गई और सन् १८५० ई०में प्लेट पर चित्र लिये जाने लगे। १८७२ ई०में डा० मैडाक्सने जेलेटीनकी सहायतासे प्लेट बनानेकी प्रथा चलाई। यह प्रथा उत्तरोत्तर उन्नत हो कर अब तक प्रचलित है। अब आर्द्र प्लेटका बहुत कम व्यवहार होता है। प्रायः सब जगह शुष्क प्लेट काममें लाया जाता है।

कमरा सन्दूकके आकारका होता है। इसके आगेकी ओर बीचमें गोल लम्बा चोंगा सा निकला रहता है। उस चोंगेमें एक गोल उन्नतोदर शीशा लगा रहता है। इसी शीशेका नाम लेंस है। दूसरी ओर एक शीशा और एक किवाड़ होता है। यह किवाड़ खटकेसे खुलता और बन्द होता है। कमरेके बीचका भाग भाथीकी तरह होता है जिसे इच्छानुसार घटा बढ़ा सकते हैं। लेंसके सामने एक ढकन होता है जिससे चोंगा बन्द किया जाता है। कमरेके भीतर अंधेरा रहता है और उसमें केवल लेंसकी ओरसे ही प्रकाश आता है। इसके सिवा प्रकाश आनेका और कोई रास्ता नहीं है। जिस वस्तुका प्रतिरूप लेना होता है वह सामने ऐसे स्थान पर होना है जहां उस पर सूर्यका प्रकाश अच्छी तरह पड़ता हो। उसके सम्मुख कुछ दूर पर कमरेका मुंह उसकी ओर करके रखा जाता है। इसके बाद लेंसका ढकन खोल फोटोग्राफर दूसरी ओरके द्वारको खोल सिर पर काला कपड़ा, जिसमें कहींसे प्रकाश न आवे, डाल कर देखता है कि उस वस्तुकी प्रतिकृति ठीक दिखाई देती है या नहीं। इसे फोकस लेना कहते हैं। अनन्तर लेंसके सामनेका ढकन फिर बन्द कर दिया जाता है और दूसरी ओर लकड़ीके बन्द चौखटेमें रखे हुए रासायनिक पदार्थ मिश्रित प्लेटको बड़ी होशियारीसे, जिसमें प्रकाश उसे स्पर्श न करने पाए, लगा देते हैं। फिर लेंसके मुंहको थोड़ी देर तकके लिये खोल देते हैं जिसमें प्लेट पर उस पदार्थकी छाया अंकित हो जाय। ढकन पुनः बन्द कर दिया जाता है और अंकित प्लेटके बड़ी सावधानीसे बन्द चौखटेमें बन्द करके रख देते हैं। इसके बाद उस प्लेटको अंधेरी कोठरीमें ले जा कर लाल लालटेनके प्रकाशमें रासायनिक मिश्रणोंमें कई बार डुबाते हैं। आखिर फिटकिरीके पानीमें डाल कर ठंढे पानीका धार उस पर गिराते हैं। ऐसा करनेसे प्लेट काले रंगका हो जाता है और उस पर पदार्थ अङ्कित दिखाई पड़ने लगता है। अब उस पर रासायनिक पदार्थ लगे हुए कागजके टुकड़ोंको अंधेरी कोठरीके भीतर सदा कर प्रकाश दिखाते और रासायनिक मिश्रणोंमें धोते हैं। इस प्रकार कागज पर प्रतिकृति अंकित हो जाती है। इसीको फोटो कहते हैं।

फोड़ना ( हिं० क्रि० ) १ भग्न करना, कड़ी वस्तुओंको खण्ड खण्ड करना। २ संगमें न रहने देना, साथ छुड़ाना। ३ शरीरमें ऐसा विकार या रोग उत्पन्न करना जिससे स्थान स्थान पर घाव या फोड़े हो जायें। ४ केवल आघात या दबावसे भेद न करना, धर्षण द्वारा डाल कर उस पार निकल जाना। ५ पक्ष छुड़ाना, एक पक्षसे अलग करके दूसरे पक्षमें कर लेना। ६ ऐसी वस्तुओंको आघात और दबावसे विदीर्ण करना जिसके अभ्यन्तर या तो पोला हो अथवा मुलायम या पतली चीज भरी हो। ७ अवयव, जोड़ या वृद्धिके रूपमें प्रकट करना, अंकुर, कनखे, शाखा आदिका निकालना। ८ शाखाके रूपमें अलग हो कर किसी ओर ले जाना। ९ गुप्त बात सहसा प्रकट कर देना, रहस्यको भेद खोलना।

१० मैत्रीसे अलग कर देना, फूट डाल कर अलग करना।

फोड़ा (हि० पु०) एक प्रकारका शोथ या उभार। शरीरमें जहां पर कोई दोष सञ्चित रहता है वहां यह उत्पन्न होता है। इसमें जलन और पीड़ा होती है तथा रक्त सड़ कर पीवके रूपमें हो जाता है। विशेष विवरण व्रणशब्दमें देखो।

फोड़िया (हि० पु०) छोटा फोड़ा, फुनसी।

फोएडालु (स० पु०) आलुकविशेष, आलूकन्द।

फोता (फा० पु०) १ पटुका, कमरबन्द। २ सिरबन्द, पगड़ी। ३ जमीनका लगान, पोत। ४ कोष, थैली। ५ अण्डकोष।

फोतेदार (फा० पु०) १ कोषाध्यक्ष, खजाञ्ची। २ तहसीलदार, रोकड़िया।

फोनोग्राफ—१९वीं शताब्दीमें आविष्कृत वाद्ययन्त्रविशेष। अमेरिकाके युक्तराज्यके अन्तर्गत न्युजार्सी वासी टामस ए एडिसन (Thomas A Edison) नामक एक वैज्ञानिकने १८७७ ई०में पहले पहल इस यन्त्रका आविष्कार किया। उन्होंने बेल (Mr Graham Bell) के टेलिफोन यन्त्रके गोलाकार पटहस्थान (Discs)-का शब्दग्रहण और वितानन शक्तिका लक्ष्य करके स्थिर किया, कि यदि किसी उपायसे वे उस स्थानमें सुरका कम्पन (Vibrations) रख सकें, तो उसकी सहायतासे एक नूतन यन्त्रकी सृष्टि हो सकती है।

इस यन्त्रमें पूर्वके गाए हुए गान, कही हुई बातें और बजाए हुए बाजोंके स्वर आदि चूड़ियोंमें भरे रहते हैं और ज्योंके त्यों सुनाई पड़ते हैं। इस यन्त्रके आकार सन्दूकसा होता है। इसके भीतर चक्कर लगे रहते हैं जो चाबी देनेसे आपसे आप घूमने लगते हैं। इसके मध्यभागमें एक खूंटी या धुरी होती है। उस धुरीकी एक नोक सन्दूकके ऊपर बीचमें निकली रहती है। यन्त्रके दूसरे ओर किनारे पर एक परदा होता है जिसके छोर पर सूई लगी रहती है। इस परदे पर बजाते समय एक चोंगा लगा दिया जाता है।

जिन चूड़ियों (Record) पर गीत राग आदि अङ्कित रहते हैं वे रेकाबीके आकारकी होती हैं। उन पर मध्यसे ले कर परिधि पर्यन्त गई हुई सूक्ष्म रेखाओंकी कुण्डलियां होती हैं। चूड़ियोंमें गीत राग आदि इस प्रकार अङ्कित किये जाते या भरे जाते हैं—एक विशेष प्रकारका यन्त्र होता है। उस नलके एक सिरे पर चोंगा (Horn) और दूसरे पर सूई (Pin) लगी रहती है। गाने, बजाने या बोलनेवाला चोंगेकी ओर बैठ कर गाता, बजाता या बोलता है। उस शब्दसे हवामें लहरियां उत्पन्न हो कर चोंगेके दूसरे सिर पर लगी हुई सूईको सञ्चालित करती हैं। इसी समय चूड़ी घुमाई जाती है और उस पर उच्चारित शब्द, गान, राग या बाजेकी ध्वनिके कम्पचिह्न सूई द्वारा अङ्कित होते जाते हैं। जब फिर उसी प्रकारका शब्द सुनना होता है, तब उसी चूड़ीको फोनोग्राफमें सन्दूकके बीच जो कील निकली रहती है उसीमें लगा देते हैं और किनारेके परदेमें लगी हुई सूई चूड़ीकी रेखा पर बैठा देते हैं। चाबी देनेसे भीतरके चक्कर घूमने लगते हैं। अब चूड़ी कीलके सहारे नाचती है और सूई रेखाओं पर घूमकर चोंगमें उसी प्रकारके वायुतरंग उत्पन्न करती है, जिस प्रकारके चूड़ीमें अङ्कित हुए थे। वे ही वायु तरंग उस यन्त्रमें संयुक्त पुर्जोंको हिलाते हैं जिससे चोंगेमेंसे हो कर चूड़ीमें अङ्कित शब्दों या स्वरोंकी प्रतिध्वनि सुनाई देती है। यह ध्वनि कुछ धीमी होती है और धातुकी झनझनाहट तथा सूईकी खरखराहटके सबबसे कुछ खराब हो जाती है। परन्तु यन्त्रमें ऐसा गुण है, कि यदि कोई गीतादि ग्रहण कालमें उसे शब्दके परिमाणानुसार घुमा सके, तो नोकदार चूड़ी या नुकीली सूई रहनेसे यह निश्चय है, कि उसी शब्दके अनुरूप शब्द उच्चारित होंगे। यदि उस कलको तेजीसे घुमावे, तो स्वर ऊंचा और धीरे धीरे घुमानेसे यह नीचा होता है। फोनोग्राफमें स्वरोंका उच्चारण व्यञ्जनोंकी अपेक्षा अधिक स्पष्ट होता है। व्यञ्जनोंमें स और श का उच्चारण इतना अस्पष्ट होता है, कि उनमें कम प्रभेद ज्ञात पड़ता है।

फोनोटोग्राफ (अ० पु०) एक यन्त्र। इसके द्वारा बोलनेवालेके शब्दोंसे उत्पन्न वायुतरङ्गोंका अङ्कन होता है। इसका आकार एक पीपे सा होता है। पीपेका एक मुंह तो बिलकुल खुला रहता है और दूसरी ओर कुछ यन्त्र लगे रहते हैं। यन्त्रमें एक पतला परदा होता है

जिस पर एक पतली सूई लगी रहती है। इसी सूईसे शब्द द्वारा उत्पन्न वायुतरंगें चूड़ी पर अङ्कित होती हैं। फोनोग्राफ देखो।

फोया (हिं० पु०) रूईके गालेका टुकड़ा, रूईका एक लच्छा।

फोरमैन (अ० पु०) कारखानोंमें कारीगरी और काम करनेवालों का सरदार या जमादार।

फोर्ट विलियम—कलकत्तेके किले मैदानमें अवस्थित प्रसिद्ध अङ्गरेजी दुर्ग। कलकत्ता देखो।

फोर्ट सेण्टजार्ज - मन्द्राजका प्रसिद्ध अङ्गरेजी दुर्ग। मन्द्राज देखो।

फोलियो (अ० पु०) कागजके तख्तेका आधा भाग।

फोहा (हिं० पु०) फाहा देखो।

फोहारा (हिं० पु०) फुहारा देखो।

फौआरा (हिं० पु०) फुहारा देखो।

फौंकना (हिं० क्रि०) डींग मारना, बढ़ बढ़ कर बातें करना।

फौज (अ० स्त्री०) १ सेना, लश्कर। २ झुण्ड, जत्था।

फौजदार (फा० पु०) सेनापति, सेनाका प्रधान।

फौजदारी (फा० स्त्री०) १ लड़ाई झगड़ा, मार पीट। २ वह न्यायालय जहां ऐसे मुकदमोंका निर्णय होता हो जिनमें अपराधीको दण्ड मिलता है, कण्टकशोधन, दण्डनिगम। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें न्यायशासनके दो विभाग दिखाई देते हैं—धर्मस्थीय और कण्टकशोधन। कण्टकशोधन अधिकरणमें आज कलके फौजदारीके मामलोंका विवरण है और धर्मस्थीयमें दीवानीके। स्मृतियोंमें दण्ड और व्यवहार ये दो शब्द मिलते हैं।

फौजी (फा० वि०) सैनिक, फौजसम्बन्धी।

फौत (अ० वि०) नष्ट, मृत।

फौरन (अ० क्रि० वि०) तत्काल, झटपट।

फौलाद (फा० पु०) हथियार बनानेका एक प्रकारका कड़ा और अच्छा लोहा।

फौलादी (फा० वि०) १ फौलादका बना हुआ। २ दृढ़, कठिन, मजबूत। (स्त्री०) ३ बल्लमकी छड़, भालेकी लकड़ी।

फौवारा (हिं० पु०) फुहारा देखो।

फ्याउ (हिं० पु०) शृगाल, गीदड़।

फ्राक (अ० पु०) लम्बी आस्तीनका ढीला ढाला कुरता जिसे प्राय बच्चोंको पहनाते हैं।

फ्रान्स—१ पश्चिम युरोपमें फरासिसियोंकी निवास भूमि। यह एक प्राचीन समृद्धिशाली राज्य है। इसके उत्तर और पश्चिममें इङ्गलिश चानेल और डोभर प्रणाली; पूर्वमें बेल्जियम, जर्मनी, स्विजर्लैण्ड और इटली; दक्षिणमें स्पेन राज्य और पश्चिममें बिस्के उपसागर तथा अटलाण्टिक महासागर है। उत्तर छोड़ कर यह पूर्वांशमें आल्पस, भसजेस और जूरा पर्वतमाला तथा दक्षिणांशमें पिरिनिस पर्वतश्रेणी द्वारा विभक्त है। डेनकार्कसे ले कर पिरानिज तक उत्तर दक्षिणमें ६२० मील लम्बा पूर्व और पश्चिममें ५५० मील चौड़ा है। उत्तर, पश्चिम और दक्षिणके समुद्रोपकूलका परिमाण १५८० मील है। पश्चिम उपकूलमें बहुतसे छोटे छोटे उपसागर हैं। दक्षिणके लियन्स उपसागरोपकूलमें छोटे छोटे ह्रद देखे जाते हैं। उपकूलवर्ती द्वीप बहुत थोड़े हैं और वह भी कोई विशेष घटना समाश्रित नहीं।

पार्वत्यप्रदेश छोड़ कर बाकी सबका समतलक्षेत्र तथा लायर, सन और गारोन आदि नदियोंका अववाहिका देश समतल तथा पवनसानुदेशकी तरह उच्च और निम्न है। बृटिनी, आञ्जु और माल्थानी भूमि पर्वत भी बालुकासे पूर्ण है। जिससे यहां कोई फसल नहीं होती। किन्तु यहांके 'हिद' नामक मैदानमें घास खूब उगती है। लाण्डो, गोरेंदे और आकुर नामक भूमिविभाग घास तथा दलदलसे परिपूर्ण हैं, देखनेमें मरुभूमिके जैसा मालूम पड़ता है। किन्तु बीच बीचमें शस्यक्षेत्र और गोचारणभूमि है। आर्देने, फण्टेनेब्लो, कम्पेनी और ओर्लियन्स विभाग वनराजिसमाकीर्ण है। प्राय समस्त फ्रान्सराज्यका अधिकांश अङ्गलसमाच्छादित और अधिकांश कृषिकार्यके उपयोगी है।

पर्वतमाला।—आल्पस् पवन सागर और विस् विभागमें अवस्थित है। माण्टब्लाङ्क नामक आल्पस् शिखर यहीं पर है। यह स्थान युरोपके मध्य सबसे ऊंचा है। फ्रान्स और स्पेनके बीचमें पिरिनिज पर्वत दण्डायमान है। इसका सर्वोच्च चोटीका नाम मेंदी

है जिसकी ऊँचाई ११९६६ फुट है। अलावा इसके उस पर्वतके दश हजार फुट ऊँचे पर अनेक शिखर फ्रान्सके अन्तर्गत हैं। उत्तरपूर्ववर्त्ती सिभेनिस पर्वतमाला गारन और लायर नदी तक फैली है और उसकी ऊँचाई ६ हजार फुटसे अधिक बतलाई जाती है। जूरा और भरजेस गिरिश्रेणी फ्रान्सकी पूर्वी सीमामें विस्तृत है।

नदी। सिभेनिस और भसजेस पर्वतमालासे सभी नदियां निकल कर फ्रान्सके विस्तीर्ण अववाहिका देशको संगठन करती हैं। सिन्, लायर, गारोन् और रोन् यहां की सबसे बड़ी नदी हैं। सिन् नदी इङ्गलिश चानेलमें, गारोन और लायर अटलाण्टिक महासागरमें तथा रोन् भूमध्यसागरमें गिरती हैं। स्यूम, मोसल, मयार, स्केलाड और लीन उत्तरसागरमें, सोमे, ऊन, अर्ने, मार्ने, आइने, योन और यूरे इङ्गलिश चानेलमें, व्लामेट, सिल्भेन, कूज, मयने, लायर, जार्म दोर्दोग्ने, आरिएज, टार्न और लोत नामक नदी अटलाण्टिक महासागरमें तथा आड, अर्ने, हिराल्ट, मायो, दौंर, इसारे और डरन्स आदि नदियां भूमध्य सागरमें गिरी हैं।

ये सब नदियां खाल द्वारा आपसमें संयोजित हैं। समस्त फ्रान्सके मध्य २०० नदियां ऐसी हैं जिनमें नाव द्वारा आ जा सकते हैं। अलावा इसके ५०० छोटी स्रोतस्विनी फ्रान्स राज्यमें बहती हैं। इस प्रकार फ्रान्स भरमें नदी और खाल ले कर प्रायः ८५०० मील जलपथसे नौका द्वारा माल पत्र ले जा सकते हैं। ग्राद और ल्यु नामक दोनों ह्रद सबसे बड़े हैं और परिमाणमें २६ वर्ग मील हैं।

जलवायु।—फ्रान्सका उत्तरांश प्रायः इङ्गलैण्डके जैसा है, हमेशा वृष्टि हुआ करती है। इस कारण ये सब स्थान गोचारणके विशेष उपयोगी हैं। मध्यभागकी वायु शुष्क है। दक्षिणके ताप प्रचण्ड और वृष्टिके अभावसे कभी कभी धानकी फसल नहीं होती, मर जाती है। पश्चिम उपकूल भागकी वायु जलसिक्त है। यहां सब समय वृष्टि होती है। फ्रान्स राज्यका प्रायः बारह भाग स्थान सुरम्य और स्वास्थ्यप्रद है। उक्त प्रकारके जलसिक्त स्थानोंमें नाना प्रकारके उद्भिद उगते देखे जाते हैं। यूरोपमें और कहीं भी ऐसी विभिन्न फसल और फलादि उत्पन्न नहीं होते। जौ, गेहूं, जै, मटर, उड़द, आलू, बिट (इस विटपालमसे चीनी बनती है), पटसन, गांजा, तमाकू, रेशमके पेड़ और औषध तथा बादाम, कमला नीबू, अंगुर, पिस्ता अनार, डुमर शहतूत आदि सुस्वादु फल बहुतायतसे उत्पन्न होते हैं। वर्गाण्डी, बोर्दो और शाम्पिन नामक स्थानमें शराब बनानेके लिये दाखकी खेती होती है। यह शराब संसार भरमें आदरणीय और सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। जहाज बनाने तथा गृहसज्जादिके उपयोगी काष्ठ यहां बहुत मिलते हैं।

खनिज पदार्थ।—भूगर्भस्थ खनिज पदार्थोंमेंसे लोहा, तांबा, सीसा, चांदी, रसाञ्जन, गन्धक, सोना, कोयला और नमक आदि मिलता है। किन्तु लोहा, नमक और कोयला सभी जगह विद्यमान है, इस कारण ये सब वाणिज्यके एक प्रधान उपकरण हैं। सोना सबसे कम पाया जाता है। मर्मर, स्लेट, अलबाष्टर, ग्रेनाइट, फिष्टोन, लिथोग्राफिक ष्टोन, मिलष्टोन आदि कम मोलके तथा कुछ मूल्यवान् पत्थर भी मिलते हैं। यहां कुल मिला कर प्रायः ५ हजार प्रस्रवण हैं। उनका धातव जल विशेष स्वास्थ्यकर है। पिरिनिज पर्वत पर चार सौ प्रस्रवण हैं जिनका जल पीनेके लिये बहुत दूर दूर देशोंके लोग आते हैं। जनसाधारणकी भलाईके लिये प्रस्रवणके निकट ६० वासस्थान निरूपित हुए हैं।

जीवजन्तु।—सिंह, बाघ और हाथी छोड़ कर यहां सब प्रकारके जंगली जन्तु मिलते हैं। तरह तरहके पक्षी भी देखनेमें आते हैं। मधु संग्रह करनेके लिये मधुमक्खियां पाली जाती हैं। समुद्रके किनारे भिन्न भिन्न प्रकारकी मछलियां पाई जाती हैं। भूमध्यसागरके किनारे कार्मिस (kermes) नामक एक प्रकारका कीड़ा उत्पन्न होता है जिससे सिन्दूर वर्णका रंग प्रस्तुत होता है।

यहांके अधिवासिगण फरासी कहलाते हैं। उनकी भाषा लाटिन मिश्रित है। यूरोपीय सभी भाषाओंमें फरासी भाषा ही राजनीतिकी उपयोगी है।

समस्त फ्रान्सराज्यका भूपरिमाण २०४६०० वर्गमील और जनसंख्या ४ करोड़से ऊपर है। प्रसिद्ध फरासी विप्लवके पहले यह वृहत् भूखण्ड भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें विभक्त था। १७९० ई०के बाद कर्सिका, जेनिभा, नेभय

आदि ले कर फरासी राज्य १३१ विभागोंमें परिणत हुआ। विख्यात जर्मन युद्धके बाद अन्तमें फरासी लोग राज्यके कुछ अंश खो बैठे। अनन्तर फरासी-राज्य ८६ विभागों में ३६२ जिलोंमें ( Arrondissements ) और क्रमशः ३१६८६ उपविभागों ( कमिउन ) में विभक्त हुआ था। जो सब प्राचीन प्रदेश फरासी इतिहासमें वर्णित हुए हैं उनकी एक तालिका नीचे देते हैं।

| प्रदेश। | डिपार्टमेण्टसंख्या। | प्रदेश। | डिपार्टमेण्टसंख्या। |
|---|---|---|---|
| आल्सस १८७१ ई०में जर्मनीके हाथ आया। | २। | गैसकनि | ३। |
| | | गिनि | ६। |
| | | इले डि फ्रान्स | ५। |
| | | लाङ्गुयेडक् | ८। |
| आङ्गुमय और औनिस | २। | लिमोसें | २। |
| आञ्जु | १। | लोरेन १८७१ ई०में जर्मनीके हाथ आया। | ४। |
| आर्टोई | १। | | |
| आर्मिन्यो | १। | | |
| आमार्णे | १। | ल्युने | २। |
| थार्णे और नाभारे | १। | मेन | २। |
| बेरी | २। | मार्के | १। |
| बोर्बोने | १। | निभार्णे | १। |
| बार्गण्डे वा बरगण्डी | ४। | नार्मण्डी | ५। |
| ब्रिटिनी | ५। | ओर्लिने | ३। |
| स्याम्पेन | ४। | पिकार्डी | १। |
| कोम्टेडिफ्रई | १। | पोइटु | ३। |
| डफने | ३। | प्रभेन्स | ३। |
| फ्लण्डर | ३। | रासिलो | १। |
| फ्रान्सेकोम्ट | ३। | सेण्टाङ्ग | १। |

उक्त प्रदेशोंके मध्य राजधानी पारी ( *Paris* ) और लियन्स, मार्सेल्स, बोर्दो, लीले, टुलो, नाण्टे और रायेन आदि महानगरोंमें लाखसे अधिक लोगोंका वास है।

शासनविधि।—फरासी राज्यमें अभी प्रजातन्त्र विधान है। सबकी सम्मतिसे नियुक्त प्रेसिडेण्ट ही यहांके सर्वमय कर्त्ता हैं। राज्यशासनभार उन्हींके हाथ है, किन्तु सात वर्षसे अधिक वे आसन ग्रहण नहीं कर सकते। राजविधि-संस्कारके लिये यहां चेम्बर आव डेपुटिज और सेनेट नामक दो सभा स्थापित हैं। वे ही लोग राज्यके शासनका संकुलन और संस्कार कर सकते हैं। जनताकी सम्मतिके अनुसार इस सभाके सदस्य नियुक्त होते हैं। चेम्बर आव डिपुटीमें ५८२ सदस्य और सेनेटमें ३०० सदस्य निर्वाचित हुआ करते हैं। ३६२ जिलोंसे डिपुटी सभाके सदस्य और उपनिवेशों तथा डिपार्टमेण्टोंसे सेनेटके सभ्य निर्वाचित होते हैं। २५ वर्षके उमरवाले फरासी डिपुटी और ४२ वर्षवाले सेनेटर होनेके योग्य हैं। सेनेट और डिपुटी सभाके प्रेसिडेण्ट भोट द्वारा ही चुने जाते हैं। १८७२ ई०में राजकार्य चलानेके लिये एक और सभा ( Conseil d' Etat ) स्थापित हुई। जातीय महासमिति ( The national Assembly ) और प्रजातन्त्रके प्रतिनिधि द्वारा ही उसके सभ्य नियुक्त होते हैं। विचारविभागके प्रधान मन्त्री ( मिनिष्टर आव जष्टिस , Garde des Sceaux ) उस सभाके सभापतिका पद पानेके योग्य हैं। एतद्भिन्न प्रजातन्त्रके एक सहकारी सभापति ( Vice President ) और ३ विभागीय सभापति ( Sectional President ) हैं।

धर्म।—राजकीय नियमानुसार सभी धर्म समान भावमें रक्षणीय और पालनीय हैं। किन्तु सिर्फ रोमन कैथलिक और प्रोटेष्टण्ट खृष्टान तथा यहूदीगण ही राजकीय वृत्ति पाते हैं। यहां सैकड़े पीछे ९८ रोमन कैथलिक और बाकी प्रोटेष्टण्ट खृष्टान हैं। कैथलिक धर्मके प्रतिष्ठाकालसे यहां ८६ बिशप, १७ आर्कबिशप और ६६ बिशप नियुक्त हैं। लुथारण सम्प्रदायके कार्यको देख रेख करनेके लिये ( General Consistory ) सभा और कैल्भिनिष्टकी स्वतन्त्र सभा पारीनगरमें प्रतिष्ठित है।

शिक्षाविभाग।—फ्रान्सकी शिक्षा-प्रणाली बिलकुल स्वतन्त्र है। गवर्मेण्ट ही शिक्षा विषयमें विशेष पक्षपाती हैं। जिससे प्रजामण्डलीके मध्य शिक्षाका विस्तार हो, इसके लिये शिक्षाविभागके एक मन्त्री ( Minister of Instruction ) नियुक्त रहते हैं। यहां धर्मतत्त्व, व्यवहारशास्त्र, आयुर्वेद, विज्ञान, साहित्य, युद्धविद्या और शिल्पविद्या पढ़नेके लिये स्वतन्त्र राजकीय विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित हैं। राजकोषसे उनका खर्च दिया जाता है।

वाणिज्य।—यहांसे जवाहरातके अलङ्कार, युद्धास्त्र, कागजका शिल्प, यान निर्माण, मट्टी, काच और चिनेमिट्टीका बरतन, संगीतयन्त्र, चित्रपुत्तली, रासायनिक द्रव्य,

तेल, साबुन, चिट चीनी, रंग, कागज मुद्रायन्त्र, रेशम, पशम, कपास, लिनेन, कार्पेट, शाल और फीता प्रभृति द्रव्य वाणिज्यके लिये बहुतायतसे प्रस्तुत होते हैं। लियन्स, टूर, पारी, निसमे, अभिन्नो, आनोने, सेण्ट एटिन आदि शहरोंमें रेशमका बढ़िया वस्त्र और फीता बनता है। रायेन, सेण्ट, कोण्सटिन, ट्रेय, लिले आदि शहरोंमें सूती कपड़ेका विस्तृत कारबार है। राइमस, लामर, आमेन, पारी आदि नगरोंमें पशमीने, बनात और कार्पेट तथा ल्यामर, लिमोगे और पारी आदि नगरोंमें काच तथा पोर्सिलेनके बरतन तैयार होते हैं।

बोर्दो, मार्सेल, नैण्ट, हाभर दि ग्रेस, कैले, बौलो, सेण्टमालो, ला ओरियेण्ट, बयने, डनराके, डिपे, रोकेल आदि बन्दर ही प्रधान वाणिज्यस्थान हैं। शराब बनाना ही यहांका प्रधान व्यवसाय है। जगत्‌में सब जगह फरासी मद्यकी विशेष सुख्याति है।

उपनिवेश। आफ्रिका महादेशमें—अलजिरिया, सेनिगाल, दमोहीपपुञ्ज, सेण्टमेरी, नोसी बे और मयोटे। एशियामें—पूर्व भारतीय अधिकार और कोचीन चीन। अमेरिकामें—गायो, गौआडालोप मार्टिनिक, सेण्टपियारे और मिकुइलन। पलिनेशियामें—न्यु कालिडोनिया, मार्कासस और टपन्टी द्वीपपुञ्ज हैं।

फरासियोंके जो सब वैदेशिक अधिकार हैं, उनका क्षेत्रफल प्राय ४६६८०७ वर्गमील है। १८४८ ई०की २४वीं फरवरीको गवर्मेण्ट डिक्रीके अनुसार उपनिवेशोंसे दास विक्रय प्रथा उठ गई।

रेलवे और टेलिग्राफ।—वाणिज्यकी सुविधाके लिये फ्रान्सराज्यमें प्राय. ३१ हजार मील रेलपथ और २५ हजार मील टेलिग्रामको तार फैलाया गया है।

इतिहास।—रोमक अधिकारमें फरासी राज्य गाल (Gaul) नामसे प्रसिद्ध था। जगद्विख्यात रोमकसेनापति जुलियस सीजरने इस देशमें अपना शासन फैलाया था। किन्तु उस समय गाल राज्यमें कोई उन्नति न दिखाई दी। इङ्गलैण्डकी तरह यह भी एक तरहसे हीन प्रभ हो उठा। रोमक जातिका गौरव रवि जब अस्त हुआ, तब धीरे धीरे युरोपके विभिन्न राजाओंने अपना अपना सिर उठाया। मेरोभिनजियन राजवंशके प्रतिष्ठाता मेरोभीके पौत्र क्लोभिसके राज्यकालमें ही फ्रान्सका प्रकृत इतिहास लिपिबद्ध हुआ। ४८१ ई०में क्लोभिस राज गद्दी पर बैठे। इस समय भिसिगथ, बर्गण्डियन, रोमक और जर्मन आदि जातियां गालराज्यका अधिकार लेनेके लिये आपसमें झगड़ने लगीं। परस्परके विरोधसे शत्रुदल बलहीन हो रहा है, यह देख कर क्लोभिसने ४८६ ई०में सोइसोंके युद्धमें रोमकोंको परास्त किया। ४९६ ई०में टालबियाक (Tolbiac)के युद्धमें असीम वीरता दिखा कर उन्होंने जर्मनोंको वशीभूत कर लिया था। थोड़ेही विजयके बाद उन्होंने भिसिगथजातिको सेप्टिमानिया प्रदेशमें अवरुद्ध रखा। इसके बाद उनके वीरत्व प्रभावसे बर्गण्डीवासी वीर्यहीन हो पड़े। आखिर ५३४ ई०में उन्हींके पुत्रसे पराजित हो वे लोग मेरोभिनजियनका आश्रय लेनेको बाध्य हुए। क्लोभिसकी मृत्युके बाद तदधिकृत राज्य थियरी, क्लोडोमीर, चाइल्डबार्ट और क्लोटेयर नामक उनके चार पुत्रोंमें बँट गये। किन्तु ५५८ ई०में क्लोटेयरके उद्यमसे पैतृक राज्य एक साथ मिला दिये गये। पीछे आपसमें अन्त विवाद हो जानेसे उनके एक दलने अष्ट्रेलिया, न्युष्ट्रिया, बर्गण्डी और आकुइटनमें जा कर स्वतन्त्र राज्य बसाया। उक्त चार राज्योंमेंसे प्रथम दो विशेष बलशाली हो गये थे। ६८७ ई०में अष्ट्रेलियाने न्युष्ट्रियाका कर्तृत्व ग्रहण किया और दोनोंके मिल जानेसे एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्रकी सृष्टि हुई। हरिएस्टाल ड युक्की उपाधि धारण कर इन प्रदेशोंका शासन करते थे। धीरे धीरे वे ही लोग न्युष्ट्रियन राजवंशके सर्वमय कर्ता हो उठे। बर्गण्डी राज गण उनसे पराभूत हुए थे। आकुइटेन राज्य मूर आतिसे लूट जानेके बाद ७३२ ई०में चार्ल्स मर्टेल कर्तृक बधीनतापाशसे युक्त हुआ। इसके २० वर्ष बाद मेरोभिनजियन राजवंशके शेष और कार्लभिन जियन वंशके १म राजा ३य चाइल्डरिकको राज्यच्युत करके पेपिन दि ग्रेस राज्य पर अधिकार किया। पिपिने अपने बाहुबलसे ब्रिटिनी छोड़ कर और सारे फ्रान्स पर अपना आधिपत्य फैला लिया था। इसी तक उनका धाक जम गई थी। उन्होंने लम्बार्डराज आइस्टल्फको पोप ष्टिफेनकी प्रधानता स्वीकार करनेको बाध्य किया।

थे स्वयं पोपको एक छोटा राज्य दान कर गये थे।

पेपिनकी मृत्युके बाद उनके लड़के शार्लमेन राजगद्दी पर बैठे। उन्होंने स्पेन, इटली, सैक्सनी, जर्मनी और बवेरिया आदि राज्योंको जीत कर ८०० ई०में यूरोप खण्डमें एक पश्चिम-साम्राज्य (Empire of the West) बसाया। इस साम्राज्यकी स्थिति सदा एक सी न रही। ८४३ ई०में यह साम्राज्य परस्पर विरुद्धभावापन्न राजाओंके विग्रहसे फ्रान्स, जर्मनी और इटली राज्यमें विभक्त हो गया। राजमुकुट इटली और जर्मनीके कार्लोभिनजियन राजवंशके ऊपर रखा गया। इसके बाद राज्यशासनका भार कुछ समय तक विभिन्न देशीय सामन्तराजाओंके साथ और पीछे जर्मनोंके शासनाधीन रहा।

८४३ ई०से ही फ्रान्सराज्यमें चार्ल्स मार्टेलवंशकी अवनतिका सूत्रपात हुआ। राज्यपरिचालनके लिये फरासी राज्य क्रमशः सामन्त राजाओंके मध्य विभक्त हुआ। ९८७ ई०में कार्लोभिनजियन राजाका प्रभाव नष्ट हो जानेसे युडे नामक किसी सरदारने राज्यसिंहासन पर अधिकार किया। ८९८ और ९३६ ई०में कार्लोभिनजियन राजवंशधरोंको फिरसे दो बार सिंहासन पर प्रतिष्ठित करना पड़ा। किन्तु ये लोग राजदण्डरक्षामें बिलकुल असमर्थ थे। फलतः ९८७ ई०में कैपेट वंशीय राजाओंने फरासी सिंहासन पर गोटी जमाई। ये सब राजगण अपने प्रचण्ड प्रतापसे बहुकाल तक सुश्रृङ्खला से राज्यशासन करनेमें, मन्त्रिसभा और शासन समिति के स्थापनमें तथा क्रुजेड नामक धर्मयुद्धमें सहायता आदि कार्योंमें, अपने प्रभावको अप्रतिहत रखनेमें तथा धन गौरवकी वृद्धि करनेमें समर्थ हुए थे।

कैपेट राजाओंके अधिकारकालमें ११०८से १२२६ ई०के मध्य नामण्डी, अञ्ज, मेन और पोइटू आदि, प्रदेशोंका अङ्गरेजोंके हाथसे पुनरुद्धार और इनकी साथ फ्रान्सका अन्तर्निविष्ट हुआ। राजा ९म लुइस पुत्रके नाम पर राज्यशासन किया था, इस कारण लोग उन्हें साधु (Saint) कहा करते थे। अपने राज्यकालमें (१२२६-१२७० ई०के मध्य) कोई राज्य प्राप्त नहीं करने पर भी उन्होंने सैन्यराज्य बढ़ा कर राजशक्तिका प्रभाव बहुत फैला लिया था। १२७०से १२८४ ई० तक ३य फिलिपके शासनकालमें लाङ्गोपडक फरासीराजके अधीन था। उनके बाद सुन्दर ४र्थ फिलिप ने ८४३ ई०में जर्मन सम्राट् लोथेयरको प्रदत्त राज्योंका पुनरुद्धार करनेकी चेष्टा की। उन्होंने पोपकी क्षमता बहुत कुछ घटा दी थी। वे निज प्रतिष्ठित एस्टेट्स् जेनरल सभाके सभ्योंको प्रतिश्रुत करके पार्लियामेण्ट महासभाकी स्थापना कर गये। उनके पुत्रोंके समय १३१४-१३२८ ई०के मध्य सामन्त विद्रोह वह्नि धधक उठी। राजपुत्रोंने रिक्तं अविमृष्ट हो उसमें साथ दिया। भलोइ वंशने भी उनका पदानुसरण किया। इस विग्रह तरङ्गमें उन्मत्त फरासियोंने १३३७ ई०में इङ्गलैण्डके साथ युद्ध घोषणा कर दी। यह युद्ध प्रायः सौ वर्ष (Hundred years war) तक चलता रहा था।

१३४६ ई०में फिलिप डि भलोई (Philip de Valois) कर्त्तृक क्रेसी युद्धमें और २य जानके राजत्वमें पोइटियाके युद्धमें अङ्गरेज लोग पराभूत हुए। १३६४-१३८० ई०के मध्य चार्ल्सने साम्राज्य पूर्ववत् बहुत कुछ पलटा लिया था। पीछे ५म चार्ल्सके राजत्व, ६ठे चार्ल्सके उन्मादरोग, स्वार्थान्वेषी राजपुत्रोंके आत्मविच्छेद, बर्गण्डी और गास्कन राजवंशके परस्पर विरोधसे फ्रान्सराज्य चौपट हो गया। १४१५ ई०में एजिनकोर्टके युद्धमें जयी हो कर अङ्गरेजोंने फ्रान्सके समुद्रोपकूलवर्त्ती प्रदेशों पर अधिकार किया। अब फरासीगण धीरे धीरे तेजोहीन होते जा रहे थे। इसी समय १४२९ ई०में आर्क निवासी जोअन नामक एक फरासी रमणीके असाधारण शौर्यसाहससे उत्साहित हो फरासियोंने अङ्गरेजोंको अच्छी तरह पराभूत किया जिससे फरासी राज्यका मानचित्र एकदम बदल गया। राजा ७वें चार्ल्स राइम नगरमें फरासी सिंहासन पर अधिष्ठित हुए। फरासी सेनाके निकट उपर्युपरि कई एक लड़ाइयोंमें पराजित हो अङ्गरेज लोग १४५३ ई०में फ्रान्स छोड़ देने को बाध्य हुए।

११वें लुइने राज्यारोहण करके सामन्तोंको दमन करनेमें सफलता प्राप्त की और १४६१-१४८३ ई०के

मध्य बहुतों राज्य जीत कर अपने अधिकारमें कर लिया। राजा ८ वें चार्ल्सकी अमलदारीमें फरासी सेना इटलि युद्धमें उलझी हुई थी। तत्परवर्ती राजा १२ वें लुई उक्त युद्धोंमें लिप्त थे, इस कारण फरासी बल बहुत कुछ नष्ट हो गया था। १५१५ ई०को १म फ्रान्सिसने मरीग्नानोके युद्धमें सुईस जातिको परास्त किया। किन्तु वे १५२५ ई०में सम्राट् ५म चार्ल्स अस स्य सेनाके सामने ठहर न सके और पाभियाके युद्धमें पराजित तथा बन्दी हुए। २य हेनरीके शासनकालमें १५६२ १५८६ ई०को हुगेनट और कैथलिकोंका धर्मयुद्ध छिड़ा। इस युद्धमें फरासी राज्य ध्वंस और राजकोष बिलकुल खाली हो गया। १५८६ ई०में ३य हेनरीकी मृत्युके साथ साथ भलोई वंशका लोप हुआ। इसके बाद बोर्बों वंशीय ४र्थ हेनरी सिंहासन पर बैठे। उन्हींके यत्नसे फ्रान्स और नाभारे राज्य एक साथ मिलाया गया। उन्होंने बड़े उद्यमसे गृहविवाद (Civil wars) दूर कर राज्यके एक महत् अभावको पूरा किया। इस आत्मविवादसे राज्यकी महती क्षति हुई थी, उसका संशोधन करनेके लिये उन्होंने विशेष कष्ट स्वीकार किया था। इस दारुण विप्लव और संघर्षके बाद फरासीसी राज्यमें तमाम पूर्ण शान्ति विराजने लगी। १३वें लुईके अधिकारमें (१६१० १६४३ ई०) कार्डिनल रिचेलु अवशिष्ट सामन्तकोंकी क्षमता खर्व करके फ्रान्समें पूर्ण राजतन्त्र (Absolute monarchy) स्थापन कर गये। ३० वर्षके युद्ध (The Thirty years, war) बाद १६४८ ई०में वेष्ट फालियर और पीछे १६५९ ई०में पिरिनिज़की सन्धिके बाद फ्रान्सने यूरोप महादेश में ऊंचा स्थान पाया। उस समय उसका मुकाबला करनेकी एक भी शक्ति नजर नहीं आती थी। उसी साल निमेगे और रायसोयिकमें जो सन्धि हुई उसमें फ्रान्सकी कोई विशेष स्वार्थहानि न हुई। किन्तु स्पेन देशके राज्यारोहणसम्बन्ध युद्ध (Wars of the Spanish Succession) के बाद इच्छा नहीं रहते हुए भी फरासीराजको १७१३ ई०में युट्रेक्टके सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ा था।

१५ वें लुईके शासनकालमें (१७१५ १७७४ ई०में) कर्सिका और लोरेन प्रदेश फ्रान्सके अधिकारभुक्त हुआ। किन्तु अष्ट्रीया युद्धमें पराजित हो जानेसे फरासी अधिकृत कुछ उपनिवेश उनके हाथसे जाते रहे। इस समय फरासी साहित्यकी विशेष उन्नति देखी गई। यूरोपकी समस्त अदालतोंमें फरासी भाषाका ही प्रचार हुआ। स्वाधीनता-प्रयासी अमेरिकन जब इङ्गलैण्डकी अधीनता का उच्छेद करने अग्रसर हुए, तब फरासीराज १६वें लुईने उनकी सहायतामें सेना भेजी थी। इस समय १७८६ ई०में फरासी अन्तर्विप्लव (The French Revolution) उपस्थित हुआ। प्रजावृन्दके साथ राजकीय दलके घोर संघर्षसे फरासी राज्य छार खार हो गया। राजहत्या, नरहत्या आदि बीभत्स व्यापार धड़ाधड़ चलने लगे। यहां तक, कि असंख्य फरासी रमणियां भी अस्त्र शस्त्रसे परिवृत हो राजरानीकी हत्या करनेकी कामनासे भार्सायल्स नगरमें उतर पड़ीं और राजप्रासाद पर चढ़ाई कर दी। वहांके रक्षिदल उन रमणियोंके हाथसे यमपुर भेजे गये। राजरानीको पूर्वाह्नमें इसकी खबर लगते ही प्राण ले कर भाग चले। यदि वे नहीं भागते, तो कभी भी उन ललनाओंके हाथसे निस्तार नहीं पा सकते थे। धीरे धीरे इस राष्ट्रविप्लवने भीषणसे भीषणतर मूर्त्ति धारण कर ली। १६ वें लुई तथा कितने राजपुत्र और राजपुरुष यमपुर भेजे गये थे, उसकी शुमार नहीं। इसी समय अर्मन और प्रुसियाराजकी मिलित सेनाने फ्रान्स पर आक्रमण कर दिया, किन्तु रणोन्मत्त फरासी सैनिकोंके सामने वे अधिक देर तक ठहर न सके। अनन्तर पुरातन राजतन्त्र और राजवंशका उच्छेद करके फरासी राज्यमें १७९२ १८०४ ई० तक प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। इसी समय महावीर नेपोलियनका अभ्युदय देखा गया। इस बालक वीरकी वीरता देख कर प्रजाको पहलेसे ही उनके प्रति आस्था हो गई थी। राजा और राजपरिवारवर्गकी चेष्टासे प्रजाका सत्त्व नष्ट होते देख उन्होंने सबके सामने दो एक ओजस्विनी वक्तृता दी। इस राजद्रोहिताका फल उन्हें हाथों हाथ मिल गया था, पर प्रजातन्त्रके बाद वे फरासी सम्राट् हो कर इस अपमानका बदला चुकानेमें बाज नहीं आये थे। १८०४ ई०में फरासी सम्राट् हो कर मेरेंगियन वीरदर्प और अमितविक्रमसे रूस, अर्मनी आदि राज्य जीत कर एक विस्तृत फरासी साम्राज्य संस्थापन करनेमें समर्थ हुए थे। १८०५ ई०का अष्ट्रालिट्ज भीषण

युद्ध उनके जीवनकी अद्भुत कीर्ति है। युद्धविग्रहमें लिप्त रह कर नेपोलियनने राजकोष खाली कर दिया था। इस कारण सेना मण्डली और मन्त्रि सभा क्रमशः उनके ऊपर वीतश्रद्ध हो रही थी। मन्त्रिदलके अनुरोधसे उन्होंने १८१४ ई०की १४वीं अप्रिलको सिंहासनका परित्याग कर एल्बा द्वीपमें आश्रय लिया। इसी समय बोर्बोवंशीय १८वें लुईमें मन्त्रिसभाके अनुरोध से राजसिंहासन पर बैठे। किन्तु इस समय भी नेपोलियनके हृदयसे फ्रान्सकी आशा दूर नहीं हुई थी। एक वर्षके भीतर ही वे पुनः फ्रान्स पर चढ़ आये। राजधानीकी ओर बढ़ते देख उद्ग्रीव सेनादलने उनका साथ दिया। सेना ले कर उन्होंने प्रूसियाराजके साथ लड़ाई ठान ली। लिग्नीके युद्धमें प्रूसियाराज १६वीं जूनको परास्त हुए। किन्तु वेलिङ्गटनप्रमुख विपक्ष सेनाने उन पर १६वीं जूनको वाटरलू क्षेत्रमें चढ़ाई कर दी। शत्रुवाहिनीके सामने वे ठहर न सके और राजधानीकी ओर लौट जानेको बाध्य हुए। मन्त्रियोंके अनुरोधसे उन्होंने पुनः अपने पुत्रके लिये राज्यका परित्याग किया। इस बार भी निकृष्ट फरासी मन्त्रिसभा उनके साथ शठता करनेसे बाज नहीं आई। उनके पुत्रको राजसिंहासन न मिल कर पुनः बोर्बोवंशको ही मिला। शत्रुके हाथ मृत्यु या अपमानित होनेके भयसे उन्होंने जीवनदान मांगा था, किन्तु नृशंस फरासी मन्त्रिदलने उनकी बात पर कुछ भी कान न दिया। धोखा दे कर उन्होंने जगत्के अद्वितीय घोर नेपोलियन वीरको शत्रु अंगरेजके हाथ समर्पण किया। अंगरेजराजने भी उन्हें सेण्टहेलेना द्वीपमें ले जा कर कैद रखा। जो नेपोलियन फरासी जातिकी उन्नतिके आदर्श थे, उनके प्रति ऐसा कठोर व्यवहार ही फरासी जातिके अधःपतनका कारण हुआ।

नेपोलियन देखो।

१८वें लुईकी मृत्युके बाद १८२४ ई०में १०म चार्ल्स राजा हुए। १८३० ई० तक राज्य करनेके बाद उसी वंशकी अन्यतम शाखाके य शयर लुई फिलिपे फरासी जातिके सिंहासन पर बैठे। १८४८ ई०को २४वीं फरवरीको फरासी राज्यमें फिरसे राष्ट्रविप्लव खड़ा हुआ तथा इसके साथ साथ राजतन्त्रका अवसान और प्रजातन्त्रका स्थापना हुई। १८५२ ई०में प्रजातन्त्रका विलय होनेसे फरासी साम्राज्य बोनापार्टी वंशके अधिकारमें आया। ३य नेपोलियन फरासीसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। १८७० ई०में होहेन जोलारण राजपुत्र ल्युपोल्डके मस्तक पर जब स्पेनराज मुकुट पहनाया गया, तब प्रूसिया और फ्रान्सके मध्य विवाद खड़ा हुआ। उसी सालकी १६वीं जुलाईको सम्राट् नेपोलियनने युद्ध घोषणा कर दी। इस अविमृश्यकारिताके दोषसे फ्रान्सका अदृष्टाकाश क्रमशः मेघाच्छन्न हो गया। समग्र जर्मन शक्तिके समरमें एक एक करके फरासीसेनादल क्षय होने लगा। सेडान-युद्धमें नेपोलियन स्वयं बन्दी हुए और विख्यात सेनापति मार्शल बजेनने प्राय १ लाख ७३ हजार फरासी-सेना ले कर मेट्जे नगरमें जर्मनके हाथ आत्मसमर्पण किया।

मार्शल मैकमहोन जनरल त्रिस्सी आदि वीरोंके प्राणपणसे युद्ध करने पर भी जयोद्दृप्त जर्मनसेनाने पारी नगरमें घेरा डाला। साम्राज्ञी युजिन इस समय राज्यकी सर्वमयी कर्त्ता थीं, जर्मनसेनाके आगमन पर वे भाग गईं। १८७१ ई०में फरासी गवर्मेण्ट और जर्मन सम्राट्के बीच सन्धि स्थापित हुई। उस सन्धिके अनुसार फरासीगण जर्मन सम्राट्को एल्सस और लोरेन प्रदेश तथा युद्धव्ययके क्षतिपूरणस्वरूप २० करोड़ पौंड मुद्रा देनेको बाध्य हुए। १८७१ ई०में ही फ्रान्समें तीसरी बार प्रजातन्त्रका सूत्रपात हुआ। जातीय समिति (National Assembly)-ने जगद्विख्यात ऐतिहासिक थियर्स (Thiers)-को तृतीय प्रजातन्त्रके प्रधान कर्मकर्त्ता (Chief of the Executive Power of French Republic) निर्वाचित किया। इस समय कोमउनों (Commune) का विद्रोहानल धधक उठा। किन्तु थोड़े ही समयके अन्दर जातीय सैन्यदलने बड़ी बहादुरीसे उसे शान्त कर दिया। १८७१ ई०के अगस्त मासमें थियर्स प्रजातन्त्रके प्रेसिडेण्ट या सभापति बनाये गये। १८७३ ई०में ३य नेपोलियनकी मृत्यु हुई। इसी साल थियर्सने पदत्याग किया। पीछे मार्शल मैक महोन (Marshal Macmahon) प्रेसिडेण्ट हुए। उनके बाद जुल्स ग्रेविने सभापतिका पद सुशोभित किया। इनके समयमें जिन्होंने प्रधान मन्त्रीका कार्य किया था उनमेंसे गैम्बेटा (Gambetta) एक थे।

आफ्रिकाके फाशोदा स्थानमें पराजित होनेसे फरासियोंकी विशेष क्षति हुई थी तथा चीनदेशके बक्सर विद्रोह और गुप्त हत्याका प्रतिशोध लेनेके लिये इन्हों ने भी प्रधान नेतृत्व ग्रहण किया था।

१९१४ ई०के आगस्तमासमें जर्मन महासमर आरम्भ हुआ। उस समय फरासी प्रजातन्त्रके सभापति थे मसियों पँयकारे ( Poincare ) उनके पूर्वतन राष्ट्रपति मसियों फैलियरके समयमें फ्रान्सके मध्य इस प्रकार एक महायुद्धका पूर्वाभास दिखाई दिया था। जर्मनी और अष्ट्रिया सम्मिलित शक्तिके विरुद्ध इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और रूसियाने युद्ध घोषणा कर दी। इस युद्ध में जर्मन सेना द्वारा फ्रान्सकी विशेषतः पारिनगरको महती क्षति हुई थी। १९१८ ई०की सन्धिमें मित्रशक्ति वर्गका जय घोषित हुई। भर्साई शान्तिकी शर्तके अनुसार जर्मनीने फ्रान्सको आल्सेस लोरेन प्रदेश लौटा दिया। फ्रान्सने १९१९ ई०के जाति सङ्घ ( League of Nation ) में योगदान दिया है।

१९१९ ई०के अप्रिल मासमें फ्रान्समें प्रबल श्रमिक विद्रोह आरम्भ हुआ था। खाद्यद्रव्यकी मूल्यवृद्धि, श्रमिकोंकी दैनिक कार्य, करवृद्धि, स्थलविशेषमें श्रमिकों का वेतनह्रास और रूसियोंके साथ फ्रान्सकी युद्धघोषणा के सम्बन्धमें अमूलक जनरव-यही सब उक्त विद्रोहके प्रधान कारण थे।

१९१९-२० ई०के निर्वाचनमें मँसियो डेसनेल (M Deschanel ) प्रजातन्त्रके सभापति हुए और मिलेरां ( Millerand ) उनके पूर्ववर्ती प्रधान मन्त्री क्लिमेनसो ( Clemenceau ) की जगह नियुक्त हुए। इसके कुछ समय बाद ही डेसनेल संयोगवशतः चलती गाड़ीसे गिर पड़े जिनसे इन्हें गहरी चोट लगी थी। इस कारण वे पदत्याग करनेको बाध्य हुए। उनकी जगह पर मिलेरां राष्ट्रपति बनाये गये।

पारी ( पेरिस ) नगर इस राज्यकी राजधानी है। जुलियस सिजरने इस नगरका लुटेसिया नामसे उल्लेख किया है। उस समय यह नगर मट्टीके घरोंसे आवृत था। ४थी शताब्दीमें 'पारिसियाई' नामक केल्टिक जातिके नामसे इस स्थानका पारिसिया नाम पड़ा। ६ठी शताब्दीके प्रारम्भमें यह नगर राजधानीमें परिणत हुआ। पीछे १०वीं शताब्दीमें ह्यूकैपेटने यहां फरासी राजतन्त्रकी राजधानी बसाई थी। १५वीं शताब्दीमें युद्ध, दुर्भिक्ष, महामारी आदिसे यह नगर हतश्री हो गया। पीछे ४र्थ हेनरी, १३वें और १४वें लुईके शासनकालमें यह नगर नाना अट्टालिकाओंसे सुशोभित और आयतनमें बढ़ा था। विख्यात वीर नेपोलियन बोनापार्टके अधिकार में तथा लुईके यत्नसे इस राजधानीने अपूर्व श्री धारण की। जो कुछ बाकी बचा, ३य नेपोलियन और बेरन हसमैनने उसे पूरा किया। इस समय राजकीय अट्टालिका, उद्यान, सेतु, जल प्रणाली और दुर्गके पुनर्निर्माण में प्राय करोड़ पौंड मुद्रा खर्च हुई थी। पारी नगरीने सम्पूर्ण नूतन भावमें सुगठित हो कर वर्त्तमान आकार धारण किया।

१८७० ई०में जर्मनी सेनाने राजधानीमें घेरा डाला और परवर्तीकालमें कमिउनोंके अत्याचारसे पारी नगरी की महती क्षति हुई।

१८८० ई०में यहांके प्रजातन्त्र मन्दिरमें ( Place de la Republique) एक ७० फुट ऊंचा अनुशासन स्थापित हुआ था। जगत्का सर्वश्रेष्ठ और सर्वापेक्षा वृहत् पुस्तकालय इस नगरमें विराजित है। पुस्तकालय देखो।

१९०० ई०में पारी राजधानीमें एक जगत् प्रसिद्ध प्रदर्शनी अनुष्ठित हुई। इसके पहले असाधारण परिश्रम और प्रचुर अर्थ व्यय करके ऐसी शिल्पप्रदर्शनी और किसी भी देशमें सङ्घटित नहीं हुई। वर्त्तमान शताब्दीमें यह फरासी जातिकी गौरव परिचायक है।

फ्रान्सीसी (वि०) १ फ्रान्स देशका, फ्रान्स देशमें उत्पन्न। २ फ्रांसदेशमें रहनेवाला, फ्रांसदेशवासी।

फ्रिस्केट (अं० स्त्री०) लोहेकी चद्दरका बना हुआ चौखटा। यह हाथसे चलाए जानेवाले प्रेसके ढांचेमें जड़ा रहता है। छापनेके समय कागजके तख्तेको ढांचे पर रख कर इसी चौखटेसे ऊपरसे बन्द कर देते हैं। पीछे ढांचेको गिरा कर प्रेसमें दबाया जाता है। कागजके तख्ते पर उन उन जगहों पर जो फ्रिस्केटके छेदसे खुली रहती हैं मैटर छप जाता है और शेष कोरा बचे रहनेसे सादा रहता है।

फ्री (अ० वि०) १ स्वतन्त्र जिस पर किसीका दाब न हो। २ कर या महसूलसे मुक्त।

फ्रीट्रेड (अ० पु०) वह वाणिज्य जिसमें मालके आने जाने पर किसी प्रकारका कर या महसूल न लिया जाय।

फ्रीमेसन (अ० पु०) फ्रीमेसनरी नामके गुप्त संघका सभ्य।

फ्रीमेसनरी (अ० स्त्री०) एक प्रकारका गुप्त संघ या सभा। इसकी शाखा प्रशाखाएँ यूरोप, अमेरिका तथा उन सब स्थानोंमें हैं जहां यूरोपियन हैं। इस सभाका उद्देश्य है समाजकी रक्षा करनेवाले सत्य, दान, औदार्य, भ्रातृभाव आदिका प्रचार। फ्रीमेसनोंकी सभाएँ गुप्त हुआ करती हैं और उनके बीच कुछ ऐसे संकेत होते हैं जिनसे वे अपने संघके अनुयायियोंको पहचान लेते हैं। ये संकेत कोनिया, परकार आदि राजगीरोंके कुछ औजारके चिह्न हैं। पुराकालमें यूरोपमें उन कारीगरों या राजगीरोंकी इसी नामकी एक संस्था थी जो बड़े बड़े गिरजे बनाया करती थी। इन्हीं संकेतोंके कारण जो असली कारीगर होते थे वे ही भरती किये जाते थे। इसी आदर्श पर सन् १७१७ ई०में फ्रीमेसन संस्थाएँ स्थापित हुईं जिनका उद्देश्य अधिक व्यापक रखा गया।

फ्रेंच (अ० वि०) फ्रांस देशका।

फ्रेंचपेपर (अ० पु०) एक प्रकारका कागज जो हलका पतला और चिकना होता है।

फ्रेम (अ० पु०) चौखटा।

फ्लाईब्वाय (अ० पु०) प्रेसमें काम करनेवाला एक लड़का। इसका काम है प्रेस परसे छपे हुए कागजको जल्दीसे झपट कर उतारना और उन पर आँख दौड़ा कर छपाईकी त्रुटिकी सूचना प्रेसमैनको देना।

फ्लूट (अ० पु०) फूँक कर बजानेका एक अंगरेजी बाजा जो बंसीकी तरह होता है।

# ब

ब—हिन्दीका तेईसवाँ व्यञ्जन और पवर्गका तीसरा वर्ण। यह ओष्ठ्यवर्ण है और दोनों होठोंके मिलानेसे इसका उच्चारण होता है। इसलिये इसे स्पर्श वर्ण कहते हैं। यह अल्पप्राण है और इसके उच्चारणमें संवार, नाद और घोष नामक बाह्य प्रयत्न होते हैं। इस वर्णका लिखने का प्रकार यों है,—पहले शून्यके आकारमें रेखा करनी होगी। पीछे उसमें मात्रा खींच देनेसे यह वर्ण बनता है। यह त्रिकोणरूपिणी रेखा ब्रह्मा, विष्णु और शिवस्वरूपिणी तथा परम मात्रा शक्ति है।

वर्णोद्धारतन्त्रके मतसे इसका ध्यान—

"नीलवर्णा त्रिनयना नीलाम्बरधरा पराम्।
नागहारोज्ज्वला देवीं द्विभुजा पद्मलोचनां॥"

इस मन्त्रसे ध्यान करके दस बार बकारका जप करना होता है।

यह बकार चतुर्वर्गप्रदायक, शरच्चन्द्रसदृश, पञ्चदेवमय, पञ्चप्राणात्मक और त्रिबिन्दुसहित है। यही बकारका स्वरूप है।

इसके वाचक शब्द ये सब हैं, वनी, भूधर, मार्ग, पत्री, लोचनप्रिया, प्रचेतस्, कलस, पक्षी, स्थलगण्ड, कपर्दिनी, पृष्ठवंश, शिखिवाह, युगन्धर, मुखबिन्दु, बली, घण्टा, योद्धा, त्रिलोचनप्रिय, क्लेदिनी, तापिनी, भूमि, सुगन्धि, नियलिप्रिय, सुरभि, मुखविष्णु, संहार, वसुधाधिप, षष्ठापुर, चपेटा, मोदक, गगन, पति, पूर्वाषाढ़ा, मध्यलिङ्ग, शनि, कुम्भ, तृतीयक (नाना तन्त्रशास्त्र)

ब (सं० पु०) [illegible]। १ वरुण। २ सिन्धु। ३ भग। ४ तोय, जल। ५ गत। ६ गन्ध। ७ तन्तुसन्तान। ८ वपन। ९ कुम्भ। इसके साङ्केतिक नाम सुगन्धार, सुरभि, मुखविष्णु, संहार, वसुधाधिप, भूधर, स्थलगण्ड हैं। (वर्णाभिधानकोष बीजाभि०)

बंक (हिं० वि०) १ टेढ़ा, तिरछा। २ पुरुषार्थी, विक्रमशाली। ३ दुर्गम, जिस तक पहुंच न हो सके। (पु०) ४ वह कार्यालय या संस्था जो लोगोंका रुपया सूद दे कर अपने यहां जमा करती अथवा सूद ले कर लोगोंको ऋण देती है, लोगोंको हुण्डियां भेजी

और भेजती है तथा इसी प्रकारके महाजनोंके कार्य करती है।

बंकट (हिं० पु०) वक्र, टेढ़ा।

बंकनाल (हिं० स्त्री०) सुनारों की एक नली। यह अति सूक्ष्म भागोंको संयोजित करनेके समय चिरागकी लौ फूंकनेके काम आती है।

बंकराज (हिं० पु०) एक प्रकारका साँप।

बंकया (हिं० पु०) अगहनमें होनेवाला एक प्रकारका धान। इसका चावल सैकड़ों वर्ष तक रह सकता है।

बंकसाल (हिं० पु०) जहाजका बड़ा कमरा। इसमें मस्तूलों पर चढ़ानेवाली रस्सियाँ या जंजीरें आदि तैयार या ठीक करके रखी जाती हैं।

बंका (हिं० वि०) १ टेढ़ा, तिरछा। २ पराक्रमी, बलशाली। ३ बाँका। (पु०) ४ धानके पौधों में हानि पहुंचानेवाला एक प्रकारका कीड़ा जो हरे रंगका होता है।

बंकाई (हिं० स्त्री०) टेढ़ापन, तिरछापन।

बंकी (हिं० स्त्री०) बांक देखो।

बंकुर (हिं० पु०) बंक देखो।

बंग (हिं० पु०) वङ्ग देखो।

बंगई (हिं० स्त्री०) सिलहटमें होनेवाली एक प्रकारकी बढ़िया कपास।

बंगनापाली (हिं० स्त्री०) एक देशी मुसलमानी रियासत।

बंगला (हिं० वि०) १ बङ्गालदेशका, बंगाल सम्बन्धी। (पु०) २ एक मंजिला कच्चा मकान। इस पर फूस या खपड़ों का छप्पर पड़ा रहता है। ३ छोटा हवादार कमरा जो प्रायः मकानों की सबसे ऊपरवाली छत पर बनाया जाता है। ४ बंगालदेशका पान। ५ वह छोटा हवादार और चारों ओरसे खुला हुआ एक मंजिला मकान जिसके चारों ओर बरामदे हों। पहले इस प्रकार के मकान बंगालमें अधिकतासे होते थे। उन्हींको देखा देखी अङ्गरेज भी अपने रहनेके मकान बनाने और उन्हें बंगला कहने लगे थे।

(स्त्री०) ६ बंगाल देशकी भाषा।

बंगलिया (हिं० पु०) १ एक प्रकारका धान। २ एक प्रकारका मटर।

बंगली (हिं० स्त्री०) १ चूड़ियों के साथ पहननेका स्त्रियोंका एक आभूषण। (पु०) २ घोड़ा।

बंगसार (हिं० पु०) पुलकी तरह बना हुआ वह चबूतरा जो समुद्रमें दूर तक चला जाता है और जिस परसे लोग जहाज पर चढ़ते या उससे उतरते हैं, बनसार।

बंगा (हिं० वि०) १ वक्र, टेढ़ा। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ उजड्ड, लड़ाई झगड़ा करनेवाला।

बंगारी (हिं० पु०) हरताल।

बंगाल (हिं० पु०) १ वङ्गदेश देखो। २ एक रागका नाम जिसे कुछ लोग मेघरागका और कुछ भैरवरागका पुत्र मानते हैं।

बंगालिका (हिं० पु०) एक रागिनी जिसे कुछ लोग मेघरागकी स्त्री मानते हैं।

बंगाली (हिं० पु०) १ बंगाल देशका निवासी। २ सम्पूर्ण जातिका एक राग। (स्त्री०) ३ वङ्गदेशकी भाषा, बँगला।

बँगुरी (हिं० स्त्री०) बंगली देखो।

बंगू (हिं० पु०) १ दक्षिण तथा बंगालकी नदियोंमें मिलनेवाली एक प्रकारकी मछली। २ भौंरा या जंगी नामक खिलौना जिसे बालक नचाते हैं।

बंगोमा (हिं० पु०) गंगा और सिन्धुमें मिलनेवाला एक प्रकारका कछुआ। इसका मांस खाने योग्य होता है।

बंचक (हिं० पु०) १ धूर्त, पाखण्डी। २ पहाड़ी देशोंमें पैदा होनेवाला एक प्रकारकी घासका दाना। यह जीरेके रूप रंग तथा आकार प्रकारका होता है।

बंचन (हिं० पु०) छल, ठगपना। वञ्चन देखो।

बंचकता (हिं० स्त्री०) ठगी, छल। वञ्चकता देखो।

बंचर (हिं० पु०) वनचर देखो।

बँचवाना (हिं० क्रि०) दूसरेको पढ़नेमें प्रवृत्त करना, पढ़वाना।

बंछित (हिं० पु०) वाञ्छित देखो।

बंज (हिं० पु०) १ वणिज देखो। २ हिमालयप्रदेशमें होनेवाला एक प्रकारका बलूतका पेड़। इसकी लकड़ी का रंग खाकी होता है। इसका दूसरा नाम सिज और मारुंगा है।

बंजर (हिं० पु०) वह भूमि जिसमें कुछ उत्पन्न न हो सके, ऊसर।

बंजारा (हि० पु०) बनजारा देखो।

बंजुल (हि० पु०) वञ्जुल देखो।

बंझा (हि० वि०) १ जिसके संतान न हो, बाँझ। (स्त्री०) २ वह स्त्री जिसमें सन्तान उत्पन्न करनेकी ताकत न हो।

बँटना (हि० क्रि०) १ विभाग होना, अलग अलग हिस्सा होना। २ कई प्राणियोंके बीच सबको प्रदान किया जाना। (पु०) ३ बटना देखो।

बँटवाई (हि० स्त्री०) १ बाँटनेकी मजदूरी। २ पिसवानेका मेहनताना।

बँटवाना (हि० क्रि०) १ वितरण कराना, सबको अलग अलग करके दिलवाना। २ पिसवाना।

बँटा (हि० पु०) १ गोल या चौकोर कुछ छोटा डब्बा। (वि०) २ छोटे आकारवाला, छोटे कदका।

बँटाई (हि० स्त्री०) १ वितरण करना, बाँटनेका काम। २ बाँटनेकी मजदूरी। ३ बाँटनेका भाव। ४ दूसरेको खेत देनेका एक प्रकार। इसमें खेत जोतनेवालेसे मालिकको लगानके रूपमें धन नहीं मिलता बल्कि उपजका कुछ अंश मिलता है।

बंटाना (हि० क्रि०) १ अंश ले लेना, भाग करा लेना। २ किसी काममें हिस्सेदार होनेके लिये या दूसरेका बोझ हल्का करनेके लिये शामिल करना।

बंटी (हि० स्त्री०) हिरन आदि पशुओंको फँसानेका जाल या फंदा।

बँटैया (हि० पु०) हिस्सा लेनेवाला, बंटानेवाला।

बंडल (अं० पु०) कागज या कपड़े आदिमें बँधी हुई छोटी गठरी, पुलिन्दा।

बंडा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका कच्चू। यह गोल गाठदार और रुयी होती है। २ अनाज रखनेका छोटी दीवारसे घिरा हुआ स्थान, बखारी।

बंडी (हि० स्त्री०) १ बिना आस्तीनकी मिरजई, फतुही। २ बगलबंदी नामक पहननेका वस्त्र।

बंडेरा (हि० पु०) बंडेरी देखो।

बँडेरी (हि० स्त्री०) वह लकड़ी जो खपरैलकी छाजनमें मंगरे पर लगायी है। यह दो पल्लियां छाजनमें बीचो बीच लम्बाईमें लगाई जाती है।

बंद (फा० पु०) १ कोई वस्तु बांधनेका पदार्थ। २ पानी रोकनेका धुस्स, पुश्ता, मेड़। ३ शरीरके अंगोंका कोई जोड़। ४ बन्धन, कैद। ५ पाच या छः चरणोंका उर्दू कविताका टुकड़ा या पद। ६ अंगरखे, चोली आदिके पल्ले बाधनेका पतला सिला हुआ कपड़ेका फीता। ७ कागजका लम्बा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा।

(वि०) ८ जो चारों ओरसे घिरा हो, जो किसी ओरसे खुला न हो। ९ जिसका मुँह या आगेका मार्ग खुला न हो। १० जिसके मुंह अथवा मार्ग पर दरवाजा, ढक्कन या ताला आदि लगा हो। ११ जो इस प्रकार घिरा हो, कि उसके अंदर कोई जा न सके। १२ जो खुला न हो। १३ जो ऐसी स्थितिमें हो जिससे कोई वस्तु अंदरसे बाहर न आ सके और न बाहरकी चीज अंदर ही आ सके। १४ जो किसी तरहकी कैदमें हो। १५ जिसका प्रचार, प्रकाशन या कार्य आदि रुक गया हो, जो जारी न हो। १६ जिसका कार्य स्थगित या रुका हुआ हो। १७ जो गति या व्यापारयुक्त न हो, थमा हुआ।

बंदगी (फा० स्त्री०) १ भक्तिपूर्वक ईश्वरकी वंदना, ईश्वराराधन। २ सेवा, खिदमत। ३ प्रणाम, सलाम, आदाब।

बंदगोभी (हि० स्त्री० १ करमकल्ला, पातगोभी। २ रोचना, रोली। ३ इङ्गुद, सिन्दुर।

बंदन (हि० पु०) वंदन देखो।

बंदनता (हि० स्त्री०) आदर या वन्दना किये जानेकी योग्यता।

बंदनवार (हि० पु०) वन्दनमाला, फूल, पत्ते, दूब आदिकी बनी हुई वह माला जो मंगल कार्योंके समय द्वार आदि पर लटकाई जाती है।

बंदना (हि० स्त्री०) वन्दना देखो।

बंदनी (हि० स्त्री०) स्त्रियोंका एक भूषण। इसे वे आगेकी ओर सिर पर पहनती हैं।

बंदनीमाला (हि० स्त्री०) वह लंबी माला जो गलेसे पैरों तक लटकती हो।

बंदर (हि० पु०) एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया। विशेष विवरण वानर शब्दमें देखो।

बंदर (फा० पु०) समुद्रके किनारेका वह स्थान जहां जहाज ठहरते हैं।

बंदरगाह (फा० पु०) समुद्रके किनारे जहाजोंके ठहरनेके लिये बना हुआ स्थान।

बंदरा (हि० पु०) बनरा देखो।

बंदली (हि० पु०) बुंदेलखण्डमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका धान। इसका दूसरा नाम रायमुनिया और तिलोकचन्दन भी है।

बंदवान (हि० पु०) बंदीगृहका रक्षक, कैदखानेका अफसर।

बंदसाल (हि० पु०) कैदी रखनेकी जगह, कैदखाना, जेल।

बंदा (फा० पु०) १ सेवक, दास। २ शिष्ट या विनीत भाषामें उत्तमपुरुष।

बंदानी (फा० पु०) १ गोलंदाज, तोप चलानेवाला। २ एक प्रकारका गुलाबी रंग। यह पियाजी रंगसे कुछ गहरा और असली गुलाबी रंगसे बहुत हल्का होता है।

बंदारु (हि० वि०) १ वन्दनीय, वन्दन करने योग्य। २ पूजनीय, आदरणीय। (पु०) ३ बंदार देखो।

बंदाल (हि० पु०) देवदाली, घघर बेल।

बंदि (हि० स्त्री०) कारागार, कैद।

बंदिया (हि० स्त्री०) बंदी नामक भूषण जो स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदिश (फा० स्त्री०) १ बांधनेकी क्रिया या भाव। २ प्रबन्ध, योजना, रचना। ३ षड़यन्त्र।

बंदी (हि० पु०) १ भाटोंकी एक जाति जो प्राचीन कालमें राजाओंका कीर्तिगान किया करती थी, भाट। बन्दी देखो। (स्त्री०) २ एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदी (फा० पु०) १ कैदी। (स्त्री०) २ दासी, चेरी।

बंदीखाना (फा० पु०) कैदखाना जेलखाना।

बंदीघर (हि० पु०) कैदखाना, जेलखाना।

बंदीवान (हि० पु०) कैदी।

बंदूक (अ० स्त्री०) धातुका बना हुआ नलीके रूपका एक प्रसिद्ध अस्त्र। इसमें पीछेकी ओर थोड़ासा स्थान बना होता है जिसमें गोली रख कर बारूद या इसी प्रकारके किसी सहायतासे चलाई जाती है। जो गोली इसमेंसे निकलती है वह अपने निशाने पर जोरसे जा लगती है। इसका उपयोग मनुष्योंको तथा दूसरे जीवोंको मार डालने अथवा घायल करनेके लिये होता है। वर्तमानकालमें साधारणतः सैनिकोंको युद्धमें लड़नेके लिये यही दी जाती है। इसके कई भेद होते हैं।

बंदूकची (फा० पु०) वह सिपाही जो बंदूक चलाता है।

बंदूख (हि० स्त्री०) बंदूक देखो।

बंदेरी (फा० स्त्री०) दासी, चेरी।

बंदोबस्त (फा० पु०) १ प्रबंध, इंतिजाम। २ वह महकमा या विभाग जिसके सपुर्द खेतों आदिको नाप कर उनका कर निश्चित करनेका काम हो। ३ खेतोंके लिये भूमिको नाप कर उसका राजकर निर्धारित करनेका काम।

बंधना (हि० क्रि०) १ बंधनमें आना, बद्ध होना, बाँधा जाना। २ रस्सी आदि द्वारा किसी वस्तुके साथ इस प्रकार संबंध होना कि कहीं जा न सके। २ प्रेमपाशमें बद्ध होना, मुग्ध होना। ३ प्रतिज्ञा या वचन आदिसे बद्ध होना ४ स्वच्छन्द न रहना, फसना, अटकना। ५ बंदी होना, कैद होना। ६ दुरुस्त होना, ठीक होना। ७ क्रमनिर्धारित होना, बराबर चलनेवाला कायदा ठहरना।

बंधना (हि० पु०) १ कोई चीज बाधनेकी वस्तु, कपड़ा रस्सी आदि। २ वह थैली जिसमें स्त्रियां सीने पिरोनेका सामान रखती हैं।

बंधनि (हि० स्त्री०) १ बन्धन, वह जिससे कोई चीज बँधी हुई हो। २ वह जो किसी चीजकी स्वतन्त्रता आदिमें बाधक हो, उलझाने या फंसानेवाली चीज।

बंधवाना (हि० क्रि०) १ बांधनेका काम दूसरेसे कराना, २ कैद कराना। ३ तालाब, कूआं आदि बनवाना, तैयार कराना। ४ देना आदि नियत कराना, मुकर्रर कराना।

बंधान (हि० पु०) १ किसी कामके होने अथवा किसी पदार्थके लेने देने आदिके सम्बन्धमें बहुत दिनोंसे चला आता हुआ निर्दिष्ट क्रम या नियम, लेन देन आदिके

सम्बन्धकी नियत परिपाटी। २ तालका सम। ३ पानी रोकनेका धुस्स, बाँध। ४ वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटीके अनुसार दिया या लिया जाय।

बंधाना (हि० क्रि०) १ बाँधनेका काम दूसरेसे कराना। २ धारण कराना। ३ कैद कराना।

बंधार (हि० पु०) नाव या जहाजमें वह स्थान जिसमें रस कर या छेदोंमेंसे आया हुआ पानी जमा होता है और जो पीछे उलीच कर बाहर फेंक दिया जाता है, गमतखाना।

बंधिका (हिं० स्त्री०) वह डोरी जिससे तानेकी साँथी बाँधी जाती है।

बंधिन (हि० पु०) बंध्या, बांझ।

बँधी (हि० पु०) वह जो बँधा हुआ हो, वह जिसमें किसी प्रकारका बँधन हो।

बँधुआ (हि० पु०) कैदी, बंदी।

बँधुवा (हि० पु०) बंधुआ देखो।

बँधेज (हि० पु०) १ नियत समय पर और नियत रूपमें मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २ प्रतिबन्ध, रुकावट। ३ वीर्यको जल्दी स्खलित न होने देनेकी क्रिया, बाजीकरण। ४ नियत समय पर या नियत रूपमें कुछ देनेकी क्रिया या भाव। ५ किसी वस्तुको रोकने या बाँधनेकी क्रिया या युक्ति।

बंपुलिस (हि० स्त्री०) मलत्यागके लिये म्युनिसपैलिटी आदिका बनवाया हुआ वह स्थान जहाँ सर्वसाधारण बिना रोक टोक जा सके।

बंबं (हिं० स्त्री०) १ बं बं शब्द, बं, बं, शिव शिव, हर हर, इत्यादि शब्दोंकी ऊँची ध्वनि जो शैव लोग भक्तिका उमंगमें आ कर किया करते हैं। २ युद्धारम्भके वीरोंका उत्साहवर्द्धक नाद, रणनाद, हल्ला। ३ दुन्दुभी, नगारा।

बंबा (हि० पु०) १ जल कल, पानीकी कल। २ स्रोत, सोत। ३ पानी बहानेकी नल।

बंबाना (हि० क्रि०) गौ आदि पशुओंका बाँ बाँ शब्द करना, रँभाना।

बंबू (हि० पु०) वह पतली बाँसकी छोटी पतली नली।

बंस (हि० पु०) वंश देखो।

बंसकार (हि० पु०) बाँसुरी।



बंसरी (हि० स्त्री०) बंसी देखो।

बंसलोचन (हि० पु०) बाँसका सार भाग जो उसके जल जानेके बाद सफेद रंगके छोटे छोटे टुकड़ोंके रूपमें पाया जाता है। वंशलोचन देखो।

बंसार (हि० पु०) बंसगार, भंडार।

बंसी (हि० स्त्री०) १ एक प्रकारका बाजा जो बांसकी नलीका बना होता है। बंसी देखो। २ मछली फँसानेका एक औजार। इसमें एक लम्बी पतली छड़ीके एक सिरे पर डोरी बँधी होती है और दूसरे सिरे पर अंकुशके आकारकी लोहेकी एक कटिया बंधी रहती है। इसी कटियामें चारा लपेट कर डोरीको जलमें फेंकते हैं और छड़ीको शिकारी पकड़े रहता है। जब मछली वह चारा खाने लगती है, तब वह कटिया उसके गलेमें फँस जाती है और वह खींच कर निकाली जाती है। २ मागधी मानमें ३० परमाणुकी तौल। ३ विष्णु, कृष्ण और रामजीके चरणोंका रेखाचिह्न। ४ धानके खेतोंमें होनेवाली एक प्रकारकी घास। इसको बाँसी भी कहते हैं। इसकी पत्तियाँ बांसकी पत्तियोंके आकारकी होती हैं। इससे धानको भारी नुकसान होता है। (पु०) ५ एक प्रकारका गेहूँ।

बंसीधर (हि० पु०) वंशीधर, श्रीकृष्ण।

बहंगी (हि० स्त्री०) भार ढोनेका एक उपकरण। यह बाँसका बना होता है। इसके दोनों सिरों पर रस्सियोंके बड़े बड़े छींके लटका दिये जाते हैं। इन्हीं छींकोंमें बोझ रख देते हैं और लकड़ीको बीचमेंसे कंधे पर रख कर ले चलते हैं।

बंहिमन् (स० पु०) अयमेषामतिशयेन बहुलः बहुल इमन् (बहुल इत्यत्र बंहादेशः पा ६।४।१५७) अतिशय बहुल, बहुत ज्यादा।

बंहिष्ठ (स० त्रि०) अतिशयेन बहु बहु इष्ठ, प्रियस्थिरेत्यादि इष्ठ प्रत्ययः। अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

"बंहिष्ठ कीर्त्तिय शाखा बहिष्ठ" (भट्टि २।४५)

बंहीयस् (स० त्रि०) बहु ईयसु, ततो बंहादेश। अतिशय बहुल।

बक (पु०) वकते कुटिलं गच्छति वकि अच् पृषोदरादित्वात् न लोप। १ स्वनामख्यात पक्षिविशेष, बगुला।

बंदर ( फा० पु० ) समुद्रके किनारेका वह स्थान जहां जहाज ठहरते हैं।

बंदरगाह ( फा० पु० ) समुद्रके किनारे जहाजोंके ठहरनेके लिये बना हुआ स्थान।

बंदरा ( हिं० पु० ) बनरा देखो।

बंदली ( हि० पु० ) रुहेलखण्डमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका धान। इसका दूसरा नाम रायमुनिया और तिलोकचन्दन भी है।

बंदवान ( हि० पु० ) बंदीगृहका रक्षक, कैदखानेका अफसर।

बंदसाल ( हि० पु० ) कैदी रखनेकी जगह, कैदखाना, जेल।

बंदा ( फा० पु० ) १ सेवक, दास। २ शिष्ट या विनीत भाषामें उत्तमपुरुष।

बंदानी ( फा० पु० ) १ गोलंदाज, तोप चलानेवाला। २ एक प्रकारका गुलाबी रंग। यह पियाजी रंगसे कुछ गहरा और असली गुलाबी रंगसे बहुत हलका होता है।

बंदारू ( हिं० वि० ) १ वन्दनीय, वन्दना करने योग्य। २ पूजनीय, आदरणीय। ( पु० ) ३ बंदार देखो।

बंदाल ( हिं० पु० ) देवदाली, घघर बेल।

बंदि ( हि० स्त्री० ) कारानिवास, कैद।

बंदिया ( हि० स्त्री० ) बंदी नामक भूषण जो स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदिश ( फा० स्त्री० ) १ बांधनेकी क्रिया या भाव। २ प्रबन्ध, योजना, रचना। ३ षड्यन्त्र।

बंदी ( हि० पु० ) १ चारणोंकी एक जाति जो प्राचीनकालमें राजाओंका कीर्तिगान किया करती थी, भाट। बन्दी देखो। ( स्त्री० ) २ एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदी ( फा० पु० ) १ कैदी। ( स्त्री० ) २ दासी, चेरी।

बंदीखाना ( फा० पु० ) कैदखाना, जेलखाना।

बंदीघर ( हि० पु० ) कैदखाना, जेलखाना।

बंदीवान ( हि० पु० ) कैदी।

बंदूक ( अ० स्त्री० ) धातुका बना हुआ नलीके आकार का एक प्रसिद्ध अस्त्र। इसमें पीछेकी ओर घोड़ा लगा बना होता है जिसमें गोली रख कर बारूद या इसी प्रकारके किसी सहायतासे चलाई जाती है। जो गोली इसमेंसे निकलती है वह अपने निशाने पर जोरसे जा लगती है। इसका उपयोग मनुष्योंको तथा दूसरे जीवोंको मार डालने अथवा घायल करनेके लिये होता है। वर्तमानकालमें साधारणतः सैनिकोंको युद्धमें लड़नेके लिये यही दी जाती है। इसके कई भेद होते हैं।

बंदूकची ( फा० पु० ) वह सिपाही जो बंदूक चलाता हैं।

बंदूख ( हि० स्त्री० ) बंदूक देखो।

बंदेरी ( फा० स्त्री० ) दासी, चेरी।

बंदोबस्त ( फा० पु० ) १ प्रबंध, इंतिजाम। २ वह महकमा या विभाग जिसके सपुर्द खेतों आदिको नाप कर उनका कर निश्चित करनेका काम हो। ३ खेतीके लिये भूमिको नाप कर उसका राज्यकर निर्द्धारित करनेका काम।

बंधना ( हि० क्रि० ) १ बंधनमें आना, बद्ध होना, बांधा जाना। २ रस्सी आदि द्वारा किसी वस्तुके साथ इस प्रकार संबंध होना कि कहीं जा न सके। २ प्रेमपाशमें बद्ध होना, मुग्ध होना। ३ प्रतिज्ञा या वचन आदिसे बद्ध होना ४ स्वच्छन्द न रहना, फसना, अटकना। ५ बंदी होना, कैद होना। ६ दुरुस्त होना, ठीक होना। ७ क्रमनिर्धारित होना, चला चलनेवाला कायदा ठहराना।

बंधना ( हि० पु० ) १ कोई चीज बांधनेकी वस्तु, कपड़ा रस्सी आदि। २ वह थैली जिसमें स्त्रिया सीने पिरोनेका सामान रखती हैं।

बंधनि ( हि० स्त्री० ) १ बन्धन, वह जिसमें कोई चीज बंधी हुई हो। २ वह जो किसी चीजकी स्वतन्त्रता आदिमें बाधक हो, उलझाने या फंसानेवाली चीज।

बंधवाना ( हिं० क्रि० ) १ बांधनेका काम दूसरेसे कराना, २ कैद कराना। ३ तालाब, कुआं आदि बनवाना, तैयार कराना। ४ देना आदि नियत कराना, मुकर्रर कराना।

बंधान ( हि० पु० ) १ किसी कार्यके होने अथवा किसी पदार्थके लेने देने आदिके सम्बन्धमें बहुत दिनोंसे चला आता हुआ निश्चित क्रम या नियम, लेन देन आदिके

सम्बन्धकी नियत परिपाटी। २ तालका सम। ३ पानी रोकनेका धुस्स, बाँध। ४ वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटीके अनुसार दिया या लिया जाय।

बंधाना (हि॰ क्रि॰) १ बांधनेका काम दूसरेसे कराना। २ धारण कराना। ३ कैद कराना।

बंधाल (हि॰ पु॰) नाव या जहाजमें वह स्थान जिसमें रस रस कर या छेदोंमेंसे आया हुआ पानी जमा होता है और जो पीछे उलीच कर बाहर फेंक दिया जाता है, गमतखाना।

बंधिका (हि॰ स्त्री॰) वह डोरी जिससे तानेकी साँथी बाँधी जाती है।

बंधिन (हि॰ पु॰) बंध्या, बाझ।

बंधी (हि॰ पु॰) वह जो बँधा हुआ हो, वह जिसमें किसी प्रकारका बंधन हो।

बंधुआ (हि॰ पु॰) कैदी, बंदी।

बंधुरा (हि॰ पु॰) बंधुआ देखो।

बंधेज (हि॰ पु॰) १ नियत समय पर और नियत रूपसे मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २ प्रतिबन्ध, रुकावट। ३ वीर्यको जल्दी स्खलित न होने देनेकी क्रिया, वाजीकरण। ४ नियत समय पर या नियत रूपसे कुछ देनेकी क्रिया या भाव। ५ किसी वस्तुको रोकने या बांधनेकी क्रिया या युक्ति।

बंपुलिस (हि॰ स्त्री॰) मलत्यागके लिये म्युनिसपैलिटी आदिका बनवाया हुआ वह स्थान जहां सर्वसाधारण बिना रोक टोक जा सके।

बंब (हि॰ स्त्री॰) १ बंब बंब शब्द, बं, बं, शिव शिव, हर हर, इत्यादि शब्दोंकी ऊँची ध्वनि जो शैव लोग भक्तिकी उमंगमें आ कर किया करते हैं। २ युद्धारम्भके वीरोंका उत्साहवर्द्धक नाद, रणनाद, हल्ला। ३ दुन्दुभी, नगारा।

बंबा (हि॰ पु॰) १ जल-कल, पानीकी कल। २ स्रोत, सोत। ३ पानी बहानेकी नल।

बंबाना (हि॰ क्रि॰) गौ आदि पशुओंका बाँ बाँ शब्द करना, रँभाना।

बंबू (हि॰ पु॰) चंडू पीनेकी बाँसकी छोटी पतली नली।

बंस (हि॰ पु॰) बंश देखो।

बंसकार (हि॰ पु॰) बाँसुरी।

बंसरी (हि॰ स्त्री॰) बंसी देखो।

बंसलोचन (हि॰ पु॰) बासका सार भाग जो उसके जल जानेके बाद सफेद रंगके छोटे छोटे टुकड़ोंके रूपमें पाया जाता है। बंशलोचन देखो।

बंसार (हि॰ पु॰) बंसाल, भंडार।

बंसी (हि॰ स्त्री॰) १ एक प्रकारका बाजा जो बांसकी नलीका बना होता है। बंशी देखो। २ मछली फँसानेका एक औजार। इसमें एक लम्बी पतली छड़ीके एक सिरे पर डोरी बँधी होती है और दूसरे सिरे पर अंकुशके आकारकी लोहेकी एक कंटिया बंधी रहती है। इसी कंटियामें चारा लपेट कर डोरीको जलमें फेंकते हैं और छड़ीको शिकारी पकड़े रहता है। जब मछली वह चारा खाने लगती है, तब वह कंटिया उसके गलेमें फंस जाती है और वह खींच कर निकाली जाती है। ३ मागधी मानमें ३० परमाणुकी तौल। ३ विष्णु, कृष्ण और रामजीके चरणोंका रेखाचिह्न। ४ धानके खेतोंमें होनेवाली एक प्रकारकी घास। इसको बाँसी भी कहते हैं। इसकी पत्तियाँ बांसकी पत्तियोंके आकारकी होती हैं। इससे धानको भारी नुकसान होता है। (पु॰) ५ एक प्रकारका गेहूं।

बंसीधर (हि॰ पु॰) बंशीधर, श्रीकृष्ण।

बंहगी (हि॰ स्त्री॰) भार ढोनेका एक उपकरण। यह बाँसका बना होता है। इसके दोनों सिरों पर रस्सियोंके बड़े बड़े छींके लटका दिये जाते हैं। इन्हीं छींकोंमें बोझ रख देते हैं और लकड़ीको बीचमेंसे कंधे पर रख कर ले चलते हैं।

बंहिमन् (स॰ पु॰) अयमेषामतिशयेन बहुलं बहुल इमन् (बहुल इ‍ष्ठयो बंहादेश पा ६।४।१५७) अतिशय बहुल, बहुत ज्यादा।

बंहिष्ठ (स॰ वि॰) अतिशयेन बहु बहु इष्ठ, प्रियस्थि रेत्यादि इष्ठ प्रत्यय। अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

"बंहिष्ठ कीर्त्तिर्यशसा वरिष्ठ" (भट्टि २।४५)

बंहीयस् (स॰ त्रि॰) बहु ईयसु, ततो बंहादेश। अतिशय बहुल।

बक (पु॰) बकते कुटिलीभवति बकि अच् पृषोदरादित्वात् न लोप। स्वनामख्यात पक्षिविशेष, बगुला।

बदर (फा० पु०) समुद्रके किनारेका वह स्थान जहा जहाज ठहरते हैं।

बदरगाह (फा० पु०) समुद्रके किनारे जहाजोंके ठहरनेके लिये बना हुआ स्थान।

बदरा (हि० पु०) बनरा देखो।

बदली (हि० पु०) रुहेलखण्डमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका धान। इसका दूसरा नाम रायमुनिया और तिलोकचन्दन भी है।

बदवान (हि० पु०) बदीगृहका रक्षक, कैदखानेका अफसर।

बंदसाल (हि० पु०) कैदी रखनेकी जगह, कैदखाना, जेल।

बदा (फा० पु०) १ सेवक, दास। २ शिष्ट या विनीत भाषामें उत्तमपुरुष।

बदानी (फा० पु०) १ गोलदाज, तोप चलानेवाला। २ एक प्रकारका गुलाबी रंग। यह पियाजी रगसे कुछ गहरा और असली गुलाबी रगसे बहुत हल्का होता है।

बदारू (हि० वि०) १ वन्दनीय, वन्दन करने योग्य। २ पूजनीय, आदरणीय। (पु०) ३ बदाल देखो।

बदाल (हि० पु०) देवदाली, घघर बेल।

बदि (हि० स्त्री०) कारानिवास, कैद।

बदिया (हि० स्त्री०) बदी नामक भूषण जो स्त्रिया सिर पर पहनती हैं।

बदिश (फा० स्त्री०) १ बाधनेकी क्रिया या भाव। २ प्रबन्ध, योजना, रचना। ३ षडयन्त्र।

बदी (हि० पु०) १ चारणोंकी एक जाति जो प्राचीन कालमें राजाओंका कीर्तिगान किया करती थी, भाट। बन्दी देखो। (स्त्री०) २ एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रिया सिर पर पहनती हैं।

बदी (फा० पु०) १ कैदी। (स्त्री०) २ दासी, चेरी।

बदीखाना (फा० पु०) कैदखाना, जेलखाना।

बदीघर (हि० पु०) कैदखाना, जेलखाना।

बदीवान (हि० पु०) कैदी।

बदूक (अ० स्त्री०) धातुका बना हुआ नलीके रूपका एक प्रसिद्ध अस्त्र। इसमें पीछेकी ओर थोडासा स्थान बना होता है जिसमें गोली रख कर बारूद या इसी प्रकार के किसी सहायतासे चलाई जाती है। जो गोली इसमेंसे निकलती है वह अपने निशाने पर जोरसे जा लगती है। इसका उपयोग मनुष्योंको तथा दूसरे जीवोंको मार डालने अथवा घायल करनेके लिये होता है। वर्तमानकालमें साधारणत सैनिकोंको युद्धमें लडनेके लिये यही दी जाती है। इसके कई भेद होते हैं।

बदूकची (फा० पु०) वह सिपाही जो बदूक चलाता है।

बदूख (हि० स्त्री०) बंदूक देखो।

बदेरी (फा० स्त्री०) दासी, चेरी।

बदोबस्त (फा० पु०) १ प्रबध, इंतिजाम। २ वह महकमा या विभाग जिसके सपुर्द खेतों आदिकी नाप कर उनका कर निश्चित करनेका काम हो। ३ खेतीके लिये भूमिको नाप कर उसका राज्यकर निर्द्धारित करनेका काम।

बँधना (हि० क्रि०) १ बधनमें आना, बद्ध होना, बाँधा जाना। २ रस्सी आदि द्वारा किसी वस्तुके साथ इस प्रकार सबध होना कि कहीं जा न सके। २ प्रेमपाशमें बद्ध होना, मुग्ध होना। ३ प्रतिज्ञा या वचन आदिसे बद्ध होना ४ स्वच्छन्द न रहना, फसना, अटकना। ५ बदी होना, कैद होना। ६ दुरुस्त होना, ठीक होना। ७ क्रमनिर्धारित होना, चला चलनेवाला कायदा ठहराना।

बँधना (हि० पु०) १ कोई चीज बाधनेकी वस्तु, कपड़ा रस्सी आदि। २ वह थैली जिसमें स्त्रिया सीने पिरोनेका सामान रखती हैं।

बँधनि (हि० स्त्री०) १ बन्धन, वह जिसमें कोई चीज बँधी हुई हो। २ वह जो किसी चीजकी स्वतन्त्रता आदिमें बाधक हो, उलझाने या फँसानेवाली चीज।

बँधवाना (हि० क्रि०) १ बाधनेका काम दूसरेसे कराना, २ कैद कराना। ३ तालाब, कूआँ आदि बनवाना, तैयार कराना। ४ देना आदि नियत कराना, मुकर्रर कराना।

बधान (हि० पु०) १ किसी कार्यके होने अथवा किसी पदार्थके लेने देने आदिके सम्बन्धमें बहुत दिनोंसे चला आया हुआ निश्चित क्रम या नियम, लेन देन आदिके

सम्बन्धकी नियत परिपाटी। २ तालका सम। ३ पानी रोकनेका धुस्स, बाँध। ४ वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटीके अनुसार दिया या लिया जाय।

बंधाना (हि० क्रि०) १ बांधनेका काम दूसरेसे कराना। २ धारण कराना। ३ कैद कराना।

बंधाल (हि० पु०) नाव या जहाजमें वह स्थान जिसमें रस कर या छेदोंमेंसे आया हुआ पानी जमा होता है और जो पीछे उलीच कर बाहर फेंक दिया जाता है, गमतखाना।

बंधिका (हि० स्त्री०) वह डोरी जिससे तानेकी साँथी बाँधी जाती है।

बंधिन (हि० पु०) बंध्या, बांझ।

बँधी (हि० पु०) वह जो बँधा हुआ हो, वह जिसमें किसी प्रकारका बँधन हो।

बँधुआ (हि० पु०) कैदी, बंदी।

बँधुवा (हि० पु०) बंधुआ देखो।

बँधेज (हि० पु०) १ नियत समय पर और नियत रूपसे मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २ प्रतिबन्ध, रुकावट। ३ वीर्यको जल्दी स्खलित न होने देनेकी क्रिया, वाजीकरण। ४ नियत समय पर या नियत रूपसे कुछ देनेकी क्रिया या भाव। ५ किसी वस्तुको रोकने या बांधनेकी क्रिया या युक्ति।

बंपुलिस (हि० स्त्री०) मलत्यागके लिये म्युनिसपैलिटी आदिका बनवाया हुआ वह स्थान जहां सर्वसाधारण बिना रोक टोक आ सके।

बंब (हि० स्त्री०) १ बं बं शब्द, बं, बं, शिव शिव, हर हर, इत्यादि शब्दोंकी ऊँची ध्वनि जो शैव लोग भक्तिकी उमंगमें आ कर किया करते हैं। २ युद्धारम्भके वीरोंका उत्साहवर्द्धक नाद, रणनाद, हल्ला। ३ दुन्दुभी, नगारा।

बंबा (हि० पु०) १ जल-कल, पानीको कल। २ स्रोत, सोत। ३ पानी बहानेकी नल।

बंबाना (हि० क्रि०) गौ आदि पशुओंका बाँ बाँ शब्द करना, रँभाना।

बंबू (हि० पु०) चंडू पीनेकी बाँसकी छोटी पतली नली।

बंस (हि० पु०) बंश देखो।

बंसकार (हि० पु०) बाँसुरी।



बंसरी (हि० स्त्री०) बंसी देखो।

बंसलोचन (हि० पु०) बांसका सार भाग जो उसके जल जानेके बाद सफेद रंगके छोटे छोटे टुकडोंके रूपमें पाया जाता है। बंशलोचन देखो।

बंसार (हि० पु०) बंगसाल, भंडार।

बंसी (हि० स्त्री०) १ एक प्रकारका बाजा जो बांसकी नलीका बना होता है। बंशी देखो। २ मछली फँसानेका एक औजार। इसमें एक लम्बी पतली छडीके एक सिरे पर डोरी बँधी होती है और दूसरे सिरे पर अंकुशके आकारकी लोहेकी एक कंटिया बंधी रहती है। इसी कटियामें चारा लपेट कर डोरीको जलमें फेंकते हैं और छडीको शिकारी पकडे रहता है। जब मछली वह चारा खाने लगती है, तब वह कटिया उसके गलेमें फंस जाती है और वह खींच कर निकाली जाती है। २ मागधी मानमें ३० परमाणुकी तौल। ३ विष्णु, कृष्ण और रामजीके चरणोंका रेखाचिह्न। ४ धानके खेतोंमें होनेवाली एक प्रकारकी घास। इसको बाँसी भी कहते हैं। इसकी पत्तियाँ बांसकी पत्तियोंके आकारकी होती हैं। इससे धानको भारी नुकसान होता है। (पु०) ५ एक प्रकारका गेहूं।

बंसीधर (हि० पु०) बंशीधर, श्रीकृष्ण।

बंहगी (हि० स्त्री०) भार ढोनेका एक उपकरण। यह बाँसका बना होता है। इसके दोनों सिरों पर रस्सियोंके बडे बडे छींके लटका दिये जाते हैं। इन्हीं छींकोंमें बोझ रख देते हैं और लकडीको बीचमेंसे कंधे पर रख कर ले चलते हैं।

बंहिमन् (स० पु०) अयमेषामतिशयेन बहुल बहुल इमन् (बहुल इत्यस्य बंहादेश पा ६।४।१५७) अतिशय बहुल, बहुत ज्यादा।

बंहिष्ठ (स० त्रि०) अतिशयेन बहु बहु इष्ठ, प्रियस्थि रेत्यादि इष्ठ प्रत्यय। अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

"बंहिष्ठ कीर्त्तिर्यशसा वरिष्ठ" (भट्टि २।४५)

बंहीयस् (स० त्रि०) बहु ईयसु, ततो बंहादेश। अतिशय बहुल।

बक (पु०) वकते कुटिलीभवति वकि अच् पृषोदरादित्वात् न लोप। १ स्वनामख्यात पक्षिविशेष, बगुला।

बंदर (फा० पु०) समुद्रके किनारेका वह स्थान जहां जहाज ठहरते हैं।

बंदरगाह (फा० पु०) समुद्रके किनारे जहाजोंके ठहरनेके लिये बना हुआ स्थान।

बंदरा (हि० पु०) बनरा देखो।

बंदली (हि० पु०) बुंदेलखण्डमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका धान। इसका दूसरा नाम रायमुनिया और तिलोकचन्दन भी है।

बंदवान (हि० पु०) बंदीगृहका रक्षक, कैदखानेका अफसर।

बंदसाल (हि० पु०) कैदी रखनेकी जगह, कैदखाना, जेल।

बंदा (फा० पु०) १ सेवक, दास। २ शिष्ट या विनीत भाषामें उत्तमपुरुष।

बंदानी (फा० पु०) १ गोलदाज, तोप चलानेवाला। २ एक प्रकारका गुलाबी रंग। यह पियाजी रंगसे कुछ गहरा और असली गुलाबी रंगसे बहुत हल्का होता है।

बंदारू (हि० वि०) १ वन्दनीय, वन्दन करने योग्य। २ पूजनीय, आदरणीय। (पु०) ३ बंदाल देखो।

बंदाल (हि० पु०) देवदाली, घघर बेल।

बंदि (हि० स्त्री०) कारानिवास, कैद।

बंदिया (हि० स्त्री०) बंदी नामक भूषण जो स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदिश (फा० स्त्री०) १ बांधनेकी क्रिया या भाव। २ प्रबन्ध, योजना, रचना। ३ षडयन्त्र।

बंदी (हि० पु०) १ चारणोंकी एक जाति जो प्राचीन कालमें राजाओंका कीर्त्तिगान किया करती थी, भाट। बन्दी देखो। (स्त्री०) २ एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदी (फा० पु०) १ कैदी। (स्त्री०) २ दासी, चेरी।

बंदीखाना (फा० पु०) कैदखाना, जेलखाना।

बंदीघर (हि० पु०) कैदखाना, जेलखाना।

बंदीवान (हि० पु०) कैदी।

बंदूक (अ० स्त्री०) धातुका बना हुआ नलीके रूपका एक प्रसिद्ध अस्त्र। इसमें पीछेकी ओर थोड़ासा स्थान बना होता है जिसमें गोली रख कर बारूद या इसी प्रकारके किसी सहायतासे चलाई जाती है। जो गोली इसमेंसे निकलती है वह अपने निशाने पर जोरसे जा लगती है। इसका उपयोग मनुष्योंको तथा दूसरे जीवोंको मार डालने अथवा घायल करनेके लिये होता है। वर्त्तमानकालमें साधारणतः सैनिकोंको युद्धमें लड़नेके लिये यही दी जाती है। इसके कई भेद होते हैं।

बंदूकची (फा० पु०) वह सिपाही जो बंदूक चलाता है।

बंदूख (हि० स्त्री०) बंदूक देखो।

बंदेरी (फा० स्त्री०) दासी, चेरी।

बंदोबस्त (फा० पु०) १ प्रबंध, इंतिज़ाम। २ वह महकमा या विभाग जिसके सपुर्द खेतों आदिको नाप कर उनका कर निश्चित करनेका काम हो। ३ खेतोंके लिये भूमिको नाप कर उसका राज्यकर निर्द्धारित करनेका काम।

बँधना (हि० क्रि०) १ बंधनमें आना, बद्ध होना, बाँधा जाना। २ रस्सी आदि द्वारा किसी वस्तुके साथ इस प्रकार संबंध होना कि कहीं जा न सके। २ प्रेमपाशमें बद्ध होना, मुग्ध होना। ३ प्रतिज्ञा या वचन आदिसे बद्ध होना ४ स्वच्छन्द न रहना, फसना, अटकना। ५ बंदी होना, कैद होना। ६ दुरुस्त होना, ठीक होना। ७ क्रमनिर्धारित होना, चला चलनेवाला कायदा ठहराना।

बँधना (हि० पु०) १ कोई चीज बांधनेकी वस्तु, कपड़ा रस्सी आदि। २ वह थैली जिसमें स्त्रियां सीने पिरोनेका सामान रखती हैं।

बँधनि (हि० स्त्री०) १ बन्धन, वह जिसमें कोई चीज बँधी हुई हो। २ वह जो किसी चीजकी स्वतन्त्रता आदिमें बाधक हो, उलझाने या फँसानेवाली चीज।

बँधवाना (हि० क्रि०) १ बांधनेका काम दूसरेसे कराना, २ कैद कराना। ३ तालाव, कुआँ आदि बनवाना, तैयार कराना। ४ देना आदि नियत कराना, मुकर्रर कराना।

बंधान (हि० पु०) १ किसी कार्यके होने अथवा किसी पदार्थके लेने देने आदिके सम्बन्धमें बहुत दिनोंसे चला आया हुआ निश्चित क्रम या नियम, लेन देन आदिके

सम्बन्धकी नियत परिपाटी । २ तालका सम । ३ पानी रोकनेका धुस्स, बाँध । ४ वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटीके अनुसार दिया या लिया जाय ।

वंधाना ( हि० क्रि० ) १ बांधनेका काम दूसरेसे कराना । २ धारण कराना । ३ कैद कराना ।

वंधाल ( हि० पु० ) नाव या जहाजमें वह स्थान जिसमें रस कर या छेदोंमेंसे आया हुआ पानी जमा होता है और जो पीछे उलीच कर बाहर फेंक दिया जाता है, गमतखाना ।

वंधिका ( हि० स्त्री० ) वह डोरी जिससे तानेकी साँथी बाँधी जाती है ।

वंधित ( हि० पु० ) वंध्या, बांझ ।

वँधो ( हि० पु० ) वह जो वँधा हुआ हो, वह जिसमें किसी प्रकारका वँधन हो ।

वँधुआ ( हि० पु० ) कैदी, बंदी ।

वँधुवा ( हि० पु० ) वंधुआ देखो ।

वँधेज ( हि० पु० ) १ नियत समय पर और नियत रूपसे मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य । २ प्रतिवन्ध, रुकावट । ३ वीर्यको जल्दी स्खलित न होने देनेकी क्रिया, वाजीकरण । ४ नियत समय पर या नियत रूपसे कुछ देनेकी क्रिया या भाव । ५ किसी वस्तुको रोकने या बांधनेकी क्रिया या युक्ति ।

वंपुलिस ( हि० स्त्री० ) मलत्यागके लिये म्युनिसपैलिटी आदिका बनवाया हुआ वह स्थान जहां सर्वसाधारण बिना रोक टोक जा सके ।

वंव ( हि० स्त्री० ) १ वं वं शब्द, वं, वं, शिव शिव, हर हर, इत्यादि शब्दोंकी ऊँची ध्वनि जो शैव लोग भक्तिकी उमंगमें आ कर किया करते हैं । २ युद्धारम्भके वीरोंका उत्साहवर्द्धक नाद, रणनाद, हल्ला । ३ दुन्दुभी, नगारा ।

वंवा ( हि० पु० ) १ जल कल, पानीकी कल । २ स्रोत, सोत । ३ पानी बहानेकी नल ।

वंवाना ( हि० क्रि० ) गौ आदि पशुओंका वाँ वां शब्द करना, रँभाना ।

वंवू ( हि० पु० ) चण्डू पीनेकी वाँसकी छोटी पतली नली ।

वंस ( हि० पु० ) वंश देखो ।

वंसकार ( हि० पु० ) वाँसुरी ।

वंसरी ( हि० स्त्री० ) वंसी देखो ।

वंसलोचन ( हि० पु० ) बांसका सार भाग जो उसके जल जानेके बाद सफेद रंगके छोटे छोटे टुकड़ोंके रूपमें पाया जाता है । वंशलोचन देखो ।

वंसार ( हि० पु० ) वंगसाल, भंडार ।

वंसी ( हि० स्त्री० ) १ एक प्रकारका बाजा जो वांसकी नलीका बना होता है । वंशी देखो । २ मछली फँसानेका एक औजार । इसमें एक लम्बी पतली छड़ीके एक सिरे पर डोरी वँधी होती है और दूसरे सिरे पर अंकुशके आकारकी लोहेकी एक कंटिया वंधी रहती है । इसी कटियामें चारा लपेट कर डोरीको जलमें फेंकते हैं और उसीको शिकारी पकड़े रहता है । जब मछली वह चारा खाने लगती है, तब वह कटिया उसके गलेमें फंस जाती है और वह खींच कर निकाली जाती है । ३ मागधी मानमें ३० परमाणुकी तौल । ३ विष्णु, कृष्ण और रामजीके चरणोंका रेखाचिह्न । ४ धानके खेतोंमें होनेवाली एक प्रकारकी घास । इसको वाँसी भी कहते हैं । इसको पत्तियाँ वांसकी पत्तियोंके आकारकी होती हैं । इससे धानको भारी नुकसान होता है । ( पु० ) ५ एक प्रकारका गेहूँ ।

वंसीधर ( हि० पु० ) वंशीधर, श्रीकृष्ण ।

वंहगी ( हि० स्त्री० ) भार ढोनेका एक उपकरण । यह वाँसका बना होता है । इसके दोनों सिरों पर रस्सियोंके बड़े बड़े छीके लटका दिये जाते हैं । इन्हीं छीकोंमें बोझ रख देते हैं और लकड़ीको बीचमेंसे कंधे पर रख कर ले चलते हैं ।

वंहिमन् ( स० पु० ) अयमेषामतिशयेन वहुलं वहुल इमन् ( वहुल शब्दस्य वंहादेश पा ६।४।१५७ ) अतिशय वहुल, बहुत ज्यादा ।

वंहिष्ठ ( स० त्रि० ) अतिशयेन वहु वहु इष्ठ, प्रियस्थि रेत्यादि इष्ठ प्रत्यय । अत्यधिक, बहुत ज्यादा ।

"वंहिष्ठ कीर्त्तिर्यशसा वरिष्ठ" ( भट्टि २।४५ )

वंहीयस् ( स० त्रि० ) वहु ईयसु, ततो वंहादेशः । अतिशय बहुल ।

वक ( पु० ) वंकते कुटिलीभवति वकि अच् पृषोदरादित्वात् न लोप । १ स्वनामख्यात पक्षिविशेष, बगुला ।

यह दूधकी तरह सफेद है। इसका गला और दोनों पैर लम्बे, चोंच लंबी, चाल धीरी और पूंछ इतनी छोटी होती है, कि देखनेमें नहीं आती। गला इसका इतना कोमल होता है, कि उसकी तुलनाका अन्य कोई भी पदार्थ नही है। यह साधारणतः ही मूल्यवान है। कोई इसे अपने माथेका सुहाग समझते हैं।

वैज्ञानिक लोगोंने इस जातिके पक्षिको Ardea की श्रेणीमे शामिल किया है। आयुर्वेद शास्त्रकारोंके मतमें यह प्लव जातिका है, क्यो कि यह तालावो के किनारों पर ही सदा बैठा रहता है। इंगलैण्ड आदि यूरोपीय देशोंमें इस जातिके पक्षीको Heron ( Ardea cinera ) कहते हैं। किंतु इसके शरीरका आकार इस बगुलेसे बड़ा होता है। जब यह तालावके तट पर रहता है तब बहुत निस्पृह मालूम होता है और स्थिर हो गला नीचा कर मछलियोंकी बाट जोहता है। ज्यों ही छोटी मछली जल पर तैरती दिखाई देती है त्यों हो लंबी चोंचसे उसे पकड़ निगल जाता है। विलायती बगुले जलके चूहे, मेढक, सरी सृपादिके बच्चोंको पकड़ खाता है। पेट भरनेके लिये बगुला समस्त दिन नदीके तट पर चुपचाप बैठा रहता है और रात्रिको वृक्षोंकी डालियो पर सोता है। जब इसके अंडे देनेका समय आता है तब यह अन्य स्थानमें उड़ जाता है। आकाशमें यह इतना ऊपर उड़ता है, कि नीचेसे हमें वह बहुत छोटा श्वेतकाय दीखता है। वह एकान्तमें वृक्ष पर घोंसला बनाता है। यहा तक, कि किसी किसी वृक्ष पर इसके घोंसलो को संख्या अस्सीसे अधिक देखी गई है। इसका घोंसला छोटी मोटी लकड़ियो से बड़ा और चिपटा बना होता है। मध्य भाग कोमल पशम, रेशम आदि अन्य द्रव्योंसे ढका रहता है। इसके ऊपर यह हरे नीले, ४-या ५ अंडे देता है।

अन्यान्य पक्षियोंकी तरह इसके अंडोंका खोल अधिक चमकता हुआ नहीं होता। अंडेके फूट जाने पर और बच्चेके बाहिर निकल आने पर यह प्रायः ६ सप्ताह तक घोंसलेके भीतर ही रहता है। इस समय वृद्ध पक्षी मछलीको पकड़ उसे खाने देते हैं। कभी कभी वृक्ष पर घोंसला बनाते समय द्रोण ( कालेकौवे ) और बगुलेमें विरोध हो उठता है। डाक्टर हेसमने (Der Hevsham ) वेष्ट मोरलैंडमें इस प्रकार पक्षियो का विवाद देखा है। पहिले युद्धमें एक वृक्ष नष्ट हुआ एवं दूसरे युद्धमें बगुलेने जय लाभ पा कर द्रोण काकके अधिकृत स्थानमें अन्यान्य घोंसला बनाया। अन्तमें इस विरोधी दलके बीच संधि हो गई। यह स्वभावसे ही पोस मानता है, पालने पर यह इतना परच जाता है, कि पालकके पास-से कभी अलग नहीं होता। यह मत्स्यसे भिन्न अन्य द्रव्य भी खाता हुआ देखा गया है। यह हंसादिकी तरह स्पष्ट रूपसे तैर नहीं सका, तो भी जलके ऊपर पद रख कर और पैरके बलसे उड़ता हुआ अभीष्ट स्थानमें चला जाता है। किसी किसी समय यह १० या १२ फीट तैर कर पार करता हुआ देखा गया है।

तीन वर्ष तक बच्चोंके माथे पर रोंए नहीं निकलते, इसके बाद मस्तकके ऊपरी भाग पर ही कितने रोंएं निकलते दिखाई देते हैं। गलेके रोंएं सफेद और अत्यन्त कोमल होते हैं। चोंच जन्मसे ही पीली होती है। पैरो का रंग पक्का होता है, इस समय बच्चो का शारीरिक गठन इतना सुन्दर नहीं होता, किंतु तीन वर्षके बाद ही उनका यौवन प्रारम्भ होने लगता है। नर और मादा स्वभावसे ही चिकने बालो से वेष्टित रहनेके कारण देखनेमें सुन्दर लगती हैं। यूरोपमें पहिले बगुलेका शिकार सम्भ्रान्त व्यक्तियो की क्रीडामें गिना जाता था। शिकार करते समय यदि किसी व्यक्तिसे अण्डा नष्ट हो जाता था, तब उसे एक पौंड अर्थ दंड देना पड़ता था।

बगुलेका मांस सुखाद्य आहार है। इंगलैंडमें ४र्थ एडवर्डके राज्यकालमें योर्कके आर्कबिशप जार्ज नेभिलके अभिषेकके समय बहुतसे बगुले मारे गये थे। राजा ८म हेनरीके विवाहके समय बकमांसका प्रचार था। आजकल रुचिके परिवर्त्तनसे इंगलैंडमें बकमांसका प्रचार नहीं रहा।

२ स्वनामख्यात पुष्पवृक्ष, अगस्तफूल। पर्याय— शिववल्ली, पाशुपत, एकाष्ठीला, बुक, वसुक, वकपुष्प, शिवमल्ली, काकशीर्ष, स्थूलपुष्प, शिवप्रिय, काकनामा, वसहट्ट, सुपूरक, रक्तपुष्प, मुनितरु, अगस्ति, वंगसेनक, अगस्त्य, शीघ्रपुष्प, मुनिद्रुम, व्रणारि, दीर्घफलक, वक्र-पुष्प, सुरप्रिय ( Sesbania grandiflora )

दक्षिण और पूर्वभारत, गङ्गाके किनारे, ब्रह्म, उत्तर आष्ट्रे लिया और मरिसस द्वीपमें यह वृक्ष उत्पन्न होता है। इसका पेड स्वभावत २२ या ३० फुट तक ऊंचा होता है। इसको लकडी बहुत हलकी होती है जिससे थोडे ही दिनोंमें पेड अपने आप मर जाता है। इसके फूल देखनेमें ढाकके फूलके समान, पर उससे बडे और सफेद तथा कुछ ललाई लिये हुये सफेद होते हैं। इसका गोंद लाल, धूप और हवा लगनेसे बैंगनकी तरह काला हो जाता है। यह जल और मदिरामें गल जाता है। काठके सूखा और नीरस होनेके कारण छाल धूप लगनेसे उससे अलग हो जाती है, किंतु भीतर मछलीके छिलके की तरह जो पतली छाल होती है उससे उत्कृष्ट, मजबूत तन्तु प्रस्तुत होता है। छालमें धारकता शक्ति है। चेचकके प्रारममें अथवा सस्फोटक ज्वरमें इसकी छाल पानीमें भिगो कर खानेको दी जाती है। कहीं कही फूल और पत्तोंका रस शिर पीडा और नासिका रोगमें दिया जाता है। इस रसको अच्छी तरह नाकके द्वारा सूंघनेसे कफ पतला हो निकल आता है, जिससे माथेका दुखना और भारीपन दूर हो जाता है।

लाल रंगके बक फूलके रेशेको ठंढे जलमें बांट कर वातयुक्त स्फीत स्थानमें लेप देनेसे फायदा देखा गया है। दुष्ट घाव या शस्त्राघातमें अथवा दुष्ट स्थानमें पत्तोंकी पुलटिस बांधनेसे क्षत स्थान आरोग्य हो जाता है। फूलोंका रस आंखोंमें डालनेसे झपनी दोष दूर होता है। हरे पत्ते और फूल रांध कर खानेमें अच्छे लगते हैं। इसकी गरी बरबटकी तरह व्यंजनादिमें खायी जाती है, किंतु खानेमें ज्यादा कसैली और अधिक खानेसे उदरमें रोगको पैदा करती है।

यह फूल शिवजीकी पूजामें पवित्र माना जाता है। प्रायः सभी पूजामें इसका व्यवहार होता है। यह सफेद, पीला, नीला और लालके भेदसे चार प्रकारका है। तन्त्र मतमें यह यन्त्रपुष्प माना जाता है। विशेषतः अन्यान्य फूलोंके पर्युषित होने पर उनके द्वारा पूजा नहीं की जाती, किंतु बकपुष्पके पर्युषित होने पर भी उससे पूजा की जाती है। वैद्यकके मतमें इसके गुण—मधुर, शिशिर, श्रम, कास, त्रिदोषनाशक एवं बलकारी है। (राजनि०) भावप्रकाशके मतसे यह शीत, नक्तान्ध्यनाशक, चातुर्थक निवारक, तिक्त, कषाय, कटुपाक, पीनस, श्लेष्मा, पित्त और वातघ्न माना गया है।

३ कुबेर। ४ एक राक्षस जो भीमके हाथसे मारा गया था। (भारत १।१६५।७३) ५ असुरविशेष, बकासुर। भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा यह असुर निहत हुआ था। भागवतमें इसका विषय यों लिखा है—

एक समय गोप बालकगण श्रीकृष्णजीके साथ वनमें गायें चराने गये। वहां श्रीकृष्ण गायोंको पानी पिलानेके लिये एक जलाशय पर पहुंचे। उसी समय बकरूप धारण कर एक असुर आया और उसने श्रीकृष्णको निगल लिया। बलराम आदि यह देख भयसे विह्वल हो सबके सब रोने लगे। उस बगुलेकी चोंच बडी और तेज थी। भगवान श्रीकृष्ण बगुलेके मुखके बीचमें बैठ कर अग्निकी तरह उसके तालू भागको जलाने लगे। बगुला जब उस वेदनाको न सह सका, तब उसने श्रीकृष्णको उगल दिया। इसके बाद यह चोंचके द्वारा श्रीकृष्णको मारनेके लिये उनके सामने आया। भगवान् श्रीकृष्णने उस असुरको फिर आते हुए देख अपनी दोनों बाहुओंसे उसकी चोंच पकड कर उसी समय उसको यमपुर भेज दिया। (भागवत १०।११ अ०)

बकच दन (हि० पु०) एक प्रकारका वृक्ष। इसकी पत्तियां गोल और बडी होती हैं। इसका पेड ऊंचा और लकडी मजबूत होती है। फल इसका लम्बा और पतला होता है जिसमें छ से आठ तो अंगुल लंबे तीन चार दल होते हैं। यह ऊपर कुछ ललाई लिए भूरे रंगका होता है। फल सिरके दर्दमें पीस कर लगाए जाते हैं।

बकचन (हि० पु०) बकच दन देखो।

बकचा (हि० पु०) बकुचा देखो।

बकचिञ्चिका (सं० स्त्री०) मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। इस मछलीके मुंहकी जगह लम्बी चोंचसी होती है। इसे कौवा मछली भी कहते हैं।

बकची (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली। २ बकुची देखो।

बकजित् (सं० पु०) बकं जितवान् इति जि क्विप् तुक् च। १ भीमसेन। २ श्रीकृष्ण।

बकठाना (हि० क्रि०) किसी बहुत कसैली चीज जैसे

बगलबंदी ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी मिर्जई। इसके बंद बगलके नीचे लगते हैं।

बगला ( हि० पु० ) १ सफेद रंगका एक प्रसिद्ध पक्षी। बक देखो। २ एक भाड़ीदार पौधा। इसे गमलोंमें शोभाके लिये लगाया जाता है।

बगलामुखी ( हि० स्त्री० ) तान्त्रिकोंके अनुसार एक देवी। बगलामुखी देखो।

बगलियाना ( हि० क्रि० ) १ बगलसे हो कर जाना, राह काट कर निकलना। २ पृथक् निकालना, अलग करना। ३ बगलमें लाना या करना।

बगली ( हि० वि० ) १ बगलसे सम्बन्ध रखनेवाला, बगलका। ( स्त्री० ) २ ऊँटोंका एक दोष। इसमें चलने समय उनकी जांघकी रग पेटमें लगती है। ३ मुग्दर हिलानेका एक ढंग। इसमें पहले मुग्दरको ऊपर उठाते हैं और उसे कंधे पर इस प्रकार रखते हैं, कि हाथ मुठिया पकड़े नीचेको सीधा होता है और मुग्दरका दूसरा सिरा कंधे पर होता है। फिर एक हाथको ऊपर ले जा कर मुग्दरको पीछे सरकाते जाते हैं, यहां तक कि वह पीठ पर लटक जाता है। इसी बीचमें दूसरे हाथके मुग्दरको पहले जैसा ऊपर ले जाते हैं इसके बाद पहले हाथके मुग्दरको हाथ नीचे ले जा कर कंधे पर इस प्रकार लाते हैं, कि उनका दूसरा सिरा फिर कंधे पर आ जाता है। इसी तरह बराबर करते रहते हैं। ४ वह सेंध जो किवाड़की बगलमें सिटकिनीकी सीधमें चोर इसलिये खोदते हैं, कि उसमेंसे हाथ डाल कर सिटकिनी खसका कर किवाड़ खोल ले। ४ अंगे, कुरते आदिमें कपड़ेका टुकड़ा जो आस्तीनके साथ कंधेके नीचे लगाया जाता है। ५ वह थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखते हैं और जिसको वे चलते समय कंधे पर लटका लेते हैं। यह चौकोर कपड़ेकी होती है। इसके तीन पाट दोहर दोहर कर सी दिये जाते हैं और चौथेमें एक डोरी लगा दी जाती है जिसे थैली पर लपेट कर बाँधते हैं। यह थैली चौकोर होती है और इसके दो ओर एक फीता या डोरीके दोनों सिरे टांके रहते हैं जिसे बगलमें लटकाते समय जनेऊकी तरह गलेमें पहन लेते हैं। ६ वह लकड़ी जिसमें हुक्केवाले गड़गड़ेको अटका कर उसमें छेद करते हैं। ७ स्त्री बक, बगला नामक पक्षीकी मादा।

बगलीटांग ( हि० स्त्री० ) कुश्तीका एक पेंच। इसमें प्रतिपक्षीके सामने आते ही उसे अपनी बगलमें ला कर और उसकी टांग पर अपना पैर मार कर उसे गिरा देते हैं।

बगली बाह ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी कसरत। इसमें दो आदमी बराबर बराबर खड़े हो कर अपनी बांहसे दूसरेकी बाँह पर धक्का देते हैं।

बगली लंगोट ( हि० पु० ) कुश्तीका एक पेंच।

बगार ( हि० पु० ) गाय बांधनेका स्थान, घाटी।

बगारना ( हि० क्रि० ) १ पसारना, फैलाना। बगराना देखो।

बगावत ( अ० स्त्री० ) १ बागी होनेका भाव। २ विद्रोह, बलवा। ३ राजद्रोह।

बगीचा ( फा० पु० ) उपवन, छोटा बाग।

बगुडा—पूर्वीय बङ्गाल और आसामके राजशाही विभागका जिला। यह अक्षा० २४ ३२´से २५ १६´ उ० तथा देशा० ८८ ५२´से ८९ ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १३५९ वर्गमील है। यहां तिस्ता, ब्रह्मपुत्र, यमुना, नागर, करतोया, बंगाली और मानस नदी बहती हैं। १७८७ ई०की भीषण बाढ़के पहले करतोया नदी तिस्ताके जलको अपने साथ लेती हुई गङ्गामें मिलती थी, उस समय इसमें बड़े बड़े जहाज आते जाते थे। इसी कारण प्राचीनकालमें इस नदीका विशेष गौरव था। बाढ़के बादसे इसकी गति पलट गई है। यद्यपि आज भी यह प्राचीन गर्भ देखा जाता है पर उसमें स्रोत बिलकुल नहीं है।

राजशाहीके कुछ थानोंको ले कर १८२१ ई०में यह जिला सगठित हुआ है। उस समय यहां नील और रेशमकी अच्छी खेती होती थी। उस समय डकैतोंका भी भारी उपद्रव था, पर वृटिश सरकारने उनका थोड़े ही दिनोंके अन्दर अच्छी तरह दमन किया। दूरवर्ती जिलेसे विचारकी सुविधा न होती देख यहां एक ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट नियुक्त हुए। वे ही राजस्व विभागका कुल काम करते थे। क्रमशः बगुडा जिलेकी उन्नति होती गई।

पीछे १८५१ ई०में यहा एक स्वतन्त्र मजिष्ट्रेट कलकृर नियुक्त हुए।

इस जिलेके अन्तर्गत महास्थानगढ और शेरपुर नगर ऐतिहासिक तत्त्वसे पूर्ण है। महास्थानगढ अभी स्तूप मात्रमें परिणत हो गया है जिसके एक पार्श्वसे करतोया नदी बहती है। एक समय यहा हिन्दू राजाओंने राज्य किया था। आज भी वहाके लोगो के मुख से उन हिन्दूराजत्र शकी बहुत सी बातें सुनी जाती हैं। १६वीं शताब्दीमें शेरपुर नगर विशेष समृद्धशाली था। मुगल इतिवृत्तमें तथा १६६२ ई०के ओलन्दाज शासन कर्त्ता ब्रूक (Von den Broucl )-के मानचित्रमें यह नगर वाणिज्य स्थान कह कर वर्णित हुआ है। ढाकामें मुसलमान-नवाबोंकी प्रतिष्ठा होनेके पहिले यह नगर मुसलमान अधिकारस्थ सीमान्तदेशमें अवस्थित तथा भिन्न राज्यके साथ वाणिज्यके लिये बहुत कुछ निर्यात था। नीलकी खेती पहलेकी तरह नहीं होती, पर रेशम तथा वस्त्रादि बुननेका कार्य पहले सा चला आ रहा है। शेरपुर और नन्दपाडामें इष्ट इण्डिया कम्पनीकी दो रेशमकी कोठी थी १८३४ जो ई०में यहासे उठा दी गई।

इस जिलेमें बगुडा और शेरपुर नामके २ शहर और ३८६५ ग्राम लगते हैं। जनसख्या ६ लाखके करीब है। इनमेंसे सैकडे पीछे १८ हिन्दू और शेष ८२ मुसलमान हैं। आबहवा कुल मिला कर अच्छी है, पर उक्त दोनों शहर करतोया नदीके किनारे अवस्थित होनेके कारण मलेरियाका अक्सर प्रकोप देखा जाता है। धान, पटसन, सरसों, चीनी, चमडा, तमाकू और गांजा यहा का उत्पन्न द्रव्य है। यमुनातीरवर्त्ती हिल्ली, दमदमा, जमालगञ्ज, वालुभरा, नौगाँव और दुबलहाटी, करतोया तीरवर्त्ती गोविन्दगञ्ज, शुमाणीगञ्ज, शिवगञ्ज, सुलतान गञ्ज और शेरपुर ये सब जिलेके प्रधान वाणिज्यस्थान समझे जाते हैं। विद्याशिक्षाकी ओर यह जिला बहुत पीछा पडा हुआ है। पर पहलेसे लोगोंका इस ओर कुछ विशेष ध्यान आकृष्ट हुआ है। अभी यहा कुल मिला कर ४६० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा जिलेमें ६ अस्पताल भी हैं।

२ उक्त जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २४ ५१´ उ० तथा देशा० ८६ २३´ के मध्य करतोया नदीके पश्चिम कुल पर अवस्थित है। जनसख्या ७ हजार है। शहरमें १८७६ ई०को म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। कालीतला और मालथी नगरकी हाट यहाका प्रधान स्थान है।

बगुलपतोख (हिं० पु०) जलमें रहनेवाली एक प्रकारकी चिडिया जो मुरगाबीसे छोटी होती है। इसका रग सफेद होता है और इसके पैर तथा चोंच काली होती है।

बगुला (हिं० पु०) बगला देखो।

बगुला—नदिया जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यहा ई, बी, एस रेलवेका एक स्टेशन होनेके कारण गोआडी कृष्ण नगर आदि स्थानोंमें जाने आने तथा वाणिज्यकी विशेष सुविधा हो गई है। इसके पास ही चूर्णी नामकी नदी बहती है।

बगूला (हिं० पु०) वह वायु जो गरमीके दिनोंमें कभी कभी एक स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है और जिससे गर्दका एक खभा सा बन जाता है। यह वायु-स्तम्भ आगेको बढता जाता है। इसका व्यास और ऊचाई कभी कम और कभी अधिक होती है। कभी कभी बडे व्यासवाले बगूलेमें पड कर बडे बडे पेड और मकान तक उखड कर उड जाते हैं। यह बगूला जब समुद्र या नदियोंमें होता है, तब उसे 'सूडी' कहते हैं और इससे पानी नलकी भाति ऊपर खिंच जाता है, बवडर।

बगेडी (हिं० स्त्री०) बगेरी देखो।

बगेरी (हिं० स्त्री०) खाकी रगकी एक छोटी चिडिया जो सारे भारतमें पाई जाती है। यह डील डौलमें गौरैयाके समान होती और मैदानोंमें जलाशयोंके पास पाई जाती है। यह जमीनके साथ इस प्रकार चिमट जाती है, कि सहजमें दिखाई नहीं देती। यह झुडोंमें रहती हैं। इसे सस्कृतमें भरद्वाज कहते हैं।

बगेचा (हिं० पु०) बगीचा देखो।

बगोधा (हिं० पु०) बगेरी नामकी चिडिया।

बग्गी (अ० स्त्री०) चार पहियेकी पाटनदार गाडी जिसे एक वा दो घोडे खींचते हैं।

बगडी—१ वङ्गालके अन्तर्गत एक विभाग। वागडी देखो।

२ मेदिनीपुरके उत्तर और हुगली तथा वाकुडाके

गाणिज्यका स्थान। यह स्थान वस्त्र व्यवसायके लिये प्रसिद्ध है। यहा जो कपडे तैयार होते हैं वे बगडो नामसे तमाम मशहूर हैं।

बघम्बर (हिं० पु०) १ बाघकी खाल जिस पर साधु लोग बैठ कर ध्यान लगाते हैं। २ बाघकी खालकी तरह बना हुआ कम्बल।

बघनहा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका हथियार। इसमें नाखूनके समान चिपटे टेढे कांटे रहते हैं। इसे उंगलियोंमें पहनते हैं और हाथापाई होने पर इससे शत्रुको नोच लेते हैं। २ एक आभूषण जिसमें बाघके नाखून चांदी या सोनेमें मढे होते हैं। इसे गलेमें तागेमें गूथ कर पहनते हैं।

बघार (हिं० पु०) १ छौंक, तडका। २ बघारनेकी महक।

बघारना (हिं० क्रि०) १ कलछी या चम्मचमें घीको आग पर तपा कर और उसमें हींग, जीरा आदि सुगंधित मसाले छोड कर उसे दाल आदिके बरतनमें मुंह ढांक कर छोडना जिसमें वह दाल आदि भी सुगंधित हो जाय, छौंकना। २ अपनी योग्यतासे अधिक, बिना मौके या आवश्यकतासे अधिक चर्चा करना।

बघेरा (हिं० पु०) लकडबग्घा।

बघेलखण्ड—मध्यभारतके अन्तर्गत एक विस्तीर्ण एजेन्सी। यह अक्षा० २२ ४०´ से २६ १०´ उ० तथा देशा० ८० ७५´ से ८२ ४५´ पू०के मध्य अवस्थित है। यह देशीय राजाओंके अधीन है तथा बडे लाटके मध्यभारतके एजेण्टसे शासित होता है। भूपरिमाण १४३२३ वर्ग मील है जिसमेंसे १३००० वर्गमील रेवाराज्यके अधीन है और शेष भाग ११ छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त है। इन ११ राज्योंके नाम हैं—बरौंदा, नागोद, मैहर, सोहावल, कोठी, जासो, पाल्देव, पहरा, तरौन, भैसौंदा और कामत रजौल। इसके उत्तरमें मिर्जापुर, इलाहाबाद और बांदा जिला, दक्षिणमें बिलासपुर, मण्डला और जब्बलपुर, पश्चिममें जब्बलपुर जिला और बुंदेलखण्ड एजेन्सी तथा पूरबमें छोटा-नागपुरका सामन्तराज्य है। जनसंख्या साढे पन्द्रह लाखके करीब है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या और वर्णोंसे अधिक है। इसमें रेवा, सतना, मैहर, उमरिया, गोविन्दगढ और उनचहर नामके ६ शहर तथा ६५५६ ग्राम लगते हैं। सतना यहांका प्रधान वाणिज्य स्थान है। १८७१ ई० तक यह स्थान बुन्देलखण्डके अधीन रहा। उसी सालसे यह बघेलखण्ड एजेन्सी कहलाने लगा है। बघेला नामक राजपूतोंके नामसे इसका बघेलखण्ड नाम पडा है। बघेला राजपूत एक समय गुजरातमें राज्य करते थे। (बघेला देखो)।

बघेला—शिशोदीय वंशीय राजपूत जातिकी एक शाखा। ये लोग पहले गुजरात प्रदेशमें राज्य करते थे। त्रिहुणपाल (त्रिभुवनपाल), दुर्लभ और वल्लभके शासनके बाद १३०० सम्वतमें विशलदेव पटनाके सिंहासन पर बैठे। इनके १८ वर्ष राज्य करनेके बाद अर्जुनदेवने १३२० सम्वत्में राज्याधिकार प्राप्त किया। उसके बाद १३३३ सम्वत्में सारङ्गदेवका राज्यारोहण देखा जाता है। १३५३ सम्वत्से १३६० सम्वत् तक कर्णने राज्य किया। शेषोक्त समयमें दिल्लीश्वर सुल्तान अलाउद्दीनने दलबलके साथ आ कर हिन्दू राजवंशको तहस नहस कर डाला। विचारश्रेणी तथा प्रवचनपरीक्षा नामक ग्रन्थमें इस राजवंशके राज्यकाल सम्बन्धमें बहुत सी बातें लिखी हैं।

रेवाकी बघेलराज-अध्यायिकासे मालूम होता है, कि अनहलवाडके अधिपति सिद्धराज जयसिंह (११०० ११५० ई०) के पुत्र व्याघ्रदेवने १२वीं शताब्दीमें यहां आ कर राज्य बसाया। व्याघ्रदेवके नामसे ही इनकी बघेला संज्ञा पडी है।

बघेली (हिं० स्त्री०) बरतन खरादनेवालोंका खूंटा। इसका ऊपरी सिरा आगेकी ओर कुछ बढा होता है। इस सिरेको थाई या नाक कहते हैं और इसी पर रख कर बरतन खरादा या कूना जाता है।

बघेरा (हिं० पु०) बघेरी देखो।

बङ्कनेर—ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत एक प्रधान नगर। यह मानतनीके किनारे अवस्थित है।

बङ्कापुर—बम्बई प्रदेशके धारवार जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० १४ ५१´ से १५ १०´ उ० और देशा० ७५ ४´ से ७५ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३४४ वर्गमील और जनसंख्या सत्तरे हजारसे ऊपर है। इसमें एक शहर और १४४ ग्राम लगते हैं। जलवायु स्वास्थ्यप्रद है।

= बम्बईके धारवार जिलान्तर्गत एक शहर। यह

अक्षा० १४ ५५´ उ० और देशा० ७५ १६´ पू०के मध्य अव स्थित है। जनसख्या छ हजारसे ऊपर है। यहा एक भग्न दुर्ग और दो मन्दिर हैं। प्रति मगलवारको हाट लगती है जिसमें मोटा कपडा, कम्बल, तेल और बरतन बिकनेके लिये आते हैं। ०७१ ई०में गङ्गवशके उदयादित्य नामक व्यक्ति यहाका शासन करते थे। १४०६ ई०में बाह्मनी सुल्तान फिरोज शाहने शहरमें घेरा डाला। १७७६ ई० में यह हैदरअलीके हाथ लगा। १८०२ ई०में बसीनकी सन्धिके अनुसार पेशवाने इसे वृटिश गवमेण्टको समर्पण किया। यहा रङ्गस्वामीका एक सुन्दर जैन मन्दिर है जिसमें अनेक शिलालिपिया खोदित हैं। शहरमें चार स्कूल हैं जिनमेंसे दो बालिकाओंके लिये हैं।

बङ्किमचन्द्रचट्टोपाध्याय—अन्तस्थ 'ब' देखो।

बङ्गस्—एक मुसलमान वश। ये लोग स्वभावत ही निरीह होते हैं। फर्रुखाबादके नवाब वंश इसी बङ्गशके मुसलमान हैं।

बच (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा। बचा देखो

बचकाना (हिं० वि०) १ बच्चोंके योग्य, बच्चोंके लायक। २ बच्चोंका सा, थोडी अवस्थाका।

बचत (हिं० स्त्री०) १ बचनेका भाव, बचाव। २ लाभ, मुनाफा। ३ वह भाग जो व्यय होनेसे बच रहे, शेष।

बचनविदग्धा (स० स्त्री०) वचनविदग्धा देखो।

बचना (हिं० क्रि०) १ कष्ट या विपत्ति आदिसे अलग रहना, रक्षित रहना। २ पीछे या अलग होना, हटना। ३ दूर रहना, परहेज करना। ४ किसी बुरी बातसे अलग रहना। ५ खरचने या काममें आने पर शेष रह जाना, बाकी रहना। ६ किसीके अन्तर्गत न आना, छुट जाना। ७ कहना।

बचपन (हिं० पु०) १ बाल्यावस्था, लडकपन। २ बच्चा होनेका भाव।

बचाना (हि० क्रि०) १ रक्षा देना, आपत्ति या कष्ट आदिमे न पडने देना। २ पीछे करना, हटाना। ३ ऐसे रोगसे मुक्त करना जिसमें मरनेकी आशा का हो। ४ प्रभावित न होने देना, अलग रखना। ५ छिपाना, चुराना। ६ किसी बुरी बातसे अलग रखना, दूर रखना। ७ व्यय न होने देना।

बचाव (हि० पु०) रक्षा, त्राण।

बचिया (हि० स्त्री०) कसीदेके काममें छोटी छोटी बूटिया।

बचुआ (हि० पु०) सिंध, उडीसा, बङ्गाल और आसाम की नदियोंमें मिलनेवाली एक प्रकारकी मछली। साधारणतः यह बालिश्त भर लम्बी होती है, पर इस जातिकी कोई कोई बडी मछली हाथ डेढ हाथ तक भी लम्बी होती है।

बचून (हि० पु०) भालूका बच्चा।

बचो (हिं० पु०) काश्मीर, सिंध और काबुलमें मिलने वाली एक बारहमासी लता। इसको जडसे मजीठकी तरहका रंग निकलता है। यह लता बीज और जड दोनोंसे उत्पन्न होती है। तीन वर्षसे ले कर पाच वर्ष तकमें इसकी जड पक कर तैयार होती है। इसकी पत्तिया पशु और विशेषत ऊँट बडे चावसे खाते हैं।

बच्चा (फा० पु०) १ किसी प्राणीका नवजात और असहाय शिशु। २ बालक, लडका।

बच्चाकश (फा० वि०) जो बहुत बच्चे जनती हो।

बच्चादान (फा० पु०) गर्भाशय, कोख।

बच्ची (हि० स्त्री०) १ वह छोटी घोडिया जो छत या छाजनमे बडी घोडियाके नीचे लगाई जाती है। २ वह बाल जो होंठके नीचे बीचमें जमता है। ३ बच्चा देखो।

बच्छ (हिं० पु०) १ बच्चा, बेटा। २ गायका बच्चा, बछडा।

बच्छनाग (हि० पु०) बछनाग देखो।

बच्छा (हिं० पु०) १ गायका बच्चा, बछडा। २ किसी जानवरका बच्चा।

बछडा (हि० पु०) गायका बच्चा।

बछनाग (हिं० पु०) एक स्थावर विष। यह नेपालके पहाडोंमें होनेवाला पौधेकी जड है। यह देखनेमें हिरनके सींगके आकारका होता है। विशेष विवरण वत्सनाभ शब्दमें देखो।

बछरा (हिं० पु०) बछडा देखो।

बछरावान—रायबरेली जिलेके अन्तर्गत एक परगना। भूपरिमाण ६४ वर्गमील है। १५वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मुसलमान सेनापति सैयद सलार मसाउद और वाई

राजाओंके हाथसे यथाक्रम परास्त और विध्वस्त होने पर भी यह स्थान भार जातिके अधिकारमें रहा। उसी साल जौनपुर राज सुलतान इब्राहिमने इस स्थान पर अधिकार जमाया। इब्राहिमने अपने कर्मचारी काजी सुलतानको यह सम्पत्ति दान कर दी। इसके बाद कुर्मी और बाइगणने पुनः उनके वंशधरोंके हाथसे छीन ली।

२ उक्त जिलेके दिग्विजयगञ्ज तहसीलका प्रधान नगर और सदर। यहां पांच शिव मन्दिर हैं।

बछौंटा (हिं० पु०) वह चंदा जो हिस्सेके मुताबिक लगाया या लिया जाय।

बजंत्री ( हिं० पु० ) बाजा बजानेवाला, बजनिया।

बज ( सं० पु० ) ओषधिविशेष।

बजकंद ( हिं० पु० ) भारतके जंगलोंमें पैदा होनेवाली एक बड़ी लता। इसकी जड़ विषैली और मादक होती है परन्तु उबालनेसे खाने योग्य हो सकती है।

बजकना ( हिं० क्रि० ) किसी तरल पदार्थका सड़ कर या बहुत गन्दा हो कर बुलबुले फेंकना, बजबजाना।

बजका ( हिं० पु० ) चनेकी दाल या बेसनकी बनी हुई बड़ी बड़ी पकौड़ियां जो पानीमें भिगो कर दहीमें डाली जाती हैं।

बजट ( अं० स्त्री० ) आगामी वर्ष या मास आदिके लिये भिन्न भिन्न विभागोंमें होनेवाले आय और व्ययका लेखा जो पहलेसे तैयार करके मंजूर कराया जाता है।

बजड़ना ( हिं० क्रि० ) १ टकराना। २ पहुंचना।

बजड़ा ( हिं० पु० ) बजरा देखो।

बजनक (हिं० पु०) पिस्तेका फल जो रेशम रंगनेके काममें आता है।

बजना—बम्बईकी काठियावाड़ एजेन्सीका एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २२ ५८´ से २३ १०´ उ० देशा० ७१ ४०´ से ७१ ५८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १८३ वर्गमील और जनसंख्या ४० हजारसे ऊपर है। सब तरहके शस्य और रुई यहांका प्रधान उत्पन्न द्रव्य है। कोई नद नदी न रहनेके कारण लोग कुएंके पानीसे अपना काम चलाते हैं। निकटवर्त्ती ढोलेरा नामक स्थानमें यहांका वाणिज्य होता है।

यहांके अधिवासी मुसलमान और जाट हैं। सरदार वंश भी मुसलमान हैं। १८०७ ई०में अंगरेजोंके साथ इनकी मित्रता हुई। यहांका राजस्व ७१००० रु० है जिनमेंसे ८ हजार रु० वृटिश-गवर्मेण्टको कर-स्वरूप देना पड़ता है। सैन्य-संख्या २३२ है। राजाको गोद लेनेका अधिकार नहीं है।

बजना ( हिं० क्रि० ) १ किसी प्रकारके आघात या हवाके जोरसे बाजे आदिमेंसे शब्द उत्पन्न होना। २ प्रख्याति पाना, प्रसिद्ध होना, कहलाना। ३ अड़ना, हठ करना। ४ शस्त्रोंका चलना। ५ प्रहार होना, आघात पड़ना। (पु०) ६ बजनेवाला बाजा। ७ रुपया। (वि०) ८ बजानेवाला।

बजनियां ( हिं० पु० स्त्री० ) वह जो बाजा बजाता या बजाती हो।

बजनिहां ( हिं० पु० ) बजनियां देखो।

बजनी ( हिं० वि० ) बजनेवाला, जो बजता हो।

बजरंग ( हिं० वि० ) वज्रके समान दृढ़ शरीरवाला।

बजरंगबली ( हिं० पु० ) महावीर, हनुमान।

बजरंगीबैठक ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी बैठक।

बजरंगगढ़—१ ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत एक सुबाहत। सूबादार ही यहांके सरदार हैं। ये ग्वालियर-राजके अधीन हैं।

२ उक्त सूबाकी राजधानी। यह अक्षा० २४ ३४´ उ० और देशा० ७७ १८´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां कार्त्तिक मासमें १५ दिन तक मेला लगता है।

बजरबट्टू ( हिं० पु० ) एक वृक्षके फलका दाना या बीज जो काले रंगका होता है और जिसकी माला लोग बच्चों को नजरसे बचनेके लिये पहनाते हैं। इसका पेड़ ताड़की जातिका है और मलाबारमें समुद्रके किनारे तथा लंकामें उत्पन्न होता है। बङ्गाल और बर्मामें भी इसे लोग बोते और लगाते हैं। इसके पत्ते बहुत बड़े और तीन साढ़े तीन हाथ व्यासके होते हैं। लोग इससे पंखे, चटाई, छाते आदि बनाते हैं। यूरोपमें इसके नरम और कोमल पत्तोंसे अनेक प्रकारके कढ़ावदार फीते बनाये जाते हैं और इसके रेशोंसे बुरुश बनाये और जाल बुने जाते हैं। इसकी रस्सियां भी बटी जा सकती हैं। इसके फल बहुत कड़े होते हैं और यूरोपमें उनसे बटन, मालाके

दाने तथा छोटे छोटे पात बनाये जाते हैं। मलवारमें इसके पेडोंको लोग समुद्रके किनारे बागोंमें लगाते हैं। यह पेड चालीस बयालीस वर्ष तक रहता है और अन्तमें पुराना हो कर गिर पडता है।

बजरबोंग (हि० पु०) १ अगहनमें होनेवाला एक प्रकार का धान। इसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है। २ बासका मोटा और भारी डंडा।

बजर हड्डी (हि० स्त्री०) घोड़े के पैरोंकी गाठोंमें होनेवाला एक फोडा जो पक कर फूट जाता है और तब यहा घाव हो जाता है। यह घाव बराबर बढता जाता है और गाठकी हड्डी फूल आती है। इससे घोडा बेकाम हो जाता है। यह रोग असाध्य माना जाता है।

बजरा (हि० पु०) १ एक प्रकारकी बड़ी और पटी हुई नाव। इसमें नीचेकी ओर एक छोटी कोठरी और एक बड़ा कमरा होता है तथा ऊपर खुली छत होती है। २ बाजरा देखो।

बजरी (हि० स्त्री०) १ ककडके छोटे छोटे टुकड़े जो गच के ऊपर पीट कर बैठाए जाते हैं और जिस पर सुरकी और चूना डाल कर पलस्तर किया जाता है। २ छोटा नुमायशी कगूरा। यह किले आदिकी दीवारोंके ऊपरी भागोंके बराबर थोड़े अन्तर पर बनाया जाता है और इसकी बगलमें गोलिया चलानेके लिये कुछ अवकाश रहता है। ३ ओला।

बजवाइ (हि० स्त्री०) बाजा बजानेकी मजदूरी।

बजवाना (हि० क्रि०) बजानेके लिये किसीको प्रेरणा करना, किसीको बजानेमें प्रवृत्त करना।

बजनैया (हि० वि०) बजानेवाला, जो बजाता हो।

बजा (फा० वि०) उचित, वाजिब।

बजाज (अ० पु०) कपड़े का व्यापारी, कपडा बेचनेवाला।

बजाजा (फा० पु०) बजाजोंका बाजार, कपड़े बिकनेका स्थान।

बजाजी (फा० स्त्री०) १ कपडा बेचनेका व्यापार, बजाजका काम। २ बजाजकी दूकानका सामान, बिक्रीके लिये खरीदा हुआ कपड़ा।

बजाना (हिं० क्रि०) १ किसी बाजे आदि पर आघात पहुचा कर अथवा हवाका जोर पहुचा कर उससे शब्द उत्पन्न करना। २ आघात पहुचाना। २ किसी चीजसे मारना। ३ चोट पहुचा कर आवाज निकालना।

बजाय (फा० अव्य०) स्थान पर, जगह पर, बदलेमें।

बजारी (हिं० वि०) १ बाजारसे सम्बन्ध रखनेवाला, बाजारू। २ साधारण, सामान्य।

बजारू (हिं० वि०) बाजारू देखो।

बजुआ (हिं० पु०) बाजू देखो।

बजुल्ला (फा० पु०) बाह पर पहननेका विशायट नामका आभूषण।

बजूरा (हिं० पु०) बिजूखा देखो।

बज्जात (फा० वि०) दुष्ट, बदमाश, पाजी।

बज्जाती (फा० स्त्री०) दुष्टता, बदमाशी।

बज्मी—कर्लावासी एक मुसलमान-कवि। इनका असल नाम अबदुल सफर था। कुछ समय सिराज नगरमें रह कर ये सम्राट् जहागीरके शासनकालमें गुजरात राज्य आये। इन्होंने १६१६ ई०में पद्मावती नामक पारसी भाषा में पद्मावती उपाख्यान लिखा। सम्राट् शाहजहान्के राजत्वकालमें १६३४ ई०को ये जीवित थे।

बज्र (स० पु०) वज्र देखो।

बझवट (हि० स्त्री०) १ वन्ध्या स्त्री, बाझ औरत। २ २ बाँझ गाय, भैंस या कोइ मादा पशु। ३ अन्नके पौधोंके डठल जिनसे बाले तोड ली गई हों।

बझान (हि० स्त्री०) बझनेकी क्रिया या भाव, बझाव।

बझाना (हिं० क्रि०) बधनमें लाना, उलझाना।

बझाव (हिं० पु०) १ बझनेका भाव, फँसनेकी क्रिया या भाव। २ उलझाव, अटकाव।

बझावट (हिं० स्त्री०) १ बझनेकी क्रिया या भाव। २ उलझाव, अटकाव।

बट (हिं० पु०) १ बट देखो। २ बड़ा नामका पकवान, बरा। ३ रस्सीकी ऐंठन, बल। ४ बाट, बटखरा। ५ बट्ट, लोढ़िया। ६ गोल वस्तु, गोला। मार्ग, रास्ता।

बटई (हि० स्त्री०) बटेर नामकी चिड़िया।

बटखर (हि० पु०) बटखरा देखो।

बटखरा (हि० पु०) तौलनेका मान, बाट।

बटन (हि० स्त्री०) १ रस्सी आदि बटने या ऐंठनेकी क्रिया या भाव, ऐंठन। (पु०) २ एक प्रकारका बादलेका

तार। ३ चिपटे आकारकी बड़ी गोल घुंडी। यह घुंडी कोट, कुरते, अंगे आदिमें टँकी रहती है और इसे छेदमें डाल देनेसे खुली जगह बंद हो जाती है तथा कपड़ा बदनको पूरी तरहसे ढक लेता है।

बटना (हि० क्रि०) १ कई तंतुओं तागों या तारोंको एक साथ मिला कर इस प्रकार ऐंठना या घुमाना कि वे सब मिल कर एक हो जायँ। २ सिल पर रख कर पीसा जाना, पिसना।

बटना (हि० पु०) १ रस्सी बटनेका औजार। २ सरसों चिरौंजी आदिका लेप जो शरीरकी मैल छुड़ानेके लिये मला जाता है, उबटन।

बटपार (हि० पु०) बटमार देखो।

बटपारी (हि० स्त्री०) बटमारका काम, डकैती, ठगी।

बटम (हि० पु०) पत्थर गढ़नेवालोंका एक यन्त्र जिससे कोना साधते हैं, कोनिया।

बटमार (हि० पु०) मार्गमें मार कर छीन लेनेवाला, डाकू, लुटेरा।

बटला (हि० पु०) बड़ी बटलोई, देग, देगचा।

बटली (हि० स्त्री०) बटलोई।

बटलोई (हि० स्त्री०) दाल, चावल आदि पकानेका चौड़े मुंहका गोल बरतन, देगची।

बटवाना (हि० क्रि०) बँटवाना देखो।

बटवायक (हि० पु०) चौकीदार, रास्तेमें पहरा देनेवाला।

बटवार (हि० पु०) १ राह बाटकी चौकसी रखनेवाला कर्मचारी, पहरेदार। २ रास्तेका कर उगाहनेवाला।

बटा (हि० पु०) १ वर्तुलाकार वस्तु, गोला। २ पथिक, राही। ३ गेंद। ४ रोड़ा, ढेला।

बटाइ (हि० स्त्री०) १ बटने या ऐंठन डालनेका काम। २ बटनेकी मजदूरी। ३ बँटाई देखो।

बटाऊ (हि० पु०) बाट चलनेवाला, बटोही, पथिक।

बटाना (हि० क्रि०) बंद हो जाना, जारी न रहना।

बटाली (हि० स्त्री०) बढ़इयोंका एक औजार, रुखानी।

बटिया (हि० स्त्री०) १ गोल मटोल टुकड़ा, छोटा गोला। २ छोटा बट्टा, लोढ़िया।

बटी (हि० स्त्री०) १ बड़ी नामका पकवान। २ गोली।

बटु (स० पु०) वटु देखो।

बटुआ (हि० पु०) बटुवा देखो।

बटुक (स० पु०) वटुक देखो।

बटुरना (हि० क्रि०) १ सिमटना, फैला हुआ न रहना। २ एकत्र होना, इकट्ठा होना।

बटुई (हिं० स्त्री०) एक वृक्ष, खेमारी।

बटुला (हि० पु०) बड़ी बटलोई।

बटुवा (हि० पु०) १ एक प्रकारकी कपड़े या चमड़ेकी गोल थैली। इसके भीतर कई खाने होते हैं और मुँह पर डोरे पिरोए रहते हैं जिन्हें खींचनेसे मुँह खुलता और बंद होता है। लोग इसे सफरमें साथ रखते हैं, क्योंकि इसके भीतर बहुतसी फुटकर चीजें आ जाती हैं।

बटेर (हिं० स्त्री०) भारतवर्षसे लेकर अफगानिस्तान, फारस और अरब तकमें मिलनेवाली एक छोटी चिड़िया। यह तीतर या लवाकी तरह होती है। इसका रंग भी तीतरका सा होता है, पर यह उससे छोटी होती है। लोग इसका शिकार करते हैं, क्योंकि इसका मांस बहुत पुष्ट समझा जाता है। लड़ानेके लिये शौकीन लोग इसे पालते भी हैं। ऋतुके अनुसार यह स्थान भी बदलती है और प्राय झुंडमें पाई जाती है। यह धूपमें रहना पसन्द नहीं करती, छाया ढूँढती है।

बटेरबाज (हि० पु०) बटेर पालने या लड़ानेवाला।

बटेरबाजी (हि० स्त्री०) बटेर पालने या लड़ानेका काम।

बटेरा (हि० पु०) कटोरा।

बटेश्वर—युक्तप्रदेशके आगरा जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° ५६' उ० और देशा० ७८° ३३' पू० आगरासे दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। यहां प्रतिवर्ष कार्त्तिक संक्रान्तिमें एक बड़ा भारी मेला लगता है। इस समय डेढ़ दो लाख मनुष्य जमा होते हैं। बटेश्वरक्षेत्रमें उस दिन गङ्गा स्नान महापुण्यजनक माना गया है। अलावा इसके मेलेमें ७ हजार घोड़े, ३ हजार ऊंट और १० हजार गायें बिकने आती हैं।

बटोई (हि० पु०) बटाही देखो।

बटोर (हि० पु०) १ बहुतसे आदमियोंका इकट्ठा होना, जमावड़ा। २ कूड़े करकटका ढेर। ३ वस्तुओंका ढेर

जो इधर उधरसे बटोर कर या इकट्ठा करके लगाया गया हो।

बटोरन ( हि० स्त्री० ) १ वस्तुओंका ढेर जो इधर उधरसे झाड़ बटोर कर लगाया गया हो। २ खेतमें पड़ा हुआ अन्नका दाना जो बटोर कर इकट्ठा किया जाय। ३ कूड़े करकटका ढेर।

बटोरना ( हि० क्रि० ) १ इकट्ठा करना, एकत्र करना। २ इधर उधर पड़ी चीजोंको चिन चिन कर इकट्ठा करना, चुन कर एकत्र करना। ३ समेटना, फैला न रहने देना। ४ फैली या बिखरी हुई वस्तुओंको समेट कर एक स्थान पर करना।

बटोहिया ( हि० पु० ) बटोही देखो।

बटोही ( हि० पु० ) पथिक, राही।

बट्ट ( हि० पु० ) १ गेंद। २ गोला, बटा। ३ बाट, बटखरा। ४ बल, शिकन।

बट्टा ( हि० पु० ) १ दलाली, दस्तूरी, डिसकाउंट। २ हानि, नुकसान। ३ पत्थरका गोल टुकड़ा जो किसी वस्तुको कूटने या पीसनेके काममें आवे, कूटने या पीसनेका पत्थर, लोढ़ा। ४ पत्थर आदिका गोल टुकड़ा। ५ कटोरा या प्याला जिसे औंधा रख कर बाजीगर यह दिखलाते हैं, कि उसमें कोई वस्तु आ गई या उसमेंसे कोई वस्तु निकल गई। ६ एक प्रकारकी उबाली हुई सुपारी। ७ पान या जवाहिरात रखनेका गोल डिब्बा। ८ पूरे मूल्यमें वह कमी जो किसी सिक्के आदिको बदलने या तुड़ानेमें हो, वह अधिक द्रव्य जो सिक्का भुनाने या उसी सिक्केकी धातु लेनेमें देना पड़े। ९ खोटे सिक्के धातु आदिके बदलने या बेचनेमें वह कमी जो उसके पूरे मूल्यमें हो जाती है।

बट्टाखाता ( हि० पु० ) वह बही या लेखा जिसमें नुकसान लिखा जाय, डूबी हुई रकमका लेखा या बही।

बट्टाढाल (हि० वि०) इतना चौरस और चिकना कि उस पर कोई गोला लुढ़काया जाय, खूब समतल और चिकना।

बट्टी ( हि० स्त्री० ) १ छोटा बट्टा, पत्थर आदिका गोल छोटा टुकड़ा। २ समडौल कटा हुआ टुकड़ा, बड़ी टिकिया। ३ कूटने पीसनेका पत्थर, लोढ़िया।

बट्टू ( हि० पु० ) धारीदार चारखाना। २ बजरबट्टू, ताली। ३ घोड़ा, लोबिया।

बट्टेबाज ( हि० वि० ) नजरबन्दका खेल करनेवाला, जादूगर। २ धूर्त, चालाक।

बठिया ( हि० स्त्री० ) उपलोंका ढेर, पाथे हुए सूखे कंडोंका ढेर।

बठ्ठना ( हि० क्रि० ) बैठना।

बठ्ठसना ( हि० क्रि० ) बैठना।

बडगा ( हि० पु० ) लवा बल्ला जो छाजनके बीचोबीच लंबाईके बल आधार रूपमें रहता है, बँडेरी।

बगड़ी ( हि० पु० ) घोड़ा।

बडगू ( हि० पु० ) कोंकण, मलाबार, त्रावङ्कोर आदिकी ओर होनेवाला एक जंगली पेड़। इसमेंसे एक प्रकारका तेल निकलता है।

बड़ ( हि० स्त्री० ) १ प्रलाप, बकवाद। ( पु० ) २ बरगदका पेड़।

बड़का ( हि० वि० ) बड़ा देखो।

बड़कुइयां ( हि० पु० ) कच्चा कुआं।

बड़कौला ( हि० पु० ) बरगदका फल।

बडगोहिया—क्षुद्र जातिका हरिण। हरिण देखो।

बडगङ्ग—चट्टग्रामके ढेकनाक पर्वतमालाके अन्तर्गत एक छोटा पहाड़।

बडगल—मन्द्राजप्रदेशवासी वैष्णव सम्प्रदाय। ये लोग रामानुज सम्प्रदायके अन्तर्भुक्त हैं। कमसे कम छः सौ वर्ष पहले काञ्चीपुरनिवासी वेंकटेश्वर नामक एक वैदान्तिक ब्राह्मण इस सम्प्रदायका प्रवर्त्तन कर गये। उन्होंने यह प्रचार कर दिया था कि, "दाक्षिणात्यमें ब्राह्मणकुलके आचार व्यवहारका संशोधन और दक्षिणापथमें आयावर्त्तके सनातन शास्त्र और धर्मकी पुनः प्रतिष्ठा करनेके लिये मैं जगदीश्वरसे भेजा गया हूं।"

ये लोग साक्षात् विष्णुके उपासक हैं। विष्णुकी तरह विष्णु शक्तिका अस्तित्व और प्रभावशालित्व स्वीकार करते हैं। तिलकधारण इस सम्प्रदायका एक प्रधान अङ्ग है। ये लोग रामानन्दीकी तरह ऊर्द्ध्वपुण्ड्रके मध्य स्थलमें विन्दु न दे कर रक्तवर्ण श्री धारण करते हैं, किन्तु उन लोगोंकी तरह भौंके नीचे नाकके ऊपर सिंहासन अङ्कित नहीं करते। यही तिलक ले कर इन लोगोंके साथ वहांके तिङ्गलोंका महाविवाद हो गया था। आखिर

काञ्चीपुरकी अदालतसे इसका निवटेरा हुआ। इस सम्प्रदायके सभी वैष्णव विद्वान हैं। संस्कृत धर्मशास्त्र का अनुशीलन करना इन लोगोंका प्रधान काय है।

वड़गाँव—पटना जिलेके विहार उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २५ ८ उ० तथा देशा० ८५ २६ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ५६७ है। यहांका तथा पार्श्ववर्ती स्थानोंका भग्नस्तूप देखनेसे अनुमान किया जाता है, कि एक समय यहां कोई विस्तृत राज्य अवस्थित था। (१)

फाहियानने लिखा है, कि नलग्राम (नालन्दा गिरि एक पर्वत (जिसका नाम उन्हें मालूम नहीं) से १ योजन और नूतनराजगृहसे प्राय उतनी ही दूर होगा। यूएन चुयंगके वचनसे हम लोगोंको मालूम होता है, कि यह राजगृहसे ५ मील उत्तर और बुद्धगयाके पवित्र वोधि द्रुमसे ७ योजनकी दूरी पर अवस्थित था। (२)

चीनपरिव्राजक फाहियान और यूएन चुयंगके वर्णनका अनुसरण करनेसे यही स्थान प्राचीन बौद्धक्षेत्र नालन्दा समझा जाता है। नालन्दा एक समय बौद्धधर्म और शास्त्रालोचनाका प्रसिद्ध स्थान था। यहां अनेक संघाराम विहार, स्तूप और बौद्ध देवदेवियोंकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित हुई थी। नालन्दा देखो।

वड़गाममें जो उच्च और दूरविस्तृत इष्टकस्तूप पड़े हैं उन्हें कनिंहम भी यूएन चुयंग वर्णित बौद्धसंघाराम मानते हैं। (३) उन सब स्तूपोंमेंसे अनेक पत्थर और बुद्धमूर्त्ति ग्रामवासी अपने अपने घर उठा ले गये हैं। यहांके वटुकभैरव नामक स्थानके चत्वरमें बुद्धदेवकी सबसे बड़ी मूर्त्ति स्थापित है। सम्भवत यही मूर्त्ति पहले बालादित्यविहारमें प्रतिष्ठित हुई थी। अभी वड़गाँवके मध्य अनेक वस्तु देखने लायक हैं, यथा —१ वटुक भैरवके चतुष्पार्श्वस्थ भास्करशिल्प, २ सुवृहत् ध्यानी बुद्धमूर्त्ति, मूर्त्तिके चारों बगल आर्यसारिपुत्र, आर्यमौद्गलायन, आर्य मैत्रेय नाथ और आर्य वसुमित्र आदि अनुचरवर्ग। उन अनुचरोंके नाम प्रतिमूर्त्तिमें ही अङ्कित हैं। यह मूर्त्ति बौद्धभिक्षुणी धर्मोपासिका गड्डा द्वारा प्रदत्त हुई है। ३ वज्रवाराही मन्दिर, वड़गाँवके राजप्रासाद और हिन्दू मन्दिरादिमें रक्षित बुद्धमूर्त्ति तथा गरुड़वाही नारायण, वागीश्वरी आदि इधर उधर प्रतिष्ठित देखी जाती हैं। यहां बुद्धगयाके प्रसिद्ध मन्दिरकी नकल पर एक जैन मन्दिर स्थापित है। यह मन्दिर ५वीं शताब्दीका बना हुआ मालूम होता है। पीछे उस मन्दिरमें बौद्ध मूर्त्ति के बदले १५०४ सम्वत्‌को जैनतीर्थङ्कर महावीरकी मूर्त्ति स्थापित हुई है। सूर्यकुण्डके किनारे बौद्धमूर्त्तिके साथ वराह अवतार, विष्णु, शिव पार्वती और सूर्यमूर्त्ति आदि दृष्टिगोचर होती हैं। अलावा इसके यहां बहुत सी बड़ी बड़ी पुष्करिणियां भी हैं।

वड़गूजर—राजपूतानावासी क्षत्रिय जाति। ये लोग अपने को श्रीरामचन्द्रके पुत्र लवके वंशधर बतलाते हैं। माचाड़ी राजवंश इसी शाखामें उत्पन्न हुए हैं।

माचाड़ी देखो।

वड़गुल्ला (हिं० पु०) एक प्रकारका वगला।

वड़चोटी—१ पञ्चकूट राज्यके अन्तर्गत एक ग्राम।

२ गया जिलेके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम और पुलिस सदर। यह अक्षा० २४ ३० १० उ० और देशा० ८५ ३ १० पू०के मध्य अवस्थित है।

वड़दुमा (हिं० पु०) वह हाथी जिसकी पूंछकी पंगनी पाव तक हो, लम्बी दुमका हाथी।

वड़नगर—मध्यप्रदेशके ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत उज्जैन जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २३ ४ उ० और देशा० ७६ २३ चामला नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या दस हजारसे ऊपर है। पहले यह रानपुन

(१) डा० बुकाननको विहारवासी किसी जैन पुरोहितसे मालूम हुआ, कि यहां राजा श्रेणिक और उनके वंशधरोंने राज्य किया था। यहांके ब्राह्मणोंका कहना है, कि यह कृष्णपत्नी रुक्मिणी देवीकी जन्मभूमि कुण्डननगरीका ध्वंसावशेष मात्र है।

(2) Beal s Fa Hian xxvm & Julien s Hiwen Thsang 1 143

(३) शक्रादित्य, बुधगुप्त, तथागत, बालादित्य, वज्र और मध्यभारत राजप्रतिष्ठित ६ घर हैं। अलावा इसके अवलोकितेश्वर मूर्त्ति और विहार, बालादित्यविहार, ताराबोधिसत्वविहार वृषत्वदेवीमन्दिर, बुद्धके केश और नखादि, ध्यानी बुद्धमूर्त्ति, भैरव, नानास्तूप और विहार निर्माणमें कनिंहम साहब सफलप्रयत्न हुए हैं।

वहराम लोधर शके अधिकारमें था। पीछे १८वी शताब्दीमें सिन्धियाके हाथ लगा। शहरमें एक डाक घर, अस्पताल, स्कूल और धर्मशाला है।

वडपेटा—१ पूर्व बङ्गाल और आसामके कामरूप जिलेका एक उपविभाग। भूपरिमाण २०६ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २६ १६ उ० और देशा० ६१ १ पू०के मध्य चौलपोशा नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या दश हजारके लग भग है। यहा नाव द्वारा चावल, रवर, रुई, तिलादि का विस्तृत वाणिज्य चलता है।

वडप्पन (हिं० पु०) महत्व, गौरव, वडाई। वस्तुओंके विस्तारके सम्बन्धमें इस शब्दका प्रयोग नहीं होता, इससे केवल पद, मर्यादा, अवस्था आदिकी श्रेष्ठता समझी जाती है।

वडफनी (हि० स्त्री०) वहुत चौडी मठिया।

वडफेणी—मेघना नदीकी एक शाखा।

वडवट्टा (हिं० पु०) वरगदका फल।

वडवड (हिं० स्त्री०) व्यर्थका बोलना, वकवाद।

वडवडाना (हिं० क्रि०) १ प्रलाप करना, व्यर्थ वोलना। २ कोई वात बुरी लगने पर मुँहमें ही कुछ बोलना।

वडवडिया (हिं० वि०) वड वड करनेवाला, वकवादी।

वडवुदर—यवद्वीप स्थित एक प्राचीन स्थान। यहा जो बुद्धमन्दिर है उसीके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है।

यवद्वीप देखो।

वडवेल—१ कडापा जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। भूपरिमाण ७५५ वर्गमील है। वडवेल, केटूरु पोरुमामिल्ल, पाल गुरलपल्ली, केटूरु, सेनकायरम्, कानुरुकुण्डला, मुन्नेली, चार्लोपल्ली और कटेरगण्डला इसके प्रधान नगर हैं।

२ उक्त तालुकका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० १४ ४५ उ० और देशा० ८६ ६ पू०के मध्य अवस्थित है। यह स्थान वहुत प्राचीन और ऐतिहासिकोंका द्रष्टव्य स्थान है।

वडवोल (हिं० वि०) वडी वडी वातें करनेवाला, लम्बी चौडी हाकनेवाला।

वडभाग (हिं० वि०) वडभागी देखो।

वडभागी (हिं० वि०) भाग्यवान्, वडे भाग्यवाले।

वडमूल—१ काश्मीरराज्यके अन्तर्गत एक पर्वत कन्दर। इस स्थान हो कर झेलम नदी वहती है। वडमूल नगर इस स्थानके दहिने किनारे वसा हुआ है।

२ काश्मीरराज्यका एक शहर। यह अक्षा० ३४ १२ उ० और देशा० ७४ २३ पू०के मध्य अवस्थित है। जन संख्या छ हजारके करीव है। यहा भूकम्प अकसर हुआ करता है। १८८५ ई०में जो भूकम्प हुआ था, उस से शहरकी महती क्षति हुई थी।

वडम्वा—उडीसाके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २० २७से २० ३१ उ० तथा देशा० ८५ १२से ८५ ३१ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १३४ वर्गमील और जनसंख्या ४० हजारके करीव है। इसके उत्तरमें हिन्दोल, पूर्वमें तिगरिया, दक्षिणमें कटक और खण्डपाडा तथा पश्चिममें नरसिंहपुर सामन्त राज्य है। कणिकाशिखर ही यहाकी गिरिश्रेणीका सर्वोच्च स्थान है।

इस राज्यकी प्रतिष्ठाके सम्वन्धमें एक प्रवाद यों प्रचलित है,—किसी उडीसाके राजाने एक मशहूर कुश्ती वाजके कौशल पर प्रसन्न हो उसे दो ग्राम दान किये। उस ग्राममें कन्ध नामक असभ्य जातिका वास था। कन्धोंको भगा कर उसने वह ग्राम अपने दखलमें कर लिया। पीछे और वहुतसे स्थान जीत कर उसने अपना राज्य वढाया। वर्त्तमान राजा विश्वम्भर वीरवर मङ्गराज महापात्र अपनेको क्षत्रिय वतलाते हैं। इनके अधीन ७०६ शिक्षित सेना और १८८ अस्त्रधारी प्रहरी नियुक्त हैं। ये अपने कोशसे विद्यालय और डाकघरका खर्च देते आ रहे हैं।

नीचे वडम्वा सामन्त राजाओंके नाम और अधिकार काल लिखे गये हैं—

| | | |
|---|---|---|
| हाटकेश्वर राउत | १३०५ से | १३२७ ई० |
| मालकेश्वर राउत | १३२७ „ | १३४५ „ |
| दुर्गेश्वर राउत | १३४५ „ | १३७१ „ |
| जम्नेश्वर राउत | १३७५ „ | १४१६ „ |
| भोलेश्वर राउत | १४१६ „ | १४५६ „ |
| कम्बू राउत | १४५६ „ | १५१४ „ |
| माधव राउत | १५१४ „ | १५३७ „ |
| नवीन राउत | १५३७ „ | १५६० „ |

| | | |
|---|---|---|
| वसुधर राउत | १५६० से | १५८४ ई० |
| चन्द्रशेखर मङ्गराज | १५८४ „ | १६१७ „ |
| नारायण मङ्गराज | १६१७ „ | १६३५ „ |
| कृष्णचन्द्र मङ्गराज | १६३५ „ | १६५० „ |
| गोपीनाथ मङ्गराज | १६५० „ | १६७६ „ |
| बलभद्र मङ्गराज | १६७६ „ | १७११ „ |
| फकीर मङ्गराज | १७११ „ | १७४३ „ |
| सानुधर मङ्गराजमहापात्र | १७४३ „ | १७४८ „ |
| पद्मनाभ वीरवर मङ्गराज | १७४८ „ | १७६३ „ |
| पिण्डिक वीरवर मङ्गराजमहापात्र | १७६३ „ | १८४१ „ |
| गोपीनाथ वीरवरमङ्गराज महापात्र | १८४१ „ | १८६६ „ |
| दाशरथी वीरवरमङ्गराजमहापात्र | १८६६ „ | १८८१ „ |
| विश्वम्भर वीरवरमङ्गराजमहापात्र | १८८१ „ | |

( वर्त्तमान राजा )

वड़रा (हिं वि०) बड़ा।

वड़राना (हिं० क्रि०) बर्राना देखो।

वड़वा (सं० स्त्री०) बलं वातीति वल वा-क टाप्, डलयोरैक्यात् लस्य डत्व। १ घोटकी, घोड़ी। २ अश्विनी रूपधारिणी सूर्यपत्नी संज्ञा। ३ तृतीया सूर्यपत्नी। ४ अश्विनीनक्षत्र। ५ नारीविशेष। ६ दासी। ७ वासुदेवकी एक परिचारिका। ८ नदीविशेष। ९ तीर्थभेद। १० वड़वाग्नि, समुद्रके भीतरकी आग या ताप। इसका उत्पत्ति विवरण कालिकापुराणमें इस प्रकार लिखा है—महादेवका कोपानल जब मदनको भस्म करके दर्शकवृन्दको भस्म करनेके लिये तैयार हुआ तब ब्रह्माने उसे वड़वा या घोड़ीके रूपमें कर दिया। देवगण उस अग्निको वड़वारूप धारण करते देख निश्चिन्त हुए। पीछे ब्रह्मा उस वड़वाको ले कर जगत्की भलाईके लिये समुद्रके किनारे गये। समुद्रने ब्रह्माको अपने किनारे उपस्थित देख उनकी पूजा की और आनेका कारण पूछा। ब्रह्माने कहा, "यह वड़वारूपधारी महादेवके क्रोधानलसे उत्पन्न हुआ है, जब तक मैं इसे पुनर्वार ग्रहण न करूं, तब तक तुम इसे अपने हवाले रखना। जिस समय मैं आ कर इसे छोड़ देने कहूंगा, उस समय तू इसे छोड़ देना। तुम्हारा केवल जल पी कर वड़वा यहां पर रहेगी। तुम इसे यत्नपूर्वक अपने पास रखना, कहीं भी जाने न देना।" ब्रह्माके इतना कहने पर समुद्रने इच्छा नहीं रहते हुए भी इसे स्वीकार कर लिया। इसके बाद वडवामुख अग्नि समुद्रमें प्रवेश कर ज्वाला समूहसे प्रदीप्त हो समुद्रके जलको दग्ध करने लगी।

वड़वाहृत (सं० पु०) वड़वया दास्या हृतः। पन्द्रह प्रकारके दासोंमेंसे एक दास।

"भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वड़वाहृत।"

( नारद )

'वड़वा दासी तल्लोभात् अङ्गीकृतदास्य' ( दायक्रमसं० )

अर्थात् वड़वा दासीके लिये जिस व्यक्तिने दासत्व अङ्गीकार किया है। कहीं कहीं 'वडवाभृत' और 'वड़वाहृत, ऐसा भी पाठ देखनेमें आता है।

वड़वाग्नि (सं० पु०) वड़वायां समुद्रस्थितायां घोटक्याः मुखस्थोऽग्नि। समुद्राग्नि। वड़वा और वड़वानल देखो।

वड़वानल (सं० पु०) वड़वाया अनलः। वड़वाग्नि। पर्याय—सलिलेन्धन, वड़वामुख, फाकध्वज, वाणिज, स्कन्दाग्नि, तृणधुक्, काष्ठधुक्, और्व, वाड़व।

किसी समय महर्षि और्व अयोनिज पुत्रकी कामना करके अपना वक्षस्थल मथने लगे। इससे एक ज्वालामय पुरुष उत्पन्न हुआ। उस पुरुषने उत्पन्न हो कर पिता और्वसे प्रार्थना की, 'मैं भूखके मारे व्याकुल हो रहा हूं, अत मुझे जगत्भक्षणकी आज्ञा दीजिये।' इसी समय ब्रह्मा और्वके समीप पहुंच गये और उनसे बोले, 'अपने पुत्रको सम्हालो, सारा संसार इससे कष्ट पा रहा है।' इस पर और्वने निवेदन किया, 'भगवन्! आप ही इस पुत्रकी वृत्ति स्थिर कर दीजिए।' ब्रह्माने कहा, 'समुद्रमें वड़वामुखमें इसका वासस्थान और समुद्रकी वारिरूप हवि ही इसकी खाद्य वस्तु होगी। इस जगत्‌में यह वड़वानल नामसे प्रसिद्ध होगा। जब जगत्का अन्तकाल आयेगा तब यह आसदेवासुरोंको भक्षण करेगा।' इस प्रकार उसकी वृत्ति स्थिर करके ब्रह्म पितामह चल दिये। तभीसे यह ज्वालामय पुरुष समुद्रके वड़वामुखमें रहने लगा। (मत्स्यपु० ५१० अ०)

वड़वा देखो।

२ लङ्काके दक्षिण पृथ्वीके चतुर्थ भागरूप स्थानविशेष। (सिद्धान्त शिरोमणि)

वडवानलचूर्ण ( स ० पु० ) एक चूर्ण जिसके सेवनसे अजीर्णका नाश और क्षुधाकी वृद्धि होती है। ( वैद्यक )

वडवानलरस ( स ० पु० ) वटिकौषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—पारा, गन्धक, पिपुल, विटलवण, उद्भिद-लवण, सौवर्चललवण, मिर्च, हरीतकी, आमलकी, वहेड़ा, यवक्षार, साचिक्षार और सोहागा इन सब द्रव्योंका समान भाग ले कर चूर्ण करे। पीछे सम्हालूकी पत्तियों-के रसमें एक दिन भावना दे कर दो या तीन रत्तीकी गोली बनावे। रोगीके अवस्थानुसार अनुपान दे। इसके सेवनसे मंदाग्नि बहुत जल्द दूर हो जाती है। ( रसेन्द्रसारसं० अजीर्णाधि० )

अन्यविध—पारा, गन्धक, माक्षिक, यवक्षार, ताम्र और अभ्र सम भाग ले कर चीते और अकवनके रसमें सौंद कर २ रत्तीकी गोली बनाये। अनुपान पानका रस है। इस औषधके सेवनके बाद हींग, सैन्धवलवण, सौवर्चल लवण, अनार, बिल्व, कुल मिला कर दो तोला, भृङ्गराज रसमें पीस कर सुराके साथ मिला कर सेवन करना होता है। इसके सेवनसे सब प्रकारके गुल्मशूल और परिणामशूल जाते रहते हैं। ( रसेन्द्रसारसं० गुल्मचि० )

वडवामुख ( स ० पु० ) वडवाया घोटक्या मुखं आश्रय त्वेनास्त्यस्य अर्श आदित्वादच्। १ वडवानल। २ शिव का मुख। ३ महादेवका नामभेद। ४ कूर्मके दक्षिण कुक्षिमें स्थित एक जनपद।

"कूर्मस्य दक्षिणे कुक्षौ वाह्य पादस्तथापरम्।
काम्बोजा पह्नवाश्चैव तथैव वडवामुखा॥"
( मार्कपु० ५८।३० )

५ वटिकौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा, ताम्र, अभ्र, सोहागा, फर्कचलवण यवक्षार, ( जवाखार ) साचिक्षार ( सज्जीखार ), सैन्धवलवण, सोंठ, अपामार्ग, पलाश और वरुणक्षार सम भाग ले कर और अम्लवर्गके रसमें भावना दे कर तथा फिर चीतेके रसमें वार वार सौंद कर लघुपुटपाक द्वारा तैयार करे। इसकी मात्रा १ माशा है। इसके सेवनसे ज्वर और ग्रहणी रोग दूर होते हैं।

वडवार ( हिं० वि० ) बड़ा देखो।

वडवारी ( हिं० स्त्री० ) १ महत्त्व, वडप्पन। २ प्रशंसा, वडाई।

वडवाल ( हिं० स्त्री० ) हिमालयके उस पारकी तराईकी भेड़ोंकी एक जाति।

वडवासुत ( स ० पु०) वडवाया घोटकी रूपाया सुत। अश्विनीकुमार। इन दोनोंके नाम नासत्य और दस्र भी हैं। ये दोनों स्वर्गके चिकित्सक और परम रूपवान् हैं। सूर्यदेवकी वडवापत्नीके गर्भसे इन्होंने जन्मग्रहण किया है। हरिवंशके ६ ठें अध्यायमें इनकी उत्पत्तिका पूरा विवरण लिखा है। अश्विन् और अश्विनीकुमार देखो।

वडवाहृत ( स ० पु० ) वडवया दास्या हृतः। वडवा हृत, पन्द्रह प्रकारके दासोंमेंसे एक, वह जो दासीके साथ विवाह करके दास हुआ हो।

वडहंस (हिं० पु०) मेघरागका पुत्र एक राग। कुछ लोग इसे सङ्कर राग मानते हैं जो रुद्राणी, जयन्ती, मारू, दुर्गा और धनाश्रीके मेलसे बनता है। कहीं कहीं यह मधु-माधव, शुद्ध हम्मीर और नरनारायणके मेलसे बना कहा गया है।

वडहंससारंग ( हि ० पु० ) सम्पूर्ण जातिका एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

वडहंसिका ( स ० स्त्री० ) एक रागिनी जो हनुमत्के मतसे मेघरागकी स्त्री कही गई है।

वडहर ( हिं० पु० ) वडहल देखो।

वडहल (हिं० पु०) सयुक्त प्रान्त, पश्चिमी घाट, पूर्व बङ्गाल और कमाऊ की तराईमें होनेवाला एक बड़ा पेड़। इसकी पत्तियां छ सात अंगुल लम्बी और पांच छ अंगुल चौड़ी तथा कर्कश होती हैं। फूल बेसनकी पकौड़ीके समान पीले पीले गोल गोल होते हैं। उनमें पखड़ियां नहीं होतीं। फल पकने पर पीले और छोटे शरीफेके बरा बर पर बड़े बेडौल होते हैं। इनका स्वाद खटमीठा होता है पर गूदेका रंग पीलापन लिये लाल होता है। लोग इसके फूल और कच्चे फलका अचार और तरकारी बनाते हैं। बड़हलके हीरकी लकड़ी कड़ी और पीली होती है। इससे नाव तथा सजावटके सामान बनाते हैं। आसाममें इसकी छाल दांत परीष्कार करनेके काममें लाई जाती है। वैद्य लोग इसके फलको बादी मानते हैं।

वडहार (हिं० पु०) विवाह हो जानेके पीछे वर और बरा-तियोंकी ज्योनार।

बड़, (हिं० वि०) १ अधिक विस्तृतका, खूब लम्बा चौड़ा। २ अवस्थामें अधिक, जिसकी उम्र ज्यादा हो। ३ गुण, प्रभाव आदिमें अधिक या उत्तम, जिसका असर या नतीजा ज्यादा हो, भारी। ४ किसी बातमें अधिक, बढ़कर। ५ गुरु श्रेष्ठ, बुजुर्ग। ६ परिमाण, विस्तार या अवस्थाका।

बड़ा (हिं० पु०) १ एक पकवान जो मसाला मिली हुई उड़दकी पीठीकी गोल चक्राकार टिकियोंको घी या तेलमें तल कर बनता है। २ उत्तरीय भारतके पहाड़ोंमें होने वाली एक बरसाती घास। इसे सुखा कर घोड़ों और चौपायोंको खिलाते हैं।

बड़ाई (हिं० स्त्री०) १ परिमाण या विस्तारकी अधिकता। २ परिमाणका विस्तार। ३ महिमा, प्रशंसा, तारीफ। ४ पद, मान, मर्यादा, वयस्, विद्या बुद्धि आदिकी अधिकता। इज्जत, दरजे, उम्र वगैरहकी ज्यादती।

बड़ाकुंवार (हिं० पु०) केवड़ेके आकारका एक पेड़। इसकी पत्तियां किरिचकी तरह बहुत लंबी लंबी निकली होती हैं।

बड़ा कुलजन (हिं० पु०) बृहत्कुल जन, मोटा कुलजन।

बड़ादिन (हिं० पु०) १ वह दिन जिसका मान बड़ा हो। २ २५ दिसम्बरका दिन जो ईसाइयोंके त्योहारका दिन है। इस दिन ईसाके जन्मका उत्सव मनाया जाता है।

बड़ापीलू (हिं० पु०) एक प्रकारके रेशमका कीड़ा।

बड़ाबोल (हिं० पु०) अहङ्कारका शब्द, घमण्ड।

बड़ासवरा (हिं० पु०) वह यन्त्र जिससे कसेरे टांका लगाते हैं, बरतनमें जोड़ लगानेका औजार।

बडिश (सं० क्ली०) बलिनो मत्स्यान् श्यति नाशयतीति शोक, लस्य डत्व। मत्स्यधारणार्थं वक्रलौहकण्टक विशेष, मछली फसानेका एक औजार, बंसी। पर्याय— मत्स्यवेधन, बलिश, बडिशी, बलिशी, मत्स्यवेधनी, बलिसी, मत्स्यभेद।

"यस्ते कण्ठमनुप्राप्तो निगीर्णं बडिशं तथा।
दहेदङ्गारवत् पुत्र ! तं विद्यात् ब्राह्मणर्षभम्॥"
(भारत १।२८।१०)

बडिशी (सं० स्त्री०) बडिशगौरादित्वात् ङीष्। बडिश, बंसी।

बड़ी (हिं० स्त्री०) १ दाल, पेठा आदि मिली हुई पीठीकी छोटी छोटी सुखाई हुई टिकिया जिसे तल कर खाते हैं, कुम्हड़ौरी। २ मांसकी बोटी।

बड़ीइलायची (हिं० स्त्री०) इलायची देखो।

बड़ी कटाई (हिं० स्त्री०) बृहत् कण्टकारी, बड़ी जातिकी भटकटैया।

बड़ीगोटी (हिं० स्त्री०) चौपायोंकी एक बीमारी।

बड़ीदाख (हिं० स्त्री०) बड़ी जातिका अंगूर। इसमें बीज होते हैं और इसे सुखा कर मुनक्का बनाते हैं।

बड़ीमाता (हिं० स्त्री०) शीतला, चेचक।

बड़ीमैल (हिं० स्त्री०) खाकी रंगकी एक चिड़िया।

बड़ीमौसली (हिं० स्त्री०) थालीमें नक्काशी बनानेके लिये लोहेका एक ठप्पा जिससे तोलोंके आगे नक्काशी बनाते हैं।

बड़ीराई (हिं० स्त्री०) लाल रंगकी एक प्रकारकी सरसों, लाही।

बड़ेमोतीका फूल (हिं० पु०) बड़ीमौलसरी देखो।

बड़ेरर (हिं० पु०) चक्रवात, बवण्डर।

बड़ेरा (हिं० पु०) १ छाजनमें बीचकी लकड़ी जो लम्बाईके बल होती है और जिस पर सारा ठाट होता है। २ कुएं पर दो खम्भोंके ऊपर ठहराई हुई वह लकड़ी जिसमें घिरनी लगी रहती है।

बड़े लाट (हिं० पु०) भारतवर्षमें अङ्गरेजी साम्राज्यके प्रधान शासक।

बड़ौंछा (हिं० पु०) एक प्रकारका लंबा और नरम गन्ना।

बड़ौदा—बम्बईके गुजरात प्रदेशके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध देशीयराज्य। यह अक्षा० २१ ५१´से २२ ४६´उ० तथा देशा० ७२ ५३´से ७३ ५५´पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ८१३५२ वर्गमील है। गायकवाड़ राजवंश द्वारा यह परिचालित होता है। बृटिश सरकारके सामन्त राज्यभुक्त नहीं होने पर भी इसकी राजकीय कार्यावली भारत सरकारके साथ संश्लिष्ट है।

बड़ौदा राज्य साधारणतः चार भागोंमें विभक्त है। १ला उत्तर वा कड़ी विभाग। इसमें पत्तन, कड़ी, वीजापुर, विषपुर, देहगाव, कलोल, सिद्धपुर, खेरालू और मेसान आदि जिले हैं। २रेमें बड़ोदा विभाग है, यह बड़ोदा, चोरन्दा, जरौद, पेटलाद, पत्ता, दभोई, सिनोर

और शङ्खेड़ा जिला ले कर सगठित है। ३रा दक्षिण वा नवसारी विभाग है। इसके अन्तर्गत नवसारी, गण देवी, पलसान, कामचीज, वेलाछामोह, वेरो और तोन- गढ जिले हैं। ४थे अमरेलो विभागमें अमरेली, ओघ मण्डल, कोरीनारधारी और दायनगर आदि जिले अव स्थित हैं। अलावा इसके वृटिश सरकारके अधिकृत स्थानोंके मध्य गायकवाड राज्यकी निज सम्पत्ति और सामान्त राज्य है।

इस जिलेके उत्तर जितने जिले पड़ते हैं, वे सभी समतल हैं। यहा नर्मदा, तासी, माही नदिया वहती हैं। काठियावाड के निकटवर्त्ती भूभागके तीन और समुद्र हैं। उत्तर छोड कर समस्त बडोदाराज्यमें सरस्वती, धाधर, किम, अम्बिका, बनास, रूपन, लून, आरो, निश्वा- मित्र, सूर्या, ओझ, वर्णा, अम्बा, करड, जम्बुआ तथा तेस्मी आदि नदियाँ विद्यमान हैं। राज्यमें तरह तरहके अनाज, रूई, तमाकू, अफीम, ईख और तिलादिवीज उत्पन्न होते हैं। चावल, गेहू और वाजरा यहाके अधिवासियोंका प्रधान भोजन है।

स्वाधीन राज्यकी तरह पहलेसे ही यहा टकसाल प्रतिष्ठित है। बडोदा राज्यकी नामाङ्कित मुद्रा वादशाही मुद्रा कहलाती है। राजस्व वसूल तथा राजकार्यकी देख रेख करनेके लिये यहा सरसुवा, नायर सुवा, वहियतिदार, महलकार आदि विशिष्ट कर्मचारी नियुक्त हैं। विचार- कार्यके लिये राज्यमें 'वरिष्ठ अदालत' ( High court ) नामक सर्वश्रेष्ठ विचारालय प्रतिष्ठित है। वर्त्तमान राजा सयाजी राव १८८१ ई०में राजगद्दी पर बैठे। इनका पूरा नाम हैं,—एच, एच, फरजद इ खासी-दौलत इ इ गलिशिया महाराजा श्री सयाजी राव, गायकवाड सेना खास खेल शमशेर वहादुर, जि, सि, एस, आइ, जि, सि, आइ, जि, सि, आइ इ। इन्हे वृटिश गवर्मेण्टसे २१ तोपोंकी सलामी मिलती है। बडोदा राज्यका विस्तृत इतिहास गायकवाड शब्दमें देखो।

राज्यकी जनसंख्या २० लाखके करीव है। इनकी भाषा गुजराती और मराठी है। १८७१ ई०में यहा पहले पाच स्कूल खोले गये जिनमेंसे दो में गुजराती, दो में मराठी और एकमें अङ्गरेजी पढाई जाती थी। पीछे और भी कितने सेकेण्ड्रीस्कूल, प्राइमरी स्कूल खोले गये। इन सब स्कूलोंमें सभी वर्णके छात्र सव प्रकारके विद्याध्ययन करते हैं। बडोदा कालेज १८८१ ई०में स्थापित हुआ और उसी साल वम्बई विश्वविद्या लयसे स्वीकृत किया गया। स्कूलके अलावा राज्यमें वहुतसे अस्पताल भी हैं। जहा सब तरहकी ओषधिया मिलती हैं। १८६८ ई०में एक पागल खाना ( Luna tic asylum) खोला गया है। राज्यमें गोलन्दाज, घुड सवार और पैदल तीनों प्रकारकी सेना है जिनकी सख्या ४७७५ है। जलवायु स्वास्थ्यप्रद है।

बडौदा—१ वडोदा राज्यका एक जिला। यह अक्षा० २१ ५० से २२ ४५ उ० तथा देशा० ७२ ३७ से ७३ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १८८७ वर्गमील और जन संख्या साढे [illegible] लाखके करीव है। इसके उत्तर वम्बईका कैरा जिला, पश्चिममें ब्रोच, काम्बे, दक्षिणमें ब्रोच और रेवाकान्था तथा पूर्वमें रेवाकान्था और पाचमहाल है। इसमें १५ शहर और ६ ४ ग्राम लगते हैं। जिलेके अधि काश लोगोंकी भाषा गुजराती है। यहा सूती कपडे तथा पीतल और तांबेके अच्छे अच्छे वरतन तैयार होते हैं।

शासन कार्य सुवा द्वारा परिचालित होता है। विद्या शिक्षामें यह जिला बहुत बढा चढा है। अभी यहा १ कालेज, १ हाई स्कूल, ६ एङ्गलो वर्नाक्युलर स्कूल और ४७६ वर्नाक्युलर स्कूल हैं। इनके अतिरिक्त १ सिविल अस्पताल, १ पागल खाना और १० औषधा- लय हैं।

२ उक्त जिलेका एक तालुक। भूपरिमाण १६० वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारसे ऊपर है। इसमें १ शहर और ११ ग्राम लगते हैं। माही, मैनी, रङ्गल, जाम्वा और विश्वामित्री नामकी पाच नदिया तालुकके मध्य वहती हैं।

३ वडोदा राज्यकी राजधानी और शहर। यह अक्षा० २२ १८ उ० तथा देशा० ७३ १५ पू० विश्वामित्री नदी के किनारे अवस्थित है। जनसंख्या प्राय १०३७६० है। यह नगर विशेष समृद्धशाली है। गुजरात भरमें इसे यदि दूसरा और वम्बई प्रदेशमें तीसरा स्थान दे, तो

कोई अत्युक्ति नहीं। नगरसे सेना निवास जानेके लिये विश्वामित्र नदी और उसकी शाखाके ऊपर चार पुल बने हैं। नगर दो बृहत् पथसे चार भागोंमें विभक्त है। मध्यस्थलमें बाजारके पास मुगलोंका बनाया हुआ एक तीन गुम्बद्का चौका दालान है। यही यहांका देखने योग्य स्थान है। अलावा इसके महाराष्ट्रोंके समयकी तथा फतेसिंहके दरबार आदिकी अट्टालिका भी अपूर्व शोभा दे रही हैं। गायकवाडराज मलहार रावके शासन कालमें वडोदाकी अधिक श्रीवृद्धि हुई थी। उनके समयमें नजरबाद, मकरपुरा, लक्ष्मीविलास आदि प्रासाद यमुनाबाई अस्पताल, राजकीय पुस्तकागार और कर्म स्थान, जेलखाना, वडोदा-कालेज आदि अनेक सुरम्य अट्टालिकायें स्थापित हुई हैं।

यहांके धर्मप्राण अधिवासियोंके यत्नसे असंख्य देव-मन्दिर निर्मित हुए हैं। गायकवाड राजाओंका प्रतिष्ठित विट्ठल मन्दिर, नारायणस्वामीका मन्दिर, खण्डोबा, बालजी, भीमनाथ, सिद्धनाथ, कालिका, बलाई, रामनाथ, महाकाली, गणपति, बलदेवजी और काशी विश्वेश्वरका मन्दिर प्रधान है। यहां गायकवाड राजाओंकी अतिथिशाला है जहां राजाखण्डेराव मुसलमान भिखारियोंको भिक्षा देनेकी अनुमति दे गये हैं। यहांके विभाग महाराष्ट्र और गायकवाड राजाओंके नाम पर आख्यात है।

४ पञ्जाबके रोहतक जिलेके अन्तर्गत एक छोटा नगर। यह यमुना नहरकी बुताना शाखा पर अवस्थित है।

वड्गार—मन्द्राज प्रदेशके मलबार जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० ११°३६' उ० तथा देशा० ७५°३७' पू०के मध्य अवस्थित है। यहांका दुर्ग पहले कोलसिरी (चिरयल) राजाओंके अधिकारमें था। पीछे १५६४ ई०में कदत्तनाड़ राजाओंने उनसे दुर्गाधिकार छीन लिया। टीपूसुलतानके हस्तगत होनेके बाद यह स्थान वाणिज्यद्रव्यके शुल्कसंग्रहस्थानरूपमें परिणत हुआ। १७९० ई०में टीपूके हाथसे उक्त दुर्ग छीन कर पुनः कदत्तनाड़ राजको दे दिया गया। किन्तु अभी यह स्थान तीर्थयात्रियोंके विश्रामस्थलमें परिणत हो गया है। नगरका वाणिज्यस्रोत अप्रतिहत है और विचार अदालत आदिके रहनेसे इसकी दिनों दिन उन्नति होती जा रही है।

वढ (हिं० वि०) अधिक, ज्यादा। इस शब्दका प्रयोग अकेले नहीं होता।

वढ़ई (हिं० पु०) सूत्रधार, काठको छील और गढ़ कर अनेक प्रकारके सामान बनानेवाला।

वढती (हिं० स्त्री०) १ मात्राका आधिक्य, मान या संख्यामें वृद्धि। विस्तारकी वृद्धिके लिये अधिकतर बाढ़ शब्दका प्रयोग होता है। २ धन धान्यकी वृद्धि, सम्पत्ति आदिका बढना।

वढदार (हिं० स्त्री०) पत्थर काटनेका यन्त्र, टाँकी।

वढन (हिं० स्त्री०) वृद्धि, बाढ।

वढना (हिं० स्त्री०) १ वर्द्धित होना, वृद्धिको प्राप्त होना। २ उन्नति करना, तरक्की करना। ३ अग्रसर होना, किसी स्थानसे आगे जाना। ४ किसीसे किसी बातमें अधिक हो जाना। ५ चलनेमें किसीसे आगे निकल जाना। ६ अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र होना। ७ परिमाण या संख्यामें अधिक होना। ८ दीपकका निर्वाण होना, चिरागका बुझना। ९ दूकान आदिका समेटा जाना, बन्द होना। १० भावका बढ़ना, खरीदनेमें ज्यादा मिलना। ११ लाभ होना, मुनाफेमें मिलना।

वढनी (हिं० स्त्री०) १ झाड़ू, बुहारी। २ पेशगी अनाज या रुपया जो खेती या और किसी कामके लिये दिया जाता है।

वढवारि (हिं० स्त्री०) बढती देखो।

वढाना (हिं० क्रि०) १ विस्तार या परिमाणमें अधिक करना, वर्द्धित करना। २ फैलाना लम्बा करना। ३ पद, मर्यादा, अधिकार, विद्या, बुद्धि, सुख सम्पत्ति आदिमें अधिक करना। ४ अग्रसर करना, चलाना। ५ चलनेमें किसीसे आगे निकाल देना। ६ ऊंचा या उन्नत कर देना। ७ बल, प्रभाव, गुण आदिमें अधिक करना। ८ गिनती या नाप तोल आदिमें अधिक करना। ९ दीपक निर्वाण करना, चिराग बुझाना। १० नित्यका व्यवहार समाप्त करना, कार्यालय बन्द करना। ११ भाव अधिक कर देना, सस्ता बेचना। १२ फैलाना। १३ समाप्त होना, बाकी न रह जाना।

वढाली (हिं० स्त्री०) कटारी, कटार।

वढाव (हिं० पु०) १ बढनेकी क्रिया या भाव। २ आधिक्य, विस्तार। ३ वृद्धि, तरक्की।

वढावन ( हि० स्त्री०) गोवरकी टिकिया जो बच्चोंकी नजर झाडनेके काम आती है।
वढायना ( हिं० क्रि० ) वढाना देखो।
वढावा ( हि० पु० ) १ प्रोत्साहन, किसी कामकी ओर मन वढानेवाली वात। २ साहस या हिम्मत दिलानेवाली वात, ऐसे शब्द जिनसे कोई कठिन काम करनेमें प्रवृत्त हो।
वढिया ( हि० वि० ) १ उत्तम, अच्छा। ( पु० ) २ एक प्रकारका कोल्हू। ३ डेढ सेरकी एक तौल। ४ गन्ने, अनाज आदिको फसलका एक रोग। इसके होनेसे कनखे नहीं निकलते और दाव वन्द हो जाती है। ( स्त्री० ) ५ एक प्रकारकी दाल।
वढेल ( हि० स्त्री० ) हिमालय परकी एक भेड जिससे ऊन निकलता है।
वढेला ( हि० पु० ) वन शूकर, जगली सूअर।
वढैया ( हि० वि० ) १ उन्नति करनेवाला, वढानेवाला। २ वढनेवाला।
वढोतरी ( हि० स्त्री० ) १ उत्तरोत्तर वृद्धि, वढती। २ उन्नति।
वण ( स० पु० ) वणनमिति वण-अप्। शब्द, आवाज।
वणिक् ( स० पु० ) १ वाणिज्य करनेवाला, वनिया, सौदागर। २ विक्रेता, वेचनेवाला। ३ ज्योतिषमें छठा करण।
वणिक्पथ ( स० पु०) वणिजा पन्था अच् समासान्त। १ हट्ट, हाट, वाजार। २ वाणिज्य व्यापारकी चीजोंकी आमदनी रफ्तनी।
वणिग्वन्धु ( स० पु० ) वणिज पण्याजीवस्य वन्धुर्यनद्-स्यात्। १ नीलीवृक्ष, नीलका पौधा। २ वणिकोंके वन्धु।
वणिग्भाव (स० पु०) वणिजो भाव। वाणिज्य। पर्याय—सत्यानृत, वाणिज्य, वाणिज्या, वणिक्पथ, वणिज्य।
वणिग्वह ( स० पु० ) वहतीति वह अच्-वह, वाणिजा वाणिज्य द्रव्याणां वह। उष्ट्र, ऊँट।
वणिज् ( स० पु० ) पणते क्रयविक्रयादिना व्यवहरतीति पण ( पणरादेश्च व। उण् २।७० ) इति इजि पस्य च व। १ क्रयविक्रयकर्त्ता, वनिया। पर्याय—वैदेहक, सार्थवाह, नैगम, वणिज, पण्याजीव, आपणिक, क्रयविक्रयिक, वैदेह, वाणिज, वाणिजिक, क्रायिक, विक्रयिक, वाणिजक, वाणिज्यकार। २ करणान्तर। ३ वैश्य। ये लोग क्रय विक्रय करते हैं, इसीसे इन्हे वणिक् कहते हैं। वाणिज्य ही इनको वृत्ति है। ४ करण विशेष। ( स्त्री०) पण्यते व्यवह्रीयते इति पण इजि, पस्य व, अभिधानात् स्त्रीत्व। ५ वाणिज्य, व्यापारको चीजोंकी आमदनी रफ्तनी।
वणिज (स० पु०) वणिगेव वणिज-स्वार्थे अण्, अभिधानात् न वृद्धि। १ वणिक्, वनिया। २ ज्योतिषोक्त वव और वालव आदि ग्यारह करणोंके अन्तर्गत छठा करण। जिस दिन यह करण होता है, उस दिन शुभ कार्यादि निषिद्ध हैं, किन्तु वाणिज्य कर्म इस करणमें प्रशस्त वतलाया गया है। इस करणमें जन्म लेनेसे जात वालक वुद्धिमान, कृतज्ञ, विविध गुणशाली, गुणग्राही वणिकोंका प्रिय और वाणिज्यकर्ममें उन्नतिशील होता है।

"प्राज्ञ कृतज्ञो गुणवान् गुणज्ञो
वणिग्जन प्राप्तमनोरथ स्यात्।
यस्य प्रसूती वणिजाभिधान
माण्डप्रधान द्रविण हि तस्य॥" (कोष्ठीप्रदीप)

३ शिव, महादेव।
वणिज्य ( स० क्ली० ) वणिजो भाव कर्म या वणिज्य ( दूतवणिग्भ्या च। पा ५।१।१२६ ) इत्यत्र काशिकोक्तेर्यं। वाणिज्य वणिकका भाव या कर्म।
वणिज्या (स० स्त्री०) वणिज्य टाप्, स्वभावात् स्त्रीलिङ्गत्व। वाणिज्य।
वत ( हि० स्त्री० ) वात। इसका प्रयोग यौगिक शब्दोंमें ही होता है, जैसे वतकही, वतवढाव।
वतक ( हि० स्त्री० ) वतख देखो।
वतक्हाव ( हि० पु० ) वातचीत। २ विवाद वातोंका झगडा।
वतकही ( हि० स्त्री० ) वार्त्तालाप, वातचीत।
वतख ( हि० स्त्री० ) हस जातिकी एक चिडिया जो पानीमें तैरती है। इसका रग सफेद, पजे झिल्लीदार और चिपटी होती है। चोंच और पजेका रग पीलापन लिये लाल होता है। इसका डीलडौल भारी होता है

इस कारण यह न तेज और सकती है न उड़ सकती है। तालों और जलाशयोंमें यह मछली आदि पकड़ कर खाती है।

बतचल ( हि ० वि० ) बकवादी, बकी।

बतबढ़ाव ( हि ० पु० ) १ व्यर्थ बात बढ़ाना, झगड़ा बखेड़ा बढ़ाना।

बतरस ( हि ० पु० ) बातचीतका आनन्द, बातोंका मजा।

बतरान ( हि ० स्त्री० ) बातचीत।

बतराना ( हि ० स्त्री० ) बातचीत करना।

बतलाना ( हि ० क्रि० ) बताना देखो।

बतवन्हा ( हि ० पु० ) एक प्रकारकी नाव। इसमें लोहेके कांटे नहीं लगाए जाते। यह केवल बेंतसे बांधी जाती है। इस प्रकारकी नाव चट्टग्रामकी ओर चलाई जाती है।

बताना ( हि ० क्रि० ) १ अभिज्ञ करना, जताना। २ निर्देश करना, दिखाना। ३ समझाना, बुझाना। ४ नाचने गानेमें हाथ उठा कर भाव प्रकट करना, भाव बताना। ५ किसी कार्यमें नियुक्त करना, कोई काम धंधा निकालना। ६ दण्ड दे कर ठीक रास्ते पर लाना, मार पीट कर दुरुस्त करना।

बताना ( हि ० पु० ) १ हाथका कड़ा। २ फटी पुरानी पगड़ी जो नीचे रहती है और जिसके ऊपर अच्छी पगड़ी बांधी जाती है।

बताला—१ पञ्जाबके गुरुदासपुर जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३१ ३५´ से ३२ ४ उ० तथा देशा० ७४ ५२´ से ७५ ३४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४७६ वर्गमील और जनसंख्या तीन लाखसे ऊपर है। इसमें श्रीगोविन्दपुर, डेरा नानक और बताला शहर तथा ४३८ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० ३० ४९´ उ० और देशा० ७५ १२´ पू० गुरुदासपुर शहरसे २० मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या तीस हजार के करीब है। यह लोल लोदीके शासनकालमें लाहोर के शासनकर्त्ता तातार खांसे जो जमीन प्राप्त की, उसी के ऊपर भट्टिराजपूत रायरामदेवने १४६५ ई०में यह नगर बसाया। सम्राट् अकबरशाहने यह सम्पत्ति शमशेर खां-को जागीरस्वरूप दे दी। शमशेर खांके यत्नसे इस नगरने नाना अट्टालिकाओंसे सुशोभित हो अपूर्वश्रीको धारण किया था। सिक्खलोगोंके अधिकारमें यह स्थान पहले रामगढ़िया और पीछे कनाइया मिसलके हाथ लगा। रणजित्के अभ्युदय तक यह रामगढ़ियोंके अधिकारमें था। पञ्जाबके अंगरेजी शासनमें आनेके बाद यह नगर कुछ समय तक उक्त जिलेका सदर रहा। पीछे यह उठ कर गुरुदासपुर नगर चला गया। शमशेर खांका समाधि मन्दिर और रणजित्के पुत्र शेरसिंह निर्मित अनारकली नामका भवन देखने योग्य है। इसमें अभी 'बरिंग' हाई स्कूल लगता है। शहरमें रेशम, ताम्र और चर्मनिर्मित द्रव्यादिका विस्तृत कारबार चलता है। पशमीने शाल भी प्रस्तुत होते हैं। उक्त हाई-स्कूलके सिवा, एक ऐङ्गलो वर्नाक्युलर हाई स्कूल और दो ऐङ्गलो वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल हैं।

बताशा ( हि ० पु० ) बतासा देखो।

बतास ( हि० स्त्री० ) १ गठिया, वातका रोग। २ वायु, हवा।

बतासफेनी ( हि ० स्त्री० ) टिकियाके आकारकी एक मिठाई।

बतासा ( हि० स्त्री० ) १ एक प्रकारकी मिठाई। यह चीनी की चाशनीको टपका कर बनाई जाती है। टपकने पर पानी बुलबुलेसे बनते जाते हैं जो जमने पर खोखले और हलके होते हैं तथा पानीमें बहुत जल्दी घुलते हैं। २ अनारकी तरह छूटनेवाली एक प्रकारकी आतशबाजी। इसमें बड़े बड़े फूलसे गिरते हैं। ३ बुलबुला, बुद् बुद।

बतिया ( हि ० पु० ) थोड़े दिनोंका लगा हुआ कच्चा छोटा फल।

बतियाना ( हि ० क्रि० ) बातचीत करना।

बतियार ( हि ० स्त्री० ) बातचीत।

बतू ( हि ० पु० ) कलाबत्तू देखो।

बतौतकु तो ( हि० स्त्री० ) कानमें बातचीत करनेकी नकल जो बन्दर करते हैं।

बतौर ( अ ० क्रि० वि० ) १ रीतिसे, तरीके पर। २ सदृश, मानिंद।

बत्तर ( हिं० स्त्री० ) बत्तख देखो।
बत्तिस ( हिं० वि० ) बत्तीस देखो।
बत्ती ( हिं० स्त्री० ) १ सूत, रुई, कपड़े आदिकी पतली छड़, चिराग जलानेके लिये रुई या सूतका बटा हुआ लच्छा। २ प्रकाश, दीपक। ३ पगड़ी या चीरेका पेंठा हुआ कपड़ा। ४ कपड़ेके किनारेका वह भाग जो सीनेके लिये मरोड़ कर पकड़ा जाता है। ५ कपड़ेकी लंबी धज्जी जो घावमें मवाद साफ करनेके लिये भरते हैं। ६ फूसका पूला जिसे मोटी बत्तीके आकारमें बांध कर छाजनमें लगाते हैं, मूठा। ७ पलीता, फलीता। ८ बत्तीकी शक्लकी कोई चीज पतली छड़ या सलाईके आकारमें लाई हुई कोई वस्तु। ६ मोमबत्ती।
बत्तीस ( हि० वि० ) १ तीससेदो अधिक, जो गिनतीमें तीससे दो ज्यादा हो। ( पु० ) २ तीससे दो अधिककी संख्या। ३ उक्त संख्याका अङ्क जो इस प्रकार लिखा जाता है—३२।
बत्तीसा ( हि० पु० ) एक प्रकारका लड्डू जिसमें पुष्टईके बत्तीस मसाले पड़ते हैं।
बत्तीसी ( हि० स्त्री० ) १ बत्तीसका समूह। २ मनुष्यके नीचे ऊपरके दांतोंकी पंक्ति जिनकी पूरी संख्या बत्तीस होती है।
बथान ( हि० पु० ) गोगृह, गायोंके रहनेकी जगह।
बथुआ ( हि० पु० ) जौ, गेहूं आदिके खेतोंमें होनेवाला एक छोटा पौधा। लोग इसका साग बना कर खाते हैं। इसकी पत्तियां छोटी छोटी और फूल घुंडीके आकारके होते हैं जिनमें काले दानेके बीज पड़ते हैं। वैद्यकमें बथुआ जठराग्निजनक, मधुर, पित्तनाशक, क्षार, अर्श और कृमिनाशक, नेत्रहितकारी, स्निग्ध, मलमूत्रशोधक और कफके रोगियोंको हितकारी माना गया है।
बद ( फा० स्त्री० ) १ गरमीकी बीमारीके कारण या यों ही सूजी हुई जांघ परकी गिल्टी, बाघी। २ चौपायोंको एक छूतकी बीमारी। इसमें उनके मुंहसे लार बहती है, उनके खुर और मुंहमें दाने पड़ जाते हैं। ३ बुरे आचरणका मनुष्य, दुष्ट, नीच। ३ पलटा, एवज। ( वि० ) ४ निकृष्ट, खराब।
बदअमली ( हि० स्त्री० ) राज्यका कुप्रबन्ध, हलचल।
बदइंतजामी ( फा० स्त्री० ) अव्यवस्था, कुप्रबन्ध।
बदख्शी—बदाख्सानवासी अफगान-जाति। चित्रल, काफरिस्तान आदि स्थानवासियोंके साथ इनका आचार व्यवहार बहुत कुछ मिलता जुलता है। ये लोग कट्टर मुसलमान नहीं हैं, आकृतिगत सादृश्य देखनेसे आर्य जातिके से प्रतीत होते हैं। ये लोग हिन्दू और इराणी जातिके मध्यवर्त्ती हैं।
बदकारी ( फा० स्त्री० ) १ कुकर्म। २ व्यभिचार।
बदकिस्मत ( फा० वि० ) मन्दभाग्य, अभागा।
बदखत ( फा० पु० ) १ बुरे अक्षर, बुरा लेख। ( वि० ) २ बुरा लिखनेवाला, जिसका लिखनेमें हाथ न बैठा हो।
बदख्वाह ( फा० वि० ) अनिष्ट चाहनेवाला, बुरा चाहनेवाला।
बदगुमान ( फा० वि० ) सन्देहकी दृष्टिसे देखनेवाला।
बदगुमानी ( फा० स्त्री० ) किसीके ऊपर मिथ्या सन्देह, झूठा शुबहा।
बदगोई ( फा० स्त्री० ) १ निन्दा, शिकायत। २ चुगली।
बदचलन ( फा० वि० ) कुमार्गी, बुरे चालचलनका।
बदचलनी (फा० स्त्री०) १ दुश्चरित्रता, बदचलन होनेकी क्रिया या भाव। २ व्यभिचार।
बदजबान ( फा० वि० ) कटुभाषी, गाली गलौज करनेवाला।
बदजात ( फा० वि० ) नीच, ओछा।
बदतमीज (फा० वि०) जो शिष्टाचार न जानता हो, गवांर, बेहूदा।
बदतर ( फा० वि० ) किसीकी अपेक्षा बुरा, और भी बुरा।
बददियानती ( फा० स्त्री० ) विश्वासघात, धोखेबाजी, बेईमानी।
बददुआ (फा० स्त्री०) अहित कामना जो शब्दों द्वारा प्रकट की जाय, शाप।
बदन ( फा० पु० ) शरीर, देह। बदन देखो।
बदनतौल ( फा० स्त्री० ) मलखम्भकी एक कसरत। इसमें कसरत करते समय मलखम्भको एक हाथसे लपेट कर उसीके सहारे सारा बदन ठहराते या तौलते हैं। इसमें सिर नीचे और पैर ऊपरकी ओर रहते हैं।

बदननिकाल (फा० पु०) मल्लखम्भकी एक कसरत। इसमें मल्लखम्भके पास खड़े हो कर दोनों हाथोंकी कैंची बांधते हैं। इसमें मेलाडोका मुंह नीचे, कमर मल्लखम्भसे सटी हुई और पैर ऊपरको होते हैं।

बदनसिंह—भरतपुरके जाटवंशीय एक राजा, चूड़ामन सिंहके पुत्र। ये १७१२ ई०में जाटदलके सरदार बनाये गये। म्हार नगरमें इनकी राजधानी थी। डिगका विख्यात दुर्ग इन्होंने ही बनवाया था। १७३९ ई०में नादिरशाहके आक्रमण-कालमें ये जीवित थे।

बदनसीब (फा० वि०) अभागा, जिसका भाग्य बुरा हो।

बदनसीबी (फा० स्त्री०) दुर्भाग्य।

बदना (हि० क्रि०) १ वर्णन करना, कहना। २ नियत करना, ठहराना। ३ सफलता पर जीत और असफलता पर हार माननेकी शर्त पर कोई बात ठहराना, होड़ लगाना। ४ स्वीकार करना, मान लेना। ५ गिनतीमें लाना, कुछ समझना।

बदनाम (फा० वि०) जिसकी कुख्याति फैली हो, जिसकी निन्दा हो रही हो।

बदनामी (फा० स्त्री०) अपकीर्त्ति, लोकनिन्दा।

बदनीयत (फा० वि०) १ जिसकी नीयत बुरी हो, जिसका अभिप्राय दुष्ट हो। २ जिसके मनमें धोखा आदि देनेकी इच्छा हो, बेईमान।

बदनीयती (फा० स्त्री०) बेईमानी, दगाबाजी।

बदनुमा (फा० वि०) कुरूप, भद्दा।

बदनूर—मध्यप्रदेशके बैतूल तहसीलका एक सदर। यह अक्षा० २१ ५५´ उ० और देशा० ७७ ५४´ पू० मचना नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या छः हजारके करीब है। यहांसे चार मील दूर खेरला ग्राममें गोंड राजाओंका प्रासाद और भग्न दुर्ग विद्यमान है। शहरमें एक मिडिल इङ्गलिश स्कूल और एक अस्पताल है।

बदनेरा—बरारके अमरावती तालुक और जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २० ५२´ उ० और देशा० ७७ ४६´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या दस हजारसे ऊपर है। यहां ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेका एक स्टेशन है। अमरावती और इलिचपुर जानेमें इसी स्टेशन पर उतरना पड़ता है। इस नगरसे अमरावती तक एक राजकीय रेलवे लाइन चली गई है। अहमदनगरकी राजकन्याने इस नगरको यौतुकमें पाया था। इसीसे कोई कोई इसे बदनेराबीबी भी कहते हैं। प्राचीन नगर-भागमें मुगल कर्मचारियोंका आवास था। यहांका मट्टीका दुर्ग आज भी नजर आता है। राजपदधरगण अथवा कर संग्रह करते थे जिससे धीरे धीरे यह नगर जनशून्य होता गया। आखिर १८२२ ई०में राजा रामसुयानेे इस नगरको अच्छी तरह लूटा और दुर्ग तथा प्राचीर को तहस नहस कर डाला। शहरमें सूती कपड़े बुननेकी एक कल है। बम्बई शहरमें रुईकी रफ्तनी होनेके कारण इस स्थानकी वाणिज्योन्नति दिनों दिन होती जा रही है।

बदनोर—राजपूतानेके उदयपुर राज्यका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २५ ५०´ उ० और देशा० ७४ १५´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। शहरमें एक डाकघर, वर्नाक्युलर स्कूल और उत्तरमें बैरावगढ़ नायकाका प्राचीन भग्न दुर्ग है। यहांके ठाकुर राठोरकी मरतिया शाखाके अन्तर्गत हैं और ये अपनेको राव योधके कनिष्ठ पुत्र दूदाके वंशधर बतलाते हैं।

बदपरहेज (फा० वि०) कुपथ्य करनेवाला, जो खाने पीने आदिका संयम न रखता हो।

बदपरहेजी (फा० स्त्री०) कुपथ्य, खाने पीने आदिमें असंयम।

बदबख्त (फा० वि०) अभागा, कमबख्त।

बदबाछा (फा० पु०) वह हिस्सा जो बेईमानी करनेसे मिला हो।

बदबू (फा० स्त्री०) दुर्गन्ध, बुरी बास।

बदबूदार (फा० वि०) दुर्गन्धयुक्त, जिसमें बुरी बास आती हो।

बदमजा (फा० वि०) १ कुस्वाद, बुरे स्वादका, खराब जायकेका। २ आनन्दरहित।

बदमस्त (फा० वि०) १ अति उन्मत्त, नशेमें चूर। २ कामोन्मत्त, लंपट।

बदमस्ती (फा० स्त्री०) १ उन्मत्तता, मतवालापन। २ कामोन्मत्तता, लंपटता।

बदमाश (फा० वि०) १ दुर्वृत्त, बुरे कर्मसे जीविका करनेवाला। २ दुष्ट, खोटा। ३ दुराचारी, बदचलन।

बदमाशी (फा० स्त्री०) १ बुरी वृत्ति, खोटाई। २ नीचता, दुष्टता।

बदमिजाज (फा० वि०) दुःस्वभाव, बुरे स्वभावका, चिड चिड़ा।

बदमिजाजी (फा० स्त्री०) बुरा स्वभाव, चिड़चिड़ापन।

बदरंग (फा० वि०) १ बुरे रंगका, जिसका रंग अच्छा न हो। २ विवर्ण, जिसका रंग बिगड़ गया हो। (पु०) ३ चौसर के खेलमें एक एक खिलाड़ीकी दो गोटियोंमें वह गोटी जो रंग न हो। ४ ताशके खेलमें जो रंग दांव पर गिरना चाहिये उससे भिन्न रंग।

बदरंगी (फा० स्त्री०) रंगका फीकापन या भद्दापन।

बदर (सं० क्ली० बदति स्थिरीभवती छिन्नेऽपि पुनः प्ररोहतीति, बद अरच्।) १ कार्पास, कपास। २ कार्पासबीज, कपासका बीया, बिनौला। ३ सेचिफल। ४ शृगालकोलि। ५ वृहत् कोलिवृक्ष, बड़ा बेरका पेड़। ६ कोलिफल, बेरका फल। संस्कृत पर्याय—कर्कन्धु, बदरी, कोल, फेणिल, कुवल, घोण्टा, सौवीर, अजाप्रिया, कुहा, कोलिविषम, भयकण्टक, सौवीरक, गुडफल, बालेष्ट, फलशैशिर, दृढबीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धु, बदर, कोली, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, पिच्छिला, कुवल। गुण—मधुर, कषाय, अम्ल। परिपक्व फलका गुण—मधुराम्ल, उष्ण, कफकारक, पचन, अतिसार, रक्त और श्रमदोषनाशक तथा रुचिकर।

यह पेड़ प्रायः सारे भारतवर्षमें होता है। जंगली बेरको झरबेरी कहते हैं। जब कलम लगा कर इसे तैयार किया जाता है, तब यह पेवंदी (पैवंदी) कहलाता है। इसकी पत्तियां चारेके काममें और छाल चमड़ा सिझाने के काममें आती है। बङ्गालमें इस वृक्षकी पत्तियों पर रेशमके कीड़े भी पालते हैं। इसकी लकड़ी जो कड़ी और कुछ लाली लिये हुए होती है, प्रायः खेतीके औजार बनानेके और इमारतके काममें आती है। इसमें एक प्रकारके लंबोतरे फल लगते हैं जिनके अंदर बहुत कड़ी गुठली होती है। यह फल पकने पर पीले रंगका हो जाता है और मीठा होनेके कारण खूब खाया जाता है। कलम लगा कर इसके फलोंका आकार और स्वाद बहुत कुछ बढ़ाया जाता है।

६ देवसर्षपवृक्ष। ७ द्विशाणमान, दो शाण या आठ माशेकी एक तौल।

बदर (फा० वि०) बाहर। जैसे, शहर बदर करना।

बदरकुण (सं० पु०) बेर पकनेका समय।

बदरगञ्ज—बङ्गालके रंगपुर जिलान्तर्गत एक गण्डग्राम और प्रधान वाणिज्यस्थान। यह अक्षा० २५° ४०´ उ० और देशा० ८९° ६´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां चावल, धान और सरसों आदि रखनेकी बड़ी बड़ी आढ़ते हैं।

बदरत्रय (सं० क्ली०) बदरोंका त्रय। तीन प्रकारका बदर, वृहद्बदर, क्षुद्रबदर और शृगालकोलि। (चरकसूत्र ४ अ०) भावप्रकाशके मतसे सौवीर, कोल और कर्कन्धु यही तीन प्रकारके बदर हैं।

बदरनवीसी (फा० स्त्री०) १ हिसाब किताबकी जाँच। २ हिसाबमें गड़बड़ रकम अलग करना।

बदरपाचन—तीर्थभेद। महाभारतमें लिखा है—महर्षि भरद्वाजकी कन्या श्रुवावतीने देवराजकी पत्नी होनेकी इच्छासे बहुत कठिन तपोनुष्ठान किया। भगवान् इन्द्र उसकी तपस्यासे बड़े प्रसन्न हुए और वशिष्ठदेवका रूप धारण कर वहां पहुंचे। श्रुवावतीने नाना प्रकारसे उनकी पूजा करनेके बाद अपना अभिप्राय प्रकट किया। इस पर वशिष्ठरूपधारी इन्द्रने कहा, 'तुम्हारी कठोर तपस्याका विषय मुझसे छिपा नहीं है। तुम्हारा मनोरथ अति शीघ्र पूरा होगा। अभी तुझे ये पांच बदर देता हूं, उनका अच्छी तरह पाक करो।' इतना कह इन्द्र वहांसे चल दिये और उसी आश्रमके समीप इन्द्रतीर्थ जा कर अग्निका तप इस उद्देशसे करने लगे जिससे श्रुवावती बदर पाक न कर सके। इधर ब्रह्मचारिणी श्रुवावतीने तनमनसे पवित्र हो बदर पाक करना आरम्भ कर दिया। सारा दिन बीत गया, तो भी सभी बदर सुपक्व न हुए। इस प्रकार श्रुवावतीके अनेक दिन बीत गये। आखिर अपने उद्देश्यको फलीभूत न होते देख वह अपना शरीर दग्ध करनेको तुल गई। पहले उसने अपने दो पैर अग्निमें डाले, पर जरा भी क्लेश अनुभव न किया। धीरे धीरे उसका सम्पूर्ण शरीर भस्म होने लगा। इसी समय इन्द्रने वहां पहुंच कर श्रुवावतीसे कहा, 'ब्रह्मचारिणी! अब तुम्हें बदरपाक नहीं करना पड़ेगा। मैं तुम्हारी भक्तिकी परीक्षा करनेके लिये वशिष्ठका रूप धारण कर आया था। तुम्हारा अभिलाष परिपूर्ण होगा। यह देह

परित्याग करके तुम स्वर्गमें मेरे साथ एकत्र वास करोगी और यह स्थान बदरपाचन तीर्थ नामसे प्रसिद्ध होगा। इस तीर्थमें सर्वदा षड्ऋतु विराजमान रहेंगी।' (भारत शल्यपर्व ४८ ४६ अ०)

बदरपुर—आसाम प्रदेशके श्रीहट्ट जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० २४° ५१´ उ० और देशा० ९२° ३३´ पू०के मध्य अवस्थित है। १८२९ ई०में ब्रह्मसेनाने जब कछार पर आक्रमण किया, तब इसी स्थान पर अंगरेजों के साथ उनका युद्ध हुआ था। यहां पर्वतके ऊपर एक दुर्ग है।

बदरपुर—पञ्जाबके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह शाह धेरीसे २ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। यहां एक बहुत बड़ा बौद्ध-स्तूप है जो मनिक्याल और शाहपुरके स्तूपसे किसी अंशमें कम नहीं। ध्वंसावशेषमें परिणत हो जाने पर भी अभी इसकी ऊंचाई ४० फुट रह गई है। इस स्तूपके मध्य जेनरल मेजुराने एक मृत मनुष्यकी हड्डी पाई थी।

बदरफली (सं० स्त्री०) बदरस्येव फलमस्य बदरफल-ङीष्। भूबदरी।

बदरवल्ली (सं० स्त्री०) भूबदरी।

बदरवीज (सं० क्ली०) बदरास्थि, बेरकी गुठली।

बदरा (सं० स्त्री०) १ आदित्यभक्ता, हुरहुर। २ कार्पासी, कपास। ३ वराहक्रान्ता, वाराही नामका पौधा। ४ पत्रपर्णी। ५ वाराहीकन्द। ६ श्वेतविदारी ७ विष्णुक्रान्ता।

बदरामलक (सं० क्ली०) पानीयामलक, पानी आमला। इसके पौधे जलाशयोंके पास होते हैं। पत्ते लम्बे लम्बे और फल लाल बेरके समान होते हैं। टहनियोंमें छोटे छोटे कांटे भी होते हैं।

बदरास्थि (सं० क्ली०) बदरवीज, बेरकी गुठली।

बदरास्थिमज्जा (सं० स्त्री०) बेरकी गुठलीका गूदा।

बदराह (फा० वि०) १ कुमार्गी, बुरे राह पर चलने वाला। २ दुष्ट, बुरा।

बदरि (सं० स्त्री०) बद-बाहुलकादरि। कोलिवृक्ष, बेरका पौधा या फल।

बदरिका—हिमालय पर्वतका प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ। यह विस्तीर्ण भूभाग कण्वाश्रम और नन्द पर्वतके बीच पड़ता है। इसका दूसरा नाम बदरीनाथक्षेत्र भी है। इस पुण्य क्षेत्रका व्यास प्राय ३ योजन और दैर्घ्य १२ योजन है। गन्धमादन, बदरी नरनारायण और कुबेर शृङ्ग इसके अन्तर्गत है। यहां बहुतसे उष्ण प्रस्रवण भी हैं।

हिमालयतीर्थके मध्य केदारनाथ जिस प्रकार शैवगणको प्रियतर हैं, वैष्णवोंमें बदरिकाक्षेत्र भी उसी प्रकार परम स्थान समझा जाता है। (१) तीर्थयात्रिगण अलकनन्दा (गंगा)-की उपत्यका पार करके तीर्थोंके दर्शन करते करते ज्योतिर्धाम (२) पहुंचते हैं। ज्योतिर्धाम पार करके ही वे धौली और अलकनन्दाके सङ्गम तट पर गन्धमादन और बदरी क्षेत्र देख पाते हैं। यहां ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, भृगु, ऋषि, सूर्य दुर्गा, धनद और प्रह्लाद आदि कुण्ड हैं। यह स्थान विष्णुप्रयाग नामसे प्रसिद्ध है। इसीके उत्तर घटोत्कचाश्रम पड़ता है। इस आश्रमके पास ही मुनीश्वर शिव और गणेशका मन्दिर अवस्थित है। विष्णु प्रयागके उत्तर पाण्डुस्थान है। (३) बदरीनाथके समीप जो नदी बहती है उसके दाहिने किनारे परके नरशिखर पर सैकड़ों लिङ्गतीर्थ और नारायण कुण्ड देखनेमें आते हैं। विष्णुमती नदीसे दो कोस उत्तर वैखानस नामक स्थान है। सन्यासिगण यहां होम याग किया करते हैं। इसके भी उत्तर कुछ कुबेर पर्वत और योगेश्वर भैरव नामक तीर्थ हैं। इसके बाद प्रवरा नामक नगरी और बदरिकाश्रमके सामने धर्मधारा नामक नदी है। इसके पास ही नारदीयशिला, वराहीशिला, नारसिंहशिला, मार्कण्डेय शिला, गारुडीशिला और उन्हीं सब नामोंकी पुष्करिणियां भी हैं। उन पर्वत परिधिके मध्यस्थलमें विष्णु

(१) इस स्थानका दूसरा नाम विशालपुर है। प्राचीन प्रवादसे माना जाता है, कि बदरी वृक्षसे ही इस स्थानका नामकरण हुआ है।

(२) जोशीमठ—यहांके नृसिंह मन्दिरके समीप प्रह्लादने विष्णुकी आराधना की थी।

(३) पाण्डुकेश्वर—यहां पाण्डुकेश्वर शिवमन्दिर आज भी विद्यमान है।

मन्दिर प्रतिष्ठित है। इसीके समीप वह्नितीर्थ और ब्रह्म कपाल, पश्चिमकी ओर १ कोसके मध्य ही उर्वशीतीर्थ तथा स्वर्णधारा नदी पर शेषतीर्थ है। बदरीनाथके वाम पार्श्वमें इन्द्रधारा, देवधारा, वसुधारा, धर्मशिला और सोम नामक नदी, सत्यपद, चक्र, द्वादशादित्य, सप्तर्षि, रुद्र, ब्रह्मा, नर-नारायण, व्यास, केशवप्रयाग और पाण्डवी नामक तीर्थ तथा मुचुकुन्द और मणिभद्र नामक ह्रद विद्यमान हैं।

इस अति प्राचीन तीर्थका माहात्म्य बहुतसे प्राचीन ग्रन्थोंमें पाया जाता है। महाभारतमें लिखा है, कि नर नारायण अर्जुनने यहां घोरतर तपस्या की थी। श्रीकृष्ण बदरिकाश्रममें अर्जुनके साथ बहुत दिन ठहरे थे। फिर दूसरी जगह लिखा है, कि श्रीकृष्णने यहां पर सायगृह मुनिके साथ साक्षात् किया था। द्वारकाध्वंसके बाद पाण्डवोंने व्यासका आदेश पा कर हिमालयको महा-प्रस्थान किया था। पूर्वमें कर्माचल और पश्चिममें यमुनोत्तरी तथा इन नदी तक विस्तृत भूभागके अनेक स्थान आज भी पाण्डवोंके आगमनको गवाही देते हैं। केदारेश्वरके पांच शिवमन्दिर पाण्डवप्रतिष्ठित माने जाते हैं। पाण्डुकेश्वरमें उन्होंने तपस्या की थी। वामना-वतारमें भगवान् विष्णु यहां पर तपस्या करके पूर्णता प्राप्त की थी, इसीसे यह पुण्यक्षेत्र सिद्धाश्रम नामसे भी प्रसिद्ध है। कहते हैं, कि राम और लक्ष्मणने रावणको मार ब्रह्मवधपापसे निष्कृति पानेके लिये हृषीकेश और तपोवनमें तपस्या की थी। वररुचिने यहां आ कर महादेवकी आराधना की और अन्तकालको वे पुष्पदन्त(४) की तरह स्वर्गधाम चले गये कौशाम्बीराज राज्यकार्यसे उत्पन्न हो शेष जीवन देवसेवामें बितानेके लिये बदरिका-श्रम आये थे।

(४) पद्मपुराणमें बदरीको सब तीर्थों की अपेक्षा पुण्य-तम वैष्णवतीर्थ बतलाया है। पुष्पदन्तने महादेवकी तपस्या करके सुशर्मा-राजकन्या जयाका पाणिग्रहण किया था। बुढ़ापा आने पर वे दोनों वानप्रस्थ अवलम्बन कर बदरिका आये थे। पुष्पदन्तके भाई गुणाढ्यने भी यहां देवसेवामें अपना जीवन बिताया था। वामनपुराणमें भी केदारनाथ और बदरीनाथ देवतीर्थकी पवित्रता वर्णित हुई है।

बदरिनाथप्रतिष्ठाके प्रसङ्गमें यहां एक अच्छी गल्प सुनी जाती है। वह इस प्रकार है,—नारदकुण्ड आ कर शङ्कराचार्यने बहुत-सी देवमूर्त्तियां जलमें देखीं। उसी समय आकाशवाणी हुई जिसके अनुसार वे उन सब प्रतिमूर्त्तियोंको बदरि वृक्षके नीचे स्थापन कर गये। उस वृक्षने धीरे धीरे बढ़ कर जितना स्थान आक्रान्त किया, वह आदिबदरी कहलाया। गन्धमादन पर्वतके नीचे यह स्थान वैष्णवधर्म पुनःस्थापनके लिये मनोनीत हुआ। इसी स्थान पर नरनारायणका आश्रम है। वैष्णवप्रभावको वृद्धिके साथ साथ यहां नरनारायण और बदरीनाथके मन्दिरादि बनाये गये। एतद्भिन्न लक्ष्मी, मातृकामूर्त्ति, महादेव और अपरापर विष्णुमूर्त्तिके मन्दिर स्थापित हुए हैं। विष्णुके आदेशसे अग्निदेव प्रस्रवणमें अवस्थान करते हैं। क्रमशः यह वैष्णव क्षेत्र तप्तकुण्ड, नारदकुण्ड, ब्रह्मकपाली, धर्मधारा, गरुडशिला, नारदशिला, मार्कण्डेयशिला, वराहशिला, नरसिंहशिला, वसुधारा तीर्थ, सत्यपथकुण्ड और त्रिकोणकुण्ड आदि १२ छोटे छोटे अंशोंमें विभक्त हो गया है। स्कन्दपुराणीय हिमवत्खण्डमें उन सब तीर्थोंका माहात्म्य वर्णित है।

बदरीनाथमें विष्णु नरसिंहरूपमें विराजित हैं। इनमें नरनारायण और नरसिंह, वराह, नारद, गरुड और भमार्क आदि शक्तियोंका समन्वय हुआ है। बदरी नामक मन्दिरके पार्श्वमें और भी चार मन्दिर प्रतिष्ठित हैं। ये पांचों मन्दिर पञ्च बदरी नामसे प्रसिद्ध हैं। (५) प्रवाद है कि शङ्खचक्रगदापद्मधारी विष्णु महाकुम्भके दिन यहांके नीलकण्ठ पर्वत शिखर पर आविर्भूत होते हैं। इनके दर्शन साधक मात्र ही पा सकते हैं। पाण्डु-केश्वरमें योगबदरीका मन्दिर स्थापित है। यहां भग-वान्‌की वासुदेवमूर्त्ति प्रतिष्ठित है। (६) ऊरगाम ध्यान बदरी तथा वृद्धकेदार और कल्पेश्वर शिवमन्दिर, अणिमठमें वृद्धबदरी मूर्त्ति स्थापित हैं। यहां हरिवंश

(५) योगबदरी, ध्यानबदरी, वृद्धबदरी और आदि-बदरी। पांडवप्रतिष्ठित पञ्चशिव-मन्दिर भी पञ्चकेदारके नामसे प्रसिद्ध हैं।

(६) किरातगण भी वासुदेवकी उपासना करते थे।

वर्णित अगस्त्य देवमूर्त्ति हैं। जोशीमठमें भविष्यबदरी और वासुदेव, गरुड़ और भगवती मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। कुछ शताब्दी पहलेसे दाक्षिणात्यके दण्डी सम्प्रदायगण बदरीनाथके पूजारीका काम करते आ रहे थे। पीछे नम्बूरी ब्राह्मणोंने उक्त कार्यका भार ग्रहण किया। वैशाख से ले कर कार्त्तिकमास तक ये लोग बदरीनाथकी सेवा किया करते हैं। पीछे शीत पड़ने पर ये ज्योतिधाम चले जाते हैं। देवप्रयागके ब्राह्मण तप्तकुण्डमें, काटि थाल, हातीपाल और दण्डी ब्राह्मण ब्रह्मकपालोंमें, डिम्री ब्राह्मण शिव और लक्ष्मी मन्दिरमें, जालिया ब्राह्मण तहूलोंमें तथा पुरोहितानुचर योगबदरीमें, डिम्रीगण ध्यानबदरीमें और दक्षिणाब्राह्मण वृद्धबदरी और आदि बदरीमें याजकता करते हैं। पञ्चबदरी छोड़ कर नन्द प्रयाग और विष्णुप्रयागके विभिन्न मन्दिरोंमें अपरापर विभिन्न श्रेणीके ब्राह्मण पुजारीका काम करते हैं। नन्द प्रयागमें स्नान करनेसे गो और ब्राह्मणवधका पाप नाश होता है।

बदरिकाश्रम (सं० पु० क्ली०) बदरिकाचिह्नित आश्रम। तीर्थविशेष। यह तीर्थ श्रीनगर (गढ़वाल) के पास अलक नन्दा नदीके पश्चिमी किनारे पर अवस्थित है। यहां नर नारायण तथा व्यासका आश्रम है। कहते हैं, कि भृगु तुंग नामक शृङ्गके ऊपर एक बदरीवृक्षके कारण बदरिका श्रम नाम पड़ा। महाभारतमें लिखा है, कि पहले यहां गंगाकी गरम और ठंढी दो धाराएं थीं और रेत सोने की थी। यहीं पर देवताओं और ऋषियोंने तप कर भगवान् विष्णुको प्राप्त किया था। गन्धमादन, बदरी, नरनारायण और कुवेरशृङ्ग इसी तीर्थके अन्तर्गत हैं। नरनारायण ऋषिने यहां कठोर तपस्या की थी। पाण्डव महाप्रस्थानके लिये इसी स्थान पर गये थे। पद्मपुराणमें वैष्णवोंके सब तीर्थोंमें बदरिकाश्रम श्रेष्ठ कहा गया है।

"योऽवतीर्य्यात्मनोऽंशेन दाक्षायण्यान्तु धर्म्मतः।
लोकानां स्वस्तयेऽध्यास्ते तपो बदरिकाश्रमे॥"
(भाग० ३।११।८)

भगवान् विष्णुने अपने अंश द्वारा दाक्षायणीमें अव तीर्ण हो कर लोगोंकी भलाईके लिये बदरिकाश्रममें तपस्या की थी। बदरिका देखो।

बदरी (सं० स्त्री०) बदर गौरादित्वात् ङीष्, वा बदरि इकारान्तादिति पक्षे ङीष्। १ कोलिवृक्ष, बेरका पेड़ या फल। २ कार्पासी। ३ कपिकच्छु, केंवांच। ४ आश्रम विशेष, शम्याप्राश।

अश्वनदी सरस्वतीके पश्चिमी किनारे ऋषियोंका यह बुद्धिवर्धक शम्याप्रास नामक पवित्र आश्रम है। यहां बहुतसे बदरी वृक्ष हैं इसी कारण इसका बदरी आश्रम नाम पड़ा है। यहां भगवान् वेदव्यासने ईश्वरकी चिन्तामें अपना तन मन लगा दिया था। पीछे भक्ति द्वारा जब चित्त निर्मल हुआ, तब पहले पुरुष और पीछे तदधीन माया उनके दर्शन गोचर हुई। जो अपार मायामें सम्मोहित जीव स्वयं गुणातीत हो कर भी अपनेको त्रिगुणात्मक समझते और गुणजन कर्तृत्वादिको प्राप्त होते हैं उन्हें भी वे देख पाये। वेदव्यासने इस प्रकार आत्मतत्त्वका अवलम्बन करके श्रीमद्भागवत संहिताकी रचना की। (भाग० १।७ अ०)

बदरी—महिसुर राज्यके अन्तर्गत एक नदी। यह बाबा बुदन गिरिमालासे निकल कर बेलूर नगर होती हुई हेमा वतीमें जा गिरी है। येरेगा-हल्ला नामक एक और शाखा नदीने इसके कलेवरकी वृद्धि की है।

बदरी—सह्याद्रिके अन्तर्गत एक तीर्थ। यहां त्रिलोचन शिवकी एक मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। (सह्या० १३।८)

बदरीच्छद (सं० पु० क्ली०) नखीनामक गन्धद्रव्य।

बदरीच्छदा (सं० स्त्री०) बदर्य्याः छदा इव छदा यस्याः। १ हस्तिकोलिवृक्ष, एक प्रकारका बेर। २ शङ्खनखी, एक सुगन्ध द्रव्य जो शायद किसी समुद्री जन्तुका सूखा मांस हो।

बदरीनाथ—युक्तप्रदेशके गढ़वाल जिलान्तर्गत एक हिमालय शिखर। यह समुद्रपृष्ठसे २३२१० फुट ऊंचा है। इसी शृङ्गभूमिसे अलकनन्दा नदी निकली है। इसके सानु देशमें प्रायः १०५०० फुटकी ऊंचाई पर बदरीनाथ नामक प्रसिद्ध विष्णुमूर्त्ति स्थापित है। यह अक्षा० ३० ४४´ १५´´ उ० तथा देशा० ७९ ३०´ ४०´´ पू०के मध्य पड़ता है। शङ्करस्वामी नामक किसी योगीने नारदकुण्डसे यह मूर्त्ति निकाल कर स्थापित की। तीर्थमाहात्म्यमें इसकी विशेष ख्याति गाई है। अग्निकाण्डसे मन्दिर नष्ट प्राय हो गया

था, अभी भक्त गणोंने उसका संस्कार करा दिया है। यहाके पुरोहित रावल कहलाते हैं। ये लोग दाक्षिणत्यवासी नम्बूरी ब्राह्मण हैं। प्रतिवर्ष ग्रीष्मके समय ये लोग यहा पहुँचते हैं और कार्त्तिकमासमें शीतके प्रारम्भ होते ही अपनी प्राप्त सम्पत्तिको जमोनमें गाड कर जोशीमठ चले जाते हैं। यहा और भी चार मन्दिर हैं। देवसेवाके लिये गढवाल और कुमाउन प्रदेशके कुछ ग्रामोंका राजस्व निर्दिष्ट है। यहा प्रतिवर्ष उत्सवके समय वहुतसे लोग समागम होते हैं। वदरी श देखो।

वदरीनारायण (स ० क्ली०) १ वदरीनाथ, नारायणकी मूर्त्ति जो वदरिकाश्रममें हैं। २ वदरिकाश्रमके प्रधान देवता।

वदरीपत्र (स ० पु०) वदर्या पत्रमिव आकृतिर्यस्य। नखी नामक गन्धद्रव्य।

वदरीपत्रक (स ० क्ली०) वदरीपत्र स्वार्थे कन्। नखी नामक गन्धद्रव्य।

वदरीपल्लव (स ० पु० क्ली०) कोलिकोमल पल्लव, वेरकी मुलायम पत्ती।

वदरीफला (स ० स्त्री०) नील शेफालिकाका पौधा।

वदरापाचन (स ० क्ली०) वदरपाचन तीर्थ। वदरपाचन देखो।

वदरीवन—१ कावेरी नदीके दक्षिणवर्त्ती एक पुण्यस्थान। यहा कमलेश्वर शिवमूर्त्ति स्थापित है। शिवपुराणके अन्तर्गत वदरीवन माहात्म्यमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है।

वदरीहाट—मुर्शिदावाद जिलेके लालवाघ उपविभागका एक प्राचीन स्थान। यह अक्षा० २४ १८´ उ० और देशा० ८८ १५´ पू० भागीरथीके दाहिने किनारे अवस्थित है। भागीरथी वक्षसे वहुकोसव्यापी स्थानका ध्वंसावशेष देखनेसे इसकी पूर्वसमृद्धिका स्मरण आ जाता है। आज भी यहा राजप्रासाद और भग्नावशेष दुर्गका चिह्न दृष्टिगोचर होता है। वहुतसी स्वणमुद्रा और स्तम्भ गात्रमें पालि अक्षरमें लिखी हुई लिपियाँ पाइ गई हैं। मालूम होता है, कि वौद्धप्रभावके समय इस नगरकी श्रीवृद्धि हुई थी। गौडके पठानराज गयासुद्दीनने अपने नाम पर इस नगरका गयासावाद नाम रखा था।

वदरीवन (स ० पु०) १ वेरका जङ्गल। २ वदरिकाश्रम।

वदरीशैल (स ० पु०) वदरीवहुल शैल पर्वत। हिमालय पर्वतैकदेश, वदरिकाश्रम।

वदरून (हि ० पु०) पत्थरकी जालीकी एक प्रकारकी नकाशी जिसमें वहुतसे कोने होते हैं।

वदरीह (फा० वि०) १ कुमार्गी, वदचलन। (पु०) २ वदलीका आभास।

वदल (अ ० पु०) १ परिवर्त्तन, हेरफेर। २ प्रतिकार, पलटा।

वदलगाम (फा० वि०) जिसे भला वुरा मुँहसे निकालते सकोच न हो, मुँहजोर।

वदलना (हि ० क्रि० १ औरका और होना, परिवर्त्तित होना। २ एक स्थानसे दूसरे स्थान पर नियुक्त होना। ३ एकके स्थान पर दूसरा हो जाना, जहा जो वस्तु रही हो वहा वह न रह कर दूसरी वस्तुका आ जाना। ४ औरका और करना, परिवर्त्तित करना। ५ एक वस्तु दे कर दूसरी वस्तु लेना या एक वस्तु ले कर दूसरी वस्तु देना। ६ एकके स्थान पर दूसरा करना, एक वस्तुके स्थानकी पूर्त्ति दूसरी वस्तुसे करना।

वदलवाना (हि ० क्रि०) वदलनेका काम कराना।

वदला (अ० पु०) १ विनिमय, परस्पर लेने और देनेका व्यवहार। २ किसी वस्तुके स्थानकी दूसरी वस्तुसे पूर्त्ति, एवज। ३ एककी वस्तुके स्थान पर दूसरा जो दूसरा वस्तु दे। ४ किसी कर्मका परिणाम जो भोगना पडे, प्रतिफल। ५ प्रतीकार, पलटा।

वदलाना (हि ० क्रि०) वदलवाना देखो।

वदली (हि ० स्त्री०) १ घनविस्तार, फैल कर छाया हुआ वादल। २ एकके स्थान पर दूसरेकी उपस्थिति। ३ एक स्थानसे दूसरे स्थान पर नियुक्ति।

वदलीवल (हि ० स्त्री०) अदल वदल, हेरफेर।

वदशक्ल (फा० वि०) कुरूप, वेडौल।

वदसलूकी (फा० स्त्री०) १ अशिष्ट व्यवहार, वुरा व्यवहार। २ अपकार, वुराई।

वदसूरत (फा० वि०) कुरूप, भद्दी सूरतवाला।

वदस्तूर (फा० क्रि० वि०) मामूली तौर पर, जैसेका तैसा, ज्योंका त्यों।

वदहजमी (फा० स्त्री०) अजीर्ण, अपच।

बदग्राम। ( फा० वि० ) १ घेहोश, अचेत। २ व्याकुल, विकल। ३ श्रान्त, शिथिल।

बदाऊँ—युक्तप्रदेशका छोटे लाटके अधीन एक जिला। यह अक्षा० २७ ४०' से २८ २६' उ० तथा देशा० ७८ १६' से ७९ ३१' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १९८७ वर्गमील है। इसके उत्तरमें मुरादाबाद, उत्तरपूर्वमें रामपुर राज्य और बरेली जिला, दक्षिण पूर्वमें शाहजहानपुर और दक्षिण पश्चिममें गङ्गा है। गङ्गाके साथ इसकी प्राकृतिक सुन्दरतामें कोई विशेष पृथकता नहीं देखी जाती। वारिविभागी स्रोत नव स्थान इसके मनोहर हैं। अन्यान्य स्थानविशेषकी भूमि खेतीके लिये उपयोगी है और अन्यान्य स्थान बालू का टकमय हैं। इसके मध्यभागमें सोत नामकी नदी बहती है। इसी सोतनदीके किनारे बदाऊं नगर बसा हुआ है। इसका छाड़ इसमें नहिल, अन्धेरी, छोइया और महावा प्रवाहित हैं।

इस जिलेका कोई प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। स्थानीय ब्राह्मणोंके मतसे इसका पूर्वनाम 'वेदमाया' अथवा वेदमौ था। दिल्लीके तोमरवंशीय नरपति महीपालने यहां एक दुर्गका निर्माण किया था। दुर्गमें वर्त्तमान बदाऊँका पश्चिमांश बना हुआ है। प्राचीन स्मृतिका ध्वंसावशेष स्वरूप मिट्टीका स्तूप आज भी देखा जाता है। उक्त महापालने 'हरमन्दिर' नामक एक मन्दिर बनवाया था। मुसलमानोंने उस मन्दिरको नष्ट कर उसके स्थानमें जुम्मा मसजिद तैयार की थी। स्थानीय अधिवासियोंका कहना है, कि इस मसजिदमें प्राचीन मन्दिरकी ध्वंसमूर्तियां लगी हुई हैं।

कोई कोई कहते हैं, कि बुद्ध नामके एक अहार राजा ने ९०५ ई०में इस नगरको बसाया था। इसके वंशधरोंने प्रायः एक सदी तक यहां राज्य किया था।(१) गजनापति महम्मदके भाञ्जे सैयद सलार मसाउद गाजीने १०२८ ई०में रोहिलखण्ड आक्रमण करते समय यहां आ कर वास किया था। किन्तु यहांके राठौरवंशीय हिन्दू राजाओं ने जब उनके विरुद्ध हथियार उठाया तब वह विशेष क्षति ग्रस्त हो यहांसे भाग गये। ११९६ ई०में गयासुद्दीनके प्रतिनिधि कुतबुद्दीन ऐबकने बदाऊं दुर्ग पर हमला कर लूटपाट मचा दी। इसमें राठौरवंशके राजपूत राजा काम आये और अहिच्छत्रपुरी पर मुसलमानोंका कब्जा हो गया। मुसलमानी अमलमें बदाऊँ 'दियार सदर' कहने लगा। समसुद्दीन अल्तमस इस प्रदेशके बादशाह हुए। कुछ अर्सेके बाद १२१० ई०में वे दिल्लीके तख्त पर बैठनेको चले। सम्राट् हो कर भी बदाऊँसे उनकी मुहब्बत जरा भी न छूटी। ६२० हिजरीमें उनकी जुम्मा मसजिदकी शिलालिपि ही इसका जीता जागता उदाहरण है। पांच साल गुजरने बाद उन्होंने अपने बड़े लड़के रुकन उद्दीन फिरोजको(२) बदाऊं की सल्तनत सौंपी। यहांकी जुम्मा मसजिद शामसीको उन्होंने ही बनवाया था। दस्तकारीके लिये उन्होंने खूब खरचा उठाया था। १३वीं और १४वीं सदीमें इस प्रदेशमें केवल लूट मारकी होती रही थी। यह विद्रोहवह्नि मुगलशासन के पहले न बुझ न सकी।

१३१५ ई०में शासनकर्त्ता महायत खाँने बागी हो बादशाहके विरुद्ध तलवार उठाई। सम्राट् खिलजीने उसको किसी प्रकारसे भी वशमें न ला सके। आखिर ग्यारह वर्षके बाद उनके पुत्र मुबारक शाह दुर्ग सहित महायत् खाँको बन्दी करनेमें समर्थ हुए थे। १४१० ई०में बागी सूबेदार मालिक हुसनने सैयद राजाओंकी अधीनता पाश तोड़ डाला। १४४९ ई०में आलमशाह बदाऊ जाकर देरा डाले। इस समय उनके वजीर बहोल लोदीके साथ षड़यन्त्र कर उसने बादशाहको तख्तसे उतार दिया। १४७९ ई० तक उन्होंने उस सल्तनतका मजा उड़ाया। अन्तमें मौतने उन्हें आ घेरा और वे दुनियासे कूच कर गये। उनकी मृत्युके बाद दामाद हुसैन शाह शरकीने इस प्रदेश पर हुकूमत चलाना शुरू किया, किन्तु बहोल लोदीने उनको ज्यादा दिन तक टिकने न दिया। उन्होंने हुसैनको पूरी तरहसे

(१) अब भी इस जिले अहीरोंका प्रभाव ज्यादा है। अहीरोंके १६वें राजा मिरगुल्लगाहुर नामके काव्येकी बहुत लोग कल्पना करते हैं।

(२) १२३६ ई०में वे दिल्लीके बादशाह हुए।

परास्त कर इस प्रदेशको दिल्लीके राज्यमें मिला लिया। जब हिन्दुस्तानमें मुगल बादशाहतकी नींव पड़ी तो हिमायूनने इस प्रदेशमें एक सर्दार तैनात कर दिया। अकबरकी सल्तनतमें बदाऊं एक सतत महकमा माना गया और कासिम अली खाँ इसके जागीरदार बनाये गये। १५७१ ई०में बड़ा भीषण अग्निकाण्ड हुआ, सबका सब जल कर खाक हो गया। शाहजहाने विचार अदालत बदाऊंसे उठवा कर बरेलीमें पहुंचाया दी। रोहिलोंके अभ्युदय पर बदाऊं और भी श्रीहीन हो गया था। १७१६ ई०में फर्रुखाबादके नवाब महम्मद खाँ वङ्गस-ने बदाऊं नगर तक जिलेका दक्षिणांश अपने अधिकारमें कर लिया था। बाकीके भाग पर रोहिल सरदार अली महम्मदने अपना दखल जमाया। रोहिलाओंने फर्रुखा-बादमें नवावको हराया और सब महाल भी अपने काबूमें कर लिये। १७७४ ई०में मिरानपुर कटरामें हाफेज रहमत जब हार गया तब यहाके शासनकर्त्ता दाऊदखाँने अयोध्या के वजीर शुजाउद्दौलासे सधि कर ली। किन्तु वजीरने थोड़े ही दिन बाद उनके ऊपर हमला कर उनको बुरी तरह शिकस्त दी और उनका राज्य छीन लिया।

१८०१ई०में यह स्थान ब्रिटिश राज्यमें आया। इस समयसे गदर तक यहा और कोई नवीन घटना न घटी। मीरटके गदरका समाचार सुन यहाके सभी सिपाही बागी हो गये। अबदुल रहीम खाँ उस समय इस प्रदेशमे राज्य करते थे। किन्तु हिंदू और मुसलमानोंमें इस गोलमालके समय आपसमें वैमनस्य बढा। ठाकुर राजाओं और मुसलमानोंके बीच दो बड़े भय कर युद्ध हुये।। इस युद्धमें हिंदू हारे। मालागढके वालि-दाद दुर्गके पतनके बाद विद्रोही सर्दार बदाऊंमें लौटे। किन्तु थोड़े ही दिनोंके बाद उन्होंने फतेगढकी तरफ प्रस्थान किया। गुनौरके पास मुसलमानोंसे अहीर परास्त हुए। १८५८ ई०में नियाज महम्मद सर जहोप ग्राण्टके हाथ हार स्वीकार कर बदाऊं शहरमें छिपे थे। उसके दलबलको जब ब्रिटिश सैन्यने अच्छी तरह हरा दिया, तब मुसलमान जरा सी भी देर रणक्षेत्रमें न ठहर सके। इसके बाद यह प्रदेश अंग्रेजोंके अधिकारमें आया।

बदाऊं, साहसवन और बिल्सी ये यहाके प्रधान व्यवसायके केन्द्र स्थान हैं। नील, चीनी, और पीतल के बासनोंकी यहां पर ज्यादा बिक्री होती है। ककोरा नामके स्थानमें हर साल कार्तिक सक्रान्तिको बड़ा भारी मेला लगता है। इस मेलेमें लाखों मनुष्यकी भीड़ होती है। चान्दपुर, सुखेला, लक्ष्मणपुर, बाढचियामें एक और मेला लगता है। यहा अयोध्या रुहेलखण्डका एक स्टेशन है।

२ बदाऊं जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २७ ५०' से २८ १२' उ० तथा देशा० ७८ ४८' से ७९ १६' पू०के मध्य गङ्गाके उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है। भूपरिमाण ३८५ वर्गमील और जनसख्या ढाई लाखके करीब है। इसमें २ शहर और ३७७ ग्राम लगते हैं।

३ जिलेका प्रधान नगर और विचार-सदर। यह अक्षा० २८ २' उ० और देशा० ७९ ७' पू०के मध्य विस्तृत है। जनसख्या प्राय ३१०३१ है। प्राचीन बदाऊं नगरके पास ही नवीन बदाऊं बसा हुआ है। पुराने बदाऊं में दुर्ग और सुरम्य मकानोंके खडहर दीख पडते हैं। मुसलमानाधिकारमें प्रायः चार सौ वर्ष तक बदाऊं शहरमें फातिहरकी राजधानी थी। उस समय इसकी शोभा और सम्पत्ति खूब बढा चढी थी। बलवन जब बदाऊं शहर को देखने आये थे तब यहा मालिक फौज शिरवाणी शासनकर्त्ता थे। ये मादक वस्तुओंको खा कर ऐसे उन्मत्त हो जाते थे, कि एक दिन इन्होंने अपने भृत्यको मार डाला था। भृत्यकी विधवा पत्नीने यह दास्तान सम्राट् बलवनको सुनाई। सम्राट् बल्वन इस करुण कहानीको सुन बहुत बिगड़े और उन्होंने उसे शहरके सदर दरवाजे पर लटका कर मरवा डाला।

इस नगरमें वास करनेके कारण मौला अबदुल कादेरका बदाऊं नाम पड़ा। १००४ ई०में यहा उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने १५७१ ई०में बदाऊंका अग्निकाण्ड अपनी आखोंसे देखा था। उसके बाद जहागीरके भाई कुतुबुद्दीन चिस्तीने यहा पर वास किया था। उन्होंने यहाकी जुम्मा मसजिदका जीर्णोद्धार कराया। अबुल फजलने लिखा है, कि यहा पर अनेक साधु फकीरों की कब्र थीं। बहुतसी कब्र न मालूम कहा चली गई हैं। केवल समसी ईदगाके पास बदरुद्दीन शाह विलायतकी जियार

और थोड़ीसी कब्रें देखी जाती हैं। किन्तु उन कब्रोंका कैसा भी इतिहास नहीं पाया जाता। समसी ईदगा और जुम्मा मस्जिद ही यहांकी प्राचीन कीर्त्तियां हैं। शमसुद्दीन अल्तमशने उसका निर्माण कराया था। ऐसी प्राचीन मुसलमान-कीर्त्ति भारतमें और कहीं भी दिखाई नहीं देती। इसके अलावा आजकलके जमानेमें भी राज्यकार्य तथा विद्या-प्रचारके लिये ब्रिटिश सरकारने अनेक घर बनवा दिये हैं।

बदाख्शान—अफगान तुर्किस्तानके अन्तर्गत एक पार्वतीय राज्य। यह अक्षा० ३५ ५०´से ३८ ३०´ उ० तथा देशा० ६६ ३०´से ७४ २०´ पू०के मध्य अवस्थित है। हिन्दूकुश पर्वतमाला इसके पास ही फैली हुई है। कोकचा जातिका उपत्यका निवास भी इस राज्यके अन्तर्गत है। यह विस्तीर्ण राज्य १६ जिलोंमें विभक्त है जिनमेंसे फैजाबाद ही सर्व प्रधान है। यहां मूल्यवान् पत्थर, ताम्र, गन्धक और सोमल आदि धातव पदार्थ पाया जाता है। १०वीं शताब्दीमें अरबी भौगोलिकोंने इस स्थानके मणिरत्नादिका उल्लेख किया है। यहां धान्यादि नाना प्रकारके शस्य और नाना सुमिष्ट फल उत्पन्न होते हैं। ताजिक जाति यहांकी अधिवासी है। आचार व्यवहारमें ये लोग काफरिस्तान, सोगनम् और रोशानीके जैसे हैं।

इस राज्यके प्राचीन इतिहासके सम्बन्धमें कोई विश्वस्त प्रमाण नहीं मिलता। जनश्रुतिसे मालूम होता है, कि आलेक्सन्दरके वंशज बदाखशाके पूर्व शासक थे। फिर कोई कोई कहते हैं, कि सम्राट् बाबरने अपने लड़के मिर्जा हिन्दाल पर बदाखशानका राज्यभार सौंपा। हिन्दालके भारत आने पर सम्राट्के जेनरल मिर्जा सुलेमान राज्याधिकारी हुए। उनके मरने पर उनके लड़के राजगद्दी पर बैठे। १८४० ई०में कतगानके मीर मुराद बेगने इस पर अपना दखल जमाया। कन्धान और अफगान-युद्धके समय बदाखशान काबुलका करद राज्य हो गया।

बदान (हि० स्त्री०) प्रतिज्ञा पूर्वक पहलेसे किसी बातका स्थिर किया जाना, किसी बातके होनेका पक्का।

बदाबदी (हि० स्त्री०) दो पक्षोंकी एक दूसरेके विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ, लाग डांट, होड़ा होड़ी।

बदाम (हि० पु०) बादाम देखो।

बदामी (फा० वि०) १ बादामी देखो। २ कौड़ियालेकी जातिका एक पक्षी, एक प्रकारका किलकिला।

बदारिया—युक्त प्रदेशके एटा जिलान्तर्गत एक गण्डग्राम। यह बूढ़ी गङ्गाके किनारे अवस्थित है। इसके दूसरे किनारे सोरोन नगर है। नदी पर लोहेका एक सुन्दर पुल बना हुआ है। म्युनिसपलिटीके अधीन रहनेके कारण यह स्थान भी नगरमें गिना जाता है।

बदिया-उज़ जमा खां—बङ्गालके अन्तर्गत वीरभूमका मुसलमान शासनकर्त्ता। इनके पिताका नाम आसद उल्ला था। पिताकी मृत्युके बाद ये सन् ११२५ सालमें राज सिंहासन पर बैठे। उसी समय इन्हें मुर्शिदाबादके नवाब मुर्शिदकुली खांसे सनद मिली। भास्कर पण्डितकी अधिनायकतामें मरहठोंने बङ्गालके पश्चिम भाग पर आक्रमण करनेके लिये के कुआड़ गांवमें शिविर छावनी डाली थी। बदिया उज़जमान्ने वर्द्धमान-राज प्रभृतिकी सहायता पा कर मरहठोंको कटोमासे मेदिनीपुर तक खदेड़ा। वी०भूम देखो।

बदी (हि० स्त्री०) १ कृष्ण पक्ष, अंधेरा पाख। (फा० स्त्री०) २ अपकार, बुराई।

बदे (हि० अव्य०) १ लिये, वास्ते। २ बदलेमें, स्थान पर।

बदौनी—मुन्तखब उत् तवारिखके प्रणेता एक विख्यात मुसलमान ग्रन्थकार। इनका असल नाम था शेख अब्दुल कादिर बदौनी। रणथम्भगढ़के निकट तोड़ग्राममें इनका जन्म हुआ था। पीछे बदाऊंमें आ कर बस जानेके कारण इनका बदौनी नाम पड़ा। इनके पिताका नाम मुलुकशाह था। नगरवासी शेख मुबारकसे इन्होंने लिखना पढ़ना सीखा था। सम्राट् अकबरशाहने इन्हें अपनी सभामें बुलाया और अरबी तथा संस्कृत भाषाके ग्रन्थोंका फारसी भाषामें अनुवाद करनेको कहा। इन्होंने दरबारमें रह कर मुन्तखब उत् तुवारीख, अथर्व वेद और रामायणका अनुवाद किया। नीति और धर्म सिखानेके लिये इन्होंने नजात उर्-रशीदकी रचना की थी। अलावा इसके ये महाभारतके दो पर्वोंका अनुवाद और १११ हिजरीमें काश्मीरका संक्षिप्त इतिहास

प्रणयन कर गये हैं। बुढ़ापा आने पर ये सम्राट् से अनुमति ले कर बदाऊं गये। वहां १००४ हिजरीमें मुन्तखब उल तवारिख की रचना कर इन्होंने अक्षय कीर्त्ति प्राप्त की। कविता रचनाके सबबसे लोग इन्हें कादिरी कहा करते थे। इनका जन्म ९४७ और मरण १००४ हिजरीमें हुआ था।

बदेश्वर—राजपूतानेके उदयपुर राज्यान्तर्गत एक गण्ड-ग्राम। यह चित्तोरके दक्षिणपश्चिम पर्वतमालाके ऊपर अवस्थित है। इसके चारों ओर दीवार खींच गई है। इसकी रक्षाके लिये पर्वत पर एक दुर्ग भी बनाया हुआ है।

बदौलत (फा० क्रि० वि०) कृपासे, आसरेसे। २ कारणसे, सबबसे।

बदौसा—युक्तप्रदेशके बंदा जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५ ३´से २५ २७´ उ० तथा देशा० ८० ५७´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३३३ वर्गमील और जनसंख्या हजारसे ऊपर है। इसमें १३२ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है। बघैन नदी तहसीलके दक्षिण पश्चिम दिशासे बह गई है।

बद्दल (हि० पु०) बादल देखो।

बद्दू (हि० पु०) १ अरबकी एक असभ्य जाति जो प्रायः लूटपाट किया करती है। (वि०) २ बदनाम।

बद्ध (सं० त्रि०) बध्यतेस्म इति बन्ध कर्मणि क्त। १ बन्धनयुक्त, बंधा हुआ। पर्याय—सन्दानित, मूर्ण, उद्धित, सन्दित, सित, निगडित, नद्ध, कीलित, यन्त्रित, संयत। २ अज्ञानमें फंसा हुआ, संसारके बंधनमें पड़ा हुआ। ३ बैठा हुआ, जमा हुआ। ४ जुड़ा हुआ। ५ निर्द्धारित, निर्दिष्ट, ठहराया हुआ। ६ जिस पर किसी प्रकारका प्रतिबंध हो, जिसके लिये कोई रोक हो। ७ जिसकी गति, क्रिया, व्यवहार आदि परिमित और व्यवस्थित हो।

बद्धक (सं० पु०) बन्दी, कैदी।

बद्धकोष्ट (सं० पु०) मल अच्छी तरह न निकलनेकी अवस्था या रोग, पेटका साफ न होना।

बद्धगुद (सं० क्ली०) बद्धं गुदं पायुर्येन। उदररोगविशेष। इसका लक्षण—जिसकी अन्त्रनाडी अन्न, शाक, बालुका द्वारा आच्छादित रहती है, उसका मल दूषित हो कर सम्मार्जनीश्रित तृणादिकी तरह धीरे धीरे अन्त्रनाडीके भीतर सञ्चित होता है। गुह्यद्वारमें मल रुक जाता है और यदि बहुत कष्टसे होता भी है, तो थोड़ा। इससे हृदय और नाभिके मध्यस्थलमें उदर परिवर्द्धित हो जाता है। (माधव०) सुश्रुतमें लिखा है, कि अन्न वा उपलेपी द्रव्य वा क्षुद्र अश्मखण्डका संयोग रहे वा न रहे, यदि अन्त्रमें दूषित मल जमा रह कर सोपानश्रेणीकी तरह (अस्थिमालाक्रमसे) नाडीमें अवस्थित रहे और उसमें मलाधारमें पुरीष रुक कर बहुत कष्टसे थोड़ा थोड़ा निकले तथा हृदय और नाभिके मध्यका ऊपरी भाग बढ़ आवे और वमनमें विष्ठा सी गन्ध हो, तो बद्धगुदरोग होता है। (सुश्रुत नि० ७ अ०)

बद्धगुदोदर (सं० पु०) पेटका एक रोग। इसमें हृदय और नाभिके बीच पेट कुछ बढ़ आता है और मल रुक रुक कर थोड़ा थोड़ा निकलता है। बद्धगुद देखो।

बद्धजिह्व (सं० त्रि०) जिन्हें जीभ हिलानेमें कष्ट मालूम होता है।

बद्धपरिकर (सं० त्रि०) कमर बाँधे हुए, तैयार।

बद्धपुरीष (सं० त्रि०) जिसका मल रुक गया हो।

बद्धपिण्ड (सं० क्ली०) बद्धपाणि, मुट्ठी।

बद्धफल (सं० पु०) बद्धानि फलानि यस्य। करञ्ज वृक्ष।

बद्धमुष्टि (सं० त्रि०) बद्धा दृढा दानानिवृत्ता वा मुष्टिर्यस्येति। १ दृढमुष्टि, जिसकी मुट्ठी बंधी हो। २ कृपण, कंजूस।

बद्धमूल (सं० त्रि०) बद्धं मूलं यस्येति। दृढमूल उत्पाटना नई मूल, जिसने जड़ पकड़ ली हो।

बद्धमुक्ति (सं० स्त्री०) वंशी बजानेमें उसके छिद्रोंसे उंगली हटा कर उसे खोलनेकी क्रिया।

बद्धरसाल (सं० पु०) बद्धो रसेन आवृत अतएव रसाल रसवान्। उत्तम जातिका एक प्रकारका आम। पर्याय—चक्रताम्र, मध्याम्र, सितजाम्रक, वनेज्य, मन्मथानन्द, मदनेच्छाफल। इसके कोमलफलका गुण कटु, अम्ल, पित्त और दाहवर्द्धक, स्वादु, मधुर पुष्टि, वीर्य और बलप्रद माना गया है। (राजनि०)

बद्धवर्चस (सं० त्रि०) मलरोधक।

बद्धगुदक (सं० त्रि०) बद्धपुरीष, जिसका मल बंध गया हो।

बद्धविण्मूत्र (सं० त्रि०) जिसका पुरीष और मूत्र बंध गया हो।

बद्धसैन्य (सं० त्रि०) जिसकी सेना आबद्ध हुई हो।

बद्धशिख (सं० त्रि०) बद्धा शिखा चूड़ा यस्येति। १ जिसकी शिखा या चोटी बंधी हो। बिना शिखा बांधे जो कुछ धर्म कर्म किया जाता है वह निष्फल होता है।

"सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन तु।
विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्॥"
(प्रायश्चित्त०)

(पु०) शिशु, बच्चा।

बद्धशिखा (सं० स्त्री०) बद्धा शिखा यस्याः। १ उच्चटा, भूम्यामलकी। बद्धा शिखा केशकलापो यस्याः। २ सम्बद्धकेशा, वह स्त्री जिसके केश बंधे हों। ३ लशुन।

बद्धसूतक (सं० पु०) रसेश्वर दर्शनके अनुसार बद्ध रस या पारा जो अक्षत, लघुद्रावी, तेजोविशिष्ट, निर्मल और गुरु कहा गया है। रसेश्वर दर्शनमें देहको स्थिर या अमर करने पर मुक्ति कही गई है। यह स्थिरता रस या पारेकी सिद्धि द्वारा प्राप्त होती है।

बद्धामयपाति (सं० पु० ज्वरनाशक औषध।

बद्धी (हिं० स्त्री०) १ डोरी, रस्सी, तस्मा। २ माला या सिकड़ीके आकारका चार लड़ोंका एक गहना। उन चार लड़ोंमेंसे दो लड़ें तो गलेमें होती हैं और दो दोनों कंधों परसे जनेऊकी तरह होती हुई छाती और पीठ तक गई रहती हैं।

बद्धोदर (सं० पु०) बद्धगुद रोग। बद्धगुद देखो।

वध (सं० पु०) हन घञ्, वधादेश। प्राणवियोगव्यापार व्यापार, हत्या, हनन, मार डालना। जिससे प्राण वियुक्त हो, वही वध पदवाच्य है। जो वधकारक अनुष्ठान करते हैं वे नरकगामी होते हैं। इसीसे शास्त्रमें वधको सम्पूर्ण निन्दित बतलाया गया है। केवल वध करनेवाला ही नरकगामी होता है सो नहीं, प्रयोजक, अनुमन्ता, अनुग्राहक और निमित्ती ये चार भी वधकारीके साथ निरयगामी होते हैं।

शास्त्रमें वध अर्थात् हिंसामात्रको ही निषिद्ध बतलाया है। फिर दूसरे शास्त्रमें यज्ञमें पशुवधका उल्लेख देखनेमें आता है। शास्त्रमें लिखा है, कि यज्ञमें यदि पशु वध किया जाय, तो कोई पाप नहीं होगा। सांख्यदर्शनमें इस विषयकी मीमांसा की गई है, वह इस प्रकार है।—श्रुतिमें हिंसामात्र ही निषिद्ध है अर्थात् कोई भी हिंसा न करे, ऐसा कहा गया है। फिर अन्य श्रुतिका मत है, कि यज्ञमें पशुवध करे। इस प्रकार पढ़नेसे तो दोनों श्रुतियोंमें विरोध देखा जाता है, पर थोड़ा गौर कर यदि देखा जाय तो कुछ भी विरोध मालूम नहीं पड़ता। क्योंकि हिंसा या पशुवध अनिष्टसाधक और यज्ञीय पशुवध यज्ञका उपकारक है। यज्ञमें जिस प्रकार दूसरे कार्य करने होते हैं, पशुवध भी उसी प्रकार उनमेंसे एक है। यथाविहित यज्ञके समाप्त होने पर जिस प्रकार यज्ञके लिये स्वर्ग होता है, उसी प्रकार पशुवधके लिये नरक भी होता है। अतएव यज्ञमें इष्ट और अनिष्ट दोनों ही अवश्यम्भावी हैं। बहुत सुखभोग करनेके बाद यदि दुःख भोगना पड़े तो उसकी गिनती दुःखमें नहीं होती, इसीलिये वे लोग वधजन्य दुःखको दुःख नहीं मानते और इससे नरक होता है सो भी नहीं। अतएव दोनों श्रुतियां एक दूसरेके विरुद्ध नहीं हैं किन्तु तिथितत्त्वमें वैध हिंसाविचारकी आड़ भागवतका यह मत खण्डित हुआ है। धर्मशास्त्रका अभिप्राय यह है, कि वैधातिरिक्त वध ही पापका कारण है, वैधवध अर्थात् यज्ञार्थ पशुहिंसामें पाप नहीं होगा, वरन् यज्ञकी सम्पूर्णताके लिये एक 'अपूर्व' होगा। वे कहते हैं—

"यज्ञार्थं पशवः सृष्टा स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः॥"
(तिथितत्त्व)

यज्ञके लिये स्वयं स्वयम्भूने पशुओंकी सृष्टि की है। अतएव यज्ञमें यह पशुवध अवध स्वरूप है अर्थात् वध जन्य कोई पाप नहीं होगा।

तत्त्वकौमुदी और तिथितत्त्वकी विचारप्रणालीकी यदि विशेषरूपसे पर्यालोचना की जाय, तो तिथितत्त्वकी यह उक्ति समीचीन प्रतीत नहीं होगी। इसका विशेष विवरण हिंसा शब्दमें देखो।

वैधातिरिक्त हिंसामात्र ही अनिष्टसाधक है, इसमें जरा भी स शय नहीं और न इस ? किसीका मतभेद ही देखा जाता है। दश आदमी मिल कर यदि प्राणिवध करने जाय और उनमेंसे केवल एक आदमी वध कर डाले तो सभीको समान पाप होता है, वे सबके सब नरक जाते हैं। हन्ता अधिक पापभागी होगा, सो नहीं।

"बहूनामेककार्याणां सर्वेषां शस्त्रधारिणाम्।
यद्येको घातकस्तत्र सर्वे ते घातकाः स्मृताः॥"
(मनु)

यदि कहीं पर एक प्राणिवध करनेसे बहुतों प्राणीकी रक्षा होती हो तो वह वध पापमें गणनीय नहीं है।
(प्रायश्चित्तवि०)

इसके अतिरिक्त जो सुवर्ण चौर, सुरापायी, ब्रह्मघाती, गुरुपत्नीगामी और आत्मघाती हैं उनका वध भी पाप जनक नहीं है।

आततायि शत्रुका वध करनेसे पाप नहीं लगता। अग्निदाता, विषदाता, शस्त्रपाणि और धन, क्षेत्र तथा दारा इनके अपहरणकारीको आततायी कहते हैं।

वधक (स ० त्रि० ) वध-कुन। १ वधकर्त्ता, वध करने वाला। २ हिंस्र, हिंसा करनेवाला। (क्ली०) ३ व्याधि। ४ मृत्यु।

वधकृत (स ० त्रि० ) वध करोति कृ क्विप् तुक्। वध कर्त्ता, वध करनेवाला।

वधगराड़ी (हिं० स्त्री० ) रस्सी बटनेका औजार।

वधत्र (स ० क्ली० ) वध करणे कत्रन्। अस्त्र, हथियार।

वधना (हिं० क्रि० ) १ वध करना, हत्या करना। (पु०) २ मट्टी या धातुका टोंटीदार लोटा जिसका व्यवहार अधिकतर मुसलमान करते हैं। ३ चूड़ीवालोंका एक औजार।

वधभूमि (स ० स्त्री० ) वह स्थान जहां अपराधियोंको प्राणदण्ड दिया जाता है।

वधस्थली (सं० स्त्री० ) वधस्य स्थली ६तत्। श्मशान।

वधाई (हि ० स्त्री० ) १ वृद्धि, बढ़ती। २ वह आनन्द मंगल जो पुत्रजन्म पर किया जाता है। ३ मंगलाचार, मंगल अवसरका गाना बजाना। ४ उपहार जो मंगल या शुभ अवसर पर दिया जाय। ५ इष्ट मित्रके शुभ, आनन्द या सफलताके अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या सदेसा, मुबारकबाद। ६ किसी सम्बन्धी, इष्ट मित्र आदिके यहां पुत्र होने पर आनन्द प्रकट करनेवाला वचन या सदेशा। ७ आनन्द मंगल, चहल पहल।

वधाङ्कक (स ० क्ली० ) वध अङ्कमत कप्। कारागार।

वधाना (हि ० क्रि० ) वध करना, दूसरेसे मरवाना।

वधाया (हि० पु० ) वधाई।

वधावना (हि ० पु० ) बधाई देखो।

वधावा (हि० पु० ) १ वधाई। २ उपहार जो सम्बन्धियों या इष्टमित्रोंके यहांसे पुत्रजन्म, विवाह आदि मंगल अवसरों पर आता है। ३ मंगलाचार, आनन्द मंगलके अवसरका गाना बजाना।

वधिक (हि ० पु० ) १ वध करनेवाला, मारनेवाला। २ प्राणदण्ड पाये हुएका प्राण निकालनेवाला, जल्लाद। ३ व्याध, बहेलिया।

वधिया (हि ० पु० ) १ वह बैल या और कोई पशु जो अण्डकोश कुचल या निकाल कर षंड कर दिया गया हो, खस्सी, आख्ता। २ एक प्रकारका मीठा गन्ना।

वधियाना (हि ० क्रि० ) वधिया करना, वधिया बनाना।

वधिर (स ० त्रि० ) वध्नाति कर्णमिति बन्ध (इषिमदि मुदीति। उण् १।५२) इति किरच। श्रवणेन्द्रियरहित, बहरा। सस्कृत पर्याय—एड, कल्ल श्रवणापटु, उच्चैःश्रवा। कुछ व्यक्ति जन्मसे ही वधिर होते हैं और कुछ अधिक दिन कर्णरोग भुगत कर। इसका लक्षण—

"यदा शब्दवह वायु श्रोत आवृत्य तिष्ठति।
शुद्ध श्लेष्मान्वितो वापि वाधिर्यं तेन जायते॥"
(माधवनि०)

जब वायु स्वयं अथवा कफके साथ मिल शब्दवह कर्णस्रोतको आवृत करके रोगीकी श्रवणशक्तिको नष्ट कर डालती है, तब वाधिर्य उत्पन्न होता है। बालक और वृद्ध व्यक्तिको यह रोग होनेसे असाध्य समझना चाहिये। यदि यह बहुत दिन तक बद्धमूल हो, तो सबोंके लिये असाध्य है। वाधिर्य देखो। जो जन्मसे ही वधिर है वह पितृ धनका अधिकारी नहीं हो सकता। 'अनंशौ क्लीवपतितौ जात्यन्धो वधिरो तथा।' (मनु) जो क्लीव, पतित, जन्मान्ध और जन्मवधिर हैं वे अनंश हैं अर्थात् अंशभागी नहीं हो सकते। २ सुगन्धतृण।

बधिरता (सं० स्त्री०) बधिरस्य भावः तल् टाप्। बाधिर्य, बहरापन।

बधिरान्ध (सं० त्रि०) १ बधिर और अन्ध, बहरा और अन्धा। (पु०) २ कश्यपके पुत्र नागभेद।

बधिरिमा (सं० पु०) बधिरस्य भाव (वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च वा ५।१।१२३) बधिरता, बहरापन।

बधू (सं० स्त्री०) बध्नाति प्रेम्णा या बध उ नलोपश्च अन्तःस्थयादौ वा वहति स्म भारमारं उह्यते अन्यैरिति वा वह-(वहेर्धश्च। उण् १।८५ इति ऊ धश्चान्तादेश। १ नारी, औरत। २ नवोढा, नवविवाहिता स्त्री। ३ स्नुषा, पतोहू। ४ पृक्का। ५ भार्या, पत्नी। ६ शटी, कचूर। ७ शारिवौषधि, अनन्तमूल।

बधूक (हिं० पु०) बन्धूक देखो।

बधूजन (सं० पु०) बधूरेव जनः। योषित्, नारी, स्त्री।

बधूशयन (सं० क्ली०) बधूटीनां शयनमिव पृषोदरादित्वात् साधुः। गवाक्ष, झरोखा।

बधूटी (सं० स्त्री०) अल्पवयस्का बधू अल्पार्थे टि, पक्षे ङीष्, यद्वा बधू (वयस्य चरम इति वाच्य। पा ४।१।२०) इत्यस्य वार्तिकोक्त्या पक्षे ङीप्। १ पुत्रभार्या, पुत्रकी स्त्री, पतोहू। २ सुवासिनी, सौभाग्यवती स्त्री। ३ नई आई हुई बहू।

बधूरज (सं० पु०) बध्वा रज आर्तव। स्त्रियोंके रजोदर्शन।

बधूरजप्रसव (सं० पु०) बध्वा रज आर्तवमस्य इव प्रसवः पुष्पादिर्यस्य। रक्ताम्लान।

बधूरा (हिं० पु०) बवंडर, बगडर।

बधोद्यत (सं० त्रि०) बधाय उद्यत। मारणार्थ उद्युक्त, मारनेके लिये तैयार।

बध्य (सं० त्रि०) १ बधार्ह, मारनेके योग्य। बध कर्मणि-यत्। २ घातोऽवश्य। आधारे यत्। ३ बध्यस्थान।

बध्यपाल (सं० पु०) बध्यं पालयति पालि-अण्, उपपदस०। कारागृहरक्षक।

बध्यभूमि (सं० स्त्री०) हन्यन्ते यत्र वधार्हेन, बध्यस्य भूमिः। श्मशान, फांसी देनेका स्थान।

बध्नांग (सं० पु०) अनिमेष।

बध्र (सं० क्ली०) बध्नात्यनेनेति बन्ध (बधेर्जस्त्रध्नश्च उण् ४।१५८) इति ष्ट्रन्। सीसक, सीसा।

बध्री (सं० स्त्री०) बध्नात्यनया बन्ध ष्ट्रन् स्त्रियाम्। चर्म रज्जु, बद्धी।

बन (हिं० पु०) वन देखो।

बनआलू (हिं० पु०) पिण्डालू और शकरकन्द आदिकी जातिका एक प्रकारका पौधा। यह नेपाल, सिक्किम, भूटान, बरमा और दक्षिण भारतमें होता है। यह प्रायः जङ्गली होता है और बोया नहीं जाता। इसकी जड़ प्रायः जङ्गली या देहाती लोग अकालके समय खाते हैं।

बनकंडा (हिं० पु०) वह कंडा जो वनमें पशुओंके गोबरसे आपसे आप सूखनेसे तैयार होता है, अरना कंडा।

बनक (हिं० स्त्री०) वनकी उपज, जङ्गलकी पैदावार।

बनककड़ी (हिं० स्त्री०) बनकांटी, पापड़ेका पेड़। यह सिक्किमसे लेकर शिमले तक पाया जाता है। इस पौधेसे एक प्रकारका गोंद और एक प्रकारका रंग भी निकाला जाता है। गोंद दवाके काममें आता है।

बनकटी (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारका बांस। पहाड़ी लोग इसके टोकरे बनाते हैं। २ जङ्गल काट कर उसे आबाद करनेका स्वत्व या अधिकार जो जमींदार या मालिककी ओरसे किसानों आदिको मिलता है।

बनकर (हिं० पु०) १ एक प्रकारका अस्त्र संहार, शत्रुके चलाए हुए हथियारको निष्फल करनेकी एक युक्ति। २ जङ्गलमें होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी घास आदिकी आमदनी। ३ सूर्य।

बनकल्ला (हिं० पु०) एक प्रकारका जङ्गली पेड़।

बनकस (हिं० पु०) एक प्रकारकी घास। इसे बनपूरा, बभनी, मोय और बाभर भी कहते हैं। इससे रस्सियां बनाई जाती हैं।

बनकोरा (हिं० पु०) लोनियाका साग, लोनी।

बनखंड (हिं० पु०) वनप्रदेश, जङ्गलका कोई भाग।

बनखंडी (हिं० स्त्री०) १ वनका कोई भाग। २ छोटासा वन। (पु०) ३ वनमें रहनेवाला, जङ्गलमें रहनेवाला।

बनखरा (हिं० पु०) वह भूमि जिसमें पिछली फसलमें कपास बोई गई हो।

बनखेड़ी—मध्य प्रदेशके होशङ्गाबाद जिलान्तर्गत सोहाग

पुर तहसीलका एक प्रधान नगर। यहा ग्रेट इण्डियन रेलपथका एक स्टेशन है।

वनखोर (हिं ॰ पु०) कौर नामका पेड़। कौर देखो।

वनगणपल्ली—१ मन्द्राजप्रदेशके कर्नूल जिलान्तगत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० १५ २´ ३०´´ से १५ २८´ ५०´´ उ० तथा देशा० ७८ १´ ४४´´ से ७८ २५´ ३०´´ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २५५ वर्गमील है। कुन्दर नदीके पश्चिम अवशाहिका प्रदेश ले कर यह राज्य सगठित है। अरेरू नामक नदी इसके मध्यदेश हो कर बहती है। इसमें १ शहर और ६४ ग्राम लगते हैं। वनगणपल्ली नगर ही इसकी राजधानी है। चतुर्थांश जमीन इस राज्यकी परती रहती है। अवशिष्टांशमें नील, रुई और उड़द उत्पन्न होती है। सूती और रेशमी कपड़ेका भी विस्तृत कारबार है।

१७वीं शताब्दीमें मुगलसम्राट् औरङ्गजेबने अपने यशोरके लड़के महम्मद वेग खाँको यह स्थान समर्पण किया। तीन पीढ़ी तक वेग वंशधरोंने यहां राज्य किया। अन्तिम राजा अपुत्रक थे, इस कारण निजामने १७६४ ई०में यह सम्पत्ति वर्त्तमान अधिकारियोंके पूर्वपुरुषको दान कर दी थी। १८०० ई०में निजामने इसका शासनभार अगरेजोंके हाथ सौंपा। सरदारोंकी शासनविशृङ्खला देख कर १८२५ १८४८ ई० तक कडापाके राजस्व संग्राहक (Collector) ने इसका परिचालन भार ग्रहण किया। पीछे मन्द्राजके गवर्नरने फिरसे यह सरदारोंके हाथ सौंपा। तभीसे दीवानी और फौजदारी शासनावली सरदारके द्वारा परिचालित होती आ रही है। १८७६ ई०में भारतके भूतपूर्व सम्राट् ७म एडवर्ड जब भारतवर्ष पधारे थे, उस समय उन्होंने यहाके सरदारको नवावकी उपाधि दी थी। राजाके बड़े लड़के ही राजाके उत्तराधिकारी होते हैं। पुत्रके अभावमें सरदार किसी आत्मीयको सिंहासन पर बिठा सकते हैं। राजस्वका अधिकांश नवावके आत्मीय १८ जागीरदारोंके भरण पोषणमें खर्च होता है। बची खुची आयसे वे अपना काम चलाते हैं।

२ उक्त सामन्तराज्यका प्रधान नगर और सदर। यह अक्षा० १५ १५´ उ० तथा देशा० ७८ २०´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहा नवावका प्रासाद विद्यमान है। नगरसे थोड़ी दूर पर हीरेकी एक खान है। १८वीं शताब्दीमें उससे प्रचुर हीरा निकाला गया था। १८०० १८५० ई० तक यहा अति मूल्यवान् पत्थर पाये गये थे, किन्तु उसके बादसे बहुत कम मिलने लगे। अभी जितना पत्थर निकाला जाता है उससे केवल मजदूरोंका खर्च भर चलता है।

वनगाँव—१ बङ्गालके यशोर जिलेका उपविभाग। यह अक्षा० २३ २६´ उ० तथा देशा० ८८ ४०´ से ६१´ २´ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६४६ वर्गमील और जनसंख्या ३ लाखसे ऊपर है। इसमें १ शहर और ७१४ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त उपविभागका एक नगर। यह अक्षा० २३ ३´ उ० तथा देशा० ८८ ५०´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ३६६० है। यहा बेङ्गल सेण्ट्रल रेल कम्पनीका कारखाना और ट्राफिक आफिस विद्यमान है।

वनगाव (हिं० पु०) १ एक प्रकारका बड़ा हिरन। इसे रोझ भी कहते हैं। २ एक प्रकारका तेंदू वृक्ष।

वनचर (हिं० पु०) १ जगलमें रहनेवाला पशु, वन्य पशु। २ वनमें रहनेवाला मनुष्य, जगली आदमी। ३ जलमें रहनेवाला जीव।

वनचरी (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी जगली घास जिसकी पत्तियां ज्वारकी पत्तियोंकी तरह होती हैं। (पु०) २ जगली पशु।

वनचारी (हिं० पु०) १ वनमें घूमनेवाला। २ वनमें रहनेवाला आदमी। ३ जङ्गली जानवर। ४ मछली, मगर, घड़ियाल, कछुवा आदि जलमें रहनेवाला जतु

वनचौंर (हिं० स्त्री०) नेपालके पहाड़ोंमें रहनेवाली एक प्रकारकी जगली गाय। इसकी पूंछकी चँवर बनाई जाती है, सुरा गाय।

वनज (हिं० पु०) १ कमल। २ शङ्ख, कमल, मछली आदि जलमें होनेवाला पदार्थ। ३ वाणिज्य, व्यवसाय।

वनजर (हिं० स्त्री०) बजर देखो।

वनजात (हिं० पु०) कमल।

बनजारा (हि॰ पु॰) १ वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लाद कर बेचनेके लिये एक देशसे दूसरे देशको जाते हैं, टाँडा लादनेवाला मनुष्य। विशेष विवरण बनजार शब्दमें देखो। २ व्यापारी, बनिया।

बनज्योत्स्ना (सं॰ स्त्री॰) माधवी लता।

बनड़ा (हि॰ पु॰) बिलावल रागका एक भेद। यह राग झूमड़ा ताल पर गाया जाता है।

बनड़ाशीत (हि॰ पु॰) एक शास्त्रीय राग जो रूपक ताल पर बजता है।

बनड़ादेसाखी (हि॰ पु॰) एक शास्त्रीय राग जो एक ताले पर बजाया जाता है।

बनत (हि॰ स्त्री॰) १ रचना, बनावट। २ अनुकूलता, सामञ्जस्य, मेल। ३ वह बेल जो सलमे या किसी फीतेको कपड़े पर लगानेसे बनती होती है। इसके दोनों ओर हाशिया होता है। जिस बेलके एक ही ओर हाशिया होता है उसे चपरास कहते हैं।

बनतुरई (हि॰ स्त्री॰) बन्दाल।

बनतुलसी (हि॰ स्त्री॰) बबई नामका पौधा। इसकी पत्तों और मंजरी तुलसीकी सी होती है।

बनदाम (हि॰ स्त्री॰) बनमाला।

बनदेवी (हि॰ स्त्री॰) किसी वनकी अधिष्ठात्री देवी।

बनधातु (सं॰ स्त्री॰) गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी।

बनना (हि॰ क्रि॰) १ रचा जाना, तैयार होना। २ किसी एक पदार्थका रूप परिवर्तित करके दूसरा पदार्थ हो जाना। ३ किसी दूसरे प्रकारका भाव या सम्बन्ध रखनेवाला हो जाना। ४ किसी पदार्थका ऐसे रूपमें आना जिसमें वह व्यवहारमें आ सके। ५ ठीक दशा या रूपमें आना। ६ सम्भव होना, हो सकना। ७ दुरुस्त होना, मरम्मत होना। ८ आविष्कार होना, निकलना। ९ प्राप्त होना, वसूल होना। १० अच्छी या उन्नत दशामें पहुंचना, धनी मानी हो जाना। ११ कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। १२ सम्पन्न होना, पूरा होना। १३ खूब सिंगार करना, सजना। १४ मनुष्यकी ऐसी मुद्रा धारण करना जो वास्तविक न हो। १५ उपहासास्पद होना मूर्ख ठहरना। १६ स्वरूप धारण करना। १७ सुयोग मिलना, सुअवसर मिलना। १८ मित्रभाव होना, आपसमें निभना।

बननिधि (हि॰ पु॰) समुद्र।

बनपट (हि॰ पु॰) वृक्षोंकी छाल आदिसे बनाया हुआ कपड़ा।

बनपति (हि॰ पु॰) सिंह, शेर।

बनपथ (हि॰ पु॰) १ समुद्र। २ वह रास्ता जिसमें जल बहुत पड़ता हो। ३ वह रास्ता जिसमें जंगल बहुत पड़ता हो।

बनपाट (हि॰ पु॰) जंगली सन, जंगली पटुआ।

बनपाल (हि॰ पु॰) बन या बागका रक्षक, माली।

बनपास—वर्द्धमान जिलेके वर्द्धमान उपविभागके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यहां बढ़िया पीतलका बरतन, घण्टा, छुरी, कैंची आदि बनती हैं।

बनप्रिय (हि॰ पु॰) कोकिल, कोयल।

बनफल (हि॰ पु॰) जंगली मेवा।

बनफशई (फा॰ वि॰) बनफशेके रंगका।

बनफशा (फा॰ पु॰) नेपाल, काश्मीर और हिमालय पर्वतमें होनेवाली एक प्रकारकी वनस्पति जो ५००० फुट तककी ऊंचाई पर होती है। इसका पौधा बहुत छोटा होता है। इसमें पतली और छोटी शाखाएं निकलती हैं जिनके सिरे पर बैंगनी या सफेद रंगके गुलनुमा फूल होते हैं। इसके पत्ते गावजबांके पत्तोंसे बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। इसकी जड़, फूल और पत्तियां तीनों ही दवाके काममें आते हैं। साधारणतः फूल और पत्तोंका व्यवहार जुकाम और ज्वर आदिमें होता है। जड़ दस्तावर दवाओंके साथ मिला कर दी जाती है। फूल और जड़का व्यवहार वमन करानेके लिये भी होता है और सादे फूल पेशाब लानेवाले माने जाते हैं।

बनबटेरा (हि॰ पु॰) काश्मीर और भूटान आदि ठंढे देशोंमें मिलनेवाला एक प्रकारका पक्षी। यह भूरे रंगका और लगभग एक फुट लम्बा होता है। यह घास और पत्तियोंसे जमीन पर या झाड़ियोंमें घोंसला बनाता है। अन्तिम जून तक इसके अंडे देखना सम्भव है। मादा एक बारमें तीन चार अंडे पालती है।

बनवास (हि॰ पु॰) १ वनमें बसना। बिदा या मरणा। २ प्राचीन कालका देशनिकालेका दण्ड।

बनवासी ( हि० पु० ) १ वनमें रहनेवाला, वह जो वनमें बसे। २ जंगली।

बनवाहन ( हि० पु० ) जलयान, नाव।

बनबिलाव ( हि० पु० ) बिल्लीकी जातिका एक जंगली जंतु। यह उत्तर भारत, बङ्गाल और उड़ीसामें मिलता है। यह बिल्लीसे कुछ बड़ा होता है और इसके हाथ पैर छोटे तथा दृढ़ होते हैं। इसका रंग मटमैला भूरा होता है और इसके शरीर पर काले लंबे दाग तथा पूँछ पर काले छल्ले होते हैं। यह प्रायः दलदलोंमें रहता है और वहीं मछली पकड़ कर खाता है। इसका रूप बहुत डरावना होता है। कभी कभी यह कुत्तों या बछड़ों पर भी आक्रमण कर बैठता है।

बनमानुस (हि० पु०) १ बंदरोंसे कुछ ऊँचा और मनुष्यसे मिलता जुलता कोई जंगली जन्तु। विशेष विवरण मानुष शब्दमें देखो। २ बिलकुल जंगली आदमी।

बनमाला ( हिं० स्त्री० ) तुलसी, कुंद, मदार, परजाता और कमल इन पांच चीजोंकी बनी हुई माला। ऐसी मालाका वर्णन हमारे यहांके प्राचीन साहित्यमें विष्णु, कृष्ण, राम आदि देवताओंके सम्बन्धमें बहुत आता है। कहा जाता है, कि यह माला गलेसे पैरों तक लंबी होनी चाहिये।

बनमाली ( हिं० पु० ) १ बनमाला धारण करनेवाला। २ कृष्ण। ३ विष्णु, नारायण। ४ मेघ, बादल।

बनमुर्गा ( हिं० पु० ) जंगली मुरगा।

बनमुर्गिया (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी जो हिमालयकी तराईमें मिलता है। इसका गला और वक्षस्थल श्वेत, समग्र शरीर आसमानी रंगका और चोंच जंगाली रंगकी होती है। यह पक्षी भूमि पर भी चलता है और पानीमें भी तैर सकता है। इसका मांस खाया जाता है।

बनरखा ( हिं० पु० १ ) बनका रक्षक, जंगलकी रखवाली करनेवाला। २ बहेलियों तथा जंगलमें रहनेवालोंकी एक जाति। इस जातिके लोग प्रायः राजा महाराजाओंको शिकारके सम्बन्धकी सूचनाएं देते हैं और शिकारके समय जंगली जानवरोंको घेर कर सामने लाते तथा उनका शिकार करते हैं।

बनरा ( हिं० पु० ) १ दूल्हा, वर। २ विवाह समयका एक प्रकारका मंगल गीत।

बनराज ( हिं० पु० ) १ बनका राजा, सिंह। २ बहुत बड़ा पेड़।

बनराय ( हिं० पु० ) बनराज देखो।

बनरी ( हिं० स्त्री० ) नववधू, नई व्याही हुई वधू।

बनरीठा ( हिं० पु० ) एक प्रकारका जंगली रीठा। इसकी फलियोंसे लोग सिरके बाल साफ करते हैं। इसका पेड़ कांटेदार होता है और सारे भारतमें पाया जाता है। इसके पत्ते खट्टे होते हैं। इसलिये कहीं कहीं लोग इसकी तरकारी बना कर भी खाते हैं।

बनरोहा ( हिं० पु० ) एक प्रकारकी घास। इसकी छालसे सुतली या सूत बनाया जा सकता है। यह घास खसिया पहाड़ी पर बहुतायतसे होती है। इसे रीसा या गनकटरा भी कहते हैं।

बनरुह ( हिं० पु० ) १ वह पौधा जो जंगलमें आपसे आप होता है, जंगली पेड़। २ पद्म, कमल।

बनरुहिया ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी कपास।

बनवर ( हिं० पु० ) बिनौला देखो।

बनवा ( हिं० पु० ) १ पनडुब्बी नामक जलपक्षी। २ एक प्रकारका बउनाग।

बनवाना ( हिं० क्रि० ) दूसरेको बनानेमें प्रवृत्त करना, बनानेका काम दूसरेसे कराना।

बनवारी ( हिं० पु० ) श्रीकृष्णका एक नाम।

बनवासी ( हिं० पु० ) बनका निवासी, जंगलमें रहने वाला।

बनवैया ( हिं० पु० ) बनानेवाला।

बनसपती ( हिं० स्त्री० ) वनस्पति देखो।

बनसार ( हिं० पु० ) जहाज पर चढ़ने और उससे उतरनेका स्थान।

बनसी ( हिं० स्त्री ) वंशी देखो।

बनस्थली ( हिं० स्त्री० ) जंगलका कोई भाग, बनखंड।

बनस्पति ( हिं० पु० ) वनस्पति देखो।

बनस्पतिविद्या ( हिं० स्त्री० ) वनस्पति शास्त्र देखो।

बनहटी ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी छोटी नाव जो डांड़से खेई जाती है।

बनहल्दी ( हिं० स्त्री० ) दारुहल्दी।

बना ( हिं० पु० ) १ वर, दूल्हा। २ एक छन्दका नाम। इसमें १०, ८ और १४के विश्रामसे ३२ मात्राएं

होती है। इसका दूसरा प्रसिद्ध नाम लालबत्ता है।

बनाइ (हिं० क्रि० वि०) १ अत्यन्त, नितान्त। २ भलीभांति, अच्छी तरह।

बनाउ (हिं० पु०) बनाव देखो।

बनाग्नि (हिं० स्त्री०) दावानल, दवारि।
वनाग्नि देखो।

बनात (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका ऊनी कपड़ा जो बहुत बढ़िया होता है।

बनाती (हिं० वि०) १ बनात सम्बन्धी। २ बनातका बना हुआ।

बनाना (हिं० क्रि०) १ सृष्टि करना, उत्पन्न करना, रचना। २ एक पदार्थके रूपको बदल कर दूसरा पदार्थ तैयार करना। ३ रूप परिवर्तन करके काममें आने लायक करना, ऐसे रूपमें पहुंचाना जिससे वह व्यवहारमें आ सके। ४ ठीक दशा या रूपमें लाना। ५ उपार्जित करना, प्राप्त करना। ६ अच्छी या उन्नत दशामें पहुंचाना। ७ कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ८ दूसरे प्रकारका भाव या सम्बन्ध रखनेवाला कर देना। ९ उपहासास्पद करना, मूर्ख ठहराना। १० दोष दूर करके ठीक करना। ११ आविष्कार करना, निकालना। १२ समाप्त करना, पूरा करना

बनाफर (हिं० पु०) क्षत्रियोंकी एक जाति। आल्हा ऊदल इसी जातिके क्षत्रिय थे।

बनाबनत (हिं० पु०) विवाह करनेके विचारसे किसी लड़के और लड़कीकी जन्मपत्रियोंका मिलान।

बनाम (फा० अव्य०) किसीके प्रति नाम पर, नामसे। इस शब्दका प्रयोग अकसर अदालती कार्रवाइयोंमें वादी और प्रतिवादीके नामोंके बीचमें होता है। यह वादीके नामके बाद और प्रतिवादीके नामके पहले रखा जाता है।

बनाय (हिं० क्रि० वि०) १ बिलकुल, पूर्णतया। २ अच्छी तरहसे।

बनार (हिं० पु०) १ बाकस नामक औषधिका वृक्ष। २ बागनई, करना करौंदा। ३ एक प्राचीन राज्य, जो गर्भगाल धाराकी उत्तरी सीमा पर था। कहते हैं कि बनारसका नाम इसी राज्यके नाम पर पड़ा है।

बनारस—काशी देखो।

बनारसी (हिं० वि०) १ काशी सम्बन्धी, काशीका। २ काशीनिवासी।

बनारी (हिं० स्त्री०) एक धातुकी नली और उसमें लगी चौड़ी लकड़ी जो कोल्हूमें लगी हुई जमीनमें कुछ नीचे लगी रहती है और जिसके नीचे नादमें रस गिरता है।

बनाल (हिं० पु०) बंसाल देखो।

बनाव (हिं० पु०) १ बनावट, रचना। २ श्रृंगार, सजावट। ३ युक्ति, तरकीब, तदबीर।

बनावट (हिं० स्त्री०) १ बनने या बनानेका भाव, रचना। २ आडम्बर, ऊपरी दिखावा।

बनावटी (हिं० वि०) कृत्रिम, नकली।

बनावन (हिं० पु०) कंकड़िया, मट्टी, छिलके और दूसरे फालतू पदार्थ जो अन्न आदिको साफ करने पर निकले, बिनन।

बनावनहारा (हिं० पु०) १ रचयिता, बनानेवाला। २ सुधारक, पहले के बिगड़े हुए को बनानेवाला।

बनावर—१ महिसुरराज्यके कडूर जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। भूपरिमाण ४६७ वर्गमील है। यहांके अधिवासी प्रायः सभी हिन्दू हैं।

२ उक्त सम्पत्तिका प्रधान नगर। पैशाधिकारमें यह स्थान राजधानीरूपमें गिना जाता था। किन्तु अभी यह ग्राममें परिणत हो गया है।

बनास—राजपूतानेके अन्तर्गत एक नदी। यह उदयपुरके प्राचीन कुम्भलमेर दुर्गके निकटवर्ती अरावली शिखरसे निकल कर दक्षिण गोमण्डलकी अधित्यका भूमि होती हुई बह गई है। ममलाम्होदसे इस नदीके ऊपर [illegible] नामक [illegible] है।

बनास—छोटानागपुर डिवीजनकी एक नदी। यह सरगुजा और कोरिया सामन्त राज्यके मध्यवर्ती पर्वतमालासे निकल कर रेवाराज्यमें जा गिरी है। इस नदीके पार्श्ववर्ती मार्गमें अभ्रक पाया जाता है।

बनास—शाहाबाद जिलेके अन्तर्गत एक नदी, शोण नदीकी एक शाखा। यह पूर्वकी ओर गङ्गामें जा गिरी है।

आरा और विहियाके मध्य इसके ऊपर रेलपथका एक पुल है। इसका संस्कृत नाम पर्णाशा है। स्थानीय अवस्था देखनेसे मालूम होता है, कि एक समय शोण नदीका कुल जल इसी वनास नदीके खात हो कर वहता था। महाभारत सभापर्व ६वें अध्यायमें हम लोग देखते हैं, कि शोण महानद शोण और पर्णाशा महानदी नामसे प्रसिद्ध था।

वनासपती (हि० स्त्री) १ जड़ी, बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि, फल फूल पत्ता आदि।

वनासा—१ युक्तप्रदेशके गढ़वाल राज्यान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० ३० ४६´ उ० और देशा० ७८ २७´ पू० यमुना और वनासाके संगम स्थल पर यमुनाके वाएं किनारे अवस्थित है। एक गण्डशैलके ऊपर अवस्थित रहनेके कारण इसका स्वाभाविक सौन्दर्य देखने लायक है। यहां वहुतसे उष्ण प्रस्रवण हैं। १८१६ ई०में पर्वतका कुछ भाग धंस जानेके कारण नगरका अर्द्धांश नष्ट हो गया है।

२ आसाम प्रदेशके अन्तर्गत एक नदी।

वनिक (हि० पु०) वणिक देखो।

वनिज (हि० पु०) १ व्यापार, वस्तुओंका क्रय विक्रय। २ धनी यात्री, मालदार मुसाफिर। ३ व्यापारकी वस्तु, सौदा।

वनिजारा (हि० पु०) वनजारा देखो।

वनिजारिन (हि० स्त्री०) वनजारा जातिकी स्त्री।

वनिता (हि० स्त्री०) १ औरत, स्त्री। २ भार्या, पत्नी।

वनिया (हि० पु०) १ व्यापार करनेवाला व्यक्ति, वैश्य। २ आटा, दाल, चावल आदि वेचनेवाला, मोदी।

वनियाइन (अ० स्त्री०) जुर्राबी बुनावटकी कुरती या वंडी जो शरीरसे चिपकी रहती है, गंजी।

वनियाचङ्ग—वङ्गालके श्रीहट्ट जिलेके हवीगञ्ज उप विभाग का एक ग्राम। यह अक्षा० २४ ३१´ उ० और देशा० ९१´ ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या तीस हजारके करीव है। अवदरेजा नामक किसी स्वधर्म-त्यागी हिन्दूराजाने १८ वीं शताब्दीके प्रथमभागमें इस नगरको वसाया। पहले इन लोगोंकी लौरमें राजधानी थी। उक्त व्यक्तिने मुगलकी अधीनता स्वीकार कर इस्लाम धर्म ग्रहण किया था। यहां एक मसजिद है।

वनिस्वत (फा० अव्य०) अपेक्षा, मुकावलेमें।

वनिहार (हि० पु०) वह आदमी जो कुछ वेतन अथवा उपजका अंश देनेके वादे पर जमीन जोतने, वोने, फसल आदि काटने और खेतकी रखवाली करनेके लिये रखा जाय।

वनिहाल—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक हिमालय गिरि सङ्कट। यह अक्षा० ३३ २१´ उ० और देशा० ७५´ २०´ पू० समुद्रपृष्ठसे प्रायः ७ हजार फुट ऊंचा है।

वनी (हि० स्त्री०) १ वनस्थली, वनका एक टुकड़ा। २ वाटिका, वाग। ३ एक प्रकारकी कपास जो दक्षिण देशमें उत्पन्न होती है। (पु०) ३ वनिया।

वनीनी (हि० स्त्री०) वैश्य जातिकी स्त्री, वनियेकी स्त्री।

वनेठी (हि० स्त्री०) वह लंवी लाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं। इसका व्यवहार पटेवाजीके अभ्यास और खेलों आदिमें होता है।

वनैला (हि० पु०) एक प्रकारका रेशमका कीड़ा।

वनैलीराज—नेपाल प्रान्तवर्त्ती भागलपुर कमिश्नरीके पूर्णिया जिलेके अन्तर्गत चम्पानगरके एक प्रसिद्ध और प्राचीन राजवंश। इस वंशके राजा मैथिल ब्राह्मण हैं। १३वीं शताब्दीके अन्तमें गदाधर नामक एक धार्मिक विद्वान् मैथिल ब्राह्मण दरभङ्गा जिलेके वेगनी नवादा ग्राममें रहते थे। उनकी विद्वता चारों ओर फैली हुई थी। उनके मुकावलेके कोई भी पण्डित उस समय नजर नहीं आते थे। उस समय वङ्गाल विहारके शासक थे वादशाह वल्वनके छोटे लड़के सुलतान नासिरुद्दीन। सुल्तान पण्डितजीकी अच्छी खातिर करते थे और उन्हींके यत्नसे पण्डितजीका आगे चल कर भाग्य चमका। कहते हैं, कि १३२४ ई०में जव गयासुद्दीन तुगलक तिरहुत पधारे, तव नासिरुद्दीनने ही पण्डितजीका उनके साथ परिचय करा दिया था। गयासुद्दीनने प्रसन्न हो पण्डितजीको प्रचुर सम्पत्ति दी जिससे उनके सितारे चमक उठे। पण्डित गदाधर झासे नवीं पीढ़ीमें देवनन्दन झाने जन्मग्रहण किया। देवनन्दनके दो सुपुत्र थे। परमानन्द झा और माणिक झा। परमानन्दका

ई०में हुआ था। ये स्वयं उर्दू और फारसीके ये अच्छे कवि थे, परन्तु यही नहीं, महर्षिशास्त्र भी उन्होंने अच्छा नाम कमाया था। कुछ समय बाद [illegible] इन्हें [illegible] चौधरी पद प्रदान किया।

इस समयसे परमानन्द का परमानन्द चौधरी नाम [illegible]। आस पासके स्थानोंमें उनकी तूती बोलने लगी। किसी कारणवश अलीवर्दीखां सरकार उन पर बड़े बिगड़े और उन्हें [illegible] लानेके लिये सैन्य भेजे। इस समय चौधरी जी [illegible] रहे थे। सिपाहियोंके [illegible] इसकी खबर लगते ही उन्होंने यथाशक्ति बन्द कर दिया और पैतृक सम्पत्ति [illegible] अपना हिस्सा बेच कर कुछ रुपये हाथ कर लिये और यहांसे सपरिवार [illegible] हुए। जन्मभूमि छोड़नेके पहले वे एक जलाशयके किनारे एक लीची वृक्ष रोप गये थे। यह वृक्ष आज भी यहां देखनेमें आता है। कहते हैं कि परमानन्द चौधरी जब शत्रुसे प्राण बचानेके लिये इधर उधर भाग रहे थे, उसी समय उनके दो पुत्र उत्पन्न हुए, [illegible] सिंह चौधरी और दुलार सिंह चौधरी। इसी समय उनके छोटे भाई [illegible] चौधरी भी हीरालाल सिंह नामक एक पुत्र रख छोड़ परलोक सिधारे। परमानन्द बहुत दिनों तक एक स्थानसे दूसरेमें भागते रहे थे। [illegible] भी उनका पीछा नहीं छोड़ा था। आखिर उन्होंने पूर्णिया जिलेके [illegible] नामक स्थानमें आत्मसमर्पण किया। ये पूर्णियाके [illegible] थे। [illegible] होते ही उन्होंने परमानन्दजीको बहुत सी जमीन प्रदान की। इस समय दुलारसिंह भी [illegible] थे, वे ही [illegible] किया करते थे। [illegible] एक दिन [illegible] राजा [illegible] साथ [illegible] हो कर [illegible] आ रहे थे। परमानन्द चौधरीने कुछ ही समय [illegible] उन्होंने [illegible] राजा बड़े प्रसन्न हुए और [illegible] नियुक्त किया। कोई कहते हैं,

कि ये तहसील्दार नहीं, रेवेन्यू दारोगा थे। कुल कारबार इन्हींके हाथ था। इसी समय पूर्णियाके [illegible] नवाब [illegible] आये। वे दिन [illegible] घूमते रहे, पर एक भी बार [illegible] मालूम न हुआ। परमानन्द चौधरीने एक बाग [illegible] इन्हें [illegible] हासिल किया। नवाब इनकी योग्यता पर बड़े प्रसन्न हुए, कि उन्हें [illegible] (१००० सिपाही मनसबदार) की उपाधि प्रदान की। इस समयसे परमानन्द [illegible] परमानन्द [illegible] नामसे प्रसिद्ध हुए।

इधर उनके पुत्र दुलारसिंहने कृषि तथा वाणिज्य द्वारा प्रचुर सम्पत्ति उपार्जन कर ली। [illegible] उनके अनुकूल हुईं। क्रमशः ये पूर्णियाके सरकारी कानूनगो हुए। नेपाल युद्धमें दुलारसिंहकी योग्यता, राजभक्ति और सेवासे संतुष्ट हो उनके इस कार्यके पुरस्कारस्वरूप वृटिश-सरकारने उन्हें 'राजा बहादुर' की उपाधिसे भूषित किया था। यथासमय उनके प्रथम स्त्रीसे [illegible] सिंह और वेदानन्दसिंह तथा द्वितीय स्त्रीसे रुद्रानन्द सिंहने जन्मग्रहण किया। आगे चल कर [illegible] प्रतिष्ठापन्न हुए। बड़े [illegible] सिंह बिना कोई सन्तान छोड़े अकाल ही [illegible] गालमें फंसे। दुलार सिंहके स्वर्गवासी होने पर वेदानन्द सिंह बहादुर राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। इनका जन्म १७९८ ई०में हुआ था। नेपाल युद्धमें [illegible] वृटिश सरकारको काफी मदद पहुंचाई थी। इस उपकारके पुरस्कारस्वरूप ये 'राजाबहादुर'की उपाधिसे भूषित हुए। [illegible] राजकार्य [illegible] किया और राजा बहादुर अपने वैमात्र भाई रुद्रानन्दसिंहसे पृथक् हो गये। वेदानन्दसिंहने [illegible] बसाया और रुद्रानन्दसिंह [illegible] उसके पश्चिमी किनारे अपने पुत्र कुमार [illegible] सिंहके नाम पर एक नया ग्राम बसाया जो [illegible] नामसे प्रसिद्ध हुआ।

राजा वेदानन्दसिंह बहादुरने [illegible] राजाओंकी [illegible] कर ली। [illegible] इनके [illegible] और [illegible] थे। ये [illegible] और [illegible]

शासक थे। वर्त्तमान बरारीके ठाकुर वंशके आदिपुरुष मदनठाकुरने बहुत दिनों तक इनके यहां नौकरी की थी। कहते हैं, कि राजा वेदानन्दकी ही उदारता और अनुग्रहसे बाबू मदन ठाकुरने प्रचुर सम्पत्ति इकट्ठी कर ली जिसका उपभोग आज भी उनके वंशधरगण करते आ रहे हैं। बरारी देखो। राजा वेदानन्दसिंह १८५१ ई०में इस धराधामको छोड़ सुरधामको सिधारे।

वेदानन्दकी मृत्युके बाद कुमार लीलानन्द सिंह राज सिंहासनके उत्तराधिकारी हुए। ये भी योग्य पिताके योग्य पुत्र थे। विद्वान् और कवि भी थे। १८५३ ई०में इन्हें भी वृटिश सरकारसे 'राजा-बहादुर' का खिताब मिला था। राजा लीलानन्दका जीवन उदारता, सदाशयता और समवेदना आदि सद्‌गुण सम्पदका आधार था। चरित्र और व्यवहारके गुणसे ये उच्च नीच सभी श्रेणियोंके अति प्रियपात्र थे। उनके जैसे जनवत्सल सहृदय मनुष्य धनीकुलमें बहुत कम देखे जाते हैं। भागलपुरके सन्थाल परगनेके जनसाधारण सम्मान और श्रद्धाके साथ उनकी स्मृतिका पोषण करते हैं। लीलानन्दके प्रथम स्त्रीसे पद्मानन्द सिंह और द्वितीय सीतावतीसे कालानन्दसिंह और कृत्यानन्दसिंह नामक तीन सुपुत्र थे। १८८३ ई०की ३री जूनको राजा लीलानन्दसिंहने अपनी जीवनलीला शेष की।

राजा लीलानन्द सिंहकी मृत्युके बाद राजा परमानन्दसिंह राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। पिताके जीते जी ये उनकी पदमर्यादाके अधिकारी हुए थे। कुछ समय बाद सारा राज्य नौ आने और सात आनेमें विभक्त हुआ। सात आनेके अधिकारी हुए राजा परमानन्द सिंह बहादुर और नौ आनेके ये दोनों भाई। राजा पद्मानन्द सिंहकी प्रथमा स्त्री पद्मावतीसे कुमार चन्द्रानन्द सिंहने जन्मग्रहण किया। १९०४ ई०में राजा पद्मानन्दसिंहने चौथा विवाह रानी पद्मसुन्दरीसे किया। ये आज भी जीती जागती हैं। १९०६ ई०के जनवरीमासमें पद्मसुन्दरीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिनका नाम कुमार सूर्यानन्द रखा गया। कुमार चन्द्रानन्द सिंह अकाल ही करालकालके गालमें पतित हुए। राजा पद्मानन्दका १९१२ ई०में देहान्त हुआ। कुमार सूर्यानन्दको भी इहलोकमें बहुत दिन ठहरना न था, वे भी चौदह वर्षकी अवस्थामें अर्थात् १९१९ ई०के सितम्बर मासमें इस धराधामको छोड़ सुरधामको सिधार गये। इस प्रकार राजा पद्मानन्दसिंहका चिराग सदाके लिये बुझ गया। पीछे रानी चन्द्रावतीने अपना सात आना हिस्सा बेच कर स्वामीका ऋण परिशोध करना चाहा, पर कृत्यानन्द सिंह बहादुर और रानी पद्मसुन्दरीने इसे रोका। कुछ समय तक आपसमें यह विषय ले कर विवाद चलता रहा। आखिर राजा कृत्यानन्दसिंह बहादुरके ही तत्त्वावधानमें सात आनेका हिस्सा रहा। बाद चन्द्रावतीकी मृत्युके ये ही इसके प्रकृत उत्तराधिकारी होंगे।

राज कालानन्दसिंहका १८८० ई०के सितम्बर मासमें जन्म हुआ था। आप अति धीर, शान्त, सच्चरित्र और विद्यानुरागी सज्जन पुरुष थे। सङ्गीतविद्या और मृगयामें भी अनुराग था। व्यवहार शिल्पके अनेक विषयोंमें आपका असाधारण अधिकार और व्युत्पत्ति देखी जाती थी। दोनों भाइयोंमें रामलक्ष्मण-सी प्रीति और सद्भाव था। आप छोटे भाईकी सलाह लिये बिना किसी गुरुतर कार्यमें हाथ नहीं डालते थे। १९०३ ई०के मार्चमें आप रामानन्दसिंह और कृष्णानन्द सिंह दो सुपुत्र छोड़ परलोक सिधारे।

अनन्तर राजा कृत्यानन्द सिंह बहादुरने कुल राज्यभार अपने हाथ लिया। आपका जन्म १८७३ ई०की २३वीं दिसम्बरको हुआ था। पूर्णिया जिला स्कूलमें विद्यारम्भ करके आपने इलाहाबाद मेयर सेण्ट्रल कालेज (Muir central college) से तत्रत्य विश्वविद्यालयकी प्रवेशिका और बि, ए, परीक्षा पास की है। आप विहारके अभिजात्य-गौरवसे गौरवान्वित उच्च धनी भूस्वामीके मध्य सर्व प्रथम या एकमात्र श्रेष्ठ हैं। आप सव्यसाची सर्वविद्या पारदर्शी हैं। क्या क्रीड़ा कौतुक, क्या लक्ष्यसाधन, क्या मृगया, क्या सङ्गीतचर्चा, क्या ग्रन्थरचना, क्या विज्ञान सेवा, क्या शिल्प-नैपुण्य—सब प्रकारके शारीरिक और मानसिक शक्तिका परिचय प्रदान करनेमें आप अग्रणी हैं। सचमुच

रहे उनकी सन्निधिमें आत्मानन्द पाते हुए सत्य सच्चा स्वरूप लिया गया, जो कभी अनुचित नहीं। आप बड़े सम्मानास्पद हैं। आप सब अपने ७३ वर्षोंकी आयु पर बड़ी योग्यता और अपार साहसका परिचय दिया है। उनकी सुरुचिपूर्ण मनोहर मनः सम्पन्नताके सब प्रकारका गौरव और सौन्दर्य प्रदान करती है। अन्यथा इसके आपके अपनी सन्तानोंके लिये, और, सम्पन्नता तथा और दिन रात शिक्षा अपने बाहर देखना स्थान पर सम्पन्नताको दिखाते हैं, उसकी शुमार नहीं।

आप केवल सुनवाने ही नहीं बाहुबलका परिचय देकर शान्त नहीं किया, वरन् आप आत्मीय बन्धु बान्धवोंका पोषण, अनाथोंका प्रतिपालन, दरिद्रोंका भरण और शिल्पसाहित्यको उत्साह प्रदान करते हैं। विद्या और सदाचार मनुष्य आपको अति प्रीतिकर है। आप अङ्गरेजी, बङ्गला हिन्दी और उर्दू भाषामें अनर्गल कथोपकथन कर सकते हैं। देशके किसी भी सत्कार्यमें, साधु अनुष्ठानमें और सम्मानप्रतिष्ठित सदाचारी शिक्षणमें आपको योगदान दिये देखते हैं। आप वर्तमान विहार व्यवस्थापक सभाके भी एक निर्वाचित सभ्य हैं। विहारमें उच्चशिक्षाकी उन्नति और प्रचारके उद्देश्यसे बांकीपुर पटनामें भागलपुरके तेजनारायण जुबली कालेजको प्रायः ६ लाख रुपयोंका दान दिया गया है। पटना (बांकीपुर) से प्रकाशित सर्व प्रथम अङ्गरेजी दैनिक पत्रिका 'विहारी' (The Behari) बहुतसी सहायतासे पुन प्रारम्भमें स्थापित हुई है। आपने हिन्दू विश्वविद्यालय बनारसको लाख रुपये, फिर आप प्रिन्स मेडिकल कालेज पटनाको लाख रुपये और पूर्ति सरकारके युद्धके समय ... सहायता प्रदान किया है। सरकारने (1911) कुमार ... मधुर ... आपके विद्यानुरागका परिचय देता है। अन्यथा इसके आपके ... और ... हैं। ... भी आपके ... हुए हैं। ... आपको ... हुए हैं।

बनैला (हिं० वि०) बन, जंगली।

बनैटी (हिं० स्त्री०) ... ।

बनौरी (हिं० स्त्री०) हिमोपल, पत्थर ... ओला।

बनौला (हिं० वि०) कृत्रिम, बनावटी।

बन्गर—अयोध्या प्रदेशके उन्नाव जिलेका एक नगर।

बन्थली—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ राज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २१° ... उ० और देशा० ७०° ... पूर्वमें अवस्थित है। वनस्थली देखो।

बन्दपात—काश्मीर राज्यके मुजफ्फराबाद विभागके अन्तर्गत हिमालय पर्वतमें अवस्थित एक गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३४° २२' उ० और देशा० ७४° ... पूर्वमें अवस्थित है। समुद्रपृष्ठसे यह स्थान १४८०४ फुट ऊँचा और सब दिन तुषारसे आवृत रहता है।

बन्दर—बंदर देखो।

बन्दर—मन्द्राज प्रदेशके कृष्णा जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १५° ४०' से १६° २६' उ० और देशा० ८०° ४८' से ८१° ३३' पूर्वमें अवस्थित है। भूपरिमाण ७४० वर्गमील और जनसंख्या दो लाखसे ऊपर है। इसमें २ शहर और १११ ग्राम लगते हैं। बन्दर या मसुली पत्तन इसका प्रधान नगर है। मसुलीपत्तन देखो।

बन्दरकुद्रु (बन्दरकुद्र)—मन्द्राजके गोदावरी जिलान्तर्गत कुमारगिरि तालुकका एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० १६° ५७' उ० और देशा० ८१° ५८' पूर्वमें अवस्थित है। १८वीं शताब्दीके पहले अंगरेजोंने गोदावरी नदीके किनारे एक कोठी खोला, पर कुछ दिन बाद वह छोड़ दी गई। आज भी यह स्थान समुद्रोपकूलवर्ती छोटे बन्दरमें गिना जाता है। गोदावरी नदीकी कौलिन्दी शाखाके ऊपर अभी यह बसा हुआ है।

बन्दा—गुरु गोविन्दका उत्तराधिकारी एक सिखगुरु। सम्राट् बहादुर शाहके राजत्वकालमें उसने सिखोंको ले लाहौर पर आक्रमण कर दिया। सम्राट्के ... फर्रुखसियरने गुरुगोविन्दके पुत्रको कैद कर मार डाला। ... बहुत ... सिखोंका ... [illegible] ... चढ़ाई कर दी।

(किन्तु

था। बालक या वृद्ध, वृद्धा या युवती किसीका लक्षा न कर नादिरशाही चला दी। गर्भवती रमणियोंके उदर फाड कर नृशस प्रवृत्तिकी पराकाष्ठा दिखला दी थी। सम्राट्ने इस जघन्य वृत्तिका वदला लेनेके लिये स्वय इससे युद्ध किया। ज जीरमें पकडे रहने पर भी वन्दा सम्राट्की आखोंमें धूल डाल भग गया। सेना बल इकट्ठा कर वह सम्राट्का फिर विद्रोही बना। सम्राट् फरुखशियरने इसको दवानेके लिये काश्मीरके शासन कर्त्ता आवदुस् समद खांको ससैन्य भेजा। कितनी वार घोरतर सघर्षके बाद वन्दाने किलेमें आश्रय लिया। समद खांने भी दलबलके साथ आ कर किलेको घेर लिया। रसद आदिके बद होने पर वन्दा आहाराभावमें आत्मसमर्पण करनेको वाध्य हुआ। वन्दा और अपरापर सिख कैदी दिल्ली भेजे गये। वन्दा लौह पजरमें आवद्ध हो हाथीकी पीठ पर दिल्ली पहुचा। सिखोंने अवनत मस्तकसे यह अवमनना सह्य की, किन्तु मनही मन इस्लामधर्म ग्रहण करनेकी अपेक्षा मृत्युको ही उन्होंने श्रेय समझा था। सम्राट्के उन्हें जीवन दान देनेमें प्रतिश्रुत होने पर भी वे लोग दान इस्लामधर्मके ग्रहणमें सम्मत नहीं हुये। फलत सम्राट्की आज्ञासे प्रति दिन सैकडों सिख-वीर घातकके हाथसे यमपुर भेजे जाने लगे। आठवें दिन वन्दा मय पुत्रोंके मारा जायगा, यह घोषित कर दिया गया। अब वह मौतका दिन पहुचा, तब घातकने वन्दा और इसके पुत्रको नगरके वहिर्देशमें ला वन्दा को पुत्रके मस्तकच्छेदनके लिये तलवार दी। वन्दाने अपने पुत्रका शिरश्छेद करना मजूर नही किया। इस पर घातकने अपने हाथसे बालकका हृदय विदीर्ण कर डाला और वलपूर्वक उस हृतपिण्ड को वन्दाके मुखमें ठूस दिया। अन्तमें उत्तप्त चीमटों-से उसके शरीरका मास भुलसा दिया और घोर यन्त्रणा दे कर सिख-गुरुके प्राण ले लिये। १७१५ ई०में इस पाशविक अत्याचारको अटलभावसे सह्य कर वन्दाने प्राणत्याग किया।

वन्दिपल्लम्—मन्द्राजप्रदेशके आर्कट जिलान्तर्गत एक पर्वत और उस पर प्रवाहित नदी। यह अक्षा० १३° ४३´ १५´´ उ० तथा देशा० ७९ ४८´ पू०के मध्य अवस्थित है। १७५० १७६० ई० तक यह स्थान अगरेज-फरासी युद्धका केन्द्रस्थल बना रहा था।

वन्डेल—वङ्गालके हुगली जिलान्तर्गत हुगली शहरका एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० २२ ५५´ उ० तथा देशा० ८८ २४´ पू० भागीरथी नदीके किनारे अवस्थित है। यहा रोमन कैथलिक खृष्टान सम्प्रदायका एक धर्ममन्दिर है। यह मन्दिर १५९९ ई०में बनाया गया है और वङ्गाल भरमें सर्वप्राचीन खृष्टधर्ममन्दिर समझा जाता है। १६३२ ई०में दिल्लीश्वरके आदेशसे मुगलोंने यह मन्दिर जला दिया और भीतरकी प्रतिमूर्त्ति तथा चित्रोंको नष्ट कर डाला। खृष्टधर्मयाजक जब वन्दीरूपमें आगरे लाया गया, तब उसके अनुरोध पर सम्राट्ने धर्ममन्दिरके खर्च वर्चके लिये ७७७ बीघा निष्कर जमीन दान की। उसी आयसे नया मन्दिर बनाया गया और उसमें १४९९ ई०की लिपि भी उत्कीर्ण हुई। पूर्ववर्त्ती किसी समय पुर्त्तगीजोंने इसकी रक्षाके लिये एक दुर्ग बना दिया था। १९वीं शताब्दीमें यहा येसुइट विद्यालय, बोर्डिंग स्कूल, खृष्टान सतियोंके आश्रम आदि निर्मित हुए। अभी पुर्त्तगीजों और फिरङ्गियोंकी अवनतिके साथ साथ यह स्थान भी श्रीहीन हो गया है। यहाके अधिवासी प्राय वङ्गाली ही हैं, धर्मयाजक बहुत थोडे हैं। यहा प्रतिवर्ष नवम्बर मासमें कैथलिकोंके नोभेना (Novena) उत्सवमें बहुतसे खृष्टान जमा होते हैं।

वन्ध (स० पु०) वन्ध हलश्चेति घञ्। १ वन्धन। २ शरीर। जब तक कर्मवन्धनका क्षय नही होता, तब तक देहके बाद अर्थात् मृत्युके बाद जन्म और जन्मके बाद मृत्यु अवश्यम्भावी है। इसी कारण शरीरको वन्ध कहते हैं। कर्मवन्धनके शेष हो जानेके वाद फिर शरीर-ग्रहण नहीं करना पडता। ३ ग्रन्थि, गाठ, गिरह। ४ कैद। ५ गृहादि वेष्टन अर्थात घर बनानेमें पहले वन्ध ठीक कर लेना होता है। १५, १७, १९ या २१ इन सव वन्धोंमें गृहादि बनाने होते हैं अर्थात् अयुग्मवन्धमें गृहादि प्रशस्त हैं। युग्मवन्धमें गृहादि भूल कर भी न बनावे। घरकी लम्बाई और चौडाई मिला कर जितने हाथ होते हैं उसे वन्ध कहते हैं। (ज्योतिस्तत्त्व)

६ पानी रोकनेका धुस्स, बाँध। ७ कोकशास्त्रके रतिके

यदि आपको चरित्रगुणमें भारतीय धनी पुरुषोंके मध्य आदर्श स्थान दिया जाय, तो कोई अत्युक्ति नहीं। आप बड़े मृगयालुब्ध हैं। आज तक आपने ७१ व्याघ्रोंको मार कर अपनी वीरता और अजस्र साहसका परिचय दिया है। उनकी सुरक्षित मृतदेह अभी चम्पानगरके राज प्रासादका गौरव और सौन्दर्य प्रदान करती है। अलावा इसके आपके अव्यर्थ सन्धानसे कितने कुम्भीर, वन्यवराह, मृग और विहङ्गम विहङ्गमा अपने नश्वर देहका त्याग कर परमधामको सिधारी हैं, उसकी शुमार नहीं।

आप केवल मृगयामें ही अपने बाहुबलका परिचय दे कर समय नहीं विताते, वरन् आप आत्मीय बन्धु बान्धवोंका पोषण, ब्राह्मणोंका प्रतिपालन, दरिद्रोंका भरण और शिल्पसाहित्यको उत्साह प्रदान करते हैं। विद्वान और सज्जनका सङ्ग आपको अति प्रीतिकर है। आप अङ्गरेजी, वङ्गला हिन्दी और उर्दू भाषामें अनर्गल कथोपकथन कर सकते हैं। देशके किसी भी सत्कार्यमें, साधु अनुष्ठानमें और सभासमितिमें सदालापी मिष्टभाषी आपको योगदान दिये देखते हैं। आप वर्त्तमान विहार व्यवस्थापक सभाके भी एक विशिष्ट सभ्य हैं। विहारमें उच्चशिक्षाकी उन्नति और प्रचारके उद्देश्यसे वनेली राजसे भागलपुरके तेजनारायण जुबली कालेजको प्रायः ६ लाख रुपयोंका दान किया गया है। पटना (बांकीपुर) से प्रकाशित सर्व प्रथम अङ्गरेजी दैनिक पत्रिका 'विहारी' (The Beharee) वनेली राजकी पृष्ठ पोषकतासे स्थापित हुई है। आपने हिन्दू विश्वविद्यालय बनारसको लाख रुपये, प्रिंस आव वेल्स मेमोरियल मेडिकल कालेज पटनाको लाख रुपये और वृटिश गवर्मेण्टको युद्धके समय डेढ लाख रुपयेका साहाय्य प्रदान किया है। वायले (Bayley) पुस्तकालय पटनामें प्रचुर दान आपके विद्यानुरागका परिचय देता है। अलावा इसके आपके कृपा फलसे कितने अस्पतालों और स्कूलोंसे लोग लाभ उठा रहे हैं। जो एक बार भी आपके साथ रह चुके हैं। वे सभी आपके चरित्र माधुर्य पर मुग्ध हो आपको सम्मान और श्रद्धाकी दृष्टिसे देखनेमें बाध्य हुए हैं।

वनैला (हिं० वि०) वन्य, जंगली।

वनौटी (हिं० वि०) कपासी, कपासके फूलका-सा।

वनौरी (हिं० स्त्री०) हिमोपल, वर्षाके साथ गिरनेवाला ओला।

वनौवा (हिं० वि०) कृत्रिम, बनावटी।

वन्थर—अयोध्या प्रदेशके उनाव जिलेका एक नगर।

वन्थली—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ राज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह नगर २१° २८' ३०" उ० और देशा० ७०° २२' १५" पू०के मध्य अवस्थित है। वामथली देखो।

वन्दयाल—काश्मीर राज्यके मुजफ्फराबाद विभागके अन्तर्गत हिमालय पर्वतश्रेणीका एक गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३१° २२' उ० और देशा० ७८°४' पू०के मध्य अवस्थित है। समुद्रपृष्ठसे यह स्थान १४८५४ फुट ऊँचा और सब दिन तुषारसे आवृत रहता है।

वन्दर—व न्दर देखो।

वन्दर—मन्द्राज प्रदेशके कृष्णा जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १५° ४५' से १६° २६' उ० और देशा० ८०° ४८' से ८१° ३३' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ७४० वर्गमील और जनसंख्या दो लाखसे ऊपर है। इसमें २ शहर और १६१ ग्राम लगते हैं। वन्दर या मसली पत्तन इसका प्रधान नगर है। मछलीपत्तन देखो।

वन्दरलङ्का (वन्दमूरलङ्का)—मन्द्राजके गोदावरी जिलान्तर्गत कुमारीगिरि नगरका एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० १६° २७' उ० और देशा० ८१° ५८' पू०के मध्य अवस्थित है। १८वीं शताब्दीके पहले अंगरेजोंने गोदावरी नदीके किनारे एक कोठी खोली, पर कुछ दिन बाद यह छोड़ दी गई। आज भी यह स्थान समुद्रोपकूलवर्त्ती छोटे वन्दरमें गिना जाता है। गोदावरी नदीकी कौशिकी शाखाके ऊपर अभी यह बसा हुआ है।

वन्दा—गुरु गोविन्दका परवर्त्ती एक सिख-गुरु। सम्राट् १म बहादुर शाहके राजत्वकालमें उसने सिखसेना ले लाहोर पर आक्रमण कर दिया। सम्राट्के भ्राता कामवक्सने गुरुगोविन्दके पुत्रको कैद कर मार डाला। इसका बदला लेनेके लिये वन्दाने सिखसेना इकट्ठी कर सम्राट्की अनुपस्थितिमें दाक्षिणात्य पर चढ़ाई कर दी। इस समय इसने मुसलमानोंके प्रति बड़ा अत्याचार किया

था। बालक या वृद्ध, वृद्धा या युवती किसीका लक्ष्य न कर नादिरशाही चला दी। गर्भवती रमणियोंके उदर फाड कर नृशंस प्रवृत्तिकी पराकाष्ठा दिखला दी थी। सम्राट्‌ने इस जघन्य वृत्तिका बदला लेनेके लिये स्वयं इनसे युद्ध किया। जंजीरमें पकड़े रहने पर भी बन्दा सम्राट्‌की आखोंमें धूल डाल भग गया। सेना दल इकट्ठा कर वह सम्राट्‌का फिर विद्रोही बना। सम्राट् फरुखशियरने इसको दबानेके लिये काश्मीरके शासन कर्त्ता आबदुस् समद खांको ससैन्य भेजा। कितनी बार घोरतर संघर्षके बाद बन्दाने किलेमें आश्रय लिया। समद खांने भी दलबलके साथ आ कर किलेको घेर लिया। रसद आदिके बंद होने पर बन्दा आहाराभावमें आत्मसमर्पण करनेको बाध्य हुआ। बन्दा और अपरापर सिख कैदी दिल्ली भेजे गये। बंदा लौह पंजरमें आबद्ध हो हाथीकी पीठ पर दिल्ली पहुंचा। सिखोंने अवनत मस्तकसे यह अवमनना सह्य की, किंतु मनही मन इस्लामधर्म ग्रहण करनेकी अपेक्षा मृत्युको ही उन्होंने श्रेय समझा था। सम्राट्‌के उन्हें जीवन दान देनेमें प्रतिश्रुत होने पर भी वे लोग दान इस्लामधर्मके ग्रहणमें सम्मत नहीं हुये। फलतः सम्राट्‌की आज्ञासे प्रति दिन सैकड़ों सिख-वीर घातकके हाथसे यमपुर भेजे जाने लगे। आठवें दिन बन्दा मय पुत्रोंके मारा जायगा, यह घोषित कर दिया गया। जब वह मौतका दिन पहुंचा, तब घातकने बन्दा और इसके पुत्रको नगरके बहिर्देशमें ला बन्दा को पुत्रके मस्तकच्छेदनके लिये तलवार दी। बंदाने अपने पुत्रका शिरच्छेद करना मंजूर नहीं किया। इस पर घातकने अपने हाथसे बालकका हृदय विदीर्ण कर डाला और बलपूर्वक उस हृतपिण्ड को बन्दाके मुखमें ठूंस दिया। अन्तमें उत्तप्त चीमटों-से उसके शरीरका मांस झुलसा दिया और घोर यंत्रणा दे कर सिख-गुरुके प्राण ले लिये। १७१५ ई०में इस पाशविक अत्याचारको अटलभावसे सह्य कर बन्दाने प्राणत्याग किया।

वन्दिपल्लम्—मन्द्राजप्रदेशके आर्काट जिलान्तर्गत एक पर्वत और उस पर प्रवाहित नदी। यह अक्षा० ११ ४३´ १५˝ उ० तथा देशा० ७६ ४८´ पू०के मध्य अवस्थित है। १७५० १७८० ई० तक यह स्थान अंगरेज फरासी युद्धका केन्द्रस्थल बना रहा था।

वन्डेल—बङ्गालके हुगली जिलान्तर्गत हुगली शहरका एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० २२ ५५´ उ० तथा देशा० ८८ २४´ पू० भागीरथी नदीके किनारे अवस्थित है। यहां रोमन कैथलिक खृष्टान सम्प्रदायका एक धर्ममन्दिर है। यह मन्दिर १५९९ ई०में बनाया गया है और बङ्गाल भरमें सर्वप्राचीन खृष्टधर्ममन्दिर समझा जाता है। १६३२ ई०में दिल्लीश्वरके आदेशसे मुगलोंने यह मन्दिर जला दिया और भीतरकी प्रतिमूर्त्ति तथा चित्रोंको नष्ट कर डाला। खृष्टधर्मयाजक जब बन्दीरूपमें आगरे लाया गया, तब उसके अनुरोध पर सम्राट्‌ने धर्ममन्दिरके खर्च वर्चके लिये ७७७ बीघा निष्कर जमीन दान की। उसी आयसे नया मन्दिर बनाया गया और उसमें १४९९ ई०की लिपि भी उत्कीर्ण हुई। पूर्ववर्त्ती किसी समय पुर्त्तगीजोंने इसकी रक्षाके लिये एक दुर्ग बना दिया था। १९वीं शताब्दीमें यहां पेसुइट विद्यालय, बोर्डिंग स्कूल, खृष्टान सतियोंके आश्रम आदि निर्मित हुए। अभी पुर्त्तगीजों और फिरङ्गियोंकी अवनतिके साथ साथ यह स्थान भी श्रीहीन हो गया है। यहांके अधिवासी प्रायः बङ्गाली ही हैं, धर्मयाजक बहुत थोड़े हैं। यहां प्रतिवर्ष नवम्बर मासमें कैथलिकोंके नोमेना (Novena)-उत्सवमें बहुतसे खृष्टान जमा होते हैं।

बन्ध (सं० पु०) बन्ध हल्स्येति घञ्। १ बन्धन। २ शरीर। जब तक कर्मबन्धनका क्षय नहीं होता, तब तक देहके बाद अर्थात् मृत्युके बाद जन्म और जन्मके बाद मृत्यु अवश्यम्भावी है। इसी कारण शरीरको बन्ध कहते हैं। कर्मबन्धनके शेष हो जानेके बाद फिर शरीर-ग्रहण नहीं करना पड़ता। ३ ग्रन्थि, गांठ, गिरह। ४ कैद। ५ गृहादि वेष्टन अर्थात् घर बनानेमें पहले बन्ध ठीक कर लेना होता है। १५, १७, १९ या २१ इन सब बंधोंमें गृहादि बनाने होते हैं अर्थात् अयुग्मबन्धमें गृहादि प्रशस्त हैं। युग्मबन्धमें गृहादि भूल कर भी न बनावे। घरकी लम्बाई और चौड़ाई मिला कर जितने हाथ होते हैं उसे बन्ध कहते हैं। (ज्योतिस्तत्त्व)

६ पानी रोकनेका धुस्स, बांध। ७ कोकशास्त्रके रतिके

अनुसार मुख्य सोलह आसनोंमेंसे कोई आसन। मुख्य सोलह आसन ये हैं—१ पद्मासन, २ नागपाश, ३ लतावेष्ट, ४ अर्द्धसंपुट, ५ कुलिश, ६ सुन्दर, ७ केशर, ८ हिल्लोल, ९ नरसिंह, १० विपरीत, ११ क्षुब्ध, १२ धेनुक, १३ उत्कण्ठा, १४ सिंहासन, १५ रतिनाग, और १६ विद्याधर।

इसके अतिरिक्त स्मरदीपिकामें अठारह प्रकारके रतिबंधोंका उल्लेख है, यथा—१ कामप्रद, २ विपरीत, ३ नागर, ४ रतिपाशक, ५ केयूर, ६ प्रियतोष, ७ समपद, ८ एकपद, ९ सम्पुट, १० उद्ध्वसम्पुट, ११ स्तनभय, १२ रतिसुन्दर, १३ ऊरुपीड, १४ स्मरचक, १५ ऊरुक्रम, १६ वेष्टक, १७ हसकोल और १८ लोलासन।

(स्मरदीपिका)

८ योगशास्त्रके अनुसार योगसाधनकी कोई मुद्रा। जैसे, उड्डियानबन्ध, मूलबंध, जालन्धरबंध, इत्यादि। ९ निबन्ध रचना। १० चित्रकाव्यमें छन्दकी ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकारकी आकृति या चित्र बन जाय। ११ लगाव, फँसाव। १२ मानसिक चिन्ता। १३ जिससे कोई चीज बांधी जाय।

बन्धक (क्ली०) बध्नातीति बंध ण्वुल। ऋणके लिये ऋणके बदलेमें धनीके पास रखी जानेवाली वस्तु, रेहन, गिरवीं। ऋण लेते समय सुवर्ण या भूमि आदि बंधक रखनी पड़ती है। बादमें सूद सहित ऋण चुकती होने पर बंधकी संपत्ति वापिस हो जाती है। याज्ञ सहितामें इस सम्बन्धमें लिखा है,—गिरवी रख यदि कर्ज लिया जावे, तो कर्जके दूने होने पर भी ऋण चुकती न हो, तो गिरवी रखी हुई वस्तु महाजनकी हो जाती है। उस पर गिरवी रखनेवालेका कुछ अधिकार नहीं रहता। गिरवी छुड़ानेका समय निश्चित रहता है। निश्चित समयमें गिरवी वस्तुको नहीं छुड़ानेसे उस पर अधिकार धनीका होता है।

यदि महाजनको बंधकी द्रव्य पर सूद बराबर मिलता रहे अथवा अन्य लाभ हो, तो बंधकी द्रव्य ज्योंको त्यों बनी रहती है। गिरवी द्रव्यके गुप्त रूपसे भोगने अथवा कार्याक्षम कर देने पर सूद नहीं मिल सकता। गिरवी द्रव्यके खो जानेपर उसका मूल्य दे देना पड़ता है। दैवरुन या राजरुन उपद्रवमें गिरवीं द्रव्यके नाश होनेसे उसका मूल्य नहीं देना पड़ता। गिरवी द्रव्य यदि यत्नपूर्वक सुरक्षित रखने पर भी नष्ट हो जाय तो उसके बदलेमें उसका यथोचित मूल्य देना पड़ेगा।

कर्जदार महाजनको सद्धनिक जान कर यदि बहुमूल्य द्रव्य बंधक रख कर उससे अल्प धन ले, तो द्विगुण सूद समेत मूलधनके देने पर बंधकी द्रव्य वापिस लेता है। यदि कर्जदार यह शर्त करे, 'जब सूद दूना हो जायगा तब द्विगुण सूद दे कर गिरवी द्रव्य छुड़ा लूंगा' तो इस शर्तके अनुकूल ऋणी दूना सूद दे कर अपना द्रव्य ले सकता है। ऋणी जब ब्याज सहित मूलधन ले कर गिरवी द्रव्य छुड़ाने आवे तब धनीको वह चीज बिना उज्जुर दे देनी चाहिये।

धनी ऋणीको द्रव्य देनेमें आपत्ति करे, तो राजाके यहां उसे चोरके समान दंड मिलता है। धनीकी उपस्थिति नहीं रहने पर उसके विश्वस्त मनुष्यके पाससे मूलधन ब्याज सहित देने पर बंधकी दूना ले लिया जाता है।

गिरवीदारके पास गिरवी द्रव्यका लेनेवाला यदि कोई उपयुक्त मनुष्य न रहे, अथवा कर्जदार गिरवी द्रव्य बेच गिरवीदारकी अनुपस्थितीमें ऋण शोध करना चाहे, तो द्रव्यका जितना मूल्य हो उसे निर्धारित कर ले, और जब तक गिरवीदार न आवे तथा धन ले कर गिरवीनामा फाड़ न दे, तब तक चीज उसीके पास रहने दे। पर उस दिनसे उस पर ब्याज नहीं चलेगी, यदि ऋण लेने समय यह शर्त हो जाय, कि मूलधनके दूने होने पर दूना ही लिया जायगा, तो कर्जदार उतना देनेको बाध्य है। यदि मूलधन बढ़ कर दूना हो जाय और कर्जदारके पास रुपया न रहे तो गिरवीदार साक्षी रख कर गिरवीद्रव्य बेच सकता है। यदि बिना गिरवी द्रव्य रखे कर्ज बढ़ कर दूना हो जावे तो कर्जदार उसके बदलेमें जमीन गिरवीदारको दे दे। पीछे उस जमीनकी फसलसे अपना कुल पावना परिशोध कर महाजन कर्जदारको वह जमीन वापस दे दे।

मनुस्मृतिमें लिखा है कि यदि भोगके निमित्त कोई वस्तु या दास दासीको गिरवी रख कर महाजनसे रुपया उधार ले तो ब्याज नहीं देनी पड़ती।

बलपूर्वक गिरवी द्रव्यका भोग नहीं हो सकता। यदि कर्ज देनेवाला उस द्रव्यको काममें लावे, तो ऋणका सूद छोड़ना होगा अथवा भोग करनेका कारण यदि उलटा हो, तो कर्जदारको निश्चित मूल्य दे कर सतुष्ट करना होगा। यदि न करे, तो कर्ज देनेवाला चोरकी तरह दण्डनीय होगा। गिरवी द्रव्यको कर्जदार जिस समय चाहेगा उसी समय उसको देना होगा। गिरवी द्रव्य जितने दिन क्यों न रहे, उस पर कर्जदारका सदा हक बना रहेगा। महाजन जितना रुपया कर्जमें दे, वह कर्जदारके पासमें कितने हो दिन क्यों न रहे, उसके दूने से ज्यादा होने पर महाजनको फिर व्याज नहीं मिलती। (मनुस्मृति ८ अ०)

(पु०) वन्ध स्वार्थे-कन्। २ विनिमय, बदला। ३ रतहिडक, वह जो स्त्रियोंको चुराता हो। (त्रि०) ४ बधन कर्त्ता, बाधनेवाला।

"न नारी न धन गेह न पुत्रो न सहोदरा।
वन्धन प्राणिना राजन्नहङ्कारस्तु व धक॥"
(भागवत ५।११।३६)

अहङ्कार ही जीवका बधक अर्थात् बाधनेवाला है। जब तक 'मेरा' हम, हमारा, अर्थात् हमारी स्त्री, हमारा पुत्र हमारा सुख दु ख, यह ज्ञान रहेगा, तब तक बधन अवश्य होगा, इसलिये अहकार ही ब धक है।

वन्धकी (स ० स्त्री०) बध्नाति मानसमिति वन्ध ण्वुल्, गौरादित्वात् ङीष्। १ व्यभिचारिणी स्त्री, बदचलन औरत। महाभारतमें लिखा है, कि जो पञ्चपुरुषगामिनी है, उसे वन्धकी कहते हैं। २ वेश्या, रण्डी। ३ हस्तिनी, हथनी।

वन्धकर्त्तृ (स ० पु०) शिव, महादेव।

वन्धन (स ० क्ली०) वन्ध भावे-ल्युट्। १ बधनक्रिया, बाधनेका काम। २ वह जिससे कोई चीज बाधी जाय। ३ वध, हत्या। ४ हिंसा। ५ रज्जु, रस्सी। ६ कारागृह, कैदखाना। ७ वन्धनस्थान। ८ शिव, महादेव। ६ शरीरका स धिस्थान, जोड़। (त्रि०) १० वन्धन कर्त्ता, बाँधनेवाला।

वन्धनग्रन्थि (स ० पु०) वन्धनस्य ग्रन्थि। १ अस्थि वन्धनकी ग्रन्थि, शरीरमें वह हड्डी जो किसी जोड़ पर हो। २ वन्धनकी गाठ, गिरह।

वन्धनपालक (स ० पु०) कारागार रक्षक, वह जो कारागारकी रक्षा करता हो।

वन्धनवेश्म (स ० क्ली०) वन्धनाय ब धनस्य वा वेश्म गृह। कारागार, कैदखाना।

वन्धनस्थ (स ० त्रि०) ब धने तिष्ठति स्था-क। ब धनस्थित, कारारुद्ध।

वन्धनस्थान (स ० क्ली०) ब धनस्य स्थान। १ कारागार। २ पशु ब धन स्थान, मवेशियोंके बाधनेका स्थान।

वन्धनागार (स ० पु०) ब धनस्य आगार। कारागृह, कारागार।

वन्धनालय (स ० पु०) ब धनाय ब धनस्य वा आलय। कारागार।

वन्धनी (स ० स्त्री०) १ भेदावरोधक सूत्रमय और स्थिति स्थापक गुणोपेत पदार्थ, शरीरके अन्दरकी वे मोटी नसे जो सन्धिस्थान पर होती हैं और जिनके कारण दो अवयव आपसमें जुड़े रहते हैं। २ वन्धनसाधन रज्जु, वह रस्सी जिससे कोई चीज बाधी जाय।

वन्धनीय (स ० त्रि०) वन्ध अनीयर। १ वन्धनयोग्य, बाधने लायक। (क्ली०) २ सेतु, पुल।

वन्धमोचनिका (स ० स्त्री०) १ वन्धसे मोचनकारी, वन्ध से रक्षा करनेवाला। २ योगिनीविशेष।

वन्धलगोती—अयोध्या प्रदेशवासी क्षत्रिय जातिविशेष। सुलतानपुर जिलेके अमेथी परगनेमें इस जातिके अनेक क्षत्रिय रहते हैं। दूसरी जगह कहीं भी इनका वास नहीं देखा जाता कहते हैं कि हसनपुर-राजभृत्यके औरस और घरांमो-रमणीके गर्भसे इनकी उत्पत्ति है। आज भी इनके किसी किसी क्रियाकर्ममें 'वङ्का' नामक अस्त्रकी पूजा होती है। उस अस्त्रसे उनके पूर्वपुरुषगण बास फाड़ते थे, किन्तु वर्त्तमान वन्धलगोतिगण इस नीच उत्पत्तिकी कथा स्वीकार नहीं करते। इन लोगोंका कहना है, कि वे सूर्य व शीय क्षत्रिय हैं, वर्त्तमान जयपुर राजव शकी एक शाखासे उत्पन्न हुए हैं। प्राय ६ सौ वर्ष पहले उस व शके कोइ व्यक्ति अयोध्या तीर्थ दर्शनको आये थे और अपने अलौकिक शक्ति प्रभावसे यहा एक नई शाखा स्थापन कर गये। धीरे धीरे दलपुष्ट हो कर उस दलके लोग यहाके सर्वेसर्वा हो उठे।

बन्धयितृ ( स ० त्रि० ) बन्ध णिच्-तृच्। बन्धनकारक, बांधनेवाला।

बन्धव ( स ० पु० ) बान्धव देखो।

बन्धस्तम्भ ( स ० पु० ) बन्धाय स्तम्भः। हस्तिबन्धन स्तम्भ, हाथी बांधनेका खंभा या खूंटा। पर्याय—आलान, शङ्कु, अनोट।

बन्धित्र ( स ० क्ली० ) बन्ध इत्र। १ कामदेव। २ चर्म व्यजन, चमड़ेका पंखा।

बन्धु ( स ० पु० ) बन्ध बन्धने ( शृस्वृस्निहित्रपीति। उण् १।११ ) इति उ। १ वह जो सदा साथ रहे या सहायता करे। जो स्नेह द्वारा मनको बन्धन करते हैं, वे ही बन्धु हैं। पर्याय—सगोत्र, बान्धव, ज्ञाति, स्व, स्वजन, दयाल, गोत्र। बन्धु तीन प्रकारका है—आत्मबन्धु, मातृबन्धु और पितृबन्धु। यथा—मौसेरे भाई, फुफेरे भाई और ममेरे भाईको आत्मबन्धु, पिताके मौसेरे भाई, फुफेरे भाई और ममेरे भाईको पितृबन्धु तथा माताके फुफेरे भाई, मौसेरे भाई और ममेरे भाईको मातृबन्धु कहते हैं। आत्म-बन्धु और पितृबन्धु ये लोग स्वाभाविक हितकारी हैं। इसी कारण शास्त्रमें इन्हें बन्धु बतलाया है। पितृव्य प्रभृतिको भी बन्धु कहते हैं।

२ भ्राता, भाई। ३ पिता। ४ माता। ५ बन्धुक पुष्प।

बन्धुक ( स ० पु० ) बन्ध-उक यद्वा बन्धव बन्धुकाक्षरण्य स्वार्थे कन्। १ वृक्षभेद, दुपहरिया फूलका पौधा। २ दुपहरियाका फूल जो लाल रंगका होता है।

बन्धुकृत्य ( स ० क्ली० ) बन्धूनां कृत्यं कार्यं। बन्धुका कार्य।

बन्धुक्षित् ( स ० त्रि० ) हविरादि द्वारा आभियुक्त। ( ऋक् १।१६२।३ )

बन्धुजन ( स ० पु० ) बन्धुरेव जनः। बन्धुलोक, आत्मीय कुटुम्ब।

बन्धुजीव ( स० पु० ) बंधुरिव जीवयति रसादिनेति बन्धुजीव-अच्। १ बन्धूक वृक्ष, गुल्दुपहरियाका पौधा। २ दुपहरियाका फूल।

बन्धुजीवक ( स० पु० ) बन्धुवत् जीवयति रसादिना इति बन्धुजीव ण्वुल्, वा बन्धुजीव एव स्वार्थे कन्। बन्धूक वृक्ष। बन्धूक देखो।

बन्धुता ( स० स्त्री० ) बन्धोर्भाव बन्धूनां समूहो वा ( ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्। पा ४।२।४३ ) इति तल् टाप्। १ बन्धुसमूह। २ बन्धु होनेका भाव। ३ भाईचारा।

बन्धुत्व ( स ० पु० ) १ बन्धुता, बन्धु होनेका भाव। २ भाईचारा। ३ मित्रता, दोस्ती।

बन्धुदत्त ( स ० पु० ) बन्धुना दत्तम्। पितृ मातृ बन्धुकर्तृक प्रदत्त स्त्रीधन, वह धन जो कन्याको विवाहके समय माता पिता या भाइयोंसे मिलता है।

बन्धुदा ( स ० स्त्री० ) १ वेश्या, रंडी। २ दुराचारिणी स्त्री, बदचलन औरत।

बन्धुपति ( स ० पु० ) बन्धूनां पतिः। बंधुश्रेष्ठ, वह जो आत्मीय कुटुम्बोंमें प्रधान हो।

बन्धुपाल ( स ० पु० ) आत्मीय कुटुम्ब प्रतिपालक, वह जो अपने कुटुम्बका प्रतिपालन करता हो।

बन्धुपृच्छ ( स ० त्रि० ) बन्धुका विषय पूँछनेवाला।

बन्धुमत ( स० त्रि० ) बन्धु अस्त्यर्थे मतुप्। १ बन्धु युक्त। २ कुटुम्बसमन्वित। ३ राजभेद। स्त्रियां टाप्। ४ नगरभेद।

बन्धुर (स ० क्ली०) बन्ध (मद्गुरादयश्च। उण् १।४२ ) इति उरप्रत्ययेन निपातनात् साधु। १ मुकुट, सिरताज। २ रथका धन। ३ स्त्रीचिह्न। ४ तिलकल्क, तिलका चूर। ५ बन्धुक, दुपहरियाका फूल। ६ बधिर, बहरा मनुष्य। ७ हंस। ८ विडङ्ग। ९ ऋषभौषध, लहसुनकी तरहकी एक औषधि। १० कर्कटशृङ्गी, काकड़ासिंगी। ११ बक, बगला। १२ विहङ्ग, चिड़िया। ( त्रि० ) १३ रम्य, सुन्दर। १४ नम्र। १५ उन्नतानत, ऊँचा नीचा।

बन्धुरा ( स ० स्त्री० ) बन्धुर टाप्। पण्ययोषा, नत्त्।

बन्धुल ( स० पु० ) बन्धून् लाति स्नेहेन गृह्णातीति बन्धु ला क। १ असतीपुत्र, बदचलन औरतका लड़का। २ वेश्यापुत्र, रंडीका लड़का। (त्रि०) ३ सुन्दर, खूबसूरत। ४ नम्र।

बन्धुवञ्चक ( स ० पु० ) वह जो बन्धुओंको ठगता होता हो।

बन्धूक ( स ० पु० ) बध्नाति सौन्दर्येण चित्तमिति बन्ध ( उलूकादयश्च। उण् ४।४१ ) इति ऊक। ( *Pentapetes Phoenicea* ) १ पुष्पविशेष, दुपहरियाका फूल। यह

फूल दो पहरमें खिलता है और शामको मुरझा जाता है। संस्कृत पर्याय—रक्तक, बन्धूजीवक, बन्धुक, बन्धु, बन्धुल, जीवक, बन्धुजीव, बन्धूलि, बन्धुर, रक्त, माध्याह्निक, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यन्दिन, रक्तपुष्प, रागपुष्प, हरिप्रिय।

यह पुष्प असित, सित, पीत और लोहितके भेदसे चार प्रकारका है। गुण—ज्वरनाशक, त्रिविध ग्रहग्रह और पिशाचप्रशमनकारक है। २ पीतशालक। ३ बन्धूप, बन्धूक। ५ दोधक नामक वृत्तका एक नाम। (त्रि०) ५ लघु, छोटा।

बन्धूकपुष्प (सं० पु०) बन्धूकस्य पुष्पमिव पुष्प यस्य। १ पीतशाल। २ बीजक।

बन्धूर (सं० पु०) बध-बंधने (मद्गुरादयश्च। उण् १।४२) इत्यत्र खर्जूरादित्वादूरप्रत्ययेन सिद्ध। १ विवर, बिल। (त्रि०) २ रम्य, सुन्दर। ३ उन्नतानत, वह स्थान जो कहीं ऊंचा और कहीं नीचा हो।

बन्धूलि (सं० पु०) बन्धुक वृक्ष, दुपहरिया फूलका पौधा।

बन्ध्य (सं० त्रि०) बन्ध-यक्। १ ऋतुप्राप्तावधि फलरहित वृक्षादि, वह पेड़ जिसमें उपयुक्त समयमें भी फल नहीं लगते। पर्याय—अफल, अवकेशी, विफल, निष्फल। २ ऐसा पुल जिसके नीचेसे पानी बहता हो, बाँध।

बन्ध्या (सं० स्त्री०) १ वह स्त्री जो सन्तान न पैदा कर सके, बांझ। मनुमें लिखा है, कि बन्ध्या स्त्री अष्टम वर्षमें अधिवेदनीय होती है। (मनु ९।८१)

वृषली स्त्रीको भी बन्ध्या कहते हैं। जिनके सन्तान नहीं होती या हो कर मर मर जाती है उसका नाम वृषली है। २ योनिरोगभेद। भावप्रकाशमें उदावर्त्ता, विप्लुता और बल्यादिभेदसे योनिरोग नाना प्रकारका बतलाया गया है। जिन सब स्त्रियोंका आर्त्तव विनष्ट होता है उन्हें बन्ध्या कहते हैं। स्त्रियोंके यह रोग होनेसे यथाविधान चिकित्सा करना आवश्यक है।

इसकी चिकित्सा।—बन्ध्यानारी प्रतिदिन मछली, काँजी, तिल, उड़द, अर्द्धक जलयुक्त मट्ठा और दधिका सेवन करे। इससे उनका आर्त्तव निकल सकता है। तितलौकीका बीज, दन्ती, गुड़, मैनफल, सुराबीज और यवक्षार इनके समान भागको थूहरके दूधमें पीस कर मूर्त्ति बनावे। पीछे उस मूर्त्तिको योनिमें देनेसे आर्त्तव निकलता है। ज्योतिष्मतीकी पत्तियां, सज्जीखार, वच, और शाल इन्हें शीतल दूधके साथ पीस कर पान करे, तीन दिनके मध्य ही रज अवश्य ही निकलने लगेगा।

श्वेतवहेडा, यष्टिमधु, रक्त बहेडा, ककटशृङ्गी और नागकेशर इन सब द्रव्योंको मधु, दुग्ध और घृतके साथ पान करनेसे बन्ध्यानारी गर्भधारण करती है। असगंध के काढ़ेके साथ दूध पाक करके कुछ दूध रहने उसे उतार ले। पीछे ऋतु स्नान करके उसका घृतके साथ सेवन करनेसे निश्चय गर्भ रह जाता है। पुष्यानक्षत्रमें लक्ष्मणामूल उखाड़ कर ऋतुस्नान करनेके बाद घृतकुमारीका रस दूधके साथ सेवन करे। इससे बन्ध्यादोष दूर हो जाता है और नारी थोड़े ही दिनोंके अन्दर गर्भधारण करती है। पीत किएटीका मूल, धाईका फूल, बटका अंकुर, और नीलोत्पल इन्हें दूधके साथ पीस कर पान करनेसे बन्ध्यादोष जाता रहता है। गजपिप्पली, जीरा, श्वेतपुष्प और शरपुङ्खा इनके समान भागको पीस कर पान करनेसे स्त्री गर्भवती होती है। एक पलाशपत्रको दूधमें पीस कर पान करनेसे वीर्यवान् पुत्र जन्म लेता है। शूकशिम्बीमूल, कपित्थकी मज्जा और लिङ्गिनी बीज, इन्हें दूधके साथ पान करनेसे नारी पुत्रप्रसवणी होती है। पुत्रजीव वृक्षका मूल, विष्णुकान्ता और लिङ्गिनी इनके समान भागको पीस कर आठ दिन सेवन करनेसे स्त्री पुत्र प्रसव करती है। (भावप्र० योनिरोगाधि०)

बन्ध्या स्त्री यदि पूर्वोक्त औषधादिका यथाविधि सेवन करे, तो उनका बन्ध्या दूर होता है और वे पुत्रप्रसवणी होती हैं, इसमें सन्देह नहीं। फिर ऐसी भी औषधि हैं जिनका सेवन यदि पुत्रप्रसविणी स्त्री करे, तो उन्हें गर्भ नहीं रहता।

वैद्यक चक्रपाणिसंग्रहमें लिखा है—

"पिप्पल्य शृङ्गवेरञ्च मरिच केशरन्तथा।
घृतेन सह पातव्य बन्ध्यापि लभते सुतम्।"

पिप्पली, शृङ्गवेर, मिर्च और नागकेशर, इन्हें घृतके साथ पान करनेसे बन्ध्या पुत्रप्रसव करती है। बला, अतिबला, यष्टि और शर्कराका मधुके साथ पान करनेसे बन्ध्यादोष दूर होता है। (भैषज्यरत्ना०)

बन्ध्याकर्कोटकी (सं० स्त्री० ) बन्ध्याया कर्कोटकी पुत्रदातृतया बन्ध्याया उपकारिणी अतोऽस्यास्तथात्व। तिक्तकर्कोटकी, बांझ ककड़ी। पर्याय—बन्ध्या, देवी, नागाराति, नागहन्त्री, मनोज्ञा, पथ्या, दिव्या, पुत्रदा, सकन्दा, श्रीकन्दा, कन्दवल्ली, ईश्वरी, सुगन्धा, सर्पदमनी, विषकण्टकिनी, परा, कुमारी, भूतहन्त्री। गुण—तिक्त कटु, उष्ण, कफावह, स्थावरादि विषनाशक और रसायन। (राजनि०) भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—लघु, कफनाशक, व्रणशोधक, सर्पविषहर, तीक्ष्ण और विसर्प तथा विषहारक।

बन्ध्यातनय ( स ० पु० ) बन्ध्याया तनय इव। अलीक पदार्थ, कभी न होनेवाली चीज।

बन्ध्यात्व ( स ० क्ली० ) बन्ध्याया भाव त्व। बन्ध्याका भाव या धर्म।

बन्ध्यादुहितृ ( स ० स्त्री० ) मिथ्या पदार्थ या वस्तु।

बन्ध्यापुत्र ( स ० पु० ) अलीक पदार्थ, ठीक वैसा ही असम्भव भाव या पदार्थ जैसे बन्ध्याका पुत्र, कभी न होनेवाली चीज।

बन्ध्याश्व ( स ० पु० ) पुराणोक्त राजभेद।

बन्ध्यासुत ( स ० पु० ) मिथ्या पदार्थ।

बन्ध्यासूनु ( स ० पु० ) आकाशकुसुमवत् मिथ्या।

बन्ध्वेष ( स ० पु० ) बन्धूनामेष अन्वेषण। अपने बन्धु वर्गोंका अन्वेषण।

बन्नी ( हिं० स्त्री०) अन्नका तिहाई अथवा और कोई भाग जो खेतमें काम करनेके बदलेमें दिया जाता है।

बन्नू—डेराजात विभागके अतर्गत एक जिला। यह अक्षा० ३३ ५ उ० तथा देशा० ७० २३ से ७१ १६ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६७० वर्गमील है। एडवर्ड्सावादमें इसका विचार-सदर स्थापित है। सिन्धु नदी जिलेके उत्तर दक्षिणमें बहती है। नदीका पश्चिम तीरवर्ती भूभाग कुछ दूर समतल है, इसमें लवण पर्वत की क्रमोन्नत शाखा देखी जाती है। खटक नियाजी वा मैदानी पर्वतमालाका सुगाजियारात् शिखर समुद्रपृष्ठसे ४७१५ फुट ऊंचा है। इसीके उत्तर भागमें प्रकृत बन्नू उपत्यका है। यह स्थान डिमयारसे और उत्तर दक्षिण में ३० कोस लम्बा है। इसके चारों ओर प्राचीरके आकारमें गिरिमाला है। पश्चिममें वाजिरी जातिका वासस्थान वाजिरी पर्वत, पीरघल और शिविधर शिखर है। उत्तरमें कोहटका खटक पर्वत और सफेदकोह, पूर्वमें तकनियाजी और दक्षिणमें शेखबुद्दिन नामक पर्वत है। इस शेखबुद्दिन पर्वत पर बन्नू और राइस्माइल खाँ-वासी यूरोपियनोंके लिये स्वास्थ्यवास स्थापित है। कुरम और तोची नदी इस उपत्यकाभूमि हो कर बहती हुई सिंधुमें मिली है। इस जिलेके उत्तर काला बागके निकट सिंधनदी लवण पर्वतको भेद कर बह गई है। सिंधुनदके पूर्व यह सिंधुसागर-दोआब कहलाता है।

लवणपर्वत और मैदानी पर्वतमाला पर जगह जगह नमक पाया जाता है। कालाबागके दूसरी ओर मारी नामक स्थानमें सैंधव नमक बहुतायतसे निकाला जाता है अलावा इसके इसाखेल नामक स्थानमें सोरा, काला बाग और कुटकीमें फिटकरी, दो प्रकारका कोयला, मट्टीका तेल और सिंधुजलमें बहुत कम मात्रामें सोना भी पाया जाता है।

कुछ सदी तक यहांके अधिवासियोंमेंसे अफगान जातिकी ही प्रधानता देखी जाती है। यहां प्राचीन कालमें हिन्दुओंका वास था और पञ्जाबके यवन वाह्लीक ( Greco Bactrian )-अधिकारमें इस जिलेमें प्रतीच्य सभ्यताके क्षीणालोकने प्रवेश किया था। बन्नू उपत्यकाके आकरा आदि स्थानोंमें आज भी अनेक इष्टकस्तूप, भग्न मूर्त्ति, हिंदूका परिहित अलङ्कार और सिक्के आदि देखने में आते हैं। १८६५ ई०में सिन्धुनदके स्रोतोवेगमें जो इसी प्रकारके एक प्राचीन समृद्धिशाली नगरका ध्वंसा वशेष बह गया था, उसमें भी अनेक भग्नमूर्त्ति और स्तम्भ आदि दिखाई दिये थे।

इन सब ध्वंसावशेषसे जिस प्राचीन समृद्धिकी कल्पना की जाती है, गजनीराज महमूदके सर्व विध्वंसकारी उपद्रवसे वह चौपट हो गई। स्थानीय प्रवाद है, कि महमूदने यहांके हिन्दू दुर्गादिको जड़से नष्ट कर डाला था। पीछे कुछ सदी तक यह प्राय जन हीन सा पड़ा रहा। धीरे धीरे बन्नूची वा बन्नूवाल और नियाजी जाति यहां आ कर बस गई। सम्राट् अकबर

शाहके अमलमें मरवत् लोगोंने इस पर अधिकार जमाया और नि यजैको खटक नियाजी पर्वत पर मार भगाया। इसके प्राय: डेढ सौ वर्ष बाद अहमदशाह दुरानीने जब गक्कर जातिका प्रभाव नष्ट कर डाला, तब सग्वङ्ग लोगोंने यहां आ कर आश्रय ग्रहण किया था। मरवत् और बन्नूची आज भी इस प्रदेशमें वास करते हैं।

अकबरके परवर्त्ती दो सदी तक यहांके अधिवासियों-ने नाममात्र दिल्लीकी अधीनता स्वीकार की थी। १७३८ ई०में नादिरशाहने यह स्थान जीत कर सारे प्रदेशको श्मशान सा बना दिया। अहमदशाह दुरानीने इसी उपत्यका हो कर अपनी सैन्यपरिचालना की थी और जाते समय वे यथासाध्य कर वसूल करनेमें जरा भी बाज नहीं आये थे। किन्तु दुर्द्धर्ष अधिवासियोंको वश-में ला कर वे शासनविधिकी स्थापना किसी हालतसे न कर सके। १८३८ ई०में यह स्थान सिक्खोंके अधिकारमें आया। रणजित्सिंहने रावलपिण्डीवासी गक्कर जाति को परास्त कर लि धुके पूर्ववर्त्ती स्थानोंमें अपना शासन प्रभाव फैलाया। राज्य फैलानेकी इच्छासे वे धीरे धीरे सिन्धुके पश्चिम बन्नू उपत्यका तक बढ गये थे। अन्यान्य सभी स्थान उनके हाथ आने पर भी वे बन्नूवासियोंको काबूमें न ला सके। कई बार युद्धके बाद वे अपने पूर्व पुरुषोंकी प्रथाके अनुसार बाकी खजाना वसूल करनेके समय सैन्य प्रेरण द्वारा उन्हें उत्सादित करते थे।

रणजित्की मृत्युके बाद यह स्थान अङ्गरेजोंके अधि कारमें आया। १८४७ ४८ ई०में सर हार्बर्ट एडवार्डिस सिक्खसेनाके साथ बन्नू उपत्यका देखने आये। इस समय बन्नूवासी स्वाधीन, परस्पर विरोधी और युद्ध विग्रहमें लिप्त थे। प्रत्येक ग्राम एक दुर्गरूपमें परिणत हो गया था। सेनापति एडवार्डिसने अपने बुद्धि कौशलसे उन्हें वशमें ला कर राज्य भरमें शान्ति स्थापन की। उनके सभी दुर्ग तोड़ फोड़ दिये गये। वे सबके सब स्वेच्छासे राज कर देने लगे। मूलतान युद्धके आरम्भमें एडवार्डिस यहांसे सैन्य संग्रह करके युद्धक्षेत्रमें उतरे। अभियानकालमें बन्नूवासियोंने विशेष राजभक्ति दिख लाई थी। एडवार्ड साबादकी सिक्खसेना विद्रोही हो कर मूलतानमें आ कर मिल गई। पञ्जाब अङ्गरेजोंके राज्यभुक्त होनेके बाद यहां अङ्गरेजोंका शासन अच्छी तरह जम गया। १८५७ ई०में सिपाही विद्रोहके समय यहां कोई विशेष घटना न घटी। पश्चिमके अधिवासियोंके आक्रमणसे बीच बीचमें शान्ति भङ्ग हुआ करती थी। सीमान्तदेशकी रक्षाके लिये यहां १० थाने हैं जिनमेंसे ८में गोरा और कुरम तथा टोची थानेमें देशीय सिपाही रहते हैं।

इस जिलेमें ७ शहर और ३६२ ग्राम लगते हैं। जन संख्या ढाई लाखके करीब है। यहांकी भाषा पुश्तु है। विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछा पड़ा हुआ है। सैकड़े पीछे ४ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी उच्चनीच श्रेणीके स्कूलोंकी संख्या कुल २०० हैं। स्कूलके अलावा एक सिविल अस्पताल और एक चिकित्सालय है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२ ४४ से ३३ ५ उ० और देशा० ७० २२ से ७० ५८ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४४३ वर्ग मील और जन संख्या प्राय १३०४४४ है। इस उपविभागमें बन्नूची नामक अफगान जातिका वास है। इसमें इसी नामका एक शहर और २१७ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० ३३ ० तथा देशा० ७० ३६ पू० कुर म नदीसे एक मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या १५ हजारके लगभग है। १८४८ ई०में लेफ्टिनेण्ट एडवर्डने इस नगरको बसाया। यहां काश्मीरके महाराजाके स्मारकमें एक दुर्ग बनाया गया है जिसका नाम धुलीपगढ है। धुलीपनगर नामका एक बाजार भी उन्हीं की स्मृतिमें बसाया गया था। चर्च मिशनरी समितिने शहरमें एक गिरजा और १८६५ ई०में एक हाई स्कूल खोला है। यहां ब्रिटिश सरकारका सीमान्तरक्षक सेनादल (१ दल अश्वारोही, २ दल पदातिक, १४७० सङ्गीनवाही सैन्य, ४८२ तलवारधारी और कामानवाही सैन्य) रहता है।

बन्नूची—बन्नू जिलावासी अफगानजाति।

बन्हि (स० स्त्री०) वह्नि देखो।

बपमार (हि० वि०) १ पिताका घातक वह जो अपने पिताकी हत्या करे। २ सबके साथ धोखा और अन्याय करनेवाला।

बपतिस्मा ( अं० पु० ) ईसाई सम्प्रदायका एक मुख्य संस्कार। यह संस्कार किसी व्यक्तिको ईसाई बनानेके समय किया जाता है। इसमें पादरी हाथमें जल ले कर अभिमन्त्रित करता और ईसाई होनेवाले व्यक्ति पर छिड़कता है। जब विधर्मी ईसाई बनाया जाता है, उस समय भी यह संस्कार किया जाता है। इस समय संस्कृत होनेवालेका एक अलग नाम भी रखा जाता है जो उसके कुल-नामके साथ जोड़ दिया जाता है।

बपुरा ( हि० वि० ) १ आशक्त, बेचारा।

बपौती ( हि० स्त्री० ) पितासे मिली हुई सम्पत्ति, बापसे पाई हुई जायदाद।

बप्पा ( हि० पु० ) पिता, बाप।

बफारा ( हि० पु० ) १ औषधमिश्रित जलको औटा कर उसकी भापसे शरीरके किसी रोगी अंगको सेकनेका काम। २ वह औषध जिसकी भापसे इस प्रकारका सेंक किया जाय।

बफौरी ( हि० स्त्री० ) वह बरी जो भापसे पकाई गई हो। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—बटलोईमें अदहन चढ़ा कर उसके मुँह पर बारीक कपड़ा बाँध दे। जब पानी खूब उबलने लगे, तब कपड़े पर बेसन या उर्दकी पकौड़ी छोड़े जो भापसे ही पक जायगी। इन्हीं पकौड़ियोंको बफौरी कहते हैं।

बफ्फा—पञ्जाब प्रदेशके हजारा जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० ३४ २६´ ३०´´ उ० और देशा० ७३ १५´ १५´´ पू० सिरहन नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। उत्तर हजारा और स्वात् विभागका यह प्रधान वाणिज्यस्थान है। यहां नील, कार्पास वस्त्र, ताम्र पात्र और शस्यादिकी आमदनी तथा रफ्तनी होती है।

बबकना ( हि० क्रि० ) उत्तेजित हो कर जोरसे बोलना, चमकना।

बबर ( फा० पु० ) १ बर्बरी देशका शेर, बड़ा शेर। २ एक प्रकारका मोटा कम्मल जिसमें शेरकी खालकी सी धारियाँ होती हैं।

बबा ( हि० पु० ) बाबा देखो।

बबुआ ( हि० पु० ) १ बेटे या दामादके लिये प्यारका संबोधन शब्द। २ जमींदार, रईस।

बबुई ( हि० स्त्री० ) १ कन्या, बेटी। २ किसी ठाकुर सरदार या बाबूकी बेटी। ३ पतिकी छोटी बहन, छोटी ननद।

बबुर ( हि० पु० ) बबूल देखो।

बबूल ( हि० पु० ) भारतके प्राय सभी स्थानोंमें मिलने वाला एक प्रसिद्ध कांटेदार पेड़। यह मझोले कदका होता है और जंगली अवस्थामें अधिकतासे पाया जाता है। गरम देश और रेतीली जमीनमें यह पेड़ बहुत जल्द बढ़ता है। कहीं कहीं यह पेड़ सौ सौ वर्ष तक रहता है। इसमें छोटे छोटे पत्ते, सूईके बराबर कांटे और पीले रंगके छोटे छोटे फूल लगते हैं। इसके अनेक भेद हैं। कुछ जातियोंके बबूल तो बागोंमें केवल शोभाके लिये लगाये जाते हैं, पर अधिकांशसे इमारत और खेतीके कामोंके लिये बहुत अच्छी लकड़ी निकलती है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत और भारी होती है। यदि यह कुछ दिनों तक किसी खुले स्थानमें पड़ी रहे, तो प्रायः लोहेके समान हो जाती है। इसकी लकड़ी ऊपरसे सफेद और अन्दरसे कुछ कालापन लिये लाल रंगकी होती है। इससे खेतीके सामान, नावें, गाड़ियों और एक्कोंके धुरे तथा पहिए आदि अधिकतासे बनाये जाते हैं। यह लकड़ी जलनेमें भी बड़े कामकी है, क्योंकि इसकी आंच बहुत तेज होती है। इसके कोयले भी बनाये जाते हैं। इसकी पतली टहनियां, इस देशमें, दातुनके काममें आती हैं। इसकी जड़, छाल, सूखे बीज और पत्तियां औषधमें भी व्यवहृत होती हैं। छालका उपयोग चमड़ा सिझाने और रंगनेमें भी होता है। पशु इसकी पत्तियां और कच्ची कलियां बड़े चावसे खाते हैं। सूखी टहनियोंसे लोग खेतों आदिमें बाढ़ लगाते हैं। सूखी कलियोंसे पक्की स्याही भी बनती है और फूलोंसे मधु निकलती है। इसमें गोंद भी होता है जो और गोंदोंसे बहुत अच्छा समझा जाता है। कुछ प्रान्तोंमें इस पर लाखके कीड़े रख कर लाख भी पैदा की जाती है। रामबबूल, खैर, कुलाई, करील, बनरीठा, सोनकीकर आदि इसीकी जातिके वृक्ष हैं।

बबूला ( हि० पु० ) १ बगूला देखो। २ बुलबुला देखो।

३ पक्षी बबूल देखो। ४ हाथियोंके पावमें होनेवाला एक प्रकारका फोड़ा।

बभनी ( हि ० स्त्री० ) १ एक प्रकारका कीड़ा। यह छिपकलीके समान, पर जोंक सा पतला होता है। इसके शरीर पर लंबी सुन्दर धारियां होती हैं। जिनके कारण वह बहुत सुन्दर जान पड़ता है। २ कुशकी जातिका एक तृण जिसे बनकुस भी कहते हैं।

बभूत ( हि ० स्त्री० ) भभूत या विभूति देखो।

बभ्रवी ( स ० स्त्री० ) बभ्रो शिवस्येय पत्नी, बभ्रु-अण् ङीप्, न वृद्धि। दुर्गा।

बभ्रि ( स ० पु० ) बभ्रु इन्। १ वज्र। ( लि० ) २ भरण कर्त्ता। ३ धारक।

बभ्रु ( स ० पु० ) बिभर्त्ति भवति वा भृ ( कुभ्रुश्च। उण् १।२३ ) इति कुश्चित्वञ्च। १ अग्नि, आग। २ शिव। ३ विष्णु। ४ नकुल। ५ मुनिविशेष। ६ देशभेद। ७ सिता वरशाक। ८ खत्रति। ९ कपिलवर्ण। १० लोमपादसुत। (भाग० ९।२४।१) ११ देवोवृधसुत। १२ ययातिपुत्र द्रह्यु के पुत्र। १३ पञ्चगन्धर्व पतिमेंसे एक। १४ विश्वामित्र के पुत्रभेद। १५ विश्वगर्भके पुत्र। ये यादवोंके अन्यतम थे। इनकी स्त्रीको शिशुपालने हर लिया था। यादवकुल जब निःशेषप्राय हो गया, तब बभ्रु कृष्णके आदेशसे यादव पत्नियोंकी रक्षाके लिये गये थे। इसी समय कुछ डकैतोंने मिल कर इन्हें मार डाला। ( भारत मौषलप० ४ अ० ) १६ कपिला गाय (लि०) १७ पिङ्गल वर्ण। १८ विशाल। १८ कपिलवर्णयुक्त।

बभ्रुक ( स० लि० ) १ पिङ्गलवर्ण सम्बधीय। ( पु० ) २ नकुल, नेवला। ३ कपिञ्जल, बंदर।

बभ्रुकर्ण ( स ० लि० ) पिङ्गलवर्ण कर्णयुक्त।

बभ्रुदेश ( स ० पु० ) जनपदभेद।

बभ्रुधातु (स ० पु०) बभ्रुः पिङ्गलो धातुः। १ स्वर्ण, सोना। २ गैरिक धातु, गेरू।

बभ्रुनीकाश ( स ० लि० ) कपिलवर्ण सदृश।

बभ्रुमालिन् ( स० पु० ) १ पिङ्गलवर्ण मालाधारी। २ मुनिविशेष। ( लि० ) ३ नकुलकी तरह मुंहवाला।

बभ्रुवाह ( स ० पु० ) महोदयपति, अर्जुनका पुत्र। बभ्रुवाहन देखो।

बभ्रुवाहन ( पु० ) मणिपुरके एक प्रसिद्ध राजा। यह अर्जुनकी स्त्री चित्राङ्गदाके गर्भसे पैदा हुए थे।

महाराज युधिष्ठिर जिस समय अश्वमेधयज्ञ करते थे, उस समय अर्जुनको यज्ञके अश्वका रक्षक बनाया। यज्ञीय अश्व दौड़ता हुआ मणिपुर पहुंचा, उसके साथमें अर्जुन भी थे। अपने समीप विनीत भावसे बभ्रुवाहन को आते देख अर्जुनने इसका कुछ भी आदर नहीं किया वरन् तिरस्कारसे कहा, 'तुम क्षत्रिय तथा वीर पुरुष कैसे, जो मेरे सामने युद्धार्थी बन कर नहीं आये। यह तुमने क्षत्रियोचित कार्य न कर प्रत्युत क्षत्रियविगर्हित कार्य किया है। अतएव मैं तुम्हे स्त्रीसे भी अधम समझता हूं।' अर्जुनके इस प्रकार तिरस्कार करने पर उलूपी बहुत बिगड़ी। उसने बभ्रुवाहनको अर्जुनके साथ लड़ाई करनेके लिये उसकाया। बभ्रुवाहनने यज्ञीय अश्व पकड़ रखा। इस पर दोनोंमें युद्ध हुआ। बभ्रुवाहनने युद्धमें अर्जुनको धराशायी बना दिया। चित्राङ्गदाको जब यह समाचार मिला तब वह रणाङ्गणमें आई और उलूपी तथा बभ्रुवाहनको कोश कर रोने लगी। उसने स्वामीके साथ सती होनेका निश्चय कर लिया। पिता और माता के शोकसे बभ्रुवाहनने भी म्रियमाण हो प्रत्योपवेशन ठान दिया।

उलूपीने इन लोगोंको प्राणत्यागकी चेष्टा देख नागलोकस्थित सञ्जीवनीमणिका ध्यान किया। ध्यान करते ही वह मणि उलूपीके पास आ गई। नागकुमारी उलूपीने उस मणिको ले कर बभ्रुवाहनको पुकारा, 'वत्स! शोक छोड़ दे। तुम अर्जुनको पराजित नहीं कर सकते। इन्द्रादि देव भी उन्हें पराजय न कर सके हैं। तुम्हारे और पिता अर्जुनके प्रेम देखनेके लिये मैंने यह मायाजाल रचा था। अर्जुन तुम्हारा पराक्रम जाननेके लिये ही यहां आये थे। मैंने भी इसीलिये तुम्हें युद्ध करनेके लिये उभाड़ा था। अतएव तुम्हें इस विषयके पापकी अणुमात्र आशङ्का न करनी चाहिये। मैंने यह दिव्य मणि ला दी है, इस मणिको ले जाओ और अर्जुनके वक्षस्थल पर रख दो। धनञ्जय मणिके रखने मात्रसे चट उठ खड़े होंगे। बभ्रुवाहनने वह मणि अर्जुनकी छाती पर रख दी। सुप्तोत्थितके समान अर्जुन उठ खड़े हुये। आकाशसे

इस प्रकार लगा होता है, कि महजमें खूब अच्छी तरह घूम सके। जिस स्थान पर छेद करना होता है उस स्थान पर नुकीला कोना लगा कर और दस्तेके सहारे उसे दबा कर रस्सीकी गराडियोंको सहायतासे अथवा और किसी प्रकार खूब जोर जोरसे घुमाते हैं जिससे वहां छेद हो जाता है।

बरमा—ब्रह्मदेश देखो।

बरमी (हिं० पु०) १ ब्रह्मवासी, बरमाका रहनेवाला। (स्त्री०) २ ब्रह्मदेशकी भाषा। (वि०) ३ ब्रह्मदेश सम्बन्धी, बरमा देशका। (स्त्री०) ४ गीली नामका पेड़।

बरम्हपोट (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी नाव जो प्रायः ४० हाथ लम्बी होती है। इस नावका पिछला भाग अपेक्षा कृत चौड़ा होता है और पीछेकी ओर ऐसा यन्त्र बना होता जिसे बारह आदमी पैरसे चलाते हैं।

बरम्हा—ब्रह्मदेश देखो।

बररे (हिं० पु० स्त्री०) बर्रे देखो।

बरवट (हिं० स्त्री०) तिल्ली नामका रोग। तिल्ली देखो।

बरयल (हिं० पु०) भेड़की एक जाति जो हिमालय पर्वतके उत्तर कुमाँऊसे सिरट तक और कमाऊंसे सिक्किम तक पाई जाती है। यह पहाड़ी भेड़ोंके पांच भेदोंमेंसे एक है। इसके नरके सिर पर मजबूत सींग होते हैं और वह लड़ाईमें खूब टक्कर लगाता है। इसका ऊन यद्यपि मैदानकी भेड़ोंसे अच्छा होता है तो भी मोटा होता है और कम्बल आदि बनानेके काममें ही आता है। इसका मांस खानेमें रूखा होता है।

बरवा (हिं पु०) बरवै देखो।

बरवासागर—मध्यभारतके इन्दोर राज्यान्तर्गत निमार जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २२।७ उ० और देशा० ७६।३ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या छह हजार से ऊपर है। कहते हैं, कि यह शहर १६७८ ई०में वर्त्तमान जमींदारके पूर्वज राणा सूर्यमल्लने बसाया था। शिवाजी राव होल्करको यह स्थान बड़ा प्रिय था, इस कारण उन्हों ने अपने रहनेके लिये यहां एक सुन्दर राजप्रासाद बनवाया था। शहरमें एक सरकारी और स्टेटका डाकघर, एक स्कूल, चिकित्सालय, सराय और एक डाक बंगला है।

बरवासागर—युक्तप्रदेशके झांसी जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २५ २२ उ० और देशा० ७८ ४४ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या छः हजारसे ऊपर है। इसके पास ही एक बड़ा पर्वत है जिसके निम्नमें एक सुन्दर ह्रद है। उक्त पर्वतसे जो जल निकलता है वह इसी ह्रदमें जमा रहता है। १७०५ १७३७ ई०के मध्य ओर्छा राज उदित्‌सिंहने नगरकी शोभा बढानेके लिये उक्त बांध और एक दुर्ग बनवाया था। ख्यातनामा झांसीकी रानी इस दुर्गकी शेष अधिकारिणी थी। अङ्गरेजोंके अधिकारमें आनेसे यह दुर्ग वासनिवासमें परिणत हो गया है। यहांसे तीन मील पश्चिम एक प्राचीन चन्देल मन्दिर है जिसकी देवमूर्त्ति मुसलमानोंसे विध्वस्त हो गई है। शहरमें एक छोटा-सा स्कूल है।

बरवै (हिं० पु०) १९ मात्राओंका एक छन्द। इसमें १२ और ७ मात्राओं पर यति तथा अन्तमें जगण होता है। इसे ध्रुव और कुरंग भी कहते हैं।

बरषा (हिं० स्त्री०) १ वृष्टि, पानी बरसना। २ वर्षा काल, बरसात।

बरषासन (हिं० पु०) एक वर्षकी भोजनसामग्री, उतना अनाज जितना एक मनुष्य अथवा एक परिवार एक वर्ष-में खा सके।

बरस (हिं० पु०) बारह महीनों अथवा ३६५ दिनोंका समूह। वर्ष देखो।

बरसगांठ (हिं० स्त्री०) वह दिन जिसमें किसीका जन्म हुआ हो, जन्मदिन। आगरे आदि प्रान्तोंमें प्रत्येक व्यक्तिके घरमें एक तागा रहता है। जिसके नामका वह तागा होता है उसके एक एक जन्मदिन पर एक एक गांठ दे दी जाती हैं। इसीसे जन्मदिनको वर्षगांठ कहते हैं। प्राचीन समयमें भी ऐसी ही प्रथा थी।

बरसना (हिं० क्रि०) १ आकाशसे जलकी बूंदोंका निरन्तर गिरना, मेह पड़ना। २ बहुत अधिक मान संख्या या मात्रामें चारों ओरसे आ कर गिरना, पहुंचना या प्राप्त होना। ३ वर्षाके जलकी तरह ऊपरसे गिरना। ४ ओसाया जाना, डाली होना। ५ खूब प्रकट होना, बहुत अच्छी तरह झलकना।

बरसाइत (हिं० स्त्री०) जेठ बदी अमावस जिस दिन स्त्रियां वट सावित्रीका पूजन करती हैं।

बरसाइन ( हि० स्त्री० ) वह गौ जो हर साल बच्चा दे, प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली गाय।

बरसाऊ ( हि० वि० ) वर्षा करनेवाला।

बरसात ( हि० स्त्री० ) वर्षाऋतु, वर्षाकाल।

बरसाती ( हि० वि० ) १ वर्षा सम्बन्धी, बरसातका। ( पु० ) २ बरसातमें होनेवाला घोड़ोंका स्थायी रोग। ३ एक प्रकारका ढीला कपड़ा जिसे पहन लेनेसे शरीर नहीं भीगता। ४ पैरमें होनेवाली एक प्रकारकी फुंसिया जो बरसातमें होती हैं। ५ चरस पक्षी, चीनी मोर।

बरसाना ( हि० क्रि० ) १ वृष्टि करना, वर्षा करना। २ ओसाना, डाली देना। ३ वर्षाके जलकी तरह लगातार बहुत सा गिराना। ४ अधिक संख्या या मात्रामें चारों ओरसे प्राप्त कराना।

बरसायत ( हि० स्त्री० ) १ शुभ घड़ी, शुभ मुहूर्त्त। २ बरसाइन।

बरसावना ( हि० पु० ) बरसाना देखो।

बरसिंघा ( हि० पु० ) वह बैल जिसका एक सींग खड़ा और दूसरा नीचेकी ओर झुका हो, मैना।

बरसी (हि० स्त्री०) वह श्राद्ध जो किसी मृतकके उद्देश्यसे उसके मरनेकी तिथिसे ठीक एक वर्ष बाद होता है।

बरसू ( हि० पु० ) एक प्रकारका वृक्ष।

बरसोदिया ( हि० पु० ) पूरे साल भरके लिये रखा हुआ नौकर।

बरसौंडी (हि० स्त्री०) वार्षिक कर, प्रति वर्ष लिया जाने वाला कर।

बरहटा (हि० पु०) बड़ी कटाई, कड़वा भटा। संस्कृतमें इसे वार्त्ताकी, बृहती, महती, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूल कटा और क्षुद्रभण्टा कहते हैं।

बरह ( हि० पु० ) वृक्ष आदिका पत्ता।

बरहना ( फा० वि० ) नग्न, नंगा।

बरहम ( फा० वि० ) १ क्रुद्ध, जिसे गुस्सा आ गया हो। २ उत्तेजित, भड़का हुआ।

बरहा ( हि० पु० ) १ खेतोंमें सिंचाईके लिये बनी हुई छोटी नाली। २ मोटा रस्सा।

बरही ( हिं० पु० ) १ मयूर, मोर। २ मुरगा। ३ अग्नि, आग। ४ साही नामका जंगली जंतु। ( स्त्री० ) ५ प्रसूताका वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो सन्तान भूमिष्ठ होनेके बारहवें दिन होती हैं। ६ सन्तान भूमिष्ठ होनेके दिनसे बारहवां दिन। ७ पत्थर आदि भारी बोझ उठानेका मोटा रस्सा। ८ जलानेकी लकड़ीका भारी बोझ, ईन्धनका बोझ।

बरहौं ( हि० पु० ) सन्तान भूमिष्ठ होनेके दिनसे बारहवाँ दिन। इसी दिन नामकरण होता है।

बराइल ( हि० पु० ) १ जहाजमें उन रस्सोंमेंसे कोई रस्सा जो मस्तूलको सीधा खड़ा रखनेके लिये उसके चारों ओर ऊपरी सिरेसे ले कर नीचे जहाजके भिन्न भिन्न भागों तक बांधे जाते हैं। २ जहाजमें इसी प्रकारके और कामोंमें आनेवाला कोई रस्सा।

बराड़ा ( हि० पु० ) बरामदा देखो।

बराडल ( हि० पु० ) बराइल देखो।

बराडी ( अ० स्त्री० ) एक प्रकारकी विलायती शराब, ब्राडी।

बरा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका पक्वान्न जो उड़दकी पीसी हुई दालका बना होता है। इसका आकार टिकिया सा होता है। इसे घी या तेलमें पका कर यों ही अथवा दही, इमलीके पानी आदिमें डाल कर खाते हैं। २ भुजदण्ड पर पहननेका एक आभूषण, टाँड।

बराइच—अयोध्याप्रदेशके फैजाबाद विभागान्तर्गत एक जिला। यह युक्तप्रदेशके छोटे लाटके शासनाधीन अक्षा० २७ ४´से २८ २४ उ० तथा देशा० ८१ ३´ से ८२ १३´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २६४० वर्गमील है। यहां घर्घरा और राप्ती नदी बहती हैं। दोनों नदीके मध्यवर्त्ती भूभाग समतल है, इससे प्राय ४० फुट ऊँचा और प्राय १३ मील प्रशस्त है। पूर्वोक्त दो नदियोंके अलावा यहां कोरियाला, मोहन, गीर्वा, सरयू, भक्ला, सिहिया आदि कई एक शाखा नदियां विद्यमान हैं। जलका अभाव नहीं रहनेके कारण यहां सब तरहका अनाज उत्पन्न होता है। इन सब द्रव्योंकी नदी द्वारा दूर दूर देशोंमें रफ्तनी होती है। अलावा इसके चीनी, रुई, तमाकू, अफीम, नील आदि भी बहुतायतसे उपजती है। जिलेके उत्तर प्रायः २५७ वर्गमील वनभूमि

वृटिश-सरकारसे सुरक्षित है। इसमें ३ शहर और १८८९ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या १० लाखसे ऊपर है। स्थानीय प्रवाद है, कि जगत्स्रष्टा ब्रह्माने पवित्रचेता ऋषियोंके ब्रह्माराधनाके लिये इसी स्थानको पसन्द किया था।(१) अयोध्यापति श्रीरामचन्द्रके शासनकालमें यह स्थान उत्तरकोशलके अन्तर्भुक्त था। श्रीरामचन्द्रके पुत्र लव राप्ती नदीके तीरवर्ती श्रावस्ती नगरीका शासन करते थे। शाक्यबुद्धके अभ्युदय पर उत्तरकोशलराज्य बौद्धधर्म की क्रीड़ाभूमि हो गया था। स्वयं बुद्धदेवने इस जिलेके अन्तर्गत कपिलवस्तुमें जन्मग्रहण किया। वे श्रावस्तिमें १६वीं शताब्दीमें ठहरे थे। उनके नवधर्मके प्रभावसे यहां उस समय ब्राह्मण्यधर्मका लोप हो गया था। बुद्धदेव देखो। चीनपरिव्राजक फा हियन यहांके बौद्ध सङ्घारामादिका ध्वंसावशेष देख गये थे। सादेठ नामक ग्राममें भी बहुत सी बौद्धकीर्त्तियोंका निदर्शन पाया जाता है। यहां बुद्धकी माता महामायाकी मूर्त्ति 'सीता माई'के रूपमें पूजी जाती है।

राजपूत जातिके अत्याचारसे निपीड़ित हो भरगण इस जिलेमें आ कर बस गये। धीरे धीरे उन्होंने अपना आधिपत्य फैला कर इस पर अपना दखल जमाया।

१०३३ ई०में सैयद सलार मसाउदने बराइच पर आक्रमण किया। युद्धमें वे राजपूतोंसे पराजित और निहत हुए। इनकी कब्र भी यहीं पर हुई। उनका समाधि मन्दिर मुसलमानोंके निकट तीर्थक्षेत्र समझा जाता है। सुलतान समसुद्दीन अल्तमसके पुत्र नासिरुद्दीनने १२४६ ई०में सम्राट् होनेके पहले इस जिलेका शासन करते थे। पीछे अनसारी मुसलमानोंने इसके कुछ अंश अधिकृत किये। सम्राट् गयासुद्दीनके अधिकार-कालमें यहां सैयदवंशकी प्रतिष्ठा हुई और भरराजगण निकाल भगाये गये। सम्राट् फिरोजशाहके राजत्व कालमें यहां डकैतोंने भारी उपद्रव मचाया था। वरियाशाह नामक किसी मुसलमान सेनापतिने उनका दमन किया जिससे राज्यमें शान्ति स्थापन हुई। पारितोषिक स्वरूप सम्राट्ने इस प्रदेशका शासनभार उस पर अर्पण किया। इकौना नगरमें उसके वंशधरगण जमींदारके तौर पर गोण्डा और बराइचकी कुछ सम्पत्तिका भोग कर रहे हैं।

सूर्यवंशीय दो राजपूत भाइयोंने यहां आ कर याम नौतोंके भरसरदारके अधीन नौकरी पकड़ी। काश्मीर प्रदेशके राइक (रैक) नामक स्थानसे आनेके कारण वे तथा उनके वंशधरगण राइकवाड़ कहलाने लगे। उनके सुशासनसे भर राज्य उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुंच गया। पीछे भर राजा वृटिश सरकारसे कुछ सम्बन्ध तोड़ देनेके लिये तैयार हो गये। उन्हों ने यह सुख भोग बहुत दिन करने भी न पाया था, कि भर लोगों ने उनकी हत्या कर अपना आधिपत्य फैलाया। यह घटना १४०६ ई०में घटी थी।

१५वीं शताब्दीके शेष भागमें इसका पूर्वभाग जनपारके (वरियाशाहके वंश), दक्षिण अनसारीके, पश्चिम राइकवाड़ और उत्तरांश स्वाधीन पार्वतीय सरदारोंके अधिकारमें था। बहोल लोदीके भाजे कालापहाड़के शासनकालमें यह स्थान दिल्लीकी अधीनता स्वीकार करनेको बाध्य हुआ। अकबरशाहके राजत्वकालमें (१५५६-१६०५) यह स्थान सरकार बराइच कहलाता था। परवर्त्तीकालमें राइकवाड़ और जनवारो ने युद्ध विग्रहादि द्वारा अपनी सम्पत्ति बढ़ानेकी कोशिश की। सम्राट् शाहजहान् अपने कर्मचारीको उत्तरका ननपारा राज्य प्रदान किया। यह स्थान सारे अयोध्याप्रदेशमें श्रेष्ठ गिना जाता है।

१७२४ ई०में अयोध्याके नवाब वजीरगण दिल्लीका अधीनता-शृङ्खल तोड़ कर स्वाधीन भावसे राज्य करने लगे। छठें नवाब सयादत् खांने अर्थ द्वारा राजस्व संग्रह करके अपने राजकोषको बढ़ाया। १८०५-१८१६ ई०में बलकीदास और उनके लड़के राय अमरसिंहके शासन कालमें बराइच राज्यकी बड़ी उन्नति हुई। पीछे हाली अली खांके कुशासनसे राज्य भरमें अशान्ति फैल गई। १८४६-४९ ई०में रघुबर दयालने राजस्व संग्रहका भार ग्रहण किया। उनके शासनसे बराइचमें घोर अत्याचार शुरू हो गया। १८५६ ई०में अयोध्याके अंगरेजी शासनमें

(१) प्रवाद है, कि ब्रह्मा के इच्छासे यह स्थान यागयज्ञके लिये निर्दिष्ट हुआ, इस कारण ब्रह्म-इच्छ या ब्रह्म इच्छसे इसका बराइच नाम पड़ा है।

आने पर यहांका दु ख जाता रहा। गदरके समय जिन्होंने इस महाविप्लवमें साथ दिया था, शान्ति स्थापित होनेके बाद उन लोगोंको अधिकृत सम्पत्ति राजभक्त प्रजाको दे दी गई। जिले भरमें ११६ स्कूल और १४ अस्पताल हैं।

२ उक्त जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २७ १६´से २०° ५६´उ० तथा देशा० ८१° २७´से ८२ १३ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ११८ वर्गमील और जन सख्या प्रायः ३७७२८८ है।

३ उक्त उपविभागके अन्तर्गत एक परगना। भूपरिमाण ३२१ वर्गमील है। बराइच नगरके गोण्डा, इकौना, भिगा और नानापाडा आदि स्थानोंमें गाडी जाने आनेका रास्ता गया है। फर्णेलगञ्ज और नवावगञ्ज यहांका प्रधान वाणिज्यस्थान है।

४ उक्त जिलेका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० २७ ३४´उ० तथा देशा० ८१ ३६´ पू०के मध्य बहरमघाटसे नेपालगञ्ज जानेके पथ पर अवस्थित है। जनसख्या २७ हजारसे ऊपर है। म्युनिस्‌पलिटी और पुलिसकी देखरेखमें रहनेके कारण राजपथादिमें रोशनीका अच्छा प्रवन्ध है। जल निकलनेके लिये ड्रेन भी हैं। घघरा नदीके किनारे गवर्मेण्टकी अट्टालिका और अगरेजोंका आवास है। यहांका देखनेयोग्य भवन मसाउदका समाधिमन्दिर ही है। नवाव आसफ उद्दौलाका दौलतखाना १६२० ई०में स्थापित हुआ है। मुल्तानवासी मुसलमान साधुका मन्दिर और मसाउदके अनुचरोंकी कब्र उल्लेखयोग्य है। शहरमें कुल मिला कर ११ स्कूल हैं।

बराइल—आसाम प्रदेशके उत्तर कछाडके अन्तर्गत एक पर्वतमाला। यह खासी, नागा और मणिपुर पर्वतमालाके साथ सयोजित है। इसकी ऊँचाई कहीं २५०० फुट और कहीं ५००० फुट है। यह पर्वत वनमालासे समाच्छादित है। इसकी एक शाखासे बराकनदी निकली है।

बराई (हिं० स्त्री०) बडाई देखो।

बराक (हिं० पु०) १ शिव। २ युद्ध, लडाई। (वि०) ३ शोचनीय, सोच करनेके योग्य। २ अधम, पापी। ४ वापुरा, बेचारा।

बराक (बारक) आसामकी उपत्यकाभूमिमें प्रवाहित एक नदी। कछाड पर्वतके अङ्गामी-नागाओंके अधिकृत कोहिमारके निकट इसका उद्गम-स्थान है। पीछे कछाड और श्रीहट्ट जिलेमें प्रवाहित हो यह मेघनामें मिलती है। तिपाईमुख ग्रामके निकट इसको तिपाई शाखा अवस्थित है। वङ्गा ग्रामके निकट यह दो शाखाओंमें विभक्त होती है। उत्तरमें सुरमा और दक्षिणमें कुशीयारा नामसे बहती है। उत्तरकछाड, खासिया, जयन्ती, लुशाई, त्रिपुरा पर्वतोंसे अनेक छोटी छोटी नदियां इसमें आ मिली हैं। उनमेंसे जिरी, चिरी, मधुरा, जातिङ्गा, लुवा, चेङ्गरखाल, पैन्दा, सोनाई काटाखाल लङ्गाई मनु और खोयाकी शाखा प्रधान हैं। बराक और उसकी शाखायों में सदा ही जल रहता है। पूर्व वङ्गीय बेलको और इण्डिया जेनरल स्टीमनभिगसन कम्पनीके दो ष्टीमर इस नदीकी कुशीयारा और सुरमा नामकी शाखायों में चलते हैं। राहमें शिलचर, शियालटेक, श्रीहट्ट, छातक, कौंसुयामुख, फेचूगञ्ज और वालगञ्ज प्रभृति नगर पडते हैं। इस प्रदेशके द्रव्य इसी नदीसे मेघनातीरवर्ती भैरव-बाजारमें लाये जाते हैं।

बराक्‌जई—प्रसिद्ध दुरानी नामक एक अफगान जातिकी शाखा। दुरानियोंमें यह बराक्‌जई जाति एक समय कांधार नगरमें विशेष क्षमताशाली हो गयी थी। अहमदशाह अवदाली और जमानशाहके राजत्वकालमें पायदा खाँ बराक्‌जई कांधार राजसिंहासनके प्रधान मन्त्री थे। जमानशाहकी रणजित्‌सिंहके साथ सन्धि होने पर पायदा चिढा और शुजा उल मुल्कको राजसिंहासन देनेके लिये षड्‌यन्त्र रचने लगा। पश्चात्‌ यह जमानतशाहके द्वारा मारा गया। उसके पुत्र फते खाँने जमानशाहको राज्यच्युत कर महमूदको काबुलके सिंहासन पर बैठाया। पीछे उन्होंने पेशावरकी सुजा लजाई नामकी जातिको परास्त किया। १८०१ ई०में नेपोलियन और रूसके राजा आलेकसन्दरके आक्रमणके भयसे अङ्गरेजोंने सुजाके साथ सन्धि कर ली। इसके पहले ही सुजा महमूदको बन्दी कर चुके थे। फते खाँने फिरसे सुजाको परास्त कर महमूदको काबुलके सिंहासन पर बिठाया और आप राजमन्त्री हुए। वह

बराकज़ई जातिको सन्तुष्ट करनेके लिये विशेष वदान्यता दिखलाने लगा। अतएव उसका दर्प दिन दिन बढ़ने लगा। महमूद अपने भृत्यको इतना क्षमताशाली देख कर भी कुछ नहीं कर सके। वे फते खाँके अधीन बिलकुल रहना नहीं चाहते थे। पारसराजके हीरट अधिकार करने पर १८१६ ई०में महमूदने उसे वहां भेजा। इस युद्धमें भी फते खाँने विशेष दक्षतासे पारस्य सैन्यको परास्त किया। उसका प्रभाव देख महमूद और उसका पुत्र कामरान जलने लगे। १८१८ ई०में वृद्ध वजीरको छलसे पकड़ कर उसकी आँखोंमें अग्निशलाका घुसेड़ दी। इस निष्ठुर आचरणसे बराकज़ई जातिके सर्दारोंने विद्रोही हो, महमूद और कामरानका हीरट तक पीछा किया और वहीं मार डाला। गजनीके पास दोस्त महम्मदके साथ महमूदकी मुठभेड़ हुई थी। फते खाँके हत्याका प्रतिशोध ले कर बराकज़ई सर्दार दोस्त महम्मदके साथ मिल १८२३ ई०में काबुल नगर पर अधिकार जमाया और उनके भाई शेर दिल वहांके राजा हुए। इस प्रकार दुरानी वंशकी सिद्दोजाई शाखाके अवसान होने पर बराकज़ई जातिने अफगान राज्य पर प्रतिष्ठा प्राप्त की। १८३४ ई०में पारससेनापति अब्बास मिर्जाके हीरट पर आक्रमणसे राज्यमें गड़बड़ी मची। यह सुयोग देख सुजाने काबुल पर आक्रमण कर दिया; किंतु दोस्त महम्मद और उनके भाई कुहन्दिलसे पराजित हो उसने खेलात नासिर खाँका आश्रय लिया। कान्धार युद्धमें विजयी होनेसे बराकज़ई जातिका प्रभाव और भी बढ़ गया। सर्दार दोस्त मुहम्मदने लार्ड आकलैण्डके सुशासनसे भीत हो १८३१ ई०में रूसराजसे मित्रता कर ली। इसी समय अलेक्जेंडर बार्नेस दूतके रूपमें काबुल राजसभामें उपस्थित हुये। दोस्त महम्मदकी इच्छा रहने पर भी रूसदूत भिटकोभिचकी प्ररोचनासे अङ्गरेजोंके साथ मित्रता न कर सके। इस पर अंग्रेजोंने अपनेको अपमानित समझ शाह सुजा उल्-मुल्कको अफगान राज्यका यथार्थ उत्तराधिकारी बना युद्धके लिये घोषणा कर दी। इसी अवसर पर सुजाने भी रणजित्सिंहको भूमिदानसे सन्तुष्ट कर १८३९ ई०में अंगरेजी सेनादल ले कर काबुलके सिंहासन पर अधिकार जमाया। दोस्त मुहम्मद अंगरेजोंके यहां वेलामोंमें नजरबन्द हुए।

बराकर—१ बङ्गालकी एक नदी। यह छोटानागपुरके अधित्यका प्रदेशसे निकल कर हजारीबाग, मानभूमी होती हुई शङ्कतोरिया ग्रामके निकट दामोदरसे मिलती है।

२ उक्त नदीका मुहाना भी बराकर कहलाता है। यहां कोयलेकी एक खान है। इष्ट इण्डिया रेलवेका एक स्टेशन रहनेसे कोयलेके वाणिज्यमें बहुत सुभीता हो गया है। यहां राजा हरिश्चन्द्रका प्रतिष्ठित एक मन्दिर है। इसके अलावा विष्णुके नाना अवतारोंकी मूर्तियोंसे शोभित और भी कितने मन्दिर हैं। इसके ३ कोस उत्तर कल्याणेश्वरीका मन्दिर या देवी स्थान है। उस मन्दिरमें कल्याणेश्वरी देवीमूर्त्ति प्रतिष्ठित है। यहांकी एक शिलालिपिमें पञ्चकोटके एक राजाका नाम पाया जाता है। कल्याणेश्वरी मन्दिरके सामनेवाले शिलालेखमें "श्रीश्री कल्याणेश्वरीचरणपरायण श्रीयुक्त देवनाथ देवशर्मा" ऐसा लिखा है। मूल मन्दिरके पार्श्वदेशमें और भी कितने ही मन्दिर देखे जाते हैं।

इस देवीमूर्त्तिके स्थापनके विषयमें अनेक प्रवाद प्रचलित हैं। एक समय किसी रोहिणीवासी ब्राह्मणने सम्मुख नालेमें एक रत्नालङ्कारविभूषित हाथ ऊपर उठा हुआ देखा। उसने पञ्चकोटके राजा कल्याणसिंहके पास आ कर इसकी खबर दी। देवीके स्वप्नादेशके अनुसार राजाने उस प्रस्तरको जलसे निकाल देवीमूर्त्ति स्थापन कर दी। और भी सुना जाता है, कि मल्लराज कन्या कल्याणदेवी अपने मैकेसे पितृकुल देवीको ले कर ससुराल आ रही थी। देवीने स्वप्नमें बालिकासे कह दिया था, 'यदि तुम मुझे कहीं एक बार जमीन पर रखोगी, तो मैं वहांसे कभी नहीं उठ सकती।' राहमें इसी नदीके किनारे वह बालिका आई और देवीमूर्त्तिको जमीन पर रख कर हाथ पांव धोने लगी। पीछे जब वह उठाने आई, तब मूर्त्ति टससे मस न हुई। यह देख कर कल्याणदेवीने उसी जगह एक मन्दिर बनवा दिया।

बरामति—रङ्गपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

बरागाई—छोटानागपुरके अन्तर्गत एक गण्डशैल। यह समुद्रपृष्ठसे ३४४५ फुट ऊँचा है।

बरागाँव—युक्तप्रदेशके बलिया जिलान्तर्गत एक नगर

यह अक्षा० २५°४५´ ४´´ उ० और देशा० ८४° २´३६´´ पू०के मध्य अवस्थित है। चितकिरोक्पुर देखो।

बरागाँव—अयोध्याप्रदेशके सीतापुर जिलान्तर्गत एक नगर।

बराडी ( हि० स्त्री० ) बरार और खानदेशकी रुई।

बरात (हि० स्त्री०) १ वर पक्षके लोग जो विवाहके समय वरके साथ कन्यावालोंके यहां जाते हैं, जनेत। २ उन लोगोंका समूह जो मुरदेके एक साथ श्मशान तक जाते हैं। ३ कहीं एक साथ जानेवाले बहुतसे लोगोंका समूह।

बराती ( हि० पु० ) १ विवाहमें वर पक्षकी ओरसे सम्मिलित होनेवाला। २ शवके साथ श्मशान तक जानेवाला।

बरातेही—बङ्गालके कटकजिलान्तर्गत अमिया पर्वतमालाका सर्वोच्च शृङ्ग। इस पर्वतके निम्नदेशमें स्थानीय पूर्वतन किसी सामन्त राजधानीका ध्वंसावशेष इधर उधर पड़ा है।

बरानकोट (अं० पु०) १ वह कड़ा कोट या लबादा जो जाड़े या बरसातमें सिपाही लोग अपनी वर्दीके ऊपर पहनते हैं। २ ओवरकोट देखो।

बराना ( हि० क्रि० ) १ प्रसङ्ग पड़ने पर भी कोई बात छोड़ कर और और बातें कहना। २ रक्षा करना, हिफाजत करना। ३ खेतोंमेंसे चूहों आदिको भगाना। ४ जान बूझ कर अलग करना, बचाना। ५ देख देख कर अलग करना, छांटना। ६ सिंचाईका पानी एक नालीसे दूसरी नालीमें ले जाना। ७ खेतोंमें पानी देना।

बराबर ( फा० वि० ) १ मान, मात्रा, संख्या, गुण, महत्त्व, मूल्य आदिके विचारसे समान, तुल्य, एक सा। २ समान पद या मर्यादायुक्त। ३ जैसा चाहिये वैसा, ठीक। जिसकी सतह ऊँची नीची न हो। ( क्रि० वि० ) ५ सर्वदा, हमेशा। ६ साथ। ७ निरन्तर, लगातार। ८ एक पंक्तिमें, एक साथ।

बराबरी ( हि० स्त्री० ) १ समानता, तुल्यता। २ सादृश्य, सदृशता। मुकाबला, सामना।

बरामद ( फा० वि० ) १ जो बाहर निकला हुआ हो, बाहर आया हुआ। २ खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहींसे निकाली जाय। ( स्त्री० ) ३ वह जमीन जो नदीके हट जानेसे निकल आई हो। ४ निकासी, आमदनी।

बरामदा ( फा० पु० ) १ मकानोंमें वह छाया हुआ तंग और लंबा भाग जो मकानकी सीमाके कुछ बाहर निकला रहता है और जो खंभों, रेलिंग या घुड़िया आदिके आधार पर ठहरा हुआ होता है, बारजा। २ मकानके आगेका वह स्थान जो ऊपरसे छाया या पटा हो पर सामने या तीनों ओर खुला हो, दालान।

बरामीटर (हि० पु०) वैरोमीटर देखो।

बराय ( फा० अव्य० ) निमित्त, वास्ते, लिये।

बरायन ( हि० पु० ) वह लोहेका छल्ला जो ब्याहके समय दूल्हेके हाथमें पहनाया जाता है। इसमें रत्नोंकी जगह गुंजा लगे रहते हैं।

बरार—वेरार देखो।

बरार ( हि० पु० ) १ एक प्रकारका जंगली जानवर। २ वह चन्दा जो गाँवोंमें घर पीछे किया जाता हो।

बरारक ( हि० पु० ) हीरा।

बरारी ( हि० पु० ) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी जो दो पहरके समय गाई जाती है। कोई कोई इसे भैरव रागकी रागिनी मानते हैं।

बरारी—भागलपुर जिलेके भागलपुर शहरसे ४ मील ईशान कोणमें गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित एक कसबा। यहांके जमींदार उच्च-कुलोद्भव मैथिल ब्राह्मण हैं जो ठाकुर कहलाते हैं।

विशेष विवरण बारारी शब्दमें देखो।

बरारी—सिन्धुप्रदेशके अहमदाबाद नगरके समीप एक प्राचीन ग्राम। यहां राजा चोवनाथकी राजधानी थी। आज भी उसका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

बरारीश्याम ( सं० पु० ) सम्पूर्ण जातिका एक संकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

बराव ( हि० पु० ) निवारण, बचाव।

बराबर—गया जिलेके अन्तर्गत एक शैलमाला। यह अक्षा० २५°१´ से २५° २´३´´ उ० तथा देशा० ८५° ३´३०´´ से ८५° ७´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहांका प्राचीन ध्वंसावशेष प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्सु स्थपतिविद्याविद् पण्डितोंका

बराकजई जातिको सन्तुष्ट करनेके लिये विशेष यत्नाग्रता दिखलाने लगा। अतएव उसका दल दिन दिन बढ़ने लगा। महमूद अपने भृत्यको इतना क्षमताशाली देख कर भी कुछ नहीं कर सके। वे फते खाँके अधीन बिलकुल रहना नहीं चाहते थे। पारसराजके हीरट अधिकार करने पर १८१६ ई०में महमूदने उसे वहां भेजा। इस युद्धमें भी फते खाँने विशेष दक्षतासे पारस्य सैन्यको परास्त किया। उसका प्रभाव देख महमूद और उसका पुत्र कामरान जलने लगे। १८१८ ई०में वृद्ध वजीरको छलसे पकड़ कर उसकी आँखोंमें अग्निशलाका घुसेड़ दी। इस निष्ठुर आचरणसे बराकजई जातिके सर्दारोंने विद्रोही हो, महमूद और कामरानका हीरट तक पीछा किया और वहीं मार डाला। गजनीके पास दोस्त महम्मदके साथ महमूदकी मुठभेड़ हुई थी। फते खाँके हत्याका प्रतिशोध ले कर बराकजई सर्दार दोस्त महम्मदके साथ मिल १८२३ ई०में काबुल नगर पर अधिकार जमाया और उनके भाई शेर दिल वहांके राजा हुए। इस प्रकार दुर्रानी वंशकी सिद्दोजाई शाखाके अवसान होने पर बराकजई जातिने अफगान राज्य पर प्रतिष्ठा प्राप्त की। १८३४ ई०में पारस-सेनापति अब्बास मिर्जाके हीरट पर आक्रमणसे राज्यमें गड़बड़ी मची। यह सुयोग देख सुजाने काबुल पर आक्रमण कर दिया; किन्तु दोस्त महम्मद और उनके भाई कुन्दिलसे पराजित हो उसने सिन्धके मासिर खाँका आश्रय लिया। कान्धार युद्धमें विजयी होनेसे बराकजई जातिका प्रभाव और भी बढ़ गया। सर्दार दोस्त मुहम्मदने लार्ड आकलैण्डकी सुशासनासे भीत हो १८३१ ई०में रूसराजसे मित्रता कर ली। इसी समय अलेकजेण्डर बार्नेस दूतके रूपसे काबुल राजसभामें उपस्थित हुये। दोस्त महम्मदकी इच्छा रहने पर भी रूसदूत भिटकोभिचकी प्ररोचनासे अङ्गरेजोंके साथ मित्रता न कर सके। इस पर अंग्रेजोंने अपनेको अपमानित समझ इस पर सुजा उल-मुल्कको अफगान राज्यका यथार्थ उत्तराधिकारी बना युद्धके लिये घोषणा कर दी। इसी अवसर पर सुजाने भी रणजित् सिंहको भूमिदानसे सन्तुष्ट कर १८३९ ई०में अंगरेजी सेनाद्वारा लेकर काबुलके सिंहासन पर अधिकार जमाया। दोस्त मुहम्मद अंगरेजोंके यहां बेतनभोगी नजरबन्दी हुए।

बराकर—१ बङ्गालकी एक नदी। यह छोटानागपुरके अधित्यका प्रदेशसे निकल कर हजारीबाग, मानभूमि होती हुई मह्लनोरिया ग्रामके निकट दामोदरसे मिलती है।

२ उक्त नदीका मुहाना भी बराकर कहलाता है। यहां कोयलेकी एक खान है। ईष्ट इण्डिया रेलवेका एक स्टेशन रहनेसे कोयलेके वाणिज्यमें बहुत सुभीता हो गया है। यहां राजा हरिश्चन्द्रका प्रतिष्ठित एक मन्दिर है। इसके अलावा विष्णुके नाना अवतारोंकी मूर्तियोंसे शोभित और भी कितने मन्दिर हैं। इसके ३ कोस उत्तर कल्याणेश्वरीका मन्दिर या देवी स्थान है। उस मन्दिरमें कल्याणेश्वरी देवीमूर्त्ति प्रतिष्ठित है। यहांकी एक शिलालिपिमें पञ्चकोटके एक राजाका नाम पाया जाता है। कल्याणेश्वरी मन्दिरके सामनेवाले शिलालेखमें "श्रीश्री कल्याणेश्वरीचरणपरायण श्रीयुक्त देवनाथ देवशर्मा" ऐसा लिखा है। मूल मन्दिरके पार्श्वदेशमें और भी कितने ही मन्दिर देखे जाते हैं।

इस देवीमूर्त्तिके स्थापनके विषयमें अनेक प्रवाद प्रचलित हैं। एक समय किसी रोहिणीवासी ब्राह्मणने सम्मुख नालेमें एक रत्नालङ्कारविभूषित हाथ ऊपर उठा हुआ देखा। उसने पञ्चकोटके राजा कल्याणसिंहके पास जा कर इसकी खबर दी। देवीके स्वप्नादेशके अनुसार राजाने उस प्रस्तरको जलसे निकाल देवीमूर्त्ति स्थापन कर दी। और भी सुना जाता है, कि बङ्गराज कन्या कल्याणदेवी अपने मैकेसे पितृकुल देवीको ले कर ससुराल आ रही थी। देवीने स्वप्नमें बालिकासे कह दिया था, 'यदि तुम मुझे कहीं एक बार जमीन पर रखोगी, तो मैं वहांसे कभी नहीं उठ सकती।' राहमें इसी नदीके किनारे वह बालिका आई और देवीमूर्त्तिको जमीन पर रख कर हाथ पांव धोने लगी। पीछे जब वह उठाने आई, तब मूर्त्ति टससे मस न हुई। यह देख कर कल्याणदेवीने उसी जगह एक मन्दिर बनवा दिया।

बराबति—रङ्गपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

बरागाई—छोटानागपुरके अन्तर्गत एक गण्डशैल। यह समुद्रपृष्ठसे ३४४५ फुट ऊँचा है।

बरागाँव—युक्तप्रदेशके बलिया जिलान्तर्गत एक नगर

यह अक्षा २५ ४५´ ४˝ उ० और देशा० ८४ २´ ३६˝ पू०के मध्य अवस्थित है। वितकिरोश्पुर देखो।

वरागाँव—अयोध्याप्रदेशके सीतापुर जिलान्तर्गत एक नगर।

वराडी ( हि० स्त्री० बरार और खानदेशकी रुई।

वरात (हि० स्त्री०) १ वर पक्षके लोग जो विवाहके समय वरके साथ कन्यावालोंके यहा जाते हैं, जनेत। २ उन लोगोंका समूह जो मुरदेके एक साथ श्मशान तक जाते हैं। ३ कहीं एक साथ जानेवाले बहुतसे लोगोंका समूह।

वराती ( हि० पु० ) १ विवाहमें वर पक्षकी ओरसे सम्मिलित होनेवाला। २ शवके साथ श्मशान तक जानेवाला।

वरातेही—बङ्गालके कटकजिलान्तर्गत असिया पर्वत मालाका सर्वोच्च शृङ्ग। इस पर्वतके निम्नदेशमें स्थानीय पूर्वतन किसी सामन्त राजधानीका ध्वंसावशेष इधर उधर पड़ा है।

वरानकोट (अ० पु०) १ वह कड़ा कोट या लवादा जो जाड़े या बरसातमें सिपाही लोग अपनी वर्दीके ऊपर पहनते हैं। २ ओवरकोट देखो।

वराना ( हि० क्रि०) १ प्रसङ्ग पड़ने पर भी कोई बात छोड़ कर और और बातें कहना। २ रक्षा करना, हिफाजत करना। ३ खेतोंमेंसे चूहों आदिको भगाना। ४ जान बूझ कर अलग करना, बचाना। ५ देख देख कर अलग करना, छांटना। ६ सिंचाईका पानी एक नालीसे दूसरी नालीमें ले जाना। ७ खेतोंमें पानी देना।

वरावर ( फा० वि० ) १ मान, मात्रा, संख्या, गुण, महत्व, मूल्य आदिके विचारसे समान, तुल्य, एक सा। २ समान पद या मर्यादायुक्त। ३ जैसा चाहिये वैसा, ठीक। जिसकी सतह ऊँची नीची न हो। ( क्रि० वि० ) ५ सर्वदा, हमेशा। ६ साथ। ७ निरन्तर, लगातार। ८ एक पंक्तिमें, एक साथ।

वरावरी ( हि० स्त्री० ) १ समानता, तुल्यता। २ सादृश्य, सदृशता। मुकावला, सामना।

वरामद ( फा० वि० ) १ जो बाहर निकला हुआ हो, बाहर आया हुआ। २ खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहींसे निकाली जाय। ( स्त्री० ) ३ वह जमीन जो नदीके हट जानेसे निकल आई हो। ४ निकासी, आमदनी।

वरामदा ( फा० पु० ) १ मकानोंमें वह छाया हुआ तंग और लंबा भाग जो मकानकी सीमाके कुछ बाहर निकला रहता है और जो खंभों, रेलिंग या घुड़िया आदिके आधार पर ठहरा हुआ होता है, बारजा। २ मकानके आगेका वह स्थान जो ऊपरसे छाया या पटा हो पर सामने या तीनों ओर खुला हो, दालान।

वरामीटर (हिं० पु०) बैरोमीटर देखो।

वराय ( फा० अव्य० ) निमित्त, वास्ते, लिये।

वरायन ( हिं० पु० ) वह लोहेका छल्ला जो ब्याहके समय दूल्हेके हाथमें पहनाया जाता है। इसमें रत्नोंकी जगह घुंघरू लगे रहते हैं।

वरार—बेरार देखो।

वरार ( हिं० पु० ) १ एक प्रकारका जंगली जानवर। २ वह चन्दा जो गाँवोंमें घर पीछे किया जाता हो।

वरारक ( हिं० पु० ) हीरा।

वरारी ( हिं० पु० ) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी जो दो पहरके समय गाई जाती है। कोइ कोई इसे भैरव रागकी रागिनी मानते हैं।

वरारी—भागलपुर जिलेके भागलपुर शहरसे ४ मील ईशान-कोणमें गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित एक कसबा। यहांके जमींदार उच्च-कुलोद्भव मैथिल ब्राह्मण हैं जो ठाकुर कहलाते हैं।

विशेष विवरण बारारी शब्दमें देखो।

वरारी—सिन्धुप्रदेशके अहमदाबाद नगरके समीप एक प्राचीन ग्राम। यहां राजा चोवनाथकी राजधानी थी। आज भी उसका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

वरारीश्याम ( स० पु० ) सम्पूर्ण जातिका एक संकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

वराव ( हि० पु० ) निवारण, बचाव।

वरावर—गया जिलेके अन्तर्गत एक शैलमाला। यह अक्षा० २५ १´ से २५ २´ ३´ उ० तथा देशा० ८५ ३´ ३०˝ से ८५ ७´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहांका प्राचीन ध्वंसावशेष प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्सु स्थपतिविद्याविद् पण्डितोंका

आन्दका पदार्थ है। इसके पास ही पटना गया रेलपथका बेला नामक स्टेशन है। इस पर्वतके सर्वोच्च शिखर पर सिद्धेश्वर नामक प्राचीन मन्दिर प्रतिष्ठित है। निवाज पुरके असुरान बाणने यह मन्दिर बनवाया था। स्थानीय प्रवाद है, कि उस असुरराजने श्रीकृष्णके साथ युद्ध किया था। प्रति वर्षके भाद्रमासमें यहां एक मेला लगता है। पर्वतके दक्षिणतट पर नाना देवमूर्त्तियां सुशोभित देखी जाती हैं। यहांके एक पर्वतमें सात गुहाएं हैं जिन्हें लोग 'सातघर' कहते हैं। उस गुहाके निकट पालिभाषामें लिखी हुई जो शिलालिपि पाई गई है उससे जाना जाता है, कि उनमेंसे चार गुहाएं ३५७ ई०सन्‌के पहले बनाई गई थीं। शेष ३ गुहा नागार्जुन पर्वत पर अवस्थित हैं। इसके पास पातालगङ्गा नामक पवित्र प्रस्रवण है। काकदेश नामक शिखरके निम्नभागमें एक प्रकाण्ड बुद्धमूर्त्ति और इधर उधर पड़ी हुई देवमूर्त्तियां देखी जाती हैं। इस पर्वत पर बहुत पहलेसे बौद्धप्रभाव फैला हुआ था। आचार्य श्रीयोगानन्द, विदेशवासी वसु, योगिकर्ममार्ग भयङ्करनाथ आदि जैन भदन्तगण इस स्थानको देख गये हैं। कुछ जैन यतियोंके रहनेके लिये अशोक और उनके पोते दशरथने यह स्थान निर्दिष्ट कर दिया था। उस समय इस स्थानको लोग 'खलतिक' कहते थे।

६ठीं शताब्दीमें राजा शार्दूल वर्मा और अनन्तवर्माके अधिकार-कालमें यहां ब्राह्मण्य धर्म फैलानेके लिये देव माता कात्यायनी और महादेव आदि हिन्दू देवमूर्त्तियां प्रतिष्ठित हुई। ७वीं शताब्दीमें यह स्थान ब्राह्मणके अधिकारमें रहनेके कारण चीनपरिव्राजक युएनचुवंगने इस स्थानका कोई उल्लेख नहीं किया।

बरास (हिं० पु०) १ एक प्रकारका कपूर जो भीमसेनी कपूर भी कहलाता है। कपूर देखो। २ जहाजमें पालकी वह रस्सी जिसकी सहायतासे पालको घुमाते हैं।

बराह (हिं० पु०) वराह देखो।

बराह (फा० क्रि० वि०) १ के और पर। २ द्वारा, जरियेसे।

बराही (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी घटिया ऊन।

बरिआत (हिं० पु०) बरात देखो।

बरिच्छा (हिं० पु०) बरच्छा देखो।

बरिजानगढ़—पूर्णिया जिलेके कृष्णगञ्ज उपविभागान्तर्गत एक प्राचीन दुर्ग।

बरिदहाटी—२४ परगनेके बारासत उपविभागके अन्तर्गत एक राजस्व विभाग। विष्णुपुर, कामालीपुर, अथगर, मथुरापुर और मासाहाट आदि स्थान इसके अन्तर्गत हैं।

बरिदशाही—दाक्षिणात्यके मुसलमान राजवंश। बाह्मनी राजवंशके अधःपतनके समय दक्षिणभारतमें पांच मुसलमान राजवंश प्रतिष्ठित हुए। बरिदशाही उनमेंसे एक है। इस वंशकी प्रतिष्ठा तुर्की वंशीय कासिम बरिद नामक एक कोतवालने की थी। ये बाहमनी राज २य महमूदके प्रधान मन्त्री थे। १५०४ ई०में उनकी मृत्यु होने पर उनके लड़के अमीर बरिद मन्त्री पद पर अभिषिक्त हुए। इन्होंने बालक बाहमनीराज २य महमूदको अपने हाथका खिलौना बना लिया था। एक एक करके इन्होंने अला उद्दीन वलि उल्ला और कलीम उल्ला आदि तीन व्यक्तियोंको राजतख्त पर बिठाया था। १५२७ ई०में कलीम राज्यच्युत हो कर अहमद नगरको भागा। इस समय अमीर बरिद बाहमनी राजधानीमें ही अपनेको स्वाधीन राजा बतला कर घोषणा कर दी। इस्माइल आदिलशाहने बिदार नगर पा कर उन्होंने यहां राजधानी बसाई। उनके लड़के अलीको बरिदशाह उपाधि थी। उसने अहमद नगर पति बुर्हानशाहके साथ युद्ध कर अपनी सारी सम्पत्ति खो दी।

बिदार या अहमदाबादके बरिदशाही राजवंश।

| | |
|---|---|
| कासिम बरिद | १४९२—१५०४ ई० |
| अमीर बरिद | १५०४—१५४९ „ |
| अली बरिदशाह | १५४९—१५६२ „ |
| इब्राहिम बरिदशाह | १५६२—१५६९ „ |
| कासिम बरिदशाह | १५६९—१५७२ „ |
| मार्जामर्ग बरिदशाह | १५७२—१६०९ „ |
| अमीर बरिदशाह (२य) | १६०९ „ |

बरियारा (हिं० पु०) हाथ सवा हाथ ऊंचा एक छोटा झाड़दार छतनारा पौधा। इसकी पत्तियां तुलसीकी सी पर कुछ बड़ी और नुकीली लम्बी होती हैं। इसमें पीले पीले फूल लगते हैं। जब फूल झड़ जाते हैं

तव कोटोंकेसे बीज पडते हैं। पौधेकी जड दवाके काम में बहुत आती है। इसके पौधेकी छालसे बहुत अच्छा रेशा निकलता है जो अनेक कामोंमें आ सकता है। इस का गुण—कडुवा, मधुर, पित्तातिसार नाशक, वलवीर्य वर्द्धक, पुष्टिकारक और कफरोधविशोधक माना गया है।

वरियाल ( हि ० पु० ) एक प्रकारका पतला वास।

वरिल ( हिं० पु० ) पकौडो या वडेकी तरहका एक पक वान।

वरिला ( हिं० पु० ) सज्जीखार।

वरिष्ठ ( स ० पु० ) वरिष्ठ देखो।

वरिस ( हिं० पु० ) वर्ष, साल।

वरी ( हिं० स्त्री० ) १ गोल टिकिया, वटी। २ वह मेवा या मिठाई जो दूल्हेकी ओरसे दुलहिनके यहा जाती है। ३ उर्द या मूगकी पीठीके सुखाए हुए छोटे छोटे गोल टुकडे जिनमें पेठे या आलूके कतरे भी पडते हैं। ये घीमें तल कर पकाए जाते हैं। ४ एक प्रकारकी घास या कदन्न। इसके दानोंको वाजरेमें मिला कर राज पूतानेकी ओर गरीव लोग खाते हैं। ( फा० वि० ) ५ मुक्त, छूटा हुआ।

वरुआ ( हिं० पु० ) १ ब्रह्मचारी, वटु। २ ब्राह्मणकुमार। ३ उपनयन सस्कार। ४ मूजके छिलकेकी वनी हुई वद्धी जिससे डलिया आदि वनाई जाती हैं।

वरुक ( हिं० अव्य० ) वरु देखो।

वरुना ( हिं० पु० ) भारतवर्षके प्राय सभी प्रान्तोंमें मिलनेवाला एक सीधा सुन्दर पेड। इसकी पत्तिया सालमें एक वार झडती हैं। कुसुम कालमें यह पेड फूलोंसे लद जाता है। फूल सफेद और सुगन्धित होते हैं। लकडी चिकनी और मजबूत होती है जिससे ढोल, कघियाँ और लिखनेकी पट्टिया अच्छी वनती हैं। इसे वन्ना और वलासी भी कहते हैं।

वरुनी ( हि ० स्त्री० ) पलकके किनारे परके वाल।

वरुला ( हिं० पु० ) वरुआ देखो।

वरुवा ( हि ० पु० ) वरुआ देखो।

वरूथ ( हि ० पु० ) वरुथ देखो।

वरुणो—सई और गोमती नदीके वीचकी एक नदी।

वरेंडा ( हि ० स्त्री० ) १ लकडीका वह मोटा गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजनकी लवाईके वल एक पाखेसे दूसरे पाखे तक रहता है। इसीके आधार पर छप्पर या छाजनका ठट्टर रहता है। २ छाजन या खपरैलके वीचो वीचका सवसे ऊ चा भाग।

वरेंडी ( हि स्त्री० ) वरेंडा देखो।

वरे ( हि ० अव्य० ) १ वदलेमें। २ निमित्त, वास्ते, खातिर।

वरेखी ( हि ० स्त्री० ) एक प्रकारका गहना जिसे स्त्रिया भुजा पर पहनती हैं।

वरेजा ( हि ० पु० ) पानका वगीचा, पानका भीटा।

वरेत ( हि ० पु० ) वरेता देखो।

वरेता ( हि ० पु० ) सनका मोटा रस्सा, नार।

वरेठी ( हि ० पु० ) ढोर चरानेवाला, चरवाहा।

वरेन्दा—पञ्जावप्रदेशके वसहर राज्यके अन्तर्गत एक हिमालय गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३१ २३´ उ० तथा देशा० ७८ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। पवर नदी पार कर इस स्थान पर आना पडता है। यह समुद्र पृष्ठसे १५०१५ फुट ऊ चा है।

वरेला—मध्यप्रदेशके मण्डला जिलान्तर्गत वनविभाग। यहा प्राय १० वर्गमील स्थान शालवृक्षसे परिपूर्ण है।

वरेली—युक्तप्रदेशका एक जिला। वेरेली देखो।

वरैंडा ( हि ० पु० ) वरेंडा देखो।

वरो ( हि ० स्त्री० ) १ आलकी जडका पतला रेशा। ( पु० ) २ एक घास जिससे वागोंको हानि पहुचती है।

वरोक ( हि ० पु० ) वह द्रव्य जो कन्यापक्षसे वरपक्षको यह सूचित करनेके लिये दिया जाता है, कि सम्बन्धकी वात चीत पक्की हो गई। इसके द्वारा वर रोका जाता है अर्थात् उससे और किसी कन्याके साथ विवाहकी वातचीत नहीं हो सकती।

वरोठा ( हिं० पु० ) १ ड्योढी, पौरी। २ वैठक, दीवान- खाना।

वरोदमेर—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यान्तर्गत एक नगर।

वरोदा—वडोदा देखो।

वरोधा ( हिं० पु० ) वह खेत या भूमि जिसमें पिछली फसल कपासकी रही हो।

बरोह (हिं० स्त्री०) बरगदकी जटा जो नीचेकी ओर बढ़ती हुई जमीन पर जा कर जड़ पकड़ लेती है।

बरौंछी (हिं० स्त्री०) सोनारोंकी वह कूंची जो सूअरके बालोंकी बनी होती है और जिससे वे गहना साफ करते हैं।

बरौंधा (हिं० पु०) एक प्रकारका गधा जो बहुत ऊँचा या लंबा होता है।

बरौंधा—१ बुन्देलखण्डके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। इसका दूसरा नाम पाथरकछार भी है। भूपरिमाण २१८ वर्गमील है। यह राज्य बहुत प्राचीन कालसे चला आ रहा है। १८०७ ई०में अङ्गरेजोंने राजा मोहनसिंहको सनद दे कर राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित किया। उनके कोई सन्तान न थी। मरते समय वे १८२७ ई०में अपने भतीजे सर्वतसिंहको उत्तराधिकारी बना गये। यद्यपि उस समय गोद लेनेका अधिकार न था, तो भी वृटिश सरकारने सर्वतसिंहको मंजूर कर लिया। १८६२ ई०में उन्हें गोद लेनेकी सनद मिली। उनके बाद रघुवरदयाल-सिंह राजसिंहासन पर बैठे। राजाबहादुर उनकी उपाधि थी। सरकारसे ६ सलामी तोपें मिलती थीं। १८८५ ई०में रघुवरकी मृत्यु हुई। उनके कोई सन्तान न थी, और न उन्होंने किसीको गोद ही लिया था। अतः वृटिश सरकारने ठाकुर प्रसाद सिंहको राज्याधिकारी बनाया। वे ही वर्त्तमान राजा हैं। वृटिशसरकारसे इन्हें ६ सलामी तोपें मिलती हैं।

इस राज्यमें कुल ७० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े पन्द्रह हजारसे ऊपर है। यहांकी भाषा बघेलखण्डी है।

२ उक्त राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २५ ३´ उ० तथा देशा० ८० ३८´ पू० कालिञ्जरसे १० मील उत्तरमें अवस्थित है। जनसंख्या १३६५ है। यहां सिर्फ एक वर्नाक्युलर स्कूल है।

बरौठा (हिं० पु०) बरोठा देखो।

बरौनी (हिं० स्त्री०) बरनी देखो।

बरौरी (हिं० स्त्री०) बरी या बरी नामका पकवान।

बर्क (अ० स्त्री०) १ विद्युत, बिजली। (वि०) २ चालाक, तेज। ३ पूर्णरूपसे अभ्यस्त, झट उपस्थित होनेवाला।

बर्कत (हिं० स्त्री०) बरकत देखो।

बरकुर—मन्द्राज प्रदेशके कनाड़ा जिलेके अंतर्गत एक प्राचीन ग्राम। अभी यह ग्राम ध्वंसावशेषोंमें परिणत हो गया है। १८८१-८४ ई०में पुर्तगीज-लेखक फेरिया-द-सुजाने लिखा है, कि पहले इस नगरमें व्यापार वाणिज्य चलता था। जबसे पुर्तगीजोंने यहां दुर्ग बनाया तभीसे इस स्थानकी श्रीवृद्धिका ह्रास हुआ।

बैन्दूर देखो।

बर्खास्त (हिं० वि०) बरखास्त देखो।

बर्गौरा—मध्यप्रदेशकी भील एजेन्सीके अन्तर्गत एक ठाकुरात सम्पत्ति। यहांके भूमिया सरदार धार और सिन्धियाराजके सामन्त समझे जाते हैं।

बरगढ़—१ मध्यप्रदेशके सम्बलपुर जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २० ४५´ से २१ ४४´ उ० तथा देशा० ८२ ३८´ से ८३ ५४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २१२६ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ... करीब है। १८५७-५८ ई०के गदरमें विद्रोहियोंने यहां आश्रय ग्रहण किया था। इसमें १ शहर और ११७२ ग्राम लगते हैं। देवीगढ़का गोंड दुर्ग यहांके बड़र पर्वत पर अवस्थित है। जिरा नामक महानदीकी एक शाखा तहसीलके मध्य बहती है।

२ उक्त उपविभागका प्रधान नगर। यह अक्षा० २१° २१´ १५´´ उ० और देशा० ८३ ३´ १५´´ पू०के मध्य अवस्थित है। शहरमें एक प्रकारका मोटा कपड़ा तैयार होता है।

बर्गी—बसहर राज्यका एक हिमालयशृङ्ग। यह अक्षा० ३१ १६´ उ० तथा देशा० ७८ १६´ पू०के मध्य अवस्थित है।

बर्गी—महाराष्ट्र-दस्युगण पहले बर्गी नामसे प्रसिद्ध थे। ये लोग हथियारबंद दलोंके साथ नगरमें घुसते और नगरवासियोंका सर्वस्व हरण कर लेते थे।

बर्छा (हिं० पु०) बरछा देखो।

बर्छैत (हिं० पु०) बरछैत देखो।

बर्जना (हिं० क्रि०) बरजना देखो।

बर्बर (स० पु०) पुष्पका उत्पत्तिस्थान।

बर्णात (स० स्त्री०) स्तनका अग्रभाग।

बर्त्तन (हिं० पु०) बरतन देखो।

वर्तना ( हिं० क्रि० ) १ व्यवहार करना, आचरण करना। २ व्यवहारमें लाना, काममें लाना।

वर्त्ताव ( हिं० पु० ) बरताव देखो।

वर्द ( हिं० पु० ) वृष, बैल।

वर्दाश्त ( फा० स्त्री० ) बरदाश्त देखो।

वर्द्धा—मध्यप्रदेशके नामी जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

वर्फ ( फा० स्त्री० ) १ हिम, जमा हुआ जल। जल जम कर कठिन होनेके बाद जो दूसरी अवस्थामें पलट जाता है उसी को वर्फ कहते हैं। ३२° डिग्री फारन हीट उत्तापसे जल जम कर कठिन हो जाता है। कठिनताप्राप्तिके साथ साथ जलमें दो प्रकारके प्राकृतिक परिवर्त्तन होते हैं। पहला श्वेत और कठिनाकार, दूसरा आयतनमें वृद्धि। जलके जमनेसे परिमाणमें वृद्धि होती है। शीतप्रधानदेशोंमें जल का पाइप अकसर फट जाते हैं। उत्तर और दक्षिण मेरु देशमें ऐसे वर्फके अनेक पर्वत देखे जाते हैं। शीतके प्रादुर्भावसे इन स्थानोंकी तुषारराशि कठिन हो रूपान्तरमें प्राप्त होता है हिमालयादि पर्वतोंके हिमानीसिक्त उच्च शिखर पर वर्फ जमती है। कभी कभी वह लुढकती हुई नीचे गिर पड़ती है। कभी कभी उन वर्फ खडोंके साथ साथ शिला-खण्ड भी गिरते देखे जाते हैं। पहिले यह स्वभावजातवर्फ मानवोंके उपकारार्थ व्यवहृत होती थी। आजकल कृत्रिम रूपसे बनायी जाती है जो सब कामोंमें आती है। मत्स्य, मांस जो सहज हीमें नष्ट हो सकता है उनको बचानेके लिये वर्फसे ढक कर रखा जाता है जिससे वे खराब नहीं होते। दूर देशोंसे मत्स्यादि लानेमें यह विशेष उप कारी है। यों तो लवणके योगसे भी ये सब चीजें लाई जा सकती हैं पर उससे उनमें लवणका आस्वाद आ जाता है। वर्फसे ढक कर लानेसे कैसा भी फर्क नहीं पड़ता। ज्वरादि रोगोंमें मस्तिष्कमें दाहके उपस्थित होने पर इसका व्यवहार करनेसे बहुत कुछ शान्ति मिलती है। रक्तस्राव, हिक्कारोग, आहतस्थान और वेदनामें वर्फके सेवनसे बहुत कुछ फायदा देखा जाता है।

वर्फका व्यवहार करनेके लिये नाना द्रव्योंका आवि ष्कार हुआ है। जैसे—आइसमेकर, आइसबैग, गिलास इत्यादि। वर्फमें औरभी एक गुण है कि उष्ण प्रधानस्थान में रखनेसे यह वायुको शीतल कर उस स्थानको भी शीतल करती है। इस सुखका उपभोग करनेके लिये बहुतसे लोग वर्फकी वाटिका और वर्फका शैल बनवाते हैं। वर्फके ऊपर आलोक गिरने पर उसकी आलोक शक्ति बढ़ जाती है। आइसलैण्ड द्वीपका ऊषालोक और उत्तर मेरुकी हिम-ज्योति (*Aurora Borealis*) इसके प्रकृष्ट दृष्टान्त हैं।

२ मशीनों आदिकी सहायता अथवा और कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी। यह साधारणतः बाजारों-में बिकता है और इससे लोग गर्मीके दिनोंमें पीनेके लिये जल आदि ठढा करते हैं। ३ कृत्रिम उपायोंसे जमाया हुआ दूध या फलों आदिका रस। यह प्रायः गर्मीके दिनों-में खानेके काममें आता है।

वर्फिस्तान ( फा० पु० ) वह स्थान जहां बहुत ही वर्फ हो, वर्फका मैदान या पहाड़।

वर्फी ( फा० स्त्री० ) एक मिठाई जो चाशनीके साथ जमे हुए खोए आदिके कतरे काट काट कर बनाई जाती है। बरफी देखो।

वर्वट ( स० पु० ) वर्व अदन्। राजमाष, बोड़ा।

वर्वटी (स० स्त्री०) वर्वट गौरादित्वात् ङीष्। १ वेश्या, रंडी। २ व्रीहिभेद, एक प्रकारका धान।

वर्वर ( स० त्रि० ) भ्रष्ट आचरण किया हुआ, हकलाता हुआ। ३ घुंघरदार, बल खाया हुआ। २ असभ्य, जंगली। ४ अशिष्ट, उद्दण्ड। ( पु० ) ५ वर्णाश्रमविहीन, असभ्य मनुष्य, जंगली आदमी। ६ एक पौधा। ७ कीड़ा। ८ एक प्रकारकी मछली। ९ एक प्रकारका नृत्य। १० अस्त्रोंकी झनकार, हथियारकी आवाज।

वर्वरा ( स० स्त्री० ) १ वर्वटी, वनतुलसी। २ एक प्रकार की मक्खी। ३ एक नदीका नाम।

वर्वरी ( स० स्त्री० ) १ वनतुलसी। २ इंगुर। ३ पीत चन्दन।

वर्रा ( हिं० पु० ) रस्सेकी खिंचाई जो कुआर सुदी चौदस को गाँवोंमें होती है। जो रस्सा खींच ले जाते हैं, वह समझा जाता है, कि वे साल भर कृतकार्य होंगे।

वर्राक (अ० वि०) १ चमकीला, जगमगाता हुआ। २ तेज, वेगवान्। ३ तीव्र। ४ चतुर, चालाक। ५ पूर्ण रूपसे अभ्यस्त, खूब मश्क किया हुआ। ६ धवला, सफेद।

**बर्राना** (हिं० क्रि०) १ व्यर्थ बोलना, फजूल बकना। २ स्वप्नकी अवस्थामें बोलना।

**बर्रे** (हिं० पु०) भिड़ नामका कीड़ा, तितैया।

**बर्रा** (हिं० पु०) एक घासका नाम।

**बर्बकशाह**—बङ्गालके नासिरशाहके पुत्र। इन्होंने १४५८ ई०में बङ्गसिंहासन पर बैठ कर १७ वर्ष तक राज्य किया। विचक्षण दक्षताके साथ राज्यशासन करके इन्होंने अच्छा नाम कमा लिया था। आठ हजार निग्रो और आबिसिनिया देशीय क्रीतदासोंको ला कर इन्होंने अपना सेना दल परिवर्द्धित और सुशिक्षित किया था। ८७९ हिजरी (१४१४ ई०)में इनका देहान्त हुआ।

**बर्वानी**—१ मध्यभारतके भुपावर एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० २१° ३६' से २२° ७' ३० तथा देशा० ७४° २८' से ७५° १६' पू०के मध्य नर्मदानदीके बायें किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण ११७८ वर्गमील है। इसके उत्तर धारराज्य, उत्तर पश्चिम अलीराजपुर, पूर्व इन्दोर राज्यका कुछ अंश और दक्षिण तथा पश्चिममें बम्बईका खान्देश जिला है। यहांके सरदार उदयपुरके शिशोदीय राजपूत वंशके हैं। १४वीं शताब्दीमें इन्होंने यहां आ कर राज्य बसाया। वर्त्तमानराजके ऊर्द्ध्वतन १५वीं पीढ़ीके परशुरामने अपने भुजबलसे दिल्लीश्वरकी सेनाको साम्राज्यसे मार भगाया था। पीछे ये पकड़े गये और दिल्ली ला कर इस्लाम धर्ममें दीक्षित हुए। इसके बाद ये अपने राज्यमें लौट आये सही, पर सिंहासन पर बैठे नहीं। अपने पुत्र भीमसिंहको सिंहासन पर बिठा कर लोकलज्जाके भयसे वे भील हो कर दिन बिताने लगे। उनका 'समाधिस्तम्भ' बर्वानीमें आज भी देखनेमें आता है। इधर उधर पड़े हुए खण्डहर, प्राचीन नगर और ध्वंसावशेषसमूह इस राज्यकी प्राचीन समृद्धिका निदर्शन हैं। विगत शताब्दीमें महाराष्ट्रवादसे इस राज्यकी पूर्व श्री नष्ट हो गई है। १८६० ई०में इस राजके सरदार यशोवन्त सिंहकी असमर्थता देख ब्रिटिश सरकारने १८३३ ई० तक इस राज्यका शासन कार्य अपने तत्त्वावधानमें रखा। पीछे यशोवन्तने पुनः शासनभार ग्रहण कर १८८० ई० तक राज्य किया। उनके मरने पर १८८० ई०में उनके भाई इन्द्रजित्सिंह राजसिंहासन पर बैठे। इनका भी शासनकार्य सराहनीय रहा। १८९४ ई०में उनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके बड़े लड़के रणजित्सिंह सोलह वर्षकी अवस्थामें राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। ये ही वर्त्तमान राणा हैं और राणा इनकी उपाधि है। वृटिश सरकारसे इन्हें ११ सलामी तोपें मिलती हैं।

इस राज्यमें इसी नामका १ शहर और ३३२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ८० हजारसे ऊपर है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ५० हिन्दू हैं और शेषमें मुसलमान तथा ऐनिमिष्ट जाति हैं। यहांकी प्रधान उपज ज्वार, मकई, तिल, चना और गेहूं है। यह राज्य चार परगनोंमें विभक्त है। हर एक परगना कमासदारके अधीन है। राजस्व चार लाखसे ऊपर है। राजाको किसी दरबारमें कर नहीं देना पड़ता। इन्हें गांजा, भांग, अफीम बेचनेका अधिकार है। पहले पहल यहां १८६३ ई०में एक स्कूल खोला गया। पीछे १८९१ ई०में एक दूसरा स्कूल स्थापित हुआ जिस का विक्टोरिया हाइ स्कूल नाम रखा गया। अभी कुल मिला कर १६ स्कूल और ६ चिकित्सालय हैं।

२ उक्त सामन्तराज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २२° २' ३० तथा देशा० ७४° ५४' पू० नर्मदाके बायें किनारे अवस्थित है। जनसंख्या छः हजारसे ऊपर है। कहते हैं, कि १६५० ई०में राणा चन्द्रसिंहने इस नगरको स्थापित किया। नगरसे पांच मीलकी दूरी पर बावनगज नामका एक पहाड़ है जिस पर बहुतसे जैन मन्दिर देखनेमें आते हैं। प्रतिवर्ष जाड़ेकी मासमें मन्दिरके पर्वोपलक्षमें एक मेला लगता है। यहां स्टेट अतिथि भवन, अस्पताल, सरकारी डाकघर और टेलीग्राफ, एक कारागार तथा एक स्कूल है।

**बर्वाला**—१ पञ्जाबप्रदेशके हिसार जिलेकी एक तहसील। भूपरिमाण ५८० वर्गमील है।

२ उक्त जिलेका एक नगर और तहसीलका सदर। इसके चारों ओर पड़ा हुआ ध्वंसावशेष इसकी पूर्व समृद्धिका परिचय देता है। आज भी यहां पहलेके जैसा वाणिज्यव्यवसाय रह गया है। यहांके प्रधान अधिवासी सैयद हैं। ये ही लोग पार्श्ववर्ती भूभागके स्वामी हैं।

**बर्सार**—पञ्जाबके काश्मीरराज्यके अन्तर्गत एक प्राचीन

नगर। यह धर्मपुरी नामसे प्रसिद्ध है और इरावती नदीकी बुधिल शाखाके बाएँ किनारे अवस्थित है। यहां तीन अति प्राचीन मन्दिरोंका भग्नावशेष देखा जाता है। अभी वह मन्दिर वृक्षोंसे ढक गया है। सबसे बड़े मन्दिर में मणिमहेश नामक शिवमूर्त्ति, गणेश, दुर्गा आदि मूर्त्तियां प्रतिष्ठित हैं। शेषोक्त मन्दिर वाल्वम्मदेवके प्रपौत्र मेरुवर्म्मदेवने बनवाया था। इसके अलावा मेरुवम्म द्वारा प्रतिष्ठित एक और गणेशमन्दिर देखा जाता है।

वर्म्मायण—गाजीपुर जिलेके बलिया नगरसे तीन कोस उत्तरमें अवस्थित एक प्राचीन नगर। वर्म्मायणजीके मन्दिरके लिये यह स्थान बहुत कुछ विख्यात है। एक ब्राह्मणरमणी इस मन्दिरकी परिचारिका हैं। मन्दिरमें एक शिलालिपि भी है। डा० कनिंहमने शिलालिपिके समयसे ही उसका प्राचीनत्व स्वीकार किया है। इसके अलावा सैकड़ों बौद्ध सङ्घारामादिका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

वर्चुर (स ० क्ली०) वर्च उरच। १ उदक, जल। २ बब्बूर वृक्ष, बबूलका पेड़।

वर्स (स ० पु०) प्रान्तभाग, अगला हिस्सा।

वर्साना—युक्तप्रदेशके मथुरा जिलान्तर्गत छात तहसील का एक शहर। यह अक्षा० २७ ३६´ उ० तथा देशा० ७७ २३´ पू० मथुरा शहरसे ३१ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या ३५४२ है। यहांके हिन्दुओंका विश्वास है, कि श्रीकृष्णकी स्त्री राधिकादेवीका यह प्रिय वासभवन था। इसके पास ही ब्रह्मा नामका एक पहाड़ है जिसकी चार चोटी पर १८वीं और १९वीं शताब्दीके बने हुए चार भवन शोभा दे रहे हैं। उन चारोंमेंसे प्रधान भवनमें, कहते हैं, कि एक समय भरतपुर, ग्वालियर और इन्दौरराज पुरोहित एक ब्राह्मण रहते थे। अभी यहां जयपुरके महाराजने एक सुन्दर मन्दिर बनवा दिया है। यहां बहुत सी पुण्य सलिला पुष्करिणी भी हैं जिनमें स्नान करनेके लिये दूर दूरके लोग आते हैं।

वर्सात (हि ० स्त्री०) बरसात देखो।

वर्स्व (स ० पु०) दन्तपीठ।

वर्ह (स ० क्ली० ) वर्ह अच्। १ मयूरपुच्छ, मोरका पंख। २ पत्र, पत्ता। ३ परिवार, कुटुम्ब।

वर्हकेतु (स ० पु०) वर्ह केतुश्चिह्न यस्य। नवम मनुके पुत्रभेद।

वर्हण (स ० क्लि०) वर्ह ल्यु। पत्र, पत्ता।

वर्हणा (स ० त्रि०) शत्रु हिंसक, शत्रुका संहार करने वाला।

वर्हणावत् (स ० त्रि०) वर्हणा मतुप्, मस्य व। हिंसा युक्त।

वर्हणाश्व (स ० पु०) राजा निकुम्भके एक पुत्रका नाम।

वर्हभार (स ० पु०) वर्हसमूह, मयूरकी पुच्छराशि।

वर्हस् (स ० क्ली०) वर्ह स्तुती-असुन्। कुश-आस्तरण।

वर्हिस् (स ० पु०) वृंहयति वृहि वृद्धौ इसि, नलोपश्च। ग्रन्थिपर्ण, गठिवनका पेड़।

वर्हिःपुष्प (स० क्ली०) वर्हिर्दीप्तिस्तद्युक्त पुष्पमस्य। ग्रन्थिपर्ण, गठिवनका पेड़।

वर्हिकुसुम (स ० क्ली०) वर्हिवर्हयुक्त कुसुम यस्य। ग्रन्थि पर्ण, गठिवन।

वर्हिण (स ० पु०) वर्हमस्त्यस्येति वर्ह 'फलवर्हाभ्यामिनच्' इति इनच् वा (वहुलमन्यत्रापि। उण् २।४९) इति इनच्। १ मयूर, मोर। (क्ली०) २ तगर।

वर्हिणवाहन (स ० पु०) वर्हिणो मयूरो वाहन यस्य। कार्त्तिकेय।

वर्हिध्वजा (स ० स्त्री०) वर्हो ध्वजो वाहन यस्या। चण्डी।

वर्हिन् (स ० पु०) वर्ह अस्त्यर्थे इनि। १ मयूर, मोर। २ प्राधापुत्र।

वर्हिपुष्प (स ० क्ली०) वर्हि वहशालि पुष्प यस्य। ग्रन्थि पर्ण, गठिवन।

वर्हियान (स ० पु०) वर्ही मयूर यान यस्य। कार्त्तिकेय।

वर्हिज्योतिस् (स ० पु०) वर्हिरिव यस्य ज्योतिरस्य। वह्नि, आग।

वर्हिमुख (स ० पु०) वर्हिरग्निर्मुखं यस्य। देवता। अग्नि देवताओंके मुखस्वरूप हैं, इसीसे अग्निमें होम करनेसे वह देवताओंको प्राप्त होता है।

वर्राना ( हि० क्रि० ) १ व्यर्थ बोलना, फजूल बकना । २ स्वप्नकी अवस्थामें बोलना ।

वर्रे ( हि० पु० ) भिड नामका कीडा, तितैया ।

वर्रो ( हि० पु० ) एक पक्षीका नाम ।

वर्वाकशाह—वङ्गाधिप नासिरशाहके पुत्र । इन्होंने १४५८ ई०में वङ्गसिंहासन पर बैठ कर १७ वर्ष तक राज्य किया । विचक्षण दक्षताके साथ राज्यशासन करके इन्होंने अच्छा नाम कमा लिया था । आठ हजार निग्रो और आबिसिनिया देशीय क्रीतदासोंको ला कर इन्होंने अपना सेनादल परिवर्द्धित और सुशिक्षित किया था । ८७९ हिजरी ( १४१४ ई० ) में इनका देहान्त हुआ ।

वर्वानी—१ मध्यभारतके भुपावर एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य । यह अक्षा० २१° ३६' से २२ ७' उ० तथा देशा० ७४ २८' से ७५ १६' पू०के मध्य नर्मदानदीके बायें किनारे अवस्थित है । भूपरिमाण ११७८ वर्गमील है । इसके उत्तर धारराज्य, उत्तर पश्चिम अलीराजपुर, पूर्व इन्दोर राज्यका कुछ अंश और दक्षिण तथा पश्चिममें बम्बईका खान्देश जिला है । यहांके सरदार उदयपुरके शिशोदीय राजपूत वंशके हैं । १४वीं शताब्दीमें इन्होंने यहां आ कर राज्य बसाया । वर्त्तमानराजके ऊर्द्ध तन १५वीं पीढीके परशुरामने अपने भुजबलसे दिल्लीश्वरकी सेनाको मालवराज्यसे मार भगाया था । पीछे ये पकडे गये और दिल्ली ला कर इसलाम धर्ममें दीक्षित हुए । इसके बाद ये अपने राज्यमें लौट आये सही, पर सिंहासन पर बैठे नहीं । अपने पुत्र भीमसिंहको सिंहासन पर बिठा कर लोकलज्जाके भयसे वे मौन हो कर दिन बिताने लगे । उनका 'समाधि स्तम्भ' अवसगढमें आज भी देखनेमें आता है । इधर उधर पडे हुए भग्नदुर्ग, श्रीहीन नगर और जलनालीसमूह इस राज्यकी प्राचीन समृद्धिका निदर्शन है । विगत शताब्दीमें महाराष्ट्रप्रभाव से इस राज्यकी पूर्व श्री नष्ट हो गई है । १८६० ई०में इस वंशके सरदार यशोवन्त सिंहकी अक्षमता देख ब्रिटिश सरकारने १८७३ ई० तक इस राज्यका शासन कार्य अपने तत्त्वावधानमें रखा । पीछे यशोवन्तने पुनः शासनभार ग्रहण कर १८८० ई० तक राज्य किया । उनके मरने पर १८८० ई०में उनके भाई इन्द्रजित्‌सिंह राजसिंहासन पर बैठे । इनका भी शासनकार्य प्रशंसनीय न था । १८९४ ई०में उनकी मृत्यु हुई । पीछे उनके बडे लडके रणजित्‌सिंह सोलह वर्षकी अवस्थामें राजसिंहासन पर अधिरूढ हुए । ये ही वर्त्तमान राजा हैं और राणा इनकी उपाधि है । वृटिश सरकारसे इन्हें ६ सलामी तोपें मिलती है ।

इस राज्यमें इसी नामका १ शहर और ३३३ ग्राम लगते हैं । जनसंख्या ८० हजारसे ऊपर है जिनमेंसे सैकडे पीछे ५० हिन्दू हैं और शेषमें मुसलमान तथा एनिमिष्ट आदि हैं । यहांकी प्रधान उपज ज्वार, मकई, तिल, चना और गेहूं है । यह राज्य चार परगनोंमें विभक्त है । हर एक परगना कमासदारके अधीन है । राजस्व चार लाखसे ऊपर है । राजाको किसी दरबारमें कर नहीं देना पडता । इन्हें गांजा, भांग, अफीम बेचनेका अधिकार है । पहले पहल यहां १८६३ ई०में एक स्कूल खोला गया । पीछे १८९९ ई०में एक दूसरा स्कूल स्थापित हुआ जिसका विक्टोरिया हाई स्कूल नाम रखा गया । अभी कुल मिला कर १६ स्कूल और ६ चिकित्सालय हैं ।

२ उक्त सामन्तराज्यकी राजधानी । यह अक्षा० २२ २' उ० तथा देशा० ७४ ५४' पू० नर्मदाके बायें किनारे अवस्थित है । जनसंख्या छः हजारसे ऊपर है । कहते हैं, कि १६५० ई०में राणा चन्द्रसिंहने इस राज्यको स्थापन किया । नगरसे पांच मीलकी दूरी पर भवनगज नामका एक पर्वत है जिस पर बहुतसे जैन मन्दिर देखनेमें आते हैं । प्रतिवर्ष जनवरी मासमें मन्दिरके पर्वोपलक्षमें एक मेला लगता है । यहां स्टेट अतिथि भवन, अस्पताल, सरकारी डाकघर और टेलीग्राफ, एक कारागार तथा एक स्कूल है ।

वर्नाला—१ पञ्जावप्रदेशके हिसार जिलेकी एक तहसील । भूपरिमाण ५८० वर्गमील है ।

२ उक्त जिलेका एक नगर और तहसीलका सदर । इसके चारों ओर पडा हुआ भग्नावशेष इसकी पूर्व समृद्धिका परिचय देता है । आज भी यहां पहलेके जैसा वाणिज्यस्रोत बह रहा है । यहांके प्रधान अधिवासी सैयद हैं । ये ही लोग पार्श्ववर्ती भूभागके कर्त्ता हैं ।

वर्मावर—पञ्जावके चम्बाराज्यके अन्तर्गत एक प्राचीन

नगर। यह धर्मपुरी नामसे प्रसिद्ध है और इरावती नदीकी बुधिल शाखाके बाएँ किनारे अवस्थित है। यहां तीन अति प्राचीन मन्दिरोंका भग्नावशेष देखा जाता है। अभी वह मन्दिर वृक्षोंसे ढक गया है। सबसे बड़े मंदिर में मणिमहेश नामक शिवमूर्त्ति, गणेश, दुर्गा आदि मूर्त्तियां प्रतिष्ठित हैं। शेषोक्त मन्दिर बालवर्म्मदेवके प्रपौत्र मेरुवर्म्मदेवने बनवाया था। इसके अलावा मेरुवर्म्म द्वारा प्रतिष्ठित एक और गणेशमन्दिर देखा जाता है।

बर्म्मायण—गाजीपुर जिलेके बलिया नगरसे तीन कोस उत्तरमें अवस्थित एक प्राचीन नगर। बर्म्मायणजीके मन्दिरके लिये यह स्थान बहुत कुछ विख्यात है। एक ब्राह्मणरमणी इस मन्दिरकी परिचारिका हैं। मन्दिरमें एक शिलालिपि भी है। डा० कनिंहमने शिलालिपिके समयसे ही उसका प्राचीनत्व स्वीकार किया है। इसके अलावा सैकड़ों बौद्ध सङ्घारामादिका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

बर्बुर (स० क्ली०) बर्ब-उरच्। १ उदक, जल। बबूरक वृक्ष, बबूलका पेड़।

बर्स (स० पु०) प्रान्तभाग, अगला हिस्सा।

बर्साना—युक्तप्रदेशके मथुरा जिलान्तर्गत छाता तहसील का एक शहर। यह अक्षा० २७ ३९´ उ० तथा देशा० ७७ २३´ पू० मथुरा शहरसे ३१ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या ३५४२ है। यहांके हिन्दुओंका विश्वास है, कि श्रीकृष्णकी स्त्री राधिकादेवीका यह प्रिय वासभवन था। इसके पास ही ब्रह्मा नामका एक पहाड़ है जिसकी चार चोटो पर १८वीं और १९वीं शताब्दीके बने हुए चार भवन शोभा दे रहे हैं। उन चारोंमेंसे प्रधान भवनमें, कहते हैं, कि एक समय भरतपुर, ग्वालियर और इन्दौरराज पुरोहित एक ब्राह्मण रहते थे। अभी यहां जयपुरके महाराजने एक सुन्दर मन्दिर बनवा दिया है। यहां बहुत सी पुण्य सलिला पुष्करिणी भी हैं जिनमें स्नान करनेके लिये दूर दूरके लोग आते हैं।

बर्सात (हि० स्त्री०) बरसात देखो।

बर्स्व (स० पु०) दन्तपीठ।

बर्ह (स० क्ली०) बर्ह-अच्। १ मयूरपुच्छ, मोरका पंख। २ पत्र, पत्ता। ३ परिवार, कुटुम्ब।

बर्हकेतु (स० पु०) बर्ह केतुश्चिह्नं यस्य। नवम मनुके पुत्रभेद।

बर्हण (स० क्लि०) बर्ह-ल्युट्। पत्र, पत्ता।

बर्हणा (स० त्रि०) शत्रु हिंसक, शत्रुका संहार करने वाला।

बर्हणावत् (स० त्रि०) बर्हणा मतुप्, मस्य व। हिंसा युक्त।

बर्हणाश्व (स० पु०) राजा निकुम्भके एक पुत्रका नाम।

बर्हभार (स० पु०) बर्हसमूह, मयूरकी पुच्छराशि।

बर्हस् (स० क्ली०) बर्ह-स्तुतौ-असुन्। कुश-आस्तरण।

बर्हिस् (स० पु०) वृं हयति वृहि वृद्धौ इसि, नलोपश्च। ग्रन्थिपर्ण, गठिवनका पेड़।

बर्हिपुष्प (स० क्ली०) बर्हिर्दीप्तिस्तद्युक्तं पुष्पमस्य। ग्रन्थिपर्ण, गठिवनका पेड़।

बर्हिकुसुम (स० क्ली०) बर्हिवर्हयुक्तं कुसुमं यस्य। ग्रन्थिपर्ण, गठिवन।

बर्हिण (स० पु०) बर्हमस्त्यस्येति बर्ह 'फलबर्हाभ्यामिनच्' इति इनच् वा (बहुलमन्यत्रापि। उण् २।४६) इति इनच्। १ मयूर, मोर। (क्ली०) २ तगर।

बर्हिणवाहन (स० पु०) बर्हिणो मयूरो वाहनं यस्य। कार्त्तिकेय।

बर्हिध्वजा (स० स्त्री०) बर्ही ध्वजो वाहनं यस्याः। चण्डी।

बर्हिन् (स० पु०) बर्ह अस्त्यर्थे इनि। १ मयूर, मोर। २ प्राचीपुत्र।

बर्हिपुष्प (स० क्ली०) बर्हि बर्हशालि पुष्पं यस्य। ग्रन्थिपर्ण, गठिवन।

बर्हियान (स० पु०) बर्ही मयूरः यानं यस्य। कार्त्तिकेय।

बर्हिज्योतिस् (स० पु०) बर्हिषि यज्ञे ज्योतिरस्य। वह्नि, आग।

बर्हिर्मुख (स० पु०) बर्हिरग्निर्मुखं यस्य। देवता। अग्नि देवताओंके मुखस्वरूप है, इसीसे अग्निमें होम करनेसे वह देवताओंको प्राप्त होता है।

वर्हिशुष्मन् ( स ० पु० ) वर्हिः कुश वल्मस्य । वह्नि, आग ।

वर्हिषद् ( स ० पु० वर्हिषि अग्नौ, कुशासने वा सीदन्ति सद् क्विप् । पितृगणविशेष, पित्राधिष्ठातृ देवगण । पितृगण आदिके उद्देश्यसे तर्पण करनेमें पहले इन्हींके उद्देश्यसे तर्पण करके पीछे पितरोंका तर्पण करना होता है । इन पितरोंके उद्देश्यसे किसी किसीने तीन वार और किसीने एक वार तर्पण करनेको वतलाया है ।

"अग्निष्वात्तास्तथा सौम्यान् हविष्मन्तस्तोथम्मपान् ।
सुकालिनो वर्हिषद आज्यपास्तर्पयेत्तत ॥"

( आह्निकतत्त्व ) तर्पण देखो ।

२ पृथुवंशज हविर्द्धानके पुत्रका नाम ।

वर्हिषद् ( स ० पु० ) वर्हिस् सद क्विप् पृषोदरादित्वात् साधुः । वर्हिषद् शब्दार्थ ।

वर्हिष्क ( स० लि० ) १ वालक नामक गन्धद्रव्य । २ दर्भयुक्त ।

वर्हिष्केश ( स ० पु० ) अग्नि, आग ।

वर्हिष्ठ ( स ० क्ली० ) १ ह्रीवेर । ( लि० ) २ कुशास्थित ३ वृद्धतम ।

वर्हिष्मत् (स ० लि०) १ कुशयुक्त । २ यज्ञयुक्त यजमान ।

वर्हिष्य (स ० त्रि०) वर्हिषि दत्त वर्हिषि हितमिति वा यत् । वह पिण्ड जो कुश पर रखा जाता है ।

वर्हिः षद् ( स० पु० ) वर्हिषद् ।

वर्हिःष्ठ ( स ० लि० ) वर्हिष्ठ ।

वर्हिस् ( स ० क्ली० ) १ कुश । २ दीप्ति । ३ अग्नि ।

वलन्द ( ( फा० वि० ) ऊंचा ।

वलथो (हि ० पु०) भारतके अनेक भागोंमें मिलनेवाला एक पेड़ । इसके फल खट्टे होते हैं और अचारके काममें जाते हैं । फलोंके रससे लोहे परके दाग भी साफ किये जाते हैं । इसकी लकड़ीसे खेतीके सामान वनाये जाते हैं ।

वल (स ० क्लो०) वलते निपथान् हन्तीति वल पचाद्यच । १ सैन्य, सेना । २ स्थौल्य, मोटापन । ३ सामर्थ्य, ताकत । पर्याय—द्रविण, तर, सह, शौर्य, स्थामन्, शुष्म, शक्ति, पराक्रम प्राण, महस्, शुष्मन्, उर्ज्जस् । वैदिक पर्याय—ओजस्, पाजस्, शव, तर, त्वक्ष, शर्द्ध, वाध नृम्ण, तविषी, शुष्म, शुष्ण, शूष, दक्ष, वीडु, च्यौत्न, सह, यह, वध, वर्ग, वृजन, वृक्, मज्मना, पौंस्यानि, भर्णांसि, द्रविण, स्यन्द्रास, शम्बर । ( वेदनिघण्टु ) गर्भमें वालकके ६ मासमें वल आ जाता है । ४ गन्धरस । ५ रूप । ६ शुक्र । धातुओंका जो मुख्य तेज है वही ओज या वल कहलाता है । ७ वपु, शरीर । ८ पल्लव, कोंपल । ९ रक्त, खून, । १० काक, कौआ । ११ वलदेव, वलराम । १२ वरुणवृक्ष । सद्योवलकर और सद्योवलहर द्रव्य—

"सद्योवलकराण्त्रीणि वालाभ्यङ्ग सुभोजनम् ।
सद्योवलहराणत्रीणि, अध्वान मैथुन ज्वर ॥"

( वैद्यक )

वालाखीस भोग, तैलमर्दन और उत्तम भोजन ये सद्यो वलकर तथा अधिक भ्रमण, मैथुन, ज्वर ये तीन सद्यो-वलहर हैं । पूर्वोक्त तीनोंके सेवनसे वल वढता है और अन्तके तीनोंसे वलका क्षय होता है ।

विद्या, अभिजन, मित्र, वृद्धि, सत्त्व, धन, तप, सहाय, वीर्य और दैव ये १० वल हैं । जिसके ये सव होते हैं उसके दश प्रकारके वल होते हैं और वही व्यक्ति वलवान् कहलाता है । सुश्रुतमें वलके सम्वन्धमें यों लिखा है—

रससे ले कर वीर्य पर्यन्त सप्तधातुओंके जो उत्कृष्ट तेज हैं, आयुर्वेदके शास्त्रोंमें उसी तेज या ओजको वल वतलाया है । वलके होनेसे शरीर पुष्ट और मजबूत होता है, सव काम करनेमें उत्साह दिखाई देता है, शरीर प्रसन्न रहता है और वाह्य तथा अभ्य तरकी इन्द्रिया वे-रोकटोक अपना काम करने लगती हैं । ( सुश्रुत १५ अ० )

शरीरस्थ ओज अथवा वल सोमगुणविशिष्ट, स्निग्ध, श्वेतवर्ण, शीतल, स्थिर, सरस, मृदु और सुगंधित है । यह शरीरमें गुप्त रूपसे रहता है, और इससे प्राणकी रक्षा होती है । यह शरीरके सभी अवयवोंमें व्याप्त हो कर रहता है । इसके नहीं रहनेसे शरीर शीर्ण वन जाता है । सव धातुओंसे जो सार निकलता है, वही ओज अथवा वल है । मानसिक और शारीरिक क्लेश, क्रोध, शोक, एकाग्रचित्तता, श्रम और क्षुधा आदि कारणों से वलका नाश होता है । वलके नाशसे तेज भी जीवोंसे एक ओर किनारा कर जाता है ।

वलके विकार और क्षयसे सन्धिस्थानोंमें शिथिलता,

शरीरमें अप्रसन्नता आ जाती है तथा वात, पित्त और श्लेष्माका प्रकोप होने लगता है। शरीर किसी प्रकारकी क्रिया करनेमें लायक नहीं रहता। बलके विकारसे शरीरमें स्तब्धता, भारीपन, वायुजन्य सूजन, वर्णको विभिन्नता, ग्लानि, तंद्रा, निद्रा आदिके लक्षण दीखने लगते हैं। बल क्षय होनेसे मूर्च्छा, मासक्षय, मोह, प्रलाप और मृत्यु तक हो जाती है।

बलके तीन प्रकार दोष होते हैं—व्यापन्न, विस्रंसा और क्षय। शरीरकी शिथिलता, अप्रसन्नता और श्रान्ति, वायु, पित्त, कफकी विकृति तथा स्वभावसे शरीरका इन्द्रिय कार्य जिस परिमाणमें होना चाहिये उस परिमाणमें नहीं होना, विस्रंसा होने पर ये सब लक्षण होते हैं। शरीरका भारीपन, स्तब्धता, ग्लानि, शारीरिक वर्णकी विभिन्नता, तन्द्रा, निद्रा और वायुजन्य शोफ आदि बलके व्यापन्न होने पर ये सब लक्षण होते हैं। बलके क्षय होने पर मूर्च्छा, मासक्षय, मोह, प्रलाप और अज्ञान ये सब लक्षण अथवा मृत्यु तक हो जाती है। बलके विस्रंसा या व्यापद होने पर नाना प्रकारके अविरुद्ध प्रतिकारोंसे उसे स्वाभाविक अवस्थामें लावे। अविरुद्ध क्रियाका यहां पर तात्पर्य है, जिसके सेवनसे कैसा भी विकार उत्पन्न न हो।

भावप्रकाशके मतसे बलके लक्षण—रससे शुक्र पर्यन्त पुष्टिहेतु समस्त कार्योंमें पटुता होनेको बल कहते हैं।

बलक्षयके लक्षण—देहकी गुरुता, स्तब्धता, मुख म्लान, विवर्णता, तन्द्रा, निद्राधिक्य तथा वातजन्य शोथ आदि लक्षणोंसे बलक्षय जानना चाहिये।

बलवृद्धिके हेतु—जिन द्रव्योंसे अग्नि और दोषोंकी समता हो धातु पुष्ट होता है उन्हीं द्रव्योंके सेवनसे बलकी वृद्धि होती है। दोष, धातु और मल इनमेंसे किसी एकका क्षय होने पर जिन द्रव्योंसे उसकी पूर्त्ति हो उसी भोजनकी अभिलाषा सबको होती है। क्षीण व्यक्तिको जिस द्रव्यके खानेकी इच्छा हो वही द्रव्य यदि उसे खानेको मिले तो शारीरिक क्षयप्राप्त अंशका पूरण होता है। उस समय अपने आप ही बलकी पूर्त्ति हो जाती है। रसोंके न्यूनाधिक्य होनेसे ही शरीर कृश और स्थूल होता है। स्थूलता या कृशता दोनों ही निन्दनीय हैं। ब्रह्मचर्य, व्यायाम, पुष्टिकर भोजन ही सदा विधेय है। पुष्टिकर और क्षीणकर दोनों प्रकारके द्रव्य खानेसे शरीरमें अक्रम सचालित हो सर्व धातुओंकी समान भावसे पुष्टि होती है। शरीरमें यदि सब धातु समान भावसे हों, तो शरीर स्थूल और कृश न हो कर मध्यम भावमें रहता है, सब कार्योंमें समर्थ होता है तथा क्षुधा, पिपासा, शीत, गर्मी आदि सह सकता है। शरीरस्थ दोष, धातु आदिका कोई निरूपित परिमाण नहीं है। इस लिये शरीरमें ये समान भावसे हैं या नहीं उसका अन्य कारणोंसे निर्णय नहीं किया जा सकता। शरीर जब स्वस्थ हो तभी जानना चाहिये, कि तीनों समान हैं। शरीरकी इन्द्रियां यदि अप्रसन्न मालूम पड़ें तो जानना चाहिये, कि बलका ह्रास हुआ है। शरीरमें बल, दोष धातुओंके समानभावमें रहनेसे अन्तःकरण और इन्द्रिय प्रवृत्ति प्रसन्न रहती है। (भावप्र० और सुश्रु०)

मनुष्यमें जितना भी बल है उनमें दैवबल ही सबसे प्रधान है। मानव यदि दैवबलसे बलीयान् हो, तो वह कठिनसे कठिन काम भी कर सकता है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणके गणेशखण्डमें लिखा है—

> अबलस्य बलं राजा बालस्य रुदितं बलम्।
> बलं मूर्खस्य मौनन्तु तस्करस्यानृतं बलम्॥
> (ब्रह्मवैवर्त्तपु० गणेशख० ३५ अ०)

जो बलहीन हैं उनके राजा ही बल है। बालकका रोना, मूर्खका मौन तथा चोरका असत्य ही बल है।

इस प्रकार क्षत्रियका युद्ध, वैश्यका वाणिज्य, भिक्षुककी भिक्षा, शूद्रका विप्रसेवन, वैष्णवकी हरिभक्ति और हरिके प्रति दास्य, खलके प्रति हिंसा, तपस्वीकी तपस्या, वेश्याका वेष, स्त्रीका यौवन, साधुका सत्य और पण्डितकी विद्या ही एकमात्र बल है। इस प्रकार सभी मनुष्यके बलका विषय अभिहित है। विस्तार हो जानेके भयसे नहीं लिया गया। बलदेव देखो।

१३ वायुकर्तृक प्रदत्त कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम। १४ श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशके वंशमें उत्पन्न परियात्रके एक पुत्रका नाम। १५ दनायुके पुत्रका नाम। १६ मेत्र,

बादल। १७ दैत्यविशेष। देवीपुराणमें इसके विषय में ऐसा लिखा है—

पूर्वकालमें बल नामका एक महाबलिष्ठ पराक्रमी दैत्य था। इन्द्र, चन्द्र प्रभृति अमरगण और यक्ष गन्धर्वगण उससे डरते थे। उस दैत्यने देवताओं को युद्धमें परास्त कर स्वर्गमें इन्द्रके सिंहासन पर अधिकार जमाया। पीछे उसने महाविषधर नागेन्द्रोंको बलपूर्वक अपने काबूमें किया और गरुडको अपना भृत्य बना कर ब्रह्मा सहित समस्त स्वर्गवासी देवोंको स्वर्गसे पाताल मार भगाया। देवगण सौ वर्ष तक उसके भयसे पातालमें रहे। पीछे उन्होंने वृहस्पतिकी शरण ली। बृहस्पतिके परामर्शसे वे विष्णुके पास पहुंचे। विष्णुने उनसे कहा, "हे देवगण! महाबलिष्ठ बल अतिशय नीति परायण, धार्मिक और युद्धमें अजेय है उसे युद्धमें पराजय करना सहज नहीं" अनन्तर वे सबके सब महामायाकी शरणमें गये। महामायाकी मोहनीविद्यासे विष्णु वृद्धब्राह्मणका रूप धारण कर वेदपाठ करते करते बलासुरके द्वार पर उपस्थित हुये। विष्णुमोहिनी मलको जप वे बलासुरसे बोले, "मैं कश्यप पुत्र हूं, मुझे देवोंने भेजा है, ऋषियों ने देवों के साथ यज्ञ आरम्भ किया है, मैं उसी यज्ञको निष्पादनके लिये आपके पास आया हूं। आप दान दीजिये जिससे यह यज्ञ सम्पन्न हो। बलासुरने यह सुन प्रतिज्ञा की, 'जो वस्तु तुम्हें यज्ञ करनेके लिये आवश्यक होगी वह मैं दूंगा, यहां तक, कि मैं अपना जीवन भी दे सकूंगा।' विष्णुरूपी वह द्विज उपयुक्त समय देख बोले, 'वह यज्ञ तुम्हारे शरीरसे ही सम्पन्न होगा। अतएव मैं तुम्हारे शरीरको मांगता हूं।' ऐसा कह उन्हों ने उसका मस्तक सुदर्शनचक्रसे काट डाला। जब उस दानवने भौतिक देहका परित्याग कर दिव्य देह प्राप्त की बलासुर के अङ्ग प्रत्यङ्गों से हीरा मोती माणिक पन्ना बन गये और उसका शरीर सत्पात्रके दान करनेसे रत्नाकर हुआ।
(देवीपुराण ५० अ०)

१८ भार उठानेकी शक्ति, सह। १९ आश्रय, सहारा। २० आसरा, भरोसा। २१ पार्श्व, पहलू। (लि०) २२ बलयुक्त, ताकतवर।

बल (हि० पु०) १ लपेट, फेरा। २ पेंठन, मरोड। ३ टेढ़ापन, कज। ४ अन्तर, फर्क। ५ अधपके आमों वाल। ६ फेरा, लपेट। ७ लहरदार घुमाव, पेच। ८ निकुडन, गुलझट।

बलकना (हि० क्रि०) १ उबलना, उफान खाना, खौलना। २ उमडना, जोशमें आना।

बलकन्द (स० पु०) मालाकन्द।

बलकर (स० लि०) करोतीति कर, बलस्य करः। १ बलजनक, जिससे बलकी वृद्धि हो। (क्ली०) २ अस्थि, हड्डी।

बलकल (स० पु०) वल्कल देखो।

बलकाना (हि० क्रि०) १ उबालना, खौलना २ उत्तेजित करना। उभारना।

बलकुआ (हि० पु०) पूर्वीय भारतमें मिलनेवाला एक प्रकारका बाँस। यह चालीस पचास हाथ लंबा और दश बारह अंगुल मोटा होता है। गांठे इसकी लंबी होती हैं जिन पर गोल छल्ला पड़ा रहता है। यह बहुत दृढ होता है और पाइट बाधनेके कामके लिये बहुत अच्छा होता है। इसका दूसरा नाम भलुआ, बड़ा बाँस, सिलवरुआ भी है।

बलकृत (स० लि०) बल करोति कृ क्विप्, तुक् च। बलकारक।

बलक्ष (स० पु०) बलते क्विप् बल अक्षत्यस्मिन् घञ्, बलक्ष इति। १ श्वेतवर्ण। (लि०) २ बलयुक्त।

बलखिन् (स० लि०) बाह्लीक देशागत।

बलगुप्ता (स० स्त्री०) बौद्ध रमणीभेद।

बलचक्र (स० क्ली०) १ सैन्यव्यूह। २ राजदण्ड।

बलचक्रवर्त्तिन (स० पु०) सम्राट्, राजराजेश्वर।

बलज (स० क्ली०) बलस्तस्माहसयुद्धादिकात् जायते बल-जन ड। १ क्षेत, खेत। २ पुरद्वार, नगरका द्वार। ३ शस्य, फसल। ४ धान्यराशि, धानका ढेर। ५ युद्ध, लड़ाई। ६ द्वार, दरवाजा। (लि०) ७ बलजन्य।

बलजा (स० स्त्री०) बलज टाप्। १ पृथ्वी। २ यूथिका, एक प्रकारकी जुही। ३ रज्जु, रस्सी।

बलद (स० पु०) बल ददातीति दा क। १ जीवक नामका वृक्ष। २ होमाग्नि। होम करनेके समय कार्य विशेषमें

अग्निका भिन्न भिन्न नाम रखा गया है। पौष्टिक कर्ममें अग्निका नाम 'बल' है। इस बलद नामसे ही अग्निका होम करना होता है। "पौष्टिके बलदः स्मृत (तिथितत्त्व) ३ वृषभ, सांढ। ४ पर्पटक, पित्त पापडा। ५ अश्वगन्धा। ६ बलदाता, बल देनेवाला।

बलदण्ड (सं० पु०) कसरत करनेके लिये लकड़ीका बना हुआ एक ढांचा। इसमें एक काठके दोनों ओर कमानकी तरह दो तिरछी लकड़ियां लगी होती हैं। इसे गद्देदण्ड भी कहते हैं।

बलदा (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा।

बलदाऊ (हिं० पु०) १ बलदेव, बलराम।

बलदीनता (सं० स्त्री०) बलस्य दीनता। ग्लानि, लज्जा।

बलदेव (सं० पु०) बलेन दीव्यतीति दिव अच्। बलराम। इन्होंने अनन्तदेवके अंशमें जन्म ग्रहण किया था, इसीसे ये शेषावतार समझे जाते हैं। (भारत १।६७।१५१)

विष्णुपुराणमें इस प्रकार लिखा है—गोकुलमें रोहिणी नामकी वसुदेवकी एक और पत्नी थी। देवकीके जब सातवाँ गर्भ हुआ, तब महामायाने कंसके भयसे उस गर्भको रोहिणीके उदरमें रख दिया। इस प्रकार गर्भ सङ्कर्षणके लिये उस गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न हुआ, वह पीछे सङ्कर्षण कहलाया। इसीसे बलदेवका दूसरा नाम सङ्कर्षण भी है। (विष्णुपु० ५।२ अ०) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें नामनिरुक्तिके विषयमें लिखा है, कि गर्भसङ्कर्षणके कारण सङ्कर्षण, वेदमें अन्त नहीं होनेके कारण अनन्त, बलोद्रेकके कारण बलदेव, हल धारणके कारण हली, नीलाम्बर परिधान करनेके कारण शितिवास, मूसल अस्त्र होनेके कारण मूसली, रेवती पत्नी होनेके कारण रेवतीरमण और रोहिणी गर्भसम्भूत होनेके कारण इनका रौहिणेय नाम पड़ा था। (ब्रह्मवैवर्त्तपु० श्रीकृष्णजन्म० १३ अ०)

नन्दालयमें इन्होंने जन्मग्रहण किया। गोकुलमें आ कर महामुनि गर्ग द्वारा इनका नामकरण हुआ। नन्दालयमें श्रीकृष्णके साथ ये एकत्र पाले पोसे गये। पीछे अक्रूरके आने पर बलराम कृष्णके साथ मथुरा पधारे और कंसको मार कर वहां कुछ दिन ठहरे। अनन्तर सान्दीपन मुनिके निकट इन्होंने विद्याभ्यास किया। रेवतीके साथ इनका विवाह हुआ। यदुकुल ध्वंस होनेके समय जब ये योगासन पर बैठे, तब इनके शरीर छिद्रसे रक्तवर्ण सहस्र मुखधारी एक वृहत् श्वेत सर्प निकल कर समुद्रमें चला गया। इस समय बलरामका शरीर प्राणशून्य हो गया था। कुरुकुलपति दुर्योधन इनके शिष्य थे। कृष्ण देखो।

बलदेवकी पूजा करनेमें इस प्रकार ध्यान करना होता है। यथा—

बलदेवं द्विबाहुञ्च शङ्खकुन्देन्दुसन्निभम्।
वामे हलायुधधरं मूषलं दक्षिणे करे।
हालाला नीलवस्त्रं हेलावन्तं स्मरेत् परम्॥"

२ वायु, हवा।

बलदेव—युक्तप्रदेशके मथुरा जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २७ २४' उ० तथा देशा० ७७ ४६' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या तीन हजारसे ऊपर है। इस नगरके ठीक मध्यस्थलमें एक मन्दिर और सामनेमें क्षीर समुद्र नामक एक पुण्यसलिला पुष्करिणी है। देवमूर्त्तिदर्शन और दीर्घिकामें स्नान करनेके लिये अनेक तीर्थयात्री आते हैं। साल भरमें यहां दो मेले लगते हैं।

बलदेवक्षेत्र—उड़ीसाके अन्तर्गत एक तीर्थस्थान। इसे तुलसीक्षेत्र भी कहते हैं। यह पवित्र स्थान कटक जिलेके वर्त्तमान केन्द्रपाड़ामें अन्तर्भुक्त है। उड़ीसाके वैष्णव इसे पवित्र स्थान समझते हैं। तुलसीक्षेत्र माहात्म्यमें इस स्थानका देवमाहात्म्य वर्णित है।

बलदेवविद्याभूषण—उत्कलदेशीय एक विख्यात ब्राह्मण पण्डित। करीब तीन सौ वर्ष हुए ये जीवित थे। वैष्णव दर्शनादिमें उस समय इनके मुकाबलेका कोई भी न था। इनका प्रण था, कि वे उन्हीं के शिष्य बनेंगे जो उन्हें तर्कमें पराजित कर सकेंगे। इसी उद्देशसे ये दिग्विजयको निकले। वङ्ग, मिथिला, काशी आदि प्रधान प्रधान स्थानोंके पण्डित इनसे परास्त हुए। आखिर ये भ्रमण करते करते वृन्दावन पहुंचे। वहां प्रसिद्ध टीकाकार विश्वनाथ चक्रवर्त्तीसे भक्तिशास्त्रके विचारमें परास्त हो इन्होंने उन्हीं का शिष्यत्व ग्रहण किया। तीक्ष्ण प्रतिभाबलसे थोड़े ही समयके अभ्यन्तर ये वैष्णवशास्त्रमें व्युत्पन्न

हो गये। इस समय जयपुरराज्यमें गोलमाल चल रहा था। जयपुरमें जो गोविन्दजीकी मूर्त्ति है, उनका सेवाधिकार गौड़ीय वैष्णवों को मिला था। कुछ शाङ्कर संन्यासीने राजाको समझा कर कहा, कि शङ्करके शारीरिकभाष्यके अतिरिक्त रामानुज, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी और निम्बादित्य इन चारों सम्प्रदायमें वेदान्त दर्शनके चार भाष्य हैं। किन्तु चैतन्यदेवका मत इन भाष्योंके अन्तर्गत नहीं है और न उस मतका पृथक् भाष्य ही है। अतएव ये लोग असम्प्रदायी हैं। असम्प्रदायी वैष्णव गोविन्दके सेवाधिकारी नहीं हो सकते।

राजाने इसकी जांच करनेके लिये एक साधु सभा बुलाई। बहुतसे पछाहीं, उदासीन पण्डित जमा हुए। वृन्दावनके गौड़ीय वैष्णव लोग भी गये। विचार आरम्भ हुआ। बङ्गालियोंकी तरफसे बलदेवने कहा, "कौन कहता है, कि हम लोगोंके भाष्य नहीं हैं? श्रीमद्भागवत ही वेदान्तके भाष्य स्वरूप हैं। 'गायत्री भाष्यरूपोऽसौभारतार्थविनिर्णय' इत्यादि वाक्य उसके प्रमाण हैं, महाप्रभुने भी यही कहा है। महाप्रभुने सार्वभौमको जिस वैयासिक भाष्य द्वारा परास्त किया, वही यथार्थमें चैतन्यसम्मत भाष्य है। षट्सन्दर्भादिमें भी यही निबद्ध हुआ है।" इतना कह कर वे शाङ्करिक पण्डितोंके साथ विवादमें प्रवृत्त हो गये और आखिर उन्हें परास्त कर ही डाला। उन्हें निरस्त करनेके अभिप्रायसे जब शङ्कर पण्डितोंने पूछा, कि यह किस सम्प्रदायके अनुगत है, तब उन्होंने कहा, "यह श्रीचैतन्यभाष्यानुगत है।" यथार्थमें षट्सन्दर्भादि भिन्न महाप्रभुका पृथक् भाष्य नहीं था, यह उन्होंने पहले ही कह दिया है।

पछाहीं पण्डितोंने जब उस भाष्यको देखना चाहा, तब वे बोले, "अवश्य दिखलाऊंगा, लेकिन आज नहीं, कल।" इतना कह कर सभा दूसरे दिनके लिये उठ गई।

भाष्य तो था नहीं, वे दिखावेंगे क्या! सो उन्होंने एक नया भाष्य बनानेका सङ्कल्प किया। इस भीषण-सागरको पार करनेके लिये उन्होंने श्रीगोविन्दजीकी शरण ली। अनाहार मन्दिरके द्वार पर पड़े रहे। इस प्रकार एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत गये। चौथे दिन भाष्य रचना करनेका इन्हें देवताने आदेश मिला। कहते हैं, कि बलदेवने मन्दिरमेंसे 'कुरु कुरु' ऐसा शब्द सुना था। प्रत्यादेश पा कर प्रसन्न चित्तसे इन्होंने भाष्यरचनामें हाथ लगा दिया और शीघ्र ही सफलता भी प्राप्त कर ली। गोविन्ददेवके आदेशसे रचित होनेके कारण इस भाष्यका "श्रीगोविन्दभाष्य" नाम रखा गया। गोविन्ददेवके आदेशकी बातें बलदेवने भाष्यके शेषमें इस प्रकार लिखी हैं—"विद्यारूपं भूषणं मे प्रदाय ख्यातिं निन्ये तेन यो मामुदारः श्रीगोविन्दः स्वप्ननिर्दिष्टभाष्यो राधाबन्धुर्बन्धुराङ्गः स जीयात्॥"

(गो० भा०)

यथासमय वह भाष्य प्रकाश्य सभामें दिखलाया गया। सभी अवाक् हो रहे। जयपुर और वृन्दावनमें गौड़ीय वैष्णवों का आधिपत्य सदाके लिये जम गया। शारीरिक भाष्यकी तरह इस भाष्यमें सभी जगह श्रुतिप्रमाणकी प्रधानता देखी जाती है। अन्यान्य भाष्योंकी तरह पुराणके प्रमाणका भी अभाव नहीं है।

बलदेव निम्नलिखित दार्शनिक ग्रन्थ बना गये हैं—

१ गोविन्दभाष्य, २ सूक्ष्मभाष्य (गोविन्दभाष्यकी टीका), ३ सिद्धान्तरत्न वा भाष्यपीठक, ४ प्रमेयरत्नावली और कान्तिमालाटीका, ५ वेदान्तस्यमन्तक, ६ गीताभूषण भाष्य, ७ दशोपनिषद्भाष्य, ८ सहस्रनामभाष्य, ९ स्तवमालाभाष्य, १० सारङ्ग रङ्गदा। (लघुभागवतामृतकी टीका)।

इनका वृन्दावनमें ही शरीरान्त हुआ। यहां आज भी उनकी समाधि विद्यमान है।

बलदेवपत्तन (स० क्ली०) वृहत्संहितोक्त समुद्रतीरवर्त्ती नगर।

बलदेवसिंह—भरतपुरके जाटवंशीय एक महाराज। ये राजा रणजित्के पुत्र और राजा रणधीरके कनिष्ठ थे। १८२४ ई०में इन्होंने अपने पुत्र बलवन्तको युवराज बनानेके लिये अङ्गरेजोंसे सहायता ली थी। १८२५ ई०में उनकी मृत्यु हुई। मथुराके निकटवर्त्ती गोवर्द्धन नामक स्थानमें इनके दोनों भाइयोंके समाधिस्तम्भ प्रतिष्ठित हैं।

बल्देवा (स० पु०) त्रायमाण ओषधि।

बलनख (स० पु०) व्याघ्रनख, बाघका नाखून।

बलना ( हिं० क्रि० ) जलना, दहकना।

बालनिग्रह ( सं० पु० ) बलस्य निग्रह षष्ठीतत्। बलक्षय।

बलनेट ( हिं० पु० ) एक संकर राग। यह रामकली, श्याम, पूर्वी, सुन्दरी, गुणकली और गधारसे मिल कर बना है।

बलन्द—छोटानागपुरवासी एक आदिम जाति। ये लोग अपनेको कृषिजीवी और हिन्दू बतलाते हैं। सम्भवतः ये भक्त बलन्द नामक गोंड जातिकी अन्यतम शाखा हैं। इन लोगोंके मध्य हिन्दू क्रिया कर्म व्यतीत कोई पार्वतीय देवदेवी पूजाका परिचय नहीं मिलता। कोरिया राजवंश का इतिहास पढ़नेसे मालूम पड़ता है, कि एक दिन बलन्द लोग विशेष पराक्रमशाली थे। गोंड और कोश्च नामक कोल जातिके बार बार आक्रमणसे बलन्द राजवंश अध पतनको प्राप्त हुआ।

बलन्धरा ( सं० स्त्री० ) भीमसेनकी पत्नी।
( महाभारत० आदि० )

बलपति ( सं० पु० ) १ प्रधान सेनापति। २ इन्द्रका एक नाम।

बलपाण्डुकर ( सं० पु० ) कुन्द वृक्ष, कुदका पौधा।

बलपुच्छक ( सं० पु० ) काक, कौआ।

बलपृष्ठक ( सं० पु० ) रोहित मत्स्य, रोहू मछली।

बलप्रद ( सं० त्रि० ) बलं प्रददाति दा-क। बलदायक, बलदेनेवाला।

बलप्रसू ( सं० स्त्री० ) प्रसूते इति प्रसूर्जननी बलस्य बल देवस्य प्रसूर्जननी। रोहिणी, बलरामकी माता।

बलबलाना ( हिं० क्रि० ) १ ऊँटका बोलना। २ व्यर्थ बकना। ३ निरर्थक शब्द उच्चारण करना।

बलबलाहट ( हिं० स्त्री० ) १ ऊँटकी बोली। २ व्यर्थ बक वाद। ३ उमंग। ४ अहङ्कार, घमण्ड।

बलबीज ( हिं० पु० ) कंघी नामके पौधेका बीज।

बलबीर ( हिं० पु० ) बलरामके भाई श्रीकृष्ण।

बलभ ( सं० पु० ) विषधर कीट, एक विषैला कीड़ा।

बलभद्र (सं० पु०) बल भद्र श्रेष्ठमस्य वा बलमस्यास्तीति अर्श आदित्वादच्, बलो बलवानपि भद्रः सौम्यः। १ अनन्त। २ लोध्र, लोधका पेड़। ३ गवय, नीलगाय। ४ विष्णुपूजनोक्त अष्टदल पद्मस्थ योगिविशेष। विष्णु प्रभृतिके पूजनमें अष्टदलपद्म बना कर योगियोंकी पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार पूजा नहीं करनेसे कोई फल नहीं होता। ५ पर्वतविशेष ( भाग० ५।२०।२६ ) ६ क्षुद्रकदम्ब वृक्ष। ( त्रि० ) ७ बलशाली, ताकत वर।

बलभद्र—इस नामके कई ग्रन्थकारोंके नाम मिलते हैं। यथा—

१ अद्भुत तरङ्गिणीके प्रणेता। २ आह्निकके रचयिता। ३ कालीतत्त्वामृततन्त्रके प्रणयनकार। ४ चेतसिंहविलास के प्रणेता। ५ जातक चन्द्रिका, वृहज्जातककी नष्टजातका ध्यायटीका और होरारत्नके रचयिता। भट्टोत्पलने वृहत्संहिताटीकामें इनका उल्लेख किया है। ६ नवरत्न धातुविवादके प्रणेता। ७ महारुद्रन्यासपद्धतिके रचयिता। ८ योगशतकसङ्कलयिता। ९ रामगीतावृत्तिके प्रणेता। १० शक्तिवादटीकाके रचयिता। ११ महानाटकदीपिकाके प्रणेता। ये काशीनाथके पुत्र और कृष्णदत्तके पौत्र थे। १५९२ ई०में इन्होंने उक्त ग्रन्थ लिखा था। १२ हायनरत्न और १६५४ ई०में होरारत्नके रचयिता। ये दामोदरके पुत्र और हरिरामके भाई थे। मकरन्दटीका और भास्करा चार्यकृत बीजगणितकी टिप्पणी भी इन्होंने लिखी है। १३ पलप्रकाशके रचयिता। १४ महारुद्रपद्धतिके प्रणेता। १५ बालबोधिनी नामक भास्वतीटीकाके प्रणेता, वसन्तके पुत्र और विमलाकरके पौत्र। इन्होंने १५४४ ई०को उमा नगरमें ग्रन्थ लिखा था। १६ वृन्दसप्रहशेषके प्रणेता। १७ नित्यानुष्ठानपद्धतिके रचयिता। १८ अशौचसारके प्रणेता। १९ एक विख्यात ज्योतिर्विद्। अलबीरुनीने इनका उल्लेख किया है।

बलभद्र तर्कवागीश—दायभागसिद्धान्तके प्रणेता।

बलभद्रपुर—तीरभुक्तके अन्तर्गत एक जनपद।

बलभद्र भट्ट—तर्कभाषाप्रकाशिका, सप्तपदार्थीटीका और प्रमाणमञ्जरी-टीकाप्रणेता। इनके पिताका नाम विष्णु-दास और माताका माधवी था।

बलभद्रशुक्ल—कुण्डतत्त्वप्रदीप और चातुर्मास्यकौमुदीके रचयिता। इन्होंने १६२४ ई०में यह ग्रन्थ जयसिंह दीक्षित-के नाम पर उत्सर्ग किया। इनके पिताका नाम स्थविर था।

बलभद्रसिंह—१ एक गुर्खासरदार। १८१४ ई०में नेपाल युद्धके

समय इन्होंने अंगरेजोंके विरुद्ध घमसान युद्ध किया था।

७ अयोध्याके प्राचीन हिन्दू राजवंशके एक राजा। उनके अधीन प्राय लाखसे ऊपर राजपूत सेना थी। १७८० ई०में उन्होंने लखनऊके नवाब वजीरकी अधीनता अस्वीकार की। दो वर्ष लगातार युद्धके बाद वे मुसलमानोंके हाथ परलोक सिधारे।

बलभद्रसूरि—प्रमाणमञ्जरीटीकाके प्रणेता।

बलभद्रसञ्ज्ञ (सं० पु०) धूलीकदम्ब।

बलभद्रा (सं० स्त्री०) बलभद्र टाप्। १ कुमारी। २ त्रायमाण नामकी लता। ३ वनजाता गो, जंगली गाय। ४ नीलगाय।

बलभद्रिका (सं० स्त्री०) बलभद्रा स्वार्थे कन् अत इत्व। त्रायमाणा नामकी लता।

बलभी—१ मालव राज्यके उत्तर काठियावाडका एक प्राचीन नगर। इसका वर्त्तमान नाम वाला है। चीनपरिव्राजक यूएनचुयंगने यह नगर देख कर लिखा है, कि यहां सैकडों संघाराम और देवमन्दिर थे। हीनयान सम्प्रदायी सम्मतीय शाखाके प्राय ६ हजार श्रमण उस समय यहां धर्मचर्चा करते थे। उन्होंने यहांका अशोकस्तूप भी देखा था। उस समय मालवराज शिलादित्यके गोत्रीय ध्रुवभट्ट नामक एक क्षत्रिय राजा यहांका शासन करते थे। राजधानीके पास ही एक सुवृहत् संघाराम था जिसमें गुणमति और स्थिरमति नामक दो बोधिसत्त्व रहते थे।

२ सह्याद्रि पर्वत पर अवस्थित एक नगरी।

बलभी (हिं० स्त्री०) वह कोठरी जो मकानके सबसे ऊपरवाली छत पर बनी हो, चौबारा।

बलभृत् (सं० त्रि०) बल बिभर्त्ति भृ क्विप् तुक् च। बलधारी।

बलमोटा (सं० स्त्री०) वृक्षविशेष, जयन्ती। इसका गुण कटु, तिक्त, शीत, कण्ठशोधक, लघु, कफनाशक, मलग्रन्थि, मूत्रकृच्छ्र विष और पित्तनाशक माना गया है।

बलम्बिद—बम्बई प्रदेशके धारवार जिलेका एक बड़ा ग्राम। यहां विषपरिहरेश्वर और वासवका एक मन्दिर है। उसके गात्र में लग्न पांच शिलालिपियोंमेंसे सर्व प्राचीन शिलालिपि ९७६ सम्वत्में उत्कीर्ण हुई है।

बलर—पञ्जाबके अन्तर्गत एक प्राचीन स्थान। एक प्राचीन स्तूपके लिये यह स्थान बहुत कुछ विख्यात है। स्तूपकी ऊँचाई प्राय ५० फुट और व्यास ४४ फुट है। इसके पास ही १७० फुट स्थानके मध्य और भी कितने छोटे छोटे स्तूप तथा सङ्घारामादिके ध्वंसावशेष देखनेमें आते हैं। इससे अनुमान किया जाता है, कि बौद्धाधिकारमें यह स्थान धर्मालोचनाके लिये मशहूर था।

बलराम (सं० पु०) रम भावे घञ्, बलेन रामो रमण यस्य। श्रीकृष्णके बड़े भाई जो रोहिणीसे उत्पन्न हुए थे। बलदेव देखो।

बलरामदास—श्रीचैतन्यचरितामृतके ११वें परिच्छेदमें लिखा है, कि बलरामदास नित्यानन्दप्रभुके भक्त थे। वैष्णव वन्दनामें जो 'सङ्गीतकारक' है यह इन्हींका बनाया हुआ है। अतएव पदकर्त्ता बलरामदास नित्यानन्दके 'गण' हैं। बलरामने अपनी पदावलीमें अपने प्रभुके रूप गुणका अच्छी तरह वर्णन किया है।

प्रेमविलास एक प्राचीन ग्रन्थ है। ये ही उसके रचयिता हैं। उस ग्रन्थमें इनका जो आत्मपरिचय है उससे जाना जाता है, कि बलरामकी माताका नाम सौदामिनी और पिताका नाम आत्मारामदास था। ये जातिके वैश्य थे और श्रीखण्डमें इनका घर था। इनका गुरुदत्त नाम था नित्यानन्द दास। 'भेकधारी' वैरागी सम्प्रदायमें ये गुरुदत्त नामसे प्रसिद्ध हैं। किन्तु प्राचीन ग्रन्थादि देखनेसे मालूम होता है, कि पूर्व समयमें वैष्णवोंके दो नाम रहते थे। दृष्टान्त स्वरूप वीरहाम्बिर और प्रेमदासका नामोल्लेख किया जा सकता है।

श्रीनित्यानन्द प्रभुके दो स्त्री थीं, वसुधा और जाह्नवा। जाह्नवादेवी शिष्यादि करती थीं। उपयुक्त स्त्री पुरुषको भी शिष्य बना सकती हैं, यह गुरुपरिवारमें सर्वत्र प्रचलित है। अतएव बलराम (जाह्नवा शिष्य होनेके कारण ही) नित्यानन्द 'परिवार' के हैं, इसीसे चरितामृतमें नित्यानन्द शाखा-वर्णन परिच्छेदमें इनका नाम देखनेमें आता है। यदि ज्ञानदास भी इसी प्रकार जाह्नवाशिष्य थे। ज्ञानदास शब्द देखो।

बलरामदेव—दाक्षिणात्यके जयपुर-राजवंशीय एक राजा। नन्दिपुरमें इनकी राजधानी थी।

बलरामवर्मा—दाक्षिणात्यके त्रिवांकुड़ राज्यके एक राजा। १७९८ १८१० ई०तक इन्होंने राज्य किया। इनके शासन कालमें राज्य भरमें अशान्ति फैल गई थी। राज्यका सुप्रबन्ध करनेके लिये इनके अधिकारमें अंगरेज प्रतिनिधि नियुक्त हुए।

बलरामकविकङ्कण—इन्होंने मुकुन्दरामके पहले चण्डीग्रन्थ का अनुवाद किया। मेदिनीपुरके अञ्चलमें उस ग्रन्थका प्रचार था। मुकुन्दरामने इनका ग्रन्थ देख कर अपने काव्यकी रचना की थी, यह बात वे स्वयं स्वीकार कर गये हैं।

बलरामपञ्चानन—धातु प्रकाश और उसकी टीका तथा प्रबोधप्रकाश नामक संस्कृत व्याकरणके प्रणेता।

बलरामपुर—१ अयोध्याप्रदेशके गोण्डा जिलान्तर्गत एक बड़ा तालुकदारी राज्य। बलराम दास नामक किसी हिन्दूने अपने नाम पर यह राज्य बसाया। उन्होंने धीरे धीरे कई स्थान जीत कर बहुत दूर तक अपनी राज्यसीमा बढ़ा ली थी। राजा नेहालसिंह १७७७ ई०में राजसिंहासन पर बैठे। उन्हींके भुजबलसे बलरामपुर राजवंशने सुख्याति प्राप्त की थी। उन्होंने लखनऊके राजाओंसे कई बार युद्ध किया था। यद्यपि वे नवावकी सेनासे हार गये थे, तो भी अपने जीवन तक उन्होंने उनकी वश्यता स्वीकार न की। वरन् जो कुछ वे राजकर देते थे, उसीसे उन्हें सन्तुष्ट होकर रहना पड़ता था। पीछे उनके पौत्र महाराज दिग्विजयसिंह KCSI १८३६ ई०में पितृसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। राज्यशासनके आरम्भमें ही उन्हें उतरौला, इकौना और तुलसीपुर आदि सामन्तोंके साथ युद्ध करना पड़ा था। सिपाहीविद्रोहके समय उन्होंने अंगरेजोंको अपने दुर्गमें आश्रय दिया और आखिर उन्हें निरापदसे गोरखपुर भेज दिया था। दिग्विजयके ऐसे आचरणसे असन्तुष्ट हो लखनऊ पतिने उनका राज्य बाँट लेनेके लिये तुलसीपुर, इकौना और उतरौलाके सरदारोंको फर्मान भेजा। किन्तु यह कार्यमें परिणत होनेके पहले ही उक्त सामन्तगण भिन्न भिन्न स्थानोंमें भेजे गये। घर्घरा नदीके दूसरे किनारे अंगरेज और विद्रोही-दलमें जो युद्ध हुआ उसमें इन्होंने अंगरेजोंका पक्ष लिया था। युद्धमें हार खा कर विद्रोही दल नेपालको भाग गया। दिग्विजयकी राजभक्ति पर प्रसन्न हो वृटिश-सरकारने उन्हें तुलसीपुरका कुछ अंश और महाराजकी उपाधि दी तथा सैकड़े पीछे १० रुपया कर भी घटा दिया। १८८२ ई०में उनकी मृत्यु हुई। उनके कोई सन्तान न रहनेके कारण रानीने महाराज भगवतीप्रसादको गोद लिया। ये ही वर्त्तमान राजा हैं। इनकी उपाधि के, सी, आइ, इ, है। राजस्व २२ लाख रु० है जिनमेंसे ६ लाखसे ऊपर वृटिश सरकारको करमें देने पड़ते हैं।

२ गोण्डा जिलेकी उतरौला जिलेका शहर। यह अक्षा० २७ २६´ उ० तथा देशा० ८२ १४´ पू०के मध्य अवस्थित है। सम्राट् जहांगीरके शासनकालमें बलरामदासने इस नगरको बसाया। यहां महाराजके प्रासाद, ४० हिन्दू मन्दिर और १६ मुसलमानोंकी मसजिद विद्यमान हैं। इनमेंसे विजलेश्वरी देवीमन्दिर ही शिल्पनैपुण्यसे पूर्ण है। यहांके बाजारमें पार्श्ववर्त्ती स्थानके उत्पन्न शस्यादि, स्थानीय सूती कपड़े, कम्बल और छुरी आदिका विस्तृत व्यापार होता है। यहां छात्रनिवास संलग्न एक हाई स्कूल, पांच सिकेण्डरी और प्राइमरी स्कूल, चिकित्सालय, जनाना अस्पताल, मोहताजखाना और एक अनाथालय है।

बलरामपुर—१ कोचविहार राज्यके अन्तर्गत एक नगर। २ मेदनीपुर जिलेके अन्तर्गत एक विस्तृत परगना।

बलरामभजा—एक वैष्णव-सम्प्रदाय। बलराम हाड़ी नामक एक चौकीदार इस मतका प्रवर्त्तक था। ये लोग कर्त्ताभजा आदि वैष्णव धर्ममतका अनुसरण करते हैं। अभी नदिया, वर्द्धमान और पबना आदि स्थानोंमें इस सम्प्रदायके अनेक वैष्णव देखे जाते हैं।

बलल (सं० पु०) बलराम।

बलवत् (सं० त्रि०) १ बलविशिष्ट, ताकतवर। २ अतिशय, बहुत। (पु०) ३ शिव।

बलवत्ता (सं० स्त्री०) बलवत्त्व, बलवानका धर्म या भाव।

बलवन गयास् उद्दीन—दिल्लीके एक मुसलमान अधिपति। बचपनमें ये सुल्तान अल्तमसके यहां बेचे गये थे।

उन्हींकी कृपासे बलवनने उमरावका पद प्राप्त कर उनकी कन्यासे विवाह किया। अलतमसके लड़के नासिर-उद्दीन जब दिल्लीके सिंहासन पर बैठे, तब बल्बन् वजीर (प्रधान मन्त्री) के पद पर अभिषिक्त हुए। १२६६ ई०में ये दिल्लीश्वरको राज्यच्युत और निहत करके सिंहासन पर अधिकार कर बैठे। १२७६ ई०में बङ्गालके शासनकर्त्ता अमीन खाँके नायब तुगरल खाँको जब मालूम हुआ, कि सम्राट् बलबन् रुग्नावस्थामें पड़े हैं, तब उन्होंने विद्रोही हो कर पहले सुल्तान अमीन खाँको कैद कर लिया और पीछे सुलतान मगिस उद्दीन नाम धारण कर अपनेको स्वाधीन राजा बतलाते हुए तमाम घोषणा कर दी। सम्राट्ने यह सम्वाद पाते ही दो दल सेना उसके विरुद्ध भेजी। किन्तु बङ्गेश्वरको परास्त करना उनके लिये टेढ़ी खीर था। आखिर सम्राट्ने उसका दमन करनेके लिये स्वयं बंगाल पर चढ़ाई कर दी। तुगरल खाँ त्रिपुराको भागा, पर रास्ते हीमें पकड़ा और मार डाला गया। यह घटना १२८२ ई०में घटी थी। इस अभियानकालमें सम्राट्को सुवर्णग्रामके हिन्दू राजाओंसे सहायता मिली थी। लौटते समय ये अपना द्वितीय पुत्र नासिर-उद्दीनको बङ्गालके शासनकर्त्तृ पद पर नियुक्त कर गये। बीस वर्ष राज्य करनेके बाद ये १२८६ ई०में परलोकको चल बसे। पीछे उनके नाती मोइज उद्दीन कैकोवादने बङ्गालसे आ कर दिल्लीके सिंहासन पर अधिकार जमाया।

बलवनसिंह—काशीपति महाराज चेतसिंहके पुत्र। ग्वालियरमें इनका जन्म हुआ था। पिताकी मृत्युके बाद ये सपरिवार आगरेमें आ कर बस गये थे। उस समय इस राज परिवारके भरणपोषणके लिये मासिक २ हजार रुपयेकी वृत्ति मिलती थी। ये उर्दूभाषामें एक दीवानकी रचना कर गये हैं।

बलवन्त (स० त्रि०) बलवान्, बली।

बलवन्तसिंह—१ काशीके अधिपति, राजा मानसरामके पुत्र और ख्यातनामा चेतसिंहके पिता। १७४३ ई०में यह राजपद पर अधिष्ठित हुए। ३० वर्ष राज्य करनेके बाद इनका देहान्त हुआ।

२ भरतपुरके जाटवंशीय एक राजा। ये १८२४ ई०में पिता बलदेवसिंहके सिंहासन पर अधिष्ठित हुए। १८२५ ई०में इनके भाई विख्यात जाट-सरदार दुर्जन शालने इन्हें राज्यच्युत करके सिंहासन पर अधिकार जमाया। १८२५ ई०में भरतपुर दुर्गके अवरोध और जयके बाद वृटिश सरकारने बलवन्तको फिरसे सिंहासन पर अधिष्ठित किया। १८५३ ई०को ३४ वर्षकी अवस्थामें इनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके पुत्र यशोवन्त राजसिंहासन पर बैठे।

बलवर्द्धन (सं० पु०) १ सैन्यवृद्धि। २ धृतराष्ट्रके पुत्र का नाम।

बलवर्द्धिन् (सं० त्रि०) बल वर्द्धयति वृध णिनि। बलवृद्धिकारक, बल बढ़ानेवाला।

बलवर्मदेव—एक हिन्दू राजा। भुजङ्गिका नामक स्थानमें इनकी राजधानी थी। समुद्र गुप्तकी लिपिसे मालूम होता है, कि इनकी माता तथा स्त्री दोनोंका नाम वृत्तदेवी था।

बलवर्मन् (सं० पु०) एक प्राचीन हिन्दू राजा। इन्हें समुद्र गुप्तने परास्त किया था।

बलवला (सं० स्त्री०) गन्धर्व।

बलवा (फा० पु०) १ विप्लव, दंगा। २ विद्रोह, बगावत।

बलवाई (फा० पु०) विद्रोही, बागी। २ उपद्रवी, फसादी।

बलवान् (सं० त्रि०) १ बलिष्ठ, ताकतवर। २ दृढ़, मजबूत। ३ सामर्थ्यवान शक्तिमान्। (पु०) ४ आहार। ५ कफ। ६ शणबीज।

बलविकर्णिका (सं० स्त्री०) दुर्गाका एक नाम।

बलविन्यास (सं० पु०) बलानां सैन्यानां विशेषेण दुर्भेद्यत्वेन न्यास स्थापन। युद्धके लिये सैन्य व्यूह रचना। सेना इस प्रकार सजानी चाहिये जिससे शत्रुगण उसे भेद कर न आ सके। यह बलविन्यास मकर-पद्मादिके भेदसे नाना प्रकारका है। मनुमें लिखा है—

यात्राकालमें यदि चारों ओरसे भयकी आशङ्का रहे, तो राजा दण्डव्यूह, पीछेकी ओर भय होनेसे शकटव्यूह, दो ओरसे आशङ्का होनेसे वराह और मकरव्यूह, आगे पीछेकी ओर भय होनेसे गरुड़व्यूह तथा केवल सामनेकी ओर भय होनेसे सूची-व्यूहकी रचना करके यात्रा करे। राजा जब जिस ओर विपदकी अधिक

आशङ्का देखे, तब उसी ओर आत्म सेनाको बढावे तथा उन सब सेनाओंको पद्मव्यूहाकारमें सजा कर आप बीचमें छिप कर खड़े रहे। सैन्यसंख्या थोड़ी रहनेसे संहतभावमें और अधिक रहनेसे विस्तृत भावमें सन्निवेशित करना विधेय है। (मनु ७ अ०) व्यूहरचना देखो।

बलविनाशन (सं० पु०) बलनाशक इन्द्र।

बलवीर (हि० पु०) बलवीर देखो।

बलवीर्य (सं० पु० क्ली०) १ भरतवंश्य नृपभेद। २ बल और वीर्य।

बलव्यसन (सं० पु०) सेनाको हराना या तितर बितर करना।

बलव्यूह (सं० पु०) एक प्रकारकी समाधि।

बलशाली (सं० त्रि०) बलेन शालते शाल णिनि। बल विशिष्ट, बली, ताकतवर।

बलशील (सं० त्रि०) शक्तिशाला, बली।

बलसन—पञ्जाबके अन्तर्गत एक पार्वतीय राज्य। यह अक्षा० ३० ५८´से ३१ ७´ उ० तथा देशा० ७७ २४´से ७७ ३५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५१ वर्गमील और जनसंख्या सात हजारके करीब है। यह सिमलासे ३० मील पूर्वमें पडता है। यहांके सामन्त राणा उपाधिधारी राजपूत हैं। राज्यका विचार-कार्य उन्हींके द्वारा होता है, पर किसी अपराधीको प्राणदण्ड देनेमें उन्हें पार्वतीय राज्यके परिचालक अंगरेज कर्मचारीसे अनुमति लेनी पडती है। राजस्व ६०००) रु०का है जिसमेंसे १०८० रु० वृटिशसरकारको देने पडते हैं। इस राज्यमें देवदारका पेड़ लम्बा चौडा उगता है।

बलसम्भव (सं० पु०) धान्यविशेष, साठी धान।

बलसाने—खान्देशजिलेके पिम्पलनेर उपविभागके अन्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण २०८ वर्गमील है। यहां बहुत सी गुहाएं और सुरक्षित तथा सुप्राचीन मन्दिर देखे जाते हैं।

बलसार—१ बम्बई प्रदेशके सूरत जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण २०८ वर्गमील है। यहांका तिथल नामक समुद्रोपकूलवर्त्ती स्थान बम्बई प्रदेशमें एक अच्छा स्वास्थ्य निवास समझा जाता है।

२ उक्त जिलेका एक नगर और बन्दर। यह अक्षा० २० ३६´ ३०´´ उ० तथा देशा० ७२ ५८´ ४०´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां शालकाष्ठका विस्तृत वाणिज्य चलता है।

बलसुम (हि० त्रि०) बलुआ, जिसमें बालू हो।

बलसूदन (सं० पु०) बलं तन्नामा प्रसिद्ध असुर सूदयतीति बल सूद ल्यु। १ इन्द्र। इन्द्रने इस असुरको युद्धमें मारा था, इस कारण उनके बलसूदन, बलारि, बलविनाशन आदि नाम पड़े हैं। २ विष्णु।

बलसेना (सं० स्त्री०) सेनादल।

बलसोर—उड़ीसा प्रदेशका एक जिला। बालेश्वर देखो।

बलस्थ (सं० त्रि०) १ बलशाली, बलवान्। २ सैन्यदलभुक्त।

बलस्थिति (सं० स्त्री०) बलानां स्थितिरवस्थानं यत्र, अभिधानात् स्त्रीत्वं। शिविर, छावनी।

बलहन् (सं० पु०) बलं सामर्थ्यं हन्तीति बल हन क्विप्। १ श्लेष्मा, कफ। बलं तन्नामानमसुरं हन्तीति। २ इन्द्र। (त्रि०) ३ बलविनाशक।

बलहर (सं० त्रि०) हरतीति हृ अच् हर, बलस्य हरः। बलनाशक।

बलहरा—एक हिन्दू राजा। ये जलन्धरके सीमान्तवर्त्ती कमर प्रदेशमें राज्य करते थे। यहांकी स्त्रियां 'अस्तान शाह' कहलाती थीं। जिस समय उमर अबदुल अजीज खलीफा पद पर सुशोभित थे, उस समय भी ये दोर्दण्ड प्रतापसे राज्यशासन करते थे। आखिर खलीफाके आदेशसे मुमाल्लमके पुत्र अस्नुने युद्ध करके उन्हें वशमें कर लिया था।

बलही—मध्यप्रदेशके भण्डारा जिलान्तर्गत एक शैलमाला। यह प्रायः ११ कोस तक फैली हुई है।

बलहीन (सं० त्रि०) बलेन हीन। १ बलशून्य। (पु०) २ ग्लानि, बलहीनता।

बला (सं० स्त्री०) कार्यकारित्वेन बलमस्त्यस्या बल अर्श आदित्वादच्, ततष्टाप्। (Sida Cordifolia) स्वनामख्यात क्षुपविशेष, बरियारा नामक क्षुप। संस्कृत पर्याय—वाट्यालक, समङ्गा, ओदनिका, भद्रा, भद्रोदनी, खरकाष्ठिका, कल्याणिनी, भद्रबला, मोटा, पाटी, बलाढ्या, शीतपाकी, वाट्या, वाटी, विनया, घाट्याली, वाटिका। बला

महाबला, अतिबला और नागबलाके भेदसे चार प्रकारका है। इनमेंसे बलाको वाट्यालिका, वाट्या और वाट्यालक महाबलाको पीतपुष्पा और महादेवी, अतिबलाको ऋष्यप्रोक्ता और कङ्कतिका तथा नागबलाको गाङ्गेरुकी और हस्वगवेधुका कहते हैं। ये चारों प्रकारकी बला शीतवीर्य, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, धारक और वायु, रक्तपित्त, रक्तदोष तथा क्षतविनाशक मानी गई हैं। बला मूलकी छालके चूर्णको दूध और चीनीके साथ मिला कर पान करनेसे मूत्रातिसार और प्रदर विनष्ट होता है। महाबलाके चूर्णको उक्त अनुपानके साथ पान करनेसे मूत्रकृच्छ्र दूर होता है तथा विपथगामी वायु स्वपथगामी होती है। अतिबला चूर्णको दूध और चीनीके साथ सेवन करनेसे प्रमेहरोग जाता रहता है। (भावप्र० पूर्वख०)

राजनिघण्टके मतसे यह अति तिक्त, मधुर, पित्तातिसारनाशक, बल और वीर्यवर्द्धक, पुष्टि और कफरोगविशोधन है। इसके बीजका गुण—कामोद्दीपक, मेहनाशक, विरेचक और वेदनाशक। इसके रेशे (मूलतंतु) धारक और बलकारक माने गये हैं।

अदरक और बलाके रेशेका काथ सविराम ज्वरमें विशेष उपकारक माना गया है। पक्षाघात रोगमें इसके रेशे हिंगु, सैन्धव और लवणके साथ दिये जाते हैं।

२ विद्याविशेष। यह विद्या ब्रह्मकन्या है। विश्वामित्रने रामचन्द्रको इस विद्याकी शिक्षा दी थी। इस विद्याके प्रभावसे युद्धके समय योद्धाको भूख और प्यास नहीं लगती। बला और अतिबला विद्या समस्त ज्ञानकी मातृस्वरूपिणी है। ३ नाट्यशास्त्रके अनुसार नाटकोंमें छोटी बहिनका सम्बोधन। ४ पृथिवी। ५ लक्ष्मी। ६ दक्ष प्रजापतिकी एक कन्याका नाम। ७ जैनियोंके ग्रन्थानुसार एक देवी जो वर्त्तमान अवसर्पिणीमें सतरहवें अर्हत उपदेशोंका प्रचार करती है। ८ बग देखो।

बला (अ० स्त्री०) १ आपत्ति, आफत। २ कष्ट, दुःख। ३ भूत, प्रेत। ३ व्याधि, रोग।

बलाक (स० पु०) बलेन अकनोति वक्र गच्छति अच्। १ बकजाति, बगला। २ एक राजाका नाम जो भागवतके अनुसार पुरुके पुत्र और जह्नुके पौत्र थे। ३ शाकपूणि ऋषिके एक शिष्यका नाम। ४ एक राक्षसका नाम। ५ जातुकर्ण मुनिके एक शिष्यका नाम। ६ स्वनामख्यात व्याधविशेष।

बलाका (सं० स्त्री०) बलते इति बल सम्बरणे (बलाकादयश्च। उण् ४।१४) इति अक, टा बलेन अकनोति वक्र अक कुटिलगतौ पचाद्यच्। १ बकजातिविशेष, एक प्रकारका बगला। पर्याय—विषकण्ठिका, विषकण्ठी, बलाकी, बालिका, तिङ्गुलिका, विषकण्ठो, शुभाङ्गा, दीर्घकन्धरा, घर्मान्ता, कामुकी, श्येता, मेघानन्दा, जलाश्रया। इसके मांसका गुण—वायुनाशक, स्निग्ध, बद्धमल, वृष्य, कफपित्तहर हिम। यह पक्षी जलमें तैरता है, इस कारण इसे प्लव जातिके अन्तर्गत माना है। १ बक देखो।

२ कामुकी स्त्री। ३ बकश्रेणी, बगलोंकी पंक्ति। ४ गतिके अनुसार नृत्यका एक भेद।

बलाकाकौशिक (सं० पु०) आचार्यभेद।

बलाकाश्व (स० पु०) १ हरिवंशके अनुसार एक राजाका नाम जो अजकके पुत्र थे। २ जह्नुके वंशके एक राजा।

बलाकिका (सं० स्त्री०) क्षुद्रबलाकाभेद।

बलाकी (स० त्रि०) बलाका व्रीह्यादित्वादिनि। १ बलाकायुक्त। (पु०) २ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम।

बलाग्र (स० क्ली०) १ सेनापति। २ सेनाका अगला भाग। (त्रि०) ३ बलशाली, बली।

बलाङ्गक (स० पु०) वसन्तकाल, वसन्तऋतु।

बलाञ्चिता (स० स्त्री०) बलेन अञ्चिता। रामवीणा।

बलाट (स० पु०) बलेन अट्यते प्राप्यते इति अट् घञ्। मुद्ग, मूंग।

बलाढ्य (स० पु०) १ माष, उड़द। (त्रि०) २ बलवान्।

बलात् (स० अव्य०) बलमस्तीति बल-अत् विच्। १ बलपूर्वक, जबरदस्तीसे। २ हठात्, हठसे।

बलात्कार (स० पु०) बलात्करण बलात् कृ भावे घञ्। १ किसीको इच्छाके विरुद्ध बलपूर्वक कोई काम करना। २ अत्याचार, अन्याय। ३ किसी स्त्रीके साथ उसकी इच्छाके विरुद्ध सम्भोग करना।

बलात्कारगण (स० पु०) जैनसम्प्रदायभेद।

बलात्काराभिगम (स० पु०) बलात्कारेण अभिगम।

बलात्कार पूर्वक किसी स्त्रीके सतीत्वका नाश करना, जिनाबिल्जब्र।

बलात्कारित (स० त्रि०) जिससे बलात्कारसे कुछ कराया जाय, जिस पर बलात्कार करके कोई काम कराया जाय।

बलात्कृत (स० त्रि०) १ बलपूर्वक आक्रान्त, जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। २ हठात् धृत, जो सहसा पकड़ा गया हो।

बलात्मिका (स० स्त्री० बलमेव आत्मा स्वरूप यस्या। १ हस्तिशुण्डवृक्ष, हाथीसूंड नामका पौधा। २ राघापद्म।

बलादि (स० पु० १ पाणिन्युक्त यप्रत्यय निमित्त शब्द गण। यथा—बल, चुल, नल, दल, वट, लकुल, उरल, पुल, मूल, उल, डुल, वन, कुल। २ अस्त्यर्थे मतुप् प्रत्यय निमित्त शब्दगण। यथा—वल, उत्साह, उद्भास, उद्वास, उद्दास, शिखा, कुल, चूडा, सुल, कूल, आयाम, व्यायाम, आरोह, अवरोह, परिणाह, युद्ध।

बलाद्यघृत (स० क्ली०) घृतौषधभेद। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—गव्यघृत ४ सेर, क्वाथके लिये बला, गोरक्ष, अर्जुनकी छाल, कुल मिला कर ४ सेर। इन्हें ६४ सेर जलमें उबाले। जब जल १६ सेर बच रहे तब उसे नीचे उतार कर एक सेर यष्टिमधु डाल दे। इसका सेवन करनेसे हृद्रोग, शूल, क्षत, रक्तपित्त आदि रोग जाते रहते हैं। (भैषज्यरत्ना० हृद्रोगाधि०)

बलाया (स० स्त्री०) बलाय आया श्रेष्ठा। बला।

बलाधिक (स० पु०) बलश्रेष्ठ, वह जो अधिक बलशाली हो।

बलाधिकरण (स० क्ली०) सेनादिका कार्य।

बलाधिष्ठान (स० क्ली०) बलस्य अधिष्ठान। बलाधान।

बलाध्यक्ष (स० पु०) बलस्य अध्यक्ष। सेनापति।

बलान—तिरहुत जिलेमें प्रवाहित एक छोटी नदी।

बलानुज (स० पु०) बलस्य बलरामस्य अनुज कनिष्ठ। श्रीकृष्ण।

बलापञ्चक (स० क्ली०) बला, अतिबला, नागबला, महाबला और राजबला नामकी पांच ओषधियोंके समुदायका नाम। बला देखो।

बलाबल (स० क्ली०) बलञ्च अबलञ्च। बल और अबल।

बलाबलाधिकरण (स० क्ली०) बलञ्च अबलञ्च ते अधि क्रियते अस्मिन् अधि कृ आधारे ल्युट्। आकाङ्क्षा और अनाकाङ्क्षारूप बलाबलके निश्चायक जैमिनि उक्त न्यायभेद। (वेदान्तपरि)

बलामोटा (स० स्त्री०) बलमोटयतीति बल मुट अच् टाप्। १ नागदमनी नामकी ओषधि। इसका गुण कटु, तिक्त, लघु, पित्त और कफनाशक, मूत्रकृच्छ्र और व्रणनाशक माना गया है। २ जयन्ती।

बलाय (स० पु०) अयतीति अय, प्रापक बलस्य अय। वरुणवृक्ष, बरुना।

बलाय (अ० पु०) १ आपत्ति, विपत्ति। २ अत्यन्त दुःखदायी मनुष्य, बहुत तंग करनेवाला आदमी। ३ दुःखदायक रोग जो पीछा न छोड़े। ४ भूत प्रेतकी बाधा। ५ दुःख, कष्ट। ६ एक प्रकारका रोग। इसमें रोगीकी उंगलीके छोर या गांठ पर फोड़ा हो जाता है। रोगीको बहुत कष्ट होता है और उंगली कट जाती या टेढ़ी हो जाती है।

बलाराति (स० पु०) बलस्य तन्नाम्ना प्रसिद्धासुरस्य अराति। १ इन्द्र। २ विष्णु।

बलारिष्ट (स० क्ली०) आयुर्वेदोक्त औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—बला १२॥ सेर और अश्वगन्धा १२॥ सेर इसे मिला कर २५६ सेर जलमें पाक करे। जब जल ६४ सेर बच रहे, तो नीचे उतार ले। पीछे ठंढा हो जाने पर उसमें ३७॥ सेर गुड़, २ सेर धवका फूल, २ पल क्षीरकाकोली, २ पल एरण्डमूल और रास्ना, इलायची, लवङ्ग, खसखसकी जड़ और गोक्षुर प्रत्येक एक एक पल डाल दे। पीछे किसी चीजसे बरतनका मुंह ढक कर एक मास तक उसी अवस्थामें छोड़ दे। इसका सेवन करनेसे बलपुष्टि और अग्निवृद्धि होती तथा प्रबल वातरोग जाता रहता है। (भैषज्यरत्ना० वातरक्ताधि०)

बलाल्क (स० पु०) बलाय बलति समर्थो भवतीति बल अल् क्वुन्। पानीयामलक, जलआंवला।

बलावलेप (स० पु०) बलेन अवलेप। गर्व, अहङ्कार, दर्प।

बलास (स० पु०) बलमस्यतीति बल अस-अण्। १ श्लेष्मा, कफ। २ कण्ठगतरोगविशेष, गलेका एक रोग

जिसमें कफ और वायुके प्रकोपसे गले और फेफड़ेमें सूजन तथा पीड़ा होती है, सांस लेनेमें कष्ट होता है।

बलास (स० पु०) बलमस्यति क्षिपति अस अण्। १ कफधातु। २ कण्ठगत रोग। बलाश देखो।

बलास (हिं० पु०) बरना नामका पौधा।

बलासक (स० पु०) शुक्लगत नेत्ररोग।

बलासग्रथित (स० क्ली०) चक्षु रोगभेद।

बलासम (स० पु०) धुक।

बलासिन् (स० त्रि०) श्वासरोगयुक्त, जिसे श्वासरोग हुआ हो।

बलाहक (स० पु०) १ मेघ, बादल। २ मुस्तक, मोथा। ३ शाल्मलीद्वीपस्थ पर्वतविशेष। ४ दैत्यविशेष। ५ नागविशेष। ६ सर्पविशेष। ७ कल्किदेवके रमागर्भजात पुत्रभेद। कल्किपत्नी रमाने वैशाखी शुक्लाद्वादशीके दिन जमदग्निके उद्देश्यसे व्रत करके महाबलिष्ठ दो पुत्र लाभ किये जिनका नाम मेघपाल और बलाहक था। ये दोनों सर्वदा देवताओंके उपकार, यज्ञ, दान और तपस्या में लगे रहते थे। (कल्किपु० ३१ अ०) ८ श्रीकृष्णका रथाश्वविशेष, कृष्णचन्द्रके रथके एक घोड़ेका नाम। ९ जयद्रथके भ्रातविशेष। १० नदविशेष। ११ कुशद्वीप स्थित पर्वतविशेष। १२ तारापीड राजाके स्वनामख्यात सेनापति।

बलाहकन्द (स० पु०) बलमाह्वयतीति बलाहस्ताद्दृश कन्द। गुल्मकन्द।

बलि (स० पु०) बल्यते दीयते इति बल दाने (सर्व-धातुभ्यो इन्। उण् ४।११७) इतीन्। १ कर, भूमिकी उपजका वह अंश जो भूस्वामी प्रति वर्ष राजाको देता है। हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें भूमिकी उपजका छठा भाग राजाका अंश ठहराया गया है। इसीको बलि या कर कहते हैं। २ उपहार, भेंट। ३ पूजा सामग्री, वह सामग्री जिससे देवताओंको पूजा जाता है। ४ चामरदण्ड, चंवरका दंड। ५ बलिवैश्य नामक पञ्च यज्ञोंमें भूतयज्ञ। गृहस्थ को प्रति दिन पांच यज्ञ करने पड़ते हैं। इससे प्रतिदिन पञ्चसूनाजनित पाप छूट जाता है। अतएव यह यज्ञ प्रत्येक गृहस्थका कर्त्तव्य बतलाया गया है। इन्हीं पांच यज्ञोंमें जो भूतयज्ञ नामका यज्ञ है उसे बलि कहते हैं।

"अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्॥
पञ्चैतान् यो महायज्ञान् न हापयति शक्तितः।
स गृहेऽपि वसन्नित्यं सूनादोषैर्न लिप्यते॥"

(मनु ३।७० ७१)

गृहस्थोंको चाहिये, कि वे प्रतिदिन बलियज्ञ करें। गृहस्थको सदा दृढ़चित्त और देवताकी पूजामें तत्पर हो कर होम करना चाहिये। होमके बाद पूर्वादि दिशाओं में बलि देनी चाहिये। उन्हें क्रम पहले पूर्व दिशामें 'इन्द्राय नमः' 'इन्द्रपुरुषेभ्यो नमः' दक्षिण दिशामें 'यमाय नमः' 'यमपुरुषेभ्यो नमः' पश्चिम दिशामें 'वरुणाय नमः' 'वरुणपुरुषेभ्यो नमः' उत्तर दिशामें 'सोमाय नमः' 'सोम पुरुषेभ्यो नमः', इस प्रकार चारों दिशाओंमें बलि देनी चाहिये। ऐसा करनेके बाद मण्डल के द्वारमें यों कहे 'मरुद्भ्यो नमः' जलमें 'अद्भ्यो नमः' मूसल या ओखलीमें 'वनस्पतिभ्यो नमः' इस प्रकार बोल कर बलि देनी पड़ती है। वास्तु पुरुषके शिर प्रदेशमें, उत्तर पूर्व दिशामें लक्ष्मीको 'श्रियै नमः' ऐसा कह कर, फिर उसके पाददेशमें 'भद्रकाल्यै नमः' घरमें ब्रह्माको 'ब्रह्मणे नमः' वास्तु देवताको 'वास्तोष्पतये नमः' ऐसा कह कर बलि देनी होती है। 'विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः' 'दिवा चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः' नक्तचारिभ्यो नमः' ऐसा कह कर समस्त देवताओं तथा दिवाचर और रात्रिचर भूतोंके उद्देश्यसे ऊपर आकाशमें बलि फेंक दी जाती है। बाकी बची हुई बलिको अपने पृष्ठदेशमें 'सर्व्वात्मभूतये नमः' कह कर सब भूतोंको बलिप्रदान करना चाहिये। अन्तमें सम्पूर्ण बलि देनेके बाद जो अन्न बचे उसे दक्षिण दिशामें मुख कर और प्राचीनावीति हो पितरों-को 'स्वधा पितृभ्यः' बोल कर बलि देनी चाहिये। बलि देनेके बाद वह अन्न कुत्ते, पतित, कुत्तेसे आजीविका करनेवालेको, पापरोगियोंको, कौवा तथा कृमियोंको देना चाहिये। उस अन्नको भूमि पर इस प्रकार रखे जिससे उसमें धूलि न लगे। जो ब्राह्मण प्रतिदिन इस विधि द्वारा अन्नसे सम्पूर्ण भूतोंको बलि देते हैं वे मृत्युके बाद दिव्य शरीरको प्राप्त कर परलोक जाते हैं। इस प्रकार बलि देनेके बाद अतिथियोंको भोजन करा कर पीछे आप

स्वय भोजन करे। ( मनु ३ अ० ) वैश्वदेवबलि साग्निक ब्राह्मणको अवश्य कर्त्तव्य है।

काम्यबलिमें बलिके पश्चिम भागमें जलसे उत्तराग्र रेखा खींच कर इस मन्त्रसे बलि देनी चाहिये। यथा—

"ऊ देवा मनुष्या पशवो वयासि सिद्धा सय
क्षीरगदैत्य स घा ।
प्रेता पिशाचास्तरव समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति
मया प्रदत्तम् ॥
पिपीलिका कीटपतङ्गाद्या बुभुक्षिता कर्मं
निब धदेहा ।
प्रयान्तु ते तृप्तिमिद मयान्न तेभ्यो विसृष्ट
सुखिनो भवन्तु ॥
येषा न माता न पिता न बन्धुर्नैवान्नसिद्धिर्न
तथान्नमस्ति ।
तत्तृप्तयेऽन्न भुवि दत्तमेतत् प्रयान्तु तृप्ति
मुदिता भवन्तु ॥
ॐ भूतानि सर्वाणि तथान्नमेतदहञ्चविष्णुर्न
यतोऽन्य दस्ति ।
तस्मादह भूतनिकायभूतमन्न प्रयच्छामि
भवाय तेषा ॥
चतुर्द्दशो भूतगणो यएप तत्र स्थिता येऽखिल
भूतसघा ।
तृप्त्यर्थमन्न हि मया निसृष्ट तेषामिदते मुदिता
भवन्तु ॥"
( आह्निकतत्त्व )

आह्निकतत्त्वमें इसका विवरण खुलासा तौरसे किया गया है। विस्तार हो जानेके भयसे यहा दो एक टीका वर्णन किया जाता है। बलि देनेका तात्पर्य यह है, कि कोइ अपने उद्देश्यसे पका कर भोजन न करे। समस्त भूत, कीडे, पतङ्ग आदिको अन्न देना ही बलि है एव इसी प्रकार बलि दे कर भोजन करना चाहिये। शास्त्रमें लिखा है, कि जो अपने सुखके निमित्त भोजन पकाते हैं वे केवल पापका ही बोझा बाधते हैं।

नवग्रहके लिये जो बलि दी जाती है उसे नवग्रह बलि कहते हैं।

सूर्यको गुडोदन, चन्द्रमाको घी दूध, मंगलको यावक, बुधको क्षीरान्न, बृहस्पतिको दध्योदन, शुक्रको घृतौदन, शनिको खिचडी, राहुको बकरेका मास एव केतुको चित्रौदन बलिमें दिया जाता है। जिनकी जो बलि है उनको वही बलि देनेसे वे प्रसन्न होते हैं। देवताओंको जिन जिन उपायों द्वारा प्रसन्न एव पूजन किया जाता है वह सब बलि कहे जाते हैं।

कालिकापुराणमें बलिका विषय, उसका क्रम एव स्वरूप अर्थात् जिस प्रकार रुधिरादि द्वारा देविया प्रसन्न होती हैं उसका वर्णन इस प्रकार किया है—साधकों को चाहिये, कि वे बलिदानका क्रम जैसा वैष्णवी कल्प तन्त्रमें कहा गया है वैसा ही ग्रहण करें। पक्षी, कच्छप, ग्राह, मत्स्य, नौ प्रकारका मृग, भैसा, बकरा, भेंडा, गाय, बकरी, रुरु, सूअर, कृष्णसार, गोधिका, शरभ, सिंह, शार्दूल, मनुष्य और अपने शरीरका खून इन्हें चण्डिका और भैरवीको प्रसन्न करनेके लिये बलिमें देना चाहिये। इन बलियोंको देनेसे सम्पूर्ण इच्छाओंकी पूर्त्ति एव मृत्युके बाद स्वर्गकी प्राप्ति होती है। महामाया दुर्गाजी मत्स्य और कच्छपके रुधिरकी बलिसे एक मास, ग्राहादिके रुधिरसे तीन मास, मृग और मनुष्योंके खूनसे आठ मास, गोधिकाके रुधिरसे एक साल, कृष्णसार और सूअरके खूनसे बारह वर्ष, अजा, भेड और शार्दूलके रुधिरसे पचीस वर्ष, सिंह, शरभ, और अपने रक्तसे एक हजार वर्ष तक सतुष्ट होती हैं। इन सम्पूर्ण पशुओंकी बलिसे दुर्गाजी परिमितकाल तक सतुष्ट रहती हैं। कृष्णसार, गैडा और बकरा देवीको बहुत प्यारे लगते हैं। बलियोंमें मनुष्यकी बलि सबसे उत्कृष्ट है। विधिके अनुसार एक नरबलि देनेसे देवी दुर्गा एक हजार वर्ष तक और तीन नरबलि देनेसे एक लाख वर्ष तक सतुष्ट रहती हैं। मंत्रसे पवित्र किया हुआ बलि-का रक्त अमृत रूपमें परिणत हो जाता है। बलिका मस्तक एव मास देवताका बहुत अभीष्टप्रद है। इसी लिये पूजाके समय बलिका शिर और रक्त देवीको दान करना पडता है। साधकोंको चाहिये, कि वे भोज्य द्रव्यके सहित लोमशून्य अथवा पूनापकरणके सहित भी मास ही दे। रक्तशून्य बलिका मस्तक अमृतके बराबर है।

कुष्माण्ड, इक्षुदण्ड, मद्य और आसव ये भी बलिमें गिने जाते हैं। जिस जगह पशुकी बलि नहीं दी जाती, उस जगह इक्षु और कुष्माण्ड बलि ही विधेय है। जो वैष्णव हैं वे अपने घर पर जब शक्तिकी पूजा करते हैं तब पशु बलिके बदले कुष्माण्ड और इक्षु बलि देते हैं इस बलिके देनेसे भी देवी कृष्णसार और बकरेके मांसकी तरह प्रसन्न होती हैं। बलिदानमें चन्द्रहास (खड्ग) या कर्त्रीसे बलिको काटना प्रशस्त है इसके सिवा, तलवार या भालेसे बलिच्छेद करना मध्यम तथा उस्तरा और भालेसे बलिको काटना अधम है। शक्ति और बाणसे बलिको काटना बिलकुल निषिद्ध है। जिन अस्त्रोंसे बलिच्छेद करना निषिद्ध बतलाया गया है उनसे यदि कोई करे, तो देवी ग्रहण न करतीं और बलिका देनेवाला शीघ्र ही मृत्यु मुखमें पहुंचता है। बलि देनेके पहले पशुको स्नान करा कर विधिके अनुसार प्रोक्षण और खड्गकी पूजा करनी चाहिये। पीछे उसी खड्गसे पशुको उत्तर या पूर्वाभिमुख कर बलि देनी चाहिये।

बलि देनेमें जो हिंसाका दोष लगता है उसको निवारण करनेके लिये मन्त्रो का पाठ किया जाता है। मन्त्रोंका तात्पर्य इस प्रकार है—स्वयं ब्रह्माजीने यज्ञके लिये पशुओंकी सृष्टि की है। इसीलिये मैं यज्ञमें पशुको बलि चढ़ाता हूं, बलि चढ़ानेमें जो हिंसा हुई है उसका दोष मुझे न हो। बलिके रक्तको पात्रमें रख कर देना चाहिये। वैभवके अनुसार सुवर्ण, कांसे, पीतल या चांदीका पात्र बलिके लिये बनाना चाहिये। जो अत्यन्त गरीब हैं वे यज्ञमें चढ़ाने लायक लकड़ीके पात्रमें भी बलिदानके रक्तको चढ़ा सकते हैं। जब बहुत-सी बलि चढ़ाई जाती हैं तब दो या तीनको सामने कर सबोंको एक साथ ही चढ़ाया जाता है। जिन पशुओंकी बलि दी जाती है वे बलि होनेके बाद दिव्यदेहको प्राप्त करते हैं और स्वर्गमें ऐश्वर्य आदि सम्पदाये भोगते हैं। वे सदाके लिये पशुयोनिको छोड़ देते हैं। भैंसा, भेंसा और बकरेकी बलि ही आज कल प्रचलित देखी जाती है। मेष और बकरे एक ही मन्त्रसे देवीके सामने चढ़ाये होते हैं; किन्तु जहां पर यह कहा जाता है कि मैं कौन-सा पशु चढ़ाता हूं वहां पर उसका पृथक् नाम लेना पड़ता है। महिषकी बलि देनेका दूसरा मन्त्र है। (कालिकापुराण ६६ अ० )

बकरोंमें जिनकी अवस्था तीन वर्षसे कमती है उनको बलिमें चढ़ाना नहीं चाहिये। यदि ऐसा पशु कोई बलिमें चढ़ावे, तो आत्मा, पुत्र और धनका क्षय होता है।

"शिशुना बलिदानेन चात्मपुत्र धनक्षय।" (तिथितत्त्व।

दुर्गोत्सवतत्त्वमें ऐसा लिखा है—

"पशुघातपूर्वकरक्तशीर्षयोर्दानं लिख्य"

पशु मारनेके बाद मस्तक और रक्तका दान करना ही बलि है। इस पशुको तलवारसे मारना चाहिये। खड्गका परिमाण इस प्रकार बतलाया गया है—उसकी मूठ बारह अंगुल, लम्बाई ३२ अंगुल और चौड़ाई ६ अंगुल, धार खूब तेज हो, ऐसी तलवारको उत्तर या पूर्वकी तरफ कर बलि करनी चाहिये।

एक आघातमें ही बलिच्छेद करना चाहिये। यदि एक आघातमें बलिच्छेद न हो, तो उस साल बलि करानेवाले और करनेवालेको पद पद पर विघ्न होंगे, ऐसा जानना चाहिये। इसलिये बलि देनेमें विशेष सावधानी की जरूरत है। बलिमें यदि विघ्न हो, तो उसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिये।

बलिदानके समय जो पशु एक आघातसे नहीं कटता, उसको फिर काट कर उसी पशुके मांससे होम करना चाहिये। विधिके अनुसार उसके मांससे पूजा करनेसे शान्ति होती है। अथवा ऐसा न कर सके, तो सहस्रनाम नामके मन्त्रको जप कर देवीके उद्देश्यसे उसके बदलेमें एक और बलि चढ़ानी चाहिये। जो पशु काटनेके समय बांधा जाता है उसका मांस अथवा रुधिर कुछ भी नहीं चढ़ाना चाहिये। उस पशुके मांससे सहस्र बार होम कर ब्राह्मणोंको सुवर्णका दान करना चाहिये। इस प्रकार शान्ति करनेसे उसका प्रतिकार होता है।

बकरे या भेड़को चढ़ानेमें भी ऐसी शान्ति करनी होती है। यदि भैंसा बलिदानके समय एक आघातसे न कट जावे तो उसकी पृथक् रीतिसे शान्ति करनी होगी।

जिस पशुकी बलि देनी होती है वह पशु युवा, व्याधि रहित, सम्पूर्ण अङ्गोंसे परिपूर्ण और अच्छे लक्षणोंसे युक्त होना चाहिये। शिशु, वृद्ध, अङ्गहीन और खोटे लक्षणवाला पशु बलिदानमें निन्दनीय गिना जाता है।

इस प्रकारके पशुको बलि देनेसे नाना प्रकारकी आपत्तियां आती हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तमें लिखा है—दुर्गापूजामें सप्तमीके दिन पूजा कर बलि देनी चाहिये, अष्टमीके दिन बलि चढ़ाना निषिद्ध है। अष्टमी दिन चढ़ानेसे कोई न कोई विपत्ति अवश्य आती है। नवमीके दिन पूजा कर यदि विधिके अनुसार बलि दी जाय, तो बहुत पुण्यका लाभ होता है। बलि देनेसे देवी दुर्गा अवश्य प्रसन्न होती हैं, किन्तु इससे पशु हिंसाजन्य पाप भी अवश्य लगता है। पशु बलिमें जो बलि चढ़ाते हैं अर्थात् पुरोहित, बलिदाता, काटनेवाला, पोषक, रक्षक, आगे और पीछे रोकनेवाले ये सात मनुष्य बलिके पाप भागी होते हैं। अतएव बलिसे पाप और पुण्य दोनों ही होते हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके प्रकृतिखण्डके ६१वें अध्यायमें लिखा है कि बलिदान देना पाप है। इससे पाप और पुण्य दोनों ही होते हैं। रघुनन्दनने तिथितत्त्वमें जहां दुर्गा पूजा के बलिदानका वर्णन किया है वहां पर उन्होंने निश्चय किया है, कि बलिके लिये जो हिंसा की जाती है वह पापजनक नहीं है। अवैध हिंसा ही पापजनक है। वैध हिंसामें पाप न हो कर पुण्य होता है—"यज्ञोऽवध" इसका अर्थ यह है, कि पूजाके लिये जो वध किया जाता है, वह वध नहीं है। ऐसा कहनेका एक मात्र यही उद्देश्य है, कि बलि चढ़ानेमें किसी प्रकारका पाप नहीं होता। यदि पूजामें बलि न दी जावे, तो महा अनर्थ होगा। अतएव पूजा करनेमें बलि अवश्य ही देनी चाहिये।

सांख्यकारिकाकी टीकामें वाचस्पतिमिश्रने, बलिमें हिंसा होती है या नहीं, ऐसा वर्णन आने पर, स्थिर किया है, कि बलिमें दोनों होते हैं, पाप भी होता है और पुण्य भी। प्राणीको मारनेसे पाप और पूजा समाप्त होनेसे पुण्य भी होता है। उनके मतसे यह बात बिल्कुल सिद्ध नहीं होती, कि बलि पुण्यजनक है, पापजनक एकदम नहीं है। वैधहिंसा और हिंसा शब्द देखो।

पशु बलिके साथ साथ नर-बलिका भी विधान शास्त्रों में पाया जाता है। किस प्रकारका मनुष्य बलिके योग्य होता है, उसके विषयमें ऐसा लिखा है—माता पितासे हीन, युवक, विवाहित, दीक्षित, व्याधिशून्य, परस्त्रीरहित और निर्मल चरित्रवाले सत्पुरुषको उसके कुटम्बियों-के हाथसे मोटी रकम दे कर खरीद लेना चाहिये। तत्पश्चात् उसको स्नान करा कर एक वर्ष तक संसार का भ्रमण करावे। फिर उसको अष्टमी और नवमीकी सन्धिमें बलि दे। (दुर्गोत्सवतत्त्व)

जिस समय पशुका मस्तक काटा जाता है उस समय यदि दांतोंका कट् कट् शब्द हो तो बलि देनेवालेको रोग और काटनेके बाद उसकी आंखोंसे यदि मल बाहिर हो, तो जानना चाहिये, कि राज्यका अमङ्गल होगा। महिष का सिर कटने तथा नीचे गिरने पर यदि उसके नेत्रोंसे खून निकले, तो जानना चाहिये, कि प्रतिद्वन्द्वी राजाको मृत्यु होगी। दूसरे पशुके मस्तकसे पसीना निकलने पर भय होगा, ऐसा जानना चाहिये।

नर बलिके समय यदि मनुष्यका शिर हसे, तो जानना चाहिये, कि शत्रुका विनाश और बलि देनेवाले की लक्ष्मी तथा आयुकी वृद्धि होगी। नर-बलिका कटा हुआ मस्तक जिन जिन वाक्यों का उच्चारण करे उनको अवश्य सफल मानना चाहिये। यदि वह हुङ्कार करे तो राज्यकी हानि और यदि देवताके नामका उच्चारण करे, तो बलि देनेवालेको अतुल ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है।

(कालिकापु० ६७ अ०)

ऐतिहासिक आलोचनासे जाना जाता है, कि पहले क्या तो भारतवासी, क्या यूरोपवासी सभीमें, चाहे सभ्य जाति हो या असभ्य, पशुबलि या नरबलिकी प्रथा बेरोक टोक प्रचलित थी। वैदिकयुगमें पुरुषमेधकी कथा पहले ही लिखी जा चुकी है। इसके बाद आरण्यकादिसे पितृमेध, गोमेध और अश्वमेधादि यज्ञों का वर्णन पाया जाता है। पौराणिक कालमें यद्यपि पुरुषमेध-यज्ञ निषिद्ध था तो भी चामुण्डाके सामने बलि देनेकी प्रथा प्रचलित थी। कालिकापुराणके ५६वें अध्यायमें देवी पूजनेके समय बलि देना चाहिये, ऐसा लिखा हुआ है।

जब तक तान्त्रिक मतका प्रभाव रहा तब तक यह रक्तकी बलि चलती रही। मानसिक प्रपञ्चकी सिद्धिके लिये पाशवप्रकृतिके कापालिक भैरवोदेवीको प्रसन्न करने, नरबलि अथवा शवसाधनाके अङ्गोंकी पूर्त्तिके लिये नर

बलि देते थे। १७वीं शताब्दीसे १९वीं शताब्दी तक यह नृशंस पूजा पद्धति समस्त भारतवर्षमें प्रचलित थी। अब भी वामाचारी सम्प्रदायके अनेक गृहस्थ परिवार जिनमें पहले नर बलि दी जाती थी, जीवित मनुष्यके बदले उनकी प्रतिमूर्त्ति बना कर देवीकी तृप्तिके लिये बलि देते हैं। इस पुतलाके बनानेके बाद उसमें प्राणप्रतिष्ठा की जाती है। सुना जाता है, कि पहले बङ्गालकी स्त्रियां पुत्रकी प्राप्तिके लिये गङ्गाके पास जा कर प्रार्थना करती थीं, कि हमारे पुत्र होनेसे हम आपको ही दे जावेगी। भाग्यसे यदि उस स्त्रीके कन्या या पुत्रका जन्म हुआ, तो वह खेद-खिन्न होती हुई गङ्गामें उसको फेंक देती थी। कोई कोई उस पुत्रको मल्लाहोंसे निकलवा कर खरीद लेते थे। बङ्गालमें और भी आत्मोत्सर्गका वर्णन पाया जाता है, वह सतीका सहमरण है। जो सती अपनी इच्छासे पतिके मार्गका अवलम्बन करती थीं उनका पवित्र आत्मोत्सर्ग परम श्लाघनीय है। किन्तु जो स्त्री जीवनके दुःखसे पीड़ित हुई, अनिच्छासे अपने कुटुम्बादिकी ताड़ना तथा लज्जा और भयसे चिताकी ज्वालामें प्रवेश करती थी उसको निष्ठुर बलि न कहा जाय, तो क्या कहा जाय? यह बलि खड्गकी तीक्ष्ण धारसे नहीं, वाक्योंके भीमप्रहारसे होती थी। (२)

शास्त्रमें गङ्गामें डूब कर प्राणत्याग करना महा पुण्यजनक कहा गया है। (३) शास्त्रीय प्रमाणोंसे जाना जाता है कि गङ्गाके जलमें प्राण त्याग करनेसे ब्रह्महत्या का पाप छूट जाता है और अन्तमें ब्रह्मपद एवं मोक्षकी प्राप्ति होती है। उस जीवका फिर कभी जन्म नहीं होता। इसी कारण हमारे देशमें ज्वरसे पीड़ित अस्सी वर्षसे अधिक वृद्धको गङ्गाकी यात्रा करायी जाती है। अन्तर्जलिके समय नाभि तक गङ्गाके जलमें डुबाए जाते हैं। उस वृद्धके जब कण्ठ तक प्राण आ जाते हैं तब उसके शीतल जलमें डुबे रहनेसे उनकी अन्तर्वायु धीरे धीरे घुस जाती है। प्रायश्चित्ततत्त्वोद्धृत अग्नि और स्कन्द पुराणके वचनानुसार यह जाना जाता है, कि उपवास कर आधी देह गङ्गाके जलमें डुबो कर प्राणत्याग करनेसे ब्रह्मसायुज्य होता है। (४)

कालिकापुराणमें जिस प्रकार नरबलिका वर्णन किया गया है उसी प्रकार बृहन्नीलतन्त्रमें शत्रुबलिका। (५) शास्त्रोल्लिखित बलिके सिवाय तालाब, मन्दिर, घर आदि बनानेके समय यदि कोई विघ्न उपस्थित हो, तो देवताओंको प्रसन्न करनेके लिये नर बलि दी जाती थी। आजकल भी सुना जाता है, कि मनुष्यरक्तसे बहुतसी अट्टालिकाओंकी नींव डाली जाती है। ऐतिहासिक हिलर साहबने ऐसी ही कितनी घटनाओंका वर्णन किया है। हिन्दू राजाओंके समय उक्त कार्यों में मनुष्यरक्त काममें लाया जाता था। मुसलमानों का जब अधिकार हुआ तब यह नृशंस बलि उठा दी गई। सम्राट् शाह

(१) इसका स्पष्ट प्रमाण वार्ड साहबके ग्रंथमें लिखा हुआ है।

(२) सतियोंका विस्तृत इतिहास सती शब्दमें देखो।

(३) 'गङ्गायां त्यजतः प्राणान् कथयामि वरानने।
कर्णे तत् परमं ब्रह्म ददामि मामकं पदम्॥"
(स्कन्दपुराण)

"त्यक्त्वा देहं गङ्गायां ब्रह्महापि च मुच्यते।"
(क्रियायोगसार)

(४) "अर्द्धोदके तु जाह्नव्यां म्रियतेऽनशनेन यः।
स याति न पुनर्जन्म ब्रह्मसायुज्यमेति च॥"
(अग्निपुराण)

स्कन्दपुराणमें भी ऐसा ही एक और श्लोक पाया जाता है—

"नाभ्यन्तं गततोयानां मृतानां क्वापि देहिनां।
तस्य तीर्थफलावाप्तिर्नात्र कार्या विचारणा॥"
(स्कन्दपुराण)

पवित्र हृदयसे किसी सन्यासीको नाभी पर्यन्त जलमें डुबो कर प्राणत्याग करते हुए हमने देखा है, वही वास्तवमें आत्मोत्सर्ग है। किन्तु मृत्युके मुखमें पड़ने वाले नरनारियोंका आश्रय रहित डूबना, बलीय बलिका छोटा रूप है।

(५) ततः शत्रुबलिं राजा दद्यात् क्षारेण निर्मितम्।
स्वयं विन्द्यात् क्रोधदृष्ट्या महाखड्गलक्षेण च॥
कोपेन बधरूहेति सत्य सत्य महेश्वरि।
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा वै शत्रुनाम्ना महेश्वरि।
शत्रुरूपो महेशानि भवत्येव न संशयः॥"
(बृहन्नीलतन्त्र)

जहान्ने नगरकी नींव डालते समय लाख पशुओं का रक्त उसमें डाला था। (६)

आजकल भी बङ्गालियों के घरमें देवी प्रसन्न करनेके लिये रक्तदानकी प्रथा प्रचलित है। स्वामी, पुत्र या भाई आदिके मरणासन्न बीमार होने पर हिन्दू स्त्रियां उनकी आरोग्यताके लिये देवीको रक्तदान करनेका मनमें संकल्प करती हैं। दुर्गा या कालीपूजामें स्त्रियां अपनी छातीका मध्यभाग चीर कर मानसिक पूजा समाप्त करती हैं। जनसाधारणका विश्वास है, कि रक्तलोलुपा भैरवी मनुष्य रक्तसे सन्तुष्ट होती हैं। अतएव स्त्रियां देवीको अपने शरीरका रक्त देकर संतुष्ट करनेका प्रयास करती हैं। सनातन हिंदूधर्ममें देवोद्देशसे आत्मोत्सर्ग करनेके और भी कितने ही उपाय बतलाये गये हैं। बहुतसे लोग यथाविधि कर्मानुष्ठान करनेके बाद महाप्रस्थान कर या अग्निकुण्डमें प्रवेश कर देवताके संतुष्ट होनेकी आशामें अपने आपको बलि चढा देते हैं।(७) ऐसा सुना जाता है, कि बहुतसे लोगोंने देवताको सन्तुष्ट रखने और उससे मोक्षप्राप्तिकी आशामें अपने आपको जगन्नाथजीके रथचक्रके नीचे उत्सर्ग कर दिया है।

जैसे प्राचीन भारत इतिहासमें ऐसी नरबलियों का अनेक जगह उल्लेख है वैसे ही प्राचीन यूरोपादि देशों में भी देवताओं को सन्तुष्ट करनेके लिये नरबलि दी जाती थी। फिनिकीय और कार्थेजि वासी अपने बाल ( Ba'al ) और मोलक नामके देवताकी रक्तपिपासा बुझानेके लिये मनुष्यको उपहारमें देते थे। स्कान्दिनेविया और ग्रेटब्रिटेनके रहनेवाले प्राचीन ड्रूइद ( Druid ) पुजारी लोग मनुष्यको जला कर अपने देवात्माको तृप्त करते थे। आथेन्सवासी अपने स्वदेशवासियों के पापोंको क्षालन करनेके लिये थार्गेलिया ( Thargelia )में प्रतिवर्ष एक नरनारी युगलकी बलि देते थे। भारतीय हिन्दू राजाओंकी तरह ग्रीकवासी भी शत्रुबलि देनेमें हिचकते नहीं थे। होमरने लिखा है, कि ट्रोजान बन्दियोंकी पेट्रोक्लिस (*Patrocle*)की समाधिके समय हत्या की गई थी। इजिप्तके रहनेवाले यवन देवके निकट बलि देनेके लिये बालक 'मेनेलेयस'को पकड़ कर ले गये थे। (८) अगस्टसने अपने देवतुल्य चचा दिवास जूलियसके सन्तोषके लिये तीन सौ पेरुसिया वासियोंको यमपुर भेजा था। पुराणवर्णित राक्षसोंकी नरबलि और नरमांस भोजन युरिपिडिस वर्णित साइक्लोप जातिके समान है।(९) युरिपिडस फिलो स्ट्रेटस् और आरिष्टटलने लामी ( Lamia ) और लेस्ट्रीगो ( Lestrygons )नामकी जातियों का उल्लेख किया है। इटली, सिसली, ग्रीस, पन्टास और लिबिया नामके स्थानोंमें उनका वास था। समुद्रके किनारे कार्थेज (*Carthage*) नगरमें उनका सर्वप्रधान देवमन्दिर था। यहां हाम ( Ham ) देवताके समक्षमें सुकुमार बच्चोंकी बलि दी जाती थी। साइरेन ( Sirens ) स्त्रियां अपनी सुन्दरता और सुमधुर गानसे समुद्रके किनारे आनेवाले मल्लाहोंको लुभा कर कास्पनिया कूलवर्त्ती मन्दिरमें ले जाती थीं।

---

(६) History of India Vol IV p 278,

(७) जिस समय तांत्रिकोंका प्रवाह जोरों बह रहा था उस समय देवीपूजाकी सामग्री नर रक्तसे बनायी जाती थी।

(७) महाप्रस्थान—स्वेच्छासे समुद्रमें डूबकर प्राणो का विसर्जन। श्रीक्षेत्रमें इन उपायोंसे अनेक साधु संन्यासियों ने प्राणत्याग किया है ऐसा सुना जाता है। माकिदनवीर आलेकसन्दरके समय कलेनासने तुषानल किया था। हिंदूशास्त्रोंमें अनेक जगह तुषानलकी व्यवस्था है।

(८) Herodotus Vol II p 119

(९) होमरने आडेसी नामके ग्रन्थमें लिखा है, कि साइक्लोप सिल्लाने युलिसिसके अनुचरों का मांस खाया था। युरिपिडिसने भी उनके नरमांस भोजनका उल्लेख किया है। इन प्रमाणोंसे अच्छी तरह जाना जाता है, कि भूमध्यसागरके किनारे अनेक स्थानोंमें पहले नर बलि प्रचलित थी। जब कभी मल्लाहका खोटा भाग्य उसे इस प्रकारकी राक्षसप्राय असभ्य जातिके स्थानमें पहुंचा देता था, तब वह अपने प्राणसे हाथ धो बैठता, उसे किसी न किसी देवताकी बलिमें जाना पड़ता था। ( Homers Odessy & Euripides )

यहा पर उनकी बलि चढ़ाई जाती थी।(१ कीटवासी दियोनिसियास (Dionusios)में जीवित पशुओंका मास दांतोंसे चीर कर दियोनिसाको संतुष्ट करने चढ़ाते थे।(२) मिनाडिस् (Maenades), थियाडिस (Thyades) और बैकी (Bacchae) प्रभृति जातियोंकी रक्तलोलुपताका उपाख्यान पाया जाता है। प्रवाद है, कि आरफियासने (Orpheus) नरमांस भक्षणकी प्रथा उठा दी थी पर वे जीव बलि बन्द न कर सके थे।

वर्नार्ड स्मिड (Bernhard Schmidt) अपने ग्रन्थमें (Griechische Saga, Munchanas) आर्कडियाके लाइकियन (Mt, Lykaion) पर्वत पर बलिके विषयमें लिख गये हैं। हिरोदोतस साइप्रस द्वीपका उन्होंने वर्णन करते समय लिखा है, कि उस द्वीपके रहनेवाले मनुष्य कुमारी अर्तेमिस देवीकी पूजामें नरबलि चढ़ाते थे। कभी कभी लकड़ीके आघात या मन्दिरके पास किसी पर्वतसे वह हतभाग्य मनुष्य नीचे गिरा दिया जाता था। बस उसी पतनसे विचारेकी जीवनलीला समाप्त हो जाती थी।(३) अर्तेमिस यहा पर काली देवीके समान पूजी जाती थी।

आसरियामें नरबलिका प्रबल स्रोत प्रवाहित था। असुरोंका विश्वास था, कि ऐसे देवभोगके सिवाय और दूसरा कोई उपहार नहीं है। पहिले ही लिखा जा चुका है, कि इजिप्तदेशमें नरबलि प्रचलित थी। दियोदोरस् और प्लूतार्क प्रभृतिने ओसिरिसकी वेदी (Alter of Osiris)का और इलिथिया नगरमें राजकर्तृक प्रदत्त नरबलिका उल्लेख किया है। रोमक लोगोंके राज्यमें यूरोप खण्डमें सभ्यताका प्रचार हुआ, परन्तु यहा नरबलि वे रोकटोक प्रचलित रही। नियस, कर्णेलियस, लेंटुलस् और पि लिसिनियस् क्रेससके शासनकालमें सिनेटसभा की अनुमतिके अनुसार नरहत्या बन्द हुई (१)। मध्य युगमें उच्च शिक्षा, सभ्यता और धर्मप्राणताके प्रचारके साथ नरबलिरूपी पापस्रोत पूर्व भारत और पश्चिम रोम साम्राज्यमें व्याप्त हुआ था। प्राचीन यहूदियोंमें भी नर बलि प्रधान देवोपहारमें गण्य थी। ईश्वरकी आज्ञासे अब्राहिम अपने पुत्रको बलि देनेके लिये उद्यत हुए थे। जेफथाकी पूजाका मनमें चिंतवन कर उन्होंने अपनी कन्याकी बलि दी थी। यहूदी मेलकको शान्तिके लिये शिशुबलि करनेकी शिक्षा देते थे। युद्धमें परास्त होने की आशङ्कासे मोयावपति (Moab)ने अपने पुत्रको जला कर मारा था (२)। ग्रीक और रोमक जातियोंके समान जर्मन, नर्समान् और फ्रेंच जातिमें नरबलिका स्रोत प्रवाहित था। वे किसी विपत्तिके आने पर अपने राजा, राजपुत्र या राजकन्याकी बलि चढ़ानेमें जरा भी नहीं भटकते थे।(३) उत्तर अमेरिकाके अजतेक (Aztecs), तोलतेक (Toltecs), तेजकुकान् (Tezcuceans) और इङ्क (Incas) जातियां परस्पर युद्ध कर शत्रुसेनाको बंदी कर लेती थीं। फिर उन असंख्य बन्दियोंको वे लोग समय समय पर देवोंके लिये बलि चढ़ाते थे।(४)

(१) *Bryants Ancient Mythology, Vol II 20*

(२) क्यसद्वीपमें (*Island of chios*) दियोनिसासकी पूजामें नरबलि चढ़ाई जाती थी। *Porphyry* टेनोडो लोपलिपसके (Tenedo Luclpis) ऐसे ही एक कृत्य का उल्लेख कर गये हैं।

(३) डा० हेण्डले (Dr Hendley) ने लिखा है, कि जोधपुरराजके राज्याधिरोहणके समय मेवारवासी भीलोंने देवीका पूजा कर बहुतसे बकरे पर्वत शिखरसे नीचे गिराये थे। पहिले चित्तोरगढ़के प्राचीन देवी मन्दिरमें और अम्बर नगरकी अम्बादेवीके सामने नरबलि दी जाती था, ऐसा सुना जाता है। चित्तोरके किसी राजाने इसी मंदिरमें सात राजपुत्रोंकी बलि दी थी। (Jour As Soc p XVII 350)

(१) *Pliny XXX* c, 3 and Hilkison s Ancient Egyptions, Vol 11 p, 286

(२) II Kings III 27

(३) राजा ओयेनयरने अपने पुत्रोंकी बलि दी थी। स्वीडन वासियोंने दुर्भिक्षके समय अपने राजा डामोल्डि को देवप्रीतिके लिये बलि चढ़ाया था।

Grim's Teutonic Mythology II p 44 राजस्थानमें भी ऐसी एक घटनाका उल्लेख है। मेवाड़पति राणा लाखाने देवीकी रक्तपिपासा दूर करनेके लिये अपने भी पुत्रोंको बलिमें चढ़ाया था।

(४) अमेरिकावासी विभिन्न जाति जयलाभ पर, और बड़ी भरमारियोंको महासमारोहसे देव पूजामें भेंट

दक्षिण अमेरिकाके पेरुवासी वलिदानके विशेष पक्ष पाती थे। इङ्कसर्दारोंके पीडित होने पर इष्ट देवताकी तृप्तिके लिये उनके पुत्रोंकी वलि दी जाती थी। आरो कानियन जातिके पुलोकन (Pruloucon)-उत्सवमें मृत सैन्यकी प्रेतात्माको सन्तुष्ट करनेके लिये शत्रुसेनाके बंदियोंको वलि देनेकी प्रथा थी। एतद्भिन्न प्रशान्त महासागरस्थ द्वीपवासी, मुरिरस्वाइर और बदोत प्रभृति आफ्रिक जाति, तातार, तुर्क, मुगल, भोट, यावा सुमात्रा, अण्डमन, जापान और चीन वासियोंमें थोडा बहुत नर-नाश या नरमांस भोजनका इतिहास पाया जाता है। टेलर साहब स्वकीय ग्रन्थमें उल्लेख करते हैं, कि बहुतसे गण्यमान्य मनुष्य प्रेतात्माओंको सन्तुष्ट करने उनकी समाधि पर अपनी अपनी स्त्री और क्रीतदासोंको बलि दिया करते थे। अशान्टि और यूकेटन वासियोंके यहां किसी भी धर्मोत्सवके होने पर कारागारसे बंदियों को ला उनकी वलि दी जाती थी। इङ्गलैण्डके इतिहास में धर्मके लिये अनेक जीवनत्यागियों (Myrters)का उल्लेख पाया जाता है। वहां कोई तो राजाज्ञाके द्वारा अस्त्राघातसे खण्ड खण्ड किया जाता था, कोई अग्निदग्ध हो कर मनुष्यजन्मकी लीलाको समाप्त करता था। वे या तो राजशत्रुकी तरफ या प्रचलित धर्मके विपक्ष जाने से नरवलि रूपमें मारे जाते थे। यह देखा जाता है, कि आजकल शक्तिपूजामें मेष, महिष, छाग, कुष्माण्ड और इक्षुदण्डकी वलि दी जाती है। इन वलियोंमें छागवलि ही ज्यादा प्रचलित है। ४ दैत्यभेद, यह सावर्णि मन्वन्तरमें इन्द्र हुआ था। (मार्कण्डेयपु० ८०।१०)

बलि (सं० पु०) कोई एक असुरराज। प्रह्लादके पुत्र विरोचनसे उसका जन्म हुआ था। बलिके एक सौ पुत्र थे जिनमेंसे बड़ेका नाम बाण था। (विष्णुपु० १।२१ अ०) बलिको बांधने स्वयं विष्णु भगवान् वामनरूप धारण कर भूमण्डल पर अवतीर्ण हुए थे।

वामन देखो।

बलिने अश्वमेध यज्ञ कर दान देना शुरू किया। विष्णु भगवान् वामनरूप धारण कर उसके सामने उपस्थित हुए। बलिने उस वामनकी अत्यन्त आदरसे पूजा कर उसके आनेका कारण पूछा। वामन रूपधारी विष्णुने उसकी खूब प्रशंसा की और अपने पैरोंसे तीन पैर प्रमाण भूमि मांगी। इस पर बलिने ब्राह्मणसे कहा, "तूने वृद्ध पुरुषों की तरह मेरी सुमिष्ट वाक्यों से प्रशंसा कर मुझे सन्तोषित किया। अब अज्ञकी तरह यह सामान्य भूमि क्यों मांगते हो, प्रभूत भूमि और धन मांगो, मैं तुझे देता हूं। क्यों कि जो मेरे पास मांगने आता है उसे दूसरेके यहां जानेकी जरूरत नहीं रह जाती। अच्छा हो! यदि तुम मुझसे और कोई बहुमूल्य वस्तु मांगो, मैं उसे दूंगा।' यह सुन कर वामन बोले, "महाराज! जो मुझे आवश्यक था उसे मैंने आप से कह दिया। क्यों कि विद्वान् अपने प्रयोजनसे अतिरिक्त वस्तु ग्रहण नहीं करते।" वामनके ये उपर्युक्त वचन सुन बलि उतनी ही जमीन देने राजी हुए। शुक्राचार्य विष्णुको पहचान गये और बलिका तिरस्कार कर बोले, 'ये साक्षात् सनातन विष्णु भगवान् हैं, कश्यपकी भार्या अदितिके गर्भसे वामन रूपमें इन्होंने जन्मग्रहण किया है। तुम विना विचारे भूमि देनेको राजी हुए हो। ये अपने एक पैरसे पृथ्वी लेंगे, दूसरेसे स्वर्ग। इनके विशाल शरीरसे गगनमण्डल व्याप्त हो जायेगा। तीसरे पैर रखनेका स्थान नहीं मिलेगा और नहीं देनेसे तुम्हें नरक जाना पड़ेगा। अतएव जिस दानसे विपत्ति उठानी पड़े, वह दान प्रशंसित नहीं होता। अतः अब तुम यदि अपनी भलाई चाहो, तो उसे दान मत दो। यही एक उपाय तुम्हारी रक्षाका है और नहीं है। इसमें एक लाभ यह भी है, कि तुमको इससे झूठका पाप भी नहीं लगेगा। क्यों कि परिहासवृत्ति रक्षा या प्राणसङ्कट के समय झूठ बोलनेसे दोष नहीं लगता। इस समय

---

देती थी। १४८६ ई०में ह्विटजिल पोचलिके मन्दिरमें लक्षाधिक नरवलि हुई थी। अनावृष्टि होने पर वे जल देवता ट्लुलोकको तृप्त करने शिशुवलि और तेजकाटल पोकाकी पूजामें भी सुन्दर सुन्दर सुकुमारका वलि देते थे। पश्चिम उडिसावासी खोन्दगण तारिपेन्नू नामकी वसुमाताके उत्सवमें नरवलि अर्पण करते थे। विस्तृत विवरण (Prescott's Conquest of Mexico Vol 1 p 22 67 68 & 71 74 and Heaviside's American Antiquities)

तुम्हारे प्राण पर सङ्कट है, इसलिये तुमको झूठ बोलनेसे पाप नहीं ।' बलिने शुक्राचार्यका यह उपदेश सुन कहा, 'गुरुदेव ! जो आपने कहा वह सत्य है उसमें जरा भी सन्देह नहीं। किन्तु मैं महात्मा प्रह्लादका पौत्र और विरोचनका पुत्र हूं। मैंने ब्राह्मणको वचन दे दिया है, सो अब किस प्रकार उन्हें धूर्तोंकी तरह धनलोभमें पड़ कर लौटा दूंगा। यह ब्राह्मण चाहे विष्णु हो या शत्रु, मैं तो उन्हें यह भूमि अवश्य दूंगा। मैं अनपराध हूं, यदि ये अधर्म कर मुझे बांधेंगे, तो भी मैं उनका वध नहीं करूंगा।' बलिकी यह बात सुन कर शुक्राचार्यने क्रोधित हो कहा, "तू मूर्ख पण्डिताभिमानी है। मेरी उपेक्षा कर मेरे शासनकी अवज्ञा करता है। अतएव तू सदाके लिये श्रीभ्रष्ट होवेगा।"

बलि गुरुकी शाप सुन कर भी सत्यसे विचलित न हुए। बलिने वामनकी पूजा की और उदकस्पर्शपूर्वक भूमि का दान दिया। अब विष्णु भगवान् वामनरूपसे आश्चर्य-रूपमें बढ़ने लगे। बलिने देखा, कि विश्वमूर्त्ति हरिके पदतलमें रसातल, चरणद्वयमें पृथ्वी, दोनों जङ्घामें पर्वत, जानुदेशमें पक्षी, ऊरुद्वयमें मरुद्गण, वसनमें सन्ध्या, गुह्य देशमें प्रजापति, जघनमें समस्त असुर, नाभिस्थलमें आकाश, कुक्षिदेशमें सप्तसागर, उरःस्थलमें नक्षत्रश्रेणी, हृदयमें धर्म्म, स्तनद्वयमें ऋत और सत्य, मनमें चन्द्र, वक्षःस्थलमें कमला, कण्ठमें वेद और समस्त शब्द, चार बाहुओंमें इन्द्रादि देवगण, कर्णद्वयमें दिशा, मस्तकमें स्वर्ग, बालोंमें मेघ, नासिकामें अग्नि, चक्षुद्वयमें सूर्य प्रभृति तीनों लोक दिखाई देते हैं। बलि और समस्त असुरगण वामनके इस प्रकार शरीर देख कर बहुत भयभीत हुए।

तदनन्तर उनके एक पदसे बलिकी समस्त भूमि, शरीरसे आकाश, बाहुद्वयसे सम्पूर्ण दिशायें आक्रान्त हो गई। दूसरे पदसे स्वर्ग व्याप्त हो गया और तीसरा पैर रखनेको कहीं पर ठौर न मिला। उनका यह कृत्य देख बलिके अनुचरोंने उन्हें मायावी समझा और उन्हें मार डालनेके लिये वे लोग अस्त्रोंका निक्षेप करने लगे, किन्तु उनका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सका। बहुतसे दानव विष्णुके अनुचरोंके हाथसे यमपुर सिधारे। बलि अपने अनुचरोंको युद्धसे निषेध करने लगे और बोले "अभी दैव हमारे प्रतिकूल है, जो तीन लोकके प्रभु और सर्वशक्तिमान् हैं उन्हें पुरुषकारसे जीतनेकी चेष्टा करना बिलकुल असम्भव है। इसलिये तुम लोग वृथा ही लोगोंका क्षय मत करो।" बलिका इतना कहना ही था, कि वामनके अभिप्रायानुसार उसको गरुडने पाशमें बांध लिया। तब भगवान् वामनने बलिसे कहा, "राजा ! तुमने मुझे तीन पद भूमी दान की है, मेरे दो पदसे सम्पूर्ण पृथ्वी आक्रान्त हो चुकी है। तीसरे पद रखनेकी और भूमी कहां है, सो दो। मेरे एक पैरसे समस्त भूलोक आक्रान्त हुआ, मेरे शरीरसे समस्त आकाश और दिशायें व्याप्त हो गयी हैं। इस प्रकार तुम्हारी समस्त भूमि आक्रान्त हो चुकी, सो तुम्हारे वचन पूर्ण नहीं हुये अतएव तुमको नरक जाना होगा। अतः कुलगुरु शुक्राचार्यकी अनुमती ले कर शीघ्र ही नरक जानेकी तैयारी करो।

विष्णु भगवान्के वचन सुन कर बलि बोले "भगवन् ! मैं असत्य कभी नहीं बोलता। मेरे कहे हुये वचन मिथ्या नहीं हो सकते। आप ही कपटतापूर्वक वामनरूपसे भिक्षा मांग कर अब दूसरा रूप दिखलाते हैं। इस पर यदि आप मुझे मिथ्यावादी मानते हों तो मैं आपके अङ्गीकारको पूर्ण करता हूं। अपकीर्तिसे मुझे जितना भय है उतना नरक या पाशबन्धनसे नहीं है। अतएव आप तृतीय चरणकमल मेरे मस्तक पर स्थापन कीजिये। भगवान् वामनने बलिके कहे अनुसार अपना तृतीय चरणकमल बलिके मस्तक पर रखा। उस समय बलि भगवान्का स्तव करने लगे। प्रह्लाद आदि भी उसी समय वहां पहुंचे और भगवान्को प्रणाम कर बोले, "बलिने अनेक सत्कार्य और सर्वस्व दानमें अर्पण कर दिया है, यह निग्रहयोग्य कदापि नहीं है, इसलिये इसका बन्धन मोचन कर दीजिये।"

भगवान् विष्णुने कहा, "जिस पर मेरा अनुग्रह होता है उसका मैं पहिले धन अपहरण कर लेता हूं। क्योंकि धनमें ममता होती है और मुझमें अविश्वास करने लगता है। यह बलि दैत्योंका अग्रणी और कीर्त्तिवर्द्धन है। इस व्यक्तिने दुर्जय मायाको जीता है अतएव अवसन्न हो कर भी यह मुग्ध नहीं होता। यह निर्धन, स्थानच्युत, शत्रुकर्तृक बध हो

कर भी सत्यसे विचलित नहीं हुआ और जातिवाले इस का परित्याग कर दु ख देते हैं। यहा तक, कि कुलगुरु शुक्राचार्यने भी शाप दिया है, फिर भी वलि सत्यसे जरा भी विचलित नहीं हुआ। अतएव मैं इसे देवताओंको दुष्प्राप्य स्थान देता हूं। मैं स्वय इसके आश्रय हुआ। यह सावर्णिमन्वतरमें इन्द्र होगा। जब तक यह मन्वन्तर नहीं आवेगा, तब तक यह विश्वकर्मा निर्मित सुतलमें आ कर रहेगा। यह स्थान सामान्य नहीं, आधि व्याधि क्लांति, जरा और पराभवसे रहित है। उसी स्थानका प्रभु हो कर बलि! तू यहा अवस्थान कर। मैं कौमोदकी गदासे तुम्हारी रक्षा करू गा।'

वलि भगवानका आदेश पा पातालको चल दिये। इधर शुक्राचार्यने भगवान् विष्णुकी आज्ञासे यज्ञको पूर्ण किया। (भागवत ८।१८ २ अ०, वामनपुराण आदिमें इसका विशेष विवरण मिलता है। वामन देखो।

५ ययाति व शोद्भव सुतपा राजपुत्र। (स्त्री०) ) लति सन्वृणोतीति वल सवरणे इन्। ६ जरा द्वारा श्लथ चर्म, बुढापेके कारण चमडे पर पडा हुइ शिकन। पर्याय— चर्मतरङ्ग, त्वगूर्मि, त्वक् तरङ्ग। ७ जठरावयव। ८ गृह दारुभेद। (मेदिनी) ९ गुदाङ्कुर। बवासीर होने पर यह निकलता है। सुश्रुतने लिखा है—

गुह्यदेशसे आध अंगुलकी कुछ अधिक दूरी पर प्रवाहणी, विसर्ज्जनी और सम्वरणी नामकी तीन वलि हैं। ये तीन वलि चार अंगुल चौडी, तिर्यग् भावसे स्थित और एक अंगुल ऊंची हैं। शङ्खावर्त्तकी तरह वलयाकारमें जडित हो कर एक दूसरेके ऊपर संस्थित हैं। उनका वर्ण हस्तीके तालूके समान है।

गुह्यदेशजात रोमके अर्द्ध भागसे ले कर यवके अर्ध भाग परिमित स्थान तकको गुदौष्ठ कहते हैं। प्रथम वलिका स्थान गुदौष्ठसे दो अंगुल नीचे है।

वलि होनेके पहिले अन्नमें अश्रद्धा, कष्टसे परिपाक, ऊरुद्वयका भारीपन, उदरमें शब्द, कृशता, अतिशय उद्गार, नेत्रोंका फूलना आदि लक्षण होते हैं। पाडु, ग्रहणी अथवा शोष रोगीको वलि रोगकी सम्भावना होने पर कास, श्वास, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा और इन्द्रियोंमें दुर्बलता आ जाती है। इन लक्षणोंके दिखाई देने पर जानना चाहिये, कि वलि रोग प्रगट होगा। यह वायु, पित्त और कफ इस प्रकार त्रिदोषज होती है।

वायुजवलि—वायुजनित वलि शुष्क, अरुणवर्ण, मध्यस्थलमें विषम, कदम्ब पुष्प, तुण्डिकेरी, नाडीमुख, या शुचीमुखकी आकृतिके समान होती है। यह वायुज वलि टन टन शब्द करती है। रोगी संकुचभावसे अर्थात् जडसड हो कर बैठता है। कटि, पृष्ठ, पार्श्व, मेढ्र गुह्य और नाभिमें वेदना होती है। नख, दन्त, चक्षु, मुख, मूत्र और पूरीष काले हो जाते हैं।

पित्तजवलि—पित्तजवलिका अग्रभाग नील और सूक्ष्म होता है। यह विसर्पी, ईषत् पीतवर्ण या यकृत्‌के समान आभाविशिष्ट होती है। शुकपक्षीकी जिह्वाके समान संस्थित, यवके मध्यभागकी आकृतिकी और जोंकके मुखके समान सर्वदा क्लेदयुक्त होती है। पित्तजवलिसे दाहयुक्त रुधिर निकलता है। ज्वर, दाह, पिपासा और मूर्च्छा प्रभृति उपद्रव तथा नख, नयन, दशन, त्वक्, मूत्र और पुरीष पीतवर्ण हो जाते हैं।

श्लेष्मजवलि—श्लेष्मजन्य वलि श्वेतवर्ण, महामूल विशिष्ट, दृढ, गोलाकार, स्निग्ध, पाण्डुवर्ण, करीर, पनस के आकारकी, कठिन, आस्रावहीन और अतिशय कण्डु विशिष्ट होती है। इसमें श्लेष्मायुक्त और अधिक परिमाणमें मासके धोवनके समान मल निकलता है। त्वक्, नख, नयन, दशन, वदन, मूत्र और पुरीष श्वेतवर्णके होते हैं।

इसके सिवाय रक्तजन्य वलि भी होती है। रक्तजवलि वटके अंकुर या विद्रुमके समान और पित्तजवलिके लक्षणोंसे विशिष्ट होती है। इसमें मल कठिन हो जानेसे दुष्ट शोणित अधिक परिमाणमें निकलता है। अतिशय शोणित निकलनेसे नाना प्रकारके उपद्रव होते हैं। वलि सान्निपातिक होनेसे उसमें सभी दोष और सब प्रकारके लक्षण होते हैं।

मलद्वारके बाह्यदेश तथा मध्य भागमें वलि होनेसे चिकित्सा करावे, किन्तु यदि अन्तर्वलि होगी, तो प्रत्याख्यान करना ही विधेय है। (सुश्रुत सुनि० २ अ०)

अर्श स् देखो।

भावप्रकाशमें लिखा है—वातजन्य अर्शरोग होने पर

जो वलि होती है वह अधिक सख्त, अथवा परस्पर विभिन्नरूप हो कर निकलती है। ये वलियां शुष्क, वेदनायुक्त, अनुपचित, कठिन, अविच्छिन्न, कर्कश और खरस्पर्श होती तथा चरभागमें उठती हैं। उनका अग्रभाग अतिसूक्ष्म और चौड़े मुंहका होता है। इन वलियोंका वर्ण धूम्र या लोहित होता है। उनकी आकृति बेर, खजूर और ककड़ीके फलके समान, कहीं कदम्ब पुष्पके और कहीं गाढ़ सरसोंके समान पीतवर्णकी होती है तथा ये स्तम्भ पिड़कासे परिवेष्टित रहती हैं। इनसे रोगीका मस्तक, पार्श्वदेश, स्कन्धदेश, कटि, ऊरु और छाती आदि स्थानोंमें वेदना, उद्गार विष्टम्भ हृद्रोग, अरुचि, कास, श्वास, विषमाग्नि, कानोंमें शब्द और भ्रम होता है। इन में चर्म, नख, विष्ठा, मूत्र, चक्षु और मुख कृष्णवर्णके हो जाते हैं।

पित्तज बवासीरमें वलि नील, रक्त, पीत अथवा काली, उनका अग्रभाग नीलवर्ण, सप्यामें अल्प, कोमल और लम्बी होती हैं। उनकी आकृति शुकपक्षीकी जिह्वाके समान, यकृतखण्ड वत्सके सदृश और मध्य तथा अन्त भागमें सूक्ष्म होती हैं। इस प्रकार वलि होनेसे दाह, ज्वर, घर्म, पिपासा, मूर्च्छा और ग्लानि होती है। पीछे चर्म, नख, मलमूत्रादि हरिद्रावर्णके हो जाते हैं।

रक्तज अर्शोंमें वोलया पित्तज अर्शोंके समान लक्षण दिखायी देते हैं। उनकी आकृति वटवृक्षके अंकुरके तथा गुञ्जा फलके समान होती है। मल कठिन होने पर भी वलि दूषित अथवा उष्ण रक्त बड़े वेगसे निकलती है। इससे रोगीका शरीर भेकके समान पीला पड़ जाता है और रक्तक्षय उत्पन्न जितने भी उपद्रव हैं सभी दिखाई देने लगते हैं। इसमें बल, वर्ण उत्साह, शक्तिका ह्रास और इन्द्रियां आकुल हो जाती हैं। (भावप्र०)

अर्शरोगमें वलियोंके ये लक्षण उपस्थित होने पर उसकी चिकित्सा करनी चाहिये। अर्श रोगकी चिकित्सा होने पर वलियां भी नष्ट हो जाती हैं। वलि अनेक स्थलोंमें शस्त्रचिकित्सासे दूर की जाती है। (भावप्र०)

वलि (हिं० स्त्री०) १ वलि देखो। २ सखी।

वलिक (स० पु०) एक नागका नाम।

वलिकर (स० स्त्री०) वलिका उपादान।

वलिकर्म (सं० क्ली०) वलिक्रिया, वलिदान।

वलिका (सं० स्त्री०) वले वलार्थं कन्, टापि अत इत्व। अतिवला।

वलिदान (स० क्ली०) १ एक देवताके उद्देश्यसे नैवेद्यादि पूजाकी सामग्री चढ़ाना। २ बकरे आदि पशु दुर्गादि देवताके उद्देश्यसे मारना। वलि देखो।

वलिध्वंसिन् (स० पु०) विष्णु। वलि देखो।

वलिन् (स० त्रि०) वल मत्वर्थे इनि (बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम्। पा ५।२।१३६) १ बलवान्, बलवाला। (पु०) २ उष्ट्र ऊंट। ३ महिष, भैंसा। ४ वृष, बैल। ५ शूकर, सूअर। ६ कुन्दवृक्ष। ७ कफ। ८ माष, उड़द। ९ बलराम।

वलिन (स० त्रि०) वलि पामा दित्वात् न। १ वलिभ, जरा द्वारा श्लथचर्मयुक्त, बुढ़ापा आने पर जिसका चमड़ा ढीला हो गया हो।

वलिनन्दन (स० पु०) १ वलिके पुत्र बाणासुर। बाण देखो।

२ अङ्ग, बङ्ग और कलिङ्ग आदि वलिपुत्र।
(विष्णुपु० ४।१८।१)

वलिनिसूदन (स० पु०) वालि निसूदयति सूद-ल्यु। वलिध्वंसी, विष्णु।

वलिन्दम (स० पु०) वलि दमयति दम-ख, मुम्। वलिका दमन करनेवाला, विष्णु।

वलिपशु (हिं० पु०) वह पशु जो किसी देवताके उद्देश से मारा जाय।

वलिपुष्ट (स० पु०) वैश्वदेवेन वलिना पुष्टः। काक, कौवा।

वलिपोदकी (स० स्त्री०) वले पोदकी उपोदकी। एक प्रकारका साग।

वलिप्रदान (स० पु०) वलिदान।

वलिप्रिय (स० पु०) वलि उपहारं प्रीणातीति वलि प्री क। १ लोध्रवृक्ष, लोधका पेड़। वलिर्येन्यदैवबलिः प्रियो यस्य। २ काक, कौवा। ३ उपहारप्रिय।

वलिबन्धन (स० पु०) वलिको बांधनेवाले विष्णु।

वलिविन्ध्य (सं० पु०) रैवतक मनुके एक पुत्रका नाम।

वलिभ (स० त्रि०) वलिश्चर्मसङ्कोचोऽस्त्यस्येति वलि

(तुन्दिवलि वट, उण्। पा ५।२।१३६) इति भ। १ वलिन, जरा द्वारा श्लथचर्मयुक्त, बुढ़ापा आने पर जिसका चमड़ा ढीला हो गया है। (पु०) २ वृद्ध पुरुष, बूढ़ा आदमी।

बलिभुक (स ० पु०) कौवा।

बलिभुज (स ० पु०) बलिं भुज क्विप्। १ काक, कौवा। २ चटक, गौरैया। ३ बक, बगला।

बलिभृत् (स ० लि०) १ करदाता, कर देनेवाला। २ अधीन, मातहत।

बलिभोजन (स ० पु०) काक, कौवा।

बलिभोजी (स ० पु०) काक, कौवा।

बलिमत् (स ० लि०) १ वृद्ध, बूढ़ा। २ उपहारविशिष्ट।

बलिमन्दिर (स ० क्ली०) अधोलोक, पाताल।

बलिया—युक्तप्रदेशके अन्तर्गत एक जिला।

विशेष विवरण बालिया शब्दमें देखो।

बलिवर्द (स ० पु०) वृष, साढ़।

बलिवेश्मन् (स ० क्ली०) बलिका आलय, पाताल।

बलिवैश्वदेव (स ० पु०) भूतयज्ञ नामक पाच महायज्ञोंमें चौथा महायज्ञ। इसमें गृहस्थ पाकशालामें पके अन्नसे एक एक ग्रास ले कर मन्त्रपूर्वक घरके भिन्न भिन्न स्थानों में मूसल आदि पर तथा काकादि प्राणियोंके लिये भूमि पर रखता है।

बलिश (स ० पु०) वंशी, कटिया।

बलिष्ठ (स ० पु०) अतिशयेन बलवान् इष्ठन् मतुपो लुक्, प्रशस्तभारवाहकत्वादस्य तथात्व। १ उष्ट्र, ऊंट। २ धर्म सावर्णिक मन्वन्तर्गत ऋषिभेद। (मार्कण्डेयपु० ६४।१६) (त्रि०) ३ अतिशय बलवान्। ये सब बलवान् हैं—वायु, विष्णु, गरुड, हनूमान, यम, महावराह, शरभ, सत्यप्रतिज्ञ, गज, मृगराज, बलराम, बली, बलि, भीम, सती, शेष और पुरुहूत। (शब्दरत्नलता)

बलिष्णु (स ० लि०) बल्यते वध्यते इति बल इष्णुच्। अपमानित।

बलिसद्मन् (स ० क्ली०) रसातल।

बलिहन् (स ० पु०) विष्णु, वामनदेव।

बलिहारी (हिं० स्त्री०) प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदिके कारण अपनेको उत्सर्ग कर देना, निछावर।

बलिहृत (स ० लि०) बलिं हरतीति क्विप्। १ बलिहरण कारी, बलि लानेवाला। २ करप्रद, कर देनेवाला। (पु०) ३ राजा।

बली (स ० स्त्री०) बलि-पक्षे ङीष्। १ वलि, चमड़े परकी झुरी। कुष्ठौषधिको अच्छी तरह चूर कर घृत और माक्षिक-के साथ रातको सेवन करनेसे बलीपलित विनष्ट होता है। २ वह रेखा जो चमड़ेके मुड़ने या सुकड़नेसे पड़ती है। (लि०) ३ बलवान्, पराक्रमी।

बलीक (स ० क्ली०) पटलप्रान्त, ओलती।

बलीन (स ० पु०) १ वृश्चिक, बिच्छू। २ असुरभेद।

बलीजा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी हेल मछली।

बलीबैठक (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी बैठक। इसमें जंघे पर भार दे कर उठना बैठना पड़ता है। इससे जाँघ शीघ्र भरती है।

बलीमुख (स ० पु०) बलीयुक्त मुख यस्य। वानर, बंदर।

बलीयस् (स० लि०) अतिशय बलयुक्त, बलिष्ठ।

बलीयान् (स ० पु०) गर्दभ, गदहा।

बलीवर्द (स ० पु०) बली च ईवर्दश्च इति। वृष, बैल। बैल पर चढ़ कर यात्रा नहीं करनी चाहिये, जो अज्ञान वशतः ऐसा करते हैं उन्हें नरक होता है और उनके पितृगण उनके हाथका जलग्रहण नहीं करते। बैल गाड़ी पर चढ़ कर यात्रा करना भी निषिद्ध बतलाया गया है।

बलीवर्दिनेय (स ० पु०) बलीवर्दका अपत्य।

बलीशाक (स ० पु०) आम्रातक वृक्ष, अमड़ेका पेड़।

बलीह (स ० पु०) वहीक, उस देशके लोग।

बलुआ (हिं वि०) १ रेतिला, जिसमें बालू अधिक मिला हो। (पु०) २ वह मट्टी या जमीन जिसमें बालूका अंश अधिक हो।

बलूच—एक जाति जिसके नाम पर देशका नाम पड़ा। बलूच देखो।

बलूचिस्तान—भारतवर्षके उत्तर पश्चिम दिग्वर्त्ती एक राज्य। अक्षा० २४ ५४´से ३२ ४´ उ० और देशा० ६० ५६´से ७० १५´पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें अफगान राज्य, पूर्वमें भारतीय सिंधुप्रदेश, दक्षिणमें आरब्योपसागर और पश्चिममें पारसराज्य है। सिंधु प्रदेशके दक्षिण पश्चिम कोणस्थ मोंज नामक अन्तरीप से ले कर पश्चिमाभिमुखमें दस्तनदीतीरवर्त्ती जुनि

अंतरीप पर्यन्त समुद्रोपकूलवर्ती स्थान कहीं बालुका-मय और कहीं कहीं छोटे छोटे पर्वतोंसे परिपूर्ण है। समुद्रके किनारे पूर्वसे पश्चिम गुरायसिंह, राम अरवा, गासन, जेनिन प्रभृति और भी कितने अन्तरीप तथा सोन्मियानी और गोयादर उपसागर विद्यमान है। शेषोक्त उपसागरके तट पर होमरा नामका एक छोटा-सा गांव है जहां एक किला देखा जाता है। यही स्थान यहांका श्रेष्ठ बन्दर है।

इस राज्यका कोई भी प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। प्राकृतिक सौंदर्यके ऊपर लक्ष्य करनेसे जाना जाता है, कि यहांके पुरातन अधिवासी निभयहीन थे। किन्तु वे स्वभावसे दृढ़काय और बलिष्ठ हैं इसीलिये वैदेशिक लोग बलूचिस्तानसे हो कर भारत आनेमें भय खाते हैं। आरियानोंके उल्लेखसे हम जान सकते हैं, कि अलेक-जेण्डरके भारताभियान-कालमें ग्रीक सेना इसी मार्गसे गुजरी थी। उस समय मत्स्य और खजूर यहांके अधि-वासियोंका एकमात्र आहार था। ईसाकी ७वीं शताब्दीके प्रारम्भमें खलीफाकी सेनाने यह प्रदेश विध्वस्त कर डाला था।

इस राज्यका भूपरिमाण १३२१८५१ वर्गमील और जनसंख्या ८१०७४६ है। ब्रहुइ और बलूचियोंकी संख्या सबसे अधिक है। दोनों जातियोंकी नाना शाखा और प्रशाखा अब भी इस देशके नाना स्थानोंमें देखी जाती हैं। किन्तु ये लोग कब और कहांसे आये इसकी स्थिरता नहीं है। यद्यपि बलूच जातिके नामसे इस प्रदेश का नाम पड़ा है तो भी यथार्थमें ब्रहुइगण यहांके प्रधान थे और वे ही सबके ऊपर अधिकार विस्तार करते थे। ब्रहुइगणकी सामाजिक उन्नति आज भी नाना आचार व्यवहारमें झलकती है। यहां पर बहुतसे प्रवाद प्रचलित हैं, उनमेंसे एकसे जाना जाता है, कि एक समय यहां हिन्दू राजाओंका प्रभाव विस्तृत था। इस वंशके सेव राजाने आत्मगत सर्दारोंके अधीनस्थ मिरघु दस्युगणके आक्रमणसे अपने राज्यकी रक्षा करनेके लिये पर्वतवासियोंको बुलाया था। पार्वतीय कुम्भ नामक ब्रहुइ सर्दारने दस्युओंके साथ वा मिरघुओंको हराया और आपनेको अधिक बलशाली जान हिन्दूराजाको सिंहासनच्युत किया तथा उसे राज्यसे निकाल भगाया। उसके अधिष्ठानसे कुम्भराणी वंशकी प्रतिष्ठा हुई। वे कुम्भराणीगण ब्रहुई थे कि नहीं, ठीक ठीक नहीं कह सकते। पर हां, ब्रहुइगणके बाद बलूच जातिका आगमन हुआ था, इसमें सन्देह नहीं।

बलूचियोंका कहना है, कि वे अरबदेशीय खाजुर नामक किसी सर्दारके अधीन हो आलेपोनगरसे आये हैं। अब भी मक्रि और भुगति जातिकी वासभूमिके निकट गिरिपथमें उस खाजुरका नाम पाया जाता है। कैहेरि नामक और एक शेख जातिका मुसल्मान 'गावर कोमडी' पर्वतके तट पर रहता है। यह कहता है कि बलूचगण सिरिया राज्यसे जब यहां आये, ठीक उसी समय उसके पूर्वपुरुष भी यहां आये थे।(१) ब्रहुइ और बलूची दोनों ही सुन्नी सम्प्रदायके मुसल्मान हैं।

कुम्भरके पूर्ववर्ती हिन्दू राजवंशका कोई इतिहास नहीं मिलता। कुम्भरकी चौथी पीढ़ीमें अब्दुल्ला खाँ राजा हुए। इस उद्धत युवकने राज्यप्रयासी हो कच्छगन्दाव पर आक्रमण किया। युद्धमें जयी हो कुम्भराणीगणने गन्दाव राजधानी पर अधिकार जमाया। इसी समय पारस्यपति नादिरशाह भारत आक्रमणके लिये अग्रसर हुए। उन्होंने कन्धारमें बलूचिस्तान औराकसी उपहारमें स्वीय सैन्यदल भेजा।

अब्दुल्ला उनसे अवगति स्वीकार कर अपने पद पर अधिष्ठित रह राज्यशासन करने लगे। किन्तु यह सुख भोग उन्हें अधिक दिन तक बदा नहीं था। सिन्धु नवाबोंके साथ युद्ध करनेसे उनका प्राणान्त हो गया। उनकी मृत्युके बाद ज्येष्ठ पुत्र हाजी महम्मद खाँ राजा

(१) इसके द्वारा अनुमान किया जाता है, कि अलेकजण्डरके भारतीय आक्रमण पथ हो कर यहां नाना जातियोंने आकर वास किया था। ग्रीसियनकी (Gedrosia of Greasia) ग्रन्थ शाखि की कथा आरियानने 'Oritae of Gedrosia' नामसे उल्लेख की है। इसके पश्चिम ब्रहुइ जातियां और पश्चिम भागके स्थान में सरपरा नामक जातिका वासस्थान है। प्लिनि आदि ग्रीकोंने Sarparae जातिका उल्लेख कर गये हैं। अलेकजण्डरके अभियान कालमें वे इनके दलमें हो इस प्रदेशमें आये थे।

हुए। नवराजाके लाम्पट्य और स्वेच्छाचारितासे प्रजा विशेष विरक्त हो गई थी। इसी समय उनके कनिष्ठ भ्राता नाशिर खाँ नादिरशाहको संतुष्ट कर खिलातमें लौट आये। पीछे प्रजावर्गके अनुरोधसे निज भ्राताकी हत्या कर उन्होंने राज्यपद प्राप्त किया। नादिरशाह इस संवादसे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने १७३९ ई० में फर्मानके द्वारा उसको वलूचिस्तानका 'बेगलर्बि' बना दिया।

नाशिर खाँ योद्धा और राजनैतिक थे। वीरोचित साहससे वे शासनकार्य सम्पन्न करने लगे। खिलात नगरमें राजदुर्ग बनाया गया और उन्हींके यत्नसे उक्त नगरी नाना शोभासे शोभित होने लगी। १७४१ ई०में नादिर शाहकी मृत्युके बाद उन्होंने काबुलराज अहमद-शाह अबदालीको राजा स्वीकार किया। किन्तु १७५८ ई०में नाशिर खाँके अपनेको स्वाधीन नरपति घोषित करने पर अहमद शाहने खाँके विरुद्ध सेना भेजी। दो तीन युद्धोंके बाद अफगानसेनाके पराजित होने पर उभय पक्षमें शान्ति स्थापित हो गया और संधिकी शर्तके अनुसार काबुलपति खाँके भ्राताको कन्यादान करने और खाँ स्वयं अहमदशाहको सैन्यद्वारा साहाय्य करनेके लिये प्रतिज्ञाबद्ध हुए। काबुलके कितने ही युद्धोंमें खाँने युद्धविद्याका अच्छा परिचय दिया था। वृद्धावस्थामें उन्होंने अपने भाई बहराम खाँके विद्रोहदमनसे अच्छी ख्याति पायी थी। १७९५ ई०में उनकी मृत्युके बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र महमूदखाँ राजा हुये। उनके राजत्वकालमें राज्य में ज्यादा गड़बड़ी मची। ११८३९ ई०में अंग्रेजोसेनाने जब जेलान गिरिसङ्कटसे अफगानराज्यमें कूच किया, तब वलूच सर्दार मेहराब खाने अंग्रेजोंके साथ विश्वास घातकता की। इसलिये अंग्रेजी सेनाने वलूचिस्तानको आक्रमण करके खिलात नगर पर अधिकार जमाया। इस युद्धमें स्वयं मेहराब खाँ मारे गये। अंगरेज-राजने खिलात नगरमें अपना शासन फैलाया। १८४१ ई०में मेहराबके नवालिग पुत्र नाशिर खाँ अंग्रेजोंके अनुग्रहसे वलूचिस्तानके सिंहासन पर अभिषिक्त हुये।

१८४३ ई०में नेपियरके सिंधु अभियानसे ले कर १८५४ ई०तक अंग्रेज और वलूच सर्दारोंके बीच कोई भी मनोवाद घटना न घटी। शेषोक्त वर्षमें लार्ड डल हौसीके शासनके समय खिलातराज्यके वलूच-अधीश्वर मीर नाशिर खाँके साथ अंग्रेज प्रतिनिधिकी एक संधि हुई। उसमें शर्त यह ठहरी, कि वे अंग्रेजोंकी सीमान्त-रक्षा, स्वराज्यमें अंग्रेजी सेनाका समावेश और वणिक प्रभृतिकी स्वार्थ रक्षाके सम्बन्धमें विशेष यत्नवान् रहेंगे और अंग्रेज-राज भी उन्हें वार्षिक ५० हजार मुद्रा देंगे। १८५६ ई० पर्यन्त नाशिरने विशेष राजभक्तिके साथ यह शर्त पालन की थी। उनकी मृत्यु होने पर उनके भाई मीर खुदादाद खाँने शासनभार ग्रहण किया। इस समय वलूचसर्दारोंने विद्रोही हो कर उनके अन्यतम भ्राता शेर दिलखाँको सिंहासन पर बिठानेकी चेष्टा की। किन्तु अंग्रेजोंकी सहायतासे वे कृतकार्य न हो सके।(१) पर राज्यमें जो अराजकता फैल गयी थी उसकी गतिको कोई भी नहीं रोक सका। १८७४ ई०में अङ्गरेजोंके वलूचिस्तानके साथ राजनैतिक सम्बन्धमें छेड़छाड़ करने पर राज्यमें और भी गड़बड़ी मच गई। अन्तमें वलूच सर्दारके बुलानेसे बाध्य हो १८७६ ई०में अंग्रेजोंने सुशासनकी स्थापनाके लिये सेना भेजी। खिलातपति और उनके सामन्तोंमें एक तरहसे मेल हो गया और उन्होंने याकुबाबादमें अंग्रेज प्रतिनिधि लार्ड लिटनके साथ जा मुलाकात की। १८७७ ई०में विक्टोरियाके 'भारतसाम्राज्ञी' उपाधि ग्रहणके उपलक्षमें वे दिल्लीदरबारमें आ शामिल हुए थे। खाँके स्वराज्यमें लौटने पर अंगरेज एजेण्टने कोयटामें रहनेकी अनुमति पाई। परवर्त्ती अंग्रेजोंके अफगान अभियानमें वलूच सरदारोंने अंग्रेजोंको विशेष सहायता पहुंचायी थी।

अभी वलूचिस्तानके झलावन, सरावन, खिलात, मकरान, लुस, कच्छगन्दावा और कोहि आदि विभाग हो गये हैं। खिलात इसकी राजधानी है। मस्तङ्ग (सरावन) कोजदार (झलावन), बेला (बेला), केज

(१) १८६३ ई०में अंगरेजप्रतिनिधिके चले आने पर शेरदिल खाने सर्दारोंके आदेशानुसार खुदादादको आक्रमण कर सिंहासन पर अधिकार जमाया। किन्तु दूसरे साल ही में उनको मार खुदादाद राजा हुये।

(मस्तान), पाघ, दादर और गन्दावा (कच्छगंदावा) आदि प्रधान नगर हैं। इनके अलावा नुश्कि, सराबन, पस्नी, वेला, मोणमियानि, कोयटो, सोहबर, शाहगोदर, माहगो, दिज, लुम, सामि, एगान और जेद्दोघाट आदि और भी कितने ही नगर हैं।

बलूची—बलूचिस्तानमें रहनेवाली सुन्नी सम्प्रदायभुक्त मुसलमान जाति। इस जातिके लोग सुन्दर, कर्मठ और योद्धा होते हैं। चोरी करना, गौ आदि चराना इनका प्रधान कार्य है। चोरी डकैतीके समय ये लोग निष्ठुर अत्याचार दिखलाते हैं सही, पर अन्य समय अतिथि सत्कार भी करते हैं इसमें सन्देह नहीं। कभी कभी ये लोग विदेशीय मनुष्यका अतिथि सत्कार कर उसका धन लूट लेते हैं। ये स्वभावतः ही अलस हैं। परन्तु युद्धविग्रह या मौलवाद्यादि प्रमोदमें आ कर भी कर्त्तव्यपरायणताका परिचय नहीं भूलते। बिना सिलाकी सामिग्री जितनी है उतनी इनके पास सदा रहती है, इनमें किसी प्रकारकी त्रुटि देखनेमें नहीं आती। जूआ खेलना, तमाकू पीना, गांजा और अफीम प्रभृति मादक चीजोंके भक्षणमें इनकी उदासीनता नहीं है। पर कोई कोई ऐसे भी हैं जो मद्य नहीं पीते। दुम्ब तथा गर्दभादि ग्रामीण पशुओंका मांस इन्हें बहुत प्रिय है। ये मवके मव मांस खाना बहुत पसन्द करते हैं। कच्चा मांस ही लहसुन प्याजके साथ खानेमें इनकी ज्यादा रुचि होती है। अपनी अवस्थाके अनुकूल क्रीतदास रखते हैं। सबोंमें बहु विवाह होता है। एक व्यक्ति ८ या १०से अधिक पत्नी रखता है। गवादि द्वारा ये कन्या खरीदते हैं। विवाहोंमें मौलवी इनकी पुरोहिताई करते हैं। विधवा विवाह भी इनमें प्रचलित है। भाईके मरने पर उसकी स्त्रीको दूसरा ग्रहण कर सकता है। किसी व्यक्तिके मर जाने पर बन्धु बान्धव आ कर तीन रात्रि मृतदेहकी चौकी देते हैं और उसी समय महाभोज भी करते हैं।

ये लोग सफेद और नील वस्त्रका जामा पहनते हैं। इनका पायजामा 'शुसि' कहलाता है। कमरमें कमरबन्द और माथेमें पगड़ी लपेटते हैं।

बलूत (अ० पु०) ठंढे देशोंमें होनेवाला माजूफलकी जातिका एक पेड़। यह यूरोपमें बहुत होता है। इसके अनेक भेद हैं जिनमेंसे कुछ हिमालय पर भी विशेषतः पूर्वी भाग (सिक्कम आदि) में होते हैं। जो बलूत भारतवर्षमें होता है उसे बंज, मारु या सीता सुपारी कहते हैं। इस प्रकारके पेड़ हिमालयमें सिन्धुनदके किनारेसे ले कर नेपाल तक होते हैं। शिमले, नैनीताल, मसूरी आदिमें भी इसके पेड़ अधिक मिलते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत नहीं होती, जल्दी टूट जाती है। खास कर यह ईंधन और कोयलेके काममें आती है। घरों में भी कुछ लगाई जाती है। दार्जिलिङ्ग और मनीपुरकी ओर जो वृक्ष होते हैं उनकी लकड़ी मजबूत होती है। यूरोपमें बलूतका आदर बहुत प्राचीनकालसे है। इङ्गलैण्डके साहित्यमें इस तरुराजका वही स्थान है जो भारतीय साहित्यमें वट या आमका है।

बलूल (सं० त्रि०) बल सिध्मादित्वात् बाहु० लच्-ऊङ। बलयुक्त।

बलेश्वर—बङ्गालमें प्रवाहित गङ्गाकी एक शाखा नदी। कुष्ठियरके निकट यह गङ्गाके कलेवरका त्याग कर गड़ई नामसे दक्षिणकी ओर बह गई है और फिर वहांसे मधुमती नाम धारण कर यशोर और फरिदपुर जिलेके मध्य हो कर बहती है। आखिर यह बाकरगञ्ज जिलेके उत्तर पश्चिम गोपालगञ्जके निकट बलेश्वर नामसे सुन्दरवनके मध्य होती हुई बङ्गोपसागरमें मिली है। यहां यह नदी हरिणघाटा नामसे मशहूर है। इसका मुहाना प्रायः १ मील प्रशस्त है। इस नदीमें बाढ़ कभी नहीं आती।

बलैया (अ० स्त्री०) बला, बलाय।

बलोत्कट (सं० त्रि०) बलेन उत्कट। १ अतिशय बलयुक्त। स्त्रियां टाप्। २ स्कन्दानुचर मातृभेद।

बलोद—मध्यप्रदेशके बिलासपुर जिलान्तर्गत एक प्रधान नगर।

बल्ल—प्राचीन जनपदभेद।

बल्कस (सं० पु०) वल्कस देखो।

बल्कल [illegible] ) यह मल्कट या मेल जो आसव उतारने [illegible] ता है।

[illegible] ०) [illegible] विरुद्ध। २ सेना

वल्ख—एक प्राचीन राज्य। वाह्लिक देखो।

वल्ति—हिमालयकी पार्वत्यप्रदेशवासी एक मोटजाति। हिन्दूकुशसे ले कर तिव्वतके नाना स्थानोंमें इनका वास है। इन लोगोंने बहुत कुछ मुसलमानोंका अनुकरण करना सीख लिया है।

वल्वज (स० पु०) तृणभेद।

वल्य (स० क्ली०) वलाय हितं वल (सुञ्जशकठजिलेति। पा ४।२।८०) इति य। १ प्रधान धातु, शुक्र। पु०) २ बुद्ध भिक्षक। (त्रि०) ३ वलकर, ताकतवर।

वल्या (स० स्त्री०) वल्या टाप्। १ अतिवला। २ अश्वगन्धा। ३ प्रसारिणी। ३ शिम्रोडी, चगोनी।

वल्ल (स० पु०) वल्ल देखो।

वल्लकी (स० स्त्री०) वल्लकी देखो।

वल्लभ (सं० पु०) वल्लभ देखो।

वल्लम (हिं० पु०) १ छड़, वल्ला। २ डंडा, सोंटा। ३ वह सुनहरा या रूपहला डंडा जिसे प्रतिहार या चोवदार राजाओंके आगे आगे ले कर चलते हैं। ४ वरछा, भाला।

वल्लमटेर (अं० पु०) १ स्वेच्छापूर्वक सेनामें भर्त्ती होने वाला। २ स्वेच्छा सेवक।

वल्लमवर्दार (हिं० पु०) वह नौकर जो राजाओंकी सवारी या वरातके साथ हाथमें वल्लम ले कर चलता है।

वल्लव (सं० पु०) १ जातिविशेष। २ पाचक, रसोइया। ३ भीमका वह नाम जो उन्होने विराटके यहां रसोइयेके रूपमें अज्ञातवास करनेके समय धारण किया था। ४ गोपालक, चरवाहा।

वल्लभगढ़—१ पञ्जावके दिल्ली जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २८ १२´से २८ ३६´ उ० तथा देशा० ७१ ७से ७७ ३१´ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३६ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। यमुना नदी तहसीलके पश्चिम हो कर वहती है। इसमें दो शहर और २४७ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८ २०´ उ० तथा देशा० ७७ २०´ पू० दिल्लीसे २४ मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ४५०६ है। यह नाम वलराम शब्दका अपभ्रंश है। वलराम एक जाट सरदार थे जिन्होंने यहां पर अपने नाम पर एक दुर्ग और प्रासाद वनवाया था। १७७५ ई०में दिल्लीसम्राट्ने यह स्थान अजित् सिंहको समर्पण किया। पीछे उनके लड़के वहादुर राजगद्दी पर वैठे। अजित्के उत्तराधिकारीने गदरके समय विद्रोहियोंका साथ दिया था, इस कारण पीछे वृटिश सरकारने उनका राज्य छीन लिया। तभीसे यह अंगरेजोंके दखलमें आ रहा है। शहरमें एक वर्नाक्युलर स्कूल और चिकित्सालय है।

वल्ला (हिं० पु०) १ लकड़ीकी लंबी, सीधी और मोटी छड़ या लट्ठा। २ मोटा डंडा, दंड। ३ गेंद मारनेका लकड़ी का डंडा जो आगेकी ओर चौड़ा और चिपटा होता है। ४ वांस या डंडा जिससे नाव खेते हैं। ५ गोवरकी सुखाई हुई पहियेके आकारकी गोल टिकिया जो होलिका जलनेके समय उसमें डाली जाती है।

वल्लापल्लि—मन्द्राजप्रदेशके कड़ापा जिलान्तर्गत एक वन विभाग। यहां तरह तरहके वहुमूल्य काष्ठ पाये जाते हैं।

वल्लारी (हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी जिसमें केवल कोमल गाधार लगता है।

वल्लालदेव—दाक्षिणात्यके शिलाहार वंशीय एक राजा। ये १०१० शकमें विद्यमान थे।

वल्लालवाड़ी—१ प्राचीन गौड़राज्यके अन्तर्गत एक स्थान यह अभी स्तूपाकारमें परिणत हो गया है। इसका घेरा एक मीलसे कम नहीं होगा। वहिर्भागमें जो विस्तृत वांध देखा जाता है, उसका निम्नभाग ५० फुट विस्तृत है। उस प्राचीरके वाहर और भीतर ७५ फुट प्रशस्त परिखा विद्यमान है।

२ विक्रमपुर जिलान्तर्गत एक स्थान। प्रवाद है, कि सेनवंशीय राजा वल्लालसेन यहां आ कर रहते थे। इस स्थानमें ७६० फुट चतुरस्र एक मृत्तिकानिर्मित किलेका ध्वंसावशेष दृष्टिगोचर होता है। उसके पास ही रामपाल नामक दिग्गी है।

वल्लालसेन और विक्रमपुर देखो।

वल्लालपुर—मध्यप्रदेशके चांदा जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० १६ ५´४५´´उ० तथा देशा० ७६ २३´१५´´ पू०के मध्य अवस्थित है। एक समय इस जनपदमें प्राचीन गोंडराजवंशकी राजधानी थी। यह प्राचीन नगर जंगलमें परिणत हो जाने पर भी उसका

निदर्शन भान भी देखनेमें आता है। १८०० ई०में यहां पत्थरका एक दुर्ग बनाया गया था। इसके उत्तरमें पुष्करिणी और पूर्वमें गौडराजके समाधि मन्दिरका भग्नावशेष पड़ा है। यहां वल्लालनदीकी एक प्रशाखाके मध्य एक देवमन्दिर स्थापित है। नदीमें बाढ़ आनेसे यह मन्दिर कुछ समय तक जलमग्न रहता है। यहांकी सम्मुख पर्वतमालाके मध्य हो कर वल्लालनदी बह गई है और इधर उधर वनराजि विराजित रहनेके कारण इस स्थानका प्राकृतिक सौन्दर्य सर्वापेक्षा मनोरम है।

**वल्लालराजवंश**—दाक्षिणात्यके एक प्रसिद्ध राजवंश। यह वंश हयशाल वल्लाल नामसे प्रसिद्ध है। वर्त्तमान महिसुर राज्यके समीपवर्ती स्थानोंमें इस वंशने १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था। पहले ये लोग कलचूरी वंशीय राजाओंके सामन्तरूपमें गिने जाते थे। आखिर उक्त राजवंशका भाग्य पतन होने पर उन्हीं लोगोंने इस प्रदेशका शासन भार ग्रहण किया।

वल्लालराजगण यादववंशके थे। दाक्षिणात्यमें जब उन लोगोंका पूरा प्रभाव फैला हुआ था, उस समय उन्होंने यादव राजाओंकी प्राचीन राजधानी द्वारसमुद्रमें (वर्त्तमान नाम हलेबीडु) राज्य बसाया। शाल या हय शाल नामक कोई व्यक्ति इस वंशके प्रतिष्ठाता थे, ऐसा बहुतेरोंका विश्वास है।(१) किन्तु उसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। शिलालिपिसे वल्लाल वंशीय राजाओंकी जो वंशतालिका पाई गई है, वह इस प्रकार है—

१०४७ ई०में उत्कीर्ण शिलालिपि(२)से मालूम होता है, कि राजा विनियादित्य त्रिभुवनमल्ल पश्चिम चालुक्य राज छठे विक्रमादित्यके सामन्त थे। उनके पुत्रका नाम एरेयङ्ग था। एरेयङ्गके तीन पुत्र थे, वल्लाल, विष्णु वर्द्धन और उदयादित्य। वल्लालने निज भुजबलसे शान्तारराज जगद्देवको ११०३ ई०में परास्त किया था। उनके छोटे भाई राजा विष्णुवर्द्धनने।(३) गङ्गराजधानी तलकाड़ पर अधिकार जमाया। इन्हीं के अधिकारकाल में वल्लालराजवंशकी ख्याति चारों ओर फैल गई थी। जनसाधारणका विश्वास है, कि रामानुजाचार्यने उन्हें वैष्णवधर्ममें दीक्षित किया था। उनके लड़के १म नरसिंहने ११४१ ११९१ ई० तक राज्य किया। पीछे राजा २य वल्लाल सिंहासन पर बैठे। वे ११९२ १२११ ई० तक राजा रहे। उन्होंने कलचूरीराजको परास्त कर राज मुकुट धारण किया। पीछे पाण्ड्य, चोड़ आदि दाक्षिणात्य राजाओंको जीत कर अपना प्रभाव फैलाया। १२५१ ई०में देवगिरि यादवराजसे २य नरसिंह परास्त हुए, यह हमें शिलालिपिसे मालूम होता है। उनके बाद राजा सोमेश्वरने चोड़राज्यके अन्तर्गत विक्रमपुर जा कर राजधानी बसाई। (१२२५ ई०में) राजा ३य नरसिंह द्वारसमुद्रमें राज्य करते थे।(४) राजा ३य वल्लाल या वीर वल्लालदेवने दाक्षिणात्यमें मुसलमानी आक्रमण पर्यन्त (१३१० ई०) राज्य किया था। मालिक काफुर द्वारसमुद्रके यादवराजाओंको जीतनेके लिये दाक्षिणात्य गये थे। युद्ध में वल्लाल पकड़े गये और पराजित हुए। उनका राज पाट मुसलमानोंके हाथ लगा, पर उन्हीं मुसलमानोंकी कृपासे वे १३२७ ई० तक राज्यशासन करते रहे थे। पीछे मुसलमानों के बार बार आक्रमणसे वल्लालराजवंश छार खार हो गया। १३३७ ई०में हम देखते हैं, कि दाक्षिणात्य के मुसलमान शासनकर्त्ताने तातुगलके हयशालके यहां आश्रय ग्रहण किया था। १३४७ ई०में द्वारसमुद्रके हय शालराज वल्लालदेवने अपरापर हिन्दूराजाओं के साथ मिल कर मुसलमानों को दाक्षिणात्यमें मस्तक उठानेका अवसर नहीं दिया और प्रायः दो सदी तक मुसलमान लोग हिन्दूराजाओं के पदानत रहे थे।

**वल्लालरायदुर्ग**—महिसुरराज्यके कदूर जिलान्तर्गत पश्चिम घाट पर्वतमालाका एक पथ। यह समुद्रपृष्ठसे ४६४६ फुट ऊंचा है। दाक्षिणात्यमें वल्लालवंशीय राजाओंने

---

(१) मेजर वरवन्स वाल्यार नामक पुस्तकमें हय शाल का राज्यकाल ९८४से १०४३ ई० तक बतलाया गया है।

(२) Mr Rice ने १०२१ ई०के उत्कीर्ण उक्त राज्यकी एक और शिलालिपिका उल्लेख किया है।

(३) विट्टिदेव, विट्टिग, त्रिभुवनमल्लदेव २य, भुजबल गङ्ग, वीरगङ्ग, विक्रमगङ्ग आदि उनके विरुद (पदवी) देखे जाते हैं।

(४) इनके राज्यकालमें १२५४ १२८६ ई०के मध्य शिला लिपि उत्कीर्ण देखी जाती है।

अधिकारकालमें यह पर्वत दूरविस्तृत दुर्गमालासे सुशो भित था ।

बल्लालसेन—गौड़देशके सेनवंशीय एक राजा। गौड़में जितने राजा हो चुके हैं उन सबमें सेनवंशीय बल्लाल का नाम बङ्गालमें किसीसे छिपा नहीं है। बल्लाल-सेनके जन्म और जातिको ले कर अनेक लोग अनेक प्रकारकी बातें कहते हैं। आधुनिक वैद्य कुलजीके मतमें—

"आदिशूरका वंश ध्वंस सेनावंश ताजा।
विश्वक्सेनका क्षेत्रज पुत्र बल्लालसेन राजा॥"

फिर विक्रमपुरमें यह प्रवाद इनके विषयमें सुना जाता है—बल्लालसेन वैद्य थे, ब्रह्मपुत्रनदके पुत्र थे, सेकशुभो दया नामक ग्रन्थमें भी इसी किंवदन्तीका उल्लेख मिलता है। आइन इ अकबरीके मतमें ये कायस्थ बतलाये गये हैं(१)। किन्तु बल्लालसेनके स्वरचित दानसागर और अद्भुत सागर, सेनराजाओंकी शिलालिपि, हरिमिश्रकी कारिका और आनन्दभट्टरचित बल्लालचरितमें (२) बल्लालसेनको चन्द्रवंशीय ब्रह्मक्षत्रिय (३), विजयसेनके पुत्र, हेमन्तसेनके पौत्र और सामन्तसेनके प्रपौत्र बतलाया है।

लक्ष्मणसेन और उनके पुत्र विश्वरूपके ताम्र-शासन तथा बल्लालके स्वरचित ग्रन्थ और ताम्रशासनमें बल्लालसेन "निःशङ्क शङ्कर गौड़ेश्वर" और महावीर कह कर वर्णित हुये हैं। बल्लालचरित लेखक आनन्दभट्ट ने लिखा है, 'बल्लालसेन राढ़, वरेन्द्र, वगड़ी, वङ्ग और मिथिला इन पांच गौड़के अधीश्वर थे। उनके समय भी मगधमें बौद्धआधिपत्य विलुप्त नहीं हुआ था। इस समय सुवर्णवणिकों में बल्लभानन्द प्रधान थे; वे मगधा-धिपतिके श्वशुर होते थे। बल्लालसेनने इनसे युद्ध के लिये कुछ रुपये कर्ज मांगे थे, पर बल्लभानन्दने नहीं दिये। इस कारण सुवर्णवणिकों के ऊपर सेनवंशका अत्यन्त प्रकोप रहा।

बल्लालसेनने गौड़राजधानीमें एक बड़ा भारी यज्ञ किया। उस समय यज्ञसभामें विक्रमपुरसे ध्रुवसेन, सुरसेन, भीमसेन आदि इनके आत्मीय लोग उपस्थित हुए। भीमसेनके ऊपर आहारके बन्दोबस्त करनेका भार था। भोजन स्थानमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र इन तीन वर्णोंका आसन निर्दिष्ट था। सभी जाति अपने अपने आसन पर बैठी। शूद्रों के साथ सोनारोंका आसन दिया गया था। किन्तु कोई भी सोनार निर्दिष्ट आसन पर न बैठे और चले गये। भीमसेनने बल्लालसे कहा, "सोनारों का नेता बड़ा अभिमानी हो गया है, यह मग धेश्वर पालराजका श्वसुर बन कर धराको मिट्टीके बर्तन समान समझने लगा है। यह दुर्वृत्त वृषल स्वजनवर्गके साथ आपको अवज्ञा कर चला गया है।" इस पर बल्लाल सेनने अत्यन्त क्रुद्ध हो तमाम ढिंढोरा पिटवा दिया, कि आजसे सभी सोनारों की शूद्रमें गिनती हुई। जो ब्राह्मण इनका याजन, अध्यापन और प्रतिग्रह करेंगे, वे निश्चय पतित होंगे। यह राजादेश सुन सुवर्णकार बड़ बिगड़े और उन्होंने दासव्यवसायियों से दूना, तिगुना मूल्य दे कर सभी दास खरीद लिये। दासा भावसे प्रजाको महा कष्ट होने लगा। इस समय कैवर्त्त-लोग राजादेशसे दास्यकर्ममें नियुक्त हुए और वे जला चरणीय भी समझे जाने लगे। कैवर्त्तोंका प्रधान महेश पहले महत्तर था, अभी वह महामाण्डलिक हो दक्षिणघाटमें

---

(१) बल्लालके कायस्थ होनेमें लोग यह कारण बत लाते हैं, कि इस वंशने कायस्थको कन्या ली थी। चन्द्रद्वीप देखो।

(२) पहिले 'कुलीन' शब्दमें मुद्रित बल्लालचरित पर निर्भर करके लिखा गया था, कि १३०० शकमें बल्लाल नामके एक स्वतन्त्र वैद्यवंशीय राजा विक्रमपुर अंचलमें राज्य करते थे, किन्तु इस समयकी हस्तलिखित बल्लाल चरितकी पोथीसे मालूम होता है, कि बल्लाल ब्रह्मक्षत्रिय थे और अङ्गाधिप कर्णके वंशमें इनका जन्म हुआ था।

(३) ब्रह्मक्षत्रियकी उत्पत्ति ले कर बल्लालचरितकी पोथीमें लिखा है—

"ब्रह्मक्षत्रस्य यो योनिर्वंश क्षत्रियपुङ्गव ।
सेनवंशस्ततो जातो यस्मिन् जातोऽसि पाण्डव ॥"

दाक्षिणात्य और सिन्धुप्रदेशमें आज भी क्षत्रिय रहते हैं। उनकी अवस्था कायस्थों के समान है और किसी स्थानमें ये कायस्थ कहे जाते हैं। कुलीन देखो।

भेजा गया।(१) इस समयसे मालाकार, कुम्भकार और कर्मकार ये तीनों जातियां सच्छूद्रमें गिनी जाने लगीं।

दास व्यवसाय बन्द कर देनेसे सभी प्रजा सुवर्ण वणिकों पर बिगड़ गई थी। सभी ब्राह्मणोंकी उत्तेजना से बल्लालसेनने घोषणा कर दी, 'कोई भी वणिक् यज्ञ सूत्र धारण नहीं कर सकता। जिस किसीके गलेमें यज्ञ सूत्र देखा जायगा उसे दण्ड मिलेगा और यज्ञसूत्र तोड़ दिया जायगा।' राजभयसे इस समय कितने वणिक् गौड़ छोड़ कर चले गये और जो रहे वे यज्ञोपवीत फेंक कर नीच शूद्रमें गिने जाने लगे। (बल्लालचरित)

बल्लालचरितसे जाना जाता है, कि इन्हीं गौड़ाधिपने बङ्गालकी समस्त जातियोंकी यथायथ सामाजिक सम्मान व्यवस्था कर दी थी। उनका प्रधान कार्य ब्राह्मण और कायस्थोंमेंसे महावंशसम्भूत और नवगुणयुक्त व्यक्तियोंको कौलीन्यमर्यादा प्रदान करना था। उनसे राढ़ी और वारेन्द्र ब्राह्मणोंने कौलीन्यमर्यादा प्राप्त की थी। बल्लालचरितकार आनन्दभट्टने लिखा है, कि वैदिक लोग वणिकोंके पक्षपाती थे, इसलिये बल्लालने उन्हें कौलीन्यमर्यादा प्रदान नहीं की थी।

कुलीन और ब्राह्मण शब्द देखो।

बल्लालके पिता विजयसेनसे सेनवंशका सौभाग्योदय होने पर भी बल्लालके समयमें ही गौड़देशमें ब्राह्मण्य धर्मने प्रधानता पाई, बौद्ध धर्मका प्रभाव घटा और मिथिला पर्यन्त सेनराज्य विस्तृत हुआ। पालवंशीय शेष गोविन्दपाल ११६१ ई०में बल्लालसेनसे पराजित हुए थे। उनके समयमें अधिकांश बौद्ध गौड़का परित्याग कर नेपाल भाग गये थे। बौद्ध प्लावित गौड़देश का उद्धार कर ब्राह्मणप्राधान्य स्थापन करनेके लिये ही बल्लालसेन समाज संस्कारमें प्रवृत्त हुए थे। किसीका यह भी कहना है कि बल्लालसेन अभिनव ब्राह्मणभक्त थे इसीलिये 'ब्रह्मक्षत्रिय' नामसे वे तमाम प्रसिद्ध हुए हैं।

समाजशासन करनेके लिये बल्लालसेनने उत्तर राढ़, दक्षिण राढ़, वारेन्द्र और बङ्ग इन चार स्थानोंमें एक एक राजधानी बसाई थी। आज भी नवद्वीप, वर्द्धमान जिला, गौड़ और विक्रमपुरमें 'बल्लालबाड़ी', 'बल्लालदिग्घी' आदि उनके निदर्शन मौजूद हैं।

आइन-इ-अकबरीके मतसे बल्लालसेनने ५० वर्ष राज्य किया। फिर आनन्दभट्टके लिखानुसार ६० वर्ष २ मासकी उम्रमें ४० वर्ष राज्य करनेके बाद १०६८ शकमें बल्लालसेनकी मृत्यु हुई। वैसा मत समीचीन प्रतीत नहीं होता। बल्लालसेनके अद्भुतसागरमें लिखा है—

गौड़ेन्द्रगणरूपी कुञ्जर पुञ्जके बन्धनस्तम्भस्वरूप भुजशाली महीपति बल्लालने १०९० शकमें अद्भुतसागर की रचना आरम्भ की। यह ग्रन्थ समाप्त न हो पाया था, कि इतनेमें उनके पुत्रका राज्याभिषेकोत्सव उपस्थित हुआ। इस महासमारोह कार्यमें व्याप्त होनेके कारण स्वरचित ग्रन्थकी परिसमाप्ति न कर गये और प्रभूत दान जलप्रवाहमें समानय गङ्गा और यमुनाका सङ्गम देखते हुए पत्नी सहित अमरधामको सिधार गये। अनन्तर महाभाग्य भूपति लक्ष्मणसेनने बहुत समीचीन

१--वैद्योंकी जलाचरणीयताके सम्बन्धमें आनन्द भट्टने १४११ शकमें लिखा है,—

एक दिन बल्लालसेन मृगया करने वनमें गये। वहां वे एक कर्मकार रमणीके रूप पर मुग्ध हो उसे घर ले आये और विवाह कर लिया। उस पद्मिनीने लक्ष्मण सेनको अनिष्ट करनेके लिये एक दिन राजा बल्लालसेनसे कहा, कि लक्ष्मणसेनने उसके प्रति बुरी इच्छा प्रकट की है। इस पर बल्लालसेन बड़े क्रुद्ध हुए और लक्ष्मणसेन का शिरश्छेद करनेका हुक्म दे दिया। इसकी खबर लगते ही लक्ष्मणसेन राजधानीका परित्याग कर दूरवर्त्ती देशमें चला गया। पीछे बल्लालका क्रोध जब शान्त हुआ तब एक दिन लक्ष्मणसेनकी पुत्रवधूने विरहपूर्ण श्लोक लिख कर उनके पास भेज दिया। बल्लालसेनने विरहजनित श्लोक पढ़ लक्ष्मणसेनको तुरंत बुला लेनेके लिये आदमी भेजा। कैवर्तोंने १८ डाँड़वाली नावमें ले कर लक्ष्मणसेनको गौड़ नगरमें बहुत जल्द हाजिर कर दिया। बल्लाल उनके इस कामसे अति सन्तुष्ट हो उन्हें जलाचरणीय बना दिया। उसी समयसे जो जालिक कैवर्त लक्ष्मणसेनको लाये थे, वे हलिकोंके द्वारा हालिक समझे जाने लगे।

(बल्लालचरित)

लगा कर राजा वल्लालसेनकृत अद्भुतसागरका अव शिष्टांश संकलन किया।

इस कथासे मालूम होता है, कि वल्लालसेनने १०९० शकमें अद्भुतसागरका लिखना आरम्भ किया था। इस ग्रन्थकी परिसमाप्तिके पहिले लक्ष्मणसेनको राज्यमें अभिषिक्त कर आप इस स्वर्गलोकसे चल बसे। वल्लालके दानसागरसे पता चलता है, कि १०९१ शकमें यह ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ था। संभव है, इसी शकमें अथवा इसके पहिले वल्लाल स्वर्गारोहण कर गये हो।

सेनराजवंश देखो।

वल्लालकी मृत्युको ले कर वल्लालचरितमें एक गल्प इस प्रकार लिखा है,—एक बार वल्लाल-बायादुम्ब नामक एक म्लेच्छके साथ युद्ध करने गये। युद्धयात्रामें वे अपने साथ दो कबूतर ले गये थे। जाते समय उन्होंने महिषियोंसे कह दिया था, 'ये कबूतर वापिस आ जाय, तो जानना, हमारी मृत्यु हो गई है, तुम लोग सभी चितारोहण कर लेना।' इधर वल्लालने महायुद्धमें बायादुम्बको निहत किया। युद्धके अवसान होने पर श्रान्ति दूर करनेके लिये वे ज्यों ही स्नान करने जलाशयमें घुसे, त्यों ही ये दोनों कबूतर उड़ कर घर पहुंचे। वल्लालकी महिषियोंने कबूतरको देख पतिकी मृत्युका निश्चय कर लिया और अपने सतीत्वका परिचय दिया। वल्लालसेनने घर आकर शोचनीय दृश्य देख, अग्निमें अपना काम तमाम किया। किन्तु इस गल्पकी सत्यता प्रतीत नहीं होती। गौड़ाधिप वल्लालसेनके दो सौ वर्ष बाद विक्रमपुरमें रामपालके निकट वल्लालसेन नामक एक वैद्य राजा प्रादुर्भूत हुए। वे ही मुसलमानोंके हाथसे मारे गये थे, ऐसा प्रवाद प्रचलित है।

बल्व (सं० क्ली०) ज्योतिषोक्त करणभेद।

बल्वजा (सं० स्त्री०) एक घासका नाम।

बल्वल (सं० पु०) इल्वल नामक दैत्यके पुत्रका नाम।

बल्हि (सं० पु०) बल्ह-इन्। १ क्षत्रियभेद। २ जनपदभेद।

बवंडना (हिं० क्रि०) व्यर्थ फिरना, इधर उधर घूमना।

बवंडर (हिं० पु०) १ चक्रवात, चक्रकी तरह घूमती हुई वायु। २ प्रचण्ड वायु, आँधी, तूफान।

बव (सं० पु०) ज्योतिषोक्त प्रथम करण। इस करणमें शुभाशुभ कर्मादि करनेसे कल्याण होता है। जो इस करणमें जन्म लेता, वह शूर, अतिशय धीरप्रकृतियुक्त, कृतकर्मा और पण्डित होता है तथा कमला उसके घरमें हमेशा वास करती है। (कोष्ठी प्र०)

बवघूरा (हिं० पु०) बवंडर, बगूला।

बवना (हिं० क्रि०) छिटकना, छितराना, बिखरना।

बवरना (हिं० क्रि०) बौरना देखो।

बवादा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी जड़ी या ओषधि जो हल्दीकी तरहकी होती है।

बवासीर (अ० स्त्री०) एक प्रकारका रोग। इसमें गुदेन्द्रियमें मस्से या उभार उत्पन्न हो जाते हैं। इसमें रोगीको पीड़ा होती है और पखानेके समय मस्सोंसे रक्त भी गिरता है। अर्शरोग देखो।

बशिष्ट (सं० पु०) वशिष्ठ देखो।

बशीरी (अ० पु०) अमृतसरमें मिलनेवाला एक प्रकारका बारीक रेशमी कपड़ा।

बष्कय (सं० पु०) तरुण वत्स, एक वर्षका बछड़ा।

बष्कयणी (सं० स्त्री०) बष्कयस्तरुणवत्सः सोऽस्ति अस्या बष्कयणादित्वान्न, पक्षे इनि ततो ङीप्। चिरप्रसूता गाभि, वह गाय जिसको ब्याए हुए बहुत समय हो गया हो।

बसंत (हिं० पु०) बसंत देखो।

बसंता (हिं० पु०) हरे रंगकी एक चिड़िया। इसका सिरसे ले कर कंठ तकका भाग लाल होता है।

बसंती (हिं० वि०) १ वसन्त ऋतु सम्बन्धी, वसन्तका। २ खुलते हुए पीले रंगका, सरसोंके फूलके रंगका। (पु०) ३ एक रंगका नाम जो तुनके फूलों आदिमें रँगनेसे आता है। यह हल्का पीला होता है पर गन्धकीसे अधिक तेज होता है। वसन्त ऋतुमें यह रंग लोगोंको अधिक प्रिय होता है। ४ पीला कपड़ा।

बसंदर (हिं० पु०) अग्नि, आग।

बस (फा० वि०) १ पर्याप्त, भरपूर। (अव्य०) २ पर्याप्त, काफी।

भेजा गया।(१) इस समयसे मालाकार, कुम्भकार और कर्मकार ये तीनों जातियां सच्छूद्रमें गिनी जाने लगी।

दास व्यवसाय बन्द कर देनेसे सभी प्रजा सुवर्ण वणिकों पर बिगड़ गई थी। अभी ब्राह्मणोंका उत्तेजनासे वल्लालसेनने घोषणा कर दी, 'कोई भी वणिक् यज्ञ सूत्र धारण नहीं कर सकता जिस किसीके गलेमें यज्ञ सूत्र देखा जायगा उसे दण्ड मिलेगा और यज्ञसूत्र तोड़ दिया जायगा।' राजभयसे इस समय कितने वणिक् गौड़ छोड़ कर चले गये और जो रहे वे यज्ञोपवीत फेंक कर नीच शूद्रमें गिने जाने लगे। (वल्लालचरित)

वल्लालचरितसे जाना जाता है, कि इसी गौड़ाधिपने बंगालकी समस्त जातिकी यथायथ सामाजिक सम्मान व्यवस्था कर दी थी। उनका प्रधान काय ब्राह्मण और कायस्थोंमेंसे महायशसम्भूत और नवगुणयुक्त व्यक्तियोंको कौलीन्यमर्यादा प्रदान करना था। उनसे राढ़ी और वारेन्द्र ब्राह्मणोंने कौलीन्यमर्यादा प्राप्त की थी। वल्लालचरितकार आनन्दभट्टने लिखा है, कि वैदिक लोग वणिकोंके पक्षपाती थे, इसलिये वल्लालने उन्हें कौलीन्यमर्यादा प्रदान नहीं की थी।

कुलीन और कायस्थ शब्द देखो।

वल्लालके पिता विजयसेनसे सेनवंशका सौभाग्योदय होने पर भी वल्लालके समयमें ही गौड़देशमें ब्राह्मण्य धर्मने प्रधानता पाई, बौद्ध धर्मका प्रभाव घटा और मिथिला पर्यन्त सेनराज्य विस्तृत हुआ। पालवंशीय शेष गोविन्दपाल ११६१ ई०में वल्लालसेनसे पराजित हुए थे। उनके प्रभावसे अधिकांश बौद्ध गौड़का परित्याग कर नेपाल भाग गये थे। बौद्ध प्लावित गौड़देशका उद्धार कर ब्राह्मणप्राधान्य स्थापन करनेके लिये ही वल्लालसेन समाज संस्कारमें प्रवृत्त हुए थे। किसीका यह भी कहना है, कि वल्लालसेन अतिशय ब्राह्मणभक्त थे इसीलिये 'ब्रह्मक्षत्रिय' नामसे वे तमाम प्रसिद्ध हुए हैं।

समाजशासन करनेके लिये वल्लालसेनने उत्तर राढ़, दक्षिण राढ़, वारेन्द्र और बंग इन पांच स्थानोंमें एक एक राजधानी बसाई थी। आज भी नवद्वीप, वर्द्धमान जिला, गौड़ और विक्रमपुरमें 'वल्लालवाड़ी', 'वल्लालदिग्घी' आदि उसके निदर्शन मौजूद हैं।

आईन-इ-अकबरीके मतसे वल्लालसेनने ५० वर्ष राज्य किया। फिर आनन्दभट्टके विचारमें ६५ वर्ष २ मासकी उम्रमें ४० वर्ष राज्य करनेके बाद १०२८ शकमें वल्लालसेनकी मृत्यु हुई। शेषोक्त मत समीचीन प्रतीत नहीं होता। वल्लालसेनके अद्भुतसागरमें लिखा है—

*गौड़ेन्द्रगणरूपी कुञ्जर पुञ्जके ध्वंसस्तम्भस्वरूप भुजशाली महीपति वल्लालने १०९० शकमें अद्भुतसागर की रचना आरम्भ की। इसकी रचना शेष न हो पाई थी, कि इतनेमें उनके पुत्रका राज्यारोहणकाल उपस्थित हुआ। इस महासमारोह कार्यमें व्यापृत होनेके कारण स्वरचित ग्रन्थकी परिसमाप्ति न कर सके और प्रभूत दान जलप्रवाहमें असमय गङ्गा और यमुनाका सङ्गम सम्पादन करते हुए पत्नी सहित अमरधामको सिधार गये। अनन्तर महामान्य भूपति लक्ष्मणसेनने बहुत तनमन*

---

१—कैवर्त्तकी जलचारणीयताके सम्बन्धमें आनन्दभट्टने १४११ शकमें लिखा है,—

एक दिन वल्लालसेन मृगया करने वनमें गये। वहांसे एक कर्मकार रमणीके रूप पर मुग्ध हो उसे घर ले आये और विवाह कर लिया। उस पद्माक्षीने लक्ष्मणसेनको अनिष्ट करनेके लिये एक दिन राजा वल्लालसेनसे कहा, कि लक्ष्मणसेनने उसके प्रति बुरी इच्छा प्रकट की है। इस पर वल्लालसेन बड़े क्रुद्ध हुए और लक्ष्मणसेनका शिरश्छेद करनेका हुकुम दे दिया। इसको खबर लगते ही लक्ष्मणसेन राजधानीका परित्याग कर दूरवर्त्ती देशमें चला गया। पीछे वल्लालका क्रोध जब शान्त हुआ तब एक दिन वल्लालसेनकी पुत्रवधूने विरहपूर्ण श्लोक लिख कर उनके पास भेज दिया। वल्लालसेनने विरहजनित श्लोक पढ़ लक्ष्मणसेनको तुरत बुला लेनेके लिये आदमी भेजा। कैवर्त्तोंने १८ डाँडवाली नावसे खे कर लक्ष्मणसेनको गौड़ेश्वरमें बहुत जल्द हाजिर कर दिया। वल्लाल उनके इस कामसे अति सन्तुष्ट हो उन्हें जलाचरणीय बना दिया। उसी समयसे जो जालिक कैवर्त्त लक्ष्मणसेनको लाये थे, वे कृषिकार्य द्वारा हालिक समझे जाने लगे।

(वल्लालचरित)

लगा कर राजा बल्लालसेनकृत अद्भुतसागरका अवशिष्टांश सकलन किया।

इस कथासे मालूम होता है, कि बल्लालसेनने १०९० शकमें अद्भुतसागरका लिखना आरम्भ किया था। इस ग्रन्थकी परिसमाप्तिके पहिले लक्ष्मणसेनको राज्यमें अभिषिक्त कर आप इस स्वर्गलोकसे चल बसे। बल्लालके दानसागरसे पता चलता है, कि १०९१ शकमें यह ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ था। सभव है, इसी शकमें अथवा इसके पहिले बल्लाल स्वर्गारोहण कर गये हो।

सेनराजव श देखो।

बल्लालकी मृत्युको ले कर बल्लालचरितमें एक गल्प इस प्रकार लिखी है,—एक बार बल्लाल वायादुम्ब नामक एक म्लेच्छके साथ युद्ध करने गये। युद्धयात्रामें वे अपने साथ दो कबूतर ले गये थे। जाते समय उन्होंने महिषियो से कह दिया था, 'ये कबूतर वापिस आ जाय, तो जानना, हमारी मृत्यु हो गई है, तुम लोग सभी चितारोहण कर लेना।' इधर बल्लालने महायुद्धमें वायादुम्बको निहत किया। युद्धके अवसान होने पर श्रान्ति दूर करनेके लिये वे ज्यों ही स्नान करने जलाशयमें घुसे, त्यों ही वे दोनो कबूतर उड़ कर घर पहुचे। बल्लालकी महिषियोंने कबूतरको देख पतिकी मृत्युका निश्चय कर लिया और अपने सतीत्वका परिचय दिया। बल्लालसेनने घर आकर शोचनीय दृश्य देख, अग्निमें अपना काम तमाम किया। किन्तु इस गल्पकी सत्यता प्रतीत नहीं होती। गौड़ाधिप बल्लालसेनके दो सौ वर्ष बाद विक्रमपुरमें रामपालके निकट बल्लालसेन नामक एक वैद्य राजा प्रादुर्भूत हुए। वे ही मुसलमानो के हाथसे मारे गये थे, ऐसा प्रवाद प्रचलित है।

बल्व (स० क्ली०) ज्योतिषोक्त करणभेद।

बल्वजा (स० स्त्री०) एक घासका नाम।

बल्वल (स० पु०) इल्वल नामक दैत्यके पुत्रका नाम।

बल्हि (सं० पु०) बलह्-इन्। १ क्षत्रियभेद। २ जनपदभेद।

बवँडना (हिं० क्रि०) व्यर्थ फिरना, इधर उधर घूमना।

बवँडर (हिं० पु०) १ चक्रवात, चक्रकी तरह घूमती हुई वायु। २ प्रचण्ड वायु, आँधी, तूफान।

बव (स० पु०) ज्योतिषोक्त प्रथम करण। इस करणमें शुभाशुभ कर्मादि करनेसे कल्याण होता है। जो इस करणमें जन्म लेता, वह शूर, अतिशय धीरप्रकृतियुक्त, छत्रकर्मा और पण्डित होता है तथा कमला उसके घरमें हमेशा वास करती है। (कोष्ठी प्र०)

बवघूरा (हिं० पु०) बव डर, बगूला।

बवना (हि० क्रि०) छिटकना, छितराना, बिखरना।

बवरना (हिं० क्रि०) बौरना देखो।

बवादा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी जड़ी या ओषधि जो हल्दीकी तरहकी होती है।

बवासीर (अ० स्त्री०) एक प्रकारका रोग। इसमें गुदेन्द्रियमें मस्से या उभार उत्पन्न हो जाते हैं। इसमें रोगीको पीड़ा होती है और पखानेके समय मस्सोंसे रक्त भी गिरता है। अर्शरोग देखो।

बशिष्ट (स० पु०) वशिष्ठ देखो।

बशीरो (अ० पु०) अमृतसरमें मिलनेवाला एक प्रकारका बारीक रेशमी कपड़ा।

बष्कय (स० पु०) तरुण वत्स, एक वर्षका बछड़ा।

बष्कयणी (स० स्त्री०) बष्कयस्तरुणवत्स सोऽस्ति अस्या बष्कयपामादित्वान्न, पक्षे इनि ततो ङीप्। चिरप्रसूता गाभि, वह गाय जिसको ब्याए हुए बहुत समय हो गया हो।

बस त (हिं० पु०) बस त देखो।

बसंता (हिं० पु०) हरे रगकी एक चिड़िया। इसका सिरसे ले कर कठ तकका भाग लाल होता है।

बसती (हिं० वि०) १ बसन्त ऋतु सम्बन्धी, बसन्तका। २ खुलते हुए पीले रगका, सरसोंके फूलके रगका। (पु०) ३ एक रगका नाम जो सुनके फूलों आदिमें रँगनेसे आता है। यह हल्का पीला होता है पर गन्धकीसे अधिक तेज होता है। वसन्त ऋतुमें यह रग लोगोंको अधिक प्रिय होता है। ४ पीला कपड़ा।

बसदर (हिं० पु०) अग्नि, आग।

बस (फा० वि०) १ पर्याप्त, भरपूर। (अव्य०) २ पर्याप्त, काफी।

वसई (वेसिन)—१ बम्बई जिलेके थाना जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १९ १६´ से १९ ३५´ उ० तथा देशा० ७२ ४४´ से ७३ १´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २२३ वर्गमील है। इसमें वसाँइ नामका एक शहर और ६० ग्राम लगते हैं। यहांकी जमीन बहुत उर्वरा है। धान, केला, ईख और पान बहुतायतसे उत्पन्न होता है। तुङ्गल और कामन नामक पर्वतमाला तालुककी शोभाको बढ़ाता है। कामन दुर्ग समुद्रपृष्ठसे २१६० फुट ऊंचा है। जलवायु स्वास्थ्यकर है।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १९ २० उ० तथा देशा० ७२ ४९´ पू० वसिन रोड स्टेशनसे ५ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या १०७०२ है। यहां बम्बई, बड़ौदा और मध्यभारतीय रेलपथका एक स्टेशन है। पहले वसाँइ द्वीप और भारतीय विभागके मध्य जलनाली बहनेके कारण पुर्त्तगीजोंने जहाजादि रखनेके लिये इस स्थानको उपयुक्त समझा। इस कारण उन्होंने गुजरातपति बहादुरशाहसे १५३४ ई०में इसका अधिकार ग्रहण किया और उसके दो वर्ष बाद यहां एक दुर्ग बनवाया। प्राय दो शताब्दी तक यह स्थान पुर्त्तगीजोंके दखलमें रहा। उस समय शहरकी ऐसी श्रीवृद्धि हुई, कि यह Court of the North नामसे पुर्त्तगीजोंके मध्य प्रसिद्ध हो गया। उस समय यहां सैकड़ों वणिक् रहते थे। उनकी सुरम्य अट्टालिकासे नगरकी शोभा निराली थी। हिदलगो नामक महाधनवान् व्यक्ति ही नगरमें अपना घर बना सकते थे, दूसरेको बसनेका हुकुम नहीं था। वे लोग शहरके बाहर घर बना कर रहते थे। १७वीं शताब्दीके शेष भागमें यहां महामारीका प्रकोप हुआ। १६१५ ई०में यहांके प्राय आधेसे अधिक अधिवासी कराल कालके गालमें फंसे थे।

पुर्त्तगीजोंका प्रभाव खर्व होने पर भी १७२० ई० तक वसाँइ नगरकी श्रीवृद्धि नष्ट नहीं हुई। उस समय पश्चिम भारतमें केवल यही एक ऐसा शहर था जो अभिमानके साथ अपना मस्तक उठाए हुए था। उधर महाराष्ट्रीयगण भी भविष्य पथ धीरे धीरे साफ कर रहे थे। अतएव एकके स्पर्द्धाशाली-अभ्युदय पर दूसरेकी क्षीणमुखज्योति और भी प्रभाशून्य हो रही थी। महाराष्ट्रसिंहके तर्जन गर्जनसे भीत पुर्त्तगीजदल अवसन्न होने लगा। १७३९ ई०में चिमनाजी अप्पाने दलबलके साथ वसाँइको घेर लिया। तीन मास तक तुमुल संग्राम होते रहनेके बाद पुर्त्तगीजोंने मराठा सेनापतिके हाथ आत्मसमर्पण किया। वसाइ नगर और जिला पेशवाने अपने अधिकारमें कर लिया। महाराष्ट्र अधिकारके समय यह स्थान वैङ्कुटनदी और दमनके मध्यवर्त्ती भूभागका प्रधान वाणिज्यशैल बनाया गया। १७८० ई०में अङ्गरेजी सेनाने वसाँइ पर अधिकार किया। १७८० ई०में सल्वाइकी सन्धिके अनुसार यह स्थान पुनः मराठोंको लौटा दिया गया। १८१८ ई०में अन्तिम पेशवाकी सिंहासनच्युतिके बाद यह अङ्गरेजी शासनाधीन हो कर थाना जिलेके अन्तर्भुक्त हुआ।

प्राचीन वसाँइ नगरके प्राचीर और प्राकारादि आज भी विद्यमान हैं। उस प्राचीर परिवेष्टित स्थानके मध्य १५३७ ई०में प्रतिष्ठित सेण्ट अन्थोनी, सेण्टपाल और डोमिनिकन कनभेण्ट आदि खृष्ट धर्ममन्दिरके ध्वंसावशिष्ट निदर्शन आज भी देखनेमें आते हैं।

वसई (वेसिन)—अंगरेजाधिकृत ब्रह्मके पेगू विभागके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० १५ ५´से १७ ३०´ उ० तथा देशा० ९४ ११´से ९५ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४१२७ वर्गमील है। आराकन पर्वतमालाके मध्यदेशमें विलम्बित रहनेके कारण इसका पश्चिमार्द्ध गण्डशैलसे समाकीर्ण है और पूर्वार्द्ध इरावती नदीकी तीन प्रधान शाखा विस्तृत रहनेके कारण विशेष उर्वरा है।

इस जिलेके बङ्गोपसागरकूल पर नेग्रिस तथा पगोडा नामक दो अन्तरीप हैं। उपकूल भागमेंसे कुछ तो वनमालासमाच्छादित है और कुछ बालुकामय भूमि दृष्टिगोचर होती है। पैमल, पिन्थामु, ख्वेदायेभ्यु, वसाँइ, थेक्यथू आदि नदियां समुद्रगर्भमें आ कर मिल गई हैं।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। टलेमीने भारतीय नदीवर्णनस्थलमें गङ्गाके पूर्वदिग्वर्त्ती जिन सब नदियों और पर्वतोंका उल्लेख किया है, उनमेंसे वसाइ नदीका नाम भी पाया जाता है। तैलङ्ग राजइतिहासमें (८२६ ई०में वसाँइके ३२ नगरोंका नामोल्लेख है।

उस समय यह स्थान पेगुराज्यके अन्तर्भुक्त था। १२५० ई०में उस मदन दि नाम्नी किसी तैलङ्ग राजकन्याके राजत्वकालमें ब्रह्मवासियोंने बसाई पर अधिकार जमाया। राज इतिहासके मतसे १२८९ ई०में यह प्रदेश पुन पेगूके शासनाधीन हुआ। १३८३ ई०में तैलङ्गसम्राट् रज धोरित् जब राजसिंहासन पर बैठे तब मौङ्गमेके शासनकर्त्ता लौक ल्याने ब्रह्मराजकी सहायतासे पेगू पर चढ़ाई कर दी। कुछ समय तक दोनों दलमें घमसान युद्ध होता रहा था।

१६८६ ई०में मन्द्राजके गवर्नरने नेग्रिसमें एक अंगरेजी उपनिवेश बसाना चाहा। प्रथम अभियानमें विफल मनोरथ होने पर भी १६८७ ई०में नेग्रिस इष्ट इण्डिया कम्पनीके अधिकारभुक्त हुआ। किन्तु १७५३ ई० तक अंगरेज लोग यहां अपना पूरा अधिकार जमा न सके थे। उस समय पेगू और ब्रह्मवासियोंमें युद्ध छिड़ गया था। अंगरेज लोग ब्रह्मके और फरासी तैलङ्ग-राजाओंके पक्षमें थे। इस साहाय्य दानमें फरासियोंको सिरियम नामक स्थान मिला था।

इसके बाद ब्रह्मराजने अंगरेज वणिकोंकी कोठी देखनेके लिये एक दूत भेजा। अंगरेज सेनापति बेकारने उनका अच्छा सत्कार किया था। १७७५ ई०में बसाँई और नेग्रिसकी कोठी जो भूमिके ऊपर स्थापित थी, उसका दान पत्र लेनेके लिये कुछ अङ्गरेज कर्मचारी ब्रह्मराजके समीप पहुंचे। किन्तु इस समय अंगरेज लोग रङ्गूनके निकट तैलङ्गोंको विशेष सहायता कर रहे थे। इस पर ब्रह्मराज अङ्गरेजोंकी विश्वासघातकता देख कर बड़े बिगड़े। आखिर उन्होंने १७५७ ई०में नेग्रिस और बसाईकी अंगरेजाधिकृत भूमि इस वणिक सम्प्रदायको सदाके लिये छोड़ दी। इसके लिये वे अंगरेजोंसे किसी प्रकारका कर नहीं लेते थे। १७५९ ई०में नेग्रिससे अंगरेजोंका वाणिज्य अड्डा उठा दिया गया। बहुत थोड़ी सेना अंगरेजसम्पत्तिकी रक्षाके लिये यहां रहती थी। उसी साल ब्रह्मपतिने उन पर चढ़ाई कर निष्ठुरभावसे उन्हें मार डाला। १७६० ई० में अंगरेजोंने क्षतिपूरण करनेके लिये ब्रह्मराजसे प्रार्थना की। किन्तु ब्रह्मपतिने उनकी एक भी न सुनी और अंगरेजोंको नेग्रिसमें घुसनेसे मनाही कर दी।

इस समयसे ले कर प्रथम ब्रह्मयुद्ध पर्यन्त अङ्गरेजोंने उपनिवेश बसानेके विषयमें कोई हस्तक्षेप न किया। उक्त युद्धमें बसाई नगर अङ्गरेजोंके हाथ लगा। यन्दबूकी सन्धिके अनुसार ब्रह्मगणके पेगू परित्याग करनेके बाद यह पुन लौटा दिया गया। द्वितीय ब्रह्मयुद्धके बादसे यह स्थान अंगरेजोंके अधिकारमें आया। जब पेगू अंगरेजोंके हाथ लगा, उस समय सारे बेसिन जिलेमें अराजकता फैल गई। पर्वतवासी दस्युदल ब्रह्मराजके सामन्त हो कर नाना स्थानोंमें लूटपाट करने लगे। केवल यही नहीं, कई स्थानोंमें उन्होंने अपना आधिपत्य भी फैला लिया। क्रमश एक अन्तर्विप्लव उपस्थित हुआ। इरावती तीरवर्त्ती जो सब ग्रामवासी अंगरेजोंके ष्टीमर पर काम करते थे, उनके ग्राम दस्युगण द्वारा जला दिये गये। इस पर अंगरेज लोग बड़े बिगड़े और उनका दमन करनेके लिये आगे बढ़े। १८५३ ई०में कप्तान फिचेने दक्षिण पूर्व दिशासे विद्रोहियोंको मार भगाया। १८५४ ई०में विद्रोही दस्युदलके उपद्रवसे पुन यह प्रदेश विशृङ्खल हो पड़ा। इस समय बौद्ध पुरोहितोंकी सहायतासे श्वे-नु और कै जन् हा नामक दो व्यक्तिने दलबल संग्रह करके कई एक नगर जीत लिये; किन्तु अंगरेजी-सेनाके हाथसे राजविद्रोहिगण बहुत ही जल्द दण्डित हुए। तभीसे यह स्थान अंगरेजोंके दखलमें चला आ रहा है।

इस जिलेमें २ शहर और २६७७ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ४ लाखके करीब है जिनमेंसे अधिकांश बौद्धधर्मावलम्बी हैं। यहां १९ सेकण्डरी, २१७ प्राइमरी, ५ स्पेशल और २३० इलिमेण्ट्री स्कूल तथा २ अस्पताल हैं।

२ निम्नब्रह्मके बसाँई जिलेका उपविभाग। यह बसाँई नदीके किनारे अवस्थित है।

३ उक्त जिलेका प्रधान नगर और बन्दर। यह अक्षा० १६ ३५´ से १६ ५६´ उ० तथा देशा० ९४ ३०´ से ९५ ३´ पू० बसाँइ नदीके किनारे अवस्थित है। यह नगर यहांका एक प्रधान वाणिज्य-बन्दर गिना जाता है।

वसई (येसिन)—१ बम्बई जिलेके थाना जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १९ १६´ से १९ ३५´ उ० तथा देशा० ७२ ४४´ से ७३ १´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २२३ वर्गमील है। इसमें वसाँइ नामका एक शहर और ६० ग्राम लगते हैं। यहाकी जमीन बहुत उर्वरा है। धान, केला, ईख और पान बहुतायतसे उत्पन्न होता है। तुङ्गल और कामन नामक पर्वतमाला तालुककी शोभाको बढाता है। कामन दुर्ग समुद्रपृष्ठसे २१६० फुट ऊंचा है। जलवायु स्वास्थ्यकर है।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १९ २० ३० उ० तथा देशा० ७२ ४१´ पू० वसिन रोड स्टेशनसे ५ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या १०७०० है। यहा बम्बई, बडौदा और मध्यभारतीय रेलपथका एक स्टेशन है। पहले वसाँइ द्वीप और भारतीय विभागके मध्य जलनाली बहनेके कारण पुर्त्तगीजोंने जहाजादि रखनेके लिये इस स्थानको उपयुक्त समझा। इस कारण उन्होंने गुजरातपति बहादुरशाहसे १५३४ ई०में इसका अधिकार ग्रहण किया और उसके दो वर्ष बाद यहा एक दुर्ग बनवाया। प्राय दो शताब्दी तक यह स्थान पुर्त्तगीजोंके दखलमें रहा। उस समय शहरकी ऐसी श्रीवृद्धि हुई, कि यह Court of the North नामसे पुर्त्तगीजोंके मध्य प्रसिद्ध हो गया। उस समय यहा सैकडों वणिक् रहते थे। उनकी सुरम्य अट्टालिकासे नगरकी शोभा निराली थी। हिदल्गो नामक महाधनवान् व्यक्ति ही नगरमें अपना घर बना सकते थे, दूसरेको बसनेका हुकुम नही था। वे लोग शहरके बाहर घर बना कर रहते थे। १३वीं शताब्दीके शेष भागमें यहा महामारीका प्रकोप हुआ। १६१५ ई०में यहाके प्राय आधेसे अधिक अधिवासी कराल कालके गालमें फंसे थे।

पुर्त्तगीजों का प्रभाव खर्व होने पर भी १७२० ई० तक वसाँइ नगरकी श्रीवृद्धि नष्ट नहीं हुई। उस समय पश्चिम भारतमें केवल यही एक ऐसा शहर था जो अभिमानके साथ अपना मस्तक उठाए हुए था। उधर महाराष्ट्रीयगण भी भविष्य पथ धीरे धीरे साफ कर रहे थे। अतएव एकके स्पर्द्धाशाली-अभ्युदय पर दूसरेकी क्षीणमुराज्योनि और भी प्रभाशून्य हो रही थी। महाराष्ट्रसिंहके तर्जन गर्जनसे भीत पुर्त्तगीजदल अवसन्न होने लगा। १७३९ ई०में चिमनाजी अप्पाने दलबलके साथ वसाँइको घेर लिया। तीन मास तक तुमुल संग्राम होते रहनेके बाद पुर्त्तगीजोने मराठा सेनापतिके हाथ आत्मसमर्पण किया। वसाइ नगर और जिला पेशवाने अपने अधिकारमें कर लिया। महाराष्ट्र अधिकारके समय यह स्थान वैङ्कटनदी और दमनके मध्यवर्त्ती भूभागका प्रधान वाणिज्यक्षेत्र बनाया गया। १७८० ई०में अङ्गरेजी सेनाने वसाँइ पर अधिकार किया। १७८२ ई०में सल्वाईकी सन्धिके अनुसार यह स्थान पुन मराठोंको लौटा दिया गया। १८१८ ई०में अन्तिम पेशवाकी सिंहासनच्युतिके बाद यह अङ्गरेजी शासनाधीन हो कर थाना जिलेके अन्तर्भुक्त हुआ।

प्राचीन वसाँइ नगरके प्राचीर और प्राकारादि आज भी विद्यमान हैं। उस प्राचीर परिवेष्टित स्थानके मध्य १५३७ ई०में प्रतिष्ठित सेण्ट एन्थोनी, सेण्टपाल और डोमिनिकन कनभेण्ट आदि खृष्ट धर्ममन्दिरके ध्वंसावशिष्ट निदर्शन आज भी देखनेमें आते हैं।

वसई (येसिन)—अंगरेजाधिकृत ब्रह्मके पेगू विभागके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० १५ ५´ से १७ ३०´ उ० तथा देशा० ९४ ११´ से ९५ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४१२७ वर्गमील है। आराकन पर्वतमालाके मध्यदेशमें विलम्बित रहनेके कारण इसका पश्चिमार्द्ध गण्डशैलसे समाकीर्ण है और पूर्वार्द्ध इरावती नदीकी तीन प्रधान शाखा विस्तृत रहनेके कारण विशेष उर्वरा है।

इस जिलेके बङ्गोपसागरकूल पर नेग्रिस तथा पगोडा नामक दो अन्तरीप हैं। उपकूल भागमेंसे कुछ तो वनमालासमाच्छादित है और कुछ बालुकामय भूमि दृष्टिगोचर होती है। पैमल, पिन्थामू, ख्वेदायेभ्यू, थेमाँ, थेक्रयथू आदि नदियाँ समुद्रगर्भमें आ कर मिल गई हैं।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। टलेमीने भारतीय नदीवर्णनस्थलमें गङ्गाके पूर्वदिग्वर्त्ती जिन सब नदियों और पर्वतोंका उल्लेख किया है, उनमेंसे वसाँइ नदीका नाम भी पाया जाता है। तैलङ्ग राजइतिहासमें (६२६ ई०में वसाँइके ३२ नगरोंका नामोल्लेख है।

उस समय यह स्थान पेगुराज्यके अन्तर्भुक्त था। १२५० ई०में उम मदन दि नाम्नी किसी तैलङ्ग राजकन्याके राजत्वकालमें ब्रह्मवासियोंने वसाइ पर अधिकार जमाया। राज इतिहासके मतसे १२८९ ई०में यह प्रदेश पुन पेगूके शासनाधीन हुआ। १३८३ ई०में तैलङ्गसम्राट रजधोरिन् जब राजसिंहासन पर बैठे तब मोङ्गमेके शासनकर्त्ता लौक-ज्याने ब्रह्मराजकी सहायतासे पेगू पर चढ़ाई कर दी। कुछ समय तक दोनो दलमें घमसान युद्ध होता रहा था।

१६८६ ई०में मन्द्राजके गवर्नरने नेग्रिसमें एक अंगरेजी उपनिवेश बसाना चाहा। प्रथम अभियानमें विफलमनोरथ होने पर भी १६८७ ई०में नेग्रिस इष्ट इण्डिया कम्पनीके अधिकारभुक्त हुआ। किन्तु १७५३ ई० तक अंगरेज लोग यहां अपना पूरा अधिकार जमा न सके थे। उस समय पेगू और ब्रह्मवासियोंमें युद्ध छिड़ गया था। अंगरेज लोग ब्रह्मके और फरासी तैलङ्ग-राजाओंके पक्षमें थे। इस साहाय्य दानमें फरासियोंको सिरियम नामक स्थान मिला था।

इसके बाद ब्रह्मराजने अंगरेज वणिकोंकी कोठी देखनेके लिये एक दूत भेजा। अंगरेज सेनापति बेकारने उनका अच्छा सत्कार किया था। १७७५ ई०में वसाई और नेग्रिसकी कोठी जो भूमिके ऊपर स्थापित थी, उसका दान-पत्र लेनेके लिये कुछ अङ्गरेज कर्मचारी ब्रह्मराजके समीप पहुंचे। किन्तु इस समय अंगरेज लोग रङ्गूनके निकट तैलङ्गोंको विशेष सहायता कर रहे थे। इस पर ब्रह्मराज अङ्गरेजोंकी विश्वासघातकता देख कर बड़े बिगड़े। आखिर उन्होंने १७५७ ई०में नेग्रिस और वसाईकी अंगरेजाधिकृत भूमि इस वणिक सम्प्रदायको सदाके लिये छोड़ दी। इसके लिये वे अंगरेजोंसे किसी प्रकारका कर नहीं लेते थे। १७५९ ई०में नेग्रिससे अंगरेजोंका वाणिज्य अड्डा उठा दिया गया। बहुत थोड़ी सेना अंगरेजसम्पत्तिकी रक्षाके लिये वहां रहती थी। उसी साल ब्रह्मपतिने उन पर चढ़ाई कर निष्ठुरभावसे उन्हे मार डाला। १७६० ई० में अंगरेजोंने क्षतिपूरण करनेके लिये ब्रह्मराजसे प्रार्थना की। किन्तु ब्रह्मपतिने उनकी एक भी न सुनी और अंगरेजोंको नेग्रिसमें घुसनेसे मनाही कर दी।

इस समयसे ले कर प्रथम ब्रह्मयुद्ध पर्यन्त अङ्गरेजोंने उपनिवेश बसानेके विषयमें कोई हस्तक्षेप न किया। उक्त युद्धमें वसाई नगर अङ्गरेजोंके हाथ लगा। यन्दबूकी सन्धिके अनुसार ब्रह्मगणके पेगु परित्याग करनेके बाद यह पुन लौटा दिया गया। द्वितीय ब्रह्मयुद्धके बादसे यह स्थान अंगरेजोंके अधिकारमें आया। जब पेगू अंगरेजोंके हाथ लगा, उस समय सारे बेसिन जिलेमें अराजकता फैल गई। पर्वतवासी दस्युदल ब्रह्मराजके सामन्त हो कर नाना स्थानोंमें लूटपाट करने लगे। केवल यही नहीं, कई स्थानोंमें उन्होंने अपना आधिपत्य भी फैला लिया। क्रमश एक अन्तर्विप्लव उपस्थित हुआ। इरावती तीरवर्त्ती जो सब ग्रामवासी अंगरेजोंके ष्टीमर पर काम करते थे, उनके ग्राम दस्युगण द्वारा जला दिये गये। इस पर अंगरेज लोग बड़े बिगड़े और उनका दमन करनेके लिये आगे बढ़े। १८५३ ई०में कप्तान फिचेने दक्षिण पूर्व दिशासे विद्रोहियोंको मार भगाया। १८५४ ई०में विद्रोही दस्युदलके उपद्रवसे पुन यह प्रदेश विशृङ्खल हो पड़ा। इस समय बौद्ध पुरोहितोंकी सहायतासे श्वे [illegible] और वै जन् हा नामक दो व्यक्तिने दलबल सग्रह करके कई एक नगर जीत लिये। किन्तु अंगरेजी-सेनाके हाथसे राजविद्रोहिगण बहुत ही जल्द दण्डित हुए। तभीसे यह स्थान अंगरेजोंके दखलमें चला आ रहा है।

इस जिलेमें २ शहर और २६७७ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ४ लाखके करीब है जिनमेंसे अधिकांश बौद्धधर्मावलम्बी हैं। यहां १६ सेकण्डरी, २१७ प्राइमरी, ५ स्पेशल और २३० इलिमेण्ट्री स्कूल तथा २ अस्पताल हैं।

२ निम्नब्रह्मके वसाई जिलेका उपविभाग। यह वसाई नदीके किनारे अवस्थित है।

३ उक्त जिलेका प्रधान नगर और बन्दर। यह अक्षा० १६ ३१´ से १६ ५६´ उ० तथा देशा० ९४ ३०´ से ९५ ३´ पू० वसाई नदीके किनारे अवस्थित है। यह नगर यहांका एक प्रधान वाणिज्य-बन्दर गिना जाता है।

नदीके बाएं किनारे नगरके उत्तरांश विभागमें श्वे मू हन्व पागोडा और अगरेजोंका दुर्ग, विचारगृह तथा धनागार आदि हैं।

अगरेजोंके अधिकारमें यहांके वाणिज्यकी दिनों दिन उन्नति देखी जाती है। धैर, लाह, सीसक, चकोर काष्ठ और धान्यादिकी विभिन्न देशोंमें रफ्तनी होती है। ष्टीमर द्वारा यहांका अधिकांश पण्य द्रव्य रंगून भेजा जाता है। ग्रीष्मके समय नदीका जल घट जानेसे ष्टीमरोंको जाने आनेमें बडी दिक्कते होती हैं।

महाराज अलौङ्गपायाके शासनकालमें यह नगर बिलकुल जनहीन था। इस कारण कोई विशेष घटना न घटी। सुना जाता है, कि तैलङ्ग राजकन्या उमतमदनी ने १२४६ ई०में इस नगरकी प्रतिष्ठा की। राल्फफिच् आदि पाश्चात्य भ्रमणकारिगण इस स्थानका 'कस्मिन' नामसे उल्लेख कर गये हैं। इसका प्राचीन नाम कुशीम नगर था। १६वीं सदीके प्रारम्भमें भी यहां वाणिज्य व्यवसाय जोरों चलता था। प्रथम ब्रह्मयुद्धके समय यहांके शासनकर्त्ता नगरको अग्निदग्ध करके लेमेतको नामक स्थानमें भाग गये। युद्धके बाद नगरवासिगण फिरसे नगरमें लौटे और वास करने लगे। द्वितीय ब्रह्म युद्धके बादसे अगरेजोंने इस स्थानको बहुत उन्नत कर दिया। दरिद्र प्रजाकी भलाईके लिये अस्पताल खोले गये।

४ अगरेजाधिकृत ब्रह्मराज्यके इरावतीविभागमें प्रवाहित एक नदी। इगा और पन्मावती इसकी दो शाखाएं हैं। अलावा इसके समुद्रमुखमें और भी कितनी छोटी छोटी नदियां आ मिली हैं। नेग्रिसद्वीप इस नदीके मुहाने पर अवस्थित है। उसका पश्चिम पार्श्व बन्दरके लायक है, पर पूर्व दिशामें पर्वत रहनेके कारण जहाज आदि नहीं आ जा सकते।

वसन (सं० पु०) वस्त्र देखो।

वसना (हिं० क्रि०) १ स्थायीरूपसे स्थित होना, रहना। २ जनपूर्ण होना। ३ अवस्थान करना, ठहरना। ४ सुगन्धसे पूर्ण हो जाना, वासा जाना। (पु०) ५ वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेट कर रखी जाय, बेठन। ६ बरतन, भांडा। ७ थैली। ८ वह लम्बी जालीदार थैली जिसमें रुपया पैसा रखते हैं। ९ वह कोठी जिसमें रुपयेका लेन देन होता हो।

वसन्तपुर—मुजफ्फर जिलेके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम। यह लालगञ्जसे साहेबगञ्ज जानेके रास्ते पर अवस्थित है। यहां वाणिज्यकी यथेष्ट उन्नति देखी जाती है। इसके उत्तर केवलपुरकी नीलकोठी अवस्थित है।

वसन्तपुर—विहारके पूर्णिया जिलान्तर्गत अररिया उप विभागका सदर। यह अक्षा० २६° १४´ उ० तथा देशा० ८७° ३२´ पू० पतार नदीके दाहिने किनारे पर अवस्थित है। जनसंख्या तीन हजारके करीब है।

वसन्तर—पञ्जाबके गुरुदासपुर जिलेमें प्रवाहित एक नदी। बहुतसे पार्वतीय स्रोतोंसे वर्द्धितकलेवर हो यह इरावती नदीमें मिली है।

वसन्तपुर—बङ्गालके खुलना जिलेके उत्तर एक प्रसिद्ध ग्राम। यह अक्षा० २२° २७´ ३०´´ उ० तथा देशा० ८९° २´ १५´´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां चावलका प्रचुर वाणिज्य होता है।

वसर (फा० पु०) कालक्षेप, गुजर।

वसव—दाक्षिणात्यवासी लिङ्गायत धर्मके प्रवर्त्तक। इन्होंने प्राचीन लिङ्गायत मतका संस्कार करके अपने मतकी प्रतिष्ठा की। ये हिङ्गुलेश्वरके आराध्य ब्राह्मण वंशमें उत्पन्न हुए थे (१)। इनके पिताका नाम मदेङ्ग मदमन्त्री और माताका मदल अरसुर था (२)। बचपन में उपनयन-संस्कार होते समय इन्होंने जब देखा, कि गायत्री मन्त्रके जपमें किसी दूसरेकी उपासना करनी पड़ती है, तब झट गलेसे जनेऊ निकाल कर तोड़ डाला और सबके सामने अपना अभिप्राय प्रकट किया, कि वे ईश्वर या शिवके अतिरिक्त और किसी दूसरेको अपना

---

(१) ये लोग 'वीर शैव' ब्राह्मण नामसे भी परिचित हैं।

(२) उक्त दम्पती कायमनोवाक्यसे सदा शिवजीकी उपासना किया करते थे। इस प्रकार देवादिदेवने प्रसन्न हो कर अपने अनुचर नन्दीको उनके पुत्ररूपमें भेजा। कणाड़ी भाषामें वसवका अर्थ है, शिवका सांड। शिव दास होनेके कारण ही इस पुत्रका वसव नाम रखा गया।

गुरु नहीं मान सकते। पुत्रको इस प्रकार विद्रश भावापन्न देख कर पिताने बहुत कुछ समझाया, पर इन्होंने एक भी न सुनी। इस अवाध्यताके कारण ये घरसे निकाल दिये गये। गुणवती बहन पद्मावती देवी भी इनके साथ हो ली। ये दोनों देश देशान्तरोंमें पर्यटन करते हुए ११५६ ई०में कल्याण नगर पहुंचे।(३)

इस राजधानीमें इनके मामा दण्डनायकके पद पर अधिष्ठित थे। उन्होंने भांजेको आश्रय दिया और राज-कार्यमें नियुक्त कर इनकी उन्नति का पथ खोल दिया। धीरे धीरे बसवको लक्ष्मीवान् देख उनके मामाने अपनी कन्या गंगादेवीका इनसे विवाह कर दिया। अपने व्याहके बाद इन्हें अपनी बहन पद्मावतीकी शादी सूझी। यथासमय कल्याणके राजा जैन विज्जलके साथ वह व्याही गई। राजाने इन्हें अपना प्रधान सेनापति बना लिया। तबसे यही सम्पूर्ण राजकार्योंकी देखरेख करने लगे। इन्होंने पुराने कर्मचारी हटा दिये और उनकी जगह पर अपने सबंधी मनुष्य रख लिये। प्रजाको अपने अधीन करनेके लिये इन्होंने बहुत धनका व्यय करना शुरू कर दिया। उनके दानसे सन्तुष्ट हो सभी प्रजा इनके पक्षमें हो गई।

इस प्रकार राज्यभरमें अपना प्रभाव जमा कर इन्होंने जैन, स्मार्त, वैष्णवादि मतका खण्डन किया और लिङ्गोपासना करना ही श्रेष्ठ है इसको सर्वत्र घोषणा कर दी। इस धर्मके प्रचारसे ब्राह्मणोंमें विद्वेषकी अग्नि धधक उठी। इनके मतमें बालक और बालिकाका विवाह करना अन्याय है एवं देवोपासनाके समय सभी पार्थिव क्रिया काण्ड निर्मूल और अपवित्र हैं। मद्यपान और मांसादि भोजन भी इनके मतमें निषिद्ध था सो बहुतसे जैन लोग उनके मतके अनुयायी हो गये। जैन सम्प्रदायको उत्तेजित अथवा बसवके निन्दित आचरण को देख कर स्वयं राजा विज्जल उसको वश्री करनेके लिये अग्रसर हुए। राजाकी सेना बसवके शिष्योंसे पराजित हुई। राजा भी उनसे हार खा कर उन्हें फिर मन्त्री पद पर रखनेको बाध्य हुए।

जैन आख्यायिकासे मालूम होता है, कि मन्त्री होनेके बाद ही बसवने राजाको मारनेका सङ्कल्प कर लिया था। कोल्हापुरके राजा शिलाहारको जीत कर जिस समय विज्जल और बसव अपनी राजधानी लौट रहे थे उस समय भीमानदीके किनारे विषके प्रयोगसे राजाकी मृत्यु हो गयी। पिताकी मृत्युका समाचार पा कर राजपुत्र मुरारी राय बदला लेनेके लिये तैयार हुये। उनके आने का समाचार पा बसव उत्तर कर्णाटकके उली नगरको भागा और शत्रुसेनाके आनेके भयसे कुए में डूब कर प्राण त्याग किया।

लिङ्गायत उपाख्यानसे जाना जाता है कि, भिन्न सम्प्रदायवालोंका प्रभाव देख कर जैन राजा विज्जलने बसवके प्यारे दो अनुचरोंकी आखें निकलवा लीं। बसव राजा को अभिशाप दे कर सगमेश्वर तीर्थको चल दिये एवं राजाका काम तमाम करनेका भार जगद्देव पर सौंपा। जगद्देवने दो नौकरोंके साथ सन्यासीके भेषसे रणवासमें प्रवेश कर ११६८ ई०में राजाको मार डाला। राजाके वियोग से राज्यमें बड़ी अशान्ति फैली जिससे कल्याणराजधानी धनहीन हो गयी। बसवने सगमेश्वरमें यह समाचार सुना। जीवोंके मर जानेसे उसे मर्मान्तिक पीड़ा हुई, जीना उसे बहुत दुःखदायी प्रतीत होने लगा। बसवकी प्रार्थना पर पार्वती देवी मुग्ध हो इन्हें स्वर्गमें ले गयी।

दूसरे लिङ्गायत ग्रन्थोंमें लिखा है, कि बसवने अलौकिक कार्य दिखा कर सर्वसाधारणको मुग्ध किया था। अत्यद्भुत क्षमता देख कर सभी उनकी तरफ आकृष्ट होने लगे थे। दानमें ये मुक्तहस्त थे। एक समय किसी मन्त्री ने राजासे निवेदन किया, कि एक वर्षके दानसे सम्पूर्ण राज्यकोष खाली हो गया है। राजाने बसवसे इसका कारण पूछा। इस पर इन्होंने बहुत सरल भावसे राज्यकोष की चाबी राजाको दे दी। राजा उनकी सहास्यमूर्त्ति देख अवाक् हो गये। फिर जब वे राज्यको देखने आये, तब उनकी अद्भुत क्षमताका परिचय पा चमत्कृत हो गये।

बसवका धर्म इस प्रकार है—एकमात्र जगत्पति ही सम्पूर्ण जीवोंके रक्षक हैं। ईश्वरसे परिचित होने

(३) इस समय यहां कलचूरिवंशीय राजा राज्य करते थे।

अथवा ईश्वरके चरणोंमें स्थान पानेके लिये किसीकी उपासना या यागयज्ञ, उपवास, तीर्थयात्रा आदि करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। लिङ्गधारी नर नारी दोनों ही बराबर हैं। पुरुषकी अपेक्षा स्त्रियोंको शक्ति किसी प्रकार कम नहीं हो सकती। अतएव स्त्रियां विवाह योग्य होने पर अपने आप स्वामीका निर्वाचन कर सकती हैं। लिङ्गधारी शिवके उपासक जब सब समान हैं, तब जातिभेदकी कोई आवश्यकता नहीं। लिङ्गधारी भक्तगण किसी कामके करने पर कभी अशुद्ध नहीं हो सकते। जातकर्म, ऋतुधर्म, सूतक, पातक, उनको स्पर्श नहीं कर सकता। मृत्युके बाद शिव भक्तोंकी स्वर्गगति होती है। वह पवित्र आत्मा फिर कभी नीचे नहीं आती, इसलिये उनकी स्वर्गप्राप्तिके लिये कोई भी अन्त्येष्टि क्रिया करनेकी जरूरत नहीं। शिव ही एकमात्र जगत्‌के कर्त्ता हैं। वे ही सब प्रकारसे लिङ्गधारियोंकी रक्षा करते हैं। ज्योतिषशास्त्रोक्त ग्रहदोष और भूतों का प्रभाव लिङ्गयतोंके ऊपर नहीं चलता।

बसवास (हि० पु०) १ निवास, रहना। २ निवास योग्य परिस्थिति, रहनेका ठौर या सुभीता। ३ स्थिति, रहने का ढंग।

बसवी—शिवोपासक रमणीमण्डली। दाक्षिणात्यके धारवाड़ जिलेमें इस सम्प्रदायकी बहुसंख्यक रमणियां देखी जाती हैं। बसवन्न और मल्लिकार्जुन इनके प्रधान देवता हैं। धारवाड़ जिलेके प्रायः प्रत्येक ग्राममें उनकी पूजा होती है। ये लोग मद्यपायी या मांसभोजी नहीं हैं। सभी निरामिष भोजन करते हैं। अलङ्कारादि पहननेमें कोई रोक टोक नहीं है। गलेमें चांदीका लिङ्गधारण और विभूतिमर्दन इन्हें अवश्य करना होता है। ये लोग सबके सब परिष्कार परिच्छन्न, विनयी और आतिथेयी हैं। जातीय सभा और विवाहादि कार्यमें ये गृहस्थ रमणियोंके साथ मिल कर शास्त्रीय क्रिया सम्पन्न करती हैं। वर और कन्याके सामने ये लोग बत्ती जला कर आरती उतारती हैं। देवपूजामें परिचर्या और लिङ्गायतरमणी समाजकी रमणियोंकी अभ्यर्थना करना इनका प्रधान काम है। ये लोग विवाहादि करती हैं; किन्तु उपपति ग्रहणमें भी बाज नहीं आतीं। अपने अपने भरणपोषणके लिये उन्हें लिङ्गायत समितिसे तनखाह मिलती है। बसवी परिचारिका और चलवडी परिचारक नहीं रहनेसे लिङ्गायत सम्प्रदाय अधूरा रह जाता है। उनके कोई सन्तान नहीं रहने पर वे गोद ले सकती हैं।

बसह (हि० पु०) वृषभ, बैल।

बसहर—पञ्जाबप्रदेशके अन्तर्गत एक पार्वतीय राज्य। यह अक्षा० ३१ ६´ से ३२ ५´ उ० तथा देशा० ७७ ३२´ से ७९ ४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३८२० वर्गमील और जनसंख्या ८० हजारसे ऊपर है। इसमें ७० ग्राम लगते हैं। १८०३से १८१५ ई० तक यह राज्य गुरखा-सरदारके अधीन रहा। १८२५ ई०में अंगरेजोंके द्वारा गुरखा प्रभाव क्षीण हो जाने पर यह स्थान पुनः पूर्वतन राजकर पर समर्पित किया गया। १८४३ ई०में अङ्गरेजों ने निर्दिष्ट राजस्व घटा दिया। राजा समशेर सिंह बहादुर १८४९ ई०में राजसिंहासन पर अभिषिक्त हुए। ये राजपूतवंशीय हैं। युद्धके समय जरूरत पड़ने पर बसहरराजको अङ्गरेजोंकी सहायता करनी पड़ती है।

बसहरि—मध्यप्रदेशके सागरजिलान्तर्गत एक नगर।

बसा (स० स्त्री०) वसा देखो।

बसा (हिं० स्त्री०) १ बर्रे, भिड़, बरटी।

बसात (हि० पु०) बिसात देखो।

बसाना (हि० क्रि०) १ बसने देना, रहनेको ठिकाना देना। २ स्थित करना, टिकाना, ठहराना। ३ जनपूर्ण करना, आबाद करना। ४ बिठाना। ५ रखना। ६ वास देना।

बसालतजङ्ग—दाक्षिणात्यके अदोनी प्रदेशके मुसलमान शासनकर्त्ता, सलावतजङ्गके भाई। इन्होंने १७५९ ई०में वन्दिवासमें प्रथम युद्धके बाद फरासी-सेनापति बुसीके साथ मिल कर अङ्गरेजोंका प्रभाव खर्व कर डालनेकी चेष्टा की थी।

बसिऔरा (हि० पु०) १ वर्षकी कुछ तिथियां जिनमें स्त्रियां बासी भोजन खाती और बासी पानी पीती हैं। २ बासी भोजन।

बसिया (हिं० वि०) बासी देखो।

बसियाना (हि० क्रि०) बासी हो जाना, ताजा न रह जाना।

वसिष्ठ—वशिष्ठ देखो।

वसीकत (हिं० स्त्री०) १ बस्ती, आबादी। २ बसनेका भाव या क्रिया, रहन।

वसीकर (हिं० वि०) वशीकर, वशमें करनेवाला।

वसीठ (हिं० पु०) १ दूत, संदेसा ले जानेवाला।

वसीठी (हिं० स्त्री०) दौत्य, दूतका काम।

वसीत (अ० पु०) एक यन्त्रका नाम जो जहाज पर सूर्यका अक्षांश देखनेके लिये रहता है, कमान।

वसु (सं० पु०) वसु देखो।

वसुकला (हिं० पु०) एक वर्णवृत्त जिसे तारक भी कहते हैं।

वसुदेव—वसुदेव देखो।

वसुधा—वसुधा देखो।

वसुन्धिया—यशोर जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २३°८' उ० तथा देशा० ८९° २४' पू०के मध्य अवस्थित है। यहां यशोरकी प्रधान हाट लगती है। नाव द्वारा चीनी, चावल आदि यशोर लाया जाता है।

वसुमती—वसुमती देखो।

वसुरहाट—१ बङ्गालके २४ परगनेके अन्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ३६३ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० २०° ४०' उ० तथा देशा० ८८° ५३' ३०" पू०के मध्य अवस्थित है। यहां दीवानी और फौजदारी अदालत लगती है।

वसुला (हिं० पु०) बसूला देखो।

वसूला (हिं० पु०) लकड़ी छीलने और गढ़नेका बढ़ईका एक हथियार। यह बेंट लगा हुआ चार पांच अंगुल चौड़ा लोहेका टुकड़ा होता है जो धारके ऊपर बहुत भारी और मोटा होता है। यह ऊपरसे नीचेकी ओर चलाया जाता है।

वसूली (हिं० स्त्री०) छोटा वसूला।

वसेरा (हिं० वि०) १ बसनेवाला, रहनेवाला। (पु०) २ वह स्थान जहां रह कर यात्री रात बिताते हैं, टिकनेकी जगह। ३ वह स्थान जहां चिड़िया ठहर कर रात बिताती है। ४ टिकने या बसनेका भाव, बसना, आबाद होना।

वसेरी (हिं० वि०) निवासी, रहनेवाला।

वसोवास (हिं० पु०) निवासस्थान, रहनेकी जगह।

वसौंधी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी रबड़ी जो सुगंधित और लच्छेदार होती है।

वस्ट (अं० पु०) चित्रकारीमें वह मूर्त्ति, चित्र या प्रतिकृति जिसमें किसी व्यक्तिके मुख अथवा छातीके ऊपरके भाग मात्रकी आकृति बनाई गई हो।

वस्त (सं० पु०) वस्त्यते यज्ञार्थं बध्यते इति वस्त घञ्। १ आदित्य, सूर्य। २ छाग, बकरा।

वस्तक (सं० क्ली०) शाकम्भर लवण।

वस्तकर्ण (सं० पु०) वस्तकर्ण अर्श आदित्वाद्च। १ शालवृक्ष, शालका पेड़। २ अजकर्णक। ३ असनाका पेड़, पीतशाल वृक्ष।

वस्तगन्धक (सं० पु०) अरुणतुलसीवृक्ष।

वस्तगन्धा (सं० स्त्री०) वस्तस्य गन्ध इव गन्धो यस्याः। १ अजगन्धा, अजमोदा। २ क्षेत्रयमानी।

वस्तगन्धाकृति (सं० स्त्री०) पुत्रदात्री लता।

वस्तमोदा (सं० स्त्री०) वस्त छाग मोदयतीति मुद-णिच् अण्। १ अजमोदा। २ वनयमानी।

वस्तर (हिं० पु०) वस्त्र देखो।

वस्तवासिन् (सं० त्रि०) बकरेकी तरह शब्द करनेवाला।

वस्तशृङ्गी (सं० पु०) मेषशृङ्गी, मेढ़ासींगी।

वस्ता (फा० पु०) कपड़ेका चौकोर टुकड़ा जिसमें कागजके मुट्ठे, बहीखाते और पुस्तकादि बांध कर रखते हैं।

वस्ताण्ड (सं० क्ली०) छागाण्ड।

वस्तान्त्री (सं० स्त्री०) वस्तस्येव अन्त्रमस्या, गौरादित्वात् ङीष्। छागलान्त्रीक्षुप। पर्याय—वृषगन्धाख्या, मेषान्त्री, वृषपत्रिका, अजान्त्री, वकडी। इसका गुण कटु, कासरोगनाशक, वीर्यप्रद और गर्भजनक माना गया है।

वस्तार—मध्यप्रदेशके चांदा जिलान्तर्गत एक मित्रराज्य। यह अक्षा० १७° ४६' से २०° १४' उ० तथा देशा० ८०° २०' से ८२° १५' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १३०६२ वर्गमील है। इसके उत्तरमें कानकर राज्य, दक्षिणमें मन्द्राजका गोदावरी जिला, पश्चिममें चांदा जिला, हैदराबाद राज्य और गोदावरी नदी तथा पूर्वमें जयपुर

राज्य है। इस सामन्त राज्यके प्रधान नगर जगदलपुरमें राजप्रासाद अवस्थित है।

इसके उत्तर, पश्चिम, मध्य और दक्षिण विभाग पर्वतमालासे समाच्छादित है। पूर्वभागकी अधित्यका भूमि समुद्रपृष्ठसे २ हजार फुट ऊँची है। यहां सब तरहका अनाज उपजता है। बेलाडीला नामक पर्वत मालाके दो सर्वोच्च शिखरके नाम नन्दिराज और पितुर-राणी हैं। उक्त पर्वतमालासे असंख्य नदियां निकली हैं। उनमेंसे शवारी, इन्द्रावती और ताल नामक प्रधान नदियां गोदावरी नदीमें मिली हैं। जमीनमें पंक पड़ जानेसे धानकी फसल अच्छी लगती है। यहां लोहेकी एक खान है, पर स्थानवासी उसे काममें नहीं लाते।

इस राज्यमें २०२७ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या तीन लाखसे ऊपर है जिनमेंसे गोंड जातिकी संख्या ही अधिक है। जगदलपुरमें कुछ ब्राह्मणोंके भी घर हैं। वे लोग मांस और मछली खाते तथा माहिरा नामक ग्वालाजातिके हाथका पानी पीते हैं। यहां धाकर नामक ब्राह्मणका एक निकृष्ट जाति है। इस जातिके लोग भी यज्ञोपवीत पहनते हैं।

दन्तेश्वरी वा मौली (भवानी और काली) तथा मातादेवी यहांके अधिवासियोंके उपास्य देवता हैं। उच्च वंशके हिन्दू अपरापर देवदेवियोंकी भी पूजा करते हैं। दन्तेश्वरी यहांके राजवंशकी कुलदेवी हैं। देवीके अनुग्रहसे इस राजवंशने हिन्दुस्तानसे वरंगुल जा कर राज्य बसाया। पीछे जब वे मुसलमानों द्वारा वहांसे भगा दिये गये, तब देवीके साथ दन्तिवाड़ामें आ कर बस गये। यहां देवीके रहनेके लिये मन्दिर बनवाया गया। पहले देवीकी लोलरसनाकी तृप्तिके लिये यहां नरबलि दी जाती थी। पीछे उसे रोकनेके लिये १८४२ ई०में उस मन्दिरमें एक स्वतन्त्र रक्षक नियुक्त हुआ तथा इसकी जवाबदेही राजाके सिर रही। यह देवीमूर्त्ति काले पत्थरकी बनी हुई है और उन्हें सर्वदा श्वेतवस्त्र पहनाया जाता है। जब किसी को अपना अभीष्ट जानना होता है, तब वे देवीके मस्तक पर एक फूल चढ़ाते हैं। उस फूलके बायें या दाहिने गिरनेसे कायका इष्टानिष्ट समझा जाता है। यहां किसी प्रकारका वाणिज्यद्रव्य प्रस्तुत नहीं होता, सिवाय मोटे कपड़ेके। आवश्यकीय द्रव्य नागपुर, रायपुर, निजामराज्य और छत्तीसगढ़से लाये जाते हैं।

यहांके राजा अपनेको राजपूत बतलाते हैं। मरहठाके अभ्युदय तक यह राज्य बिलकुल स्वतन्त्र था। १८वीं शताब्दीमें नागपुर गवर्मेण्टने इस पर कर निर्द्धारित कर दिया। इसी समय जयपुर राज्यके साथ भद्राचलमें लड़ाई छिड़ गई। कई वर्षों तक यहां अराजकता फैली रही। भूतपूर्व राजा भैरवदेवका ६२ वर्षकी उमरमें १८९१ ई० को देहान्त हुआ। पीछे उनके लड़के रुद्र प्रताप देव सिंहासन पर बैठे। उनकी नाबालिगी तक राज्य गवर्मेण्ट की देखरेखमें रहा। ये ही वर्त्तमान राजा हैं। राजाको दत्तक लेनेका अधिकार नहीं है, एकमात्र ज्येष्ठपुत्र ही सिंहासनके अधिकारी हैं।

बस्तार (फा० पु०) एक बंधी हुई बहुत सी वस्तुओंका समूह, मुट्ठा, पुलिंदा।

बस्ति (सं० पु०) वस्ति देखो।

बस्तिशेख—पञ्जाबप्रदेशके जलन्धर नगरके उपकण्ठवर्त्ती एक स्थान। १६२७ ई०में शेख दरवेश नामक किसी मुसलमानने इस छोटे नगरको बसाया।

बस्ती युक्तप्रदेशके गोरखपुर विभागका जिला। यह अक्षा० २६° २५´ से २७° ३०´ उ० तथा देशा० ८२° १२´ ८३° १४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २७९२ वर्गमील है। इसके उत्तरमें नेपाल राज्य, पूर्वमें गोरखपुर जिला, दक्षिणमें गोगरा और पश्चिममें गोण्डा है। जिलेका समग्र स्थान पर्वतमय है। तराई प्रदेशकी तरह कहीं उच्च और कहीं निम्न जलाभूमिमें परिणत है। मध्य भागमें राप्ती और कुयाना नदी बहती है जिससे जिला तीन स्वतन्त्र भागोंमें विभक्त हो गया है। इनमेंसे उत्तर दिशा का पर्वतसमाकीर्ण तराई भूमि, मध्य भाग उर्वरा और शस्यशालिनी तथा घर्घरा और कुयानाका मध्यवर्त्ती निम्नभाग जलप्लाव्य है। यहां कृत्रिम उपायसे जलसिञ्चन करके शस्यरक्षा की जाती है। राप्ती, बूढ़ी राप्ती, आरा, बाणगङ्ग, मसवो, अमी, कुयाना, कुड़ा, कोटलाइया और घर्घरा ही यहांकी प्रधान नदियां हैं। एकमात्र राप्ती और घर्घरामें ही वाणिज्यपोत आ जा सकते हैं। बगिरा बाय दना, पाथरा ताल और चण्डुताल नामक कई एक हृद हैं। उक्त जलाशयोंमें नाना प्रकारके पक्षी रहते हैं।

- फाहियान इस स्थानको देख गये हैं। उस समय इसका उत्तरीय भाग जगलमें परिणत हो गया था। कहते हैं, कि १३ वीं शताब्दीमें राजपूतवंशने भारस् और डोम कटारको परास्त करके इस स्थान पर दखल जमाया। इसके बाद बहुतसे राजपूत राजा इस स्थानको ले कर आपसमें लडते रहे। अकबरके शासनकालमें मुसलमानोंने गोरखपुर जीत कर इस जिलेमें प्रवेश किया और राजाको सिंहासनच्युत करके इसे अवध सूबामें मिला लिया। १६१० ई०में मुसलमानोंकी गोटी यहांसे उखडी, पर १६८० ई०में उन्होंने फिरसे इसको अपने दखलमें किया। इसके बादका इतिहास गोरखपुर जिलेके साथ संलग्न है। गोरखपुर देखो।

जिलेमें ४ शहर और ६६०३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या बीस लाखके करीब है। जिनमेंसे सैकडे पीछे ८४ हिन्दू और शेष मुसलमान हैं। यद्यपि यह जिला बहुत लम्बा चौडा है, पर म्युनिसपलिटी एक भी नहीं है। जिलेमें कुल मिला कर ३०८ स्कूल हैं। इनमेंसे २ वृटिश गवर्मेण्टसे और १३५ डिष्ट्रिक्टबोर्डसे परिचालित होते हैं। स्कूलके अलावा ८ अस्पताल भी हैं। सब मिला कर यहांकी आवहवा अच्छी है।

२ उक्त जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २६ ३३´से २७ ६´ उ० तथा देशा० ८२ ३७´से ८२ ५६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५३६ वर्गमील और जनसंख्या चार लाखके करीब है।

३ उक्त तहसीलका सदर। यह अक्षा० २६ ४७´ उ० तथा देशा० ८२ ४३´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १४७६१ है। १७ वीं शताब्दीमें यहां राजप्रासाद था, पर अभी यह खंडहरमें पड़ा है। शहरमें प्राचीन हिन्दू-राजाका दुर्ग भी देखनेमें आता है। यहां तीन स्कूल हैं जिनमेंसे एक बालिकाके लिये है।

बस्ती (हिं० स्त्री०) १ निवास, आबादी। २ जनपद, बहुतसे घरोंका समूह जिनमें लोग बसते हैं।

बस्तु (सं० स्त्री०) वस्तु देखो।

बस्त्र (सं० पु०) वस्त्र देखो।

बस्य (सं० वि०) वश्य देखो।

बस्नि (सं० अव्य०) क्षिप्र, तेजीसे।

बहगा (हिं० पु०) बडी बहंगी।

बहंगी (हिं० स्त्री०) बोझा ले चलनेके लिये तराजूके आकारका एक ढांचा, कांवर। लगभग चार हाथ लम्बी लचीली लकडी या बांसके दोनों छोरों पर रस्सीका छीका लटका कर नीचे काठका चौकठा सा लगा देते हैं। इसी चौकठे पर बोझ रखा जाता है। बांसको बीचोबीच कंधे पर रख कर चलते हैं।

बहकना (हिं० क्रि०) १ मार्गभ्रष्ट होना, भटकना। २ किसीकी बात या भुलावेमें आ जाना, बिना भला बुरा विचारे किसीके कहने या फुसलानेसे कोई काम कर बैठना। ३ ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जा कर दूसरी ओर जा पडना, चूकना। ४ रस या मदमें चूर रहना, आपेमें न रहना। ५ किसी बातमें लग जानेके कारण शान्त होना।

बहकाना (हिं० क्रि०) १ ठीक रास्तेसे दूसरी ओर ले जाना या फेरना। २ शान्त करना, बहलाना। ३ कोई उपयुक्त कार्य करानेके लिये बातोंका प्रभाव डालना, भुलावा देना। ४ लक्ष्यभ्रष्ट करना, ठीक लक्ष्य या स्थानसे दूसरी ओर कर देना।

बहत्तर (हिं० वि०) १ सत्तर और दो, सत्तरसे दो ज्यादा। (पु०) २ सत्तरसे दो अधिककी संख्या और अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७२।

बहत्तरवां (हिं० पु०) जिसका स्थान बहत्तर पर पड़े।

बहदुरा (हिं० पु०) एक कीडा। यह धान या चनेमें लग कर उसके पत्ते काट कर गिरा देता है।

बहन (हिं० स्त्री०) बहिन देखो।

बहना (हिं० क्रि०) १ द्रवपदार्थोंका निम्नतलकी ओर आपसे आप गमन करना, पानी या पानीके रूपकी वस्तुओंका किसी ओर चलना। २ गया बीता होना, अधम या बुरा होना। ३ ठीक लक्ष्य या स्थानसे हट जाना, फिसल जाना। ४ स्रवित होना, लगातार बूंद या धारके रूपमें निकल कर चलना। ५ बिना ठिकाने का हो कर घूमना, मारा मारा फिरना। ६ सन्मार्गसे दूर हो जाना, आवारा होना। ७ गर्भपात होना, अडाना। ८ सस्ता मिलना, बहुतायतसे मिलना। ९ वायुका संचरित होना, हवाका चलना। १० हट जाना, दूर

बहलगन्धकृत ( स० पु० ) पक्षिराज शालिधान्य, पक्षिराज नामका धान।

बहलचक्षस् ( स० पु० ) मेषशृङ्गी, मेढ़ासींगी।

बहलत्वच् ( स० पु० ) बहला दृढ़ा त्वक् वल्कलं यस्य। १ श्वेतलोध, सफेद लोध। २ भूर्जवृक्ष, भोजपत्रका वृक्ष।

बहलदल ( स० पु० ) कृष्णशोभाञ्जन, काली सोहिंजना।

बहलना (हिं० क्रि०) १ दुःखकी बात भूलना और चित्तका दूसरी ओर लगना। २ मनोरञ्जन होना, चित्त प्रसन्न होना।

बहलवर्त्मन् ( स० क्ली० ) नेत्रवर्त्मगत रोगभेद। वर्त्म देशका जैसा रंग है उसी रंगकी पिड़का जब वर्त्मके चारों ओर हो जाती है, तब उसे बहलवर्त्म कहते हैं।

बहला (स० स्त्री०) बहलानि प्रचुराणि पुष्पाणि सन्त्यस्याः, अर्श आदित्वादच्। १ शतपुष्पा। २ स्थूलैला, बड़ी इलायची।

बहलाङ्ग ( स० पु० ) मेषशृङ्गी, मेढ़ासींगी।

बहलाना ( हिं० क्रि० ) १ भ्रमद या दुःखकी बात भुलवा कर चित्त दूसरी ओर ले जाना। २ मनोरञ्जन करना, चित्त प्रसन्न करना। ३ भुलावा देना, बातोंमें लगाना।

बहलाव ( हिं० पु० ) प्रसन्नता मनोरञ्जन।

बहलिया ( हिं० पु० ) बहेलिया देखो।

बहली ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी छतरीदार या परदेदार गाड़ी जिसे बैल खींचते हैं।

बहल्लो ( हिं० पु० ) कुश्तीका एक पेंच।

बहस ( अ० स्त्री० ) १ खण्डन मण्डनकी युक्ति, दलील। २ विवाद, झगड़ा। ३ होड़, बाजी।

बहसना (हिं० क्रि०) १ तर्क वितर्क करना, विवाद करना। २ शर्त बांधना, होड़ लगाना।

बहाउद्दीन नक्सबन्द शेख—एक मुसलमान फकीर। इन्होंने सुफी सम्प्रदायकी उपमत्तकी शाखाका प्रवर्त्तन करके अच्छा नाम कमा लिया था। इन्होंने 'हयतनामा' नामक एक नीतिमूलक और 'दलील-इ अशिकिन' नामक एक सौफ साम्प्रदायिक ग्रन्थकी रचना की थी। पारस्य राज्यके हरपा नगरमें १४५३ ई०को उनका देहान्त हुआ।

बहाउद्दीन वलद मौलाना—एक मुसलमान साधु, वाल्हिक देशवासी ख्यातनामा जलाल उद्दीन मौलवी रूमीके पिता। ख्वाजारिमके शासनकर्त्ता सुलतान महम्मद उद्दीनके शासनकालमें इन्होंने विशेष प्रतिपत्ति लाभ की। सुफी साम्प्रदायिक मतमें उनकी एकान्त भक्ति रहनेके कारण उन्होंने अपने मतका प्रचार करनेकी इच्छासे उस धर्मतत्त्वकी विशद व्याख्या प्रकट की। उनकी यह वक्तृता सुननेके लिये पारस्यके नाना स्थानोंसे दल बांध बांध कर मुसलमान लोग आया करते थे। जीवनकी शेष दशामें ये मातृभूमिका परित्याग कर तुरुष्क राज्यके कोणिया नगरमें जा बसे। यहां १२३० या १२३३ ई०में उनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके पुत्रने इस सम्प्रदायके प्रधान गुरुका आसन प्राप्त किया।

बहाउद्दीन जकरिया शेख—मुलतानवासी एक मुसलमान फकीर, कुतुबुद्दीन महम्मदके पुत्र और कमाल उद्दीन कुरेशीके पौत्र। मुलतानके अन्तर्गत कोटकरोड नगरमें ११७० ई०को उनका जन्म हुआ। पाठाध्ययन शेष करके ये बोगदाद नगर गये और वहां शेख सहाबुद्दीन सुहरवर्दीके शिष्य बने। पीछे मुलतान लौटने पर फकीर उद्दीन शकरगञ्जके साथ इनका परिचय हुआ। १२६७ ई०को मुलतान नगरमें इनकी मृत्यु हुई। भारतवर्षीय श्रेष्ठतम मुसलमान साधुओंमें ये एक थे। मरते समय ये अपने पुत्रादिको अतुल सम्पत्ति छोड़ गये।

बहाउद्दीन साम—घोर और गजनी राज्यके नरपति गयासुद्दीन महम्मदके पुत्र। १२१० ई०को १४ वर्षकी अवस्थामें ये पितृसिंहासन पर बैठे। तीन मास राज्य करनेके बाद ये अलाउद्दीन अत्सिजसे परास्त हुए और होरटके शासनकर्त्तासे कैद किये गये। चेङ्गिस खाँके आक्रमणकालमें इन्होंने बहाउद्दीनको ख्वारिजमके हाथ समर्पण किया जिसने इन्हें नदीमें डुबा मारा।

बहादरान—राजपूतानेके बीकानेर राज्यके अन्तर्गत एक जिला और उसका प्रधान नगर। बीकानेर देखो।

बहादुर ( फा० पु० ) १ उत्साही, साहसी। २ पराक्रमी, शूरवीर।

बहादुरी ( फा० स्त्री० ) वीरता, शूरता।

बहादुर खाँ—( बहादुरखान् इ शेबानी ) दिल्लीके बादशाह अकबरके प्रसिद्ध सचिव खान् जमानके छोटे भाई।

इनका असली नाम महम्मद सैयद था। हुमायूँ फारससे लौटते समय इन्हें दावरका शासन भार सौंप गये थे। कुछ ही दिन बाद बहादुरने विद्रोही हो कर कान्धार पर दखल करना चाहा। सिस्तानके शाह महम्मद शा उस समय कान्धारके सेनापति थे। उन्होंने फारस के बादशाहसे सहायता मांगी। कुछ काजलवासीने बहादुर खां पर हमला किया था, उस समय उन्होंने भाग कर अपनी रक्षा की थी।

बहादुर खांके आचरणसे दिल्लीके बादशाह उनसे बहुत ही नाराज थे। अकबरने अपने राजत्वके ३रे वर्षमें मानकोट अधिकार किया। इस समय बैरामखांके अनुरोधसे उन्होंने बहादुरको क्षमा कर दिया। बहादुर खां को मूल्तानकी जागीर मिली थी। दूसरे वर्ष मालव जयके समय इन्होंने बादशाहकी सेनाकी काफी सहायता की थी। बैरामखांके पतन होने पर मासुम-अनगाकी कोशिश से बहादुरखां 'वकील' और इटावा सरकारके शासन कर्त्ता हुए थे। खान् जमानके विद्रोहके समय ये भी भाईके साथ जा मिले थे। इसी अपराध पर ये अकबर के आदेशसे कैद कर लिये गये और शाहबाज खां कम्बूके हाथसे मारे गये। भाईकी तरह ये भी एक विद्वान् पुरुष थे।

बहादुर खाँ—खानदेशके एक अधिपति, फरुखीवंशके राजा अली खाँके पुत्र। राजा अली खाने अकबरकी तरफसे दाक्षिणात्यके राजाओंसे घोरतर युद्ध किया था। उसीमें ये शत्रुओंके हाथ मारे गये। इस समय बहादुर खां असीरगढ़में कैद थे। ऊंचे खानदानमें उत्पन्न होने पर भी इनकी तकदीरमें सुख शांति न लिखी थी। यही कारण है, कि उन्होंने १० वर्ष तक कारावासका कष्ट सहा था। पिताकी मृत्युके बाद १५६६ ई०में ये राजा तो हुए, पर सुशिक्षाके अभावसे और निर्बुद्धिताके कारण ये दिल्ली श्वरकी अधीनता स्वीकार न कर सके। आखिर दिल्ली से बादशाहकी फौज चली आई और हमला कर असीर गढ़ पर कब्जा कर लिए। इस तरह बहादुर खाने अपना राज्य खो दिया।

बहादुर खां—औरङ्गजेबका एक प्रिय सेनापति। इन्होंने दाराशिकोहको पुत्र सहित बन्दी करके औरङ्गजेबके सामने हाजिर किया।

बहादुर खां—विहारके एक शासनकर्त्ता। इन्होंने अपने पिताकी मृत्युके बाद अपनेको स्वाधीन राजा घोषित किया था। दिल्लीके बादशाह इब्राहिम लोदीके राजत्वकालमें (१५२५ ई०में) इन्होंने दिल्लीकी सेनाके साथ बड़ी तैयारीके साथ कई युद्ध किये थे, जिसमें ये विजयी हुए थे और सम्भलप्रदेश पर्यन्त स्थान अधिकार किया था।

बहादुर खां सिस्तानी—मालवराज अवदुल्ला खां उजवेग का एक सहकारी सरदार। १५६६ ई०में सम्राट् अकबरने उजवेगके विरुद्ध युद्ध किया था, जिसमें मालवराज के सहकारी सरदारोंने अन्य कोई उपाय न देख मुगल बादशाहकी शरण ली थी। परन्तु बहादुर खाने अपनी फौजके साथ जमुना पार कर अन्तर्वेदीके बीच मुगल सेनापति मीर मैज उल्मुल्क पर धावा मारा। उसमें मुगलोंकी सेना परास्त हो कर कनौजकी तरफ भाग गई। उसके बाद खां जमानके विद्रोह-दमनके लिए अकबरशाह जब गाजीपुरकी तरफ बढ़े, तो बहादुर खाने मौका समझ जौनपुर दखल कर लिया। अकबर बहादुर खांकी क्षमताको खर्व करनेके अभिप्रायसे जौनपुर लौटे। सम्राट्के आगमनसे भयभीत हो कर बहादुर खां बनारस भाग गये। वहांसे बहादुरने सम्राट्की अधीनता स्वीकार कर क्षमा प्रार्थना की थी।

बहादुर गिलानी—दाक्षिणात्यके बाहमनी राजवंशके अधःपतनके समय (१४७३-१४८६ ई०में) जब बीजापुर जुन्नर आदि स्थानोंके शासनकर्त्ताओंने अपना अपना प्रभाव जमा कर स्वाधीनता प्राप्त और स्वतन्त्र राजवंशकी प्रतिष्ठा की थी, उस समय कोङ्कण प्रदेशके शासनकर्त्ता बहादुर गिलानीने भी स्वाधीन होनेकी चेष्टा की थी। इन्होंने विद्रोही हो कर बेल्गाम और गोआ अधिकार किया था। शङ्खेश्वरमें अपना राजपाट स्थापन कर इन्होंने १४८६ ई०में मिराज और जामखण्डी जय किया था। उसके बाद कोङ्कण उपकूलमें भी सेना रखनेकी चेष्टा करने पर १४९३ ई०में सुल्तान महमूदबेगके उद्योगसे और बीजापुरके राजा युसुफ आदिल खां महमूदशाहकी सहायता से बहादुर खां गिलानी मिराजमें पराजित हुए और मार डाले गये। जामखण्डी और शङ्खेश्वर महमूदशाहके

हाथ लगा और बेल्गाम आदि अन्य सम्पत्तियां जैन-उल्-मुल्कको दे दी गई।

बहादुर खाँ नाहर—राजपूतानेके अन्तर्गत मेवाड़ प्रदेशके खांजादा राजवंशके प्रतिष्ठाता। तैमूरके दिल्ली आक्रमण के पहले और बादमें इन्होंने दिल्लीराज-दरबारमें विशेष प्रतिष्ठा पाई थी। सम्राट् फिरोजशाहने इनकी वीरता देख कर इन्हें 'नाहर'की उपाधि दी थी। फिरोजाबादसे ३० कोस दक्षिणके पर्वतके नीचे बसे हुए कोटिला नगरमें इनकी राजधानी थी। इस नगरकी रक्षाके लिए उन्होंने पर्वतके ऊपर तीन दुर्ग बनवाये थे। १३८९ ई०में (हिजरी ७९१) इन्होंने फिरोजाबाद पर अपना कब्जा किया। पीछे राजपुत्र आबू बकरकी सहायतासे इन्होंने दिल्लीश्वर महम्मदशाहको सिंहासनसे उतार कर आबूको राजा बनाया था। परन्तु महम्मदने जब फिर दिल्ली सिंहासन अधिकार किया, तब आबू बकरने पराजित हो कर मेवाड़में आ बहादुरकी शरण ली। ७९२ हि०में महम्मदशाहने मेवाड़ पर चढ़ाई कर बहादुरको परास्त और आबू बकरको कैद कर लिया था। बहादुर खाँके क्षमा याचना करने पर सुलतानने राज भूषा दे कर उनकी सम्मान रक्षा की थी। ७९५ हि० (१३९३ ई०)में बहादुरने पुनः दिल्ली-द्वार तक लूट लिया। इससे महम्मदने क्रोधमें आ कर मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी और कोटिला अधिकार कर लिया। (यह युद्ध-संवाद कोटिलाकी जुम्मा मसजिदके शिलालेखमें वर्णित है) बहादुर खाँ झरका फिरोजपुर भाग गये। सुलतान महम्मूद अलाउद्दीनके राज्यके समय ये दिल्लीके किलेकी रक्षामें नियुक्त थे। तबसे ले कर मृत्यु पर्यन्त ये राज्य सम्बन्धी अनेक विषयोंमें लिप्त रहे। यही कारण है, कि सर्व साधारणमें इनकी विशेष प्रतिष्ठा हो गई थी।

प्रवाद है, कि बहादुर खाँ नाहर अपने हिन्दू धर्मावलम्बी श्वशुर राणा अमृपाल द्वारा मारे गये। उनके पुत्र अलाउद्दीन खाँजादाने अपने नानाको मार कर पितृ हत्याका प्रतिशोध लिया था। कोटिलाकी जुम्मा मसजिदमें अब भी बहादुर खाँकी कब्र मौजूद है। इन्होंने अलवारसे ७ कोस उत्तर पूर्वमें बहादुरपुर नामका नगर स्थापित किया था।

बहादुरगञ्ज—युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

बहादुरखेल—पञ्जाबप्रदेशके कोहट जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह अक्षा० ३० १०´ ३०´´ तथा देशा० ७० ५१´ १५´´ पू०के मध्य विस्तृत है। इसके दक्षिणमें जो पर्वत श्रेणी है उस पर सेंधा नमक पाया जाता है। उसी नमककी खानके लिये यह स्थान बहुत कुछ मशहूर है। काबुल, बलूचिस्तान, देराजात, सिन्धु और भारतवर्षके प्रायः प्रत्येक नगरमें इस नमककी रफ्तनी होती है।

बहादुरगढ़—पञ्जाबप्रदेशके रोहतक जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २८ ४१´ ३० तथा देशा० ७६ ५६´ पू० के मध्य विस्तृत है। पहले यह नगर सरफाबाद नामसे प्रसिद्ध था। १७५४ ई०में मुगल सम्राट् २य आलमगीरने २५ ग्रामोंके साथ यह नगर बहादुर खाँ नामक किसी बलूच सरदारको दान कर दिया। उक्त सेनापतिने एक दुर्ग बना कर इस स्थानको अपने नामसे बसाया। १७९३ ई०में सिन्धियाके राजाने इस पर अपना कब्जा किया। १८०३ ई०में झज्जरके नवाब भ्राता इस्माइल खाँने लार्ड लेकके अनुग्रहसे इस स्थानका शासन भार ग्रहण किया। उक्त नवाबवंश १८५७ ई० तक यहांका शासन करते रहे। शेष नवाब बहादुरजङ्ग खाँ गदरके समय अङ्गरेजोंके विरुद्ध खड़े हुए थे। इस कारण उनका राज्य छीन कर ब्रिटिश साम्राज्यमें मिला दिया गया। पूर्वतन राजप्रासाद आज भी विद्यमान है।

बहादुर निजामशाह—दाक्षिणात्यके अहमद नगरस्थ निजाम शाही राजवंश (१०म) के अन्तिम राजा। इन्होंने निजाम उल् मुल्ककी, उपाधि धारण की थी। १५९५ ई०में इनके पिता इब्राहिम शाहकी मृत्यु होने पर अहमद नगरके सिंहासन सम्बन्धमें झगड़ा खड़ा हुआ। बहादुरने अकबरके पुत्र मुरादको अपनी सहायताके लिये बुला भेजा। मुरादके पहुंचने पर इन्होंने नगर-रक्षाका भार चाँदबीबी और नासिर खाँ पर सौंप गोलकुण्डा और बीजापुरके राजासे सहायता मांगी। इधर सम्राट् पुत्र मुरादने अहमदनगर अवरोध कर बैठे। इस अवसर पर यथोचित साहस दिखा कर चाँदबीबीने रमणी-कुलको गुणोज्ज्वल किया था। किसी तरह अबुलफजलको

चाद्वीवीको परास्त न कर सकने पर, तथा बीजापुर और गोलकुण्डाकी सेनाके युद्धक्षेत्रमें पहुंच जाने पर मुरादको सन्धि करनी पड़ी। इस सन्धिकी शर्तोंके अनुसार उन्हें चाद्वीवीसे कुछ रुपये और बरारराज्य प्राप्त हुआ था। १५९६ ई०में सन्धिपत्रके अनुसार बहादुरशाह चापन्दके कारागारसे लाये गये और चाद वीवीने इच्छा नहीं होने पर भी उन्हें सिंहासन पर अभि किया। परन्तु अपने प्रिय आमात्य महम्मद खाको मन्त्रि-पद पर नियुक्त कर सुलतानाने बड़ी बेवकूफीका काम किया था। महम्मद खाकी क्षमता-वृद्धिके साथ साथ चाद्वीवीका प्रभुत्व घटता जाता था। उसी वर्ष महम्मद खाके दमनके लिये इब्राहिम आदिलशाहने चाद्वीवीके प्रार्थनानुसार सोहल खाकी सेनाके साथ भेज दिया। चार मास तक दुर्ग अवरोध करने पर महम्मद सुल तानाका आश्रय ग्रहण करनेको वाध्य हुए। उस समय निहङ्ग खाने मन्त्री बन कर राजकार्य चलाया था।

१६०० ई०में मुगलोंकी सेनाने अहमदनगर फतह कर बहादुरको परिवार सहित ग्वालियरके किलेमें बन्द रखा और वहीं पर उनकी मृत्यु हुई। इसके बाद दो एक वंशधर नाममात्रको राजा हुए थे। चाद्वीवी, अकबर और निजामशाही देखो।

बहादुरशाह—बङ्गालके एक अफगानी शासनकर्त्ता, महमूद शाहके पुत्र। ५ वर्ष स्वाधीनतासे राज्य करनेके बाद ये १५३६ ई०में सलीम शाह द्वारा राज्यच्युत हुए थे।

बहादुरशाह (सुलतान)—गुजरातके एक शासनकर्त्ता, २य मुजफ्फर शाहके द्वितीय पुत्र। पिताकी मृत्युके समय ये जौनपुरमें थे, अतः इनके छोटे भाई महमूदशाह अपने ज्येष्ठ सहोदर सिकन्दर शाहकी हत्या कर राजा बन बैठे। बहादुरको मालूम पड़ते ही उन्होंने अपने राज्यमें लौट कर महमूदको सिंहासनसे उतार दिया और १५२६ ई०में स्वय पितृ सिंहासन पर आरूढ़ हुए। १५३१ ई०में इन्होंने मालव जीत कर वहांके राना सुलतान २य महमूदको बन्दी, फिर हत्या की थी। १५३६ ई०में सम्राट् हुमायूं द्वारा ये मालवमें पराजित हुए और सम्राट्को अपना राज्य समर्पण कर काम्बेकी तरफ भाग गये। वहां जा कर उन्होंने सुना, कि दीऊ द्वीपके पास ही एक यूरोपीय 'मीर बहरी' है। ये उनके नौ सेनापतिकी हत्या करनेकी मनसासे सेना ले कर उधर अग्रसर हुए। वहां पोर्त्तुगीजोंके शस्त्राघातसे बेहोश हो कर समुद्रकी गोदमें, १५३७ ई०में सदाके लिए सो गये। बीस वर्षकी उम्रमें राज्याधिकारी हो कर इन्होंने ११ वर्ष राज्य किया था, इस प्रकार ३१ वर्षकी अवस्थामें इस युवककी मृत्यु हुई।



बहादुरशाह १म—(शाह-आलम बादशाह) मुगलसम्राट् १म आलमगीरके द्वितीय पुत्र। ये अमीर तैमूरसे बारह पीढ़ी नीचे थे। (१०५३ हि०) बरहनपुरमें इनका जन्म हुआ था। युवराज मुआजिम या कुतुब-उद्दीन शाह आलम नामसे इनकी प्रसिद्धि थी। १११४ हि०में, जब अहमदाबादमें पिताकी मृत्यु हुई थी, तब ये काबुलमें थे। इनके छोटे भाई आजमशाह मौका पा कर राजधानीमें अपनेको भारत साम्राज्यका अधीश्वर घोषित किया। उधर युवराज मुआजिमने भी काबुलमें रहते हुए ही, बाहादुरशाह नाम ग्रहण कर राजमुकुट धारण किया था।

राज्याधिकारको ले कर दोनों भाइयोंमें विवाद हुआ। दोनो पक्षोंमें युद्धकी तैयारियां होने लगीं। आगराके पास धौलपुरमें दोनों तरफकी सेनाएं इकट्ठी हुई और (१११९ हि०में) बड़ा भारी युद्ध हुआ, जिसमें राजपुत्र आजम और उनके दो पुत्र बेदार बख्त और वलाजा मारे गये। फिर इन्होंने राजदण्ड ग्रहण कर ५ वर्ष तक राज्य किया। वजीर मुनाइम खां आदिकी सहायतासे इन्होंने दिल्ली, आगरा, जोधपुर, उदयपुर आदि राज्य हस्तगत किये थे। "शाह आलम बहादुर शाह"के नामसे इन्होंने मुद्राङ्कन करा कर खुतबा पढ़वाया था। इनके राज्यके दूसरे वर्ष राजपुत्र महम्मद कामबख्स अपने अधिकारसे च्युत हुए जिससे जुल्फिकर खांकी प्रतिष्ठा बढ़ गई और इनके प्रयत्नसे महाराष्ट्रपतिने सरदेशमुखी लेनेके लिए आवेदन किया था।

इनके राजत्वके ३रे वर्षमें (११२१ हि०में) गुरु गोविन्द सिंहकी मृत्युसे उत्तेजित हो सिख लोग बन्दाकी अधीनतामें विद्रोही हो गये थे। किन्तु खान, खानाके प्रयत्न

से पञ्जाबमें शान्ति स्थापित हो गई थी। पांच वर्ष राज्य करनेके बाद ७१ वर्षकी उमरमें इनकी मृत्यु हुई। ख्वाजा कुतुबउद्दीनकी कब्रके पास इनका दफन किया गया, जो "कुतुबुद्द मस्जिद" के नामसे प्रसिद्ध है। इनके चार पुत्रोंमें जहन्दार शाह पितृसिंहासनके अधिकारी हुए थे।

बहादुरशाह २य—दिल्लीके आखिरी मुगल बादशाह। इनका पूरा नाम—अबुल मुजफ्फर सिराज उद्दीन मह म्मद बहादुरशाह है। २य अकबरशाहकी मृत्युके बाद १८३७ ई०में ये पितृ सिंहासन पर बैठे थे। इनकी माता का नाम था लालबाई। १७७५ ई०में इनका जन्म हुआ था।

दाक्षिणात्यमें महाराष्ट्र शक्तिके अभ्युत्थानसे मुगलों का बल दिन पर दिन घट रहा था। बहादुरशाह महा राष्ट्रोंके हाथमें गुड्डा बने हुए थे। कवियोंमें कायरताका भाव रहता ही है। ये भी फारसीके एक अद्वितीय विद्वान् थे। उर्दू कविता लिखनेके कारण विद्वत्समाज द्वारा इन्हें 'जाफर'-की उपाधि मिली थी। इनके बनाये हुए 'दीवान" बहुत मिलते हैं। कवित्वरसमें डूबे रहनेके कारण ये राजकीय प्राय सभी कार्य भूल जाया करते थे। सन् ५७के गदरमें सहयोगिताके सिवा इनके जीवनमें विशेष कोई युद्ध विग्रहका उल्लेख नहीं मिलता। १८५७ ई०के सिपाही-युद्धमें इन्होंने नेतृत्व ग्रहण किया था। १८५८ ई०में, जब कि गदर शान्त हो चुका था, ये कैद कर लाये गये। पश्चात् यहांसे मेगेरा (H. M. S. Megera) जहाजमें बिठा कर सपरिवार रंगून पहुंचाये गये और वहां नजरबन्द रखे गये। अपने भरण पोषणके लिये ये अंग्रेजोंसे मासिक १ लाख रुपये पाते थे। बस, यहीं से भारतमें तैमूर वंशका राज्य लोप हुआ। इनके पुत्र मिर्जा मुगल और मिर्जा ख्वाजा सुल्तान तथा पौत्र मिर्जा आबू बकर विद्रोहमें शामिल पाये जानेके कारण अङ्गरेजों द्वारा पकड़े और मारे गये। विद्रोहके बक्त बहादुरशाहने अपने नामसे सिक्के चलाये थे।

बहादुर सिंह राय—अन्तर्वेदीय गुर्जरवंशीय एक राजपूत राजा। मसेरा और कोयल प्रदेश इनके अधिकारमें था। इन्होंने दिल्ली दरबारके नवाब सफदर जङ्गका उच्छेद किया था, इस कारण सम्राट्ने इसके प्रतिविधानके लिये सूर्य मल्ल जाटको भेजा और साथ ही उनसे राज्य-सम्पत्ति छीन लेनेका आदेश दिया। १७५७ ई०में जाट-राजाने इन्हें युद्धमें परास्त कर मार डाला और राज्य छीन लिया। सुजानचरितकाव्यमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है।

बहादुरशाह—अहमदाबादके अन्तिम मुसलमान राजा। १६०७ ई०में इन्होंने मुगलोंसे सूरतको छीन लेनेका प्रयत्न किया था, परन्तु मुगल सेनाने इन्हें परास्त कर दिया। इन्हीं के अधिकारकालमें अङ्गरेजों को अहमदाबादमें वाणिज्य करनेकी आज्ञा दी गई थी।

बहाना (हिं० क्रि०) १ प्रवाहित करना, द्रव पदार्थोंको निम्नतलकी ओर छोड़ना। २ प्रवाहके साथ छोड़ना। ३ सस्ता बेचना। ४ फेंकना, डालना। ५ वायु सञ्चालित करना, हवा चलाना। ६ व्यर्थ व्यय करना, खोना। ७ डालना, लुढ़ाना।

बहाना (फा० पु०) १ किसी बातसे बचने या कोई मत लब निकालनेके लिये अपने सम्बन्धमें कोई झूठ बात कहना, हीला। २ प्रसङ्ग, निमित्त। ३ वह बात जिसकी ओटमें असल बात छिपाई जाय।

बहार (फा० स्त्री०) १ वसन्त ऋतु, फूलोंके खिलनेका मौसिम। २ नारंगीका फूल। ३ एक रागिनी। ४ प्रफुल्लता, विकास। ५ आनन्द, मौज। ६ शोभा, सौन्दर्य। ७ यौवनका विकास, जवानीका रंग।

बहारगुर्जरी (फा० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

बहारदाखा (फा० पु०) मुकाम रागका पुत्र, एक राग।

बहारना (हिं० क्रि०) बुहारना देखो।

बहारागढ़—बिहारके सिंहभूम जिलान्तर्गत एक प्रधान वाणिज्य स्थान। यह अक्षा० २२ १६´ १६´´ उ० तथा देशा० ८६ ४५´ ३०´´ पू०के मध्य अवस्थित है।

बहारी (हिं० स्त्री०) बुहारी देखो।

बहाल (फा० वि०) १ पूर्ववत् स्थित, ज्यों का त्यों। २ स्वस्थ, भला चङ्गा। ३ प्रसन्न, खुशहाल।

बहाली (फा० स्त्री०) १ पुनर्नियुक्ति, फिर उसी जगह पर मुकर्ररी। २ धोखा देनेवाली बात, झांसा पट्टी।

बहाव (हिं० पु०) १ बहनेका भाव। २ प्रवाह, बहनेकी क्रिया। ३ बहती हुई धारा, बहता हुआ जल आदि।
बहि (स० अव्य०) बाहर।
बहि (स० पु०) पिशाचभेद।
बहिअर (हिं० स्त्री०) स्त्री।
बहिक्रम (हि० पु०) अवस्था, उमर।
बहित्र (स० पु०) वहित्र देखो।
बहिन (हि० स्त्री०) भगिनी, माताकी कन्या।
बहिनापा (हिं० पु०) बहनापा देखो।
बहिरङ्ग (स० क्ली०) बहि प्रकृतेर्बाह्यमङ्ग यस्य। १ व्याकरणोक्त प्रत्ययादि निमित्तक प्रकृत्यवयवादि कार्य। (त्रि०) २ बाहरवाला, बाहरी। ३ जो गुट या मण्डलीके भीतर न हो।
बहिरर्गल (स० पु०) बहिर्भागका अर्गल।
बहिरर्थ (स० त्रि०) बहिर्विषयमें अर्थयुक्त।
बहिराना (हिं० क्रि०) निकाल देना, बाहर कर देना।
बहिर्गत (स० त्रि०) १ जो बाहर गया हो। २ जो बाहर हो। ३ जो अन्तर्गत न हो, अलग, जुदा।
बहिर्गिरि (स० पु०) जनपदभेद।
बहिर्जानु (स० अव्य०) हाथोंको दोनों घुटनोंके बाहर किये हुए। श्राद्ध आदि कृत्योंमें इस प्रकार बैठनेका प्रयोजन पड़ता है।
बहिर्द्वार (स० क्ली०) बहि स्थ द्वारम्। तोरण, बाहरका दरवाजा।
बहिर्द्वारप्रकोष्ठक (स० पु०) बहिर्द्वारस्य प्रकोष्ठक। गृहद्वारका बहि प्रकोष्ठ। पर्याय—प्रघाण, प्रघण, अलिन्द।
बहिर्ध्वजा (स० स्त्री०) दुर्गा।
बहिर्निगमन (स० स्त्री०) बाहर निर्गमन, बाहर जाना।
बहिर्भूत (स० त्रि०) बहिस् भूक्त। १ बहिर्गत, जो बाहर गया हो। २ अलग, जुदा। ३ जो बाहर हो।
बहिर्भूमि (स० स्त्री०) १ बस्तीके बाहरवाली भूमि। २ झाड़े जगल जानेकी भूमि।
बहिर्मुख (सं० त्रि०) बहिर्बाह्यविषये मुख प्रवणता यस्य। विमुख, पराङ्मुख, विरुद्ध।
बहिर्मुद्रा (स० स्त्री०) वह मुद्रा जो बाहरमें की जाय।
बहिर्यात्रा (स० स्त्री०) बहिर्भागमें यात्रा।
बहिर्यान (स० क्ली०) बहिर्गमन।
बहिरति (स० स्त्री०) रतिके भेदोंमेंसे एक, बाहरी रति या समागम जिसके अन्तर्गत आलिङ्गन, चुम्बन, स्पर्श, मर्दन, नखदान, रददान, और अधरपान है।
बहिर्लक्ष्य (स० त्रि०) बाहरकी ओर लक्ष्यमान।
बहिर्लापिका (स० स्त्री०) काव्य रचनामें एक प्रकारकी पहेली। इसमें उसके उत्तरका शब्द पहेलीके शब्दोंके बाहर रहता है भीतर नही।
बहिर्वासस् (स० क्ली०) बहिर्वास। बाहरका वस्त्र। वस्त्र दो प्रकारका होता है, अन्तर्वास और बहिर्वास। अन्तर्वासको कोपीन और कोपीनके ऊपर जो वस्त्र पहना जाता है उसे बहिर्वास कहते हैं। (भाग० ६।८।६)
बहिर्विकार (स० पु०) बाह्यविकार।
बहिर्वृत्ति (स० स्त्री०) बाह्यवृत्ति।
बहिर्वेदि (स० अव्य०) वेदीके बाहरमें।
बहिला (हिं० वि०) बन्ध्या, बाझ।
बहिश्चर (स० पु०) बहिश्चरतीति चर ट। १ बहि र्विचरण। (त्रि०) २ बहिश्चरणशील।
बहिष्ठ (स० त्रि०) बहि स्थित, जो बाहरमें हो।
बहिष्करण (स० क्ली०) १ बहिरिन्द्रिय। २ बाहर करना।
बहिष्कार (स० पु०) १ निकालना, बाहर करना। २ दूर करना, हटाना।
बहिष्कार्य (स० त्रि०) निकालने योग्य, बाहर करने लायक।
बहिष्कुटीचर (स० पु०) बहिष्कुट्या चरतीति चर-ट। कुलीर, केंकड़ा।
बहिष्कृत (स० त्रि०) १ बाहर किया हुआ, निकाला हुआ। २ त्यागा हुआ, अलग किया हुआ।
बहिष्कृति (स० स्त्री०) बाहर करनेकी क्रिया, निकालना।
बहिष्क्रिय (स० त्रि०) बाह्य क्रियावाली, निकालने लायक।
बहिष्क्रिया (स० स्त्री०) १ बाह्य क्रिया। २ बाहर करना, निकालना।
बहिष्टाज्जोतिस् (स० त्रि०) त्रिष्टुभ्छन्दोभेद।

बहिष्पट ( सं० पु० ) बहिरावरण।
बहिष्पवित्र ( सं० त्रि० ) पवित्रताहीन।
बहिष्पिण्ड ( सं० त्रि० ) बहिर्भागमें पिण्डयुक्त।
बहिष्प्रज्ञ (सं० त्रि०) जिसकी प्रज्ञा बाह्य व्यापारमें नियुक्त हो।
बहिष्प्राण ( सं० त्रि० ) १ जिसके प्राण बहिर्गत हो गये हों। २ वित्त।
बहिस् ( सं० अव्य० ) बहि देखो।
बहिःस्थ ( सं० त्रि० ) बहिः स्थित।
बहिःसद् ( सं० त्रि० ) बहिः सीदति सद क्विप्। बाहरमें उपवेशनकारी, बाहरमें बैठनेवाला।
बही ( हिं० स्त्री० ) हिसाब किताब लिखनेकी पुस्तक।
बहीखाता ( हिं० स्त्री० ) हिसाब किताबकी पुस्तक।
बहीनर ( सं० पु० ) शतानीकके पौत्र।
(भाग० ९।२२। ४२)
बहीर ( हिं० स्त्री० ) १ भीड़, जनसमूह। २ सेनाके साथ साथ चलनेवाली भीड़ जिसमें साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं, फौजका लवाज।
बहीरज्जु ( सं० अव्य० ) रज्ज्वा बहिः। रज्जुके बहिर्भागमें, रस्सीके बाहरमें।
बहीरा ( हिं० पु० ) बहेड़ा देखो।
बहु ( सं० त्रि० ) बहते इति बहि वृद्धौ (लंघि बंह्योर्नलोपश्च। उण् १।३०) इति कुर्नलोपश्च। १ बहुत, एकसे अधिक। २ अधिक, ज्यादा।
बहु ( हिं० स्त्री० ) बहू देखो।
बहुक ( सं० पु० ) बहु-कन् छाया कन्। १ कर्कट, केकड़ा। २ अर्क, आक। ३ जलखातक, छोटा तालाब। ४ चातक, पपीहा। ५ हरिणविशेष। ( त्रि० ) ६ बहु द्वारा क्रीत, जो अधिक मोलमें खरीदा गया हो।
बहुकण्टक ( सं० पु० ) १ क्षुद्र गोक्षुर, गोखरू। २ यवास, जवासा। ३ हिन्ताल वृक्ष। ४ शिमुड़ी क्षुप, सहि-जनका पेड़। ५ कुरण्टवाल वृक्ष। ६ स्नुही वृक्ष। ७ पाटला वृक्ष। ८ गर्जुंनी वृक्ष।
बहुकण्टका ( सं० स्त्री० ) अग्निदमनीवृक्ष।
बहुकण्टा ( सं० स्त्री०) बहवः कण्टा कण्टकानि यस्याः। कण्टकारी, भटकटैया।
बहुकन्द ( सं० पु० ) बहवः कन्दा यस्य। शूरण, ओल।
बहुकन्या ( सं० स्त्री०) १ गृहकन्या, घृतकुमारी। २ अनेक कन्या।
बहुकर ( सं० पु० ) बहु कार्यं करोतीति ( दिवाविभानिशा प्रभेति पा ३।२।२१ ) इति ट। १ उष्ट्र, ऊँट। ( त्रि० ) २ मार्जनकारी, झाड़ू देनेवाला। ३ बहुकार्यकर्ता, बहुत काम करनेवाला।
बहुकरी ( सं० स्त्री० ) बहुकर-ङीप्। सम्मार्जनी, झाड़ू।
बहुकर्णिका (सं० स्त्री०) बहवः कर्णा इव पत्राणि यस्याः। आखुकर्णी, मूसाकानी।
बहुकाम ( सं० त्रि० ) अनेक कामनायुक्त।
बहुकार ( सं० त्रि० ) बहुकार्यकारक, बहुत काम करनेवाला।
बहुकूर्च ( सं० पु० ) मधुनारिकेल वृक्ष।
बहुकृत्य ( सं० त्रि० ) बहु करणीय, जिसे बहुतसे काम करनेको हो।
बहुकेतु ( सं० पु० ) पर्वतभेद।
बहुक्रम ( सं० पु० ) वैदिक शब्दका क्रमभेद।
बहुक्षम ( सं० त्रि० ) १ अधिक सहिष्णु। (पु०) २ जैन साधुभेद। ३ बुद्धभेद।
बहुगन्ध ( सं० क्ली० ) बहुर्गन्धो यस्मिन्। १ गुडत्वच, दारचीनी। २ कुन्दुरु, कुंदुरु। ३ पीतचन्दन।
बहुगन्धदा ( सं० स्त्री० ) बहुगन्ध ददाति वा बहुगन्ध दा-क। कस्तूरी।
बहुगन्धा ( सं० स्त्री० ) १ चम्पककलि, चम्पा फूलकी कलि। २ यूथिका, जूही। ३ कृष्ण जीरक, स्याह जीरा।
बहुगर्हवाच् ( सं० त्रि० ) बहुगर्हा बहुनिन्दिता वाग यस्य। कुत्सित बहुवादी, अश्लील शब्द बोलनेवाला।
बहुगव ( सं० पु० ) पुरुवंशीय राजा सुद्युके एक पुत्रका नाम।
बहुगुडा ( सं० स्त्री० ) १ कण्टकारी, भटकटैया। २ भूम्यामलकी, भूआँवला।
बहुगुण ( सं० त्रि० ) १ बहुसूत्रयुक्त। २ बहुसद्गुण वाला। ( पु० ) ३ अनेक गुण। ४ देवगन्धर्वभेद।
बहुगुना ( हिं० पु० ) चौड़े मुँहका एक गहरा बरतन। इसके पेंदे और मुँहका घेरा बराबर होता है। इसमें

यात्रा आदिमें कई काम ले सकते हैं। शायद इसीसे इसको बहुगुना कहते हैं।

बहुज्ञ ( सं० त्रि० ) बहु जानाति ज्ञा क। १ बहुदर्शी, बहुत बातें जाननेवाला। २ बहुविद्, जानकार।

बहुग्रन्थि ( सं० पु० ) बहवो ग्रन्थयो यस्य। झावुक, झाऊका पेड़।

बहुचारिन् ( सं० त्रि० ) बहु स्थानमें भ्रमणकारी।

बहुचित्र ( सं० त्रि० ) विभिन्न प्रकार, अनेक तरहका।

बहुच्छद ( सं० पु० ) सप्तपर्ण वृक्ष।

बहुच्छिन्ना (सं० स्त्री०) बहु यथा स्यात्तथा छिद्यते स्मेति बहु छिद् क्त। कन्दगुडूची।

बहुजल्प ( सं० त्रि० ) बहुभाषी, बहुत बोलनेवाला।

बहुजात ( सं० त्रि० ) द्रुतगामी, तेजीसे चलनेवाला।

बहुटनी ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारका गहना जो बाँह पर पहना जाता है।

बहुत ( हिं० वि० ) १ अनेक, गिनतीमें ज्यादा। २ आवश्यकता भर या उससे अधिक। ३ जो मात्रामें अधिक हो, परिमाणमें ज्यादा।

बहुतन्त्रि ( सं० त्रि० ) बहुतन्त्रविशिष्ट।

बहुतन्त्री ( सं० त्रि० ) बहवस्तन्त्रयो यस्मिन्। बहुतन्त्र विशिष्ट।

बहुतन्त्रीक ( सं० त्रि० ) बहुतन्त्री स्वार्थे कन्। बहुतन्त्र विशिष्ट। जैसे—बहुतन्त्रिका वीणा, बहुतन्त्रीकपट, बहुतन्त्रीकवस्त्र, इत्यादि।

बहुतर ( सं० त्रि० ) अनेक, प्रभूत।

बहुतरकणिश ( सं० पु० ) बहुतराणि कणिशानि धान्यशीर्षाणि यस्य। तृणधान्यविशेष, चेना नामका अन्न।

बहुतरशा ( सं० स्त्री० ) लताभेद।

बहुताँ ( हिं० वि० ) १ बहुत। (स्त्री०) २ बनियोंकी बोली में तीसरी तौलका नाम। तीनकी संख्या अशुभ समझी जाती है। इससे तौलकी गिनतीमें जब बनिये तीन पर आते हैं, तब यह शब्द करते हैं।

बहुता ( सं० स्त्री० ) अधिकता, बहुत्व।

बहुताइत ( हिं० स्त्री० ) बहुतायत देखो।

बहुताई ( हिं० स्त्री० ) अधिकता, ज्यादती।

बहुतात ( हिं० स्त्री० ) बहुतायत देखो।

बहुतायत ( हिं० स्त्री० ) अधिकता, ज्यादती।

बहुतिक्ता ( सं० स्त्री० ) बहुस्तिक्तो रसो यस्याः। काकमाची।

बहुतिथ ( सं० त्रि० ) बहु ( बहुपूगगणसंघस्य तिथुक्। पा ५।२।५२ ) बहुतका पूरण।

बहुतृण ( सं० क्ली० ) तृण 'तृणाद्बहु' इति बहुप्रत्यय। मुञ्जातृण, मूँज नामकी घास।

बहुतेरा ( हिं० वि० ) १ अधिक, बहुत सा। ( क्रि० वि०) २ बहुत परिमाणमें, बहुत प्रकारसे।

बहुतेरे ( हिं० वि० ) संख्यामें अधिक, बहुतसे।

बहुत्र ( सं० अव्य० ) बहु ( सप्तम्यास्त्रल्। पा ५।३।१० ) इति त्रल्। बहुतोंमें, अनेक विषयोंमें।

बहुत्व ( सं० पु० ) आधिक्य, अधिकता।

बहुत्वक् ( सं० पु० ) सप्तपर्णवृक्ष।

बहुत्वक ( सं० पु० ) बहुत्वगेव बहुत्वच् स्वार्थे कन्। भूर्जवृक्ष, भोजपत्र।

बहुत्वच् ( सं० पु० ) बहवस्त्वचो यस्य। भूर्जवृक्ष, भोजपत्र।

बहुधा ( सं० अव्य० ) बहु प्रकारसे, नाना प्रकारसे।

बहुदण्डिक ( सं० त्रि० ) बहवो दण्डा सन्त्यस्य बहुदण्ड ठन्। बहुदण्डविशिष्ट।

बहुदर्शिता ( सं० स्त्री० ) बहुज्ञता, बहुतसी बातोंकी समझ।

बहुदर्शी ( सं० पु० ) जिसने बहुत कुछ देखा हो, जानकार।

बहुदल (सं० पु०) १ तृणधान्यविशेष, चेना नामका अन्न। २ चिञ्चोटक क्षुप, चेच साग।

बहुदला ( सं० स्त्री० ) चञ्चु, चेच नामका साग।

बहुदान ( सं० पु० स्त्री० ) प्रचुर दे(ना)।

बहुदामन ( सं० स्त्री० ) स्कन्दानुचर मातृभेद।

बहुदायिन् ( सं० त्रि० ) प्रभूतदानशील।

बहुदुग्ध ( सं० पु० ) बहूनि दुग्धानि अपक्वावस्थाया यस्य। १ गोधूम, गेहूं। स्त्रियां टाप्। २ बहुक्षीरा गाभि, बहुत दूध देनेवाली गाय। ३ स्नुही वृक्ष, थूहर का पेड़।

बहुदुग्धिका ( सं० स्त्री० ) बहुदुग्धा स्वार्थे कन् टाप् अत इत्व। स्नुही वृक्ष, थूहरका पेड़।

बहुदेवत (स० त्रि०) बहुदेव निमित्तक पाठ्य।
बहुदेवत्य (स० त्रि०) बहुदेव सम्बन्धीय।
बहुदैवत (स० त्रि०) बहुदेवता सम्बन्धीय।
बहुदैवत्य (स० त्रि०) बहुदेवता सम्बन्धीय।
बहुधन (स० त्रि०) बहुधनशाली, धनी।
बहुधनेश्वर (स० पु०) १ धनी व्यक्ति। २ कुबेर।
बहुधर (स० पु०) शिव, महादेव।
बहुधा (स० अव्य०) बहु (विभाषाचहोर्धा विप्रकृष्टकाले। पा ५।४।२०) १ बहुप्रकारसे अनेक ढंगसे। २ प्रायः, अकसर, अधिकतर अवसरों पर।
बहुधात्मक (स० स्त्री०) बहुधा आत्मा यस्य। स्वयम्भु।
बहुधान्य (स० त्रि०) १ बहुधान्ययुक्त। २ जिसके प्रचुर धान्य हो। (स्त्री०) ३ राशि राशि धान्य। ४ साठ संवत्सरोंमेंसे बारहवां संवत्सर।
बहुधार (स० स्त्री०) बह्वी धारा यस्य। वज्रहीरक, एक प्रकारका हीरा।
बहुधूप (स० पु०) सर्जवृक्ष।
बहुधेनुक (स० स्त्री०) बहुसम्यक दोहनयोग्य गाभी।
बहुधेय (स० पु०) १ बहु नाम युक्त। २ सम्प्रदायभेद।
बहुध्वज (स० पु०) शूकर, सूअर।
बहुनाडिक (स० त्रि०) बहुनाडि कन्। काय, शरीर।
बहुनाडीक (सं० त्रि०) बह्वो नाड्यो यस्मिन, बहुनाडी कप्। १ दिवस। २ स्तम्भ।
बहुनाद (स० पु०) बहुर्महान् नाद शब्दो यस्य। शङ्ख।
बहुपटु (स० त्रि०) बहुषु विषयेषु पटुः। १ बहुकार्यमें दक्ष, जो बहुत काम जानता हो।
बहुपत्र (स० पु०) बहूनि पत्राणि दलान्यस्य। १ अभ्रक, अबरक। २ पलाण्डु, प्याज। ३ वंशपत्र, हरिताल। ४ मुचुकुन्दवृक्ष। ५ पलाशवृक्ष। (त्रि०) ६ अनेक पत्रयुक्त, जिसमें बहुत सी पत्तियां हों।
बहुपत्रा (स० स्त्री०) बहु पत्रटाप्। १ तरुणी पुष्प वृक्ष। २ तिपर्णिङ्गिनी लता। ३ जन्तुका, पहाड़ी नामकी लता। ४गोरक्षदुग्धी, दुधिया घास। ५ भूम्यामलकी, भूआंवला। ६ घृतकुमारी, घीकुवार घृतकी।
बहुपत्रिका (स० स्त्री०) बहुपत्रा संज्ञायां स्वार्थे कन् टापि अत इत्वं। १ भूम्यामलकी, भूआंवला। २ महाशतावरी। ३ मेथिका, मेथी। ४ वचा।
बहुपत्री (स० स्त्री०) बहुपत्र गौरादित्वात् ङीष्। १ लिङ्गिनी। २ गृहकन्या, घीकुवार। ३ तुलसीका पौधा। ४ जतुका। ५ बृहती। ६ गोरक्ष दुग्ध, दुधिया घास।
बहुपत्नीक (स० त्रि०) बह्वी पत्नीयस्य 'नद्यृतश्च' 'शेषाद्विभाषा' इति कप्। बहुपत्नीयुक्त, जिसके अनेक स्त्रियां हों।
बहुपद् (स० त्रि०) १ बहुपादयुक्त, जिसके अनेक पैर हों। (पु०) २ वटवृक्ष, बरगदका पेड़।
बहुपर्ण (स० पु०) मत्कुण द।
बहुपर्ण (सं० पु०) बहूनि पर्णानि पत्राणि यस्य। १ सप्तच्छदवृक्ष। (त्रि०) २ अनेक पत्रयुक्त।
बहुपर्णिका (स० स्त्री०) बहुपर्ण संज्ञायां कन्, टापि अत इत्व। आखुपर्णी।
बहुपर्णी (सं० स्त्री०) बहुपर्ण गौरादित्वात् ङीष्। मेथिका, मेथी।
बहुपशु (स० त्रि० बहुपशुयुक्त, जिसके अनेक मवेशी हों।
बहुपाक्य (स० त्रि०) जिसके घरमें दरिद्रोंके लिये अनेक खाद्य वस्तु बनती हों।
बहुपाद् (सं० पु०) वटवृक्ष, बरगदका पेड़।
बहुपाद (स० पु०) बहुपद् देखो।
बहुपाय्य (स० त्रि०) बहुपरक्षक शासनमय या बहुत रक्षक वर्हिताय।
बहुपुत्र (सं० पु०) बहवः पुत्राः सन्ततयो यस्य। १ सप्त पर्ण। २ पाजये प्रजापतिका नाम। (त्रि०) ३ अनेक पुत्रविशिष्ट, जिसके बहुतसे पुत्र हों।
बहुपुत्रिका (स० स्त्री०) स्कन्दकी अनुचरी, एक मातृका।
बहुपुत्री (स० स्त्री०) १ शतावरी। २ भूम्यामलकी। ३ पृहती।
बहुपुष्प (स० पु०) बहूनि पुष्पाणि यस्य। १ पारिभद्र वृक्ष, फरहदका पेड़। २ निम्बवृक्ष, नीमका पेड़।
(स० स्त्री०) बहुपुष्प संज्ञाया कन्, सन ...धायका पेड़।

बहुप्रकार ( स ० लि० ) नानाविध प्रकार, तरह तरहका।
बहुप्रकृति ( स ० लि० ) बहुप्रकृतियुक्त।
बहुप्रज ( स० लि० ) बहु प्रजा यस्य। १ बहुसन्तति-विशिष्ट, जिसके बहुत संतान हों। ( पु० ) २ मुञ्जतृण, मूंजका पौधा। ३ शूकर, सूअर।
बहुप्रतिज्ञ ( स ० लि० ) बहुः प्रतिज्ञा यस्मिन्। १ अनेक-पदसङ्कीर्ण पूर्वपक्षविशिष्ट व्यवहार, अनेक विषयक प्रतिज्ञा युक्त व्यवहार। २ अनेक प्रतिज्ञायुक्त।
बहुप्रद ( स ० लि० ) प्रददातीति प्र दा क, बहूनां प्रदः। १ प्रचुरदाता, बहुत देनेवाला। ( पु० ) २ शिव, महादेव।
बहुप्रसू ( स ० स्त्री० ) बहून् प्रसूते इति बहु प्र सू क्विप्। बहु सन्तान प्रसवकारिणी, बहुत बच्चा जननेवाली।
बहुप्रिय ( स ० पु० ) यवतृण।
बहुप्रेयसी ( स ० लि० ) बहुप्रेयसीयुक्त।
बहुफल ( स ० पु० ) बहूनि फलानि यस्य। १ कदम्ब वृक्ष। २ विकङ्कत, कटाई, वनभटा। ३ तेज फलवृक्ष। ४ यवधान्य। ५ वटवृक्ष। ६ कक्कोल। ७ लक्षवृक्ष।
बहुफला ( स ० स्त्री० ) बहुफल टाप्। १ क्षविका, एक प्रकारका वनभटा। २ माषपर्णी, जंगली उड़द। ३ काकमाची। ४ त्रपुसी, खीरा। ५ शशाण्डुली। ६ क्षुद्र कारवेल्ली, छोटा करेला। ७ भूम्यामलकी, भूआंवला।
बहुफलिका ( स ० स्त्री० ) बहुफला स्वार्थे कन्, अत इत्वम्। भूबदरी, एक प्रकारका छोटा बेर।
बहुफली ( स ० स्त्री० ) एक प्रकारकी जंगली गाजर। इसका पौधा अजवाइनका सा पर उससे छोटा होता है। पत्ते सौंफकी तरह होते हैं और धनियेके फूलोंकेसे पीले रंगके गुच्छे लगते हैं। उंगलीकी तरह या पतली गाजर-सी लंबी जड़ होती है। बीज भूरे हलके और हरसिंगार के बीजोंके जैसे होते हैं।
बहुफेना ( स ० स्त्री० ) बहु फेनो यस्याः। १ सातला, पीले दूधवाला थूहर। २ शङ्खहुली।
बहुबल ( स ० पु० ) बहु अतिशय बलं यस्य। १ सिंह। ( लि० ) २ अतिशय बलयुक्त।
बहुवल्क ( स ० पु० ) पियासाल।
बहुबाहु ( स ० पु० ) रावण।
बहुबीज ( स ० पु० ) १ बीजपूरकवृक्ष, बिजौरा नीबू। २ बीजवाला केला। ३ शरीफा।

बहूबेगम—लखनऊके नवाब आसफ उद्दौलाकी माता। इन्होंने १७९८से १८१५ ई० तक फैजाबाद नगरका निष्कर भोग किया था। उनकी मृत्युके बाद उक्त नगर तहस नहस हो गया। उनका समाधि मन्दिर आज भी विद्यमान है जो अयोध्याप्रदेश भरमें एक श्रेष्ठ भवन समझा जाता है।
बहुभद्र ( स ० पु० ) जातिविशेष।
बहुभाषिन् ( स ० लि० ) बहु भाषते भाष णिनि। बहुत बोलनेवाला, बकवादी।
बहुभाष्य ( स ० क्ली० ) बहु भाषण।
बहुभुज् ( स ० लि० ) बहु भुज क्विप्। १ बहुभोजनकारी, बहुत खानेवाला।
बहुभुजक्षेत्र ( स ० पु० ) रेखागणितमें वह क्षेत्र जो चारसे अधिक रेखाओंसे घिरा हो।
बहुभुजा ( स ० स्त्री० ) बहवः भुजा यस्य। दश भुजा, दुर्गा।
बहुभोजन ( स ० लि० ) बहु भोजनं यस्य। १ अतिभोजन युक्त। ( क्ली० ) २ अतिशय भोजन।
बहुमञ्जरी ( स ० स्त्री० ) बह्व्यो मञ्जर्यो यस्याः। तुलसी।
बहुमत ( स ० पु० ) १ अलग अलग बहुतसे मत, बहुतसे लोगोंकी अलग अलग राय। २ अधिकतर लोगोंका एक मत, बहुतसे लोगोंकी मिल कर एक राय।
बहुमत्स्य ( स ० क्ली० ) बहुमत्स्यशाली जलाशय, वह पोखरा जिसमें बहुतसी मछलियां हों।
बहुमन्तव्य ( स ० लि० ) बहु मन तव्य। बहु प्रकारसे मननीय।
बहुमल ( स ० पु० ) बहूनि मलानि यस्य। १ सीसक, सीसा नामकी धातु। ( लि० ) २ अनेक मलयुक्त।
बहुमान ( स ० लि० ) बहु मानं यस्य। १ बहुमानयुक्त, माननीय। ( क्ली० ) २ अधिक मान।
बहुमानिन् ( स ० लि० ) बहु मन णिनि। अतिशय सम्मानार्ह, अधिक आदरणीय।
बहुमान्य ( स ० लि० ) बहुभिर्मान्य। १ अनेक लोक कर्त्तृक माननीय, जिसका बहुतसे लोक आदर करते हों। २ अतिशय माननीय।

बहुदैवत (स० वि०) बहुदेव निमित्तक पाठ्य।

बहुदैवत्य (स० वि०) बहुदेव सम्बन्धीय।

बहुदैवत (स० वि०) बहुदेवता सम्बन्धीय।

बहुदैवत्य (स० वि०) बहुदेवता सम्बन्धीय।

बहुधन (स० वि०) बहुधनशाली, धनी।

बहुधनेश्वर (स० पु०) १ धनी व्यक्ति। २ कुबेर।

बहुधर (स० पु०) शिव, महादेव।

बहुधा (स० अव्य०) बहु (विभाषा बहोर्धा विप्रकृष्टकाले। पा ५।४।२०) १ बहुप्रकारसे अनेक ढंगसे। २ प्रायः, अक्सर, अधिकतर अवसरों पर।

बहुधात्मक (स० स्त्री०) बहुधा आत्मा यस्य। स्वयम्भु।

बहुधान्य (स० वि०) १ बहुधान्ययुक्त। २ जिसके प्रचुर धान्य हो। (क्ली०) ३ राशि राशि धान्य। ४ साठ संवत्सरोंमेंसे बारहवां संवत्सर।

बहुधार (स० क्ली०) बह्वी धारा यस्य। वज्रहीरक, एक प्रकारका हीरा।

बहुधूप (स० पु०) सर्ज्जवृक्ष।

बहुधेनुक (स० क्ली०) बहुसंख्यक दोहनयोग्य गाभी।

बहुधेय (स० पु०) १ बहु नाम युक्त। २ सम्प्रदायभेद।

बहुध्वज (स० पु०) शूकर, सूअर।

बहुनाडिक (स० त्रि०) बहुनाडि-कन्। काय, शरीर।

बहुनाडीक (स० त्रि०) बह्वो नाड्यो यस्मिन्, बहुनाडी कप्। १ दिवस। २ स्तम्भ।

बहुनाद (स० पु०) बहुर्महान् नादः शब्दो यस्य। शङ्ख।

बहुपटु (स० वि०) बहुषु विषयेषु पटुः। १ बहुकार्यमें दक्ष, जो बहुत काम जानता हो।

बहुपत्र (स० पु०) बहूनि पत्राणि दलान्यस्य। १ अभ्रक, अबरक। २ पलाण्डु, प्याज। ३ वंशपत्र, हरिताल। ४ मुचुकुन्दवृक्ष। ५ पलाशवृक्ष। (त्रि०) ६ अनेक पत्रयुक्त, जिसमें बहुत-सी पत्तियां हों।

बहुपत्रा (स० स्त्री०) बहु-पत्रटाप्। १ तरुणी पुष्प वृक्ष। २ गिरिलिङ्गिनी लता। ३ जन्तुका, पहाड़ी नामकी लता। ४ गोरक्षदुग्धी, दुधिया घास। ५ भूम्या मलकी, भूआंवला। ६ घृतकुमारी, घीकुआर। ७ वृहती।

बहुपत्रिका (स० स्त्री०) बहुपत्रा संज्ञायां स्वार्थे वा कन्, टापि-अत इत्वं। १ भूम्यामलकी, भूआंवला। २ महाशतावरी। ३ मेथिका, मेथी। ४ वच।

बहुपत्री (स० स्त्री०) बहुपत्र गौरादित्वात् ङीष्। १ लिङ्गिनी। २ घृतकन्या घीकुआर। ३ तुलसीका पौधा। ४ जतुका। ५ वृहती। ६ गोरक्ष दुग्ध, दुधिया घास।

बहुपत्नीक (स० त्रि०) बह्वी पत्न्यो यस्य 'नद्यृतश्च' इति कप्। बहुपत्नीयुक्त, जिसके अनेक स्त्रियां हों।

बहुपद (स० त्रि०) १ बहुपादयुक्त, जिसके अनेक पैर हों। (पु०) २ वटवृक्ष, बरगदका पेड़।

बहुपन्ना (स० पु०) मत्स्यभेद।

बहुपर्ण (स० पु०) बहूनि पर्णानि पत्राणि यस्य। १ सप्तच्छदवृक्ष। (त्रि०) २ अनेक पत्रयुक्त।

बहुपर्णिका (स० स्त्री०) बहुपर्ण संज्ञायां कन्, टापि अत इत्व। आखुपर्णी।

बहुपर्णी (स० स्त्री०) बहुपर्ण गौरादित्वात् ङीष्। मेथिका, मेथी।

बहुपशु (स० त्रि० बहुपशुयुक्त, जिसके अनेक मवेशी हों।

बहुपाक्य (स० त्रि०) जिसके घरमें दरिद्रोंके लिये अनेक खाद्य वस्तु बनती हों।

बहुपाद (स० पु०) वटवृक्ष, बरगदका पेड़।

बहुपाद (स० पु०) बहुपद देखो।

बहुपाय्य (स० वि०) बहुकर्तृक गन्तव्य या बहुकर्तृक रक्षणीय।

बहुपुत्र (स० पु०) बहवः पुत्राः सन्ततयो यस्य। १ सप्तपर्ण। २ पांचवें प्रजापतिका नाम। (त्रि०) ३ अनेक पुत्रविशिष्ट, जिसके बहुतसे पुत्र हों।

बहुपुत्रिका (स० स्त्री०) स्कन्दकी अनुचरी, एक मातृका।

बहुपुत्री (स० स्त्री०) १ शतावरी। २ भूम्यामलकी। ३ वृहती।

बहुपुष्प (स० पु०) बहूनि पुष्पाणि यस्य। १ पारिभद्र-वृक्ष, फरहदका पेड़। २ निम्बवृक्ष, नीमका पेड़।

बहुपुष्पिका (स० स्त्री०) बहुपुष्प संज्ञायां कन्, अत इत्व। धातकीवृक्ष, धायका पेड़।

बहुप्रकार ( स ० त्रि० ) नानाविध प्रकार, तरह तरहका।
बहुप्रकृति ( स ० त्रि० ) बहुप्रकृतियुक्त।
बहुप्रज ( स ० त्रि० ) बह्व्यः प्रजा यस्य। १ बहुसन्तति-विशिष्ट, जिसके बहुत संतान हों। ( पु० ) २ मुञ्जतृण, मूंजका पौधा। ३ शूकर, सूअर।
बहुप्रतिज्ञ ( स ० त्रि० ) बह्वी प्रतिज्ञा यस्मिन्। १ अनेक-पदसङ्कीर्ण पूर्वपक्षविशिष्ट व्यवहार, अनेक विषयक प्रतिज्ञा युक्त व्यवहार। २ अनेक प्रतिज्ञायुक्त।
बहुप्रद ( स ० त्रि० ) प्रददातीति प्र-दा-क, बहूनां प्रदः। १ प्रचुरदाता, बहुत देनेवाला। ( पु० ) २ शिव, महादेव।
बहुप्रसू ( स ० स्त्री० ) बहून् प्रसूते इति बहु प्र क्विप्। बहु सन्तान प्रसवकारिणी, बहुत बच्चा जननेवाली।
बहुप्रिय ( स ० पु० ) यवतृण।
बहुप्रेयसी ( स ० त्रि० ) बहुप्रेयसीयुक्त।
बहुफल ( स ० पु० ) बहूनि फलानि यस्य। १ कदम्ब वृक्ष। २ विकङ्कत, कटाइ, वनभंटा। ३ तेज फलवृक्ष। ४ यवधान्य। ५ वटवृक्ष। ६ कक्कोल। ७ लकुचवृक्ष।
बहुफला ( स ० स्त्री० ) बहुफल टाप्। १ क्षविका, एक प्रकारका वनभंटा। २ माषपर्णी, जंगली उड़द। ३ काकमाची। ४ त्रपुसी, खीरा। ५ शशाण्डुली। ६ एक प्रकारवेल्ली, छोटा करेला। ७ भूम्यामलकी, भूआंवला।
बहुफलिका ( स ० स्त्री० ) बहुफला स्वार्थे कन्, अत इत्वम्। भूबदरी, एक प्रकारका छोटा बेर।
बहुफली ( स ० स्त्री० ) एक प्रकारकी जंगली गाजर। इसका पौधा अजवाइनका सा पर उससे छोटा होता है। पत्ते सौंफकी तरह होते हैं और धनियेके फूलोंकेसे पीले रंगके गुच्छे लगते हैं। जंगलीकी तरह या पतली गाजर-सी लंबी जड़ होती है। बीज भूरे हल्के और हरसिंगार-के बीजोंके जैसे होते हैं।
बहुफेना ( स ० स्त्री० ) बहु फेनो यस्याः। १ सातला, पीले दूधवाला थूहर। २ शंखहुली।
बहुबल ( स ० पु० ) बहु अतिशय बलं यस्य। १ सिंह। ( त्रि० ) २ अतिशय बलयुक्त।
बहुबल्क ( स ० पु० ) पियासाल।
बहुबाहु ( स ० पु० ) रावण।
बहुबीज ( स ० पु० ) १ बीजपूरकवृक्ष, बिजौरा नीबू। २ बीजवाला केला। ३ शरीफा।

बहूबेगम—लखनऊके नवाब आसफ उद्दौलाकी माता। इन्होंने १७९८से १८१५ ई० तक फैजाबाद नगरका निष्कर भोग किया था। उनकी मृत्युके बाद उक्त नगर तहस नहस हो गया। उनका समाधि-मन्दिर आज भी विद्य मान है जो अयोध्याप्रदेश भरमें एक श्रेष्ठ भवन समझा जाता है।
बहुभद्र ( स ० पु० ) जातिविशेष।
बहुभाषिन् ( स ० त्रि० ) बहुभाषते भाष णिनि। बहुत बोलनेवाला, बकवादी।
बहुभाष्य ( स ० क्ली० ) बहु भाषण।
बहुभुज् ( स ० त्रि० ) बहु भुज क्विप्। १ बहुभोजनकारी, बहुत खानेवाला।
बहुभुजक्षेत्र ( स ० पु० ) रेखागणितमें वह क्षेत्र जो चारसे अधिक रेखाओंसे घिरा हो।
बहुभुजा ( स ० स्त्री० ) बह्वः भुजा यस्य। दश भुजा, दुर्गा।
बहुभोजन ( स ० त्रि० ) बहु भोजनं यस्य। १ अतिभोजन युक्त। ( क्ली० ) २ अतिशय भोजन।
बहुमञ्जरी ( स ० स्त्री० ) बह्वी मञ्जर्यो यस्याः। तुलसी।
बहुमत ( स ० पु० ) १ अलग अलग बहुतसे मत, बहुतसे लोगोंकी अलग अलग राय। २ अधिकतर लोगोंका एक मत, बहुतसे लोगोंकी मिल कर एक राय।
बहुमत्स्य ( स ० क्ली० ) बहुमत्स्यशाली जलाशय, वह पोखरा जिसमें बहुतसी मछलियां हों।
बहुमन्तव्य ( स ० त्रि० ) बहु मन तव्य। बहु प्रकारसे मननीय।
बहुमल ( स ० पु० ) बहूनि मलानि यस्य। १ सीसक, सीसा नामकी धातु। ( त्रि० ) २ अनेक मलयुक्त।
बहुमान ( स ० त्रि० ) बहु मानं यस्य। १ बहुमानयुक्त, माननीय। ( क्ली० ) २ अधिक मान।
बहुमानिन् ( स ० त्रि० ) बहु मन णिनि। अतिशय सम्मा-नार्ह, अधिक आदरणीय।
बहुमान्य ( स ० त्रि० ) बहुभिर्मान्यः। १ अनेक लोक कर्तृक माननीय, जिसका बहुतसे लोक आदर करते हों। २ अतिशय माननीय।

बहुमार्ग (स० क्लो०) बहवो मार्गा यस्मिन्, चतुर्दिक्षु पथसत्त्वात् तथात्व। १ चत्वर, चौरस्ता। (त्रि०) २ अनेक पथयुक्त।

बहुमुख (स० पु०) अनेक मुख, बहुतसे मुँह।

बहुमूत्र (स० पु०) १ रोगविशेष, एक रोग जिसमें रोगीको मूत्र बहुत उतरता है। (त्रि०) २ बहुमूत्ररोगी। प्रमेह देखो।

बहुमूत्रता (स० स्त्री०) बहुमूत्ररोग।

बहुमूर्त्ति (स० स्त्री०) बह्वी मूर्त्तिर्यस्या। १ वन कार्पास, वनकपास। (पु०) २ विष्णु। (त्रि०) ३ बहुमूर्त्तिधर, बहुरूपिया।

बहुमूर्द्धन् (स० पु०) बहवो मूर्द्धानो यस्य, 'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्' इति श्रुतेस्तथात्व। विष्णु।

बहुमूल (स० पु०) बहूनि मूलानि यस्य। १ इक्कड़, नरसल। २ शिग्रु, सैंजना। ३ स्थूलशर, रामशर, सरकण्डा। (त्रि०) ४ अनेक मूलयुक्त।

बहुमूलक (स० क्लो०) बहुमूल-कन्। १ उशीर, खस। २ वीरण, आदिकी जातिके तृण। ३ इक्कड़, सरकण्डा।

बहुमूला (स० स्त्री०) बहुमूल-टाप्। १ शतावरी। २ आम्रातकवृक्ष, अमड़ेका पेड़। ३ माकन्दी, एक प्रकारका कद।

बहुमूल्य (स० त्रि०) बहूनि मूल्यानि यस्य। महार्घ्य वस्तु, अधिक मूल्यका, कीमती।

बहुयज्वन् (स० त्रि०) बहुयज्ञकारी।

बहुयाजिन् (स० त्रि०) बहुयज्ञके कर्त्ता।

बहुयोजना (स० स्त्री०) स्कन्दानुचर मातृकाभेद।

बहुरंगा (हिं० वि०) १ चित्रविचित्र, कई रंगका। २ बहुरूपधारी। ३ अस्थिर चित्तका, मनमौजी।

बहुरंगी (हिं० वि०) १ बहुरूपिया, अनेक प्रकारके रूप-धारण करनेवाला। २ अनेक रंग दिखलानेवाला।

बहुरथ (स० पु०) एक राजा।

बहुरद (स० पु०) जातिविशेष, किसी किसीने इन्हें 'बाहुवाघ' बतलाया है।

बहुरन्ध्रिका (स० स्त्री०) बहूनि रन्ध्राणि यस्याः, बहुरन्ध्र-टाप्, स्वार्थे कन्-टापि अतइत्त्व। मेदा।

बहुरना (हिं० क्रि०) १ लौटना, वापस आना। २ फिर हाथमें आना, फिर मिलना।

बहुरसा (स० स्त्री०) बहुरसो यस्याः। महाज्योतिष्मती लता। २ रसवती स्त्री। (त्रि०) ३ बहु रसयुक्त।

बहुरामपुर—तैरभुक्तके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। (ब्रह्मख० ४७।१६४)

बहुराशिक (स० पु०) गणितभेद। एक त्रैराशिक द्वारा दूसरे त्रैराशिककी निर्दिष्ट राशि जाननेको ही बहुराशिक कहते हैं। त्रैराशिक देखो।

बहुरिया (हिं० स्त्री०) नई बहू।

बहुरिबन्द—मध्यप्रदेशके अन्तर्गत एक प्रचीन नगर। यह जब्बलपुर नगरसे १६ कोस उत्तर कैमूर गिरिमालाकी अधित्यका भूमि पर अवस्थित है। इस पहाड़ीभूमिमें जल अटकानेके लिये ४५ बाँध हैं। ये सब बाँध यदि न होते, तो यह स्थान जलशून्य मरुभूमि हो जाता। पूर्वोक्त बाँध द्वारा ३६ झील बन गई हैं। ये सब बाँध निकटवर्त्ती ग्रामोंके नामसे ही पुकारे जाते हैं। मुनिया ताल नामक बाँध लक्ष्मणसिंह परिहारके भाई यमुना सिंहसे बनाया गया है। यहां अनेक प्राचीन कीर्त्तियोंका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

बहुरी (हिं० स्त्री०) चर्वण, चबेना।

बहुरुहा (स० स्त्री०) बहु यथातथा रोहतीति रुह क टाप्। कन्दगुडूची।

बहुरूप (स० पु०) बहूनि-रूपाणि यस्य। १ सर्जरस। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कामदेव। ५ सरट, गिरगिट। ६ ब्रह्मा। ७ केश। ८ रुद्र। ९ प्रियव्रतके पुत्र मेधातिथिके एक पुत्रका नाम। १० वर्षभेद। ११ बुद्धविशेष। १२ ताण्डव नृत्यका एक भेद जिसमें अनेक प्रकारके रूप धारण करके नाचते हैं। १३ शाल निर्यास, धूना। १४ नानारूपयुक्त, अनेक रूप धारण करनेवाला।

बहुरूपक (स० पु०) बहुरूप स्वार्थे कन्। जाहकजन्तु।

बहुरूपा (स० स्त्री०) बहुरूपस्य प्रियस्य स्त्री-टाप्। १ दुर्गा। २ अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

बहुरूपाष्टक (स० क्लो०) तन्त्रविशेष। ब्राह्मी, माहेश्वरी,

कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा और शिव दूती ये आठ बहुरूपा विषयक तन्त्र हैं।

बहुरूपी (स ० वि० ) १ अनेक रूप धारण करनेवाला। (पु० ) २ बहुरूपिया।

बहुरेखा ( स ० स्त्री० ) बही बहुला रेखा करस्थादि चिह्नम्। प्रचुर दीर्घ चिह्न। सामुद्रिक मतसे जिनके हाथमें अनेक रेखाएं रहती हैं वे दु खभागी होते हैं।

बहुरेणु ( स ० पु० श्वेतकिणिही वृक्ष।

बहुरेतस् ( स ० पु० ) बहु रेतो यस्य। ब्रह्मा।

बहुरोमा (स ० पु०) बहूनि रोमाणि यस्य। १ मेष, मेढा। २ वानर, ब दर। ( लि० ) ३ लोमश, जिसके शरीरमें अधिक रोएं हों।

बहुल ( स ० क्ली० ) ब हते वृद्धि गच्छतीति वहि वृद्ध कुलच्, नलोपश्च। १ आकाश। २ सितमरिच, सफेद मिर्च। ३ कृष्ण वर्ण। ४ अग्नि। ५ कृष्णपक्ष। ( लि० ) ६ प्रचुर, ज्यादा।

बहुलगन्धा ( स ० स्त्री० ) बहुलो गन्धो यस्या। क्षुद्रैला, छोटी इलायची।

बहुलच्छद ( स ० पु० ) बहुलानि छदानि यस्य। १ रक्त शिग्रु, लाल सहिजन। २ शोभाञ्जन, काला सहिजन।

बहुलता (स ० स्त्री०) बहुलस्य भाव तल् टाप्। बहुलत्व, अधिकता।

बहुलवण ( स ० क्ली० ) बहूनि लवणानि यस्मिन्। औषर लवण।

बहुल-वर्म ( स ० वि० ) उत्तम कवचयुक्त।

बहुल-वल्कल ( स ० पु० ) चार वृक्ष, पियाशालका पेड।

बहुला ( स ० स्त्री० ) बहुल-टाप्। १ नीलिका, नीलका पौधा। २ एला, इलायची। ३ गो, गाय। ४ देवीविशेष। ५ नदीभेद। ५ स्वनामख्याता उत्तमराज पत्नी। ६ कृत्तिका नक्षत्र। ७ गाभिविशेष, एक गाय जिसके सत्यव्रतकी कथा पुराणोंमें आई है और जिसके नाम पर लोग भादों वदी चौथ और माघ वदी चौथको व्रत करते हैं।

बहुलाचौथ ( स ० स्त्री० ) भादों वदी चौथ। इस दिन बहुला गायके सत्यव्रतके स्मरणार्थ व्रत किया जाता है।

बहुलान्त ( स ० पु० ) सोम।

बहुलावन ( स ० पु० ) वृन्दावनके ८४ वनोंमेंसे एक वन। कहते हैं, कि इसी वनमें बहुला गायने व्याघ्रके साथ अपना सत्यव्रत निबाहा था।

बहुलाभिमान (स ० लि०) अतिशय अभिमानी, भूयिष्ठाभिमानी, दृप्त।

बहुलालाप ( स ० लि० ) बहुतर वाक्यविन्यास।

बहुलाश्व ( स ० पु० ) मैथिल वंशीय नृपभेद।

बहुलारा—बाकुड़ा जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह द्वारिकेश्वर वा दारुकेश्वर नदीके दक्षिण कोणमें बाकुड़ा नगरसे ६ कोस पूर्व अवस्थित है। यहाका शिवमन्दिर बङ्गालके अपरापर स्थानोंके मन्दिरोंसे श्रेष्ठ है। मन्दिरमें शिवकी लिङ्गमूर्त्ति, दुर्गा, गणेश, बुद्ध आदि मूर्त्तिया प्रतिष्ठित हैं।

बहुलिका ( स ० स्त्री० ) सप्तर्षि मण्डल।

बहुली ( हि ० स्त्री० ) एला, इलायची।

बहुलीकरिष्णु (स ० लि०) अबहुल बहुल करिष्णु बहुल अभूत तद्भावे च्वि, कृ-इष्णुच्। बाहुल्यकारक।

बहुलीकृत ( स ० क्ली० ) अबहुल बहुल कृत अभूत तद्भावे च्वि। १ अपनीततुष धान्यादि, भूसी उड़ाया हुआ धान। ( स्त्री० ) २ विस्तृतीकृत।

बहुलेश्वर—बम्बईप्रदेशके खानदेश जिलान्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यहा बहुलेश्वर शिवका एक सुन्दर मन्दिर है।

बहुवचन ( स ० पु० ) व्याकरणकी एक परिभाषा जिससे एकसे अधिक वस्तुओंके होनेका बोध होता है।

बहुवत् ( स ० अव्य० ) बहुवचनके समान।

बहुवर्ण ( स ० पु० ) १ गौधेरक जातिभेद। २ अनेक वर्ण, अनेक जाति।

बहुवर्त्त ( स ० क्ली० ) जनपदभेद।

बहुवर्त्म ( स ० पु०) आंखोंका एक रोग। इसमें पलका के चारो ओर छोटी छोटी फुंसियाँ सी फैल जाती हैं।

बहुवलिकवि—दाक्षिणात्यवासी एक कवि। इन्होंने नागकुमारचरित नामक एक ग्रन्थ लिखा है। उक्त ग्रन्थमें ये बाईसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथके समसामयिक मथुराधिपति नागकुमारका चरित वर्णन कर गये हैं।

बहुवल्क (सं० पु०) बहूनि वल्कानि यस्य। प्रियाल, पियासालका पेड़।

बहुवल्ली (सं० स्त्री०) मृत्तिका लता।

बहुवादी (सं० त्रि०) बहु वदते वद णिनि। बहुभाषी, बहुत बोलनेवाला।

बहुवाद्य—जम्बूखण्डके अन्तर्गत जनपदभेद।

(महाभारत भीष्म० ६।७५)

बहुवार (सं० पु०) बहूनि वारयतीति बहु वृ णिच् अण्। १ वृक्षविशेष, लिसोड़ेका पेड़। संस्कृत पर्याय—शेलु, शीत, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, उद्दाल, उद्दालक, सेलु। इसके फलका गुण—शीतल, श्लेष्मवर्द्धक, शुक्रकारक, गुरु, दुर्जर और मधुर। २ अनेक बार।

बहुवारक (सं० पु०) बहूनि वृक्षादीनि वारयतीति वृ णिच् ण्वुल्। वृक्षविशेष, लिसोड़ेका पेड़।

बहुवार्षिक (सं० त्रि०) बहुवर्षभव, कई वर्षों तक होनेवाला।

बहुवि (सं० क्ली०) बहुतर पक्षियुक्त वृक्षादि, वह पेड़ जिस पर बहुतसे पक्षी रहते हो।

बहुविघ्न (सं० त्रि०) १ नाना प्रकार बाधायुक्त। (क्ली०) २ नाना प्रकारकी बाधाये।

बहुविद् (सं० त्रि०) बहु वेत्ति विद् क्विप्। बहुज्ञ, अनेक विषयोंसे जानकार।

बहुविज्ञ (सं० त्रि०) बहुज्ञ, बहुतसे बाते जाननेवाला।

बहुविध (सं० त्रि०) बहवो विधा यस्य। नाना प्रकारका, तरह तरहका। पर्याय—विविध, नानारूप, पृथग्विध।

बहुविस्तीर्ण (सं० त्रि०) बहु यथा स्यात्तथा विस्तीर्ण। अनेक विस्तारयुक्त, खूब लम्बा चौड़ा।

बहुवीज (सं० क्ली०) बहूनि बीजानि यस्य। गण्डगात्र, सिताफल।

बहुवीर्य (सं० पु०) बहु वीर्यं तेजो यस्य। १ विभीतक, बहेड़ा। २ तण्डुलीयशाक। ३ शाल्मली वृक्ष, सेमरका पेड़। ४ मरुव, मरुआ।

बहुवीर्या (सं० स्त्री०) भूम्यामलकी, भूआंवला।

बहुवोढव्य (सं० त्रि०) अधिक वाक्यव्ययी, बहुत बोलनेवाला।

बहुव्ययी (सं० त्रि०) बहु व्यय अस्त्यर्थे इनि। अतिशय व्ययशील, बहुत खर्चीला।

बहुव्रीहि (सं० पु०) १ व्याकरणमें ६ प्रकारके समासों मेंसे एक। इसमें दो या अधिक पदोंके मिलनेसे जो समस्त पद बनता है वह एक अन्य पदका विशेषण होता है। (त्रि०) बहवो व्रीहयो यस्य। २ प्रचुर धान्ययुक्त।

बहुशक्ति (सं० त्रि०) बहु शक्तिर्यस्य। अधिक शक्तिसम्पन्न, बहुत ताकतवर।

बहुशत्रु (सं० पु०) बहव शत्रवो यस्य। १ चटक, गौरा पक्षी। (त्रि०) २ बहुशत्रुविशिष्ट, जिसके अनेक दुश्मन हो। तृतीया तिथिमें पटोल खानेसे उसके अनेक दुश्मन होते हैं। (तिथितत्त्व)

बहुशल्य (सं० पु०) बहु शल्य यस्य। १ रक्त खदिर, लाल खैर। (त्रि०) २ अनेक शल्ययुक्त।

बहुशस् (सं० अव्य०) बहूनि ददाति करोत्यादि वा बहु (बह्वल्पार्थाच्छस् । पा ५।४।४२) इति शस्। बहु, अनेक।

बहुशाख (सं० पु०) १ स्नुही वृक्ष, थूहर। (त्रि०) २ बहुशाखायुक्त, जिसमें अनेक डालिया हो।

बहुशास्त्र (सं० क्ली०) बहुशास्त्र कर्मधा०। बहुविध शास्त्र।

बहुशाल (सं० पु०) बहुभिः शालते इति बहु शाल-अच्। स्नुही, थूहर।

बहुशिख (सं० त्रि०) बह्वी शिखा यस्य। १ अनेक शिखायुक्त। स्त्रिया टाप्। २ गजपिप्पली। ३ अनेक शिखा।

बहुशिरस् (सं० पु०) विष्णु।

बहुशृङ्ग (सं० पु०) विष्णु।

बहुश्रुत (सं० त्रि० बहु श्रुत यस्य। अनेक शास्त्र श्रुतियुक्त, जिसने अनेक प्रकारके विद्वानोंसे भिन्न भिन्न शास्त्रोंको बाते सुनी हों।

बहुश्रुति (सं० स्त्री०) अनेक श्रुति, बहु वेदमन्त्र।

बहुश्रुतीय (सं० पु०) बौद्धसम्प्रदायभेद।

बहुश्रेयसी (सं० त्रि०) बह्व्यः श्रेयसी यस्य, ईयसन्त त्वात् नकप् न वा ह्रस्व। अनेक श्रेयसीयुक्त।

बहुसङ्ख्यक (सं० पु०) गिनतीमें बहुत।
बहुसदाचार (सं० त्रि०) बहु सदाचारसम्पन्न, अच्छा आचरणवाला।
बहुसन्तति (सं० त्रि०) बह्वी सन्ततिर्विस्तारोऽन्वयो वा यस्य। १ अनेक सन्तानयुक्त, जिसके बहुत बाल बच्चे हों। (पु०) २ ब्रह्मयष्टि, एक प्रकारका बांस।
बहुसम्पुट (सं० पु०) बहु सम्पुटो यस्य। विष्णुकन्द।
बहुसार (सं० पु०) बहु सार स्थिरांशो यस्य। खदिर, खैर।
बहुसिक्थ (सं० त्रि०) बहुसरविशिष्ट।
बहुसुत (सं० त्रि०) बहवः सुता यस्य। अनेक पुत्र युक्त, जिसके बहुत सन्तान हों।
बहुसुता (सं० स्त्री०) शतमूली।
बहुसुवर्णक (सं० त्रि०) १ बहुसुवर्णयुक्त। (पु०) २ राजपुत्रभेद। ३ गङ्गातीरस्थ अग्रहारभेद।
बहुसू (सं० स्त्री०) बहून् सूते वा बहु सू क्विप्। १ शूकरी, मादा सूअर। (त्रि०) २ अतिशय प्रसवयुक्त।
बहुसूति (सं० स्त्री०) बहु सूति प्रसवो यस्या। १ बहु अपत्ययुक्ता गाभी, वह गाय जिसके अनेक बछड़े हों। २ बहुसन्तान प्रसविणी स्त्री।
बहुसूवन् (सं० त्रि०) बहु-सू-क्वनिप्। १ बहुप्रजाप्रसव कारक। स्त्रियां ङीप् 'वनोर' इति नस्य र। २ बहु सूअरी, वह प्रजा प्रसविनी।
बहुस्रव (सं० त्रि०) बहु यथा तथा स्रवति स्रु अच्। अनेकधा क्षरणशील, अनेक क्षरणशील।
बहुस्रवा (सं० स्त्री०) शल्लकी वृक्ष, सलई।
बहुस्वन (सं० पु०) बहुः प्रचण्ड स्वन शब्दो यस्य। १ पेचक, उल्लू। २ शंख। (त्रि०) ३ अनेक शब्दयुक्त।
बहुस्वामिक (सं० त्रि०) जिसके अनेक प्रभु हों, जिस चीजके बहुतसे मालिक हों।
बहुहिरण्य (सं० त्रि०) १ बहु सुवर्णयुक्त। (पु०) २ बहु सुवर्ण। ३ वेदोक्त एकाहभेद।
बहूँटा (हिं० पु०) बांह पर पहननेका एक गहना।
बहू (हिं० स्त्री०) १ पुत्रवधू, पतोहू। २ पत्नी, स्त्री। ३ कोई नवविवाहिता स्त्री, दुलहिन।
बहूदक (सं० पु०) बहूनि उदकानि शौचाद्भृतया यस्य। सन्यासिभेद। संसाराश्रमका परित्याग कर ये लोग सन्यास अवलम्बन करते हैं। सात घरोंमें जितनी भिक्षा मिलती है वही उनका आहार है। केवल एक गृहस्थके यहां भिक्षा नहीं मांगते, सात गृहस्थके घर जाना ही पड़ता है। यदि एक ही गृहस्थ उन्हें प्रचुर भिक्षा दे दे, तो वे उसे ग्रहण नहीं करते।

ये सब सन्यासी गो पुच्छ लोमके द्वारा बद्ध त्रिदण्ड, शिक्य, जलपूतपात्र, कौपीन, कमण्डलु, गात्राच्छादन, कन्था, पादुका, छत्र, पवित्र, चर्म, सूची, पक्षिणी, रुद्राक्ष माला, योगपट्ट, बहिर्वास, खनित्र और कृपाण अपने साथ लिये फिरते हैं। सर्वाङ्गमें भस्मलेपन, त्रिपुण्ड, शिखा और यज्ञोपवीत धारण इनका अवश्य कर्त्तव्य है। इन्हें वेदाध्ययन और देवताराधनामें रत तथा वृथा वाक्यका परित्याग कर सर्वदा इष्ट देवताके चिन्तनमें तत्पर रहना पड़ता है। शामको गायत्रीजप और स्वधर्मो चित क्रियानुष्ठान करना होता है।

अतिभोजन और रिपुपरतन्त्र होनेसे योगाभ्यासमें मन दृढ नहीं रहता, इस कारण इन्हें परिमित आहार और काम, क्रोध, शोक, मोह, हर्ष, विषाद आदिका परित्याग करना चाहिये। इनके शास्त्रमें चातुर्मास्य व्रतानुष्ठान बतलाया गया है। ये लोग मोक्षाभिलाषी हैं। मोक्ष लाभके लिये गायत्रीजप ही प्रधान कर्त्तव्य है। इन सब सन्यासियोंकी मृत्यु होनेसे मृतदेह जलाई नहीं जाती, जलमें बहा दी जाती है। इन्हें मृत शौचादि भी नहीं होता।
बहूदक—कुमारिकाकी महानदीके निकटवर्त्ती नदीभेद। (कुमारिका १५।११।६)
बहून्न (सं० क्ली०) प्रचुर अन्न।
बहूपमा (सं० स्त्री०) एक प्रकारका अर्थालङ्कार। इसमें एक उपमेयके एक ही धर्मसे अनेक उपमान कहे जाते हैं।
बहेगवा (हिं० पु०) १ एक पक्षी जिसे भुजंगा या कर चोटिया भी कहते हैं।
बहेत (हिं० स्त्री०) वह काली मट्टी जो तालों या गड्ढोंमें बह कर जमा हो जाती है। इसी मट्टीके खपरे बनते हैं।
बहेगवा (हिं० पु०) चौपायोंकी गुदाके पास पूछके नीचेकी मांसग्रन्थि।

बहेचा ( हिं० पु० ) घड़ेका ढांचा जो चाक परसे गढ़ कर उतारा जाता है। इसे अब थापी और पिटनेसे पीट कर बढ़ाते हैं, तब यह घड़े के रूपमें आता है।

बहेड़क ( सं० पु० ) विभीतक वृक्ष, बहेड़ा।

बहेड़ा (हिं० पु०) अर्जुनकी जातिका एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़। यह पतझड़में पत्ते झड़ता है और सिंध तथा राजपूताने आदि सूखे स्थानोंको छोड़ भारतवर्षके जंगलोंमें सर्वत्र होता है। इसके पत्ते महुएकेसे होते हैं। फूल बहुत छोटे छोटे लगते हैं। विभीतक देखो।

बहेड़ा—दरभङ्गा जिलेके अन्तर्गत एक प्रधान वाणिज्य स्थान। यह अक्षा० २६ ४´ उ० तथा देशा० ८६ १०´ ८´´ पू०के मध्य अवस्थित है। पहले यह स्थान उपविभागका सदर था। पर आबहवा अच्छी न होनेके कारण दरभङ्गा नगरमें यह उठा कर लाया गया।

बहेड़ी—युक्तप्रदेशके बरेली जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २८ ३५´ से २८ ५४´ उ० तथा देशा० ७९ १६´ से ७९ ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३४५ वर्गमील और जनसंख्या ७ लाखसे ऊपर है। इसमें २ छोटे छोटे शहर और ४१० ग्राम लगते हैं।

बहेतू ( हिं० वि० ) १ इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला, जिसका कहीं ठौर ठिकाना न हो। २ व्यर्थ घूमनेवाला, निकम्मा।

बहेरा ( हिं० पु० ) बहेड़ा देखो।

बहेला ( हिं० पु० ) कुश्तीका एक पेंच।

बहेलिया ( हिं० पु० ) पशु पक्षियोंको पकड़ने या मारनेका व्यवसाय करनेवाला शिकारी।

बहलोलपुर—पञ्जाबके लुधियाना जिलेका एक ग्राम। यह अक्षा० ३०° ३५´ उ० तथा देशा० ७६ २२´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। सम्राट् अकबरके समय बहलोल खाँ और बहादुर खाँ नामक दो अफगानोंने इसे बसाया था।

बहलोल लोदी, सुलतान—दिल्लीके एक मुसलमान बादशाह। ये मालिक कालाके पुत्र थे, इस कारण लोग इन्हें मालिक बहलोल कहा करते थे। इनके चाचा सुलतान शाहलोदी (इसलाम खाँ) सरहिन्दके शासनकर्ता थे। वे बहलोलको सुचतुर और बुद्धिमान् देख पुत्रकी तरह इनका लालन पालन करते थे और मरते समय अपना उत्तराधिकारी बना गये थे।

बादशाह बन बहलोलने बुद्धिवैभवसे संसार भरमें अपना प्रभाव फैला लिया। किन्तु चचेरा भाई कुतुब खाँ इनके वशमें नहीं हो सका। उसने दिल्लीके सुलतान महम्मदसे उनकी चुगली खाई। सुलतान महम्मदने उसकी बातोंमें आ, हाजी हिसाम खाँको सेना ले कर बहलोलका दमन करने भेजा। खिजिराबादके कारा ग्रामके निकट दोनों दलमें मुठभेड़ हो गई। हाजी हिसाम खाँ हार खा कर दिल्लीको भागा।

उसके भाग जाने पर बहलोलने उसके विरुद्ध सुलतान महम्मदके पास एक पत्र भेजा। पत्रमें लिखा था, कि इसके अन्याय शासनसे यहाँका राज्य एकदम नष्ट हो गया है। दास आपके चरणोंकी सेवा करने सदा तैयार है। इनकी बातोंमें पड़ कर सुलतान महम्मदने हाजी हिसाम खाँको मरवा डाला और हामिद खाँको उसकी जगह पर वजीर बनाया। यह खबर जिस समय बहलोलने सुनी, उसी समय बहुतसे लोदियोंको साथ ले वे सम्राट महम्मदके अभिवादनार्थ दिल्ली आये। यहाँ आ कर इन्होंने अपनी जागीरका चिरस्थायी प्रबन्ध कर लिया।

अब सुलतानकी तरफ हो कर इन्होंने मालव राजाको हराया और भेंट स्वरूप खानखानाकी उपाधि पाई। इनकी पदोन्नतिसे राजदरबारमें लोदियोंकी खूब बन चली। इन लोगोंने बिना सम्राटकी अनुमतिके लाहोर, दीपालपुर, सनाम, हिसार, फिरोजा आदि कितने ही जिलोंमें अपनी गोटी जमा ली।

सुलतान महम्मदने इनकी जड़ उखाड़नेकी बहुत चेष्टा की, पर सभी विफल हुई। अन्तमें इन लोगोंने विद्रोही हो दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। बहुत दिनों तक दिल्लीमें घेरा डाले रहनेके बाद ये विफल मनोरथसे सरहिन्द लौट आये। मालिक बहलोलका इसी समय सुलतान नाम पड़ा। किन्तु बिना दिल्लीको दखल किये उन्होंने अपने नाम पर खुतबा पाठ और सिक्केका प्रचार नहीं होने दिया।

महम्मदकी मृत्युके बाद उनका लड़का अलाउद्दीन दिल्लीके राजसिंहासन पर बैठा। इस समय यद्यपि

सिंधु (हिन्द) प्रदेश भिन्न भिन्न राजाओंके शासनाधिकारमें था, तो भी लोदी-वंशका स्थान सबसे ऊंचा ही था।

बहोलने फिरसे दलबलके साथ दिल्ली पर धावा बोल दिया। किन्तु इस बार भी भग्नमनोरथ हो इन्हें वापिस जाना पड़ा। अल्लाउद्दीन जब वजीर हामिद खांका काम तमाम करनेका षड्यन्त्र कर रहे थे, उस समय बहोल फिरसे दिल्ली पर चढ़ आये। इस बार हामिद खांकी सहायतासे बहोलने दिल्लीमें प्रवेश किया। हामिदके घर पर बहोलके प्रतिदिन जाने आनेसे दोनोंमें खासा प्रेम हो गया। किन्तु बहोलके मनसे राज्य-पिपासा और हामिदका उच्छेद-संकल्प कब दूर होनेवाला था! छलसे बहोलने हामिदको कैद कर लिया और दिल्लीके राजसिंहासन पर अपना दखल जमाया। अब ८५५ हि० (१४५१ ई०की १९वीं अप्रिल)को भारतके सिंहासन पर बैठ उन्होंने अपने नामसे खुतबापाठ और सिक्का चलानेका हुकुम दे दिया। ये पुत्रकी तरह प्रजा-पालन करते हुए तथा मन्त्री और सेनानीको वश कर निष्कण्टक राज्य करने लगे।

राजा हो कर बहोलने दिल्लीके समीपवर्ती तथा अपने अधिकृत स्थानों और मुलतानमें अच्छा शासन कर अपनी कीर्त्ति कौमुदी फैलाई। इनके अच्छे शासनसे विरक्त हो कितने ही अल्लाउद्दीन-पक्षके अमीरोंने लोदी वंशका सत्ता मिटानेके लिये जौनपुरके शासनकर्त्ता सुलतान महमूदसे सहायता मांगी। तदनुसार महमूदने ६११ हिजरीमें दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। बहोल अपने पुत्र ख्वाजा बयाजिदको अनेक अमीरोंके साथ किलेकी रक्षा पर नियुक्त किया और आप लड़नेको मुस्तैद हुए। सन्धिकी बहुत कोशिश करने पर जब कोई फल न निकला, तब उन्होंने लड़ाई ठान दी। दोनोंमें घमसान युद्ध हुआ। अन्तमें जौनपुरका सेनापति फते खां या हिरवी बहोलकी सेनाके सामने न ठहर सका और कैद कर लिया गया। सुलतान महमूद पीठ दिखा कर भागे। इस समयसे बहोलकी राज्यपिपासा बलवती और भी हो गई। उन्होंने अपने बलसे पार्श्ववर्त्ती हिन्दू और मुसलमान राजाओंको हरा कर यहां अपनी धाक जमाई और उनकी सम्पत्तिका कुछ अंश अपना लिया। पीछे सुलतान अल्लाउद्दीनके आत्मीय मालिक बहानके उसकानेसे महमूद शर्कीने बहोल पर धावा बोल दिया। बचावका कोई रास्ता न देख बहोलको उनसे सन्धि करनी पड़ी। सन्धिकी शर्तोंके अनुसार बहोल केवल दिल्लीके अधिपति मुबारकशाहकी अधिकृत सम्पत्तिके सर्वाधिकारी हुए, पर बलपूर्वक छीनी हुई अन्य लोगोंकी सम्पत्ति उन्हें वापिस देनी पड़ी। कुछ दिनों बाद बहोलने शमसाबादके शासनकर्त्ता जूना खांको हराया और कर्णरायको वहांकी गद्दीका मालिक बनाया।

सुलतान बहोलके शासनसे विरक्त हो जौनपुरके राजा महमूदने उनके विरुद्ध युद्धयात्रा की। शमसाबादके निकट फिर दोनोंमें गहरी मुठभेड़ हुई। कुतुबखां लोदी कैद कर जौनपुर लाया गया। सुलतान महमूदके मरने बाद उनके लड़के महम्मदशाह राजा हुए और दोनोंके बीच सन्धि हो गई। लेकिन कुतुबखांको वापिस आये न देख बहोलने फिर महम्मदसे लड़ाई ठान दी। इस युद्धमें महम्मदकी ही जीत हुई। उन्होंने कर्णरायको राजगद्दीसे उतार कर पुनः जूना खांको शमसाबादकी राजगद्दी पर बिठाया

इस समय महम्मदकी आज्ञासे उनका छोटा भाई हसनखां मारा गया जिससे जौनपुरमें बड़ी हलचल मची। राजमाता बीबी रानीने छोटे पुत्रके वियोगसे दुःखित हो ज्येष्ठ महम्मदको दबानेके लिये कितने ही अमीर भेजे। उन लोगोंके हाथसे महम्मद यमपुरके मेहमान बने।

बीबी रानीकी आज्ञासे महम्मदका सबसे छोटा भाई हुसैन खां जौनपुरकी राजगद्दी पर बैठा। उसने बहोलके साथ मित्रता की। किंतु बहोलके शमसाबाद आक्रमण और जूना खांकी राज्यच्युतिसे विरक्त हो उसने दिल्ली पर चढ़ायी कर दी। कुछ दिनों तक परस्परमें खूब युद्ध चलता रहा। व्यर्थ दोनों तरफकी सेनाका विनाश देख दोनोंने आपसमें मेल कर लिया और अपने अपने देशको लौटे। इसके बाद बहोलने जौनपुर सेनाके प्रधान अहमद खां मेवातीको हरा कर अपने वश कर लिया।

इस समय बयानाके शासनकर्त्ता युसुफ खां थे। उन्होंने विद्रोही हो बहोलकी अधीनता छोड़ दी और

हुसेनके नामसे बयानामें खुत्वा पाठ और सिक्का चलाया। तीन वर्ष तक किसी प्रकारकी लड़ाई न हुई। बादमें हुसेनने बड़ी सेना ले कर बहोल पर कई बार चढ़ाई कर दी। सराई लस्करके युद्धके बाद दोनोंमें शान्ति स्थापित हो गई। ८९३ हिजरीमें फिर लड़ाई शुरू हुई। हुसेन खाँकी जीत देख कर कुतुब खाँने सन्धि करनेका प्रस्ताव किया। इसकी शर्तोंके अनुसार बहोल गंगाके उत्तर और हुसेन गंगाके दक्षिण भागके शासनाधिकारी हुए। अब युद्ध बंद हुआ। हुसेन जब अपने राज्यको लौट रहे थे इसी समय बहोलने पीछेसे उन पर आक्रमण कर धनरत्न छीन, उनके कितने ही प्रधान प्रधान व्यक्तियों को कैद कर लिया। हुसेन हार कर भागा। उनके अधिकृत कपिला, पटियाली, साकित, कोल और जलाली नामक स्थान बहोलके हाथ लगे। हुसेनखाँने फिरसे सेना इकट्ठी कर बहोलसे युद्ध छेड़ा। किंतु इस बार वे विशेष क्षति ग्रस्त हो जान ले कर रापरीकी ओर भागे। इस समय भी बहोलको मोटी रकम हाथ लगी थी। रापरीमें सुल्तान हुसेनखाँको हरा कर उन्होंने इटावा पर आक्रमण किया। इस समय वयनरके अधिपति थे राय तिलकचंद। उन्हों ने बहोलका पराक्रम सुन उनकी आधीनता स्वीकार कर ली। सुल्तानको खुश करनेकी इच्छासे जमुनाको पार कर राय तिलकचन्दने सुलतान हुसेन खाँको पन्नाकी ओर मार भगाया। इसी अवसर पर बहोलने जौनपुरको जीतनेकी आशासे सेना इकट्ठी की। हुसेन खाँ अबकी बार अपनी रक्षा किसी प्रकार न कर सका और बराइच को भागा। यहां भी वह निश्चित रूपसे नहीं रह सका। बहोलकी सेनाने उस पर वहां भी आक्रमण किया। रहब नदी (कालीनदी)के तट पर दोनों में खूब युद्ध चला। अन्तमें हुसेनकी हार हुई और जौनपुर राज्य बहोल के अधिकारमें आ गया। यहां वे मुबारक खाँको शासन कर्त्ता बना कर आप बदाऊँकी ओर चल दिये। अवसर पा हुसेनखाँने पुन जौनपुरका उद्धार कर यहांसे लोदियों को मार भगाया। पश्चात् बहोलके पुत्र बर्बाक और स्वयं सुल्तानने उस पर आक्रमण कर दिया। इस बार सुल्तान हुसेन खाँ हार कर बिहारको भागा।

बहोलने हल्दी नगरमें सुना, कि हमारा चचेरा भाई कुतुवा खाँ मर गया है उसी समय वे यहांसे चल दिये और उसका दफन किया। पीछे उन्हों ने उसको जौनपुर के राजसिंहासन पर अपने पुत्र बर्बाकको और कड़ामें ख्वाजा बयाजिदके पुत्र आजाम् हुमायूंको अधिष्ठित किया। चंदवारके रास्तामें धौलपुर पड़ा और यहांके राजाने उन्होंने बहुमूल्य पदार्थोंकी भेंट ली। यहांसे चल कर वे इनाहपुर ग्वालियर, बाड़ी आदि स्थानोंमें गये। यहांके राजाओं से भी इन्हें प्रचुर धन प्राप्त हुआ। लौटते समय इन्होंने इटावाके अधिपति राय दानदके पुत्र सगतसिंहको राजगद्दीसे उतार कर दिल्लीकी ओर प्रस्थान किया। दिन रात्रिके घोर परिश्रमसे पथ धूपमें निरंतर भ्रमणसे मार्गमें ही वे बीमार पड़े और ८९४ हिजरी (१४८८ ई०)-में मलावी ग्राममें इनका प्राणान्त हुआ। उन्होंने प्रायः ३८ वर्ष ८ मास और आठ दिन बड़ी धीरतासे राज्य किया था। इनके मरने पर उनके पुत्र सिकेन्दर लोदी दिल्लीके सिंहासन पर बैठे।

सुल्तान बहोल धार्मिक, वीर, साहसी और विद्वान् थे। उनमें दया, चतुरता और दानशीलताका भी अभाव नहीं था। वे साधुताके रक्षक थे। धार्मिक कर्मोंका करना और उसके नियमादि पालना उनका प्रधान कर्त्तव्य था। वे अपना अधिकांश समय साधु, सच्चरित्र और ज्ञानवान् पण्डितों के साथ बीताते, दरिद्र, दुःखियों को सदा अपनी हृदयमें रखते, आश्रितको कभी नहीं छोड़ते और दिनमें ५ बार नमाज पढ़ते थे।

बहक्षर (स० त्रि०) बहु अक्षरं यत्र। बहु अक्षरयुक्त पद।

बहग्नि (स० पु०) वेदोक्त विविध अग्नि।

बहध्याय (स० त्रि०) बहु अध्याय सम्पन्न।

बहन्न (स० त्रि०) बहु अन्न द्वारा उपेत।

बहप् (स० त्रि०) अल्पमय प्रदेशादि।

बहपत्य (स० पु० स्त्री०) बहूनि अपत्यानि यस्य। १ शूकर, सूअर। २ मूषक, मूसा।

बहभिधान (सं० क्लो०) बहुवचन।

बहन्न (स० पु०) १ मुद्गल्यका एक पुत्र। २ अनेक अश्व। (त्रि०) ३ बहु अश्वयुक्त।

बहदिन् (स० त्रि०) बहु अत्ति, अद् णिनि। बहुभोजक, बहुत खानेवाला।

बह्वादि (स० पु०) बहु आदि करके पाणिन्युक्त शब्दगण। गण यथा—बहु, पद्धति, अञ्चति, अङ्कति, अंहति, शकटि, शक्ति, शारि, वारि, राति, राधि, अहि, कपि, यष्टि, मुनि, चण्ड, अराल, कृपण, कमल, विकट, विशाल, विसङ्कट, भरुज, ध्वज, चन्द्रभाग, कल्याण, उदार, पुराण, अहन्, क्रोड, नख, खुर, शिखा, बाल, शफ, गुद, भग, गल और राग।

बहनशिल्व (स० क्ली०) १ बह्वाशिनो भाव त्व। बहु भोजनकारीका काय या भाव, बहुत भोजन।

बह्वाशिन् (स० त्रि०) बहु अश्नातीति बहु अश णिनि। बहु भोजनशील, बहुत खानेवाला।

बह्वाश्चर्य (स० त्रि०) बहु आश्चर्ययुक्त।

बह्वीश्वर (स० क्ली०) नर्मदा तटस्थ एक पवित्र शैवक्षेत्र।

बहलपुर—पञ्जाबप्रदेशके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० २७ ४२´से ३० २५´ उ० तथा देशा० ६६ ३१´ से ७४ १´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १५११८ वर्गमीलके करीब है जिनमेंसे १८८० वर्गमील स्थान प्रदेश है। इसके उत्तर पश्चिममें सिन्धु और शतद्रु नदी बहती है।

बहल नगरमें लुंगी, सूफी आदि रेशमी कपड़े बुननेका कारबार होता है। नील, रुई और धान्यादि शस्य ही यहांका प्रधान वाणिज्यद्रव्य है। स्थानीय खेती बारीकी सुविधाके लिये नाना स्थानोंमें नहर काटी गई है। इण्डस भेली रेलवे लाइन इसी राज्य हो कर गई है।

दुरानी साम्राज्यकी उच्छृङ्खलता और शाहसुजाके काबुलसे भागने पर यहांके राजवंशके पूर्वपुरुष सिन्धुप्रदेशसे आ कर यहां स्वाधीनभावमें राज्य करने लगे। पञ्जाबमें रणजित्सिंहके अभ्युदयसे डर कर यहांके नवाब बहवल खाँने अङ्गरेजोंसे आश्रय मांगा। परन्तु अङ्गरेज लोग उन्हें आश्रय देने राजी न हुए। १८०६ ई०में लाहोरमें जो सन्धि हुई उससे रणजितका शतद्रुके दक्षिण सीमान्त गत स्थानों तक अधिकार कायम रहा। १८३३ ई०में वाणिज्य-व्यपदेशमें अङ्गरेजोंने नवाबके साथ सन्धि कर ली। फिर १८३४ ई०में शाहसुजाको काबुल-तख्त पर बिठानेके लिये बहलपुर-राजके साथ अङ्गरेज गवर्मेण्टका राजकीय सम्बन्ध स्थापित हुआ। सन्धिपत्रमें शर्त यों थी, "गवर्मेण्ट आपद् विपद्में नवाबकी सहायता करेंगे और नवाब भी जरूरत पड़ने पर अङ्गरेजोंको शत्रुसे लड़नेमें मदद पहुंचायेंगे। नवाबवंशधरगण यहांके एकमात्र अधिकारी रहेंगे। गवर्मेण्ट शासन विषयमें कुछ भी छेड़छाड़ नहीं करेगी।"

प्रथम अफगान युद्धमें नवाबने अङ्गरेजोंको खासी मदद पहुंचाई थी। १८४७ ई०के मूलतान-युद्धमें उन्होंने सेनापति सर हार्बर्ट एडवर्डिसके साथ मिल कर युद्ध किया था। इस कार्यके पारितोषिक स्वरूप उन्हें ब्रिटिश सरकारकी ओरसे सब्जलकोट और भौङ्गप्रदेश तथा यावज्जीवन लाख रुपयेकी वृत्ति मिली थी। उनकी मृत्युके बाद उनके इच्छानुसार ३य पुत्र राजा हुए; किन्तु उनके बड़े भाईने उन्हें राज्यच्युत करके सिंहासन पर कब्जा जमाया। अङ्गरेजोंका आश्रय पा कर ३य पुत्र बहलपुरके राजस्वसे वृत्ति पाने लगे। अङ्गरेजोंके साथ जो शर्तें थीं उसे तोड़ देनेके कारण वे लाहोर दुर्गमें आबद्ध हुए। यहां १८६२ ई०में उनका प्राणान्त हुआ।

बड़ेके यथेच्छाचार और उत्पीड़नसे तंग आ कर प्रजा १८६३ और १८६६ ई०में बागी हो गई। नवाबने धीरोचित साहससे दोनों ही दफा विद्रोहियोंको उपयुक्त शिक्षा दी थी। १८६६ ई०में षड्यन्त्रकारियोंने विषयोगसे उनके प्राण ले लिये। पीछे उनका चार वर्षका लड़का सादिक महम्मद खाँ (४र्थ) राजतख्त पर बैठा। बालक राजके शासनकालमें,तथा पूर्वविद्रोहमें राज्यभर अशान्ति फैल गई था। अङ्गरेज गवर्मेण्टने राज्यनाशकी आशङ्कासे बालकका राज्यकार्यभार अपने हाथ ले लिया। पीछे १८७९ ई०में बालिग होने पर राज्यभार उन्हें लौटा दिया गया। १८७८-८० ई०के अफगान-युद्धके समय नवाबने धनजनसे अङ्गरेजोंको सहायता पहुंचाई थी। १८९९ ई०में उनकी मृत्यु हुई। पीछे महम्मद बहवल खाँ (५म) राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। राज्य-सुख इनके भाग्यमें बदा नहीं था। चार वर्ष समुद्रयात्रामें मक्काकी तीर्थयात्रा करते समय १९०७ ई०के फरवरी मासमें उनका प्राणान्त हुआ। पीछे उनके लड़के हाजी सादिक महम्मद खाँ अस्थायी राज

तथा देशा० ८४ १२ से ५ १७´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३३४ वर्गमील और जनसंख्या साढ़े तीन लाखके करीब है। इसके उत्तरमें गङ्गा बहती है। इसमें पटना और फुल्वारी नामके २ शहर और १७५ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त विभागका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २५ ३७´ उ० तथा देशा० ८५ ८´ गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित है। प्राचीन पटना राजधानीके पश्चिम उपकण्ठमें अवस्थित रहने और यूरोपीयगणके वासस्थान होनेके कारण यह स्थान विशेष समृद्धिशाली हो गया है। प्राचीन गङ्गा नदीके खातके ऊपर राजकीय अट्टालिका और अङ्गरेजों के आवास भवन अवस्थित हैं। इस नगरके मिठापुर नामक विभागमें इष्ट इण्डिया और पटना-गया रेलवेका ष्टेशन है। बांकीपुरसे प्राचीन पटना राजधानीमें जाने आनेकी सुविधाके लिये हालमें एक और स्टेशन खोला गया है। यहांसे आध कोसकी दूरी पर गोला नामक स्थान है। यहांका गोलघर देखने लायक है। स्टेशनके पास ही कारागार है जहां करीब पांच सौ कैदी रखे जाते हैं। १८८३ ई०में स्थापित 'विहार नेशनल कालेज'में बी० ए० तककी पढ़ाई होती है। इसके अलावा यहां जनाना-हाई स्कूल भी है जो पटना विश्वविद्यालयसे सम्बन्ध रखता है।

पटना देखो।

बांकीपुर—बारकपुरके उत्तर पलताके निकटवर्त्ती एक प्राचीन ग्राम। यह हुगली नदीके किनारे अवस्थित है। पहले यहां अस्टेण्ड कम्पनी (Ostend Compa y)-की वाणिज्य कोठी थी। अष्ट्रियाराजने पूर्व भारतीय वाणिज्यका अंश लेनेकी आशासे १७२२-२३ ई०में यह वणिकसमिति संगठन की। इसके कर्मचारिगण अकसर अंगरेज और ओलन्दाज लोग होते थे। जर्मन सम्राट्के भारत-वाणिज्य लूटनेसे उक्त वणिक समितिका अधःपतन हुआ। जर्मन वणिकदलने भारतवर्षमें आ कर मन्द्राजके कोभेलङ्ग और बङ्गालके बांकीपुरमें कोठी खोली। जर्मनोंके अभ्युदय पर अंगरेज, फरासी और ओलन्दाज वणिक्सम्प्रदाय विचलित हो गये। १७२७ ई०में भियेना राजदरबारके बाधा डालने और धीरे धीरे अन्यान्य सम्प्रदायोंकी उन्नति तथा समुद्रपथके वाणिज्य प्रभावसे इनका वाणिज्योद्यम बिलकुल जाता रहा। १७४४ ई०में अंगरेज, ओलन्दाज और जर्मनोंने मिल कर मुसलमान फौजदारके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। मुसलमानी सेनाके बांकीपुरमें घेरा डालने पर अस्टेण्ड कम्पनीके एजेण्टने गोला वर्षण द्वारा उन्हें आहत कर डाला जिससे वे सबके सब प्राण ले कर भागे। जर्मन वणिकसम्प्रदायकी वाणिज्यरूपी आशा लता जड़से उखाड़ दी गई। अवशिष्ट जर्मन कर्मचारिगण इस स्थानका परित्याग कर अपना बोरिया बंधना ले यूरोप भागे।

बांकुड़ा—बङ्गालके वर्द्धमान विभागान्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २२° ३८ से २३ ३८´ उ० तथा देशा० ८६ ३६´ से ८७ ४६´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर और पूर्वमें दामोदर नदी, दक्षिणमें मेदिनीपुर और पश्चिममें मानभूम जिला है। भूपरिमाण २६२१ वर्गमील है।

इसका पूर्वांश प्रायः समतल है। जितना ही उत्तर और पश्चिम बढ़ते जायें, उतना ही गण्डशैल और जङ्गलभूमि नजर आती है। यह विस्तीर्ण शैलश्रेणी समुद्रपृष्ठसे १४०० फुट ऊंची है। सुशुनिया नामक पहाड़ १४४२ फुट ऊंचा है। उस पहाड़के शिखर पर राजा चन्द्रवर्मदेवकी एक शिलालिपि पाई गई है। दामोदर और द्वलकिशोर या द्वारकेश्वर यहांकी प्रधान नदी हैं। वर्षा ऋतुमें इनके कलेवरकी वृद्धि होती है। इस समय पर्वत परका जल हठात् बाढ़की तरह आ कर आस पासके स्थानोंको बहा देता है। ऐसी बाढ़का आगमनकाल निश्चित नहीं रहता जिससे सैकड़ों आदमी प्राणसे हाथ धो बैठते हैं। विष्णुपुर नगरके समीप पूर्वतन राजाओंकी अक्षय कीर्त्ति देखनेमें आती है।

पहले यह स्थान वर्द्धमान चकलाके अन्तर्भुक्त था। १७६० ई०की २७ वीं सितम्बरको यह वृटिशगवर्मेण्टके हाथ लगा। अंगरेजोंके बंगालकी दीवानी पानेके बाद भी बांकुड़ा (उस समय विष्णुपुर जमींदारी नामसे प्रसिद्ध था) वीरभूम जिलेके अन्तर्गत था।

विष्णुपुर राजवंशका इतिहास ले कर इस जिलेका विस्तृत इतिहास बना है। ११वीं शताब्दीमें यह स्थान विशेष समृद्धिशाली था। राजप्रासाद, नाट्यशाला, अश्व और हस्तिशाला, सेनावारिक, अस्त्रागार, धनागार,

देवमन्दिर और पुष्करिणी आदिसे नगरने अपूर्व शोभा धारण की थी। परवर्त्तीकालमें यहांके हिन्दूराजगण कभी तो शत्रुभावमें मुसलमान नवाबों के प्रतिकूलाचरण करते थे और कभी मित्रभावमें उन्हें सहायता पहुंचाते थे। ये लोग कभी भी मुर्शिदाबादके राजदरबारमें हाजिर नहीं होते थे। १८वीं शताब्दीमें इस राजवंशकी अवनति हुई। मराठा डकैतोंके आक्रमण, मुसल्मान नवाबोंके अयथा करसंग्रह और १७७० ई०के महादुर्भिक्ष से विष्णुपुर जनहीन हो गया। विष्णुपुर राज्यका अधिकांश स्थान अरण्यमें परिणत हुआ। इस प्रकार धनहीन हो जानेसे राजाने अपनी मदनमोहन देवमूर्त्ति कलकत्ता वासी-गोकुलचन्द्र मित्रके यहां बंधक रखी। पीछे अर्थ संग्रह करके उक्त मूर्त्ति छुड़ानेके लिये उन्होंने मन्त्रीको कलकत्ता भेजा। गोकुलमित्रने रुपये ले कर भी देवमूर्त्ति लौटाना न चाहा। इस पर राजाने देवमूर्त्तिकी पुनःप्राप्तिके लिये कलकत्ते सुप्रिमकोर्टमें नालिश ठोंक दी। देवमूर्त्ति उन्हें वापस मिली। विस्तृत विवरण विष्णुपुर शब्दमें देखो।

अंगरेजोंके अधीन आने पर भी यहांकी दुर्गति दूर न हुई। महाराष्ट्रीय और मुसलमानोंके अयथा करसंग्रहसे अव्याहति पाने और प्रजाका कष्ट दूर होने पर भी १७७० ई०के दुर्भिक्षसे जो लोगोंकी महती क्षति हुई थी उससे वे अपनी अवस्था जरा भी सुधार न सके। विष्णुपुरके ध्वंसावशिष्ट दुर्गमें एक प्राचीन कमान रखी हुई है जो १२॥ फुट लम्बी है। प्रवाद है, कि यह कमान देवतासे राजाको मिली थी।

इस जिलेमें ३ शहर और ३५१२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ग्यारह लाखसे ऊपर है, जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या अधिक है। इस जिलेमें कोढ़की शिकायत बहुत है। महामारीका भी अकसर प्रकोप देखा जाता है। यहांकी प्रधान उपज धान, ईख, गेहूं, मकई, लाह और रुई है। पहले यहां नीलकी अच्छी खेती होती थी, पर अब उसका बिलकुल ह्रास हो गया है। रेशमी, सूतीके कपड़े, पीतल और तांबेके अच्छे अच्छे बरतन तैयार होते हैं। बांकुड़ा शहरमें टसरका अच्छा कारबार होता है।

विद्या शिक्षामें यह जिला बहुत बढ़ा चढ़ा है। अभी यहां कुल मिला कर १३८८ स्कूल हैं जिनमेंसे एक शिल्प कालेज है। स्कूलके अलावा १० अस्पताल और कुष्ठाश्रम हैं।

२ उक्त जिलेका पश्चिम उपविभाग। यह अक्षा० २२° ३८' से २३° ३८' उ० तथा देशा० ८६° ३६' से ८७° २५' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६२१ वर्ग मील और जनसंख्या ७ लाखसे ऊपर है। इसमें बांकुड़ा नामका १ शहर और ४०६१ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २३° १४' उ० तथा देशा० ८७° ४' पू० धलकिशोर नदीके उत्तरी किनारे पर अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः २०७३७ है, हिन्दूकी संख्या ज्यादा है। कहते हैं, कि बाकूरायने इस नगरको बसाया था, इसीसे इसका बांकुड़ा नाम पड़ा है। उनके वंशधर आज भी इस शहरमें वास करते हैं। टसरके कपड़ेका यहां अच्छा कारबार चलता है। १६०२ ई०में जो कुष्ठाश्रम खोला गया है उसमें ७२ रोगी रखे जाते हैं। जलवायु स्वास्थ्यप्रद है।

विष्णुपुर देखो।

बांकुड़ी (हिं० स्त्री०) बांकड़ी देखो।

बांग (फा० स्त्री०) १ शब्द, आवाज। २ चिल्लाहट, पुकार। ३ वह ऊंचा शब्द या मन्त्रोच्चारण जो नमाज का समय सूचित करनेके लिये कोई मुल्ला मसजिदमें करता है, अजान। ४ प्रातःकालके समय मुर्गेके बोलने का शब्द।

बांगड़ू (हिं० वि०) मूर्ख, बेवकूफ।

बांगर (हिं० पु०) १ छकड़ा गाड़ीका वह बांस जो फड़के ऊपर लगा कर फड़के साथ बांध दिया जाता है। २ अवधमें पाये जानेवाले एक प्रकारके बैल। ३ खादरके विरुद्ध वह भूमि जो कुछ ऊंचे पर अवस्थित हो, वह भूमि जो नदी झील आदिके बढ़ने पर भी कभी पानीमें न डूबे।

बांगा (हिं० पु०) वह रुई जो ओटी न गई हो, कपास।

बांगुर (हिं० पु०) पशुओं या पक्षियोंके फंसानेका जाल, फंदा।

बांचना (हिं० क्रि०) १ पढ़ना। २ शेष रहना, बाकी रहना। ३ बचाना, छोड़ देना।

बांछना (हिं० क्रि०) १ अभिलाषा करना, चाहना, इच्छा

करना। २ अच्छी या बुरी चीजें चुनना, छाटना।

बाझ (हि० स्त्री०) १ वन्ध्या, वह स्त्री जिसे सन्तान न होती हो। २ कोई मादा जिसे बच्चा न होता हो। ३ एक प्रकारका पहाड़ी वृक्ष। इसके फलोंकी गुठलियां बच्चों के गलेमें, उनको रोग आदिसे बचानेके लिये बांधी जाती है।

बाझककोली (हि० स्त्री०) वन परवल, जेतरसा।

बांझपन (हि० पु०) वन्ध्यात्व, बाझ होनेका भाव।

बाट (हि० पु०) १ बाटनेकी क्रिया या भाव। २ भाग, हिस्सा। ३ घास या पयालका बना हुआ एक मोटा-सा रस्सा। गावके लोग इसे कुआर सुदी १४ को बनाते हैं और दोनों ओरसे कुछ कुछ लोग इसे पकड़ कर तब तक खींचातानी करते हैं जब तक वह टूट नहीं जाता। ४ गौओं आदिके लिये एक विशेष प्रकारका भोजन। इसमें खरी, बिनौला आदि चीजें रहती हैं। इसके खानेसे उनका दूध बढ़ता है। ५ ढेंडर नामकी घास। यह धानके खेतों में उग कर उसकी फसलको हानि पहुंचाती है।

बाटचूट (हि० स्त्री०) १ भाग, हिस्सा। २ देन लेन, देना दिलाना।

बाटना (हि० क्रि०) १ किसी चीजके कई भाग करके अलग अलग रखना। २ विभाग करना, हिस्सा लगाना। ३ वितरण करना, थोड़ा थोड़ा सबको देना।

बाटा (हि० पु०) १ बाटनेकी क्रिया या भाव। २ भाग, हिस्सा। ३ गाने बजानेवालों आदिका वह इनाम जो वे आपसमें बाट लेते हैं।

बाड़ (हि० पु०) १ दो नदियोंके संगमके बीचकी भूमि। यह भूमि नदियों की बाढ़से डूब जाती है और फिर कुछ दिनोंमें निकल आती है। इस प्रकारकी भूमि बड़ी उपजाऊ होती है। (वि०) २ बाड़ा देखो।

बाड़ा (हि० पु०) १ वह पशु जिसकी पूंछ कट गई हो। २ परिवारहीन पुरुष, वह मर्द जिसके लड़केवाले न हों। ३ सोंटा। (वि०) १ पुच्छहीन, जिसके पूंछ न हो।

बाँड़ी (हि० स्त्री०) १ पुच्छहीन गाभी, बिना पूंछकी गाय। २ कोई मादा पशु जिसकी पूंछ न हो या कट गई हो। ३ छोटी लाठी, छड़ी।

बाँड़ीबाज (हि० पु०) १ लाठीबाज, लकड़ीसे लड़नेवाला। २ उपद्रवी, शरारती।

बाद (फा० पु०) सेवक, दास।

बाँदर (हि० पु०) बन्दर देखो।

बाँदा (हि० पु०) १ एक प्रकारकी वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उग कर पुष्ट होती है। २ किसी वृक्ष पर उगी हुई दूसरी वनस्पति।

बांदी (हि० स्त्री०) दासी, लौंडी।

बादू (हि० पु०) १ कैदी, बंधुआ।

बाँध (हि० पु०) नदी या जलाशय आदिके किनारे मिट्टी पत्थर आदिका बनाया हुआ धुस्स। यह पानीकी बाढ़ आदि रोकनेके लिये बनाया जाता है।

बाँधना (हि० क्रि०) १ रस्सी, तागे, कपड़े आदिकी सहायतासे किसी पदार्थको बंधनमें करना। २ ऐसा प्रबंध या निश्चय कर देना जिससे किसीको किसी विशेष प्रकारसे व्यवहार करना पड़े, पाबंद करना। ३ कसने या जकड़नेके लिये रस्सी आदि लपेट कर उसमें गांठ लगाना। ४ पकड़ कर बंद करना, कैद करना। ५ चारों ओरसे बटोरे या लपेटे हुए कपड़े आदिके कोनों को चारों ओरसे बटोर कर और गांठ दे कर मिलाना जिसमें संपुट सा बन जाय। ७ मकान आदि बनाना। ८ प्रेम पाशमें बद्ध करना। ९ रचनाके लिये सामग्री जोड़ना, उपक्रम करना। १० मन्त्र तन्त्रकी सहायतासे अथवा और किसी प्रकार प्रभाव, शक्ति या आशि आदिको रोकना। ११ नियत करना, मुकर्रर करना। १२ पानीका बहाव रोकनेके लिये बांध आदि बांधना। १३ चूर्ण आदिको हाथों में दबा कर पिंडके रूपमें लाना। १४ किसी प्रकारका अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना। १५ ठीक करना, दुरुस्त करना। १६ क्रम या व्यवस्था आदि ठीक करना।

बाँधनू (हि० पु०) १ उपक्रम, म[illegible] २ कपड़े की रंगाई-में वह बन्धन जो रंगरेज [illegible] रंगाई आदि रखनेके [illegible] या और कोई ऐसा [illegible] गया हो। ४ कोई बात [illegible] उसके संबंधमें तरह तरह[illegible]

मिथ्या अभियोग, झूठा दोष। ६ कल्पित बात, मनसे गढ़ी हुई बात।

बाँब ( हिं० पु० ) सांपके आकारकी एक प्रकारकी मछली।

बाँबी ( हिं० स्त्री० ) १ दीमकके रहनेका भीटा, बँबोठा।

बाँमी ( हिं० स्त्री० ) बाँबी देखो।

बाँयाँछोड़ो ( हिं० स्त्री० ) लहसुनियाकी जातिका एक प्रकारका रत्न।

बाँवारथी ( हिं० पु० ) वामन, बौना।

बाँयाँ ( हिं० स्त्री० ) बायाँ देखो।

बाँस ( हिं० पु० ) १ तृण जातिकी एक प्रसिद्ध वनस्पति। इसके काण्डों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गांठे होती हैं और गांठों के बीचका स्थान प्राय कुछ पोला होता है। विशेष विवरण व श शब्दमें देखो। २ भाला। ३ पीठके बीचकी हड्डी जो गर्दनसे कमर तक चली गई है, रीढ़। ४ नाव खेनेकी लग्गी। ५ सवा तीन गजकी एक माप, लाठा।

बाँसखाली—चट्टग्राम जिलेके अन्तर्गत एक प्रधान वाणिज्य स्थान। यह अक्षा० २२ ५०´ १५˝ उ० तथा देशा० ९१ ३१´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां चावलका वाणिज्य जोरों चलता है।

बाँसगवा—१ युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलान्तर्गत पदरौना तहसीलका एक ग्राम। यह अक्षा० २६ ४८ उ० तथा देशा० ८४ १२´ पू० गोरखपुर शहरसे ६४ मील पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या पांच हजारसे ऊपर है।

बाँसगाव—१ युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा २६ १४´से २६ ४३´ उ० तथा देशा० ८३ ४´से ८३´ ४४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६१४ वर्गमील और जनसंख्या प्राय ४३८३६४ है। इसमें ४ शहर और १६६७ ग्राम लगते हैं। इसके उत्तर आमी नदी, दक्षिण गोगरा और पूर्वमें रामी है।

२ उक्त उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २६´३३´ उ० तथा देशा० ८३ २२´ पू० गोरखपुर शहरसे १६ मील दक्षिण पड़ता है। जनसंख्या पांच हजारसे ऊपर है। शहरमें दो स्कूल हैं।

बांसदा—१ बम्बईके सूरत एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २० ४२´से २० ५६´ उ० तथा देशा० ७३ १८ से ७४ ३४´ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २१५ वर्गमील है। इसके पश्चिममें सूरत जिला, उत्तरमें बड़ौदाराज्य, पूर्वमें दङ्ग राज्य और दक्षिणमें धरमपुर राज्य है। इस राज्यका अधिकांश स्थान पर्वत और जङ्गलमय है। कहीं कहीं समतल क्षेत्र भी देखा जाता है। धान, चना और उड़द यहांकी प्रधान उपज है। सूती फीता, चटाई, पगा, पशमीना गलीचा भी प्रस्तुत होता है।

यहांके सरदार राजपूत वंशीय हैं। ये लोग अपनेको हिन्दू और मोलाङ्कि नामक राजपूतवंशसे उत्पन्न बतलाते हैं। बांसदा नगरके समीपस्थ दुर्भेद्य प्राचीर दुर्ग और सैकड़ों देवमन्दिरादिका ध्वंसावशेष इसकी पूर्व समृद्धिका परिचायक है। मुसलमानी अमलके पहले इनकी राज्य सीमा समुद्रोपकूल तक फैली हुई थी। मुसलमानोंकी चलतीमें इन्होंने जङ्गल प्रदेशमें आश्रय लिया। महाराष्ट्र लोग इनसे कर लिया करते थे। किन्तु १८०२ ई०में बसाई सन्धिके बाद पेशवा ने करस ग्रहका भार अङ्गरेजोंके ऊपर सौंप दिया। वर्तमान राजाका नाम महरूल श्रीइन्द्रसिंहजी प्रतापसिंहजी राजा साहब है। सरकारको ओरसे इन्हे ९ सलामी तोपें मिलती हैं। इनके पास १५० सेना और १४ कमान है। मुकद्दमेका विचार राजा स्वय करते हैं। किसीको फांसी देनेमें इन्हे पालिटिकल एजेण्टकी सलाह लेनी पड़ती है। राजाको दत्तक पुत्र ग्रहणका अधिकार है। बड़े लड़केही राज सिंहासनके अधिकारी होते हैं।

राज्यकी जनसंख्या ४० हजारसे ऊपर है जिनमेंसे हिंदूकी संख्या सबसे अधिक है यहां की भाषा गुजराती है। राजस्व ३३४३४७ रु० है जिनमेंसे वृटिशसरकारको ७३५१ रु० कर और १५०० रु० चौथ स्वरूप देने पड़ते हैं। राज्य भरमें ४ बालक-स्कूल और १ बालिका-स्कूल है। जङ्गली असभ्य जातिके लड़कोंको मुफ्तमें शिक्षा दी जाती है। शिक्षाविभागमें राज्यका पांच हजारसे ज्यादा रुपया खर्च होता है। राज्यकी ओरसे एक अस्पताल भी खुला है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २० ४५´ उ० तथा देशा० ७३ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ४ हजारके करीब है। राजाके अनुग्रहसे यहां बालक और

१० ४१ 70

करना। २ अच्छी या बुरी चीजें चुनना छाटना।

बांझ ( हि० स्त्री० ) १ वन्ध्या, वह स्त्री जिसे सन्तान न होती हो। २ कोई मादा जिसे बच्चा न होता हो। ३ एक प्रकारका पहाडी वृक्ष। इसके फलों की गुठलिया बच्चो के गलेमें, उनको रोग आदिसे बचानेके लिये बाधी जाती है।

बांझककोली ( हि० स्त्री० ) वन परवल, खेखसा।

बांझपन ( हि० पु० ) वन्ध्यात्व, बाझ होनेका भाव।

बांट ( हि० पु० ) १ बाटनेकी क्रिया या भाव। २ भाग, हिस्सा। ३ घास या पयालका बना हुआ एक मोटा-सा रस्सा। गांवके लोग इसे कुवार सुदी १४ को बनाते हैं और दोनो ओरसे कुछ कुछ लोग इसे पकड कर तब तक खींचातानी करते हैं जब तक यह टूट नहीं जाता। ४ गौओ आदिके लिये एक विशेष प्रकारका भोजन। इसमें खरी, बिनौला आदि चीजे रहती हैं। इसके खानेसे उनका दूध बढता है। ५ ढेडर नामकी घास। यह धानके खेतो में उग कर उसकी फसलको हानि पहुंचाती है।

बांटचूट ( हि० स्त्री० ) १ भाग, हिस्सा। २ देन लेन, देना दिलाना।

बांटना ( हि० क्रि० ) १ किसी चीजके कई भाग करके अलग अलग रखना। २ विभाग करना, हिस्सा लगाना। ३ वितरण करना, थोडा थोडा सबको देना।

बांटा ( हि० पु० ) १ बांटनेकी क्रिया या भाव। २ भाग, हिस्सा। ३ गाने बजानेवालो आदिका वह इनाम जो वे आपसमें बांट लेते हैं।

बांड ( हि० पु० ) १ दो नदियो के संगमके बीचकी भूमि। यह भूमि नदियो की बाढसे डूब जाती है और फिर कुछ दिनोंमें निकल आती है। इस प्रकारकी भूमि बडी उपजाऊ होती है। ( वि० ) २ बाडा देखो।

बांडा ( हि० पु० ) १ वह पशु जिसकी पूंछ कट गई हो। २ परिवारहीन पुरुष, वह मर्द जिसके लडकेबाले न हों। ३ तोता। ( वि० ) १ पुच्छहीन, जिसके पूंछ न हो।

बांडी ( हि० स्त्री० ) १ पुच्छहीन गाभी, बिना पूंछकी गाय। २ कोई मादा पशु जिसकी पूंछ न हो या कट गई हो। ३ छोटी लाठी, छडी।

बांडीबाज ( हि० पु० ) १ लाठीबाज, लकडीसे लडनेवाला। २ उपद्रवी, शरारती।

बांद ( फा० पु० ) सेवक, दास।

बांदर ( हि० पु० ) बंदर देखो।

बांदा ( हि० पु० ) १ एक प्रकारकी वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओ पर उग कर पुष्ट होती है। २ किसी वृक्ष पर उगी हुई दूसरी वनस्पति।

बांदी ( हि० स्त्री० ) दासी, लौंडी।

बांदू ( हि० पु० ) १ कैदी, बंधुआ।

बांध ( हि० पु० ) नदी या जलाशय आदिके किनारे मिट्टी पत्थर आदिका बनाया हुआ धुस्स। यह पानीकी बाढ आदि रोकनेके लिये बनाया जाता है।

बांधना ( हि० क्रि० ) १ रस्सी, तागे, कपडे आदिकी सहायतासे किसी पदार्थको बंधनमें करना। २ ऐसा प्रबंध या निश्चय कर देना जिससे किसीको किसी विशेष प्रकारसे व्यवहार करना पडे, पाबंद करना। ३ कसने या जकडनेके लिये रस्सी आदि लपेट कर उसमें गांठ लगाना। ४ पकड कर बंद करना, कैद करना। ५ चारों ओरसे बटोरे या लपेटे हुए कपडे आदिके कोनो को चारो ओरसे बटोर कर और गांठ दे कर मिलाना जिसमें संपुट सा बन जाय। ७ मकान आदि बनाना। ८ प्रेम पाशमें बद्ध करना। ९ रचनाके लिये सामग्री जोडना, उपक्रम करना। १० मन्त्र तन्त्रकी सहायतासे अथवा और किसी प्रकार प्रभाव, शक्ति या गति आदिको रोकना। ११ नियत करना, मुकर्रर करना। १२ पानीका बहाव रोकनेके लिये बांध आदि बाँधना। १३ चूर्ण आदिको हाथो में दबा कर पिण्डके रूपमें लाना। १४ किसी प्रकारका अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना। १५ ठीक करना, दुरुस्त करना। १६ क्रम या अवस्था आदि ठीक करना।

बांधनू ( हि० पु० ) १ उपक्रम, मंसूबा। २ कपडेकी रंगाई-में वह बन्धन जो रंगरेज लोग चुनरी या लहरियेदार रंगाई आदि रंगनेके पहले कपडेमें बांधते हैं। ३ चुनरी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बांध कर रंगा गया हो। ४ कोई बात होनेवाली मान कर पहलेसे ही उसके संबंधमें तरह तरहके विचार, ख्याली पुलाव। ५

मिथ्या अभियोग, झूठा दोष। ६ कल्पित बात, मनसे गढ़ी हुई बात।

बाँच (हिं० पु०) सांपके आकारकी एक प्रकारकी मछली।

बाँबी (हिं० स्त्री०) १ दीमके रहनेका भीटा, बमीठा।

बाँभी (हिं० स्त्री०) बाँबी देखो।

बायाँछोड़ो (हिं० स्त्री०) लहसुनियाकी जातिका एक प्रकारका रत्न।

बाँवारथी (हिं० पु०) वामन, बौना।

बाँयाँ (हिं० स्त्री०) बायाँ देखो।

बाँस (हिं० पु०) १ तृण जातिकी एक प्रसिद्ध वनस्पति। इसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गांठें होती हैं और गांठों के बीचका स्थान प्रायः कुछ पोला होता है। विशेष विवरण वंश शब्दमें देखो। २ भाला। ३ पीठके बीचकी हड्डी जो गर्दनसे कमर तक चली गई है, रीढ़। ४ नाव खेनेकी लग्गी। ५ सवा तीन गजकी एक माप, लाठा।

बाँसखाली—चट्टग्राम जिलेके अन्तर्गत एक प्रधान वाणिज्य स्थान। यह अक्षा० २२ ५०´ १५´´ उ० तथा देशा० ९१ ´३१´´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां चावलका वाणिज्य जोरों चलता है।

बाँसगवा—१ युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलान्तर्गत पदरौना तहसीलका एक ग्राम। यह अक्षा० २६ ४८ उ० तथा देशा० ८४ १२´ पू० गोरखपुर शहरसे ६४ मील पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या पांच हजारसे ऊपर है।

बाँसगांव—१ युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २६ १४´से २६ ४३´ उ० तथा देशा० ८३ ४´से ८३ ४४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६१४ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ४३८३६४ है। इसमें ४ शहर और १६६७ ग्राम लगते हैं। इसके उत्तर अमी नदी, दक्षिण गोगरा और पूर्वमें राप्ती है।

२ उक्त उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २६´३३´ उ० तथा देशा० ८३ २२´ पू० गोरखपुर शहरसे १६ मील दक्षिण पड़ता है। जनसंख्या पांच हजारसे ऊपर है। शहरमें दो स्कूल हैं।

बांसदा—१ बम्बईके सूरत एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २० ४२´से २० ५६´ उ० तथा देशा० ७३ १८ से ७४ ३४´ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २१५ वर्गमील है। इसके पश्चिममें सूरत जिला, उत्तरमें बड़ौदाराज्य, पूर्वमें दंग राज्य और दक्षिणमें धरमपुर राज्य है। इस राज्यका अधिकांश स्थान पर्वत और जङ्गलमय है। कहीं कहीं समतल क्षेत्र भी देखा जाता है। धान, चना और उड़द यहांकी प्रधान उपज है। सूती फीता, चटाई, पग्गा, पशमीना गलीचा भी प्रस्तुत होता है।

यहांके सरदार राजपूत वंशीय हैं। ये लोग अपनेको हिन्दू और सोलाङ्कि नामक राजपूतवंशसे उत्पन्न बतलाते हैं। बांसदा नगरके समीपस्थ दुर्भेद्य प्राचीर दुर्ग और सैकड़ों देवमन्दिरादिका ध्वंसावशेष इसकी पूर्व समृद्धिका परिचायक है। मुसलमानी अमलके पहले इनकी राज्य-सीमा समुद्रोपकूल तक फैली हुई थी। मुसलमानोंकी चलतीमें इन्होंने जङ्गल प्रदेशमें आश्रय लिया। महाराष्ट्र लोग इनसे कर लिया करते थे। किन्तु १८०२ ई०में बसाइ सन्धिके बाद पेशवा ने करस ग्रहका भार अंगरेजोंके ऊपर सौंप दिया। वर्तमान राजाका नाम महरवल श्रीइन्द्रसिंहजी प्रतापसिंहजी राजा साहब हैं। सरकारको ओरसे इन्हें ६ सलामी तोपें मिलती हैं। इनके पास १५० सेना और १४ कमान है। मुकद्दमेका विचार राजा स्वयं करते हैं। किसीको फांसी देनेमें इन्हें पालिटिकल एजेण्टकी सलाह लेनी पड़ती है। राजाको दत्तक पुत्र ग्रहणका अधिकार है। बड़े लड़केही राजसिंहासनके अधिकारी होते हैं।

राज्यकी जनसंख्या ४० हजारसे ऊपर है जिनमेंसे हिंदूकी संख्या सबसे अधिक है यहां की भाषा गुजराती है। राजस्व ७७४३४७ रु० है जिनमेंसे वृटिशसरकारको ७३५१ रु० कर और १५०० रु० चौथ स्वरूप देने पड़ते हैं। राज्य भरमें ४ बालक-स्कूल और १ बालिका-स्कूल है। जङ्गली असभ्य जातिके लड़कोंको मुफ्तमें शिक्षा दी जाती है। शिक्षाविभागमें राज्यका पांच हजारसे ज्यादा रुपया खर्च होता है। राज्यकी ओरसे एक अस्पताल भी खुला है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २० ४५´ उ० तथा देशा० ७३ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ४ हजारके करीब है। राजाके अनुग्रहसे यहां बालक और

बालिका विद्यालय, औषधालय आदि प्रतिष्ठित हुए हैं।

बांसदिहा—१ युक्तप्रदेशके बलिया जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५°४७´से २६°७´ उ० तथा देशा० ८३°५४´ से ८४°३१´ पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३७१ वर्ग मील और जनसख्या ३ लाखके करीब है इसमें ५ शहर और ५१५ ग्राम लगते हैं। बहुत-सी छोटी छोटी नदियां तहसीलके मध्य होती हुई घघरामें मिली हैं। प्रतिवर्ष वर्षाऋतुमें इसका अधिकांश स्थान घघराकी बाढसे बह जाता है।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २५°५३´ उ० और देशा० ४°१४´ पू० बलिया शहरसे १०मील उत्तर पड़ता है। जनसख्या प्रायः १००२४ है। पहले यह स्थान नरौलिया राजपूतके अधिकारमें था। पीछे भूमिहारोंने इसे खरीद लिया। शहरमें अभी १ चिकित्सालय और १ स्कूल है।

बाँसपूर ( हि० पु० ) एक प्रकारका बारीक कपडा। कहते हैं, कि यह इतना महीन होता था, कि इसका एक थान बांसके चोंगेमें भरा जा सकता था।

बांसफल ( हि० पु० ) संयुक्तप्रान्तमें पैदा होनेवाला एक प्रकारका धान।

बांसफोड—युक्तप्रदेशमें रहनेवाली निकृष्ट जाति। यह डोम नामकी नीच जातिकी एक शाखा है। बांस फाडना या धरांमीका कार्य करना इनका जातीय व्यवसाय है, इसीसे यह नाम पडा है। मिर्जापुर-वासी बांस-फोडोंका कहना है, कि ये रेवा नगरके उत्तर पश्चिमस्थ बीरसिंहपुर नामके स्थानसे यहां आये हैं। गोरखपुर वासी अपनेको घरवाडी डोम बतलाते हैं। ये दूसरोंको अपनी जातिमें मिला सकते हैं। यदि कोई इस जातिकी रमणी पर आसक्त हो इनमें मिलना चाहे, तो उसे महा भोज देना पडता है। पीछे उस जातिके साथ एकत्र बैठ कर मद्य पान करनेसे उसको इस जातिका पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाता है।

ये लोग डोम जातिके अन्तर्भुक्त होने पर भी कभी कभी अपनेको धानुक बतलाते हैं। भागलपुर शहरमें जो बांसफोड हैं उनमें पङ्क्ति विवाह प्रचलित है। किन्तु उस जिलेके बाहर कहीं भी पङ्क्ति विवाह प्रचलित नहीं देखा जाता। नेपाल सीमान्तवासी बांसफोड वहांके ही विभिन्न थाकमें डोह विवाह करते हैं। मिर्जापुरमें महावती, चमकल, गौमल, समुद्र, लहर, फलई, मगरिह, सरैहा आदि अनेक थाक हैं। इनमें सपिण्ड विवाह भी चलता है। किन्तु ममेरी वा फुफेरी बहनसे शादी नहीं होती। यहां तक कि जिस घरमें बांसफोड नाते-दार कन्याका विवाह होता है उस घरमें बिना दो तीन पीढी बीते दूसरा विवाह नहीं हो सकता। गोरखपुरके घरवाडी, बांसफोड, माङ्गता, डोम, धरकार, नाटक, तसिहा, हलालखोर, कूच बाधिया प्रभृति विभिन्न थाकों में विवाहादि क्रिया होती है।

ये लोग अनेक विषयोंमें हिन्दूका अनुकरण करते हैं। समाजशासनके लिये इनमें एक नेता होता है जिसे सब कोई 'मोडल' कहते हैं। समाजमें जब अनीति अनाचार या विभ्राट् उपस्थित होता है, तब वह अनेक सदस्योंकी सम्मति ले न्याय करता है। यदि कोई नीचाशय व्यक्ति धोबिन या डोमिनके साथ आसक्त होता है, तो वह जन्म भरके लिये जातिच्युत किया जाता है। स्त्रियोंको भी इसी प्रकार दण्ड मिलता है। यदि कोई उच्च जातिकी स्त्रीके प्रेममें फंस जाय, तो वह एक जातीय भोज देने मात्रसे ही फिर समाजमें आ सकता है। इच्छानुसार एक दो या तीन ब्याह तक ये करते हैं। कोई भी पुरुष उपपत्नी नहीं रख सकता और न स्त्री ही स्वामीके रहते दूसरा स्वामी कर सकती है। स्त्री यदि दूसरे पुरुषके प्रेममें फसी हो, तो उसके स्वामी और पिताको एक बडा भोज देना पडता है। दोष साबित न हो, तो स्त्रीको सजा नहीं मिलती।

इन लोगो में बालिका विवाह ज्यादा होता है। यदि ब्याहके पहले कोई लडकी ऋतुमती होवे, तो उसका पिता जातिच्युत किया जाता है। वरका मामा ब्याह स्थिर करता है। सम्बन्ध स्थिर हो जाने पर कन्याके पक्षमें ४) रु० पहिले जमा करना पडता है। यदि कोई स्त्री स्वामीका तिरस्कार करे वा उच्छिष्ट भोजन खानेको दे, तो वह समाजकी अनुमति ले कर उसका त्याग कर सकता है और दूसरा विवाह भी कर सकता हैं। विधवाये सगाई या धरेजा करती हैं और उनके पुत्र और कन्या

होतो ही पितृसम्पत्तिके अधिकारी होते हैं। विधवा देवरके साथ भी व्याह कर सकती है। उसका प्रथम जातपुत्र पिताको सम्पत्तिसे वंचित नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति अपने भाई, बहन और नातीको गोद ले सकता है।

पुत्र होने पर १२ दिन तक ये अशुद्ध रहते हैं। सूतिका गृहमें बासोरा जातिकी स्त्रियां इनकी सेवा करती हैं। बारह दिन तक मृत व्यक्तिके उद्देश्यसे सूअरकी बलि दी जाती है। उसके मांसको सभी मिल कर खाते हैं। स्त्रियां इस दिन कुएँकी पूजा करती हैं। ये जातबालकके कर्णवेध उपलक्षमें ब्राह्मण पंडितों से तिथी सुदवाते हैं। कर्णवेधके बाद प्रत्येक बालक ही समाजमें शामिल गिना जाता है और तभीसे जातीय प्रथा नुसार चलता है।

विवाहकी शुभलग्न सुदवानेके लिये ये ब्राह्मण पण्डितोंके पास जाते हैं। विवाहबंधनके दृढ़ करनेके लिये बालकका पिता कन्याके पिताके साथ मदिरा पात्रको बदलता है और कन्याका भाई अपने पिताके मस्तक पर पगड़ी पहनाता है। इनकी विवाह प्रक्रिया धरकार जाति के समान है; किन्तु विवाहके कुछ पहले वरपक्षकी तरफ होम होता है। मण्डपमें ये नीमर और गूलरकी डाल गाड़ते हैं। विवाहमें नख काटते और दोनों पैर लाल रंगसे रंगते हैं। विवाह शेष होने पर हिंदुओं के अनुसार ये गौरी और गणेशजीकी पूजा करते हैं। तत्पश्चात् कन्यादान, ग्रन्थिबन्धन, सिन्दूरदान, आदि कार्य समाप्त करके वर कन्याको आमोद प्रमोदसे सारी रात कोहबर में बितानी पड़ती है।

ये लोग मृतव्यक्तिका दाह करते हैं। किन्तु अल्प वयस्क बच्चोंको अथवा संक्रामक रोगग्रस्त व्यक्तिको मिट्टी-में गाड़ या नदीमें फेंक देते हैं। दाहके बाद ये लोग भी नीमकी पत्तियां चबाते हैं। केवल दश दिन तक अशौच रहता है। दशवें दिन मृतका पुत्र, कन्या वा स्त्री अथवा छोटा भाई दूध तथा अन्नसे पांच पिण्ड देता है। फिर घर आ कर ये शूकरका मांस रांधते और आत्मीय जनोंको भोजन कराते हैं। इन कार्योंमें ब्राह्मणकी आवश्यकता नहीं पड़ती। पितृ पक्षमें ये १५ दिन तर्पणकी तरह मृत पुरुषों को भूमि पर जल दान करते हैं। नवें दिन ये पूरी, खीर, शूकर मांस उनको देते हैं। १५वें दिन और भी समारोहसे पितृ पुरुषों को भोग देते हैं।

विन्ध्याञ्चलकी विन्ध्यवासिनीदेवी ही इनकी प्रधान देवता हैं। प्रति चैत्रमासकी ६वीं तारीखको ये देवीके नाम पर शूकर बलि देते हैं। गोरखपुरवासी कालिका देवीकी तथा श्रावणसुदी ५को नागोंकी पूजा करते हैं। इसके सिवाय दीह नामके ग्राम्यदेवता और पीपलके पेड़ आदिको भी ये पूजते देखे जाते हैं। हरदोईवासी काल देव तथा देवीकी पूजा करते हैं। होली, रामनवमी, करवाचौथ, गरुड़पूजा आदि उत्सवोंमें भी ये लोग खूब आमोद प्रमोद करते हैं।

स्त्रियां आभूषण पहनती हैं। बालक और बालिकाओं के दो नाम रखे जाते हैं। जातबालकोंके शरीरको सबल और पुष्ट बनानेके लिये ये ओझा बुलवाते हैं और उप देवताकी कुदृष्टिसे बचानेकी चेष्टा करते रहते हैं। ये गोमांस नहीं खाते। डोम धोबी, छोटे भाईकी स्त्री, बड़े सालेकी स्त्री और भांजेकी स्त्रीका स्पर्श नहीं करते। इन का स्पर्श करना ये लोग पाप समझते हैं। पंखा, टोकरी और बांसका बकस बनाना ही इनका दैनिक व्यवसाय है। कोई कोई मजूरी, झाड़ूबरदार और मेहतरका काम करके भी अपना गुजारा चलाते हैं।

बांसली (हिं० स्त्री०) १ मुरली, बांसुरी। २ रुपया पैसा रखनेकी एक प्रकारकी जालीदार लंबी पतली थैली। इस प्रकारकी थैली जो कमरमें बांधी जाती है। ३ बंशीके आकारका एक प्रकारका बाजा जो पीतल या लोहेका बना होता है।

बांसलोई—भागीरथी नदीकी एक शाखा। यह संथाल परगनेसे निकल कर बीरभूम और मुर्शिदाबाद जिलेके मध्य होती हुई अट्टीपुरके निकट गङ्गानदीमें मिली है।

बांसवाड़िया—हुगली जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२°५८´ उ० तथा देशा० ८८°२४´ पू० हुगली नदी के किनारे अवस्थित है। जनसंख्या साढ़े छ हजारके करीब है। यहां हंसेश्वरीदेवीके १३ चूड़ामन्दिर हैं। लाखसे अधिक रुपये व्यय करके स्थानीय जमींदारपत्नी शङ्करी दासीकी अनुमतिसे यह मन्दिर बनाया गया है।

उक्त सौभाग्यवती रमणीने मराठोंके हाथसे इस मन्दिरकी रक्षाके लिये इसके चारों ओर परिखा और एक कामान तथा अस्त्रसम्वलित दुर्ग बनवा दिया था।

बाँसवाड़ा—१ राजपूतानेके अन्तर्गत एक राज्य। यह अक्षा० २३° ३' से २३° ५५' उ० तथा देशा० ७३° ५८' से ७४° ४७' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या १९४६ है। इसके उत्तरमें प्रतापगढ़ और मेवाड़, पश्चिममें डूंगरपुर और सुन्थ, दक्षिणमें झालोद, झबुका और पूर्वमें सैलान, रतलाम और प्रतापगढ़ है। इस राज्यकी पर्वतमय वन्य भूमिमें भीलजातिका वास है। सरदार यहांके सिशोदिया राजपूत हैं। डूंगरपुरमें जो राजपूतवंश राज्य करते हैं वे इनकी एक शाखा हैं। १६वीं शताब्दीमें वांसवाड़ा और डूंगरपुर एक राजाके अधीन था। १५२८ ई०में सरदार उदयसिंहकी मृत्यु होने पर उनके दो पुत्रोंने पिताके आदेशानुसार उक्त दोनों सम्पत्ति आपसमें बांट ली। इसी समय दोनों सामन्तो के वंशधर परस्पर स्वाधीन हो कर राज्य करने लगे। माही नदी ही उनकी राज्य सीमा निर्देश करती है। १८वीं शताब्दीके शेषमें वांसवाड़ाराज मरहठों की अधीनता स्वीकार कर धारके अधिपतिको कर देने लगे। १८१२ ई०में अंगरेजोंने महाराष्ट्रीय बन्धन काट कर उन्हें अपना मित्र बना लिया। १८१८ ई०की सन्धिके अनुसार राजा अंगरेजोंकी सहायता करनेमें प्रतिश्रुत हुए। भूतपूर्व सामन्त महारावल लक्ष्मणसिंहका १९०५ ई०में देहान्त हुआ। पीछे उनके बड़े लड़के शम्भूजी गद्दी पर बैठे। उनका जन्म १८६८ ई०में हुआ था। अभी पिरथीसिंह बाँसवाड़ा-राजसिंहासनको सुशोभित कर रहे हैं। इनका पूरा नाम है,—
एच एच राय रायाँ महारावल साहिब श्री पिरथीसिंहजी बहादुर। इन्हें १५ तोपोंकी सलामी मिलती हैं। राजस्व नौ लाखके करीब है। राजाको गोद लेनेका अधिकार है। अभी इनके पास ५०० पदाति, ६० अश्वारोही और ३ कमान हैं। पहले यहां सलीमसाही सिक्का चलता था जो अंगरेजी सिक्केसे तिहाई कम होता था, पर १९०४ ई० से अंगरेजी सिक्का ही चलने लगा है।

राज्यमें १ शहर और १२८७ ग्राम लगते हैं। जनसख्या पौने दो लाखके करीब है। अनाजमें मकई और चावल मुख्य पैदावार है। मूंग, उड़द, तिल, सरसों गेहूं, चना, जौ भी अच्छी तरह होते हैं। खनिज पदार्थ अभी तक बहुत कम पाये गये हैं और जो पाये भी गये हैं वे बहुत थोड़ी-सी मात्रामें। यहांकी गाय भैंस अधिक दूध देने वाली नहीं होतीं। इनके सींग और प्रान्तोंकी गाय भैंस से कुछ अधिक लम्बे होते हैं। यहांका जलवायु अप्रिल से जून तक गर्म और शुष्क तथा बरसातमें तर और नम रहता है। शीतकाल सबसे अच्छा समझा जाता है। पर कहीं कहीं इस देशमें ऐसी ठढ भी पड़ती है, कि जिससे उसके विषयमें यह कहावत प्रसिद्ध हो गई है—

वांसवाड़ाको वायरो, आतरीकी डाड।
इनसे भी जो ना मरे, तो छापी वारे फाड़॥

यहांकी राजप्रणाली राजतन्त्र शासन है। दरबारको अपने राज्यके आन्तरिक प्रबन्धमें पूर्ण शासनाधिकार है।

२ उक्त सामन्त राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २३° ३३' उ० और देशा० ७४° २७' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ७०३८ है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ६० हिन्दू और शेष मुसलमान हैं। १६वीं शताब्दीमें वाँसवाड़ाके प्रथम सरदार जगमलने इसे बनाया। कहते हैं, कि पहले यह स्थान भील सरदार वासनाके दखलमें था। उसीके नाम पर इसका नामकरण हुआ है। पीछे जगमालने उसे मार कर वांसवाड़ा पर अधिकार जमाया। इस नगरके चारों ओर प्राचीर है। दक्षिणस्थ उच्चभूमिके ऊपर राजप्रासाद अवस्थित है। शाहीविलास नामक प्रासादमें वर्त्तमान सरदार रहते हैं। इसके पूर्वमें वाईताल नामकी दिग्गी है। उस दिग्गीसे संलग्न जो उद्यान है उससे आध कोस दूर वांसवाड़ा राजकी छतरी अवस्थित है। वर्त्तमान नगरसे २ मील दक्षिण पर्वतके ऊपर दुर्गवासादिका खंडहर नयनगोचर होता है। यहां प्रतिवर्ष आश्विन मासमें १५ दिन तक मेला लगता है। शहरमें एक डाकघर, टेलिग्राफ आफिस, एक कारागार, एक एङ्गलो वर्नाक्युलर स्कूल और एक अस्पताल है।

बांसा—अयोध्या प्रदेशके हरदोई जिलान्तर्गत एक नगर।

बांसा (हिं० पु०) १ बांसका बना हुआ चोंगीके आकारका वह छोटा नल जो हलके साथ बंधा रहता है। इसीमें बोनेके

लिये अन्न भरा रहता है जो नीचेकी ओरसे गिर कर खेतमें पड़ता है। २ नाकके ऊपरका हड्डी जो दोनों नथनोंके ऊपर बीचोबीच रहती है। ३ एक प्रकारका छोटा पौधा। इसमें चपई रंगके बहुत सुन्दर फूल लगते हैं। इसके बीज बहुत छोटे और काले रंगके होते हैं। इसकी लकड़ीके कोयलोंसे बारूद बनती है।

बांसागड़ा (हिं० पु०) कुश्तीका एक पेच।

बांसिनी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका बांस जिसे बरियाल, ऊना अथवा कुल्लुक भी कहते हैं।

बांसी—राजपूतानेके उदयपुरके अन्तर्गत बांसी सामन्त राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २४ २०´ उ० तथा देशा० ७४ २४´ पू० उदयपुर शहरसे ४७ मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या १२६५ है। मेवाड़के उच्चकुलोद्भव एक सम्भ्रान्त व्यक्ति यहांका शासन करते हैं। 'रावत' उनकी उपाधि है। इस राज्यमें कुल ५१ ग्राम लगते हैं। राजस्व २४००० रु० हैं जिनमेंसे १६२ रु० वृटिश सरकारको देने पड़ते हैं।

बांसी—१ युक्तप्रदेशके बस्ती जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २७ से २७ २८´ उ० तथा देशा० ८२ ४६ से ४३ १४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६२१ वर्गमील और जनसंख्या ४ लाखसे ऊपर है। इसमें 'उसका' नामक एक शहर और १३४३ ग्राम लगते हैं। यह तहसील उत्तर नेपाल सीमासे ले कर दक्षिण राप्ती नदी तक विस्तृत है।

२ युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलान्तर्गत एक नगर और बांसी तहसीलका सदर। नदीके दूसरे किनारे नर्कथा नामक ग्राममें यहांके राजा रहते हैं। पहले बांसी नगरमें ही राजप्रासाद अवस्थित था। पूर्वतन राजदुर्गका ध्वंसावशेष आज भी विद्यमान है। इस नगरसे कई एक पथ नेपाल, बस्ती, डुमरियागञ्ज, बढ़नी आदि स्थानों तक गये हैं। पहले इन सब स्थानोंमें शस्यादिका जोरों वाणिज्य चलता था, पर अभी उतना नहीं है।

बांसी (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारका मुलायम पतला बांस जिससे हुक्केके नैचे आदि बनते हैं। २ एक प्रकारका गेहूं जिसकी बाल कुछ काली होती है। ३ एक प्रकारका पत्थर। इसका रंग सफेदी लिए पीला होता है और बड़ी बड़ी सिलोंके रूपमें पाया जाता है। ४ एक प्रकारका धान। इसका चावल बहुत सुगंधित, मुलायम और स्वादिष्ट होता है। यह विशेषतः संयुक्तप्रान्तमें पाया जाता है। इसका दूसरा नाम बांसफल भी है। ५ एक प्रकारकी घास। इसके डंठल मोटे और कड़े होते हैं, इसीलिये पशु कम खाते हैं। ६ एक प्रकारका पक्षी।

बांसुरी (हिं० स्त्री०) मुंहसे फूंक कर बजानेका एक बाजा जो बांसका बना होता है। इसकी लम्बाई डेढ़ बालिश्त होती है और सिरा बांसकी गांठके कारण बंद रहता है। यह सिरेकी ओर सात स्वरोंके लिये सात छेद होते हैं और दूसरी ओर एक विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ बजानेका छेद होता है। उसी छेदवाले सिरेको मुंहमें ले कर फूंकते हैं और स्वरोंवाले छेदों पर उंगलियां रख कर उसे बन्द कर देते हैं। जब जो स्वर निकालना होता है, तब उस स्वरवाले छेद परकी उंगलियां उठा लेते हैं।
वंशी देखो।

बांसुली (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी घास जो फसलके लिये बड़ी ही हानिकारक होती है। २ बांसुरी देखो।

बांसुलीकन्द (हिं० पु०) एक प्रकारका जंगली सूरन या जमीकंद। यह गलेमें बहुत अधिक लगता है और प्रायः इसीके कारण खानेके योग्य नहीं होता।

बांह (हिं० स्त्री०) १ बाहु, भुजा। २ बल, शक्ति, भुजबल। ३ कुरते, कमीज, अंगे, कोट आदिमें लगा हुआ वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बांह डाली जाती है, आस्तीन। ४ एक प्रकारकी कसरत जो दो आदमी मिल कर करते हैं। इसमें बारी बारीसे हर एक आदमी अपनी बांह दूसरेके कंधे पर रखता है इसमें बांहों पर जोर पड़ता है और उनमें बल आता है। ५ सहायक, मददगार। ६ शरण, सहारा, भरोसा।

बांहतोड़ (हिं० पु०) कुश्तीका एक पेच। इसमें जब गरदन पर जोड़के दोनों हाथ आते हैं तब उन हाथों परसे अपना एक हाथ उलट कर उसकी जांघमें अड़ा देते हैं और दूसरा हाथ उसकी बगलसे ले जा कर गरदन पर घुमाते हुए उसकी पीठ पर ले जाते हैं। फिर उसे टांगसे मार कर गिरा देते हैं।

बांहमरोड़ (हिं० स्त्री०) कुश्तीका एक पेच। इसमें जब

जोड़का हाथ कधे पर आता है, तब अपना हाथ उसकी बगलमें ले जा कर उसकी उंगलियां पकड़ कर मरोड़ देते हैं और दूसरे हाथसे उसकी कोहनी पकड़ कर टांगसे मारते हैं। ऐसा करनेसे जोड़ तुरत जमीन पर गिर जाता है। यह पेच उसी समय किया जाता है जब जोड़ शरीरसे सटा नहीं रहता, कुछ दूर पर रहता है।

बाही (हिं० स्त्री०) बाह देखो।

बा (हिं० पु०) जल, पानी।

बा (फा० पु०) बार, दफा, मरतबा।

बाइ (हि० स्त्री०) बाई देखो

बाइबिरंग (हि० स्त्री०) विडंग।

बाइबिल—ईसाइयोंकी प्रधान धर्म पुस्तक। ईश्वर अभिव्यक्त धर्मतत्त्वोंकी मूल वाक्यावली ग्रथित कर ईसाई लोग जिस पवित्र धर्मग्रन्थको मानते हैं उसी धर्मपुस्तकका ४थी शताब्दीमें महात्मा ख्रूसोष्टमने (Chrysostom) 'बाइबिल' नाम रखा। भाषा और अन्तर्निहित विषयोंकी विभिन्नतासे यह ग्रन्थ दो भागोंमें विभक्त हुआ। प्राचीन कथाओंकी ऐतिहासिकता पर्यवेक्षण कर उन्होंने प्रथमार्द्धको पूर्व भाग (Old Testament) एवं परार्द्धको उत्तर भाग (New Testament) नामसे प्रकट किया। पूर्वखण्डकी ऐतिहासिक घटनाओंके साथ उत्तरखण्डका घटना निचय विशेषरूपसे संयुक्त है। प्रोटेष्टाण्ट सम्प्रदायके ईसाई उक्त दोनों ग्रन्थों की संयोजक घटनावलिको एपोक्रिफा (Apocrypha) या अप्रामाणिक समझते हैं। ये समस्त ईश्वरप्रोक्त घटनाएं हैं, इस विषयमें वे लोग सन्देह करते हैं।

अभी हम लोग भी जिस बाइबिलको देखते हैं वह दो विभागों में विभक्त है, पहला 'ओल्डटेस्टमेण्ट' दूसरा 'न्यु टेस्टमेण्ट'। इस New Testament विभागमें पूर्व [illegible] धर्मशास्त्र वा Scripture कह कर [illegible] किया है। १८० ई०में ईश्वर समाचार विषयक [illegible] ही Holy Scripture कहलाता था। ईरानियस (Irenæus) [illegible] पूर्व और उत्तरखण्डको [illegible] Lord's Scripture नाम रख गये हैं। [illegible]

मुद्रित बाइबिल ग्रन्थके पूर्वखण्ड (Old Testment) में ३६ ग्रंथविभाग हैं। अति प्राचीनकालमें इसका कुछ अंश हिब्रू और कुछ कालदीय भाषामें रचा गया था। उसके मध्य ईसासे दो सदी पहले संघटित हिब्रू कालदीय साहित्यकी अनेक घटनायें सन्निवेशित हुई हैं।

पूर्वखण्डके इतिहास, परमार्थतत्त्व, भविष्यद्वाणी और काव्यांशके पश्चात् उत्तरखण्डका ईश्वर समाचार (Gospel), देव, मनुष्योंका संमिश्रण, ईसामसीहकी अलौकिकलीला और मृत्यु एवं ईसा प्रेरित दूतोंकी (Apostle's) भक्ति, देवानुरक्ति प्रभृति एकत्र ग्रथित हैं। यहूदियोंके पूर्वखण्डका विभाग वर्त्तमान प्रणालीसे बहुत भिन्न था। उन्हों ने अपनी वर्णमालाके अनुसार उसे २२ भागों में विभक्त किया है। स्मृति (Law), ईश्वर वाक्य और ईश्वर महिमाकीर्त्तन सूचक गान (Hagiographa) ये तीन नम्बरसे लिपिबद्ध हैं। पांच परिच्छेद (Book) तक मूसाकी स्मृति, जसुआ, जाजेस, सामुएल, किंस्, ईसाया, जिरिमिया और ऐजिकाएल प्रभृति ईश्वर नियोजित धर्मोपदेष्टाओंका धर्मतत्त्व और साम्स, प्रोभार्वस, इक्लिजियाष्टिस्, जाब, सलोमाके गीत, रुथ, लैमेन्टेसन, एस्थर, दानिएल, एजरा, नेहेमिया आदिमें ईश्वरप्रेम, भजन और सरस गीतोंमें कीर्त्तित हुए हैं। दूसरे दूसरे ग्रन्थों को ले कर यहूदी और ईसाइयोंमें घना मतभेद देखा जाता है।

यहूदियों के अवरोधसे पूर्व इस ग्रन्थका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। मोजेसके उपदेशसे जाना जाता है, कि यह धर्मग्रन्थ जलप्लावन-कालीन पवित्र जहाजके पार्श्वमें रख दिया गया था। जेरुसालेमका मन्दिर तैयार होनेके बाद राजा सलोमनने इस ग्रन्थको मन्दिरमें रखनेकी अनुमति दी। परवर्त्ती ईश्वरप्रणोदित व्यक्ति जिससे सार्वजनिक उपकारके लिये भविष्यमें इस ग्रन्थकी रक्षा कर सकें इसकी भी उन्होंने व्यवस्था कर दी थी। किन्तु नेबूकाडनेजर (Nebuchadnezzar) के द्वारा जेरुसलम ध्वंस होनेके बाद इस ग्रन्थकी हस्तलिपि नष्ट हो गयी। इसके पहले यहूदी इसकी प्रतिलिपि बेबीलन नगरमें ले गये थे इसीसे वह ध्वंससे बच रही। उन लोगोंके अवरोधके

समय दानियाल (Daniel) ने जेरेमियाकी भविष्यद्वाणी का उल्लेख किया है। अवरोधसे मुक्त हो उन्होंने इस्रायलके प्रति ईश्वरप्रोक्त मोजेस गाथाके पुनरुद्धारके लिये एजरासे अनुरोध किया। एजरा बहुत परिश्रमसे इस पवित्र वाक्यावलीकी एक प्रतिलिपि संग्रह कर गये। यहूदियोंका उसकी पाठशुद्धिकी रक्षा करनेमें विशेष ध्यान था। जोसेफस (*Josephus*)-ने लिखा है, कि उनके समयसे ले कर आर्त्तजरक्षस (Artaxerxes)के राज्य काल तक किसीने भी इस पवित्र ग्रन्थका कलेवर बढ़ाने की कोशिश न की।

ईसाकी २री सदीसे छठीं सदीके मध्य यहूदियों का 'तालमुद' नामका धर्मग्रन्थ रचा गया। उसमें विभिन्न बाइबिलोंका शब्दविन्यास और पाठभेद उल्लिखित है। तालमुदके समाप्त होने पर टिबेरियाके मसोराइट लोगोंने (Masorites of Tiberias) बहु परिश्रम स्वीकार कर ग्रन्थशुद्धि करनेका सङ्कल्प किया।(१)

हिब्रु धर्मशास्त्रके समारिटन पेन्टाट्यूक (२) (Samaritan Pentateuch) और सेप्टुआजिन्ट (Septuagint) नामक ग्रन्थका ग्रीक अनुवाद ही सर्व प्राचीन है। आज कल जो समारिटन पेन्टटुक देखनेमें आता है वह प्राचीन हिब्रु समारिटन ग्रन्थकी नकल मात्र है। ओरिगेन राजाके राजत्वके पहले समारिया वासियोंने इस ग्रन्थको प्रस्तुत किया था। ७० धार्मिक महापुरुषोंने ग्रीक अनुवाद किया था इस कारण इसका नाम 'सेन्टुआजिंट पड़ा।(३)

आकुइला, थियोडोसियन और सिमाकस नामके तीन ग्रीक अनुवाद २री सदीमें रचित हो ओरिगनके हेक्सा-प्लायमें रखे गये थे। तत्पश्चात् १ली शताब्दीमें सिरीयक, ३रीमें कोप्टिक, ४थीमें इथियोपिक, ५वींमें आर्मेनियनोंके सेप्टुआजिन्टके आधार पर पूर्व और उत्तर बाइबिल खण्ड रचा गया। इसके सिवाय १ली या २री शताब्दीमें इतालीय, ४थी शताब्दीमें उलफिलसके गथिक अनुवादकी असम्पूर्ण प्रति पाई गई है।

पहिले जिन सब ग्रन्थों का उल्लेख किया है, वे मूल हिब्रु पुस्तकके अंशविशेषके अनुवाद मात्र हैं। प्रकृत सम्पूर्णाकारमें ग्रथित इस पुस्तककी जो एक प्रति मुरा टोमियों के धर्मशास्त्रमें देखी जाती है वह १७० ई० में लिखी गयी थी। इसका प्रथम और शेष भाग नहीं मिलता। जो कुछ पुस्तकमें लिखा है उससे जाना जाता है, कि पवित्रात्मा मार्कके सुसमाचारसे इस ग्रन्थका उद्बोधन हुआ है। किन्तु बीच बीचमें छूट भी है। सिरीय लोगों का पेशिटो (the peshito) ग्रन्थ अविकल अनुवादित तो हुआ है पर उसमें कोई कोई अंश छूट गया है।

युसिबियस् (Eusebius)को उत्तर खण्डकी जो प्रति मिली थी वही आजकल जनसाधारणकी आग्रहकी वस्तु हो रही है। वे इस ग्रन्थके दो हिस्से कर गये थे। एक

---

(१) विभिन्न समालोचकोंका इस विषयमें विभिन्न मत है। कोई कोई कहते हैं, कि उन्होंने पाठशुद्धि कर ग्रन्थकी पवित्रताकी रक्षा की थी। दूसरे कहते हैं, कि इससे ग्रन्थकी पवित्रता नष्ट की गई है। क्योंकि, इसमें पूर्व पुरुषों के मुखसे निकले हुये शब्द नहीं हैं; किन्तु इस विषयमें उनकी सद्विवेचना और परिश्रम सबको मान्य है।

(२) इस ग्रन्थकी मौलिकताको बहुत लोग स्वीकार नहीं करते।

(३) कोई कोई कहते हैं, कि यह ग्रन्थ यहूदियों की 'सानहेड्रिम' महासभामें ७७ सभ्यों के द्वारा अनुमोदित हुआ था। अन्य उपाख्यानों से पता चलता है, कि आलेक्सन्द्रियाके पुस्तकागारकी रक्षाके लिये टलेमी फिलाडेलफस ने स्मृति-ग्रन्थके लिये जेरुसलमके सर्वप्रधान पुरोहित एलियाजारको लिख भेजा था। तदनुसार उन्हों ने बारह जातियोंसे छ छ करके १२ व्यक्तियों को अनुवादके लिये भेजा। जो कुछ भी हो, सेन्टुयाजिन्ट ग्रन्थ जो विभिन्न व्यक्तियोंके द्वारा लिखा गया था उसके बहुत प्रमाण मिलते हैं। पेन्टाटुक ग्रन्थ भी इसी प्रकार टेलमीलेगस या उसके पुत्र फिलाडेलफसके राजत्वकालमें लिखा गया था, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ईसाके जीवितकालमें यह पुस्तक यहूदियों के आदरकी विशेष सामिग्री थी। उसके प्रमाण उत्तरखण्डमें कई जगह लिखे गये हैं। पश्चात् ईसाइयोंके ग्रन्थालोचनामें प्रवृत्त होने पर उन्होंने इस ग्रन्थका परित्याग कर दिया।

जोडका हाथ कंधे पर आता है, तब अपना हाथ उसकी बगलमें ले जा कर उसकी उंगलियां पकड़ कर मरोड़ देते हैं और दूसरे हाथसे उसकी कोहनी पकड़ कर टांगसे मारते हैं। ऐसा करनेसे जोड़ तुरत जमीन पर गिर जाता है। यह पेच उसी समय किया जाता है जब जोड शरीरसे सटा नहीं रहता, कुछ दूर पर रहता है।

बांही (हिं० स्त्री०) बांह देखो।

बा (हिं० पु०) जल, पानी।

बा (फा० पु०) बार, दफा, मरतबा।

बाइ (हि० स्त्री०) बाई देखो

बाइबिरंग (हि० स्त्री०) विडङ्ग।

बाइबिल—ईसाइयोंकी प्रधान धर्म पुस्तक। ईश्वर अभिव्यक्त धर्मतत्त्वोंकी मूल वाक्यावली ग्रथित कर ईसाई लोग जिस पवित्र धर्मग्रन्थको मानते हैं उसी धर्मपुस्तकका ४थी शताब्दीमें महात्मा ख्रुसोष्टमने (Chrysostom) 'बाइबिल' नाम रखा। भाषा और अन्तर्निहित विषयोंकी विभिन्नतासे यह ग्रन्थ दो भागोंमें विभक्त हुआ। प्राचीन कथाओंकी ऐतिहासिकता पर्यवेक्षण कर उन्होंने प्रथमार्द्धको पूर्व भाग (Old Testament) एवं परार्द्धको उत्तर भाग (New Testament) नामसे प्रकट किया। पूर्वखण्डकी ऐतिहासिक घटनाओंके साथ उत्तरखण्डका घटना निचय विशेषरूपसे संयुक्त है। प्रोटेष्टान्ट सम्प्रदायके ईसाई उक्त दोनों ग्रन्थों की संयोजक घटनावलिको एपोक्रिफा (Apocrypha) या अप्रामाणिक समझते हैं। ये समस्त ईश्वरप्रोक्त घटनाएं हैं, इस विषयमें वे लोग सन्देह करते हैं।

अभी हम लोग भी जिस बाइबिलको देखते हैं वह दो विभागों में विभक्त है, पहला 'ओल्डटेस्टमेण्ट' दूसरा 'न्यु टेस्टमेण्ट'। इस New Testament विभागमें पूर्वखण्डकी लिपिको धर्मशास्त्र या Scripture कह कर उल्लेख किया है। १८० ई०में ईश्वर समाचार विषयक ग्रन्थ ही Holy Scripture कहलाता था। ईरानियस् (Irenaeus) इस धर्मग्रन्थके पूर्व और उत्तरखण्डको मिला कर उसका Lord's Scripture नाम रख गये हैं। पूर्वखण्डके ग्रीक नाम Palaia diatheka' से महात्मा पालने "The Old Testment" नाम रखा। वर्त्तमान मुद्रित बाइबिल ग्रन्थके पूर्वखण्ड (Old Testment) में ३६ ग्रन्थविभाग हैं। अति प्राचीनकालमें इसका कुछ अंश हिब्रू और कुछ काल्दीय भाषामें रचा गया था। उसके मध्य ईसासे दो सदी पहले संघटित हिब्रू काल्दीय साहित्यकी अनेक घटनायें सन्निवेशित हुई हैं।

पूर्वखण्डके इतिहास, परमार्थतत्त्व, भविष्यद्वाणी और काव्यांशके पश्चात् उत्तरखण्डका ईश्वर समाचार (Gospel), देव, मनुष्योंका संमिश्रण, ईसामसीहकी अलौकिकलीला और मृत्यु एवं ईसा प्रेरित दूतोंकी (Apostle's) भक्ति, देवानुरक्ति प्रभृति एकत्र ग्रथित हैं। यहूदियोंके पूर्वखण्डका विभाग वर्त्तमान प्रणालीसे बहुत भिन्न था। उन्हों ने अपनी वर्णमालाके अनुसार उसे २२ भागों में विभक्त किया है। स्मृति (Law), ईश्वर वाक्य और ईश्वर महिमाकीर्त्तन सूचक गान (Hagiographa) ये तीन नम्बरसे लिपिबद्ध हैं। पांच परिच्छेद (Book) तक मूसाकी स्मृति, जसूआ, जाजेस, सामुएल, किंग, ईसाया, जिरिमिया और एजिकाएल प्रभृति ईश्वर नियोजित धर्मोपदेष्टाओंका धर्मतत्त्व और साम्स, प्रोभार्वस, इक्लिजियाष्टिस्, जाब, सलोमनके गीत, रुथ, लैमेन्टेसन्, एस्थर, दानिएल, एजरा, नेहेमिया आदिमें ईश्वरप्रेम, भजन और सच्चा गीतोंमें कीर्त्तित हुए हैं। दूसरे दूसरे ग्रन्थों को ले कर यहूदी और ईसाइयोंमें घना मतभेद देखा जाता है।

यहूदियों के अवरोधसे पूर्व इस ग्रन्थका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। मोजेसके उपदेशसे जाना जाता है, कि यह धर्मग्रन्थ जलप्लावन-कालीन पवित्र जहाजके पार्श्वमें रख दिया गया था। जेरुसालेमका मन्दिर तैयार होनेके बाद राजा सलोमनने इस ग्रन्थको मन्दिरमें रखनेकी अनुमति दी। परवर्त्ती ईश्वरप्रणोदित व्यक्ति जिससे सार्वजनिक उपकारके लिये भविष्यमें इस ग्रन्थकी रक्षा कर सकें इसकी भी उन्होंने व्यवस्था कर दी थी। किन्तु नेबुकाडनेजर (Nebuchadnezzar) के द्वारा जेरुसलम ध्वंस होनेके बाद इस ग्रन्थकी हस्तलिपि नष्ट हो गयी। इसके पहले यहूदी इसकी प्रतिलिपि बेबीलन नगरमें ले गये थे इसीसे वह ध्वंससे बच रही। उन लोगोंके अवरोधके

समय दानियाल (Daniel) ने जेरेमियाकी भविष्यद्वाणी का उल्लेख किया है। अवरोधसे मुक्त हो उन्होंने इस्रा एलके प्रति ईश्वरप्रोक्त मोजेस गाथाके पुनरुद्धारके लिये एजरासे अनुरोध किया। एजरा बहुत परिश्रमसे इस पवित्र वाक्यावलीको एक प्रतिलिपि संग्रह कर गये। यहूदियोंका उसकी पाठशुद्धिकी रक्षा करनेमें विशेष ध्यान था। जोसेफस (Josephus) ने लिखा है, कि उनके समयसे ले कर आर्त्तजरक्षस (Artaxerxes) के राज्य काल तक किसीने भी इस पवित्र ग्रंथका कलेवर बढ़ाने की कोशिश न की।

ईसाकी २री सदीसे छठी सदीके मध्य यहूदियों का 'तालमुद' नामका धर्मग्रंथ रचा गया। उसमें विभिन्न बाइबिलोंका शब्दविन्यास और पाठभेद उल्लिखित है। तालमुदके समाप्त होने पर टिबेरियाके मसोराइट लोगोंने (Masorites of Tiberias) बहु परिश्रम स्वीकार कर ग्रंथशुद्धि करनेका सङ्कल्प किया।(१)

हिब्रू धर्मशास्त्रके समारिटन पेन्टाटुक (२) (Samaritan Pentateuch) और सेप्टुआजिन्ट (Septuagint) नामक ग्रंथका ग्रीक अनुवाद ही सर्व प्राचीन है। आज कल जो समारिटन पेन्टटुक देखनेमें आता है वह प्राचीन हिब्रू समारिटन ग्रंथकी नकल मात्र है। ओरिगेन राजाके राजत्वके पहले समारिया वासियोंने इस ग्रंथको प्रस्तुत किया था। ७० धार्मिक महापुरुषोंने ग्रीक अनुवाद किया था इस कारण इसका नाम 'सेन्टुआजिंट' पड़ा।(३)

आकुइला, थियोडोसियन और सिमाकस नामके तीन ग्रीक अनुवाद २री सदीमें रचित हो ओरिगनके हेक्सा-प्लायमें रखे गये थे। तत्पश्चात् १ली शताब्दीमें सिरीयक, ३रीमें कोप्टिक, ४थीमें इथियोपिक, ५वींमें आर्मेनियनोंके सेप्टुआजिन्टके आधार पर पूर्व और उत्तर बाइबिल खण्ड रचा गया। इसके सिवाय १ली या २री शताब्दीमें इतालीय, ४थी शताब्दीमें उल्फिलसके गथिक अनुवादकी असम्पूर्ण प्रति पाई गई है।

पहिले जिन सब ग्रन्थों का उल्लेख किया है, वे मूल हिब्रू पुस्तकके अंशविशेषके अनुवाद मात्र हैं। प्रकृत स ग्रहाकारमें ग्रथित इस पुस्तकको जो एक प्रति मुरा टोनिओ के धर्मशास्त्रमें देखी जाती है वह १७० ई० में लिखी गयी थी। इसका प्रथम और शेष भाग नहीं मिलता। जो कुछ पुस्तकमें लिखा है उससे जाना जाता है, कि पवित्रात्मा मार्कके सुसमाचारसे इस ग्रंथका उद्बोधन हुआ है। किन्तु बीच बीचमें छूट भी है। सिरीय लोगों का पेशिटो (the peshito) ग्रंथ अविकल अनुवादित तो हुआ है पर उसमें कोई कोई अंश छूट गया है।

युसिवियस् (Eusebius) को उत्तर खण्डकी जो प्रति मिली थी वही आजकल जनसाधारणकी आग्रहकी वस्तु हो रही है। वे इस ग्रंथके दो हिस्से कर गये थे। एक

(१) विभिन्न समालोचकोंका इस विषयमें विभिन्न मत है। कोई कोई कहते हैं, कि उन्होंने पाठशुद्धि कर ग्रन्थकी पवित्रताकी रक्षा की थी। दूसरे कहते हैं, कि इससे ग्रन्थकी पवित्रता नष्ट की गई है। क्योंकि, इसमें पूर्वपुरुषों के मुखसे निकले हुये शब्द नहीं हैं; किन्तु इस विषयमें उनकी सद्विवेचना और परिश्रम सबको मान्य है।

(२) इस ग्रन्थकी मौलिकताको बहुत लोग स्वीकार नहीं करते।

(३) कोई कोई कहते हैं, कि यह ग्रन्थ यहूदियों की 'सानहेद्रिम' महासभामें ७७ सभ्यों के द्वारा अनुमोदित हुआ था। अन्य उपाख्यानों से पता चलता है, कि आलेकसन्द्रियाके पुस्तकागारकी रक्षाके लिये टलेमी फिलाडलफस ने स्मृति-ग्रन्थके लिये जेरुसलमके सब प्रधान पुरोहित एलियाजारको लिख भेजा था। तदनुसार उन्हों ने बारह जातिमेंसे छः छः करके १२ व्यक्तियों को अनुवादके लिये भेजा। जो कुछ भी हो, सेन्टुयाजिन्ट ग्रंथ जो विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा लिखा गया था उसके बहुत प्रमाण मिलते हैं। पेन्टाटुक ग्रन्थ भी इसी प्रकार टेलमीलेगस या उसके पुत्र फिलाडेलफसके राजत्वकालमें लिखा गया था, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ईसाके जीवितकालमें यह पुस्तक यहूदिओं के आदरकी विशेष सामिग्री थी। उसके प्रमाण उत्तरखण्डमें कई जगह लिखे गये हैं। पश्चात् ईसाइयोंके ग्रंथालोचनामें प्रवृत्त होने पर उन्होंने इस ग्रंथका परित्याग कर दिया।

जोड़का हाथ कंधे पर आता है, तब अपना हाथ उसकी बगलमें ले जा कर उसकी उँगलियां पकड़ कर मरोड़ देते हैं और दूसरे हाथसे उसकी कोहनी पकड़ कर टांगसे मारते हैं। ऐसा करनेसे जोड़ तुरत जमीन पर गिर जाता है। यह पेच उसी समय किया जाता है जब जोड़ शरीरसे सटा नहीं रहता, कुछ दूर पर रहता है।

बाही ( हिं० स्त्री० ) बाह देखो।

बा ( हिं० पु० ) जल, पानी।

बा ( फा० पु० ) बार, दफा, मरतबा।

बाइ ( हिं० स्त्री० ) बाई देखो

बाइबिरंग ( हिं० स्त्री० ) बिडंग।

बाइबिल—ईसाइयोंकी प्रधान धर्म पुस्तक। ईश्वर अभिव्यक्त धर्मतत्त्वोंकी मूल वाक्यावली ग्रथित कर ईसाई लोग जिस पवित्र धर्मग्रन्थको मानते हैं उसी धर्मपुस्तकका ४थी शताब्दीमें महात्मा क्रुसोष्टमने ( Chrysostom ) 'बाइबिल' नाम रखा। भाषा और अन्तर्निहित विषयोंकी विभिन्नतासे यह ग्रन्थ दो भागोंमें विभक्त हुआ। प्राचीन कथाओंकी ऐतिहासिकता पर्यवेक्षण कर उन्होंने प्रथमार्द्धको पूर्व भाग ( Old Testament ) एवं परार्द्धको उत्तर भाग ( New Testament ) नामसे प्रकट किया। पूर्व खण्डकी ऐतिहासिक घटनाओंके साथ उत्तरखण्डका घटना निचय विशेषरूपसे संयुक्त है। प्रोटेष्टाण्ट सम्प्रदायके ईसाई उक्त दोनों ग्रन्थों की संयोजक घटनावलिको एपोक्रिफा ( Apocrypha ) या अप्रामाणिक समझते हैं। ये समस्त ईश्वरप्रोक्त घटनाएं हैं, इस विषयमें वे लोग सन्देह करते हैं।

अभी हम लोग भी जिस बाइबिलको देखते हैं वह दो विभागों में विभक्त है, पहला 'ओल्डटेस्टमेण्ट' दूसरा 'न्यु टेस्टमेण्ट'। इस New Testament विभागमें पूर्वखण्डकी लिपिको धर्मशास्त्र या Scripture कह कर उल्लेख किया है। १८० ई०में ईश्वर समाचार विषयक ग्रन्थ ही Holy Scripture कहलाता था। ईरानियस् ( Irenaeus ) इस धर्मग्रन्थके पूर्व और उत्तरखण्डको मिला कर उसका Lord's Scripture नाम रख गये हैं। पूर्वखण्डके ग्रीक नाम 'Palaia diatheka' से महात्मा पालने "The Old Testment" नाम रखा। वर्त्तमान मुद्रित बाइबिल ग्रन्थके पूर्वखण्ड ( Old Testment ) में ३६ ग्रन्थविभाग हैं। अति प्राचीनकालमें इसका कुछ अंश हिब्रू और कुछ काल्दीय भाषामें रचा गया था। उसके मध्य ईसासे दो सदी पहले संघटित हिब्रू काल्दीय साहित्यकी अनेक घटनायें सन्निवेशित हुई हैं।

पूर्वखण्डके इतिहास, परमार्थतत्त्व, भविष्यद्वाणी और काव्यांशके पश्चात् उत्तरखण्डका 'ईश्वर समाचार ( Gospel ), देव, मनुष्योंका संमिश्रण, ईसामसीहकी अलौकिकलीला और मृत्यु एवं ईसा प्रेरित दूतोंकी ( Apostle's ) भक्ति, देवानुरक्ति प्रभृति प्रकाश प्रथित हैं। यहूदियोंके पूर्वखण्डका विभाग वर्त्तमान प्रणालीसे बहुत भिन्न था। उन्हों ने अपनी वर्णमालाके अनुसार उसे २२ भागों में विभक्त किया है। स्मृति (Law), ईश्वर वाक्य और ईश्वर महिमाकीर्त्तन सूचक गान ( Hagiographa ) ये तीन स्तम्बरसे लिपिबद्ध हैं। पांच परिच्छेद ( Book ) तक मूसाकी स्मृति, जसुआ, जाजेस, सामुएल, किंग, ईसाया, जिरिमिया और ऐजिकाएल प्रभृति ईश्वर नियोजित धर्मोपदेष्टाओंका धर्मतत्त्व और साम्स, प्रोभार्वस, इक्लिजियाष्टिस्, जाब, सलोमाके गीत, रुथ, लैमेण्टेसन्, एस्थर, दानिएल, एजरा, नेहेमिया आदिमें ईश्वरप्रेम, भजन और सच्चा गीतोंमें कीर्त्तित हुए हैं। दूसरे दूसरे ग्रन्थों को ले कर यहूदी और ईसाइयोंमें घना मतभेद देखा जाता है।

यहूदियों के अवरोधसे पूर्व इस ग्रन्थका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। मोजेसके उपदेशसे जाना जाता है, कि यह धर्मग्रन्थ जलप्लावन-कालीन पवित्र जहाजके पार्श्वमें रख दिया गया था। जेरुसालेमका मन्दिर तैयार होनेके बाद राजा सलोमनने इस ग्रन्थको मन्दिरमें रखनेकी अनुमति दी। परवर्त्ती ईश्वरप्रणोदित व्यक्ति जिससे सार्वजनिक उपकारके लिये भविष्यमें इस ग्रन्थकी रक्षा कर सकें इसकी भी उन्होंने व्यवस्था कर दी थी। किन्तु नेबूकाडनेजर ( Nebuchadnezzar )के द्वारा जेरुसलम ध्वंस होनेके बाद इस ग्रन्थकी हस्तलिपि नष्ट हो गयी। इसके पहले यहूदी इसकी प्रतिलिपि बेबीलन नगरमें ले गये थे इसीसे वह ध्वंससे बच रही। उन लोगोंके अवरोधके

समय दानियाल (Daniel) ने जेरेमियाकी भविष्यद्वाणी का उल्लेख किया है। अवरोधसे मुक्त हो उन्होंने इस्रा एलके प्रति ईश्वरप्रोक्त मोजेस गाथाके पुनरुद्धारके लिये एजरासे अनुरोध किया। एजरा बहुत परिश्रमसे इस पवित्र वाक्यावलीकी एक प्रतिलिपि संग्रह कर गये। यहूदियोंका उसकी पाठशुद्धिकी रक्षा करनेमें विशेष ध्यान था। जोसेफस (Josephus)-ने लिखा है, कि उनके समयसे ले कर आर्त्तजरक्षस (Artaxerxes)के राज्य काल तक किसीने भी इस पवित्र ग्रंथका कलेवर बढ़ाने की कोशिश न की।

ईसाकी २री सदीसे छठीं सदीके मध्य यहूदियों का 'तालमुद' नामका धर्मग्रंथ रचा गया। उसमें विभिन्न बाइबिलोंका शब्दविन्यास और पाठभेद उल्लिखित है। तालमुदके समाप्त होने पर टिबेरियाके मसोराइट लोगोंने (Masorites of Tiberias) बहु परिश्रम स्वीकार कर ग्रंथशुद्धि करनेका सकल्प किया।(१)

हिब्रू धर्मशास्त्रके समारिटन पेन्टाटूक (२) (Samaritan Pentatench) और सेप्टुआजिन्ट (Septuagint) नामक ग्रंथका ग्रीक अनुवाद ही सर्व प्राचीन है। आज कल जो समारिटन पेन्टटुक देखनेमें आता है वह प्राचीन हिब्रू समारिटन ग्रंथकी नकल मात्र है। ओरिगेन राजाके राजत्वके पहले समारिया वासियोंने इस ग्रंथको प्रस्तुत किया था। ७० धार्मिक महापुरुषोंने ग्रीक अनुवाद किया था इस कारण इसका नाम 'सेप्टुआजिंट पड़ा।(३)

आकुइला, थियोडोसियन और सिमाकस नामके तीन ग्रीक अनुवाद २रो सदीमें रचित हो ओरिगनके हेक्मा-प्लायमें रखे गये थे। तत्पश्चात् १ली शताब्दीमें सिरीयक, ३रीमें कोप्टिक, ४थीमें इथियोपिक, ५वीमें आर्मेनियनोंके सेप्टुआजिन्टके आधार पर पूर्व और उत्तर बाइबिल खण्ड रचा गया। इसके सिवाय १ली या २री शताब्दीमें इतालीय, ४थी शताब्दीमें उलफिलसके गथिक अनुवादकी असम्पूर्ण प्रति पाई गई है।

पहिले जिन सब ग्रन्थो का उल्लेख किया है, वे मूल हिब्रु पुस्तकके अ शविशेषके अनुवाद मात्र हैं। प्रकृत स महाकारमें ग्रथित इस पुस्तकको जो एक प्रति सुरा टोनिओके धर्मशालमें देखी जाती है वह १७० ई० में लिखी गयी थी। इसका प्रथम और शेष भाग नहीं मिलता। जो कुछ पुस्तकमें लिखा है उससे जाना जाता है, कि पवित्रात्मा मार्कके सुसमाचारसे इस ग्रंथका उद्बोधन हुआ है। किन्तु बीच बीचमें छूट भी है। सिरीय लोगो का पेशिटो (the peshito) ग्रंथ अविकल अनुवादित तो हुआ है पर उसमें कोइ कोइ अंश छूट गया है।

युसिबियस् (Eusebius)को उत्तर खण्डकी जो प्रति मिली थी वही आजकल जनसाधारणकी आग्रहकी वस्तु हो रही है। वे इस ग्रंथके दो हिस्से कर गये थे। एक

(१) विभिन्न समालोचकोंका इस विषयमें विभिन्न मत है। कोई कोई कहते हैं, कि उन्होंने पाठशुद्धि कर ग्रन्थकी पवित्रताकी रक्षा की थी। दूसरे कहते हैं, कि इससे ग्रन्थकी पवित्रता नष्ट की गई है। क्योंकि, इसमें पूर्व पुरुषो के मुखसे निकले हुये शब्द नहीं हैं; किन्तु इस विषयमें उनकी सद्विवेचना और परिश्रम सबको मान्य है।

(२) इस ग्रन्थको मौलिकताको बहुत लोग स्वीकार नहीं करते।

(३) कोई कोई कहते हैं, कि यह ग्रन्थ यहूदियोंकी 'सानहेद्रिम' महासभामें ७७ सभ्यो के द्वारा अनुमोदित हुआ था। अन्य उपाख्यानो से पता चलता है, कि आलेक्सन्द्रियाके पुस्तकागारकी रक्षाके लिये टलेमी फिलाडलफसने स्मृति-ग्रन्थके लिये जेरुसलमके सर्वप्रधान पुरोहित एलियाजारको लिख भेजा था। तदनुसार उन्होने बारह जातिमेंसे छ छ करके १२ व्यक्तियो को अनुवादके लिये भेजा। जो कुछ भो हो, सेप्टुयाजिन्ट ग्रंथ जो विभिन्न व्यक्तियो के द्वारा लिखा गया था उसके बहुत प्रमाण मिलते हैं। पेन्टाटुक ग्रन्थ भी इसी प्रकार टेलमीलेगस या उसके पुत्र फिलाडेलफसके राजत्वकालमें लिखा गया था, इसमें कुछ भी सदेह नहीं है। ईसाके जीवितकालमें यह पुस्तक यहूदियो के आदरकी विशेष सामिग्री थी। उसके प्रमाण उत्तरखण्डमें कई जगह लिखे गये हैं। पश्चात् ईसाइयोंके ग्रंथालोचनामें प्रवृत्त होने पर उन्होंने इस ग्रंथका परित्याग कर दिया।

जोड़का हाथ कंधे पर आता है, तब अपना हाथ उसकी बगलमें ले जा कर उसकी उँगलियां पकड़ कर मरोड़ देते हैं और दूसरे हाथसे उसकी कोहनी पकड़ कर टांगसे मारते हैं। ऐसा करनेसे जोड़ तुरत जमीन पर गिर जाता है। यह पेंच उसी समय किया जाता है जब जोड़ शरीरसे सटा नहीं रहता, कुछ दूर पर रहता है।

बांही (हिं० स्त्री०) बांह देखो।

बा (हिं० पु०) जल, पानी।

बा (फा० पु०) बार, दफा, मरतबा।

बाइ (हिं० स्त्री०) बाई देखो

बाइबिरंग (हिं० स्त्री०) बिडंग।

बाइबिल—ईसाइयोंकी प्रधान धर्म पुस्तक। ईश्वर अभिव्यक्त धर्मतत्त्वोंकी मूल वाक्यावली ग्रथित कर ईसाई लोग जिस पवित्र धर्मग्रन्थको मानते हैं उसी धर्मपुस्तकका ४थी शताब्दीमें महात्मा क्रुसोष्टमने (Chrysostom) 'बाइबिल' नाम रखा। भाषा और अंतर्निहित विषयोंकी विभिन्नतासे यह ग्रंथ दो भागोंमें विभक्त हुआ। प्राचीन कथाओंको ऐतिहासिकता पर्यवेक्षण कर उन्होंने प्रथमार्द्ध-को पूर्व भाग (Old Testament) एवं परार्द्धको उत्तर भाग (New Testament) नामसे प्रकट किया। पूर्वखण्डकी ऐतिहासिक घटनाओंके साथ उत्तरखण्डका घटना निचय विशेषरूपसे संयुक्त है। प्रोटेष्टाण्ट सम्प्रदायके ईसाई उक्त दोनों ग्रन्थों की संयोजक घटनावलिको एपोक्रिफा (Apocrypha) या अप्रामाणिक समझते हैं। ये समस्त ईश्वरप्रोक्त घटनाएं हैं, इस विषयमें वे लोग सन्देह करते हैं।

अभी हम लोग भी जिस बाइबिलको देखते हैं वह दो विभागों में विभक्त है, पहला 'ओल्डटेस्टमेण्ट' दूसरा 'न्यु टेस्टमेण्ट'। इस New Testament विभागमें पूर्वखण्डकी लिपिको धर्मशास्त्र या Scripture कह कर उल्लेख किया है। १८० ई०में ईश्वर समाचार विषयक ग्रन्थ ही Holy Scripture कहलाता था। ईरानियस् (Ireneus) इस धर्मग्रन्थके पूर्व और उत्तरखण्डको मिला कर उसका Lord s Scripture नाम रख गये हैं। पूर्वखण्डके ग्रीक नाम Palaia diatheka' से महात्मा पालने "The Old Testment" नाम रखा। वर्त्तमान मुद्रित बाइबिल ग्रन्थके पूर्वखण्ड (Old Testment) में ३६ ग्रंथविभाग हैं। अति प्राचीनकालमें इसका कुछ अंश हिब्रू और कुछ काल्दीय भाषामें रचा गया था। उसके मध्य ईसासे दो सदी पहले संघटित हिब्रू काल्दीय साहित्यकी अनेक घटनायें सन्निवेशित हुई हैं।

पूर्वखण्डके इतिहास, परमार्थतत्त्व, भविष्यद्वाणी और काव्यांशके पश्चात् उत्तरखण्डका ईश्वर-समाचार (Gospel), देव, मनुष्योंका संमिश्रण, ईसामसीहकी अलौकिकलीला और मृत्यु एवं ईसा प्रेरित दूतोंकी (Apostle's) भक्ति, देवानुरक्ति प्रभृति एकत्र ग्रथित हैं। यहूदियोंके पूर्वखण्डका विभाग वर्त्तमान प्रणाली से बहुत भिन्न था। उन्हों ने अपनी वर्णमालाके अनुसार उसे २२ भागों में विभक्त किया है। स्मृति (Law), ईश्वर वाक्य और ईश्वर महिमाकीर्त्तन सूचक गान (Hagiographa) ये तीन नम्बरसे लिपिबद्ध हैं। पांच परिच्छेद (Book) तक मूसाकी स्मृति, जसूआ, जाजेस, सामुयल, किंग्स्, ईसाया, जिरिमिया और एजिकायल प्रभृति ईश्वर नियोजित धर्मोपदेष्टाओंका धर्मतत्त्व और साम्स, प्रोभार्बस, इक्लिजियाष्टिस्, जाब, सलोमाके गीत, रुथ, लैमेन्टेसन्, एस्थर, दानियल, एजरा, नेहेमिया आदिमें ईश्वरप्रेम, भजन और स्तव गीतोंमें कीर्त्तित हुए हैं। दूसरे दूसरे ग्रन्थों को ले कर यहूदी और ईसाइयोंमें घना मतभेद देखा जाता है।

यहूदियों के अवरोधसे पूर्व इस ग्रंथका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। मोजेसके उपदेशसे जाना जाता है, कि यह धर्मग्रंथ जलप्लावन-कालीन पवित्र जहाजके पार्श्वमें रख दिया गया था। जेरुसालेमका मन्दिर तैयार होनेके बाद राजा सलोमनने इस ग्रन्थको मन्दिरमें रखनेकी अनुमति दी। परवर्त्ती ईश्वरप्रणोदित व्यक्ति जिससे सार्वजनिक उपकारके लिये भविष्यमें इस ग्रंथकी रक्षा कर सकें इसकी भी उन्होंने व्यवस्था कर दी थी। किन्तु नेबूकाडनेजर-(Nebuchadnezzar)के द्वारा जेरुसलम ध्वंस होने के बाद इस ग्रंथकी हस्तलिपि नष्ट हो गयी। इसके पहले यहूदी इसकी प्रतिलिपि बेबीलन नगरमें ले गये थे इसीसे वह ध्वंससे बच रही। उन लोगोंके अवरोधके

समय दानियाल (Daniel)-ने जेरेमियाकी भविष्यद्वाणी का उल्लेख किया है। अवरोधसे मुक्त हो उन्होंने इस्रा एलके प्रति ईश्वरप्रोक्त मोजेस गाथाके पुनरुद्धारके लिये एजरासे अनुरोध किया। एजरा बहुत परिश्रमसे इस पवित्र वाक्यावलीकी एक प्रतिलिपि संग्रह कर गये। यहूदियोंका उसकी पाठशुद्धिकी रक्षा करनेमें विशेष ध्यान था। जोसेफस (Josephus)-ने लिखा है, कि उनके समयसे ले कर आर्त्तजरक्षस (Artaxerxes)के राज्य काल तक किसीने भी इस पवित्र ग्रंथका कलेवर बढाने की कोशिश न की।

ईसाकी २री सदीसे छठीं सदीके मध्य यहूदियों का 'तालमुद' नामका धर्मग्रंथ रचा गया। उसमें विभिन्न बाइबिलोंका शब्दविन्यास और पाठभेद उल्लिखित है। तालमुदके समाप्त होने पर टिबेरियाके मसोराइट लोगोंने (Masorites of Tiberias) बहु परिश्रम स्वीकार कर ग्रंथशुद्धि करनेका सकल्प किया।(१)

हिब्रू धर्मशास्त्रके समारिटन पेन्टाटूक (२) (Samaritan Pentateuch) और सेप्टुआजिन्ट (Septuagint) नामक ग्रंथका ग्रीक अनुवाद ही सर्व प्राचीन है। आज कल जो समारिटन पेन्टटुक देखनेमें आता है वह प्राचीन हिब्रू समारिटन ग्रंथकी नकल मात्र है। ओरिगेन राजाके राजत्वके पहले समारिया वासियोंने इस ग्रंथको प्रस्तुत किया था। ७० धार्मिक महापुरुषोंने ग्रीक अनुवाद किया था इस कारण इसका नाम 'सेन्टुआजिंट पड़ा।(३)

(१) विभिन्न समालोचकोंका इस विषयमें विभिन्न मत है। कोई कोई कहते हैं, कि उन्होंने पाठशुद्धि कर ग्रन्थकी पवित्रताकी रक्षा की थी। दूसरे कहते हैं, कि इससे ग्रन्थकी पवित्रता नष्ट की गई है। क्योंकि, इसमें पूर्व पुरुषों के मुखसे निकले हुये शब्द नहीं हैं, किन्तु इस विषयमें उनकी सद्विवेचना और परिश्रम सबको मान्य है।

(२) इस ग्रन्थकी मौलिकताको बहुत लोग स्वीकार नहीं करते।

(३) कोई कोई कहते हैं, कि यह ग्रन्थ यहूदियों की 'सानहेद्रिम' महासभामें ७१ सभ्यों के द्वारा अनुमोदित हुआ था। अन्य उपाख्यानों से पता चलता है, कि आलेक्सन्द्रियाके पुस्तकागारकी रक्षाके लिये टलेमी फिलाडेलफस ने स्मृति-ग्रन्थके लिये जेरुसलमके सर्वप्रधान पुरोहित एलियाजारको लिख भेजा था। तदनुसार उन्हों ने बारह जातिमेंसे छ छ करके १२ व्यक्तियों को अनुवादके लिये भेजा। जो कुछ भी हो, सेन्टुयाजिन्ट ग्रंथ जो विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा लिखा गया था उसके बहुत प्रमाण मिलते हैं। पेन्टाटुक ग्रन्थ भी इसी प्रकार टेलमीलेगस वा उसके पुत्र फिलाडेलफसके राजत्वकालमें लिखा गया था, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ईसाके जीवितकालमें यह पुस्तक यहूदियों के आदरकी विशेष सामिग्री थी। उसके प्रमाण उत्तरखण्डमें कई जगह लिये गये हैं। पश्चात् ईसाइयोंके आलोचनामें प्रवृत्त होने पर उन्होंने इस ग्रंथका परित्याग कर दिया।

आकुइला, थियोडोसियन और सिमाक्स नामके तीन ग्रीक अनुवाद २री सदीमें रचित हो ओरिगनके हेक्सा प्लायमें रखे गये थे। तत्पश्चात् १ली शताब्दीमें सिरीयक, ३रीमें कोप्टिक, ४थीमें इथियोपिक, ५वींमें आर्मेनियनोंके सेप्टुआजिन्टके आधार पर पूर्व और उत्तर बाइबिल खण्ड रचा गया। इसके सिवाय १ली या २री शताब्दीमें इतालीय, ४थी शताब्दीमें उलफिलसके गथिक अनुवादकी असम्पूर्ण प्रति पाई गई है।

पहिले जिन सब ग्रन्थों का उल्लेख किया है, वे मूल हिब्रू पुस्तकके अंशविशेषके अनुवाद मात्र हैं। प्रकृत स ग्रहाकारमें ग्रथित इस पुस्तककी जो एक प्रति मुरा टोनिओ के धर्मशास्त्रमें देखी जाती है वह १७० ई० में लिखी गयी थी। इसका प्रथम और शेष भाग नहीं मिलता। जो कुछ पुस्तकमें लिखा है उससे जाना जाता है, कि पवित्रात्मा मार्कके सुसमाचारसे इस ग्रंथका उद्बोधन हुआ है। किन्तु बीच बीचमें छूट भी है। सिरीय लोगों का पेशिटो (the peshito) ग्रंथ अविकल अनुवादित तो हुआ है पर उसमें कोई कोई अंश छूट गया है।

युसिबियस् (Eusebius)को उत्तर खण्डकी जो प्रति मिली थी वही आजकल जनसाधारणकी आग्रहकी वस्तु हो रही है। वे इस ग्रंथके दो हिस्से कर गये थे। एक

जोड़का हाथ कंधे पर आता है, तब अपना हाथ उसकी बगलमें ले जा कर उसकी उँगलियां पकड़ कर मरोड़ देते हैं और दूसरे हाथसे उसकी कोहनी पकड़ कर टांगसे मारते हैं। ऐसा करनेसे जोड़ तुरत जमीन पर गिर जाता है। यह पेंच उसी समय किया जाता है जब जोड़ शरीरसे सटा नहीं रहता, कुछ दूर पर रहता है।

बाहो (हिं० स्त्री०) बाह देखो।

बा (हिं० पु०) जल, पानी।

बा (फा० पु०) बार, दफा, मरतबा।

बाइ (हि० स्त्री०) बाई देखो

बाइविरंग (हि० स्त्री०) विडंग।

बाइबिल—ईसाइयोंकी प्रधान धर्म पुस्तक। ईश्वर अभिव्यक्त धर्मतत्त्वोंकी मूल वाक्यावली ग्रथित कर ईसाई लोग जिस पवित्र धर्मग्रन्थको मानते हैं उसी धर्मपुस्तकका ४थी शताब्दीमें महात्मा क्रूसोष्टमने (Chrysostom) 'बाइबिल' नाम रखा। भाषा और अन्तर्निहित विषयोंकी विभिन्नतासे यह ग्रन्थ दो भागोंमें विभक्त हुआ। प्राचीन कथाओंकी ऐतिहासिकता पर्यवेक्षण कर उन्होंने प्रथमार्द्धको पूर्व भाग (Old Testament) एवं परार्द्धको उत्तर भाग (New Testament) नामसे प्रकट किया। पूर्वखण्डकी ऐतिहासिक घटनाओंके साथ उत्तरखण्डका घटना निचय विशेषरूपसे संयुक्त है। प्रोटेष्टाण्ट सम्प्रदायके ईसाई उक्त दोनों ग्रन्थों की संयोजक घटनावलिको एपोक्रिफा (Apocrypha) या अप्रामाणिक समझते हैं। ये समस्त ईश्वरप्रोक्त घटनाएं हैं, इस विषयमें वे लोग सन्देह करते हैं।

अभी हम लोग भी जिस बाइबिलको देखते हैं वह दो विभागों में विभक्त है, पहला 'ओल्डटेस्टमेण्ट' दूसरा 'न्यु टेस्टमेण्ट'। इस New Testament विभागमें पूर्व [illegible] लिपिको धर्मशास्त्र वा Scripture कह कर [illegible] किया है। १८० ई०में ईश्वर समाचार विषयक [illegible] Holy-Scripture कहलाता था। ईरानियस् (Irenaeus) इस [illegible] पूर्व और उत्तरखण्डको [illegible] Lord's Scripture नाम रख गये हैं। पूर्वखण्डको ग्रीक [illegible] 'Palaia diatheke' [illegible] [illegible] Old Testament [illegible]

मुद्रित बाइबिल ग्रन्थके पूर्वखण्ड (Old Testment) में ३६ ग्रंथविभाग हैं। अति प्राचीनकालमें इसका कुछ अंश हिब्रू और कुछ काल्दीय भाषामें रचा गया था। उसके मध्य ईसासे दो सदी पहले संघटित हिब्रू काल्दीय साहित्यकी अनेक घटनायें सन्निवेशित हुई हैं।

पूर्वखण्डके इतिहास, परमार्थतत्त्व, भविष्यद्वाणी और काव्यांशके पश्चात् उत्तरखण्डका 'ईश्वर समाचार (Gospel), देव, मनुष्योंका संमिश्रण, ईसामसीहकी अलौकिकलीला और मृत्यु एवं ईसा प्रेरित दूतोंकी (Apostle's) भक्ति, देवानुरक्ति प्रभृति एकत्र ग्रथित हैं। यहूदियोंके पूर्वखण्डका विभाग वर्त्तमान प्रणालीसे बहुत भिन्न था। उन्हों ने अपनी वर्णमालाके अनुसार उसे २२ भागों में विभक्त किया है। स्मृति (Law), ईश्वर वाक्य और ईश्वर महिमाकीर्त्तन सूचक गान (Hagiographa) ये तीन तस्वरसे लिपिबद्ध हैं। पांच परिच्छेद (Book) तक मूसाकी स्मृति, जसूआ, जाजेस, सामुएल, किंग्स्, ईसाया, जिरिमिया और येजिकाएल प्रभृति ईश्वर नियोजित धर्मोपदेष्टाओंका धर्मतत्त्व और साम्स, प्रोभार्वस, इक्लिजियाष्टिस्, जाव, सलोमाके गीत, रुथ, लैमेन्टेसन्, एस्थर, दानियल, एजरा, नेहेमिया आदिमें ईश्वरप्रेम, भजन और मत्त्वा गीतोंमें कीर्त्तित हुए हैं। दूसरे दूसरे ग्रन्थों को ले कर यहूदी और ईसाइयोंमें घना मतभेद देखा जाता है।

यहूदियों के अवरोधसे पूर्व इस ग्रंथका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। मोजेसके उपदेशसे जाना जाता है, कि यह धर्मग्रंथ जलप्लावन-कालीन पवित्र जहाजके पार्श्वमें रख दिया गया था। जेरुसालेमका मन्दिर तैयार होनेके बाद राजा सलोमनने इस ग्रन्थको मन्दिरमें रखनेकी अनुमति दी। परवर्त्ती ईश्वरप्रणोदित व्यक्ति जिससे सार्वजनिक उपकारके लिये भविष्यमें इस ग्रंथकी रक्षा कर सकें इसकी भी उन्होंने व्यवस्था कर दी थी। किन्तु नेबुकाडनेजर (Nebuchadnezzar) के द्वारा जेरुसलम ध्वंस होनेके बाद इस ग्रंथकी हस्तलिपि नष्ट हो गयी। इसके पहले यहूदी इसकी प्रतिलिपि बेबीलन नगरमें ले गये थे इसलिये वह ध्वंससे बच रही। उन लोगोंके अवरोधके

समय दानियाल (Daniel)-ने जेरेमियाकी भविष्यवाणी का उल्लेख किया है। बन्दीदशासे मुक्त हो उन्होंने इस ग्रन्थके प्रति ईश्वरप्रेरित मोजेस गाथाके पुनरुद्धारके लिये पत्रादिसे अनुरोध किया। एजरा बहुत परिश्रमसे इस पवित्र धर्मशास्त्रोंको एक प्रतिलिपि संग्रह कर गये। यहूदियोंका उसकी पाठशुद्धिकी रक्षा करनेमें विशेष ध्यान था। जोसेफस (Josephus)-ने लिखा है, कि उसके समयसे ले कर आर्तक्षत्र (Artaxerxes)-के राज्य काल तक किसीने भी इस पवित्र ग्रन्थका कलेवर बढ़ानेकी कोशिश न की।

ईसाकी २री सदीसे छठी सदीके मध्य यहूदियों का 'ताल्मुद' नामका धर्मग्रन्थ रचा गया। उसमें विभिन्न बाइबिलोंका शब्दविन्यास और पाठभेद उल्लिखित है। ताल्मुदके समाप्त होने पर टिबेरियाके मसोरार्ट लोगोंने (Masorites of Tiberias) बहु परिश्रम स्वीकार कर ग्रन्थशुद्धि करनेका संकल्प किया।(१)

हिब्रू धर्मशास्त्रके समारिटन पेण्टाटूक (२) (Samaritan Pentateuch) और सेप्टुआजिण्ट (Septuagint) नामक ग्रन्थका ग्रीक अनुवाद ही सर्व प्राचीन है। आज कल जो समारिटन पेण्टटूक देखनेमें आता है वह प्राचीन हिब्रू समारिटन ग्रन्थकी नकल मात्र है। मोजेसके राज्यके प्रारम्भके पहले समारिया वासियोंने इस ग्रन्थका प्रस्तुत किया था। ७० पण्डित महापुरुषोंने ग्रीक अनुवाद किया था इस कारण इसका नाम 'सेप्टुआजिंट' पड़ा।(३)

आधुनिक, थियोडोसियस और सिमाकस नामके तीन ग्रीक अनुवाद २री सदीमें रचित हो ओरिगनके हेक्सा प्लामें रखे गये थे। तत्पश्चात् ३री शताब्दीमें सिरायक, ३रीमें कोप्टिक, ४थेमें इथिओपिक, ५वींमें आर्मेनियनोंने सेप्टुआजिण्टके आधार पर पूर्व और उत्तर बाइबिल खण्ड रचा गया। इसके सिवाय ९वीं या १०वीं शताब्दीमें स्लाभोय, ४थी शताब्दीमें उल्फिलसके गथिक अनुवादकी असम्पूर्ण प्रति पाई गई है।

पहिले जिन सब ग्रन्थों का उल्लेख किया है, वे मूल हिब्रू पुस्तकके अनुवाद मात्र हैं। ब्रिटिश म्युजियममें रक्षित इस पुस्तककी जो एक प्रति ग्रुटोलिमो के धर्मशास्त्रमें देखी जाती है वह १३१ ई० में लिखी गयी थी। इसका प्रथम और शेष भाग नहीं मिलता। जो कुछ पुस्तकमें लिखा है उससे जाना जाता है, कि पवित्रात्मा मार्कके कुलमाधारके इस ग्रन्थका संशोधन हुआ है। किन्तु बीच बीचमें छूट भी है। सिरिया लोगोंका पेशिटो (Peschito) ग्रन्थ अविकल अनुवादित तो हुआ है पर उसमें कोई कोई अंश छूट गया है।

युसिबियस् (Eusebius)-की उक्त ग्रन्थकी जो प्रति मिली थी वही आजकल जनसाधारणके आग्रहकी वस्तु हो रही है। वे इस ग्रन्थको हिब्रू कर गये थे। एक

- - - - - - - -

(१) विभिन्न समालोचकोंका इस विषयमें विभिन्न मत है। कोई कोई कहते हैं, कि इन्होंने पाठशुद्धि कर ग्रन्थकी पवित्रताकी रक्षा की थी। दूसरे कहते हैं, कि इससे ग्रन्थकी पवित्रता नष्ट की गई है। क्योंकि, इसमें पूर्वपुरुषों के मुखसे निकले हुये शब्द नहीं हैं, किन्तु इस विषयमें उनकी सद्विवेचना और परिश्रम सबको मान्य है।

(२) इस ग्रन्थकी मौलिकताको बहुत लोग स्वीकार नहीं करते।

(३) कोई कोई कहते हैं कि यह ग्रन्थ यहूदियों की 'सानहेड्रिन' सभासदोंमें ७२ सभ्यों के द्वारा अनुमोदित हुआ था। अन्य उपाख्यानों से पता चलता है, कि आलेकसन्द्रियाके पुस्तकागारकी रक्षाके लिये टलेमी फिलाडेलफसने स्मृतिग्रन्थके लिये जेरुसलमके सर्वप्रधान पुरोहित इलियाजारको लिख भेजा था। तदनुसार उन्होंने बारह जातियोंसे छः छः करके १२ व्यक्तियों को अनुवादके लिये भेजा। जो कुछ भी हो, सेप्टुआजिण्ट ग्रन्थ जो विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा लिखा गया था उसके बहुत प्रमाण मिलते हैं। पेण्टाटुक ग्रन्थ भी इसी प्रकार रचनाकौशल था इसके पूर्व किन्तु ईसाके जन्मकालमें लिखा गया था इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ईसाके आविर्भावकालमें यह पुस्तक यहूदियों में बहुत विशेष सम्मानित थी। उनके समान उपासकोंने कर धारण किये गये हैं। पश्चात् ईसाइयोंके ग्रन्थोपयोगमें प्रयुक्त होने पर यहूदीने इस ग्रन्थका परित्याग कर दिया।

हिस्सेमें स्वीकृत या प्रामाण्य विषय ( Acknowledged Books) सन्निवेश किये गये हैं और दूसरेमें अप्रामाणिक वा मतभेदयुक्त ग्रन्थांशको स्थान दिया गया है । प्रथम श्रेणीमें उन्होंने केवल सुसमाचार ( Gospel ), आदर्श पुरुषोंकी क्रियावली ( Acts of the Apostles ) और पाल, जान पीटर प्रभृति महापुरुषोंके पत्रों का उल्लेख किया है तथा द्वितीय श्रेणीमें कितने ही विषयोंको जनसाधारणसे अनुमोदित और कितनेको कृत्रिम तथा प्रक्षिप्त बतलाया है।

प्रोटेष्टाण्टों के गृहीत बाइबिल पुस्तकका वर्त्तमान अंशसमावेश १५वीं ई०में मार्टिन लूथरके द्वारा सम्पादित हुआ था। पूर्वखण्डकी 'पेन्टाटुक' नामक पञ्च पत्रिकामें सृष्टिप्रकरण, अब्राहिम प्रवर्त्तित ऐश्वरिक विधि, उनके वंशधरोंका इजिप्ट गमन, ईश्वरादेशसे उनका देशत्याग, सिनिया देशीय वनभ्रमण, कानन जय, वहीं पर निवास स्थानका निर्माण और उस देशके रहनेवालोंके धर्मकर्ममें जीवनातिपातके लिये मोजसकी विधि प्रभृति लिपिबद्ध हुई हैं । जसूया और जाजस नामके ग्रन्थों में ईस्रालराजवंशके स्थापनके पूर्व यहूदियों का इतिहास वर्णित है। इसके बाद रुथका उपाख्यान और उसके साथ साथ डेभिडके इतिहासका वर्णन देखा जाता है। परवर्त्ती सामुएल नामक दो पुस्तकों में साधु सामुएल, राजा सल और डेभिडके वर्णन प्रसङ्गमें राजविधि, राज्यस्थापन और नाना धार्मिक कथा, किंस, क्रोनिकेलस् नामक चार पुस्तकोंमें इस्रायल और जूडाका राज्यविवरण, सलोमनका राज्यारोहण, यहूदियोंका अवरोध, आसिरीय, बाबिलोनीय आक्रमण और यहूदिओं का इधर उधर गमन आदि विषय उल्लिखित हैं । इसके परवर्त्ती इजरा और नेहेमिया नामक दो पुस्तकों में यहूदियों की अवरोध मुक्ति और जेरुसलम नगरमें फिरसे राज्यपाट स्थापन, इष्थरमें यहूदियों का अवरोधप्रसङ्ग, जाव(१) नामकी पुस्तकमें केवल धर्मप्रसङ्ग और इसके बाद सामस् या गीतिग्रन्थ है । इस शेष ग्रन्थमें डेभिडसे ले कर यहूदिओं के अवरोध तक स गृहीत प्रार्थना भजनआदि गीत वर्णित हैं। ये सब भजन जेरुसलेमके मन्दिरमें जोर जोरसे पढ़े जाते थे।(२)

'प्रभार्ब' नामकी पुस्तकमें सलोमनका ज्ञानगर्भ और उपदेश सूत्र लिखे हुये हैं। इक्लिजियास्टिस् में जगत्का असारत्व और सलोमनकी गीतिमालामें विश्वासियों के प्रति ईसाका प्रेम, धर्मसहायतासे जीवात्माका परमात्माके साथ मिलन आदिका वर्णन है। कहीं भी उसमें अश्लील रूपसे वर्णन नहीं देखा जाता । तत्पश्चात् इसाया, जेरिमिया, एजिकायल, दानियल, होसिया, जोएल, आमोस, ओबादिआ, जोना, मिका, नाहुम, हबक्कुक, जेफानिया, हग्गै, जकारिया और मालाची प्रभृति धर्मवीरों का पुस्तकों में प्रेम, ईश्वरका न्यायविचार, मूर्त्तिपूजाका प्रतिषेध और इदोम, निनिभ प्रभृति विध्वस्त नगरों का उल्लेख है।

उत्तरखण्डके आरम्भमें ही खृष्ट धर्मघोषक ( Evangelist) मेथु, मार्क, लूक और जान-लिखित पुस्तकमें ईसा की महिमाका कीर्त्तन है। ईसाके दूतों की कार्यावली ( Acts of apostles )में यहूदी और जेन्टाइलोंके मध्य खृष्टमहिमा प्रचार, ईसूको ही खृष्टरूपसे कथन और खृष्ट विश्वासी धर्मसम्प्रदाय आदिका प्रसङ्ग देखा जाता है। तत्पश्चात् पालकी १४, जेम्सकी १, पिटरकी २, जूडाकी १ धर्म प्रचारिणी पत्रिका एवं जानका प्रत्यादेश सर्वशेष धर्मग्रन्थ हैं।

ईसाइयोंका बाइबिल नामक अंश कब और किस भाषा में लिखा गया था, इस विषयकी आलोचनामें प्रवृत्त हो प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्सु हिब्रु पण्डितगण एवं शब्दविद्गण शब्दशास्त्रके सामञ्जस्य द्वारा जिस सिद्धान्त पर पहुंचे हैं उसका एक पूर्वापर इतिहास यहां पर दिया गया है। पवित्र बाइबिल ग्रन्थके पूर्वखण्डमें हिब्रू भाषाके तीन

(१) यह ग्रन्थ बहुप्राचीन तथा मोजेसका लिखा हुआ है, ऐसा बहुतोंका विश्वास है।

(२) इस अंशमें धर्मका उच्छ्वास, ईश्वर वियोजित आत्माकी कातरोक्ति, आत्मग्लानि, भगवत्मिलन प्रत्याशा में परमानन्द, ईश्वरवाक्य, सदुपदेश, बाबिलनमें कातर यहूदियोंका क्रन्दन, मन्दिरके सम्मुख आर्कको देख पुरोहितोंकी आनन्दध्वनि प्रभृति करुण रसात्मक वार्त्ताका वर्णन है।

उपनिवेश्न देखे जाते हैं। मोशनके समय जिस भाषामें यहूदी लोग बोलते थे उसी हिब्रू भाषामें ये ग्रन्थ लिखित और अनूदित हुए थे। किन्तु कालमें प्राचीन हिब्रु भाषा जब कुछ मार्जित हुई तब आजेल, मागुल्ल किंग, एक्लिजियर स्याम्स, प्रभाग्रस और इसाया, जेरिमा, जोयल, आमस, ओबदिया, जोना मिका नाहुम, हबक्कुक प्रभृति ग्रन्थ प्रचलित हुए। इसके बाद बबीलोनके समय हिब्रू के साथ कार्डाल्जेनीय उपनायकलिपि संमिश्रित होने पर इस्थर, एजरा और नेहेमिया आदि ग्रन्थोंकी रचना हुई। डानियल और एजराका कुछ अंश काल्दी या अर मियान भाषामें लिखे हुए हैं। उत्तरखण्ड (The New Testament) हेलेनिष्टिक ग्रीक भाषामें रचा गया। ग्रीक औपनिवेशिक यहूदियोंने इस भाषाकी व्युत्पत्ति प्राप्त कर सरस्वामयिक ग्रन्थोंको अपनी अपनी भाषामें रच डाला। उसमें नई सभ्यासियोंने अपनी भाषाके शब्द भी उसके अन्दर शामिल कर दिये। इस प्रकार संमिश्रित ग्रीक भाषा हिब्रू ग्रीक कहलाने लगा। न्यायु इसके पालेष्टाइन अवस्थानकालमें यह मिश्रभाषा वहाँ पर प्रचलित थी। फिर उसी भाषामें उत्तरखण्ड लिपीबद्ध हुआ। हिब्रू बाइबिलका सबसे पहला मुद्रणकार्य १४८८ ई०में सोनसिनो द्वारा सम्पादित हुआ था। कम्प्लुटेन्सियन पोलिग्लटके लिये कार्डिनल जिमेनिस (Cardinal Ximenes) के व्ययसे बाइबिलका उत्तरखण्ड प्रकाशित हुआ। इसका मुद्रण १५०२ ई० में आरंभ हो १५१४ ई० में समाप्त हुआ था। किन्तु १५२२ ई० तक इसका सर्वसाधारणके निकट प्रचार न रहा। इसी समय इरासमस् (Erasmus) ने उक्त ग्रन्थको १५१६ ई०में मुद्रित कर प्रकाशित कर दिया। १८०७ ई०में डा० आर मिल्कके द्वारा बाइबिल मुद्रित हुई जिसमें नाना विभिन्न पाठोंका वर्णन है। १८३० ई० और १८३१ ई०में स्कोलज (Scholz) ने भिन्न दो खण्डोंमें बाइबिल प्रकाशित की उसमें ६७४ पुस्तकोंका नवीन है। पाठ न्तरमें ३३१ ग्रन्थोंका एक दूसरे मिला कर संस्करण प्रकाशित किया था। रिच (Rich), लकमान्(Lachmann) प्रभृति अनेक पंडितोंके यत्नसे ग्रन्थ ईसायता के लिये आदरणीय वस्तु है। इङ्गलैण्डमें भी कई बार अनेक प्रकारके बाइबिल मुद्रित हुए था। इस पुस्तकको



उपस्थित पवित्रता एकमात्र मनुष्यको ही है। यदि कोई इस अनुमोदित पाठको उपयोगी इच्छा करे, तो उन्हें गार्डियन बोर्डसे अनुमति लेनी पड़ती है। इंगलैण्डमें और और उसके प्रवर्त्तक बाइबिल शास्त्रके प्रचारके लिये पृथ्वीकी नाना स्थानोंमें ७० बाइबिल सोसाइटियाँ स्थापित हुई हैं। प्राय २५३ विभिन्न भाषामें बाइबिल ग्रन्थ मुद्रित हो चुके हैं। कहीं कहीं एक भाषामें दो तीन तरहका अनुवाद देखा जाता है।

बाइरोहृत—बम्बई प्रदेशके पञ्चगाम जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह विस्तृत मैदानके मध्यभागमें अवस्थित है। मनमाड़ और अमालनेरके निकट रहनेके कारण यह वाणिज्य केन्द्र हो गया है। शहरका बगलगढ़ नामक प्राचीन विष्णुमन्दिर देखने लायक है। मन्दिर की बनावट देखनेसे मालूम होता है, कि एक समय उसमें जिन मूर्त्ति प्रतिष्ठित था। मन्दिर गात्रमें दो स्तम्भोंमें १२वीं शताब्दीमें उत्कीर्ण दो शिलालेख पाये जाते हैं। इसमें प्रथम फलकमें ७३ पंक्ति और दूसरेमें ५१ पंक्ति है। पहला अस्पष्ट है और दूसरा यादवराज कार्त्तवीर्यके शासनकाल (११४३-११६४ ई०) के बीच उत्कीर्ण किया गया है।

बाइस (फा० पु० पु०) बाइस शब्द। २२ वें देखो।

बाइसवाँ (हिं० वि०) २२ वाँ देखो।

बाइसिकिल (अं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध गाड़ी। इसमें आगे पीछे दो पहिये होते हैं। इसके बीचमें सिर्फ बैठने भरके लिये छोटा सा स्थान रहता है। आगेकी ओर दोनों हाथ टेकने और गाड़ीका घुमानेके लिये मजबूत आधारकी एक टेक होती है। इसमें नीचेकी ओर एक चक्कर लगा रहता है जो पैरसे दबानेसे घूमता है जिससे गाड़ी बहुत तेजीसे चलती है।

बाईस (हिं० स्त्री०) १ विड्रोपीयेका वात रोग। इसके प्रकोपसे मनुष्य बेसुध या पागल हो जाता है। बाई देखो। २ स्त्रियोंके लिये आदरसूचक शब्द। जैसे, मनोरमाबाई, मस्तानीबाई। ३ एक शब्द जिसका प्रयोग स्त्रियाँ अपनी माता देवताओंके नामके साथ किया करती हैं।

बाईस (हिं० पु०) १ बीस और दोकी संख्या या अङ्क जो इस प्रकार लिखा जाता है—२२। (वि०) २ बीससे दो अधिक, जो बीस और दो हों।

**बाईसवाँ** ( हिं० वि० ) जो क्रममें बाईसके स्थान पर हो, गिननेमें बाईसके स्थान पर पड़नेवाला ।

**बाईसी** ( हिं० स्त्री०) १ बाईस वस्तुओंका समूह । २ बाईस पद्योंका समूह ।

**बाउ** ( हिं० पु० ) पवन, हवा ।

**बाउर** ( हिं० वि० ) १ बावला, पागल । २ भोला भाला, सोधा सादा । ३ मूर्ख, अज्ञान । २ मूक, गूंगा ।

**बाउरी** ( हिं० स्त्री० ) १ एक प्रकारकी घास । २ बावली देखो ।

**बाउरी**—पश्चिम बङ्गवासी निकृष्ट जाति । कृषिकार्य, मृत् पात्रनिर्माण और पालकी वहन इनका प्रधान व्यवसाय है । आकृतिगत सदृशता देख कर मानवतत्त्वविद्गने इन्हें पार्वतीय जातिमें शामिल किया है ।

इनके मध्य भी विभिन्न थाक हैं । यथा—१ मल्ल भूमिया, २ शिकारिया और गोवरिया, ३ पञ्चकोटी, ४ माला या मूलो, ५ धूलिया या धूलो, ६ मालुआ या मलुआ, ७ भाटिया या भेटिया, ८ काठुरियो, ६ पाथुरिया । भिन्न स्थानोंमें वास या जातीय व्यवसायके कारण इन लोगों-के मध्य वर्त्तमानकालमें बहुत कुछ स्वतन्त्रता आ गई है । किन्तु विवाहके सम्बन्धमें कोई गोलमाल नहीं है । ममेरा और चचेरा सम्बन्ध बाद दे कर ये सगोत्रमें भी विवाह करते हैं । अलावा इसके एक वंशके मध्य वरकी सात पीढ़ी और कन्याकी तीन पीढ़ी छोड़ कर भी विवाह चलता है । बहुविवाह उसी हालतमें होता है जब वह अपनेको उनके भरणपोषणमें समर्थ देखता है । विवाहके कोई मन्त्र तन्त्र नहीं हैं । वरकर्त्ता कन्याकर्त्ता को सवा रुपये और उपस्थित व्यक्तियोंको एक भोज दे सकनेसे ही विवाह कार्य सिद्ध होता है । विधवाविवाह भी प्रचलित है । किन्तु अधिकांश जगह विधवा अपने देवरसे ही कर लेती है । काली, विश्वकर्मा इनके उपास्य देवता हैं । मरने पर शवदेह जलाई जाती है । किन्तु बाँकुड़ा जिलेमें मृतको औंधे मुंह करके गाड़ देते हैं ।

**बाउल**—वैष्णव सम्प्रदायविशेष । श्री चैतन्य महाप्रभुको ही ये लोग अपने सम्प्रदायके प्रवर्त्तक बतलाते हैं । किन्तु यथार्थमें कौन व्यक्ति इस साम्प्रदायिक मतकी सृष्टि कर गये हैं, ठीक ठीक मालूम नहीं । ये लोग अपनी साधन प्रणाली किसीके भी सामने प्रकट नहीं करते । इनका विश्वास है, कि किसीके सामने अपना साम्प्रदायिक मत या भजन प्रणाली प्रकट करनेसे पाप लगता है । ये लोग कहते हैं, कि परमदेवता श्री राधाकृष्ण युगल रूपमें मानव हृदयमें विराजित हैं । सुतरां नरदेह त्याग करके उनकी तलाशमें दूसरी जगह जानेकी जरूरत नहीं ।

अखिल ब्रह्माण्डके निखिल पदार्थमात्र ही मनुष्य शरीर में विद्यमान हैं । इस कारण उनका मत देहतत्त्व नामसे भी प्रसिद्ध है । 'जो भाण्डमें है, वह ब्रह्माण्डमें है ।' इस बातकी सार्थकता सम्पादन करनेके लिये वे व्याख्या देते हैं, कि चन्द्र, सूर्य, अग्नि, ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर तथा गोलोक, वैकुण्ठ और वृन्दावन, ये सभी देहके मध्य वर्त्तमान हैं ।

मानव देहमें विराजमान परमदेवताके प्रति प्रेमा नुष्ठान इस सम्प्रदायका मुख्य साधन है । प्रकृति पुरुषके परस्पर प्रेमसे ही वह प्रेम पर्याप्त होता है । अतएव प्रकृति साधन ही इन लोगोंकी साधनाका प्रधान अङ्ग है । ये लोग एक एक प्रकृति ले कर वास करते हैं और उसी प्रकृतिकी साधनामें आजीवन प्रवृत्त रहते हैं । यह साधन पद्धति अति गुह्य व्यवहार है । दूसरेके जाननेका उपाय नहीं है, जाननेसे भी वह लेखनीय नहीं है । कामरिपु उपभोगके प्रकरण विशेष द्वारा कालका शान्ति-साधन पूर्वक चरममें परम पवित्र प्रेममात्र अवलम्बन करना इस साधनका उद्देश्य है । इनका मत है, कि जब वह प्रेम परिपक्व हो जाता है, तब स्त्री पुरुष दोनों ही नितान्त आत्म विस्मृत और बाह्यज्ञान शून्य हो कर अपनी लीला से केवल राधाकृष्ण-लीलाका अनुभव कर सकते हैं ।

उस प्रकृति साधनके अन्तर्गत 'चारिचन्द्रभेद' नामक एक क्रिया है । मनुष्य उस क्रियाको अतिमात्र वीभत्स व्यापार समझ सकते हैं पर बाउल सम्प्रदायी उसे परम पवित्र पुरुषार्थको साधन मानते हैं । उनका कहना है, कि मनुष्य उक्त चार चन्द्र ( अर्थात् देहसे निर्गत शोणित, शुक्र, मल और मूत्र ये चार पदार्थ )को पिताके औरस और माताके गर्भसे प्राप्त करते हैं । अतएव उन चारों पदार्थका परित्याग न करके पुनः शरीरके मध्य ग्रहण करना कर्त्तव्य है । घृणाप्रवृत्ति पराभवके लिये इनके

मध्य सम्मान्य स्थान देने जाते हैं। इस सम्प्रदायके लोग नर वध तो नहीं करते, पर नर-देह पानेसे उसका मांस खाते हैं। अथवा चन्द्र संग्रह करके उसे पहननेकी प्रथा भी इन लोगोंमें प्रचलित है।

यद्यपि ये लोग अनेक विषयोंमें गुप्तरूपसे लोकविरुद्ध कार्य करते हैं, तो भी लोक-समाजमें डरके मारे कुछ कुछ लोकाचारके अनुसार भी चलते हैं।

ये लोग केवल लोगोंको दिखानेके लिये तिलक और माला धारण करते हैं। मालामें स्फटिक, प्रवाल, पद्म बीज, रुद्राक्ष आदि नानाप्रकार वस्तु भी गुंथी रहती हैं।

इनके मतसे विग्रह सेवा या उपवासादि आवश्यक नहीं है। कोई कोई मध्याहारी बाउल विग्रहकी स्थापना तो करते हैं, पर यह बाउलके मतानुसार पुण्य और निन्द नीय है। इन लोगोंमें छ्यापा उपाधि भी देखी जाती है। फलतः बाउल और छ्यापा दोनों एक ही अर्थ बोधक है।

प्रेमउपासनातत्त्व, नायिकासिद्धि, रागमयीकणा और गोपिनी आदि इनके कई एक साम्प्रदायिक ग्रन्थ हैं। उन ग्रन्थोंमें इस मतका विशेष वृत्तान्त वर्णित हुआ है।

बाएँ (हि० क्रि० वि०) बाई ओर, बाईं तरफ।

बाचाल (हि० वि० मुँहजोर, बहुत अधिक बोलने वाला।

बाछरी (हिं० स्त्री०) पांच महीनेकी ब्याई गाय।

बाजरा (स० पु०) एक प्रकारकी बड़ी नदर जिसकी कड़ियोंकी नावें बनती हैं।

बाटली हि० स्त्री०) आसाम और मध्यप्रदेशमें बहुता बनमें मिलनेवाला एक प्रकारका वृक्ष। इसके पत्ते रेशम-के कीड़ोंको खिलाये जाते हैं। यह वृक्ष बहुत ऊंचा होता है। इसकी लकड़ी भूरे रंगकी और बहुत मजबूत होती है। इससे खेतीके अच्छे अच्छे सामान बनते हैं। इसकी छालको चमड़ा सिझाया जाता है।

बाकरी (हि० वि०) बहाजके मस्तूलको एक ओरसे दूसरी ओर फेरनेका काम।

बाकी (अ० वि०) १ अवशिष्ट, जो बच रहा हो। (स्त्री०) २ गणितमें एक प्रकारकी रीति इसके अनुसार किसी एक संख्या या मानको किसी दूसरी संख्या या मानमेंसे घटाया जाता है। ३ घटानेके बाद बची हुई संख्या या मान।

बाकी (अ० अव्य०) १ परन्तु, लेकिन। (स्त्री०) २ एक प्रकारका धान।

बाकु सा (हि० पु०) कु ओके फूलका सुखाया हुआ केसर। यह खानी और मद्योंमें औषधकी तरह दिया जाता है।

बाकुची (हि० स्त्री०) सोमराजी।

बाकुर—कटक जिलेके अन्तर्गत एक समुद्रकी खाड़ी। यह महानदीकी शाखाके मुँहसे संयोजित है। १८६६ ई०में उड़ीसा दुर्भिक्षके समय अनेक गवर्मेण्टने इस खाड़ीके मुह पर एक चावलकी आढ़त खोल दी थी।

बाकुर (हिं० स्त्री०) आगमन, बढ़ता हुआ।

बाखरगञ्ज—बङ्गाल और आसामके ढाका विभागका एक जिला। यह अक्षा० २१ ४१ से २३ ५ उ० तथा देशा० ८९ ५२ से ९१ ३ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४५४२ वर्गमील है। इसके उत्तरमें फरीदपुर, पूर्वमें मेघना और शाहबाज नदी, दक्षिणमें बङ्गालकी खाड़ी और पश्चिममें बलेश्वर नदी है। गङ्गा, मेघना और ब्रह्मपुत्र नामक प्रधान नदी तथा कुछ छोटी छोटी शाखाएं जिलेके मध्य हो कर बह गई हैं। यहांके उन जगहोंमें यहां धान काफी उपजता है। बाखरगञ्जका बालाम चावल बंगालमें मशहूर है। अंगरेजोंने इसी स्थानको कलकत्ते का धान्यागार (Grain ry of Calcutta) बतला कर उल्लेख किया है। यहांकी प्रायः सभी नदियोंमें ज्वार आते जाते हैं। मेघना नदीमें जब बाढ़ उमड़ आती है, तब लोग बह जाते हैं। इस नदीके मुहाने पर बहुतसे छोटे छोटे द्वीप उत्पन्न हुए हैं। इनमेंसे दक्षिण शाहबाजपुर, मानपुर, रामुना और रायनाबाद आदि द्वीप ही विशेष उल्लेखयोग्य हैं। सुन्दरी काष्ठ, चावल, सुपारी आदिको दूर दूर देशोंमें बहुतायतसे रफ्तनी होती है।

अकबर-सेनापति टोडरमलने १५८२ ई०में इस स्थानको सोनारगांव सरकारके अन्तर्भुक्त कर लिया था। १६५८ ई०में सुल्तान सुजाके बन्देलोंसे जब बङ्गाल प्रान्तमें पुनः शासन कार्य आरम्भ हुआ, तब सुन्दरवनका बाखरगञ्ज विभाग सुजाबादके नामसे प्रसिद्ध हुआ। १७२१ ई०में

सम्राट् महम्मदशाहके राजत्वकालमें बङ्गालके नवाव जाफर खाँ द्वारा जो जरीप कराई गई, उसमें बाखरगञ्ज और सुन्दरवन जहांगीरनगर बाङ्गलाके अन्तर्भुक्त रहा। बङ्गाल इष्टइण्डिया कम्पनीके हाथ आनेके बाद १७६५-१८१७ ई० तक यह स्थान ढाकाके राजस्व सग्राहकके अधीन था। किन्तु यहाके विचार-कार्यके लिये स्वतन्त्र जज और मजिष्ट्रेट नियुक्त थे। उस समय कृष्णकाटी और कीरावाद नदीके सङ्गमस्थल पर बाखरगञ्ज नगरमें ही इसकी अदालत प्रतिष्ठित थी।

१८०१ ई०में विचार विभागके बरिशाल नगरमें उठ आनेसे वह स्थान जनशून्य और परित्यक्त हो गया। दूसरे वर्ष इस जिलेकी आकृति बहुत कुछ बदल गई।

इस जिलेमें ५ शहर और ४६१२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या २० लाखसे ऊपर है। मुसलमानोंकी संख्या सब कौमोंसे ज्यादा है।

बरिशाल, बाखरगञ्ज, बउफल, नलछिटी, झालकाटी और पिरोजपुर नगर यहाके प्रधान स्थान हैं। यहाके अधिवासी बड़े ही दुर्द्धर्ष हैं। डकैती, मारपीट और खूनी मुकदमेंकी पेशी बरिशालमें बहुत देखी जाती है। लोगोंका अत्याचार जैसा क्षतिकर है, तूफान, बाढ़ आदि भी वैसा ही शस्यादिके लिये हानिकारक है।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत उन्नति कर रहा है। अभी कुल मिला कर ३०७४ स्कूल हैं जिनमेंसे एक शिल्प कालेज है। स्कूलके अलावा ४१ अस्पताल और चिकित्सालय हैं।

बाग (अ० पु०) १ वाटिका, उपवन, उद्यान। २ लगाम।

बागडोर (हि० स्त्री०) १ वह रस्सी जो घोड़े की लगाममें बांधी जाती है और जिसे पकड़ कर साईस लोग उसे टहलाते हैं। २ लगाम।

बागना (हिं० क्रि०) चलना, फिरना।

बागबान (फा० पु०) वह जो बागकी रखवाली, प्रबंध और [illegible] आदि करता हो, माली।

बागबान—बम्बई प्रदेशकी धारवाड़ जिलावासी माली जाति-विशेष। [illegible] व्यवहार इन लोगोंका बहुत कुछ [illegible] है। औरङ्गजेब बादशाहकी अमलदारीमें [illegible] धर्ममें दीक्षित हुए हैं। ये स्वभावसे ही सबल दृढ़काय होते हैं। पुरुष माथेके बाल छटवाते हैं, किन्तु दाढ़ी रखाते हैं। इनकी रमणियोंका वेश भूषा ठीक हिंदू रमणी सरीखा है। बाजारमें फल, शाक सब्जी आदि बेचनेमें ये पुरुषोंकी सहायता करती हैं। ये लोग अपनी श्रेणिमें ही विवाहादि करते हैं। सामाजिक नियमके भंग करनेवालोंको चौधुरी दण्ड देते हैं। मुसलमान होने पर भी ये लोग गुप्तरूपसे हिंदू-देवदेवीको पूजते हैं तथा उत्सव करते हैं। विवाहादिमें काजीको बुलाते हैं। ये लोग इनकी सम्प्रदायभुक्त सुन्नी मुसलमान हैं इनमें कोई भी कभी कलमा पाठ नहीं करता।

बागबानी (फा० स्त्री०) १ मालीका पद। २ मालीका काम।

बागर (हिं० पु०) १ नदी किनारेकी वह ऊंची भूमि जहां तक नदीका पानी कभी पहुंचता ही नहीं। २ बागुर देखो।

बागलकोट—बम्बईके बीजापुर जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १६° ४' से १६° २८' उ० तथा देशा० ७५° २६' से ७६° ३' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६८३ वर्गमील और जनसंख्या प्राय १२३४५६ है। इसमें १ शहर और १६० ग्राम लगते हैं। जिले भरमें यहाका जलवायु बहुत अच्छा है।

२ उक्त तालुकका सदर। यह अक्षा० १६° ११' उ० तथा देशा० ७५° ४२' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या उन्नीस हजारसे ऊपर है। यहां रेशमी और सूती कपड़े का विस्तृत कारबार है। शहरसे ढाई कोस दूर मुख कन्दि नामक स्थानमें एक बड़ी पुष्करिणी है। उसके जलसे खेतीबारी होती है। शहरमें सब जजकी अदालत, अस्पताल और एक म्युनिसिपल स्कूल है। कहते हैं, कि पहले यह स्थान सिंहलाधिपति रावणके गायकके अधिकारमें था। १६वीं शताब्दीमें विजय नगरके राजाने इस पर दखल जमाया। १६६४से १७५५ ई०तक यह सब नूरके नवावके अधिकारमें रहा। पीछे पेशवाने उसे छीन कर अपने राज्यमें मिला लिया। १७७४ ई०में यह हैदरके हाथ लगा, पीछे पेशवाने उसका पुनरुद्धार किया। पेशवाके समय शहरमें एक टक्साल थी। जिसमें १८३५

ई० तक सुचारुरूपसे काम चलता रहा था। शहरमें पांच स्कूल हैं जिनमेंसे एक बालिकाके लिये है।

बागउपुर—मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलान्तर्गत एक नगर।

बागलान—१ बम्बईके नासिक जिलान्तर्गत एक प्राचीन राज्य। इसके पूर्वमें चन्दोर, पश्चिममें सूरत और समुद्र, उत्तरमें सुलतानपुर तथा दक्षिणमें नासिक और त्रिम्बक हैं। पहले यह राज्य ३४ परगनोंमें विभक्त था। यहांके नौ दुर्गोंमेंसे शालहीर और मूल्हीर नामक दो पहाड़ी दुर्ग दुर्भेद्य थे। दाक्षिणात्यकी चढ़ाई करते समय औरङ्गजेबने इस राज्य पर दांत गड़ाया था। तदनुसार उन्होंने १६३७ ई०में यहां एक दल सेना भेजी। मूल्हीरपतिने आत्मरक्षाका कोई उपाय न देख दुर्गकी ताली मुगलों के पास भेज दी। १८१४ ई०को ३री जुलाईको मूल्हीर-किला अंगरेजोंके हाथ लगा और बागलान राज्य खान्देशमें मिला लिया गया। इसके बाद यह नासिक जिलेके अन्तर्भुक्त हुआ।

२ बम्बईके नासिक जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० २० २६´से २० ५३´ उ० तथा देशा० ७३ ५१´ से ७४ २४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६०१ वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारसे ऊपर है। इसमें १५६ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है। वर्षाऋतुके बाद यहां मलेरियाका विशेष प्रकोप देखा जाता है।

बागवान (हिं० पु०) बागबान देखो।

बागवानी (हिं० स्त्री०) बागबानी देखो।

बागाँचड़ा—नदिया जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह शान्तिपुरसे ५ मील पश्चिम-उत्तरमें अवस्थित है। यह स्थान गङ्गाके गर्भसे निकल कर क्रमशः जङ्गलमें परिणत हो गया और यहां बहुतसे बाघ आदि वास करने लगे। इसी कारण 'बाघचर'से इस स्थानका नामकरण हुआ है। प्रसिद्ध तान्त्रिक रघुनन्दनका यहीं पर वास था। जनसाधारणमें ये पूर्णानन्दगिरि परमहंस नामसे प्रसिद्ध थे। उनके बनाये हुए अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, यथा—षट्चक्रभेद, श्यामकेश्वरतन्त्र, श्यामारहस्यतन्त्र, शाक्तक्रमतन्त्र और तत्त्वचिन्तामणि। अन्तिम ग्रन्थ १४६६ शकमें रचा गया था। यहां पर दूर दूर देशके लोग वाग्देवी ठाकुरानीकी पूजा करने आते हैं। प्रति शनि और मङ्गलवारको यात्रीका समागम होते हैं। रघुनन्दनके भागिनेय महादेव मुखोपाध्यायके वंशधर यहांके अधिकारी माने जाते हैं। वाग्देवी-प्रतिष्ठाके बाद चाद राय नामक किसी धनी व्यक्तिने यहां एक शिवालय निर्माण किया। अभी चादरायकी अट्टालिका जङ्गलमें परिणत हो गई है। जङ्गल भी चादरायका जङ्गल नामसे प्रसिद्ध है।

बागा (फा० पु०) अंगेकी तरहका पुराने समयका एक पहनावा जो घुटनों तक लम्बा होता है और जिसमें छाती पर तीन बंद लगते हैं, जामा।

बागासा—१ बम्बईप्रदेशके काठियावाड राज्यके अन्तर्गत एक छोटा सामन्त राज्य। यहांके सामन्त गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको राजकर दिया करते हैं।

२ काठियावाड़के अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २१ २६´ उ० तथा देशा० ७१ पू०के मध्य कुनकावससे १५ मीलकी दूरी पर पड़ता है। जनसंख्या ६१७८ है। देवगाम देवलीके वलमन्त भायने इसे १५२५ ई०में जीता।

बागी (अ० पु०) वह जो प्रचलित शासन-प्रणाली अथवा राज्यके विरुद्ध विद्रोह करे, विद्रोही, राजद्रोही।

बागीचा (फा० पु०) उद्यान, उपवन।

बागुर (हिं० पु०) पक्षी या मृग आदि फँसानेका जाल। इसका दूसरा नाम बागौर भी है।

बागेपल्ली—महिसुरके कोलार जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १३ ३७´ से १३ ५८´ उ० तथा देशा० ७७ ३६´ से ७८ ८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४४७ वर्गमील और जनसंख्या ६५ हजारके करीब है। इसमें २ शहर और ३७२ ग्राम लगते हैं।

बागेवाड़ी—१ बम्बई प्रदेशके कालादगी जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ७६४ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक नगर और प्रधान वाणिज्य स्थान।

बागेश्वर—युक्तप्रदेशके अलमोरा तहसीलका एक ग्राम। यह अक्षा० २९ ५१´ उ० तथा देशा० ७९ ४८´ पू०के मध्य सरयू और गोमती नदीके मध्यस्थल पर अवस्थित

सम्राट् महम्मदशाहके राजत्वकालमें बङ्गालके नवाब जाफर खाँ द्वारा जो जरीप कराई गई, उसमें वाकरगञ्ज और सुन्दरवन जहांगीरनगर वाकलाके अन्तर्भुक्त रहा। बङ्गाल इष्टइण्डिया कम्पनीके हाथ आनेके बाद १७६५-१८१७ ई० तक यह स्थान ढाकाके राजस्व सग्राहकके अधीन था। किन्तु यहाके विचार-कार्यके लिये स्वतन्त्र जज और मजिष्ट्रेट नियुक्त थे। उस समय कृष्णकाटी और गौराबाद नदीके सङ्गमस्थल पर बाकरगञ्ज नगरमें ही इसकी अदालत प्रतिष्ठित थी।

१८०१ ई०में विचार विभागके वरिशाल नगरमें उठ आनेसे वह स्थान जनशून्य और परित्यक्त हो गया। दूसरे वर्ष इस जिलेकी आकृति बहुत कुछ बदल गई।

इस जिलेमें ५ शहर और ४६१२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या २० लाखसे ऊपर है। मुसलमानोंकी संख्या सब कौमोंसे ज्यादा है।

वरिशाल, बाकरगञ्ज, बउफल, नलछिटी, झालकाटी और पिरोजपुर नगर यहाके प्रधान स्थान हैं। यहाके अधिवासी बडे ही दुर्द्धर्ष हैं। डकैती, मारपीट और खूनी मुकदमेंकी पेशी वरिशालमें बहुत देखी जाती है। लोगों का अत्याचार जैसा क्षतिकर है, तूफान, बाढ आदि भी वैसा ही शस्यादिके लिये हानिकारक है।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत उन्नति कर रहा है। अभी कुल मिला कर २०७४ स्कूल हैं जिनमेंसे एक शिल्प-कालेज है। स्कूलके अलावा ४१ अस्पताल और चिकित्सालय हैं।

बाग ( अ० पु० ) १ वाटिका, उपवन, उद्यान। २ लगाम।

बागडोर ( हि० स्त्री० ) १ वह रस्सी जो घोडे की लगाममें बांधी जाती है और जिसे पकड कर साईस लोग उसे टहलाते हैं। २ लगाम।

बागना ( हिं० क्रि० ) चलना, फिरना।

बागवान (फा० पु०) वह जो बागकी रखवाली, प्रबन्ध और सजावट आदि करता हो, माली।

बागवान्—बम्बई प्रदेशकी धारवाड जिलावासी माली जाति विशेष। आचार व्यवहार इन लोगोंका बहुत कुछ कुणबी जातिके समान है। औरङ्गजेब बादशाहकी अमलदारीमें लोग मुसलमानी धर्ममें दीक्षित हुए हैं। ये स्वभावसे ही सबल दृढकाय होते हैं। पुरुष माथेके बाल छटवाते हैं, किन्तु दाढी रखते हैं। इनकी रमणियोंका वेश भूषा ठीक हिंदू रमणी सरीखा है। बाजारमें फल, शाक सब्जी आदि बेचनेमें ये पुरुषोंकी सहायता करती हैं। ये लोग अपनी श्रेणिमें ही विवाहादि करते हैं। सामाजिक नियमके भंग करनेवालोंको चौधुरी दंड देते हैं। मुसलमान होने पर भी ये लोग गुप्तरूपसे हिंदू-देवदेवीको पूजते हैं तथा उत्सव करते हैं। विवाहादिमें काजीको बुलाते हैं। ये लोग हनफी सम्प्रदायभुक्त सुन्नी मुसलमान हैं इनमें कोई भी कभी कलमा पाठ नहीं करता।

बागवानी ( फा० स्त्री० ) १ मालीका पद। २ मालीका काम।

बागर ( हिं० पु० ) १ नदी किनारेकी वह ऊंची भूमि जहां तक नदीका पानी कभी पहुंचता ही नहीं। २ बागु देखो।

बागलकोट—बम्बईके बीजापुर जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १६° ४' से १६° २८' उ० तथा देशा० ७५° २६' से ७६° ३' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६८३ वर्ग मील और जनसंख्या प्राय १२३४५६ है। इसमें १ शहर और १६० ग्राम लगते हैं। जिले भरमें यहाका जलवायु बहुत अच्छा है।

२ उक्त तालुकका सदर। यह अक्षा० १६° ११' उ० तथा देशा० ७५° ४२' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या उन्नीस हजारसे ऊपर है। यहा रेशमी और सूती कपडेका विस्तृत कारबार है। शहरसे ढाई कोस दूर मुक्तकन्दि नामक स्थानमें एक बडी पुष्करिणी है। उसके जलसे खेतीबारी होती है। शहरमें सब जजकी अदालत, अस्पताल और एक म्युनिसिपल स्कूल है। कहते हैं, कि पहले यह स्थान सिंहलाधिपति रावणके गायकके अधिकारमें था। १६वीं शताब्दीमें विजय नगरके राजाने इस पर दखल जमाया। १६६४से १७५५ ई०तक यह सवनूरके नवाबके अधिकारमें रहा। पीछे पेशवाने उसे छीन कर अपने राज्यमें मिला लिया। १७७४ ई०में यह हैदरके हाथ लगा, पीछे पेशवाने उसका पुनरुद्धार किया। पेशवाके समय शहरमें एक टकसाल थी। जिसमें १८३५

ई० तक सुचारुरूपसे काम चलता रहा था। शहरमें पांच स्कूल हैं जिनमेंसे एक बालिकाके लिये है।

बागलपुर—मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलान्तर्गत एक नगर।

बागलान—१ बम्बईके नासिक जिलान्तर्गत एक प्राचीन राज्य। इसके पूर्वमें चन्दोर, पश्चिममें सूरत और समुद्र, उत्तरमें सुल्तानपुर तथा दक्षिणमें नासिक और तिम्बक हैं। पहले यह राज्य ३४ परगनोंमें विभक्त था। यहांके नौ दुर्गोंमेंसे शाल्हीर और मूल्हीर नामक दो पहाड़ी दुर्ग दुर्भेद्य थे। दाक्षिणात्यकी चढ़ाई करते समय औरङ्गजेबने इस राज्य पर दांत गड़ाया था। तदनुसार उन्होंने १६३७ ई०में यहां एक दल सेना भेजी। मूल्हीरपतिने आत्मरक्षाका कोई उपाय न देख दुर्गकी ताली मुगलों के पास भेज दी। १८१४ ई०की ३री जुलाईको मूल्हीर-किला अंगरेजोंके हाथ लगा और बागलान राज्य खानदेशमें मिला लिया गया। इसके बाद यह नासिक जिलेके अन्तर्भुक्त हुआ।

२ बम्बईके नासिक जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० २० २६´ से २० ५३´ उ० तथा देशा० ७३ ५१´ से ७४ २४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६०१ वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारसे ऊपर है। इसमें १५६ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है। वर्षाऋतुके बाद यहां मलेरियाका विशेष प्रकोप देखा जाता है।

बागवान (हिं० पु०) बागबान देखो।

बागवानी (हिं० स्त्री०) बागबानी देखो।

बागांचड़ा—नदिया जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह शान्तिपुरसे ५ मील पश्चिम-उत्तरमें अवस्थित है। यह स्थान गंगाके गर्भसे निकल कर क्रमशः जङ्गलमें परिणत हो गया और यहां बहुतसे बाघ आदि वास करने लगे। इसी कारण 'बाघचर'-से इस स्थानका नामकरण हुआ है। प्रसिद्ध तान्त्रिक रघुनन्दनका यहीं पर वास था। जन साधारणमें वे पूर्णानन्दगिरि परमहंस नामसे प्रसिद्ध थे। उनके बनाये हुए अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, यथा—षट्चक्र भेद, वामकेश्वरतन्त्र, श्यामारहस्यतन्त्र, शाक्तक्रमतन्त्र और तत्त्वचिन्तामणि। अन्तिम ग्रन्थ १४९९ शकमें रचा गया था। यहां पर दूर दूर देशके लोग वाग्देवी ठाकुरानीको पूजा करने आते हैं। प्रति शनि और मङ्गलवारको यात्री समागम होते हैं। रघुनन्दनके भागिनेय महादेव मुखोपाध्यायके वंशधर यहांके अधिकारी माने जाते हैं। वाग्देवी प्रतिष्ठाके बाद चाद राय नामक किसी धनी व्यक्तिने यहां एक शिवालय निर्माण किया। अभी चादरायकी अट्टालिका जङ्गलमें परिणत हो गई है। जङ्गल भी चादरायका जङ्गल नामसे प्रसिद्ध है।

बागा (फा० पु०) अंगेकी तरहका पुराने समयका एक पहनावा जो घुटनों तक लम्बा होता है और जिसमें छाती पर तीन बंद लगते हैं, जामा।

बागासा—१ बम्बईप्रदेशके काठियावाड़ राज्यके अन्तर्गत एक छोटा सामन्त राज्य। यहांके सामन्त गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको राजकर दिया करते हैं।

२ काठियावाड़के अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २१ २९´ उ० तथा देशा० ७१ पू०के मध्य कुनकावासे १५ मीलकी दूरी पर पड़ता है। जनसंख्या ६१७८ है। बेगाम देवलीके वलमन्त्व भायने इसे १५२५ ई०में जीता।

बागी (अ० पु०) वह जो प्रचलित शासन प्रणाली अथवा राज्यके विरुद्ध विद्रोह करे, विद्रोही, राजद्रोही।

बागीचा (फा० पु०) उद्यान, उपवन।

बागुर (हिं० पु०) पक्षी या मृग आदि फंसानेका जाल। इसका दूसरा नाम बागोर भी है।

बागेपल्ली—महिसुरके कोलर जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १३ २३´ से १३ ५८´ उ० तथा देशा० ७७ ३६´ से ७८ ८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४४७ वर्गमील और जनसंख्या ६५ हजारके करीब है। इसमें २ शहर और ३७२ ग्राम लगते हैं।

बागेवाड़—१ बम्बई प्रदेशके कालादगी जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ७६४ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक नगर और प्रधान वाणिज्य स्थान।

बागेश्वर—युक्तप्रदेशके अल्मोरा तहसीलका एक ग्राम। यह अक्षा० २९ ५१´ उ० तथा देशा० ७९ ४८´ पू०के मध्य सरयू और गोमती नदीके मध्यस्थल पर अवस्थित

है। यहां मध्य एशिया और भोट राज्यके साथ वाणिज्य चलता है। प्रति वर्ष जनवरीमासमें एक भोटिया मेला लगता है। इस समय पर्वतजात नाना द्रव्य विकनेके लिये आते हैं। प्रवाद है, कि मुगल सरदार तैमुरने वागेश्वर उपत्यकामें एक उपनिवेश बसाया था, किन्तु उसका अभी चिह्नमात्र भी नहीं देखा जाता है।

बागेसरी (हिं० स्त्री०) १ सरस्वती। २ सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी जो किसीके मतसे मालकोश रागकी स्त्री और किसीके मतसे भैरव, केदार, गौरी और देवगिरी आदि कई रागों तथा रागिनियों के मेलसे बनी हुई सकर रागिनी है।

बागोर—राजपूतानेके उदयपुर राज्यान्तर्गत इसी नामके परगनेका सदर। यह अक्षा० २५° २२' उ० तथा देशा० ७४° २३' पू० कोठारी नदीके बाएं किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ढाई हजारसे ऊपर है।

बाग्डी—गलङ्गी और मेघना नदीके अन्तर्निहित एक प्राचीन जनपद। इसके दक्षिणमें समुद्र पड़ता है। यूएनचुयङ्गने इस स्थानको समतट नामसे उल्लेख किया है। विक्रमपुर नगरमें इस प्रदेशकी राजधानी थी।

बाग्डोगरा—बङ्गालके रङ्गपुर जिलान्तर्गत एक नगर।

बाग्दा—मेदिनीपुर जिलेमें अवस्थित एक नदी जो गोआ खालीके समीप हुगली नदीमें गिरती है।

बाग्दी—मध्य और पश्चिम बंगवासी नीच जाति। दास वृत्ति, कृषिकार्य और धीवरवृत्ति ही इस जातिकी प्रधान उपजीविका है। इस जातिके मध्य तेंतुलिया, दुलिया, ओझा, मछुआ, (मेछुया या मेछा) गुलमाझी, मुएडमाझी, कुशमेतिया, (कुशमातिया या कुशपुत्र), फरोईदुलिया, मलमेतिया (मतिया या मतियाल), बाजान्दरिया, दुलातिया, लेट, मोदा, ये तथोक्त आदि कितने स्वतन्त्र थाक दृष्टिगोचर होते हैं। बाग, धारा, खां, माझी, मसालची, मोदी, पालखाई, परमाणिक, फेरका, पुइला, राय, सान्तासर्दार आदि इनकी पदवी हैं। प्रत्येक श्रेणीके मध्य भिन्न भिन्न गोत्र हैं। अहि, बाघऋषि, कच्छप, काशयक, पाकवसन्ता, पालऋषि, पोडूऋषि, शालऋषि, अल्म्यान, काश्यप, थामि, वात्स्य, गदिमायत, काल राह्वो प्रभृति नाम गोत्ररूपमें व्यवहृत हैं।

अपने घर छोड़ कर दूसरे घरमें तथा सगोत्रमें विवाह निषिद्ध है। एक तेतुलिया भिन्न अपर श्रेणीके बाग्दी घरमें विवाह नहीं कर सकता। किन्तु कन्याके एक गोत्र होने पर विवाह भी नहीं होता है। सपिएड विवाह भी निषिद्ध है।

बाकुड़ा, मानभूम, और उड़ीसाके उत्तरांशमें बाग दियोंके बीच बालविवाह प्रचलित देखा जाता है। कोई कोई जवानी आने पर पुत्र कन्याका ब्याह देते हैं। विवाह के पहले यदि जवान कन्या पर पुरुष पर आसक्त हो जाये तो उसे ये लोग दोष नहीं मानते। २४ परगना, यशोर, नदिया आदि जिलाओंमें बालविवाह प्रचलित है। कोई कोई अवस्थानुसार एकाधिक विवाह भी करता है। इनकी विवाहपद्धति हिंदुओंके समान होने पर भी इसमें असभ्य प्रथाके कितने दोष मिश्रित हो गये हैं। वरयात्राके पहिले ये महुआ वृक्षके साथ विवाह करते हैं और उसे सिंदूर प्रदान कर, सूतसे बांध देते हैं। पीछे वह सूत, महुआके पत्तेके साथ वरके दाहिने हाथमें लपेटते हैं। जब बारात दरवाजे पर पहुंचती है, तब कन्या पक्षीय लोग उसे अपने घरमें प्रविष्ट नहीं होने देते। द्वन्द्व-युद्धमें वर पक्षके लोग जयलाभ कर वरको भीतर ले जाते हैं। शाल पत्राच्छादित कुञ्जके मध्यस्थित पीढ़ीके ऊपर वर बैठता है। उसके चारों कोनेमें तेल भात शस्य और हल्दी रखी जाती हैं। मध्यस्थलमें गर्त्त खोदकर जल रख दिया जाता है। कन्या आ कर उस शालकुञ्जके चारों ओर सात बार घूमती है। बाद कुञ्जमध्यमे आ वरके सामने बैठ जाती है। यह जलपूर्ण गर्त्त दोनोंके सामने रहता है। ब्राह्मण द्वारा विवाहके मन्त्रादि पाठ हो जाने पर कन्याप्रदान शेष समझा जाता है। दक्षिणा देनेके बाद ब्राह्मणको गांठ बांधी जाती है। गोत्रान्तरके बाद सिन्दूर दान और माला बदल होने पर विवाह-कार्य शेष होता है। रात्रिमें उपस्थित कुटुम्बियोंको अवस्थानुसार भोजन कराया जाता है। दूसरे दिन वर कन्याको ले कर अपने घर चला जाता है। विवाहके बाद चार दिनमें गांठें खोली जाती हैं।

*तेंतुलिया* बाग्दीको छोड़ कर शेष सभी बाग्दी श्रेणी में विधवाकी सगाई होती है। इस विवाहमें पहलेके

जैसा मन्त्रादिका पाठ नहीं किया जाता। एक आसन पर दोनोंको बिठा दोनोंके कपालमें बटी हल्दीका लेप होता है। दोनोंके मस्तक एक चादरसे ढक दिये जाते हैं। शुभ दृष्टि होने पर वर कन्याके हाथमें लोहेका कड़ा पहनाता है। विधवा अपने देवरके साथ भी विवाह कर सकती है। जिन सब बाग्दियोंने हिंदू धर्म का आश्रय ग्रहण किया है, उनका आचार व्यवहार उच्च श्रेणीके हिन्दुओं-सा है। किन्तु स्त्रीके वन्ध्या, परपुरुषगामी अथवा असाध्य होने पर ज्ञातीय सभाके मतानुसार उसका त्याग किया जा सकता है। उस स्त्रीको छः मासकी खुराक देनी पड़ती है। छः मास बाद यह रमणी फिर सगाई कर सकती है। तैंतुलिया छोड़ कर अपर बाग्दी बावरियोंके जैसा विवाह करनेके लिये किसी उच्च जातिको अपनेमें शामिल होने देते हैं।

ब्रह्मा, विष्णु, धर्मराज और दुर्गा आदि सभी शक्ति मूर्त्तिकी ये लोग उपासना करते हैं। पतित ब्राह्मण इन सब देवताओंकी पूजामें इनके यहाँ पुरोहिताई करते हैं। मनसादेवी ही इनकी कुलदेवता है। आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विन मासमें ५वीं या २०वीं को देवीके सामने महासमारोहसे ये लोग बकरे की बलि देते हैं। नागपञ्चमीके दिन देवीकी चतुर्भुजा मूर्त्ति गढ़ कर उसकी पूजा करते हैं। पूजाके बाद वह पुष्करिणी आदि जलाशयोंमें विसर्जित हो जाती हैं। बाकुड़ा और मानभूम अञ्चलमें भाद्र-संक्रान्तिके दिन ये लोग भादुदेवीकी प्रतिमूर्त्ति गढ़ कर महासमारोहसे नगर में भ्रमण करते फिरते हैं। इस उत्सवमें खूब नृत्य गीत होता है।

ये लोग शवको जलाते हैं। किन्तु वसन्त (माता) विसूचिका रोगमें किसीकी मृत्यु होने पर उसे मिट्टीमें गाड़ देते हैं। तीन वर्षके बालक और बालिका भी मिट्टी में गाड़ी जाती है। अशौचके बाद ये लोग मृतके उद्देश से श्राद्ध करते हैं। अपरापर हिन्दुओंकी तरह इन लोगोंके भी सम्पत्ति विभाग होता है। ज्येष्ठ पुत्र ही अधिक अंश पाता है, क्योंकि परिवारकी समस्त वृद्धा स्त्रियोंका पालन उसीको करना पड़ता है।

घटवाली, चौकीदारी आदि दासवृत्ति इनके द्वारा सम्पादित होती हैं। ये लोग लाठी चलानेमें विशेष पटु हैं।

बम्बई प्रदेशके वेलगाम जिलेमें एक श्रेणीके बाग्दी देखे जाते हैं। इन लोगोंमें भी सगोत्र विवाह निषिद्ध है। पुरुष माथे पर शिखा रखते तथा मद्य और मांसके प्रिय होते हैं। स्त्रियां मांगमें सिंदूर देती हैं, मङ्गल सूत्र और वलय पहनती हैं। परिष्कार परिच्छन्न नहीं होने पर भी ये लोग निरीह और शान्त हैं। देवता और ब्राह्मणमें इनकी विशेष भक्ति है। पुरोहितके न होने पर भी विवाह श्राद्ध आदिमें ब्राह्मण लोग इनकी याजकता करते हैं। बारहवें दिन जातबालकका नाम करण और जाति भोजन होता है। विवाहके प्रथम दिन वर कन्याके शरीरमें हल्दी और तेल लगाया जाता है, दूसरे दिन यथाविहित मन्त्रपाठके बाद विवाह समाप्त होने पर वर और कन्याके शरीर पर चावल छींटते हैं। बहु विवाह और विधवा विवाह इनमें प्रचलित है। ये लोग मृतदेहको मिट्टीमें गाड़ देते हैं। तेरहवें दिन पातक मिट जाने पर स्वजातिवालोंका भोज होता है। सामाजिक विभ्राटका विचारमण्डल सम्पन्न करते हैं।

बाम्नी—बम्बईके सतारा जिलेका एक ग्राम। यह अक्षा० १६° ५५' उ० तथा देशा० ७४° २६' पू० अशतसे ॥ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या ५६४१ है। ग्रामके पश्चिम पुराने समयकी एक मसजिद है।

बागरू—राजपूतानेके जयपुर राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° ४८' उ० तथा देशा० ७५° ३३' पू० आग्रा-अज मेरके रास्ते पर अवस्थित है। यहां राज्यके प्रधान सामन्त ठाकुरका वास है। ये जयपुर दरबारको प्रयोजन पड़ने पर चौदह अश्वारोहीसे मदद पहुंचाते हैं। ये किसी प्रकारका कर नहीं देते। यहां सूती कपड़ेकी छींट और रङ्गका विस्तृत कारबार है।

बाग्ली—१ मध्यभारतके इन्दोर एजेन्सीका एक छोटा सामन्त राज्य। भूपरिमाण ३०० वर्गमील है। यहांके सरदार चम्पावत्-वंशीय राजपूत हैं। ठाकुर इनकी उपाधि है। वर्त्तमान ठाकुरराज सिन्धियाके अधीन हैं। सिन्धिया-राजको इन्हें कर देना पड़ता है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २२° ३८'

उ० तथा देशा० ७६ २५´ पू०के मध्य अवस्थित है।

वाघम्बर ( हिं० पु० ) १ बाघकी खाल जिसे लोग विशेषत साधु, त्यागी और अमीर विछाने आदिके काममें लाते हैं। २ एक प्रकारका रोएंदार कवल जो दूरसे देखने पर बाघकी खालके समान जान पडता है।

वाघ ( हिं० पु० ) शेर नामका प्रसिद्ध हिंसक जन्तु। व्याघ्र देखो।

वाघ—मध्यप्रदेशके भण्डारा जिलेमें प्रवाहित एक नदी। यह किचगढके निकटवर्ती पर्वतमालासे निकल कर बालाघाट जिलेकी शोण और देव नामक शाखा-नदीमें मिलती है। वर्षाके समय इस नदीमें पण्य द्रव्य ले कर गमना गमन किया जाता है।

वाघ—१ ग्वालियर राज्यके भोपावर एजेन्सीके अधिकृत एक परगना। इसकी लम्बाई १४ मील और चौडाई १२ मील है। इस वनमय पार्वतीय स्थानमें भीपणकाय भील जातिका वास है। यहा लोहेकी एक खान है।

२ ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत एक छोटा नगर। यह अक्षा० २२ २४´ उ० तथा देशा० ७४ ४८´ ३०´´ पू० गिरना और घनी नदीके सङ्गम-स्थल पर अवस्थित है। जन सख्या दो हजारके करीब है। यहाका पञ्चपाण्डु नामक गुहामन्दिर बहुत कुछ प्रसिद्ध है। विन्ध्यगिरिमालाके दक्षिणस्थ पार्वत्य भूमिके ऊपर यह गुहामन्दिर स्थापित है। यहाके बौद्ध विहार अजण्टाके गुहामन्दिरके जैसे हैं। ये सब ५वीं से ७वीं शताब्दीके मध्यके बने हुए हैं, ऐसा प्रत्नतत्त्वविदोंका विश्वास है।

वाघखाली—चट्टग्रामके अन्तर्गत एक छोटी नदी।

वाघजला—बङ्गालके २४ परगनेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२ ४७´ २८´´ उ० तथा देशा० ८८ ४७ १६´´ पू०के मध्य अवस्थित है। दमदमाका सेना-वास भी इसी नगरकी सीमाके अन्तर्भुक्त है।

वाघबङ्गा—यशोर जिलेके अन्तर्गत एक छोटा ग्राम। यह अक्षा० २३ १३´ उ० तथा देशा० ८६ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहा मट्टीके अच्छे अच्छे बरतन तैयार होते हैं।

वाघपत—१ युक्तप्रदेशके मीरट जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २८ ४७´ से २६ १८´ उ० तथा देशा० ७७ ७´ से ७७ २६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४०५ वर्गमील और जनसख्या तीन लाखके लगभग है। इसमें ६ शहर और २१८ ग्राम लगते हैं। यह तहसील हिन्दन और यमुना नदीके मध्यस्थलमें पडती है।

२ उक्त जिलेका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २८ ५७´ उ० तथा देशा० ७७ १३´ पू० मीरट शहरसे ३० मील पश्चिममें अवस्थित है। जनसख्या करीब ५६७२ है। महाभारतमें इस नगरका उल्लेख है। राजा युधिष्ठिर कुछ दिन यहा ठहरे थे। नगर दो भागोंमें विभक्त है, एक भागमें कसवा ( गृहस्थ ) और दूसरे भागमें मण्डि ( वणिक् ) रहते हैं। यमुना पार करनेके लिये नगरके बाहर एक पुल है। यहाके अधिवासिगण चौहान वंशीय राजपूत हैं। चीनीकी विक्रीके लिये यह स्थान बहुत कुछ मशहूर है। अलावा इसके रुई, गेहू, लाल मिर्च, सज्जीमट्टी पञ्जाब, राजपूताने तथा बुन्देलखण्डके नाना स्थानोंमें भेजी जाती हैं। शहरमें तीन स्कूल हैं।

वाघमती—उत्तर विहारमें प्रवाहित एक नदी। यह नेपाल राज्यके काठमण्डू नगरसे निकल कर मुजफ्फरपुर, चम्पारण और दरभगा जिलेके मध्य होती हुई बूढी गण्डक में मिली है। पर्वतके ऊपर हो कर बहनेके कारण वर्षा कालमें उसका जलप्रवाह बहुत अधिक हो जाता है। कभी कभी इसमें ऐसी बाढ उमड आती है, कि आस-पासके गावोंकी बडी क्षति होती है। हैयाघाटके निकट इसकी करई नामक शाखा निकल कर तिलकेश्वरमें तील युगा नदीमें गिरी है। लालबाक्य, भुरेङ्गी, लखनदई, छोटी वाघमती, धौस और भिम नामक इसकी शाखाएं प्रधान हैं। मलाईसे वेलनपुर घाट तक वाघमतीका पुराना गर्भ दृष्टिगोचर होता है। वर्षाकालमें वाघमतीका स्रोत बहनेके कारण उसके कलेवरकी वृद्धि होता है। परन्तु शीतकालमें उसमें सिर्फ २ फुट जल रह जाता है। पुरातन गर्भके पूर्वकूलमें बहुत सी नीलकोठी देखनेमें आती हैं।

वाघमती ( छोटी )—वाघमती नदीकी एक शाखा जो मुजफ्फरपुर जिलेमें बहती है। हैयाघाटसे ले कर दर भङ्गा तक इसमें वाणिज्य-पोत आ जा सकते हैं। कमला, धौस और भिम इसके कलेवरकी वृद्धि करती हैं।

वाघमारा—त्रिपुराराज्यके अन्तर्गत एक प्रधान वाणिज्य स्थान।

वाघमारी—मयूरभञ्ज और सिंहभूम जिलेके मध्यवर्त्ती एक गिरिशृङ्ग।

वाघमुण्डी—विहारके मानभूम जिलेकी एक अधित्यका। इसके सर्वोच्च शिखरका नाम गङ्गावाडी है। यह अक्षा० २३ १२´ उ० तथा देशा० ८६ ५´ ३०´´ पू०के मध्य पुरु लिया नगरसे १० कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है।

वाघल—सिमला पर्वतके निम्नवर्त्ती पञ्जावके अन्तर्गत एक पार्वतीय राज्य। यह अक्षा० ३१ ५´ से ३१ १६´ उ० तथा देशा० ७६ ५५´ से ७७ ५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १२४ वर्गमील और जनसंख्या २५ हजारके करीव है। इसकी राजधानी अर्की है जो सिमलासे २० मील उत्तर पश्चिममें पड़ती है। यहाके राजगण पुयार वंशीय राजपूत हैं। पहले इनकी उपाधि राणा थी। वर्त्तमान सरदारके पिता किशन सिंहने अङ्ग्रेजोंको खासी मदद पहुचाई थी जिससे सरकारने प्रसन्न हो कर उन्हे राजाकी उपाधिसे भूषित किया। १५१५ ई०की सनदके अनुसार ये लोग इस राज्यका भोग करते आ रहे हैं। सभी कार्यका विचार राजा द्वारा ही परिचालित होता है। प्राणदण्ड देते समय इन्हें कमिश्नरकी अनुमति लेनी पड़ती है। यूरोपीय अतिथियोंके रहनेके लिये राजाने एक सुन्दर भवन बनवा दिया है जो सिमला पहाड़से १० कोस दूर पड़ता है। गौड़ और सारस्वत ब्राह्मण तथा कुनेति जाति द्वारा यहाका कृषिकार्य सम्पन्न होता है। गुर्खा-अधिकारमें अर्की नगर राजधानी रूपमें गिना जाता था। वर्त्तमान राजाका नाम विक्रम सिंह है। ये १९०४ ई०में राजसिंहासन पुर बैठे। इन्हे ५० सेना और १ कमान रखनेका अधिकार है। राजस्व ५०००० रु०मेंसे ३६०० रु० वृटिश-सरकारको करस्वरूप देने पड़ते हैं।

वाघनापाड़ा—वर्द्धमान जिलेके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध वैष्णव-स्थान। यहा प्रति वर्ष एक मेला लगता है।

वाघवनपुर—पञ्जावप्रदेशके लाहोर जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। सलीमके उद्यानके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है। जहांगीर बादशाहके भीलम उद्यानके ढंग पर सम्राट् शाहजहान्के प्रधान स्थपति अलीमर्दन खाने यह उद्यान वाटिका बनवाई थी। मुगल सम्राटकी अवनतिके साथ साथ यह उद्यान भी लोप हो गया। पञ्जावकेशरी रणजित् सिंहने उसका जीर्णसंस्कार किया था।



वाघहाट—सिमला शैलके समीपवर्त्ती अङ्ग्रेज-रक्षित एक गिरि राज्य। यह अम्बाला विभागके छोटे लाटके अधीन है। यह अक्ष० ३० ५०´ से ३० ५८´ उ० तथा देशा० ७७ २´ से ७७ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३६ वर्गमील और जनसंख्या १० हजारके लगभग है। यहाके राणा अपनेको दाक्षिणात्यके धरानगिरि वंशज राजपूत बतलाते हैं। १८०५ ई०में राणाने विलासपुर राज्यको मदद दी थी इस कारण गुरखाने उनका राज्याधिकार बहुत दिनों तक कायम रखा। पीछे १८१५ ई०में राज्यका कुछ भाग जब्त कर पतियालामें मिला लिया गया। १८३६ ई०में कोई राज्याधिकारी न रहनेके कारण राज्य जब्त कर लिया गया, पर १८४२ ई०में भूतपूर्व राणाके भाइके हाथ पाच वर्ष तकके लिये लौटा दिया गया। १८६२ ई०में राणा दलीप सिंह राजसिंहासन पर बैठे। इन्हे सि आइ इ की उपाधि मिली थी। राज्यकी आय तीस हजार रुपये हैं। कसौली और सोलनके सेनानिवासके लिये राणासे कुछ स्थान ले कर वृटिश सरकारने राज कर माफ कर दिया है।

वाघहाट—हैदरावाद राज्यके मेदक जिलेका तालुक। भूपरिमाण ४५१ वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारके करीब है। इसमें मुसीरावाद नामका १ शहर और ११० ग्राम लगते हैं। राजस्व ७५००० रु० है।

वाघा (हिं० पु०) १ चौपायोंका एक रोग। इसमें पशुओंका पेट फूल जाता है और सास रुकनेसे वे मर जाते हैं। २ कबूतरों की एक जातिका नाम।

वाघी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी गिलटी। यह अधिकतर गरमीके रोगियोंके पैर और जांघकी सन्धिमें होती है। यह बहुत कष्टदायक होती है और जल्दी दबती नहीं। बहुधा यह पक जाती है और चीरनी पड़ती है।

वाघुल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी छोटी मछली।

वागेरहाट—१ बङ्गालके खुलना जिलेका उपविभाग। यह अक्षा० २२ ४४´ से २२ ५९´ उ० तथा देशा० ८९ ३२´ से

८९ ५८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६७१ वर्ग मील और जनसंख्या प्राय ३६३०४१ है। इसमें १०४५ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है।

२ उक्त उपविभागका सदर। यह अक्षा० २२ ४०´३० तथा देशा० ८९ ४७´ पू० भैरव नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या हजारसे ऊपर है। नगरके पश्चिम खाँ जहान्‌का भग्न अट्टालिका स्तूप दृष्टिगोचर होता है। खाँ-जहान्‌की सातगुम्बज नामक मसजिद और समाधि मन्दिर देखने लायक है। समाधि मन्दिरका ऊपरवाला गुम्बज ४७ फुट ऊँचा है। खाँ जहान् सुन्दरवनको आबाद करनेके लिये यहां आये थे। उनकी उक्त समाधि देखनेके लिये दूर दूरके लोग आते हैं। यहांके अधिवासिगण प्राय मुसलमान हैं जो बड़े उपद्रवी मालूम पड़ते हैं। नगरकी वाणिज्योन्नति दिनों दिन होती जा रही है।

वागेश्वर—कुमायुन जिलेका हिमालयपर्वतस्थ एक शैव-तीर्थ। यह गोमती और सरयूसङ्गमके समीप सोरकोट नामक स्थानमें अवस्थित है। स्कन्दपुराणके मानस-खण्डमें यह तीर्थमाहात्म्य कीर्त्तित हुआ है। इसी देवोद्देशसे वर्षमें यहां दो बार मेला लगता है। इस समय देवदर्शनकी कामनासे अनेक लोग समागम होते हैं।

वागेश्वर—गोंड़ोंके उपदेवताविशेष। गोंड लोग इसकी पूजा किया करते हैं।

वागेरा—राजपूतानेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह थोल नगरसे ६ कोस पश्चिम वराहनगरके दक्षिण कूल पर अवस्थित है। यहां विष्णुकी वराहमूर्त्ति, प्राचीन वराह-मन्दिर और सागर नामक पुष्करिणी, 'श्रीमत् आदि वराह' नाम तथा वराहमूर्त्ति अङ्कित मुद्रा देखनेसे अनुमान होता है, कि एक समय यहां वराहमूर्त्तिपूजाका विशेष आदर था। आज भी यहां शूकर पवित्र समझे जाते हैं। वागेर वासी यदि किसी शूकरकी हत्या करे, तो उसकी अवश्य मृत्यु होगी, ऐसा उन लोगोंका विश्वास है।

वागेराका प्राचीन नाम वसन्तपुर है। पहले यह चम्पावती नगराधिप गन्धर्वसेनके राज्यायुक्त था। प्राचीन मन्दिरादिके ध्वंसावशेष होने पर भी अभी इस नगरमें ३ हजार मनुष्योंका वास है। अधिवासियोंमेंसे अधिकांश ब्राह्मण, राजपूत और बनिये हैं। ये सबके सब विष्णुके उपासक हैं। यहांके लोग हाथमें कुठार ले कर इधर उधर भ्रमण करते हैं।

वाचण्ड—बुन्देलखण्डके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम। यह किचान् नदीके बाएं किनारे पर्वत तट पर अवस्थित है। एक समय यह स्थान महासमृद्धिशाली था। ध्वंसाव शेषसे उसका यथेष्ट प्रमाण मिलता है। वामन अव-तार, हरगौरी, विष्णु, लिङ्गमूर्त्ति, बहुसंख्यक प्रस्तरस्तम्भ और शिलालिपि आदि उसके निदर्शन हैं। शिलालिपिमें यह नगर वच्छुनिस्थान नामसे लिखा गया है। यहां एक समय चन्देलराज मिरलमदेव राज्य करते थे।

वाचा (हिं० स्त्री०) १ बोलनेकी शक्ति। २ बातचीत, वाक्य।

वाछ (हिं० पु०) गांवमें मालगुजारी, चंदे, कर आदिका प्रत्येक हिस्सेदारके हिस्सेके अनुसार परता, बेहरी।

वाछड़ा (हिं० पु०) बछड़ा देखो।

वाछल—राजपूत जातिकी एक शाखा। इस शाखाके लोग अपनेको विराटके पिता वेनराजके वंशधर कहलाते हैं। ११७१ ई०के पहले वाछल राजगण रोहिलखण्ड (पूर्व) देवल और देवहा (पिलिभीत नदी) नदीके अन्तर्वर्त्ती प्रदेशका शासन करते थे। कटेरियाओंके अभ्युदय पर वे लोग देवहाके पूर्व भाग गये। मुसल मानोंके उपर्युपरि आक्रमणसे तंग आ कर वे जङ्गलमें जा छिपे और गढगाजन तथा गढखेरा आदि स्थानोंमें दुर्गस्थापन करके राज्य करने लगे। निगोही नगरमें उनकी राजधानी थी। दिल्लीश्वरने इस नगरमें घेरा डाल कर राजा उदरनके १२ पुत्रों को यमपुर भेज दिया था। आज भी निगोहीमें उनके १२ समाधिस्तम्भ विद्यमान हैं। उनके वंशधर नर्दण सिंह आज भी इस स्थानका जागीर रूपमें भोग करते हैं।

वाछल-राजपूतोंका गोत्राचार्य शाखा अपनेको चन्द्र वंशीय बतलाती है। चौहान, राठोर और कच्छवाहोंको ये लोग अपनी कन्या देते हैं। मथुरा, बदाउन, शाहजहान पुर, रोहिलखण्ड और अलीगढ़के निकट आज भी वाछल जमींदारोंका अस्तित्व है। अबुल-फजल गुजरात-प्रदेशमें इस जातिके आधिपत्यकी कथा लिख गये हैं।

बाछा ( हि० पु० ) १ गायका बच्चा, बछड़ा। २ लड़का, बच्चा।

बाज ( अ० पु० ) १ सारे संसारमें मिलनेवाला एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। यह प्राय चीलसे छोटा पर उससे अधिक भयंकर होता है। उसका रंग मटमैला, पीठ काली और आंखें लाल होती हैं। यह आकाशमें उड़ती हुई छोटी मोटी चिड़ियों या कबूतरों आदिको झपट कर पकड़ लेता है। प्राय शौकीन लोग इसे दूसरे पक्षियों-का शिकार करनेके लिये पालते भी हैं। इसकी कई जातियां होती हैं। २ एक प्रकारका बगला। ३ तीरमें लगा हुआ पर। ( फा० ) ४ एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्तमें लगा कर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदिका अर्थ देता है। जैसे दगाबाज, नशेबाज आदि। ( फा० वि० ) ५ वञ्चित, रहित। ( क्रि० वि० ) ६ विना, बगैर।

बाज ( हिं० पु० ) १ घोटक, घोड़ा। २ बाद्य, बाजा। ३ सितारके पांच तारोंमेंसे पहला जो पक्के लोहेका होता है। ४ बजानेकी रीति। ५ तानेके सूतोंके बीचमें देनेकी लकड़ी।

बाजड़ा ( हिं० पु० ) बाजरा देखो।

बाजदावा ( फा० पु० ) अपने अधिकारोंका त्याग, अपने दावे या स्वत्वसे बाज आना।

बाजना ( हिं० क्रि० ) १ बाजे आदिका बजाना। २ प्रसिद्ध होना, कहलाना। ३ लड़ना, भिड़ना। ४ सामने मौजूद हो जाना, जा पहुंचना।

बाजबहादुर—मालवके अधिपति। १५५४ ई०में ये पिता सुजा खांके सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। इनका पूरा नाम मालिक बैयाजिद था। ये मालवके चतुष्पार्श्ववर्ती नाना स्थानोंको जीत कर स्वाधीनभावमें राज्यशासन करते थे। सिंहासन पर बैठते समय इन्होंने सुलतान बाजबहादुरका नाम ग्रहण किया। ये रूपमती नामक किसी रमणीके प्रेममें फंस गये थे। यह बात पश्चिम-भारतमें तमाम गाई जाती है। १७ वर्ष राज्य करनेके बाद सम्राट् अकबरने १५७० ई०में उनका राज्य छीन कर अपने राज्यमें मिला लिया। पीछे बाजबहादुर दिल्लीमें अकबरशाहसे मेल कर दो हजार अश्वारोही सेनाके नायक हुए थे। मरने पर उज्जयिनीकी एक पुष्करिणीमें उन दोनोंकी कब्र बनाई गई।

बाजबहादुरचन्द्र—एक हिन्दूराजा, राजचन्द्रके पुत्र, त्रिमल्लचन्द्रके पौत्र और लक्ष्मणचन्द्रके प्रपौत्र। ये स्मृतिकौस्तुभके प्रणेता अनन्तदेवके प्रतिपालक थे।

बाजरा ( हिं० पु० ) एक प्रकारकी बड़ी घास जिसकी बालोंमें हरे रंगके छोटे छोटे दाने लगते हैं। सारे उत्तरी, पश्चिमी और दक्षिणी भारतमें लोग इसे खाते हैं। अनाज मोटा होता है और इसकी खेती बहुत-सी बातोंमें ज्वारकी खेतीसे मिलती जुलती है। यह खरीफकी फसल है और प्राय ज्वारके कुछ पीछे वर्षाऋतुमें बोई जाती है। जाड़े के आरम्भमें इसकी कटनी होती है। इस के खेतोंमें खाद देने या सिंचाई करनेकी विशेष आवश्यकता नहीं होती। पहले तीन चार बार जमीन जोती जाती है और तब बीज बो देते हैं। एकाध बार निराईकी जरूरत अवश्य पड़ती है। इसके लिये किसी बहुत अच्छी जमीनकी आवश्यकता नहीं होती और यह साधारणसे साधारण जमीनमें भी प्राय अच्छी तरह होता है। यहां तक, कि राजपूतानेकी बलुई भूमिमें भी यह अधिकतासे होता है। बाजरेके दानोंका आटा पीस कर और उसकी रोटी बना कर खाई जाती है। इसकी रोटी बहुत ही बलपूर्वक और पुष्टिकारक मानी जाती है। कुछ लोग दानों को यों ही उबाल कर और उसमें नमक मिर्च आदि डाल कर खाते हैं। कहीं कहीं लोग इसे पशुओं के चारेके लिये ही बोते हैं। इसमें बादी, गरम, रूखा, अग्निदीपक, पित्तवर्द्धक, कान्तिजनक, बल वर्द्धक और स्त्रियों के कामको बढ़ानेवाला माना गया है।

बाजहर ( हि० पु० ) जहरमोहरा देखो।

बाजा ( हि० पु० ) बजानेका यन्त्र, वाद्य। वाद्य देखो।

बाजाब्ता ( फा० क्रि० वि० ) १ नियमानुसार, जाब्तेके साथ। ( वि० ) २ जो नियमानुकूल हो, जो जाब्तेके साथ हो।

बाजार ( फा० पु० ) १ वह स्थान जहां सब तरहकी चीजोंकी अथवा किसी एक ही तरहकी चीजकी बहुत-सी दूकानें हों। २ वह स्थान जहां किसी निश्चित समय, वार, तिथि या अवसर आदि पर सब तरहकी दूकानें लगती हों, हाट, पैंठ।

बाजार—युक्तप्रदेशके सीमान्त प्रदेशके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह कालीपाणी नामक नदीके किनारे अवस्थित है। स्वात और सिन्धुनदके मध्यस्थलमें अवस्थित रहनेके कारण इस स्थानने प्राचीन भारतीय वाणिज्यका केन्द्रस्थान अधिकार किया था। काबुल, मध्य-एशिया आदि नाना स्थानोंसे माल यहांके बाजारमें जमा होता था, इसीसे इसका 'बाजार' नाम पड़ा। इसके सन्निहित दन्तालोक पर्वत पर अनेक बौद्धगुहा मन्दिरों का ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

बाजारगांव—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलान्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम। पूर्व कालसे ही बेरार और बम्बई नगरके साथ यहांका विस्तृत वाणिज्य चला, आ रहा है। आमदनी और रफतनी रेलगाड़ी द्वारा ही होती है। इसके दक्षिण भागके ध्वंस प्राय दुर्गका नागपुरराज जानोजीके पांच, हजारी सेनापति द्वारकोजी नायक शासन करते थे। प्राय ८५ वर्ष पहले द्वारकोजीने वह दुर्ग बनवाया था।

बाजारी (फा० वि०) १ बाजार सम्बन्धी, बाजारका। २ साधारण, मामूली। ३ अशिष्ट। ४ मर्यादारहित, बाजारमें इधर उधर फिरनेवाला।

बाजारू (हि० वि०) बाजारी देखो।

बाजिघोरपड़े—एक महाराष्ट्रीय सामन्त, मुधोलके अधिपति। इन्होंने १६४६ ई०में बीजापुर सरकारके पिताके प्रति निर्दय व्यवहार किया था। उक्त कृत पापके प्रायश्चित्तके लिये १६६१ ई०में शिवाजीने स्वय उनके विरुद्ध यात्रा कर दी। घोरपड़े पकड़े गये और निहत हुए। उनके आत्मीय और अनुचरवर्गने अपने मालिकका पदानुसरण किया। मुधोल नगर लूट जानेके बाद जला दिया गया।

बाजितपुर—मैमनसिंह जिलेके किशोरगञ्ज उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २४°१३´ ३० तथा देशा० ९०°५७´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या दस हजारसे ऊपर है। पहले यहां बहुत बढ़िया मसलिन तैयार होता था जिससे इसकी सुख्याति दूरी फैल गई थी। मसलिन संग्रह करनेके लिये इष्ट इंण्डिया कम्पनीकी यहां एक कोठी (Factory) भी थी।

बाजितपुर—तैरभुक्तके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। (ब्रह्म०ख० ४७।१४८।५५)

बाजिताग्राम—बङ्गालके वीरभूमके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह मयूराक्षीसे ४ कोस उत्तरमें अवस्थित है। (देशा० ५७।२१४)

बाजिप्रभु—एक महाराष्ट्र सेनापति। १६६५ ई०में जब मुगलसेना शिवाजीका गर्व खर्व करनेके लिये आगे बढ़ी, उस समय ये मावली और हेटकारी मराठा सेना ले कर पुरन्धर दुर्गमें मौजूद थे। मुसलमान सेनापति मिर्जा, राजा जयसिंह और दिलेर खांके पुरन्धरकी ओर बढ़ने पर ये असीम साहससे उसके साथ युद्धमें प्रवृत्त हो गये। कई एक युद्धोंके बाद मुगलसेनाने दुर्गके निम्न देश पर अधिकार जमाया। किन्तु हेटकारी मराठासेना ऊपरसे गोली बरसाने लगी जिससे शत्रुगण भाग जानेको बाध्य हुए। इसी समय मावली सेना भी मुगल सेना पर टूट पड़ी। अच्छी तरह परास्त हो जाने पर भी मुगल सेनापतिने फिरसे लड़ाई ठान दी। इसी बीच शिवाजीने कौशलपूर्वक मुगलसेनापति जयसिंहसे सन्धि करके इस युद्धका अवसान किया। इस युद्धमें बाजिप्रभुने वीरोचित साहसका परिचय दिया था।

बाजी (फा० स्त्री०) १ शर्त, दांव, बदान। २ खेलमें प्रत्येक खिलाड़ीके खेलनेका समय जो एक दूसरेके बाद क्रमसे आता है, दावं।

बाजी (हिं० पु०) १ घोड़ा। २ बजनिया।

बाजीगर (फा० पु०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

बाजीराव (१म)—एक महाराष्ट्र पेशवा, बालाजी राव विश्वनाथके पुत्र। १७४० ई०में इनकी मृत्यु हुई। विस्तृत विवरण पेशवा शब्दमें देखो।

बाजीरावरघुनाथ (२य)—महाराष्ट्रके नवम पेशवा। १७९५ ई०में सप्तम पेशवा माधवराव नारायणकी अपघात मृत्युके बाद ये महाराष्ट्रपेशवा पद पर अभिषिक्त हुये। किन्तु महाराष्ट्र मन्त्रिसभाके कार्यविपर्ययसे कुछ समय तक उनके कनिष्ठ भ्राता 'चिमणाजी माधोराव'ने पेशवा हो कर महाराष्ट्रका शासन किया था।

चिमनाजी माधवराव देखो।

१७९६ ई०में मंत्रिदलकी प्रार्थनाके अनुसार जब

महाराष्ट्र राजसरकारमें होलकर और शिंदेराजका आधिपत्य विस्तृत हुआ, तब रघुनाथराव गुजरातकी तरफ भागे। इस समय वे अपनी गर्भवती पत्नी आनन्दीबाईको धार-दुर्गमें छोड गये थे। इसके कुछ दिन बाद अन्तिम महाराष्ट्र पेशवा बाजीराव रघुनाथका जन्म हुआ। ज्यों ज्यों वे बढते गये, त्यों त्यों उनकी समुज्ज्वल रूपज्योति खिलने लगी। जिस प्रकार रूपमें उसी प्रकार गुण मण्डलीसे भी यह बालक विभूषित होने लगा। विनयादि सद्गुणों ने उनके प्रति जनसाधारणको विशेष श्रद्धा उत्पन्न करा दी। जो उसके साथ जरा भी वचनालाप करता, वह उसकी प्रशंसा किये विना नहीं रहता। निविष्टचित्तसे विद्याभ्यासमें रत रहनेसे अल्प दिनों में ही नाना शास्त्रों में पारदर्शी हो गये। उनके ज़मानेमें कोई भी ऐसा ब्राह्मण न था जो शास्त्रविचारमें उनकी बराबरी कर सके। राजवंशोचित अस्त्रशस्त्रविद्यामें भी वे बहुत निपुण थे। उनके समान अश्वारोही और तीरन्दाज महाराष्ट्र देशमें विरला ही था।

बालककी ऐसी प्रतिभाशक्ति देख उसे भविष्यमें आशङ्काका कारण समझ कर महाराष्ट्रसचिव नाना फडनवीसने उसे तथा उसके भाइयोंको १७९३ ई०में पूर्ववास कोपर गाँवसे शिवनेरीके पार्वत्य दुर्गमें कैद रखा। पश्चात् १७९४ ई०मे जूनारके किलेमें नजरबन्द किया। रघुपन्त घोरपडे और बलवतराव नागनाथ उनकी अभिभावकतामें नियुक्त किये गये। इसके पहले नानाने निजप्रभावकी अक्षुण्ण रखनेके लिये माधोरावको भी बन्दी किया था। बाजीरावके अनुनय विनयसे सन्तुष्ट हो बलवतराव रक्षकने उनके पत्रको माधोरावके हाथमें समर्पण किया। एक दूसरेके प्रति आकृष्ट हुए। बाजीरावके प्रति माधोरावका अत्यन्त स्नेह देख नानाने उन दोनो को अलग अलग कर दिया। वे बलवतरावको भी शृङ्खलाबद्ध करनेमें बाज नही आये। दिनों दिन माधोरावके प्रति नानाफडनवीसका अत्याचार बढने लगा। हताश हो माधोरावने आत्महत्या की। यह सवाद पा नानाफडनवीस परशुराम भाऊ, रघुजी भोसले, दौलतराव शिंदे और तुकाजी होल्करको बुला उनसे परामर्श करने लगे। स्थिर हुआ, कि बाजीरावके सिंहासन पर बैठानेसे महाराष्ट्र राज्यमें अङ्गरेजोंका आधिपत्य बढेगा। अतएव उसे राज्य न दे माधोरावकी विधवा पत्नी यशोदाबाईको दत्तकपुत्र ग्रहण करा उसे ही राज्य देना चाहिये। बाजीरावने इस गूढ अभिप्रायको समझ सिंदियाको अपने हाथ कर लिया। नाना फडनवीस और परशुरामके मोहमतसे मुग्ध हो बाजीराव निश्चिन्त रहे। इधर शिंदेके मत्री वल्लभभट्ट और शिंदेराज कार्यक्षेत्रमें उपस्थित हो कुछ अप्रतिभ और अपमानित हुये। पूनामें आ बाजीराव और सिंदियाका मिलन होने पर भी महामन्त्री वल्लभने उनके कृत कुकर्मके प्रायश्चित्त स्वरूप उनके कनिष्ठ भ्राता चिमनाजी माधोरावको १७९६ ई०की २६वीं मईको पूनामें बुला कर पेशवा पद पर अभिषिक्त किया। इसी समय परशुराम वल्लभकी सहायतासे नानाके उच्छेद साधनमें प्रयासी हुये। परशुराम और नानाफडनवीस देखो।

नाना दूसरा उपाय न देख पुन बाजीरावको अपने दलमें लानेकी चेष्टा करने लगे। अब तक उन्होंने जो बहु परिश्रमसे धन सचित किया था उससे कितना ही अंश पेशवा और सिंदिया सैन्यको अपनी तरफ मिलाया। पेशवा-सेनापति बाबा राव फडके परशुरामके विरुद्ध अग्रसर हुए। तुकोजी होलकर और सखाराम घाटगेने उनकी सहायताके लिये वचन दिया। अन्तमें बाजी-रावको हस्तगत कर उन्होंने शिंदेराजको राज्यका लोभ दिखा अपने वशीभूत किया। उसके साथ साथ निजाम मन्त्री मासीर उलमुल्क और स्वयं निजामको खुर्दा-युद्धमें अधिकृत निजाम राज्य छोडनेको प्रतिज्ञाबद्ध हुये। बाजीराव और बाबाराव शिंदे-मन्त्री वल्लभके आगमन-से सन्देहचित्त हो सैन्यसग्रह करने लगे। वल्लभ ससैन्य आ बाजीरावको सम्पूर्ण षड्यन्त्रका मूल जान उन्हे चारों ओरसे घेर लिया और सखाराम घाटगेके तत्त्वावधानमें उत्तर भारतकी तरफ चालान कर दिया। पथमें जाते जाते उन्होंने घाटगेको अर्थलोभसे वशीभूत कर लिया। वे कुछ दिन तक निकटमें ही रहे। इधर नानाकी कूटमन्त्रणासे वल्लभ और परशुराम दोनों ही पकडे गये। बाजीराव भी भीमातीरवर्ती कोरेगाव नगरमें रहने लगे।

नानाने बाजीरावके समीप उपस्थित हो उनसे एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करा लिये, कि वे पेशवा पद पर अधिष्ठित हो नाना फड़नवीस पर किसी प्रकारका अत्याचार न करेंगे। १७९६ ई०की २५वीं नवम्बर को सब लोगोंकी सम्मतिसे वे पेशवा पद पर अधिष्ठित हुये।

बाजीरावके सिंहासन पर बैठनेके बाद १७९७ ई०में फिरसे राज्यविप्लवके चिह्न दिखाई देने लगे। उसी साल पूना नगरमें पेशवाकी अरबो और देशी सिपाहियोंके बीच एक खड़युद्ध छिड़ गया। उत्तरोत्तर अन्तर्विप्लवसे राज्यमें घोर विशृङ्खलता उपस्थित हुई। बाजीरावके परामर्शानुसार घाटगेने नानाके घर और अनुचरवर्गोंको लूटा। नाना अपने परिवार सहित कैद कर लिये गये। बाजीरावने अपने सौतेले भाई अमृतरावको सचिव पद तथा बालाजीपंत पटवर्धनको सेनापति पद दे शिंदेराजको मन्त्रिपदसे हटानेका विचार किया, किन्तु शिंदेराजने उनके कहे मुताबिक दो करोड़ रुपये मांगे। राज्यकोषके खाली पड़ जानेसे वे यथासमय रुपये न दे सके। अतः उन्होंने घाटगेको पूना नगर लूट कर अर्थसंग्रह करनेका आदेश दिया। पहले राजगृहमें नदी कर पूनाके आत्मीयवर्गको निर्यातन क्लेश उठाना पड़ा। फिर महाजन, धनी व्यक्तिमात्रको कठोर अत्याचार और दारुण यन्त्रणा भोगनी पड़ी थी। इस कार्यके लिये बाजीरावने प्रकाश्य रूपसे शिंदेका तिरस्कार किया। १७९८ ई०में महादजी शिंदेकी विधवा पत्नीको अमृतरावने आश्रय दिया। ऐसे ही समयमें आ कर घाटगेने अमृतरावकी छावनी पर आक्रमण कर दिया। क्रमशः दोनों पक्षमें घोर युद्ध होनेकी आशङ्का होने लगी।

शिंदेने बाजीरावको भय दिखानेके लिये नानाको अहमदनगरके दुर्गसे मुक्त कर दिया। बाजीराव पहले हीसे नानाके षड्यन्त्रसे डरते थे। अब कारागारसे छुटकारा मिलने पर वे और दंग रह गये। अतः उन्होंने सिंधियाके साथ मित्रता कर और जिससे नाना पक्षीय अंगरेजोंकी सेना फिर प्रवेश न कर सके उसके प्रतिविधानकी वे चेष्टा करने लगे। इधर वे गुप्तचर भेज नानाको स्वयं बुला उन्हें मित्र पद पर अभिषिक्त कर निश्चिन्त हुये।

१७९८ ई०में घाटगेके हाथसे अमृतराव पराजित हुये। महादजीकी तीन पत्नियोंने कोल्हापुर राज्यमें जा आश्रय लिया, बल्लभभट्ट प्रभृति ब्राह्मणोंने उनका पक्ष अवलम्बन किया। पेशवाने फिर शिंदेके साथ मिल कर १८०० ई०में कोल्हापुर पतिका दमन किया था। किन्तु पूनामें विभ्राट्के उपस्थित हो जानेसे वे कोल्हापुर राज्यको जय न कर सके। इसी समय नाना फड़नवीसकी मृत्यु हुई। बाजीराव सिंदियाके हाथमें कठपुतलीकी तरह रहने लगे। यशवन्तराव होलकर मालवाके विजयसे उत्साहित हो क्रमशः अग्रसर होने लगे। उसका दमन करनेके लिये शिंदे पूनासे रवाना हुए। अवसर पा बाजीराव पूना वासियों पर यथेच्छा व्यवहार करने लगे। घाटगेको प्रतिशोध देनेमें अपनेको असमर्थ जान उन्होंने जशोवतके साथ मेल कर लिया। उनके हाथसे शिंदेसैन्य विध्वस्त होती जाती थी। उन्होंने जो पेशवाराज्यको लूटा था, उससे बाजीराव असन्तुष्ट हो उनका दमन करने अग्रसर हुये। किन्तु १८०२ ई० में शिंदे और पेशवाकी मिलित सेना यशवंतसे अच्छी तरह परास्त हुई। पूनामें विजय घोषणा कर यशोवंतने पेशवा परिवारके प्रति सदय व्यवहार किया। विशेष चेष्टा करने पर भी वे फिर बाजीरावको लौटा न सके। आखिर वे अमृतरावको पेशवा पद देने राजी हुये। बाजीरावके अङ्गरेजोंके साथ मिलने पर विशेष इच्छा नहीं रहते हुए भी अमृतराव पेशवा पद पर बैठे। १८०२ ई०में बसईकी सन्धिके अनुसार अंगरेजी सेनापति वेलेस्लीने होलकर दस्युगणको परास्त कर १८०३ ई० की १३वीं मईको पेशवा पद पर अभिषिक्त किया।

शिंदे, होलकर और पिण्डारियों के पुनः पुनः लुण्ठन और १८०३ ई०की अनावृष्टिसे दक्षिणमें दारुण अकाल पड़ा। साथ साथ महामारी भी उपस्थित हुई। इसी समय बाजीराव शिंदे और रघुजी भोंसलेके साथ मिल अङ्गरेजों का प्रभाव रोकनेके लिये कटिबद्ध हुये। १८०३ ई०में अहमदनगर दुर्ग और असे युद्धमें विजय हो अंग्रेज दाक्षिणात्यके कर्त्ताधर्त्ता हो गये थे। इस समयसे ले कर बाजीरावके पुनः अभ्युत्थान पर्यन्त महाराष्ट्र-राज्यमें और कोई नवीन घटना नहीं घटी, सिर्फ दस्यु उपद्रव और

विद्रोही सेनादलका उपद्रवमात्र होता रहा था।

१८१२ ई० में एलफिष्टनके अधिष्ठान समयसे बाजी रावने अपनी सेनाको अंग्रेजी प्रथानुसार शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। १८१३ ई०में राजप्रतिनिधि खुशरूजी के कर्णाटकका सूबेदार होने पर सदाशिव माणि केश्वर जलने लगे और उन्हो ने मि० एलफिष्टनके निकट उनकी चुगली खाई। अतः उनकी सलाहसे खुशरूजी फिर प्रतिनिधि बननेके लिये राजी हुये और त्रिम्बकजी डेङ्गलिया कर्णाटकके शासनकर्त्ता बन कर आये। त्रिम्बकजी अंगरेजो की चलती पर जल कर बाजीरावको उनके विरुद्ध उसकाने लगे, पर उससे कोई फल न निकला। इधर त्रिम्बकजीके अत्याचारसे राज्य चौपट लग गया। पूनाके अदालतमें जो ज्यादा घूस देता उसीकी जय होती थी।

१८१५ ई०में पेशवा, शिंदे, होल्कर, भोंसले और पिंडारी सरदारो के पास समाचार भेज उन्हे अंग्रेजो के विरुद्ध लड़नेकी सलाह देने लगे। त्रिम्बकजीकी प्ररोचनासे उन्हो ने अंग्रेज कर्मचारी एलफिष्टनको निजाम और गायकवाड़राजके प्रतिपत्ति लाभकी कथा जताई। उस समय गायकवाड़के दूत गङ्गाधर शास्त्री पूनामें थे। उनको अपने पक्षमें लानेकी त्रिम्बकजी तथा बाजी रावने विशेष चेष्टा की। किन्तु कुछ भी फल न देख उन्होंने शठतासे गङ्गाधरको पण्ढरपुरके विठोबा मन्दिरमें ले जा कर मार डाला। इसी सबबसे अंग्रेजी राज्य और गोपालराव मैराल त्रिम्बकजी पर सन्देह करने लगे। त्रिम्बकको अंगरेजोंके हाथ समर्पण करनेके लिये बाजीरावसे अनुरोध किया गया। बाजीरावने उस त्रिम्बकको अवरुद्ध कर रखा। त्रिम्बकको अर्पित हुए न देख अङ्गरेजी सेना पूनाकी तरफ अग्रसर हुई। बाजी रावने किंकर्त्तव्यविमूढ हो कर त्रिम्बकजीको अङ्ग रेजोंके हाथ सौंप दिया। गङ्गाधरकी हत्यामें बड़ोदा के राजमन्त्री सीतारामने सहायता दी थी, वे भी बाजीरावके पक्षमें आ कर सेनासंग्रह करते थे। उसी वर्ष त्रिम्बकजी थाना दुर्गसे अहमद नगरके पर्वतप्रदेशको भाग गये।

त्रिम्बकजीके समर्पित होने पर सदाशिव माऊ मान केश्वर, मोरोदीक्षित और चिमनाजीनारायण बाजीरावके प्रधान परामर्शदाता थे। १८१६ ई०में उन्होंने ऊपरसे अङ्गरेजोंसे मित्रता दिखायी, पर भीतर ही भीतर वे शिंदे, होलकर, नागपुर और पिंडारियोंके साथ मिल अंग्रेजोंको परास्त करनेके लिये कोशिश करते थे। त्रिम्बक जीको अर्थसे सहायता कर उन्होंने भील, कोल रमसी और मङ्ग आदि पार्वत्य जातियोंको अङ्गरेजोंके विरुद्ध लडनेके लिये उभाड़ा। एलफिष्टनने यह समाचार पा पेशवासे कैफियत मांगी पेशवाने इसका उत्तर देनेके लिये अपनी सेना भेज दी। एलफिष्टनने इससे सन्तुष्ट न हो पेशवासे कहा, 'आप त्रिम्बकको हमारे हाथ सौंप दें, जब तक नहीं सौंपेंगे तब तक सिंहगढ़, पुरन्धर और रायगढ़ दुर्ग अंग्रेजो के अधिकारमें रहेंगे। यदि आप उक्त तीनों दुर्ग बन्धनस्वरूप रखनेको राजी न होंगे, तो अंग्रेजराज्य पूनाकी राजधानी पर हमला करनेको बाध्य होगा।' तीनों दुर्ग अंग्रेजों के हाथ लगे सही परन्तु उनमें एक भी सेना न बच रही थी। १८१३ ई०में पूनाकी सन्धिके अनुसार पेशवा नर्मदाके उत्तर और तुङ्गभद्राके दक्षिणवर्त्ती भूभाग पर अधिकार छोड़ देनेको बाध्य हुये। पूनाकी सन्धि समाप्त होने पर वे पूना नगरीका परित्याग कर पण्ढरपुर में तीर्थयात्राके लिये चल दिये। उसी वर्ष किर्किरी युद्ध में पराजित हो पेशवा सितारोकी तरफ भागे। किन्तु अङ्गरेज सेनाने उनका पीछा किया जिससे उनको अनेक जगह पर्यटन करने पर ससैन्य पूनाकी तरफ बढ़ना पड़ा। १८१८ ई०की ४थी जनवरीमें अंग्रेजोंसे फिर परास्त हो वे शोलापुरको चौदी ग्यारह हुए। किन्तु आत्मरक्षामें असमर्थ हो उन्होंने आसीरगढके निकटवर्त्ती ढोल-कोट नगरमें अंग्रेज सेनापति जनरल सर जनमेल्कं हाथ आत्मसमर्पण किया। उक्त वर्षकी ३री जूनको अंग्रेजोंने ८ लाख रुपये मासिक वेतन मुकर्रर कर कान पुरके पास बिठुर नगरमें उनके रहनेके लिये स्थान निश्चित कर दिया। सिपाही विद्रोहके प्रधान नेता धुन्धु पत (नाना साहब) इन्हींके दत्तक पुत्र थे। १८५२ ई०में विठुर नगरमें बाजीरावकी मृत्यु हुई।

बाजु (फा० अव्य०) १ बिना, बगैर। २ अतिरिक्त, सिवा।

बाजू (फा० पु०) १ भुजा, बाहु। २ एक प्रकारका गोदना

जो बाँह पर गोदा जाता है। इसका आकार बाजूबंद-सा होता है। ३ वह जो हर काममें बराबर साथ रहे और सहायता दे। ४ बाजूबंद नामका गहना जो बाँह पर पहना जाता है। ५ पक्षीका डैना। ६ सेनाका किसी ओरका एक पक्ष।

बाजूबंद ( फा० पु० ) एक प्रकारका गहना जो बाँह पर पहना जाता है। यह कई तरहका होता है। इसमें बहुधा बीचमें एक बड़ा चौकोर नग या पटरी होती है। इसके आगे पीछे छोटे छोटे और नग या पटरियां होती हैं जो सबकी सब तागे या रेशममें पिरोई रहती हैं।

बाझना ( हिं० क्रि० ) बझना देखो।

बाट ( हिं० पु० ) १ मार्ग, रास्ता। २ पत्थर आदिका वह टुकड़ा जो चीजें तौलनेके काममें आता है, बटखरा। ३ पत्थरका वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाय। ( स्त्री० ) ४ बाटनेका भाव, बटन, बल।

बाटना ( हिं० क्रि० ) सिल पर बट्टे आदिसे पीसना, चूर्ण करना।

बाटली ( हिं० स्त्री० ) जहाजके पालमें उपरकी ओर लगा हुआ वह रस्सा जो मस्तूलके ऊपरसे हो कर फिर नीचेकी ओर आता है। इसीको खींच कर पाल ताना जाता है।

बाटिका ( स० स्त्री० ) बाग, तुलसी। २ गद्यकाव्यका एक भेद।

बाटी ( हिं० स्त्री० ) १ गोली, पिंड। २ अंगारों या उपलों आदि पर सेंकी हुई एक प्रकारकी गोली या पेड़ेके आकारकी रोटी, लिट्टी।

बाढ़—१ पटना जिलेके अन्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ५२६ वर्गमील है। फतुआ, बाढ़ और मुकामा थाना इसके अन्तर्भुक्त हैं।

२ उक्त जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २५° २९' १०" उ० तथा देशा० ८५° ४५' १२" पू० गङ्गाके किनारे अवस्थित है। यहां इष्ट इण्डिया रेलपथका एक स्टेशन है।

बाड़—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २५° २'से २५° २२' उ० तथा देशा० ८१° ३१'से ८१° ४६' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २५३ वर्गमील और जनसंख्या ५५ हजारसे ऊपर है। इसमें २३७ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है। यहांकी प्रधान उपज धान है।

बाड़—युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलान्तर्गत एक शहर। यह अक्षा० २५° ३१' उ० तथा देशा० ८३° ५२' पू० गाजीपुर शहरसे १८ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या पांच हजारसे ऊपर है। इसके पास ही १५३६ ई०में हिमायूं और शेरशाहमें युद्ध हुआ था जिसमें हिमायूंकी हार हुई थी। शहरमें बहुतसे प्राचीन मन्दिर और दो स्कूल हैं।

बाड़किन (अं० पु०) १ एक प्रकारका सूआ जो छापेखानेमें काम आता है। इसमें पीछेकी ओर लकड़ीका दस्ता लगा रहता है। इससे कम्पोजीटर लोग कपोज किये हुए मैटरमेंसे गलतीसे लगा हुआ अक्षर निकालते और उसकी जगह दूसरा अक्षर बैठाते हैं। २ दफ्तरीखानेमें काम आनेवाला एक प्रकारका सूआ। इसका पिछला सिरा बहुत मोटा होता है। यह किताबों आदिमें ठोंक कर छेद करनेके काममें आता है।

बाड़व ( स० क्ली० ) वडवानां समूहः वडवा ( खण्डिकादिभ्यश्च। पा ४।२।४५ ) इत्यञ्। १ वडवा-समूह, घोड़ियोंका झुण्ड। २ ब्राह्मण। ३ वडवानल, वड़वाग्नि। ( त्रि० ) वडवया इव वडवा अण्। ४ वड़वासम्बन्धी।

बाड़वाग्नि ( स० पु० ) वडवा समुद्रस्था घोटकी तत्सम्बन्ध्यग्नि। वड़वानल।

बाड़वाग्र्य ( स० पु० ) बाड़वेषु ब्राह्मणेषु आग्र्यः श्रेष्ठः। ब्राह्मणश्रेष्ठ।

बाड़वेय ( स० पु० ) वडवायाः घोटकरूपधारिण्याः सूर्यपत्न्याः अपत्ये पुमांसौ वडवा-ढक्। अश्विनीकुमार द्वय। यह शब्द द्विवचनान्त है।

बाड़व्य ( स० क्ली० ) बाड़वानां ब्राह्मणानां समूहः बाड़व ( ब्राह्मणमाणववाडवाद्यत्। पा ४।२।४२) इति यत्। ब्राह्मणसमूह।

बाड़म ( स० पु० ) मत्स्य, मछली।

बाड़ा (हिं० पु०) १ चारों ओरसे घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २ वह स्थान जिसमें पशु रहते हैं, पशुशाला।

बाड़ा—मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलान्तर्गत एक नगर।

पिण्डारी-सरदार चीतूने इस स्थानका जागीर रूपमें भोग किया था। यहा ईखकी विस्तृत खेती होती है। सूती कपडे बना कर बेचना और छिन्दवाडा राज्यकी वन्य भूमिसे काष्ठ और रङ्गका वाणिज्य करना यहाके अधिवासियोंकी प्रधान उपजीविका है।

वाडिस ( अ० स्त्री० ) स्त्रियोंके पहननेकी एक प्रकारकी अगरेजो ढगकी कुरती।

वाडिङ्गन ( स० पु० ) वाड प्लावन तस्मै इङ्गते इति वाड् इङ्ग-ल्यु। वार्ताकू।

वाडी—हजारीबाग जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह ग्राण्ड ट्राङ्क रोड नामक पथके एक ओर अवस्थित है।

वाडी—अयोध्या प्रदेशके सीतापुर जिलेकी एक तहसील। भूपरिमाण १२५ वर्गमील है। पहले यहा कच्छ और अहीर जातिका वास था। १४वीं शताब्दी तक यह स्थान उन्हीं के अधिकारमें रहा। पीछे मुसलमान धर्मावलम्बी प्रतापसिंह नामक किसी हिन्दूने दिल्लीके तुगलक सम्राट्के फरमानके अनुसार यह स्थान दखल किया। उनके वंशधरगण आज भी चौधरी कहलाते हैं। फिलहाल यहाके अनेक स्थान वैश नामक राजपूतोंके अधिकारमें हैं।

वाड़ी ( हि० स्त्री० ) वाटिका, वारी, फुलवारी।

वाडीगार्ड ( अ० पु० ) १ किसी राजा या वहुत बडे राजकर्मचारीके साथ रहनेवाले उन थोडे से सैनिकोंका समूह जिनका काम उसके शरीरकी रक्षा करना होता है। २ इन सैनिकोंमेंसे कोई एक सैनिक।

वाडीर ( स० पु० ) भृत्य, नौकर।

वाढ ( स० क्ली० ) १ सत्य। २ प्रतिज्ञा। ३ अधिकता, वृद्धि।

वाढ ( हि० स्त्री० ) १ वढनेकी क्रिया या भाव, वढाव। २ अधिक वर्षा आदिके कारण नदी या जलाशयके जलका बहुत तेजीके साथ और बहुत अधिक मानमें बहना। ३ बन्दूक या तोप आदिका लगातार छूटना। ४ वह धन जो व्यापार आदिमें बढे, व्यापार आदिसे होनेवाला लाभ। ५ तलवार, छुरी आदि शस्त्रोंकी धार, सान।

वाढक्ट ( हि० स्त्री० ) १ तलवार। २ खड्ग।

वाढसत्वन् ( स० त्रि० ) निःशङ्कगामी, अशङ्कित गमन।

वाढी ( हि० स्त्री० ) १ वाढ, वढाव। २ अधिकता, वृद्धि। ३ वह व्याज जो किसीको अन्न उधार देने पर मिलता है। ४ लाभ, नफा।

वाढीवान ( हि० पु० ) वह जो छुरी, कैंची आदिकी धार तेज करता हो।

वाण ( स० पु० ) वणन वाण शब्दस्तदस्यास्तीति वाण अच्। १ अस्त्रविशेष, तीर, सायक। प्राचीनकालमें प्राय सारे ससारमें इस अस्त्रका प्रयोग होता था और अब भी अनेक स्थानोंके जगली तथा अशिक्षित लोग अपने शत्रुओंका सहार या आखेट आदि करनेमें इसीका व्यवहार करते हैं। यह प्रायः लकडी या नरसलकी डेढ हाथकी छड होती है जिसके सिरे पर पैना लोहा, हड्डी, चकमक आदि लगा रहता है जिसे फल या गासी कहते हैं। यह फल कई प्रकारका होता है, कोई लम्बा, कोई अर्द्धचन्द्राकार और कोई गोल। लोहेका फल कभी कभी जहरमें बुझा भी लिया जाता है जिससे आहतकी मृत्यु प्राय निश्चित हो जाती है। कहीं कहीं इसके पिछले भागमें पर आदि भी बाध देते हैं जिससे यह सीधा और तेजीके साथ जाता है। (धनुर्वद देखो।)

२ गोस्तन, गायका थन। ३ केवल। ४ अग्नि, आग। ५ काण्डावयव, शरका अगला भाग। ६ नीलझिण्टी, नीली कटसरैया। ७ भद्रमुञ्ज तृण, सरपत, रामसर। ८ लक्ष्य, निशाना। ९ पाचकी सख्या। कामदेवके पाच वाण माने हैं इसीसे वाणसे ५ की सख्याका बोध होता है। १० इक्ष्वाकुवंशीय विकुक्षिके पुत्रका नाम। ११ कादम्बरी प्रणेता एक प्रसिद्ध कवि। (वाणभट्ट देखो।) १२ राजा बलिके सौ पुत्रोंमेंसे सबसे बडे पुत्रका नाम। भागवतमें इसका विवरण यों है—

महाराज बलिके सौ पुत्र थे, जिनमेंसे बडे का नाम वाण था। वाण सर्वगुणसम्पन्न और सहस्रबाहु थे। इन्होंने हजारों वर्ष तपस्या कर शिवसे वरप्राप्त किया था। पातालस्थ शोणपुरीमें इनकी राजधानी थी। महादेवके अनुग्रहसे देवगण इनके किङ्कर सदृश थे। युद्धस्थलमें महादेव स्वय आ कर इनकी रक्षा करते थे। वाणके ऊषा नाम्नी एक कन्या थी। ऊषा प्रति रातको एक कमनीयकान्ति पुरुष स्वप्नमें देखती थी। क्रमशः

स्वप्नदृष्ट पुरुषके लिये नितान्त व्याकुल हो उसने सखी चित्रलेखाके समीप अपना अभिप्राय प्रकट किया। चित्रलेखा उस पुरुषको श्रीकृष्णका पौत्र जान कर योगबलसे आकाश मार्ग होती हुई द्वारका पहुँची और वहांसे अनिरुद्धको हरण कर ऊषाके निकट ले आई। अनिरुद्ध कुछ दिन तक गुप्तभावसे वहीं रहे। पीछे बाणको मालूम होने पर उन्होंने अनिरुद्धको कैद कर रखा।

इधर चार वर्ष तक जब अनिरुद्धका कहीं पता न चला, तब एक दिन नारद श्रीकृष्णके यहां गये और कुल बातें कह सुनाई। 'अनिरुद्ध बाणके निकट आबद्ध हैं' नारदके मुखसे यह संवाद पा कर श्रीकृष्ण आगबबूले हो गये और उसी समय उन्होंने बाण-पुरीको यात्रा कर दी। वहां पहुँच कर श्रीकृष्णने बाणके साथ युद्ध ठान दिया। इस युद्धमें महादेव स्वयं आ कर श्रीकृष्णसे लड़े थे। युद्धमें श्रीकृष्णने जब बाणकी सब भुजाएँ काट डालीं, तब शिवजी श्रीकृष्णका स्तव करने लगे। स्तवसे श्रीकृष्णने युद्ध बंद कर दिया। इस समय बाणकी केवल चार भुजाएँ बच रही थीं। बाणने ऊषा समेत अनिरुद्धको श्रीकृष्णके हाथ प्रत्यर्पण किया। श्रीकृष्ण बड़ी धूमधामसे पुत्र और पुत्रवधूको द्वारका ले आये। (भागवत ६२-६४ अ०) हरिवंशमें १७२वें अध्यायसे आरम्भ करके इसका विस्तृत विवरण लिखा है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां उसका उल्लेख नहीं किया गया।

बाणगङ्गा (सं० स्त्री०) बाणेन प्रकटिता गङ्गा नदीविशेष। हिमालयके सोमेश्वर गिरिसे निःसृत एक प्रसिद्ध नदी। कहते हैं, कि यह रावणके बाण चलानेसे निकली थी इसीसे इसका यह नाम पड़ा। इसमें स्नान करनेसे सभी पाप दूर होते हैं। यहां बाणेश्वर नामका एक लिङ्ग है जिनके दर्शन करनेसे भी अशेष पुण्यलाभ होता है।

बाणदण्ड (सं० पु०) बाणस्य दण्ड। वाधादण्ड। इसका पर्याय वेमा है।

बाणधि (सं० पु०) बाणा धीयन्तेऽस्मिन् धा आधारे कि। इषुधि, तूण, तरकश।

बाणनाशा (सं० स्त्री०) नदीभेद।

बाणपञ्चानन (सं० पु०) एक ग्रन्थकार।

बाणपति (सं० पु०) बाणासुरके स्वामी, महादेव।

बाणपत्र (सं० स्त्री०) कङ्कपक्षी।

बाणपथ (सं० पु०) शरमार्ग, उतनी दूर जहां तक बाण जा कर गिरे।

बाणपात (सं० पु०) शरनिक्षेप।

बाणपुङ्खा (सं० स्त्री०) बाणस्य पुङ्खा। शरपुङ्खा।

बाणपुर (सं० क्ली०) बाणस्य राज्ञः पुरम् नगरम्। बाण राजनगर। पर्याय—देवीकोट, कोटीवर्ष, ऊषावन, शोणितपुर, आग्नेय, उमावन, कोट्टवीपुर।

बाणभट्ट—एक प्रसिद्ध कवि। ये कन्नौजके अधिपति श्रीहर्षवर्द्धनके सभापण्डित थे। इन्होंने अपने बनाये हुए 'हर्षचरित' नामक ग्रन्थमें अपने जीवनकी कुछ घटनाओंका उल्लेख किया है। ये शोणतीरवासी सारस्वतवंशी ब्राह्मण थे। बचपनमें ही पिता मातासे वियोग होनेके कारण ये उच्छृङ्खल प्रकृतिके हो गये थे। नागरिकोंके साथ रहनेके कारण इनके आचारमें सन्देह किया जा सकता है जो नितान्त निर्मूल भी नहीं है। यद्यपि दुर्व्यसनों में फंस जानेके कारण इनका अध्ययन छूट गया, तथापि इस समयके नागरिकोंके समान ये भारतके नागरिक नहीं थे। बाणभट्ट यद्यपि उच्छृङ्खल प्रकृतिके हो गये थे तथापि उनका चरित्र नीच नहीं हुआ। बाणभट्टका मन जब अपने साथियोंसे ऊब गया, तब वे उनका परित्याग कर श्रीहर्षवर्द्धनकी सभामें उपस्थित हुए। विद्याव्यसनी राजाने इनको उचित आश्रय दिया।

इन्होंने 'हर्षचरित' 'कादम्बरीका पूर्वभाग' 'चण्डिका शतक' और 'पार्वतीपरिणय' नामक ग्रन्थ बनाये हैं। अनेक विद्वानोंका मत है, कि पार्वती परिणयके कर्त्ता ये बाणभट्ट नहीं हैं। हर्षचरित और कादम्बरी ये दोनों गद्यकाव्य हैं। चण्डिकाशतकमें सौ श्लोकोंसे भगवती की स्तुति की गई है। पार्वतीपरिणय नाटक है। कहते हैं, कि इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त पद्य कादम्बरी भी बाणभट्टने बनाई थी परन्तु यह ग्रन्थ अभी तक न तो कहीं प्रकाशित हुआ है और न उसका कहीं पता ही लगा है।

ऊपर कहा गया है, कि बाणभट्ट हर्षदेवके राजा

पण्डित थे। काव्यप्रकाशके टीकाकार पण्डितोंने वाणभट्ट और हर्षदेवके सम्बन्धमें एक विलक्षण झमेला डाल दिया है। काव्यप्रकाशकी वृत्तिमें एक स्थान पर लिखा है "श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्" अर्थात् श्रीहर्षसे जिस प्रकार धावक आदिको धन प्राप्त हुआ था। काव्य प्रकाशके टीकाकार महेश्वर इसका अर्थ इस प्रकार करते हैं—"श्रीहर्षो राजा, धावकेन रत्नावलीं नाटिका तन्नाम्ना कृत्वा बहुधन लब्धम्" काव्यप्रकाशकी टीकामें वैद्यनाथ ने लिखा है—"श्रीहर्षारयस्य राज्ञो नाम्ना रत्नावली नाटिका कृत्वा धावकारय कविर्बहुधन लेभे' दूसरे टीका कारोंने भी इसी प्रकारका अपना मत प्रकाशित किया है। काव्यप्रकाशके टीकाकार प्रसिद्ध विद्वानोंने जो लिखा है उसको माननेके पहिले कुछ विचार करना आवश्यक है। कालिदास रचित मालविकाग्निमित्र नामक नाटककी प्रस्तावनामें लिखा है—"प्रथितयशसा धावकसौमिल्लक विपुत्रादीना प्रबन्धानतिक्रम्य वर्त्तमानकवे कालि दासस्य कृतौ किं कृतो बहुमान।" अर्थात् प्रसिद्ध विद्वान धावक सौमिल्ल कविपुत्र आदिके बनाये नाटकोंके रहते हुए भी वर्त्तमान कवि कालिदासके नाटकका इतना आदर क्यों किया जाता है। इससे दो बातोंका पता लगता है, एक तो यह कि धावक एक प्रसिद्ध नाटक-लेखक थे और कालिदाससे प्राचीन थे। अत ७वीं सदीके हर्षदेवके नामसे कालिदाससे भी प्राचीन धावक कविने रत्नावली नामकी नाटिका बनायी हो, यह किसी प्रकार युक्तिसगत नहीं समझा जा सकता। इसकी मीमासामें केवल दो ही उत्तर पर्याप्त हैं। एक तो यह, कि मालविकाग्निमित्रके रचयिता कालिदास रघुवशके रचयिता कालिदाससे भिन्न हैं। क्यो कि रघुवशप्रणेता कालिदास विनयी थे और मालविकाग्निमित्रप्रणेता कालिदास उद्धत।

वाणभट्ट ७वीं शताब्दीमें विद्यमान थे। कहा जाता है, कि युएनचुयगके भारत आनेके समय वाणभट्ट वर्त्तमान थे। सूर्यशतककर्त्ता मयूरभट्ट वाणके जामाता और जैन पण्डित मानतुङ्गाचार्य इनके मित्र थे। ये तीनो ही हर्षवर्द्धनके सभा पण्डित थे।

वाणयुद्ध (स ० क्ली० ) वाणेन सह युद्ध। वाणराजके साथ श्रीकृष्णका स ग्राम। वाण देखो।

वाणविद्या (स ० स्त्री० ) वह विद्या जिससे वाण चलाना आवे, तीरदाजी।

वाणलिङ्ग (स ० क्ली० ) वाणार्चनार्थ कृत लिङ्ग। नर्मदादि नदीजात शिवलिङ्गविशेष।

नर्मदा नदीमें जो शिवलिङ्ग पाया जाता है वही वाणलिंग है। यह वाणलिंग सब लिङ्गो की अपेक्षा श्रेष्ठ है। शिवलिङ्ग-पूजनमें कोमललिङ्गके मध्य मृल्लिङ्ग और कठिन लिङ्गके मध्य वाणलिंग ही सर्वोत्कृष्ट है।

"कोमलेषु च लिङ्गेषु पार्थिव श्रेष्ठमुच्यते।
कठिनेषु च पाषाण पाषाणात् स्फाटिक वरम्॥
हैरण्य राजतात् श्रेष्ठ हैरण्याद्धीरक वरम्।
हीरकात् पारद श्रेष्ठ वाणलिङ्ग तत परम्॥
(मेरुतन्त्र ६ अ०)

नर्मदा, देविका, गङ्गा और यमुना आदि नदियो में वाणलिङ्ग पाया जाता है। इस लिङ्गका पूजन करनेसे इहजन्मका समस्त अभीष्टलाभ और परजन्ममें मुक्ति होती है।

वाणलिङ्ग भिन्न भिन्न चिह्न द्वारा भिन्न भिन्न नामसे प्रसिद्ध है। यथा—जो लिङ्ग मधु और पिङ्गल वर्णाभ तथा कृष्ण कुण्डलिकायुत होता है उसे स्वयम्भु लिङ्ग, जो नाना वर्ण तथा जटा और शूलचिह्नयुक्त है उसे मृत्युञ्जय लिङ्ग, दीर्घाकार, शुभ्रवर्ण और कृष्णविन्दु चिह्नवालेको नीलकण्ठ शुक्लाभ, शुक्लकेश और तीन नेत्र चिह्नयुक्तको महादेव, कृष्णवर्ण आभायुक्त और स्थूल विग्रहको कालाग्निरुद्र तथा मधु और पिङ्गलवर्णाभ, श्वेत यज्ञोपवीतयुक्त, श्वेतपद्मासीन और चन्द्ररेखा भूषित लिङ्गको त्रिपुरारि लिङ्ग कहते हैं।

वाणलिङ्गमें महादेव सर्वदा अवस्थित रहते हैं। वाण लिङ्गकी पूजा करनेमें वेदिका बनाना आवश्यक है। क्योंकि, उस वेदिकाके ऊपर लिङ्गस्थापन करके पूजा करनी होती है। विना आधारके पूजा नहीं करनी चाहिये। यह वेदिका ताम्र, स्फाटिक, स्वर्ण, पाषाण और रौप्य इन मेंसे किसी एककी होनी चाहिये। प्रतिदिन इस प्रकार वेदिकाके ऊपर वाणलिङ्ग रख कर पूजा करनेसे मुक्ति लाभ होता है।

"ताम्रो वा स्फाटिको स्वार्णो पाषाणी राजती तथा।
वेदिका च चकर्तव्या तत्र संस्थाप्य पूजयेत्॥
प्रत्यह योऽर्च्चयेल्लिङ्ग नार्मद भक्तिभावत।
ऐहिक किं फल तस्य मुक्तिस्तस्य करे स्थिता॥"
(सूतसंहिता)

वाणलिङ्ग नाना प्रकारके हैं जिनमेंसे कितने मोक्षार्थियों के, कितने गृहस्थोंके और कितने सन्यासियोंके शुभजनक हैं।

निन्दनीय लिङ्ग—वाणलिङ्ग यदि कर्कश हो, तो उसकी पूजा नहीं करनी चाहिये, करनेसे स्त्री और पुत्रका नाश होता है। एक पार्श्वस्थित लिङ्ग, भग्नलिङ्ग, छिद्रलिङ्ग और जिस लिङ्गका अग्रभाग तीक्ष्ण हो वैसा लिङ्ग, शीर्षदेशयम, त्र्यस्र अर्थात् त्रिकोण लिङ्ग, अति स्थूल और अति कृश लिङ्गपूजामें प्रशस्त नहीं है। कपिलवर्ण अथवा घनाभलिङ्ग मोक्षार्थियोंके लिये शुभ जनक है। जिस लिङ्गका वर्ण भ्रमरके जैसा है, वैसा ही लिङ्ग गृहस्थोंके पक्षमें शुभकर माना गया है। इस लिङ्गका सपीठ और अपीठ दोनों ही अवस्थामें पूजन किया जा सकता है। वाणलिङ्गपूजामें आवाहन या विसर्जन कुछ भी नहीं करना होता है। स्त्रीशूद्रको भी इस वाणलिङ्गके पूजनमें अधिकार है। शिवका जो ध्यान है उससे भी वाणलिङ्ग पूजा की जा सकती है अथवा निम्नोक्त ध्यान से भी पूजा कर सकते हैं। ध्यान यथा—

"ओं प्रमत्त शक्तिसंयुक्त वाणाख्यञ्च महाप्रभम्।
कामवाणान्वितं देवं संसारदहनक्षमम्॥
शृङ्गारादिरसोल्लास वाणाख्य परमेश्वरम्।
एव ध्यात्वा वाणलिङ्ग यजेत्तं परमं शिवम्॥"

वाणलिङ्ग नाम पड़नेका कारण सूतसंहितामें इस प्रकार लिखा है—राजा वाण महादेवके अतिशय प्रिय थे और प्रतिदिन शिवलिङ्ग बना कर उनकी पूजा करते थे। इस प्रकार दिव्य परिमाण सौ वर्ष तक उन्होंने शिव पूजा की थी। आखिर महादेवने प्रसन्न हो कर उन्हें इस प्रकार वर दिया था, "मैं तुम्हें चौदह करोड़ लिङ्ग प्रदान करता हूं, ये सब सिद्ध लिङ्ग हैं। ये लिङ्ग नर्मदादि पुण्य नदीमें रहेंगे" यथानियम इस वाणलिङ्गकी पूजा और पूजाके बाद स्तव करके पूजा समाप्त करनी होती है। स्तव यथा—

"वाणलिङ्गमहाभाग संसारात्त्राहि मां प्रभो।
नमस्ते चोग्ररूपाय नमस्ते व्यक्तयोनये॥
संसारकारिणे तुभ्यं नमस्ते सूक्ष्मरूपधृक्।
प्रमत्ताय महेन्द्राय कालरूपाय वै नमः॥
दहनाय नमस्तुभ्यं नमस्ते योगकारिणे।
भोगिनां भोगकर्त्रे च मोक्षदात्रे नमोनमः॥"

इत्यादि।

योऽशधार, वाणलिङ्गस्तोत्र नर्मदाखण्ड देखो।

**वाणवार** (सं० पु०) वाण परमुक्तशर वारयतीति वृ णिच् अण्। भटादिका चोलादि तिसनाह। पर्याय—वारवाण, वारण, चोलक।

**वाणविद्या** (सं० स्त्री०) वह विद्या जिससे वाण चलाना आवे, तीरदाजी।

**वाणसुता** (सं० स्त्री०) वाणस्य वाणासुरस्य सुता। ऊषा।

**वाणहन्** (सं० पु०) वाण वाणासुर हन्तीति हन् क्विप्। विष्णु।

**वाणा** (सं० स्त्री०) १ वाणमूल। २ नीलपुष्प भिण्टीक्षुप, नीली कटसरैया।

**वाणारि** (सं० पु०) वाणस्य वाणासुरस्य अरि। विष्णु।

**वाणाश्रय** (सं० पु०) वाणस्य आश्रय। धनु।

**वाणासन** (सं० क्ली०) वाणस्य आसन। धनु।

**वाणासुर** (सं० पु०) राजा बलिके सौ पुत्रोंमेंसे सबसे बड़े पुत्रका नाम। वाण देखो।

**वाणाह्वा** (सं० स्त्री०) १ मुञ्ज तृण। २ नील कमल।

**वाणिज** (सं० पु०) वणिगेव, वणिज अण्। १ वणिक्। २ वाड़वाग्नि।

**वाणिजक** (सं० पु०) वणिगेव वणिज् ठञ्। १ वाड़वाग्नि। २ वणिक्। (त्रि०) ३ धूर्त्त।

**वाणिज्य** (सं० पु०) व्यापार, रोजगार।

**वाणी** (सं० स्त्री०) नीलझिण्टी, नीली कटसरैया।

**वाणेश्वर** (सं० पु०) १ शिवलिङ्गभेद। २ विद्यार्णव सेतु नामक ग्रन्थके एक सङ्कलनकर्त्ता।

वाणेश्वरविद्यालङ्कार देखो।

**वाणेश्वरविद्यालङ्कार**—बङ्गालके एक विख्यात पण्डित। इन की स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र थी। इनके पिता जो सब

स स्कृत स्तव पाठ करते थे उन्हें सुन कर ही ये मुखस्थ कर लेते थे। इनकी ऐसी असाधारण मेधाका परिचय पा कर एक दिन इनके पिताने कहा, 'भविष्यमें बाणू भी एक पण्डित होगा।' उनकी उक्ति मिथ्या न हुई। थोडी ही उमरमें ये सब शास्त्रोंमें पण्डित हो गये। इनको बनाई हुई सुललित और पाण्डित्यपूर्ण अनेक कविताएं प्रचलित हैं। पहले ये नवद्वीपाधिपति महाराज कृष्ण चन्द्रके सभा पण्डित थे। पीछे कलकत्ते आ कर इन्हों ने महाराज नवकृष्णकी सभा उज्ज्वल की। बड़े लाट वारेन हेष्टिंसने जिन सब पण्डितोंको सहायतासे 'विवादा र्णवसेतु' नामक बृहत् धर्मशास्त्रस ग्रह प्रकाशित किया था, उनमेंसे बाणेश्वर एक थे।

बात ( हिं० स्त्री० ) १ वाणी, वचन। २ प्रचलित प्रसग, फैली हुई चर्चा। ३ प्रसङ्ग, चर्चा, जिक्र। ४ प्रास संयोग, घटित होनेवाली अवस्था। ५ परस्पर कथोप कथन, गप शप। ६ संदेश, सदेसा। ७ व्यवस्था, हाल, माजरा। ८ झूठ या बनावटी कथन, मिस, बहाना। ९ कोई मामला तै करनेके लिये उसके सम्बन्धमें चर्चा, किसीके साथ कोई व्यवहार या सबध स्थिर करनेके लिये परस्पर कथोपकथन। १० फँसाने या धोखा देनेके लिये कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार। ११ अपनी हैसि यत, योग्यता, गुण, सामर्थ्य इत्यादिके सबन्धमें कथन या वाक्य। १२ आदेश, उपदेश, सीख। १३ रहस्य, भेद, मर्म। १४ प्रतिज्ञा, कौल। १५ मानमर्यादा, प्रतिष्ठा। १६ विश्वास, प्रतीति। १७ कामना, इच्छा। १८ ढग, तौर। १९ गुण या विशेषता, खूबी। २० प्रश्न, सवाल। २१ प्रशंसाका विषय, तारीफकी बात। २२ चमत्कार-पूर्ण कथन, उक्ति। २३ गूढ रहस्य, अभिप्राय। २४ अभिप्राय, तात्पर्य। २५ कर्त्तव्य, उचित पथ या उपाय। २६ दाम, मोल। २७ वस्तु, पदार्थ। २८ स्वभाव, गुण, प्रकृति। २९ सम्बन्ध, तअल्लुक। ३० आचरण, व्यव हार। ३१ तत्त्व, मर्म।

बातकटक ( हिं० पु० ) एक वायु रोग।

बातचीत ( हिं० स्त्री० ) दो या कई मनुष्योंके बीच कथोप कथन, वार्त्तालाप।

बातड ( हिं० वि० ) वायुयुक्त, वायुवाला।

बातप ( हिं० पु० ) हिरन।

बातफरोश ( हिं० पु० ) १ बात बनानेवाला, बात गढने वाला। २ झूठमूठ इधर उधरकी बात कहनेवाला।

बातर ( हिं० पु० ) पजाबमें धान बोनेका एक ढग।

बातलारोग ( हिं० पु० ) एक योनिरोग जिसमें सुई चुभने कीसी पीडा होती है।

बातिङ्गन ( स० पु० ) वार्त्ताकी, बगन।

बाती ( हिं० स्त्री० ) १ लम्बी सलाईके आकारमें बटी हुई रूई या कपडा। २ कपड़े या रूईको बट कर बनाई हुई सलाई जो तेलमें डुबा कर दिया जलानेके काममें आती है, बत्ती। ३ वह लकडी जो घासके छेतके ऊपर बिछा कर छप्पर छाते हैं।

बातुल ( हिं० पु० ) पागल, बौड़हा।

बातूनिया ( हिं० वि० ) बातूनी देखो।

बातूनी ( हिं० वि० ) बकवादी, बहुत बोलने या बात करने-वाला।

बाथू ( हिं० पु० ) बथुआ नामका साग।

बाद ( हिं० पु० ) १ तर्क, बहस। २ प्रतिज्ञा, शर्त। ३ नाना प्रकारके तक वितर्क द्वारा बातका विस्तार, भक भक। ४ विवाद, झगडा। ( अव्य ) ५ निष्प्रयोजन, फजूल।

बाद (फा० अव्य०) १ पश्चात्, पीछे। (वि०) २ अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ। ३ दस्तूरी या कमीशन जो दाममेंसे काटा जाय। ४ अतिरिक्त, सिवाय। ५ असलसे अधिक दाम जो व्यापारी माल पर लिख देते और दाम बताते समय घटा देते हैं।

बाद ( फा० पु० ) वात, हवा।

बादकाकुल ( स० पु० ) तालके मुख्य ६० भेदोंमेंसे एक भेद।

बादनुमा ( फा० पु० ) वायुकी दिशा सूचित करनेवाला यन्त्र, पवन प्रकाश।

बादबान ( फा० पु० ) पाल।

बादर (सं० पु०) बदर स्वार्थे अण्। १ कार्पासवृक्ष, कपास-का पौधा। २ कार्पास सूत्र, कपासका सूत। ३ कर्पूर, कपूर। ४ नैऋत्यकोणमें एक देश। (बृहत्संहिता) (त्रि०) ५ बेर नामक फलका, उससे उत्पन्न या उससे संबन्ध

रखनेवाला। ६ कपासका, रुईका बना हुआ। ७ मोटा या भद्दा।

बादर (हिं० वि०) आनन्दित, प्रसन्न, आह्लादित।

बादरङ्ग (सं० पु०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपलका पेड़।

बादरा (सं० स्त्री०) १ बदरी या बेरका पेड़। २ कपास का पौधा। ३ जल, पानी। ४ रेशम। ५ दक्षिणावर्त्त शंख।

बादरायण (सं० पु०) बदर्य्यां भवः फक। वेदव्यास।

बादरायणि (सं० पु०) बादरायण इञ्। वेदव्यास।

बादल (हिं० पु०) १ पृथ्वी परके जलसे उठी हुई वह भाप जो घनी हो कर आकाशमें छा जाती है और फिर पानी की बूँदोंके रूपमें गिरती है। मेघ देखो। २ एक प्रकारका पत्थर जो दुधिया रंगका होता है। इस पर नीली रंगकी बादलकी सी धारियाँ पड़ी होती हैं। इस प्रकारका पत्थर राजपूतानेमें निकलता है।

बादला (हिं० पु०) सोने या चाँदीका चिपटा चमकीला तार जो गोटे बुनने या कलाबत्तू बटनेके काममें आता है।

बादशाह (फा० पु०) १ राजसिंहासन पर बैठने वाला, राजा, शासक। २ स्वतन्त्र, मनमाना करने वाला। ३ श्रेष्ठ पुरुष। ४ शतरंजका एक मुहरा जो किश्त लगनेके पहले केवल एक बार घोड़ेकी चाल चलता है और शेषरूपसे बचा रहता है। ५ ताशका एक पत्ता जिस पर बादशाहकी तसवीर बनी रहती है।

बादशाहजादा (फा० पु०) राजकुमार, कुमार।

बादशाहजादी (फा० स्त्री०) राजकुमारी।

बादशाहत (फा० स्त्री०) राज्य, शासन, हुकूमत।

बादशाहपसन्द (फा० पु०) दिलबहार हलका आसमानी रंग, धराधानी रंग।

बादशाहपुर—पञ्जाब प्रदेशके गुड़गाँव और दिल्ली जिलेमें प्रवाहित एक पहाड़ी नदी। यह दिल्ली जिलेकी बल्लभ गढ़ पर्वत मालासे निकली है। बादशाहपुर ग्रामके निकट वहीं जलप्रपात भी इसी नामसे प्रसिद्ध है।

बादशाही (फा० स्त्री०) १ राज्य, राज्याधिकार। २ शासन, हुकूमत। ३ व्यवहार, मनमाना। (वि०) ४ बादशाहका, राजाका।

बादहवाई (फा० क्रि० वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, यों ही।

बादा—२४ परगनेके अन्तर्गत लवणपल्लमिक भूभाग। यहाँ मछली बहुत पाई जाती है।

बादाम—स्वनाम प्रसिद्ध वृक्षभेद। (Terminalia Catappa) इसके बीजका गूदा खानेमें बहुत बढ़िया लगता है। जामुन आदि वृक्षोंकी तरह यह ऊँचा और इसका तना मोटा होता है। बादामके साधारण दो भेद हैं, देशी अथवा पात और विलायती। भिन्न भिन्न देशमें यह भिन्न भिन्न नामसे प्रसिद्ध है। यथा—

हिन्दी—बादाम, बादामी; बंगला—बादाम; उड़ीसा—बादाम; युक्तप्रदेश—देशी बादाम; दाक्षिणात्य—हिन्दी बादाम, जङ्गली बादाम, बादाम-इ-हिन्दि; बम्बई—बादाम, जङ्गली बादाम, बङ्गाली बादाम, देशी बादाम; महाराष्ट्र—बङ्गाली बादाम, नट बादाम, जङ्गली बादाम, तामिल—नट बदम, कोट्टई, नट्टुवदोम, नये बदम; तैलङ्ग—वेदम, नये-बदम बिट्टुल; कनाड़ी—नट बादामी, तरि, तरु; मलय—नट्टु बादाम, कोट्टुक, सिङ्गापुर—कोट अम्बा; संस्कृत—इङ्गुदी, हिंगुदी। पारस्य—बादामे हिन्दि; अंगरेजी—Indian almond।

भारतमें प्रायः सब जगह यह वृक्ष देखा जाता है समुद्रपृष्ठसे प्राय १ हजार फुट ऊँचे स्थान तक यह वृक्ष देखनेमें आता है। वृक्षकी छालसे एक प्रकार काला गोंद निकलता है जो जलमें घुल जाता है। इसके पत्ते और छिलकोंमें थोड़ा रस होता है। इसमें धारकता गुण है। स्याही, दन्तमञ्जन और मिस्सीके बनानेमें लवणाक्त लोहे(Iron Salts)के साथ इसे मिलाते हैं। रेशम, पशम और सूती कपड़ेको नाना वर्णोंमें रंगनेमें यह बहुत उपयोगी है। वृक्षकी छालके रेशेसे मन्द्राजमें एक प्रकारका वस्त्र बनता है।

बादामके पीसनेसे तेल निकलता है। यह तेल सुगंधित और सुस्वादु होता है। वायुरोगग्रस्त उष्णमस्तिष्क व्यक्तिके शरीरमें इस तेल द्वारा मालिश करनेसे बहुत लाभ होता है। लोग खुजली, कुष्ठ आदि चर्म रोगोंमें इसके कच्चे पत्तोंका रस व्यवहार करते हैं।

विलायती बादामका विज्ञानवादियोंने *Prunus Amygdalus* नाम रखा है। सिङ्गापुरमें इसे दक्षिणी और शेष सभी जगह बादाम या बादामी कहते हैं। अफगानिस्तान, अलजिरिया, पशिया माइनर सिरिया और

पारस्य प्रभृति देशोंमें यह पैदा होता है। इसका गोंद यूरोपमें 'Hog tragacanth' नामसे बिकता है तथा असल ट्रागाकान्थके बदलेमें इसका व्यवहार होता है।

तिक्त बादाम विरेचक औषधिके रूपमें प्रयोग किया जा सकता है। कभी कभी स्नायवीय वेदनामें उसका प्रलेप करनेसे पीड़ा धीरे धीरे दूर हो जाती है। यह दृष्टिशक्तिवर्द्धक है। पिपरमेण्टके साथ इसके दूधका सेवन करनेसे सर्दी दूर होती है। साधारणतः यह तेज, स्वास्थ्यकर, मूत्रकारक, अश्मद्रवकर, प्लीहा और यकृत दोषनाशक है। बाद कर माथेके बालोंमें लगानेसे जूँ मर जाती हैं। इसके रेशेका गुण—धातुपरिवर्द्धक और स्वास्थ्यकर है। अवस्था विशेषमें इसके रसका सेवन तथा प्रलेप किया जाता है। बादामके रसका चीनीके साथ सेवन करनेसे छींकें बंद होती हैं।

बादामा (फा० पु०) एक प्रकारका रेशमी कपड़ा।

बादामी (फा० वि०) १ बादामके छिलकेके रंगका, कुछ पीलापन लिये लाल रंगका। २ अण्डाकार, बादामके आकारका। (पु०) ३ एक प्रकारका धान। ४ बादामके आकारकी एक प्रकारकी छोटी डिबिया जिसमें गहने आदि रहते हैं। ५ वह खाजामरा जिसकी इन्द्रिय बहुत छोटा हो। ६ पानीके किनारे रहनेवाली एक प्रकारकी छोटी चिड़िया। इसका प्रधान खाद्य मछली है।

बादामी—१ बम्बईके बीजापुर जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १५ ४६´ से १६ ६´ उ० तथा देशा० ७५ १०´ से ७६ ३२´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६१५ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें १ शहर और १६७ ग्राम लगते हैं। यहांकी आबहवा जिले भरमें खराब है।

२ उक्त तालुकका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० १५-५५´ उ० तथा देशा० ७५ ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या लगभग ४४८२ है। यहां ६५० ई०में निर्मित एक जैन गुहामन्दिर और ५७६ ई०में उत्कीर्ण शिलालिपि-युक्त तीन हिन्दू गुहामन्दिर बाहिर हुए हैं। बौद्धधर्मकी अवनतिके समय जब हिन्दुओंकी प्रधानता फिरसे स्थापित हुई, तब इन सब मन्दिरोंका निर्माणकार्य सम्पन्न हुआ था। यहांके एक मन्दिरमें पञ्चशीर्ष सर्पमूर्त्तिके ऊपर भगवान् विष्णु नरसिंहरूपमें स्थापित हैं। अलावा इसके यहां सैकड़ों हिन्दूमन्दिरके निदर्शन देखे जाते हैं। १७वीं शताब्दीमें यूएनचुवङ्ग यहां आये हुए थे। उस समय यह स्थान विजयनगरके राजाओंके अधिकारमें था। १८१८ ई०में जनरल मनरोने इसे अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया। १८४० ई०में निजामराज्य-की ओरसे १२५ अरबोंने नरसिंह नामक एक अन्ध ब्राह्मणकी अधिनायकतामें इस ग्राम पर दखल जमाया, अङ्गरेजी खजाना लूटा और लूटका माल एक एक करके निजाम राज्य पहुंचाया। किन्तु इसके सात दिनके बाद ही वे सबके सब पकड़े गये और जीवन भरके लिये कालापानी भेज दिये गये। शहरमें सिर्फ एक स्कूल है।

बादि (हिं० अव्य०) व्यर्थ, फजूल।

बादिन—१ सिन्धुप्रदेशके हैदराबाद जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० २४ १३´ से २४ ५८´ उ० तथा देशा० ६८ ४३´ से ६६ १६´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ७३८२३ है। इसमें कुल १६५ ग्राम लगते हैं। यहांकी प्रधान फसल धान और ईख है।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २४ ३८´ उ० तथा देशा० ६८ ५४´ पू० हैदराबाद शहरसे ६२ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या २ हजारसे ऊपर है। १७५० ई०में सवालो नामके किसी हिन्दू व्यक्तिने इस नगरको बसाया। विख्यात पठान सरदार मदद उर्फ शाह नसिरुद्दिनने इसे तहस नहस कर डाला। यहां घी, चीनी, गुड़, दधि, तमाकू, चमड़े, रुई और लौह पित्तलादि धातु निर्मित द्रव्यका यथेष्ट वाणिज्य चलता है। प्रति वर्षके जूनमासमें एक बड़ा मेला लगता है। शहरमें सिर्फ एक अस्पताल है।

बादिपुरी—मन्द्राज प्रदेशके नेल्लूर जिलेके अन्तर्गत एक भूसम्पत्ति।

बादिया—पश्चिम बङ्गवासी जातिविशेष।

बादिया (हिं० पु०) लोहारोंका एक औजार जिससे पेच बनाया जाता है।

बादी (फा० वि०) १ वायु सम्बन्धी। २ वायुविकार-सबंधी। ३ वायुकुपित करनेवाला, विकार उत्पन्न करने वाला। (स्त्री०) ४ शरीरस्थ वायु, वातविकार। (पु०)

५ किसीके विरुद्ध अभियोग करनेवाला, मुद्दई। ६ प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु। ७ लुहारोंका सिकड़ी करनेका औजार।

बादु—२४ परगनेके बारासत उपविभागके अन्तर्गत एक प्राचीन प्रसिद्ध स्थान।

बादुड़िया—२४ परगनेके बसीरहाट उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २४°४५´ उ० तथा देशा० ८८°४८´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय १२६२१ है। हिन्दूकी संख्या मुसलमानसे अधिक है।

बादुना (हिं० पु०) घेवर नामकी मिठाई बनानेका एक औजार। यह लोहे या पीतलका बना होता है। इसे भट्टीके मुंह पर रख कर उसमें घी भरते और पतला मैदा डाल देते हैं। मैदा पक जाने पर उसे चीनीकी चाशनीमें पाग देते हैं।

बादुर—स्वनामप्रसिद्ध स्तन्यपायी पक्षिजातिविशेष, चमगादड़ (Bat)। पक्षीकी तरह पंख होने पर भी यह पशु आदिकी तरह स्तन पीता है। यह नाना आकारका और निशाचर होता है। बहुत दूरसे उड़ कर यह अन्य लोगों को हानि पहुंचाता है। बादुरके दो भेद हैं। एक जो कीट पतङ्गादिसे अपना पेट भरता है और दूसरा जो सुपक्व फलादिका भक्षण करते हैं। इनकी आंखें छोटी होने पर भी दृष्टि तेज होती है। इनको जितने बड़े कान होते हैं,उतनी ही श्रवणशक्ति तीक्ष्ण होती है। घ्राणके द्वारा सुपक्व फलकी गंध जान उसका अनुसरण करते हुए वहां तक पहुंच जाते हैं। रात्रिमें इतस्ततः भोजनकी तलाशमें निकलते हैं तथा ये दिनमें वृक्ष-कोटरमें, वृक्षकी डालमें, गुहामें, भग्न अट्टालिकामें और छतके नीचेकी कड़ीमें औंधे मुंह लटक कर रहते हैं। मादा अंडे नहीं पारती, एक बारमें एक या दो बच्चे जनती है। बच्चे माताकी आकृतिकी तुलनामें बड़े होते हैं।

इनका मुख पतला, शङ्खास्थि (*Temporal bone*) और शब्दग्रहणके लिये श्रवणेन्द्रियस्थ शम्बुकाकार छिद्र बड़ा, चवार और शुक्रास्थि बड़ी होती है।

इनके चवाने, काटनेके दांत होते हैं। पैरकी हड्डी अंगुलि पर्यन्त चौड़ी होती है। पतली हड्डीसे दोनों पांव, सूक्ष्म चर्मसे ढके रहनेके कारण सहजमें उड़ सकते हैं। पैरके पीछेमें नाखून हैं। उन्हीं नाखून द्वारा ये झूलते हैं। वक्षःस्थलमें दो स्तन होते हैं।

इनके अन्धान्त्र (Coccum) नहीं होता। किन्तु लोल मांस और अस्थियुक्त है। सन्तानोत्पत्तिका समय आने पर उनका अण्डकोष बाहिर निकल आता है। गर्भाशय में दो छोटे छोटे सींग रहते हैं। कितनी मादा बादुरके शावकपालके रहनेके लिये थैली रहती है। शीतकाल में उनके ढक देनेसे बच्चे गरम रहते हैं। बच्चे सक्षम होने पर माताके पीछे पीछे चलते हैं। इनके शरीरमें लोम हैं। लोमके बीच Nycteribia नामका कीट पैदा होता है।

पृथिवीके चारों तरफ बादुर देखनेमें आते हैं। वैज्ञानिकोंने इस जातिके पशुको *Pteropodidae*, Vampyridae Noctilionidae और Vespertilionidae प्रभृति श्रेणीमें शामिल किया है। विशेष विवरण चमगादड़ शब्दमें देखो।

बादोसराय—१ अयोध्या प्रदेशके बाराबांकी जिलान्तर्गत एक परगना। भूपरिमाण ४८ वर्गमील है। इसका कुछ अंश प्राचीन घघराखाईकी उच्चभूमि पर और कुछ तराई प्रदेशकी निम्नभूमि पर अवस्थित है।

२ उक्त जिलेका एक नगर। यह बाराबांकी नगरसे १२॥ कोस उत्तर पूर्व रामनगरसे दरियाबाद जानेके रास्ते पर अवस्थित है। बादशाह नामक किसी फकीरने ५५० वर्ष पहले इस नगरको बसाया। यहांका मुसलमान साधु मलामतशाहका समाधि मन्दिर मुसलमानोंके निकट एक पवित्र तीर्थ समझा जाता है।

बाध (सं० पु० बाधनमिति बाध भावे घञ्। १ प्रतिबन्धक, रुकावट। २ उपद्रव, उत्पात। ३ पीड़ा, कष्ट। ४ कठिनता, मुश्किल। ५ अर्थकी असंगति, मानीका ठीक न बैठना। ६ वह पक्ष जिसमें साध्यका अभाव स्था हो। ७ मूंजकी रस्सी।

बाधक (सं० पु०) बाधामिति बाध भावे ण्वुल्। १ स्त्रीरोगविशेष। इसमें उन्हें संतति नहीं होती या संतति होनेमें बड़ी पीड़ा या कठिनता होती है। स्त्रियोंके ऋतु कालमें इस रोगका प्रकोप होता है। इस रोगके होनेसे सन्तानार्थिगण यदि यथाविधान षष्ठी आदिकी पूजा करे, तो यह रोग अवश्य दूर होता है। वैद्यकके अनुसार चार प्रकारके दोषोंसे बाधक रोग होता है—रक्तमाद्री, षष्ठी, अंकुर और जलकुमार।

रक्तमादिमें—कटि, नाभि पेडू आदिमें वेदना होती है और ऋतु ठीक समय पर नहीं होता। इस प्रकारके ऋतुमें सन्तान नहीं होती।

षष्ठी बाधकमें—ऋतुकालमें आँखों, हथेलियों और योनिमें जलन होती है और रक्तस्राव लालायुक्त होता है तथा ऋतु महीनेमें दो बार होता है।

अंकुरबाधकमें—ऋतुकालमें उद्वेग रहता है। शरीर भारी रहता है, रक्तस्राव बहुत होता है, नाभिके नीचे शूल होता है, तीन तीन चार चार महीने पर ऋतु होता है, हाथ पैरमें जलन रहती है।

जलकुमारबाधक रोगमें—शरीर सूज जाता है, बहुत दिनों में ऋतु हुआ करता है सो भी बहुत थोड़ा। गर्भ न रहने पर गर्भ सा मालूम होता है। इन चारों बाधकों-से प्रायः गर्भ नहीं रहता। पीछे इसकी प्रतिषेधक औषधका सेवन करनेसे यह रोग जाता रहता है। सुश्रुतादिमें इस रोगका कोई उल्लेख देखनेमें नहीं आता। (त्रि०) २ बाधाजनक, प्रतिबंधक।

बाधकता (स० स्त्री०) बाधकस्य भाव तल टाप्। बाधक का भाव या धर्म, बाधा।

बाधन (स० क्ली०) बाध ल्युट्। १ पीड़ा, कष्ट। २ प्रतिबन्धक, बाधा। (त्रि०) ३ पीड़ादाता, कष्ट देने वाला। ४ प्रतिबन्धक, विघ्न डालनेवाला।

बाधना (हिं० क्रि०) १ बाधा डालना, रोकना। २ विघ्न करना, बाधा डालना।

बाधा (स० स्त्री०) बाध-टाप्। १ पीड़ा, कष्ट। २ विघ्न, रुकावट, अड़चन। ३ भय, डर आशङ्का। ४ निषेध, मनाही।

बाधित (स० त्रि०) बाध-क्त। १ बाधायुक्त, जो रोका गया हो। २ जिसके साधनमें रुकावट पड़ी हो। ३ जिसके सिद्ध या प्रमाणित होनेमें रुकावट हो। ४ प्रभाव हीन, ग्रस्त।

बाधितृ (स० त्रि०) बाधते इति बाध-तृण्। बाधक।

बाधिरिक (स० पु०) बधिरिका शिवादित्वादण् (पा ४।१।११२)। बधिरिकाका अपत्य।

बाधिर्य (सं० क्ली०) बधिरस्य भाव बधिर ष्यञ्। बधिरका भाव, बधिरता रोग, बहिरापन।

बाध्य (स० त्रि०) बाध ण्यत्। १ बाधनीय, बाधितव्य। २ निर्वर्त्य।

बाध्यता (स० स्त्री०) बाधस्य भाव बाध्य तल् टाप्। बाध्यत्व।

बाध्योग (स० पु०) बध्योग बिदादित्वादण्। बध्योगका गोत्रापत्य।

बाध्योगायन (स० पु०) बाध्योगस्य गोत्रापत्य हरितादित्वात् फक्। बाध्योगका गोत्रापत्य।

बान (हिं० पु०) १ शालि या जड़हनको रोपनेके समय उतनी पेड़िया जो एक साथ ले कर एक स्थानमें रोपी जाती हैं। २ अफगानिस्तान तथा आसाममें होनेवाला एक पेड़। यह सात हजारसे नौ हजार फुटकी ऊँचाई तक होता है। पतझड़ नहीं होने पर भी वसन्तऋतुमें इसकी पत्तियां रंग बदलती हैं। इसकी लकड़ी भीतरसे ललाई लिये सफेद रंगकी होती है और बहुत मजबूत होती है। पत्तियां और छाल चमड़े सिझानेके काम आती हैं। ३ बाण, तीर। ४ एक प्रकारकी आतशबाजी जो तीरके आकारकी होती है। इसमें आग लगते ही यह आकाशकी ओर बड़े वेगसे छूट जाती है। ५ वह गुबदार छोटा डंडा जिससे धुनकीकी तांतको झटका दे कर रूई धुनते हैं। ६ समुद्र या नदीकी ऊँची लहर। (स्त्री०) ७ वेशविन्यास, बनावट। ८ अभ्यास, आदत। (पु०) ९ कान्ति, रंग।

बानइत (हिं० वि०) १ बाना चलाने या खेलनेवाला। २ बाण चलानेवाला, तीरंदाज। ३ बहादुर, योद्धा।

बानक (हिं० स्त्री०) १ वेष, भेस। २ एक प्रकारका रेशम जो पीला या सफेद होता है।

बानगी (हिं० स्त्री०) किसी मालका वह अंश जो ग्राहकको दिखानेके लिये निकाल कर दिया जाय।

बानर (हिं० पु०) बंदर।

बानवे (हिं० पु०) १ नब्बेसे दो अधिककी संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—९२। (वि०) २ जो गिनतीमें नब्बेसे दो ज्यादा हो, दो ऊपर नब्बे।

बाना (हिं० पु०) १ वस्त्र, पोशाक। २ अङ्गीकार क्रिया हुआ धर्म, रीति। ३ एक प्रकारका हथियार जो सांग या भालेके आकारका होता है। यह लोहेका होता है और

मुरा गिरिपथमें अङ्गरेजी सेना सन्निवेशित थी। इसी स्थान पर मराठोंने अङ्गरेजोंके विरुद्ध अन्तिम बार अस्त्र धारण किया था। इसी गिरिसङ्कटमें भी युद्धमें पराजित हो कर मराठों ने सदाके लिये अपनी स्वाधीनता खो दी।

२ काश्मीरराज्यके अन्तर्गत एक गिरिकन्दर। यह अक्षा० ३४° १०' उ० तथा देशा० ७४ ३' पू०के मध्य अवस्थित है। यहां विपाशा (झेलम) नदी बहती है। इस नदीमें एक बड़ा पुल है।

बारवई—१ मध्यभारतके इन्दोर राज्यान्तर्गत निमार जिले का एक परगना। यह भोपावर पेजेन्सीके शासनाधीन है।

२ उक्त जिलेका एक नगर। यह नर्मदा नदीसे १ मील उत्तर पड़ता है। यहां राजपूताना-मालव रेलपथका एक स्टेशन रहनेके कारण वाणिज्यकी विशेष सुविधा हो गई है। १८४७ ई०में धारगांव, ससवाराड, मण्ड लेश्वर और बारवई होलकरराजको समर्पण किया गया।

बाराबकी—युक्तप्रदेशके फैजाबाद विभागका जिला। यह अक्षा० २६ ३१'से २७ २१' उ० तथा देशा० ८० ५६'से ८१ ५२' पू० के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १७५८ वर्गमील है। इसके उत्तर पश्चिममें सीतापुर, उत्तर पूर्वमें गोण्डा, दक्षिणपूर्वमें फैजाबाद और सुल्तानपुर, दक्षिणमें रायबरेली तथा पश्चिममें लखनऊ है। यह जिला प्राय समतल है, पर उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वकी ओर ढालू होता आया है। गोमती, घघरा और चौका आदि शाखा-नदियां इस जिलेके मध्य हो कर बहती हैं जिससे यहांकी जमीन उर्वरा हो गई है। इसके मध्यभागमें कुछ झील और तालाब हैं। वर्षा कालमें कुछ तालाब भर जाते हैं और एकत्र हो कर एक खण्ड जलराशिकी तरह दीख पड़ते हैं। किन्तु वर्षाके बाद वे पूर्व रूप आकार धारण करते हैं।

इस जिलेके नाना स्थानों में जो सब प्राचीन निदर्शन देखे जाते हैं, प्रत्नतत्त्वविद्गण यदि उनका उद्धार कर सकें, तो एक अभिनव इतिहास तैयार हो सकता है। यहां नागपूजोपलक्षमें सैकड़ों मनुष्य जमा होते हैं। नागराजाओंके समयमें ही यहां नागपूजाकी सृष्टि हुई है यह बात आज भी बहुतों के मुखसे सुना जाता है। अहिच्छत्रके नागह्रदके निकट जहां बुद्धदेवने धर्मकथा की थी, वहां अशोकनिर्मित एक स्तूपका ध्वंसावशेष देखा जाता है। पहले यहां भर जातिका पूर्ण प्रभाव फैला हुआ था। उनके अभ्युदय पर अयोध्यामें जगह जगह दुर्ग, प्राकार, परिखा और जलाशयादि बनाये गये थे। आज भी ध्वंसावशेष समूह लुप्तकीर्त्तिकी गवाही देता है।

ब्राह्मण्यधर्मका पुनरभ्युदय होने पर बौद्ध लोग यहां से भगाये गये और क्षत्रियों की प्रधानता स्थापित हुई। मुसलमानों आक्रमणसे क्षत्रिय और भरजातियों का प्रभाव जाता रहा। १०३० ई०में सैयद सलार मसाउद ने इस स्थान पर आक्रमण किया। ११८६ ई०में औमरी सैयदोंने सिहरियाको परास्त करके यहां उपनिवेश बसाया। १२३८ ई०में जोहेलपुरके निकट भर जातिको परास्त करके मुसलमान सेनापति अबदुल वाहिदने इस स्थान का जैदपुर नाम रखा। इस समय गैरानीके सैयदों ने भर लोगों से सिठौली तथा भारि नामक मुसलमानों ने बाह- क्षत्रियगणसे बदौलो और भर अधिकृत भयाई महो लारा नामक स्थान छीन लिया। १३०० ई०में कन्नौजी और १३२५ ई०में रसूलपुर भरशासनसे जाता रहा।

१५वीं शताब्दीमें यह स्थान दिल्लीके लोदी और जौनपुरके शर्कीवंशका युद्धस्थल हो गया था। इस समय फतेपुरके सूबेदार दरियाव खाने दरियाबादमें और रामियर तथा बछल जातिकी वासभूमिमें (घाघरा नदीके उभय तीरवर्त्ती भूमि) अचलसिंहने एक सेनानिवेश स्थापित किया था। उक्त अचलसिंहके वंशधरगण आज भी छः भूसम्पत्तिके अधिकारी हैं तथा बीस हजार कल्हन उन अचल सिंहको अपना पूर्व पुरुष स्वीकार कर गौरव करते हैं। इस समय इस जिलेका इतस्ततः मुसलमान कर्तृक विशोभित होने पर भी हरहा नगर सूर्यवंशीके और सूर्यपुर सोमवंशी क्षत्रियोंके हाथ था। रामनगरके रायकवार क्षत्रियगण किस समय यहां आ कर बस गये थे, उसका कोई प्रकृत इतिहास नहीं मिलता।

, बराइच देखो।

सम्राट् अकबर शाहके राजत्वकालमें रायकवारके सरदार हरिहरदेवने काश्मीर-युद्धमें खूब वीरता दिख

लाई थी। पारितोषिक स्वरूप सम्राट्ने उन्हें इस जिलेका सइलाक परगना प्रदान किया। १७५१ ई०में राइकवाड़ोंने विद्रोही हो कर लखनऊ पर चढ़ाई कर दी। कल्याणी नदीके किनारे मुसलमानी सेनाके साथ उनकी गहरी मुठभेड़ हो गई। आखिर खाँजादागणने जयी हो कर उनकी कुल सम्पत्ति छीन ली। १८१४ ई०में सयादत् अली खाँकी मृत्युके बाद राइकवाड़गण अपने लोप हुए राज्यका पुनरुद्धार करनेमें समर्थ हुए थे। १८५२ ई०में अंगरेजशासनभुक्त होनेके पहले उन्होंने एक विस्तृत राज्य सगठन किया था। देशीय राजाके अधिकारमें यह स्थान अत्याचारका आदर्शस्थल हो गया। गोमती और कल्याणी तीरवर्ती जङ्गलमय पहाड़ प्रदेशमें सूर्यपुरके शैराज सिंहजीका, भवानीगढ़के महीपत सिंहका और फागुनगढ़के गङ्गावक्सके दस्युसेनादलका दुर्भेद्य दुर्ग स्थापित था।

१८५७-५८ ई०के गदरमें यहांके तालुकदारगण शामिल थे। नवाबगञ्जके युद्धमें सीतापुर और बाराबंकीके राइकवाड़ोंने राजपूतोचित वीरताका परिचय दिया था। उस समयके कोई अंगरेज सेनापति इन लोगोंके रणोन्माद और भीषण साहसकी कथा लिपिबद्ध कर गये हैं। १८५८ ई०के जुलाई मासमें यहां पूरी शान्ति स्थापित हुई। दूसरे वर्ष दरियाबादसे नवाबगञ्ज जिलेमें सदर उठा कर लाया गया। इस जिलेके अन्तर्गत बाराबंकी, फतेपुर, रामसनेही और हैदरगढ़ नामके चार उपविभाग पड़ते हैं।

इस जिलेमें १० शहर और २०५२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ग्यारह लाखसे ऊपर है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ८३ हिन्दू और १७ मुसलमान हैं। यह जिला विद्याशिक्षामें बहुत पीछा पड़ा हुआ है। अभी कुल मिला कर १७० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा १२ अस्पताल और चिकित्सालय भी हैं।

२ उक्त जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २६ ५६´ उ० तथा देशा० ८१ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ३०२० है। नवाबगञ्ज शहरसे यह एक मील उत्तर पड़ता है।

बारबा—बारबा राज्यका प्रधान नगर और बन्दर। यह अक्षा० १८ ६२´ ४०´´ उ० तथा देशा० ८४ ३७´ ३५´´ पू० के मध्य अवस्थित है। यहांसे नाना प्रकारके द्रव्योंकी भारतके विभिन्न देशोंमें रफ्तनी होती है।

बारवा (हिं० स्त्री०) एक रागिनी जिसे कुछ लोग भारागकी पुत्रवधू मानते हैं।

बारबाटी—उड़ीसाकी राजधानी कटकके अन्तर्गत एक दुर्ग। यह अक्षा० २० २६´ उ० तथा देशा० ८५ ५६´ पू० कटकके दूसरे किनारे महानदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। किस समय यह दुर्ग बनाया गया था, ठीक ठीक मालूम नहीं। १४वीं शताब्दीमें हिन्दू राजाओंके अधिकारकालमें उसका गठनकार्य समाप्त हुआ, ऐसा जनसाधारणका विश्वास है। १७५० ई०में मुसलमान और महाराष्ट्र-अधिकारमें इसके कुछ अंशोंका संस्कार किया गया। अभी यह दुर्ग जंगलमें परिणत होने पर भी उसका पूर्व द्वार और फते खां रहीम निर्मित मसजिद विद्यमान है। दुर्गकी सीमाके चारों कोने पर दो स्तवक प्रस्तरप्राचीर और बीचमें पताकास्तम्भ था। पूर्वद्वारके निकट और दोनों तरफ दो चतुरस्र गुम्बदका चिन्ह भी दृष्टिगोचर होता है। १७६७ ई०में भ्रमणकारी मोटे (M la Motte) इसके गठनकार्यके साथ इङ्गलैण्डस्थ विण्डसर दुर्गकी तुलना कर गये हैं। १८०३ ई०में महाराष्ट्र अभियानके शेषमें यह दुर्ग अंग्रेजोंके हाथ लगा।

बारवाला—बम्बई प्रदेशके अहमदाबाद जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२ ८´ १५´´ उ० तथा देशा० ७१ ५७´ ३०´´ पू० उतौली नदीके बायें किनारे अवस्थित है। यह नगर चारों ओर प्राचीरसे घिरा है।

बारवाला—१ पञ्जाब प्रदेशके हिसार जिलेके अन्तर्गत एक तहसील। भूपरिमाण ५८० वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान नगर और विचार-सदर। यहांका ध्वंसावशेष इस स्थानकी प्राचीन समृद्धिका परिचय देता है। अधिकांश अधिवासिगण सैयद वंशीय मुसलमान हैं। ये लोग निकटवर्ती स्थानोंके अधिकारी हैं।

बारवसपुर—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलान्तर्गत एक सामन्तराज्य। भूपरिमाण ४३ वर्गमील है।

बारबीघा—मुङ्गेर जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा०

मुना गिरिपथमें अङ्गरेजी सेना सन्निवेशित थी। इसी स्थान पर मराठोंने अङ्गरेजोंके विरुद्ध अन्तिम बार अस्त्र धारण किया था। इसी गिरिसङ्कटमें इसी वन्दरसे पराजित हो कर मराठों ने सदाके लिये अपनी स्वाधीनता खो दी।

२ काश्मीरराज्यके अन्तर्गत एक गिरिकन्दर। यह अक्षा० ३४ १०´ उ० तथा देशा० ७४ ३´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां वितस्ता (झेलम) नदी बहती है। इस नदीमें एक बड़ा पुल है।

बारवई—१ मध्यभारतके इन्दौर राज्यान्तर्गत निमार जिले का एक परगना। यह भोपावर एजेन्सीके शासनाधीन है।

२ उक्त जिलेका एक नगर। यह नर्मदा नदीसे १ मील उत्तर पड़ता है। यहां राजपूताना मालव रेलपथका एक स्टेशन रहनेके कारण वाणिज्यकी विशेष सुविधा हो गई है। १८४३ ई०में धारगाव, वसडावाद, मण्डलेश्वर और बारवई होलकरराजको समर्पण किया गया।

बाराबंकी—युक्तप्रदेशके फैजाबाद विभागका जिला। यह अक्षा० २६ ३१´ से २७ २१´ उ० तथा देशा० ८० ५६´ से ८१ ५२´ पू० के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १७५८ वर्गमील है। इसके उत्तर पश्चिममें सीतापुर, उत्तर-पूर्वमें गोंडा, दक्षिणपूर्वमें फैजाबाद और सुल्तानपुर, दक्षिणमें रायबरेली तथा पश्चिममें लखनऊ है। यह जिला प्रायः समतल है, पर उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वकी ओर ढालू होता आया है। गोमती, घघरा और चौका आदि शाखा-नदियां इस जिलेके मध्य हो कर बहती हैं जिससे यहांकी जमीन उर्वरा हो गई है। इसके मध्यभागमें कुछ झील और तालाब हैं। वर्षाकालमें कुल तालाब भर जाते हैं और एकत्र हो कर एक बृहद् जलराशिकी तरह दीख पड़ते हैं। किन्तु वर्षाके बाद ये पूर्ववत् आकार धारण करते हैं।

इस जिलेके नाना स्थानों में जो सब प्राचीन निदर्शन देखे जाते हैं, प्रत्नतत्त्वविद्गण यदि उनका उद्धार कर सकें, तो एक अभिनव इतिहास तैयार हो सकता है। यहां नागपूजोपलक्षमें सैकड़ों मनुष्य जमा होते हैं। नागराजाओंके समयसे ही यहां नागपूजाकी सृष्टि हुई है यह बात आज भी बहुतों के मुखसे सुना जाता है। ओर स्लेवके नागदहके निकट जहां बुद्धदेवने धर्मचर्या की थी, वहां अशोकनिर्मित एक स्तूपका ध्वंसावशेष देखा जाता है। पहले यहां भर जातिका पूर्ण प्रभाव फैला हुआ था। उनके अभ्युदय पर अयोध्यामें जगह जगह दुर्ग, प्राकार, परिखा और जलाशयादि बनाये गये थे। आज भी ध्वंसावशेष समूह लुप्तकीर्त्तिकी गवाही देता है।

ब्राह्मण्यधर्मका पुनरभ्युदय होने पर बौद्ध लोग यहांसे भगाये गये और क्षत्रियों की प्रधानता स्थापित हुई। मुसलमानी आक्रमणसे क्षत्रिय और भरजातिका प्रभाव जाता रहा। १०३० ई०में सैयद सलार मसाऊद ने इस स्थान पर आक्रमण किया। ११८९ ई०में श्रीमती सेगोंने सिहरियाको परास्त करके यहां उपनिवेश बसाया। १२३८ ई०में जोहिलपुरके निकट भर जातिको परास्त करके मुसलमान सेनापति अब्दुल वाहिदने इस स्थान का जैदपुर नाम रखा। इस समय गेहलोत सैयदोंने भर लोगों से सिठौली तथा आदि नामक मुसलमानोंने बार- क्षत्रियगणसे बधौली और भर अधिकृत सआई-नाही लारा नामक स्थान छीन लिया। १३०० ई०में बधौली और १३३५ ई०में रसूलपुर भरशासनसे जाता रहा।

१५वीं शताब्दीमें यह स्थान दिल्लीके लोदी और जौनपुरके शर्कीवंशका युद्धस्थल हो गया था। इस समय फतेपुरके सूबेदार दरियाव खांने दरियाबादमें और कामियर तथा बढ़न जातिकी वासभूमिमें (गाघरा नदीके उभय तीरवर्त्ती भूमि) अजलसिंहने एक सेनानिवेश स्थापित किया था। उक्त अजलसिंहके वंशधरगण आज भी छः भूसम्पत्तिके अधिकारी हैं तथा बीस हजार कल्हन उन अचल सिंहको अपना पूर्व पुरुष समझ कर गौरव करते हैं। इस समय इस जिलेका इतना मुसलमान कर्तृक शासित होने पर भी हड़हा नगर सूर्यवंशीके और सूर्यपुर सोमवंशी क्षत्रियोंके हाथ था। रामनगरके राइकवार क्षत्रियगण किस समय यहां आ कर बस गये थे, उसका कोई प्रकृत इतिहास नहीं मिलता।

बराइच देखो।

सम्राट् अकबर शाहके राजत्वकालमें राइकवारके सरदार हरिहरदेवने काश्मीर-युद्धमें खूब वीरता दिख

लाई थी। पारितोषिक स्वरूप सम्राट्ने उन्हें इस जिलेका सहलाक परगना प्रदान किया। १७५१ ई०में राइकवाड़ोंने विद्रोही हो कर लखनऊ पर चढ़ाई कर दी। कल्याणी नदीके किनारे मुसलमानी सेनाके साथ उनकी गहरी मुठभेड़ हो गई। आखिर पाँजादागणने जयी हो कर उनकी कुल सम्पत्ति छीन ली। १८१४ ई०में सयादत् अली खाँकी मृत्युके बाद राइकवाडगण अपने खोए हुए राज्यका पुनरुद्धार करनेमें समर्थ हुए थे। १८५२ ई०में अंगरेजशासनभुक्त होनेके पहले उन्होंने एक विस्तृत राज्य संगठन किया था। देशीय राजाके अधिकारमें यह स्थान अत्याचारका आदर्शस्थल हो गया। गोमती और कल्याणी तीरवर्ती जङ्गलमय पहाड़ प्रदेशमें सूर्यपुरके शैराज सिंहजीका, भवानीगढ़के महीपत सिंहका और कायुतगढ़के गङ्गाबक्सके दस्युसेनादलका दुर्भेद्य दुर्ग स्थापित था।

१८५७-५८ ई०के गदरमें यहांके तालुकदारगण शामिल थे। नवाबगञ्जके युद्धमें सीतापुर और बराइचके राइकवाड़ोंने राजपूतोचित वीरताका परिचय दिया था। उस समयके कोई अंगरेज सेनापति इन लोगोंके रणोन्माद और भीषण साहसकी कथा लिपिबद्ध कर गये हैं। १८५८ ई०के जुलाई मासमें यहां पूरी शान्ति स्थापित हुई। दूसरे वर्ष दरियाबादसे नवाबगञ्ज जिलेमें सदर उठा कर लाया गया। इस जिलेके अन्तर्गत बारायकी, फतेपुर, रामसनेही और हैदरगढ़ नामके चार उपविभाग पड़ते हैं।

इस जिलेमें १० शहर और २०५२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ग्यारह लाखसे ऊपर है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ८३ हिन्दू और १७ मुसलमान हैं। यह जिला विद्याशिक्षामें बहुत पीछा पड़ा हुआ है। अभी कुल मिला कर १७० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा १२ अस्पताल और चिकित्सालय भी हैं।

२ उक्त जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २६ ५६´ उ० तथा देशा० ८१ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ३०२० है। नवाबगञ्ज शहरसे यह एक मील उत्तर पड़ता है।

बारवा—बारवा राज्यका प्रधान नगर और बन्दर। यह अक्षा० १८ ६२´ ४०´´ उ० तथा देशा० ८४´ ३७´ ३५´´ पू० के मध्य अवस्थित है। यहांसे नाना प्रकारके द्रव्योंकी भारतके विभिन्न देशोंमें रफतनी होती है।

बारवा (हिं० स्त्री०) एक रागिनी जिसे कुछ लोग श्रीरागकी पुत्रवधू मानते हैं।

बारबाटी—उड़ीसाकी राजधानी कटकके अन्तर्गत एक दुर्ग। यह अक्षा० २० २९´ उ० तथा देशा० ८५ ५६´ पू० कटकके दूसरे किनारे महानदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। किस समय यह दुर्ग बनाया गया था, ठीक ठीक मालूम नहीं। १४वीं शताब्दीमें हिन्दू राजाओंके अधिकारकालमें उसका गठनकार्य समाप्त हुआ, ऐसा जनसाधारणका विश्वास है। १७५० ई०में मुसलमान और महाराष्ट्र अधिकारमें इसके कुछ अंशोंका संस्कार किया गया। अभी यह दुर्ग जंगलमें परिणत होने पर भी उसका पूर्वद्वार और फते खां रहीम निर्मित मसजिद विद्यमान है। दुर्गकी सीमाके चारों कोने पर दो स्तवक प्रस्तरप्राचीर और बीचमें पताकास्तम्भ था। पूर्वद्वारके निकट और दोनों तरफ दो चतुरस्र गुम्बदका चिह्न भी दृष्टिगोचर होता है। १७६७ ई०में भ्रमणकारी मोटे (M la Motte) इसके गठनकार्यके साथ इङ्गलैण्डस्थ विण्डसर दुर्गकी तुलना कर गये हैं। १८०३ ई०में महाराष्ट्र अभियानके शेषमें यह दुर्ग अंग्रेजोंके हाथ लगा।

बारवाला—बम्बई प्रदेशके अहमदाबाद जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२ ८´ १५´´ उ० तथा देशा० ७१´ ५७ ३०´´ पू० उतौली नदीके बाये किनारे अवस्थित है। यह नगर चारों ओर प्राचीरसे घिरा है।

बारवाला—१ पञ्जाब प्रदेशके हिसार जिलेके अन्तर्गत एक तहसील। भूपरिमाण ५८० वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान नगर और विचारसदर। यहांका ध्वंसावशेष इस स्थानकी प्राचीन समृद्धिका परिचय देता है। अधिकांश अधिवासिगण सैयद् वंशीय मुसलमान हैं। ये लोग निकटवर्ती स्थानोंके अधिकारी हैं।

बारवसपुर—मध्यप्रदेशके रामपुर जिलान्तर्गत एक सामन्तराज्य। भूपरिमाण ४३ वर्गमील है।

बारबीघा—मुङ्गेर जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा०

२५° १४´ उ० तथा देशा० ८१° ४६´ पू०के मध्य अव स्थित है।

बारसिनकल्ली—बेरारराज्यके अकोला जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

बारह (हि० पु०) १ बारहकी संख्या। २ बारहका अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१२। (वि०) ३ जो संख्यामें दस और दो हो।

बारहखड़ी (हि० स्त्री०) वर्णमालाका एक अंश। इसमें प्रत्येक व्यंजनमें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, और अः इन बारह स्वरोंको, मात्राके रूपमें, लगा कर बोलते या लिखते हैं।

बारहठनरहरदास— अवतारचरित नामक हिन्दी ग्रन्थके रचयिता।

बारहदरी (हि० स्त्री०) चारों ओरसे खुला हवादार बैठक। इसमें बारह द्वार रहते हैं।

बारहपत्थर (हि० पु०) १ वह पत्थर जो छावनीकी सरहद पर गाड़ा जाता है, सीमा। २ छावनी।

बारहबाट (हि० पु०) एक प्रकारका बढ़िया सोना।

बारहबाना (हि० वि०) १ सूर्यके समान चमकवाला। २ चोखा, खरा।

बारहबानी (हि० वि०) १ सूर्यके समान चमकवाला। २ निर्दोष, पापरहित। ३ पूर्ण, पूरा। ४ खरा, चोखा। (स्त्री०) ५ सूर्यकी सी चमक, चोखी चमक।

बारहमासा (हि० पु०) एक प्रकारका पद्य या गीत। इसमें बारह महीनोंकी प्राकृतिक विशेषताओंका वर्णन किसी विरही या विरहिणीके मुँहसे कराया गया हो।

बारहमासी (हि० वि०) १ सब ऋतुओंमें फलने फूलने वाला, सदाबहार।

बारहवफात (अ० पु०) अरबी महीने रबी उल्‌अव्वलकी वे बारह तिथियां जिनमें मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार महम्मद साहब बीमार पड़ कर मरे थे।

बारहवाँ (हि० वि०) जो स्थानमें ग्यारहवेंके बाद हो।

बारहसिंगा (हि० पु०) हिरनकी जातिका एक पशु। यह तीन चार फुट ऊँचा और सात आठ फुट लम्बा होता है। इसके सींगोंमें कई शाखाएँ निकलती हैं इसीसे 'इसका बारहसिंगा' नाम पड़ा। बीमारोंके सींगोंके ऊपर इसके सींगों पर कड़ा आवरण नहीं होता, कोमल चमड़ा होता है। इसके सींगका आवरण हर साल फागुन चैतमें उतरता है। आवरणके उतरने पर सींगोंमेंसे एक नई शाखा का अंकुर दिखाई पड़ता है। इस प्रकार प्रति वर्ष एक नई शाखा निकलती है जो कुआर कातिक तक पूरी बढ़ जाती है। मादाके सींग नहीं होते, ये शीत देशोंमें अधिक देखे जाते हैं।

बारहाँ (हि० वि०) बारहवाँ देखो।

बारही (हि० स्त्री०) बच्चोंके जन्मसे बारहवाँ दिन। इस दिन उत्सव आदि किये जाते हैं।

बारहों (हि० पु०) १ किसी मनुष्यके मरनेके दिनसे बारहवाँ दिन, द्वादशाह। २ कन्या या पुत्रके जन्मसे बारहवाँ दिन। इस दिन कुल व्यवहारके अनुसार अनेक प्रकारकी पूजा होती है। बहुतोंके यहाँ इसी दिन नामकरण भी होता है, बरही।

बारा—पञ्जाब प्रदेशके पेशावर जिलेमें प्रवाहित एक नदी। यह बारा नामक उपत्यका भूमिसे निकल कर काबुल नदीकी शाहआलम शाखामें मिली है। बारा नामक दुर्गके सामने यह नदी तीन धाराओंमें विभक्त हो गई है। एक धारा पेशावर नगरमें और दूसरी खलील तथा मोहमन्द जाति अधिवासित प्रदेशमें बह गई है। कोहट और आटकमें द्रव्यादि ले जानेके लिये नदीमें दो पुल हैं। बारा नदीके किनारे धानकी अच्छी फसल लगती है। सिख अधिकारमें यहाँसे पेशावर चावल भेजा जाता था जिसमेंसे अधिकांशकी रणजितसिंहके यहाँ खपत होती थी। यह पुण्यसलिला नदी यहाँके हिन्दूकी निगाहमें पवित्र समझी जाती है।

बारा (हि० वि०) १ जिसकी बाल्यावस्था हो, जो सयाना न हो। (पु०) २ लोहेकी वह गली जो बेलनके सिरे पर लगाई जाती है और जिसके फिरनेसे बेलन फिरता है। ३ एक गीत जिसे कुएँमें मोट खींचते समय गाते हैं। ४ वह आदमी जो कुएँ पर खड़ा हो कर मोट पर निकले हुए चरसे या मोटका पानी उलट कर गिराता है। ५ अंतरेसे तार खोलनेका काम।

बारात (हि० स्त्री०) १ बरयात्रा, किसीके विवाहमें उसके घरके लोगों सब मिलके, इष्ट मित्रों का मिल कर वधूके घर जाना। २ वह समाज जो वरके साथ उसे ब्याहने के लिये सज कर वधूके घर जाता है।

बारादरी ( हि० स्त्री० ) बाहदरी देखो।

बारानी ( फा० वि० ) १ बरसाती। ( स्त्री० ) २ वह भूमि जिसमें केवल बरसातके पानीसे फसल उत्पन्न होती है और सींचनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती है। ३ वह कपड़ा जो पानीसे बचनेके लिये बरसातमें पहना या ओढ़ा जाता है। यह ऊनको जमा कर या सूती कपड़े पर मोम आदि लपेट कर बनाया जाता है। ४ वह फसल जो बरसातके पानीसे बिना सिंचाई किये उत्पन्न होती हो।

बारापोल—दाक्षिणात्यमें प्रवाहित एक नदी। यह मन्द्राज प्रदेशके कुर्गराज्य और मलबार जिलेमें प्रवाहित हो कर अरबसागरमें गिरी है। कुर्गराज्यके ब्रह्मगिरि नामक पर्वतके जिस स्थानसे यह नदी निकली है वह लक्ष्मण तीर्थ और पापनाशी नामसे प्रसिद्ध है। कुर्ग सीमान्त-में इस नदीके २ सौ फुट ऊंचा एक प्रपात है। वनभाग और पर्वतकन्दरादिके मध्य हो कर बहनेके कारण तीर भूमिका दृश्य अतीव मनोहर है। कोन्ननूर जानेके रास्ते पर इस नदीके ऊपर एक सुन्दर पुल है।

बारामती—बम्बई प्रदेशके पूना जिलेके भीमथडी तालुक का एक शहर। यह अक्षा० १८ ६´ उ० तथा देशा० ७४-३४´ पू० पूना शहरसे ५० मील पूर्वमें अवस्थित है। जन सख्या ६ हजारसे ऊपर है। म्युनिसपलिटी १८६५ ई०में स्थापित हुई है। शहरमें सब जजकी अदालत और दो अङ्गरेजी स्कूल हैं।

बारामीटर ( अं० पु० ) वैरोमीटर देखो।

बारारी—भागलपुर शहरसे ४ मील उत्तर पूर्वमें अवस्थित एक कसबा। यह अक्षा० २५ १६´ उ० तथा देशा० ८७ २´ पू०के मध्य गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ५ हजारके करीब है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या ज्यादा है। यहां केवल एक पक्की सडक है जो भागलपुर शहर तक चली गई है। बी एन डबल्यू रेलवेका यहां एक स्टेशन भी है। यह स्थान आम्र काननसे आच्छादित है। वर्षाऋतुमें यहांका दृश्य बहुत ही रमणीय और नेत्रोंको सुखद प्रतीत होता है। जिधर दृष्टि दौड़ाइ जाय, उधर ही सब्ज मखमली फर्श बिछा मालूम होता है। कोइ स्थान ऐसे हैं जो बड़े शान्त और सुरम्य दिखाइ पड़ते हैं। जिनसे प्राचीन कालके ऋषि आश्रमोंका स्मरण हो आता है, लेकिन अधिकतर यह मनोहर छवि थोड़े ही दिन तक रहती है। वर्षाऋतुके बाद दृश्य बिलकुल बदल जाता है, सारी भूमि नग्न, भूरे रंगकी और सूखी बनी रहती है। यहां पर गङ्गाके अतिरिक्त सदैव बहनेवाली नदियोंका अभाव है और न एक तालाब ही है। अधिवासी कलके पानीसे ही अपना कुल काम चलाते हैं। मकइ, मूंग, उडद, सरसों, गेहूं, चना, जौ आदि फसल प्रायः उसी जमीन पर लगती हैं जो पुण्य सलिला भागीरथीके अपनी पूर्व गतिका परित्याग करनेसे निकल आई है। अधिवासियोंमेंसे बहुत थोड़े कृषि द्वारा जीविका चलाते हैं, अधिकांशका गुजारा नौकरी पर ही निर्भर करता है।

यहांके जमींदार कुलीन यशोक्त मैथिल ब्राह्मण हैं। वास भवन भी इसी कसबेमें हैं। 'ठाकुर' इनकी उपाधि है। इनका प्राचीन इतिहास हमें विस्तृत भावमें मालूम नहीं, जहां तक विश्वस्त सूत्रसे पता लगा है, वह यों है,—स्वर्गीय बाबू मदनमोहन ठाकुर इसके स्थाप पिता थे। कहते हैं, कि पहले इनकी अवस्था उतनी अच्छी न थी। १९वीं शताब्दीके मध्य वे बनेली राज स्वर्गीय वेदानन्दसिंह बहादुरके यहां नौकरी करते थे। उक्त महाशय की इन पर बड़ी कृपा रहती थी। अवस्था किसीकी सदा एक सी नहीं रहती। जो आज राजतख्त पर हैं, उन्हें कल राहके भिखारी और राहके भिखारीको विपुल सम्पत्तिके अधिकारी देखते हैं। वेदानन्द बहादुरके यहां रह कर बाबू मदन ठाकुरका अदृष्टाकाश परिष्कृत हो गया, भाग्य लक्ष्मी सानुकूल हुइ। धीरे धीरे वे अतुल वैभवके अधिकारी हो गये जिसका उपभोग आज भी उनके वंशधरगण करते आ रहे हैं। आप सादे मिजाजके थे, देशी फैशन की पोशाक धारण करते थे। केवल उत्सवादि तथा अन्य राजकीय अवसरों पर राजेसी ठाठ पसन्द फरमाते थे। अन्त समयमें आप बृजमोहन ठाकुर, जगमोहन ठाकुर और कृष्णमोहन ठाकुर तीन पुत्ररत्न छोड़ इहधामका परित्याग कर सुरधामको सिधारे। वे तीनों भाई भी योग्य पिताके योग्य पुत्र थे। प्रायः सभी कामों में अपने पूज्यपाद पिताका अनुसरण करते थे।

७५° १४' उ० अक्षा० और देशा० ८०° ४६' पूर्वके मध्य अव स्थित है।

बारसिंगली—बेलगराज्यके अकोला जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

बारह (हिं० पु०) १ बारहकी संख्या। २ बारहका अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१२। (वि०) ३ जो संख्यामें दस और दो हो।

बारहखड़ी (हिं० स्त्री०) वर्णमालाका वह अंश। इसमें प्रत्येक व्यञ्जनमें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, और अः इन बारह स्वरोंको, मात्राके रूपमें, लगा कर बोलते या लिखते हैं।

बारहठ बारहदास—अवतारचरित नामक हिन्दी ग्रन्थके रचयिता।

बारहदरी (हिं० स्त्री०) चारों ओरसे खुला हवादार बैठक। इसमें बारह द्वार रहते हैं।

बारहपत्थर (हिं० पु०) १ वह पत्थर जो छावनीकी सरहद पर गाड़ा जाता है, सीमा। २ छावनी।

बारहबान (हिं० पु०) एक प्रकारका बढ़िया सोना।

बारहबाना (हिं० वि०) १ सूर्यके समान चमकवाला। २ चोखा, खरा।

बारहबानी (हिं० वि०) १ सूर्यके समान चमकवाला। २ निर्दोष, पापरहित। ३ पूर्ण, पूरा। ४ खरा, चोखा। (स्त्री०) ५ सूर्यकी सी चमक, चोखी चमक।

बारहमासा (हिं० पु०) एक प्रकारका पद्य या गीत। इसमें बारह महीनोंकी प्राकृतिक विशेषताओंका वर्णन किसी विरही या विरहिणीके मुंहसे कराया गया हो।

बारहमासी (हिं० वि०) १ सब ऋतुओंमें फलने फूलने वाला, सदाबहार।

बारहवफात (अ० पु०) अरबी महीने रबी उल-अव्वलकी वे बारह तिथियां जिनमें मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार मुहम्मद साहब बीमार रह कर मरे थे।

बारहवाँ (हिं० वि०) जो स्थानमें ग्यारहवेंके बाद हो।

बारहसिंगा (हिं० पु०) हिरनकी जातिका एक पशु। यह तीन चार फुट ऊंचा और सात आठ फुट लम्बा होता है। इसके सींगोंमें कई शाखाएं निकलती हैं इसीसे इसका 'बारहसिंगा' नाम पड़ा। मौसमोंके सींगोंके समान इसके सींगों पर कड़ा आवरण नहीं होता, कोमल चमड़ा होता है। इसके सींगका आवरण हर साल फागुन चैतमें उतरता है। आवरणके उतरने पर सींगोंमेंसे एक नई शाखा का अंकुर दिखाई पड़ता है। इस प्रकार प्रति वर्ष एक नई शाखा निकलती है जो कुआर कार्त्तिक तक पूरी बन जाती है। मादाके सींग नहीं होते, वे चैत बैशाखमें बच्चा देती हैं।

बारहीं (हिं० वि०) बारहवां देखो।

बारही (हिं० स्त्री०) बच्चोंके जन्मसे बारहवां दिन। इस दिन उत्सव आदि किये जाते हैं।

बारहों (हिं० पु०) १ किसी मनुष्यके मरनेके दिनसे बारहवां दिन, द्वादशाह। २ कन्या या पुत्रके जन्मसे बारहवां दिन। इस दिन कुल व्यवहारके अनुसार अनेक प्रकारकी पूजा होती है। बहुतोंके यहां इसी दिन नामकरण भी होता है, बरही।

बारा—पञ्जाब प्रदेशके पेशावर जिलेमें प्रवाहित एक नदी। यह बारा नामक उपत्यका भूमिसे निकल कर काबुल नदी की शाहआलम शाखामें मिली है। बारा नामक दुर्गके सामने यह नदी तीन धाराओंमें विभक्त हो गई है। एक धारा पेशावर नगरमें और दूसरी खलील तथा मोहमन्द जाति अधिवासित प्रदेशमें बह गई है। कोहट और बारकमें द्रव्यादि ले जानेके लिये नदीमें दो पुल हैं। बारा नदीके किनारे धानकी अच्छी फसल लगती है। सिख अधिकार में यहांसे पेशावर चावल भेजा जाता था जिसमेंसे अधि काशकी रणजितसिंहके यहां खपत होती थी। यह पुण्य सलिला नदी यहांके हिन्दुओंकी निगाहमें पवित्र समझी जाती है।

बारा (हिं० वि०) १ जिसकी बाल्यावस्था हो, जो सयाना न हो। (पु०) २ लोहेकी वह गली जो बेलनके सिरे पर लगाई जाती है और जिसके खिलनेसे बेलन खिलता है। ३ एक गीत जिसे कूएंसे मोट खींचते समय गाते हैं। ४ वह आदमी जो कुएं पर खड़ा हो कर भर कर निकले हुए चरसे या मोटका पानी उलट कर गिराता है। ५ अतरसे सार खींचनेका काम।

बारात (हिं० स्त्री०) १ बरयात्रा, किसीके विवाहमें उसके घरके लोगों, संबंधियों, इष्ट मित्रों का मिल कर बधूके घर जाना। २ वह समाज जो बरके साथ उसे ब्याहने के लिये सज कर बधूके घर जाता है।

बारादरी ( हि० स्त्री० ) बारहदरी देखो।

बारानी ( फा० वि० ) १ बरसाती। ( स्त्री० ) २ वह भूमि जिसमें केवल बरसातके पानीसे फसल उत्पन्न होती है और सींचनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती है। ३ वह कपड़ा जो पानीसे बचनेके लिये बरसातमें पहना या ओढ़ा जाता है। यह ऊनका जमा कर या सूती कपड़े पर मोम आदि लपेट कर बनाया जाता है। ४ वह फसल जो बरसातके पानीसे बिना सिंचाई किये उत्पन्न होती हो।

बारापोल—दाक्षिणात्यमें प्रवाहित एक नदी। यह मन्द्राज प्रदेशके कुर्गराज्य और मलबार जिलेमें प्रवाहित हो कर अरबसागरमें गिरी है। कुर्गराज्यके ब्रह्मगिरि नामक पर्वतके जिस स्थानसे यह नदी निकली है वह लक्ष्मण तीर्थ और पापनाशी नामसे प्रसिद्ध है। कुर्ग सीमान्त-में इस नदीके २ सौ फुट ऊंचा एक प्रपात है। वनभाग और पर्वतकन्दरादिके मध्य हो कर बहनेके कारण तीर भूमिका दृश्य अतीव मनोहर है। कोन्ननूर जानेके रास्ते पर इस नदीके ऊपर एक सुन्दर पुल है।

बारामती—बम्बई प्रदेशके पूना जिलेके भीमथड़ी तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १८ ६' उ० तथा देशा० ७४-३४' पू० पूना शहरसे ५० मील पूर्वमें अवस्थित है। जन-संख्या ६ हजारसे ऊपर है। म्युनिसपलिटी १८६५ ई०में स्थापित हुई है। शहरमें सब-जजकी अदालत और दो अङ्गरेजी स्कूल हैं।

बारामीटर ( अं० पु० ) बैरोमीटर देखो।

बारारी—भागलपुर शहरसे ४ मील उत्तर पूर्वमें अवस्थित एक कसबा। यह अक्षा० २५ १६' उ० तथा देशा० ८७ २' पू०के मध्य गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ५ हजारके करीब है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या ज्यादा है। यहां केवल एक पक्की सड़क है जो भागलपुर शहर तक चली गई है। बी एन डबल्यू रेलवेका यहां एक स्टेशन भी है। यह स्थान आम्र काननसे आच्छादित है। वर्षाऋतुमें यहांका दृश्य बहुत ही रमणीय और नेत्रोंको सुखद प्रतीत होता है। जिधर दृष्टि दौड़ाइ जाय, उधर ही सब्ज मखमली फर्श बिछा मालूम होता है। कोई स्थान ऐसे हैं जो बड़े शान्त और सुरम्य दिखाई पड़ते हैं। जिनसे प्राचीन कालके ऋषि आश्रमोंका स्मरण हो आता है, लेकिन अधिकतर यह मनोहर छवि थोड़े ही दिन तक रहती है। वर्षाऋतुके बाद दृश्य बिलकुल बदल जाता है, सारी भूमि नग्न, भूरे रङ्गकी और सूखी बनी रहती है। यहां पर गङ्गाके अतिरिक्त सदैव बहनेवाली नदियोंका अभाव है और न एक तालाब ही है। अधिवासी कलके पानीसे ही अपना कुल काम चलाते हैं। मकई, मूंग, उड़द, सरसों, गेहूं, चना, जौ आदि फसल प्रायः उसी जमीन पर लगती है जो पुण्यसलिला भागीरथीके अपनी पूर्व गतिका परित्याग करनेसे निकल आई है। अधिवासियोंमेंसे बहुत थोड़े कृषि द्वारा जीविका चलाते हैं, अधिकांशका गुजारा नौकरी पर ही निर्भर करता है।

यहांके जमींदार कुलीन वंशोद्भव मैथिल ब्राह्मण हैं। वास-भवन भी इसी कसबेमें है। 'ठाकुर' इनकी उपाधि है। इनका प्राचीन इतिहास हमें विस्तृत भावमें मालूम नहीं, जहां तक विश्वस्त सूत्रसे पता लगा है, वह यों है,—स्वर्गीय बाबू मदनमोहन ठाकुर इसके स्थापयिता थे। कहते हैं, कि पहले इनकी अवस्था उतनी अच्छी न थी। १९वीं शताब्दीके मध्य वे बनैली राज स्वर्गीय वेदानन्दसिंह बहादुरके यहां नौकरी करते थे। उक्त महाशयकी इन पर बड़ी कृपा रहती थी। अवस्था किसीकी सदा एक सी नहीं रहती। जो आज राजतख्त पर हैं, उन्हें कल राहके भिखारी और राहके भिखारीको विपुल सम्पत्तिके अधिकारी देखते हैं। वेदानन्द बहादुरके यहां रह कर बाबू मदन ठाकुरका अदृष्टाकाश परिष्कृत हो गया, भाग्य लक्ष्मी सानुकूल हुई। धीरे धीरे वे अतुल वैभवके अधिकारी हो गये जिसका उपभोग आज भी उनके वंशधरगण करते आ रहे हैं। आप सादे मिजाजके थे, देशी फैशनकी पोशाक धारण करते थे। केवल उत्सवादि तथा अन्य राजकीय अवसरों पर अंग्रेजी ठाठ पसन्द फरमाते थे। अन्त समयमें आप बृजमोहन ठाकुर, जगमोहन ठाकुर और श्यामोहन ठाकुर तीन पुत्ररत्न छोड़ इहधामका परित्याग कर सुरधामको सिधारे। ये तीनों भाई भी योग्य पिताके योग्य पुत्र थे। प्रायः सभी कामोंमें अपने पूज्यपाद पिताका अनुसरण करते थे।

७५° १४´ उ० तथा देशा० ८५° ४१´ पू०के मध्य अव स्थित है।

बारसिनास्की—पेनसिलवेनियाके अकोना जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

बारह (हिं० पु०) १ बारहकी संख्या। २ बारहका अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१२। (वि०) ३ जो संख्यामें दस और दो हो।

बारहखड़ी (हिं० स्त्री०) वर्णमालाका एक अंश। इसमें प्रत्येक व्यञ्जनमें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, और अः इन बारह स्वरोंको, मात्राके रूपमें, लगा कर बोलते या लिखते हैं।

बारहटनरहरदास—अवतारचरित नामक हिन्दी ग्रन्थके रचयिता।

बारहदरी (हिं० स्त्री०) चारों ओरसे खुला हवादार बैठक। इसमें बारह द्वार रहते हैं।

बारहपत्थर (हिं० पु०) १ वह पत्थर जो छावनीकी सरहद पर गाड़ा जाता है, सीमा। २ छावनी।

बारहबान (हिं० पु०) एक प्रकारका बढ़िया सोना।

बारहबाना (हिं० वि०) १ सूर्यके समान दमकवाला। २ चोखा, खरा।

बारहबानी (हिं० वि०) १ सूर्यके समान दमकवाला। २ निर्दोष, पापरहित। ३ पूर्ण, पूरा। ४ खरा, चोखा। (स्त्री०) ५ सूर्यकी सी दमक, चोखी चमक।

बारहमासा (हिं० पु०) एक प्रकारका पद्य या गीत। इसमें बारह महीनोंकी प्राकृतिक विशेषताओंका वर्णन किसी विरही या विरहिणीके मुंहसे कराया गया हो।

बारहमासी (हिं० वि०) १ सब ऋतुओंमें फलने फूलने वाला, सदाबहार।

बारहवफात (अ० पु०) अरबी महीने रबी-उल-अव्वलकी वे बारह तिथियां जिनमें मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार मुहम्मद साहब बीमार पड़ कर मरे थे।

बारहवां (हिं० वि०) जो स्थानमें ग्यारहवेंके बाद हो।

बारहसिंगा (हिं० पु०) हिरनकी जातिका एक पशु। यह तीन चार फुट ऊंचा और सात आठ फुट लम्बा होता है। नरके सींगोंमें कई शाखाएं निकलती हैं इसीसे इसका 'बारहसिंगा' नाम पड़ा। गौतायोंके सींगोंके समान इसके सींगों पर कड़ा आवरण नहीं होता, कोमल चमड़ा होता है। इसके सींगका आवरण हर साल फागुन चैतमें उतरता है। आवरणके उतरने पर सींगोंमेंसे एक नई शाखा का अंकुर दिखाई पड़ता है। इस प्रकार प्रति वर्ष एक नई शाखा निकलती है जो कुआर कातिक तक पूरी बढ़ जाती है। मादाके सींग नहीं होते, वे पीर धैशाखमें बच्चा देती हैं।

बारहां (हिं० वि०) बारहवां देखो।

बारही (हिं० स्त्री०) बच्चोंके जन्मसे बारहवां दिन। इस दिन उत्सव आदि किये जाते हैं।

बारहों (हिं० पु०) १ किसी मनुष्यके मरनेके दिनसे बारहवां दिन, द्वादशाह। २ कन्या या पुत्रके जन्मसे बारहवां दिन। इस दिन कुछ व्यवहारके अनुसार अनेक प्रकारकी पूजा होती है। बहुतोंके यहां इसी दिन नामकरण भी होता है, बरही।

बारा—पञ्जाब प्रदेशके पेशावर जिलेमें प्रवाहित एक नदी। यह बारा नामक उपत्यका भूमिसे निकल कर काबुल नदी की शाहआलम शाखामें मिली है। बारा नामक दुर्गके सामने यह नदी तीन धाराओंमें विभक्त हो गई है। एक धारा पेशावर नगरमें और दूसरी खलील तथा मोहमन्द जाति अधिवासित प्रदेशोंमें बह गई है। कोहट और आटकमें द्रव्यादि ले जानेके लिये नदीमें दो पुल हैं। बारा नदीके किनारे धानकी अच्छी फसल लगती है। सिख अधिकारमें यहांसे पेशावर चावल भेजा जाता था जिसमेंसे अधि काशकी रणजित्‌सिंहके यहां खपत होती थी। यह पुण्य सलिला नदी यहांके हिन्दूकी निगाहमें पवित्र समझी जाती है।

बारा (हिं० वि०) १ जिसकी बाल्यावस्था हो, जो सयाना न हो। (पु०) २ लोहेकी कंगनी जो बेलनके सिरे पर लगाई जाती है और जिससे जिसनेसे बेलन फिरता है। ३ एक गीत जिसे कुएंसे मोट खींचते समय गाते हैं। ४ वह आदमी जो कुएं पर खड़ा हो कर भर कर निकले हुए चरसे या मोटका पानी उलट कर गिराता है। ५ अनारसे तार खींचनेका काम।

बारात (हिं० स्त्री०) १ बरयात्रा, विवाहके सिपाहीं वरके घरके लोगों, सम्बन्धियों, इष्ट मित्रों का मिल कर वधूके घर जाना। २ वह समाज जो वरके साथ उसे ब्याहने के लिये सज कर वधूके घर जाता है।

बारादरी ( हि ० स्त्री० ) बारहदरी देखो।

बारानी ( फा० वि० ) १ बरसाती। ( स्त्री० ) २ वह भूमि जिसमें केवल बरसातके पानीसे फसल उत्पन्न होती है और सी चनेकी आवश्यकता नही पडती है। ३ वह कपडा जो पानीसे बचनेके लिये बरसातमें पहना या ओढा जाता है। यह ऊनको जमा कर या सूती कपडे पर मोम आदि लपेट कर बनाया जाता है। ४ वह फसल जो बरसातके पानीसे बिना सिंचाई किये उत्पन्न होती हो।

बारापोल—दाक्षिणात्यमें प्रवाहित एक नदी। यह मन्द्राज प्रदेशके कुर्ग राज्य और मलबार जिलेमें प्रवाहित हो कर अरबसागरमें गिरी है। कुर्ग राज्यके ब्रह्मगिरि नामक पर्वतके जिस स्थानसे यह नदी निकली है वह लक्ष्मण-तीर्थ और पापनाशी नामसे प्रसिद्ध है। कुर्ग सीमान्त-में इस नदीके २ सौ फुट ऊंचा एक प्रपात है। वनभाग और पर्वतकन्दरादिके मध्य हो कर बहनेके कारण तीर भूमिका दृश्य अतीव मनोहर है। कोन्ननूर जानेके रास्ते पर इस नदीके ऊपर एक सुन्दर पुल है।

बारामती—बम्बई प्रदेशके पूना जिलेके भीमथडी तालुक का एक शहर। यह अक्षा० १८ ६´ उ० तथा देशा ७४-३४´ पू० पूना शहरसे ५० मील पूर्वमें अवस्थित है। जन संख्या ६ हजारसे ऊपर है। म्युनिस्पलिटी १८६७ ई०में स्थापित हुई है। शहरमें सब जजकी अदालत और दो अङ्गरेजी स्कूल हैं।

बारामीटर ( अ ० पु० ) वैरोमीटर देखो।

बारारी—भागलपुर शहरसे ४ मील उत्तर पूर्वमें अवस्थित एक कसबा। यह अक्षा० २५ १६´ उ० तथा देशा० ८७ २´ पू०के मध्य गङ्गाके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ५ हजारके करीब है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या ज्यादा है। यहां केवल एक पक्की सडक है जो भागल पुर शहर तक चली गई है। ई० आई० रेलवेका यहां एक स्टेशन भी है। यह स्थान आम्र काननोंसे आच्छादित है। वर्षाऋतुमें यहाका दृश्य बहुत ही रमणीय और नेत्रोंको सुखद प्रतीत होता है। जिधर दृष्टि दौडाई जाय, उधर ही सब्ज मखमली फर्श बिछा मालूम होता है। कोई स्थान ऐसे हैं जो बडे शान्त और सुरम्य दिखाई पडते हैं। जिनसे प्राचीन कालके ऋषि आश्रमोंका स्मरण हो आता है, लेकिन अधिकतर यह मनोहर छवि थोडे ही दिन तक रहती है। वर्षाऋतुके बाद दृश्य बिल कुल बदल जाता है, सारी भूमि नग्न, भूरे रंगकी और सूखी बनी रहती है। यहां पर गङ्गाके अतिरिक्त सदैव बहनेवाली नदियोंका अभाव है और न एक तालाब ही है। अधिवासी कलके पानीसे ही अपना कुल काम चलाते हैं। मकई, मूंग, उडद, सरसों, गेहूं, चना, जौ आदि फसल प्रायः उसी जमीन पर लगती है जो पुण्य सलिला भागीरथीके अपनी पूर्व गतिका परित्याग करने से निकल आई है। अधिवासियोंमेंसे बहुत थोडे कृषि द्वारा जीविका चलाते हैं, अधिकांशका गुजारा नौकरी पर ही निर्भर करता है।

यहांके जमींदार कुलीन वंशोद्भव मैथिल ब्राह्मण हैं। वास भवन भी इसी कसबेमें हैं। 'ठाकुर' इनकी उपाधि है। स्टेटका प्राचीन इतिहास हमें विस्तृत भावमें मालूम नहीं, जहां तक विश्वस्त सूत्रसे पता लगा है, वह यों है,—स्वर्गीय बाबू मदनमोहन ठाकुर इसके स्थापयिता थे। कहते हैं, कि पहले इनकी अवस्था उतनी अच्छी न थी। १६वीं शताब्दीके मध्य ये बनैली राज स्वर्गीय वेदानन्दसिंह बहादुरके यहां नौकरी करते थे। उक्त महाशय की इन पर बडी कृपा रहती थी। अवस्था किसीकी सदा एक सी नहीं रहती। जो आज राजतख्त पर हैं, उन्हें कल राहके भिखारी और राहके भिखारीको विपुल सम्पत्ति के अधिकारी देखते हैं। वेदानन्द बहादुरके यहां रह कर बाबू मदन ठाकुरका अदृष्टाकाश परिष्कृत हो गया, भाग्य लक्ष्मी सानुकूल हुई। धीरे धीरे ये अतुल वैभवके अधि-कारी हो गये जिसका उपभोग आज भी उनके वंशधर गण करते आ रहे हैं। आप सादे मिजाजके थे, देशी फैशन की पोशाक धारण करते थे। केवल उत्सवादि तथा अन्य राजकीय अवसरों पर राजेसी ठाठ पसन्द फरमाते थे। अन्त समयमें आप ब्रजमोहन ठाकुर, जगमोहन ठाकुर और कृष्णमोहन ठाकुर तीन पुत्ररत्न छोड इहधामका परित्याग कर सुरधामको सिधारे। ये तीनों भाई भी योग्य पिताके योग्य पुत्र थे। प्रायः सभी कामों में अपने पूज्यपाद पिताका अनुसरण करते थे।

कुछ समय बाद कृष्णप्रेयसीने राजगृहमें प्रवेश किया और वे सबके सब पृथक् पृथक् हो गये। ब्रजमोहन ठाकुर के चार सुपुत्र थे, हरिमोहन ठाकुर, श्रीमोहन ठाकुर, चन्द्रमोहन ठाकुर और इन्द्रमोहन ठाकुर। द्वितीय पुत्र श्रीमोहन ठाकुर उच्चाभिलाषी प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आपका वर्ण गौर, शरीर हृष्ट पुष्ट, गठीला और कद ऊँचा था। आपका प्राकृतिक ज्ञान तथा मनुष्यकी पहचान बहुत अच्छी थी। प्रजाका पालन पुत्रवत् करते थे। आपकी उदारता बहुत प्रसिद्ध है। आप पुराने जमानेके रईस थे। जो कोई विपन्न आदमी आपके यहां आते थे, उनकी आशाएं किसी न किसी रूपमें पूरी हो ही जाती थीं। धार्मिक कार्योंमें आपकी पूर्ण श्रद्धा थी, इसी कारण आप अपने प्रासादसे उत्तर गङ्गाके किनारे राधाकृष्णकी मूर्त्ति प्रतिष्ठा कर गये हैं। वृद्धावस्थामें एक पुत्ररत्न छोड़ आपने जीवनलीला सम्वरण की।

पुत्रका नाम श्री क्षेत्रमोहन ठाकुर है। आप स्टेटके ३ पट्टीदारोंमेंसे एक हैं। पिताकी मृत्युके समय आप बिल्कुल नाबालिग थे। इस कारण आपका स्टेट कोर्ट आफ वार्ड्स लग गया। आपके लालन पालनका भार आपकी पूजनीया माताके सिर रहा। 'लखनऊ कालविन तालुकदार' (Lucknow Colvin Talukdar) स्कूलमें आपने अन्यान्य भारतीय राजकुमारोंके साथ विद्याशिक्षा प्राप्त की। शिशुपनसे ही आपमें अलौकिक चिह्न स्फुरित थे। कहा भी है कि—"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" अध्यापक आपकी तीव्र बुद्धि और स्मरणशक्तिको देख कर विस्मित होते थे। थोड़े ही दिन हुए (१९२३ ई०की ७वीं नवम्बरको) आपने बालिग हो कर राजकार्यका कुल भार अपने हाथ लिया। आप इस थोड़ेसे समयमें अपने उच्च गुणोंसे अपनी प्रजाके ही प्रेमपात्र नहीं किन्तु आस पासके सभी जो आपकी प्रजा नहीं हैं, उनके भी आदर और प्रेमके भाजन हो गये हैं। आपका स्वभाव बहुत हँसमुख है और प्रजाके दुःख सुखको सुननेके लिये सर्वदा तत्पर रहते हैं। जो एक बार भी आपके साथ रह चुके हैं, वे आपके व्यक्तित्वगुण पर मुग्ध हो आपकी सभ्यता और उदारताकी हृदयसे प्रशंसा करते हैं। आप साहित्यप्रेमी हैं। आपके उद्योगसे एक छोटा पुस्तकालय भी खोला गया है जिसमें प्रायः सब भाषाओंकी पुस्तकोंका संग्रह है। आप अङ्गरेजी, बङ्गला और हिन्दी भाषामें धाराप्रवाह कथोपकथन कर सकते हैं। जिस प्रासाद में आप रहते हैं उसका नाम श्रीभवन है। यह भवन चारों ओर आम्र-काननोंसे समाच्छन्न है जिस से इसकी शोभा देखनी ही बन आती है। इसके नैऋति कोणमें थोड़ी ही दूरके फासले पर भागलपुर सेण्ट्रल जेल है। करीब दो वर्ष हुए आपके एक सुपुत्रने जन्मग्रहण किया है।

उधर जगमोहन ठाकुरके एक पुत्र थे। हरिमोहन ठाकुर उनका नाम था। आप बड़े साहसी सत्यवादी और साहित्यानुरागी थे। आपकी वीरता, राजभक्ति और सेवासे सन्तुष्ट हो कर आपके सत्कार्यके पुरस्कारस्वरूप वृटिश सरकारने आपको राय बहादुर की उपाधिसे भूषित किया था। आप अपने नाम पर एक हाई स्कूल भी खोल गये हैं जिसमें पहले शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। पर कुछ दिन हुए विद्यार्थियोंको आधी फीस देनी पड़ती है। आपने प्रजाहितके अनेक कार्य किये हैं। स्टेटकी सीमा आपके समयमें बहुत कुछ बढ़ गई। स्थानीय म्युनिस्पलिटीको पहले पहल पानीकी कल खोलनेमें आपने बीस हजार रुपयेका दान किया था। बहुत दिनों तक राज्य सुख भोग करके आप उग्रमोहन ठाकुर और प्राणमोहन ठाकुर दो पुत्ररत्न छोड़ परलोकको सिधारे। उग्रमोहन ठाकुरकी निःसन्तानावस्थामें मृत्यु हुई। उनका प्रसिद्ध भवन आलमगंज कारुकार्यविशिष्ट है। आसपासकी हरियाली इसकी शोभाको और भी बढ़ाती है।

बाबू प्राणमोहन ठाकुरका आचार व्यवहार बहुत कुछ अपने पिताके मिलता जुलता था। इतिहासके मनन पाठसे बहुधा यह परिणाम निकलता है, कि राज्यकी स्थापना मानसिक तथा शारीरिक बलके द्वारा ही होती है। हां यह अवश्य है, कि उसकी स्थिरताके लिये उसके फलने फूलनेके लिये, उसके स्थायी जीवनके लिये न्याय तथा धर्म-बलकी ही आवश्यकता होती है। वर्तमान स्थानिक राज्य व्यवहारसे सीधा आ कर सहानुभूतिसे

फलता फूलता है। "न्यायं विराज्य" न्याय ही राज्य है। न्यायसे पद च्युत होने पर अधोगतिको प्राप्त होना पडता है। राज्य छोटा हो या बडा, धर्म ही राज्यकी दृढ और जबरदस्त ढाल है। कहनेका तात्पर्य यह कि बाबू प्राणमोहन ठाकुर धर्ममूर्त्ति थे। सहानुभूति और उदारताने आपमें अच्छा दखल जमाया था। प्रजाकी भलाईकी ओर आपका विशेष ध्यान था। लडाई झगडे-से आप एक पुरसा दूर रहते थे। अपने प्रपितामह बाबू मदन ठाकुरके चलाये हुए सदावर्त्तको आपने अपने जीवन भर अच्छी तरह निभाया। दीन विद्यार्थियोंके लिये पठनपाठनकी सामग्री बिना मूल्य देनेका आपने प्रबन्ध कर दिया था। पर दु खका विषय है, कि अधिक दिन तक यह सुखभोग आपके भाग्यमें न बदा था। अकाल ही आप कराल कालके गालमें पतित हुए। पर इतना ही सन्तोष था आप तीन पुत्ररत्न छोड गये थे।

ज्येष्ठ पुत्र राजमोहन ठाकुरका भरी जवानीमें स्वर्ग वास हो गया। आप आदर्श मूर्त्ति थे। आपकी मृत्यु पर प्रजाकी बात तो दूर रहे, विपक्षियोंने भी शोक प्रकट किया था। आपके कनिष्ठ दो भ्राता, श्री नरेशमोहन ठाकुर और श्री सूर्यमोहन ठाकुर अभी नाबालिग हैं।

आप दोनो भाई योग्य पिताके योग्य पुत्र निकले। आगे चल कर आपसे बहुत कुछ उन्नतिकी आशा की जाती है। स सारमें जो महान् आत्माएं हुई हैं उनको सदैव अनेक प्रकारके कष्ट सहने पडे हैं। वास्तवमें ये कष्ट ही आत्माको उच्च पद प्राप्त करनेमें सहायक होते हैं। आप क्रमशः ७-५ वर्षकी अवस्थामें पिताहीन तो हो ही चुके थे परन्तु कुटिल कालने आपको मातृहीन भी कर दिया। श्रीनरेशमोहन ठाकुरकी अभी चढती जवानी है। आप धीर, शान्त, सचरित्र और विद्यानुरागी हैं। सङ्गीत विद्यामें आपका विशेष अनुराग है। व्यवहार शिल्पके अनेक विषयोंमें आपका असाधारण अधिकार और व्युत्पत्ति देखी जाती है। राजनैतिक विषयो में आपकी अच्छी सूझ है। कभी कभी आपके मनेजर भी इस विषयमें आपसे परामर्श लेते हैं। बुद्धि आपकी सराहनीय है, इसमें सन्देह नहीं। आपका 'काञ्चनगढ' नामक प्रासाद बहुत उच्च और सुरम्य है। अहातेमें जो फूलकी क्यारियां है उनमें तरह तरहके फूल लगते हैं जिससे इसकी शोभा और भी खिल जाती है। वर्ष भी पूरा नहीं हुआ है कि आपके एक पुत्ररत्नने जन्म ग्रहण किया है। इस जन्मोत्सवमें आपने करीब बीस हजार रुपये खर्च किये थे। कहते हैं, कि जो भिखमंगा आता, चाहे उसकी माग कितनी ही बडी क्यों न हो मुंहमागी वस्तु पा कर निहाल हो घर जाता था। स्टेट भरमें जहा देखो, वहीं आनन्द, वहीं सुख, वही सौभाग्य सम्पद् दिखाई देती थी।

यहा 'देवी गङ्गावती ठाकुरानी' नामक १ दातव्य अस्पताल है जिसमें रोगी भी रखे जाते हैं। इलाज अच्छा होता है, दूर दूर ग्रामोंके लोग इलाज कराने यहा आते हैं। अलावा इसके तीन विशाल मन्दिर हैं जिनमें राधाकृष्ण, लक्ष्मीनारायण मुरलीधरकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित हैं। प्रथम दो मन्दिर गङ्गाके किनारे अवस्थित हैं जिससे इनकी प्राकृतिक शोभा अति मनोरम है। राधाकृष्णका मन्दिर गुम्बजदार है और उसमें जो सीढियां लगी हैं वे गङ्गाके किनारे तक छू गई हैं। उक्त मन्दिरके चारों ओर करीब बीस गुम्बज हैं जिनमें नरसिंह, चन्द्र, सूर्य आदि संगमर्मरकी मूर्त्तियां स्थापित हैं। राधाकृष्णकी मूर्त्ति अष्टधातुकी बनी हुई है और क्रमशः डेढ दो फुट ऊंची होंगी। यह अक्षय कीर्त्ति बाबू श्रीमोहन ठाकुरकी है। स्थापनकालसे ही मुंगेर जिलेके अन्तर्गत कसबा ग्रामवासी स्वर्गीय मुकुन्द झा उक्त युगल मूर्त्तिकी सेवा शुश्रूषा किया करते थे। दरबारमें उनकी अच्छी खातिर थी। वे कट्टर धार्मिक और श्री मुरलीधरजीके परम भक्त थे। सन् १३२७ साल (१९२० ई०) भादोंकी अमावसमें उनकी मृत्यु हुई। कहते हैं, कि जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, उसके ठीक एक घंटा पहले उन्हें ऐसा मालूम पड़ा, मानो कोई उनके कानमें जोरसे कह रहा हो, 'गङ्गाके किनारे चलो'। तदनुसार उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीनरसिंह झाको जो वहीं पर थे, बुलाया और गङ्गाके किनारे ले जानेको कहा। आश्चर्यका विषय है, कि ज्यों ही गङ्गाजीमें उन्हें प्रवेश करा कर मुखमें जल दिया गया त्यों ही उनके प्राणपखेरू उड गये।

कुछ समय बाद कुटुम्बियोंने राजगृहमें प्रवेश किया और वे सबके सब पृथक् पृथक् हो गये। प्रसन्नमोहन ठाकुर के चार सुपुत्र थे, हीरेमोहन ठाकुर, धीमोहन ठाकुर, चन्द्रमोहन ठाकुर और इन्द्रमोहन ठाकुर। द्वितीय पुत्र धीमोहन ठाकुर उच्चाभिलाषी प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आपका वर्ण गौर, शरीर हृष्ट पुष्ट, गठीला और बड़ ऊँचा था। आपका प्रखर ज्ञान तथा मनुष्यकी पहचान बहुत अच्छी थी। प्रजाका पालन पुत्रवत् करते थे। आपकी उदारता बहुत प्रसिद्ध है। आप पुराने अमीरोंके स्तंभ थे। जो कोई निर्धन आपके यहां जाते थे, उनकी आशाएँ किसी न किसी रूपमें पूरी हो ही जाती थीं। धार्मिक कार्योंमें आपकी पूर्ण श्रद्धा थी, इसी कारण आप अपने प्रासादसे उत्तर गङ्गाके किनारे राधाकृष्णकी मूर्ति प्रतिष्ठा कर गये हैं। युवावस्थामें एक पुत्ररत्न छोड़ आपने जीवनलीला सम्वरण की।

पुत्रका नाम श्री केशवमोहन ठाकुर है। आप स्टेटके ३ पट्टीदारोंमेंसे एक हैं। पिताकी मृत्युके समय आप बिल्कुल नाबालिग थे। इस कारण आपका स्टेट कोर्ट आफ वार्ड्स हो गया। आपके लालन पालनका भार आपकी पूजनीया माताके सिर रहा। 'लखनऊ कालविन तालुकदार' (Lucknow Colvin Talukdar) स्कूलमें आपने अन्यान्य भारतीय राजकुमारोंके साथ विद्याशिक्षा प्राप्त की। शिशुपनसे ही आपमें अलौकिक चिह्न प्रस्फुटित थे। कहा भी है कि—"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" अध्यापक आपकी तीव्र बुद्धि और स्मरणशक्तिको देख कर विस्मित होते थे। थोड़े ही दिन हुए (१९२३ ई०की ७वीं नवम्बरको) आपने बालिग हो कर राजकार्यका कुल भार अपने हाथ लिया। आप इस थोड़ेसे समयमें अपने उच्च गुणोंसे अपनी प्रजाके ही प्रेमपात्र नहीं किन्तु आस पासके सभी जो आपकी प्रजा नहीं हैं, उनके भी आदर और प्रेमके भाजन हो गये हैं। आपका स्वभाव बहुत हंसमुख है और प्रजाके दुःख सुखको सुननेके लिये सदैव तत्पर रहते हैं। जो एक बार भी आपके साथ रह चुके हैं, वे आपके चरित्रमाधुर्य पर मुग्ध हो आपकी सज्जनता और उदारताकी दुहाई देनेको बाध्य हैं। आप साहित्यप्रेमी हैं। आपके उद्योगसे एक छोटा पुस्तकालय भी खोला गया है जिसमें प्रायः सब भाषाओंकी पुस्तकोंका संग्रह है। आप अङ्गरेजी, बङ्गला और हिन्दी भाषामें धाराप्रवाह कथोपकथन कर सकते हैं। जिस प्रासादमें आप रहते हैं उसका नाम धीभवन है। यह भवन चारों ओर आम्र-काननसे समाच्छन्न है जिससे इसकी शोभा देखते ही बन आती है। इसके नैऋति कोणमें थोड़ी ही दूरके फासले पर भागलपुर सेण्ट्रल जेल है। करीब दो वर्ष हुए आपके एक सुपुत्रने जन्मग्रहण किया है।

उधर जगमोहन ठाकुरके एक पुत्र थे। हरिमोहन ठाकुर उनका नाम था। आप बड़े साहसी सच्चरित्र और साहित्यानुरागी थे। आपकी वीरता, राजभक्ति और सेवासे सन्तुष्ट हो कर आपके सत्कार्यके पुरस्कारस्वरूप बृटिश सरकारने आपको राय बहादुर की उपाधिसे भूषित किया था। आप अपने गाम पर एक हाई-स्कूल भी खोल गये हैं जिसमें पहले शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। पर कुछ दिन हुए विद्यार्थियोंको आधी फीस देनी पड़ती है। आपने प्रजाहितके अनेक कार्य किये हैं। स्टेटकी सीमा आपके समयमें बहुत कुछ बढ़ गई। स्थानीय म्युनिसपलिटीको पहले पहल पानीकी कल खोलनेमें आपने बीस हजार रुपयेका दान किया था। बहुत दिनों तक राज्य सुख भोग करके आप ब्रजमोहन ठाकुर और प्राणमोहन ठाकुर दो पुत्ररत्न छोड़ परलोकको सिधारे। ब्रजमोहन ठाकुरकी निःसन्तान अवस्थामें मृत्यु हुई। उनका प्रसिद्ध भवन आनन्दगढ़ कारुकार्यविशिष्ट है। आसपासकी हरियाली इसकी शोभाको और भी बढ़ाती है।

बाबू प्राणमोहन ठाकुरका आचार व्यवहार बहुत कुछ अपने पितासे मिलता जुलता था। इतिहासके पठन पाठनसे बहुधा यह परिणाम निकलता है, कि राज्यकी स्थापना पाशविक तथा शारीरिक बलके द्वारा ही होती है। पर यह अवश्य है, कि उसकी स्थिरताके लिये उसके फलने फूलनेके लिये, उसके स्थायी जीवनके लिये सत्य तथा धर्म-कर्मकी ही आवश्यकता होती है। नवीन स्थापित राज्य स्थायी होता जा कर सहानुभूतिसे

वारिधि ( सं० पु० ) वारिधि देखो।

वारिवाह ( हिं० पु० ) बादल।

वारिश ( फा० पु० ) १ वृष्टि, वर्षा। २ वर्षाऋतु।

वारिस्टर (अं० पु०) वह वकील जिसने विलायतमें रह कर कानून परीक्षा पास की हो। ये दीवानी फौजदारी और माल आदिकी सारी छोटी बड़ी अदालतोंमें वादी या प्रतिवादीकी ओरसे मामलों और मुकद्दमोंकी पैरवी, बहस तथा अन्य कार्रवाइयां कर सकते हैं। इन्हें वकालतनामे या मुख्तारनामेकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

वारी ( हिं० स्त्री० ) १ किनारा, तट। २ धार, बाढ़। ३ वह स्थान जहां किसी वस्तुके विस्तारका अन्त हुआ हो, हाशिया। ४ बगीचे, खेत आदिके चारों ओर रोकके लिये बनाया हुआ घेरा, बाढ़। ५ किसी बरतनके मुंहका घेरा या छिछले बरतनके चारों ओर रोकके लिये उठा हुआ घेरा या किनारा। ६ वाटिका, बगीचा। ७ खिड़की, झरोखा। ८ घर, मकान। ९ रास्तेमें पड़े हुए झाड़ इत्यादि। १० मेड़ आदिसे घिरा स्थान, क्यारी। ११ जहाजोंके ठहरनेका स्थान, बंदरगाह। १२ पारी, ओसरी। १३ लड़की, कन्या। १४ नवयौवन, थोड़े वयसकी स्त्री। ( पु० ) १५ एक जाति जो पत्तल दोने बना कर ब्याह शादी आदिमें देती है और सेवा टहल करती है। पहले इस जातिके लोग बगीचा लगाने और उनकी रखवाली आदिका काम करते थे।

वारीक ( फा० वि० ) १ जो मोटाई या घेरेमें इतना कम हो, कि छूनेसे हाथमें कुछ मालूम न हो, महीन। २ जिसे समझनेके लिये सूक्ष्म बुद्धि आवश्यक हो, जो विना अच्छी तरह ध्यानसे सोचे समझमें न आए। ३ जिसकी रचनामें दृष्टिकी सूक्ष्मता और कलाकी निपुणता प्रकट हो। ४ सूक्ष्म, बहुत ही छोटा। ५ जिसके अणु अति सूक्ष्म हों।

वारीका (फा० पु० ) बालोंकी वह महीन कलम जिससे चित्रकारीमें पतली पतली रेखाएं खींची जाती हैं।

वारीकी (फा० स्त्री० ) १ सूक्ष्मता, पतलापन। २ साधारण दृष्टिसे न समझमें आनेवाला गुण या विशेषता।

वारीखाना (हिं० पु० ) तोपके कारखानेमें वह स्थान जहां तोपकी बत्ती या टिकिया सुखाई जाती हैं।

वारूई—बरई देखो।

वारुईपुर- बङ्गालके २४ परगनेके अन्तर्गत एक शहर। यह अक्षा० २२ २१´ उ० तथा देशा० ८८ २७´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ४२१७ है। यहां पानकी विस्तृत खेती होनेके कारण इसका वारुइपुर नाम पड़ा है। यहांके 'राय चौधरी' वंश प्राचीन जमींदार हैं और डायमण्ड हारवर नामक उपविभागका अधिकांश स्थान इनके अधिकारभुक्त हैं।

वारुणी ( हिं० स्त्री० ) वारुणी देखो।

बारूद ( तु० स्त्री० ) एक प्रकारका चूर्ण या बुकनी जो गन्धक, शोरे और कोयलेको एकमें पीस कर बनती है और आग पा कर भकसे उड़ जाती है। बम, रकेट आदि अग्निक्रीडाविषयक द्रव्य बनानेमें भी इसी मसालेकी जरूरत पड़ती है। ऐसा पता चलता है, कि इसका प्रयोग भारतवर्ष और चीनमें बन्दूक आदि आग्नेयास्त्र और तमाशेमें बहुत प्राचीनकालसे किया जाता था। अशोकके शिलालेखोंमें अग्निगन्ध या अग्निस्कन्ध शब्द तमाशे ( आतशवाजी )के लिये आया है। परन्तु इस बातका पता आज तक विद्वानोंको नहीं लगा, कि सबसे पहले इसका आविष्कार कहां, कब और किसने किया है। इसका प्रचार यूरोपमें १४वीं शताब्दीमें मूर ( अरब ) लोगोंने किया और १६वीं शताब्दी तक इसका प्रयोग केवल बन्दूकको चलानेमें होता रहा। आजकल अनेक प्रकारकी बारूदें मोटी, महीन, सम विषम रवेकी बनती हैं। संयोजक द्रव्योंकी मात्रा निश्चित नहीं है। देश देशमें प्रयोजनानुसार अंतर रहता है पर साधारण रीतिसे बारूद बनानेमें प्रति सैकड़े ७०से ७८ अंश तक शोरा, १० या १२ अंश गन्धक और १५से १७ तक कोयला पड़ता है। ये तीनों पदार्थ अच्छी तरह महीन पीस छान कर एकमें मिलाये जाते हैं। बादमें तारपीनका तेल या स्पिरिट डाल कर चूर्णको भलीभांति मलते हैं। अनन्तर उसे धूपमें सुखा लेते हैं। तमाशेकी बारूदमें कोयलेकी मात्रा अधिक डाली जाती है। कभी कभी लोहचुन भी इसलिये डालते हैं, जिससे फूल अच्छे निकलें। भारतवर्षमें अब बारूद बन्दूकके कामकी कम बनती है, प्रायः तमाशेकी ही बारूद बनाई जाती है।

बारूदखाना ( हिं० पु० ) वह स्थान जहां गोला, बारूद आदि लड़ाईका सामान रहता है।

इन्होंने यहां 'राय हरिमोहनठाकुर बहादुर' नामका एक हाई स्कूल है जो १८९८ ई०में स्थापित हुआ है। इसमें करीब ढाई सौ लड़के पढ़ते हैं। बाबू सुरेन्द्र नाथ बसु बी, ए, प्रधानाध्यापक हैं। आप करीब ८ बरस वर्षोंसे इस स्कूलमें कार्य सम्पादन करते आ रहे हैं। स्थानीय स्कूलोंमें यहांकी पढ़ाई और सर्वोत्तम समादरणीय हैं। तारीफ तो यह है, कि जितने लड़के शिक्षाविभाग लड़के लिये शुरू कर भेजे जाते, वे सबके सब कामयाब निकलते हैं। इसके अलावा यहां एक म्युनिसिपल अपर प्राइमरी स्कूल है। १९१० ई०में Barasat-co-operative नामका जो बैंक खुला है, उसमें यहांके तथा आस पासके अधिवासी ज्यादा लाभ उठा रहे हैं। स्टेटके इन तीनों पट्टेदारोंकी आय मिला कर ४ लाख रुपयेसे ज्यादा है।

बारासात—२४ परगनेके अन्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २२° ३३' से २२° ५६' उ० तथा देशा० ८८° ७' से ८८° ४७' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २७१ वर्गमील और जनसंख्या ढाई लाखसे ऊपर है। इसमें बारासात और गोबरडांगा नामके दो शहर और ७२४ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त उपविभागका एक नगर और विचारालय। यह अक्षा० २२° ४३' उ० तथा देशा० ८८° २९' पू० कलकत्तेसे १४ मील उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ८६३४ है। १८३४ ई०में यशोर और नदिया जिलेसे कितने परगने निकाल कर इसमें अन्तर्भुक्त किये गये और बारासात जिला कायम हुआ है। १८६१ ई० तक यहां एक ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट थे। यहां को भी रेल पथका एक स्टेशन है।

१८३१ ई०में सैयद अहमदके अनुयायी मुसलमान हुए तीतू मीर नामक किसी मुसलमान फकीरकी बातोंमें पड़ कर हिन्दूके विरुद्ध खड़ा हो गया। इन उन्मत्त मुसलमानोंने देवमन्दिरोंको तोड़ डाला और ब्राह्मणोंके प्रति विशेष अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। यहां तक, कि वे गायोंको भी जानसे मारने लगे। पर उन्होंने एक बांसका किला बनाया था। पुलिसमें अङ्गरेजोंकी सेनाके सामने ठहर न सके और तुरंत आ छिपे। पीछे उनमेंसे एक सौ मारे गये और ढाई सौ बन्दी हुए। जो थोड़े बच गये, उन्होंने फिरसे अङ्गरेजोंके विरुद्ध तलवार उठाई, पर हार खा कर निःशक्त हो बैठे। यही लड़ाई बंगालमें तीतूमीरकी लड़ाई नामसे मशहूर है। यहां सरकारी अदालत और एक छोटा कारागार है जिसमें सिर्फ १२० कैदी रखे जाते हैं। नगरके पास ही मुसलमान फकीर पीर एकदिल साहिबके उद्देश्यसे प्रतिवर्ष मेला लगता है। इस मेलेमें हिन्दू और मुसलमान दोनों कौमके लोग जमा होते हैं।

बारासिया—मधुमती नदीकी एक शाखा। यह फरिदपुर और यशोर जिलेके मध्य हो कर बहती है। यह लालगाड़ाके निकट मधुमतीका परित्याग कर पुनः मोटा गङ्गामें आ मिली है। इस नदीमें सब समय पण्य द्रव्य ले कर नावें आती जाती हैं।

बारिक (अं० पु०) पक्के मकानों या मकानोंकी श्रेणी या समूह जिसमें फौजके सिपाही रहते हैं, छावनी।

बारिकपुर—बारकपुर देखो।

बारिक मास्टर (अं० पु०) वह प्रधान कर्मचारी जो बारिककी देखभाल और प्रबन्ध करता है।

बारिद (स० पु०) वारिद देखो।

बारिदोआब—पञ्जाबप्रदेशके अन्तर्गत एक भूभागकी, इरावती और शतद्रु अथवा विपाशा नदियोंके मध्यका स्थान। गुरुदासपुर, अमृतसर लाहोर, मण्टगोमारी और मुलतान जिला इसके अन्तर्भुक्त हैं।

बारिदोआबखाल—उक्त अन्तर्वेदीके मध्य जलसेचनके लिये एक कृत्रिम खाल। यह गुरुदासपुर, अमृतसर और लाहोर तक विस्तृत है। सम्राट् शाहजहानके स्थापत्यकार इञ्जिनियर अलीमर्दान खाँने १६३३ ई०में जो हंसली खाल कटवाया था १८५६ ई०में उसके कलेवरकी पुष्टि करनेके लिये लार्ड डलहौसीने उस कार्यमें हाथ लगाया। १८५१-५२ ई०से ले कर १९०१-२० ई०के मध्य उस कार्यका शेष हुआ। मुलतान और शाखाओंको ले कर इसका परिमाण ३४८ मील है।

बारिधर (हिं० पु०) १ बादल, मेघ। २ एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें रगण नगण और दो भगण होते हैं।

वारिधि ( स ० पु० ) वारिधि देखो।
वारिवाह ( हि • पु० ) बादल।
वारिश ( फा० पु० ) १ वृष्टि, वर्षा। २ वर्षाऋतु।
वारिस्टर (अ ० पु०) वह वकील जिसने विलायतमें रह कर कानून परीक्षा पास की हो। ये दीवानी फौजदारी और माल आदिकी सारी छोटी बडी अदालतोंमें वादी या प्रतिवादीकी ओरसे मामलो और मुकदमोंकी पैरवी, बहस तथा अन्य कारवाइया कर सकते हैं। इन्हें वका लतनामे या मुख्तारनामेकी आवश्यकता नहीं पडती।
वारी ( हि ० स्त्री० ) १ किनारा, तट। २ धार, बाढ। ३ वह स्थान जहा किसी वस्तुके विस्तारका अन्त हुआ हो, हाशिया। ४ बगीचे, खेत आदिके चारों ओर रोकके लिये बनाया हुआ घेरा, बाढ। ५ किसी बरतनके मु हका घेरा या छिछले बरतनके चारो ओर रोकके लिये उठा हुआ घेरा या किनारा। ६ वाटिका, बगीचा। ७ खिडकी, झरोखा। ८ घर, मकान। ९ रास्तेमें पडे हुए झाड इत्यादि। १० मेड आदिसे घिरा स्थान, क्यारी। ११ जहाजों के ठहरनेका स्थान, बदरगाह। १२ पारी, ओसरी। १३ लडकी, कन्या। १४ नवयौवन, थोडे वयसकी स्त्री। ( पु० ) १५ एक जाति जो पत्तल दोने बना कर ब्याह शादी आदिमें देती है और सेवा टहल करती है। पहले इस जातिके लोग बगीचा लगाने और उनकी रखवाली आदिका काम करते थे।
बारीक ( फा० वि० ) १ जो मोटाई या घेरेमें इतना कम हो, कि छूनेसे हाथमें कुछ मालूम न हो, महीन। २ जिसे समझनेके लिये सूक्ष्म बुद्धि आवश्यक हो, जो बिना अच्छी तरह ध्यानसे सोचे समझमें न आए। ३ जिसकी रचनामें दृष्टिकी सूक्ष्मता और कलाकी निपुणता प्रकट हो। ४ सूक्ष्म, बहुत ही छोटा। ५ जिसके अणु अति सूक्ष्म हों।
बारीका (फा० पु० ) बालोंकी तरह महीन कलम जिससे चित्रकारीमें पतली पतली रेखाए खींची जाती हैं।
बारीकी (फा० स्त्री० ) १ सूक्ष्मता, पतलापन। २ साधा रण दृष्टिसे न समझमें आनेवाला गुण या विशेषता।
बारीखाना (हि० पु० ) तोपके कारखानेमें वह स्थान जहा तोपकी बत्ती या टिकिया सुखाई जाती हैं।
वारुई—वरइ देखो।
वारुईपुर वङ्गालके २४ परगनेके अन्तर्गत एक शहर। यह अक्षा० २२ २१ उ० तथा देशा० ८८ २७ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसख्या प्राय ४२१७ है। यहा पानकी विस्तृत खेती होनेके कारण इसका वारुईपुर नाम पडा है। यहाके 'राय चौधरी' व श प्राचीन जमींदार हैं और डायमण्ड हारबर नामक उपविभागका अधिकाश स्थान इनके अधिकारभुक्त हैं।
वारुणी ( हि० स्त्री० ) वारुणी देखो।
बारूद ( तु० स्त्री० ) एक प्रकारका चूर्ण या बुकनी जो गन्धक, शोरे और कोयलेको एकमें पीस कर बनती है और आग पा कर भकसे उड जाती है। बम, रकेट आदि अग्निक्रीडाविषयक द्रव्य बनानेमें भी इसी मसालेकी जरू रत पडती है। ऐसा पता चलता है, कि इसका प्रयोग भारतवर्ष और चीनमें बन्दूक आदि आग्नेयास्त्र और तमाशे-में बहुत प्राचीनकालसे किया जाता था। अशोकके शिलालेखोंमें अग्निगन्ध या अग्निस्कन्ध शब्द तमाशे ( आतशबाजी )के लिये आया है। परन्तु इस बातका पता आज तक विद्वानोंको नहीं लगा, कि सबसे पहले इसका आविष्कार कहा, कब और किसने किया है। इसका प्रचार यूरोपमें १४वीं शताब्दीमें मूर ( अरब ) लोगोंने किया और १६वीं शताब्दी तक इसका प्रयोग केवल बन्दूकोंकी चलानेमें होता रहा। आजकल अनेक प्रकारकी बारूदें मोटी, महीन, सम विषम रवेकी बनती हैं। संयोजक द्रव्योंकी मात्रा निश्चित नहीं है। देश देशमें प्रयोजनानुसार अन्तर रहता है पर साधारण रीतिसे बारूद बनानेमें प्रति सैकडे ७५से ७८ अ श तक शोरा, १० या १२ अ श गन्धक और ११से १२ तक कोयला पडता है। ये तीनों पदार्थ अच्छी तरह महीन पीस छान कर एकमें मिलाये जाते हैं। बादमें तारपीनका तेल या स्पिरिट डाल कर चूर्णको भलीभांति मलते हैं। अनन्तर उन्हें धूपमें सुखा लेते हैं। तमाशेकी बारूदमें कोयलेकी मात्रा अधिक डाली जाती है। कभी कभी लोहचुन भी इसलिये डालते हैं, जिससे फूल अच्छे निकले। भारतवर्षमें अब बारूद बन्दूकके कामकी कम बनती है, प्राय तमाशेकी ही बारूद बनाई जाती हैं।
बारूदखाना ( हि ० पु० ) वह स्थान जहा गोला, बारूद आदि लडाईका सामान रहता है।

बाड़दानी (हिं० स्त्री०) बाग्दानी देखो।

बाड़पुर—मध्यभारतके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। मालपुर नामक सामन्तगण द्वारा यह परिचालित होता है।

मालपुर देखो।

बारुल—मध्यप्रान्त जिलेके अन्तर्गत एक लौहक्षेत्र। यह अक्षा० २३° ४४' उ० तथा देशा० ८१° ६' पू०के मध्य अवस्थित है। इस विस्तीर्ण भूभागमें खनिज लौह प्रचुर परिमाणमें पाया जाता है। मि० हेनिङ स्मिथने इस स्थानका परिदर्शन कर गवर्मेण्टको जो रिपोर्ट दी उससे जाना जाता है, कि प्रति वर्गमीलमें प्राय ६०॥ लाख टन मिश्रित लोहा मिलता है। उसे गलानेसे कमसे कम १६ लाख टन शुद्ध लोहा उत्पन्न हो सकता है।

बारे (फा० क्रि० वि०) अन्तको।

बारेमें (फा० अव्य०) प्रसङ्गमें, विषयमें।

बारोमीटर (अं० पु०) बैरोमीटर देखो।

बारो—बुन्देलखण्डके अन्तर्गत भाण्डार पर्वतके पाद मूलस्थ हृदके किनारे अवस्थित एक प्राचीन नगर। यह बारानगर नामसे मशहूर है। गोंड़ारिया जाति द्वारा स्थापित गड़रमठ नामक देवमन्दिर तथा इधर उधर पड़े हुए प्रस्तर स्तम्भादि यहांकी पूर्वकीर्त्तिकी घोषणा करते हैं। उस मन्दिरके तथा निकटवर्त्ती गणेश मन्दिरके गात्रमें नवग्रह तथा दशावतारादि मूर्त्ति खोदित देखी जाती है। पार्श्ववर्त्ती जैन मन्दिरको गठन देखनेसे मालूम होता है, कि उन प्राचीन प्रस्तरादिसे ये सब गठित या संस्कृत हुए हैं। यहां ९३३ संवत्में पदुमल्लतिलक तोमरर राजाके समयमें उत्कीर्ण एक शिलालिपि पाई गई है। इससे अनुमान किया जाता है, कि मालवमें परमारराजाओंके पहले यहां तोमरवंशीय राजाओंका अभ्युदय हुआ था। उस हृदके उत्तरी किनारे एक वैष्णव मन्दिर है जिसके सामने चारों तरफ पर दश अवतार मूर्त्ति और उसके पार्श्वमें दोल-शालि नामक चांदमा स्थापित है।

यहांसे १॥ कोस उत्तर पथेरो नामक ग्राम है जो एक समय इसीके अन्तर्भुक्त था। सम्राट् औरङ्गजेबके राजत्वकालमें बुन्देला-सरदार छत्रसालको जब इस नगरकी समृद्धिका पता लगा तब उन्होंने इसपर हाथ आ कर इसे अच्छी तरह लूटा। लूटका माल ले कर लौटते समय वे धोला नदीकी बाढ़ देख अधीर हो उठे। पीछे उन्होंने धोलाका इस प्रकार स्तव किया था।

"धोला तुम पर्यांत हो सब नदियों सरदार।
सावनमें आयम् भयो हमें लगाहो पार॥"

कहते हैं, कि उनकी इस स्तुतिसे धोला प्रसन्न हुई थी। नदीकी बाढ़ घट जानेसे वे कुशलपूर्वक स्वराज्य लौटे।

बार्कएडमण्ड—(Edmond Burke) एक अंग्रेज राजनैतिक। इनके पिता एक सामान्य व्यवहारजीवी थे। डब्लिन विश्वविद्यालयमें रह कर इन्होंने विद्या उपार्जन की। १७५६ ई०में 'भिण्डिकेशन आव नेचरल सोसाइटी' तथा 'महत् और सुन्दर' नामक प्रबन्ध लिख कर ये जनसाधारणमें विशेष प्रसिद्ध हो गये हैं। लार्ड मार्किंङ्घमके काम छोड़ने पर १७८२ ई०में ये सेनाविभागके वेतनदाता-पद पर अधिष्ठित हुए। उस समय प्रिवि कौन्सिल सभामें भी इनको आसन दिया गया। दूसरे वर्ष लार्ड शेल्बोर्णके राजकोष-कर्त्ता होने पर इन्होंने काम करना छोड़ दिया। भारतवर्षमें अंग्रेज शासनकर्त्ता वारेन हेष्टिंसके अन्याय शासनसे क्रुद्ध हो इन्होंने पार्लमेण्टमें जो राजनैतिक वक्तृता (Burke's Impeachment on Warren Hastings) दी थी, उसीसे ये जगद्वासीकी श्रद्धाके पात्र हुए थे। फिर फरासी विप्लवका दोष दिखा कर इन्होंने १७९० ई०में जो प्रबन्ध लिखा है, (Reflection on the French Revolution) वह इनके ज्ञान या बुद्धिका उज्ज्वल परिचय है। १७९४ ई०में इन्होंने पार्लियामेण्टका आसन त्याग किया। वृद्धावस्थामें सुशिक्षित पुत्रकी मृत्यु हो जानेसे इनका हृदय चूर चूर हो गया और इसीसे इनकी मृत्यु भी हुई। डा० जनसन, लार्ड मेकले आदि मनीषिगण इनकी वाग्मिता और राजनीतिज्ञताकी भूरि भूरि प्रशंसा कर गये हैं। १७३० ई०में डब्लिन नगरमें इनका जन्म और १७९७ ई०में बेकन्सफिल्ड नगरमें इनकी जीवनलीला शेष हुई।

बार्थलमिउ-सेण्ट—एक यहूदी साधु। यहूदी इन्हें नाथानेल समझते हैं। ये भारत, अर्मेनिया और [illegible]

१२२० ई०में भारतवर्षमें खृष्टान धर्मका प्रचार करनेके लिये आये थे।

'बार्लम—खृष्टानधर्मशास्त्र बाइबिलके सेण्ट जान विभाग वर्णित एक साधु। पारस्य सीमान्तवासी भारतवासी तथा साधु जोसेफत नामसे उल्लिखित हुए हैं। पाश्चात्य पण्डितगण भारतराजपुत्र जोसेफत्को 'वोधिसत्त्व' मानते हैं।

बार्लो सर जार्ज—मन्द्राजके अंगरेज शासनकर्त्ता। इष्ट इण्डिया कम्पनीके परिदर्शकरूपमें इन्होंने भारतवर्ष पर पदार्पण किया। इनके शासनकालमें १८०६ ई०को वेल्लूरमें सिपाही विद्रोह उपस्थित हुआ। इस विद्रोहसे अंगरेजवणिक्‌गण बहुत डर गये थे।

बार्वटीर (सं० पु०) १ त्रपु, रांगा। २ अंकुर, अंखुआ। ३ गणिका सुत, जारज।

बार्ह (सं० त्रि०) बर्हसम्बन्धीय।

बार्हत (सं० क्ली०) बृहत्या फलं लक्षादित्वादण्। १ बृहतीफल। उत्सादित्वात् अञ्। (त्रि०) २ बृहति भव।

बार्हतानुष्टुभ (सं० त्रि०) बृहती अनुष्टुभ छन्द सम्बन्धीय।

बार्हद्वन (सं० पु०) बृहद्वनेरपत्य कण्वादित्वादण्। बृहद्वन्नि ऋषिका गोत्रापत्य।

बार्हदीषव (सं० पु०) बृहदिषुवंशीय।

बार्हदुक्थ (सं० त्रि०) बृहदुक्थसम्बन्धीय। बृहदुक्थ का गोत्रापत्य।

बार्हद्गिर (सं० त्रि०) बृहद् गिरिसम्बन्धीय।

बार्हदैवत (सं० क्ली०) शौनक-रचित बृहद्देवता सम्बन्धीय।

बार्हद्बल (सं० क्ली०) १ बृहद्बल सम्बन्धीय। २ बृहद्बलका गोत्रापत्य।

बार्हद्रथ (सं० पु० स्त्री०) बृहद्रथस्यापत्य शैषिकोऽण्। १ बृहद्रथ राजसुत। (त्रि०) २ बृहद्रथ सम्बन्धी।

बार्हद्रथि (सं० पु०) बृहद्रथका गोत्रापत्य।

बार्हवत (सं० त्रि०) बर्हवत शब्दयुक्त।

बार्हस्पत (सं० पु०) बृहस्पतेरिदं स वा देवताऽस्य अण्। १ बृहस्पति सम्बन्धी। २ वत्सरविशेष। ३ बृहस्पतिके उद्देशसे चरुप्रभृति।

बार्हस्पत्य (सं० पु०) बार्हस्पत्य बृहस्पतिप्रोक्त शास्त्र अधीयमानत्वेनास्त्यस्येति, अर्श आदित्वादच्। १ नास्तिक। (क्ली०) २ नीतिशास्त्र। (त्रि०) ३ बृहस्पति सम्बन्धीय।

बार्हिण (सं० त्रि०) बर्हिणो विकार ताल्यादित्वात् अण्। बर्हिविकार।

बार्हिषद (सं० पु०) बर्हिषदका गोत्रापत्य।

बाल (सं० पु० क्ली) बलतीति बल ण। १ गन्धद्रव्य विशेष, सुगन्धबाला नामक गन्धद्रव्य। पर्याय—ह्रीवेर बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशनामक, अम्बुनामक, ह्रिवेर, वर्हिष्ठ, बालक, वारिद, वर, ह्रीवेरक, केश्य, वज्र, पिङ्ग, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर। गुण—शीतल, तिक्त, पित्त, वमन, तृषा, ज्वर, कुष्ठ, अतिसार, श्वास, और व्रणनाशक तथा केशहितकर। २ अर्भक, बालक, लड़का। पर्याय—माणवक, बालक, माणव, किशोर, वटु, बुद्धिन्धय, बटुक, किशोरक, पाक, गर्भ, हितक, पृथुक, शिशु, शाव, अर्भ, डिम्भक, डिम्भ।

मनुष्य जन्मकालसे ले कर प्राय १६ वर्षकी अवस्था तक बाल या बालक कहा जाता है। स्त्री भी १६ वर्ष तक बाला कहलाती है।

"आषोडशाद्भवेद्बालस्तरुणस्तत उच्यते।
वृद्धः स्यात् सप्ततेरूर्द्ध वर्षीयान् नवते परम्॥"
(भरत)

भावप्रकाशमें बालपरिचर्याविधि इस प्रकार लिखी है—

बालकके भूमिष्ठ होनेसे यथाविधि कुलाचार और स्त्री आचार जो पूर्वापर प्रचलित है, उसका अनुष्ठान करना आवश्यक है।

वयःक्रमभेदसे यह बालक तीन प्रकारका है, दुग्धपायी, दुग्धान्नभोजी और अन्नभोजी। इनमेंसे एक वर्ष तकके बालकको दुग्धपायी, दो वर्ष तकको दुग्धान्नभोजी और तीन वर्षसे ले कर सोलह वर्ष तकके बालकको अन्नभोजी कहते हैं।

बालककी उमर छः अथवा आठ मास होनेसे यथोक्त विधिके अनुसार उसे थोड़ा थोड़ा करके अन्न खिलावे। पीछे वयोवृद्धिके अनुसार उसकी मात्रा बढ़ाते जाय।

धर्मशास्त्रमें भी बालकका छठाँ या आठवाँ मास ही अन्नप्राशनका विहितकाल निर्दिष्ट हुआ है। बालकको गोदमें ले कर उसे मिष्टान्नादि द्वारा सुखी करे, कभी भी तर्जनादि द्वारा भयभीत न करे। निद्रित अवस्थामें सहसा न जगावे और जब तक स्वयं उठ कर बैठ न सके, तब तक बैठानेकी चेष्टा न करे। गोद पर बिठाने अथवा सुलाने और औषधादि प्रयोग करनेके सिवा अन्य समयमें अत्यंत रोदन न करावे।

बालकके इच्छानुसार अर्थात् जिससे उसका मन हमेशा प्रसन्न रहे, उन विषयमें विशेष यत्न करना आवश्यक है। क्यों कि, मनके प्रफुल्ल रहनेसे ही शरीर की दिनों दिन वृद्धि होती है। वायु, रौद्र, विद्युत्, वृष्टि, धूम, अग्नि, जल, उच्च और निम्न स्थानसे हमेशा बचाये रहे।

तैलाभ्यङ्ग, उत्सादन, स्नान, नेत्राञ्जन, कोमल वस्त्र और मृदु अनुलेपन इनसे ही बालकके लिये हितकर है। बालकको आठ वर्षके बाद अस्त्रका प्रयोग करावे। सोलह वर्षसे पहले विरेचन देना उचित नहीं। (भावप्र०) (सुश्रुत शारीरस्थान दशम अध्यायमें इसका विशेष विवरण लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां नहीं लिखा गया।)

बालकके शरीरकी मेधा, बल और बुद्धि बढ़ानेके लिये भिन्न भिन्न चार प्रकारके योग निर्दिष्ट हुए हैं। इन सब योगोंका नाम प्राश है। बालकको इनमेंसे एक योगका सेवन कराना कर्त्तव्य है। प्रथमयोग सुवर्णचूर्ण, कुष्ठ मधु घृत और वच। द्वितीय ब्राह्मी, शङ्खपुष्पी, मधु, घृत और सुवर्ण। तृतीय अर्कपुष्पी, मधु घृत सुवर्णचूर्ण और वच; चतुर्थ सुवर्णचूर्ण, कैटर्य, [illegible], दूर्वा घृत और मधु। (सुश्रुत शा० १० अ०)

(पु०) बलति प्राणान् बलति संवृणोतीति वा वल-ण। ४ [illegible] गन्धद्रव्यविशेष, खस, बेला। पर्याय—हिरुद, बल, [illegible], कुन्तल, कुम्भ, निशाकर, [illegible]। ५ पंचवर्ष शिशु, पांचवर्षका बच्चा, लड़का। ६ अप्राप्तव्यवहार, नाबालिग। ७ करिवालधि, हाथीकी दुम। ८ [illegible], [illegible]। ९ पञ्चवर्षीय हाथी, पांच वर्षका हाथी।

१० पुच्छ, दुम। ११ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। १२ किसी पशुका बच्चा। १३ वह जिसको ज्ञान न हो, नासमझ आदमी। (त्रि०) १४ मूर्ख, नासमझ। १५ जो सयाना न हो, जो पूरी बाढ़को न पहुँचा हो। १६ जिसे उगे या निकले हुए थोड़ी ही देर हुई हो।

बाल (हिं० स्त्री०) १ कुछ अनाजों के पौधोंके डंठलका वह अग्र भाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं। २ एक प्रकारकी मछली।

बाल (फा० पु०) [illegible]।

बालक (सं० पु०) बाल स्वार्थे कन्। १ ह्रीबेर, सुगन्धबाला। २ अङ्गुलीयक, अंगूठा। ४ लड़का, पुत्र। ५ शिशु, थोड़ी उमरका बच्चा। ६ अबोध व्यक्ति, अनजान आदमी। ७ हाथीका बच्चा। ८ घोड़ेका बच्चा। ९ वलय, कङ्गन। १० केश, बाल। ११ हाथी तथा घोड़े की दुम।

बालकताई (हिं० स्त्री०) १ बाल्यावस्था। २ लड़कपन, नासमझी।

बालकपन (हिं० पु०) १ बालक होनेका भाव। २ लड़कपन, नासमझी।

बालकप्रिया (सं० स्त्री०) बालकानां प्रिया ६-तत्। १ इन्द्रवारुणी। २ कदली, केला। (त्रि०) ३ बालक प्रियमात्र।

बालकदास—गदाली राजवंशके एक पुरुष, पार्वतीदासके पुत्र। १८६० ई०में ये विद्रोही हिन्दुओंके हाथसे मारे गये।

बालकराम—वैद्यमहोत्सव टीकाके प्रणेता।

बालककवि—वदूंकरसमञ्जरी नामक अलङ्कार ग्रन्थके रचयिता।

बालकाण्ड (सं० पु०) रामायणका वह भाग जिसमें रामचन्द्रजीके जन्म तथा बाललीला आदिका वर्णन है।

बालकाल (सं० पु०) बाल्यावस्था, बचपन।

बालकी (हिं० स्त्री०) कन्या, पुत्री।

बालकुन्दावरोह (सं० पु०) बालरोगाधिकारोक्त अवलेह भेद।

बालकेलि (सं० पु०) बालानां केलिः ६-तत्। लड़कोंका खेल।

वालकृष्ण—कई एक संस्कृत ग्रन्थकर्त्ताओंके नाम। यथा—१ पञ्चश्लोकिताजिक प्रणेता। २ मुदितराघवके रचयिता। ३ हरिभक्तभास्करोदयके प्रणेता। कोई कोई इन्हें वालचन्द्र भी कहते हैं। ४ होमविधानके रचयिता। ५ दत्तसिद्धान्तमञ्जरीके प्रणेता। ये जलहनीट करयशीय देवभट्टके पुत्र थे। ६ पञ्चश्लोकी और उसकी टीकाके प्रणेता। ७ अलङ्कारसारके प्रणेता। ८ ऋग्वेददेवताक्रमके रचयिता। ९ तर्कटीकान्यायबोधिनीकार। १० तैत्तिरीयसंहिता भाष्यकार। ११ प्रयोगसारके प्रणेता। ये गोकुल ग्रामवासी थे। १२ प्रशस्ति प्रकाशिका नामक ग्रन्थके रचयिता, ब्रह्मानन्दके शिष्य। १३ नन्द पण्डितकी तत्त्वमुक्तावली नामक टीकाके प्रणेता। १४ सप्तसंस्थ प्रयोगके प्रणेता, महादेवके पुत्र। १५ शिवोत्कर्षप्रकाशके प्रणेता। १६ श्रौतस्मार्त्तविधिके रचयिता। १७ जम्बूसरवासी यादवके पुत्र, रामकृष्णके पौत्र, नारायणके प्रपौत्र। इन्होंने जातककौस्तुभ, जैमिनिसूत्रभाष्य, ताजिककौस्तुभ, योगिनीदशाक्रम आदि ग्रन्थ और त्रिवेणीस्तोत्र, नारायणस्तोत्र, महागणपतिस्तोत्र, यन्त्रोद्धार, शङ्करस्तोत्र, शिवस्तोत्र और संक्रान्तिनिर्णय आदि कई एक पुस्तकें लिखी हैं। १८ कादम्बरीविषयपदविवृत्तिके प्रणेता। ये वेङ्कट रङ्गनाथदीक्षितके पुत्र थे। १९ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली प्रकाशके रचयिता। इन्होंने अपने पुत्र महादेवभट्ट दिनकरके लिये उक्त ग्रन्थकी रचना की।

वालकृष्ण (सं० पु०) उस समयके कृष्ण जिस समय वे छोटी अवस्थाके थे, वाल्यावस्थाके कृष्ण।

वालकृष्णत्रिपाठी-गुणमञ्जरीके प्रणेता, काशीरामके पुत्र।

वालकृष्णदास—शङ्कराचार्यप्रणीत ऐतरेयोपनिषद्भाष्य और तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यके टीकाकार।

वालकृष्णदीक्षित—१ सिद्धान्तमुक्तावलीयोजना और सेवाफलवृत्ति टिप्पनी नामक ग्रन्थके प्रणेता। ये लालूभट्ट नामसे प्रसिद्ध थे। २ वल्लभाचार्यकृत सेवाकौमुदीकी निवन्धविवृत्तियोजना नामकी टीका, निर्णयार्णव और सुबोधिनी नामक भागवतके १०म स्कन्धकी टीकाके प्रणेता।

वालकृष्णपायगुप्त—उपाहृतितत्त्व चित्तमीमांसागूढार्थप्रकाशिका और राक्षसकाव्य टीका 'काशिका' नामक तीन ग्रन्थके रचयिता। ये वालमभट्ट नामसे प्रसिद्ध थे।

वालकृष्णभट्ट—१ श्रौतप्रायश्चित्त नामक काव्यके प्रणेता। २ विद्वत्भूषण-काव्यके प्रणेता। ये अभिनशके थे। इनका जीवनकाल १६१० ई० माना जाता है।

वालकृष्ण भारद्वाज—तिथिनिर्णय नामक ग्रन्थके रचयिता।

वालकृष्णमिश्र—मानवश्रौतसूत्रवृत्तिके प्रणेता, विद्यानाथके पुत्र।

वालकृष्णानन्द—द्राविड़वासी एक संस्कृतज्ञ पण्डित। इन्होंने श्रीधराचार्य, स्वयम्प्रकाश, शिवराम, गोपाल, पुरुषोत्तम और पूर्णानन्द आदिसे शिक्षा प्राप्त की थी। ईशावास्योपनिषद्, काठकोपनिषद्, केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद् और प्रश्नोपनिषद् आदि भाष्य तथा प्रणवार्थनिर्णय भिक्षुसूत्र और भाष्यवार्त्तिक आदि ग्रन्थ इन्हींके बनाये हुए हैं।

वालकेलि (सं० स्त्री०) १ लड़कोंका खेल, खिलवाड़। २ बहुत ही साधारण या तुच्छ काम।

वालकेशी (सं० स्त्री०) तृणविशेष। एक प्रकारकी घास।

वालकोट—पञ्जाबप्रदेशके हजारा जिलान्तर्गत एक नगर। यह नयनसुख नदीके वायें किनारे अवस्थित है। नौशेरावासीके साथ यहांके अधिवासियोंका विस्तृत व्यवसाय चलता है।

वालकोट—मध्यप्रदेशके दमोह जिलेके पार्श्वस्थभूभागस्थ एक नगर। यह प्राचीर और परिखादि परिवेष्टित तथा दुर्ग द्वारा सुरक्षित है। १८५७ ई०में यहांके लोदा अधिवासियोंने विद्रोहमें साथ दिया था। उसी समय अंगरेजीसेनाने यहांके प्राचीन दुर्गको तहस नहस कर डाला।

वालक्रिया (सं० स्त्री०) वालकके योग्य क्रिया।

वालक्रीडन (सं० क्ली०) वालस्य क्रीडन, क्रीड़ भावे-ल्युट्। लड़कोंके खेल।

वालक्रीडनक (सं० पु०) वालाना क्रीडनक क्रीडनद्रव्य। १ कपर्दक, कौड़ी। वालक कौड़ी ले कर खेलते हैं, इसीसे इसका नाम क्रीडनक पड़ा है। २ वे सव द्रव्य जिनसे छोटे छोटे वच्चे खेला करते हैं।

वालक्रीडा (सं० स्त्री०) वालस्य क्रीडा। लड़कोंके खेल और काम।

वालखडी (हिं० पु०) वह हाथी जिसमें कोई दोष हो।

बालखिल्य (सं० पु०) मुनिविशेष। ब्रह्माके रोमकूपसे इन लोगोंकी उत्पत्ति हुई है। ये सभी ऋषि अंगूठेके बराबर हैं। इनकी संख्या साठ हजार है। (भाग० विष्णुपु०) सूर्यके रथके आगे चलते हैं। मार्कण्डेयपुराणमें लिखा है, कि क्रतुकी भार्या सन्नतिसे साठ हजार बाल-खिल्यगण उत्पन्न हुए जो सबके सब ऊर्द्ध्वरेता हैं।

बालग्रहापरिहार—शिशु देखो।

बालगञ्ज—आसाम प्रदेशके श्रीहट्ट जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २४° ३०' ३५" उ० तथा देशा० ९१° ५७' १५" पू०के मध्य कुशियारा नदीके किनारे अवस्थित है। इस नदी द्वारा यहांसे चावल, पटसन, सेमलकी रुई आदि की बहुतायतसे भिन्न भिन्न स्थानोंमें रफ्तनी होती है।

बालगर्भिणी (सं० स्त्री०) प्रथमगर्भवती, वह स्त्री जिसने पहले पहल गर्भधारण किया हो।

बालगोपाल (सं० पु०) बालः शिशुमूर्त्तिधरो गोपालः। १ श्रीकृष्णकी बालमूर्त्ति।

"क्षीरपयोनिधिपुत्तलिकारं हास्यकटाक्षकलानिधिसारं।
हारमनोहरनूपुरपादं तं प्रणमामि च बालगोपालम्॥"

२ परिवारके लड़के लड़कियां आदि, बाल बच्चे।

बालगोविन्द—पूर्वबिहारके एक राजा, राजा मदनपालके पुत्र। इन्होंने १८६ दिनोंमें राज्य किया। उनके समयमें लक्ष्मणावतीके राजा मानसिंहकी अभ्यर्थना की थी।

बालग्रह (सं० पु०) बालानां बालकानां ग्रहः। बालकोंके ग्रहविशेष।

"बालग्रहा अनाचारात् पीडयन्ति शिशुं यतः।
तस्मात्तेभ्यो रक्षितव्यो बालः प्रयत्नतः॥ (सुश्रुत)"

अनाचार करने पर बालग्रह बालकोंको सताता है इस लिये उनकी रक्षा करनी चाहिये।

बालग्रह नौ हैं यथा—स्कन्द, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका और नैगमेय। इनमें कितने स्त्री और पुरुष हैं।

(इसका सविस्तर विवरण सुश्रुतमें देखो)

बालग्रहके आक्रमणका कारण—जिस घरमें देवपूजा, पितृकार्य, देवता ब्राह्मण व अतिथि सत्कार नहीं होता तथा जो शौचाचाररहित, कुत्सित व्यवहारमें लिप्त रहता है और जिनके घरमें फूटा कांसेका बरतन रहता है उन लोगोंके घरमें ग्रहोंका उपद्रव होता है। यह बालकोंके ग्रहका आक्रमण होने पर ग्रहोंकी पूजा करनी पड़ती है। पूजासे ग्रह सन्तुष्ट होते हैं। जैसे बालकोंका प्रतिपालन करना चाहिये वैसा न कर अतिप्रचार या अशौचाचार करने तथा मङ्गलाचार न करनेसे बालक भीत या पीड़ित होते हैं, तब ग्रहगण उनके शरीरमें प्रविष्ट हो जाते हैं। बालककी देहमें ग्रहोंके लक्षण विकास होने पर शान्त्यर्थ उपायका प्रयोग करना चाहिये।

बालग्रहसे पीड़ितके सामान्य लक्षण—ग्रहपीड़ित बालक कभी उद्विग्न और कभी त्रासयुक्त हो रोता है। नख, दन्तद्वारा निज तथा धात्रीको विदारण करता है। ऊर्द्ध्वकी ओर ऊपर और नीचे दृष्टि, दन्तघर्षण, आर्त्तनाद और ओष्ठ दंशन, आहारमें अनिच्छा, कृशता, बलह्रास, देहकी मलिनता, रात्रिजागरण, हृदयकम्पन, पुनः पुनः वमन, और न खाना, शोथ, स्वरभङ्ग, अतीसार और शरीरमें मत्स्य और रक्तके समान गन्ध आती है।

बालग्रहपीड़ितके विशेष लक्षण—दोनों नेत्र स्फीत, देहमें शोणितगन्ध, स्तनोंसे द्वेष, मुख टेढ़ा, किसी एक पलक स्थिर, उद्विग्नता, अश्रुकणोंमें भारीपन, थोड़ा थोड़ा रोना, मुट्ठी बांधना, मलमें गाढ़ापन आदि लक्षण स्कन्दग्रहजन्य होने पर होते हैं।

स्कन्दापस्मारके द्वारा पीड़ित होने पर कभी अचेतन, कभी सचेतन, हाथपैर कंपाना, मलमूत्र निकलना, जंभाईके साथ आवाज करना, मुंहसे फेनोद्गार आदि लक्षण होते हैं।

शकुनिग्रहसे पीड़ित होने पर अङ्गोंमें शिथिलता, भयसे चमकना, शरीरमें फफोले और दुर्गन्ध, सर्वत्र विविध रक्त और दाहपाकविशिष्ट घाव सर्वाङ्गमें पीड़ा, आदि लक्षण होते हैं।

रेवती ग्रहसे पीड़ित होने पर मुख हरितवर्ण, देह अतिशय पाण्डु या श्यामवर्ण, ज्वर, मुखपाक, सर्वाङ्गमें वेदना और कानमें मल आदि लक्षण होते हैं।

पूतनाग्रह पीड़ितके सर्वाङ्ग शिथिल, दिन और रात्रि

में स्वच्छन्द निद्रा न आना, पतला दस्त आना, देहमें काकके तुल्य गंध आना, वमन, लोमहर्षण तथा तृष्णा आदि लक्षण होते हैं।

अन्धपूतनाग्रहाभिभूत होने पर स्तनोंमें द्वेष, अतीसार, कास, हिक्का, वमन, ज्वर, सतत विवर्ण और शोणित गंध आदि लक्षण होते हैं।

शीतपूतनाग्रहसे पीडित होने पर, उद्विग्न, अतिशय कम्प, रोदन, अवसन्नभावसे निद्रा, अन्तकूजन, अङ्ग शैथिल्य आदि लक्षण होते हैं। मुखमण्डिकाग्रहसे पीडितके अंग म्लान, हस्तपाद और वदन रक्तवर्ण, बहुभोजी, उदरशिराओंसे आवृत्त, उद्वेग और मूत्रकी सी गंध आदि लक्षण होते हैं। नैगमेयग्रहसे पीडित होने पर फेनेका वमन, देहका मध्य भाग विनमित, उद्वेग विलाप, ऊर्द्ध्वदृष्टि, ज्वर, शरीरमें चर्बीकी सी गंध आना आदि लक्षण होते हैं।

बालक स्तब्धभावापन्न, स्तनद्वेषी और बारबार मुह्यमान होने तथा रोगके सम्पूर्ण लक्षण प्रकट होने पर रोगी शीघ्र ही प्राण त्याग करता है। ऐसा न होने पर रोग साध्य है। रोगकी परवाह न करनेसे रोग आराम नहीं होता इसलिये उसकी प्रथमावस्थासे ही चिकित्सा करनी चाहिये। शिशुको पवित्र गृहमें रख पुराने घीका मर्द्दन करना तथा घरमें सरसों फैलाना चाहिये। रोगीके पास सर्वगन्धा औषधिके बीज और गंधमाल्योंसे अग्निमें घृतका हवन करना चाहिये।

इन सम्पूर्ण ग्रहोंकी चिकित्सा यों लिखी है—स्कन्दग्रहसे पीडित बच्चेको वातघ्न वृक्षका क्वाथ, या ऐसे वृक्षकी जडका क्वाथके साथ पाक और सर्वगंधा, सुरामण्ड और कैटर्य आदि द्रव्योंको डाल मर्द्दन करना प्रशस्त है। देवदारु, रास्ना, मधुरवृक्ष इनका क्वाथ और दूधके साथ घृत पाक करके पिलाना चाहिये। सरसों, सांपकी केंचुल और ऊंट, बकरी, गो आदिके रोमोंका धुआं देना चाहिये। सोमलता, इन्द्रवल्ली, शमी, विल्वकंटक और मृगादनी आदिको ग्रथित कर अङ्गमें धारण करना चाहिये। निशाकालमें स्नान कर चत्वर पर स्कन्दग्रहकी पूजा करनी चाहिये। रक्त माल्य, रक्तपताका, गंध, विविध प्रकार भक्ष्य, घण्टावाद्य, नूतनशाली, यव, कुक्कुट आदिकी बलि देनी चाहिये।

मन्त्र—"तपसा तेजसाञ्चैव यशसा वपुसा तथा।
निधानं योऽव्ययोदेवः स ते स्कन्दः प्रसीदतु॥
ग्रहसेनापतिर्देवो देवसेनापतिर्विभुः।
देवसेनारिपुहरः पातु त्वां भगवान् गुहः॥
देवदेवस्य महतः पावकस्य च यः सुतः।
गङ्गोमाकृत्तिकानाञ्च स ते शर्म प्रयच्छतु॥
रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तचन्दनभूषितः।
रक्तदिव्यवपुर्देवः पातु त्वां क्रौंचसूदनः॥"

स्कन्दापस्मारकी चिकित्सा—विल्व, शिरीष, गोलोमी और सुरसादिके क्वाथका परिषेचन, सर्वगंधाके साथ तिलतैलमर्द्दन, क्षीरवृक्ष और काकल्यादि गणका क्वाथ मिलाकर घृत या दुग्धका पान कराना तथा वच और हिंगुका आलेपन करना चाहिये। गृध्र और उल्लूका पुरीष, केश, हाथीके नख, गायका घी और बालोंका धूपमें प्रयोग करना चाहिये। अनन्ता, विम्बी, मर्कटी तथा कुक्कुटी आदि शरीरमें धारण करना चाहिये। चतुष्पथमें स्कन्दापस्मार ग्रहकी पूजा कर पक्के या कच्चे मांस, प्रसन्न रुधिर, दुग्ध और भूतान्नकी बलि देनी चाहिये। मन्त्र—

"स्कन्दापस्मारसञ्ज्ञो यः स्कन्दस्य दयितः सखा।
विशाखसञ्ज्ञश्च शिशोः शिवोऽस्तु विकृताननः॥"

शकुनिग्रहकी चिकित्सा—शकुनि ग्रहजन्य रोगमें वेत, आम, कपित्थ आदिका क्वाथ परिषेचन, कषाय और मधुर द्रव्यसमूहको मिला कर गर्म तैलका मर्द्दन, यष्टिमधु, खस खसकी जड, वाला, श्यामालता, उत्पल, पद्मकाष्ठ, लोध, प्रियंगु, मजीठ और गैरिक आदिका प्रदेह प्रयोग करना चाहिये। व्रणरोगमें कहा हुआ चूर्ण और धूप, विविध प्रकारका पथ्य, आदि प्रयोज्य है। शतमूली, मृगादनी, पर्याय नागदन्ती, निदिग्धिका, लक्ष्मणा, सहदेवा, बृहती आदि शरीरमें धारण करना चाहिये। यथोक्त प्रकारसे इसकी पूजा अवश्य कर्त्तव्य है।

रेवतीग्रहकी चिकित्सा—अश्वगन्धा, अजशृङ्गी, शारिवा, पुनर्नवा, मुद्गानि, माषानि, भूमिकुष्माण्ड, आदि क्वाथका परिषेचन, धव, अश्वकर्ण, अर्जुन, धातकी, तिन्दुक, कुष्ठ या सर्जरसके साथ पाक कर तैलका मर्दन,

चारोंग्नादि गणके योगसे पका हुआ तेल, कुल्थी, तिलचूर्ण और सर्षप आदिका प्रदेह करना चाहिये। गृध्र उल्लू, आदिके पुरीष और जौ आदिके धूपका नाम सर्वेद प्रयोग करनेसे सद्यक्षोभ शान्त होता है।

गोरा दूध, नारियल, दही आदिसे गोपालके घरमें निवेदनपूर्वक पूजा करे और गोष्ठसङ्गम पर जाकर और बालकको स्नान करा कर इस ग्रहको इस प्रकार स्तुति करे।

"नानावस्त्रधरा देवी चित्रमाल्यानुलेपना।
चलत्कुण्डलिनी श्यामा रेवती ते प्रसीदतु॥
लम्बा करालिनी विनता तथैव बहुपुत्रिका।
रेवती सततं माता सा ते देवी प्रसीदतु॥"

पूतनाग्रहकी चिकित्सा—कपोतवङ्का, अरलुक, वरुण, पारिभद्रक, आस्फोतिका आदि काथका परिषेचन, वच, हरीतकी, गोलोम, हरिताल, मनःशिला, कूठ आदिसे पक्व तैलमर्दन, गुणकारी, मधुरक, कुष्ठ, तालिश, खदिर, चंदन आदिसे पाक किया हुआ घृत, वच, कुष्ठ, हिङ्गु, गिरिकदम्ब, इलायची और हरेणु आदिका धुआं देना चाहिये। गन्धनाकुली, कुम्भिका, वर्णनदी हड्डी और घृत का धूप प्रयोग करना चाहिये। काकादनी, चित्रफला, बिम्बी और गुञ्जा आदि शरीरमें धारण करना चाहिये।

मत्स्य, अन्न, कुल्माष और मांस इन सबको शरावेमें रख अपराह्नके समय घरमें निवेदन कर यथाविधान पूजा करनी आवश्यक है। पश्चात् उच्छिष्ट जलसे बालकको स्नान कराना चाहिये। स्नानके बाद स्तुतिमन्त्र—

"मलिनाम्बरसंवीता मलिना रूक्षमूर्धजा।
शून्यागारस्थिता देवी दारकं पातु पूतना॥
दुर्दर्शना सुदुर्गन्धा करालमेघकालिका।
भिन्नागारस्थिता देवी दारकं पातु पूतना॥"

अन्धपूतना ग्रहकी चिकित्सा—तिक्त वृक्षोंके पत्तोंका क्वाथ, सुरा, कांजी, कुष्ठ, हरिताल, मनःशिला और धूना द्रव्योंसे पकाया हुआ तैल अभ्यङ्ग, पिप्पली मूल, मधुरवर्ग, मधु, [illegible] और घृतको इन सब द्रव्योंसे पकाये हुए दूधका पान, मछलीके सार [illegible] प्रदेह और चक्षुओंमें शीतल प्रदेह ही विधेय है। मुर्गेका पुरीष, केश, चर्म, सर्पनिर्मोक और [illegible] पुरानी

प्रयोग करना चाहिये। कुक्कुटी, मर्कटी, बिम्बी, अनन्ता आदि द्रव्य शरीरमें धारण करना चाहिये। कच्चे तथा पक्के मांसको या शोणितको चतुष्पथमें निवेदन कर घरमें बच्चेको सर्वगन्धादि जलसे स्नान करा कर स्तुति मंत्र पढ़े—

"कराला पिङ्गला मुण्डा कषायाम्बरवासिनी।
देवी बालमिमं प्रीता संरक्षतु अन्धपूतना॥"

शीतपूतनाग्रहकी चिकित्सा—कपित्थ, सुवहा, बिम्बी, बिल्व, प्रचीबल, नंदी, भल्लातकी इन सब, कम्बु, गोमूत्र, मोथा, देवदारु, कुष्ठ और सर्जरस इन सबको तैलको पका कर उससे अभ्यंग करना चाहिये। इसके सिवाय रोहिणी, धूना, खदिर तथा पलाश और अर्जुन इन सबके काथमें भी दूधके साथ सिद्ध करके घृत पान करना चाहिये। गृध्र और उल्लूका पुरीष, यव, सर्पनिर्मोक, निम्बपत्र और यष्टिमधु आदि धूपदानके लिये प्रयोज्य हैं। लता, गुञ्जा और काकादनी अङ्गमें धारण करना विधेय है। मूंगके साथ अन्न पाक कर उससे नदीके किनारे शीतपूतनाको तर्पण करना चाहिये। मद्य और रुधिरका देवीको उपहार दे जलाशयके किनारे बालकको यह मन्त्र पढ़ स्नान कराये।

मंत्र—"मुद्गौदनाशना देवी सुरासोणितपायिनी।
जलाशयालया देवी पातु त्वां शीतपूतना॥"

मुखमण्डिकाकी चिकित्सा—कपित्थ, बिल्व, तर्कारी, वाशी, श्वेत वरणपत्र, कुबेराक्षी आदि द्रव्योंके काथका सेक, भृङ्गराज, अजगन्धा, हरिद्रा आदिके रसमें वस्त्र द्वारा तैल पका कर अभ्यंजन करे। रास्ना, गुग्गुल, पुनर्नवा, मधुर और स्वादु आदि द्रव्योंसे सिद्ध किये हुये घृतका पान करना चाहिये। वच, धूना, कुष्ठ और चोरक धूप देना चाहिये। चाष, कपित्थ और सर्पं आदिकी जिह्वा अङ्गमें धारण करना, वलि, पुष्प, माल्य, अन्न पान, मनःशिला, पैंगल और क्षीरान्न तथा पुरोडास, गोष्ठमें उपहार देकर उसमें शिशुको स्नान करा कर मंत्र पढ़े—

"अलंकृता रूपवती सुभगा कामरूपिणी।
गोष्ठमध्यालयरता पातु त्वां मुखमण्डिका॥"

नैगमेयग्रहकी चिकित्सा—बिल्व, अग्निमथ, छोटी करज आदिका काथ, सुरा, काजी और धान्याम्लका सेक, प्रिय गु, सरल काष्ठ, अनतमूल, सोंया गोमूत्र, दधिमण्ड और अम्लकाजी आदि द्रव्योंसे पके हुये तैलका अभ्यङ्ग, दश मूलका काथ, दूध, मधुरगण, खर्जूर मस्तक आदिसे घीको पका पिलावे। हरीतकी, जटिला और वच, हिंगु, कुष्ठ, भल्लातक और अजमोदा आदिसे धूप बनावे। रात्रिमें जब लोग सो जाये तब उल्लू और गृध्रका पुरीष निर्मित धूप, तिल, तण्डुल और देवीकी पूजा करे या वट वृक्ष मूलमें बालकको स्नान करा यह मत पढे।

"अजाननश्चलाक्षिभ्रू कामरूपी महायशाः।
बाल पालयिता देवो नैगमेयोऽभिरक्षतु॥"

(सुश्रुत उत्तरत० २७—३७ भावप्र० बालरोगाधि०)

रावणकृत बालतंत्रमें बालग्रहका विशेष विवरण लिखा हुआ है। विस्तार हो जानेके भयसे इसको नहीं लिखा गया। अति सक्षेपसे इसका वर्णन यहा किया गया है। ये ग्रह बालकोंको जन्मसे १२ वर्ष तक पीडित करते हैं। उपरको अवस्थावालेको ग्रहोंकी शङ्का नहीं रहती।

प्रथम दिन, प्रथम मास, या प्रथम सालमें जब नन्दा नामक मातृका बालकों पर आक्रमण करती है तब ज्वर और आखे बद हो जाती हैं, शरीर सदा दुःखित रहता है जिससे बालक शयन नहीं कर सकता। सदा रोता ही रहता है दूध अच्छा नहीं लगता और घुनट शब्द करता रहता है।

द्वितीय दिन, मास या वर्षमें सुनन्दा नामक मातृकाके बालक पर आक्रमण करनेमे उपरकी तरह लक्षण प्रकाश होते हैं।

तृतीय दिन, मास या वर्षमें पूतना नामकी मातृकाके आक्रमण करनेसे ज्वर, चक्षुउन्मीलन, गात्रोद्वेजन, मुष्टियद्ध, क्रन्दन, ऊर्द्ध निरीक्षण आदि लक्षण होते हैं।

चतुर्थ दिन, मास या वर्षमें मुखमण्डिका नामकी मातृका बालक पर आक्रमण करती है। जिससे प्रथम ज्वर, फिर चक्षुउन्मीलन, ग्रीवानमन और रोदन आदि लक्षण होते हैं। बच्चेको नींद नहीं आती और दूध नहीं पीता।

पचम दिन, मास या वर्षमें कटपूतना नामकी मातृका बच्चोंको ग्रहण करती हैं उससे ज्वर होते हैं। छठे दिन, मास या वर्षमें शकुनिका नामकी मातृका बच्चोंको पीडा देती है। उस समय बच्चोंके शरीरमें पीडा और ऊर्द्ध निरीक्षण आदि लक्षण होते हैं।

सप्तम दिन, मास व वर्षमें शुष्करेवती नामकी मातृका बालकोंको पीडित करती है तब ज्वर गात्रोद्वेजन एव मुष्टिबद्धता आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

अष्टम दिन, मास या वर्षमें अर्यकामातृका और नवम मास, दिन या वर्षमें स्वस्तिकामातृका, दशवें दिन, मास या वर्षमें निर्ऋतामातृका, ग्यारहवे दिन, मास या वर्षमें कामुकामातृका आक्रमण करती है। इन सब मातृकाओंके आक्रमण करनेसे इनकी पूजा या बलि देवे जिससे ये सतुष्ट हो बालकका परित्याग करे। ऐसा करनेसे बच्चा अपने आप ही अच्छा हो जावेगा।

रावणकृत बालतत्र देखो।

बालग्राम—शोणपाके पश्चिम दिग्वर्त्ती एक प्राचीन ग्राम।

बालगौरीतीर्थ (स ० क्ली०) एक तीर्थका नाम।

बालचन्द्र (स ० पु०) बालेन्दु।

बालचतुर्भद्रिका (स ० स्त्री०) औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—मोथा, पीपल, अतीस, कर्कटशृङ्गी आदिके चूर्णको मधुके साथ सेवन करानेसे छोटे छोटे बच्चोंका ज्वरातिसार, श्वास, काश और वमि दूर हो जाती है।

बालचरित (स ० क्ली०) बालकोंका खेल।

बालचर्य (स ० पु०) बालस्य बालकस्येव चर्या यस्य। १ कार्त्तिकेय। २ बालकोका चरित।

बालचर्या (स ० पु०) बालकका कार्य।

बालचाङ्गेरीघृत—औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—घृत ४ सेर, आमलकका रस ४ सेर, बकरीका दूध ४ सेर, चूर्णके लिये कैथ, त्रिकटु, सैन्धव, धराक्रान्ता, उत्पल, सुगन्धवाला, बेलसोंठ, धवफूल और मोचरस कुल मिला कर १ सेर। इस घृतका अच्छी तरह पाक कर सेवन करनेसे अतिसार और ग्रहणीरोग जाता रहता है।

बालचिकित्सा (स० स्त्री०) बालस्य चिकित्सा। १ बालककी चिकित्सा। २ कौमारभृत्या, दायागरी।

बालछड (हि ० स्त्री०) जटामासी।

बालजीवन (स ० क्ली०) बालस्य जीवन। दुग्ध। बालक-

जिसे पूज सी कर अनिष्टपात करता है, इसीसे पूतना यह नाम रखा गया है।

बालटी (अं० स्त्री०) एक प्रकारकी डोलची। इसका पेंदा चिपटा और गोल गोलाईकी ओर घेरा तथा ऊपर की ओर अधिक चौड़ा होता है। इसमें ऊपरकी ओर उठानेके लिये एक दस्ता भी लगा रहता है।

बालतनय (सं० पु०) बालानि तनयानि पत्राणि यस्य। १ खदिर वृक्ष, खैरका पेड़। २ बालक पुत्र। (त्रि०) ३ बालतनययुक्त।

बालतन्त्र (सं० क्ली०) बालाय बालकरक्षार्थं तन्त्रमुपाय शास्त्रं वा। गर्भिणीकी, बालकोंके लालन पालन आदिकी विद्या, धायगीरी। पर्याय—कुमारभृत्या, गर्भिणीव्यपदेश।

बालतृण (सं० क्ली०) बालं नवमानं तृणं। नवतृण, हरी घास।

बालद (हिं० पु०) बैल।

बालत्व (सं० क्ली०) बालस्य भाव त्व। बालकता, बालकका भाव।

बालदलक (सं० पु०) बालानि क्षुद्राणि दलानि यस्य वा बाल इव क्षुद्रं दलं यस्य, तत स्वार्थे कन्। खदिर वृक्ष, खैरका पेड़।

बालदियावाडो—पूर्णिया जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५° ३१ उ० तथा देशा० ८७ ९१' पू०के मध्य अवस्थित है। यहां १७५६ ई०में बड़े ख्वार सिराज उद्दौला के साथ पूर्णियाके नवाब शौकत जङ्गका एक युद्ध हुआ था। युद्धमें पूर्णिया राज पराजित और निहत हुए थे।

बालदीक्षित—कन्यानिर्णयप्रयोग, जातकर्मप्रयोग, उत्सर्गप्रमाण, बौधायनप्रयोग, बौधायनश्राद्ध, बौधायन सूत्राभिषेक, श्राद्धसंग्रह, बौधायनीयमन्त्रसंग्रह और सांकल्पिकश्राद्धप्रयोग आदि ग्रन्थोंके प्रणेता थे। १८वीं शताब्दीके मध्यभागमें जीवित थे।

बालदीक्षित नारायण अग्निहोत्री ...
ये वैद्यनाथ नारायणके पुत्र थे।

बालधि (सं० पु०) बालाः बैला धीयन्ते ...
पूँछ। ...

बालधी (हिं० स्त्री०

बालना (हिं० क्रि०) १ जलाना। २ प्रज्वलित करना, रोशन करना।

बालनाथ—पञ्जाब प्रदेशके झेलमसे जलालपुर जानेके रास्ते पर अवस्थित एक पहाड़ शैल। इस पर्वतके शिखर पर बालनाथ नामक सूर्यमन्दिर प्रतिष्ठित था। अभी उसकी जगह गोरख नाथ नामक शिवलिङ्ग स्थापित है।

बालपत्र (सं० पु०) बालं [redacted] क्षुद्र पत्रं यस्य। १ खदिर वृक्ष, खैरका पेड़। २ यवास, जवासा। (क्ली०) ३ नूतन पत्र, कोंपल। ४ दुरालभा।

बालपत्रक (सं० पु०) बालपत्र स्वार्थे कन्। खदिरवृक्ष, खैरका पेड़।

बालपन (हिं० पु०) १ बालक होनेका भाव। २ बालक होनेकी अवस्था, लड़कपन।

बालपर्णी (सं० स्त्री०) मेथिका, मेथी।

बालपाश्या (सं० स्त्री०) बालपाशे केशपाशे साधु यत्। सीमन्तिकस्थित स्वर्णादिनिर्मित परिष्कार, स्त्रियोंके बालोंमें पहननेका प्राचीन कालका एक प्रकारका आभूषण।

बालपुष्पिका (सं० स्त्री०) बालानि क्षुद्राणि पुष्पाणि यस्याः सा, स्वार्थे कन्, टापि अत इत्वम्। यूथिका, जूही।

बालपुष्पी (सं० स्त्री०) यूथिका, जूही।

बालबच्चे (हिं० पु०) सन्तान, औलाद।

बालबुद्धि (सं० स्त्री०) १ बालकोंकी सी बुद्धि, थोड़ी समझ। (त्रि०) २ जिसकी बुद्धि बालकोंकी सी हो, बहुत ही थोड़ी बुद्धिवाला।

बालबोध (सं० स्त्री०) देवनागरी लिपि।

बालभैषज्य (सं० स्त्री०) जो बालकोंकी ... बहुत ...।

बालब्रह्मचारी (सं० पु०) वह जिसने बाल्यावस्थासे ही ब्रह्मचर्य धारण किया हो, बहुत ही छोटी उमरसे ब्रह्मचर्य रखनेवाला।

(सं० पु०) शुक्लपक्षके द्वितीयाका चन्द्रमा।

सं० पु०) बालभारती नामक ग्रन्थ ...

... जिस किसी ग्रन्थमें

... कविता

बालभाव ( स ० पु० ) बालस्य भाव । बालकका भाव, लड़कपन ।

बालभृत्य ( स ० पु० ) बाल्यकालसे दास ।

बालभैषज्य ( स ० क्ली० ) बाल भैषज्य, बालस्य शिशो र्भैषज्य । १ रसाञ्जन । २ बालककी औषध ।

बालभोग ( स ० पु० ) १ वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण आदिकी मूर्त्तियों के सामने प्रातःकाल रखा जाता है । २ जलपान, कलेवा ।

बालभोज्य ( स ० पु० ) बालाना भोज्य । चणक, चना ।

बालम ( हिं० पु० ) १ पति, स्वामी । २ प्रणयी, प्रेमी ।

बालमऊ—१ अयोध्याप्रदेशके हरदोई जिलान्तर्गत एक परगना । सम्राट् अकबरशाहके राजत्वके शेषभागमें बलाई कुर्मी नामक कोई हिन्दू चन्देलराजाओं का अत्याचार सह न सका और माडीके कच्छवह क्षत्रियगणकी शरणमें पहुंचा । मुसलमानोंके आक्रमणसे उन्हें बचानेके कारण कच्छवह राजाओं ने उसे यह वनविभाग पारितोषिकमें दिया । बलाईने जंगलको काट छाट कर इसे आबादी बना दिया । पीछे उसने बलाई खेरा नामका जो ग्राम बसाया वही बालमऊ नगर नामसे प्रसिद्ध हुआ । बालमऊ नगरसे इस परगनेका नामकरण हुआ है । चौदह ग्राम ले कर यह परगना सगठित है । यहाके ८ ग्रामो में कच्छवह क्षत्रिय, २में निकुम्भ, ३में सुकुल ब्राह्मण, १में कायस्थ और शेष १ ग्राममें कश्मीरी ब्राह्मणो का वास है ।

२ उक्त परगनेका एक नगर । वाणिज्य व्यापारमें यह नगर विशेष उन्नतिशील है ।

बालमति ( स० स्त्री० ) बालबुद्ध, लड़कोंकी-सी अक्ल ।

बालमत्स्य (सं० पु०) मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी छिलका रहित छोटी मछली । इसका मांस पथ्य और बलकारक माना जाता है ।

बालमुकुन्द ( सं० पु० ) १ बाल्यावस्थाके श्रीकृष्णजी । २ श्रीकृष्णकी शिशुकालकी वह मूर्त्ति जिसमें वे घुटनोंके बल चलते हुए दिखाए जाते हैं ।

बालमुकुन्द आचार्य—सोनाचरणचामरके प्रणेता ।

बलमूल ( सं० क्ली० ) कच्ची मूली ।

बालमूलक ( सं० क्ली० ) अचिरजात कोमलमूलक, छोटी और कच्ची मूली । यह वैद्यकके अनुसार कटु, उष्ण, तिक्त, तीक्ष्ण तथा श्वास, अर्श, क्षय और नेत्ररोग आदिका नाशक, पाचक तथा बलवर्द्धक मानी जाती है ।

बालमूलिका (स० स्त्री०) आम्रातक वृक्ष, आमड़ेका पेड़ ।

बालमृग ( स० पु० ) हरिणादि मृगवर्ग ।

बालम्भट्ट—१ गोत्रनिर्णयके प्रणेता । २ सूर्यगतरत्नटीकाके रचयिता । ३ आह्निकसारमञ्जरीके प्रणेता, विश्वनाथ भट्ट दातारके पुत्र ।

बालयज्ञोपवीतक ( स० क्ली० ) बाल यज्ञोपवीत तत स्वार्थे कन् । उपवीतविशेष । पर्याय—उरश्छद, पञ्च वट ।

बालरस (स० पु०) रसौषधविशेष । इसकी प्रस्तुत प्रणाली—पारा ८ तोला, गन्धक ८ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला, इन्हें लोहेके बरतनमें घोट कर केशराज, भृङ्गराज, निसोथ प्रत्येकके रसमें सात बार भावन दें । पीछे सरसोंके समान गोली बनावे । इसका सेवन करनेसे बालकके त्रिदोष, जीर्णज्वर, कास और शूल आदि रोग जाते रहते हैं ।

अन्यविध—पारद ८ तोला, गन्धक ८ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला इन्हें लोहेके बरतनमें घोट कर केशराज, भृङ्गराज, निसोथ, पान, काकमोचिका, सूर्यावर्त्त, पुनर्णवा, मेरुपर्णी और श्वेत अपराजिता प्रत्येकके रसमें सात बार भावन दे । पीछे उसमें ४ तोला मिर्चचूर्ण डाल कर सरसोंके समान गोली बनावे । अनुपान पानका रस रखा गया है । इसका सेवन करनेसे त्रिदोषसम्भूत सुदारुण ज्वर, कास आदि समस्त रोग प्रशमित होते हैं ।

( रसेन्द्रसारस० बालरोगाधि० )

बालराज ( स ० क्ली० ) बाल स्वल्पोऽपि राजते इति राज पचाद्यच् । १ वैदूर्यमणि । ( पु० ) २ बालकृष्ण ।

बालरूप—एक निबन्धकार । वाचस्पतिमिश्रने इनका उल्लेख किया है ।

बालरोग ( स ० पु० ) बालस्य रोग । बालककी व्याधि, बालककी पीड़ा । इसके विषयमें भावप्रकाशमें यों लिखा है—

बालरोगके निदान और लक्षण—गुरु भोजन, विषमाशन और आहार विहारसे धात्रीके शरीरमें वातादि दोष

सिर्फ दूध पी कर जीवनधारण करता है, इसीसे दूधका यह नाम रखा गया है।

बाल्टी (अ० स्त्री०) एक प्रकारकी डोलची। इसका पेदा चिपटा और घेरा नीचेकी ओर संकरा तथा ऊपरकी ओर अधिक चौड़ा होता है। इसमें ऊपरकी ओर उठानेके लिये एक दस्ता भी लगा रहता है।

बालतनय (सं० पु०) बालानि नवोद्गतपत्राणि तनया इव यस्य। १ खदिर वृक्ष, खैरका पेड़। २ बालक पुत्र। (त्रि०) ३ बालतनययुक्त।

बालतन्त्र (सं० क्ली०) बालाय बालकरक्षार्थं तन्त्रमुपाय शास्त्र वा। गर्भिणीचर्या, बालकोंके लालन पालन आदिकी विद्या, दायागरी। पर्याय—कुमारभृत्या, गर्भिण्यवेक्षण।

बालतृण (सं० क्ली०) बाल नवजात तृण। नवतृण, हरी घास

बालद (हि० पु०) बैल।

बालत्व (सं० क्ली०) बालस्य भाव त्वं। बालकता, बालकका भाव।

बालदलक (सं० पु०) बालानि दलानीव दलानि यस्य वा बाल इव क्षुद्र दल यस्य, तत स्वार्थे कन्। खदिर-वृक्ष, खैरका पेड़।

बालदियावाड़ी—पूर्णिया जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५ २१´ उ० तथा देशा० ८७ ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां १७५६ ई०में बङ्गेश्वर सिराज उद्दौलाके साथ पूर्णियाके नवाब सौकत जङ्गका एक युद्ध हुआ था। युद्धमें पूर्णिया-राज पराजित और निहत हुए थे।

बालदीक्षित—अग्निष्टोमप्रयोग, आग्रयणप्रयोग, उपाकर्मप्रमाण, बौधायनप्रयोग, बौधायनप्रवर्ग्य, बौधायन महाग्निचयन, वाजपेयप्रयोग, श्रौतपरिभाषासंग्रहवृत्ति और सावित्रचयनप्रयोग आदि ग्रन्थोंके प्रणेता। ये १८वीं शताब्दीके मध्यभागमें जीवित थे।

बालदीक्षित पायगुन—भक्तितरङ्गिणी-टीकाके प्रणेता। ये वैद्यनाथ पायगुनके पुत्र थे।

बालधि (सं० पु०) बाला केशा धीयन्तेऽत्र, बाल धा कि। केशयुक्त लाङ्गूल, दुम।

बालधि (हि० स्त्री०) दुम, पूंछ।

बालना (हि० क्रि०) १ जलाना। २ प्रज्वलित करना, रोशन करना।

बालनाथ—पञ्जाब प्रदेशके झेलमसे जलालपुर जानेके रास्ते पर अवस्थित एक गण्ड शैल। इस पर्वतके शिखर पर बालनाथ नामक सूर्यमन्दिर प्रतिष्ठित था। अभी उसकी जगह गोरख नाथ नामक शिवलिङ्ग स्थापित है।

बालपत्र (सं० पु०) बाल इव क्षुद्रं पत्र यस्य। १ खदिर वृक्ष, खैरका पेड़। २ यवास, जवासा। (स्त्री०) ३ नूतन पत्र, कोंपल। ४ दुरालभा।

बालपत्रक (सं० पु०) बालपत्र स्वार्थे कन्। खदिरवृक्ष, खैरका पेड़।

बालपन (हि० पु०) १ बालक होनेका भाव। २ बालक होनेकी अवस्था, लड़कपन।

बालपर्णी (सं० स्त्री०) मेथिका, मेथी।

बालपाश्या (सं० स्त्री०) बालपाशे केशसमूहे साधु यत्। १ सीमन्तिकास्थित स्वर्णादिरचित पट्टिका, सिरके बालोंमें पहननेका प्राचीन कालका एक प्रकारका आभूषण।

बालपुष्पिका (सं० स्त्री०) बालानि क्षुद्राणि पुष्पाणि यस्या तत. स्वार्थे कन्, टापि अतइत्व। यूथिका, जूही।

बालपुष्पी (सं० स्त्री०) यूथिका, जूही।

बालबच्चे (हि० पु०) सन्तान, औलाद।

बालबुद्धि (सं० स्त्री०) १ बालकोंकी सी बुद्धि, थोड़ी अक्ल। (वि०) २ जिसकी बुद्धि बच्चोंकी सी हो, बहुत ही थोड़ी बुद्धिवाला।

बालबोध (सं० स्त्री०) देवनागरी लिपि।

बालबोधक (सं० स्त्री०) जो बालकोंकी समझमें आ जाए, बहुत सहज।

बालब्रह्मचारी (सं० पु०) वह जिसने बाल्यावस्थासे ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो, बहुत ही छोटी उम्रसे ब्रह्मचर्य रखनेवाला।

बालभ (सं० पु०) सुदन्तगज, सुन्दर दांतवाला हाथी।

बालभद्रक (सं० पु०) बालोऽपि भद्र इव, तत स्वार्थे कन्। विषभेद, एक प्रकारका विष जिसे शम्भव भी कहते हैं।

बालभारत (सं० क्ली०) १ अमरचन्द्ररचित संक्षिप्त भारत-कथा। २ राजशेखर रचित एक नाटक।

बालभाव (स० पु०) बालस्य भाव। बालकका भाव, लड़कपन।

बालभृत्य (स० पु०) बाल्यकालसे दास।

बालभैषज्य (स० क्लो०) बाल भैषज्य, बालस्य शिशो भैषज्य। १ रसाञ्जन। २ बालककी औषध।

बालभोग (स० पु०) १ वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण आदिकी मूर्त्तियों के सामने प्रातःकाल रखा जाता है। २ जलपान, कलेवा।

बालभोज्य (स० पु०) बालाना भोज्य। चणक, चना।

बालम (हिं० पु०) १ पति, स्वामी। २ प्रणयी, प्रेमी।

बालमउ—१ अयोध्याप्रदेशके हरदोइ जिलान्तर्गत एक परगना। सम्राट् अकबरशाहके राजत्वके शेषभागमें बलाई शुर्मी नामक कोई हिन्दू चन्देलराजाओं का अत्याचार सह न सका और माडीके कच्छवाह क्षत्रियगणकी शरणमें पहुंचा। मुसलमानोंके आक्रमणसे उन्हें बचानेके कारण कच्छवाह राजाओं ने उसे यह वनविभाग पारितोषिकमें दिया। बलाईने जंगलको काट छांट कर इसे आबादी बना दिया। पीछे उसने बलाई खेरा नामका जो ग्राम बसाया वही बालमऊ नगर नामसे प्रसिद्ध हुआ। बालमऊ नगरसे इस परगनेका नामकरण हुआ है। चौदह ग्राम ले कर यह परगना सगठित है। यहांके ८ ग्रामो में कच्छवाह क्षत्रिय, २में निकुम्भ, ३में सुकुल ब्राह्मण, १में कायस्थ और शेष १ ग्राममें कश्मीरी ब्राह्मणो का वास है।

२ उक्त परगनेका एक नगर। वाणिज्य व्यापारमें यह नगर विशेष उन्नतिशील है।

बालमति (स० स्त्री०) बालबुद्धि, लड़कोंकी सी अक्ल।

बालमत्स्य (सं० पु०) मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी छिलका रहित छोटी मछली। इसका मांस पथ्य और बलकारक माना जाता है।

बालमुकुन्द (सं० पु०) १ बाल्यावस्थाके श्रीकृष्णजी। २ श्रीकृष्णकी शिशुकालकी वह मूर्त्ति जिसमें वे घुटनोंके बल चलते हुए दिखाए जाते हैं।

बालमुकुन्द आचार्य—सीताचरणचामरके प्रणेता।

बालमूल (सं० क्ली०) कच्ची मूली।

बालमूलक (सं० क्ली०) अचिरजात कोमलमूलक, छोटी और कच्ची मूली। यह वैद्यकके अनुसार कटु, उष्ण, तिक्त, तीक्ष्ण तथा श्वास, अर्श, क्षय और नेत्ररोग आदि का नाशक, पाचक तथा बलवर्द्धक मानी जाती है।

बालमूलिका (स० स्त्री०) आम्रातक वृक्ष, आमड़ेका पेड़।

बालमृग (स० पु०) हरिणादि मृगगर्भ।

बालम्भट्ट—१ गोत्रनिर्णयके प्रणेता। २ सूर्यशतकटीकाके रचयिता। ३ आह्निकसारमञ्जरीके प्रणेता, विश्वनाथ भट्ट दातारके पुत्र।

बालयज्ञोपवीतक (स० क्ली०) बाल यज्ञोपवीत तत स्वार्थे कन्। उपवीतविशेष। पर्याय—उरङ्कट, पञ्च वट।

बालरस (स० पु०) रसौषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—पारा ८ तोला, गन्धक ८ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला, इन्हें लोहेके बरतनमें घोट कर केशराज, भृङ्गराज, निसोथ प्रत्येकके रसमें सात बार भावन दे। पीछे सरसोंके समान गोली बनावे। इसका सेवन करनेसे बालकके त्रिदोष, जीर्णज्वर, कास और शूल आदि रोग जाते रहते हैं।

अन्यविध—पारद ८ तोला, गन्धक ८ तोला, स्वर्ण-माक्षिक ४ तोला इन्हें लोहेके बरतनमें घोट कर केशराज, भृङ्गराज, निसोथ, पान, काकमोचिका, सूर्यावर्त्त, पुनर्णवा, मेकपर्णी और श्वेत अपराजिता प्रत्येकके रसमें सात बार भावन दे। पीछे उसमें ४ तोला मिर्चचूर्ण डाल कर सरसोंके समान गोली बनावे। अनुपान पानका रस रखा गया है। इसका सेवन करनेसे त्रिदोषसम्भूत सुदारुण ज्वर, काश आदि समस्त रोग प्रशमित होते हैं। (रसेन्द्रसारस० बालरोगाधि०)

बालराज (स० क्ली०) बालः स्वल्पोऽपि राजते इति राज पचाद्यच्। १ वैदूर्यमणि। (पु०) २ बालकश्रेष्ठ।

बालरूप—एक निबन्धकार। वाचस्पतिमिश्रने इनका उल्लेख किया है।

बालरोग (स० पु०) बालस्य रोग। बालककी व्याधि, बालककी पीड़ा। इसके विषयमें भावप्रकाशमें यों लिखा है—

बालरोगके निदान और लक्षण—गुरु भोजन, विषमाशन और आहार विहारसे धात्रीके शरीरमें वातादि दोष

सिर्फ दूध पी कर जीवनधारण करता है, इसीसे दूधका यह नाम रखा गया है।

बालटी (अं० स्त्री०) एक प्रकारकी डोलची। इसका पेंदा चिपटा और घेरा नीचेकी ओर संकरा तथा ऊपरकी ओर अधिक चौड़ा होता है। इसमें ऊपरकी ओर उठानेके लिये एक दस्ता भी लगा रहता है।

बालतनय (सं० पु०) बालानि नवोद्गतपत्राणि तनया इव यस्य। १ खदिर वृक्ष, खैरका पेड़। २ बालक पुत्र। (त्रि०) ३ बालतनययुक्त।

बालतन्त्र (सं० क्ली०) बालाय बालकरक्षार्थं तन्त्रमुपाय-शास्त्रं वा। गर्भिणीचर्या, बालकोंके लालन पालन आदिकी विद्या, दायागरी। पर्याय—कुमारभृत्या, गर्भिण्यवेक्षण।

बालतृण (सं० क्ली०) बाल नवजात तृण। नवतृण, हरी घास

बालद (हि० पु०) बैल।

बालत्व (सं० क्ली०) बालस्य भावः त्व। बालकता, बालकका भाव।

बालदलक (सं० पु०) बालानि दलानीव दलानि यस्य वा बाल इव क्षुद्र दल यस्य, तत स्वार्थे कन्। खदिर-वृक्ष, खैरका पेड़।

बालदियावाड़ो—पूर्णिया जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५ २१ उ० तथा देशा० ८७ ४१ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां १७५६ ई०में वङ्गेश्वर सिराज उद्दौला के साथ पूर्णियाके नवाब सकत जङ्गका एक युद्ध हुआ था। युद्धमें पूर्णिया-राज पराजित और निहत हुए थे।

बालदीक्षित—अत्यग्निष्टोमप्रयोग, आग्रयणप्रयोग, उपा-कर्मप्रमाण, बौधायनप्रयोग, बौधायनप्रवर्ग्य, बौधायन महाग्निचयन, वाजपेयप्रयोग, श्रौतपरिभाषासग्रहवृत्ति और सावित्रचयनप्रयोग आदि ग्रन्थोंके प्रणेता। ये १८वीं शताब्दीके मध्यभागमें जीवित थे।

बालदीक्षित पायगुप्त—भक्तितरङ्गिणी-टीकाके प्रणेता। ये वैद्यनाथ पायगुप्तके पुत्र थे।

बालधि (सं० पु०) बाला केशा धीयन्तेऽत्र, बाल धा कि। केशयुक्त लाङ्गूल, दुम।

बालधि (हि० स्त्री०) दुम, पूंछ।

बालना (हि० क्रि०) १ जलाना। २ प्रज्वलित करना, रोशन करना।

बालनाथ—पञ्जाब प्रदेशके झेलमसे जलालपुर जानेके रास्ते पर अवस्थित एक गण्ड शैल। इस पर्वतके शिखर पर बालनाथ नामक सूर्यमन्दिर प्रतिष्ठित था। अभी उसकी जगह गोरक्ष नाथ नामक शिवलिङ्ग स्थापित है।

बालपत्र (सं० पु०) बाल इव क्षुद्र पत्र यस्य। १ खदिर वृक्ष, खैरका पेड़। २ यवास, जवासा। (स्त्री०) ३ नूतन पत्र, कोंपल। ४ दुरालभा।

बालपत्रक (सं० पु०) बालपत्र स्वार्थे कन्। खदिरवृक्ष, खैरका पेड़।

बालपन (हि० पु०) १ बालक होनेका भाव। २ बालक होनेकी अवस्था, लड़कपन।

बालपर्णी (सं० स्त्री०) मेथिका, मेथी।

बालपाश्या (सं० स्त्री०) बालपाशे केशसमूहे साधु यत्। १ सीमन्तिकास्थित स्वर्णादिरचित पट्टिका, स्त्रियोंके बालोंमें पहननेका प्राचीन कालका एक प्रकारका आभूषण।

बालपुष्पिका (सं० स्त्री०) बालानि क्षुद्राणि पुष्पाणि यस्या तत स्वार्थे कन्, टापि अतइत्व। यूथिका, जूही।

बालपुष्पी (सं० स्त्री०) यूथिका, जूही।

बालबच्चे (हि० पु०) सन्तान, औलाद।

बालबुद्धि (सं० स्त्री०) १ बालकोंकी सी बुद्धि, थोड़ी अक्ल। (वि०) २ जिसकी बुद्धि बच्चोंकी सी हो, बहुत ही थोड़ी बुद्धिवाला।

बालबोध (सं० स्त्री०) देवनागरी लिपि।

बालबोधक (सं० स्त्री०) जो बालकोंकी समझमें आ जाय, बहुत सहज।

बालब्रह्मचारी (सं० पु०) वह जिसने बाल्यावस्थासे ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो, बहुत ही छोटी उम्रसे ब्रह्मचर्य रखनेवाला।

बालभ (सं० पु०) सुदन्तगज, सुन्दर दांतवाला हाथी।

बालभद्रक (सं० पु०) बालोऽपि भद्र इव, तत स्वार्थे कन्। विषभेद, एक प्रकारका विष जिसे आमय भी कहते हैं।

बालभारत (सं० क्ली०) १ अमरचन्द्ररचित संक्षिप्त भारत-कथा। २ राजशेखर रचित एक नाटक।

वालभाव (स० पु०) वालस्य भाव। वालकका भाव, लड़कपन।

वालभृत्य (स० पु०) वाल्यकालसे दास।

वालभैषज्य (स० क्ली०) वाल भैषज्य, वालस्य शिशो भैषज्य। १ रसाञ्जन। २ वालककी औषध।

वालभोग (स० पु०) १ वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषतः वालकृष्ण आदिकी मूर्त्तियोंके सामने प्रातःकाल रखा जाता है। २ जलपान, कलेवा।

वालभोज्य (स० पु०) वालाना भोज्य। चणक, चना।

वालम (हिं० पु०) १ पति, स्वामी। २ प्रणयी, प्रेमी।

वालमउ—१ अयोध्याप्रदेशके हरदोई जिलान्तर्गत एक परगना। सम्राट् अकवरशाहके राजत्वके शेषभागमें वलाई कुर्मी नामक कोई हिन्दू चन्देलराजाओंका अत्याचार सह न सका और माडीके कच्छवह क्षत्रियगणकी शरणमें पहुंचा। मुसलमानोंके आक्रमणसे उन्हें वचानेके कारण कच्छवह राजाओंने उसे यह वनविभाग पारितोषिकमें दिया। वलाईने जंगलको काट छांट कर इसे आवादी वना दिया। पीछे उसने वलाई खेरा नामका जो ग्राम वसाया वही वालमऊ नगर नामसे प्रसिद्ध हुआ। वालमऊ नगरसे इस परगनेका नामकरण हुआ है। चौदह ग्राम ले कर यह परगना सगठित है। यहांके ८ ग्रामोंमें कच्छवह क्षत्रिय, २में निकुम्भ, ३में सुकुल ब्राह्मण, १में कायस्थ और शेष १ ग्राममें कश्मीरी ब्राह्मणोंका वास है।

२ उक्त परगनेका एक नगर। वाणिज्य व्यापारमें यह नगर विशेष उन्नतिशील है।

वालमति (स० स्त्री०) वालबुद्धि, लड़कोंकी सी अक्ल।

वालमत्स्य (सं० पु०) मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी छिलका रहित छोटी मछली। इसका मांस पथ्य और वलकारक माना जाता है।

वालमुकुन्द (सं० पु०) १ वाल्यावस्थाके श्रीकृष्णजी। २ श्रीकृष्णकी शिशुकालकी वह मूर्त्ति जिसमें वे घुटनोंके वल चलते हुए दिखाए जाते हैं।

वालमुकुन्द आचार्य—सीताचरणचामरके प्रणेता।

वलमूल (स० क्ली०) कच्ची मूली।

वालमूलक (सं० क्ली०) अचिरजात कोमलमूलक, छोटी और कच्ची मूली। यह वैद्यकके अनुसार कटु, उष्ण, तिक्त, तीक्ष्ण तथा श्वास, अर्श, क्षय और नेत्ररोग आदिका नाशक, पाचक तथा वलवर्द्धक मानी जाती है।

वालमूलिका (स० स्त्री०) आम्रातक वृक्ष, आमड़ेका पेड़।

वालमृग (स० पु०) हरिणादि मृगवर्ग।

वालभट्ट—१ गोत्रनिर्णयके प्रणेता। २ सूर्यशतकटीकाके रचयिता। ३ आह्निकसारमञ्जरीके प्रणेता, विश्वनाथ भट्ट दातारके पुत्र।

वालयज्ञोपवीतक (स० क्ली०) वाल यज्ञोपवीत तत स्वार्थे कन्। उपवीतविशेष। पर्याय—उरङ्कट, पञ्चवट।

वालरस (स० पु०) रसौषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—पारा ८ तोला, गन्धक ८ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला, इन्हें लोहेके वरतनमें घोट कर केशराज, भृङ्गराज, निसोथ प्रत्येकके रसमें सात वार भावन दे। पीछे सरसोंके समान गोली वनावे। इसका सेवन करनेसे वालकके त्रिदोष, जीर्णज्वर, श्वास और शूल आदि रोग जाते रहते हैं।

अन्यविध—पारद ८ तोला, गन्धक ८ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला इन्हें लोहेके वरतनमें घोट कर केशराज, भृङ्गराज, निसोथ, पान, काकमोचिका, सूर्यावर्त्त, पुनर्णवा, भेकपर्णी और श्वेत अपराजिता प्रत्येकके रसमें सात वार भावन दे। पीछे उसमें ४ तोला मिर्चचूर्ण डाल कर सरसोंके समान गोली वनावे। अनुपान पानका रस रखा गया है। इसका सेवन करनेसे त्रिदोषसम्भूत सुदारुण ज्वर, काश आदि समस्त रोग प्रशमित होते हैं।

(रसेन्द्रसारस० वालरोगाधि०)

वालराज (स० क्ली०) वाल स्वल्पोऽपि राजते इति राज पचाद्यच्। १ वैदूर्यमणि। (पु०) २ वालकश्रेष्ठ।

वालरूप—एक निवन्धकार। वाचस्पतिमिश्रने इनका उल्लेख किया है।

वालरोग (स० पु०) वालस्य रोग। वालककी व्याधि, वालककी पीड़ा। इसके विषयमें भावप्रकाशमें यों लिखा है—

वालरोगके निदान और लक्षण—गुरु भोजन, विषमाशन और आहार विहारसे धात्रीके शरीरमें वातादि दोष

बालसरस्वती—बालसरस्वतीय काव्यरचयिता। इनका दूसरा नाम मदन भी था।

बालसौंगड़ा (हिं० पु०) शुक्नोका एक पेच॥

बालसात्म्य (सं० क्ली०) दुग्ध, दूध।

बालसूरि—हेमाद्रिमर्वप्रायश्चित्तके प्रणेता।

बालसूर्य (सं० क्ली०) बाल सूर्य इव। १ वैदूर्यमणि। २ प्रातःकालीन सूर्य, उदयकालके सूर्य।

बालसूर्यक (सं० क्ली०) बालसूर्य एव स्वार्थे कन्। वैदूर्यमणि।

बालस्थान (सं० क्ली०) १ बाल्यावस्था, लड़कपन। २ शिशुत्व।

बालहस्त (सं० पु०) बाला हस्त इव मक्षिकादीनां निरा रक्त स्यात्। १ बालधि, पूंछ। (त्रि०) बालानां केशानां हस्त समूह। २ केशसमूह।

बाला (सं० स्त्री०) बाला केशा इव पदार्था विद्यन्ते यस्याः, बाल 'अर्शआदित्वाच्' ततष्टाप्। नारिकेल, नारियल। २ हरिद्रा, हल्दी। ३ मल्लिकाभेद, बेलेका पौधा। ४ अलङ्कारभेद, एक प्रकारका कड़ा। ५ मेध्य, खैर। ६ त्रुटि, नुकसान। ७ घृतकुमारी, घी-कुआर। ८ ह्रीवेर। ९ अम्बष्ठा, ब्राह्मणीलता। १० नीलझिण्टी, नीली कट-सरैया। ११ एक वर्ष वयस्का गाय, एक वर्षकी अवस्थाका गाय। १२ षोडशवर्षीया स्त्री, बारह-तेरह वर्षसे सोलह-सत्तरह वर्ष तककी अवस्थाकी स्त्री। यह स्त्री ग्रीष्म और शरत्कालमें प्रशमनीया और हर्षदायिनी है। भावप्रकाशमें लिखा है, कि बालास्त्रीका सेवन करनेसे बलवृद्धि होती है।

"नित्य बाला सेव्यमाना नित्य वर्द्धयते बलं।"
(भावप्रकाश)

कन्यामात्रमें ही इस शब्दका प्रयोग देखा जाता है। पांच वर्षकी कन्याको भी बाला कहते हैं।

"पञ्चवर्षा स्मृताबाला" (हारीत २१५)

दो वर्षसे कम उमरवालीको भी बाला कहते हैं। इनकी मृत्यु पर उदकक्रिया और अग्निसंस्कार नहीं होता। इनकी मृतदेह जमीनमें गाड़ी जाती है।

"अजातदन्ता ये बाला ये च गर्भाद्विनिःसृताः।
न तेषामग्निसंस्कारो न पिण्ड नोदकक्रिया॥"
(गरुड़पु० १०७ अ०)

१३ पत्नी, भार्या। १४ स्त्री, औरत। १५ पुत्री, कन्या। १६ सुगन्धवाला। १७ सूक्ष्म एला, छोटी इला यची। १८ चीनी ककड़ी। १९ दश महाविद्याओंमेंसे एक महाविद्याका नाम। २० गेहूंकी फसलको नष्ट करनेवाली एक प्रकारकी कीड़ी। २१ एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें तीन रगण और एक गुरु होता है।

बाला (फा० पु०) ऊंचा, जो ऊपरकी ओर हो।

बालाई (हिं० स्त्री०) मलाई देखो।

बालाई (फा० वि०) १ ऊपरी, ऊपरका। २ निश्चत आय के सिवा।

बालाकि (सं० पु०) बलाकाया अपत्य बाह्वादित्वात् इञ्। (पा ४।१।९६) गार्ग्यऋषिभेद।

बालाकुप्पी (फा० स्त्री०) प्राचीनकालका एक प्रकारका दण्ड जो अपराधियोंको शारीरिक कष्ट पहुंचानेके लिये दिया जाता था। इसमें अपराधीको एक छोटी पीढ़ी पर, जो ऊंचे खंभेसे लटकती होती थी, बैठा देते थे। फिर उस पीढ़ीको रस्सीके सहारे ऊपर खींच कर एक दमसे नीचे गिरा देते थे। इसमें आदमीके प्राण तो नहीं जाते थे, पर उसे बहुत अधिक शारीरिक कष्ट होता था।

बालाक्षी (सं० स्त्री०) बाला केशा इव अक्षिसदृश पुष्पं यस्या। केशपुष्पावृक्ष। पर्याय—मानसी, दुर्गपुष्पी, केशधारिणी।

बालाखाना (फा० पु०) मकानके ऊपरका कमरा, कोठे के ऊपरकी बैठक।

बालाघाट—दाक्षिणात्यके कर्णाटक प्रदेशके प्राचीन विजय नगर राज्यके अन्तर्गत एक जिला। जो जिला घाट पर्वतमालाके ऊपर अवस्थित था उसे बालाघाट और जो नीचे था उसे पयनघाट कहते थे। यह अक्षा० ८ १०' से ८' १६' उ० तथा देशा० ७७ २०' से ८ १०' पू०के मध्य विस्तृत था। स्थानीय अधिवासी बेलारी, कर्णूल और कड़ापा जिलेको आज भी बालाघाट कहते हैं।

बालाघाट—मध्यप्रदेशके नागपुर विभागके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २१ १९' से २२' २४' उ० तथा देशा० ७९' ३९' से ८१ ३' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरि माण ३१३२ वर्गमील है। इसके उत्तरमें मण्डला जिला,

पूर्वमें विलासपुर और दुर्ग जिला, दक्षिणमें भण्डार और पश्चिममें सिवनी है। बुढ़नपुर इसका विचार सदर है।

यह जिला साधारणतः तीन भागोंमें विभक्त है। दक्षिण अर्थात् पहला भाग समतल और सबसे निम्न है। दूसरा माननालुक नामक उपत्यका-भूमि है और तीसरे भागमें रायगढबोछिया नामक अधित्यकाप्रदेश पड़ता है। पहले विभागमें वेणगङ्गा, बाघ, देव, घिसरी और शोण नदी बहती है। १ला और २रा भाग वनमालासे समाच्छन्न है। ३रे भागकी सर्वोच्च पर्वतभूमि समुद्रपृष्ठसे ३ हजार फुट ऊंचा है। इस पार्वत्यप्रदेशके स्थान विशेषमें घना जंगल नजर आता है। देवनदीके किनारे कटङ्ग नामक एक प्रकारका बांस उत्पन्न होता है जिसकी ऊंचाई १०० फुटके करीब होगी। ऐसा सुन्दर बांसका जंगल और कहीं भी देखनेमें नहीं आता। इस वन्य विभागमें गोंड और बैगा जाति अधिक संख्यामें रहती है। किसी किसी झरनेमें सोना पाया जाता है। अलावा इसके लोहा, सुरमा, गेरूमट्टी और अबरक भी बहुतायतसे पाया जाता है।

महाराष्ट्र आक्रमणके पहले इस स्थानके दक्षिण भागका कोई इतिहास नहीं मिलता, किन्तु उसके सौ वर्ष पहलेसे ही नागपुरके भोंसले सरदार इस प्रदेशका शासन करते आ रहे थे। मराठोंकी अमलदारीके पहले उत्तरी उच्चभूमि पर गढ़ामण्डलके राजवंश प्रतिष्ठित थे। प्रस्तर निर्मित बौद्धमन्दिरसे यहांकी पूर्वसमृद्धिकी कल्पना की जाती है। लक्ष्मण नामक किसी व्यक्तिके उद्योग और अध्यवसायसे १८१०ई०में नाना स्थानोंसे लोग आ कर यहां बस गये। परसवाड़ा और तन्निकटवर्त्ती ३० ग्राम अभी श्यामल शस्यक्षेत्रसे पूर्ण हो इस उपनिवेशकी श्रीवृद्धिका परिचय देते हैं।

इस जिलेमें बालाघाट नामक १ शहर और १०७५ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ३ लाखसे ऊपर है। विद्याशिक्षामें इस जिलेका स्थान बारहवां पड़ता है। अभी यहां १ मिडिल इङ्गलिश स्कूल, ३ वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और ६२ प्राइमरी स्कूल है। स्कूलके अलावा ६ अस्पताल भी हैं।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २१ १९´ से २२ ५´ उ० तथा देशा० ७९ ३९´ से ८० ४५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६८७ वर्गमील और जनसंख्या प्राय २४९६१० है। इसमें बालाघाट नामका १ शहर और ५८२ ग्राम लगते हैं। इस तहसीलमें वेनगङ्गाके दोनों किनारे धान खूब उपजता है।

३ बालाघाट तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २१ ४९´ उ० तथा देशा० ८०´ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ६२२३ है। शहरमें १ मिडिल इङ्गलिश स्कूल, १ बालिका स्कूल और १ अस्पताल है।

बालाघाट—बेरार राज्यके अन्तर्गत एक पहाड़ी भूमि। यह अजेण्टा पर्वतके ऊपर अवस्थित है। दाक्षिणात्य अधित्यका भूमिकी यही सर्वोत्तर सीमा है।

बालाजी आवजी—महाराष्ट्रकेशरी छत्रपति शिवाजीकी शासनसभामें नियुक्त एक प्रभु-कायस्थ 'चिटनीस' अर्थात् मन्त्री। आप हरि रामाजीके पौत्र और आवजी हरिके पुत्र थे। आपके पिता पुश्तैनीसे हबसीराज-सरकारमें दीवानका कार्य करते थे। आवजी हरि जब जैजुरी में खण्डोबाकी पूजा करने गये थे, उसी समय हबसीराजकी मृत्यु हो गई। इससे उनके ज्ञाति शत्रुओंने अफवाह फैला दी, कि आवजी हरिकी पूजाके कारण ही राजाकी मृत्यु हुई है। इस पर राज्यकी तरफसे आवजी हरिको वंश सहित समुद्रमें डुबो देनेका आदेश हुआ। उनके तीनों पुत्र बालाजी आवजी, श्यामजी आवजी और चिमनाजी आवजी माताके साथ राजापुर बन्दर पहुचाये गये। यहां पर बालाजी आवजीके मामा विसजी शंकरने २५ होन मुद्रा दे कर चारोंको खरीद लिया। बालाजीकी माताने बड़े परिश्रमसे ५ होन मुद्रा परिशोध की। बादमें शिवाजीने बालक बालाजीके सुन्दर हस्ताक्षरों पर प्रसन्न हो कर अवशिष्ट २० होन मुद्रा दे कर इन्हें मोल ले लिया और १६४८ ई०में उन्हें अपने यहां चिटनीसी पद पर नियुक्त किया।

चिटनीस ( Secretary )का पद प्राप्त होनेके बादसे ही बालाजीको भाग्यलक्ष्मीने पकड़ा पाया। शिवाजीके कार्यमें इन्होंने अपना तन मन न्योछावर कर दिया। उनके सभी गुप्त कार्य बालाजीके द्वारा होते थे। अफजल खांकी हत्या, सम्भाजी और जीजीबाइकी मुक्ति, दिल्लीमें

शिवाजी और सम्भाजीके बन्दित्वमोचन तथा अंग रेजोंके साथ राज-कारणके उपलक्ष्में आप ही अपने मालिकके दाहिने हाथ बने थे। दिल्लीमें रहते हुए आप होने मिठाईकी डलियामें रख कर शत्रुके हाथसे शिवाजी और शम्भाजीकी रक्षा की थी।

उनकी सेवा, भक्ति और निष्ठा पर शिवाजी मुग्ध थे और इसी लिये उनका बालाजी पर विशेष स्नेह था। इनकी बिना सलाह लिये वे कोई भी काम न करते थे। इस तरह चटनीस आवजी धीरे धीरे सर्वाध्यक्ष हो गये। उधर मुख्य प्रधान मोरोपन्त पिंगले ईर्षावश इन्हे अप दस्थ करनेके अभिप्रायसे इनके छिद्र ढूढने लगे। चिट-नीस पुत्र आवजी बालाके उपनयन संस्कारके समय ब्राह्मण प्रवर मोरोपन्तने गडबड मचाई, कि कलिमें कोई क्षत्रिय नहीं है, इसलिये क्षत्रियोचित संस्कारमें कायस्थों-का अधिकार नहीं हो सकता। कुछ भी हो, बहुत वाद विवादके बाद बालाजीने पुत्रकी उपनयन क्रिया स्थगित कर दी। शिवाजीको मालूम होते ही उन्होंने काशीके पण्डितोंका अभिमत संग्रह करनेका आदेश दिया। उसके अनुसार बालाजीने काशीकी विद्वन्मण्डलीके सम्मतिपत्र संग्रह किये।

राज्याभिषेकके समय शिवाजीका भी उपनयनादि संस्कार नहीं हुए थे। बालाजी आवजीने विशेष उद्योग के साथ पण्डितप्रवर गागाभट्टकी शास्त्रीय युक्तिके अनु सार प्रौढ़ अवस्थामें शिवाजीका यज्ञोपवीत कराया और राज्याभिषिक्त किया। शिवाजीने प्रसन्न हो कर इन्हे पुश्तैनी 'चिटनीस' (*Chief Secretary*) पद प्रदान किया। शिवाजीके अभिषेकके बाद 'चिटनीस'-प्रवर बालाजीने अपने ज्येष्ठ पुत्र आवाजी बालाकी उपनयन क्रिया सम्पन्न की। इस उत्सवमें गागाभट्ट आदि बहुत से प्रसिद्ध पण्डित उपस्थित हुए थे और यथारीति कायस्थ प्रभुके संस्कारादि कराये थे।

इसके बाद सम्भाजीके राज्याधिकारको ले कर महा राष्ट्र राज्यमें फिर गडबडी मची। उसमें, बालाजी आवजी अन्यान्य मंत्रियोंके साथ इस मामलेमें शामिल न होने पर भी सम्भाजीके आदेशसे १६०३ शकाब्द (१६८१ ई०) में वे हाथीके पैरों तले दवा कर मरवा दिये गये।

बालाजी लक्ष्मण—खानदेशके एक महाराष्ट्री शासनकर्त्ता। १८०४ ई०में इन्होंने कोपरगावके सात हजार भीलोंको किसी बहानेमें डाल कर पकडवाया था और उनमेंसे अधिकांशको दो कूओंमें डलवाया था।

बालाजी बाजीराव—महाराष्ट्र राज्यके तीसरे पेशवा। आप १म पेशवा बाजीरावके पुत्र थे। बालाराव पण्डित प्रधानके नामसे ये जनसाधारणमें मशहूर थे। १७४० ई० में आप पिताके सिंहासन पर आरूढ हुए और १७६१ ई०में पानीपतकी लडाईमें मौजूद थे। इस युद्धमें इनके ज्येष्ठ पुत्र विश्वासराव मारे गये। आपके अन्य दो पुत्र मधुराव और नारायणरावको क्रमशः पेशवा पद प्राप्त हुआ। पेशवा देखो।

बालाजी विश्वनाथ—महाराष्ट्रराज्यमें पेशवा नामक ब्राह्मण वंशके प्रतिष्ठाता। पहले पहल आप कोङ्कणप्रदेशके एक ग्रामके पटवारी थे। वहांसे फिर यादववंशीय एक सरदार के अधीन काम करने लगे। यहीं पर इनकी गुप्त प्रतिभा विकसित हुई। महाराष्ट्र पति शम्भाजीके पुत्र शाहुके राज्यकालमें आप पेशवा पद पर नियुक्त हुये। इस समय ये राज्यके सर्वेसर्वा थे। १७२० ई०में इनकी मृत्यु होने पर प्रथम पुत्र बाजीराव पेशवाने राज्यका शासन किया था। पेशवा देखो।

बालाएडा—२४ परगनेके अन्तर्गत एक परगना। यह कल कत्तेके पूर्व और सुन्दरवनके उत्तरमें अवस्थित है। हाबरा, गोसाँईपुर, हादीपुर, नायाबाद, मानियापाड़ी, बेदारी, खाटरा जनार्दनपुर, चाँदपुर, हरिपुर, गोपालपुर आदि ग्राम यहांके प्रधान वाणिज्यस्थान हैं। हाबरा ग्राम में पीर गोराचाँदका प्रसिद्ध समाधिमन्दिर विद्यमान है।

बालादस्ती (फा० स्त्री०) १ अनुचित रूपसे हस्तगत करना, नामुनासिब तौरसे वसूल करना। २ बल प्रयोग, जबर दस्ती।

बालादित्य (सं० पु०) १ नवोदित सूर्य। २ काश्मीरके एक राजा। मगध और काश्मीर देखो।

बालापन (हिं० पु०) लड़कपन, बचपन।

बालापुर—१ बरारके अकोला जिलेका तालुक। यह अक्षा० २० १७´से २० ५५´उ० तथा देशा० ७६ ४१´७७´पू० के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १०१६७ है।

इसमें बालापुर, पातुर और बाडगाव नामके ३ शहर और १६२ ग्राम लगते हैं। यहांसे थोडी दूर पर अकबरके चौथे लडके सुलतान मुरादका बनाया हुआ राजप्रासाद भग्नावस्थामें पडा है।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २० ४० उ० तथा देशा० ७६ ५०´ पू० ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेके पारस स्टेशनसे ६ मील दूरमें अवस्थित है। मून नदी इसके बीच हो कर बह गई है। मुगलोंकी अमलदारीमें इलिचपुरके बाद इसी शहरमें सेनानिवास स्थापित हुआ था। बाला नामक देवीमन्दिरके सामने पहले यहा एक भारी मेला लगता था। यहा बालादेवीका मन्दिर रहनेके कारण ही इसका बालापुर नाम पडा है। आईन इ अकबरी ग्रन्थमें इस परगनेकी समृद्धिकी कथा उल्लिखित है। सम्राट् औरङ्गजेबके पुत्र आजमशाह यहा पर रहते थे। १७२१ ई०में निजाम उल्मुल्कने इस नगरके समीप मुगलसेनाको परास्त किया था। मेलघाट पहाडी दुर्गको छोड कर बालापुरका दुर्ग ही बेरारमें सबसे बडा है। शिलालिपिसे जाना जाता है, कि इलिचपुरके नवाब इस्माइल खांसे १७५७ ई०में यह दुर्ग बनाया गया था। १०३२ हिजरीमें निर्मित यहांकी जुमा मसजिद भग्नावस्थामें पडी है। नगरके दक्षिण नदी किनारे 'छतरी' नामक छत्रच्छत्रि अट्टालिका नगरकी शोभाको बढा रही है। प्रवाद है, कि सम्राट् आलमगीरके अनुचर राजा सवाई जयसिंहने यह छतरी बनवाई थी।

बालावर (फा० पु०) एक प्रकारका अंगरखा। इसमें चार कलिया और छ बन्द होते हैं। अँगरखा देखो।

बालामय (सं० पु०) बालस्य आमयः। बालरोग। बालरोग देखो।

बालायनि (सं० पु०) बालाया अपत्य तिकादित्वात् फिङ् (पा ४।१।१५४) बालाका अपत्य।

बालाराव—विख्यात नाना साहबके भाई, अयोध्याप्रदेशके सिपाही विद्रोहके एक नेता। तुलसीपुर पर्वतके नीचे इनके साथ अंगरेजोंकी मुठभेड हुई थी। युद्धमें हार खा कर ये अपने भाई नानाकी तरह जगलमें भाग गये। इनके भाग जानेसे ही अयोध्या प्रदेशमें विद्रोह शान्त हुआ और प्रायः डेढ लाख सशस्त्र विद्रोहीसेनाने अंगरेजोंकी वश्यता स्वीकार की।

बालारुण (सं० पु०) बालार्क, बालसूर्य।

बालारोग (हिं० पु०) नहरुआ रोग।

बालार्क (सं० पु०) बालः नवोदितोऽर्क। १ प्रातःकालीन सूर्य। यह सूर्यताप शरीरमें लगनेसे शरीरका अनिष्ट होता है।

"शुष्कमांस स्त्रियो वृद्धा बालार्कं स्तरुण दधि।
प्रभाते मैथुन निद्रा सद्य प्राणहराणि षट्॥"
(चाणक्य)

बालाश्म (सं० क्ली०) बालुका, बालू।

बालासिनोर—गुजरात प्रदेशके रेवाकान्थके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० २२ ५३´ से २३ १७´ उ० तथा देशा० ७३ १७´ से ७३ ४०´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १८९ वर्गमील है। इसके उत्तरमें मही कान्थ राज्य, पूर्वमें लूनावाद-राज्य, पश्चिम और दक्षिणमें कैरा जिला है। यहा माही नामकी नदी बहती है। कृषिकार्यमें कूपका जल काम आता है। यहांके सरदार मुसलमान हैं। 'बाबी' या द्वाररक्षक (१) इनकी उपाधि है। अंगरेजराज निर्दिष्ट राजनैतिक कर्मचारीकी सलाह ले कर ये हत्यापराधीको दण्ड देते हैं। राजस्व सवा लाख रुपया है जिनमेंसे १५५३६ रु० वृटिश सरकारको और ३०७८ रु० बडौदाके गायकवाडको करमें देने पडते हैं। सैन्यसंख्या ११७ है जिनमेंसे १६ घुडसवार हैं। नवाबको सरकारकी ओरसे ९ सलामी तोपें मिलती हैं। सलाबत् खांसे निम्न पांचवी पीढीमें शेरखां बाबीने १६६४ ई०में दिल्ली दरबारसे बालासिनोर और बीजापुरका शासनभार ग्रहण किया। पीछे जूनागढ राज्य भी उनके हाथ लगा। मृत्युके बाद बडे लडके बालासिनोरमें और छोटे जूनागढमें अधिष्ठित हुए। गुजरातमें महाराष्ट्र प्रभाव जम जानेसे (१७६८ ई०में) यहांके सरदारने पेशवा और गायकवाडराजकी अधीनता स्वीकार की। १८१८ ई०में पेशवा अधिकृत यह स्थान अंगरेजराजके पालिटिकल एजेण्टके शासनभुक्त हुआ।

---

(१) मुगल राजदरबारमें इन वंशके आदिपुरुष द्वाररक्षीका काम करते थे।

इस राज्यमें ६८ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े तीन हज़ारके करीब है। यहांकी जमीन बड़ी उपजाऊ है। ज्वार, धान, तेलहन और रुई काफी उपजती है। यहां १० स्कूल और २ अस्पताल हैं।

२ उक्त राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २२ ५६´ उ० तथा देशा० ७३´ २५´ पू०के मध्य शेरी नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ८५३० है। पत्थरकी दीवार शहरके चारों ओर दौड़ गई है, उसमें चार फाटक लगे हुए हैं। शहरके उत्तर एक उच्च स्थान पर नवाबका प्रासाद अवस्थित है। शहरसे तीन मील दूर एक पहाड़ी पर डुंगरिया महादेवके उद्देश्यसे अगस्त मासमें वार्षिक मेला लगता है।

बालाहिसार—काबुलके सीमान्त देशवर्त्ती एक नगर। इसे 'काबुलका द्वार भी कह सकते हैं। १८४१ ई०में यहां अंगरेजी-सेनाने आश्रय ग्रहण किया था। यहां शाहसुजा का राजप्रासाद और तोरणस्तम्भ है। जब पहले पहल अंगरेजोंने यहां सेनानिवास खोलना चाहा तब सुजाने आपत्ति की, पर आखिर वे सम्मति देनेको बाध्य हुए।

बालासन—दार्जिलिङ्ग जिलेमें प्रवाहित एक नदी। यह अगत्ल्पेंठा नामक भूभागसे निकल कर तराईकी ओर हो दो भागोंमें विभक्त हो गई है। नूतन बालासन नामक शाखा शिलिगुड़ीके दक्षिण महानदीमें मिली है और दूसरी पूर्णिया जिला होती हुई बह गई है। इस नदीतीरवर्त्ती पहाड़ी जंगलमय तराई प्रदेशमें नाना द्रव्यों की खेती होती है।

बालासुर (स० पु०) असुरभेद।

बालाहेरा—राजपूतानेके जयपुर राज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६ ५१´ उ० तथा देशा० ७६ ४९´ पू० आगरेसे अजमीर जानेके गिरिपथ पर अवस्थित है। यहांका पहाड़ीदुर्ग १८वीं शताब्दीके शेष भागमें सिन्दे सेनापति डिबायनोने विध्वस्त हुआ था।

बालि (सं० पु०) वानरोंके अधिपति। पर्याय—ऐन्द्र, बाली।

रामायणमें लिखा है,—मेरु नामका एक श्रेष्ठ पर्वत है। इस पर्वतके किसी एक शिखर पर ब्रह्म-सभा प्रतिष्ठित है। एक दिन कमल-योनि ब्रह्मा वहां योगाभ्यास कर रहे थे कि इतनेमें सहसा उनके नेत्रोंसे आंसूकी बूंद टपक पड़ी। बूंदके गिरनेके साथही उससे एक वानर पैदा हुआ, जिसका नाम ऋक्षराज था। ब्रह्माने उसे देख कर कहा, "हे वानर! तू इस अमरोंकी विहार भूमि सुमेरु पर्वत पर आ कर नाना प्रकारके फल मूल खाता हुआ हमेशा मेरे पास रह।"

एक दिन यह वानर पिपासासे अत्यन्त आतुर हो कर उत्तर मेरु शिखरकी तरफ चल दिया। वहां एक सरोवरके पानीमें अपने मुंहकी छाया देख कर सोचने लगा, यह तो मेरे जैसा दीखता है, यह मेरा परम शत्रु है, इसलिये इसे शीघ्र ही मार डालना चाहिये। यह विचार कर वह पानीमें कूद पड़ा। पश्चात् वह वानर सरोवर से निकला और एक मनोहर स्त्रीका रूप धारण किया। इतनेमें इन्द्र और सूर्य दोनों ही वहां आ पहुंचे और उस कामिनीको देख कर कामदेवके वशीभूत हो गये। क्रमशः उनका धैर्य च्युत हुआ। आखिर उस रमणीको न पा कर इन्द्र उसके मस्तक पर स्खलित वीर्य निक्षेप कर निवृत्त हुए। उधर दिवाकर भी मन्मथके बाणोंसे घायल थे, उन्होंने भी उसकी ग्रीवामें निषिक्त बीज निक्षेप किया। इस प्रकार इन्द्र और सूर्य दोनोंने मदन व्यथासे छुटकारा पाया। बादमें उस कामिनीने इन्द्रके बीजको अमोघ जान कर उससे सर्वश्रेष्ठ वानरका जन्म दिया जिसका नाम हुआ बालि और ग्रीवामें पतित वीर्यसे सुग्रीव उत्पन्न हुए। इस तरह इन्द्रसे बालि और सूर्यसे सुग्रीव की उत्पत्ति है।

उस दिनके बीत जाने पर ऋक्षराजने फिर वानर रूप प्राप्त किया और अपने दोनों पुत्रोंको ले कर ब्रह्माके पास पहुंचे। ब्रह्माने उन्हें किष्किन्धामें जा कर राज्य करने की आज्ञा दी। विश्वकर्माने वहां मनोरम पुरी निर्माण की थी। बालि उसी नगरीमें जा कर वानरोंका राजा बन कर राज्य करने लगे। ये दोनों भाई अत्यन्त बलशाली थे, तीनों लोकमें इनकी समता कोई न था। बालिकी प्रधान महिषीका नाम तारा था और सुग्रीवकी स्त्रीका नाम रुमा।

एक दिन किसी मायावी दैत्यके उपद्रवके कारण, बालि अपने भाईको पातालके द्वार पर बिठा कर स्वयं दैत्योंके विनाशके लिए पाताल चला गया। इधर कपिक

विलम्ब हो जानेसे सुग्रीवने निश्चय कर लिया, कि वालि की मृत्यु हो गई। वह द्वार पर एक बड़ा भारी पत्थर रख कर किष्किन्धा लौटा और वहां जा कर वालिका मृत्यु सम्वाद प्रचारित किया। वालिकी मृत्यु हुई जान कर मन्त्रियोंने सुग्रीवको राजा बना दिया। पश्चात् सुग्रीव उनसे मिल कर सुखसे राज्य करने लगे। इस तरह कुछ दिन बाद वालि उन दैत्योंको मार कर उस गुफाके द्वार पर आया, तो देखा कि वहां पत्थर रखा हुआ है। वालिने उस पत्थरको पैरोंकी ठोकरसे तोड़ डाला और अपने भवनमें पहुंचा। सुग्रीवको राज्य और पत्नीका भोग करते देख वालि मारे क्रोधके अधीर हो उठे और सुग्रीवको मारनेके लिए उद्यत हुए। सुग्रीवने भाग कर मतङ्गका आश्रय लिया। वालि अपनी पत्नी तारा और भ्रातृ-वधू रुमाको ले कर सुखसे रहने लगे।

किसी समय रावण वालिको पराजित करनेके अभिप्रायसे किष्किन्धा पहुंचा उस समय वालि दक्षिणसागर में सन्ध्या कर रहा था। रावणके वहां पहुंचने पर, वालिने अपनी बगलमें दबा और भी तीन सागरोंमें भ्रमण करके सन्ध्या समाप्त की। इस पर रावणके विशेषरूप से पराजय स्वीकार करने पर वालिने उसे छोड़ दिया। उधर सुग्रीव वालि द्वारा निकाले जानेके कारण मतङ्गाश्रममें ही दिन बिता रहा था। रावणके द्वारा सीता हरी जाने पर जब राम और लक्ष्मण सीताकी खोजमें निकले, तो मतङ्गाश्रमवासी सुग्रीवसे उनकी मित्रता हो गई। सुग्रीवकी सहायता करनेको उन्होंने वचन दिया और तदनुसार रामने वालिका वध किया। वालिके मारे जाने पर सुग्रीव फिर किष्किन्धाका राजा हुआ और वालिका पुत्र अङ्गदको युवराज पद मिला। लङ्काधिपति रावणके साथ युद्ध करते समय इसी वालि पुत्र अङ्गद तथा सुग्रीवने सेनापति हो कर कई लाख वानर वाहिनी द्वारा श्रीरामचन्द्रकी सहायता की थी।

(रामा० कि० ४०काण्ड)

वानरवंशी राजा वालिके विषयमें जैन पद्मपुराणमें इस प्रकार लिखा है—

विद्याधर क्षेत्रमें एक किष्किन्धा नामकी नगरी है। उस नगरीमें सर्व लक्षणयुक्त सूर्यके समान प्रतापी सूर्यरज नामके राजा राज्य करते थे। उनके चन्द्रमालिनी नामकी रानी महामनोज्ञ अपनी सुन्दरतासे चन्द्रमाको भी लज्जित करनेवाली थी। उन दोनोंका काल सुखसे व्यतीत होता था। एक दिन रानी चन्द्रमालिनीने रात्रि के समय शुभ स्वप्न देखे। उन स्वप्नोंके फलके अनुसार रानीने गर्भ धारण किया। नवें मास रानीने शुभनक्षत्रमें सर्वलक्षणयुक्त पुत्र प्रसव किया। वह बालक क्रमसे बड़ा हुआ। अवस्थाके अनुसार यथा विधि उसके यज्ञोपवीतादि संस्कार भी हुये। उसने बाल अवस्थाका उलङ्घन कर यौवन अवस्थामें पदार्पण किया। उसके पराक्रमकी गुणगाथा समस्त संसारमें व्याप्त हो गई। उसके समान बलवान् तथा धैर्यवान उस समय कोई भी न था, अतएव सब लोग 'वाली' कह कर उसका सम्मान करने लगे।

एक दिन राजा सूर्यरजको संसारसे वैराग्य हो गया। वे द्वादश भावनाओंका चिन्तन करने लगे। यद्यपि वे संसारसे पहिले हीसे उदासीन थे, पर अब उनका मन संसारमें जरा भी न लगा। उन्होंने अपने प्रिय पुत्र वालिको राज्य सौंपा और आप तपोवनमें जा दिगम्बरी दीक्षासे भूषित हुये।

महापराक्रमी वालि किष्किन्धा नगरीके सिंहासन पर बैठ न्यायके अनुसार प्रजाका पालन करने लगे। वे धर्मात्माओंके शिरोमणि थे। प्रतिदिन ढाईद्वीपमें विद्यमान जिनचैत्यालयोंका दर्शन कर आते थे। इनके छोटे भाईका नाम सुग्रीव था।

राक्षसवंशीय दशाननका प्रबल प्रतापीरूपी सूर्य उस समय मध्याह्नमें तप्तायमान हो रहा था। वह लङ्काका राज्य करता था तथा अपने पराक्रमसे तीन खण्डोंको जीता था। भूमि गोचरी और विद्याधर समस्त राजा उसके चरणोंकी सेवा किया करते थे। जब वालि राज्यसिंहासन पर बैठे, तब उन्होंने रावणकी आज्ञा मानना अस्वीकार किया। रावणने उसको अपनी आज्ञा से विमुख हो जान शीघ्र ही उनके पास एक दूत भेजा। दूत बड़े अभिमानसे वालिके दरबारमें जा रावण की प्रशंसा कर कहने लगा, हे वालि! तुम्हारे पिताको दशाननने इस किष्किन्धापुरीका राज्य दिया था। जब तक

तुम्हारे पिता रहे, उनका और हमारा आपसमें परम स्नेह रहा। अब तुम जो हमसे विमुख हुये हो सो ठीक नहीं है। क्योंकि, रावणके प्रतापके सामने कोई भी ठहर नहीं सकता। इस लिये तुम शीघ्र ही जा अपनी भगिनी सुप्रभाका रावणके साथ विवाह कर दो और उनके चरणोंमें अपना मस्तक झुकावो।' दूतके गर्वयुक्त ये वचन सुन उन्होंने कहा, कि जिस रावणकी प्रशंसाका तुम इतना बडा पुल बांध रहे हो उसे मैं अपने बांये हाथकी हथेलीसे चूर सकता हूं। मैं तुम्हारी सब शर्तें कबूल कर सकता हूं; किन्तु उसके चरणोंमें अपना मस्तक नहीं नमा सकता।

बालि इस प्रकार सोच ही रहे थे कि भावी समरकी आशङ्कासे उनका दिल संसारसे उचट गया। वे विचारने लगे, कि मैं अपने वास्ते कितने प्राणियों को विध्वस्त करनेके लिये तैयार हो रहा हूं। एक उपाय मेरी समझमें आ रहा है कि मैं दिगम्बरी दीक्षा ले लूं और इस राज्यको सुग्रीवको दे दूं। इस उपायसे न तो जीवहिंसा ही होगी न मेरा अभिमान ही भग होगा। ऐसा विचार कर उन्होंने अपनी दिक्षाका वृत्तान्त समस्त लोगोंमें प्रगट किया और सुग्रीवको राज्य दे आप तपोवनको चल दिये। वहां शिला पर बैठे हुए नग्न दिगम्बर मुनिके पास जा अवनत मस्तक हो उनकी स्तुति की और उनसे दीक्षा ले आप द्वादश तपको तपने लगे। यद्यपि वे राज्यकी समस्त विभूतियोंका त्याग कर चुके थे तो भी वे राजा ही प्रतीत होते थे। कारण, इनसे समस्त प्राणियोंकी रक्षा होती थी। वे मुनि सदा ध्यानमें तत्पर पूर्णरूपसे अहिंसाके प्रतिपालक थे। उन्होंने समस्त संसारकी माया ममताको छोड दिया था। चाहे उनकी स्तुति करो या निंदा, वे सदा मध्यस्थभाव रखते थे। शत्रु मित्र पर उनका सदा एक-सा भाव था। संसारमें यदि उनके कोई शत्रु था तो केवल अष्टकर्म और मित्र था तो एक धर्म ही।

एक दिन कैलाश पर्वत पर बालि मुनि कायोत्सर्गसे खड़े खड़े ध्यानमें तल्लीन हो के अपनी आत्माका चिन्तवन कर रहे थे।

जब सुग्रीवने किष्किन्धाका राज्य पाया तो उसने अपनी सुप्रभा बहिनका रावणके साथ पाणिग्रहण कर दिया और आप उसका आज्ञाकारी सेवक बन वहांका शासन करने लगा। रावणने विद्याधर लोककी अनेक सुन्दर सुन्दर बालिकाओंके साथ विवाह किया था। नित्यालोक नगरमें राजा नित्यावलोककी रानी श्रीदेवीसे रत्नम रत्नावली नामकी पुत्री थी। उसे विवाह कर रावण लङ्का को आते थे। जब वे कैलाश पर्वत आये तो उनका पुष्पक विमान इस प्रकार अटक गया जिस प्रकार वायुमण्डल सुमेरु पर्वत पर जा अटक जाता है। तब घण्टादिक शब्दसे वह विमान रहित हो गया, मानो वह विमान रूठ कर चुप हो गया हो। रावणने विमानको अटका देख मरीचि मन्त्रीसे उसका कारण पूँछा। मरीचिने कहा, "देव! यह कैलाश पर्वत है। यहां पर कोई मुनि कायोत्सर्गसे शिला पर रत्नके स्तंभके समान सूर्यके सम्मुख आतापन योगको धारण कर बैठे होंगे। वे मुनि महा घोर तपको तप रहे होंगे या शीघ्र ही मुक्तिको जानेवाले होंगे। आप नीचे उतर उन पवित्र मुनिके दर्शन कर अपना जन्म कृतार्थ कीजिये।" मन्त्री मरीचिके ये वचन सुन रावण विमानसे उतरा और कैलाश पर्वतकी तरफ गर्वयुक्त हो देखने लगा। इतने ही में उसने दिग्गजोंकी सूंडके समान दोनों भुजाओंको बढ़ाया। जिनके शरीरसे सर्प लटक रहे थे, पाषाणस्तंभके समान जो आतपति शिला पर निश्चल खड़े थे वैसे बालिमुनिको उसने देखा। रावणने जब बालिमुनिको देखा तब पापी पहिले वैरका स्मरण कर भृकुटि चढा डसता हुआ कठोर शब्द बालिमुनिके प्रति कहने लगा,—"अहो! कैसा तेरा तप है? जो अभिमान अभी तक नहीं छोड़ता। मेरा विमान चलनेसे क्यों रोका? क्या तू वीतराग धर्मको धारण करता है या अमृत और विषको एक करना चाहता है? पापी! तू कहां और तेरा वीतराग धर्म कहां! ठहर, अभी तेरे गर्वको चकना चूर किये देता हूं। मैं तुझे सहित इस कैलाश पर्वतको समुद्रमें डाल दूंगा।" इस प्रकार उस निर्दयीने विकराल रूप बनाया। जितनी विद्यायें उसने अभी तक साधी थीं वे चिन्तवन करनेसे ही उसके समीप आयीं। तब रावण विद्याके बलसे पातालमें बैठा। उसका नेत्र प्रचण्ड क्रोधसे लाल और हुंकार शब्दसे मुख वाचाल हो गया। अपनी भुजाओंसे कैलाश पर्वत उठानेका वह उद्योग करने लगा। सिद्ध,

हस्ति, सर्प, हिरण आदि पशुपक्षी भयकर शब्द करने लगे। जलके झरने टूट कर भयंकर आवाज होनेसे वृक्षके समूह उखड़ गये। इस प्रकार कैलाश पर्वत चलायमान हुआ।

भगवान् वालि ध्यानमें मग्न थे। कैलाश पर्वतके चलायमान होनेसे कुछ देरके लिये उनका ध्यान भंग हुआ। जब भगवान् वालिने रावणका कर्त्तव्य जाना तो थे जरा भी खेद खिन्न न हुये और मनमें यों विचारा कि यह कैलाश पर्वत अत्यन्त रमणीक है, चक्रवर्ती भरतने इस पर जिन-चैत्यालय बनवाये हैं, वे कहीं भंग न हों जायें इस लिये उन्होंने अपने चरणोंका अंगूठा ढीला कर दबा दिया। इस पर रावण भाराक्रान्त हो दब गया, उसके नेत्रों से रक्त झरने लगा, मुकुट टूट गया और माथा पसीनेसे तर बतर हो गया। उसके पैर, जङ्घाये छिल गयी और वह रोने लगा। तभीसे वह पृथ्वीतलमें रावण नामसे प्रसिद्ध हुआ। रावणके अत्यन्त दीन शब्द सुन कर राणियां विलाप करने लगीं। पहिले तो सेनापति मंत्रिगुण युद्ध करनेके लिये तत्पर हुये, किन्तु जब उन्हों ने ऋषिराजका प्रताप जाना तब चुप हो गये। देवता कायबल ऋद्धिका अतिशय जान दुंदुभि बाजा बजाने लगे। तब परमदयालु महामुनिने अपना अंगूठा ढीला कर दिया।

रावणने पर्वतके नीचेसे निकल कर योगीश्वरको बारंबार स्तुति की और हाथ जोड़ उनके चरणोंमें मस्तक नमा क्षमा मागो। योगीश्वर महाराज स्वयं क्षमाशील थे। वे क्षमाके आगार थे। शत्रु मित्रमें उनकी समानवृत्ति थी, अतएव उस कार्यसे न तो उनको क्षोभ ही हुआ, न हर्ष।

केवली हो भगवान वालिने इस भूतल पर विहार किया। अनेक अज्ञानी जीवोंको सम्बोधन तथा गृहस्थ और मुनि धर्मका यथायथ उपदेश दिया। उनकी शान्ति मूर्त्ति देख कर सिंहादिक क्रूर जतुओंने क्रूरता छोड़ दी। दुर्बलको सबल नहीं सताने लगे।

कुछ दिनों बाद शेष चार अघातिया कर्मोंको भी उन्होंने नष्ट कर डाला और आप सिद्धशिला पर आ विराजे।

वालि—१ हुगली जिलेके आरामबाग उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २२ ४६´ उ० तथा देशा० ८७° ४६´ पू० द्वारिकेश्वर नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ७१२ है। रेशमी और सूती कपड़ेका यहां अच्छा व्यवसाय होता है। २ भागीरथी तीरवर्ती एक समृद्धिशाली ग्राम। यह अक्षा० २२ ३६´ उ० तथा देशा० ८८ २३´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां इष्ट इण्डियन रेलवेका एक स्टेशन है। इस ग्राममें ब्राह्मणोंकी संख्या अधिक है।

वालि—राजपूतानेके योधपुर राज्यके अन्तर्गत वालि जिले का सदर। यह अक्षा० २५ १८´ उ० तथा देशा० ७३ १८´ पू०के मध्य अवस्थित है। राजपूताना मालवा रेलवेके फालना स्टेशनसे ५ मील दूर पड़ता है। जनसंख्या पांच हजारके करीब है। यहां प्राचीन कालका बना हुआ १ दुर्ग, डाकघर, १ वर्नाक्युलर स्कूल और एक अस्पताल है। यहांकी शिलालिपिसे जाना जाता है, कि १०वीं शताब्दीमें राठोर राजा यहांका शासन करते थे। १८वीं शताब्दीके शेष भागमें यह जोधपुर राजके हाथ लगा।

वालिका (स० स्त्री०) वाला एव वाला स्वार्थे कन् टाप् अतइत्व। १ कन्या, छोटी लड़की। २ पुत्री, बेटी। ३ एला, इलायची। ४ वालुका, बालू। ५ कर्णभूषण, कानमें पहननेकी बाली। ६ अम्बष्ठा। ७ मूसली।

वालिकुमार (स० पु०) वालि नामक बंदरका लड़का अंगद जो रामचन्द्रजीकी सेवामें था।

वालिखिल्य (स० पु०) पुलस्त्यकन्या सन्ततिसे उत्पन्न क्रतुके साठ हजार पुत्र या ऋषिविशेष। वालखिल्य देखो।

वालिग (अ० पु०) वह जो बाल्यावस्थाको पार कर चुका हो, जो अपनी पूरी अवस्थाको पहुंच चुका हो। कानून के अनुसार कुछ बातोंके लिये १८ वर्ष या इससे अधिक अवस्थाका मनुष्य वालिग माना जाता है।

वालिगञ्ज—कलकत्तेके दक्षिण पूर्वमें अवस्थित एक गण्ड ग्राम। निर्जनताप्रिय अंगरेजोंका यहां वास होनेके कारण इस स्थानकी मर्यादा दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। एतद्भिन्न भारतवर्षके बड़े लाटके शरीररक्षी सेना यहां रहती है। कलकत्ता जाने आनेकी सुविधाके लिये यहां पूर्ववङ्गीय रेलपथका एक स्टेशन है।

वालियाटियम—मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलान्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह अक्षा० १७ ३६´ उ० तथा देशा०

८२ ३८´ ३०´´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां भवरुद्र नामक विख्यात शिवालय प्रतिष्ठित रहनेके कारण दूर दूर देशके लोग देवदर्शन करनेको आते हैं। जिस पर्वत पर यह मन्दिर स्थापित है वहांसे वराह नदी निकली है। इस नदीके उत्तर वाहिनी होनेके कारण लोग इसका तीर्थ माहात्म्य गाते हैं। इस नदीके किनारे एक गर्त्तमें भस्म के जैसा पदार्थ देखा जाता है। देवमन्दिरके पुरोहित उस भस्म राशिको वालिचक्रवर्त्ती नामक किसी व्यक्ति के यज्ञका होमावशेष बतलाते हैं। यहाकी देवमूर्त्ति पश्चिममुखी है।

बालिद्वीप—भारत महासागरके अन्तर्गत एक छोटा सा द्वीप। "बलि" अर्थात् वीर मनुष्य उस द्वीपमें रहते थे इसलिये 'बालिद्वीप' नाम पड़ा। अब तो बालि नामसे ही प्रसिद्ध है। किसी समय यहां ब्राह्मण और बौद्धधर्म-का प्रभाव बढ़ रहा था, ऐसा सभी स्वीकार करते हैं। नीचे इस द्वीपका विस्तृत इतिहास वर्णन किया जाता है।

यह छोटा सा द्वीप यवद्वीपसे पूर्व १॥ मील दूर अक्षा० ८ से ६ दक्षिण तथा देशा० ११४ २६´ से १५०´ ४०´ पू०के मध्य अवस्थित है। दोनोंके बीचमें एक नाली बह गई है जिससे दोनोंमें व्यवधान पड़ जाता है। बालिद्वीप-कोयवद्वीपका हिस्सा बहुत लोग मानते हैं। पाश्चात्य भौगोलिकोंने इस स्थानका "बालि या छोटा यव" (Little Java) नामसे उल्लेख किया है। पूर्व और पश्चिममें यह ७० मील लम्बा तथा ३५ मील चौड़ा है। भूपरिमाण १६८५ भौगोलिक वर्गमील है।

इस द्वीपमें ज्यादातर पहाड़ है। ये कहीं चार हजार-से १० हजार फुट तक ऊंचे हैं। इसकी ऊंचाईमें कहीं कहीं जिनमें आग जला करती हैं ऐसी चोटियां हैं। गुनङ्ग अनङ्ग नामकी चोटी समुद्रकी तराईसे १२३७६ फुट ऊंची है। इन पहाड़ोंकी पैतूर नामकी चोटीसे (६११६८) हमेशा गीले धातुएं निकला करती हैं। १८०४ और १८१५ ई०में और दो दूसरी चोटियोंसे अग्नि निकलती हुई देखी गई थीं। यहांकी छोटी छोटी नदियोंमें जितनी दूर तक ज्वार भाटा आया करता है बस उतनी दूर तक हो,देशी नाव इनमें चल सकती हैं। इनके सिवाय पहाड़के ऊपर बहुतसे तालाब और तलैया देखी जाती हैं। अत्यन्त गहरे तालाबोंके जलसे यहांकी खेती खूब हरीभरी रहती है। धान, भुट्टा, कलाई, नारंगी और तरह तरहका चावल पैदा होता है।

यहांके वासिन्दोंकी देहकी बनावट यव और मलय द्वीपके रहनेवालोंसे मिलती जुलती है। लेकिन पहनावा में बहुत गहरा भेद पाया जाता है। चीन और सिलेबिस द्वीपके मङ्ग लोगोंके साथ ये वाणिज्य व्यवसाय करते हैं। सूती कपड़े, रुई, नारियल तेल, पक्षियोंके घोसले और चर्म आदि चीजोंके बदलेमें बालिद्वीपवासी उक्त बनियों से अफीम, सुपारी, हाथीके दांत, सोना, चांदी मोल लेते हैं। पहले इस द्वीपमें दास विक्रयकी प्रथा प्रचलित थी। कैदी, वैरी, ऋणी और चोरोंको ये लोग चीनोंके हाथ बेच देते थे।

समग्र बालिद्वीपके एकमात्र अधीश्वर बालि और लम्बकोंके सम्राट् कहे जाते हैं। ये क्लोङ्ग कोङ्गसिमो साचोयेनन' नामसे मशहूर हैं। इस द्वीपसाम्राज्यमें आठ छोटे छोटे सामन्तों के राज्य हैं। प्रत्येक भागमें एक एक राजा राज्य करनेको नियुक्त हैं। ये करीब आठ लाख आदमियों पर हुकूमत करते हैं। यहांके वासिन्दे यव द्वीपकी अपेक्षा ज्यादा उन्नत हैं। सभ्यता और शास्त्रज्ञानमें उन्हों ने दूसरे द्वीपों से अधिक श्रेष्ठता प्राप्त की है। किसी समय भी ये यवद्वीपके ओलन्दाजों के साथ शत्रुता करने बाज नहीं हुये। १८४६ ई०में ओलन्दाजों और क्लोङ्ग काङ्गोके राजाके बीच जो सुलह हुई उससे बालिराज उनके मित्र जरूर हुए पर उन्हों ने ओलन्दाजों की वश्यता स्वीकार नहीं की।

इतिहास।

बालिद्वीपका पुराना इतिहास नहीं मिलता है। लोगों का विश्वास है, कि यहां पहले राक्षस रहा करते थे। कुछ दिनों के बाद 'मजपहित'से कुछ हिन्दुओं ने आ कर यहां उपनिवेश बनाया। उन्हींके द्वारा वासुकी (नागराज वासुकी)के मन्दिरसे यहांके हिन्दू प्राधान्य मात्र,उसका समय कल्पित किया जा सकता है। उसान आदि नामके ग्रन्थमें लिखे हुये मय राक्षस और उसके अनुचरोंके पराभव तथा देवताओंका आधिपत्य विस्तार

सूचक उपाख्यानोंसे बहुतेरे स्वीकार करते हैं, कि इस द्वीप में पहिले हिंदूधर्म फैला हुआ था।

उशन-यव नामके ग्रन्थसे जाना जाता है, कि मज पहित राज अगुङ्ग समुद्र पार कर वलिके शासनकर्ता को दमन करनेके लिये आये थे। वालिराजके हारनेके बाद मजपहित-राजके सदस्योंने वहां पर रहनेका अधिकार पाया। कुछ दिनोंके बाद मुसलमानोंके अभ्युदयसे मजपहित (विल्वतिक्त) राजधानीका जब पतन हुआ तब उक्त राजवंशधरोंने भी वालिद्वीपमें आ कर आश्रय ग्रहण किया।

यव और वालिद्वीपके दोनों उशन ग्रन्थमें इसी विषय को स्पष्ट करनेवाली एक छोटी सी पौराणिक आख्यायिका देखी जाती है। किसी समय मयराक्षस वंशके मज दानव नामक वालिके राक्षसराजने राज्यमें उपद्रव करना शुरू कर दिया था। इस पर 'मजपहितराज'ने आर्यडामर और पति गजमद नामके दो सेनापतियोंके साथ आ कर उस राक्षसको पराजित किया था। उन्होंने 'गेलगेल' नामके स्थानमें राजधानी बसाई और वहीं राज्य करने लगे। उपाख्यानके मूलमें चाहे कुछ भी क्यों न हों, किन्तु वालिवासी सभी यह स्वीकार करते हैं, कि आर्यडामरने वालीको परास्त किया था और मजह पहित राज्यके ध्वंसके बाद यहांके राजवंशधरोंने वालिद्वीपमें आ कर निवास किया था।

वालिद्वीपके 'गेलगेल' नगरमें देव अगुङ्गने राज्य स्थापन कर सम्पूर्ण वालिराज्यको अपनी सेना और मंत्रियोंमें बांट दिया। आर्य डामरने प्रधान पति (सचिव) पद पर नियुक्त हो तवनान् प्रदेश पाया था। राजा देव अगुङ्ग आर्य डामरके विना परामर्श लिये कोई भी कार्य नहीं करते थे। पश्चात् डामर "आर्यवेश्वेङ्ग" नामकी पदवीको धारण कर राजप्रतिनिधि हो राज्यकी देखरेख करने लगे।

आर्यडामरके भाई आर्य से टो, आर्य वेवेतेङ्ग, आर्य वरिङ्गोन, आर्य ब्लोग, आर्य कगनिसा, आर्य विष्णु लुकु आदिने भी राज्यानुग्रहसे कुछ प्रदेश पाये थे। इसके सिवा आर्य मजूरी वबु नामके स्थानमें, तनकुबेर, तनवयुर (कुमार) तथा मन्दर तीन प्रभावशाली वैश्योंने भी भिन्न भिन्न स्थानोंमें राजशासन प्राप्त किया था।

पतिगजमद भी मेंगुइ विभागके शासनकर्त्ता हुए थे।

इस प्रकार अनेक व्यक्तियों पर वालिका राज्य अवलम्बित था। १६३३ ई०में ओलन्दाज राजदूतके वर्णनसे जाना जाता है, कि देव अगुङ्ग समस्त वालिद्वीपके अधिपति थे। दूसरे समस्त सामन्त उनकी अधीनता स्वीकार करते थे। पश्चात् 'गेलगेल' राजधानीके ध्वंसके बाद क्लोङ्ग-कोङ्ग, बङ्गलि, गियान्यर और बोलेलेङ्ग प्रदेश देवअगुङ्ग-राजपरिवारके अधिकारमें रहे। पूर्वोक्त राजा जातिके क्षत्रिय थे। कुछ समयके बाद जब वैश्य जाति का प्रभाव बढ़ा तब वे निष्प्रभ हो गये।

सामन्तों के बगावत करनेसे वालिद्वीपमें बहुत उथल पुथल मची। मेङ्ग ईरानकी प्रभाववृद्धिके साथ साथ करङ्ग-असेम आदि राज्यकी जय, डामर-राजवंशका वदेङ्ग पर आक्रमण और उन्हींकी गोष्ठीका बोनानमें स्वाधीन हो कर राज्यस्थापन करना आदि बहुत सी भीतरी उलट पुलट हो गयी। इसके सिवाय क्लोङ्गकोङ्ग और करङ्ग असेम राज्यमें आपसी विद्वेषभावकी आग और भी धधक उठी। गेलगेलके राजदरबारमें रहते समय गजमद वंशीय किसी राजपुरुषकी देवअगुङ्गकी आज्ञासे हत्या की गयी। उस हत्याका बदला लेनेके लिये मेङ्गुई और करेङ्ग-असेम वासियों ने उनके ऊपर क्रुद्ध हो तलवार उठाई। देवअगुङ्ग इस युद्धमें बुरी तरह हारे और उनका गेल गेलमें सिंहासन नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। देवअगुङ्गका करङ्गअसेम राजकन्याके साथ जब विवाह हो गया तब दोनों पक्षोंका झगड़ा निबट गया। इस रानीने वीरोचित भावसे दोनों राज्योंका शासन किया। इसी समयसे देवअगुङ्ग वंशके राजाओंकी प्रभुताका ह्रास हुआ। यद्यपि यह वंश हार गया था तो भी विजेता राज्योंमें यहां पूर्ववत् सम्मान पाता था। पर करङ्ग-असेम आदि राजा उनको कर नहीं देते थे। यह अवश्य था, कि वे उन्हें सर्वप्रधान राजा मानते थे। पश्चात् करेङ्गअसेम राजाओं ने बोलेलेङ्ग और लम्बकको जीत कर अपना प्रभाव फैलाया था। दक्षिणमें तवनानके गोष्ठी राजाओं ने पश्चिम वेदाङ्ग और पूर्वका कुछ भाग भी अपना लिया। फिर देवअगुङ्ग वंशीय देवमङ्गोश नामके किसी 'पुङ्गवन्'ने गियान्यरको लूट कर वहां पर अपना

स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। इस समय हम स्पष्ट रीतिसे देखते हैं, कि क्रोङ्ककोङ्ककी प्राचीन क्षत्रिय जातिके सिवाय और सब ही पतित या नीच जातिमें सम्मिलित हो गये थे। नीचे आठ सामन्त राज्यों का संक्षिप्त इतिहास दिया जाता है।

१ ख्राङ्गकोङ्ग—देव अगुङ्गवनके द्वारा चलाया गया। इनके अधिकारमें प्रायः छ हजार मनुष्य रहते हैं। करङ्गअसेम और वोलेलेङ्ग सामन्त इनके साथ एक मत हो कर कार्य करते हैं। ये शूद्राणीसे पैदा हुए हैं। इनकी सौतेली मा करङ्गअसेम राजकन्याके गर्भसे एक कन्या जन्मी थी। राणियो में कोई भी पुत्रवती न थी, अतएव ये शूद्राणी (ज्येष्ठ) पुत्र ही राज्यपद पर अधिष्ठित हुये।

२ गियान्यर—१८४१ ई०में देवमङ्गीशकी मृत्युके बाद उनके पुत्र देवपहान राजा हुए। यद्यपि ये क्षत्रिय वंशमें उत्पन्न हुये थे, तो भी उन्होंने शूद्र तथा पुङ्गरकी पदवी प्राप्त की थी। इनके प्रपितामह ही इस वंशके स्थापनकर्त्ता थे। पहिले देवअगुङ्गके पूर्व पुरुषोंके अधीन ये उसी प्रदेश पर दो सौ सेनाके नायक थे। छलबलसे अपने स्वामीको उन्होंने अपने हाथमें कर लिया और मेङ्गुई राज्यके अन्तर्गत क्रमशः देश पर अपना अधिकार जमाया। ओलंदाजोंने जब वोलेलेङ्ग-पर आक्रमण किया तब गियान्यरके पति देव अगुङ्गकी आज्ञासे ये दलबलके साथ आगे बढ़े। बेदाङ्ग-राजाके साथ इनकी मित्रता विश्वासयोग्य नहीं थी। इस कारण बेदाङ्ग-सीमान्तमें राजा काशीमनने एक वास स्थान बनवाया।

३ वंगली—देवजदे पुदङ्ग वान् १८९८ ई०में यहां राजा हुये थे। ये लोग भी अपनेको देवअगुङ्गके वंशज बतलाते हैं, किन्तु अगुङ्ग वंशकी अपेक्षा ये मर्यादामें हीन हैं। ये देव अगुङ्गकी अधीनतामें नहीं हैं। बदोङ्ग और तब शानके सामन्तराजाओंके साथ इनकी खूब प्रेम है। यहां के निवासी साहसी और धीर होते हैं। बङ्गली राजा एक समय देव अगुङ्गके सेनापति थे। १८४१ ई०में ओलन्दाजोंके समय इन्होंने ओलंदाजगवर्मेण्टकी सहायता की थी। इस प्रत्युपकारके पुरस्कारस्वरूप इन्हें वोलेलेङ्ग प्रदेश मिला। ये बन्दूकोंसे युद्ध करते थे।

४ मेंगुई—पतिगजमड़ इस प्रदेशके अधिकारी नियुक्त हुये थे। इनके कोई पुत्र न था। वर्तमान राजागण आयशामरकी प्रपौत्री कियशानके वंशधर हैं। इन्होंने किसी समय करङ्गअसेम, वोलेलेङ्ग, लम्बक और बदोङ्ग आदि राज्योंमें भी अपना अधिकार फैलाया था। लम्बक, वोलेलेङ्ग और करङ्ग-असेम राजवंशके साथ मेंगुई-राजवंशका घनिष्ट संबन्ध है। १८७८ ई०में अनक अगुङ्ग कटुट् अगुङ्ग यहां राज्य करते थे।

५ करंग-असेम—यहांके अधिपति अपनेको गञ मडके वंशधर बतलाते हैं। किन्तु करंग राजपुत्रके साथ मेंगुई राज कन्याका विवाह भी चलता है। पहले कहा जा चुका है, कि आर्य मजूरी यहांके दक्षप्रदेशके राज थे। मेंगुई राजाने करङ्ग असेम जीता था और वोलेलेङ्ग अधिकारके बाद क्रोङ्गकोङ्ग वोलेलेङ्ग प्रदेश उनके हाथसे जाता रहा था। १८७८ ई०में नम्र राजदे यहां राज्य करते थे। युद्धमें इसी वंशने विजय पायी थी। इन्होंने गेलगेलका ध्वंस और लम्बक तथा सेम्बेरा पर आक्रमण किया था। करङ्ग और लम्बक-राजाओंकी आपसकी फूटने बहुत नुकसान किया। इसी बीचमें मतरमराजने आ कर दोनो को परास्त किया। इस राजपरिवारकी कुल-ललना और बालिकायें सम्मानकी रक्षाके लिये अग्निमें प्रवेश करती हैं। ये स्त्रियां आपसमें दूसरेको अनिष्ट करनेके लिये अपने प्राणो तककी आहुति देती है। बस यही बालिद्वीपवासियोंका 'बेला' उत्सव है। लम्बकके करङ्ग असेम राजाओंकी अवनतिके बाद करंग असेम बालि-वोलेलेङ्ग और देवअगुंग वंशके राजा स्वाधीन हो कर राज्य करते रहे। करंग असेमका राज्य पर्वतमय है। यहां पर धान्यकी खेती नहीं होती। यहांके रहनेवाले लकड़ीको बेच कर अपना निर्वाह करते हैं। लम्बक राजाका नाम र कटुट् करङ्ग असेम नाम है। 'सेलापरङ्ग' इनकी उपाधि है।

६ वोलेलेङ्ग—यहांके राजा मेम्र र मदे करङ्ग असेम कहे जाते हैं। यहांके अधीश्वर गञमडवंशीय हैं। यहां पहिले देवअगुङ्गवंशके क्षत्रियोंने सात पीढ़ी तक राज्य किया था। उनके बाद वैश्यवंशीय राजाओंका प्रभाव बढ़ा। आर्य वेलेलेङ्ग-वंशीय मम्र र पंद्रि इसी वंशके एक राजा थे।

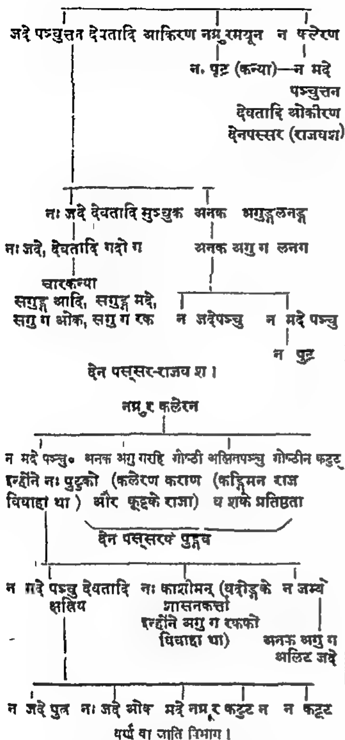
पश्चात् करङ्ग असेमके राजाओंने इस प्रदेश पर अधिकार जमाया। किन्तु राजपुत्रोंके आपसी वैमनस्यके कारण राज्यमें बहुत हुल्लड़ मचा। अन्तमें जब करेङ्ग असेम, बोलेलेङ्ग प्रदेश दो राजकुमारोंको दे दिये गये तो उनका विवाद मिट गया। वर्त्तमान राजभ्राता गोष्ठी जेलन्दे ग यहाके सर्वेसर्वा हैं।

७ तबानान—ये राजवंशवाले अपनेको आर्यडामरको संतान बतलाते हैं। राजाको उपाधि रट्ट नम्रूर अगुङ्ग है। वास्तवमें ये किसीके साथ फगड़ेमें नहीं फसते थे। मेंगुइ-राजके विरुद्ध युद्ध करने पर मार्गप्रदेश इनाममें इनको मिला। तबानन्के कोइ 'पुङ्गव' मार्गके शासनकर्त्ता थे। ये वैश्य नहीं थे। बालिद्वीपमें इन शूद्रराजाओंको छोड़ और कोई भी शूद्र राजा नहीं हुए। इनके पुरखे पहले ताड़ी बेचते थे। मेंगुइ राजाकी दयासे ये "पुङ्गव" हो गये थे। मेंगुइ राजाके बाद यह स्थान तबानान राज्यमें आ गया। ये अपने पदकी रक्षा करनेमें समर्थ हुए थे।

८ बदोङ्ग—(बन्दनपुर) पहिले यह प्रदेश मेंगुइ और आर्य बेलेलेङ्गके पिनति राज्यमें शामिल था। तबानानराजगोष्ठीके किसी सर्दारने इस राजको स्थापन किया था। ये 'नम्रूर बोला, या अनक अगुङ्ग रिङ्गपुपाहन भूमितबानान नामसे प्रसिद्ध थे। इस वंशके नम्रूर अदे पम्चुत्तने, मदे नम्रूर देन पस्मर और नम्रूर अदे काशीमनने प्रदेशोंमें रह प्रबल पराक्रमसे अपने राजकी मर्यादा बढ़ायी थी। इनके परिश्रमसे पिनति गियान्यरसे तजङ्ग, गुनङ्गरट्, सनोर, तमन, इङ्ग-रन, इु ग, तोरगनद्वीप, म्रोबोह्न, लेगियान, कुट, तुबन, जेम्बरन और बालिद्वीपका दक्षिण भाग ये सब प्रदेश इस राजमें थे। उक्त नम्रूर बोलासे १०वीं पीढ़ीमें राजा काशीमनने इस प्रदेशका कर्तृत्व लाभ किया था। काशीमनके प्रपितामहसे ही इस राजका इतिहास पाया जाता है। ये ही सबसे पहिले तबानान् राजासे 'पकेन बदोङ्ग' नामके वाणिज्यक्षेत्रमें आ बसे थे।

नम्रूर बोलाका पुत्र या पौत्र अनक अगुङ्ग कटुट मण्डेशने गुयाहमदसे गुनुङ्ग बेटुर नामके आग्नेय पर्वत पर आ कर देवीदनु या ग गाकी उपासना की थी। पश्चात् उन्होंने बदोंगके मकेल तिंगि लोगोंकी सहायता पा बहुतों को अपने दलमें मिलाया और अपने आपको मेंगुइके 'पुङ्गव' नामसे प्रसिद्ध किया। उनके तीन पुत्र गोष्ठी बयहनतगे, गोष्ठीन्योमन तगे और गोष्ठी कोटुट कदि नामके थे। इनमें द्वितीय पुत्र न्योमनने ही इस वंशके प्रभावको फैलाया और अपने वंशधरोंके लिये राजका सिंहासन सदाके लिये स्थापित किया। ये साहसी, चतुर और योद्धा थे। इन्हों ने स्वयं प्रमिवशीया स्त्रीके साथ विवाह किया था। उनकी एक सालीका विवाह क्रोङ्ग कोङ्गके साथ हुआ था। यह स्त्री अपने पतिके साथ सती हुई थी। इनकी और दूसरी बहनोंका विवाह मेंगुइकी गोष्ठी अगुङ्गके साथ किया गया था। इस प्रकार प्रताप शाली आत्मीय कुटुम्ब से व्याप्त हो द्वितीय न्योमन अपनी क्षमता फैलानेके लिये प्रयास करने लगे। कब उन्होंने मेंगुइ राजको हराया इस विषयका अभी निश्चय नहीं हुआ है, तो भी उनके पुत्र और पौत्र उक्त राज्यके पुङ्गव थे इस बातका अनुमान किया जा सकता है। उनके बाद गोष्ठी नम्रूर जम्बेमिहिकने राज्य किया। इनके दो पुत्र थे। पहलेका नाम था अनक अगुङ्ग जदे गलोगोर और दूसरेका अनक अगुङ्ग त'ल रिङ्ग बतु कोटोक तगेल। उन्होंने गालागोरमें राज्य स्थापन किया। कोटोकके राजवंशधर पम्चुत्तन और देन-अपस्सरके पुङ्गव नामसे प्रसिद्ध हुये थे। कोटोकी पम्चुत्तन राजधानी किसी समय बलमें अकर कमजोर थी। किन्तु उसके राजाओंने अन्तिम बदोङ्ग राजको एक छत्राधीन कर लिया था। कोटोकके पुत्र 'पुत्र' नामसे मशहूर थे। उनके जेष्ठ पुत्र अनक अगुङ्ग पम्चुत्तन या नम्रूरके प्रभावसे पम्चुत्तन राज बहुत विस्तृत हो गया था। उन्हों ने निकटवर्ती दूसरे राजाओंको पराजित कर स्वयं बदोङ्ग पर स्वाधीन राज्य स्थापित किया। उनके पाच सौ विवाहिता स्त्रियां थीं। उनमें यह पाटराणीका पद कितनी ही उच्च वंशीय रानियोंको मिला था।

उक्त नम्रूर शक्तिके पुत्र नम्रूर आदे पम्चुत्तन राज वंशके प्रतिष्ठाता थे। इन्होंका केवल राज्याभिषेक होता है। द्वितीय नम्रूर मयुन और तृतीय पालेरन-देनपस्सूर राजपदके अधिष्ठाता थे। कलेरनके पुत्र नम्रूर मदे पुङ्ग




### वर्ण या जाति विभाग।

बालिद्वीपके रहनेवाले ज्यादा हिंदू और कहीं कहीं बौद्ध भी हैं। यहां चारों वर्ण रहते हैं।—ब्राह्मण, सत्रिय (क्षत्रिय), वेश्य (वैश्य) और शूद्र इन चार वर्ण या जातिका छोड़ और कोई भी तरहके मनुष्य यहां पर नहीं रहते हैं।

ब्राह्मणोंको 'इदा', क्षत्रियोंकी 'देव' और वैश्योंकी 'गुष्ठि' (गौष्ठी) पदवी है। शूद्रकी कोई भी पदवी अथवा सम्मानसूचक शब्द नहीं है। इसलिये विदेशी या साधारण जाति 'कवुल' या दास कह कर प्रसिद्ध हैं।

भारतवर्षमें चार वर्णोंको छोड़ और भी अनेक मिश्र जातियोंका निवास है, किन्तु बालिके हिंदुओंमें वैसी मिश्र या सङ्कर जाति नहीं पायी जाती। जैसे भारतमें अनुलोम और प्रतिलोम सङ्कर जातिकी उत्पत्ति हुई है वैसे बालिद्वीपमें उनकी उत्पत्ति नहीं है।

भारतमें तीन जातियां द्विज कही जाती हैं। उनका यथाकालमें यज्ञोपवीत संस्कार भी होता है। ये जातियां अपनी अपनी जातिमें ही विवाहादि-सम्बन्ध करती हैं। इन तीन वर्णोंमें उच्चवर्णका कोई मनुष्य यदि अपनेसे नीचवर्णकी कन्याके साथ विवाह करे, तो उस कन्याके गर्भसे पैदा हुई संतान पितृजातिको प्राप्त करनेके अधिकारी होती है। क्षत्रिय और वैश्योंमें ऐसे विवाह बहुत प्रचलित हैं। ऐसी बहुत-सी शूद्र जातिकी स्त्रियां धनियों के घरमें दासी या भोग्या कह कर रक्खी जाती हैं और उनकी सन्तान शूद्र समझी जाती हैं। किन्तु जब इनका विवाह-सम्बन्ध होने लगता है, तो उनकी पितृजातिकी ही गिनती है। ये शूद्र स्त्रीसे उत्पन्न सन्तान उच्चवर्णकी स्त्रीसे पैदा हुई संतानों से नीची अवश्य गिनी जाती हैं। यदि कोई ब्राह्मण शूद्रसे विवाह कर ले तो उसको प्रायश्चित्त करना होगा और स्त्रीको संस्कार द्वारा शुद्ध कर घरमें ले आना होगा। उस स्त्रीके साथ उसके पिताके कुलका कोई सम्बन्ध नहीं रहता। प्रतिलोम विवाह बिलकुल ही वर्जनीय है। यदि ऐसा कोई सम्बन्ध करे, तो उसको निर्वासन अथवा प्राणदण्ड भोगना पड़ेगा। कोई ब्राह्मणवंश दो, तीन पीढ़ी तक शूद्रों के साथ विवाहादि क्रिया करे, तो वह भी शूद्र जातिमें गिना जायगा। यदि कोई ब्राह्मण हीन कर्म अथवा अपने धर्मका त्याग कर दे, तो उसे शूद्र जातिमें ही शुमार किया जायगा।

### ब्राह्मण।

बालिद्वीपके ब्राह्मण भगवान् द्विजेन्द्र वहु रवु (नवागत) पदण्डके वंशधर कहे जाते हैं। यवद्वीपके केदिरि नामक स्थानमें इस ब्राह्मणका वासस्थान था। उनके वंशधर वहांसे मजपहित चले गये, फिर मजपहितसे बालिद्वीपमें आ कर वास करने लगे।

सन मेमयुरा राजकन्याके साथ पाणिग्रहण किया था। इस विवाह-सूत्रमें आबद्ध हो दोनों राजवंशोंने काशीमन नामकी राजधानी बसाई थी। किन्तु इससे भी वे सन्तुष्ट न हुये। उन्होंने पचेन बदोङ्ग प्रदेशमें जम्बेराज पर आक्रमण कर उनको परास्त किया। बाद इसके उन्होंने देनपस्सरमें राजधानी स्थापित की और वहीं पर अपना दरबार ले गये। काशीमनमें उनके दूसरे पुत्र राज्य करते थे। वे युद्ध होमें सदा फँसे रहे, अतएव अपनी राज्य सीमा बढ़ा न सके।

देन पस्सर राजके तीन पुत्र थे। नम्बुर मदे पच्युत्तन और नम्बुर अम्बे देनपस्सर होमें थे तथा द्वितीय नम्बुर काशीमन काशीमन् प्रदेश पर राज्य करते थे। देनपस्सर-राजा लोग 'दैननादि क्षत्रिय' इस उपाधिसे भूषित होते थे। वे जब गियान्गर और तबाननके सामन्तों के साथ मिल गये तो इन्होंने माग, मगुइ आदि राजाओंको अपना सामन्त बनाया। इस प्रकार दक्षिणस्थ चार सामन्त राज्योंमें बदल हो १८७६ ई० तक करङ्ग असेम और बोल-लेङ्ग राजके साथ विपक्षता की थी।

नम्बुमदे पच्युत्तनके बाद देनपस्सर राजवंशमें राजा काशीमन ही सबसे ज्यादा प्रतिभाशाली तथा पराक्रमी थे। उन्होंने अपनी भुजाओंके पराक्रमसे देनपस्सर और काशीमनमें एकछत्र राज्य किया था। उन्होंने नम्बुमदे पच्युत्तनके पुत्र नम्बुजदे ओकाको देनपस्सरके सिंहासनसे हटा कर तथा निर्वासित कर स्वयं राजदण्ड धारण किया था। जदेओका बदला लेनेके लिये बन बन घूमने लगे और मेगुई आदि देशवासियोंको अपने पक्षमें करनेके लिये कोशिश करने लगे। अन्तमें इन्होंने बहुत बड़ी सेनाके साथ काशीमनकी इस्तंगता लड़कीको हर कर उसके साथ विवाह कर लिया। इस विवाहसे सब झगड़ा टंटा मिट गया सही, पर वृद्ध काशीमनने देनपस्सरमें अपनी प्रभुता अक्षुण्ण रखनेके लिये खूब प्रयास किया था।

पच्युत्तन नम्बुर जदे देवनादि अभिरलके वंशमें उनके पुत्र देवनादि और उनके बाद देवनादि महेन्द्र राज्य पर अभिषिक्त हुये। इन्होंने जानागरके पिता और भाइयोंके विरुद्ध बहुत युद्ध किये थे। उनके भाई अनकअगुङ्ग लनङ्गने राजसेना ले कर जेम्ब्रना प्रदेश पर आक्रमण किया और उसको जीता था। जदेराजवंशमें कोई सन्तान न थी, अनन्तर १८३० ई०में वे राजसिंहासन पर बैठे। उनकी 'गुस्तिक' पत्नीके गर्भसे दो पुत्र थे। वे पिताके जीवितकालमें 'पराकन' (राजपरित्याज्य) नामसे पुकारे जाते थे।

ये दो राजपुत्र नीचवंशमें उत्पन्न हुये थे, अतएव उनका राजा होना किसीने भी स्वीकार न किया। इसी बीच देनपस्सरमें काशीमनराज अपने प्रभावको भी रखना चाहते थे। देन पस्सर और दूसरे भाई भी नीचवंशसे पैदा हुये थे, इसी कारण अनेक पुङ्गवगण उनकी अधीनता स्वीकार न की। किन्तु काशीमनके अभ्युदय होने पर पच्युत्तन राजवंशमें उनका पूर्ण प्रभाव पड़ गया। बदोङ्गराजके देनपस्सर और पच्युत्तन राजवंशके वे ही मुख्य अभिभावक समझे जाते थे। वर्तमान पच्युत्तन राजका अभिषेक नहीं होता। किन्तु वे पिताकी मृतदेहके जलनेके बाद सम्पूर्ण विधि करनेके अधिकारी हैं। किन्तु देनपस्सरके राजा अब भी पितृदेहको जला नहीं सकते। वे समस्त आत्मीय मृतदेहको प्रासादमें रखते हैं। मृतकी अवस्था और मर्यादाके अनुसार उसकी अन्त्येष्टि क्रिया भी होती है। यवद्वीपके प्रधान पुङ्गवगणकी वंशावली नीचे उद्धृत की जाती है।

बदोङ्गराजवंश

गोष्ठी नम्बुरपोला

अनक अगुङ्ग परेदेवन

गोष्ठी बदयातेग — गोष्ठीन्यामननेग — गोष्ठी पट्टरकरे

गोष्ठीनम्बु रजम्बेसिद्दिक

अनक अगुङ्गजदे मन्लोगोर — अनक अगुङ्गनलिङ्गरह मोटक (पच्युत्तनमें)

[illegible]

नम्बुरजाति (१९०० में) — गोष्ठीमदेरगार — गोष्ठी पट्टदलन

थे। यवद्वीपमें केदिरि सबसे बड़ा राज्य गिना जाता था तथा क्षत्रिय इसमें अधिक नहीं थे। माहिपगण ही (महाजन) राज्य करते थे।

क्षत्रियोंमेंसे केवल देवअगुङ्ग और उनका वैमात्रेय भाई आर्या डामर तथा अपर छह मनुष्य बालिद्वीपमें पहिले आये थे। यवद्वीप देखो। आर्या डामर और अन्य छह लोगोंके वंशधर आचारभ्रष्ट हो वैश्य बन गये थे। केवल देवअगुङ्गको विशुद्ध सदाचारी क्षत्रिय समझ राजा लोग अब भी श्रेष्ठसम्मान देते हैं। बदोङ्ग, तबानान, मेंगुइ, करङ्ग असेम आदि स्थानोंके रहनेवाले कितने लोग अपनेको अगुङ्गदेवके कुटुम्बी बतलाते हैं, लेकिन पंडित लोग उनको सदाचारी क्षत्रिय नहीं मानते। क्लोङ्ग कोङ्ग, बङ्गली और गियान्यरमें अब भी क्षत्रियवंश राज्य करते हैं। बोलेलेङ्गमें पहिले देव अगुङ्गके वंशका राज्य था, इस समय इनके कुटुम्बी लोग बदोङ्गमें रहते हैं। देशाक, मवेव और पुङ्कक नामके कितने ही क्षत्रिय हैं जिनका शूद्रोंके साथ सम्बन्ध देखा जाता है।

वेश्य (वैश्य)।

बालिद्वीपमें क्षत्रियोंकी अपेक्षा वैश्योंकी संख्या ज्यादा है। करङ्ग असेम, बोलेले बुलमेङ्ग इ, तबानान, बदोङ्ग और लम्बक आदि स्थानोंमें अब भी वैश्य लोग राज्य करते हैं। तबानान और बदोङ्गके राजगण क्षत्रिय आर्यडामरके वंशज होनेसे देव अगुरके प्रभाव द्वारा वैश्य हो गये हैं। उनके पूर्वपुरुष वैश्योंकी तरह बालोंको बांधते थे, इसलिये वे वैश्य कहलाये जाते थे। वर्त्तमानकालमें केशोंके बीच क्षत्रिय और वैश्योंमें कुछ भेद देखनेमें नहीं आता।

वहां और मजपहितके क्षत्रिय वर्त्तमानमें "माहिप" (माहिष्य) या "कायो", वैश्य "रयङ्ग" "पति" "देमाङ्ग" और तुमङ्गगुङ्ग नामोंसे प्रसिद्ध हैं। पतिवंशोंके पूर्वपुरुष प्रथमदेव अगुङ्गके मन्त्री थे, इसलिये इस वंशके कोई कोई लोग "मन्त्री" कहलाते हैं। आर्यडामर और पति नामधारी वंशधरोंको छोड़ और सभी शूद्र हो गये हैं।

कृषि, वाणिज्य और शिल्प वैश्योंकी मुख्य आजीविका होने पर भी यहांके प्रधान वैश्य इन सब कामोंको घृणित समझते हैं। वे लोग अफीम खाने और कुक्कट

बालियों का विश्वास है, कि पहिले ये ब्राह्मण भारतसे यवद्वीप गये थे। भगवान् द्विजेन्द्र उनके श्रेष्ठ अगुआ नेता थे। द्विजेन्द्रके पांच स्त्रियां थीं। उनमेंसे पांच स्त्रियों के गर्भसे उत्पन्न सन्तान पांच विभागोंमें बट कर बालिद्वीपमें वास करने लगा। इन पांच शाखाओं के नाम—१ कमेनु २ गेलगेल, ३ नुआबा, ४ मास और ५ पाटदृान्य।

गिया-पर्वदेशके कमेनु नामक स्थानमें जिनका वास है वे लोग कमेनु ब्राह्मण हैं। ये ब्राह्मण स्त्रियोंसे पैदा हुए हैं। गेलगेल नामक स्थानमें जिन ब्राह्मणों का वास था वे गेलगेल ब्राह्मण कहे जाने लगे। वे द्विजेन्द्रकी क्षत्रियपत्नियों से उत्पन्न हुये थे। द्विजेन्द्रके औरस और क्षत्रिय बाल विधवाके नुआबा ब्राह्मणों की उत्पत्ति है। इसी तरह वैश्य कन्याके मासब्राह्मणों की और शूद्र स्त्रीसे पाटदृान्य नामके ब्राह्मण पैदा हुये हैं।

जहां क्षत्रियोंका राज्य है वहां गेलगेल ब्राह्मणों की प्रधानता और जहां वैश्यों की प्रधानता है वहां मास ब्राह्मण सचराचर दान पूजा लिया करते हैं। भिन्न वर्णकी माताके सम्मानमें जरूर फर्क है। किन्तु उस विषयमें जातिका कुछ भी ख्याल नहीं है। इन पांच श्रेणियोंमें जो सच्चरित्र, साधुप्रकृति, धर्मशील, विद्वान्, शास्त्रज्ञ हैं वे पूज्य और प्रधान गिने जाते हैं।

बालिद्वीपमें ब्राह्मणोंकी ही संख्या ज्यादा है। सभी ब्राह्मण राजा और क्षत्रियोंके अधीन हैं। क्या तो युद्ध क्या दूत कार्य सब समयमें ब्राह्मणोंको राजाकी आज्ञा माननी पड़ती है। राजाकी आज्ञा उल्लङ्घन करनेसे ब्राह्मणों को भी देशसे निकाल दिया जाता है। तौ भी ब्राह्मण राजाओं की अपेक्षा उच्चपदस्थ और सम्मानित हैं। वे राजकन्याके साथ विवाह कर सकते हैं, किन्तु राजा ब्राह्मण कन्याका विवाह अपने साथ नहीं कर सकते।

बालिद्वीपमें ब्राह्मणोंकी ज्यादा संख्या है इसी लिये और जातियों का उतना प्रभाव नहीं है। बहुत सी जातियां इसी कारणसे दरिद्र हीन हो गयी हैं और आजीविकाके लिये अपने हाथसे परिश्रम करती हैं। यहां तक कि मछली पकड़ने और शारीरिक परिश्रम द्वारा धन कमानेमें भी कुछ भी कसर नहीं रखते।

ब्राह्मणों में जो सम्पूर्ण शास्त्रों का रहस्य जानते हैं और समस्त ब्राह्मणोचित कार्योंमें पारदर्शिता प्राप्त करते हैं वे गुरुके द्वारा दण्ड पा कर 'परिडनदण्ड' या 'पदण्ड' उपाधि पाते हैं। गुरुके चरणों में अपनी मस्तकको रख अर्पित गुरुके पादोदकका पान, हर तरहसे गुरुकी आज्ञामें तत्पर रहने आदि कठोर कार्य में उत्तीर्ण होने पर भी इस उपाधिकी प्राप्ति होती है। जो ब्राह्मण-छात्र गुरु गृहमें वास कर इस उपाधिको प्राप्त करनेकी कोशिश करते हैं राजा उनको यथेष्ट उत्साह दान आदिसे सन्तुष्ट करते रहते हैं।

"पदण्ड" उपाधिके पानेवाले ही राजाके दण्डाधिकारी और धर्माधिकारी होते हैं। वे समस्त अधर्म चारियों को दण्ड देते हैं। इन्हीं पदण्डों में कोई पुरोहित होते हैं। इस या साधारण ब्राह्मणों में जो विद्या, बुद्धि और सरलतामें पदण्ड हो सकते हैं उन्हीं को राजा अपना पुरोहित बनाते हैं।

कुलपुरोहित ही राजगुरु होते हैं। राजा उनका शिष्य होता है और उनकी हर तरहसे सेवा किया करता है। वह समस्त राजनैतिक या धर्मनैतिक कार्योंमें पुरोहित से परामर्श लेना उचित समझता है। राज्य या समस्त राजपरिवारकी मङ्गल कामनाके लिये पुरोहित सदा ही यागयज्ञ, शांतिपाठ, वेदपाठ आदि शुभकार्य में निरत रहते हैं।

बालिद्वीपमें भिन्न भिन्न श्रेणियों में एक एक पुरोहित हैं। केवल राजपुरोहित ही गुरु कहा जाता है और सब उसको पूजते हैं। समस्त सामन्त भी पदण्डों में किसी को पुरोहित बनाते हैं और उसको गुरु कह कर पुकारते हैं। वर्तमान समयमें बालिद्वीपमें सात पुरोहित या राजगुरु हैं—कोङ्कोङ्में दो, गियान्यरमें एक, बदोंग या बन्दन पुरमें दो, तबाननमें एक एवं मेंगुइमें एक ऐसे सात पुरोहित या राजगुरु यहां पर हैं। बालिके निवासी इनको देवों की तरह पूजते या नमस्कार करते हैं। गुरु जब राजपथसे बाहिर निकलते हैं तब हजारों मनुष्य उनको साष्टाङ्ग नमस्कार करते देखे जाते हैं और बहुतसे लोग उनके पादोदक लेनेके लिये अत्यन्त व्यस्त रहते हैं।

ब्राह्मण समस्त वर्णोंसे कन्या बहुत स्त्रियां ग्रहण करते हैं। वर्णसङ्कर होने पर भी वे ब्राह्मणवर्णमें ही गिनी जाती हैं। किन्तु सम्पत्तिके अधिकारमें हीनाधिक भाव जरूर रहता है। शूद्राका पुत्र जो ग्रहण कर सकता है उससे अधिक वैश्याका पुत्र, तथा उससे ज्यादा क्षत्रिया का, और सबसे ज्यादा ब्राह्मणीका पुत्र दायभागका अधिकारी है। ब्राह्मणों से शूद्राकी सन्तान होना यह निंदित है। यदि तीन पीढ़ी ऐसा सबंध होता रहा तो वह शूद्र वर्णमें शुमार की जायगी। क्षत्रिय और वैश्यों के लिये भी ऐसा ही नियम है।

ब्राह्मणों की सवर्णा स्त्री जैसा सम्मान पाती हैं शूद्रा स्त्री उसका शतांश भी नहीं पाती। ऐसा भी देखा जाता है, कि वे सवर्णा स्त्रोकी मृत्युके बाद भरण पोषणके लिये जायदाद दे जाते हैं, किन्तु शूद्राको कुछ भी नहीं दे सकते।

ब्राह्मणों के साथ गमन करना ही निम्न जातीय स्त्रियों के लिये गौरव तथा सम्मान है; किन्तु सवर्णाका सहगमन एकदम निषिद्ध है।

सवर्णा स्त्रियोंको वेद, होम, यागयज्ञादिमें पूर्ण अधिकार होता है। वे स्त्रियाके सती होनेके समय या दानादि कार्य वेलाका तर्पण आदि कार्य करती हैं या सहायता कर सकती हैं। जैसे ब्राह्मणोंमें पण्डित या पदण्ड उपाधि होती है वैसे ही सुशीला ब्राह्मण कन्याओंको 'पदण्ड स्त्री' या 'पण्डित'की उपाधि मिलती है।

ब्राह्मणोंमें तीन ब्राह्मण हैं—शैव बौद्ध, और भुजङ्ग। शैव शिवके, बौद्ध बुद्धके और भुजङ्ग-ब्राह्मण नागोंके उपासक हैं। सब स्थानमें शैव ब्राह्मण ज्यादा, भुजङ्ग बहुत थोड़े हैं।

क्षत्रिय।

भारतमें जैसे विशुद्ध सदाचारी क्षत्रियोंका अभाव है बालिद्वीपमें भी वैसे सदाचारी क्षत्रिय नहीं हैं। जिस समय भारतसे हिंदुओंने आ कर यवद्वीपमें उपनिवेश किया था, उस समय बहुत थोड़े क्षत्रिय आये थे। "उशनयव" ग्रन्थसे मालूम होता है, कि कोरिपान, गगल्ङ्ग, केदिरि और जङ्गला इन चार प्रदेशोंमें क्षत्रियराज्य था। "रगल्व" ग्रन्थमें लिखा है, कि यव अथवा केदिरि की राजसभामें क्षत्रिय और वैश्य जातिके सामन्त रहते थे। यवद्वीपमें केदिरि सबसे बड़ा राज्य गिना जाता था तथा क्षत्रिय इसमें अधिक नहीं थे। माहिपगण ही (महाजन) राज्य करते थे।

क्षत्रियोंमेंसे केवल देवअगुङ्ग और उनका वैमात्रेय भाई आर्य डामर तथा अपर छह मनुष्य बालिद्वीपमें पहिले आये थे। यवद्वीप देखो। आर्य डामर और अन्य छह लोगोंके वंशधर आचारभ्रष्ट हो वैश्य बन गये थे। केवल देवअगुङ्गको विशुद्ध सदाचारी क्षत्रिय समझ राजा लोग अब भी थे सम्मान देते हैं। बदोङ्ग, तबानान, मेंगुइ, करङ्ग असेम आदि स्थानोंके रहनेवाले कितने लोग अपनेको अगुङ्गदेवके कुटुम्बी बतलाते हैं, लेकिन पंडित लोग उनको सदाचारी क्षत्रिय नहीं मानते। क्लोङ्ग कोङ्ग, बङ्गली और गियान्यरमें अब भी क्षत्रियवंशज राज्य करते हैं। बोलेलेङ्गमें पहिले देव अगुङ्गके वंशका राज्य था, इस समय इनके कुटुम्बी लोग बदोङ्गमें रहते हैं। देशक, प्रवेब और पुङ्गकन नामके कितने ही क्षत्रिय हैं जिनका शूद्रस्त्रीके साथ सबंध देखा जाता है।

वश्य (वैश्य)।

बालिद्वीपमें क्षत्रियोंकी अपेक्षा वैश्योंकी संख्या ज्यादा है। करङ्ग असेम, बोलेलेङ्ग गुनमेङ्गइ, तबानान, बदोङ्ग और लम्बक आदि स्थानोंमें अब भी वैश्य लोग राज्य करते हैं। तबानान और बदोङ्गके राजगण क्षत्रिय आर्यडामरके वंशज होनेसे देव अगुङ्गके प्रभाव द्वारा वैश्य हो गये हैं। उनके पूर्वपुरुष वैश्योंकी तरह बालोंको बांधते थे, इसलिये वे वैश्य कहलाये जाते थे। वर्त्तमानकालमें केशोंके बीच क्षत्रिय और वैश्योंमें कुछ भेद देखनेमें नहीं आता।

दहा और मजपहितके क्षत्रिय वर्त्तमानमें "माहिप" (माहिष्य) या "कायो", वैश्य "रयङ्ग" "पति" "देमाङ्ग" और तुमङ्गगुङ्ग नामोंसे प्रसिद्ध हैं। पतिश्रेणीके पूर्व पुरुष प्रथमदेव अगुङ्गके मन्त्री थे, इसलिये इस वंशके कोई कोई लोग "मन्त्री" कहलाते हैं। आर्यडामर और पति गजमद्के वंशधरोंको छोड़ और सभी शूद्र हो गये हैं।

कृषि, वाणिज्य और शिल्प वैश्योंकी मुख्य आजीविका होने पर भी यहांके प्रधान वैश्य इन सब कामोंको घृणित समझते हैं। वे लोग अफीम खाने और कुक्कुट

गुरुके खर्चे चलानेके लिये कुछ वाणिज्य करते हैं। अपर जातिके लोग भी वाणिज्य करने लगे हैं।

शूद्र।

शूद्रोंको धर्म कर्म करनेमें अधिकार नहीं है। द्विजाति की सेवा करना ही शूद्रका मुख्य धर्म है। अपनी वस्तु पर शूद्रोंका कुछ भी अधिकार नहीं रहता। मुखिया या राजा जब चाहे तब शूद्रके घरसे प्रत्येक वस्तु ले सकता है उसमें शूद्र किसी तरहका निषेध नहीं कर सकता। राजा किसी देशमें चला जाये तो उस देशके शूद्रोंको राजाके लिये हंस, बक कुक्कुटादि खाद्य-सामग्री इकट्ठी करनी पड़ती है। इस समय राजकर्मचारी अपनी इच्छाके अनुकूल शूद्रके घरसे जो चाहे ले सकता है, शूद्र किसी तरहकी आपत्ति नहीं कर सकता। राजकर्मचारी इच्छानुसार शूद्रों के ऊपर अत्याचार करते थे पर वृद्ध डाचोंमनने यह प्रथा नष्ट कर दी। शूद्रोंकी सभी दशायें बड़ी शोचनीय हैं। परन्तु, राजभृत्यगण और मुखिया राजकुमारको तरह आलस्यसे और शूद्रों के धन आदिकी लूटपाटमें अपना जीवन बिताते हैं तथा अफीम खाने और मुर्गे लड़ानेमें सदा व्यस्त रहते हैं।

मण्डिका (मण्डलेश्वर), प्रबेकेल और अन्यान्य राजकीय पद पर शूद्र नियुक्त होते हैं। मण्डलेश्वर एक देश अथवा तहसीलका मालिक होता है। इनके पूर्व पुरुष देव अगुङ्गके द्वारा शूद्र बनाये गये थे। मजपहितसे जो समस्त वैश्य बालिद्वीपमें आये थे वे सब भी शूद्रोंमें शामिल किये जाते हैं।

यहांके पतित ब्राह्मण भी बहुत कुछ शूद्राचारी हैं। सङ्गुल नामकी एक श्रेणीके शूद्र हैं, जो स्मृतिपुराण को पढ़ते हैं और मन्त्रोंका पाठ करते हैं। इनके पूर्व पुरुष ब्राह्मण थे। "दले असुर" या कालपूजा कर ये लोग ब्राह्मण धर्मसे पतित हो गये हैं। इनके बीच एक प्रवाद यों प्रचलित है,—एक प्रसिद्ध पदण्डाको पाचक अथवा परिचारक था। वह गुप्तरूपसे अपने प्रभुका पूजाकर्म देखता और वेदपाठ सुनता था। इसी तरह उसने वेद सीख लिया। लेकिन वह शीघ्र ही पकड़ा गया। कोई उपाय न देख उसे पदण्डाने शूद्रगणमें शुमार किया तथा उसे और उसके वंशजोंको वैदिकमन्त्र पढ़नेका अधिकार दिया।

बालिद्वीपके चारों वर्ण ही प्रायः विश्वासी, अध्यवसायी साहसी और कर्मठ हैं।

भाषा और साहित्य।

यवद्वीपसे यहांकी भाषामें बहुत अंतर है। यवद्वीपकी वर्णमालामें २० अक्षर हैं, किन्तु बालि आदि पलिनेशिय द्वीपपुंजकी वर्णमालामें १८ अक्षर देखे जाते हैं। भाषाके पंडितोंने बालिद्वीपके साथ सुन्द, मलय प्रभृति पलिनेशिय द्वीपपुञ्जकी भाषागत एकता स्थिर की है। सुन्द और बालिद्वीपके त, द और ध में विशेष भेद नहीं है। संस्कृत तालव्यके उच्चारणके अनुकूल इनका व्यवहार होता है। सुन्द और बालिद्वीपकी भाषामें आकारका स्पष्ट उच्चारण किया जाता है, किन्तु यवद्वीपमें 'अ' के स्थानमें 'उ' का प्रयोग होता है। ड, और ष का विशेष भेद रहने पर भी इनका उच्चारण कभी कभी अनुनासिक योगमें होता है। "न"के स्थानमें ञ तथा कभी कभी ञ के स्थान ङका व्यवहार भी देखा जाता है। इनके अन्त्यस्थ "व" नहीं होते।

यवद्वीपकी तरह यहांकी भाषा दो प्रकारकी है। उच्च श्रेणीके लोग परिमार्जित भाषा बोलते हैं। परिमार्जित भाषा ही यहांकी सभ्य भाषा है। अन्य जनसाधारण जो भाषा बोलते हैं वह निम्न श्रेणीकी भाषा मानी जाती है। वर्तमान यवद्वीपके रहनेवाले जिस परिमार्जित और श्रेष्ठ तर भाषा बोलते हैं, उससे बालिद्वीपके उच्चश्रेणीके लोगोंकी भाषा बहुत भिन्न है। यवद्वीपकी निम्नश्रेणीकी भाषाकी बहुत कुछ बालिद्वीपकी उत्तम भाषासे मिलती जुलती है। किन्तु यवद्वीपकी भाषामें मार्जित शब्दोंका प्रयोग नहीं देखा जाता। यवद्वीपके रहनेवाले सहजमें बालिद्वीप-की भाषाका अर्थ समझ कर सकते हैं, किन्तु साफ शुद्ध वचन नहीं बोल सकते। इन लोगों की निम्न श्रेणीकी भाषामें मलय और सुन्द्र द्वीपवासियों की भाषाका मेल बहुत रहता है।

यह भाषा यवद्वीप निवासियों के लिये सरल हो गयी है। यवद्वीपके रहनेवाले और बालि उपनिवेशके तथा उनके पहिले यहांके आदिवासी यही भाषा बोलते थे। निम्नश्रेणीकी भाषा यद्यपि रूपान्तरित और परिमार्जित हो गयी है तो भी पलिनेशिय भाषाकी स्मृति आज

स्यमान बनी हुई है। भाषाके विद्वान् यह भी कहते हैं, कि चार सौ वर्ष पहिले बालि, मलय और सुन्द प्रभृति द्वीप अर्द्धसभ्य थे। सुतरां यहांकी प्रचलित भाषा भी उसी तरह विरल रही होगी, इसमें आश्चर्य ही क्या? सुमात्रासे बालि और उससे पूर्वदिक्‌वर्त्ती द्वीपों की भाषाका निकट सम्बन्ध देख कर भाषाके पण्डितों ने यह सिद्धान्त किया है, कि बालिद्वीपमें मलय और सुन्द निवासियोंका उपनिवेश हो इस भाषा सामञ्जस्यका कारण है। जब विजयी यवनिवासियों ने आ कर बालिद्वीपके बहु संख्यक लोगों को इसी एक भाषामें बोलते देखा तब भाषाके परिवर्त्तन करनेमें उन्होंने किसी प्रकारकी चेष्टा न की। उस समय यवद्वीपनिवासी यही भाषा बोलते थे, इसलिये यह बालिद्वीपकी राष्ट्र भाषा बन गई तथा पलिनेशिय मिश्रित भाषा ही बालिद्वीपकी निम्न श्रेणीकी भाषा हो गई।

पूर्वतन यवभाषाके सहित बालिद्वीपकी भाषाका जो निकट सम्बन्ध है वह कवि भाषामें मिले हुए तगल और मलय शब्दके अस्तित्वसे हो जाना जाता है। क्योंकि, कविभाषाकी उत्पत्तिके समयमें यवभाषा परिमार्जित नहीं हुई थी। कविभाषामें जो मलय शब्दका अस्तित्व है उस यवभाषाका पलिनेशीय भाषाके साथ संबंध मालूम पड़ता है। किन्तु वर्त्तमान यवद्वीप भाषामें मलयदेशीय शब्दका प्रयोग नहीं देखा जाता। बालिद्वीपमें यवनिवासियों के आगमन और जातिविभागके स्थापित होनेसे यहांकी भाषामें भी भेद दिखाई देता है अर्थात् कुलीन ब्राह्मण और क्षत्रिय परिमार्जित उत्तम भाषा तथा निकृष्ट शूद्र लोग जघन्य भाषा बोलते हैं। बालिद्वीपके निकटवर्त्ती स्थानों में हिन्दू सभ्यताका विस्तार है, तो भी उन लोगों की आदि और पैतृक भाषामें कोई विशेष भेद नहीं है। कथित भाषाको छोड़ बालिद्वीपमें लिखित भाषा भी है। वर्त्तमान ग्रन्थों के अतिरिक्त प्राचीन काव्यग्रन्थ कवितामें तथा ब्राह्मणों का धर्मशास्त्र संस्कृत भाषामें लिपिबद्ध होते थे। जो ब्राह्मण यवद्वीपमें आये थे अपने धर्म शास्त्रग्रन्थों को साथमें लाये थे, ऐसा सभी स्वीकार करते हैं। वे लोग उच्च श्रेणीके संस्कृतविद्वान् थे; किन्तु प्राकृत भाषामें भी उनकी विशेष व्युत्पत्ति थी तथा वे प्राकृतिक भाषा अच्छी तरह बोल सकते थे, ऐसा बहुतोंका विश्वास है। यदि ईसा जन्मके ५०० वर्ष बाद भारतवासिका इस द्वीपमें आगमन मान लिया जाय तो कवि भाषाकी उत्पत्तिके प्रारम्भमें कोई न कोई अवश्य ही कारण होगा। क्योंकि, भारतीय प्राकृतकी विकृतिका समावेश उसका एकदम नहीं हुआ है। भारतके बहुतसे हिंदू और बौद्ध लोग अपने धर्मके प्रचारके लिये यवद्वीपमें आये थे। वे यद्यपि पाली और प्राकृत भाषाके खूब जानकार थे तो भी उनको अपने धर्ममें यहांके लोगोंको दीक्षित करनेके लिये यहांकी भाषा सीखनी पड़ी थी। बौद्धलोगोंके साथ ब्रह्मोपासक हिंदू भी यव, बालि आदि द्वीपोंकी भाषा सीखनेमें रत हुये थे। बालिवासियोंको अपने धर्ममें दीक्षित करने तथा अपने शास्त्रोंमें कथित पूजाओंमें विश्वास उत्पन्न कराने और भक्ति उनके हृदयमें जगानेके लिये बालिभाषा का ही उन्होंने आश्रयग्रहण किया था। क्योंकि, वे जानते थे, कि दूसरे देशमें अपना धर्म फैलानेके लिये यहांकी भाषाका सीखना नितान्त आवश्यक है। प्रम्बनन और बुड़ोबुद्दोरके खंडहरोंसे जाना जाता है, कि यवद्वीपमें बौद्ध और ब्राह्मण बे-रोकटोक एक ही स्थानमें रहते थे। उनकी पूजापद्धति भिन्न अवश्य थी परन्तु आपसके मूलमन्त्रोंमें कहीं भी भेद नहीं पाया जाता था। कवि भाषा में रचित ग्रन्थों का कुछ भाग शैव ब्राह्मणोंके द्वारा बनाया गया है तो दूसरा भाग बौद्धों के द्वारा। दोनों ही प्रकारके ग्रन्थों को बालिवासी आदरकी दृष्टिसे देखते हैं और उन का पाठ करते हैं।

विदेशियों के समानभाव होनेसे ही कविभाषाकी उत्पत्ति होती है। भारतसमागत बौद्धों ने यवद्वीप निवासियों की संख्या अधिक देख कर नई भाषाका प्रचार करनेमें साहस नहीं किया। बौद्धलोगों ने विज्ञान और धर्मशास्त्रों के भावों को तद्देशनिवासियोंके सरल रूपसे समझानेके लिये यहांकी भाषामें संस्कृतका प्रचार किया। यवद्वीप निवासियों की भाषामें ऐसा अर्थबोधक कोई शब्द न रहनेके कारण भारतीय धर्मोपदेष्टाने उनकी शिक्षाके लिये अगणित संस्कृत शब्द भाषामें विमिश्रित किये। उसी मिश्र भाषासे ग्रन्थ लिखे गये और धर्म शिक्षाका कार्य संपन्न होने लगा।

मनुप्रणीत मानवधर्मशास्त्रके नहीं होने पर भी ये लोग मनुको ही (मनु) धर्मशास्त्रके प्रणेता मानते हैं। पूर्वाधिगम अथवा शिवशासन नामक ग्रन्थ भी मनुके बनाये हैं। इसकी भाषा कविता और दृष्टान्तोंसे शून्य है।

साधारण कविसाहित्यके बीच भारत युद्ध नामके ग्रंथका उल्लेख किया जा सकता है। किसी समयमें यही महाभारतका अनुवाद कह कर प्रसिद्ध था; किन्तु महाभारतकी पोथी मिल जानेसे जो भ्रम लोगोंके बीच फैल रहा था वह मिट गया। भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य पर्व्वोंको ले कर भारतयुद्ध तैयार किया गया है। केदिरिराज श्रीपादुकाधार जयभयकी आज्ञासे हेपुसदने इस ग्रन्थका निर्माण किया था।

४ विवाह—मं पुकण्व प्रणीत कविताका एक अपूर्व ग्रन्थ। ५ स्मरदहन—रामायण प्रणेता कवि राजा कुसुमके पुत्र मधुधर्मज द्वारा रचित। ६ सुमनासान्तक—रघुवंश विषयक ग्रन्थ। ७ बोम (भौम) काव्य—जिसमें विष्णुके औरस और पृथ्वीके गर्भसे भौम दानवकी उत्पत्ति और कृष्णजीके हाथ उसका मरण विषय उल्लिखित है। मंपुप्रद बोध नामक बौद्धरचित एक शास्त्र है। ८ अर्जुन विजय—रावणकार्त्तवीर्य और अर्जुनके युद्धका वर्णन इसमें है। यह मंपु तन्तुल्र बोध नामके बौद्ध द्वारा प्रणीत है।

९ कुनमौम—इसमें जैनधर्मका व्याख्यान लिया गया है। १० हरिवंश—महाभारतका परिशिष्ट खंड। मपुपेतुतु बोध नामके एक बौद्धने इसको कविभाषामें लिखा है। इत्यादि कितने ग्रंथ उल्लेखनीय हैं।

बबद् अथवा ऐतिहासिक बौद्धग्रंथोंमें १ केनङ्र् बोक—केदिरि, मजपहित और वान्तिराज्य राजाके आदि पुरुष प्रमपुर केनङ्र्योक्से लेकर आख्यायिकाका आरंभ किया है। २ रङ्गलये—जिसमें केदिरिराजमंत्री रङ्गलवे द्वारा शिवबुद्धकी पराजय और केदिरिराजवंशका चरित वर्णित है। ३ उज्जनपथ और ४ उज्जनपाति—इसमें उक्त दो द्वीपके राजाओंके चरितका उल्लेख है। ५ देवेन्द्र—इसमें वाल्मिरावदका धर्मशास्त्र इतिहास है।

गुगुर अथवा धर्मविचार और नीतिविषयक ग्रन्थ असंख्य हैं। ये अधिकांश श्लोकोंमें लिखे गये हैं। उनमें १ सुवन संक्षेप, २ सुवनकोष, ३ बृहस्पतितत्त्व, ४ सारसमुच्चय, ५ सत्यमान, ६ चन्द्रस्मन्, ७ सर्वोरमाति, ८ गुगुर कामोक (कामाख्यातत्व ?), ९ राजनीति, १० नीतिसार वा नीतिशास्त्र, ११ कामन्दकीनीति, १२ नरोत्तोय, १३ रत्नत्रय और १४ तिथिदशगुणित ये कितने ग्रन्थ मुख्य हैं।

पहिले दो धर्मशास्त्रके विषयका उल्लेख किया जा चुका है। यहां पर १ आगम, २ अधिगम, ३ देवागम, ४ सारसमुच्चय, ५ कुटकालमय, ६ स्वयंभू वा स्वयंभु, ७ देवदण्ड और ८ यमसंघ आदि कितने ग्रन्थ मिलते हैं। शेनय शास्त्र नामका एक स्मृतिग्रन्थ है जिसमें भारतीय धर्मशास्त्रके अनुसार एक स्मृतिग्रन्थ है। लेकिन इसका प्रचार अधिक नहीं है। पूर्वाधिगम नामके स्मृतिशास्त्रकी उपक्रमणिकामें जो कुछ लिखा है वह समस्त उद्धृत ज्योंका त्यों दिया गया है; केवल संस्कृत शब्दका वानि रूपान्तर नहीं हुआ है। इस नमूनेसे सब कोई जान सकते हैं, कि यहांकी शास्त्रीयभाषामें कितने संस्कृत शब्दोंका मिलाव है—

"अभिज्ञानसंज्ञ। इदन् पूर्व्वाधिगमशासन शास्त्रसारोद्धृत पूर्व्वारम सङ्ग्, तलम पृथाजार्य राजपुरोहित सर्व गुणसम्पूर्ण सङ्ग सर्व्वजन हृदय-तमिरहरण सकल-प्रचूडामणि शिरसि प्रतिष्ठित तकाप् सहन पराचार्य शिष्य कन्ये, कनिष्ठ मध्योत्तम नंदन शिष्य परमादि गुरु महाप्रभावानङ्ग् गंभीर शिर यंगुदारणसत्वाङ्गलीमर्कारि अपनङ्ग् नीर पणदहन मस्सा सकप लिङ्ग्, समस्त प्रतिसन्तान सङ्ग्, मस्नङ्ग् पुर शिर मतः प्रमाणकेन धर्मलिङ्ग् रसलिङ्ग्, शास्त्राधिगम शास्त्रसारोद्धृत रि दर पङ्ग् कुमकयेन शाहन सङ्ग् गुम् नै शिवागम, किमुत महत सङ्ग्, गुरुङ्ग्, शिव विपाक स्थपित लिङ्ग्, नगर सङ्ग् (सम्पन्न ?) इत्य अंगुलि धिः सङ्ग्, महारेश लिङ्ग्, नगर स्थापन लिङ्ग्, प्रदेशनास्य चन्द्रल सङ्ग्, अनिक प्रतीयक वायव्यविच्छेद सङ्ग्, दश सङ्ग्, सत गलकेन विचारलिङ्ग्, मर्व्वकलिङ्ग्, सनातन गुरुङ्ग्, लिङ्ग्, प्रदेश न तमु रस्तोर, दसन सङ्ग्, इङ्ग्, अधिगमशास्त्रसारोद्धृत गुरु धर्मलिङ्ग् शास्त्रावलीरदायकैः।"

सन्य वा गुगुरकामोक्ष नामके ग्रंथमें आगारे मृत्यु पर्यन्त स्त्रोके कर्त्तव्योंका वर्णन है। चन्द्रकरण

इसी स्मृतिके द्वारा वर्णित धर्मका अवलम्ब ले अपना जीवन बिताते हैं। राजा अथवा ब्राह्मणको इस धर्मनीति के अनुकूल कार्य करने पर "राजर्षि" उपाधि दी जाती है तथा शास्त्रलिखित आचरणके नहीं करनेसे राजाओंकी अभिषेकक्रिया नहीं होती।

मल्लत् ग्रन्थमें पञ्जीकी वीरत्वकहानीका जिक्र है। उसके छन्द किदुङ्ग् कविसे बिलकुल अलहदे हैं। गम्बु नामक नाट्यशालामें इस ग्रन्थके स्थल विशेषका अभिनय होता है। किंतु यहां पर कालिदासादि विद्वानों के बनाये गये नाटकों का आभास मात्र नहीं है। भारतीय नाटकके आदर नहीं होनेमें दो कारण कहे जा सकते हैं। सम्भव है कि, भारतीय ब्राह्मणों के यवद्वीप आनेके बाद कालिदासादि पण्डितों के महामूल्य नाटक बने हों, अथवा धर्मप्रचारक ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्रसे भिन्न अन्य नाटकों की आलोचना करनेमें ध्यान नहीं दिया हो।

धर्मशास्त्र, पौराणिक काव्य और इतिहासके अतिरिक्त इनके यहां काल जाननेके लिये ज्योतिषशास्त्र भी हैं। कालके निर्णय करनेमें इन लोगों के दो मत हैं। एक भारतीय दूसरा बालीय अथवा पलिनेशिय। भृगुगर्ग नामक पुस्तकसे मालूम पड़ता है, कि ये लोग शालिवाहनराज प्रतिष्ठित शक सम्वत् (७८ ई०)-से कालका निर्णय करते हैं तथा कसङ्ग अथवा चैत्र-माससे वर्षके आरम्भका समय मानते हैं। मुसल्मानों के प्रभावसे यवद्वीपकी काल गणनामें हेर फेर अवश्य हुई, पर यहांकी गणनामें चन्द्रमासकी जगह सौर मासके अतिरिक्त और कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। जेष्ठ और आषाढ़के अतिरिक्त महीनों के नाम संस्कृत और बालिदेशकी भाषामें हैं। यथा—श्रावण (कस), काड़ वा, भाद्रपद (भाद्रपद) अथवा करो, असुजि (आश्वयुज वा आश्विन), कतिग (कार्त्तिक) अथवा कपत, मार्गशिर, मार्गशीर्ष (अग्रहायन) वा कालिम, कनम वा पोष्य (पौष), कपित वा माग (माघ), कउलु वा फाल्गुन (फाल्गुन) कसङ्ग अथवा मधुमास (चैत्र), वादग वा वैशाख (वैसाख) एवं जेष्ठ (ज्यैष्ठ) और आषाढ़। प्राचीन रोमक आदिके मतके अनुसार बालिद्वीपमें पहिले १० मास प्रचलित थ, उनमें ज्येष्ठ और आषाढ़के दो मास नहीं थे तथा वे पहिले ३५ दिनका मास मानते थे। दिनोंके नाम पलिनेशिय और हिन्दी भाषामें मिले हुए हैं। यथा—रविति सोम, अङ्गगार, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर (हिंदी) एवं पहिङ्ग, पुअन, वगि, कालिवना और मेनिश (पलिनेशिय)। इसके अलावा उन लोगों के ग्रह नक्षत्र आदिके विषयका तथा इनके द्वारा होनेवाले मनुष्योंके शुभ अशुभ फलोंका भी ज्ञान है। उनका चन्द्रमास शुक्ल (तङ्गल) और कृष्णपक्ष (पुङ्गलुंगङ्ग) ले कर माना जाता है।

उक्त ३५ दिनमें ३५ नक्षत्रोंके फलाफलको छोड़ कर भी वे जात बालकके शुभाशुभ जाननेके लिये सप्ताहके प्रति दिन १ देवता, २ नरमूर्त्ति, ३ वृक्ष, ४ पक्षी, ५ भूत और ६ सत्वके अस्तित्वकी कल्पना करते हैं तथा उनके प्रभावों के अनुसार मानव चरित्रकी कल्पना करते हैं।

अमृत, शून्य, काल, पति, और लिन्योक दिनके ये पांच लक्षण हैं। अमृत क्षणमें उत्पन्न होनेसे सौभाग्यशाली शून्यमें दरिद्र, कालमें रिपुवश, पति क्षणमें मृत्यु और लिन्योकमें पैदा होनेसे मनुष्य असच्चरित्र और चोर होता है। इसके सिवाय उनका दिन आठ घटिकाओंमें विभक्त है। इसीको जाननेके लिये वे जलयंत्रका व्यवहार करते हैं। पानीकी घड़ी अपने देशमें भी प्रसिद्ध है। प्रत्येक राजमहलमें ऐसी एक घड़ी होती है। पानी भरने पर उसके पानी फेंकनेके लिये एक मनुष्य नियुक्त रहता है। जब घड़ी पूरी हो जाती है तब वह जनताको जतानेके लिये नगारेमें चोब देता है।

पञ्जिकाकी गणनामें भृगुगर्गके सिवाय वे सुन्दरी सम और सुन्दरी भुजङ्ग नामकी पुस्तककी सहायता लेते हैं। ज्योतिषचक्रमें राशियोंकी गणना करते हैं। वृश्चिक के स्थानमें वृश्चिक, कर्कटके स्थानमें रकत, मीनके घरमें कुंभ और मेषके घरमें मकर आदि देखी जाती हैं। प्राचीन ग्रीक लोगोंकी तरह वे तुलाराशि नहीं मानते। तुलाके घरमें वृश्चिकका अधिकार पाया जाता है।

भारतवासियोंकी तरह इनका भी विश्वास है, कि राहु ग्राससे सूर्य और चन्द्रमाका ग्रहण होता है। सूर्यग्रहणका नाम 'ग्रह' और चन्द्रग्रहका नाम 'राहु' है। ग्रहणके समय वे यन्त्रों और चित्कार द्वारा विकट शब्द करते

मनुस्मृति भारतधर्मशास्त्रके नहीं होने पर भी ये लोग मनुको ही (मनु) धर्मशास्त्रके प्रणेता मानते हैं। पूर्वाधिगम अथवा शिवशासन नामक ग्रन्थ भी मनुके बनाये हैं। इसकी भाषा कविता और श्लोकोंसे शून्य है।

साधारण धर्मग्रन्थादिकके बीच भारत युद्ध नामके ग्रन्थका उल्लेख किया जा सकता है। किसी समयमें यही महाभारतका अनुवाद कह कर प्रसिद्ध था, किन्तु महाभारतकी पोथी मिल जानेसे जो भ्रम लोगोंके बीच फैल रहा था वह मिट गया। भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य पर्वोंको ले कर भारतयुद्ध तैयार किया गया है। केदिरि राज जयाभय नारजयभयकी आज्ञासे सेपुसद्ने इस ग्रन्थका निर्माण किया था।

४ विवाह—सं पुरुष प्रणीत कविताका एक अपूर्व ग्रन्थ। ५ स्मरदहन—रामायण प्रणेता कवि राजा कुसुमके पुत्र मधुधर्मज द्वारा रचित। ६ सुमनसान्तक—रघुवंश विषयक ग्रन्थ। ७ बोम (भौम) काव्य—जिसमें विष्णुके औरस और पृथ्वीके गर्भसे भौम दानवकी उत्पत्ति और कृष्णार्जुनके हाथ उसका मरण विषय उल्लिखित है। ग्रन्थ बौद्ध नामक पण्डितरचित एक शास्त्र है। ८ अर्जुन विजय—रावणकार्त्तवीर्य और अर्जुनके युद्धका वर्णन इसमें है। यह ग्रन्थ तन्तुलर बोध नामके बौद्ध द्वारा प्रणीत है।

९ सुतसोम—इसमें श्वेतपर्वका उपाख्यान लिखा गया है। १० हरिवंश—महाभारतका परिशिष्ट ग्रंथ। मपुसेवुलु बोध नामके एक बौद्धने इसको कविभाषामें लिखा है। पूर्वोक्त कितने ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

स्वर अथवा ऐतिहासिक काव्य यथा १ केन्द्रद मोक—केदिरि, जनपहित और कालिराज प्रभृति आदि पुरुष प्रमुख केन्द्रदमोकको ले कर आख्यायिकाका आरम्भ किया है। २ रङ्गलये—जिसमें केदिरिराजसभा रङ्गलय द्वारा शिवपुरको पराजय और केदिरिराज ग्रन्थका चरित वर्णित है। ३ उजनराय और ४ उजरपाटि—इसमें उक्त दो स्थानके राजाओंके चरितका उल्लेख है। ५ वेलेङ्क, इसमें कालिन्द्राराका धर्मशास्त्र लिखा है।

कुछ अथवा धर्मविषयक और नीतिक ग्रंथ अनेक हैं। ये कविभाषा श्लोकोंमें लिखे गये हैं। इनमें १ भुवन-सक्षेप, २ भुवनकोष, ३ बृहस्पतितत्त्व, ४ तत्त्वसमुच्चय, ५ सरसमान, ६ चन्द्रमान, ७ सारोद्धार, ८ गुरु कामोक (कामान्धातंत्र?), ९ राजनीति, १० नीतिसार वा नीतिशास्त्र, ११ कामन्दनीति, १२ सरोतम, १३ दण्डक और १४ तिथिदृश्यगणित ये कितने ग्रन्थ मुख्य हैं।

पहिले ही धर्मशास्त्रके विषयका उल्लेख किया जा चुका है। यहा पर १ आगम, २ अधिगम, ३ देवागम, ४ सार समुच्चय, ५ दुष्टकालभय, ६ स्वयंभू या स्वयम्भू, ७ देवदण्ड और ८ धर्मसंघ आदि कितने ग्रंथ मिलते हैं। सेवर्ग नामका एक स्मृतिग्रंथ है जिसमें भारतीय धर्मशास्त्रके अनुसार एक स्मृतिग्रन्थ है। लेकिन इसका प्रचार अधिक नहीं है। पूर्वाधिगम नामके स्मृतिशास्त्रकी उपक्रमणिकामें जो कुछ लिखा है वह समस्त उद्धृत अंश क्यों किया गया है, केवल संस्कृत शब्दका आविष्कार नहीं हुआ है। इस नमूनेसे सब कोई जान सकते हैं, कि यहांकी शास्त्रीयभाषामें कितने संस्कृत शब्दोंका मिलाव है—

"अभिवाद मंत्र। लिख्त् पूर्वाधिगमशासन शास्त्रमार्ग सहित पूर्व्वाद्य सङ्ग तल्स पूज्याचार्य राजपुरोहित मन्त्र गुणानमातुरदिन सङ्गन सर्व्वाङ्ग हृदय-शनिघ्नहरण सवस्त्र पञ्चामणि शिरसि प्रतिष्ठित सरस्वती पराधार्य शिव पर्व, कनिष्ठ मध्योत्तम सं ग्ग शिव परमादि गुरु महा भगवानङ्ग सेवीर शिर य गुरुतरणसमानरसीमकरि अपगङ्ग सीर पणद्रुम भक्त सकपलिङ्ग नत्ताम धीन मन्त्रान मङ्ग गत्मङ्ग पुन शिर अतः प्रमाण्यंत सीः मिङ्ग स्वामिङ्ग शास्त्राधिगत शास्त्रमार्गोद्धृत रि यह यङ्ग मरपेदन नहन नङ्ग गुरु ने शिवागम, किन्तु महन मङ्ग पुणङ्ग शिव शिवाक स्थविर सिङ्ग नगर शङ्ग (सम्मत?) दण्ड व गुनि पैः मङ्ग, महाविर सिङ्ग नगर प्रापन सिङ्ग प्रतिनन्तन कन्दन मङ्ग पतित प्रतीपक वाक्यहृदयविच्छेद सङ्ग, मव मङ्ग, सन सवैव विचारलिङ्ग सर्व्वकर्त्तालिङ्ग सत्तानन्त गुणङ्ग, लिङ्ग प्रवेश स न गु इस्तीर, स्मन राङ्ग, शङ्ग अधिगमशास्त्रमार्गोद्धृत गुण पालिङ्ग शासनकर्त्तारेटीकायधेः।"

गद्य वा कुछुकनीति नामके ग्रंथमें अनामें स्मृति वर्णन कर्त्तार धार्मिकतामोंका वर्णन है। संस्कृतमन्त्र

इसी स्मृतिके द्वारा वर्णित धर्मका अवलम्ब ले अपना जीवन बिताते हैं। राजा अथवा ब्राह्मणको इस धर्मनीति के अनुकूल कार्य करने पर "राजर्षि" उपाधि दी जाती है तथा शास्त्रलिखित आचरणके नहीं करनेमें राजाओंकी अभिषेकक्रिया नहीं होती।

मलन् ग्रन्थमें पञ्जीकी वीरकहानीका जिक्र है। उसके छन्द किदुङ्ग् कविसे बिलकुल अलहदे हैं। गम्बु नामक नाट्यशालामें इस ग्रन्थके स्थल विशेषका अभिनय होता है। किन्तु यहां पर कालिदासादि विद्वानों के बनाये गये नाटकों का आभास मात्र नहीं है। भारतीय नाटकके आदर नहीं होनेमें दो कारण कहे जा सकते हैं। सम्भव है कि, भारतीय ब्राह्मणों के यवद्वीप आनेके बाद कालिदासादि पण्डितों के महामूल्य नाटक बने हों, अथवा धर्मप्रचारक ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्रसे भिन्न आर नाटकों की आलोचना करनेमें ध्यान नहीं दिया हो।

धर्मशास्त्र, पौराणिक काव्य और इतिहासके अतिरिक्त इनके यहां काल जाननेके लिये ज्योतिषशास्त्र भी है। कालके निर्णय करनेमें इन लोगों में दो मत हैं। एक भारतीय दूसरा यावीय अथवा पलिनेशिय। भृगुगर्ग नामक पुस्तकसे मालूम पड़ता है, कि ये लोग शालिवाहनराज प्रतिष्ठित शक सम्वत् (७८ ई०)-से कालका निर्णय करते हैं तथा वसन्त अथवा चैत्र माससे वर्षके आरम्भका समय मानते हैं। मुसलमानों के प्रभावसे यवद्वीपकी काल गणनामें हेर फेर अवश्य हुए, पर यहांकी गणनामें चन्द्रमासकी जगह सौर मासके अतिरिक्त और कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। जेष्ठ और आषाढ़के अतिरिक्त महीनों के नाम संस्कृत और बालिद्वीपकी भाषामें हैं। यथा—श्रावण (कस), पात्र वा, भाद्रपद (भाद्रपद) अथवा करो, असुजि (आश्वयुज वा आश्विन), कतिग (कार्त्तिक) अथवा कपत, मार्गशिर, मार्गशीर्ष (अग्रहायण) वा कालिम, कराम वा पोष्य (पौष), कपित वा माग (माघ), कसुलु वा फाल्गुन (फाल्गुन) वसन्त अथवा मधुमास (चैत्र), यादस वा वैशाख (वैसाख) एवं जेष्ठ (ज्यैष्ठ) और आषाढ़। प्राचीन रोमक आदिके मतके अनुसार बालिद्वीपमें पहिले १० मास प्रचलित थे, उनमें ज्येष्ठ और आषाढ़के दो मास नहीं थे तथा वे पहिले ३५ दिनका मास मानते थे। दिनोंके नाम पलिनेशिय और हिंदी भाषामें मिले हुए हैं। यथा—रविदिति सोम, अङ्गार, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर (हिंदी) एवं पहिङ्ग, पुवन, वगि, कालिवना और मेनिश (पलिनेशिय)। इसके अलावा उन लोगों के ग्रह नक्षत्र आदिके विषयका तथा इनके द्वारा होनेवाले मनुष्योंके शुभ अशुभ फलोंका भी ज्ञान है। उनका चन्द्रमास शुक्ल (तङ्गल) और कृष्णपक्ष (पुङ्गलुभङ्ग) ले कर माना जाता है।

उक्त ३५ दिनमें ३५ नक्षत्रोंके फलाफलको छोड़ कर भी वे ज्ञात बालकके शुभाशुभ जाननेके लिये सप्ताहके प्रति दिन १ देवता, २ नरमूर्त्ति, ३ वृक्ष ४ पक्षी, ५ भूत और ६ सत्त्वके अस्तित्वको कल्पना करते हैं तथा उनके प्रमाणों के अनुसार मानव चरित्रकी कल्पना करते हैं।

अमृत, शून्य, काल, पति, और लिम्योव दिनके ये पांच लक्षण हैं। अमृत क्षणमें उत्पन्न होनेसे सौभाग्यशाली शून्यमें दरिद्र, कालमें रिपुवश, पति क्षणमें मृत्यु और लिम्योवमें पैदा होनेसे मनुष्य असच्चरित और चोर होता है। इसके सिवाय उनका दिन आठ घटिकोंमें विभक्त है। इसीको जाननेके लिये वे जलयन्त्रका व्यवहार करते हैं। पानीकी घड़ी अपने देशमें भी प्रसिद्ध है। प्रत्येक राजमहलमें ऐसी एक घड़ी होती है। पानी भरने पर उसके पानी फेंकनेके लिये एक मनुष्य नियुक्त रहता है। जब घड़ी पूरी हो जाती है तब वह जनताको जतानेके लिये नगारेमें चोब देता है।

पञ्जिकाकी गणनामें भृगुगर्गके सिवाय ये सुन्दरी क्रम और सुन्दरी भुक्त नामकी पुस्तककी सहायता लेते हैं। ज्योतिषचक्रमें राशियोंकी गणना करते हैं। वृश्चिक के स्थानमें मृचिक, कर्कटके स्थानमें रक्त, मीनके घरमें कुम्भ और मेषके घरमें मकर आदि देखे जाते हैं। प्राचीन ग्रीक लोगोंकी तरह ये तुलाराशि नहीं मानते। तुलाके घरमें वृश्चिकका अधिकार पाया जाता है।

भारतवासियोंकी तरह इनका भी विश्वास है, कि राहु ग्राससे सूर्य और चन्द्रमाका ग्रहण होता है। सूर्यग्रहणका नाम 'ग्रह' और चन्द्रग्रहका नाम 'राहु' है। ग्रहणके समय ये यन्त्रों और चित्कार द्वारा विकट शब्द करते

है। विश्वास है कि इन मन्त्रोंसे सब पाप दूर हो जाते हैं, किन्तु लज्जाको छोड़ देते हैं। हमारे देशमें आज कल भी ग्रहणके समय गङ्गाध्वनि और शान्तिमन्त्रसे कोलाहल करते हुए गङ्गास्नान करते हैं।

यह विषय पहिले ही कहा जा चुका है, कि ब्राह्मण इस द्वीपमें कब आये थे, उनके समयका निर्णय करना अत्यन्त कठिन है। जब बौद्ध धर्मका प्रभाव घटा तब बौद्ध साधुओंने अपने धर्मके प्रचारके लिये नाना देशोंमें पर्यटन किया। शालिवाहनके कागणनाम और प्राचीन संस्कृत के सिवाय दूसरी भाषाके न रहने अभाव इन्होंमें अनुमान किया जाता है, कि प्रथम या द्वितीय शताब्दीके बीच-में यहां ब्राह्मणोंका आगमन हुआ होगा। पूर्वाञ्चलस्थ द्वीप वासियों के मध्य ऐसा प्रवाद है, कि क्लिङ्ग (कलिङ्ग) देश से उनके देशमें सभ्यता धर्म और व्यवस्थाका प्रचार हुआ है। पहिले यवद्वीपमें, पीछे वहांसे समस्त स्थानोंमें व्याप्त हो गया। यहां पर ब्राह्मणकी प्रभुता देख द्वीपवासियोंने उपनिवेशोंको बसाना चाहा। सबसे पहिले १म शताब्दी में त्रितुष्टि नामक किसी ब्राह्मणने बहुतसे लोगों के साथ आ दक्षिण उपकूल पार किया और वे सबके सब मेरु पर्वतके पादमूलमें बस गये। यवद्वीपमें जो सम्वत् चलता है उसको त्रितुष्टि नामके एक प्राचीन राजाने चलाया था। इसीलिये यह सम्वत् आजिशाक (आदिशक) नामसे प्रसिद्ध है।

यवद्वीपके एक उपाख्यानसे जाना जाता है, कि पहिले बहुतसे हिन्दू मिल कर यहां आये थे। उनके साथमें स्त्री पुत्र थे, यह भी सहजमें निश्चय किया जा सकता है। महात्मा त्रितुष्टि भी अपने स्त्री पुत्र सहित आये थे। उनकी सहधर्मिणीका नाम ब्राह्मण-शान्ति और दो पुत्रोंका मनुमानस और मनुमादेव था। वे बौद्ध थे, या हिन्दू इसका प्रमाण नहीं मिलता। इन्होंने और इनके वंशजोंने यहां कुछसमय तक राज्य किया था।

३०० सम्वत् तक इस देशमें बहुत औपनिवेशिक आये थे। उनमेंसे कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियोंके नाम ये हैं—

शैलनाथ—३०० शकमें मौतक—२०० शकमें, गुहिर ३१० शकमें कृष्ण ३३१ शकमें तथा विमर्दि और उनके पुत्र दशबाहु ३५० शकमें यहां आये थे। ९८० शकमें बहुतसे शैव पण्डित यवद्वीपमें पधारे। किन्तु उनके साथ यवद्वीप वासियोंका मत नहीं मिलता था, इस कारण वे लोग भगा दिये गये। इन्होंने यहांके राजा गुरु दासकी शरण ली। राजा गुरुदास उन लोगोंके शरणागत हो गये। यवद्वीपवासियोंके मुसलमान होनेके कुछ समय पहिले किन्हीं बौद्धोंने मजपहित नामक स्थानमें शैव राज अधिपतिके यहां आश्रय लिया था। मजपहित राज्यके भ्रष्ट हो जाने पर ये लोग बालिद्वीपको भाग गये। उनके अधिपतिका नाम बाहुराजु था।

बालिद्वीपमें इस समय जो शक चल रहा है, वह यव द्वीपकी अपेक्षा ५ वर्ष कम है। इन पांच वर्षोंकी कमी क्यों हुई, बालिवासी पण्डित लोग इसका कोई कारण बतला नहीं सके हैं। मालूम पड़ता है, कि चान्द्रमास गणनाके स्थानमें सौर गणनाका परिवर्तन, पलिनेशीय गणनाका संमिश्रण आदि दोषोंसे ऐसा विभ्राट हुआ है। पहले १० मासका १ वर्ष, पीछे १२ मासका माना गया। यदि मलमासकी गणना न की जाय तो भी इनके साथ हिन्दू पत्रिकाकी विभिन्नता देखी जाती है। उन लोगोंका शुभाशुभ घटना और समय निरूपणके लिये पत्रिकाकी आवश्यकता नहीं होती। वे लोग विशेष ऋतु द्वारा पार्थ जीव पुष्पोंका प्रस्फुटन, समुद्रका सामयिक गति परि वर्तन अथवा रूपान्तर ग्रहण, अन्य प्राकृतिक निदर्शन आदि घटनाओंको देख कर समयका निरूपण कर लेते हैं।

धर्म, देवता और शिक्षण।

भारतके जो हिन्दू धर्मावलम्बियोंने बालिद्वीपमें प्रवेश किया था। पहिले लिखा गया है, कि बौद्ध धर्मप्रचारकोंके साथ साथ शैव ब्राह्मणोंने पूर्वाञ्चलस्थ द्वीपमें उपनिवेश बसाये, किन्तु ब्राह्मणधर्मके अधिक प्रभावसे बौद्ध लोगों का प्रभाव बहुत कुछ जाता रहा। बौद्ध सब प्रकारके पशुओं के मांसको खाते हैं, किन्तु शैव संस्कारके लोग गाय, कुत्ते आदि अस्पृश्य जीवोंका मांस नहीं खाते।

बालिद्वीपके पण्डितके मुखसे सुना जाता है, कि कुछ दिनके कनिष्ठ भ्राता थे। दोनों सम्प्रदाय परस्परकी बन्दि रोकते हैं तो भी कोई किसीके देवकी पूजा नहीं करते, किन्तु पूजा पद्धतिमें भी परस्पर समानता देखा जाती है।

, पद्मावलिकम नामके उत्सवमें शैव पंडित बौद्ध पुरोहितको बुला कर उत्सर्ग किया करते हैं। राजा अथवा राजपुत्रोंकी अन्त्येष्टि क्रियाके समय शैव पुरोहित शिवपूजाके और बौद्ध पुरोहित बुद्ध पूजाके जलका मृतदेहके मस्तक पर सिंचन करते हैं। इसके अलावा कवि धर्में बौद्ध और शैवके परस्पर सुहृद्भावों को ले कर अनेक कथायें लिखी गई हैं।

प्राचीन ब्राह्मण धर्म में इन लोगोंको प्रगाढ भक्ति थी, तो भी ये लोग शिवोपासक कहे जाते थे। इन लोगों का धर्मशास्त्र दो भागों में विभक्त है, पुरोहितोंकी स्वगृह में गुप्तपूजा और जनसाधारणकी पूजा।

वैदिकयुगके ब्राह्मणोंके सूर्य और अग्नि उपासना की तरह ये लोग अपने गृहमें सूर्यकी पूजा करते हैं। इसी सूर्यको ये लोग शिव मानते हैं, क्योंकि शिवके तीन नेत्र ही सूर्यके रूपान्तर हैं।

हर एक पंडित प्रति पूर्णिमा और अमावस्याके दिन प्रातःकालमें ६ से ले कर १० घडी तक अभुक रह घरमें सूर्य की उपासना करते हैं।

पंडित लोग तीन दिनके अतिरिक्त कालियनमें (पलिनेशिय सप्ताहके ५वें दिन) देवको भक्तिसे उत्सर्ग करते हैं। अलिङ्ग, कलिङ्ग आदि उच्च श्रेणीके याजकलोग प्रतिदिन देव-सेवा करते हैं; किन्तु अमावस्या और पूर्णिमा को छोड अन्य किसी दिन देवपूजाका विशेष उत्सव नहीं होता। घरके सामने पूर्व दिशामें मुख कर सूर्यकी पूजाके लिये ये लोग बैठते हैं। नैवेद्य, अक्षत आदि उपकरण, फूल, जल घटा आदि सभी पूजाकी सामिग्री सज्जित रहती है। विधिपूर्वक वेद मंत्रका उच्चारण करके पूजा साङ्ग करनेसे देवावेश होता है। इस समय भक्तिपूर्वक नृत्य होता है। ये देहस्थित देवकी फूलोंसे पूजा करते हैं। पूजा करते समय उन लोगोंके पुत्र पिताके सम्मुख कुछ समय तक खड़े रहते हैं, बादमें हट जाते हैं। उनके प्रसादको राजा आदि सभी ग्रहण करते हैं। वे उसको अमृतके समान मानते हैं। पूजाके समय जिस जलको पंडित लोग काममें लाते हैं वह 'तोयतीर्थ' कहा जाता है। यह भी बहुत पवित्र होता है। जनसाधारण इस को पंडित लोगोंसे खरीद कर अपनी देहमें या मृतककी देहमें पवित्रताके लिये लगाते हैं। गृहस्थियोंकी पूजा अथवा श्राद्धादिक अन्त्येष्टि क्रियाओं में ये लोग उपस्थित हो कर सम्पूर्ण क्रियाओंको विधिवत् कर जाते हैं।

अपने गृहोंमें ये वेद, ब्रह्माण्डपुराण और कविग्रंथोंकी आलोचना करते रहते हैं। अपने पुत्रों तथा क्षत्रिय बालकोंको उच्चशिक्षा देते हैं। जो लोग शुभाशुभ उनसे पूछने आते हैं उनको शुभाशुभ ज्योतिषगणनाके अनुसार बतलाते हैं। ये बालिद्वीपको पंजिका या पञ्चाङ्गको बनाते हैं। यदि कोई नवीन अस्त्रको तैयार करे, तो बिना मंत्रों के पवित्र किए हुये वह अस्त्र ठीक तरहसे नहीं चलता।

जनताकी मङ्गल-कामनाके लिये ये मन्दिरोंमें पूजा किया करते हैं। उस पूजामें सब श्रेणीके लोग आते हैं। गुनुङ्ग अगुङ्ग पर्वतके पादमूलमें बासुकीका मंदिर ही सर्वश्रेष्ठ है। यहांकी देवमूर्त्तिका नाम 'सङ्गपूर्णजय' है। इसके सिवाय तबाननके बतुकरु मंदिरमें, 'महा जयनिङ्गात्' बदोङ्गके उलुवतु मंदिरमें 'देवीदनुर', ब्रतुमें 'सुङ्ग माणिक कुमारङ्ग,' गियान्यरके अवक मंदिरमें 'सङ्गपुत्र जय', क्लोङ्कोङ्गके गियलव मंदिरमें 'सङ्गोङ्गजय' और तबाननके पकेन बुङ्गन मंदिर में 'सङ्ग माणिक कलेव' नामक देव मूर्त्तियां हैं। महादेवकी समस्त मूर्त्तियोंके हाथमें तलवार, धनुष और बर्छा आदि अच्छी तरह सजे हैं। इन प्रधान प्रधान मंदिरों में राजा लोग प्रजाको मङ्गल कामनाके लिये पूजा करवाते हैं। उलुवतुके मंदिरमें बालि वर्षके इक्कीसवें दिन और बासुकीके मंदिरमें कार्तिककी पूर्णिमाको बडा भारी महोत्सव होता है। इनके सिवाय और भी बहुतसे प्रधान मंदिर हैं जिन्हें सभी मनुष्य भक्तिकी निगाहसे देखते हैं।

१—सेरङ्गन द्वीपस्थ सकेनन मंदिरमें सङ्गहाङ्ग इन्द्र नामक वज्रधारी इन्द्रमूर्त्ति है। नूतन सालके ११ वें दिन उस मंदिरमें महोत्सव होता है।

२—बङ्गलीके जेमपुरु मंदिरमें भी इन्द्रमूर्त्ति है। इसके सिवाय जेम्बोना, ३ रम्बोत्सवि, ४ समेतिग और गियान्यरके, ५ किन्तेल्गुमि मंदिरके देवताकी पेजी शक्तिकी कथायें प्रचारित हैं।

है। विश्वास है, कि इन शब्दोंसे भयभीत हो शीघ्र ही राहु चन्द्रमाको छोड़ देते हैं। हमारे देशमें आज कल भी ग्रहणके समय घण्टाध्वनि और आनन्दोन्मादसे कोलाहल करते हुए गङ्गास्नान करते हैं।

यह विषय पहिले ही कहा जा चुका है, कि ब्राह्मण इस द्वीपमें कब आये थे, उनके समयका निश्चय करना अत्यन्त कठिन है। जब बौद्ध धर्मका प्रभाव बढ़ा तब बौद्ध साधुओंने अपने धर्मके प्रचारके लिये नाना देशोंमें पर्यटन किया। शालिवाहनकी वर्षगणना और प्राचीन संस्कृत के सिवाय दूसरी भाषाके ग्रंथका अभाव देखनेसे अनुमान किया जाता है, कि प्रथम या द्वितीय शताब्दीके बीच में यहां ब्राह्मणोंका आगमन हुआ होगा। पूर्वाञ्चलस्थ द्वीपवासियोंके मध्य ऐसा प्रचार है, कि क्लिङ्ग (कलिङ्ग) देश से उनके देशमें सभ्यता धर्म और व्यवस्थाका प्रचार हुआ है। पहिले यवद्वीपमें, पीछे वहांसे समस्त स्थानोंमें व्याप्त हो गया। यहां पर शस्यकी प्रचुरता देख भारतवासियोंने उपनिवेशोंको बसाना चाहा। सबसे पहिले १म शताब्दी में तितुषि नामक किसी ब्राह्मणने बहुतसे लोगोंके साथ था दक्षिण उपकूल पार किया और वे सबके सब मेरु पर्वतके पादमूलमें बस गये। यवद्वीपमें जो सम्वत् चलता है उसको तितुषि नामके एक प्राचीन राजाने चलाया था। इसीलिये यह सम्वत् आजिशाक (आदिशक) नामसे प्रसिद्ध है।

यवद्वीपके एक उपाख्यानसे जाना जाता है, कि पहिले बहुतसे हिन्दू मिल कर यहां आये थे। उनके साथमें स्त्री पुत्र थे, यह भी सहजमें निश्चय किया जा सकता है। महात्मा तितुषि भी अपने स्त्री पुत्र सहित आये थे। उनकी सहधर्मिणीका नाम ब्राह्मण-कान्ति और दो पुत्रोंका मनुमानस और मनुमादेव था। ये बौद्ध थे, या हिंदू इसका प्रमाण नहीं मिलता। इन्होंने और इनके वंशजोंने यहां कुछ समय तक राज्य किया था।

३५० शाक तक इस देशमें बहुत औपनिवेशिक आये थे। उनमेंसे कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियोंके नाम ये हैं—

शेलमयान—१०० शाकमें, घोटक—२०० शाकमें, सुदित—३१० शाकमें, कुमार—३३१ शाकमें तथा तिरुदि और उनके पुत्र दन्तबाहु ३७० शाकमें यहां आये थे। ४८० शाकमें बहुतसे शैव पण्डित यवद्वीपमें पधारे; किन्तु उनके मतके साथ यवद्वीप वासियोंका मत नहीं मिलता था, इस कारण वे लोग भगा दिये गये। इन्होंने यहांके राजा शुतुदामकी शरण ली। राजा शुतुदाम उन लोगोंके मतावलम्बी हो गये। यवद्वीपवासियोंके मुसलमान होनेके कुछ समय पहिले कितने शैवोंने मजपहित नामक स्थानके शैव राजा ब्रविजयके यहां आश्रय लिया था। मजपहित राज्यके नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर ये लोग बालिद्वीपको भाग गये। उनके अधिपतिका नाम वाहुराहु था।

बालिद्वीपमें इस समय जो शक चल रहा है, यह यव द्वीपकी अपेक्षा ५ वर्ष कम है। इन पांच वर्षोंकी कमी क्यों हुई, बालिवासी पण्डित लोग इसका कोई कारण बतला नहीं सके हैं। मालूम पड़ता है, कि चान्द्रमास गणनाके स्थानमें सौर गणनाका परिवर्तन, चलितेशीय गणनाका सम्मिश्रण आदि दोषोंसे ऐसा विभ्राट हुआ है। पहले १० मासका १ वर्ष, पीछे १२ मासका माना गया। यदि मलमासकी गणना न की जाय तो भी इसके साथ हिंदू पञ्जिकाकी विभिन्नता देखी जाती है। उन लोगोंको शुभाशुभ घटना और समय निरूपणके लिये पञ्जिकाकी आवश्यकता नहीं होती। ये लोग विशेष ऋतु द्वारा पार्वतीय फूलोंका प्रस्फुटन, समुद्रका सामयिक गति परिवर्तन अथवा रूपान्तर ग्रहण, अन्य प्राकृतिक निदर्शन आदि घटनाओंको देख कर समयका निरूपण कर लेते हैं।

धर्मतत्त्व, देवतत्त्व और विश्वास।

भारतके जो हिंदू धर्मात्माओंने बालिद्वीपमें प्रवेश किया था। पहिले लिखा गया है, कि बौद्ध धर्मप्रचारकोंके साथ साथ शैव ब्राह्मणोंने पूर्वाञ्चलस्थ द्वीपमें उपनिवेश बसाये, किन्तु ब्राह्मणधर्मके अधिक प्रचारसे बौद्ध लोगों का प्रभाव बहुत कुछ जाता रहा। बौद्ध सब प्रकारके पशुओंके मांसको खाते हैं, किन्तु शैव सम्प्रदायके लोग गाय, कुत्ते आदि अस्पृश्य जीवोंका मांस नहीं खाते।

बालिद्वीपके पण्डितके मुखसे सुना जाता है, कि बुद्ध शिवके कनिष्ठ भ्राता थे। दोनों सम्प्रदाय परस्परमें अति स्नेही हैं तो भी कोई किसीके देवकी पूजा नहीं करते, किन्तु पूजा पद्धतिमें भी परस्पर समानता देखी जाती है।

पञ्चायलिकम नामके उत्सवमें शैव पंडित बौद्ध पुरोहितको बुला कर उत्सर्ग किया करते हैं। राजा अथवा राजपुत्रो-की अन्त्येष्टि क्रियाके समय शैव पुरोहित शिवपूजाके और बौद्ध पुरोहित बुद्ध पूजाके जलका मृतदेहके मस्तक पर सिंचन करते हैं। इसके अलावा कविग्र थमें बौद्ध और शैवके परस्पर सुहृद्‌भावो को ले कर अनेक कथायें लिखी गई हैं।

प्राचीन ब्राह्मण धर्म में इन लोगोंकी प्रगाढ़ भक्ति थी, तो भी ये लोग शिवोपासक कहे जाते थे। इन लोगों का धर्मशास्त्र दो भागो में विभक्त है, पुरोहितोंकी स्वगृह में गुप्तपूजा और जनसाधारणकी पूजा।

वैदिकयुगके ब्राह्मणोंके सूर्य और अग्नि उपासना की तरह ये लोग अपने गृहमें सूर्यकी पूजा करते हैं। इसी सूर्यको ये लोग शिव मानते हैं, क्योंकि शिवके तीन नेत्र ही सूर्यके रूपान्तर हैं।

हर एक पंडित प्रति पूर्णिमा और अमावस्याके दिन प्रातःकालमें ६ से ले कर १० घड़ी तक अभुक रह घरमें सूर्यकी उपासना करते हैं।

पंडित लोग तीन दिनके अतिरिक्त काल्यिनमें (पलिनेशिय सप्ताहके ५वें दिन) देवको भक्तिसे उत्सर्ग करते हैं। अलिङ्ग, कलिङ्ग आदि उच्च श्रेणीके याजकलोग प्रतिदिन देव-सेवा करते हैं; किन्तु अमावस्या और पूर्णिमा-को छोड़ अन्य किसी दिन देवपूजाका विशेष उत्सव नहीं होता। घरके सामने पूर्व दिशामें मुख कर सूर्यकी पूजाके लिये ये लोग बैठते हैं। नैवेद्य, अक्षत आदि उपकरण, फूल, जल घटा आदि सभी पूजाकी सामिग्री सज्जित रहती है। विधिपूर्वक वेद मन्त्रका उच्चारण करके पूजा साङ्ग करनेसे देवावेश होता है। इस समय भक्तिपूर्वक नृत्य होता है। वे देहस्थित देवकी फूलोसे पूजा करते हैं। पूजा करते समय उन लोगोंके पुत्र पिताके सम्मुख कुछ समय तक खड़े रहते हैं, बादमें हट जाते हैं। उनके प्रसादको खाना आदि सभी ग्रहण करते हैं। वे उसको अमृतके समान मानते हैं। पूजाके समय जिस जलको पंडित लोग काममें लाते हैं वह 'तोयतीर्थ' कहा जाता है। यह भी बहुत पवित्र होता है। जनसाधारण इसको पंडित लोगोंसे खरीद कर अपनी देहमें या मृतककी देहमें पवित्रताके लिये लगाते हैं। गृहस्थियोंकी पूजा अथवा श्राद्धादिक अन्त्येष्टि क्रियाओं में ये लोग उपस्थित हो कर सम्पूर्ण क्रियाओंको विधिवत् कर जाते हैं।

अपने गृहोंमें ये वेद, ब्रह्माण्डपुराण और कविग्रन्थोंकी आलोचना करते रहते हैं। अपने पुत्रों तथा क्षत्रिय बालकोंको उच्चशिक्षा देते हैं। जो लोग शुभाशुभ उनसे पूछने आते हैं उनको शुभाशुभ ज्योतिषगणनाके अनुसार बतलाते हैं। ये वालिद्वीपकी पञ्जिका या पञ्चाङ्गको बनाते हैं। यदि कोई नवीन अस्त्रको तैयार करे, तो विना मन्त्रो के पवित्र किए हुये वह अस्त्र ठीक तरहसे नहीं चलता।

जनताकी मङ्गल-कामनाके लिये ये मन्दिरोंमें पूजा किया करते हैं। उस पूजामें सब श्रेणीके लोग आते हैं। गुनुङ्ग अनुङ्ग पर्वतके पादमूलमें वासुकीका मंदिर ही सर्वश्रेष्ठ है। यहांकी देवमूर्त्तिका नाम 'सङ्गपूर्णजय' है। इसके सिवाय तवाननके बतुकहु मंदिरमें, 'सह जयरिङ्गात्' बदोङ्गके उलुबतु मंदिरमें 'देवीदतुर', प्रङ्कुमें 'सुङ्ग माणिक कुमारङ्ग,' गियान्यरके जरुक मंदिरमें 'सङ्गपुल जय', क्लोङ्कोङ्गके गिगलव मंदिरमें 'सङ्गोङ्गजय' और तवाननके पकेन दुङ्गन मंदिर में 'सङ्ग माणिक कलेन' नामक देव मूर्त्तियां हैं। महादेवकी समस्त मूर्त्तियोंके हाथमें तलवार, धनुष और बर्छा आदि अच्छी तरह सजे हैं। इन प्रधान प्रधान मंदिरो मे राजा लोग प्रजाकी मङ्गल कामनाके लिये पूजा करवाते हैं। उलुवतुके मंदिरमे वालि वर्षके इकोसवें दिन और वासुकीके मंदिरमे कार्त्तिककी पूर्णिमाको बड़ा भारी महोत्सव होता है। इनके सिवाय और भी बहुतसे प्रधान मंदिर हैं जिन्हे सभी मनुष्य भक्तिकी निगाहसे देखते हैं।

१—सेरङ्गन द्वीपस्थ सकनन मंदिरमे सङ्गहङ्ग इन्द्र नामक वज्रधारी इन्द्रमूर्त्ति है। नूतन सालके ११ वें दिन उस मंदिरमे महोत्सव होता है।

२—बङ्गलीके जेमपुल मंदिरमे भी इन्द्रमूर्त्ति है। इनके सिवाय जेम्ब्रोना, ३ रमोत्सनि, ४ समेतिग और गियान्यरके, ५ किन्तेलगुमि मंदिरके देवताका ऐसी शक्तिकी कथायें प्रचारित हैं।

पातरणमें दुर्गा, काल और भूतोंकी तृप्तिके लिये सब लोग उनको पूजते हैं। पुरी नामक मन्दिरमें उच्च जातिके मनुष्य और 'पद्मस्तनन' मन्दिरमें शिवजीकी सभी लोग पूजा किया करते हैं। 'परार्यद्भुत' नामक मन्दिरोंमें देव और पितृगणकी पूजा हुआ करती है। फराङ्गन, मडय द्यङ्गन मङ्गुर और मेद आदि छोटे छोटे मन्दिर महादेवकी पूजाके लिये निर्दिष्ट हैं। इन मन्दिरों में शिवजी पद्मासन लगा कर बैठे हैं। उन्हीं के तृप्ति-साधक माल्य और चन्दनादि गन्ध द्रव्य चढ़ाये जाते हैं। प्रत्येक मन्दिरमें लिंगकी मूर्त्ति स्थापित है। समुद्रके किनारे बहुतसे वरुणदेवके मन्दिर हैं। राहमें सतियों के अनेक मन्दिर दृष्टिगोचर होते हैं।

बालिद्वीपमें वैष्णवधर्मका प्रचार नहीं है तो भी ब्राह्मण शिवपूजाके समय विष्णु भगवान्‌की पूजा करते हैं। ये हो बहुत कुछ हम लोगों की हरिहरमूर्त्ति के एकात्म सूचक हैं। ये मेरु, कैलाश और गुनुङ्ग अगुङ्गको स्वर्ग या इन्द्रलोक, विष्णुलोक या ब्रह्मलोक और शिवलोक कह कर कल्पना करते हैं और उन तीन लोकों में शिवको सर्वमय रूपमें विराजमान हैं। पदण्ड लोग शिवजीके सिवाय और किसी भी देवताके चार हाथ नहीं मानते।

शिवजीके प्रधान अलङ्कार ये सब हैं—अक्षमाला, चामर, त्रिशूल और पाश। कितनी सशस्त्र शिवमूर्त्तियोंका पहिले ही उल्लेख हो चुका है। शिव और काल एक होने पर भी मङ्गलमय शिवमूर्त्ति सुखास्पद और महासंहारक कालमूर्त्ति घोर तामस है। पातरणमें काल और उनकी पत्नी दुर्गा तथा अनुचर भूतों की पूजा होती है। शिव पत्नी उमा, पार्वती, गिरिपुत्री, देवीगङ्गा और देवीदनु नामों से पूजित होती हैं। शस्याधिष्ठात्री लक्ष्मीदेवी यहां पर शिवपत्नीके रूपमें महादेवजीके साथ पूजी जाती हैं।

विष्णुकी तरह यहां ब्रह्माजीका कोई मंदिर नहीं है। किसी महोत्सवमें विष्णु और ब्रह्ममूर्त्तिके साथमें अस्थायी मंदिर बनता है। उत्सवके बाद वह पुनः तोड़ दिया जाता है। यहां ब्रह्मा स्वयंयोनि, प्रजापति और चतुर्मुख नाम से विख्यात हैं। दान ही ब्रह्माकी प्रधान पूजा है। जो ब्राह्मण दण्डिका उस दण्डका धारण करते हैं, वे ही पदण्ड कहलाते हैं।

ब्रह्माकी पत्नी सरस्वती देवी यहां विद्या नामसे पूजित हैं। उनकी पूजाका कोई दूसरा भिन्न मंदिर नहीं है। वसु गुनोङ्ग सप्ताहमें शनैश्चरके दिन बालि वासी नाना पोथियोंको इकट्ठा कर गृहस्थित देवालयमें सरस्वतीकी पूजा करते हैं।

बालिवासी यद्यपि विष्णुका विशेषरूपसे पूजन नहीं करते, तोभी वे विष्णुके मत्स्य, वराह, कूर्म्म, वामन, परशुराम प्रभृति अवतार स्वीकार करते हैं। शंख, चक्र, गदा और दण्ड विष्णुके प्रधान चिह्न हैं।

ये लोग श्री या लक्ष्मीको विष्णुकी पत्नी मानते हैं। जब विष्णु, ब्रह्मा और शिव (स्रष्टा रक्षक और संहर्त्ता) ये तीनों शक्तियां एक हैं, तब लक्ष्मी सरस्वती प्रभृतिको शिव की पत्नी माननेमें कोई दोष नहीं है। ये लोग अभ्यास वशसे विष्णुमूर्त्तिके माथे पर तिलक लगाते हैं। शिवके जिस तरह तीन नेत्र हैं, उसी तरह कपालस्थ तिलकको ये लोग शिवके त्रिनेत्र जैसा व्यवहार करते हैं। वैष्णवी मूर्त्ति लक्ष्मी और सरस्वतीके माथे पर चैत्यशान या चन्द्रतिलक देते हैं। प्राचीन पवित्र चीजों पर खुदे हुये अनेक देवताओंकी मूर्त्तियां भी खुदी हुई हैं। ये हिन्दू देवताओंको विशेष स्वीकार करते हैं, तो भी उनके यहां ब्रह्माण्ड पुराणोक्त अपरापर देवताओंका उल्लेख मिलता है। इन्द्र, यम, सूर्य, चन्द्र, अनिल, कुबेर, वरुण, अग्नि आदि आठ देवताओं को ये लोकपाल कहते हैं। इन्द्रके बाद यम और वरुण का ये आदर सत्कार करते हैं। देवराज इन्द्र स्वर्गपुरी में अप्सरा, विद्याधरी और ऋषियोंसे परिवृत हो रहते हैं।

'विवाह' नामके ग्रन्थमें रावणके द्वारा किया गया इन्द्र का पराजय वर्णित है। बालिवासियोंका विश्वास है, कि इन्द्रलोकवासी मनुष्य देहको धारण कर सकते हैं। इन्द्रलोकको पार कर जीव विष्णुलोकको जाता है। पश्चात् शिवलोक जाने पर आत्माको अनन्त सुखकी प्राप्ति होती है। शिवलोककी प्राप्ति ही सबोंका मुख्य उद्देश्य है, तो भी एकमात्र पदण्ड लोगोंको ही सायुज्यकी प्राप्ति होती है। ये अनेक परिश्रम करने पर भी शिवलोक नहीं पा सकते। ऐसा उत्सवमें बहुधा सतीके और दासकी रक्षाके लिये स्वर्गलोकमें आत्मजीवनको स्वीकार करनेमें दासाको स्वर्ग

प्राप्ति होती है। किन्तु यदि इस आत्मोत्सर्गके समय पुरोहित उपस्थित न हों या शास्त्रविहितकर्म द्वारा स्वर्ग गमनका पथ परिष्कार न किया गया हो, तो उनको कभी भी स्वर्गलाभ न होगा। वे मेढक और सर्प हो कर पृथ्वी पर बहुत काल तक विचरण करेंगे। स्वर्ग पहुंचने पर भी यम उनके पुण्यपापका यथोचित रीतिसे विचार करते हैं। इसी विश्वासके वशीभूत हो वे शव का कभी कभी दो माससे २० वर्ष तक दाह नहीं करते।

दूसरे लोकपालोंमेंसे किसीकी पूजा नहीं की जाती। अनिल और वायुसे सम्पूर्ण जीवोंकी रक्षा होती है, अतएव उनका भी वे यथासाध्य आदर सत्कार करते हैं। पदण्ड और वैद्य लोग समय समयमें पवित्र वायु या फुत्कार द्वारा रोगीकी चिकित्सा करते हैं। अनशन व्रतमें वायुमार्गका वे सेवन करते हैं।

कार्त्तिकेय और गणेशजीकी पूजा कहीं भी देखने नहीं पड़ती। प्रत्येक प्रवेशद्वारमें पर विघ्नविनाशन गण पतिजीको मूर्त्ति प्रतिष्ठित है या कहीं कहीं उनका चित्र-मात्र ही लगा हुआ है। गणपतिजीके हस्तिमुण्ड होनेके कारण बालिवासियोंकी धारणा है, कि यह पशु मनुष्यके मङ्गलप्रद नहीं है। बोलेलेङ्गराज हाथीकी पीठ पर बैठ कर घूमते हैं। उनको देख सबके सब समझते हैं कि वे या तो राज्यसे भ्रष्ट या पाप पङ्कमें मग्न हो गये हैं। व्याघ्रसे तो वे महा घृणा करते हैं। यदि राज्यमें व्याघ्रका उत्पात हो जाय, तो सब लोग विश्वास करने लग जाते हैं, कि शीघ्र ही राज्यमें उपद्रव होगा या उसका उपद्रव होना ही राज्यके अधःपतनका कारण है। किन्तु गैंडाको देखने पर, चाहे इस जन्ममें हो या पर जन्ममें, वह अवश्य ही सम्मानको प्राप्त करेगा, ऐसी उन लोगोंकी धारणा है। किसी किसी महायज्ञमें वे गैंडाकी बलि देते हैं। इसका रक्त, मांस, चर्बी उन लोगोंके व्यवहारमें आती है। बहुतसे मनुष्य काम देवकी भी पूजा करते हैं। इनके प्राचीन काव्योंमें वासुकी, अनंत, तक्षक नागकी कथा, जनमेजयका सर्पयज्ञ, भग वान् वशिष्ठका राक्षस-यज्ञ और किन्नर, किंपुरुष, उरग, दैत्य, दानव, गन्धर्व, पिशाच आदि पुराणोल्लिखित कथाएं पायी जाती हैं।

सृष्टितत्त्व।

बालिके हिंदूलोग सृष्टितत्त्वके विषयमें ब्राह्मण पुराण का मत स्वीकार नहीं करते। वे अण्डसे जगत्‌की उत्पत्ति मानते हैं। पहिले सनन्द और सनत्कुमारादि चार जन ही पैदा हुये थे। बादमें ब्रह्माने क्रमसे स्वर्ग, नद, नदी, पर्वत और उद्भिज आदि तथा मरीचि, भृगु अङ्गिरा प्रभृति देव, ऋषि गणकी सृष्टि की।

सर्वलोक पितामह ब्रह्मा ही परमेश्वर शिवके स्रष्टा हैं। फिर शिव ही ब्रह्माके पितामह माने जाते हैं तथा उनके भव, सर्व आदि नाम भी उल्लिखित हैं। शारी रिक उपादान भेद उनके ये हैं—१ आदित्यशरीर, २ अप शरीर, ३ वायुशरीर, ४ अग्निशरीर, ५ आकाश, ६ महा पण्डित, ७ चन्द्र और ८ अजतारगुरु आदि। यही कारण है, कि ये अष्टतनु नामसे भी प्रसिद्ध हैं। ब्रह्माने अपने कल्प और धम नामक दो पुत्रोंकी सृष्टिके बाद यथाक्रम देव, असुर, पितृ, मानव, यक्ष, पिशाच, उरग, गधर्व, गण, किन्नर, राक्षस और सबके अन्तमें पशु आदिकी सृष्टि की। पीछे उन्होंने ब्राह्मण आदि चार वर्णोंको रचा। अनन्तर स्वायम्भुवादि मनु, शतरूपा, बारह यम, लक्ष्मी, नील लोहित (शिव)से सहस्र रुद्र, अग्नि और मेघोंकी उत्पत्तिकथा तथा धर्म और अहिंसा, श्री और विष्णु, सरस्वती और पूर्णमासके विवाहादि प्रसङ्ग लिखे हैं। स्वायम्भुव आदि मन्वन्तरमें और भी एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, अष्ट वसु, दश विश्वदेव, द्वादश भार्गव आदि विद्यमान थे।

बालिवासी भी पृथ्वीको सात द्वीप मानते हैं। उनके ब्रह्माण्ड पुराणमें भी पृथिवीका वर्ष विभाग तथा अग्निध्रादि स्वायम्भुव मनुके पौत्रोंकी शासनकथा कही गई है। कृत, त्रेता, द्वापर और कलि आदि चार युग ही वे लोग स्वीकार करते हैं। क्रमः क्रमसे मनुष्यकी संख्या घटती है। यह भी वे लोग मानते हैं।

शास्त्रोंमें ब्राह्मणसन्तानके आचरणीय अनुष्ठानादिका विषय इस तरह लिपिबद्ध है,—१ बाल्य अवस्थामें ब्रह्म-चर्यपूर्वक गुरुके घर पर विद्याध्ययन, २ विद्यावधनमें आबद्ध हो गृहस्थ धर्मका प्रतिपालन, ३ वैखानस (वान-प्रस्थ) अवलम्बन, ४ अन्तमें छह शत्रुओंको जीत कर

पर मसाला लगा कर सुगन्धि द्रव्योंका लेपन करते हैं और प्रत्येक अंगों पर एक टुकड़ा रख कर शव देहको वस्त्र, चटाई आदिसे ढक देते हैं। उन द्रव्योंसे शरीरमेंसे रस निकलने लगता है। वह रस नीचे रखे हुये धातु नामके पात्रमें जमा होता रहता है, प्रातमें वह फेंक दिया जाता है।

छह मासमें देहका दाह नहीं होनेसे देह सूख जाती है। यदि छह मासमें भी वह रस न सूखे, तो तीर्थोदक तथा पवित्र जल और नाना तरहके उपहार शवके सम्मुख दिये जाते हैं। पश्चात् शव शरीरमें भूतयोनि प्रविष्ट होती है। इसी भयसे वे उसके मुखमें एक सोनेकी अंगूठी रख देते हैं।

दाहके तीन दिन पूर्व शवका आवरण हटा दिया जाता है और आत्मीयगण उससे अन्तिम विदा लेनेके लिये आते हैं। इस समय पूर्वोक्त अङ्गराग जलसे धो कर फिर उसे ढक दिया जाता है। बादमें सोनेकी अंगूठीके बदले पांच धातुपात्रोंमें ओम् शब्दके साथ स, ब, त, अ, इ ये पांच बीजाक्षर लिख कर शवके मुखमें रख दिये जाते हैं। चीजोंसे बने हुये पञ्चदेव ही उस शवकी रक्षा करते हैं। पश्चात् वेदपाठ और शवके ऊपर शान्तिवारिका सिञ्चन किया जाता है।

जिस गृहमें शव रक्खा जाता वह अशुद्ध हो जाता है। दाह तक उस घरमें उसका कोई पदाधर पाक नहीं करता। किन्तु भूतोंका भय हो जानेके भयसे उसके अन्दर कोई न कोई आता जाता ही रहता है। बदोङ्ग और देनपसार राजाओंके शवकी रक्षाके लिये स्वतन्त्र महल बना हुआ है। शवरक्षाका खर्च थोड़ा है, किन्तु दाहकी प्रक्रिया अत्यंत गुरुतर और बहुत खर्चीली है। शववहनके लिये प्रासादसे 'पदे' (चिता स्तूप) तक ही जानेके लिये एक बांसका सेतु बांधना पड़ता है। यह सेतु मदिरा तीरसे सजाया जाता है। उसके ऊपर शिखरे सहित एक चूड़ाकार मंदिर बनाया जाता है। इस मन्दिरकी शोभा भी दर्शनीय है। अवस्थाके भेदसे चूड़ा तीन तल या ग्यारह तल तकका होता है। इसमें भीतरमें घर भी अच्छी तरहसे सजाये जाते हैं। राजाओंका रूप रख कर उसे सबसे ऊपर वाले तल्लेमें नवेन्द्र पल्लवसे ढक कर रक्खा जाता है। वह

शवयात्रा भी महासमारोहसे की जाती है। शवको ले जाते समय उसके व्यवहार करनेके सब द्रव्य उसके साथ रखते जाते हैं। इन लोगोंकी शवयात्रा इस तरह निकलती है—पहिले बाहक, पीछे वाद्यादि वाद्यकार ग्राम, अस्त्र शस्त्र परिपूर्ण सेनापुरुष, गजउपयोग द्रव्यादि, स्त्रियोंके सिर पर भूतोंकी तृप्तिके लिये उपहार, नर्तकियोंकी सेना, राजव्यवहार्य सेना, राजाके वस्त्रालंकार, फिर अश्व पर चढ़ा हुआ राजपुत्र या पौत्र और सबके बाद सेनादल तथा वाद्यकरोंका दल रहता है।

द्वितीय स्तवकमें सौसे अधिक स्त्रियोंके सिर पर तीर्थके जलपूर्ण कुम्भ रहते हैं। तृतीय स्तवकमें भूतों (पल्लेन कुरान) के फलमूल और मांसादि आहार करने योग्य चीजें रहती हैं। उसके बाद पालकी दण्ड और उसके पीछे चन्देरयुक्त एक बड़े सांपका कृत्रिम रूप रहता है। उस सांपको मार कर वे शवके साथमें जला देते हैं। बर्थेके ऊपर रखी हुई शवके पीछे मृतात्मीया स्त्रियां और अन्यान्य आत्मीय रहते हैं। इस महायात्राके समय कवियात्रोंका गान होता है। जो भी शोक सूचक नहीं, रामायण अथवा महाभारतका सुललित उद्धृत अंश।

गियान्यरमें पर्वतके ऊपर एक स्थायी दाहस्थान है। इसके चारों तरफ ईंटोंके स्तम्भ और प्राचीरसे परिवेष्टित है। बीचमें वलि कामका स्थान है। इसके पास ही चार लाल स्तम्भोंके ऊपर छत या गृह है। यहीं पर शवका दाह होता है। जहां राजाओंके शरीर जलाये जाते हैं वहां पर एक सिंह स्थापित है। किन्तु दूसरे मनुष्यों के लिये श्वेत या कृष्ण गोसिंह होता है। गल्लानचारि लाभिनी रमणियोंके दाहके लिये राज दाहस्थानके पास भागमें तीन वेश्यागार बने हुये हैं। साधारण लोगोंके लिये ऐसे चूड़ागृह नहीं बन सकते। उनको तख्तोंके बक्समें ही रख कर शवदाह करना पड़ता है। इन तख्तोंका आकार कोई कोई पशुओंके आकारका बनाते हैं। उन बक्सोंमें शवको ढक कर रख दिया जाता है।

दाहसे पूर्ववर्ती दिन गन्नन द्वारा पंडितगण शव देहको विमानमध्यमें दाहके लिये ले जानेकी अनुमति देते हैं। क्लुंगकुंगकी चिताके सम्मुख करीब १५० लाशका

सांप तैयार करते हैं जिसे वे लोग नागवन्ध कहते हैं। पण्डित इस कृत्रिम सांपको मार कर मृत देहके साथ जला देते हैं।

शवके दाहस्थानमें पहुंचने पर पहले उसे अरथी परसे नीचे उतारते हैं। बादमें कपड़ा ढक कर उसे सिंह या गोमूर्त्तिके वक्समें रख देते हैं। इस समय उपस्थित लोग उसके वस्त्रोंको लूट लेते हैं और कुछ घरको लौटा ले जाते हैं। पीछे उपस्थित पण्डित एक घड़ा कुछ मंत्र पढ़ कर और शवका पवित्र देहसे सिंचन कर चले जाते हैं। पुरोहितका कार्य जब पूर्ण हो जाता है तब बालिदल वक्सके नीचे चिता बना उसमें आग लगा देते हैं। देहके जल जाने पर उपस्थित आत्मीय लोग अस्थियोंको निकाल उनको अच्छी तरह उपकरणोंसे सजा समुद्रमें फेंक देते हैं। इस समय पण्डोंको भ लपाठ करना पड़ता है। इन कार्योंके लिये उनको ५०० रु० और तरह तरहके वस्त्र, पकवान मिलते हैं। इस प्रधान अन्त्येष्टि क्रियाके बाद एक वर्ष तक प्रत्येक पक्षमें इसी तरह समारोहसे दाह स्थानमें जाना पड़ता है। इस प्रकार कई बार शवके बदलेमें अरथीके ऊपर पुष्पस्तूप सजा कर श्मशान ले जाते और उसे क्षण भंगुरकी तरह प्रति बार समुद्रमें फेंक देते हैं। इस प्रकार एक वर्षके भीतर मृत आत्माके लिये बहुत उपहार दिया जाता है, जो मासिक श्राद्धके समान होता है। दाहकर्मके एक वर्ष बाद जब वार्षिक श्राद्ध हो जाता है तब वे मृतात्माका स्वर्गलाभ मानते हैं।

यहां भी सहमरणप्रथा प्रचलित थी। बहु विवाह प्रचलित रहनेके कारण एकसे अधिक स्त्रीग्रहण करते थे। राजा मन्गुर शक्तिका ५ सौ रमणिका पाणिग्रहण उसका अन्यतम दृष्टान्त है। एक स्वामीकी मृत्यु होने पर उसके पीछे बहुत स्त्रियोंको अग्निज्वालामें देहत्याग करना पड़ता था। महाभारतादि पवित्र शास्त्रग्रन्थ वर्णित सतीके चरित्रसे यहांकी स्त्रियां इतनी उत्तेजित होती हैं, कि वे सुयशलाभकी प्रत्याशासे सहजमें स्वामीके पीछे मरनेको तैयार हो जाती हैं। एक पतिके पीछे बहुत स्त्रियोंका आत्मोत्सर्ग सचमुच विस्मयकर है।

वालिद्वीपमें एकमात्र क्षत्रिय तथा वैश्य (देव और गोष्ठीके) राजाओंमें सहमरण प्रथा प्रचलित है। शूद्रोंमें सहमरण नहीं है। क्यों कि, वे स्वभावसे ही दरिद्र हैं। निर्धन अवस्थामें ऐसी ठाटबाटके साथ अन्त्येष्टि क्रिया और बेला उत्सवका करना उनके लिये नितान्त असंभव है। इनको निम्नश्रेणीका समझ पुरोहित इनके ऊपर धर्मप्रभावका विस्तार करना नहीं चाहते तथा वे लोग भी पुरोहितोंको काफी दक्षिणा नहीं देते हैं। यहां पर ब्राह्मणोंमें भी कभी कभी सहमरण देखा जाता है, स्वामीके वियोगसे दुःखित ब्राह्मणरमणी स्वामीके विच्छेदको नहीं सहनेके कारण स्वामीके साथ चितामें प्राण त्याग कर देती हैं वे ही यथार्थमें सतीकी योग्य हैं; किन्तु यश चाहने वाली ललनाओंमें भी कोई कोई पतिभक्तिकी पराकाष्ठासे बन सती नामके सार्थक बनती हैं। यदि ब्राह्मण रमणी सहमृता नहीं भी हो तो कोई दोष नहीं गिना जाता। लेकिन क्षत्रियरमणी और वैश्यस्त्रियों में यदि कोई स्त्री अनुमृता न हो तो बड़ी निंदा होती है।

यहांकी स्त्रियोंका सहमरण दो प्रकारसे होता है। जो स्वामीकी चिता पर मचके ऊपरसे कूद कर आत्मा विसर्जन करती हैं वे स्त्री 'सतिया' हैं। विवाहिता या रक्षिता स्त्री अपनी इच्छाके अनुसार अग्निकुण्डमें कूदती है। दूसरे पक्षमें स्त्रियोंको स्वामीसे भिन्न चितामें अग्नि जला कर जीवन त्यागना पड़ता है। कभी कभी पटरानी को बेला प्रथाके अनुसार प्राण विसर्जन करते देखा गया है। पहले इस प्रकार सहमरणके लिये क्रीत दासियोंको जबर्दस्ती अग्निमें झोंक दिया जाता था। राजा सहधर्मिणी को छोड़ जो स्त्रियां रखते हैं वे शूद्राणी होने पर भी खरीदी जाती हैं। सती या बेला होना इनकी इच्छाके ऊपर निर्भर है, किन्तु क्रीतदासीकी हत्या अवैध मरबलिमात्र है। जिस समय वे सहमरणकी इच्छा प्रकट करती हैं, तभीसे लोग उनका पितृ लोगोंकी तरह सम्मान करते हैं। उसी समय मनुष्य उनकी प्रीतिके लिये तरह तरहके बढ़िया भोजन उसके सामने ला कर रख देते हैं। रमणियोंके अन्तःकरणमें धर्मभाव उद्दीपित करनेके लिये और स्वर्गधामकी चिरशान्ति सुखकी कथाओंको समझानेके लिये एक विदुषी पण्डित स्त्री सदा उसके साथ घूमती रहती है। कभी कभी उसको घोलेसे या

अफीमके प्रयोगसे उन्मत्त बना कर उसको चिताकी अग्निमें फेंक दिया जाता है।

यहां सामान्य या मध्यश्रेणीकी मृत्युके आठवें दिन उनकी स्त्रियोंसे मरनेके लिये अनुरोध किया जाता है। जो सहमरणके लिये अपनी सम्मति प्रकट करती हैं वे जब तक उनके पतियोंकी अन्त्येष्टिक्रिया नहीं होती तब तक वे खूब सम्मान पाती हैं और सम्पूर्ण सुखको भोग सकती हैं। फ्रेडरिक आदि कितने ही यूरोपवासी १८४१ ई०में गियान्यरराजदेवमङ्गोलकी अन्त्येष्टिक्रियामें उपस्थित थे। यथाविधि शवयात्रामें शवदेहकी तरह अन्य तीन शवोंके ऊपर उनकी तीन स्त्रियोंको भी बैठा कर सभास्थानमें लाया गया था। स्मशान पहुंच कर सती स्नान करनेके बाद श्वेत वस्त्र पहनती है तथा केशविन्यास आदि करके सतीकी तरह हंसमुख हो स्वर्गमें स्वामीके साथ गमन करनेके लिये उद्यत होती है। इस समय उनके शरीर पर आभूषण नहीं होते। अग्निमें कूदनेके पहिले उनके कपड़ोंका खोल दिये जाते हैं और उनके बाल खुले रहते हैं।

वालिन् (सं० पु०) बालः केशः उपलक्षितत्वेनास्त्यस्य इनि। वानरराज वालि।

"अथाम्बरगतस्तस्य वानरस्य महात्मनः।
वालेषु पतितं बीजं वालीनाम बभूव ह॥"

(रामा० उत्तरा० १७ स०)

इन्द्रका अमोघ तेज बाल अर्थात् केशद्वारा पतित हुआ था इस कारण वालि नाम पड़ा है। वालि देखो।

वालिनी (सं० स्त्री०) अश्विनीनक्षत्र।

वालिया—(बलिया) १ युक्तप्रदेशके बनारस विभागका एक जिला। यह अक्षा० २५° ३३' से २६° ११' उ० तथा देशा० ८३° ३८' से ८४° ३९' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १२४५ वर्गमील है। इसके उत्तर पूर्वमें गोगरा, दक्षिणमें गङ्गा और पश्चिममें आजमगढ़ तथा गाजीपुर हैं। गङ्गा और घघरा नदीके सङ्गमस्थल पर्यन्त सम तल होनेके कारण १८७९ ई०में यह जिला संगठित हुआ है। गङ्गाके किनारे जितने स्थान पड़ते हैं, वे नदीके बालुकामय स्थानसे विशेष उर्वर हैं। उन दो नदियोंके अलावा यहां सरजू नदी भी बहती है। आम्रकाननके सिवा यहां दूसरा वनजङ्गल नहीं देखा जाता। केवल गालव विभाग और घघरा नदीतीरवर्ती तृणाच्छन्न निम्नभूमि छोड़ कर और सभी उच्च भूमि पर थोड़ा बहुत फल मिलता है। नदी किनारे जो जंगल हैं उनमें नीलगाय और जंगली सूअर पाये जाते हैं। यहांका जलवायु गाजीपुर और आजमगढ़के जैसा है।

गाजीपुर और आजमगढ़ जिलेका कुछ अंश ले कर इस जिलेकी उत्पत्ति हुई है। इस कारण इसका प्राचीन इतिहास उन्हीं दो जिलोंमें वर्णित हुआ है। यहां वर्त्तमान किसी अट्टालिकाका अस्तित्व नहीं रहने पर भी बहुतसे बौद्ध सङ्घारामादिका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है। कुण्डलधारी बौद्धयतियोंका वास होनेके कारण ही इस स्थानका बलिया नाम पड़ा है। बौद्ध वालि या वलि शब्दसे कर्णकुण्डलका बोध होता है। यहां जो एक भग्न दुर्ग देखा जाता है उसे स्थानीय लोग भरजातीय अधिवासियों द्वारा निर्मित बतलाते हैं। भर लोगोंके अधःपतनके बाद यहां राजपूत जातिका अभ्युदय हुआ। सेनगार, करचौलिया, कौसिक, बिसेन, बीरवार, भरौली, दुनवार, नेकुम, बाई, बरहिया, लोहतमिया, हरिहोबंस जातियां इस जिलेमें वास करती हैं।

इस जिलेमें १३ शहर और १७८४ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या १० लाखके करीब है। सैकड़े पीछे ९१ हिन्दू हैं और शेषमें मुसलमान तथा दूसरी दूसरी जातियां हैं। यहांकी प्रधान उपज धान, चना, जौ, और गेहूं है। ईख बहुतायतसे उपजाई जाती है।

विद्याशिक्षामें यह जिला बढ़ा चढ़ा है। सभी कुल मिलाकर यहां १३१ स्कूल हैं। स्कूलके अलावा ५ अस्पताल हैं।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ३३' से २५° ५६' उ० तथा देशा० ८३° ५०' से ८४° ३१' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४४१ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ४०१९२२ है। इसमें ६ शहर और ५७२ ग्राम लगते हैं। यहांकी जमीन खूब उपजाऊ है।

३ उक्त तहसीलका एक प्रधान शहर और विचार सदर। यह अक्षा० २५° ४४' उ० तथा देशा० ८४° १०' पू०के मध्य गङ्गाके उत्तरी किनारे अवस्थित है। जनसंख्या

प्राय १५२७८ है। कहते हैं, कि रामायण-रचयिताके आदि कवि वाल्मीकि मुनिके नाम पर इस स्थानका नामकरण हुआ है, पर उसका कोई इतिहास नहीं मिलता। प्राचीन नगरका परित्याग कर १८७३-७१ ई०में नया शहर बसाया गया। यहा प्रतिवर्ष कार्त्तिकी पूर्णिमामें गङ्गा-सङ्गम पर ददि नामका एक मेला लगता है। इस मेलेमें ४ लाखसे अधिक मनुष्य जमा होते हैं। मेलेमें मवेशी अधिक सख्यामें विकने आते हैं। इष्ट इण्डिया रैलवेके डुमराँव स्टेशनमें उतर कर यहा आना पडता है। इस शहरमें सरकारी दफ्तर, अस्पताल और बहुतसे स्कूल है।

वालियाघाटा—१ बङ्गालकी राजधानी कलकत्ता महानगरीसे पूर्व उपकण्ठवर्त्ती एक प्रसिद्ध ग्राम। यह अक्षा० २० ।२३´ ४५´´ उ० तथा देशा० ८८ २५´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहाँ वाखरगञ्जके चावल और सुन्दरवनके काष्ठकी आढत है। पूर्वबंगीय रैलपथकी दक्षिण शाखाके विस्तृत तथा वालियाघाटा खालके रहनेसे वाणिज्यकी विशेष सुविधा हो गई है। अलावा इसके यहा चूनेका कारवार होता है।

२ कलकत्तेके श्यामवाजारसे जो नई खाल काटी गई है, उसीको वेलेघाटा या वालियाघाटा खाल कहते हैं। यह कलकत्तेके दक्षिण वादाभूमि पार कर लवणहृदमें मिलती है। आज भी इस खालसे ढाका, यशोर आदि स्थानोंमे नावे जाती आती हैं।

वालियातोटक—मल्लभूमिके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह देवीरासुलीसे ४ कोस उत्तरमें अवस्थित है। यहा राजा गोपालसिंहके मन्त्री राजिवका वासभवन विद्यमान है।

वालियासाहेवगज—भागलपुर जिलान्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम।

वालिरङ्गन—मन्द्राज प्रदेशके कोयम्बतुर जिलेकी एक गिरिमाला। यह महिसुरसे हुस्सनूर-सङ्कट तक विस्तृत है। इस पर्वतकी एक शाखा जो उत्तर दक्षिणको चली गई है उसके पूर्वांशका सर्वोच्च शृङ्ग ५३०० फुट ऊँचा है। इसका उपत्यकादेश वनसमाच्छन्न और हस्तिसङ्कुल है। गुण्डल और होन्नुलोले नदी इस पर्वतसे निकली है।

वालिश (स० क्ली०) वाला सन्ति यस्य इति वाली मस्तकस्तेन शेते यत्र आधारे ड। १ उपाधान, तकिया। २ शिशु, बालक। ३ मूर्ख, अबोध व्यक्ति। (त्रि०) ४ अबोध, अज्ञान।

वालिश (फा० स्त्री०) तकिया।

वालिश्त (फा० पु०) एक प्रकारकी माप। यह प्राय बारह अंगुलसे कुछ ऊपर और लगभग आध फुटके होती है, बीता।

वालिश्य (स० पु०) मूर्खता, अज्ञानता, नासमझी।

वालिस ट्रेन (अ० स्त्री०) वह रेलगाडी जिस पर सडक बनानेके सामान लाद कर भेजे जाते हैं।

वालिसना—बडौदा राज्यके खाडी विभागान्तर्गत एक नगर।

वालिहन्ता (स० पु०) वालेर्वालिनो वा वानरराजस्य हन्ता। १ रामचन्द्र। वालि देखो। २ उडूदेशके अन्तर्गत ग्रामविशेष।

वालिही—मध्यप्रदेशके जव्वलपुर जिलान्तर्गत एक अति प्राचीन नगर। यह अक्षा० २३ ४७´ ४५´´ उ० तथा देशा० ८० १६´ पू०के मध्य अवस्थित है। पहले इस स्थानका नाम 'वावासत्' या पापावत था। यहा वालि राजके परास्त होनेसे इसका वालिहरी नाम पडा। पहले यह नगरी प्राय १२ कोस विस्तृत थी और यहा सैकडों देवालय शोभा दे रहे थे। उस समय झुडके झुड जैनतीर्थयात्री आया करते थे। १७८१ ई०में यह स्थान मराठोंके हाथ लगा। १७९६ ई०में यह नागपुरराजके हाथ सौंपा गया। १८१७ ई०में भोंसलेने यह स्थान वृटिश गवर्मेण्टको दे दिया। सिपाहीविद्रोहके समय रघुनाथ सिंह बुन्देला यहाके दुर्ग पर अधिकार कर बैठे, पर अङ्गरेजोंने शीघ्र ही उसे मार भगाया और दुर्गको पुन अपने कब्जेमें कर लिया। वर्त्तमान नगरके चारों ओर आम्रवन और नतोन्नत गिरिराजिवेष्टित, नयनमनोहर सुवृहत् सरोवर, सुनिर्मित तडाग और प्राचीन जैन तथा हिन्दू-कीर्त्तिका ध्वंसावशेष नाना स्थानो में नजर आता है।

वाली (हिं० स्त्री०) १ कानमें पहननेका एक प्रसिद्ध आभूषण। यह सोने या चाँदीके पतले तारका गोलाकार बना होता है। इसमें शोभाके लिये मोती आदि भी

खान अमीर तैमूर था। बाबरका मातृकुल भी सामान्य नहीं था। उनकी माता कुतलुग् निगार खानम् मुगलिस्तानके अधिपति यूनस खाँकी कन्या और प्रसिद्ध चंगेज खाँके वंशधर महमूद खाँकी बहन थीं।

१४८३ ई०की १४ फरवरी ( ६ मुहर्रम, ८८८ हिजरी) को बाबरका जन्म हुआ और १४९४ ई०के जून मास ( रमजान, ८९९ हिजरी )में पिताकी मृत्युके बाद वे फरगनाके राजसिंहासन पर बैठे। अन्दिजान नामक स्थानमें उनकी राजधानी थी।

उन्होंने ग्यारह वर्ष तक तातार और उजबेकोंके साथ नाना स्थानोंमें लगातार युद्ध किया था। किन्तु आखिर वे अपना राज्य छोड़ कर काबुलकी ओर भाग जानेको बाध्य हुए थे। जो कुछ हो, थोड़े ही दिनों के बाद उन्होंने काबुल, कन्धार और बदख्शान पर अपनी गोटी जमा ली थी और २२ वर्ष तक वे वहाँका शासन करते रहे थे। अनन्तर उन्होंने भारतवर्षमें कदम बढ़ाया। उनके भौभाग्यका पथ खुल गया।

इस समय पठान अधिपति इब्राहिम खाँ लोदी दिल्ली पर आधिपत्य करते थे। उन्होंने दलबलके साथ पानीपतकी लड़ाईमें बाबरका सामना किया। १५२६ ई०की २०वीं अप्रिलको बाबरने उक्त लड़ाईमें विजय प्राप्त की और उसके साथ साथ भारतवर्षमें मुगल-साम्राज्यकी प्रतिष्ठाका सूत्रपात हुआ।

बाबर केवल वीर ही नहीं थे, विद्वान और विचक्षण भी थे। वे अपनी तुर्की भाषामें आत्मजीवनी लिख गये हैं। यह अपूर्व ग्रन्थ 'तुजुक बाबरी' नामसे समान मशहूर और महत्त्वपूर्ण है। अकबरके राजत्वकालमें अब्दुल रहीम खानखानाने उक्त ग्रन्थका पारसी भाषामें अनुवाद किया। इस ग्रन्थमें बाबरकी धारावाहिक जीवनी और अनेक ऐतिहासिक विवरण मिलते हैं।*

बाबरका राजत्वकाल कुल मिला कर ३८ वर्ष होता है जिसमेंसे उन्होंने अन्दिजानमें ११ वर्ष, काबुलमें २२ वर्ष और भारतमें ५ वर्ष राज्य किया। १५३० ई०की २६वीं दिसम्बरको आगरेमें उनकी मृत्यु हुई। पहले यमुनाके किनारे रामबाग उद्यानमें उनकी कब्र हुई थी, पर छः मासके बाद वहाँसे काबुल उठा कर लाई गई। यहाँ उनके परपोतेके लड़के शाहजहान्ने एक अच्छी मसजिद बनवा दी है, जिसे एक बार देखनेसे ही मन आकृष्ट हो जाता है। उनकी कब्रके ऊपर 'बहिश्त रोजीबाद' अर्थात् स्वर्ग ही उनका भाग्य है, ऐसा लिखा हुआ है।

मृत्युके बाद बाबरको 'फर्दौस मकानी'की उपाधि दी गई थी। पीछे उनके बड़े लड़के हुमायूँ राजतख्त पर बैठे। बाबरके तीन पुत्र थे,—मिर्जा कामरान, मिर्जा अस्करी और मिर्जा हिन्दाल।

फिरिस्ताने लिखा है, कि बाबर अतिशय सुरापायी और रमणीमें आसक्त थे। आमोद प्रमोद करनेके समय वे काबुलके निकटस्थ अपने प्रमोद काननमें एक तालाबको शराबसे भर देते थे और युवती रमणियोंके साथ मौज करते थे। मुगल और हुमायूँ देखो।

बावरची ( फा० पु० ) भोजन पकानेवाला, रसोइया।

बावरचीखाना ( फा० पु० ) पाकशाला, रसोईघर।

बावरा ( हि० वि० ) बावला देखो।

बावरी ( हि० वि० ) बावली देखो।

बावल ( हि० पु० ) आँधी, अंधड़।

बावला (हि० वि०) विक्षिप्त, पागल।

बावलापन (हि० पु०) पागलपन, सनक।

बावली ( हि० स्त्री०) १ चौड़े मुँहका कुँआ जिसमें पानी तक पहुँचनेके लिये सीढ़ियाँ बनी हों। २ सीढ़ियाँ लगी हुई छोटा गहरा तालाब। ३ हजामतका एक प्रकार। इसमें सामनेसे हो कर चोटीके पास तकके बाल चार पाँच अंगुल चौड़ाईमें मूँड़ दिये जाते हैं जिससे सिरके ऊपर कूएँकासा आकार बन जाता है।

बावली पिण्ड—पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत एक स्थान। यह भागपंथसे पाँच मील दक्षिण पूर्व ही यन्त्रके मध्यवर्ती बल्लराके समीप अवस्थित है। नगरके ध्वंसावशेषोंमें परिष्कार होने पर भी यहाँ तथा निकटवर्ती अन्यान्य स्तूप आदि बहुसंख्य बौद्धकीर्तियाँ देखनेमें आती हैं। परिव्राजक यूएनचुवंगने इस स्थानको देखा था। बावली

* Translated into English by J. Leyden and Wm Erskine.

नालाके किनारे प्राचीन ध्वसराशिके ऊपर यह ग्राम बसा हुआ है। हसन अवदल्से हरिपुर (हजारा जिला) जानेके रास्ते पर यह स्थान पड़ता है। हसन अवदल और पानतीपिण्डके मध्यवर्त्ती रुद्रकोट या थीकोट नामक स्थान बहुत प्राचीन है। प्रवाद है, कि थीकोटदुर्ग रसालूके चिरशत्रु राजा शिरकपके अधिकारमें था।

वावादेव—अर्पणमीमांसा नामक संस्कृतग्रन्थके रचयिता।

वावाशास्त्री—स्वरोदय विवरणके रचयिता।

वाशिंदा (फा० पु०) निवासी, रहनेवाला।

वाष्कल (स० पु०) १ एक दैत्यका नाम। २ वीर, योद्धा। ३ एक उपनिषद्का नाम। ४ एक ऋषिका नाम। ५ रौप्य, चांदी।

वाष्कलक (स० त्रि०) वाष्कल सम्बन्धीय।

वाष्कलि (स० पु०) १ वैदिक आचार्यभेद। २ वाष्कल का अपत्य।

वाष्किह (स० पु०) वष्किह अपत्यार्थे अण्। वष्किहका अपत्य।

वाष्प (हिं० पु०) १ भाप। वाष्प देखो। २ लोहा। ३ अश्रु, आसू। ४ एक प्रकारकी जड़ी। ५ गौतमबुद्धके एक शिष्यका नाम।

वाष्पी (स० स्त्री०) हिंगु पत्नी।

वास (हिं० पु०) १ रहनेकी क्रिया या भाव, निवास। २ निवासस्थान, रहनेका स्थान। ३ एक छन्दका नाम। ४ वस्त्र, कपड़ा। (स्त्री०) ५ गन्ध, महक, वू। ६ इच्छा, वासना। ७ अग्नि, आग। ८ एक प्रकारका अस्त्र। ९ तेज धारवाली छुरी, चाकू, कैंची इत्यादि छोटे छोटे शस्त्र जो रणमें तोपोंमें भर कर फेंके जाते हैं।

(पु०) १० एक बहुत ऊंचा वृक्ष। इसकी लकड़ी रगमें लाली लिए काली और इतनी मजबूत होती है, कि साधारण कुल्हाड़ियोंसे नहीं कट सकती। इस लकड़ीसे पलगके पाये और दूसरे सजावटी सामान बनाये जाते हैं। इसमें बहुत ही सुगधित फूल लगते हैं। इसका गोंद कई कामोंमें आता है। पहाड़ोंमें यह पेड़ ३००० फुटकी ऊंचाई तक होता है।

वासकर्णी (स० स्त्री०) यज्ञशाला।

वासकसज्जा (स० स्त्री०) वह नायिका जो अपने पति या प्रियतमके आनेके समय केलि सामग्री सज्जित करे।

वासगारी—अयोध्या प्रदेशके फैजाबाद जिलान्तर्गत एक नगर। प्रसिद्ध मुसलमान साधु मखदुम असरफने १३८८ ई०में इसे बसाया। उनके वंशधर इस नगरके सत्त्वाधिकारी हैं।

वासठ (हिं० वि०) १ साठ और दो, इकतीसका दूना। (पु०) २ साठ और दोकी संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६२।

वासठवां (हिं० वि०) जो क्रममें वासठके स्थान पर हो, गिनतीमें वासठके स्थान पर पड़नेवाला।

वासड़ा—२४ परगनेके सुन्दरवन विभागका एक गण्डग्राम। यह अक्षा० २२ १२´ उ० तथा देशा० ८८ ३७´ पू० विद्याधरी नदीके किनारे अवस्थित है। फकीर मुवारक गाजीके समाधिमन्दिरके लिये यह स्थान बहुत मशहूर है। प्रति वर्ष यहां एक मेला लगता है जो 'गाजीसाहबका मेला' कहलाता है। प्रवाद है, कि गाजी साहबने जङ्गली पशुओंको स्तम्भित कर दिया था। यहां तक कि वाघ उनका वाहन बन गया था। आज भी लकड़हारे गाजी साहबकी पूजा किये विना लकड़ी काटनेके लिये जङ्गल नहीं घुसते। निकटवर्त्ती प्रायः सभी ग्रामोंमें गाजी साहबकी वेदी देखी जाती है। उस वेदीके सामने लकड़हारे गाजी साहबके वंशधर फकीर द्वारा नैवेद्य चढ़ाते हैं।

वासदेव (हिं० पु०) १ अग्नि, आग। २ वासुदेव देखो।

वासन (हि० पु०) बरतन, भांड।

वासना (हि० स्त्री०) १ इच्छा, चाह। २ गन्ध, महक। (क्रि०) ३ सुगन्धित करना, महकाना।

वासफूल (हि० पु०) १ एक प्रकारका धान। २ इस धानका चावल।

वासमती (हिं० पु०) १ एक प्रकारका धान। २ इस धानका चावल। यह पकने पर अच्छी सुगध देता है।

वासर (हि० पु०) १ दिन। २ प्रातःकाल, सवेरा। ३ सवेरे गानेका एक राग।

वासव (स० पु०) इन्द्र।

वासवी (हि० पु०) अर्जुन।

वासवीदिशा (स० पु०) पूर्व दिशा, यह इन्द्रकी दिशा मानी जाती है।

बासरी (म० पु०) यम, फन्दा।

बासा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका पक्षी। २ अडूसा। ३ एक प्रकारकी घास। यह घास [illegible] पत्तोंके समान होती है और पशुओंको खिलाई जाती है।

बासि—[illegible] राज्यका एक नगर। यह अक्षा० ३० ३५´ ३० तथा देशा० ७६ ४´ पूर्वके मध्य अवस्थित है। यहां एक एंग्लोवर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और एक चिकित्सालय है।

बासि—पञ्जाबके पटियाला राज्यका एक नगर। यह अक्षा० ३० ४०´ ३० तथा देशा० ७६ २८ पूर्वके मध्य अवस्थित है। जनसंख्या लगभग १३०३८ है। यहां सूती कपड़ेका व्यवसाय जोरों चलता है। शहरमें एक वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और एक पुलिस स्टेशन है।

बासित (हिं० वि०) सुगन्धित किया हुआ।

बासिनद्र—[illegible] पहाड़ी प्रदेशकी एक गिरिश्रेणी और उसका सर्वोच्च शृङ्ग। यह अक्षा० २१ ३१´ ३० तथा देशा० ९२ २१ पूर्वके मध्य अवस्थित है।

बासि[illegible]—मन्द्राज प्रदेशके [illegible] जिलान्तर्गत एक पर्वत। यह समुद्रपृष्ठसे २८०० फुट ऊंचा है। इसके उच्च शिखर पर वेङ्कटेश स्वामीका मन्दिर विद्यमान है।

बासिन्दा (फा० वि०) अधिवासी, [illegible]।

बासिम—बेरार राज्यके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० १९ २६ से २० २८´ उ० तथा देशा० ७६ ४०´ से ७७ ४४ पूर्वके मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २९४१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें अकोला और अमरावती जिला, पूर्वमें उन जिला, दक्षिणमें पेनगङ्गा नदी और हैदराबाद राज्य तथा पश्चिममें बुलढाना जिला है। सारा जिला पर्वतमय है। पूर्णा, बेंबला, काटापूर्णा, अडाण, पूस, अरुणावती और पेनगङ्गा नदी इस जिलेमें बहती हैं।

[illegible] और पुराणका [illegible] तथा जैनशिलालिपियोंकी आलोचनाके सिवा इस स्थानका प्राचीन इतिहास जाननेका कोई उपाय नहीं है। १३१४ ई०में [illegible] इस प्रदेश पर [illegible] था। पीछे प्रायः १६वीं शताब्दी तक यह [illegible] अधीन रहा। १५१६ ई०में [illegible] पुत्र [illegible] हुआ [illegible]। १५७१ ई०में [illegible] इस स्थानको छीन लाये और इसे अपने साम्राज्यभुक्त कर गये।

पेनगङ्गाके उत्तर पर्वत पर [illegible] है। १६०० ई०में इन्होंने बासिमके [illegible] स्थान दखल किये। अंगरेजोंके अधिकारकाल तक ये लोग चारों ओर स्थानोंमें लूट मार मचाते रहे थे। १६७० ई०में मुगलोंका [illegible] देश मराठोंने [illegible] स्थान लूट लिया। १६७१ ई०में शिवाजीके सेनापति प्रतापरावने इस स्थान पर आक्रमण करके 'कांरजा' लूट लिया। औरङ्गजेबकी मृत्युके बाद १७१७ ई०में [illegible] मराठोंने बासिम और [illegible] लिया था। १७२४ ई०में चिनकिलिच खाँ (निजाम उल मुल्क)ने मुगलोंको पराजय कर मराठोंकी सहायतासे इस प्रदेशका शासन [illegible] लिया। १८०४ ई०की सन्धिके अनुसार निजामने बासिमका कुछ अंश खरीदा। १८०१ ई०में पिण्डारियोंने इस जिलेको अच्छी तरह लूटा। १८१९ ई०में यहांके [illegible] निजामके विरुद्ध उमरखेड़में लड़ाई ठान दी थी। यहांसे विताड़ित हो कर उन्होंने अपने नये दुर्गमें आश्रय ग्रहण किया। किन्तु आत्मरक्षामें असमर्थ हो वे बन्दी हो हैदराबाद भेजे गये। वहीं पर उनकी मृत्यु हुई।

१८५० ई०की सन्धिके अनुसार निजामको [illegible] उमरखेड़ परगना मिला। अङ्गरेज सरकारने निजाम राज्यको रुपयेसे सहायता पहुंचाई थी, इस कारण १८५३ ई०में उन्हें यह स्थान [illegible] किया गया। १८५९ ई०में यहां अङ्गरेजोंके साथ रोहिल्लाका युद्ध हुआ। पीछे १८६०-६१ ई०की दूसरी सन्धिके अनुसार यह स्थान पुनः अङ्गरेजोंके हाथ लगा।

इस जिलेमें ३३ नगर और ८०४ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े तीन लाखके ऊपर है। हिन्दुओंकी संख्या सैकड़े पीछे ९० है। यहांकी भाषा मराठी है। शिक्षा विषयमें यह जिला बेरारके [illegible] जिलोंसे पीछे पड़ता है। अभी कुल मिला कर १२० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा एक अस्पताल और [illegible] चिकित्सालय हैं।

२ बेरारके [illegible] जिलेका [illegible]। इसमें बासिम और [illegible] तालुक लगते हैं।

३ उक्त उपविभागका एक तालुक। यह अक्षा० १९ ५२´ से २० ७५´ उ० तथा देशा० ७२ ४०´ से ७७ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १०४६ वर्गमील और जनसंख्या १७७२५० है। इस तालुकमें वासिम नामक एक शहर और ३२४ ग्राम लगते हैं। यहांकी जमीन बहुत उपजाऊ है।

४ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २० ७´ उ० तथा देशा० ७७ ११´ पू०के मध्य अवस्थित है। बहु प्राचीन कालमें वत्स नामक किसी ऋषिने इस नगरको बसाया। उन्हीं के नामानुसार यह स्थान वच्छगुलिन नामसे प्रसिद्ध था। पीछे लोग उसके अपभ्रंशमें वासिम कहने लगे। नगरके बाहर पद्मातीर्थ नामक एक पुण्यसलिला पुष्करिणी है। प्रवाद है, कि वासुकि नामक कोई राजा इस पुष्करिणीमें स्नान कर कुष्ठरोगसे मुक्त हुए थे। उसी माहात्म्यके लिये आज भी सैकड़ों कुष्ठरोगी इसमें स्नान करने आते हैं। १७वीं शताब्दीमें वासिमके देशमुखोंने मुगल सम्राट्से काफी जमीन और रत्न पाया था। नागपुरके भोंसलेके बाद यहां निजाम राजाने सेनानिवास और टकसाल खोली थी। भोंसलेके सेनापति भवानी कालू-प्रतिष्ठित वालाजीका मन्दिर और पुष्करिणी देखने लायक है।

वासिष्ठी (हिं० स्त्री०) वन्नास नदीका एक नाम। कहते हैं, कि वसिष्ठजीके तप प्रभावसे ही यह नदी प्रकट हुई थी।

वासी (हिं० वि०) १ जो ताजा न हो, देरका बना हुआ। २ जो सूखा या कुम्हलाया हुआ हो, जो हरा भरा न हो। ३ जिस पेड़से अलग हुए ज्यादा देर हो गई हो। ४ जो कुछ समय तक रखा रहा हो। ५ बसनेवाला, रहनेवाला।

वासोदा—मध्यभारतके भोपाल एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। भूपरिमाण ४० वर्गमील और जनसंख्या पांच हजारके करीब है। यहांके सामन्तगण पठान वंशीय और नवाब-उपाधिधारी हैं। १७वीं शताब्दीमें ओर्छाके राजा वीरसिंहदेवने वासोदा नगरको बसाया था। यह राज्य नवाब वसोदा नामसे मशहूर है। इस राज्यके पश्चिममें टोंक राज्यका सिरजों जिला और ग्वालियरका कुछ अंश; उत्तरमें मध्यप्रदेशका सागर जिला, पठारी राज्य और महम्मदगढ़; पूर्वमें सागर जिला और भोपाल तथा दक्षिणमें भी भोपाल है।

१८वीं शताब्दीमें फरोखैवंशके महम्मद दिलेर खाँ नामक एक वारकजी फिरोज खेल अफगानने इस राज्यको स्थापित किया। उनकी मृत्युके बाद यह राज्य उनके दो लड़कोंमें विभक्त हुआ। बड़े लड़केके हिस्सेमें कोरवै पड़ा। छोटे लड़के अहसन उल्ला खां पहले ग्वालियर राज्यके राग और पीछे बहादुरगढ़में बस गये। किन्तु मराठोंसे तंग आ कर वे १७५३ ई०में अपनी राजधानीको वासोदामें उठा लाये। १८१७ ई०में यह राज्य सिन्धिया के हाथ लगा, पर अंगरेजोंके दवावसे १८२२ ई०में फिर लौटा दिया गया।

अ सन उल्लाकी १७८६ ई०में मृत्यु हुई। पीछे नवाब बकाउल्ला खां और आसद अली खां राज्याधिकारी हुए। वर्त्तमान सरदारका नाम हैदर अली खाँ है। ये १८६७ ई०में राजगद्दी पर बैठे। इनकी भी उपाधि नवाब है। इस राज्यमें कुल २३ ग्राम लगते हैं। राजस्व १६००० रु० है। यहांकी जमीन खूब उपजाऊ है।

२ उक्त राज्यकी एक राजधानी। यह अक्षा० २३ ५१´ उ० तथा देशा० ७७ ५६´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या १८५० है। यहां एक सरकारी डाकघर, कारागार, एक स्कूल और एक चिकित्सालय है।

वासोली—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक भूभाग और उस देशका एक नगर। यह अक्षा० ३२ ३३´ उ० तथा देशा० ७५ ४८´ पू०के मध्य हिमालयके दक्षिण इरावती नदीके किनारे अवस्थित है। १७९५ ई०में यह स्थान सिखोंके अधिकारमें आया।

वासौंधी (हिं० स्त्री०) वसौंधी देखो।

वास्त (सं० ति०) वस्त या छागसम्बन्धीय।

वास्तायन (सं० पु०) वस्तका गोत्रापत्य।

वाह (सं० पु०) बाहु, बाँह।

वाह (हिं० पु०) खेतको जोतनेकी क्रिया, खेतकी जोताई।

वाहट—एक ग्रन्थकार। मल्लिनाथने रघुवंशटीकामें इनका नामोल्लेख किया है।

वाहडी (हिं० स्त्री०) वह खिचड़ी जो मसाला और कुम्हड़ौरी डाल कर पकाई गई हो।

पाप किया था, इस कारण राजाके समीप भेजा। राजा ही दण्डदाता हैं, तुम्हें दण्ड देनेका मुझे अधिकार नहीं है। अभी तुम और राजा दोनों ही पवित्र हो गये हो। (भारत शान्तिपर्व २३,१४-४०)

यह नदी हिमालयसे निकली है। हरिवंशमें लिखा है,—प्रसेनजित राजाके गौरी नामकी एक स्त्री थी। स्वामीने क्रुद्ध हो कर शाप दिया था जिससे वे 'बाहुदा' नदीमें परिणत हुईं

"प्रसेनजितः भार्या गौरी नाम पतिव्रता।
अभिशप्ता तु सा भर्त्रा नदी वै बाहुदा कृता॥"

(हरिवंश १२।८)

२ कुरुवंशीय परीक्षित् राजाकी पत्नी (त्रि०) ३ बहुदाता, बहुत दान करनेवाला।

बाहुपाश (सं० पु०) १ बाहु द्वारा युद्धविशेष भेद। २ बाहुबन्धन।

बाहुप्रलम्ब (सं० त्रि०) आजानुबाहु, जिसकी बाहें बहुत लम्बी हों। ऐसा व्यक्ति बहुत वीर माना जाता है।

बाहुबल (सं० क्ली०) बाहोर्बलं। हस्तबल, पराक्रम, बहादुरी।

बाहुबलि (सं० पु०) गिरिभेद।

बाहुबलिन् (सं० त्रि०) बाहुबलशाली, पराक्रमी।

बाहुबाध (सं० पु०) जनपदभेद।

बाहुभाष्य (सं० क्ली०) बहुभाषणशीलता, बहुत बोलने वाला।

बाहुभूषा (सं० स्त्री०) बाह्वोर्भूषा भूषणं। १ केयूर, बहुँटा। २ बाहुभूषणमात्र।

बाहुभेदिन् (सं० पु०) बाहुं भिनत्ति बाहु-भिद णिनि। विष्णु। (त्रि०) २ बाहुभेदक।

बाहुमत् (सं० त्रि०) बाहुयुक्त।

बाहुमात्र (सं० त्रि०) बाहुः प्रमाणमस्य बाहु मात्रच्। बाहुपरिमाण।

बाहुमित्रायण (सं० पु०) बाहुमित्रका गोत्रापत्य।

बाहुमूल (सं० क्ली०) बाहोर्मूलं। कक्ष, कंधे और बाहुका जोड़।

बाहुयुद्ध (सं० क्ली०) बाहुभ्यां कृतं यत् युद्धं। भुज द्वारा संग्राम, कुश्ती। पर्याय—नियुद्ध। बाहु युद्धके अनेक भेद हैं, यथा—प्रकृष्ट, संकुल, पर्यस्त और चित्र। हरिवंशके विष्णुपर्व १२ अध्यायमें इसका विवरण लिखा है। मल्लयुद्ध देखो।

बाहुयोध (सं० पु०) मल्ल, पहलवान।

बाहुल (सं० क्ली०) बहुल-अण्। १ बहुलभाव, बहुलत्व, ज्यादती। २ बाहुत्राण, युद्धके समय हाथोंमें पहनने की एक वस्तु जिससे हाथकी रक्षा होती थी। ३ अग्नि, आग। ४ कार्त्तिक मास।

बाहुलक (सं० क्ली०) बहुलेन बहुलप्रदेशेन निर्वृत्तं शङ्खादित्वात् भव्। व्याकरणोक्त सूत्रों पाधिरहित विधानादि।

कहीं कहीं विधिका विधानविधित हो कर बाहुलक विधि चार प्रकारकी बतलाई गई है, यथा—कहीं प्रवृत्ति, कहीं अप्रवृत्ति, कहीं विभाषा और कहीं कुछ अन्यथा।

बाहुलग्रीव (सं० पु०) मयूर, मोर।

बाहुलता (सं० स्त्री०) बाहुरेव लता, रूपक कर्मधा०। बाहु रूप लता।

बाहुलतिका (सं० स्त्री०) बाहुरेव लतिका। बाहुलता।

बाहुलेय (सं० पु०) बहुलानां कृत्तिकादीनामपत्यं पुमान् बहुला ढक्। कार्त्तिकेय।

बाहुल्य (सं० क्ली०) बहुल ष्यञ्। आधिक्य, अधिकता।

बाहुविस्फोट (सं० पु०) ताल ठोकना।

बाहुवीर्य (सं० क्ली०) बाहोः वीर्यं। बाहुबल, भुजबल, पराक्रम।

बाहुव्यायाम (सं० पु०) बाहु द्वारा व्यायाम कौशल।

बाहुशालिन् (सं० त्रि०) बाहुभ्यां शालते शाल-णिनि (उणादि ... ) इति णिनि। बाहुबलयुक्त।

बाहुशाल (सं० पु०) वृक्षभेद। थूहरका पेड़।

बाहुशालिन् (सं० त्रि०) बाहुभ्यां शालते शाल-णिनि। १ बाहुबलाधिकयुक्त, पराक्रमी। (पु०) २ शिव। ३ भीम। ४ धृतराष्ट्रके पुत्रभेद। ५ दानवभेद। ६ दानवभेद।

बाहुशिखर (सं० पु०) स्कन्ध, कंधा।

बाहुशोष (सं० पु०) वेदनाके हाथोंमें होनेवाला एक प्रकारका बाहु रोग जिससे बाहु पतला होता है।

बाहुश्रुत्य (सं० पु०) बाहुश्रुत होनेका भाव, बहुत सी बातोंको, सुन कर, प्राप्त की हुई जानकारी।

बाहुसम्भव (सं० पु०) बाहू ब्रह्मबाहू सम्भवोऽस्य। क्षत्रिय, जिनकी उत्पत्ति ब्रह्माकी बाहुसे मानी जाती है।

बाहुसहस्रभृत् (सं० पु०) बाहूनां सहस्रं बिभर्त्तीति क्विप् (ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्। पा ६।१।७१) इति तुक् च। कार्त्तवीर्यार्जुन। परशुरामने परशु द्वारा इनकी हजार भुजाएँ काट डाली थीं। सबेरे इनका नाम लेनेसे सब प्रकारकी दुर्गति और महापातक विनाश होता है।

"कार्त्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रभृत्।
योऽस्य संकीर्त्तयेन्नाम कल्यमुत्थाय मानवः।
न तस्य वित्तनाशः स्यात् नष्टञ्च लभते पुनः॥"

(आह्निकतत्त्व) कार्त्तवीर्यार्जुन देखो।

बाहू (सं० स्त्री) बाहु देखो।

बाहूबाहवि (सं० अव्य०) बाहुभिर्बाहुभिर्यत् युद्धं वृत्तं। बाहु द्वारा जो युद्ध होता है, कुश्ती।

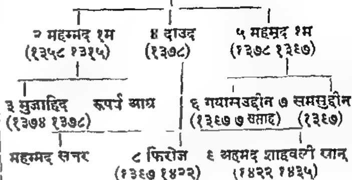
बाहेर (हिं० क्रि०वि०) पवित्र, निरष्ट।

बाह्मणगाव—मध्यप्रदेशके बालाघाट जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। भूपरिमाण ८ वर्गमील है।

बाह्मण (हिं० पु०) ब्राह्मण देखो।

बाह्मनीवंश—दाक्षिणात्यका एक मुसलमान राज-वंश। १३४४ ई०में वरंगल, विजयनगर और द्वारसमुद्रमें हिन्दू राजाओंने मिल कर दिल्लीकी अधीनता त्याग दी थी। यह देख दौलताबादके मुसलमान शासनकर्त्ता अन्यान्य मुसलमान अमात्योंकी सहायतासे एक साथ १३४१ ई०में दिल्लीश्वर मुहम्मद तुगलकके अधीनता पाश छेद कर स्वाधीनताकी ध्वजा उड़ानेमें समर्थ हुए थे। कुल्बर्गा (आशनाबाद) में उन्होंने अपना राजपाट स्थापित किया था। उक्त दौलताबादके राज प्रतिनिधि हसन बाल्यावस्थासे ही अति दरिद्र थे। गङ्गू नामक किसी ब्राह्मणकी सहायतासे इन्होंने राजसरकारमें प्रतिष्ठा प्राप्त की और पीछे पदोन्नति हुई। ब्राह्मणके प्रति, कृतोपकारके लिये कृतज्ञता प्रकाशार्थ ये अपना नाम हसन गङ्गू बाह्मनी रख कर राज सिंहासन पर बैठे। इन्हीं के द्वारा प्रतिष्ठित राजवंश, उस ब्राह्मणके स्मरणार्थ बाह्मनी नामसे प्रसिद्ध हुआ।

बाह्मनी राजवंश।




हुमायू (१४५७ १४६१)
जिहाय वा जहिया
हसन
११ निजाम (१४६१ ६३)
१२ महम्मद ३य (१४६३ ८२)
अहमद
१४ महमूद २य (१४८२ १५१८)
१५ अहमद २य (१५१८ २०)
१६ अलाउद्दीन (१५२० २२)
१७ वालि उल्ला (१५२२ २२)
१८ कलीम उल्ला (१५२५ २७)

उपर्युल्लिखित अठारह राजाओंने करीब दो सौ वर्ष तक दाक्षिणात्यके कुल्बर्गा-राजसिंहासन पर बैठ कर राजकार्य चलाया था। अनन्तर बरिदशाही, आदिल शाही, इमादशाही और कुतुबशाही राजाओंने दक्षिण-भारतमें शासनदण्ड विस्तार किया था।

अलाउद्दीन अपना राज्य चार भागोंमें विभक्त कर १३५८ ई०में परलोक सिधारे। उनके पुत्र महम्मदशाहने गणपति राज्य लूट कर वरङ्गल राज्य पर हमला किया। युद्धमें वरङ्गल राजपुत्र नागदेव मारे गये, जिससे गोल कुण्डा आदि राज्य महम्मदशाहके हस्तगत हुए।

पाप किया था, इस कारण राजाके समीप भेजा। राजा ही दोषीको दण्ड देते हैं, मुझे दण्ड देनेका कोई भी अधिकार नहीं है। अभी तुम और राजा दोनों ही पवित्र हो गये हो। (भारत शान्तिपर्व २३,२४ अ०)

यह नदी हिमालयसे निकली है। हरिवंशमें लिखा है,—प्रसेनजित राजाके गौरी नामकी एक स्त्री थी। स्वामीने क्रुद्ध हो कर उन्हें शाप दिया था जिससे वे 'बाहुदा' नदीमें परिणत हुई

लेभे प्रसनजिद्भार्या गौरी नाम पतिव्रता।
अभिशप्ता तु सा भर्त्रा नदी वै बाहुदा कृता॥"

(हरिवं० १२।७)

२ पुरुवंशीय परीक्षित् राजाकी पत्नी (त्रि०) ३ बहुदाली, बहुत दानकरनेवाली।

बाहुपाश (स० पु०) १ बाहु द्वारा युद्धकौशल भेद। २ बाहुशृङ्खल।

बाहुप्रलम्ब (स० त्रि०) आजानुबाहु, जिसकी बाहें बहुत लम्बी हों। ऐसा व्यक्ति बहुत वीर माना जाता है।

बाहुबल (स० क्ली०) बाहो बल। हस्तबल, पराक्रम, बहादुरी।

बाहुबलि (स० पु०) गिरिभेद।

बाहुबलिन् (स० त्रि०) बाहुबलशाली, पराक्रमी।

बाहुबाध (स० पु०) जनपदभेद।

बाहुभाष्य (स० क्ली०) बहुभाषणशीलता, बहुत बोलने वाला।

बाहुभूषा (स० स्त्री०) बाह्वोर्भुजयोर्भूषा भूषणं। १ केयूर, बहुँटा। २ बाहुभूषणमात्र।

बाहुभेदिन् (स० पु०) बाहु भिनत्तीति बाहु० भिद णिनि। विष्णु। (त्रि०) २ बाहुभेदक।

बाहुमत् (स० त्रि०) बाहुयुक्त।

बाहुमात्र (स० त्रि०) बाहुः प्रमाणमस्य बाहु मात्रच्। बाहुपरिमाण।

बाहुमितायन (स० पु०) बहुमितका गोत्रापत्य।

बाहुमूल (स० क्ली०) बाह्वोर्मूल। कक्ष, कंधे और बाहुका जोड़।

बाहुयुद्ध (स० क्ली०) बाह्वोर्भुजाभ्यां वा युद्ध। भुज द्वारा संग्राम, मल्लयुद्ध, कुश्ती। पर्याय—नियुद्ध। बाहु युद्धके अनेक भेद हैं, यथा—सङ्कट, पङ्कट, करघर्षण और क्रिया महाभारतके विराटपर्व १२ अध्यायमें इसका विवरण लिखा है। मल्लयुद्ध देखो।

बाहुयोध (स० पु०) मल्ल, पहलवान।

बाहुल (स० क्ली०) बहुल-अण्। १ बहुलभाव, बहुतायत, ज्यादती। २ बाहुत्राण, युद्धके समय हाथमें पहनने-की एक वस्तु जिससे हाथकी रक्षा होती थी। ३ अग्नि, आग। ३ कार्त्तिक मास।

बाहुलक (स० क्ली०) बहुलेन बहुलग्रहणेन निर्वृत्त सङ्कलादित्वात् अण् संज्ञायां कन्। व्याकरणोक्त सर्वोपाधिरहित विधानादि।

कहीं कहीं विधिका विधानविविध देख कर बाहुलक विधि चार प्रकारकी बतलाई गई है, यथा—कहीं प्रवृत्ति, कहीं अप्रवृत्ति, कहीं विभाषा और कहीं इसकी अन्यथा।

बाहुलग्रीव (स० पु०) मयूर, मोर।

बाहुलता (स० स्त्री०) बाहुरेव लता, रूपक कर्मधा०। बाहु रूप लता।

बाहुलतिका (स० स्त्री०) बाहुरेव लतिका। बाहुलता।

बाहुलेय (स० पु०) बहुलानां कृत्तिकादीनामपत्य पुमान् बहुला ढक्। कार्त्तिकेय।

बाहुल्य (स० क्ली०) बहुल ष्यञ्। आधिक्य, अधिकता।

बाहुविस्फोट (स० पु०) ताल ठोकना।

बाहुवीर्य (स० क्ली०) बाह्वो वीर्यं। बाहुबल, भुजबल, पराक्रम।

बाहुव्यायाम (स० पु०) बाहु द्वारा नाना कौशल।

बाहुशर्दिन् (स० त्रि०) बाहुभ्यां शर्द्धयति अभिभवतीति (सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये। पा ३।२।७८) इति णिनि। बाहुबलयुक्त।

बाहुशाल (स० पु०) वृक्षभेद। बहुशाल देखो।

बाहुशालिन् (स० त्रि०) बाहुभ्यां शालते तद्वीर्याधिक्येन श्लाघते शाल इनि। १ बाहुवीर्याधिक्ययुक्त, पराक्रमी। स्त्रियां ङीप्। (पु०) २ शिव। ३ भीम। ४ धृतराष्ट्र पुत्रभेद। ५ दानवभेद। ६ राजपुत्रभेद।

बाहुशिखर (स० पु०) स्कन्ध, कंधा।

बाहुशोष (स० पु०) बाहुमें होनेवाला एक प्रकारका वायु रोग जिसमें बहुत पीड़ा होती है।

**बाहुश्रुत्य** (सं० पु०) बाहुश्रुत होनेका भाव, बहुत सी बातोंको, सुन कर, प्राप्त की हुई जानकारी।

**बाहुसम्भव** (सं० पु०) बाहू ब्रह्मबाहू सम्भवोऽस्य। क्षत्रिय, जिनकी उत्पत्ति ब्रह्माकी बाहुसे मानी जाती है।

**बाहुसहस्रभृत्** (सं० पु०) बाहूनां सहस्रं बिभर्त्तीति क्विप् (ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्। पा ६।१।७१) इति तुक् च। कार्त्तवीर्यार्जुन। परशुरामने परशु द्वारा इनकी हजार भुजाएँ काट डाली थीं। सबेरे इनका नाम लेनेसे सब प्रकारकी दुर्गति और महापातक विनाश होता है।

"कार्त्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रभृत्।
योऽस्य संकीर्त्तयेन्नाम कल्यमुत्थाय मानवः।
न तस्य वित्तनाशः स्यात् नष्टञ्च लभते पुनः॥"
(आह्निकतत्त्व) कार्त्तवीर्यार्जुन देखो।

**बाहू** (सं० स्त्री०) बाहु देखो।

**बाहूबाहवि** (सं० अव्य०) बाहुभिर्बाहुभिर्येत् युद्धं प्रवृत्तं। बाहु द्वारा जो युद्ध होता है, कुश्ती।

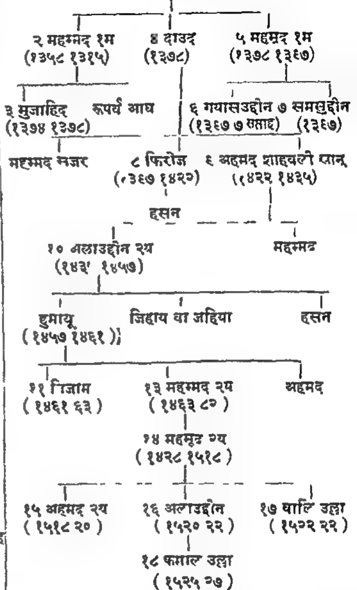
**बाहेर** (हिं० क्रि०वि०) बहिर, निकट।

**बाह्मणगांव**—मध्यप्रदेशके बालाघाट जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। भूपरिमाण ८ वर्गमील है।

**बाह्मण** (हिं० पु०) ब्राह्मण देखो।

**बाह्मनीवंश**—दाक्षिणात्यका एक मुसलमान राज-वंश। १३४४ ई०में वरंगल, विजयनगर और द्वारसमुद्रमें हिन्दू राजाओंने मिल कर दिल्लीकी अधीनता त्याग दी थी। यह देख दौलताबादके मुसलमान शासनकर्त्ता अन्यान्य मुसलमान अमात्योंकी सहायतासे एक साथ १३४१ ई०में दिल्लीश्वर मुहम्मद तुगलकके अधीनता पाश छेद कर स्वाधीनताकी ध्वजा उड़ानेमें समर्थ हुए थे। कुलबर्गा (आहसनाबाद) में उन्होंने अपना राजपाट स्थापित किया था। उक्त दौलताबादके राज प्रतिनिधि हसन बाल्यावस्थासे ही अति दरिद्र थे। गङ्गू नामक किसी ब्राह्मणकी सहायतासे इन्होंने राजसरकारमें प्रतिष्ठा प्राप्त की और पीछे पदोन्नति हुई। ब्राह्मणके प्रति, कृतोपकारके लिये कृतज्ञता प्रदर्शनार्थ ये अपना नाम हसन गङ्गू बाह्मनी रख कर राज-सिंहासन पर बैठे। इन्हीं के द्वारा प्रतिष्ठित राजवंश, उस ब्राह्मणके स्मरणार्थ बाह्मनी नामसे प्रसिद्ध हुआ।

बाह्मनी राजवंश।




उपर्युल्लिखित अठारह राजाओंने करीब दो सौ वर्ष तक दाक्षिणात्यके कुलबर्गा-राजसिंहासन पर बैठ कर राजकार्य चलाया था। अनन्तर बरिदशाही, आदिलशाही, इमादशाही और कुतुबशाही राजाओंने दक्षिण-भारतमें शासनदण्ड विस्तार किया था।

अलाउद्दीन अपना राज्य चार भागोंमें विभक्त कर १३५८ ई०में परलोक सिधारे। उनके पुत्र महम्मदशाहने गणपति-राज्य लूट कर वरङ्गल राज्य पर हमला किया। युद्धमें वरङ्गल राजपुत्र नागदेव मारे गये, जिससे गोलकुण्डा आदि राज्य महम्मदशाहके हस्तगत हुए।

१३६५-६६ ई०में इन्होंने विजयनगरके राजाके विरुद्ध युद्ध कर दृढ़ दर्जेकी निष्ठुरताका परिचय दिया। इस युद्धमें विजयी होने पर भी दोनों पक्षोंमें शान्ति स्थापित न हो पायी थी। १३७५ ई०में इनकी मृत्यु होने पर इनके पुत्र मजाहिदने राजासन पर बैठ कर लगातार कई मरतबा विजयनगर पर चढ़ाई की थी। इन युद्धोंमें उनके अत्याचारोंकी सीमा न थी। अन्तिम आक्रमणमें विफल मनोरथ हो कर लौट रहे थे, कि रास्तेमें उनके चाचा दाऊदने (१३७८ ई०में) इन्हें मार डाला। दाऊद भी राजसिंहासन पर बैठनेके बाद मजाहिदकी धात्रीके षड़यन्त्रसे मारे गये। उसके बाद अलाउद्दीनके कनिष्ठ पुत्र महम्मद राजा हुए। करीब १९ वर्ष तक निष्कण्टक राजा करके १३९७ ई०में ये परलोक सिधारे। उनकी मृत्युके बाद उनके दोनों पुत्र गयासउद्दीन और समसुद्दीनने क्रमशः कुछ दिनों तक राज्य किया। बादमें एक क्रीतदासने गयासउद्दीनके आगे उपाड़ कर उन्हें कैद किया था और समसुद्दीनको दाऊदके पुत्र फिरोजने राज्यच्युत किया था।

फिरोजने २५ वर्ष तक राज्य किया था। उन्होंने १३९८, १४०१ और १४०७ ई०में लगातार तीन बार विजयनगर पर आक्रमण किया था। प्रथम दो युद्धोंमें विजयनगरके राजा पराजित हुए, परन्तु तृतीय युद्धमें फिरोजको परास्त और विशेष क्षतिग्रस्त हो कर अपने राज्यमें लौट आना पड़ा। द्वितीय युद्धकी विजयके उपलक्ष्यस्वरूप फिरोजने विजयनगरकी राजकन्याका पाणिग्रहण किया था। १४१२ ई०में उनकी मृत्यु होनेके बाद उनके भाई अहमद शाहने निर्दोष भतीजोंको भगा कर स्वयं राज्य पर अधिकार जमा लिया। राज्याधिकारके बाद ही इन्होंने विजयनगरके राजाको युद्धमें परास्त कर लेना प्रारम्भ कर दिया। पश्चात् वरङ्गल पतिके इनके साथ युद्धमें मारे जानेके कारण उक्त राज्य नष्ट हो गया। ये भी विदरनगर स्थापन कर १४३५ ई०में समारोहसे चल बसे। उनके पुत्र २य अलाउद्दीनके राजसिंहासन पर आरोहण करने पर कनिष्ठ महम्मद विजयनगर नरेशके साथ मिल कर भाईके विरोधी बन गये और कर विद्रोह खड़ा कर दिया। पर महम्मद परास्त हो कर शहर ही में भाईके वशीभूत हो गये। अलाउद्दीनके विजयनगरके राजधानी उड़ा लाने पर, १४२७ ई०में विजयनगरके शेर राजने लगातार कई बार बाह्मनीराज्य पर आक्रमण किये। आखिर दोनों पक्षोंमें सन्धि हो गई। १४५७में २य अलाउद्दीनकी मृत्यु होने पर उनके निष्ठुर पुत्र हुमायूंने ४ वर्ष राज्य किया। राजकर्मचारियोंके षड़यन्त्रसे १४६१ ई०में हुमायूंके मारे जाने पर उनके ज्येष्ठपुत्र निजामको राज्य मिला। निजाम ८ वर्षके बालक होने पर भी उनकी बुद्धिमती माता और महामन्त्री महमूद गवान्ने अच्छी तरह राजकार्य चलाया था। उस समय उड़िष्या, तैलिङ्ग और मालवाकी सेनाने आ कर बाह्मनीराज्य पर आक्रमण किया था, परन्तु सभी उल्टे पांव लौट गये। इनकी मृत्युके बाद १४६३ ई०में ३य महम्मद ८० वर्षकी उम्रमें सिंहासन पर बैठे। १४६८ ई०में ये महमूद गवानको प्रधान मंत्री नियुक्त कर राज्यकी सीमा वृद्धि करनेके लिये अग्रसर हुए। १४६९ ई०में ये कोङ्कण अधिकार करने, उड़िष्या राजको सहायता देने और तैलङ्ग आक्रमण तथा कोण्डपल्ली एवं राजमहेन्द्र विजय करने आदिमें व्यस्त थे। १४७७ ई०में ये पुनः मछलीपत्तन लौटे थे। वहांसे फिर समुद्रोपकूल हो कर काञ्चीपुर तकके स्थान पर आक्रमण किया और लूट मार की। १४८१में इन्होंने अपने दुर्भाग्यवश ही निजाम उल्मुल्क भैरीकी सलाहसे महमूद गवानको पदच्युत किया और मार डाला। महमूद गवानकी ज्ञानगर्भ सुमन्त्रणाओं और राज्य परिचालनकी सुव्यवस्था खो कर इन्होंने स्वयमेव ही अपने पैरोंमें कुल्हाड़ी मार ली थी। इस घटनाके बादसे ही बाह्मनी राज्यके अधःपतनका सूत्रपात हो गया। महमूद गवानकी मृत्युके बाद राज्यके प्रधान प्रधान सामन्तगण राज्यको उपेक्षादृष्टिसे देखने लगे और राज दरबारमें कम आने लगे। वे प्रायः अपने दलबलके साथ अपने अपने राज्यमें घूमा करते थे। १४८२ ई०में महमूद गवानके दत्तकपुत्र युसुफ आदिल शाहको गोआ नगरकी रक्षार्थ भेजनेके बाद महम्मदकी मृत्यु हो गई। उनके पुत्र २य महमूदने राजा होनेके साथ ही निजाम उल्मुल्क भैरीको अपना मंत्री नियुक्त किया। युसुफ आदिलके राजधानीमें लौटने पर उनकी हत्याके लिए षड़यन्त्र होने लगा। युसुफको खबर लगते ही वे अपने राज्य बीजापुरको भाग गये।

अनन्तर महमूदके तेलिङ्गना आक्रमणके लिए चले आने पर निज़ाम उलमुल्क मार डाले गये। इसी मौके पर मालिक अहमद जुनारमें स्वाधीन हो गये। बेरारके शासनकर्त्ता ईमाद उल्मुल्क विद्रोही हो कर राज्यके विरुद्ध खड़े हुए। मन्त्री कासिम वारिदकी मृत्युके बाद १५०४ ई०में ब्राह्मनीराज एक तरहसे अमीर वरिदके अधीन हो गया। १५१२ ई०में तैलङ्गके शासनकर्त्ता कुतब उल् मुलकने गोलकुण्डाके राजा बन कर बाह्मनी शासनकी अवज्ञा की थी। इसके सिवा बाह्मनी राज सेनाके साथ बीजापुर और बेदार सेनाका कई बार युद्ध होनेसे बाह्मनी राजशक्ति क्रमश क्षीण हो चली। १५१८ ई०में महमूदकी मृत्युके बाद उनके पुत्र २य अहमद राजा तो हुए, परन्तु राज्यकी समस्त क्षमता अमीर वरिदके हाथ रही। १५२० ई०में उनकी मृत्यु हुई और कनिष्ठ भ्राता अलाउद्दीन राजा हुए। इन्होंने राज मन्त्रियोंके कबलसे छुटकारा पानेकी कोशिश की, जिससे वे १५२२ ई०में राजगद्दीसे उतारे और मार डाले गये। पश्चात् उनके छोटे भाई वाली दो वर्षके लिए राजा रहे, १५२४ ई०में विष दे कर उनका भी काम तमाम किया गया और अमीर वारिदने उनकी विधवा स्त्रीसे अपना सम्बन्ध किया। उसके बाद कलाम उल्लाको सिंहासन पर बिठाया गया, पर वे १५२७ ई०में प्राणोंके डरसे अहमदनगर भाग गये और इधर अमीर वरिदने भी बाह्मनी छोड़ कर नगरमें नवीन राजवंशकी प्रतिष्ठा की। वरिदशाही देखो।

वाह्य (स० क्ली०) वाह्यते चाल्यते इति वाहि ण्यत्। १ यान, सवारी। २ भार ढोनेवाला पशु, जैसे—बैल, गधा, ऊँट आदि। ३ वहिस, बाहर। (त्रि०) ४ वहिर्भव, बाहरमें होनेवाला। ५ वहनीय, ढोनेवाला। ६ बाहरी, बाहरका।

वाह्यकरण (स० क्ली०) वाह्यक्रिया।

वाह्यकर्ण (स० पु०) महाभारतके अनुसार एक नागका नाम।

वाह्यकुण्ड (स० पु०) नागभेद, एक नागका नाम।

वाह्यतपश्चर्य्या (स० स्त्री०) जैनियोंके अनुसार तपस्या का एक भेद। यह छ प्रकारकी होती है—अनशन, औनोदर, वृत्तिसंक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश और लीनता।

वाह्यतस (स० अव्य०) वहिर्भागमें, बाहरमें।

वाह्यता (स० स्त्री०) वहिर्विषयता।

वाह्यद्युति (स० पु०) पारेका एक संस्कार।

वाह्यपटी (स० स्त्री०) जवनिका, नाटकका परदा।

वाह्याभ्यन्तर (स० पु०) प्राणायामका एक भेद। इसमें आते और जाते हुए श्वासको कुछ कुछ रोकते रहते हैं।

वाह्याभ्यन्तराक्षेपी (स० पु०) प्राणायामका एक भेद। जब प्राण भीतरसे बाहर निकलने लगे, तब उसे निकलने न दे कर उलटे लौटाना, और जब भीतर आने लगे तब उसको बाहर रोकना।

वाह्यविद्रधि (स० पु०) एक प्रकारका रोग। इसमें शरीरके किसी स्थानमें सूजन और फोड़ेकी सी पीड़ा होती है। इस रोगमें रोगीके मुंह अथवा गुदासे मवाद निकलता है। यदि मवाद गुदासे निकले तब तो रोगी साध्य माना जाता है, पर यदि मवाद मुंहसे निकले तो वह असाध्य समझा जाता है।

वाह्यविषय (स० पु०) प्राणको बाहर अधिक रोकना।

वाह्यवृत्ति (स० स्त्री०) प्राणायामका एक भेद। इसमें भीतरसे निकलते हुए श्वासको धीरे धीरे रोकते हैं।

वाह्याचरण (स० पु०) आडम्बर, ढकोसला।

वाह्यायाम (स० पु०) वायु सम्बन्धी एक रोग। इसमें रोगीको पीठकी नसें खिंचने लगती हैं और उसका शरीर पीछेकी ओरको झुकने लगता है।

वाह्यालय (स० पु०) वहिर्वाटी, बाहरका घर।

वाह्लक—वाह्लीक देखो।

वाह्लीक (स० पु०) काम्बोजके उत्तरप्रदेशका प्राचीन नाम जहां आज कल बलख है। यह स्थान काबुलके उत्तरकी ओर पड़ता है। इसका प्राचीन पारसी नाम बख्तर है। इसी बख्तर शब्दसे यूनानी शब्द वैक्ट्रिया बना है।

वाह्व (स० क्ली०) वाहु।

वाह्वादि (स० पु०) वाहु आदि करके इञ् प्रत्ययनिमित्त शब्दगण। गण यथा— वाहु, उपवाहु, उपवाकु, निवाकु, शिवाकु, वटाकु, उपनिन्दु, वृषली, वकला, चूड़ा, बलाका मूषिका, कुशला, छगला, ध्रुवका, धूवका, सुमित्रा, दुर्मित्रा, पुष्करसद्, अनुहरत्, देवशर्मन, अग्निशर्मन, भद्र

यनैन, सुनामन्‌ पुनामन्‌, सुनामन, पक्षन्‌, सामन, अष्टम, अभिर्जानस, सुधायन्‌, उदञ्चु, शिरस्‌, माष, शरावित, मगेर्ची, भैमवृद्धिन, श्रङ्गुल्तोदिन, सप्तादिन, नगरमर्दिन प्रराग्मर्दिन, लोमन, अजीगर्त, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, साम्ब, गद प्रद्युम्न, राम, उदङ्क, उदक। (पाणिनि)

बिंदा (हिं० स्त्री०) १ एक गोपीका नाम। २ माथे परका गोल और बड़ा टीका। ३ इस आकारका कोई चिह्न।

बिंदी (हिं० स्त्री०) १ शून्य, सुन्ना। २ माथे पर लगानेका गोल छोटा टीका। ३ इस आकारका कोई चिह्न।

बिंदुका (हिं० पु०) १ बिंदी, गोल टीका। २ इस आकारका कोई चिह्न।

बिंदुली (हिं० स्त्री०) १ माथे परका गोल टीका, टिकुली। २ इस प्रकारका कोई चिह्न।

बिंदुली (हिं० स्त्री०) बिंदी, टिकुली।

बिंद्रावन (हिं० पु०) वृन्दावन देखो।

बिंध (हिं० पु०) विन्ध्याचल देखो।

बिंधाना (हिं० क्रि०) १ बो धनाश्च अकर्मक रूप, छेदा जाना। २ फसना, उलझना।

बिंधिया (हिं० पु०) वह जो मोती बो धनेका काम करता हो, मोतीमें छेद करनेवाला।

बिंब (सं० पु०) बिम्ब देखो।

बिआना (हिं० क्रि०) बच्चा देना, जनना।

बिआपी (हिं० वि०) व्यापी देखो।

बिओग (हिं० पु०) वियोग देखो।

बिओगी (हिं० वि०) वियोगी देखो।

बिकट (सं० वि०) विकट देखो।

बिकना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका द्रव्य ले कर दिया जाना, मूल्य ले कर लिया जाना, बिक्री होना।

बिकराल (सं० वि०) विकराल देखो।

बिकल (सं० वि०) विकल देखो।

बिकलाई (हिं० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी।

बिकलाना (हिं० क्रि०) घबराना, व्याकुल होना।

बिकवाना (हिं० क्रि०) बेचनेका काम दूसरेसे कराना, किसीसे बिक्री कराना।

बिकसना (हिं० क्रि०) १ प्रस्फुटित होना, खिलना, फूलना। २ प्रफुल्लित होना, बहुत प्रसन्न होना।

बिकसाना (हिं० क्रि०) १ विकसना देखो। २ विकसित करना, खिलाना। ३ प्रफुल्लित करना, प्रसन्न करना।

बिकाऊ (हिं० वि०) जो बिकनेके लिये हो, बिकनेवाला।

बिकाना (हिं० क्रि०) बिकना देखो।

बिकार - विकार देखो।

बिकारी (हिं० वि०) १ विकृत रूपवाला। २ अहितकर हानिकारक। (स्त्री०) १ एक प्रकारकी टेढ़ी पाई जो अंकों आदिके आगे संख्या या मान आदि सूचित करनेके लिये लगाई जाती है।

बिक्री (हिं० स्त्री०) १ किसी पदार्थके बेचे जानेकी क्रिया या भाव। २ वह धन जो बेचनेसे प्राप्त हो, बेचनेसे मिलनेवाला धन।

बिक्रू (हिं० वि०) बेचने लायक, बिकाऊ।

बिख (हिं० पु०) विष, जहर।

बिखम (हिं० वि०) गरल, विष।

बिखरना (हिं० क्रि०) खडों या कणों आदिका इधर उधर गिरना या फैल जाना, छितराना।

बिखराना (हिं० क्रि०) खडों या कणोंको इधर उधर फैलाना, छितराना।

बिखाद (हिं० पु०) विषाद देखो।

बिखेरना (हिं० क्रि०) खडों या कणोंको इधर उधर फैलाना तितर बितर करना।

बिखोंडा (हिं० पु०) एक प्रकारकी बड़ी घास जो सारे भारतवर्षमें पाई जाती है। यह ज्वार जातिकी होती है और बारहों महीने हरी रहती है। जब यह अच्छी तरह बढ़ जाती है, तब चारेके बहुत उपयोगी होती है, पर आरम्भिक अवस्थामें इसका प्रभाव खानेवाले पशुओं पर बहुत बुरा और प्रायः विषके समान होता है। इस में से एक प्रकारके दाने भी निकलते हैं जिन्हें गरीब लोग यों ही, पीस कर अथवा बाजरे आदिके आटेके साथ मिला कर खाते हैं। इसकी कहीं खेती नहीं होती, यह खेतोंकी मेड़ों पर अथवा जलाशयोंके आस पास आपसे आप उगती है।

बिगड़ना (हिं० क्रि०) १ किसी पदार्थके गुण या रूप आदिमें ऐसा विकार होना जिससे उसकी उपयोगिता घट जाय या नष्ट हो जाय, असली रूप या गुणका नष्ट

हो जाना, खराब जाना। २ परस्पर विरोध या वैमनस्य होना, लड़ाई झगड़ा होना। ३ व्यर्थ व्यय होना, बेफायदा खर्च होना। ४ किसी पदार्थके बनते या गढ़े जाते समय उसमें कोई ऐसा विकार होना जिससे वह ठीक या पूरा न उतरे। ५ दुरवस्थाको प्राप्त होना, अच्छा न रह जाना। ६ नीतिपथसे भ्रष्ट होना, बद्‌-चलन होना। ७ क्रुद्ध होना, गुस्सेमें आ कर डांट डपट करना, अप्रसन्नता प्रकट करना। ८ विरोधी होना, विद्रोह करना। ६ पशुओं आदिका अपने स्वामी या रक्षककी आज्ञा या अधिकारसे बाहर हो जाना।

बिगड़े दिल (हिं० पु०) १ हर बातमें लड़ने झगड़नेवाला, वह जो बात बातमें बिगड़ खड़ा हो। २ कुमार्ग पर चलने वाला, वह जो बिगड़ा हुआ हो।

बिगर (हिं० क्रि० वि०) रहित, बिना।

बिगरना (हिं० क्रि०) बिगड़ना देखो।

बिगहा (हिं० पु०) बीघा देखो।

बिगही (हि० स्त्री०) क्यारी, बरही।

बिगाड़ (हिं० पु०) १ बिगड़नेकी क्रिया या भाव। २ दोष, बुराई। ३ वैमनस्य, झगड़ा, लड़ाई।

बिगाड़ना (हि० क्रि०) १ किसी वस्तुके स्वाभाविक गुण या रूपको नष्ट कर देना। २ नीति पथसे भ्रष्ट करना, कुमार्गमें लगाना। ३ किसी पदार्थको बनाते समय या कोई काम करते समय उसमें कोई ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक या पूरा न उतरे। ४ दुरवस्था को प्राप्त करना, बुरी दशामें लाना। ५ व्यर्थ व्यय करना। ६ स्त्रीका सतीत्व नष्ट करना, पातिव्रत्य भंग करना। ७ बुरी आदत लगाना, स्वभाव खराब करना। ८ बहकाना।

बिगाना (फा० वि०) १ जो अपना न हो, जिससे आपस दारीका कोई सम्बन्ध न हो, पराया। २ अजनबी, अनजान।

बिगार (हि० पु०) बिगाड़ देखो।

बिगारी (हि० स्त्री०) बेगारी देखो।

बिगाहा (हि० पु०) बिग्गाहा देखो।

बिगुल (अ० पु०) अंगरेजी ढंगकी एक प्रकारकी तुरही जो प्राय सैनिकोंको एकत्र करने अथवा इसी प्रकारका कोई और काम करनेके लिये संकेत रूपमें बजाई जाती है।

बिगूचन (हि० स्त्री०) १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है, असमंजस। २ कठिनता, दिक्कत।

बिगूचना (हि० क्रि०) १ संकोचमें पड़ना, दिक्कतमें पड़ना। २ दबाया जाना, पकड़ा जाना। ३ दबोचना, धर दबाना।

बिगूतना (हि० क्रि०) बिगूचना देखो।

बिगोना (हिं० क्रि०) १ नष्ट करना, विनाश करना। २ भ्रममें डालना, बहकाना। ३ छिपाना, चुराना। ४ तंग करना, दिक करना।

बिग्गाहा (हिं० पु०) आर्य्या छंदका एक भेद। इसे 'उद्गीति' भी कहते हैं। इसके प्रथम पादमें १२५, द्वितीयमें १५, तृतीयमें १२ और चतुर्थमें १८ मात्राएँ होती हैं।

बिग्रह (सं० पु०) विग्रह देखो।

बिघटना (हि० क्रि०) विनाश करना, बिगाड़ना।

बिचकाना (हि० क्रि०) १ किसीको चिढ़ानेके लिये मुंह टेढ़ा करना, मुंह चिढ़ाना। २ मुंहको टेढ़ा करना, मुंह बनाना।

बिचरना (हिं० क्रि०) १ इधर उधर घूमना, चलना फिरना। २ पर्यटन करना, यात्रा करना, सफर करना।

बिचलना (हिं० क्रि०) १ विचलित होना, इधर उधर हटना। २ हिम्मत हारना। ३ कह कर इनकार कर जाना, मुकरना।

बिचला (हि० वि०) जो बीचमें हो, बीचवाला।

बिचवाना (हि० पु०) बीचमें पड़नेवाला, बीच-बचाव करनेवाला।

बिचारा (हि० वि०) बेचारा देखो।

बिच्छित्ति (सं० स्त्री०) शृङ्गाररसके ११ हावोंमेंसे एक। इसमें किञ्चित् शृङ्गारसे ही पुरुषको मोहित कर लिया जाना वर्णन किया जाता है।

बिच्छू (हि० पु०) १ एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर। वृश्चिक देखो। २ एक प्रकारकी घास। इस घासके छू जानेसे बिच्छूके काटनेकी सी जलन होती है। ३ काक्तुंडिका पौधा या उसका फल।

बिछना (हि० क्रि०) १ बिछानाका अकर्मक रूप, फैलाया

जाना। २ किसी पदार्थका जमीन पर बिखेरा जाना, छितराया जाना। ३ जमीन पर लिटाया या गिराया जाना।

*बिछना ( हि० क्रि० ) बिछना देखो।*

बिछलाना ( हि० क्रि० ) बिछलना देखो।

बिछवाना ( हि० क्रि० ) बिछानेका काम दूसरेसे कराना, दूसरेको बिछानेमें प्रवृत्त करना।

बिछाना ( हि० क्रि० ) १ जमीन पर उतनी दूर तक फैलाना जितनी दूर तक फैल सके। २ जमीन पर गिरा या लेटा देना। ३ किसी चीजको जमीन पर कुछ दूर तक फैला देना।

बिछायत ( हि० पु० ) बिछौना देखो।

बिछावना ( हि० क्रि० ) बिछाना देखो।

बिछिया ( हिं० स्त्री० ) पैरकी उंगलियोंमें पहननेका एक प्रकारका छल्ला।

बिछुआ ( हि० पु० ) १ एक प्रकारका गहना जो पैरमें पहना जाता है। २ एक छोटा सा शस्त्र, एक प्रकारकी छोटी टेढ़ी छुरी। ३ अगिया या भायर नामका पौधा। ४ मनकी मूली।

बिछुड़न ( हि० स्त्री० ) १ बिछुड़ने या अलग होनेका भाव। २ वियोग, जुदाई।

बिछुड़ना ( हि० पु० ) १ साथ रहनेवाले दो व्यक्तियोंका एक दूसरेसे अलग होना, जुदा होना। २ प्रेमियोंका एक दूसरेसे अलग होना, वियोग होना।

बिछुरना ( हि० क्रि० ) बिछुड़ना देखो।

बिछुरनि ( हि० स्त्री० ) बिछुड़न देखो।

बिछुवा (हि० पु०) बिछुआ देखो।

बिछोह ( हि० पु० ) १ वह जो बिछुड़ा हुआ हो, जिसका वियोग हुआ हो। २ जो विरहका दुःख सह रहा हो, विरही।

बिछोड़ा (हि० पु०) १ बिछुड़नेकी क्रिया या भाव, अलग होना। २ विरह होना, प्रेमियोंका वियोग होना।

बिछोह ( हि० पु० ) वियोग, जुदाई

बिछौना ( हिं० पु० ) १ वह कपड़ा आ सोनेके कामके लिये बिछाया जाता हो, बिछावन, बिस्तर। २ वह फालतू सामान और काठ कबाड़ आदि जो जहाजोंके पेंदेमें बहुमूल्य पदार्थोंको सील आदिसे बचानेके लिये उनके नीचे अथवा उनको टक्कर आदिसे बचाने और उन्हें कसा रखनेके लिये उनके बीचमें बिछाया जाता है।

*बिजड़ ( हि० स्त्री० ) खड्ग, तलवार।*

बिजनी ( हि० स्त्री० ) हिमालयकी एक जंगली जाति। इस जातिके लोग उस प्रदेशमें रहते हैं जहां ब्रह्मपुत्र नद हिमालयको काट कर तिब्बतसे भारतमें आता है।

बिजनौर—युक्तप्रदेशके बरेली उपविभागका उत्तरीय जिला। यह अक्षा० २६ १´से २६ ५८´ उ० तथा देशा० ७८ से ७८ ५७´पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १७११ वर्गमील है। हिमालय पर्वतके निम्न देशमें जो सड़क उत्तर पूर्वकी ओर चली गई है, वह इस जिलेको गढ़वाल जिलेसे पृथक् करती है। इसके दक्षिण-पूर्व और दक्षिणमें नैनीताल तथा मुरादाबाद है। गङ्गा नदी जिलेके पश्चिम हो कर बह गई है। गङ्गाके तीरवर्ती स्थान छोड़ कर और प्राय सभी स्थान पर्वतमण्डित हैं। हिमालय, गढ़वाल और चण्डी नामक पर्वतमालाका अधित्यका देश ले कर यह जिला सङ्गठित है। गङ्गातीरवर्ती स्थानोंमें खेती बारी होती है।

जिलेका कोई प्रकृत इतिहास नहीं मिलता। अयोध्याके पमार द्वारा विध्वस्त किये जानेके बाद यहां रोहिलोंका अधिकार रहा। ७वीं शताब्दीमें चीन परिव्राजक यूएनचुवंगने बिजनौरसे ४ कोस दूरवर्ती मन्दावर नगरकी समृद्धिका उल्लेख किया है। १११४ ई०में मुरारीमें अग्रवाल वणिकोंने आ कर मन्दावर नगरका संस्कार किया और वे लोग वहीं बस गये। १४३० ई०में तैमुरने लाल धाङ्के निकट यहांके अधिवासियोंको परास्त किया। युद्ध उसके बाद मुसलमानोंने यहां नादिरशाही जारी कर दी थी, जिससे नगर बिलकुल जनहीन हो गया था।

सम्राट् अकबरशाहके राजत्वकालमें बिजनौर शम्भल सरकारके अधीन हुआ। मुगलोंकी अधःपतन पर रोहिलोंने आ कर उपनिवेश बसाया। रोहिला सरदार अली महम्मदने अपने निकटवर्ती स्थानों पर अधिकार जमाया। तभीसे यह स्थान रोहिलखण्डके नामसे पुकारने लगा। अली महम्मदके दौरात्म्यसे उत्पीड़ित हो अयोध्याके सूबेदारने महम्मद शाहको उनके

विरुद्ध उसकाया। रोहिला सरदारके सम्राट्‌की अधीनता स्वीकार करने पर १६४८ ई०में उन्हें अपना राज्य वापस मिला। उनकी मृत्युके बाद रोहिलावीर हाफिज रहमत् खाँने राजकार्यका भार अपने हाथ लिया। १७७१ ई०में महाराष्ट्रीयदलने सम्राट् शाहआलम को दिल्लीके सिंहासन पर बिठा कर रोहिलखण्ड पर आक्रमण कर दिया। रोहिलोंने इस असमयमें अयोध्याके वजीरसे सहायता मांगी। वजीर सहायता तो क्या देंगे, उल्टे १७७२ ई०में उन्हें बुरी तरह परास्त किया। युद्धमें हार खा कर रोहिलोंने सारा रोहिलखण्ड राज्य वजीरको समर्पण किया। केवल १७७४ ई०की सन्धिके अनुसार अलीके पुत्र फैजउल्ला खाके लिये रामपुर राज्य रख छोड़ा।

रोहिला पठानोंके समय यह पार्वत्यप्रदेश नाना नगरादिसे सुशोभित था। १८०१ ई०में यह स्थान अङ्गरेजोंके दखलमें आया। १८०७ ई०के गदरके अलावा १८३३ ई०में अफजल गढ़के निकट दोटूपति अमीर खाका पराभव यहांकी उल्लेखयोग्य घटना है। १८१७ ई० तक यह स्थान मुरादाबाद जिलेके अन्तर्भुक्त रहा। बादमें यह स्वतन्त्र जिलाभुक्त हो गया। पहले नगीना नगरमें और पीछे १८२४ ई०को बिजनौर नगरमें विचार सदर स्थापित हुआ।

मीरट नगरका विद्रोहस्रोत बिजनौर नगर भी पहुंचा था। इस समय दरवीके सेनादलने बिजनौरका साथ दिया। नजीबाबादके नवाब अपनी पठान-सेना ले कर कार्यक्षेत्रमें उतरे। कुछ समय उक्त नवाब यहांके राजा रहे। पीछे जब हिन्दू-मुसलमानमें विवाद छिड़ा, तब हिन्दुओंने मुसलमानोंको भगा कर अपना आधिपत्य फैलाया। सिपाहीविद्रोहके बाद १८५८ ई०के अप्रिल मासमें यह स्थान फिरसे अंगरेजोंके शासनाधीन हुआ।

इस जिलेमें १६ शहर और २१३२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े सात लाखसे ऊपर है। हिन्दूकी संख्या सैकड़े पीछे ६४ और ३५ मुसलमान तथा शेषमें आर्य लोग हैं। यहांकी प्रधान उपज गेहूं, जै, बाजरा, चना और ईख है। रुई और तेलहनकी फसल भी अच्छी लगती है। विद्याशिक्षामें यह जिला भी युक्तप्रदेशके अन्यान्य जिलोंके जैसा बहुत पीछा पड़ा हुआ है। सैकड़े पीछे २ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी कुल मिला कर २२५ स्कूल हैं जिनमेंसे ३ गवर्मेण्टसे और शेष जिला तथा म्युनिसिपल बोर्डसे परिचालित होते हैं। स्कूलके अलावा १० अस्पताल और चिकित्सालय हैं। कुल मिल कर इस जिलेकी आवहवा अच्छी है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २९ १´ से २९ ३८´ उ० तथा देशा० ७८ ०´ से ७१ २५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भू परिमाण ४८३ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखसे ऊपर है। इसमें ५७२ ग्राम और ६ शहर लगते हैं। बिजनौर शहर ही सबसे बड़ा है। तहसीलके पश्चिम गङ्गा नदी बह गई है।

३ उक्त तहसीलका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २९ २२´ उ० तथा देशा० ७८ ८´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १७५८३ है। कहते हैं, कि राजा वेणने इस नगरको बसाया था। सम्राट् अकबरके पहलेका इस नगरका कोई इतिहास नहीं मिलता। यहां सूती कपड़े, छुरी और अनेक तैयार होते हैं। शहरमें एक मिडिल स्कूल और एक बालिका स्कूल है।

बिजयसार (हिं० पु०) विजयसार देखो।

बिजयघंट (हि० पु०) मन्दिरोंमें लटकाये जानेका बड़ा घंटा।

बिजयसार (हिं० पु०) एक प्रकारका बहुत बड़ा जंगली पेड़। इसके पत्ते पीपलके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं। इसमें आंवलेके समान एक प्रकारके पीले फल भी लगते हैं। इसके फूल कड़वे, पर पाचक और बादी उत्पन्न करनेवाले होते हैं। इसकी लकड़ी कुछ कालापन लिये लाल रंगकी और बहुत मजबूत होती है। यह ढोल, तबले आदि बनानेके काममें आती है। इससे अनेक प्रकारकी स्याहियां और रंग भी बनते हैं। इसका गुण कुष्ठ, विसर्प, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमि, कफ, रक्त और पित्तका नाशक माना गया है।

बिजली (हिं० स्त्री०) १ एक प्रसिद्ध शक्ति जिसके कारण वस्तुओंमें आकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है। विद्युत देखो। २

आसमकी गुडलीके अन्दरकी गिरी। ३ एक प्रकारका आभूषण जो कानमें पहना जाता है। ४ एक प्रकारका आभूषण जो गलेमें पहना जाता है। (वि०) ५ बहुत अधिक चंचल या तेज। ६ बहुत अधिक चमकनेवाला, चमकीला।

बिजलीमार (हि० पु०) आसाम और दारजिलिङ्गके आस पासकी तराइयोंमें अधिकतासे होनेवाला एक प्रकारका बड़ा वृक्ष। यह बहुत सुन्दर और छायादार होता है। इसके हीरकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है और प्रायः सिरिसकी लकड़ीकी तरह काममें आती है। आसामवाले इस वृक्ष पर एक प्रकारकी लाख भी उत्पन्न करते हैं।

बिजहन (हि० वि०) जिसकी रोपण शक्ति नष्ट हो गई हो, जिसका बीज नष्ट हो गया हो।

बिजाती (हि० वि०) १ दूसरी जातिका, और जाति या तरह का। २ जो जातिसे बहिष्कृत कर दिया गया हो, जाति से निकाला हुआ, अजाती।

बिजायठ (हि० पु०) बाह पर पहननेका बाजूबन्द गहना।

बिजायर—बीदावर देखो।

बिजिपुर—मन्द्राज प्रदेशके विजागपत्तन जिलान्तर्गत एक 'मुत्ता' भूमि। पहले यहां नरबलि प्रचलित थी।

बिजेपुर—१ राजपूतानेके उदयपुर राज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह चित्तोर नगरसे पूर्ववर्त्ती उपत्यका देशमें अवस्थित है। नगरके चारों ओर एक लम्बा चौड़ा बांध है। यहांके सरदार ८१ ग्रामका शासन करते हैं।

बिजेराघोगढ़—मध्यप्रदेशके जब्बलपुर जिलान्तर्गत एक भूमिभाग। भूपरिमाण ७५० वर्गमील है। पहले राज वंशी सरदार इस प्रदेशका शासन करते थे। १८५७ ई०में सरदारके असद्व्यवहार पर असन्तुष्ट हो वृटिश सरकारने उनका अधिकार छीन लिया। यहां लोहेकी एक खान है।

२ उस भूभागका प्रधान ग्राम। यहां सरदारका आवास भवन और दुर्ग है।

बिजैसार (हि० स्त्री०) बिजयसार देखो।

बिजोरा (हि० पु०) १ बिजौरा देखो। (वि०) २ अशक्त, कमजोर।

बिजोलिया—राजपूतानेके उदयपुर राज्यका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २५° १०´ ३० तथा देशा० ७५° १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसमें ८३ ग्राम लगते हैं। यहांके सरदार मेवारके एक सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं। इनकी उपाधि राव सवाई है। राजस्व ७७६००) रु० है जिस मेंसे २८६० रु० दरबारमें कर स्वरूप दिये जाते हैं। कहते हैं, कि वर्त्तमान सरदारके पूर्वपुरुष १६वीं शताब्दीमें बयानासे मेवार आये थे। ये लोग पोवार राजपूत हैं। इस शहरका प्राचीन नाम विन्ध्यवल्ली था। यहां तीन शिवके मन्दिर और पांच जैन मन्दिर हैं।

बिजोहा (हि० पु०) केशवके अनुसार एक छन्दका नाम।
विज्जुहा देखो।

बिजौरा (हि० पु०) नीबूकी जातिका एक वृक्ष। इसके पत्ते नीबूके पत्तेके समान, पर उनसे बहुत अधिक बड़े होते हैं। इसके फूलोंका रंग सफेद होता है और फल बड़ी नारंगीके बराबर होते हैं। यह दो प्रकारका होता है, एक खट्टे फलवाला और दूसरा मीठे फलवाला। फलोंका छिलका बहुत मोटा होता है। इसका गुण खट्टा, गरम, कण्ठशोधक, तीक्ष्ण, हलका, दीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ट और त्रिदोष, शूल, खांसी, हिचकी आदिको दूर करनेवाला माना गया है। इस वृक्षकी जड़, इसके फल और फलोंके बीज तीनों औषधके काममें आते हैं।

बिजौरी (हि० स्त्री०) उड़दकी पीठी और पेठेके मेलसे बनी हुई बड़ी, कुम्हड़ौरी।

बिज्जू (हि० पु०) बिल्लीके आकार प्रकारका एक जंगली जानवर। यह दो हाथ लम्बा होता है और प्रायः जंगलों में बिल खोद कर अपनी मादाके साथ उसीमें रहता है। रातको यह बाहर निकल कर चूहों, मुरगियों आदिका शिकार करता और उनको खा जाता है। कभी कभी यह कब्रोंको खोद उनमेंसे मृत शरीरोंको निकाल कर भी खा जाता है।

बिज्जूहा (हि० पु०) एक वर्णिक वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें दो रगण होते हैं।

बिजना—१ बुन्देलखण्ड पोलिटिकल एजेन्सीके अधीन जागीरोंमेंसे एक छोटी जागीर। इसका भूपरिमाण २७ वर्गमील और आबादी डेढ़ हजारसे ऊपर है। इसके पूर्व और

छोड़ कर और तीनों ओर युक्तप्रदेशका झाँसी जिला पड़ता है। पहले यह स्थान तेहरी और उर्च्छा राजाओं के अधिकारमें था। इसका अष्टभाई नाम पड़नेका कारण यह है, कि दीवान रायसिंहने बड़गाव जागीरको अपने आठ पुत्रोंमें बाँट दिया था। उनके द्वितीय पुत्र दीवान सावन्तसिंहके भागमें विजना जागीर पड़ी। सावन्तके मरने पर जागीर उनके तीन पुत्रों के बीच बाँट दी गई। वृटिश अमलदारीमें दीवान सुजानको १८२३ ई०में जागीरकी सनद मिली। उनकी मृत्युके बाद उनके लड़के दीवान मुकुन्दसिंह गद्दी पर बैठे। ये ही वर्त्तमान जागीरदार हैं। ये लोग बुन्देलावंशीय राजपूत हैं। इस जागीरमें केवल चार ग्राम लगते हैं। राजस्व १००००) रु० है। जागीरदारको १५ कमान, ४० अश्वारोही और ५३० पदाति सेना रखनेका अधिकार है।

२ उक्त जागीरका प्रधान शहर। यह अक्षा० २५ २७´ उ० तथा देशा० ७९ ०´ पू० झासीके नवगङ्ग जाने के रास्ते पर अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १०६२ है।

विजनी—१ आसाम प्रदेशके ग्वालपाड़ा जिलेका एक राज्य। यह अक्षा० २५ ५३´ से २६ ३२ उ० तथा देशा० ९० ८५ से ९१ ८५´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका अधिकांश स्थान जङ्गलावृत है। यहांके राजा अपनेको कोचविहार राजवंशावतंस बतलाते हैं।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह० अक्षा २६ ३०´ उ० तथा देशा० ९० ४७´ ४०´ पू०के मध्य अवस्थित है।

विजली—मध्यभारतके भण्डार जिलान्तर्गत एक भू सम्पत्ति। भूपरिमाण १२६ वर्गमील है। इसका अधिकांश स्थान पर्वत और जङ्गलसे आवृत है। यहांके दरेकशा गिरिपथके निकट कछगढ़ नामक एक गुहा है। कुआरदास और बघारा नदीतीरवर्त्ती स्थान मनोहर दृश्योंसे पूर्ण है।

विझवारी (हिं० स्त्री०) छत्तीसगढ़में बोली जानेवाली एक प्रकारकी भाषा।

विझरा (हिं० पु०) एकमें मिला हुआ मटर, चना, गेहूं और जौ।

विझुकाना (हिं० क्रि०) १ भड़कना। २ डरना, भयभीत होना। ३ टेढ़ा होना, तनना।

विट (हिं० पु०) १ साहित्यमें नायकका वह सखा जो सब कलाओंमें निपुण हो। २ पक्षियोंकी विष्ठा, बीट।

विटक (स० पु०) पिटक।

विटरना (हिं० क्रि०) १ घघोला जाना। २ गदा होना।

विटरना (हिं० क्रि०) १ घघोलना। २ घघोल कर गदा करना।

विट्ठल (हिं० पु०) १ विष्णुका एक नाम। २ बम्बई प्रान्तमें शोलापुरके अन्तर्गत पण्ढरपुर नगरकी एक प्रधान देव मूर्त्ति। यह मूर्त्ति देखनेमें बुद्धकी मूर्त्ति जान पड़ती है। जैन लोग इसे अपने तीर्थङ्करकी मूर्त्ति और हिन्दू लोग विष्णु भगवानकी मूर्त्ति बतलाते हैं। विठ्ठल देखो।

विठलाना (हिं० क्रि०) बैठाना देखो।

विठाना (हिं० क्रि०) बैठाना देखो।

विडम्ब (स० पु०) विडम्ब देखो।

विड (हिं० पु०) १ विष्ठा। २ एक प्रकारका नमक।

विट् देखो।

विडर (हिं० वि०) छितराया हुआ, दूर दूर।

विडरना (हिं० क्रि०) १ इधर उधर होना, तितर बितर होना। २ पशुओंका भयभीत होना, बिचकना।

विडारना (हिं० क्रि०) १ इधर उधर करना, तितर बितर करना। २ भगाना।

विडायते (हिं० वि०) ज्यादा, अधिक।

विडारना (हिं० क्रि०) भयभीत करके भगाना।

विडाल (स० पु०) १ बिल्ली, बिलाव। बिडाल देखो। २ विडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गाने मारा था। ३ दोहेके बीसवे भेदका नाम। इसमें ३ अक्षर गुरु और ४२ अक्षर लघु होते हैं। ४ आंखके रोगोंकी एक प्रकारकी ओषधि।

विडालक (स० पु०) बिडालक देखो।

विडालपाद (स० पु०) एक तौल जो एक कर्षके बराबर होती है। कर्ष देखो।

विडालवृत्तिक (स० त्रि०) बिल्लीके समान स्वभाव वाला, लोभी, कपटी, दंभी, हिंसक, सबको धोखा देने वाला और सबसे टेढ़ा रहनेवाला।

विडालाक्ष (स० त्रि०) जिसकी आंखे बिल्लीकी आंखोंके समान हों।

विडालाक्षी (स० स्त्री०) एक राक्षसीका नाम।

बिडालिका ( स ० स्त्री० ) १ बिल्ली । २ हरताल ।
बिडाली (स ० स्त्री०) १ बिल्ली । २ एक प्रकारका आंखका रोग । ३ एक प्रकारका पौधा ।
बिडिंग ( स ० स्त्री० ) पानका बीड़ा, गिलौरी ।
बिडौजा ( स ० पु० ) इन्द्रका एक नाम ।
बितताना (हि० क्रि० ) व्याकुल होना, बिलखाना ।
बितना ( हि ० पु० ) बित्ता देखो ।
बिता ( हि ० पु० ) बित्ता देखो ।
बिताना (हि० क्रि०) समय आदि व्यतीत करना, गुजारना, काटना ।
बिताल ( हि ० पु० ) बैताल देखो ।
बितीतना ( हि ० क्रि० ) व्यतीत होना, गुजरना ।
बित्त (स ० पु०) वित्त देखो ।
बित्ता (हि ० पु०) हाथकी सब उंगलियां फैलाने पर अंगूठेके सिरेसे कनिष्ठिकाके सिरे तककी दूरी, बालिश्त ।
बिथकना ( हि ० क्रि० ) १ चकित होना, हैरान होना । २ थकना ।
बिथरना ( हि ० क्रि० ) १ छितराना, इधर उधर होना । २ अलग अलग होना, खिल जाना ।
बिथारना ( हि ० क्रि० ) छिटकाना, बिखेरना ।
बिदकना ( हि० क्रि० ) १ फटना, चिरना । २ घायल होना, जखमी होना । ३ भड़कना ।
बिदकाना ( हि ० क्रि० ) १ विदीर्ण करना, फाड़ना । २ घायल करना, जखमी करना ।
बिदरी ( हि ० स्त्री० ) १ जस्ते और तांबेके मेलसे बरतन आदि बनानेका काम । इसमें बीच बीचमें सोने चांदीके तारोंसे नक्काशी की हुई होती है । २ बिदरकी धातुका बना हुआ सामान ।
बिदरीसाज ( हि ० पु० ) बिदरकी धातुसे बरतन आदि बनानेवाला ।
बिदल ( स० स्त्री० ) विघट्टितं दलं यस्य । १ छिपाहुआ बलायादि, दान । २ स्वर्णादिका अवयव । ३ दाड़िम फल, अनारका दाना । ४ पत्रादिकृत पात्र विशेष, बांसका बना हुआ दौरा या कोई पात्र । ५ रक्त ... लाल सोना । ६ पिष्टक, पीठी । विदल देखो ।
बिदलकारि (स ० स्त्री०) पत्रविदारिणी, पत्रभञ्जकारिणी ।
बिदलसंहित ( स ० त्रि०) ... युक्त ।
बिदल ( स ० स्त्री० ) विघट्टितानि दलानि यस्याः । १ त्रिवृत्, निसोथ । ( त्रि० ) २ पत्रशून्य, जिसमें पत्ते न हों ।
बिदहना ( हि ० क्रि० ) धान या कुटकी आदिकी फसल पर आरम्भमें पाटा या हेंगा चलाना । जिस समय फसल एक बालिश्तकी हो जाती है और वर्षा होती है, तब मिट्टी गीली हो जाने पर उस पर हेंगा या पाटा चला देते हैं । इससे फसल छंट जाती है और फिर उग उठती है, तब जोरोंसे बढ़ती है ।
बिदहनी ( हि ० स्त्री० ) बिदहनेकी क्रिया या भाव ।
बिदा ( अ० स्त्री० ) १ प्रस्थान, गमन, रवानगी । २ जानेकी आज्ञा । ३ द्विरागमन, गौना ।
बिदाई ( अ० स्त्री० ) १ बिदा होनेकी क्रिया या भाव । २ बिदा होनेकी आज्ञा । ३ वह धन जो किसीको बिदा होनेके समय उसका सत्कार करनेके लिये दिया जाय ।
बिदामी ( हि ० वि० ) बादामी देखो ।
बिदारना ( हि ० क्रि० ) १ चीरना, फाड़ना । २ नष्ट करना, बिगाड़ना ।
बिदारी ( हि ० पु० ) विदारी देखो ।
बिदारीकंद ( हि ० पु० ) एक प्रकारका कंद । इसकी बेलके पत्ते अरुईके पत्तोंके समान होते हैं । यह कंद बेलकी जड़में होता है । इसका रंग कुछ कुछ लाल होता है और इसके ऊपर एक प्रकारके छोटे छोटे रोएं होते हैं । इसका गुण—मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, वर्णप्रवर्द्धक और रुधिरविकार, दाह तथा वमननाशक है ।
बिदेस ( हि ० पु० ) परदेश, अपने देशके अतिरिक्त और कोई देश ।
बिद्दत ( अ० स्त्री० ) १ पुरानी अच्छी बातको बिगाड़नेवाली नई खराब बात । २ कष्ट, तकलीफ । ३ विपत्ति, आफत । ४ अत्याचार, जुल्म । ५ दोष, बुराई । ६ दुर्दशा ।
बिध ( हि० पु० ) १ हाथियोंका चारा । २ प्रकार, तरह, ३ ब्रह्मा । ४ जमाखर्चका हिसाब, आय व्ययका लेखा ।
बिधना ( हि ० पु० ) ब्रह्मा, करतार ।
बिधबदी ( हि० स्त्री० ) भूमिकर देनेकी एक रीति । इसमें

बीघे आदिके हिसाबसे कोई कर नियत नहीं होता, बल्कि कुल जमीनके लिये यों ही अन्दाजसे कुछ रकम दे दी जाती है।

विधवपन ( हिं० पु० ) वैधव्य, रँडापा।

विधवा—विधवा देखो।

विधवाना ( हिं० क्रि० ) बिँधवाना देखो।

विधाई ( हिं० पु० ) विधायक, वह जो विधान करता हो।

विधाना ( हिं० क्रि० ) बिँधाना देखो।

विधिना ( हि० स्त्री० ) विधना देखो।

विधुली ( हि० पु० ) हिमालयकी तराईमें होनेवाला एक प्रकारका बाँस। इसे नल-बाँस और देव बाँस भी कहते हैं। देवबाँस देखो।

विनता ( हि० पु० ) पिड़की नामकी चिड़िया।

विनती ( हि० स्त्री० ) प्रार्थना, निवेदन।

विनन (हि० स्त्री०) १ बिनने या चुननेकी क्रिया या भाव। २ बुननेकी क्रिया या भाव, बुनावट। ३ वह कूड़ा कर्कट आदि जो किसी चीजमेंसे चुन कर निकाला जाय, चुनन।

विनना ( हि० क्रि० ) १ छोटी छोटी वस्तुओंको एक एक करके उठाना, चुनना। २ इच्छानुसार संग्रह करना, छाट छाट कर अलग करना। ३ डंकवाले जीवका डंक मारना, काटना।

विनरी ( हि० स्त्री० ) बरनी देखो।

विनसाना (हिं० क्रि०) १ विनाश करना, नष्ट कर डालना। २ विनष्ट होना।

विना (हि० अव्य०) छोड़ कर, बगैर।

विनाई ( हि० स्त्री० ) १ बीनने या चुननेकी क्रिया भाव। २ बीनने या चुननेकी मजदूरी। ३ बुननेकी क्रिया या भाव, बुनावट। ४ बुननेकी मजदूरी।

विनाती ( हिं० स्त्री० ) विनती देखो।

विनाना ( हि० क्रि० ) बुनवाना देखो।

विनानी ( हि० वि० ) १ अज्ञानी, अनजान। ( स्त्री० ) २ विशेष विचार, गौर।

विनावट ( हि० स्त्री० ) बुनावट देखो।

विनासना ( हि० क्रि० ) विनष्ट करना, संहार करना।

विनौका ( हि० पु० ) पकवान बनाते समयका वह पकवान जो पहले थानमेंसे निकाल कर गणेशके निमित्त अलग रख देते हैं। यह भाग पकवान बनानेवालेको मिलता है।

विनौरिया ( हि० स्त्री० ) खरीफके खेतोंमें होनेवाली एक प्रकारकी घास। इसमें छोटे पीले फूल निकलते हैं। यह घास प्रायः चारेके काममें आती है।

विनौला ( हि० पु० ) कपासका बीज। यह पशुओंके लिये पुष्टिकारक होता है। इससे एक प्रकारका तेल भी निकाला जाता है, बनौर।

विन्दवी ( स० पु० ) विदि अवयवे बाहु० अनि। बिन्दु, अङ्ग।

विन्दवीय ( स० त्रि० ) बिन्दवि गर्हादित्वात् छ। (पा ४।२।१८८)। बिन्दुसम्बन्धीय, अङ्गसम्बन्धीय।

विन्दु ( स० पु० ) बिन्दु देखो।

विन्दुक ( स० पु० ) चिह्न, गोल टीका।

विन्दुकित ( स० त्रि० ) बिन्दु द्वारा आवृत।

विन्दुघृत (स० क्ली०) घृतौषधविशेष।

विन्दुचित ( स० पु० ) रोहित मृगविशेष।

विन्दुचित्रक ( स० पु० ) बिन्दुरूप चित्रमस्य कप्। मृग भेद।

विन्दुजाल ( स० क्ली० ) बिन्दुना जाल। १ बिन्दुसमूह। २ हस्तिशुण्डो परिस्थित बिन्दुसमूह, वह बिन्दु जो हाथीकी सूँड पर होते हैं। ३ हाथियोंका पद्मक नामक रोग।

विन्दुतन्त्र ( स० पु० ) १ शारीफलक, चौपड़ आदिकी बिसात। २ तुरङ्ग।

विन्दुतीर्थ ( स० क्ली० ) काशीके प्रसिद्ध पञ्चनद तीर्थका नामान्तर जहा बिन्दुमाधवका मन्दिर है।

विन्दुदेव ( स० पु० ) बौद्धदेवता भेद।

विन्दुनाथ (स० पु०) हठयोगविद्या प्रवर्त्तक आचार्यभेद।

विन्दुपत्र (स० पु०) बिन्दु पत्रे यस्य। भूर्जवृक्ष, भोज-पत्र।

विन्दुफल ( स० क्ली० ) मुक्ताविशेष।

विन्दुमत् ( स० त्रि० ) १ बिन्दुयुक्त। २ बिन्दुकी तरह जिसका आकार हो। (स्त्री०) ३ शार्ङ्गधर पद्धति लिखित वृत्त भेद। ४ मरीचिपत्नी बिन्दुमतकी माता। ५ राज शशबिन्दुकी कन्या, मान्धाताकी स्त्री।

बिन्दुमाधव (सं० पु०) १ विष्णुका नामान्तर। २ काशी स्थित वेणीमाधव। बिन्दुमाधव देखो।

बिन्दुरक (सं० पु०) वृक्षविशेष।

बिन्दुरेखक (सं० पु०) बिन्दुचिह्नित रेखा यत्र, कप्। पक्षि भेद।

बिन्दुरेखा (सं० स्त्री०) १ बिन्दुसमन्वित रेखा। (Dotline) २ राजा चन्द्रविक्रमकी कन्या।

बिन्दुवासर (सं० पु०) बिन्दुपातस्य वासर। गर्भमें सन्तानोत्पत्तिकारक शुक्रपातदिन, वह दिन जब प्रथम गर्भसञ्चार हो।

बिन्दुसरस् (सं० पु०) बिन्दुनामक सर। एक सरोवर। यह अति पवित्र और पापनाशक है। महाभारतमें लिखा है— कैलाशके उत्तरमें मैनाक पर्वतके समीप हिरण्यशृङ्ग नामका एक मणिमय पर्वत है, उसी पर यह रमणीय बिन्दुसरोवर है। इसके किनारे भगीरथने गङ्गादर्शनके लिये बहुत काल तक तपस्या की थी। इन्द्रने भी यहां सौ अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त की थी। मयदानवने जब युधिष्ठिरको सभा निर्माण की थी, तब वे यहींसे रत्नादि ले गये थे। (भारत सभापर्व)

बिन्दुसार (सं० पु०) चन्द्रगुप्तके एक पुत्रका नाम।

बिन्दुसेन (सं० पु०) राजा क्षत्रौजसके पुत्र।

बिन्दुह्रद (सं० पु०) बिन्दुसरोवर।

बिपत्ति (सं० स्त्री०) विपत्ति देखो।

बिबस (हिं० वि०) १ विवश, मजबूर। २ परवश, पराधीन। (क्रि० वि०) ३ विवश हो कर, लाचारीसे।

बिबाई (हिं० स्त्री०) पैरका एक प्रकारका रोग। इसमें पैरोंके तलुएका चमड़ा फट जाता है और वहां जख्म हो जाता है। इस कारण चलने फिरनेमें बहुत दर्द होता है। यह रोग प्रायः जाड़ेके दिनोंमें और वृद्ध व्यक्तियों को हुआ करता है।

बिबाही (हिं० स्त्री०) १ बेवाक होनेका भाव, हिसाब आदिका साफ होना। २ समाप्ति, अन्त।

बिबि (हिं० वि०) दो।

बिभित्सा (सं० स्त्री०) भेद करनेकी चलानेकी इच्छा।

बिभित्सु (सं० त्रि०) ध्वंस या नाश करनेमें इच्छुक।

बिभ्रक्षयिषु (सं० त्रि०) भोजनेच्छु खानेमें पटु।

बिभ्रक्षु (सं० त्रि०) भृष्ट करनेमें इच्छुक।

बिमन (हिं० वि०) १ जिसे बहुत दुःख हो। २ चिन्तित, उदास। (क्रि० वि०) ३ बिना चित्त लगाए, अनमना हो कर।

बिमोहना (हिं० क्रि०) मोहित करना, लुभाना।

बिमौरा (हिं० पु०) वाल्मीक, बाँबी।

बिम्ब (सं० क्ली०) वी गत्यादिषु (उणादयश्च। उण् ४।८५) इति वन् प्रत्ययेन निपातनात् साधुः। १ प्रतिबिम्ब, छाया, अक्स। २ कमण्डलु। ३ मूर्ति। ४ बिम्बिका फल, कुन्दरू नामक फल। पर्याय—तुण्डिकेरी, रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी, ओष्ठी, बिम्बी, बिम्बा, बिम्बक बिम्बजा। गुण—पित्त, कफ, छर्दि, व्रण, तृष्णा और तृषानाशक। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—शीतल, गुरु, पित्त, अस्र और वातनाशक, रुचिकर तथा आध्मान कारक। (क्ली०) ५ सूर्यचन्द्र मण्डल। ६ मण्डलमात्र। ७ गिरगिट, गिरगिट। ८ सूर्य। ९ आभास, झलक। १० छन्दविशेष।

बिम्बक (सं० क्ली०) बिम्ब-स्वार्थे-कन्। १ चन्द्रसूर्य मण्डल। २ बिम्बिका फल, कुन्दरू। ३ साँचा, ढाँचा।

बिम्बकि (सं० पु०) राजपुत्रभेद।

बिम्बजा (सं० स्त्री०) बिम्ब फलं आपतेऽस्यामिति जन ड। बिम्बिका।

बिम्बट (सं० पु०) सर्षप, सरसों।

बिम्बर (सं० पु०) उच्च संख्या।

बिम्बसार (सं० पु०) बिम्बिसार नरपति। बिम्बिसार देखो।

बिम्बा (सं० स्त्री०) बिम्बं फलमस्त्यस्यामिति बिम्ब अच् टाप्। बिम्बिका देखो।

बिम्बिका (सं० स्त्री०) १ बिम्ब, छाया। २ चन्द्रसूर्य मण्डल।

बिम्बित (सं० त्रि०) बिम्ब तारकादित्वादितच्। प्रति बिम्बयुक्त।

बिम्बिन् (सं० त्रि०) बिम्ब शब्दपर्याय।

बिम्बिसार (सं० पु०) एक प्राचीन राजाका नाम। ये अजातशत्रुके पिता और गौतमबुद्धके समकालीन थे।

कहते हैं, कि ये पहले शाक्त थे, पर पीछे बुद्धके उपदेशसे बौद्ध हो गये।

बिम्बी ( सं० स्त्री० ) बिम्ब-गौरादित्वात् ङीष्। बिम्बिका।

बिम्बु ( सं० स्त्री० ) गुवाक, सुपारी।

बिम्बोष्ठ ( सं० त्रि० ) बिम्ब ओष्ठ 'ओत्वोष्ठयो समासे वा' इति पाक्षिकोऽकारलोप, बिम्बे इव ओष्ठौ यस्य। जिसके होंठ बिम्बफलके समान हों।

बियर ( अं० स्त्री० ) एक प्रकारकी हलकी अंगरेजी शराब जो जौकी बनी होती है और जिसे प्रायः स्त्रियां पीती हैं।

बियरसा ( हिं० पु० ) एक प्रकारका बहुत ऊँचा वृक्ष जो पहाड़ोंमें ३००० फुटकी ऊँचाई तक होता है। इसकी लकड़ी कुछ लाली लिए काले रंगकी, बहुत मजबूत और कड़ी होती है। लकड़ी प्रायः इमारतें और मेज कुरसी आदि बनानेके काममें आती है। इसमें एक प्रकारके सुगन्धित फूल लगते हैं और गोंद भी होता है जो कई कामोंमें आती है।

बियाड़ ( हिं० पु० ) वह खेत जिसमें पहले बीज बोए जाते हैं और छोटे छोटे पौधे हो जाने पर जहांसे उखाड़ कर दूसरे खेतमें रोपे जाते हैं।

बियान ( हिं० पु० ) प्रसव, बच्चा देनेकी क्रिया। २ बच्चा देनेका भाव। यह शब्द विशेषतः पशुओंके लिये प्रयुक्त होता है।

बियाना ( हिं० क्रि० ) बच्चा देना, जनना।

बियाबान ( फा० पु० ) ऐसा उजाड़ स्थान या जंगल जहां कोसों तक पानी न मिले

बियो ( हिं० पु० ) बेटेका बेटा, पोता।

बिरंग ( हिं० पु० ) १ कई रंगोंका, जिसमें एकसे अधिक रंग हों। २ बिना रंगका, जिसमें कोई रंग न हो।

बिरंज ( फा० पु० ) १ चावल। २ पका हुआ चावल, भात।

बिरंजी ( फा० स्त्री० ) लोहेकी छोटी कील, छोटा कांटा।

बिरगेड ( अं० स्त्री० ) १ सेनाका एक विभाग जिसमें कई रेजिमेंटें या पलटनें होती हैं। २ काम करनेवालोंका कोई ऐसा दल जो एक ही तरहकी वर्दी पहनता हो और एक ही अधिकारीकी अधीनतामें काम करता हो।

बिरतिया ( हिं० पु० ) हज्जाम या बारी आदिकी जातिका वह व्यक्ति जो विवाह संबंध ठीक करनेके लिये वर पक्ष की ओरसे कन्यावालोंके यहां अथवा कन्या पक्षसे वर पक्षकी योग्यता, मर्यादा, अवस्था आदि देखनेके लिये जाता है।

बिरथा ( हिं० वि० ) १ व्यर्थ, निरर्थक। २ बिना किसी कारणके।

बिरद ( हिं० पु० ) १ बड़ाई, यश। २ बिरद देखो।

बिरदैत (हिं० पु०) १ बहुत अधिक प्रसिद्ध वीर या योद्धा। ( त्रि० ) २ प्रसिद्ध, नामी।

बिरध ( हिं० त्रि० ) वृद्ध देखो।

बिरधाई ( हिं० स्त्री० ) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

बिरधापन ( हिं० पु० ) १ वृद्ध होनेका भाव, बुढ़ापा। २ वृद्ध होनेकी अवस्था, वृद्धावस्था।

बिरमना ( हिं० क्रि० ) १ आराम करना, सुस्ताना। २ ठहरना, रुकना। ३ मोहित हो कर फंस रहना।

बिरमाना ( हिं० क्रि० ) १ व्यतीत करना, बिताना। २ रोक रखना, ठहराना। ३ मोहित करके फंसा रखना।

बिरला ( हिं० वि० ) कोई कोई, इक्का दुक्का।

बिरवा ( हिं० पु० ) १ वृक्ष। २ पौधा। ३ चना, बूट।

बिरवाही ( हिं० स्त्री० ) १ वह स्थान जहां छोटे छोटे पौधे उगाये गये हों। २ छोटे पौधोंका कुंज या बाग।

बिरषभ ( हिं० पु० ) वृषभ देखो।

बिरसन ( हिं० पु० ) विष, जहर।

बिरही ( हिं० पु० ) वियोगसे पीड़ित पुरुष, वह पुरुष जो अपनी प्रेमिकाके विरहसे दुःखित हो।

बिराजना ( हिं० क्रि० ) १ शोभित होना, शोभा देना। २ बैठना।

बिरादर ( फा० पु० ) भ्राता, भाई।

बिरादरी ( फा० स्त्री० ) १ बन्धुत्व, भाईचारा। २ जातीय समाज, एक ही जातिके लोगों का समूह।

बिराना ( हिं० क्रि० ) मुंह चिढ़ाना।

बिरिया ( हिं० स्त्री० ) १ समय, वक्त। २ बार, दफा।

बिरिया ( हिं० स्त्री० ) १ चाँदी या सोनेका बना हुआ कानमें पहननेका एक गहना। यह कटोरीके आकारका होता है। २ चर्खेके बेलनमेंका कपड़े या लकड़ीका वह

टिकिया जो इसलिये लगाई जाती है कि उसमेंकी मुंडी गू ढेमें रगड़ न खाय।

बिकमा (हि० पु०) एक प्रकारका गानद म।

बिरझना (हि० क्रि०) उलझना, झगड़ना।

बिरोधा (हि० पु०) [illegible] देखो।

बिरोधना (हि० क्रि०) विरोध करना, बैर करना।

बिलंगी (हि० स्त्री०) अलगनी, अरगनी।

बिलंद (फा० पु०) १ ऊंचा। २ बड़ा। ३ जो विफल हो गया हो।

बिल (सं० क्ली०) १ छिद्र, सूराख। २ गुहा, कन्दरा। (पु०) ३ उच्चैःश्रवा अश्व। ४ बेतस, बेंत।

बिल (हि० पु०) १ जमीनके अन्दर खोद कर बनाया हुआ कुछ जंगली जीवोंके रहनेका स्थान। (अं० पु०) २ पावनेके हिसाबका पर्चा, पुरजा, जिसमें प्राय बेची या दी हुई चीजोंके तिथि सहित नाम और दाम, किसीके लिये व्यय किये हुए धनका विवरण अथवा किसीके लिये किये हुए कार्य या सेवा आदिका विवरण और उसके पुरस्कारकी रकमका उल्लेख होता है। इसके उपस्थित करने पर वाजिब पावना चुकाया जाता है। ३ किसी कानून आदिका वह मसौदा जो कानून बनानेवाली सभामें उपस्थित किया जाय।

बिलकारिन् (सं० पु०) बिल करोतीति कृ णिनि। १ मूषक, चूहा। (त्रि०) २ गर्त्तकारक, बिवर बनानेवाला।

बिलकुल (अ० क्रि० वि०) १ पूरा पूरा, सब। २ सिरसे पैर तक, आदिसे अन्त तक।

बिलखना (हि० क्रि०) १ विलाप करना, रोना। २ दुःखी होना।

बिलखाना (हि० क्रि०) १ रुलाना। २ दुःखी करना।

बिलग (हि० वि०) १ पृथक्, अलग। (पु०) २ पार्थक्य, अलग होनेका भाव। ३ द्वेष या और कोई बुरा भाव, रंज।

बिलगाना (हि० क्रि०) १ पृथक् होना, अलग होना। २ पृथक् करना, अलग करना।

बिलगौं (हि० पु०) एक प्रकारका संकर राग।

बिलछना (हि० क्रि०) [illegible] देखो।

बिलटना (हि० क्रि०) भ्रष्ट करना, नाशना।

बिलटी (अं० स्त्री०) रेलके द्वारा भेजे जानेवाले मालकी वह रसीद जो रेलवे कम्पनीसे मिलती है। जहांसे माल भेजा जाता है, रसीद वहीं पर मिलती है। पीछेसे माल पानेवालेके पास यह रसीद भेज दी जाती है।

बिलधावन (सं० क्ली०) योनिस्थान प्रक्षालन।

बिलनी (हि० स्त्री०) काली भौंरी। यह अपने रहनेके लिये दीवारों या किवाड़ों पर मट्टीका घर बनाती है। यह वही भृङ्गी है जिसके विषयमें यह प्रसिद्ध है, कि यह किसी कीड़ेको पकड़ कर भृङ्गी ही बना डालती है। २ आंखकी पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसी, गुहांजनी।

बिलफेल (अ० क्रि० वि०) सम्प्रति, अभी।

बिलबिलाना (हि० क्रि०) १ छोटे कीड़ोंका इधर उधर रेंगना। २ असम्बद्ध प्रलाप करना। ३ व्याकुल हो बकना। ३ भूखसे बेचैन हो उठना। ४ कष्टके कारण व्याकुल हो कर रोना, चिल्लाना।

बिलमना (हि० क्रि०) १ विलम्ब करना, देर करना। २ ठहर जाना, रुकना।

बिलमाना (हि० क्रि०) १ अटका रखना, रोक रखना।

बिललाना (हि० क्रि०) १ विलाप करना, बिलख कर रोना। २ व्याकुल हो कर असम्बद्ध बातें बकना।

बिलवाना (हि० क्रि०) १ नष्ट करना, बरबाद करना। २ किसी वस्तुको दूसरेके द्वारा नष्ट कराना, बरबाद कराना। ऐसे स्थानमें रखवाना या रखना जहां कोई देख न सके, छिपाना अथवा छिपानेके काममें दूसरेको प्रवृत्त करना।

बिलवास (सं० पु०) बिले वासोऽस्य। [illegible]।

बिलवासिन् (सं० पु०) बिले वसति वस णिनि। १ सर्प, सांप। (त्रि०) २ गर्त्तवासी, बिलमें रहनेवाला।

बिलशय (सं० पु० बिले शेते इति शी अच्।) १ सर्प, सांप। (त्रि०) २ बिलवासी, बिलमें रहनेवाला।

बिलशायिन् (सं० पु०) बिल शी णिनि। बिलशय।

बिलहर (हि० पु०) बिलहरा देखो।

बिलहरा (हि० पु०) बांसकी तीलियों आदिका बना हुआ एक प्रकारका संपुट। इसमें पानके लगे हुए बीड़े रखे जाते हैं।

बिला (अ० अव्य०) बिना, बगैर।

बिलाई (हि० स्त्री०) १ बिल्ली, बिलारी। २ लोहे का

लकड़ीकी एक सिटकनी जो किवाड़ोंमें उनको बंद करने के लिये लगाई जाती है। ३ कुएँमें गिरा हुआ बरतन या रस्सी आदि निकालनेका कांटा। यह लोहेका बना होता है। इसके अगले भागमें बहुत-सी अंकुसियां लगी रहती हैं। उन्हीं अंकुसियोंमें चीज फंस कर निकल आती है।

बिलाईकन्द ( हि० पु० ) बिदारीकन्द देखो।

बिलाना ( हि० क्रि० ) १ नष्ट होना, विलीन होना। २ छिप जाना, अदृश्य हो जाना।

बिलार ( हि० पु० ) मार्जार, बिल्ला।

बिलारी ( हि० स्त्री० ) मजारी, बिल्ली।

बिलारीकन्द ( हि० पु० ) एक प्रकारका कन्द।

बिलाव ( हि० पु० ) बिलार देखो।

बिलावर ( हि० पु० ) बिल्लौर देखो।

बिलावल ( स० पु० ) केदारा और कल्याणके योगसे उत्पन्न एक राग। यह दीपक रागका पुत्र माना जाता है। इसके गानेका समय प्रातःकाल है।

बिलासना ( हि० क्रि० ) भोग करना, भोगना।

बिलिंबी ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी कमरखका फल या उसका पेड़।

बिलियर्ड ( अ० पु० ) एक अंगरेजी खेल। यह गोल अंटों और लंबी लंबी छड़ियों द्वारा बड़ी मेज पर खेला जाता है।

बिलिया ( हि० स्त्री० ) १ कटोरी। २ गाय बैलके गलेकी एक बीमारी।

बिलूर ( हि० पु० ) बिल्लौर देखो।

बिलेशय—एक योगाचार्य। हठ प्रदीपिकामें इनका उल्लेख देखनेमें आता है।

बिलेशय ( स० पु० स्त्री० ) बिले शेते शी अच्, अलुक् समासः। १ सर्प, सांप। २ मूषिक, मूसा। ३ गोधा, नेवला। ४ शश, खरहा। ५ शल्लकी, साही नामक जंतु।

बिलेश्वर ( स० पु० ) तीर्थभेद। यहां बिलेश्वर शिवलिङ्ग विद्यमान है।

बिलैया ( हि० स्त्री० ) १ बिल्ली। २ कद्दू, मूली आदिके महीन महीन डोरेसे लच्छे काटनेका एक औजार। यह वास्तवमें लोहेकी एक चौकी सी होती है। इस पर उभरे हुए छेद बने होते हैं। उन उभारोंसे रगड़ खा कर कटे हुए कतरे छेदोंके नीचे गिरते जाते हैं।

बिलौन ( हि० वि० ) बिना लावण्यका, कुरूप।

बिलोना (हि० क्रि०) १ मथना, खूब हिलाना। २ ढालना, गिराना।

बिलोलना ( हि० क्रि० ) डोलना, हिलना।

बिलौकस् ( स० वि० ) बिल ओकः स्थानं यस्य। बिल-वासी, बिलमें रहनेवाला।

बिलौर ( हि० पु० ) बिल्लौर देखो।

बिल्कुल ( हि० क्रि० वि० ) बिलकुल देखो।

बिल्म ( स० क्ली० ) बिल-बाहु० मक्। १ भासन, चमक। २ शिरस्त्राण, टोपी, पगड़ी।

बिल्मिन् ( स० वि० ) बिल्म इनि। १ बिल्मयुक्त। (पु०) २ रुद्रभेद।

बिल्मुक्ता ( अ० वि० ) १ जो घट बढ़ न सके। ( पु० ) २ वह लगान जो घटाया बढ़ाया न जा सके। ३ वह पट्टा जिसकी शर्तोंके अनुसार लगान घटाया बढ़ाया न जा सके।

बिल्ल ( स० क्ली० ) बिल्ल लाति लाक। १ आलवाल, थाला। २ हिंगु।

बिल्लमूला ( स० स्त्री० ) बिल्लमिव मूलं यस्याः। वाराही कन्द।

बिल्लसू ( स० स्त्री० ) प्रसूतदशपुत्रा, वह स्त्री जिसने दश पुत्र प्रसव किये हों।

बिल्ला ( हि० पु०) १ मार्जार। बिडाल देखो। २ चपरासकी तरहकी पीतलकी पतली पट्टी। इसे पहचानके लिये विशेष विशेष प्रकारके काम करनेवाले बाँह पर या गलेमें पहने रहते हैं।

बिल्ली ( हि० स्त्री० ) १ बिडाल देखो। २ उत्तरीय भारत और बरमाकी नदियोंमें मिलनेवाली एक प्रकारकी मछली। पकड़े जाने पर यह मछली काटती है जिससे विष सा चढ़ जाता है।

बिल्लीलोटन ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी बूटी। इसके विषयमें प्रसिद्ध है, कि उसकी गंधसे बिल्ली मस्त हो कर लोटने लगती है। यह दवाके काममें आती है। यूनानी हकीमने इसका 'बादर जबोया' नाम रखा है।

बिल्लूर ( हि० पु० ) बिल्लौर देखो।

बिल्लौर ( हि० पु० ) १ एक प्रकारका स्वच्छ पत्थर। यह

शीशेके समान पारदर्शक होता है। २ बहुत स्वच्छ शीशा जिसके भीतर मैल आदि न हो।

बिल्लौरी (हिं० वि०) १ बिल्लौरका बना हुआ, बिल्लौर पत्थरका। २ बिल्लौरके समान स्वच्छ।

बिल्व (सं० पु० बिल भेदने उल्वादयश्चेति साधुः। फलवृक्षविशेष, एक प्रकार फलका पेड़, बेलका पेड़। पर्याय—शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर, श्रीफल, महाकपित्थ, गोहरीतकी, पूतिवात, अतिमङ्गल्य, महाफल, शल्य, हृद्यगंध, शाम्बाङ्कुर, कर्कटाह, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्रश्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, दुरारुह, त्रिशाखपत्र, त्रिशिख, शिवद्रुम, सदाफल, सत्यफल, सुभूतिक, समीरसार। इसके फलके गुण—मधुर, हृद्य, कषाय, गुरु, पित्त, कफ, ज्वर, और अतिसार-नाशक। मूलके गुण—त्रिदोषनाशक, मधुर, लघु और वमन निवारक। इसके कोमल फलके गुण—स्निग्ध, गुरु, संग्राहक और दीपन। पके फलके गुण—मधुर, गुरु, कटु, तिक्त, कषाय, उष्ण, संग्राहक और त्रिदोष नाशक। (राजनि०)

भावप्रकाशके अनुसार बालबिल्वको बिल्वकर्कटी और बिल्वपेशिका कहते हैं। यह धारक और कफ, वायु, आमदोष तथा शूलनाशक है। मतान्तरमें यह धारक, अग्निसंदीपक, पाचक, कटुकषाय, तिक्तरस, उष्णवीर्य, लघु स्निग्ध तथा वायु और कफनाशक माना गया है। पका फल—गुरु, त्रिदोषजनक, दुष्पाच्य, दाहक वायु दुर्गन्धिकर, विदाही, विष्टम्भकारक, मधुररस, और मन्दाग्निकारक है। फलोंमें सुपक्व फल ही विशिष्ट गुणदायक है, परन्तु इसके लिये यह नियम नहीं, इसका कच्चा फल ही विशिष्ट गुणदायक होता है। द्राक्षा, बिल्व और हरितकी आदि फलोंमें सूखने पर ही गुणाधिक्य होता है। (भाव०)

बिल्ववृक्षकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बृहद्धर्मपुराणमें लिखा है, कि कमला प्रतिदिन सहस्र पद्मों द्वारा महादेवकी पूजा करती थीं। एक दिन वे हजार पुष्पोंको २।३ बार गिन कर पूजाके लिये बैठीं, तो क्या देखती हैं, कि २ पद्म कम ही होते हैं। तब लक्ष्मीने मन ही मन विचार किया, कि भगवान् विष्णु मेरे स्तनोंको पद्म कह कर उल्लेख किया करते हैं, अब अपने दोनों स्तनोंको काट कर उन्हींसे पूजा समाप्त करूं। पश्चात् उन्होंने अपने बायें स्तनको काट कर महादेवके मस्तक पर चढ़ाया। जब वे दाहिना स्तन काटनेको उद्यत हुईं तो महादेवने स्वलिङ्गमेंसे निकल कर कहा, "दूसरा स्तन काटनेकी आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हारी भक्तिसे बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं। तुम्हारा जो छिन्न स्तन मेरे मस्तक पर चढ़ाया गया है वह पृथिवी पर 'श्रीफल' के नामसे पुण्यप्रद वृक्षके रूपमें समुत्पन्न होवे। श्रीफल वृक्ष ही तुम्हारी मूर्तिमती भक्ति समझी जावे। जब तक सूर्य और चन्द्र रहेंगे, तब तक तुम्हारी यह कीर्त्ति रहेगी। यह वृक्ष मेरा अत्यन्त प्रिय होगा। इस वृक्षके पत्रके बिना मेरी पूजा कभी भी न हो सकेगी" यह सुन कर लक्ष्मी अत्यन्त आह्लादित हुईं।

वैशाख मासकी शुक्ला तृतीयाके दिन बिल्ववृक्षका आविर्भाव हुआ। श्रीफलवृक्षके उत्पन्न होते ही ब्रह्मा, नारायण, इन्द्रादि देवगण और देवपत्नियां, सभी वहां समागत हुए। तब सबोंने देखा, कि यह वृक्ष स्निग्ध, शिवस्वरूप और अपने तेजसे देदीप्यमान है। यह वृक्ष त्रिपत्रों से सुशोभित है।

भगवान् विष्णुने कहा, 'इस वृक्षके इक्कीस नाम होंगे—बिल्व, मालूर, श्रीफल, शाण्डिल्य, शैलूष, शिव पुण्य, शिवप्रिय, देवावास, तीर्थपद, पापघ्न, कोमलच्छद, जय, विजय, विष्णु, त्रिनयन, वर, धूम्राक्ष, शुक्लवर्ण, संयमी, और श्राद्धदेवक। इस वृक्षका जड़से ले कर सौ धनु तक स्थान परमतीर्थ स्वरूप है। इस वृक्षके तीन पत्र तीन देवोंके समान हैं। उसके बीच पत्र शिव, वामपत्र ब्रह्मा और दक्षिणपत्र साक्षात् विष्णु है। बिल्ववृक्षकी छाया या पत्ता लांघना अथवा पैरों से छूना निषिद्ध है। इस वृक्षके स्पर्श करनेसे आयु बढ़ती और पैरोंसे छूनेसे श्रीभ्रष्ट होता है। सहस्र पद्मों द्वारा पूजा करनेसे जितना फल होता है, उतना ही एक एक बिल्वपत्र द्वारा पूजा करनेसे प्राप्त होता है। तुलसीदलकी तरह बिल्व पत्र तोड़ते समय भी मन्त्रोच्चारण करना पड़ता है।

"पुण्यवृक्ष महाभाग मालूर श्रीफलप्रद।
महेशपूजनार्थाय त्वत्पत्राणि चिनोम्यहं॥'

इस मन्त्र द्वारा बिल्वपत्र तोड़ कर पीछे विधि विधान पूर्वक शिवजीकी पूजा करना चाहिये।

मन्त्र—"आ नमो बिल्वतरवे सदा शङ्कररूपिणे।
सफलानि समांगानि कुरुष्व शिवदर्पद ॥"

सुबह उठनेके बाद वृक्षके नीचे चारो तरफ दश हाथ परिमित स्थान गोवर पानीसे लीपना चाहिये। पश्चात्त अर्थात् अमावस्या, पूर्णिमा, द्वादशी, सायंकाल और मध्याह्नकाल, इन समयोंमें बिल्वपत्र नहीं चुनना चाहिये। शाखा तोड़ना और वृक्ष पर चढ़ना उचित नहीं। वृक्ष पर चढ़ कर पत्र चुन ले, पर शाखा कदापि न तोड़े। रमणीय, अखण्डित या खण्डित सभी प्रकारके पत्रसे शिवकी अर्चना हो सकती है। ६ मासके बाद बिल्वपत्र पर्युषित होता है। सूर्य और गणेशके अति रिक्त सभी देवताओंकी पूजा बिल्वपत्र द्वारा की जाती सकती है। जिस स्थानमें बिल्ववृक्षोंका कानन है। वह स्थान काशीके समान पवित्र है। मकानसे ईशान कोन में बिल्ववृक्ष लगानेसे विपद्की सम्भावना नहीं रहती। पूर्वदिशामें रहनेसे सुख, दक्षिणमें रहनेसे मरणभयका नाश और पश्चिममें रहनेसे प्रजालाभ हुआ करता है। श्मशान, नदीतीर, प्रान्तर और वनमें बिल्ववृक्ष होनेसे वह स्थान पीठस्थल कहलाता है।

घरके आंगनके बीचमें बिल्ववृक्ष नहीं लगाना चाहिये। यदि दैवात् ऐसे स्थानमें उत्पन्न हो जाय, तो शिव समझ कर उसकी अर्चना करनी चाहिए। बिल्ववृक्ष छेदन या उसका काष्ठ दहन करना निषिद्ध है। ब्राह्मणों के यज्ञके सिवा अन्य किसी भी कारणसे बिल्ववृक्ष बेचनेसे उसे पतित होना पड़ता है। बिल्वकाष्ठ घर्षित चन्दन मस्तक पर लगानेसे नरक भय दूर होता है। चैत्र, वैशाख ज्येष्ठ और आषाढ़ इन चार महीनोंमें बिल्ववृक्षमें जल-सिंचन करना विधेय है। (वृहद्धर्मपु० ८।११ अ०)

वह्निपुराणमें लिखा है, कि—गोरूप धारिणी लक्ष्मी के पृथ्वी पर अवतीर्ण होने पर उनके गोमयसे बिल्व-वृक्षकी उत्पत्ति हुई।

"भूगोलदमीश्च या धेनु गात्वा सा गता महीम्।
तद्गोमयभवो बिल्व श्रीश्च तस्मादजायत ॥"

(वह्निपु०)

इस वृक्षमें सर्वदा लक्ष्मीका वास रहता है इसी लिये इसका नाम श्रीवृक्ष है।

तन्त्रके अनुसार इसकी उत्पत्ति इस प्रकार है—विष्णु पत्नी लक्ष्मी पृथ्वी पर बिल्ववृक्ष रूपमें उत्पन्न हुई। कारण विष्णु सरस्वतीको बहुत ■ प्यार करते थे। इस लिये लक्ष्मीने महादेवके लिए बहुत वर्ष तक घोर तर तपस्या की थी। इतने पर भी महादेवकी प्रीति न हुई। तब वे बिल्ववृक्ष-रूपमें परिणत हुई, बादमें वही बिल्व वृक्षके नामसे प्रसिद्ध हुआ। महादेव सर्वदा इस वृक्षमें वास करते हैं। (योगिनीतन्त्र पूर्वखण्ड ७ प०)

बिल्ववृक्षके नीचे प्राणत्याग करनेसे मोक्ष लाभ होता है।

'बिल्ववृक्षस्तथा देवी भगवान् शङ्कर स्वयं।
बिल्ववृक्षतले स्थित्वा यदि प्राणांस्त्यजेत् सुधी ॥
तत्क्षणात् मोक्षमाप्नोति किं तस्य तीर्थकोटिभि ।"

(पुरश्चरणोल्लास १० पटल)

देवपूजामें बिल्वपत्र चढ़ाते समय अधोमुख रहना चाहिए। बिल्वपत्रके बिना शक्तिपूजादि नहीं होती।
बेलफल और बिल्ववृक्ष देखो।

**बिल्वक** (स० पु०) १ तीर्थभेद। २ नागभेद। ३ पीठ स्थानभेद।

**बिल्वकादि** (स० पु०) पाणिन्युक्त शब्दगणभेद। यथा—बिल्व, वेणु, वेत्र, वेतस, इक्षु, काष्ठ, कपोत, तृण, कुञ्चा, तक्षन्।

**बिल्वकीय** (स० त्रि०) बिल्वा सन्ति यस्यां नडादित्वात् छ कुक् च। बिल्वयुक्त भूमि।

**बिल्वज** (स० त्रि०) बिल्वात् जायते जन-ड। बिल्वजात मात्र।

**बिल्वजा** (स० स्त्री०) शालिधान्य विशेष।

**बिल्वतेजस्** (स० पु०) नागभेद।

**बिल्वतैल** (स० क्ली० कर्णरोगोक्त तैलौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, छागदुग्ध १६ सेर और बेल सोंठ १ सेर इसे गोमूत्रमें पीस कर कल्क दे। वाधिर्यरोग में यह तेल कानमें देनेसे बधिरता जाती रहती है।

अन्यविध—तिलतैल १ सेर, बकरीका दूध ४ सेर, कल्क बेलसोंठ ? पल। पीछे यथानियम इस तेलका पाक करे। वा श्लैष्मिक बधिरतामें यह तेल कानमें देनेसे बधिरता प्रशमित होती है।

(भैषज्यरत्ना० कर्णरोगाधि०)

बिल्वनाथ (सं० पु०) एक शैवाचार्य।

बिल्वपत्र (सं० क्लो०) बिल्वका पत्र। बेलकी पत्तियां।

बिल्वपत्रिका (सं० स्त्री०) बिल्वफलिका दाक्षायणी मूर्त्तिभेद।

बिल्वान्तर (सं० पु०) नागभेद।

बिल्वपेशिका (सं० स्त्री०) बिल्वकी पेशिका। सूखा बिल्वखण्ड, बेलसोंठ।

बिल्वमङ्गल ठाकुर—दक्षिणमें रहनेवाले एक ब्राह्मण कुमार। कृष्णवेण्वानदीके किनारे किसी गांवमें ये रहते थे। बाल्यावस्थामें पिताके वियोग हो जानेसे प्रचुर सम्पत्तिके उत्तराधिकारी और लम्पट हो गये। इस नदीके दूसरे पार में चिन्तामणि नामकी एक वेश्या रहती थी। ये दिनरात उसमें आसक्त रह कर प्रेम करते थे। यही प्रेम उनको एक दिन श्रीकृष्णके दर्शन कराने ले गया था।

एक दिन किसी प्रकार उस वेश्याको मालूम हुआ, कि कल बिल्वमङ्गल सुबह निश्चित पिताका श्राद्ध करेंगे। वेश्याने उस दिन उनका नदीपार होना असम्भव जान रात्रिमें नदी पार होनेसे उन्हें निषेध कर दिया। गृहकर्म करने पर बिल्वमङ्गल फिर स्थिर न रह सके, चिन्तामणिकी दर्शनलालसामें उत्कण्ठित हो आधी रातमें घरसे निकल पड़े। नदीके आते आते घोर घटायें उठीं, उसके साथ साथ वज्रपात, वर्षापात और वृष्टिपात होने लगा। इस प्रकारके बाधा विघ्नको अतिक्रम कर वे नदी किनारे पहुंचनेके लिये व्यग्र हो गये। वाय्वादि तूफानने उन्मादिनी भावनाकार धारण किया था। घाटों और उतार चढ़ाव उठ कर नदीको विभीषिकामयी बना रही थी। प्रेमोन्मत्त बिल्वमङ्गल ऐसे समयमें भी स्थिर न रह सके और जलमें कूद पड़े। जलमें कभी डूबते कभी तैरते चले जा रहे थे। जलमें बहावसे उनके हाथ एक बहता हुआ मुर्दा लगा। उसीके आश्रयसे नदी पार कर वेश्याके घरके सामने बिल्वमङ्गल उपस्थित हो गये। रात्रि अधिक हो गई थी, द्वार बंद देख कर वे गृह प्रवेशको चेष्टामें घर के चारों ओर घूमने लगे। मकानकी दीवारमें लटकते हुए एक लम्बे सांपको रस्सी जान उसे पकड़ लिया। उसीके सहारे वे प्राकार पर चढ़े और आंगनमें कूद पड़े। कूदनेकी आवाज सुनते ही चिन्तामणि आदि वेश्यायें दीपक ले कर आयीं और पड़े हुए बिल्वमङ्गलको उठा कर ले गयीं। किन्तु देखनेसे उनकी पूर्व स्थिति न थी। देख उन्हें स्नान कराया और शुद्ध वस्त्र पहनाया। बिल्वमङ्गल चिन्तामणिके प्रेममें ऐसे लीन थे, शरीरका ज्ञान भी सुधि न थी।

उस समय वह वेश्या समीपमें उनका हाथ पकड़ आप तिरस्कार भरे वचनोंसे कहने लगी, मैं वेश्या नीच अस्पृश्य और निन्दित हूं। तुम ब्राह्मण पुत्र हो, यह प्रेम मुझे न कर यदि तुम इस प्रेमके एक भागसे एक बार भी श्रीकृष्णके चरणकमलोंमें समर्पण करते तो निश्चय ही तुम्हें सौगुणा फल मिलता।

चिन्तामणिके इस भर्त्सनावाक्यसे बिल्वमङ्गलके हृदयमें ज्ञानभाव उपस्थित हुआ, साथ साथ विवेक और वैराग्य दिखाई दिया। उस रात्रिको कृष्णनामगानमें बिताया, सबेरा होते ही वे दूसरी जगह चले गये। रास्तेमें सोमगिरि नामक एक साधुके साथ उनका साक्षात् हुआ। बिल्वमङ्गल उनके निकट कृष्णमन्त्रमें दीक्षित हुए। एक वर्ष गुरु सेवाके बाद प्रेमवैराग्य पा उन्होंने विशुद्ध प्रेमधन प्राप्त किया। इसके बाद उनको कृष्णदर्शनकी अभिलाषा उत्पन्न हुई। वृन्दावन जानेके अभिलाषी हो वे मार्ग मार्गमें विचरण करने लगे।

कुछ दिन बाद एक गांवमें आ कर वे स्नानकर्मादिके एक कूपके तीरे बैठ गये और कृष्णके ध्यानमें दिन बिताने लगे। दैवसे एक वणिककी स्त्री उस सरोवरमें स्नान करने आयी। बिल्वमङ्गलकी निगाह उस पर पड़ी और पूर्वाभ्यासके कारण कामावेगसे उनका मन कुछ चञ्चल हुआ। वे उस रूपवती रमणीके पीछे चल दिये। रमणी तो अपने घरमें चली गई और साधु चिन्ताकुल मनसे दरवाजे पर बैठ रहे। वणिकने साधुको देख आदर सहित वचनोंसे उन्हें सन्तुष्ट किया। साधुने उससे स्त्रीके दर्शनकी प्रार्थना जताई। वैश्यपत्नीके लिये वणिकने स्वयं घरमें जा कर स्त्रीको सुन्दर वस्त्र और आभूषणोंसे सजा कर साधुके सामने उपस्थित कर दिया। उस समय साधुने स्त्रीके रूपको देख कर मिल कर विचार अपनेको खूब तिरस्कार किया।

इसके अनन्तर उन्होंने उस रमणीसे दो सुई ले कर अपनी आंखें फोड़ डालीं और वे कृष्ण प्रेमके अनुरागमें अन्धेकी तरह धीरे धीरे वृन्दावनकी ओर चल दिये। राधाकृष्णके प्रेममें मतवाले हो उन्होंने जिस अमृतगीतसे त्रिभुवनको पुलकित कर दिया था; वही गीत श्रीकृष्णकर्णामृत नामसे प्रसिद्ध है। प्रवाद है, कि गोपवेशमें श्रीकृष्ण उनको खिलाते थे। एक दिन उन्होंने गोपबालकवेशी श्रीकृष्णके हाथको जोरसे दबा लिया। बालकने, हाथमें व्यथा होती है ऐसा कह कर अपना हाथ उनसे छुड़ा लिया। इस पर बिल्वमङ्गलने कहा था—

"हस्तमुत्क्षिप्य यातोऽसि बलात् कृष्ण किमद्भुतम्।
हृदयाद् यदि निर्यासि पौरुषं गणयामि ते ॥
(श्रीकृष्णकर्णामृत ३।९६)

भक्तप्रेमसे राधाकृष्ण बिल्वमङ्गलको और बहुत दिन तक क्लेश न दे सके। उन्होंने निज पद्महस्तके द्वारा उनके ज्ञान चक्षु खोल दिये। अब अन्धेके नयन खुल गये, उन्होंने त्रिभङ्गभङ्गिम मुरलीवदन श्याममूर्त्तिके दर्शन किये, पासमें प्रेममयी राधा—ऐसा युगल रूप देख कर वे प्रेमावेशमें ढल गये। (भक्तमाल)

बिल्वमङ्गलठाकुरका दूसरा नाम लीलाशुक था। श्रीकृष्णप्रेममें मत्त्यासी बन उन्होंने तत्त्वज्ञान लाभ किया था। कृष्णकर्णामृत, कृष्णबालचरित, कृष्णाह्निककौमुदी, गोविन्दस्तोत्र, बालकृष्णक्रीडाकाव्य, बिल्वमङ्गलस्तोत्र और गोविन्ददामोदरस्तव नामक ग्रन्थ उनके बनाये हुए मिलते हैं।

बिल्ववन (सं० क्लो०) बिल्वस्य वन। बेलका जंगल।

बिल्ववन—दाक्षिणात्यके मदुरा नगरके निकटवर्ती एक तीर्थ। यह वेगवती नदीके किनारे अवस्थित है। स्कन्दपुराणान्तर्गत बिल्वारण्य माहात्म्य और शिवपुराणके बिल्ववन माहात्म्यमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है।

बिल्ववृक्ष (सं० पु०) बेलका पेड़। (Aegle marmelos) विभिन्न भाषाओंमें इसके नाम—हिन्दी—बेल, श्रीफल, श्रीफल, संस्कृत—बिल्व, श्रीफल मालूर बिल्वफल, बिल्व मराठी बेल गुजराती—बिल, बंगला—बेल, बिल्व; आसामी—बेल; सिन्ध—बिल, कटोरी; अरबी—सफरजले, हिन्दि, सुल, फोल—लोल्लमो मध औरनपग्; तामिल—बिल्वफलम्; तैलङ्ग—मरेदु, मालुरमु, बिल्व पण्डु, पतिर; गोंड—महका, महका; मलयालम्—कुवलप्पजम्, कनाड़ी—बिलपत्री या बेलपत्री; ब्रह्म—ओक्षित्, उषिनुवन; सिंगापुर—बेल्लो। भारतमें प्राय सर्वत्र ही यह वृक्ष होता है। हिमालय पर्वतके वन विभागमें और दक्षिण भारत तथा ब्रह्मदेशमें बेलके पेड़ स्वभावतः उत्पन्न होते हैं।

इस वृक्षकी छाल अलग कर लेनेसे उसमेंसे एक प्रकारका गोंद सा निकलता है। फलके अन्दर श्रेणीबद्ध बीज होते हैं। प्रत्येक बेलमें बीजोंके रहनेके लिए १० से लेकर १५ तक गह्वर होते हैं। इन कोषोंमें बीज गोंदके साथ लिपटे हुए रहते हैं। यह गोंद आस्वाद हीन और द्रव्यादि जोड़नेके काममें आता है। बेलके गोंदमें चूना मिला कर उससे कांचके बासन आदि जोड़े जा सकते हैं।

कच्चे बेलके छिलकेसे एक प्रकारका जरद रंग निकलता है जो हर्रोके साथ मिलानेसे केलिका नामक वस्त्र रंगनेके काममें आता है।

बिल्ववृक्षमें भेषज गुण भी बहुत है। कच्चे और पक्के फल, जड़, पत्ते, छिलका आदि सबमें अलग अलग गुण पाये जाते हैं।

१ कच्चा फल—कच्चे फलोंको खण्ड खण्ड कर लोग सुखा लिया करते हैं, जो बेलगरीके नामसे बाजारमें बिकता है। इसमें धारकता गुण है। लड़कोंको अजीर्ण रोग होने पर इसका काढ़ा बना कर दिया जाता है। यह पाकाशयके लिए अत्यंत उपयोगी है और सहज ही परिपाक होता है। कभी कभी संग्रहणी रोगमें भी इसका पथ्य दिया जाता है। आमाशय (पेचिस) आदि औदरिक रोगोंमें कच्चा बेल भून कर गुड़ या चीनीके साथ खानेसे उपकार होता है।

२ पका फल—सुमिष्ट, सुगन्धियुक्त और शीतल होता है। गरमियोंमें इमली या दहीके साथ इसका मठा सरबत बना कर पीनेसे बड़ा स्वादिष्ट मालूम पड़ता है और पेट ठंढा रहता है। यह सरबत हृद्य, बलकारक और सारक होता है। सुबहमें बरफके साथ सरबत पीनेसे उदरामय रोग जाता रहता है। पका बेल थोड़ी सी चीनी मिला कर खानेसे पेट बंध जाता है। दीर्घाजीर्ण या आमाशयजनित दौर्बल्यमें यूरोपीय लोग बेलमार्मालेड (Bel marmalade) बना कर सुबहके वक्त इसका सेवन करते हैं।

३ बेलकी जड़—इसकी छालका काढ़ा बना कर सविराम ज्वरमें प्रयुक्त किया जा सकता है। दीर्घकाल स्थायी कोष्ठबद्धता रोगमें जड़की छाल १ आउन्स १० आउन्स गरम जलमें उबाल कर, उसमेंसे १ या २ आउन्स सेवन करनेसे यथेष्ट उपकार मिलता है। चित्तो न्मादता (Hypochondriasis) और हृद्रोग (Palpitation of the heart)में यह फायदेमन्द है। वैद्यक दशमूल पाचनमें बेलकी जड़ रहती है। बेलकी जड़ सर्पके मस्तक पर लगानेसे उसका फन नत हो जाता है। सर्पके काटे हुए स्थान पर बेलकी जड़ लगानेसे विष भी नष्ट होता है।

४ पत्र—बेलपत्तेका रस अल्पज्वरमें देनेसे सामान्य दस्त होता है और ज्वर घट जाता है। चक्षु रोगमें अथवा गात्र क्षतमें कभी कभी बेलपत्तेको कूट कर, उस स्थान पर कच्ची पुलटिस रखी जाती है, जिससे दर्द घट जाता है। सामान्य ज्वरमें बेलपत्तेका काढ़ा सेवन कराया जाता है। बेलपत्तों से शिव और शक्तिकी पूजा होती है, यह बात बिल्व शब्दमें कही जा चुकी है।

५ बकला छिलका—यह भी समय समय पर औषधके काममें आता है।

६ फूल—इससे अच्छी सुगन्धि प्राप्त होती है।

यूरोपीय चिकित्सकोंने बेलसे तीन औषधियां बनाई हैं—(१) Extract of Bel (२) Liquid Extract of Bel और (३) Powder of the Pulp। ये तीनों दवाइयां उदर और ज्वर रोगमें अवस्थानुसार सेवन की जाती हैं।

बिल्वा (सं० स्त्री०) बिल्व-टाप्। हिंगुपत्री।

बिल्वाश्रमक (सं० क्ली०) रैवातीर-स्थित एक तीर्थस्थान।

बिल्वेश्वर (सं० क्ली०) शिवलिङ्गभेद।

बिल्वोदकेश्वर (सं० पु०) शिवमूर्त्तिभेद। हरिवंशके १३६ अध्यायमें इसके आविर्भावका विषय लिखा है।

बिल्हण (सं० पु०) चालुक्यराज विक्रमाङ्ककी सभा के एक कवि। इन्होंने विक्रमाङ्क-चरित काव्य लिखा है। इस ग्रन्थमें उस समयकी अनेक ऐतिहासिक कथाओंका वर्णन है। इन्हें लोग 'चोर कवि' भी कहा करते थे।

बिवरना (हिं० क्रि०) १ सुलझाना, एकमें गुथी हुई वस्तुओंको अलग अलग करना। २ बंधे या गुथे हुए बालोंको हाथ, कंघी आदिसे अलग अलग करके साफ करना, बाल सुलझाना।

बिवराना (हिं० क्रि०) १ बालोंको खुलवा कर सुलझ-वाना। २ बाल सुलझाना।

बिशप (अं० पु०) ईसाई मतका बड़ा पादरी।

बिशाखपत्तन—विशाखपत्तन देखो।

बिशालकवि—विशालकवि देखो।

बिश्वनाथ सिंह—विश्वनाथ सिंह देखो।

बिषान (हिं० पु०) विषाण देखो।

बिष्णुप्रसाद कुंवरि—विष्णुप्रसाद कुंवरि देखो।

बिसभार (हिं० वि०) असावधान, गाफिल।

बिस (हिं० वि०) विष देखो।

बिसकण्ठिका (सं० स्त्री०) बिसमिव कण्ठोऽस्या कप्। बलाका, बगलोंकी पंक्ति।

बिसकण्ठिन् (सं० पु०) बिसमिव कण्ठोऽस्त्यस्य इनि। बक, बगला।

बिसकुसुम (सं० क्ली०) बिसस्य कुसुम। कमल।

बिसखपरा (हिं० पु०) १ गोहकी जातिका एक विषैला सरीसृप जन्तु। यह हाथ सवा हाथ लम्बा होता है। इसका काटा हुआ जीव तुरन्त मर जाता है। इसकी जीभ स्याह होती है जिसे यह थोड़ी थोड़ी देर पर निकाला करता है। देखनेमें यह बड़ी भारी छिपकली सा होता है। २ पुनर्नवा, पथरचटा। ३ एक प्रकार की जंगली बूटी। इसकी पत्तियां बनगोभकी सी, पर कुछ अधिक हरी और लंबी होती हैं। यह औषधमें काम आती है। इसका दूसरा नाम बिसखपरी भी है।

बिसखा (सं० त्रि०) बिस मृणाल खनति खन विट्-डा। मृणाल खननकर्त्ता।

बिसखादिका (सं० स्त्री०) १ मृणाल खननकादि। २ वात्स्यायनका कामसूत्र वर्णित नाटकभेद।

बिसखापर (हिं० पु०) बिसखपरा देखो।

बिसग्रन्थि—बिसस्य ग्रन्थि। मृणाल ग्रन्थि, कमलकन्द। इसे जलमें देनेसे जलकी मलिनता दूर होती है।

बिसज (सं० क्ली०) बिसाज्जायते जन ड। पद्म, कमल।

बिसटी (हिं० स्त्री०) बेगार।

बिसनाभि (सं० पु०) बिस नाभिरुत्पत्तिस्थानं यस्य।

१ पद्मिनी, कमल। २ पद्मसमूह, कमलोंका ढेर।
विसनालिका ( सं० स्त्री० ) विसस्य नालिकेव। मृणाल।
विसनासिका ( सं० स्त्री० ) वकभेद।
विसनी ( हिं० वि० ) १ जिसे किसी बातका व्यसन या शौक हो। २ वेश्यागामी, रंडीबाज। ३ जो व्यवहारकी साधारण वस्तु सामने आने पर नाक भौं सिकोड़े, जिसे चीजें जल्दी पसन्द न आए। ४ जिसे सफाई सजावट या बनाव सिंगार बहुत पसन्द हो, चिकनिया।
विसप्रसून ( सं० क्ली० ) पद्म, कमल।
विसमय ( हिं० पु० ) विस्मय देखो।
विसमिल ( फा० वि० ) आहत, घायल।
विसमिल्लाह ( अ० पु० ) श्रीगणेश, आरम्भ।
विसरना ( हिं० क्रि० ) विस्मृत होना, भूल जाना।
विसराना ( हिं० क्रि० ) विस्मृत करना, ध्यानमें न रखना।
विसल ( सं० क्ली० ) विस लातीति ला-क। पल्लव, कोंपल।
विसवत् ( सं० त्रि० ) विस चतुर्थादित्वात् मतुप् मस्य व। मृणाल युक्तादि।
विसवर्त्मन ( सं० पु० क्ली० ) विसाख्य नेत्रवर्त्मगत रोग भेद।
विसवार ( हिं० पु० ) हज्जामोंकी वह पेटी जिसमें वे हजामत बनानेके औजार रखते हैं, किसवत।
विसवासिनी ( हिं० वि० ) १ विश्वास करनेवाला। २ जिस पर विश्वास हो।
विसवासी ( हिं० वि० ) १ जो विश्वास करे। २ जिस पर विश्वास हो। ३ जिस पर विश्वास न किया जा सके, बेएतबार। ४ जिसका कुछ ठीक न हो, कि कब क्या करे करावेगा।
विससना ( हिं० क्रि० ) १ वध करना, घात करना। २ शरीर काटना, चीरना फाड़ना।
विसहर ( सं० पु० ) सर्प, साप।
विसहरू ( हिं० पु० ) मोल लेनेवाला, खरीददार।
विसहिनी ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी चिड़िया।
विसायँध ( हिं० वि० ) १ सड़ी मछलीकी सी गन्धवाला, जिससे सड़ी मछलीकी सी गंध आती हो। ( स्त्री० ) २ मछलीकी-सी गंध, सड़े मांसकी सी गंध।
विसाख ( हिं० स्त्री० ) विशाखा देखो।
विसात ( अ० स्त्री० ) १ धनसम्पत्तिका विस्तार, हैसियत। सामर्थ्य, हकीकत। २ शतरंज या चौपड़ आदि खेलनेका कपड़ा या बिछौना जिस पर खाने बने होते हैं। ३ जमा, पूंजी।
विसाती ( अ० पु० ) १ विस्तर बिछा कर उस पर सौदा रख कर बेचनेवाला। २ छोटी चीजोंका दुकानदार।
विसाना ( हिं० क्रि० ) १ वश चलना, काबू चलना। २ विषका प्रभाव करना, जहरका असर करना।
विसारद ( हिं० पु० ) विशारद देखो।
विसारना ( हिं० क्रि० ) स्मरण न रखना, भुला देना।
विसारा ( हिं० वि० ) विषाक्त, विष भरा।
विसासिनी ( हिं० स्त्री० ) विश्वासघातिनी, जिस पर विश्वास न किया जा सके।
विसाह ( हिं० पु० ) क्रय, खरीद।
विसाहना ( हिं० क्रि० ) १ क्रय करना, खरीदना। २ जान बूझ कर अपने पीछे लगाना, अपने साथ करना। ( पु० ) ३ मोल लेनेकी वस्तु, कामकी चीज। ४ मोल लेनेकी क्रिया, खरीद।
विसाहनी ( हिं० क्रि० ) सौदा, जो वस्तु मोल ली जाय।
विसाहा ( हिं० पु० ) सौदा, खरीदी हुई वस्तु।
विसिनी ( सं० स्त्री० ) विस पुष्करादित्वात् इनि। १ पद्मिनी, २ मृणालादियुक्त देश। ३ नलसमुदाय।
विसिल ( सं० त्रि० ) विस काश्यादित्वादिल। जो मृणालके समीप हो।
विसुनना ( हिं० क्रि० ) कोई वस्तु खाते समय उसका कुछ अंश नाककी ओर चढ़ जाना।
विसुनी ( हिं० पु० ) अमरबेल।
विसुवा ( हिं० पु० ) विस्वा देखो।
विसूरना ( हिं० क्रि० ) १ चिन्ता करना, सोच करना। ( स्त्री० ) २ चिन्ता, फिक्र।
विसेन ( हिं० पु० ) क्षत्रियोंकी एक शाखा, किसी समय इनका राज्य वर्त्तमान गोरखपुरके आस पासके प्रदेशसे ले कर नेपाल तक था।
विस्कुट ( अं० पु० ) खमीरी आटेकी तवे पर पकी हुई एक प्रकारकी टिकिया। यह बहुत हलकी होती है और

दूधमें डालनेसे फूल जाती है। विस्कुट नमकीन और मीठा दोनों प्रकारका होता है। इसे यूरोप और बंगालके लोग बहुत खाते हैं।

विस्तर (हि० पु०) १ बिछौना, बिछावन। २ विस्तार, बढाव।

विस्तरना (हि० क्रि०) १ फैलाना, अधिक करना। २ बढा चढा कर वर्णन करना, विस्तारसे कहना।

विस्तरा (हि० पु०) बिस्तर देखो।

बिस्तारना (हि० क्रि०) विस्तृत करना, फैलाना।

बिस्तुइया (हि० स्त्री०) गृहगोधा, छिपकली।

बिस्वा (हि० पु०) एक बीघेका बीसवां भाग।

बिस्वेदार (हि० पु०) १ पट्टीदार, हिस्सेदार। २ किसी बड़े राजा या तअल्लुकेदारके अधीन जमींदार।

बिस्वास (हि० पु०) विश्वास देखो।

बिहंग (हि० पु०) विहग देखो।

बिहंडना (हि० क्रि०) १ खण्ड खण्ड कर डालना, तोडना। २ नष्ट कर देना। ३ काटना।

बिहँसना (हि० क्रि०) मुस्कराना, मंदमंद हँसना।

बिहंसाना (हि० क्रि०) १ बिहंसना देखो। २ प्रफुल्लित होना, खिलना।

बिहतर (फा० वि०) बहुत अच्छा।

बिहतरी (फा० स्त्री०) कुशल, भलाई।

बिहबल (हि० वि०) व्याकुल देखो।

बिहरना (हि० क्रि०) घूमना, फिरना, सैर करना।

बिहरो (हि० स्त्री०) चन्दा बरार।

बिहाग (हि० पु०) एक राग जो आधी रातके बाद लग-भग २ बजेके गाया जाता है। यह राग हिंडोलरागका पुत्र माना जाता है।

बिहागड़ा (हि० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक राग। इस में सब शुद्ध स्वर लगते हैं। इसके गानेका समय रातको १६ दण्डसे २० दण्ड तक है। कोई इसे हिंडोल रागकी रागिनी और कोई सरस्वती केदारा और मारवाके योगसे उत्पन्न मानते हैं।

बिहान (हि० पु०) १ प्रातःकाल, सवेरा। (क्रि० वि०) २ कल्ह, कल।

बिहार—पटना जिलेका उपविभाग। अन्तस्थ 'व'में देखो।

बिहारना (हि० क्रि०) विहार करना, केलि या क्रीड़ा करना।

बिहारीमल—विहारीमल देखो।

बिहारी लाल—विहारीलाल देखो।

बिहाल (फा० वि०) व्याकुल, बेचैन।

बिहिश्त (फा० स्त्री०) स्वर्ग, वैकुण्ठ।

बिही (फा० स्त्री०) १ पेशावर और काबुलकी ओर मिलने वाला एक पेड़। इसके फल अमरूदसे मिलते जुलते हैं। २ उक्त पेडका फल जिसकी गिनती मेवोंमें आई है। ३ अमरूद।

बिहीदाना (फा० पु०) बिही नामक फलका बीज जो दवाके काममें आता है। इन बीजोंको भिगो देनेसे लुआब निक-लता है जो शर्बतकी तरह पिया जाता है।

बिहीन (हि० वि०) रहित, बिना।

बिहून (हि० वि०) रहित, बिना।

बिहोरना (हि० क्रि०) बिछुड़ना।

बींड (हि० पु०) बींडा देखो।

बींडा (हि० पु०) १ मडरेके आकारका लम्बा नाल जो पेडकी पतली टहनियोंसे बुन कर बनाया जाता है। यह कच्चे कुएं या बीडमें इसलिये दिया जाता है, कि उस का भगाड न गिरे। २ पिंडी पिंड। ३ जलानेकी लकड़ी या घास आदिका बांध कर बनाया हुआ बोझ। ४ धानके पयालका बनाया हुआ एक प्रकारका गोल आसन। इस पर गाँवके लोग आगके किनारे बैठ कर तापते हैं। ५ घास आदिको लपेट कर बनाई हुई गेडुरी जिस पर घड़े रखे जाते हैं। ६ वह गेडुरी जिसे सिर पर रख कर घड़े, टोकरे आदिका भार उठाते हैं। ७ बड़ी बाड़ी, लुंडी।

बीं'डिया (हि० पु०) वह बैल जो तीन बैलोंकी गाड़ीमें सबसे आगे रहता है और जिसके गलेके नीचे बीं'डा रहती है।

बींडी (हि० स्त्री०) १ रस्सी या सूतकी वह पिंडी जो लकड़ी या किसी और चीजके ऊपर लपेट कर बनाई जाय। २ वह मोटी और कपड़े आदिमें लपेटी हुई रस्सी जो उस बैलके आगे गलेके सामने छाती पर रहती है जो तीन बैलोंकी गाड़ीमें सबसे आगे रहता है। ३ केंचुला। ४ वह लकड़ी जिस पर

सूत आदिमें लपेट कर बीड़ी बनाई जाती है। ५ वह गेडुरी जिसे सिर पर रख कर घड़ा टोकरा या और कोइ बोझ उठाते हैं।

बींधना (हिं० क्रि०) विद्ध करना, छेदना।

बीं ( फा० स्त्री० ) बीना देखो।

बीका ( हिं० वि० ) वक्र, टेढ़ा।

बीकाजी— भन्तन्य 'र'-म देखो।

बीकानेर—बीकानर देखो।

बीख ( हिं० पु० ) पद, कदम, डग।

बीग ( हिं० पु० ) भेड़िया।

बीगहाटी ( हिं० स्त्री० ) वह लगान जो बीघेके हिसाबसे लिया जाय।

बीघा ( हिं० पु० ) खेत नापनेका एक वर्ग मान जो बीस बिस्वेका होता है। एक जरीब लम्बी और एक जरीब चौड़ी भूमि क्षेत्रफलमें एक बीघा होती है। भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें भिन्न भिन्न मानकी जरीबका प्रचार है। अत प्रान्तिक बीघेका मान जिसे देही या देहाती बीघा कहते हैं, सब जगह समान नहीं है। पक्का बीघा जिसे सरकारी बीघा भी कहते हैं, ३०२५ वर्गगजका होता है जो एक एकड़का ५वां भाग होता है। अब सब जगह प्राय इसी बीघेका प्रयोग होता है।

बीच ( हिं० पु० ) १ किसी परिधि, सीमा या मर्यादाका केन्द्र अथवा उस केन्द्रके आसपासका कोइ ऐसा स्थान जहांसे चारों ओरकी सीमा प्राय समान अन्तर पर हो, किसी पदार्थका मध्यभाग। २ दो वस्तुओं या स्थलोंके बीचका अन्तर, अवकाश। ३ अवसर, मौका। ४ भेद, फरक। ( स्त्री० ) ५ लहर, तरंग।

बीचोबीच ( हिं० क्रि० वि० ) ठीक मध्यमें, बिलकुल बीचमें।

बिंदु ( हिं० पु० ) बिन्दु देखो।

बीज ( सं० क्ली० ) विशेषेण कार्यरूपेण अपत्यतया च जायते 'उपसर्गे च संज्ञाया' इति जन ड 'अन्येषामपीति' उपसर्गस्य दीर्घ वा विशेषण ईजते कुक्षि गच्छति शरीर या ईज गतिकुत्सनयोः पचाद्यच्। १ कारण। "बीज मा सर्वभूताना विद्धि पार्थ सनातन।" (गीता ७।१०) २ शुक्र। 'बीज शुक्र' (मेधातिथि) ३ शक्तिरूप। ( मनु १०।७२ ) ४ अंकुर। ५ तत्त्वाधान। ( मेदनी ) ६ मज्जा। (राजनि०) ७ गणित विशेष, बीजगणित। ८ वृक्षादिका अंकुराधार।

९ देवताओंके मूलमन्त्र, बीजमन्त्र। तन्त्रमें प्रत्येक देवताके भिन्न भिन्न बीजमन्त्र लिखे हैं। बहुत ही सक्षेपमें इस विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

अन्नपूर्णाबीज—'ह्रीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।' त्रिपुरा बीज—'श्रीं ह्रीं क्लीं।' त्वरिताबीज 'ओं ह्रीं हुं खे च छे क्ष स्त्री हुं क्षे ह्रौ फट्।' नित्याबीज-ऐं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।' दुर्गाबीज—'ओं ह्रीं दुं दुर्गायै नम।' महिषमर्दिनीबीज—'ओं महिषमर्दिनि स्वाहा।' जयदुर्गाबीज—'ओं दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा।'

शूलिनीबीज—'ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रह हुं फट् स्वाहा।' वागीश्वरीबीज—'वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।' पारिजात सरस्वती बीज—'ओं ह्रीं ह्सौं ओं ह्रीं सरस्वत्यै नम।' गणेशबीज—'गं'। हेरम्बबीज—'ओं गूं नम।' हरिद्रागणेशबीज—'ग्लं'। लक्ष्मीबीज—'श्रीं'। महालक्ष्मीबीज—'ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौं जगत् प्रसूत्यै नम।' सूर्यबीज—'ओं घृणि सूर्य आदित्य।' श्रीरामबीज—'रां' रामाय नम जानकीवल्लभाय स्वाहा।' विष्णुबीज—'ओं नमो नारायणाय।' श्रीकृष्णबीज—'गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।' वासुदेवबीज—'ओं नमो भगवते वासुदेवाय।' बालगोपालबीज—'ओं क्लीं कृष्णाय।' लक्ष्मीवासुदेवबीज 'ओं ह्रीं ह्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नम।' दधिवामनबीज—'ओं नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय स्वाहा।'

हयग्रीवका बीज—'ओं उद्गिरत्प्रणवोद्गीथसर्ववागीश्वरेश्वर। सर्ववेदमयाचिन्त्य सर्वबोधय बोधय॥

नृसिंहबीज—'उग्र वीर महाविष्णु ज्वलन्त सर्वतोमुख। नृसिंह भीषण भद्र मृत्युमृत्यु नमाम्यहम्॥'

नरहरिबीज—'आ ह्रीं क्ष्रौं हुं फट्।' हरिहरबीज—'ओं ह्रीं ह्रौं शङ्करनारायणाय नमः ह्रौं ह्रीं ओं।' वराहबीज—'ओं नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवस्स्वःपतये भूपतित्वं मे देहि ददापय स्वाहा।' शिवबीज—'ह्रौं।'

मृत्युञ्जयबीज—'ओं जुं सः।' दक्षिणामूर्त्तिबीज—'ओं नमो भगवते दक्षिणामूर्त्तये मह्यं मेधां प्रयच्छ स्वाहा। चिन्तामणिबीज—र क्ष म र य औं ऊं।' नीलकण्ठबीज—'प्रों न्रीं ठः नमः शिवाय।' चण्ड बीज—'रूध्द फट्।' क्षेत्रपालबीज—'ओं क्षौं क्षेत्र पालाय नमः।' बटुकभैरव बीज—'ओं ह्रीं बटुकाय आप दुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।' त्रिपुराबीज—'हसरैं' 'हसकलरीं' 'हसरौं'। सम्पत्प्रदभैरवीबीज—'हसरैं सहकलरी हसरौं।' भयविध्वंसिनी भैरवीबीज—'हसैं, हसकलरीं, हसरौं।' कौलेशभैरवीबीज 'सहरैं, सहकलरी, सहरौं।' सकलसिद्धिदाभैरवीबीज—'सहैं, सहकलरीं, सहौं।' चैतन्यभैरवीबीज—'सहैं, सकलह्रीं, सहरौं।' कामेश्वरीभैरवीबीज—'सहैं, सकलह्रीं, नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सहरौं।' षट्कूटाभैरवीबीज—'ड र ल कसहैं, ड, र ल क स हीं ड र ल क स हौं।' नित्याभैरवीबीज—'ह स क ल र डैं, ह स क ल र डीं, हस कलरडौं।' रुद्रभैरवी बीज—'हसखफरैं, हसकलरी हसौं।' भुवनेश्वरी भैरवीबीज—'हसैं, हसकलह्रीं, हसौं।' सकलेश्वरी-बीज—'सहैं, सहकलह्रीं, सहौं।' त्रिपुरावालाबीज—'ऐं क्लीं सौं। नवकूटाबालाबीज—'ऐं क्लीं सौं हसैं, हस-कलरीं, हसौं, हसरैं, हसकलरीं हसरौं। अन्नपूर्णा भैरवीबीज—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।'

श्रीविद्याबीज—क ए ई ल ह्रीं। हस क ह ल ह्रीं सकलह्रीं। छिन्नमस्ताबीज—श्रीं ह्रीं हूं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा। श्यामाबीज—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणेकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। गुह्यकालीबीज—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्येकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। भद्र-कालीबीज—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

श्मशानकालिकाबीज—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशान कालि क्रीं क्रीं हूं हूं स्वाहा। महाकालीबीज—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकाली क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ताराबीज—ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। चण्डोग्रशूलपाणिबीज—ओं ह्रीं हूं शिवाय फट्। मातङ्गिनी बीज—ओं ह्रीं क्लीं हूं मातङ्गिन्यै फट् स्वाहा।

उच्छिष्टचाण्डालिनी बीज—सुमुखीदेवि महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः। धूमावती बीज—धूं धूं स्वाहा। भद्रकालीबीज—ह्रौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा। उच्छिष्टगणेशबीज—ओं हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा। धनदाबीज—ध ह्रीं श्रीं देवि रतिप्रिये स्वाहा। श्मशानकालिका बीज—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं।

बगलाबीज—ओं ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाच मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ओं स्वाहा।

कर्णपिशाचीबीज—ओं कर्णपिशाचि वदातीतानागतशब्दं ह्रीं स्वाहा। मञ्जुघोषबीज—क्लीं ह्रीं श्रीं।

तारिणीबीज—क्लीं क्लीं कृष्णदेवि ह्रीं क्लीं ऐं। सारस्वत बीज—ऐं। कात्यायनीबीज—ऐं ह्रीं श्रीं चौं चण्डिकायै नमः। दुर्गाबीज—दुं। विशालाक्षीबीज—ओं ह्रीं विशालाक्ष्यै नमः। गौरीबीज—ह्रीं गौरि रुद्रदयिते योगेश्वरि हूं फट् स्वाहा।

महाश्रीबीज—ह्रीं नमो महाश्रीराजितेराजपूजिते जये विजये गौरि गान्धारि त्रिभुवनशङ्करि सर्वलोकशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सुसुदुदुघेंघेंवाचे ह्रीं स्वाहा।

इन्द्रबीज—इं इन्द्राय नमः। गरुडबीज—क्षिप ओं स्वाहा। विषहरान्तबीज—प म। वृश्चिकविषहर बीज—ओं सरह स्फुः। ओं हिलि हिलि चिलि स्फुः। ओं हिलि हिलि चिलि चिलि स्फुः। ब्रह्मणे स्फुः। सर्वेभ्यो देवेभ्यस्फुः।

मूषिकविषहरबीज—ओं गें प्रः ठः। ओं ग गा ठः। मूषिकनाशबीज—ओं सरणे फुः असरणे फुः विसरणे फुः। लूता विषहरबीज—ओं ह्रीं ह्रीं हूं अनन्तं श्रीं स्वाहा गरुड हूं फट्। सर्वकीटविषहर बीज—ओं नमो भगवते विष्णवे सर सर हन हन हुं फट् स्वाहा।

सुखप्रसवबीज (मन्त्र)—ओं मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। ॐ मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि मारीच मारीच स्वाहा।'

इन दोनों मन्त्रोंमेंसे कोई भी मन्त्र पानी पर आठ बार जप कर उस पानीको आसन्नप्रसवाको पिलानेसे अनायास प्रसव हो जाता है।

आद्यपटीबीज– ॐ नमो भगवति चामुण्डे श्म शानसे अप्रतिहतरूपपराक्रमे अमुकप्राय विचेतसे स्वाहा। भौगा हुआ लाल वस्त्र पहन कर समुद्रगामिनी नदी अथवा ऊसर भूमिमें दक्षिण मुख बैठ कर यदि यह मन्त्र ऊर्द्धवाहु हो कर जपा जाय, तो वस्त्र सूखनेके साथ साथ शत्रुके प्राण भी सूखते जाते हैं।

हनूमद्वीज—ह हनूमते रुद्रात्मकाय हु फट्। वीर-साधनबीज—'ह पवननन्दनाय स्वाहा।' श्मशानभैरवी बीज—श्मशानभैरवि नररुधिरास्थिवसाभक्षणि सिद्धिं मे देहि मम मनोरथान् पूरय हु फट् स्वाहा। ज्वाला-मालिनीबीज—ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी गृध्रगण परिवृते ▮ फट् स्वाहा। महाकालीबीज—र्क्रं क्रं क्रीं क्रीं पशून् गृहाण ▮ फट् स्वाहा।

निगडबन्धनमोक्षणबीज ( मन्त्र )—ॐ नम स्तते चिन्न त तिमतेनो यन्मय विमेता बन्त्रमेत यमेन दत्त तस्या सविता नोत्तमे नाये अधोजोऽवैर।

त्र्यम्बकबीज—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्द्धन। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

मृतसञ्जीवनीबीज—हौं ॐ जू स औ भूर्भुव स्व। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनं। उर्वारु कमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

औ भूर्भुव स्व। इत्यादि (तन्त्रसार) आकर्षणादि जो सब बीज हैं, वे यहां बाहुल्यके भयसे नहीं दिये जा सके।

"बीजसङ्केतमेवाथ कथ्यते तन्त्रमार्गत।
बीजनामानि कानिचिद् वक्ष्यामि विदुषां मुदे॥
माया लज्जा परा शक्तिर् त्रिगुणा भुवनेश्वरा।
हृल्लेखा शम्भुवनिता शक्तिर्देवीश्वरी शिवा॥"
( मायातारिणी )

प्राणतोषिणीमें लिखा है—परमेश्वरीका बीज ह्रीं है। इसी तरह लक्ष्मीका बीज श्रीं, सरस्वती बीज ऐं, तारा-का बीज हु, कालीका बीज क्रीं, गुह्यकालीका बीज क्रीं, शिवका बीज हौं और अस्त्रका बीज फट् है। (प्रा० तो०)

काली तारा आदि प्रत्येकके बीज मन्त्र पृथक् पृथक् हैं। विशेष विवरण उन उन शब्दोंमें देखो।

बीजक (स० पु०) १ सूची, फेहरिस्त। २ वह सूची जिस में मालका ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। ३ बीज। ४ यह सूची जो किसी गड़े हुए धनकी उसके साथ रहती है। ५ असनाका वृक्ष। ६ बिजौरा नीबू। ७ कबीरदासके पद्योंके तीन संग्रहोंमेंसे एक। ८ जनमके समय बच्चेकी वह अवस्था जब उसका सिर दोनों भुजाओंके बीचमें हो कर योनिके द्वार पर आ जाय।

बीजकर्त्तृ ( स० पु० ) शिव, महादेव।

बीजकृत ( स० क्ली० ) बीज वीर्य करोति वर्द्धयति कृ क्विप् तुक् च। वाजीकरण।

बीजकोश ( स० पु० ) बीजानां कोष आधार इव। पद्म बीजाधार चकिया। पर्याय वराटक, कर्णिका, वारिकुञ्ज, भद्रोटक।

बीजक्रिया ( स० स्त्री० ) बीजगणितके नियमानुसार गणितके किसी प्रश्नकी क्रिया।

बीजखाद ( हिं० पु० ) वह रकम जो जमींदारों या महा जनों आदिकी ओरसे किसानोंको बीज और खाद आदिके लिये पेशगी दी जाती है।

बीजगणित ( स० क्ली० ) गणितका वह भेद जिसमें अक्षरोंको संख्याओंका द्योतक मान कर कुछ साङ्केतिक चिह्नों और निश्चत युक्तियोंके द्वारा गणना की जाती है और विशेषत अज्ञात संख्याएं आदि जानी जाती हैं।
बीजगणित देखो।

बीजगर्भ ( स० पु० ) बीजानि गर्भे अभ्यन्तरे यस्य। पटोल, परवल।

बीजगुप्ति ( स० स्त्री० ) बीजाना गुप्तियत्र। १ शिम्बी, सेम। २ तुष, धानकी भूसी। ३ फली।

बीजत्व ( स० क्ली० ) बीजस्य भाव त्व। बीजका भाव या धर्म, बीजपन।

बीजदर्शक ( स० पु० ) अभिनय परिदर्शक, वह व्यक्ति जो नाटकके अभिनयकी व्यवस्था करता हो।

बीजधानी ( स० स्त्री० ) नदीभेद।

बीजधान्य ( स० क्ली० ) बीजप्रधान धान्य। धान्यक, धनिया।

बीजनौर—१ अयोध्याप्रदेशके लखनऊ जिलान्तर्गत एक परगना। भूपरिमाण १४८ वर्गमील है।

२ उक्त जिलेका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २६ ५६ उ० तथा देशा० ८० ८४ पू०के मध्य लखनऊ शहर से ४ कोस दक्षिणमें अवस्थित है।

पामीवंशीय विजयीराजने इस नगरको बनाया। उन्होंने यहासे आध कोस उत्तर नाथवन नामक एक दुर्ग भी बनवाया था। प्रथम मुसलमान-आक्रमणसे ही राजवंशकी लक्ष्मी विदा हो गई। मुसलमानी अमलमें यह स्थान उक्त परगनेके सदररूपमें गिना जाता था। यहा आज भी अनेक समाधिमन्दिर विद्यमान हैं।

बीजपादप (सं० पु०) बीजप्रधान पादप। १ भल्लातक, भिलावाँ। २ बीजोत्पन्न।

बीजपुष्प (सं० क्ली०) बीजप्रधान पुष्प यस्य। मरुवक, मरुआ। २ मदनवृक्ष।

बीजपुष्पिका (सं० स्त्री०) वृक्षभेद। (Andropogon Saccharatus)

बीजपुर (सं० पु०) बीजाना पूरः समूहो यत्र। १ बिजौरा नीबू। संस्कृत पर्याय—बीजपूर्ण, पूर्णबीज, सुकेशर, बीजक, केशराम्ल, मातुलुङ्ग, सुपूरक, रुचक, बीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल। इसके फलका गुण—अम्ल, कटु, उष्ण, श्वास, कास और वायुनाशक, कण्ठशोधनकर, लघु, हृद्य, दीपन, रुचिकारक, पाचन, आध्मान, गुल्म, हृद्रोग, प्लीहा और उदावर्त्तनाशक, विबन्ध, हिक्का, शूल और वमीमें प्रशस्त माना गया है। २ मधुकर्कटी, चकोतरा।

बीजपूर्ण (सं० पु०) बीजेन पूर्णः। १ बिजौरा नीबू। २ चकोतरा

बीजपेशिका (सं० स्त्री०) बीजस्य शुक्रस्य पेशिकेव। अण्डकोष।

बीजप्ररोहिन् (सं० त्रि०) बीजसे उद्गमनशील, बीजसे उगनेवाला।

बीजफलक (सं० पु०) बीजप्रधान फलं यस्य कप्। बीजपूर, बिजौरा नीबू।

बीजबन्द (हिं० पु०) खरियारीके बीज, खिरेंटीके बीज।

बीजमति (सं० स्त्री०) बीज स्थिर करनेमें समर्थ मन।

बीजमन्त्र (सं० क्ली०) विभिन्न देवताके उद्देश्यसे निर्दिष्ट मूलमन्त्र।

बीजमातृका (सं० स्त्री०) कमलगट्टा।

बीजमात्र (सं० क्ली०) १ बीज या वंशरक्षाकी उपयोगिता। २ ऋग्वेदका एक मण्डल।

बीजमार्ग (सं० पु०) वाममार्गका एक भेद।

बीजमार्गी (हिं० पु०) बीजमार्ग पथके अनुयायी।

बीजरत्न (सं० पु०) बीज रत्नमिव यस्य। उड़दकी दाल

बीजरुह (सं० त्रि०) बीजात् रोहतीति रुह। शुधान्य शालि प्रभृति।

बीजरेचन (सं० क्ली०) बीज रेचन रेचक यस्य। जयपा जमालगोटा।

बीजल (सं० त्रि०) बीज (सिध्मादिभ्यश्च। पा ५।२।९७ इति मत्वर्थे लच्। बीजयुक्त, जिसमें बीज हो।

बीजल (हिं० स्त्री०) तलवार।

बीजवपन (सं० क्ली०) बीजाना वपन। खेतमें बीजवपन खेतमें बीज बोना। पहले पहल खेतमें बीज बोनेमें उत्त जिनका विचार करना होता है। ज्योतिषमें लिखा है पूर्वफल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वभाद्रपद, कृत्तिका, भरणी अश्लेषा और आर्द्रा भिन्न नक्षत्रोंमें रिक्ता, अष्टमी और अमावस्या भिन्न तिथियोंमें शुभग्रहके केन्द्रस्थ होने पर स्थिरलग्नमें जन्मलग्न तथा मिथुन, तुला, कन्या, कुम्भ और धनुर्लग्नके पूर्वभागमें बीजवपन प्रशस्त बतलाया गया है।

"हलप्रवाहबीजवपनस्य विधि स्मृत।
विशाखायां, शुभे चन्द्रे स्थिरस्यमनुजोदय॥"

(ज्योतिस्तत्त्व)

बीजवपनके दिन सवेरे नाना प्रकारके मंगलकार्य करके पूर्वमुख हो निम्नोक्त मन्त्रसे बीजवपन करे। मन्त्र यथा—

"त्वं वै वसुन्धरे सीते बहुपुष्पफलप्रदे।
नमस्ते मे शुभं नित्यं कृषिं मथा शुभं कुरु॥
रोहन्तु सर्वशस्यानि काले देव प्रवर्षतु।
कर्षकास्तु भवन्तूग्रा धान्येन च धनेन च स्वाहा॥"

इस मन्त्रसे प्राजापत्यतीर्थ द्वारा बीजवपन करे। इस दिन बन्धु बान्धवोंके साथ एकत्र भोजन करना होता है। बीजवपन विषयमें वैशाखमास श्रेष्ठ, ज्येष्ठ मध्यम और शेष मास अधम माने गये हैं।

"वैशाखे वपनं श्रेष्ठं ज्येष्ठे मध्यम मेदिनी रवौ।
अत परस्मिन्नधमं न जातु श्रावणे शुभम्॥"

(ज्योतिस्तत्त्व)

बीजवर (स ० पु०) कलायभेद, एक प्रकारका उडद।
बीजवाप (स ० पु०) बीजस्य वाप। बीजवपन, बीज बोना।
बीजवापिन् (स ० पु०) बीजवपनकारी, वह जो बीज बोता हो।
बीजवाहन (स ० पु०) महादेव, शिव।
बीजवृक्ष (स ० पु०) बीजादेव वृक्षो यस्य, बीज प्रधानो वृक्ष वा। असन वृक्ष, असनाका पेड।
बीजसञ्चय (स ० पु०) बीजाना सञ्चय। बीजसंग्रह, बोनेके लिये धान आदिका संग्रह। माघ या फाल्गुन मासमें बीज संग्रह करे।

'माघे वा फाल्गुन वापि सर्वबीजानि संग्रहेत्।
शोषयत् तापयद्रौद्रे रात्री नोपनिधापयत्॥"
(ज्योतिस्तत्त्व)

बीजको धूपमें अच्छी तरह सुखा कर रखना होता है। हस्ता, चित्रा, अदिति, स्वाति, रेवती और श्रवणाख्य इन सब नक्षत्रोंमें, स्थिर लग्नमें वृहस्पति, शुक्र और बुधवार को बीजसञ्चय करे। बीजसञ्चयके बाद किसी पत्रमें मन्त्र लिख कर उसमें रख दे। ऐसा करनेसे चूहे आदि का भय नही रहता। मन्त्र—

"धनदाय सर्वलोकहिताय देहि मे धान्य स्वाहा।
नम इडायै इडा देवी सर्वलोकविवर्द्धिनी काम-
रूपिणि धान्य देहि स्वाहा॥" (ज्योतिस्तत्त्व)

बीजसू (स ० स्त्री०) बीजानि सूते इति सू क्विप्। पृथ्वी।
बीजस्थापन (स ० क्ली०) बीजाना स्थापन। धान्यादि-स्थापन।
बीजहरा (स ० स्त्री०) एक डाकिनीका नाम।
बीजहारिणी (स ० स्त्री०) बीजहरा देखो।
बीजा (हि० वि०) दूसरा।
बीजा—सिमला पर्वतके निकटवर्त्ती एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० ३० ५३' से ३० ५५' उ० तथा देशा० ७६ ५६' से ७७ १' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४ वर्गमील और जनसंख्या ११३१ है। यहाके सरदार पूरनचाँद राजपूतवंशीय हैं। ठाकुर इनकी उपाधि है। राजस्व ५००) रु० है जिनमेंसे १२४ रुपये करमें देने पड़ते हैं।

बीजाकृत (स० त्रि०) बीजेन सहकृत कृष्टमिति (कृञो द्वितीय तृतीयशम्बबीजात् कृषौ। पा ५।४।५८) इति डाच्। बीजवपनपूर्वक कृष्टक्षेत्र, वह खेत जो बीज बोनेके बाद जोता गया हो।
बीजाक्षर (स० स्त्री०) किसी बीजमन्त्रका पहला अक्षर।
बीजाख्य (स ० पु०) १ जैपालवृक्ष, जमालगोटा। (क्ली०) २ जैपालका बीज, जमालगोटेका बीया।
बीजागढ—प्राचीन निमार प्रदेशकी राजधानी। अभी यह स्थान श्रीहीन हो गया है। सतपुरा पर्वतके ऊपर भग्नावशेष बीजागढ दुर्ग अवस्थित है। दक्षिण निमार का अधिकांश स्थान ले कर उक्त दुर्गके नाम पर होल्कर राज्यका बीजागढ सरकार और जिला गठित है।
बीजाङ्कुर (स ० पु०) १ बीजोद्गत प्रथम अंकुर, अँखुआ। २ बीज और अङ्कुर।
बीजाङ्कुर न्याय (स ० पु०) एक प्रकारका न्याय। इस का व्यवहार दो सम्बद्ध वस्तुओंके नित्य प्रवाहका दृष्टान्त देनेके लिये होता है। बीजसे अंकुर और अंकुरसे बीज होता है। इन दोनोंका प्रवाह अनादिकालसे चला आता है। दो वस्तुओंमें इसी प्रकारका प्रवाह या सम्बन्ध दिखलानेके लिये इसका उपयोग होता है।
बीजाढ्य (स ० स्त्री०) १ बीजयुक्त, बीजवाला। (पु०) २ बीजपूर, बिजौरा नेबू।
बीजाध्यक्ष (स ० पु०) शिव।
बीजापुर—बम्बईके दक्षिणी महाराष्ट्र देशकी एक एजेन्सी। यह बीजापुर जिलेके कलकृरकी देखरेखमें है। यह अक्षा० १६ ५०' से १७ १८' उ० तथा देशा० ७५ १' से ७० ३१' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ९८० वर्गमील है। जलवायु बीजापुर जिलेके जैसा है। जाटकी सतारा जागीर और दफलापुर राज्य ले कर यह सगठित है। यहाके सरदार सपोरेकी दफलापुर ग्रामके प्रधान लक्ष्माजीके वंशधर बतलाते हैं। १६८० ई०में उनके लड़के सतवाजी राव जाट, करनगाँ, बरदोल और ननद उपविभागके देशमुख नियुक्त हुए। बीजापुर पतन के बाद उन्होंने सम्राट् औरङ्गजेबको आत्मसमर्पण किया। १८२० ई०में वृटिश सरकारने जाटके वर्त्तमान सरदारके वंशधरोंकी कार्रवाईमें हाथ बँटाया। १८२७ ई०में सतारके

राजाने सरदारका ऋण चुकानेके लिये जाट राज्यको अपने हाथ कर लिया। १८४१ ई०में यह फिर लौटा दिया गया। १८४६ ई०में जाट और दफलापुर सतारा जागीरके जैसा वृटिश सरकारका करदराज्य हो गया। जाट-सरदार उच्च कुलोद्भव महाराष्ट्रीय हैं। गोद लेनेका इन्हें अधिकार है। जनसंख्या ७० हजारके करीब है। इसमें जाट और दफलापुर नामके २ शहर और ११७ ग्राम लगते हैं। राजस्व साढ़े तीन लाख रुपये हैं जिनमेंसे ६४०० रु० वृटिश सरकारको करमें देने पड़ते हैं।

बीजापुर - बम्बईके दक्षिणी विभागका एक जिला। यह अक्षा० १५ ४६´से १७ २८´ उ० तथा देशा० ७५ १६´से ७६ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५६६६ वर्गमील है। इसके उत्तरमें भीम नदी जो इसको शोलापुर और अक्कल कोटसे पृथक करती है; पूर्व और दक्षिण पूर्वमें निजाम-राज्य, दक्षिणमें मलप्रभा नदी जो जिलेको धारवाड और रामराज्यसे अलग करती है, पश्चिममें मुधोल, यमखण्डी और जाटराज्य है। पहिले इस जिलेका नाम कलादगी था, १८८५ ई०में बीजापुर रखा गया है। उसी समय सदर कलादगीसे उठा कर बीजापुरमें लाया गया। यहांकी प्रधान नदी ये सब हैं भीमा, दोन कृष्णा, घाटप्रभा और मालप्रभा। दोन नदीका जल बिलकुल खारा है।

पूर्व समयमें यह स्थान चालुक्य वंशके अधिकारमें था। १२६४ ई०में जलाल उद्दीन खिलजीके भतीजे अलाउद्दीनने दलबलके साथ आ कर इस स्थानको कब्जा डाला और राजारामचन्द्रको दिल्ली सम्राट्की अधीनता स्वीकार करनेको बाध्य किया। १५वीं शताब्दीमें युसुफ आदिलशाहने एक स्वतन्त्र मुसलमान राज्य बसाया। बीजापुरमें उसकी राजधानी कायम हुई। इस समयसे जिलेका इतिहास बीजापुर शहरके साथ मिला हुआ है। ८७वीं शताब्दीमें चीनपरिव्राजक युएनचुवंग यहांको देखने आये थे। उस समय यहां चालुक्यवंशका शासन था।

इस जिलेमें ८ शहर और ११९३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े सात लाखके करीब है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या सैकड़े पीछे ८८ है। विद्याशिक्षामें प्रेसीडेन्सी-के चौबीस जिलोंके मध्य यह जिला सोलहवां पड़ता है। सैकड़े पीछे चार मनुष्य शिक्षित हैं। अभी २ हाई स्कूल, ३०६ प्राइमरी स्कूल, १०० मिडिल तथा खानगी स्कूल हैं। स्कूलके अलावा बीजापुर शहरमें दो अस्पताल हैं जिनमेंसे एकमें स्त्रियों की चिकित्सा होती है।

२ बीजापुर जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १६ २०´से १७ ५´ उ० तथा देशा० ७५ २६´ से ७६´ २´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ८६६ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें बीजापुर नामका १ शहर और ८४ ग्राम लगते हैं। थोड़ा उपत्यकाको छोड़ कर और प्राय सभी स्थान अनुर्वर हैं। इस पार्वतीय विभागमें वृक्षादि नहीं रहने पर भी स्थानीय जलवायु स्वास्थ्यकर है।

३ उक्त जिलेका एक प्रसिद्ध शहर। यह अक्षा० १६ ४९´ उ० तथा देशा० ७५´ ४३´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या २५ हजारके लगभग है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। नगरके प्राचीन इतिहासके सम्बन्धमें फिरिस्ताने इस प्रकार लिखा है, २य मुराद्के पुत्र ख्यातनामा ओसमानली सुलतानने बीजापुरमें पहले पहल मुसलमानी राज्य स्थापन किया। उनके वंशधर २य महम्मद जब तख्त पर बैठे, तब उन्होंने अपने सब भाइयोंका काम तमाम करनेका हुकुम दे दिया। इस समय उनकी माताने बड़े कौशलसे युसुफ नामक अपने एक पुत्रकी जान बचाई। नाना स्थानोंमें भटकते हुए युसुफने अहमदाबाद बिदारराजके अधीन नौकरी की। राजाकी मृत्युके बाद वे अहमदाबाद राज्यका परित्याग कर बीजापुर आये और जनसाधारणकी सलाहसे उन्होंने अपनेको राजा बतला कर तमाम घोषित कर दिया। युसुफने अपने बाहु बलसे समुद्रतीर पर्यन्त राज्यसीमा बढ़ा ली। उन्होंने पुर्त्तगीजोंसे गोआ नगर भी छीन लिया। बहुत धन खर्च करके बीजापुरमें एक विस्तृत दुर्गवाटिका बनाई गई। १५१० ई०में उनकी मृत्यु होने पर उनके लड़के इस्माइलखाँने दोर्दण्ड प्रतापसे १५३४ ई० तक राज्य किया। पीछे मुल्लु आदिलशाह छ मास राज्य करनेके बाद राजतख्तसे उतार दिये गये। बाद उनके छोटे भाई इब्राहिम राज

सिंहासन पर बैठे। उन्होंने १५५७ ई० तक राज्य किया। उनके मरने पर उनके लड़के अली आदिलशाह राज्याधिकारी हुए। उन्होंने अपने शासनकालमें बीजापुर नगरको चारों ओर दीवारसे घेर लिया और जुम्मा मसजिद तथा बहुत सी जलप्रणालियां बनाईं जो आज भी विद्यमान हैं। इन्होंने अहमदनगर और गोलकुण्डाराजके साथ मिल कर विजयनगराधिप राजा रामके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। उस समय दिल्लीको छोड़ और कोई भी राजा भारतमें उनके समान शक्तिशाली न थे। तालिकोटके युद्धमें १५६४ ई०को रामराजा मुसलमानोंके हाथसे परास्त और बन्दी हुए। बीजयनगर लूटनेके बाद यवनराजके आदेशसे वे मार डाले गये। १५७६ ई०में उनका देहान्त हुआ। पीछे उनके भतीजे २य इब्राहिम आदिल कच्ची उमरमें राजतख्त पर बैठे और राजकार्यका कुल भार मृतराजकी पत्नी विख्यात चांद बीबीने अपने हाथ लिया। अभीसे ले कर मृत्यु पर्यन्त इब्राहिमने बड़ी दक्षतासे राजकार्य चलाया। १६२६ ई०में उनकी मृत्युके बाद महम्मद अली शाह राजा हुए। इन्हीं के शासनकालमें महाराष्ट्रकेशरी शिवाजीका आविर्भाव हुआ था। शिवाजीके पिता शाहजी बीजापुर राजके अधीन नौकरी करते थे। इसी सुअवसरमें शिवाजीने उक्त राजभण्डारके व्ययसे तथा यहांके सैनादलकी सहायतासे १६४६-४८ ई०के मध्य राजाधिकृत अनेक दुर्ग अधिकार कर लिये। इधर शिवाजीके अत्याचारसे, उधर औरङ्गजेब परिचालित मुगलवाहिनीके लगातार आक्रमणसे महम्मद तंग तंग आ गये। इस समय किसी कारणवशतः औरङ्गजेबको आगरा नगर लौटना पड़ा था जिससे शिवाजीका प्रभाव दाक्षिणात्यमें भी फैल गया। महम्मद शत्रुके प्रतापसे धीरे धीरे कमजोर होते गये। १६६० ई०में चिन्ताके मारे वे इस लोकसे चल बसे। पीछे आदिलशाह राजा तो हुए, पर बीजापुर राजवंशका अधःपतन रोक न सके। १६७२ ई०में उनकी मृत्युके बाद उनके छोटे लड़के सिकन्दर आदिलशाह राजगद्दी पर बैठे। वे ही इस वंशके अन्तिम राजा थे।

१६८६ ई०में औरङ्गजेबने बीजापुर दखल किया। इतने दिनोंके बाद बीजापुर राजवंशकी स्वाधीनता जाती रही। दिल्लीके मुगल राजवंशके अधःपतनसे बीजापुरका विस्तृत ध्वंसावशेष महाराष्ट्रग्रासमें पतित हुआ। १८१८ ई०में अन्तिम पेशवाकी पदच्युतिके बाद बीजापुर और सताराराज्य वृटिशसरकारके अधिकारभुक्त हुआ। सतारा राजका बीजापुरकी मुसलमानकीर्त्तिकी रक्षाकी ओर विशेष ध्यान था। १८४८ ई०में सताराराज इस धराधाम को छोड़ सुरधाम सिधारे। उनकी एक भी सन्तान न थी इस कारण वृटिश सरकारने शासनभार अपने हाथ ले लिया। यहांकी जुम्मा मसजिद, इब्राहिमका रोजा, महमूदका समाधिमन्दिर, असुर मुवारकप्रासाद, मेहतुरी महल और बक्‌तागार नामक अट्टालिकाका शिल्पचातुर्य और गठनप्रणाली देखने लायक है।

बीजाम्ल (सं० क्ली०) बीजे अम्लोऽम्लरसो यस्य। वृक्षाम्ल।

बीजाणवतन्त्र (सं० क्ली०) बीजमन्त्रनिर्देशक एक तन्त्र।

बीजावर—मध्यभारतके बुन्देलखण्डके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० २४ २' से २४ ४७' उ० तथा देशा० ७८ ०' से ८० ३६' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ९७३ वर्गमील है। पहले यह स्थान गढ़ मण्डला गोंडके अधिकारमें था। पीछे १८वीं सदीमें पन्नाके स्थापयिता छत्रसालने इस पर दखल जमाया। उनकी मृत्युके बाद सारा राज्य उनके पुत्रोंके मध्य बँट गया। बिजावर जगत्‌राजके हिस्सेमें पड़ा। १७६९ ई०में जगद्राजके गुमानसिंहने, जो उस समय अजयगढ़के शासक थे, बिजवीर राज्य जगत्‌के औरस पुत्र वीरसिंह देवको दे दिया। वीरसिंहने अपने बाहुबलसे राज्यसीमा बहुत दूर तक फैला ली थी। पीछे १७९३ ई०में वे अली बहादुर और हिम्मत बहादुरसे युद्धमें निहत हुए। अनन्तर १८०२ ई०में हिम्मत बहादुरने वीरसिंहके लड़के केशरीसिंहको सनदके साथ राजसिंहासन लौटा दिया। कुछ समय तक उनकी सनद जब्त कर ली गई थी। पीछे १८१० ई०में उनकी मृत्युके बाद उनके लड़के रतनसिंहको सनद लौटा दी गई। उन्होंने अपने शासनकालमें सिक्का चलाया था। १८६१ ई०में उनके मरने पर भान

प्रतापसिंह राजसिंहासन पर अधिरुढ हुए। गदरके समय उन्होंने वृटिश सरकारको खासी मदद पहुंचाई थी जिससे उन्हें खिल्अत और ११ सलामी तोपें मिलीं। १८६२ ई०में उन्हें गोद लेनेका अधिकार और १८६६ ई०में महाराजाकी उपाधि मिली थी। उनके कुशासनसे राज्य भरमें अशान्ति फैल गई, आप खुद कर्जके बोझसे किंकर्त्तव्य विमूढ हो गये। १८९१ ई०में उनकी मृत्यु हुई। कोई सन्तान न रहने कारण उन्होंने ओर्च्छाके वर्त्तमान महाराजके द्वितीय पुत्र सामन्त सिंहको गोद लिया था। ये ही अभी यहाके सामन्त हैं। वृटिशसरकारसे इन्हें भी ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। इनकी सैन्यसंख्या इस प्रकार है—१०० अश्वारोही, ८०० पदाति और ४ कमान। १८६६ ई०की शासननीतिके बलसे यहाके सरदार सब प्रकारके फौजदारी मामले पर विचार करते हैं।

इस राज्यमें इसी नामका १ शहर और ३४३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या सवा लाखके करीब है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ९६ हिन्दू हैं।

२ उक्त राज्यका सदर। यह अक्षा० २४ ३९´ उ० तथा देशा० ७९ २०´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ७२२० है। १७वीं सदीमें गोंड सरदार विजयसिंहने इसे बसाया था। पीछे पन्नाके छत्रसालने इस पर अधिकार जमाया। शहरमें १ कारागार, १ स्कूल, १ अस्पताल और १ धर्मशाला है।

बीजिक ( सं० त्रि० ) बीजयुक्त, बीजवाला।

बीजित ( सं० त्रि० ) जिसमें बीज बोया जा चुका हो, बोया हुआ।

बीजिन् (सं० पु०) बीजमस्त्यस्येति बीज इनि। १ पिता। (त्रि०) २ बीजविशिष्ट, बीजवाला। ३ बीजसम्बन्धी।

बीजी ( हिं० वि० ) १ बीजिन् देखो। ( स्त्री० ) २ गिरी, मींगी। ३ गुठली।

बीजु ( हिं० स्त्री० ) बिजुली।

बीजुपात ( हिं० पु० ) वज्रपात देखो।

बीजुरी ( हिं० स्त्री० ) बिजली देखो।

बीजू ( हिं० वि०) बीजसे उत्पन्न, जो बीज बोनेसे उत्पन्न हुआ हो, कलमका उलटा।

बीजोदक (सं० क्ली०) बीजमिव कठिनमुदकं, तस्य कठिनत्वात् तथात्व। करका, ओला।

बीजोप्तिचक्र ( सं० क्ली० ) बीजवपनार्थ शुभाशुभ सूचक चक्र। बीज बोनेके लिये शुभाशुभ ज्ञानार्थ सर्पाकार चक्र। बीज बोनेमें शुभ होगा या अशुभ, यह इसी चक्र द्वारा जाना जाता है।*

बीज्य ( सं० त्रि० ) विशेषेण इज्य, अथवा बीजाय हितः। (उगवादिभ्यो यत्। पा ५।१।२) इति यत्। जो अच्छे वंशमें उत्पन्न हुआ हो, कुलीन।

बीट ( हिं० स्त्री० ) १ पक्षियोंकी विष्ठा, चिड़ियोंका गुह। २ गुह, मल।

बीडल ( हिं० पु० ) विडल देखो।

बीड़ ( हिं० स्त्री० ) एकके ऊपर एक रखे हुए रुपये जो साधारणतः गुल्लीका आकार धारण कर लेते हैं।

बीड़ा ( हिं० पु० ) १ पानकी गिलौरी जो पानमें चूना, कत्था, सुपारी आदि डाल कर और उसे लपेट कर बनाई जाती है। २ वह डोरी जो तलवारकी म्यानमें मुंहके पास बंधी रहती है। म्यानमें तलवार डाल कर वह डोरी तलवारके बत्तेको मूंठोंमें बाँध दी जाती है जिससे वह म्यानसे निकल नहीं सकती।

बीड़िया ( हिं० वि० ) बीड़ा उठानेवाला, अगुआ।

बीड़ी ( हिं० स्त्री० ) १ पत्तेमें लपेटा हुआ सुरतीका चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरुट आदिके स्थानमें सुलगा कर पीते हैं। २ मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रंगनेके लिये मुंहमें मलती हैं। ३ गड्डी। ४ बीड़ा देखो। ५ एक प्रकारका नाच।

बीतना ( हिं० क्रि० ) १ समयका विगत होना, गुजरना। २ संघटित होना, घटना। ३ निवृत्त होना, दूर होना।

---

* 'सर्पाकारं लिखेच्चक्रं बीजोप्तिकालमध्यमा।
मुखे पृष्ठे गले बीजे भानिचारानि... ॥
पुच्छे चतुर्षि पच्च दिभाया फल वदेत्।
सदा चायं विचारः भानाङ्गादपरस्तथा॥
उदर धान्यवृद्धि स्यात् पुच्छे धान्यक्षया भवत्।
इति रोगभयं राम्य चक्र बीजोप्तिसम्मतं॥'
( ज्योतिस्तत्त्व )

बीता ( हि० पु० ) बित्ता देखो।

बीरा ( हि० पु० ) मालगुजारी, निश्चित करना।

बीन (हि० स्त्री०) एक प्रसिद्ध बाजा। यह सितारकी तरह का पर उससे बड़ा होता है। इसमें दोनों ओर बहुत बड़े बड़े तूंबे होते हैं जो बीचके एक लम्बे डाँडसे मिले होते हैं। इसमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक साधारणतः ५ या ७ तार लगे होते हैं। इन तारोंमेंसे प्रत्येकसे आवश्यकतानुसार भिन्न भिन्न प्रकारके स्वर निकाले जाते हैं। यह बाजा बहुत उच्च कोटिका माना जाता है और प्रायः बहुत बड़े बड़े गवैयोंके कामका होता है। विशेष विवरण वीणा शब्दमें देखो।

बीनना ( हि० क्रि० ) १ छोटी छोटी चीजोंको उठाना, चुनना। २ छाँट कर अलग करना, छाँटना।

बीफै ( हि० पु० ) बृहस्पतिवार, गुरुवार।

बीबी ( फा० स्त्री० ) १ कुलीन स्त्री, कुलवधू। २ अविवाहिता लड़की, कन्या। ३ स्त्रियोंके लिये आदरार्थक शब्द। ४ पत्नी, स्त्री।

बिबेरैना ( हि० पु० ) दक्षिण भारतके पश्चिमी घाटोंमें मिलनेवाला एक प्रकारका वृक्ष। इसकी लकड़ीका रंग पीला होता है और यह इमारत तथा नावें बनानेके काममें आता है। इस लकड़ीमें जल्दी घुन या कीड़ा आदि नहीं लगता

बीभत्स ( स० पु० ) बीभत्स्यतेऽत्र अनेन वध मन करणे घञ्। १ अर्जुन। २ काव्यके नौ रसोंके अन्तर्गत सातवां रस। इसमें रक्त मांस आदि ऐसी बातोंका वर्णन होता है, जिनसे अरुचि और घृणा तथा इन्द्रियोंमें सङ्कोच पैदा होता है। इसका वर्ण नील और देवता महाकाल हैं। जुगुप्सा इसका स्थायी भाव है, पीब, मेद, मज्जा, रक्त, मांस या उनकी दुर्गन्धि आदि विभाव हैं; कम्प, रोमाञ्च, आलस्य, सङ्कोच आदि अनुभाव हैं और मोह, मरण, आवेग, व्याधि आदि व्यभिचारी भाव हैं। ( त्रि० ) ३ घृणित, जिसे देख कर घृणा उत्पन्न हो। ४ क्रूर। ५ पापी।

बिभत्सित ( स० त्रि० ) घृणित, निन्दित।

बीभत्सु ( स० पु०) बीभत्सनानि वध सन् उ। १ अर्जुनके दस नामोंमेंसे एक नाम। ये युद्धमें शत्रुका न्याय पूर्वक संहार करते थे, कभी भी बीभत्स कर्म नहीं करते, इसीसे इनका बीभत्सु नाम पड़ा।

"न कुर्यां कर्म बीभत्सं युध्यमानः कथञ्चन।
तेन देवमनुष्येषु बीभत्सुरिति विश्रुतः ॥"
( भारत ४।४४।१८ )

बीम ( अ० पु० ) १ जहाजके पार्श्वमें लम्बाईके बल लगा हुआ बड़ा शहतीर, आड़ा। २ जहाजका मस्तूल।

बीमा ( फा० पु० ) १ किसी प्रकारकी विशेषतः आर्थिक हानि पूरी करनेकी जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन ले कर उसके बदलेमें की जाती है। आजकल बीमेकी गिनती एक प्रकारके व्यापारके अन्तर्गत होती है और इसके लिये अनेक प्रकारकी कम्पनियां स्थापित हैं। इसमें बीमा करने वाला कुछ निश्चित नियमोंके अनुसार, समय समय पर एक ही साथ कुछ निश्चित धन ले कर अपने ऊपर इस बातका जिम्मा लेता है, कि यदि बीमा करनेवालेकी अमुक कार्य या व्यापार आदिमें अमुक प्रकारकी हानि या दुर्घटना आदि होगी तो उसके बदलेमें हम बीमा करने वालेको इतना धन देंगे। आजकल मकानों या गोदामों आदिके दग्ध होने, समुद्रमें जहाज आदिके डूबने, प्रेषित मालका ठीक हालतमें निर्दिष्ट स्थान तक पहुंचनेका अथवा दुर्घटना आदिके कारणसे हाथ पैर टूटने या शरीर निकम्मा हो जानेका बीमा होता है। जानबीमा नामका एक और प्रकारका बीमा होता है। इसमें बीमा करानेवालेको हर एक महीना, हर एक वर्ष अथवा एक ही साथ कुछ निश्चित धन देना पड़ता है और उसके किसी निश्चित अवस्था तक पहुंचने पर उसे बीमेकी रकम मिल जाती है। यदि उसे निश्चित अवस्था तक पहुंचनेके पहले ही उसकी मृत्यु हो जाय तो उसके परिवारोंको वह रकम मिल जाती है। फिलहाल बालकोंके विवाह और विद्याशिक्षाके व्ययके सम्बन्धमें भी बीमा होने लगा है। डाकद्वारा पत्र या माल आदि भेजनेका भी डाक विभागके द्वारा बीमा होता है। २ वह पत्र या पारसल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो।

बीमार ( फा० पु० ) रोगग्रस्त, रोगी।

बीमारदार ( फा० वि० ) जो रोगियोंकी सेवा करता हो।

बीमारदारी ( फा० स्त्री० ) रोगियोंकी शुश्रूषा।

बीमारी ( फा० स्त्री० ) १ व्याधि, रोग। २ झंझट। ३ बुरी आदत।

बीया ( हिं० पु० ) बीज, दाना।

बार ( हिं० वि० ) १ बीर देखो। ( पु० ) २ भ्राता, भाई। ( स्त्री० ) ३ सखी, सहेली। ४ चरागाहमें पशुओंको चरानेका यह महसूल जो पशुओंकी संख्याके अनुसार लिया जाता है। ५ कानमें पहननेका स्त्रियोंका एक आभूषण। यह गोल चक्की-सा होता है और इसका ऊपरी भाग ढालुआ और उठा हुआ होता है तथा इसके दूसरी ओर खूंटी होती है जो कानके छेदमें डाल कर पहनी जाती है। इसमें ढाई तीन अंगुल लंबी कंगनीदार पूंछ-सी निकली रहती है जिसमें प्रायः स्त्रियां रेशम आदिका भब्बा लगवाती हैं। यह भब्बा पहनते समय सामने कानकी ओर रहता है। ६ एक प्रकारका गहना जो कलाईमें पहना जाता है। ७ पशुओंके चरनेका स्थान, चरागाह।

बीरन ( हिं० पु० ) भ्राता, भाई।

बीरनि ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारका गहना जो कानमें पहना जाता है। इसे बीरी भी कहते हैं।

बीरबहूटी ( हिं० स्त्री० ) एक छोटा रेंगनेवाला कीड़ा। यह किलनीको जातिका होता है और प्रायः बरसात शुरू होनेके समय जमीन पर इधर उधर रेंगता हुआ दिखाई पड़ता है। इसका रंग गहरा लाल होता है और मखमल की तरह इस पर छोटे छोटे कोमल रोएं होते हैं।

इन्द्रवधू देखो।

बीरिट ( सं० पु० ) गण।

बीरी ( हिं० स्त्री० ) १ एक प्रकारका गहना जो कानमें पहना जाता है। इसे तरना भी कहते हैं। २ ढरकी के बीचमें लम्बाईके बल घट छेद जिसमेंसे नरी भर कर तागा निकाला जाता है। ३ लोहेका वह छेददार टुकड़ा जिस पर कोई दूसरा लोहा रख कर लोहार छेद करते हैं।

बीहड़ ( हिं० वि० ) १ पोला, भीतरसे खाली। ( पु० ) २ वह जमीन जो नीची हो और जहां पानी भरा रहता हो। ३ मेल। ४ एक ओषधिका नाम।

बीवर ( अं० पु० ) उत्तरीय अमेरिका और एशियाके उत्तरीय किनारे मिलनेवाला एक प्रकारका जन्तु। यह जलके किनारे कुछ बांध कर रहता है। इसके मुंहमें बड़े बड़े और मजबूत कटीले दांत होते हैं। ऊपर नीचे चार डाढ़ होते हैं जो ऊपरकी ओर चिपटी और कठिन होती हैं। इसके प्रत्येक पांवमें पांच पांच उंगलियां होती हैं और पिछले पैरोंकी उंगलियां जुड़ी रहती हैं। इसकी पूंछ भारी, नीचे ऊपरसे चिपटी और छिल्कोंसे ढकी होती है। इसकी नाक और कानकी बनावट ऐसी होती है, कि पानीमें गोता लगानेसे आपसे आप उनके छिद्र बन्द हो जाते हैं। इसका चमड़ा जो समूर कहलाता है, कोमल और बड़े दामोंमें बिकता है। इसका मांस स्वादिष्ट होता है, पर लोग इसका शिकार विशेषतः चमड़ेके लिये ही करते हैं।

बीवी ( हिं० स्त्री० ) बीबी देखो।

बीस ( हिं० वि० ) १ जो संख्यामें दसका दूना हो। २ श्रेष्ठ, अच्छा। ( स्त्री० ) ३ बीसकी संख्या। ४ बीसकी संख्याका द्योतक चिह्न।

बीसना ( हिं० क्रि० ) शतरंज या चौसर आदि खेलनेके लिये बिसात बिछाना, खेलके लिये बिसात फैलाना।

बीसवां ( हिं० वि० ) बीसके स्थान पर पड़नेवाला।

बीसी ( हिं० स्त्री० ) १ बीस चीजोंका समूह, कोरी। २ भूमिकी एक प्रकारकी नाप जो एक एकड़से कुछ कम होती है। ३ ज्योतिष शास्त्रके अनुसार साठ संवत्सरोंके तीन विभागोंमेंसे कोई विभाग। इनमेंसे पहली बीसी ब्रह्मबीसी, दूसरी विष्णुबीसी और तीसरी रुद्र या शिवबीसी कहलाती है। (पु०) ४ तौलनेका कांटा, तुला। (स्त्री०) ५ प्रति बीघे दो बिस्वेकी उपज जो जमींदारको दी जाती है।

बीहड़ ( हिं० पु० ) १ विषम, ऊंचा नीचा। २ जो ठीक न हो, जो सरल या समान हो। ३ पृथक्, जुदा।

बुंद ( हिं० स्त्री० ) १ बूंद, ठोप। २ वीर्य। ( पु० ) ३ तीर। ( वि० ) ४ थोड़ा सा, जरा-सा।

बुंदकी ( हिं० स्त्री० ) १ छोटी गोल बिंदी। २ किसी चीज पर बना या पड़ा हुआ छोटा गोल दाग या धब्बा।

बुंदकीदार (हिं० वि०) जिस पर बुंदकियां पड़ी या बनी हों, जिस पर बुंदे केसे चिह्न हों।

बुंदस्यारी (हिं० स्त्री०) वह दंड जो बदमाशोंसे जमींदार लेता है।

बुंदवाल (हिं० पु०) छोटी छोटी बूंदोंकी वर्षा।

बुंदा (हिं० पु०) १ कानमें पहननेका एक प्रकारका आभूषण जो बुलाकके आकारका होता है। इसे लोलक भी कहते हैं। २ माथे पर लगानेकी बड़ी टिकली जो पन्नी या कांच आदिकी बनती और बड़ी बिन्दीके आकारकी होती है। ३ बड़ी टिकलीके आकारका गोदना। यह माथे पर गोदा जाता है। इसमें बहुतसे छोटे छोटे दाने या गोदनेके चिह्न होते हैं।

बुंदिया (हिं० स्त्री०) बुंदी देखो।

बुंदोदार (हिं० वि०) जिसमें छोटी छोटी बिंदियां बनी या लगी हों।

बुंदपटी (हिं० पु०) जहाजमें पिछला पाल।

बुआ (हिं० स्त्री०) बूआ देखो।

बुक (सं० त्रि०) बुक्क अच् पृषोदरादित्वात् उपधालोप। १ भीषण शब्द करनेवाला। (पु०) २ एरण्ड वृक्ष, रेंड़ीका पेड़। ३ ईश्वरमल्लिका।

बुक (अ० स्त्री०) १ एक प्रकारका कलफ किया हुआ महीन, पर बहुत करारा कपड़ा। यह बच्चोंकी टोपियोंमें अस्तर देने या अंगिया, कुरती, जनानी चादरें आदि बनानेके काममें आता है। यह साधारण मलमलसे बहुत पतला, पर प्रायः वैसा ही करारा या कड़ा होता है। २ एक प्रकारकी महीन पन्नी।

बुक (अं० स्त्री०) पुस्तक, किताब।

बुकचा (हिं० पु०) १ वह गठरी जिसमें कपड़े बंधे हुए हों। २ गठरी।

बुकची (हिं० स्त्री०) १ छोटी गठरी विशेषतः कपड़ोंकी गठरी। २ दर्जियोंकी थैली। इसमें वे सुई, डोरा, कैंची आदि सीनेके सामान रखते हैं।

बुकनी (हिं० स्त्री०) १ किसी चीजका महीन पीसा हुआ चूर्ण। २ वह चूर्ण जिसे पानीमें घोलनेसे कोई रंग बनता है।

बुकरा (हिं० पु०) १ उबटन, बटना। २ बुक्क देखो।

बुकस (हिं० पु०) भंगी, मेहतर।

बुक्का (हिं० पु०) बुक्का देखो।

बुकार (हिं० पु०) वह बालू जो बरसातके बाद नदी अपने तट पर छोड़ जाती है और जिसमें कुछ अन्न आदि बोया जा सकता हो।

बुकुन (हिं० पु०) १ बुकनी। २ किसी प्रकारका पाचक, चूर्ण।

बुकेफल—झेलमनदी तीरवर्ती एक प्राचीन नगर। माकिदनवीर अलेक्सन्दरका प्रिय घुड़ाश्व बुकेफलस (Bucephalus) जिस स्थान पर मारा गया था, वीरवरने वहां अपने अश्ववरके स्मरणार्थ यह नगर बसाया। आज भी इस नगरका ध्वंसावशेष वर्त्तमान जलालपुर नगरके निकट पड़ा है।

बुकेरा—सिन्धुप्रदेशके हैदराबाद जिलान्तर्गत एक तालुक। यहां चार मुसलमान समाधिमन्दिर हैं जिनमेंसे शेख तायोबा और पीर फजलशाहकी समाधि ही सर्वप्राचीन और मुसलमान समाजमें विशेष आदरणीय है। इन समाधिमन्दिरके सामने वर्ष भरमें दो बार मेला लगता है जिसमें सैकड़ों आदमी जमा होते हैं।

बुक्क (सं० पु०) बुक्कयति शब्दायते इति बुक्क अच्। १ छाग, बकरा। २ हृदयस्थ मांसपिण्ड। ३ अग्रमांस। ४ हृदय, कलेजा। ५ समय। ६ शोणित।

बुक्कचेरला—मन्द्राज प्रदेशके अनन्तपुर जिलान्तर्गत एक वृहद् ग्राम। यहांका बांध देखने लायक है।

बुक्कन (सं० क्लो०) बुक्क भावे ल्युट्। भाषण, कुत्तेका भौंकना।

बुक्कपत्तन—मन्द्राज प्रदेशके अनन्तपुर जिलान्तर्गत एक नगर। १७४० ई०में रायदुर्गके पलिगारोंने इस स्थानमें घेरा डाला था। बेल्लेरीके पलिगारोंके आने पर घेरा उठा लिया गया और दोनोंने बन्धुरूपमें दुर्गके मध्य प्रवेश किया। आखिर यह नगर बेल्लेरीके पलिगारोंके ही हाथ लगा। यहांका विशालतीका जल-बांध ४०० वर्ष पहलेका बना हुआ है।

बुक्कराय—विजयनगरके महापराक्रान्त नरपति। ये सायणाचार्य और माधवाचार्यके प्रतिपालक थे।

विजयनगर देखो।

बुक्करायसमुद्र—मन्द्राजप्रदेशके अनन्तपुर जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। इसके सामनेवाले बांधके ऊपर किनारे अनन्तसागर अवस्थित है।

बुक्कन (सं० पु० स्त्री०) बुक्कन पृषोदरादित्वात् साधु। चाण्डाल।

बुक्का (सं० स्त्री०) बुक्क-टाप्। १ हृदय, कलेजा। २ अग्रमांस, गुर्देका मांस। ३ रक्त, लहू। ४ छाग, बकरी। ५ प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जो मुंहमें फूंक कर बजाया जाता था।

बुक्का (हि० पु०) १ कूटे हुए अभ्रकका चूर्ण। यह प्रायः होलीमें गुलालके साथ मिलाया जाता या इसी प्रकारके और कामोंमें आता है। २ बहुत छोटे छोटे नकली मोतियोंके दाने जो पीस कर ओषधके काममें आते हैं अथवा पिरो कर आभूषणों आदि पर लपेटे जाते हैं।

बुक्काग्रमांस (सं० क्ली०) बुक्कस्य अग्रमांस। १ हृदय, कलेजा। २ हृदयस्थ मांस पिण्डाकार अग्रमांस।

बुक्कार (सं० पु०) बुक्क कि श्वादि शब्दे भावे घञ्, बुक्क निनादस्तस्य कार करण। सिंहध्वनि, सिंहका गर्जन।

बुक्की (सं० स्त्री०) बुक्क गौरादित्वात् ङीष्। बुक्क, हृदय।

बुक्कुर (नगर)—बम्बईके शिकारपुर जिलेके मध्यस्थित सिन्धुनदीके किनारेका दुर्गसुरक्षित एक द्वीप। यह अक्षा० २७ ४३´ उ० तथा देशा० ६८´ ६´ पू०के मध्य अवस्थित है। नदीगर्भस्थित यह पर्वतखण्ड ८ सौ फुट लम्बा और ३ फुट चौड़ा है। सक्कर नगरकी बगल हो कर नदीकी एक शाखा बह गई है। १३२७ ई०में यह स्थान सम्राट् महम्मद तुगलककी अमलदारीमें किसी शासनकर्त्ता द्वारा परिचालित होता था। सम्मावंशीय राजाओंके अधिकारकालमें यह दुर्ग भिन्न भिन्न राजोंसे अधिकृत हुआ था। राजा शाहबेग आर्घुनने अलोरका दुर्ग तोड़ फोड़ कर बुक्कुर दुर्गका संस्कार किया। १५७४ ई०में सम्राट् अकबरशाहने अपने नौकर केशुखांको यह दुर्ग सौंपा। १७३६ ई०में कल्होरावंशके राजाने इस पर दखल जमाया। उसके बाद यह अफगानोंके शासनाधीन हुआ। खैरपुराधिपति मीररुस्तम खाँने अफगानोंके हाथसे यह स्थान छीन लिया।

१८३९ ई०में प्रथम अफगान युद्धके समय खैरपुरके मीरोंने यह स्थान अंगरेजोंको सुपुर्द किया। सिन्धु और अफगानकी चढ़ाईके समय यहां अंगरेजोंका अस्त्रागार स्थापित हुआ था। १८७६ ई०में यहां एक कारागार खोला गया।

बुखार (अ० पु०) १ ज्वर, ताप। २ वाष्प, भाप। ३ हृदयका उद्वेग, शोक, क्रोध दुःख आदिका आवेग।

बुखारचा (फा० पु०) १ कोठरीके भीतर तख्तों आदिका बनी हुई छोटी कोठरी। २ खिड़कीके आगेका छोटा बरामदा।

बुग (हि० पु०) १ मच्छर। २ बुग देखो।

बुगचा (हि० पु०) बुकचा देखो।

बुगदर (हि० पु०) मच्छर।

बुगदा (फा० पु०) कसाइयोंका छुरा जिससे वे पशुओंकी हत्या करते हैं।

बुगियाल (हि० पु०) पशुओंके चरनेका स्थान, चरागाह।

बुगुल (हि० पु०) बिगुल देखो।

बुचाना—हिमालय पर्वतवासी ब्राह्मण जातिविशेष। ये लोग अपनेको वाराणसीवासी गौड़ ब्राह्मणके वंशधर बतलाते हैं। कोई कोई नैठान ब्राह्मणसे इनकी उत्पत्ति बतलाते हैं। इनका आचार व्यवहार सनौढ़ और गढ़वाली ब्राह्मणों सा मिलता जुलता है। ये लोग साधारणतः विद्वान, बुद्धिमान और कर्मदक्ष हैं।

बुचका (हि० पु०) बुकचा देखो।

बुज़कसाब (फा० पु०) वह जो पशुओंकी हत्या करता अथवा उनका मांस आदि बेचता हो, बकर कसाब।

बुज़दिल (फा० वि०) भीरु, डरपोक।

बुजनी (हि० स्त्री०) कानमें पहननेका एक प्रकारका गहना। यह करनफूलके आकारकी होती है। इसके नीचे झुमका भी लटकाया जाता है। इसे प्रायः छोटी स्त्रियां पहनती हैं।

बुजियाला (फा० पु०) १ वह बन्दरिया जिसे कलन्दर लोग तमाशा करना सिखलाते हैं। २ वह बन्दर जिसे कलन्दर तमाशा करना सिखाते हैं।

बुज़ुर्ग (फा० वि०) १ जिसकी अवस्था अधिक हो, बड़ा। २ वृद्ध, बूढ़ा। (पु०) ३ पूर्वज, बाप दादा।

बुज़ुर्गी (फा० स्त्री०) बुज़ुर्ग होनेका भाव, बड़ापन।

बुज्जर ( हि० पु० ) एक प्रकारकी चिड़िया।
बुज्ञी ( फा० वि० ) बकरी।
बुज्भा ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी चिड़िया।
बुझना (हि० क्रि०) १ अग्नि शिखाका शान्त होना, जलने का अन्त होना। २ चित्तका आवेग या उत्साह आदि मंद पड़ना। ३ पानी आदिकी सहायतासे किसी प्रकार-का ताप शान्त होना। ४ पानीका किसी गरम या तपाई हुई चीजसे छौंका जाना। ५ तपी हुई या गरम चीज का पानीमें पड़ कर ठंढा होना।
बुझाई (हि०स्त्री०) १ बुझानेकी क्रिया। २ बुझानेका भाव।
बुझाना (हि० क्रि०) १ जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना, अग्नि शान्त करना। २ तप्त पदार्थको जलमें डाल कर ठंढा करना। ३ चित्तका आवेग या उत्साह आदि शान्त करना। ४ ठंढे पानीमें इसलिये किसी चीजको तपा कर डालना जिसमें उस चीजका कुछ गुण या प्रभाव उस पानीमें आ जाय, पानीको छौंकना। ५ पानी डाल कर ठंढा करना। ६ सन्तोष देना, जी भरना। ७ किसीको बूझनेमें प्रवृत्त करना।
बुझारत ( हि० स्त्री० ) किसी गांवके जमींदारोंके वार्षिक आय व्यय आदिका लेखा।
बुड़की ( हि० स्त्री० ) डुबकी, गोता।
बुड़ना (हि० क्रि०) डूबना देखो।
बुड़बुड़ाना ( हि० क्रि० ) मन ही मन कुढ़ कर या क्रोधमें आ कर अस्पष्ट रूपसे कुछ बोलना, बड़बड़ करना।
बुड़ाव ( हि० पु० ) डुबाव देखो।
बुड्ढा ( हि० वि० ) जिसकी अवस्था अधिक हो गई हो, ५० ६० वर्षसे अधिक अवस्थावाला।
बुड्ना ( हि० पु० ) पत्थर फूल, छड़ीला।
बुढ़ाई ( हि० स्त्री० ) वृद्धत्व, बुढ़ापा।
बुढ़ाना ( हि० क्रि० ) वृद्धावस्थाको प्राप्त होना, बुड्ढा होना।
बुढ़ापा (हि० पु०) १ वृद्धावस्था, बुड्ढे होनेकी अवस्था। २ बुड्ढे होनेका भाव, बुड्ढा पन।
बुढ़िया बैठक ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी बैठक। इसमें दीवार, खम्भे आदिका सहारा ले कर बार बार उठते बैठते हैं।

बुढ़ौती ( हि० स्त्री० ) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
बुत ( फा० पु० ) १ प्रतिमा, मूर्त्ति। २ प्रियतम, वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। ३ तेसडबुत नामक खेलमें वह दाव जिसमें खिलाडीके हाथमें केवल तसवीरें ही हों अथवा तीनों ताशोंकी बुन्दियोंका जोड़ १०,२० या ३० हो। समखुराना।
बुतना ( हि० क्रि० ) बुझना देखो।
बुतपरस्त ( फा० पु० ) १ मूर्त्तिपूजक, वह जो मूर्त्तियोंकी पूजा करता हो। २ वह जो सौंदर्यका उपासक हो, रसिक।
बुतपरस्ती ( फा० स्त्री० ) मूर्त्तिपूजा।
बुतशिकन ( फा० पु० ) वह जो मूर्त्तिपूजाका घोर विरोधी हो, वह जो प्रतिमाओंको तोड़ता या नष्ट करता हो।
बुताना ( हि० क्रि० ) बुझाना देखो।
बुत्त ( हि० वि० ) बुत देखो।
बुद ( हि० वि० ) दलालकी बोलीमें 'पांच'।
बुदबुद ( स० पु० ) पानीका बुलबुला, बुल्ला।
बुदबुदा ( हि० पु० ) पानीका बुलबुला, बुल्ला।
बुदलाय ( हि० वि० ) दलालकी बोलीमें 'पन्द्रह'।
बुद्ध ( स० पु० ) बुध्यते स्म इति बुध क्त, यद्वा भावे क्त, बुद्ध ज्ञानमस्यास्तीति अर्श आदित्वादच्। भगवानका अवतारविशेष। पर्याय—सर्वज्ञ, सुगत, धर्मराज, तथागत, भगवान्, मारजित्, लोकजित्, जिन, षड़भिज्ञ, दशबल, अद्वयवादी, विनायक मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्ता, मुनि, धर्म, त्रिकालज्ञ, धातु, बोधिसत्त्व, महाबोधि, आर्य, पञ्चज्ञान, दशार्ह, दशभूमिग, चतुस्त्रिंशज्जातकज्ञ, दशपारमिताधर, द्वादशाक्ष, त्रिकाय, संगुप्त, दयाकूर्च, खजित, विज्ञानमातृक, महामैत्र, धर्मचक्र, महामुनि, असम, खसम, मैत्री, बल, गुणाकर, अकनिष्ठ, त्रिशरण, बुध, वक्री, वागशनि, जितारि, अर्हण, अर्हन्, महासुख, महाबल। बुद्धदेव देखो।
(त्रि०) २ जागरित, जो जागा हुआ हो। ३ ज्ञानवान, ज्ञानी। ४ पण्डित, विद्वान्।
बुद्धकल्प ( स० पु० ) बुद्धका कल्प, वर्त्तमान युग।
बुद्धक्षेत्र ( स० क्ली० ) बुद्धकी लीलाभूमि, वह स्थान जहां पर एक बुद्धका आविर्भाव हुआ है।

बुद्धगया (स ० स्त्री०) कीकटस्थ बुद्धका गयाभेद। बोधगया देखो।

बुद्धगुप्त ( स ० पु० ) गुप्तवंशीय एक राजा। गुप्तराजवंश देखो।

बुद्धगुरु ( स० पु० ) एक बौद्धाचार्य।

बुद्धघोष ( स ० पु० ) एक प्रसिद्ध बौद्धाचार्य। ५वीं शताब्दीमें ये विद्यमान थे।

बुद्धचर्य ( स ० क्ली० ) बुद्धका कार्य या जीवन।

बुद्धज्ञानश्री ( स ० पु० ) एक प्रसिद्ध बौद्धाचार्य।

बुद्धत्व ( स ० क्ली० ) बुद्धस्य भाव त्व। बुद्धका भाव या धर्म।

बुद्धदत्त ( स ० पु० ) १ चण्ड महासेनका मन्त्री। ( त्रि०) बुद्धेन दत्त। २ बुद्ध कर्त्तृक दत्त, जो बुद्धदेवसे दिया गया हो।

बुद्धद्वीप ( स ० पु० ) राजभेद।

बुद्धदेव—बौद्धधर्मके प्रवर्त्तक महाज्ञानी पुरुष, हिन्दू-शास्त्रोक्त भगवानके दश अवतारोंमेंसे नवां अवतार। दशावतार देखो।

हिन्दूमत।

साहित्यदर्पणकारोंने बुद्धावतारके विषयमें जो श्लोक उद्धृत किया है, उसका भावार्थ इस प्रकार है—

"बुद्धावतारमें जिनके ध्यानके मध्य सारा संसार विलीन हुआ था, कल्कि अवतारमें जो अधार्मिक मनुष्योंका खड्ग द्वारा नाश करेंगे, उनको हम प्रणाम करते हैं।"

जयदेवने दशावतार स्तोत्रमें बुद्धावतारके सम्बन्धमें लिखा है—हे केशव! आपने बुद्ध शरीर धारण कर दयार्द्र चित्तसे पशुहिंसाकी अपकारिता दिखलाते हुए यज्ञविषयक मन्त्रोंकी निन्दा की है। हे जगदीश हरे! आपका जय हो। (१)

श्रीमद्भागवतके प्रथम स्कन्धके तीसरे अध्यायमें लिखा है कि भगवानने इक्कीस बार अवतार लिये थे। इस कलियुगमें वे गयाप्रदेशमें अञ्जनके पुत्र बुद्धनामसे अवतीर्ण होंगे। बाद कलियुगके शेषकालमें वे विष्णु यशा नामक ब्राह्मणका पुत्र बन कर कल्किरूपमें जन्मग्रहण करेंगे।

विष्णुपुराणमें तृतीय अंशके १७वें और १८वें अध्यायमें बुद्ध मायामोह नामसे प्रसिद्ध हैं। उक्त पुराणमें लिखा है, कि भगवान्ने अपने शरीरसे मायामोहको उत्पादन कर देवताओंसे कहा—'यह मायामोह सभी दैत्योंको मोहित करेंगे। दैत्योंके वेदमार्गविहीन होनेसे तुम लोग अनायास उन सबोंका बध कर सकोगे।' अनन्तर मायामोह नर्मदा नदीके किनारे जा कर बोले, 'हे दैत्यपतिगण! तुम लोग क्यों तपस्या करते हो? यदि तुम्हें ऐहिक और पारत्रिक फलकी इच्छा हो, तो मेरे कथनानुसार कर्म करो। मैं जो धर्मोपदेश दूंगा, वही मुक्तिका उपयोगी होगा। उससे श्रेष्ठ धर्म और दूसरा नहीं है। उस धर्मके ग्रहण करनेसे स्वर्ग या मुक्ति जो चाहो, मिलेगा।"

मायामोहकी प्ररोचनासे दैत्यगण वेदमार्गसे बहिर्गत हुए। यह धर्म है, यह अधर्म, यह सत् है यह असत्, इससे मुक्ति होती है, उससे नहीं, यह परमार्थ है, यह अलीक, यह दिगम्बरोंका धर्म है, यह बहुवस्त्र मनुष्योंका, इस प्रकार नाना सन्देहयुक्त वाक्य कह कर माया मोहने दैत्योंको स्वधर्मत्याग कराया और कहा, 'हे दैत्य गण! तुम लोग मेरे कहे हुए धर्मका 'अर्हत' अर्थात् मान्य करो।' यही कारण है, कि मायामोहके चलाये हुए धर्मको माननेवाले 'आर्हत' कहलाते हैं। मायामोहका धर्म क्रमशः बहुत दूर तक फैल गया। अनन्तर इन्होंने असुरोंसे कहा, 'यदि तुम लोग निर्वाणलाभ अथवा स्वर्गकी कामना करते हो, तो पशुहिंसा प्रभृति बुरे धर्मोंका परित्याग करो। इस जगत्प्रवाहको विज्ञानमय समझो और यह निश्चय जानो, कि इस संसारके कोई आधार नहीं है; इत्यादि।

इसी प्रकार अग्निपुराण, वायुपुराण, स्कन्दके हिमवत्खण्ड आदि पौराणिक ग्रन्थोंमें बुद्धावतारका थोड़ा बहुत विषय लिखा हुआ है।

शङ्कराचार्यने वेदान्तसूत्रके द्वितीय पादके उत्पत्त्यसम्भव सूत्रकी व्याख्यामें निम्नलिखित आख्यायिका उद्धृत की है—

---

(१) "निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदय हृदयदर्शितपशुघातम्। केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे॥" (जयदेव)

'असार पदार्थसे सार पदार्थकी उत्पत्ति होती है' इस प्रकार खण्डन कर व्यासने वेदोंका प्रामाण्य संस्थापन किया है। इसके बाद भगवान् बुद्ध दैत्योंको विमूढ करनेमें प्रवृत्त हुए। बुद्धदेव रुद्ररूपी महादेवसे बोले, (१) 'हे महाबाहो रुद्र! हे महाभुज! आप मोहशास्त्रोंकी रचना कर अनर्थ और वितथ्यको दिखाइये तथा कई एक कल्पित शास्त्रोंकी सृष्टि कर ऐसा उपाय कीजिये जिससे सभी मनुष्य मेरे प्रति विमुख हो जाय।' बुद्धदेवके कथनानुसार महादेव प्रभृतिने भी अपने अपने अंशोंमें अवतार लिया और वैदिक धर्ममें प्रवेश कर मनुष्यों को विश्वास दिलानेके लिये वेदों की यथार्थ व्याख्या की। अनन्तर उन्हों ने अस्ति और नास्तिके सिवा अविद्या नामक पदार्थको जगत्प्रवाहका कारण बतलाया और उस अविद्याकी निवृत्तिसे ही निर्वाण लाभ होता है, ऐसा बतला कर कितने ही जातिभ्रष्ट सन्यासियों और पाषण्डोंकी सृष्टि की। यह देख कर व्यास उन पर बड़े ही प्रसन्न हुए।

बौद्धमत।

उधर बौद्धग्रन्थकारोंने बुद्धदेवकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। अमरसिंहने अपने अमरकोषके प्रथम अध्यायमें ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति देवताओंके नामके पहले बुद्धका नामकीर्त्तन किया है —

"सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः।
समन्तभद्रो भगवान् मारजित् लोकजित् जिनः॥
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः।
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः।
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः॥

बङ्गदेशीय प्राचीन बौद्ध कवि रामचन्द्रने कविभारती भक्तिशतक ग्रन्थमें लिखा है,—

"महाऽविद्याभिभूतोऽभवदभिमतमहामायायालिङ्गिताङ्गो।
विष्णुरागातरेकात् निजवपुषि धृता पार्वती शङ्करेण॥
वीतावियो निमायो जगति स भगवान् वीतरागो मुनीन्द्रः।
कः सेव्यो बुद्धिमद्भिस्त्रिदशगणमे भ्रातरन्युपदिश्यताम्॥"

ब्रह्मा अविद्या द्वारा अभिभूत थे विष्णु महामायाके आलिङ्गनमें विमुग्ध थे और शङ्करने आसक्तिवशतः पार्वतीको अपने शरीरमें धारण किया था। किन्तु मुनिपुङ्गव बुद्ध अविद्या, माया तथा आसक्ति इन सबों से बिल्कुल अलग थे।

विदेह नामक कविने समन्तकूटवर्णना नामक पालि ग्रन्थमें लिखा है,—

"सननवितततिमिर व्यसनकन्दप्पदप्पं।
निमहितनिधानं सब्बभासरवेतुम्।
अमितमतिमनघ सविदं भरसारं।
सुगतमहमुधार रूपसारं नमामि॥"

काश्मीरके प्रसिद्ध बौद्ध कवि क्षेमेन्द्रने अवदानकल्पलतामें बुद्धजन्म नामक परिच्छेदके प्रारम्भमें लिखा है —

"इयति जगति कालाकालसगाय भानु
परममृतरस्यै पृथा जगति चन्द्रः।
इयति जगति पूर्ण्य पत्यमद्यानि कश्चित्
विपुलकुशलसेतु सत्त्वसन्तारणाय॥"

अवदानकल्पलतामें महाकाश्यपावदान नामक ६३वें पल्लवके प्रारम्भमें क्षेमेन्द्रने लिखा है,-

"शत्रु धातुरवयादय पुरा विनिया मुनिवरास्य वल्कृत।
शान्ति तत् सुखद त्रणायत यस्य यस्य न स विस्मरान्पदम्॥"

बुद्धचरितकाव्यके प्रारम्भमें अश्वघोषने बुद्धको नमस्कार करते हुए लिखा है —

"श्रियं परार्ध्यां विदधत् विधातृजित् तमो निरस्यन्नभिभूतभानुभृत्।
नुदन्निदाघं जितचारुचन्द्रमाः स वन्द्यतेऽर्हन् इह यस्य नोपमा॥"

एशिया महादेशके प्रायः सभी प्रदेशोंमें बुद्धदेवका जीवनचरित पाया जाता है। ललित विस्तरसूत्र, बुद्धचरितकाव्य, लङ्कावतारसूत्र, अवदानकल्पलता आदि संस्कृत ग्रन्थ, महावंश, महापरिनिर्वाणसूत्र, महावग्ग, जातक प्रभृति पालिग्रन्थ, फोपान् सि चि चि इत्यादि चीनग्रन्थ, शाक्जितसुरोगु आदि जापानी, मल्लगरवत्तु प्रभृति ब्रह्मदेशीय ग्रन्थ, गल्ड्का रोल (कैङ्‌ गुरके सूत्रपिटकका ख अध्याय) नामक तिब्बतीय ग्रन्थ इत्यादि बौद्ध

---

(१) 'त्वञ्च रुद्र महाबाहो मोहशास्त्राणि कारय।
अनर्थानि वितथ्यानि दर्शयस्व महाभुज॥
मायामे प्रकटितस्त्वञ्च कुरु शास्त्रानि वदस्वान मुक ॥"

ग्रन्थका मत अवलम्बन कर वर्त्तमान प्रबन्ध लिखा जाता है।

बुद्धका पूर्वजन्म।

इस घोर तमावृत संसारमें असंख्य युगके बाद एक एक बुद्ध आविर्भूत होते आये हैं। शाक्यसिंहसे पहले भी इस पृथ्वी पर अनेक बुद्धोंने जन्म लिया था किन्तु उनका धारावाहिक इतिहास नहीं मिलता। वर्त्तमान समय बौद्धशास्त्रानुसार महाभद्रकल्प कहलाता है। इसी कल्पमें ककुच्छन्द, कनकमुनि, काश्यप और शाक्यसिंहने यथाक्रम ३१०१, २०६०, १०१४ और ६३३ ईस्वी सनके पहले जन्मग्रहण किया था। इन सबोंके पहले और १२० मनुष्य क्रमानुसार प्रादुर्भूत हुए थे। उनके पूर्व असंख्य कोटि बुद्धोंने जन्म लिया था। बौद्धोंका विश्वास है, कि इस अनादि संसारमें कुल कितने बुद्धों ने जन्मग्रहण किया, उसकी शुमार नहीं।

यहां पर अन्यान्य बुद्धोंका चरित न लिख कर केवल गौतमबुद्ध या शाक्यसिंहके पूर्व जन्मका वृत्तान्त लिखा जाता है।

शाक्यबुद्धका पूर्वजन्म।

एक समय जब ब्रह्माने देखा, कि ब्रह्मलोकके अधिवासियोंकी संख्या बहुत थोड़ी बच गई है, तब वे बड़े ही चिन्तित हुए। इसका कारण ढूंढने पर उन्हें मालूम हुआ, कि पृथिवी पर असंख्य कल्पके मध्य किसी भी बुद्धने जन्म नहीं लिया है, इसीलिये सभी जीव अज्ञानाच्छन्न हैं। अनेक वर्षोंके भीतर पृथिवी पर पुण्यवान मनुष्योंके जन्म नहीं लेनेके कारण कोई भी मरनेके बाद ब्रह्मलोक नहीं आ सकता; अतएव ब्रह्मलोक जनशून्य हो गया है।

तब ब्रह्मा चारों ओर देख कर सोचने लगे, कि पृथिवी पर क्या कोई ऐसा है, जो कालक्रमसे बुद्धत्वलाभ कर सकता है? बादमें ध्यानयोगसे उन्हें मालूम हुआ, कि कमल जिस प्रकार खिलनेकी आशासे सूर्योदयकी प्रतीक्षा करता है, उसी प्रकार तमसाच्छन्न पृथिवी पर एक ज्ञानवान् मनुष्य बुद्धत्वलाभकी प्रत्याशामें काल यापन कर रहा है। उन्हें यह भी मालूम हुआ, कि बुद्धत्वलाभके लिए जो सब प्रार्थी पृथिवी पर विद्यमान हैं, उनमेंसे एक ही सर्वश्रेष्ठ है। इस पर ब्रह्माने उन्हींको चुन लिया और वे ही गौतमबुद्ध या शाक्यसिंहके नामसे प्रसिद्ध हुए।

जिस समय ब्रह्माने उन्हें चुन लिया था उस समय वे ही पृथिवी पर सबोंकी अपेक्षा गरीब थे। उनके एक मात्र बूढ़ी तथा विधवा माता थी। गौतम वाणिज्य-व्यवसायका अवलम्बन कर बड़े कष्टसे अपना और विधवा माताका आहार संग्रह करते थे। एक दिन वे सौभाग्यवृद्धिकी आशासे सुवर्णभूमि नामक देश जानेके लिए समुद्रके किनारे पहुंचे और नाविकोंको पुरस्कारस्वरूप कुछ चांदीके टुकड़े दे कर बोले,—"हे नाविकगण! तुम मुझे और मेरी बूढ़ी माताको नाव पर चढ़ा कर सुवर्णभूमि पहुंचा दो। तुम्हारी अनुकम्पाके सिवा समुद्र पार कर जानेका हमें और कोई दूसरा उपाय नहीं है।' इस पर नाविकोंने उन दोनोंको नाव पर चढ़ाया; किन्तु अभाग्यवश थोड़ी दूर जाते ही वह नाव डूब गई। उत्ताल तरङ्गमें गौतम अपने जीवनकी माया छोड़ कर माताकी जीवन रक्षामें लग गए। हिंस्र जलजन्तुओंके प्रति लक्ष्य न कर उन्होंने माताको अपनी पीठ पर बिठा लिया और आप तैरने लगे। गौतमको ऐसा दृढ़प्रतिज्ञ देख ब्रह्माने कहा,—यही एक मनुष्य बुद्धत्वप्राप्तिका यथार्थ अधिकारी है। अनन्तर ब्रह्माकी सहायतासे गौतम माताके साथ समुद्र पार कर गए। तब ब्रह्माने विचारा, कि बुद्धत्व लाभ करनेमें जिन सब गुणोंका रहना आवश्यक है, गौतममें वे सभी मौजूद हैं। उस समय गौतमने भी बुद्धत्वलाभ करनेका दृढ़ संकल्प किया। कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हुई और उन्होंने ब्रह्मलोकमें पुनर्जन्म ग्रहण किया। जिस दिन गौतमके मनमें बुद्धत्वप्राप्तिकी इच्छा उत्पन्न हुई थी उस दिनसे असंख्य वर्षोंके भीतर इस संसारमें एक लाख पचीस हजार बुद्धोंने अवतार लिया था; किन्तु गौतम तब तक भी न बोधि लाभ न कर सके थे।

सर्वभद्रकल्पमें गौतम धम्मरंशीय सम्राट्के पुत्ररूपमें आविर्भूत हुए और इसी कल्पमें उन्हें वाक्प्रणिधान उत्पन्न हुआ उनका कहना था, "मैं बुद्ध होऊंगा और बुद्धत्वलाभ करना ही मेरा अभाव है।"

सारमन्दकल्पमें गौतमने पुष्पवती नगरीमें राजा सुनन्दके

पुत्ररूपमें जन्मग्रहण किया । इस कल्पमें उन्होंने तृष्णाङ्कर बुद्धसे अनियत विवरण (अनिश्चित आश्वास) और दीपङ्कर बुद्धसे नियत विवरण (निश्चित आश्वास) प्राप्त किया। तृष्णाङ्कर बुद्धने कहा था, कि गौतम काल क्रमसे बुद्धत्व लाभ कर सकते हैं। किन्तु दीपङ्करका कहना था, कि गौतम अवश्य ही बुद्धत्व लाभ करेंगे।

गौतम सारमण्डकल्पमें यथाक्रम सुरुचि ब्राह्मण, अतुल नागराज, अतिदेव ब्राह्मण तथा सुजात ब्राह्मणके नामसे परिचित थे। वरकल्पमें वे क्रमश यशमित्र और सन्यासिरूपमें प्रादुर्भूत तथा मण्डकल्पमें राजचक्र वर्त्तित्वको प्राप्त हुए। बाद असंख्य कल्प तक संसार घोर अज्ञानान्धकारमें निमग्न रहा।

इस समय गौतम देव, मनुष्य आदि नाना योनियोंमें परिभ्रमण करते रहे। 'पञ्चशत पञ्चाश जातक' नामक पालिग्रन्थमें इनके ५५० जन्मोंका विवरण लिखा है। इनमें से वे ८३ बार सन्यासी, ५८ बार महाराज, ४३ बार वृक्ष देवता, २६ बार धर्मोपदेशक, २४ बार राजामात्य, २४ बार पुरोहित ब्राह्मण, २४ बार युवराज, २३ बार भद्र लोक, २२ बार पण्डित, २० बार, इन्द्र, १८ बार मर्कट, १३ बार वणिक, १२ बार धनी, १० बार मृग, १० बार सिंह, ८ बार हंस, ६ बार हस्ती, १२ बार कुक्कुट, ५ बार भृत्य, ५ बार सौपर्ण गरुड, ४ बार अश्व, ४ बार वृष, ३ बार कुम्भकार, ३ बार अन्त्यज जाति, २ बार मत्स्य, २ बार हस्तिपक, २ बार इन्दुर, १ बार कुक्कुर, १ बार सर्प-चिकित्सक, १ बार सूत्रधार, १ बार कर्मकार, १ बार मेढक, १ बार शशक इत्यादिरूपमें पृथिवी पर अवतीर्ण हुए थे।

ऊपर जो तालिका दी गई है, वह पूरी नहीं है। गौतमबुद्धने असंख्य जन्मग्रहण किया था, जिसका आमूल वृत्तान्त संग्रह करना नितान्त दुरूह है। उन्होंने एक एक जन्ममें एक एक प्रकारके सत्कर्मका अनुष्ठान किया था। किसी जन्ममें दास्य, किसीमें शीलता, किसीमें नैष्कम्य, किसीमें प्रज्ञा और समयानुसार वीर्य, क्षान्ति, सत्य, अधिष्ठान, मैत्री और उपेक्षा आदि सद्गुणोंकी पराकाष्ठा भी दिखाई थी। उल्लिखित दश गुण दश पारमिता कहलाते हैं। गौतम साधारणतः उक्त पारमिताओंका अनुष्ठान करते थे।

गौतमबुद्धने शशिराजकुमार जन्ममें अपना मस्तक, नेत्र, मांस, सन्तान, स्त्री तथा सर्वस्व वितरण कर दानपारमिताका (१) अनुष्ठान किया था। भूमिदत्त जन्ममें उन्होंने तीन प्रकारकी शीलपारमिता (२) सम्पन्न की थी। छुद्द सुम सोममें काञ्चन, मणि, माणिक्य, दास तथा दासी इत्यादिका त्याग कर सन्यासधर्म ग्रहण किया था और इसी जन्ममें उनकी निष्क्रम पारमिता (३) अनुष्ठित हुई। सत्तुभक्त जन्ममें वे प्रज्ञा पारमिता (४) तथा महजनक जन्ममें वीर्य पारमिताकी (५) चरम सीमा पर पहुंचे थे। क्षान्तिवाद जन्ममें उन्होंने मनुष्यके अन्याय तथा निष्ठुर व्यवहारको अम्लान चित्तसे सह्य कर क्षान्ति पारमिताका (६) उज्ज्वल दृष्टान्त दिखाया था। महासुत सोमजन्ममें बुद्धने सत्यपारमिता (७), तेमिजन्ममें दृढ प्रतिज्ञ हो श्रेष्ठ धर्मका अनुष्ठान कर अधिष्ठान पारमिता तथा सरजन्ममें शत्रु और मित्र, उपकारी और अपकारी, ज्ञाति और अपरिचित प्रभृति सबोंके साथ सम भाव दिखा कर उन्होंने मैत्री (९) तथा चित्तके अविषम भाव या उपेक्षा पारमिताका (१०) परिचय दिया था।

उपर्युक्त पारमिताओंमेंसे प्रत्येकका पूर्णरूपसे अनुष्ठान करनेके कारण ही बुद्धका नाम 'दशभूमीश्वर' पड़ा।

कर्मके विभिन्न परिणामसे गौतमबुद्धने नाना जन्मग्रहण किया सही, पर वे कभी भी असत् कर्ममें प्रवृत्त न हुए। तिर्यग्योनिमें जन्म लेकर भी उन्होंने बुद्धोचित कार्यका अनुष्ठान किया था। बुद्धदेवके कई एक जन्म ग्रहणका विषय जो नीचे लिखा गया है, उसे पढ़नेसे सभी समझ सकते हैं कि बौद्धचरिताध्यायियोंका ऐसा विश्वास था, कि गौतमबुद्ध पशु आदि योनिमें जन्म ले कर भी सत्य, क्षान्ति इत्यादि धर्मसे विचलित न हुए।

मर्कटजन्म—प्रज्ञापारमिता।

एक समय गौतम बन्दर रूपमें जन्म ले कर ८००० बन्दरोंके अधिपति हुए थे। हिमालयके तराई प्रदेशके जंगलमें उनका राज्य था। उसके समीप किसी छोटे गांवमें एक बहुत बड़ा इमलीका पेड़ था। बन्दरोंके इमली खानेकी इच्छा प्रकट करने पर गौतमने

उनसे कहा "हे प्रजागण ! तुम लोग शिष्टता मत छोड़ो। इस इमलीके पेड़को ग्रामवासियोंने बड़ी मेहनतसे लगाया है और वे हमेशा इसकी चौकसीमें लगे रहते हैं, ताकि यह पेड़ शीघ्र बरबाद न हो जाय।

बन्दरोंने उनकी बात पर कुछ भी उत्तर न दिया। अन्तमें रातको लगभग ५०० बन्दर मिल कर चुपचाप इमली खानेको चले। उन्होंने सोचा, कि उन्हें कोई देख न सकेगा, किन्तु वे इमली खाते समय अपने आपको बिलकुल भूल गए और अपनी बोलीमें अपने अपने मनका आनन्द प्रकाश करने लगे। बाद गांववाले बन्दरोंकी आवाज सुन कर एक एक लाठी ले उस पेड़के नीचे आये। उन लोगोंने विचारा, "हम लोग सुबह तक यहां ठहरेंगे और बन्दरोंको पेड़ परसे उतरते ही मारेंगे। धीरे धीरे यह खबर कपिराज गौतमको मिली। उन्होंने कहा, 'मेरे मना करने पर भी बन्दर इमली खानेका लालच न छोड़ सके। उन सबोंके जीवन अभी बड़े सङ्कटमें पड़े हैं; जो हो प्रजाकी रक्षा करना राजाका परम कर्त्तव्य है। अतएव मुझे किसी उपायका अव- लम्बन कर उनकी रक्षा अवश्य करनी चाहिए।

बाद गौतमने गांवमें आ कर देखा, कि बच्चे, बूढ़े, स्त्री सबके सब सोये हुए थे और गांवके वयस्क मनुष्य लाठी ले कर इमलीके पेड़के नीचे खड़े थे। गांवमें बिलकुल सन्नाटा छा रहा था, सिर्फ एक घरमें एक बूढ़ी औरत खांसती थी। उसे नींद नहीं आती, वह कभी उठती, कभी बैठती और कभी बिछावन पर लेट जाती थी। अब गौतमने उसी बूढ़ीके घरमें आग लगा दी। घर जलने लगा और बूढ़ी चिल्लाती हुई घरके बाहर आई। आग बुझानेका कोई उपाय उसे दीख न पड़ा। बाद जो सब मनुष्य इमलीके पेड़के नीचे खड़े थे, उन्होंने बूढ़ीकी आवाज सुन अपनी अपनी लाठी फेंक दी और सब गांव जा कर आग बुझानेमें लग गए। सुअवसर पा कर बन्दर अपने घर चले आये। इसी जन्ममें गौतमने प्रज्ञा पारमिता सम्पन्न की थी।

ऊदबिलाव-जन्म-वीर्यपारमिता।

किसी समय गौतमने ऊदबिलावरूपमें जन्म लिया था। यह ऊदबिलाव किसी नदीके किनारे एक पेड़ पर रहता और बड़े यत्नसे अपने बच्चोंका पालन पोषण करता था। एक दिन तीव्र तूफानसे यह पेड़ उखड़ कर नदीमें गिर पड़ा जिससे उस परके सभी बच्चे डूब गए। उस समय गौतमने प्रतिज्ञा की, "समुद्र सुखा कर बच्चोंका उद्धार करूंगा।' बाद वे अपनी पूंछ नदीमें डुबा डुबा कर किनारे पर झाड़ने लगे। सात दिन तक वे इसी प्रकार करते रहे। तब देवराजने आ कर उनसे पूछा, "हे साधु ऊदबिलाव! तुम्हें जरा भी समझ नहीं, इस प्रकार पूंछ डुबो कर पानी छिड़कनेसे कितने दिनोंमें तुम समुद्र सुखा सकोगे? समुद्र ८४ हजार योजन गहरा है। तुम जैसे लाखों प्राणीकी ऐसी चेष्टा करने पर भी समुद्र नहीं सूख सकता।"

इतने पर ऊदबिलावरूपी गौतमने देवराजसे कहा, 'हे वीरपुरुष! यदि सभी मनुष्य आप जैसे साहसी होते, तो आपका कहना सार्थक होता। आपमें कहां तक विक्रम है, यह आपके वचनसे ही मालूम पड़ता है। जो कुछ हो, आप सरीखे भीरु, कापुरुष तथा निर्बोधके साथ बातचीत करनेसे कोई फल नहीं। आपका जहां जी चाहे, चले जाय, मेरे कार्यमें बाधा न डालें। मैंने जो आरम्भ किया है, उसे बिना समाप्त किये न छोड़ूंगा।" देवराज उस ऊदबिलावका अदम्य उत्साह देख कर चकित हो रहे। बाद देवताओंकी सहायतासे उसने सभी बच्चोंको समुद्रसे बाहर निकाला। गौतमने इस जन्ममें वीर्यपारमिता दिखलाई थी।

सिंहजन्म—सत्यपारमिता।

एक समय गौतम सिंहकुलमें जन्म ले कर किसी पहाड़ पर रहते थे। उसके समीप ही कीचड़से भरी हुई एक झील थी जहां हरिण आदि जन्तु चरा करते थे। एक दिन सिंहरूपी गौतमने भूखसे व्याकुल हो कर एक हरिणका पीछा किया; किन्तु उक्त झीलके कीचड़में वे फंस गए। उससे निकलनेका कोई उपाय न देख उन्होंने एक गीदड़से कहा, 'हे भद्र! मैं बड़ी तकलीफमें आ गिरा हूं। मेरे दोनों पैर कीचड़में इस प्रकार फंस गये हैं, कि उन्हें बाहर निकालनेकी मुझमें सामर्थ्य नहीं। हे भाई! तुम कृपा कर इससे निकाल दो।' गीदड़ बोला, 'आप बलवान् तथा विक्रमशाली जन्तु हैं।

अभी आप ऐसे भूखे हैं, कि आपके समीप जानेका मुझे साहस नहीं होता। शायद आपकी रक्षा करनेमें मुझे अपने जीवनसे हाथ धोना पड़े। इस पर सिंह उसे नाना प्रकारसे अभयदान दे बारम्बार प्रार्थना करने लगे। तदनुसार गीदड़ने निकटवर्ती हृदसे सिंहके पैर तक एक नाला बनाया। हृदका जल उस नालेके द्वारा सिंहके पैर तक पहुंचते ही वह कीचड़ जलके समान तरल हो गया। बाद सिंह अनायास कीचड़से निकल कर उस गीदड़को धन्यवाद देने लगा। उसी दिनसे सिंह और गीदड़ चिरकाल तक एक ही गुफामें सपरिवार रहने लगे। सिंहने कभी भी उसे मारनेकी चेष्टा न की। इस जन्ममें गौतमने सत्यपारमिताकी रक्षा की थी।

वेश्मान्तरजातक-दानपारमिता।

जम्बूद्वीपकी जयातुरा नगरीमें सञ्ज नामक एक राजा रहते थे। उनकी प्रधान महिषीका नाम था स्पृशती। उनके वेश्मान्तर नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। चैत्यराजकन्या माद्रीदेवीके साथ वेश्मान्तरकी शादी हुई। उसी समय कलिङ्गदेशमें भारी अकाल पड़ा। कलिङ्गराजको मालूम हुआ, कि वेश्मान्तरके जो श्वेत हस्ती है वह पानी बरसा सकता है। प्रवाद है, कि उक्त हस्तीके एक आस्तरणका मूल्य २४ लाख रुपये था। कुछ दिन बाद कलिङ्गराजने आठ ब्राह्मणको जयातुरा नगरी भेजा। उपोषध दिनमें वेश्मान्तर दरिद्र और भिक्षुकको अन्नवस्त्र इत्यादि दान दे रहे थे, उसी समय उक्त आठों ब्राह्मण वहां जा कर बोले "महाराज कुमार! आपके जो श्वेत हस्ती है, उसे ही पानेकी आशासे हम लोग आपके पास आये हैं।" वेश्मान्तरने कहा, 'हे ब्राह्मणगण! इस हाथीकी बात तो दूर रहे, आप लोग मेरे नेत्र हृतपिण्ड इत्यादि जो कुछ चाहें, उसे भी मैं सहर्ष प्रदान करूंगा।' 'हम लोगोंका और कुछ भी प्रार्थनीय नहीं है' ऐसा कह कर वे लोग उक्त हस्तीको ले कलिङ्ग देश लौट गए। नगरवासिगण यह खबर सुन कर बड़े ही दुःखित हुए और सबोंने राजप्रासादमें जा कर राजासे निवेदन किया, 'महाराज! हम लोग श्वेतहस्तीसे अनेक उपकार पाते थे। आपके पुत्रने उक्त हस्ती ब्राह्मणोंको दे कर बड़ा अनिष्ट किया है।' इस पर महाराजने अपने पुत्रको दण्ड देनेकी इच्छा प्रकट की। बाद नगरवासी बोले, 'महाराज! पुत्रको और कोई दण्ड देनेका प्रयोजन नहीं, उन्हें राज्यसे बाहर निकाल देना ही समुचित दण्ड होगा।' तदनुसार वेश्मान्तर वङ्कु नामक पहाड़ पर भेज दिये गए। हजारों मनाही करने पर भी उनकी स्त्री माद्रीने उनका साथ नहीं छोड़ा। इधर महारानी स्पृशती पुत्रकी निर्वासन वार्ता सुन हतचेतन हो पड़ी। बाद महाराजने उन्हें सान्त्वना दे कर कहा, 'मैं कुछ दिनके बाद ही पुत्रको पुनः घर ले आऊंगा।"

जिस समय वेश्मान्तर और माद्रीदेवीने घर छोड़ा, उसी समय उन्होंने अपनी सम्पत्ति अथवा वस्त्रालङ्कारादि दरिद्रोंको दे दिये। वेश्मान्तर सर्वस्व त्याग कर केवल अपनी स्त्री, पुत्र तथा कन्याके साथ एक रथ पर चढ़ वङ्कुगिरिकी ओर चले। उनकी माताने उन्हें जो कुछ दिया था, उन्होंने उसे भी दरिद्रोंको बांट दिया। अन्तमें रास्तेमें दो ब्राह्मण सामने आ वेश्मान्तरसे बोले, 'महाशय! यदि रथ खींचनेवाले ये दोनों घोड़े मिल जाते, तो हम लोग बड़े ही उपकृत होते। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर फिर एक ब्राह्मणने आकर कहा, 'प्रभो! आपका रथ पानेसे ही मेरी दरिद्रताकी कुछ कमी हो जाती।' उक्त ब्राह्मणोंके प्रार्थनानुसार वेश्मान्तरने अपना रथ तथा दोनों घोड़े दे दिये। बाद माद्रीदेवी कन्याको और वेश्मान्तर पुत्रको अपनी गोदमें ले कर पैदल ही चलने लगे। चैत्यदेशके राजाने उन लोगोंको बुलाया, किन्तु वेश्मान्तर उनके यहां नहीं गए।

अनन्तर वे लोग वङ्कुगिरि पहुंचे। यहां विश्वकर्माने उन लोगोंके लिए दो छोटे छोटे घर बनाये। वेश्मान्तर और माद्रीदेवी उन्हीं दोनों घरोंमें संयत भावसे रहने लगीं। सन्तान माताकी अनुपस्थितिमें पिताके साथ रहती थी। इसी तरह सात महीने बीत गए। एक दिन यूनक नामक एक वृद्ध ब्राह्मणने वेश्मान्तरके निकट आ कर कहा, 'महाराज! मैंने बड़े कष्टसे एक सौ रुपये उपार्जन कर एक ब्राह्मणके पास रखे थे, किन्तु उसने कुल रुपये खर्च कर दिये वह बड़ा गरीब था, सुतरां रुपये न लौटा सकनेके कारण उसने मुझे अमित्रतपा नामकी कन्या प्रदान की है। मेरी उक्त पत्नी (अमित्रतपा)

घरके सभी कामोंको अकेली नहीं कर सकती। मैंने सुना है, कि आपके जालीय नामका एक पुत्र तथा कृष्णाजिना नामकी एक कन्या है। मैं इन दोनोंको लेनेकी इच्छा करता हूं। ये मेरी पत्नीके दास और दासी हो कर घरके सभी काम करेंगे और तभी मुझे घरको चिन्तासे फुरसत मिलेगी।' ब्राह्मणकी बात सुन कर वेश्मान्तर बोले, 'महात्मन! मेरी दोनों सन्तान द्वारा यदि आपका प्रयोजन सिद्ध हो, तो मैं खुशीसे इन्हें आपके हाथ सौंप देता हूं।' इतना सुनते ही जालीय तथा कृष्णाजिना जङ्गलकी ओर भाग गई। उनकी माता उस समय फल मूलादिकी तलाशमें बाहर गई हुई थी। वेश्मान्तर दोनों सन्तानको जोरसे पुकारने लगे। जालीय आ कर पिताके पैरों पर गिर पडा और बोला, 'हे पिता! हमारी माता अभी वनके मध्य फल तथा काष्ठकी खोजमें गई हैं, वे जब तक लौट न आवे, तब तक हमें मत छोडिये।'

इस पर भिक्षु ब्राह्मण आगबबूला हो उठे और बोले, 'ऐसा झूठा मनुष्य मैंने अब लों नहीं देखा था। आप संसारमें दयाशील कहलाते हैं, किन्तु मेरी समझमें नहीं आता, कि इन दोनों सन्तानको दे कर भी आप इन्हें नहीं छोडते।'

भिक्षुककी बात सुन कर वेश्मान्तरने पत्नीकी अनुपस्थितिमें ही उन बच्चोंको दे दिया। पर्वतके ऊपर रास्तेमें उन दोनोंको जो तकलीफ झेलनी पडी थी, उसे वेश्मान्तरने अपनी आंखों देखा था। माद्रीदेवीने जंगलसे आ कर जब यह बात सुनी, तब वह फूट फूट कर रोने लगी। इस पर वेश्मान्तरने सान्त्वना देते हुए कहा, 'बुद्धत्व लाभ करना सहज नहीं है। मैं पुत्र तथा कन्याको दान कर यदि दानपारमिता सम्पादन कर सकूं, तो निःसन्देह मुझे सर्वस्व लाभ हुआ। इस तुच्छ दानको देख कर तुम्हें विस्मित नहीं होना चाहिए।'

अनन्तर देवराजने देखा, कि वेश्मान्तर ऐसे दानी हैं, कि वे अपनी स्त्रीको भी वितरण कर सकते हैं। अच्छा मैं इनकी परीक्षा तो लूं। अतएव उन्होंने ब्राह्मणका रूप धारण कर वेश्मान्तरसे कहा, 'महाशय! मैं बूढा और रोगी हो गया हूं—मेरी सेवा शुश्रूषा करनेवाला कोई नहीं है। आपकी पत्नी दासी हो कर यदि मेरी सेवा करती, तो मुझे बडा सुख मिलता।

ब्राह्मणकी बात सुन कर वेश्मान्तरने माद्रीदेवीकी ओर देखा। माद्री देवीने स्वामीका अभिप्राय जान कर कहा, 'यदि मुझे दान कर आप बुद्धत्व प्राप्त कर सकें, तो यह मेरे सौभाग्यकी बात है।'

बाद वेश्मान्तरने उक्त ब्राह्मणसे कहा, 'महाराज! मेरी पत्नी ग्रहण कीजिए, यह सामान्य दान मेरे बुद्धत्वलाभका सहायक हो।' इस पर ब्राह्मणरूपी देवराज बोले, 'हे वेश्मान्तर! मैंने आनन्दके साथ माद्रीदेवीको ग्रहण किया, अब इन पर आपका कोई अधिकार न रहा। मैं इन्हें आपके पास कुछ दिनोंके लिए गच्छित रख जाता हूं। ऐसा कह कर भिक्षुरूपी देवराज अन्तर्धान हो गए।

उधर यूजक नामक ब्राह्मण जालीय और कृष्णाजिनाको लेकर जयातुरा नगरी पहुंचे। सञ्जय अपने पौत्र तथा पौत्रीको पा कर बडे ही प्रसन्न हुए और उस ब्राह्मणको इतना खिलाया, कि जिससे वह कराल कालके गालमें पतित हुआ। सञ्जने बडी धूमधामसे उसकी अन्त्येष्टिक्रिया की। कुछ दिनके बाद बहुत से मनुष्योंको साथ ले सञ्ज वङ्कगिरि पर जा वेश्मान्तर और माद्रिदेवीको घर ले आये। पूर्वोक्त श्वेतहस्तीके प्रभावसे कलिङ्ग देशमें वृष्टि उपजी हुई। बाद उक्त देशवासियोंने उस हाथीको लौटा दिया। वेश्मान्तर, माद्रीदेवी, महाराज सञ्ज, महारानी स्पृशती, जालीय तथा कृष्णाजिना सबके सब फिर एक साथ मिले। वेश्मान्तरने शरीर त्याग कर तुषित नामक स्वर्गमें पुनर्जन्म ग्रहण किया। इसी जन्ममें गौतमने दान पारमिता प्राप्त की थी।

बौद्धग्रन्थमें इसी प्रकार अपरापर पारमिता साधनके सम्बन्धमें अलौकिक गल्प वर्णित हैं। विस्तार हो जानेके भयसे यहां उनका वर्णन नहीं किया गया। बौद्धगण जिस भावमें बुद्धदेवके पूर्वजन्मकी लीला ग्रहण करते हैं, उसे दिखानेके लिए ही ऊपर कई एक कहानी दी गई, अन्यथा इन सब गल्पोंके साथ शाक्यबुद्धके जीवनेतिहासका कोई सम्पर्क है ऐसा प्रतीत नहीं होता।

बुद्धदेवके पूर्वपुरुष।

महावस्तु नामक ग्रन्थमें कोलिय-राजवंशकी उत्पत्ति

वर्णन अध्यायमें बुद्धदेवके पूर्वपुरुषके विषयमें निम्न लिखित वृत्तान्त दिया है,—

सम्मत नामके कोई एक प्रसिद्ध राजा थे। उनके पुत्रका नाम था कल्यान। कल्यानके पुत्र रव, इनके पुत्र उपोषध और उपोषधके पुत्र मान्धाता हुए। राजा मान्धाताके वंशने पुत्रपौत्रादिक्रमसे हजारो वर्ष तक राज्य किया था। पश्चिम साकेत नगरमें सुजात नामक इक्ष्वाकुवंशीय राजा राज्य करते थे। उनके ओपुर, निपुर, करकण्डक, उल्कामुख तथा हस्तिकशीर्ष नामक पांच पुत्र एवं शुद्धा, विमला, विजिता, जला और जली नाम की पांच कन्या थी।

राजा सुजात जेन्ती (जयन्ती) नामक किसी विला सिनीके प्रेममें फंस गए। उसके गर्भसे जेन्त (जयन्त) नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक दिन राजाने खुश हो कर जेन्तीसे कहा, 'मैं तुम्हें मुंहमांगा वर प्रदान करूंगा। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वही वर मांगो। इस पर जेन्तीने कहा, 'महाराज! पहलेमें अपने मातापितासे पूछ लूं, वे जो कुछ कहेंगे, वही मेरा अभीष्ट होगा।' बाद जेन्ती अपने मातापिता प्रभृति स्वजनोंके पास जा कर बोली, 'राजाने मुझे मुंहमांगा वर प्रदान करनेकी प्रतिज्ञा की है अब आप सबोंकी जो आज्ञा हो वही वर मैं मांगू।' उस समय जिसका जो अभिमत हुआ, उसने वही कहा। कोई बोला, 'जेन्ती! तुम एक उत्कृष्ट ग्रामका आधिपत्य मांग लो, इत्यादि। बाद पण्डिता निपुणा तथा मेधाविनी किसी रमणीने कहा, 'जेन्ती! तुम राजाकी विलासिनी स्त्री हो। राजाने तुम्हें वर मांगनेको कहा है, जो तुम्हारे सौभाग्यकी बात है। वे बड़े ही सत्यवादी हैं, उनकी प्रतिज्ञा कभी अन्यथा नहीं होती। तुम उनसे यही वर मांगो, कि महा राज! आप अपनी क्षत्रिया स्त्रीके गर्भजात पांच कुमारों को राज्यसे निर्वासित कर मेरे गर्भसम्भूत जेन्त (जयन्त) नामक पुत्रको यौवराज्य पर अभिषिक्त करें। मेरी आपसे यही एकान्त प्रार्थना है, कि आपके मरने पर जिससे मेरा पुत्र साकेत महानगरका राजा हो सके, उसीका विधान कीजिए।' जेन्तीने यही वर मांगा। राजा सुजात जेन्तीकी इस प्रार्थनाको सुन कर बड़े दुःखित हुए। वे अपने पांचों पुत्रोंको बहुत प्यार करते थे। 'अतएव उन्हें किस प्रकार राज्यसे निकाल दूंगा' इसका निश्चय नहीं कर सके। इधर जेन्तीको प्रार्थित वर प्रदान नहीं करनेसे उनकी प्रतिश्रुति भङ्ग होती थी। बाद राजाने जेन्तीसे कहा, 'मैं तो तुम्हें वही वर देता हूं, किन्तु नगर तथा देशकी प्रजाओंको यह बात मालूम हो गई है, कि मैं अपने पांचों पुत्रको निर्वासित कर तुम्हारे पुत्रको युव- राज बनाऊंगा। अब उन लोगोंने भी उन्हींके साथ वन जानेकी प्रतिज्ञा की है।' राजाने भी प्रजाको ऐसा करनेसे नहीं रोका। प्रजागण भी बाल बच्चोंको साथ ले सचमुच उक्त पांच कुमारोंके साथ चल चली। वे सबके सब साकेत नगरसे बाहर जा कर उत्तरकी ओर बढ़े। कुछ दिन बाद कोशिकोशलके राजा उन सबोंको अपने राज्यमें ले गए। वे लोग कुछ दिन तक वहीं ठहरे। अनंतर कोशिकोशलके राजाने देखा, कि ये सब मनुष्य इन पांच कुमारोंके प्रति बड़े ही अनुरक्त हैं। यदि ये लोग यहां ज्यादा दिन तक रह जाय, तो हो सकता है, कि मुझे मार कर इन्हीं कुमारोंको राजा बनावें। इस प्रकार ईर्षाके वशीभूत हो कर राजाने पञ्च कुमारके साथ उस झुण्डको कोशिकोशल राज्यसे विदा किया।

अनन्तर वे लोग हिमालय पर्वतके प्रत्यन्त प्रदेशमें शाकोटवनखण्डस्थित ऋषि कपिलके आश्रममें पहुंचे और वहीं रहने लगे। वहां उन्होंने अपनी बहन, भाजी इत्यादिके साथ एक दूसरेका विवाह किया। जब राजा सुजातने वणिकोंसे यह सुना, कि उनके पुत्र अनुहिमवत् प्रदेशके शाकोटवनखण्डस्थित ऋषि कपिलके आश्रममें रहते हैं और उन लोगोंने वहीं पर परिणय कार्य सम्पन्न किया है, तब उन्होंने अपने पुरोहित और मन्त्रीसे पूछा, 'कुमारोंने जिस रीतिके अनुसार विवाह किया है, वह शक्य अर्थात् धर्मसङ्गत है या नहीं?' इस पर पुरोहित ब्राह्मणपण्डितोंने कहा, 'महाराज! कुमारगण अभी जिस अवस्थामें रहते हैं, उसमें उक्त अनुरूप विवा- हादि शक्य अर्थात् सङ्गत है।' ब्राह्मणोंने उस कार्यको शक्य बतलाया था, इसीलिए कुमारगण 'शाक्य' कह लाये और उसी समयसे वे शाक्य नामसे प्रसिद्ध हुए।

तदनन्तर उन शाक्य कुमारोंने ऋषि कपिलकी अनुमति ले कर एक महानगर बसाया। कपिलऋषिने उन्हें वास स्थान प्रदान किया था, इसी कारण वह नगर कपिल वस्तु नामसे प्रसिद्ध हुआ। कुमारों मेंसे ओपुर सबसे बड़े थे, वे ही नगरके राजा हुए। राजा ओपुरके पुत्र निपुर निपुरके पुत्र करकण्डक, करकण्डकके पुत्र उल्कामुख, उल्कामुखके पुत्र हस्तिकशीर्ष तथा हस्तिकशीर्षके पुत्र सिंहहनु थे। सिंहहनुके शुद्धोदन, धौतोदन, शुक्लोदन और अमृतोदन नामके चार पुत्र तथा अमिता नामकी एक कन्या हुई।

अमिता बड़ी खूबसूरत थी, किंतु कुछ दिनके बाद वह कोढ़िन हो गई। चिकित्सकों ने आलेपन, वमन, विरेचन इत्यादि अनेक प्रकारके प्रतीकारकी व्यवस्था की, पर रोग जैसेका तैसा ही बना रहा। धीरे धीरे अमिताके समूचे शरीरमें फोड़ा निकल आया और सभी मनुष्य उससे घृणा करने लगे। बाद उसके भाइ उसे रथ पर बिठा कर हिमालयके उत्सङ्ग पर्वतकी गुफामें ले गए। वहां उन्होंने एक बड़ा गड्ढा खोद कर अमिताको उसमें बिठा दिया। अनन्तर गड्ढेमें प्रभूत खाद्य, उदक, उपास्तरण, प्रावरण इत्यादि रख पत्थरोंसे दरवाजा बन्द कर वे सब लौट आये। चारों ओर बन्द रहनेके कारण गड्ढेमें बड़ी गर्मी पड़ने लगी। उस आवृत स्थानका वास तथा वहांकी उष्णताका सेवन कर अमिता कुष्ठव्याधिसे विमुक्त हो गई। उसके शरीरमें एक भी फोड़ा न रह गया। उसने अमानुषिक सौन्दर्य प्राप्त किया। मनुष्यकी गन्ध पा कर एक बाघ वहां आया और अपने पैरोंसे दरवाजे परके पत्थरों को हटाने लगा।

उसके समीप ही कोल नामक एक राजर्षि रहते थे। उन्होंने पांच प्रकारको अभिज्ञा तथा चार प्रकारके ध्यान प्राप्त किये थे। उनका आश्रमपद फल, मूल, पत्र, पुष्प और जलसे समृद्ध तथा विभूषित था। उस ऋषिको आश्रमके चारों ओर घूमते हुए देख कर बाघ डरके मारे भाग गया। ऋषिने गड्ढेके पास जा कर उसका दरवाजा खोल दिया। वहां उस परम रमणीया शाक्यकन्याको देख कर उन्होंने पूछा, 'तुम कौन हो?' इस पर अमिताने सारा हाल कह सुनाया। परम सौन्दर्यशालिनी अमिताको देख कर ऋषिके अन्तःकरणमें उत्कट अनुराग उत्पन्न हुआ। उन्होंने सोचा* 'क्या संसारमें ऐसा कोई है जो चिर ब्रह्मचारी हो तथा जिसके हृदयमें आसक्ति दूर तक भी न गई हो! काठमें जिस प्रकार आग छिपी रहती है, उसी प्रकार ब्रह्मचारियोंके हृदयमें अनुराग यदि प्रच्छन्न भावमें विद्यमान है और मौका मिलते ही वह अनुरागरूप आशीविष प्रकुपित हो जाता है।

बाद वह राजर्षि शाक्यकन्याके सहवाससे ध्यान तथा अभिज्ञासे भ्रष्ट हुए। वे उस कन्याको अपने आश्रममें ले गए। उक्त कोल ऋषिके औरस और शाक्यकन्या अमिताके गर्भसे बत्तीस पुत्र उत्पन्न हुए। वे सभी देखनेमें बड़े ही सुन्दर और अजिनजटा धारण किये हुए थे। अनन्तर अमिताने अपने पुत्रोंसे कहा, 'तुम लोगोंके मातामह कपिलवस्तु नगरके राजा हैं, अतएव तुम लोग वहीं जाओ।' मातापिताकी अनुमति ले कर कुमारोंने कपिलवस्तु नगरकी ओर यात्रा कर दी। वहांके शाक्योंने ऋषिकुमारोंसे पूछा, 'आप लोग कौन हैं और कहांसे आये हैं?' इस पर वे लोग बोले, 'अनुहिमवत प्रदेशमें कोल नामक जो राजर्षि रहते हैं हम लोग उन्हींके पुत्र तथा शाक्यराज सिंहहनुके दौहित्र हैं। हमारी माता सिंहहनुकी लड़की है।' शाक्यगण यह सुन कर बड़े प्रसन्न हुए। जब उन्होंने सुना, कि जिस कुष्ठरोग ग्रस्ता अमिताको निर्वासन किया था, वह रोगसे निर्मुक्त हो गई और उसीके गर्भसे इन ऋषिकुमारोंकी उत्पत्ति हुई है, तब उनके आनन्दकी सीमा न रही। उन्होंने कुमारों को प्रचुर दान दिया। शाक्यकन्याओंके साथ उनका विवाह हुआ। कोल नामक ऋषिके औरससे उनका जन्म हुआ था इसीलिए वे लोग कोलियवंश नामसे प्रसिद्ध हुए।

शाक्योंके देवदह नामक एक जनपद था। वहां सुभूति नामक एक समृद्धिशाली शाक्यराजा रहते थे।

---

* "किं नापि तावच्चिरब्रह्मचारी न चास्य रागानुशयासमुद्धतो।
पुनाऽपि सा रागविषा प्रकुप्यति तिष्ठ यथा काष्ठगतं अनुहजम्॥"

(अवदानकल्पलता, महावस्तु, जातक, महावग्ग, बुद्धचरित-काव्य इत्यादि ग्रन्थोंमें भी ऐसी ही आख्यायिका वर्णित है।

पूर्वोक्त कोलियवंशकी किसी कन्याके साथ उनका विवाह हुआ। सुभूतिके माया, महामाया, अतिमाया, अनन्तमाया, चूलीया, कोलीसोवा तथा महा प्रजावती नामकी सात कन्या उत्पन्न हुई। पहले ही कहा जा चुका है, कि सिंहहनु कपिलवस्तुके सिंहासन पर अधिष्ठित थे। उनके शुद्धोदन, शुक्लोदन, धौतोदन और अमृतोदन नामक चार पुत्र तथा अमिता नामकी एक कन्या थी। सिंहहनुके मरने पर शुद्धोदन कपिलवस्तुके सिंहासन पर बैठे। पूर्वोक्त देवदहके राजा सुभूतिके जो सात कन्याएं थीं उनमेंसे माया और महाप्रजावतीको शुद्धोदनने व्याहा।

शाक्यबुद्धकी जीवनी।

वैशाख मासकी पूर्णिमा तिथिको * मायादेवीके गर्भका सञ्चार हुआ। तदनन्तर दश महीनेके बाद माया देवीने कपिलवस्तु नगरके समीप लुम्बिनी नामक परम रमणीय उद्यानमें एक पुत्र प्रसव किया। पुत्रके उत्पन्न होते ही शुद्धोदन सर्वार्थ ससिद्ध हुए थे, इसीलिए उन्होंने उसका नाम सर्वार्थसिद्ध या सिद्धार्थ रखा। सिद्धार्थके जन्म लेनेके सात दिन बाद ही मायादेवी इस लोकसे सिधार गई। कुमारके पालन पोषणका भार उसकी मासी महाप्रजावती गौतमीके हाथ सौंपा गया।

बाल्यजीवन।

हिमालय पर्वतके पास ही असित नामक एक महर्षि वास करते थे। इस समय वे अपने भाजे नरदत्तके साथ कपिलवस्तु नगर पधारे। सिद्धार्थमें बारह प्रकारके महापुरुष लक्षण और अस्सी प्रकारके अनुव्यञ्जन देख कर उन्होंने शुद्धोदनसे कहा, 'यह बालक स सारा श्रममें अवस्थान करे, तो राजचक्रवर्त्ती अथवा यदि गृह त्यागी हो, तो सम्यक सम्बोधि प्राप्त करेगा।' बाद ऋषि असित अपने आश्रमको चल दिये।

कुछ दिन बाद सिद्धार्थ गुरुके निकट भेजे गए। उन्हें विश्वामित्र नामक उपाध्यायसे नानादेशीय लिपि शिक्षा मिली। गुरुके यहां जानेके पहले ही उन्होंने निम्न लिखित चौंसठ प्रकारकी लिपि सीखी थी। यथा—ब्राह्मी, खरोष्ठी अङ्गलिपि, पुष्करसारी वङ्ग-लिपि, मगधलिपि माङ्गल्यलिपि, मनुष्यलिपि, अगुलीयलिपि, शकारिलिपि, ब्रह्मलिपि, द्राविडलिपि, किनारीलिपि, दक्षिणलिपि, उग्रलिपि, सख्यालिपि, अनुलोमलिपि, अद्ध धनुर्लिपि, दरदलिपि, खास्यलिपि, चीनलिपि, हूनलिपि, मध्याक्षरविस्तरलिपि, पुष्पलिपि, देवलिपि, नागलिपि किन्नरलिपि, महोरगलिपि, असुर लिपि, गरुडलिपि, मृगचक्रलिपि, चक्रलिपि, वायुमरु-लिपि, भौमदेवलिपि, अन्तरीक्षदेवलिपि, उत्तरकुरुद्वीप लिपि, अपरगौडलिपि, पूर्वविदेहलिपि, उत्क्षेपलिपि, निक्षेपलिपि, विक्षेपलिपि, प्रक्षेपलिपि, सागरलिपि, वज्र लिपि, लेखप्रतिलेखलिपि, अनुद्रुतलिपि, शास्त्रावर्त्तलिपि, गणनावर्त्तलिपि उत्क्षेपावर्त्तलिपि, अभ्याहारिणीलिपि, सर्वरुत्सङ्ग्रहारिणीलिपि, विद्यानुलोमालिपि, विमिश्रित लिपि, ऋषितपस्तप्ता, रोचमाना, धरणीप्रेक्षणलिपि, सर्वौषधिनिष्यन्दालिपि, सर्वसारसंग्रहणी और सर्वभूत रुतग्रहणी।

धीरे धीरे उन्होंने नाना प्रकारकी विद्या सीख ली और वेद तथा उपनिषदमें विशेष पाण्डित्य लाभ किया। कुछ दिन बाद सिद्धार्थका लिखना पढ़ना समाप्त हुआ और वे राजधानी कपिलवस्तु लौटे। शुद्धोदनने दण्ड पाणि शाक्यकी कन्या गोपके साथ उनका विवाह कर दिया। सिद्धार्थने विवाहके समय वेद, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, शिक्षा, गणित, सांख्य, योग, वैशेषिक इत्यादि शास्त्रोंमें विशेष पारदर्शिता दिखाई थी।

बचपनसे ही सिद्धार्थको ससारसे वैराग्य उत्पन्न हुआ था। जिस समय वे वर्णमाला सीखते थे उसी समय आकार उच्चारित करते ही 'अनित्य सर्वससार' ऐसा वाक्य उन्हें सुनाई पड़ा था। एक दिन वे कृषि ग्राम देखने गए और वहीं पर एक वृक्षके नीचे अकेले बैठ कर ध्यानमग्न हुए।

ससारवैराग्यका कारण।

अनन्तर एक दिन उन्होंने उद्यान देखनेकी इच्छा प्रकट करते हुए अपने सारथिसे रथ तैयार करनेको कहा। सारथिने भी वैसा ही किया। रास्तेमें एक जराजीर्ण वृद्ध

* यह वृत्तान्त ललितविस्तर, बुद्धचरितकाव्य, सद्धर्मपुण्डरीक, महावंश रतन इत्यादि ग्रंथके अवलम्ब पर लिखा गया है।

मनुष्यको देख कर सिद्धार्थने सारथिसे पूछा, 'सारथे! क्यों यह मनुष्य लाठीके बल झुक कर इतनी तकलीफसे चलता फिरता है? उसका शरीर दुर्बल और स्थैर्य विहीन तथा मांस, रुधिर और त्वक् सभी सूख गए हैं। देहकी शिराएं भी दिखाई पड़ती हैं। इसका सिर उजला, दांत विरल और अङ्ग प्रत्यङ्ग अत्यन्त कृश हो गए हैं, इसका क्या कारण है?

इस पर सारथिने कहा, 'हे देव! यह मनुष्य बुढ़ापेके द्वारा अभिभूत, दुःखित और बलवीर्य हीन हो गया है। इसकी सभी इन्द्रियां क्षीण हो गई हैं। आत्मीयगण द्वारा परित्यक्त हो यह व्यक्ति अभी निःसहाय हो गया है। वनमें जिस प्रकार सूखी लकड़ी व्यर्थ पड़ी रहती है यह मनुष्य भी उसी प्रकार अकर्मण्य हो काल यापना करता है।'

सिद्धार्थने फिर भी सारथिसे पूछा,- जराग्रस्त होना क्या इस मनुष्यका कुलधर्म है अथवा संसारके सभी मनुष्योंकी ऐसी ही अवस्था होती है। जल्दी यथार्थ उत्तर दो, मैं इसका कारण खोज निकालूंगा।

तब सारथिने कहा, 'देव! यह इस मनुष्यका कुल धर्म या राष्ट्रधर्म नहीं है, संसारके सभी मनुष्य यौवन और जरा द्वारा अभिभूत होते हैं। आप तथा आपके पिता, माता, भाई और कुटुम्ब परिवार आदि कोई भी बुढ़ापेके हाथसे छुटकारा नहीं पा सकते। मनुष्यकी यही एक गति है।

इस पर सिद्धार्थ बोले, 'हे सारथे! सभी मनुष्य निर्बोध हैं, उनकी बुद्धिको धिक्कार है, क्योंकि वे जवानी के मदसे उन्मत्त हो कर बुढ़ापे पर ध्यान नहीं देते। तुम रथ लौटाओ, मैं उसी जराग्रस्त व्यक्तिको पुनः देखूंगा। मुझे भी एक दिन इसका शिकार बनना पड़ेगा। अतएव इस क्रीडासुखसे क्या प्रयोजन?'

एक समय सिद्धार्थ नगरके दक्षिण द्वार हो कर उद्यान चले। उसी समय उन्होंने एक रोगग्रस्त मनुष्यको देख कर सारथिसे पूछा, 'हे सारथे! क्यों यह मनुष्य अपने कुत्सित् मलमूत्रमें पड़ा हुआ है? इसका शरीर पीला पड़ गया है, सभी इन्द्रियां विकल हो गई हैं तथा सर्वाङ्ग सूख गया है, यह बड़ी तेजीसे सांस लेता और छोड़ता है और बड़े कष्टसे समय व्यतीत करता है, इसका क्या कारण?'

सारथिने जवाब दिया,—प्रभो! यह मनुष्य रोग ग्रस्त हो कर अत्यन्त दुःखित है। इसकी मृत्यु निकट आ गई है। इसके आरोग्यलाभकी कोई सम्भावना नहीं। इसकी ताकत बिलकुल जाती रही। रक्षा पानेकी कोई आशा न देख कर यह मनुष्य निरावलम्ब हो गया है।'

तब सिद्धार्थने कहा, 'आरोग्य स्वप्नक्रीडाकी तरह अलीक है, व्याधिसमूह अत्यन्त भयङ्कर है। क्या कोई विज्ञ पुरुष ऐसी अवस्था देख आमोद प्रमोदमें मत्त हो कर सांसारिक सुखका अनुभव कर सकता है?'

एक समय जब सिद्धार्थ नगरके पश्चिम द्वार हो कर उद्यानकी ओर जा रहे थे, तब एक मृतकको देख कर उन्होंने सारथिसे पूछा,—'हे सारथे! क्यों इस मनुष्यको लोग चारपाई पर ले जा रहे हैं। इसके बाल चारों ओर बिखरे हुए हैं तथा सभी मनुष्य सिर पर धूल फेंकते हैं और छाती पीट पीट कर विलाप करते हैं, इसका क्या कारण है?

सारथिने उत्तर दिया, 'हे देव! जम्बूद्वीपमें इसकी मृत्यु हुई है। यह मनुष्य फिर भी अपने पिता, माता, पुत्र और पत्नी प्रभृतिको नहीं देख सकता। घर, पिता, माता, मित्र तथा बन्धु आदिको छोड़ कर यह परलोक जाता है।'

तब सिद्धार्थने कहा, 'यौवनको धिक्कार है, क्योंकि, जरा इसके पीछे ही लगी रहती है। आरोग्यको धिक्कार है, कारण, विविध व्याधि अवश्यम्भावी है। जीवनको धिक्कार है, क्योंकि मनुष्य चिरस्थायी नहीं है। विज्ञ पुरुषको धिक्कार है, कारण वे अलीक आमोद प्रमोदमें मत्त हैं। यदि जरा, व्याधि तथा मृत्यु न होती, तो मनुष्यको पञ्चस्कन्ध धारण कर इस महा दुःखका भोग नहीं करना पड़ता। उन तीनोंके नित्य सहचर हो कर हम लोगोंको जो तकलीफ उठानी पड़ती है, उससे आश्चर्यकी बात और क्या है? अतएव मैं घर लौट कर दुःखसे छुटकारा पानेका उपाय करूंगा।'

किसी समय सिद्धार्थ नगरके उत्तर द्वार हो कर उद्यानकी ओर जा रहे थे कि इतनेमें उन्होंने एक शान्त

दान्त संयत तथा ब्रह्मचारी भिक्षुकको देख कर सारथिसे पूछा, 'हे सारथे! यह मनुष्य कौन है? ये शान्ति शील तथा प्रसान्तचित्त हैं, इनकी आखे स्थिर हैं और गेरुआ वस्त्र पहने हुए हैं। ये न तो उद्धत हैं और न अवनत। ये भिक्षा पात्र ले कर शान्तभावसे विचरण करते हुए अन्तकालकी प्रतीक्षा करते हैं। इनका पूरा हाल मुझे कहो।'

इस पर सारथि बोला, 'हे देव! यह मनुष्य भिक्षु हैं। इन्होंने कामसुखका परित्याग कर विनीत आचरण अवलम्बन किया है। प्रव्रज्या ग्रहण कर ये आत्माकी शान्तिके अन्वेषणमें लगे हैं तथा आसक्तिहीन और विद्वेषविहीन हो कर सामान्य आहार सग्रह करते हैं।'

तब बोधिसत्त्व बोले,—तुमने जो कुछ कहा, यह अक्षरश सत्य है। ज्ञानी मनुष्य हमेशा प्रव्रज्याश्रमकी प्रशंसा करते आए हैं। इसी आश्रमका अवलम्बन कर अपनी भलाईके साथ साथ दूसरे जीवोंकी भी भलाई की जा सकती है और तभी मनुष्य सुखसे जीवन व्यतीत कर सकता है। सुमधुर अमृत अर्थात् मुक्ति इसी आश्रमका फल है।

अभिनिष्क्रमण।

अपने पुत्रको इस प्रकार विषय नैराश्यायुक्त देख शुद्धोदनने उन्हे गृहस्थाश्रममें रखनेकी अनेक चेष्टा की, किन्तु सब व्यर्थ। सिद्धार्थने गृहस्थाश्रमका परित्याग करनेका सकल्प कर लिया। उन्होंने दो पहर रातको पिताके शयनागारमें आ कर उनसे कहा, 'हे पिता! आज मैं घर छोड चला जाऊ गा।'

सिद्धार्थका चित्त उस समय चार प्रकारके प्रणिधान में निमग्न था। यथा—ससारका महाचारक बन्धन तोड कर मनुष्यको उन्मुक्त करना, ससारके महान्धकार गहनसे निवारण करनेके लिए उनके प्रज्ञाचक्षुका उत्पादन करना, अहकार ममकाराभिनिविष्ट मनुष्योंको आर्य मार्गोपदेश प्रदान करना और जो जीव धर्माधर्मके वशीभूत हो कर इस लोकसे परलोक जाते तथा परलोकसे इस लोकमें आते हैं, उन्हें प्रत्यावर्त्तन क्लेशसे बचाना।

एक दिन नगरसे बाहर जानेके लिये सिद्धार्थने छन्दक नामक अपने सारथिको रथ सज्जित करनेका आदेश दिया। इस पर छन्दक बोला, 'हे प्रभो! अभी आपके एक पुण्यलक्षण पुत्र उत्पन्न हुआ है। वह चारों द्वीपका अधिपति होगा। आप विपुल सम्पत्तिके मालिक हैं। कपिलवस्तु राज्य सुसमृद्ध तथा रमणीय है। हे देव! मुनिगण दूसरे जन्ममे ऐसी सम्पत्तिका भोग करने कठोर तपस्या किया करते हैं। आप सम्पत्तिलाभ कर के भी उसका परित्याग क्यों करने चले हैं? और भी आपकी पत्नी अत्यन्त रमणीया, विकसित पद्मकी तरह लोचनविशिष्टा, विचित्र हारशोभिता, मणिरत्नभूषिता तथा मेघनिर्मुक्त आकाशमे समुदित विद्युत्की जैसी प्रभाशालिनी, मनोहरा एव शयनगता हैं—ऐसी पत्नीकी उपेक्षा न करें।'

इस पर सिद्धार्थ बोले,—हे छन्दक! मैंने रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द इत्यादि अनेक प्रकारकी काम्य वस्तुका इस लोक तथा देवलोकमें अनन्त कल्प तक भोग किया है, किन्तु मुझे किसीसे भी तृप्ति न मिली। मैंने घर छोड देनेकी प्रतिज्ञा की है। वज्र, कुठार, शर, प्रस्तर, विद्युत्प्रभाकी तरह प्रज्वलित लौह, आग्नेय गिरिशिखर इत्यादि मेरे सिर पर क्यों न गिर जायं, पर तो भी गृहास्थाश्रममें पुन मेरी अनुरक्ति नही करा सकते हो।

*सिद्धार्थको दृढप्रतिज्ञ देख कर छन्दकने रथ सजाया।* दोपहर रातको पुष्यनक्षत्रके योगमें सिद्धार्थ घर छोड कर चल दिये।

वे यथाक्रम शाक्य, कोल्य, मल्ल और मैनेय प्रभृति देश पार कर गए। छ योजन जानेके बाद सुबह हुई। बादमें उन्होंने अपने शरीर परके आभरण उतार कर छन्दकको घर लौट जानेकी आज्ञा दी। छन्दक जहासे लौटा था, वहा एक चैत्य सस्थापित हुआ जो आज तक भी छन्दकनिवर्त्तन नामसे प्रसिद्ध है।

मस्तक-मुण्डन।

तदनन्तर उन्होंने अपना मस्तक मुडवा लिया। जहा पर उनकी चूडा फेंकी गई थी, वहा एक चैत्य सस्थापित हुआ जो आज भी चूडाप्रतिग्रहण नामसे विख्यात है। बाद उन्होंने कषाय वस्त्र पहने हुए एक व्याधको देखा और उसके वस्त्रसे अपना कौषिक पट्ट-

वस्त्र बदल लिया। जिस स्थान पर उन्होंने काषायवस्त्र धारण किया था, वहां पर भी एक चैत्य स्थापित हुआ जो आज भी काषायग्रहण नामसे मशहूर है।

छन्दक सिद्धार्थका आभरण ले कर राजधानी कपिलवस्तु पहुंचा। उससे सारा हाल सुन कर शुद्धोदन, महाप्रजावती प्रभृति सभी गंभीर शोकसागरमें डूब गए। सिद्धार्थके पुन घर लौटनेकी सम्भावना न देख उन्होंने उनके सभी आभरण पुष्करिणीमें फेंक दिये। वह पुष्करिणी आज भी आभरण नामसे विख्यात है।

गोपाने प्रातःकाल उठ कर जब सुना, कि उनके स्वामीने संसाराश्रमका त्याग किया है, तब वह पृथिवी पर गिर पड़ी और अपना केश काट कर शरीर परके सभी अलङ्कार उतार दिये। वे कहने लगीं,—हाय! मेरे परिणायक मुझे छोड़ कर चले गए, मैं जीवनकी सभी प्रकारकी प्रिय वस्तुसे आज ही वियुक्त हुई।

दीक्षा-ग्रहण।

बोधिसत्त्व छन्दकको लौटा कर यथाक्रम शाक्या और पद्मा नामकी दो ब्राह्मणीके आश्रममें अतिथि हुए। बाद वे रैवत नामक महर्षिके आश्रममें पहुंचे और अन्तमें वैशाली महानगरी गए। यहां आराड कलाम नामक किसी उपाध्यायसे उनकी भेंट हुई। उक्त उपाध्यायके तीन सौ चेले थे। बोधिसत्त्वने भी उनका शिष्यत्व ग्रहण कर कुछ दिन तक ब्रह्मचर्यका अनुष्ठान किया। आराड कलाम अपने शिष्योंको आकिञ्चन्यायतन धर्मकी शिक्षा देते थे। उनका कहना था, कि इस प्रकार विषय वासनासे विरहित हो कर सर्वत्यागी होना ही परम मुक्ति है, किन्तु बोधिसत्त्व इस शिक्षासे विशेष तृप्ति लाभ न कर सके।

अनन्तर वे मगधके अन्तर्गत पाण्डव पर्वतराजके समीप विहार करने और राजगृह नगरमें भिक्षा मांग कर अपना गुजरा चलाने लगे। राजगृहके सभी मनुष्य उन्हें देख कर बड़े ही विस्मित हुए। उन्होंने वहांके राजा बिम्बिसारके पास जा कर कहा,—महाराज! स्वयं ब्रह्मा, देवराज इन्द्र अथवा सूर्य आपके नगरमें भिक्षा मांगते हैं। इस पर बिम्बिसार बहुतसे मनुष्योंको साथ ले पाण्डव पर्वतराजके समीप गए।

मगधराजने बोधिसत्त्वसे कहा, 'आपके दर्शन पा कर मैं कृतकृत्य हो गया। कृपया आप मेरे सहायक हों, मैं आपको सारा राज्य दान करता हूं—आप यथेष्ट काम्यवस्तुका भोग करें।

उपकारी तथा दयार्द्रचित्त बोधिसत्त्व मधुर, शुद्ध दिल और प्रेमपूर्ण वाक्यमें बोले, 'हे धरणीपाल! आपका सर्वदा मङ्गल हो, मैं किसी भी कामसुखका प्रार्थी नहीं। कामना विषतुल्य और अनंत दोषका आकर है। कामके वशीभूत हो कर मनुष्य नरक, प्रेत, तिर्यग् इत्यादि योनिमें जन्म लेते हैं। ज्ञानियोंने कामनाकी सब जगह निन्दा की है। मैंने उसे श्लेष्मपिण्ड जैसा जान छोड़ दिया है।'

इस पर बिम्बिसारने पूछा,—हे भिक्षो! आप किस देशसे आये हैं? आपका जन्म कहां हुआ और आपके माता पिता कहां रहते हैं?

बोधिसत्त्वने उत्तर दिया,—हे राजन्! शाक्योंका सुसमृद्धिशाली कपिलवस्तु एक नगर है। वहींके राजा शुद्धोदन मेरे पिता हैं। बुद्धत्वलाभकी आशासे मैंने प्रव्रज्या ग्रहण की है।

तब बिम्बिसार बोले,—आपके दर्शनसे हमें बड़ा आनन्द हुआ। हम लोग आपके ही पिताके शिष्य हैं। हे स्वामिन्! यदि आप बुद्धत्व प्राप्त करें, तो मैं आपके ही धर्मका आश्रय लूं। यह कह कर बिम्बिसार बोधिसत्त्वके चरणोंकी वन्दना कर राजगृहको लौट आये।

उस समय रुद्रक नामक कोई उपाध्याय राजगृहमें अध्यापना करते और अपने शिष्योंको 'नैव संज्ञा नासंज्ञायतन समापत्तिके उपाय' की व्याख्या देते थे। उनका कहना था, कि श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञा इन पांचोंका अवलम्बन कर मोक्षमार्गका पथिक होना उचित है। मुक्तिलाभ होनेमें ज्ञान और अज्ञान दोनोंका अतिक्रम किया जा सकता है। बोधिसत्त्वने कुछ समय तक रुद्रकसे उपशिक्षा प्राप्त की। इसके बाद वे मगधके गयाशीर्ष नामक पर्वत पर गए और वहां तीन प्रकारकी आध्यात्मिक उपमा उनके मनमें उदित हुई। इन्होंने कहा, कि जिसके काम्य वस्तु प्रिय

यक राग, तृष्णा या पिपासाकी निवृत्ति नहीं हुई है, वह कभी भी आन्तरिक तथा शारीरिक दुःखसे निर्मुक्त नहीं हो सकता। यदि कोई मनुष्य आग जलानेकी इच्छासे भीगी लकड़ीको पानीमें डुबो रखे और फिर उसी लकड़ीको भीगी अरणीसे रगड़े, तो वह उससे कभी भी आग नहीं निकाल सकता। उसी प्रकार जिसका चित्त रागादि द्वारा अभिभूत है, वह कदापि ज्ञानज्योति लाभ नहीं कर सकता। यही उपमा बोधिसत्त्वके मनमें पहले पहल उदित हुई। बाद उन्होंने सोचा, कि जो भीगी लकड़ीको जमीन पर रख कर भीगी अरणीसे उसे रगड़ता है, वह भी जिस प्रकार अग्नि उत्पादन करनेमें समर्थ नहीं होता उसी प्रकार जिसका हृदय रागादिद्वारा अभिषिक्त है, उसे भी ज्ञान ज्योति नहीं मिलती यही दूसरी उपमा हुई। अनन्तर उनके मनमें यह उत्पन्न हुआ, कि जो सूखी लकड़ीको जमीन पर रख कर सूखी अरणीसे रगड़ता है, वह उससे अनायास आग जला सकता है इसी तरह जिसके चित्तसे रागादि बिलकुल चला गया है, वही सिर्फ ज्ञानाग्नि लाभ करनेमें समर्थ होता है। यही तीसरी उपमा कहलाई।

इसके बाद उन्हें गया प्रदेशमें उरुविल्वा ग्रामके समीप नैरञ्जना नामकी एक नदी मिली। उस रमणीय नदीके किनारे बैठ कर वे सोचने लगे, कि वर्त्तमान युगमें जम्बूद्वीप पांच प्रकारके पापोंका कलुषित है। अभी मैं जम्बूद्वीपके मनुष्योंको किस प्रकार धर्मकार्यमें अभिनिविष्ट करूं, यही मेरा चिन्तनीय विषय है। इस प्रकार सोचते हुए बोधिसत्त्व छः वर्षव्यापी तपस्यामें प्रवृत्त हुए। सबसे पहले उन्होंने आस्फानक ध्यानका अनुष्ठान किया। जिस प्रकार बलवान् मनुष्य दुर्बलके ऊपर अनायास ही शासन कर सकता है, उसी प्रकार वे चित्त तथा देहको संयत करने लगे। जिस समय बोधिसत्त्व उक्त ध्यानमें निमग्न थे, उस समय उनके मुंह और नाकसे सांसका आना जाना तो बिलकुल बन्द था, परन्तु उनके कर्णछिद्रसे बड़ी आवाज निकलने लगी थी। धीरे धीरे वह छिद्र भी बन्द हो गया। मुंह, नाक और कानके छेदोंका बन्द होना ही था, कि सांस ऊपरकी ओर चली और मस्तक भेद कर बाहर निकल गई। बाद उन्होंने आहारका नियम कर दिया और अन्तमें प्रतिदिन वे एक चावल खाने लगे। धीरे धीरे उनका शरीर क्षीण होने लगा। कुछ दिन बाद वे यथाविहित आसन पर बैठ कर ललितव्यूह नामक समाधिमें निमग्न हुए। बोधिसत्त्व जिस समय नैरञ्जना नदीके किनारे बोधिवृक्षके नीचे योगासन पर आसीन हुए उस समय उन्होंने कहा था, 'इस आसन पर मेरा शरीर शुष्कता लाभ क्यों न करे और मेरा त्वक्, अस्थि तथा मांस यहीं पर विलीन क्यों न हो जाय, किन्तु जब तक सुदुर्लभ बुद्धत्व लाभ न कर सकूंगा तब तक मैं कदापि इस आसन परसे न डिगूंगा।' (ललितविस्तर)

बुद्धचरितकाव्यके १३वें सर्गमें लिखा है,—राजर्षिवंशोद्भव महर्षि बोधिसत्त्व जब परमज्ञान लाभ करनेके लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो बोधिवृक्षके नीचे बैठे, तब संसारके सभी मनुष्योंके आनन्दकी सीमा न रही, किन्तु सद्धर्मका शत्रु मार डर गया। मनुष्य जिसे कामदेव, चित्रायुध और पुष्पशर कहते हैं, पण्डितोंने उसीको कामराज्यका अधिपति मुक्तिका विद्वेषी मार बतलाया है। विलास, हर्ष और दर्प नामके तीन पुत्र तथा रति, प्रीति और तृष्णा नामकी तीन कन्याने मारसे पूछा, 'हे पितः! आज आप इतने उदास क्यों हैं?' इस पर मारने कहा, 'शाक्य मुनि दृढ़प्रतिज्ञारूप वर्म, सत्त्वरूप आयुध तथा बुद्धिरूप बाण धारण कर मेरा सारा राज्य जीतनेके लिए बोधिवृक्षके नीचे बैठे हैं, इसी हेतु मेरा मन विचलित हो गया है। यदि वे मुझे पराजित कर संसारमें मोक्षधर्मका प्रचार करेंगे, तो मैं राज्यसे च्युत हो जाऊंगा तथा कन्दर्पकी वृत्तिका भी लोप हो जायगा। अतएव जब तक वे दिव्यचक्षु प्राप्त न करें और मेरे ही राज्यमें रहें तब तक मैं उनको उच्छिन्न कर डालूंगा। जिस प्रकार नदीका वेग बढ़ कर पुल तोड़ देता है, मैं भी उसी प्रकार उनका भेद करूंगा।' बाद मनुष्यहृदयका अस्वास्थ्यकारी मार पुष्पमय धनुष् और मोहोत्पादक पांच बाण ले कर अपने पुत्र तथा कन्याके साथ उक्त वृक्षके नीचे उपस्थित हुए। अनन्तर मार धनुषके अग्रभाग पर बायां हाथ रख प्रशान्तचित्तसे योगासन पर बैठा और भवसागरके पार-

गमनेच्छु बोधिसत्त्वसे बातें करने लगा। दोनोंमें पहले वाग्युद्ध हुआ। अनन्तर मारने अपने पुत्र, कन्या और असंख्य सेनाओंके साथ विविध उपायसे बोधिसत्त्व पर आक्रमण कर दिया, किन्तु वे इससे मस न हुए।

मार सम्मुख संग्राममें पराजित हो कर अत्यन्त विषण्ण चित्तसे अपना घर लौटा। बादमें रति, तृष्णा और आरति नामक तीन कन्याओंने मारको सान्त्वना दे कर कहा, 'हे पिता! आप चिन्ता न करें, हम लोग कौशलपूर्वक बोधिसत्त्वको आपके अधीन कर देंगी।' अनन्तर वे युवतीका रूप धारण कर उनके निकट गईं।

इन्दुवदना तथा मोहरूप अलङ्कारसे विभूषिता रति संसारके नाना प्रकारके सुखकी कथा सुना कर बोधिसत्त्वको रिझाने लगी। वह बोली,—हे बोधिसत्त्व! तुम साम्राज्य सुखका परित्याग कर क्यों दीन भावसे समय बिताते हो? सम्पत्ति त्याग करनेसे ही मुक्ति मिलती है, यह तुमने किससे सुना है? तुम मेरे आश्रयमें आओ, पर हां, यदि तुम विपथगामी न हो तब। निद्राभिभूत मनुष्य जिस प्रकार किसीकी भी बात नहीं सुनता, ध्यान मग्न बोधिसत्त्व उसी प्रकार रतिकी बात सुन न सके।

रतिका कहना खतम होते ही तृष्णा और आरति आ कर बोधिसत्त्वको नाना प्रलोभन दिखाने तथा वृद्धाका रूप धारण कर नाना उपदेश वाक्य कहने लगीं।

एक बार रति, तृष्णा और आरतिने उनके समीप आ हाथ जोड़ कर कहा था,—भगवन्! हम लोग आपकी शरणमें आई हैं। आप हमें प्रव्रज्याधर्म प्रदान करें। आपकी कथा सुन हम सब गार्हस्थ्य धर्मका परित्याग कर सुवर्णपुरसे यहां आई हैं। हम कन्दर्पकी लड़की तथा हमारे पांच सौ भाई हैं। वे सब भी सद्धर्म ग्रहण करनेको उत्सुक हैं। आपने वैराग्यका अवलम्बन किया है, अतएव हम सब आज ही विधवा हो जावेंगी।

निर्लज्ज मारने भी अन्तमें यथासाध्य चेष्टा की, पर उसकी एक भी न चली। बोधिसत्त्व कन्दर्पको जीत कर महाप्रीत्याहारव्यूह नामक समाधिमें लग गए।

बोधिसत्त्वने इस प्रकार मार सेनाको दूर कर परम शान्ति प्राप्त की। उनका चित्त सुप्रसन्न हुआ। वे पहले सुवितर्क, दूसरे अवितर्क तीसरे निष्प्रीतिक और चौथे अदुःखासुख ध्यानमें विहार करने लगे। चित्तकी सत् तथा असत् वृत्तियां ही मङ्गलदायक हैं, ऐसा सोच कर उन्होंने सवितर्कध्यानमें परमानन्द लाभ किया था। फिर चित्तको सत् तथा असत्वृत्तियोंका परस्पर विरोध मिट जानेसे ही उन्हें अवितर्क समाधिलाभ हुआ। जब प्रीति और अप्रीति इन दोनोंके प्रति उनकी उपेक्षा उत्पन्न हुई, तब निष्प्रीतिक ध्यान प्राप्त हुआ। सुख और दुःख सम्पूर्णरूपसे तिरोहित होनेसे उनका चित्त धीरे धीरे सुनिर्मल हो गया और तभी उन्होंने अदुःखासुख ध्यान लाभ किया।

अनन्तर रात्रिके प्रथम याममें बोधिसत्त्वके दिव्य चक्षु उत्पन्न हुए। उन्होंने तत्त्वज्ञानका साक्षात्कार प्राप्त किया। रात्रिके मध्यम याममें उन्हें पूर्वतन विषयोंकी याद आई और अन्तमें वे संसारके दुःखका कारण ढूंढने लगे। तदनन्तर बाह्य और आभ्यन्तर जगत्के क्रिया प्रवाहके मध्य किस प्रकार अविच्छिन्न कार्यकारण भाव विद्यमान है इसका निर्णय करनेमें वे प्रवृत्त हुए। उक्त भाव के अखण्ड नियमके वशीभूत हो कर इस अनादिसंसार की बाह्य वस्तु उत्पत्ति, स्थिति और विनाशको प्राप्त होती है। आध्यात्मिक संसारमें भी कुशल और अकुशल चैतसिक वृत्तियोंने अविद्याकी वशवर्ती हो कर उत्पत्ति तथा निरोध लाभ किया है। संसारमें किस प्रकार दुःख की उत्पत्ति होती है इसका निर्णय करते हुए बोधिसत्त्वने कहा, कि अविद्यासे संस्कार, संस्कारसे विज्ञान, विज्ञान से नामरूप, नामरूपसे षडायतन, षडायतनसे स्पर्श, स्पर्शसे वेदना, वेदनासे तृष्णा, तृष्णासे उपादान, उपादानसे भव, भवसे जाति और जातिसे जरामरण, शोक परिदेव, दुःख, दौर्मनस्य, उपायास इत्यादिकी उत्पत्ति होती है।

अविद्या अथवा अज्ञान ही दुःखका कारण है। बाद बोधिसत्त्व रात्रिके शेष याममें यह सोचने लगे, कि किस प्रकार अविद्याकी निवृत्ति हो जाय, ताकि सभी मनुष्य दुःखसे चिरमुक्ति लाभ कर सकें। अनन्तर उन्होंने दुःख निवृत्तिका एक उपाय ढूंढ निकाला।

बोधिसत्त्वने जिस मुहूर्तमें संसारके दुःखसमूहकी उत्पत्ति तथा निरोधका कारण बतलाया था, उसी मुहूर्त में वे 'बुद्ध' नामसे प्रसिद्ध हुए।

बुद्धत्व लाभ करनेके बाद भी सात दिन तक वे बोधि वृक्षके नीचे बैठे थे। पांचवें सप्ताहमें उन्होंने मुचिलिन्द नागराज भवनमें और छठे में अजपालके न्यग्रोधमूल में वास तथा सातवें सप्ताहमें तारायणमूलमें विहार किया था। उसी समय त्रपुष और भल्लिक नामक दो सहोदर वणिक् बहुतसे मनुष्योंके साथ दक्षिणसे उत्तरकी ओर जाते थे। उन्होंने बड़ी श्रद्धा भक्तिसे बुद्धको आहार प्रदान किया था।

तदनन्तर धर्मचक्र प्रवर्त्तन करनेके लिये बुद्ध वाराणसी महानगरीमें मृगदाव नामक स्थानकी ओर चल दिये। रास्तेमें आजीवक नामके किसी दार्शनिकसे उनको भेंट हो गई। दोनोंमें नाना आध्यात्मिक विषयका कथोपकथन हुआ। अन्तमें आजीवकने पूछा, 'हे गौतम ! तुम कहां जाओगे ?' इस पर बुद्ध बोले,—'मैं पहले वाराणसी और बाद काशिकापुरी जा कर समाजमें अप्रतिहत धर्मचक्रका प्रवर्त्तन करूंगा।' तब आजीवकने ताना मार कर कहा,—'हे गौतम ! मैं जाता हूं। तुम्हारा गन्तव्यपथ अभी बहुत दूर है।'

अनन्तर गया प्रदेशके सुदर्शन नामक नागराजने बुद्धको न्योता दिया। कुछ दिन बाद वे गङ्गा नदी पार कर वाराणसी पहुंचे। वहां उन्होंने महाकाश्यप, अश्वजित्, महानाम तथा कौण्डिन्य प्रभृति पांच शिष्योंके निकट निर्वाण धर्मकी व्याख्या की। इसी प्रसङ्गमें बुद्धदेवने कहा था,—दुःख, दुःखकी उत्पत्ति, दुःखका निरोध और दुःख निरोधका उपाय इन्हीं चारोंको आर्यसत्य कहते हैं। जन्म, जरा, व्याधि, मरण, अप्रियसंयोग और प्रियवियोग इत्यादि सभी दुःख शब्दवाच्य हैं। सक्षेपतः तृष्णा ही दुःखोत्पत्तिका कारण है और इसकी निवृत्तिसे ही दुःख निवृत्त होता है। सम्यग् दृष्टि, सम्यग् सङ्कल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यगाजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि ये आठ आर्याष्टाङ्गिक मार्ग कहलाते हैं और इन्हीं आठोंका अवलम्बन करनेसे दुःख निवृत्त होता है।

कुछ दिन बाद ५४ युवराज और एक हजार तीर्थिकने बुद्धदेवका धर्म ग्रहण किया। ये तीर्थिक पहले अग्निकी उपासना करते थे। मगधाधिपति महाराज बिम्बिसार भी उसी समय बौद्धधर्ममें दीक्षित हुए। सारिपुत्र और मौद्गल्यायन ये दोनों बुद्धदेवके सर्वप्रधान शिष्य थे। आगे ये लोग अग्रश्रावक कहलाये।

अनन्तर बुद्धदेव कपिलवस्तु नगर बुलाये गए। उनके पिता शुद्धोदन उन्हें देख कर बड़े ही विस्मित हुए। उस समय बुद्धके पुत्र राहुल और सौतेला भाई नन्द दोनोंने बौद्धधर्म ग्रहण किया। कुछ दिन बाद बुद्धके चचेरे भाई अनिरुद्ध और आनन्द तथा साला देवदत्त बुद्धप्रवर्तित धर्ममें दीक्षित हुए। बुद्धदेवने आनन्दको प्रधान उपस्थायकका पद दिया। बाद वे वैशाली नगर गए। वहां उन्होंने अपने शिष्योंको संसारकी अनित्यता पर उपदेश दिया। अनन्तर वे राजगृहके समीप एक स्थानमें पधारे। वहां वे रोगग्रस्त हुए और जीवक नामके सुप्रसिद्ध चिकित्सकने उन्हें दवा दी। रोगमुक्त हो कर बुद्धदेवने अनेक अलौकिक घटना दिखाई। यह देख कर कूटदन्त और शैल नामक ब्राह्मणने भी बौद्ध-धर्म ग्रहण किया। कोशलराज प्रसेनजित् भी इसी धर्मके अनुयायी हुए।

उसी समय देवदत्तने मगधराज अजातशत्रु के साथ मिल कर बुद्धदेवको मारनेकी चेष्टा की। अन्तमें देवदत्त विफल मनोरथ हुए और अजातशत्रुने बौद्धधर्म तथा सङ्घका आश्रय लिया। देवदत्त स्वानुष्ठित पापका फल भोगनेके लिये नरकगामी हुए।

बुद्धदेव पहले स्त्रियोंको अपने धर्ममें दीक्षित नहीं करते थे। अपनी मौसी महाप्रजावतीके विशेष अनुरोध तथा प्रार्थना करने पर बुद्धदेवने पहले उन्हें ही दीक्षित किया। कुछ दिन बाद उनकी पत्नी यशोधरा भी बौद्ध धर्ममें प्रविष्ट हुई। धीरे धीरे पांच सौ स्त्रियोंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। और इसी प्रकार बौद्ध भिक्षुणी सम्प्रदायका दल गठित हुआ। राजा बिम्बिसारकी पत्नीने उक्त धर्ममें दीक्षित हो कर बहुत सी स्त्रियोंको इस ओर आकृष्ट किया। विशाखा नामकी वणिक्कन्याने बौद्धसम्प्रदायकी यथेष्ट उन्नति की थी।

श्रावस्तीके अनाथपिण्डक नामक एक वणिक्ने बुद्धधर्मका अवलम्बन कर उन्हें जेतवन विहार प्रदान किया था। बुद्धदेव उसी विहारमें वास कर धर्मोपदेश दिया करते थे।

कुछ दिन बाद बुद्धदेवके दो शिष्य सारिपुत्त तथा मौद्गल्यायनने निर्वाण लाभ किया। बाद आनन्द ही उनके सेवक बने। आनन्द बुद्धके साथ घूम घूम कर धर्म प्रचार करते थे।

किसी समय बुद्धदेवके आदेशानुसार आनन्दने अनन्य भिक्षुओंको राजगृह नगरकी उपस्थानशालामे बुलाया। वहां बुद्धदेवने कहा,—हे भिक्षुकगण! मैं तुम लोगोंको सात अपरिहानीय धर्मका उपदेश देता हूं, ध्यानसे सुनो —

जब तक तुम लोग कर्म, भस्म, निद्रा और आमोद इन सबोंमें रत न रहोगे, तब तक तुम लोगोंकी पापेच्छा प्रबल न होगी और जब तक तुम लोग पापमित्रका आश्रय न लोगे तथा हमेशा निर्वाणलाभके उपायमें लगे रहोगे तब तक तुम लोगोंका अधःपतन न होगा।

हे भिक्षुकगण! और भी सुनो—जब तक तुम लोग श्रद्धावान्, ह्रीमान, विनयी, शास्त्रज्ञ वीर्यशाली, स्मृतिमान् और प्रज्ञावान् बने रहोगे तब तक तुम लोगोंका क्षय नहीं होगा।

अन्य सात अपरिहानीय ये हैं—जब तक तुम स्मृति, पुण्य वीर्य प्रीति प्रश्रब्धि, समाधि और उपेक्षा इन सात प्रकारके ज्ञानाङ्गकी भावना करोगे, तब तक तुम्हारा अधःपतन नहीं।

और भी सात अपरिहानीय धर्मका विषय वर्णन करता हूं सुनो। जब तक तुम लोग अनित्य अनात्म अशुभ आदीनव प्रहाण विराग और निरोध इन सात प्रकारकी संज्ञाओंका चिन्ता करोगे, तब तक तुम लोग विचारोगे कि संसारकी सभी वस्तु अनित्य और अलीक हैं; सबोंका परिणाम अशुभ तथा सभी पापमय है। इस प्रकार चिन्ता कर अर्जित पुण्यका संरक्षण, अलब्ध पुण्यका लाभ, उत्पन्न पापका परित्याग और अन्य पापकी अनुत्पत्ति इन चार विषयोंमें तुम लोग सम्यक् रूपसे चेष्टावान् होगे। अनन्तर संसारासक्तिका त्याग कर वासनाओंका नाश कर सकोगे।

दूसरे छः अपरिहानीय धर्म ये हैं—जब तक भिक्षुगण कायमनोवाक्यसे ब्रह्मचारियोंके प्रति मित्रता-सा व्यवहार करेंगे, जब तक वे भिक्षालब्ध द्रव्यसमूहका सिर्फ अपने ही भोग न कर शीलवान् ब्रह्मचारियोंको भी कुछ बांट देंगे और जब तक वे अपने सदाचारकी रक्षा कर सद्धर्मकी ओर दृष्टि रखेंगे, तब तक उनका क्षय नहीं होगा।

अनन्तर बुद्धदेव राजगृह छोड़ कर आनन्दके साथ अम्बलट्ठिका नामक स्थानमें पहुंचे जहां बहुत से भिक्षु ठहरे हुए थे। वहां उन्होंने शीलसमाधि और प्रज्ञाविषयमें नाना धर्मोपदेश करते हुए कहा था, कि शीलपरिशुद्ध समाधि, समाधिपरिशुद्ध प्रज्ञा और प्रज्ञापरिशुद्धचित्त बहुत फलदायक होता है।

कुछ दिन बाद वे नालन्दा गए। वहां सारिपुत्त नामक शिष्यके साथ उनकी भेंट हुई। नालन्दाके प्रावारिकाम्रवन में वे विहार करते थे, कि इतने हीमें सारिपुत्तने वहां आ कर प्रणाम करते हुए कहा, 'भगवन! आपके प्रति मेरी अटूट भक्ति है, क्योंकि इस पृथिवी पर आज तक किसी ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणने जन्म नहीं लिया है, जो आपकी अपेक्षा अधिकतर ज्ञानी हों।' इस पर बुद्धदेव बोले - हे सारिपुत्त! पूर्वकालमें जिन सब ज्ञानी मनुष्योंने जन्म ग्रहण किया था, तुम उनके चित्तके साथ अपने चित्तकी तुलना कर क्या जान सकते हो—वे कैसे शीलसम्पन्न, धर्मपरायण तथा प्रज्ञावान् थे? और भी क्या तुम बता सकते हो, कि भविष्यकालमें जो सब ज्ञानी मनुष्य आविर्भूत होंगे उनका चित्त, धर्म और प्रज्ञा कैसी होगी? हे सारिपुत्त! तुमने यदि मेरे चित्तके साथ अपने चित्तकी तुलना की है, तो यह बताओ, कि मेरे शील, धर्म और प्रज्ञा कैसी है?

इस पर सारिपुत्तने जवाब दिया, 'भगवन्! मैं भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान ज्ञानियोंके चित्तके साथमें अपने चित्तकी तुलना करनेमें समर्थ नहीं। मैं सिर्फ प्रचलित धर्मकी प्रणालीसे जानकार हूं। राजा बड़ी अट्टालिका बनवा कर उसे मजबूत दीवारसे घेर देते हैं। उसमें सिर्फ एक ही दरवाजा रखा जाता है जिस पर एक दरबान हमेशा खड़ा रहता और परिचित आदमीको भीतर जाने देता है। अट्टालिकाके भीतर जानेका न तो कोई दूसरा रास्ता ही रहता और न दीवारमें कोई ऐसा छेद बना होता है, जिस हो कर एक छोटी बिल्ली

भी आ जा सके। हे भगवन्! भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान कालके ज्ञानी मनुष्योंने धर्मका ठीक वैसा ही एक दरवाजा खोल रखा है। उन लोगोंका कहना है, कि पहले काम, हिंसा, आलस्य, विचिकित्सा और मोह इन पांच प्रकारके प्रतिबन्धकका निवारण करना चाहिये। अनन्तर क्रोध, उपनाह, प्रक्षदान, ईर्षा, मात्सर्य, शाठ्य माया, मद, विहिंसा, अह्री, अनपत्रपा, स्त्यान औद्धत्य, अश्राद्धय, कौपीन्य, प्रमाद, मुषितस्मृतिता, विक्षेप, असम्प्रजन्य, कौकृत्य, मिद्ध, वितर्क तथा विचार ये चौबीस प्रकारके उपक्लेश अर्थात् चित्तका दुषितभाव परिवर्जन करना कर्त्तव्य है। इसके बाद यह हमेशा याद रखनी चाहिये, कि शरीर अपवित्र है, वेदना दुःखमयी है चित्त चञ्चल है और सभी पदार्थ मिथ्या हैं। फिर स्मृति पुण्य, वीर्य, प्रीति, प्रश्रब्धि, समाधि और उपेक्षा इस सम्बोधि अंग अर्थात् परम ज्ञानके विषयमें सोचना उचित है। और इसी प्रकार सोचते सोचते सम्बोधि अर्थात् परम ज्ञान लाभ किया जा सकता है। भूतकालके ज्ञानियोंने इसी प्रणालीका अवलम्बन कर सम्बोधि प्राप्त की थी। भविष्यत्कालके ज्ञानी मनुष्य भी इस पथका अनुसरण कर सम्बोधि लाभ करेंगे। हे भगवन्! आपने भी उक्त प्रणालीका अवलम्बन कर सम्बोधिलाभ किया है।

अनन्तर बुद्धदेव पाटली ग्राम गए। वहाके उपासकोंने उनकी खूब खातिर की। बाद बुद्धदेव बोले,—हे उपासकगण! अधार्मिक और दुःशील गृहस्थोंकी पांच प्रकारसे हानी होती है,—(१) वे बड़े दरिद्र होते हैं, (२) उनका चारों ओर दुर्नाम फैल जाता है, (३) मनुष्य उनका विश्वास नहीं करते, (४) देहावसानके समय भी उनके चित्तका उद्वेग निवृत्त नहीं होता और (५) मरनेके बाद वे निरयगामी होते हैं। किन्तु सुशील मनुष्य पांचो प्रकारके लाभ उठाते हैं—(१) वे महा सुखका भोग करते हैं, (२) उनका सुनाम चारों ओर फैलता है, (३) उनका अन्तःकरण प्रसन्न रहता है, (४) देहावसानके समय उनके चित्तमें किसी प्रकारका उद्वेग नही रह जाता और (५) मरनेके बाद उन्हे स्वर्ग-प्राप्त होता है।

अनन्तर बुद्धदेव आनन्द और भिक्षुओंके साथ कोटि नामक गाव गये। वहा उन्होंने भिक्षुओंको सम्बोधन कर कहा,—हे भिक्षुगण! चार प्रकारके सत्यका प्रकृत तत्त्व न जाननेके कारण ही मनुष्य वारम्बार इस लोक तथा परलोक जाते आते हैं। दुःख, इसकी उत्पत्ति, इसका ह्रास और इसके ध्वंस करनेका उपाय इन चार महा सत्योंको अच्छी तरह जान लेनेसे ही भवतृष्णाकी निवृत्ति तथा पुनर्जन्मका उच्छेद होता है।

इसके बाद बुद्धदेव नादिका नामक स्थानमें पहुंचे और वहीं उन्होंने भिक्षुओंको धर्मादर्श नामका धर्मोपदेश दिया जिसका सार यह था—जिस मनुष्यका बुद्धधर्म और सङ्घ पर दृढ़ विश्वास है, उसे नरक या प्रेतयोनिमें जन्म नही लेना पड़ेगा।

कुछ दिन बाद बुद्धदेवने वैशाली नगरी जा कर आम्र पाली गणिकाके घर भोजन किया था। उक्त गणिकाने विनीतभावसे कहा, "भगवन्! मैं अपना आम्रवन भिक्षु सघको प्रदान करती हूं, कृपया इसे ग्रहण कीजिये। अनन्तर बुद्धदेव उसे नाना प्रकारके धर्मोपदेशसे उपकृत कर वहासे चल दिये।

बुद्धदेवने वहासे विदा ले कर बिल्वग्राममें वर्षा काल बिताया। उस समय उन्हे अस्वस्थ देख भिक्षुगण व्याकुल हो गए। इस पर उन्होंने आनन्दसे कहा, 'हे आनन्द! भिक्षुगण मुझसे और क्या चाहते हैं? मैंने तुम लोगोंके निमित्त प्रकाश्य धर्मका प्रचार किया है—इसमें कुछ भी गुह्य नहीं है। तुम लोग इसका आश्रय ग्रहण कर धर्मरूप दीपक जलाओ और दूसरे किसी धर्मका आश्रय मत लो, अपनेमें ही अपना आश्रय लो। हे आनन्द! मेरे निर्वाणके बाद जो यह धर्मदीप प्रज्वलित कर मुक्ति लाभके निमित्त अपने ही ऊपर निर्भर करेगा, दूसरेका आश्रय नही लेगा, वही भिक्षुओंके मध्य अग्रगण्य होगा।

अनन्तर बुद्धदेव वैशालीनगरीके चापलचैत्यमें कुछ दिन तक ठहरे। उसी समय पापात्मा मारने आ कर उनसे कहा, 'हे भगवन्! 'आप परिनिर्वाण लाभ करें—आपका अन्तिम समय आ गया है।' इस पर बुद्धदेव बोले, 'जब तक भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक और उपासिका समूह विनीत, विशारद, धर्मधर तथा धर्मानुधर्मचारी

न हो लेंगे, जब तक मनुष्य समाजमें ब्रह्मचर्य सुप्रचारित नहीं होगा, तब तक हे मार! मैं परिनिर्वृत्त न होऊंगा। तुम इसकी चिंता न करो आजसे तीन महीने बाद मैं परिनिर्वाण लाभ करूंगा।'

इसके बाद उन्होंने आनन्दसे कहा—हे आनन्द! मोक्षके आठ सोपान हैं,—१ला जिनके मनमें रूपका भाव विद्यमान है, वे ही बाह्यजगत्में रूप देखते हैं। २रा, मनमें रूपका भाव तो नहीं, किंतु बहिर्जगत्में वह दीख पड़ना। ३रा मनके भीतर रूपका भाव मौजूद है, किंतु बहिर्जगत में मालूम नहीं होना। ४था, रूप जगत्का अतिक्रम कर 'आकाश अनन्त है' ऐसी भावना करते करते आकाशानन्त्यायतनमें विहार करना। ५वां आकाशानन्त्यायतनका अतिक्रम कर 'ज्ञान अनन्त है' इस प्रकार सोचते सोचते विज्ञानानन्त्यायतनमें विहार करना। ६ठा, विज्ञानानन्त्यायतनको पार कर 'कुछ नहीं है' ऐसी चिंता करते करते आकिञ्चन्यायतनमें विहार करना। ७वां, इसका अतिक्रम कर 'ज्ञान भी नहीं है' ऐसा सोचते सोचते नैव सञ्ज्ञानासञ्ज्ञायतनमें विहार करना और ८वां नैव सञ्ज्ञानासञ्ज्ञायतनका अतिक्रम कर ज्ञान और ज्ञाता दोनोंका निरोध साधन कर सञ्ज्ञावेदयितृनिरोधकी उपलब्धि होना।

अनन्तर बुद्धदेव वैशाली महावनकी कूटागारशाला में गए। उनके आदेशानुसार आनन्दने सब भिक्षुओंको बुलाया। बाद बुद्धदेवने उन लोगोंसे कहा,—हे भिक्षु-गण! मैंने जो धर्मोपदेश किया है, तुम लोग अच्छी तरह उसकी पर्यालोचना कर मनुष्यकी भलाई और सुख-के निमित्त संसारमें ब्रह्मचर्य स्थापित करना। और हे भिक्षुगण! मेरे कहे हुए धर्मोंमेंसे सैंतीस विषय भली भांति याद रखना जो ये हैं—चार स्मृत्युपस्थान, चार सम्यक् प्रहाण, चार ऋद्धिपाद, पांच इन्द्रिय, पांच बल, सात बोध्यङ्ग और आठ मार्ग। शरीर अपवित्र है, वेदना दुःखमयी है, चित्त चञ्चल है तथा सभी पदार्थ अलीक हैं ऐसी भावनाका नाम चतुःस्मृत्युपस्थान है। अर्जित पुण्यकी रक्षा, अलब्ध पुण्यका उपार्जन, पूर्वसञ्चित पापका परित्याग और नूतन पापकी अनुत्पत्ति, इन चार प्रकारकी चेष्टाका नाम चतुःसम्यक् प्रहाण है। असामान्य क्षमताप्राप्तिके निमित्त अभिप्राय, चिन्ता, उत्साह और अन्वेषणको चार ऋद्धिपाद कहते हैं। श्रद्धा, समाधि, वीर्य, स्मृति और प्रज्ञा इन पांचोंका नाम इन्द्रिय है और यही पांच फिर पञ्चबल भी कहलाते हैं। स्मृति, धर्म, परिनय, वीर्य, प्रीति, प्रश्रब्धि, समाधि और उपेक्षा इन सातोंको सप्त बोध्यङ्ग कहते हैं। सम्यक् दृष्टि, सम्यक् सङ्कल्प सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त सम्यगाजीव, सम्यग् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि इन आठोंका नाम अष्ट आर्यमार्ग है।

उक्त सैंतीस पदार्थ लेकर मैंने धर्मकी व्यवस्था की है। तुम लोग भलीभांति आलोचना कर जनसमाजमें इसका प्रचार करो। मैं तीन महीने बाद निर्वाण लाभ करूंगा, अतएव तुम लोग सावधान हो जाओ। उन्होंने और भी कहा था,—मेरा जीवन अब शेष होनेको आ चला है, सबों को छोड़ कर मैं चला जाऊंगा। हे भिक्षुगण! अप्रमत्त समाहित तथा सुशील बनो और स्थिरसंकल्प हो कर अपने आपको देखो। जो प्रमादका परित्याग कर इस धर्ममें विहार करेंगे वे ही जन्म और संसारका उच्छेद कर सदाके लिये दुःखसे मुक्त होंगे।

अनन्तर बुद्धदेव भिक्षुओंके साथ भण्ड नामक ग्राममें गए। वहां उन्होंने कहा था 'हे भिक्षुगण! शील, समाधि प्रज्ञा और विमुक्ति इन्हीं चार प्रकारके अनुशीलनसे मनुष्य संसारपथमें बहुत दिन तक चक्कर लगाते हैं।

बाद वे यथाक्रम हस्तिग्राम, आम्रग्राम जम्बुग्राम और भोगनगर पधारे। उन्होंने भोगनगरके आनन्द चैत्यमें विहार करते समय कहा था,—हे भिक्षुगण यदि कोई भिक्षु आ कर तुम लोगोंसे कहे, कि उन्होंने अमुक वाक्य भगवान बुद्धदेवसे सुना है, भिक्षुसङ्घसे उसका उपदेश पाया है, किसी आराममें कई एक स्थविर भिक्षुने मिल कर उन्हें उक्त वाक्य कहा है, तो तुम लोग उनकी बात पर पहले विश्वास या अविश्वास न करना। उनके कहे हुए वाक्यको सूत्रपिटक या विनयपिटकके साथ मिला कर देखना, यदि मूल अथवा विनयमें तदनुरूप वाक्य रहे तो समझना, कि उक्त भिक्षुने अमुक वाक्य भलीभांति ग्रहण किया है और तब तुम लोग भी

उनकी बात पर अभिनन्दन प्रकट करना, किंतु यदि सूत्र या विनयमें वैसा वाक्य न मिले, तो उस पर विश्वास करना उचित नहीं।"

अनन्तर बुद्धदेव पावा नामक स्थानमें आ कर चुन्द नामक शिष्यके आम्रवनमें विहार करने लगे। चुन्दने उनके पास जा कर अभिवादनपूर्वक निवेदन किया, 'भगवन्! भिक्षुसंघके साथ मिल कर आप कल मेरे यहां कृपया भोजन करेंगे।' बुद्धदेवने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। चुन्दने घर जा कर अनेक प्रकारके खाद्य और बहुत सा शूकरमांस प्रस्तुत किया। दूसरे दिन बुद्धदेव उनके यहां गए और बोले, 'हे चुन्द! तुम शूकर-का मांस सिर्फ मुझे ही देना—यह भिक्षुदलमें न परसना। क्योंकि मनुष्यलोक, देवलोक और ब्रह्मलोकमें मेरे सिवा और कोई भी ऐसा नहीं है जो उस मांसको पचा सके। मुझे परस देनेके बाद यदि और बच रहे तो उसे गड्ढेमें फेंक देना।' चुन्दने भी वैसा ही किया।

चुन्दके यहां भोजन कर चुकनेके बाद ही बुद्धदेव लोहित प्रस्कन्दिका नामक व्याधि अर्थात् रक्तामाशय रोगसे ग्रसित हुए और उसी समय वे कुशीनगरकी ओर चल दिये। रास्तेमें उन्होंने आनन्दसे कहा, 'हे आनन्द! मैं बहुत थक गया हूं। तुम एक कपड़ेको चार तह करके उस वृक्षके नीचे बिछा दो। मुझे प्यास लगी है, अतएव थोड़ा पानी भी लाओ। अनन्तर बुद्धदेवने पानी पी कर कुछ विश्राम किया।

उसी समय पुक्कस नामक आलाडकलामके कोई शिष्य पावाकी ओर जा रहे थे। बुद्धदेवको वहां देख कर उन्हों ने कहा, 'अहा! प्रव्रज्याका क्या ही असामान्य प्रभाव है। एक समय आलाड़-कलाम किसी वृक्षके नीचे बैठ कर तपस्या कर रहे थे उसी समय ५०० गाड़ी उनके शरीर पर हो कर चली गई, किन्तु उन्होंने न तो उन्हें देखा और न उनका शब्द ही सुन पाया।' पुक्कसकी बात सुन कर बुद्धदेव बोले हे पुक्कस! मैं एक समय आतमा नामक स्थानके भूषागारमें तपस्या कर रहा था। उस समय अविरत मेघगर्जन, वृष्टिपात और विद्युत् विस्फुरण होती थी। उस दुर्घटनामें भूषागारके दो किसान और चार बैल मर गये। जिस जगह वे किसान और चारों बैल विनष्ट हुए थे, वहां बहुतसे मनुष्य आ कर इकट्ठे हुए। बाद उनमेंसे एकने मुझे पूछा, 'महाशय! यहां क्या हुआ है?' इस पर मैं ने कहा—मुझे कुछ मालूम नहीं। फिर वह बोला, 'महाशय! देवर्षण, मेघगर्जन, विद्युत स्फुरण आदिका क्या आपको कुछ भी खबर नहीं है? क्या आपने कोई शब्द न सुना? क्या आप सोये हुए थे?' मैंने कहा, 'नहीं, मैं तो जाग्रत था।' इस पर फिर वह मनुष्य बोला, 'बड़े आश्चर्यकी बात है, कि आप जाग्रत थे, तो भी कुछ जान न सके।' बुद्धकी बात सुन कर पुक्कस बड़े ही आश्चर्यान्वित हुए और उसी दिनसे उन्होंने बुद्ध धर्म तथा संघका आश्रय ग्रहण किया।

कुछ दिन बाद पुक्कसने बुद्धको एक सुनहला वस्त्र प्रदान किया जिससे आनन्दने उनका शरीर ढक दिया। अनन्तर बुद्ध भिक्षुओंके साथ ककुत्था नदीके किनारे गए और वहीं स्नान कर चुन्दके आम्रवनमें ठहरे। चुन्दने एक सिंहासन बिछा दिया और बुद्धदेवने उस पर बैठ कर कुछ समय तक विश्राम किया। अनन्तर उन्होंने एकान्तमें आनन्दसे कहा, 'हे आनन्द! चुन्दके मनमें यदि किसी प्रकारका परिताप उपस्थित हो तो तुम उसे दूर करना। उसके यहां भोजन करनेसे ही मुझे कठिन रोग हुआ है, ऐसा सोच कर वह दुःखित न होने पावे। तुम उसे कहना, कि बुद्ध और भिक्षुसंघको खिला कर जो सद्धर्म आपने सञ्चय किया है, उससे आपको स्वर्ग लाभ होगा। चुन्दके लिये यह बड़े ही सौभाग्यकी बात थी, कि बुद्धने उनके यहां भोजन किया था। जो खाद्य खा कर उन्होंने सम्बुद्धि तथा परिनिर्वाण लाभ किया था, वह महाफलदायक है।'

अनन्तर बुद्धदेवने कहा—दानशील व्यक्तिके पुण्य प्रवर्द्धित होता है। संयतके वैर उत्पन्न नहीं होता, धार्मिक अमङ्गलका वर्जन कर सकते हैं और राग, द्वेष तथा मोहका क्षय होनेसे निर्वाणलाभ होता है।

बाद बुद्धदेव हिरण्यवती नदी पार कर शालवन गए। वहां वे उत्तरकी ओर सिरहाना कर एक चारपाई पर लेट रहे और बोले,— हे आनन्द! चार स्थान सबोंके लिये श्रद्धास्पद हैं, जहां बुद्धका जन्म हुआ था जहां उन्हें सम्यक् सम्बोधि लाभ हुई थी, जहां उन्होंने धर्मचक्र प्रव

र्त्तित किया था और जहां उनका परिनिर्वाण हुआ था।

उसी समय आनन्दने पूछा, 'भगवन्! स्त्रीजातिके प्रति कैसा व्यवहार करना होगा?' इस पर बुद्धदेवने उत्तर दिया 'अदर्शन अर्थात् उनको भेंट न करना।' फिर आनन्दने पूछा, 'हे भगवन्! यदि उनसे भेंट हो जाय, तो क्या करना चाहिये?' बुद्ध बोले 'हे आनन्द! अनालाप अर्थात् उनके साथ बातचीत न करनी चाहिये।' 'भगवन्! यदि वे बोलचाल करें, तो क्या करना उचित है?' 'हे आनन्द! उपस्थापन अर्थात् उनकी देवताकी तरह पूजा और उपासना करोगे।'

अनन्तर आनन्दने बुद्धदेवसे कहा, 'हे भगवन्! कुशी नगर एक जङ्गलपूर्ण छोटा नगर है, आप यहां परिनिवृत न होंगे। चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती साकेत कौशाम्बी, वाराणसी आदि अनेक महानगर हैं जहाके ब्राह्मण और क्षत्रिय आपके प्रति भक्तिपरायण हैं। वे आपके शरीरकी पूजा भी करेंगे।' इस पर बुद्धदेवने उत्तर दिया, 'हे आनन्द! तुम ऐसा न कहो। प्राचीनकालमें महासुदर्शन नामक एक धार्मिक और चतुरन्तविजयी राजाने जन्म ग्रहण किया था। कुशीनगर या कुशावतीमें उनकी राजधानी थी। यह नगर धन और जनसे भरा हुआ था। यह पूर्व पश्चिम बारह योजन लम्बा और उत्तर दक्षिण सात योजन चौड़ा है। हे आनन्द! तुम यहांके मल्लोंसे कहो, कि आज रात्रिके शेष याममें बुद्ध यहीं पर परिनिर्वाणलाभ करेंगे।' बाद कुशीनगरके मल्लोंने यहां आ कर बुद्धदेवकी वन्दना और पूजा की।

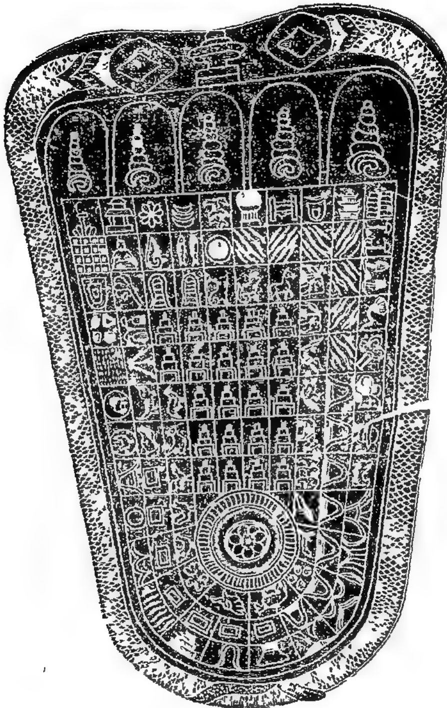
इतनेमें सुभद्र नामक परिव्राजक वहां पधारे। उसी दिन रात्रिके शेष याममें गौतमबुद्ध परिनिर्वाण लाभ करेंगे, ऐसा जान कर वे बोले, 'मैंने सुना है, कि संसारमें शायद ही बौद्धोंकी गति मिलेगी। गौतमबुद्ध आज इस लोकको छोड़ जायंगे। मैं उनका उपदेश सुन कर धर्मविषयक कई एक सन्देह दूर करूंगा। अनन्तर सुभद्र बुद्धके समीप जानेको उद्यत हुए। इस पर आनन्दने कहा, 'महाशय! भगवान् क्लान्त हो गये हैं, आप उन्हें अभी विरक्त न करें।' इतनी बातें सुन कर बुद्धदेवने आनन्दसे कहा, 'हे आनन्द! सुभद्रको मत रोको— उन्हें मेरे पास आने दो।' बाद सुभद्रने उनके समीप जा कर पूछा, 'हे गौतम! पूरण काश्यप, मस्करी गोशाल, अजित केशकम्बली, ककुदकात्यायन, सञ्जयपुत्र वैरत्ति तथा निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र आदि जो सब धर्मोपदेशक लोग कर विद्यमान हैं, उनके उपदेश श्रेयस्कर हैं या नहीं और वे सब शास्त्रोंमें अभिज्ञ हैं अथवा नहीं?' इस पर बुद्धदेवने उत्तर दिया,—हे सुभद्र! इन सब तीर्थङ्करकी अभिज्ञता कैसी है उसका विचार करनेसे कोई फल नहीं मिलता? मैं आपको जिस धर्मका उपदेश देता हूं, उसे ध्यान दे कर सुनिये। जिस धर्ममें सम्यक् दृष्टि, सम्यक् सङ्कल्प, सम्यक् वाक, सम्यक् कर्मान्त, सम्यगाजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि इन आठ आर्यमार्गोंका उपदेश नहीं है, ऐसे धर्मावलम्बियोंमें किसी प्रकारका श्रमण उत्पन्न नहीं हो सकता। किंतु जिस धर्ममें उक्त आठ आर्यमार्गका उपदेश है उसमें श्रमण भी मौजूद हैं। श्रमण भिन्न दूसरे व्यक्तिका वाक्य शून्य अर्थात् निरर्थक है। हे सुभद्र! मैंने अपने उनतीसवें वर्षसे ही प्रव्रज्याको ग्रहण किया है और धर्मके अन्वेषणमें इक्यावन वर्ष तक प्रज्ञा तथा समाधिका अनुष्ठान किया है। जो मेरे आचरित न्याय और धर्मानुवर्ती नहीं हैं उनमें श्रमण भी नहीं है।'

अनन्तर सुभद्रने बुद्धके समीप प्रव्रज्या ग्रहण की और बाद ब्रह्मचर्यका सम्यक् अनुष्ठान कर अर्हत् पद प्राप्त किया। वे ही बुद्धके अन्तिम शिष्य थे।

अनन्तर बुद्धने आनन्दसे कहा, 'हे आनन्द! मेरे मरनेके बाद मेरा प्रवर्त्तित धर्म ही तुम लोगोंका परिचालक होगा। तदनन्तर वयोज्येष्ठ भिक्षुगण नव्य भिक्षुओंका नाम या गोत्रोच्चारण करें। हे बन्धो! इसी भावसे सम्बोधन करेंगे। फिर नवीन भिक्षुगण प्राचीनको मान नीय या पूजनीय समझ कर उनकी अभ्यर्थना करेंगे।'

बाद भिक्षुओंसे बुद्धने कहा,—हे भिक्षुगण! यदि तुम लोगोंमेंसे किसीको मेरे प्रवर्त्तित धर्ममें कोई सन्देह या मतभेद रहे, तो हमसे पूछ कर दूर कर लो। कुछ देर बाद आनन्द बोले,—भगवन्! आपके प्रवर्त्तित धर्मके किसी विषय पर हम लोगोंमेंसे किसीको भी मतद्वैध नहीं है।

अनन्तर बुद्धने भिक्षुओंसे कहा, 'हे भिक्षुगण! संयोगोत्पन्न पदार्थका क्षय अवश्यम्भावी है। तुम लोग सावधान हो कर अपना अपना कार्य करोगे, बस यही मेरा अंतिम वाक्य है।



चीनके उपास्य बुद्धपद।

तदनन्तर बुद्धदेव प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ ध्यानमें यथाक्रम विहार करने लगे। फिर उन्होंने आकाशानन्त्यायतन, विज्ञानानन्त्यायतन, आकिञ्चन्यायतन, नैव संज्ञा ना संज्ञायतन और संज्ञा वेदयित निरोध इन सब

योगमें विहार किया। आकाश असीम है ज्ञान अनन्त, न सार अकिञ्चन, संज्ञा और असंज्ञा दोनों ही अलीक हैं इस प्रकार सोचते हुए संज्ञा तथा वेदना दोनोंका नाश होनेसे बुद्धने परिनिर्वाणलाभ किया। उसी समय संसारके मध्य एक सर्वप्रधान प्राणी तिरोहित हुए।

बुद्धके परिनिर्वाण लाभ करते ही भिक्षुगण पृथ्वी पर गिर कर रोने लगे। अनन्तर अनिरुद्धने आनन्दसे कहा, 'हे बन्धो! कुशी नगर जा कर मल्लोंसे कह दो कि भगवानने परिनिर्वाण लाभ किया है।' तदनुसार आनन्द वहां गए। उनके मुखसे बुद्धके परिनिर्वाण-लाभका संवाद सुन कर मल्लपुत्र, मल्लस्नुषा और मल्लगृहस्थ छाती पीट पीट कर विलाप करने लगे। बाद उन्होंने शालवनमें जा कर नृत्य, गीत, वाद्य पुष्पमाला, गन्ध प्रभृतिसे सात दिन तक बुद्धदेहकी पूजा की। सातवें दिन वे उनका मृत-शरीर मुकुटबन्धन नामक चैत्यमें ले गए और एक शुद्ध वस्त्र द्वारा उसे ढक दिया। इस प्रकार उनका शरीर पांच सौ वस्त्र और कार्पास द्वारा आच्छादित हुआ तथा तैलपूर्ण लौहपात्रमें रखा गया। बाद वे सर्वगन्धमय चिता प्रस्तुत कर उसे जलाने लगे। उन्होंने चौरास्ते पर एक बृहत् स्तूप निर्माण कर कहा,—जो गृहस्थ यहां आ कर माल्य और गन्ध अर्पण करेंगे अथवा इस स्थान पर आ आनन्दित होंगे, वे बहुत दिन तक सुखसे रहेंगे।

उसी समय महाकाश्यप ५०० भिक्षुओंके साथ पावासे कुशीनगर आये। उन्होंने मुकुटबन्धनचैत्यमें आ कर तीन बार बुद्धचिताकी प्रदक्षिणा और सिर नवा कर बुद्धपादकी वन्दना की। अनन्तर चिता जल उठी और धीरे धीरे बुद्धका चर्म, मांस, स्नायु प्रभृति सभी जल गए सिर्फ हड्डी बच रही।

अब मगधराज अजातशत्रुने सुना, कि बुद्धदेवने कुशी नगरमें निर्वाणलाभ किया है, तब उन्होंने दूत द्वारा कहला भेजा, 'भगवान् क्षत्रिय थे और मैं भी क्षत्रिय हूं। अत मुझे उनके शरीरका एक अंश अवश्य मिलना चाहिये, क्योंकि मैं उस अंशके ऊपर महास्तूप निर्माण करूंगा।' वैशालीनगरके लिच्छवियोंने भी यही संवाद दूत द्वारा कहला भेजा। इसी प्रकार शाक्यगण, अल्लकल्पके बुल्य गण, रामग्रामके कोलियगण और पावाके मल्लगण सबों ने बुद्धके शरीरांशकी प्रार्थना की। वेठद्वीपके ब्राह्मणों ने भी उनके शरीरका एक अंश पानेकी आशा की। इस पर कुशीनगरके मल्लोंने कहा 'भगवान बुद्धने हम लोगों के ग्राममें ही परिनिर्वाणलाभ किया है, हम लोग किसी को भी उनके शरीरका अंश प्रदान न करेंगे।' तब द्रोण नामक ब्राह्मणने सबोंसे कहा, 'हे महाशय! मेरी एक बात सुनिये। बुद्ध शान्तिवादी थे। उन साधु पुरुषके देहभागके लिये हमें न लड़ना चाहिये। आप सभी लोग इकट्ठे हों, हम इनका शरीर आठ भागोंमें बांट देते हैं। सब ओर स्तूप बनाये जाय तथा सभी मनुष्य उन्हें देख कर प्रसन्नतालाभ करें।"

इस पर सभी राजी हुए और द्रोण ब्राह्मणने बुद्धकी हड्डी आठ भागोंमें बांट दी। अनन्तर वे बोले, 'हे महाशयगण! जिस कुम्भमें रख कर बुद्धका शरीर बांटा गया है, वह मुझे दिया जाय। मैं उसके ऊपर एक स्तूप बनाऊंगा।

अनन्तर पिप्पलिवनीयोंने मौर्य दूत द्वारा कहला भेजा, "भगवान क्षत्रिय थे और मैं भी क्षत्रिय हूं। अतएव मुझे उनके शरीरका कुछ अंश मिलना चाहिये।" किन्तु दूतने आ कर देखा, कि बुद्धके शरीरका पहले ही आठ हिस्सा हो गया है। बाद वह उनकी चिताकी भस्म ले कर लौट गया। पिप्पलिवनीय मौर्योंने उस भस्मके ऊपर महास्तूप निर्माण किया। इस प्रकार आठ महा स्तूप, एक कुम्भस्तूप और एक अङ्गारस्तूप कुल दश स्तूप बनाये गये।

एक समय बुद्धदेवका प्रवर्तित धर्म सारे संसारमें प्रचारित हुआ था। सम्प्रति भी प्रायः जगतके एक भाग तृतीयांश मनुष्य बुद्धधर्मके अनुगामी तथा भक्त हैं। बौद्ध धर्म अन्यान्य विवरण देखो।

बुद्धद्वादशीव्रत (सं० क्ली०) बुद्धके उद्देशसे अनुष्ठेय व्रतभेद, वह व्रत जो बुद्धके उद्देश्यसे किया जाता है।

बुद्धद्रव्य (सं० क्ली०) बुद्ध स्तूपागारतो स्थान द्रव्य। स्तौपिक, वह वस्तु जो स्तूपमें पाई जाय।

बुद्धधर्म (सं० पु०) बुद्धाना धर्म। बुद्धदेव द्वारा प्रचारित अहिंसादि धर्म। बुद्ध और बौद्ध देखो।

बुद्धधर्मसङ्घ (स० पु०) बौद्धधर्मके तीन प्रधान अङ्ग अर्थात् बुद्ध, उनका चलाया हुआ धर्म और उनकी अनुयायी श्रमणसम्प्रदाय।

बुद्धनन्दि (स० पु०) अष्टम बौद्ध स्थविर। उत्तर भारतमें इनका वास था।

बुद्धनाथ—एक कणफटयोगी। कणफट शब्द देखो।

बुद्धनिर्माण—इन्द्रजालविद्या द्वारा बुद्धका मूर्त्तिगठन।

बुद्धनीलकण्ठ—नेपालमें अवस्थित एक छोटा ह्रद। इसके उत्तर पूर्व कोनके प्रस्रवणसे जलधारा निकलती देखी जाती है। कहते हैं, कि शङ्खधारी तीन प्रस्तरकी जो मूर्त्ति हैं उन्हीं के हाथमेंके शङ्खसे यह जल ह्रदमें गिरता है। यह स्रोतस्विनी रुद्रमती नामसे प्रसिद्ध है। ह्रदके मध्यभागमें जलशयन नामक विष्णु मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। सूर्यवंशीय राजा हरिदत्तवर्म उक्त मन्दिरकी प्रतिष्ठा कर गये हैं।

बुद्धपालित (स० पु०) नागार्जुनका शिष्यभेद। इन्होंने आर्यदेव विरचित ग्रन्थादिकी टीका लिखी है।

बुद्धपिण्डी—बुद्धका स्तूप।

बुद्धपुर—कसाइ नदी तीरवर्त्ती एक प्राचीन ग्राम। यह मधुयादिके दूसरे किनारे अवस्थित है। यहां एक गण्ड शैलके ऊपर बहुतसे ध्वंसावशिष्ट मन्दिर दृष्टिगोचर होते हैं। यहांके लिङ्ग-मूर्त्ति बुद्धेश्वर नामसे प्रसिद्ध है। स्थानीय लोग गयापुरीके गदाधरकी तरह बुद्धपुरीके बुद्धेश्वरका माहात्म्य गाते हैं।

बुद्धपुराण (स० क्ली०) १ बुद्धाविर्भावादि ज्ञापक पुराण भेद। २ लघु ललितविस्तरका नामान्तर।

बुद्धभद्र (स० पु०) एक ख्यातनामा बौद्ध। इन्होंने अपने माता पिताको प्रसन्न करनेके लिये सुगतावास निर्माण किया।

बुद्धभूमि (स० स्त्री०) बौद्धोंका सूत्रग्रन्थभेद।

बुद्धमन्त्र (स० क्ली०) १ धारणी। २ बुद्धका मन्त्र।

बुद्धमार्ग (स० पु०) १ बुद्धका अवलम्बित पथ, बौद्ध धर्म। २ एक बौद्धभिक्षु। ये महाराज कुमारगुप्तके राज्यकालमें विद्यमान थे।

बुद्धमित्र (स० पु०) वसुबन्धुके शिष्य नवम बौद्ध स्थविर।



बुद्धमिहिर—सिंहके पुत्र एक प्रसिद्ध बौद्ध। १४० शकमें उत्कीर्ण उनकी शिलालिपि पाई जाती है।

बुद्धरक्षित (स० पु०) बुद्धेन रक्षित। १ बुद्ध द्वारा रक्षित। २ बौद्धभिक्षु भेद।

बुद्धराज (स० पु०) राजभेद।

बुद्धलोकनाथ—प्रसिद्ध बौद्ध-यति।

बुद्धवचन (स० क्ली०) १ बौद्धसूत्र। २ बुद्धके वाक्य।

बुद्धवन (स० क्ली०) बुद्धेन नामक पर्वतभेद। यहां बाँसका एक बड़ा वन है।

बुद्धवर्म—चालुक्यवंशीय एक राजा। चालुक्यराजवंश देखो।

बुद्धविषय (स० पु०) बुद्धक्षेत्र।

बुद्धसंगीति (स० स्त्री०) १ बौद्ध ग्रन्थभेद। २ बुद्धके सद्धर्मकी रक्षाके लिये तीन बौद्ध महासभा। बौद्ध देखो।

बुद्धसिंह (स० पु०) असङ्ग बोधिसत्त्वके एक शिष्य।

बुद्धसेन (स० पु०) राजकुमारभेद।

बुद्धस्थान—राजपूतानेके अन्तर्गत एक प्राचीन जनपद। यह जयपुरसे वैराट जानेके रास्ते पर अवस्थित है। यहां बुद्धपद आदि पाये जाते हैं।

बुद्धागम (स० पु०) बौद्धशास्त्र।

बुद्धानुस्मृति (स० स्त्री०) बौद्ध सूत्रभेद।

बुद्धान्त (स० पु०) बुद्ध भावे क्त, तस्य अन्त परिच्छेद। जीवकी अवस्थाभेद, जाग्रदवस्था।

बुद्धावतारस्थान—फल्गुनदी तीरवर्त्ती बोधगया। यहां शाक्यसिंह बुद्ध हुए थे।

बुद्धि (स० स्त्री०) बुध्यतेऽनयेति बुद्ध क्तिन्। १ निश्च, यात्मिका अन्तःकरणवृत्ति, वह शक्ति जिसके अनुसार मनुष्य किसी उपस्थित विषयके सम्बन्धमें ठीक ठीक विचार या निर्णय करता है। पर्याय—मनीषा, धिषणा, धी, प्रज्ञा, शेमुषी, मति, प्रेक्षा, उपलब्धि, चित्, सम्वित्, प्रतिपद्, ज्ञप्ति, चेतना, धारणा, प्रतिपत्ति, मेधा, मनन, मनस्, ज्ञान, बोध, हल्लेख, संख्या, प्रतिभा, आत्मजा, पण्डा, विज्ञान। (राजनि० शब्दरत्ना०)

भगवद्गीतामें सात्त्विक, राजसिक और तामसिक इन तीन प्रकारकी बुद्धिका उल्लेख है।

सात्त्विकी बुद्धि—"प्रवृत्तिञ्च निवृत्तिञ्च कार्याकार्य भयाभये।
बन्धं मोक्षञ्च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी।

राजसी—यया धर्ममधर्मञ्च कार्यञ्चाकार्यमेव च।
अयथावत् प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी॥
तामसीबुद्धि—अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥"
(गीता १८।३०-३२)

जिसके द्वारा प्रवृत्ति, निवृत्ति, कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य, भय, अभय, बन्धन और मोक्षादि जाना जा सके, उसे सात्त्विकी बुद्धि, जिसके द्वारा धर्म, अधर्म, कार्याकार्यादिको भलीभांति बिना जाने सुने अन्यथा ज्ञान उत्पन्न हो, उसे राजसी बुद्धि और जिसके द्वारा अधर्मको धर्म और अकर्त्तव्यको कर्त्तव्य समझा जाय, ऐसे विपरीत भावप्रकाशक ज्ञानको तामसी बुद्धि कहते हैं।

इष्टानिष्ट विपत्ति अर्थात् निद्रावृत्ति, व्यवसाय, समाधिता अर्थात् चित्तस्थैर्य, संशय और प्रतिपत्ति ये पांच बुद्धिके गुण हैं।

"शुश्रूषा श्रवणञ्चैव ग्रहणं धारणा तथा।
ऊहोऽपोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानञ्च धीगुणाः॥" (हेम)

शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, ऊह, अपोह और अर्थविज्ञान ये सात बुद्धिके गुण हैं। इसकी वृत्ति पांच हैं, यथा—प्रमाण, विपर्य्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। नैयायिकोंने इस बुद्धिके दो भेद बतलाये हैं। अनुभूति और स्मृति।

"विभुर्बुद्ध्यादि गुणवान् बुद्धिस्तु द्विविधा मता।
अनुभूतिः स्मृतिश्च स्यादनुभूतिश्चतुर्विधा।
प्रत्यक्षमप्यनुमितिस्तथोपमिति शब्दजे॥" (भाषापरिच्छेद)

बुद्धि दो प्रकारकी है, नित्या और अनित्या। इनमेंसे नित्या बुद्धि परमात्माकी और वह प्रत्यक्षप्रमात्मिका है। अनित्या बुद्धि जीवकी है। स्मृति और अनुभवके भेदसे इसके दो प्रकार हैं। फिर उनके भी दो प्रकार हैं, यथार्थ और अयथार्थ। अनुभवके चार भेद हैं, प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्दज। (न्यायद०) सांख्यके मतसे त्रिगुणात्मिका प्रकृतिका प्रथम विकार है। इसे महत्तत्त्व भी कहते हैं।

प्रकृतिका प्रथम विकाश बुद्धितत्त्व है। आदिसर्गकालमें असंसारी और अशरीरी आत्माके सान्निध्यवशतः प्रकृतिके मध्य पहले पहल प्रस्फुरित होती है। सत्त्व गुण सबसे पहले बुद्धितत्त्वरूपमें प्रादुर्भूत हुआ था। बहुत निर्मल होनेके कारण इसे महत्तत्त्व कहते हैं। इसे हृदयङ्गम करनेके लिये वर्त्तमान प्राणिनिचयको बुद्धिका बीजस्थान कहा है, यह विचारना होगा। इससे देखा जायगा, कि समस्त विशेष विशेष बुद्धिका विकाशस्थान अन्तःकरण है। प्रत्येक अन्तःकरण हरिहरमूर्त्तिकी तरह द्विमूर्त्तिमें विद्यमान है। उसकी एक मूर्त्ति या परिमाणका नाम मनन और अध्यवसाय तथा द्वितीयका नाम अभिमान या अहं है। 'मैं' 'मैं हूं' 'वस्तु' 'वस्तु है' 'मेरा' 'मुझसे करने योग्य है', इत्यादि प्रकारके निश्चयात्मक विकाशको अध्यवसाय और ज्ञानशक्ति कहते हैं। यह ज्ञानशक्ति सहजातरूपमें जीवनके अन्तरात्मामें निरन्तर संलग्न रहती है। ज्ञानशक्तिकी समष्टि ही महान् है। महान् और पूर्णज्ञान दोनों एक चीज है।

सांख्यमें जिसे महत्तत्त्व और बुद्धितत्त्व बतलाया है, वही पूर्णज्ञानशक्ति है। जो महान् पुरुष महान् बुद्धितत्त्व से अच्छी तरह प्रतिबिम्बित होते हैं वह महापुरुष सांख्योक्त सृष्टिकर्त्ता और पुराणादि शास्त्रके हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, कार्यब्रह्म और ईश्वर हैं।

भूलोक, द्युलोक, अन्तरीक्षलोक, चन्द्रलोक, सूर्य्यलोक, ग्रहलोक, नक्षत्रलोक और ब्रह्मलोक आदि समस्त पदार्थ इन महान् पुरुषोंके अधीन हैं। यह महत्तत्त्वात्मक व्यापक बुद्धि मेरा, तुम्हारा, उसका, चन्द्रलोकस्थ मनुष्यका, सूर्य्यलोकस्थ मनुष्यका, पशु पक्षीका ज्ञान है, इत्यादि क्रमसे उस उस देहमें परिच्छिन्न हो कर विराज करती है। हम लोग जिस प्रकार हस्तपदादिविशिष्ट देहके ऊपर 'मैं' और 'मेरा' यह अभिमान निक्षेप किये हुए हैं, उसी प्रकार हिरण्यगर्भ या ईश्वर सम्पूर्ण बुद्धितत्त्वकी अन्तःकरण समष्टिके ऊपर 'मैं' और 'मेरा' आदि अभिमान निक्षेप किये हुए हैं।

हम लोगोंके जिस प्रकार नींद टूटने पर आंख खुलते न खुलते सहसा अज्ञानतमका अस्त और ज्ञानका उदय होता है, उसी प्रकार नितान्त दुर्लक्ष्य अव्यक्तरूप जगत् जब अपनी सुषुप्तावस्थासे उठा था, उसी समय प्रकृतिगर्भसे सूक्ष्म ज्ञानका अभिव्यञ्जक (अ गुणस्वरूप), तमोपहारक, सृष्टिसामर्थ्ययुक्त भगवान् स्वयम्भू हिरण्यगर्भ

था महत्तत्त्वका आविर्भाव हुआ था। ज्यों ही जगत्की निद्रा टूटी, त्यों ही महान् वा बुद्धिका विकाश हुआ। उस समय जगत् अलक्ष्य रूपमें उनके गात्रमें अङ्कित हो गया। महत्तत्त्व वा बुद्धितत्त्वसे अहतत्त्वका अविर्भाव होता है। अत यही बुद्धितत्त्व जगत्का मूल है।

प्रकृति, महत् और सांख्यदर्शन देखो।

कालिकापुराणमें बुद्धिक्षय और बुद्धिका कारण इस प्रकार लिखा है—

"शोक क्रोधश्च लोभश्च कामोमोह परासुता।
ईर्षामानो विचिकित्सा कृपासूया जुगुप्सता॥
द्वादशैते बुद्धिनाशहेतवो मानसा मला॥"

(कालिकापु० १८ अ०)

शोक, क्रोध, लोभ, काम, मोह, ईर्षा, मान, विचिकित्सा, कृपा, असूया और जुगुप्सता ये १२ बुद्धिनाशके कारण और मानस मल हैं।

२ एक प्रकारका छन्द। इसके चारों पादोंमें क्रमसे १६, १४, १४, १३ मात्राएँ होती हैं। इसका दूसरा नाम लक्ष्मी भी है। ३ छप्पयका ४२वा भेद। ४ उपजाति वृत्त का १४वा भेद। इसका दूसरा नाम सिद्धि भी है।

बुद्धिक (स ० पु० ) नागराजभेद, एक नागका नाम।

बुद्धिकर शुक्ल—द्विविध जलाशयोत्सर्ग प्रमाणदर्शनके प्रणेता।

बुद्धिकामा (स ० स्त्री०) कुमारानुचर मातृभेद, कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

बुद्धिचक्षु ( स ० पु० ) प्रज्ञाचक्षु, धृतराष्ट्र।

बुद्धिचिन्तक (स ० त्रि०) बुद्धिपूर्वक चिन्ता कारी।

बुद्धिजीविन् (स० त्रि०) बुद्ध्या जीवति जीव णिनि। वह जो बुद्धिके द्वारा अपनी जीविकाका निर्वाह करता हो।

"भूतानां प्राणिन श्रेष्ठा प्राणिना बुद्धिजीविन।
बुद्धिमत्सु नरा श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणा स्मृता॥"

( मनु १।९६ )

बुद्धितत्त्व ( स ० क्ली० ) साङ्ख्योक्त प्रकृतिका प्रथम विकार महत्तत्त्व। बुद्धि और प्रकृति शब्द देखो।

बुद्धिपर (स ० त्रि०) जो बुद्धिसे परे हो, जिस तक बुद्धि न पहुंच सके।

बुद्धिपुर (स ० क्ली०) १ बुद्धिस्थान। २ तञ्जोरके पश्चिममें अवस्थित एक शिवतीर्थ। इसका वर्त्तमान नाम पोड्डूर है। ब्रह्माण्डपुराणके अन्तर्गत बुद्धिपुर माहात्म्यमें इसका माहात्म्य विस्तारसे लिखा है।

बुद्धिपूर्व ( स ० त्रि० ) इच्छाकृत, जो जान बूझ कर किया गया हो।

बुद्धिप्रकाश एक संस्कृत ग्रन्थकार। सारमञ्जरीमें वनमालीने इनका उल्लेख किया है।

बुद्धिमत्ता ( स ० स्त्री० ) बुद्धिमान होनेका भाव, समझदारी।

बुद्धिमान् ( स ० त्रि० ) जिसकी बुद्धि बहुत प्रखर हो, जो बहुत समझदार हो।

बुद्धिमानी ( हि० स्त्री० ) बुद्धिमत्ता देखो।

बुद्धिराज—वाञ्छाकल्पलतोपस्थानप्रयोगके प्रणेता। ब्रह्मराजके पुत्र।

बुद्धिलगोविन्द—तिथिनिर्णयसंग्रहके रचयिता।

बुद्धिलिङ्ग—सारस्वतगच्छके एक जैनाचार्य। ये नवम दशपूर्वी थे। पट्टावलीमें लिखा है, कि महावीर निर्वाणके २६५ वर्षके बाद इन्होंने आचार्यपद ग्रहण किया था।

बुद्धिवत ( हि० वि० ) बुद्धिमान्, अक्लमंद।

बुद्धिवसवप्प नायक—वेदनूर राजवंशके एक राजा। इन्होंने १७४० से १७५३ ई० तक राज्य किया था।

बुद्धिवर ( स ० पु० ) विक्रमादित्यके एक मन्त्री।

बुद्धिवृद्धि ( स ० स्त्री० ) १ ज्ञानवृद्धि। (पु०) २ शङ्कराचार्यके एक शिष्यका नाम।

बुद्धिशक्ति ( स ० स्त्री० ) मेधाशक्ति।

बुद्धिशाली ( स ० त्रि० ) बुद्धिमान, समझदार।

बुद्धिशील ( स ० त्रि० ) बुद्धिमान्, बुद्धिशाली।

बुद्धिशुद्ध (स ० त्रि०) सद्बुद्धियुक्त, अच्छी समझवाला।

बुद्धिश्रीगर्भ ( स ० पु० ) बोधिसत्त्वभेद।

बुद्धिसहाय ( स ० पु० ) बुद्धौ बुद्ध्याकृते कार्ये सहायः। मन्त्री, वजीर।

बुद्धिसागर ( स ० त्रि० ) १ अगाधबुद्धियुक्त। ( पु० ) २ एक कोषकार।

बुद्धिसागर—एक जैनसूरि, वर्द्धमानसूरिके शिष्य। यह शायद १०८८ सवत्में विद्यमान थे। इनका बनाया हुआ श्रीबुद्धिसागर नामक एक व्याकरण मिलता है।

**बुद्धिस्थ** (स० त्रि०) बुद्धिस्थित।

**बुद्धिहत** (स० त्रि०) बुद्धिहीन, जिसमें बुद्धि न हो।

**बुद्धिहा** (स० स्त्री०) बुद्धिको नष्ट करनेवाली, शराब।

**बुद्धिहीन** (स० त्रि०) जिसे बुद्धि न हो, मूर्ख।

**बुद्धीन्द्रिय** (स० क्ली०) बुद्ध्यात्मक या इन्द्रिय। ज्ञानेन्द्रिय।

"मनः कर्णौ तथा नेत्रे रसना त्वक् च नासिके।
बुद्धीन्द्रियमिति प्राहुः शब्दकोविचक्षणाः॥"

(शब्दरत्ना०)

चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वक् और मन यही बुद्धीन्द्रिय हैं। इन्द्रिय ग्यारह हैं जिनमेंसे पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय तथा मन उभय इन्द्रिय है। पञ्चज्ञानेन्द्रिय ही बुद्धीन्द्रिय हैं।

**बुद्धोड क** (स० पु०) चैत्य, वह स्थान जहां बुद्धदेवके अवयव और व्यवहार्य द्रव्यादि रखे हुए हैं।

**बुद्बुद** (स० पु०) १ वर्त्तुलाकार जलविकार, बुलबुला। २ गर्भस्थ अवयवविशेष।

**बुध** (स० पु०) बुध्यते यः, बुध (इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः। पा ३।१।१३५) पण्डित। पर्याय—विद्वत्, विपश्चित्, दोषज्ञ, सत्, सुधी, कोविद, धीर, मनीषी, ज्ञ, प्राज्ञ, सङ्ख्यावत्, पण्डित, कवि, धीमत्, सूरि, कृतिन्, कृष्टि, लब्धवर्ण, विचक्षण, दूरदर्शिन्, दीर्घदर्शिन्, विदग्ध, दूरदृश्, सूरिन्, वेदिन्, वृद्ध, बुद्ध, विधानग, प्रज्ञिल, व्यक्त, प्राप्तरूप, सुरूप, अभिरूप, बुधान, कवितावेदिन्, वष्ठ, निदित, कवि।

(अमर, शब्दर०, जटाधर)

"अल्पुमं स्तुतिभिर्गुरुं प्रणतिभिर्नुन्नं कथाभिर्बुधम्।
विद्याभी रसिकं रसेन सकलं शीलेन कुर्याद्वशम्॥"

(नररत्न)

२ नवग्रहके अन्तर्गत चतुर्थग्रह। बृहस्पतिकी भार्या ताराके गर्भसे चन्द्रके द्वारा इसकी उत्पत्ति हुई है। विष्णुपुराणमें लिखा है—चन्द्रने देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नी ताराको हरण किया। अनन्तर बृहस्पतिकी प्रार्थनासे भगवान् ब्रह्माने चन्द्रको बहुत बार रोका, तथा समस्त देवर्षियोंने भी चन्द्रसे याच्ञा की; किन्तु चन्द्रने ताराका परित्याग नहीं किया। बृहस्पतिके प्रति द्वेष रखनेवाले शुक्र भी उसके सहायक हो गये। इधर अङ्गिरासे विद्यालाभ कर भगवान् रुद्र भी बृहस्पतिकी सहायता करने लगे। शुक्र चन्द्रके पक्षमें थे इस कारण प्रधान प्रधान दानव बुधके पक्षमें हो गये। बृहस्पति और चन्द्रमें तुमुल संग्राम बधा। इन्द्र देवताओंके साथ बृहस्पतिकी सहायता करने लगे। उस समय भगवान् ब्रह्माने असुर और देवताओंको युद्धसे निवृत्त कर बृहस्पतिको तारा दिलवा दी। उस समय बृहस्पति ताराको गर्भिणी देख कहने लगे, 'हमारे क्षेत्रमें अन्य व्यक्तिके वीर्यसे उत्पन्न पुत्रका धारण करना तुम्हारे लिये उचित नहीं है।'

बृहस्पतिके यह वचन सुन ताराने ईषिकास्तम्ब (मूंजके तिनकोंका गुच्छा)में वह गर्भ गिरा दिया। निक्षेप मात्रसे समुत्पन्न पुत्र अपने तेज द्वारा देवताओंको अभिभव करने लगा। इसको देख कर देवताओंने तारासे पूछा, 'तुम सत्य कहो, कि यह सन्तान किसकी है।' ताराने लज्जासे कुछ भी जवाब न दिया। उस समय इस कुमारने माताको शाप देनेमें उद्यत हो कहा, 'क्यों नहीं हमारे पिताका नाम कहती हो, मैं तुम्हें यही शाप देता हूं कि अन्य कोई भी तुम्हारे जैसी मन्थर भाषिणी नहीं हो सकती।' उस समय तारा लज्जित हो बोली, 'यह पुत्र चन्द्रका है।' चन्द्रने यह वचन सुन पुत्रका आलिङ्गन किया और उससे कहा, 'कि तू अति प्राज्ञ है इसलिये तेरा नाम बुध हुआ। (विष्णुपु० ४।६ अ०)

काशीखण्डमें लिखा है—बुधने पूर्वोक्त रूपसे जन्मधारण कर चन्द्रकी अनुमतिसे काशीमें बुधेश्वर नामसे शिवलिङ्गकी प्रतिष्ठा की तथा बहुत वर्षों तक कठोर तपका अनुष्ठान किया। महादेवने उसकी तपस्यासे प्रसन्न हो उसे यह वर प्रदान किया, 'नक्षत्रलोकके ऊपर तुम्हारा लोक होगा तथा समस्त ग्रहमण्डलके बीचमें तुम श्रेष्ठरूपसे सम्मानित होगे। तुम्हारा प्रतिष्ठित शिवलिङ्ग आराधित हो कर सबको बुद्धि प्रदान करेंगे तथा अन्तमें शिवलोकमें उनकी गति होगी।

(काशीख० १४ अ०)

मत्स्यपुराणमें एक विशेष बात देखनेमें आती है, कि बृहस्पतिके घरमें ताराने १ वर्ष बाद सन्तान पैदा की तथा वहां ही उसके संस्कारादि कार्य हुए।

(मत्स्यपुराण २४

सभी पुराणोंमें ही बुद्धके जन्मका वृत्तान्त पूर्वोक्त रूपसे लिखा है।

ग्रहोंके बीच बुध चौथा है। इसका गोत्र अत्रि है। इसका वर्ण काली दूबके समान, यह उत्तर दिक्पति, नपुंसक, शूद्रजाति, अथर्व वेदाभिज्ञ, रजोगुण विशिष्ट, मिश्रितरस, मिथुनराशि, मरकत मणिप्रिय और मगधदेशका अधिपति है। इसके मित्र रवि और शुक्र तथा शत्रु चन्द्र हैं। बुधग्रहके एक एक राशिभोगका समय २८ दिन है। कालपुरुषका वाक्य बुध है। बुध बाल स्वभाव तथा सकल शास्त्राभिज्ञ है। इसकी आकृति धनुषके समान है। ये ग्रामचर और पशुजातिका है। बुधग्रहके भवस्थानके अनुसार उत्पन्न बालकके शुभाशुभादिका निर्णय किया जाता है।

बुधके लग्नमें उत्पन्न मनुष्य स्थूल शरीर, धीर प्रकृति, रक्तलोचन, कालीदूबके समान श्यामवर्ण, सदय हृदय, राजसेवानुरक्त, हृष्ट, दक्ष, स्वकुलतिलक और नाना वेशकारी होता है।

बुधके बारहवें भवमें उत्पन्न मनुष्य शुचि, सम्यक्‌रूप शास्त्रार्थवेत्ता, सुखी, दीर्घायु, प्रभु मित्रवर्गका आश्रय और प्राज्ञ होता है। जिस मनुष्यका जन्म बुधके तेरहवें राशिमें होता है, वह उत्कृष्ट विभव और सुखसम्पन्न, नाना प्रकार रत्नसमन्वित तथा दिन पर दिन उसके खजानेकी वृद्धि होती है।

मेषादि द्वादश राशिमें बुधके रहने पर निम्नलिखित फल होता है। मेषराशिमें बुधके रहनेसे विग्रहप्रिय, अस्त्रवेत्ता, अतिचतुर, प्रतारक, सर्वदा चिन्तान्वित, अतिकृश, सङ्गीत और नृत्यकर्मरत असत्यवादी, रतिप्रिय, लिपिवेत्ता, मिथ्यासाक्ष्यदाता, बहुभोजनशील, बहुश्रमोत्पन्न धनधान्य विनाशकर, अनेक बन्धनभागी, रणमें अस्थिर और ऋणयुक्त, वृषमें इसके दक्ष, दाम्भिक, दाता, ज्ञानापन्न, विज्ञानशास्त्र और वेदज्ञ, आराम, वस्त्रभूषण, और माल्यविधिवेत्ता, स्थिरप्रकृति, स्फीततायुक्त, स्त्री धनयुक्त, प्रियवर्ण कथनशील, गान्धर्व हास्यलीला और रतिशील; मिथुनमें रहनेसे शुभवेशधर, प्रियभाषी, विख्यात,मतिमान्, श्लाघान्वित, मानी, प्रसिद्ध घोड़ेकी तरह क्रीड़नशील, स्त्रीपुत्रविवादरत, श्रतिकाव्य और कलावेत्ता, कवि, स्वाधीन, प्रियतर, प्रमाणरत, अनेक कर्मकर्त्ता, बहुपुत्रवान् और बहुमित्रसम्पन्न, कर्कट राशिमें रहने पर प्राज्ञ, विदेशनिरत, स्त्रीरति और घरमें अतिशय आसक्तचित्त, चपल, बहुत प्रलापी, अपने बन्धुओंका विद्वेषी और वादी, द्वेष्टा, चौरप्रायुक्त, कुत्सितस्वभावी, सत्कवि तथा अपने यशकी कीर्त्ति द्वारा प्रसिद्ध होता है।

सिंह राशिमें बुद्धके रहने पर—ज्ञान तथा कलाहीन, लोकविख्यात, असत्यवादी, अल्प श्रवणशील, धनवान्, सत्वहीन, सहजहन्ता, स्त्री दुर्भाग्यहीन, पराधीन, जघन्य कर्मकारी, स्त्रीकी तरह आकृतिवाला, सन्ततिहीन, अपने कुलके विरुद्ध काम करनेवाला तथा लोकप्रिय होता है।

तुला राशिमें बुधके रहने पर—सर्वदा शिल्पकर्म और विवादमें अभिरत, वाक्‌चातुर्य सम्पन्न, अतिशय व्ययी, नाना दिशाओंमें वाणिज्य व्यवसायी, विद्वान्, अतिथि और गुरुभक्त, कृत्रिम व्यवहारकुशल, सम्मानित, देव और विप्रभक्त, शठतापरायण, बलहीन, शीघ्रकोप और परितोषयुक्त होता है।

वृश्चिक राशिमें बुधके रहने पर—श्रमशोक और आर्यपरायण, अत्यन्त धर्म तथा लज्जाशील, मूर्ख, साधु शीलहीन, लोभी, दुष्टाङ्गनारतिशील, निष्ठुर और दम्भ निरत, अस्थिरकर्मकर, लोकविशिष्ट, अतिशय निरुद्धधर्मा, ऋणी और नीचान्नप्रिय होता है।

धनूराशिमें बुधके रहने पर—दाता, शास्त्र, श्रुत और वीर्यसम्पन्न, मन्त्रणाकुशल अथवा पुरोहित, कुलप्रधान, महाविभवसम्पन्न, यज्ञ और अध्यापनारत, मेधावी, वाक्‌पटु, लिपि, लेखक और शब्दकुशल होता है।

मकरराशिमें बुधके रहने पर—नीच, मूर्ख, षण्डप्रकृति, परकर्मकर्त्ता, कलादिगुणहीन, नानादुःखयुक्त, शीघ्रविहारी, अतिशय शोकसम्पन्न, खल, असत्य चेष्टाविशिष्ट, बन्धुवियुक्त, अनयतात्मा, मलिन मूर्त्ति, भयचकित और निष्ठाहीन होता है।

कुम्भराशिमें बुधके रहने पर—वाक्य और बुद्धिरत-कर्महीन, धर्मशून्य, स्वजनरहित, आशाहीन शत्रुपराभूत, अशुचि, शीलतावर्जित, जड़, अतिशय दुष्टा स्त्री

युक्त, मद्युक्त, भोगान्वक, सर्वदा विभागवेत्ता और क्लीवतुल्य होता है।

मीनराशिमें बुधके रहने पर—आचार और शौचनिरत, देवतानुरत्त, सन्ततिविहीन, दरिद्र, सुन्दरीपत्नीयुक्त, साधुओंका प्रियपात्र, परिहासमग्न, शुल्कादि कर्मकुशल, परधनसञ्चयशील, रत्नाकर्ता और विख्यात होता है।

बुधके द्वादश राशिमें रहने पर ऊपर कहे हुए फल प्राप्त होते हैं। इसको छोड़ शत्रु या मित्रके घरमें अवस्थान करने तथा उनके देखने पर भिन्न रूप फल होता है। बुध यदि मङ्गलके घरमें रहे और रवि इसको देखे, तो सत्यवादी, सुखी, राजसत्कृत तथा बन्धुओंका प्रीतिपात्र होता है। इस बुधको यदि चन्द्र देखे तो युवतियोंके चित्तको हरनेवाला, अतिशय सेवक, अत्यन्त मलिन देह और गीतशील होता है।

यदि बुधको मङ्गल देखे, तो मिथ्याप्रिय, सुन्दर काव्य और कलहयुक्त, पण्डित, प्रचुर धनवान्, भूमिप्रिय और शूर होता है। बृहस्पतिके देखनेसे तो सुखी, केशसमूह अति सुन्दर, प्रभूत धनवान्, आज्ञापक और पापात्मा होता है।

शुक्र यदि बुधको देखे, तो नृपकार्यकारी, सुभग, दुःखी और चातुर्ययुक्त तथा शनिश्चर यदि देखे तो अतिशय दुःखयुक्त, उग्रप्रकृतिसम्पन्न हिंसारत और निरयकुलजनविहीन होता है।

इस प्रकार मङ्गल, बुध, बृहस्पति आदि जिस ग्रहके अधिपति हैं बुध उनके ग्रहमें रह कर रवि आदि ग्रहके दृष्टियुक्त होने पर विभिन्न फल होता है। विस्तार होनेके भयसे यहां पर सभी लिखा नहीं गया।

यदि बुधग्रह पापग्रहके सहित होवे, तो पाप और शुभग्रहके साथ होवे तो शुभफल होता है। यदि किसीके साथ नहीं रहे, तो गृहस्वामी और दृष्टि सम्बन्ध द्वारा शुभाशुभ निर्णय करना होता है; किन्तु बुध रविके साथ रहे तो दोष नहीं होता। उससे बुधादित्ययोग हुआ करता है। इस योगजन्यमें इसके नीचे रविका रहना आवश्यक है अर्थात् ये जिस नक्षत्रमें रहे, रवि उसी नक्षत्रके न्यून भागमें रहेगा। बुधके ऊपरी भागमें रवि रहे, तो यह योग नहीं होगा। इस योगमें जन्म होनेसे वाक्चतुर विचक्षण, ज्ञानवान्, धनवान् तथा राजमण्डलमें पूजित होता है। रविके दीप्तांशमें जो कोई ग्रह क्यों न रहे, वह ग्रह अस्तमित होगा। जो ग्रह अस्तमित होगा उसका फल अशुभ है। इसमें विशेषता यही है, कि बुधके अस्तमित होनेसे भी उतना अशुभ नहीं होता।

बुध—ज्योतिर्विद्या, मातुल, गणित, वैद्य, सौंदर्य और शिल्प विद्याकारक है। इसके अवस्थानको देख कर इन सबका निर्णय किया जाता है। इसके कन्याराशिके १५वें अंशमें रहनेसे उच्च तथा मीनके १५ अंशमें रहनेसे नीच स्थान होता है। उच्च स्थानमें ग्रहोंका बल अधिक और नीचस्थानमें हीनबल होता है। इसकी वक्रगतिका काल २१ दिन है।

बुधारिष्ट—जातबालककी कर्कटराशिमें यदि यह ग्रह स्थित करे और यह लग्नके ६ठे किंवा ८वें स्थानमें हो तथा चन्द्र इसे देखे, तो जातबालककी चार वर्षमें मृत्यु होती है।

बुध यदि केन्द्रमें स्थित हो, तो बुद्धिमान, विद्वान, माननीय, गुरुजनोंके प्रति भक्तिपरायण तथा सुशीला रमणीका पति होता है। इसके तुङ्गकल्पलतामें पराके वचन इस प्रकार लिखे हैं—

'*कन्याराशिका बुध यदि भाग्यसे मिले तो सौ वर्षकी आयु होती है। राजा उसे सम्मानपूर्वक बुलाता और कुटुम्ब उसके घर आ कर पूजा करता है। मातापिता श्रेष्ठ होते हैं। वह धर्म करनेवाला तीर्थगामी बन नाना सुखोंको भोगता है तथा स्थान स्थानमें सम्मान पाता है।*

(रामा)

बुधका स्वरूप—ये शूद्र, श्यामवर्ण, शिराधुक्त शरीर, वस्त्रलाभकर, नृत्यगीत आदिमें निपुण, कौतुहल सम्पन्न, कोमलवाक्यविशिष्ट, त्रिदोषसम्पन्न, रजोगुणावलम्बी, मध्यमाकृति, दाता, कभी गुरुगणा कभी आदरता करनेवाला, ग्राम, क्रीड़ागृह और क्रीड़ाभूमिचारी तथा पञ्चराशिलोचन हैं।

हस्ता, चित्रा, स्वाति और विशाखा इन चार नक्षत्रों में जन्म होनेसे इनकी दशा होती है। इसकी दशाका भोगकाल १७ वर्ष है। इस दशामें मनुष्य उदारोंका

सम्भोग करता है तथा सब समय आमोद प्रमोदरत रहता है, नित्यधनागम और समस्त कामनायें सिद्ध होती हैं। अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा आदिका फल विचार कर स्थिर करना होता है। ग्रहोंके अवस्थान भेदसे स्थूलफलकी पृथक्ता होती है।

विंशोत्तरीय मतमें भी बुधकी दशा १७ वर्ष है। ९, १८, २७ नक्षत्रमें जन्म होने पर बुधकी दशा होती है। इस मतसे प्रत्यन्तर्दशा स्थिर कर फलका निर्णय किया जाता है। बुधकी पीड़ा—चूर्ण रोग, क्षिप्तता, शिर पीड़ा, भृगिरोग, अस्फुटवाक्य, स्मृति और वाक्शक्तिहीनता, धातुरोग, अजीर्ण, सर्दी और जिह्वारोग बुधके विरुद्ध होनेसे होता है।

गोचरमें निम्नलिखितके अनुसार शुभाशुभ जाना जाता है। बुध जन्ममें स्थित हो, तो बन्धन, द्वितीयमें धनलाभ, तृतीयमें वध और शत्रुभय, चतुर्थमें अर्थलाभ, पञ्चममें असुख, षष्ठमें स्थानलाभ, सप्तममें बहु प्रकार शरीरपीड़ा, अष्टममें धनलाभ, नवममें पीड़ा, दशममें सुख, एकादशमें अर्थलाभ और द्वादशमें वित्तनाश होता है। ग्रहके विरुद्ध होने पर—उसका दान, जप, होम, मन्त्र और कवच धारण करना उचित है।

बुधका दान—नील वस्त्र, स्वर्ण, कांसा, उरद, पीला फूल, [redacted] गुर, हाथी दांत ये सब दक्षिणाके साथ दान करनेसे शुभ होता है।

ये मौलसरी पुष्प द्वारा पूजित होनेसे प्रसन्न होते हैं। इनका होम करनेमें अपामार्गका समिध करना होता है। इनकी दक्षिणा सोना है। मूलिकाधारणमें वरगद वृक्षकी जड़ धारण करनी चाहिये। रत्नधारणके स्थानमें पद्मरागमणि धारण करना विधेय है। इनका स्तोत्र—

"प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधं।
सौम्यं सत्वगुणोपेतं नमामि शशिनः सुतम्॥"
(नवग्रहस्तोत्र)

ग्रहयज्ञतत्त्वमें लिखा है—बुध मगधदेशोद्भव, अत्रिगोत्रजात, इषद्दीर्घ, पीतवर्ण, वैश्यजाति, चतुर्भुज, वामोर्द्ध क्रममें चक्र, वर, खड्ग, और गदाधारी, सुवास्य, सिंहवाहन और पीतवस्त्र, इसके अधिदेवता नारायण, प्रत्यधिदेवता विष्णु धनिष्ठा नक्षत्रयुक्त द्वादशीमें उत्पन्न, ग्रामचारी, शुभग्रह, नीलवर्ण, सुवर्णद्रव्यस्वामी, वर्त्तुलाकृति, शिशु, इतरगृहसञ्चारी, वातपित्तकफात्मक क्लीग्रह, प्रातःकालमें प्रबल, पश्चिमगामी, सकल रसप्रिय है। (ग्रहयज्ञतत्त्व)

मतान्तरमें—सोम (चन्द्र) बुधका पिता और रोहिणी माता है। पुराणमें लिखा है—किसी समय चन्द्र बृहस्पति पत्नी तारादेवीको हर कर ले गये। इस कारण एक माया युद्ध हुआ। चन्द्रके पक्षसे दैत्य दानव तथा बृहस्पतिके पक्षसे इन्द्रादि देव लड़े। पृथ्वीकी प्रार्थनासे ब्रह्माने मध्यस्थ हो बुधसे तारादेवीके प्रत्यर्पणके लिये अनुरोध किया। इस समय तारादेवी गर्भवती थी। यह पुत्र किसका होगा, इसे जाननेके लिये ब्रह्माने तारासे पूछा। तारादेवीने उसको चन्द्रका पुत्र बतलाया। फिर किसीका मत है, कि बुधने वैवस्वत मनुकन्या इलादेवीके साथ विवाह किया था। इलादेवीके गर्भसे पुरूरवाका जन्म हुआ। बुधने ऋग्वेदके मन्त्र प्रकाशित किये थे। ये सौम्य, रौहिणेय, प्रहसन, रोधन, तुङ्ग और श्यामाङ्ग आदि नामोंसे भी प्रसिद्ध हैं।

यह ग्रह (Mercury) सूर्यके अति सन्निकटमें अवस्थित है। इसका कक्षपथ पृथ्वी कक्षके मध्यभागमें सन्निवेशित होनेके कारण प्रति सन्ध्यामें यह मानवकी दृष्टिगोचर होता है। पृथ्वीकी अपेक्षा इसका आयतन छोटा है। व्यास प्राय ३१४० मील है। सूर्यकी तुलनामें इसका परिमाण नियुतके दो अंशमात्र है। पृथ्वीकी अपेक्षा इसका उत्ताप और आलोक ७ गुणा अधिक है। स्वीय कक्षपक्षमें भ्रमण करते करते यह ग्रह कभी कभी सूर्यगोलकके मध्यभागमें आ जाता है। इस समय सूर्यवक्षमें एक गोलाकार दाग देखा जाता है जिसे अंगरेजीमें Transit of mercury कहते हैं। १८६१, १८६८, १८७८, १८८१, १८९१ और १८९४ ई०में पृथ्वी वासियोंने सूर्यवक्ष पर इस प्रकार गोल विंदु देखा था।

२ सूर्यवंशीय राजविशेष। ३ कल्पयुक्तिके प्रणेता एक कवि। ४ वेगवान् राजाका पुत्र। (भाग० ९।२।३०) ५ मगधके एक राजा। ये ३६०० कलिसंवतमें विद्यमान थे। (कुमारिकाखण्ड) बुधगुप्त देखो।

बुधकौशिक—रामरक्षास्तोत्रके प्रणेता।

बुधगुप्त—गुप्तवंशीय एक राजा। १६५ सम्वत्में उत्कीर्ण इनकी स्तम्भलिपि पाई गई है।

बुधचक्र (सं० क्ली०) बुधस्य ग्रहविशेषस्य चक्रं। बुध ग्रहके अपनी राशिसे अन्यराशिमें सञ्चारके समय सत्ताईस नक्षत्रोंका शुभाशुभ ज्ञापकचक्र।

बुधचार (सं० पु०) बुधस्य बुधग्रहस्य चार संचार। बुधग्रहका शुभाशुभ ज्ञापक सञ्चार। बृहत्संहितामें लिखा है—चन्द्रपुत्र बुध उत्पातशून्य हो कभी भी उदित नहीं होते। इनके उदयमें धान्यादि मूल्यके ह्रास या वृद्धिके कारण अकसर जल, अग्नि अथवा तूफान हुआ करता है। श्रवणा, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्रोंको मर्दित कर यदि बुध विचरण करे, तो रोगभय तथा अनावृष्टि होती है। यह ग्रह आर्द्रासे लगायत मघा पर्यन्त जिस किसी नक्षत्रका आश्रय करे, उसीसे शस्त्रपात, क्षुधा, भय, रोग, अनावृष्टि तथा संताप द्वारा प्रजा अवपीड़ित होगी। हस्तासे ज्येष्ठा पर्यंत ६ नक्षत्रोंमें इसके विचरण करने पर गोपीड़ा, तैलादि रसोंकी मूल्यवृद्धि और नाना प्रकारके खाद्यद्रव्योंसे पृथिवी पूर्ण हो जाती है। उत्तर फाल्गुनी, कृत्तिका, उत्तर भाद्रपद तथा भरणी नक्षत्रमें इस ग्रहके विचरण करने पर प्राणियोंका धातुक्षय होने लगता है। यह यदि अश्विनी, शतभिषा, मूला, तथा रेवती नक्षत्रोंको अभिमर्दित कर विचरें, तो पण्य, वैद्य, नौकाजीवी, जलपदार्थ, तथा अश्वका उपघात होता है। पूर्वफल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और पूर्व भाद्रपद इन तीन नक्षत्रोंमें किसी नक्षत्रको अभिमर्दित कर विचरण करनेसे क्षुधा, शस्त्र, तस्कर, रोग तथा भय उपस्थित होता है।

पराशरने पहिले बुधकी सात प्रकारकी गति निर्दिष्ट की है। यथा—१ प्राकृत, २ विमिश्र, ३ संक्षिप्त, ४ तीक्ष्ण, ५ योगान्त, ६ घोर, ७ पाप।

स्वाती, भरणी, रोहिणी तथा कृत्तिका नक्षत्रमें इस नक्षत्रके रहनेसे प्राकृतगति होती है। मृगशिरा, आर्द्रा, मघा और अश्लेषा नक्षत्रस्थ बुधकी गतिका नाम मिश्र; पुष्या, पुनर्वसु, पूर्वफल्गुनी और उत्तर फल्गुनीकी गतिका नाम संक्षिप्त पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, ज्येष्ठा, अश्विनी और रेवतीकी गतिका नाम तीक्ष्ण है। मूला, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें जो इसकी गति होती है, वह योगान्तिक है। श्रवणा, चित्रा, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रमें जो गति होती है उसे घोर तथा हस्ता, अनुराधा अथवा ज्येष्ठा नक्षत्रकी गतिको पाप कहते हैं। यही ७ प्रकार बुधकी गति है। पराशरने उदयास्त दिवस द्वारा इसका गतिलक्षण भी निरूपित किया है। इसकी प्राकृत गति ४० दिन, मिश्र ३० दिन, संक्षिप्त २२ दिन, तीक्ष्ण १८ दिन, योगान्त ९ दिन और पापगति ११ दिन होती है।

जिस समय इसकी प्राकृत गति होती है, उस समय आरोग्य, वृष्टि, शस्यवृद्धि तथा मंगल होता है। संक्षिप्त तथा मिश्रगतिसे मिश्रफल होता और अन्य गतियोंसे विपरीत फल होता है।

देवलके मतमें बुधकी गति चार प्रकार है—ऋजु, अतिवक्र, वक्र और विकल। इन चार गतिके विद्यमानका काल—३० दिन, २४ दिन, १२ दिन तथा ६ दिनमात्र है। ऋजुगतिसे प्रजाका हित होता है, अतिवक्रगतिसे अर्थनाश, वक्रगतिसे शस्त्रभय तथा विकलगतिसे भय और रोग होता है। पौष, आषाढ़, श्रावण, वैशाख अथवा माघ मासमें यदि ये दीखें, तो जगत्में भय किन्तु अस्तमित हो, तो जगत्में शुभ होता है। इसका कार्त्तिक अथवा आश्विन मासमें दृष्टिगोचर होनेसे शस्त्र, चोर, अग्नि, रोग तथा जलका भय होता है। बुधचारज्ञ पण्डितोंका कहना है, कि इसके अस्त समयमें सब नगर रुद्ध तथा उदयकालमें फिर वही नगर मुक्त हो जाते हैं। कोई कोई कहते हैं, कि यदि पश्चिम दिशामें इनका उदय हो, तो उन सब नगरोंमें शुभ होता है। इनका वर्ण सोने या सुग्गे अथवा शस्यकमणिके समान और स्निग्ध होता है तथा स्वयं बृहत्काय होते हैं, उस समय सबोंका मंगल अन्यथा अशुभ ही होता है।

(बृहत्संहिता बुधाचार ७ अ०)

रवि प्रभृति ६ ग्रहोंमें नियमानुसार एक एक ग्रह वर्षपति होते हैं। इनमें इसके वर्षपति होने पर माया, इन्द्रजाल, गान्धर्व, लेख्य, गणित और अस्त्रजाननेवालोंकी वृद्धि होती है। राजा लोग प्रजाकी भलाईके लिये

माङ्गलिक कार्योंका अनुष्ठान करते हैं। जगत्‌में वार्ता और त्रयीशास्त्र अविकल रहते हैं। मनुकी न्यायदण्ड नीति अच्छी तरह विराजित होती है। बुध अपने वर्ष अथवा मासमें पृथ्वी पर हास्यज्ञ, दूत, कवि, बालक, नपुंसक, युक्तिज्ञ, सेतु, जल और पर्वतनिवासियोंको तृप्ति तथा पृथ्वीको औषधियोंसे भरपूर कर देते हैं।

(बृहत्स० १०।१०-१२)

बुधजामी (हिं० पु०) चन्द्रमा, बुधके पिता।

बुधतात (सं० पु०) बुधस्य ग्रहविशेषस्य तात पिता। चन्द्रमा।

बुधदिन (सं० क्ली०) बुधवार देखो।

बुधदैवज्ञ—पद्यप्रदीपके प्रणेता, कृष्णके पुत्र।

बुधपुर—मानभूम जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह अक्षा० २१ ५८´ १५´´ उ० और देशा० ८६ ४४´ पू०के मध्य कसाई नदीके किनारे अवस्थित है। यहाँ तथा यहांसे २ कोस उत्तर पाकबीड़ा ग्राममें अनेक जैन मन्दिरों और तीर्थङ्करादियोंकी प्रतिमूर्तियां भग्नावस्थामें इधर उधर पड़ी नजर आती हैं। बुद्धपुर देखो।

बुधरत्न (सं० क्ली०) बुधप्रिय रत्न शाकपार्थिवादित्वात् समास। मरकतमणि।

बुधवार (सं० पु०) बुधस्य वार। बुधग्रहका दिन, सात वारोंमेंसे एक वार। इस वारमें शुभ कार्यादि किये जाते हैं। इस दिन उत्तर और दक्षिणकी ओर यात्रा नहीं करनी चाहिये। इस वारमें जन्म लेनेसे जातबालक गुणी, क्रियाकुशल, मतिमान्, विनीत, मृदुस्वभाव और कमनीयमूर्त्तिका होता है।

"बुधवासरे कुशलः क्रियावान् विद्यासमीरो मतिमान विनीत।
मृदुस्वभावः रमणीयमूर्त्ति बुधस्य वारे प्रभवो मनुष्य ॥"

(कोष्ठीप्र०)

बुधसानु (सं० पु०) १ पर्ण। २ यज्ञपुरुष।

बुधसिंहशर्मा—मूलतानवासी एक ज्योतिर्विद्। १७६६ ई० में इन्होंने ग्रहणदर्श और प्रबोधिनी नामक उसकी टीका लिखी। ये यशोवन्तके पुत्र और गोपालके पौत्र थे।

बुधसुत (सं० पु०) बुधस्य सुत पुत्र। १ पुरूरवा। बुधश्च बुद्धस्य पुत्र। २ बुद्धके पुत्र राहुल।

बुधहाटा—खुलना जिलेका एक प्रसिद्ध ग्राम। यह अक्षा० २२ ३२´ उ० तथा देशा० ८६ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां सब प्रकारके द्रव्योंका वाणिज्य होता है। यहांके भग्नप्राय १२ शिवालय बहुत प्रसिद्ध हैं। प्रति वर्ष रासयात्रा, दुर्गा और कालीपूजाके उपलक्षमें यहां बड़ा मेला लगता है।

बुधा (सं० स्त्री०) बोधयति रोगिणं वा बुध (इगुपधेति। पा ३।१।१३५) इति कस्ततष्टाप्। जटामांसी।

बुधान (सं० पु०) बोधयति बुध्यते वा बुध बोधने (युधिबुधि दृशः किच्च। उण् २।९०) इति आनच् किच्च। १ गुरु। २ विज्ञ। ३ ब्रह्मवादी। ४ प्रियवादी। ५ कवि।

बुधाना—१ युक्तप्रदेशके मुजफ्फरनगर जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २६ १२´ से २६ २६´ उ० तथा देशा० ७७ ६ से ७७ ४०´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २८७ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखके करीब है। इसमें कन्धला और बुधाना नामके २ शहर तथा १४६ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २६ १७ उ० और देशा० ७७ २६´ पू० मुजफ्फर नगरसे १६ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ६६६४ है। १८५७ ई०के गदरमें विद्रोहियोंने इस पर अधिकार जमाया पर पीछे अङ्गरेजोंने उनका दमन कर इसे पुनरुद्धार किया।

बुधाष्टमी (सं० स्त्री०) बुधवारयुता अष्टमी, शाकपार्थिवादित्वात्समास। व्रतविशेष, बुधवारमें अष्टमी होने पर यह व्रत किया जाता है। चैत्र, पौष तथा हरिशयनकालको छोड़ अन्य मासोंमें इस व्रतको करना चाहिये। निंदितकालमें यदि बुधाष्टमी की जाय, तो पुराकृत पुण्यका विनाश होता है।

"पतङ्गे मकर याते देवे जाग्रति माधवे।
बुधाष्टमीं प्रकुर्वीत वर्जयित्वा तु चैत्रकम् ॥
प्रसुप्ते तु जगन्नाथ सन्ध्याकाले मधौ तथा।
बुधाष्टमीं न कुर्वीत कृत्वा हन्ति पुराकृतम् ॥"

(व्रतकालविवेक)

कालशुद्धिमें शुक्ल वा कृष्णपक्षकी अष्टमीमें बुधवार

हो, तो इस व्रतका अनुष्ठान करना चाहिये। इस व्रतके करनेसे दुःख नहीं होता।

हेमाद्रिके व्रतखंड भविष्योत्तरमें लिखा है—सत्ययुगमें इल नामक एक राजा थे। वे सखी आदिके साथ महादेव के शापसे हिमालय पर गये। जिस समय उन्होंने वहांकी भूमि पर पैर रखा उसी समय उनका स्त्रीरूप हो गया। बादमें घूमते घूमते वे उमाके वनमें पहुंचे, वहां बुध इनको देख अपने घर ले आये। यह दिन अष्टमीयुक्त बुधवार था। इस कारण बुधवारयुक्त अष्टमी श्रेष्ठ मानी गई है। अतएव इस दिनका नाम बुधाष्टमी पड़ा। बुधके इस स्त्रीसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम पुरूरवा रखा गया। ये ही चन्द्रवंशके आदि पुरुष हैं। बुधाष्टमीके दिन व्रत करनेसे सब प्रकारके अभीष्ट सिद्ध होते हैं। बुधवारमें अष्टमी सम्पूर्ण होनेसे यह व्रत होता है, खण्डा तिथिमें नहीं होता।

इस व्रतको आरम्भ करके आठवें वर्षमें प्रतिष्ठा करनी होती है। गरुडपुराणमें लिखा है, कि जलाशयमें बुधकी यथाशक्ति पूजा कर ब्राह्मणको दक्षिणा देनी चाहिये। बादमें बुधाष्टमी व्रतकी कथा सुन पारण करना होता है।

कथाका तात्पर्य यह है,— पुराकालमें पाटलीपुत्रमें वीर नामके एक श्रेष्ठ ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नीका नाम रम्भा, पुत्रका कौशिक और कन्याका नाम विजया था तथा उनके धनपाल नामक एक बैल था। एक दिन ब्राह्मण इनके साथ गङ्गा किनारे गये। वहां पर गोपालने बैलको चुरा लिया। गङ्गासे निकल जब ब्राह्मणने वृष को नहीं देखा, तब वे बड़े दुःखित हुए और बैल ढूंढनेके लिये ग्राममें घूमने लगे। विजया पिपासातुर हो माता के साथ सरोवर किनारे गयी। वहां दिव्य स्त्रियां इस बुधाष्टमीव्रतका आचरण कर रही थीं। उनको इस व्रतका आचरण करते देख इन्होंने भी व्रतका अनुष्ठान कर दिया। व्रतके फलसे विजयाका यमके साथ विवाह हुआ और कौशिक अयोध्या नगरके राजा हुये।

हेमाद्रिके व्रतखण्ड और व्रतपद्धतिमें इस व्रतका विशेष विवरण लिखा है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां पर सविस्तार नहीं लिखा गया।

बुधिकोट—महिसुरके कोलर जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० १२ ५४´ तथा देशा० ७८ ८´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या प्रायः १४६० है। यहां १७२२ ई०में दाक्षिणात्य विजयी हैदर अली खांका जन्म हुआ था। उस समय उनके पिता फते महम्मद खां शिराके नवाब के अधीन फौजदारका काम करते थे।

बुधित (सं० त्रि०) बुध्यते स्म सेट् बुध क्त। १ बुद्ध। २ ज्ञात।

बुधियाल— १ महिसुरराज्यके चित्तल दुर्ग जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। भूपरिमाण ३६६ वर्गमील है।

२ उक्त तालुकका विचार-सदर। यह अक्षा० १३ ३६´ उ० तथा देशा० ७६ २५´ पू० होसदुर्ग शहरसे १६ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ११११८ है। १५वीं शताब्दीमें विजयनगरके राजकर्मचारियों द्वारा निर्मित यहांके दुर्गमें १६वीं सदीकी बहुत सी शिला लिपियां देखी जाती हैं। मुसलमान और मराठोंके विप्लवसे यह दुर्ग तहस नहस हो गया है। १८३० ई०के गदरमें राजविद्रोहियोंने इस दुर्गमें आश्रय लिया था।

बुधिल (सं० त्रि०) बुध्यते यः बुध किलच्। विद्वान्।

बुध्न (सं० पु०) बुध्नातीति बन्ध बन्धने (बन्धर्ब्रधि बुधी च। उण् ३।५) इति नक् बुधादेशश्च। १ वृक्षमूल। २ मूल देश ३ अग्रभाग।

बुध्नवत् (सं० त्रि०) बुध्न मतुप् मस्य वः। मूल युक्त।

बुध्निय (सं० त्रि०) गार्हपत्य अग्नि, बुध्न्य।

बुध्न्य (सं० पु०) बुध्ने मूले भव यत्। १ गार्हपत्य अग्नि। २ अन्तरिक्षभव। ३ रुद्रभेद।

बुनना (हिं० क्रि०) १ जुलाहोंकी वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारोंकी सहायतासे कपड़ा तैयार करते हैं। विशेष विवरण 'वयन-क्रिया' शब्दमें देखो। २ बहुतसे तारों आदिकी सहायतासे उक्त क्रियासे अथवा उससे मिलती जुलती किसी और क्रियासे कोई चीज तैयार करना। ३ बहुतसे सीधे और बड़े सूतोंको मिला कर उनको कुछके ऊपर और कुछके नीचेसे निकाल कर अथवा उसमें गोंट आदि दे कर कोई चीज तैयार करना।

बुना—पूर्व और मध्य बङ्गवासी एक जातिका नाम। इस जातिकी गिनती बागदीमें की गई है।

बुनाई (हिं० स्त्री०) १ बुननेकी क्रिया या भाव, बुनावट। २ बुननेकी मजदूरी।

बुनावट (हिं० स्त्री०) बुननेमें सूतोंकी मिलावटका ढंग, सूतोंके संयोगका प्रकार।

बुनियाद (फा० स्त्री०) १ मूल, जड़। २ वास्तविकता, असलियत।

बुनियाददासी—वैष्णव सम्प्रदायविशेष। ये लोग निर्गुण उपासक हैं। इस कारण अपने भजनालयमें किसी देव प्रतिमूर्त्तिको रख कर उसकी अर्चना नहीं करते। रामात् निमात् आदि साम्प्रदायिक वैष्णव पाषण्ड बतला कर इनकी घृणा करते हैं। यहां तक कि, इनका अङ्गस्पर्श करनेसे वे लोग अपनेको अशुचि और पापग्रस्त समझते हैं।

बुनेरा—राजपूतानेके उदयपुर राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५ ३०´ उ० तथा देशा० ७४ ४१´ पू० उदयपुर शहरसे ६० मील उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या ४२५१ है। यहांके सामन्तराज उदयपुरराजके प्रधान सहाय हैं। नगर प्राचीर वेष्टित और दुर्ग द्वारा सुरक्षित है। इस राज्यमें १ शहर और १११ ग्राम लगते हैं। राजस्व ८८०००) रु० है जिनमेंसे ४६००) दरबारमें करस्वरूप देना पड़ता है। १५६७ ई०को यह अकबरके अधिकारमें था। १७वीं शताब्दीमें उदयपुरके राणा राजसिंह १मके छोटे लड़के भीमसिंह औरङ्गजेबके दरबारमें गये और उन्हें हर हालतसे प्रसन्न कर बनेरा नगर जागीर स्वरूप प्राप्त किया। औरङ्गजेबने उन्हें राजाकी उपाधि भी दी। तभीसे यह उपाधि उनके वंशधरोंमें आज तक चली आ रही है। यहां १७२६ ई०में एक दुर्ग बनाया गया था जिसे तीस वर्षके बाद ही शाहपुरके राजाने अपने अधीन कर लिया। परन्तु कुछ समय बाद ही २य राणा राजसिंहने इसके यथार्थ अधिकारीको लौटा दिया।

बुन्द—पञ्जाब प्रदेशके भिन्द राज्यके अन्तर्गत एक नगर।

बुन्दी—राजपूतानेके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य।

बूँदी देखो।

बुन्दार—मन्द्राज प्रदेशके बीजागापाटम जिलेका एक प्रसिद्ध ग्राम। यह कन्ध जातिकी आवासभूमि है। पहले यहां नरबलि बे-रोक टोक प्रचलित थी। उस उपलक्ष्यमें जो उत्सव होता था, उसे मेरिया या कुम्भा उत्सव कहते थे। १८४६ ई०के पहले यह पाप अभिनय बड़ी धूमधामसे किया जाता था। ग्रामके पूर्व, पश्चिम और मध्यस्थलमें एक एक नरदेह सूर्यके उद्देश्यसे चढ़ाई जाती थी। इनके उपास्य देवताका नाम माणिक्सोरा था।

बुन्दाला—पञ्जाब प्रदेशके अमृतसर जिलान्तर्गत एक नगर। यह नगर अक्षा० ३१ ३२´ उ० तथा देशा० ७४ ५´ पू० अमृतसरसे ११ मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या ४५०० है। यहां सिख जातिकी संख्या ही अधिक है।

बुन्देलखण्ड—आर्यावर्त्तके अन्तर्गत एक देशविभाग। यह अक्षा० २३ ५२ से २६ २६´ उ० तथा देशा० ७७ ५३´ से ८१ ३१´ पू०के मध्य विस्तृत है। इसके उत्तरमें यमुना नदी, पश्चिम और उत्तरमें चम्बल नदी, दक्षिणमें जब्बलपुर नदी और सागरविभाग, दक्षिण तथा पूर्वमें बघेलखण्ड (रेवा) तथा मिर्जापुर पर्वतमाला है। हमीरपुर, जलौन, झांसी, ललितपुर और बान्दा नामक अङ्गरेजाधिकृत जिला, ओर्च्छा, दतिया, समथर, अजय गढ़, अलीपुर और धुरवाई, बिजनातोरी, फतेपुर, पहाड़ी, बाङ्का आदि अधभाया जागीर, बरौंदा, राजगी, बेरी, बिहट, बिजावर, चरखारी और कालिञ्जरका चौबीराज्य—पालदेव, पहरा, तरावन, भाइसौंदा, कम्भा, रजौला, छत्तरपुर, गड़ौली, गौरीहर, आसो, जिग्नी, खनियाधाना, लुघासी, नैगवान, रिवाई, पन्ना, बिलहरी और सरिला आदि सामन्तराज्य इसके अन्तर्भुक्त हैं।

यह राज्यखण्ड विन्ध्याचल, पन्ना और बन्देरी पर्वत मालासे समाच्छन्न है। इसी कारण इसका अधिकांश स्थान अधित्यकामय है। यहांकी प्रधान नदियां सिन्धु, पहुज, बेतवा, धासन, बीरमा, केन, बागी, पायसुनी और तोन्स हैं जो यमुना नदीमें गिरती हैं। यहां हीरे, लोहे, कोयले और तांबेकी खान जहां तहां दिखाई देती हैं।

स्थानीय प्रवाद है, कि गोंड लोगोंने सबसे पहले यहां आ कर उपनिवेश बसाया। पीछे चन्देलवंशीय राजपूतोंने गोंड राजाओंको परास्त कर अपनी प्रतिष्ठा जमाई। चन्देलराजाओंके अधिकारके समय यहां सैकड़ों शिल्पकार्ययुक्त देवमन्दिर और जलाशय आदि बनाये गये

थे। अभी उनका केवल भग्नावशेष मात्र इधर उधर विक्षिप्त देखा जाता है। अलावा इसके हमीरपुर जिलेकी जलप्रणाली, कालिञ्जर और अजयगढ़का विख्यात दुर्ग तथा खजुराह और महोवाका प्रसिद्ध मन्दिर आज भी उनकी प्राचीन कीर्त्तिकी घोषणा करती है।

फिरिस्ताके वर्णनसे मालूम होता है, कि १०२१ ई०में गजनीपति महमूदके आक्रमणके समय चन्देल राजाने ३६ हजार अश्वारोही, ४५ हजार पदाति और ६४० हाथी ले कर उनका मुकाबला किया था। चन्देल वंशके प्रतिष्ठाता राजा चन्द्रवर्मासे निम्न २०वीं पीढ़ीमें राजा परमालदेव ११८३ ई०में दिल्लीके चौहानपति पृथ्वीराजसे परास्त हुए थे। परमालदेवके अधःपतनके बाद राज्यमें अराजकता फैल गई और मुसलमानोंके बार बार आक्रमणसे यह स्थान श्रीभ्रष्ट हो गया। आखिर १४वीं शताब्दीमें गहरवारवंशीय राजपूत जातिकी चन्देलशाखा इस प्रदेशमें आ कर यमुनाके किनारे बस गई। उन्होंने धीरे धीरे कालिञ्जर और कालपी नगर अधिकार किया और महोनीमें राजधानी बसाई।

१५३१ ई०में राजा रुद्रप्रतापने ओर्च्छा नगर स्थापन किया। इनके शासनकालमें बुन्देलाराज्यकी सीमा बहुत दूर तक फैल गई थी। पीछे बुन्देला प्रभाव यमुनाके पश्चिम प्रदेशमें भी फैला। तभीसे यह स्थान बुन्देलखण्ड कहलाने लगा।

इसके कुछ दिन बाद ही ओर्च्छाराज रुद्रप्रतापके प्रपौत्र राजा वीरसिंहदेवने मुसलमानी आक्रमणसे भय पा कर मुगल बादशाहकी अधीनता स्वीकार की। किंतु चम्पतराय नामक एक चन्देला सरदारने बेतवा तीरवर्ती पार्वत्यप्रदेशमें रह कर मुसल्मानी सेनाको नाकोदम लाया था।

ख्यातनामा बुन्देलाराज छत्रशाल उक्त महापुरुषके सुपुत्र थे। उन्होंने पितृपदका अनुसरण करके अपने जीवनको सार्थक बनाया था। उन्होंने बुन्देलागणमें प्रधान सरदार और सेनापति नियुक्त होनेके बाद अपने दलबलके साथ पन्नाकी यात्रा की और वहांके पहाड़ी दुर्गों पर अधिकार जमाया। इस प्रदेशमें जहां जहां उनके शत्रु रहते थे उन सब स्थानोंको उन्होंने अग्निसे जला दिया। आखिर कालिञ्जरका दुर्ग जीत कर उन्होंने वहां अपना राज्य बसाया। १७३४ ई०में फर्रुखाबादके पठान नवाब अहमद खाँ बङ्गसने उन पर धावा बोल दिया। इस बार शत्रुके हाथसे विशेष कष्ट पा कर वे मराठोंकी सहायता लेनेको बाध्य हुए। महाराष्ट्र पेशवा बाजीराव सुयोग पा कर बुन्देलखण्डमें अपनी गोटी जमानेके लिये दलबलके साथ आये और अहमद खाँको परास्त कर बुन्देलाराजको विपद्से उद्धार किया। इस कार्यके पारितोषिक स्वरूप पेशवाको बुन्देलखण्डके पूर्व भागका कुछ अंश और एक दुर्ग मिला। पीछे उन्होंने काशीके एक ब्राह्मण पण्डितको यह स्थान दान कर दिया। अंगरेजोंके दखलमें आनेके पहले तक यह स्थान उन्हीं काशीपण्डित ब्राह्मणके वंशधरोंके शासनाधीन था।

इसके बाद पेशवाने ओर्च्छाराजसे झांसी छीन लिया। उन्होंने जिस सूबेदारके हाथ इस स्थानका कार्यभार सौंपा था, उन्हींके वंशधरोंने कुछ समय तक यहांका राज्यकार्य चलाया था। राजा छत्रशालके वंशधरगण सामान्य सम्पत्तिके उत्तराधिकारी हो कर भी भिन्न भिन्न भागोंमें इस स्थानका शासन करते थे। किन्तु इस अधःपतनशील राजवंशके राजकर्मचारियोंके विद्रोहसे महा विशृङ्खलता उपस्थित हुई।

इस अराजकता और अन्तर्विप्लवजनित छोटी मोटी लड़ाइयोंसे बुन्देलाराज्यको चौपट लगने देख बाजीरावके पौत्र अली बाहादुरने (१) तलवार उठाई और घमसान युद्धके बाद इस प्रदेशका कुछ अंश अधिकार कर लिया। १८०२ ई०में कालिञ्जर दुर्गमें घेरा डालनेके समय अलीकी मृत्यु हुई। पीछे पूना राजदरबारकी अनुमतिसे अलीके पुत्र समशेर बहादुरको तरफसे हिम्मत् बहादुर राजकार्य की देखरेख करने लगे।

इधर महाराष्ट्रीय सामन्त राजाओंके विद्रोह और बसाईके सन्धिपत्रके गोलमालसे अंगरेजराज बुन्देलखण्डके कुछ अंशों पर अधिकार कर बैठे। इस पर भग्न सन्तुष्ट हो सिन्धिया, होल्कर और बेरारपति तथा समशेर

(१) ये पेशवा बाजीरावकी मुसलमान रमणीसे उत्पन्न हुए थे।

द्वारा परिचालित महाराष्ट्र सैन्यने अंगरेजोंके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। राजा हिम्मत बहादुरने भविष्यमें अपनी स्वार्थहानि देख अंगरेजोंका पक्ष लिया और इस प्रदेशका कुछ अंश फिरसे उन्हें सपुर्द किया। इस समयके बन्दोबस्तके अनुसार अंगरेज लोग राजा हिम्मतको सैन्यरक्षाके लिये २० लाख रुपयेकी सम्पत्ति और महा यनाके लिये जागीर देनेको राजी हुए। अंगरेजी सेना बुन्देलखण्डमें घुसी और मौका पा कर समशेरको परास्त किया। हिम्मतकी मृत्युके बाद उनकी सम्पत्ति अंगरेजराजने छीन ली। अब उनके वंशधरगण केवलमात्र जागीर और वार्षिक वृत्तिका भोग करने लगे। समशेर बहादुरने अंगरेजराजसे दी गई ४ लाख रुपयेकी वृत्तिसे सन्तुष्ट हो बन्दामें रहनेकी अनुमति पाई थी। १८२३ ई०में यहां उनकी मृत्युके बाद उनके भाई जुल्फिकर अली उनकी सम्पत्तिके अधिकारी हुए।

जुलफिकरके बाद अली बहादुरने उस सम्पत्तिका भोग किया। परन्तु १८५७ ई०के गदरमें उन्हें शामिल पाये जानेके कारण उनकी सम्पत्ति छीन ली गई और वे इन्दौर राजधानीमें नजर बन्द किये गये। १८७३ ई०में उनकी मृत्यु होने पर उनके वंशधरोंको अंगरेज राजसे १२०० रुपयेकी वृत्ति मिली।

अंगरेजोंने पहले पहल इस प्रदेशमें हिम्मत बहादुर और पेशवा-प्रदत्त कुछ भूमि प्राप्त की। १८१८ ई०में पेशवाके अधःपतनके बाद समूचा बुन्देलखण्ड अंगरेजों के दखलमें आया। इसके बाद जलौन, झांसी, जैतपुर, खद्दी, चिरगांव, पूर्वा, निश्चयावरगढ़ तिरोहा, शाहगढ़ और बाणपुर आदि सामन्त राज्योंके शासनकर्त्ताओंके व्यवहारसे असन्तुष्ट हो वृटिश सरकारने उनकी सम्पत्ति अपने हाथ कर ली।

बुन्देला—बुन्देलखण्ड निवासी गाहरवाड़ शाखासे उत्पन्न राजपूत जाति। देवी विन्ध्यावासिनी भवानीके वरदान से ये लोग बुन्देला कहलाये और उनका प्रदेश बुन्देलखण्ड नामसे प्रसिद्ध हुआ। इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि यह गाहरवाड़ जाति भिन्न देशसे यमुना पार में आ कर यहां बस गई थी। (१)

बुन्देलखण्डके राजइतिहासमें लिखा है, कि यह जाति अयोध्याधिपति सूर्यवंशीय राजा रामचन्द्रके वंशमें उत्पन्न हुई है। राज इतिहासमें इसकी वंशतालिका इस प्रकार है—

रामचन्द्रके पुत्र कुश, कुशके पुत्र हरिब्रह्म (महीपाल), हरिब्रह्मके पुत्र उरिम, उरिमके अलस्थान, अलस्थानके विमलचन्द, विमलके पुत्र छत्रपाल, छत्रपालके पुत्र योधपाल, और योधपालके पुत्र विहङ्गराज (विहङ्गेश) थे। इन सातोंने ही अयोध्यामें राज्य किया था।

विहङ्गके पुत्र काशराजने बनारसमें आ कर राज पाट स्थापित किया; ये ही पहले पहल काशीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुये। काशीराजके पुत्र गुहिलदेव, गुहिलके निमलचन्द, निमलचन्द्रके गोपचन्द, गोपके गोविन्दचन्द, गोविन्दके तुहिनपाल, तुहिनके विन्ध्यराज, विन्ध्यके लुनिकदेव, लुनिकके विदलदेव विदलके अर्जुनब्रह्म और अर्जुनके पुत्र वीरभद्र थे। इन्हों ने यथाक्रम काशीके सिंहासन पर बैठ कर प्रबल प्रतापके साथ राज्यशासन किया। राजा वीरभद्रके चार पुत्र थे जिनमेंसे कुमार पंचमको राजा अधिक चाहते थे। पिताकी मृत्युके बाद पञ्चम राजगद्दी पर बैठे। उनके अन्य भाइयोंने विद्रोही बन इनको राज्यसे निकाल दिया। उदासीन हो पंचमने विन्ध्याचल आ कर विन्ध्यावासिनी देवीकी आराधना की। कठोर तपसे भी देवी प्रसन्न न हुई, यह देख कर उन्होंने आत्मोत्सर्ग करना चाहा। जब वे अपनी तलवारसे मस्तक छेदनेमें उद्यत

(१) मिर्जापुरमें प्रवाद है, कि गाहरवाड़ वंशीय कोई राजपूत परिवार विन्ध्याचलके निकट गौड़ ग्राममें आ बस गया। इस वंशके कोई पूर्व पुरुष पन्नाराजके अधीन काम करते थे। निःसन्तान पन्नाराजकी मृत्युके बाद उन गाहरवाड़ राजकर्मचारीने उनके दुर्ग पर अधिकार जमाया। किंतु वे स्वयं पुत्र रहित थे अतएव यह नूतन राजपाट उनको भी अच्छा नहीं लगता था। वे संसारसे उदासीन हो विन्ध्याचलवासी विन्ध्यावासिनी देवीके निकट चले गये। वहां देवीके प्रसादके लिये अपना मस्तक दान करनेको उद्यत हो गये। उनके शरीरस्थ रक्त बिन्दुओंसे एक बालक उत्पन्न हुआ। बिन्दु (बुंद)से उत्पन्न होनेके कारण उस बालकका बुंदेला नाम पड़ा। उनके वंशधर भी बुन्देला नामसे प्रसिद्ध हुए।

हुये तब देवी पञ्चमके सामने स्वशरीरसे आविर्भूत हुई तथा बड़े प्रसन्न हो उनसे बोलीं, "वत्स ! हमारे वरदानसे तुम राज्यमें लौट जाओ और बहुत राज्योंको जीत कर एक सुदूरव्यापी जनपद बसाओ तथा सुखसे जीवनयात्रा निर्वाह करो। वत्स ! तुमने हमारे सामने अपने जीवन उत्सर्गमें जो रक्तविन्दु गिराया था उससे तुम्हारे जैसा यह पुत्र उत्पन्न हुआ। यह पुत्र विपत्तिमें और युद्धविग्रहमें तुम्हें सहायता पहुंचायेगा तथा तुम्हारे ये वंशज बुन्देला नामसे प्रसिद्ध होंगे।

पञ्चम राज्यमें लौट आये और काशीश्वरकी उपाधि ग्रहण कर राज्यशासन करने लगे। पीछे ये अपने पुत्र वीरसिंह-को अयोध्याका शासनभार सौंप आप निश्चिन्त रहे। राजा वीरसिंहने अपने भुजबलसे पूर्व दिशाके प्रदेशोंको जीत अफगानके राजा सत्तर खाँ को हराया। बादमें जय प्रणोदित हो उन्होंने कालिञ्जर दुर्ग जीतनेकी इच्छासे दक्षिणकी ओर प्रस्थान किया। कालिञ्जर और काल्पि विना प्रयासके उनके हाथ लगा। इसके अनन्तर उन्होंने महोनीतमें आ राज्य बसाया। अपनी वीरताके कारण ये लौहधार नामसे विख्यात हुये थे।

वीरसिंहके पुत्र राजा बलवन्तने भी पिताकी तरह राज्यशासन किया। उनके पुत्र अर्जुनपालने कुण्डहरा गढ़ पर अधिकार और जैतपुरमें राज्यस्थापन किया। अर्जुनके पुत्र सुहिनपाल, सुहिनके महजेन्द्र, महजेन्द्रके लुनिगंदेव, लुनिगंदेवके पृथ्वीराज, पृथ्वीराजके रामचन्द्र, रामचन्द्रके मेदनीमल्ल, मेदनीमल्लके अर्जुनदेव, अर्जुनदेवके पुत्र मालिक हुए और मालिकके पुत्र उच्छाधिपति ख्यातनामा रुद्र प्रतापने सिंहासन पर बैठ पुत्रकी तरह प्रजापालन किया था। उनके भर्त्तृचन्द्र मधुकर (मधुकर शाह), उदयादित्य, कीर्त्तिशाह, भगत दास, उमादास, चन्द्रदास, घनश्याम दास, प्रयाग दास, भैरवदास, और खण्डेराय आदि १२ पुत्र दया, माया और युद्ध आदि विषयोंमें पारदर्शी थे।

राजा रुद्रप्रतापकी मृत्युके बाद भर्त्तृचन्द राजा हुए। उनके बाद मधुकर शाह राजसिंहासन पर बैठे। अन्य सब भाइयोंने इनकी अधीनता स्वीकार की, किन्तु उदयादित्यने अपने भुजबल और बुद्धिमत्ताके साथ दलबल संग्रह कर महोनेमें राज्य स्थापित किया। उनके पुत्र प्रेमचन्दने बहुतसे युद्धोंमें सैयद और अफगान सेनाको हराया। उनके तीन पुत्र थे जिनमेंसे विख्यात वीर भगवन्त राव महोनेके सिंहासन पर मानसिंह शाहपुरमें और किशोरसिंह सिमरोहमें रह राज्यशासन करते थे। भगवन्तके पुत्र कुलनन्द बड़े धार्मिक थे। उनके खड्गराय, चन्द्रराय, शोभनराय, और चम्पत्राय नामके चार पुत्र थे। राजा चम्पतराय मुगलसम्राट् शाहजहांके प्रभावकी उपेक्षा कर उन्हे राजकर देनेसे इनकार चले गये। इस लिये सेनापति बकि खाँ उन्हे उचित दण्ड देनेके लिये आया। इस युद्धमें मुगल सेना पराभूत हो लौट जानेको बाध्य हुई।

राजा चम्पत्रायके पांच पुत्र थे—सर्वाहन, अङ्गदराय, रतनशाह, छत्रशाल और गोपाल। इनमेंसे छत्रशाल ही बुन्देला जातिकी गौरव वृद्धि करनेमें समर्थ हुए थे।

छत्रसाल देखो।

राजा छत्रशालके यत्नसे सैकड़ों बुन्देला सर्दारोंने एकत्र हो मुसलमानोंसे युद्ध किया था। छत्रपुरमें छत्रशालकी मृत्यु हुई। इस नगरमें उनका विख्यात समाधिमंदिर आज भी विद्यमान है। हृदयशाह, जगत्राय, पद्मसिंह, भर्त्तृचन्द प्रभृति चार पुत्र उनकी प्रथम पत्नीसे और दूसरी स्त्रीसे उनके १२ पुत्र हुए थे।

राजा छत्रशाल मृत्युके समय अपनी सारी सम्पत्ति दो भागोंमें बांट गये थे। हृदयसिंहने पन्नाराज्य पाया और जगत्राय जैतपुरके सिंहासन पर अधिष्ठित हुये।

पन्ना शब्दमें पन्नाराजवंशका विवरण देखो।

जैतपुर राज्यमें जगत्राय अधिष्ठित रह राज्यशासन करते थे। उनके राज्यकालमें महम्मद खाँ बङ्गसेरके आदेशानुसार उनके सेनापति दलिल खाँ दलबलके साथ अग्रसर हुए। नदपुरिया नामक स्थानमें दोनों दलोंमें घोर सङ्घर्ष हुआ। इस युद्धमें बुन्देलाराज रामसिंहको निहत देख प्रत्यावर्त्तन करते थे, ऐसे ही समयमें शत्रु हाथसे आहत हो जगत्राय अश्वपृष्ठसे गिर पड़े। छावनीमें लौट कर उनकी पत्नी रानी अमरकुमारी पतिको न देख भीत और चकित हो गई। फिर दृढ़चित्त हो स्वामी दर्शनकी प्रत्याशासे रणभूमिमें कूद पड़ा। सम्मेय

अग्रसर हो उन्होंने पहिले दलिलके शिविर पर आक्रमण कर दिया। अतर्कित अवस्थामें आक्रमण करनेसे मुसलमानी सेना भी आत्मरक्षामें समर्थ न हुये। युद्धमें उनकी हार हुई। जयलाभके बाद उल्लसित सैन्यमण्डली मशाल जला कर राजाकी भूपतित देहकी तलाश करने लगी। शेषमें शिविर लानेके बाद रानीके यत्नसे राजा होशमें आये।

दलिल खांकी मृत्यु और पराभवसे निरुद्यम न हो महम्मदने फिरसे बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर लिया। इस बार निरुपाय देख जगत्राय पेशवा बाजीरायसे सहायताके लिये प्रार्थना की। बाजीरावने इतकार्यके पारितोषिक स्वरूप बुन्देलखण्डके कितने ही प्रदेश पाये थे। इस स्थानसे लौटकर सम्मानपूर्वक वे मस्तानी नामकी एक मुसल्मान बालिकाको अपने साथ ले गये। इसी रमणीके गर्भसे समशेर बहादुरका जन्म हुआ था।

१८१५ सम्वत्‌में (१७०८ ई०में) जगत्रायका माउ नगरमें देहान्त हुआ। उनकी मृत्युके पहले उनके पुत्र कीर्त्तिसिंहकी मृत्यु हो गयी थी और कीर्त्तिने प्रार्थनानुसार उन्होंने अपने पौत्र कीर्त्तिके पुत्र गुमानसिंहको 'सैनाान सिरोही' पद पर अभिषिक्त किया।

राजा जगत्रायकी मृतदेह ले उनके पुत्र पहाड़सिंह जैतपुरमें चले आये। पहले उन्होंने घोषणा कर दी, कि राजा मृत्युरोगसे शायित हो रहे हैं, उनकी मुक्तिका और कोई उपाय नहीं है। इस शवदेहको वे अपने घरमें रख स्वयं सिंहासन पानेकी आशामें षड़यन्त्र रचने लगे। गुमानसिंहके बदलेमें उन्होंको सिंहासन पर अभिषिक्त करनेके लिये वे सेनापतियोंको घूस भी देने लगे। कुमार फतेसिंह, सेनापत और वीरसिंह देव आदि उनकी ओरसे गुमानके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये राजी हुये।

पहाड़सिंहका सिंहासनाधिकार और राजा जगत्रायका मृत्युसंवाद पा गुमानसिंहने दूत भेज अपना प्राप्य जैतपुरका सिंहासन पानेके लिये अनुरोध किया किन्तु पहाड़सिंहने इसे सुनी अनसुनी कर कहला भेजा, कि अपने पिताके सिंहासन पानेके वे ही एक मात्र अधिकारी हैं। पुत्रके रहते पौत्रका कोई भी अधिकार सिंहासन पर नहीं हो सकता।

गुमान सिंह इस पर बड़े बिगड़े और उन्होंने जैतपुर राज्यको नष्टभ्रष्ट करनेका दृढ़ सङ्कल्प किया। १७६१ ई०में कुन्देलाके समीप दोनों सेनामें घोरतर युद्ध हुआ। इस युद्धमें गुमान सिंह स्वीय मित्र नवाब नजफ खांके साथ परास्त हुये। १७६५ ई०में मृत्युशय्या पर शायित हो पहाड़सिंहने गुमानसिंहको कहला भेजा, 'मैं संसारका परित्याग कर चला जा रहा हूं, यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो ससैन्य हमारे ऊपर आक्रमण करो।' पहाड़सिंह कुलपहाड़में रह निज सम्पत्तिका विभाग कर रहे थे। इसी समय वहां गुमान और उनके भाई खुमानसिंह उपस्थित हुये। उन्होंने गुमानको बांदा और खुमानको चारखाड़ीका राजपद प्रदान किया।

इसके बाद बुन्देला राजाओंकी विशेष प्रतिपत्तिकी कथा मालूम नहीं। महाराष्ट्रके अभ्युदय कालमें वे सहकारी रूपसे युद्धकार्यमें व्यापृत थे। हिम्मत खांका विद्रोह और अंग्रेज समागम तथा महाराष्ट्र युद्धादिका विषय बुन्देलखण्डमें विवृत हुआ है।

बुबुक्ना (हिं० क्रि०) जोर जोरसे रोना, ढाढ़ मारना।

बुबुकारी (हिं० क्रि०) उच्च स्वरसे क्रन्दन करना।

बुबुधान (सं० पु०) १ आचार्य। २ देव। ३ पण्डित।

बुबुर (सं० क्ली०) उदक, जल।

बुभुक्षा (सं० स्त्री०) भोक्तुमिच्छा भुज इच्छार्थे सन्, बुभुक्ष धातु (अ प्रत्ययात्। पा ३।३।१०२) इति अस्ततष्टाप्। क्षुधा, खानेकी इच्छा।

बुभुक्षित (सं० त्रि०) बुभुक्षा भोजनेच्छा सञ्जाताऽस्य (तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच्। पा ५।२।३६) क्षुधित, जिसे भूख लगी हो। (मनु १०।१०५)

बुभुक्षु (सं० त्रि०) भोक्तुमिच्छु भुज सन उ। भोजन करनेमें इच्छुक।

बुभूर्ष (सं० त्रि०) बिभर्त्तुमिच्छु सन उ। भरण करनेमें इच्छुक।

बुभूषक (सं० त्रि०) बुभूष-कन। यशकी इच्छा रखनेवाला।

बुभूषा (सं० स्त्री०) भवितुमिच्छा भू सन, अ, टाप्। यशकी इच्छा रखना।

बुयाम (अ० पु०) चीनी मट्टीका बना हुआ एक प्रकारका गोल और ऊँचा बड़ा पात्र। यह साधारणतः तेजाब और अचार आदि रखनेके काममें आता है, जार।

बुरकना (हिं० क्रि०) १ किसी पिसी हुई या महीन चीज को हाथसे धीरे धीरे किसी दूसरी चीज पर छिड़कना, भुरभुराना। (पु०) २ बच्चोंकी वह दावात जिसमें वे पटिया आदि पर लिखनेके लिये खरिया मट्टी घोल कर रखते हैं।

बुरका (अ० पु०) १ मुसलमान स्त्रियोंका एक प्रकारका पहनावा। यह प्रायः थैलेके आकारका होता है। दूसरे दूसरे वस्त्र पहन चुकनेके बाद यह सिर परसे डाल लिया जाता है और इससे सिरसे पैर तक सभी अंग ढके रहते हैं। जो भाग आँखोंके सामने पड़ता है उसमें जाली लगी रहती है जिसमें चलते समय सामनेको चीजें दिखाई पड़ें। २ वह झिल्ली जिसमें जन्मके समय बच्चा लिपटा रहता है, खेड़ी।

बुरकाना (हिं० क्रि०) बुरकनेका काम दूसरेसे कराना, दूसरेको बुरकनेमें प्रवृत्त करना।

बुरदू (अ० पु०) १ पार्श्व, बगल। २ ओर, तरफ। ३ जहाजका वह भाग जो हवा या तूफानके रुख पर न पड़ता हो, बल्कि पीछेकी ओर हो। ४ जहाजका बगल-वाला भाग।

बुरा (हिं० वि०) निकृष्ट, मन्दा।

बुराई (हिं० स्त्री०) १ नीचता, खोटापन। २ बुरे होनेका भाव, बुरापन। ३ किसीके सम्बन्धमें कही हुई कोई बुरी बात, शिकायत, निन्दा। ४ अवगुण, दोष।

बुरादा (फा० पु०) १ वह चूर्ण जो लकड़ीको आरेसे चीरने पर उसमेंसे निकलता है, लकड़ीका चूरा। २ चूर्ण, चूरा।

बुरुड—दाक्षिणात्यवासी अन्त्यजजातिविशेष। बांसकी डाली आदि तैयार करना ही इन लोगोंका जातीय व्यवसाय है। इनकी उत्पत्तिका विवरण यों है—पहले ये लोग मराठा थे। ज्येष्ठकी पूर्णिमामें पार्वती देवीकी वट वृक्षपूजाके लिये इन्होंने फलपुष्पवहनोपयोगी डाली बनाई थी इसीसे ये जातिच्युत हुये।

इनके मध्य आद, कणाडी, लिंगायत, मराठा, परारी और तैलंग आदि श्रेणीविभाग हैं। ये एक दूसरेके साथ न तो आदानप्रदान करते और न एक साथ बैठ कर खाते ही हैं। प्रायः सभी लोग मद्य तथा मांसप्रिय होते और पूजादिमें उपवास करते हैं। इन लोगोंका पहनावा बहुत कुछ मराठियोंसे मिलता जुलता है।

महादेव इनके प्रधान उपास्य देवता हैं। ब्राह्मण और जङ्गमोंमें इनकी अटल भक्ति है। विवाह और श्राद्धादिमें ब्राह्मणोंको बुलाते हैं।

जातबालकके पांचवें दिन ये षष्ठी देवीकी पूजा करते हैं। तीन महीनेके बादसे ले कर दो वर्ष तकके बालकोंका मुण्डन होता है। मृत्युके बाद ये लोग शवको जलाते और गाड़ते भी हैं। दशवें दिन पिण्ड दान करते हैं। इन लोगोंमें विधवा विवाह प्रचलित है।

बुरापन (हिं० पु०) बुराई देखो।

बुरुश (अं० पु०) अंगरेजी ढंग पर बनी हुई किसी प्रकारकी कूँची। यह कूँची चीजोंको रगने, साफ करने या पालिश आदि करनेके काममें आती है। बुरुश प्रायः कूटी हुई मूँज या कुछ विशेष पशुओंके बालोंसे बनाए जाते हैं और भिन्न भिन्न कार्यके लिये भिन्न भिन्न आकार प्रकारके होते हैं। रंग आदि भरनेके लिये जो बुरुश तैयार किये जाते हैं उनमें प्रायः काठके एक चौड़े टुकड़े में छोटे छोटे बहुतसे छेद करके उनमें एक विशेष क्रिया और प्रकारसे मूँज या बालोंके टुकड़ोंमें एक दस्ता भी लगा दिया जाता है। यह प्रायः मूँज या नारियल, बेंत आदिके रेशोंसे अथवा घोड़े, गिलहरी, ऊँट, सूअर, भालू, बकरी आदि पशुओंके बालों से बनाये जाते हैं।

बुरुल (हिं० पु०) एक प्रकारका बहुत बड़ा वृक्ष। यह हिमालयमें १३००० फुटकी ऊँचाई तक होता है। इसका छिलका बहुत साफ और चमकीला होता है जिससे पहाड़ी लोग झोंपड़े बनाते हैं। इसकी लकड़ी छत पाटने और पत्ते चारेके काममें आते हैं।

बुर्ज (अ० पु०) १ किले आदिकी दीवारोंमें, कोनों पर आगेको ओर निकला अथवा आस पासकी इमारतसे ऊपरकी ओर उठा हुआ गोल या पहलदार भाग। इसके

बीचमें बैठने आदिके लिये थोड़ी सी जगह होती है। प्राचीनकालमें प्राग इस पर रख कर तोपें चलाई जाती थी। २ गुबद। ३ गुम्बारा। ४ राशिचक्र। ५ मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकारका इमारत या कोई अंग।

बुर्द (फा० स्त्री०) १ ऊपरी लाभ, ऊपरी आमदनी। २ शर्त, बाजी। ३ शतरञ्जके खेलकी वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते हैं और केवल बादशाह रह जाता है। उस समय बाजी 'बुर्द' कहलाती और आधी मात समझी जाती है।

बुर्द्द—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत एक नगर।

बुर्गी (हिं० स्त्री०) बीज बोनेका एक ढंग। इसमें बीज हलकी जोतमें डाल दिये जाते हैं और उसमेंसे आपसे आप गिरते चलते हैं।

बुर्स (अ० पु०) बुरुश देखो।

बुर्हान निजामशाह २य—निजामशाही वंशके ७म राजा। इन्होंने १५६० से १५६४ ई० तक राज्य किया। ये बुर्हानाबाद नामक एक नगर बसा गये हैं।

निजामशाही देखो।

बुर्हान इमादशाह—इमादशाही वंशके ४ थ राजा। इन्होंने १५६० से १५६४ ई० तक राज्य किया। ये तफल्लुल खाँसे पराजित और बन्दी हुए थे। उनकी राज्यच्युतिके बाद तफल्लुलने कुछ दिनों तक राज्यशासन किया था।

बुर्हानपुर—१ मध्यप्रदेशके निमार जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २१ ५´से २१ ३७´ उ० तथा देशा० ७५ ५७´ से ७६ ४८ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ११३८ वर्गमील और जनसंख्या ८० हजारसे ऊपर है। इसमें बुर्हानपुर नामका १ शहर और १६४ ग्राम लगते हैं। असीरगढ़ नामका यहां एक प्राचीन किला भी है।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २१ १८´ उ० तथा देशा० ७६ १४´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ३३३४१के लगभग है। हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। १४०० ई०में खानदेशके फरूखिवंशीय राजा नसिर खाँने इस नगरको दौलताबादके विख्यात मुसलमान शेख बुर्हानउद्दीनके नाम पर बसाया। दाक्षिणात्य के अन्यान्य मुसलमान राजाओं द्वारा यह नगर बार बार आक्रमण और लूटे जाने पर भी फरूखि वंशके ११वें राजाने यहां राज्य किया था। १६०० ई०में सम्राट् अकबरशाहने इसे अपने शासनभुक्त कर लिया।

बादशाह किलेके दो शिखरको छोड़ कर प्राचीन फरूखि राजाओंकी और कोई कीर्त्ति नहीं देखी जाती। उक्त वंशके बारहवें राजा अली खाँ यहां पर जुमा मसजिद आदि अनेक सुन्दर अट्टालिका बना गये हैं। अकबर और उनके वंशधरोंके उद्यमसे यह नगर सौधमालासे भूषित हो गया था। १६३५ ई० तक दिल्लीके अधीनस्थ राज पुरुषगण यहां रह कर राजकार्य चलाते थे। पीछे यहांसे औरङ्गाबादमें राजधानी उठा कर लाई गई थी। उसके बादसे बुर्हानपुर खानदेश सूबाके प्रधान नगररूप में परिणत हुआ।

१६१४ ई०में अङ्गरेजी दूत सर टामस रो बुर्हानपुर आ कर यहांकी अवस्था वर्णन कर गये हैं। उसके ४४ वर्ष बाद टावर्नियरने इस नगरकी विशेष समृद्धिकी कथाका उल्लेख किया है। मुगल प्रभावके समय इस नगरसे नाना द्रव्योंकी रफ्तनी पारस्य, तुरुष्क, मास्कोभियो, पोलण्ड, अरब और इजिप्त आदि प्रदेशोंमें होती थी।

सम्राट् औरङ्गजेबके राजत्वकालमें बुर्हानपुर दाक्षिणात्ययुद्धका केन्द्रस्थल बन गया था। १६८५ ई०में औरङ्गजेबके दलबल समेत बुर्हानपुरका परित्याग करनेके बाद ही मराठोंने इस नगरको लूटा। उसके ३४ वर्ष बाद मराठा लोग लगातार युद्धके बाद यहांसे चौथ संग्रह करनेमें समर्थ हुये थे। १७२० ई०में आसफजाह निजाम उल्मुल्कने दाक्षिणात्यको फतह कर इस नगरमें राजपाट स्थापन किया। १७४८ ई०में यहीं पर उनकी मृत्यु हुई।

१७३१ ई०में नगरके चारों ओर प्राचीर और बुर्ज तथा ६ सिंहद्वार स्थापित हुए १७६० ई०में उदयगिरि युद्धके बाद निजामने बुर्हानपुरराज्य पेशवाके हाथ सौंपा। इसके १८ वर्ष पीछे सिन्धियाराजको उक्त सम्पत्ति हाथ लगी। १८०३ ई०में सेनापति वेलेस्ली ने नगर पर अधिकार जमाया। किन्तु १८६० ई०से ही

यह सम्यक्रूपसे अङ्गरेजोंके दखलमें आया। १८४६ ई०में यहां हिन्दू और मुसलमानके बीच झगड़ा खड़ा हो गया था जिसमें दोनों तरफके बहुतसे लोग मरे थे। वर्त्तमान अट्टालिकाके मध्य अकबरशाहका लालकिला और औरङ्गजेबकी जुम्मा मसजिद ही प्रधान है। रवनियरके समयसे ले कर वर्त्तमानकाल तक यहां रेशम मसलिन आदि वस्त्रोंका विस्तृत कारबार होता चला आ रहा है। शहरमें एक मिडिल इङ्गलिश स्कूल, एक बालिका स्कूल और एक अस्पताल है।

बुर्हानाबाद—दाक्षिणात्यके अहमदाबाद जिलान्तर्गत एक नगर। मुगलसेनापति शाहबाज खां इस नगरको लूट और विध्वस्त कर गये हैं।

बुर्हेला—राजपूत जातिकी एक शाखा। ये लोग रघुवंशी और बाई सम्प्रदायकी कन्यासे विवाह करते और अमेठियाओंको अपनी कन्या देते हैं।

बुलन्द (फा० वि०) १ उत्तुङ्ग, भारी। २ जिसकी ऊँचाई अधिक हो, बहुत ऊँचा।

बुलन्दी (फा० स्त्री०) १ बुलन्द होनेका भाव। २ ऊँचाई।

बुलडाग (अं० पु०) मझोले आकारका एक प्रकारका विलायती कुत्ता। यह बहुत बलवान, दुष्ट और देखनेमें भयङ्कर होता है।

बुलढाना—पश्चिम बरार विभागका एक जिला। यह अक्षा० १६ १´से २१ १´ उ० तथा देशा० ७५ ५६´ से ७६ ५२´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २८०६ वर्गमील है। चिखली, मालकापुर और मेहकर नामक तीन तालुकमें यह जिला विभक्त है।

यह जिला बेरार बालाघाट पर्वतके अधित्यका देशमें अवस्थित है। इसकी उपत्यकाभूमिमें बहुत सी पवित्र सलिला नदियोंके बहनेसे यह स्थान कृषिकार्यके उपयोगी हो गया है। पेणगङ्गा, नलगङ्गा, विश्वगङ्गा, घन, पूर्णा और काटापूर्णा आदि यहांकी प्रधान नदियां हैं। जिलेके दक्षिण भागमें लोनर नामक ह्रद है। उस ह्रदके किनारे उत्कृष्ट कारुकार्ययुक्त एक प्राचीन हिन्दूमन्दिर स्थापित है। हिन्दूमात्र ही उस मन्दिरको पवित्र समझते हैं।

देवलघाट नामक स्थानमें पेणगङ्गाके किनारे, मेहकर, सिन्धखेर और पिम्पल गांव नामक स्थानमें हेमाड पन्थियोंके प्राचीन मन्दिर देखे जाते हैं। जब पूर्णाकी उपत्यकाभूमि मुसलमानोंके हाथ लगी, उस समय जैन राजाओंने यहां आधिपत्य फैलाया था। १२९४ ई०में दिल्लीके शासनकर्त्ता अलाउद्दीनने इस प्रदेश पर अधिकार किया और इलिचपुर आदि स्थानोंमें अपनी प्रतिष्ठा जमाई। धीरे धीरे उनके वंशधरोंके यत्नसे दक्षिणदिग्वर्त्ती भूभाग मुसलमानोंके शासनभुक्त हुए। १३१८ ई०में समस्त बेरार प्रदेश पर मुसलमानोंका अधिकार फैल गया था। १४३७ ई०में अहमदशाह बाह्मनीके लड़के अलाउद्दीनने रोहन खेर नामक स्थानमें खान्देश और गुजरातराजाको सेनाको परास्त किया। बाह्मनी राजवंशके बाद इमादशाही राजाओंने यहां आधिपत्य फैलाया। पीछे अहमदनगर राजवंशका अभ्युदय हुआ। १५९६ ई०में चाँदबीबीने बेरार राज्य सम्राट् अकबरशाहके हाथ सौंपा। सम्राट्के लड़के मुराद और दानियाल बारी बारीसे यहांके राजप्रतिनिधि रहे। १६०५ ई०में अकबरकी मृत्युके बाद आबिसिनिके सरदार मालिक अम्बरने बेरार जीत कर १६२८ ई० तक शासन किया। पीछे सिन्धखेरके देशमुख लाकजी यादवराजकी सहायतासे सम्राट शाहजहान्‌ने इस राज्यका पुनरुद्धार किया। उक्त यादवराज मालिक अम्बरके १० हजार अश्वारोहीके सेनानायक थे। उन्होंने ही शाहजहान्‌का पक्ष ले कर अपने पूर्वस्वामीके अदृष्टाकाशको घनान्धकारसे समाच्छन्न कर दिया था। इसी लाकजी यादवकी एक वीरप्रसू कन्या महाराष्ट्रकेशरी शिवाजीकी माता थी। औरङ्गजेबके राजत्वकालमें १६७१ ई०को शिवाजीके सेनापति प्रतापरावने यहांसे चौथ वसूल किया था। पश्चात् १७१७ ई०में सम्राट् फर्रुखशियरके समय मराठोंने यहांसे चौथ और सरदेशमुखी वसूल करनेकी सनद प्राप्त की। १७२४ ई०में चिन् किलीच खाँ (निजाम उल्मुल्क)ने साखर खेदलर (फतेखेदुला)के निकट मुगलसेनाको परास्त किया। किन्तु वे मरहठोंको कर संग्रहसे निवारण न कर सके। १७६० ई०में मेहकर पेशवाके हाथ सुपुर्द किया गया। १७६६ ई०में निजामने भी पूनाराजकी अधीनता स्वीकार की। अंगरेज युद्धमें महाराष्ट्र पराजयके बाद १८०४ ई०को निजामने अंगरेजोंके अनुग्रह

से सारा बेरार राज्य प्राप्त किया। १८०३ ई०में महाराष्ट्रदलने फिरसे फतेखेड़ला पर अधिकार किया। पिण्डारी युद्धके बाद १८२२ ई०की सन्धिके अनुसार यह प्रदेश सम्पूर्णरूपसे निजामके हस्तगत हुआ। इसके बाद महाराष्ट्रोंको फिर अपना सिर उठानेका साहस न हुआ। किन्तु स्थानीय जमींदार, तालुकदार, राजपूत और मुसलमानोंके उपद्रवसे राज्य भरमें विशेष उच्छृङ्खलता उपस्थित हुई। इस विप्लवके फलसे १८४६ ई०में मालकापुर लूटा गया था। १८५१ ई०में यादववंशधरोंकी अधिनायकतामें शेष पेशवा बाजीरावको अरबीसेनाने निजाम सेनाको परास्त किया। इस कार्यसे असन्तुष्ट हो अंगरेजोंने बाजीरावकी पूर्व सम्पत्ति छीन ली और उन्हें विठुर नगरमें नजर बन्द रखा।

इस जिलेमें ६ शहर और ८७० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े चार लाखके करीब है। विद्याशिक्षामें यह जिला बेरारके छ जिलोंमें छठा पड़ता है। सैकड़े पीछे ४ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी कुल मिला कर २०० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा १ अस्पताल और ७ चिकित्सालय हैं।

२ उक्त जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २० ३२ उ० तथा देशा० ७६ १४ पू० समुद्रपृष्ठसे २१६०० फुट ऊँचा है। जनसंख्या ४१३७ है। १८६३ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है।

बुलन्दशहर—युक्तप्रदेशके मीरट विभागमें अवस्थित एक जिला। यह अक्षा० २८ ४´ से २८ ४३´ उ० तथा देशा० ७७ १८´ से ७८ २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १८९९ वर्गमील है। इसके उत्तरमें मीरट जिला, पश्चिममें यमुना नदी, दक्षिणमें अलीगढ़ और पूर्वमें गङ्गा नदी है।

गङ्गा और यमुना नदीके अन्तर्वेदीके मध्य अवस्थित रहनेके कारण यह स्थान बहुत उर्वरा है। समूचा जिला अधित्यकाकी तरह समुद्रपृष्ठसे प्राय ६५० फुट ऊंचा है। गङ्गा और यमुनाके अलावा जिलेमें काली नदी (कालिन्दी), हिन्दन, करोन, पटवाई और छोइया नामक कइ एक छोटी छोटी नदियां बहती हैं।

स्थानीय प्रवादसे जाना जाता है, कि अति प्राचीन कालमें यह स्थान पाण्डवराजधानी हस्तिनापुरके अधिकारमें था। उक्त नगर गङ्गामें बह जानेके बाद कोई शासनकर्त्ता आहर नगरमें रह कर यहांका राजकार्य चलाते थे। शिलालिपिसे मालूम होता है, कि एक समय यहां गौड़ ब्राह्मणोंका वास था और गुप्तराजगण यहांका शासन करते थे। १०१८ ई०में जब गजनीपति महमूद बरण (बुलन्दशहरका चलित नाम) नगरमें पहुंचे, उस समय हरदत्त नामक एक हिन्दूराजा यहां राज्य करते थे। मुसलमान ऐतिहासिकोंने लिखा है, कि उस युद्धमें मुसलमानराजाके डरसे हिन्दूराजाने दलबल समेत इस्लामधर्म ग्रहण कर लिया और इस प्रकार उसके हाथसे निष्कृति पाई। उस समयसे उस अन्तर्वेदीमें नाना वर्णों के लोग आ कर बस गये। आज भी उन सब जातियोंका इस जिलेके किसी किसी स्थान पर अधिकार देखा जाता है।

११९३ ई०में जब कुतबुद्दीनने बरणकी ओर कदम बढ़ाया, तब यहांके अधिपति दोरवंशीय राजा चन्द्रसेनने दलबल ले कर उनका मुकाबला किया था। आखिर उनके आत्मीय जयपालके षड्यन्त्रसे मुसलमानराजने उक्त नगर पर अधिकार जमा लिया। जयपालके इस्लामधर्म ग्रहण करनेके बाद मुसलमानराजाने प्रसन्न हो उन्हें उक्त नगरका चौधरी पद प्रदान किया। उनके वंशधरगण आज भी इस जिलेकी कुछ सम्पत्तिका भोग कर रहे हैं।

१४वीं शताब्दीसे यहां राजपूत जातिका अभ्युदय देखा जाता है। इन राजपूतोंने यहांके पूर्वतन अधिवासियोंको भगा कर उनके ग्रामादि दखल कर लिये। पीछे मुगल-आक्रमणके समय इस प्रदेशकी दुरवस्था और भी बढ़ गई थी। पीछे सम्राट् अकबरके सुशासनसे तमाम शान्ति विराजने लगी। परन्तु औरङ्गजेब यहांके इस्लाम धर्मावलम्बी हिन्दू अधिवासियोंके ऊपर अत्याचारकी पराकाष्ठा दिखानेसे बाज नहीं आये। बहादुरशाहके समयसे (१७०७ ई०) मुगलशक्तिका अधःपतन शुरू हुआ। इस अवसर पर गुजर और जाटसरदारोंने बागी हो कर छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्य स्थापन किये थे।

१८वीं शताब्दीमें कोइल-नगरमें रह कर महाराष्ट्र-

शासनकर्त्ता राजकाय चलाते थे। वरण नगर उस समय कोइलके अधीन था। १८०३ ई०में अंगरेजी सेनाने कोइल और अलीगढ़ दुर्ग पर दखल जमाया। १८२३ ई०में अलीगढ़ और मोरटका कुछ अंश ले कर बुलन्दशहर एक स्वतन्त्र जिलारूपमें गिना जाने लगा। उसके बादसे ले कर १८५७ ई०के गदर तक यहां और कोई उल्लेखयोग्य घटना न घटी।

सिपाहीविद्रोहके समय गुजरों, ६म पदातिक सेना दल, मालगढ़के शासनकर्त्ता वालिदाद खाँ और इस्लाम धर्मावलम्बी राजपूतोंने अंगरेजोंसे घमसान युद्ध किया था। सिपाहीविद्रोह देखो।

इस जिलेमें २३ शहर और १५०६ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या १० लाखसे ऊपर है। सैकड़े पीछे ७६ हिन्दू, १६ मुसलमान और शेषमें आर्य तथा ईसाई लोग हैं। यहांकी प्रधान उपज गेहूँ, चना, मकई, ज्वार और बाजरा है। विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछा पड़ा हुआ है। सैकड़े पीछे ३ मनुष्य शिक्षित मिलते हैं। अभी कुल मिला कर २०० स्कूल हैं। स्कूलके सिवाय यहां ६ अस्पताल और चिकित्सालय हैं।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २८ १४´ से २८° ४३´ उ० तथा देशा० ७७ ४३´ से ७८ १३´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४७७ वर्गमील और जनसंख्या साढ़े तीन लाखके करीब है। इसमें बुलन्दशहर, शिकारपुर, सियाना और औरङ्गाबाद नामक ३ शहर तथा ३७६ ग्राम लगते हैं। जिले भरमें यह सबसे अच्छी तहसील है। काली नदी तहसीलके उत्तरसे दक्षिणको बह गई है।

३ उक्त तहसीलका एक सदर। यह अक्षा० २८ २४´ उ० तथा देशा० ७७ ५२´ पू०के मध्य अवस्थित है। जन संख्या १८८५६के लगभग है। यहां इष्ट इण्डिया रेलवेका एक स्टेशन है। यह नगर समुद्रपृष्ठसे ७४१ फुट ऊँचा है। इसका प्राचीन अंश एक गण्डशैलके शिखर पर और नूतन नगर निकटवर्त्ती समतल क्षेत्र पर बसा हुआ है।

प्रसिद्ध मासिदनवीर महात्मा अलेक्सन्दर तथा उत्तर भारतके हिन्दूशाहिक राजाओंकी नामाङ्कित मुद्रा आज भी वरण नगरके नाना स्थानोंमें पाई जाती है। मुसलमान और शाहिक राजाओंके समय उनके देशोंके लोग यहां आ कर बस गये थे, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। दोरवंशीय राजा हरदत्तने इसलाम धर्ममें दीक्षित हो कर तथा तरह तरहका उपढौकन भेज कर गजनीपति महमूदको सन्तुष्ट किया था। यहांके शेष हिन्दूराजा चन्द्रसेनने महम्मदघोरीके युद्धमें अपने जीवनको न्योछावर कर दिया था। युद्धमें मुसलमान सेनापति ख्वाजा लाल बरणी भी खेत रहे थे। आज भी उनकी कब्रके आस पासका स्थान उन्हींके नामसे पुकारा जाता है।

प्राचीन हिन्दू प्रधानताके निदर्शन स्वरूप यहां और कोई अट्टालिका या देवमन्दिरका ध्वंसावशेष नजर नहीं आता। पर हां, निकटवर्त्ती स्थानकी मट्टी खोदनेसे जहां तहां खोदित स्तम्भ या अट्टालिकादिका खण्डित अंश देखा जाता है। उसका गठनकार्य देखनेसे वह प्राचीन हिन्दूगठन सा प्रतीत होता है, इसमें कोई उज्र नहीं। प्राचीन भग्न अट्टालिकाके मध्य सम्राट् अकबर शाहके प्रधान सेनापति बहलोल खाँका समाधिमन्दिर ही सर्वप्राचीन है। अलावा इसके प्राचीन नगरके बीचमें जुम्मा मसजिद दृष्टिगोचर होती है। अंगरेजोंके दखलमें आनेसे इसकी कोई विशेष श्रीवृद्धि नहीं हुई है। शहरमें एक हाई स्कूल, एक तहसीली स्कूल और चार प्राइमरी स्कूल हैं।

बुलबुल (अ० फा० स्त्री०) एक प्रसिद्ध गानेवाली छोटी चिड़िया। इसे अंगरेजीमें नाइटइङ्गल (Nightingale या Pellorneum ruficeps) और पारसी भाषामें "बुलबुल्गोस्ता" अथवा "बुलबुल् हजार दस्तान" कहते हैं। उर्दूवाले इस शब्दको पुलिंग मानते हैं। जान पड़ता है, कि बहुतोंने इस प्रसिद्ध गानेवाले पक्षीको देखा है। इसकी सुन्दरता साधारण है। किन्तु इसका स्वर बहुत सुललित है। जिस किसी व्यक्तिने एक बार भी ध्यान लगा कर इसके गानको सुना है उसने मुक्तकण्ठसे इसको गानेवाले पक्षियोंमें सबसे श्रेष्ठ माना है और इसको चित्तोन्मादक स्वरका भूरि भूरि प्रशंसा की है। यह पक्षी १०० रुपयेसे १५० रुपये तक बिकता है।

प्राणी तत्त्वविदोंका कहना है, कि बुलबुलका गानेप

योंगी सिर और मांसपेशी अत्यन्त सबल हैं, अन्य गायक पक्षियोंकी मांसपेशी उतनी परिपुष्ट नहीं होती। यही कारण है, कि इसका स्वर इतना बुलन्द है तथा यह बहुत समय तक नाना स्वरमें गाना गा सकती है।

बुलबुल दो तरहकी देखी जाती हैं। उनमेंसे एक श्रेणीके पक्षी समतल भूमिके जङ्गलमें रहते हैं। इनका शरीर पांच इञ्च लम्बा, पूंछ ढाई इञ्च और चोंच एक इञ्चसे कुछ कम होती है। चोंचका अग्रभाग सूक्ष्म और सीधा होता है। चोंच और मुखका भीतरी भाग पीला होता है। इनकी पीठ आदिके ऊपरी भागका रङ्ग प्राय नस्यके समान, तलभाग कुछ सफेद और दोनों पैर कुछ ललाई लिये हुये सफेद होते हैं। दूसरी श्रेणीके पक्षी पर्वतों पर रहते हैं। कभी कभी पर्वतके निम्नभागमें स्थित अरण्य आदि स्थानोंमें भी देखे जाते हैं। पर्वतमें नहीं रहनेवाले पक्षियोंकी अपेक्षा इस श्रेणीके पक्षियोंकी देहका परिमाण प्राय दो इञ्च अधिक तथा कान भी कुछ बड़े होते हैं। प्रथम श्रेणीके पक्षीकी अपेक्षा द्वितीय श्रेणीके पक्षियोंकी कण्ठध्वनि बहुत ऊंची होती है। विशेषत द्वितीय श्रेणीकी बुलबुल ही रजनी गायक कहलाती है। बुलबुल प्रौढावस्थासे ही अधिक गाती है।

इस पक्षीका नर ही अधिक गाता है। ये सब बाल्य अवस्थामें ही प्राय दो तीन मास तक गाते हैं तथा दल बांध कर तीन चार मास एक स्थानमें रहते हैं। इस समयमें ये दो बार अण्डप्रसव, शावकोत्पादन और उनका पालन करते हैं। शावक अवस्थामें ही नर मादाका भेद अच्छी तरह मालूम पड़ता है। जिन बच्चोंके वक्ष और पक्षका अग्रभाग कुछ पीला और गला सफेद होता है, वे नर और जिनका गला सफेद, पक्षका अग्रभाग बिलकुल पीला नहीं होता वे मादा समझे जाते हैं।

यह पक्षी समभण्डलवासी है। यूरोप और एशियाके बहुतसे प्रदेशोंमें तथा अफ्रिकाके केवल नील नदके तीरवर्ती देशमें यह पक्षी मिलता है। मादा एक बारमें ५ या ६ हरे कपासी रङ्गके छोटे छोटे अण्डे देती हैं। पन्द्रह दिन अण्डे सेनेके बाद बच्चे बाहर निकल आते हैं। इनका घोंसला जमीनसे कुछ ऊपर तथा लम्बे तिनकोंसे ढकी मिट्टीमें रहता है। इनको शावक अवस्थामें ही ला कर पालना चाहिये। इस समय लानेसे ये पालनेवालेके अत्यन्त वशीभूत हो जाते हैं तथा प्रौढ अवस्थामें निर्भय चित्तसे गाने लगते हैं। ये पोषकके इतने वशीभूत प्रिय और भक्त होते हैं, कि कभी कभी पोषकके विरहमें अपना जीवन पर्यन्त विसर्जन कर देते हैं। इनमेंसे अधिकांश कीट और पतङ्गभोजी तथा अन्य फलादि भी खाते हैं।

यूरोपके किसी किसी प्रदेशमें बुलबुलको पकड़नेका विशेष नियम है। यदि कोई प्रौढावस्थामें पक्षीको पकड़े तो उसको राजदरबारमें दण्ड दिया जाता है। यहां बुलबुलके बच्चोंको पकड़ कर बेचना ही साधारण नियम है।

पालतू पक्षी पिंजरेमें ही रहता है। ऐसी अवस्थामें कोई जोड़ा जोड़ा तथा कोई एक एक पक्षीको एक एक पिंजरेमें रखते हैं। पिंजरा लम्बाईमें १२ इञ्च तथा ऊंचाईमें १ फुट होता है। बेष्टिन् (Mr Bastin) साहबका कहना है कि पिंजरेको हरे रङ्गसे रंगाना और ऊपरसे हरे कपड़े द्वारा उसे ढंक देना उचित है। यदि कोई उनके कहे अनुसार बुलबुलके पिंजरेको हरे रङ्गसे रंगे, तो उनको चाहिये कि पक्षीको पिंजड़ेमें रखनेसे पहिले उसको अच्छी तरह शुष्क और दुर्गन्धि रहित कर लें। उन्हें पिंजरेमें तीन दण्ड तैयार करना चाहिये उनमें दो पिंजरेके तलके निकट और तीसरा उससे कुछ ऊपर रहे। पक्षियोंके कोमल पैर निरापद रखनेके लिये तीनों दण्डको हरिद्वर्णके कपड़े (मखमल आदि) से मण्डित कर देना चाहिये। पिंजड़ेमें एक जलपात्र इस तरह रखना चाहिये, कि पक्षी इच्छानुसार उससे उतर कर पात्रमें स्नान कर सके। पिंजड़ेके नीचेका भाग एकदम पानीसे न भींग जाये इसलिये उसकी तह पर एक ब्लोटिङ्ग पेपर या आयल क्लोथ बिछा देना चाहिये। उसे फिर परिवर्त्तन कर पिंजड़ेकी बीटको बाहर निकाल देना उचित है।

परीक्षाके द्वारा जाना गया है, कि जो बुलबुल पक्षी यत्न पूर्वक साफ पिंजड़ेमें रखे जाते हैं वे अच्छा मधुर गान गाते हैं। निर्जन या विरक्तिजनक स्थान इन को बिलकुल पसंद नहीं है। ऐसे स्थानोंमें रखनेसे उतने

प्रफुल्ल चित्तसे गान नहीं करते। गान करनेके लिये कभी कभी छायाविशिष्ट और कभी रौद्रमय स्थान निर्वाचन कर वहां कुछ समयके लिये पिंजरेको रख दे। इस पक्षीका सावधानी तथा मृदुतासे पालन करना कर्त्तव्य है।

इनको बढ़िया बाग, सुन्दर सुन्दर स्थान बहुत पसन्द हैं। पुष्पोंकी सुगंधि इनको बहुत भाती है तथा इनका स्वभाव अत्यन्त कोमल होता है। ये शरद् ऋतुके अन्तिम भागसे ले कर वसन्तऋतु तक उच्च कण्ठसे सुललित गान गाते हैं। जब शीत ज्यादे पड़ने लगता है, तो इनका गाना कुछ कमती हो जाता है। यह पक्षी सदा अपनेमें ही मदोन्मत्त और अपने स्वरमें सदा मस्त देखा जाता है। गाते समय ये दिनकी अपेक्षा रात्रिमें अविश्रान्त नाना तरहकी स्वरलहरीसे कर्णको सुख पहुंचाता है और हृदय को तो मानो स्वर्गसे दूसरे स्वर्गके रत्न सिंहासन पर ही बैठा देता है। इसी गुणसे इस पक्षीका नाम अङ्गरेजीमें Nightingale अर्थात् रातमें गानेवाली चिड़िया रखा है। यदि आपका हृदय बालुकामय भूमिकी तरह केवल नीरस या पाशवभाव पूर्ण न हो, तो आप संसारी हों या संसारविरागी योगी हों, आपके हृदयको सदा ही बुलबुलके सुललित मनोहर स्वरसे अवश्य ही आकृष्ट और मोहित होना पड़ेगा। जब ये उत्तेजित होते हैं, तो रातमें एक मुहूर्त्तके लिये भी इनका मनोहर गान बंद नहीं होता। इस अवस्थामें ये किस वक्त सोते हैं इसका निर्णय नहीं किया जा सकता। इस गम्भीर निशीथके समय इनकी सुदूर व्यापिनी स्वरलहरी सुननेसे किसका चित्त मुग्ध नहीं होता? ये एक विश्वासमें बहुत देर तक गान कर सकता है।

यह पक्षी उद्यान तथा फूलोंका अत्यन्त प्रिय है। इस कारण सुवासित उद्यानमें पिंजरेके आवरणको हटा कर रखना चाहिये अथवा कभी कभी इसके पिंजरेमें सुगंधियुक्त गुलाबादि फूलोंको रख देना उचित है। सवेरे और शाम इसे दूसरे मनोहर गानेवाले पक्षियोंका गान श्रवण करावे। उसे सुन यह पक्षी बहुत प्रसन्न होता है और बढ़िया तौरसे गाने लगता है।

बुलबुलको फतिंग, घोड़ेकी लीदमें उत्पन्न कीड़े, चींटियोंके अण्डे, भुने चनेके सत्तू गरम घीमें भून कर खानेके लिये देना चाहिये। कभी कभी उन वस्तुओंके साथ मुर्गी या हंसके अण्डोंका रस मिला कर देना उचित है।

यह पक्षी पिंजड़ेमें आबद्ध रहनेसे कभी कभी बीमार भी पड़ता है। उस समय इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। अतएव जो पीड़ा इसको ज्यादा हुआ करती है उसके कुछ औषधोंका विषय नीचे लिखा जाता है।

आहार ठीक समय न मिलने, पिंजड़ेमें रहनेसे उचित व्यायामका अभाव आदि कारणोंसे इनको मन्दाग्नि हो जाती है। इस समय इनको एक दिनके अन्तर पर तीन या चार मकड़ी खिलाना उचित है। इससे भी यदि यह दुर्बल ही दीख पड़े और उसकी पीड़ा बढ़ती ही चली जाये, तो जलमें लौहसिङ्घान (मोरचा लगा हुआ लोहा) को तीन चार दिन तक डुबो कर रखे और यह जल उसे पीनेको दे। इससे मन्दाग्नि या दुर्बलता दूर हो जाती है।

प्रथम वर्षमें गानेके समय इस पक्षीके नाकके छेदके ऊपर कुछ छोटे छोटे फोड़े निकल आते हैं। इस समय उन फोड़ों पर मक्खन चुपड़ देना उचित है। यदि इससे लाभ न दीखे, तो फिटकिरीको शहदके साथ फोड़ पर लगाना चाहिये। यदि इन दवाइयोंसे फोड़ा आराम न जाय तो छुरीको अग्निमें गरम कर उससे उन फोड़ोंको जला देवे तथा काले साबुनके जलसे उस घावको बार बार धो डाले। ऐसा करनेसे जरूर अवश्य आरोग्य होगा। इस समय पीने जलके बदले तीन चार दिन तक विट पालङ्कका रस देना उचित है। इसको प्रतिदिन नया बना कर देना चाहिये।

पक्षपरिवर्त्तन काल पालतू पक्षीमात्रके लिये विपत्ति जनक है, फिर बुलबुलके लिये भी उतना ही विपज्जनक है। इस समय ये प्रायः दुर्बल हो जाते हैं। इसलिये इनका शारीरिक बल संरक्षणार्थ पक्षपरिवर्त्तन कालके कुछ पहिले अर्थात् वैशाख मासके अन्तसे ज्येष्ठ मास तक इनको मुर्गीके अंडे और जाफरान (कुंकुम) मिश्रित सत्तू देना उचित है। पक्षपरिवर्त्तनके आरम्भ होनेसे इनको आहार के लिये यथेष्ट कीट और पतङ्ग देना होगा तथा बीच बीचमें मकड़ा खानेको देना चाहिये। इस समय इनको स्नान और पीनेके जलमें कुंकुम देना नितान्त आवश्यक

है। इस समय इनको शीतल वायु और सब प्रकार की विरक्तिसे रक्षा करना उचित है। पक्षपरिवर्त्तनकालमें किसी किसी पक्षीका नासारन्ध्र बन्द हो जाता है। ऐसी हालतमें एक या दो दिन पर्यन्त मक्खन, गोलमिर्चका चूर्ण और लहसुनका रस मिला कर नासारन्ध्रमें देना चाहिये। इससे भी यदि आरोग्य न हो, तो इस पक्षीके निमित्त एक पखको मक्खनमें भिगो कर उसे नाकके एक छेदसे प्रवेश करा दूसरे छेदसे हो कर बाहिर निकाल ले। यदि एक बारमें इसके द्वारा नासारन्ध्रमें मक्खन न लगे, तो फिर इसी पखको दूसरी बार मक्खनसे लपेट कर उल्लिखित नियमसे नासारन्ध्रमें प्रवेश कराना आवश्यक है। अर्थात् नासारन्ध्रमें जिससे अच्छी तरह मक्खन लगे वही उपाय करना चाहिये। फिर दो दिन पर्यन्त नये बादामका साराश जलके साथ घिसनेसे जो दूधकी तरह हो जाता है, उसे पानीके बदलेमें व्यवहार करावे। इससे रुका हुआ नासारन्ध्र खुल जाता है। नासारन्ध्रके रुक जानेसे कभी कभी इनका पक्षपरिवर्त्तन बन्द हो जाता है। इसलिये नासारन्ध्रको खोल कर पक्षपरिवर्त्तनार्थ इस पक्षीको आमिष जलमें (मछलीके धुए जलमें) स्नान करावे और पीनेके जलको कुंकुमसे आरक्त करके देवे। इस पक्षपरिवर्त्तनकालमें कभी कभी बुलबुल वातरोगसे पीड़ित हो जाती है। किन्तु यथार्थमें यह वातरोग नहीं है। यह बहुधा पैरकी हड्डीको आच्छादित करनेवाले मासकी वृद्धिके कारण होता है। पालतू पक्षीके ढाई वर्ष होने पर जङ्घा और अंगुलिका अस्थि आच्छादक चर्म बढ़ कर मोटा हो जाता है। वातरोगकी तरह पीड़ा मालूम होवे, तो पहिले आध घटा बुलबुलके दोनों पैरको जलमें डुबो कर रखना उचित है। इससे आरोग्य हो जानेकी बहुत कुछ सम्भावना है। यदि आरोग्य न हो तो उष्ण जल अथवा तैल द्वारा पैरके आच्छादक चर्मको नोंच कर फेंक देना चाहिये। अस्थि आच्छादक चर्मको उठा देनेमें तैल अथवा थोड़ गर्म जलमें पहिले १०।१५ मिनट पक्षीके दोनों पैर भिगो देवे पीछे सावधानीसे अस्थि आच्छादक चर्मको हटा कर इसके स्थानमें तैल मल देना उचित है। इस समय कभी कभी इनके मलके साथ ऐसा रक्तस्राव निकलता है कि, उसको केवल रक्त ही कहना चाहिये तथा इससे पक्षी दुर्बल हो कभी कभी जीवन तक विसर्जन कर देता है। इस तरह शोणितस्राव देखने पर पहिले पीनेके जलके बदलेमें इनको पका हुआ बकरीका दूध खाने देना चाहिये। इससे भी यदि रक्त निकलना बन्द न हो, तो बकरी दूधके साथ मेष मज्जाको पका कर इसे पीने जलके बदलेमें तीन चार दिन देना उचित है। इससे इनका शोणितस्राव बन्द हो जायगा।

पक्षपरिवर्त्तनके बाद कभी कभी बुलबुलके मृगीरोग होता है। मूर्च्छित होने पर इस पक्षीको बलपूर्वक शीतल जलमें डुबा कर स्नान कराना चाहिये। इससे आरोग्य न हो, तो पावकी एक उंगलीका कुछ अंश काट कर रक्त अधिक मात्रामें निकाल देना चाहिये। ऐसा करनेसे मृगीरोग नष्ट हो जाता है।

यदि पक्षी विषादयुक्त हो, जभाई लेने लगे और पखों को भी उठाये रखे तो समझना चाहिये, कि इसके पेटमें दर्द होता है। इस अवस्थामें जलके साथ कुंकुम विशेष उपकारी है।

बुलबुलको कभी श्वास रोग भी होता है। इस रोगमें सिरकाको शहदके साथ मिला कर खिलानेसे फायदा होता है।

कोई कोई कहते हैं, कि चींटियां बुलबुलकी भयानक शत्रु हैं। बहुत लोग सुन कर आश्चर्य करेंगे कि चींटियोंको खानेसे बुलबुल मर जाता है। इस वास्ते इसके रक्षकको चाहिये कि चींटी न खाने दें अन्यथा यह सुमधुर मनोहर गीत गानेवाली चिड़ियाको सदाके लिये अपने हाथसे खो बैठेंगे। चाहे यह प्रवाद ही हो तो भी प्रतिपालकको इससे सावधान जरूर रहना चाहिये।

बुलबुलका अच्छी तरह पालन करनेसे २४ २५ वर्ष तक यह जिन्दा रह सकती है। एक वर्षमें आठ नौ मास तक सुललित मनोहर कण्ठसे गाती है। मुसलमान बादशाहोंके जमानेमें इस पक्षीका बहुत आदर था इसीलिये पारसी भाषामें इसकी प्रशंसा ज्यादा की गयी है। फारसी और उर्दूके कवि इसे फूलोंको प्रेमी नायकके स्थानमें मानते हैं।

बुलबुलचश्म (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया।

बुलबुलबाज (फा० पु०) वह जो बुलबुल पालता या लड़ाता हो, बुलबुलका खिलाड़ी या शौकीन।

बुलबुलबाजी (फा० स्त्री०) बुलबुल पालने या लड़ानेका काम।

बुलबुलबोस्ता (फा० पु०) गुलबुल दस्ता।

बुलबुला (हिं० पु०) बुदबुदा, पानीका बुला।

बुलवाना (हिं० क्रि०) बुलानेका काम दूसरेसे कराना, दूसरेको बुलानेमें प्रवृत्त करना।

बुलाक (हिं० पु०) वह लम्बोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियां प्राय नथमें या दोनों नथनोंके बीचके परदेमें पहनती हैं।

बुलाकी (हिं० पु०) घोड़ेकी एक जाति।

बुलाना (हिं० क्रि०) १ आवाज देना पुकारना। २ किसीको बोलनेमें प्रवृत्त करना, बोलनेमें दूसरेको लगाना।

बुलावा (हिं० पु०) निमन्त्रण, बुलानेकी क्रिया या भाव।

बुलाह (हिं० पु०) वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूंछके बाल पीले हों।

बुलि (सं० स्त्री०) बुल-इन किच्। १ स्त्रीचिह्न, भग।

बुलिन (अ० स्त्री०) चौकोर पालके लगानेमें बांधनेका एक विशेष प्रकारका रस्सा।

बुलेलो (हिं० पु०) महिसुर और पूर्वी घाटमें अधिकतासे मिलनेवाला मँझोले आकारका एक पेड़। इसकी लकड़ी सफेद और चिकनी होती है जिससे तस्वीरोंके चौखटे, मेज, कुरसियां आदि बनाई जाती हैं। इसके बीजोंसे एक प्रकारका तेल निकलता है जो मशीनों आदिके पुरजोंमें डाला जाता है।

बुलौवा (हिं० पु०) बुलावा देखो।

बुल्लन (हिं० पु०) १ मुंह, चेहरा। २ पानीका बुलबुला। ३ गिरईकी तरहकी एक भूरे रंगकी एक मछली। इस मछलीके मूंछे नहीं होती।

बुल्व (सं० त्रि०) बुल् व उल्वादित्वात् निपातनात् साधुः। तिरश्चीन, तिरछा।

बुल्सार—बम्बई प्रदेशके सूरत जिलेका उत्तरीय तालुक। यह अक्षा० २० ४६ उ० तथा देशा० ७२ ५० से ७३ ८' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २०८ वर्गमील और जनसंख्या प्राय ८७८८६ है। इसमें इसी नामका १ शहर और ६० ग्राम लगते हैं। समुद्रके किनारे बसा होनेके कारण यहांकी आबहवा अच्छी है। बम्बई नगरसे अनेक मनुष्य स्वास्थ्यपरिवर्तनके लिये यहां आते हैं।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २० ३७' उ० तथा देशा० ७२ ५६' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या १२८०७ है। यहां जलपथ और स्थलपथसे नाना प्रकारके द्रव्योंका वाणिज्य होता है। शहरमें एक सबजजकी अदालत, अस्पताल, एक हाई स्कूल और एक मिडिल इङ्गलिश स्कूल तथा ६ वर्नाक्युलर स्कूल हैं।

बुष (सं० क्ली०) बुस्यते उत्सृज्यते यत्, ग्युषबेति क, पृषोदरादित्वात् षत्व। भुस, अनाज आदिके ऊपरका छिलका।

बुस (सं० क्ली०) बुस्यते तुच्छत्वादुत्सृज्यते इति (इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः। पा ३।१।१३५) तुष, भूसी। पर्याय- कडङ्गर, तुष। २ उदक, जल।

बुस्त (सं० क्ली०) बुस्त्यते नाद्रियते बुस्त घञ्। पनसादि फलका त्यज्य अंश, कटहल आदिका वह हिस्सा जो खाने लायक नहीं है। २ मांसपिण्डभेद, मांसकी पीठी।

बुहरी (हिं० स्त्री०) बहुरी देखो।

बुहारना (हिं० क्रि०) झाड़ूसे जगह साफ करना, झाड़ देना।

बुहारा (हिं० पु०) वह बड़ा झाड़ू जो ताड़की सींकोंसे बनाया जाता है।

बुहारी (हिं० स्त्री०) झाड़ू, सोहनी।

बूच (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली। बूचा देखो।

बूंद (हिं० स्त्री०) १ जल या और किसी तरल पदार्थका वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदिके समय प्राय छोटी सी गोली या दाने आदिका रूप धारण कर लेता है। २ एक प्रकारका रंगीन देशी कपड़ा। इसमें बूंदोंके आकारकी छोटी छोटी बूटियां बनी होती हैं। ३ वीर्य। (वि०) ४ बहुत अच्छा या तेज। इस अर्थमें इसका व्यवहार केवल तलवार, कटार आदि काटनेवाले हथियारों और शराबके सम्बन्धमें होता है।

बूंदा (हि० पु०) १ बड़ी टिकुली। २ सुराहीदार मणि या मोती जो कान या नथमें पहना जाता है।

बूंदाबांदी (हि० स्त्री०) अल्प वृष्टि, हल्की या थोड़ी वर्षा।

बूंदी—दक्षिण पूर्वी राजपूतानेका एक स्वतन्त्र राज्य। यह अक्षा० २५ से २६ उ० तथा देशा० ७५° १५ से ७६ १६ पू० के मध्य विस्तृत है। इस राज्यके उत्तरमें जयपुर और टोंकका राज्य, पश्चिममें उदयपुर अर्थात् मेवाड़का राज्य, दक्षिणमें कोटा और मेवाड़का राज्य और पूर्वमें कोटा राज्य है। भूपरिमाण २२२० मीलसे कुछ अधिक है। जनसंख्या दो लाखके लगभग और आय १२ लाखके अन्दाज है। इस राज्यमें माहेश्वरके पुराण प्रसिद्ध राजा रन्तिदेव(१)का बसाया हुआ चंबल नदीके तट पर पाटन नगर एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहां पर केशवराय जीका प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है जिसका जीर्णोद्धार संवत् १६६८ वि०में बूंदीके इतिहासप्रसिद्ध वीर नरेशराव राजा छत्रसालजीने कराया था। कार्त्तिक सुदि १३से मार्गशिर बदि दोज तक ५ दिन यहां बड़ा मेला जुड़ता है। दूसरा तीर्थस्थान बूंदीसे डेढ़ कोस पर बाणगङ्गाके किनारे केशवनाथ है।

बूंदीके नरेश हाड़ा चौहान हैं जो साम्भरके चौहान राजा माणिकराज (संवत् ७४१)-की संतानमें अस्थि पालजीके वंशज होनेसे हाड़ा संज्ञाको प्राप्त हुए हैं।

क्योंकि हाड़ा वंश चौहानवंशकी एक शाखा है। इस लिये पहले चौहान वंशके विषयमें परिचय देना बहुत आवश्यक है। टाड साहबने चौहानवंशकी अग्निकुण्डसे उत्पत्ति लिख कर भी इनका सामवेद सोमवंश माधुनी शाखा और वात्स्य गोत्र लिखा है जो बिलकुल एक दूसरेके विरुद्ध है। सामवेदकी कौथुमी शाखा है माधुनी शाखा नहीं है माध्यंदिनी शाखा तो यजुर्वेदकी है। और अग्नि कुण्डसे उत्पन्न होनेके कारण सोमवंश भी नहीं हो सकता, अग्निवंश कहला सकता है। केवल संवत् १२७७ के रावलुमाके शिलालेखमें वत्सके ध्यान और चन्द्रके योगसे चाहमानजीका चन्द्रलोकसे आना लिखा है उससे चन्द्रवंशी होना इस लिये नहीं माना जा सकता, कि उस लेखसे पहले संवत् १२००के आसपासके शिलालेखोंमें कई जगह इनको सूर्यवंशी लिखा मिलता है। १३वीं शताब्दीके आरम्भके लिखे "पृथ्वीराज विजय" काव्यमें जगह जगह चौहानोंको सूर्यवंशी लिखा है। उसमें लिखा है, कि ब्रह्माजीकी प्रार्थनासे विष्णुने सूर्यको ओर देखा तो सूर्यमण्डलसे एक पुरुष आया, वही चौहान (चाहमान) कहलाया, पर वहां ही उसके भाई धनञ्जयका भी वर्णन है जिसकी उत्पत्तिका कुछ भी पता नहीं, कि वह कहांसे आ गया। परन्तु दूसरे स्थल पर इनको (चाहमान)-राम इक्ष्वाकु और रघुके वंशमें लिखा है (१)। हमीर महाकाव्यमें लिखा है, कि पुष्करमें ब्रह्माजीके यज्ञकी रक्षा के लिये ब्रह्माके ध्यानसे सूर्यमण्डलसे एक दिव्य पुरुष उतर कर आया और उसने यज्ञकी रक्षा कर ब्रह्माजीको संतुष्ट किया, उसी पुरुषका नाम चाहमान हुआ। पृथ्वीराजरासो नामक महाकाव्य में वशिष्ठजीके यज्ञकी रक्षाके लिये आबू पर्वत पर ४ क्षत्रियोंकी अग्निकुण्डसे उत्पत्ति लिखी है। उसीमें चाहमान (चतुर्भुज) जीकी उत्पत्तिका भी वर्णन है। और भी कई ग्रन्थोंमें सूर्य और अग्नि वंशी लिखा है।

सूर्यवंश वर्णन करनेवालोंमें ब्रह्माजीके यज्ञकी रक्षाके लिये चाहमानजीका सूर्यमण्डलसे आना लिखा है और अग्निवंश वर्णन करनेमें ब्रह्माके पुत्र वशिष्ठके यज्ञकी रक्षा के लिये यज्ञकुण्डसे उत्पन्न होनेका विधान है। भेद कुछ नहीं है, यज्ञकी रक्षा और विष्णुका सम्बन्ध दोनोंमें है और दोनोंके यज्ञमें देवताओंका आह्वान होना भी स्वाभाविक बात है। सूर्यका नाम भी विष्णु है। अग्निको मृत्यु लोकमें अग्नि, अन्तरिक्षमें विद्युत और द्युलोक में सूर्य कहते हैं। अतः सूर्यका नाम भी अग्नि सिद्ध है तब चौहानोंका सूर्यवंशी या अग्निवंशी होनेका भेद कुछ नहीं है। आज कल चौहान अपनेको अग्निवंशी ही मानते हैं।

(१) नगदा मथुरा रेलवेके सवाई माधोपुर स्टेशनसे ६ कोस पर रणथंभोरका प्रसिद्ध प्राचीन किला है जो सम्भव है इसी रन्तिदेवका बनवाया हुआ हो।

(१) "काकुत्स्थमिक्ष्वाकु रघू च यद्दधत्पुराभवत् त्रिप्रवरं रघोः कुलम्। कलामपि प्राप्य स चाहमानतां प्ररूढ तुर्य प्रवरं बभूव तत्॥" (पृथ्वीराज विजयद्वि० सर्ग ७१)

सवत् १६१२ वि०में राव सुरजनजी अपने स्वतन्त्र पैतिक राज्य बूंदीके स्वतन्त्र नरेश हो गये और मेवाड़से इनका कोई सम्बन्ध न रहा। इन्होंने बूंदी राज्य प्राप्त होने पर मेवाड़से अपने दो छोटे भाइयोंको भी बुला कर बूंदी राज्यमें ही बीस बीस हजार रुपये वार्षिककी जागीर दे दी और जो बूंदी राज्यके परगने राव सुरतानसिंहजीके समयमें शत्रु लोग दबा बैठे थे उन्हें वीरतासे विजय कर बूंदी राज्यमें मिला लिया, जिससे उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गई। इसी समय अर्थात् सवत् १६१५ विक्रम में शेरशाही खानदानके हाकिम हाजी खा पठानने अकबर बादशाहके डरसे घबड़ा कर रणथंभोरका किला राव सुरजनके हाथ बेच डाला। इस समय मेवाड़वालोंका रणथंभोरसे कोई सबन्ध न था। दूसरे वर्ष अकबरके सेनापति हबीब अलीने अकबरकी आज्ञासे रणथंभोर पर चढ़ाई की और देशमें उपद्रव मचाया, परन्तु राव सुरजनने उसे मार भगाया।

इस समय तक बूंदीके अधीश कभी मेवाड़वालोंके अधीन नहीं थे और न रणथंभोर पर ही मेवाड़का अधिकार था, वे सदैव स्वतन्त्र नरेश रहे थे(१) चित्तोड़ विजय करनेके पीछे सवत् १६२० विक्रमीमें अकबरने रणथंभोर पर चढ़ाई की। तुजुके जहांगीरीमें जहांगीरने लिखा है, कि राव सुरजनके पास ६-७ हजार सवार सदैव नौकर रहते थे। इससे यह भी जाना जा सकता है, कि जब ६-७ हजार सवार राव सुरजनके पास रहते थे तो १५-२० हजार पैदल भी अवश्य ही रहते होंगे, इसके अलावा गजपति और रथपति। जहांगीरने लिखा है, कि राव सुरजनने १४ दिन तक उसके वालिद बादशाह अकबरको रणथंभोर पर परेशान किया। सुर्जन चरितमें लिखा है, राव सुरजनने १४ बार बादशाह अकबरको परास्त किया था। संभव है, वे १४ लड़ाइयां १४ दिनमें हुई हों। १४ दिनकी लड़ाई से हतोत्साह हो कर बादशाह अकबरने राव सुरजनको नर्मदा, मथुरा और काशी मण्डलोंका लोभ दे कर अधिकारी और गढ़मंडला (बारोगढ़-गढ़कटक) विजय करने पर चुनारका परगना और दिया।

राव सुरजनके पुत्र दूदा भोजने दूदा पर पदमें हो सूरत और अहमदनगरका विजयमें अच्छा नाम कमाया। राव राजा भोजने जैसा अकबर बादशाहको अपनी वीरतासे प्रसन्न किया था, वैसे ही उसने उसकी धर्मविरुद्ध आज्ञाओंको भंग करके अपनी मूछोंकी लाली रखी थी।

इनके पुत्र सरबुलन्दराय राव राजा रतनसिंहजीने बुरहानपुरके मैदानमें खुर्रमकी बड़ी सेनाको परास्त कर जहांगीरका जाता हुआ राज्य बचाया था। इनके छोटे पुत्र माधोसिंहजीको कोटाका स्वतन्त्र राज्य मिला जिसमें उस समय ३६० गाव थे। सर बुलन्दरायके पौत्र बूंदीके राव राजा छत्रसाल और कोटेके राव मुकुन्दसिंहजीने धौलपुर और फतिहाबाद (उज्जैनके पास) की लड़ाइयोंमें शाहजादे औरङ्गजेब और मुरादकी मिश्रित सेनाओंसे तुमुल सग्राम कर दाराशिकोहको भागनेका अवसर दे वीरगति पाई, पर जोधपुरके महाराज जसवन्तसिंहकी तरह पीठ दिखा कर अपने कुलको कलंक न लगने दिया। राव राजा छत्रसालके पुत्र राव राजाभावसिंहने औरङ्गजेबकी धर्मविरुद्ध आज्ञाओंका सदैव तिरस्कार कर मन्दिरोंकी रक्षा की और जल झूलनी एकादशीके धर्मोत्सवका जुलूस अपनी भुजाओंके बल दिल्ली नगरमें बड़ी धूमधामसे निकाल कर यमुना तट पर पहुंचाया और पीछे अपने स्थान पर ला कर धर्मरक्षाकी मर्यादा पालन की। इनके भ्रातृपौत्र राव राजा अनिरुद्धसिंहजीके पुत्र राव राजा बुधसिंहजीने अपनी भुजाओंके बल जाजऊके मैदानमें आजमशाहको मार कर बहादुर शाहको दिल्लीके तख्त पर बिठाया और हफ्तहजारी मनसब और महाराव राजाकी पदवी पाई। इस युद्धमें आजमका पक्ष समर्थन करने पर जयपुरके सवाई महाराज जयसिंहको घायल हो खेत छोड़ कर भागना पड़ा था जिसका उनके मनमें द्वेष जमा हुआ था। फर्रुखसियरके समयमें जब कि बादशाहतमें गड़बड़ी मची, तो जयपुर नरेश सवाई महाराज जयसिंहजी अपने बहनोई बूंदीके महाराव राजा बुधसिंहजीको अपने साथ जयपुर ले आये जहां उन्होंने इन्हें बड़ी प्रीतिके साथ अपने पास

(१) मालवेके बादशाह बहादुरशाहने चित्तौड़ पर चढ़ाई की। उस समय चित्तौड़का राणा विक्रमादित्य और उसके छोटे भाई उदयसिंहको बूंदीराजने आश्रय दिया था।

रख और धोखा दे कर अपनी आजऊकी हारका बदला लेनेके लिये इनका बूंदी राज्य इन्हींके एक स्वामि द्रोही सरदार करवरके जागीरदारके पुत्र दलेलसिंहको अपनी पुत्री ब्याह कर दे दिया और उसे अपना करद राज्य बना लिया। महाराव राजा बुधसिंहजीको जब सवाई जयसिंहका प्रपंच मालूम हुआ तो ये जयपुरसे चल दिये। इनके पीछे ही जयपुरकी सेना भी चढी। जयपुर और बूंदीकी सीमा पर दोनोंमें डट कर युद्ध हुआ जिसमें जयपुर राज्यके बड़े बड़े सरदार मारे गये और जब महाराव राजा बुधसिंहजीके भी जो थोड़े से मनुष्य थे, मारे गये तब ये अपनी सुसराल बेघू (मेवाड) में चले गये। इनके देवलोक होनेके पीछे इनके १३ वर्षके पुत्र वीरकेशरी महाराव राजा उमेद सिंहजीने अपने अनेक वर्षों के असीम परिश्रम, अतुल पराक्रम और अद्वितीय रणकौशलसे जयपुर जैसे बलाढ्य हाथीके पेटमेंसे अपना बूंदीका पैतिक राज्य निकाला और अपने पुरखाओंकी कीर्त्तिको उज्वल और चिरस्थाई किया। फिर अपने पुत्र कुंवर अजित् सिंहजीको राज्य दे आप तीर्थाटनको निकले और पीछे वानप्रस्थ हो बूंदीसे दो कोस पर अपने केदारनाथजीके आश्रममें तप करने लगे जहां उनके पूर्वज कोल्हनजीको दंडौती देते समय श्री केदारनाथजीने प्रकट हो कर दर्शन दे उनकी यात्रा सफल की थी।

महाराव राजा अजित्सिंहजीने बोलेटा गावके झगडे में राणा अरिसीजीको मार कर अपनी वीरता प्रकट की, जिसका वैर अभी तक दोनों राज्योंमें बना हुआ है। इनके पुत्र महाराव राजा विष्णुसिंहजीने सन् १८०४ ई० में जसवतराव हुल्करके विरुद्ध अङ्गरेजी सेनापति कर्नल मानसून साहबको सहायता दे कर सन् १८१८ ई० (संवत् १८७' वि०) में वृटिश सरकारसे संधि की।

महाराव राजा विष्णुसिंहजीके पुत्र महाराव राजा रामसिंहजीने अपने ६८ वर्षके राज्यशासनमें प्रजाका उत्तम रीतिसे पालन करनेके सिवाय बूंदीमें संस्कृत विद्याकी उन्नति कर इसे छोटी काशी बना दिया। ये महाराव राजा धर्म और न्यायकी मूर्त्ति थे। बूंदीकी प्रजा इनको राजर्षि सम्बोधन करती है और अङ्गरेजी सरकार भी इनका बहुत मान रखती थी। सन् १८५७ के गदरमें इन्होंने गवर्मेण्टको अच्छी सहायता दी थी। इनकी जोधपुरवाली महाराणी राठोडजीसे महाराज कुमार भीमसिंहजीका और नागोदके पडिहारजीसे कुंवर रगनाथसिंहजीका जन्म हुआ था। इन दोनों कुमारोंके देवलोक सिधारनेके पीछे कतकुनके पडिहारजीसे मिती आश्विन कृ० १ संवत् १९२६के दिन महाराज कुमार रघुवीर सिंहजीका और उनके पीछे कुरङ्गराज सिंहजी, कुंवर रघुराज सिंहजी और कुंवर रघुवरसिंहजीका जन्म हुआ। संवत् १९४५ वि०के चैत्र कृष्णपक्षमें महाराव राजा रामसिंहजीके देवलोक होने पर मिती चैत्र शुक्ल ११ भृगुवार संवत् १९४६ (१२ अप्रेल सन् १८८९) को महाराव राजा रघुवीरसिंहजी १९॥ वर्षकी अवस्थामें बूंदी राजसिंहासन पर विराजे। इन महाराव राजाजीके दश विवाह हुए थे, जिनमेंसे बड़ी महाराणी जोधपुरकी राठोड जी श्रीसौभाग्य कुंवरीजीके गर्भसे अगहन कृ० ५ संवत् १९४६ (१२ नवम्बर सन् १८८९ ई०) को महाराज कुमार रायरेन्द्रसिंहजीका जन्म हुआ। परन्तु दुःख है, कि फाल्गुण शुक्ल ८ रविवार संवत् १९५५ (५ मार्च सन् १८९९ ई०) को केवल ९। वर्षकी अल्प आयुमें उनका देवलोक वास होनेसे राजपरिवार और प्रजामें हाहाकार मच गया।

महाराव राजा रघुवीरसिंहजीके समयमें सन् १९११ ई०के १२ दिसम्बरको दिल्लीमें एक बड़े शाही दरबारमें इङ्गलैण्डके राजा और भारतवर्षके सम्राट् पंचमजार्जका राज्याभिषेक हुआ जिसमें भारतवर्षके समस्त राजा महाराजा, नवाव, गवर्नर, लेफिटनेन्ट गवनर, सरदार सेठ साहूकार आदि तथा दूसरे दूसरे देशोंके प्रतिनिधि भी आये थे। उसमें निमन्त्रण पा कर महाराव राजा बूंदी भी सम्मिलित हुए थे।

भारतवर्षसे विदा होते समय सम्राट्ने राजा रघुवीरसिंहको १० जनवरी १९१२ ई०के दिन जी सी वी ओ की उपाधिसे भूषित किया।

ये महाराव राजा विद्वानोंका आदर सत्कार करनेमें सदैव तत्पर रहते थे। इनके समयमें सदैव धर्मानुष्ठान और ब्राह्मण भोजन होते रहते थे। प्राचीन मर्यादाका पालन और प्रजापालनमें इतना अनुराग था, कि जब जब

अकाल पड़े तब तो राव रघुनाथके चढ़े हुए लाखों रुपये प्रजाको छोड़ दिये और लाखों रुपयोंका नाज प्रजामें बांटा और गरीबोंका पालन किया। इन्होंने बूंदी राज्यमें गौओंके चरनेके लिये जमीन छोड़ रखी है। महाराव राजा रघुवीरसिंहजी जैसे धर्म मर्यादा और प्रजापालक थे वैसे ही वीर धीर और उत्साही थे। इस समयके नरेशोंमें महाराव राजा साहब धनुर्विद्यामें अद्वितीय थे। मिती कृष्ण १३ मंगलवार सम्वत् १९८४ के दिन महाराव राजा रघुवीरसिंहजीके स्वर्ग सिधारने पर इनके सहोदर लघु भ्राता महाराज रघुराजसिंहजीके पुत्र महाराज ईश्वरीसिंहजी ही एकमात्र उत्तराधिकारी थे। ये मिती श्रावण शुक्ल चतुर्दशीको बूंदीराज सिंहासन पर विराजे। ये ही वर्त्तमान राजा हैं। इन्हें १७ तोपोंकी सलामी मिलती है।

बूंदी (हि० स्त्री०) १ एक प्रकारकी मिठाई। यह अच्छी तरह फेंटे हुए बेसनको झरनेमेंसे बूंद बूंद टपका कर और घीमें छान कर बनाई जाती है। इसके दो भेद हैं, मीठी और नमकीन। नमकीन बूंदी बनानेके लिये पहले ही बेसनको घोलते समय उसमें नमक, मिर्च आदि मिला देते हैं, पर मीठी बूंदी बनानेके लिये बेसन घोलते समय उसमें और कुछ भी मिलाया नहीं जाता। उसे घीमें छान कर शीरेमें डुबा देते हैं और तब फिर काममें लाते हैं। छोटे दानोंकी बूंदीका लड्डू भी बांधते हैं जो बूंदीका लड्डू कहलाता है। २ वर्षाके जलकी बूंद।

बू (फा० स्त्री०) १ बास, गंध, महक। २ दुर्गन्ध, बदबू।

बूआ (हि० स्त्री०) १ पिताकी बहन, फूफी। २ भारतकी बड़ी बड़ी नदियोंमें मिलनेवाली एक प्रकारकी मछली। इसका मांस रूखा होता है। ३ बड़ी बहन। ४ मुसलमान स्त्रियोंका परस्पर आदरसूचक सम्बोधन।

बूई (हि० पु०) दिल्लीसे सिन्ध तक तथा दक्षिण भारतमें मिलनेवाला एक प्रकारका पौधा। यह ऊसरों और खार आदिमें अधिक होता है। इसे जला कर सज्जीखार निकालते हैं।

बूक (हि० पु०) मालूफलको जातिका एक बड़ा वृक्ष। यह पूर्वी हिमालयमें ७००० से १०००० फुटकी ऊंचाई तक रखी जाय तो बहुत दिनों तक खराब नहीं होती। यह खम्भे, चौखटे और घरके आदि बनानेके काममें आती है। दार्जिलिङ्गके आस पासके जंगलोंमें इससे बढ़ कर उपयोगी और कोई वृक्ष कदाचित ही होता है। यहां इसकी पत्तियोंसे चमड़ा भी सिझाया जाता है।

(पु०) २ चंगुल, बकोटा।

बूकना (हि० क्रि०) १ सिल और बट्टेकी सहायतासे किसी चीजको महीन पीस कर चूर्ण करना। २ अपनेको अधिक योग्य प्रमाणित करनेके लिये गढ़ गढ़ कर बातें करना।

बूका (हि० पु०) वह भूमि जो नदीके हटनेसे निकल आती है, गंग बरार।

बूक्का (सं० स्त्री०) बुक्कयति शब्दायते इति बुक्क अच् पृषो दरादित्वाद्दीर्घः। बुक्क, हृदय।

बूगा (हि० पु०) भूसा।

बूच (अं० पु०) १ बड़ी मेख। २ कपड़े कागज या चमड़े आदिका वह टुकड़ा जो बन्दूक आदिमें गोली या बारूद को यथास्थान स्थिर रखनेके लिये उसके चारों ओर लगाया जाता है।

बूचड़ (अं० पु०) पशुओंका मांस आदि बेचनेके लिये उनको हत्या करनेवाला, कसाई।

बूचड़खाना (हि० पु०) वह स्थान जहां पशुओंकी हत्या होती है, कसाई बाड़ा।

बूचा (हि० वि०) १ जिसके कान कटे हुए हों, कनकटा। २ जिसके ऐसे अंग कट गए हों अथवा न हों जिनके कारण वह कुरूप जान पड़ता हो।

बूची (हि० पु०) वह भेड़ जिसके कान बाहर निकले हुए न हों, बल्कि जिसके कानके स्थानमें केवल छोटा-सा छेद ही हो, गुजरी।

बूजन (फा० पु०) बन्दर।

बूजना (फा० क्रि०) धोखा देना, छिपाना।

बूझ (हि० स्त्री०) १ बुद्धि, समझ। २ पहेली।

बूझना (हि० क्रि०) १ समझना, जानना। २ प्रश्न करना, पूछना।

बूट (अं० पु०) एक प्रकारका अंगरेजी ढंगका जूता जिस से पैरके गट्टे तक ढक जाते हैं।

बूटा ( हिं० पु० ) १ छोटा वृक्ष, पौधा। २ पश्चिमी हिमालयमें गढवालसे अफगानिस्तान तक होनेवाला एक छोटा पौधा। ३ फलों या वृक्षों आदिके आकारके चिह्न जो कपड़ों या दीवारों पर अनेक प्रकारसे बनाए जाते हैं।

बूटी ( हिं० स्त्री० ) १ वनस्पती, जड़ी। २ भांग, भंग। ३ एक पौधा जिसके रेशेसे रस्सियां बनाई जाती हैं। इसे गुडवाकला भी कहते हैं। ४ खेलनेके ताशके पत्तों पर बनी हुई टिक्की। ५ फूलोंके छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर बनाये जाते हैं।

बूड़ना (हिं० क्रि०) १ निमज्जित होना, डूबना। २ निमग्न होना, लीन होना।

बूड़ा ( हिं० पु० ) वर्षा आदिके कारण होनेवाली जल की बाढ़।

बूढ़ ( हिं० पु० ) १ लाल रंग। २ बीर बहूटी।

बूढ़ा (हिं० पु०) बुड्ढा देखो।

बूत ( हिं० पु० ) बूता देखो।

बूता (हिं० पु०) पराक्रम, बल।

बूथनी ( हिं० स्त्री० ) आकृति, चेहरा, शक्ल।

बूना ( हिं० पु० ) चनार नामक वृक्ष। चनार देखो।

बूम ( अं० पु० ) १ वह लट्ठा जो नदी आदिमें नावोंको छिछले पानीसे बचाने और ठीक मार्ग दिखलानेके लिये गाड़ा जाता है। २ जहाजोंके पालके नीचेके भागमें लगा हुआ लट्ठा। यह उसे फैलाए रखनेके लिये लगाया जाता है। ३ वह रोक जो बहुतसे लट्ठों आदिको बांध कर तैयार की जाती है। यह नदीमें इसलिये लगाई जाती है जिससे बहती हुई लकड़ियां इसमें रुक जाय। ४ लट्ठों या तारों आदिसे बनाई हुई वह रोक जो बन्दरोंमें शत्रुके जहाज अंदर आनेसे रोकनेके लिये लगाई जाती है।

बूर ( हिं० पु० ) एक प्रकारकी घास जो पश्चिम भारतमें होती है। इसके खानेसे गौओं भैंसों आदिका दूध और दूसरे पशुओंका बल बहुत बढ़ जाता है। इसमें एक प्रकार की गंध होती है। यदि गौएं आदि इसे अधिक खायं, तो दूधमें भी वही गंध आ जाती है। यह घास दो प्रकारकी होती है, एक सफेद और दूसरी लाल। इसे सुखा कर १० १५ वर्षों तक रख सकते हैं।

बूरा ( हिं० पु० ) १ कच्ची चीनी जो भूरे रंगकी होती है, शक्कर। २ साफ की हुई चीनी। ३ महीन चूर्ण, सफूफ।

बूरी ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी बहुत छोटी वनस्पति। यह पौधा, उनके तनों, फलों और पत्तों आदि पर उत्पन्न हो जाती है। इससे वे पदार्थ सड़ने या नष्ट होने लगते हैं। अंगूरके लिये यह विशेष प्रकारसे घातक होती है। इसकी गणना वृक्षों आदिके रोगोंमें की गई है।

बूला ( हिं० पु० ) पयालका बना हुआ जूता, लतड़ी।

बृंहण ( सं० ति० ) बृंहि ल्यु। पुष्टिकारक।

बृंहणत्व ( सं० क्ली० ) बृंहणस्य भाव त्व। बृंहणका भाव या धर्म।

बृंहित ( सं० क्ली० ) बृंह क्त। हस्तिगर्जन, चिंघाड़ मारना।

बृंहिता ( सं० स्त्री० ) स्कन्दमातृकाभेद। कहीं कहीं 'बंहिला' ऐसा भी पाठ देखा जाता है।

बृटिश ( हिं० वि० ) ब्रिटिश देखो।

बृबदुक्थ ( सं० क्ली० ) पद।

बृबु (सं० पु०) १ पणिका तक्षा। २ वेदोक्त एक पणिराज।

बृबूक ( सं० क्ली० ) जल, पानी।

बृष ( सं० पु० ) वृष देखो।

बृसय ( सं० पु० ) १ असुर। २ त्वष्टा। "अवातिरत बृसयस्य" (ऋक् १।९३।४) ३ एक असुर रोग। (वेद०)

बृसी ( सं० स्त्री० ऋषियोंका आसन।

बृहक ( सं० पु० ) बृह क्वुन्। देवगन्धर्वभेद।

बृहच्चञ्चु ( सं० पु० ) बृहती चञ्चु शाकविशेष। १ महाचञ्चुशाक। (वि०) २ दीर्घचञ्चुयुक्त, लम्बी चोंचवाला।

बृहच्चित्त ( सं० पु० ) जम्बूर, बिजौरा।

बृहच्छन्दस् ( सं० ति० ) बृहच्छादयुक्त।

बृहच्छरीर ( सं० ति० ) बृहदाकारविशिष्ट।

बृहच्छल्क ( सं० पु० ) बृहत् शल्को यस्य। चिङ्गटमत्स्य।

बृहच्छाल ( सं० वि० ) बृहत् शालयुक्त।

बृहच्छ्रवस् ( सं० ति० ) बृहत् श्रवो यस्य। महायशस्क।

बृहज्जाबालोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्भेद।

बृहज्जाल (सं० क्ली०) बड़ा जाल।

बृहज्जीवन्ती ( स० स्त्री० ) बृहज्जीवन्तिका क्षुप। पर्याय—पयस्या, प्रियङ्करी, मधुरा, जीवपुष्पा, वृहज्जीवा, यशस्करी। गुण—बहुवीर्यदायक, मूत्रविदारण, वेगपूर्वक रक्तनियामक।

बृहच्छदस्का ( स० स्त्री० ) बृहती छदना। बड़ा नगाड़ा।

बृहतिका ( स० स्त्री० ) बृहती ( बृहत्या आच्छादन। पा ७।४।२६ ) इति स्वार्थे कन्। १ उत्तरीयवस्त्र, उपरना। २ बृहती, वनभंटा।

बृहती ( स० स्त्री० ) बृहत् गौरादित्वात् ङीष्। १ क्षुद्रवार्त्ताकी, वनभंटा। पर्याय - महती, प्रान्ता, वार्त्ताकी, सिंहिका, कुली, राष्ट्रिका, स्थूलकण्टा, भण्टाकी, महोटिका, बहुपत्री, कण्टतनु, कण्टालु, कटफला, वार्त्ताकी, सिंही, प्रसहा, रक्तपाकी, स्वादुफलिका। गुण — कटु, तिक्त, उष्ण, वातज्वर, अरोचक, आम, कास, श्वास और हृद्रोगनाशक। अकान्ता इत्यौ
　२ विश्वावसु गन्धर्वकी वीणाका नाम। ३ उत्तरीय वस्त्र, उपरना। ४ कण्टकारी, भटकटैया। ५ सुश्रुत के अनुसार एक मर्मस्थान जो रीढ़के दोनों ओर पीठके बीचमें है। यदि इस मर्मस्थानमें चोट लगे तो बहुत अधिक रक्त जाता है और अन्तमें मृत्यु हो जाती है। ६ वाक्य। ७ एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें नौ अक्षर होते हैं

बृहतीफल्ल ( स० पु० ) वैद्यकमें एक प्रकारका बाजा बाद्य।

बृहतीपति ( स० पु० ) बृहतीनां वाचां पति। बृहस्पति।

बृहत् ( स० त्रि० ) बृह-बृद्धौ ( वर्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च। उण् २।८४ ) इति अति प्रत्ययेन, निपातनात् साधु। १ महत्, बहुत बड़ा। २ प्रवीण। ३ उच्च, ऊंचा। ४ दृढ़, बलिष्ठ। ( पु० ) ६ एक मरुत्का नाम।

बृहत्क ( स० त्रि० ) बृहत्प्रकार ( स्थूलदृढ्ब्रीहितोक्त्या। पा ५।४।३ ) इत्यस्य वार्तिकोक्त्या कन्। बृहत्, बहुत भारी।

बृहत्कन्द ( स० पु० ) बृहत् कन्दं यस्य। १ गृञ्जन, गाजर। २ विष्णुकन्द।

बृहत्कर्म ( स० त्रि० ) बृहत्कर्म यस्य। महाकर्मयुक्त, बृहत् कार्ययुक्त।

बृहत्काय ( स० पु० ) आजमीढवंशीय नृपभेद।

बृहत्कालशाक ( स० पु० ) बृहन् महान् कालशाकः। लोपनिका।

बृहत्कास ( स० पु० ) बृहन् कासः। पाड़ गर, नरेडर नामक गन्धद्रव्य।

बृहत्कीर्त्ति ( स० त्रि० ) बृहती कीर्त्तिर्यस्य। १ महाकीर्त्तियुक्त। ( पु० ) २ आङ्गिरसाग्निपुत्रभेद। ३ असुरभेद।

बृहत्कुक्षि ( स० त्रि० ) बृहन् कुक्षिर्यस्य। तुन्दिल, तोंद।

बृहत्केतु ( स० त्रि० ) बृहन्केतुर्यस्य। १ महाध्वजयुक्त, ( पु० ) २ राजभेद।

बृहत्क्षत्र ( स० पु० ) आजमीढवंशीय नृपभेद।

बृहत्ताल ( स० पु० ) बृहन् तालः। हिन्ताल।

बृहत्तिक्ता ( स० स्त्री० ) बृहन् तिक्तो रसोऽस्याः। पाठा, सोनापाठा।

बृहत्तृण ( स० पु० ) वंश, बांस।

बृहत्त्वच् ( स० पु० ) बृहती त्वक् यस्य। सप्तपर्णवृक्ष, नीमका पेड़।

बृहद्दल ( स० पु० ) बृहत् दलं यस्य। १ हस्तिकन्द, हाथी कन्द। २ श्वेत लोध, सफेद लोध। ३ काममर्द।

बृहत्पत्रा ( स० स्त्री० ) बृहत् पत्रं यस्याः। त्रिपर्णिका।

बृहत्पर्ण ( स० पु० ) सफेद लोध।

बृहत्पलाश ( स० त्रि० ) बृहत् पत्रयुक्त, जिसमें बड़े बड़े पत्ते हों।

बृहत्पाटलि ( स० पु० ) धुस्तूर, धतूरा।

बृहत्पाद ( स० पु० ) बृहन् पादो यस्य। वटवृक्ष, बरगद पेड़।

बृहत्पारेवत ( स० क्ली० ) बृहत् महत् पारेवतं। महापारेवत, बड़ा अमरूद।

बृहत्पाली ( स० पु० ) वनजीरा।

बृहत्पीलु ( स० पु० ) बृहन् पीलु कर्मधा०। महापीलुवृक्ष, पहाड़ी अखरोट।

बृहत्पुष्प ( स० पु० ) १ महाकुष्माण्ड, पेठा। ( स्त्री० ) २ कदली वृक्ष, केलेका वृक्ष।

बृहत्पुष्पी ( स० स्त्री० ) बृहत् पुष्पं यस्याः ङीष्। १ घण्टारवा। २ शणवृक्ष, सनका पेड़।

बृहत्पृष्ठ ( स० त्रि० ) बृहत्पृष्ठयुक्त।

बृहत्फल (स० क्ली०) १ कुष्माण्ड कुम्हड़ा। २ पनसीफल, कटहल। ३ जम्बूफल, जामुन। ४ चचेण्डा, चिचड़ा।

बृहत्फला (स० स्त्री० ) बृहत्फल यस्या। १ अलाबू, लौकी। २ कटुतुम्बी, तितलौकी। ३ महेन्द्रवारुणी। ४ कुष्माण्डी, कुम्हड़ा। ५ राजजम्बू, बड़ा जामुन।

बृहत्यादि (स० पु०) सन्निपातज्वरोक्त कषाय। प्रस्तुत प्रणाली—बृहती, पुष्कर, भार्गी कचूर, शृङ्गी, दुरालभा, वत्सकबीज और परोल इनका समान भाग ले कर कषाय प्रस्तुत कर अर्थात् आध सेर जलमें सिद्ध करके जब आध पाव जल रहे तब उसे उतार ले। इसका सेवन करनेसे सन्निपातिक ज्वर जाता रहता है।

बृहत्सवर्त्त (स० पु०) सत्रभेद।

बृहत्साम (स० क्ली०) बृहत् साम नित्यक। साममेद। गीतामें लिखा है कि सामके मध्य बृहत्साम श्रेष्ठ है।

"बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहं ॥" (गीता)

बृहत्सुख (स० त्रि०) प्रभूत धनी सुख सम्पन्न, खुशहाल।

बृहत्सेन (स० त्रि०) १ महासेनायुक्त, जिसके बड़ी फौज हो। (पु०) २ बार्हद्रथवंशीय भावीनृपभेद ३ मगधवंशीय नृपभेद। (स्त्री०) ४ बृहती सेना भारी फौज।

बृहत्स्तोम (स० क्ली०) स्तोमभेद।

बृहत्स्फिज (स० त्रि०) बृहत् स्फिचयुक्त।

बृहदग्नि (स० पु०) नानाविध अग्नियुत।

बृहदङ्ग (स० पु०) बृहदङ्ग यस्य। मतङ्गज, हाथी।

बृहदनीक (स० त्रि० ) बहु सैन्ययुक्त।

बृहदम्बालिका (स० स्त्री०) कुमारानुचर मातृभेद।

बृहदम्ल (स० पु० बृहत् अम्लो यस्य। कामरङ्ग।

बृहदश्व (स० पु०) ऋषिभेद।

बृहदात्रेय (स० पु०) वैद्यक ग्रन्थभेद।

बृहदारण्यक (स० क्ली०) उपनिषद्भेद। इसमें ब्रह्मतत्त्व अति विस्तृतभावमें वर्णित हुआ है। शतपथब्राह्मणका आरण्यक अंश ही बृहदारण्यक कहलाता है। इसके बहुतो भाष्य और टीकाएं देखी जाती हैं।

बृहदि (स० पु०) १ आजमीढपुत्र नृपभेद। २ हर्य्यश्ववंशीय नृपभेद।

बृहदुक्थ (स० क्ली०) १ महत् उक्थ। (पु०) २ अग्निवंशीय तपस्य पुत्र अग्निभेद।

बृहदुक्ष (स० पु०) जगत् साधुकारक प्रजापति।

बृहदुत्तरतापनी (स० स्त्री०) उपनिषद्भेद।

बृहदेला (स० स्त्री०) बृहती एला, बड़ी इलायची।

बृहद्गर्भ (स० पु०) राजा शिविके एक पुत्रका नाम।

बृहद्गिरि (स० पु०) १ प्रभूत स्तुति, खूब तारीफ। २ मरुत्, एक देवगणका नाम।

बृहद्गु (स० पु०) राजभेद, एक राजाका नाम।

बृहद्गृह (स० पु०) देशविशेष, कारुषदेश। यह देश विन्ध्या पर्वतके पीछे मालवादेशके समीप अवस्थित है।

बृहद्गोल (स० क्ली०) बृहद्गोल गोलाकारफल यस्य। शीर्णवृन्त, तरबूज।

बृहद्गौरीव्रत (स० क्ली०) व्रतभेद।

बृहद्ग्रावन (स० त्रि०) बृहत् प्रस्तरवत्, बड़े पत्थरके जैसा।

बृहद्दन्ती (स० स्त्री०) एरण्डपत्रविटप दन्तीविशेष, एक प्रकारकी दन्ती जिसके पत्ते एरण्डके पत्तोंके समान होते हैं। इसके गुण—कटु, दीपन, गुदाङ्कुर, अश्म, शूल, अर्श, कण्डू, कुष्ठ और विदाहनाशक। दन्ती देखो।

बृहद्धर्म (स० पु०) वक्षेयुवंशीय नृपभेद।

बृहद्दल (स० पु०) बृहद् दल यस्य। १ पट्टिकालोध्र, सफेद लोध। २ हिन्ताल वृक्ष। ३ रक्तरसोन, लाल लहसुन। ४ मलयवर्णवृक्ष। (स्त्री०) ५ लज्जालुका छोटो लज्जालु।

बृहद्दली (स० स्त्री०) लज्जावती, लजालू।

बृहद्दिव (स० त्रि०) ज्येष्ठ, प्रशस्यतम।

बृहद्दिवा (स० स्त्री०) महाद्युतियुक्ता, जिसमें चमक दमक हो।

बृहद्देवता (स० स्त्री०) वेदके ऋषि प्रतिपादक ग्रन्थभेद।

बृहद्द्युम्न (स० पु०) नृपभेद।

बृहद्धनुस् (स० पु०) १ आजमीढवंशीय नृपभेद। (त्रि०) बृहत्धनुर्यस्य। २ महाचापयुक्त।

बृहद्धर्म (स० पु०) आजमीढवंशीय नृपभेद।

बृहद्धर्मपुराण (स० स्त्री०) पुराणग्रन्थविशेष। यह एक उपपुराण है। पुराण देखो।

बृहद्धन (स० त्रि०) बृहत् धन यस्य। १ महाधन। (पु०) २ इक्ष्वाकुवंशीय नृपभेद।

बृहद्दन्त (सं० पुं०) बृहन् दन्तो यस्य। महादन्त, बड़ा दाँत। पर्याय—हस्ति।

बृहद्दल (सं० पुं०) १ महादल। २ सफेद लोध। ३ लज्जावन्ती, लज्जालु।

बृहद्बीज (सं० पुं०) बृहत् बीजं यस्य। आम्रातक, अमड़ा।

बृहद्बृहस्पति (सं० पुं०) धर्मशास्त्रभेद।

बृहद्ब्रह्म (सं० पुं०) आङ्गिरस ऋषिभेद। (भारत वन० २११ अ०)

बृहद्भट्टारिका (सं० स्त्री०) दुर्गाका एक नाम।

बृहद्भण्डी (सं० स्त्री०) त्रायमाणा लता।

बृहद्भय (सं० पुं०) सावर्णि मनुके एक पुत्रका नाम। (मार्कण्डेयपु० ९१ अ०)

बृहद्भानु (सं० पुं०) बृहन् भानुरश्मिर्यस्य। १ अग्नि। (भारत ३।२२०।८) २ चित्रक वृक्ष। ३ सत्यभामाके एक पुत्रका नाम। (भाग० १०।६१।१०) ४ पृथुलाक्षके एक पुत्रका नाम। (भाग० ९।२३।११) ५ आङ्गिरस रुद्रसावर्णि मन्वन्तरमें हरिके एक अवतारका नाम। रुद्रसावर्णि मन्वन्तरमें भगवान् हरिने वितानाके गर्भ और सत्रायणके औरससे जन्मग्रहण किया था। इसका नाम बृहद्भानु रखा गया। (भाग० ८।१३।२९)

(त्रि०) ६ बृहद्रश्मिविशिष्ट, अच्छी रोशनीवाला।

बृहद्भास (सं० पुं०) १ प्रासादभेद। स्त्रीयां टाप्। २ सूर्यकी कन्या, अग्नि भानुकी पत्नी।

बृहद्रण (सं० पुं०) इक्ष्वाकुवंशके भावि नृपभेद। (भाग० ९।१२।१२)

बृहद्रथ (सं० पुं०) बृहन् रथो यस्य। १ इन्द्र। २ यज्ञपात्र। ३ सामवेदका मन्त्र। ४ मन्त्रविशेष। ५ मित्र पुत्र। ६ शतधन्वपुत्र। ७ देवरातपुत्र। ८ तिमिर राजपुत्र। ९ पृथुलाक्षके पुत्र। १० मगधराजभेद। (त्रि०) ११ प्रभूतरथ जिसके अनेक रथ हों।

बृहद्रयि (सं० त्रि०) बहु धनयुक्त, धनवान्।

बृहद्रवस् (सं० त्रि०) महाशब्दकारी, जोरसे आवाज करनेवाला।

बृहद्राजिन (सं० पुं०) क्षुद्रोलूक, छोटा उल्लूपक्षी।

बृहद्रि (सं० त्रि०) महाधन धनी।

बृहद्रेणु (सं० पुं०) सर्पभेद।

बृहद्रेणु (सं० त्रि०) बहु पांशुयुक्त।

बृहद्धोम (सं० पुं०) सोमकसिद्धान्त-वर्णित जापभेद।

बृहद्रथन (सं० पुं०) बृहत् बृहन्नाम सद्रस्त्यामि स्तोत्रतया मनुष, गम्य च। १ बृहन्नामसामस्तोत्रस्तुत्य इन्द्र, बृहत् साम स्तोत्र द्वारा स्तवनीय। २ तरसाध्य यज्ञ। स्त्रीयां ङीप्। ३ नदीभेद।

बृहद्वयस् (सं० त्रि०) बहु शक्तिशाली, पराक्रमी। २ अधिकवयस्क, ज्यादा उमरका।

बृहद्वर्ण (सं० पुं०) स्वर्णमाक्षिक, सोनामक्खी।

बृहद्वल्क (सं० पुं०) १ पट्टिका लोध, सफेद लोध। २ सप्तपर्णवृक्ष।

बृहद्वल्ली (सं० स्त्री०) कारवल्ली, करेला।

बृहद्वसिष्ठ (सं० पुं०) धर्मशास्त्रभेद।

बृहद्वसु (सं० पुं०) वैष्णव जनभेद।

बृहद्वार (सं० पुं०) देवधान्य।

बृहद्वादिन् (सं० त्रि०) अहङ्कारी घमण्डी।

बृहद्वारुणी (सं० स्त्री०) बृहती वारुणी कर्मधा०। १ महेन्द्रवारुणीलता। २ रास्नाक्षुप।

बृहद्वासिष्ठ (सं० क्ली०) १ इस नामके एक शास्त्र। २ धर्मशास्त्र।

बृहद्विष्णु (सं० पुं०) धर्मशास्त्रभेद।

बृहद्व्यास (सं० पुं०) धर्मशास्त्रभेद।

बृहद्व्रत (सं० त्रि०) महाव्रत पालनकारी।

बृहद्दली (सं० स्त्री०) गन्धद्रव्यभेद।

बृहन्नट (सं० पुं०) बृहन् नटः। १ महानटगण, बड़ा नटखट। २ अर्जुनका एक नाम। ३ बाहु, बाँह।

बृहन्नला (सं० स्त्री०) अर्जुनका उस समयका नाम जिस समय वे अज्ञातवासमें स्त्रीके वेशमें रह कर राजा विराटकी कन्याको नाच गान सिखाते थे। अर्जुन देखो।

बृहन्नारदीयपुराण (सं० क्ली०) पुराणभेद। इसकी गिनती उपपुराणमें की गई है। पुराण देखो।

बृहन्नारायण (सं० पुं०) एक उपनिषद्का नाम जिसे याज्ञिकी उपनिषद् भी कहते हैं।

बृहन्नारायणोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्भेद।

बृहन्निम्ब (सं० पुं०) महानिम्ब।

बृहन्निर्वाणतन्त्र (सं० क्ली०) एक तन्त्र जो महानिर्वाणतन्त्रसे भिन्न है। तन्त्र देखो।

वृहन्नेत्र (त्र ० त्रि० ) १ वृहत् नयनयुक्त, बड़ी बड़ी आँख वाला। २ दूरवर्त्ती, दूरका।

वृहन्नौका (स ० स्त्री०) क्रीड़नभेद, चतुरङ्ग नामका खेल। चतुरङ्ग देखो।

वृहस्पति—(स ० पु०) वृहता वाचा पति। (पारस्करेति। पा ६।१।१५७। इति सुट् निपात्यते। अङ्गिराके पुत्र, देवताओंके गुरु, धर्मशास्त्र प्रयोजक, नवग्रहोंमेंसे पञ्चम ग्रह। पर्याय—सुराचार्य, गीष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आङ्गिरस, वाचस्पति, चित्रशिखण्डिज। (अमर) उतथ्यानुज, गोविन्द, चारु, द्वादशरश्मि, गिरीश, दिदिव, पूर्वफल्गुनीभव। (जटाधर) सुरगुरु, वाक्पति, वचसाम्पति, इज्य, वागीश, वक्षस्, दीदिवि, द्वादशकर, प्राक्फाल्गुन, गीरथ। (शब्दरत्ना०)

"एत ते देव सवितर्यज्ञ प्राहुर्वृहस्पतये॥" (शुक्लयजु ९।२७)

देवताओंके यज्ञमें वृहस्पति ब्रह्मा होते थे। ऋग्वेदमें वृहस्पति शब्दका अर्थ पुरोहित और मन्त्रपालक देखनेमें आता है।

'वृहस्पतिं य सुभृतं विभर्त्ति" (ऋक ४।५०।७) "वृहस्पतिं वृहता महता मन्त्रस्य पालयितारं देवउत्तमत्वया पुरोहित वा।" (सायण)

ग्रहयागतत्त्वमें लिखा है—वृहस्पतिग्रह ईशानकोण, पुरुष, ब्राह्मणजाति, ऋग्वेद, सत्त्वगुण, मधुर रस, धनु और मीनराशि, पुष्यनक्षत्र, वस्त्र, पुष्परागमणि और सिन्धुदेशके अधिपति हैं। इनका शरीर वड़ गुरु है। ये पद्मस्थित और चतुर्भुज हैं, चारों हाथोंमें अक्ष, वर, दण्ड और कमण्डलु धारण किये हुए हैं। इनके अधिदेवता ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। ये अङ्गिरा मुनिके पुत्र, प्रातःकालमें प्रबल, शुभप्रद, देवगृहस्वामी, पुरुष, स्वङ्गत्व स्वामी, वातपित्तकफात्मक वणिक्कर्म कर्त्ता और अङ्गिरागोत्र हैं। (ग्रहयागतत्त्व)

दीपिकाके मतसे—वृहस्पतिकी आकृति पद्मके समान, वर्ण गौर और जाति ब्राह्मण हैं। ये पुरुष हैं, तमोगुणके अधिपति और समाधातु विशिष्ट हैं, ऋग्वेदके अधिपति, राशिचक्रमें सप्तम, नवम और पञ्चम गृहमें पूर्णदृष्टि है। रवि, चन्द्र और मङ्गल मित्र, बुध और शुक्र शत्रु तथा शनि सम है। वृहस्पतिका मूल त्रिकोण धनु है। वृहस्पतिके १ राशिसे दूसरी राशिमें जानेमें १ वर्ष और सम्पूर्ण राशियोंमें भ्रमण करनेमें १२ वर्ष समय लगता है। कर्कट राशि वृहस्पतिसे उच्च और मकरके नीचे है, जिसमें कर्कटके ५ अंश बहुत उच्च हैं और मकरके ५ अंश बहुत नीचे हैं। वृहस्पति ऊँचे पर रहनेसे शुभफल और नीचे रहनेसे अशुभफल होता है; ऊँचे और नीचेके बीचमें रहनेसे मागहार द्वारा फलका निर्णय करना चाहिए। वृहस्पति काल पुरुषका ज्ञान और सुख है। वृहस्पतिके दीप्तांश ६ हैं अर्थात् वृहस्पतिग्रह जब जिस राशिमें रहते हैं, तब उसी राशिके जितने अंशमें उनका किरणजाल पूर्णरूपसे निक्षिप्त होता है, उसे दीप्तांश कहते हैं, किन्तु सूर्यके दीप्तांशमें सभी ग्रह अस्तमित होते हैं। वृहस्पतिकी वक्रगतिका काल एक सौ दिन है। वृहस्पति धन, पुत्र, काञ्चन और मित्रादिके देनेवाले हैं

वृहस्पतिके दण्डमें जन्म होनेसे वह व्यक्ति अत्यन्त मेधावी, दाम्भिक, बहु पुत्रयुक्त, मिष्टभाषी और नृत्यगीत प्रिय होता है। वृहस्पतिरिष्ट—वृहस्पति यदि मेष अथवा वृश्चिक राशिमें रह कर किसी लग्नके अष्टम स्थान स्थित हों तथा यदि वे रवि, चन्द्र, मङ्गल और शनि द्वारा दृष्ट हों और शुक्रकी दृष्टि न रहे, तो बालककी तीन वर्षके भीतर मृत्यु होती है। वृहस्पतिके तुङ्ग पर अवस्थान करनेसे मानव मन्त्री, नरश्रेष्ठ, अतिशय बलवान माननीय, अति रागान्वित, ऐश्वर्यशाली, हस्ती, अश्व, यान और सुन्दरी रमणियों द्वारा विभूषित और बहु गोष्ठी पोषक होता है।

मेष आदि द्वादश राशियोंमें वृहस्पति रहनेसे निम्न लिखित रूप फल हुआ करता है —

मेषमें वृहस्पति होनेसे नागादि सम्पन्न, कर्मठ, वक्ता, दाम्भिक, विख्यातकर्मा, तेजस्वी, बहुशत्रु और व्ययार्थयुक्त, क्रोधी, क्रूर और दण्डनायक होता है।

वृषमें वृहस्पति पड़नेसे—पीनविशालशरीर सम्पन्न, देव द्विजगुरु भक्तिमान, शान्त, सुन्दर, भाग्यवान, स्वदारानुरक्त, सुन्दरगृह युक्त, धनाढ्य, उत्तम वस्त्र और भूषणयुक्त, नयनेत्ता, स्थिरप्रकृति, विनीत और औषधप्रयोग कुशल होता है। मिथुनराशिमें वृहस्पति रहनेसे मेधावी,

धार्मी, निपुण, कार्य-कुशल, विनयी, गुरु और शास्त्रोंमें मान्य और समृद्धिशाली होता है। कर्कराशिमें बृहस्पति होनेसे—विद्वान, सुरूप देहसम्पन्न, महा धर्मप्रिय, सत्त्व भावयुक्त, यशस्वी, धनी, रोचक स्वभाव, विख्यात, नरपति, धार्मिक और सत्यमें अनुरक्त होता है। सिंह राशिमें बृहस्पति होनेसे—स्थिरवैरतायुक्त, धीरप्रकृति, अतिशय पराक्रमशाली, श्रेष्ठ, मित्रस्नेह सम्पन्न, शूर, पर्वत या अरण्यवासी होता है। कन्या राशिमें बृहस्पति होनेसे—मेधावी, धर्मरत, क्रियापटु ज्ञानवान, दाता, विशुद्धस्वभाव निपुण व्याख्याता और प्रभूत धनवान होता है। तुलाराशिमें बृहस्पति होनेसे—मेधावी, बहु मित्रवान्, विदेशभ्रमणमें रत, प्रभूत धनवान्, अजार्जित, नट और नर्तक द्वारा धन नाश तथा पवनात्मक शरीरवाला होता है। वृश्चिकमें बृहस्पति रहनेसे शास्त्रोंमें कुशल, साधुनीति, अनेक पदयुक्त, अच्छे स्वभाव युक्त, कुरोग द्वारा पीड़ित, बहु परिश्रमी, दाम्भिक, धर्मलिप्त और निन्दाकारी होता है। धनुराशिमें बृहस्पति होनेसे—मन्त्र, श्रेष्ठ, यज्ञादिकर्ममें आचार्य, प्रख्यात विद्वान, सङ्ग्राममें अक्षम, दाता, अपने सुहृद पक्षको प्रिय व्यवहारकारी, राजमन्त्री या मण्डलाधिपति, नाना देशनिवासी और धर्मकरण संयुक्त होता है। मकरमें बृहस्पति रहनेसे—अल्प बलवान, क्लेश सहिष्णु, नीचाचार परायण, मूर्ख, निन्दक, व्याकुल, कृपण, दीन, बन्धुवत्सल और धर्मसे दूर तथा भीरु प्रवासशील और विषादी होता है। कुम्भमें बृहस्पति होनेसे—रत्न, असाधुप्रवृत्ति, रोगाभिभूत, नृशंस, लोभी, व्याधिग्रस्त, प्रकृति गुणहीन और गुरुतल्पगामी होता है। मीनराशि में रहनेसे वेद और अर्थशास्त्रका वेत्ता, साधु और सुहृद्गणोंका पूज्य नृपतिका नेता, प्रशस्य, धनवान्, निर्भीकचित्त विशिष्ट, मुनिसिद्धान्तमें विख्यात और प्रशान्त गोष्ठीविशिष्ट होता है। (मानसागरी)

बृहस्पति दूसरेके गृहमें दूसरे ग्रह द्वारा दृष्ट होनेसे भिन्न भिन्न फल होता है। सम्बन्ध न होनेसे इसका कुछ वर्णन किया जाता है।

बृहस्पति मंगलके गृहमें रह कर रवि द्वारा दृष्ट होने पर—धार्मिक, प्रभुत, धीर, क्षमाशीलतायुक्त प्रकृति और रोगयुक्त होता है। उस गृहमें चन्द्र द्वारा दृष्ट होनेसे—इतिहास और काव्यमें कुशल, बहुरत्न और अनेक स्त्रीयुक्त, नृपति और पण्डित होता है। मङ्गल द्वारा दृष्ट होनेसे—श्रेष्ठ राजपुरुष धनी, दुःखित स्त्री और भृत्ययुक्त होता है। बुध द्वारा दृष्ट होनेसे—अनृतवादी, पापपरायण, परविक्तान्वेषणमें निपुण, मेधावी, कपटी और नीतिवेत्ता होता है। शुक्र द्वारा दृष्ट होनेसे—सर्वदा गृह, शय्या, वस्त्र, गन्ध, माल्य, अलङ्कार, सुपत्नी स्त्री, विभव सम्पन्न, उत्तम मतिमान और भीरुस्वभाव होता है। शनि द्वारा दृष्ट होनेसे—मलिनदेह, लोभी, उद्धतप्रकृति, मात्सिक, प्रसिद्ध मानरोग और अस्थिरमति होता है।

बृहस्पति शुक्रके गृहमें रह कर रवि द्वारा दृष्ट होने पर—मनुष्य और पशु आदिका अधिपति, धनी, पण्डित और राजमन्त्रित्व होता है। चन्द्र द्वारा दृष्ट होनेसे—अतिशय धनवान्, मधुरभाषी, जननीका प्रिय, युवतीप्रिय और उपभोग भोगी होता है। मङ्गल द्वारा दृष्ट होनेसे—बालाओंका प्रिय, प्राज्ञ, शूर, धनी, गुणी और राजपुरुष होता है। बुध द्वारा दृष्ट होनेसे—पण्डित, चतुर, विख्यात, उत्तम भाग्यमान् विजयशाली, सुशील और धर्मनीतियुक्त होता है। शुक्र द्वारा दृष्ट होनेसे—अत्यन्त मनिन्द्रदेह, धनी, मधुरस्वभाव, श्रेष्ठ वस्त्र और शय्यासे युक्त होता है। शनि द्वारा दृष्ट होनेसे—प्राज्ञ, धनधान्य सम्पन्न, ग्राम और नगरवासियोंमें सर्वप्रधान, मलिनदेह और कुत्सित भार्या युक्त होता है।

बृहस्पति बुधके गृहमें रह कर रवि द्वारा दृष्ट होनेसे—श्रेष्ठ, ग्रामपति, पुत्र दारा और धनसे सम्पन्न होता है। चन्द्र द्वारा दृष्ट होनेसे—धनवान, मातृवत्सल, सुकृति सम्पन्न, सुखी और व्ययशील होता है। मङ्गल द्वारा दृष्ट होनेसे—सैकड़ों युद्धोंमें विजयी, धनी और लोकपूज्य होता है। बुध द्वारा दृष्ट होनेसे—ज्योतिःशास्त्रमें कुशल, बहु पुत्र और दारा युक्त, सूत्रकार, अतिशय विद्या सम्पन्न होता है। शुक्रके देखने पर—देवमन्दिरमें कार्यकारी, वेश्यागमन और कामिनीका हृदयहारी होता है। शनि देखनेसे—पापमति, सुखी और दुष्ट शरीर होता है।

चन्द्रके गृहमें रहते हुए बृहस्पतिका रवि द्वारा दृष्ट होने पर—अतिरूपोंमें विख्यात, धन और दारा विहीन

तथा अन्तिम अवस्थामें धनी होता है। चन्द्र दृष्ट होनेसे—अतिशय द्युतिमान्, नृपति तुल्य, धन और वाहन द्वारा समृद्धिसम्पन्न, उत्तम पत्नी और पुत्र युक्त होता है। मङ्गल दृष्ट होनेसे—बाल्यावस्थामें दाता, पंडित और शूर; बुध देखनेसे—बान्धव और मातृहेतु धनवान्, कलहान्वित, पापहीन, विश्वासी और मन्त्रणा कुशल, शुक्र देखनेसे—अनेक स्त्री-युक्त, धनी और भाग्यवान, शनि देखनेसे—ग्राम, सेना वा नगरका प्रधान, वाचाल, बहुविभव सम्पन्न और वृद्धावस्थामें भोगी एवं दाता होता है।

रविके गृहमें बृहस्पति हों और रवि द्वारा दृष्ट हों, तो लोकप्रिय, विख्यात, नृपति और सुन्दरस्वभाव होता है। चन्द्र द्वारा दृष्ट होनेसे—स्त्रीके भाग्यसे धनवान्, जितेन्द्रिय और मलिनदेह, मङ्गल दृष्ट होनेसे—साधु और गुरुजनों के समीप सत्यवादी, शूर और क्रूरप्रकृति, बुध देखनेसे—विज्ञानशास्त्रविद्, श्रेष्ठ और विख्यात, शुक्र देखनेसे—स्त्री प्रिय, सुन्दर भाग्यसम्पन्न और राजपूजित, शनि देखनेसे—असुरों तीक्ष्णस्वभाव, देवपत्नी सदृश पत्नीसुख विशिष्ट और भोक्ता होता है।

बृहस्पति अपने घरमें रह कर चन्द्र द्वारा दृष्ट होनेसे—राजविरोधी, सर्वदा परितापग्रस्त, धन और आत्मबन्धुहीन, मङ्गल देखनेसे—सग्राममें पराजय, क्रूर, घातक परपीड़क और उसकी पत्नीका नाश होता है। बुध देखनेसे—राजमन्त्री, अथवा नृपति, सुख धन और सौभाग्ययुक्त, सबोंको आनन्दकर और अतिशय रूपवान होता है। शुक्र देखनेसे—अतिशय मलिन, भीरुस्वभाव, दीन और सुखभोग रहित होता है।

बृहस्पति शनिके गृहमें हो और रवि द्वारा दृष्ट हो, तो पण्डित, क्षितिपालक और पराक्रमशाली होता है। चन्द्र दृष्ट होनेसे—मातापिताकी भक्तिमें तत्पर, कुलप्रधान, प्राज्ञ, दाता, धनी, सुशील और धार्मिक, मङ्गल दृष्ट होनेसे—शूर, योद्धा, गर्वित, तेजस्वी और प्रसिद्ध, बुध दृष्ट होनेसे—कामुक, गणप्रधान, सबके साथमें मित्रता युक्त और पण्डित, शुक्र दृष्ट होनेसे—भोज्य, अन्नपान और विभव सम्पन्न, उत्तम स्त्रीयुक्त, और शनि दृष्ट होनेसे—अशेष विद्या विशारद, देश या पुरका प्रधान और धनी हुआ करता है। (सारावली)

इस प्रकार गणना पूर्वक बृहस्पतिके शुभाशुभका निर्णय किया जाता है। पूर्वोक्त फलदशा, अन्तर्दशा वा प्रत्यन्तर्दशा मध्यमें होती है। अष्टोत्तरी वा विंशोत्तरीके मतसे साधारणतः दशाकी गणना की जाती है।

अष्टोत्तरीके मतसे २० पूर्वाषाढ़ा, २१ उत्तराषाढ़ा और अभिजित् तथा २२ श्रवणा नक्षत्रमें जन्म होनेसे बृहस्पति की दशा होती है। इस दशाका परिमाण १९ वर्ष है। इसके प्रति नक्षत्रमें ४ वर्ष ९ मास, प्रति नक्षत्रके पादमें १ वर्ष २ मास १५ दिन, प्रति दण्डमें २८ दिन ३० दण्ड, प्रति पलमें २८ दण्ड ३० पल होता है। नक्षत्रका परिमाण ३० दण्ड होनेसे ऐसा समय होगा, कमी-बेशी होनेसे भागहार द्वारा भोग्यफलका निर्णय करना चाहिए।

मानवको इस दशाके समय राज्यप्राप्ति, धनागम, पुत्रलाभ, विविध वस्तुओंका भोग, सुख-वृद्धि, विद्या लाभ, सुख्याति और धनकी प्राप्ति होती है।

विंशोत्तरीके मतसे बृहस्पतिकी दशा १६ वर्ष है। पुनर्वसु, विशाखा वा पूर्वभाद्रपद नक्षत्रमें जन्म लेनेसे बृहस्पतिकी दशा होती है।

अष्टोत्तरी और विंशोत्तरीके मतसे बृहस्पतिकी दशाकी प्रत्यन्तर्दशा इस प्रकार है —

| अष्टोत्तरीके मतसे | विंशोत्तरीके मतसे |
|---|---|
| वर्ष, मास दिन, दण्ड, | वर्ष, मास, दिन, |
| बृ, बृ, ३ । ४ । ३ । २० । | बृ, बृ, २ । १ । १८ । |
| बृ, रा, २ । १ । १० । १० । | बृ, श, २ । ६ । १२ । |
| बृ शु, ३ । ८ । १० । ० । | बृ, के, ० । ११ । ६ । |
| बृ, र, १ । ० । २० । ० । | बृ, शु २ । ८ । ० । |
| बृ, च, २ । ७ । २० । ० । | बृ, र, ० । ९ । १८ । |
| बृ, म, १ । ४ । २६ । ४० । | बृ, च, १ । ४ । ० । |
| बृ, बु, २ । ११ । २६ । ४० । | बृ, म, ० । ११ । ० । |
| बृ, श, १ । ९ । ३ । ० । | बृ, रा, २ । ४ । २४ । |
| १९ वर्ष । | १६ वर्ष । |

बाहुल्य भयसे प्रत्यन्तर्दशा नहीं लिखी जा सकी।

दशा देखो।

बृहस्पतिग्रह १ वर्ष बाद एक एक राशिका भोग किया करते हैं। गोचरमें बृहस्पति रहनेसे निम्नलिखित प्रकार फल होता है—

गाड़ी सहारा भी मिल सके। २ सरकारी न्यायालयके न्यायकर्ता।

**बेधना** (हि० क्रि०) बेंधना देखो।

**बेंट** (हि० स्त्री०) औजारों आदिमें लगा हुआ काठ या इसी प्रकारकी और किसी चीजका दस्ता, मूठ।

**बेड़** (हि० पु०) १ वह भेड़ा जो भेड़ोंके झुण्डमें बच्चे उत्पन्न करनेके लिये छूटा रहता है। २ डलालको बोली में नगद रुपया पैसा, सिक्का। ३ पड़ाव। (स्त्री०) ४ वह थाला जो किसी मालको नीचे गिरनेसे रोकनेके लिये उस के नीचे लगाई जाय, चाँड़।

**बेड़ा** (हि० पु०) १ बेड़ा देखो। (वि०) २ आड़ा, तिरछा। ३ कठिन, मुश्किल।

**बेड़ी** (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी टोकरी जो बांसकी बनी होती है। इसमें चार रस्सियां बंधी रहती हैं। उन रस्सियोंकी सहायतासे दो आदमी मिल कर किसी गड्ढेका पानी उठा कर खेत आदि सींचते हैं। इसे दुगलिया और डौरी भी कहते हैं।

**बेढ़ीमतकली** (हि० स्त्री०) हँसियाके आकारका लोहे का एक औजार। इसमें काठका दस्ता लगा रहता है। इससे बरतनों पर निला भी की जाता है।

**बेंद** (हि० पु०) खंभे आदिके ऊपरी पतले भागमें पहनाया हुआ किसी धातुका पतला नोकीले पत्तर या इसी प्रकार का और कोई पदार्थ। इसका उपयोग यह जाननेके लिये होता है कि हवा किस ओर बह रही है। यह साहजसी चारों ओर घूम सकता है और हमेशा हवाके रुख पर घूमता रहता है, फरहरा।

**बेत** (हि० पु०) १ एक प्रसिद्ध लता। इसकी गिनती ताड़ या खजूर आदिकी जातिमें की गई है। विशेष विवरण बल्क शब्दमें देखो। २ बेतकी छड़ीसे बनी हुई छड़ी।

**बेंदुली** (हि० स्त्री०) माथे पर लगानेकी बिंदी, टिकली।

**बेंदा** (हि० पु०) १ माथे पर लगानेका गोल तिलक, टीका। २ एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां माथे पर पहनती है। ३ एक प्रकारको टिकली जो माथे पर लगाई जाती है। ४ एक प्रकारका आभूषण जो टिकलीके आकारका होता और माथे पर पहना जाता है।

**बेंदी** (हि० स्त्री०) १ टिकली, बिंदी। २ शून्य, सुन्ना। ३ सरोके पेटका या बेलबूटा। ४ दावनीके आकार का गहना जिसे स्त्रियां माथे पर पहनती हैं।

**बेधरा** (हि० पु०) बड़ कियाड़ेके पीछे लगानेकी लकड़ी। इसे अरगल भी कहते हैं।

**बेधवाना** (हि० क्रि०) छिदानेके लिये किसीसे कपड़ा नपवाना।

**बे** (फा० अव्य) १ बिना, बगैर। (हि० अव्य०) २ छोटों के लिये एक सम्बोधन शब्द जो प्राय अशिष्टता-सूचक माना जाता है।

**बेअकल** (फा० पु०) मूर्ख, बेवकूफ।

**बेअकली** (फा० स्त्री०) मूर्खता, बेवकूफी।

**बेअदब** (फा० वि०) जो किसीका अदब न करता हो, जो बड़ोंका आदर सम्मान न करता हो।

**बेअदबी** (फा० स्त्री०) बेअदब होनेका भाव, गुस्ताखी।

**बेआब** (फा० वि) १ जिसमें आब या चमक न हो। २ जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो।

**बेआवर** (ब्यावर)—अजमेर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २६° ०´ उ० तथा देशा० ७४° १६´ पू०के मध्य अव स्थित है। जनसंख्या प्राय २२००० है जिनमेंसे हिन्दू की संख्या ज्यादा है। स्थानीय लोग इसे नयानगर कहते हैं। अजमेर मेरवाड़ा विभागके अंगरेज कमि श्नरने १८३५ ई०में यह नगर मेरवासियोंके लिये बसाया। मेवाड़की राजधानी उदयपुर और मारवाड़ की राजधानी जोधपुरके बीचमें स्थापित होनेके कारण यह स्थान थोड़े ही समयके अन्दर एक प्रधान वाणिज्य केन्द्रमें परिणत हुआ, तथा धनवानों पूर्ण हो इसकी आशातीत श्रीवृद्धि हुई। नगरके चारों ओर पत्थरकी प्राचीर है। यहांकी सड़क बहुत विस्तृत है और दोनों ही पार्श्व वृक्ष बड़े वृक्षोंकी छायासे सुशोभित हैं।

शहरमें कपासका विस्तृत कारबार है। कपासको गाठ बांधनेके लिये दो वाष्पीय यन्त्र प्रेस प्रतिष्ठित हैं। अलावा इसके लाहेका काम बनानेका भी एक बहुत बड़ा कारखाना है। इन सब लोगोंके बरतनों और रंगीन कपड़ेकी विभिन्न स्थानोंमें रफ्तनी होती है। स्थानीय धनीमानी लोग और वाणिज्य उल्लेख योग्य है।

बेआबरू (फा० वि०) जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, बेइज्जत।

बेआबी (फा० स्त्री०) निस्तेजता, मलिनता।

बेआरा (हिं० पु०) एकमें मिला हुआ जौ और चना।

बेओनी (हिं० स्त्री०) जुलाहोंका एक औजार। यह प्रायः बयीके आकारका होता है और तानेके सूतके बीच में रहता है।

बेइंसाफी (फा० स्त्री०) अन्याय, इंसाफका अभाव।

बेइज्जत (फा० वि०) १ अप्रतिष्ठित, जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। २ जिसका अपमान किया गया हो, अपमानित।

बेइज्जती (फा० स्त्री०) १ अप्रतिष्ठा। २ अपमान।

बेउलि (हिं० पु०) बेला देखो।

बेइल्म (फा० पु०) जो कोई विद्या न जानता हो, जो कुछ पढ़ा लिखा न हो।

बेईमान (फा० वि०) १ जिसका ईमान ठीक न हो, जिसे धर्मका विचार न हो। २ जो अन्याय कपट या और किसी प्रकारका अनाचार करता हो।

बेईमानी (फा० स्त्री०) बेईमान होनेका भाव।

बेउज्र (फा० वि०) जो आज्ञापालन अथवा और कोई काम करनेमें कभी किसी प्रकारकी आपत्ति न करे।

बेकदर (फा० वि०) जिसकी कोई कदर या प्रतिष्ठा न हो, बेइज्जत।

बेकदरी (फा० स्त्री०) बेकदर होनेका भाव, बेइज्जती।

बेकनाट (स० पु०) कुसीदजीवी सूदखोर।

बेकरा (हिं पु०) पशुओंका खुरपका नामक रोग, खुरहा।

बेकरार (फा० वि०) व्याकुल, विकल।

बेकरारी (फा० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी।

बेकल—मन्द्राज प्रदेशके दक्षिण कनाडा जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० १२ २४ उ० तथा देशा० ७५ ३ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां एक सुवृहत् दुर्ग सुरक्षित अवस्थामें विद्यमान है। दुर्गका पर्यवेक्षण करने से उसमें वर्त्तमान युरोपीय स्थापत्य विज्ञानके अनेक निदर्शन पाये जाते हैं। समुद्रगर्भमें जो एक शैल है उसीके ऊपर यह दुर्ग स्थापित है। इक्केरी और चेराकल राजवंशके परस्पर विरोधकालमें इस दुर्गकी प्रथम प्रतिष्ठा हुई थी, ऐसा अनुमान किया जाता है। पीछे वह संस्कृत हो इस प्रकार सुदृढ़ दुर्गमें रूपान्तरित हो गया है। पाश्चात्य भौगोलिक De Barros ने इस स्थान की समृद्धिका उल्लेख किया है। उनके विवरणमें यह नगर Cota Coulam नामसे वर्णित है।

बेकली (हिं० स्त्री०) १ बेकल होनेका भाव, घबराहट। २ स्त्रियोंका एक रोग। इसमें उनका गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है। इसमें रोगीको बहुत अधिक पीड़ा होती है।

बेकस (फा० वि०) १ निराश्रय, निःसहाय। २ दीन, गरीब। ३ मातृ पितृहीन, बिना मा बापका।

बेकस—पाश्चात्य जगत्‌की प्राचीन जातियों द्वारा पूजित देवमूर्त्ति। प्राचीन ग्रीक लोगोंके मध्य यह देवमूर्त्ति जिउसके पुत्र देवनिसस, लाटिन जातिमें बेकस (Bacchus) और मिस्रवासियोंमें ओसिरिस नामसे प्रसिद्ध हैं। पाश्चात्य जगत्‌में बेकसके सम्बन्धमें जो किंवदन्ती प्रचलित हैं उसकी पर्यालोचना करनेसे ऐसा प्रतीत होता है मानो उस समय बहुत बेकस विद्यमान थी। दियोदोरस और सिसिरो इस प्रकारकी अनेक बेकसोंका उल्लेख कर गये हैं पर जिस बेकसका उल्लेख यहां किया जाता है उसने कादमसराज-तनया सिमिलीके गर्भ और जुपिटर वृहस्पतिके औरससे जन्मग्रहण किया है। मिसरीय किंवदन्तीका अनुसरण करनेसे जाना जाता है, कि युवराज बेकस एक दिन युवावस्थामें नाक्सस द्वीपमें गाढ़ी निद्रामें सो रहे थे, इसी समय कुछ नाविक आ कर उन्हें चुरा ले गये। इस पर युवक बड़े बिगड़े और उन्होंने नाविक-दलको शाप दिया जिससे वे सबके सब मछली हो गये। इसी जगहसे बेकसको ऐशीभक्तिका परिचय पाया जाता है। उन्होंने अपने पुण्यबल और पिताकी सम्मतिसे माता सिमिलीको नरकसे उद्धार कर स्वर्गधाम भेज दिया। इस समयसे वे बाइजने नामसे मशहूर हुए। अनन्तर बेकसने पूर्वकी चढ़ाई करके वहांके अधिवासियोंको द्राक्षाकर्षण और मधु आहरणकी शिक्षा दी थी। इस कारण वे मद्यपायी जातिके देवतारूपमें पूजित हुए। बेकसके उन्सर अर्गिज,

बेकिनेलिया, डायोनिसिया, साबाजिया या ओर्जिया नामसे पाश्चात्य जगत्‌में प्रसिद्ध है। ग्रीक और उनकी स्त्रियोंने इस पूजाका रोममें प्रचार किया। इस उत्सवमें यहांके बहुतसे लोग शराब पीते थे। यहां तक कि वे आत्मविस्मृत हो बहुतसे निन्दित कर्म भी कर डालते थे। १८० ई०में बेकस सम्बन्धीय उत्सवकी दुर्दशा देख कर रोम गवर्मेण्टने यह उत्सव सदाके लिये बन्द कर दिया।

बेकसपूजामें जो सब स्त्रियां पुरोहितके कार्यमें लिप्त रहती थीं, उत्सवभेद और देशभेदसे वे विभिन्न नाम पाती थीं। परिच्छदके तारतम्यानुसार वे मेनाडिस, थायडिस, बेकान्टिस, मिमेलोनाइडिस, बासराइडिस आदि नामोंसे जनसाधारणमें प्रसिद्ध थीं। मिस्रवासी बेकसकी मूर्तिके लिये वृषद्वार पर शूकरबलि देते थे। अधिकांश जगह छागबलिकी ही व्यवस्था देखी जाती थी। क्योंकि, छागकुल द्राक्षालताका नाश करनेमें सदा उन्मुख रहता था। डिनिडोरा कहता है, कि देवताओंके मध्य इनका मस्तक मुकुटहीन, कामदेवकी तरह सुन्दर और यौवनावस्थामें मस्तक समाच्छादित बालों से शोभित रहते हैं। यौवन उनके मुखमण्डल पर सदा विराज करता है। कभी भी वे हाथमें शृङ्ग लिये दिखाई पड़ते हैं। इस शृङ्गके सम्बन्धमें पाश्चात्य जगत्‌में किंवदन्ती है कि बेकसने वृषके द्वारा भूमिकर्षणकी शिक्षा दी थी, उसीके निदर्शनस्वरूप उन्होंने हाथमें शृङ्ग धारण किया है। फिर कोई कहते हैं, कि लाइबियर मरुभूमिमें जब वे भ्रमण करते थे और पिपासासे कातर तथा मृतप्राय हो गये थे उस समय उनके पिता जुपिटर मेषका रूप धारण कर उन्हें जलपूर्ण स्थान बतला दिया था। उस घटनासे कृतज्ञतास्वरूप वे शृङ्गधारी हो गये हैं। डियोडोरसने तीन और प्रकारकी बेकसमूर्तिका उल्लेख किया है, उनमेंसे (१) भारतविजयी बेकस ... (२) जुपिटर और प्रसर्पीनाके पुत्र शृङ्गधारी और (३) जुपिटर तथा सिमिलाके पुत्र थीबिसकी बेकस है। सिसिरोके मतानुसार १ प्रसर्पीना पुत्र २ न्यायसके पुत्र, ३ कबिरसके पुत्र, इन्होंने एशिया देशमें अपना प्रभुत्व फैलाया था, ४ ज्युपिटर और न्यायसके पुत्र तथा ५ जुपिटर चन्द्रके पुत्र हैं।

वर्तमान कायरो नगरसे ३ मील दक्षिण उत्तर मिस्रके डिया नामक ग्राममें प्रायः १८०० ई० सन्‌के पहले प्रतिष्ठित जुपिटर (वृषभपति) मन्दिरका ध्वंसावशेष दृष्टिगोचर होता है।

पाश्चात्य जगत्‌में बेकसके लिङ्गरूपकी नाना भावमें उपासना होती है। कभी तो वे और सौन्दर्यशाली सुकुमार युवक, कभी मस्तक पर द्राक्षा या आइवी लताका किरीट और कभी हाथमें त्रिशूल लिये रहते हैं। व्याघ्र और सिंह उनका प्रियवाहन और मागपाई नामक पक्षी उनको अतिप्रिय है। वे व्याघ्रचर्मसे समाच्छादित हो भारतविजयके लिये गये थे। फिर कभी वे भास्कर-मण्डित भूगोल पर उपविष्ट मूर्तिमें गर्दभ या सीलिनिस-के समान पूजित होते हैं। भारत भ्रमणकारी बहुतसे म.म. ग्रन्थकारोंने लिङ्गमूर्तिके उपास्य एक देवताका उल्लेख किया है। अधिक सम्भव है कि वे भारतवर्षीय महादेवकी लिङ्गपूजाके साथ ग्रीकदेशीय बेकसके लिङ्ग मूर्ति देवताकारकी सदृशता देख कर ऐसा निर्णय कर गये हों।

बेकस (हि० वि०) जिसको आशा या परामर्श न मालूम होता।

बेकानूनी (फा० वि०) नियमविरुद्ध, जो कानून या कायदेके खिलाफ हो।

बेकाबू (फा० वि०) १ जिसका अपने ऊपर काबू न हो, विवश। २ जिस पर किसीका काबू न हो, जो किसीके वशमें न हो।

बेकाम (हि० वि०) १ जिसे कोई काम न हो, निकम्मा। (क्रि० वि०) २ निरर्थक, व्यर्थ।

बेकायदा (फा० वि०) नियमविरुद्ध, कायदेके खिलाफ।

बेकार (फा० वि०) १ निकम्मा निठल्ला। २ जो किसी काममें न आ सके, निरर्थक।

बेकारी (फा० स्त्री०) बेकार होनेका भाव, काम या रोजगार न होनेका भाव

बेकसूर (फा० वि०) निरपराध, जिसका कोई कसूर न हो।

बेकुफ—एक मुसलमान धर्मसम्प्रदाय। यह सम्प्रदाय

मुसलमान पाखण्डी साधु ही इसका प्रवर्त्तक है। १८वीं शताब्दीके प्रथम भागमें इस व्यक्तिने दिल्ली राजधानी पहुंच कर जनसाधारणके बीच यह घोषणा कर दी, कि मैंने अभिनव कुरान पाया है। इस कुरानका भाव स्वयं ईश्वरने व्यक्त किया है, इत्यादि। बहुतसे लोग उसकी बात पर विश्वास कर तथा ग्रन्थका मर्म और मूलतत्त्व जान कर शीघ्र ही उसके शिष्य बन गये। देखते देखते इस नवीन कुरानके मतानुयायियोंका एक सम्प्रदाय संगठित हो गया। इस सम्प्रदायके गुरु या आचार्य स्थानीय मौलवीगण 'बेकुरू' नामसे प्रसिद्ध हुए और उनका शिष्य सम्प्रदाय फरायुद्द कहलाया। उक्त मुसलमान पाखण्डी साधुने प्राचीन पारसी धर्मग्रन्थसे कुछ अपने मतके अनुकूल वचन उद्धृत करके स्वीय कल्पनाबलसे उक्त कुरानका सङ्कलन किया था।

बेकुरा (सं० स्त्री०) १ वाद्य। २ वाद्ययन्त्रभेद।

बेकुरि (सं० स्त्री०) वाद्य।

बेख (फा० स्त्री०) मूल, जड़।

बेखटक (हिं० क्रि०) १ बिना किसी प्रकारके रुकावटके, बिना किसी प्रकारकी रुकावट या असमञ्जसके। (क्रि० वि०) २ निस्सङ्कोच, बिना आगा पीछा किए।

बेखता (फा० वि०) १ निरपराध, बेकसूर। २ अमोघ, अचूक।

बेखबर (फा० वि०) १ अनजान, नावाकिफ। २ बेसुध, बेहोश।

बेखबरी (फा० स्त्री०) १ अज्ञानता, बेखबर होनेका भाव। २ बेहोशी।

बेखुर (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी। इसका शिकार किया जाता है। यह काश्मीर, नेपाल और बङ्गालमें पाया जाता है, परन्तु अक्तूबरमें पहाड़ परसे उतर कर समभूमि पर आ जाता है। फल मूल ही इसका प्रधान आहार है और प्रायः नदियों या जलाशयोंके किनारे छोटे छोटे झुंडोंमें रहता है।

बेखौफ (फा० पु०) निर्भय, निडर।

बेग (हिं० पु०) वेग देखो।

बेग (अं० पु०) कपड़े, चमड़े या कागज आदि लचीले पदार्थोंका एक थैला। इसका मुंह ऊपरसे बंद किया जा सकता है।

बेगड़ी (हिं० पु०) १ वह जो हीरा काटता हो, हीरा तराश। २ वह जो नगीना बनाता हो, हकाक।

बेगती (हिं० स्त्री०) बङ्गालकी खाड़ीमें मिलनेवाली एक प्रकारकी मछली। यह प्रायः ४ हाथ लम्बी होती है और इसका मांस स्वादिष्ट होता है।

बेगनूरी खाँ कुचिन—एक मुगल-सेनापति। इन्होंने मुगल सम्राट् अकबरशाहके अन्यतम सेनापति मुइज्जुल मुल्कके अधीन खैराबाद युद्धमें विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी अनन्तर सम्राट्के शासनकालके ३२वें और ३३वें वर्षमें इन्होंने यथाक्रम अबुल मतलब और कादिक खाँके अधीन नारिनियोंके साथ युद्ध किया था। एक हजार सेना इनके अधीन रहती थी। १००१ हिजरीमें इनकी मृत्यु हुई।

बेगम (तु० स्त्री०) १ राज्ञी, रानी। २ ताशके पत्तोंमेंसे एक पत्ता। इस पर एक स्त्री या रानीका चित्र बना होता है। यह पत्ता केवल इक्के और बादशाहसे छोटा और बाकी सबसे बड़ा समझा जाता है।

बेगम—उच्चकुलोद्भव मुसलमान रमणियोंकी उपाधि। साधारणतः मुगल बादशाहकी पत्नियां इस उपाधिसे सम्मानित होती थीं। मुगल 'बेग' उपाधि पुंलिङ्गमें और 'बेगम' स्त्रीलिङ्गमें व्यवहृत होती हैं। पाठानोंके मध्य बीबी, निसा, खानुम, खातुम, बानु आदि उपाधियां बेगमकी तरह सम्मानसूचक समझी जाती हैं। यही कारण है कि बेगम या बेगम साहिबा कहनेसे साधारणतः बादशाह पत्नी, राज्ञी, राजमहिषी, रानीका ही बोध होता है।

बेगमगञ्ज—बङ्गालके नोआखाली जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यहां एक थाना है। स्थानीय वाणिज्यकी कुछ कुछ उन्नति देखी जाती है।

बेगमपुर—हुगली जिलेके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यहां सूती कपड़ेका विस्तृत कारबार है।

बेगमपुर—बम्बईके शोलापुर जिलेके शोलापुर तालुकका एक गण्डग्राम। यह अक्षा० १७ ३४´ उ० तथा देशा० ७५ ३४´ पू० भीमा नदीके दहिने किनारे शोलापुर शहरसे १२ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या २३०४ है।

यहां सम्राट् औरङ्गजेबकी प्यारी कन्या बेगमोंका समाधि मन्दिर विद्यमान है। इस औरङ्गजेब [illegible] जब १६९५ ई०में इस ग्रामके दूसरे किनारे ब्रह्मपुरीमें छावनी डाले हुए थे, उसी समय उस कन्याकी मृत्यु हुई थी। इस कारण औरङ्गजेबने इस स्थानका अपनी कन्याके नाम पर बेगमपुर नाम रखा। यहां [illegible] छोटा मोटा कारखाना है।

बेगमपुर—यशोहर जिलेका एक समृद्धिसम्पन्न गण्ड ग्राम। यहां बहुतसे देशी ईसाइयोंका वास है। स्थानीय अधिवासी मनुष्य हो कपड़े बुन कर अपना गुजारा करते हैं।

बेगमसमरू—सरधनाधिपतिनी एक मुसलमान रमणी। यह सामान्य नर्तकीसे अपने अद्भुत गुण और बुद्धिके बलसे राजमहिषी हो गई थी। फ्रान्स राज्यके ट्रिअर प्रदेशवासी वाल्टर रेनहार्ड नामक एक फरासी युवक नौसेनादलमें सूबेदारका काम करता था। कुछ समय बाद नौसेनाके साथ यह भारतवर्ष आया। यहांसे यह नौविभागका परित्याग कर विभिन्न स्थानोंके देशीय सामन्त राजाओंके अधीन काम करने लगा। बङ्गालके नवाब मीरकासिमके अधीन मार्के नामक जो जर्मन सेनापति था, रेनहार्ड शुभ अवसर देख कर उसके अधीन सैन्यविभागमें भर्ती हो गया। मीर कासिमके कौशलसे पटनामें जो अङ्गरेज कैद रखे गये थे उनकी हत्या कर रेनहार्ड नवाबका प्रिय हो गया था सही, पर थोड़े ही दिनोंके अन्दर अङ्गरेजोंसे नवाबकी दुर्दशा और पतन अवश्यम्भावी जान कर उसने बङ्गालका परित्याग किया और भरतपुर राज सूरजमलका आश्रय लिया। यहां भी यह सरदारका काम छोड़ कर नजफखांके अधीन सैन्यनायकके पद पर भर्ती हुआ। १७७८ ई०में उसकी मृत्यु हुई और आगरा नगरमें दफन किया गया।

[illegible] और समरू।

कोई कोई कहते हैं कि रेनहार्डने अङ्गरेजोंको मरवा कर (Sombre) नाम ग्रहण किया था। यही कारण है कि इतिहासमें यह समरू नामसे प्रसिद्ध है। इसने विभिन्न राजदरबारोंमें तथा सैन्यदलमें काम करके प्रचुर सम्पत्ति अर्जन की थी। एक दिन यह काश्मीरकी एक युवती नर्तकीको देख कर उस पर मोहित हो गये और आखिर उससे विवाह कर ही लिया। वही रमणी आगे चल कर बेगम समरू नामसे मशहूर हुई।

स्वामीकी मृत्युके बाद बेगम समरू स्वामीके अर्जित सरधना राज्यकी अधीश्वरी हुई। १७८१ ई०में यह कैथलिक गिर्जामें खृष्टधर्ममें दीक्षित हुई। अनन्तर उसने १७९३ ई०में पुनः मुसो ले वासो नामक किसी फरासी भद्रलोकसे विवाह किया। यह व्यक्ति अपने स्वभावके दोषसे प्रजावर्गका अप्रिय हो उठा। सभी प्रजाने विद्रोही हो कर रेनहार्डके पुत्र जाफर याब खांके नेतृत्वमें वासोका काम तमाम करनेकी ठानी। कुत्सित समझने प्रजावर्गके मनोभावसे अपना सर्वनाश उपस्थित देख भयभीत स्वामीको आत्महत्या करनेकी सलाह दी। वासोके निधन होने पर जार्ज टामस नामक बेगमके एक विश्वस्त कर्मचारीने विद्रोहका दमन किया। १८०२ ई०में जाफरयाबकी मृत्यु हुई। उसकी कन्याके गर्भजात पुत्र डैविड अक्टरलोनी डाइस सोम्ब्रे बेगम समरूकी मृत्युके बाद १८३६ ई०में उनकी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी बना था। उन्होंने कैथलिक धर्म मन्दिरों तथा विद्यालयोंके लिये प्राय सात लाख सौलह हजार रुपयेका दान किया था।

बेगमसुल्तान—एक मुगल राजकन्या। आगरेके इतिमाद उद्दौलाकी मसजिदके बगलमें इसका समाधिमन्दिर विद्यमान है। इस समाधिमन्दिरके गात्रमें लिखा है, कि सम्राट् शाहजहांके समय १०४८ ई०में उसकी समाधि हुई। यह शेख [illegible]की कन्या थी।

बेगमहम्मद (नौकवाई) सम्राट् अकबर शाहके एक सेना नायक।

बेगमाबाद—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २८° ४८' ३०" उ० तथा देशा० ७७° ४३' २४" पू०के मध्य मेरठ शहरसे १४ मील तथा दिल्लीसे २८ मील दूर [illegible] रोड नामक राहके पर अवस्थित है। करीब डेढ़ सौ वर्ष हुए [illegible] यहां एक सुन्दर देवमन्दिरकी प्रतिष्ठा की था। [illegible] [illegible] प्रतिष्ठित

मसजिद अभी भग्नावस्थामें पड़ी है। नगरकी श्रीवृद्धिके लिये १८५६ ई०की २०वीं विधिके अनुसार म्युनिसिपल और पुलिसकी रक्षाके लिये कुछ राजस्व वसूल होता है।

बेगमा (तु० वि०) १ बेगम सम्बन्धी। २ उत्तम, बढ़िया। (पु०) ३ एक प्रकारका बढ़िया रूपदी धान। ४ एक प्रकारका पनीर। इसमें नमक कम डाला जाता है। ५ पञ्जाबमें होनेवाला एक प्रकारका बढ़िया चावल।

बेगर (हिं० क्रि० वि०) बगैर देखो।

बेगरज (फा० वि०) १ जिसे कोई गरज या परवा न हो। (क्रि० वि०) २ निष्प्रयोजन व्यर्थ।

बेगरजी (फा० स्त्री०) बेगरज होनेका भाव।

बेगवता (सं० स्त्री०) एक वर्णार्द्ध वृत्त। इसके विषम पादोंमें ३ सगण, १ गुरु और सम पादोंमें ३ भगण तथा २ गुरु होते हैं।

बेगसर (हिं० पु०) अश्वतर, खच्चर।

बेगानगी (फा० स्त्री०) बेगाना होनेका भाव, परायापन।

बेगाना (फा० वि०) १ जो अपना न हो, गैर, पराया। २ अनजान, नावाकिफ।

बेगार (फा० स्त्री०) १ बिना मजदूरीका जबरदस्ती लिया हुआ काम। २ वह काम जो चित्त लगा कर न किया जाय, वह काम जो बेमनसे किया जाय।

बेगारी (फा० स्त्री०) बेगारमें काम करनेवाला आदमी।

बेगी (पेद्दवेगी)—मन्द्राजप्रदेशके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह इल्लोर नगरसे ६ मील उत्तरमें अवस्थित है। जन साधारणका विश्वास है कि वेङ्गीके तेलिङ्ग राजाओंने पहले यहां राजधानी बनाई थी। ६०५ ई०में चालुक्य विजयके बादसे ही इस वंशका प्रताप खर्व होता आया। ४थी शताब्दीमें जो एक ताम्रफलक उत्कीर्ण हुआ है उसमें यह वंश शालङ्कायन-राजवंश कह कर वर्णित है।

शिलालिपिके प्रमाणसे और भी जाना जाता है, कि वेङ्गीराज्य आधिपात्यका एक अति प्राचीन जनपद था। पल्लवगण यहांका शासन करते थे। काञ्चीपुरके पल्लव राजाओंके साथ इनका नजदीकी सम्बन्ध था। प्रत्नतत्त्वविद् बुर्नेलके मतानुसार यह राज्य ७वीं शताब्दीमें प्रतिष्ठित हुआ। चालुक्यराजाओंसे वेङ्गीका अधःपतन होनेके बाद काञ्चीपुर ही पल्लवराजाओंकी राजधानी हो गई।

उपरिउक्त पेद्दवेगी नगर ही प्राचीन राजधानी था, यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसीके समीप छिन्नवेगी नामक एक और ग्राम है। वेगी नगरसे ५ मील दक्षिण पूर्वमें देण्डलूरु ग्राम तक पुरातन अट्टालिकाओंका विस्तीर्ण ध्वस्तस्तूप पड़ा दृष्टिगोचर होता है। वह प्रायः पेद्दवेगी और छिन्नवेगी तक विस्तृत है। यह विस्तृत ध्वंसावशेष प्राचीन वेङ्गी राजधानीकी समृद्धकीर्त्ति है। उसीसे नगरकी प्राचीन वाणिज्यवृद्धि और श्रीसौन्दर्यका कल्पना हो सकती है। किंवदन्ती है, कि मुसलमानोंने वेगी और देण्डलूरका ध्वंसप्राय मन्दिरादिके पत्थर ले कर इल्लोरका दुर्ग बनवाया था।

बेगुन (हिं० पु०) बैंगन देखो।

बेगुनाह (फा० वि०) १ जिसने कोई गुनाह न किया हो, जिसने कोई पाप न किया हो। २ निर्दोष जिसने कोई अपराध न किया हो।

बेगुनी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी पकौड़ी।

बेगूसराय—बिहार और उड़ीसाके मुङ्गेर जिलेका एक उत्तर पश्चिम उपविभाग। यह अक्षा० २५° १५' से २५° ४७' उ० तथा देशा० ८५° ४७' से ८६° ३७' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ७१२ वर्गमील और जनसंख्या साढ़े छः लाखके करीब है। इसमें ७०५ ग्राम लगते हैं। तेघड़ा और बेगूसराय थाना ले कर यह उपविभाग संगठित है। एक समय यहां नीलकी अच्छी खेती होती थी। यहां फौजदारी और राजस्वकी कचहरी अदालत है।

२ उक्त उपविभागका सदर। यह अक्षा० २५° २६' उ० तथा देशा० ८६° ८' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ११३३८के लगभग है। यहां सरकारी दफ्तर और एक छोटा जेल है, जिसमें केवल २८ कैदी रखे जाते हैं।

बेग्राम—एक प्राचीन नगर। अभी यह ध्वंसावस्थामें पड़ा है। यह अक्षा० ३४° ५३' उ० तथा देशा० ७१° १८' पू०के मध्य काबुल नगरसे २५ मील और जलालाबादसे २ मील पश्चिममें अवस्थित है। नगरके चारों ओर ६० फुट चौड़ी रखी इंटकी प्राचीर विद्यमान है। सुप्रसिद्ध भ्रमणकारी चाल्स मेसनने इस नगरका पर्यवेक्षण करके इसको Alexandria ad Caucasum कह कर तुलना की है। नगरके ध्वंसावशेषका अनुसन्धान

करके मैसर और आन्ध्रके प्रत्नतत्त्वविदोंने यहांसे प्रथम करीब १८५० ताम्र और पाठ मिश्र मुद्रा तथा शङ्ख, माला, पत्थर और सन्यान्य स्मृति चिह्न पाये थे। दूसरे वर्ष ११०८, तीसरे वर्ष ७ ०८ और चौथे वर्ष १२५३४ और सबसे अन्तमें अर्थात् १८२७ ई०को उन्हें १० हजार ताम्र और सीसक और चांदी, ब्रोन्ज, सिन्धु मालव सिन्धु ताम्र आन्ध्रीय सिन्धु और हिन्दू मुसलमानी मुद्रा हाथ लगी थी। अध्यापक विल्सनने अपने [illegible] Arts में आदर प्रथमें इन सब मुद्राओंसे अनुगत विस्तार, मध्यवर्तिता और आन्ध्रका ऐतिहासिक सम्बन्ध निरूपण किया है। अनुमान ऐसा है, कि इस नगरमें यवनराजाओंकी राजधानी थी। कालान्तरमें यहां ऐसा भयानक महामारी फैली, कि इसकी मनुष्य उसके शिकार बन गये और आखिर यह नगर उजाड़ हो जङ्गलमें परिणत हो गया है। अभी हिन्दूओंने इसका उल्लास नाम रखा है।

बेङ्गी—दाक्षिणात्यका एक प्राचीन जनपद। पहले यह कलमन्दर उपकूल पर अवस्थित था। इसके पश्चिम पूर्वघाट पर्वतमाला, उत्तर गोदावरी और दक्षिणमें कृष्णा नदी है। गोदावरी जिलेके एलोर तालुकके पेदा या बेङ्गवी ग्रामका ध्वंसावशेष ही प्राचीन बेङ्गी राजधानी का अवशिष्ट समझा जाता है। देखो दक्ष।

चालुक्यराज २य पुलकेशीके भाई कुब्जविष्णुवर्द्धनने ६१५ ई०में यहां पूर्व चालुक्यराजवंशकी प्रतिष्ठा की थी। लगभग ७३३से ७४७ ई०के मध्य राष्ट्रकूट सेनापति उन्होंने शाकम्भरी अभिषेकार्थ विजयी बन कर पूर्व राज्यको दखल कर उसे बेङ्गीराज्यसे मार भगाया और पूर्व चालुक्यराज ४र्थ विष्णुवर्द्धनने राजा नन्दिवर्म्माको अधीनता स्वीकार की। इसके बाद ७९९से ८४३ ई० तक बेङ्गी सिंहासन पर चालुक्यराज नरेन्द्र मृगराज २य विजयादित्य अधिष्ठित रहे। राष्ट्रकूटपति ३य गोविन्द इनके दाहिने बनके भारी राज्यमें भगाये गये। पुनः बेङ्गीराज गोविन्दके सब मातहत निश्चिन्त रहने लगे। पीछे उन्होंने राष्ट्रकूट दुर्गको बनाया। राजा गोविन्दका सामना करने पहुंचा था। ९३४ ई०में राष्ट्रकूटराज ३य अमोघवर्षने पुनः बेङ्गीराज को पददलित कर डाला और विजयादित्यकी सहायतासे चालुक्य सेना परास्त हुए। चालुक्यराज ३य विजयादित्य गोविन्दके लिये माधवदिग्गुणाके साथ युद्धमें जीत रहे और उसी अमोघवर्षने ९४० ई०में जीत कर डाला।

एक दूसरी शिलालिपिके प्रमाणसे मालूम होता है, कि पूर्वचालुक्यराज गुणक विजयादित्य ३य (८४४-८८८) ने गङ्ग और राष्ट्रकूटोंको पराजित तथा राष्ट्रकूटराज ३य कृष्ण। पराजय इनके सामने नगरको ध्वंस कर डाला। राजा ३य कृष्ण था बलवान बहुत दिन तक युद्ध कर न सके। उन्होंने चक्रराजको छुड़ा कर दहन पुनः ग्रहण किया। किन्तु पीछे चालुक्यराज ३य भीमने फिर भुजबलसे पितृराज्यका उद्धार किया।

१०१७ ई०में चोलराज राजराज देवने बेङ्गीदेशको जीत कर यहां पञ्चमहाशब्द सामन्त एक महादण्ड नायक नियुक्त किया था।

अनन्तर कल्याणके पश्चिम चालुक्य ६ठे विक्रमादित्यने इस नगर पर अधिकार जमाया (१०७६-११२६ ई०)। इसी समय बेङ्गीराज राजिग या कुलोत्तुङ्ग चोड़ ने काञ्चीपुर राज्य पर चढ़ाई कर दी। राजा विक्रमादित्यके भाई जय सामन्तने राजेन्द्र चोड़को सहायता दी। इस समरमें विच्छिन्न हो राजा विक्रमादित्य उनके साथ आगे बढ़े। युद्ध विक्रमादित्यकी ही जीत हुई। राजिग हार कर भागे और जयसिंह बन्दी हुए।

बेङ्गीपुर—बेङ्गीनगर।

बेङ्गीराष्ट्र—दाक्षिणात्यका एक जनपद। यह पहाड़ोंमें की गङ्गापुर शासनिमें इसका उल्लेख है। सम्भवतः बेङ्गी राज्य बेङ्गीराष्ट्र नामसे प्रसिद्ध था।

बेचक (हिं० पु०) बिक्री करनेवाला, बेचनेवाला।

बेचना (हिं० क्रि०) विक्रय करना, मूल्य ले कर माल पराये देना।

बेचाराम—बम्बई प्रदेशके बड़ौदा राज्य कड़ाम उप विभागके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध देवालिङ्ग और सर्वाश्रय एक धर्मस्थान। यह अहमदाबाद जिलेके विरमगांवसे ११० मील दूर पर अवस्थित है। यहां प्रति वर्ष आश्विन मासमें एक मेला लगता है। जिसमें २० हजार यात्रियोंका समागम होता है।

बेनवाना (हिं० क्रि०) बिकवाना देखो।
बेचारा (फा० वि०) जिसका कोई साथी या अवलम्ब न हो, गरीब, दीन।
बेचाराम—कविकल्पलता टीकाके प्रणेता।
बेचाराम न्यायालङ्कार—आनन्द तरङ्गिणी और सिद्धान्ततरि नामक ग्रन्थ टीकाके रचयिता। ग्रन्थकर्त्ताने उस ग्रन्थमें संस्कृत काव्यरत्नाकर, चैतन्यरहस्य, भैषज्यरत्नाकर और सिद्धान्तमनोरम नामक ग्रन्थोंका उल्लेख किया है। अलावा इसके सिद्धान्तमणिमञ्जरी नामक उनका बनाया हुआ एक ज्योतिर्ग्रन्थ भी मिलता है।
बेचिराग (फा० वि०) जहां दीआ तक न जलता हो, उजड़ा हुआ।
बेचू—एक निम्नश्रेणीके कवि। इनका जन्म १६५० ई०में हुआ था। इन्होंने भक्तिरसकी कविता की है।
बेचूराम—स्मृतिरत्नावलीके रचयिता।
बेचैन (फा० वि०) जिसे किसी प्रकार चैन न पड़ता हो, बेकल।
बेचैनी (फा० स्त्री०) विकलता घबराहट।
बेजड़ (फा० वि०) जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो, जिसके मूलमें कोई तत्त्व या सार न हो।
बेजएडला—मन्द्राज प्रदेशके कृष्णा जिलेके गुण्टूर तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यहांके गोपालस्वामीके मन्दिरके प्रवेश द्वारमें एक प्रस्तरलिपि ग्रथित है।
बेजनानेस—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ विभागके गोहेलवाड़ प्रान्तस्थ एक छोटा सामन्त राज्य। भूपरिमाण २६ वर्गमील है। यहांके सामन्त बड़ोदाके गायकवाड़को वार्षिक ३१ रुपये कर देते हैं। बेजनानेस ग्राममें हो सरदारका वास है।
बेजबान (फा० वि०) १ जिसमें बातचीत करनेकी शक्ति न हो, मूक, गूंगा। २ जो अपनी दीनता या नम्रताके कारण किसी प्रकारका विरोध न करे, दीन।
बेजा (फा० वि०) १ जो अपने उचित स्थान पर न हों, बेठिकाने। २ अनुचित, नामुनासिब। ३ खराब, बुरा।
बेजा खाँ—सिन्धुप्रदेशके एक विख्यात दस्युसरदार। यह जातिका मुसलमान था। दस्युवृत्ति उसके जीवनका एक मात्र कार्य होने पर भी, सच पूछिये तो वह निष्ठुर नहीं था। उसकी दयाने दूसरोंको उनका पक्ष अवलम्बन करनेको बाध्य किया। यहां तक कि वह परम दयावान् योद्धा समझा जाता था।

१८४४ ई०में सर चार्लस नेपियरने उसके पैतृक राज्य पुल्जीगढ़ पर आक्रमण करना चाहा। इस उद्देश से उन्होंने कप्तान टेटको ७०० सौ अश्वारोही और लेफ्टनाण्ट फिटसजी राल्डको २०० उष्ट्र आरोही सेनाके साथ पार्वत्यप्रदेश भेजा। उक्त दोनों अंगरेज सेनापतिने मरुभूमि पार कर देखा कि बेजा खाँ सुसज्जित सेनादलके साथ अंगरेजी सेनाको रोकनेके लिये बिलकुल तैयार है। अब दोनों दलमें मुठभेड़ हुई। टेट परास्त और क्षतिग्रस्त हो भागे। इस समय बेजा खाँने यहां पर जितने कूप थे उन्हें मट्टीसे भरवा दिया। किन्तु अंगरेजोंके सौभाग्यसे एक कूप छूट गया। उसी कूपके जलसे अंगरेजोंने अपना प्राण बचाई।

बेजाखांके इस जयलाभसे मुसलमान लोग चारों ओरसे बेजाके दुर्गमें इकट्ठे होने लगे और उन्होंने प्रकाश्य रूपमें घोषणा कर दी कि वे लोग अमरीअर महम्मदको ला कर पुनः सिन्धु राज्य स्थापन करेंगे।

इधर दुर्गकी ओर जाकरानी जाति सीमान्त पर विद्रोही हो उठी। इस समय शिकारपुरके ६४ स्वदेशीय पदातिक सेनादलमें भी विद्रोहिताका पूर्वलक्षण दिखाई देने लगा। यह देख सर चार्लस कार्य हानिकी आशङ्का से १८४५ ई०की १८वीं जनवरीको उनका दमन करनेके उद्देशसे रवाना हुए। ब्रिगेडियर हण्टरने थोड़े ही समयके अन्दर शिकारपुरके सिपाहियोंको अच्छी तरह दण्ड दिया। कप्तान सल्टरने दरिया खांके अधीनस्थ सात सौ जाकरानी दस्युको परास्त किया। ठीक उसी समय कप्तान बेकने बेजा खांके दुर्गके अधीनस्थ जितनी सेना थी उनका उच्छेद कर डाला।

अंगरेजोंके मित्र सरदार अलीचाँदने इस समय पुल्जी दुर्गमें बेजा खांको परास्त कर विजयलक्ष्मी प्राप्त की। उपर्युपरि इस प्रकारके तीन युद्धोंमें हार खा कर बेजा खाँ क्रोधसे अधीर हो उठा और उक्त पर्वतके पश्चिम पार्श्वकी ओर चल दिया। इधर सल्टर उत्तरकी ओर डटे रहे। और बेकर तथा

[illegible] आक्रमण कर दिया। [illegible] के साथ [illegible] घेर लिया। [illegible] कोई उपाय न देख [illegible]। १८४० ईस्वीमें [illegible] हाथ आत्मसमर्पण किया।

बेजान (फा० वि०) १ दुर्बल, सुस्त। २ जिसमें [illegible] न हो। ३ [illegible]। ४ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।

बेजापुर [illegible] प्राचीन नगर। [illegible] नाम विजयपुर है।

[illegible]

बेजाब्ता (फा० वि०) जो जाब्तेके अनुसार न हो, कानून या नियम आदिके विरुद्ध।

बेज़ार (फा० वि०) जो किसी बातसे बहुत तंग आ गया हो, जिसका जी किसी बातसे बहुत ऊब गया हो।

बेजू (अ० पु०) [illegible] एक प्रकारका जंतु [illegible]। इसके [illegible] छोटे होते हैं। [illegible] छोटी होती है [illegible]। [illegible] जमीनमें [illegible] है। इसका मांस खाया जाता है और [illegible] आदिमें [illegible]।

बेजोड़ (फा० वि०) जिसमें जोड़ न हो, जो [illegible] का बना हो। २ जिसकी समता न हो सके, अद्वितीय।

[illegible] (हि० पु०) [illegible] आदि [illegible] हुए [illegible]।

बेंटिंक [illegible]।

बेटा (हि० पु०) पुत्र, लड़का।

बेटौना (हि० पु०) [illegible]।

[illegible] (हि०) [illegible] एक प्रकारका [illegible]।

[illegible] (हि० पु०) एक प्रकारका [illegible] है।

[illegible] (हि० पु०) [illegible] के कारण [illegible]।

बेठिकाने (फा० वि०) १ [illegible] न हो। २ व्यर्थ, निरर्थक। ३ जिसका कोई सिर पैर न हो, ऊटपटांग।

बेड़ (फा० पु०) १ [illegible]। २ [illegible] जिस पर [illegible] हुए [illegible] पहले [illegible] जाते हैं। ३ [illegible]।

बेड़ (हि० पु०) १ [illegible] चारों ओर लगाई हुई बाड़, [illegible]। २ [illegible]।

बेड़ना (हि० क्रि०) [illegible] आदिके चारों ओर [illegible] लिए छोटी दीवार आदि खड़ा करना, [illegible]।

बेड़ा (हि० पु०) १ बड़े बड़े लट्ठों, लकड़ियों या तख्तों आदिको [illegible] बांध कर बनाया हुआ ढांचा। इस [illegible] पर [illegible] बैठ और [illegible] आदि पार करते हैं। [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible] जहाजों आदिका समूह। (वि०) ४ [illegible] दाहिनी ओर [illegible] बाईं ओर [illegible]। ५ कठिन, मुश्किल।

बेड़िया (हि० पु०) [illegible]। इसका [illegible] है और [illegible] लिये [illegible] है।

बेढंग (हि० वि०) १ [illegible]। २ [illegible] और [illegible] हो।

[illegible] (हि० स्त्री०) १ [illegible]। [illegible] जिसमें [illegible] न सके। २ [illegible] का एक [illegible]। [illegible] होते हैं। ३ [illegible] है और [illegible] जाता है। ४ [illegible] बना हुआ [illegible]। ५ [illegible]।

बेडौल ( हिं० वि० ) १ जिसका डौल या रूप अच्छा न हो, भद्दा। २ जो अपने स्थान पर उपयुक्त न जान पड़े, बेढ़ंगा।

बेढ़ंग ( हिं० वि० ) बेढ़ंगा देखो।

बेढ़ंगा (हिं० वि०) १ जिसका ढंग ठीक न हो, बुरे ढंग वाला। २ कुरूप, भद्दा। ३ जो ठीक तरहसे लगाया, रखा या सजाया न गया हो।

बेढ़ंगापन (हिं० पु०) बेढ़ंगे होनेका भाव।

बेढ़ ( हिं० पु० ) १ नाश, बरबादी। २ बोया हुआ वह बीज जिसमें अंकुर निकल आया हो।

बेढ़ई ( हिं० स्त्री० ) वह रोटी या पूरी जिसमें दाल, पीठी आदि कोई चीज भरी हो, कचौड़ी।

बेढ़न ( हिं० पु० ) वह जिससे कोई चीज घेरी हुई हो।

बेढ़ना (हिं० क्रि०) १ वृक्षों या खेती आदिको, उनकी रक्षाके लिये चारों ओरसे टट्टी बांध कर अथवा और किसी प्रकार घेरना। २ चौपायोंको घेर कर हांक ले जाना।

बेढ़ब ( हिं० वि० ) १ जिसका ढब या ढंग अच्छा न हो। २ जो देखनेमें ठीक न जान पड़े, भद्दा। ( क्रि० वि० ) ३ अनुचित या अनुपयुक्त रूपसे, बुरी तरहसे।

बेढ़ा ( हिं० पु० ) १ घरके आस पास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियां आदि बोई जाती हों। २ एक प्रकारका गहना जो हाथमें पहना जाता है।

बेढ़ाना ( हिं० क्रि० ) १ घेरनेका काम दूसरेसे कराना, घिरवाना। २ ओढ़ाना।

बेणीफूल ( हिं० पु० ) एक प्रकारका गहना जो सिर पर पहना जाता है। इसका आकार फूल सा होता है। इसे सीसफूल भी कहते हैं।

बेतचेरुवु—मन्द्राजप्रदेशके कर्णूल जिलान्तर्गत नन्द्याल तालुकका एक गण्डग्राम। मानचित्रमें यह वैमुमचेरु नामसे लिखा गया है। यहांके आञ्जनेय मन्दिरमें १४९० शक और १४६७ ई०में उत्कीर्ण दो शिलाफलक देखे जाते हैं। ये दोनों फलक विजयनगर राज सन्ताशिवके राज्यकालमें किसी राजवंशीयसे दिये गये थे। पतद्भिन्न ग्रामके अन्यान्य स्थानोंमें और भी कितनी शिलालिपियां देखी जाती हैं।

बेतकल्लुफ ( हिं० वि० ) १ जिसे ऊपरी शिष्टाचारका विशेष ध्यान न हो, सीधासादा व्यवहार करनेवाला। २ जो अपने हृदयकी बात साफ साफ कह दे। ( क्रि० वि० ) ३ बिना किसी प्रकारके तकल्लुफके। ४ निस्संकोच बेधड़क।

बेतकल्लुफी ( फा० स्त्री० ) सरलता, सादगी।

बेतकसीर (फा० वि०) निरपराध, बेगुनाह।

बेतङ्गा—बङ्गालके फरिदपुर जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २३ उ० तथा देशा० ८९ ५७ पू० चन्दना नदीके किनारे अवस्थित है। यहां चावल और उरदका विस्तृत कारबार है।

बेतना ( हिं० क्रि० ) प्रतीत होना, जान पड़ना।

बेतवाद—बम्बईके खान्देश जिलान्तर्गत सिन्दखेत तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २१ १३ उ० तथा देशा० ७४ ५४ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या प्रायः ४०१४ है। शहरमें १८६८ ई०को म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। यहां एक स्कूल है।

बेतवोलू—मन्द्राज प्रदेशके कृष्णा जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह नन्दिग्राम तालुक सदरसे १५ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। इस नगरके निकटवर्ती शैल पर जो सुवृहत् ध्वंसावशेष पड़ा है, उसकी गठनप्रणालीकी पर्यालोचना करनेसे वह बौद्धस्तूप सरीखा प्रतीत होता है। उसका व्यास प्रायः ६६ फुट है और चारों ओर भास्करशिल्प मर्मरपत्थर विमण्डित है। उसके चारों बगल प्राचीन समाधियोंके ऊपर बहुसंख्यक प्रस्तर निर्मित चक्र दृष्टिगोचर होते हैं। एक चक्रके नीचे एक घोड़ेकी कुछ हड्डियां पाई गई हैं जिन्हें देख कर अनुमान किया जाता है, कि समाधिके पहले घोड़ेको दो खण्ड करके गाड़ा गया था। क्योंकि घोड़ेके मस्तककी हड्डी दूसरी जगह रखी हुई है और उस गड्ढेके चारों कोनेमें चार बड़े बड़े पाव रखे हुए हैं। घोड़ेकी वह हड्डी अभी आक्सफोर्ड नगरीके Ashmolean Museum गृहमें सुरक्षित है।

बेतमङ्गला—दाक्षिणात्यके महिसुरराज्यके कोलरजिलान्तर्गत एक तालुक। भूपरिमाण २६० वर्गमील है। पालर नदी इस उपविभागके मध्य हो कर बहती है। इस उपविभागके पश्चिम स्वर्णमयीभूमि और मार्कुपम् ग्रामके निकट सोनेकी

[illegible] अधिकार कर लिया। इस समय नेपालियोंने भी [illegible] के साथ युद्ध करके [illegible] लिया। [illegible] कोई उपाय न देख देखकर [illegible] १८५० ई० में [illegible] अंग्रेजोंके हाथ आत्मसमर्पण किया।

बेजान ( फा० वि० ) १ मृतक मुरदा। २ जिसमें जीवन शक्ति बहुत ही थोड़ी हो जिसमें कुछ भी दम न हो। ३ निर्बल कमजोर। ४ कुम्हलाया हुआ मुरझाया हुआ।

बेजापुर बम्बई प्रान्तके सतारा जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। इसका शुद्ध नाम विजयपुर है।

(देखो विजयपुर नगर)

बेजोड़ ( फा० वि० ) जो आपसमें बराबर न हो, नामुनासिब या मिलान वालेमें विरुद्ध।

बेटार ( फा० वि० ) जो किसी बातमें हरा नहीं गया हो जिसका किसी बातमें कुछ भी न हो।

बेजु ( अ० पु० ) [illegible] जानवर [illegible] नामक जानवर। यह [illegible] लम्बा होता है। इसके शरीरका रंग भूरा और पैर छोटे होते हैं। इसकी [illegible] बहुत [illegible] होती है और [illegible] होते हैं। यह [illegible] लिये [illegible] है। इसका मांस खाया जाता है और इसकी [illegible] आदिमें [illegible] बनाए जाते हैं। [illegible] शिकारी लोग इसे [illegible] शिकार कर पुरीमें इसका शिकार करते हैं।

बेजोड़ ( फा० वि० ) जिसमें जोड़ न हो या [illegible] का बना हो। २ जिसका सामना न हो सके अद्वितीय।

बेझरा ( हि० पु० ) गेहूं जौ मटर, चने आदि अनाजोंको एकमें मिला हुआ अन्न।

बेंटिंक लॉर्ड - हिन्दुस्थानके एक गवर्नर जनरल। ये [illegible] भारतके गवर्नर जनरल थे।

बेटा ( हि० पु० ) पुत्र लड़का।

बेटौना ( हि० पु० ) [illegible]

बेठी ( हि० ) [illegible] एक प्रकारका [illegible] है।

बेठ ( हि० पु० ) [illegible] ऊपर [illegible] मिट्टी बालूका [illegible] है।

बेठन ( हि० पु० ) वह कपड़ा जो किसी चीज़को [illegible] बांधनेके काममें आता है।

बेठिकाना ( फा० वि० ) १ स्थान च्युत जो अपने उचित स्थान पर न हो। २ व्यर्थ, निरर्थक। ३ जिसका कोई सिर पैर न हो, ऊटपटांग।

बेड़ ( अ० पु० ) १ बाड़ेका भाग, बाड़। २ खेतोंके चारों ओर का वह मेंड़ जिस पर बबूल और थूहड़ लिए हुए कांटेदार पौधे लगाए जाते हैं। ३ विस्तार, फैलाव।

बेड़ ( हि० पु० ) १ कमरेके चारों ओर लगाई हुई बाड़, [illegible]। २ नगर घेरा, किला।

बेड़ना ( हि० क्रि० ) नए वृक्षों आदिके चारों ओर उनकी रक्षाके लिये घेरा, बाड़ आदि खड़ी करना, घेरना, बांधना।

बेड़ा ( हि० पु० ) १ बड़े बड़े लट्ठों, लकड़ियों या तख्तों आदिको एकमें बांध कर बनाया हुआ ढांचा। इस ढांचेपर बोझ लादकर नदी आदि पार करते हैं। यह नदीमें बहा हुए [illegible] होता है। २ नाव। ३ बहुत सी नावों या जहाजों आदिका समूह। (वि०) ४ जो आंखके समानान्तर दाहिनी ओरसे बाईं ओर अथवा बाईंसे दाहिनी ओर गया हो। ५ कठिन मुश्किल।

बेड़िया ( हि० पु० ) बंगालकी एक जंगली जातिकी एक शाखा। इसका आचार व्यवहार [illegible] होता है और इसके विवाह आदि [illegible] [illegible] होता है।

बेड़िन ( हि० स्त्री० ) १ नट जाति की स्त्री जो नाचती गाती हो। २ [illegible] जो नाचती गाती और [illegible] हो।

बेड़ी ( हि० स्त्री० ) १ लोहेकी कड़ियोंकी जोड़ी या जंजीर। यह कैदियों या पशुओं आदिके पैरोंमें डाली जाती है जिस से वे स्वतन्त्रतापूर्वक घूम फिर न सकें। २ बांस आदिकी एक टोकरी। इससे खेतों [illegible] होते हैं। ३ [illegible] जिसके द्वारा [illegible] और [illegible] है और [illegible] आदिसे [illegible] [illegible] जाता है। (वि०) ४ [illegible] बना हुआ [illegible]। ५ छोटी नाव।

बेडौल (हिं० वि०) १ जिसका डौल या रूप अच्छा न हो, भद्दा। २ जो अपने स्थान पर उपयुक्त न जान पड़े, बेढंगा।

बेढंग (हिं० वि०) बेढंगा देखो।

बेढंगा (हिं० वि०) १ जिसका ढंग ठीक न हो, बुरे ढंगवाला। २ कुरूप, भद्दा। ३ जो ठीक तरहसे लगाया, रखा या सजाया न गया हो।

बेढंगापन (हिं० पु०) बेढंगे होनेका भाव।

बेढ़ (हिं० पु०) १ नाश, बरबादी। २ बोया हुआ वह बीज जिसमें अंकुर निकल आया हो।

बेढ़ई (हिं० स्त्री०) वह रोटी या पूरी जिसमें दाल, पीठी आदि कोई चीज भरी हो, कचौड़ी।

बेढ़न (हिं० पु०) वह जिससे कोई चीज घेरी हुई हो।

बेढ़ना (हिं० क्रि०) १ वृक्षों या खेतों आदिको, उनकी रक्षाके लिये चारों ओरसे टट्टी बांध कर रूंधना और किसी प्रकार घेरना। २ चौपायोंको घेर कर हांक ले जाना।

बेढब (हिं० वि०) १ जिसका ढब या ढंग अच्छा न हो। २ जो देखनेमें ठीक न जान पड़े, भद्दा। (क्रि० वि०) ३ अनुचित या अनुपयुक्त रूपसे, बुरी तरहसे।

बेढ़ा (हिं० पु०) १ घरके आस पास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियां आदि बोई जाती हों। २ एक प्रकारका गहना जो हाथमें पहना जाता है।

बेढ़ाना (हिं० क्रि०) १ बेढ़नेका काम दूसरेसे कराना, घिरवाना। २ ओढ़ाना।

बेणीफूल (हिं० पु०) एक प्रकारका गहना जो सिर पर पहना जाता है। इसका आकार फूल सा होता है। इसे सीसफूल भी कहते हैं।

बेतञ्चेरु—मन्द्राजप्रदेशके कर्णूल जिलान्तर्गत नन्द्याल तालुकका एक गण्डग्राम। मानचित्रमें यह बैथुमचेर्ल नामसे लिखा गया है। यहांके आञ्जनेय मन्दिरमें १४७० शक और १४६७ ई०में उत्कीर्ण दो शिलाफलक देखे जाते हैं। ये दोनों फलक विजयनगर राज सदाशिवके राज्यकालमें किसी राजवंशीयसे दिये गये थे। एतद्भिन्न ग्रामके अन्यान्य स्थानोंमें और भी कितनी शिलालिपियां देखी जाती हैं।

बेतकल्लुफ (हिं० वि०) १ जिसे ऊपरी शिष्टाचारका विशेष ध्यान न हो, सीधासादा व्यवहार करनेवाला। २ जो अपने हृदयकी बात साफ साफ कह दे। (क्रि० वि०) ३ बिना किसी प्रकारके तकल्लुफके। ४ निस्सङ्कोच बेधड़क।

बेतकल्लुफी (फा० स्त्री०) सरलता, सादगी।

बेतकसीर (फा० वि०) निरपराध, बेगुनाह।

बेतङ्गा—वङ्गालके फरिदपुर जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २३ उ० तथा देशा० ८९ ५७ पू० चन्द्रना नदीके किनारे अवस्थित है। यहां चावल और उरदका विस्तृत कारबार है।

बेतना (हिं० क्रि०) प्रतीत होना, जान पड़ना।

बेतवाद—वम्बईके खान्देश जिलान्तर्गत सिन्दखेत तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २१ १३ उ० तथा देशा० ७४ ५४ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या प्रायः ४०१४ है। शहरमें १८६४ ई०को म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है। यहां एक स्कूल है।

बेतवोलु—मन्द्राज प्रदेशके कृष्णा जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह नन्दिग्राम तालुक सदरसे १५ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। इस नगरके निकटवर्ती शैल पर जो बृहत् ध्वंसावशेष पड़ा है, उसकी गठनप्रणालीकी पर्यालोचना करनेसे यह बौद्धस्तूप सरीखा प्रतीत होता है। उसका व्यास प्रायः ६६ फुट है और चारों ओर भास्करशिल्प मर्मरप्रस्तर विमण्डित है। उसके चारों बगल प्राचीन समाधियोंके ऊपर बहुसंख्यक प्रस्तर निर्मित चक्र दृष्टिगोचर होते हैं। एक स्तम्भके नीचे एक घोड़ेकी कुछ हड्डियां पाई गई हैं जिन्हें देख कर अनुमान किया जाता है, कि समाधिके पहले घोड़ेको दो खण्ड करके गाड़ा गया था। क्योंकि घोड़ेके मस्तककी हड्डी दूसरी जगह रखी हुई है और उस गड्ढेके चारों कोनेमें चार बड़े बड़े पाव रखे हुए हैं। घोड़ेकी यह हड्डी अभी आक्सफोर्ड नगरीके Ashmolean Museum गृहमें सुरक्षित है।

बेतमङ्गला—दाक्षिणात्यके महिसुरराज्यके कोलरजिलान्तर्गत एक तालुक। भूपरिमाण २६० वर्गमील है। पालर नदी उपविभागके मध्य हो कर बहती है।

पश्चिम स्वर्णमयीभूमि और मार्कुपम्

भेजनेके लिये दीर्घ और स्थूल स्फुलिङ्ग उत्पादनकारी यन्त्रकी आवश्यकता है। स्फुलिङ्ग जितना ही दीर्घ होगा, इथरमें उतने ही जोरसे आघात करेगा और इथरतरङ्ग उतनी ही अधिक दूर जायगी। फिर स्फुलिङ्ग जितना स्थूल होगा, इथरसे उतने ही अधिक परिमाणमें तरङ्ग निकलेगी। दूर स्थानमें संवाद भेजनेके लिये दोनों ही चीजोंकी जरूरत है—इथर तरङ्गका अधिक दूर जाना और तरङ्गका परिमाण भी अधिक होना। अतएव इनडाक-सन कायेल खरीदनेके पहले यह देखना होगा, कि इससे दोनों उद्देश्य सिद्ध होंगे या नहीं।

पहले ही कहा जा चुका है, कि यन्त्रसे जितना ही लम्बा ताड़ित स्फुलिङ्ग निकलेगा, उतनी ही अधिक दूर तक संवादादि भेजे जायगे। साधारणतः एक इञ्च ताडित् स्फुलिङ्ग द्वारा एक मील तक संवाद भेजा जा सकता है। इस अनुपातसे २० मीलके लिये २० इञ्च स्फुलिङ्गकी जरूरत हो सकती है, पर यथार्थमें उतने दीर्घ स्फुलिङ्गकी जरूरत नहीं होती। ६ इञ्च स्फुलिङ्गके द्वारा २० मील तक संवाद भेजा जा सकता है। यहां पर यह भी कह देना आवश्यक है, कि केवल स्फुलिङ्गकी दीर्घताके ऊपर दूरीका परिमाण निर्भर नहीं करता, यन्त्रके भिन्न भिन्न अंशके निर्माण-कौशलके ऊपर भी आंशिक परिमाणमें निर्भर करता है—फिर स्थानके ऊपर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। सामनेमें यदि पर्वतसे इथर तरङ्ग बहुत दूर तक नहीं जा सकती। यही कारण है, कि समुद्रकी जलराशिके ऊपर जितनी दूर तक संवाद भेजा जा सकता है, पर्वतादि समाकीर्ण स्थलभूमिमें उतनी दूर तक भेजनेकी आशा कभी नहीं की जा सकती। यहां पर एक मील पर्यन्त संवाद भेजनेके उपयोगी यन्त्रादिका विषय वर्णन किया जाता है।

एक मील दूर संवाद भेजनेमें एक इञ्च ताडित स्फुलिङ्ग उत्पादनकारी इनडाकसनकायेलकी जरूरत है। तारविहीन टेलिग्राफके यन्त्रोंमेंसे यह अधिकतर मूल्यवान है। इसका संग्रह कर सकनेसे अन्यान्य अंश आसानीसे संग्रह किया जा सकता है अथवा अपने हाथसे उन्हें थोडे ही खर्चमें बना भी सकते हैं।

इनडाकसन कायेलके भिन्न भिन्न अंश इस प्रकार हैं,—इसके ठीक मध्यभागमें कुछ नरम लोहेके तार बहुत मजबूतीसे बण्डलमें बंधे रहते हैं। इस लोहेके तारका यह गुण है, कि जब इसके चारों ओर ताडित् प्रवाहित होती है, तब इससे चुम्बकशक्ति निकलती है। फिर ताडितप्रवाहके बंद होते ही चुम्बकशक्ति गायब हो जाती है। ताडितप्रवाहको उत्पन्न करनेके लिये इस बण्डलके ऊपर रेशम मण्डित तांबेके तार जड़े रहते हैं। इस तारके दोनों छोरको बैटरीके साथ संयुक्त कर देनेसे इसमें ताडित प्रवाहित होती है। इस तारका नाम है प्राइमरी कायेल (Primary Coil)।

इस प्राइमरी कायेलके ऊपर बहुत बारीक और लम्बे रेशम मण्डित तांबेके तार जड़े होते हैं जिन्हें सेकण्डरी (Secondary Coil) कहते हैं। जिससे प्राइमरी और सेकेण्डरी कायेलकी ताडित एक दूसरेमें न जा सके इसके लिये दोनों कायेलके मध्यभागमें ताडित अपरिचालक इबोनाइटकी चुंगी दी हुई रहती है। इसी सेकेण्डरी कायेलके दोनों छोरोंसे पूर्वकथित ताडित स्फुलिङ्ग निकलते हैं।

इनडाकसन कायेलमें एक जगह पीतलका स्प्रिंग और दूसरी जगह पीतलका स्तम्भ रहता है। स्प्रिंगके अग्रभागमें लोहेका एक खण्ड और स्तम्भके अग्रभागमें स्क्रू बैठाया हुआ रहता है। स्क्रू, बडी होशियारीसे स्प्रिंगके साथ मिला होता है। इस यन्त्रमें एक अंशका नाम कण्डेंसर (Condenser) है जिससे ताडित शक्तिकी अधिक परिमाणमें वृद्धि होती है। कुछ टीनके पत्तर (Tin Foil) और पैरैफिनयुक्त कागज इस प्रकार सजे रहते हैं जिससे प्रत्येक पत्तरके बाद ही एक एक कागज पड़े। फिर जोड़ और बेजोड़ नम्बरके पत्तर एक साथ पृथक् पृथक् संयुक्त किये रहते हैं। इस कारण जोड़ नम्बरके पत्तरके साथ बेजोड़का स्पर्श नहीं होता। कनडेन्सर साधारणतः इनडाकसन कायेलके बक्सके निम्नभागमें रहता है।

उक्त अंशोंके अलावा 'की' (Key) और बैटरी भी रहती है। 'की'के ऊपर दबाव डालनेसे इसके दोनों अंश मिल जाते हैं जिससे ताडित बैटरीसे इनडकसन कायेलमें प्रवेश करती है।

स्थान है। इसके दक्षिण पूर्व घाटपर्वतमाला अपूर्व शोभा दे रही है।

२ उक्त उपविभागका एक प्राचीन शहर। यह अक्षा० १३ उ० तथा देशा० ७८ २०´ पू० पालर नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या हजारसे ऊपर है। प्रवाद है, कि किसी चोलराजने इस नगरकी प्रतिष्ठा की। अभी नगरका पूर्व सौन्दर्य बिलकुल नहीं है। १८१४ ई०में वीरीपेट नगरमें उपविभागका विचार सदर उठ कर चले जाने तथा रेलवे खुलनेसे नगरका कारबार बिलकुल बंद सा हो गया और अभी सिर्फ एक गण्डग्राममें परिणत हो गया है।

बेतमीज (फा० वि०) जिसे भद्रताका आचरण करना न आता हो, बेहूदा।

बेतरह (फा० क्रि० वि०) १ अनुचितरूपसे, बुरी तरहसे। २ असाधारणरूपसे, विलक्षण ढंगसे। (वि०) ३ बहुत अधिक, बहुत ज्यादा।

बेतरीका (फा० वि०) १ अनुचित, बेकायदा। (क्रि० वि०) २ अनुचितरूपसे, बिना ठीक तरीकेसे।

बेतवा—बुन्देलखण्डकी एक नदी। यह भूपालतालसे निकल कर यमुनामें मिलती है। (वेत्रवती देखो।)

बेतहाशा (फा० क्रि० वि०) १ बहुत शीघ्रतासे, अधिक तेजीसे। २ बिना सोचे समझे। ३ बहुत घबराहटसे।

बेताब (फा० वि०) १ दुर्बल, कमजोर। २ व्याकुल, बेचैन।

बेताबी (फा० स्त्री०) १ दुर्बलता, कमजोरी। २ व्याकुलता, बेचैनी।

बेतार (हिं० वि०) बिना तारका जिसमें तार न हो।

बेतारका तार—विद्युत्की सहायतासे भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तारकी सहायताके बिना ही भेजा जाता हो। आजकल ऐसा कोई भी नहीं जिसने तारविहीन टेलीग्रामकी कथा न सुनी हो। टाइटानिक जहाजके जलमग्न होनेके बाद जनता इसकी उपकारिता अच्छी तरह समझ सकी है। समुद्रगर्भमें निमज्जित होनेके पहले मुहूर्त पर्यन्त इसके टेलिग्राफ कर्मचारीने कैसी धीरतासे तारविहीन टेलिग्राफकी सहायताके द्वारा विपद्वार्त्ता चारों ओर भेजी थी, यह किसीसे छिपा नहीं है। किन्तु इस तारविहीन टेलिग्राफके द्वारा किस उपायसे संवादादि भेजे जाते हैं, यह शायद बहुतोंको मालूम नहीं है। अतः इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

विज्ञानजगत् दिन पर दिन उन्नतिके पथ पर अग्रसर होता जा रहा है। आजकल तारविहीन टेलिग्राफकी बहुत उन्नति हुई है। संवादादि सूक्ष्मरूपसे ग्रहण करनेके लिये यन्त्रमें अनेक नये नये अंश संयोजित हुए हैं। यह जनसाधारणके लिये जितना दुःसाध्य और व्ययसाध्य प्रतीत होता है, यथार्थमें उतना जटिल और व्ययसाध्य नहीं है।

आधुनिक वैज्ञानिक पण्डितोंने स्थिर किया है, कि हम लोगोंको इस पृथ्वीके चारों ओर वायुकी अपेक्षा सूक्ष्मतर एक और आवरण है जिसका नाम है इथर, यह पृथिवी—पृथ्वी ही क्यों, सारा विश्वजगत् ही मानो इथर समुद्रमें डूबा हुआ है। किसी कारणवश इसमें तरङ्ग उत्पन्न होनेसे यह चारों ओर फैल जाती है। प्रकाश, उत्ताप, शब्द सभी इथर-तरङ्गके द्वारा उत्पन्न हो कर हम लोगोंके निकट आते हैं। इस इथर तरङ्गको ग्रहण करनेका यदि कोई यन्त्र रहे, तो उस यन्त्रकी सहायतासे अनायास ही यह तरङ्ग ग्रहणकी जा सकती है। यही तारविहीन टेलिग्राफकी मूल भित्ति है। एक स्थानसे ताडित यन्त्रके द्वारा इथरमें तरङ्ग उत्पन्न की जाती है, यह तरङ्ग चारों ओर फैलती है और जहां इस तरङ्गको ग्रहण करनेका यन्त्र है वहां पहुंचनेसे ही यह अनायास पकड़ ली जाती है। अतएव यह देखा जाता है, कि प्रत्येक स्टेशनमें दो यन्त्रका रहना आवश्यक है—एक इथर तरङ्ग उत्पादनकारी ताडित यन्त्र और दूसरा इथर तरङ्ग ग्रहणकारी यन्त्र।

जिस ताडित यन्त्रकी सहायतासे इथरमें तरंग उत्पन्न की जाती है, उसका नाम इनडाक्सन कायेल (Induction coil) है। बेटरीके साथ संयुक्त होने पर इसके दो प्रान्तोंसे ताडित स्फुलिङ्ग निकला करते हैं और उन स्फुलिङ्ग द्वारा ही इथरमें तरङ्ग उत्पन्न होती है। यह स्फुलिङ्ग जितना लम्बा और मोटा होगा तरङ्ग भी उसी अनुपातसे उत्पन्न होगी। सुतरां दूर स्थानमें संवाद

भेजनेके लिये दीर्घ और स्थूल स्फुलिङ्ग उत्पादनकारी यन्त्रकी आवश्यकता है। स्फुलिङ्ग जितना ही दीर्घ होगा, इथरमें उतने ही जोरसे आघात करेगा और इथरतरङ्ग उतनी ही अधिक दूर जायगी। फिर स्फुलिङ्ग जितना स्थूल होगा, इथरसे उतने ही अधिक परिमाणमें तरङ्ग निकलेगी। दूर स्थानमें संवाद भेजनेके लिये दोनों ही चीजोंकी जरूरत है—इथर तरङ्गका अधिक दूर जाना और तरङ्गका परिमाण भी अधिक होना। अतएव इनडाक्सन कायेल खरीदनेके पहले यह देखना होगा, कि इससे दोनों उद्देश्य सिद्ध होंगे या नहीं।

पहले ही कहा जा चुका है, कि यन्त्रसे जितना ही लम्बा ताडित स्फुलिङ्ग निकलेगा, उतनी ही अधिक दूर तक संवादादि भेजे जायगे। साधारणत एक इञ्च ताडित् स्फुलिङ्ग द्वारा एक मील तक संवाद भेजा जा सकता है। इस अनुपातसे २० मीलके लिये २० इञ्च स्फुलिङ्गकी जरूरत हो सकती है, पर यथार्थमें उतने दीर्घ स्फुलिङ्गकी जरूरत नही होती। ६ इञ्च स्फुलिङ्गके द्वारा २० मील तक संवाद भेजा जा सकता है। यहा पर यह भी कह देना आवश्यक है, कि केवल स्फुलिङ्गकी दीर्घताके ऊपर दूरीका परिमाण निर्भर नही करता, यन्त्रके भिन्न भिन्न अंशके निर्माण-कौशलके ऊपर भी आंशिक परिमाणमें निर्भर करता है—फिर स्थानके ऊपर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। सामनेमें घर पडनेसे इथर तरङ्ग बहुत दूर तक नही जा सकती। यही कारण है, कि समुद्रकी जलराशिके ऊपर जितनी दूर तक संवाद भेजा जा सकता है, पर्वतादि समाकीर्ण स्थलभूमिमें उतनी दूर तक भेजनेकी आशा कभी नहीं की जा सकती। यहां पर एक मील पर्यन्त संवाद भेजनेके उपयोगी यन्त्रादिका विषय वर्णन किया जाता है।

एक मील दूर संवाद भेजनेमें एक इञ्च ताडित स्फुलिङ्ग उत्पादनकारी इनडाक्सनकायेलकी जरूरत है। तारविहीन टेलिग्राफके यन्त्रोंमेंसे यह अधिकतर मूल्यवान है। इसका संग्रह कर सकनेसे अन्यान्य अंश आसानीसे संग्रह किया जा सकता है अथवा अपने हाथसे उन्हें थोडे ही खर्चमें बना भी सकते है।

इनडाक्सन कायेलके भिन्न भिन्न अंश इस प्रकार हैं,—इसके ठीक मध्यभागमें कुछ नरम लोहेके तार बहुत मजबूतीसे बंडलमें बंधे रहते हैं। इस लोहेके तारका यह गुण है, कि जब इसके चारों ओर ताडित् प्रवाहित होती है, तब इससे चुम्बकशक्ति निकलती है। फिर ताडितप्रवाहके बंद होते ही चुम्बकशक्ति गायब हो जाती है। ताडितप्रवाहको उत्पन्न करनेके लिये इस बंडलके ऊपर रेशम मंडित तांबेके तार जडे रहते हैं। इस तारके दोनों छोरको बैटरीके साथ संयुक्त कर देनेसे इसमें ताडित प्रवाहित होती है। इस तारका नाम है प्राइमरी कायेल (Primary Coil)।

इस प्राइमरी कायेलके ऊपर बहुत बारीक और लंबे रेशम मण्डित तांबेके तार जडे होते हैं जिसे सेकण्डरी (Secondary Coil) कहते हैं। जिससे प्राइमरी और सेकेण्डरी कायेलकी ताडित एक दूसरेमें न आ सके इसके लिये दोनों कायेलके मध्यभागमें ताडित अपरिचालक इबोनाइटकी चुंगी दी हुई रहती है। इसी सेकेण्डरी कायेलके दोनों छोरोंसे पूर्वकथित ताडित स्फुलिङ्ग निकलते हैं।

इनडाक्सन कायेलमें एक जगह पीतलका स्प्रिंग और दूसरी जगह पीतलका स्तम्भ रहता है। स्प्रिंगके अग्रभागमें लोहेका एक खण्ड और स्तम्भके अग्रभागमें एक पेंच बैठाया हुआ रहता है। एक बडी होशियारीसे स्प्रिंगके साथ मिला होता है। इस यन्त्रमें एक अंशका नाम कण्डेंसर (Condenser) है जिससे ताडित शक्तिकी अधिक परिमाणमें वृद्धि होती है। कुछ टीनके पत्तर (Tin Foil) और पैरेफिनयुक्त कागज इस प्रकार सजे रहते हैं जिससे प्रत्येक पत्तरके बाद ही एक एक कागज पडे। फिर जोड और बेजोड नम्बरके पत्तर एक साथ पृथक् पृथक् संयुक्त किये रहते हैं। इस कारण जोड नम्बरके पत्तरके साथ बेजोडका स्पर्श नही होता। कनडेन्सर साधारणत इनडाक्सन कायेलके बक्सके निम्नभागमें रहता है।

उक्त अंशोंके अलावा 'की' (key) और बैटरी भी रहती है। 'की'के ऊपर दबाव डालनेसे इसके दोनों अंश मिल जाते हैं जिससे ताडित बैटरीसे इनडाक्सन प्रवेश करता है।

प्राइमरी कायेलका एक तार बैटरीके एक छोरसे तथा दूसरा स्प्रिं और एक पार्श्वके कनडेन्सरके साथ मिला रहता है। स्तम्भके नीचेसे एक तार कनडेन्सरके अपर पार्श्व और 'की' के साथ तथा एक दूसरा तार बैटरीके अन्य प्रान्तसे संयुक्त रहता है।

'कि' पर (k) दबाव डालनेसे ताड़ित बैटरीसे निकल कर स्त्र और स्प्रिंके द्वारा प्राइमरी कायेलमें प्रवेश करेगी। प्राइमरी कायेलमें ताड़ितके प्रवाहित होते ही भीतरके लौहतारमें चुम्बक गुण आ जायगा। उस समय उक्त लौहखण्ड सामनेकी ओर आकृष्ट होगा तथा स्प्रिं स्त्र से विच्छिन्न हो जायगा। सुतरां उस समय ताड़ित प्रवाह बन्द हो जायगा और साथ साथ लौहतारका चुम्बकत्व गुण भी जाता रहेगा। अतः स्प्रिं फिरसे पूर्वस्थान पर आ कर स्त्र के साथ मिल जायगा। इस प्रकार धीरे धीरे द्रुतगतिसे ताड़ित प्रवाह रुद्ध और प्रवाहित होता रहेगा। इस अवस्थामें सेकण्डरी कायेलमें प्रचण्ड वेगसे ताड़ित उत्पन्न हो कर इसके दोनों छोरोंसे निकलती रहेगी। विस्तार हो जानेके भयसे इस तार विहीन टेलिग्राफके अन्यान्य यन्त्रोंकी कथा नहीं लिखी गई।

बेताल (सं० पु०) भूतयोनिविशेष। वेताल देखो।

बेताल (हिं० पु०) भाट, नदी।

बेताला (सं० स्त्री०) वह वाद्य या संगीत ताल जो सह गामी नहीं है।

बेताहाजीपुर—युक्तप्रदेशके मीरट जिलेका एक गण्ड-ग्राम। यह लोनी नगरसे ३ मील पश्चिममें अवस्थित है। यहां मुसलमान साधु अब्दुल्ला शाहकी दरगाह और सम्राट् औरङ्गजेब द्वारा निर्मित एक मसजिद है।

बेति—अयोध्या प्रदेशके प्रतापगढ़ जिलान्तर्गत एक नगर। अभी यह गण्डग्राममें परिणत हो गया है और एक सुविस्तीर्ण ह्रदके किनारे अवस्थित है। ह्रद वर्षा कालमें १० वर्गमील और ग्रीष्मऋतुमें ३ वर्गमील स्थान तक छा लेता था। अभी गङ्गाके साथ जो एक नहर-काटी गई है उसमें इस ह्रदका लगाव होनेके कारण अब उतना जल इसमें रहने नहीं पाता। ह्रदके उत्तरी किनारे सुन्दर सुन्दर वृक्षोंके वन हैं और अन्यान्य किनारे खेती बारी होती है। प्रवाद है, कि अयोध्याके किसी राजाने यहां यज्ञकुण्ड खोदवाया था। आज भी उसके आस पासका स्थान खोदनेसे यज्ञीय दग्ध शस्यादि मिलते हैं। इस ह्रदमें बहुतसी बड़ी बड़ी मछलियां और तीर वर्ती वनभागमें अपर्याप्त वन्यकुक्कुट मिलते हैं। ह्रदके मध्यस्थित छोटे द्वीपके मध्यस्थलमें एक छोटा प्रासाद निर्मित है। पहले उस स्थानमें राजपुत्रगण पक्षी आदिका शिकार करते थे। अलावा इसके यहां दो प्राचीन हिन्दू देवालय भी हैं।

बेतिया—१ बिहार और उड़ीसाके चम्पारन जिलेका एक उत्तरीय उपविभाग। यह अक्षा० २६° ३६' से २७° ३१' उ० तथा देशा० ८३° ५०' से ८४° ४६' पू०के मध्य अव स्थित है। भूपरिमाण २०१३ वर्गमील है। इस उप विभागका दक्षिणी हिस्सा समतल है। यहां जो पर्वत-माला है वह करीब २० मील तक विस्तृत है। जनसंख्या साढ़े सात लाखके करीब है। इसमें बेतिया नामक एक शहर और १३१६ ग्राम लगते हैं। इस उपविभागका अधिकांश बेतियाराजके शासनाधीन है। बेतियासे १३ मील उत्तर पश्चिम रामनगर नामक एक गण्ड-ग्राम है जहां रामनगरके राजा रहते हैं। राजाको १६७६ ई०में दिल्लीसम्राट् औरङ्गजेब द्वारा उपाधि मिली थी। १८६० ई०में वृटिश सरकारने भी उसे स्वीकार कर लिया। त्रिवेणी नामकी जो नहर काटी गई है उससे दुर्भिक्षके समय उपविभागका भारी उपकार होता है।

२ उक्त उपविभागका सदर। यह अक्षा० २६° ४८' उ० तथा देशा० ८४° ३०' पू०के मध्य हरहा नदीके प्राचीन गर्भ पर अवस्थित है। जनसंख्या २५ हजारके करीब है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या ज्यादा है। १८६६ ई०में म्युनिसपलिटी स्थापित हुई थी। यहां जो रोमन कैथ लिक मिसन है उसे १७४० ई०में फादर जोसेफ मेरोने स्थापित किया जो इसी शहरमें रहते थे। कहते हैं, कि उक्त जोसेफ साहब किसी समय नेपालसे बेतियाकी ओर जा रहे थे उसी समय राजा ध्रुवसिंहसे इनका परिचय हो गया। राजाकी कन्या सख्त बीमार थीं जोसेफने उन्हें बिलकुल आरोग्य कर दिया था। इस प्रत्युपकारके पुरस्कारस्वरूप राजाने उन्हें बेतियामें बसा

दिया और एक सुन्दर भवन तथा ६० एकड़ जमीन दी। महाराजाका प्रासाद जो इसी शहरमें है उत्कृष्ट कारुकार्यविशिष्ट है। शहरमें सरकारी दफ्तर और एक छोटा जेल है।

बेतियाराज—विहार और उड़ीसाके चम्पारन जिलान्तर्गत उक्त उपविभागका बड़ा स्टेट। इसका भूपरिमाण १८२४ वर्गमील है। १७वीं शताब्दीके मध्य भागमें प्रसिद्ध योद्धा राजा उग्रसेनसिंहने अपने बाहुबलसे विपुल सम्पत्ति उपार्जन की। वे ही इस विस्तृत राज्यके प्रकृत स्थापयिता हैं। पीछे राजा युगल किशोरसिंह राजतख्त पर बैठे। उनके समयमें सरकारी कर बहुत पड़ जानेके कारण राजा ब्रिटिश सरकारके विरुद्ध खड़े हो गये। आखिर राजाकी हार हुई और राज्य डाइरेक्ट मनेजमेण्टके अधीन कर दिया गया। कुछ समय बाद जब वृटिश सरकारने बाकी कर वसूल होनेका कोई उपाय न देखा तब लाचार हो १७७१ ई०में मझाव और सिमरौन परगने राजाको तथा शेष अंश उनके भतीजेको प्रदान किये। १७९१ ई०में युगलकिशोरके पुत्र वीर किशोरके साथ उक्त दोनों परगनेका दससाला बन्दोबस्त किया गया। १८३० ई०में वीरकिशोरके उत्तराधिकारी आनन्द किशोर वृटिश सरकारसे महाराज बहादुरकी उपाधिसे भूषित हुए। १८९७ ई०से यह राज्य कोर्ट आव वार्डके अधीन है। राजा जातिके भूमिहार हैं।

बेतीकलान—अयोध्याप्रदेशके रायबरेली जिलेका एक नगर। यहां एक सुन्दर बहुत पुराना महादेवका मन्दिर है।

बेतीगेडी—बम्बई प्रदेशके धारवाड़ जिलेका एक नगर। यह अक्षा० १५ २६´ उ० तथा देशा० ७५ ४१´ पू० गडगसे १ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। गडग और बेतीगेडी एक म्युनिसिपलिटीके अधीन है। प्रति सप्ताह एक दिन हाट लगती है। हाटमें विशेषतः रूईकी लाखों रुपयेकी बिक्री होती है।

बेतुगीदेव—चालुक्य वंशीय एक राजा। सद्गमेश्वरमें इनकी राजधानी थी।

बेतुल—मध्यप्रदेशके नरबुदा विभागका एक जिला। यह अक्षा० २१ २९´ से २२ ०३´ उ० तथा देशा० ७७ ११´ से ७८ ३८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३८२६ वर्गमील है। इसके उत्तर और पश्चिममें होसङ्गाबाद, पूर्वमें छिन्दवाड़ा और दक्षिणमें बेरारका अमरौती जिला है। बदनूर नगर इसका विचारसदर है। मध्य प्रदेशके चीफ कमिश्नर से यह जिला शासित होता है।

यह जिला प्रायः पार्वत्य अधित्यकासे पूर्ण है और समुद्रपृष्ठसे २००० फुट ऊंचा है। इसके प्राकृतिक दृश्यकी पर्यालोचना करनेसे यह दो भागोंमें विभक्त प्रतीत होता है। इसका प्रधान नगर बेतुल जिलेके ठीक मध्यमें अवस्थित है। माछना और सापना नदीके बहनेसे जमीन खूब उर्वरा हो गई है। नदीतीर अथवा उसके आस पासका स्थान शस्य समृद्धिसे श्रीसम्पन्न हो गया है। इन दोनों नदियोंके पश्चिम भागमें आग्नेय गिरिके अग्न्युत्पातोत्थित पदार्थ द्वारा गठित बहुत ऊंचा पर्वत रहनेके कारण वहां लोगोंका वास नहीं है। उसके पश्चिमस्थ निविड़ जङ्गलके मध्य हो कर ताप्ती नदी बह गई है। जिलेके दक्षिण भागमें एक पर्वतशृङ्ग पर पवित्र मूलताइ नगर विद्यमान है। इस मूलताईकी अधित्यका भूमिसे ताप्ती, वर्द्धा और वेलनदी निकल कर जिलेके पूर्व और पश्चिमभागमें बह गई हैं। तप नदी जिलेके उत्तरपूर्व कोनेमें बहती है। पूर्वस्थित माछना, सापना और मोरन नदीको छोड़ कर पर्वतकी उपत्यकासे और भी कितने पहाड़ी सोते निकल कर खेतोंमें वर्ष भर जल देते रहते हैं। पश्चिमके पार्वत्य वन भागमें शाक, शीशम, अर्जुन और शाल आदि वृक्षोंका वन है। उस वनमें अधिकतर गोंड और कुर्कु जातिका वास है। उस स्थानका २८७ वर्गमील वनभाग गवर्मेण्टके १म श्रेणीका और ८०० वर्गमील वन २य श्रेणीका रक्षित वनभाग कह कर निर्दिष्ट है।

अति प्राचीनकालसे बेतूल नगर खेर्ला गोंड राज्यका शासनकेन्द्र चला आ रहा था। फिरिस्ताके विवरणमें किसी किसी गोंड राजाका वर्णन छोड़ कर और कहीं भी एक धारावाहिक इतिहास नहीं मिलता। उक्त ग्रन्थसे हम लोगोंको पता लगता है, कि १५वीं शताब्दीमें राजाके साथ मालवराजका घोरतर युद्ध चला था। युद्धमें कभी मालवराजकी और कभी

हुई थी। अनन्तर गौलिराजाओंने प्राचीन गोंडराजवंशको परास्त किया। किन्तु थोड़े ही समयके अन्दर उस गोंडजातिने फिरसे नई शक्तिका सञ्चय कर अपने पूर्वराज्य पर अधिकार जमाया। जो कुछ हो, प्रायः १७०० ई०के समकालमें गोंडसरदार राजा भकत बुलन्द वेतुल सिंहासन पर अधिष्ठित थे, ऐसा प्रमाण मिलता है। राजा गोंड जातिके होने पर भी इसलामधर्ममें दीक्षित हुए थे। देवगढ़ राजधानीमें रह कर राजा भक्त बुलन्द घाटपर्वतमालाके निम्नवर्ती नागपुर राज्यका शासन करते थे। उनकी मृत्युके बाद उनके एकमात्र पुत्र ही राजा हुए। पीछे १७३६ ई०में उनके स्वर्गवासी होने पर उनके दो लड़कोंमें राज्यसिंहासन ले कर विवाद खड़ा हुआ। बेरारके महाराष्ट्र सरदार रघुजी भोंसले उस विवादको निपटानेके लिये मध्यस्थ बने। परन्तु दोनोंके बीच राज्यविभाग कर देनेके बदलेमें उन्होंने वेतुल राज्यको भोंसलोंके अधिकृत राज्य में मिला लिया। १८१८ ई०में अप्पा साहबकी पराजय और पलायनके बाद अङ्गरेजोंके युद्धके खर्च स्वरूप दाक्षिणात्यका जो अंश मिला, वर्त्तमान वेतुल जिला उसीका एक अंश है। १८२६ ई०की सन्धिके अनुसार वेतुल भूभाग स्पष्टतः वृटिश अधिकारभुक्त हो गया। १८१८ ई०में अप्पा साहबके साथ अङ्गरेजोंका जो युद्ध छिड़ा था, उसमें अङ्गरेजोंने मुल्ताई, वेतुल और शाहपुरमें सेनाकी छावनी डाली थी। आखिर अप्पा साहब पाचमाढ़ीसे पश्चिमकी ओर दलबल समेत भाग गये। १८६२ ई० तक वेतुलमें अङ्गरेजी सेना रखी गई थी।

इस जिलेमें २ शहर और ११६४ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या तीन लाखके करीब है। गेहूं, धान, उड़द, तेलहन, ईख, रूई, पटसन, तमाकू तथा और दूसरे दूसरे अनाजोंकी खेती होती है। जलवायु उतना खराब नहीं है। वृष्टिपात प्रायः प्रतिदिन हुआ करता है। चैत्र मास के शेष तक यहां गरमी रहती है। श्यामलाशैलका अधित्यका देश अङ्गरेजोंके पक्षमें विशेष मनोरम है। उदरामय रोग यहांका मारात्मक है।

विद्याशिक्षामें प्रान्तके मध्य इस जिलेका स्थान बारहवां आया है। सैकड़े पीछे ४ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी कुल मिला कर १ मिडिल इङ्गलिश स्कूल, ३ वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और ६० प्राइमरी स्कूल हैं। स्कूलके अलावा ३ चिकित्सालय हैं।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २१-२२ से २१ २२ उ० तथा देशा० ७७ ११से ७८ ३ पू० के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १७०१६४ है। इसमें बदनूर और वेतुल नामक २ शहर और ७७७ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २१ ५२ उ० तथा देशा० ७७ ५६ पू० बदनूर शहरसे तीन मील दूर पड़ता है। जनसंख्या ५ हजारके करीब है। बदनूर नगरमें जिलेका सदर उठ जानेके पहिले इसी शहरमें अङ्गरेजोंका आवास था। यहांका प्राचीन दुर्ग और अङ्गरेजोंका समाधि उद्यान देखने लायक है। यहांके अधिवासी मट्टीके अच्छे अच्छे बरतन बनाते हैं जो भिन्न भिन्न स्थानोंमें बिक्रीके लिये, भेजे जाते हैं। शहरमें १ वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और १ बालिका स्कूल है।

वेतुलपिउदङ्गडी—मन्द्राजप्रदेशके मालबार जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० १० ५३´ उ० तथा देशा० ७५ ५८´ १५´´ पू०के मध्य तिरुके रेल स्टेशनसे २ मील पूर्वमें अवस्थित है। यहां वेतुलनाद राजवंशका एक प्रसाद था। १७८४ ई०में टीपू सुल्तानने इसे तहस नहस कर डाला। अभी ध्वंसावशेषके उपकरण ले कर यहांकी जजी और कलक्टरी अदालत बनाई गई है।

वेत्तुर—मन्द्राज प्रदेशके मालबार जिलान्तर्गत वल्लुवनाड तालुकका एक प्राचीन गण्डग्राम।

वेत्तवलुम—मन्द्राज-प्रदेशके दक्षिण अर्काट जिलान्तर्गत कल्लकुर्चो तालुककी एक जमींदारी।

वेत्तादपुर—दाक्षिणात्यके महिसुर-राज्यके अन्तर्गत एक पर्वत। यह अक्षा० १२ २७´ उ० तथा देशा ७६ ७´ पू० समुद्रपृष्ठसे ४३५० फुट ऊँचा है। पर्वत कोणाकार है। इसकी चोटी पर सुप्रसिद्ध मल्लिकार्जुन महादेवका मन्दिर अवस्थित है। पर्वतके पादमूलमें वेत्तादपुर नगर है जहां सङ्केति ब्राह्मण अधिक संख्यामें रहते हैं। १०वीं शताब्दीमें वेट्टुल राय नामक एक जैन राजाने लिङ्गायत

धर्ममतका अनुसरण कर इस देवमन्दिरका संस्कार कराया था। टीपू सुल्तानके अभ्युदय तक यह स्थान देशीय सामन्तोंके अधीन रहा।

बेत्तु—दक्षिण भारतस्थ जैनदेवस्थान विशेष। यहां न कोई मन्दिर है और न तीर्थङ्करोंकी कोई प्रतिमूर्त्ति ही है। यहां एक प्राचीर वेष्टित विस्तृत प्राङ्गण है जहां गोमती या गोमत राजाकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। वहांके लोग उस मूर्त्ति की पूजा करते हैं।

बेत्तुर—महिसुर राज्यके देवनगर तालुकके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यह अक्षा० १४ ३०´ उ० तथा देशा० ७६ ७´ पू०के मध्य देवनगर शहरसे २ मील उत्तर अवस्थित है। जनसंख्या १२१० है। किंवदन्ती है, कि १३वीं शताब्दीमें यह स्थान देवगिरिके यादवराजाओंकी अन्यतम राजधानी थी।

बेत्वा—मध्यभारत एजेन्सीके बुन्देलखण्डके अन्तर्गत एक नदी। इसका प्राचीन नाम वेत्रवती है। वेत्रवती देखो।

बेतौर (अ० क्रि० वि०) १ बुरी तरहसे, बेढ़ंगेपनसे। (वि०) २ जिसका तौर तरीका ठीक न हो, बेढंगा।

बेद (सं० पु०) वेद देखो।

बेन्क (हिं० पु०) हिन्दू।

बेदखल (फा० वि०) अधिकारच्युत, जिसका दखल, कब्जा या अधिकार न हो। इसका व्यवहार सिर्फ स्थावर संपत्तिके लिये ही होता है।

बेदखली (फा० स्त्री०) अधिकारमें न रहनेका भाव, दखल या कब्जेका हटाया जाना अथवा न होना।

बेदनरोग (हिं० पु०) पशुओंका एक प्रकारका छूतवाला भीषण ज्वर। इसमें रोगी पशु बहुत सुस्त हो कर कांपने लगता है, उसका सारा शरीर गरम और लाल हो जाता है, भूख बिलकुल नहीं और प्यास बहुत अधिक लगती है। इसमें पाखानेके साथ आंव भी निकलती है।

बेदम (फा० वि०) १ मृतक मुर्दा। २ जो काम देने योग्य न रह गया हो, जर्जर। ३ जिसकी जीवनी शक्ति बहुत घट गई हो, अधमरा।

बेदमजनू (फा० पु०) एक प्रकारका वृक्ष। इसकी शाखायें बहुत झुकी हुई रहती हैं। इसी कारण यह बहुत मुरझाया और ठिठुरा हुआ जान पड़ता है। इसकी छाल और फलों आदिका व्यवहार औषधमें होता है।

बेदमल (हिं० पु०) लकड़ीकी वह तख्ती जिस पर तेल लगा कर सिकलीगर लोग अपना मस्किला नामक यन्त्र रगड़ कर चमकाते हैं।

बेदमाल (हिं० पु०) वदमन देखो।

बेदमुश्क (फा० पु०) पश्चिम भारत और विशेषतः पंजाबमें अधिकतासे होनेवाला एक प्रकारका वृक्ष। इसमें एक प्रकारके बहुत ही कोमल और सुगन्धित फूल लगते हैं। इन फूलोंके अर्कका व्यवहार औषधके रूपमें होता है। यह अर्क बहुत ही ठंढा और चित्तको प्रसन्न करनेवाला माना जाता है।

बेदरी (हिं० वि०) विदरी देखो।

बेदर्द (फा० वि०) कठोर हृदय, निर्दय।

बेदर्दी (फा० स्त्री०) निर्दयता, बेरहमी।

बेदलैला (फा० पु०) एक प्रकारका पौधा। इसमें सुन्दर फूल लगते हैं।

बेदाग (फा० वि०) १ निर्दोष, शुद्ध। २ निरपराध, बेकसूर। ३ जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो, साफ।

बेदाना (हिं० पु०) १ एक प्रकारका उत्कृष्ट काबुली अनार। इसकी छाल बहुत पतली होती है। २ एक प्रकारका मीठा छोटा शहतूत। ३ एक प्रकारकी छोटे दानेकी मीठी बुदिया। इसमें बहुत रस रहता है। ४ दालचीनी, चिलगोजा। ५ बिहीदाना नामक फलका बीज। इसे पानीमें भिगोनेसे लुआब निकलता है। लोग प्रायः इसका शरबत बना कर पीते हैं। यह ठंढा और बलकारक माना जाता है। (वि०) ६ मूर्ख, बेवकूफ।

बेदाम (हिं० पु०) १ बादाम देखो। (हिं० वि०) २ बिना दामका, जिसका कुछ मूल्य न दिया गया हो।

बेदाम—मन्द्राजप्रदेशके गञ्जाम जिलान्तर्गत एक छोटा सामन्त राज्य। बेदाम ग्राम दो वर्गमील विस्तृत है।

बेदार (विदार)—हैदराबाद राज्यके गुलबर्गा विभागका एक जिला। यह अक्षा० १७ ३०´ से १८ ५१´ उ० तथा देशा० ७६ ३०´ से ७७ ५१´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४१६८ वर्गमील है जिनमेंसे २१२६ वर्गमील जागीर है। इसके उत्तरमें नान्देर, पूर्व और दक्षिणमें नवाब सर खुरशेदजाहका

राज्य तथा पश्चिममें भीर जिला और ओसमानाबाद है। यहांकी प्रधान नदीका नाम मञ्जरा है।

प्राचीन विदर्भ राज्यसे इसका बेदार नाम पड़ा है। निर्भोगराज नलके बाद इस स्थानकी समृद्धि वा विशेष इतिहासका परिचय नहीं मिलता। दाक्षिणात्यके हिन्दू राजाओंके समय यह स्थान उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुंच गया था। १३२१ ई०में मुहम्मद बिन तुगलकने इस पर अधिकार जमाया। पीछे यह १३४७ ई०में बाहमनी वंशके प्रथम राजा हसन शाह गांगूके हाथ लगा। बाहमनीराजके अधःपतन पर यह जिला विदारके वरिदशाहीके अधीन हुआ। उन्होंने १४९२से १६०९ ई० तक शासन किया। अनन्तर यह बीजापुरके आदिलशाही राज्यमें मिला लिया गया। १६२४ ई०में अहमदनगरके निजामशाही मन्त्री मालिक अम्बरने इसे लूटा। पीछे बीजापुरके राजाने इसका उद्धार किया। उन्होंने १६५८ ई० तक यहांका अच्छी तरह शासन किया। अनन्तर औरङ्गजेबने इस पर दखल जमाया। १८वीं शताब्दीमें यह जिला हैदराबादराज्यमें शामिल कर लिया गया।

इस जिलेमें ७ शहर और १४०७ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या प्रायः ७६६१२६ है। यहांके अधिवासी बेदार या बेदारी कहलाते हैं। ये लोग साहसी तथा शिकार और दस्युवृत्तिमें विलक्षण पटु हैं। जिस पिंडारीदलने एक समय भारतवर्षको कँपा डाला था उसमें विदारी जातिकी ही संख्या अधिक थी। महिसुर राज्यमें तथा रमणमल्ल पर्वत पर ऐसे विदारियोंका वास है। पांच तालुकको ले कर यह जिला संगठित हुआ है, यथा विदार, कारामुङ्गी, निलङ्ग, उदगीर और वरवाल राजुरा। विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत गिरा हुआ है। सैकड़े पीछे २ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी कुल मिला कर ३० प्राइमरी स्कूल, २ मिडिल स्कूल और १ हाई स्कूल है। स्कूलके अलावा चार चिकित्सालय हैं जिनमेंसे एक यूनानी है। विदार दुर्ग चारों ओर प्राचीर और खाईसे घिरा है। यहांकी जुम्मा और सोलह गुम्बजवाली मसजिद देखने लायक है। शहरके बाहर वरिदशाही नवाबोंके समाधिमन्दिर हैं। आबहवा यहांकी बहुत स्वास्थ्यप्रद है।

२ उक्त जिलेका एक तालुक। इसका भूपरिमाण ४८७ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें विदार और कोहिर नामके २ शहर और १७७ ग्राम लगते हैं जिनमेंसे ८७ ग्राम जागीर हैं। राजस डेढ़ लाखसे ज्यादा है।

३ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १७° ५५´ उ० तथा देशा० ७७ ३२´ पू० समुद्रपृष्ठसे २३३० फुटकी ऊँचाई पर अवस्थित है। जनसंख्या दश हजारसे ऊपर है। १८वीं शताब्दीके मध्यकालमें यह बाहमनी राजवंशकी राजधानीरूपमें गिना जाता था। उस समय इसकी श्रीवृद्धि भी यथेष्ट थी। जो प्रकाण्ड प्राचीर और बुर्ज आदि एक समय चारों ओर बनाये गये थे, वे अभी ध्वंसावस्थामें पड़े हुए हैं।

मुगलसम्राट् बाबरशाहके भारत आक्रमणकालमें बेदारराज्य पार्श्ववर्त्ती राजाओंके करतलगत रहा। १५७२ ई०में निजामशाही राजाओंने इस प्रदेशमें अपना शासन फैलाया। १७०१ ई०में पेशवा बाजीराव और सलाबतजङ्गके साथ इस नगरमें सन्धि हुई थी।

एक समय यहां एक प्रकारका बढ़िया बरतन और विभिन्न धातव पात्रादि बनते थे जो यूरोपीय वाणिज्य पण्यमें 'बेदार-वेअर' (Beder Ware) नामसे प्रसिद्ध हैं। बाहमनीराजके मंत्री महम्मद गावनने यहां एक कालेज बनवाया था जो अभी भग्नावस्थामें पड़ा है। यहांकी जुम्मा और 'सोलह खम्भा' मसजिद देखने लायक है।

बेधड़क (हिं० क्रि० वि०) १ निःसङ्कोच, बिना किसी प्रकारके सङ्कोचके। २ बिना किसी प्रकारके भय या आशङ्काके, निडर हो कर। ३ बिना किसी प्रकारकी रोक टोकके, बेकायदे। ४ बिना कुछ सोचे समझे, बिना आगा पीछा किये। (वि०) निर्द्वन्द्व, जिसे किसी प्रकारका सङ्कोच या खटका न हो। ६ निर्भय, निडर।

बेधना (हिं० क्रि०) किसी नुकीली चीजकी सहायतासे छेद करना, छेदना। २ शरीरमें क्षत करना, घाव करना।

बेधर्म (हिं० वि०) जिसे अपने धर्मका ध्यान न हो, धर्मसे गिरा हुआ।

बेनग (हिं० पु०) जयन्तिया पहाड़ोंमें मिलनेवाला छोटा

जातिका पहाड़ी घास। यह प्राय ल्ताके समान होता है। इसकी टहनियोंसे लोग छप्परोंकी लकड़ियाँ आदि बाँधते हैं।

बेन (हिं० पु०) १ वंशी, मुरली। २ सँपेरोंके बजानेकी तूमड़ी, महुअर। ३ बाँस। ४ एक प्रकारका वृक्ष।

बेन (अं० पु०) १ जहाजके मस्तूल पर लगानेकी एक प्रकारकी झंडी। इसके फहरानेसे यह पता चलता है, कि हवा किस तरफकी है। २ वायु, हवा।

बेनज़ीर (फा० वि०) जिसकी कोई समता न कर सके, अनुपम।

बेनट (हिं० स्त्री०) लोहेकी वह छोटी किर्च जो सैनिकोंकी बंदूकके अगले सिरे पर लगी रहती है, संगीन।

बेनसेढ (अं० पु०) जहाजके काममें आनेवाला एक प्रकारका बड़ा थैला। यह टाट आदिका बना हुआ नलके आकारका होता है। इसकी सहायतासे जहाजके नीचेके भागोंमें ऊपरकी ताजी हवा पहुंचाई जाती है।

बेना (हिं० पु०) १ एक प्रकारका छोटा पंखा जो बांसका बना होता है। २ उशीर, खस। ३ बंश, बांस। ४ माथे पर बेंदीके बीचमें पहननेका एक प्रकारका गहना।

बेनागा (हिं० क्रि० वि०) नित्य, लगातार।

बेनिमून (फा० वि०) अद्वितीय, अनुपम।

बेनी (हिं० स्त्री०) १ स्त्रियोंकी चोटी। २ भादोंके अन्त या कुंआरके आरम्भमें होनेवाला एक प्रकारका धान। ३ गङ्गा, सरस्वती और यमुनाका संगम, त्रिवेणी। ४ किवाड़ोंकी वह छोटी लकड़ी जो उसके किसी पल्लेमें लगी रहती है। यह दूसरे पल्लेको खुलनेसे रोकती है।

बेनी—१ एक भाषा कवि। ये असनी जिला फतेहपुरके निवासी थे। इन्होंने संवत् १६६०में जन्मग्रहण किया था। इनकी कविता बहुत ही सरस, सरल, मधुर और ललित है। स्फुटकवित्त तथा इनका रचा नायिका भेदका एक अत्युत्तम ग्रन्थ पाया जाता है।

२ रायबरेली जिलेके निवासी एक कवि। इनका जन्म सं० १८४४में हुआ था। ये लखनऊके नवाबके दीवान महाराज टिकैतरायके यहां रहते थे। सम्वत् १८९२में ये परलोक सिधारे।

बेनीपान (हिं० पु०) बेंदी देखो।

बेनीप्रवीण—लखनऊके रहनेवाले एक भाषा कवि। ये जातिके कान्यकुब्ज वाजपेयी ब्राह्मण थे। इनका जन्म सम्वत् १८७६में हुआ था। इनकी कविता बहुत ही अच्छी होती थी। इनका बनाया नायिका विषयक ग्रन्थ देखने योग्य है।

बेनीसिंह—एक ग्रन्थ-रचयिता। इनका जन्म सम्वत् १८७६में हुआ था। ये हिन्दी साहित्यके अच्छे मर्मज्ञ थे। ये कविजनोंकी खूब खातिर करते थे। इनका देहान्त १९४१ सम्वत्‌में हुआ।

बेनु (हिं० पु०) १ वेणु देखो। २ वंशी, मुरली। ३ वंश, बांस।

बेनुली (हिं० स्त्री०) जाते या चक्कीमें वह छोटी-सी लकड़ी जो किल्लेके ऊपर रखी जाती है और जिसके दोनों सिरों पर जोती रहती है।

बेनौटी (हिं० वि०) १ कपासके फूलकी तरह हलके पीले रंगका, कपासी। (पु०) २ एक प्रकारका रंग जो कपासके फूलके रङ्गका-सा हलका पीला होता है, कपासी।

बेपरद (फा० वि०) १ अनावृत, जिसके ऊपर कोई परदा न हो। २ नग्न, नंगा।

बेपरवा (फा० वि०) १ जिसे कोई परवा न हो, बेफिक्र। २ जो किसीके हानि लाभका विचार न करे और केवल अपने इच्छानुसार काम करे, मनमौजी। ३ उदार।

बेपरवाही (फा० स्त्री०) १ बेपरवाह होनेका भाव बेफिकरी। २ अपने मनके अनुसार काम करना।

बेपर्द (हिं० वि०) बेपरद देखो।

बेपार (हिं० पु०) हिमालयकी तराईमें ६०००से ११००० फुटकी ऊंचाई तक अधिकतासे मिलनेवाला एक प्रकारका बहुत ऊंचा वृक्ष। इसकी लकड़ी यदि सीडसे बची रहे, तो बहुत दिनों तक ज्योंकी त्यों रहती है और प्राय इमारतमें काम आती है। इस लकड़ीका कोयला बहुत तेज होता है और लोहा गलानेके लिये बहुत अच्छा समझा जाता है। इसकी छालसे जंगलोंमें झोपड़ियाँ भी छाई जाती हैं।

बेपारी (हिं० पु०) व्यापारी देखो।

बेपीर (फा० वि०) १ जिसके हृदयमें किसीके दुःखके

लिये सहानुभूति न हो, दूसरोंके कष्टको कुछ न समझने वाला। २ निर्दय, बेरहम।

बेपेंदी ( हिं० वि० ) जिसमें पेंदा न हो, जो पेंदा न होनेके कारण इधर उधर लुढ़कता हो।

बेफायदा ( फा० वि० ) १ जिससे कोई फायदा न हो, व्यर्थका। ( क्रि० वि० ) २ नाहक।

बेफिक्र ( फा० वि० ) निश्चिन्त, बेपरवा।

बेफिक्री ( फा० स्त्री० ) निश्चिन्तता, बेफिक्र होनेका भाव।

बेबस ( हिं० वि० ) १ जिसका कुछ वश न चले, लाचार। २ पराधीन, परवश।

बेबसी ( हिं० स्त्री० ) विवशता, मजबूरी। २ पराधीनता, परवशता।

बेबाक ( फा० वि० ) जो अदा कर दिया गया हो, चुकता किया हुआ।

बेबुनियाद ( फा० वि० ) निर्मूल, बेजड़।

बेब्याहा ( फा० वि० ) अविवाहित, कुआरा।

बेभाव (फा० क्रि० वि० ) जिसका कोई हिसाब या गिनती न हो, बेहद।

बेम ( हिं० स्त्री० ) जुलाहोंकी कंघी।

बेमन ( फा० क्रि० वि० ) १ बिना मन लगाए, बिना दत्त चित्त हुए। ( वि० ) २ जिसका मन न लगता हो।

बेमरम्मत ( फा० वि० ) जिसकी मरम्मत होनेको हो, पर न हुई।

बेमरम्मती ( फा० स्त्री० ) बेमरम्मत होनेका भाव।

बेमारी ( हिं० स्त्री० ) बीमारी देखो।

बेमालूम ( फा० क्रि० वि० ) १ बिना किसीको पता लगे। (वि०) २ जो मालूम न पड़ता हो, जिसका पता न लगता हो।

बेमिलावट ( फा० वि० ) शुद्ध, खालिस।

बेमुनासिब ( फा० वि० ) अनुचित, जो मुनासिब न हो।

बेमुरव्वत ( फा० वि० ) जिसमें शील या संकोचका अभाव हो, तोता-चश्म।

बेमुरव्वती ( फा० स्त्री० ) बेमुरव्वत होनेका भाव।

बेमौका ( फा० वि० ) १ जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो। ( पु० ) २ अवसरका अभाव, मौका न होना।

बेयरा ( हिं० पु० ) बरा देखो।

बेर ( हिं० पु० ) १ प्राय० सारे भारतमें मिलनेवाला मझोले आकारका एक प्रसिद्ध कटीला वृक्ष। इसके छोटे बड़े कई भेद होते हैं। विशेष विवरण बदर शब्दमें देखो। २ बेरका फल। ( स्त्री० ) ३ बार, दफा। ४ विलम्ब, देर।

बेरजरी ( हिं० स्त्री० ) जंगली बेर, झड़बेरी।

बेरजा ( हिं० पु० ) विरोजा देखो।

बेरवा ( हिं० पु० ) सोने या चांदीका कड़ा जो कलाईमें पहना जाता है।

बेरस ( फा० वि० ) १ रसरहित, बिना रसका। २ जिसमें आनन्द न हो, बेमजा। ३ जिसमें अच्छा स्वाद न हो, बुरे स्वादवाला।

बेरहम ( फा० वि० ) निर्दय, निठुर।

बेरहमी ( फा० स्त्री० ) निर्दयता, निष्ठुरता।

बेरा ( हिं० पु० ) १ समय, वक्त। २ प्रात काल, तड़का। ३ एकमें मिला हुआ जौ और चना।

बेरा ( अं० पु० ) वह चपरासी, विशेषतः साहब लोगोंका वह चपरासी जिसका काम चिट्ठी-पत्री या समाचार आदि पहुंचाना और ले आना आदि होता है।

बेरादरी ( हिं० पु० ) बिरादरी देखो।

बेराम ( हिं० वि० ) बीमार देखो।

बेरामी ( हिं० स्त्री० ) बीमारी देखो।

बेरार (बरार,—मध्यभारतके अन्तर्गत एक स्वतन्त्र प्रदेश। यह पहले बरार राज्यके नामसे प्रसिद्ध था। हैदराबादके नवाब निजामने जबसे इसका कर्तृत्व अङ्गरेजोंके हाथ सौंपा, तबसे यह हैदराबाद एसाइएड डिष्ट्रिक्ट नामसे प्रसिद्ध हुआ। हैदराबादके रेजिडेण्ट बेरारके चीफ कमिश्नर पद पर रह कर यहांका शासन कार्य चलाते थे। तभीसे बराराज्य आकोला, बुलदाना, वासिम, अमरावती, इलिचपुर और वुन इन छः जिलोंमें बँट गया है। इसके उत्तर और पूर्व सीमामें मध्यप्रदेश, दक्षिणमें निजामराज्य और पश्चिममें बम्बई प्रेसिडेन्सी है। भूपरिमाण १७७१० वर्गमील है। यह अक्षा० १९° ३५' से २१° ४७' उ० तथा देशा० ७५° ५९' से ७९° ११' पू०के मध्य अवस्थित है।

समग्र बरार-राज्य पूर्वपश्चिममें विस्तृत एक

सुदीर्घ उपत्यका-भूमि है। इसके उत्तरभागमें सातपुरा पर्वतमाला और दक्षिणमें अजन्ता शैलश्रेणी है। स्थानीय लोग सातपुरा निकटस्थ उपत्यकाको वरार पयानघाट तथा अजन्ता शैल और तदन्तर्गत अधित्यका देशको वरार वालाघाट कहते हैं। इन दो भागोंके मध्यमें उत्तराश ही अपेक्षाकृत उर्वर और शस्यशाली है। यहां तासीकी शाखा पूर्णा आदि कई एक पार्वत्य नाले सातपुरा और अजन्ता पहाड़से उतर कर मूलनदीमें आ मिले हैं। यहां पर वर्षा नियमितरूपसे और यथेष्ट होती है। इन सब कारणोंसे यहां कभी भी पानीकी कमी नहीं होती और न सूखा ही पड़ता है। शरदऋतुमें शस्यपूर्ण क्षेत्रोंकी शोभा बड़ी ही आनन्ददायक होती है। अधिकांश स्थानमें खेती वारी होती है। परिश्रमी कृषक गण बड़े उद्यम और उत्साहके साथ हल जोतते और बीज बोते हैं। कुनवी, भील आदि पार्वत्य जातियां ही यहां किसानोंका काम करती हैं।

भूपरिमाणकी तुलनामें बेरारप्रदेश आयोनियन द्वीप को छोड़ कर ग्रोस राज्यके समान है, परन्तु जन-संख्या उससे प्राय दुगुनी है। इसकी पूर्वपश्चिममें विस्तृति करीब १५० मील और साधारण प्रस्थ करीब १४४ मील है। यहां सब समेत ५७१० ग्राम हैं। तापी, पूर्णा, वर्द्धा और पेनगङ्गा वा प्राणहिता ये यहांकी नदियां हैं, परन्तु उनमेंसे वर्द्धा हो कर बेरार उपत्यकाका अधिकांश जल निकल आया करता है। बुलढाना जिलेका लोणार नामक लवण जलयुक्त ह्रदके चारों ओर पहाड़ हैं, मानो गोलाकारमें ह्रदको वेष्टित कर रखा हो। उस पर्वत पर नाना तरहके वृक्ष शोभित हैं। ह्रदका जलभाग ३४५ एकड़ है, परन्तु तीरभूमिकी परिधि ५॥ मीलसे कम नहीं है।

१८८३ ई०के मार्च महीनेकी जरीपके अनुसार यहांका वनभाग ४३४४ वर्गमील है। उसमें ११ ६ वर्ग मील राजरक्षित, २८३ वर्गमील जिला द्वारा रक्षित तथा ३६५५ वर्ग-मील अरक्षित अवस्थामें पड़ा है। इनमें गाविलगढ पहाड़का वन ही उत्कृष्ट है। यहांसे बरारके अधिवासियोंको नित्य व्यवहार्य और गृह-निर्माणोपयोगी काष्ट और बांस पर्याप्तरूपसे मिलते हैं। दक्षिण बरारके गाजरा उपत्यकाके मेलघाट नामक पार्वत्यप्रदेशमें सेगुन काठ और जलानेकी लकड़ी तथा घास बहुतायतसे मिलती है। अमरावतीके उत्तर देशवासी तथा पूर्णा नदीके उत्तर तीरस्थ ग्रामवासी उस लकड़ी और घासको काममें लाते हैं।

बरारराज्यके पूर्वांशमें तथा वहांके करञ्ज पर्वत पर बहुतायतसे खनिज लोहा पाया जाता है। दुर्भाग्यका विषय है कि देशीय लोग उस लोहेको गला कर किसी काममें नहीं लाते और न किसी धातुविद् वैज्ञानिक द्वारा उसकी परीक्षा ही कराते हैं। वुन जिलेके वर्द्धा उपत्यका देशमें उत्तर दक्षिणको विस्तृत एक कोयलेकी खान (Coal field) पाई गई है। अनुमानसे यह उत्तरमें वर्धासे दक्षिणमें पेनगङ्गा तक विस्तृत है। १८७० ई०में उस खानको खोद कर परीक्षा भी की गई थी, कई स्थानोंसे कोयला भी निकाला गया था, परन्तु वहां बिक्रीकी सुविधा न होनेसे वह कार्य स्थगित रखा गया। नागपुरसे भुसावल और बम्बई जानेके लिये जो रेल गई है, उससे यहांके कपास आदिके व्यवसायकी विशेष उन्नति हुई है। भारतके अन्यान्य स्थानोंकी रुईसे यहांकी रुई अच्छी होती है और यहां कपासकी पैदावार भी बहुत है।

यहांकी आबहवा निहायत बुरी नहीं है। दाक्षिणात्य में सर्वत्र ही जैसी गरमी और जाड़ा पड़ता है, यहां भी वैसा ही समझना चाहिए। परन्तु पयानघाट उपत्यकामे गरमी विशेष पड़ा करती है। मार्च महीनेके अन्तसे ही यहां गरमी शुरू होती, है अप्रेल तक वह किसी तरह सहनीय रहती है, परन्तु मई और जूनमें तो वह बिल्कुल असह्य हो जाती है। उसके बाद वर्षा शुरू हो जानेसे आबहवामें कुछ शीतलता आती है, रात्रिको यह स्थान स्वभावत. शीतल है। चारों ओर पहाड़ और उपत्यका सूर्यके तापसे विशेष उत्तप्त होने पर भी कालीरंगकी मिट्टी होनेके कारण गरमी ज्यादा देर नहीं ठहरती। वर्षाके समय चारों ओर खूब ठण्डक रहती है। अजन्ता पहाड़के ऊपरवाले वालाघाट पार्वत्य देशमें समतल क्षेत्रकी अपेक्षा बहुत कम उत्ताप है। सर्वोच्च गविलगढ पर्वतके तापका प्रभाव मध्यम है, इस पर्वत पर ३७७७ फुट ऊँचे स्थानमें

चिकल्दा नामक स्वास्थ्य निवास है जो इलिचपुरसे २० माईल दूर है।

बरार राज्यका इतिहास अधिक प्राचीन नहीं है। नर्मदातट तक समग्र दाक्षिणात्य जब जिस प्रकारसे जिस राजाके अधीनतामें शासित हुआ है, यह बरारराज्य भी उसी प्रकार उनमेंसे किसी एक राजाके अधीन रहा है। परन्तु इसके प्राचीनतम इतिहासका पता लगाना कठिन है। शिलालेखसे मालूम होता है, कि इस प्रदेशमें अनेक सामन्तराज थे, पर वे किस किस राजाके अधीन थे, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता।

ऐतिहासिक तत्त्वालोचना करनेसे मालूम होता है, कि ईसाकी ११वीं और १२वीं शताब्दीमें यहां कल्याणके चालुक्य राजगण राज्य करते थे। ईसाकी १३वीं शताब्दीमें इस देशमें देवगिरि (दौलताबाद)-के यादववंशीय राजाओंका प्रभाव विस्तृत हुआ था, ऐसा अनुमान होता है। क्योंकि उक्त शताब्दीके शेषभागमें पठान राजा अलाउद्दीनने देवगिरिके हिन्दू नरपति रामदेवको परास्त करके मार डाला था। रामदेव एक प्रसिद्ध और प्रबल प्रतापी राजा थे। उस समय इस देशमें यादव वंशीय विशेष क्षमताशाली थे, यह बात शिलालेख और इतिहाससे स्पष्ट है।

कल्याणके चालुक्यराज और देवगिरिके यादव नरपतियों द्वारा यहां लगातार राज्य किये जाने पर भी यह हम प्राचीन देवकीर्त्तिके ध्वंसावशेषादिसे अनुमान कर सकते हैं, कि बरार प्रदेशके दक्षिण पूर्वस्थ जिले वरगुल-के प्राचीन हिन्दूराजवंशके अधीन थे।

स्थानीय किंवदन्ती इस प्रकार है कि, इलिचपुर राजधानीके स्वाधीन राजा यहांके अधिपति थे। उस वंशमें 'इल'-नामके एक राजा थे। उन्हींके नामानुसार इलिचपुर नामकरण हुआ है। यह राजवंश दाक्षिणात्यमें मुसलमान प्रभावके पहले बरारका शासनकर्त्ता था। स्थानीय स्थापत्यकीर्त्तिकी आलोचनासे मालूम होता है, कि ये जैनधर्मावलम्बी थे। परन्तु अभी तक उक्त ध्वंसकीर्त्ति की अच्छी तरह खोज नहीं की गई है, इसलिये इसका निश्चित इतिहास अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

१२९४ ई०में दिल्लीश्वर फिरोज खिलजीके भतीजे और जमाई अलाउद्दीन पहले पहल दाक्षिणात्य विजय करने आये थे। उन्होंने देवगढ़में यादवराज रामदेवको युद्धमें परास्त और कैद किया था। कोई कोई कहते हैं कि रामदेव मार दिये गये थे, और किसी किसी का कहना है, अलाउद्दीनने बहुत-सा धन ले कर छोड़ दिया था। परन्तु उन्होंने इलचपुर राज्य उन्हें नहीं दिया था अथवा धनके साथ साथ राज्य भी ले लिया था।

अलाउद्दीनने दिल्ली लौट कर अपने चचा या श्वशुर को मार डाला और स्वयं दिल्लीके सिंहासन पर बैठे। उनके राजत्वकालमें उत्तर-भारतसे मुसलमान सेना दलोंने दाक्षिणात्यमें जा कर लगातार कई बार यहांके राज्योंको तहस नहस कर दिया था। अलाउद्दीनकी मृत्युके बाद देवगिरिके अधीनस्थ दाक्षिणात्य प्रदेशने पुनः स्वाधीनता प्राप्त की, पर यह स्वाधीनता अधिक दिन तक न रही। १३१८ ई०में मुबारक खिलजीने हिन्दू विद्रोहका दमन किया। उन्होंने मुसलमानोंका कठोर शासन देखानेके लिए देवगिरिके अन्तिम हिन्दूराजाके शरीरकी चमड़ी उखड़वा डाली थी। उस समयसे १८०६ ई० तक बरार राज्य मुसलमानोंके अधिकारमें रहा। सन् १८०६ में भारतके राज प्रतिनिधि लार्ड कर्जनने राजनैतिक कारणसे निजामको कह सुन कर बरार निजाम राज्यसे पृथक् करा लिया। तभीसे यह हैदराबाद-एसाइण्डडिष्ट्रिक्ट स्वतन्त्ररूपसे "बरारप्रदेश" कहलाया।

मुसलमान शासनकर्त्ताओंकी अधीनतामें भी बरार स्वतन्त्र नामसे ही परिचित रहा। हां शासकोंके सामर्थ्यानुसार उसकी सीमाकी कमी बेशी अवश्य होती रही थी। १३५० ई०में दिल्लीके मुसलमान सम्राट् महम्मद तुगलककी मृत्युके बाद बरार राज्य दिल्लीके तुगलकवंश की अधीनतासे पृथक् हुआ और उसके बाद लगभग १५० वर्ष तक यहांके मुसलमान शासनकर्त्ताओंने दिल्लीश्वरकी अधीनताकी अपेक्षा कर स्वाधीन राजाकी तरह यहांका शासन किया। उसके बाद, करीब १३० वर्ष तक यह दाक्षिणात्यके ब्राह्मनी राजवंशके अधीन रहा। अलाउद्दीन हुसेनशाहने अपने राज्यको ४ प्रदेशोंमें विभक्त किया था, जिसमें माहुर और बरारके कुछ अंशको ले कर एक प्रदेश गठित हुआ था।

१५२६ ई०में उक्त ब्राह्मनीवंशका अध पतन होने पर, दाक्षिणात्य भारतवर्षमें पांच मुसलमान राजवंशोंके अधीन शासित हुआ था। उस समय इमादशाही राजा बरार राज्यके अधिपति थे। इलिचपुरमें उनकी राजधानी थी। प्रवाद है, कि इस राजवंशके अधिष्ठाता एक कनाडी हिन्दू थे जो युद्धमें बन्दी हो कर बरारके शासनकर्त्ता खाँ जहानके समक्ष लाये गये थे। खाँ जहानने उनकी बुद्धि और शक्तिका परिचय पा कर उन्हें राजकीय उच्च पद पर नियुक्त किया। धीरे धीरे वह इमाद उल् मुल्ककी उपाधिके साथ सेनानायकके पद पर नियुक्त रहा। इमादशाह पीछे बरारके स्वाधीन राजा हुए थे इमादके वंशधर उनके समान शक्तिशाली और सौभाग्यवान् न थे। इन लोगोंको राज्य रक्षामें असमर्थ जान १५७२ ई०में बीजापुर और अहमदनगरके राजाओंने मिल कर बरार पर आक्रमण किया और बरारराज्य अहमदनगरके करतलगत हुआ। परन्तु अहमदनगरके राजा उसका अधिक दिन तक उपभोग न कर सके। १५९६ ई०में उन्होंने अपनी रक्षाके लिए बरारप्रदेश मुगल सम्राट् अकबरशाहको सौंप दिया। १५९९ ई०में दाक्षिणात्यके उपलब्ध राज्योंका बन्दोबस्त करनेके लिये सम्राट् स्वयं बुरहानपुर पहुंचे। उन्होंने अपने पुत्र कुमार दानियलको बरार और अन्यान्य प्रदेशके प्रतिनिधि नियुक्त कर उस प्रदेशके शासनकी व्यवस्था की। "आईन इ अकबरी"में बरार सूबेका राजस्व और परिमाणादि लिखा हुआ है।

१६०५ ई०में सम्राट् अकबरशाहकी मृत्यु होने पर मुगल राजसरकारमें राज्यव्यवस्थाकी बड़ी गड़बड़ी हुई। मुगलदरबारके उत्तर भारतमें शृङ्खला स्थापनके लिए व्यस्त रहनेसे दक्षिण भारतके नवाधिकृत प्रदेशोंके शासनमें वह विशेष ध्यान न दे सका। इसी समय बरारको अरक्षित देख कर दौलताबादके स्वाधीनता प्रयासी निजाम शाही राजा मालिक अम्बरने बरारके कुछ अंश पर अधिकार कर लिया। १६२८ ई०में उनके मृत्यु समय तक बरार निजामशाही वंशके अधीन रहा। उसके बाद १६३० ई०में मुगलोंने उसे जीत कर वहां दिल्लीश्वरकी शासन शक्ति स्थापित की। मुगल सम्राट् शाहजहाने अपने दाक्षिणात्य राज्यको दो भागोंमें विभक्त कर दोनोंको पृथक् पृथक् शासनकर्त्ताओंके अधीन छोड़ दिया उस समय बरार, पयानघाट, जालना और खानदेश एक ही विभागमें था। परन्तु यह व्यवस्था विशेष लाभ प्रद न होनेसे फिर उक्त दोनों विभाग एक ही में मिला दिये गये और एक ही शासक द्वारा उसका शासन किया गया। १६१२ ई०में यहां पहले पहल कर लगाये जानेकी व्यवस्था हुई थी। बादमें शाहजहांके समय उसका बहुत कुछ संस्कार हुआ था। १६३७-३८ ई०में फसली सन चलाया गया था।

इसके बाद १६५० ई० तक बरारका प्रादेशिक स्वतन्त्र कोई इतिहास नहीं मिलता। उस समय दक्षिण भारतमें मुगल, मराठा और मुसलमान राजाओंमें परस्पर नाना स्थानोंमें युद्ध चल रहा था। १६५०से १७१७ ई० तक मुगल बादशाह औरङ्गजेब दाक्षिणात्यके युद्धमें लिप्त थे उस समयका बरारका इतिहास औरङ्गजेबके दाक्षिणात्य विजयसे संश्लिष्ट है। १७०७ ई०में औरङ्गजेबकी मृत्यु हुई। उसके बाद बरार प्रदेश मराठा और मुगल सेनाओंके लूट मार और अग्निदहनादि अत्याचारका केन्द्रस्थल रहा। इसी समयसे वास्तवमें इस देशकी प्रजाने महाराष्ट्रगण सरदेशमुखी और चौथ वसूल करने लगे थे। १७१७ ई०में सम्राट् फरुखशियरके सैयदवंशीय मन्त्रिगण भी कर देनेके लिए बाध्य हुए थे। १७२० ई०में दाक्षिणात्यके मुगल प्रतिनिधि चीन किलिच खाँने निजाम-उल मुल्क नाम धारण कर स्वाधीनताके लिये प्रयास किया। इस पर दो सैयद मन्त्रियोंने उनके विरुद्ध सेना भेजी। परन्तु उस सेनाको उन्होंने युद्धमें परास्त कर दिया और इस प्रकार वे अपना प्रभुत्व विस्तार करनेमें समर्थवान् हुए। इस समय बरारके सूबेदार उनके साथ मिल गये थे। १७२१ ई०में बुरहानपुरमें प्रथम युद्ध और उसके बाद ही बालापुरमें दूसरा युद्ध हुआ। उसके उपरान्त १७२४ ई० में बुलढाना जिलेके सखरखेलदा नामक स्थानमें तीसरा या अन्तिम युद्ध हुआ। तबसे सखरखेलदा "फते खेलदा" के नामसे प्रसिद्ध हुआ है। इस युद्धके बादसे बरार प्रदेश १८वीं शताब्दी तक नाममात्रके लिये हैदराबाद-राजवंशके अधीन रहा।

ईसाकी १७वीं शताब्दीके शेषभागसे ही

पूर्णसमृद्धिका ह्रास होता रहा। १५६७ ई०में फरासोसी भ्रमणकारी M. de Thevenotने इस देशका परिदर्शन करके लिखा है, कि मुगल-साम्राज्यमें यह स्थान धन धान्य और जलादिसे परिपूर्ण था। उसके बाद, स्थानीय कर संग्राहकोंके निग्रहोंसे यह स्थान शस्यशून्य और जलहीन हो गया। फिर राजाओंके युद्ध विग्रहसे यह स्थान श्रीभ्रष्ट हो गया। इसी समयमें महाराष्ट्रोंने दुर्बल और अरक्षित बरार राज्यको लूट कर नष्ट कर दिया। उनकी दस्युताके भयसे स्थानीय वाणिज्य का लोप हुआ और इसीलिए लोग देश छोड़ कर चले गये। मुगल सम्राट्ने जब यहां एक जागीरदार नियुक्त कर राजस्व संग्रहकी व्यवस्था की तब उधर महाराष्ट्रोंने भी कर वसूलीके लिए स्वतन्त्र जागीरदार नियुक्त किये और प्रजाको उत्पीड़न करने लगी। प्रजाओंने इस प्रकारसे दोनों पक्षको कर देनेके कष्टसे दुःखित हो कर जमीन छोड़ दी। निरन्तर लूट मार और दूसरोंका सर्वनाश होते देख प्रजाओंका हृदय भी कलुषित हो गया और वे भी स्थायी बन्दोबस्तके पक्षपाती न रहे।

१८०४ ई०में हैदराबादकी सन्धिकी शर्तोंमें वर्धानदीके पूर्ववर्ती जिलोंको ले कर समग्र बरार राज्य (कुछ अंश नागपुरका भोंसले वंश और पेशवाओंके अधीन रहा) निजामके अधिकारमें चला गया। गाविलगढ़ नरनाला दुर्ग नागपुरके महाराष्ट्र सरदारोंके अधिकारमें था। १८-२२ ई०में फिर एक सन्धि हुई, जिसमें बरारकी सीमा निर्दिष्ट हो कर वर्धाके पश्चिमस्थ समग्र प्रदेश निजामके अधिकारमें चला गया और नागपुरके राजाको उक्त नदी के पूर्वस्थित प्रदेश नाममात्रको मिला। १७६० ई०में पेशवाने जिन जिलोंको अपने राज्यमें रखा था तथा १८०३ ई०तक नागपुरके राजाने जिन स्थानों पर कब्जा किया था वह सब निजामको वापस दिया गया।

उपर्युक्त कारणसे अनेक राजाओंको सेनाओंकी संख्या घटा देनी पड़ी। उन सैनिकोंने अन्य कोई अर्थोपार्जनका उपाय न देख डकैती करना शुरू कर दिया। इन डकैतों के अत्याचारोंसे राज्यकी रक्षा करनेके लिए निजामको बहुत कष्ट सहने पड़े थे और अर्थ-व्यय भी प्रचुर हुआ था। इस अयथा अर्थव्ययके कारण निजामराज्यको ऋणग्रस्त होना पड़ा और अंग्रेज-गवर्नमेण्ट १८०० ई०की सन्धिके अनुसार राज फौजमें सेनाको वेतन देती रही। इस तरह उत्तरोत्तर विग्रहोंके कारण निजामके अधिकृत देश नष्टप्राय होने पर अंग्रेज लोग शान्तिके लिए अग्रसर हुए और १८४६ ई०में उन्होंने अप्पासाहबको कैद कर उनके अधीनस्थ सेना दलको भगा दिया।

निजाम अंग्रेजोंके साहाय्यतार्थ 'हैदराबाद कण्टिञ्जेण्ट' नामक सेनादलका पोषण कर रहे थे, स्वयं जब उस के व्ययभार वहन करनेमें असमर्थ हो गये, तब उन्होंने अंग्रेजोंको सौंप दिया। जब तक अंग्रेज गवर्नमेण्ट उस ऋणके चुकता होनेका कोई मार्ग नहीं निकाल सकी थी। इस कारण तथा ऊपर कहे गये युद्ध-विग्रहसे हैदराबाद राज्य दिवालिया हो गया। इसलिए उपाया न्तर न देख १८५३ ई०में अंग्रेजोंके साथ निजामकी एक सन्धि हुई, जिसमें अंग्रेजोंको उनका ऋण चुकाने और कण्टिञ्जेण्ट सेनादलके पोषणके लिए निजामसे ५० लाखकी आमदके कई जिले प्राप्त हुए। ये जिले तभीसे (धाराशिव और रायचूर दोआबको छोड़ कर) "हैदराबाद एसाइण्ड डिष्ट्रिक्ट" नामसे अंग्रेजोंके अधीन परिचालित हुए हैं। उस सेनादलका मूलांश एलचपुरमें तथा आकोला और अमरावतीमें कुछ पदातिक मात्र रखे गये।

उस सन्धिमें यह भी तय हुआ कि, अंग्रेज-गवर्नमेण्ट निजामको सालको साल हिसाब देगी और राजस्वका जो कुछ बचेगा वह भी निजामको मिलेगा। निजामको अब युद्धके समय अंग्रेजोंके लिए सेना नहीं भेजनी होगी। वह सेनादल भी निजामके सेना विभागके अधीन न रहा, सिर्फ उन्होंके कार्यके लिए अंग्रेजोंके अधीन सेनादलके रूपमें रखा गया।

बादमें १८५३ ई०की सन्धिके अनुसार वार्षिक हिसाब दाखिल करना असुविधाजनक मालूम हुआ। उस १८०२ ई०की सन्धिकी शर्तमें ५) सैकड़ा शुल्क अदा करने की जो बात थी, उसको ले कर दोनोंमें और भी विवाद होने लगा। तब अंग्रेजोंने इस विपत्तिसे छुटकारा पानेके अभिप्रायसे तथा १८५७ ई०के गदरके समय निजामके द्वारा की गई सहायताके उपलक्ष्में उन्हें पुर

स्कार देनेके लिए १८६० ई०के दिसम्बर मासमें और एक सन्धि की, जिसमें अङ्गरेजोंने निजामसे प्राप्य और भी ५० लाख रुपयेका दावा छोड़ दिया। सुरपुरके विद्रोही राजाका राज्य छीन कर निजामको अर्पण किया तथा धाराशिव और रामचूर दोआव उन्हें लौटा दिया। निजामको अंग्रेजोंसे सम्पत्ति तो मिली पर उन्हें भी उसके बदले गोदावरी नदीके वामकूलमें अवस्थित कई जिले और नदीमें वाणिज्यके लिए जो शुल्क वसूल होता था, वह छोड़ देना पड़ा।

इस प्रकारसे अङ्गरेजो ने बदलेमें जो निजामसे बरार और अन्यान्य जिलोंमें सम्पत्ति प्राप्त की थी, उसकी आम दनी १२ लाखकी थी। अंग्रेज गवर्मेण्ट उस रुपयेसे १८५३ ई०की सन्धिके अनुसार कार्य करेगी। निजाम सरकारको उसे आयव्ययका हिसाब नहीं देना होगा। उक्त असाइएड डिष्ट्रिकृमें सेनाओंके वेतनके लिये निजाम द्वारा दी गई जो जागिरें थीं तथा निजामके अपने व्यय के लिये जो सम्पत्तियां थीं उन्हें अपने शासनाधीन करने के अभिप्रायसे अङ्गरेज सरकार अन्य स्थानों में सम्पत्ति दे कर उसका बदला कर सकती है।

१८६१ ई०में इस परिवर्त्तनके सिवा १८५३ ई०से बरारका और कुछ राजनैतिक परिवर्त्तन नहीं हुआ। १८५७ ई०में सिपाही विद्रोहके समय भी यहां विप्लवके विशेष लक्षण नहीं दिखाई दिये थे। १८५८ ई०में तांतिया तोपी अपने दलबल सहित सातपुरा शैल तक आ पहुंचा था सही, परन्तु उसे बरारकी उपत्यकामें कोई प्रदेश हाथ नहीं लगा।

अंग्रेजी शासनमें बरारकी उन्नतिके सिवा अवनति नहीं हुई है। जो बरार किसी समय महाराष्ट्र और मुगलों के अत्याचारोंसे जनशून्य हो गया था, वही बरार अंग्रेजोंके शान्तिमय शासनसे जनपूर्ण हो गया। बङ्गाल के भूतपूर्व गवर्नर (छोटे लाट) सर रिचर्ड टेम्पल्ने इस स्थानके राजकीय विवरणमें बरारकी तत्कालीन समृद्धि का वर्णन किया है। अमेरिकाके युद्धके समस्त यहाका रूईका व्यवसाय बहुत बढ़ा चढ़ा था। यहा तक कि उस समय रुपये देने पर भी आदमी नहीं मिलते थे। लोग मुंह मांगे दाम ले कर काम पर लगते थे। ग्रेट इण्डि-यन पेनिन्सुला और निजामस् स्टेट रेल्वे स्थापित होनेके बाद यहाके वाणिज्यकी यथेष्ट उन्नति हुई है।

शहरमें ४० शहर और ५७१० ग्राम लगते हैं। जन संख्या २८ लाखके करीब है जिनमें हिन्दुओंकी संख्या लगभग २४॥ लाख, मुसलमान २ लाखके करीब तथा गोंड, कुर्कु आदि असभ्य जातियोंकी संख्या १ लाख ७० हजार होगी। जैन, सिख, पारसी और ईसाइ भी हैं, जिनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है। अधिकांश लोग कृषि जीवी हैं। यहा ज्वार, बाजरा, गेहूं, चना, धान, तिल, सन, तम्बाकू, ईख, कपास, मसीना, तेल्कर बीज, गांजा, अफीम और पोस्त आदिकी खेती होती है। यहाके अधि वासी शारीरिक परिश्रमसे अनेक वस्तुए उत्पन्न करते हैं और उनके विनिमयमें वे अन्य देशकी वस्तुओंकी आमद करते हैं। ये भी किसी चीजको अच्छी तरह पूरा नहीं कर पाते हैं, और न यहा ऐसे कल कारखाने आदि हैं, जिनसे वे अपने काममें आने योग्य वस्त्रादि बना सके। कितने ही लोग सूतके मोटे कपड़े, गलीचे और पायजामा बनाते तो हैं, पर उनका आदर नहीं है। रेशमी कपड़े बुननेका थोड़ा बहुत कारोबार होता है। कहीं कहीं वस्त्र बुननेका व्यवसाय भी चलता है। बुलदानाके निकटवर्त्ती देवलघाटमें इस्पातसे अस्त्रादि बनानेका सामान्य कारोबार होता है। नागपुरसे महीन वस्त्र तथा अन्यान्य आवश्यकीय चीजे बम्बईसे लाइ जाती हैं।

अमरावती, आकोला, आकोट, अञ्जनगाव, बालापुर, वासिम, देवलगाव, इलिचपुर, हिवारखेर, जल्गाव, करिञ्जा खामगाव, कारञ्जगाव, मलकापुर, परतवाडा, पाथुर, सेन्दुरजना, सेगाव और जेउटमाल नगर बरार प्रदेशकी समृद्धिके परिचायक हैं। अमरावती, आकोला, खाम गाव, सेगाव और वासिममें म्युनिसिपलिटी है।

भारतके राज प्रतिनिधि लार्ड कर्जनके राजनैतिक कौशलसे १९०६ ७ ई०में बरार प्रदेश निजाम-सरकारके अधिकारसे च्युत होनेसे पहले, यह प्रदेश एक चीफ कमिश्नरके द्वारा शासित होता था। उनके अधीन १ जुडिसियल कमिश्नर तथा १ राजस्व विभागीय कमि श्नर, ६ डेपुटी कमिश्नर, १७ असिस्टेण्ट कमिश्नर और

१ इन्सपेक्टर जनरल आफ पुलिस, जेल और रैजिष्ट्रेशन, ६ डिष्ट्रिक्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट आफ पुलिस, ७ आसिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट आफ पुलिस, १ सेनिटरी कमिश्नर (ये इन्सपेक्टर जनरल आफ डिसपेन्सरी और भक्सिनेसन पद पर भी कार्य करते थे), ६ सिविल सर्जन, १ डिरेक्टर आफ पब्लिक इन्सट्रकसन, १ कन्जरभेटर आफ फारेष्ट और असिस्टेन्ट कन्जरभेटर थे। १८८३ ई०में यहां ६७ मजिष्ट्रेट कार्य करते थे। उन सबको दीवानी और राजस्व वसूली सम्बन्धी मुकदमोंका विचार करनेका अधिकार था। वर्तमानमें अभी डिपुटी कमिश्नर दीवानी और फौजदारी मामले पर विचार करते हैं। एक एक तालुक एक एक तहसीलदारके अधीन हैं जिनका काम राजस्व वसूल करना है। ऐसे तहसीलदारोंकी संख्या बीस है। डिसट्रिक्ट जेल सिविल सरजनके अधीन है। विद्याशिक्षामें यह जिला आस पासके जिलोंसे बहुत बढ़ा चढ़ा है। जिलेमें कुल मिला कर ४७ अस्पताल हैं।

वेरिआ (हि० स्त्री०) समय, वेला।

वेरिज (हि० स्त्री०) किसी जिलेकी कुल जमा।

वेरिया (हि० स्त्री०) समय, काल।

वेरी (हि० स्त्री०) १ हिमालयमें होनेवाली एक प्रकारकी लता। इसके रेशोंसे रस्सियां और मछली फसानेके जाल बनाते हैं। इसे 'मुरकुल' भी कहते हैं। २ अन्नमें मिली हुई सरसों और तीसी। ३ बेर देखो। ४ उतना अनाज जितना एक बार चक्कीमें डाला जाता है, अनाजकी मुट्ठी जो चक्कीमें डाली जाती है।

वेरीउत (हि० पु०) एक शब्द जो महावत लोग हाथीको किसी कामसे मना करनेके लिये कहते हैं।

वेरुआ (हि० पु०) बांसका वह टुकड़ा जो नाव खींचनेकी गूनमें आगेकी ओर बंधा रहता है और जिसे कंधे पर रख कर मल्लाह खींचते हुए चलते हैं।

वेरुई (हि० स्त्री०) वेरुआ, छड़ी।

वेरुकी (हि० स्त्री०) एक रोग। इसमें बैलोंकी जीभ पर काले काले छाले हो जाते हैं और उसे बहुत कष्ट देते हैं।

वेरुख (फा० वि०) १ जो समय पड़ने पर रुख (मुंह) फेर ले, बेमुरव्वत। २ क्रुद्ध, नाराज।

वेरुखी (फा० स्त्री०) अवसर पड़ने पर मुंह फेर लेना, बेमुरव्वती।

वेरूप (हि० वि०) कुरूप, बदशक्ल।

वेरोक (फा० क्रि० वि०) निर्विघ्न, बेखटके।

वेरोकटोक (फा० वि०) निर्विघ्नपूर्वक, बिना अड़चनके।

वेरोजगार (फा० वि०) जिसके हाथमें कोई रोजगार न हो, जिसके पास करनेको कोई काम धंधा न हो।

वेरोजगारी (फा० स्त्री०) बेरोजगार होनेका भाव।

वेरौनक (फा० वि०) जिस पर रौनक न हो, उदास।

वेरौनकी (फा० स्त्री०) बेरौनक होनेका भाव।

वेर्रा (हि० पु०) मिले हुए जौ और चनेका आटा। २ कोईका फल।

वेर्रावरार (हि० पु०) अन्नकी उगाही।

वेलन्द (फा० वि०) १ ऊंचा। २ जो बुरी तरह पराजय या विफल मनोरथ हुआ हो।

वेल (हि० पु०) १ मझोले आकारका एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष। विशेष विवरण बिल्व शब्दमें देखो। (स्त्री०) २ वनस्पति शास्त्रके अनुसार वे छोटे कोमल पौधे जिनमें कांड या मोटे तने नहीं होते और जो अपने बल पर ऊपरकी ओर उठ कर नहीं बढ़ सकते। वल्ली देखो। ३ सन्तान, वंश। ४ नाव खेनेका डाँड़, बल्ली। ५ कपड़े या दीवार आदि पर एक पंक्तिमें दूर तक बनी हुई फूल पत्तियाँ आदि जो देखनेमें बेलके समान जान पड़ती हों। ६ विवाह आदिमें कुछ विशिष्ट अवसरों पर सम्बन्धियों और बिरादरीवालोंकी ओरसे हज्जामों, गानेवालियों और इसी प्रकारके और नेगियोंको मिलनेवाला थोड़ा थोड़ा धन। ७ रेशमी या मखमली फीते आदि पर जरदोजी आदिसे बनी हुई इसी प्रकारकी फूल पत्तियाँ जो प्रायः पहननेके कपड़ों पर टांकी जाती हैं। ८ घोड़ोंका एक रोग। इसमें उनका पैर टखनेसे ऊपर तक सूज जाता है, गुमनाम।

वेल (फा० पु०) १ एक प्रकारकी कुदाली। इससे भल दूर जमीन खोदते हैं। २ एक प्रकारका लंबा खुरपा। ३ सड़क आदि बनानेके लिये चूने आदिसे जमीन पर डाली हुई लकीर जो केवल चिह्नके रूपमें अथवा सीमा निर्धारित करनेके लिये होती है।

वेल (अ० पु०) कपड़े या कागज आदिकी वह चर्खी

गठरी जो एक स्थानसे दूसरे स्थान पर भेजनेके लिये बनाई जाती है, गांठ।

बेलक ( हिं० पु० ) फरसा, फावड़ा।

बेलकी ( हिं० पु० ) चरवाहा।

बेलखजी ( हिं० पु० ) पूर्वी हिमालयमें मिलनेवाला एक प्रकारका बहुत ऊँचा वृक्ष। यह चार सौ फुटकी ऊंचाइ तक होता है। इसके हीरकी लकड़ी लाल और बहुत मजबूत होती है। इससे चायके सन्दूक, इमारती और आरायशी सामान तैयार किये जाते हैं। वृक्षको काटनेके बाद इसकी जड़से अंखुवा फूट आता है।

बेलगगरा ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी मछली।

बेलगाव (बेलगाम)—बम्बई प्रसिडेन्सीके दक्षिण विभाग का एक जिला। यह अक्षा० १५ २२´ से १६ ५८´ उ० तथा देशा० ७४ २´ से ७५ २८´ पू०के मध्य अव स्थित है। भूपरिमाण ४६४६ वर्ग-माइल है। इसकी उत्तर सीमामें मिरज और जाट राज्य, उत्तर पूर्वमें कलादगी जिला, पूर्वमें जामखण्डी और मुधोल राज्य, दक्षिण और दक्षिण पूर्वमें धारवार, उत्तर कनाड़ा और कोल्हापुर राज्य, दक्षिण पश्चिममें गोआ राज्य तथा पश्चिममें सावन्तवाड़ी और कोल्हापुर राज्य है। उत्तर पूर्वसे दक्षिण पश्चिमकोणमें यह १२० माइल विस्तृत है और प्रस्थमें ४ से ८० माइल तक है।

यह जिला गण्डशैलमालासे विभूषित हो कर स्थान स्थान पर उत्कटका, अविरचना और अत्युच्च शृङ्गावलीसे परिशोभित है। एक तरफ जैसी समतल प्रान्तर पर नदियोंकी अपूर्व शान्तिमयी शोभा है, दूसरी तरफ वैसा ही अत्युन्नत पर्वतोंकी शिखाओं पर दुर्भेद्य गिरिदुर्गका घोर गम्भीर दृश्य है। यह शैलश्रेणी पश्चिमघाट या सह्याद्रिशैलकी अन्यतम शाखा है। इस जिलेका पश्चिम और दक्षिणांशका पार्वत्य प्रदेश अपेक्षाकृत ऊंचा है और वह पूर्वकी तरफ क्रमशः नीचा होता हुआ कलादगि जिला तक गया है। दक्षिणमें सह्याद्रिपर्वतकी भांतिगर शाखा प्रशाखाएं इतस्ततः विस्तृत होने पर भी बीच बीचमें निविड़ वनमाला और जनहीन समतल भूमि देखी जाती है। इस दक्षिण भागमें बड़ी बड़ी नदियोंके किनारे आम, जामुन, कटहल, इमली आदि वृक्ष फल



भारसे अवनत हो उस निर्जनतामें भी स्थानीय सौन्दर्य की वृद्धि कर रहे हैं। बेलगामका उत्तर और पूर्व अंश शस्यपूर्ण श्यामल प्रान्तरमय है और उसके बीच बीचमें छोटी किसानोंकी बस्तियां हैं।

इसके उत्तरमें कृष्णा, मध्य भागमें घाटप्रभा और दक्षिणमें मालप्रभा नदी सह्याद्रि पर्वतसे निकल कर पूर्वकी ओर धीरमन्थर गतिसे बहती हुई बङ्गोपसागरमें जा मिली है। इन नदियोंके पश्चिमांशका जल मीठा है, किन्तु पूर्वांशका जल समुद्रस्रोतमें मिल जानेसे कुछ खारा हो गया है।

इस पार्वतीय प्रदेशमें जगह जगह लोहा, अभ्रक, लालपत्थर, दानादार और स्फटिकप्रस्तर आदि पाये जाते हैं। जङ्गलोंमें साल, सफेद साल, हर्रा, हर्रे और कटहल आदिके पेड़ तथा जानवरोंमें नाना प्रकारके हरिण, जंगली सूअर, बाघ, चीता और तरह तरहके पक्षी देखनेमें आते हैं।

यहांका इतिहास महाराष्ट्र इतिहाससे सम्बन्ध रखता है इसलिए स्वतन्त्र रूपसे पृथक् कुछ नहीं लिखा गया। १८१८ ई०में पूनाकी सन्धिके अनुसार पेशवाने अंग्रेजोंको धारवाड़ विभागके साथ यह जिला भी दिया था। तभीसे यह धारवाड़ जिलेमें शामिल समझा जाता था और अंग्रेजों द्वारा इसका शासन होता था। पीछे शासन कार्यकी सुविधाके लिए १८३६ ई०में उस विभागके दक्षिणांशमें धारवाड़ और उत्तरांशमें बेलगाव नामसे दो स्वतन्त्र जिले कर दिये गये। १८४४-४५ ई०में कोल्हापुर तथा १८५७-५८ ई०में यहां दूसरी बार बलवा हुआ था। इस जिलेमें बेलगाम और उसमें लगा हुआ सेना निवास (छावनी), गोकक, अथनी, निपानी, सौन्दत्ती और यमकणमर्डी प्रधान नगर हैं। यहांके अधिवासी साधारणतः लिङ्गायत शैव हैं। इसके सिवा अन्यान्य धर्मावलम्बी भी हैं। कैकाडी नामक दस्युजाति यहां प्रसिद्ध है।

यह जिला अथनी, बेलगाम, चीकोड़ी, चिकोड़ी, गोकाक, पारसगढ़ और सम्पगांव नामक छः उपविभागोंमें विभक्त है। पारसगढ़ उपविभागके पर्वत पर यल्लमा देवीका प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां पर प्रति वर्ष

चैत्र मासमें, देवीके उद्देशसे पूजा होती और तीन दिन तक मेला लगता है। उस समय यहां करीब ४० हजार तीर्थ यात्रियोंका समागम होता है। कार्त्तिकमें मूल मन्दिरसे कुछ दूरी पर एक छोटेसे पीठमें जा कर मारण क्रियाबोधक पूजादि होती है। इसके बाद आई हुई स्त्रियां यल्लमा देवीके पति वियोग जनित दुःखमें समवेदना प्रकट करनेके लिए रोनेके स्वरमें भीषण चीत्कार करती हैं। बीस तीस हजार स्त्रियोंका एक साथ मिल कर चीत्कार करना कैसा भीषण होता होगा, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। फिर ये स्त्रियां देवीके वैधव्यकी समवेदनामें अपने हाथोंकी चूड़ियां और कड़े आदि गहने तोड़ या खोल डालती हैं।

२ बम्बई प्रेसिडेन्सीके बेलगाम जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० १५ ४१´ से १६ ३´ उ० तथा देशा० ७४ २´ से ७४ ४३´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका भूपरिमाण ६४४ वर्ग माइल है। इसमें बेलगांव नामक १ शहर और २०१ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है।

इस उपविभागमें निम्नलिखित गिरिदुर्ग विद्यमान हैं —१ बेलगामदुर्ग। २ महीपतगढ़दुर्ग—यह बेलगाम से ६ माइल पश्चिमोत्तरमें सुन्दी नामक स्थानमें अवस्थित है। ३ कलानिधिगढ़—जो बेलगामसे १७ माइल पश्चिममें कल्यिडे नामक स्थानमें है। ४ गन्धर्वगढ़ बेलगामसे १६ माइल पश्चिमोत्तरमें कोगाउ नामक स्थानमें अवस्थित। ५ पारगढ़—यह बेलगामसे ३० माइल पश्चिम दक्षिणमें पारगढ़ पहाड़के शिखर पर। ७ वाड़गढ़—जो बेलगामसे २२ माइल पश्चिममें अवस्थित है। यहां बेल्लनाथका मन्दिर है।

३ उक्त जिलेका प्रधान नगर। यह समुद्रपृष्ठसे २५०० फुटकी ऊंचाई पर बेलरीनाला नामक मार्कण्डा नदीके एक शाखास्रोतके ऊपर स्थापित है। मार्कण्डा और मालप्रभाने परस्पर सम्मिलित हो कर कृष्णानदीके कलेवरको पुष्ट किया है। यह नगर अक्षा० १५° ५१´ ३० तथा देशा० ७४ ३१´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ३५ हजारसे ऊपर है। इसके पूर्वमें दुर्ग तथा पश्चिममें सैनानिवास है। प्राकृतिक अनमशून्य है। यहां वांसकी पैदाइश बहुत है। इस लिए कनाडी भाषामें इसका नाम वेणुग्राम था, और उसीसे वेगु वेलु या बेलगाम हो गया है। यहांका गिरिदुर्ग छोटा होने पर भी सुरक्षित है। आयतन लम्बाईमें १००० गज और चौड़ाई में ७०० गज है। १८१४ ई०में पेशवाके अधःपतन पर अङ्गरेजी सेनाने दुर्ग पर अधिकार कर लिया। २१ दिन अवरोधके बाद दुर्गस्थ सैनिकोंने अंग्रेजोंके हाथ आत्मसमर्पण किया था।

किम्वदन्ती है, कि १५१९ ई०में यह दुर्ग बना था। इसके भीतर आसद खांकी दरगाह या मसजिद तथा और दो जैन मन्दिर हैं, जो क्रमशः १२वीं और १३वीं सदीमें बने हैं। दरगाहके प्रवेशद्वारमें १५३७ ई०का एक शिलालेख है।

अंग्रेजोंके अधिकारमें आनेके बादसे बेलगाम नगर की नाना विषयोंमें श्रीवृद्धि हुई है। वाणिज्यके प्रभाव से नगर धन और जनसे परिपूर्ण है। सैनानिवास स्थापित होनेके साथ ही यहां देशीय बालकोंके शिक्षार्थ स्कूल आदिकी व्यवस्था हो गई है। विंगुर्ला बन्दर यहांका प्रधान वाणिज्य केन्द्र है। उसी स्थानसे यहां को चावल वस्तु रवाना होता है और बाहरसे आती है। यह सूती कपड़े बुननेका व्यवसाय होता है। शहरमें कुल मिला कर ३०० करघे, ६ म्युनिसिपल प्राइमरी स्कूल और २ हाई स्कूल हैं। अलावा इसके यूरोपियन और यूरेशियन लड़कोंके लिये भी दो स्कूल हैं।

बेलगिरि ( हिं० स्त्री० ) बेलके फलका गूदा।

बेलनक ( हिं० पु० ) बेलना देखो।

बेलचा ( फा० पु० ) १ एक प्रकारकी छोटी कुदाल। इस से माली लोग बागकी क्यारियां आदि बनाते हैं। २ कोई छोटी कुदाल। ३ एक प्रकारकी लम्बी खुरपी।

बलजियम—यूरोप महादेशके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। बेलजियम शब्द देखो।

बेलज्जत ( फा० वि० ) १ स्वाद रहित, जिसमें किसी प्रकारका स्वाद न हो। २ जिसमें कोई सुख न मिले।

बेलड़ी ( हिं० स्त्री० ) छोटी बेल या लता।

बेलदार—बिहार और पश्चिम-बङ्गालकी रहनेवाली एक निम्नश्रेणीकी जाति। ये लोग बेल ( कुदालीका तरहका एक औजार )-से मिट्टी आदि खोदते हैं, इसलिए इनका नाम 'बेलदार' पड़ा है। शाहाबाद और भागलपुरकी

कोयलेका खानमें ये काम करते हैं। पश्चिम बङ्गालमें ये बाउडी या कोडा जातिके समान समझे जाते हैं।

इस जातिकी उत्पत्तिका कोई इतिहास नहीं मिलता। बिन्द और नुनिया लोगोंके साथ इनका बहुत कुछ सामञ्जस्य है। आङ्गोपाङ्गके गठनको देखनेसे यह जाति द्राविडीय व शोम्भव और आदिम जातिकी शाखा मालूम पड़ती है। किसी किसीका मत है कि, जङ्गलोंमें शिकार करनेवाले बिन्द जाति ही आदि है उसीसे बेलदार और नुनिया जातिकी उत्पत्ति है। पीछे ये स्वतन्त्र वृत्ति अवलम्बन पूर्वक कुछ अंशोंमें सभ्य हो गये हैं।

नुनिया और बिन्द देखो।

बिहारवासी बेलदारोंमें चौहान और कथौनिया या कथावा नामका दो वंश या थाक तथा काश्यप गोत्र प्रचलित हैं। इनमें बाल-विवाह प्रचलित है। परन्तु बहुत जगह प्रौढ़ विवाह भी देखनेमें आता है। 'ममेरा' और 'चचेरा' सम्पर्कके अनुसार ये विवाह करते हैं। विवाह के नियम अन्य निम्नश्रेणीकी जातियोंके सदृश ही है। पहली स्त्रीके बन्ध्या होने पर पुरुष दूसरा विवाह कर सकता है। सगाईके अनुसार विधवाका विवाह भी होता है। पञ्चोंके विचारसे विवाह बन्धन छूट सकता है और फिर वह स्त्री अपना दूसरा विवाह कर सकती है।

मैथिल ब्राह्मण इनका पौरोहित्य करते हैं। श्राद्ध और अन्त्येष्टिक्रियादि धर्म कर्म निम्न श्रेणीके हिन्दुओंकी भांति होते हैं। माघ मासकी तिलसंक्रान्तिमें गोड़ाकी पूजा करते हैं। इनमें बहुत से तो मिट्टीखोदी करते हैं, और कुछ मजदूरी ले कर दूसरोंका काम करते हैं। पूर्व बङ्गालमें हिन्दुओंके अलावा मुसलमान बेलदार भी हैं। ये साधारणतः गांवका कूड़ा कर्कट ले कर बाहर फेंकते हैं, तथा मरे हुए पशुओंको ढो कर यथास्थान पहुंचाते और जङ्गल काटते हैं तथा हिन्दू और मुसलमानोंके विवाहमें मशालचीका काम करते हैं। यही उनकी आजीविका है।

उत्तर पश्चिम भारत और दाक्षिणात्यमें भी बेलदार पाये जाते हैं। इनके कोई निर्दिष्ट वासस्थान या गृहादि नहीं होते, साधारणतः ये तम्बुओंमें ही रहते हैं। जब जहां इन्हें काम मिलता है, तब वहांके लिए ये चल देते हैं। कहीं कहीं ये पत्थर भी काटते हैं तथा कुआ और तालाब खोदनेका भी काम करते हैं। पूनाके बेलदार हिन्दी और मराठी भाषा बोलते हैं। इनकी पगड़ी लगभग १६० हाथ लम्बे कपड़ेकी बधी होती है। ये मड़ी आइ या शीतला माताकी पूजा करते तथा उन्हें मृत्युकी अधिष्ठात्री समझते हैं। इसके सिवा माता, आइ, देवी, भवानी आदि विभिन्न शक्ति मूर्त्तियोंकी उपासना भी करते हैं। देवी पूजामें बकरा चढ़ाते हैं।

रुपये कमा लेनेके बाद ये विवाह करते हैं। मरे बालकोंको मिट्टीमें गाड़ देते और तीसरे दिन उस पर पानी और चावल द्वारा पिण्ड देते हैं।

हिन्दू राजाओंके यहां भी बेलदार सेना रहा करती थी। राजा सीतारामकी बेलदार सेना मिट्टी काटती थी और आवश्यक होने पर युद्धमें भी काम आती थी। उस समय यह सेना निम्न श्रेणीके हिन्दू और जंगलियों मेंसे संगृहीत होती थी।

उत्तर पश्चिमके बेलदारोंमें बाछल, चौहान और खरोतवंश विद्यमान हैं। पहलेकी दो शाखाएं राजपूत जातिके अनुकरणसे गृहीत हैं। खर नामक तृणविशेष द्वारा चटाइ बनानेके कारण तीसरी शाखाका नाम खरोत पड़ा है। इसके अलावा बरेलीमें माहुल और ओरा, गोरखपुरमें देशी, खारबिन्द और सरवरिया, बस्ती जिलेमें खारबिन्द और मासखावा आदि थोक देखे जाते हैं। वर्तमानमें समस्त हिन्दुओंके सद्वासमें रह कर ये बछगोता, बछल, बहेलिया, बिन्दवार, चौहान, दीक्षित, गहरवाड, गौड़, गौतम, घोषी, कुरमी, लुनिया, ओरा, राजपूत, ठाकुर आदि वंशगत नामसे तथा अगरवाला, अमरनगी, अयोध्यावासी, भदारिया, बिलोवाल गङ्गापारी गोरखपुरी, कनौजिया, कसौवाल, सरवरिया (सरयूतीर वासी) और उत्तराह आदि स्थानीय नामोंके अनुकरणसे विभक्त होनेकी कोशिशमें लगे हुए हैं। इस जातिका वंश आख्यान कुछ भी नहीं है। हां, परिचय देते समय कहते हैं, कि पहले ये राजपूत थे, किसी राजा द्वारा बलपूर्वक महादेवके सामने नियुक्त किये जानेके कारण समाजमें वे इस प्रकार निगृहीत हुए हैं। इनमें सगाईके अनुसार विधवाका विवाह होता है। पतिके

गई क्या उपवास रख सकती हैं। ये पार्वतीजीकी पूजा करते हैं। शिवरात्रिको महादेवकी पूजा और उपवास भी करते हैं।

उड़ीसामें बेलदार सिर्फ तालाब खोदनेका काम करते हैं। इनमें एक जमादार रहता है जिसके अधीन कई आदमी रहते हैं और उन आदमियोंके अधीन बहुतसे बेलदार दल बांध कर काम करते हैं। इनके रहनेका कोई निश्चित ठिकाना नहीं है। जहां जहां काम पड़ता है, उसी जिलेमें जा कर बस जाते हैं।

बेलदार (फा० पु०) वह मजदूर जो फावड़ा चलाने या जमीन खोदनेका काम करता हो।

बेलदारी (फा० स्त्री०) बेलदारका काम, फावड़ा चलाने का काम।

बेलन (हिं० पु०) १ लकड़ी, पत्थर या लोहे आदिका बना हुआ गोल भारी, और लंबे आकारका खण्ड। यह अपने अक्ष पर घूमता है और इसे लुढ़का कर किसी चीजको पीसने, किसी स्थानको समतल करने या कंकड़ पत्थर आदि कूट कर सड़कें बनाते हैं, रोलर। २ कोल्हूका जाठ। ३ छापेखानेका बेलन। ४ किसी यन्त्र आदिमें लगा हुआ बेलनके आकारका कोई बड़ा पुरजा जो घुमा कर दबाने आदिके काममें आता है। ५ कोई गोल और लंबा लुढ़कनेवाला पदार्थ। ६ रूई धुनकनेकी मुठिया या हत्था। ७ गन्ना दबाना। ८ एक प्रकारका जड़हन धान। ९ पानीमें मिलाए हुए नेबूके पानीमें भिगोकर महायानमें रखे हुए गाय पार्वतीमें निकाला जाता है।

बेलनदार (हिं० वि०) बेलनवाला, जिसमें बेलन लगा हो।

बेलना (हिं० पु०) काठका बना हुआ एक प्रकारका लंबा दस्ता। यह बीचमें मोटा और दोनों ओर कुछ पतला होता है। यह प्रायः रोटी, पूरी, कचौरी आदिकी लोई को चकले पर रख कर बेलनेके काम आता है। यह चकला पाटल आदिका भी बनता है।

बेलना (हिं० क्रि०) १ रोटी, पूरी, कचौरी आदिकी लोई को चकले पर रख कर बेलनसे बढ़ाकर फैलाना। पूरी बड़ा और बड़ा और पतला करना। २ चौपट करना, नष्ट करना। ३ विनोदके लिये पानीके छींटे उड़ाना।

बेलपत्ता (हिं० पु०) [illegible]

बेलपत्र (हिं० पु०) बेलके पेड़की पत्तियां जो हर एक सींकमें तीन तीन होती हैं और जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं। बिल्व पत्र देखो।

बेलपाता (हिं० पु०) बेलपत्र देखो।

बेलबागुरा (हिं० पु०) हिरनोंको फंसानेका जाल।

बेलबूटेदार (हिं० वि०) जिसमें बेलबूटे बने हों, बेल बूटों वाला।

बेलदरा (हिं० पु०) एक प्रकारकी छत्तीतरी पिटारी जिसमें लगे हुए पान रखे जाते हैं। यह बांस या धातुओं आदि की बनी होती है।

बेलहरी (हिं० पु०) सानी पान।

बेलहाजा (हिं० स्त्री०) लकड़ीका वह ठप्पा जिससे धोती आदिके किनारों पर लहरियेदार बेल छापी जाती है।

बेलहाशिया (हिं० पु०) बजहाशा देखो।

बेला (हिं० पु०) १ चमेली आदिकी जातिका एक प्रकार का छोटा पौधा। इसमें सफेद रंगके सुगन्धित फूल लगते हैं। इन फूलके तीन भेद हैं—मोतिया, मोंगरा और मदनबान। पहला मोतीके समान गोल होता है, दूसरा उससे बड़ा और प्राय सुपारीके बराबर होता है, और तीसरेकी पत्ती प्राय एक सम लम्बी होती है। २ एक प्रकारका गहना जो बेलेके फूलके आकारका होता है। ३ त्रिपुरा, मल्लिका। ४ लहर। ५ कटोरा। ६ नारियलकी बना हुआ एक प्रकारकी छोटा कुल्हिया। इसमें एक लम्बी लकड़ी लगा रहता है जिससे तेल नापा या दूसरे बरतनमें भरा जाता है। ७ समुद्रका किनारा। ८ समय।

बेलाग (हिं० वि०) १ साफ, खरा। २ जिसमें किसी प्रकारकी लगाव या सम्बन्ध न हो।

बेलाडोना (अं० पु०) मकोयका सत्त। यह प्रायः अंग रेजी औषधमें खाने या पीड़ित स्थान पर लगानेके काम में आता है।

बेलावल (हिं० पु०) बिलावल देखो।

बेलि (हिं० स्त्री०) बेल देखो।

बेलिया (हिं० स्त्री०) छोटी कटोरी।

बेलौस (हिं० वि०) १ सच्चा, खरा। २ बेमुरव्वत।

बेल्लारि— मन्द्राजका एक जिला। [illegible]

बेल्लूर (बेलूर या बाल्लन्दूर)—मन्द्राजप्रदेशके अन्तर्गत

उत्तर आर्कट जिलेके वेल्लूर तालुकके अधीन एक प्रसिद्ध शहर। यह अक्षा० १२ ५८ ५ १३ १८ ३० तथा देशा० ७९ ४४ से ७६ ७ पू०म, पालर नदीके किनारे मन्द्राजसे ८० माइल तथा आर्कटसे १५ माइल पश्चिममें अवस्थित है। यहां सेशनजिजाम, सब कलेक्टरकी कचहरी अदालत सब-जिला गीय कार्यालय, जेल, अस्पताल, डाकखाना, तार घर और गवर्नमेण्टके सार्वजनिक कार्यालय तथा म्युनिसिपालिटी और रेलवे एक स्टेशन है। इस कारण यह शहर बहुत ही घना बसा है। जनसंख्या लगभग ५० हजार है। यहांका दुर्ग बहुत ही प्राचीन है। प्रवाद है, कि भद्राचल-वासी किसी व्यक्तिने १२७४ से १२८३के भीतर उक्त दुर्ग निर्माण कर विजय नगर के राजवंशको अर्पण किया था। ईसाकी १७वीं शताब्दी के मध्य भागमें बीजापुरके सुलतानने इस दुर्ग पर आक्रमण किया था। १७७६ ई० में महाराष्ट्र नायक तुकाजीरावने ४॥ मास तक अवरोध करनेके बाद वेल्लूर अधिकार किया था। १७०८ ई०में दाउद खाँने आ कर महाराष्ट्रोंको भगा दिया। उस समय कर्णाटकके अन्दर वेल्लूर दुर्ग ही सर्वापेक्षा दुर्भेद्य समझा जाता था। पीछे दोस्त अलीने अपने जमाईको यह दुर्ग दे दिया। उनके पुत्र मुर्त्तिजा अलीने १७४१ ई०में यहां सफदर अलीकी हत्या की। मुर्त्तिजाअली अपने अधिनायक आर्कटके नवाबके आदेशको अमान्य कर स्वाधीन भावसे यहांका राज करते रहे। उस समय अंगरेजगण आर्कटके नवाबके मित्र थे। वे १७५९ ई०में मुर्त्तजा पर शासन करनेके लिये वेल्लूर आये, पर अकृतकार्य हो वापस लौटनेके लिये उन्हें बाध्य होना पड़ा। १७६० ई०में अंग्रेजोंने पुनः वेल्लूर दुर्ग पर चढ़ाई की, इस बार भी उन्हें लौट जाना पड़ा। कुछ भी हो, कुछ दिन बाद अंग्रेजोंने वेल्लूर अधिकार कर लिया। १७८२ ई०में हैदरअलीने वेल्लूर दुर्ग अवरोध करनेका आयोजन किया। अन्तमें १७८० ई०में बहुसंख्यक सैन्यसामन्त ले कर वे उक्त दुर्गको घेर बैठे। लगभग दो वर्ष तक घेरा कायम रहा था, जिससे दुर्गस्थ अंग्रेजोंके नाकों दम आ चुकी थी। यहां तक, कि अंग्रेजी सेना आत्म समर्पण करनेको तैयार हो चुकी थी, परन्तु इतनेमें हैदरअलीकी मृत्यु हो गई और मन्द्राजसे अंग्रेजी फौज भी आ धमकी, इससे उस बार अंग्रेजोंकी रक्षा हो गई। १७९१ ई०में लार्ड कार्नवालिसने इस दुर्गको केन्द्र बना कर रङ्गपुरका युद्ध छेड़ा। १७९९ ई०में श्रीरङ्गपत्तनके पतनके बाद टीपू सुलतानके परिवारके लोग इसी वेल्लूर दुर्गमें आबद्ध थे। १८०६ ई०में यहां जो सिपाही विद्रोह हुआ था, उसमें टीपू सुलतानके परिवारका हाथ था, ऐसा बहुतोंका विश्वास है। इस विद्रोहमें समस्त अंग्रेज राजपुरुषों और यूरोपीयोंने विद्रोहियोंके हाथ प्राण विसर्जन किये थे। कर्नल जिलेसपीकी चेष्टा से शीघ्र ही विद्रोही लोग शान्त हुए और टीपूका परिवारवर्ग कलकत्तेमें स्थानान्तरित किये गये।

उक्त दुर्गके सिवा यहां एक बहुत ही उमदा विष्णु मन्दिर है। इस मन्दिरका कारुकार्य और शिल्पनैपुण्य देख कर विमुग्ध होना पड़ता है। मन्दिरके अलिन्दमें अश्वारोही मूर्त्तिमें जैसा भास्कर्य देखा जाता है, उसकी तुलना अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं आती। इस मन्दिरके सिवा यहांके बाद शाहकी मसजिद भी देखनेकी चीज है।

यह शहर गरम होने पर भी स्वास्थ्यकर है। यहां सुगन्धि पुष्पोंकी कृषि यथेष्ट होती है। यहांसे प्रति दिन फूलोंकी सैकड़ों टोकरियां रेलके जरिये मन्द्राजको रवाना होती हैं।

वेअक्ल (फा० वि०) मूर्ख, नासमझ।

वेअक्ली (फा० स्त्री०) मूर्खता नासमझी।

वेवक्त (फा० क्रि० वि०) अनुपयुक्त समय पर, कुसमयमें।

वेठिकाना (फा० वि०) १ बिना घर द्वारका, जिसके रहने आदिका कोई ठिकाना न हो। २ परदेशी।

वेपरवा (फा० वि०) १ जो मिलना आदिका निर्वाह न करे। २ कुशील, बेमुरव्वत। ३ लापरवा, छिपे हुए उपकारको न माननेवाला।

वेवर (हिं० पु०) एक प्रकारकी घास। इसकी रस्सी खाट बुननेके काममें आती है।

वेवरेवाजी (हिं० स्त्री०) चालाकी, चालबाजी।

वेवरेवार (हिं० वि०) तफसीलवार विवरण सहित।

वेवस्था (हिं० स्त्री०) व्यवस्था देखो।

बेगार ( हि० पु० ) बेगार देना।
बेवा ( फा० स्त्री० ) विधवा, रांड़।
बेवाई ( हि० स्त्री० ) बिवाई फटना।
बेश ( हि० पु० ) वेश भेषा।
बेशऊर ( फा० वि० ) नासमझ, फूहड़, मूर्ख।
बेशऊरी ( फा० स्त्री० ) मूर्खता, नासमझी।
बेशक ( फा० क्रि० वि० ) निःसंदेह, जरूर।
बेशकीमत ( फा० वि० ) बहुमूल्य, मूल्यवान।
बेशकीमती ( फा० वि० बेशकीमत देखो।
बेशरम ( फा० वि० ) निर्लज्ज, बेहया।
बेशरमी ( फा० स्त्री० ) निर्लज्जता, बेहयाई।
बेशी ( फा० स्त्री० ) १ अधिकता, ज्यादती। २ लाभ, मुनाफा। ३ साधारणसे अधिक कार्य करनेकी मजदूरी।
बेशुमार ( फा० वि० ) अगणित, असंख्य।
बेश्म ( हि० पु० ) गृह, घर।
बेसन ( हि० पु० ) चनेका आटा, रेहन।
बेसनी ( हि० वि० ) १ बेसनका बना हुआ। ( स्त्री० ) २ बेसनकी भरी हुई पूरी। ३ वह कचौरी जिसमें बेसन भरा हो।
बेसबब ( फा० क्रि० वि० ) अकारण, बिना किसी सबब या कारणके।
बेसबरा ( फा० वि० ) जो सन्तोष न रख सके, अधीर।
बेसबरी ( फा० स्त्री० ) अधैर्य, असन्तोष।
बेसमझ ( फा० वि० ) मूर्ख, नासमझ।
बेसमझी ( हि० स्त्री० ) मूर्खता, नासमझी।
बेसरा ( फा० वि० ) आश्रयहीन, जिसे ठहरनेका कोई स्थान न हो।
बेसरोसामान (फा० वि०) जिसके पास कुछ भी सामग्री न हो, दरिद्र।
बेसवा ( हि० स्त्री० ) वेश्या, रण्डी।
बेसवार ( हि० पु० ) वह सड़ाया हुआ मसाला जिससे शराब चुआई जाती है।
बेसाहना ( हि० क्रि० ) १ खरीदना, मोल लेना। २ जान बूझ कर अपने पीछे लगाना।
बेसाहा ( हि० पु० ) सामग्री, सौदा।
बेसिन —बराई देखो।
बेसिलसिले (हि० वि०) क्रमके विना रखने, बिना किसी क्रम आदिके।
बेसी ( फा० क्रि० वि० ) अधिक, ज्यादा।
बेसुध ( हि० वि० ) अचेत, बेहोश। २ बेखबर, बदहवास।
बेसुधी ( हि० स्त्री० ) अचेतनता बेखबरी।
बेसुर ( हि० वि० ) मन्द। २ आदिकी दृष्टिसे जिसका स्वर ठीक न हो, बेमेल स्वर वाला।
बेसुरा ( हि० वि० ) १ जो अपने ठिकाने या मौके पर न हो, बेमौका। २ जो नियमित स्वरमें न हो।
बेस्वाद ( हि० वि० ) १ स्वादरहित, जिसमें कोई अच्छा स्वाद न हो। २ जिसका स्वाद खराब हो, बदजायका।
बेहंगम ( हि० वि० ) १ जो देखनेमें भद्दा हो, बेढंगा। बेढब, विकट।
बेहंगमपन (हि० पु०) १ भद्दापन, बेढंगापन। २ विकटता, भयंकरता।
बेहँसना ( हि० क्रि० ) ठठा कर हँसना, जोरसे हसना।
बेहड़ ( हि० वि० ) बाहड़ देखो।
बेहतर ( फा० वि० ) अपेक्षाकृत अच्छा, किसीसे बढ़ कर।
बेहतर (फा० अव्य०) प्रार्थना या आदेशके उत्तरमें स्वीकृति सूचक शब्द।
बेहतरी ( फा० स्त्री० ) अच्छापन, भलाई।
बेहद ( फा० वि० ) १ जिसकी कोई सीमा न हो, असीम, अपार। २ बहुत अधिक।
बेहन ( हि० पु० ) १ अन्न आदिका बीज जो खेतमें बोया जाता है बीया। ( वि० ) २ पीला, जर्द।
बेहना ( हि० पु० ) १ जुलाहोंकी एक जाति जो प्रायः धुननेका काम करती है। २ रुई धुननेवाला, धुनिया।
बेहया ( फा० वि० ) जिसे लज्जा या हया आदि बिलकुल न हो, निर्लज्ज।
बेहयाई ( फा० स्त्री० ) बेशर्मी, निर्लज्जता।
बेहर ( हि० वि० ) १ स्थावर, अचर। २ पृथक, अलग। ( पु० ) ३ वापी, बावली।

बेहरना (हि० क्रि०) किसी चीजका फटना या तड़क जाना, दरार पड़ना।

बेहरा (हि० पु०) १ एक प्रकारकी घास जिसे चौपाए बहुत पसन्द करते हैं। २ मूंजकी बनी हुई गोल या चिपटी पिटारी। इसमें नाकमें पहनने की नथ रखी जाती है। (वि०) ३ पृथक्, जुदा।

बेहरी (हि० स्त्री०) १ किसी विशेष कार्यके लिये बहुतसे लोगोंसे चन्देके रूपमें मांग कर एकत्र किया हुआ धन। २ इस प्रकार चन्दा उगाहनेकी क्रिया। ३ वह किस्त जो असामी जिमींदारको देता है।

बेहला (हि० पु०) सारंगीके आकारका एक प्रकारका अङ्गरेजी बाजा।

बेहाल (फा० वि०) व्याकुल, बेचैन।

बेहाली (फा० स्त्री०) बेहाल होनेका भाव, बेचैनी।

बेहिसाब (फा० क्रि० वि०) बहुत अधिक, बहुत ज्यादा।

बेहुनर (हि० वि०) १ जिसे कोई हुनर न आता हो, मूर्ख। २ वह भालू या बन्दर जो तमाशा करना न जानता हो।

बेहुरमत (फा० वि०) जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, बेइज्जत।

बेहूदगी (फा० स्त्री०) असभ्यता, अशिष्टता।

बेहूदा (फा० वि०) १ जिसे तमीज न हो, जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो। २ जो शिष्टता या सभ्यता के विरुद्ध हो, अशिष्टतापूर्ण।

बेहूदापन (फा० पु०) बेहूदा होनेका भाव, बेहूदगी।

बेफिक्र (फा० वि०) चिन्तारहित, बेफिक्र।

बेहोश (फा० वि०) अचेत, बेसुध।

बेहोशी (फा० स्त्री०) मूर्च्छा, अचेतता।

बैंक (अ० पु०) वह स्थान या संस्था जहां लोग ब्याज पानेकी इच्छासे रुपया जमा करते हों और ऋण भी लेते हों, रुपयेके लेन देनकी कोठी।

बैंगन (हि० पु०) एक वार्षिक पौधा जिसके फलकी तरकारी बनाई जाती है। भंटा देखो। २ एक प्रकारका चावल जो कनारा और बम्बई प्रान्तमें होता है।

बैंगनी (हि० वि०) बैंगनके रंगका, बैंजनी।

बैंजनी (हि० वि०) जो ललाई लिये नीले रंगका हो, बैंगनी।

बैंड (अ० पु०) १ झुंड। २ बाजेवालोंका झुंड जिसमें सब लोग मिल कर एक साथ बाजा बजाते हैं।

बै (हि० स्त्री०) १ बैमर, कंघी। २ वय देखो।

बै (अ० स्त्री०) बिक्री, बेचना।

बैकुंठ (हि० पु०) बैकुण्ठ देखो।

बैखरी (हि० स्त्री०) वैखरी देखो।

बैखानस (हि० वि०) वैखानस देखो।

बैग (अ० पु०) १ थैला, झोला। २ टाटका एक प्रकारका थैला। इसमें यात्री अपना असबाब भर कर हाथमें लटका कर साथ ले जाते हैं।

बैगन (हि० पु०) बैगन देखो।

बैगना (हि० पु०) एक प्रकारका पकवान। यह बैंगन आदिके टुकड़ोंको बेसनमें लपेट कर और तेलमें तल कर बनाया जाता है।

बैगनी (हि० स्त्री०) बैंगना देखो।

बैजंती (हि० स्त्री०) १ फूलके एक पौधेका नाम। इसके काण्डके सिरे पर लाल या पीले फल लगते हैं। वैजयन्ती देखो। २ विष्णुकी माला।

बैज (अ० पु०) १ चिह्न। २ चपरास।

बैजई (हि० पु०) एक प्रकारका हलका नीला रंग। इस रंगकी रंगाई लखनऊमें होती है। यह रंग कौवेके अण्डेके रंगसे मिलता जुलता है, इस कारण इस रंगको लोग बैजई कहते हैं।

बैजनाथ (हि० पु०) वैद्यनाथ देखो।

बैजयती (स० स्त्री०) वैजयंती देखो।

बैजला (हि० पु०) १ उर्देका एक भेद। २ कबड्डीका खेल।

बैजवाप (स० पु०) बीजवापका अपत्य।

बैजवापीय (स० त्रि०) बैजवापि सम्बन्धीय।

बैजा (अ० पु०) १ अण्डा। २ एक प्रकारका फोड़ा। इसके भीतर पानी होता है।

बैजाबाई—महाराष्ट्र सरदार महाराज दौलतरावसिन्धिकी महिषी। ये महाराष्ट्र-मन्त्री श्रीजीराव घाटगकी कन्या थीं। १८वीं शताब्दीके शेषभागमें इनका जन्म हुआ था। हिन्दूराव इनके भाई थे।

बचपनसे ही बैजाकी प्रकृति दाम्भिकता पूर्ण थी। यह

पर बार जो हुक्म दे देता था उसकी तामील न करनेसे यह बहुत रुष्ट होता था। पिताके मरनेसे शान्ति [illegible] और [illegible] प्रवृत्तियोंसे परिचालित हो उसका चरित्र धीरे धीरे पुरुषोचित वृत्ति और विचारसे पूर्ण हो गया था। माताके ऐश्वर्य और सौन्दर्यने उनके हृदयमें राजशक्तिका प्रभुत्व [illegible] सम्पूर्णरूपसे [illegible] कर लिया था।

१८०७ ई०में माताकी मृत्यु होने पर इनके राज्य भार अपने हाथ [illegible]। [illegible] अपनी माताके [illegible] उन्होंने [illegible] सबका भावी उत्तराधिकारी [illegible] था। [illegible] नाबालिग होनेके कारण वे [illegible] राजकार्यको पर्यालोचना करता था। किन्तु नाबालिगके ऊपर [illegible] व्यवहार और अत्याचार करनेमें भी वे कभी बाज नहीं आता था। इस प्रकार उपर्युपरि माताके [illegible] सह न कर सके। उन्होंने [illegible] अत्याचारोंसे छुटकारा पानेके लिये [illegible] सरकारकी शरण ली। अन्त में सरकारने १८३३ ई०में [illegible] सिन्धुराजकी गद्दी पर बैठाया। इससे [illegible] प्रभुत्व बिलकुल जाता रहा। [illegible] आपसे राजप्रासादमें रहना अच्छा नहीं समझा, सो यह राजप्रासादका परित्याग कर आगरा आ रहने लगा। यहां कुछ दिन रह कर यह फरुखाबादको चला [illegible]। आखिर [illegible] आगरा आ [illegible] वहां उन्होंने अपना शेष जीवन [illegible] था।

पाद्म (सं० त्रि०) पाद्म सम्बन्धी।

पद्मिक (सं० त्रि०) १ [illegible]। २ हेतु। ३ [illegible]। ४ [illegible], हाथ उठा हुआ कोरा।

पद्माय (सं० पु०) [illegible] भाव।

पञ्चप (सं० पु०) [illegible]।

पेंटरी (अं० स्त्री०) १ [illegible]। इसमें [illegible] पदार्थोंके बीच [illegible] द्वारा बिजली पैदा करके [illegible] जाता है।

पैंठा (हिं० स्त्री०) [illegible] और [illegible], भरना।

पैठ (हिं० पु०) [illegible]।

पैठ (हिं० स्त्री०) १ [illegible] प्रवेश। २ [illegible]।

७ बैठनेका स्थान आदि। ४ [illegible], मेल। ५ एक प्रकारकी कसरत। इसमें बार बार [illegible] होना और बैठना पड़ता है। ६ [illegible]। ७ अधिवेशन, सभासदोंका [illegible]। ८ [illegible] ठाई। ९ बैठनेकी क्रिया। १० [illegible] धातु [illegible] जिसके सिरे पर बत्ती जलती या मोमबत्ती खोसनेका [illegible] होता है।

पैठना (हिं० पु०) [illegible] आदि जहां [illegible] [illegible] पाल बैठ कर पाल [illegible]।

पैठनी (हिं० [illegible]) [illegible] बैठे और उठनेका [illegible], पैठक। २ [illegible]।

पैठार (हिं० स्त्री०) १ [illegible]। २ प्रवेश, भाव। ३ बैठनेका [illegible]। ४ पैठक, [illegible]।

पैठना (हिं० क्रि०) १ [illegible] इस प्रकार स्थित होना [illegible] शरीरका आधा [illegible] उस [illegible], आसन जमाना। २ तौलमें ठहरना [illegible]। ३ [illegible], बिगड़ना। ४ [illegible]। ५ [illegible] होना, [illegible] ठीक रूप [illegible]। ७ [illegible] होने पर उसमें पुरी [illegible]। ८ [illegible] पर [illegible] बिगड़ जाना [illegible] होना, [illegible]। [illegible] पदाधिक गोता हो [illegible] पर पहुंचना। [illegible] जीविका [illegible] पद पर स्थित होना, [illegible]। [illegible] किसी [illegible] पड़ना। [illegible], आदि लाना। [illegible] खुला बहुत [illegible] जाना।

पैठाना (हिं० [illegible]) [illegible] स्थान जहां हुक्कड़ [illegible] मिलते [illegible]।

पैठार (हिं० स्त्री०) पैठना। [illegible]।

बैठवाना ( हिं० क्रि० ) १ बैठानेका काम दूसरेसे कराना। २ पेड़ पौधे लगवाना, रोपाना।

बैठा ( हिं० पु० ) चमचा या बड़ी करछी।

बैठाना ( हिं० क्रि० ) १ स्थित करना, आसीन करना। २ नियत स्थान पर ठीक ठीक ठहराना। ३ प्रतिष्ठित करना, नियत करना। ४ प्रतिष्ठित करना, पद पर स्थापित करना। ५ चलता न रहने देना, बिगाड़ना। ६ नीचे की ओर ले जाना, धसाना। ७ अभ्यस्त करना, मानना। ८ पानी आदिमें घुली वस्तुको तलमें ले जा कर जमाना। ९ दबा कर बराबर करना, पचकाना या धसाना। १० क्षिप्त वस्तुको निर्दिष्ट स्थान पर डालना, लक्ष्य पर जमाना। ११ घोड़े आदि पर सवार कराना। १२ पौधेको लगाना, जमाना। १३ काम धंधेके योग्य न रखना, बेकाम कर देना। १४ किसी स्त्रीको पत्नीके रूपमें रख लेना।

बैठालना ( हिं० क्रि० ) बैठाना देखो।

बैढ़ना ( हिं० क्रि० ) बंद करना, बेढ़ना।

बैडाल ( हिं० वि० ) बिल्लीसम्बन्धी।

बैडालव्रत ( हिं० पु० ) बिल्लीके समान अपने घातमें रहना और ऊपरसे बहुत सीधा सादा बना रहना। वैडालव्रत देखो।

बैडालव्रती ( हिं० वि० ) बिल्लीके समान ऊपरसे सीधा सादा, पर समय पर घात करनेवाला, कपटी।

बैण ( स० पु० ) बांसका काम करनेवाला।

बैत ( अ० स्त्री० ) पद्य, श्लोक।

बैतरनी ( हिं० स्त्री० ) १ वैतरणी देखो। २ आसाममें होने वाला एक प्रकारका धान। इसका चावल बना रहता है।

बैताल ( स० पु० ) वेताल देखो।

बैतालिक ( हिं० वि० ) वैतालिक देखो।

बैद ( हिं० पु० ) चिकित्साशास्त्रका जाननेवाला पुरुष। वैद्य देखो।

बैदई ( हिं० स्त्री० ) वैद्यकी विद्या या व्यवसाय।

बैदल ( स० क्ली० ) १ भिक्षुकका मृण्मयादि पात्र। (पु०) विदलो दालि तस्मात् जात विदल अण्। २ पिष्टकभेद, दालकी पीठी।

बैदूर्य ( स० पु० ) वैदूर्य देखो।

बैदेही ( स० स्त्री० ) वैदेही देखो।

बैननेय ( स० पु० ) वैनतेय देखो।

बैना (हिं० पु०) वह मिठाई आदि जो विवाहादि उत्सवोंके उपलक्षमें इष्टमित्रोंके यहां भेजी जाती है।

बैन्दवाय ( स० पु० ) बैन्दवि सम्बन्धीय।

बैन्दवि ( स० पु० ) बिन्दुभव।

बैपारी ( हिं० पु० ) व्यापार करनेवाला, रोजगारी।

बैयन (हिं० पु०) काष्ठयन्त्रविशेष, लकड़ीका एक औजार। यह ताना बैठानेके काममें आता है।

बैरंग ( अ० वि० ) वह चिट्ठी या पारसल जिसका महसूल भेजनेवालेकी ओरसे न दिया गया हो, पानेवालेसे वसूल किया जाय।

बैर ( हिं० पु० ) १ शत्रुता, अदावत। २ दुर्भाव, द्रोह। ३ हलमें लगा हुआ चोंगा। यह चिलमके आकारका होता है और इसमें भरा हुआ बीज हल चलनेमें बराबर कूंड़में पड़ता जाता है। ४ बेरका फल और पेड़।

बैरख ( हिं० पु० ) झंडा, पताका।

बैरा (हिं० पु०) १ हलमें लगा हुआ एक प्रकारका चोंगा। यह चिलमके आकारका होता है और बोते समय बीज डाला जाता है। २ सेवक, चाकर। ३ ईंटके टुकड़े, रोड़े आदि जो मेहराब बनाते समय उसमें चुनी हुई ईंटोंको जमी रखनेके लिये खाली स्थानमें भर देते हैं।

बैरागी ( हिं० स्त्री० ) भुजा पर पहननेका एक गहना। इसमें लम्बोतरे गोल बड़े बड़े दाने होते हैं और धागेमें गूथ कर पहने जाते हैं।

बैराग ( स० पु० ) वैराग्य देखो।

बैरागी ( हिं० पु० ) वैष्णव मतके साधुओंका एक भेद।

बैराग्य ( हिं० पु० ) वैराग्य।

बैराना ( हिं० क्रि० ) वायुके प्रकोपसे बिगड़ना।

बैरी (हिं० वि०) १ बैर रखनेवाला, दुश्मन।

बैल (हिं० पु० १ एक चौपाया। इसकी मादाको गाय कहते हैं। वृष देखो। २ मूर्ख मनुष्य, जड़ बुद्धिका आदमी।

बैलर ( अ० पु० ) पीपेके आकारका लोहेका बड़ा देग जो भापसे चलनेवाली कलोंमें होता है। इसमें पानी भर कर खौलाते और भाप उठाते हैं ... के पुर्जे चलते हैं।

बैलून (अ० पु०) १ गुब्बारा। २ बड़ा गुब्बारा जिसमें सवार बैठे लोग ऊपर हवामें उड़ा करते थे। इस गुब्बारे द्वारा आकाशमार्गमें उड़ कर अनायासही वहां के विभिन्न वायुस्तरों और गगनस्थ नक्षत्रोंका परिदर्शन तथा भूमण्डलस्थ बहुदूरवर्ती देशोंको देखा जा सकता है।

यह साधारणतः कागज, मोटे रेशमी वस्त्र या गटापार्चा नामक रबर संयुक्त वस्त्र द्वारा बनाया जाता है। इसकी आकृति पलाण्डु या नाशपाती फल विशेषके सदृश है। इस प्रकारकी एक बड़ी थैलीको रस्सीके जालमें डाल कर उसमें भाप भरी जाती है। भापसे भरपूर होने पर थैली फूल जाती है और भापके स्वाभाविक नियमानुसार वह ऊपरको उड़ती है। उस थैली पर चढ़े हुए जालकी तमाम रस्सियोंको इकट्ठी बांध कर उसमें नाव बांध दी जाती है, उस नावमें कभी एक और कभी कई आदमी बैठ कर वायुमण्डलमें उड़ते हैं। जिस वैज्ञानिक कारण से बैलून ऊपरको चढ़ता है, उसका विवरण नीचे दिया जाता है।

उष्ण वायु साधारण वायुकी अपेक्षा हलकी होती है, इस कारण बैलून उष्ण वायुसे परिपूर्ण होने पर वह ऊपर को चढ़ता है। दिवाली पर लड़के लोग कागजके बैलून बनाते और उसमें धूआं भर कर आकाशमें उड़ाते हैं। बड़े बड़े व्योमयान भी इसी प्रणालीसे उष्ण वायु द्वारा ऊपर चढ़ाये जाते हैं। अन्यान्य वाष्प और आर्द्र भौतिक आदि जो वायवीय पदार्थ वायुराशिसे हलके हैं, उनके द्वारा भी बैलून उड़ाया जा सकता है। उद्जन वाष्प द्वारा छोटे छोटे रबरके बैलून और बड़े बड़े बैलून भी उड़ाये जा सकते हैं, किन्तु उसमें विशेष व्यय होता है। अब तो सस्ती किफायतोंके कारण बैलूनके लिए कोयलेकी गैस (कोयलोंसे उत्पन्न गैस जिससे बड़े बड़े शहरोंमें रोशनी जला करता है) काममें लाया जाता है। कोयलेकी गैस वायुराशिसे हलकी होती है, इसलिए किसी भी बैलूनमें उसे भर दो, बैलून आपसे आप ऊपरको चढ़ता रहेगा। यदि उसके नीचे हलकी नाव लटका दी जाय तो लोग उसमें बैठ कर अनायास ही आसमानकी सैर कर सकते हैं। निम्नस्थ वायुसे उपरिस्थ वायु क्रमशः हलकी, इसी गई है इसलिए यह बैलून तब तक ऊपरको चढ़ता ही रहेगा, जब तक कि उसमें भरी हुई वायुके समान हलकी वायुराशि उसे न मिल जाय। जब समान घनत्वकी वायु उसे मिल जायगी तब उसकी ऊर्ध्वगति रुक जायगी। फिर ऊपरकी हवा जिस ओर बहेगी, बैलून भी उसी तरफ उड़ने लगेगा। बैलूनकी हवा थोड़ी निकाल देनेसे वह नीचेको उतरेगा और उसके नीचे बंधी हुई नावमेंसे कोई भारी चीज नीचे फेंक देनेसे कुछ ऊपर चढ़ सकता है। इस प्रकार उसके आरोहीगण इच्छानुसार थोड़ा बहुत चढ़ उतर तो सकते हैं, परन्तु वे इच्छानुसार एक देशसे दूसरे देशको नहीं जा सकते। वायुका प्रवाह उन्हें जिस ओर चाहे ले जा सकता है, उसमें आरोहीका कोई वश नहीं चलता।

पानीमें जिस प्रकार कोई चीज समायतनासमायतन स्थानान्तरित जलके भारके समान बल पर बहती रहती है, उसी प्रकार वायुमें भी कोई भी वस्तु अपने समायतन स्थानान्तरित वायुके भारके समान बल पर उड़ती रहती है। जिस प्रकार, जिन चीजोंका आपेक्षिक गुरुत्व जलके आपेक्षिक गुरुत्वसे अधिक है, उन चीजोंको पानीमें छोड़ देनेसे नीचे चली जाती है, जिनका आपेक्षिक गुरुत्व जलके आपेक्षिक गुरुत्वसे कम है, वे चीजें पानीमें बहने लगती हैं और जिनका आपेक्षिक गुरुत्व जलके आपेक्षिक गुरुत्वके समान है, उन चीजोंको पानीमें जहां रखा जायगा, वहीं पर वे स्थिर रहेंगी, उसी प्रकार जिन वस्तुओंका आपेक्षिक गुरुत्व वायुके आपेक्षिक गुरुत्वसे अधिक है, वे वस्तुएं वायुराशिसे नीचे गिर जाती हैं, जिनका आपेक्षिक गुरुत्व वायुके आपेक्षिक गुरुत्वसे कम है, वे वायुराशिसे ऊपर उड़ने लगती हैं और जिनका आपेक्षिक गुरुत्व जिस स्थानकी वायुके आपेक्षिक गुरुत्वके समान है वे वस्तुएं उसी स्थानकी वायुमें स्थिर रहेंगी। जैसे समुद्रजलका गुरुत्व ज्यादा होनेसे जहाज आदि एक स्थानसे दूसरे स्थानमें बह कर जाते हैं, उसी प्रकार वायुराशिके समुद्रजलका गुरुत्वके [illegible] जहाजको एक स्थानसे दूसरे स्थानमें ले जाता है।

फ्रान्सवाले ही इस [illegible] आविष्कारक हुए थे। प्राचीन आर्यगण पुष्पक [illegible] यानोंमें चढ़ कर आकाश

मार्गसे यथेच्छा गमन करते थे। पुराणादिमें इस विषय के काफी प्रमाण पाये जाते हैं। परन्तु जिस क्रियाके प्रभावसे वे व्योमयान रूप रथको इच्छानुसार चलाते थे, वह विद्या अब लुप्त हो गई है। पश्चिम युरोपखण्ड वासी शिल्पविज्ञान विशारद विद्वानोंने इस व्योमयानको इच्छानुसार इधर उधर चलानेके लिए बहुत प्रयत्न किये, परन्तु आज तक वे सफल मनोरथ न हो सके।

१८०४ ई०में बिओ और गे लूसक नामक दो विद्वान् ऊपरकी वायुका शैत्य और उष्णता आदि गुणागुण तथा अन्यान्य विषयोंकी परीक्षा करनेके लिए नाना प्रकारके यन्त्र, पक्षी, पतङ्ग आदि प्राणियोंको साथ ले कर, १३वीं अगस्तको सुबह १० बजे फरासीसी राज्यको राजधानी पैरिस नगरीसे व्योमयानमें चढ़े थे। वे मेघराज्यको भेद कर करीब ८७०० हाथ ऊपर पहुंचे और विविध विषयोंकी परीक्षा करते हुए ३॥ घण्टे तक आकाश मार्गमें भ्रमण कर पैरिससे करीब २७ माइलकी दूरी पर मेरिसिल ग्राममें उतरे। ऊपरकी वायु पृथिवी की निकटवर्ती वायुकी अपेक्षा शीतल है, यह बात पूर्व प्रमाणानुसार निश्चित होने पर भी अब प्रत्यक्ष अनुभूत हुई।

इसके बाद, अन्यान्य विद्वानोंके अनुरोध करने पर गे लूसाक उसी वर्ष १५ सितम्बरको एक बार अकेले ही ऊपर चढ़े थे। उस बार वे १७३६० हाथ अर्थात् लगभग दो कोस ऊंचे पहुंचे थे और वहांकी वायुके सम्बन्धमें उन्होंने शैत्य, उष्णत्व, लघुत्व, गुरुत्व आदि अनेक विषयोंकी परीक्षा की थी। उनका कहना है, कि वहांकी वायु इतनी शीतल है, कि उससे हाथ पैर अवश हो जाते हैं और साथ ही इतनी हल्की है, कि श्वास लेनेमें भी कष्ट मालूम होता है। यहां तक कि उस परिशुष्क वायुके सेवनसे उनका गला नीरस और खाद्यद्रव्य गलेसे उतारनेमें अनुपयोगी हो गया था। वे १४३०७ और १४१२७ हाथ ऊंचेसे दो बोतल वायु भर लाये थे। उनकी परीक्षा करने पर मालूम हुआ, कि पृथिवीकी निकटवर्ती वायुमें जो जो पदार्थ जिस जिस परिमाणसे मिश्रित है, उतने ऊपरकी वायुमें भी वे पदार्थ उसी परिमाणसे मिले हुए हैं।

उस समय ग्रीन नामक एक और व्यक्ति भी बैलून पर चढ़ कर ऊपर गये थे। उन्होंने १८३६ ई० तक २२६ बार व्योमयान द्वारा आकाशमार्गमें परिभ्रमण किया था। अन्तिम वर्ष नवम्बर मासमें जब वे बैलून पर चढ़े थे, उस समय उनके साथ हालण्ड और इककमेसन् साहब भी थे। ज्यादा ऊंचाई पर पहुंचनेकी इच्छासे वे पक्ष पक्षके लिए खाने पीने और अन्य व्यवहार्य वस्तुएं साथ ले कर ७ नवम्बरको दिनके १०॥ बजे लण्डन नगरमें बैलून पर सवार हुए। पूर्व-दक्षिणकी तरफ गमन करते हुए उन्होंने अनेक ग्राम और नगरोंकी शोभा देखी। ४ घण्टे ४८ मिनटके बाद वे इङ्गलैण्ड भूमिको छोड़ कर समुद्रके ऊपर पहुंचे। सायंकाल बीत जाने पर समुद्र पार कर वे फरासीसी राज्यमें आये। उस अन्धकारमय रात्रिमें स्वर्गलोक निवासियोंकी तरह कितने राज्य, राजधानी, नगर नदी, ग्रामादिका निरीक्षण करते हुए शून्य मार्गसे समस्त रात्रि भ्रमण करते रहे। रात्रि समाप्त होने पर उन्होंने एक बार कुछ ऊपर जा कर सूर्योदय और उस सम्बन्धी आश्चर्यजनक शोभाका निरीक्षण किया और फिर नीचे उतर कर वे अन्धकारमें आवृत हो गये। तात्पर्य यह, कि उस दिन उन्होंने सूर्यको तीन बार उदित और दो बार अस्त होते हुए देखा था। इस यात्रामें वे लगभग १२० कोस शून्यमार्गमें भ्रमण करनेके बाद, दूसरे दिन सुबह जर्मनीके अन्तर्गत नासौ डचीमें विलवर्ग नामक स्थानमें उतरे थे।

१७८३ ई०में मोण्ट-गलफियरके युद्धके लिए पहले पहल बैलून पर चढ़नेकी व्यवस्था की गई थी। १७८६ ई०में फरासीसी राज्यमें राज्यविप्लव सम्बन्धी जो घोर युद्ध हुआ था, उसमें साधारणतन्त्री दलने व्योमयानमें चढ़ कर ऊपरसे विपक्षियोंकी गति विधिका पर्यवेक्षण किया था। इस नये विषयके कारण १७६४ ई०में फ्लिउरस नामक स्थानमें अष्ट्रियाकी सेनाके साथ फरासीसी सेनाध्यक्ष जोर्डन साहबका युद्ध हुआ था। उसमें कनल कुतेल साहब एक सामरिक कर्मचारीको साथ ले कर व्योमयान द्वारा ऊपर चढ़े थे, और इशारेसे जार्डन साहबको सब बातें बतलाते जाते थे, जिसके अनुसार चल कर जोर्डन साहबने युद्धमें विजय पाई था। उक्त सामरिक कर्मचारीके साथ कर्नल कुतेल पर

पर स्थितिमें भी श्री बार्ड ८९६ हाथ ऊपर चढ़े थे। [illegible] उन्होंने बैलून पर तोपसे नए कौशल प्रदर्शन किया था। इसके बाद पुनः [illegible] साहब १९११ ई०में मार्नेके युद्धमें भी इन असमसाहसिक कार्योंमें नियुक्त हुए थे। उसके बाद [illegible] बार, प्राङ्कफोर्ट, [illegible] और लिजके अवरोधमें भी सामरिक विभागके आदेशसे बैलून द्वारा विपक्षकी गतिविधिके निरीक्षणका कार्य चला था। १८७५ ई०में आन्तोगार्प अवरोधके समय तथा १८०१ ई०में सोल्फेरिनो रणक्षेत्र में बैलूनमें चढ़ कर उसकी निगरानीकी चेष्टा की गई थी। १८६१ ई०में अमेरिकाके अन्तर्विप्लवके युद्धमें (Civil War) बैलूनकी सहायतासे रिचमण्ड और अन्यान्य स्थानोंमें अनेक गोपनीय संवाद प्राप्त हुए थे।

१८७० ई०में फरासीसियोंके साथ प्रुसियोंका जो तुमुल युद्ध हुआ था उसमें बहुतायतसे व्योमयानोंका व्यवहार हुआ था। शत्रुपक्षीय सेनादलोंकी अवस्था और उद्योगका पर्यवेक्षण, अवरुद्ध नगरोंमें संवाद प्रेरण और इतस्ततः गमनागमन तथा विपक्षीय बैलून यात्रियों पर आक्रमण करनेके लिये अनेक बार व्योमयान व्यवहृत हुए थे। यहाँ तक कि, उस समय बैलूनोंमें परस्पर युद्ध भी हुआ था।

इस प्रकार विभिन्न समयोंमें युद्धके समय बैलूनका व्यवहार होने पर भी, वास्तव १८८२-८४ ई०में यह सामरिक विभागका एक आवश्यकीय उपकरण समझा गया। १८८४-८५ ई०में फरासीसियोंने टोंकिन युद्धमें तथा ब्रिटिश गवर्नमेण्टने बेचुआनालैण्डके युद्धमें बैलूनकी विशेष उपयोगिताका अनुभव किया था। १८९९-१९०२ ई०में दक्षिण अफ्रिकाके बूअर युद्धमें भी बैलून व्यवहृत हुआ था।

पोता आदिकी तरह बैलूनका भी इच्छानुसार चलानेकी चेष्टा होने लगी और फलस्वरूप १८६६ ई०के जुलाई मासमें उत्तर अमेरिकाके [illegible] नामक [illegible] उस विमानकी सुचारुरूपसे परीक्षा हुई। आदर्श स्वरूप एक वाष्पीय विमान बनाया गया। यह विमान वाष्पीय पोतादिकी तरह [illegible] और [illegible] द्वारा विभिन्न दिशाओंमें परिचालित होता था। वैज्ञानिक आलोचनासे बैलूनके स्थानमें अब aeronaut और aerop lne नामक यन्त्रमें रूपान्तरित हुआ है।

'व्योमयान' व 'हवाई जहाज' शब्द देखो।

अनुमान लगभग ५० वर्ष पहिले [illegible] और [illegible] नामक दो अङ्गरेज व्योमयान पर चढ़ कर आकाशमें उड़े थे। परन्तु यूरोपमें एक व्यक्तिने इस विषयमें ऐसी पटुता दिखलाई कि जिसे देख कर लोग दंग हो गये थे। इसके बाद स्पेन्सर नामक एक अङ्गरेजने बैलूनमें चढ़ कर भ्रमण करनेके बाद "पाराशूट" नामक छतरीकी सहायतासे जमीन पर उतरनेका कौशल दिखा कर लोगोंको और भी चमत्कृत कर दिया। उनके साथ वैज्ञानिक तत्त्वानुसन्धानके अभिप्रायसे Mr J Choudhry आदि कई भारतीय विद्यार्थी भी बैलून पर चढ़े थे। प्रसिद्ध व्यायाम शिक्षक रामचन्द्र चट्टोपाध्याय अपनी शिक्षासे "पाराशूट" की सहायतासे कलकत्तेमें उतरे थे।

वैल्व (सं० त्रि०) बिल्वसम्बन्धी, बेलका।

वैल्वक (सं० त्रि०) बिल्व [illegible] युक्त। बिल्व काय।

वैल्वकि (सं० पुं०) बिल्वकका अपत्य

वैल्वज (सं० त्रि०) [illegible]।

वैल्वजक (सं० त्रि०) बल्वजोंके द्वारा अधिवासित।

वैल्वयन (सं० त्रि०) [illegible] जाति।

वैल्ववत (सं० त्रि०) [illegible] द्वारा अधिवासित।

वैल्वायन – पाणिनिके एक [illegible]।

वैल्वायन (सं० पुं०) बिल्वका गोत्रापत्य।

[illegible] (सं० पुं०) [illegible]।

वैस (हिं० स्त्री०) १ आयु, उम्र। २ यौवन, जवानी। ३ क्षत्रियोंकी एक [illegible] एक प्रसिद्ध शाखा। इस शाखाका [illegible] [illegible] था। [illegible] विक्रम संवत् ६६७ के लगभग इस शाखाके प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धनके पूर्वज [illegible] और [illegible]।

[illegible]

वैसर (हिं० स्त्री०) जुलाहोंका एक यन्त्र। इसमें [illegible] कपड़ा बुनते समय [illegible] रहता है।

वैसवारा (हिं० पुं०) अवधका पश्चिमी प्रान्त।

बैसवारा शब्द देखो।

वैसाख ( हि ० पु० ) वैशाख देखो।

वैसाखी ( हि ० पु० ) एक प्रकारकी लाठी। इसके सिरेको कंधेके नीचे बगलमें रख कर लंगड़े लोग टेकते हुए चलते हैं। इसके सिरे पर जो अर्द्धचन्द्राकार आड़ी लकड़ी लगी होती है, वही बगलमें रहती है।

वैहीनरि ( स ० पु० ) वहीनरका अपत्य।

बोंक ( हि ० पु० ) लोहेका एक तिकोना कांटा। यह कावाड़के पल्लेमें नीचेकी चूलकी जगह लगाया जाता है।

बोंगना ( हि ० पु० ) पीतलका एक बरतन। इसकी बाढ़ ऊंची और सीधी ऊपरको उठी हुई होती है।

बोआई ( हि ० स्त्री० ) १ बोनेका काम। २ बोनेकी मजदूरी।

बोक ( हि ० पु० ) बकरा।

बोकड़ी ( स ० स्त्री० ) १ चल्लाकिका। २ धान्यविशेष।

बोकरा ( हि ० पु० ) बकरा देखो।

बोकरी ( हि ० स्त्री० ) बकरी देखो।

बोकला ( हि ० पु० ) बकला देखो।

बोकाण ( हि ० पु० ) पश्चिम दिशाका एक पर्वत।

बोखार ( हि ० पु० ) बुखार देखो।

बोगुमा ( हि० पु० ) घोड़ोंकी एक बीमारी। इससे उनके पेटमें ऐसी पीड़ा होती है, कि वे बेचैन हो जाते हैं।

बोज ( हि ० पु० ) घोड़ोंका एक भेद।

बोजा (फा० स्त्री०) चावल प्रस्तुत मद्य, चावलको शराब।

बोझ ( हि ० पु० ) १ ऐसा पिण्ड जिसे गुरुत्वके कारण उठानेमें कठिनता हो, भार। २ कोई ऐसा कठिन काम जिसके पूरे होनेकी चिन्ता बराबर बनी रहे, मुश्किल काम। ३ कठिन लगनेवाली बात पूरी करनेकी चिंता, खटका या असमञ्जस। ४ गुरुत्व, भारीपन। ५ उतना ढेर जितना बैल, घोड़े, गाड़ी आदि पर लद सके। ६ किसी कार्यको करनेमें होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय। ७ घास, लकड़ी आदिका उतना ढेर जितना एक बैल उठा कर ले सके। ८ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके सम्बन्धमें कोई ऐसी बात करनी हो जो कठिन जान पड़े।

बोझना ( हि० क्रि० ) किसी नाव या गाड़ी पर माल रखना।

बोझल ( हि ० वि० ) भारी, वजनदार।



बोझा ( हि ० पु० ) १ बोझ देखो। २ एक प्रकारकी सङ्कीर्ण कोठरी जिसका आकार सन्दूक सा होता है। इस प्रकार की कोठरीमें रावके बोरे इसलिये नीचे ऊपर रखे जाते हैं जिसमें शीरा या जूसी निकल जाय।

बोझाई ( हि ० स्त्री० ) १ बोझने या लादनेका काम। २ बोझनेकी मजदूरी।

बोट ( अ ० स्त्री० ) १ नाव, नौका। २ अग्निबोट, स्टीमर।

बोटा ( हि० पु० ) १ लकड़ीका काटा हुआ मोटा टुकड़ा जो लम्बाईमें हाथ दो हाथके लगभग हो बड़ा न हो। २ काटा हुआ टुकड़ा।

बोटी ( हि० स्त्री० ) मांसका छोटा टुकड़ा।

बोड़ ( हि ० स्त्री० ) एक प्रकारका आभूषण जो सिर पर पहना जाता है।

बोड़रो ( हि ० स्त्री० ) नाभी, तोंदी।

बोडल ( हि ० स्त्री० ) एक पक्षी जिसे जेवर भी कहते हैं। इसकी चोंच पर एक सींग सा होता है। यह एक प्रकार का पहाड़ी महोख है।

बोड़ा ( हि ० पु० ) १ अजगर, बड़ा सांप। २ एक प्रकार की पतली लम्बी फली जिसकी तरकारी होती है, लोबिया।

बोड़ी ( हि ० स्त्री० ) १ दमड़ी। २ अति अल्प धन।

बोत ( हि ० पु० ) घोड़ोंकी जाति।

बोतक ( हि० पु० ) पानकी पहले वर्षकी खेती।

बोतल ( अ ० स्त्री० ) कांचका एक लम्बी गरदनका गहरा बरतन जिसमें द्रव पदार्थ रखा जाता है।

बोतलिया ( हि० वि० ) बोतलके रंगका, कासनी लिये हरा।

बोता ( हि ० पु० ) ऊंटका बच्चा जिस पर अभी सवारी न होती है।

बोदकी ( हि ० स्त्री ) कुसुम या बरेंकी एक जाति। इसमें कांटे नहीं होते। इसके फूल रंगाईके काममें आते हैं।

बोदर ( हि ० स्त्री० ) १ ढलुवीली उड़ी। ( पु० ) २ ताल या जलाशयके किनारे सिंचाईका पानी चढ़ानेके लिये बना हुआ स्थान जिसके कुछ नीचे दो आदमी इधर उधर खड़े हो कर टोकरे आदिसे उलीच कर पानी ऊपर गिराते रहते हैं।

बोदा (हिं० वि०) १ जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मूर्ख। २ जो तत्पर या प्रस्तुत न हो। ३ सुस्त, मट्ठर। ४ जो दृढ़ या मज़बूत न हो, कमज़ोर।

बोदापन (हिं० पु०) १ बुद्धिकी स्थूलता, मन्दता, तेज न होना। २ सुस्ती, मट्ठरपन।

बोध (सं० पु०) १ ज्ञान या जानकारी, समझ, ज्ञान। २ संतोष, धीरज।

बोधक (सं० पु०) १ ज्ञापक, ज्ञान करानेवाला। २ शृङ्गार रसमें हावोंमेंसे एक हाव। इसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरेको अपना मनोगत भाव जताता है। (वि०) ३ बोधकारक, ज्ञान करानेवाला।

बोधकर (सं० पु०) करोतीति कर कृ-ट, बोधस्य प्रबोधस्य कर। निद्राभङ्ग बोधकारक, जो किसीको सवेरे जगाया करे। इसका पर्याय वैतालिक है।

बोधगम्य (सं० वि०) समझमें आने योग्य।

बोधगया (बुद्धगया) गया जिलेके अन्तर्गत सुप्रसिद्ध और सुमाचार हिन्दू तीर्थ गयाधामसे ७ मील पर एक ग्राम। बहुत दिनोंसे यह स्थान बौद्धोंका एक प्रधानतम तीर्थक्षेत्र गिना जाता है। इसी कारण पहले ही यहाँका माहात्म्य चारों ओर फैल गया था। बौद्धसम्राट अशोकके बनाये हुए स्तूप और महाबोधि मन्दिरका ध्वंसावशेषसमूह इस का प्रधान साक्ष्य है। यहां समस्त बौद्धोंके पूज्य शाक्यसिंहने बुद्धदेव—जो हिन्दूशास्त्रमें भी अवतार माने गए हैं। ऐतिहासिक बोधि समाधिस्थ हो कर सिद्धिलाभ किया था। वह बोधिवृक्ष आज भी मौजूद है।

इस मुहानेके ग्रामके उत्तरमें रसिलपुर, पश्चिममें मस्तिपुर, कोल्हाता, मुचुरा और नूनी नामक ग्राम दक्षिणमें तारडीह तथा पूर्वमें लीलाजान नदी है। यह अक्षा० २४ ४२ ४५″ उ० और देशा० ८५ ३ ५″ पू० के मध्य गया नगरसे फल्गुके आनेके रास्तेमें बड़ा तोरण और घोसगढ़ नदीके तीरसे लगभग ३॥ कोसकी दूरी पर बसा है। बुद्धगयाके पार्श्वदेशमें तारडीह ग्राम नामक ग्राम है। सानवाद ग्राम तारडीहमें उक्त दोनों ग्राम लगभग नामसे लिखे गये हैं। यहां तथा इसके पार्श्ववर्ती कुछ गाँव प्रान्तोंमें जो छोटे बड़े बहुतसे स्तूपोंका अस्तित्व देखनेमें आता है।

अधिकांश स्तूप बोधगयाके पूर्व भाग अवस्थित है। ग्रामके मध्यस्थित सुवृहत स्तूप लगभग १५०० x १५०० फुट जमीन घेरे हुए है। बोधगया और तारडीहग्रामके बीचसे जो रास्ता निकला है, वही इस स्तूपको दो भागोंमें बांटता है। इसका अधिकांश उत्तरभागमें [illegible] हिस्सा है। इस अधित्यकाके ऊपर ही भारतका अपूर्व कीर्तिस्वरूप बोधिमण्डप महाबोधि मन्दिर स्थापित है। उसका परिमाण १५२० x १००० फुट है। १८६१ ईस्वीमें जनरल कनिंघम साहब पहले यहां प्रवेश देखने आये थे। उस समय उन्होंने इस भागका 'राजस्थान' (राजागढ़) नामसे उल्लेख किया है और अभी तक यह स्थान 'गढ़' नामसे प्रसिद्ध है।

* इसका अक्षर-स्तम्भ [illegible] विवरण देख।

१ कनिङ्गहम—[illegible], पर्यायका—बुद्धदेवकी गया-अम, काणदर्शी—[illegible] निर्देश किया था। [illegible]

[illegible] है। [illegible] हिन्दूधर्मका [illegible] है। [illegible]

* इसका अक्षर-[illegible] है। [illegible] दक्षिण [illegible] प्रकाशित होता है।

[illegible]

Arch. Sur. Rep. vol. I, p. 13

[illegible]

बोधगयामें प्रसिद्ध महाबोधि मन्दिरके दक्षिण लीलाजन नदीके वाम किनारे पर जयस्थित उद्यानके मध्य एक सुवृहत् मठ है। यह अट्टालिका चौमंजिली और चारों ओर ईंटोंकी दीवारसे घिरी हुई है। इसके दक्षिणमें 'बारह द्वारी' नामक अट्टालिका और उत्तरमें बहुत से गृहादि देखनेमें आते हैं। उक्त मठके पश्चिम प्राकार के बहिर्भागस्थित स्तूपके ऊपर चार मन्दिरयुक्त एक अट्टालिका शोभित है। इन चार मन्दिरोंमें एकमें जगन्नाथ, दूसरेमें गङ्गाबाई प्रतिष्ठित राममूर्त्ति और एक कोने में शिवमूर्त्ति स्थापित हैं। उक्त मठके दक्षिण पश्चिम कोणस्थित प्राचीरके बाहर साधुओंका समाधिस्थान है और प्रत्येक समाधिके ऊपर स्तूप या लिङ्गमूर्त्ति स्थापित हैं। केवल महन्तोंकी समाधिके ऊपर सुदृश्य क्षुद्राकार मन्दिरादि बने हुए हैं।

मठाधिकारी महन्तगण ही उक्त दोनों ग्रामके अधिकारी हैं। गवर्मेण्टको राजस्व दे देनेके बाद उसकी बचत और उक्त बोधिवृक्षके नीचे हिन्दू या बौद्ध तीर्थयात्रियोंका दिया हुआ उपहार मिला कर इसकी वार्षिक आय लगभग ८० हजार रुपयेकी होगी। इस आमदनी से उन्हें प्रतिदिन सैकड़ों सन्यासीके भोजन और एक अतिथिशाला तथा विद्यालयका खर्च निभाना पड़ता है।

सुननेमें आता है, कि १८वीं शताब्दीके प्रारम्भमें यहां एक मठ स्थापित हुआ था। महन्तोंकी वंशतालिकासे जाना जाता है, कि उस समय घमण्डीनाथगिरि नामक एक शैव सन्यासी यहां आ कर बस गए और अपने साम्प्रदायिक सन्यासियोंके रहनेके लिये उन्होंने एक मठ स्थापित किया। उनकी मृत्युके बाद उनके शिष्य चैतन्यगिरि मठाध्यक्ष हुए। उस समय बुद्धगयाका महाबोधि-मन्दिर जङ्गलसे भरा हुआ था।* देवमूर्त्तिकी परिचर्या तथा पूजाके लिये एक पुरोहित भी उस धन्य प्रदेशमें नहीं थे और न कोई यात्री ही देवपूजाकी इच्छासे वहां जाते थे। मुसलमान प्रभावसे उत्सन्नप्राय इस जन्मभूमिमें जो एक साधु धीरे धीरे अपना साधु उद्देश्य साधते थे, उस समय किसीका भी उस ओर लक्ष्य न था।

चैतन्यके प्रियतम शिष्य महाज्ञानी महादेव अपनी विद्याके प्रभावसे निकटवर्त्ती स्थानोंमें परिचित थे। महाबोधि मन्दिरके सामने एकान्तमें बैठ कर वे महादेवी की साधना करते थे। देवीकी कृपासे वे इस क्षुद्र मठ को एक सुदीर्घ सङ्घाराममें परिणत कर गए हैं। प्रवाद है, कि सम्राट् शाहआलमके आदेशानुसार वे इस बुद्ध मन्दिरके एकमात्र सत्त्वाधिकारी तथा प्रधान महन्तके जैसे गिने जाते थे। उनके प्रधान शिष्य लालगिरि उदार परवश हो यहां अतिथिशाला स्थापित कर गए हैं। लालगिरिके शिष्य राघव, राघवके शिष्य रैनहित उनके शिष्य शिवगिरि और शिवगिरिके शिष्य हेमन्तगिरिने मठाधिकारी हो कर यथानियम अपने अपने कर्त्तव्यका पालन किया था।*

यहांके महन्तगण आजीवन ब्रह्मचर्यका अवलम्बन करते हैं। शिष्योंमेंसे जो समधिक ज्ञानवान् और विद्याशाली होते, उन्हें ही प्रधान महन्तका पद मिलता था। किन्तु अभी ऐसा नियम देखनेमें नहीं आता। शिष्योंमें जो सबसे छोटे तथा जिनके साथ मठाध्यक्षका अधिक सौसादृश्य है वही बालक महन्तपदके अधिकारी होते हैं। मालपूआ, मोहनभोग और भङ्ग उनका प्रधान खाद्य है। वर्त्तमान महन्त सुपण्डित और शास्त्रदर्शी हैं।

बुद्धगयाका प्राचीनत्व।

बुद्धावतार प्रसङ्गमें यह स्थान तीर्थसमूहके मध्य गिना जाता है। शुद्धोदनके पुत्र शाक्यसिंह राजसिंहासनका परित्याग कर इस निर्जन प्रदेशमें एक अश्वत्थवृक्षके नीचे बैठ ध्यानमग्न हुए थे। उन्होंने अपने योगप्रभावसे सम्यकसम्बोधि प्राप्त की थी, इसलिए यह स्थान 'महाबोधि'* और उक्त अश्वत्थवृक्ष जनसाधारणमें 'बोधि

* डा० बुकानन हमिल्टन जब बुद्धगया आये थे, तब उन्होंने यहांके महन्तसे सुना था, कि चैतन्यके समय यह स्थान जंगलमय था और यहां एक भी बौद्ध दर्शनमें नहीं आते थे।

* गया कलक्टरी आफिसके कागजातसे जाना जाता है, कि गुनायगिरि नामक एक महन्तने गवर्मेण्टसे मस्तिपुर ताराडी नामक स्थान कायमी बन्दोबस्तमें लिया। कोई कोई इस गुनायगिरिको ही शिवगिरिका नामान्तर बतलाते हैं।

* राजा अमरदेवकी अप्रामाणिक शिलालिपिमें बुद्धगया नाम

[illegible] नामसे प्रसिद्ध है०। ललितविस्तर पढ़नेसे जाना जाता है, कि सम्राट् अशोक (प्रियदर्शी) के बुद्धदेवका स्मृतिचिह्नसमूह सम्पादन करनेमें यत्नवान् होने पर उपगुप्तने उन्हें शाक्यसिंहका समाधिस्थान निरूपण कर दिया। अशोकने भी इस महाबोधिमन्दिर स्थापनके लिये एक लाख स्वर्णमुद्रा प्रदान की। उरुविल्वा (वर्तमान [illegible]) ग्रामके समीप पर यह महामन्दिर स्थापित हुआ था। शाक्यसिंह वाणप्रस्थाश्रमका अवलम्बन कर इस उरुविल्वामें अनेक वर्षों तक रहते थे। ललितविस्तरमें इसका सविशेष विवरण मिलता है। नैरञ्जना नदीके किनारे यह प्राचीन ग्राम उस समय [illegible] परिपूर्ण था।† शाक्यमुनि जिस समय जगत्‌के जीवोंका दुःख दूर करनेकी इच्छासे प्रगाढ़ चिन्तामें मग्न थे, उस समय दूर दूरके ग्राम्य बालकगण उनके पवित्र गात्र पर धूल डाला करते थे।‡

बोधिसत्त्व गयाशीर्ष पर्वत पर जा कर घूमते घूमते उरुविल्वा ग्राम पहुंचे। वे इस स्थानकी रमणीयता पर मुग्ध हो गये और मुक्ति साधनका प्रकृतस्थान जान कर यहीं रहने लगे।* नन्दिक नामक एक सेनापति उस समय इस ग्राम पर आधिपत्य करते थे। उनकी धर्मपरायणा कन्या सुजाता प्रतिदिन शाक्यसिंहको पायसान्न दिया करती थी।

यह स्थान बुद्धदेवका प्रीतिकर रमणीय और [illegible] जनपरिशोभित होने पर भी कालक्रमसे यह पवित्र तीर्थ नष्टप्राय हो गया था। राजपुत्र शाक्यसिंह यहीं आ कर उरुविल्व काश्यपके आश्रममें पधारे—। सिंहलदेशीय

---

पुनर्निर्मित होने पर भी यह नाम न जहां [illegible]। कारण किसी भी प्राचीन बौद्ध या हिन्दूग्रन्थमें बुद्धगयाका नाम नहीं है। प्राचीन शिलालिपि और चीनपरिव्राजकोंके भ्रमणवृत्तान्तमें यह स्थान 'महाबोधि' नामसे प्रसिद्ध है। [illegible] जाना जाता है, कि हिन्दूका पवित्र [illegible] गयाशिर उस समय ब्रह्मयोनि नामसे विख्यात था। बौद्धधर्मका ह्रास और ब्राह्मणधर्मकी पुनः प्रतिष्ठा होने पर हिन्दुओंने (बुद्धको अवतार स्वीकार कर) [illegible] इस बोधिद्रुमका पदार्पण कर [illegible] उसे आत्मसात् [illegible] किया और [illegible] इसका [illegible] बुद्धगया नाम रख दिया। महाबोधिमन्दिर और बोधिवृक्ष उक्त ग्रामके उत्तर ही अवस्थित हैं। किन्तु स्थानीय दक्षिणाभिमुख [illegible] दूरी ग्राम [illegible] है।

श्री [illegible] महाबोधि विहार और [illegible] तथा [illegible] का है। [illegible] नहीं [illegible] है। (Ind. Ant. X 1001) [illegible] १०८० ई० [illegible] १३३१ ई० [illegible] 'महाबोधि' [illegible] उल्लिखित हुआ है। [illegible] है।

● [illegible] उल्लिखित है। [illegible] है।

० "[illegible] ।
[illegible] उरुविल्वायां [illegible] नैरञ्जना नदी ॥"

(ललितविस्तर)

† "[illegible] ।
[illegible] ॥"

(ललितविस्तर)

‡ "[illegible] बोधिसत्त्व [illegible] ॥ [illegible] ।"

(ललितविस्तर)

* Manual of Buddhism, p. 1[illegible] [illegible] ।

बौद्धधर्मके इतिहासमें उरुविल्वाका ही प्रसङ्ग मिलता है। महावंश पढनेसे जाना जाता है कि, "बुद्धघोष सिंहलसे भारतमें आ कर बो (बोधि)-वृक्षकी पूजा करनेकी इच्छासे मगधके अन्तर्गत उरुवेलय ग्राममें उपस्थित हुए।" शाक्य सिंहके यहां पर तपस्या करनेके पहले यह स्थान उरुविल्वा नामसे प्रसिद्ध था, इसमें सन्देह नहीं। क्योंकि शाक्यके बुद्धत्व पानेके पूर्व इस स्थानका "बोधगया" नाम होना नितान्त असम्भव है। सुजाताके पिता सेनापति नन्दिक कोकदराजके अधीन काम करते थे। गयानगरी उस समय मगधराज्यकी राजधानी थी। ८वीं और ९वीं शताब्दीमें हिन्दूप्राधान्य स्थापित होनेके बाद उरुविल्वाके अशोकप्रतिष्ठित बौधमन्दिरादिसे गयाक्षेत्रकी स्वातन्त्र्यरक्षाके लिए हिन्दूगण इस स्थानको 'बोधगया' नाम कल्पित करते हैं।* कारण, गयालीगण गया धाममें प्रतिष्ठा लाभ कर गयाकी कीर्त्ति और तीर्थसमूह की रक्षा करनेमें यत्नवान् थे। उरुविल्वा (बुद्धगया)की पूर्वतन अशोककीर्त्तियां क्रमशः ध्वंसप्राय हो रही थीं।†

हिन्दूगण प्रतिहिंसापरवश हो कर उरुविल्वाकी प्राचीन बौद्धकीर्त्तिकी उपेक्षा करते थे, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। उन्होंने यह स्थान जंगलमें परिणत देख इसका परित्याग किया। कालक्रमसे अङ्गरेजोंकी अनुकम्पा और ब्रह्मराजके अर्थसाहाय्यसे यह लुप्तप्राय महाबोधि मन्दिर नवकलेवरमें शोभित हो जनसाधारणके दृष्टि-पथ पर आरूढ हुआ है। बुद्धगयाके इस महाबोधि मन्दिरका जीर्णसंस्कार होनेके समय कहीं कहीं थोड़ा परिवर्त्तन भी हुआ है।

यथार्थमें किस समय यह स्थान जङ्गलसे परिपूर्ण हुआ था, यह स्थिर करना मुश्किल है। ४थी शताब्दीमें बौद्ध प्रभावके अवसान अथवा ब्राह्मण्यधर्म-सेवी गयालियोंके अभ्युत्थानके समय महाबोधि मन्दिर जो अनादृत हुआ था, उसमें सन्देह नहीं। हिन्दुओंने जब बौद्धतीर्थको विलोप करना चाहा, तब भिन्नदेशीय बौद्ध धर्मावलम्बियोंने यत्नपूर्वक यहांका पूर्वतन बौद्धस्मृतिकी रक्षा की। इस पवित्र मन्दिरके वृक्षलतादि समाच्छादित ध्वंसराशिमें परिणत होने पर भी बौद्धगण समयानुसार इस पुण्यतीर्थमें आ कर यथासम्भव संस्कार करते थे उसका यथेष्ट ऐतिहासिक प्रमाण शिलालिपिसे मिलता है।

४थी शताब्दीके अन्तमें सम्राट् अशोक द्वारा प्रतिष्ठित वज्रासन और पुरातन मन्दिर तथा उस वज्रासनके सामने गाड़ी हुई रौप्यमुद्राओंके मध्य शकराज हुविष्क (१४० ई०)का मुद्रा प्राप्त होनेसे इस स्थानके प्राचीनत्वका परिचय मिलता है। इसके बाद चीनपरिव्राजक फाहियान भी उरुविल्वाके महाबोधिमन्दिरका उल्लेख

* पहले ही लिखा जा चुका है, कि अमरदेवकी १०वीं शताब्दीकी उत्कीर्ण शिलालिपिमें बुद्धगया नामका उल्लेख है। Asiatic Researches Vol I p 284

† ललितविस्तरमें लिखा है, कि शाक्यसिंह राजगृहसे गया-नगर पधारे। वहां मनुष्योंकी भलाईके लिये उन्होंने चित्तसंयम कर निविष्ट मनसे ध्यान करनेका सङ्कल्प किया। उरुविल्वा-वनमें बुद्धके सम्बोधिलाभ करनेके बाद गयानगरीमें उनके निकट धर्मप्रचारका मुख्यक्षेत्र हुआ था। किंतु दुःखका विषय है, कि ५वीं शताब्दीके प्रारम्भ (४०४ ई० सन्)में जब चीन-परिव्राजक यूएनचुमङ्ग यहां आये थे, उस समय इस स्थानका बौद्धप्रभाव एकबारगी तिरोहित हो गया था और सारा नगरी जनशून्य श्मशानभूमि पूर्ण थी। ७वीं शताब्दीमें यूएनचुङ्गके परिदर्शन-कालमें यहां हिंदूप्रभाव स्थापित हो रहा था, सुतरां गयालीगण गयातीर्थ पर अधिकार कर उनकी रक्षामें लगे थे। बहुतोंका मत है, कि महाबोधि तीर्थ लुप्त होनेसे हिंदूगण गया-धाममें उन्हीं बोधिकीर्त्तियोंको ला कर उनकी रक्षा करते हैं। बुद्धगयाके अनेक प्रस्तर और शिलालिपि यहांके मंदिरादिमें लाई पर भी गयाके प्राचीनत्वका लोप नहीं हुआ है। यहांका पिण्डदान प्रभृतिकी महात्म्य कथा रामायण महाभारतादिमें वर्णित है। वायुपुराणान्तर्गत गयामाहात्म्यमें गयासुरका जो अद्भुत उपन्यास है उसका समालोचना करनेसे वह रूपकके जैसा प्रतीत होता है। गयासुरका विराट समावलिद्ध है। असुरोंकी 'श्रेष्ठ वैष्णवता' बौद्धोंकी अहिंसाका परिचय देती है। गयासुरके निश्चलता-सम्पादनमें देवताओंकी कापुरुषता और धर्मप्राण हिंदू द्वारा निरीह बौद्धोंके प्रत्याख्यानके सिवा और क्या कहा जाय। गया शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

गए गए हैं। यूएनचुयङ्गके वर्णनसे पता चलता है, कि प्रथम शताब्दीमें मध्यभागमें इस मन्दिरका पूरा भवन संस्कृत हुआ और मन्दिरकी प्राङ्गणभूमि तथा बोधि-मण्डप पश्चात् फल्गु नदीकी बालुकाराशिसे परिपूर्ण हो गया।* सुतरां इसके बादसे ही इस तीर्थमें मनुष्यों का आवागमनकी इच्छा कम हो गई, इसमें सन्देह नहीं।

७वीं शताब्दीके प्रारम्भमें बौद्धधर्मके प्रधान शत्रु राजा शशाङ्कने यह बोधिद्रुम काट डाला, किन्तु [illegible] बुद्धमूर्तिको उसके स्थान। पूर्णवर्माके [illegible] लगा हुई थी। वह मूर्ति भी कालक्रमसे नष्ट हो गई है।

इस बोधिद्रुमकी पुनःस्थापनाके लिए ६२० ई०में राजा पूर्णवर्माने उसके चारों ओर २४ फुट ऊंची पक्की दीवार बनवा दी।†

चीन-परिव्राजक यूएनचुयङ्गने बाद ६३८ ई०में [illegible] आकर बाद [illegible] महाबोधिको प्राप्त किया। वे फिर ६६० ई०को महाबोधिमें [illegible] भेजने आये।‡ ६४० ई०में [illegible] महाबोधिमें [illegible] पूजन करनेके लिए आये थे।+

७वीं शताब्दीमें बौद्धराज हर्षवर्द्धनके समय जब बौद्धप्रभाव स्थापित हुआ, तब चीनदेशीय बौद्ध परि-व्राजकोंने भारतके साथ धर्मसम्बन्ध विस्तार किया था। ८वीं और ९वीं शताब्दीमें ब्राह्मण धर्मकी प्रतिष्ठा हो। पर बौद्धधर्म हीनबल हुआ। सुतरां चीनवालोंका भारतमें आना जाना बन्द सा हो गया। १०वीं शताब्दीमें मगधके पालवंशीय बौद्धनरपतियोंका अधिकार होनेसे पुनः दोनों देशोंमें धर्म प्रचारसम्बन्ध विस्तृत हुआ। राजा महीपालके राजत्वकालमें (१०००-१०४० ई०में) जो सब चीनपरिव्राजक महाबोधिके दर्शन करने आये थे, वे अपने अपने भाषाओंमें शिलालिपि लिख गए हैं, वर्तमान अनुसन्धानसे वे सब आविष्कृत हो कर प्राचीन इतिहासमें नूतन ज्योतिःप्रदान करते हैं।॥

११वीं शताब्दीके प्रारम्भमें धर्मराज बुद्ध नामक एक व्यक्तिको ब्रह्मराजने महाबोधिमन्दिर बनवानेके लिए भेजा। उक्त कार्यमें १०३५ ई०में [illegible] कर गए हैं। एक और दूसरी शिलालिपिसे जाना जाता है, कि १०७१ ई०में उक्त मन्दिरका निर्माण कार्य समाप्त न होनेके कारण पुनः वर्ष एक और [illegible] भेजा गया। वे ७ वर्ष १० मास यहां पर रह कर १०७९ ई०में निर्माणकार्य समाप्त कर लौट आये थे।

अनन्तर १२वीं शताब्दीके शेष भाग (अर्थात् ११९८ ई०को मुसलमान आक्रमणके पहिले) में [illegible] अशोकचल्लने इसके किसी किसी भागका पुनर्निर्माण किया।

१३वीं और १४वीं शताब्दीमें गया आदि स्थान मुसलमानोंके हाथ आये। शिलालेखके [illegible] पता लगता है, कि [illegible] हाथसे पवित्र [illegible] रक्षाके लिए [illegible] शुरू किया था। [illegible] कोई प्रमाण नहीं रहने पर भी सहजमें अनुमान किया जा सकता है, कि मुसलमान विजयके समयमें [illegible] अत्याचारसे पीड़ित हो कर यहांके अधिवासिगण महा-बोधिमन्दिर छोड़ भागे और [illegible] क्रमशः [illegible] में परिणत हो गई।

[illegible] जो सब [illegible] गए हैं, उसका [illegible] भारतीय [illegible] अपूर्व परिच्छेद बढ़ जाता है। [illegible] महाबोधिमन्दिर [illegible] एक अलौकिक कीर्ति है। इस मन्दिर और उसका तोरणद्वार, प्राचीन महाबोधिसङ्घाराम, वज्रासन, बोधिद्रुम, [illegible] स्तूप तथा

* [illegible] होता है, कि [illegible] हुआ है।

† Julien's Hiuen Thsang Vol. II p. 131

‡ इससे ऐसा मालूम होता है, कि [illegible] ई०में [illegible] है।

+ [illegible]

॥ [illegible] Journal [illegible] 1861, Vol. XXX p. [illegible]

[illegible]

विहार प्रभृति खण्डकीर्त्तियां प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्सुओं को नूतन आलोक प्रदान करती हैं।

१८९६ ई०में ब्रह्मराजने तीन कर्मचारियोंको बोधि मन्दिरका सम्स्कार करनेके लिए भारतवर्ष भेजा। १८७७ ई०को कर्मक्षेत्रमें पहुंच कर जब वे उक्त कार्यसाधनमें असमर्थ ठहरे, तब बङ्गालके छोटे लाट (Sir Asely Eden )ने पहले बेगलर साहब ( M J D, Beglar )को तत्त्वावधारक नियुक्त कर भेजा। इससे तृप्त न हो कर उन्होंने पुन राजा राजेन्द्रलाल मित्रसे कार्यपरिदर्शन करनेके लिये प्रार्थना की। उन दोनोंके उद्योग और ब्रह्मवासियोंके यत्नसे बोधगयाका संस्कार साधित हुआ। यहां तक कि, इस महाबोधिमन्दिरने उच्च चूडावलम्बी हो कर पुन बौद्धस्मृतिको जगा दिया। किन्तु अब भी यहांकी कितनीही सम्पत्ति कलकत्तेके जादूघरमें संरक्षित हैं।

*वायुपुराणीय गयामाहात्म्यमें* बोधगया भी एक हिन्दू तीर्थके जैसा गिना जाता है। यहांका बोधिवृक्षका दर्शन तथा उसके नीचे पिण्डदान अत्यन्तपुण्यजनक है।

बोधघनाचार्य ( सं० पु० ) एक उपाध्याय। ये बोधानन्द घन और अहोबलशास्त्री नामसे प्रसिद्ध थे।

बोधक (सं० पु०) बोध अभिप्राय जानातीति ज्ञा क। अभिप्रायवेत्ता, श्रीकृष्ण।

बोधन ( सं० क्ली० ) बुध णिच् ल्युट्। १ गन्धदीप, गंध दीप देना। २ वेदन, ज्ञापन, जताना। ३ विज्ञापन, इश्तहार। ४ उद्दीपन, अग्नि या दीपक आदिको प्रज्वलित करना। ५ ज्ञान। ६ चैतन्य सम्पादन। यथा—दुर्गादेवीका बोधन। आश्विन मासमें अकालमें रामचन्द्रने रावण वधके लिए भगवती दुर्गाका बोधन किया था। शास्त्रमें बोधनकी व्यवस्थादिके विषयमें इस प्रकार लिखा है,—

"इषे मास्यसिते पक्षे कन्याराशिगते रवौ।

"नवम्यां बोधयेद्देवीं क्रीडाकौतुकमङ्गलै ।"

अत्र कृष्णा दत्यादिपु इत्यपि गौणाश्विनपरं।' (तिथितत्त्व)

रविके कन्याराशिमें पहुंचने पर, अर्थात् आश्विन मासमें कृष्णपक्षकी नवमी तिथिमें देवीका यथाविधान बोधन करना चाहिए। इस स्थानमें 'आश्विन' पदसे मतलब गौणाश्विन से है। नवमी आदि कल्पस्थलमें प्राप्त कालमें कल्पारम्भ हो कर सायङ्कालमें बिल्वतरुमूलमें देवीका बोधन किया जाता है। कृष्णा नवमीसे ले कर शुक्ला दशमी अर्थात् विजयादशमी तक प्रति दिन देवीकी पूजा करना चाहिये। *नवमी बोधन आश्विन मासमें ही कहा* गया है। अन्यत्र इस प्रकार लिखा है।

"आर्द्रायां बोधयेद्देवीं मूलेनैव प्रवेशयेत्।

तिथिनक्षत्रयोर्योग द्वयोरेवानुपालनम् ।

योगाभावे तिथिर्ग्राह्या देव्या पूजनकर्म्मणि।

कृष्णानवम्यामार्द्रायोगो विधौ मन्त्रे च श्रूयते ॥"

लिङ्गपुराणके मतसे—

कन्यायां कृष्णपक्षे तु पूजयित्वार्द्रभे दिवा।

नवम्यां बोधयेद्देवीं महाविभव विस्तरै ॥" ( तिथितत्त्व )

आर्द्रा नक्षत्रमें देवीका बोधन करना चाहिए। इससे मालूम होता है, कि आर्द्रानक्षत्र युक्त नवमी तिथि ही बोधनके लिए प्र।प्त दिन है। परन्तु प्रति वर्ष गौणाश्विन कृष्णानवमीमें आर्द्रायोग सम्भवपर नहीं, अर्थात् किसी वर्ष पड़ा और किसीमें न पड़ा, ऐसी दशामें 'आर्द्रायां बोधयेत्' किस प्रकार सम्भव हो सकता है। इसकी मीमांसा शास्त्रोंमें इस प्रकार है, कि नवमीके दिन ही बोधन होगा, हां, यदि उस नवमी। आर्द्रा नक्षत्रका योग हुआ तो बहुत ही उत्तम है। अन्यथा आर्द्रा नक्षत्रके विना बोधन हो नहीं हो सकता, ऐसा नहीं है।

'अकालमें बोधन करना चाहिए' यहां अकाल शब्दका अर्थ देवताओंकी रात्रि है। कारण, उत्तरायण देवताओंके दिन हैं और दक्षिणायण उनकी रात्रि। देवताओंकी रात्रिमें कोई भी कार्य करना प्रशस्त नहीं। इसलिए "अकाले ब्रह्मणा बोध" इस प्रकार कहा गया है। रात्रि निद्राका समय है, इसलिए बोधन करके पूजा की जाती है।

"अथैनदक्षिणायन देवानां रात्रिरिति एवच।

रावणस्य महामाया ब्रह्मणा बोधिता पुरा।

तथैव च नरा कुर्यु प्रतिसम्वत्सर नृप ॥"

नवमी तिथि यदि उभय दिनमें पूर्वाह्नमें ही प्राप्त हो और दूसरे दिन नक्षत्र लाभ अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र हो, तो दूसरे दिन ही बोधन होगा। युग्मादर होनेसे पहले दिन नहीं होगा और दोनों ही दिन यदि पूर्वाह्न लाभमें और नक्षत्रका योग न हो, तो पूर्व दिनमें बोधन होगा। कारण,

ऐसे स्थानमें अमुक तिथियों का बोधन होता और तिथि [illegible] का प्रयोग है।

[illegible]

[illegible] का बोधन प्रशस्त है। [illegible] नवमीके दिन [illegible] शुक्ल [illegible] तिथिको [illegible] दूसरे दिन [illegible] पूजा करनी चाहिए। [illegible] बोधन [illegible] प्रयुक्त हो गया है। [illegible] वर्षानुसार षष्ठी वा नवमीके दिन बोधन हुआ करता है।

षष्ठीके दिन [illegible] यदि पूर्व दिन सायंकालमें षष्ठी प्राप्त हो और दूसरे दिन यदि सायंकालमें प्राप्त न हो तो पूर्व दिन सायंकालमें देवीका बोधन और दूसरे दिन आमन्त्रण अधिवास होगा। यदि वे दोनों दिन ही सायंकालमें षष्ठी प्राप्त [illegible], तो दूसरे दिन ही बोधन होगा।

[illegible]

[illegible] (तिथितत्त्व)

बोधन [illegible] बोधन इस प्रकार उल्लेख हुआ। [illegible] बोधनका [illegible]

[illegible]

(दुर्गोत्सव[illegible])

कालिका पुराणमें लिखा है कि [illegible] बोधन [illegible] करना [illegible] नहीं है। [illegible] तिथियोंमें हुआ करता है। [illegible] बोधन [illegible] है। [illegible]

[illegible] पढ़ी और नवमी तिथिमें बोधन करना चाहिए।

बोधनी (सं० स्त्री०) बुध णिच् ल्युट् ङीप्। १ [illegible]। २ [illegible]। ३ प्रबोधिनी एकादशी, कार्तिक मास की शुक्ला एकादशी। इस दिन भगवान् विष्णु सो कर उठते हैं इसलिए इसका बोधनी नाम पड़ा है। यह अति पुण्य दिन है। इसमें स्नान दानादि करनेसे अनन्त फल लाभ होता है।

[illegible]

बोधनीय (सं० त्रि०) बुध् कर्मणि अनीयर्। बोध्य, समझमें आने लायक।

बोधपूर्वोत्तर (सं० पु०) एक वैतालिक।

बोधयितृ (सं० त्रि०) बुध णिच् तृच्। १ जो ज्ञानमार्ग सुझाता है, गुरु। २ वैतालिक, जो स्तुतिपाठ द्वारा सवेरे जगाया करता है।

बोधविष्णु (सं० त्रि०) [illegible]

बोध[illegible] (सं० पु०) [illegible] सम्प्रदायके प्रधान गुरु। ये [illegible] नामसे प्रसिद्ध थे।

बोधवासर (सं० पु०) बोधस्य वासरः। प्रबोधस्य वासरः। भगवान् विष्णुका प्रबोध दिन। [illegible] एकादशी, इस दिन भगवान् विष्णु सो कर उठते हैं। [illegible] लिखा है, कि यदि [illegible] पुण्यकर्म क्यों न करे, पर वह यदि बोधवासर [illegible] उपवास न करे, तो उसके किये हुए सभी पुण्य निष्फल होते हैं।

[illegible]

( [illegible] )

बोधात्मा (सं० पु०) [illegible] ज्ञान और [illegible]।

बोधायन (सं० पु०) [illegible]। १ [illegible]। २ विष्णु।

बोधायन[illegible] (सं० पु०) [illegible]।

बोधायन [illegible] किया है। [illegible]

बोधारण्ययति ( स० पु० ) तत्त्वकौमुदीव्याख्यानके प्रणेता, भारती यतिके गुरु।

बोधि ( स० पु० ) बुध ( सर्वधातुभ्य इन्। उण् ४।११७ ) इति इन्। १ समाधिभेद। २ पिप्पलवृक्ष, पीपलका पेड़। ३ बोध, ज्ञान। ( त्रि० ) ४ ज्ञाता।

बोधित ( स० त्रि० बुध णिच-क्त। ज्ञापित, जताया हुआ।

बोधितरु ( स० पु० ) बोधिरेव तरु। १ अश्वत्थवृक्ष, पीपलका पेड़। २ गयामें स्थित पीपलका वह पेड़ जिसके नीचे बुद्ध भगवानने सम्बोधि ( बुद्धत्व ) प्राप्त की थी। बौद्धोंके धर्मग्रन्थोंके अनुसार इस वृक्षका कल्पान्तमें भी नाश नहीं होता और इसीके नीचे बुद्धगण सदा सम्बोधि प्राप्त करते हैं।

बोधितव्य ( स० त्रि० ) बुध-णिच् तव्य। ज्ञापितव्य।

बोधिद ( स० पु० ) अर्हद्भेद।

बोधिद्रुम ( स० पु० ) बोधिरेव द्रुम। बोधितरु देखो।

बोधिधर्म ( स० पु० ) बौद्धधर्माचार्य। इनका पूर्वनाम बोधिधन है।

बोधिन् ( स० त्रि० ) ज्ञात, प्रबुद्ध।

बोधिभद्र ( स० पु० ) एक बौद्धाचार्य।

बोधिमण्ड ( स० पु० ) बोधिद्रुमके नीचे जिस वज्रासन पर बैठ कर शाक्यमुनिने ज्ञानलाभ किया था, पृथ्वीसे उत्थित उसी आसनका नाम।

बोधिमण्डल ( स० क्ली० ) वह आसन जिस पर बैठ कर शाक्यसिंहने सम्बोधि प्राप्त की थी।

बोधिसङ्घाराम—बौद्ध सङ्घारामभेद। नालन्दा देखो।

बोधिसत्त्व (स० क्ली०) बोधि बोधवत् सत्त्व। बुद्धविशेष, वह जो बुद्धत्व प्राप्त करनेका अधिकारी हो, पर बुद्ध न हो। बोधिसत्त्वकी तीन अवस्थाएं होती हैं जिन्हें पार करने पर बुद्धत्वकी प्राप्ति होती है।

बोधिसिद्धि—सहस्रारत्न नामक वेदान्तग्रन्थके रचयिता।

बोधेन्द्र—आत्मबोधटीका भावप्रकाशिका, नामरसायन, नामरसोदय और हरिहरभेदधिक्कार प्रभृति संस्कृत ग्रन्थके प्रणेता।

बोधेय ( स० पु० ) धर्मसम्प्रदाय विशेष।

बोध्य ( स० त्रि० ) बुध ण्यत्। बोधयोग्य, बोधनीय।

बोना ( हिं० क्रि० ) १ किसी दाने या फलके बीजको इसलिये मट्टीमें डालना जिसमें उसमेंसे अंकुर फूट और पौधा उत्पन्न हो। २ बिखराना, इधर उधर डालना।

बोबा ( हिं० पु० ) १ स्तन, थन। २ गट्ठर, गठरी। ३ घरका माल असबाब, असबाब।

बोब्बी ( हिं० स्त्री० ) दाक्षिणात्यमें पश्चिमी घाटकी पहाड़ियोंमें होनेवाला एक प्रकारका सदाबहार पेड़। यह पुन्नाग या सुलताना चम्पाकी जातिका होता है।

बोर (हिं० पु०) १ डुबानेकी क्रिया। २ गुंबजके आकारका एक प्रकारका गहना। यह सिर पर पहना जाता है और इसमें मीनाकारीका काम होता है। रत्नादि भी इसमें जड़े हुए होते हैं। ३ चाँदी या सोनेका बना हुआ गोल और कंगूरेदार घुँघरू। यह आभूषणोंमें गूथा जाता है।

बोरका ( हिं० पु० ) १ दवात। २ मिट्टीकी दवात। इसमें लड़के खड़िया घोल कर रखते हैं।

बोरना ( हिं० क्रि० ) १ जल या किसी और द्रव्य पदार्थमें निमग्न कर देना, डुबाना। २ कलङ्कित करना, बदनाम कर देना। ३ युक्त या आवेष्टित करना। ४ डुबा कर भिगोना। ५ घुले रंगमें डुबा कर रंगना।

बोरसी ( हिं० स्त्री०) मट्टीका बरतन जिसमें आग रख कर जलाते हैं, अंगीठी।

बोरा (हिं० पु०) १ टाटका बना हुआ थैला। इसमें अनाज आदि रखते हैं। २ चाँदी या सोनेका बना छोटा घुंघरू।

बोरिका ( हिं० पु० ) मट्टीका एक प्रकारका बरतन। इसमें लड़के लिखनेके लिये खड़िया घोल कर रखते हैं।

बोरिया ( हिं० स्त्री० ) छोटा थैला। ( फा० पु० ) २ बिछावन, चटाई।

बोरी ( हिं० स्त्री० ) टाटकी छोटी थैली, छोटा बोरा।

बोरो ( हिं० पु० ) एक प्रकारका धान। साधारणतः धान तीन प्रकारका होता है, आउस, आमन, बोरो। यह धान नदीके किनारेकी भीड़में बोया जाता है और बहुत मोटा होता है।

बोरोबाँस (हिं० पु०) पूर्वी बङ्गालमें होनेवाला एक प्रकारका बांस।

बोड़े (अ० पु०) १ किसी स्थानसे जानेके लिये बना हुआ मार्ग। २ [illegible]। ३ [illegible] के लिये बना हुआ [illegible] या [illegible]।

[illegible] (अ० पु०) यह [illegible] के लिये बना हो, [illegible]।

[illegible] (हि० पु०) [illegible] और [illegible] और [illegible] एक प्रकारका रोग। यह [illegible] लगता है और [illegible] जाता है।

[illegible] (हि० पु०) १ [illegible], [illegible]। २ [illegible], [illegible] हुआ [illegible]। ३ [illegible] या प्रतिमा। ४ [illegible] हुआ [illegible]। ५ प्रतिमा, [illegible]। ६ [illegible], [illegible]। ७ [illegible], [illegible]। ८ एक प्रकारका [illegible] गोंद। इसका [illegible] होता है। यह [illegible] जातिके एक पेड़ से निकलता है।

[illegible] (हि० स्त्री०) १ [illegible], [illegible]। २ [illegible], [illegible]। ३ [illegible] भाषा [illegible]। ४ [illegible], [illegible]।

बोकला (हि० पु०) १ [illegible] और बोलनेवाला [illegible], [illegible]। २ [illegible] शब्द [illegible] जाता, [illegible]। ३ [illegible]। ४ [illegible], [illegible]। (वि०) ५ [illegible], [illegible]।

बोकली (हि० स्त्री०) [illegible] [illegible]।

बोखना (हि० क्रि०) १ मुँहके ऊपर निकालना। २ किसी [illegible] उत्पन्न करना। ३ कुछ करना [illegible] करना।

बोखवाना (हि० क्रि०) १ [illegible] कराना। २ [illegible] देना।

[illegible] (अ० पु०) एक बहुत [illegible] इसकी लकड़ी बहुत मजबूत और [illegible] बहुत अच्छी होती है।

बोगदार (हि० पु०) [illegible]।

बोगदा (हि० पु०) वह [illegible] [illegible] किया गया हो।

बोगना (हि० क्रि०) [illegible]

[illegible] (हि० पु०) [illegible]

बोगी (हि० स्त्री०) १ [illegible], [illegible]

[illegible] शब्द [illegible] जाता। ३ [illegible] और [illegible] करना। ४ वह [illegible] [illegible] किसी [illegible] के [illegible] [illegible] करते हैं, [illegible]। ५ [illegible] शब्द [illegible]।

बोझिया (हि० पु०) वह आदमी जिसे [illegible] लिये [illegible] जो [illegible] किया जाय हो, [illegible]।

बोझाह (हि० पु०) [illegible] एक जाति।

बोझना (हि० क्रि०) [illegible]।

बोझाई (हि० स्त्री०) [illegible]।

बोझाना (हि० क्रि०) बोझेका काम दूसरेसे कराना।

बोझ (हि० स्त्री०) [illegible], [illegible]।

बोटनी (हि० स्त्री०) १ किसी [illegible] [illegible] पहली बिक्री। २ किसी दिनकी पहली बिक्री। जब तक [illegible] नहीं हुई रहती तब तक दुकानदार किसीको उधार सौदा नहीं देते। उनका विश्वास है कि पहली बिक्री यदि अच्छी होगी, तो दिन भर अच्छी होगी। इस पहली बिक्रीका [illegible] किसी समय सब देशोंमें माना जाता था।

बोटाना (हि० क्रि०) [illegible]।

बोटारी (हि० स्त्री०) [illegible]।

बोटिया (हि० स्त्री०) [illegible] [illegible] एक प्रकारका [illegible]। इसका [illegible] और [illegible] होती है।

बोड़ (हि० स्त्री०) १ [illegible] हो [illegible] [illegible] जाये [illegible] हो। २ [illegible], [illegible]।

बोड़ना (हि० क्रि०) [illegible] बड़ना [illegible], [illegible]।

बोड़र (हि० पु०) [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]।

[illegible] (हि० स्त्री०) १ [illegible] [illegible] हैं। २ [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible], [illegible]

बौछाड़ ( हिं० स्त्री० ) १ वायुके झोंकेसे तिरछी आती हुई बूंदोंका समूह, झड़ास। २ लगातार बात पर बात जो किसीसे कही जाय। ३ वर्षाकी बूंदोंके समान किसी वस्तुका बहुत अधिक मात्रामें कहीं आ कर पड़ना। ४ बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। ५ व्यङ्ग्य पूर्ण वाक्य जो किसीको लक्ष्य करके कहा जाय, ताना।

बौछार ( हिं० स्त्री० ) बौछाड़ देखो।

बौड़हा ( हिं० वि० ) पागल, बावला।

बौना ( हिं० पु० ) समुद्रमें तैरता हुआ निशान, तिरींदा।

बौद्ध ( स० क्ली० ) बुद्धेन प्रणीत बुद्ध अण्। १ बुद्धकृत निरीश्वर शास्त्र। मत्स्यपुराणमें लिखा है, कि वृहस्पति इस शास्त्रके प्रवर्त्तक थे। ( मत्स्यपु० २४ अ० ) २ बुद्ध मतावलम्बी धर्मसम्प्रदाय। बुद्धशास्त्र वेत्ति अधीते वा अण्। ( त्रि० ) ३ बुद्धशास्त्राध्यायी। ४ बुद्धशास्त्र वेत्ता। पर्याय—भिक्षुक, क्षपण, अश्लोक, वैनासिक।

बौद्धधर्म—भगवान बुद्ध द्वारा प्रवर्त्तित धर्म। भगवान शाक्यबुद्धके भक्त जिस धर्मके अनुसार चलते हैं, वही बौद्धधर्म है।

### बौद्धधर्मकी उत्पत्ति।

भारतवर्षमें बौद्धधर्मका आविर्भाव कबसे हुआ, उसका ठीक ठीक पता लगाना कठिन है। पर हां इतना स्थिर हो चुका है, कि उपनिषद्युगके अवसानके साथ ही साथ बौद्धधर्मका आविर्भाव हुआ। कारण, बौद्धधर्मके त्रिपिटक और सूत्रकी पर्यालोचना करनेसे साफ साफ मालूम होता है कि उस समय उपनिषद् या वेदान्तमत उन्नतिकी चरम सीमा पर था। योगसाधना वेदान्तका अङ्ग नहीं होने पर भी यथार्थमें वैदान्तिकोंने उसकी पूर्णाङ्गता सम्पादन करनेमें विरुद्धमत प्रकाश नहीं किया है। योगसूत्रकार पतञ्जलिके समयमें योगधर्मकी जितनी उन्नति तथा पुष्टि हुई थी, बुद्धदेवके आविर्भावकालमें उतना जनसमाजमें प्रचार न रहने पर भी योगचर्य्या जो भिक्षु या संन्यासिसमाजमें विशेष आदृत और अनुष्ठित थी, यह प्राचीन बौद्धग्रन्थादिकी आलोचना करनेसे स्पष्ट प्रतीत होता है। बुद्ध प्रवर्त्तित कर्मवाद और आत्माका देहान्तरवाद उस समय जनसाधारणमें प्रचारित था, इसमें सन्देह नहीं। बौद्धगण यद्यपि आत्माका अस्तित्व स्वीकार नहीं करते, किन्तु वे कर्मफलको अपने धर्मतत्त्वका सार मानते हैं। जीव या आत्माका यह धर्म बौद्ध मनोविज्ञानका सम्पूर्ण विरोधी होने पर भी उस समयके वेदान्त और योगतत्त्वके प्रचारविषयके निदर्शन स्वरूप में बौद्धोंको धर्मनीतिमें स्थान मिला था।

बौद्धधर्मके आविर्भावके समय शिक्षित और चिन्ताशील भारतवासीकी पारलौकिक मुक्तिचिन्ता गभीर दुश्चिन्ता ( बौद्धमतसे सम्वेग ) में परिणत हुई। तब वे किस आदर्शका लक्ष्य कर धर्म और नीतिके पथ पर अग्रसर हुए थे, उसकी आलोचना करनेसे जान पड़ता है, कि उस समय सभी कष्टमय जीवनकी यन्त्रणा, वार्द्धक्य तथा मृत्युकी आशङ्कासे डर गए थे। बारम्बार जन्म परिग्रहके भयने उनकी इस पीड़ादायक चिन्ताको और भी भयानक बना दिया था। सभी सम्प्रदायके मनुष्य उस समय जीवनको अत्यन्त गुरुभार समझने और इसीको ही मानवजीवनके एकमात्र अविमिश्र दुःखका कारण मानते थे। इसीलिए सभी पुनर्जन्म या 'संसारयन्त्रणा' से मुक्तिलाभ करनेमें व्यतिव्यस्त थे। सबोंका यह दृढ़ विश्वास था, कि पुनर्जन्मनिवारणके विभिन्न उपाय हैं और उनका अनुष्ठान करनेसे ही मुक्तिलाभका पथ प्रशस्त होता है। अज्ञान या अविद्याका पराजय और श्रेष्ठतम सत्य ( सम्बोधि ) का लाभ करना ही इस पथाश्रयका एकमात्र उपाय है। वैदान्तिकोंका कहना है, कि परमात्मा और जीवात्माके एकान्त भावमें एक साथ सम्मिलनका नाम सत्य या तत्त्वज्ञान है। सांख्यवादी कहते हैं, कि आत्मा अनन्त तथा विशुद्ध है और भूत या तत्त्वसे सम्पूर्ण विच्छिन्न है। आत्मा देहावच्छिन्न रहने पर भी कदापि पवित्रता नष्ट नहीं करती। बौद्धगण आत्मा या परमात्मारूप किसी पदार्थका अस्तित्व स्वीकार नहीं करते।

### आर्यसत्य।

सम्बोधि लाभके बाद महात्मा शाक्यबुद्धने आर्यसत्य और प्रतीत्य समुत्पादका प्रचार किया। बुद्धदेव स्वयं कहते हैं, कि यही दो उनके प्रचारित धर्मकी मूलभित्ति हैं, यथा—दुःख, समुदय, निरोध तथा प्रतिपद या मार्ग ये ही चार सत्य आर्यसत्य हैं। दुःख है, यह बात कोई

बोर्ड ( अ० पु० ) १ किसी स्थायी कार्यके लिये बनी हुई समिति। २ कागजकी मोटी दफ्ती। ३ मालके मामलोंके फैसले या प्रबन्धके लिये बनी हुई समिति या कमेटी।

बोर्डिंग हाउस (अ० पु०) वह घर जो विद्यार्थियोंके रहनेके लिये बना हो, छात्रावास।

बोलगोवास ( हिं० पु० ) उड़ीसा और चट्टग्रामकी ओर होनेवाला एक प्रकारका बांस। यह घरोंमें लगता है और टोकरे बनानेके काममें आता है।

बोल ( हिं० पु० ) १ वचन, वाणी। २ व्यंग्य, लगती हुई बात। ३ कथन या प्रतिज्ञा। ४ बाजोंका बंधा हुआ शब्द। ५ प्रतिज्ञा, वादा। ६ संख्या, अदद। ७ गीतका टुकड़ा, अंतरा। ८ एक प्रकारका सुगंधित गोंद। इसका स्वाद कड़ुआ होता है। यह गूगलकी जातिके एक पेड़से निकलता है।

बोलचाल ( हिं० स्त्री० ) १ कथोपकथन, बातचीत। २ मेल मिलाप, परस्पर सद्भाव। ३ चलती भाषा, रोजमर्रा। ४ हस्तक्षेप, छेड़छाड़।

बोलता ( हिं० पु० ) १ ज्ञान करानेे और बोलनेवाला तत्त्व, आत्मा। २ अर्थयुक्त शब्द बोलनेवाला प्राणी, मनुष्य। ३ हुक्का। ४ जीवनतत्त्व, प्राण। ( वि० ) ५ वाक्पटु, वाचाल।

बोलती ( हिं० स्त्री० ) वाक्, वाणी।

बोलना ( हिं० क्रि० ) १ मुँहसे शब्द निकालना। २ किसी वस्तुका शब्द उत्पन्न करना। ३ कुछ कहना, कथन करना।

बोलवाना ( हिं० क्रि० ) १ उच्चारण कराना। २ बुलवाना देखो।

बोलवाला ( अ० पु० ) एक बहुत ऊंचा सदाबहार पेड़। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत और भीतर ललाई लिये बहुत अच्छी होती है।

बोलसर ( हिं० पु० ) मौलसिरी।

बोलास ( हिं० पु० ) वह अंश या भाग जो किसीका कह दिया गया हो।

बोलाना ( हिं० वि० ) बुलाना देखो।

बोलावा ( हिं० पु० ) निमन्त्रण, आह्वान।

बोली (हिं० स्त्री०) १ वाणी, मुंहसे निकली हुई आवाज। २ अर्थयुक्त शब्द या वाक्य, वचन। ३ नीलाम करनेवाले और लेनेवालेका जोरसे दाम का कहना। ४ वह शब्द जिसका व्यवहार किसी प्रदेशके निवासी अपने भाव या विचार प्रकट करनेके लिये संकेत रूपसे करते हैं, भाषा। ५ अर्थयुक्त शब्द या वाक्य।

बोलीदार ( हिं० पु० ) वह आसामी जिसे जोतनेके लिये खेत यों ही जबानी कह कर दिया जाय, कोई लिखा पढ़ी न हो।

बोल्लाह ( हिं० पु० ) घोड़ोंकी एक जाति।

बोवना ( हिं० क्रि० ) बोना देखो।

बोवाई ( हिं० स्त्री० ) बोआई देखो।

बोवाना ( हिं० क्रि० ) बोनेका काम दूसरेसे कराना।

बोह ( हिं० स्त्री० ) डुबकी, गोता।

बोहनी ( हिं० स्त्री० ) १ किसी सौदेकी पहली बिक्री। २ किसी दिनकी पहली बिक्री। जब तक बोहनी नहीं हुई रहती, तब तक दूकानदार किसीको उधार सौदा नहीं देते। उनका विश्वास है कि पहली बिक्री यदि अच्छी होगी, तो दिन भर अच्छी होगी। इस पहली बिक्रीका शकुन किसी समय सब देशोंमें माना जाता था।

बोहारना ( हिं० क्रि० ) बुहारना देखो।

बोहारी ( हिं० स्त्री० ) झाड़ू।

बोहिया ( हिं० स्त्री० ) चीनमें होनेवाली एक प्रकारकी चाय। इसकी पत्तियां छोटी और काली होती हैं।

बौंड ( हिं० स्त्री० ) १ टहनी जो दूर तक डोरीके रूपमें गई हो। २ लता, बेल।

बौंडना (हिं० क्रि०) लताकी तरह बढ़ना, टहनी फेंकना।

बौंडर ( हिं० पु० ) घूम घूम कर चलनेवाली वायुका झोंका, बगूला।

बौंडी ( हिं० स्त्री० ) १ पौधों या लताओंके वे कच्चे फल जो साररहित होते हैं। २ फली, छीमी।

बौआना ( हिं० क्रि० ) १ स्वप्नावस्थाका प्रलाप, सपनेमें कुछ कहना।

बौखल ( हिं० वि० ) पागल, सनकी।

बौखलाना (हिं० क्रि०) कुछ कुछ पागल हो जाना, सनक जाना।

बौछा (हिं० स्त्री०) हवाका तेज झोंका जो वेगमें आंधीसे कम हो।

बौछाड़ (हिं० स्त्री०) १ वायुके झोंकेसे तिरछी आती हुई बूंदोंका समूह, झड़ास। २ लगातार बात पर बात जो किसीसे कही जाय। ३ वर्षाकी बूंदोंके समान किसी वस्तुका बहुत अधिक संख्यामें कहीं आ कर पड़ना। ४ बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। ५ व्यंग्य पूर्ण वाक्य जो किसीको लक्ष्य करके कहा जाय, ताना।

बौछार (हिं० स्त्री०) बौछाड़ देखो।

बौड़हा (हिं० वि०) पागल, बावला।

बौता (हिं० पु०) समुद्रमें तैरता हुआ निशान, तिरौंदा।

बौद्ध (सं० क्लो०) बुद्धेन प्रणीत बुद्ध अण्। १ बुद्धकृत निरीश्वर शास्त्र। मत्स्यपुराणमें लिखा है, कि बृहस्पति इस शास्त्रके प्रवर्त्तक थे। (मत्स्यपु० २४ अ०) २ बुद्ध मतावलम्बी धर्मसम्प्रदाय। बुद्धशास्त्र वेत्ति अधीते वा अण्। (त्रि०) ३ बुद्धशास्त्राध्यायी। ४ बुद्धशास्त्र वेत्ता। पर्याय—भिन्नक, क्षपण, शह्लोक, वैनासिक।

बौद्धधर्म—भगवान बुद्ध द्वारा प्रवर्त्तित धर्म। भगवान शाक्यबुद्धके भक्त जिस धर्मके अनुसार चलते हैं, वही बौद्धधर्म है।

बौद्धधर्मकी उत्पत्ति।

भारतवर्षमें बौद्धधर्मका आविर्भाव कबसे हुआ, उसका ठीक ठीक पता लगाना कठिन है। पर हां इतना स्थिर हो चुका है, कि उपनिषद्युगके अवसानके साथ ही साथ बौद्धधर्मका आविर्भाव हुआ। कारण, बौद्धधर्मके त्रिपिटक और सूत्रकी पर्यालोचना करनेसे साफ साफ मालूम होता है, कि उस समय उपनिषत् या वेदान्तमत उन्नतिकी चरम सीमा पर था। योगसाधना वेदान्तका अङ्ग नहीं होने पर भी यथार्थमें वैदान्तिकोंने उसकी पूर्णाङ्गता सम्पादन करनेमें विरुद्धमत प्रकाश नहीं किया है। योगसूत्रकार पतञ्जलिके समयमें योगधर्मकी जितनी उन्नति तथा पुष्टि हुई थी, बुद्धदेवके आविर्भावकालमें उतना जनसमाजमें प्रचार न रहने पर भी योगचर्य्या जो भिक्षु या संन्यासिसमाजमें विशेष आदृत और अनुष्ठित थी, यह प्राचीन बौद्धग्रन्थादिकी आलोचना करनेसे स्पष्ट प्रतीत होता है। बुद्ध प्रवर्त्तित कर्मवाद और आत्माका देहान्तरवाद उस समय जनसाधारणमें प्रचलित था, इसमें सन्देह नहीं। बौद्धगण यद्यपि आत्माका अस्तित्व स्वीकार नहीं करते, किन्तु वे कर्मफलको अपने धर्मतत्त्वका सार मानते हैं। जीव या आत्माका यह धर्म बौद्ध मनोविज्ञानका सम्पूर्ण विरोधी होने पर भी उस समयके वेदान्त और योगतत्त्वके प्रचारविषयके निदर्शन स्वरूप में बौद्धोंको धर्मनीतिमें स्थान मिला था।

बौद्धधर्मके आविर्भावके समय शिक्षित और चिन्ताशील भारतवासीकी पारलौकिक मुक्तिचिन्ता गभीर दुश्चिन्ता (बौद्धमतसे सम्वेग) में परिणत हुई। तब वे किस आदर्शको लक्ष्य कर धर्म और नीतिके पथ पर अग्रसर हुए थे, उसकी आलोचना करनेसे जान पड़ता है, कि उस समय सभी दुःखमय जीवनकी यन्त्रणा, वार्द्धक्य तथा मृत्युकी आशङ्कासे डर गए थे। बारम्बार जन्म परिग्रहके भयने उनकी इस पीड़ादायक चिन्ताको और भी भयानक बना दिया था। सभी सम्प्रदायके मनुष्य उस समय जीवनको अत्यन्त गुरुभार समझते और इसीको ही मानवजीवनके एकमात्र अविमिश्र दुःखका कारण मानते थे। इसीलिए सभी पुनर्जन्म या 'संसारयन्त्रणा' से मुक्तिलाभ करनेमें व्यतिव्यस्त थे। सबोंका यह दृढ़ विश्वास था, कि पुनर्जन्मनिवारणके विभिन्न उपाय हैं और उनका अनुष्ठान करनेसे ही मुक्तिलाभका पथ प्रशस्त होता है। अज्ञान या अविद्याकी पराजय और श्रेष्ठतम सत्य (सम्बोधि) का लाभ करना ही इस पथाश्रयका एकमात्र उपाय है। वैदान्तिकोंका कहना है, कि परमात्मा और जीवात्माके एकान्त भावमें एक साथ समाश्रयका नाम सत्य या तत्त्वज्ञान है। सांख्यवादी कहते हैं, कि आत्मा अनन्त तथा विशुद्ध है और भूत या तत्त्वसे सम्पूर्ण विच्छिन्न है। आत्मा देहावच्छिन्न रहने पर भी कदापि पवित्रता नष्ट नहीं करती। बौद्धगण आत्मा या परमात्मारूप किसी पदार्थका अस्तित्व स्वीकार नहीं करते।

आर्यसत्य।

सम्बोधि लाभके बाद महात्मा शाक्यबुद्धने आर्य सत्य और प्रतीत्य समुत्पादका प्रचार किया। बुद्धदेव [illegible]। यही दो उनके प्रचारित धर्मकी मूलभित्ति है, यथा—दुःख, समुदय, निरोध तथा प्रतिपद् या मार्ग ये ही चार सत्य आर्यसत्य हैं। दुःख है, यह बात कोई

अस्वीकार नहीं कर सकते। दुःख रहना ही उसका कारण (समुदय) है। इस दुःखका निरोध करनेके लिए अवश्य ही कोई पथ या उपाय (मार्ग) है।

प्रतीत्यसमुत्पाद।

प्रतीत्यसमुत्पाद बारह प्रकारका है, इसका दूसरा नाम 'द्वादशनिदान' भी है। इस द्वादश निदानका उद्देश्य है दुःखका यथार्थ कारण निर्णय करना। आयुर्वेदके साथ निदानका जो सम्बन्ध है, आर्यसत्यके साथ द्वादश-निदानका भी वही सम्बन्ध है। द्वादशनिदानके नाम ये हैं;—अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति, जरामरण, शोक, परिवेदना, दुःख, दौर्मनस्य, उपायास इत्यादि।

बुद्धदेव शब्द देखो।

मनुष्य पहले अविद्याच्छन्न अर्थात् अज्ञान निद्राभिभूत रहते हैं। थोड़ी चेतना लाभ करनेसे ही वे कितने ही संस्कारके वशीभूत हो जाते हैं—उस समय भी उनके पूर्णचेतना नहीं होती। संस्कारके बाद विज्ञान या चेतना होती है। चेतना होनेसे द्रव्यका नाम और रूप का ज्ञान होता है। नामरूपकी उपलब्धिके बाद षडायतन अर्थात् षडिन्द्रियकी क्रिया आरम्भ होती है जिससे बाहरी वस्तुके साथ संस्पर्श होता है। संस्पर्शसे वेदना या अनुभूति और अनुभूतिसे तृष्णा अर्थात् सुखप्राप्ति तथा दुःखपरिहारकी इच्छा होती है। तृष्णासे कार्यकी चेष्टा या उपादान उत्पन्न होता है। चेष्टाका आरम्भ होनेसे एक अवस्थाकी उत्पत्ति होती है जो अच्छी या बुरी भी हो सकती है। इस अवस्थाका नाम है भव। इसके बाद ही जाति या नवजीवनकी उत्पत्ति होती है। जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका विनाश अवश्यम्भावी है सुतरां जीवनमें शोक, दुःख जरामरण प्रभृतिका अवश्य ही भोग करना होगा। जिससे इस जरामरण दुःखादिसे निस्तार मिले उस पथका आविष्कार करना ही बुद्धधर्मका मुख्य उद्देश्य है। यहां भी योगशास्त्रके साथ उक्त मतका उतना विरोध नहीं है। अविद्या ही सभी अमङ्गलका निदान है। इसका विनाश करना दोनोंका ही उद्देश्य है। किन्तु इसमें एक कठिन समस्या है। योगशास्त्रकार दार्शनिक शाश्वतवादी—वे अमृतत्व और अपरिवर्त्तनशीलताके आकांक्षी हैं। जो क्षणस्थायी तथा परिवर्त्तनशील है, वही अमङ्गल है और इसका परिहार करना ही जीवोंका प्रधान कर्त्तव्य है। किन्तु बौद्धधर्म आत्माके अस्तित्वका स्वीकार नहीं करते। आत्माके सम्बन्धमें तीन मत प्रबल हैं—

(१) शाश्वतवाद—आत्मा इहलोक तथा परलोक दोनों लोकमें वर्त्तमान रहती है।

(२) उच्छेदवाद—आत्मा केवल इसलोकमें ही वर्त्तमान रहती है।

(३) बुद्धमत—आत्मा इहलोक अथवा परलोकमें प्रकृतिरूपसे वर्त्तमान नहीं रहती।

हिन्दूधर्म और बौद्धधर्मके कर्मवादमें भी प्रभेद है। हिन्दूगण आत्माके अमरत्व पर विश्वास करते हैं और इनका कर्मवाद इसी विश्वासके ऊपर संस्थापित है। आत्माके अमरत्व पर अविश्वासी बौद्धोंने ऐसा न मान कर कर्मवादको काटछांट कर अपने मतानुसार कर लिया है। बौद्धधर्ममें कर्मका इस प्रकार वर्णन किया है,—"मनुष्य की मृत्यु होनेसे उसके भिन्न भिन्न खण्ड भी उसीके साथ विनष्ट होते हैं। किन्तु उसके कर्म द्वारा विनष्ट खण्डका जगह नये खण्ड उपस्थित होते हैं तथा इन्हीं सब खण्डोंके द्वारा गठित अन्य एक जीव परलोकमें जन्म-ग्रहण करता है। यद्यपि यह जीव भिन्न खण्ड द्वारा गठित है, किन्तु कर्म एक रहनेके कारण यह जीव और मृत मनुष्य दोनों ही एक हैं। सुतरां संसारमें जीव यद्यपि असंख्य जन्ममृत्युके अधीन है, तो भी एक कर्म-सूत्र द्वारा ही उसका एकत्व स्थिर रहता है।"

ऐसी नीति और या युक्ति परिस्फुट सी प्रतीत होने पर भी कुछ विशेष होता जाता नहीं है। कारण, बौद्धधर्म ज्ञानविज्ञानके अतीत और सदा सत्यके ऊपर प्रतिष्ठित है ऐसा बौद्धगण विश्वास करते हैं।

"सवम् अनित्यम्", सभी अनित्य क्षणस्थायी है—यह बौद्धधर्मका एक मूलसूत्र है। इस मूलसूत्र पर बहुतेरे आक्षेप करते हैं,—"यदि सभी अनित्य या क्षण स्थायी हैं, तो कर्म किस प्रकार जन्मजन्मान्तरमें स्थायी होगा?" इसके उत्तरमें कहा जा सकता है, कि समस्त पार्थिव आनन्य है। जिस कर्म द्वारा मानवजीवन

जन्मजन्मान्तरमें प्रथित है, वह आदर्शमूल पार्थिव अनित्य वस्तुके मध्य नहीं गिना जाता।

एक और भी कठिन समस्या है। बौद्धधर्मग्रन्थमें बहुत सी पौराणिक गल्प पायी जाती हैं।

इन सब विषयोंकी आलोचना करनेसे यही मालूम होता है, कि परवर्ती बौद्धशास्त्रग्रन्थमें जिस धर्मकी कथा पाई जाती है, महात्मा बुद्धका प्रचारित मूलधर्म उससे पृथक् है। किसी किसी पण्डितका कहना है, कि महात्मा शाक्यबुद्धने कर्मवादका प्रचार नहीं किया और न अतिरञ्जित उपन्यास, रूपक गल्प या आख्यायिका ही उनके ज्ञानगर्भ तथा तत्त्वज्ञानपूर्ण उपदेशको कलङ्कित कर सकती है। उनके निर्वाणप्राप्तिके बाद जितने धर्मग्रन्थ सङ्कलित हुए हैं, उतने ही वे नानारूप आवर्जना तथा जञ्जालजालसे पूर्ण हैं।

अन्तर विषयके सम्बन्धमें जो कुछ हो, बौद्धधर्मकी मूलनीतिका कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ है। दार्शनिकत्व प्रदान करनेसे बौद्धधर्मको निरीश्वर मायावाद कहा जा सकता है। पाश्चात्य दार्शनिक बार्कली का मायावाद भी इसी प्रकारका है। बाह्यजगत्‌की एक सत्ता है इस भ्रान्त संस्कारके वशीभूत हो कर मनुष्य नाना प्रकारके भ्रममें पतित होते हैं। मनुष्य अपनी अनुभूतिके सिवा और कुछ अनुभव नहीं कर सकते, वे स्वयं ही अपनी अनुभूतिके कारण हैं। संसारके समस्त ज्ञात और ज्ञेयपदार्थ कर्त्ताके ज्ञानानुसार हैं। वे सभी 'अहं' अर्थात् 'मैं' के फलस्वरूप हैं, 'मैं' के लिये 'मेरे' द्वारा 'मुझ' में ही वर्त्तमान हैं। बार्कलीके मतसे ईश्वरवाद है, किन्तु बौद्धमतसे नहीं, सिर्फ इतना ही प्रभेद है।

सत्त्वका विभिन्न उपादान।

प्रत्येक जीवके दो विभिन्न उपादान हैं, नाम और रूप। नाम द्वारा मानसिक गुण और रूप द्वारा बाह्य गुण प्रकाशित होते हैं। वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान ये चार गुण 'नाम' द्वारा और मृत्तिका, वारि, अग्नि तथा मरुत् ये चार महाभूत तथा इनसे उत्पन्न सभी पदार्थ 'रूप' द्वारा प्रकाशित होते हैं।

उपर्युक्त सभी गुण या स्कन्धकी समष्टि अथवा जन्म और पुनर्जन्मके कारणका नाम है कर्म। अतः ऐसा कहा जाता है, कि नाम और पुनर्जन्मकी धारा वाहिक समष्टिका नाम संसार है। कर्मका आरम्भ नहीं, किन्तु अन्त हो सकता है। इस अवस्थाप्राप्तिके आठ पथ निर्दिष्ट हुए हैं।

मुक्तिपथ।

निर्वाणकामी जीवको चार अवस्थाका अतिक्रम करना पड़ता है। जो क्रमागत इन चार अवस्थाओंको प्राप्त हुए हैं, वे यथाक्रम श्रोत आपन्न, सकृदागामी, अनागामी और अर्हत कहलाते हैं। इनका साधारण नाम श्रावक या सेवक है। प्रत्येक अवस्था फिर दो भागमें बंटी है, जैसे मार्ग और फल।

मुक्तिगामीकी चार अवस्था।

(१) जिनने प्रथम अवस्था प्राप्त की है उनका नाम है श्रोत आपन्न। इन्होंने संयोजन (मानवप्रवृत्ति) के प्रथम तीन बन्धनका अतिक्रम किया है, इन्हें अपाय या किसी विपद्‌का भय नहीं।

(२) जो फिरसे मनुष्ययोनिमें जन्म लेते हैं, वे सकृदागामी हैं। वे केवल सन्देहादि प्रथम तीन बन्धन से मुक्ति नहीं पाते; इसके सिवा उन्होंने राग (अनुराग, स्नेह, ममता), द्वेष और मोह इन तीन मलोंको वशीभूत किया है।

(३) जो अनागामी पांच बन्धनसे मुक्त हुए हैं। कामलोकमें उनका पुनर्भ्रमण न हो कर ब्रह्मलोकमें ही जन्म होगा।

(४) अर्हत्—जो समुदय अपवित्रता दूर कर समस्त क्लेशोंकी उपेक्षा करनेमें समर्थ हैं, किसी प्रकारके प्रलोभनसे भी जो नीतिपथसे विच्युत नहीं होते, जिनके समस्त कर्त्तव्यकर्म सम्पन्न और सभी बन्धन छिन्न हुए हैं, वे ही अर्हत् हैं। वे चार प्रकारकी उच्चप्रकृति लाभ करते हैं—उनका फिर पुनर्जन्म नहीं होता।

निर्वाण।

जो उक्त चार अवस्थाका क्रमागत अतिक्रम कर मुक्तिपथके पथिक हैं, वे ही प्रकृत आर्य हैं। आर्यके जीवन का मुख्य उद्देश्य है निर्वाणलाभ। निर्वाणके विषयमें बहुत कुछ कहना है, यहां पर ... दी जाती है।

निर्वाण का प्रकारका है—अर्थात् इस मार्गमें रह कर जो निर्वाणलाभ करते हैं, वह वैशाग्निकोंका जीवन्मुक्ति कहा जा सकता है। यही प्रथम निर्वाण है। इसका दूसरा बौद्धनाम उपाधिशेष है। अन्य निर्वाण का नाम है परिनिर्वाण। मृत्युके बाद बुद्धगण इसी निर्वाणके अधिकारी होते हैं। इस निर्वाणलाभसे चिरकालके लिये सभी प्रकारकी पार्थिव यन्त्रणाका अवसान होता है। यह विशुद्ध आनन्दकी अवस्था तथा अनन्तकालस्थायी है।

इस परिनिर्वाण प्राप्तिके बाद अनुभवक्षमता वर्त्तमान रहती है या नहीं, यही एक आलोच्य विषय है। बौद्धधर्मका मूलतत्त्व ले कर विचार करनेमें निर्वाणप्राप्ति के बाद अनुभवक्षमताका रहना असम्भवपर प्रतीत नहीं होता, किन्तु इस विषयमें बौद्धोंके मनमें भी विषम सन्देह आ पड़ता है। कारण उन्होंने जब बुद्धसे सुना, कि वे पूर्व जन्मकी सभी घटनाएं कह सकते हैं तब उनके मनमें यह संस्कार हो सकता था, कि निर्वाणप्राप्तिके बाद भी स्मृति और अनुभव रहनेकी सम्भावना है। जो कुछ हो, इस सम्बन्धमें आलोचना करना महात्मा बुद्ध का ही निषेध है।

धर्म-साधना।

निर्वाणप्राप्तिकी चेष्टा करनेमें बहुत ध्यानधारणाका प्रयोजन है। इस उच्च अवस्थाका आयोजन करनेमें जिस सोपानकी आवश्यकता है, उसका नाम भावना, (अर्थात् चर्चा या अनुशीलन) है। इसके चार स्तर हैं—मैत्री, करुणा, मुदिता (सन्तोष) और उपेक्षा। योगियोंकी साधनावस्थाके साथ इसका सादृश्य है। इसका दूसरा साधारण नाम ब्रह्मविहार है।

मतानुसार और भी एक भावनाका उल्लेख देखनेमें आता है। उसका नाम 'अशुभ' भावना अर्थात् शरीरमें जो सब घृणित भाव हैं, उनकी उपलब्धि है। यहां भावनाका अर्थ चर्चा नहीं, किन्तु उपलब्धि है। यह अशुभ दश प्रकारका है। पालिग्रन्थमें इस दश अशुभ भावनाके नाम ये हैं—१ उद्धुमातक, २ विनीलक, ३ विपुब्बक, ४ विच्छिद्दक, ५ विक्खायितक, ६ हतविक्खित्तक, ७ लोहितक, ८ पुळुवक, ९ अट्ठिक। रक्त, मांस, अस्थि, कृमि प्रभृति द्वारा देहका जो अवस्थान्तर होता है, यह इस अशुभ द्वारा ही सूचित हुआ करता है।

उक्त दश प्रकारके अशुभ तथा चार प्रकारके ब्रह्मविहार ४० 'कम्मट्ठान' या धर्म कार्यके अङ्गविशेष विसुद्धिमग्गमें वर्णित हैं। ललितविस्तरमें ये सब १०८ धर्मालोकमुखके अन्तर्निविष्ट हैं। अशुभभावनामें एक प्रकारकी गूढ साधना भी है जिसका नाम कसिण अथवा कृत्स्नायतन है। इस साधनाके समय जिन दश वस्तुओंके प्रति मन संयोग कर भावना करनी होती है, उनके नाम ये हैं, यथा—मृत्, वारि, अग्नि, वायु, नील, पीत, लोहित, श्वेत, आलोक और शून्य या व्योम भावना।

उक्त चालीस प्रकारके मध्य दश प्रकारकी अनुस्मृति का उल्लेख देखनेमें आता है। यथा—बुद्ध, धर्म, सङ्घ, देवता, नीति त्याग, मृत्यु, देह, आनापानस्मृति (निश्वास प्रश्वासकी नियमबद्धता) तथा शान्ति या निर्वाण।

आनापानस्मृति द्वारा निश्वास प्रश्वासके प्रति मन निविष्ट कर जितने ही निर्दिष्ट विषयकी चिन्ता करनी होती है, यह अति उच्च अङ्गकी समाधि है।

कम्मट्ठानके मध्य 'आरुप्प' नामक चार विशेष हैं, ये भी ब्रह्मलोकानुगत हैं। इन चारोंके नाम हैं 'आकासानञ्चायतन (आकाशानन्त्यायतन) 'विञ्ञाणञ्चायतन' (विज्ञानान्त्यायतन), 'आकिञ्चञ्ञायतन' (आकिञ्चन्यायतन) और 'नेवसञ्ञानासञ्ञायतन' (नैवसंज्ञा नासंज्ञायतन)। जो ध्यान और समाधि द्वारा ये सब लोकविषयलाभ करनेमें समर्थ हैं उन्होंने ही धर्मकी अत्यन्त उच्च अवस्था प्राप्त की है। इसमें भी एक उच्चतर अवस्था है जिसका नाम है सञ्ञावेदितनिरोध। इस अवस्थामें साधकको निर्मोक्ष लाभ होता है।

यद्यपि कम्मट्ठानके मध्य चार प्रकारके ध्यानका विशेष उल्लेख नहीं है, किन्तु स्वरूप विचार कर देखनेसे मालूम होगा, कि चार प्रकार ध्यानकी अवस्था साधना के चार अङ्गविशेषरूपमें वर्णित हैं। यहां पर यह कह देना आवश्यक है, कि बौद्धधर्मप्रचारके बहुत पहले ही ध्यानका प्रथा प्रचलित थी। किसी किसीके मतसे

ध्यानकी अवस्था पाच प्रकारकी बतलाई गई है। उन्होंने द्वितीय अवस्थाको दो भागोंमें बांटा है।

ध्यानका विषय कहनेमें समाधिका विषय भी कहना होता है। समाधिके नाना प्रकारके भेद देखनेमें आते हैं। बौद्धशास्त्रमें तीन प्रकारकी समाधिके नाम ये हैं—सवितर्क सविचार, अवितर्क विचारमात्र और अवितर्क अविचार। अन्य तीन प्रकारकी समाधिका नाम शून्यता, अनिमित्त (कारणहीन) और अप्पणिहित (अप्रणिहित) या विशेष उद्देश्यविहीन है।

समाधिके दो सोपान हैं। निकृष्ट समाधिका नाम उपचारसमाधि और उत्कृष्ट समाधिका नाम अप्पना (अर्पणा) समाधि है। महायानमतावलम्बी बौद्धगण और भी अनेक प्रकारकी समाधि बतलाते हैं। प्रज्ञापारमिताग्रन्थमें १०८ प्रकारकी समाधिका उल्लेख मिलता है।

पूर्वकथित चालीस प्रकारके कम्मत्थानके अलावा और भी दो कम्मका उल्लेख देखा जाता है। आहारपटिकुल्लसञ्ञा (अर्थात् आहारप्रतिकूलसंज्ञा या आहार्य द्रव्यमें अपवित्रताबोध), चतुधातुवत्थान अर्थात् चार महाभूतका निर्णयकरण इत्यादि।

भूस्थान और जीवश्रेणीभेद।

बौद्धशास्त्रके मतसे विश्वब्रह्माण्डमें बहुसंख्यक चक्रवाल हैं। प्रत्येक चक्रवालमें विभिन्न पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, स्वर्ग और नरक हैं। हम लोगोंका पृथ्वीके केन्द्रस्थलमें मेरु अथवा सुमेरुपर्वत प्रतिष्ठित है। जिसके चारों ओर प्रधान प्रधान कुलाचल पर्वत और इन सब पर्वतोंका अतिक्रम कर चार महाद्वीप अवस्थित हैं। उत्तरमें उत्तरकुरु, मेरु पर्वतके दक्षिणमें जम्बूद्वीप (भारतवर्ष), पश्चिममें अपर-गोदान और पूरबमें पूर्वविदेह वर्तमान है।

प्रत्येक गोलकमें तीन लोक या धातु हैं। सबसे निम्न कामलोक, उसके ऊपर रूपलोक और सर्वोपरि अरूपलोक है।

सबसे निम्न लोकमें छ प्रकारके देवताका वास है—१ चारों ओर पाल, २ तैंतीस देवता, ३ यमगण, ४ तुषितगण, ५ निर्माणरतिगण ६ परिनिर्मित और वशवर्तिगण। इनके सिवा मनुष्य असुर प्रेत और जीवलोक तथा नरक मिला कर कुल ग्यारह कामलोक हैं।*

रूपब्रह्मलोक सोलह भागोंमें विभक्त है। जिनने काम को जीत कर देवत्व लाभ किया है, वे अपने अधिकारानुसार इस लोकमें वास कर सकते हैं। इन लोकोंमेंसे १ला निम्नलोक ब्रह्मपारिसद्य, २रा ब्रह्मपुरोहित, ३रा महाब्रह्म, ४था परित्ताभ, ५वां अप्रमाणाभ, ६ठा आभास्वर, ७वां परीत्तशुभ, ८वां अप्रमाणशुभ ९वां शुभकृत्स्न, १० वां बृहत्फल, ११वां असंसत्व, १२वां अवृह, १३वां अतपस्, १४वाँ सुदृश, १५वां सुदर्शन और १६वां सर्वोच्च लोक अकनिष्ठ है। प्रथम ध्यानके पहले, दूसरे और तीसरे स्तरमें जो पारदर्शी हैं वे प्रथमसे तृतीय लोकके अधिकारी होते हैं। द्वितीय ध्यानके अधिकारी चतुर्थसे षष्ठ लोकके वासोपयोगी हैं। तृतीय ध्यानके अधिकारी सातवें से नवें लोकमें, चतुर्थ ध्यानके अधिकारी दसवेंसे ग्यारहवें में और अनागामिगण बारहवेंसे सोलहवें लोकमें वास करनेके उपयुक्त हैं। रूपब्रह्मलोकके बाद अरूपब्रह्मलोक है। इसका पुनः भिन्न भिन्न स्तर निर्णीत हुआ है।

जीवोंके रहनेके लिए कुल इकतीस स्थान निर्दिष्ट हैं। सबसे निम्न स्थानका नाम नरक या निरय है। आठ प्रकार नरकका उल्लेख है, यथा—सञ्जीव, कालसूत्र, सङ्घात, रौरव, महारौरव, तपन, प्रतापन और अवीचि। उक्त आठ नरकके सिवा और भी अनेक छोटे छोटे नरक देखनेमें आते हैं।

नरकके ऊपर इतरप्राणियोंका स्थान है। इसके ऊपर प्रेतलोक और उसके भी ऊपर असुर लोक है। असुरोंमें राहु सब प्रधान है। नरक और इससे ऊपर उक्त तीन लोक अपायलोक कहलाता है। यही भोगका स्थान है।

इकतीस स्थानके अलावा और भी एक लोक है जहां प्राणिगण अपने कर्मफलानुसार उच्च और नीचगति पा कर रहते हैं। जिसने अति उच्चपद पाया है, उसकी भी नीच अधोगति हो सकती है। केवल बुद्ध, प्रत्येक बुद्ध और अर्हतोंकी अधोगति नहीं होता।

* अभिधम्मत्थसङ्गह, अङ्गुत्तरनिकाय और व्युत्पत्ति द्रष्टव्य।

निम्नलिखित रूपसे श्रेणीविभाग किया गया है,—(१) बुद्ध, (२) प्रत्येकबुद्ध, (३) अर्हत्, (४) देव, (५) ब्रह्म, (६) गन्धर्व, (७) गरुड़, (८) नाग, (९) यक्ष, (१०) कुम्भाण्ड, (११) असुर, (१२) राक्षस, (१३) प्रेत, (१४) नरकवासी।

उक्त श्रेणीविभागके मध्य केवल प्रथमोक्त तीन ही आलोच्य विषय हैं।

### अर्हत्।

निर्वाणप्राप्तिके पूर्व चार सोपानका उल्लेख किया गया है। सर्वोच्च सोपान पर अर्हत्‌गण अवस्थित हैं। सामान्य मनुष्यकी अपेक्षा इनकी मानसिक शक्ति कहीं श्रेष्ठ है। ये अर्थ, धर्म, निरुक्ति और प्रतिभान यही चार प्रकारकी प्रतिसम्भिदासे सम्पन्न हैं। इसके सिवा इनके पांच प्रकारकी अभिज्ञा है। अभिज्ञा द्वारा ये अमानुषिक और आश्चर्यजनक कार्य करनेमें, पूर्व जन्मकी कथा स्मरण रखने, पृथिवीके सभी शब्द सुनने तथा उनके अर्थ समझने, पृथिवीकी समस्त घटनाएं देखने और जीवोंकी मृत्यु तथा पुनर्जन्म किस प्रकार होता है, उसे समझनेमें समर्थ हैं। इनके और एक प्रकारकी अभिज्ञा है जिसके द्वारा सभी तीन प्रवृत्ति समूल विनष्ट हो जाती हैं। अर्हत्‌गण इन्हीं आठ प्रकारकी विद्यासे विशिष्ट हैं। इनका सर्वप्रधान गुण प्रज्ञा है। इस प्रज्ञाके बलसे ही ये भवसमुद्र पार हो जाते और इसी लिए ये प्रज्ञाविमुक्त कहलाते हैं। अर्हतोंके निम्नश्रेणीस्थ अनागामी प्रभृति इस अवस्थाको लाभ नहीं कर सकते।

जो आर्य सत्य ज्ञान पानेके अधिकारी हैं, उनमेंसे अर्हत्‌गण ही सर्वश्रेष्ठ हैं। परन्तु तथागत आर्य, अर्हत् तथा श्रावक ये तीन शब्द एक ही अर्थमें व्यवहृत देखे जाते हैं।

परवर्त्तिकालमें महायान सम्प्रदायिगण प्रत्येक शब्दसे पुरातन बौद्धोंको समझाते और उनके विरुद्धवादी हीनयान सम्प्रदायके प्रति भी उसी शब्दका प्रयोग करते थे।

महायानगण समस्त बौद्धसन्तानको यान या सम्प्रदायमें विभक्त करते हैं—(१) श्रावकयान, (२) प्रत्येकबुद्धयान और (३) बोधिसत्त्वयान। सद्धर्मपुण्डरीक ग्रन्थमें इन्हीं तीन यानका उल्लेख है। इस ग्रन्थके मतसे स्थविर अर्थात् पूर्वमतावलम्बिगण श्रावक, निर्जनमें चिन्तापरायण दार्शनिकगण प्रत्येकबुद्ध और सिद्ध, गुरु तथा धर्मप्रचारकगण बोधिसत्त्व कहलाते हैं।

यद्यपि बौद्ध धर्मावलम्बियोंमें श्रेणीविभाग तथा मत विरोध होता है, तो भी अन्तमें सबोंकी चरम गति एक है। इसलिए तथागतने कहा है, "मैं सभी जीवोंको निर्वाणके पथ पर ले आऊंगा। समस्त जीव मेरी ही सन्तान हैं।'

प्राचीन प्रत्येकबुद्धयान और महायान बौद्धोंका कहना है, कि अर्हत्‌की अपेक्षा प्रत्येकबुद्ध कहीं श्रेष्ठ हैं। प्रत्येकबुद्ध भी बुद्धकी तरह अपनी क्षमता द्वारा निर्वाण प्राप्तिके उपयोगी ज्ञानलाभ करनेमें समर्थ हैं, किन्तु धर्मप्रचार करना उनका कर्त्तव्य नहीं है। ये समस्त विषयके दर्शन नहीं कर सकते और सभी विषय बुद्धके सिंहासनके अधिकारी हैं। प्राकृतिक नियमके बलसे बुद्ध और प्रत्येकबुद्ध एक समय वास नहीं कर सकते।

### बुद्ध।

बुद्ध कौन हैं, इसे जाननेमें उनके बाह्य और आभ्यन्तरिक सभी लक्षणोंकी आलोचना करना आवश्यक है। बाह्यलक्षणके मध्य प्रथम उल्लेखयोग्य ३२ महापुरुषलक्षण है, बाद ८० प्रकारके अनुव्यञ्जन। इनके अलावा २१६ माङ्गल्य लक्षणकी कथा वर्णित है। बुद्धके प्रत्येक पैरमें १०८ करके ये लक्षण या चिह्न वर्त्तमान रहते हैं। बुद्धगण अपने देवचक्षु द्वारा प्रतिदिन छः बार पृथ्वीको देखते हैं। कोई कोई कहते हैं कि गौतम बुद्धके १२ हाथ थे और फिर कोई उनके १८ हाथ बतलाते हैं। सिंहल प्रदेशके आदम शैलशृङ्ग पर उनका जो श्रीपदचिह्न देखा जाता है, वह ५ फुटसे अधिक लम्बा और १२॥ फुट चौड़ा है।

बुद्धकी मानसिक गुणावली तीन भागोंमें विभक्त है—(१) दश बल, (२) अठारह आवेणिकधर्म और (३) चार वैशारद्य। दश बल रहनेके कारण बुद्धका दूसरा नाम दशबल भी है। उपयुक्त या अनुपयुक्तताका ज्ञान, कर्मका अवश्यम्भाविफल, उद्देश्यलाभार्थ प्रकृतपथ, विभिन्न भूतका ज्ञान प्रभृति दश बलका उल्लेख है। भूत

भविष्यत और वर्तमान सभी घटना देखनेकी क्षमता प्रभृति अठारह आवेणिक धर्म हैं। निम्नलिखित चार वैशा रद्यको कथा देखी जाती है, यथा—(१) तथागतका सर्वदर्शन क्षमतालाभ, (२) पापहीनता, (३) निर्वाण प्राप्तकी अन्तरायोंका ज्ञानलाभ और (४) प्रकृत मुक्ति पथ दिखानेकी क्षमता।

बुद्धके अन्य नाम—जिन, सुगत, तथागत, अर्हत्, शास्ता, भगवत, दशबल, लोकविदू, सर्वज्ञ, निर्भय, निरवद्य, पुरुषदम्यसारथि, षड्भिज्ञ, अनुत्त, नरोत्तम, देवातिदेव, त्रिकालज्ञ, त्रिप्रातिहार्यसम्पन्न, इत्यादि। ये सब नाम सभी समयके बुद्धोंके प्रति प्रयोज्य हैं। वर्त्तमान समयके बुद्धके और भी कितने विशेष नाम हैं,—शाक्यसिंह, शाक्यमुनि, शाक्य, शाक्यपुङ्गव, सिद्धार्थ, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, आदित्यबन्धु, सूर्यवंश, आङ्गिरस और गौतम इत्यादि।

प्राचीन बौद्ध शास्त्रग्रन्थके मतानुसार वर्त्तमान युगके बुद्धके पूर्व और भी २४ बुद्ध हो गये हैं जिनके नाम ये हैं,—दीपङ्कर, कौण्डिन्य, मङ्गल, सुमना, रैवत, शोभित, अनोमदर्शी, पद्म, नारद, पद्मोत्तर, सुमेध, सुजात, प्रियदर्शी, अर्थदर्शी, धर्मदर्शी, सिद्धार्थ, पुष्य, विपश्यिन्, शिखी, विश्वभू, ककुच्छन्द, कोणागमन और काश्यप।

भूतकालमें जैसे बुद्ध थे, भविष्यत्में भी वैसे ही बुद्ध अवतीर्ण होंगे। उनका नाम मैत्रेय होगा और अजित उनकी उपाधि होगी। वर्त्तमानमें वे तुषितस्वर्गमें बोधिसत्त्वरूपमें वास करते हैं।

समस्त तथागत ही प्रायः समतुल्य हैं, पर सामान्य विषयमें परस्परमें थोड़ा प्रभेद देखा जाता है। शारीरिक आकृति और आयुपरिमाणमें कुछ विशेषता है। किसीने क्षत्रियवंशमें और किसीने ब्राह्मणकुलमें जन्मग्रहण किया है। सभी बुद्धोंने एक ही प्रकारकी नीतिका प्रचार किया था। कालक्रमसे जब प्रचारित सत्य अन्तर्हित हो गया तब एक बुद्धने जन्मग्रहण कर अपनी क्षमताके बलसे बिना किसी गुरुकी सहायताके ही पूर्व प्रचारित नीति और सत्यका पुनः आविष्कार किया।

महायान सम्प्रदायगण और भी एक प्रकारके बुद्ध बतलाते हैं जो ध्यानीबुद्धके नामसे प्रसिद्ध हैं। इनके नाम हैं—वैरोचन, अक्षोभ्य, रत्नसम्भव, अमिताभ और अमोघसिद्धि। इनके फिर पञ्चशक्ति या पञ्चतारा महायोगिनी हैं।

पाश्चात्य पण्डितोंके मतसे शाक्यमुनि ही एकमात्र ऐतिहासिक बुद्ध हैं। इनसे पहले जिनके नामका उल्लेख मिलता है, वह कल्पित है।

हम लोग बुद्धके बाह्यलक्षण और आभ्यन्तरीण गुणावलीकी समालोचना कर बुद्ध कैसे व्यक्ति थे इसकी जो मीमांसा करना चाहते हैं, उसे बुद्ध स्वयं ही इस प्रश्नका उत्तर दे गये हैं। बुद्धको एक वृक्षके नीचे बैठा हुआ देख कर एक ब्राह्मणने पूछा, "क्या आप देवता हैं?" बुद्धने उत्तर दिया, "नहीं।" "क्या आप गन्धर्व हैं?" उत्तर मिला 'नहीं।' ब्राह्मण बोले "क्या आप यक्ष हैं?" बुद्धने कहा, 'नहीं।' ब्राह्मणने फिर पूछा "क्या आप मनुष्य हैं?" बुद्ध बोले, "मैं मनुष्य भी नहीं हूं।" इस पर ब्राह्मणने बड़े ही आश्चर्यान्वित हो पूछा "तब आप कौन हैं?" बुद्धने उत्तर दिया, "हे ब्राह्मण! मैं बुद्ध हूं।" अतएव देखा जाता है, कि बुद्ध मनुष्यकी आकृति धारण करके भी प्रकृति और गुणमें मनुष्य नहीं थे। वे बुद्ध थे—किन्तु मनुष्य, देवता, यक्ष या गन्धर्व नहीं थे। अनेक अवस्थाका अतिक्रम करनेसे बुद्धत्व प्राप्त होता है।

### बोधिसत्त्व।

जो बुद्ध होनेके अधिकारी हैं, वे बोधिसत्त्व कहलाते हैं। बोधिसत्त्व शब्दका साधारण अर्थ 'बुद्धिमान जीव' है। जिनके बोधि है, वही बोधिसत्त्व हैं। किन्तु यह 'बोधि' सम्यक् सम्बोधिमें परिणत नहीं होती। यह अवस्था प्राप्त करनेसे बुद्ध हो जाता है।

बोधिसत्त्वकी तीन अवस्था है—अभिनीहार (अर्थात् बुद्धत्वप्राप्तिकी उच्च आकांक्षा), व्याकरण (तथागत कर्त्तृक भविष्यद्वाणी कि वे बुद्ध होंगे) और हलाहल (बुद्धत्व प्राप्त होनेसे पुनः जन्म न होगा, इसके लिये आनन्दध्वनि। यही उसका शेष जन्म है, पुनः जन्मग्रहणरूप क्लेश भोगना नहीं पड़ेगा) कोई कोई बोधिसत्त्वके जीवन-कार्यको चार भागोंमें बांटते हैं, यथा—मानस (अभिप्राय), प्रणिधान (दृढ़ सङ्कल्प), वाक्प्रणिधान (वाक्य द्वारा सङ्कल्पका प्रकाश) और विवरण (अभिव्यक्ति)।

बुद्धकी तरह बोधिसत्त्वके भी

महासत्त्व नाम ही अकसर व्यवहृत होता है। बौद्धधर्म ग्रन्थमें बहुतसे बोधिसत्त्वके विवरण पाये जाते हैं जिनमें से मैत्रेय, लोकेश्वर या अवलोकितेश्वर और मञ्जुश्री सर्वाधिक विख्यात हैं।

जो भविष्यत्‌में बुद्ध होंगे, उन्हें बहुजन्म अतिक्रम करने होंगे। पूर्वमें जो सब बुद्ध हुए, वे अपनी बुद्धत्व प्राप्तिके विषयकी भविष्यद्वाणी कर गए हैं। उनके जन्म जन्मान्तरके कार्य और गुणकी सैकड़ों प्रशंसा जातक तथा अवदान नामक बौद्धग्रन्थमें वर्णित हैं। वर्त्तमान भद्रकल्पके बुद्ध शाक्यमुनिके पूर्वजन्मके सम्बन्धमें वैसे ही अनगिनत इतिहास तथा गल्प लिखित और प्रचलित हैं। पालि चरियापिटक और आर्यशूर रचित जातकमाला देखो।

बोधिसत्त्वमें अनेक नैतिक तथा मानसिक गुणोंका रहना आवश्यक है। सभोंकी अपेक्षा प्रधान गुण है जीवोंके प्रति दया।

पालिधर्मग्रन्थमें दशपारमिता या महागुणका उल्लेख देखनेमें आता है। यथा—दान, शील, नेक्खम्म या (निष्क्रम या संसार त्याग), पञ्ञा (प्रज्ञा), विरिय (वीर्य), खन्ति (क्षान्ति), सच्च (सत्यवादिता), अधिट्ठान (दृढसङ्कल्प), मेत्ती (मैत्री या ममता), उपेक्खा (उपेक्षा)।

इन सब आध्यात्मिक गुणके अलावा बोधिसत्त्वमें उच्च मानसिक गुणों का रहना भी परमावश्यक है। इन गुणोंका नाम है बोधिपक्षधर्म और इनकी संख्या ३७ है। ये सब गुण केवल बोधिसत्त्वके लिये प्रयोजनीय नहीं हैं, अर्हतोंमें भी इनका रहना आवश्यक है। ये गुण सात भागोंमें विभक्त हैं। यथा—

(१) देह, अनुभूति, उपस्थित चिन्ता और धर्म सम्बन्धमें चार प्रकारका 'स्मृत्युपस्थान' अर्थात् स्मृति या चिन्ताशीलता।

(२) चार प्रकारके सम्यक्प्रधान (सम्यक् प्रहाण) अर्थात् प्रयोग या सच्चेष्टा।

(३) चार प्रकारका इद्धिपाद (ऋद्धिपाद) या अलौकिक क्षमता।

(४) पञ्च इन्द्रिय।

(५) पञ्च बल (मानसिक शक्ति)।

(६) सात प्रकारकी बोधि, बोज्झङ्ग या सम्बोध्यङ्ग, स्मृति, धर्मविचय, उद्यम, प्रीति, शम, मनःसंयम, समाधि, उपेक्षा।

(७) अष्टाङ्गिक मार्ग या आठ प्रकारका पथ।

उपर्युक्त गुण और धर्मके सिवा बोधिसत्त्वके अन्यान्य गुणका उल्लेख भी जगह जगह पर देखनेमें आता है।

उत्तर भारतीय प्राचीन बौद्ध-सम्प्रदायके महावस्तु नामक ग्रन्थमें बोधिसत्त्वकी १० प्रकारकी भूमि या अवस्था वर्णित है। यथा—प्रमुदिता, विमला, प्रभाकरी, अर्चिष्मती, सुदुर्जया, अभिमुखी, दुरङ्गमा, अचला, साधुमती और धर्ममेघा।

बोधिसत्त्वमें जैसे इन सब गुणोंका रहना आवश्यक है, वैसे ही उनके अधिकार भी असंख्य हैं।

शाक्यमुनिके बुद्ध होनेके पहले जिन सब बोधिसत्त्वों ने जन्मग्रहण किया था, वे उन्हींके अवतार माने जाते हैं। किसी किसी सम्प्रदायका विश्वास है, कि बुद्धत्वप्राप्ति के बाद भी उन्होंने अवतार लिया है। ये लोग अशोकके पुत्र कुणालको भी एक अवतारमें गिनते हैं।

बौद्धधर्मनीति।

ब्राह्मण्यधर्मकी नीति वेद, स्मृति, पुराण, साधुओंके आचरण और व्यक्तिगत विवेकके ऊपर संस्थापित है, किन्तु बौद्धधर्म नीति केवल बुद्धके उपदेश तथा उनके प्रदर्शित पथका अनुगत है। लेकिन बुद्धने जो एक ही धर्मनीतिकी प्रतिष्ठा की थी, ऐसा भी नहीं कह सकते। कारण, उन्होंने स्वयं ही अनेक स्थल प्राचीन ऋषियोंकी धर्मनीतिकी यथेष्ट सुख्याति की है। उन्होंने यह भी कहा है कि प्राचीन ब्राह्मणगण अपने उच्च धर्म और नीतिके लिए संसारमें प्रसिद्ध थे।

बौद्धगण अपने धर्मग्रन्थमें ब्राह्मण्य हिन्दूधर्मकी कथा स्वीकार तो नहीं करते, पर वास्तवमें उन्होंने अनेक धर्मनीति, साधु और सत् आचारका व्यवहार हिन्दूधर्म शास्त्रसे ग्रहण किया है।

बुद्धने उपदेश दिया है, कि प्रत्येक धार्मिक गृहपति आय धारणका पञ्चभाग प्रदान करना चाहिए। परिवार, अतिथि, पितृगण, भूस्वामी और देवताओंको यह पञ्च

बलि या उपहार देना उचित है। यह उपदेश नि म देह स्मृतिमें ग्रहण किया गया है।

बौद्धधर्ममें आत्माका अस्तित्व स्वीकार नहीं करने पर भी महात्मा बुद्धने अनेक समय आत्मा या चित्तका उल्लेख किया है। इससे ज्ञात पड़ता है, कि अनात्मवादमें हिंदूधर्मसे बौद्धनीतिका कुछ अंश लिया गया है। और भी, मालूम होता है, कि अहिंसा, पितामाताका भरणपोषण तथा भिक्षादान आदि नीति भी प्राचीन धर्मसूत्रसे गृहीत हुई हैं।

बौद्धधर्मग्रन्थमें जहां कहीं धर्मनीतिके सम्बन्धमें उपदेश दिया गया है, प्रायः वहीं पर पद्यछन्दका व्यवहार हुआ है। समस्त अंश पद्यमें लिखित नहीं होने पर भी कुछ अंश जो पद्यमें लिखे गए हैं, वे सब तो ही देखनेमें आते हैं। ये सब उपदेश बहुत जगह बौद्धधर्मके मतसत्रमें विभिन्न तथा कहीं कहीं विरुद्धमतप्रकाशक हैं। यह देखनेसे प्रतीत होता है, कि केवल, बौद्ध भिक्षुओंके कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यके निर्धारणके सिवा और कोई भी धर्मनीति पहले वर्त्तमान न थी। धर्मविस्तारके साथ ही साथ यह भी लिपिबद्ध हुई है।

बौद्ध धर्मनीतिकी प्रस्तावना करनेमें कई एक बातें याद रखनी होंगी। (१) भिक्षु और गृही दोनों श्रेणीके लिए ही नीतिका उपदेश दिया गया है। अर्हत् गण कुछ परिमाणमें साधारण नीतिके अतीत हैं। मुनिके किसी प्रकारकी आसक्ति न रहनी चाहिए और न प्रीति अथवा अप्रीतिजनक कोई काम करना ही उचित है। जो पुत्रकन्याका परित्याग कर सकते हैं, वे ज्ञानी कहलाते हैं। किन्तु धर्मग्रहणके लिए जो अपनी स्त्रीको छोड़ सकते और जो किसी भी प्रकारसे स्त्रीपुत्रका भरणपोषण नहीं करते हैं उन्हें हीन संसारमें अत्यन्त सत्कार्य करनेकी प्रशंसा और समादर मिलता है। फिर अन्यान्य स्थानोंमें ऐसा भी देखा जाता है, कि स्त्री ही सर्वोत्कृष्ट वस्तु है और वही पृथिवीका सर्वश्रेष्ठ धन कहलाती है। बौद्धधर्मग्रन्थमें ऐसा ही वैषम्य अकसर देखा जाता है।

---

* मज्झिमनिकाय २य भाग ६८ पृ०।

उत्तर और दक्षिण प्रदेशीय बौद्धोंके मध्य धर्मनीति विषयमें कोई विशेष वैषम्य नहीं दिखाई पड़ता। हां, उत्तराञ्चलके बौद्धोंमें सत् और सुनीति अधिकतर रूपसे कार्यमें परिणत हुई सी ज्ञात पड़ती है। यही कारण है, कि इनका धर्ममत दक्षिणाञ्चल बौद्धोंकी अपेक्षा समधिक विस्तृत हुआ है।

चाहे भारतवर्षमें हो अथवा अन्य देशमें, सभी जगह नीति दो भागोंमें विभक्त हो सकती है, पहला जिन सब नियमोंका उल्लङ्घन करनेसे शास्त्रकी व्यवस्था निर्दिष्ट है। और दूसरा जिस अनुशासनका पालन करनेसे प्रशंसा, आदर अथवा पुरस्कार मिलता है। प्रथम श्रेणीके नियमोंका अवश्य ही प्रतिपालन करना चाहिए, क्योंकि ऐसा नहीं होनेसे समाजबन्धन शिथिल हो जायगा। इनका नाम यम है और द्वितीय श्रेणीके अनुशासनका नाम नियम। नियम सभी समय सबोंके अवश्य प्रतिपाल्य नहीं हैं, पर जो उनका पालन कर सकते हैं वे जनसमाजमें महत् तथा आदर्श समझे जाते हैं।

बौद्धधर्मनीतिके मध्य दश शिक्षापाद भी इसी प्रकारके हैं, भिक्षुसम्प्रदायको अवश्य ही इनका प्रतिपालन करना चाहिए। जो गृही हैं उनके लिए प्रथम पांच ही प्रतिपाल्य हैं। इस दश शिक्षापाद द्वारा निम्न लिखित कार्य निषिद्ध हुए हैं,—

(१) जीवनाश, (२) चौर्य, (३) व्यभिचार, (४) मिथ्यावादिता, (५) मद्यपान, (६) अनियमित समयमें आहार, (७) सांसारिक आमोद प्रमोदमें योगदान (८) अलङ्कार अथवा विलासद्रव्यका व्यवहार, (९) वृहत् अथवा सामग्रीपूर्ण पालङ्कका व्यवहार और (१०) अर्थग्रहण।

प्रथम पांच सर्वोंके लिए प्रयोज्य हैं, किन्तु इसमें भी कुछ विशेषता है। ब्रह्मचर्य या इन्द्रिय-संयम अर्थात् संन्यासी और संन्यासिनीके लिए सब प्रकारसे स्त्रीपुरुषसंसर्गका परिहार और गृहीके लिए पर पुरुष या परस्त्रीगमन निषिद्ध है, इत्यादि।

जो संसारका परित्याग कर श्रमण सम्प्रदायभुक्त हुए हैं, उनके लिए उक्त शिक्षापादके सिवा और अनेक कठोर नियम विधिबद्ध हैं। इनके [illegible] तीन

भागोंमें विभक्त हो सकते हैं जिनमेंसे प्रथम दो भाग प्राय उपयुक्त द्रव्यगिक्षावादके समान हैं। किन्तु तृतीय अवस्था इससे बड़ी अधिक है। इस अवस्थामें पशु बलि, भविष्यवाणी या ज्योतिषशास्त्रमें विश्वास प्रभृति निषिद्ध हैं। ब्राह्मणधर्मके चौथे आश्रममें यति या मुक्त ब्राह्मणोंकी जो अवस्था है, श्रमणोंकी तीसरी अवस्था वैसी ही है।

बौद्धधर्ममें प्रशंसाका विषय यह है, कि कुसंस्कार और घृणित धर्ममत इसमें स्थान न हो पा सकता।

बौद्धगण विरुद्ध धर्म वालियोंके साथ यद्यपि तर्क वितर्क नहीं करते और अकारण ही उन्हें किसी प्रकार असन्तुष्ट करना नहीं चाहते हैं। बुद्ध स्वयं भी जनसाधारणके मतका सम्मान करते थे। यदि किसी शिष्यका अपराध उनके निकट विचार्य्य विषय होता था, तो वे इस प्रकार विचार कर देते थे, कि जनसाधारणमेंसे कोई भी उनके प्रति असन्तुष्ट नहीं हो सकता था। वे कोई ऐसा उपदेश या आदेश नहीं देते थे, जो अत्यन्त कठोर सा प्रतीत हो। जब देवदत्तने बुद्धदेवसे अनुरोध किया था, कि श्रमणगण कदापि मत्स्य या मांसाहार न कर सके, ऐसा नियम किया जाय, तब देवदत्तके इस अनुरोध पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया था। (१)

ऐसी गल्प प्रचलित है, कि एक जैनने बुद्धदेवका शिष्यत्व ग्रहण किया। बुद्धने उसे उपदेश दिया था, 'सुनो! निर्ग्रन्थों (जैनाचार्य)ने बहुत दिन तक तुम्हारे घरमें आश्रय लिया है, अतएव जब वे तुम्हारे पास आवे तब उनको भिक्षाप्रदान करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।' इससे जाना जाता है, कि अन्य धर्मावलम्बियोंके प्रति बुद्धदेवको हिंसा या द्वेष न था। किन्तु जो धर्मके बहाने अक्रिया या कुक्रिया करते थे वे कदापि बुद्धदेवके श्रद्धास्पद न हो सकें। उस समय आजीवक नामक एक सम्प्रदाय था जिसकी अनेक कुक्रियाओंकी कथा सुनी जाती है। एक दिन एक आदमीने बुद्धदेवसे पूछा, 'क्या कोई आजीवक मृत्युके बाद स्वर्ग जा सकता है?' इस पर उन्होंने उत्तर दिया,—मुझे ९१ कल्पकी कथा याद है, इसके मध्य केवल एक ही आजीवकको स्वर्गमें देखा है जो 'कर्मवादिन्' और 'किरियवाद' (क्रियावाद) समझता था।

बौद्धधर्मको व्यवहारिक नीतिका विशेषत्व निर्देश करना दुरूह है। इसके दो कारण हैं। प्रथमतः बौद्ध धर्मनीतिके आदर्श और भारतवर्षके अन्यान्य धर्मके आदर्शमें कोई विशेष पार्थक्य दिखाई नहीं पड़ता। द्वितीयतः विभिन्न बौद्धसम्प्रदायका भिन्न भिन्न मत है। बौद्धधर्म प्रधानतः भिक्षु या सन्यासीका धर्म है। क्रमशः इसने जब गृहस्थाश्रममें प्रवेश किया, तब स्थान, काल और पात्रविशेषमें अनेक नियमादि काट छाँट कर वे गृहस्थके व्यवहारोपयोगी कर लिये गए हैं।

दक्षिण और उत्तरदेशीय बौद्धसम्प्रदायको जैसी मतविभिन्नता देखी जाती है, वैसा ही महायान और हीनयान इन दो सम्प्रदायमें भीषण विरोध है। महायानोंके धर्मग्रन्थमें अहिंसा और दयाको जितना श्रेष्ठत्व दिया गया है दूसरे सम्प्रदायके ग्रन्थमें उतना नहीं देखा जाता। इसलिए ये दोनों ही बौद्धधर्मके विशेषत्व से जान पड़ते हैं।

महायानबौद्धोंका आदर्श उच्च होने पर भी, उनमें एक बड़ा दोष था। वे अपनी दया और उदारता जनसाधारणमें विशेषरूपसे प्रकाशित कर अन्य सम्प्रदायमें इन सब गुणोंकी त्रुटि दिखलाते हुए सर्वदा उन पर तीव्र आक्रमण करते थे। यहां तक, कि स्वधर्मावलम्बी हीनयान सम्प्रदायके प्रति भी उनका व्यवहार उतना उदार नहीं था।

यथार्थमें बौद्धोंने भारतके अन्यान्य धर्मसम्प्रदायकी अपेक्षा अनेक उदारता दिखलाई है, इसमें सन्देह नहीं। बौद्धधर्मका प्रचार करनेमें वे बौद्धसमाजके मनुष्योंको हिन्दूसमाजकी नाई सङ्कीर्ण गण्डीके मध्य रखनेमें प्रयासी नहीं होते। इसीलिए बौद्धधर्म संसारमें एक सार्वजनीन धर्मके जैसा प्रसिद्ध हुआ है।

---

(१) महावग्ग ६।३१।१४, मज्झिमनिकाय (१।३६९) प्रभृति प्राचीन बौद्धधर्मशास्त्रमें अदृष्ट, अश्रुत या असन्दिग्ध रूप मत्स्य और मांस ग्रहणकी व्यवस्था है। महावग्गमें मनुष्य, हस्ती, अश्व, कुक्कुर, सर्प, सिंह, व्याघ्र, शूकर और तरक्षुका मांस खाना निषिद्ध बतलाया है।

भारतीय संन्यासधर्म।

अनेक देशोंमें देखा जाता है, कि समयानुसार मनुष्य चारों ओर सांसारिक और सामाजिक भोगविलासकी बहुतायतसे विरक्त हो अथवा अपने मायाजीवनमें जिस प्रियतमा आशाको ले कर जीवन धारण करते थे, उससे निराश हो कर जब सांसारिक सुखकी असारता और अनित्यता समझ सकते हैं, तब वे इस कपटतापूर्ण सांसारिक सुखका परित्याग कर प्रकृत तथा पवित्र सुखान्वेषणके लिए निर्जन प्रदेशमें अवस्थान पूर्वक धर्म और ईश्वरचिन्तारूप पवित्र कार्यमें जीवन बिताते हैं। भारतवर्षके प्राकृतिक सौन्दर्य, प्राचीन आर्यऋषियोंके अतीत जीवन, भारतवासीकी चिन्ताशीलता और अत्यधिक परिमाणमें धर्मानुराग प्रभृतिके कारणसे इस सन्यास धर्म ग्रहणकी पिपासा भारतवर्षमें ही बहुत देखी जाती है।

अति प्राचीनकालसे भारतवर्षमें जिन चार आश्रमों की प्रथा प्रचलित है, उन्हींमें सन्यासधर्मका बीज निहित है। ब्रह्मचर्यकी प्रथम अवस्थामें जब गुरुगृहमें रहना पड़ता था, उस समय सन्यासधर्मकी समस्त कठोरताका प्रतिपालन करना होता था। इन्हीं सब प्रथाओंको बौद्ध भिक्षुओंने ग्रहण किया है।

ब्रह्मचारीकी इच्छा होने पर आजीवन शिष्य भावसे गुरुगृहमें रहना पड़ता था। ऐसे ब्रह्मचारी और बौद्ध भिक्षुके मध्य कोई पृथक्ता नहीं देखी जाती। यति, मुक्त, सन्यासी और परिव्राजक इत्यादि नामसे भी ये परिचित हैं।

यद्यपि बौद्धधर्मके आविर्भावका ठीक समय निर्देश करना दुश्वार है, किन्तु सम्राट अशोकके समयमें जो बौद्धसङ्घ प्रतिष्ठित और बहुत से धर्मग्रन्थ लिपिबद्ध हुए थे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। इसका प्रमाण अशोकके अनुशासनसे ही मिलता है। इससे जाना जाता है, कि अशोकके राजत्वके बहुत पहलेसे ही बौद्धधर्मने प्राधान्य लाभ किया था। बौद्धधर्मग्रन्थमें निर्ग्रन्थ और आजीवक सम्प्रदायका बारम्बार उल्लेख देखा जाता है और उनके साथ बौद्धोंका विरोधविषय भी उसमें वर्णित है। इससे मालूम होता है, कि उक्त तीनों सम्प्रदाय ही उस समय वर्तमान थे। इन्हीं सब सम्प्रदायके दृष्टान्तका अनुसरण कर बौद्धने सप्ताहमें एक दिन धर्मकार्यके लिए निर्दिष्ट किया था। बुद्धदेवने बहुत कम नीति या विधि बनाई थी। अनेक समय वे प्रचलित साधारण मतके व्यवहारमें जो अदूषणीय समझते, उसे ही ग्रहण करते थे। वे नियम या विधानकी सृष्टि करनेके लिए विशेष उत्सुकता नहीं दिखलाते थे तथा नियमरक्षामें सर्वदा लगे रहते थे।

प्रातिमोक्ष।

सङ्घके जिन सब विधान द्वारा मण्डलीका शासन या शान्तिविधान होता था, उसका नाम "पातिमोक्ख" (प्रातिमोक्ष) था। पालि ग्रन्थमें जिस पातिमोक्खका विधान है, वही सर्व प्राचीन है और वही बौद्ध भिक्षुओं-की दण्डविधि है। सभी बौद्धधर्मसम्प्रदायका विधान ऐसा ही है। पर उसकी संख्यामें कमी या बेशी अवश्य देखी जाती है। पालिग्रन्थके मतसे सन्यासियोंके प्रातिमोक्षकी संख्या २२७, चीनदेशमें प्रकाशित धर्मगुप्त सम्प्रदायमें २५०, तिब्बतमें २५३ और महाव्युत्पत्तिमें ८५६ है।

बुद्धदेवका आदेश था, कि प्रति मास दो बार अर्थात् प्रत्येक पक्षमें एक बार उस नियमावलीको पढ़ना चाहिए। चार भिक्षुक जिस जगह इकट्ठे होते थे, वहीं इसकी आवृत्ति होती थी। प्रत्येक विधानकी आवृत्ति समाप्त होने पर पाठक पूछते थे, क्या किसी भिक्षुने इसका उल्लङ्घन किया है? उल्लङ्घन करने पर उन्हें खुले रूपमें सभामें कहना पड़ता था।

प्रातिमोक्षके सिवा भिक्षुओंके प्रतिपाल्य और भी कितने नियम हैं, जिनके नाम धूताङ्ग या धूतगुण हैं। दक्षिण प्रदेशीय बौद्धोंके ग्रन्थमें इसकी संख्या १३ और उत्तर प्रदेशीय बौद्धके मतमें १२ है। नीचे संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

(१) पांशुकूलिक—अर्थात् छिन्न वस्त्र खण्ड द्वारा वसन बनाना चाहिए। सभी भिक्षु इस नियमका प्रतिपालन नहीं करते, केवल आरण्यक भिक्षु ही इसका विशेष भावसे पालन करते हैं।

(२) त्रैचीवरिक (त्रैचीवरिक) प्रत्येक भिक्षुको तीनसे अधिक परिधेय नहीं रहने चाहिये।

(३) पैण्डपातिक—दरवाजे दरवाजे भिक्षा द्वारा खाद्य संग्रह करना उचित है।

(४) 'सापदानचारिया' (सापदान-चर्या) एक द्वारसे दूसरे द्वार पर नियमानुसार भिक्षा मागनी चाहिए।

(५) एकासनिक (ऐकासनिक)—एक आसन पर बैठ कर आहार करना चाहिए।

(६) पत्तपिण्डिक (पात्रपिण्डक) एक पात्रसे आहार, (उत्तर प्रदेशीय बौद्धोंमें यह नियम चालू नहीं है।)

(७) 'खलुपच्छाभत्तिक'—आहार्य द्रव्य अमङ्गल मालूम होनेसे उसे न खाना।

(८) आरण्यक—वनमें वास करना।

(९) रुक्खमूलिक' (वृक्षमूलिक)—वृक्षके नीचे वास करना।

(१०) 'अब्भोकासिक' (अभ्योवकाशिक) अनाच्छादित स्थानमें रहना।

(११) 'सोसानिक' (श्माशानिक) श्मशानमें अथवा उसके समीप वास करना।

(१२) 'यथासन्थतिक' (याथासंस्तारिक)—जहां रात हो जाय, वहीं डेरा करना।

(१३) 'नेसज्जिक' (नैशद्यक)—निद्राकालमें भी शयन न कर बैठे रहना।

उक्त नियम सबोंके लिये प्रयोजनीय नहीं है, तब इनका पालन करना अच्छा ही है। आठवेंसे ले कर ग्यारहवें तक सन्यासियोंके लिये प्रयोज्य नहीं है। ग्यारवेंसे तेरहवें तक उनके लिए बिल्कुल निषिद्ध है। गृहीके लिये केवल ५वा और छठा प्रतिपाल्य है।

प्रव्रज्या, उपसम्पदा।

जब कोई पुरुष अथवा रमणी ससारके भोगसुखका परित्याग कर भिक्षुजीवन बितानेके अभिलाषी या अभिलाषिणी होती थी, तब उन्हे भिक्षु सम्प्रदायमें ले लिया जाता था। इसमें जाति या मर्यादाकी विशेषता न थी। केवल दस्यु, तस्कर, क्रीतदास, युद्धव्यवसायी और रोगग्रस्त या महापापी व्यक्ति नहीं लिए जाते थे। सङ्घमें प्रवेश करनेका नाम प्रव्रज्या और भिक्षुक या श्रमण धर्ममें दीक्षित होनेका नाम उपसम्पदा है। प्रव्रज्या ग्रहणमें जिस प्रकार दस्युतस्करादि अयोग्य गिने जाते हैं, उसी प्रकार कुष्ठान्वित मनुष्यों को दीक्षा नहीं दी जाती थी। रमणियोंके दीक्षाग्रहणमें चौबीस अन्तराय थे।

प्रव्रज्या और दीक्षा या उपसम्पदाकी पृथक्ता ले कर बौद्धग्रन्थोंने अनेक समय बड़ा ही गोलमाल किया है। तब एक प्रकारसे यही समझ लेना यथेष्ट होगा, कि सन्यास धर्मग्रहणके लिए गृहत्यागका नाम प्रव्रज्या और उस धर्ममें दीक्षित होनेका नाम उपसम्पदा है। बौद्धधर्म ग्रन्थ पढ़नेसे जाना जाता है, कि बुद्धदेवने पहले साठ शिष्यों को भिक्षुपदमें वरण किया। इन्होंने थोड़े समयमें ही ब्रह्मचर्यधर्मका उत्कर्ष दिखाया था। जब बुद्धशिष्य धर्मप्रचारसे लौट आये, तब उनके साथ बहुतसे मनुष्योंने आ कर बुद्धदेवसे प्रव्रज्या और उपसम्पदाकी दीक्षा मांगी। उसी समयसे उन्होंने ऐसी अनुमति दी, कि भिक्षुगण भी दीक्षा प्रदान कर सकते हैं और उसी समयसे मस्तक तथा श्मश्रु मुण्डन और काषायवस्त्र पहननेका नियम प्रवर्त्तित हुआ।

उस समय दीक्षाग्रहणकारियों के तीन आश्रय लेने पड़ते थे—बुद्ध, धर्म और सङ्घ—"बुद्धं शरणं गच्छामि धर्मं शरणं गच्छामि सङ्घं शरणं गच्छामि।" (१)

प्रव्रज्याग्रहण और भिक्षुसम्प्रदायमें प्रवेश एक ही समय हो सकता था। जिसके अनेक दृष्टान्त हैं। (२) बौद्ध बालक जब सात वर्षके होते थे, तब वे पितामाता की अनुमति ले ब्रह्मचर्यका अवलम्बन कर वे भिक्षुधर्मग्रहणकी अपेक्षा करते थे। जब तक बीस वर्षकी उम्र न हो जाती थी, तब तक कोई भी प्रव्रज्या ग्रहणका अधिकारी नहीं होता था, सुतरां श्रमणोंको १३ वर्ष तक ब्रह्मचर्य सीखना पड़ता था। इस समय वे दश प्रकार शिक्षापाठका अभ्यास करते थे।

अन्य धर्मावलम्बी कोई यदि सन्यासग्रहणकी इच्छा करते थे, तो उन्हे भी यथारीति नियमका पालन करना और परीक्षाके लिए उन्हे कुछ दिन तक ठहरना पड़ता

(१) महावग्ग नामक पालि ग्रन्थमें यह 'त्रिशरणगमन' कहलाता है। श्याम देशीय ग्युन्दसिग्रन्थमें त्रिशरणका ऐसा अर्थ लिया गया है—"बुद्धं त्रिशरणागमनं धर्मं त्रिशरणागमनं संघं शरणागमनं"

(२) दीपवंश १२।६२।

था। इस समयका नाम है परिवास। चूड़ाधारी अग्नि उपासक जटिल तथा शाक्यवंशके सिवा और किसीको भी ( परिवास बिना ) उपसम्पदा लाभ करनेमें नहीं देखा जाता।

भिक्षुपदप्रार्थी व्यक्तिको दश अथवा समयानुसार पांच भिक्षुओंके समक्ष एक परीक्षा देनी पड़ती थी। इस परीक्षाके पहले पदप्रार्थीको कमण्डलु और काषाय वस्त्रग्रहण तथा एक उपाध्याय या गुरु चुन लेना पड़ता था। भिक्षुओंके मध्य एक मनुष्य सभापतिरूपमें दीक्षाप्रार्थीकी परीक्षा लेते थे। यदि वे सन्तुष्ट होते तब वे वहांके समवेत भिक्षुओंको उपस्थित व्यक्तिकी प्रार्थना तथा उसकी उपयुक्तता सुना देते थे। उन्हें दो बार अपना नाम प्रकाश करना पड़ता था। भिक्षुगण जब उसे उपयुक्त समझते थे, तब वे मौन द्वारा अपनी सम्मति देते थे। बाद सभापति महाशय भिक्षुपदप्रार्थीको भिक्षुमण्डलमें ग्रहण कर उसे आजीवन केवल चार प्रकारके आवश्यकीय द्रव्यका भोग और चार प्रकारके पापका परिहार करनेके लिये उपदेश देते थे। चार प्रकार आवश्यकीय द्रव्यके अलावा अन्यान्य द्रव्य एकबारगी निषिद्ध न था, पर वह आवश्यकीय गिना जाता था।

रमणियोंमेंसे जो संन्यासधर्म ग्रहण करती थी, उन्हें भी पुरुषकी नाईं सभी नियमोंका पालन करना पड़ता था। ( चुल्लवग्ग १०।१७ )

उपसम्पदा या दीक्षाप्रणालीके सम्बन्धमें उत्तर और दक्षिण प्रदेशीय बौद्धोंमें सामान्य कुछ कुछ मतभेद रहने पर भी मूल विषयमें कोई पृथक्ता नहीं देखी जाती। (१)

परिधेय।

भिक्षुओंका परिधेय तीन भागमें विभक्त था,— अन्तरवासक, उत्तरासङ्ग और संघाति। अन्तरवासक कमरसे ले कर पैर तक लटका रहता और कमरमें काय बन्धन या पेटीसे बंधा रहता था। इसका दूसरा नाम है, निवासन। उत्तरासङ्ग उत्तरीयका काम करता था, यह वक्ष और स्कन्धदेशके आवरणके लिये व्यवहृत होता था। संघातिका प्रकृत व्यवहार क्या था, इसका निश्चित निर्द्धारण करना कठिन है। भिन्न भिन्न खण्डोंमें मिला कर परिधेय प्रस्तुत किया जाता था। मगधके शस्यक्षेत्रका अनुकरण ही इसका उद्देश्य कहा जाता था।

भिक्षुओंको वस्त्र देना गृहीके लिए पुण्यकर्म है। प्रत्येक वर्ष वर्षाके अन्तमें परिधेय वितरण करनेका नियम है। इस वितरणकार्यका नाम "कठिन" है। इसके अनेक प्रकारके नियम और प्रणाली हैं। शरीरका आच्छादन करनेके लिए किसी वस्त्रका व्यवहार करना भिक्षुओंको विलासिता समझी जाती थी। बौद्धग्रन्थमें विलास द्रव्यका व्यवहार निषिद्ध है। काष्ठपादुका (खड़ाऊँ) और चट्टोजूतेके व्यवहारमें उतना निषेध नहीं है, छाताका व्यवहार विशेष कारणके सिवा अनावश्यकीय है, पर पंखेके व्यवहारकी अनुमति है।

( महावग्ग २-४ और चुल्लवग्ग ५।२२।२३ )

उक्त प्रकारके परिच्छदके अलावा निम्नलिखित द्रव्य भी भिक्षुओंके नित्य व्यवहारमें गिने जाते हैं—एक भिक्षापात्र, कमरबन्ध, एक सूई ( जान पड़ता है, कि फटे कपड़े सीनेके लिए ), क्षौरकार्यके लिए एक क्षुर (अस्तूरा) और एक जलपात्र।

उत्तराञ्चलमें भिक्षुगण एक लाठीका व्यवहार करते थे जिसका नाम खक्खर था। दक्षिणाञ्चलमें यह 'कत्तर' कहलाता था।

जपकी माला बौद्धोंके मध्य अब सभी जगह प्रचलित देखी जाती है; किंतु मालूम होता है कि इसका व्यवहार बहुत थोड़े दिनसे आरम्भ हुआ है। जपमालाकी व्यवहारप्रथाकी भारतवर्षमें उत्पत्ति हुई है या नहीं इसमें भी घोर सन्देह है।

वर्षावास।

भिक्षुओंके वर्षाकालमें किसी एक स्थानमें वास करनेकी विधि थी। उस समय भ्रमण करना निषिद्ध था। आषाढी पूर्णिमासे ले कर कार्त्तिकीपूर्णिमा तक वे घरमें रहा करते तथा कोई कोई एक महीनेके बाद किसी पर्णशालामें आश्रय लेते थे। उत्तर प्रदेशीय भिक्षुगण श्रावणके प्रथम दिनसे ले कर कार्त्तिकके प्रथम दिन तक गृहवास करते थे।

(१) Waddell's Buddhism of Tibet p 178 145, Hodgson's Nepal p 139 145 देखो।

भिक्षुसम्प्रदायकी सृष्टिके पहले ऐसे वासस्थानकी व्यवस्था प्रवर्त्तित थी या नहीं, इसका निर्द्धारण करना दुरूह है बहुत से भिक्षुओंको एक साथ रहना चाहिए ऐसा कोई नियम न था। वर्त्तमान सिंहलवासी भिक्षु-गण वर्षाकालमें अपना मठ परित्याग कर समयोपयोगी स्थानमें रहते हैं, किन्तु बुद्धघोषका विवरण बिल्कुल स्वतन्त्र था। इस विवरणमें देखा जाता है, कि भिक्षुओं का कर्त्तव्य यह है,—विहारका तत्त्वावधारण, अपने आहार तथा पानीयका सरञ्जाम, विग्रहादि मूर्त्तिकी सेवा और अन्यान्य यथाविहित अनुष्ठान। भिक्षुओंको प्रति दिन उच्च स्वरसे दो या तीन बार कहना पड़ता था, 'मैं केवल तीन महीनेके लिए इस विहारमें वास करनेको आया हूं।'

इस व्यवहारका प्रधान उद्देश्य यही था, कि वर्षाकाल में जिससे भिक्षुगण भ्रमण न करें, इसीलिए उस समय उनके गृहवासका नियम निर्दिष्ट हुआ था। भिक्षुओंका वासगृह निर्दिष्ट होनेके सम्बन्धमें ऐसा प्रवाद है,—पहले उनके कोई निर्दिष्ट वासस्थान न था। वन, पर्वतगुहा, वृक्षमूल, श्मशान या ऐसे ही किसी स्थानमें वे रहते थे। राजगृहके एक समृद्धिशाली वणिक्‌ने उनके लिए वास स्थान बनानेकी इच्छासे बुद्धदेवसे अनुमति मांगी। इस पर उन्होंने भिक्षुओंको विहार आदि पांच प्रकारके वास स्थानमें रहनेकी अनुमति दी और उक्त वणिक्‌ने भी उनके वासके लिए एक दिनमें ६० वासगृह बनवाए।

विहार।

'विहार' अर्थसे केवल बौद्धमठ ही नहीं वरन् मन्दिर' भी समझा जाता है। युएनचुअङ्गका कहना है, कि सिंहल में भिक्षुओंके वासस्थानका नाम 'पर्णशाला' और जहां देव देवी आदिकी पूजा होती हैं उसका नाम 'विहार' है। भिक्षुओंके वासस्थानका दूसरा नाम है "सङ्घाराम"। प्रत्येक बौद्धमठके मध्य विहार था; यथा—नालन्दा और सारनाथका विहार।

मध्ययुगमें भारतवर्ष और सिंहलके सङ्घारामका प्रकृत विवरण चीन देशीय बौद्ध परिव्राजकोंके लिखे ग्रन्थमें ही मिलते हैं। इससे पता लगता है, कि जो मठमें रहते, वे 'आवासिक' कहलाते थे। राजा तथा धनी मनुष्योंकी दानशीलताके कारण श्रमणोंको मठके व्ययकी चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी।

भिक्षुओंका कर्त्तव्य।

भिक्षुओंके नित्य नैमित्तिक कर्त्तव्य हैं—पुण्यकार्यका अनुष्ठान, धर्मसूत्रपाठ और ध्यानधारणा, किसी मठमें आगन्तुक (अन्य स्थानके अपरिचित भिक्षु) के आगमन से मठवासी उनकी सम्बर्द्धना करते थे। वे उनके वस्त्रादि ढोते, पैर धोनेके लिए जल और शरीर मर्द्दनके लिए तेल ला देते तथा नियमित समयमें जो नियमित आहार रहता था, उसे प्रदान करते थे। आग-न्तुकके कुछ देर विश्राम करने पर वे उनसे पूछते थे, 'आपने कबसे भिक्षुव्रत ग्रहण किया है?' प्रश्नका उत्तर मिलने पर उनके लिए निद्रा और वासका स्थान निर्दिष्ट होता था तथा उनकी मर्य्यादाके अनुसार जो सब परिचर्याएं विहित थीं, उसी प्रकार उनकी सेवा की जाती थी। गमिक (गमनोद्यत), पिण्डचारिक (भिक्षाकार्यमें नियुक्त) और आरण्यक (अरण्यवासी) भिक्षुओंके लिए विभिन्न प्रणालीकी अभ्यर्थना तथा परिचर्या विधिबद्ध है। (चुल्लवग्ग)

मठकी कार्यप्रणाली।

मठकी कार्यप्रणाली नियमित करनेके लिए उपयुक्त भिक्षुगण सङ्घद्वारा नियुक्त होते थे। खाद्यविभाग, वासस्थाननिर्देश भण्डाररक्षा, वस्त्रादिरक्षा, परिच्छद प्रदान, वर्षाकालके लिए स्वतन्त्र भावसे परिच्छद रखना, मठके उद्यानका तत्त्वावधारण, पीनेके जलकी व्यवस्था आदि नाना प्रकारके कार्य अनेक मनुष्योंके ऊपर सौंपा हुआ था। सब विषयोंका सुनियम विधिबद्ध था, सुतरां किसी प्रकारके गोलमाल होनेकी सम्भावना न थी। किसी किसी सङ्घमें मनुष्य नियुक्त नहीं रहते थे। जब आवश्यकता पड़ती थी, तभी भिक्षुओंके ऊपर साम यिक कार्यभार सौंपा जाता था। दृष्टान्तकी जगहमें 'नवकर्मिक' पदका उल्लेख किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति भिक्षुओंके लिए घर बनवानेमें प्रस्तुत हो कार्यकी देखरेखके लिए एक उपयुक्त भिक्षु चाहते थे, तो उसको उस कार्य पर रख दिया जाता था।

प्राचीन कालमें ज्ञान और उसका छोटा बड़ा ले कर

भिक्षुओंकी पदमर्यादामें कोई विशेषता न थी। तब ऐसा भी नहीं कह सकते, कि कोई श्रेणीविभाग न था। कार्यके भेदसे श्रेणीभेद होता था। जो उम्रमें बड़े थे, वे 'स्थविर' और जो छोटे थे वे 'दहर' कहलाते थे। इसके अलावा उपाध्याय (शिक्षादाता), साद्धंविहारी (सदस्य), आचार्य ( अध्यापक ) और अन्तेवासी ( शिक्षार्थी ) इन कई एक श्रेणीमें भिक्षुगण विभक्त थे। सिंहलमें भी ऐसा ही श्रेणीविभाग था, किन्तु वहांके महानायक पद पर अधिष्ठित हो कर एक भिक्षु सभी कार्योंकी देखभाल करते थे। महायानोंमें ऐसी प्रथा न थी।

भिक्षुओंका खाद्य।

घी, मक्खन, तेल, मधु, चीनी, मछली, मांस, दूध और दही आदि खाद्य भिक्षुओंके लिए निषिद्ध था। किन्तु कोई पीड़ाग्रस्त होनेसे आवश्यकतानुसार इनमेंसे किसी द्रव्यका व्यवहार कर सकते थे। फिर कहीं ऐसा भी देखा जाता था, कि तीन प्रकारसे पवित्र होने पर मत्स्य और मांस भी खा सकते हैं। तीन प्रकार ये हैं—अदृष्ट, अश्रुत और असन्दिग्ध। इस निषेधकी कोई कार्यकारिता न थी। कहते हैं, कि बुद्धने स्वयं ही शूकरका मांस खाया था। वास्तवमें बात यह है, कि बौद्धगण इन सब विषयोंमें ब्राह्मणका पथानुसरण करते थे। मत्स्य मांसके व्यवहारमें ब्राह्मणके लिए जितना निषेध है, भिक्षुओंके लिए भी उतना ही है। उस समय देशमें जो व्यवस्था प्रचलित थी, बौद्धोंने अपने समाजमें भी उसीका प्रवर्त्तन किया था।

बौद्धभिक्षुगण ( पुरुष या रमणी ) ब्रह्मचारियोंकी तरह अपना आहारीय द्रव्य भिक्षा द्वारा ही संग्रह करते थे, किन्तु प्रभेद यह था, कि ब्रह्मचारी भिक्षा मांगते थे, पर भिक्षुओंमें मांगनेकी रीति न थी। यदि कोई अपनी इच्छासे कुछ दे देता तो वही वे ले लेते थे।

रोग होने पर औषधव्यवहार करनेकी विधि थी। उस समय घी, मक्खन, तेल, मधु और शक्कर औषधके रूपमें व्यवहार कर सकते थे। नानारूप औषध प्रस्तुत करने की विधि और विविध प्रकारके अस्त्रका विवरण बौद्ध-ग्रन्थमें मिलता है। इससे जान पड़ता है, कि प्रभूत उन्नति हुई थी। ( महावग्ग )

प्रातिमोक्ष या दण्डविधि।

प्रातिमोक्ष प्रधानतः आठ भागमें विभक्त था। प्रत्येक भागकी थोड़ी विधि नीचे दी जाती है,—

१म। कठिन अपराध करने पर अपराधी सङ्घसे निकाल बाहर कर दिया जाता था, सभी बौद्धग्रन्थका इस सम्बन्धमें एक मत था। अपराधका विवरण ( १ ) कामरिपुके वशीभूत हो कर इन्द्रिय निग्रहका प्रतिज्ञाभङ्ग, ( २ ) चौर्य (३) प्राणनाश और ( ४ ) अलौकिक क्षमता का कौशल दिखलाना।

२य। तेरह प्रकारका अपराध। इसकी शास्ति थी किसी किसी निर्दिष्ट समयके लिए सङ्घसे बहिष्करण।

३य। इस विभागके सम्बन्धमें दो विधान हैं।

४र्थ। इसमें तिरसठ अपराधोंका उल्लेख है और नाना ग्रन्थमें नानारूपसे सन्निवेशित हैं। दण्डग्रहण द्वारा प्रायश्चित्त।

५म। इस श्रेणीमें ९२ अनुशासनकी कथाएं हैं। इन सब अपराधियोंकी शास्ति प्रायश्चित्त है। चीन देशीय धर्मग्रन्थ और व्युत्पत्ति नामक ग्रन्थमें केवल ९०का ही उल्लेख देखा जाता है।

६ष्ठ। चार प्रकारके अपराध—अपने मुखसे अपराध स्वीकार करने पर ही उसका प्रतीकार होता है।

७म। शिक्षाकार्य—नाना विषयकी नियमावली, उद्देश्य, सभ्यता और सदाचारकी शिक्षा। पालिग्रन्थमें इसकी संख्या ७५, चीन देशीय ग्रन्थमें १०० और व्युत्पत्तिमें १०६ है।

८म। आईन विषयक सात नीति।

जो भिक्षुके लिए भी उक्त विधि प्रचलित हैं, तब श्रेणीविभागमें कुछ परिवर्त्तन मालूम पड़ता है। किसी समाजमें नियम प्रवर्त्तन करनेसे सङ्घारामका शासन विधान करना आवश्यक है। बौद्धसङ्घमें भी शास्ति का विधान है; यद्यपि वह कठिन नहीं, तो भी यथेष्ट है। सर्वप्रधान शास्ति सङ्घसे बहिष्करण है, इससे निम्न स्तरकी शास्ति है कुछ समयके लिए निर्वासन। एक और प्रकारकी शास्तिका नाम निःसारण है। निर्वासन और निःसारणमें पृथक्ता जानना कठिन है। निर्वासन

परिवाद और निस्सारण प्रभृति दण्डके बाद जब भिक्षुओंको पुनः सङ्घमें लिया जाता था, तब भिक्षुगण एकत्र हो कर निर्द्धारण करते थे, कि अपराधीको शास्ति हुई है या नहीं। इस समय २० या इससे अधिक भिक्षुओंका समावेश होना आवश्यक था। ब्रह्मदण्ड नामक एक प्रकारकी अद्भुत शास्तिका उल्लेख देखनेमें आता है। परिनिर्वाण प्राप्तिके कुछ दिन पहले बुद्धदेवने चण्ड नामक एक व्यक्तिको यह शास्ति प्रदान करनेके लिए अपने प्रिय शिष्य आनन्दको आदेश दिया था। आनन्द उस समय जानते नहीं थे, कि ब्रह्मदण्ड किसे कहते हैं। पूछने पर बुद्धदेवने कहा था, "चण्डको जो खुशी हो सो बोले, किन्तु भिक्षुओंमेंसे न तो कोई उसके साथ बातचीत करे और न कोई उसे उपदेश दे या कुछ पूछे।" इसी शास्तिसे चण्डके भारी अनुताप हुआ था और इसीसे यह शास्ति प्रचलित हुई।

अपराध स्वीकार करना अन्यतम शास्ति है। पहले नियम था, कि जब भिक्षुगण प्रति पक्षमें एकत्र होते थे, तब यह स्वीकारोक्ति करनी पड़ती थी। किन्तु उसमें विलम्ब होता था और कार्यमें हानि पहुंचती थी। इसलिए अन्तमें यह नियम हुआ, कि वयोज्येष्ठ किसी भिक्षुके समीप स्वीकार्य अपराधकी स्वीकारोक्ति करनी होगी।

उपास्य।

पहले ही कहा जा चुका है, कि दीक्षाकालमें तीनकी शरण लेनी पड़ती थी। बौद्धोंके यही प्रधान उपास्य त्रिरत्न या तीन रत्नत्रय हैं,—बुद्ध, धर्म और सङ्घ।

इसके अलावा और भी अनेक पदार्थ हैं, जो बौद्धोंके निकट सम्मान तथा अर्चनाके विषय हैं,—साधुमहात्माओंकी पवित्र स्मृतिका परिचायक कोई द्रव्य और उनके स्मरणार्थ प्रतिष्ठित स्मृतिस्तम्भादि। इस समुदायका साधारण नाम है धातु। धातु तीन भागमें विभक्त है,—शारीरिक, उद्देशिक और पारिभोगिक। शारीरिक धातु शरीर सम्बन्धीय है; उद्देशिक—स्मरण उद्देश्यसे जो संस्थापित है; पारिभोगिक—जो सब द्रव्य बुद्धदेवके व्यवहारमें रहे हैं।

तपुस और भल्लिक नामक दो वणिकोंने जब बुद्धदेवका शिष्यत्व ग्रहण किया, तब उन्होंने उपास्यस्वरूप हो उनके स्मरणार्थ केशगुच्छ दिया था। यही सबोंके लिए प्राचीनतम पवित्रस्मृति है। कोई कोई कहते हैं, कि उन दोनों वणिकोंने नख और केशके सिवा उनके पात्र और तीन परिच्छद भी पाये थे।

सिंहलमें भी ऐसी ही केशस्मृतिका विषय प्रचलित है। कन्नौज, अयोध्या, मथुरा आदि आर्यावर्त्तके अनेक स्थानोंमें बुद्धदेवका केश और नखरूप पवित्र स्मृति संरक्षित है और वहां स्तूप बनाया गया है। कन्नौजके इस स्तूप और पवित्र स्मृतिके सम्बन्धमें बौद्धसमाजमें अनेक अलौकिक कथाएं प्रचलित थीं। सत्कारके बाद शरीरका जो अंश बच जाता है, वही सर्वप्रधान शारीरिक स्मृति है। बुद्धदेवकी मृत्युके बाद उनके शरीरकी अवशेष स्मृति ले कर राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु अल्लकल्प, रामग्राम, वेठद्वीप, पावा और कुशीनगर इन आठ स्थानोंमें आठ स्तूप बनाए गए। उक्त आठ स्तूपके सिवा बुद्धदेवके स्मरणार्थं द्रोण और मौर्यवंशियोंने भी दो मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा की थी। प्रवाद है, कि बुद्धदेवका एक दांत स्वर्गमें, एक गान्धारमें, एक कलिङ्गमें और एक नागलोकमें पूजित होता है।

काबुल नदीके दक्षिण नगर नामक स्थानमें जितने पवित्र स्मृति चिह्न विद्यमान हैं, उतने कहीं नहीं हैं। हिड्डनगरीमें बुद्धदेवके मस्तककी हड्डी और चक्षुगोलक स्वरूप पवित्र स्मृतिरक्षाके लिए तीन विहार प्रतिष्ठित हैं।

सिंहल आदि दक्षिणदेशोंमें भी पवित्र स्मृतिका अभाव नहीं है। सिंहलमें दन्तस्मृति सुप्रसिद्ध है। इसके सिवा यहांके बौद्धोंका विश्वास है, कि जिन अर्थात् बुद्धदेवके कण्ठकी हड्डी भी यहां रक्षित है। थेर सरभूने इसको श्मशानमें ले जा कर सिंहलमें रखा है। रुयना वेली नामक स्थानमें बुद्धदेवकी अस्थि संरक्षित है, यह भी प्रसिद्ध कथा है।

पूर्व पूर्व युगके बुद्धोंकी कोई शारीरावशेषस्मृति किसी भी स्थानमें रक्षित है, ऐसा सुना नहीं जाता। किन्तु यह सुननेमें आता है, कि श्रावस्ती नामक स्थानके एक स्तूपमें काश्यप बुद्धकी समस्त अस्थि संरक्षित है। परवर्त्ती साधु और भिक्षुकी अनेक स्मृति बहुतसे स्थानमें रक्षित है, इसका पता लगा है।

चीनपरिव्राजक फाहियानने वैशालीके समीप आनन्दके आधे शरीरके ऊपर एक स्तूप बना हुआ देखा था। उनका अपरार्द्ध शरीर मगधमें पवित्र स्मृतिकी रक्षा करता है। मथुरानगरमें सारिपुत्र, मौद्गल्यायन, पूर्ण-मैत्रायणीपुत्र, उपाली, आनन्द और राहुलकी स्मृतिरक्षाके लिये स्तूप निर्माचित हुए थे। यहां उपगुप्तके नख पवित्र स्मृतिरूपमें सरक्षित हैं और मञ्जुश्री तथा अन्यान्य बोधिसत्त्वके स्मृतिसंरक्षणके लिये भी एक स्तूपकी बात सुनी जाती है।

बुद्ध और साधुगण जिन सब द्रव्योंका व्यवहार करते थे, वे बौद्धसमाजमें अत्यन्त भक्तिके साथ पूजित होते हैं। किस समयसे इस भक्ति और पूजाका आरम्भ हुआ इसका निर्देश करना कठिन है, किन्तु यह निश्चित है, कि मध्ययुगके बहुत पहलेसे ही उत्तर और दक्षिणभारतमें इस पूजाका आरम्भ हुआ था।

फाहियान जब तीर्थभ्रमणमें बाहर निकले थे, तब उन्होंने नगरके समीप चन्दनकाष्ठकी बनी हुई बुद्धदेवकी यष्टि देखी थी जिसकी लम्बाई लगभग १६ या १७ फुट होगी। इस स्थानके समीप ही उन्होंने एक मन्दिरमें बुद्धकी सङ्घाति देखी थी। यूएनचुअङ्गने यहीं पर सङ्घाति और काषाय दोनों ही देखे थे।

तीर्थपर्यटक फाहियानने बुद्धदेवका भिक्षापात्र पेशावरमें देखा था। बुद्धदेवका पवित्र स्मृतिरक्षक वह भिक्षापात्र सर्वसाधारण द्वारा पूजित होता था। दो शताब्दीके बाद यह पारस्याधिपतिके अधिकारमें था। प्रवाद है, कि भिक्षापात्र पहले वैशालीमें था। फाहियानका कहना है, कि उन्होंने ऐसी भविष्यद्वाणी सुनी थी कि भिक्षापात्र परवर्त्ती समयमें यथाक्रम तुर्किस्तान, खोटान, कराचर, चीन सिंहल और भारतवर्षमें भ्रमण कर अन्तमें तुषित देवतार्ओंके स्वर्गमें जायगा।

सिंहल धर्मग्रन्थमें अनेक परिभोगस्मृतिचिह्नके विवरण देखे जाते हैं। बुद्ध ककुसन्ध (कुकुच्छन्द) के पानपात्र, कोनागमनके कमरबन्द और काश्यप तथा गौतमबुद्धके स्नानवस्त्रकी कथाका सविस्तार उल्लेख है।

दाक्षिणात्यके कोङ्कणपुरमें ७वीं शताब्दीमें एक विहार था। इसमें सिद्धार्थके बाल्यकालका मस्तकावरण सुरक्षित था। भक्तगण इसे सप्ताहमें एक ही दिन (विश्राम दिनमें) देख सकते और उसकी पूजा करते थे। जिस चीनपरिव्राजकने यह संवाद दिया है, उनका कहना है, कि वामियान नामक स्थानमें स्थविर शाणकवासिकका लौहपात्र और परिच्छद रक्षित था जो मणिनिर्मित होनेके कारण लाल रंगका था। प्रवाद है, कि जब तक बौद्ध धर्म और बौद्धनीति पृथिवी पर वर्त्तमान रहेगी, तब तक यह परिच्छद भी रहेगा।

और भी एक प्रकारकी स्मृतिरक्षाका उल्लेख मिलता है—इसे छाया स्मृति कहते हैं। अनेक स्थल पर गुहा विशेषमें बुद्धदेव या बोधिसत्त्व छाया रख गए हैं जो भक्तोंको दिखाई जाती थी। कौशाम्बी, गया और नगर इन तीन स्थानोंकी कथा ही विशेष प्रसिद्ध है। कौशाम्बीकी गुहा रहने पर भी यूएनचुअङ्ग यहां छाया न देख सके, किन्तु वे गयाधाममें छायादर्शनसे कृतार्थ हुए थे। पूर्ववर्त्ती परिव्राजक फाहियानका कहना है, कि बुद्धकी यह छाया लगभग तीन फुट लम्बी थी और उस समय यह खूब साफ सुथरा दिखलाई पड़ती थी। नगरकी निकटवर्त्ती गुहामें बुद्धकी छाया समधिक प्रसिद्ध थी। इसी गुहामें नाग गोपाल रहते थे और बुद्धदेव महानिर्वाण प्राप्तिके कुछ पहले इसमें अपनी छाया रख गए हैं। गुहाके प्रवेश द्वार पर दो चौकोण प्रस्तर थे जिनके ऊपर तथागतका पदचिह्न देखा जाता था।

चैत्य, विहार।

बौद्धप्रभावके समय भारतवर्षने जिस स्थपति और भास्कर विद्याका परिचय दिया है, आज भी वह पृथ्वीके पुरातत्त्वविदोंकी आलोचनाका विषय है तथा और भी बहुत दिन रहेगा। आज तक जितने स्तूप, मन्दिर मूर्त्ति, स्मृतिस्तम्भ या चैत्यादि आविष्कृत हुए हैं, उनके आमूल विवरणका उल्लेख करना असम्भव है। हां, जो विशिष्टरूपसे धर्मादि कार्यके साथ संसृष्ट हैं, उसका स्थूल विवरण नीचे दिया जाता है।

धर्ममन्दिर या मठका साधारण नाम है चैत्य। चैत्य कहनेसे सिर्फ ईंट या पत्थरका बना मन्दिर ही नहीं समझा जाता वरन् पवित्र वृक्ष, स्मृतिपरिचायक प्रस्तर, पवित्र स्थान या कीर्त्तित लिपि आदि भी समझी जाती

हैं। सुतरां पवित्र धर्मगृहमात्र ही चैत्य हैं; किन्तु चैत्य होनेसे ही वह कोई घर या मन्दिर नहीं होगा।

ऐसे पवित्र मन्दिरोंके मध्य विहार और स्तूप ही प्रधान हैं। मृत अथवा जीवित बुद्धोंके वासस्थान या मूर्त्तिसमन्वित मन्दिरको साधारणतः विहार कह सकते हैं। नेपालमें चैत्य और विहारका पार्थक्य है उनमें कुछ विशेषता नहीं देखी जाती। इनमेंसे जहां आदि बुद्ध या ध्यानीबुद्धकी मूर्त्ति है, वह चैत्य और जहां शाक्यदेव अन्यान्य सात मानुषी बुद्ध अथवा साधुओंकी मूर्त्ति है, वह विहार कहलाता है। नेपाली चैत्यका विस्तृत विवरण पढ़नेसे मालूम होता है, कि चैत्य स्तूपके सिवा और कुछ भी नहीं है। स्तूपका पालिनाम थुप है। बहुतेरे स्तूपका अर्थ धातुगर्भ या गर्भ लगाते हैं। यथार्थमें स्तूपके एक अंशको गर्भ कहते हैं अर्थात् जहां पवित्रस्मृति संरक्षित होती है वही गर्भ है। प्रसिद्ध व्यक्तियोंकी समाधिके ऊपर स्मृति संरक्षणके लिए स्तूप बनाया जाता था, ऐसा बहुतोंका कहना है तथा यह सम्भवपर भी मालूम होता है। स्तूपकी भित्ति चौकोन और गोलाकार दोनों ही हो सकती है। इसके ऊपर एक गुम्बज और गुम्बजके ऊपर विपरीतभावमें संस्थापित एक पीरामिड या चूड़ा भी बनी होती थी। पीरामिड एक क्षुद्र 'गल' द्वारा संलग्न रहता था। सबसे ऊपर एक या दो छत्र और छत्रके ऊपर पताका तथा पुष्पमाला इत्यादि परिशोभित होती थी।

कार्लिके गुहामन्दिरमें जो स्तूप देखा जाता है, वह उपर्युक्त प्रकारसे बना है। इसके ऊपर अब भी काष्ठ-निर्मित छत्रका चिह्न देखा जाता है।

सिंहल और नेपालके प्राचीन चैत्योंका आकार ऐसा ही है। सिंहलमें किसी किसी स्तूपके ऊपर गर्भाकृति गुम्बज देखनेमें आता है, किन्तु साधारण आकृति अर्द्ध बुद्बुदकी है और उसके ऊपर यथाक्रम तीन छत्र संस्थापित हैं।

छत्रकी संख्या अथवा पीरामिडके विभिन्न स्तर प्रासादके विभागनिर्देशक हैं। उत्तर और दक्षिण प्रदेशीय बौद्धगण बहुत-से स्तूपोंके मध्य भेदपार्थक्य प्रतिष्ठित देखते हैं।

चीनदेशके परिव्राजक जिस समय भारतवर्ष आये थे, उस समय देशके नाना स्थानोंमें स्तूप और चैत्य थे। अब उनमेंसे बहुतोंका अस्तित्व भी नहीं है, किन्तु कहीं कहीं भग्नावशेष नजर आता है।

यूएनचुअङ् जब तीर्थपर्यटनमें भारतवर्ष पधारे, उस समय उन्होंने बहुतसे विहार और सङ्घाराम भग्नावस्थामें देखे थे जो उनके लिखे विवरणमें ही मालूम होता है। किन्तु इसके दो शताब्दी पहलेके विवरणसे जान पड़ता है, कि ये सब अभग्नावस्थामें ही थे। पेशावरका सुवृहत् स्तूप ४०० हाथसे भी अधिक ऊंचा था। यूएनचुअङ्गने जिस समय इसे देखा था, उसके पहले भी यह तीन बार अग्निदाहसे नष्ट हो गया था। यह स्तूप महाराज कनिष्कके समयका बना हुआ था। जान पड़ता है, कि मानिकियालका स्तूप भी उसी समय बना था। प्रवाद है, कि पुष्कलावतीमें दो स्तूप अशोकके समयमें निर्मित हुए थे। ब्रह्मा और इन्द्र देवताने बहुमूल्य प्रस्तरसे विनिर्मित दो स्तूप संस्थापित किये थे, ऐसा जो प्रवाद है, उसमें कदापि ऐतिहासिकगण विश्वास नहीं करेंगे। उपर्युक्त स्तूपसमूहका भग्नावशेष यूएनचुअङ्गने देखा था।

अशोकावदानमें लिखा है, कि सम्राट् अशोकने भारतवर्षमें कुल ८४००० धर्मराजिका या स्तूप और विहार बनवाये। बुद्धदेवके निर्वाणप्राप्तिके बाद जो आठ स्तूप निर्मित हुए, उनमेंसे सातका द्वार अशोक द्वारा उद्घाटन हुआ है। सिर्फ रामग्राम स्तूपका द्वार वे नहीं खोल सके थे।

वाराणसीके निकट सारनाथका विहार और स्मृति प्रासाद ७वीं शताब्दीमें भी सुरक्षित अवस्थामें था; किन्तु अभी यह भग्नावशेषमें परिणत हुआ है। यहांका एक मन्दिर अब जैनोंके अधिकारमें है।

केवल साधु और धार्मिकोंके स्मरणार्थ लिए स्तूप नहीं बनाये जाते थे। मथुरामें सारिपुत्र, मौद्गल्यायन और आनन्दके उद्देश्यसे ऐसे स्तूप उत्सर्ग किये गए थे। अभिधर्म, विनय और सूत्रग्रन्थके उद्देश्यसे भी स्तूप बनवानेका विवरण मिलता है।

कपिलवस्तुमें भी बहुत सा स्मृतिपरिचायक स्तूप और

विहारकी कथा सुनी जाती है, किन्तु उनका नामनिशान तक भी नहीं है। मध्ययुगमें मगधमें भी स्तूपकी कमी न थी।

सिंहलके सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन स्तूपका नाम महाथूप था। दुट्टगामनिके समयमें बुद्धदेवके पदचिह्नके ऊपर यह स्तूप बनाया गया था। यह अनुरोधपुरके उत्तर में स्थापित और तीन सौ हाथ ऊँचा था। इनके समीप ही अभयगिरिका प्रसिद्ध सङ्घाराम वर्त्तमान था। इसके अलावा अन्यान्य स्तूप, विहार और प्रासाद इत्यादिकी संख्या सिंहलमें उतनी कम न थी।

प्राचीन बौद्धधर्मग्रन्थमें बुद्धदेवकी मूर्त्तिपूजाका विवरण नहीं देखा जाता। उनके पदचिह्न, आसन, वेदी या चक्र आदिके निकट ही मनुष्य बुद्धदेवकी उपस्थितिकी कल्पना कर उनका पूजा तथा भक्ति करते थे, सिर्फ ऐसा ही विवरण मिलता है। बहुतोंका विश्वास है, कि अशोकके राजत्वके बादसे मूर्त्तिपूजाकी प्रथा प्रचलित हुई है। इस सम्बन्धमें कोई ऐतिहासिक तथ्य तो नहीं मिलता, पर नाना प्रकारके प्रवाद और उपन्यास अवश्य प्रचलित हैं। सब अर्चनाओंकी यथायथ आलोचना और अनुसन्धान कर ऐतिहासिक तथ्य निर्णय करना इस प्रबन्धमें असम्भव है। यूरोपीय पुरातत्त्वविदोंका सिद्धान्त है, कि ईसाजन्मके एक सौ वर्ष पहले या उसके बाद मूर्त्तिपूजाकी प्रथा प्रचलित हुई है। किंतु अलेक्सन्दरके समय प्राक् लिखित कहानीसे भी जाना जाता है, कि इससे पहले भी मूर्त्तिपूजा प्रचलित थी। जो कुछ हो, सम्राट् कनिष्कके समयसे ही यह प्रथा समस्त भारतवर्षमें प्रसिद्ध थी। धर्मपिपासु चीनपरिव्राजकोंने अपने भ्रमण-वृत्तान्तमें सैकड़ों बार बुद्धदेवकी मूर्त्तिका उल्लेख किया है। फाहियानने ५वीं शताब्दीमें साङ्काश्य नामक स्थानमें बुद्धदेवकी दश हाथ लम्बी खड़ी मूर्त्ति देखी थी और यूएनचुअङ्ग भी ७वीं शताब्दीमें उक्त मूर्त्ति देख गए थे। इन्होंने पेशावरमें बारह हाथ लम्बी श्वेत प्रस्तरकी बनी बुद्धमूर्त्तिका दर्शन और पूजन किया था। यह मूर्त्ति कनिष्कस्तूपके समीप ही थी और रातको इस स्तूपके चारों ओर घूमती थी।

निर्वाणप्राप्तिके समय बुद्धदेवकी उपविष्ट प्रतिमूर्त्तिका उल्लेख अनेक बार देखनेमें आता है। बामियान नामक स्थानमें वैसी ही एक मूर्त्तिकी कथा सुननेमें आती है जो लगभग १०० फीट ऊँची थी। यूएनचुअङ्गका कहना है, कि उन्होंने कुशीनगरके शालवनमें निर्वाणप्राप्तिकी अवस्थापरिचायक एक और बुद्धमूर्त्ति देखी थी।

बुद्धदेवकी चित्रित प्रतिमूर्त्तिकी संख्या भी मध्ययुगमें एकदम कम न थी। यूएनचुअङ्गने पेशावरमें एक प्रतिकृति देखी थी जिसके शिल्पचातुर्य और सौन्दर्य पर वे चकित हो गए थे। इसके समीप ही उन्होंने बुद्धदेवकी दो मूर्त्ति देखी थी जिनमेंसे एक ■ फीट और दूसरी चार फीट लम्बी थी।

बौद्ध भक्तगण केवल शाक्यमुनिकी ही श्रद्धा भक्तिमें नहीं लगे रहते, वरन् पूर्व बुद्धोंकी मूर्त्ति भी पूजते थे। अनेक स्थानोंमें शाक्यबुद्धमूर्त्तिके साथ तीन या छः गत बुद्धकी मूर्त्ति देखी जाती है। भविष्यद्बुद्ध मैत्रेयके प्रति उनकी और भी ज्यादा भक्ति थी। वे अभी बोधिसत्त्व अवस्थामें वर्त्तमान हैं। इनकी अनेक मूर्त्ति नजर आती हैं। सबसे प्रसिद्ध मूर्त्ति उद्यानकी राजधानीके निकट उपत्यकामें थी जो ६० हाथ ऊँची और सुनहले काठकी बनी थी। बौद्धग्रन्थमें पता चलता है, कि बोधिसत्त्व अब लों पृथिवी पर अवतीर्ण नहीं हुए हैं। सुतरां जिस शिल्पीने यह मूर्त्ति बनाई थी, वह अर्हत् मध्यान्तिकके अनुग्रहसे तुषित स्वर्ग गया था और वह बोधिसत्त्वका शारीरिक परिमाण और वर्ण इत्यादि देख कर पृथिवी पर आया और वैसी ही मूर्त्ति बनाई।

उत्तर प्रदेशीय बौद्धगण केवल बोधिसत्त्व मैत्रेयकी मूर्त्तिपूजा कर परितृप्त न हो सके। वे अवलोकितेश्वर और मञ्जुश्री बोधिसत्त्वका भी मूर्त्तिपूजा करते थे। फाहियानका कहना है, कि उन्होंने मथुराके महायान सम्प्रदायको प्रज्ञापारमिता, मञ्जुश्री और अवलोकितेश्वरकी पूजा करते देखा था। इसके दो शताब्दी बाद यूएनचुअङ्गने परिभ्रमणकालमें अवलोकितेश्वरकी असंख्य मूर्त्ति देखी थी। कपिश, उद्यान, काश्मीर, कन्नौज, गया और महाराष्ट्रके कपोतसङ्घाराममें इस बोधिसत्त्वकी मूर्त्तिपूजाकी कथा उनके लिखे विवरणसे मिलती है। किंतु चीन परिव्राजकोंके बाद पर

पुन महत्त्वात् अशोककी गिरिलिपिमें उसका स्पष्ट प्रमाण मिलता है। उक्त गिरिलिपिमें विनयपिटकका सारांश 'विनयसमुत्कर्ष' नामक प्रतिमोक्ष, सूत्रपिटकके अंगुत्तर निकायके अन्तर्गत आरण्यक 'अनागत भय' सूत्र, विनय पिटकके महावग्गके अन्तर्गत 'उपतिष्यप्रश्न' या 'शारिपुत्रप्रश्न' सूत्रपिटकके सुत्तनिपातके अन्तर्गत 'मुनिगाथा' नामक १२वां सूत्र, मज्झिमनिकायके अन्तर्गत 'राहुलोवादमें मृषावाद' या अम्बलट्ठिका राहुलोवाद नामक ६१ सूत्र इत्यादि प्राचीन बौद्धग्रन्थावलीका स्पष्ट उल्लेख है। प्रियदर्शी शब्द देखो।

अशोकके शासनकालमें बौद्धधर्मका प्रचार।

पहले ही कहा जा चुका है, कि अशोकके राजत्वकालमें पाटलिपुत्रमें सङ्गीतिका अधिवेशन हुआ था, यह विश्वसनीय है। अशोक बिन्दुसारके पुत्र और चन्द्रगुप्तके पौत्र थे। सम्भवतः २१६ ईसवीसनके पहले अशोकका राज्याभिषेक हुआ था। प्रियदर्शी देखो।

अशोकके समयके जो सब अनुशासनादि मिलते हैं, उनमें देखा जाता है, कि बौद्धधर्ममें दीक्षित हो कर यद्यपि उन्होंने इस धर्मप्रचारके लिए यथासाध्य चेष्टा की थी और बहुत सा धन भी खर्च किया था, तो भी आजीवक, निर्ग्रन्थ प्रभृति सम्प्रदायको उन्होंने नहीं सताया। किन्तु बौद्धोंने उक्त सम्प्रदायके मनुष्योंको सब समय हास्यवर्णमें चित्रित करनेमें कुछ भी कसर उठा न रखी। अशोकके उनके प्रति अत्याचार नहीं करनेके कारण बौद्धगण कभी कभी उनसे अप्रसन्न रहते थे।

उन्होंने बौद्धधर्मका अवलम्बन कर जिन सब अनुशासनोंका प्रचार किया था, उनसे जाना जाता है, कि वे युवावस्थामें बौद्धधर्ममें दिये यथेष्ट अर्थव्यय कर अपनेको एक भिक्षु बतला गए हैं। उनके राजत्वकालमें बौद्धधर्म भारतवर्षमें उन्नतिकी चरम सीमा पर था। जब वृद्धावस्थामें वे मन्त्रियों और राजकुमारोंके परामर्शानुसार चलनेमें बाध्य हुए, उसी समयसे बौद्धधर्म प्रचारके लिए खर्चकी कमी हो गई, ऐसा बौद्धग्रन्थ पढ़नेसे मालूम होता है। अधिक क्या, अशोकके समय भारतमें "अहिंसा परमोधर्मः" यह मूलमन्त्र केवल भारतवर्षमें ही नहीं, वरन देशान्तरमें भी प्रचारित हुआ था। इसके पहले सैकड़ों यज्ञशालामें हजारों पशुवध होता था। अशोकने पशुवध रोकनेके लिए ऐसा अनुशासन प्रचार किया था —

"देवताओंके प्रियराजा प्रियदर्शीका कहना है, कि अभिषेकके २६ वर्ष बाद निम्नलिखित जीवोंका वध निवारित हुआ—

शुक, सारिका, अरुण, चक्रवाक, हंस, नान्दीमुख, गिलाट, जतुका, अम्बाकपीलिका, दुली, अनस्थिका, मत्स्य, वेदवेयक, गङ्गापुपुटक, संकुजमत्स्य, ककटशल्यक, पन्नशश, सृमर, षण्डक, ओकपिण्ड, पलसत, श्वेतकपोत, ग्रामकपोत और अन्य सभी चतुष्पद (जीव), जिनका भोग नहीं लगता और न खाया ही जाता है, अजका (छागी) एडका (भेड़ी), शूकरी, गर्भिणी या दुग्धवती तथा उनके छः माससे छोटे बच्चे भी अवध्य हैं। अनिष्टार्थ या हिंसार्थ वनमें आग न लगानी चाहिए और न जीव द्वारा दूसरे जीवका पालन ही करना चाहिए। तीन चातुर्मास्यमें, पौष पूर्णिमा, चतुर्दशी, अमावस्या तथा प्रतिपद्में और प्रति उपवासके दिन मत्स्य अवध्य हैं इस समय बेचना भी मना है। अष्टमी, चतुर्दशी तथा पूर्णिमामें तिष्य और पुनर्वसु नक्षत्रयुक्त दिनमें, तीन चातुर्मास्य और पर्वदिनमें वृष, अज, मेष, शूकर तथा अन्यान्य जीवको खस्सी न करना चाहिए। तिष्य और पुनर्वसु नक्षत्रमें, चातुर्मास्य पूर्णिमा तथा पक्षमें अश्व या गौ लाञ्छित करना उचित नहीं।"

(५म स्तम्भलिपिका अनुवाद)

बुद्धदेवके जीवनकालमें मध्यदेश और प्राच्य या पूर्व भारतमें बौद्धधर्म जो प्रचारित हुआ था, उसका पता बौद्धधर्म ग्रन्थसे मिलता है। अशोकके बौद्धधर्ममें दीक्षित होनेके पहले तक अन्य किसी स्थानमें धर्मप्रचारकी कोई विशेष चेष्टा नहीं होती थी। अशोकके समयसे ही बौद्धधर्मका प्रभाव नाना स्थानोंमें फैल गया, यह सर्ववादिसम्मत है। किन्तु प्रचारकी प्रणाली ले कर अनेक प्रकारका मतभेद देखा जाता है।

अशोकके राजत्वकालमें बौद्धधर्मप्रचारका प्रधान केन्द्र मिहल हो था। पहले ही लिखा जा चुका है, कि निग्रोधारामके पूर्व बुद्धदेवकी अस्थिशाला थी, कि २३६

वर्ष बाद महेन्द्र नामक एक व्यक्ति सिंहलमें बौद्धधर्मका आलोक प्रज्वलित करेंगे। जिस वर्ष पाटलिपुत्रमें अधिवेशन हुआ था, उसी वर्ष महेन्द्रने सिंहलमें धर्म प्रचारका भार ग्रहण किया और चार श्रमणोंको साथ ले वे चल दिये। पहले उन्होंने विदिशागिरि जा कर अपनी माताको दीक्षित किया। प्रवाद है, कि उसी स्थान पर स्वर्गसे देवराज इन्द्र उनकी मुलाकातमें आये थे और सिंहलमें कुस स्कारच्छन्न मनुष्योंके निकट बौद्धधर्म का सत्यालोक प्रचार करनेका उन्हें आदेश दिया। महेन्द्र अपने साथियोंके साथ शून्य मार्गसे सिंहलकी ओर चले और मिस्सक नामक पर्वतके ऊपर उतरे। यहां सिंहलके राजा देवानांप्रिय शिकार करते थे। कालक्रमसे राजाके साथ उनकी भेंट हो गई और उन्होंने राजाको 'हत्थिपदसुत्त' होनेके लिये उपदेश दिया। राजा वहीं पर ४० हजार मनुष्योंके साथ बौद्धधर्ममें दीक्षित हुए। बाद वे राजधानी गए और वहां राजकुमार, राजपुत्री तथा सभासदोंने भी उनका धर्मोपदेश सुन कर वहां धर्म ग्रहण किया। धीरे धीरे मनुष्योंकी संख्या इतनी बढ़ गई, कि नगरके बाहर नन्दन उद्यानमें धर्मोपदेश प्रदान करनेका स्थान निर्दिष्ट हुआ। यहां भी बहुतसे सिंहलवासियोंने बौद्धधर्मका आश्रय लिया। राजाने मेघवन नामक उद्यानमें कपड़ेका घर बनवा कर प्रचारकोंके रहनेका स्थान निर्दिष्ट कर दिया। दूसरे दिन राजाने वहां जा कर जब देखा, कि श्रमणगण उनके निर्दिष्ट आरामस्थलमें अत्यन्त आराम तथा सन्तोषके साथ रहते हैं, तब उन्होंने यह मेघवन उद्यान सङ्घके नामसे उत्सर्ग किया। यही मेघवन अन्तमें तिस्सारामं या महाविहारमें परिणत हुआ।

महाविहारके श्रमणोंने सिंहलमें बौद्धधर्मप्रचारके सम्बन्धमें यद्यपि अनेक अलौकिक तथा महेन्द्रकी क्षमता प्रभृतिका खूब बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया है, तो भी इसे एकबारगी अमूलक नहीं कह सकते। क्योंकि, उत्तरांचलके बौद्धगण भी स्वीकार करते हैं, कि महेन्द्र द्वारा ही पहले पहल सिंहलमें बौद्धधर्मका प्रचार हुआ। प्रभेद इतना ही देखा जाता है, कि महाविहारके भिक्षुओंने महेन्द्रको अशोकका पुत्र कहा था किन्तु उत्तरप्रदेशीयगण उन्हें अशोकके भाई बतलाते हैं।

दोनों प्रदेशके बौद्धोंने धर्मप्रचार सम्बन्धमें मध्यान्तिक नामक एक साधुकी खूब प्रशंसा की है। सिंहलवासियोंका कहना है, कि मध्यान्तिकसे महेन्द्रने उपसम्पदा प्राप्त की थी और मध्यान्तिकने गान्धार प्रदेशमें एक क्रुद्ध तथा भयावह नागराजका दमन कर बहुत से मनुष्योंको उसके दासत्वसे मुक्त किया था। केवल नागलोक ही नहीं, उन्होंने नरलोकमें भी बहुतोंको बौद्धधर्मका आभास दिया था। उत्तरप्रदेशीय बौद्धोंके विवरणसे मालूम होता है, कि मध्यान्तिक आनन्दके शिष्य थे। उन्होंने काश्मीरमें हुलुण्ड नामक नागको शासन कर उसे बौद्धधर्ममें दीक्षित किया। काश्मीरमें उनके द्वारा बौद्धधर्मका इतना अधिक प्रचार हुआ, कि थोड़े दिनोंमें ही वहां नागगण कर्तृक पांच सौ मठ प्रतिष्ठित हुए।

मज्झिम नामक एक दूसरे स्थविरने हिमालयके यक्षोंको बौद्धधर्ममें दीक्षित किया था, ऐसा भी वर्णन मिलता है।

महादेव नामक एक और विख्यात धर्मप्रचारकका विवरण देखा जाता है। उन्हींसे महेन्द्रने [illegible] ग्रहण की थी। इन्होंने महीन्तल प्रदेशमें जा कर बहुतोंको [illegible] बन्धनमुक्त किया था। उत्तरदेशीय बौद्धधर्मग्रन्थमें भी इनका नाम मिलता है, किन्तु इन सब ग्रन्थोंमें वे मन्द बुद्धादीके जैसे वर्णित हुए हैं। इनके कुतर्क द्वारा बौद्धोंमें अनेक प्रकारके मतभेद तथा वादविसंवाद हुए थे। हिन्दू-देवता महादेवकी वर्णनाके साथ इन महादेवका अनेक सादृश्य देखा जाता है। काश्मीरमें इनका बड़ा ही प्रभाव था और इनसे बौद्ध धर्मप्रचारमें बहुत ही विघ्नबाधाएं हुई थीं। किसी किसी बौद्ध पण्डितका कहना है, कि शैवेराज भी काश्मीरमें बौद्ध धर्मप्रचारके प्रतिबन्धक हुए थे और वही दूसरे भावमें महादेवके मत्थे मढ़ा गया है।

सिंहलदेशीय विवरणमें और भी अनेक धर्मप्रचारकके नाम मिलते हैं,—रक्षित, महारक्षित, धर्मरक्षित और महाधर्मरक्षित। इनके नामोंमें नितान्त सौसादृश्य रहने पर भी इनमेंसे कोई भी छोड़ देने लायक नहीं हैं। शोन और उत्तर नामक और भी दो मनुष्योंके नाम मिलते हैं। वे स्वर्णभूमि नामक स्थानमें गये और वहांसे पिशाचोंको भगा कर बहुतोंको मुक्तिपथ पर लाये। यथार्थमें वे

वर्ष बाद महेन्द्र नामक एक व्यक्ति सिंहलमें बौद्धधर्मका आलोक प्रज्वलित करेंगे। जिस वर्ष पाटलिपुत्रमें अधिवेशन हुआ था, उसी वर्ष महेन्द्रने सिंहलमें धर्म-प्रचारका भार ग्रहण किया और चार श्रमणोंको साथ ले वे चल दिये। पहले उन्होंने विदिशागिरि जा कर अपनी माताको दीक्षित किया। प्रवाद है, कि उसी स्थान पर स्वर्गसे देवराज इन्द्र उनकी मुलाकातमें आये थे और सिंहलमें कुसंस्काराच्छन्न मनुष्योंके निकट बौद्धधर्मका सत्यालोक प्रकाश करनेका उन्हें आदेश दिया। महेन्द्र अपने साथियोंके साथ शून्य मार्गसे सिंहलकी ओर चले और मिस्सक नामक पर्वतके ऊपर उतरे। वहां सिंहलके राजा देवानांप्रिय शिकार करते थे। कालक्रमसे राजाके साथ उनकी भेंट हो गई और उन्होंने राजाको 'हस्तिपदसुत्त' होनेके लिये उपदेश दिया। राजा वहीं पर ४० हजार अनुचरोंके साथ बौद्धधर्ममें दीक्षित हुए। बाद वे राजधानी गए और वहां राजकुमार, राजपुत्री तथा सभासदोंने भी उनका धर्मोपदेश सुन कर यही धर्म ग्रहण किया। धीरे धीरे मनुष्योंकी संख्या इतनी बढ़ गई, कि नगरके बाहर नन्दन उद्यानमें धर्मोपदेश प्रदान करनेका स्थान निर्दिष्ट हुआ। यहां भी बहुतसे सिंहलवासियोंने बौद्धधर्मका आश्रय लिया। राजाने मेघवन नामक उद्यानमें कपड़े का घर बनवा कर प्रचारकोंके रहनेका स्थान निर्दिष्ट कर दिया। दूसरे दिन राजाने वहां जा कर जब देखा, कि श्रमणगण उनके निर्दिष्ट आवासस्थलमें अत्यन्त आराम तथा सन्तोषके साथ रहते हैं, तब उन्होंने यह मेघवन उद्यान सङ्घके नामसे उत्सर्ग किया। यही मेघवन अन्तमें तिस्साराम या महाविहारमें परिणत हुआ।

महाविहारके श्रमणोंने सिंहलमें बौद्धधर्मप्रचारके सम्बन्धमें यद्यपि अनेक अलौकिक तथा महेन्द्रकी क्षमता प्रभृतिका खूब बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया है, तो भी इसे एकबारगी अमूलक नहीं कह सकते। क्योंकि, उत्तरांचलके बौद्धगण भी स्वीकार करते हैं, कि महेन्द्र द्वारा ही पहले पहल सिंहलमें बौद्धधर्मका प्रचार हुआ। प्रभेद इतना ही देखा जाता है, कि महाविहारके भिक्षुओंने महेन्द्रको अशोकका पुत्र कहा था किन्तु उत्तरप्रदेशीयगण उन्हें अशोकके भाई बतलाते हैं।

दोनों प्रदेशके बौद्धोंने धर्मप्रचार सम्बन्धमें मध्यान्तिक नामक एक साधुकी खूब प्रशंसा की है। सिंहलवासियोंका कहना है, कि मध्यान्तिकसे महेन्द्रने उपसम्पदा प्राप्त की थी और मध्यान्तिकने गान्धार प्रदेशमें एक क्रुद्ध तथा भयावह नागराजका दमन कर बहुत से मनुष्योंको उसके दासत्वसे मुक्त किया था। केवल नागलोक ही नहीं, उन्होंने नरलोकमें भी बहुतोंको बौद्धधर्मका आभास दिया था। उत्तरप्रदेशीय बौद्धोंके विवरणसे मालूम होता है, कि मध्यान्तिक आनन्दके शिष्य थे। उन्होंने काश्मीरमें हुलुण्ड नामक नागको शासन कर उसे बौद्धधर्ममें दीक्षित किया। काश्मीरमें उनके द्वारा बौद्धधर्मका इतना अधिक प्रचार हुआ, कि थोड़े दिनोंमें ही वहां नागगण कर्त्तृक पांच सौ मठ प्रतिष्ठित हुए।

मज्झिम नामक एक दूसरे स्थविरने हिमालयके यक्षोंको बौद्धधर्ममें दीक्षित किया था, ऐसा भी वर्णन मिलता है।

महादेव नामक एक और विख्यात धर्मप्रचारकका विवरण देखा जाता है। उन्होंने महेन्द्रने [illegible] ग्रहण की थी। इन्होंने महीमण्डल प्रदेशमें जा कर बहुतोंको बन्धनमुक्त किया था। उत्तरदेशीय बौद्धधर्मग्रन्थमें भी इनका नाम मिलता है, किन्तु इन सब ग्रन्थोंमें ये सन्देहवादीके जैसे वर्णित हुए हैं। इनके कुतर्क द्वारा बौद्धोंमें अनेक प्रकारके मतभेद तथा वादविसंवाद हुए थे। हिन्दू-देवता महादेवकी वर्णनाके साथ इस महादेवका अनेक सादृश्य देखा जाता है। काश्मीरमें इनका बड़ा ही प्रभाव था और इनसे बौद्ध धर्मप्रचारमें बहुत ही विघ्नबाधाएं हुई थीं। किसी किसी बौद्ध पण्डितका कहना है, कि दौवेराय भी काश्मीरमें बौद्ध धर्मप्रचारके प्रतिबन्धक हुए थे और यही दूसरे भावमें महादेवके नामसे कहा गया है।

सिंहलदेशीय विवरणमें और भी अनेक धर्मप्रचारकके नाम मिलते हैं,—रक्षित, महारक्षित, धर्मरक्षित और महाधर्मरक्षित। इनके नामोंमें नितान्त सौसादृश्य रहने पर भी इनमेंसे कोई भी छोड़ देने लायक नहीं हैं। शोन और उत्तर नामक और भी दो मनुष्योंके नाम मिलते हैं। वे स्वर्णभूमि नामक स्थानमें गये और वहांसे पिशाचोंको भगा कर बहुतोंको मुक्तिपथ पर लाये। यथार्थमें ये

दोनों व्यक्ति गोनोत्तर या उत्तर नामके एक ही व्यक्ति थे, यह निर्णय करना दुरुह है।

अशोकसे ले कर कनिष्क तक बौद्धप्रभाव।

अशोककी मृत्युके बादसे कनिष्कके सिंहासनारोहण पर्यन्त तीन शताब्दी तक बौद्धधर्मका प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। यद्यपि शुङ्गवंशीय राजाओंने बौद्धधर्मके प्रति उतना सुदृष्टिपात नहीं किया, तो भी बौद्धधर्मका प्रभाव उत्तरमें हिमालयको भेद कर चीनदेश तक फैला हुआ था और दक्षिणमें सिंहल देशमें इसने जो प्रभाव विस्तृत किया था, वह आज भी वर्त्तमान है।

मौर्यवंशीय शेष राजा पुष्यमित्रके द्वारा राज्यच्युत हुए थे। पुष्यमित्र ब्राह्मण्यधर्मके विश्वासी थे। इन्होंने बौद्धधर्मके प्रति जितना अत्याचार किया था, उसका ऐतिहासिक तथ्य संग्रह करना सहज नहीं है। तब इस विषयमें अनेक किंवदन्ती प्रचलित हैं —एक विवरणमें देखा जाता है, कि इन्होंने मध्यदेशसे ले कर जलधर तक बहुत से बौद्धसङ्घाराम जला दिये और अनेक मठधारी शिक्षित बौद्ध भिक्षुओंको मार डाला। फिर भी एक दूसरे विवरणमें लिखा है, कि इन्होंने देशसे बौद्धधर्म हटानेकी इच्छासे पाटलिपुत्रका कुक्कुटाराम ध्वंस कर डाला तथा शाकल प्रदेशके निकटवर्त्ती भिक्षुओंका विनाश किया। तीसरे विवरणसे पता चलता है, कि नागार्जुनके समयसे ले कर असङ्गके समय तक बौद्धोंके प्रति तीन बार घोरतर अत्याचार किया गया था।

२री शताब्दीमें मध्यदेशमें बौद्धधर्मकी कैसी भी अवस्था क्यों न हो, उत्तर पश्चिम भारतवर्षमें यवन राजाओंके अधिकारमें बौद्धधर्मका प्रबल प्रभाव उस समय भी वर्त्तमान था। उनमें मिलिन्द (Menander) नामक नरपति बौद्ध धर्मानुरक्त थे। ऐसा विवरण भी मिलता है, कि वे स्थविर नागसेन द्वारा बौद्धधर्ममें दीक्षित हुए थे।

नागसेनके सम्बन्धमें विशेष विवरण नहीं मिलता। तिब्बत देशीय एक ग्रन्थमें देखा जाता है, कि बौद्ध महापुरुषोंमेंसे एक पुरुष काश्यपकी मृत्युके बाद धर्मप्रचारमें निकले। एक और तिब्बतीय पुस्तकसे पता चलता है, कि नागसेन और मनोरथ इन दोनोंमें मतभेद हो गया था। इन सब ग्रन्थोंमें जो समय निर्देश किया गया है, वह विश्वासयोग्य नहीं है और न उसके ऊपर निर्भर करना ही निरापद है।

साहित्यिक प्रमाण छोड़ कर यदि केवल प्राचीन सङ्घाराम, विहार, अनुशासन प्रभृतिके ऊपर निर्भर किया जाय, तो निःसन्देह प्रमाणित होगा, कि खृष्ट पूर्व ३०० और १०० ई०के बीच बौद्धधर्मने विशेष विख्याति पाई थी। इस मूल धर्मसे अनेक प्रकारके सम्प्रदायोंकी भी सृष्टि हुई थी। कनिष्कके राजत्वके पूर्व काल तक अठारह प्रकारके विभिन्न सम्प्रदायका विवरण मिलता है। मालूम होता है, कि २री शताब्दीमें ही महायान सम्प्रदायकी पुष्टि, उन्नत भाव तथा चिन्ताने बौद्धसमाजमें प्रवेश किया था।

सिंहलमें बौद्धधर्मका प्रभाव एक-सा बना रहा। देवानांप्रिय राजाने चालीस वर्ष तक राज्य किया, बाद उनके भाई सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। देवानांप्रियके ६६ या १०६ वर्ष बाद अभयदुट्ठगामनीका राज्य आरम्भ हुआ। ये बौद्धधर्मके बड़े ही अनुरागी थे। इन्होंने बहुत से स्तूप, विहार और लौहप्रासाद बनवाये थे। कहते हैं, कि महाविहार इन्हीं का बनाया हुआ था। फिर किसी किसीका कहना है, कि तिस्सके समयमें महाविहारकी प्रतिष्ठा हुई थी। महास्तूपके पाददेशमें बुद्ध, धर्म, सङ्घ और धर्मप्रचारक महादेव, उत्तर तथा धर्मरक्षितकी प्रतिमूर्त्ति संस्थापित हैं।

ज्ञात पड़ता है, कि अभयदुट्ठगामनीके राजत्वकालमें अभयगिरि सङ्घारामकी स्थापना हुई थी। उसी समय सिंहलमें त्रिपिटक और अट्ठकथा (बौद्धधर्मनीति) लिखी गई थी।

इसके बाद और भी अनेक राजाओंने बौद्धसङ्घके महदुपदेशोंका साधन किया था जिनमेंसे वसभ (वृषभ) का नाम ही श्रेष्ठ था। इन्होंने बहुत से स्तूप बनवाये थे। इसके अलावा एक विहार और एक उपासनागृह, अनेक भग्नारामका संस्कार किया तथा ४४ बार वैशाखी उत्सव मनाया था। और भी अन्यान्य प्रकारके सत्कार्य द्वारा ये यशस्वी हुए थे।

कनिष्क।

कनिष्कका राज्य भारतवर्षके इतिहासमें बड़ा ही प्रसिद्ध है। इन्हीं शकविजेतासे शकसंवत्सरकी गणना शुरू हुई है। खोतन, काशगार, गान्धार, सिन्धु, उत्तर पश्चिम भारत, काश्मीर, मध्यदेश, यहां तक कि पूर्व भारतका अधिकांश इनके राज्यभुक्त हुआ था। ये भी अशोकके जैसे महाप्रतापशाली राजा थे और इन्होंने बौद्धधर्मकी खूब उन्नति की थी।

प्रवाद है, कि ये पहले बौद्धधर्मके अविश्वासी थे। धार्मिकप्रवर सुदर्शनने इन्हें बौद्धधर्ममें दीक्षित किया था। किस समय इन्होंने यह धर्म ग्रहण किया, इसका निर्णय करना मुश्किल है। तब उनके समयमें (१०० ई०में) जो सङ्घका अधिवेशन हुआ था, वह निश्चित है। कोई कोई कहते हैं, कि जलन्धरके निकट कुवनके विहारमें यह सङ्गीति हुई थी। फिर किसी किसीका कहना है, कि काश्मीरके अन्तर्गत कुण्डलवनके विहारमें इसका अधिवेशन हुआ था।

इस तृतीय महासङ्गीतिके कार्यविवरणमें नाना प्रकारके मतभेद हैं, यहां सबोंका उल्लेख करना असम्भव है। तिब्बतदेशीय एक ग्रन्थमें देखा जाता है, कि एक सौ वर्षसे भी अधिक समयसे बौद्धोंके मध्य जो मतभेद चला आता था, उसकी मीमांसा करानेके लिए कनिष्कने यह सङ्गीति बैठाई थी। कुल मिला कर अठारह सम्प्रदाय इस सभामें उपस्थित थे तथा सभी धर्मके मूलसूत्रकी रक्षामें लगे थे। इस सभामें सम्पूर्ण विनय और सूत्र तथा अभिधर्मके अलिखित अंश लिपिबद्ध हुए थे। उसी समय महायान सम्प्रदायका बहुत कुछ धर्ममत लिया गया था, किन्तु प्राचीन बौद्धभावकोंने उसमें कोई आपत्ति नहीं की।

एक दूसरे तिब्बतीय ग्रन्थमें देखा जाता है, कि धर्मग्रन्थसमूहको लिपिबद्ध करनेके लिए पार्श्वके अनुगत पांच सौ अर्हत तथा वसुमित्रके दलभुक्त पांच सौ बोधिसत्त्व यहां इकट्ठे हुए थे।

यूएनचुअङ्गका कहना है, कि राजा कनिष्कने ही मतभेद और विरोध मिटानेके लिए यह सङ्गीति या सभा बैठाई। इसमें पार्श्वकी भी अनुमति ली गई थी। अर्हतोंके सम्मिलनके लिए राजाने एक विहार बनवाया जहां ५०० भिक्षु इकट्ठे हुए थे। इस महाधर्मसभामें उत्तरमें तिब्बत, सिकिम, भूटान, नेपाल, लादख, चीन, मङ्गोलिया, तातार, यहां तक कि जापानसे और दक्षिणमें सिंहल, ब्रह्म, श्याम आदि स्थानोंसे बौद्धप्रतिनिधि आये थे। सिंहलके महावंशसे जाना जाता है, कि अलसद्द (अलेक्सन्द्रिया) से यहां तीन हजार भिक्षु आकर शामिल हुआ था। वसुमित्रके कर्तृत्वाधीनमें इस सभाका कार्य सम्पन्न हुआ था। यहां सूत्रपिटकका उपदेशसमन्वित एक भाष्य, उतना ही श्लोकसमन्वित विनय विभास (विनयका भाष्य) और अभिधर्मका विभास (अभिधर्मका भाष्य) रचा गया था।

यद्यपि इस तृतीय सङ्गीतिके सम्बन्धमें अनेक विषय अन्धकारमें पड़े हुए हैं, किन्तु पर विषयका स्पष्ट प्रमाण मिलता है। सिंहलसे प्रतिनिधिके आने पर भी इस सङ्गीतिमें सम्भवतः उन्होंने योगदान नहीं दिया। भारतवर्षीय बौद्धोंके सभी सम्प्रदायके प्रतिनिधि इसमें उपस्थित हुए थे और इस सङ्गीति द्वारा जो छोटे छोटे मतविरोधकी मीमांसा हुई थी, उसे ही परम लाभ कहना चाहिये।

महायान-सम्प्रदाय।

पहले ही कहा जा चुका है, कि महायान सम्प्रदायके भाव और चिन्ताने बहुत पहलेसे ही बौद्ध समाजमें प्रवेश किया था। किस समय इस सम्प्रदायका प्रथम आविर्भाव हुआ, इसका ठीक ठीक पता लगाना असम्भव है। बहुतोंका अनुमान है, कि बुद्धनिर्वाणके एक सौ वर्ष बाद वैशालीकी महासङ्घिक सभासे ही महायानमतका सूत्रपात और स्थविर अश्वघोष द्वारा १ली शताब्दीमें उक्त मत जनसाधारणमें प्रचारित हुआ। आदि बौद्धशास्त्र पालिभाषामें लिखा था, —सम्राट् कनिष्कके आश्रयमें महायानके अभ्युदयके साथ संस्कृत भाषामें बौद्धशास्त्र रचित और प्रचारित हुए। शकराजा प्रधानतः और भी, कनिष्कके बौद्धधर्मका ग्रहण करने पर महायान मतमें सौगतभाव समाश्रित हुआ। महायानके प्रधान उपास्य अमिताभको बहुतेरे मृगदावकाका प्रतिरूप मानते हैं। बौद्धग्रन्थमें लिखा है, कि बोधिसत्त्व नागार्जुनने

तृतीय मगीनिके समय जन्मग्रहण किया। ये ही माध्य मिक सम्प्रदायके प्रवर्त्तक थे और इन्होंके द्वारा पूर्व प्रचलित महायान सम्प्रदायकी यथेष्ट उन्नति हुई। ये राहुलभद्र नामक एक ब्राह्मणके शिष्य थे जो महायान सम्प्रदाय भुक्त थे। इस ब्राह्मणने श्रीकृष्ण और गणेशसे अनेक विषयों की शिक्षा पाई थी। इससे जान पड़ता है, कि महायान सम्प्रदायका धर्ममत बहुत कुछ भगवद्गीतासे लिया गया था। बहुतोंका विश्वास है, कि शैवधर्मके निकट भी महायान अनेक विषयोंमें ऋणी हैं।

किसीका कहना है, कि नागार्जुन ६० वर्ष तक जीवित थे और इसके बाद सुखावती स्वर्गको गए। कोई कोई कहते हैं, कि वे एक सौ वर्ष तक जीवित थे, फिर कोई उन्हें पांच सौ वर्षसे अधिककी परमायु प्रदान करनेमें भी कुण्ठित नहीं होते। राजतरङ्गिणी नामक ऐतिहासिक ग्रन्थमें लिखा है, कि नागार्जुन तुरुष्क राजाओंके बाद आविर्भूत हुए थे। इस विवरणके ऊपर निर्भर कर यह सिद्धान्त करना भ्रमात्मक नहीं होगा, कि नागार्जुन २री शताब्दीके मध्यभाग या शेषभागमें जीवित थे। देव नामक एक सिंहलवासी स्थविरके साथ नागार्जुनका घोरतर वाक्‌युद्ध हुआ था, ऐसा वर्णन मिलता है। ये देव अल्पवयस्क थे और तीसरी शताब्दीमें भी जीवित थे। इससे भी समझा जाता है, कि नागार्जुन २री शताब्दी के शेष भागमें विद्यमान थे।

यह नवीन धर्मसम्प्रदाय बहुतसे धर्मग्रन्थोंको लिपि बद्ध कर अपनी कार्यतत्परताका परिचय दे गया है। अनेक स्थल पर त्रिपिटकसे मूलसत्य ले कर आवश्यकतानुसार परिवर्त्तित तथा परिवर्द्धित हुआ है। हीनयान महायानोंको बौद्धधर्मका शत्रु बतलाते थे सही, पर वैसा नहीं देखा जाता है। किन्तु यह अस्वीकार भी नहीं कर सकते, कि मूलधर्मका सत्य ही महायानोंने ग्रहण किया है और टीकाटिप्पनी द्वारा उसका दूसरा अर्थ लगाया है।

मूल बौद्धधर्म कठोर नियमाधीन कुछ भिक्षुसङ्घके सीमाबद्ध था अर्थात् आदि बौद्धधर्म मतसे केवल भिक्षुगण ही मोक्षलाभमें समर्थ थे। किन्तु महायानसम्प्रदायने निखिल जगत्‌में मुक्तिविधान किया था। यदि सभी महायानका आश्रय ले तो अनायास, और बहुत जल्द बोधिसत्त्व हो संसारसागर पार कर निर्वाणपथके पथिक हो सकते हैं। इस विशाल और उदार नीतिसे ही यह सम्प्रदाय 'महायान' नामसे प्रसिद्ध हुआ था। फिर सङ्कीर्ण बुद्धि तथा बहुत थोड़े मनुष्योंके मतानुवर्त्ती होनेके कारण आदिबौद्धधर्मानुगामियोंको महायानगण ही अवज्ञाके साथ 'हीनयान' कहते थे। यथार्थमें वे ही प्रत्येकबुद्धयान या श्रावकयान कहलाते थे।

महायानोंके मतसे कर्मशून्य अर्हतोंकी अपेक्षा दया तथा सहानुभूतिपूर्ण बोधिसत्त्वगण श्रेष्ठ हैं, इसीलिए हीनयानगण उनकी निन्दा करते हैं। महायानगण शून्यवादके पक्षपाती हैं। इन्हीं महायानोंसे भारतवर्षमें शून्यवाद अर्थात् 'सर्वं शून्यं' यह मत विशेष भावसे प्रचलित हुआ था।

महायानधर्मके प्रचारका प्रधान कारण यह था कि इन्होंने भक्तिको श्रेष्ठ आसन दिया है और ध्यानधारणा तथा साधना आदिको धर्मका अङ्ग बतलाया है। इसके साथ साथ जीवोंके प्रति दया और सहानुभूति प्रकाश करना इनका प्रधान कर्त्तव्य होनेके कारण भारतवर्षमें लाखों नरनारियोंने इस धर्मका आश्रय लिया था।

प्राधान्य लाभके लिए महायानोंको हीनयान सम्प्रदायके साथ बहुत दिन लड़ना पड़ा था।

यह पहले ही कहा गया है, कि सिंहलवासी बौद्धोंने जलन्धरकी सङ्गीतिमें योगदान नहीं किया था, यहां तक कि उनके ग्रन्थमें कनिष्कका नाम तक भी नहीं पाया जाता। इससे प्रतीत होता है, कि १ली शताब्दीमें इन दोनों सम्प्रदायमें सम्पूर्ण पार्थक्य था।

२०९ या २१७ ई०में सिंहलपति तिष्यके समय वेतुल्योंद्वारा एक भीषण विवाद उपस्थित हुआ जिसका प्रधान उद्देश्य यह था—बुद्ध मनुष्य नहीं हैं, वे तुषित स्वर्गमें रहते हैं, उनके द्वारा धर्मोपदेश नहीं हुआ है। उनके प्रेरित तथा आदिष्ट आनन्दसे ही धर्मोपदेश किया गया है। यही मत ले कर संघर्ष उपस्थित हुआ। यह मत वेतुल्यवाद या वितण्डावाद नामसे प्रसिद्ध है। परन्तु तिष्यराजके यत्नसे यह गोलमाल रुक गया। इस समय थेरदेव नामक एक प्रसिद्ध बौद्धाचार्यका आविर्भाव हुआ था।

३री शताब्दीके मध्यभागमें अभयमेघवर्णके राजत्व कालमें महाविहार तथा अभयगिरिके भिक्षुओंके साथ मतविरोध उपस्थित हुआ और उसी समय सागलिक सम्प्रदायकी उत्पत्ति हुई। महासेनके राजत्वकालमें महाविहारके बौद्धोंके प्रति बड़ा ही अत्याचार हुआ। कहते हैं, कि शत्रुओंकी प्ररोचनासे महाविहार विध्वस्त हो गया और अभयगिरिके बौद्धोंकी खूब उन्नति हुई। पीछे यह महाविहार फिरसे निर्मित हुआ।

प्रवाद है, कि महासेनके पुत्र मेघवर्णके राजत्वकाल में (३०६ ई०में) प्रसिद्ध बुद्धदन्त सिंहल लाया गया था। महासेनके समय फाहियान सिंहल आये थे। उनका कहना है, कि उस समय महाविहारमें ३००० और अभयगिरिमें ५००० श्रमण रहते थे तथा अभयगिरि महाविहारकी अपेक्षा समधिक समृद्धिशाली था। महानामने ४१० ४३२ ई० तक राज्य किया। उसी समय भारतवासी बुद्धघोष सिंहल भ्रमणके लिये गये और विशुद्धिमार्ग नामक प्रकाण्ड ग्रन्थकी रचना की। सिंहलवासी उन्हें स्वय मैत्रीय कह कर सम्मान करते थे।

और भी अनेक राजाओंने सिंहलमें बौद्धधर्मकी उन्नतिके लिए भिन्न भिन्न रूपमें सहायता पहुंचाई थी।

चार दार्शनिक शाखा

चीनपरिव्राजक यूएनचुअङ्ग जिस समय भारतवर्षमें रहते थे, उस समय बौद्धसमाजमें चार प्रधान दार्शनिक सम्प्रदाय थे —वैभाषिक, २ सौत्रान्तिक, ३ योगाचार और ४ माध्यमिक। प्रथम दो हीनयान तथा शेषोक्त दो महायान सम्प्रदायभुक्त थ। यूएनचुअङ्गका कहना है, कि सिंहलके महाविहारवासी हीनयान और अभयगिरिके भिक्षुगण महायान सम्प्रदायी थे।

वैभाषिक।

वैभाषिकगण पृथ्वीका अस्तित्व स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं, कि बाह्य जगत्के सभी द्रव्योंका ज्ञान उपलब्ध करनेकी क्षमता मनुष्यमात्रको है। ये सूत्रका प्राधान्य अस्वीकार कर "अभिधर्मको" ही प्रामाण्य ग्रन्थ मानते हैं। इनके मतानुसार शाक्यमुनि एक साधारण मनुष्य थे। तब बिना दूसरेकी सहायताके वे जो ज्ञान प्राप्त कर सके थे, यही उनका देवत्व था।

सौत्रान्तिक।

सौत्रान्तिकोंका कहना है कि बाहरी सभी पदार्थ प्रकृत नहीं, छायामात्र हैं, सुतरां उनका ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं हो कर परोक्ष है। ये केवल सूत्रका ही विश्वास करते हैं। इनके मतमें बुद्ध दशबल चार वैशारद्य, तीन स्मृत्युपस्थानसमन्वित तथा सब भूतोंके प्रति दयावान् थे। इनके दो काय हैं, १ला धर्मकाय और २रा भोगकाय। कुमारलब्ध इस मतके प्रवर्तक थे।

योगाचार।

योगाचार श्रेणीके बौद्धदार्शनिकगण विज्ञानके अलावा और किसीका अस्तित्व स्वीकार नहीं करते। इसीलिए इनका अन्य नाम विज्ञानवादी है।

माध्यमिक।

माध्यमिकोंका कहना है, विश्वसंसार इन्द्रजालके सदृश है। सत्य दो प्रकारका है, परामर्श और संवृत्ति (वेदान्त का पारमार्थिक और व्यवहारिक)। इनके मतानुसार सभी स्वप्नवत् हैं,—न सत्ता है, न विनाश है, जन्म, मृत्यु या निर्वाण कुछ भी नहीं है। वास्तवमें ये लोग मायावादी होने पर भी 'माया'का व्यवहार नहीं करते; वरन् सांख्य मतके 'प्रधान' और 'प्रकृति'के बदलेमें 'प्रज्ञा' और 'उपाय' शब्दका व्यवहार करते हैं।

सर्वदर्शनसंग्रहकारोंने माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक तथा वैभाषिक इन चार मतोंका संक्षिप्त परिचय तथा समालोचना इस प्रकार की है —

'उक्त चारों मतमें माध्यमिकके मतानुसार—"कुछ भी नहीं है—सभी शून्य है' ऐसा दृष्टान्त दिखलाया गया है। किन्तु जो सब वस्तु स्वप्नावस्थामें दिखाई पड़ती हैं, जाग्रदवस्थामें वह फिर देखनेमें नहीं आती और जो वस्तु जाग्रदवस्थामें दिखलाई पड़ती है स्वप्नावस्थामें फिर वह कुछ भी देखा नहीं जाती और सुषुप्ति दशामें कोई भी वस्तु नहीं दीखती है। सुतरां इससे यह साबित होता है, कि वस्तुतः कोई भी वस्तु सत्य नहीं है, सत्य होनेसे अवश्य ही वह सभी समय देखी जाती।

योगाचारके मतमें बाह्यवस्तु मात्र ही मिथ्या है, केवल क्षणिक विज्ञान रूप आत्मा ही सत्य है। यह

विज्ञान दो प्रकारका है, प्रवृत्ति विज्ञान और आलय विज्ञान। जाग्रत् तथा सुप्त अवस्थामें जो ज्ञान होता है, उसे प्रवृत्ति विज्ञान और सुषुप्तिदशामें जो ज्ञान होता है, उसे आलय विज्ञान कहते हैं। यह ज्ञान केवल आत्मा का ही अवलम्बन किये रहता है।

सौत्रान्तिकगण बाह्यवस्तुको सत्य तथा अनुमान सिद्ध मानते हैं। वैभाषिकोंके मतसे बाह्य वस्तु प्रत्यक्ष सिद्ध है। एकमात्र भगवान् बुद्धके बौद्धधर्मके उपदेष्टा होने पर भी शिष्योंमें मतभेद होना असम्भव नहीं। इसका दृष्टान्त उन्होंने इस प्रकार दिया है। यदि कोई व्यक्ति कहे, कि 'सूर्य डूब गये' तो यह वाक्य सुन कर लम्पट व्यक्ति परदारहरण तथा तस्कर परधनापहरणका समय उपस्थित हुआ ऐसा समझेगा। किन्तु साधु सन्ध्या वन्दनादि भगवत् उपासनाका समय आ गया, ऐसा समझेंगे। अतएव एक व्यक्तिके वक्ता होने पर भी श्रोता गण अपने अभिप्रायानुसार एक वाक्यका पृथक् पृथक् तात्पर्य ग्रहण करते हैं।

उनके मतानुसार वाक्, पाणि, पाद, गुह्य और लिङ्ग ये पांच कर्मेन्द्रिय तथा नासिका, जिह्वा, चक्षु, त्वक् और श्रोत्र ये पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं; तथा मन और बुद्धि उभयेन्द्रिय हैं। इन्हीं बारह इन्द्रियोंका आयतन (आवासस्थान) होनेके कारण शरीर द्वादशायतन कहलाता है। सभी बौद्धमतानुसार धनोपार्जन द्वारा इस द्वादशायतन शरीरकी सम्यक् शुश्रूषारूप पूजा करना प्रधान कर्म है। इनके मतसे देवता सुगत और जगत् क्षणभङ्गुर है, प्रत्यक्ष तथा अनुमान ये दो प्रमाण हैं। दुःख, आयतन, समुदय और मार्ग ये चार तत्त्व; विज्ञानस्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संस्कारस्कन्ध तथा रूपस्कन्ध ये पांच स्कन्ध दुःख तत्त्व, पांच इन्द्रिय तथा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द ये पांच विषय एवं मन और धर्मायतन अर्थात् बुद्धि ये बारह आयतनतत्त्व हैं। मनुष्योंके अन्तःकरणमें स्वभावतः जो रागद्वेषादि उत्पन्न होता है, उसे समुदय तत्त्व कहते हैं।

इस मतसे सभी संस्कार क्षणमात्र स्थायी हैं, ऐसी जो स्थिर वासना है उसका नाम मार्गतत्त्व है। मार्गतत्त्व ही मोक्ष कहलाता है। चर्मासन, कमण्डलु, मुण्डन, चीर, पूर्वाह्न भोजन, समूहावस्थान और रक्ताम्बर ये सब यति धर्मके अङ्ग हैं।

उक्त बौद्धसम्प्रदायके मतसे सभी वस्तु क्षणिक अर्थात् प्रथम क्षणमें उत्पन्न और द्वितीयमें विनष्ट होती हैं। आत्मा भी क्षणिक और ज्ञानस्वरूप है; क्षणिक ज्ञानातिरिक्त स्थिरतर आत्मा नहीं है। (सर्वदर्शनस०)

नागार्जुन माध्यमिक मतके प्रवर्त्तक थे। इसी प्रकार उनके समसामयिक कुमारलब्ध सौत्रान्तिक मतप्रवर्त्तक समझे जाते हैं। इस समय आर्यदेव तथा अश्वघोष नामक और भी दो प्रसिद्ध स्थविरके नाम मिलते हैं। महायान सम्प्रदाय अश्वघोषको स्व सम्प्रदाय भुक्त मानते हैं। नागार्जुन और आर्यदेवके समसामयिक अथच वयःकनिष्ठ नागाह्वय उपाधि तथागतभद्र नामक एक प्रसिद्ध आचार्यका उल्लेख है। ये नालन्दाविहारके प्रधान आचार्य थे। बहुतेरे नागाह्वय और नागार्जुनका एक ही व्यक्ति मानते हैं।

प्रधान प्रधान बौद्धाचार्य।

वैभाषिकोंके मध्य धर्मत्रात, घोषक, बुद्धदेव, वसुमित्र आदि भदन्तगण प्रसिद्ध थे। धर्मत्रात आर्यदेवके शिष्य तथा महाविभाषा और उदानवर्गके प्रणेता थे। वसुमित्र कनिष्क-राजपुत्रके राजत्वकालमें विद्यमान थे। छठी शताब्दीमें दो प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डितोंका आविर्भाव हुआ था जिनमेंसे एकका नाम आर्य असङ्ग और दूसरेका वसुबन्धु था। ये दोनों ही गान्धारवासी थे। असङ्ग योगाचारमतावलम्बी थे। ये पहले महीशासक और पीछे महायानसम्प्रदायभुक्त हुए। बहुत दिनों तक इन्हों ने अयोध्याके निकट एक सङ्घाराममें वास किया। पीछे ये राजगृहमें रहने लगे और यहीं उनकी समाधि हुई। इन्होंने योगसम्बन्धमें एक प्रसिद्ध पुस्तक रची है।

वसुबन्धु असङ्गके छोटे भाई और नालन्दाविहारके अध्यापक थे। नेपालमें इनकी मृत्यु हुई। इनका प्रधान ग्रन्थ अभिधर्मकोष है। इसके अलावा इन्होंने महायान ग्रन्थकी टीका भी लिखी है।

उक्त दोनों व्यक्तिके अलावा और भी कितने प्रसिद्ध तथा असाधारण पण्डितोंका विवरण मिलता है जिनमेंसे कोई महायान और कोई हीनयान सम्प्रदायभुक्त थे। इनके

नाम ये हैं—दिङ्नाथ, गुणप्रभ, स्थिरमति, सङ्घदास, बुद्धदास, धर्मपाल, शीलभद्र, जयसेन चन्द्रगोमिन, चन्द्रकीर्त्ति, गुणमति, वसुमित्र (२य), यशोमित्र, भव्य, बुद्धपालित और रविगुप्त।

किसी किसीका मत है, कि इनमेंसे धर्मकीर्त्ति सबसे अन्तमें विद्यमान थे। फिर कोई कहते हैं, कि धर्मकीर्त्ति कुमारिल भट्टके समसामयिक थे, किन्तु यूएनचुअङ्गने इनका नाम नहीं बतलाया है।

महायानोंके प्राधान्यके साथ इस सम्प्रदायके मध्य किसी किसीने तान्त्रिक गुह्यधर्मका अवलम्बन और प्रकाश किया। भोटदेशीय लामागण नागार्जुनको ही गुह्यमतका प्रवर्त्तक मानते हैं। ६ठी शताब्दीमें ये गुह्यमतावलम्बीगण 'मन्त्रयान' नामसे प्रसिद्ध हुए। उस समय चीन और जापान तक बौद्धतान्त्रिकका अभ्युदय हुआ था। ७वीं शताब्दीमें भोटदेश (तिब्बत) में 'मन्त्रयान' मत प्रचलित हुआ। १०वीं शताब्दीमें यही मन्त्रयान नाना विभत्समूर्त्तिमें 'कालचक्र' नामसे सारे भोटमें फैल गया जो नेपालमें 'वज्रयान' नामसे आज भी प्रचलित है।

उत्तर भारतमें बौद्धधर्म।

प्रवाद है, कि शङ्कराचार्य और कुमारिलभट्ट दोनोंने मिल कर बौद्धधर्मको भारतवर्षसे निर्वासित किया। किन्तु यह कहां तक सत्य है, मालूम नहीं। शङ्कराचार्यके बाद भी बौद्धधर्म भारतवर्षमें प्रचलित था, इसका यथेष्ट प्रमाण मिलता है। शङ्करके समय हिन्दुधर्मका अभ्युदय होने पर भी पराक्रान्त राजन्यवर्ग बौद्ध और हिन्दुधर्मको कुछ समय तक एक सा देखते थे।

७वीं शताब्दीमें राजा हर्षवर्द्धनने बौद्धधर्मकी खूब उन्नति की। उनका दूसरा नाम शिलादित्य था। वे यद्यपि महायान सम्प्रदायभुक्त थे, तथापि सभी बौद्ध सम्प्रदायको समभावमें देखते थे। वे बौद्धाचार्य मैत्रायणीय दिवाकर मित्रकी विशेष भक्ति करते थे उनकी बहन राज्यश्री बौद्ध भिक्षुणी हुई थी। उन्हीके समय चीनपरिव्राजक यूएनचुअङ्ग भारतवर्षमें आये थे। वे लिख गए हैं, कि सम्राट् हर्षवर्द्धनके राजत्वमें नाना सम्प्रदायके हिन्दू और बौद्धगण सुखशान्तिसे रहते थे। उस समय हीनयान और महायान इन दो सम्प्रदायी बौद्धोंके मध्य ही दलबन्दी थी। कर्णसुवर्णराज शशाङ्क बौद्धदलनमें विशेष तत्पर थे, किन्तु ऐसा दृष्टान्त बहुत विरल है।

उस समय काश्मीरमें भी बौद्धधर्मका प्रभाव ज्योंका त्यों बना था। किंतु यहां कायस्थवंशीय राजा दुर्लभवर्द्धनके राज्यकालमें शैव प्रभाव धीरे धीरे बद्धित होनेका प्रमाण मिलता है। ये स्वयं शैव हो कर भी बौद्धधर्मके प्रति विराग नहीं दिखलाते थे।

पहले ही कहा जा चुका है, कि ७५० ई०से बौद्धधर्मकी अवनति आरम्भ हुई किंतु पश्चिम भारतवर्षमें इसके पहले ही मुसलमान कर्त्तृक सिन्धुविजय द्वारा (७१२ ई०में) अवनतिका सूत्रपात हुआ था।

सिंहलमें भिक्षुओंके मध्य जो साम्प्रदायिक विरोध चलता था, वह अभयबोधिके राजत्वकालमें बहुत कुछ शान्त हो गया था। क्योंकि उस समय तामिलगण बौद्धोंके प्रति अत्याचार करते थे, जिससे इनके मध्य एकताका बन्धन दृढ़तर हो गया। राजा सङ्घबोधि पराक्रम बाहु (१म) के (११५३—११८४ ई०में) राजत्वकालमें सभी सम्प्रदायके मध्य एकताबन्धनके लिए विशेष चेष्टा होती थी और ११६५ ई०में अनुराधपुरकी सङ्गीतिमें यह कार्यमें परिणत हुई।

१३वीं शताब्दीके आरम्भमें कलिङ्गसे माघ नामक एक राजाने पुनः बौद्धोंके प्रति अत्याचार करना शुरू कर दिया। लगभग १२५० ई०में विजयबाहुने राजा हो कर इस अत्याचारको रोका और बौद्धधर्मको सजोर बनाया। उनके पुत्र पराक्रमबाहु (३य) अत्यन्त धर्मानुरागी तथा शिक्षाप्रेमी थे। संस्कृत भाषाके वे अगाध पण्डित थे तथा बहुतसे पण्डित उनकी सभामें स्थान पाते थे।

सिंहलमें बौद्धधर्म आज तक भी वैसा ही बना है। अङ्गरेज, मुसलमान तथा हिन्दू धर्मका आक्रमण सह्य करके भी यह एकबारगी तिरोहित नहीं हुआ। सिंहलमें उच्चश्रेणीके सभी मनुष्य बौद्धधर्मविश्वासी थे। किन्तु वर्तमान सिंहली बौद्धधर्म हिन्दूधर्मकी छाया तथा उसके प्रभावसे जड़ित है।

विज्ञान दो प्रकारका है, प्रवृत्ति विज्ञान और आलय विज्ञान। जाग्रत् तथा स्वप्न अवस्थामें जो ज्ञान होता है, उसे प्रवृत्ति विज्ञान और सुषुप्तिदशामें जो ज्ञान होता है, उसे आलय विज्ञान कहते हैं। यह ज्ञान केवल आत्मा का ही अवलम्बन किये रहता है।

सौत्रान्तिकगण वाह्यवस्तुको सत्य तथा अनुमान सिद्ध मानते हैं। वैभाषिकोंके मतमें वाह्य वस्तु प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। एकमात्र भगवान् बुद्धके बौद्धधर्मके उपदेश होने पर भी शिष्योंमें मतभेद होना असम्भव नहीं। इस का दृष्टान्त उन्होंने इस प्रकार दिया है। यदि कोई व्यक्ति कहे, कि 'सूर्य डूब गये' तो यह वाक्य सुन कर लम्पट व्यक्ति परदारहरण तथा तस्कर परधनापहरणका समय उपस्थित हुआ ऐसा समझेगा। किन्तु साधु सन्ध्या वन्दनादि भगवत् उपासनाका समय आ गया, ऐसा समझेंगे। अतएव एक व्यक्तिके वक्ता होने पर भी श्रोतागण अपने अभिप्रायानुसार एक वाक्यका पृथक् पृथक् तात्पर्य ग्रहण करते हैं।

उनके मतानुसार वाक्, पाणि, पाद, गुह्य और लिङ्ग ये पांच कर्मेन्द्रिय तथा नासिका, जिह्वा, चक्षु, त्वक् और श्रोत्र ये पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं, तथा मन और बुद्धि उभये न्द्रिय हैं। इन्हीं बारह इन्द्रियोंका आयतन (आरामस्थान) होनेके कारण शरीर द्वादशायतन कहलाता है। सभी बौद्धमतानुसार धनोपार्जन द्वारा इस द्वादशायतन शरीर की सम्यक् शुश्रषारूप पूजा करना प्रधान धर्म है। इनके मतमें देवता सुगत और जगत् क्षणभगुर है; प्रत्यक्ष तथा अनुमान ये दो प्रमाण हैं। दुःख, आयतन, समुदय और मार्ग ये चार तत्त्व। विज्ञानस्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संस्कारस्कन्ध तथा रूपस्कन्ध ये पांच स्कन्ध दुःख तत्त्व, पांच इन्द्रिय तथा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द ये पांच विषय एवं मन और धर्मायतन अर्थात् बुद्धि ये बारह आयतनतत्त्व हैं। मनुष्योंके अन्तःकरणमें स्वभावतः जो रागद्वेषादि उत्पन्न होता है, उसे समुदय तत्त्व कहते हैं।

इस मतमें सभी संस्कार क्षणमात्र स्थायी हैं, ऐसी जो स्थिर वासना है उसका नाम मार्गतत्त्व है। मार्गतत्त्व ही मोक्ष कहलाता है। चर्मासन, कमण्डलु, मुण्डन, चीर, पूर्वाह्न भोजन, समूहावस्थान और रक्ताम्बर ये सब यति धर्मके अङ्ग हैं।

उक्त बौद्धसम्प्रदायके मतसे सभी वस्तु क्षणिक अर्थात् प्रथम क्षणमें उत्पन्न और द्वितीयमें विनष्ट होती है। आत्मा भी क्षणिक और ज्ञानस्वरूप है; क्षणिक ज्ञानातिरिक्त स्थिरतर आत्मा नहीं है। (सर्वदर्शनस०)

नागार्जुन माध्यमिक मतके प्रवर्त्तक थे। इसी प्रकार उनके समसामयिक कुमारलब्ध सौत्रान्तिक मत-प्रवर्त्तक समझे जाते हैं। इस समय आर्यदेव तथा अश्वघोष नामक और भी दो प्रसिद्ध स्थविरके नाम मिलते हैं। महायान सम्प्रदाय अश्वघोषको स्व सम्प्रदाय-भुक्त मानते हैं। नागार्जुन और आर्यदेवके समसामयिक अथच वय कनिष्ठ नागाह्वय उपाधि तथागत-भद्र नामक एक प्रसिद्ध आचार्यका उल्लेख है। ये नालन्दाविहारके प्रधान आचार्य थे। बहुतेरे नागाह्वय और नागार्जुनको एक ही व्यक्ति मानते हैं।

प्रधान प्रधान बौद्धाचार्य।

वैभाषिकोंमें भदन्त धर्मत्रात, घोषक, बुद्धदेव, वसुमित्र आदि भदन्तगण प्रसिद्ध थे। धर्मत्रात आर्यदेवके शिष्य तथा महाविभाषा और उदानवर्गके प्रणेता थे। वसुमित्र कनिष्क-राजपुत्रके राजत्वकालमें विद्यमान थे। ६ठी शताब्दीमें दो प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डितोंका आविर्भाव हुआ था जिनमेंसे एकका नाम आर्य असङ्ग और दूसरेका वसुबन्धु था। ये दोनों ही गान्धारवासी थे। असङ्ग योगाचारमतावलम्बी थे। ये पहले महीशासक और पीछे महायानसम्प्रदायभुक्त हुए। बहुत दिनों तक इन्होंने अयोध्याके निकट एक सङ्घाराममें वास किया। पीछे ये राजगृहमें रहने लगे और वहीं उनकी समाधि हुई। इन्होंने योगसम्बन्धमें एक प्रसिद्ध पुस्तक रची है।

वसुबन्धु असङ्गके छोटे भाई और नालन्दाविहारके अध्यापक थे। नेपालमें इनकी मृत्यु हुई। इनका प्रधान ग्रन्थ अभिधर्मकोष है। इसके अलावा इन्होंने महायान ग्रन्थकी टीका भी लिखी है।

उक्त दोनों व्यक्तिके अलावा और भी कितने प्रसिद्ध तथा असाधारण पण्डितों का विवरण मिलता है जिनमेंसे कोई महायान और कोई हीनयान सम्प्रदायभुक्त थे। इनके

नाम ये हैं —दिङ्नाग, गुणप्रभ, स्थिरमति, सङ्घदास, बुद्धदास, धर्मपाल, शीलभद्र, जयसेन, चन्द्रगोमिन्, चन्द्रकीर्त्ति, गुणमति, वसुमित्र (२य), यशोमित्र, भव्य, बुद्धपालित और रत्निगुप्त।

किसी किसीका मत है, कि इनमेंसे धर्मकीर्त्ति सबसे अन्तमें विद्यमान थे। फिर कोई कहते हैं, कि धर्मकीर्त्ति कुमारिल भट्टके समसामयिक थे, किन्तु यूएनचुअङ्गने इनका नाम नहीं बतलाया है।

महायानोंके प्राधान्यके साथ इस सम्प्रदायके मध्य किसी किसीने तान्त्रिक गुह्यधर्मका अवलम्बन और प्रकाश किया। भोटदेशीय लामागण नागार्जुनको ही गुह्यमतका प्रवर्त्तक मानते हैं। ६ठी शताब्दीमें ये गुह्य मतावलम्बीगण 'मन्त्रयान' नामसे प्रसिद्ध हुए। उस समय चीन और जापान तक बौद्धतान्त्रिकका अभ्युदय हुआ था। ७वीं शताब्दीमें भोटदेश (तिब्बत) में 'मन्त्रयान' मत प्रचलित हुआ। १०वीं शताब्दीमें यही मन्त्रयान नाना विमलसमृद्धिमें 'कालचक्र' नामसे सारे भोटमें फैल गया जो नेपालमें 'वज्रयान' नामसे आज भी प्रचलित है।

उत्तर भारतमें बौद्धधर्म।

प्रवाद है, कि शङ्कराचार्य और कुमारिलभट्ट दोनोंने मिल कर बौद्धधर्मको भारतवर्षसे निर्वासित किया। किंतु यह कहां तक सत्य है, मालूम नहीं। शङ्कराचार्यके बाद भी बौद्धधर्म भारतवर्षमें प्रचलित था, इसका यथेष्ट प्रमाण मिलता है। शङ्करके समय हिंदुधर्मका अभ्युदय होने पर भी पराक्रान्त राजस्वबर्ग बौद्ध और हिंदूधर्मको कुछ समय तक एक सा देखते थे।

७वीं शताब्दीमें राजा हर्षवर्द्धनने बौद्धधर्मकी खूब उन्नति की। उनका दूसरा नाम शिलादित्य था। वे यद्यपि महायान सम्प्रदायभुक्त थे, तथापि सभी बौद्ध सम्प्रदायको समभावमें देखते थे। वे बौद्धाचार्य मैत्रायणीय दिवाकर मित्रकी विशेष भक्ति करते थे, उनकी बहन राज्यश्री बौद्ध भिक्षुणी हुई थी। उन्हींके समय चीनपरिव्राजक यूएनचुअङ्ग भारतवर्षमें आये थे। वे लिख गए हैं, कि सम्राट् हर्षवर्द्धनके राजत्वमें नाना सम्प्रदायके हिंदू और बौद्धगण सुखशान्तिसे रहते थे। उस समय हीनयान और महायान इन दो सम्प्रदायी बौद्धोंके मध्य ही दलबन्दी थी। कर्णसुवर्णराज शशाङ्क बौद्धदलनमें विशेष तत्पर थे, किंतु ऐसा दृष्टान्त बहुत विरल है।

उस समय काश्मीरमें भी बौद्धधर्मका प्रभाव ज्योंका त्यों बना था। किन्तु यहां कायस्थवंशीय राजा दुर्लभवर्द्धनके राज्यकालमें शैव प्रभाव धीरे धीरे वर्द्धित होनेका प्रमाण मिलता है। वे स्वयं शैव हो कर भी बौद्धधर्मके प्रति विराग नहीं दिखलाते थे।

पहले ही कहा जा चुका है, कि ७५० ई०में बौद्धधर्मकी अवनति आरम्भ हुई किंतु पश्चिम भारतवर्षमें इसके पहले ही मुसलमान कर्त्तृक सिन्धुविजय द्वारा (७१२ ई०में) अवनतिका सूत्रपात हुआ था।

सिंहलमें भिक्षुओंके मध्य जो साम्प्रदायिक विरोध चलता था, वह अग्रबोधिके राजत्वकालमें बहुत कुछ शांत हो गया था। क्योंकि उस समय तामिलगण बौद्धोंके प्रति अत्याचार करते थे, जिससे इनके मध्य एकताका बन्धन दृढ़तर हो गया। राजा सङ्घबोधि पराक्रम बाहु (१म) के (११५३—११८४ ई०में) राजत्वकालमें सभी सम्प्रदायके मध्य एकभाव बनके लिए विशेष चेष्टा होती थी और ११६५ ई०में अनुराधपुरकी सङ्गीतिमें यह कार्य्य परिणत हुई।

१३वीं शताब्दीके आरम्भमें कलिङ्गके माघ नामक एक राजाने पुनः बौद्धदेवके प्रति अत्याचार करना शुरू कर दिया। लगभग १२५० ई०में विजयबाहुने राजा हो कर इस अत्याचारको रोका और बौद्धधर्मको सजीव बनाया। उनके पुत्र पराक्रमबाहु (३य) अत्यन्त धर्मानुरागी तथा शिक्षाप्रेमी थे। संस्कृत भाषाके वे अगाध पण्डित थे तथा बहुतसे पण्डित उनकी सभामें स्थान पाते थे।

सिंहलमें बौद्धधर्म आज तक भी वैसा ही बना है। अङ्गरेज, मुसलमान तथा हिन्दू धर्मका आक्रमण सह्य करके भी वह एकबारगी तिरोहित नहीं हुआ। सिंहलमें उच्चश्रेणीके सभी मनुष्य बौद्धधर्मविश्वासी थे। किन्तु वर्त्तमान सिंहली बौद्धधर्म हिन्दूधर्मकी छाया तथा उसके प्रभावसे जड़ित है।

### भारतमें बौद्धधर्मके प्रभावका लोप।

तान्त्रिकताका प्राधान्य जब आरम्भ हुआ उसी समय से बौद्धधर्मकी अवनति होने लगी। इसके लिए केवल हिंदू ही दायी नहीं थे। बौद्धगण भी अन्तमें इस तान्त्रिकतामें आस्था स्थापन कर नाना प्रकारके अलौकिक क्रियाकलाप और सिद्धिलाभकी आशासे इसकी चर्चा करते थे। असङ्गका तिरोभाव और धर्मकीर्तिके आविर्भावके समय बौद्धतान्त्रिकताकी परिपुष्टि साधित हुई। भोटदेशी लामा तारानाथने लिखा है, कि धर्मकीर्तिके बाद ही अनुत्तर योग प्रकट हो उठा था।

गौडके पालराजगण बौद्धधर्मावलम्बी थे, इसके प्रमाणका अभाव नहीं है। इन पालराजाओंकी सभामें बहुतसे सिद्धवज्राचार्यने नाना अलौकिक कार्य दिखा दिखा कर जनसाधारणको विमुग्ध किया था। यही समय वज्रयानका परिणति-काल है। उसी समय गुरुकर्तृक कानमें तान्त्रिक बीजमन्त्र देनेकी व्यवस्था हुई।

पालवंशने ७७०—११६१ ई० तक राज्य किया। उस समय विक्रमशिलाका मठ तान्त्रिकशास्त्र-चर्चाका एक प्रधान स्थान था।

पालराजवंशके बाद सेनराजगण प्रबल हुए। ये लोग यद्यपि हिन्दूधर्मावलम्बी थे तथापि बल्लालसेनने स्वयं तान्त्रिकधर्म ग्रहण कर बौद्धोंके प्रति अत्याचार नहीं किया। १२०० ई०में अर्थात् मुसलमान विजयके बाद मगधमें बौद्धधर्म बिलकुल तिरोभाव हो गया। उद्दण्डपुर और विक्रमशिलाका मठ भूमिसात् हुआ। भिक्षुओंमेंसे कुछ तो मारे गए और कुछ भागे। उन्होंने उड़ीसा, नेपाल, ब्रह्म, कम्बोज आदि देशोंमें जा कर आश्रय लिया। उनमेंसे बौद्धाचार्य शाक्यश्री पहले उड़ीसा, बाद तिब्बतमें, रत्नरक्षित नेपालमें, बुद्धमित्र तथा उनके अनुसङ्गिगण दक्षिणभारतमें, सङ्गम श्रीज्ञान शार्दूलके साथ ब्रह्म और कम्बोज प्रभृति स्थानोंमें चले गए। किन्तु जिस जिस स्थानमें उक्त महात्माओंने पदार्पण किया था, वहां बौद्धधर्मका क्षीण दीपालोक बहुत दिनों तक जलता रहा था। अब भी दक्षिण बङ्ग, उड़ीसा तथा दक्षिण भारतके स्थान स्थानमें बौद्धप्रभावकी क्षीण स्मृति विद्यमान है। १८वीं शताब्दी तक भोटदेशीय तीर्थयात्री त्रिपुरा और उड़ीसाके पार्वत्य प्रदेशोंमें बौद्धधर्मके निदर्शन देख गए हैं। आज भी उनकी स्मृति मयूरभञ्जके पार्वत्य प्रदेशमें मौजूद है।

काश्मीरमें लगभग १४वीं शताब्दीके मध्यभाग तक बौद्धप्रभाव विद्यमान था। १३४० ई०में मुसलमानोंके आधिपत्यलाभ करने पर लादकको छोड़ कर और दूसरे स्थानसे बौद्धधर्म तिरोहित हो गया।

बङ्गदेशमें १६वीं शताब्दी तक भी बौद्धधर्मका आलोक प्रज्वलित था। १५वीं शताब्दीको बङ्गालके एक राजाने गयाके बोधिद्रुमके पादपीठका जीर्ण संस्कार किया था। उड़ीसाके राजा मुकुन्ददेव हरिचन्दन यद्यपि हिन्दू थे, तो भी उनके राजत्वकालमें बौद्धप्रभाव पुनः सजीव हो उठा। बादमें मुसलमानोंने आ कर उस चिरागको बुझा दिया।

जो सब आचार्य नेपाल गए थे उनके पार्षद वहीं वज्रयानके प्रवर्तक हुए। इस सम्प्रदायके मध्य वज्राचार्यने सर्वप्रधानगुरुका आसन ग्रहण किया था। आज भी नेपालमें 'वज्रयान'की प्रबलता है। यह सम्प्रदाय घोरतर तान्त्रिक तथा पञ्चमकारका उपासक है। नेपालकी तरह तिब्बतमें भी वज्रयान या कालचक्रयानकी प्रधानता देखी जाती है। नेपाल, तिब्बत, चीन, जापान, ब्रह्म, श्याम, लामा आदि शब्द देखो।

बङ्गाल और बिहार आदि देशोंसे भाग कर बौद्धोंने नेपालमें आश्रय लिया। यहां उनके प्रति किसी प्रकारका अत्याचार न हुआ। अब भी नेपालमें बहुतसे बौद्ध वास करते हैं। किन्तु धर्मके प्रति अनुराग, संसार वितृष्णा, मुक्तिकी ऐकान्तिक कामना आदि जो बौद्ध धर्मके आकर्षणके विषय थे उनमेंसे कुछ भी इस समय वर्त्तमान नहीं है।

आज भी नेपालमें नाममात्र बौद्धभिक्षु देखे जाते हैं। यथार्थमें वज्राचार्य या गृहीतान्त्रिक गुरुका आधिपत्य ही प्रबल है। एक समय जहां मुक्तिकामी हो कर सभी तन्त्र तथा धारणी समूहको श्रवण करते थे, अभी वही अर्थकरी व्यवसायमें परिणत हुआ है।

वर्त्तमानकालमें नेपालके बौद्धदार्शनिक समाजमें स्वाभाविक, ऐश्वरिक, कार्मिक तथा यात्निक ये चार

प्रकारके मत प्रचलित हैं। ये ही कई एक सम्प्रदाय नाम मातके लिए त्रिरत्नको मानते हैं, किन्तु उनके निकट इसका अर्थ अन्यरूप है। ये बुद्धका अर्थ मन, धर्मका भूत और सङ्घका अर्थ दोनोंके साथ जड़ जगत्‌का सम्पर्क, ऐसा लगाते हैं। स्वाभाविकगण चार्वाक हैं, ऐश्वरिक नैया यिक और मीमांसक तथा कार्मिक और यात्निक गण दैव तथा पुरुषकारवादी हैं। यद्यपि बहु पूर्वकालसे ये सब मत प्रचलित हैं किन्तु त्रिरत्नके साथ सम्बन्ध और सङ्घकी अभूतपूर्व व्याख्याको आलोचना करनेसे ये सब मत अभी नेपालमें प्रचलित हैं, उसमें सन्देह नहीं।

बौद्धधर्मकी शेष स्मृति तथा प्रच्छन्न बौद्ध सम्प्रदाय।

जिस बौद्धधर्मने हाइ हजार वर्ष तक पूर्व भारतमें प्राधान्य लाभ किया था, आबालवृद्धवनिता जिस धर्ममें हजारों वर्ष अभ्यस्त थीं, वही बौद्धधर्म पूर्व भारतसे एक बारगी तिरोहित होगा, ऐसा कदापि सम्भव नहीं।

महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री महाशयने प्रमाण किया है, कि वङ्गदेशमें धर्मपण्डितोंके मध्य अब भी प्रच्छन्न बौद्धधर्म विद्यमान है। डोम तथा शीतलापण्डितों ने भूतपूर्व बौद्धप्रभावकी क्षीण स्मृति बना रखी है।

धर्मठाकुर शब्द देखो।

महायान और इस सम्प्रदायसे उद्भूत मन्त्रयान तथा वज्रयानोंके नाना बुद्ध, बोधिसत्त्व तथा नाना शक्तिमूर्त्ति और उनको पूजाका प्रचार करने पर भी अनेक कुसंस्कार और आवर्जनासे विशुद्ध बुद्धमत्त अन्धकारावृत्त था सही, पर महायानगण बिल्कुल लक्ष्यभ्रष्ट नहीं हुए थे। उनका लक्ष्य उसी महाशून्यवादकी ओर था। बौद्धगण अपने धर्म को 'धर्म' या 'सद्धर्म' तथा अपनेको 'सद्धर्मी' बतलाते थे।

क्या हीनयान क्या महायान दोनों सम्प्रदायमें त्रिरत्न का यथेष्ट सम्मान था। परवर्त्ती महायानोंसे त्रिरत्न ही मूर्त्तिपरिग्रहमें उपासित हुए। धर्म स्त्रीमूर्त्ति बन कर बुद्धदेवके वाम पार्श्वमें और सङ्घ पुरुषमूर्त्तिमें परि णत हो कर बुद्धके दक्षिण पार्श्वमें अधिष्ठित तथा पूजित होने लगे। त्रिरत्नका ऐसा परिवर्त्तन चित्र गयाके महाबोधिसे आविष्कृत प्राचीन भास्कर शिल्पसे पाया गया है।* जिस धर्मके लिए बुद्धदेवने अतुल राजैश्वर्यका परित्याग और कठोर साधना कर सिद्धि प्राप्त की थी। धीरे धीरे उसी धर्मने बौद्धसाधारणके प्रधान उपास्य तथा बुद्ध और शक्तिके मध्य सर्वप्रधान आसन पाया। जो शून्यवाद बौद्धधर्मका प्रधान लक्ष्य था, वही महाशून्य धर्मदेवताके नामान्तरसे गण्य हुआ और इसी निराकार महाशून्यमें सभी बुद्ध, देवदेवी तथा सर्वजगत्‌की उत्पत्ति कल्पित हुई।

हिंदू तथा मुसलमानप्रभावसे महायान बौद्धप्रभाव विलुप्त होने पर भी जनसाधारणके हृदयमें उक्त धर्मदेवता जिस आसनको बिछाये बैठे थे, कि उन्हें सहजमें कोई भी वहांसे विच्युत नहीं कर सका था। जो धर्मदेवताको भूतपूर्व बौद्धधर्मावशेष बतला कर नहीं छोड़ सके, गौड़वङ्गके ब्राह्मण प्रधान समाजमें वे ही हीन जातिमें परिणत हुए। उनके वंशधरगण आज भी धर्मठाकुरके सेवक या पूजक हैं। मालूम होता है, कि महायान प्रभावकी शेषावस्थामें धर्मकी नारीमूर्त्ति बनाने पर भी वङ्गके धर्मपूजकोंने दो एक स्थलके सिवा सभी जगह यह मूर्त्ति आदृत थी। वास्तवमें उनके कोई रूप न था, पर कहीं कहीं ध्यानी बुद्धमूर्त्ति धर्मराज रूपमें पूजित होता है। किंतु अनेक स्थानोंमें जो धर्म-ठाकुरका ध्यान पाया गया है उसे पढ़नेसे ही शून्यमूर्त्तिका परिचय पाया जायगा।

"यस्यान्ता नादि मध्यो न च करचरणौ नास्तिकायो निनादं
नाकारा नैव रूपं न च भयमरणे नास्ति जन्मानि यस्य।
योगान्द्रै ध्यानगम्यं सकलदलगतं सर्वसङ्कल्पनाथं
भक्ताना कामपूरं सुरनरवरदं चिन्तयन् शून्यमूर्त्तिं॥"

यह शून्यमूर्त्ति किस प्रकार हुई, उसका विवरण सर्वदर्शनसंग्रह बौद्धदर्शन प्रस्तावमें इस प्रकार देखा जाता है —

"अस्ति नास्ति तदुभयानुभयचतुष्कोटिविनिर्मुक्तं शून्यरूपं।"

वास्तवमें बौद्धोंका सर्वोच्चदर्शन ही शून्यवाद है। प्रज्ञापारमिता आदि प्रसिद्ध बौद्धग्रन्थोंमें शून्यता और महा शून्यताको विशेष आलोचना हुई है। किसी भी हिंदूशास्त्र ने ऐसे शून्यवादका समर्थन नहीं किया है तथा पर-वर्त्ती हिन्दूदार्शनिक शून्यवादका खण्डन करनेमें यत्नवान् हुए हैं। महायानोंके इस शून्यवादको आलोचना करनेका कारण यह है कि यद्यपि महायान सम्प्रदाय अभी अङ्ग वङ्ग

*Cunningham's Mahabodhi p 55, plate XXI.

कलिङ्गमें एकबारगी अन्तर्हित हो गया है तथा ब्राह्मण प्राधान्यनिर्देशक किसी हिंदूशास्त्रमें शून्यवाद स्वीकृत नहीं हुआ है, तो भी आज तक बहुउत्कलवासीके इतर जनसाधारणके मध्य शून्यवादका प्रभाव विलुप्त नहीं हो सका है। केवल शून्यपुराण ही नहीं, वरन् बहुत धर्म मङ्गल तथा डोम हाड़ी प्रभृति नीच जातिके धर्मविश्वासमें वही शून्यवाद स्पष्टरूपसे वर्त्तमान है। बङ्गके उक्त साम्प्रदायिक मङ्गलग्रन्थ या नीच जातिका ही विश्वास नहीं है, वरन् मयूर भञ्जके दुर्भेद्य जङ्गलावृत प्रदेशसे आविष्कृत सिद्धान्त उडुम्बर, अभयपटल, भावाकार संहिता प्रभृति उत्कल ग्रन्थ से भी महायान धर्मकी विगत स्मृति पाई गई है।

सिद्धान्त उडुम्बरके प्रारम्भमें ही यह श्लोक देखा जाता है।—

"अनाकाररूपं शून्यं शून्यं मध्ये निरञ्जनः।
निराकारमहाज्योतिः भज्योति भंगावायम्॥"

धर्मपूजाप्रवर्त्तक रमाई पण्डितके शून्यपुराणमें भी यही श्लोक है,—

"शून्यरूपं निराकारं सहस्रविघ्नविनाशनम्।
सर्वपर परोऽसि तस्मात्त्व वरदो भव॥"

सुतरां देखा जाता है, कि दोनों ■ ग्रन्थकारोंका लक्ष्य शून्यवाद है तथा उद्देश्य भी एक है।

नेपाली बौद्धोंके स्वय भूपुराणके प्रारम्भमें भी ऐसा ही श्लोक है,—

"नमो बुद्धाय धर्माय सङ्घरूपाय वै नमः।
स्वयम्भुवे विमलज्ञानभासे धर्मधातवे॥ (१)
अस्ति नास्ति स्वरूपाय ज्ञानरूपस्वरूपिणे।
शून्यरूपस्वरूपाय नानारूपाय वै नमः॥ (३)"

रमाई पण्डितकी पद्धतिमें भी देखा जाता है, कि उस महाशून्यमूर्त्ति "लङ्गित अवतार"-रूप धर्मसे आद्याशक्ति पार्वतीका जन्म है और बाद उस पार्वतीसे ब्रह्मा विष्णु और महेश्वरकी उत्पत्ति हुई है।

धर्मपूजाकी पद्धतिमें "ओं श्रीं धं धर्माय नमः" इस प्रकार शून्यमूर्ति धर्मराजका बीज निर्दिष्ट है। मयूरभञ्ज सिद्धांतउडुम्बरग्रन्थमें 'ओं श्री शून्यरूपाय नमः' इस शून्यरूप निरञ्जनका ध्यान देखा जाता है। किसी हिन्दूशास्त्रमें इसको शून्य नहीं बतलाया है, अतएव महायान बौद्धोंके इस धोंगमतको विशुद्ध कहना बाहुल्य है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि महायानोंने त्रिरत्नमेंसे एक (सङ्घ)-को पुरुषमूर्त्ति माना था जो अब भी बोधगयामें विद्यमान है। गौड़वङ्गके धर्मोपासकोंके साधारणतः इस मूर्त्तिको ग्रहण नहीं करने पर भी धर्ममङ्गलसमूहके नायक प्रसिद्ध धर्मभक्त लाउसेनकी राजधानी मैनागढ़के समीप जो धर्मस्तव पाया गया है, उसमें बुद्धधर्मसङ्घ सङ्घमूर्त्तिका स्तव इस प्रकार है,—

"श्वेताङ्ग श्वेतमाल्यं श्वेतयज्ञोपवीतकम्।
श्वेतासनं श्वेतरूपं निरञ्जनं नमाम्यहं वै॥"

उक्त आदर्श पर मयूरभञ्जके सिद्धान्त-उडुम्बर ग्रन्थमें धर्म और सङ्घको एकत्र लक्ष्य करके प्रसिद्ध विष्णुका ध्यान कल्पित हुआ है। यथा—

ओं शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥"

जहां पर उक्त ध्यान है, उससे पहले ऐसी धर्मगायत्री देखी जाती है,—

"ओं सिद्धदेव सिद्ध धर्मा वरेण्यमस्य धीमहि।
मर्वन्त्रो धीयो यान सिद्धधर्म प्रचोदयात्॥"

(सिद्धान्त-उडुम्बर १० अ०)

सिद्धान्त उडुम्बरमें अज्ञातपूर्व कई एक आख्यायिकाएं मिलती हैं जो पौराणिक सी प्रतीत होती हैं। किंतु आश्चर्यका विषय है, कि क्या बौद्ध क्या हिन्दू किसी पौराणिक ग्रन्थमें ऐसी आख्यायिकाका समर्थन नहीं मिला। इससे ज्ञात पड़ता है, कि सिद्धान्त उडुम्बरकी रचनाके समय अर्थात् दो वर्ष से पहले बौद्ध समाज में ऐसा प्रवाद प्रचलित था अथवा प्रवादसमर्थक यदि कोई ग्रन्थ रहता तो उसीके अनुसार उडुम्बरकार बाउरी जातिका परिचय दे जाते। निरञ्जनके दक्षिण अङ्गमें विप्र और मुखसे विश्वामित्रका जन्म हुआ था तथा उन्होंने बाउरी जातिकी उत्पत्ति है। इस निरञ्जनने दाहिने अङ्गसे पद्मालया नामक एक कन्याको जन्म दिया। इसके गर्भ और विश्वामित्रके औरससे ध्यानकाण्डी नामक बाउरीका उत्पन्न हुए जो पुत्र बाउरी कहलाये। दुन्धिबाउरी तथा उनके बंशधरगण ब्राह्मणोंके साथ

वेदपाठ करते थे। उस समय ब्राह्मण ज्येष्ठ और बावरो कनिष्ठ कहलाते थे। बायोशाण्डिड, परमानन्द भाइ और राघो शामगल थे तीनों पद्मालयके पुत्र शबर थे। थे ही तीन दुली बावरो थे। विश्वामित्रकी दूसरी स्त्रीका नाम था चित्रोर्वशी। इनके गर्भसे कुशसर्गा, विधु कुश और उपकुश उत्पन्न हुए। विश्वामित्रकी तीसरी स्त्री गन्धकेशीसे प्रयशा, उद्यम और माधुधर्म नामक तीन पुत्र हुए जो वाघुति (बाग्दी) नामसे परिचित थे। उनकी चौथी भार्या वायुरेखासे जयसर्वा, विजयसर्वा और धीर्यकेतु नामक तीन पुत्र जन्मे जो शबर कहलाये। उक्त दुलि बावरी, बाघुती और शबरसे पुनः १२ जाति या शाखा हुई यथा—दुलिबावरी, काहाल, अनय काहाल, गुरु काहारि, पेरी, बावरी, शबर, ज्ञुमङ्ग, बादु, भादु, गुरु और नूधन।

सिद्धान्त उडुम्बरका विवरण दूसरे किसी ग्रन्थमें नहीं मिलता। किंतु विश्वामित्रसे शबर जातिकी उत्पत्ति हुई है, यह बात ऋग्वेदके ऐतरेय ब्राह्मणमें भी मिलती है। यथा—"त एतेऽन्ध्रा पुण्ड्रा शबराः पुलिन्दा मूतिबा इत्युदन्त्या बहवो भवन्ति। विश्वामित्रा दस्युनां भूयिष्ठा।" (७।३।६)

सिद्धान्त उडुम्बरकारने उक्त परिचयके मध्य एक विशेष बात लिखी है।

पद्मालयाके तीन पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्रके साथ विष्णु की बातचीत हुई थी। विष्णुने शङ्खासुरको मार कर उन्हें सङ्घ दिया था। इस प्रकार पद्मालयाके धरने मात्र सङ्घोंसे सम्भाषण किया था।

यहां पर सङ्घ शब्दका अर्थ है बौद्धसङ्घ। शून्यपुराणमें भी इसी प्रकार 'सङ्घ' की जगह 'सङ्ख' शब्द व्यवहृत हुआ है। बौद्धधर्मानभिज्ञ जनसाधारणके निकट 'सङ्घ' सङ्खमें परिणत हुआ है। सङ्घके शत्रुओंको मार कर बुद्धदेवके लिए ही ज्येष्ठ दुलिबावरी सङ्घाधिप हुए थे। इसी प्रकार उनके तथा छोटे दो भाइयोंके वंशधरने बौद्धसङ्घमें प्रवेश किया था। किंतु बाकी ६ भाइयोंने बौद्ध धर्म ग्रहण नहीं किया, इसीलिए वे अस्पृश्य समझे जाने लगे।

सिद्धान्त उडुम्बरकारने स्पष्ट लिखा है, "दुलि बावरी अटन्ति, ब्राह्मण सङ्घे वेद पढ़ुथाति। ब्राह्मण ज्येष्ठ बावरी कनिष्ठ। ए पढ़ुथिले राजा प्रतापरुद्रङ्कठारु गाण्य करि रखि अच्छन्ति।"

उद्धृत प्रमाणसे साफ साफ मालूम होता है, कि बावरी जातिने राजा प्रताप रुद्रके समय तक बौद्धाचारका पालन किया था और वह ब्राह्मणोंके समान गिनी जाती थी। राजा प्रताप रुद्रके समयसे इस जातिका अधःपतन हुआ। राजा प्रतापरुद्र महाप्रभु चैतन्यदेवके समसाम यिक थे। उस समय उड़ीसा तथा दाक्षिणात्यके अनेक स्थानोंमें जो बौद्धसमाज विद्यमान था, वह महाप्रभु चैतन्यदेवके भ्रमणवृत्तान्तके लेखक गोविन्ददासके विवरण और उनके चरिताख्यायक चूड़ामणिदासके चैतन्यमङ्गल से ही जाना जाता है। चैतन्यप्रवर्त्तित वैष्णव धर्ममें श्रेष्ठ बौद्धधर्मका सार और निम्न श्रेणीके वैष्णव या सहजिया-के मध्य हीन बौद्ध धर्म जो एक साथ मिला हुआ है, उसका भी यथेष्ट प्रमाण पाया गया है। युगल भजन प्रभृति सहजियाका प्रधान अङ्ग जो विलुप्त बौद्ध धर्मके अञ्चलसे लिया गया है, वह नेपालसे आविष्कृत कानुभट्टका 'चर्या चय विनिश्चय' नामक बौद्धग्रन्थ पढ़नेसे मालूम होता है।[¶] एलि साहब उत्कलाधिपति प्रतापरुद्रकी सभामें पहले बौद्धोंका समादर और अन्तमें बुद्धनिग्रहके इति हासका वर्णन कर गए हैं *।

सिद्धान्त-उडुम्बर और उक्त उत्कलके इतिहासकी एक साथ आलोचना करनेसे समझा जाता है, कि बावरी जातीय बौद्धाचार्यगण ही राजनिग्रहसे छिपे रूपमें रहने लगे, साथ साथ उन्होंने बुद्ध तथा बौद्धशक्तियोंका नाम भी छिपा रखा। विष्णुने ही बुद्धका अवतार लिया था, ऐसा विश्वास कर वे बुद्धकी जगह विष्णुका पूजन करने लगे। हिन्दू देवदेवियोंको उपास्य मान कर भी वे अपने प्रधान लक्ष्यसे विचलित नहीं हुए—उन्होंने शून्यवाद के मूलधर्मको ही सर्वप्रधान समझ रखा। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर भी उनके सामने तुच्छ गिने जाने लगे।

[¶] महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रीने इस ग्रन्थका आविष्कार किया है। यह हजारों वर्ष पहलेकी बाङ्गलाभाषामें लिखा है। ग्रन्थ नितान्त अश्लील है।

* Sterling's Orissa, (Ed of 1904), p

धर्मभक्त धर्मपण्डित तथा डोमपण्डितगण जिस प्रकार हिन्दूसमाजमें अस्पृश्य हैं, राजनिग्रहसे हिन्दूसमाजके द्वारा बावरी जाति भी उसी प्रकार अस्पृश्य हुई। सिद्धान्त डम्बरकारका कहना है—"कलियुगे न दृश्य। बावरी कुले मण्डन पातक क्षय हय बोलि विष्णुमाया धरि गोप्य करि रखि अच्छन्ति।"

सिद्धान्त डम्बरसे जाना जाता है, कि बावरी जाति भी प्राचीन महायान सम्प्रदायकी तरह महाशून्यता या शून्यब्रह्मको ही जगत्का मूल बतला कर घोषणा की गई है, अर्थात् उसके प्रच्छन्न बौद्धमतके मध्य महायानका विशुद्ध शून्यवादका आभास मिलता है।

राजा प्रतापरुद्रके समय १६वीं शताब्दीमें बौद्धधर्म उत्कलमें प्रबल हो गया था। किन्तु राजनिग्रहसे बौद्ध-प्रभाव बहुत अवसान होने पर भी बौद्धसम्प्रदाय एकबारगी विलुप्त हो गया। सम्भवतः राजनिग्रहके डरसे बौद्धोंने उड़ीसाके गढ़जात दुर्गम पार्वत्य प्रदेशमें आश्रय लिया था।

उत्कलके स्वाधीन राजा मुकुन्द देव थे। एक समय उत्तरमें त्रिवेणी और दक्षिणमें गञ्जाम तक इनके अधिकारमें था। ये भी कुछ कुछ बौद्धानुरागी थे और उनके अधिकार में बहुतसे बौद्धगण रहते थे, तिब्बतभाषामें लुम्बो थाम्बो रचित 'पग्‌सम जोनसन' ग्रन्थसे उसका पता चलता है।

१७वीं शताब्दीमें जो बौद्धधर्मका क्षीणालोक अनेक स्थानोंमें प्रज्वलित था उसका कुछ कुछ प्रमाण मिलता है। तिब्बतीय बौद्धधर्मके इतिहासलेखक Dr. Waddell ने भोटभाषामें रचित बुद्धगुप्त तथागतनाथका भ्रमणवृत्तान्त प्रकाशित किया है। उक्त महात्मा १६०८ ई०में भारत भ्रमण आये थे। उनके भ्रमण-वृत्तान्तसे जाना जाता है कि १७ वीं शताब्दीमें भी त्रिपुराके देवीकोट, हरिभञ्ज, फुकराढ़ और पालगढ़में बहुत से बौद्धयति तथा बौद्धग्रन्थ विद्यमान थे।

हरिभञ्जका अवस्थान-निर्णय।

बुद्धगुप्त-तथागतनाथ पार्वत्यत्रिपुराराज्यको देख कर हरिभञ्ज नामक स्थानमें पधारे। इस स्थानको मयूरभञ्ज भी कहते हैं। १७वीं शताब्दीमें अर्थात् बुद्धगुप्तके समय हरिभञ्ज प्रतिष्ठित हरिहरपुरमें मयूरभञ्जकी राजधानी थी। हरिपुरमें एक समय जो बौद्धसङ्घ था, वहांके ध्वंसावशेषसे आविष्कृत आगुलीतारासे उसका आभास मिलता है। बुद्धगुप्तने इस अञ्चलमें हरिभञ्ज चैत्यका दर्शन किया था। यहां उन्होंने हितगर्भकन्या नामक एक बौद्ध-उपासिकासे तथा एक प्रधान धर्मपण्डितकी जीवनीसे अनेक गुह्यतत्त्वका पता लगाया था।

फुकराढ़का संस्थान।

फुक्‌राढ़ या फुग्‌राढ़—तिब्बतीय भाषामें 'फुग'का अर्थ है सिद्धगुहा। सिद्धगुहावेष्टित राढ़ प्रदेश ही फुग राढ़ है। वर्त्तमान बंगाल प्रदेशका पश्चिमदक्षिणांश जिस प्रकार "राढ़" कहलाता है उसी प्रकार मयूरभञ्जका पार्वत्य प्रदेश भी अधिवासियोंके निकट 'राढ़' नामसे परिचित है। केवल स्थानीय अधिवासिगण ही नहीं, वरन् उत्कलवासी भी मयूरभञ्जको राढ़ कहते हैं। इसी प्रकार हरिभञ्जके निकटवर्त्ती सिद्धगुहावेष्टित फुक) राढ़को मयूरभञ्जका पार्वत्य प्रदेश कह सकते हैं।

पालगढ़का संस्थान।

उड़ीसाके गढ़जातसमूहके अन्यतम वर्त्तमान पाल लहरा राज्य ही भोट भ्रमणकारीका पालगढ़ है। सुनते हैं, कि इस समय यहां बौद्धपालराजाओंके वंशधरगण राज्य करते थे और बौद्धधर्मावलम्बियोंका भी अभाव नहीं था।

१७वीं शताब्दीमें जहां बौद्ध उपासिका हितगर्भकन्या रहती थी, धर्मपण्डितकी जीवनी और उनके प्रवर्त्तित गुह्यतत्त्वका जहां सभी आदरपूर्वक अध्ययन करते थे, जहां अनेक यति तथा बौद्धोंके बौद्धग्रन्थका अभाव नहीं था वह हरिभञ्जचैत्य कहा है?

मयूरभञ्जकी राजधानी बारिपदासे आठ कोसकी दूरी पर अवस्थित वर्त्तमान बहलाई ग्रामके बोधिवोधरके समीप क्षुद्र चैत्यमूर्त्ति निकली है। उसके निकट प्राचीन हरिभञ्ज चैत्यका जो भग्नावशेष था, वही उस स्थानके जैसा प्रतीत होता है।

नेपालके नाना स्थानोंके चैत्यकी अवस्था देख कर ज्ञात पड़ता है कि जहां कोई एक महत् चैत्य है वहीं उस का आदर्शस्वरूप एक या एकसे अधिक छोटा चैत्य देखा जाता है। नेपालमें मध्ययुगके या वर्त्तमान चैत्यमें आदि

बुद्ध, पञ्चध्यानी; त्रिरत्न या बुद्ध धर्म और सङ्घमूर्त्ति तथा चैत्य पार्श्वमें हारीतीकी मूर्त्ति विद्यमान हैं।

बड़साई ग्राममें भी ऐसा छोटा चैत्य देखनेमें आता है। यह चैत्य अभी 'चन्द्रसेना' नामसे स्थानीय हिन्दुओं के निकट परिचित है। ऐसे चैत्यको हम लोग वृहत् चैत्यका आदर्श मानते हैं।

नेपालके प्रत्येक छोटे बड़े आदर्श चैत्यके चारों ओर या कुलुङ्गोमें अक्षोभ्य, रत्नसम्भव अमिताभ, अमोघसिद्धि ये चार 'ध्यानी' बुद्ध नजर आते हैं।

बड़साईग्रामके उक्त आदर्शचैत्यके चारों ओर वैसी ही चार मूर्त्ति हैं। उनका अक्षोभ्यादि चार ध्यानी बुद्धके जैसा रूप नहीं होने पर भी उक्त चार बुद्धके वाहन तथा उनके चार पुत्र बोधिसत्त्वकी मूर्ति हैं, जैसे—अक्षोभ्यकी जगह उनका वाहन हस्ती और उसके ऊपर दण्डायमान वज्रपाणि बोधिसत्त्व, रत्नसम्भवकी जगह उनका वाहन अश्व और उसके ऊपर रत्नपाणिबोधिसत्त्व-दण्डायमान हैं। इसी प्रकार अमिताभकी जगह उनका वाहन मयूरपक्षी और उसके ऊपर पद्मपाणिबोधिसत्त्व तथा अमोघसिद्धकी जगह उनका वाहन गरुड़ और उसके ऊपर विश्वपाणिकी मूर्त्ति हैं। ऊर्ध्व मध्य भागमें वैरोचनकी जगह एक मुखाकृति है।

उक्त चैत्यपार्श्वमें त्रिरत्नकी दूसरी चतुर्भुजा धर्म मूर्त्ति विराजमान है। नेपालके बहुतसे चैत्योंमें ऐसी ही धर्ममूर्त्ति देखी जाती है *।

बड़साई ग्राममें उक्त चतुर्भुजा धर्ममूर्त्तिकी मूर्त्ति वर्त्तमान है। पहले ही लिखा जा चुका है, कि नेपालके प्रत्येक बौद्धचैत्य या मन्दिरपार्श्वमें शीतला या हारीती की मूर्त्ति देखी जाती है। नेपालीबौद्धोंके वृहत् स्वयम्भू पुराणमें भी इसी प्रकार वर्णित हुआ है —

"ततश्च हारीतीं देवीं पञ्चपुत्रसमैर्वृताम्।
श्रीस्वयम्भूपश्चिमाग्रे दक्षिणास्य संस्थापितम्॥
ये च या या मनुष्याश्च पञ्चोपचारकैरपि।
मद्यधारादिभिः पूज्ये मांसै वलिनिर्मितैः॥
लोहळे पेये स्नाने पाने भक्तपिण्डाभ्यां पूजितम्।
तस्या पुण्यप्रसादाच्च न जातु दस्युपद्रवम्॥
अग्रजा अन्त्यजा लोका शैवापि बौद्धमार्गका।
हारीत्यामपि यक्षिण्यां सदा मुदा प्रपूजितम्॥"

(७म अ०)

इससे यह स्थिर होता है, कि जहां चैत्य है वहीं त्रिरत्न और ध्यानीबुद्धशोभित आदर्श चैत्य है, तथा उसीके समीप हारीतके अधिष्ठानकी सम्भावना है। बड़साइ ग्रामके एक स्थानमें उक्त तीन मूर्त्तिसे क्या यह स्पष्ट जान नहीं पड़ता, कि एक समय वहां एक वृहत् चैत्य था? यहांके अधिवासियोंका कहना है, कि बड़साई ग्रामके पार्श्ववर्त्ती बोधिपुष्करणीके समीप पूर्वोक्त तीन मूर्त्ति विद्यमान थी। थोड़े दिन हुए, कि वहांसे ला कर ये सब मूर्त्तियां ग्राममें रखी गई हैं। बोधि पुष्करणीके चारों ओर अभी विस्तीर्ण कृषिक्षेत्र है। एक समय इसके निकट ही जो बौद्धचैत्य था और उसीसे इसका नाम ऐसा पड़ा है, उसमें सन्देह नहीं। उस प्राचीन बौद्धचैत्यका अभी कोई चिह्न नहीं मिलता। लगभग एक सौ वर्ष पहले जो सामान्य स्मृतिपरिचायक चिह्न था, कृषकोंके हलचालनसे वह भी स्थानान्तरित हो गया है—सिर्फ बीच बीचमें बड़े बड़े कटे हुए पत्थर क्षीण स्मृतिका परिचय देते हैं।

हरिपुरसे ३ कोसकी दूरी पर उक्त बोधिपुष्करणी है और इसीके पार्श्वस्थ बड़साई ग्रामके सिवा हरिपुरके निकट वर्त्ती और किसी जगह ऐसा बौद्धचैत्यनिदर्शन नहीं मिलता है। इसी लिए बड़साईके निकटस्थ बुद्धगुप्त वर्णित हरिभञ्चैत्यका अवस्थान स्वीकार किया जाता है। तथागतनाथने यहां बहुतसे बुद्धशास्त्र तथा धर्म पण्डितकी जीवनी सुना था। यथार्थमें इसी बड़साई ग्रामसे प्रच्छन्न बौद्धमतमसार सिद्धान्तउडुम्बर, अनाकारसंहिता, अमरपटल प्रभृति अपूर्व ग्रन्थ आविष्कृत हुए हैं। मालूम नहीं, कि इस अञ्चलमें विशेष अनुसन्धान करनेसे वैसी कितनी ही चीजें मिल सकती हैं। धर्मपूजाप्रवर्त्तक रमाइपण्डितके शून्य पुराणका और यहांके सिद्धान्त उडुम्बरका मूलसूत्र या लक्ष्य एक है यह पहिले ही लिखा जा चुका है।

बड़साईके उक्त धर्म, चैत्य और हारीतीपूजामें आज भी ब्राह्मणको अधिकार नहीं है—अति निम्नश्रेणीकी देहरी

* Oldfield's Nepal p. 211

धर्मगत धर्मपण्डित तथा सोमपण्डितगण जिस प्रकार हिन्दूसमाजमें अस्पृश्य हैं, राजनिग्रहसे हिन्दूसमाजके द्वारा बाथरी जाति भी उसी प्रकार अस्पृश्य हुई। सिद्धान्त उडुम्बराका कहना है—"कलियुगे त हइब। बाथरी छुले सकल पातक क्षय हय बोलि विष्णुमाया करि गोप्य करि रहि अच्छ ति।"

सिद्धान्त उडुम्बरसे जाना जाता है, कि बाथरी जाति में प्राचीन महायान सम्प्रदायकी तरह महाशून्यता या शून्यवादका ही ज्ञानका मूल बतला कर घोषणा की गई है, अर्थात् उसमें प्रच्छन्न बौद्धमतके मध्य महायानका विशुद्ध शून्यवादका आभास मिलता है।

राजा प्रतापरुद्रके समय १६वीं शताब्दीमें बौद्धधर्म उत्कलमें प्रबल हो गया था। किन्तु राजनिग्रहसे बौद्ध धर्म एका अस्तगत होने पर भी बौद्धसम्प्रदाय एकबारगी विलुप्त हो गया। सम्भवतः राजनिग्रहके डरसे बौद्धोंने उड़ीसाके गड़जात दुर्गम पार्वत्य प्रदेशमें आश्रय लिया था।

उत्कलके स्वाधीन राजा मुकुन्द देव थे। एक समय उत्तरमें त्रिवेणी और दक्षिणमें गञ्जाम तक इनके अधिकारमें था। ये भी कुछ कुछ बौद्धानुरागी थे और उनके अधिकारमें बहुतसे बौद्धगण रहते थे, तिब्बतभाषामें सुम्पो खाम्पो रचित 'पग्सम जोनजङ' ग्रन्थसे उसका पता लगता है।

१७वीं शताब्दीमें जो बौद्धधर्मका क्षीणालोक अनेक स्थानोंमें प्रचलित था उसका कुछ कुछ प्रमाण मिलता है। तिब्बतीय बौद्धधर्मके इतिहासलेखक Dr. Waddell ने भोटभाषामें रचित बुद्धगुप्त तथागतनाथका भ्रमणवृत्तान्त प्रकाशित किया है। उक्त महात्मा १६०८ ई०में भारत वर्ष आये थे। उनके भ्रमण-वृत्तान्तसे जाना जाता है कि १७वीं शताब्दीमें भी त्रिपुराके देवीकोट, हरिभञ्ज, फुक्राढ़ और पालगढ़में बहुत से बौद्धयति तथा बौद्धग्रन्थ विद्यमान थे।

हरिभञ्जका वर्त्तमान निर्णय।

बुद्धगुप्त तथागतनाथ पाश्चात्यपुराणाचलको देख कर हरिभञ्ज नामक स्थानमें पधारे। इस स्थानको मयूरभञ्ज भी कहते हैं। १७वीं शताब्दीमें अर्थात् बुद्धगुप्तके समय हरिहरभञ्ज प्रतिष्ठित हरिहरपुरमें मयूरभञ्जकी राजधानी थी। हरिपुरमें एक समय जो बौद्धमठ था, वहांके कुछ सामग्रीसे आविष्कृत आनुषङ्गिकतासे उसका आभास मिलता है। बुद्धगुप्तने इस अञ्चलमें हरिभञ्ज चैत्यका दर्शन किया था। यहां उन्होंने हितगर्भकन्या नामक एक बौद्ध उपासिकासे तथा एक प्रधान धर्मपण्डितकी जीवनीसे अनेक गुह्यतत्त्वका पता लगाया था।

फुक्राढ़का निर्णय।

फुक् राढ़ या फुग् राढ़—तिब्बतीय भाषामें 'फुग'का अर्थ है सिद्धगुहा। सिद्धगुहावेष्टित राढ़ प्रदेश ही फुग राढ़ है। वर्त्तमान बंगाल प्रदेशका पश्चिमदक्षिणांश जिस प्रकार "राढ़" कहलाता है उसी प्रकार मयूरभञ्जका पार्वत्य प्रदेश भी अधिवासियोंके निकट 'राढ़' नामसे परिचित है। केवल स्थानीय अधिवासिगण ही नहीं, वरन् उत्कलवासी भी मयूरभञ्जको राढ़ कहते हैं। इसी प्रकार हरिभञ्जके निकटवर्ती सिद्धगुहावेष्टित (फुक) राढ़को मयूरभञ्जका पार्वत्य प्रदेश कह सकते हैं।

पालगढ़का स्थान।

उड़ीसाके गड़जातसमूहके अन्यतम वर्त्तमान पाललहरा राज्य ही भोट भ्रमणकारीका पालगढ़ है। सुनते हैं, कि इस समय यहां बौद्धपालराजाओंके वंशधरगण राज्य करते थे और बौद्धधर्मोत्सवका भी अभाव नहीं था।

१७वीं शताब्दीमें जहां बौद्ध उपासिका हितगर्भकन्या रहती थी, धर्मपण्डितकी जीवनी और उनके प्रवर्त्तित गुह्यतत्त्वका जहां सभी आदरपूर्वक अध्ययन करते थे, जहां अनेक यति तथा अनेकानेक बौद्धग्रन्थका अभाव नहीं था, वह हरिभञ्जचैत्य कहां है।

मयूरभञ्जकी राजधानी बारिपदासे आठ कोसकी दूरी पर अवस्थित वर्त्तमान बड़साई ग्रामके बोधिपोखरके समीप क्षुद्र चैत्यमूर्त्ति मिलती है। उसके निकट प्राचीन हरिभञ्ज चैत्यका जो अवस्थान था, वही उस स्थानके जैसा प्रतीत होता है।

नेपालके नाना स्थानोंके चैत्यकी अवस्था देख कर ज्ञात पड़ता है कि जहां कोई एक बृहत् चैत्य है वहीं उस का आदर्शस्वरूप एक या उससे अधिक छोटा चैत्य देखा जाता है। नेपालमें मध्ययुगके या वर्त्तमान चैत्यमें आदि

बुद्ध, पञ्चध्यानी, त्रिरत्न या बुद्ध धर्म और सङ्घमूर्त्ति तथा चैत्य पार्श्वमें हारीतीकी मूर्त्ति विद्यमान है।

बडसाई ग्राममें भी ऐसा छोटा चैत्य देखनेमें आता है। यह चैत्य अभी 'चन्द्रसेना' नामसे स्थानीय हिन्दुओं के निकट परिचित है। ऐसे चैत्यको हम लोग बृहत् चैत्यका आदर्श मानते हैं।

नेपालके प्रत्येक छोटे बड़े आदर्श चैत्यके चारों ओर या कुलुङ्गीमें अक्षोभ्य, रत्नसम्भव अमिताभ, अमोघसिद्धि ये चार 'ध्यानी' बुद्ध नजर आते हैं।

बडसाईग्रामके उक्त आदर्शचैत्यके चारों ओर वैसी ही चार मूर्त्ति हैं। उनका अक्षोभ्यादि चार ध्यानी बुद्धके जैसा रूप नहीं होने पर भी उक्त चार बुद्धके वाहन तथा उनके चार पुत्र बोधिसत्त्वकी मूर्ति हैं, जैसे—अक्षोभ्यकी जगह उनका वाहन हस्ती और उसके ऊपर दण्डायमान वज्रपाणि बोधिसत्त्व, रत्नसम्भवकी जगह उनका वाहन अश्व और उसके ऊपर रत्नपाणिबोधिसत्त्व-दण्डायमान हैं। इसी प्रकार अमिताभकी जगह उनका वाहन मयूरपक्षी और उसके ऊपर पद्मपाणिबोधिसत्त्व तथा अमोघसिद्ध की जगह उनका वाहन गरुड़ और उसके ऊपर विश्वपाणि-की मूर्त्ति हैं। ऊर्ध्व मध्य भागमें वैरोचनकी जगह एक मुखाकृति है।

उक्त चैत्यपार्श्वमें त्रिरत्नको दूसरा चतुर्भुजा धर्म मूर्त्ति विराजमान है। नेपालके बहुतसे चैत्योंमें ऐसी ही धर्ममूर्त्ति देखी जाती है *।

बडसाई ग्राममें उक्त चतुर्भुजा धर्ममूर्त्तिकी मूर्त्ति वर्त्तमान है। पहले ही लिखा जा चुका है, कि नेपालके प्रत्येक बौद्धचैत्य या मन्दिरपार्श्वमें शीतला या हारीती की मूर्त्ति देखी जाती है। नेपालीबौद्धोंके बृहत् स्वयम्भू पुराणमें भी इसी प्रकार वर्णित हुआ है:—

"ततश्च हारीतीं देवीं पञ्चपुत्रसमन्वितम्।
श्रीस्वयम्भूपश्चिमाग्रे दक्षिणास्यं संस्थापितम्॥
ये च या या मनुष्याश्च पञ्चोपचारकैरपि।
मधुपायसादिभिः पूज्ये भाने नैमित्तिकैः॥
लेहयै पेये खाने पाने मकपिण्डाभ्यां पूजितम्।
तस्याः पुण्यप्रसादाच्च न जातु हस्तुदत्तान॥
अनया अन्यथा टीका शैवापि बौद्धसेवका।
हारीत्यामपि यत्नियया सदा मुदा प्रपूजितम्॥"

(७म अ०)

इससे यह स्थिर होता है, कि जहां चैत्य हैं वहीं त्रिरत्न और ध्यानीबुद्धशोभित आदर्श चैत्य है, तथा उसीके समीप हारीतके अधिष्ठानकी सम्भावना है। बडसाई ग्रामके एक स्थानमें उक्त तीन मूर्त्तिसे क्या यह स्पष्ट जान नहीं पड़ता, कि एक समय वहां एक बृहत् चैत्य था? यहांके अधिवासियोंका कहना है, कि बडसाई ग्रामके पार्श्ववर्त्ती बोधिपुष्करणीके समीप पूर्वोक्त तीन मूर्त्ति विद्यमान थीं। थोड़े दिन हुए, कि वहांसे ला कर ये सब मूर्त्तियां ग्राममें रखी गई हैं। बोधि पुष्करणीके चारों ओर अभी विस्तीर्ण कृषिक्षेत्र है। एक समय इसके निकट ही जो बौद्धचैत्य था और उसीसे इसका नाम ऐसा पड़ा है, उसमें सन्देह नहीं। उस प्राचीन बौद्धचैत्यका अभी कोई चिह्न नहीं मिलता। लगभग एक सौ वर्ष पहले जो सामान्य स्मृतिपरिचायक चिह्न था, कृषकोंके हलचालनसे वह भी स्थानान्तरित हो गया है—सिर्फ बीच बीचमें बड़े बड़े कटे हुए पत्थर क्षीण स्मृतिका परिचय देते हैं।

हरिपुरसे ३ कोसकी दूरी पर उक्त बोधिपुष्करणी है और इसीके पार्श्वस्थ बडसाई ग्रामके सिवा हरिपुरके निकट वर्त्ती और किसी जगह ऐसा बौद्धचैत्यनिदर्शन नहीं मिलता है। इसी लिए बडसाईके निकटस्थ बुद्धगुप्त वर्णित हरिभञ्जचैत्यका अवस्थान स्वीकार किया जाता है। तथागतनाथने यहां बहुतसे गुह्यशास्त्र तथा धर्म पण्डितकी जोगनी सुना था। यथार्थमें इसी बडसाई ग्रामसे प्रच्छन्न बौद्धमतसमर्थक सिद्धान्तडम्बर, शून्याकारसहिता, आगमपटल प्रभृति अपूर्व ग्रन्थ आविष्कृत हुए हैं। मालूम नहीं, कि इस अञ्चलमें विशेष अनुसन्धान करनेसे वैसी कितनी ही चीज मिल सकती हैं। धर्मपूजाप्रवर्त्तक रमाइपण्डितके शून्य पुराणका और यहांके सिद्धान्त डम्बरका मूलसूत्र या लक्ष्य एक ही यह पहिले ही लिखा जा चुका है।

बडसाईके उक्त धर्म, चैत्य और हारीतीपूजामें आज भी ब्राह्मणको अधिकार नहीं है—अति निम्नश्रेणीकी

* Oldfields Nepal p. 211

जाति भी इस पूजा करती है। पहले बाथुरीगण पूजा करते थे और अब भी वे समयानुसार करते हैं। जिस दिन बौद्ध-जगत्में सभी जगह बुद्धदेवका जन्मोत्सव मनाया जाता है, आज भी उस स्मरणीय वैशाखी पूर्णिमाके दिन उक्त खड़माई ग्रामस्थ चट्टसेना नामक और चैत्यका पूजन तथा महोत्सव होता है। जनसाधारणका विश्वास है कि बहुत दिनोंसे यहां वैशाखपूर्णिमाका महोत्सव चला आता है जो "उज्ञापर्व" कहलाता है। इस उत्सवमें २० २५ हजार मनुष्य इकट्ठे होते हैं जिसमें बाथुरीजातिकी संख्या कम नहीं रहती। ऐसा उत्सव मयूरभञ्जमें और कहीं भी नहीं होता। कभी कभी उक्त क्षुद्रचैत्यकी पूजाके उपलक्षमें जनता असाधारण भयभक्ति दिखलाती है। यहां तक कि, ब्राह्मण भी आ कर उसके सामने सिर झुकाते हैं। नेपालमें अब भी ऐसे मूर्तिविशिष्ट चैत्यका सब जगह महासमादर और पूजा प्रचलित है।

अभी वैशाखी पूर्णिमाके 'उज्ञापर्व'के सिवा और दूसरे किसी दिन उक्त क्षुद्र चैत्यकी पूजा नहीं होती, किन्तु हारीतीदेवीकी पूजा सब समय हुआ करती है। कारण, बहुत दिनोंसे बौद्ध तथा हिन्दूजनसाधारण हारीती या शीतलाका पूजन करते आये हैं। आश्चर्यकी बात है, कि अभी यह मूर्ति जनसाधारणमें 'कालिका' नामसे परिचित है। इसलिए थोड़े दिन हुए ब्राह्मण भी इस देवीकी पूजा करने लग गए हैं। किन्तु साधारणतः वे नीच देहुरोंसे ही पूजी जाती हैं और निम्नश्रेणीके देहुरीगण बहुत दिनोंसे यहांकी देवसम्पत्तिका भोग करते आए हैं।

जो कुछ हो, ढाई सौ वर्ष पहले जिस स्थानमें बौद्ध उपासक तथा उपासिकाओंका अभाव नहीं था तथा बहुत दूर देशोंसे बौद्ध आचार्यगण यहांके प्रसिद्ध चैत्य और नाना गुह्यस्थानोंके दर्शन करने आते थे, अभी वहांके उक्त सामान्य निदर्शनके सिवा और कुछ भी नहीं देखा जाता। स्थानीय प्राचीन मनुष्योंसे सुना जाता है, कि बाथुरी जातिकी चेष्टासे ही इन सब द्रव्योंकी रक्षा हुई है।

बाथुरी और बावरी।

उक्त बाथुरी जाति मयूरभञ्ज और निकटवर्ती अन्य गड़जातके सिवा कहीं दूसरी जगह नहीं मिलती। सिद्धान्त उदुम्बरमें ६ प्रकारकी ब्राह्मणजातिके मध्य "बाथुरी" नामक निम्न एक (वर्त्तमान अस्पृश्य) ब्राह्मण जातिकी कथा लिखी है, वही छिपे रूपसे मयूरभञ्जके पार्वत्य प्रदेशमें 'बावरी' नामसे प्रसिद्ध है। बावरीजाति अनार्य नहीं थी—इसकी गिनती सुसभ्यजातियोंमें होती थी। इनमेंसे बहुतोंने राज्यशासन भी किया है तथा अनेक देवकीर्त्तियोंकी स्थापना कर सुसभ्यसमाजका परिचय भी दिया है जिसका मयूरभञ्जमें काफी प्रमाण मिलता है। मयूरभञ्जके दुर्गम सिमला पहाड़के ऊपर स्थापत्यशिल्पका विशाल निदर्शन 'अठारह देव' नामक जो प्राचीन प्रस्तर मन्दिर और प्रस्तर अट्टालिकादि हैं, वही विशाल कीर्त्ति बाथुरीजातिकी पूर्व समृद्धिका परिचय देती है। कुछ दिन पहले जो इस जातिके मध्य राजा, राजमन्त्री, सामन्त प्रभृति विद्यमान थे, अब भी उनकी क्षीणस्मृति वर्त्तमान है। बाथुरिया लोग भी अपनेको आर्यजाति और ब्राह्मणके समकक्ष बतलाते हैं। वे ब्राह्मणकी तरह यज्ञसूत्र धारण तथा उन्हींके जैसा दशाह अशौचका पालन करते हैं। बाद अशौचके नापित आ कर क्षौर कर देता है। ग्यारहवें दिवस श्राद्ध समाप्त होता है। ब्राह्मण पुरोहित ही पौरोहित्य करते हैं। एकादशाहको ही ब्राह्मण भोजन तथा स्वजाति भोज होता है। वर्त्तमान समयमें इस जातिके सर्वप्रधान व्यक्ति 'महापात्र' कहलाते हैं। मयूरभञ्जके खूटा बरकचिया नामक स्थानमें महापात्रों का वासस्थान है। प्रत्येक बाथुरी गृहस्थको पुत्रकन्याके विवाहके समय महापात्रको मर्यादास्वरूप एक वस्त्र, १० सुपारी और १०० पान देने होते हैं। किसी भी उत्सवके समय महापात्रकी अनुमति लेनी पड़ती है। मयूरभञ्जके महापात्र वंश अपनेको ज्येष्ठ और केवपुर दन्तुर प्रभृति महापात्र वंशको वशिष्ठकी सन्तान बतलाते हैं।

अभाग्यवश इस जातिकी अवस्था अभी अत्यन्त हीन होने पर भी जातीय सम्मान तथा वंशमर्यादाकी ओर उनका विशेष लक्ष्य है। कोई भी बाथुरी ब्राह्मणादि किसी दूसरी जातिका अन्न कदापि नहीं खाते, यदि कोई दूसरी जातिका अन्न ग्रहण या भिन्न जातीय स्त्रीसे साथ और सम्बन्ध करे तो वे उसे शीघ्र समाज और

जातिच्युत होते हैं। आश्चर्यका विषय है, कि ये किसी दूसरी जातिको छूनेमें घृणा बोध करते हैं। ये धर्मराज, जगन्नाथ और खिचिङ्केश्वरी या छोटो खिचिङ्केश्वरीको पूजते हैं। इनका कहना है, कि निरञ्जनकी जाङ्गुसे ही इनके बीजपुरुषकी उत्पत्ति हुई है, इसीलिए इनका बाहुरी या बाथुरी नाम पड़ा है।

बाहुरी शब्दसे जो 'बावरी' या 'बाथुरी हुआ है, उसमें सन्देह करनेका कोई भी कारण नहीं। वर्त्तमान बाथुरी जातिका यज्ञसूत्र, अशौच, श्राद्ध, आभिजात्यमर्यादा तथा आचार व्यवहार देख कर यही सिद्धान्त उड्‌म्वर वर्णित महायान बौद्धसम्प्रदाय भुक्त बावरी जाति सी प्रतीत होती है।

यथार्थमें यह जाति अत्यन्त छिपे रूपसे वनमें रहती है। पहले ही कहा गया है कि बाथुरीगण दूसरी जातिको छूनेमें घृणा करते हैं। ब्राह्मणप्रभावान्वित हिन्दूराजाके अधिकारमें वास और अवस्था वैगुण्यके कारण बहुतोंके पूर्वाचारका परित्याग करने पर भी ये लोग अब भी पूर्व धर्ममत तथा विश्वास एकबारगी छोड़ नहीं सके हैं और धर्मराज जगन्नाथको महायान बौद्धभावमें पूजते हैं। खिचिङ्गमें जो प्रकाण्ड बुद्धमूर्त्ति निकली है छोटो खिचिङ्केश्वरीकी मूर्त्ति बौद्ध तान्त्रिक समाजमें सिता राची नामक शक्तिमूर्त्ति कहलाती थी। इस मूर्त्तिके गात्रमें अभी भी "ये धर्म हेतु प्रभवा' इत्यादि बौद्धसूत्र उत्कीर्ण हैं। बाथुरीगण "धर्म मा" नामक और एक देवीकी पूजा करते हैं यह द्विभुज रमणीमूर्त्ति खिचिङ्गमें अधिष्ठित है, अवस्थानुसार बाथुरीमहिलाएं हीनश्रेणीकी रमणियोंकी तरह सभी हाथमें कांसे या पीतलका अलङ्कार पहनती हैं। उक्त देवी भी उसी तरह हीनजाति वेशभूषामें भूषित होने पर भी विरल अन्यतम धर्ममूर्त्तिसी प्रतीत होती है। कहीं कहीं पर बाथुरीगण "शून्य ब्रह्म'की भी पूजा करते हैं। सिद्धान्त उड्‌म्बरसे 'ओं शून्य ब्रह्मणे नम' ऐसा बीज मन्त्र पहले ही उद्धृत किया गया है। अशिक्षित हीनावस्थापन्न कोई कोई बाथुरी इस ब्रह्मको 'धम्म्' या 'बम्म्' बतलाते हैं। कोट सम्बलोंके मध्य एक बड़ामकी उपासना प्रचलित है। क्या ही आश्चर्यकी बात है, कि बडम और बड़ामका नामसादृश्य देख कर बहुतेरे बाथुरीजातिको हीन अनार्यजातिमें गिनती करते हैं। सिद्धान्त-उड्‌म्बरमें लिखा है, कि "बावरी द्विजह अन्नपिण्ड" अर्थात् ब्राह्मणकी तरह बावरी भी अन्नपिण्ड देते हैं वर्त्तमान बाथुरीजातिमें भी महापात्र प्रभृति प्रधानोंके श्राद्धमें अन्नपिण्ड देनेकी व्यवस्था है। इससे भी यह जाति जो एक समय बौद्धप्रभावकालमें ब्राह्मणोंके ऊपर प्रभुत्व जमानेको अग्रसर हुई थी, उसका कुछ आभास झलकता है। जो कुछ हो, महाराज प्रताप रुद्रके समयसे राजनिग्रहसे यह जाति जो पार्वत्य प्रदेशमें आश्रय लेनेको बाध्य हुई थी और बौद्धप्रभावके विलोपके साथ साथ बङ्गप्रदेशमें डोमपण्डितकी तरह अति हीन तथा अस्पृश्य हो गई है, इसमें सन्देह नहीं। मयूरभञ्ज और निकटवर्त्ती पार्वत्य गहनकाननवासी अपरिचित जातिको ही प्रच्छन्न बौद्ध कहते हैं। इस जातिके मुंहसे मुखसे गोरक्षनाथ, मणिकानाथ और मार्कण्ड यक्षका नाम सुना जाता है। बड़साहग्राममें आविष्कृत अमर पुटलमें मीननाथका ही नाम मणिकानाथ है। शून्य पुराण तथा नाना धर्ममङ्गलमें दूसरे किसी ऋषिका विशेष परिचय नहीं रहने पर भी मार्कण्डेय, गोरक्ष, मीननाथ आदिका नाम मिलता है। यहांकी अनाकार संहितामें मार्कण्डेयका तपस्या और अमरपटलमें मीनगोरक्ष संवाद वर्णित है। बौद्धसमाजमें गोरक्षनाथ एक प्रधान बौद्धाचार्यके जैसे सम्मानित थे *। मीननाथका तो बड़ा ही सम्मान होता था। ये अब भी नेपालके अधिष्ठातृदेवता मच्छेन्द्रनाथ नामसे बौद्धसमाजमें विशेष पूजित हैं तथा नेपाली बौद्धगण इस मच्छेन्द्रनाथको ही 'पद्मपाणि' बोधिसत्त्वका अवतार मानते हैं †।

जो कुछ हो, उक्त प्रमाण और अनेक कारणोंसे

* It is stated in Pagasm Jon-zan (by Sumpo khanpo a renowned Buddhist Teacher of Tebbet) 'About (13th Century AD) this time foolish yogis, who were followers of Buddhist Yogi Goraksha became Civaite Samnyasis" (Journal of the Asiatic society of Bengal, 1898 Pt 1 P, 25)

† Dr Oldfield's Nepal, vol II, P, 264

बाधुरियोंको प्रस्थान तथा परिग्रह बौद्ध माननेमें कोई आपत्ति न रही।

बौध (सं० पु०) बुधस्यापत्य पुमान् बुध अण्। बुधके पुत्र, पुरूरवा।

बौधमार्गी— सत्पथानुसरति स्यात्पार्थे प्रणेता।

बौधायन (सं० पु०) १ आङ्गिरस मिश्र बोधऋषिकी सन्तति। २ एक ऋषि। इन्होंने श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्रकी रचना की।

बौधि (सं० पु०) बोध सञ्। आङ्गिरस मिश्र बोधका गोत्रापत्य।

बौध्य (सं० पु०) बोध यञ्। आङ्गिरस गोत्रापत्य। महाभारत शान्तिपर्वमें बौध्यगीता अर्थात् बौध्यका जो उपदेश है, उसका स्थूल तात्पर्य इस प्रकार है —एक दिन ययातिने बौध्यसे पूछा था, 'आपने किसके उपदेशसे शान्तिलाभ किया है?' बौध्यने उत्तर दिया, 'मैंने पिङ्गला वेश्या, क्रौञ्च, सर्प, भ्रमर, शरनिर्माता और कुमारी इन छः जनोंके उपदेशसे शान्ति पाई है। आशा सबसे बलवती है। आशाका विनाश कर सकनेसे ही परम सुख प्राप्त होता है। पिङ्गला आशाका परित्याग कर सुखसे सोई थी। निरामिष व्यक्तियोंने क्रौञ्चको आमिष ग्रहण करते देख उसे मार डाला था, यह देख कर किसी एक क्रौञ्चने आमिषका परित्याग कर परमसुख प्राप्त किया था। स्वयं घर बना कर रहना सुखका हेतु नहीं है। सांप दूसरेके बनाये हुए घरमें सुखसे सोता है। तपस्विगण भिक्षावृत्तिका अवलम्बन कर भृङ्गकी तरह पर्यटन करते हुए आनन्दपूर्वक जीविका निर्वाह करते हैं। एक शर बनानेवाला शर बनानेमें ऐसा मशगूल था कि उसके सामने राजाके गमन होने पर भी वह बिलकुल अनजान रहा, किसी प्रकार उसका ध्यान न हट सका। एक दिन एक कुमारी प्रच्छन्नभावसे कुछ अतिथियोंको भोजन करानेको धान ऊखलमें धान कूट रही थी। चोट देनेसे उसके हाथोंकी चूड़ियां झन झन शब्द करने लगीं। उसने समझा, कि बहुतोंके एक जगह रहनेसे ही कलह पैदा होता है सो उसने सब चूड़ियां फोड़ डालीं केवल एक रहने दी। अतएव अकेला विचरण करनेसे किसीके भी साथ विवाद होनेकी सम्भावना नहीं, यही बौध्यके उपदेशका स्थूल तात्पर्य है।

(भारत शान्तिप० १७८ अ०)

बोधो देशभेदोऽभिजनोऽस्य शान्तिकादित्वात् ञ्य। (त्रि०) २ निवासादिरूपसे उस देशके अधिवासी।

बौना (हिं० पु०) बहुत छोटे डीलका मनुष्य, अत्यन्त ठिगना या नाटा मनुष्य।

बौभुक्ष (सं० त्रि०) १ दरिद्र। २ अनाहारावसन्न दुर्बल व्यक्ति। ३ कृश। ४ क्षुधित।

बौर (हिं० पु०) आमकी मञ्जरी, मौर।

बौरई (हिं० स्त्री०) पागलपन, सनक।

बौरना (हिं० क्रि०) आमके पेड़में मंजरी निकलना, आमका फूलना।

बौरहा (हिं० वि०) विक्षिप्त, पागल।

बौरा (हिं० वि०) १ विक्षिप्त, पागल। २ गूंगा। ३ अज्ञान, भोला।

बौराना (हिं० क्रि०) १ विक्षिप्त हो जाना, सनक जाना। २ उन्मत्त हो जाना, विवेक या बुद्धिसे रहित हो जाना।

बौरी (हिं० स्त्री०) बावली स्त्री। बौरा देखो।

बौलड़ा (हिं० पु०) एक प्रकारका गहना जो सिर पर पहना जाता है। इसका आकार सिकड़ी सा होता है।

ब्यंग (हिं० पु०) अन्तस्थ 'व' में देखो।

ब्यंजन (हिं० पु०) व्यञ्जन देखो।

ब्यक्ति (सं० पु०) व्यक्ति देखो।

ब्यजन (सं० पु०) व्यजन देखो।

ब्यथा (सं० स्त्री०) व्यथा देखो।

ब्यथित (हिं० वि०) व्यथित देखो।

ब्यलीक (सं० वि०) व्यलीक देखो।

ब्यवसाय (सं० पु०) व्यवसाय देखो।

ब्याख्या (सं० स्त्री०) व्याख्या देखो।

ब्यवहरिया (हिं० पु०) व्यवहार या लेनदेन करनेवाला, महाजन।

ब्यवहार (हिं० पु०) १ रुपयेका लेन देन। २ रुपयेके लेन देनका संबंध। ३ इष्टमित्रका सम्बन्ध। ४ व्यवहार देखो।

ब्यवहारी (हिं० पु०) १ कार्यकर्त्ता, मामला करनेवाला।

२ लेन देन करनेवाला। ३ जिसके साथ लेन देन हो। ४ जिसके साथ प्रेमका व्यवहार हो।

ब्यसन ( सं० पु० ) व्यसन देखो।

ब्यसनी ( सं० त्रि० ) व्यसनी देखो।

ब्याज ( हि० पु० ) १ वृद्धि, सूद। २ व्याज देखो।

ब्याध ( हिं० पु० ) व्याध देखो।

ब्याधा ( सं० स्त्री० ) व्याधि देखो।

ब्याधि ( सं० स्त्री० ) व्याधि देखो।

ब्याना ( हिं० क्रि० ) उत्पन्न करना, पैदा करना।

ब्यापार ( सं० पु० ) व्यापार देखो।

ब्यारी (हिं० स्त्री०) १ रातका भोजन, ब्यालू। २ वह भोजन जो रातके लिये हो।

ब्याल ( सं० पु० ) व्याल देखो।

ब्याली ( हिं० स्त्री० ) १ सर्पिणी, नागिन। २ सर्पोंको धारण करने वाला।

ब्यालू ( हिं० पु० ) ब्यारी, रातका भोजन।

ब्याह ( हिं० पु० ) विवाह। विवाह देखो।

ब्याहता ( हिं० वि० ) १ जिसके साथ विवाह हुआ हो। ( पु० ) २ पति।

ब्याहना ( हिं० क्रि० ) किसीका किसीके साथ विवाह संबंध कर देना।

ब्यूँगा ( हिं० पु० ) चमारका एक यन्त्र जो लकड़ीका बना होता है। इससे वे चमड़ेको रगड़ा दे कर मुलायम करते हैं। इसका आकार रौंपीके आकार सा होता है, पर अगला भाग अधिक चौड़ा होता है।

ब्योंचना ( हिं० क्रि० ) १ किसी अंगका एकबारगी इधर उधर मुड़ जाना जिससे पीड़ा हो। २ हाथ, पैर उंगली गरदन आदि पड़से अतिरिक्त किसी अंगके एकबारगी झोंकेके साथ मुड़ जानेसे नसोंका स्थानसे हट जाना।

ब्योंत ( हिं० पु० ) १ विवरण, माजरा। २ युक्ति, उपाय। ३ उपक्रम, आयोजन। ४ साधारण प्रणाली, तरीका। ५ प्रबंध, इंतजाम। ६ संयोग, अवसर। ७ पहनावा बनानेके लिये कपड़ेकी काट छांट, तराश। ८ प्राप्त सामग्रीसे कार्यके साधनकी व्यवस्था, काम पूरा उतारने का हिसाब किताब। ९ साधन या सामग्री आदिकी सीमा।

ब्योंतना ( हिं० क्रि० ) १ मारना, काटना। २ कोई पहनावा बनानेके लिये कपड़ेको माप कर काटना छांटना, नापसे करना।

ब्योंताना ( हिं० क्रि० ) दरजीसे नापके अनुसार कपड़ा कटाना।

ब्योपार ( हिं० पु० ) व्यापार देखो।

ब्योपारी ( हिं० पु० ) व्यापारी देखो।

ब्योरना ( हिं० क्रि० ) १ सूत या तागेके रूपकी उलझी हुई वस्तुओंके तार तार अलग करना। २ गुथे या उलझे हुए बालोंको अलग अलग करना।

ब्योरा ( हिं० पु०) १ विवरण, तफसील। २ किसी विषय का अंग प्रत्यंग, किसी एक विषयके भीतरकी सारी बात। ३ वृत्तान्त, समाचार।

ब्योसाय ( हिं० पु० ) व्यवसाय देखो।

ब्योहर ( हिं० पु०) रुपया ऋण देना, लेन देनका व्यापार।

ब्योहरा ( हिं० पु० ) सूद पर रुपया देनेवाला, हुंडी चलानेवाला।

ब्योहरिया ( हिं० पु० ) महाजनी करनेवाला।

ब्योहार ( हिं० पु० ) व्यवहार देखो।

ब्यौहर ( हिं० पु० ) ब्योहर देखो।

ब्यौहरिया ( हिं० पु० ) ब्योहरिया देखो।

ब्यौहार ( हिं० पु० ) व्यवहार देखो।

ब्रज ( सं० पु० ) व्रज देखो।

ब्रजबादनी ( हिं० पु० ) एक प्रकारका आम। इसका पेड़ लताके रूपका होता है। इसका दूसरा नाम राजवल्ली भी है।

व्रध्न ( सं० पु० ) बध्न बध्नाते ( बन्धे ब्रधिबुधीच उण्। ३।५ ) इति न च ब्रधादेशश्च। १ सूर्य। २ वृक्षमूल। ३ अर्क, आकका पौधा। ४ शिव। ५ दिन। ६ अश्व, घोड़ा। ७ चौदहवें मनु चैत्यके पुत्रका नाम। ८ रोग विशेष। इसका लक्षण—

"यस्य वायु प्रकुपित शोफशूलकरश्चरन्।
वंक्षणात् वृषणौ याति ब्रध्नस्तस्योपजायते ॥"

( चरक १८ अ० )

ब्रह्म (स० क्ली०) बृंहति वर्द्धते निरतिशयमहत्त्वलक्षणवृद्धिमान् भवतीति बृंहि वृद्धौ (बृंहेर्नोऽच्च। उण् ४।१४५) मनिन् नकारस्याकारः रत्वञ्च। १ वेद। "तस्मादेतद् ब्रह्म नामरूपमन्नञ्च जायते।" (श्रुति) २ तपस्या, तप। ३ सत्य। ४ तत्त्व, यथार्थ। (अमर) ५ सर्वगुणातीत विशुद्ध तुरीय चित्स्वरूप, चैतन्यस्वरूप ब्रह्म, ज्ञानमय परमात्मा। वेदान्तमें लिखा है—

"ब्रह्मातिरिक्तमज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु, ब्रह्मैव नित्य वस्तु, तदन्यदखिलमनित्य" अर्थात् ब्रह्म ही एकमात्र नित्य वस्तु है। ब्रह्मके अतिरिक्त अज्ञानादि समस्त जड़ समूह अवस्तु और अनित्य हैं। श्रुतिमें पाया जाता है, कि "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति।" (श्रुति)

जिससे इस भूत समूहकी उत्पत्ति हो कर स्थिति हुई है और जिसमें यह लीन होता है, वही ब्रह्म है। वेदान्त दर्शनमें ब्रह्म जिज्ञासाके स्थलमें 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इस सूत्रके बाद 'जन्माद्यस्य यतः' इस सूत्रमें ब्रह्मका लक्षण वर्णित हुआ है। यहां अति संक्षेपमें वेदान्त प्रतिपादित ब्रह्मका विषय लिखा जाता है।

"सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्।" (श्रुति) इस जगत् सृष्टिके पहले केवल 'सत्' मात्र था, नाम और रूप कुछ भी न था। समस्त एकमात्र और अद्वितीय था।

"ऐतदात्म्यमिदं सर्वं तत् सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो।" (श्रुति) यह समस्त जगत् एतदात्मक अर्थात् सद्वस्तु ही इन सबकी आत्मा है, यह सद्वस्तु एकमात्र सत्य है और यही आत्मा या ब्रह्म है। हे श्वेतकेतो! तुम्हीं वह ब्रह्म हो। यह सद्वस्तु ही सत्य है। इससे प्रमाणित होता है कि कार्य अर्थात् जगत् सत्य नहीं है, असत्य अर्थात् मिथ्या है। तुम वही हो, ऐसा कहनेसे, जीवात्मा और परमात्मा एक है, भिन्न नहीं। यही एक तत्त्व है। 'एकमेवाद्वितीयम्' 'एक' 'एव' 'अद्वितीय' इन तीन पदोंके द्वारा सद्वस्तुमें अर्थात् ब्रह्ममें भेदत्रय निवारित हुए हैं। अनात्मा अर्थात् जगत्में तीन तीन प्रकारका भेद देखा जाता है। जैसे स्वगतभेद, सजातीयभेद, और विजातीयभेद। अवयवके साथ अवयवीका भेद स्वगतभेद है, अर्थात् पत्र, पुष्प और फलादिके साथ वृक्षका जो भेद है, उसे स्वगत भेद कहते हैं। एक वृक्षसे दूसरे वृक्षमें भेद अवश्य ही है, इसी भेदका नाम सजातीयभेद है। कारण, इस भेदके प्रतियोगी और अनुयोगी दोनों ही वृक्षजातीय हैं। शिला आदिकी अपेक्षा वृक्षमें जो भेद है, वह विजातीय भेद है। अनात्मवस्तुकी तरह आत्मवस्तुमें अर्थात् ब्रह्ममें भेदत्रयकी आशङ्का हो सकती है। इस आशङ्काकी निवृत्तिके लिए 'एकमेवाद्वितीयम्' यह रूप निरूपित हुआ है। 'एक' पदके द्वारा स्वगत भेद, 'एव' से सजातीय भेद और 'अद्वितीय' पद द्वारा विजातीय भेद निवारित होता है। जो एक अर्थात् निरंश या निरवयव है, उसमें स्वगत भेद हो नहीं सकता। क्योंकि, अंश या अवयव द्वारा ही स्वगतभेद हुआ करता है। सद्वस्तुके अवयव नहीं हैं। कारण, जो सावयव है, अवश्य उसकी उत्पत्ति होगी। अवयवोंके परस्पर संयोग या सन्निवेशके पूर्वमें सावयव वस्तुका अस्तित्व नहीं रह सकता। अवयव संयोगके बाद सावयव वस्तुकी उत्पत्ति होती है यह कहना ही पड़ेगा। सुतरां सावयव वस्तुकी उत्पत्ति है। जिसकी उत्पत्ति है, वह जगत्का आदि कारण नहीं हो सकता। क्योंकि उसकी उत्पत्ति भी कारणान्तरकी अपेक्षा रखती है। इस अवस्थामें सिद्ध होता है, कि आदि कारण या सद्वस्तुके अवयव नहीं हैं। जिसके अवयव नहीं हैं, उसमें स्वगतभेद नहीं हो सकते। नाम और रूप सद्वस्तुके अवयवरूपमें कल्पित नहीं हो सकते हैं। कारण जगत् पदार्थका नाम और रूपके अर्थमें उसका आकार समझा जा सकता है। नाम और रूपके उद्भवका नाम सृष्टि है सृष्टिके पूर्व नाम और रूपका उद्भव नहीं होता। अतएव नाम और रूपका अंश रूपमें कल्पना कर उसके द्वारा भी सद्वस्तुके स्वगत भेदका समर्थन किया जा सकता है। अब सिद्धान्त हुआ, कि ब्रह्ममें स्वगत भेद नहीं है और न हो सकता है। सद्वस्तु अर्थात् ब्रह्मका सजातीय भेद भी असम्भव है। क्योंकि सद्वस्तुका सजातीय वस्तु सत् स्वरूप होगा, और 'सत्' पदार्थ एकमात्र है। कारण 'सत् सत्' इस प्रकारका एक भावरूपमें प्रतीयमान वस्तु एक ही होगी, ऐसा माना गया है

सकतो। दो सत्पदार्थ मानने पर उनमें परस्पर वैलक्षण्य भी मानना पड़ेगा। सत् पदार्थमें स्वाभाविक वैलक्षण्य रहना असम्भव है। अतएव अन्य सत् कल्पनाका कोई प्रमाण नहीं। सत् पदार्थ एकमात्र होनेसे, सुतरां अन्य पदार्थ न होनेसे, सत् पदार्थमें सजातीय भेदका होना नितान्त असम्भव है। घट सत्ता, पट सत्ता इत्यादि रूपसे सद्वस्तुमें सजातीय भेदकी प्रतीति होती है सही, किन्तु घटाकाश, मठाकाश इत्यादिकी तरह वह भेद भी औपाधिक है, स्वाभाविक नहीं। नाम और रूप स्वरूप उपाधिभेदसे सत् पदार्थके भेद भी सृष्टिके उत्तरकालमें हो सकते हैं पूर्वकालमें नहीं। क्योंकि सृष्टिके पूर्वकालमें नाम और रूपका उद्भव ही नहीं हुआ। अतएव ब्रह्ममें सजातीयभेद नहीं है। स्वगत भेद और सजातीय भेदकी तरह सत्पदार्थमें विजातीय भेद भी नहीं बतलाया जा सकता। कारण, जो सत्का विजातीय है वह सत् नहीं है, असत् है। जो असत् है उसका अस्तित्व नहीं है और जिसका अस्तित्व ही नहीं है, वह भेदका प्रतियोगी नहीं हो सकता। जो विद्यमान है, वह अपर वस्तुसे भिन्न है, और अपर वस्तु भी उससे भिन्न हो सकती है। जिसका अस्तित्व नहीं है वह कुछ भी नहीं हो सकता। अतएव सत् पदार्थमें विजातीय भेद भी अजातपुत्रके नामकरणके समान अलीक है। एक, एव, अद्वितीय, इन तीन पदोंके ब्रह्ममें स्वगतभेद, सजातीय भेद और विजातीय भेद नहीं है, यही कहा गया है।

सृष्टिके पहले अद्वैततत्त्व अर्थात् 'एक ब्रह्म' इसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। जो वस्तुतः अद्वैत है, वह कभी भी द्वैत नहीं हो सकता। वस्तुका अन्यथाभाव असम्भव है। आलोक कभी अन्धकार नहीं हो सकता और न अन्धकार ही कभी आलोक होता है। वास्तवमें भेद और अभेद दोनों परस्पर विरोधी होनेसे दोनों सत्य नहीं हो सकते। सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेसे मालूम होता है, कि अभेद सत्य है, भेद मिथ्या है। अभेद शब्दका अर्थ एकत्व है और भेदका अर्थ नानात्व।

एकत्वव्यवहार निरपेक्ष है, और नानात्व व्यवहार दूसरेकी अपेक्षा रखता है। पूर्व सिद्ध एकत्व उत्तरकालमें व्यवह्रियमाण नानात्व द्वारा बाधित नहीं हो सकता। वरन् पूर्वसिद्ध एकत्व द्वारा पर भावी नानात्व ही बाधित हो सकता है। निरपेक्ष होनेसे एकत्व प्रबल है, और सापेक्ष होनेसे नानात्व दुर्बल है। विरोधके स्थल पर प्रबल दुर्बलको बाधित करता है, एकत्व अभेद नानात्व अर्थात् भेदका उपजीव्य है। प्रतियोगिज्ञानके विना भेदका ज्ञान नहीं हो सकता। आश्रयके विना कोई ठहर नहीं सकता। इसलिए भी भेद अभेदकी अपेक्षा दुर्बल है। अतएव अभेद सत्य है और भेद मिथ्या। ब्रह्म एक और अद्वितीय है। उपनिषद्में यह विषय विस्तृतरूपसे उपदिष्ट हुआ है। द्वैत उपदिष्ट न होने पर भी उपनिषद्में किसी किसी जगह द्वैतका आभास पाया जाता है। द्वैत और अद्वैत, इन दोनोंमें एक ही सत्य है, दूसरा काल्पनिक है, यह अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा। क्योंकि वस्तु एकरूप होगी, दो रूप नहीं हो सकती। द्वैतको पारमार्थिक और अद्वैतको काल्पनिक कहनेसे एक विज्ञानसे सर्वविज्ञान प्रतिज्ञा भङ्ग होती है, उपादान मात्रके लिए ही सत्यताका अवधारण असङ्गत होता है, और ब्रह्मात्मका सिद्धवत् निर्देश अनुपपन्न होता है। सुतरां अद्वैत वा अभेद काल्पनिक है, पारमार्थिक, द्वैत वा भेद मिथ्या वा व्यावहारिक है, यही सिद्धान्त श्रुतिसङ्गत है।

"यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितर इतरं पश्यति" (श्रुति) जिस समय द्वैत सदृश होता है, उस समय एक दूसरेको देख सकते हैं। श्रुतिमें "द्वैतमिव" है इस "इव शब्दके प्रयोगसे द्वैतका मिथ्यात्व प्रज्ञापित होता है।

"मन्दान्धकारे रज्जुः सर्प इव भवति।" (श्रुति)

मन्द अन्धकारमें रज्जु सर्पकी भांति दीखती है। ऐसे स्थलमें 'सर्प इव' कहनेसे सर्पका मिथ्यात्व जैसे बतलाया गया है, उसी तरह समझना चाहिये।

"मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति।" (श्रुति)

जो इस ब्रह्मको नाना रूपमें दर्शन करता है, वही मृत्यु द्वारा विनाशको प्राप्त होता है। इस जगह

भी 'नानेव' इस शब्दके प्रयोग द्वारा नानात्व वास्तविक नहीं है नानात्व मिथ्या है, यही कहा गया है। "एक सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।" (श्रुति) एक ब्रह्मको अनेक रूपमें कल्पना होती है। ऐसे बहुत श्रुतिके भयसे प्रमाण नहीं दिये गये। छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपनिषद् तथा वेदान्तदर्शन देखनेसे इसके बहुत प्रमाण मिल सकते हैं।

अद्वैतमतानुसार सृष्टि वस्तुतः सत्य नहीं है काल्पनिक मात्र है। कल्पना द्वारा पारमार्थिक अद्वैतकी कोई भी क्षति नहीं हो सकती। जिसकी आँखें तिमिरग्रस्त हैं या रोगयुक्त हैं, वह यदि एक चन्द्रमाको कई चन्द्रमाकी भांति देखे, तो उसके देखनेसे चन्द्रमा अनेक नहीं हो सकते। कारण, चन्द्रका अनेकत्व वास्तविक नहीं है, वह उसकी आँखोंमें विकार होनेसे, मिथ्या कल्पना है। कल्पित रूप वस्तुका स्पर्श नहीं करता, वस्तुके साथ कल्पितरूपका कोई सम्बन्ध नहीं। इसी तरह अविद्याके दोषसे हमारे विचित्र वस्तुओंका दर्शन करने पर भी उसके द्वारा प्रकृत रूपमें ब्रह्म जगदाकार नहीं हो सकते।

किसी किसी श्रुतिमें ब्रह्मके परिणामवादका आभास देखनेमें आता है। परन्तु अविद्या कल्पित नाम रूपात्मक रूपभेदसे ब्रह्म परिणाम व्यवहारके गोचर होने पर भी, द्वैत मिथ्यात्व और अद्वैत सत्यत्व बोधक श्रुतियोंके मतानुसार विवर्त्तवादकी पारमार्थिकता सिद्ध होती है। किन्तु परिणाम प्रतिपादनके विषयमें श्रुतिका तात्पर्य नहीं है। कारण, उस प्रकारका ब्रह्मात्मभाव ज्ञानमोक्ष का साधन है। सत्कार्यज परिणाम प्रक्रियाके अनुसार सृष्टि है इसलिए श्रुतिमें 'नेति' 'नेति' अर्थात् यह ब्रह्म नहीं है, यह ब्रह्म नहीं है, इस प्रकारसे प्रपञ्चका निषेध कर निष्प्रपञ्च ब्रह्मात्मभावका ही उपदेश दिया गया है।

एक ब्रह्म बहुरूपमें कल्पित होते हैं। यह पहले ही कहा जा चुका है, 'ब्रह्मायत्ता' यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते कि प्रथममें ही इस जगत्की सृष्टि हुई है।

"आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् ... [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥"

(पञ्चदशी द्वैत वि० १६)

इस अनन्त ब्रह्माण्डकी सृष्टिके पहले केवल एकमात्र ब्रह्म ही विद्यमान थे, उस समय और कुछ भी विद्यमान न था। उस अद्वितीय ब्रह्मके मनमें सङ्कल्प हुआ, कि "मैं जगत्की सृष्टि करूंगा"। उनके "इस सङ्कल्प मात्रसे ही चराचर जगत्की सृष्टि हो गई। तैत्तिरीय श्रुतिके देखनेसे मालूम होता है कि, ब्रह्मके सङ्कल्प मात्रसे ही आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी और औषधि आदि सभी वस्तु यथाक्रम उत्पन्न हुई। उसी ब्रह्मने—"मैं बहु होकर जगत्में परिणाम होऊंगा" ऐसा सङ्कल्प किया, और इसी सङ्कल्परूप तपोबलसे उन्होंने अनन्त ब्रह्माण्डकी सृष्टि की है।

छान्दोग्य उपनिषद्में भी कहा गया है कि, इस अशेष ब्रह्माण्ड सृष्टिके पहले और कुछ भी नहीं था। केवल एकमात्र सत्स्वरूप ब्रह्म ही विद्यमान था। उन्होंने सङ्कल्प किया कि, नानाकारसे जगत् उत्पन्न होवे, उसी समय ब्रह्मके उस सङ्कल्पके फलसे यह जगत् उत्पन्न हो गया।

इन श्रुति प्रमाणोंके द्वारा सिद्ध होता है कि, ब्रह्म ही एकमात्र जगत्कारण हैं। उन्हींसे सृष्टि, स्थिति और लय होता है। अनन्तचैतन्य, अरूप, अस्पर्श, अशब्द और अव्यय ब्रह्मकी पारमेश्वर शक्ति अज्ञान है। अज्ञानके प्रादुर्भावसे अन्तःकरणादिकी उत्पत्ति होती है, अन्तःकरणसे परिच्छिन्न जीव हैं, फिर उन्हींके निरोधसे अपरिच्छिन्न और निरञ्जन हैं। यह अज्ञान देवात्मशक्ति, ब्रह्मयोनि, अज्ञानशक्ति, माया, सृष्टिशक्ति, मूलप्रकृति आदिके नामसे परिभाषित हुआ है। यथा सत्ता प्रथम और यथा चाहतपथ, सभी अज्ञानका विलास है, इसीलिए यह शक्तिका विशुद्धात्म कहलाता है।

"[illegible] ॥
[illegible]" (वेदान्त०[illegible])

शक्तिका ब्रह्माश्रित स्वभावसे उसी का दूसरी

जगत् दिखाया है। इसलिए जगत् और ब्रह्म अब मिश्रित या एकावभासमें भासित हैं। यही कारण है कि अब प्रत्येक द्रव्य ही पञ्चरूपी हो रहा है। (१) 'अस्ति' है, (२) 'भाति' भासता है, (३) 'प्रिय' प्यारा लगता है, (४) 'रूप' यह एक प्रकारका है, (५) 'नाम' यह अमुक वस्तु है। इन पञ्चरूपोंमें प्रथमोक्त भिन्न रूप तीन ब्रह्म हैं, अवशिष्ट दो रूप जगत् अर्थात् अज्ञान विकार हैं। अज्ञान विकार या जगत् परमार्थतः सत्य नहीं है, इसीलिए कहा गया है कि, जगत मिथ्या है, एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है। श्रवण, मनन और निदिध्यासनादि द्वारा अज्ञान तिरोहित होता है।

स्वरूप और तटस्थ, इन दो लक्षणों द्वारा श्रुतिने ब्रह्म निरूपण किया है। ब्रह्म जगत्कारण है, यह तटस्थ लक्षण है, ब्रह्म सच्चिदानन्द, अखण्ड, एकरस और अद्वय है, स्वरूप ही इसका लक्षण है। ब्रह्म जगत् कारण होने पर भी सांख्यकी प्रकृति और वैशेषिकके परमाणुकी तरह परिणामी और आरम्भिक नहीं हैं। वे स्वयं ही अपनी मायासे आकाशादिके रूपमें निर्वर्तित हुए हैं। सुतरां अभिन्न निमित्तोपादान विवर्तका कारण हैं। अभिन्न निमित्तोपादानका दृष्टान्त मकड़ी है। मकड़ी सृज्यमान सूतके प्रति सचैतन्य प्राधान्यसे निमित्तकारण है, और स्वशरीर प्राधान्यसे उपादान कारण है। मकड़ी जो सूत बनाती है उसका उपादान वह कहीं अन्यसे नहीं लाती, वह उसके शरीरमें ही है।

जगत् ब्रह्मका विकार नहीं है, विवर्त है। सचमुच ही जो वस्तु एक प्रकारसे अन्य प्रकारमें रूपान्तरित हो जाती है वह विकार और मिथ्या है अन्यथा प्रतीत होनेसे उसे विवर्त समझना चाहिए। दुग्ध दधि हो जाता है, यह विकार है। रज्जुमें सर्पकी प्रतीति होती है। यह भी विवर्त है। जगत् ब्रह्मका विकार नहीं है। किंतु विवर्त है। सुतरां यह दृश्य जगत् इन्द्रजाल सदृश्य, तात्त्विकसत्ताशून्य है, अर्थात् मिथ्या है।

ब्रह्म विना व्यापारके स्वेच्छासे जगत्का सृष्टि करते हैं। उनकी इस प्रकारकी इच्छा शक्तिका ही नाम माया है। गुणवती माया एक होने पर भी गुणके प्रभेदसे ही जीव और ब्रह्ममें इस प्रकारका विभाग प्रचलित है। उत्कृष्ट सत्त्वके प्राबल्यसे माया है और मलिन सत्त्वके प्राबल्यसे अविद्या, मायाके उपहित ब्रह्म और अविद्याके उपहित जीव है। जीव केवल उपहित नहीं, किंतु अविद्याके वश्य भी है। माया एक है इसलिए ब्रह्म भी एक है। मालिन्यके अपाधिक्यके अनुसार अविद्या बहुत है। तदनुसार जीव भी नाना है, जैसे—सुर, असुर, पशु, पक्षी मनुष्य आदि। मायाका मायामें ज्ञानशक्तिका चरमोत्कर्ष है, इसलिए उसके उपहित ब्रह्म भी सर्वज्ञ है स्वतन्त्र और सर्व नियन्ता हैं। जीव ज्ञानशक्तिकी अल्पताके कारण वैसा नहीं है। जैसे, एक ही आकाश, घट रूप उपाधिमें घटाकाश उसके त्यागने पर महाकाश है, वैसे ही ब्रह्म भी मनुज आदि उपाधिमें जीव और उसके त्याग करने पर ब्रह्म है।

शास्त्र, युक्ति और अनुभव, इन तीनों प्रकारके अनुसन्धानसे मालूम होता है कि, अस्तित्व और प्रकाश जिसके अधीन है, वह अपनेमें ही कल्पित है। जैसे, तरङ्ग बुदबुद आदि जलके अधीन होनेसे जलमें ही कल्पित हैं अर्थात् उनकी सत्ता जलसत्ताके अतिरिक्त नहीं है, उसी तरह इस दृश्य ब्रह्माण्डका अस्तित्व और प्रकाश सच्चिदानन्द ब्रह्मसत्ताके अधीन है। इससे स्थिर किया जाता है कि सच्चिदानन्द ब्रह्म हैं, चैतन्यमें कल्पित जीव इस ब्रह्म कल्पित भावका साक्षात्कार करनेमें असमर्थ है। जैसे, दर्पण की कालिमा दर्पणके स्वच्छ स्वभावको प्रच्छन्न कर देता है उसी तरह अपने अनिर्वचनीय अनादि अज्ञानने भी इस स्वरूपको प्रच्छन्न कर दिया है। इसीसे अज्ञ, नाना द्वैत प्रपञ्चके मिथ्यात्वसे ज्ञात नहीं है। श्रवणादि द्वारा अज्ञान मालिन्य परिमार्जित होने पर फिर वे समझ सकते हैं, कि मैं पूर्ण हूं, अनवच्छिन्न और सत्य हूं। अन्य समस्त मेरेमें और मेरे कल्पित हैं। मैं ही ब्रह्म हूं।

सृष्टिके पहले यह समस्त सत् अर्थात् ब्रह्म, था, और कुछ भी न था, यह सब ही ब्रह्म है। अद्वय ब्रह्म ही आदितत्त्व है। इन सब श्रुतियोंके द्वारा मुख्यरूपसे अद्वय ब्रह्मतत्त्वका उपदेश किये जानेसे और उनके प्रतिपादनार्थ तत्त्वमसि आदि महावाक्यका उपदेश करनेसे स्पष्टतया समझमें आता है कि 'त्वं ब्रह्म', तुम ही ब्रह्म हो।

वैदान्तिक आचार्योंके मतानुसार ब्रह्म सगुण होते हुए भी, उनमें भी प्रकारान्तरसे द्वैतवादका सिद्धान्त असङ्गत नहीं है, वेदान्त आचार्यगण प्राय सभी विशिष्टाद्वैतवादी हैं। ब्रह्म सगुण, सर्वशक्तिमान और निखिल कल्याणगुणके आधार हैं। जीवात्मा समस्त पृथक् सत्ता है, परस्पर भिन्न और ब्रह्मके दास हैं। जगत् ब्रह्मका शक्ति विकास और परिणाम है; सुतरां सत्य है। सत्य ज्ञानादि गुणविशिष्ट ब्रह्म से, सत्त्व रजादि गुणविशिष्ट जगत् है, और सत्यादि धर्माधर्मादि गुणविशिष्ट जीवात्मा अभिन्न है अर्थात् जीवात्मा जगत् ब्रह्मसे भिन्न हो कर भी भिन्न नहीं है। जीव और ब्रह्मका स्वरूप अभिन्न नहीं है, किन्तु आदित्यके प्रभाव की भांति वह ब्रह्मसे भिन्न नहीं है, परन्तु ब्रह्म जीवसे अधिक है। जैसे प्रभासे आदित्य अधिक है, उसी प्रकार जीवसे ब्रह्म अधिक है। ब्रह्म सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ कल्याणगुणका आकर है, धर्माधर्मादिशून्य जीव उससे विलक्षण है।

ब्रह्मभेदाभेद, द्वैताद्वैत और अनेकान्तवाद विशिष्टाद्वैतवादका नामान्तर मात्र है। ब्रह्म एक भी है, अनेक भी है। वृक्ष जैसे अनेक शाखायुक्त होते हैं ब्रह्म भी वैसे ही अनेक शक्तियुक्त माना है। अद्वैतवादियोंके मतसे यह मत भ्रमात्मक है। कारण, दो वस्तु एक समयमें परस्पर भिन्न और अभिन्न नहीं हो सकता। क्योंकि भेद और अभेद परस्पर विरोधी हैं। अभेदका अर्थ है भेदका अभाव। भेद और भेदका अभावका एक समयमें एक वस्तुमें रहना असम्भव है। कार्य और कारण यदि अभिन्न हो, तो जगत् ब्रह्मसे अभिन्न हो सकता है। परन्तु कार्य और कारणके अभिन्न होनेसे जैसे मृत्तिकारूपमें घटशरावादिका और सुवर्णरूपमें कुण्डलमुकुटादिका एकत्व कहा जाता है, उसी प्रकार घटशरावादि और कुण्डलादिका एकत्व क्यों नहीं होता? अर्थात् घटशरावादि और कुण्डलमुकुटादि रूपमें जैसे नानात्व कहा जाता है, उसी प्रकार उसी रूपमें ही एकत्व भी क्यों नहीं आता है? कारण, मृत्तिका और घटशरावादि तथा सुवर्ण और कुण्डलमुकुटादिके अभिन्न होनेसे मृत्तिका सुवर्णादिका धर्म एकत्व घट शरावादि और कुण्डलमुकुटादिका धर्म नानात्व भी सुवर्णादिमें सञ्चरित हो है। क्योंकि कार्य और कारण जब एक वस्तु है तब एकत्व और नानात्व धर्म भी सङ्कर हो कार्य और कारणगत होंगे।

किसी किसी आचार्यने इस दोषके परिहारके लिये अन्यान्य सिद्धान्त किया है। उनका कहना है, कि भेद और अभेद अवस्थाभेदसे होता है अर्थात् अवस्थाभेदमें एकत्व और नानात्व दोनों ही सत्य हैं। संसारावस्थामें नानात्व और मोक्षावस्थामें एकत्व है। अर्थात् संसारावस्थामें जीव और ब्रह्म भिन्न हैं और लौकिक तथा शास्त्रीय व्यवहारमें सत्य हैं। मोक्षावस्थामें जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं तथा सभी लौकिक और शास्त्रीय समस्त व्यवहार निवृत्त होते हैं, यह सिद्धान्त भी सङ्गत नहीं है। कारण 'तत्त्वमसि' 'अहं ब्रह्मास्मि' इत्यादि श्रुति बोधित जीवके ब्रह्मभाव अवस्थाविशेषमें नियमित नहीं है। क्योंकि ब्रह्मत्व भाव बोधक श्रुतिमें अवस्थाविशेषका उल्लेख नहीं है। जीवका अस्मदादिप्रमाणभेद ब्रह्मत्व अर्थात् सर्वदा विद्यमान है, यही श्रुति द्वारा जाना जाता है। श्रुतिमें कहा गया है, कि यह नित्य सङ्गत है। श्रुतिवाक्यकी अवस्था विशेषमें अभिप्रायकी कल्पना निष्प्रमाण है। 'तत्त्वमसि' इस श्रुति बोधित जीवका ब्रह्मभाव किसी प्रकारके प्रयत्न या चेष्टा साध्य रूपमें निर्दिष्ट नहीं हुआ है। 'असि' इस पदसे स्वतःसिद्ध अर्थका मात्र प्रज्ञापन किया गया है।

अतएव जो लोग कहते हैं कि, जीवका ब्रह्मभाव ज्ञान और कर्मसमुच्चयसे साध्य है उनका सिद्धान्त सङ्गत नहीं है और विशेष यह है कि एकत्व और नानात्व निवर्त्तित नहीं हो सकता। कारण, यथार्थज्ञान अयथार्थ ज्ञानका और उसके कार्यका निवर्त्तक हो सकता है। यथार्थ या सत्य वस्तुका निवर्त्तक नहीं हो सकता। रज्जुज्ञान परिकल्पित सर्पका निवर्त्तक होता है, परन्तु सुवर्णज्ञान कुण्डलादिका निवर्त्तक नहीं होता। एकत्वज्ञान द्वारा नानात्व निवर्त्तित नहीं होने पर मोक्षावस्थामें भी कल्पना सत्यार्थके समान नानात्व रहेगा। सुतरां मुक्ति हो नहीं सकेगी।

भेदाभेदवाद विशिष्टाद्वैतवाद ही है। इसके मतसे

चित् और अचित् अर्थात् जीव और जड़रूप प्रपञ्च विशिष्ट आत्मा शिव अद्वितीय हैं, वे ही ब्रह्म हैं। यह शिवरूप ब्रह्म ही कारण और कार्य है। इनका नाम विशिष्ट शिवाद्वैत है। चिदचित् सभी प्रपञ्च शिव नामक ब्रह्म का शरीर है। वे जीवकी तरह शरीरी होने पर भी उसकी तरह दुःखके भोक्ता नहीं हैं। अनिष्ट भोगके प्रति शरीर सम्बन्ध कारण नहीं हैं अर्थात् शरीरी होने पर भी अपने अज्ञान अनुवर्त्तना जनित अनिष्ट भोग नहीं करते। जीव ईश्वर परवश है। ईश्वरकी आज्ञा का अनुवर्तन न करनेसे उन्हें अनिष्ट भोगना पड़ता है। ईश्वर स्वाधीन हैं, इसलिए उनके अनिष्ट भोग नहीं है। शरीर और शरीरोकी भांति—गुण और गुणीकी तरह विशिष्टाद्वैतवाद शैवाचार्योंका अनुमत है। मृत्तिका और घटकी भांति कार्य-कारणरूपमें तथा गुण और गुणीकी तरह विशेषण विशेष्य रूपमें विना भावरहित्य ही प्रपञ्च और ब्रह्मके अनन्यत्व है। जैसे उपादान कारणके विना कार्यका भाव अर्थात् सत्ता नहीं रहती, मृत्तिकाके विना घट नहीं होता, सुवर्णके विना कुण्डल नहीं रहता, गुणके विना गुण नहीं रहता, उसी तरह ब्रह्मके विना प्रपञ्च शक्ति नहीं रह सकती। उष्णताके विना जैसे अग्निके जाननेका कोई उपाय नहीं, उसी तरह शक्तिके विना ब्रह्मको भी नहीं जाना जा सकता। जिसके विना जिसका ज्ञान नहीं होता, वही उसका विशिष्ट है। गुणके विना गुणीको नहीं जाना जा सकता इसलिए गुणी गुणविशिष्ट है। प्रपञ्चशक्तिके विना ब्रह्मको नहीं जाना जा सकता, इसीलिए ब्रह्म प्रपञ्चशक्तिविशिष्ट हैं। यही उनका स्वभाव है। देवता और योगिगण जिस भांति कारणान्तरकी अपेक्षा न रखते हुए ही अचिन्त्यशक्तिके प्रभावसे नानारूप सृष्टि कर डालते हैं, ब्रह्म भी उसी तरह अचिन्त्यशक्तिके प्रभावसे नानारूपमें परिणत होते हैं। नानारूपमें परिणत होने पर भी उनका एकत्व नष्ट नहीं होता।

अचिन्त्य, अनन्त और विचित्र शक्ति ब्रह्ममें ही विद्यमान हैं। ब्रह्मके असाध्य कुछ भी नहीं है, और न कुछ असम्भव है। अतएव यह सम्भव है, यह असम्भव है इस प्रकारकी कल्पना ब्रह्मके लिए हो ही नहीं सकती। लौकिक प्रमाण द्वारा जिन वस्तुओंका बोध होता है, ब्रह्म उन सभीसे विजातीय हैं। वे केवलमात्र शास्त्रगम्य हैं। शास्त्रमें वे जिस प्रकारसे उपदिष्ट हुए हैं, वे उसीरूप हैं। इस विषयमें सन्देह नहीं हो सकता। लौकिक दृष्टान्त के अनुसार उनके विषयमें विरोध आशङ्का करना उचित नहीं है। कारण, वे लोकातीत या अलौकिक हैं।

ब्रह्ममें मायाशक्ति अचिन्त्य, अनन्त और विचित्र शक्ति युक्त है। तादृश शक्ति युक्त मायाशक्ति विशिष्ट परमेश्वर अपनी शक्तिके अंश द्वारा प्रपञ्चाकारमें परिणत हैं, और स्वतः वा स्वयं प्रपञ्चातीत हैं।

ब्रह्म प्रपञ्चाकारमें परिणत होते हैं, इस विषयमें जिज्ञास्य हो सकता है कि कृत्स्न अर्थात् समस्त ब्रह्म ही प्रपञ्चरूपमें परिणत होता है, या ब्रह्मका एक देश या एकांश। इसके उत्तरमें यदि कहा जाय कि, कृत्स्न ब्रह्म जगदाकारमें अर्थात् कार्याकारमें परिणत होते हैं, तो मूलोच्छेद हुआ जाता है। ब्रह्मके द्रष्टव्यत्व उपदेश तथा उसके उपायरूपमें श्रवणमननादि या शमदमादि भी अनावश्यक हैं। ब्रह्म यदि मृदादिकी भांति सावयव होते, तो उनका एकदेश कार्याकारमें परिणत या एकदेश यथावत् अवस्थित है, ऐसी कल्पनाकी जा सकती थी और द्रष्टव्यत्वादिका उपदेश भी सार्थक होता। क्योंकि कार्याकारमें परिणत ब्रह्मांश अयत्नदृष्ट होने पर भी अपरिणत ब्रह्मांश अयत्न दृष्ट नहीं है। परन्तु ब्रह्मके अवयव नहीं माने जा सकते, कारण ब्रह्म निरवयव है यह बात श्रुतिसिद्ध है। ब्रह्मके अवयव स्वीकार करनेसे श्रुतिका विरोध होता है। इसके उत्तरमें शैवाचार्योंका कहना कि ब्रह्म शास्त्रैकसमधिगम्य हैं, प्रमाणान्तरगम्य नहीं। शास्त्रमें ब्रह्मका कार्याकार परिणाम, निरवयवत्व और कार्यके विना ब्रह्मका अवस्थान ये सभी विषय श्रुत हुए हैं। सुतरां उक्त आपत्ति की ही नहीं जा सकती।

भगवान् शङ्कराचार्यने इन सब मतोंमें दोष दिखा कर कहा है, कि ब्रह्मका परिणामवाद किसी प्रकार भी सङ्गत नहीं हो सकता। कारण कार्याकारमें परिणाम और अपरिणत ब्रह्मका अवस्थान ये दोनों बातें परस्पर विरुद्ध हैं। एक समयमें एक वस्तुके परिणाम और अपरिणाम दोनों नहीं हो सकते। इसी प्रकार सावयवत्व

और निरवयवत्व परस्पर विरुद्ध हैं। एक वस्तु एक समयमें सावयव और निरवयव हो यह कभी भी सम्भव नहीं हो सकता। श्रुति भी असम्भव और विरुद्ध अर्थ प्रतिपादन करनेमें असमर्थ हैं। या यदा शब्द बाधका असमर्थ वाचक है। अतएव शब्द अयोग्य अर्थ प्रतिपादन करनेमें अक्षम है।

'आदित्यो यूपः, यजमानः प्रस्तरः' अर्थात् पत्थर पानीमें बहता है। वृषीन यज्ञ किया था, इत्यादि वाक्यगरिष्ठ अर्थवाक्य अर्थवादवाक्यके यथाश्रुत अर्थमें जैसे तात्पर्य नहीं है, अर्थान्तरमें तात्पर्य है, उसी प्रकार परिणाम बोधक वाक्यका भी अर्थ विशेषमें तात्पर्य करना पड़ेगा। ब्रह्म एकांशमें परिणत और अंशान्तरमें अपरिणत है, यह कल्पना भी युक्ति सिद्ध नहीं है। इसमें प्रश्न हो सकता है कि, कार्याकारमें परिणत ब्रह्मांश ब्रह्मसे भिन्न है या अभिन्न। यदि भिन्न है, तो ब्रह्मके कार्याकारमें परिणत नहीं हुआ। क्योंकि कार्याकारमें परिणत ब्रह्मांश ब्रह्म नहीं है ब्रह्मसे भिन्न है। एकके परिणाममें दूसरेका परिणाम नहीं कहा जा सकता। मृत्तिकाके परिणाममें सुवर्णका परिणाम नहीं होता। पक्षान्तरमें कार्याकारमें परिणत ब्रह्मांश यदि ब्रह्मसे भिन्न न हो, अर्थात् अभिन्न हो तो पूर्वोक्तदोषकी आपत्ति उपस्थित होती है। परिणत अंशका ब्रह्म एक ब्रह्मसे अभिन्न होने पर परिणत और अपरिणत एक वस्तु बन जाती है। सुतरां सम्पूर्ण ब्रह्मका परिणामका अतिक्रम नहीं किया जा सकता। यदि कहा जाय कि परिणत ब्रह्मांश ब्रह्मसे भिन्नाभिन्न अर्थात् भिन्न और अभिन्न दोनों है। परिणत ब्रह्मका कारणरूपमें ब्रह्मसे अभिन्न है और कार्यरूपमें ब्रह्मसे भिन्न है। दृष्टान्तमें कहा जा सकता है कि कुण्डलमुकुटादि सुवर्णरूपमें अभिन्न हैं और कुण्डलमुकुटादिरूपमें भिन्न भेद और अभेद परस्पर विरुद्ध पदार्थ है ये दोनों एक समयमें एक वस्तुमें रह ही नहीं सकते। कार्याकारमें परिणत अंश या तो ब्रह्मसे भिन्न होगा या अभिन्न होगा। भिन्न भी हो और अभिन्न भी, यह हो नहीं सकता। और भी विवेच्य विषय यह है कि ब्रह्म स्वभावतः अमृत हैं, वे परिणाम-अवस्थामें मरणशील नहीं करेंगे, यह हो ही नहीं सकता। स्वभावतः मरणशील जीव हैं, अमृत ब्रह्म हैं, यह भी नहीं हो सकता। किसी प्रकार भी स्वभावमें अन्यथा नहीं हो सकता। जो लोग कहते हैं कि शास्त्रानुसार कर्म और ज्ञान इन दोनोंके द्वारा मर्त्य जीवको अमृतत्व प्राप्त होगा उनका यह मत भी असङ्गत है। क्योंकि, स्वभावतः अमृत ब्रह्मके भी यदि मर्त्यता हो, तो मर्त्य जीवका कर्मज्ञानसमुच्चयसाध्य अमृतत्वलाभ अर्थात् मोक्षावस्था स्थायी होगा, यह दुराशा मात्र है। भगवान् शङ्कराचार्यने यह सब देख कर ब्रह्म विवर्त्तवाद पक्ष ही स्थिर किया। उनके मतमें ब्रह्म शुद्ध या निर्विशेष है। प्रपञ्च सत्य नहीं, रज्जु सर्पादि की तरह मिथ्या है। इसलिए ब्रह्ममें कोई विशेष या धर्म नहीं है, वे निर्विशेष ब्रह्म अद्वितीय हैं। प्रपञ्च जब मिथ्या है, ब्रह्मके अतिरिक्त वस्तु जब सत्य नहीं है, तब ब्रह्म अद्वितीय हैं, यह अनायास ही बोध गम्य है। जीव ब्रह्मसे भिन्न नहीं है, यह बात एक सामान्य श्लोकमें कही गई है —

"श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः॥"

कोटि कोटि ग्रन्थोंमें जो कहा गया है, मैं श्लोकार्द्ध द्वारा वही कहूँगा। वह यही है, ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है, जीव ही ब्रह्म है। शङ्कराचार्यका यही अभिमत है। सभी अद्वैतवादियोंने एक वाक्यसे श्रुतिको ही अद्वैतवादका मूल प्रमाण माना है। श्रुतिके तात्पर्य का पर्यालोचनासे जो निर्णीत होगा, वह अवनतमस्तक से स्वीकार करनेके लिए सभी बाध्य हैं।

श्वेतकेतुका ब्रह्मोपदेशके स्थानमें दी हुई आख्यायिका उपनिषद्में एक आख्यायिका संक्षिप्त तात्पर्य यहाँ प्रदर्शित किया जाता है। आरुणिने श्वेतकेतु नामक अपने पुत्रसे कहा, हे श्वेतकेतो, गुरुकुलमें जा कर ब्रह्मचर्यका अभ्यास करो। क्योंकि हमारे कुलमें कोई व्यक्ति बिना अध्ययन किये ब्रह्मबन्धु नहीं होता।' तदनन्तर बालक श्वेतकेतु पिताके उपदेशानुसार गुरुकुलमें जा अध्ययन समाप्त कर चौबीस वर्षकी अवस्थामें घरमें वापस आ गए और वे अपनेको एक असाधारण विद्वान् समझने लगे। यही कारण था कि, वे विनयश बालकाल भी नहीं

करते थे। पुत्रकी ऐसी अवस्था और अभिमानका प्रति लक्ष्य करके आरुणिने कहा, 'श्वेतकेतो! तुम अनुचान मानी हो अर्थात् अपनेको बड़े विद्वान् समझते हो और किसीके साथ बातचीत भी नहीं करते। अच्छा बतलाओ तो सही, तुमने गुरुके समक्ष ऐसा कोई प्रश्न किया था कि जिसका उत्तर यथावत् मिलने पर अश्रुत विषय श्रुत, अमत विषय मत और अज्ञात विषय विज्ञात हो सकता हो?' श्वेतकेतुने यह असम्भव समझ कर कहा—'हे भगवन्! यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है?' आरुणि बोले—हे प्रियदर्शन! जैसे एक मृत्पिण्ड विज्ञात होने पर भी समस्त मृण्मय अर्थात् मृत्विकार विज्ञात होता है, एक नखनिकृन्तन (नहरनी) विज्ञात होने पर कार्ष्णायस अर्थात् कृष्ण लौहका विकार विज्ञात होता है, क्योंकि मृत्तिका, लौह और कृष्णायस यही सत्य है, विकार केवल वाक्य द्वारा ही आरब्ध होता है, अर्थात् मृत्तिकादि संस्थानविशेषके अनुसार घटपटादि नाम होते हैं, परन्तु वास्तवमें मृत्तिकादिके अतिरिक्त विकार नहीं है, उसी प्रकार एक विज्ञानमें सर्वविज्ञान सम्भवपर हो सकते हैं। उपादान मात्र ही सत्य है, विकार मिथ्या है। इस कारण जगत्का उपादान जान लेनेसे सब कुछ जाना जा सकता है।' इस पर श्वेतकेतुने कहा—"हे भगवन्! आप ही मुझे उपदेश दीजिए।' श्वेतकेतुके प्रार्थना करने पर आरुणिने उन्हें जगत्कारणका उपदेश दिया। इस जगह एक विज्ञानमें सब विज्ञान की प्रतिज्ञा कर उसके उपादानके लिए जगत्कारणका उपदेश दिया गया। विकार वस्तुगत्या सत्य होने पर कभी भी एक विज्ञानमें सर्वविज्ञान नहीं हो सकता कि उपादान विज्ञान होने पर भी उपादेय अर्थात् उसका विकार अविज्ञात रह सकता है। अतएव प्रतिपन्न होता है, उपादानके सिवा विकारका वास्तविक अस्तित्व नहीं है। उदाहरणार्थ—'मृत्तिकेत्येव सत्यं, लोहमित्येव सत्यं, कार्ष्णायसमित्येव सत्यं" (श्रुति) अर्थात् मृत्तिका ही सत्य है, लौह ही सत्य है, कृष्णलौह ही सत्य है। इस प्रकारसे उपादानकी सत्यता अवधारण करनेसे विकारको असत्यता स्पष्ट हो प्रतीत होती है। जो असत्य है, वह मिथ्या है, यह कहना वाङ्मात्र है। उपदेश देते समय आरुणिने पुनः पुनः कहा था।

"एतदात्म्यमिदं सर्वं तत् सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो।"

सत्यं सम्यगेव आसीदेकमेवाद्वितीयम्॥"

वही सत् वस्तु एकमात्र सत्य है, वे ही ब्रह्म हैं और वे तुम ही हो। तुम ही समस्त, एकमात्र और अद्वितीय हो। इस श्रुतिके तात्पर्यका वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

जीवात्मा और परमात्मा या ब्रह्मका ऐक्य ही वेदान्त शास्त्रमें प्रतिपादित हुआ है। साधारणतः जीवात्मा ब्रह्मसे भिन्न रूपमें प्रतीयमान होने पर भी वेदान्तशास्त्र समझा देते हैं कि जीवात्मा वास्तविक ब्रह्मके अतिरिक्त नहीं है, ब्रह्मस्वरूप है। वेदान्तादि दर्शनशास्त्रका प्रयोजन मुक्ति है। अज्ञान या अविद्याकी निवृत्ति और स्वस्वरूपमें आनन्द प्राप्तिको मुक्ति कहते हैं। यह मुक्ति जीव और ब्रह्मके ऐक्य साक्षात्कार साध्य है। अर्थात् जीव और ब्रह्मका ऐक्य साक्षात्कार होनेसे ही मुक्ति है। आपत्ति हो सकती है, कि संसारदशामें भी स्व स्वरूप आनन्दका अन्यथाभाव नहीं है। क्योंकि वस्तुस्वरूपमें अन्यथाभाव असम्भव है। अतएव स्व स्वरूप आनन्द नित्यप्राप्त होनेसे उनकी प्राप्ति नहीं हो सकती। अप्राप्त वस्तुकी प्राप्ति हो सकती है, जो नित्यप्राप्त है, उसकी फिर प्राप्ति क्या होगी। स्व स्वरूप आनन्दकी प्राप्ति न कर सकने पर जीव ब्रह्मका ऐक्य साक्षात्कार और उनका साधन भी नहीं हो सकता। इसके उत्तरमें वक्तव्य यह है, कि नित्यप्राप्त वस्तु भी मिथ्याज्ञान या भ्रमवशतः अप्राप्त मालूम होती है। वह भ्रम दूर होने पर वह प्राप्त रूपमें प्रतीयमान होती है। कण्ठगत स्वर्णहार नित्य प्राप्त होने पर भी विस्मरणके कारण अप्राप्त और तन्गत में वही फिर प्राप्त प्रतीत होता है। उसी प्रकार आनन्द ब्रह्मका स्वरूप होने पर भी संसारदशामें अविद्या दोषसे वह सम्यक् प्रतिभात नहीं होता, इसलिए अप्राप्त मालूम होता है। विद्याके द्वारा अविद्यासे निवृत्त होनेसे वही सम्यक्‌रूपमें प्रतिभात होता है, इसलिए वह प्राप्त हुआ, ऐसा विवेचित होता है।

संसारावस्थामें अविद्या-दोषसे ब्रह्मका आनन्दरूपत्व

विशेषरूपसे प्रतिभास नहीं होता, किन्तु सामान्यरूपसे प्रतिभास होता है। जैसे किसी घरमें कुछ बालकोंके खेल-कूद करते समय उसमें बैठे हुए उसके पिताको सामान्यरूपसे मालूम होता है, कि उसका पुत्र भी खेल-कूद कर रहा है, परन्तु उस पुत्रके खेल-कूदकी ध्वनि विशेषरूपसे नहीं मालूम पड़ती, उसी प्रकार ब्रह्मका सामान्यरूपसे प्रत्यक्षतामें सामान्यरूपसे प्रतिभास होने पर भी विशेषरूपसे प्रतिभास नहीं होता। विशेषरूपसे प्रतिभास न होने पर भी किसी अवस्थामें भी ब्रह्मके सामान्यरूपका अभाव नहीं होता, ब्रह्म चैतन्यस्वरूप है। ब्रह्मचैतन्यके प्रभावसे जड समूह प्रकाशित होता है। जडसमूह स्वप्रकाश नहीं है। इसलिये जड ब्रह्म नहीं है। ब्रह्म चेतन और नित्य है। प्रत्येक शरीरादिकी और उनके सम्बन्धकी उत्पत्ति और विनाश होने पर भी ब्रह्मकी उत्पत्ति और विनाश नहीं है। इसलिये ब्रह्म नित्य है, जो नित्य है वह असत्य नहीं हो सकता। अतएव ब्रह्म सत्यस्वरूप है।

"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।" (श्रुति)

ज्ञान और ब्रह्म एक होने पर भी अनादि अविद्या या अज्ञानजन्य जीवात्माका संसार या बन्धन होता है। अज्ञानकी आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं। जैसे कभी रज्जुमें सर्पका भ्रम होता है, रज्जुका ज्ञान होने पर सर्पका भ्रम नहीं होता। रज्जुका अज्ञान सर्पभ्रमका कारण है। रज्जुका अज्ञान आवरण शक्तिके द्वारा रज्जु स्वरूप पर आवरण डालता है, पीछे विक्षेप शक्तिके द्वारा रज्जुमें सर्पका उत्पादन करता है। मूल, और ब्रह्म विषयक अज्ञान भी आवरणशक्ति द्वारा ब्रह्म या सच्चिदानन्द पर आवरण डाल कर विक्षेपशक्तिसे ब्रह्ममें कर्तृत्व भोक्तृत्वादि धर्मका तथा आकाशादि प्रपञ्चका उत्पादन करता है। आकाशमें बादल होने पर सूर्य मण्डल दृष्टिगोचर नहीं होता परन्तु वह नष्ट नहीं है। कारण थोड़ा सा बादल बहुयोजन विस्तृत सूर्यमण्डलको ढक नहीं सकता। किन्तु द्रष्टाकी आँखोंपर वह आवरण डाल दिया है, इसीसे सूर्य आच्छादितके समान मालूम होता है। इसी प्रकार परिच्छिन्न अज्ञान अपरिच्छिन्न आत्माकी ज्योतिको वस्तुतः आवृत नहीं कर सकता। परन्तु यह अवलोकयिता या जीवात्माकी बुद्धिको आवृत अवश्य करता है। इसीसे ब्रह्म आवरणयुक्त मालूम पड़ते हैं। ब्रह्मका स्वरूप आवृत होनेसे ब्रह्म प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। ऐसी स्थितिमें अवलोकयिता या जीव विक्षिप्त हो कर आत्मामें भ्रम और भ्रमके धर्मको धर्म समझता है। इस प्रकारका बोध अध्यास कहलाता है। मैं मनुष्य हो कर आत्मामें धर्माध्यासका उदाहरण है। क्योंकि मनुष्यत्वादि देहका धर्म उसमें आरोपित हुआ है। यह मेरा है, इत्यादि ममताका नाम संसर्गाध्यास है। यह अध्यास परम्परा अनादि है। उसमें भी पूर्व पूर्वका अध्यास या तज्जनित संस्कार बादके अध्यासमें कारण है। ब्रह्म स्वभावतः अच्छेद्य, अभेद्य और अदाह्य है। कोई भी ब्रह्मका इष्ट या अनिष्ट नहीं कर सकता। कारण, वास्तवमें ब्रह्मका इष्ट या अनिष्ट हुआ है ही नहीं। इसलिये जो ब्रह्मस्वरूप है उसके नाशका होना असम्भव है। देह और इन्द्रियों आदिका इष्ट और अनिष्ट हो सकता है, पर अध्यासवश देहादिका इष्ट अनिष्ट ही आत्माका इष्ट अनिष्ट समझा जाता है। तदुपरि इस इष्ट और अनिष्टके विषयमें रागद्वेष पैदा प्रवृत्ति आदि भाव हैं, और प्रवृत्ति होनेसे आचरित कर्मका फल भोगना पड़ता है। कर्मफलका भोग मुमुक्षु जीवोंके उपलब्धिके सिवा और कुछ भी नहीं है। इसलिये मुमुक्षु लोगोंको उपलब्धिके लिये यथाशक्ति कर्मफल त्यागनेके लिये ब्रह्म परिग्रह करना पड़ता है। भोगाभिलाषी मनुष्य भोगके लिये कर्म करता है और कर्म करनेके लिये त्याग करता है। जिस प्रकार द्रव्यके उपयोगसे सुखानुभव होता है, उस प्रकार द्रव्यके सम्बन्धका अर्थात् स्वत्वाधिकार और ममताका निवृत्ति है। अध्यास इस अनर्थ परम्पराका निदान है। अध्यास या अविद्याका नाश होनेसे अविद्यार्थ निवृत्ति है। जब विचारके द्वारा अविद्याका नाश हो जाता है, तब ब्रह्मका स्वरूप प्रकाशमान होता है। इसीके लिये "ब्रह्मसूत्र" का आरम्भ हुआ है।

अब शंका हो सकती है कि ब्रह्म यदि सामान्यरूपसे ज्ञात है, उसमें सच्चिदानन्दका ज्ञान निश्चित है और मुमुक्षुओंको इतना होने पर भी अविद्यावश ब्रह्मके विषय, पुनः

पापका लोप और दुःखका भोग होता है। अतएव अविद्या ही सम्पूर्ण अनर्थोंका मूल है। विद्याके द्वारा सर्वानर्थमूल अविद्याका नाश करना बुद्धिमानका कर्त्तव्य है। किन्तु जिज्ञास्य यह है कि आलोकमें अन्धकारकी तरह स्वप्रकाश ब्रह्ममें अविद्या कैसे रह सकती है? द्वितीयत ब्रह्म इच्छा पूर्वक अपने लिए अनर्थकर मिथ्याज्ञानका अवलम्बन करेंगे, यह भी नितान्त असम्भव है। कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति इच्छा पूर्वक अपने लिए अनिष्टकर विषय ग्रहण नहीं कर सकता। इसके उत्तरमें यह कहना कि दोनों ही सम्भव हैं।

स्वप्रकाशक ब्रह्ममें अविद्या कैसे रह सकती है, अविद्या किसकी है? इस विषयमें वैदान्तिक आचार्योंने विस्तृत आलोचना की है। संक्षेपमें उसका यत्किञ्चित आभास मात्र प्रदर्शित किया जाता है।

"स्वप्रकाशे कुतोऽविद्या तां विना कथमावृति ।
इत्यादि तर्कजालानि स्वानुभूतिग्रसत्यसौ ॥
स्वानुभूतावविश्वासे तर्कस्याप्यनवस्थिते ।
कथं वा तार्किकम्मन्यस्तत्त्वनिश्चयमाप्नुयात् ।
बुद्ध्यारोहाय तर्कश्चेदपेक्ष्येत तथा सति ।
स्वानुभूत्यनुसारेण तर्क्यतां मा कुतर्क्यताम् ॥"

इसका तात्पर्य यह है कि, स्वप्रकाश ब्रह्ममें अविद्या किस प्रकार रह सकती है? अविद्या नहीं मान लो फिर ब्रह्मके स्वरूपमें आवरण किस प्रकार हो सकता है? स्वानुभव तर्कजालको निराकृत करता है, अपने अनुभवसे ही यह सब अकिञ्चित् कर प्रतिपन्न होता है। क्योंकि, मैं अज्ञ हूं, मैं अपनेको नहीं जानता, इस प्रकारका अनुभव प्रत्यक्षसिद्ध है। स्वानुभव पर विश्वास न करनेसे जो अपनेको तार्किक समझते हैं, वे कैसे तत्त्वका निश्चय करेंगे? कारण, तर्क तो व्यवस्थित नहीं होता। देखा जाता है, कि एक तार्किक जिस तर्कका न्यास करते हैं, अन्य तार्किक उसे तर्काभास सिद्ध कर देते हैं। उसका तर्क भी अन्य तार्किक द्वारा तर्काभासमें परिणत किया जाता है। इसलिए केवल तर्कके द्वारा तत्त्वका निश्चय नहीं किया जा सकता। अनुभूत विषय बुद्धया रूढ़ होनेके लिए अर्थात् जो अनुभव है उसे भली भांति समझनेके लिए या उसमें दृढ़ विश्वास जमानेके लिए तर्ककी आवश्यकता हो सकती है, परन्तु तो भी अपने अनुभवके अनुसार तर्क करना उचित है, कुतर्क करना उचित नहीं। फलतः जब सभी अपने अज्ञानका अनुभव कर रहे हैं, तब अज्ञान किसके हैं? यह प्रश्न उठ नहीं सकता। स्वप्रकाश ब्रह्ममें अज्ञान कैसे सम्भव हो सकता है, यह प्रश्न हो सकता है, पर इसका मूल्य नहीं। क्योंकि स्वप्रकाश ब्रह्ममें अज्ञान जब साक्षात् अनुभूत होता है, तब अज्ञानके अस्तित्वमें सन्देह करनेको गुंजाइश नहीं। अतएव अज्ञान सत्ताका कारण निर्णीत न होने पर भी कुछ हानिलाभ नहीं हो सकता। तादृश अनुभव होता है इस कारण वैदान्तिक आचार्योंने कहा है, कि नित्य स्वप्रकाश चैतन्य अज्ञानका विरोधी नहीं है। क्योंकि नित्य स्वप्रकाश चैतन्यमें अज्ञान का अनुभव हो रहा है, इस कारण नित्य स्वप्रकाश चैतन्यको अज्ञानका विरोधी नहीं कहा जा सकता। कारण, विरोध वा अविरोधके अनुभवानुसार निर्णीत होता है। विवेक वा विचार जनित यथार्थ ज्ञान होने पर वह अज्ञान विनिष्ट होता है, इसलिए विवेक जनित ज्ञान अज्ञानका विरोधी है।

रज्जु गोचर अज्ञान रज्जुस्वरूपको आवृत कर उसमें सर्पका उद्भावन करता है। रज्जु तत्त्वका साक्षात्कार होनेसे रज्जु गोचर अज्ञान और उसका कार्य सर्प बाधित होता है। रज्जु तत्त्वके साक्षात्कारके पहले रज्जु गोचर अज्ञान और उसका कार्य सर्प बाधित तो नहीं मालूम पड़ता, किन्तु वास्तवमें उस समयमें भी वह बाधित रहता है। उस समय भी रज्जु सर्पका वास्तविक अस्तित्व नहीं है। इसी प्रकार ब्रह्मतत्त्व साक्षात्कारके बाद अज्ञान और उसका कार्य बाधित होता है। ब्रह्म तत्त्व साक्षात्कारके पहले अज्ञान और उसका कार्य बाधित प्रतीयमान न होने पर भी उस समय वह बाधित ही रहता है। इसलिए श्रुतकी आज्ञा है, कि ब्रह्म नित्यमुक्त है। उसका बन्धन वास्तविक नहीं है। सुतरां मुक्तिलाभ भी वास्तविक नहीं है। अतएव शास्त्र दृष्टिमें अविद्या तुच्छ है, अर्थात् आकाश कुसुमके

साधन करता है। परन्तु श्रुति दृष्टिसे अनिर्वाच्य अविद्या सत् है, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह सत् हो तब ब्रह्म समान होगा है। अविद्या है, ऐसा भी नहीं कह सकते, क्योंकि वह ज्ञान बाधित है, उसका पारमार्थिक अस्तित्व नहीं कह सकता। अतः श्रुति अविद्या और उसका कार्य दोनों ही अनिर्वचनीय हैं। कारण सभी उसका अनुभव करते हैं। सभी दार्शनिकों ने यह स्वीकार किया है, कि ब्रह्म देहादिसे अतिरिक्त है। उसका स्वरूप नित्यानन्दस्वरूप है। तत्त्वज्ञान द्वारा नित्यज्ञान हुए होने पर जीवको मोक्ष प्राप्त होता है। (वेदान्तसा०)

कुसुमाञ्जलिमें ब्रह्मका लक्षण इस प्रकार लिखा है —

"सत्यज्ञानानन्दमनुपमकारणं [illegible] सर्वज्ञं सर्वेश्वरं निर्विकल्पं देशकालाद्यनवच्छिन्नमसङ्गम् अपि [illegible] न [illegible] सर्वं हृदि सतो [illegible] सर्वशोभं अनिन्द्यमपि सर्वज्ञ सर्वनियन्तृ [illegible] सृष्टिस्थितिलयकारकं [illegible] वेदा वदन्ति।"

सत्यस्वरूप, आनन्दमय, अनन्त अकारण, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, निर्विकल्प, देश और काल द्वारा अनवच्छिन्न अवच्छेद होने पर भी [illegible], अकारण हो कर भी सर्वकारण, अरूप हो कर भी सर्वरूप, अकर्ता हो कर भी सर्वकर्ता, अनिन्द्य होने पर भी सबका, सबका नियन्ता, सर्वान्तर्यामी और समस्त सृष्टि स्थिति लय [illegible] जिसको वेद भी कह कर अनिर्वचनीय वस्तु है, वही ब्रह्म है। [illegible] ब्रह्म [illegible] निर्दिष्ट किया है।

"पुरुषोत्तम [illegible] ब्रह्म शुद्ध बुद्ध स्वभाव [illegible]। 'आदिविद्वान् सिद्ध इति कापिलाः।' कापिल [illegible] सिद्ध पुरुषको ब्रह्म कहते हैं। [illegible] इस प्रकार कहा गया है — "क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टो [illegible] [illegible] पातञ्जलाः। क्लेश, कर्मविपाक और आशय द्वारा अपरामृष्ट और निर्माण काय [illegible] अधिष्ठान और अनु[illegible] है।

"लोकवेदविरुद्धमपि निर्लेप स्वतन्त्रश्चेति महापाशुपताः।" लोक और वेदके विरुद्ध होने पर भी ब्रह्म स्वतन्त्र और निर्लेप ही है। यही महापाशुपतोंका मत है। "शिव इति शैवाः।" शैवोंके मतसे शिव ही ब्रह्म है। 'पुरुषोत्तम इति वैष्णवाः।' वैष्णवोंके मतानुसार पुरुषोत्तम विष्णु ही ब्रह्म है। 'पितामह इति पौराणिकाः।' पौराणिकोंके मतसे पितामह ही ब्रह्म है। "यज्ञपुरुष इति याज्ञिकाः' याज्ञिकोंके अनुसार यज्ञ पुरुष ही ब्रह्म है। "सर्वज्ञ इति सौगताः" सौगतोंके मतसे सर्वज्ञ ही ब्रह्म है। 'निरावरण इति दिगम्बराः।' दिगम्बरगण निरावरणको ब्रह्म कहते हैं। "उपास्यत्वेन देशित इति मीमांसकाः।' मीमांसकोंका मत है, कि उपास्य रूपमें जो निर्दिष्ट किये गये हैं, वे ही ब्रह्म हैं। "लोकव्यवहारसिद्ध इति चार्वाकाः।" चार्वाकोंका कहना है, कि लोक व्यवहारमें जो सिद्ध हैं, वही ब्रह्म है। "यावदुक्तोपपन्न इति नैयायिकाः' नैयायिक मतमें जो युक्ति द्वारा उपपन्न होता है वही ब्रह्म है। "विश्वकर्मेति शिल्पिनः।" शिल्पियोंका कहना है कि विश्वकर्मा ही ब्रह्म है।

कुसुमाञ्जलिमें भिन्न भिन्न वादियोंके मत उल्लिखित प्रकारसे संकलित किये गये हैं। पञ्चदशीमें महावाक्य विवेकके प्रकरणमें ब्रह्मका स्वरूप लिखा है, वह इस प्रकार है, —

येनेक्षते शृणोतीदं जिघ्रति व्याकरोति च।
स्वाद्वस्वादू विजानाति तत्प्रज्ञानमुदीरितम्॥
चतुर्मुखेन्द्रदेवेषु मनुष्याश्वगवादिषु।
चैतन्यमेकं ब्रह्मातः प्रज्ञानं ब्रह्म मय्यपि॥
परिपूर्णः परात्मास्मिन् देहे विद्याधिकारिणि।
बुद्धेः साक्षितया स्थित्वा स्फुरन्नहमितीर्यते॥
स्वतः पूर्णः परात्मात्र ब्रह्मशब्देन वर्णितः।
अस्मीत्यैक्यपरामर्शस्तेन ब्रह्म भवाम्यहम्॥
एकमेवाद्वितीयं सन्नामरूपविवर्जितम्।
सृष्टेः पुराधुनाप्यस्य तादृक्त्वं तदितीर्यते॥
श्रोतुर्देहेन्द्रियातीतं वस्त्वत्र त्वंपदेरितम्।
एकता ग्राह्यतेऽसीति तदैक्यमनुभूयताम्॥

भद्दङ्गारादिदेहान्तात् प्रत्यगात्मेति गीयते ॥
दृश्यमानस्य सर्वस्य जगतस्तत्त्वमीर्यते ।
ब्रह्मशब्देन तद्ब्रह्म स्वप्रकाशात्मरूपकम् ॥"
(पञ्चदशीका महावाक्यवि० १-८)

जिस नित्य चैतन्यकी सहायतासे चक्षु द्वारा रूपादि दृश्य पदार्थ दृष्टिगत होते हैं, जिसके द्वारा वाक्यादि का श्रवण होता है, जिसकी सहायतामें गन्धका आघ्राण किया जाता है, जिसके साहाय्यसे कण्ठनाली आदि वागिन्द्रिय द्वारा वाक्य उच्चारित होते हैं, और जिससे स्वादु और अस्वादु आदि रसका परिज्ञान होता है, वह ज्योतिर्मय जीवचैतन्य ही प्रज्ञान है, और प्रज्ञान ही ब्रह्म हैं। इसलिए श्रुतिमें 'प्रज्ञान ब्रह्म' ऐसा कहा गया है। सच्चिदानन्दमय सर्वव्यापी पर ब्रह्म ही ब्रह्मा और इन्द्र आदि देववृन्दमें, मनुष्य और गो, अश्व आदि जन्तुवर्गमें, तथा अन्यान्य सृष्ट पदार्थोंमें अन्तर्यामी रूपमें अवस्थान कर रहे हैं। इसलिए मुझमें भी वे अवस्थित हैं। अत एव दोनों चैतन्य एक ही हैं, अर्थात् जीवचैतन्य और ब्रह्मचैतन्य अभिन्न हैं। इसीलिए श्रुतिमें 'अहं ब्रह्मास्मि' इस प्रकार कहा गया है। पूर्ण ज्ञानस्वरूप ब्रह्म अपनी मायाशक्तिके वशीभूत हो कर मायामय संसारमें शमदमादि साधन द्वारा ब्रह्मतत्त्व साधनके उपाय-स्वरूप पञ्चभौतिक देहमें अवस्थानपूर्वक अन्तःकरणके साक्षिरूपमें प्रकट होते हैं। उन्हें देशकालादि द्वारा परिच्छिन्न नहीं किया जा सकता। वही पूर्ण ज्ञान-स्वरूप परमात्मा ही अहं शब्द वाच्य हैं। यह 'अहं' ही ब्रह्म है। जो स्वतःसिद्ध सर्वव्यापी हैं पूर्ण ब्रह्मरूपी परमात्मा हैं, वे ही ब्रह्म शब्दके प्रतिपाद्य हैं, अर्थात् 'ब्रह्म' शब्दके उच्चारण करनेसे ही उन सर्वव्यापी परब्रह्मका बोध होता है, और 'अस्मि' शब्दसे 'अहं' शब्द प्रतिपाद्यचैतन्य और ब्रह्मचैतन्य इन दोनोंका ऐक्य प्रतिपादित होता है। यदि 'अहं' शब्दवाच्य जीवचैतन्य और ब्रह्मचैतन्य इन दोनोंका ऐक्य प्रतिपादित हो गया तो जीवन्मुक्त पुरुष जो कहते हैं, कि 'मैं ही ब्रह्म हूं' उसमें कोई दोष नहीं होता और वैसा व्यवहार भी होता है। इस प्रत्यक्षीभूत नामरूप स्वरूप दृश्यमान जगतकी उत्पत्तिके पहले केवलमात्र नामरूप विवर्जित अद्वितीय सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वव्यापी परब्रह्म विद्यमान थे और अब भी वे उसी रूपमें विराजमान हैं। इसीलिए उपनिषद्में 'तत्त्वमसि' रूपमें उनका उपदेश किया गया है। जो इस परिदृश्यमान जगत्‌के मूलाधार और एकमात्र कारण स्वरूप हैं, वे सच्चिदानन्द परात्पर ब्रह्मचैतन्य ही ब्रह्मपदके प्रतिपाद्य हैं। वे स्वप्रकाश स्वरूप हैं, अर्थात् वे स्वयं प्रकाशित न होने पर कोई भी उनका प्रकाश नहीं कर सकता। वे स्वयं ही प्रकाश स्वरूप हैं। ब्रह्मोपनिषद्में लिखा है,—ब्रह्मके अवस्थानके चार स्थान हैं, नाभि, हृदय, कण्ठ और मूर्द्धा *।

इन चारों स्थानोंमें ब्रह्म प्रकट होते हैं। जागरित, स्वप्न, सुषुप्त और तुरीय ये ही ब्रह्मके चार पद हैं। जागरितमें ब्रह्मा, स्वप्नमें विष्णु सुषुप्तमें रुद्र और तुरीयमें परमाक्षर हैं। उक्त चार प्रकारकी अवस्थाओं सहित ब्रह्म ही आदित्य हैं, विष्णु, ईश्वर और वे ही प्राण और और ब्रह्म हैं। इन जाग्रत आदि अवस्थाओंमें ब्रह्म प्रकाशरूपमें अवस्थान करते हैं।

ब्रह्मके मन नहीं है, न कर्ण हैं, न हाथ हैं और न पैर ही हैं। वे इन्द्रियादिसे रहित होते हुए भी स्व प्रकाश स्वरूप हैं। उनके सामने लोक भी लोक नहीं हैं, देवता भी देवता नहीं हैं, वेद भी वेद नहीं हैं। यज्ञ, पिता, माता, पुत्रवधु चण्डाल, अन्त्यजाति आदि कोई कुछ भी नहीं है। ब्रह्मके समीप सभी समान हैं। ब्रह्मके समक्ष कोई भी अपना प्रभाव नहीं दिखला सकता केवल ब्रह्म ही सर्वदा प्रकाशित रहते हैं।

"अचक्षुरमनस्कमश्रोत्रमपाणिपादं ज्योतिर्वर्जितं न तत्र लोका न लोका, देवा न देवा, वेदा न वेदा, यज्ञा न यज्ञा, माता न माता, पिता न पिता, स्नुषा न स्नुषा, चाण्डालो न चाण्डालः, पौल्कसो न पौल्कसः, श्रमणो न श्रमणः, पशवो न पशवः, तापसो न तापस इत्येकमेव परं ब्रह्म विभाति।" (ब्रह्मोपनि० १८)

* "अथास्य पुरुषस्य चत्वारि स्थानानि भवन्ति, नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्द्धेति।" "तत्र चतुष्पादं ब्रह्म विभाति।" जागरितं स्वप्नं सुषुप्तं तुरीयमिति। जागरिते ब्रह्मा, स्वप्ने विष्णुः सुषुप्ते रुद्रः तुरीयं परमक्षरं, स आदित्यश्च विष्णुश्चेश्वरश्च स पुरुषः स प्राणः स जीवः सोऽग्निः सर्वश्च जाग्रत् तयोर्मध्ये यत्परं ब्रह्म विभाति।" (ब्रह्मोपनि० १५-१७)

[illegible] ही ब्रह्म प्रकाशित होते हैं। वे निरवय, स्वप्रकाश स्वरूप हैं। ब्रह्म सर्वत्र विद्यमान हैं। यह जगत् ब्रह्ममें प्रतिष्ठित है। ब्रह्म विचार होनेसे सभी कुछ जाना जा सकता है।

'[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥'

( [illegible] )

जिस ज्ञानमें अधिक ज्ञान और गत है, जो सुख श्रेष्ठ सुख है, जिस ज्ञानमें अधिक ज्ञान और नहीं है, वही ब्रह्म है। जिसके देखनेसे और कोई भी द्रष्टव्य देखनेको बाकी नहीं रहता, जिसके होनेसे फिर जन्म नहीं होता, जिसके जाननेसे फिर कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता, वही ब्रह्म है। जो पूर्ण है, सच्चिदानन्द है, अक्षय है, नित्य और एक है, वे ही ब्रह्म हैं।

ब्रह्म सगुण और निर्गुणके भेदसे दो प्रकारके हैं। सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म ही निर्गुण हैं, जगत् सृष्टि आदि करनेवाले ब्रह्म सगुण हैं।

"[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥" इत्यादि।

( [illegible] पु० [illegible] ४० अ० )

एक ब्रह्म गुण भेदसे दो प्रकार हैं, सगुण और निर्गुण मायाश्रित ब्रह्म सगुण और मायातीत ब्रह्म निर्गुण है। ये सगुण भगवान् इच्छाशक्ति द्वारा इस जगत्‌की सृष्टि करते हैं।

विष्णुपुराणमें ब्रह्म लक्षणको इस प्रकार लिखा है — जो परात्पर और श्रेष्ठ हैं, स्थूल सूक्ष्मादि और रूपवर्णादि रहित हैं, क्षय और विनाश परिणाम [illegible], वृद्धि और जन्म वर्जित हैं, जो सर्वत्र विद्यमान हैं, अक्षय और अव्यय हैं वे ही ब्रह्म हैं। इनके चार रूप हैं, यथा — प्रथम व्यक्त (माया), पुरुष और काल। इनमें प्रथमरूप पुरुष, द्वितीय और तृतीय रूप व्यक्त और अव्यक्त, तथा चतुर्थ रूप काल है। विभागानुसार प्रधानादि रूप सृष्टि स्थिति और प्रलयके उद्भव और प्रकाशके हेतु हैं।

प्रलयकालमें दिन, रात्रि, आकाश भूमि, अन्धकार, आलोक आदि कुछ भी न था। उस समय केवल प्रधान और पुरुष मात्र थे। तदनन्तर सृष्टिके समय ब्रह्म इच्छानुसार परिणामी और अपरिणामी प्रकृति और पुरुषमें प्रविष्ट हो कर उन्हें क्षोभित अर्थात् सृष्टि करनेमें उन्मुख करते हैं। परन्तु उनकी कोई क्रियावत्ता नहीं है। जैसे गन्धके निकटवर्ती होनेसे ही मनमें चाञ्चल्य उत्पन्न होता है, उसी प्रकार ब्रह्मका यह क्षोभ भी है। पीछे पुनः काल समाप्त पर प्रलय होता है। ( विष्णुपु० १।२ अ० )

"[illegible] ।
[illegible] ॥"

( [illegible] )

यह समस्त जगत् ही ब्रह्म है, ब्रह्मके सिवा और सब [illegible] लिखा है। भागवतमें इस श्लोकमें ब्रह्मका सम्पूर्ण स्वरूप दिखाते हैं।

'[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥'

( भागवत ११।११ )

जिससे इस परिदृश्यमान समस्त जगत्, स्थिति और लय हो रहा है, जिसके [illegible] सत्तामात्रसे ही [illegible] उनका लक्षण है, और आकाश कुसुम आदि [illegible] जिनका कहीं अस्तित्व न होनेसे उनको असत् माना जाता है, जो सर्वत्र सभी काल ही विद्यमान हैं, जिनके परिज्ञानमें भी विमोहित होते हैं [illegible] आदि [illegible] हृदयमें ब्रह्म द्वारा प्रकाशित किया था, और तेज, जल [illegible] इस [illegible] इत्यादि [illegible] होते हैं, [illegible] प्रकार जिनकी [illegible] हेतु [illegible] और [illegible] सृष्टि

वास्तविक असत्य होने पर भी सत्यरूपमें प्रतिभासित होते हैं। अथवा तेजमें जलका भ्रम इत्यादि जैसे वस्तुतः मिथ्या है, उसी प्रकार जिनके अतिरिक्त सत्व, रज और तम इन तीनों गुणोंकी सृष्टि अलीक है तथा अपने तेजः प्रभावसे जिनमें किसी प्रकार उपाधि सम्बन्ध नहीं है, उस सत्य स्वरूप परब्रह्मको नमस्कार है। 'ब्रह्म' सम्बन्धी अन्यान्य विवरण "वेदान्त दर्शन" शब्दमें देखो।

ब्रह्मवैवर्त पुराणमें सगुण ब्रह्मके नौ प्रकार रूपका उल्लेख है,—

"योगिनो य वेदन्त्येवं ज्योतीरूपं सनातनम्।
ज्योतिरभ्यन्तरे नित्यरूपं भक्ता वदन्ति यम्॥
वेदा वदन्ति सत्यं यं नित्यमाद्यं विचक्षणाः।
यं वदन्ति सुराः सर्वे परं स्वेच्छामयं प्रभुम्।
सिद्धेन्द्रा मुनयः सर्वे सर्वरूपं वदन्ति यम्॥
यमनिर्वचनीयञ्च योगीन्द्रः शङ्करो वदत्॥
स्वयं धाता च प्रवदत् कारणानाञ्च कारणम्।
शेषो वदेदनन्तं च नवधारूपमीश्वरम्॥

(ब्रह्मवै०पु० श्रीकृष्णजन्मखण्ड, १२८ अ०)

(१) ज्योतीरूप सनातन, (२) अभ्यन्तरज्योति नित्यरूप, (३) सत्यस्वरूप, (४) नित्य और आदिपुरुष, (५) स्वेच्छामय प्रभु, (६) सर्वरूप, (७) अनिर्वचनीय, (८) कारणका कारण और (९) अनन्त। उल्लिखित नौ प्रकारसे ब्रह्मका नाम निर्देश हुआ करता है।

गरुड पुराणके ४४वें अध्यायमें सगुण और निर्गुण ब्रह्मका ध्यान लिखा हुआ है; बाहुल्यके भयसे यहां विस्तृत नहीं लिखा जा सका।

(पु०) ५ सृष्टिकर्त्ता देवता विशेष "बृंहति प्रजाय।" जिन्होंने प्रजाकी सृष्टि की है, वे ही ब्रह्मा हैं। पर्याय—आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमेष्ठी, पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, स्वयम्भु, चतुरानन, धाता, अब्जयोनि, द्रुहिण, विरिञ्चि, कमलासन, स्रष्टा, प्रजापति, वेधस्, विधाता, विश्वसृज् विधि, (अमर) नाभिजन्म, अण्डज पूर्वनिधन कमलोद्भव, सदानन्द रजोमूर्त्ति, सत्यक, सवाहन, (किसी किसी अमरकोषमें ये पर्याय भी देखनेमें आते हैं) द्रुघण, विरिञ्चि, स्वयम्भू, पद्मयोनि, पद्मासन, विश्वसृज्, विधि, (भरत) देवदेव, पद्मगर्भ, गुणसागर, वेदगर्भ, बहुरेतस्, स्वभू, मन्थाराम, सुधाचार्य, द्रुपाद्वैत, हंसपर्ण, लोकनाथ, महावीर्य, सरोजी मञ्जुप्राण, नाभिजन्मन्, बहुरूप, जटाधर, भवन्‌शतधृति, कञ्ज, प्रभु, चिन्तामणि, पद्मपाणि, पुराणग, अष्टकर्ण हृत्सत्य, सर्वकर्त्ता, चतुर्मुख (शब्दरत्न) क, (एकाक्षरकोष) आ, शतपत्रनिवास, स्वायम्भुव मनु पिता, (कविकल्प०) म, (प्रयागव्याख्या)

ब्रह्माकी उत्पत्तिका विवरण प्रायः सभी पुराणोंमें आलोचित हुआ है। अत्यन्त संक्षेपमें यहां थोड़ा सा विवेचन किया जाता है। मनुस्मृतिमें लिखा है— जब कि यह परिदृश्यमान् जगत् एकमात्र अन्धकारावृत और अप्रत्यक्ष था, तब अव्यक्त स्वयम्भू ब्रह्मने अपने शरीरसे विविध प्रजा सृष्टिकी इच्छा कर सबसे पहले ध्यानयोगसे जलकी सृष्टि की। पश्चात् उस जलमें बीज डाला, और उस बीजसे एक अण्ड उत्पन्न हुआ। उस अण्डसे स्वयं ब्रह्माने पितामहके रूपमें जन्मग्रहण किया। नर अर्थात् परमात्मासे उत्पन्न होनेसे जलका नाम नारा है, ब्रह्मरूपमें अवस्थित परमात्माका सर्वप्रथम अयन या आश्रय होनेसे ब्रह्माको नारायण कहते हैं, तथा आदि कारण, अव्यक्त और नित्य पुरुषसे उत्पन्न होनेसे उन्हें ब्रह्मा कहा गया है। ब्रह्माने उस अण्डमें ब्राह्मानके संवत्सर काल वास करके अन्तमें उसे दो भागोंमें विभक्त कर दिया। उसके ऊर्द्ध्वखण्डमें स्वर्गादि लोक और अधोखण्डमें पृथिव्यादि, तथा मध्य भागमें आकाश, अष्ट दिशाएं और समुद्र निर्माण किया। पीछे ब्रह्माने इस जगत् और विविध प्रजाकी सृष्टि की।* सृष्टि देखो।

---

* सोऽभिध्याय शरीरात् स्वात् सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः।
अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्॥
तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम्।
तस्मिन् जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः॥
आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥
यत्तत् कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम्।
तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्त्यते॥

[illegible] ब्रह्म प्रकाशित होते हैं। वे नित्य, [illegible] स्वरूप हैं। ब्रह्म सर्वत्र विद्यमान हैं। यह जगत् ब्रह्ममें प्रतिष्ठित है। ब्रह्म विज्ञान होनेसे सभी कुछ जाना जा सकता है।

'[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥"

( [illegible] )

जिस लाभसे अधिक लाभ और नहीं है, जो सुख श्रेष्ठ सुख है, जिस ज्ञानसे अधिक ज्ञान और नहीं है, वही ब्रह्म है। जिसके देखनेसे और कोई भी द्रष्टव्य देखने को बाकी नहीं रहता, जिसके होनेसे फिर जन्म नहीं होता, जिसके जाननेसे फिर कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता, वही ब्रह्म है। जो पूर्ण है, सच्चिदानन्द है, अद्वय है नित्य और एक है, वे ही ब्रह्म हैं।

ब्रह्म सगुण और निर्गुणके भेदसे दो प्रकारके हैं। सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म ही निर्गुण है, जगत् सृष्टि आदि करनेवाले ब्रह्म सगुण हैं।

"[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥" इत्यादि।

( [illegible] )

[illegible] भेदसे दो प्रकार हैं, सगुण और निर्गुण मायाश्रित ब्रह्म सगुण और मायातीत ब्रह्म निर्गुण है। [illegible] भगवान् [illegible] द्वारा इस [illegible] सृष्टि करते हैं।

विष्णुपुराणमें ब्रह्म सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है— जो परमेश्वर और ब्रह्म हैं [illegible] और [illegible] रहित हैं, ह्रास और विकास वर्जित हैं, वृद्धि और [illegible] वर्जित हैं, जो सर्वत्र विद्यमान हैं, [illegible] और [illegible] हैं, वे ही ब्रह्म हैं। उनके [illegible] रूप हैं, [illegible] ( [illegible] ), पुरुष और काल। इनमें [illegible] पुरुष, द्वितीय और तृतीय रूप व्यक्त और अव्यक्त, [illegible] रूप काल है। [illegible]नुसार [illegible] सृष्टि स्थिति और प्रलयके [illegible] और [illegible] हेतु हैं।

[illegible] दिन, रात्रि, आकाश, भूमि, अन्धकार, [illegible] आदि कुछ भी न था। उस समय केवल प्रधान और पुरुष मात्र थे। तत्पश्चात् सृष्टिके समय ब्रह्म इच्छानुसार परिणामी और अपरिणामी प्रकृति और पुरुषमें प्रविष्ट हो कर उन्हें [illegible] अर्थात् सृष्टि करनेमें [illegible] करते हैं। परन्तु उनकी कोई [illegible] नहीं है। जैसे गन्धके [illegible] होनेसे ही मनमें [illegible] होता है, उसी प्रकार ब्रह्म [illegible] भी हैं। [illegible] काल [illegible] होता है। ( [illegible] )

"[illegible] ।
[illegible] ॥"

( [illegible] )

यह समस्त जगत् ही ब्रह्म है, इसके सिवा और सब [illegible] है। भागवतमें एक [illegible] सम्पूर्ण [illegible] किये हैं।

'[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥"

( भागवत [illegible] )

जिनसे यह [illegible] उत्पन्न होता, स्थिति और लय हो रहा है, जिनके [illegible] हो [illegible] [illegible] है, और [illegible] आदि [illegible] किसी [illegible] न होनेसे [illegible] जाना जाता है, [illegible] ही विद्यमान हैं जिनमें [illegible] हैं [illegible] प्रकाशित किया था, और [illegible] अर्थात् [illegible] सृष्टि इत्यादि [illegible] जैसे [illegible] करते हैं उसी प्रकार [illegible] और [illegible] सृष्टि

वास्तविक असत्य होने पर भी सत्यरूपमें प्रतिभासित होते हैं। अथवा तेजमें जलका भ्रम इत्यादि जैसे वस्तुतः मिथ्या है, उसी प्रकार जिनके अतिरिक्त सत्व, रज और तम इन तीनों गुणोंकी सृष्टि अलीक है तथा अपने तेज प्रभावसे जिनमें किसी प्रकार उपाधि सम्बन्ध नहीं है, उस सत्य स्वरूप परब्रह्मको नमस्कार है। 'ब्रह्म' सम्बन्धी अन्यान्य विवरण "वदांत दर्शन" शब्दमें देखो।

ब्रह्मवैवर्त पुराणमें सगुण ब्रह्मके नौ प्रकार रूपका उल्लेख है,—

"यागिनो य वेदन्त्यर ज्योतीरूपं सनातनम्।
ज्योतिरभ्यंतरं नित्य रूपं भक्ता वदन्ति यम्॥
यदा वदन्ति सत्य यं नित्यमाद्य विचक्षणा।
यं वद ति सुरा सर्वे पर स्वेच्छामय प्रभुम्।
सिद्धेन्द्रा मुनय सर्वे सर्वरूपं वद ति यम्॥
यमनिर्वचनीयञ्च योगीन्द्रः शङ्करो वदेत्॥
स्वय धाता च प्रवदेत् कारणानाञ्च कारण।
शेषो वदेदनन्त यं नराकारमीश्वरम्॥
(ब्रह्मवै०पु० श्रीकृष्णजन्मखण्ड, १२८ अ०)

(१) ज्योतीरूप सनातन, (२) अभ्यन्तरज्योति नित्यरूप, (३) सत्यस्वरूप, (४) नित्य और आदिपुरुष, (५) स्वेच्छामय प्रभु, (६) सर्वरूप, (७) अनिर्वचनीय, (८) कारणका कारण और (९) अनन्त। उल्लिखित नौ प्रकारसे ब्रह्मका नाम निर्देश हुआ करता है।

गरुड पुराणके ४४वे अध्यायमें सगुण और निर्गुण ब्रह्मका ध्यान लिखा हुआ है। बाहुल्यके भयसे यहां विस्तृत नहीं लिखा जा सका।

(पु०) ५ सृष्टिकर्त्ता देवता विशेष 'बृंहति प्रजाय।' जिन्होंने प्रजाकी सृष्टि की है, वे ही ब्रह्मा हैं। पर्याय— आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमेष्ठी, पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, स्वयंभु, चतुरानन, धाता, अब्जयोनि, द्रुहिण, विरिञ्चि, कमलासन, स्रष्टा, प्रजापति, वेधस्, विधाता, विश्वसृज्, विधि, (भरत) नाभिजन्म, अण्डज पूर्वनिधन कमलोद्भव, सदानन्द रजोमूर्त्ति, सत्यक, [illegible] हंसवाहन, (किसी किसी अमरकोषमें ये पर्याय भी देखनेमें आते हैं) द्रुघण, विरिञ्चि, स्वयम्भु, पद्मयोनि, पद्मासन, विश्वसृज्, विधि, (भरत) देवदेव, पद्मगर्भ, गुणसागर, वेदगर्भ, बहुरेतस्, सम्भू, सन्ध्याराम, सुधावर्य, कृपाद्वैत, सत्यक, लोकनाथ, महावीर्य, सरोजी मञ्जुप्राण, नाभिजन्मन्, बहुरूप, जटाधर, सनत्शतधृति, कञ्ज, प्रभु, चिन्तामणि, पद्मपाणि, पुराणग, अष्टश्रवण, हंसरथ, सर्वकर्त्ता, चतुर्मुख (शब्दरत्न) क, (एकाक्षरकोष) बा, शतपत्रनिवास, स्वायम्भुव मनु पिता, (त्रिकाण्ड०) म, (शब्दरत्नावली)

ब्रह्माकी उत्पत्तिका विवरण प्राय सभी पुराणोंमें आलोचित हुआ है। अत्यन्त संक्षेपमें यहां थोड़ा सा विवेचन किया जाता है। मनुस्मृतिमें लिखा है— जब कि यह परिदृश्यमान् जगत् एकमात्र अन्धकारावृत और अप्रत्यक्ष था, तब अव्यक्त स्वयम्भू ब्रह्माने अपने शरीरसे विविध प्रजा-सृष्टिकी इच्छा कर सबसे पहले ध्यानयोगसे जलकी सृष्टि की। पश्चात् उस जलमें बीज डाला, और उस बीजसे एक अण्ड उत्पन्न हुआ। उस अण्डसे स्वयं ब्रह्माने पितामहके रूपमें जन्मग्रहण किया। नर अर्थात् परमात्मासे उत्पन्न होनेसे जलका नाम नारा है, ब्रह्मरूपमें अवस्थित परमात्माका सर्वप्रथम अयन या आश्रय होनेसे ब्रह्माको नारायण कहते हैं, तथा आदि कारण, अव्यक्त और नित्य पुरुषसे उत्पन्न होनेसे उन्हें ब्रह्मा कहा गया है। ब्रह्माने उस अण्डमें ब्राह्मानके संवत्सर काल वास करके अन्तमें उसे दो भागोंमें विभक्त कर दिया। उसके ऊर्द्ध्वखण्डमें स्वर्गादि लोक और अधोखण्डमें पृथिव्यादि, तथा मध्य भागमें आकाश, अष्ट दिशाएं और समुद्र निर्माण किया। पीछे ब्रह्माने इस जगत् और विविध प्रजाकी सृष्टि की।* सृष्टि देखो।

---

* सोऽभिध्याय शरीरात् स्वात्सिसृक्षुर्विविधा प्रजा।
अपएव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्॥
तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम्।
तस्मिन् यज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामह॥
आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनव।
ता यदस्यायन पूर्वं तेन नारायण स्मृत॥
यत्तत् कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम्।
तद्विसृष्ट स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते॥

कालिकापुराणमें लिखा है—सृष्टिके पहले जब कि सृष्टि नहीं थी, तब सत्त्वगुण [illegible] समाधियुक्त [illegible] था। उस समय दिन रात, पृथिवी, ज्योति, आकाश, वायु और अन्य आदि कुछ भी नहीं थे, उस समय केवलमात्र सूक्ष्म नित्य, अप्रतिहत, अव्यक्त, अक्षय, [illegible] ब्रह्म था। वे भाव [illegible], प्रकृति पुरुष [illegible] अनादि काल विद्यमान था। वे ही परम ब्रह्म ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर इस प्रकार नाम रूपमें विभक्त हुए हैं।

परमब्रह्मने सृष्टि करनेकी अभिलाषा करके प्रकृतिको विक्षोभित किया। प्रकृतिके विक्षुब्ध होने पर महत्तत्त्व [illegible] त्रिविध अहङ्कार और अहङ्कारसे पञ्च तन्मात्राकी उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात् [illegible] भूतादिकसे [illegible] आकाश और [illegible] सृष्टि कर [illegible] उस [illegible] धारण किया। उसके बाद उन्होंने पुनः [illegible] प्रकृतिको सृष्टिके लिए विक्षोभित किया। फिर प्रकृतिने उस कारण [illegible] त्रिगुणमय अण्डको स्थापित किया। वही [illegible] समस्त [illegible] हुआ [illegible] सुवर्णमय [illegible] परिणत हुआ और इस तरह [illegible] हो गई। स्वयं ब्रह्मा [illegible] उस अण्डमें एक [illegible] उसका भेद किया। [illegible] जरायु रूप सुमेरु और [illegible] पर्वतादि [illegible] समुद्र तथा [illegible] पृथिवी उत्पन्न हुई। फिर ब्रह्माने [illegible] इच्छानुसार [illegible] विभाग किया। उनसे [illegible] मनु, [illegible] परिणत हुआ। [illegible] विष्णु और महेश्वरने [illegible] अर्थात् [illegible] ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥"

(कालि० [illegible])

का उत्पन्न हुआ। ब्रह्माके ऊपर सृष्टि [illegible] वे ही ब्रह्मा हुए। कालिकापुराण [illegible]

[illegible] लिखा है—

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] । ' इत्यादि।

(भाग० [illegible])

भगवान् विष्णुने सृष्टि करनेकी कामनासे [illegible] महत्तत्त्व, अहङ्कारतत्त्व और पञ्चतन्मात्र द्वारा [illegible] पुरुष [illegible] अर्थात् ग्यारह इन्द्रिय और पञ्चमहाभूत इन सोलह [illegible] विराट् मूर्ति धारण की थी। [illegible] करने पर उनके [illegible] विश्वसृष्टि [illegible] ब्रह्मा उत्पन्न हुए। उन्होंने इस विराट् मूर्तिके [illegible] द्वारा भूलोकादि [illegible] कल्पित हुए हैं।

[illegible]
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥'

(भाग० [illegible])

एक परम पुरुषने ही प्रकृतिके सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणोंसे युक्त हो कर विश्व संसारकी सृष्टि, स्थिति और प्रलय [illegible] ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वररूपमें [illegible] धारण किया है। [illegible] सृष्टि, [illegible] पालन और [illegible] करते हैं।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों ही परब्रह्मके अंश हैं। तीनों एक हैं। [illegible] सृष्टि करते हैं, वे ही ब्रह्मा [illegible] कहे जाते हैं।

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥"

(मार्क० [illegible])

भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अङ्गिरा, मरीचि दक्ष, अत्रि और वशिष्ठ ये नौ ब्रह्माके मानस पुत्र हैं। ये भी ब्रह्मा कहलाते हैं।

मत्स्यपुराणके तृतीय अध्यायमें ब्रह्माके चतुर्मुख होनेका कारण इस प्रकार लिखा है,—ब्रह्माके शरीरसे एक कन्या उत्पन्न हुई। ब्रह्मा उस कन्याको देख कर कामसे पीड़ित हुए। पश्चात् वे उस कन्याकी ओर सतृष्ण दृष्टिसे देखते रहे और 'अति आश्चर्य रूप है' 'अति आश्चर्य रूप है' बार बार ऐसा कहने लगे यह कन्या ब्रह्मके भावको ताड़ गई और उनके चारों तरफ प्रदक्षिणा देने लगी। इस तरह चारों ओरसे कन्या दृष्टिगोचर हो, इसलिए ब्रह्माके चारों ओर चार मुख हो गये। (मत्स्यपु० ३अ०)

सृष्टिके प्रारम्भमें ब्रह्माके दश मानसपुत्र उत्पन्न हुए; पहले मरीचि, फिर अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु और नारद।

ब्रह्माके शरीरसे दश प्रजापतियोंकी उत्पत्ति हुई। दक्षिण अङ्गुष्ठसे दक्षप्रजापति, स्तनान्तसे धर्म, हृदयसे कुसुमायुध, भ्रूमध्यसे क्रोध, अधरसे लोभ, बुद्धिसे मोह, अहङ्कारसे मद, कण्ठसे प्रमोद और लोचनसे मृत्युका उद्भव हुआ था। दश प्रजापतियोंका विषय उन उन शब्दोंमें तथा प्रजापति शब्दमें देखो।

महाभारतमें शान्तिपर्वके १८०वें अध्यायमें ब्रह्माकी उत्पत्तिका विवरण लिखा है। लेख बढ़ जानेके भयसे यहां अधिक नहीं लिखे गये।

कल्पके प्रारम्भमें ब्रह्मा सृष्ट होते हैं और कल्पके क्षयमें उनका ध्वंस होता है। ब्रह्माकी पूजा आदिके विषयमें कालिकापुराणमें इस प्रकार लिखा है। ब्रह्माका मन्त्रोद्धार,—

"पतृतीयञ्च वह्निञ्च शेषस्वरसमन्वित ।
चन्द्रबिन्दुसमायुक्तो ब्रह्ममन्त्र प्रकीर्त्तित ॥" (कालिकापु०)

पवर्गके तृतीयवर्ण 'ब' के नीचे रकार जोड़नेसे 'ब्र' और उसमें औकार तथा चन्द्रबिन्दु लगानेसे ब्रह्माका मन्त्र "ब्रौं" होता है। यही ब्रह्माका बीजमन्त्र है। इस मन्त्रके द्वारा ब्रह्माकी पूजा करनेसे अभिलषित वस्तुकी प्राप्ति होती है।

ब्रह्माका ध्यान इस प्रकार है

"ब्रह्मा कमण्डलुधरश्चतुर्वक्त्रश्चतुर्भुज ।
कदाचिद्रक्तकमले हंसारूढ़ कदाचन ॥
वर्णेन रक्तगौराङ्ग प्रांशुस्तुङ्गाङ्ग उन्नत ।
कमण्डलुर्वामकरे स्रुवो हस्ते तु दक्षिणे ॥
दक्षिणाधस्तथा माला वामाधश्च तथा स्रुव ।
आज्यस्थाली वामपार्श्वे वेदा सर्वेऽग्रत स्थिता ॥
सावित्री वामपार्श्वस्था दक्षिणस्था सरस्वती ।
सर्वे च ऋषयो ह्यग्रे कुर्यादेभिश्च चिन्तनम् ॥"

(कालिकापु० ८२)

इस मन्त्रसे ब्रह्माका ध्यान करना चाहिए। "परमेशाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मन् प्रचोदयात्" यह ब्रह्माकी गायत्री है। नैवेद्यके अतिरिक्त सभी उपचार ब्रह्माको दिये जा सकते हैं। रक्तवर्ण कौषेय वस्त्र ब्रह्माको परम प्रीतिकर है। आज्य, क्षीर और तिलयुक्त घृत ये तीन ब्रह्माके प्रधान भोज्य पदार्थ हैं। ब्रह्माके पार्श्वमें विष्णु और शिवकी पूजा करनी चाहिए। ब्रह्माके करस्थित स्रुवादि, सरस्वती, सावित्री, हंस और पद्म इनकी भी पूजा करना विधेय है। इनका अर्घ दुग्ध द्वारा और प्रणाम दण्डवत् हो कर करना चाहिए।

(कालिकापु० ८२ अ०)

गृहदाहादि होनेसे ब्रह्माकी पूजा की जाती है।

६ ऋत्विक् भेद, एक प्रकारके ऋत्विक्। होम करते समय ब्रह्माकी स्थापना करनी चाहिए। जैसे विप्र ब्राह्मण के अभावमें कुशपत्र द्वारा ब्रह्मा बना कर उसमें स्थापना की जाती है।

"ऊर्द्ध्वकेशो भवत् ब्रह्मा अध केशस्तु विष्टरः।"

(उद्वाहतत्त्व)

कुशमय ब्रह्माको यथानियम बना कर उसका अग्रभाग ऊंचा कर देना चाहिए। जिनके अग्रभाग समान हों, ऐसे ५० कुशपत्रोंसे ब्रह्माका निर्माण करना उचित है। अग्निसे पूर्वकी ओर प्रागग्र कुशा बिछा कर उसके ऊपर ब्रह्माका स्थापन किया जाता है। भवदेवमें इसकी प्रणाली विस्तृतरूपसे लिखी है।

७ विष्कुम्भ आदि सत्ताइस योगोंमेंसे पचीसवां योग। इस योगमें सभी प्रकारके शुभ कर्मादि किये जा

[illegible] है। इस [illegible] यदि [illegible], तो वह [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] और [illegible] होता है।

[illegible]

(स० [illegible])

[illegible] ( सं० स्त्री० ) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible]।

[illegible] ( सं० पु० ) वह [illegible] जो [illegible] [illegible] किया जाय।

[illegible] ( सं० [illegible] ) [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]।

[illegible] ( सं० पु० ) [illegible]।

[illegible] ( सं० पु० ) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible] है, [illegible] और [illegible] [illegible] है। [illegible] है। [illegible] और [illegible] है। [illegible] करते है।

[illegible] ( सं० स्त्री० ) [illegible]। [illegible] है, इस कारण [illegible] यह नाम पड़ा है।

[illegible] ( सं० त्रि० ) १ [illegible]। २ [illegible] [illegible] है।

[illegible] ( सं० पु० ) [illegible]। [illegible] है और [illegible] है।

[illegible] ( सं० पु० ) [illegible]।

[illegible] ( सं० त्रि० ) [illegible]।

[illegible] ( सं० त्रि० ) [illegible]।

[illegible] ( सं० स्त्री० ) [illegible], [illegible]।

[illegible] ( सं० पु० ) वह [illegible] जो [illegible] [illegible] जाता है।

[illegible] ( सं० स्त्री० ) [illegible] [illegible]। [illegible] है, कि [illegible] [illegible] है। [illegible] है। [illegible] और [illegible] जाता है। यह [illegible], [illegible] और [illegible] है। इस [illegible] [illegible] होता है—

[illegible]

[illegible]

इस [illegible] [illegible] और [illegible] होता है।

( [illegible] )

[illegible] ( सं० स्त्री० ) [illegible]।

[illegible] ( सं० पु० ) [illegible]। [illegible]।

[illegible]

[illegible]

( [illegible] )

[illegible] ( सं० [illegible] ) [illegible]। [illegible]। [illegible] और [illegible] किया जाता है। [illegible] किया [illegible] जाता है।

[illegible]

[illegible]

( [illegible] )

[illegible] है, [illegible] [illegible] होता है। [illegible] है। [illegible] [illegible] है। [illegible] है। [illegible]।

"पञ्चगव्येन दर्भैश्च स्नापयति भक्तितः ।
ब्रह्मकूर्चविधानेन विष्णुलोके महीयते ॥"
"ब्रह्मकूर्च विधानेन कुशोदकयुक्तेन ।" (दायविज्ञानतत्त्व)

ब्रह्मकृत (सं० त्रि०) ब्रह्म तपः करोतीति कृ क्विप् । १ तापस, तपस्याकारी । २ स्तोत्रकारी, जो कायमनो वाक्यसे पूजा और भजना करते हैं । (पु० ३ विष्णु । ४ शिव । ५ इन्द्र ।

ब्रह्मकृत (सं० त्रि०) ब्रह्मणा कृत । ब्रह्मा द्वारा किया हुआ ।

ब्रह्मकृति (सं० स्त्री०) क्रियमाण ब्रह्मस्तोत्र ।

ब्रह्मकोश (सं० पु०) ब्रह्माका रत्नभण्डार, ब्रह्मतत्त्वाश्रित पवित्र शब्द या ग्रन्थ ।

ब्रह्मकोशी (सं० स्त्री०) ब्रह्मणः कोशीव । अजमोदा ।

ब्रह्मक्षत्र—१ ब्राह्मण और क्षत्रियसे उत्पन्न एक जाति । २ ब्रह्मतेजा क्षत्रिय ।

"ब्रह्मक्षत्रस्य यो योनिर्वंशो राजर्षिसत्कृतः ।"
(विष्णुपु० ४।२१।४)

श्रीधरस्वामीने तट्टीकामें इस क्षत्रिय जातिके सम्बन्धमें इस प्रकार व्यवस्था की है,—"ब्रह्मणः ब्राह्मणस्य क्षत्रस्य क्षत्रियस्य च योनिः कारणं क्षत्रियैः कैश्चित्तपोविशेषात् ब्राह्मण्य लब्धमिति ।" दाक्षिणात्यमें ये ब्रह्मक्षत्रगण आज भी कायस्थोंके आचार व्यवहारका पालन करते और कायस्थ कहलाते हैं । कुलीन देखो ।

३ ब्रह्मज्ञान और क्षत्रवीर्यशाली । प्रजापति दक्ष ब्रह्मतेज और क्षत्रिय वीर्यसे पूर्ण हो ब्रह्माधिष्ठित प्रदेश तपस्याके लिये गये थे ।

"दक्षो दत्त्वाऽथ ता कन्या ब्रह्मक्षत्र प्रययौ च ।
ब्रह्मण्याऽध्युषित पुण्य समाहितमना मुनिः ॥"
(हरिवंश १९२)

ब्रह्मक्षेत्र (सं० क्ली०) १ ब्रह्माका अधिष्ठानस्थान मानव देह ।

"ब्रह्मण्यो लोकसंसिद्धो जनित्रं प्रथमं पदं ।
ब्राह्मण्याऽध्युषितत्वाच्च ब्रह्मक्षेत्रमिहोच्यते ॥"
(हरिवंश)

२ वेदमन्त्रपारग ब्राह्मण अधिवासित पुण्यस्थान ।

ब्रह्मगति (सं० स्त्री०) मुक्ति, निर्वाण ।

ब्रह्मगन्ध (सं० पु०) ब्रह्मका विकाश या ज्ञानरूप सौगन्ध ।

ब्रह्मगया—गयातीर्थ । गया देखो ।

ब्रह्मगर्भ (सं० पु०) १ एक स्मृतिशास्त्रके प्रणेता । (स्त्री०) ब्रह्मेव गर्भो यस्याः । २ आदित्यभक्ता, हुरहुर । ३ अजगन्धा, अजमोदा ।

ब्रह्मगवी (सं० स्त्री०) ब्राह्मणकी अधिष्ठित गाभी ।

ब्रह्मगाठ (हिं० स्त्री०) जनेऊकी गाठ ।

ब्रह्मगायत्री (सं० स्त्री०) गायत्री मन्त्रविशेष ।

ब्रह्मगार्ग्य (सं० पु०) ऋषिभेद ।

ब्रह्मगिरि (सं० पु०) ब्रह्मणः गिरिः पर्वत । ब्रह्मशैल । यह पर्वत नीलकूट नामक कामाख्यानिलयके पूर्वमें अव स्थित है ।

ब्रह्मगिरि—मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके मलवार जिलान्तर्गत एक गिरिश्रेणी । समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई प्रायः ४५०० फुट है । दावमोरैत्ता नामक इसका सर्वोच्च शिखर ५७७° फुट ऊंचा है । यह अक्षा० ११ ५६´ उ० तथा देशा० ७६ २´ पू०के मध्य अवस्थित है । इसके चारों तरफ जंगल है ।

ब्रह्मगीता (सं० स्त्री०) ब्रह्मणः गीता इत्तम् । १ महाभारतके अनुशासन पर्वमें ब्रह्मकर्तृक कथित अनुशासन रूप गाथा । (भारत अनुशासन० ३५ अ०) २ शिवपुराणके अन्तर्गत ज्ञानखण्डके ६से ११ अध्याय पर्यन्त, यह विभाग जिसमें वेदान्त और योगशास्त्रकी अवतारणा हुई है ।

ब्रह्मगीतिका (सं० स्त्री०) ब्रह्माकी स्तुति या गीत ।

ब्रह्मगुप्त (सं० पु०) १ विद्याधर नाम पत्नीके गर्भ और ब्रह्माके औरससे उत्पन्न एक पुत्रका नाम । २ एक ज्योतिर्विद् । इनका जन्म ५९८ ई०में हुआ था । इनका बनाया हुआ ब्रह्मसिद्धान्त आज भी मिलता है । ३ भक्त सम्प्रदायके एक गुरु ।

ब्रह्मगुप्तीय (सं० पु०) ब्रह्मगुप्तवंशोद्भव राजपुत्र ।

ब्रह्मगोल (सं० पु०) भूमण्डल, पृथ्वी ।

ब्रह्मगौरव (सं० क्ली०) ब्रह्मर्षिदमप्रचर अस्त्रादि ।

ब्रह्मग्रन्थि (सं० पु०) यज्ञोपवीत या जनेऊकी मुख्य गांठ ।

ब्रह्मग्रह (सं० पु०) ब्रह्मराक्षस ।

[illegible] है। [illegible] है, [illegible]
[illegible]
[illegible] होता है।
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] (सं० स्त्री० [illegible]) [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible] और [illegible]
[illegible]

[illegible] (सं० [illegible]) [illegible]
[illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] होता है, [illegible] और
[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] है, [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]
है, [illegible]
करते हैं।

[illegible] (सं० स्त्री०) [illegible]
[illegible] है, [illegible]
गया है।

[illegible] (सं० त्रि०) [illegible]
[illegible] है।

[illegible] (सं० पु०) [illegible]
[illegible] है। [illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible]

[illegible] (सं० त्रि०) [illegible]

[illegible] (सं० त्रि०) [illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible] और [illegible]
[illegible] है।

[illegible] (सं० पु०, [illegible])
[illegible]
है [illegible]
है। [illegible]
[illegible] है। [illegible] और [illegible]
[illegible] है। [illegible], [illegible] और [illegible]
है। [illegible]
[illegible] होता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible] और
[illegible] होता है।

[illegible]

[illegible] (सं० स्त्री०) [illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (सं० पु०) [illegible]
[illegible] और
[illegible] है। [illegible]
[illegible]
जाता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है, [illegible]
[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] है। [illegible]

"पञ्चगव्येन देवश य स्नापयति भक्तित ।
ब्रह्मकूर्चविधानेन विष्णुलोके महीयते ॥"
"ब्रह्मकूर्च विधानेन कुशोदकयुक्तेन।" (देवप्रतिष्ठातत्त्व)

ब्रह्मकृत (स० त्रि०) ब्रह्म तप करोतीति कृ क्विप्। १ तापस, तपस्याकारी। २ स्तोत्रकारी, जो कायमनोवाक्यसे पूजा और भजना करते हैं। (पु० ३ विष्णु। ४ शिव। ५ इन्द्र।

ब्रह्मकृत (स० त्रि०) ब्रह्मणा कृत। ब्रह्मा द्वारा किया हुआ।

ब्रह्मकृति (स० स्त्री०) क्रियमाण ब्रह्मस्तोत्र।

ब्रह्मकोश (स० पु०) ब्रह्माका रत्नभण्डार, ब्रह्मतत्त्वाश्रित पवित्र शब्द या ग्रन्थ।

ब्रह्मकोशी (स० स्त्री०) ब्रह्मण कोशीव। अजमोदा।

ब्रह्मक्षत्र—१ ब्राह्मण और क्षत्रियसे उत्पन्न एक जाति। २ ब्रह्मतेजा क्षत्रिय।

"ब्रह्मक्षत्रस्य यो योनिर्वंशो राजर्षिसत्कृत ।"
(विष्णुपु० ४।२१।४)

श्रीधरस्वामीने तट्टीकामें इस क्षत्रिय जातिके सम्बन्धमें इस प्रकार व्यवस्था की है,—"ब्रह्मणः ब्राह्मणस्य क्षत्रस्य क्षत्रियस्य च योनि कारणम् क्षत्रियैरेव केचित्तपोविशेषात् ब्राह्मणत्वं लब्धमिति।" दाक्षिणात्यमें ये ब्रह्मक्षत्रगण आज भी कायस्थोंके आचार व्यवहारका पालन करते और कायस्थ कहलाते हैं। (कुलीन देखो।)

३ ब्राह्मण और क्षत्रवीर्यशाली। प्रजापति दक्ष ब्रह्मतेज और क्षत्रिय वीर्यसे पूर्ण हो ब्रह्माधिष्ठित प्रदेश तपस्याके लिये गये थे।

"दक्षो दत्त्वाऽथ ता कन्या ब्रह्मक्षत्र प्रथय च।
ब्रह्मण्याऽध्युषित पुण्यं समाहितमना मुनि ॥"
(हरिवंश ११२)

ब्रह्मक्षेत्र (स० क्ली०) १ ब्रह्माका अधिष्ठानस्थान मानव देह।

"ब्रह्मण्या लोकसंसिद्धा जनिष्टे प्रथमे पद।
ब्राह्मण्याऽध्युषितत्वाच्च ब्रह्मक्षेत्रमिहोच्यते ॥"
(हरिवंश)

२ वेदमन्त्रपारग ब्राह्मण अधिवासित पुण्यस्थान।

ब्रह्मगति (स० स्त्री०) मुक्ति, नजात।

ब्रह्मगन्ध (स० पु०) ब्रह्मका विकाश या ज्ञानरूप सौगन्ध।

ब्रह्मगया—गयातीर्थ। गया देखो।

ब्रह्मगर्भ (स० पु०) १ एक स्मृतिशास्त्रके प्रणेता। (स्त्री०) ब्रह्मेव गर्भो यस्याः। २ आदित्यभक्ता, हुरहुर। ३ अजगन्धा, अजमोदा।

ब्रह्मगवी (स० स्त्री०) ब्राह्मणकी अधिकृत गाभी।

ब्रह्मगांठ (हिं० स्त्री०) जनेऊकी गांठ।

ब्रह्मगायत्री (स० स्त्री०) गायत्री मन्त्रविशेष।

ब्रह्मगार्ग्य (स० पु०) ऋषिभेद।

ब्रह्मगिरि (स० पु०) ब्रह्मणा गिरि पर्वतः। ब्रह्मशैल। यह पर्वत नीलकूट नामक कामाख्यानिलयके पूर्वमें अवस्थित है।

ब्रह्मगिरि—मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके मलबार जिलान्तर्गत एक गिरिश्रेणी। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई प्रायः ४५०० फुट है। दावसोबेट्टा नामक इसका सर्वोच्च शिखर ५२७६ फुट ऊंचा है। यह अक्षा० ११ ५६´ ३० तथा देशा० ७६ २´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके चारों तरफ जंगल है।

ब्रह्मगीता (स० स्त्री०) ब्रह्मण गीता इ-तत्। १ महाभारतके अनुशासन पर्वमें ब्रह्मकर्तृक कथित अनुशासन रूप गाथा। (भारत अनुशासन० ३५ अ०) २ स्कन्दपुराणके अन्तर्गत ज्ञानखण्डके ६से ११ अध्याय पर्यन्त, वह विभाग जिसमें वेदान्त और योगशास्त्रकी अवतारणा हुई है।

ब्रह्मगीतिका (स० स्त्री०) ब्रह्माकी स्तुति या गीत।

ब्रह्मगुप्त (स० पु०) १ विद्याधर सोम पत्नीके गर्भ और ब्रह्माके औरससे उत्पन्न एक पुत्रका नाम। २ एक ज्योतिर्विद्। इनका जन्म ५९८ ई०में हुआ था। इनका बनाया हुआ ब्रह्मसिद्धान्त आज भी मिलता है। ३ अन्त सम्प्रदायके एक गुरु।

ब्रह्मगुप्तीय (स० पु०) ब्रह्मगुप्तवंशोद्भव राजपुत्र।

ब्रह्मगोल (स० पु०) भूमण्डल, पृथ्वी।

ब्रह्मगौरव (स० क्ली०) ब्रह्ममर्यादासूचक अस्त्रादि।

ब्रह्मग्रन्थि (स० पु०) यज्ञोपवीत या जनेऊकी मुख्य गांठ।

ब्रह्मग्रह (स० पु०) ब्रह्मराक्षस।

सकते हैं। इस योगमें यदि कोई भी अंग हो, तो वह नाना शास्त्रोंमें पण्डित, धार्मिक, ब्रह्मज्ञानी, शमदमगुणान्वित और कालज्ञ होता है।

"[illegible] ।
[illegible] ॥"

(बृ० [illegible])

ब्रह्मकन्यका (सं० स्त्री०) ब्रह्मण: कन्यका सुता। १ सरस्वती। २ भारती नामकी बूटी जो दवाके काममें आती है, ब्राह्मी बूटि।

ब्रह्मकर (सं० पु०) वह कर जो ब्राह्मण या गुरु पुरोहितको दिया जाय।

ब्रह्मकर्म (सं० क्ली०) ब्रह्मविहितं कर्म। १ वेदविहित कर्म। २ [illegible] कर्मकाण्ड। ३ ब्राह्मणका कर्म।

ब्रह्मकर्मसमाधि (सं० पु०) गोपालका नामान्तर, श्रीकृष्ण।

ब्रह्मकर्मसमाधि (सं० पु०) ब्रह्मणोऽन्यत्र कर्माणि [illegible] समाधि [illegible] कर्मणा समाधि। सब कर्मोंके करनेवाले ब्रह्मरूपमें [illegible]।

'[illegible] ।
[illegible] ॥' (गीता ४।२४)

[illegible] होता है, वे ब्रह्म [illegible] और [illegible] नहीं देखने पाते। उनके निकट यह जगत् एक ब्रह्ममय समझा जाता है। जिस प्रक्रिया द्वारा होम करना होता है, उसे वे देख नहीं सकते, [illegible] वे [illegible] ब्रह्माका ही अनुभव करते हैं। ब्रह्म और [illegible] [illegible] योगिगण ब्रह्माग्निमें ही आहुति देते हैं, अर्थात् ब्रह्ममें समाधि करके जीवात्माका लय करते हैं।

ब्रह्मकला (सं० स्त्री०) दाक्षायणी। ये ब्रह्माके हृदयमें विद्यमान हैं, इस कारण उनका यह नाम पड़ा है।

ब्रह्मकल्प (सं० त्रि०) १ ब्रह्मतुल्य। २ ब्रह्मा [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] एक ब्रह्मा रहते हैं।

ब्रह्मकाण्ड (सं० पु०) वेदका एक भाग। इसमें ब्रह्मकी [illegible] और यह कर्मकाण्डसे भिन्न है।

ब्रह्मकाय (सं० पु०) देवताविशेष।

ब्रह्मकायिक (सं० त्रि०) ब्रह्मकाय [illegible] देव [illegible]।

ब्रह्मकार (सं० त्रि०) [illegible]।

ब्रह्मकाष्ठ (सं० क्ली०) तूतकाष्ठ, शहतूत।

ब्रह्मकिल्बिष (सं० क्ली०) वह पाप जो ब्राह्मणके विरुद्ध कार्योंसे लगता है।

ब्रह्मकुण्ड (सं० क्ली०) ब्रह्मणा निर्मितं कुण्डं तडागम्। ब्रह्मा द्वारा निर्मित [illegible] सरोवर। कालिका पुराणमें लिखा है, कि पाण्डुनाथके उत्तर ब्रह्मकुण्ड नामका एक सरोवर है। यह सरोवर ब्रह्माने [illegible] स्नानके लिये बनाया है। इसकी लम्बाई सौ व्याम और चौड़ाई उसका आधा है। यह सर्वपापहर, पवित्र और देवलोकमें आगत है। इस सरोवरमें निम्नोक्त मन्त्रका पाठ करके स्नान करना होता है—

'[illegible] ।
[illegible] ॥'

इस मन्त्रमें स्नान कर ब्रह्मकूट पर्वत पर चढ़े और उमापतिकी पूजा करनेसे मुक्तिलाभ होता है।

(कालिकापु० ८६ अ०)

ब्रह्मकुशा (सं० स्त्री०) अजमोदा।

ब्रह्मकूट (सं० पु०) ब्रह्मा कूटे शिखरे यस्य। पर्वतविशेष।

"[illegible] ।
[illegible] ॥"

(कालिकापु० ८१ अ०)

ब्रह्मकूर्च (सं० क्ली०) ब्रह्मणो ब्राह्मणस्याय कूर्चमिव। १ व्रतविशेष। शास्त्रकथित [illegible] या इसी प्रकारकी और अशुद्धि दूर करनेके लिये यह व्रत किया जाता है। इसमें एक दिन निराहार रह कर दूसरे दिन पञ्चगव्य पिया जाता है।

"[illegible] ।
[illegible] ॥"

([illegible])

[illegible] लिखा है—चतुर्दशी, अमावस्या या पूर्णिमा तिथिमें पञ्चगव्य वा हविष्यान्न भोजन करनेसे यह व्रत होता है। [illegible] यह व्रत करनेसे [illegible] पाप दूर होते हैं। जो प्रति मास दो बार करके यह व्रत करते हैं, वे उत्तम गति प्राप्त करते हैं। [illegible] पञ्चगव्यपान भी कहते हैं। २ कुश [illegible] पञ्चगव्य।

"पञ्चगव्येन देवस्य य स्नापयति भक्तित ।
ब्रह्मकूर्चविधानेन विष्णुलोके महीयते ॥"
"ब्रह्मकूर्च विधानेन कुशोदकयुक्तेन।" (देवप्रतिष्ठातत्त्व)

ब्रह्मकृत (स० त्रि०) ब्रह्म तप करोतीति कृ क्विप्। १ तापस, तपस्याकारी। २ स्तोत्रकारी, जो कायमनो वाक्यसे पूजा और भजना करते हैं। (पु० ३ विष्णु। ४ शिव। ५ इन्द्र।

ब्रह्मकृत (स० त्रि०) ब्रह्मणा कृत। ब्रह्मा द्वारा किया हुआ।

ब्रह्मकृति (स० स्त्री०) क्रियमाण ब्रह्मस्तोत्र।

ब्रह्मकोश (स० पु०) ब्रह्माका रत्नभण्डार, ब्रह्मतत्त्वा श्रित पवित्र शब्द या ग्रन्थ।

ब्रह्मकोशी (स० स्त्री०) ब्रह्मण कोशीव। अजमोदा।

ब्रह्मक्षत्र—१ ब्राह्मण और क्षत्रियसे उत्पन्न एक जाति। २ ब्रह्मतेजा क्षत्रिय।

"ब्रह्मक्षत्रस्य यो योनिर्वं शो राजर्षिसत्कृत ।"
(विष्णुपु० ४।२१।४)

श्रीधरस्वामीने तट्टीकामें इस क्षत्रिय जातिके सम्बन्धमें इस प्रकार व्यवस्था की है,—'ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य क्षत्रस्य क्षत्रियस्य च यानि कारण क्षत्रियेरव कैश्चित्तपोविशेषात् ब्राह्मणत्व लब्धमिति।" दाक्षिणात्यमें ये ब्रह्मक्षत्रगण आज भी कायस्थोंके आचार व्यवहारका पालन करते और कायस्थ कहलाते हैं। कुलीन देखो।

३ ब्रह्मज्ञान और क्षत्रवीर्यशाली। प्रजापति दक्ष ब्रह्मतेज और क्षत्रिय वीर्यसे पूर्ण हो ब्रह्माधिष्ठित प्रदेश तपस्याके लिये गये थे।

"दत्त्वा दत्त्वाऽथ ता कन्या ब्रह्मक्षत्र प्रपद्य न।
ब्रह्मणाऽध्युषितं पुण्यं समाहितमना मुनि ॥"
(हरिवंश ११२)

ब्रह्मक्षेत्र (स० क्ली०) १ ब्रह्माका अधिष्ठानस्थान मानव देह।

"ब्रह्मणा स्वायंसिद्धा जनिते प्रथम पद।
ब्रह्मणाऽध्युषितमात्त्व ब्रह्मक्षेत्रमिहोच्यते ॥"
(हरिवंश)

२ वेदमन्त्रपारग ब्राह्मण अधिवासित पुण्यस्थान।

ब्रह्मगति (स० स्त्री०) मुक्ति, नजात।

ब्रह्मगन्ध (स० पु०) ब्रह्मका विकाश या ज्ञानरूप सौगन्ध।

ब्रह्मगया—गयातीर्थ। गया देखो।

ब्रह्मगर्भ (स० पु०) १ एक स्मृतिशास्त्रके प्रणेता। (स्त्री०) ब्रह्मेव गर्भो यस्या। २ आदित्यभक्ता, हुरहुर। ३ अजगन्धा, अजमोदा।

ब्रह्मगवी (स० स्त्री०) ब्राह्मणकी अधिकृत गाभी।

ब्रह्मगांठ (हिं० स्त्री०) जनेऊकी गांठ।

ब्रह्मगायत्री (स० स्त्री०) गायत्री मन्त्रविशेष।

ब्रह्मगाथ (स० पु०) ऋषिभेद।

ब्रह्मगिरि (स० पु०) ब्रह्मणा गिरिः पर्वत। ब्रह्मशैल। यह पर्वत नीलकूट नामक कामाख्यानिलयके पूर्वमें अव स्थित है।

ब्रह्मगिरि—मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके मलवार जिलान्तर्गत एक गिरिश्रेणी। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई प्रायः ४००० फुट है। दायमीबेत्ता नामक इसका सर्वोच्च शिखर ५७०६ फुट ऊंचा है। यह अक्षा० ११ ५६´ उ० तथा देशा० ७६ २´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके चारों तरफ जंगल हैं।

ब्रह्मगीता (स० स्त्री०) ब्रह्मण गीता ६-तत्। १ महाभारतके अनुशासन पर्वमें ब्रह्मकर्तृक कथित अनुशासन रूप गाथा। (भारत अनुशासन० ३५ अ०) २ शिवपुराणके अन्तर्गत ज्ञानखण्डके ६से ६ अध्याय पर्यन्त, यह विभाग जिसमें वेदान्त और योगशास्त्रकी अवतारणा हुई है।

ब्रह्मगीतिका (स० स्त्री०) ब्रह्माकी स्तुति या गीत।

ब्रह्मगुप्त (स० पु०) १ विद्याधर भीम पत्नीके गर्भ और ब्रह्माके औरससे उत्पन्न एक पुत्रका नाम। २ एक ज्योतिर्विद्। इनका जन्म ५९८ ई०में हुआ था। इनका बनाया हुआ ब्रह्मसिद्धान्त आज भी मिलता है। ३ भक्त सम्प्रदाय के एक गुरु।

ब्रह्मगुप्ताय (स० पु०) ब्रह्मगुप्तस्यगोत्रापत्य राजपुत्र।

ब्रह्मगोल (स० पु०) भूमण्डल, पृथ्वी।

ब्रह्मगौरव (स० क्ली०) ब्रह्ममहिमसूचक अस्त्रादि।

ब्रह्मग्रन्थि (स० पु०) यज्ञोपवीत या जनेऊकी मुख्य गांठ।

ब्रह्मग्रह (स० पु०) ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्मग्राहिन् (सं० त्रि०) ब्रह्म ग्रहण करनेवाला, ब्रह्मग्रहणमें उपयुक्त।

ब्रह्मघातक (सं० पु०) ब्राह्मणं हन्ति हन-ण्वुल्। १ ब्रह्महत्याकारक। (त्रि०) २ ब्राह्मणोंको परिग्लानिकारक पाप [illegible]। ब्राह्मणोंको [illegible] नाम ब्रह्मघातक होता है अर्थात् इससे ब्रह्महत्या पापभागी होता है।

ब्रह्मघातिन् (सं० त्रि०) ब्रह्म हन णिनि। ब्राह्मणको मारनेवाला, ब्राह्मणकी हत्या करनेवाला।

ब्रह्मघातिनी (सं० स्त्री०) १ ब्राह्मणको मारनेवाली। २ रजस्वला होकर दूसरे दिन स्त्रीकी संज्ञा।

ब्रह्मघोष (सं० पु०) १ वेदध्वनि। २ वेदपाठ।

ब्रह्मघ्न (सं० त्रि०) ब्राह्मणं हन्ति हन-क। १ ब्रह्महत्याकारक, ब्राह्मणको हत्या करनेवाला। (स्त्री०) २ ब्रह्मघ्नी, ब्राह्मणको मारनेवाली। ३ गृहकन्या, घीकुआर।

ब्रह्मचक्र (सं० क्ली०) ब्रह्मनिर्मित चक्र। [illegible] इस चक्रमें [illegible] सर्वदा घूमते रहते हैं, इसीसे इसको ब्रह्मचक्र कहते हैं।

ब्रह्मचर्य (सं० क्ली०) ब्रह्मणे वेदार्थं चर्य आचरणीयं। १ आश्रम विशेष, प्रथम आश्रम। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये ही चार आश्रम हैं। अपने धर्ममें ब्रह्मचर्याश्रम ही श्रेष्ठ है। २ अष्टाङ्गमैथुन निवृत्ति, मैथुनका परित्याग।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

([illegible] अ० १०)

स्मरण, कीर्तन, केलि, प्रेक्षण, गुह्यभाषण, संकल्प, अध्यवसाय और क्रियानिवृत्ति ये आठ प्रकार मैथुन हैं। इस अष्टाङ्ग निवृत्तिका नाम ब्रह्मचर्य है। स्त्री और पुरुष दोनोंके लिए ही ब्रह्मचर्य पालनीय है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

३ [illegible] पातञ्जलदर्शनमें लिखा है कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह [illegible] है। पहले अहिंसा उसके बाद सत्य इत्यादि करके ब्रह्मचर्यकी प्रतिष्ठा होती है। पातञ्जल शास्त्रमें लिखा है, "अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।" पातञ्जलदर्शनके भाष्यकारका मत इस प्रकार है, यदि साधक योगाङ्गका साधन करता हो तो पहले अहिंसानुष्ठान, उसके बाद सत्य और अस्तेय, पश्चात् ब्रह्मचर्यका अनुष्ठान करना चाहिए। ब्रह्मचर्य [illegible] मुख्य अंग [illegible] है। शरीरमें यदि शुक्र धातु प्रतिष्ठित हो, विकृत, स्खलित या विचलित न हुआ हो, अटल और अचल हो, तो समस्त बुद्धि इन्द्रिय और शरीरकी शक्ति वृद्धि होती है। जिससे प्रकाश शक्ति बढ़ जाती है, राग द्वेषादि अन्तर्हित और कामक्रोधादि क्षीण हो जाते हैं। अतएव शरीरस्थित शुक्रधातुको अविकृत, अस्खलित और अविचलित रखनेके लिए साधक स्त्रियोंके अङ्ग प्रत्यङ्गादिके दर्शन और स्पर्शादिका परित्याग कर देना चाहिए। क्रीडा, हास्य और परिहास, उसके [illegible] लावण्यकी चिन्ता आदि भी वर्जनीय हैं। आलिङ्गन और [illegible] निषिद्ध है। कुछ दिन इस प्रकार नियमसे चलते रहनेसे ब्रह्मचर्य दृढ़ हो जाता है। उस समय आत्मामें और एक प्रकारकी अद्भुत शक्ति, जिसका नाम ब्रह्मतेज है, का आविर्भाव होता है। तब उसकी शुभ्र ज्योतिः अपूर्व और स्वाभाविक तेज सम्प्रतिष्ठित हो जाता है।

'ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः' (पात०सू० २।३८)

ब्रह्मचर्यकी प्रतिष्ठा अर्थात् वीर्य निरोध करनेसे सुस्थिर होने पर वीर्य अर्थात् निरतिशय सामर्थ्य उत्पन्न होती है। वीर्य या शुक्र धातुका कणामात्र भी यदि विकृत या विचलित न हो, स्वप्नमें भी यदि कामोद्रेक न हो, स्वप्नमें भी यदि चित्त चाञ्चल्य न पड़े, तो किसी ऐसी एक अद्भुत शक्तिका संचार होता है, जिसके द्वारा चित्त सदा [illegible] या [illegible] रहनेके योग्य बन जाता है। फिर उसे जो उपदेश दिया जायगा, वह सार्थक होगा। (पातञ्जल०)

कलियुगमें ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ निषिद्ध है।

[illegible]
[illegible]

(उद्वाहतत्त्व)

४ जैनमतानुसार पांच व्रतोंमेंसे एक व्रत। इसके दो भेद हैं—(१) एकदेश ब्रह्मचर्याणुव्रत और (२) सर्वदेश ब्रह्मचर्यमहाव्रत। इस व्रतको स्थिरताके लिए जैनागममें पांच पांच भावनाएं कही गई हैं।

इस व्रतको रक्षार्थ स्त्रियोंमें प्रीति उत्पन्न करनेवाली कथाओंके सुननेका त्याग, उनके मनोहर अङ्गोंको अनुरागसे देखनेका त्याग, पूर्व समयमें भोगे हुए स्त्री सम्भोगके स्मरण करनेका त्याग, कामोद्दीपक, पुष्टिकर और इन्द्रियोंको उत्तेजित करनेवाले रसोंका त्याग और शरीरको बहु शृङ्गारादिसे मोहक बनानेका त्याग, ये पांच ब्रह्मचर्यव्रतकी भावनाएं हैं। गृहस्थगण एकदेश ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करते हैं अर्थात् आचार सहित गृहस्थ स्वदारमें सन्तोष रहते हैं और आचार-रहित श्रावक मैथुनादिका परित्याग करते हैं। सर्वदेश अर्थात् पूर्ण ब्रह्मचर्य मुनिगण पालन करते हैं, जो महाव्रतमें गणनीय है। जैनागममें इस व्रतको दूषित करनेवाले पांच अतीचार भी माने गये हैं। यथा—

"परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानङ्गक्रीडा कामतीव्राभिनिवेशाः॥" (मोक्षशास्त्र ७।२८)

दूसरेके पुत्र पुत्रियोंका विवाह कराना, दूसरेकी ब्याही व्यभिचारिणी स्त्रीके यहां आना जाना या वचनालाप करना, वेश्यादि व्यभिचारिणी स्त्रियोंके साथ लेन देन आदि व्यवहार रखना, कामसेवनके अङ्गोंको छोड़ कर अन्य अनङ्गों द्वारा काम क्रीड़ा करना और अपनी स्त्रीमें कामसेवनकी अत्यन्त लालसा रखना, ये पांच ब्रह्मचर्याणुव्रतके अतीचार हैं। गृहस्थ ब्रह्मचारियोंको इनसे बचते रहना चाहिए। महाव्रती मुनियोंका अखण्ड ब्रह्मचर्य होता है, जहां तो केवल आत्मामें लीन होना ही ब्रह्मचर्य है।

ब्रह्मचर्यप्रतिमा—जैनमतानुसार श्रावक अर्थात् जैनगृहस्थोंकी एकादश श्रेणियोंमेंसे सप्तम श्रेणी। इस प्रतिमाको पालन करनेवाले ब्रह्मचारी, सप्तमप्रतिमाधारी या वर्णी कहलाते हैं।

ब्रह्मचर्यमहाव्रत—जैनमतानुसार मुनिगण द्वारा पालनीय त्रयोदश प्रकार सम्यक् चरित्रमेंसे एक चरित्र और पञ्चविध महाव्रतोंमेंसे एक व्रत।

'जैनधर्म' शब्दमें मुनिधर्म देखो।

ब्रह्मचर्यव्रत (सं० त्रि०) ब्रह्मचर्यं विद्यतेऽस्य मतुप् मस्य व। ब्रह्मचर्ययुक्त, ब्रह्मचारी।

ब्रह्मचर्याणुव्रत—जैनमतानुसार पांच अणुव्रतोंमेंसे चतुर्थ अणुव्रत। अणुव्रत देखो।

ब्रह्मचारिणी (सं० स्त्री०) ब्रह्मणा वेदेन चारयति आचरतीति ब्रह्म-चर स्वार्थे णिच्, कर्त्तरि ल्यु ङीप्। मार्गी।

ब्रह्मचारी (सं० पु०) ब्रह्म ज्ञानं तपो वा आचरतीति अवश्यमाचरति ब्रह्म चर आवश्यके णिनि। १ प्रथमाश्रमी, ब्रह्मचर्याश्रमी, उपनयनके बाद नियम पूर्वक साङ्गवेदाध्ययनके लिए गुरुगृहमें अवस्थान करनेवाला ब्रह्मचारी। मनुसंहितामें ब्रह्मचर्याश्रम और ब्रह्मचारीके कर्त्तव्य इस प्रकार लिखे हैं—उपनयनके उपरान्त ही ब्रह्मचर्याश्रम विधेय है। उपनयन होते ही द्विजोंके प्रति त्रैविद्याग्नि अथवा मधु मांस वर्जनादि व्रतोंका आदेश और विधिपूर्वक वेदग्रहणका भार अर्पित होता है। उपनयनके समय जिस ब्रह्मचारीके प्रति जो चर्म, जो सूत्र, जो मेखला, जो दण्ड और जो वसन विहित हैं, चान्द्रायणादि व्रतके समय भी वे ही विधेय हैं। गुरुकुलमें वास करते समय ब्रह्मचारीको इन्द्रिय संयमपूर्वक अपने अदृष्टकी वृद्धिके लिए निम्नलिखित नियमोंका पालन करना चाहिए। प्रतिदिन स्नान करके शुद्धतासे देव, ऋषि और पितृतर्पण देवपूजा तथा सायं और प्रातःकालमें सम्पूर्ण समिध द्वारा होम करना उचित है। ब्रह्मचारीके लिए मधु और मांस भोजन, गन्धद्रव्य सेवन, माल्यादि धारण, गुड़ प्रभृति रस ग्रहण और स्त्री सम्भोगादि निषिद्ध है। जो पदार्थ स्वभावतः मधुर किन्तु कारण पा कर अम्ल हो जाते हैं अर्थात् दधि इत्यादिका सेवन, प्राणियोंकी हिंसा, तैल द्वारा आपादमस्तक अभ्यञ्जन, कज्जलादि द्वारा चक्षु रञ्जन पादुका व छत्र धारण, लोगोंके साथ वृथा कलह, देश वार्त्तादिका अन्वेषण, मिथ्या भाषण, कुत्सित अभिप्रायसे स्त्रियोंके प्रति कटाक्ष या उनका आलिङ्गन और दूसरेके प्रति अनिष्टाचरण इत्यादिसे ब्रह्मचारी निवृत्त रहा करते हैं। सर्वत्र एकाकी शयन करना चाहिए और कदापि हस्तव्यापारादि द्वारा रेतःपात न करना चाहिए। कामवश रेतःपात करनेसे आत्मव्रत बिल्कुल ही नष्ट हो जाता है और तो क्या,

यदि मरणकाल ब्रह्मचारीका समावर्तन और वेद समाप्त हो जाय, तो पहले कहे हुए व्रतके बाद मूर्च्छा अथवा जानी चाहिए और 'पुनर्मां ... इन्द्रियं' अर्थात् मेरा तेज पुनः लौट आये, इत्यादि वेदमन्त्रका जाप कर ... करना कर्तव्य है। आचार्यका जिन वस्तुओंको आवश्यकता हो, उन वस्तुओंका आहरण और प्रतिदिन भिक्षान्न संग्रह करना चाहिये। जो गृहस्थ वेद युक्त हैं और अपने कर्मों पालन करते हैं, प्रशस्त ... उन्हींके घरसे भिक्षा संग्रह करना चाहिए। गुरुके घरमें, अपने ज्ञातिकुटुम्बों अथवा मातुलादि बन्धुओंके घर भिक्षा करना ब्रह्मचारीके लिए उचित नहीं है— हां, यदि भिक्षोचित गृहस्थ न मिले, तो पूर्व पूर्व कुल छोड़ कर बादके मातुलादि कुलसे भिक्षा आरम्भ करना चाहिए। और पूर्वोक्त भिक्षोचित गृहस्थ यदि अभाव हो, तो संयतेन्द्रिय और मिथ्यावाक्य त्याग अर्थात् मौन हो कर ग्राम भिक्षा अर्थात् ग्रामवासियोंके घर भिक्षा करनी चाहिए, परन्तु अभिशप्त और महापातकादि ग्रस्त व्यक्तिके घरसे कभी भी भिक्षा ग्रहण न करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिये, कि दूरसे समिधकाष्ठ आहरण करके ऊपर रखें और निरालस हो कर सायं एवं प्रातःकालमें समिधकाष्ठ द्वारा प्रज्वलित अग्निमें होम करें। ब्रह्मचारी यदि अनातुर अवस्थामें निरन्तर सात दिन भिक्षाचरण तथा सायं और प्रातःकालमें समिधकाष्ठ द्वारा होम न करे, तो उसको अवकीर्णी प्रायश्चित्त करना पड़ता है। प्रतिदिन भिक्षा आहरण करना ब्रह्मचारीका कर्तव्य है किन्तु भिक्षान्न एक ही गृहस्थके घरसे ग्रहण करना उचित नहीं। भिक्षान्न द्वारा जीवन ब्रह्मचारीको उपवासविधान अतिरिक्त उपवासके समान बतलाया है।

ब्रह्मचारी देवोद्देश्यसे अनुष्ठित श्राद्धकार्योंमें निमन्त्रित हो कर इच्छानुसार मधुमांसादि वर्जित अन्न और ऋषियोंके उद्देश्यसे श्राद्धमें निमन्त्रित हो कर व्रत अविरुद्ध अन्न ग्रहण कर सकते हैं। इस प्रकारसे ब्राह्मण ब्रह्मचारीको भोजन करनेसे भी व्रत भिक्षाचर्या हानि नहीं होगी। परन्तु क्षत्रिय और ब्रह्मचारीके लिए इस प्रकार भोज व्यवस्थामें ... नहीं विधान किया है। क्षत्रिय और वैश्य ब्रह्मचारियोंके लिए भिक्षाचरण विहित हुआ है परन्तु श्राद्धान्न भोजनकी विधि उनके लिए नहीं है। ब्रह्मचारी गुरु द्वारा आदिष्ट हों या न हों स्वयं प्रति दिन वेदाध्ययन और गुरुके हितानुष्ठानमें तत्पर होना ही पड़ेगा। प्रति दिन शरीर, वाक्य, बुद्धि और मनको संयत करके कृताञ्जलि पुटसे वे गुरुके मुखकी ओर दृष्टि लगा कर खड़े होंगे। ब्रह्मचारी सर्वदा गुरुके समान उनसे हीनासनपर और हीन वस्त्र परिधान करेंगे। गुरुसे पहले उठना और गुरुके पश्चात् शयन करना भी उनके कर्तव्यमें शामिल है। लेटे या बैठे हुए, भोजन करते हुए अथवा दूसरी ओर मुँह फेरे हुए या दूसरी तरफ मुँह किये गुरुकी आज्ञा ग्रहण करना या उनसे बातचीत करना उचित नहीं। गुरुके समक्ष शिष्यका आसन और शय्या सब तरह अनुन्नत होना चाहिए। गुरुके पीछे भी, उनका नाम उच्चारणादि पूर्वक गुरुका नाम उच्चारण नहीं करना चाहिए। उपहास बुद्धिसे भी गुरुके गमन और कथनादिका अनुकरण करना उचित नहीं है। ब्रह्मचारी किसी अवस्थामें भी गुरुके साथ एक आसन पर न बैठें और गुरुका सवर्ण ज्ञाति गुरुकी तरह पूजा करें तथा असवर्ण ज्ञातिका प्रत्युत्थान और अभिवादन द्वारा सम्मान करें। परन्तु वे गुरुपत्नीका शरीरमर्दन, गात्रमर्दन, केशसंस्कार या स्नानादि नहीं करा सकते। युवा ब्रह्मचारी तरुणी गुरुपत्नीको कभी भी पादग्रहण द्वारा अभिवादन नहीं कर सकता। इस लोकमें मनुष्योंको दूषित करना ही स्त्रियोंका स्वभाव है। इस कारण पण्डित अर्थात् विवेकी पुरुषोंको स्त्रियोंसे सावधान रहना चाहिए। इन्द्रियां अतिशय बलवान हैं, इसलिए विद्वान् व्यक्तिके लिए भी सावधानता आवश्यक है।

ब्रह्मचारीको सूर्योदय या सूर्यास्तके समय कदापि सोते न रहना चाहिए। यदि, वह इसके लिए सावधान न रहे तो पातकका भागी है। जान बूझ कर हो या अज्ञान वश, जहाँ सूर्य उदय या अस्त हुआ, उस दिन उपवास और जप करना चाहिए। यदि वे प्रायश्चित्त न करें तो उन्हें महापातकका पाप लगेगा।

ब्रह्मचारीको इन सब नियमोंका पालन कर जीवनका चतुर्थ भाग गुरु-गृहमें बिताना चाहिए। ब्रह्मचर्याश्रम के बाद उन्हें गुरुगृहसे लौट कर दार परिग्रह यानी विवाह करके गृही बनना चाहिए। (मनु० ३ अ०)

सामान्य ब्रह्मचर्य द्विज मात्रको ही धारण करना चाहिए, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों जातियोंको ही ब्रह्मचर्य अवलम्बन करना चाहिए। ब्रह्मचारी अवस्थामें विशेष पीडादिके सिवा एक स्थानाहृत अन्न भोजन नहीं करना चाहिए। क्षत्रिय और वैश्य ब्रह्मचारीको श्राद्ध भोजनमें अधिकार नहीं है। ब्रह्मचारीको ही मधु, मांस, अञ्जन, गुरुके सिवा अन्य व्यक्तिका उच्छिष्ट भोजन, निष्ठुर वाक्य प्रयोग, स्त्री समोग, जीव-हिंसा, उदयास्त समयमें सूर्यदर्शन, अश्लील अर्थात् मिथ्यावाक्य वा जुगुप्सित वाक्य तथा परिवाद अर्थात् सत्य हो वा असत्य दूसरेका दोषोद्घोषण आदि त्याग देना चाहिए। ब्रह्मचारीको एक एक वेदके अध्ययनमें बारह वर्ष ब्रह्मचर्य पालन करना चाहिए, इसमें असमर्थ होनेसे पांच पांच वर्ष तो ब्रह्मचर्य धारण करना ही चाहिए।

नैष्ठिक ब्रह्मचारीको आचार्यके समक्ष, आचार्यके अभावमें उनके पुत्रके समीप, उनके अभावमें आचार्य पत्नीके समक्ष और उनकी अनुपस्थितिमें अग्निहोत्रीय अग्निके समक्ष यावज्जीवन वास करना चाहिए। जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी उक्त विधिके अवलम्बन पूर्वक प्रमसे देहत्याग करे, तो उन्हें मुक्ति प्राप्त होती है। इस संसार में फिर उन्हें जठर यन्त्रणा नहीं भोगनी पड़ती।

(याज्ञवल्क्यस० १ अ०)

ब्रह्मचर्य दो प्रकारका है—एक उपकुर्वाण और दूसरा नैष्ठिक। जो विधि पूर्वक वेद अध्ययन करनेके बाद गृहस्थाश्रम अवलम्बन करते हैं उन्हें उपकुर्वाण और जो मरणान्त पर्यन्त ब्रह्मचर्यसे रहते हैं, उन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते हैं। (कूर्मपु० २ अ०)

विष्णुपुराणमें लिखा है,—उपनयनके बाद ब्रह्मचर्य अवलम्बन पूर्वक गुरुगृहमें वेदाध्ययन करना चाहिए।

"बालः कृतोपनयनो वेदाहरणतत्परः।
गुरुगेहे वसेद्भूप! ब्रह्मचारी समाहितः॥"

(विष्णुपु० ३।९।१)

७ गन्धक विशेष, एक गन्धक।

ब्रह्मचारिणी (सं० स्त्री०) ब्रह्मणि वेदे चरतीति ब्रह्म-चर णिनि, स्त्रियां ङीप्। १ दुर्गा, पार्वती। २ ब्रह्मचर्य धारिणी स्त्री। ३ करुणी वृक्ष। ४ ब्राह्मीशाक। ५ सरस्वती। ६ ब्रह्मयष्टिका, वरङ्गा।

ब्रह्मचोदन (सं० त्रि०) यज्ञके प्रति ब्राह्मणोंका प्रेरक।

ब्रह्मज (सं० पु०) ब्रह्मणो जायते जन ड। १ हिरण्यगर्भ। हिरण्यगर्भ सृष्टिके पहले ब्रह्मसे सृष्ट हुए। ब्रह्मने अपने शरीरमें विविध प्रजा-सृष्टिकी इच्छा करके पहले जलकी सृष्टि की। पीछे उसमें बीज डाला गया जिससे एक अण्ड निकला। उस अण्डसे सर्वलोकपितामह ब्रह्माकी उत्पत्ति हुई। अतएव ब्रह्मा ब्रह्मज हैं। २ ब्रह्मजात मात्र, पञ्चभूतादि, अन्न जगत् प्रभृति।

"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते" (श्रुति)

जिससे इन भूतोंकी सृष्टि हुई, वही ब्रह्मज है। ब्रह्म ही इस जगतके मूल हैं, उन्हीं से इस जगत्की सृष्टि, स्थिति और लय हुआ करता है।

ब्रह्मजटा (सं० स्त्री०) ब्रह्मणो जटेव सदृशा। दमनक वृक्ष, दौनेका पौधा।

ब्रह्मजन्म (सं० क्ली०) ब्रह्मग्रहणार्थं जन्म। उपनयन संस्कार, उपनयन देनेसे ही ब्रह्मजन्म होता है।

"उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान् ब्रह्मदः पिता।
ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥"

(मनु २।१४६)

ब्रह्मजाया (सं० स्त्री०) १ ब्राह्मणपत्नी। २ जुहू। ये ऋग्वेद के १०।१०९ सूक्तकी ऋषि थे।

ब्रह्मजार (सं० पु०) १ ब्राह्मणीका उपपति। २ इन्द्र।

ब्रह्मजिज्ञासा (सं० स्त्री०) ब्रह्मण जिज्ञासा। १ ब्रह्मगति फलक विचार। २ शारीरक सूत्र। वेदान्त दर्शन।

ब्रह्मजीवी (सं० पु०) श्रौत आदि कर्म करा कर जीविका चलानेवाला।

ब्रह्मजुष्ट (सं० क्ली०) ब्रह्मणा जुष्ट। स्तव या मन्त्रसे प्रीत।

ब्रह्मजूत (सं० त्रि०) स्तोत्र द्वारा आकृष्ट।

ब्रह्मज्ञ (सं० पु०) ब्रह्म जानातीति ब्रह्म-ज्ञा-क। १ श्रीगोपाल। २ विष्णु। ३ कार्त्तिकेय। (त्रि०) ४ ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मको जाननेवाला।

[illegible] (स॰ व्र॰ १।३) इत्यादि श्रुतियोंसे ब्रह्मज्ञान । २ प्रत्यक्ष [illegible] ज्ञान, तत्त्वमसि आदि वाक्य जन्य प्रतिपादित पूर्णब्रह्म ज्ञान । ( [illegible] ) ३ [illegible] [illegible] आत्मज्ञान [illegible] । ( [illegible] ) ३ [illegible] [illegible] विषयक ज्ञान । ४ प्रकृति पुरुषके विवेक विषयक ज्ञान । ( [illegible] ) ५ आत्मज्ञान, आत्मानुभूति, अपने आत्माका यथार्थ अनुभव, ब्रह्मज्ञान । ( [illegible] )

आत्माका निश्चय वेदान्तमें इस प्रकार है, - अपने [illegible] [illegible] अलग होना ही प्रधान है। जैसे घट शरीरादि अन्य, ज्ञात है वैसे ही आत्मा द्वारा ज्ञात है। [illegible] द्रष्टा [illegible] है वह ही आत्मा है। पहले इस बातको सर्वत्र और दृढ़ करना चाहिये। अर्थात् 'मैं ही घट ज्ञान हूँ' और उसका आधार यह देह है, इन्द्रिय और मन सभी कुछ ज्ञान विषयका विकार है और कुछ नहीं', अर्थात् 'मैं ज्ञान हूँ और मैं ज्ञानका आधार हूँ।' यह सब प्रपञ्च वस्तु सबका नाश मिथ्या है, ऐसा ज्ञान जब अविच्छिन्न हो जाता है, तब वही ज्ञान 'अहं' अर्थात् 'मैं' जो ज्ञान है, वह इन्द्रिय और मन सबको त्याग कर स्वयंमें आ कर अपवाद किया करता है। 'अहं' ज्ञान [illegible] होनेसे ही प्रधान होता है। इसीको तत्त्वज्ञान या आत्मज्ञान भी कहा जा सकता है।

पर ही जीव [illegible] और अन्यान्य जीवोंमें विचार [illegible] है। यही पर [illegible] [illegible] हो जाता है और पर [illegible] [illegible] [illegible] उपाधियोंसे अर्थात् आधार (देहादि) [illegible] [illegible] [illegible] हो जाता है। वस्तुतः पर [illegible] अतिरिक्त [illegible] नहीं है। उपाधिके दूर होने पर ही [illegible] [illegible]। [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] अथवा [illegible] ज्ञान करता है। क्योंकि, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रकट होता है, [illegible] [illegible] होता है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] आत्मज्ञान है, [illegible] है। वे सब [illegible] [illegible] [illegible]

लिया और कुछ नहीं है। ऐसा प्रतीति सुदृढ़ होना चाहिए, और प्रतीतिके सुदृढ़ या अविचलित होने ही जीव अपने ब्रह्मका साक्षात्कार कर कृतार्थ हो सकता है। इसीप्रकार गुरु जिस समय शिष्यको और मुमुक्षु जिसका तत्त्वमसि 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इत्यादि महावाक्योंका उपदेश करते हैं, उस समय उनके द्वारा इन वाक्योंका तात्पर्य पूर्वोक्त प्रकार प्रतीति अर्थात् [illegible] [illegible] और अपरोक्ष ब्रह्मबोध उपस्थित होता है। तत्पश्चात् वही ज्ञान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रविष्ट हो कर जीवका कृतार्थ कर देता है।

श्रवणादिके बाद दो प्रकारका वाक्य ज्ञान होते देखा जाता है, एक परोक्षरूपसे और दूसरे अपरोक्षरूपसे। [illegible] वस्तु श्रोताके समक्षमें (प्रत्यक्ष भावमें) होनेसे तद्बोधक वाक्य तद्वस्तु विषयमें अपरोक्ष ज्ञान उत्पन्न करता है और असमक्षमें होनेसे परोक्षज्ञान करता है।

'तत्त्वमसि' आदि महावाक्य ही शिष्योंको प्रत्यक्ष भ्रान्तिको दूर कर ब्रह्मका साक्षात्कार करा देते हैं। कारण, [illegible] ही [illegible] अनादि अनिर्वचनीय अज्ञानसे 'मैं अमुक हूँ' इस प्रकार भाव या परिच्छेद भ्रान्तिमात्र और और हो कर बैठता है। सुतरां अद्वय ब्रह्मबोधक तत्त्व मसि आदि महावाक्य ही अपना [illegible] भ्रान्तभावोंको दूर कर ब्रह्मस्वरूपका साक्षात्कार करानेमें समर्थ है। उपदेशानन्तर तत्त्वमसि आदि महावाक्य जिज्ञासु शिष्यके मनमें [illegible] उदित करते हैं। उनके द्वारा [illegible] उसका 'मैं अमुक हूँ' यह भ्रान्तिवृत्ति विदूरित या विलुप्त होता है। उस समय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर्थात् ब्रह्मभाव स्थिर होता है। यह [illegible] ब्रह्मज्ञान या [illegible] है।

[illegible] [illegible] और अज्ञानको [illegible] ज्ञान और [illegible] चैतन्य और अचैतन्य [illegible] विरोधा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, कि विरोधा [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] और देखने

हुए ब्रह्ममें अज्ञानका आवेश मानना अन्याय है। कारण, ज्ञान और अज्ञान एकत्र रह ही नहीं सकते, यह नियम है।

निपुण हो कर अनुसन्धान करनेसे मालूम होता है कि चैतन्यकी पार्श्वचर शक्ति अज्ञान है और उसकी सत्ता चैतन्य सत्ताके अधीन है। ये दोनों परस्पर प्रतियोगी हो कर भी परस्परके स्वरूपके बोधक हैं। अन्धकारकी सत्ता न रहनेसे किसकी सामर्थ्य है, कि आलोकको सिद्ध कर सके? जड़ न रहनेसे और अज्ञानका अभाव होनेसे कौन चेतन और ज्ञानकी सत्ता पर विश्वास ला सकता है? वस्तुतः प्रत्येक आलोक और प्रत्येक चेतनके अधीन अन्धकार और अज्ञानकी अवस्था न देखा जाता है। कौनसे चेतनका अज्ञानसे सम्बन्ध नहीं है? सम्पूर्ण चेतन जीवोंमें अज्ञानका सम्बन्ध देख कर निश्चय किया जा सकता है, कि अज्ञान चेतनकी पार्श्वचर शक्ति है। छाया जैसे आलोककी पार्श्वचर है, वैसे ही अज्ञान भी ज्ञानका पार्श्वचर है। ये दोनों ही शक्तियां कोई एक अनिर्वाच्य सम्बन्धसे कभी दूरमें कभी निकटमें, कभी प्रकाश्यरूपमें और कभी अप्रकटरूपमें आलोक और ज्ञानके साथ देखी या सुना जाती हैं। सुविधा यह है, कि परस्पर विरुद्ध स्वभावान्वित हैं, साक्षात् सम्बन्धमें देखी नहीं जा सकती। जैसे अन्धकारके समय आलोकका नाश हो जाता है, उसी प्रकार अज्ञानके समय ज्ञानका और ज्ञानके समय अज्ञानका तिरोभाव हो जाता है। ज्ञान होते ही अज्ञान भाग जायगा, यह स्थिर होनेसे ही हम अज्ञानके निवारणार्थ प्रयत्न करते हैं। अज्ञानसे ही संसार है, संसार और कुछ भी नहीं है। अतएव चेतन अद्वय ब्रह्मकी पार्श्वचर शक्ति अज्ञान है, उसके प्रादुर्भावमें अन्तःकरणादिकी उत्पत्ति है, अनन्तर ये अन्तःकरणादि परिच्छिन्न जीव हैं, और उसीके तिरोभावसे अपरिच्छिन्न और निरञ्जन होते हैं। क्या अन्तः प्रपञ्च और क्या बाह्य प्रपञ्च, सभी कुछ अज्ञानका विलास है, इसीलिए इन सबको भ्रान्तिका विजृम्भण कहा गया है।

"अस्ति भाति प्रियं रूपं नाम चेत्यंशपञ्चकम्।
आद्यत्रयं ब्रह्मरूपं जगद्रूपं ततो द्वयम्॥"

शक्तिरूपी ब्रह्माश्रित अज्ञानने ब्रह्म या ब्रह्मका जगत् देखा है। इसीलिए जगत् और ब्रह्म अब मिश्रित या एक मालूम पड़ता है। यही कारण है, कि प्रत्येक द्रव्य ही पञ्चरूपी दिखाई देता है। जैसे, १ अस्ति—है, २ भाति—भासता या प्रकाशित होता है, ३ प्रिय—अच्छा लगता है, ४ रूप—यह इस प्रकार है, ५ नाम—यह अमुक वस्तु है। इस प्रकार पञ्चरूपमें प्रथमोक्त तीन प्रकार ब्रह्म और अवशिष्ट दो प्रकार जगत् अर्थात् अज्ञान विकार है। अज्ञान विकार या जगत् परमार्थतः सत्य नहीं है, इसलिए कहा जाता है, कि जगत् मिथ्या और ब्रह्म सत्य है।

अज्ञानके समय अर्थात् संसार-दशामें 'अहं' मैं, यह वृत्ति अस्थिर या अनिश्चतरूपसे उदित रहती है। संसार-कालका अहं ज्ञान एकाकार नहीं है इसीलिए यह अप्रमा अर्थात् मिथ्या है। विचारना चाहिए, कि अज्ञान कालका अहं कभी मन, कभी इन्द्रिय और कभी शरीरका आधार बना कर अवस्थान करता है। पूर्ण चैतन्यकी ओर अग्रसर नहीं होता। सुतरां संसार कालका अहं ज्ञान अस्थिरता युक्त और सन्दिग्धकी तरह अप्रमा अर्थात् मिथ्या है। जननीके समान हिताभिलाषिणी श्रुति तत्त्वमसि आदि महावाक्यके उपदेश द्वारा उस अप्रमा या भ्रान्तिको दूर करनेमें प्रवृत्त है। श्रवण करनेमें असफल होनेसे मनन करना चाहिए और मनन में भी सफलता न होनेसे निदिध्यासन अवलम्बन करना उचित है।

श्रवण, मनन और निदिध्यासनमें अधिकार प्राप्ति और बुद्धिकी दुर्बलता निवारणके लिए पहले चित्तपरिकर्मकारक उपासना आवश्यक है। शम, दम, उपरति, श्रद्धा, समाधान आदि वेदोक्त अनुष्ठानमें रत रहनेसे चित्त निर्मल होता है। तभी श्रवणादि कार्यमें अधिकार उत्पन्न होता है। मनन निदिध्यासनके प्रभावसे प्रतिबन्धक अभाव प्राप्त होता है। प्रतिबन्धक अभाव प्राप्त होते ही श्रवणका फल ब्रह्मज्ञान ('अहं ब्रह्म' इत्याकार अनुभव) अपनेसे ही उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार ब्रह्मज्ञान होते ही मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होता है। अज्ञानान्धजीव मायामें मोहित हो कर सर्वदा सुखके लिये दुःख भोग रहा है। जीवके अज्ञानको नष्ट करनेके

ब्रह्मज्ञान (सं० क्ली०) ब्रह्मणि ब्रह्मविषये यज्ज्ञानं। १ ब्रह्म विषयक ज्ञान, तत्त्वमसि आदि वाक्य जन्य प्रतिफलित वृत्त्यारूढ ज्ञान। (वेदान्तलघुचन्द्रिका) २ मिथ्यावासना विरह विशिष्ट आत्मभिन्न भिन्नज्ञान। (मुक्तिवाद) ३ क्लेशकर्मविपाकाशयनिरासक हिरण्यगर्भ विषयक ज्ञान ४ प्रकृति पुरुषके विवेक विषयक ज्ञान। (सांख्यद०) ५ आत्मज्ञान, स्वानुभूति, अपने आत्माका यथार्थ अनुभव, केवलज्ञान। (जैनदर्शन)

ब्रह्मज्ञानका विषय वेदान्तमें इस प्रकार है,—अपने ब्रह्मभावका अपरोक्षज्ञानमें आरूढ होना ही ब्रह्मज्ञान है। जैसे मरु मरीचिकामें जलकी भ्रान्ति है, वैसे ही ब्रह्ममें दृश्य भ्रान्ति है। सुतरां दृश्य प्रपञ्च मिथ्या है, ब्रह्म ही सत्य है। पहले इस ज्ञानको अर्जन और दृढ करना चाहिए। अनन्तर 'मैं ही यह ज्ञान हूं और उसका आधार यह देह है, इन्द्रिय और मन सभी कुछ भ्रान्ति विशेषका विलास है और कुछ नहीं"। सुतरां "मैं ज्ञान हूं और मैं ज्ञानका आधार हूं।" यह सब ब्रह्ममें रज्जु सर्प की तरह मिथ्या है, ऐसा ज्ञान जब अविचल हो जाता है, तब अपने आप 'अहं' अर्थात् 'मैं' जो ज्ञान है, वह इन्द्रिय और मन सबको त्याग कर ब्रह्ममें जा कर अवगाह किया करता है। 'अहं' ज्ञान ब्रह्मावगाही होनेसे ही ब्रह्मज्ञान होता है। इसको तत्त्वज्ञान वा आत्मज्ञान भी कहा जा सकता है।

एक ही चैतन्य हममें और अन्यान्य जीवोंमें विराज मान है। वही एक अखण्ड चैतन्य ही ब्रह्म है और वही अनादि अनन्त ब्रह्मचैतन्य उपाधिभेदसे अर्थात् आधार (देहादि)-भेदसे विभिन्नभाव भासके सदृश हो जाता है। वस्तुतः वह अभिन्नके अतिरिक्त विभिन्न नहीं है। उपाधिके दूर होते ही एक है, अन्यथा बहुत। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल, यह लोकत्रय ब्रह्मचैतन्यमें अवभासित है अथवा मायिकरूपमें दीख पड़ता है। क्योंकि, जिस प्रकार एकाद्वय महान् व्यापिचैतन्यमें स्वाश्रित अज्ञानके प्रभावसे विश्वरूप इन्द्रजाल प्रकट होता है, उसी प्रकार विश्व मिथ्या है। केवल प्रकाशक चैतन्य ही सत्य है और तो क्या, सत्य चैतन्यमें जो जो भासमान हैं, वे भी असत्य हैं। ये सब चैतन्याश्रित अज्ञानके विलासके सिवा और कुछ नहीं हैं। ऐसी प्रतीति सुदृढ होना चाहिए, और प्रतीतिके सुदृढ वा अविचलित होते ही जीव अपने ब्रह्मत्वका साक्षात्कार कर कृतार्थ हो सकता है। ज्ञानिमान् गुरु जिस समय विवेकी और मुमुक्षु शिष्यको 'तत्त्वमसि' 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इत्यादि महा वाक्योंका उपदेश करते हैं, उस समय उनके द्वारा उक्त वाक्यकी सामर्थ्यसे पूर्वोक्त प्रकार प्रतीति अर्थात् विश्वका मिथ्यात्व और अपनेमें ब्रह्मत्वबोध उपस्थित होता है। अनन्तर वही ज्ञान साधनके बलसे अपरोक्ष पथमें प्रविष्ट हो कर जीवको कृतार्थ कर देता है।

श्रवणादिके बाद दो प्रकारसे वाक्य बोध होते देखा जाता है, एक परोक्षरूपसे और दूसरे अपरोक्षरूपसे। वाक्प्रकाश्य वस्तु श्रोताके समक्षमें (प्रत्यक्ष मार्गमें) होनेसे तद्बोधक वाक्य तद्वस्तु विषयमें अपरोक्ष ज्ञान उत्पन्न करता है और असमक्षमें होनेसे परोक्षज्ञान करता है।

'तत्त्वमसि' आदि महावाक्य ही शिष्योंकी मनुष्य भ्रान्तिको दूर कर ब्रह्मका साक्षात्कार करते रहते हैं। कारण, ब्रह्म ही स्वाश्रित अनादि अनिर्वाच्य अज्ञानसे 'मैं अमुक हूं' इस सद्वय भाव वा परिच्छेद भ्रान्तिप्राप्त और जीव हो कर मौजूद हैं। सुतरां अद्वय ब्रह्मबोधक तत्त्व मसि आदि महावाक्य ही अपनी उस स्वात्मभ्रान्तिको दूर कर ब्रह्मस्वरूपका साक्षात्कार करानेमें समर्थ है। उपदेशात्मक तत्त्वमसि आदि महावाक्य जिज्ञासु शिष्यके मनमें ब्रह्माकारावृत्ति उदित करती है। उसके द्वारा क्रमसे उनकी 'मैं अमुक हूं' यह भ्रान्तिवृत्ति विदूरित वा निवृत्त होती है। उस समय उसके वह चिरसिद्ध अद्वय भाव अर्थात् ब्रह्मभाव स्थिर होता है। यह अद्वय ब्रह्मभाव ही ब्रह्मज्ञान है।

यद्यपि आलोक और अन्धकारकी तरह ज्ञान और अज्ञान अर्थात् चैतन्य और अचैतन्य परस्पर विरोधी पदार्थ हैं, तथापि उनके अभिभाव्य अभिभावकभाव अप्र त्याख्येय हैं। इसका तात्पर्य यह है, कि विरोधी पदार्थ का सहावस्थान नहीं होता। जैसे आलोक और अन्ध कार एक साथ नहीं रह सकते, वैसे ही ज्ञान और अज्ञान कभी भी एक साथ नहीं रह सकते। यह देखते

हुए ब्रह्ममें अज्ञानका आवेश मानना अन्याय है। कारण, ज्ञान और अज्ञान एकत्र रह ही नहीं सकते, यह नियम है।

निपुण हो कर अनुसन्धान करनेसे मालूम होता है कि चेतनकी पार्श्वचर शक्ति अज्ञान है और उसकी सत्ता चैतन्य सत्ताके अधीन है। ये दोनों परस्पर प्रतियोगी हो कर भी परस्परके स्वरूपके बोधक हैं। अन्धकारकी सत्ता न रहनेसे किसकी सामर्थ्य है, कि आलोकको सिद्ध कर सके? जड़ न रहनेसे और अज्ञानका अभाव होनेसे कौन चेतन और ज्ञानकी सत्ता पर विश्वास ला सकता है? वस्तुतः प्रत्येक आलोक और प्रत्येक चेतनके अधीन अन्धकार और अज्ञानका अवस्था न देखा जाता है। कौनसे चेतनका अज्ञानसे सरोकार नहीं है? सम्पूर्ण चेतन जीवोंमें अज्ञानका सम्बन्ध देख कर निश्चय किया जा सकता है, कि अज्ञान चेतनकी पार्श्वचर शक्ति है। छाया जैसे आलोककी पार्श्वचर है, वैसे ही अज्ञान भी ज्ञानका पार्श्वचर है। ये दोनों ही शक्तियां कोई एक अनिर्वाच्य सम्बन्धसे कभी दूरमें कभी निकटमें, कभी प्रकाश्यरूपमें और कभी अप्रकटरूपमें आलोक और ज्ञानके साथ देखी या सुनी जाती हैं। सुविधा यह है, कि परस्पर विरुद्ध स्वभावान्वित हैं, साक्षात् सम्बन्धसे देखी नहीं जा सकती। जैसे अन्धकारके समय आलोकका नाश हो जाता है, उसी प्रकार अज्ञानके समय ज्ञानका और ज्ञानके समय अज्ञानका तिरोभाव हो जाता है। ज्ञान होते ही अज्ञान भाग जायगा, यह स्थिर होनेसे ही हम अज्ञानके निवारणार्थ प्रयत्न करते हैं। अज्ञानसे ही संसार है, संसार और कुछ भी नहीं है। अखण्ड चेतन अद्वय ब्रह्मकी पार्श्वचर शक्ति अज्ञान है, उसके प्रादुर्भावमें अन्तःकरणादिकी उत्पत्ति है, अनन्तर ये अन्तःकरणादि परिच्छिन्न जीव हैं, और उसीके तिरोभावसे अपरिच्छिन्न और निरञ्जन होते हैं। क्या अन्तःप्रपञ्च और क्या बाह्य प्रपञ्च, सभी कुछ अज्ञानका विलास है, इसीलिए इन सबको भ्रान्तिका विजृम्भण कहा गया है।

"अस्ति भाति प्रियं रूपं नाम चेत्यंशपञ्चकम्।
आद्यत्रयं ब्रह्मरूपं जगद्रूपं ततो द्वयम्॥"

शक्तिरूपी ब्रह्माश्रित अज्ञानने ब्रह्म या ब्रह्मका जगत् देखा है। इसीलिए जगत् और ब्रह्म अब मिश्रित या एक मालूम पड़ता है। यही कारण है, कि प्रत्येक दृश्य ही पञ्चरूपी दिखाई देता है। जैसे, १ अस्ति—है, २ भाति—भासता या प्रकाशित होता है, ३ प्रिय—अच्छा लगता है, ४ रूप—यह इस प्रकार, है, ५ नाम—यह अमुक वस्तु है। इस प्रकार पञ्चरूपमें प्रथमोक्त तीन प्रकार ब्रह्म और अवशिष्ट दो प्रकार जगत् अर्थात् अज्ञान विकार है। अज्ञान विकार या जगत् परमार्थतः सत्य नहीं है, इसलिए कहा जाता है, कि जगत् मिथ्या और ब्रह्म सत्य है।

अज्ञानके समय अर्थात् संसार-दशामें 'अहं' मैं, यह वृत्ति अस्थिर या अनिश्चितरूपसे उदित रहती है। संसार कालका अहं ज्ञान एकाकार नहीं है इसीलिए यह अप्रमा अर्थात् मिथ्या है। विचारना चाहिए, कि अज्ञान कालका अहं कभी मन, कभी इन्द्रिय और कभी शरीरका आधार बना कर अवस्थान करता है। पूर्ण चैतन्यकी ओर अग्रसर नहीं होता। सुतरां संसार कालका अहं ज्ञान अस्थिरता युक्त और सन्दिग्धकी तरह अप्रमा अर्थात् मिथ्या है। जननीके समान हिताभिलाषिणी श्रुति तत्त्वमसि आदि महावाक्यके उपदेश द्वारा उस अप्रमा या भ्रान्तिको दूर करनेमें प्रवृत्त है। श्रवण करनेमें असफल होनेसे मनन करना चाहिए और मननमें भी सफलता न होनेसे निदिध्यासन अवलम्बन करना उचित है।

श्रवण, मनन और निदिध्यासनमें अधिकार प्राप्ति और बुद्धिकी दुर्बलता निवारणके लिए पहले चित्तपरिष्कारक उपासना आवश्यक है। शम, दम, उपरति, श्रद्धा, समाधान आदि वेदोक्त अनुष्ठानमें रत रहनेसे चित्त निर्मल होता है। तभी श्रवणादि कार्यमें अधिकार उत्पन्न होता है। मनन निदिध्यासनके प्रभावसे प्रतिबन्धक अभाव प्राप्त होता है। प्रतिबन्धक अभाव प्राप्त होते ही श्रवणका फल ब्रह्मज्ञान ('अहं ब्रह्म' इत्याकार अनुभाव) अपनेसे ही उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार ब्रह्मज्ञान होते ही मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होता है। अज्ञानबद्धजीव मायामें मोहित हो कर सर्वदा सुखके लिये दुःख भोग रहा है। जीवके अज्ञानको नष्ट करनेके

लिए ब्रह्मज्ञानकी बहुत बडी आवश्यकता है और उसकी प्राप्तिके लिए तत्त्वमसि वाक्य श्रवण, मनन और निदिध्यासन नितान्त आवश्यक कर्त्तव्य है।

"वेदान्तसांख्यसिद्धान्तब्रह्मज्ञानं वदाम्यहम्।
अहं ब्रह्म परं ज्योतिर्विष्णुरित्येव चिन्तयेत्॥
यरें छोम्नि ब्रह्मो च ज्योतिरर्रं त्रिधा स्थितम्॥" इत्यादि
(गरुडपु० २४० अ०)

गरुडपुराणमें पूर्वोक्त वाक्यका ही समर्थन किया गया है, इसलिए बाहुल्यके भयसे उसका उल्लेख नहीं किया जा सका। विशेष विवरणके लिए ब्रह्म और वेदान्त शब्द देखना चाहिए।

ब्रह्मज्ञानी (सं० त्रि०) ब्रह्मज्ञानं विद्यतेऽस्य, ब्रह्म ज्ञान इनि। ब्रह्मज्ञान विशिष्ट, परमार्थ तत्त्वका बोध रखनेवाला।

ब्रह्मज्य (सं० त्रि०) ब्राह्मणके ऊपर अत्याचार करनेवाला।

ब्रह्मज्येय (सं० क्ली०) ब्राह्मणनिग्रह, ब्राह्मणके ऊपर दौरात्म्य।

ब्रह्मज्येष्ठ (सं० पु०) १ ब्रह्माके ज्येष्ठ सहोदर। (त्रि०) २ ब्रह्मप्रधान।

ब्रह्मज्योतिस् (सं० क्ली०) १ शिव। २ ब्रह्म या देवता की ज्योति। (त्रि०) ३ ब्रह्मतेज, ब्रह्मद्युति।

ब्रह्मणस्पति (सं० पु०) ब्रह्मण पति अलुक्समास। १ ब्राह्मण जाति स्वामी। २ मन्त्रस्वामी।

ब्रह्मण्य (सं० पु०) ब्राह्मणे हितं ब्रह्मन् (राजन्यामात्यविब्रह्म ब्रह्मण्याम्च। ५।१।७) इति यत् (येचाभाव कर्मणो। पा ६।४।१६८) इत्यण् प्रकृत्या। १ विष्णु। २ ब्रह्मदारुवृक्ष। ३ मुञ्जतृण। ४ तूलवृक्ष। ५ शनैश्चर। ६ कार्त्तिकेय। ७ दुर्गा। ८ स्तोत्र। (त्रि०) ९ ब्रह्मविषयमें साधु। १० ब्रह्मसम्बन्धी।

ब्रह्मण्यदेव (सं० पु०) ब्रह्मण्ये देव। श्रीकृष्ण।

ब्रह्मण्यता (सं० स्त्री०) ब्रह्मणस्य भाव तल् टाप्। ब्राह्मण का धर्म या भाव।

ब्रह्मण्यतीर्थ (सं० पु०) आचार्यभेद।

ब्रह्मता (सं० स्त्री०) ब्रह्मणो भाव तल् टाप्। ब्रह्मत्व।

ब्रह्मताल (सं० पु०) १ चतुर्दशताल। यह दश ताला त्मक है। इसमें मात्राएं ७ हैं, क च ट त प इन पञ्चाक्षरोंके उच्चारणकाल मात्रा है। प्रथमलघुमात्रा, तदर्द्ध द्रुत मात्रा, उसमें ४ लघु और ६ द्रुत हैं। ।०।०० ।००० ऐसी मात्राएं हैं।

'चतुर्दशाभिधं ताले अगणान्तर प्लुत।" (सङ्गीतदामो०)

वाद्यका ताल विशेष, बाजेका एक ताल। यह चौदह पदका ताल है। इसमें दश ताल और चार खाली पड़ते हैं। जैसे—

| + | ० | १ | १ |
|---|---|---|---|
| धा गना | त्रेकटता | त्रेकटता | धुन्ना |
| ० | ० | । ० | । |
| धुन् धुन् | गेटेकटे | केटे | तेटे |
| १ | ० | १ | १ |
| केटे तेटे | गिरदिना | थिरटि | ता रिरटि |
| १ | १ | + | |
| तेटे कटे | तेटे केटे | गेड़े घनि । धा | |

ब्रह्मतीर्थ (सं० क्ली०) ब्रह्मणस्तीर्थं। १ पुष्करमूल। २ रेवाके तट पर एक प्राचीन तीर्थ। इस तीर्थमें स्नान करनेसे अन्य वर्णको ब्रह्मण्य लाभ और ब्राह्मणको परमागति प्राप्त होती है। (भारत ३।८३।१०५)

ब्रह्मतेजस् (सं० क्ली०) १ ब्रह्मशक्ति। (त्रि०) ब्रह्मणस्तेज इव तेजो यस्य। २ ब्रह्माकी तरह तेज शाली।

ब्रह्मत्व (सं० क्ली०) ब्रह्मणो भाव (तस्यभावस्त्व। पा ५।१।११९) इति त्व। १ शुद्धका भाव। २ ब्राह्मणत्व। ३ ब्रह्मा नामक ऋत्विक् मुनिका भाव या धर्म।

ब्रह्मदन् (सं० पु०) १ सप्तपर्णवृक्ष। २ ब्राह्मणयष्टिका, भारगी।

ब्रह्मद (सं० पु०) ब्रह्मवेदं ददाति, दा-क। वेददाता आचार्य। उपनयनके बाद गुरु शिष्यको वेदप्रदान करते हैं। ब्रह्मदाता गुरु जन्मदाता पिताकी अपेक्षा माननीय हैं।

"उत्पादक ब्रह्मदात्रोर्गरीयान् ब्रह्मद पिता।
ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥" (मनु २।१४६)

ब्रह्मदण्ड (सं० पु०) ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य दण्ड सिद्ध यष्टि १ ब्राह्मणयष्टिका, भारगी। २ वशिष्ठकी सिद्धयष्टि।

"धिग्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।
एकेन ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि मे॥"

३ ब्राह्मणका शापरूप दण्ड, ब्रह्मशाप। ४ विमकी यष्टि। ५ केतुभेद।

ब्रह्मदण्डी ( सं० स्त्री० ) ब्रह्मणे ब्रह्मोपासनार्थं दण्डी क्षुद्रो दण्डः। जङ्गलोंमें मिलनेवाली एक जडी। इसकी पत्तियों और फलों पर कांटे होते हैं। वैद्यकमें इसे गरम और कड़वी तथा कफ और वातनाशक माना गया है।

ब्रह्मदत्त ( सं० पु० ) १ इक्ष्वाकुवंशीय राजविशेष। इसका पर्याय ब्रह्मसूनु है। २ स्वनामख्यात नीपपुत्र। ( त्रि० ) ३ ब्रह्मकर्तृक दत्त, जो ब्रह्मने दिया गया हो। ४ ब्राह्मण को जो दिया गया हो। ( पु० ) ५ शुक्रदेवकी कन्या कृत्वीसमाख्याके गर्भसे उत्पन्न अणुहके एक पुत्रका नाम। हरिवंशके ११ वें अध्यायमें इसका उत्पत्ति-विवरण लिखा है।

ब्रह्मदर्भा (सं० स्त्री०) ब्रह्मणे हितो दर्भो यस्या। यमानिका, अजवाइन।

ब्रह्मदातृ ( सं० पु० ) ब्रह्म-दा तृच्। वेददाता आचार्य। ब्रह्मद देखो।

ब्रह्मदान ( सं० क्ली० ) ब्रह्मण वेदस्य दान। वेददान, वेदाध्यापन। सभी दानोंमें वेददान उत्कृष्ट है।

ब्रह्मदारु ( सं० क्ली० ) ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य हितकरो दारु। १ स्वनामख्यात अश्वत्थाकार वृक्षविशेष, शहतूत। पर्याय—तूत, पूग, क्रमुक, ब्रह्मण्य, तूद, पलाशिक, तल, पूग, यूप।

ब्रह्मदाय ( सं० पु० ) वेदका वह भाग जिसमें ब्रह्मका निरूपण हो।

ब्रह्मदेया ( सं० स्त्री० ) ब्रह्मणे देया। ब्रह्मविधिके अनुसार दया कन्या, ब्रह्मविवाहमें दी जानेवाली कन्या।

ब्रह्मदेश—भारतवर्षके पूर्वदिग्वर्त्ती ब्रह्मद्वीप*के अन्तर्गत वर्त्तमान अंगरेजाधिकृत एक राज्य। भू परिमाण २३७००० वर्गमील है जिनमेंसे १६९००० ब्रिटिश राज्यके अधीन और ६८००० वर्गमील स्वतन्त्र राज्य है।

जब ब्रह्मवासियोंका उत्पात असह्य हो गया तब अंगरेजोंने ब्रह्मदस्युके आक्रमणसे भारतसीमान्तकी रक्षाके लिए १८२४ और १८५२ ई०में दो युद्ध किये जिनमें उन्हें ब्रह्मराज्यका कुछ अंश युद्धव्ययकी क्षतिपूर्त्तिमें मिला। यही इतिहासमें अंगरेजाधिकृत ब्रह्म ( British Burma ) नामसे लिया है। शासनकार्यकी सुविधाके लिए अंगरेजोंने उस प्रदेशको चार विभाग और बीस जिलेमें बांट दिया। यान्दाबू-सन्धिके बाद आराकान और तेनासरीम विभाग भी भारतसाम्राज्यके अन्तर्गत हुआ। उसी समयसे अड़तीस वर्ष तक उक्त स्थानका शासनभार बङ्गालके छोटे लाटके ऊपर सौंपा गया। १८५३ ई०में पेगु और मात्तवान अंगरेजोंके अधिकारमें आया। १८६२ ई०में अंगरेजोंने उक्त चार प्रदेश एक साथ मिला दिये और सर अथर फेरी (Sir Arthur Phayre, The first Chief commissioner) को वहांका स्वतन्त्र शासनकर्त्ता बनाया।

बङ्गसीमा पर आक्रमण करनेका समुचित दण्डस्वरूप दक्षिण ब्रह्म ( Lower Burma )-का कुछ अंश अंगरेजों के हाथ सौंप कर सम्राट् आलोमपयाके वंशधर उत्तरब्रह्म (Upper Burma) की ओर चले गए और आवा नगरमें राजधानी बसा कर राजकार्य चलाने लगे। स्वाधीन-चेता ब्रह्मराजके उद्धत स्वभावको रोकने और उनके अनुचरवर्ग द्वारा अंगरेजप्रजा जो सताई जाती थी उसे निवारण करनेके लिये भारतराजप्रतिनिधि लार्ड डफरिनने १९८५ ई०के शेष भागमें मन्दालयकी ओर एक दल सेना भेजी। इस सेनादलने वहां जा कर राजसिंहासन छीन लिया और ब्रह्मराजको नजरबन्द कर भारतवर्ष भेज दिया। बड़े लाटने पहले मन्त्रिसभा ( Central Council of Burmese Ministers ) द्वारा वहांके राजकार्यकी देख-भाल करनेका विचार किया था, किंतु दुष्ट मन्त्रिदलके बुरे व्यवहार और आलराजपुत्रोंके सिंहासन पर अधिकार जमानेकी चेष्टाके हेतु गुप्तविग्रहसे उत्तेजित कर उन्होंने १८८६ ई०में सारा ब्रह्मसाम्राज्य अंगरेज शासनाधीन कर लिया। पहले प्रधान कमिश्नर द्वारा ही राजकार्य परिचालित होता था। अन्तमें सारे ब्रह्मके प्रधान शासनकर्त्ता स्वरूप एक लेफ्टेनेण्ट गवर्नर नियुक्त हुए हैं।

स्वाधीन ब्रह्मराज्य जब अंगरेजोंके अधिकारमें आया

* यूरोपीय भौगोलिकोंने इसे Eastern Peninsula या India beyond the Ganges नामसे उल्लेख किया है।

तब उसकी सीमा परिवर्त्तित हुई। पहले ब्रह्मराज्यकी जो सीमा थी, अंगरेज सरकार अब भी उसी विस्तीर्ण साम्राज्यका शासन करती है। यह अक्षा० ६ ५६´ से २७ ३०´ उ० तथा देशा० ९२ ११´ से १०१ ६´ पू०के मध्य अवस्थित है।

अंगरेजोंके हाथमें आनेके बाद ब्रह्मराज्यमें किसी किसी देशी शिल्पकी अवनतिके साथ साथ नाना विषयकी उन्नति भी हुई है। यद्यपि यह राज्य स्वाधीन था, तो भी यहाकी प्रजा सुखस्वच्छन्दसे एक दिन भी न बिताती थी। चोरी करना, दूसरेका धन छीन लेना, घर जला देना, जीवोंको मारना आदि अनेक प्रकारके बुरे काम यहांके अधिवासियोंका अङ्गभूषण था। किन्तु अंगरेजी शासनमें सभी प्रकारके अत्याचार जाते रहे।

यह देश पथरीला होनेके कारण यहां साल्वीन नदीकी अववाहिका प्रदेशमें धान, चना, मकई, गेहूं कलाई, तम्बाकू, रूई, सरसों और नील आदिकी अच्छी खेती होती है। इसके अलावा ब्रह्मवासीका अत्यन्त प्रिय चायका पौधा (Theodendron persicum) और अमरूद, केला, पपीता, इमली, नीबू, नारङ्गी आदि नानाजातिके फलवृक्ष भी यहां पाये जाते हैं। उत्तर ब्रह्ममें इरावती नदीकी चैङ्ग ढैङ्ग, मितङ्गे और शैले आदि शाखाएं बहती हैं। नाम क्ये नामक नदी मणिपुर और लुसाइ गिरिमालाके बीच हो कर बहती हुई चैङ्गढैङ्ग नदीमें मिल गई है। इसके सिवा बहुत-सी नदियां इरावती साल्वीन और थाल्वीन नदीका कलेवर बढ़ाती हुई भारतमहासागरमें गिरती हैं।

यहांके जङ्गलमें बहुत से शाल और सेगुनके पेड़ हैं तथा बढ़िया लाह और खरका गोंद भी पाया जाता है। ये सब द्रव्य वाणिज्यके लिए उत्तर और दक्षिण ब्रह्मसे रङ्गुण बन्दरमें ला कर नाना स्थानोंमें भेजे जाते हैं।

यह राज्य खनिज पदार्थका आकर है। यहां सोना, चांदी, तांबा, टीन, सीसा, रसाञ्जन, विस्माथ, पुखराज, कोयला, शिलातैल (Petroleum), गन्धक, सोडा, नमक, लोहा, मर्मर पत्थर आदि पाये जाते हैं। इसके अलावा मन्दालयके ३५ कोस उत्तर पूर्वमें बदिदा और वैसवीमतो नील तथा चुन्नी पत्थर पृथिवीमें गड़ा हुआ मिलता है। इस विस्तीर्ण भूभागमें निकाली हुई प्रस्तरराशि राजकोषमें ही रखी जाती हैं। यहांका चूना पत्थर सब देशोंमें प्रसिद्ध है।

नाफ नदीके मुहानेसे ले कर नेग्रेस अन्तरीप तक आराकान विभाग विस्तृत है। इसके उत्तर और पूर्व सीमास्थित आराकानयोम, पर्वतमालाके अयङ्ग गिरिसङ्कट हो कर इरावतीकी उपत्यकाभूमिमें जा सकते हैं। समुद्रोपकूलमें कई एक छोटे छोटे द्वीप हैं, उनमेंसे चेदूवा और रामरी ही प्रधान हैं। ये सब उपजाऊ हैं। नाफ नदीके सिवा यहां मयु कुलदन, तलक और अयङ्ग, आदि कई एक नदियां हैं। कुलदन या आराकान नदीके दक्षिण कूल पर आकयाव नगर बसा हुआ है। किन्तु पेगु और इरावती विभाग ही विशेष शस्यशाली है। यहां इरावती, ह्लैङ्ग या रङ्गून, पेगु और सितौङ्ग आदि नदियां बहती हैं। यही कारण है, कि उनके अववाहिका देश बहुत उपजाऊ हैं। लगभग १०४० मील पार कर इरावती नदी बङ्गोपसागरमें मिलती है। इस नदीमें ६०० मील तक नाव आ जा सकती है।

समुद्रोपकूल स्थित तेनासरीम विभाग अक्षा० १० से १८ उत्तरके मध्य बसा है। यहांकी प्रधान नदी है साल्वीन। यह नदी कहांसे निकली है, इसका आज तक भी पता नहीं लगा है, किन्तु यूनान प्रदेशके समीप ही इसका मूलस्रोत अनुमान किया जाता है। इस विभागकी पूर्वसीमामें जो पर्वतमाला दिखाई पड़ती है, वह दौङ्ग लौङ्ग पर्वतमाला है। इसी पर्वतमालासे ब्रह्म और श्यामराज्य पृथक् होता है।

राज्यमें प्रधानतः तीन गिरिश्रेणी देखी जाती हैं। इसका सर्वपश्चिम आराकानयोमा पर्वत आसाम प्रदेशकी नागागिरिमालासे उठ कर नेग्रेस अन्तरीपमें आ मिला है। इसकी अन्तिम शाखा पर 'हाम्देन' नामक पागोदा (मन्दिर) अवस्थित है और बीचमें पेगुयोमा गिरिमाला है। इरावती और सितौङ्ग उपत्यकाभूमिके मध्य अवस्थित रहनेसे यह उक्त दोनों नदीके अववाहिका प्रदेशको विभक्त करती है। यह पर्वतमाला उत्तर ब्रह्मकी येमेथिन गिरिश्रेणीके सानुदेशसे ले कर दक्षिणकी ओर इरावतीके डेल्टा तक फैल गई है। यहां एक पर्वत

शिखर पर सुप्रसिद्ध विख्यात बौद्धतीर्थ शेवदगोन मन्दिर अवस्थित है। पौंदौंङ्ग नामक गिरिमाला सित्तौङ्ग और साल्वीन उपत्यकाके बीच विस्तृत है। तौङ्ग-गु प्रदेशके मनिपुर इसका एक शिखर ८ हजार फीटसे भी अधिक ऊंचा है।

यहां कई छोटे छोटे हृद भी नजर आते हैं, उनमेंसे रंगुनके निकटवर्त्ती कन्दवर्ग, हानजादा जिलेका 'नू' नामक हृद और येमिन जिलेके दो हृद उल्लेखयोग्य हैं। पेगु और सित्तौङ्ग तथा रंगुन और इरावतीको मिलाने वाली दो खाई वाणिज्य तथा कृषिकार्यकी विशेष उपकारी हैं।

एशिया महादेशके दक्षिण भागमें तीन प्रायद्वीप समुद्रमें घुस गये हैं। अरब और भारतवर्षके साथ प्राचीन जगत्की ऐतिहासिक घटनावली जैसी मिलती जुलती है, इस ब्रह्मदेशका वैसा कोई ऐतिहासिक वैभव नहीं है। विद्या नीति, धर्म या वाणिज्य विस्तारका कोई प्रसङ्ग ही नहीं देखा जाता है। महाभारतके सभापर्वमें 'शर्मक' और 'वर्मक' नामक दो देशोंका उल्लेख है। कोई कोई इन्हीं दोनोंको यथाक्रम श्याम और ब्रह्मदेश बतलाते हैं। महाभारतके समय यह स्थान किरात और भगदत्तके अधिकारभुक्त था। भारतवर्षमें आर्यहिन्दुओंका उपनिवेश स्थापित होनेके बाद जो वाणिज्यप्रभाव पूर्वमें चीन और पश्चिममें इजिप्ट आदि स्थानोंमें फैला हुआ था, वह ब्रह्मराज्य तक नहीं जा सका, यह कौन कह सकता है? केवल टलेमीके भूगोलवृत्तान्तमें इस स्थानका Aurea chersonesus अर्थात् सुवर्णभूमि नाम पाया जाता है।

पूर्वोक्त दोनों प्रायद्वीपकी तरह यहां भी धीरे धीरे धर्मप्रभाव विस्तृत हुआ था, किन्तु बड़े दुःखकी बात है, कि उस धर्मस्रोतमें पड़ कर भी अधिवासीगण आनन्द लाभ न कर सके। अहिंसाकी महिमा प्राप्त न कर सकनेके कारण उन्होंने प्रतिहिंसाके विषसे जर्जरित हो कर अपनी वासभूमि रणक्षेत्रमें परिणत की थी। परस्परकी उन्नतिसे ईर्षान्वित हो कर उन्होंने पार्श्ववर्त्ती राज्य नाशमें मिला दिया।

अङ्गरेजोंके [illegible] अपने अधिकारमें किया था, उसमें आराकान, अरकुन, मर्त्तावान और पेगु ये ही चार राज्य थे। इन्हीं चार राज्योंके इतिहाससे जाना जाता है, कि यहांके राजा अपनेको भारतीय हिन्दूवंशोद्भव बतलाते थे। उनका धर्म और शास्त्र भी भारतवर्षसे ही लाया गया था, इसमें सन्देह नहीं। एक समय जो यहां भारतीय सभ्यता हुआ था, उसका प्रमाण टलेमी लिखित इरावती नदीके डेल्टा पश्चवर्त्ती स्थान समूहकी भौगोलिक तालिकामें मिलता है। किसी तरहका प्राचीन इतिहास न मिलने पर भी रंगुन और रामप्रदेशमें इधर उधर पड़ी हुई जो सब बहुप्राचीन कीर्त्तिसमूह आविष्कृत हुई हैं*, उनसे भी भारतीय हिन्दूका ब्रह्मदेश जाना सूचित होता है।

आराकानके ब्रह्मराजवंश इतिहास पढ़नेसे जाना जाता है, कि गौतमबुद्धसे बहुत पहले एक वाराणसी राजपुत्रने आराकान आ कर वर्त्तमान साम्द्वयके निकट रामावती नगरमें राजधानी बसाई थी। वे प्रति वर्ष वाराणसीराजको कर देते थे। इसी प्रकार कुछ दिन बीत जाने पर वाराणसी राज शेवकतो (जिन्होंने दूसरे जन्ममें गौतमबुद्धरूपमें जन्म लिया था) अपने चतुर्थ पुत्र कम्बिनके ऊपर ब्रह्मराज्यका शासनभार सौंप गए। उक्त राजपुत्रने ब्रह्म, श्याम और मलयवासियोंके ऊपर अपना आधिपत्य जमाया था। उनके राज्यकी उत्तर सीमा मणिपुरसे ले कर चीन तक फैली हुई थी†। कम्बिन अपने राज्यमें बहुत सी असभ्य जातियोंको बसा गए थे। इस गल्पकी कोई सत्यता न रहने पर भी इसके द्वारा ब्रह्ममें भारतीय सभ्यता और बौद्धधर्मके प्रवेशलाभके

* Dr Forchhammer और Major R C Temple इन दोनों महोदयके अनुसन्धानसे ब्रह्मदेशके प्रत्नतत्त्वका पुनरुद्धार उद्घाटित हुआ है।

† ब्रह्मके प्राचीन ऐतिहासिकगण यहां तक भारी भ्रममें पड़े थे। शाक्यवंशमें गौतम बुद्धका जन्म और उनका दूसरा नाम शाक्यसिंह होनेके कारण उन्होंने शाक्य (शेवक्ती)-के पुत्र-जन्मकी कल्पना की है। वे फिर गौतमबुद्धको शाक्यका पुत्रत्व कारण नामवर स्वीकार करते हैं।

सिवा और किसी विषयकी सूचना नहीं मिलती१ ।

आराकानके प्रचलित प्रवादके ऊपर निर्भर करनेसे पता लगता है, कि किसी एक समयमें भारतीय हिंदू और बौद्धगण इस देशमें आये थे। फिर पूर्वाञ्चलसे भी म्रतोंने यहां आ कर उपनिवेश स्थापित किया था। उस औपनिवेशिक दलके कोई भी आदिम अधिवासियोंके विरुद्धाचारी न हुए। इसके बाद बौद्धधर्मके प्रचारार्थ शाक्यवंशीय एक राजा यहां आ कर राज्य करते थे। इन्हीं के वंशधर २६वें राजाके समयमें (१४६ ई०में) यहां बौद्धधर्मका पूर्णरूपसे प्रचार हुआ था।

उस समय और उसके परवर्त्ती कालमें ब्रह्मके विभिन्न प्रदेश कम्बोजके राजाओंके अधिकारमें थे, उनमेंसे कोई शैव, कोई वैष्णव और कोई वैश्य थे। कम्बोज देखो।

६ठी शताब्दीके प्रारम्भमें मुसलमान वणिक् आराकान उपकूलमें आये। इसी वर्ष आराकानराज वङ्गविजय करने गये और चट्टग्राममें उन्होंने एक कीर्त्तिस्तम्भ स्थापित किया। १०वीं शताब्दीमें प्रोमराजने आराकान पर चढ़ाई की; उस समय वहांकी राजधानी म्रोहौङ्ग नगरमें स्थापित हुई थी। उसके बाद पांच सौ वर्ष तक यहां पर ब्रह्म, शान, तैलङ्ग और ख्यून आदि विभिन्न जातिने चढ़ाई की।

बोधगयामें प्राप्त १२वीं शताब्दीकी शिलालिपिसे जाना जाता है, कि पगानराजने वङ्गाल पर आक्रमण किया। दिनाजपुरके राजमहलमें जो प्राचीन शिलालिपि है, उसमें वङ्गके काम्बोजराज द्वारा शिवमन्दिर-प्रतिष्ठाकी कथा लिखी है। सम्भवतः वे ही पगानराज होंगे। ११३३ से ११५३ ई० तक वङ्ग, पेगु, पगान और श्याम आदि प्रदेशके राजाओंने आराकानराज गवल्यकी अधीनता स्वीकार की थी। गवल्यके कीर्त्तिस्तम्भ महती मन्दिरको १८२५ ई०में अङ्गरेजीसेनाने तहस नहस कर दिया। इसके एक सौ वर्ष बाद शान और तैलङ्ग जातिके उपर्युपरि आक्रमणसे यह स्थान विध्वस्तप्राय हो गया। अन्तमें १२६४ ई०को राजा मिन्तिने विपक्षियोंको भगा कर अपने राज्यका उद्धार किया और पगान तथा पेगु राज्य जीत कर उसकी सीमा बढ़ा दी*। बाद उनके वंशधरोंने लगभग १४०४ ई० तक राज्य किया। उसी वर्ष राजा मिनसव मूनके अत्याचारसे तंग आ कर सब प्रजा बिगड़ गई जिससे वे राज्य छोड़ कर भाग गये। और वङ्गालके मुसलमान राजाओंकी शरणमें पहुंचे। कुछ दिन बाद वे मुसलमानोंकी सहायतासे पुनः अपने राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। उसी समयसे आराकानी मुद्रा पर निरन्तर पारसी और नागरी अक्षरमें नामादि लिखे रहते थे।१

विद्रोही प्रजावर्गने आवाराजकी शरण ली। आवाराजने वहां १४३० ई० तक राज्यशासन किया। उसके बाद आराकानराज्यमें उल्लेखयोग्य कोई घटना न घटी। १६वीं शताब्दीके आरम्भमें पूर्वकी ओरसे ब्रह्मवासी और समुद्रपथसे पुर्त्तगीज जलदस्युने आराकान पर आक्रमण किया। पुर्त्तगीजोंके उपद्रवसे म्रोहौङ्ग (प्राचीन आराकान) नगरकी रक्षा करनेके लिए १५३१ ई०में १८ फोट ऊंची पत्थरकी दीवार बनाई गई थी। १५३१ ई०में उसके चारों ओर खाई खोदी गई। उसी समयसे आराकानी विदेश उद्योगी हो रहते थे। १५६०से १५७० ई०के बीच उन्होंने चट्टग्राम जीत कर वहीं पर शासन करना शुरू कर दिया और आराकान-राजपुत्र उस समय वहांके राजा हुए। धीरे धीरे मुगलसाम्राज्यके प्रतिद्वन्द्वी होनेकी इच्छासे उन्होंने पुर्त्तगीज दस्युदलको अपने राज्यमें बुलाया और समुद्रोपकूलमें उनका वासस्थान नियुक्त कर दिया। चट्टग्राम ही उनकी दस्युताका प्रधान केन्द्रस्थल था। यहां उन्होंने मुगलरणतरीकी दोनों ओर खड़े रह कर रणनिपुणताका परिचय दिया था और बारबार जयलाभसे उत्फुल्ल हो कर आश्रयदाता आराकान-राजकी अधीनता तोड़ दी। १६०५ ई०में उद्धतस्वभाव पुर्त्तगीजोंको

१ राजसभामें लिखित ब्रह्मराजेतिहासमें कनिंघम साहबने जो राजत्वकाल लिखा है वह सम्पूर्ण अविश्वासजनक है।

* उस समय आराकानवासीगण दक्षिण पूर्व बङ्गालकी ओर अग्रसर हो कर सोनारगांवके समीप रामाग राजकर वसूल किया था।

१ आराकानमें प्रचलित राजचिह्नाङ्कित १५वीं शताब्दीकी प्राचीन मुद्रा पाई गई है।

चट्टग्राममें पृथक्‌रूपसे शासनविस्तार करते हुए देख कर आराकानपति क्रुद्ध हुए और १६०६ ई०में उनको यहांसे भगा दिया। विशेष विवरण पुर्त्तगीज शब्दमें देखो।

१५वीं शताब्दीके प्रारम्भसे १८वींके शेषभाग तक इस देशके इतिहासमें केवल युद्धके सिवा और किसी विशेष घटनाका उल्लेख नहीं देखा जाता। इसके अन्तर्गत खण्डराज्य परिवर्तित होने पर भी ब्रह्म और तैलङ्गके अधिवासियोंने यथाक्रम यहांका राजासन अधिकार किया था। १६वीं शताब्दीके अन्तमें आवा और पेगु राजाओंके बीच घोरतर संग्राम हुआ। इधर आराकानपतिने तहाधिपतिको हीनबल देख कर सेरियाम नगरका स्थान अपने दखलमें कर लिया। तौङ्ग-गुके शासनकर्त्ताकी सहायतासे उनके पुत्रने भी पेगुराजके सिंहासनाधिकारी हो कर उक्त प्रदेश अधिकारमें रखनेकी इच्छासे अपने पुर्त्तगीज कर्मचारी निकोटी (Philip de Brito Nicote) के ऊपर भार सौंप दिया। निकोटीने इस प्रकार पदोन्नतिसे उद्धत हो राजानुग्रह उपेक्षा कर लगभग १३ वर्ष तक अपने बाहुबलसे यहांका राज्यशासन किया। अन्तमें आवापतिने १६१३ ई०में उनको रणक्षेत्रमें मार कर इस प्रदेश पर पुनः अधिकार जमाया।*

१८वीं शताब्दीके मध्यभागमें राजा आलौङ्गपया (अलोम्प्रा) के अभ्युदयकालमें ब्रह्मराज्य समुन्नत हुआ था। उसी समय आराकानराज्य अन्तर्विप्लवसे विदलित होने पर १७८४ ई०में राजपुत्र बादव पयाने उसे आवा साम्राज्यमें मिला लिया। इसी युद्धसे यथार्थमें बङ्गसीमान्तमें ब्रह्मवासियोंका पदार्पण हुआ। अङ्गरेजराजने उनके अनधिकार प्रवेशसे उत्यक्त हो कर १८२४ ई०में युद्धघोषणा कर दी बाद १८२६ ई०में यान्दाबूकी सन्धिके अनुसार अङ्गरेजोंको आराकान और तेनासेरीम प्रदेश क्षतिपूरण-स्वरूप मिला।

थातुन, पेगु और मार्त्तावन आदि जनपद तैलङ्ग (मुन) * के अधिकारमें थे। ब्रह्मवासिगण तैलङ्ग राज्यको रामन्न या रमनिया कहते थे। ख्रष्टजन्मके बहुत पहले भारतीय औपनिवेशिकोंके द्वारा थातुन नगर स्थापित हुआ।† यहांका ध्वंसावशेष अब भी प्राचीनत्वका परिचय देता है। यह नगर समुद्रसे पांच कोस दूर नदीके किनारे बसा हुआ है। नदीके मुंह पर पङ्क जम जानेसे यहांके वाणिज्यका ह्रास हो गया और नगर श्रीहीन हो कर ध्वंसमें परिणत हुआ। यहांका प्रकृत इतिहास नहीं मिलने पर भी बौद्ध इतिहाससे पता लगता है, कि इस्वी सन् ३०० वर्ष पहले महाबोधिसङ्घके समय थातुन नगर (सुवर्णभूमि) में दो धर्मप्रचारक भेजे गये थे। ४०३ ई०में सिंहलसे बुद्धघोष यहां बौद्धग्रन्थादि लाये थे। ११वीं शताब्दी तक यह नगर विशेष समृद्धिसम्पन्न था। इसके बाद पगान सम्राट् अनव्रतने इसे ध्वंस कर दिया। राजेतिहाससे जाना जाता है, कि यहां ५९ राजाओंने प्रायः १६८३ वर्ष तक राज्य किया था।

प्रवाद है, कि थातुनसे भारतवासी ५७३ ई०में पेगु नगर आ कर रहने लगे। उन्होंने ही पेगुमें राजधानी स्थापित की। इसके तीन वर्ष बाद मार्त्तावन नगर बसाया गया। रामन्न देशवासी उस समय उन्नतिकी चरम सीमा पर चढ़े हुए थे और रामन्नका आयतन बेसिन तक फैल गया था। मार्त्तावन राजवंशके १७वें राजा तिस्यने दूसरा धर्म ग्रहण किया। उसी समयसे देशीय राजवंश प्रायः लोप हुआ। अनव्रतविजय (लगभग १०५० ई०) के बाद पेगु समृद्धिशाली हो उठा।

मार्त्तावानके समीप तगरपुन्‌निवासी मगडू नामक एक व्यक्तिने विद्रोही दलमें मिल कर पेगु और मार्त्तावान नगर जीता। उनके विरुद्ध पगानसे प्रेरित मुसलमान सेनाको हरा कर उन्होंने धीरे धीरे सारा तैलङ्गराज्य

---

* भ्रमणकारी वर्थियरने लिखा है, कि १७वीं शताब्दीमें यह स्थान अर्थयात्रुदय पुर्त्तगियोंके द्वारा पूर्ण हुआ था। निकोटीके बाद सिवाष्टियन गञ्जालिसने सन्द्वीपमें पुर्त्तगीज प्रभाव फैलाया था।

* ये ब्रह्म-आविका एक विशिष्ट शाखा है। इनकी बोली बहुत कुछ कम्बोज और आसामी भाषासे मिलती जुलती है।

† दक्षिण भारतके परमयवत उपकूलस भारतवासी सुवर्णद्वीप गए। कम्बोज आदि राज्यके साथ भारतीय सम्बन्ध पुराणादिसे जाना जाता है।

ब्रह्मके अधिवासी साधारणतः कठोर परिश्रमी और शिल्प निपुण होते हैं। नौका और गृहादिका निर्माण तथा शिल्पनैपुण्यपूर्ण धम्मठादि उनके अत्युत्कृष्ट निदर्शन हैं। शिल्पकार्यमें उन्होंके कोमल स्वभावका परिचय मिलता है सही, किन्तु अत्यन्त सामान्य कारणसे ही ये मगरूर हो जाते हैं। मनुष्य जीवनके प्रति उन्हें तनिक भी दया नहीं है। छोटी छोटी सी बातके लिए भी ये नरहत्या कर डालते हैं—यहां तक कि किसी दिन व्यञ्जनादि खराब होनेसे ये अपनी प्रियतमा स्त्रीका प्राणनाश करनेमें भी कुण्ठित नहीं होते। दस्युवृत्ति तथा अत्याचार व्यभिचार इनके जीवनका एक गौरव जनक कार्य है।

यहांकी स्त्रियां परदानशीन नहीं होतीं—वे स्वच्छन्दसे इधर उधर घूम सकती हैं। बाजारसे द्रव्य आदि खरीदना, घरका कामकाज करना, पण्यद्रव्य बेचना और रेशमी कपड़ा बुनना इनका प्रधान कर्म है। विवाहसे पहले बालिकागण बाजारमें फलमूलादि बेच कर जो लाभ उठाती हैं। उसीसे वे अपना अलङ्कार बनवाती हैं।

ब्रह्मदेशमें जो सम्वत् प्रचलित है वह ६३९ ई०के अप्रिल (बैशाख) से आरम्भ हुआ है। २९ या ३० दिनका चान्द्रमास रूप बारह महीनेका वर्ष होता है। प्रति मासके शुक्ल या कृष्ण पक्षसे मासगणना होती है। दिन रात आठ पहरमें अर्थात् दिन और रात प्रति तीन घण्टेके अन्तर विभक्त है। उस समय एक एक बार घण्टेकी आवाज होती है।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि ब्रह्मकी भाषामें अनेक पालि और अपभ्रंश संस्कृत शब्दका प्रयोग है*। ब्रह्मभाषाका प्रत्येक अक्षर ही भारतीय वर्णमालासे लिया गया है। इनके काव्यविभागकी जब तक विशेष आलोचना न की जाय, तब तक उसे समझना असम्भव है"।

* संस्कृत शब्दका ब्रह्मभाषामें परिवर्तन मङ्गल (मर्त्तक) अभिषेक (भिथित), चक्र (चक), द्रव्य (द्रव), कर्म (कम) ऋषि (रसि) आदि है।

१०१५ ई०की २१वीं फरवरीको माइकल साइम (Michael ...

ब्रह्मराज्यस्थित सभी मठमें तालपत्र और बांससे बनाए हुए कागज पर लिखी हुई पोथी नजर आती है। यजुन, मधु, प्रोम आदिका विवरण उन उन शब्दमें देखो।

पेगूका शिवमदु पागोदा ब्रह्मका एक प्रधान और विख्यात मन्दिर है। रङ्गून नगरके समीप शिल्पपागोल मन्दिर भी बहुत सुन्दर है। पर्वतके शिखर पर अवस्थित होनेसे यह स्थान दूर देशवासीकी भी दृष्टि आकर्षण करता है और इसकी स्वर्णचूड़ा सूर्यकी किरणोंमें विभासित हो कर चारों ओर प्रकाश फैलाती है। मन्दिर वाटिका और चतुर्दिकस्थ सौधमाला देवकीर्त्तिकी अपूर्व शोभा बढ़ाती है। नगरसे मन्दिरमें आनेका जो रास्ता है, उसके स्थान स्थान पर गौतम बुद्धकी प्रतिमूर्त्ति परिशोभित है। अमरावतीका राजप्रासाद भी शिल्पनैपुण्यमें कम नहीं है।

ब्रह्मवासिगण उत्सवके बड़े ही पक्षपाती हैं। प्रायः प्रति सप्ताहमें एक महोत्सव हुआ करता है। धनी मनुष्य के श्राद्ध कार्य, बुद्धोंके राहान् (अर्हन् पुरोहित) दीक्षामें ये लोग बहुत खर्च करते हैं। ८से १० वर्ष तक बालक मठप्रवेशके अधिकारी हैं।

ब्रह्मदैत्य (स० पु०) ब्रह्मा ब्राह्मणरूपी दैत्य। प्रेतयोनि प्राप्त ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो मर कर प्रेतयोनि पाता है।

ब्रह्मदोष (स० पु०) ब्रह्म हत्या, ब्राह्मणको मारनेका दोष।

ब्रह्मदोषी (स० त्रि०) वह जिसे ब्रह्महत्या लगी है।

ब्रह्मद्रव (सं० पु०) गङ्गा जल।

ब्रह्मद्रुम (स० पु०) पलास, ढेरु।

ब्रह्मद्रोही (सं० त्रि०) ब्राह्मणोंसे वैर रखनेवाला।

ब्रह्मद्वार (स० क्ली०) ब्रह्मरन्ध्रका पन्थ, खोपडीके बीच माना हुआ वह छेद जिससे योगियोंके प्राण निकलते हैं।

ब्रह्मद्विप (स० त्रि०) ब्राह्मणे द्वेष्टि ब्राह्मण द्विष् ...

कर पहुंचे। यहां पहुंच ... उनका खूब ... थी। उस ... अप्रिल मासमें ... अवस्थित ... कर दुर्गादि ... उस समय ... ...ना और ... दिन ... ... था।

क्विप्। वेद और ब्राह्मणके एक, जो वेद और ब्राह्मणकी हिंसा करता हो।
ब्रह्मधर ( सं० क्ली० ) ब्रह्मज्ञानसम्पन्न।
ब्रह्मधातु ( सं० पु० ) १ ब्रह्मरूप धातु। २ रुद्र।
ब्रह्मण—ब्रह्म देखो।
ब्रह्मनाभ ( सं० पु० ) ब्रह्म नाभौ यस्य। विष्णु।
ब्रह्मनाल ( सं० क्ली० ) ब्रह्मणो ब्रह्मलोकमार्गे नालमिव। काशीधामके मणिकर्णिका समीपस्थ तीर्थविशेष।

"पितामहेश्वरं लिंगं ब्रह्मनालोपरिस्थितम्।
पूजयित्वा नरो मर्त्त्या ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्॥"
( काशीख० ६१ अ० )

ब्रह्मनालके ऊपर महेश्वर लिङ्ग स्थापित हैं। इस लिङ्गकी पूजा करनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। इस तीर्थमें शुभाशुभ जो कर्म किया जाता है, वह अक्षय होता है। काशीखण्डके ६१वें अध्यायमें विशेष विवरण लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां कुछ नहीं दिया गया।
ब्रह्मनिर्वाण ( सं० क्ली० ) ब्रह्मणि परब्रह्मणि निर्वाण लय। ब्रह्ममें निवृत्त, परब्रह्ममें लय प्राप्त होना ही ब्रह्मनिर्वाण है। अज्ञानके बिलकुल दूर होनेसे ही ब्रह्मनिर्वाण होता है।

"एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ! नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥"
( गीता २।७२ )

जो समस्त वासनाओंका निःशेषरूपसे परित्याग कर आखिर जीवनके ऊपर भी निस्पृह हो अहं मदी ममत्वभावको विसर्जन करते हुए विचरण करते हैं, उन्हींको निर्वाणमुक्ति होती है। इस अवस्थाको ब्रह्मसंस्थान कहते हैं। यह ब्रह्मसंस्था वा ब्राह्मीस्थिति प्राप्त होनेसे ही जीव पुनर्वार मुग्ध नहीं हो सकता। जीवनकी शेष दशामें भी यदि जीव ऐसी ब्रह्मनिष्ठामें रत रहे, तो भी वह ब्रह्ममें ही विलीन हो जाता है। इसीका नाम ब्रह्मनिर्वाण है।
ब्रह्मनिष्ठ ( सं० पु० ) १ पारिशपिप्पल, पारीस पीपल। ( त्रि० ) २ ब्राह्मणभक्त। ३ ब्रह्मज्ञानसम्पन्न।
ब्रह्मनीड़ ( सं० क्ली० ) ब्रह्माका अवस्थित-स्थान।
ब्रह्मनुत्त ( सं० त्रि० ) मन्त्रबलसे अपसारित।
ब्रह्मपति ( सं० पु० ) १ बृहस्पति। २ ब्रह्मणस्पति।
ब्रह्मपत्र ( सं० क्ली० ) ब्रह्मणस्तदाख्यया प्रसिद्धस्य वृक्षस्य पत्र। पलाश पत्र, पलासका पत्ता।
ब्रह्मपत्री ( सं० स्त्री० ) वाराही नामक महाकन्द शाक।
ब्रह्मपथ ( सं० क्ली० ) ब्रह्म प्राप्तिकर पन्थ।
ब्रह्मपद ( सं० पु० ) १ ब्रह्मका स्थान। ( क्ली० ) २ ब्रह्मत्व। ३ ब्राह्मणत्व।
ब्रह्मपन्नग ( सं० पु० ) मरुद्भेद।
ब्रह्मपर्णी ( सं० स्त्री० ) ब्रह्मेव विस्तीर्णानि आमूलं स्थितानि पर्णानि यस्याः। पृश्निपर्णी, पिठवन नामकी लता।
ब्रह्मपर्वत ( सं० क्ली० ) पर्वतभेद।
ब्रह्मपलाश ( सं० पु० ) अथर्ववेदकी एक शाखा।
ब्रह्मपवित्र (सं० पु०) ब्रह्मणि वेदोक्तकर्मणि पवित्रः। कुश।
ब्रह्मपादप ( सं० पु० ) ब्रह्म तदाख्यया प्रसिद्धः पादपः। पलाश वृक्ष।
ब्रह्मपार्षद ( सं० पु० ) वृक्ष विशेष, ब्रह्मपर्णी। २ बौद्धके मतसे ब्रह्माका परिचारक गण।
ब्रह्मपाश ( सं० पु० ) ब्रह्मदत्त अस्त्रविशेष, ब्रह्मका दिया हुआ पाश नामक अस्त्र। पाश या फंदेका प्रयोग प्राचीन कालमें युद्धमें होता था।
ब्रह्मपिशाच ( सं० पु० ) ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मपुत्र—अन्तस्थ 'व'में देखो।
ब्रह्मपुत्री ( सं० स्त्री० ) ब्रह्मणः पुत्री कन्या। १ सरस्वती नदी। २ सरस्वती। ३ वाराहीकन्द।
ब्रह्मपुर ( सं० क्ली० ) ब्रह्मणः पुरः। १ ब्रह्मके अनुभवका स्थान, हृदय। २ ब्रह्मलोक। ३ ईशानकोणमें स्थित एक देश।
ब्रह्मपुराण ( सं० क्ली० ) वेदव्यास प्रणीत महापुराणभेद। पुराणोंमें इसका नाम पहले आनेसे कुछ लोग इसे आदि पुराण भी कहते हैं। विशेष विवरण पुराण शब्दमें देखो।
ब्रह्मपुरी—१ मध्यप्रदेशके चन्दा जिलान्तर्गत एक तहसील। भू-परिमाण ३३२१ वर्गमील है।

२ उक्त जिलेका एक नगर और ब्रह्मपुरि तहसीलका शहर। यह एक पर्वतके ऊपर स्थापित है। इसके सर्वोच्च स्थान पर एक प्राचीन दुर्ग अवस्थित था। अभी

यहां विचारालय, विद्यालय और पुलिसावास बनाया गया है। यहां बढ़िया सूतीके कपड़े तथा पीतल और तांबेके बरतन तैयार होते हैं।

ब्रह्मपुरी (सं० स्त्री०) ब्रह्मण पुरी। १ विधाताका नाम। २ काशीधाम।

ब्रह्मपुरुष (सं० पु०) ब्रह्मण पुरुष इव। ब्रह्मपालक द्वारपालरूप चक्षु, वाक्, मन और प्राणादि पञ्च ब्रह्म पुरुष। ये सब स्वर्गलोकके द्वारपाल स्वरूप हैं।

ब्रह्मपुरोगव (सं० त्रि०) पुरोगत ब्रह्म।

ब्रह्मपुरोहित (सं० पु०) ब्रह्म बृहस्पति पुरोहितो यस्य। देवताओंके पुरोहित बृहस्पति।

ब्रह्मपूत (सं० त्रि०) ब्रह्मणा पूतः। ब्रह्म द्वारा पवित्र। तपस्यादि द्वारा पूतदेह। (अथर्व १२।१।२६)

ब्रह्मप्रसूत (सं० त्रि०) ब्रह्मणा प्रसूत। १ ब्रह्मजात जगत्। ब्रह्मसे इस जगत्की उत्पत्ति हुई है। (क्ली०) २ ब्राह्मणारब्ध कर्म।

ब्रह्मप्रिय (सं० त्रि०) ब्रह्मध्याननिरत, जो सदा ब्रह्मचिन्तामें निमग्न रहते हों।

ब्रह्मप्री (सं० त्रि०) ब्रह्मणा प्रीणाति प्री क्विप्। १ सोमलक्षण अन्न द्वारा प्रीत। २ स्तोत्रप्रिय।

ब्रह्मफांस (हिं० स्त्री०) ब्रह्मपाश देखो।

ब्रह्मबन्धु (सं० पु०) ब्रह्मणो बन्धुरिव। १ अधिक्षेप। २ निर्देश। ३ निन्दित ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो अपने कर्ममें हीन हो। ४ विप्रतुल्य भट्टादि।

ब्रह्मबध्या (सं० स्त्री०) बध भावे-क्यप्, टाप्, ब्रह्मण बध्या। ब्रह्महत्या, ब्राह्मणवध।

ब्रह्मबल (सं० पु०) वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मणको तप आदि द्वारा प्राप्त हो।

ब्रह्मबलि (सं० पु०) अथर्ववेदके मन्त्रविवर्त्तक गुरुभेद।

ब्रह्मबिन्दु (सं० पु०) ब्रह्मणि वेदाध्ययनकाले बिन्दु। १ वेदाध्ययनकालमें मुखनिःसृत लाला, वह राल जो वेद पढ़ते समय मुखसे टपकती है। यह राल दोषावह नहीं समझी जाती।

ब्रह्मबीज (सं० क्ली०) ब्रह्मसंज्ञक बीजमन्त्र। १ ओं। २ तूतविरोष।

ब्रह्मवैध्या (सं० स्त्री०) नदीभेद।

ब्रह्मब्रुवाण (सं० पु०) आत्मानं ब्रह्माणं ब्रूते ब्रू शानच्। वह जो अपनेको ब्राह्मण बतलाता हो। कर्णने अपनेको ब्राह्मण बतला कर परशुरामसे अस्त्र शास्त्र सीखा था। (भारत ५।६१ अ०) २ ब्राह्मणब्रु, अपकृष्ट ब्राह्मण।

ब्रह्मभद्रा (सं० स्त्री०) ब्रह्मणि भद्रा ७तत्। विप्रहितार्थ त्रायमाणोषधीभेद।

ब्रह्मभवन (सं० क्ली०) ब्रह्माका वासस्थान। ब्रह्मलोक।

ब्रह्मभाग (सं० पु०) ब्रह्मणो भागः। ब्रह्मरूप ऋत्विकके हरणीय यज्ञद्रव्यका भागभेद।

ब्रह्मभाव (सं० पु०) ब्रह्मणो भाव। १ मोक्ष। २ ब्रह्मका स्वरूप।

ब्रह्मभावक (सं० त्रि०) ब्रह्म भावयति उपदिशति ब्रह्म भू णिच् ण्वुल्। ब्रह्मोपदेशक।

ब्रह्मभिद् (सं० त्रि०) ब्रह्मभेदक, जो एक ब्रह्मके विविधभेदकी कल्पना करता हो।

ब्रह्मभुवन (सं० क्ली०) ब्रह्मलोक।

ब्रह्मभूति (सं० स्त्री०) ब्रह्मणो भूतिरहस्सम्बन्धि भूतिर्यस्याः। १ सन्ध्या। (त्रि०) २ ब्रह्मज्ञानमात्र।

ब्रह्मभूमिजा (सं० स्त्री०) ब्रह्मभूमेर्जायते या, ब्रह्म भूमि जन ड्विर्या टाप्। सिंहली।

ब्रह्मभूय (सं० क्ली०) ब्रह्मणो भावः। १ ब्रह्मत्व। २ मोक्ष। ३ ब्रह्मभाव।

ब्रह्मभूयस् (सं० क्ली०) १ ब्रह्ममें लीनभाव। २ ब्रह्मध्यानमें एकाग्रता।

ब्रह्मभूयस्त्व (सं० क्ली०) १ ब्रह्मा भिन्न रूपमें अवस्थान। २ ब्रह्मलीनता। ३ ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मभोज (सं० पु०) ब्राह्मणोंको खिलानेका कर्म, ब्राह्मणभोजन।

ब्रह्ममङ्गलदेवता (सं० स्त्री०) लक्ष्मीका नामान्तर।

ब्रह्ममठ (सं० पु०) ब्राह्मणका विद्यामन्दिर। २ राजतरङ्गिणी वर्णित काश्मीरका एक विद्यामन्दिर।

ब्रह्ममण्डूकी (सं० स्त्री०) १ मञ्जिष्ठा, मँजीठ। २ मण्डूकपर्णी। ३ भारङ्गी।

ब्रह्ममति (सं० पु०) बौद्धोंमें एक प्रकारके उपदेवता।

ब्रह्ममय (सं० त्रि०) ब्रह्मात्मकः ब्रह्मन मयट्। १ ब्रह्मात्मक, ब्रह्मस्वरूप। २ ब्रह्मास्त्र।

ब्रह्ममह (सं० पु०) ब्रह्मणे महः। ब्राह्मणके उद्देशसे उत्सव।

ब्रह्ममाण्डूकी (सं० स्त्री०) ब्राह्मीशाक। ब्रह्ममण्डुकी देखो।

ब्रह्ममित्र (सं० पु०) ब्रह्ममित्रमस्य। मुनिभेद।

ब्रह्ममीमांसा (सं० स्त्री०) ब्रह्मणः मीमांसा ६-तत्। ब्रह्मज्ञानार्थं वेदान्त वाक्यविचारात्मक व्यास प्रणीत ग्रन्थभेद। विशेष विवरण 'वेदान्तदर्शन' शब्दमें देखो।

ब्रह्ममुहूर्त (सं० पु०) सूर्योदयके ३४ घड़ी पहलेका समय।

ब्रह्ममूर्द्धभृत् (सं० पु०) ब्रह्मणो मूर्द्धभृत् शिरोमणिरिव। शिव।

ब्रह्ममेखल (सं० पु०) ब्रह्मणा ब्राह्मणानां मेखला पुंवद्भाव। मुञ्जतृण, मूंज।

ब्रह्ममेध्या (सं० स्त्री०) नदीभेद।

ब्रह्मयज्ञ (सं० पु०) ब्रह्मणो ब्रह्मणे वा यज्ञः। विधिपूर्वक वेदाभ्यसन, शिष्योंका वेदाध्यापन। यह पञ्च यज्ञके अन्तर्गत है। प्रतिदिन ब्रह्मरूप वेदाध्ययन करना ब्राह्मण मात्रका अवश्य कर्त्तव्य है।

ब्रह्मयशस् (सं० क्ली०) ब्रह्माकी यशोराशि।

ब्रह्मयशस (सं० क्ली०) ब्रह्माका यशोगायकसाममन्त्रविशेष।

ब्रह्मयशस्विन् (सं० त्रि०) अत्यधिक पवित्रताशाली।

ब्रह्मयष्टि (सं० स्त्री०) ब्रह्मणो यष्टिरिव। १ भार्गी, भारंगी। २ वृक्षविशेष। ब्रह्मयष्टिके फलको जलमें पीस कर उसका लेप देनेसे रक्तदोष जाता रहता है। ३ ब्राह्मणके हस्तस्थित दण्ड।

ब्रह्मयाग (सं० पु०) ब्रह्मणोयागः। ब्रह्मयज्ञ।

ब्रह्मयज्ञ देखो।

ब्रह्मयातु (सं० पु०) यातुभेद।

ब्रह्मयामल (सं० क्ली०) तन्त्रशास्त्रविशेष।

ब्रह्मयुग (सं० क्ली०) ब्रह्मा विप्रस्तदुपलक्षितं युगं। हिरण्यगर्भका विप्रसृष्टि प्रधान कालभेद।

ब्रह्मयुज् (सं० त्रि०) ब्रह्म युज् क्विप्। मन्त्र द्वारा युक्त।

ब्रह्मयोग (सं० पु०) ब्रह्मणस्तत्साक्षात्कारस्य योगः समाधिः। ब्रह्मसाक्षात्कारसाधन समाधिभेद।

प्रजापति ब्रह्मा ही ब्रह्मयज्ञ हैं, वे ही परम साङ्ख्य योग और विज्ञान हैं। वे ही चार्वाकोंका समाज तथा साङ्ख्योंकी प्रकृति और पुरुष हैं, वे ही स्रष्टा और संहर्त्ता हैं। वे ही कालरूपी साक्षात् ईश्वर हैं। फिर वे ही काल क्षय, ज्ञेय और विज्ञान हैं अर्थात् जो जिस भावमें ग्रहण करते हैं वे ही उनके तत्स्वरूप हैं। यही ब्रह्मयोग है। इस ब्रह्मयोगका ज्ञान हो जानेसे सभी अज्ञान तिरोहित होता है। (हरिवं० २१० अ०)

२ विष्कुम्भादि पञ्चविंश योगके अन्तर्गत योगभेद। ३ १८ मात्राओंका एक ताल। इसमें १२ आघात और ६ खाली होते हैं।

ब्रह्मयोनि (सं० पु०) ब्रह्मणो योनिरुत्पत्तिरत्र। १ ब्रह्मगिरि। २ ब्रह्मप्राप्तिकारण ब्रह्मध्यान। ३ सबोंका उत्पत्तिकारण—ब्रह्म। ४ तीर्थविशेष। (त्रि०) ५ जिसका उत्पत्तिकारण ब्रह्म हो।

ब्रह्मयोनि (सं० स्त्री०) ब्रह्मा योनिरुत्पत्तिकारणं यस्याः, स्त्रियां पक्षे ङीप्। कुरुक्षेत्रस्थ सरस्वतीतीरवर्त्ती पृथूदकके निकट अवस्थित तीर्थविशेष। यहां पर ब्रह्मा चार वर्णोंकी सृष्टि करते हैं। इस तीर्थमें स्नान करनेसे मुक्ति लाभ होती है। (वामनपु० ३८ अ०)

ब्रह्मरक्षस् (सं० क्ली०) अपदेवताविशेष।

ब्रह्मरथ (सं० पु०) १ ब्राह्मणका शकट या यानविशेष। २ ब्रह्माका वाहन, हंस।

ब्रह्मरत्न (सं० क्ली०) ब्राह्मणको प्रदत्त धनरत्न।

ब्रह्मरन्ध्र (सं० क्ली०) ब्रह्मणः परमात्मनः अधिष्ठानाय रन्ध्रं आकाश, वा ब्रह्मणे ब्रह्मप्राप्तये रन्ध्रं। उत्तमाङ्ग, ब्रह्मतालु, मस्तकके मध्य वह गुप्त छेद जिससे हो कर प्राण निकलनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। कहते हैं, कि योगियोंके प्राण इसी रन्ध्रसे निकलते हैं।

ब्रह्मरस (सं० पु०) ब्रह्मज्ञानरूप उत्कृष्ट सुधा।

ब्रह्मराक्षस (सं० पु०) आदौ ब्रह्मा ब्राह्मणः पश्चाद्राक्षसः दुष्कर्मभिः राक्षसयोनिं गतः। १ भूतविशेष, वह ब्राह्मण जो मर कर भूत हुआ हो।

"संयोगं पतितैर्गत्वा परस्यैव च योषितम्।
अपहृत्य च विप्रस्वं भवति ब्रह्मराक्षसः॥" (मनु० १२।६०)

जो पतितके साथ संसर्ग, परस्त्री गमन और ब्राह्मणका

का धन अपहरण करता है, वही ब्रह्मराक्षस होता है। रामायणमें लिखा है, कि ब्रह्मराक्षस यज्ञके विघ्नोत्पादक होते हैं। ( रामा० ७।११ अ० )

२ महादेवका गणविशेष। पारिभाषिक प्रयोगमें मूर्ख, क्लीव, कच्छर, वाजी और बधिर इन पाचोंको ब्रह्मराक्षस कहते हैं।

"मूर्खः क्लीवः कच्छरः स्यैव वाजी बधिर एव च।
सदीनार्थं न मुञ्चन्ति पञ्चैते ब्रह्मराक्षसाः ॥"

(व्यवहारप्र०)

ब्रह्मराज (सं० पु०) १ राजपुत्रभेद। २ ब्रह्मदेशका अधिपति।

ब्रह्मरात ( सं० क्ली० ) ब्रह्म तज्ज्ञानं रातं यस्मै। १ शुकदेव। २ याज्ञवल्क्य मुनि। इन्होंने जनकसे ब्रह्म विद्या सीखी थी। बृहदारण्यक-उपनिषद्में यह उपाख्यान वर्णित है।

ब्रह्मरात्र ( सं० पु० ) रात्रेरप रात्रः, ब्रह्मणो रात्रः। ब्रह्म मुहूर्त्त, रात्रिका शेष चार दण्ड। इस समय सबोंको विछावन परसे उठना चाहिये।

"ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानुमोदिताः।
अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः ॥"

( भागवत १०।३३।४६ )

ब्रह्मरात्रि ( सं० पु० ) १ याज्ञवल्क्य मुनि। ये ब्रह्मज्ञान देते हैं, इसीसे इनका ब्रह्मरात्रि नाम पड़ा है। हेमचन्द्र टीकामें इनकी व्युत्पत्ति इस प्रकार लिखी है। ब्रह्मणा राति ददाति य., ब्रह्मशब्दात् रायतेर्नाम्नीति मिलत्ययमिमाडपम् ( हेमटीका ) ( स्त्री० ) २ ब्रह्माकी रात्रि। मनुमें इस ब्रह्मरात्रिका परिमाण इस प्रकार बतलाया है—अठारह निमिष अर्थात् चक्षुके पलककी एक काष्ठा, तीस काष्ठाकी एक कला, तीस कलाका एक मुहूर्त्त और तीस मुहूर्त्तको एक दिन रात होती है। मनुष्योंके लिये दिवाभागमें जागरण और रात्रिकालमें निद्रा बतलाई गई है। मनुष्यका एक मास पितृलोकका एक दिनरात होता है। उनमेंसे कृष्णपक्ष उनका दिन और शुक्लपक्ष रात होता है। कृष्णपक्ष काम करनेका और शुक्लपक्ष सोनेका समय है। मनुष्यका एक वर्ष देवताओंका एक दिन रात माना गया है। फिर उनके भी इस प्रकार विभाग हैं,— उत्तरायण देवताओंका दिन और दक्षिणायन उनकी रात्रि है। दैवपरिमाण चार हजार वर्षका सत्ययुग होता है। इस युगके चार सौ वर्ष सन्ध्या और चार सौ वर्ष सन्ध्यांश है। तीन हजार वर्षमें त्रेतायुग कल्पित हुआ है। उसकी सन्ध्या और सन्ध्यांशका परिमाण तीन सौ वर्ष है। द्वापर युग दो हजार वर्ष और कलियुग हजार वर्ष इनकी सन्ध्या है और सन्ध्यांश एक एक सौ वर्ष कम है। मनुष्योंको जो चार युगोंकी संख्या निरूपित हुई, उसके बारह हजार वर्षका देवताओंका एक युग होता है। इस प्रकार दैवपरिमाण सहस्रयुगका एक दिन और उतने ही समयकी उनकी एक रात होती है। (मनु १ अ०)

ब्रह्मराशि ( सं० पु० ) १ पवित्र ज्ञानराशि। २ पवित्र ग्रन्थसमूह। ३ परशुरामका नामान्तर। ४ बृहस्पति कर्त्तृक आक्रान्त श्रवणा नक्षत्र।

ब्रह्मरीति ( सं० स्त्री० ) ब्रह्मवर्णा रीतिः। १ पित्तलभेद, एक प्रकारका पीतल। २ ब्रह्मा या ब्राह्मणकी रीति।

ब्रह्मरूपक ( सं० पु० ) एक प्रकारका छन्द। इसके प्रत्येक चरणमें गुरुलघुके क्रमसे १६ अक्षर होते हैं। इसे चञ्चला और चित्र भी कहते हैं।

ब्रह्मरूपिणी ( सं० स्त्री० ) १ वन्दा, बाँदा। २ ब्रह्मस्वरूपा।

ब्रह्मरेखा ( सं० स्त्री० ) भाग्य या अभाग्यका लेख। इसके विषयमें कहा जाता है, कि ब्रह्मा किसी जीवके गर्भमें आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।

ब्रह्मर्षि ( सं० पु० ) ब्रह्मा ब्राह्मणः ऋषि या ब्रह्म वेदं पठति या ऋषति वेत्ति। वशिष्ठादि मुनिगण।

ब्रह्मर्षिदेश ( सं० पु० ) ब्रह्मर्षीणां देशः वासयोग्यस्थान। कुरुक्षेत्रादि चार देश, वह भूभाग जिसके अन्तर्गत कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेनक देश थे। इन ब्रह्मर्षि देशसम्भूत ब्राह्मणोंसे पृथ्वीके सभी लोगोंको सदाचार सीखना चाहिये।

ब्रह्मलिखित ( सं० पु० ) ब्रह्मलेख, मानवकी अदृष्टलिपि।

ब्रह्मलोक ( सं० पु० ) ब्रह्मणो लोकः भुवन। ब्रह्माधिष्ठान भुवन, सत्यलोक। ब्रह्मा इस लोकमें अवस्थान करते हैं।

"गच्छन्तु मुनयो लोकं स्नुषां मेरु गिरेः ।
ब्रह्मलोकः समाख्यातो ब्रह्मणस्तत्र सम्भवः ॥"

( देवीपुराण

विष्णुपुराणके मतानुसार तपोलोकमे छः गुणा ऊपर सत्यलोक है। इसीको ब्रह्मलोक कहते हैं।

"षड्गुणेन तपोलोकात् सत्यलोको विराजते।
अपुनर्मारका यत्र ब्रह्मलोकोहि स स्मृत ॥"

(विष्णुपु० २।३ अ०)

ब्रह्मैय लोक। २ तुरीय ब्रह्मस्वरूप।

वेदान्त दर्शनमें लिखा है, कि जो नाडीरश्मिसम्बन्ध घटित अर्चिरादि पर्वविशिष्ट देवयानपथसे ब्रह्मलोकको गमन करते हैं, वे सब उपासकगण चन्द्रलोकगत उपासकोंकी तरह भोगक्षयके बाद पुन इस लोकमें जन्म नहीं लेते। इस पृथ्वीसे तृतीय स्वर्गमें ब्रह्मलोक है। यहां 'अर' और 'ण्य' नामक समुद्रतुल्य सुधाहद, अन्नमय और मदकर सरोवर तथा अमृतवर्षी अश्वत्थ है। यह स्थान तत्त्वज्ञानी ब्रह्मोपासकको छोड कर दूसरेके लिये अगम्य है। यह लोक अजेय ब्रह्मपुरी है। यहां प्रभु ब्रह्माके निर्मित हिरण्मय गृह है। उपासना द्वारा ब्रह्मलोक प्राप्त होनेसे फिर यहांसे लौटना नहीं पडता। उपासक वहांके लोकमें जा कर अमर होते हैं अर्थात् मुक्तिलाभ करते हैं। वेदान्त और ब्रह्म शब्द देखो।

ब्रह्मवक्तृ (स० पु०) १ परब्रह्मरूप सत्यधर्मका प्रचारक। २ वेदधर्मके प्रवर्त्तक आचार्य।

ब्रह्मवत् (स० त्रि०) ब्रह्मणा ब्रह्मज्ञान सम्पन्न। वेदसम्पन्नीय।

ब्रह्मवद (स० पु०) सम्प्रदायविशेष।

ब्रह्मवद्य (स० क्लो०) ब्रह्म वेदस्तस्य वदन (वद-सुपि-क्यप् च। पा ३।१।१०६) इति भावे यत्। ब्रह्माका वाक्य।

ब्रह्मवद्या (स० त्रि०) ब्रह्मणा वेदेन उच्यते या ब्रह्मवद्य टाप्। कथा।

ब्रह्मवध (स० पु०) ब्राह्मणहत्या।

ब्रह्मवध्या (स० पु०) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण वध।

ब्रह्मवध्याकृत (स० क्लो०) ब्राह्मण हत्याजनित पाप।

ब्रह्मवनि (स० त्रि०) ब्राह्मणानुरक्त।

ब्रह्मवर्चस (स० क्ली०) ब्रह्मणो वेदस्य तपसो वा वर्चस्तेज। १ वह शक्ति जो ब्राह्मण तप और स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करे। २ ब्रह्मतेज। मनुमें लिखा है, कि ऋषिगण दीर्घ काल तक सन्ध्याका अनुष्ठान करते हैं, इस कारण वे दीर्घ-आयु, प्रज्ञा, यश, कीर्त्ति और ब्रह्मतेज प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मवर्चस्विन् (स० पु०) ब्रह्मणो वर्चः समासान्तविधेरनित्यत्वान् न अच्समासान्त ततोऽस्त्यर्थे विनि। ब्रह्मतेजोयुक्त, ब्रह्मतेजवाला।

ब्रह्मवर्त्त (स० पु०) ब्रह्मणा ब्राह्मणाना वर्त्त वर्त्तन यस्मिन्। ब्रह्मवर्त्तदेश।

ब्रह्मवर्द्धन (स० क्ली०) ब्रह्मणस्तपसो वर्द्धनं यस्मात्। ताम्र, तांबा।

ब्रह्मवल (स० पु०) सम्प्रदायविशेष।

ब्रह्मवल्ली (स० स्त्री०) लताविशेष।

ब्रह्मवाटीय (स० पु०) मुनिभेद।

ब्रह्मवाद (स० पु०) ब्रह्मणो वेदस्य वादो वदन पठनमिति यावत्। १ वेदपाठ, वेदका पढना पढाना। २ वह सिद्धान्त जिसमें शुद्ध चैतन्य मात्रको सत्ता स्वीकार की जाय, अनात्मको सत्ता न मानी जाय।

ब्रह्मवादिन् (स० पु०) ब्रह्मवाद वेदपाठोऽस्यास्तीति ब्रह्मवाद णिनि। वेदवक्ता, वेदपाठक। पर्याय—वेदान्ती।

ब्रह्मवादिनी (स० स्त्री०) ब्रह्मवादिन् ङीप्। गायत्री।

ब्रह्मवाद्य (स० क्ली०) ब्रह्मज्ञान विषयमें प्रतियोगिता।

ब्रह्मवालुक (स० क्लो०) तीर्थभेद।

ब्रह्मवास (स० पु०) ब्रह्मणो वास। ब्रह्मलोक।

ब्रह्मवाहस (स० त्रि०) ब्रह्मणा मन्त्ररूपवेदेन ऊह्यते वह-कर्मणि वाहु असिच् णित्। मन्त्र द्वारा प्राप्यमान।

ब्रह्मवित्त्व (स० क्ली०) ब्रह्मविदो भाव त्व। ब्रह्मविद्का भाव या धर्म।

ब्रह्मविद् (स० पु०) ब्रह्मस्वरूपतया वेत्ति आत्मान विद् क्विप्। १ ब्रह्मात्मैक्यवेत्ता। २ विष्णु। ३ शिव। (त्रि०) ४ वेदार्थज्ञाता, वेदका अर्थ जाननेवाला।

ब्रह्मविद्या (स० स्त्री०) ब्रह्मणो ब्रह्मविषयिणी वा विद्या। १ ब्रह्मज्ञान। २ दुर्गा। ३ उपनिषद्भेद, वह विद्या जिसके द्वारा कोई व्यक्ति ब्रह्मको जान सके।

ब्रह्मविद्यातीर्थ (स० पु०) एक ग्रन्थकार।

ब्रह्मविद्विष् (स० त्रि०) वेद या ब्राह्मणको हिंसा, द्वेष या घृणाकारी।

ब्रह्मविवर्द्धन (स० पु०) ब्रह्मणो विवर्द्धन ६ तत्। १ तपोवर्द्धक। २ विष्णु। (क्ली०) ३ तप आदिका विशेषरूपसे वर्द्धन।

का धन अपहरण करता है, वही ब्रह्मराक्षस होता है। रामायणमें लिखा है, कि ब्रह्मराक्षस यज्ञके विघ्नोत्पादक होते हैं। (रामा० १।११ स०)

२ महादेवका गणविशेष। पारिभाषिक प्रयोगमें मूग, रुरो, कच्छप, कानी और बधिर इन पाचोंको ब्रह्मराक्षस कहते हैं।

"मूगः रुरो कच्छप श्चैव कानी बधिर एवच।
महीतार्थं न गृह्णन्ति पञ्चैव ब्रह्मराक्षसा॥"

(व्यवहारप्र०)

ब्रह्मराज (स० पु०) १ राजपुत्रभेद। २ ब्रह्मदेशका अधिपति।

ब्रह्मरात (स० पु०) ब्रह्म तज्ज्ञान रातं यस्मै। १ शुकदेव। २ याज्ञवल्क्य मुनि। इन्होंने जनकसे ब्रह्म विद्या सीखी थी। बृहदारण्य उपनिषद्में यह उपाख्यान वर्णित है।

ब्रह्मरात्र (स० पु०) रात्रेरप रात्रः, ब्रह्मणो रात्रः। ब्राह्म मुहूर्त, रात्रिका शेष चार दण्ड। इस समय सबोंको विछावन परसे उठना चाहिये।

"ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानु मोदिताः।
अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः॥"

(भागवत १०।३३।४९)

ब्रह्मराति (स० पु०) १ याज्ञवल्क्य मुनि। ये ब्रह्मज्ञान देते हैं, इसीसे इनका ब्रह्मराति नाम पड़ा है। हेमचन्द्र टीकामें इनकी व्युत्पत्ति इस प्रकार लिखी है। ब्रह्मणा राति ददाति य., ब्रह्मन्-रा. रुपाबोधनाम्नीति विभाषया न णत्वम् (हेमटीका) (स्त्री०) २ ब्रह्माकी रात्रि। मनुमें इस ब्रह्मरात्रिका परिमाण इस प्रकार बतलाया है—अठारह निमिष अर्थात् चक्षुके पलकको एक काष्ठा, तीस काष्ठाकी एक कला, तीस कलाका एक मुहूर्त और तीस मुहूर्तोंकी एक दिन रात होती है। मनुष्योंके लिये दिवाभागमें जागरण और रात्रिकालमें निद्रा बतलाई गई है। मनुष्यका एक मास पितृलोकको एक दिनरात होता है। उनमेंसे कृष्णपक्ष उनका दिन और शुक्लपक्ष रात होता है। कृष्णपक्ष काम करनेका और शुक्लपक्ष सोनेका समय है। मनुष्यका एक वर्ष देवताओंका एक दिन रात माना गया है। फिर उनके भी इस प्रकार विभाग है,—उत्तरायण देवताओंका दिन और दक्षिणायन उनकी रात्रि है। देवपरिमाण चार हजार वर्षका सत्ययुग होता है। इस युगके चार सौ वर्ष सन्ध्या और चार सौ वर्ष सन्ध्यांश है। तीन हजार वर्षमें त्रेतायुग कल्पित हुआ है। उसकी सध्या और सन्ध्यांशका परिमाण तीन सौ वर्ष है। द्वापर युग दो हजार वर्ष और कलियुग हजार वर्ष इनकी सन्ध्या है और सन्ध्यांश एक एक सौ वर्ष कम है। मनुष्योंकी जो चार युगोंकी सख्या निरूपित हुई, उनके बारह हजार वर्षोंका देवताओंका एक युग होता है। इस प्रकार देवपरिमाण सहस्रयुगका एक दिन और उतने ही समयकी उनकी एक रात होती है। (मनु १ अ०)

ब्रह्मराशि (स० पु०) १ पवित्र ज्ञानराशि। २ पवित्र ग्रन्थसमूह। ३ परशुरामका नामान्तर। ४ बृहस्पति कर्तृक आक्रान्त श्रवणा नक्षत्र।

ब्रह्मरीति (स० स्त्री०) ब्रह्मवर्णा रीतिः। १ पित्तलभेद, एक प्रकारका पीतल। २ ब्रह्मा या ब्राह्मणकी रीति।

ब्रह्मरूपक (स० पु०) एक प्रकारका छन्द। इसके प्रत्येक चरणमें गुरुलघुके क्रमसे १६ अक्षर होते हैं। इसे चञ्चला और चित्र भी कहते हैं।

ब्रह्मरूपिणी (स० स्त्री०) १ वन्दा, बाँदा। २ ब्रह्मस्वरूपा।

ब्रह्मरेखा (स० स्त्री०) भाग्य या कपालका लेख। इसके विषयमें कहा जाता है, कि ब्रह्मा किसी जीवके गर्भमें आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।

ब्रह्मर्षि (स० पु०) ब्रह्मा ब्राह्मणः ऋषि या ब्रह्मा वेदं परब्रह्म वा ऋषति वेत्ति। वशिष्ठादि मुनिगण।

ब्रह्मर्षिदेश (स० पु०) ब्रह्मर्षीणां देशः ब्रह्मणोपलक्षणम्। कुरुक्षेत्रादि चार देश, वह भूभाग जिसके अन्तर्गत कुरु क्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेनक देश थे। इन ब्रह्मर्षि देशसम्भूत ब्राह्मणोंसे पृथ्वीके सभी लोगोंको सदाचार सीखना चाहिये।

ब्रह्मलिखित (स० पु०) ब्रह्मलेख, भाग्यकी अदृष्टलिपि।

ब्रह्मलोक (स० पु०) ब्रह्मणो लोकः भुवनं। ब्रह्माधिष्ठान भुवन, सत्यलोक। ब्रह्मा इस लोकमें अवस्थान करते हैं।

"सत्यस्तु सप्तमो लोक अपुनर्मारगामिनाम्।
ब्रह्मलोकः समाख्यातो ह्यप्रतीघातलक्षणः॥"

(वह्निपुराण

विष्णुपुराणके मतानुसार तपोलोकसे छ गुणा ऊपर सत्यलोक है। इसीको ब्रह्मलोक कहते हैं।

"षड्गुणेन तपोलोकात् सत्यलोके विराजते।
अपुनर्मारका यत्र ब्रह्मलोकोहि स स्मृत ॥"

(विष्णुपु० २।१ अ०)

ब्रह्मैव लोक । २ तुरीय ब्रह्मस्वरूप।

वेदान्त दर्शनमें लिखा है, कि जो नाडीरश्मिसम्बन्ध घटित अर्चिरादि पर्वविशिष्ट देवयानपथसे ब्रह्मलोकको गमन करते हैं, वे सब उपासकगण चन्द्रलोकगत उपासकोंकी तरह भोगक्षयके बाद पुन इस लोकमें जन्म नहीं लेते। इस पृथ्वीसे तृतीय स्वर्गमें ब्रह्मलोक है। यहा 'अर' और 'ण्य' नामक समुद्रतुल्य सुधाह्रद, अन्नमय और मदकर सरोवर तथा अमृतवर्षी अश्वत्थ है। यह स्थान तत्त्वज्ञानी ब्रह्मोपासकको छोड कर दूसरेके लिये अगम्य है। यह लोक अजेय ब्रह्मपुरी है। यहा प्रभु ब्रह्माके निर्मित हिरण्मय गृह है। उपासना द्वारा ब्रह्मलोक प्राप्त होनेसे फिर यहासे लौटना नही पडता। उपासक वहा लोकमें आ कर अमर होते हैं अर्थात् मुक्तिलाभ करते हैं। वेदान्त और ब्रह्म शब्द देखो।

ब्रह्मवक्तृ (स० पु०) १ परब्रह्मरूप सत्यधर्मका प्रचारक। २ वेदधर्मके प्रवर्त्तक आचार्य।

ब्रह्मवत् (स० त्रि०) ब्रह्मया ब्रह्मज्ञान सम्पन्न। वेदसम्बन्धीय।

ब्रह्मवद (स० पु०) सम्प्रदायविशेष।

ब्रह्मवद्य (स० क्ली०) ब्रह्म वेदस्तस्य वदन (वद-सुपि-क्यप् च। पा ३।१।१०६) इति भावे यत्। ब्रह्मका वाक्य।

ब्रह्मवद्या (स० त्रि०) ब्रह्मणा वेदेन उच्यते या ब्रह्मवद्य टाप्। कथा।

ब्रह्मवध (स० पु०) ब्राह्मणहत्या।

ब्रह्मवध्या (स० पु०) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण वध।

ब्रह्मवध्याकृत (स० क्ली०) ब्राह्मण हत्याजनित पाप।

ब्रह्मवनि (स० त्रि०) ब्राह्मणानुरक्त।

ब्रह्मवर्चस (स० क्ली०) ब्रह्मणो वेदस्य तपसो वा वर्चस्तेज। १ वह शक्ति जो ब्राह्मण तप और स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करे। २ ब्रह्मतेज। मनुमें लिखा है कि ऋषिगण दीर्घ काल तक सन्ध्याका अनुष्ठान करते हैं, इस कारण वे दीर्घ-आयु, प्रज्ञा, यश, कीर्त्ति और ब्रह्मतेज प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मवर्चस्विन् (स० पु०) ब्रह्मणो वर्चः समासान्तविधेरनित्यत्वात् न अच्समासान्त ततोऽस्त्यर्थे विनि। ब्रह्मतेजोयुक्त, ब्रह्मतेजवाला।

ब्रह्मवर्त्त (स० पु०) ब्रह्मणा ब्राह्मणाना वर्त्तं वर्त्तन यस्मिन्। ब्रह्मावर्त्तदेश।

ब्रह्मवर्द्धन (स० क्ली०) ब्रह्मणस्तपसो वर्द्धन यस्मात्। ताम्र, तांबा।

ब्रह्मवल (स० पु०) सम्प्रदायविशेष।

ब्रह्मवल्ली (स० स्त्री०) लताविशेष।

ब्रह्मवाटीय (स० पु०) मुनिभेद।

ब्रह्मवाद (स० पु०) ब्रह्मणो वेदस्य वादो वदन पठनमिति यावत्। १ वेदपाठ, वेदका पढना पढाना। २ वह सिद्धान्त जिसमें शुद्ध चैतन्य मातको सत्ता स्वीकार की जाय, अनात्मकी सत्ता न मानी जाय।

ब्रह्मवादिन् (स० पु०) ब्रह्मवाद वेदपाठोऽस्यास्तीति ब्रह्मवाद णिनि। वेदवक्ता, वेदपाठक। पर्याय—वेदान्ती।

ब्रह्मवादिनी (स० स्त्री०) ब्रह्मवादिन् ङीप्। गायत्री।

ब्रह्मवाद्य (स० क्ली०) ब्रह्मज्ञान विषयमें प्रतियोगिता।

ब्रह्मवालुक (स० क्ली०) तीर्थभेद।

ब्रह्मवास (स० पु०) ब्रह्मणो वास। ब्रह्मलोक।

ब्रह्मवाहस (स० त्रि०) ब्रह्मणा मन्त्ररूपवेदेन ऊह्यते वह-कर्मणि वाहु असिच् णिच्च। मन्त्र द्वारा प्राप्यमान।

ब्रह्मवित्त्व (स० क्ली०) ब्रह्मविदो भाव त्व। ब्रह्मविद्का भाव या धर्म।

ब्रह्मविद् (स० पु०) ब्रह्मस्वरूपतया वेत्ति आत्मान विद् क्विप्। १ ब्रह्मात्मैक्यवेत्ता। २ विष्णु। ३ शिव। (त्रि०) ४ वेदार्थज्ञाता, वेदका अर्थ जाननेवाला।

ब्रह्मविद्या (स० स्त्री०) ब्रह्मणो ब्रह्मविषयिणी वा विद्या। १ ब्रह्मज्ञान। २ दुर्गा। ३ उपनिषद्भेद, वह विद्या जिसके द्वारा कोई व्यक्ति ब्रह्मको जान सके।

ब्रह्मविद्यातीर्थ (स० पु०) एक ग्रन्थकार।

ब्रह्मविद्विष् (स० त्रि०) वेद या ब्राह्मणकी हिंसा, द्वेष या घृणाकारी।

ब्रह्मविवर्द्धन (स० पु०) ब्रह्मणो विवर्द्धन ६ तत्। १ तपोवर्द्धक। २ विष्णु। (क्ली०) ३ तप आदिका विशेषरूपसे वर्द्धन।

का धन अपहरण करता है, वही ब्रह्मराक्षस होता है। रामायणमें लिखा है, कि ब्रह्मराक्षस यज्ञके विघ्नोत्पादक होते हैं। (रामा० १।११ स०)

२ महादेवका गणविशेष। पारिभाषिक प्रयोगमें मूल, रुद्री, कच्छप, वानो और बधिर इन पापोंको ब्रह्मराक्षस कहते हैं।

"मूली रुद्री कच्छप श्वैव वानी बधिर एव च।
शरीराणि न मुञ्चन्ति पञ्चैते ब्रह्मराक्षसाः ॥"

(व्यवहारम०)

ब्रह्मराज (सं० पु०) १ राजपुत्रभेद। २ ब्रह्मदेशका अधिपति।

ब्रह्मरात (सं० पु०) ब्रह्म तत्त्वज्ञानं रातं दत्तं यस्मै। १ शुकदेव। २ याज्ञवल्क्य मुनि। इन्होंने आदित्यसे ब्रह्मविद्या सीखी थी। बृहदारण्य उपनिषद्में यह उपाख्यान वर्णित है।

ब्रह्मरात्र (सं० पु०) रात्रेरपरं रात्रं, ब्रह्मणो रात्रः। ब्राह्म मुहूर्त्त, रात्रिका शेष चार दण्ड। इस समय सबोंको विछावन परसे उठना चाहिये।

"ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानुमोदिताः।
अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः ॥"

(भागवत १०।३३।४१)

ब्रह्मराति (सं० पु०) १ याज्ञवल्क्य मुनि। ये ब्रह्मज्ञान देते हैं, इसीसे इनका ब्रह्मराति नाम पड़ा है। हेमचन्द्र टोकामें इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार लिखी है। ब्रह्मज्ञान राति ददाति च, अथवा ब्रह्मदत्तः रातः ...इति विग्रहः (स्त्री०) २ ब्रह्माकी रात्रि। मनुमें इस ब्रह्मरात्रिका परिमाण इस प्रकार बतलाया है—अठारह निमिष अर्थात् चक्षुके पलकको एक काष्ठा, तीस काष्ठाकी एक कला, तीस कलाका एक मुहूर्त्त और तीस मुहूर्त्तका एक दिन रात होती है। मनुष्योंके लिये दिवाभागमें जागरण और रात्रिकालमें निद्रा बतलाई गई है। मनुष्यका एक मास पितृलोकको एक दिनरात होता है। उसमेंसे कृष्णपक्ष उनका दिन और शुक्लपक्ष रात होता है। कृष्णपक्ष काम करनेका और शुक्लपक्ष सोनेका समय है। मनुष्यका एक वर्ष देवताओंकी एक दिन रात माना गया है। फिर उनमें भी इस प्रकार विभाग है,—उत्तरायण देवताओंका दिन और दक्षिणायन उनकी रात्रि है। देवपरिमाण चार हजार वर्षका सत्ययुग होता है। इस युगके चार सौ वर्ष सन्ध्या और चार सौ वर्ष सन्ध्यांश है। तीन हजार वर्षमें त्रेतायुग कल्पित हुआ है। उसकी सन्ध्या और सन्ध्यांशका परिमाण तीन सौ वर्ष है। द्वापर युग दो हजार वर्ष और कलियुग हजार वर्ष इसकी सन्ध्या है और सन्ध्यांश एक एक सौ वर्ष कम है। मनुष्योंकी जो चार युगोंकी संख्या निर्दिष्ट हुई, उसके बारह हजार वर्षका देवताओंका एक युग होता है। इस प्रकार देवपरिमाण सहस्रयुगका एक दिन और उतने ही समयकी उनकी एक रात होती है। (मनु १ अ०)

ब्रह्मराशि (सं० पु०) १ पवित्र ज्ञानराशि। २ पवित्र ग्रन्थसमूह। ३ परशुरामका नामान्तर। ४ बृहस्पति कर्तृक आक्रान्त श्रवणा नक्षत्र।

ब्रह्मरीति (सं० स्त्री०) ब्रह्मवर्णा रीतिः। १ पित्तलभेद, एक प्रकारका पीतल। २ ब्रह्मा या ब्राह्मणकी रीति।

ब्रह्मरूपक (सं० पु०) एक प्रकारका छन्द। इसके प्रत्येक चरणमें गुरुलघुके क्रमसे १६ अक्षर होते हैं। इसे चञ्चला और चित्र भी कहते हैं।

ब्रह्मरूपिणी (सं० स्त्री०) १ वन्दा, बाँदा। २ ब्रह्मस्वरूपा।

ब्रह्मरेखा (सं० स्त्री०) भाग्य या अभाग्यका लेख। इसके विषयमें कहा जाता है, कि ब्रह्मा किसी जीवके गर्भमें आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।

ब्रह्मर्षि (सं० पु०) ब्रह्मा ब्राह्मणः ऋषि या ब्रह्म वेदं पठति या अवगति वेत्ति। वशिष्ठादि मुनिगण।

ब्रह्मर्षिदेश (सं० पु०) ब्रह्मर्षीणां देशः आवासोपस्थान। कुरुक्षेत्रादि चार देश, वह भूभाग जिसके अन्तर्गत कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेनक देश थे। इस ब्रह्मर्षिदेशसम्भूत ब्राह्मणोंसे पृथ्वीके सभी लोगोंको सदाचार सीखना चाहिये।

ब्रह्मलिखित (सं० पु०) ब्रह्मलेख, भाग्यकी अदृष्टलिपि।

ब्रह्मलोक (सं० पु०) ब्रह्मणो लोकः भुवनं। ब्रह्माधिष्ठान भुवन, सत्यलोक। ब्रह्मा इस लोकमें अवस्थान करते हैं।

"...[illegible]...।
...[illegible]... ॥"

(कौर्मपुराण

विष्णुपुराणके मतानुसार तपोलोकसे छ गुणा ऊपर सत्यलोक है। इसीको ब्रह्मलोक कहते हैं।

"षड् गुणेन तपोलोकात् सत्यलोको विराजते।
अपुनर्मारका यत्र ब्रह्मलोकोहि स स्मृत ॥"
(विष्णुपु० २।२ अ०)

ब्रह्मैव लोक । २ तुरीय ब्रह्मस्वरूप।

वेदान्त दर्शनमें लिखा है, कि जो नाडोरश्मिसम्बन्ध घटित अर्चिरादि पर्वनिशिष्ट देवयानपथसे ब्रह्मलोकको गमन करते हैं, वे सब उपासकगण चन्द्रलोकगत उपासकोंकी तरह भोगक्षयके बाद पुन इस लोकमें जन्म नहीं लेते। इस पृथ्वीसे तृतीय स्वर्गमें ब्रह्मलोक है। यहां 'अर' और 'ण्य' नामक समुद्रतुल्य सुधाह्रद, अन्नमय और मदकर सरोवर तथा अमृतवर्षी अश्वत्थ है। यह स्थान तत्त्वज्ञानी ब्रह्मोपासकको छोड़ कर दूसरेके लिये अगम्य है। यह लोक अजेय ब्रह्मपुरी है। यहां प्रभु ब्रह्माके विनिमित हिरण्मय गृह है। उपासना द्वारा ब्रह्मलोक प्राप्त होनेसे फिर यहांसे लौटना नहीं पड़ता। उपासक वहां लोकमें जा कर अमर होते हैं अर्थात् मुक्तिलाभ करते हैं।

वदान्त और ब्रह्म शब्द देखो।

ब्रह्मवक्तृ (स ० पु० ) १ परब्रह्मरूप सत्यधर्मका प्रचारक। २ वेदधर्मके प्रवर्त्तक आचार्य।

ब्रह्मवत् ( स ० त्रि० ) ब्रह्मया ब्रह्मज्ञान सम्पन्न। वेदसम्बन्धीय।

ब्रह्मवद ( स ० पु० ) सम्प्रदायविशेष।

ब्रह्मवद्य ( स ० क्ली० ) ब्रह्म वेदस्तस्य वदन ( वद-सुपि-क्यप् च। पा ३।१।१०६) इति भावे यत्। ब्रह्माका वाक्य।

ब्रह्मवद्या ( स ० स्त्री० ) ब्रह्मणा वेदेन उच्यते या ब्रह्मवद्य टाप्। कथा।

ब्रह्मवध ( स ० पु० ) ब्राह्मणहत्या।

ब्रह्मवध्या ( स० पु० ) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण वध।

ब्रह्मवध्याकृत ( स ० क्ली० ) ब्राह्मण हत्याजनित पाप।

ब्रह्मवनि (स० त्रि०) ब्राह्मणानुरक्त।

ब्रह्मवर्चस ( स० क्ली० ) ब्रह्मणो वेदस्य तपसो वा वर्च्चस्तेजः। १ वह शक्ति जो ब्राह्मण तप और स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करे। २ ब्रह्मतेज। मनुमें लिखा है कि ऋषिगण दीर्घ काल तक सन्ध्याका अनुष्ठान करते हैं, इस कारण वे दीर्घ आयु, प्रज्ञा, यश, कीर्त्ति और ब्रह्मतेज प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मवर्चस्विन् (स ० पु०) ब्रह्मणो वर्चः समासान्तविधेरनित्यत्वात् न अच्समासान्त ततोऽस्त्यर्थे विनि। ब्रह्मतेजोयुक्त, ब्रह्मतेजवाला।

ब्रह्मवर्त्त (स० पु०) ब्रह्मणा ब्राह्मणाना वर्त्तं वर्त्तन यस्मिन्। ब्रह्मावर्त्तदेश।

ब्रह्मवर्द्धन (स ० क्ली०) ब्रह्मणस्तपसो वर्द्धन यस्मात्। ताम्र, तांबा।

ब्रह्मवल ( स ० पु०) सम्प्रदायविशेष।

ब्रह्मवल्ली ( स ० स्त्री० ) लताविशेष।

ब्रह्मवाटीय ( स ० पु० ) मुनिभेद।

ब्रह्मवाद ( स ० पु० ) ब्रह्मणो वेदस्य वादो वदन पठनमिति यावत्। १ वेदपाठ, वेदका पढ़ना पढ़ाना। २ वह सिद्धान्त जिसमें शुद्ध चैतन्य मात्रकी सत्ता स्वीकार की जाय, अनात्मकी सत्ता न मानी जाय।

ब्रह्मवादिन् (स ० पु०) ब्रह्मवाद वेदपाठोऽस्यास्तीति ब्रह्मवाद णिनि। वेदवक्ता, वेदपाठक। पर्याय—वेदान्ती।

ब्रह्मवादिनी ( स ० स्त्री० ) ब्रह्मवादिन् ङीप्। गायत्री।

ब्रह्मवाद्य ( स ० क्ली० ) ब्रह्मज्ञान विषयमें प्रतियोगिता।

ब्रह्मवालुक ( स ० क्ली० ) तीर्थभेद।

ब्रह्मवास ( स ० पु० ) ब्रह्मणो वास। ब्रह्मलोक।

ब्रह्मवाहस ( स० त्रि० ) ब्रह्मणा मन्त्ररूपवेदेन ऊह्यते वहकर्मणि वाहु असिच् णिच्। मन्त्र द्वारा प्राप्यमान।

ब्रह्मवित्त्व ( स ० क्ली० ) ब्रह्मविदो भाव त्व। ब्रह्मविद्का भाव या धर्म।

ब्रह्मविद् ( स ० पु० ) ब्रह्मस्वरूपतया वेत्ति आत्मान विद्-क्विप्। १ ब्रह्मात्मैक्यवेत्ता। २ विष्णु। ३ शिव। ( त्रि० ) ४ वेदार्थज्ञाता, वेदका अर्थ जाननेवाला।

ब्रह्मविद्या ( स ० स्त्री० ) ब्रह्मणो ब्रह्मविषयिणी या विद्या। १ ब्रह्मज्ञान। २ दुर्गा। ३ उपनिषद्वेद, वह विद्या जिसके द्वारा कोई व्यक्ति ब्रह्मको जान सके।

ब्रह्मविद्यातीर्थ ( स ० पु० ) एक ग्रन्थकार।

ब्रह्मविद्विष् ( स ० त्रि० ) वेद या ब्राह्मणकी हिंसा, द्वेष या घृणाकारी।

ब्रह्मविवर्द्धन ( स ० पु० ) ब्रह्मणो विवर्द्धन ऋ-अत्। १ तपोवर्द्धक। २ विष्णु। (क्ली०) ३ तप आदिका से वर्द्धन।

ब्रह्मद्रु (सं० पु०) ब्रह्मरूपः प्रसिद्धो द्रुः वा ब्रह्मणो वेदस्यार्थं यो द्रुः। १ पलाश वृक्ष। २ उदुम्बर, गूलरका पेड़।

ब्रह्मवृत्ति (सं० स्त्री०) ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य वृत्तिर्जीवनोपाय। १ ब्राह्मणका जीवनोपाय, ब्राह्मणकी जीविका। २ ब्रह्माकार अन्तःकरणवृत्ति।

ब्रह्मवृद्ध (सं० त्रि०) जप तप द्वारा वर्द्धितशक्ति या तत् सम्पन्न।

ब्रह्मवृन्द (सं० क्ली०) ब्राह्मण-सभा।

ब्रह्मवृन्दा (सं० स्त्री०) ब्रह्मप्रतिष्ठित नगरभेद।

ब्रह्मवेद (सं० पु०) ब्रह्मणो वेद ज्ञान ६-तत्। ब्रह्म ज्ञान। २ ब्रह्मप्रतिपादक वेदभाग। ३ वेदान्त।

ब्रह्मवेदमय (सं० त्रि०) ब्रह्मवेदयुक्त।

ब्रह्मवेदी (सं० स्त्री०) ब्रह्मणो वेदिरिव। १ देशविशेष। २ ब्रह्माके वेदीका आसन।

ब्रह्मवेदिन् (सं० त्रि०) ब्रह्म विद् णिन्। ब्रह्मवित्, ब्रह्मतत्त्वज्ञ।

ब्रह्मवैवर्त (सं० क्ली०) विवृतिरेव वैवर्तं स्वार्थे अण्, ब्रह्मणो विवर्तं विशेषेण विवृतिर्यत्र। १ वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्मके कारण हो। २ ब्रह्मके कारण प्रतीत होनेवाला जगत्, ब्रह्मका विवर्त जगत्। विवर्त और विकारका लक्षण इस प्रकार है।

"सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदाहृतः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः॥"
(वेदान्तसा०)

एक प्रकारकी वस्तु अन्य प्रकारकी होनेसे विकार और अन्यथा प्रतीत होनेसे विवर्त होता है। दूधसे दही होना विकार और रज्जुका सर्पाकारमें प्रतीत होना विवर्त है। जगत् ब्रह्मका विकार नहीं है, किन्तु विवर्त है। इसीको ब्रह्मवैवर्त कहते हैं। २ अठारह पुराणोंमेंसे एक पुराण जो कृष्ण भक्ति सम्बन्धी है। इसमें ब्रह्मका अच्छी तरह निरूपण किया गया है, इसीसे इसका नाम ब्रह्मवैवर्त पड़ा है। विशेष विवरण पुराण शब्दमें देखो।

ब्रह्मव्रत (सं० क्ली०) व्रतविशेष। यह व्रत [illegible] करना होता है। जो यह व्रत करते हैं उन्हें ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है।

ब्रह्मशल्य (सं० पु०) ब्रह्मेव शुभ्रं शल्यं त्वगावरणं यस्य, अति शुभ्रवल्कलत्वात् तथात्वं। सोमवल्क, बबूलका पेड़।

ब्रह्मशाला (सं० स्त्री०) १ तीर्थभेद। २ वेद पढ़नेका घर।

ब्रह्मशासन (सं० क्ली०) ब्रह्मणः शासनं निर्णयो उपदेशो वा यस्मिन्। १ ब्रह्मविचार गृह। इसका पर्याय धर्मकीलक है। २ ब्रह्माकी आज्ञा या उन सब कार्योंमें ब्रह्म कर्तृक नियोजन। ३ वेद या स्मृतिकी आज्ञा। आज्ञा लङ्घनकारी ब्रह्मद्वेषीको नरक होता है। ४ विधाताका अनुशासन या कर्त्तव्यरूप उपदेश। ५ वेद। ६ नवद्वीपके पूर्व-दक्षिणभागमें गङ्गाके दूसरे किनारे अवस्थित एक ग्राम। ७ वह ग्राम या भूमि जो राजाकी ओरसे ब्राह्मणको दी गई हो।

ब्रह्मशिर (सं० क्ली०) अस्त्रभेद। इसका उल्लेख रामायण और महाभारत दोनोंमें है। इस अस्त्रका चलाना अगस्त्यसे सीख कर द्रोणाचार्यने अर्जुन और अश्वत्थामाको सिखाया था। (भारत सौप्तिकप० १२ अ०)

ब्रह्मशुम्भित (सं० त्रि०) अग्निवर्द्धक मन्त्र द्वारा अलङ्कृत।

ब्रह्मश्री (सं० त्रि०) सामभेद।

ब्रह्मसंशित (सं० त्रि०) ब्रह्मणा संशितः ३-तत्। मन्त्र द्वारा तीक्ष्णीकृत।

ब्रह्मसंसद् (सं० स्त्री०) ब्रह्मलोक या ब्रह्मसदन।

ब्रह्मसत्य (सं० त्रि०) १ ब्रह्ममें सम्पूर्णभावसे स्थित। २ ब्रह्मज्ञानमय।

ब्रह्मसंहिता (सं० स्त्री०) वैष्णवाचारसिद्धान्त सम्बन्धीय एक ग्रन्थभेद, भगवत्सिद्धान्त संग्रहग्रन्थविशेष।

ब्रह्मसती (सं० स्त्री०) सरस्वती नदी।

ब्रह्मसत्र (सं० क्ली०) ब्रह्म वेदस्तदध्ययनरूपं सत्रं। ब्रह्मयज्ञ, विधिपूर्वक वेदपाठ।

ब्रह्मसत्रिन् (सं० त्रि०) ब्रह्मसत्र सम्पन्न ऋषि। ब्रह्मयज्ञ साधक।

ब्रह्मसदन (सं० क्ली०) सीदन्त्यस्मिन् सद् आधारे ल्युट्, [illegible] ६-तत्। यज्ञमें ब्रह्मा नामक ऋत्विक्का

आसन जो वारुणी काष्ठका और कुशसे ढका हुआ होता था। (कात्या० श्रौत० २।१।२) २ हिरण्यगर्भ सदन। ३ तीर्थभेद।

ब्रह्मसदस् ( स ० क्ली० ) ब्रह्माका आलय।

ब्रह्मसभा ( स ० स्त्री० ) ब्रह्माकी समिति।

ब्रह्मसमाज ( स ० पु० ) एक नया सम्प्रदाय जिसके प्रवर्त्तक बंगालके राजा राममोहनराय थे। ब्राह्मसमाज देखो।

ब्रह्मसम्भव ( सं० पु० ) द्विपृष्ठ नामक जैनविशेष।

ब्रह्मसर ( स ० क्ली० ) तीर्थभेद। इस तीर्थमें जा कर एक रात वास करनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। ब्रह्माने स्वयं इस सरोवरमें एक श्रेष्ठ यूप उच्छ्रित किया था। इस यूपका प्रदक्षिण करनेसे वाजपेय-यज्ञका फललाभ होता है। (भारत ३।८४।७६)

ब्रह्मसर्प (स ० पु०) ब्रह्मवृहान् सर्प। सर्पविशेष। पर्याय—हलाहल, अञ्जलाला।

ब्रह्मसव ( स ० पु० ) ब्रह्मयज्ञ।

ब्रह्मसागर ( स ० पु० ) तीर्थभेद।

ब्रह्मसामन् ( स ० क्ली० ) सामभेद।

ब्रह्मसायुज्य ( स ० क्ली० ) युनक्तीति युज (इगुपधेति। पा ३।१।१३५) क। तत (तेन सहेति। पा २।२।२८) इति बहु व्रीहि। ब्रह्मका भाव। पर्याय—ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्व, ब्रह्म सायुज्य।

ब्रह्मसार्ष्टिता ( स ० स्त्री० ) ब्रह्मणः सार्ष्टिता समान गतिता। ब्रह्मतुल्य गतित्व।

ब्रह्मसावर्णि ( स ० पु० ) ब्रह्मपुत्रो सावर्णि। दशम मनु भेद। भागवतके अनुसार इनके मन्वन्तरमें विष्वक्सेन अवतार और इन्द्र, शम्भु, सुवासन विरुद्ध इत्यादि देवता होंगे। (भागव० ८।१३ अ०)

ब्रह्मसिद्धान्त ( स ० पु० ) पैतामह ज्योतिषसिद्धान्तभेद।

ब्रह्मसुत ( स ० पु० ) ब्रह्मणः सुत। १ केतुभेद। २ मरीचि प्रभृति ब्रह्माके पुत्र।

ब्रह्मसुता ( स ० स्त्री० ) सरस्वती।

ब्रह्मसुवर्चला ( स ० स्त्री० ) १ तन्नामक ओषधिविशेष। २ आदित्यभक्ता, हुरहुज या हुरहुर नामका पौधा। पहले तपस्वी लोग इसका कड़ुआ रस पीते थे। ३ ब्राह्मी शाक।

ब्रह्मसू ( सं० पु० ) चतुर्व्यूहात्मक विष्णुकी एक मूर्त्ति, अनिरुद्ध अवतार। पर्याय—उषापति, प्रद्युम्न, काम देव। कल्पान्तरमें ब्रह्मा अनिरुद्धसे उत्पन्न हुए थे।

( पद्मपुराण )

ब्रह्मसूत्र ( स ० क्ली० ) ब्रह्मणि वेदग्रहणकाले उपनयन-समये धृत यत सूत्र। १ यज्ञसूत्र, जनेऊ। पर्याय—पवित्र, यज्ञोपवीत, द्विजायनी, उपवीत, सावित्र, सावित्री सूत्र। २ व्यासका शारीरिक सूत्र जिसमें ब्रह्मका प्रति पादन है और जो वेदान्तदर्शनका आधार है।

ब्रह्मसूत्रिन् ( स ० त्रि० ) ब्रह्मसूत्र अस्त्यर्थे इनि। ब्रह्म-सूत्रधारी, यज्ञसूत्री।

ब्रह्मसूनु ( स ० पु० ) ब्रह्मणः सूनुः पुत्र। १ इक्ष्वाकु-वंशोद्भव राजविशेष। पर्याय—ब्रह्मदत्त। २ ब्रह्मपुत्र।

ब्रह्मसृज् ( स ० पु० ) १ ब्रह्माको उत्पन्न करनेवाला। २ शिवका एक नाम।

ब्रह्मस्तम्भ ( स ० पु० ) ब्रह्माके आश्रयस्वरूप जगद्-ब्रह्माण्ड।

ब्रह्मस्तेय ( स ० पु० ) ब्रह्मणः स्तेय ६-तत्। गुरुकी विना अनुमतिके अन्यको पढ़ाया हुआ पाठ सुन कर अध्ययन करना। (मनु २।११६)

ब्रह्मस्थल ( स ० क्ली० ) नगरभेद।

ब्रह्मस्थान ( स ० क्ली० ) ब्रह्मणः स्थान ६ तत्। तीर्थ भेद।

ब्रह्मस्व (स ० क्ली०) ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य स्व धन। ब्राह्मण सम्बन्धि धन। ब्राह्मणका धन नहीं चुराना चाहिये, चुरानेसे उसे भारी पाप होता है तथा जब तक सूर्य चन्द्रमा रहेंगे, तब तक वह नरकमें वास करता है।

( ब्रह्मवैवर्त्त प्रकृति० ४६ अ० )

ब्रह्मस्वरूप ( स ० पु० ) १ ब्रह्म। २ जगत्प्रकृतिका प्रतिरूप। स्त्रीलिङ्गमें ब्रह्मस्वरूपा और ब्रह्मस्वरूपिणी पद होता है। ३ मूल प्रकृतिरूपा भगवती।

ब्रह्महत्या ( स ० स्त्री० ) ब्रह्मणो हनन (हनस्त ३।३। १०८) इति भावे क्यप, तकारोऽन्तादेशश्च स्त्रीत्व लोकात्। ब्राह्मणवध। यह एक महापातक है।

"ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागम।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह॥" (मनु)

ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय, गुरुपत्नी गमन और इनका संसर्ग भी महापातक है।

ब्रह्महत्याधिष्ठात्री देवताका स्वरूप ब्रह्मवैवर्त्त-पुराणमें इस प्रकार वर्णित है,—

"तप्तताम्राभया शुष्काङ्गी लोहिताम्बरधारिणी।
रक्तपिङ्गलनेत्रा च शुष्ककण्ठोष्ठतालुका॥
लेलिहानरसना ज्वालादीप्ता कराला।
धातुर्नाशकारी वह्निज्वाला द्रवेतिनम्॥
अट्टहासं हसन्ती च दन्तादीप्ता च भीषणम्॥
इ ही दण्ड्या च ता पेशे स्मारं स्मारं गुरोर्वधम्।
निरन्तं सन्ययती भूपालप्रस्थकृत ॥"

( ब्रह्मवैवर्तपु० श्रीकृष्ण-जन्मख० ४७ अ० )

ब्रह्महत्याजनित महापातककी निवृत्तिके लिये प्राय श्चित्त करना विधेय है । इस प्रायश्चित्तका विषय प्रायश्चित्त विवेकमें विस्तृत भावसे वर्णित है। ब्राह्मण यदि बिना जाने ब्राह्मणवध करे, तो उसे पापशान्तिके लिये बारह वर्ष व्रतानुष्ठान करना चाहिये। प्रायश्चित्त विवेकमें लिखा है—

"ब्रह्महा द्वादशाब्दानि कुटीं कृत्वा वने वसेत्।
भैक्षाश्यात्मविशुद्ध्यर्थं कृत्वा शवशिरोध्वजम्॥
भिक्षार्थी विचरेद्ग्रामे यद्येवं न जीवति॥"

( मनु ११।७२ )

यदि इस द्वादश वार्षिक व्रतका अनुष्ठान करनेमें असमर्थ हो, तो १८० धेनुदान करना चाहिये और यदि यह भी न कर सके, तो मूल्योद्धार करना आवश्यक है। इसमें ५४० कार्षापण उत्सर्ग और १०० कार्षापण दक्षिणा देनी होती है। अनन्तर प्रायश्चित्तके विधानानुसार प्रायश्चित्त करना होगा। शास्त्रविहित इस प्रकार प्राय श्चित्तानुष्ठान करनेसे ब्रह्महत्यापातक जाता रहता है।

ब्राह्मण यदि ज्ञानपूर्वक ब्रह्महत्या करे, तो उसे द्विगुण द्वादशवार्षिक व्रतका अनुष्ठान करना होगा। यदि इतना न कर सके, तो ३६० धेनुदान, उसके अभावमें १०८० कार्षापण उत्सर्ग और २०० कार्षापण दक्षिणा आवश्यक है। अनन्तर वे प्रायश्चित्तके विधानानुसार प्रायश्चित्त करें। क्षत्रिय यदि अज्ञान ब्राह्मणहत्या करे, तो उसके लिये ब्राह्मण वर्णके वधके प्रायश्चित्तको दूना प्रायश्चित्त विधेय है। इच्छापूर्वक ब्रह्महत्या करनेसे उसे पूर्वोक्त प्रायश्चित्तको दूना करना होगा।

वैश्य अज्ञानमें यदि ब्रह्महत्या करे, तो उसे छत्तीस वर्ष व्रत करना होगा। यदि उसमें अशक्त हो, तो ५४० धेनुदान और उसके भी अभावमें १६२० कार्षापण दान और ४०० कार्षापण दक्षिणा आवश्यक है। इच्छापूर्वक करनेसे उसको ७२ वर्ष व्रतानुष्ठान करना होगा। इसमें असमर्थ होनेसे १०८० धेनुदान और उसके अभाव में ३२४० कार्षापण दान और ४०० कार्षापण दक्षिणा दें। शूद्र यदि अज्ञानतः ब्रह्महत्या करे, तो उसे ४८ वर्ष व्रत करना होगा। असमर्थोंके लिये ७२० धेनुदान और उसके अभावमें २१६० कार्षापण उत्सर्ग तथा ४०० कार्षा पण दक्षिणा देना विधेय है। ज्ञानपूर्वक करनेसे इसके दूने प्रायश्चित्तका अनुष्ठान आवश्यक है।

( प्रायश्चित्त-विवेक )

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें शास्त्रनिर्दिष्ट ब्रह्महत्याका विषय इस प्रकार लिखा है :—

श्रीकृष्ण, शिव, गणेश और सूर्य आदि देवताओंकी पूजामें जो भेद समझता है, उसे ब्रह्महत्याका पाप लगता है। गुरु, इष्टदेवता, अन्नदाता, पिता और माता आदि गुरुजनके प्रतिभेद समझनेसे भी ब्रह्महत्याका पाप होता है। जो हरिके पादोदकके साथ अन्य देवताके पादोदककी तुलना करते और विष्णु विष्णुभक्त तथा सर्वशक्तिस्वरूपा प्रकृतिकी निन्दा करते हैं उन्हें भी ब्रह्महत्याका पाप लगता है। भारतवर्षमें अनुगामी द्विजोंमें भूसन्त, अन्नमें जीवादिदान, गुरु, माता, पिता, साध्वी स्त्री और भार्याका पालन पोषण नहीं करनेसे ब्रह्महत्यापातक होता है।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके प्रकृतिखण्ड ३०वें अध्यायमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां उसका उल्लेख नहीं किया गया।

ब्रह्महन् ( स० पु० ) ब्रह्माणं ब्राह्मणं हतवान्, ब्रह्म-हन (ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्। पा ३।२।८७) इति क्विप्। ब्रह्मघ्न, ब्राह्मणकी हत्या करनेवाला। ब्रह्मघ्न देखो।

ब्रह्महत्यादि महापातककारी अनेकों वर्ष नरकका भोग करके पीछे कुत्ते, सूअर, गदहे, ऊंट, बकरे, भेड़,

मृग, पक्षी, चण्डाल और पुक्कश आदि योनियोंमें जन्म लेते हैं।

"श्वशूकरखरोष्ट्राणां गोऽजाविमृगपक्षिणाम।
चण्डालपुक्कशानाञ्च ब्रह्महा योनिमृच्छति॥"
(मनु १२।५५)

ब्रह्महविस् (सं० क्ली०) ब्रह्मैव हविरर्प्यमाणमाज्य। अर्प्यमाण हवि।

"ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥" (गीता ४।२४)

ब्रह्महुत (सं० क्ली०) ब्रह्मणि ब्राह्मणे हुतं दत्त ब्रह्मपदमत्र उपलक्षण तेन नृमात्रे बोध्य। पञ्चमहायज्ञके अन्तर्गत अतिथिपूजनरूप यज्ञविशेष।

ब्रह्महृदय (सं० पु०) नक्षत्रभेद, प्रथमवर्गके १६ नक्षत्रोंमें से एक नक्षत्र जिसे अङ्गरेजीमें कॅपेल्ला (Capella) कहते हैं।

ब्रह्महृद (सं० पु०) ह्रदविशेष।

ब्रह्मा (सं० पु०) ब्रह्म देखो।

ब्रह्माक्षर (सं० क्ली०) प्रणव, ओङ्कार।

ब्रह्माक्षरमय (सं० त्रि०) ब्रह्माक्षर मयट्। मन्त्र।

ब्रह्माग्रभू (सं० पु०) ब्रह्मणोऽग्रे सम्मुखे भवतीति भू क्विप्, यद्वा ब्रह्मणो देहाज्जातत्वात् तथात्व। घोटक, घोड़ा।

ब्रह्माञ्जलि (सं० पु०) ब्रह्मणे वेदपाठार्थं कृतो योऽञ्जलि। १ सामवेद पाठके समय स्वरविभागार्थ जो अञ्जलि की जाती है, उसका नाम ब्रह्माञ्जलि है। २ वेदपाठार्थ गुरुके निकट कर्त्तव्य विनयाञ्जलि।

ब्रह्माणी (सं० स्त्री०) ब्रह्माणमणति कीर्त्तयतीति अण् शब्दे कर्मण्यण् ङीप्, यद्वा ब्रह्माणमानयति जीवयतीति अन् प्राणने ण्यन्तादस्मात् कर्मणि अणि कृते (गौरादिभ्यः। पा ४।१।४१) इति निपातनेन अस्य पुंयोगादिति णत्वञ्च। ब्रह्माकी पत्नी। ब्रह्माके आधे शरीरसे इनकी उत्पत्ति हुई है। इनका नामान्तर सावित्री, सरस्वती और गायत्री है। २ दुर्गा। ३ रेणुका नामक गन्धद्रव्य। ४ एक छोटी नदी जो कटकके जिलेमें वैतरणी नदीसे निकली है।

ब्रह्माण्ड (सं० क्ली०) ब्रह्मणो जगत्स्रष्टुरण्डम्। १ चतुर्दशभुवन, चौदहों भुवनोंका समूह, गोलक। ब्रह्मणा विश्वसृजा कृतमण्डम्। २ भुवनकोष, विश्वगोलक। मनुमें लिखा है, कि स्वयम्भू भगवान्‌ने प्रजासृष्टिकी इच्छासे पहले जलकी सृष्टि की और उसमें बीज फेंका। बीज पड़ते ही सूर्यके समान प्रकाशवाला स्वर्णाभ अण्ड या गोल उत्पन्न हुआ। पितामह ब्रह्माका इसी अण्ड या ज्योतिर्गोलकमें जन्म हुआ। उसमें अपने एक संवत्सर तक निवास करके उन्होंने ध्यानबलसे उसके आधे आध दो खण्ड किये। ऊर्ध्वखण्डमें स्वर्ग आदि लोकोंकी और अधोखण्डमें पृथ्वी आदिकी रचना की तथा मध्यभागमें आकाश अष्टदिक और समुद्र आदि स्थापित किये। विश्वगोलक इसीलिये ब्रह्माण्ड कहा जाता है।
(मनुसंहिता १ अध्याय)

विष्णुपुराणमें लिखा है, कि भगवान् ब्रह्माने एक अण्ड या गोल उत्पादन किया। वह प्राकृत अण्ड भूतोंकी महायतासे धीरे धीरे बढ़ता गया। अव्यक्तरूप जगत्पति विष्णु व्यक्तरूपी हो ब्रह्मस्वरूपमें उस अण्डमें व्यवस्थित हुए। सुमेरु इसका उल्व अर्थात् गर्भवेष्टन चर्म, अन्यान्य महीधर जरायु और समुद्र गर्भोदक हुआ। पीछे उस अण्डमें पवन सहित समस्त द्वीप, समुद्र और सदेवासुर मनुष्य आदि उत्पन्न हुए। ब्रह्माके अण्डसे उत्पन्न होनेके कारण इसका ब्रह्माण्ड नाम पड़ा।
(विष्णुपु० १।२ अ०)

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें श्रीकृष्णजन्मखण्डके ८४वें अध्यायमें ब्रह्माण्डकी उत्पत्तिका विवरण लिपिबद्ध है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां पर कुछ नहीं लिखा गया। सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणि आदि ग्रन्थोंमें भी ब्रह्माण्डकी उत्पत्तिकथाका वर्णन किया गया है। विस्तृत विवरण खगोल, पृथिवी और भूगोल शब्दमें देखो।

२ महादान विशेष। पुण्यदिनमें तुलापुरुष दानके विधानानुसारसे यह दान विधेय है। सुवर्ण द्वारा ब्रह्माण्ड प्रस्तुत करके उसमें अष्टदिग्गज, षड्वेदाङ्ग, अष्टलोकपाल, ब्रह्मादि देवगण, उमा, लक्ष्मी, वसु, आदित्य और मरुत् आदि अङ्कित करे। यह

निर्मित ब्रह्माण्ड भी उसमें देना चाहिये। उसके पूर्वमें अनन्तशय्या, पूर्वदक्षिणमें प्रद्युम्न, दक्षिणमें प्रकृति और सङ्कर्षण पश्चिममें चारों वेद और अनिरुद्ध तथा उत्तरमें अग्नि और वासुदेवकी मूर्ति अङ्कित रहे थी। पीछे यथाविधान पूजा और होमादि करके सुवर्ण ब्रह्माण्डका तीन बार प्रदक्षिण करना होगा। प्रदक्षिण करनेका मन्त्र इस प्रकार है,—

"[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]॥"

(मत्स्यपुराण २७० अ०)

यह ब्रह्माण्ड दान करनेसे सभी पाप जाते रहते हैं। उक्त महापुराणके २७०वें अध्यायमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है। वराहपुराणमें भी इस दानका विधान देखनेमें आता है। कार्त्तिक मासकी शुक्लाद्वादशी या पूर्णिमाके दिन सुवर्णनिर्मित ब्रह्माण्ड दान करनेसे पृथिवी स्थित सभी वस्तुके दानमें जो पुण्य है, वही पुण्य प्राप्त होता है।

"[illegible] ।
[illegible] ॥"

(वराहपु०)

३ कोणत्व, कपाल। ४ शुभ लिङ्गका भेद।

ब्रह्माण्डपुराण (सं० पु०) अठारह महापुराणके अन्तर्गत एक पुराण। यह पुराण पूर्व और उत्तर भागमें तथा प्रक्रिया, अनुषङ्ग, उपोद्घात और उपसंहार नामक चार पादोंमें विभक्त है। इसकी श्लोक संख्या १२ हजार है। पहले जावाद्वीपमें यह महापुराण यवद्वीपमें लाया गया था और वहीं कविभाषामें इसका अनुवाद हुआ था। [illegible] पुराण और [illegible]।

ब्रह्माम्भु (सं० पु०) [illegible] ब्रह्मात् भू क्विप्। अभ्र, मेघ। [illegible] में लिखा है कि घोड़ा ब्रह्माके नासिकासे उत्पन्न हुआ है। [illegible]। भाष्यमें उसका अर्थ इस प्रकार किया है "[illegible] ब्रह्माके [illegible] उत्पन्न हुए।"

[illegible] (सं० स्त्री०) [illegible]।

ब्रह्माद्रिजाता (सं० स्त्री०) ब्रह्मा [illegible] सम्भूता। गोदावरी।

ब्रह्मादित्य—[illegible] और [illegible] वा [illegible] नामक ग्रन्थके प्रणेता, [illegible]के पुत्र। इनका दूसरा नाम ब्रह्मार्क भी था।

ब्रह्मानन्द (सं० पु०) ब्रह्मस्वरूप आनन्द, ब्रह्मज्ञानसे उत्पन्न आनन्द। यह आनन्द सब आनन्दसे श्रेष्ठ है। ब्रह्म साक्षात्कार होने पर जो आनन्द होता है, उसीका नाम ब्रह्मानन्द है।

ब्रह्मानन्द—१ [illegible]के शिष्य। इन्होंने [illegible] दीपिका, न्यायानन्दतरङ्गिणी, भावार्थदीपिका [illegible]टीका, त्रिपुरार्णवरहस्य और ज्योत्स्ना (हठप्रदीपिका) नामक ग्रन्थ बनाये हैं। २ [illegible]के प्रणेता।

ब्रह्मानन्दगिरि—श्रीमद्भागवत् गीता टीकाके प्रणेता।

ब्रह्मानन्दभारती—१ भागवत [illegible] प्रणेता। २ रामानन्द और गोपालानन्दके शिष्य। इन्होंने शङ्कराचार्य कृत वाक्यसुधा और विष्णुसहस्रनाम [illegible] की टीका लिखी है।

ब्रह्मानन्दयोगी—[illegible] सिद्धान्तके प्रणेता।

ब्रह्मानन्दसरस्वती—१ आनन्ददीपकी लघु [illegible] प्रणेता। २ [illegible] ३ ईशावास्योपनिषद्भाष्य, ईशावास्योपनिषद्रहस्य, माण्डूक्योपनिषद्भाष्य और वेदान्तसूत्रमुक्तावली प्रभृति ग्रन्थके प्रणेता। ४ पुरुषार्थप्रबोध ग्रन्थके कर्त्ता। ५ नारायणतीर्थ, परमानन्द सरस्वती और विश्वेश्वरके शिष्य। इन्होंने अद्वैतचन्द्रिका या लघु चन्द्रिका नामक मधुसूदनका अद्वैतसिद्धिका पर टिप्पणी और अद्वैतसिद्धान्तविद्योतन, सिद्धान्तबिन्दुन्याय रत्नावली, और ब्रह्मानन्दीय और ब्रह्मानन्दीय नामक ग्रन्थ बनाये हैं। ये [illegible] ब्रह्मानन्द नामसे परिचित थे।

ब्रह्मानन्दी—[illegible] प्रणेता।

ब्रह्मासन (सं० पु०) ब्रह्मणे [illegible] आसनम्। [illegible]। [illegible] स्वस्ति, [illegible]

और भूतराट्र ये सात राक्षस वास करते हैं।

(विष्णुपु० २।१०।१७)

ब्रह्माभ्यास (सं० पु०) ब्रह्मण वेदस्य अभ्यास। वेदाभ्यास।

ब्रह्मायण (सं० त्रि०) १ ब्रह्मका आश्रय स्थान। २ नारायणका नामान्तर।

ब्रह्मायतन (सं० क्ली०) ब्रह्मणः आयतन। १ ब्रह्मणका गृह। २ ब्रह्ममन्दिर।

"गृहब्रह्मायतने विप्रान् विनिहन्याद्ब्रह्मिनो गोत्रे।

(बृहत्स० ३३।२७)

ब्राह्मणके घर पर उल्कापात होनेसे विप्रगणका विनाश होता है।

ब्रह्मारण्य (सं० क्ली०) ब्रह्मण वेदस्य अरण्यमिव। वेद पाठ भूमि।

ब्रह्मार्पण (सं० क्ली०) ब्रह्मणे अर्पण। १ सच्चिदानन्दात्मकरूपमें ब्रह्मचिन्तन।

"ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्॥"

(गीता ४।२४)

२ परमात्मा ब्रह्ममें सर्वकर्म फलका त्याग। कूर्मपुराणमें लिखा है—

ब्रह्ममें जो कुछ दिया जाता है, वह फिर ब्रह्मको ही अर्पित होता है। हम लोग किसी कार्यके कर्त्ता नहीं हैं, ब्रह्म ही सबोंके कर्त्ता हैं। इस प्रकार सभी कर्मों के अर्पणका नाम ब्रह्मार्पण है। (कूर्मपु० ४ अ०)

ब्रह्मावर्त्त (सं० पु०) ब्रह्मणा ब्रह्मनिष्ठब्राह्मणानामावर्त्त इव, बहुलब्राह्मणाश्रयत्वादस्य तथात्वं। १ देशविशेष। सरस्वती और दृषद्वती इन दो नदियोंके बीच जो प्रदेश पड़ता है, उसीका नाम ब्रह्मावर्त्त है। यह देश देवनिर्मित होनेके कारण पवित्र माना गया है। इस देशमें ब्राह्मणादि वर्णोंका जो आचार है, वही सदाचार कहलाता है।

इस देशका आचार ही सबोंके शिक्षणीय है। अलावा इसके कुरुक्षेत्र, मत्स्य, कान्यकुब्ज और मथुरा ये सब ब्रह्मर्षिदेश हैं। ब्रह्मर्षिदेश देखो।

२ ब्रह्मावर्त्तमें अवस्थित एक तीर्थका नाम।

(भारत ३।८३।४०)

ब्रह्मासन (सं० क्ली०) ब्रह्मणे ब्रह्मप्राप्त्यै आसन। ध्यानासन, योगासन। जिस आसन पर बैठ कर ब्रह्मध्यान किया जाता है, वह पद्म और स्वस्तिकादि आसन है। २ रुद्रयामलोक्त देवपूजाङ्ग आसन भेद।

"यद्ब्रह्मासनं तदा वक्ष्ये यत्कृत्वा ब्राह्मणो भवत्।
एकं पादमूरौ दत्वा तिष्ठेद्दण्डाकृतिर्भवेत्॥"

(रुद्रयामल)

ऊरुमें एक पाद दे कर दण्डाकृति अवस्थान करनेसे ब्रह्मासन होता है। इस प्रकार आसन करके तपस्या करनेसे ब्रह्मत्वलाभ होता है।

ब्रह्मास्त्र (सं० क्ली०) ब्रह्मस्वरूपमस्त्र। ब्रह्मस्वरूप अस्त्र विशेष। यह सब अस्त्रोंसे श्रेष्ठ है। मन्त्रपूत करके इसका प्रयोग करना होता है।

"तदा रामस्तु क्रुद्धेन ब्रह्मास्त्रं प्रति रावणे।
नारायणविनाशार्थं चिन्तितं चैतुराननम्॥" (देवीपु०)

२ एक रसौषध जो सन्निपातमें दिया जाता है। यह रस पारे, गंधक, सींगिया और काली मिर्चके योगसे बनता है।

ब्रह्मास्य (सं० क्ली०) ब्रह्मा या ब्राह्मणका मुख।

ब्रह्माहुत (सं० त्रि०) हुताहुति, जिसे आहुति दी गई हो।

ब्रह्माहुति (सं० स्त्री०) ब्रह्मणे आहुति। ब्रह्मयज्ञ, वेदाध्ययन।

ब्रह्मिन् (सं० पु०) ब्रह्म वेदस्तपो वाऽस्त्यस्य शेषतया ब्राह्मादित्वादिनि, टिलोप। १ वेद और तपस्याके शेषीभूत परमेश्वर। ब्रह्म वेदो वैधतयाऽस्त्यस्य इनि। २ वेद और तदर्थाभिज्ञ।

ब्रह्मिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन ब्रह्मी इष्ठन्, टिलोपः। अतिशय ब्रह्मज्ञ, ब्रह्मज्ञानसम्पन्न।

ब्रह्मिष्ठा (सं० स्त्री०) ब्रह्मिष्ठ-टाप्। दुर्गा।

ब्राह्मी (सं० स्त्री०) मेधाजनकत्वात् ब्रह्मणे हिता ब्रह्म अन्, बाहुल्कात् न वृद्धि। स्वनामख्यात शाकविशेष, ब्राह्मी शाक। इसका गुण—सारक, शीतवीर्य, तिक्त, कषाय, मधुररस, लघु, मेधाजनक, शीतल, मधुरविपाक, आयुस्कर, रसायन, स्वर और स्मृतिशक्तिवर्द्धक, पुष्ट, पाण्डु, मेह, रक्तदोष, कास, विष, शोथ और ज्वरनाशक।

(भावप्र०) ब्राह्मी शब्द देखो।

२ पञ्चगव्यमध्य, एक प्रकारकी मछली जो जिसे पकड़ नहीं हो सकती है। ३ कंजिका मार्गी।

ब्राह्मीघृत (स० क्री०) ब्राह्मीपाक घृत। घृतौषध विशेष। इसका दूसरा नाम ब्राह्मघृत है। प्रस्तुत प्रणाली—घृत और एक सेर ब्राह्मीशाकका जलमें या एक कलमें पूर्ण, पानी उसका रस निचोड़ ले, अनन्तर गव्य रस १६ सेर, गव्य घृत ४ सेर, कल्कार्थ हरिद्रा, मालतीपुष्प, कुट, निसोथ, हरीतकी, प्रत्येकका रस एक पल और पीपल, विडङ्ग, सैन्धव, चीनी, वच, प्रत्येक दो तोला इसका यथाविधान घामी आगमें पाक करना होगा। यह घृत पान करनेसे ज्वरविरति दूर होती है। जो कोकिलके जैसा गाना गन्धस्वर बनाना चाहे उन्हें इस घृतका अवश्य सेवन करना चाहिये। ७ दिन तक इस घृतका सेवन करनेसे किन्नरकी तरह कण्ठस्वर और एक मास सेवन करनेसे श्रुतिधर होता है। इस घृतके सेवन करनेसे पुष्ट, वर्ण, शरीर और कान्तिमान प्रतिभा एवं बल, वर्ण और अग्निकी वृद्धि होती है। (भैषज्य रत्नावली स्वरभेदाधिकार)

ब्राह्मीपत्र (स० त्रि०) ब्राह्मीका पत्र इसका इयत्तुल्य, दिग्गे। प्रसिद्ध, ब्राह्मणलक्षण।

ब्रह्मेन्द्रसरस्वती—१ धर्मनिरूपणके प्रणेता। २ एक ग्रन्थकार। कवीन्द्रन्द्र कवीन्द्रचन्द्रोदयमें इनका उल्लेख है।

ब्रह्मेन्द्रस्वामी—एक ग्रन्थकार। कवीन्द्र चन्द्रोदयमें इनका परिचय देखनेमें आता है।

ब्रह्मेश (स० त्रि०) ब्रह्मणि ब्राह्मणे ईशः ईश्वरो यस्य पृषो दरादित्वात् साधु। १ कार्तिकेय। २ विष्णु।

ब्रह्मेश्वर—ज्योतिस्तत्त्वके प्रणेता।

ब्रह्मेश्वरतीर्थ (स० क्ली०) तीर्थविशेष।

ब्रह्मोज्झ (स० पु०) ब्रह्म वेदमुज्झति उज्झ त्यागे अण्। वेदत्यागी। मनुने वेदत्यागीको अनुपातकी कहा गया है।

ब्रह्मोदुम्बर (सं० क्ली०) तीर्थभेद।

ब्रह्मोद्य (स० त्रि०) ब्रह्मणि वेदस्य ब्राह्मणस्य वा उद्य प्रतिपादम्। इसका प्रतिपादन।

ब्रह्मोत्तर (स० त्रि०) ब्रह्म ब्राह्मण उत्तरः प्रधानं यस्य। ब्राह्मण स्वामिक भूम्यादि, वह भूमि जो ब्राह्मणको दान की जाय। ब्रह्मोत्तर भूमिका कर नहीं लगता।

ब्रह्मोत्तरार्थ (स० क्ली०) तीर्थविशेष।

ब्रह्मोत्तर (स० पु०) शिव।

ब्रह्मोद्य (सं० क्री०) ब्रह्मणो वेदस्य वदनं वद वद-क्यप्। १ ब्रह्मवाक्य, वेदवाक्य। २ ब्राह्मणका वाक्य। ३ गूढ़ कथन।

ब्रह्मोद्या (स० स्त्री०) ब्रह्म वद क्यप् टाप्। ब्रह्मकी कथा।

ब्रह्मोपनिषद् (स० पु०) उपनिषद्विशेष।

ब्रह्मोपनेतृ (स० पु०) ब्रह्मार्थं ब्राह्मणं उपनयति इति, ब्रह्म उप नी-तृच्। १ पलाशवृक्ष। २ ब्राह्मणका उपनयन करानेवाला।

ब्रह्मौदन (स० क्री०) ब्रह्मणे वेदवेत्त्रे। यह भात जो यज्ञ में ऋत्विजोंको दिया जाता है।

"ब्रह्मौदनं त्रिंशत्रिंश पचामि अस्मा ..॥"

(अथर्व० ११।१।१)

ब्राहुई (बारोई)—बलुचिस्तानका पार्वत्य-अंचलवासी जाति विशेष। किन्ताकी नगरी ही ये लोग राजा मानते हैं। इनकी भाषा ब्राहुई है जो पारसी, पेश्तु या बलूची भाषासे स्वतन्त्र है।* कलात और सरावान प्रदेशमें ब्राहुईगण

* कलातवासिद् मेलने ... यह जाति पश्चिम-दक्षिण भारतम वसूचिस्तानके पहाड़ प्रदेशमें आ कर बस गई। इन कालकका यह अनुमान है कि ईस्वीसन् और मुसलमानोंके आक्रमण ... आ कर निवास कर रहे हैं। उनका यह भी अनुमान है, कि जब तक आर्यों की तरह द्राविड़ जाति दक्षिण भारत प्रवेश करती थी। ब्राहुईगणका कहना है, कि उनके पूर्वपुरुष आलेप और अलेप्पो प्रदेशसे इस देशमें आये हैं। ... उनकी भाषामें प्राचीन हिन्दू ... प्रयोग पाया है। उनकी धारणा है, कि ब्राहुईगण एक, गुराबा का ... अनुगामी ... और ... आये थे। ... इसी ... ब्राहुई ... देखा जाता है।

ब्राहुई रहते हैं। साधारणतः इनके ७४ थाक हैं। प्रत्येक थाकके ऊपर एक एक सरदार आधिपत्य करते हैं। ये लोग कहीं भी एक जगह स्थिर हो कर नहीं रहते। लोमन नामक पशमनिर्मित तम्बू ही इनका वासगृह और शयन तथा भोजनोपयोगी पात्रादि ही इनका असबाब है। ये सबके सब हानफेली सम्प्रदायभुक्त सुन्नी मुसलमान हैं। इनका विश्वास है, कि स्वयं महम्मदने विशेष अनुग्रहपूर्वक इनके धर्मका पर्यवेक्षण करनेके लिये ४० साधुओंको भेज दिया था। बलुचिस्तानके उत्तरदिग्वर्त्ती चिहल-तौं नामक पर्वत पर उक्त ४० जनोंकी समाधि हैं। उक्त ४० के अलावा उनके मध्य पीर, मुल्ला या फकीर आदि दूसरे साधु मुसलमान नहीं हैं। सैकड़ों हिन्दू और भिन्न भिन्न सम्प्रदायी मुसलमानगण इस पवित्र पर्वतके दर्शन करने आते हैं।

पठान और बलूची जातिसे इनके शारीरिक गठनमें बहुत फर्क पड़ता है। कच्छ गण्डवके प्रखर सूर्यकर और पार्वतीय शीत तथा हिमका सहन करके ये लोग स्वभावतः बलशाली हो गये हैं। ये लोग कर्मदक्ष कृषिकार्य निरत, सहिष्णु, सत्साहसी, उद्यमशील, शिकारी और योद्धा हैं। अर्थगृध्नु होने पर भी ये विश्वासी, विषादशून्य और हिंसावृत्तिहीन हैं।

शीत अथवा ग्रीष्म ऋतुमें इनका पहनावा एक ही तरहका रहता है। तलवार, ढाल और बन्दूक इनका प्रधान युद्धास्त्र है। आजकल वृटिश सरकारके बम्बई सेनादलमें बहुत सी ब्राहुई सेना काम करती है।

खिलातके खाँ स्वयं ब्राहुई व शके और कुम्बराणी शाखाके प्रतिष्ठाता कुम्बरके वंशधर हैं। इस शाखाके तीन थाक हैं। अहमदजई, खानी और कुम्बराणी। कुम्बराणी थाकके लोग शेष दो थाकोंकी कन्या लेते हैं। खिलातपति ब्राहुई जातिके प्रतिनिधिरूपमें राजनैतिक सम्बन्धकी रक्षा करते हैं।

ब्राह्म (स० क्ली०) ब्रह्मन् इद, ब्रह्मन् (तस्येदं। पा ४।३। १२०) इत्यण् (नस्तद्धिते। पा ६।४।१४४) इति टिलोपः। १ ब्रह्मतीर्थ। यह तीर्थ वृद्धाङ्गुष्ठके मूलमें अवस्थित है। आचमन करते समय ब्राह्मणको इस तीर्थ पर जल रख कर आचमन करना चाहिये। हाथके दक्षिण और अङ्गुष्ठके उत्तर जो रेखा है, वही ब्राह्मतीर्थ है। उसी रेखा पर जल ले कर आचमन करना होता है।

२ ब्रह्मपुराण। ३ ब्रह्मदेवताके अध्यादि। (पु०) ब्रह्मणोऽपत्यं पुमान् इति अन्। ४ नारद। ब्रह्मण इदम् इति अन्। ५ विवाहविशेष, ब्राह्मविवाह। महर्षि मनुने ब्राह्म, प्राजापत्य, दैव आदि ८ प्रकारके विवाहोंका उल्लेख किया है।

कन्याको वस्त्राऽलङ्कारादि द्वारा आच्छादन करके विद्या और सदाचारसम्पन्न वरको यथाविधि अर्चना पूर्वक जो कन्या सम्प्रदान किया जाता है, उसीको ब्राह्मण विवाह कहते हैं। विस्तृत विवरण विवाह शब्दमें देखो।

६ मुहूर्त्तविशेष, ब्राह्ममुहूर्त्त, रात्रिके शेष चार दण्ड। ७ मनुक्त राजाओंका धर्मविशेष, राजाओंका एक धर्म जिसके अनुसार उन्हें गुरुकुलसे लौटे हुए ब्राह्मणोंकी पूजा करनी चाहिये। ८ नक्षत्र। ९ ब्रह्मसम्बन्धी दिन। १० सम्प्रदायविशेष। ब्राह्मसमाज देखो। (त्रि०) ११ ब्रह्म सम्बन्धीय।

ब्राह्मक (स० त्रि०) ब्रह्मणा कृत कुलालादित्वात् वुञ्। विप्रकृत, ब्राह्मणका किया हुआ।

ब्राह्मकृतेय (स० पु०) ब्रह्मकृतका गोत्रापत्य।

ब्राह्मगुप्त (स० पु०) १ आयुधजाति वर्गभेद। स वर्गो येषां त्रिगर्त्तादित्वात् छ। २ ब्राह्मगुप्तीय आयुधजाति वर्गभेदयुक्त।

ब्राह्मण (स० पु०) ब्रह्मणो विप्रस्य प्रजापतेर्वा अपत्य, ब्रह्म वेदस्तमधीते वा ब्रह्मन् अण्। (ब्राह्मोऽजातौ। पा ६।४।१७१) इति न, टिलोपः। विप्र जातिभेद, ब्राह्मण स्वजाति, ब्राह्मण जाति। पर्याय—द्विजाति, अग्रजन्मा, भूदेव, वाडव, विप्र। (अमर) द्विज, सूत्रकण्ठ, ज्येष्ठवर्ण, अग्रजातक, द्विजन्मा, वक्त्रज, मैत्र, वेदवास, नय, गुरु। (शब्दरत्नाकर) ब्रह्मा, षट्कर्मा, द्विजोत्तम। (राजनि०) ब्राह्मण समस्त वर्णोंमें श्रेष्ठ होते हैं। प्लक्षद्वीपमें इनको हंस कहते हैं। शाल्मलद्वीपमें श्रुतिधर, कुशद्वीपमें कुशल, क्रौञ्चद्वीपमें गुरु, शाकद्वीपमें ऋतव्रत कहलाते हैं। पुष्करद्वीपमें सभी एक वर्ण हैं (भाग०) "ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीत्" (श्रुति)

ब्रह्माके मुखसे ब्राह्मण उत्पन्न हुए थे। मनुसंहितामें

लिखा है—धर्मरक्षाके निमित्त लोकोंके मनुष्योंकी वृद्धिके लिये मुख, बाहु, ऊरु और पादसे क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रवर्णकी सृष्टि की। ब्राह्मणकी सृष्टि कर उनके लिए अध्यापन, अध्ययन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह इन छः कर्मोंका निर्देश किया। इसीलिए ब्राह्मणका एक नाम षट्कर्मा भी है।

"अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहञ्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥"

(मनु० १।८८)

ब्रह्माके मुखसे ब्राह्मणने जन्म लिया है, ब्राह्मण सबसे पहले उत्पन्न हुए हैं, और वेद धारण करते हैं इस कारण धर्मानुशासनसे ब्राह्मण ही सृष्ट पदार्थोंके प्रभु हैं। देवताओं और पितरोंको हव्यकव्य प्राप्त होगा और उससे समस्त जगत्‌की रक्षा होगी, इसलिए ब्रह्माने तपस्या करके पहले अपने मुखसे ब्राह्मणकी सृष्टि की। [illegible] देवगण जिनके मुखसे हवनीय द्रव्य सामग्री सदा भोजन करते हैं, पितृगण श्राद्धादिमें प्रदत्त अन्नादि जिनके मुखसे ग्रहण करते हैं, ऐसे ब्राह्मणोंसे श्रेष्ठ और कौन हो सकता है। सृष्ट पदार्थोंमें जिनके प्राण हैं वे श्रेष्ठ हैं, बुद्धिजीवियोंमें मनुष्य श्रेष्ठ हैं, और मनुष्योंमें ब्राह्मण ही सर्वश्रेष्ठ हैं। ब्राह्मणोंमें जो विद्वान् हैं वे श्रेष्ठ हैं और उनमें भी अनुष्ठाता श्रेष्ठ हैं तथा उनसे भी श्रेष्ठ हैं ब्रह्मज्ञ ब्राह्मण।

विप्रकी जो शरीरोत्पत्ति है, वह धर्मका शाश्वत मूर्तिस्वरूप अवस्था है। धर्मार्थ उत्पन्न हो कर विप्र ब्रह्मत्व प्राप्त करता है। जब ब्राह्मण जन्मग्रहण करते हैं, तब वे पृथिवीमें सर्वोपरि प्रतिष्ठित तथा धर्मोंकी रक्षार्थ सब जीवोंके ईश्वररूपी गिने जाते हैं। [illegible] पृथ्वीमें समस्त धन ही विप्रका निजस्व है। सर्व वर्णोंमें श्रेष्ठ और उत्कृष्ट ब्राह्मण होनेसे विप्र ही सम्पूर्ण सम्पत्ति ग्रहणके योग्य हैं। विप्र जो भोजन करता है, परिधान या दान करता है वह परकीय होने पर भी उसका निजस्व है। ब्राह्मण विप्रके ही अनुग्रहसे अन्यान्य लोग भोजनादि द्वारा जीवित रहते हैं।

विप्रको सर्वदा धर्मशास्त्रानुसार व्यवहार रखना चाहिए। [illegible] करे। जिस ब्राह्मण गृहमें [illegible] यदि वैदिक अनुष्ठान करे तो वेदाध्ययनका सम्पूर्ण लाभ हो सकता है।

(म०, १।[illegible])

महाभारतमें लिखा है—ब्राह्मणी क्षत्रिया और वैश्याके गर्भसे ब्राह्मण द्वारा जो पुत्र उत्पन्न होता है, वह पुत्र भी ब्राह्मण होता है।

"ब्राह्मण्यां ब्राह्मणाज्जातो ब्राह्मणः स्यान्न संशयः।
क्षत्रियायां तथैव स्याद्वैश्यायामपि चैव हि॥"

(महाभा० अनु० प० ४७।१८)

इन वर्णोंके गर्भसे ब्राह्मण द्वारा जो पुत्र उत्पन्न होता है वही ब्राह्मण सबोंसे श्रेष्ठ है।

महाभारत शान्तिपर्वमें विप्रके लक्षण इस प्रकार लिखे हैं, जो जातकर्मादि संस्कार द्वारा संस्कृत हैं, परम पवित्र और वेदाध्ययनमें अनुरक्त हो कर प्रतिदिन सन्ध्यावन्दना, स्नान, जप, होम, देवपूजा और अतिथि सत्काररूप षट्कर्मोंका अनुष्ठान करते हैं तथा शौचाचारपरायण, नित्य ब्रह्मनिष्ठ, गुरुप्रिय और सर्वदा सत्यनिरत रहते हैं वे ही ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण [illegible] गुण प्रकाश होते हैं। (भार० शान्ति० १८९ अ०)

विप्रकी जीविका आदिके विषयमें भगवान् मनुने कहा है कि विप्रको आयुके प्रथम चतुर्थांशमें गुरुगृह निवास कर तथा द्वितीयांशमें दारग्रहण कर घरमें अवस्थान करना चाहिए। ब्राह्मणको ऐसी जीविका न करनी चाहिए, जिससे किसी जीवको किसी प्रकार अनिष्ट हो या थोड़ी भी पीड़ा हो। आपत्कालमें भी ऐसी वृत्ति ब्राह्मणके लिए विहित नहीं है। लोकयात्रा किसी प्रकार चले और शरीरको क्लेश न पहुँचे, ऐसा सञ्चय करके ही ब्राह्मणको धन सञ्चय करना चाहिए। ब्राह्मणको ऋत, अमृत, मृत, प्रमृत या सत्यानृत द्वारा जीविका निर्वाह करनी चाहिए, किन्तु श्ववृत्ति (नौकरी) कदापि नहीं करनी चाहिए। इनकी व्याख्या यह है—भूमिमें गिरे हुए धान्यादिके कणोंको संग्रह करना शिलवृत्ति है, इसके द्वारा जीविका निर्वाह करनेका नाम ऋत है। बिना माँगे जो कुछ मिल जाय, उसे अमृतवृत्ति कहते हैं। भिक्षा माँगना मृत वृत्ति है और वाणिज्य द्वारा जीविका निर्वाह करना सत्यानृत वृत्ति है।

इन वृत्तियों द्वारा जीविकानिर्वाह करनेवाला ब्राह्मण चार श्रेणियोंमें विभक्त है, जैसे कुशूल धान्यक, कुम्भी धान्यक, त्र्यहैहिक और अश्वस्तनिक। जो ब्राह्मण तीन वर्ष तक अनायास ही निर्वाह कर सकता है, उसको कुशूलधान्यक कहते हैं। इस प्रकारके ब्राह्मण सोमपान करनेके योग्य हैं। जो एक वर्षके लिए धान्यादिका संग्रह कर रखते हैं, ऐसे ब्राह्मण कुम्भीधान्यक कहलाते हैं। किसी किसीके मतसे ६ मासके लिये भी धान्यका संग्रह रखनेवालेको कुम्भीधान्यक कहते हैं। तीन दिन लायक धान्यका संग्रह रखें, ऐसे ब्राह्मण त्र्यहैहिक कहाते हैं। जो कलके लिए भी कुछ संग्रह नहीं करते, नित्य संग्रह करते और निर्वाह करते हैं, ऐसे ब्राह्मण अश्वस्तनिक हैं। अश्वस्तनिक विप्र ही सबसे श्रेष्ठ हैं। उनके बाद त्र्यहैहिक और कुम्भीधान्यक हैं। कुशूल धान्यक ब्राह्मणोंमें निकृष्ट हैं।

इन सभी प्रकारके ब्राह्मणोंमेंसे कोई ऋतामृतादि षट्कर्मशील हैं, कोई त्रिकर्मकारी हैं, कोई द्विकर्मवान् हैं और कोई अध्यापना मात्र द्वारा ही निर्वाह करते हैं।

शिलोञ्छवृत्ति परायण विप्र धन साध्य पुण्य कर्ममें अक्षम हों तो वे केवल मात्र अग्निहोत्रपरायण होंगे, और पर्व तथा अयनान्तमें जो यज्ञ किये जाते हैं (अर्थात् दर्श पौर्णमास्यादि यज्ञ) करेंगे। जो दम्भादिसे रहित और सरल हो, जिस आजीविकाके लिए कुछ भी शठता या वञ्चना न करनी पड़ती हो, जो अति विशुद्ध अर्थात् पाप रहित हो, ऐसी आजीविका ब्राह्मणको यजन याजनादि द्वारा सम्पन्न करना योग्य है। सुखार्थी ब्राह्मण मात्र सन्तोष अवलम्बन पूर्वक धन चेष्टादिसे विरत रहे। कारण, सन्तोष ही सुखका मूल है और असन्तोष दुःखका कारण।

गृहस्थ ब्राह्मणोंको उपयुक्त वृत्तियोंमेंसे कोई भी एक वृत्ति अवलम्बन कर निम्नोक्त नियमोंका पालन करना चाहिए। ब्राह्मणोंको उचित है, कि यावज्जीवन निरलस रह कर अपने अपने आश्रमानुसार वेदोक्त और स्मार्त्त कर्त्तव्यकर्मोंका सम्पादन करे। जिन विषयोंमें इन्द्रियोंकी शीघ्र आसक्ति होती है ऐसे कर्म या शास्त्रविरुद्ध अथवा अध्यापनादि तथा धन रहने पर या उसके अभावमें किसी स्थानसे धन सञ्चयकी चेष्टा करना ब्राह्मणके लिए निषिद्ध है। इच्छापूर्वक किसी इन्द्रिय विषयमें आसक्त न हो; इन्द्रिय किसी विषयमें आसक्त हों, तो उनको भी निवृत्त करना चाहिये। कोई भी ऐसा उपार्जन न करे जो वेदाभ्यासके विरुद्ध हो। किसी भी प्रकारसे परिवारका प्रतिपालन कर, प्रतिदिन स्वाध्याय लाभ मात्र कर लेने मात्रसे ही ब्राह्मणका जीवन सफल है। जैसी उम्र हो, जैसा कर्म हो, जितना धन हो, जैसा वेदाध्ययन और जैसी वंशकी मर्यादा हो, उसीके अनुसार वेश, भूषा, वाक्य और बुद्धि रखना ही विधेय है। ब्राह्मणको चाहिए, कि वह ऋषियज्ञ अर्थात् वेदाध्ययन, देवयज्ञ तथा होम, भूतयज्ञ, (भूतबलि) मनुष्ययज्ञ (अतिथिसत्कार) और पितृयज्ञ (श्राद्ध) इन पांच यज्ञोंका सर्वदा अनुष्ठान करे। शक्ति हो तो इन यज्ञानुष्ठानोंका कदापि परित्याग न करे। उदित होमकारीको ब्राह्मण दिन और रात्रिके प्रारम्भमें तथा अनुदित होमकारीको दिन और रात्रिके अन्तमें सर्वदा अग्निहोत्रयज्ञ करना चाहिए। कृष्णपक्ष समाप्त होने पर दर्श नामक यज्ञ तथा पूर्णिमाको पौर्णमास यज्ञ, नूतन शस्य उत्पन्न होने पर अग्रहायण याग, ऋतु पूर्ण होने पर चातुर्मास्य याग और अयनके प्रारम्भमें पशुयाग करना उचित है।

वेद विरुद्ध मार्गावलम्बी, वर्णान्तरवृत्तिजीवी, बिलाड़ व्रती, वेदविरुद्धतार्किक और बकव्रती ब्राह्मणोंकी वाक्य द्वारा अर्चना नहीं करनी चाहिये। अन्नदानके लिये निषेध नहीं है। स्नातक ब्राह्मणको मुण्डन न कराना चाहिए, किन्तु केश, नख और श्मश्रु कर्त्तन कर सकते हैं। इन्हें सर्वदा क्लेशसहिष्णु और शुक्लवास परिधान करना चाहिए। भिक्षादिके समय वेणु निर्मित यष्टि और शौच प्रक्षालनादिके लिए जल पूर्ण कमण्डलु साथ रखें। सूर्योदय और सूर्यास्तके समय सूर्य दर्शन करना निषिद्ध है। राहु-ग्रस्त और जल प्रतिबिम्बित सूर्यका दर्शन भी विधेय नहीं। वत्सबन्धनकी रज्जुका उल्लङ्घन, वारिवर्षणके समय द्रुत गमन और जलमें अपना प्रतिबिम्ब दर्शन ये कार्य भी निषिद्ध कहे गये हैं। एक वस्त्र पहन कर भोजन करना, विवस्त्र हो कर स्नान करना तथा मार्गमें, भस्मके ऊपर, गोचारण स्थानमें, फाल द्वारा

वर्जित भूमिमें जानेसे, ज्योतिष्मय चिता और देव वाटिकामें मूत्रिकादिके स्पर्श और गर्भमें मल-मूत्र त्याग करना सर्वथा निषेध नहीं है।

ब्राह्मण मुँहसे फूँक कर आग न जलावें। सन्ध्याकालमें भोजन, शयन और गमन निषिद्ध है। तैलादि द्वारा भूमि लेपन करना और पहने हुए कपड़ेसे भोजन करना निषिद्ध है। जिस ग्राममें अधिक रोग बढ़ गया हो, जो स्थान शूद्रप्रधान हो और जहाँ पर धर्मभ्रष्ट पाखण्डोका अधिकार हो, ऐसे स्थानमें ब्राह्मणोंको न रहना चाहिए। जिन पदार्थोंका स्नेहांश स्वाभाविक निकाल लिया गया हो, वे पदार्थ भी ब्राह्मणको न खाना चाहिए। जिसमें दृष्ट और अदृष्ट किसी प्रकार का भी फल नहीं है, ऐसा काम लेशमात्र भी करना उचित नहीं। ब्राह्मण अञ्जलि द्वारा जल न पीवे, न उसके ऊपर रख कर भोजन करे और न बिना प्रयोजन किसी विषयमें कौतूहल ही करे। संगीत और नृत्य आदि वादन न करें। जानुके भीतर या ऊपर हाथोंसे रख कर आस्फोटन ध्वनि, दन्तघर्षण और गर्जनादिकी तरह चीत्कार करना भी ब्राह्मणके लिए निषिद्ध है। कांसेके पात्रमें पैर धोने, फूटे बरतनमें भोजन करनेसे पाप उत्पन्न होते हैं, इसलिए ऐसा न करना चाहिए। दूसरेके व्यवहार किये जूता, वस्त्र, उपवीत, अलङ्कार, माला और कमण्डलु आदि व्यवहारमें लाना उचित नहीं। स्वयं अपने नख और लोम छेदन न करना चाहिए।

ब्राह्मणको चाहिए कि ब्राह्ममुहूर्त अर्थात् रात्रिके शेष मुहूर्तमें जागरित होकर धर्म और अर्थका तथा कैसे कल्याण हो यह चिन्ता करें। देवस्मरणपूर्वक निष्क्रमण करके उठ कर शौच करें। उसके बाद आचमन कर मुख धो कर शुचि हो कर समाहित मनसे प्राणायाम सन्ध्या और गायत्री जप करें। इससे दीर्घायु प्रज्ञा, यश, कीर्त्ति और ब्रह्मतेज प्राप्त होता है। इत्यादि।

विशेष विवरण के लिए मनु चतुर्थ अध्याय और आह्निक तत्त्व देखो।

ब्राह्मणके लिए प्रतिदिन सान्ध्यवन्दन सन्ध्योपासनादि करना अत्यन्त कर्त्तव्य है। यदि कोई ब्राह्मण लोभसे या मोहवशसे सन्ध्यावन्दनादि न करें तो, देव और पितृगण उनके द्वारा की हुई पूजा और श्राद्धादि ग्रहण नहीं करते। ऐसे ब्राह्मण शूद्रके समान हैं और वे सब कर्मोंसे वर्जनीय हैं।

"[illegible]
[illegible] ॥"
"[illegible]
[illegible] ॥"

( [illegible] ३१ अ० )

वेदान्तशास्त्रमें लिखा है—नित्य सन्ध्यादि नित्यकर्म हैं, नहीं करनेसे प्रत्यवाय होता है। इसके अनुष्ठानसे दुरितक्षय पाप क्षय होते हैं। "नित्यानि, सन्ध्या प्रत्यवाय साधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि" (वेदान्तसार)

ब्राह्मणके प्रतिदिन सन्ध्या करनेका फल—

"[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥"

( ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्रकृतिख० ३१ अ० )

जो ब्राह्मण पापक्षालक नित्यसन्ध्याका अनुष्ठान करते हैं, वे सूर्यके समान तेजस्वी होते हैं। उनके पद पद चलने द्वारा पृथिवी पवित्र होती है, उनके संसर्गसे तीर्थ समुदाय भी पवित्र होता और पाप समूह धुल जाता है।

ब्राह्मणके लिए निषिद्ध कर्म ये हैं—विष्णुमन्त्रका परित्याग, शिवपूजा वर्जन, एकादशी न करना, विष्णु नैवेद्य भोजन, शूद्रान्न भोजन, शूद्र दासत्व, शूद्र याजन, कन्या विक्रय, हरिनाम विक्रय और विद्या विक्रय आदि कर्म ब्राह्मणके लिए निन्दनीय हैं। इनके सिवा पापस्थ, वृष वाहन, वृषलपति, अग्निहोत्रीका दासत्व, वार्द्धुषिक भोजन, शूद्रान्न भोजन, असत्प्रतिग्रह, पार्थिवपूजा, मृत्तिका, दुग्ध विक्रय, दत्तापहरण और अन्नयाचन विन्नादि कर्म ब्राह्मणके निषिद्ध हैं। ( [illegible] ३१ )

"[illegible]
[illegible]"

( [illegible] ३३ )

यदि ब्राह्मण शूद्राओंके साथ गमन करे, तो वह वृषलीपति कहलायगा। इस श्रेणीके ब्राह्मणोंके श्राद्धका पिण्ड विष्ठा-सदृश और तर्पण मूत्र तुल्य है, तथा उसका कोटि जन्मार्जित तपस्याका फल नष्ट होता है।

ब्राह्मणके लिए प्रतिग्रह निषेध—कुरुक्षेत्र, वाराणसी, बदरी, गङ्गासागरसङ्गम, पुष्कर, भास्करक्षेत्र, प्रभास, रासमण्डल, हरिद्वार, केदार, सोमतीर्थ, बदरपाचन, सरस्वती नदीतीर, वृन्दावन, गोदावरी, कौशिकी, त्रिवेणी और नारायणक्षेत्र आदि तीर्थोंमें ब्राह्मणको प्रतिग्रह न करना चाहिए।

पारिभाषिक महापातकी ब्राह्मण—

"शूद्रानां त्रित्याजी ग्रामयाजीति कीर्त्तित।
देवोपजीवजीवी च देवलश्च प्रकीर्त्तित॥
शूद्रपाकोपजीवी य सूपकार प्रकीर्त्तित।
सन्ध्यापूजाविहीनश्च प्रमत्त पतित स्मृत॥
एते महापातकिन कुम्भीपाकं प्रयान्ति ते।"

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्रकृतिखं० २७ अ०)

सात शूद्रोंके अधिक यजनकारीका नाम ग्रामयाजी है। ये ग्रामयाजी ब्राह्मण, देवोपजीवी देवल, शूद्रका पाचक ब्राह्मण और सन्ध्यावन्दनादि विहीन प्रमत्त ब्राह्मण महापातकी हैं। इस श्रेणीके ब्राह्मण कुम्भीपाक नरकमें जाते हैं।

ब्राह्मण प्रसन्न चित्तसे जो भी आशीर्वाद देते हैं, वह पूर्णस्वस्त्ययन है।

"आशिषं कर्त्तुमर्हन्ति प्रसन्नमनसा शिशुम्।
पूर्णमस्त्ययनं तस्यो विप्राशीर्वचनं ध्रुवम्॥"

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० श्रीकृष्णजन्म खं० ११ अ०)

ब्राह्मण अपने कर्म द्वारा अपाङ्क्तेय या पङ्क्तिपावन होते हैं। अपाङ्क्तेय ब्राह्मण, जैसे—क्लिब, भ्रूणहा, यक्ष्मी, पशुपालक, यार्द्धुषिक, गायक, सर्वविक्रयी, अगारदाही, गरद, कुण्डाशी, सोमविक्रयी, सामुद्रिक, राजभृत, तैलिक, कूटकारक, पिताके साथ विवादकारी, अभिशस्त, स्तेन, शिल्पोपजीवी, पर्वकार, सूची, मित्रद्रोही, पारदारिक, परिवित्ति, कुश्चर्मा, गुरुतल्पग, कुशीलव, देवलक और नक्षत्रजीवी आदि ब्राह्मण अपाङ्क्तेय हैं, अर्थात् इनके साथ बैठ कर भोजन न करना चाहिए। 'पङ्क्ति पावन' शब्द देखो।

ब्राह्मण क्षत्रियादि त्रिवर्णके द्वारा प्रणम्य हैं। पुष्पहस्त, पयोहस्त, देवहस्त, तैलाभ्यङ्गित विग्रह, देवगृहस्थित, औरदेव पूजाके समय, इन अवस्थाओंमें ब्राह्मणको प्रणाम नहीं करना चाहिए।

"पुष्पहस्तं पयोहस्तं देवहस्तञ्च भूसुर।
न नमेत् गृहमध्य तैलाभ्यङ्गितविग्रहम्॥" इत्यादि।

(पद्मपु० क्रियायोग खं० २ अ०)

आततायी ब्राह्मणको वध करनेमें कुछ भी दोष नहीं है। (ब्रह्मवैवर्त्त पु० गणपति खं० २५ अ०)

यहां तक तो विभिन्न शास्त्रोंसे ब्राह्मणके आचार व्यवहार और अनुष्ठेय व्रतकर्मादिका विषय लिखा गया। अब अन्यान्य विषय लिखे जाते हैं। ब्रह्मके मानस-कल्पमें मानवादि सृष्ट होनेके बाद, उनमें जाति विभाग सङ्गठित हुआ। भारतवर्षके सिवा अन्याय देशके अधिवासीगण एक जातिमें शामिल हैं और विभिन्न सम्प्रदायोंमें विभक्त हैं। परन्तु इस हिन्दू प्रधान भारतभूमिमें ब्राह्मणादि चार जातियोंका विभाग है। मध्य एशियासे जो आर्य औपनिवेशिक पहले भारतकी तरफ आये थे, उनमें इस प्रकारका वर्ण विभाग था या नहीं, इसका कोई प्रकृष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं है। हम ऋग्वेदके पुरुषसूक्तमें (१०।९०।११ १२) देखते हैं, कि पुरुष विभक्त होने पर उनके मुखसे ब्राह्मण हुए थे। इनके अतिरिक्त वाजसनेय संहिता (१४।२८-३६), अथर्ववेद (१५।१०।१-३ और १९।६।६), तैत्तिरीय संहिता (७।१।१।४ ६), तैत्तिरीय ब्राह्मण (१।२।६।७ और ३।१२।९।२) और शतपथ ब्राह्मणके (२।१।४।१२) सूत्रमें ब्राह्मणादिकी उत्पत्तिका उल्लेख है। वेदके सिवा मनुसंहिता कूर्मपुराण और भागवत पुराणमें भी पुरुषसूक्तके अनुसार चार जातियोंकी उत्पत्तिका विवरण लिखा है। ब्रह्माण्डपुराणमें (पूर्वभाग ८।१५०-१६०) "स्वयंभूते ब्रह्म विद्यमान" इस प्रकार चिन्तावृत्ति धारी प्रजागण स्वयम्भू ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण-रूपमें निर्दिष्ट हुए थे। विष्णु, मत्स्य और मार्कण्डेय पुराणमें भी ठीक ऐसा ही वर्णन पाया जाता है। हरिवंशमें युद्ध सत्त्वगुणसे, महाभारत आदिपर्वमें मनुसे और शान्तिपर्वमें कृष्णके गजतमें (३।६।२६ २७)

उत्पत्ति हुई है, ऐसा उल्लेख मिलता है। गुणसे उत्पत्ति होनेके कारण ब्राह्मण सर्वत्र पाये जाते हैं और मुक्त हुए हैं।

पुराणके प्रसङ्गसे यह भी ज्ञात होता है, कि पहले क्षत्रिय और वैश्यगण ब्राह्मणत्व प्राप्त करते थे और वे क्षत्रोपेत ब्राह्मण कहलाते थे। * वैदिक ग्रन्थोंमें ब्राह्मणके मन्त्रद्रष्टा क्षत्रिय ऋषियोंका उल्लेख पाया जाता है।

( शूद्र १०।६५, और ब्राह्मण आ० ७म ब्राह्मण )

ब्राह्मण द्वारा शूद्रासे उत्पन्न सन्तान ब्राह्मण होगी। ब्राह्मण यदि अनुलोम क्रमसे होन वर्णकी स्त्रीके साथ गमन करके उससे सन्तान उत्पन्न करे, तो वह सन्तान माताके हीनजातित्वके कारण उसी जातिकी होगी। उत्कृष्ट जाति ब्राह्मण द्वारा शूद्रकन्यासे उत्पन्न सन्तान निकृष्ट होने पर भी सातवें जन्ममें वह उत्कृष्ट जातित्व अर्थात् ब्राह्मणत्व प्राप्त करेगा। याज्ञवल्क्यने लिखा है, सातवें अथवा पांचवें जन्ममें भी युग उत्पन्न होता है यह उसी जातिका समझा जायगा। अर्थात् उत्कर्ष पञ्चम या सप्तम जन्ममें ब्राह्मणत्व है, किन्तु जातिके व्यतिक्रमसे पूर्ववत् भवन ( प्रतिलोमज ) होता है। महाभारतके अनुशासनपर्व ( अ० १४३ ) में लिखा है कि ब्राह्मणको सर्वज्ञत्वमें जातिकानिर्णयकारी ब्राह्मणत्वको प्राप्त होता है। वनपर्व ( २११।१२ १३ ) में ऐसा देखा जाता है कि शूद्रयोनिमें उत्पन्न होने पर भी कोई व्यक्ति यदि सद्गुणोंका सेवा करे तो उसे वैश्यत्व और क्षत्रियत्व प्राप्त होगा है और जो सदा, सत्यता आर्जव गुणमें अधिनिविष्ट होंगे उनके लिए ब्राह्मणत्व भी प्रकट हो सकता है।"

* ऋग्वेद १० और १०म अ०, विष्णुपुराण ४५०, भा० २ अ०, और ७।१४।१५, [illegible] और [illegible] तथा अन्यान्य, लिङ्ग और मत्स्यादि पुराणमें भी इस प्रकार का उल्लेख पाया जाता है। [illegible] इसमें देखना चाहिए।

[illegible]

[illegible]

चातुर्वर्ण्य-परिवर्तनके साथ ही नाना ग्राम और नगरोंकी उत्पत्ति हुई। उपाध्याय प्रभृति पठित विद्वानियां प्राप्य और जिनके नियम सारे माना लिया है वे मिश्र या अनुग्रहक कहलाये।

यह पहले ही कहा जा चुका है, कि गोत्रसे पहले गोत्रज या पैतृकोंका नाम ही पुत्र का प्रवर कह पाते थे। किसी ब्राह्मणका परिचय जानना हो, तो पहले उसका वेद, गोत्र और प्रवर जानना आवश्यक है। जिस ऋषिके वंशमें जिसका जन्म है, वही पूर्वपुरुष परिचायक ऋषि ही उसका गोत्र है। कश्यपादिकोंमें जो ऋषि हैं, बौधायनादिके श्रौत ग्रंथमें उन ऋषियोंके नाम ही गोत्रनिरूपित हुए हैं। बौधायन, आश्वलायन, कात्यायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ, भरद्वाज और लौगाक्षि आदि रचित श्रौत ग्रन्थोंमें प्रायः सब भी विभिन्न गोत्रोंके नाम पाये जाते हैं। भारतवर्षीय ब्राह्मणोंमें वर्त्तमानमें प्रायः वे ही गोत्र प्रचलित हैं। प्राचीन शिलालिपियोंमें अनेक मूल गोत्रोंके प्रमाण पाये जाते हैं। [illegible] और 'प्रवर' शब्द देखो।

बहुत प्राचीनकालमें वैदिक तथा ब्राह्मणगण भारतमें पधारे थे। परवर्ती समयमें भी प्रायः दोनों भारतमें और ब्राह्मणका आगमन हुआ। [illegible] का विवरण इसी शब्दमें देखना चाहिए।

महाराज आदिशूरके समयमें कान्यकुब्जसे पांच ब्राह्मण बुलाये गये थे। राजा बल्लालसेनने बङ्गालके ब्राह्मणोंमें कौलिन्य मर्यादा स्थापित की। परन्तु देवीवरके मेल बन्धनद्वारा लिखित कौलिन्यका मुख्य हो गया। भारतवर्षमें नाना श्रेणीके ब्राह्मणोंका वास है।

[illegible]

( ब्रा० ) २ मत्स्यके पर्याय, [illegible]। 'तत्र ब्राह्मणस्य महत्त्वं कथितं पुनः। वैद आत्माभिरक्षणाच, [illegible] ब्राह्मणाभिधानात्, [illegible], पूर्वे [illegible] आत्मज्ञानानि च [illegible] पूर्वोदाहृतं [illegible]।

[illegible]

[illegible]

वेदके ब्राह्मणभागका लक्षण स्थिर करना बहुत ही कठिन है, कारण वेदभागकी इयत्ताका कोई अवधारण न होनेसे ब्राह्मणभागके अन्यभागके लक्षणमें अव्याप्ति और अतिव्याप्ति दोष होता है। इसलिये इसका कोई निर्दिष्ट लक्षण न करना ही श्रेय है। परन्तु इतना कहा जा सकता है, कि मन्त्रभाग एक है और ब्राह्मणभागमें हेतु, निर्वचन, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परक्रिया, पुराकल्प और व्यवधारण कल्पना आदि कहे गये हैं। वेद मन्त्र और ब्राह्मण इन दो भागोंमें विभक्त हैं। वेदका मन्त्रातिरिक्त भाग ही ब्राह्मणभाग है। ३ विष्णु। (भारत १३।१४९।८४) ४ शिव। (भारत १३।१४९।८४) ५ अग्निका नामान्तर, अग्निका एक नाम। (शतपथब्रा० १।४।२।२) ६ नक्षत्रभेद, एक नक्षत्र।

ब्राह्मणक (सं० पु०) ब्राह्मण कुत्सितार्थे कन्। १ कुत्सित ब्राह्मण, निन्दित ब्राह्मण। ब्राह्मणेन जातिमात्रेण कायति कै-क। २ ब्राह्मणकृत्यरहित ब्राह्मणजाति। स्वार्थे कन्। ३ आयुधजीवि ब्राह्मणप्रधान देश।

ब्राह्मणकल्प (सं० पु०) १ वेदके ब्राह्मण और कल्पभाग (त्रि०) २ ब्राह्मण सदृश।

ब्राह्मणकीय (सं० त्रि०) ब्राह्मणक छ (पा ४।२।१०४) ब्राह्मणकसम्बन्धीय।

ब्राह्मणकाम्या (सं० स्त्री०) ब्राह्मणस्य काम्या ६-तत्। १ विप्र इच्छा। २ ब्राह्मण विषय।

ब्राह्मणघ्न (सं० त्रि०) ब्राह्मणं हन्ति हन-क। ब्राह्मण घातक।

ब्राह्मणचक्षुस् (सं० क्ली०) ब्राह्मणस्य सर्वार्थप्रकाशकत्वात् चक्षुरिव। श्रुति और स्मृति ही ब्राह्मणके चक्षु हैं।

"श्रुतिस्मृती च विप्राणां चक्षुषी देवनिर्मिते।
काणस्तत्रैकया हीनो द्वाभ्यामन्ध प्रकीर्त्तितः॥" (हारीत)

ब्राह्मणचण्डाल (सं० पु०) ब्राह्मणश्चाण्डाल इव। शास्त्र निषिद्ध कर्मकारी अपकृष्ट ब्राह्मण।

ब्राह्मणजात (सं० क्ली०) १ ब्राह्मणवंश सम्भूत। २ विप्र जाति।

ब्राह्मणजातीय (सं० त्रि०) ब्राह्मण सम्बन्धीय।

ब्राह्मणजीविका (सं० स्त्री०) पौरोहित्यरूप यजनयाजनादि तथा अध्यापनादिरूप उपजीविका।

ब्राह्मणता (सं० स्त्री०) ब्राह्मणस्य भावः तल् टाप्। १ ब्राह्मणका धर्म, ब्राह्मणका कर्त्तव्य कर्म। २ ब्राह्मणत्व।

ब्राह्मणत्रा (सं० अव्य०) ब्राह्मणाय देयं त्राच्। ब्राह्मणको देने लायक।

ब्राह्मणत्व (सं० क्ली०) ब्राह्मणस्य भाव त्वल्। ब्राह्मणका भाव या धर्म, ब्राह्मण-पन।

ब्राह्मणदारिका (सं० स्त्री०) ब्राह्मण-कन्या।

ब्राह्मणद्वेषिन् (सं० त्रि०) ब्राह्मणका हिंसाकारी, ब्राह्मणकी हिंसा करनेवाला।

ब्राह्मणपथ (सं० पु०) वेदके ब्राह्मणविशेष।

ब्राह्मणपाल (सं० पु०) राजपुत्रभेद।

ब्राह्मणप्रिय (सं० त्रि०) ब्राह्मणः प्रियो यस्य। १ विष्णु। ब्राह्मणस्य प्रिय। २ विप्रहित।

ब्राह्मणब्रुव (सं० पु०) ब्राह्मणवंशोत्पन्नतया वेदोक्त कर्माकुर्वन्नपि आत्मानं ब्राह्मणं ब्रवीतीति ब्राह्मण ब्रू-क, वाहुलकात् न वच्यादेश। ब्राह्मण जातिमात्रोपजीवी, वेदविहित कर्मादिहीन ब्राह्मण। जो सब ब्राह्मण संस्कृत अर्थात् उपनयनादि संस्कारयुक्त हो कर नित्य और नैमित्तिक कर्म अथवा अध्ययन और अध्यापनादि किसी भी कर्मका अनुष्ठान नहीं करते, उन्हें ब्राह्मणब्रुव कहते हैं। जो ब्राह्मण हो कर ब्राह्मणके किसी भी कर्त्तव्यका पालन नहीं करते और अपनेको ब्राह्मण होनेका दावा करते हैं वे ही ब्राह्मणब्रुव हैं।

"सममब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे।
प्राधीते शतसाहस्रमनन्तं वेदपारगे॥" (मनु ७।८५)

भगवान् मनुने लिखा है, कि अब्राह्मणको दान करनेसे उसका तुल्यरूप फल, ब्राह्मणब्रुवको दान करनेसे उसका दूना, अर्थात ब्राह्मणको दान करनेसे लाख गुना और वेदपारग ब्राह्मणको दान करनेसे अनन्त गुणफल प्राप्त होता है।

ब्राह्मणभोजन (सं० क्ली०) ब्राह्मणानां भोजनम्। ब्राह्मणको खिलाना। किसी दैव या पैत्र कर्मका अनुष्ठान करनेसे उसके अङ्गस्वरूप ब्राह्मणभोजन कराना अवश्य

कर्त्तव्य है। मनुने ब्राह्मणभोजनका विषय इस प्रकार लिखा है,—

[illegible] पितृश्राद्धमें [illegible] कर्ममें लिये एक भी ब्राह्मणभोजन कराना उचित है। [illegible] ब्राह्मण [illegible] आवश्यकता नहीं होता।

दैवकार्य्यमें दो और पितृकार्य्यमें तीन ब्राह्मण अथवा देवकार्य्यमें एक और पितृकार्य्यमें भी एक ब्राह्मणभोजन कराना होता है। समर्थ होने पर भी इससे अधिक ब्राह्मणभोजन करानेका नियम नहीं है, क्योंकि अधिक ब्राह्मण होनेसे उनके सेवा, देश, काल, शुभाशुभ और पात्रापात्रके विचार आदि सम्बन्धमें किसी नियमका यथावत् रूपसे प्रतिपालन नहीं होता। इसी कारण बहुत ब्राह्मणोंको खिलाना निषिद्ध है। ब्राह्मण दैव और पितृ कार्यमें एक एक वेदविद् ब्राह्मणको खिलाना चाहिये। वेदज्ञ अनभिज्ञ यदि सैकड़ों ब्राह्मणको खिलाया भी क्यों न जाय, तो भी कोई फल नहीं। वेदपारग ब्राह्मणके सम्बन्धमें विशेष अनुसन्धान करना आवश्यक है, अर्थात् उसके पिता, पितामहादि, पूर्वपुरुषगण भी वैसा [illegible] था, उसका निरूपण करे। इस प्रकारका शुद्ध, वेदपारग ब्राह्मणभोजन ही प्रशस्त है। वेदज्ञ अनभिज्ञ जहाँ दश लाख ब्राह्मण भोजन करते हैं, उस स्थानमें यदि वेदविद् एक भी ब्राह्मणभोजन करे, तो दश लाख ब्राह्मणभोजन करानेका फल होता है। जो ब्राह्मण [illegible] ग्रास ग्रहण करते हैं, यमलोकमें उन्हें उतने ही लौहपिण्ड खाने पड़ते हैं।

ब्राह्मणोंमें प्रथम कोई ज्ञाननिष्ठ, कोई तपस्या परायण, कोई तपस्या और अध्ययन उभयनिष्ठ और कोई कर्मनिष्ठ है। इन चार प्रकारके ब्राह्मणोंमें ज्ञाननिष्ठ ब्राह्मणको ही श्राद्धमें खिलाना चाहिये। किन्तु देव कार्य्यमें इन चारों ही प्रकारके ब्राह्मण भोजन करा सकते हैं। जिसके पिता मूर्ख है अथवा जो स्वयं वेदपारग है या जो स्वयं मूर्ख और पिता वेदपारग है, इन दोनोंमेंसे जिसके पिता वेदपारग हैं, उन्हें ब्रा[illegible] अधिक श्रेष्ठ समझा होता है। वेदपारग ब्रा[illegible] [illegible] चतुर्वेद [illegible] इस तरह देवे ब्राह्मणोंको खिलाने[illegible]

है। श्राद्धमें ऐसे ब्राह्मणका अभाव हो तो कर्मनिष्ठको कार्य सम्पन्न करे।

अनुकल्पविधि—मातामह, मातुल, भागिनेय, श्वशुर, गुरु, दौहित्र, जामाता, मातृष्वसृ, पितृष्वसृ पुत्रादि, बन्धु पुरोहित और शिष्य इन्हें भोजन कराना चाहिये। दैवश्राद्धकर्ममें तो ऐसे ब्राह्मणका विचार किया जा सकता है। अन्य दैवकार्यमें उनका शुभाशुभ नहीं देखा जाता। किन्तु निषेध निन्दित ब्राह्मणको, चाहे दैव कार्य हो या पैत्र किसी भी कार्यमें भोजन नहीं कराना चाहिये। जो सब ब्राह्मण चोरी करते हैं, जो क्लीव, नास्तिक, वेदाध्ययनशून्य, ब्रह्मचारी चर्मरोगग्रस्त [illegible], बहुयाजी, चिकित्साव्यवसायी प्रतिमा परिचारक, देवल, वाणिज्योपजीवी, कुनखी, श्यावदन्त अर्थात् कृष्णवर्ण दन्तविशिष्ट, गुरुके प्रतिकूलाचरणकारी, चोर तथा स्मार्त अग्निपरित्यागकारी कुसीदजीवी, पशुपालक इत्यादि तथा और भी जो निन्दित ब्राह्मण हैं उन्हें खिलानेसे ब्राह्मणभोजनका फल नहीं होता, वरं पाप हो जाता है। (मनुसंहिता ३ अध्याय)

आजकल उक्त गुणयुक्त ब्राह्मण नहीं मिलते, इसी कारण कुशमय ब्राह्मण बना कर श्राद्धादि निष्पन्न किया जाता है।

ब्राह्मणप्रिय (सं० पु०) ब्राह्मणानाम्, प्रियो यस्मात् [illegible] हेतौ [illegible]। [illegible] "ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा" (भारत० अ० [illegible])

ब्राह्मणयष्टिका (सं० स्त्री०) ब्राह्मणस्य यष्टिरिव; [illegible] । [illegible], भार्ङ्गी। पर्याय—पद्मा, ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, अङ्गारवल्ली, [illegible], बर्बर, वर्द्धक, [illegible], [illegible], [illegible] सुरूपा, [illegible], [illegible], [illegible]। गुण—कटु, तिक्त, उष्ण, [illegible], गुल्म, रक्त, शोथ, कास [illegible] [illegible] ([illegible])

योग, तपस्या, दम, दान, सत्य, शौच, दया, शास्त्रज्ञान और आस्तिक्य ये सब ब्राह्मणके लक्षण हैं।

ब्राह्मणवध (सं० पु०) ब्राह्मणस्य वधः। ब्राह्मणहत्या।

ब्राह्मणवत् (सं० त्रि०) १ ब्राह्मणतुल्य। २ ब्राह्मणयुक्त। ३ वेदके ब्राह्मणनिर्दिष्ट विधिके अनुरूप।

ब्राह्मणवर्चस् (सं० क्ली०) ब्राह्मणस्य वर्च ततोऽचसमासान्त। ब्राह्मणका तेज। ब्रह्मवर्च्चस् देखो।

ब्राह्मणशस्त्र (सं० क्ली०) ब्राह्मणस्य शस्त्रमिव तत्कार्यकारित्वात्। अभिचारादि मन्त्रोच्चारणात्मक विप्रवाक्य। ब्राह्मण जिस मन्त्रका उच्चारण करके अभिचारादि कार्य सम्पन्न करते हैं वह वाक्य शस्त्रकी तरह कार्य करता है, इसीसे इसका ब्राह्मणशस्त्र नाम पड़ा।

ब्राह्मणसम (सं० पु०) ब्राह्मणस्य सम। क्रियारहित विप्र, वह ब्राह्मण जो ब्राह्मण-कर्त्तव्यकर्म नहीं करता है। ब्रह्मबीजसे जन्म ले कर मन्त्र और संस्कारादि वर्जित होनेसे उसको ब्राह्मणसम कहते हैं।

ब्राह्मणसात् (सं० अव्य०) ब्राह्मणाधीन करोति ब्राह्मणसाति। जो ब्राह्मणके अधीन हो।

ब्राह्मणस्पत्य (सं० पु०) वृहस्पतिका काय।

ब्राह्मणहित (सं० त्रि०) ब्राह्मणस्य हित। ब्राह्मणका हितकारी। पर्याय—ब्राह्मण्य।

ब्राह्मणाच्छंसिन् (सं० पु०) ब्राह्मणे मन्त्रेतरवेदभागे विहितानि शस्त्राणि उपचारात् ब्राह्मणानि तानि शंसति हितायार्थे षष्ठ्युपसंख्यान इति अलुक्। सोमयागमें ब्रह्मरूप ऋत्विक्का सहकारी ऋत्विग्भेद।

ब्राह्मणाच्छंसीय (सं० त्रि०) ब्राह्मणाच्छंसिनो भाव 'होत्राभ्यश्छ', इति च्छ। ब्राह्मणाच्छंसीका भाव या कर्म। (श्रौत्या० श्रा० १०।६)

ब्राह्मणाच्छंसी (सं० त्रि०) ब्राह्मणाच्छंसिसम्बन्धीय।

ब्राह्मणादि (सं० पु०) भाव और कर्ममें ष्यञ् प्रत्यय निमित्त पाणिन्युक्त शब्दगण। यथा—ब्राह्मण, वाडव, माणव, चोर, धूर्त्त, आराधय, अपराधय, उपराधय, एकभाव, द्विभाव, त्रिभाव, अन्यभाव, अक्षेत्रज्ञ, संवादिन्, संवेशिन्, सभाषिन्, बहुभाषिन्, शीर्षघातिन्, विघातिन्, समस्थ, विषमस्थ, परमस्थ, मध्यमस्थ, अनीश्वर, कुशल, चपल, निपुण, पिशुन, कुतूहल, क्षेत्रज्ञ, मिश्र, बालिश, अलस, दुष्पुरुष, कापुरुष, राजन्, गणपति, अधिपति, गडुल दायाद, विशस्ति, विषम, निपात, निपात। (पाणिनि)

ब्राह्मणायन (सं० पु०) ब्राह्मणस्यापत्य नडादिभ्य, फक्। (पा ४।१।९९) ब्राह्मणका गोत्रापत्य, शुद्धवंशजात विप्र।

ब्राह्मणिक (सं० त्रि०) ब्राह्मणस्य मन्त्रेतरवेदभागस्य व्याख्यानो ग्रन्थ ठक्। मन्त्रेतर वेदभाग व्याख्यान ग्रन्थ।

ब्राह्मणी (सं० स्त्री०) ब्राह्मण स्त्रियां ङीष्। १ ब्राह्मण पत्नी। मनुमें ब्राह्मणीगमनका विषय इस प्रकार लिखा है—

शूद्र यदि अरक्षिता ब्राह्मणी-गमन करे, तो उसका लिङ्गच्छेद और सर्वस्वहरण तथा भर्त्तादि कर्त्तृक रक्षिता ब्राह्मणगमन पर उसका वध और सर्वस्व हरण दण्ड विधेय है। वैश्य यदि रक्षिता ब्राह्मणी गमन करे, तो उसे एक वर्ष कारावरोध दण्ड दे और उसकी सारी सम्पत्ति छीन ले। क्षत्रिय यदि ऐसा करे, तो उसे सहस्र पणदण्ड तथा गर्दभमूत्र द्वारा उसका मस्तक मुड़वा दे। वैश्य या क्षत्रिय यदि अरक्षिता ब्राह्मणी गमन करे, तो वैश्यको ५०० सौ पण और क्षत्रियको १०० पण दण्ड होना चाहिये। वैश्य या क्षत्रियके गुणवती रक्षिता ब्राह्मणीका गमन करनेसे उसे शूद्रवत् दण्ड और ब्राह्मणके बलपूर्वक रक्षिता ब्राह्मणी गमन करनेसे सहस्र पण दण्ड तथा सकामा ब्राह्मणीगमन करनेसे ५०० सौ पण दण्ड होना चाहिए। (मनु ८ अ०)

"कुलटा विप्रपत्नीनां गमनं सुरविप्रया।
षड्ब्रह्मत्यापोडशांशं पातकं तु भवेत् ध्रुवम्॥"
(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्रकृति ख० ४५ अ०)

कुलटा ब्राह्मणी-गमन करने पर भी ब्रह्महत्याके १६ भागोंका एक भाग पाप लगता है।

२ बुद्धि। महाभारतमें 'बुद्धि'-को पारिभाषिक ब्राह्मणी रूपमें बतलाया गया है। (भारत १४।३४।११ १२)

३ तीर्थविशेष। इस तीर्थमें स्नानदानादि करनेसे पद्मवर्ण यान द्वारा ब्रह्मलोककी गति होती है।
(भारत ३।८४।५४)

ब्राह्मणीत्व (सं० क्ली०) ब्राह्मणी भावे त्व। ब्राह्मणीका भाव या धर्म।

कर्त्तव्य है। मनुमें ब्राह्मणभोजनका विषय इस प्रकार लिखा है,—

पञ्चयज्ञके अन्तर्गत पितृयज्ञमें पितरोंको सन्तुष्ट करनेके लिये एक भी ब्राह्मणभोजन कराना उचित है। बलिवैश्व में ब्राह्मणभोजनकी आवश्यकता नहीं होती।

दैवकार्यमें दो और पितृकार्यमें तीन ब्राह्मण अथवा दैवपक्षमें एक और पित्रादि पक्षमें भी एक ब्राह्मणभोजन कराना होता है। समर्थ होने पर भी इससे अधिक ब्राह्मणभोजन करानेका नियम नहीं है, क्योंकि अधिक ब्राह्मण होनेसे उनकी सेवा, देश, काल, शुद्धाशुद्ध और पात्रापात्रके विचार आदि सम्बन्धमें किसी नियमका सम्यक्‌रूपसे प्रतिपालन नहीं होता। इसी कारण बहुत ब्राह्मणोंको खिलाना निषिद्ध है। ब्राह्मण दैव और पितृकार्यमें एक एक वेदविद्‌ ब्राह्मणको खिलाना चाहिये। वेदमें अनभिज्ञ यदि सैकड़ों ब्राह्मणको खिलाया भी क्यों न जाय, तो भी कोई फल नहीं। वेदपारग ब्राह्मणके सम्बन्धमें विशेष अनुसन्धान करना आवश्यक है, अर्थात्‌ उनके पिता, पितामहादि, पूर्वपुरुषका भी कैसा आभिजात्यादि गुण था, उसका निरूपण करे। वंशपरम्परा-शुद्ध, वेदपारग ब्राह्मण भोजन ही प्रशस्त है। वेदसे अनभिज्ञ जहां दश लाख ब्राह्मण भोजन करते हैं, उस श्राद्धमें यदि वेदविद्‌ एक भी ब्राह्मणभोजन करे, तो दश लाख ब्राह्मणभोजन करानेका फल होता है। अज्ञ ब्राह्मण श्राद्धमें जितने ग्रास भोजन करते हैं, परलोकमें उन्हें उतने ही लौहपिण्ड खाने पड़ते हैं।

ब्राह्मणोंके मध्य कोई आत्मज्ञाननिष्ठ, कोई तपस्यापरायण, कोई तपस्या और अध्ययन उभयनिष्ठ और कोई कर्मनिष्ठ हैं। इन चार प्रकारके ब्राह्मणोंमें आत्मज्ञाननिष्ठ ब्राह्मणको ही श्राद्धमें खिलाना चाहिये। किन्तु दैवकर्ममें उक्त चारों ही प्रकारके ब्राह्मण-भोजन प्रशस्त है। जिनके पिता मूर्ख हैं अथवा जो स्वयं वेदपारग हैं या जो स्वयं मूर्ख और पिता वेदपारग हैं इन दोनोंमेंसे जिनके पिता वेदपारग हैं, उन्हें भोजन करानेसे अधिक फल प्राप्त होता है। वेदपारग ऋग्वेदी ब्राह्मण, समस्त शाखाध्यायी यजुर्वेदी ब्राह्मण अथवा सामवेदी ब्राह्मण,—इन तीन वेदी ब्राह्मणोंमेंसे किसीको भोजन करा सकते हैं। श्राद्धमें ऐसे ब्राह्मणका अभाव हो तो कल्पविधानसे कार्य सम्पन्न करे।

अनुकल्पविध—मातामह, मातुल, भागिनेय, श्वशुर, गुरु, दौहित्र, जामाता, मातृष्वसृ, पितृष्वसृ, पुत्रादि, बन्धु, पुरोहित और शिष्य इन्हें भोजन कराना चाहिये। केवल श्राद्धकर्ममें ही ऐसे ब्राह्मणका विचार किया जा सकता है। अन्य दैवक्रियामें उनका गुणागुण नहीं देखा जाता। किंतु निम्नोक्त निन्दित ब्राह्मणको, चाहे दैव कार्य हो या पैत्र्य किसी भी कार्यमें भोजन नहीं कराना चाहिये। जो सब ब्राह्मण चोरी करते हैं, जो क्लीव, नास्तिक, वेदाध्ययनशून्य, ब्रह्मचारी चर्मरोगग्रस्त, द्यूतक्रीड़ापरायण, बहुयाजी, चिकित्साव्यवसायी, प्रतिमापरिचालक, देवल, वाणिज्योपजीवी, कुनखी, श्यावदन्त अर्थात्‌ कृष्णवर्ण दन्तविशिष्ट, गुरुके प्रतिकूलाचरणकारी, श्रौत तथा स्मार्त्त अग्निपरित्यागकारी कुसीदजीवी, पशुपालक इत्यादि तथा और भी जो निन्दित ब्राह्मण हैं उन्हें खिलानेसे ब्राह्मणभोजनका फल नहीं होता, वरं पाप ही होता है। ( मनुसंहिता ३ अध्याय )

आजकल उक्त गुणयुक्त ब्राह्मण नहीं मिलते, इसी कारण कुशमय ब्राह्मण बना कर श्राद्धादि निष्पन्न किया जाता है।

ब्राह्मणयज्ञ ( सं० पु० ) ब्राह्मणमालभ्य‌ते यत्र यज्ञ मध्यपद लोप कर्मधा०। विप्रमालभकर्त्तव्य सौत्रामणीय यज्ञ। "ब्राह्मणयज्ञ सौत्रामण्युदितारुस्य" ( कात्या० श्रौ० १९।१।१ )

ब्राह्मणयष्टिका ( सं० स्त्री० ) ब्राह्मणस्य यष्टिरिव, ततः स्वार्थे संज्ञायां वा कन्‌ अत इत्वं। वृक्षविशेष, भारंगी। पर्याय—फञ्जिका, ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, अङ्गारवल्ली, बालेयशाक, बर्बर, वर्द्धक, ब्रह्मयष्टि, कञ्जीका, पद्मी, ब्रह्मयष्टिका, सुर्जेश, अङ्गारवल्लरी, बालेय, ब्राह्मिका, भृगुभवा, पद्मा, खरशाक, हञ्जीका। गुण—कटु, तिक्त, तिक्त, रुचिकर, उष्ण, पाचन, लघु, दीपन, गुल्म, रक्त, शोथ, कास, कफ, श्वास, पीनसरोग, ज्वर और वायुनाशक। ( भावप्र० )
२ विप्रदण्ड।

ब्राह्मणयष्टी ( सं० स्त्री० ) ब्राह्मणस्य यष्टीव। भार्गी।

ब्राह्मणलक्षण ( सं० क्ली० ) ब्राह्मणस्य लक्षणम्‌। विप्रका असाधारण धर्मभेद।

योग, तपस्या, दम, दान, सत्य, शौच, दया, शास्त्रज्ञान और आस्तिक्य ये सब ब्राह्मणके लक्षण हैं।

ब्राह्मणवध ( सं० पु० ) ब्राह्मणस्य वध । ब्राह्मणहत्या।

ब्राह्मणवत् ( सं० त्रि० ) १ ब्राह्मणतुल्य । २ ब्राह्मणयुक्त । ३ वेदके ब्राह्मणनिर्दिष्ट विधिके अनुरूप।

ब्राह्मणवर्चस् ( सं० क्ली० ) ब्राह्मणस्य वर्च ततोऽचसमासान्त । ब्राह्मणका तेज। ब्रह्मवर्च्चस् देखो ।

ब्राह्मणशस्त्र ( सं० क्ली० ) ब्राह्मणस्य शस्त्रमिव तत्कार्यकारित्वात् । अभिचारादि मन्त्रोच्चारणात्मक विप्रवाक्य । ब्राह्मण जिस मन्त्रका उच्चारण करके अभिचारादि कार्य सम्पन्न करते हैं वह वाक्य शस्त्रकी तरह कार्य करता है, इसीसे इसका ब्राह्मणशस्त्र नाम पड़ा।

ब्राह्मणसम ( सं० पु०) ब्राह्मणस्य सम । क्रियारहित विप्र, वह ब्राह्मण जो ब्राह्मण-कर्त्तव्यकर्म नहीं करता है। ब्रह्मबीजसे जन्म ले कर मन्त्र और संस्कारादि वर्जित होनेसे उसको ब्राह्मणसम कहते हैं।

ब्राह्मणसात् ( सं० अव्य० ) ब्राह्मणाधीन करोति ब्राह्मण साति । जो ब्राह्मणके अधीन हो।

ब्राह्मणस्पत्य ( सं० पु० ) बृहस्पतिका काय।

ब्राह्मणहित ( सं० त्रि० ) ब्राह्मणस्य हित । ब्राह्मणका हितकारी। पर्याय—ब्राह्मण्य।

ब्राह्मणाच्छंसिन् ( सं० पु० ) ब्राह्मणे मन्त्रेतरवेदभागे विहितानि शास्त्राणि उपचारात् ब्राह्मणानि तानि शंसति द्वितीयार्थे पञ्चम्युपसंख्यान इति अलुक् । सोमयज्ञमें ब्रह्मरूप ऋत्विक्का सहकारी ऋत्विक्भेद ।

ब्राह्मणाच्छंसीय ( सं० त्रि० ) ब्राह्मणाच्छंसिनो भाव 'होताभ्यश्छ', इति छ । ब्राह्मणाच्छंसीका भाव या कर्म।
(कात्या० श्रौ० १०।६)

ब्राह्मणाच्छंसी ( सं० त्रि० ) ब्राह्मणाच्छंसिसम्बन्धीय।

ब्राह्मणादि ( सं० पु० ) भाव और कर्ममें ष्यञ् प्रत्यय निमित्त पाणिन्युक्त शब्दगण। यथा—ब्राह्मण, वाडव, माणव, चोर, धूर्त्त, आराधय, अपराधय, उपराधय, एकभाव, द्विभाव, त्रिभाव, अन्यभाव, अक्षेत्रज्ञ, संवादिन्, संवेशिन्, सम्भाषिन्, बहुभाषिन्, शीर्षघातिन्, विघातिन्, समस्थ, विषमस्थ, परमस्थ, मध्यमस्थ, अनीश्वर, कुशल, चपल, निपुण, पिशुन, कुतूहल, क्षेत्रज्ञ, मिश्र, बालिश, अलस, दुष्पुरुष, कापुरुष, राजन्, गणपति, अधिपति, गडुल दायाद, विशस्ति, विषम, विपात, निपात ।
( पाणिनि )

ब्राह्मणायन (सं० पु०) ब्राह्मणस्यापत्य नडादिभ्य, फक्। ( पा ४।१।९९ ) ब्राह्मणका गोत्रापत्य, शुद्धवंशजात विप्र।

ब्राह्मणिक ( सं० त्रि० ) ब्राह्मणस्य मन्त्रेतरवेदभागस्य व्याख्यानो ग्रन्थ ठक्। मंत्रेतर वेदभाग व्याख्यान ग्रन्थ।

ब्राह्मणी ( सं० क्ली० ) ब्राह्मण स्त्रियां ङीप्। १ ब्राह्मण पत्नी। मनुमें ब्राह्मणीगमनका विषय इस प्रकार लिखा है—

शूद्र यदि अरक्षिता ब्राह्मणी-गमन करे, तो उसका लिङ्गच्छेद और सर्वस्वहरण तथा भर्त्रादि कर्त्तृक रक्षिता ब्राह्मणगमन पर उसका वध और सर्वस्वहरण दण्ड विधेय है। वैश्य यदि रक्षिता ब्राह्मणी गमन करे, तो उसे एक वर्ष कारावरोध दण्ड दे और उसकी सारी सम्पत्ति छीन ले। क्षत्रिय यदि ऐसा करे, तो उसे सहस्र पणदण्ड तथा गर्दभमूत्र द्वारा उसका मस्तक मुड़वा दे। वैश्य वा क्षत्रिय यदि अरक्षिता ब्राह्मणी गमन करे, तो वैश्यको ५०० सौ पण और क्षत्रियको १०० पण दण्ड होना चाहिये। वैश्य या क्षत्रियके गुणवती रक्षिता ब्राह्मणीका गमन करनेसे उसे शूद्रवत् दण्ड और ब्राह्मणके बलपूर्वक रक्षिता ब्राह्मणी गमन करनेसे सहस्र पण दण्ड तथा सकामा ब्राह्मणीगमन करनेसे ५०० सौ पण दण्ड होना चाहिए। (मनु ८ अ०)

"कृत्वा विप्रपत्नीनां गमनं गुरुविप्रयाः।
बृहद्ब्रह्महत्यायोऽनन्तरो पातक तु भवत् ध्रुवम्॥"
( ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्रकृति ख० ४५ अ० )

कुलटा ब्राह्मणी-गमन करने पर भी ब्रह्महत्याके १६ भागोंका एक भाग पाप लगता है।

२ बुद्धि। महाभारतमें 'बुद्धि'-को पारिभाषिक ब्राह्मणी रूपमें बतलाया गया है। ( भारत १४।३४।११-१२ )

३ तीर्थविशेष। इस तीर्थमें स्नानदानादि करनेसे पद्मवर्ण यान द्वारा ब्रह्मलोककी गति होती है।
( भारत ३।८४।५४ )

ब्राह्मणीत्व ( सं० क्ली० ) ब्राह्मणी भावे त्व। ब्राह्मणीका भाव या धर्म।

**ब्राह्मण्य** (सं० क्ली०) ब्राह्मणानां समूहः ब्राह्मण (ब्राह्मणमाणववाडवाद्यत्। पा ४।२।४२) इति यत्। १ ब्राह्मणसमूह। २ ब्राह्मणका धर्म, विप्रत्व।

ब्राह्मण यदि शूद्रासे पुत्रोत्पादन करे, तो उसके ब्राह्मण धर्मकी हानि होती है। (पु०) ३ शनिग्रह।

**ब्राह्मदण्ड** (सं० पु०) १ ब्रह्माका हस्तस्थित दण्ड। ब्रह्मास्त्र भेद।

**ब्राह्मदत्तायन** (सं० पु०) ब्रह्मदत्त नडादित्वात् फक् (पा ४।१।९९) ब्रह्मदत्तका अपत्य।

**ब्राह्मप्राजापत्य** (सं० त्रि०) ब्रह्मप्रजापति सम्बन्धीय।

**ब्राह्ममुहूर्त्त** (सं० पु०) ब्राह्मो ब्रह्मदेवताको मुहूर्त्त। अरुणोदयकालके प्रथम दो दण्ड, सूर्योदय।

**ब्राह्मराति** (सं० पु०) याज्ञवल्क्यका गोत्रापत्य।

**ब्राह्म समाज**—हिन्दूशास्त्र सम्मत धर्मसम्प्रदाय विशेष, हिन्दूशास्त्रानुमोदित एक धर्म समाज। एकमात्र परब्रह्मकी उपासना ही इस सम्प्रदायका मुख्य उद्देश्य है। "एकमेवाद्वितीयम्" के सिवा यह समाज अन्य देवताओंका वास्तविक अस्तित्व नहीं मानता। साथ ही ये लोग संस्कारके वशीभूत हो कर 'सर्वत्र' ही ब्रह्म विद्यमान हैं, इस तत्त्वज्ञापककी दुहाई दे कर काली, दुर्गा आदि देवी-देवताओंके प्रति भक्ति प्रदर्शन करनेमें भी कुण्ठित नहीं होते। पर ब्रह्मके सिवा जगत्‌में और द्वितीय मूल शक्ति नहीं, यह शुद्ध अद्वैतवादियोंका मत है। महात्मा राममोहनराय द्वारा प्रतिष्ठित ब्राह्ममत उसीका अनुरूप है*। "ॐ तत् सत्" इसका मूल मन्त्र है।

ब्राह्मसमाजका उत्पत्ति प्रकरण उसके प्रतिष्ठाता राजा राममोहनरायकी जीवनीके साथ इतना उलझा हुआ है, कि उनकी जीवनीकी आलोचना किये बिना उसका प्रकृत निरूपण करना बहुत ही कठिन हो जाता है। अतएव इस धर्म-समाजकी स्थापनाके प्रसङ्गमें उसके प्रवर्त्तककी कुछ जीवनी भी लिखी जाती है।

बङ्गालके अन्तर्गत हुगली जिलेके दक्षिण विभागमें खानाकुल ग्रामसे सटा हुआ राधानगर नामक एक ग्राम है; इसी ग्राममें राजा राममोहन रायका जन्म हुआ था। इनके जन्म-समयके विषयमें मतभेद है। कोई कहते हैं, कि १७७४ ई०में इनका जन्म हुआ था और कोई कहते हैं, कि १७७२ ई० में हुआ था। राममोहनराय शाण्डिल्य गोत्रीय बन्द्योपाध्यायवंशीय सुवर्ण मेलके राढ़ीय कुलीन ब्राह्मण थे। इनके पूर्वपुरुष मुसलमान नवाब सरकारमें प्रतिपत्तिशाली थे, इसीसे उनको 'राय' उपाधि थी। राममोहन अंग्रेजोंके प्रथम अधिकारके समय कलेक्टरीके दीवान पद पर प्रतिष्ठित हुए थे। तबसे लोग उन्हें दीवान राममोहन राय कहते थे। आखिरमें दिल्लीके पेन्शन प्राप्त सम्राट्ने 'राजा'की उपाधि दे कर उन्हें अपनी पेन्शनकी वृद्धि करानेके लिए इंगलैण्ड भेजा जिससे अन्तमें ये राजा राममोहनराय कहलाये।

राममोहनका पितृकुल पौराणिकमतसे वैष्णवका उपासक और मातृकुल तान्त्रिकमतानुसार शक्तिका उपासक था। उक्त दोनों कुलोंको स्वधर्ममतमें निष्ठावत्ताकी विशेष ख्याति थी। राममोहन प्रारम्भिक अवस्थामें पितृकुलके वैष्णवधर्ममें परम भक्तिमान् थे। कहा जाता है, कि वे प्रतिदिन श्रीमद्भागवतका एक अध्याय पाठ किये बिना जल तक ग्रहण न करते थे, इसके अतिरिक्त उनके २२ पुरश्चरण करनेकी बात भी सुनी जाती है।

राममोहन अपने ग्राममें बंगला और फारसी सीखनेके बाद अरबीकी शिक्षा पानेके लिए पटना भेजे गये। पीछे संस्कृत सीखनेको काशी भी पहुंचे। बाद

---

* महात्मा राममोहन राय जिस ब्राह्मसमाजका प्रचार कर गये हैं, वह सम्पूर्णरूपसे शास्त्रानुमोदित है या नहीं हम इस बातकी मीमांसा नहीं करना चाहते। उन्होंने वेदान्त और उपनिषदादिके जो मतमतकी व्याख्या की है, उसका अधिकारित्व आचार्योंके लिये जितना सम्भव है उसी सम्बन्धमें वेदान्तसारमें लिखा है कि—"अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरःसरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।" यह कुछ भी हो, पर इसमें सन्देह नहीं, कि उनकी कोई महात्माके कार्यकलापसे हुए आख्यान हो गये हैं। अतः किसी किसी अंशमें वृत्तान्त ईसाई द्वारा भी लिखित देखे जाते हैं।

सामान्य ज्ञान-लाभसे परितृप्त नहीं हुए ; इन सभी भाषाओंमें आपने उच्चतम वैज्ञानिक और दार्शनिक ग्रन्थों का अध्ययन किया था। जब ये पन्द्रह वर्षके हुए, तब दोनों भाषाओंमें व्युत्पन्न और शास्त्रार्थके मर्मके जानकार हो गये। आपका यह ज्ञान हृदय कुटीरमें सकीर्णतासे न रह सका, और न विचार भी पल्लवग्राहितामात्र था ; यही कारण है, कि अभीसे आपके ब्रह्म विचारमें आपको प्रश्न हुआ, कि ब्रह्म एक है तो हम बहुतसे देवताओंकी आराधना और परिच्छिन्न मूर्त्तियों की पूजा क्यों करते हैं? आपका यह मर्मस्पर्शी विचार उत्तरोत्तर प्रबल होने लगा। इस विषय में आपका अपने पिताके साथ भी तर्क वितर्क हुआ था। परन्तु पुत्रके इस प्रकारके व्यवहारसे पिता क्रुद्ध हो गये। पिताका कोप देख पुत्र भी विमर्षभावापन्न हो गये। परन्तु फिर भी आप सहजमें निरस्त न हुए। अधिकतर ज्ञान उपार्जनके लिए आप देशभ्रमणको निकले। इस यात्रामें राममोहन तिब्बत तक जा कर बौद्धलामाओंके धर्मतत्त्वको जाननेकी कोशिश की थी। ३।४ वर्ष बाद आप घर लौटे। परन्तु धर्मका सारतत्त्व निर्णय आपके जीवनका प्रधान कार्य हो गया था। इसलिए आप घरमें न रह कर फिर काशी चल दिये। वहां वेदान्तादिशास्त्रकी प्रगाढ़ आलोचनासे जो ब्रह्मतत्त्व आपको ज्ञान हुआ, उसके साथ प्रचलित धर्मोंमें बहुत अन्तर देख कर आप उस ब्रह्मतत्त्वको उद्घोषणाके लिए प्रस्तुत होने लगे। उस समय आपकी अवस्था केवल २५ वर्षकी थी।

इसके बाद आपने अंग्रेजी पढ़ना प्रारम्भ किया। विशेष उद्यमके साथ नूतन भाषा शिक्षामें प्रवृत्त होने पर भी आपका मन ब्रह्मतत्त्वके निर्णयमें फसा रहनेके कारण, अंग्रेजी सीखनेमें अधिक विलम्ब होने लगा।

१८०३ ई०में राममोहनके पिता रामकान्त रायकी मृत्यु हुई। उस समय आप अर्थ-सङ्गतिके लिए अंगरेज सरकारमें कार्य करनेको तैयार हुए। १८०४से १८१४ ई० तक आपने सरकारी कार्य किया। अन्तमें कितने ही वर्ष तक आप कलेक्टरोंके दीवान रहे।

उस समयका दीवानी पदका कार्य कैसा था, हम लोगोंकी समझमें नहीं आता। स्वभावतः आप परिश्रमी थे और अपनी तीक्ष्ण बुद्धिसे जटिल विषयोंकी जल्दी ही मीमांसा कर डालते थे। इसने उन्हें सरकारी कार्य करनेके बाद भी अन्य कार्य करनेके लिए काफी अवकाश रहता था। उस समयमें आप धर्मकी आलोचना किया करते थे। अब उनकी तत्त्वानुसन्धित्साके साथ अर्थशक्तिका योग हुआ समझना चाहिए। इससे भारतके नाना सम्प्रदायके लोगोंके साथ समागम और शास्त्रचर्चाके अनेक सुयोग आपको मिले। इस समयमें अपने निगूढ़ शास्त्रार्थ भी लिपिबद्ध किये थे।

'तुहफत् उल् मुवाहिद्दीन' नामक आपका रचा हुआ एक ग्रन्थ है, जिसका भूमिका अरबी भाषामें और अन्यान्य अंश फारसी भाषामें लिखा गया है। इस ग्रन्थसे राममोहन रायका परिचय मिलता है। ग्रन्थका मर्म यह है कि—कोई पथिक कहता है, कि मैंने समस्त पृथिवीमें भ्रमण किया, पर कहीं भी धर्म सम्प्रदायोंका सम्मिलन नहीं देखा ; किन्तु प्रणिधान पूर्वक देखनेसे ज्ञान होगा, कि सभी धर्मोंमें एक ईश्वरकी बात है। केवल धर्म याजकोंने ही भेद-वर्द्धन किया है। इस ग्रन्थके शेषमें कहा गया है कि—लोक हितके लिए प्रयत्न करो, यही यथेष्ट है। उत्तर देते हुए आपने समस्त शास्त्रीय विचारसे परोपकारको ही कोटि ग्रन्थोंका सार वाक्य बतलाया है। इसे उनके तिब्बत आदि दूरदेश पर्यटनका और बौद्ध संसर्गका फल ही समझना चाहिए। यह ग्रन्थ पहले लिखे जाने पर भी सम्भवतः उस समयमें ही मुद्रित हुआ था। परन्तु साधारण श्रेणीके लोगोंमें इस ग्रन्थका अधिक प्रचार या विचार नहीं हुआ।

प्रच्छन्नभावसे ज्ञाना‍न्वेषणमें व्यापृत रह कर राममोहन राय अपने जीवनमें बड़ी तृप्ति अनुभव करते थे। इस अपरिसीम ज्ञानानन्दमें उनकी अर्थ तृष्णा क्रमशः निवृत्तिकी ओर दौड़ने लगी। आप दीवान होते हुए भी स्वयं आधे कलेक्टर थे। कलेक्टर डिगबी साहब आपको महात्मा समझते थे और बड़ा आदर करते थे। यह मान-मर्यादा भी अब आपको अच्छा न लगने लगी। संन्यासीकी तरह तिब्बत गये थे, उधरसे लौटते समय

आपके मन-मन्दिरमें ब्रह्मसाधनकी महत्ता घुस चुकी थी। गार्हस्थ्य उन्नतिके लिए आपने जो जो कार्य किये थे, सब आपको हेय मालूम होने लगे। ४० वर्षकी अवस्थामें आप चतुर्थाश्रमको लक्ष्य बना कर, दीवानी-पद छोड़, धर्मोन्नतिके लिए कलकत्ता पधारे। उस समय आपकी त्यागबुद्धि ऐसी बलवती थी, कि अंग्रेज सरकारके सादर आह्वानके प्रति भी आपने बड़ी निर्भीकतासे उदासीनताका परिचय दिया। तत्कालीन भारत राज प्रतिनिधि (गवर्नर जनरल बहादुर)के एक गुरुतर कार्य सम्पादनके लिए आपसे प्रार्थना करने पर भी, आपने गीतोक्त ईश्वरोपासनामें सर्वान्तःकरण लगा दिया और उस पर कुछ भी ख्याल न किया।

राममोहन रायने कलकत्ता और समस्त बंगालकी अवस्था देख कर सर्वसाधारणके हितके लिए क्या क्या किया था, यह बात उनकी कार्यावलीसे स्पष्ट मालूम हो जाती है।

इस विस्तीर्ण भारतभूमिमें अब सूर्य, चन्द्र वा अग्नि प्रभासम्पन्न हिन्दू राजन्यवर्गका आधिपत्य नहीं है। अब ब्राह्म और क्षात्र शक्तिके संयोग वियोगका विचार निष्प्रयोजन है। शास्त्रानुसार राजा ही युग परिवर्तक हैं, अतएव मुसलमानोंके अधिकारसे भारतमें नूतन युगका आविर्भाव समझना चाहिए। फिलहाल अंग्रेजों का अधिकार है। इस नवतर युगके पहलेसे ही दूर-वर्ती देशोंके संवर्द्धित ज्ञान, विज्ञान और सभ्यताका प्रकाश धीरे धीरे भारतक्षेत्रमें होने लगा था। सम्प्रति समग्र पृथिवीकी ज्ञानोन्नति और सभ्यताका प्रवाह विद्युद्वेगसे इस प्राचीन क्षेत्रमें आ पहुंचा है।

सृष्टि, स्थिति और प्रलयकी अतीतदेशीया ब्रह्मवाणी भारत की अक्षय और चिरन्तन सम्पत्ति है। राममोहन राय अपनी पूर्वपुरुष-परम्परासे युगयुगान्तर प्रवाहिता उसी अमूल्य सम्पत्तिको प्राप्त कर उसीकी मृतसञ्जीवनी शक्तिके प्रभावसे सर्वश्रेयोविधायिनी "ॐ तत्सत्" आदि मन्त्रोंकी उच्चारण-पूर्वक, उन्हीं पूजाओंसे मनुष्यके सार्वभौमिक कल्याण-साधनके लिए खड़े हुए।

कलकत्तामें अंग्रेजी राज्यकी राजधानी प्रतिष्ठित होनेके साथ साथ ही बङ्गालमें एक नवीनतर युगका उपक्रम हो रहा था, कि इसी समय राममोहन रायने जन्मग्रहण किया। जिस समय प्रधान विचारपति सर विलियम जोन्सने एशियादेशके और प्रधानतः भारत वर्षके शास्त्रोंके अनुसन्धानार्थ "एशियाटिक सोसाइटी" स्थापित की थी, उस समय राममोहन राय ज्ञानार्जन संग्रहके लिए अकेले भारतके नाना प्रान्तोंमें भ्रमण कर रहे थे। पीछे उन्होंने भी यूरोपीय विद्वानोंकी तरह शास्त्र भाषाओंमें अभिज्ञ हो कर उस कार्यमें प्राधान्य प्राप्त किया था। १८१४ ई०में आप कलकत्ता आये। उस वर्ष कलकत्तामें ईसाइयोंके बिशपका आसन प्रतिष्ठित हुआ था। इससे पहले कलकत्ता 'टाउन' (Town) मात्र था, अब 'सिटी' (City) हो गया है। ईसाई मिशनरियां सिर्फ कर्तव्य निष्ठासे इस देशमें आ कर धर्मप्रचार करते थे। फिर राजशक्तिकी सहायतासे वे भारतमें ईसाई धर्मके प्रचारमें प्रयत्नशील हुए। ऐसे कठिन समयमें वेदान्त ग्रन्थ हाथमें ले कर राममोहन राय उदित हुए।

राममोहन रायने कलकत्ता आ कर प्रथमतः अपने देशीय लोगोंके धर्ममतमें विशोधन करनेकी चेष्टा की। उसके लिए उन्होंने सबसे पहले वेदान्तसूत्रके सुविस्तृत शङ्कर भाष्यका मर्मार्थ बंगलामें लिखा और उसे छपा कर प्रकाशित एवं प्रचारित किया। इसके साथ ही वेदान्त शास्त्रके सारमर्मका सङ्कलन करके एक छोटी पुस्तिका भी प्रचारित हुई थी। पीछे और भी कई एक उपनिषदोंका इसी प्रकारसे बङ्गानुवाद करके उनका प्रचार किया गया। इसके बाद ही, उन्होंने अंग्रेजी भाषामें उक्त ग्रन्थोंका अनुवाद प्रकाशित कराया। उक्त ग्रन्थोंकी कई-एक भूमिकाओंमें महात्मा राममोहनरायने अपना अभिप्राय व्यक्त किया है। उसमें उन्होंने अपने मनके भावको स्पष्टरूपसे व्यक्त करनेमें वाक्य विन्यासमें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं रखी है। नीचे उनके कुछ वाक्य उद्धृत किये जाते हैं, जिससे उनका संक्षिप्त अभिप्राय मालूम हो सकता है।

वेदान्तसूत्रके अर्थ-प्रकाशकके प्रारम्भमें आपने साफ वाक्यमें कहा है कि—"वेदमें पुनः पुनः प्रतिज्ञा करते हैं, कि सम्पूर्ण वेदमें ब्रह्मको कहा गया है और ब्रह्म ही वेदके प्रतिपाद्य हैं।"

इस ग्रन्थकी भूमिकामें आपने लिखा है—"इस अकिञ्चनने वेदान्तशास्त्रका अर्थ भाषामें एक प्रकारसे यथासाध्य प्रकट किया है। इसकी दृष्टिसे जानियेगा, कि हमारे शास्त्रानुसार अति पूर्व परम्परासे और बुद्धिकी विवेचनासे जगत्के स्रष्टा, पाता और संहर्त्ता इत्यादि विशेषणों द्वारा व्यक्त केवल ईश्वर ही उपास्य हुए हैं। अथवा स माधि विषय क्षमतापन्न होनेसे ब्रह्ममय और इस रूपमें वे ही ब्रह्म साधनीय हुए हैं।"

इन ग्रन्थोंके प्रकाशित होने पर ब्राह्मणोंने नाना प्रकारसे आपत्ति की थी। उसके उत्तरमें राममोहन रायने अपना यह सिद्धान्त प्रकट किया कि "जब ज्ञानके बिना मोक्ष नहीं होगा, तब सबके लिए ज्ञानकी साधना आवश्यक है। इसमें वर्ण, आश्रम, वेदाध्ययनादिका विधि निषेध घटा कर लोगोंको परमार्थसे भ्रष्ट करना अनुचित है। यतिको जिस प्रकार ब्रह्मविद्यामें अधिकार है, उसी प्रकार उत्तम गृहस्थको भी अधिकार है, कि वह ब्रह्मज्ञान अर्जन करे। साधारणतः ज्ञान साधनके समय प्रणव उपनिषदादिके श्रवण मनन द्वारा आत्मामें एकनिष्ठा होनेका अनुष्ठान और इन्द्रिय निग्रहमें यत्न, इतना ही आवश्यक है। वर्ण धर्माचार करनेसे उत्तमता है, परन्तु उसके बिना ब्रह्मज्ञान उत्पन्न नहीं होता, ऐसा नहीं है। फलतः इन्द्रिय दमन, शमदमादिका अभ्यास, परब्रह्ममें प्रीति और श्रवण मननादि द्वारा ब्रह्मका साक्षात्कार करना, ये ही आवश्यक कर्त्तव्य हैं।

इस प्रकार ब्रह्मज्ञान साधनकी कर्त्तव्यताका प्रतिपादन कर राममोहन रायने 'गायत्रीका अर्थ' और 'गायत्र्या परमोपासना विधान' आदि पुस्तकोंका प्रचार किया, और विनयके साथ विज्ञापन किया कि "वेद मन्त्रोंके अर्थको बिना समझे उनका व्यवहार करनेसे कोई लाभ नहीं, बल्कि दोष है।" आपने और भी निर्देश किया, कि "समझनेमें अनुकूलता हो, इस आशयसे शास्त्रोंका अर्थ भाषामें अनुवादित किया है, मेरा और कुछ वक्तव्य नहीं है, शास्त्रार्थ समझ कर जो कर्त्तव्य हो, करें।"

स्वदेशीय लोगोंमें "एकमेवाद्वितीय" ब्रह्मतत्त्वको वेदका मुख्य तात्पर्य प्रतिपादन कर आपने तद्विरुद्धवादी विदेशियोंको प्रबोधित करनेके लिए १८१७ ई०में अंग्रेजी भाषामें उसी मर्मकी अनेक पुस्तकें लिखीं। उन पुस्तकोंमें "सब प्रकार परब्रह्मका उपदेश ही हिन्दूशास्त्रोंका मुख्य तात्पर्य है" यही पुनः पुनः कहा गया है। अंग्रेजी-में बड़े ओजस्वी वचन विन्यासमें कहा है कि "इसी ब्रह्मज्ञानके अभावसे हमारे देशमें अनेक दुर्गतियाँ हो रही हैं। उसकी उद्दीपनाके सिवा हमारे ऐहिक और पारत्रिक मङ्गल साधनके लिये और कोई भी उपाय नहीं है। इससे पहले आपके द्वारा प्रकाशित वेदान्तसार ग्रन्थके अङ्ग्रेजी अनुवादको पढ़ कर यूरोप और अमेरिकाकी विद्वन्मण्डली चमत्कृत हो गई थी। इन्होंने बड़ी दृढ़ताके साथ कहा था कि "हिदेन" नामसे हिन्दुओं पर कलङ्का रोप और उसके लिये उनके प्रति अवज्ञाका व्यवहार करना नितान्त अविहित है*।

* राममोहन रायने उत्तरकालमें जिस ब्राह्मसमाजकी प्रतिष्ठा की थी, वह किस प्रकारसे गठित हुई थी, इस बातका स्पष्टीकरण करनेके लिये हम उन अनुष्ठानोंकी आलोचना करते हैं। इस प्रसङ्गमें और भी कई एक विषय द्रष्टव्य हैं,—

१। राममोहनने पौराणिक मतके विषयमें कहा है—"पुराण अल्पबुद्धियोंके बोधाधिकारके लिये रूपक बना कर ईश्वरके माहात्म्यका वर्णन करते हैं, परन्तु पुराण यह भी बार बार दिखाते हैं कि यह सब केवल अल्पमतियोंके हितके लिये कहा गया है, जिससे पुराणमें दोषमात्र स्पर्श न कर सके।"

२। किसी इसाई मिशनरीने कहा है कि, इस देशके मनुष्य सब प्रकारकी नीति और धर्मके विनाश करनेवाली अज्ञानता और जड़तासे आसक्त हो रहे हैं। इस बातसे स्वदेशीय पण्डितोंकी अवमानना समझ राममोहन रायने उसका उत्तर दिया कि —"मुझे खेद है कि आप इतने दिन इस देशमें रह कर भी इस देशके लोगोंका विद्यानुशीलन और शास्त्रीय धर्म भी न समझ सके। इधर दो वर्ष बीतनेमें केवल कलकत्तेके लोगोंने ही परमार्थ सम्बन्धी तथा स्मृति, तर्क, व्याकरण, ज्योतिष आदि विषयके सैकड़ों ग्रन्थ रच कर प्रकाशित किये हैं। परन्तु मुझे आश्चर्य नहीं होगा कि यह बातका अभी तक ज्ञात न हुआ हो, कारण आपने तथा प्रायः अन्यान्य सभी मिशनरियोंने इस देशके तत्त्वदर्शनके लिए एक साथ ही चक्षु रोक रखे हैं।"

३। राममोहन राय मरनेका किसी प्रकारमें

उसके बाद राममोहनरायने ईसाई उपदेश वाक्यावलीका संकलन कर (१८२० ई०में) जो अपना अभिप्राय प्रकट किया, उसमें उन्होंने ईसाइयोंके त्रित्ववादको अमूल सिद्ध कर दिखलाया। उन्होंने यह भी कहा, कि ईसामसीह एक महिमान्वित पुरुष थे, उनका उपदेश पालन करनेसे सुख शान्ति मिल सकती है। इस ग्रन्थके प्रकाशनसे असन्तुष्ट हो कर मिशनरियोंने आपत्ति उठाई और कहने लगे, कि "ईसामसीह और परमेश्वर एक ही हैं। इस तत्त्वमें तथा ईसाई प्रायश्चित्तमें विश्वास न करनेसे केवल उनका उपदेश पालन करने मात्र कभी भी परित्राण नहीं हो सकता। इस विषयमें ईसाई मिशनरियोंसे राममोहनरायका नाना प्रकार वादानुवाद हुआ। इस कारण राममोहन रायने ईसाइयोंको अवगतिके लिये क्रमशः तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं*। उक्त तीनों पुस्तकोंमें आपने हिब्रु और ग्रीक भाषामें लिखित मूल बाइबिलसे कोई कोई वाक्य उद्धृत कर सिद्ध किया है, कि अङ्गरेजी अनुवादमें मूल ग्रन्थके भावको कई स्थानोंमें विकृत कर दिया गया है। इस अनुवादमें राममोहन रायने प्राचीन और नवीन विधानकी बाइबिल पर ऊहापोहके साथ खूब विचार करके सिद्ध कर दिया कि, ईश्वर एक है, उनमें त्रित्व नहीं है। ईसामसीहमें जो भी कुछ शक्ति और माहात्म्य है, वह ईश्वर प्रदत्त है, अतएव वे ईश्वरप्रेरित एक महापुरुष मात्र हैं, ईसामसीह सद्धर्मके उपदेशके प्रचारसे मनुष्योंके परित्राणके हेतुभूत और पथस्वरूप हुए हैं। शिष्योंके प्रति ईसामसीहका यह उपदेश है कि—"तुम लोग जा कर समस्त जातियोंके मनुष्योंको शिष्य बनाओ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्माके नामसे उन्हें अपनाओ।" (मथि १८, १६) ईसामसीहके नामसे धर्म प्रचारका यही मूल है। राममोहन रायने इस वाक्यकी विवेचना करके दिखलाया है, कि ईसामसीहके नवविधानिक शिष्यगण यहूदी या अन्यान्य जातियोंके साथ कहीं मिल न जाय, इसलिये उन्होंने इस प्रकार प्रक्रियामें ईश्वरके पुत्र बतला कर अपना नाम प्रथित करनेकी व्यवस्था की है। परन्तु उसमें भी उन्होंने "रसूल-अल्लाह" महम्मदकी तरह ईश्वरके प्रेरित धर्मवक्ताके सिवा अन्य किसी मर्यादाकी आकांक्षा नहीं रखी है।

इस आलोचनासे मिशनरियोंके मतानुयायी ईसाई मतकी दीक्षामें विपर्यय उपस्थित हुआ था। राममोहन रायका उद्देश था कि, ईसाके विशुद्ध और सुनीतिपूर्ण उपदेश द्वारा लोगोंको नीतिकी शिक्षा मिल सकती है, पर दुर्भाग्यसे मिशनरियां उस मार्गको कण्टकाकीर्ण किये डालती हैं। राममोहनरायका यह आन्दोलन बिल्कुल निष्फल नहीं गया। उन्होंने रेवरेण्ड आदम आदि उदारचेता कुछ व्यक्तियोंको बाइबिलका यथार्थ अर्थ समझा कर उनके द्वारा भारतीय एकेश्वर विश्वासी समाजकी प्रतिष्ठा कराई। उनके द्वारा प्रकाशित "बाइबिल" विचार ग्रन्थ यूरोप और अमेरिकाके एकेश्वरवादी ईसाइयोंका मनतोषक हुआ था। इस विचारके पढ़नेसे उनको आन्तरिक दृढ़ता उत्पन्न हुई और उनका संगठन भी क्रमशः पुष्ट होता गया। राममोहनको इस बातका बड़ा आनन्द हुआ था, कि वे उन्हें उपनिषद्का ब्रह्मरसास्वादन करानेमें समर्थ हुए।

उपर्युक्त शुभ लक्षणोंको देख कर राममोहन रायका उत्साह दूना हो गया। यहां तक कि आपने अपने विश्वस्त मित्र आदम साहबको अपना सर्वस्व दान करनेका संकल्प कर लिया। उन्होंने आदम साहबको यहांके एकेश्वरवादी ईसाइयोंके गिर्जाका पादरी बना दिया और स्वयं ब्राह्मणमण्डलीके साथ उस गिर्जाघरमें जा कर

या धर्मत्राता इत्यादि नहीं बनाया था। उनके वेदान्तशास्त्र-मतको "भ्रान्तमूलक?" इस प्रतिवादमें उनके प्रति इस प्रकारका कटाक्ष करने पर उन्होंने भी पूर्व लेखोंका उत्तर दे कर स्पष्ट किया कि "मैं पूर्वपुरुषोंके धर्मकी रक्षा ही कर रहा हूं, अतः निर्दोष, इसमें कुछ भी नहीं है।" आपने "A Defence of Hindu Theism" और "A Second Defence of the Monotheistical System of the Veds" नामक दो पुस्तकोंमें इन सबके मतका पौत्तलिकताका सम्पूर्ण खण्डन किया है।

* I, II and III Appeal to the Christian Public.

ईश्वरोपासना करते थे*। ऐसे भजनालयमें विशुद्धभावसे उपासना होती थी, ऐसा उनकी छोटी सी पुस्तिकामें प्रकट है।

राममोहन राय ईसाई धर्मके विशोधन-कार्यमें अनुरक्त हो कर उसके अनुकूल इतने अग्रसर हो गये थे, कि गिर्जा प्रकरणमें उपासना विधि पूर्णाभ्यस्त न होने पर भी उस समय उन्होंने ईसाइयोंके साथ तादृश उपासना करनेको अपना कर्त्तव्य समझा था। उन्होंने अपने पूर्व संस्कारके अनुसार "गायत्र्या ब्रह्मोपासनाविधान" अर्थात् गायत्री जप और तदनुयायी ब्रह्मचिन्तन द्वारा उपासना विधान संस्कृत भाषामें प्रकाशित किया और बादमें उसका अंग्रेजी अनुवाद भी किया। अंग्रेजी पाठकोंमेंसे जो शब्द ब्रह्म वा सर्वत्र ब्रह्मदर्शनका तत्त्व न समझ सकते थे, उनके लिए वे उतने अंशकी व्याख्या भी लिख गये हैं।

इधर क्रमशः आदम साहबका गिर्जा लोकशून्य होने लगा। उस समय एकेश्वरवादी ईसाइयोंका एक स्वतन्त्र गिर्जाका प्रचलन असंभव समझ कर तथा हिन्दू सम्प्रदायके एकेश्वरवादी भी अन्य पन्था देखने लगे, इसलिये राममोहनने अपने प्रयत्नोंकी गति बदल दी थी।

कहा जाता है, कि एक दिन एकेश्वरवादी ईसाइयोंके उपासनालयसे लौटते समय राममोहन रायके हमेशाके साथी ताराचंद चक्रवर्ती और चन्द्रशेखर देवने कहा कि "हम पराए समाजमें क्यों जाते हैं। हमारा अपना एक उपासनालय होना चाहिए।" राममोहन भी ऐसा ही चाहते थे। धीरे धीरे अपने समाजका मत विशोधन करना उनका अभिप्रेत था। वे अपने संस्कार, शिक्षा और साधनाके अनुसार ब्रह्मोपासना करेंगे, इससे बढ़ कर उनकी प्रार्थनीय वस्तु और क्या हो सकती थी! उनके बन्धुगण उद्योग करने लगे। थोड़े ही समयमें वेदविधिसम्मत एक उपासना सभा स्थापित हो गई। अनेकोंकी एकत प्रवृत्त चेष्टासे जिसकी उत्पत्ति हुई, उसकी दृढ़ प्रतिष्ठा आकाङ्क्षणीय है। वही आजकलका यह अशीतिवर्षदेशीय ब्राह्मसमाज है।

महात्मा राममोहन राय जब रंगपुरमें नाना सम्प्रदायोंके उपासकोंके साथ एकत्र हो कर धर्मानुशीलनमें रत थे, तभीसे एक नूतन धर्म सभाका सूत्रपात हुआ था। कलकत्ता आ कर उन्होंने वास्तवमें एक आत्मीय सभाका संगठन कर डाला। इस सभामें वेदका पाठ और ईश्वरके उद्देशसे स्तुति गीत होते थे। कुछ दिन बाद हिन्दू और ईसाई मतके बहुदेवोपासकोंके साथ वादानुवादमें तथा सहमरण विषयका महा आन्दोलनमें प्रवृत्त होनेसे राममोहन राय फिर इस आत्मीय सभाकी रक्षा न कर सके। ४ वर्ष तक यथानियमसे अपना उद्देश साधन कर यह सभा टूट गई। उसके १० वर्ष बाद नवीन उद्यमसे तथा प्रशस्तर यत्नसे वर्त्तमान ब्राह्मसमाजकी प्रतिष्ठा हुई।

शक सं० १७५०के, भाद्रपद मासमें (ई० सन् १८२८) यह सभा स्थापित हुई*। इस सभामें राममोहनराय साधारण व्यक्तिके समान एक उपासक मात्र गिने जाते थे। प्रति सप्ताह इस सभाका अधिवेशन होता था। सूर्यास्तके कुछ पहलेसे प्रारम्भ कर कुछ रात्रि तक इसका कार्य होता था। सभा भवनके एक पार्श्वमें दो तैलङ्ग ब्राह्मण बैठ कर वेद पाठ करते थे। सूर्यके अस्तगत होने पर उत्सवानन्द विद्यावागीश सभा भवनमें आ कर उपनिषद्का पाठ और उसकी व्याख्या करते

---

* १७४६ शक सं०में 'धर्मतला हरकरा' नामक अङ्गरेजी संवादपत्रके कार्यालयके ऊपरके हिस्सेमें सप्ताहमें एक दिन आदम साहब ईश्वरोपदेश देते थे। राममोहन राय, उनके भानजा, पुत्र तथा अन्यान्य कुटुम्बीजन, ताराचंद चक्रवर्ती और चंद्रशेखर देव वहां उपस्थित रहते थे। (तत्त्वबोधिनी पत्रिका, वैशाख, शक सं० १७६६) इसके पहले स्थानाभावके कारण कभी कभी राममोहन रायके लाल बाजार मकानमें भी आदम साहबका यह उपासना हुआ करता था।

* कलकत्ताके जोड़ासांको मुहल्लेमें कमलालोचन बसुके मकान पर इस सभाकी प्रथम प्रतिष्ठा हुई थी। इसके बारह वर्ष पहले इस मकानमें हिंदू कालेजका कार्य हुआ था। उत्तरकालमें (१८३० ई०) इस मकानमें डफ् साहबने जनरल एसेम्ब्लिज इन्स्टिट्यूशनका कारम्भ किया था। इस सामान्य मकानका परिचय इतिहासके योग्य विषय हो गया है।

ब्राह्मसमाजकी प्रतिष्ठाके लिए महात्मा राममोहन राय सर्वदासे अनुप्राणित हो कर वेद विहित ब्रह्मोपासना रूप धर्म प्रचारमें प्रणोदित हुए थे। उस प्रसङ्गमें उन्हें सबसे अग्रगामी और भी एक सुन्दर कार्यमें हस्तक्षेप करना पड़ा था। वह था भारतभूमिका चिरकाल प्रचलित सतीदाह या सहमरण प्रथाका निवारण। ब्रह्मज्ञानके प्रचारमें उक्त महात्माने इस लोमहर्षणकर्म प्रवृत्तिकी निवृत्ति की था।‡ सतीदाह या सहमरण देखो।

इधर तो यह अमङ्गल निवारित हुआ और उधर मङ्गलमूल ब्राह्मसमाजका गृहनिर्माणका कार्य समाप्त हुआ। राममोहन रायने सतीहत्याके बदले ब्रह्मचर्यके मङ्गलदीपको प्रज्वलित कर (माघ महीनेमें) ब्राह्मसमाजके स्वकीय नवीन भवनमें ब्रह्मोपासना प्रारम्भ कर दी।

यह घटना ब्राह्मसमाजके लिए मूलतः अनुकूल हुई सही, परन्तु कार्यतः प्रतिकूल ठहरी। सतीदाहके पक्ष समर्थनकारियोंने इस आन्दोलनके खण्डनके लिए ब्राह्मसमाजके प्रतिपक्षी एक सभाकी सृष्टि कर डाली। माघ मासमें ही इस विरोधकारी धर्मसभाकी नींव पड़ी। इसके ६ दिन बाद ही ब्रह्मसभा स्वकीय नूतन मन्दिरमें आसन जमा कर बैठी। इसी प्रकार धर्मसभाके सभ्योंके उपनार्थ एक मन्दिरके लिए भी चन्दा इकट्ठा हुआ, परन्तु वह स्थायी न हुआ। सन् सं० १७५१में पौष और माघ मासमें इस घटना पर कलकत्ताके हिन्दू समाजने भारी आन्दोलन उठाया था, यह उस समयके सामयिक साहित्यके अवलोकनसे ज्ञात होता है।

कुछ भी हो, गीतोक्त [illegible] प्रभाव होते हुए भी भारतभूमिमें कर्मबीजसे नाना प्रशाखायुक्त पल्लवित एक धर्मकल्पवृक्षका उद्भव हुआ था, कि जिसका रोपण और दोहकार्य महात्मा राममोहन राय द्वारा सम्पादित हुआ। यह भारतकी एक प्रकृष्ट ऐतिहासिक घटना है। इस कल्पतरु आश्रयमें अवगाहने हिन्दूविधवाओंका मनूक्त ब्रह्मचर्यका तथा शास्त्रोक्त मुक्तिलाभका मार्ग प्रशस्त हुआ है, इसमें सन्देह नहीं।

राममोहन रायके ज्ञानरूप सूर्यरश्मिसे कठोर सतीदाह प्रथाका अन्धकार अपसारित होने पर, हिन्दू जाति अन्य सभ्य जातियोंके समक्ष मस्तक ऊँचा करनेमें समर्थ हुई थी। इस सतीदाहको रोकनेके लिए उन्हें सतीदाहप्रथाके समर्थकोंके विरुद्ध विलायत यात्रा करनी पड़ी थी। इसके लिए धर्मप्राण राममोहन उस समय अपने द्वारा प्रतिष्ठित ब्राह्मसमाजको भी उसी अवस्थामें छोड़ स्वयं सकुशल समुद्रमें कूद पड़े थे ‡।

---

* भारतभूमिमें जितनी बार ब्रह्मज्ञानका उद्बोधन हुआ है, उतनी ही बार स्वर्गसुख कामना-मूलक यागयज्ञादि कर्मकाण्डका प्रचार कम था। कर्मप्रधान शास्त्रका [illegible] है। श्रुति कहती है, कर्म द्वारा मुक्तिकामना ऐसा, रथ द्वारा [illegible] चेष्टा, या पङ्गु द्वारा पर्वतशिखर [illegible] करना, अथवा सुरा द्वारा सुरा धोना करनेके समान है। (मनु १२।१३०, श्रीमद्भागवत १।८।५२) [illegible] द्वारा [illegible] इसका उल्लेख है। परन्तु उसका भावार्थ अन्य प्रकार है। गीताका उपदेश है कि, फलकी कामना त्याग कर कर्म करो, परन्तु [illegible] हुआ था। जिस प्रकार स्वर्गसुखकी कामनासे सहमरण अनुष्ठित होता था, उसी प्रकार [illegible] जिस देशमें उत्पन्न हुई है, उस देशमें कभी गीताका भी प्रचार हुआ था, अथवा निष्काम धर्मकी आलोचना हुई थी, यह अनुमान भी नहीं किया जा सकता। अब उसी [illegible] द्वारा ही राममोहनराय ने [illegible] किया। जिस वर्ष ब्रह्मसमाज स्थापित हुआ था (१८२८), उसके दूसरे ही वर्ष १८२९ ई० के ४ दिसम्बरको इस कुप्रथाका निवारक कानून बन गया।

* सतीदाह प्रथाका रोकना राममोहन रायके लिये जितना गौरवजनक था, उतना ही वह उनके लिये दुर्भाग्यका भी कारण था। कारण, इसके लिये उनके विरुद्ध हजारों आदमी खड़े हो गये थे, यहां तक कि उनका [illegible] हो गया था। लोगोंको ऐसा मालूम हो गया था कि [illegible] करें। इस और [illegible] विरुद्ध [illegible] [illegible] जब कि [illegible] हुए थे।

राममोहनराय भारतभूमिसे जन्मभरके लिए विदा ले कर उत्तमाशा अन्तरीप वेष्टनपूर्वक छ मास समुद्रपथसे कष्टको सहते हुए ८वीं अप्रेलको इंग्लैण्ड पहुंचे थे। वहां उन्हें तीन वर्ष रहना पड़ा था। आश्विन शुक्ला चतुर्थी, शक सं० १७५५ ता० २७ सेप्टेम्बर १८३३ ई०को ब्रिष्टल नगरमें आपने देहत्याग किया था। मृत्यु-समय में उनकी अवस्था ५१ या ६१ वर्षकी थी।

ब्राह्मसमाजके इतिहासमें राममोहनरायके इंग्लैण्ड वासके विषयमें दो विषय जानने योग्य हैं। एक तो यह, कि वहांके एकेश्वरवादियोंका कहना था, कि यदि राममोहनराय तीन वर्ष रह कर वहांके विद्वानोंके साथ समालोचना न करते, तो वहांका यूनिटेरियन सम्प्रदाय इतनी जल्दी परिपुष्ट न होती। दूसरा विषय यह है कि, सहमरणप्रथा निवारित होने पर भी प्रवर्त्तकोंकी आहुतिके प्रभावसे उसके पुनरुज्जीवनकी सम्भावना होने लगी थी, परन्तु राममोहन रायने प्रिवी कौन्सिल तक समुपस्थित हो कर १८३२ ई०की ११वीं जुलाईको इसकी "अपील नामंजूर" करा दी थी। विधवा हिन्दू रमणियों का मनूक ब्रह्मचर्य-गौरव सुदूर विलायत तक विघोषित हुआ था।

राममोहन रायके सम्पूर्ण जीवनके कार्यों से ब्राह्म समाजका कुछ न कुछ सम्पर्क अवश्य है।* अब ब्राह्म समाज सङ्कटोंमें गिरता पड़ता किस तरह क्रमशः वृद्धिको प्राप्त हुआ इस बातका वर्णन किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त वादविवाद और अन्यान्य प्रतिकूल घटनाओं-मेंसे राममोहनरायके अवर्त्तमानमें ब्रह्मसभाकी रक्षा करना एक दुष्कर कार्य था। इससे पहले करीब ५०।६० व्यक्ति सभाको उपासनाके समय उपस्थित होते थे। सदस्यगण बदनामी होनेके कारण क्रमशः सभाका सम्पर्क छोड़ने लगे। परन्तु राममोहन रायके चिरसहाय महा महोपाध्याय रामचन्द्र विद्यावागीशने इस सभाके प्रथम दिन जो आचार्यका आसन ग्रहण किया था, उससे वे किसी भी तरह विचलित न हुए। ब्रह्मसमाजके इतिहासमें इस महात्माका नाम और गुणावली विशेष उल्लेखनीय है।

हुगली जिलेके अन्तर्गत पालपाड़ा ग्राममें रामचन्द्र विद्यावागीशका जन्म हुआ था। उनके ज्येष्ठ भ्राता तान्त्रिक साधक थे, नाम था हरिहरानन्द तीर्थ स्वामी कुलावधौत।† तीर्थस्वामी राममोहन रायके तन्त्रोपदेष्टा थे। उनके अनुज रामचन्द्र विद्यावागीश राममोहन रायके कलकत्ता-वासमें प्रारम्भसे ले कर आखिर तक छायाकी तरह उनके अनुवर्ती थे। उन्होंने प्रथमतः अपने प्रतिष्ठित वेद चतुष्पाठीमें वेदान्तशास्त्रका अध्यापन किया। बादमें संस्कृत कालेजमें स्मृतिशास्त्रके अध्यापक नियुक्त हुए। इस कार्यमें नियुक्त रहने पर भी विद्यावागीश महाशय ब्राह्मसमाजके नेताओंमें एक प्रधान व्यक्ति समझे जाते थे। सर्वत्र उनका आदर था। हिन्दू-कालेजके अन्तर्गत बङ्गला पाठशालाके छात्रों को भी आप नियमितरूपसे नीतिशिक्षा दिया करते थे। शक सं० १७४०से १७६१ तक पन्द्रह वर्ष आप ब्राह्मसमाज-के आचार्य पद पर समारूढ़ रहे।। इस वर्ष श्रीमद् देवेन्द्रनाथ प्रमुख कुछ उत्साही युवकोंके ब्राह्मसमाजके सर्वाङ्गीन उन्नतिसाधनमें व्रती होने पर उनके जीवनका कार्य समाप्त हुआ था। इसके कुछ दिन बाद ही आप पीड़ित हो कर शय्याशायी हुए। अन्तमें काशीयात्रा की और मार्गमें ही १७६६ शकाब्दमें फाल्गुन मासमें आप की मृत्यु हुई।

इसके बाद ब्राह्मसमाजका कार्य भार श्रीमद् देवेन्द्रनाथ ठाकुर पर सौंपा गया। देवेन्द्रनाथ ठाकुर देखो।

१७६० शकाब्दमें, इक्कीस वर्षकी उम्रमें ही देवेन्द्रनाथ ठाकुरका धर्मभाव उद्दीप्त हुआ था। एक दिन सहसा राममोहन राय द्वारा प्रचारित ईशोपनिषद् ग्रन्थके एक छिन्न पत्रमें 'ईशावास्यमिदं सर्वं' इस ब्रह्ममन्त्रको पढ़ कर आप परम पुलकित हुये थे। यही उनकी मनोभूत साविवीमन्त्रदीक्षा है। तभीसे, केवल त्रिसन्ध्यामें ही नहीं, किंतु दिन और रातको भी वेदोपनिषद्के मन्त्र उनका रसनामें विलास करते रहते थे।

* 'राममोहन राय' शब्दमें सम्पूर्ण विवरण लिखा गया है।

* अवधौताश्रम ग्रहणके पहले इनका नाम नन्दकुमार था।

† इस समय आपने ब्राह्मसमाजमें जो व्याख्यान दिए थे, उनमेंसे १७ दिनके व्याख्यान बार बार छपे थे।

देवेन्द्रनाथने शक सं० १७६५ में स्वतः प्रवृत्त हो कर तत्त्वबोधिनी सभाका आरम्भ किया। दो वर्ष बाद यह भी ब्राह्मसमाजके साथ मिल गई थी। तत्त्वबोधिनी सभा की स्थापनाके बाद नाना मतके और नाना प्रकारके पृष्ठपोषक सभ्य समाजके सदस्योंके समूह ब्राह्मसमाज के भीतर आ कर खड़े होते थे *।

१७६५ शकाब्दमें तत्त्वबोधिनी सभा कुछ प्रधान कार्योंका अनुष्ठान कर ब्राह्मसमाजके इतिहासमें स्मरणीय बनी है। वे कार्य इस प्रकार हैं,—(१) तत्त्वबोधिनी पत्रिकाका प्रकाशन, (२) तत्त्वबोधिनी पाठशालाका स्थापन, (३) ब्राह्मधर्म ब्राह्मधर्मकी दीक्षा ग्रहण, (४) ब्राह्म समाजकी नियमावलीका प्रचलन, और (५) मासिक सभा तथा सांवत्सरिक उत्सवका विधान।

नियमावलीके संशोधनके प्रसङ्गमें दोनों सभाओंको एकत्र करनेका प्रस्ताव आलोचित हुआ। उसमें स्थिर हुआ कि, 'तत्त्वबोधिनी सभा स्वतन्त्ररूपसे ज्ञान और विज्ञानके अनुशीलन द्वारा ब्रह्मधर्मका प्रचार करेगी। उसकी जो मासिक उपासना होती है वह ब्राह्मसमाजकी मासिक सभारूपमें प्रतिमासके प्रथम रविवारके प्रातः-कालमें सम्पादित होगी।' यह भी स्थिर हुआ कि 'इन दोनों सभाओंका पृथक् सांवत्सरिक उत्सव न हो कर जिस दिन इस नूतन मन्दिरमें ब्राह्मसमाजकी उपासना आरम्भ होती है उसी दिन (बंगला मा० ११ माघको) इसका सांवत्सरिक उत्सव होगा।'

* देवेन्द्रनाथ उस समय स्कूल और कालेजका प्रचलित अनुसार साहित्य, विज्ञान और इतिहासादि [illegible] और सुशिक्षित हुए और ब्राह्मसमाजके सदस्य हुए थे। उनमें अधिकांश ही हिन्दू कालेजके छात्र थे। हिन्दू कालेजके स्वनाम प्रसिद्ध [illegible] ठाकुरने [illegible] छात्रोंको [illegible] हिन्दू कालेजके छात्रों द्वारा [illegible] साहित्य और विज्ञानका [illegible] पुस्तकें तैयार कराई थीं। [illegible] इस [illegible] और [illegible] थे। [illegible] और [illegible] गुरुजनोंके [illegible] और [illegible] थी।

पहले ब्राह्मसमाज "ब्रह्मसभा"के नामसे प्रसिद्ध हुआ था। बादमें विद्यावागीशद्वारा मुद्रित व्याख्यानोंके मुख पृष्ठ पर "ब्राह्मसमाज" ये पद प्रथम सन्निविष्ट हुआ। तत्त्वबोधिनी पत्रिकाके पहले तब उस समय किसी किसी पुस्तकमें "ब्राह्मसमाज" नाम व्यवहृत हुआ था। इसके कुछ ही दिन बाद "ब्राह्मसमाज" नाम स्थिरतर हो गया।

इस समय [illegible] विद्यासागर सदृश कुछ सुविज्ञ व्यक्तिगण सभ्य थे। इसलिए तत्त्वबोधिनी सभामें "ब्रह्मसभा" और ब्राह्मसमाजके कार्योंका आरम्भ हुआ। साहित्य और विज्ञानके साथ धर्मशिक्षा देनेके लिए तत्त्वबोधिनी पाठशाला खोली गई थी। यहाँ उपनिषद् आदिकी पढ़ाई होती थी। इसके लिए कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें तत्त्वबोधिनी पत्रिकाके सम्पादक अक्षयकुमार दत्त द्वारा रची गईं। शास्त्र-पाठ व बंगला भाषामें उनका प्रचार। आलोचनाके लिए तत्त्वबोधिनी पत्रिकाका सर्वत्र समादर होने लगा। इस प्रकारसे तत्त्वबोधिनी सभा और ब्राह्मसमाजने एक एक साथ ही अच्छी प्रतिष्ठा पाई थी। साहित्य रसज्ञ, विज्ञानप्रिय, तत्त्वजिज्ञासु, विद्यानुरागीगण इस सभामें परम आनन्द अनुभव करने लगे। ब्राह्मसमाजका उपासना-स्थान लोक पूर्ण दिखलाई देने लगा।

देवेन्द्रनाथने जब देखा कि, सभा-भवनके [illegible]में आदमी नहीं समाते, तब उन्होंने पासका मकान बनवाया, जिसमें कि एक साथ ५०० आदमी आसानीसे बैठ सकते थे। उसके बाद धर्मसाधना सम्बन्धमें कहाँ तक क्या हो रहा है, इस पर उनकी दृष्टि गई। पूर्व प्रचलित नियमावलीमें व्यवहार करके अनेकोंने नित्य उपासनाके लिए अनुरोध तो किया, पर उपासना पद्धति तब भी निर्वाचित या निर्दिष्ट न हो पाई थी। इससे नित्य धर्म का बोध, शिक्षा और साधनाके उपयोगी एक प्रणाली का अभाव मालूम देने लगा। क्रमशः इन दोनों अभावोंकी पूर्ति होने लगी। राममोहन रायने एक संक्षिप्त उपासनापद्धति लिखा था। श्रुतिपाठ, ध्यान और प्रार्थनादि द्वारा उसका कलेवर परिवर्द्धित किया गया। तत्पश्चात् श्रुति और स्मृति प्रयोग सार संकलन पूर्वक एक ग्रन्थ

धर्मग्रन्थ रचा गया। उस ग्रन्थके संस्कृतमन्त्रोंका सुबोध बंगला अनुवाद और व्याख्या भी कर दी गई। भारतके प्राचीन ब्रह्मवादी ऋषिगण ब्रह्म विषयक जो महामन्त्र नित्य पाठ करते थे, इतने समय बाद वे श्रुति वाक्य सज्जनगणोंके गोचर हुआ और अर्थबोधके साथ उनका नित्य पाठ होने लगा। हृदयको तृप्तिकर और शुद्धीभनोंको सर्वमङ्गलकर मन्त्रोंतिकी रचनावली घर घरमें ध्वनित होने लगी। बंगालकी शिक्षितमण्डली प्राचीन ऋषियोंके आशीर्वाद सहित ज्ञानालोकको प्राप्त कर ऐहिक और पारत्रिक परम मङ्गलकी साधना प्रवृत्त हुई।

परन्तु फिर भी देवेन्द्रनाथको सर्वतोभावसे परितृप्ति न हुई। उन्होंने देखा, बहुतसे भाई तर्कप्रिय हैं, उनमें प्रेम नहीं है, धर्मसाधनामें समुचित निष्ठा नहीं है, सुतरां योगधर्मको भी विशेष चर्चा नहीं हो रही है। इन सब लक्षणोंको देख कर वे निगूढ धर्म चिन्तामें प्रवृत्त हुए। कलकत्तामें उनका चित्त समाधान न हुआ। वे हिमालय प्रदेशको चल दिये।

दो वर्ष हिमालय प्रदेशमें भ्रमण कर देवेन्द्रनाथ घर लौटे। शक सं० १७८०में कलकत्ता लौट कर उन्होंने ब्राह्म धर्मानुरागी और एक उत्साही युवक दल देखा। इस युवक दलके नेता थे श्रीमत् केशवचन्द्र सेन।

श्रीयुक्त केशवचन्द्र सेन द्वारा प्रचारित नवविधान समाजका विवरण यथास्थानमें लिखा गया है। १७८१ शकाब्दसे १७८६ तक इन्होंने ब्राह्मसमाजमें रह कर उसकी जो महोन्नति की है, ब्रह्मसमाजके इतिहासमें वही उल्लेख-योग्य विषय है। नवविधान समाज द्वारा ब्राह्म-समाजका जो उपकार हुआ है, वह भी आखिरमें दिखाया जायगा। केशवचन्द्र और नवविधान देखो।

केशवचन्द्रके पितामह रामकमल सेन एक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् व्यक्ति थे। राममोहन रायके प्रतियोगी और प्रसिद्ध हो विलसन साहबके साथ उनकी गहरी मित्रता थी। राममोहनके विरुद्ध धर्म सभा स्थापित होने पर, रामकमल सेन उक्त सभाके नेताओंमें प्रधान नेता समझे जाते थे। परन्तु विधाताके विचित्र विधान हैं, उन्हीं रामकमलके पोतेने 'क्रिश्चियन' कुसंस्कारोंसे अपनी रक्षा करते हुए राममोहन रायकी प्रतिष्ठित सभाका गौरव बढ़ानेमें कोई कसर न रखी।

प्रथमावस्थामें उन्होंने एक सुपण्डित पादरीसे विशेष निपुणताके साथ क्रिश्चियन धर्मग्रन्थ पढ़ा। राममोहन राय द्वारा सङ्कलित क्रिश्चियन उपदेशको पढ़ कर वे उन्हें ईसाई धर्मसे अनुरक्त समझने लगे थे। किंतु आलोचना करते रहनेसे पीछे उनका यह भ्रम दूर हो गया। तदनन्तर वे ब्राह्म धर्मके मर्मको समझ कर प्रतिज्ञापत्रमें हस्ताक्षर करके ब्राह्मसमाजके सभ्य बने। फिर देवेन्द्रनाथके साथ केशवचन्द्रका सम्मिलन हुआ। थोड़े दिनोंमें यह मिलन एक अपूर्व और अतुलनीय सौहार्दरूपमें परिणत हो गया था।

देवेन्द्रनाथका हृदय ईश्वर प्रेममें गद्गद था। केशवचन्द्रका भी यही हाल था। दोनोंके सम्मिलन और सौहार्द-वर्द्धनमें यही एक कारण था। देवेन्द्रनाथ अद्वैतमत को अच्छा न समझते थे। उन्होंने ज्ञानी भक्त रामप्रसाद की तरह बहुप्रकारसे तत्त्व संस्थापन किया था। केशवचन्द्रने उसे ही सर्वसाधारणके लिए ग्रहणीय बना दिया। दोनोंने मिल कर एक ब्रह्म विद्यालय खोल दिया। देवेन्द्रनाथ ओजस्वी सुस्वादु मातृभाषामें और केशवचन्द्र हृदय-ग्राही तेजस्कर अंग्रेजीभाषामें उस विद्यालयके सैकड़ों छात्रोंको उपदेश दिया करते थे। सिर्फ विद्यालयमें ही नहीं, बल्कि घरमें, मैदानमें, सर्वदा ज्ञान और धर्म की चर्चा किया करते थे। इस प्रकार 'सत्य ज्ञान-मनन्त' परमेश्वरके प्रेम और पवित्रताका तथा मनुष्यके भ्रातृभावकी शिक्षा और व्याख्या, आलोचना और प्रचारमें केशवचन्द्र और देवेन्द्रनाथ स्वयं जैसे मग्न हो गये थे, श्रोता और सहचरवर्ग भी वैसे ही सर्वांशमें उनके सह धर्मी बनने लगे थे। एक प्राणताके विस्तारके साथ ब्राह्मधर्मका प्रचार होने लगा। ब्राह्मधर्म प्रचारके लिए कुछ व्यक्ति धन मान, प्राण तक विसर्जन करनेके लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो गये।

शक सं० १७८५ तक यही हालत रही। देवेन्द्रनाथ इस समयको ब्राह्मसमाजका वसन्तकाल कहा करते थे। उनकी उक्ति यह थी —"इस समयमें हृदयके प्रीति कुसुम द्वारा हृदयेश्वरकी अर्चना कर ब्राह्मगण ही कृतार्थ हुए थे।"

ईश्वरप्रसाद इन कुरीतियोंके अवसरोंमें 'पौत्तलिकताके प्रचार रीति और मतभावना" मानते हुए पूर्णोक्त धर्मतत्वके मत्यावलम्बन स्मरण करते रहते थे। अब भी ब्राह्म-समाजके इतिहास इस अंश तक आ पहुंचे हैं।

ब्राह्मसमाजके विषयमें इस समय और पौत्तलिकताके सम्बन्धमें आलोचना करना आवश्यक है। अब तक ब्राह्मसमाजके सम्प्रदाय एक मतमें काम करते रहे तब तक सम्प्रदाय प्रणाली धर्मतत्व समझना चाहिए। अपने इसमें मतभेद हुआ और परस्पर विवाद आरम्भ हो गया, तबसे ब्राह्मसमाजमें मतभेदान्वित कुछ पौत्तलिकताके लक्षण दिखाई देने लगे।

पहले ब्राह्मसमाजके सदस्योंमें किसी प्रकारका मतभेद था ही नहीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। किन्तु उनमें उतनी व्यापकता नहीं पहुंचता था। वे व्यवस्था पूर्वक मतभेद नहीं करते थे। जिसको हम आदि ब्राह्म समाज कहते हैं, उसका नाम पहले ब्राह्मसमाज ही न था *। इसके बाद मेदिनीपुर, ढाका और फिर बम्बई मद्रास आदि नगरोंमें जो ब्राह्मसमाज स्थापित हुए, उन्होंने सामान्य मतभेदके कारण भी अपना नाम "ब्राह्मसमाज" नहीं रखा †। किन्तु फिर भी वे समाज मूल ब्राह्मसमाजकी शाखा गिनी जाती थीं। उनमें सद्भाव सर्वतोभावसे विद्यमान था। इसके बाद जो प्रथम हुए उनमें ब्राह्मसमाजके सम्प्रदाय 'ब्राह्म' नामसे विशेष परिचय उपलब्ध किया। उनमें एक पृथक् सम्प्रदाय गठित होनेका प्रतिपादक विवाद शुरू हुआ था।

पहले उल्लेख किया गया है, कि राममोहन रायके परमात्मतत्व विद्यावान् परमेश्वरवादी होने पर भी, यूरोप और अमेरिका वासी यूनिटेरियन क्रिश्चियन लोग उनके ब्राह्मजातिके निष्कारण और पैतृकनिष्ठके कारण, पूर्ण स्वाधीनता और अपने सम्प्रदायमें शामिल नहीं समझ सके थे। केशवचन्द्र उन क्रिश्चियनोंके सम्पर्क और उनके अभिमत सत्कार्य संगठित हुए थे, इसलिये जातिविभाग उनकी दृष्टिमें विचार धर्मविरुद्ध और असङ्गत मालूम हुआ था। किन्तु इतना ही नहीं, वे हिन्दूसमाजकी सम्पूर्ण रीति नीतियोंको ऐसा दूषित समझते थे, कि मानो उसका सम्पूर्ण संशोधन किये बिना धर्मरक्षाका और उपायान्तर ही नहीं है। इसी विवेचनासे उन्होंने हिन्दू समाजके आमूल संस्कारके लिए दृढ़संकल्प हो कर उस का पुनर्गठन करना चाहा था और एकमात्र ब्राह्मसमाज की सहायतासे यह निष्पादित हो सकता है यह विचार कर वे प्रथमतः ब्राह्मसमाजको दी गई एक नियमोंसे अब एकता उद्योग करने लगे। इसके लिए उन्होंने सं० १९२१के कार्तिक मासमें उन्होंने भारतके समस्त ब्राह्मसमाजोंसे उन उन समाजके एक एक प्रतिनिधिको कलकत्ता बुलाया। अभिप्राय यह कि, उन प्रतिनिधियोंके अभि-मतसे भिन्न भिन्न ब्राह्मसमाजोंको सर्व पुनर्गठन परिवर्तन करना और क्रमशः समस्त देशको विशोधित करनेका उपाय निर्धारण करना। इसमें १।४ मास पहले केशव-

---

* [illegible] पहले 'ब्राह्मसमाज' नाम कैसे पड़ा था, यह [illegible] नहीं जा सकी है। [illegible] "[illegible]" नाम [illegible] हुआ था। [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible], यह [illegible] [illegible] इस समाजने "[illegible]" नाम [illegible] दिया था।

† १९२८ [illegible], मेदिनीपुरमें करीब ५० सदस्यों [illegible] "[illegible]" नामकी एक सभा स्थापित की। [illegible] [illegible] लिखा गया था कि, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। १९२८ [illegible] [illegible] '[illegible]' [illegible] [illegible] हुई। यह [illegible] [illegible] [illegible] थी। १९३३ [illegible] '[illegible]' [illegible] हुआ, [illegible] [illegible] एक [illegible] भी [illegible] हुई था। इस [illegible] "[illegible]" नाम [illegible] की [illegible] हो चुकी थी जो कि [illegible] दिखाता है। [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया था। वर्द्धमान, [illegible], [illegible], [illegible] आदि स्थानोंमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था।

चंद्रने (अपौत्तलिक) ब्राह्मधर्मानुसार एक वैद्यजातीय वरके साथ कायस्थजातीय एक विधवाकन्याका विवाह कार्य सम्पन्न कराया था। इससे उनके मनोभावका कुछ अंश प्रस्फुटित हो चुका था। उनकी आंतरिक चेष्टा थी, कि समस्त ब्राह्मसमाजके सदस्यगण एकमत हो कर इसी आदर्श देशकी कुरीतियां और कुसंस्कारोंको जडमूलसे उखाड कर फेंकते रहें।

कहना व्यर्थ है, कि इस प्रकार आदर्शसे कार्य करना देवेन्द्रनाथके अभिप्रायसे विरुद्ध न था, इसलिए समस्त ब्राह्मसमाजके प्रतिनिधियोंका बुलाना और उनमें मतैक्य सम्पादन करना कुछ भी सुसाध्य न हुआ।

परन्तु केशवचन्द्रको विश्वास था, कि इस प्रकार किये बिना ब्राह्मधर्म प्रतिपालित नहीं होता। इस लिये उन्होंने अपनी कोशिशसे स्वमतावलम्बी सदस्यों द्वारा इस प्रकारसे ब्राह्मधर्मका अनुष्ठान और ब्राह्मधर्म-प्रचार निर्वाह करनेका संकल्प कर तदनुसार प्रचार कार्यादि पृथक रूपसे करना शुरू कर दिया। दूसरे ही वर्ष १७८७ शताब्दमें देवेन्द्रनाथ द्वारा परिचालित आदि ब्राह्मसमाजसे सर्वथा विच्छिन्न ब्राह्मसमाज स्थापनके लिए उद्योग करने लगे।

केशवचन्द्रके आदि ब्राह्मसमाजका सम्बन्ध छोड कर नूतन उपासनालयके आयोजनमें व्यस्त होने पर महात्मा राजनारायण वसुने उक्त आदि-ब्राह्मसमाजका परिचालक पद ग्रहण किया।

केशवचन्द्रने अपने अभिप्रायानुकूल ब्राह्मसमाजकी स्थापनाके लिए जनसाधारणसे सहायता मांगी थी *। जाति, वर्ण और सम्प्रदाय निर्विशेषसे जिस ब्राह्मसमाज की स्थापना हुई है वहां किसी जातिका चिह्न रहना उचित नहीं, यह संस्कार बलीयान् होने पर भारतके केशवचन्द्रकी सहायतार्थ रुपये आने लगे। वे बिना पूंजीके ईश्वर सहाय हो कर घरसे निकले, पर तु सब त ही सफलकाम हुए। "ब्रह्मकृपाहि केवलं" इत्यादि नामाङ्कित ध्वजा उडाते हुए वे अतुल अर्थ सञ्चयपूर्वक कलकत्ता लौटे। उनका ब्राह्मधर्म प्रचार बाहुल्यतासे होने लगा। अनेक व्यक्ति अपने परिवारसे सम्बन्ध हटा कर उनके समाजमें प्रविष्ट हो गये। १८६९ ई०को ६ठी मार्चको "भारतवर्षीय ब्राह्मसमाज"के स्वतन्त्र उपासना मन्दिरका द्वार उन्मुक्त हुआ †।

केशवचन्द्र हिन्दुओं द्वारा पोषित कुसंस्कार और उपधर्मके दुर्गको तोडनेके लिए शुद्ध भावसे पारिवारिक और सामाजिक क्रिया निर्वाह करनेकी प्रतिज्ञाके कारण आदि ब्राह्मसमाजसे पृथक् हुए थे। उनका कार्य भी इस प्रकारसे निष्पन्न होने लगा। परन्तु फिर भी एक बलवत् अन्तराय रह गया। वह यह, कि नवीन ब्राह्मविवाह पद्धति कानून द्वारा सिद्ध किया किये इस सतत सम्प्रदायको किसी तरह भी रक्षाका उपाय न देख वे भारतके बडे लाटके शरणापन्न हुए। स्वयं गवर्नर जनरल लार्ड लारेन्स बहादुर केशवचन्द्रके उपासनालयमें आया करते थे और उनको आदरकी दृष्टिसे देखते थे। केशवचन्द्रने उनसे एक सशुद्ध विवाह कानूनकी पाण्डुलिपि तयार करवाई। उस पर सर्वसाधारण जनताके आपत्ति करने पर सिर्फ ब्राह्मोंके लिए 'ब्राह्म' नामसे इस कानून को विधिबद्ध करानेकी चेष्टा की गई। पर आदि ब्राह्म समाज और तदनुगत अन्यान्य समाजके सभ्योंने उस पर भी आपत्ति की। इससे यह भी रद हो गया। बादमें रजिष्टरी द्वारा सिविल विवाहका कानून विधिबद्ध हुआ। इस रजिष्टरी-कार्यके अव्यवहित पूर्वमें या बादमें ब्रह्मोपासना और पिताके पक्षसे कन्यादानादि कार्य करने

* केशवचन्द्रने भारतवर्षके समस्त ब्राह्मधर्मसमाजोंको एक सूत्रमें गूंथनेके उद्देश्यसे अपने द्वारा स्थापित इस समाजका नाम रखा—"भारतवर्षीय ब्राह्मसमाज। १८६६ ई०के नवम्बर मासमें उन्होंने ब्राह्मधर्मानुरागी व्यक्तिमात्रसे प्रार्थना की कि, उनके प्रचार कार्यमें तथा विशुद्ध आदर्शमूलक इस ब्राह्मसमाजके स्थापनार्थ उभाका अर्थ द्वारा सहायता पहुंचाना चाहिए।

† इससे मालूम होता है कि, ब्राह्मसमाज कहनेसे एक मकान और उसके भीतरके आदमी ही नहीं समझना चाहिए, बल्कि ब्राह्मसमाजका अर्थ सम्पूर्ण ब्राह्मोपासकोंके समूहसे है। उपासनाभवनको ब्रह्मका उपासना मंदिर या ब्रह्ममंदिर कहना चाहिए। कलकत्ताके ८८ नं० मछुआबाजार स्ट्रीटमें केशवचन्द्रका नवविधान समाज प्रतिष्ठित है।

की बाधा न रही। केशवचन्द्रने इसे भी बराबर आदि समाज पर प्रयुक्त किया था। १८७२ ई०की १९ मार्चको यह कानून पास हुआ था। इस प्रकारसे सम्प्रदाय रूपसे सर्वांशतया स्वतन्त्र होने पर केशवचन्द्रकी आशाएँ पूर्ण अर्थात् सिद्ध और विपुल परिश्रम सार्थक हुआ था।

उनके द्वारा आरम्भ अपौत्तलिक अनुष्ठान तथा जाति और वर्ण निर्विशेषसे विवाह आदि [illegible] विधान आत्मीय व्यक्तियोंमें चलने लगे। अब तक ब्राह्मधर्म तथा ब्राह्मसमाज भक्ति और परिष्कृत लक्षणोंसे सर्वजनोंमें दृश्यमान हो चुका था। एक दिन देवेन्द्रनाथने 'ब्राह्म' स्थान प्रकट करनेके निमित्त ॐकार युक्त अंगुलीयक पहननेकी व्यवस्था की थी। इस प्रकार ब्राह्म सम्प्रदायके लोगोंका स्वतंत्र चिह्न निश्चय हुआ *।

ब्राह्मोंकी वयोवृद्धिके साथ साथ उनकी पुत्रकन्यादि सन्तानोंकी संख्या भी बढ़ने लगी। जिससे जातकर्म, नामकरण और विवाहादि ब्राह्म अनुष्ठानोंका बाहुल्य होने लगा। विवाहकानून विधिबद्ध होनेके ६ वर्ष बाद केशवचन्द्रकी कन्याका विवाह सम्बन्ध उपस्थित हुआ। इस विवाहमें केशवचन्द्रको बड़ी ही विपत्तिमें पड़ना पड़ा था। उन्हें बाध्य हो कर अपनी कन्याको अल्पवयस्क राजाके हाथ सौंप देना पड़ा। इस विवाहमें उनकी मानी हुई कोई भी आईन काम न आया। यह कोचविहार विवाहके नामसे प्रसिद्ध (१८७८ ई०) है।

इस घटनासे केशवचन्द्रके सम्प्रदायके अधिकांश व्यक्ति उनके प्रति बड़े नाराज हो गये। उन्होंने आईन [illegible] जिस आईनको आवश्यक हो [illegible] था, परन्तु स्वयं उस आईन पर उन्होंने कुछ भी ध्यान न दिया। धर्मबुद्धिसे उन्होंने अपने मन्दिरको [illegible] किया। इस प्रकार तथा और भी कई कारणोंसे विरुद्धवाद उनके विरुद्ध फैलने लगा। आखिरकार उनके विरुद्धवादी [illegible] भिन्न कर उनका संसर्ग त्याग दिया और एक नया समाज स्थापित किया जिसका नाम रखा गया "साधारण ब्राह्मसमाज"। १८७८ ईस्वीकी १५वीं मईको यह समाज स्थापित हुआ था *।

भारतकी [illegible] इसकी प्रकृति भी समझी जा सकती है। केशवचन्द्र कोचविहार विवाह कराके विधाताका विशेष विधान बतला कर आत्म उद्धार-दोषको मिटाने लगे। उधर वे सब केशवचन्द्रको भारतवर्षीय ब्राह्मसमाजके उपासना मन्दिरके अधिकारसे च्युत करनेकी चेष्टा करने लगे। पीछे पुलिसकी सहायतासे उन्होंने अपनी अधिकार की रक्षा कर पाई थी। फिर केशवचन्द्रने घोषणा की, कि 'यह मन्दिर मेरे लिए विधाताका दान है।' इस प्रकार भारतवर्षीय ब्राह्मसमाजके अधिकारोंसे सब तरह वञ्चित हो कर उस मन्दिरके उपासकोंने यह नवीन समाज और नवीन उपासना मन्दिर निर्माण कराया और उसमें सर्व प्रकारसे साधारणतन्त्र राजनीतिका अनुसरण किया गया। अतएव प्रथम ही उसका नाम "साधारण ब्राह्म समाज" रखा गया।

साधारण ब्राह्मसमाजका परिचय देनेके लिए अधिक कुछ न लिखेंगे। इस समाजके सदस्यगण जब भारतवर्षीय ब्राह्मसमाजके साथ एक योगसे उपासनादि करते थे, उस समय वे जिस प्रकारसे उपासना और पारिवारिक तथा सामाजिक क्रियाकलापादिका अनुष्ठान करते थे, अब भी उन्होंने उन्हीं समस्त आचारोंको विधिवत् रखा। केवल व्यक्तिविशेषके कर्त्ताधिपत्यका खण्डन और साधारणतन्त्रकी राजनीतिका स्थापन करनेके लिए उन्हें बहुनियमयुक्त कार्यनिर्वाहक सभा और उसकी शाखा प्रशाखायें बनानी पड़ी थीं। वे लोग [illegible] रीत्यनुसार पर कन्याको उस साधारण उपासना मन्दिरमें ला कर उनका विवाहकानून सम्पन्न करने लगे। इनकी उपासनादिमें भी अनेक [illegible] देखनेमें आता है।

इधर केशवचन्द्र आत्मीय लोगोंका [illegible] व्यथित हो कर केवल ईश्वर चिन्तामें निरत हुए। वे पूर्वसे यह देखते आ रहे थे, कि लोग युक्ति और तर्क पर अधिक निर्भर रह कर एक प्रकार नास्तिक और स्वेच्छाचारी हुए जा रहे हैं। ब्राह्मसमाजमें इस प्रकारके

* [illegible]

* [illegible]

नास्तिक्य और यथेच्छाचारको नष्ट करनेके लिये उन्होंने जो विधिनियम चलाए, ब्राह्मसमाजमें उनका प्रचार न होते देख वे "नवविधान" नामसे अन्य मत प्रकाशित करने लगे*।

वर्त्तमान नवविधान मत पर विश्वास रखनेवाले व्यक्ति इन सार सत्योंमें सन्देह और तर्क न करें, स्थिर विश्वाससे ऐहिक और पारत्रिक कल्याणकर कार्यका अनुष्ठान करते रहें, यही नवविधानका तात्पर्य है।

नवविधानाचार्य केशवचन्द्रने सर्वधर्म सारभूत इन तत्त्वोंको पत्तनस्वरूप कर, पूर्वापर साधकोंमें ज्ञान भक्ति, योग और वैराग्यके समन्वयकी चेष्टा की है। ये अपने सम्प्रदायमें हिन्दुओंका होम, ईसाइयोंका जलमज्जन, सिखोंका दरबार भजन, वैष्णवोंका सङ्कीर्त्तन और शाक्तों की 'मा' 'मा' वाणी, यह सब कुछ सन्निविष्ट कर गये हैं। इस मतके साधक ब्राह्मगण मुसलमानधर्म प्रति ष्ठाता महम्मदकी तरह केशवचन्द्रको नवविधानप्रवर्त्तक "आचार्य" मानते हैं। सम्प्रति ब्राह्म नामसे जो सम्प्र दाय गठित है, उस सम्प्रदायके सभी व्यक्ति उपर्युक्त विशेष विधानमें एक मत न होने पर भी केशवचन्द्रको अपना मूल स्वीकार करते हैं।

इस प्रकारसे इस समय "ब्राह्मसमाज" शब्दसे दो प्रकारकी अर्थसङ्गति की जाती है—(१) ब्राह्म नामधारी व्यक्तियोंका सम्प्रदाय और (२) ब्रह्मोपासकोंकी मण्डली। आदि ब्राह्मसमाज द्वारा ब्राह्मसमाजमें ब्रह्मोपासक मण्डलीकी अधिक वृद्धिकी चेष्टा हो रही है। उसमें ऐसे ही व्यक्ति अधिक हैं, जो व्यवस्थापूर्वक देवताओंके बहुत्वको एकत्वम अर्थात् परब्रह्ममें समावेश करते हैं, जो बाह्यपूजाके बदले मानस पूजाका विधान करते हैं, जो श्रवणकीर्त्तनादि स्मरण और भक्तिमार्गमें एक सर्व श्रेष्ठके प्रति निष्ठावान् होते हैं, जो नीतिपालनको अथवा ईश्वरको श्रेष्ठ आराधना समझते हैं जो योगमार्गमें परमात्माके निर्विशेषत्वकी साधना करते हैं। ऐसे सभी व्यक्ति आदि ब्राह्मसमाजके मतका अनुवर्त्तन करते हैं, अथवा आदि ब्राह्मसमाजका कार्य करते हैं, ऐसा सम झना चाहिए। अतएव नवविधानी और साधारणी ब्राह्मोंके साथ यह परमात्मनिष्ठ व्यक्तिवर्ग आदि ब्राह्म समाज अर्थात् ब्रह्मोपासकोंका मण्डलीमें परिगणित हो सकते हैं*।

ब्राह्मसमाजके इतिहासमें एक विषय और भी द्रष्टव्य है —

देवेन्द्रनाथके साथ केशवचन्द्रके विच्छेदके समय दोनोंके भिन्न संस्कारोंने जो प्रकृष्टता धारण की थी, उस का वर्णन हम पहले ही कर चुके हैं। देवेन्द्रनाथने देखा कि, केशवचन्द्र आय ईसाइधर्मानुगत हैं और गति विजा तीय हुई जा रही है। इससे वे जातीय भावका उद्दीपनामें प्रवृत्त हुए। इस समय स्वदेश, स्वजाति और हिन्दूधर्मके नामसे उन्नतिसाधक बहुतसी सभासमिति और ग्रन्थादि का प्रकाशन होने लगा। हिन्दू रीतिनीतिमें कितना उत्कृष्ट और निर्दोष अंश है, उसकी रक्षाके लिए आदि ब्राह्म समाजमें दृढ़ता उत्पन्न हुई। क्रमशः केशवचन्द्रमें अरिष्ट मज्जागत हिंदुभाव परिस्फुटित होने लगा। उन्होंने हिंदुओं के शुद्धाचार धारण किये। बहुत बचपनमें ही ये निरा मिष आहार करते थे। उनके प्रभावसे ब्राह्मोंमें मत्स्य मांसादि आहारकी प्रसक्ति दूर हो गई। विलायत प्रवासी हमारे देशके युवकोंमें, स्वदेशीय रीतिनीति पालन के लिए श्रीमती महारानी भारतेश्वरी विक्टोरिया द्वारा

---

* शक सं० १८०१के माघमासमें नवविधान घोषित हुआ। (१) ईश्वर है, (२) वे पिता हैं और हम सब पुत्र, (३) ईश्वर पवित्र हैं, हमें पापोंका त्याग कर [illegible] होना चाहिए, धर्मोंके सार और सत्य [illegible] चाहिए, मन्था ... —(४) वर भाग ... ध्यानोंकी ... १०L.

* देवेन्द्रनाथने ब्राह्मधर्म प्रथम उपनिषद्‌का तात्पर्य विशुद्ध संस्कृतभाषामें अनूदित कर अध्यापक ब्राह्मण पण्डितों और वर्द्धमानन्द सरिषम, महेशचन्द्र उद्‌यापन शिव नियत किया था। राममोहन रायने इसे ब्राह्म समाजकी प्रतिष्ठाके दिन (बंगला माघको) आरम्भ किया, ब्राह्मसमाज पण्डितोंको ... था।

सनातन, केशवचन्द्र ही गुरुस्थानीय थे। सर्वत्र केशवचन्द्र ही ईश्वरनिष्ठा, प्रेम और धर्मानुराग आदि, गुरुस्वरूप इन गुणोंके आदर्शभूत माने गये हैं।

आदि ब्राह्मसमाजसे भारतवर्षीय ब्राह्मसमाजका उद्भव, उससे फिर साधारण समाजकी उत्पत्ति, इसी बीचमें ब्राह्मविवाह आइन। ब्राह्मधर्मशास्त्रके निर्णयके अनुसार इन तीन समाजोंके प्रमुखोंमें आपसमें कुछ विवाद हो गया। अब तीन शाखाओंसे तीनों ब्राह्मसमाज अपनी प्रशाखाओंका विस्तार कर रहे हैं। शाखोंमें अब विवादबुद्धिकी सम्भावना नहीं है। प्रत्युत विविध शुभ कार्योंके अनुष्ठानमें तीनों समाजके व्यक्ति एकत्र होते हैं। यूरोप और अमेरिकाका विशुद्ध एकेश्वरवादी समाज, इस देशका आर्यसमाज, थियोसोफिकल सम्प्रदाय, और परमहंस सच्चिदानन्द सम्प्रदाय आदि इन ५० वर्षोंके पुराने ब्राह्मसमाजके अनुकरणसे गठित हैं। ब्राह्मगण इस समय इन समस्त उन्नत धर्मसम्प्रदाय लोगोंको प्रीतिकी दृष्टिसे देखते हैं और जहां सम्भव होता है उनके साथ सम्मिलनकी चेष्टा करते हैं। आदि-समाजके पुरातन साधक भूत पूर्व सत्यवादियोंकी प्रतिष्ठाता देवेन्द्रनाथ अब भी ब्रह्मर्षि कहलाते हैं और इस प्रकारसे मृत्यु होने पर भी वे अमर हैं।

"ब्राह्मधर्मके प्रचार रोग और अत्याचारके बाद धर्मोत्साह उपस्थित होगा।" "शान्तिप्रिय हो कर उसके लिए अपेक्षा करो।" श्रीमद् देवेन्द्रनाथके शक सं० १७८०में कहे हुए थे वाक्य अब स्मरण हो आते हैं। जिस ग्रीष्ममें कुसुम शोभाहीन और सौरभशून्य हो जाते हैं, वर्षाकी अमृत धारासे उनमें भी पुष्पोंकी सुषमा श्री और सौरभ प्रकट होता है। ब्राह्मगण अब ब्राह्मसमाज रूपी पुष्पोद्यानकी उसी अवस्थाको देखनेकी आशा कर रहे हैं।

ब्राह्माहोरात्र (सं० पु०) ब्रह्मणोऽहोरात्रः। ब्रह्माका रात और दिन। इसका मान मनुष्यलोकके कल्पके बराबर है। देवपरिमाणके सहस्र युगका ब्रह्माका एक दिन और उतने ही समयकी एक रात्रि होती है।

ब्राह्मि (सं० त्रि०) ब्रह्मन् इञ्। टिलोप। १ ब्रह्माका अपत्य। २ ब्रह्माका वरदपुत्र। "नमो ब्राह्माय ब्राह्मये।" (मनुसं० ३।३१)

ब्राह्मिका (सं० स्त्री०) ब्राह्म एव स्वार्थे कन् टाप् अत इत्वम्। ब्राह्मणयष्टिका।

ब्राह्मी (सं० स्त्री०) ब्रह्मन् इदं, ब्रह्मन् अण् टिलोपः, स्त्रियां ङीप्। १ दुर्गा। (देवीपु० ४५ अ०) २ शिवकी अष्ट मातृकाके अन्तर्गत मातृकाविशेष। ३ सरस्वती। ४ सूर्यमूर्ति। ५ रोहिणी नक्षत्र। इस नक्षत्रके अधिष्ठाता देवता ब्रह्मा हैं। ६ ब्राह्मीशाक, सोमलताके आकारमें होनेवाली एक बूटी। यह जमीन पर फैलती है, ऊंची नहीं होती है। इसकी पत्तियां छोटी छोटी और गोल होती हैं और एक ओर निम्न रही होती है। आयुर्वेद शास्त्रमें इसकी जड़, पत्ते और डंठल आदिके विशेष विशेष गुण लिपिबद्ध हुए हैं। यह गुरुपाकी और गुरु विरेचक है। घृतादिके साथ ब्राह्मीशाकका रस पाक कर मालिश करनेसे मेदोदोष जाता रहता है। यह उन्माद, अपस्मार, स्वरभङ्ग आदि रोगोंमें विशेष उपकारक है। ब्राह्मीके पत्तोंके रसके साथ २ रत्ती कूठ पाचक अथवा मधुके साथ सेवन करनेसे उन्मत्तता नष्ट होती है। बङ्गालमें इसके पत्ते शिरदर्द, अग्निमान्द्य, पाण्डुरोग, खाँसी, खुजली आदिको दूर करनेवाले माने जाते हैं। ७ वार्ताकी, भारंगी। ८ पद्मगन्ध मत्स्य। ९ सोमलता। १० महाज्योतिष्मती। ११ वाराहीकन्द। १२ हिलमोचिका। १३ भारतवर्षकी एक प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बंगला आदि आधुनिक लिपियां निकली हैं। यह लिपि उसी प्रकार बाएं ओरसे दाहिनी ओर लिखी जाती थी और इससे निकली हुई आधुनिक लिपियां लिखी जाती हैं। लिपियोंके जो नाम गिनाए गए हैं उनमें खरोष्ठी लिपिका भी नाम मिलता है। इस लिपिका सबसे पुराना नमूना भारतमें अशोकके शिलालेखोंमें मिलता है। पाश्चात्यविद्वानोंका कहना है, कि भारतवासियोंने अक्षर लिखना फिनिशियनोंसे सीखा और ब्राह्मी लिपि भी उसी प्रकार प्राचीन फिनीशियन लिपिसे ली गई, जिस प्रकार अरबी, यूनानी, रोमन आदि लिपियां। परन्तु बहुतसे देशीय विद्वानोंने प्रमाण कर सिद्ध किया है कि ब्राह्मी लिपिका विकास भारतमें स्वतन्त्र रीतिसे हुआ। अक्षर देखो।

(त्रि०) १४ ब्रह्मसम्बन्धिनी। १५ [illegible]।

ब्राह्मीअनुष्टुप (सं० पु०) एक वैदिक छन्द। इसमें सब मिल कर ४८ वर्ण होते हैं।
ब्राह्मीउष्णिक (स० पु०) एक वैदिक छन्द। इसमें सब मिलाकर ४२ वर्ण होते हैं।
ब्राह्मीकन्द (स० पु०) ब्राह्म्या कन्द इव कन्दो यस्य। वाराहीकन्द।
ब्राह्मीकुण्ड (स० क्ली०) स्कन्दपुराणोक्त तीर्थभेद।
ब्राह्मीगायत्री (सं० स्त्री०) ३६ वर्णवाला एक वैदिक छन्द।
ब्राह्मीजगती (स० स्त्री०) ७२ वर्ण वाला एक वैदिक छन्द।
ब्राह्मीत्रिष्टुप (स० पु०) ६६ वर्ण वाला एक प्रकारका वैदिक छन्द।
ब्राह्मीपंक्ति (स० स्त्री०) ६० वर्ण वाला एक वैदिक छन्द।
ब्राह्मीबृहती (स० स्त्री०) ५४ वर्ण-वाला एक वैदिक छन्द।
ब्राह्मौदनिक (स० त्रि०) ब्राह्मणोंकी पाकाग्नि।
ब्राह्म्य (स० क्ली०) १ विस्मय। २ द्रव्य। ब्राह्मण इद ब्राह्मन् ष्यञ्। (त्रि०) ३ ब्राह्मण सम्बन्धी।
ब्रिगेड (अ० पु०) सेनाका एक समूह।
ब्रिगेडियर जनरल (अ० पु०) एक सैनिक कर्मचारी जो एक ब्रिगेड भरका सञ्चालक होता है।
ब्रिटिश (अ० वि०) १ उस द्वीपके सम्बन्ध रखनेवाला जिसमें इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड हैं। २ इङ्गलिस्तानका, अंगरेजी।
ब्रीड़ा (हिं० स्त्री०) व्रीड़ा देखो।
ब्रिवियर (अ० पु०) एक प्रकारका छोटा टाइप। यह आठ प्वाइंटका अर्थात् पाइकाका ⅔ होता है।
ब्रीहि (हिं० पु०) व्रीहि देखो।
ब्रुवत (स० त्रि०) ब्रवीतीति ब्रू शतृ। वक्ता, बोलने वाला।
ब्रुवाण (स० त्रि०) ब्रूते इति ब्रू शानच्। वक्ता, बोलने वाला।
ब्रुश (अ० पु०) बालोंका बना हुआ कूंचा। इससे टोपी या जूते इत्यादि साफ किये जाते हैं।
ब्रूहम (अ० स्त्री०) एक प्रकारकी घोड़ागाड़ी। इसे ब्रूहम साहबने पहले पहल निकाला था, इसीसे ब्रूहम नाम पड़ा। इसमें एक ओर हांकनेके बैठनेका और उसके सामने दूसरी ओर केवल दयाओंका पैर रखनेका स्थान होता है।
ब्रेवरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका बढ़िया कश्मीरी तम्बाकू।
ब्लाक (अ० पु०) १ ठप्पा जिस पर कोई चित्र छापा जाय। २ भूमिका कोई चौकोर टुकड़ा।
ब्लेष्क (स० पु०) जाल।

# भ

भ—हिन्दी वर्णमालाका चौबीसवाँ और पवर्गका चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। उच्चारण कालमें ओष्ठके साथ जिह्वाका अग्रभाग स्पर्श होता है, इसीसे यह स्पर्शवर्ण है। इसका प्रयत्न संवार, नाद और घोष है। यह महाप्राण है और इसका अल्पप्राण 'ब' है। भकारका स्वरूप—

"भकारं शृणु चार्वङ्गि स्वयं परमकुण्डली।
महामोक्षप्रदं वर्णं तरुणादित्य संप्रभम्।
पञ्चप्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं सदा॥" (कामधेनुत०)

यह वर्ण परमकुण्डली स्वरूप, महामोक्षप्रद, तरुण आदित्यसदृश, पञ्चप्राण और पञ्चदेवमय है। ध्यान पूर्वक इस वर्णका दस बार जप करनेसे समस्त अभीष्ट सिद्ध होते हैं। इसका ध्यान—

भंजना (हिं० क्रि०) १ विभक्त होना, टुकड़े टुकड़े होना। २ किसी बड़े सिक्के या छोटे छोटे सिक्कोंसे बदला जाना, भुनना। ३ बटा जाना। जैसे—रस्सी या तागेका भंजना। ४ मोड़ा जाना, भाना जाना।

भंजनी (हिं० स्त्री०) करघेका एक अंग। यह तानेको विस्तृत रखनेके लिये उसके किनारे पर लगाया जाता है। इसे बांसकी तीन चिकनी सीधी और दृढ़ लकड़ियोंसे बनाते हैं। ये लकड़ियां पास पास समानान्तर पर रहती हैं। इन्हीं तीनों लकड़ियोंके बीचकी सन्धियोंमेंसे ऊपर नीचे हो कर ताना लगाया जाता है। यह बुननेवालेके सामने किनारे पर रहता है।

भंजाना (हिं० क्रि०) १ भागों या अंशोंमें परिणत कराना, तुड़वाना। २ बड़ा सिक्का आदि दे कर उतने ही मूल्यके छोटे सिक्के लेना, भुनाना। ३ दूसरेको भांजनेके लिये प्रेरणा करना या नियुक्त करना। जैसे—रस्सी भंजाना, कागज भंजाना।

भंभा (हिं० पु०) वह लकड़ी जो कूप के किनारेके खंभे या खोटेके ऊपर आड़ी रखी जाती है और जिस पर गड़ारी लगा कर धुरे टिकाए जाते हैं।

भटकटैया (हिं० पु०) भटकटैया देखो।

भटा (हिं० पु०) बैंगन।

भंडताल (हिं० पु०) एक प्रकारका गाना और नाच। इसमें गानेवाला गाता है और शेष समाजी उसके पीछे तालियां पीटते हैं।

भड़ना (हिं० क्रि०) १ हानि पहुंचाना, बिगाड़ना। २ भंग करना, तोड़ना। ३ नष्ट भ्रष्ट करना, गड़बड़ करना। अपकीर्त्ति फैलाना, बदनाम करना।

भँड़फोड़ (हिं० पु०) १ मट्टीके बरतनोंको गिराना या तोड़ना फोड़ना। २ मट्टीके बरतनोंका टूटना फूटना। ३ भेद खोलनेका भाव, रहस्योद्घाटन।

भंडभांड़ (हिं० पु०) एक कटीला क्षुप। इसकी पत्तियां नुकीली, लम्बी और कटीली होती हैं। जाड़ेके दिनोंमें यह उगता है। इसका फूल पोस्तके फूलके आकारका पीले या बसंती रंगका होता है। जब फूल झड़ जाते हैं तब पोस्तकी तरह लम्बी और कांटोंसे युक्त ढेंढी लगती है जिसमें पकने पर काले रङ्गके पोस्त से और कुछ बड़े

दाने निकलते हैं। इन दानोंको पेरनेसे तेल निकलता है। इस तेलको लोग जलाते और दवाके काममें लाते हैं। इसके पौधेसे पीले रंगका दूध निकलता है जो घाव और चोट पर लगाया जाता है। इसकी जड़ भी फोड़े फुंसियों पर पीस कर लगाई जाती है। इसके नरम डंठलकी गूदीकी तरकारी भी बनाई जाती है।

भड़रिया (हिं० पु०) एक जातिका नाम। इस जातिके लोग फलित ज्योतिष या सामुद्रिक आदिकी सहायतासे लोगोंको भविष्य बता कर अपना निर्वाह करते हैं। ये लोग शनैश्चरादि ग्रहोंका दान भी लेते हैं। कहीं कहीं इस जातिके लोग तीर्थमें यात्रियोंको स्नान और दर्शन आदि भी कराते हैं। इस जातिके लोग ब्राह्मणोंमें किन्तु अतिम श्रेणीके समझे जाते हैं। २ पाखण्डी, ढोंगी। ३ धूर्त्त, मक्कार। (स्त्री०) ४ दीवारों अथवा उनकी सन्धियोंमें बना हुआ वह ताख या छोटी कोठी जिसके आगे छोटे छोटे दरवाजे लगे रहते हैं और जिनमें छोटी चीजें रखी जाती हैं।

भड़सार (हिं० स्त्री०) वह गोदाम जहां सस्ता अन्न खरीद कर महंगीमें बेचनेके लिए इकट्ठा किया जाता है।

भड़ा (हिं० पु०) १ पात्र, भाण्डा। २ भण्डारा। ३ रहस्य, भेद। ४ वह लकड़ी या बल्ला जिसका सहारा लगा कर मोटे और भारी बल्लोंको उठाते या सरकाते हैं।

भड़ाना (हिं० क्रि०) १ उपद्रव करना, उछल कूद करना। २ नष्ट करना, तोड़ना फोड़ना।

भड़ार (हिं० पु०) १ कोष, खजाना। २ अन्नादि रखनेका स्थान, कोठार। ३ पाकशाला, भंडारा। ४ उदर, पेट। ५ अग्निकोण। ६ भंडारा देखो।

भड़ारा (हिं० पु०) १ भंडार देखो। २ समूह, झुंड। ३ साधुओंका भोज। ४ उदर, पेट।

भड़ारी (हिं० स्त्री०) १ छोटी कोठरी। २ कोश, खजाना। (पु०) ३ कोषाध्यक्ष, खजानची। ४ रसोइया, रसोईदार।

भँड़ेरिया (हिं० पु०) भँड़रिया देखो।

भँड़ेरियापन (हिं० पु०) १ मक्कारी, ढोंग। २ चालाकी।

भँड़ौआ (हिं० पु०) १ भांड़ोंके गानेका गीत। २ हास्य आदि रसोंकी साधारण अथवा निम्नकोटिकी कविता

भँबुरी (हिं० स्त्री०) एक पेड़ जो बबूलकी जातिका होता है। इसे कुलाह भी कहते हैं। [illegible]

भँभाना (हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना।

भँभा (हिं० पु०) छिद्र, छेद।

भँभाका (हिं० स्त्री०) अधिक [illegible] योनि।

भँभाना (हिं० क्रि०) गौ आदि पशुओंका चिल्लाना, रँभाना।

भँभीरी (हिं० स्त्री०) एक पतिंगा। इसकी पूछ लम्बी और पतली, रंग लाल और बिलकुल तितलीके समान पारदर्शक चार पर होते हैं। इसकी आँखें टिड्डीकी आँखोंकी तरह बड़ी और उभरी रहती हैं। यह वर्षामें बहुत दिखाई पड़ता है और प्रायः पानीके किनारे पानीके ऊपर उड़ता है। पकड़ने पर यह अपने पैरोंको हिला कर भन भन शब्द करता है। इसका दूसरा नाम गुल्लाहा भी है।

भँवर (हिं० पु०) १ बड़ी मधुमक्खी, सारंग। २ बरें, भिड़।

भँवना (हिं० क्रि०) १ घूमना, फिरना। २ चक्कर लगाना।

भँवर (हिं० पु०) १ भौंरा। भ्रमर देखो। २ गर्त, गड्ढा। ३ पानीमें वह स्थान जहां पानीकी लहर एक बिन्दु पर बराबर घूमती है। ऐसे स्थान पर यदि मनुष्य या नाव आदि पहुंच जाय, तो उसके डूबनेकी सम्भावना रहती है।

भँवरकली (हिं० स्त्री०) लोहे या पीतलकी कड़ी। यह कीलमें इस प्रकार जड़ी रहती है कि जिसे जिधर चाहें उधर सहजमें घुमा सकते हैं। यह प्रायः पशुओंके गले की सिकड़ी या पट्टे आदिमें लगी रहती है। पशु चाहे जितने चक्कर लगावे, पर इसकी सहायतासे उसकी सिकड़ीमें बल नहीं पड़ने पाता।

भँवरगीत (हिं० पु०) भ्रमरगीत देखो।

भँवरजाल (हिं० पु०) भ्रमजाल, संसार और सांसारिक झगड़े बखेड़े।

भँवरभीख (हिं० स्त्री०) वह भिक्षा जो भौंरेके समान घूम फिर कर थोड़ी थोड़ी [illegible] मिलती हो।

भँवरा (हिं० पु०) भौं[illegible]।

भँवरी (हिं० स्त्री०) १ [illegible] पशुओंके शरीरके ऊपर वह स्थान जहांके रोयें एक केन्द्र पर घूमे हुए हों। पशुओंका इस प्रकारका घुमाव शुभाशुभ लक्षण समझा जाता है। ३ [illegible] घूम घूम कर [illegible]। ४ [illegible] बालोंका [illegible] लगाना, [illegible]। ५ परिक्रमा। ६ भांवर देखो।

भँवारा (हिं० वि०) भ्रमणशील, घूमनेवाला।

भँसना (हिं० क्रि०) १ पानीके ऊपर तैरना। २ पानीमें डाला या फेंका जाना।

भँसान (हिं० पु०) [illegible]।

भंगम (सं० पु०) वायु गुल्म।

भइया (हिं० पु०) १ भाई। २ एक आदरसूचक शब्द। इसका व्यवहार प्रायः बराबरवालोंके लिये होता है।

भक (हिं० स्त्री०) सहसा अथवा रह रह कर आगके जल उठने अथवा वेगसे धूएँके निकलनेके कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। इसका प्रयोग प्रायः 'से' विभक्तिके साथ होता है। जैसे लम्प भकसे जल उठा।

भकक्षा (सं० स्त्री०) [illegible]। [illegible]।

भकराँध (हिं० स्त्री०) अनाजके सड़नेकी गंध, सड़े हुए अनाजकी गंध।

भकराँधा (हिं० वि०) सड़ा हुआ।

भकसा (हिं० वि०) जो अधिक समय तक पड़ा रहनेके कारण कसैला हो गया हो और जिसमेंसे एक विशेष प्रकारकी दुर्गंधि आती हो।

भकसाना (हिं० क्रि०) किसी खाद्य पदार्थका अधिक समय तक पड़े रहने अथवा और किसी कारणसे बदबूदार और कसैला हो जाना।

भकाऊ (हिं० पु०) बच्चोंको डरानेके लिये एक कल्पित [illegible], हौवा।

भकार (सं० पु०) [illegible]।

भकुआ (हिं० वि०) मूर्ख, मूढ़।

भकुआना (हिं० क्रि०) १ भकुआ जाना, घबरा जाना। २ भकुआ देना, घबरा देना। ३ मूर्ख बनाना।

भकुरा (हिं० पु०) [illegible] जिससे मोटी [illegible] आदि बुना जाता है।

मकुडाना (हिं० क्रि०) १ लोहेके गजसे तोपके मुहका भीतरी भाग साफ करना। २ लोहेके गजसे तोपके मुहमें बत्ती भरना।

मकुरा (हिं० वि०) भकुआ देखो।

भकूट (सं० क्ली०) भस्य कूटम्। एक प्रकारको राशियोंका समूह जो विवाह गणनामें शुभ मानी जाती है।

"लेटारित्य नाशयेत् तत् भकूटम्।" (मुहूर्तचिन्ता०)

भकोसना (हिं० क्रि०) १ किसी चीजको विना अच्छी तरह कुचले हुए जल्दी जल्दी खाना, निगलना। २ खाना।

भक्कर—मध्यभारतका एक देशी राज्य। चाङ्गभक्कर देखो।

भक्कर—१ पञ्जावके मियानवाली जिलेका उपविभाग। इसमें भक्कर और ल्याह नामक दो तहसील लगती है।

२ उक्त विभागकी एक तहसील। यह अक्षा० ३१° १०´ से ३२° २८´ उ० तथा देशा० ७०° ४७´ से ७२° पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३१३४ वर्गमील और जनसंख्या सवा लाखसे ऊपर है। इसमें भक्कर नामक १ शहर और १९६ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० ३१° ३७´ उ० तथा देशा० ७१° ४´ पू० सिन्धुके बाएँ किनारे अवस्थित है। जनसंख्या साढ़े पांच हजारके करीब है। नगरका पश्चिमांश उर्वर और शस्यशाली है जो प्रतिवर्ष बाढ़से बह जाता है। पूर्वभाग तृणगुल्मादिविहीन वालुकामय मरुभूमि सदृश है। पूर्वतन अफगान राजाओंके अधिकारकालमें यहांसे आम्रादि काबुल भेजे जाते थे। ६२४ हिजरीमें सुलतान समसुद्दीनने भक्कर दुर्गमें घेरा डाला और उसे जीत लिया। भक्करपति मालिक नासिरुद्दीनने यह संवाद पाते ही जलमें डूब कर आत्म विसर्जन किया। १५वीं शताब्दीके शेषभागमें किसी बलूच सरदारका अनुगमनकारी औपनिवेशिक दल यहां आ कर बस गया। उक्त सरदारके वंशधर तभीसे यहाका शासन करते रहे। आखिर अहमदशाह दुर्रानीने इस स्थानको जीत कर किसी व्यक्तिको दान कर दिया। उस व्यक्तिने राजशक्तिकी सहायतासे बलूच शासनकर्ताको राज्यसे निकाल कर अपनी गोटी जमाई। शहरमें एक अस्पताल और म्युनिसिपल वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल है।

भक्किका (सं० स्त्री०) झिल्ली, झींगुर।

भक्त (सं० क्ली०) भज्यते स्मेति भज सेवायां कर्मणि क्त। अन्न, भक्तके अपभ्रंशसे "भात" शब्द हुआ है। भाव प्रकाशमें लिखा है, कि अन्न, अन्ध, कूर, ओदन, भिस्सा और दीदिवि, ये सब भक्तके पर्याय शब्द हैं। भक्त (भात) प्रस्तुत करनेकी विधि यों है —चावलको अच्छी तरह धो कर उससे पांच गुणा खौलते हुए जलमें पाक करे और जब उत्तमरूपसे सिद्ध हो जाय, तब उसे उतार कर माड़ फेंक दे। इसके गुण—अग्निवर्द्धक, तृप्ति जनक, रुचिकर, और हलका। विना धोये हुए चावलका भात तथा जिसका माड़ अच्छी तरह नहीं निकाला गया हो वह शीतवीर्य, गुरु (भारी), अरुचिकर तथा कफवर्द्धक है। (भावप्रकाश)

वैष्णव मतमें भात विष्णुको नैवेद्य लगा कर खाना चाहिये। यदि कोई भूल कर विना नैवेद्य लगाये भोजन करे, तो उसके लिये वह अन्न विष्ठा तुल्य हो जाता है। जो प्रतिदिन भक्तिपूर्वक विष्णुको नैवेद्य लगा कर भोजन करता है वह भगवानका दासत्व लाभ करता है।

अन्नदानके समान और दान नहीं है। अन्नदानमें सब प्रकारका पुण्य होता है। निम्नलिखित व्यक्तियोंके अन्न वर्जनीय हैं :—

राजाका अन्न, नाचनेवालेका अन्न, चुराया हुआ अन्न, कुम्हार, भड़ुआ, वेश्या तथा नपुंसकका अन्न नहीं खाना चाहिये। तेली, रजक, तस्कर, ध्वजी, गान्धर्व अर्थात् नाचनेवाले, लोहार, जुलाहा, कलाल, चित्रकार, वार्धुषिक, पतित, वर्णसङ्कर, छात्रिक, अभिशप्त, सोनार, शैलूष, व्याधित, आतुर, चिकित्सक, पुंश्चली, दाम्भिक, चोर, नास्तिक, देवतानिन्दक, मदिरा बेचनेवाला, श्वपाक, भार्याजित, अर्थात् स्त्रैण, शस्त्रजीवी, क्लीव, मत्त, उन्मत्त, भीत, रुदित, ब्रह्मद्वेषी और पापरुचि आदिका अन्न तथा श्राद्धान्न, अशौचान्न, सौएदान्नादि भोजन नहीं करना चाहिये। मनुष्य जो दुष्कर्म करता है वह अन्नमें समाश्रित होता है, इसलिये वह अन्न जो मनुष्य खाता है वह मानो पाप भोजन करता है। अतः पापीका अन्न निषिद्ध है।

भँवूरो ( हिं० स्त्री० ) एक पेड़ जो बबूलकी जातिका होता है। इसे फुलाई भी कहते हैं। फुलाई देखो।

भँभरना ( हिं० क्रि० ) भयभीत होना, डरना।

भभा ( हिं० पु० ) बिल, छेद।

भभाका ( हिं० स्त्री० ) अधिक अवस्थाकी स्त्रीकी योनि।

भभाना ( हिं० क्रि० ) गौ आदि पशुओंका चिल्लाना, रँभाना।

भँभीरी ( हिं० स्त्री० ) एक पतिंगा। इसकी पूंछ लम्बी और पतली, रंग लाल और बिलकुल झिल्लीके समान पारदर्शक चार पर होते हैं। इसकी आंखें टिड्डीकी आखोंकी तरह बड़ी और ऊपर निकली रहती हैं। यह वर्षाके अन्तमें दिखाई पड़ता है और प्राय पानीके किनारे घासोंके ऊपर उड़ता है। पकड़ने पर यह अपने पैरोंको हिला कर भन भन शब्द करता है। इसका दूसरा नाम जुलाहा भी है।

भमर ( हिं० पु० ) १ बड़ी मधुमक्खी, सारंग। २ बर्रे, भिड़।

भवना (हिं० क्रि०) १ घूमना, फिरना। २ चक्कर लगाना।

भवर ( हिं० पु० ) १ भौंरा। भ्रमर देखो। २ गर्त, गड्ढा। ३ पानीके बहावमें वह स्थान जहां पानीकी लहर एक केन्द्र पर चक्राकार घूमती है। ऐसे स्थान पर यदि मनुष्य या नाव आदि पहुंच जाय, तो उसके डूबनेकी सम्भावना रहती है।

भँवरकली ( हिं० स्त्री० ) लोहे या पीतलकी कड़ी। यह कीलमें इस प्रकार जड़ी रहती है कि उसे जिधर चाहे उधर सहजमें घुमा सकते हैं। यह प्राय पशुओंके गलेकी सिकड़ी या पट्टे आदिमें लगी रहती है। पशु चाहे जितने चक्कर लगावे, पर इसकी सहायतासे उसकी सिकड़ीमें बल नहीं पड़ने पाता।

भंवरगीत ( हिं० पु० ) भ्रमरगीत देखो।

भंवरजाल ( हिं० पु० ) भ्रमजाल, संसार और सांसारिक झगड़े बखेड़े।

भंवरभीख ( हिं० स्त्री० ) वह भीख जो भौंरेके समान घूम फिर कर मांगी जाय, तीन प्रकारकी भिक्षाओंमेंसे दूसरी।

भंवरा ( हिं० पु० ) भौंरा देखो।

भंवरी ( हिं० स्त्री० ) १ पानीका चक्कर, भंवर। २ जन्तुओंके शरीरके ऊपर वह स्थान जहांके रोएं और बाल एक केन्द्र पर घूमे हुए हों। बालोंका इस प्रकारका घुमाव स्थानभेदसे शुभ अथवा अशुभ लक्षण माना जाता है। ३ बनियोंका सौदा ले कर घूम घूम कर बेचना, फेरी। ४ रक्षक, कोतवाल या अन्य कर्मचारियोंका प्रजाकी रक्षाके लिये चक्कर लगाना, गश्त। ५ परिक्रमा। ६ भंवर देखो।

भंवारा ( हिं० वि० ) भ्रमणशील, घूमनेवाला।

भंसना ( हिं० क्रि० ) १ पानीके ऊपर तैरना। २ पानीमें डाला या फेंका जाना।

भंसरा ( हिं० पु० ) भैंजनी देखो।

भंसस ( सं० पु० ) पायु, गुदा।

भइया ( हिं० पु० ) १ भाई। २ एक आदरसूचक शब्द। इसका व्यवहार प्राय बराबरवालोंके लिये होता है।

भक ( हिं० स्त्री० ) सहसा अथवा रह रह कर आगके जल उठने अथवा वेगसे धूपके निकलनेके कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। इसका प्रयोग प्राय 'से' विभक्तिके साथ होता है। जैसे लप भकसे जल उठा।

भकक्षा ( सं० स्त्री० ) भस्य कक्षा। नक्षत्रकक्षा।

भकराध ( हिं० स्त्री० ) अनाजके सड़नेकी गंध, सड़े हुए अनाजकी गंध।

भकराधा ( हिं० वि० ) सड़ा हुआ।

भकसा ( हिं० वि० ) जो अधिक समय तक पड़ा रहनेके कारण कसैला हो गया हो और जिसमेंसे एक विशेष प्रकारकी दुर्गंधि आती हो।

भकसाना (हिं० क्रि०) किसी खाद्य पदार्थका अधिक दिनों तक पड़े रहने अथवा और किसी कारणसे कसैला हो जाना।

भकाऊ ( हिं० पु० ) बच्चोंको डरानेके लिये एक कल्पित व्यक्ति, हौवा।

भकार ( सं० पु० ) भ-स्वरूपेकार। भ स्वरूपवर्ण।

भकुआ ( हिं० वि० ) मूर्ख, मूढ़।

भकुआना ( हिं० क्रि० ) १ चकपका जाना, घबरा जाना। २ चकपका देना, घबरा देना। ३ मूर्ख बनना।

भकुड़ा ( हिं० पु० ) मोटा गज जिससे तोपमें बत्ती आदि ठूंसी जाती है।

मकुड़ाना ( हिं० क्रि० ) १ लोहेके गजसे तोपके मुहका भीतरी भाग साफ करना। २ लोहेके गजसे तोपके मुहमें वत्ती भरना।

मकुरा ( हिं० नि० ) मकुआ देखो।

मकूट ( स० क्ली० ) मस्य कूटम्। एक प्रकारकी राशियोंका समूह जो विवाह गणनामें शुभ मानी जाती है।

"क्षेत्रारित्वं नाशयेत् यत् मकूटम्।" ( मुहूर्त्तचिन्ता० )

मकोसना (हिं० क्रि०) १ किसी चीजको विना अच्छी तरह कुचले हुए जल्दी जल्दी खाना, निगलना। २ खाना।

मक्कर—मध्यभारतका एक देशी राज्य। माक्रमक्कर देखो।

मक्खर—१ पञ्जावके मियानवाली जिलेका उपविभाग। इसमें मक्खर और ल्याह नामक दो तहसील लगती हैं।

२ उक्त विभागकी एक तहसील। यह अक्षा० ३१° १०´ से ३२° २८´ उ० तथा देशा० ७० ४७´ से ७२ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३१३४ वर्गमील और जनसंख्या सवा लाखसे ऊपर है। इसमें मक्खर नामक १ शहर और १६६ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तहसीलका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० ३१° ३७´ उ० तथा देशा० ७१ ४´ पू० सिन्धके बायें किनारे अवस्थित है। जनसंख्या साढ़े पांच हजारके करीब है। नगरका पश्चिमांश उर्वर और शस्यशाली है जो प्रतिवर्ष बाढ़से बह जाता है। पूर्वभाग तृणगुल्मादिविहीन बालुकामय मरुभूमि सदृश है। पूर्वतन अफगान राजाओंके अधिकारकालमें यहांसे आम्रादि काबुल भेजे जाते थे। ६२४ हिजरीमें सुलतान समसुद्दीनने मक्खर दुर्गमें घेरा डाला और उसे जीत लिया। मक्खरपति मालिक नासिरुद्दीनने यह संवाद पाते ही जलमें डूब कर आत्म विसर्जन किया। १५वीं शताब्दीके शेषभागमें किसी बलूच सरदारका अनुगमनकारी औपनिवेशिक दल यहां आ कर बस गया। उक्त सरदारके वंशधर तभीसे यहां-का शासन करते रहे। आखिर अहमदशाह दुर्रानीने इस स्थानको जीत कर किसी व्यक्तिको दान कर दिया। उस व्यक्तिने राजशक्तिकी सहायतासे बलूच शासनकर्त्ताको राज्यसे निकाल कर अपनी गोटी जमाई। शहरमें एक अस्पताल और म्युनिसिपल वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल है।

मक्खिका ( स० स्त्री० ) मिश्री, कोई गुड़।

मक्त (सं० क्ली०) भज्यते सेव्यते इति भज सेवायां कर्मणि क्त। अन्न, भक्तके अपभ्रंशसे "भात" शब्द हुआ है। भाव प्रकाशमें लिखा है, कि अन्न, अन्ध, कूर, ओदन, भिस्सा और दीदिवि, ये सब भक्तके पर्याय शब्द हैं। भक्त (भात) प्रस्तुत करनेकी विधि यों है —चावलको अच्छी तरह धो कर उससे पांच गुणा खौलते हुए जलमें पाक करे और जब उत्तमरूपसे सिद्ध हो जाय, तब उसे उतार कर माड़ फेंक दे। इसके गुण—अग्निवर्द्धक, तृप्ति जनक, रुचिकर, और हलका। विना धोये हुए चावलका भात तथा जिसका माड़ अच्छी तरह नहीं निकाला गया हो वह शीतवीर्य, गुरु ( भारी ), अरुचिकर तथा कफवर्द्धक है। (भावप्रकाश)

वैष्णव मतमें भात विष्णुको नैवेद्य लगा कर खाना चाहिये। यदि कोई भूल कर विना नैवेद्य लगाये भोजन करे, तो उसके लिये वह अन्न विष्ठा तुल्य हो जाता है। जो प्रतिदिन भक्तिपूर्वक विष्णुको नैवेद्य लगा कर भोजन करता है वह भगवानका दासत्व लाभ करता है।

अन्नदानके समान और दान नहीं है। अन्नदानमें सब प्रकारका पुण्य होता है। निम्नलिखित व्यक्तियोंके अन्न वर्जनीय हैं —

राजाका अन्न, नाचनेवालेका अन्न, चुराया हुआ अन्न, कुम्हार, भड़ुआ, वेश्या तथा नपुंसकका अन्न नहीं खाना चाहिये। तेली, रजक, तस्कर, ध्वजी, गान्धर्व अर्थात् नाचनेवाले, लोहार, जुलाहा, कलाल, चित्रकार, वार्धुषिक, पतित, वर्णसंकर, छात्रिक, अभिशस्त, सोनार, शैलूष, व्याधित, आतुर, चिकित्सक, पुंश्चली, दाम्भिक, चोर, नास्तिक, देवतानिन्दक, मदिरा बेचनेवाला, श्वपाक, भार्याजित, अर्थात् स्त्रैण, ग्रामयाजी, क्लीव, मत्त, उन्मत्त, भीत, रुदित, ब्रह्मद्वेषी और पापरुचि आदिका अन्न तथा श्राद्धान्न, अशौचान्न, सौएडान्नादि भोजन नहीं करना चाहिये। मनुष्य जो दुष्कर्म करता है वह अन्नमें संक्रमित होता है, इसलिये वह अन्न जो मनुष्य खाता है वह मानो पाप भोजन करता है। अतः पापीका अन्न निषिद्ध है।

सुकृतं हि मनुष्यस्य सवमन्येऽनुष्ठितम्।
यो यस्यान्नेन जीवेत स तस्याश्नाति किल्बिषम्।
(कूर्मपु० उपविभाग १६ अ०)

२ धन। 'भक्त धन (मेधातिथि) ( वि० ) भजते स्मेति भज सेवायां क्त। ३ तत्पर, भक्तियुक्त, पूज्यविषयक अनुराग भक्तिसे युक्त। भज भावे क्त। ४ भजन। भक्तिके लक्षण —

जिसको कृष्णकी कथामें विशेष अनुराग है तथा अश्रु और पुलकोद्गम होता है, मन सदा श्रीकृष्णमें निमग्न रहता है, वही भक्त है। जो पुत्र और स्त्री आदिको मन वचन और शरीरसे कृष्णके तुल्य मानते हैं वे ही भक्त हैं। सब जीवों पर जिसकी माया है तथा जो सारे संसारको श्रीकृष्णका स्वरूप जानते हैं वे ही महाज्ञानी और भक्त हैं।

जिनके भक्तिके उपदेशसे शरीर पुलकायमान होता है, जो कभी हसते हैं, कभी नाचते हैं, जो सदा ही परमानन्दित हैं अथवा जो कभी आनन्दमें निमग्न, कभी गानमें अथवा जो भगवान्‌के भावमें डूबकर रोदन करते हैं, जो भगवत् प्रेममें निमग्न रहते हैं और जो सर्वज्ञ ईश्वरको जान कर सनातन विष्णुका भजन करते हैं, तथा जिनका सभी प्राणियों पर समान अनुराग है वे ही भक्त कहलाते हैं।

ब्राह्मण यदि हरिभक्त हों, तो उनका प्रभाव अतुलनीय है। हरिभक्त ब्राह्मणके चरणकमलकी धूलसे पृथ्वी पवित्र हो जाती है। उनके पदचिह्नकी गणना तीर्थोंमें होती है और उसको स्पर्श करनेसे तीर्थरत पाप भी विनष्ट होता है। उनके आलिङ्गन, उनके साथ वार्त्तालाप, उनके जूठे भोजन, दर्शन और स्पर्श करनेसे सब पाप नाश होते हैं। सब तीर्थोंमें घूम कर स्नानादिसे जैसा पुण्य होता है, एक भगवान्‌भक्त ब्राह्मणके दर्शनसे भी उसी तरहका पुण्य लाभ होता है।

विष्णु भक्तके शरीरमें सारे तीर्थ अवस्थान करते हैं। विष्णुभक्तकी पदरजसे पृथ्वी, तीर्थ, तथा सारा संसार पवित्र हो जाता है। जो विष्णुमन्त्रकी उपासना करते, विष्णुका उच्छिष्ट भोजन करते और विष्णुका ही जो एकमात्र ध्यान करते हैं, वे सब विष्णुभक्त विष्णुको प्राणसे भी अधिक प्रिय हैं। कलियुगमें दश हजार वर्ष तक ये विष्णुभक्त रहेंगे। अनन्तर विष्णु भक्तोंके चले जाने पर सब कोई एक वर्ण होंगे तथा पृथ्वी कलिमें ग्रस्त होगी।

विष्णुभक्तका कर्त्तव्य—विष्णुभक्त सर्वदा सब मनुष्योंके सामने विष्णुका कीर्त्तन करेंगे और अपने पास जो कुछ हो उन्हें विष्णुको सदा देंगे।

भक्त विष्णुमन्त्रसे दीक्षित हो कर पवित्र होते हैं तथा उनके पूर्वज भी पवित्र हो जाते हैं। भक्त ब्रह्मत्व, अमरत्व, इन्द्रत्व, मनुत्व, निर्वाणमुक्ति, अथवा अणिमादि ऐश्वर्य्य आदिकी कुछ भी याचना नहीं करते। केवल मात्र विष्णुके प्रति एकान्त अनुराग वा परा अनुरक्ति रहे, यही उनकी अभिलाषा है। शरीर मन वचनसे एकमात्र भगवान्‌में अनुरक्त रहना ही उनकी आकांक्षा है। ब्रह्महत्या, गुरुहत्या, गोवध, स्त्रीवध, आदिसे जिस प्रकार लोग पातकी बनता है, एकमात्र भक्तको त्यागनेसे ही उसी प्रकार पातकी हो कर रहता है। उसका इस समय और भविष्यमें मंगल नहीं होता। ( मार्कण्डेयपुराण हरिभक्तचन्द्रोदय० ) हरिभक्तिविलासमें भक्तका विशेष विवरण देखो।

भक्ति परायण ही भक्त है। उत्तम, अधम और प्राकृत आदि भक्तके अनेक भेद हैं। अत्यन्त संक्षेप रूपमें उस विषयकी पर्य्यालोचना की जाती है। जो भजन करता है, वह भी भक्त है। गीतामें कहा गया है—

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥ ( गीता )

श्रीकृष्णने अर्जुनसे कहा है—आर्त्त (पीड़ित), जिज्ञासु, अर्थ चाहनेवाला तथा ज्ञानी ये चार प्रकारके मनुष्य मेरा भजन करते हैं। गजेन्द्र आर्त्तभक्त, सनक सनातनादि जिज्ञासु भक्त, ध्रुव आदि अर्थार्थी भक्त और शुकदेवादि ज्ञानिभक्त हैं।

भक्ति-याजनमें अधिकारीको भक्त कहा जाता है। उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ इसके तीन भेद हैं। श्रीमद्भागवतके ११वें स्कन्धमें उक्त तीनों अधिकारियोंका उल्लेख है।

उत्तम—"सर्व्वभूतेषु यः पश्येद्भगवद्भावमात्मनः।
भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः॥

मध्यम—ईश्वरे तदधीनेषु बालिशेषु द्विषत्सु च ।
प्रेममैत्री कृपोपेक्षा यः करोति स मध्यमः ॥
कनिष्ठ—अर्चायामेव हरये पूजां यः श्रद्धयेहते ।
न तद्भक्तेषु चान्येषु स भक्तः प्राकृतः स्मृतः ॥"

श्रीमद्भागवतके सप्तमस्कन्धमें श्रवणादि जो नौ प्रकारकी भक्तिके लक्षण कहे गये हैं उनके एक एक भक्ति अनुसार यश करनेवाला भक्त कहलाता है। नवधा भक्ति यथा—

"श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्च्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनं ॥
इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा ।
क्रियते भगवत्यद्धा तन्मन्येऽधीतमुत्तमम् ॥"
(भागवत ७।५।२३-२४)

श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्च्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म, निवेदन यही नौ भक्ति हैं।

इन नौ प्रकारकी भक्तियोंके अधिकारी भक्त यथा—

"श्रीविष्णोः श्रवणे परीक्षिदभवद्वैयासकिः कीर्त्तने,
प्रह्लादः स्मरणे तदङ्घ्रिभजने लक्ष्मीः पृथुः पूजने ।
अक्रूरस्त्वभिवन्दने कपिपतिर्दास्येऽथ सख्येऽर्जुनः ।
सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत् कृष्णाप्तिरेषां परम् ॥"
(भक्तिरसामृतसिन्धु पूर्व० २।१२६)

श्रवणभक्तिसिद्ध भक्त परीक्षित, कीर्त्तनभक्तिसिद्ध भक्त वेदव्यासनन्दन शुकदेव, स्मरणभक्तिसिद्ध भक्त प्रह्लाद पादसेवनभक्तिसिद्ध भक्त लक्ष्मी, पूजनभक्तिसिद्ध भक्त महाराज पृथु, वन्दनभक्तिसिद्ध भक्त अक्रूर दास्यभक्तिसिद्ध भक्त हनुमान, सख्यभक्तिसिद्ध भक्त अर्जुन और आत्मनिवेदनभक्तिसिद्ध भक्त बलिराज।

इसके अलावा पद्मपुराणमें भी भगवत्पूजाके प्रसङ्गमें कतिपय भक्तोंके नाम उद्धृत देखे जाते हैं।

"मार्कण्डेयोऽम्बरीषश्च वसुर्व्यासो विभीषणः ।
पुण्डरीको बलिः शम्भुः प्रह्लादो विदुरो ध्रुवः ॥
दाल्भ्यः पराशरो भीष्मो नारदाद्याश्च वैष्णवाः ।
सेव्या हरिं निषेव्यामी नो चेदागः परं भवेत् ॥"

हरि सेवानन्तर, मार्कण्डेय, अम्बरीष, वसु, व्यास, विभीषण, पुण्डरीक, बलि, शम्भु प्रह्लाद, विदुर, ध्रुव, दाल्भ्य, पराशर, भीष्म तथा नारदादि भक्तोंकी सेवा करना वैष्णवोंके लिये अवश्य कर्त्तव्य है, नहीं करनेसे घोरतर अपराध होता है। पूर्वोक्त मार्कण्डेयादि मनीषिगण भक्त तथा प्रह्लाद भक्तराजके नामसे पुकारे जाते हैं। प्रह्लाद आदि भक्तोंमें पाण्डुनन्दन श्रेष्ठ भक्त हैं। फिर पाण्डवसे भी यादवगण श्रेष्ठ भक्त हैं।

"सदासन्निहितत्वात् ममताधिक्यतो हरेः ।
पाण्डवेभ्योऽपि यदवः केचित् श्रेष्ठतमा मताः ॥"
(लघुभाग)

सर्वदा श्रीकृष्णके निकट रहनेसे ममतातिशय निबन्धन कतिपय यादव पाण्डवसे श्रेष्ठ तथा इन यादवोंके मध्य उद्धव भक्त श्रेष्ठ थे। इन उद्धवसे भी फिर व्रजदेवीगण श्रेष्ठ भक्त थीं। उन लोगोंके मध्य श्रीकृष्णप्रिया श्रीराधिका ही सबकी अपेक्षा श्रेष्ठ भक्त थीं।

"तत्रापि सर्वगोपीनां राधिकाति वरीयसी ।
यदाधिक्येन कथिता मत्स्यपुराणागमादिषु ॥"

इन सब गोपियोंमें श्रीराधिका ही अधिक श्रेष्ठ थीं। क्योंकि, पुराण तथा वेदादि शास्त्रोंमें उन्हींको सबोंसे श्रेष्ठ बतलाया है।

भक्तिरसामृतसिन्धु नामक वैष्णवग्रन्थमें भक्तोंके अनेक भेद कहे गये हैं। उनमेंसे शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुररसके भक्त लोग श्रेष्ठ हैं। सनकसनन्दादि शान्तरसके भक्त थे। दासभक्त चार प्रकारके हैं—अधिकृत, आश्रित, पारिषद और अनुग। ब्रह्मा, शिव, इन्द्र इत्यादिको अधिकृत दास भक्त कहा जाता है।

आश्रित दासभक्त—शरणागत, ज्ञाननिष्ठ और सेवानिष्ठके भेदसे तीन प्रकारका है।

कालिय नाग तथा जरासन्धकारागारस्थ बद्ध नृपतिगण शरणागत दासभक्त थे।

जिन्होंने मुक्तिकी इच्छा छोड़ कर केवल भगवान्का ही आश्रय लिया है वे ज्ञाननिष्ठ भक्त हैं। शौनकादि ऋषि लोग ज्ञाननिष्ठ दासभक्त थे।

जो पहिलेसे ही भजन विषयमें आसक्त हैं, वे ही सेवानिष्ठ दासभक्त हैं। चन्द्रध्वज, हरिहर, बहुलाश्व, इक्ष्वाकु, श्रुतदेव, पुण्डरीक आदि ही सेवानिष्ठ भक्तके निदर्शन हैं। पारिषद दासभक्त—द्वारकानगरीमें उद्धव, दारुक, सात्यकि, श्रुतदेव,

गणजित्, नन्द, उपनन्द और भद्र आदि पार्षद दास भक्त थे। ये मन्त्रणा तथा सारथ्यादि कार्य्यों में नियुक्त रहते हुए भी किसी किसी समय परिचर्य्यादि कार्य्यमें प्रवृत्त रहते थे। कुरुवंशमें भीष्म, परीक्षित् और विदुर आदिको भी पार्षददासभक्त कहा जाता है। अनुगदास भक्त—जो सर्वदा स्वामीके सेवाकार्य्यमें दत्तचित्त रहता है उसे अनुग कहते हैं। यह अनुग दो प्रकारका है—पुरस्थ और व्रजस्थ।

'सुचन्द्रो मण्डल स्तम्भ सुतम्बाद्या पुरानुगा'।

सुचन्द्र, मण्डल स्तम्भ और सुतम्बादि पुरस्थ अनुग दासभक्त हैं। रक्तक, पत्रक, पत्री, मधुकण्ठ, मधुव्रत, रसाल, सुविलास, प्रेमकन्द, मरन्द, आनन्द, चन्द्रहास, पयोद, वकुल, रसद और शारद आदि व्रजस्थ अनुग दासभक्त हुए।

सख्यरस भक्त—पुरसम्बन्धी और व्रजसम्बन्धीके भेदसे दो प्रकारका है। अर्जुन, भीम, और द्रुपद नन्दिनी द्रौपदी और श्रीदाम आदि सख्यरसके पुर सम्बन्धी भक्त कहे जाते हैं।

सुहृत् सखा, सखा, प्रियसखा और प्रियनर्मसखाके भेदसे व्रजस्थ सख्यरसके भक्तगण इन चार श्रेणियोंमें विभक्त हैं। श्रीकृष्णसे कुछ उम्रमें अधिक, वात्सल्यगन्धि युक्त, सदा शस्त्र द्वारा दुष्टों से श्रीकृष्णकी रक्षा करनेवाले ही श्रीकृष्णके सुहृद सखा हुए। सुभद्र, मडलीभद्र, भद्रवर्द्धन, गोभट, यक्षेन्द्रभट, भद्राङ्ग वीरभद्र, महागुण, विजय और बलभद्र आदि भी सुहृद सखा थे। जिन लोगोंकी मित्रता कुछ सेवामिश्रित है, जो कृष्णसे उम्रमें कुछ कम और श्रीकृष्णके सेवासुख के अभिलाषी हैं वे ही सखा हैं। विशाल, वृषभ, ओजस्वी, देवप्रस्थ, वरूथप, मरन्द, कुसुमापीड, मणिवन्ध, करन्धम, आदि सख्यरसके भक्तगण सखा नामसे विख्यात हैं।

प्रियसखा—जिनकी मित्रता शुद्ध है अर्थात् जिसमें दास्य या वात्सल्यका गन्धमात्र भी नहीं है, इस तरहके समवयस्क मित्रोंको प्रियसखा कहते हैं। श्रीदाम, सुदाम, दाम वसुदाम, किङ्कणी, स्तोककृष्ण, अंशु, भद्रसेन, विलासी, पुण्डरीक, विटंक और कलविंक आदि प्रिय सखा नामसे विख्यात हैं। ये अनेक तरहके खेल और बाहु युद्ध तथा दण्डयुद्ध आदि कौतुक द्वारा सर्वदा श्रीकृष्ण को आनन्दित किया करते थे।

प्रियनर्म सखा—प्रिय सखासे भी सब प्रकारसे श्रेष्ठ, अत्यन्त रहस्य कार्यमें नियुक्त तथा विशेष भावके रखने वालेको ही प्रियनर्म-सखा कहते हैं। सुवल, अर्जुनगोप, गन्धर्व, वसन्त और उज्ज्वल प्रभृति प्रियनर्म सखाके नामसे विख्यात हैं।

श्रीकृष्णके गुरुवर्ग ही वत्सल-रसके भक्त थे। व्रज रानी यशोदा, व्रजराज नन्द, रोहिणी, ब्रह्मा इन सबोंने जिन गोपियोंके पुत्रोंको हरण किया था, वे सब गोपी, देवकी, देवकीको सपत्नीगण, कुन्ती, वसुदेव और सान्दी पनि मुनि आदि श्रीकृष्णके गुरुवर्ग थे। प्रेयसीवर्ग मधुर रसके भक्त थे। कृष्णके सभी प्रेयसीवर्गमें वृष भानुनन्दिनी श्रीराधिका ही सर्वप्रधाना थीं।

'प्रेयसीषु हरेरासु प्रवरा वार्षभानवी'

पहले ही कहा जा चुका है, कि जो देवताओंके चरणोंमें तन मन समर्पण कर स्थिरचित्तसे उनकी आराधना में सदा नियुक्त रहते हैं, वे ही भक्त हैं। देवतामें प्रेम अथवा भक्ति न रहनेसे भक्त नहीं हो सकता, अटल विश्वास ही भक्तका पूर्ण लक्षण है। भक्तश्रेष्ठ-नाभाजी कृत 'भक्तमाल'-की टीकामें प्रियदासने लिखा है —

हरि गुरु दास सों साचो सोई भक्त सही
गही एक टेक फिरि उतरे न टरि है।
भक्ति रसरूप को स्वरूप है छवियार
चाव हरि नाम लेत अश्रु ढरि झरि हैं॥
वही भगवन्त सन्तप्रीतिको विचार करे
धरे दूरि ईश ताहू पापडोनीसों करि है।
गुरु गुरुताई की सचाई ले दिखाई ,जाहि
गाई श्रीपै हरिजू की रीति रङ्ग भरि है॥

जो भक्त अविचलितचित्तसे हरिको गुरु कह कर जानते हैं वही श्रेष्ठ भक्त गिने जाते हैं। हृदयमें भक्ति के स्वरूपका उदय होनेसे अनर्थ नाश और सर्व स्वार्थ लाभ होता है। एकमात्र भगवान्, भक्त और गुरुके चरणध्यानके बिना भक्तोंके मनमें और किसीसे भी प्रेमभाव स्थान नहीं पा सकता। जो स्वयं स्वार्थत्याग

पूर्वक आनन्द कौतुक अथवा प्रेम पूर्वक सदा राधाकृष्ण का नाम हृदयमें धारण करते हैं वे ही श्रेष्ठ है, नहीं तो स्वार्थज्ञानसे ही पूजन भजनादि वणिग्वृत्तिमात्र है। जो हरिगुणगान और हरिरसास्वादनको ही सब विचारों और सर्वमङ्गलोंका सार जान कर प्रेममें निमग्न रहते हैं वे ही भक्त हैं अर्थात् देवतत्त्वमें प्रवृत्त विश्वासीको ही भक्त कहा जाता है।

पद्मपुराणमें विष्णुभक्तकी दैवोत्पत्ति बतलाया है। हरिपदके शरणार्थी भक्तको चाहिये, कि वे श्रीकृष्णकी भक्तिमें लीन हो कर उनका भजन करें। जो विष्णु भक्ति नहीं करते उनके पूर्वपुरुष तक भी नरकगामी होते हैं। भक्तकी कामना हो या न हो, वे तीव्र भक्तियोगसे उपाधिरहित पूर्ण पुरुष श्रीभगवान्‌की ही पूजा करें। एक मात्र अमला अथवा निष्कामा भक्ति ही श्रीभगवानकी प्रीतिसाधनमें समर्थ है।

भक्तोंको चाहिये, कि वे भक्ति सहित वैष्णवके निकट कृष्णमन्त्र ग्रहण करें, अवैष्णवके निकट मन्त्रदीक्षासे हरिभक्ति नहीं बढ़ती। विष्णु भक्ति विहीन मनुष्यके निकट मंत्र लेनेसे हरिभक्तका हृदय भक्तिपूर्ण नहीं हो सकता। ब्राह्मण वैष्णवसे मन्त्र लेना उचित है। शाक्त अथवा शैवसे मन्त्र लेनेसे हरिभक्तिमें विघ्न उत्पन्न हो सकता है। देवीपुराणमें लिखा है, कि विभिन्न सम्प्रदायके भक्तोंको नास्तिकका वर्जन करना चाहिए। गुरु और शिष्यके विपरीत मार्गमें चलनेसे कभी भी भक्तके हृदयमें भक्तिका आविर्भाव नहीं हो सकता तथा उसका इष्टवस्तुका साधन निष्फल होता है। प्रकृत भक्तको अपने उपास्य देवताके प्रति अचला भक्ति रखनी चाहिये, किन्तु ऐसा कहनेका यह तात्पर्य नहीं वे भक्त देवताओंमें भेदज्ञान रखे। हरिभक्तोंमें स्वयं महादेव श्रेष्ठतम कहे गये हैं। शास्त्रमें शुकदेवगोस्वामी तथा महर्षि नारद आदिकी कथा सुनी जाती है। कृष्णके भक्त लोग चतुर्वर्ग फलकी इच्छा नहीं करते, वे निष्काम तथा माधुर्य्यमयी भक्ति द्वारा श्रीकृष्णका भजन कर प्रेमरसको सिद्ध करते हैं। अन्यान्य योगधर्मसे धर्मार्थकाम सिद्ध तो होता है, पर श्रीकृष्णके भजनसे परमात्र प्रपञ्चनधाम-की प्राप्ति होती है। प्रकृत भक्त सिद्धिकी ओर दृष्टिपात नहीं करते, केवल प्रेमानन्दमें कृष्णसेवानन्दकी प्रार्थना करते हैं।

"सालोक्यसार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत।
दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः॥"

(भाग० ३।२९।१३)

कृष्ण भक्तके निकट त्रिजगत् तुच्छ है, उनका चित्त सदा आनन्दमय रहता है। भक्त ऊँच नीच जातिका भेदविचार नहीं करते। वैष्णव भक्तका स्पृष्ट अन्न-जल अथवा उनका उच्छिष्ट भोजन या चरणोदक पान करनेमें कभी पराङ्मुख नहीं होना चाहिये। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनसे कहा था—

"ये मे भक्तजनाः पार्थ न मे भक्ताश्च ते जनाः।
मद्भक्तानाञ्च ये भक्तास्ते मे भक्ततमा मताः॥"

(आदिपुराण)

जो हमारे भक्तके भक्त हैं वे ही श्रेष्ठ भक्त कहे जाते हैं, स्वयं ब्रह्मा भी कृष्णभक्तकी समता नहीं कर सकते। इसीलिये उन्होंने अर्जुनको श्रीमुखसे ही कहा है, कि वैष्णवकी सेवा करो, उससे बढ़ कर कृष्णभक्त होनेका उपाय नहीं है। उन्होंने और भी कहा है—

"साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयन्त्वहम्।
मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि॥"

भक्त और भगवानका शरीर दो होने पर भी उनके हृदय एक हैं। भक्त भगवानसे भिन्न और किसीका ध्यान नहीं करते और भगवान भी उसे वैसा ही समझते हैं। भक्तका हृदयकोरक भक्तिकुसुम पूर्ण है। भक्त-गण विभिन्न उपायसे भगवानको पाते हैं। गोपियोंने कामसे, नन्द यशोदाने स्नेहसे, कंसने भयसे, वृन्दावन वासीने पुण्यफलसे, रावणशिशुपालादिने द्वेषसे, प्रह्लाद आदिने भक्तिसे और शुकदेवादिने ज्ञानसे नारायणको प्राप्त किया था।

सभी शास्त्रोंमें हरिभक्त वैष्णवोंकी महिमा और आराधनाविधि बतलाई गई है। हरिभक्तको नीचजाति समझनेसे उसे नरक होता है। पवित्रचेता गुहकको भी रामचन्द्रने आलिङ्गन किया था। वामन अवतारमें उन्होंने असुरश्रेष्ठ बलिराजका दासत्व स्वीकार किया था स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण सखारूपमें अर्जुनके सारथि

थने थे तथा उन्होंने पाण्डवपत्नी द्रौपदीकी लाज रखी थी। जिस भक्तप्रेममें उन्होंने वृषभानुसुता श्रीराधिकाका मानभञ्जन किया था, उसी भक्तप्रेमसे उन्होंने पालयित्री यशोमतीके बन्धन और गोपपति नन्दके बाधावहन प्रेमको सह्य किया था। भक्तराज अक्रूर और विदुर भक्ति साधनासे ही उन्हें पाया था। भक्तका मनोरथ पूर्ण करनेकी कामनासे उन्होंने भक्तवर प्रह्लादकी प्रार्थना करने पर स्फटिकस्तम्भके मध्य नृसिंह रूपमें हिरण्यकशिपुको दर्शन दिये थे।

महाभारतके राजधर्म पर्वाध्यायमें उन्होंने बलिसे कहा है,—

"नित्यं ये प्रातरुत्थाय वैष्णवानान्तु कीर्त्तनम्।
कुर्वन्ति ते भागवता कृष्णतुल्या कलौ बले ॥" (भारत)

प्रातःकालमें विछावनसे उठ कर जो वैष्णवोंके नामकीर्त्तन करते हैं, वे ही कलिमें भागवत और कृष्णतुल्य समझे जाते हैं। पहले ही कहा जा चुका है 'मद्भक्तानाञ्च ये भक्तास्ते मे भक्ततमा मताः ॥' अतएव भगवान् स्वयं स्वीकार करते हैं, 'भक्तकी महिमा अपार है, जो विष्णुभक्तके दास और वैष्णवान्नभोजी हैं, वे निःशङ्कचित्तसे यज्ञभुक्तोंकी गतिको पाते हैं। विष्णुभक्तकी अर्चना सर्वतोभावमें श्रेयस्कर है। जो उसका विपरीत आचरण करते हैं, वे दाम्भिक वा विष्णुवञ्चक हैं। पादोत्तरखण्डमें भागवत पूजनकी भूरि भूरि प्रशंसा की गई है। दूसरी जगह भगवान् श्रीकृष्णने और भी भक्तपूजाकी अधिकता और अवश्य कर्त्तव्यता निर्देश की है। हरिभक्तोंके प्रिय व्यक्ति सबोंके लिये वन्दनीय हैं। जिसके घरमें वैष्णव भोजन करते हैं, वैष्णवसङ्गलाभसे उसका शरीर निष्पाप हो जाता है। वहां कृतान्तरका भी अधिकार नहीं है। स्वयं भगवान् भक्तकी रसनामें रसास्वादन करते हैं। नारदपुराणमें भी विष्णुभक्तका माहात्म्य वर्णित है। श्रीमत् मध्वाचार्यने लिखा है,—

"भगवद्भक्तपादाब्ज पादुकाभ्यां नमोऽस्तु मे।
यत्सङ्गमः साधनञ्च साध्यञ्चाखिलमुत्तमम् ॥"

(हरिभक्ति विलास)

पद्मपुराणमें भी भगवद्भक्तोंके पादत्राण अवलम्बन की कथा लिखी है। कृष्णभक्तिके दर्शन वा स्पर्शनसे साक्षात् पुक्कश भी पवित्र हो जाता है। हरिभक्तकी पूजा करनेसे ब्रह्मरुद्रादि भी उन पर प्रसन्न रहते हैं। भगवान् भक्तिरूपमें ही लोकसमूहका विधान करते हैं। हरिभक्तका नाम भी महत् है तथा ब्रह्मरुद्रादि पहलेसे भी उत्कृष्ट हैं। वे हरिभक्तिपरायण महात्मा सर्व धर्मके कर्त्ता बतलाये गये हैं। केशव जिन पर सन्तुष्ट रहते हैं, वह यदि चण्डाल भी क्यों न हो, ब्रह्ममय होता है। वह भक्त ब्रह्मघाती होने पर भी पवित्र है। जिनके शरीरमें तप्तमुद्रादि भागवत चिह्न दिखाई देते हैं, तथा जो सर्वदा हरिगुणगानमें रत हैं, वे ही कलिमें देवता समझे जाते हैं।

ऊपरमें भक्तोंके लक्षण और महिमादिका वर्णन किया गया। अब साधन परम्परासिद्ध महिमसम्पन्न भक्तोंके मध्य जो सामान्य प्रभेद लक्षित होता है, वही नीचे लिखा जाता है। जिनका अन्तःकरण अपने अभीष्टभावमें भावित है, उन्हें कृष्णभक्त कहते हैं। साधक और सिद्धके भेदसे कृष्णभक्त दो प्रकारका है।

"तद्भावभावितस्वान्ताः कृष्णभक्ता इतीरिताः।
ते साधकाश्च सिद्धाश्च द्विविधाः परिकीर्त्तिताः ॥"

बिल्वमङ्गलठाकुर एक साधक भक्त थे। उन्हीं के समान भक्त साधकभक्त कहलाते हैं।

"बिल्वमङ्गलतुल्या ये साधकास्ते प्रकीर्त्तिताः।"

फिर जो किसी प्रकारका क्लेश जानते ही नहीं, जिनकी कृष्णार्थ ही समस्त क्रिया है और जो निरन्तर सर्वदा प्रेमसुखास्वादनमें रत रहते हैं, वे ही सिद्ध भक्त हैं।

"अविज्ञाताखिलक्लेशाः सदा कृष्णाश्रितक्रियाः।
सिद्धाः स्युः सन्ततं प्रेमसौख्यास्वादपरायणाः ॥"

सिद्ध भक्त दो प्रकारका है—सम्प्राप्तसिद्ध और नित्य सिद्ध। फिर सम्प्राप्तसिद्धके भी दो भेद हैं—साधन सिद्ध और कृपासिद्ध।

साधनसिद्ध—जो भक्तिप्रभावसे क्लेशपरम्पराको बलित करके श्रय चरणोंमें परिणत होते हैं, जो मोक्षादिकी ओर दृक्पातमें भी घृणा बोध करते, जिनके उत्तरोत्तर वर्द्धमान प्रेमोत्सवसे अन्तःकरण स्तम्भित और आनन्दाश्रुजलसे वदनमण्डल आर्द्र और

शरीर अतिशय पुलकित होता है, उन धन्य पुरुषोंको प्रणाम करता हूं। मार्कण्डेयादि साधन द्वारा प्राप्त सिद्ध हुए थे।

"मार्कण्डेयाद्या' प्रोक्ता साधने प्राप्तसिद्धयः ॥"

श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्धमें कृपासिद्धका विषय इस प्रकार लिखा है —

"नासां द्विजातिसंस्कारो न निवासो गुरावपि।
न तपो नात्ममीमांसा न शौचं न क्रिया शुभा ॥
तथापि ह्युत्तमश्लोके कृष्णे योगेश्वरेश्वर।
भक्तिर्दृढा न चास्माकं संस्कारादिमतामपि ॥"

इनका द्विजोचित संस्कार नहीं होता, ये गुरुगृहमें वास नहीं करते, तपस्या और आत्मविचार नहीं करते और न शौच तथा शुभ कर्म ही करते हैं, तथापि उत्तम श्लोक योगेश्वरेश्वर भगवान् श्रीकृष्णमें इनकी प्रगाढ़ भक्ति रहती है। हम लोग संस्कारादि रहते हुए भी वैसी भक्तिसे वञ्चित हैं। यज्ञपत्नी, बलिदैत्य और शुकदेवादि कृपासिद्ध हैं। "कृपासिद्धा यज्ञपत्नी वैरोचनि शुकादयः" यादव और गोपगण श्रीकृष्णके नित्यप्रिय हैं। ये ही नित्यसिद्ध भक्त कहलाते हैं।

सुधीभक्तके दोनों अपराधसे सावधान रह कर श्रीकृष्णकी अर्चना करनेसे शीघ्र ही प्रेम उत्पन्न होता है। नामग्रहणसे सेवापराध दूर होता है, किन्तु नामापराधसे मानवको नरकभोग भिन्न अन्य गति नहीं है। नामापराध और सेवापराध देखो।

पहले ही कहा जा चुका है, कि श्रीविष्णुके नाम गुणादि श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, उनकी पादपरिचर्या और पूजा, उनकी वन्दना, उनका दास्य या सेवकत्व, सख्य या बन्धुज्ञान तथा आत्मनिवेदन अर्थात् देहसे शुद्धात्मापर्य्यन्त सभी आत्माको उन्हें निवेदन, यही नौ भक्तके प्रधान भक्तिलक्षण हैं। एतद्भिन्न गुरुपादाश्रय, दीक्षा, गुरुसेवा, सद्धर्मजिज्ञासा और शिक्षा, सन्मार्गानुसरण, कृष्णप्रिय वस्तुमें भोगलालसा वर्जन, एकादशी, कार्त्तिकेय प्रभृति व्रतानुष्ठान, गो विप्र-वैष्णव सेवा, अपराध वर्जन, अश्वत्थसेवन, अन्य देवता या शास्त्रमें अभेद ज्ञान, मथुरामण्डलमें वास, श्रीमद्भागवत पाठश्रवण आदि और भी चौंसठ प्रकारके भक्तिलक्षण कहे गये हैं। भक्तिरसामृतसिन्धु और हरिभक्तिविलास देखो।

भक्तकंस (स० पु० क्लि०) भक्तार्थं कंस। भक्ताहरणार्थ पात्र कांसेका वह वरतन जिसमें भात खाया जाता है।

भक्तकर (स० पु०) भक्तं भजनं करोतीति कृ-ट। १ एक प्रकारका सुगंधित द्रव्य जो अनेक दूसरे द्रव्योंके योगसे बनाया जाता है। (त्रि०) २ भक्तिकारक।

भक्तकार (स० पु०) भक्तमन्नं करोतीति कृ (कर्मण्यण्। पा ३।२।१) इत्यण्। १ पाचक, रसोइया। पर्याय—सूद, औदनिक, गुण, भक्षकार, सूपकार, आरालिक, वल्लव। २ भक्तकर नामक सुगंधित द्रव्य।

भक्तकृत्य (स० क्ली०) भोज्यादिका आयोजन।

भक्तच्छन्द (स० पु०) १ क्षुधा। २ आकांक्षा

भक्तजा (स० स्त्री०) अमृत।

भक्तता (स० स्त्री०) भक्तस्य भाव तल्-टाप्। भक्तत्व, भक्ति।

भक्ततूर्य (स० क्ली०) भक्तस्य तद्भोजनकालस्य आवेदकं वा भक्ते तद्भोजनकाले वादनीयं तूर्यं। भोजनकालमें वादनीय तूर्य, प्राचीनकालका एक प्रकारका बाजा जो भोजन करते समय बजाया जाता था। इसका पर्याय नृपमान है।

भक्तत्व (स० पु०) किसीके अङ्ग या भाग होनेका भाव, अवयवीभूत होना।

भक्तदास (स० पु०) भक्तेन अन्नमात्रेण दासः। पन्द्रह प्रकारके दासोंमेंसे एक दास, वह दास जो केवल भोजन ले कर ही काम करता हो।

मनुमें ७ प्रकारके दासोंका उल्लेख है जिनमेंसे भक्तदास दूसरा है। (मनु ८।४१५)

२ एक राजा। ये श्रीरामचन्द्रजीके परम भक्त थे और सर्वदा रामायण सुना करते थे। एक दिन सीताहरणका वृत्तान्त जब इन्होंने सुना, तब आवेगमें आ सीताके उद्धारके लिये हाथमें तलवार लिये समुद्रमें कूद पड़े। कहते हैं, कि इसी समय स्वयं रामचन्द्रजी सीताके साथ वहां उपस्थित हुए और उन्हें समुद्रसे बाहर निकाल कर बोले, मैंने रावणका वध कर सीताका उद्धार किया। अब चिन्तारहित हो अपने राज्यको लौट जाओ। राजा सीता सहित श्रीरामचन्द्रके दर्शन पा फूले न समाये और अपने घरको वापिस आये।

भक्तद्वेष (स० पु०) भक्ते द्वेष। १ अन्नमें अरुचि। २ भगवद्भक्तके प्रति द्वेष।

भक्तद्वेषिन् (स० त्रि०) भक्त द्विष णिनि। भक्तद्वेष युक्त।

भक्तनिष्ठ (स० त्रि०) १ निष्ठावान् भक्त। २ भक्त सेवन विषयमें विशेष निष्ठायुक्त। ३ एक राजा। आदि पुराणमें उनकी साधुता और भक्त वैष्णवके प्रति भक्ति निष्ठाका जो विवरण लिखा है वह इस प्रकार है—

एक दिन दो चोर वैष्णवका वेश धारण कर चोरीके उद्देशसे राजाके समीप पहुंचे। राजाने परम भक्ति भावसे उनका पादप्रक्षालन कराया। यहां तक, कि चरण सेवाके लिये उन्होंने रानियोंको नियुक्त रक्खा। दो पहर रातको जब सभी निद्रा देवीकी गोदमें सो रहे थे, उसी समय वैष्णववेशी प्रतारक उन चोरोंने रानीको मार कर उनके अलङ्कारादि ले लिये और वहांसे चम्पत हुए। किन्तु धर्मकी जय होती ही है, वे सब चोर रास्ता भूल गये और इधर उधर भटकने लगे। सवेरे राज भृत्यगण उन दोनोंको राजाके समीप पकड़ लाये। परम भक्तिमन्त राजा वैष्णवकी ऐसी बन्धनदशा देख चित्कार कर उठे। क्रमशः उन्होंने रानीकी हत्यावार्त्ता भी सुनी। रानीका हत्याकारक जान कर भी राजाने उन वैष्णव चोरोंको मुक्त कर देनेका हुकुम दिया और उनका पादोदक ले कर रानीके मुखमें देने कहा। भक्तके सहाय भगवान् हैं, राजाके भक्तिबलसे रानी जी उठी। अनन्तर राजाने उन दोनों वैष्णवोंको स्तवसे सन्तुष्ट कर विदा किया। (भक्तमाल)

४ एक महाराज। ये भी विख्यात हरिभक्त थे। एक दिन कोई भक्तप्रधान उनके समीप उपस्थित हुआ। राजाने यथाविधान उस वैष्णवश्रेष्ठ अतिथिकी अर्चना की। एक वर्ष तक राजाके साथ रह कर जब उस साधु भक्तने जानेकी इच्छा प्रकट की, तब राजाने प्राणत्याग करनेका सङ्कल्प किया। यह देख रानीने अपने दो पुत्रोंको विष खिला कर मार डाला। राजपुत्रकी मृत्यु पर हाहाकार मच गई, सभी छाती पीट पीट कर रोने लगे। अब साधुने राजारानीको इस दशामें छोड़ जाना अच्छा नहीं समझा। इसलिये वह भक्त पुरमें उन लोगोंको सान्त्वना देनेके लिये गया। रानीने उस भक्तसे अपने पुत्रका निधनकारण कह दिया तथा चार दिन और ठहरनेके उनसे अनुरोध किया। साधुमें राजा और रानीकी प्रीति देख कर भक्त चमत्कृत हो रहा। पीछे रानीने उस साधुके चरणामृत ले कर मृत पुत्रके ऊपर छिड़क दिया जिससे वह उठ कर खड़ा हो गया, मानो अभी सो कर उठा हो। वैष्णवके चरणामृत पर रानीका अटूट विश्वास देख साधु आश्चर्यान्वित हो गये तभीसे उन्होंने फिर कभी भी राजा रानीका साथ नहीं छोड़ा। (भक्तमाल)

भक्तपन (हिं० पु०) भक्ति।

भक्तपुलाक (स० पु०) भक्तस्य पुलाक इव। १ मांड, पीच। २ ग्रासाच्छादनयोग्य भक्तपिण्ड।

भक्तप्रिय—एक महाराज। वैष्णवमें उनका अक्षुण्ण प्रेम था। डोम भाड आदि वैष्णवोंका वेश धारण कर उनके सामने नृत्यगीत करते थे। वे भी प्रेममें मत्त हो उन्हें कभी तो दण्डवत् और कभी आलिङ्गन करते थे। (भक्तमाल)

भक्तमण्ड (स० पु० क्ली०) भक्तस्य अन्नस्य मण्ड। अन्नाम्र रस, माड। पर्याय—मासर, आचाम, निस्राव।

भक्तमल्ल—नूरपुरके एक राजा। इन्होंने ९६५ हिजरीमें मान कोट अवरोधके समय अकबरशाहके शत्रु सिकन्दरसुरकी सहायता की थी। सिकन्दरकी दुर्गति देख कर ये पीछे मुगल सम्राट्की शरणमें पहुंचे। मुगलवाहिनीके साथ जब ये लाहोर नगर लड़ने गये, तब वहां वैराम खांके हाथ इनकी मृत्यु हुई।

भक्तमाल—एक प्राचीन धर्मग्रन्थ। वैष्णव कवि लाल दासने इसकी बंगला उन्दमें रचना की। भक्तोंकी जीवनी इस ग्रन्थमें मालाकारमें ग्रथित होनेके कारण इसका नाम भक्तमाल रखा गया है। ग्रन्थकारने अपनी रचनाके मध्य भक्तचरित्र और देवतत्त्वादि बहुत से तात्त्विक विषयोंका समावेश किया है। भगवत्तत्त्व, जीवतत्त्व, मायातत्त्व, सृष्टितत्त्व, और साधतत्त्व आदि विषय भक्तचरित्रके आनुषङ्गिक हैं। इस विविध तत्त्वकी आलोचना रहनेके कारण भक्तमालग्रन्थकी साधारणतः चरित्र और

तात्त्विक विभागमें विभक्त किया गया है। चरित्र विभाग प्रधानतः नाभाजीकृत हिन्दीभक्तमाल और प्रिय दासकृत तट्टीकासे तथा तात्त्विक विभाग उक्त दोनों ग्रन्थ और श्रीहरिभक्तिविलास, श्रीलघुभागवतामृत, भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि, षट्सन्दर्भ और चैतन्यचरितामृत, ब्रह्मसंहिता, श्रीमद्भागवतगीता, ब्रह्म, गरुड़, ब्रह्माण्ड, पद्म, स्कन्दादिपुराण और अपरापर अनेक भक्तिशास्त्रोंसे सङ्कलित है। इसमें २७ माला या परिच्छेद हैं। उन २७ मालाके शेषमें ग्रन्थकारने स्वकृत ग्रन्थका फलश्रुतिवर्णन और निज दैन्यादि ज्ञापन करके अन्तमें राधाकृष्ण विषयक एक गीतमें ग्रन्थका उपसंहार किया है। इस ग्रन्थमें कितने असमाञ्जस्य दोष रहने पर भी वे इसकी गुणराशिके मध्य छिप गये हैं।

इस बङ्गला भक्तमाल ग्रन्थने ही बङ्गालीके हृदयमें विल्वमङ्गल, जयदेव, तुलसीदास, रघुनाथदास, प्रबोधानन्द सरस्वतीरूप, सनातन और जीव गोस्वामी, श्रीधरस्वामी बोपदेव, शंकर, रामानुज, मीराबाई, करमैतीबाई और कबीर आदि तत्त्वरसनिमग्न महानुभवोंका ज्ञान, भक्ति और वैराग्यकी वैचित्र्यमयी जीवलीला जगमगा रही है।

प्रमाण प्रयोगादि द्वारा प्रतिपाद्य विषयकी दृढ़ता सम्पादन करनेके लिये इस ग्रन्थमें २०७ शास्त्रीय श्लोक उद्धृत हुए हैं। श्लोकावली छोड़ कर इसमें नाभाजीकृत हिंदी मूल और उसकी टीकासन्निविष्ट है।

भक्तराज (सं० पु०) भक्तश्रेष्ठ।

भक्तरुचि (सं० स्त्री०) १ क्षुधा। २ भोजन करनेकी प्रबल इच्छा।

भक्तरोचन (सं० क्लि०) क्षुधाका उद्रेक।

भक्तवत्सल (सं० त्रि०) भक्तेषु वत्सलः ७-तत्। १ भक्तके प्रति वत्सल, भक्तों पर स्नेह करनेवाला। २ विष्णु।

भक्तविपाकवटी (सं० स्त्री०) वटिकौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—कज्जली २ भाग, स्वर्णमाक्षिक, हरिताल, मैनकी छाल, इमलीकी जड़, दन्तीमूल, मोथा, चितामूल, सोंठ, पीपल, मिर्च, हरितकी, यमानी, कृष्णजीरा, हिङ्गु, गुड़, सैंधव, वनयमानी, जायफल, यवक्षार प्रत्येकका चूर्ण १ भाग, इन सब द्रव्योंको [illegible]के रस, सम्हालूके पत्तोंके रस, ज्योतिष्मतीके पत्तोंके रस और चिता रसमें तीन दिन भावना दे कर गोली बनावे, अनुपान लवङ्गचूर्ण ४ माशा। इस औषधका सेवन करनेसे अग्निमान्द्यादि अति शीघ्र प्रशमित होता है। (रसकौ०)

रसेन्द्रसारसंग्रहमें भक्तपाकवटीका उल्लेख देखनेमें आता है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—अभ्र, पारा, गन्धक, हिङ्गुल, ताम्र, हरिताल, मनःशिला, वङ्ग, हरीतकी, बहेड़ा, विष, जैपाली, दन्ती, कर्कटशृङ्गी, सोंठ, पीपल, मिर्च, यमानी, चिता, मोथा, जीरा, कृष्णजीरा, सोहागा, इलायची, तेजपत्र, लवङ्ग, हींग, कायफल, सैन्धव प्रत्येक तीन भाग। इन सब द्रव्योंके चूर्णको अदरक, चिता, एरण्डी, तुलसी, थूहर और बेलपत्र प्रत्येकके रसमें सात बार भावना दे कर तीन रत्तीकी गोली बनावे। इसका सेवन करनेसे कोष्ठबद्ध, कफ और त्रिदोषजनित मन्दाग्नि, विषमज्वर और त्रिदोषजनित विषमज्वर जाता रहता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह अजीर्णाधि०)

भक्तशरण (हिं० पु०) वह स्थान जहां भात पका कर रखा जाता है, रसोईघर।

भक्तशाला (सं० स्त्री०) १ रन्धन या भोजनगृह। २ आवेदनकारियोंका सम्बर्द्धनागृह। ३ वह स्थान जहां भक्त लोग बैठ कर धर्मोपदेश सुनते हों।

भक्तसिक्थ (सं० पु०) भक्तस्य सिक्थः ६-तत्। भातका माँड़।

भक्ताग्र (सं० पु०) भोजनशाला।

भक्तादाय (सं० पु०) धान्यादि द्वारा स गृहीत कर।

भक्ताभिलाष (सं० पु०) भक्ते अभिलाषः ७-तत्। १ अन्नके प्रति अभिलाष। भक्तस्य अभिलाष। २ भगवद्भक्तकी इच्छा।

भक्ति (सं० स्त्री०) भज्यते इति भज क्तिन्। १ विभाग, भाग। २ सेवा शुश्रूषा। ३ अनेक भागोंमें विभक्त करना, बाटना। ४ अङ्ग, अवयव। ५ खण्ड। ६ वह विभाग जो रेखा द्वारा किया गया हो। ७ विभाग करनेवाली रेखा। ८ पूजा, अर्चन। ९ श्रद्धा। १० [illegible] ११ [illegible] १२ अनुराग, स्नेह। १३ [illegible]
निरन्तिशय
विशिष्ट तथा

१५ गौणवृत्ति। १६ उपचार। १७ एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें तगण, यगण और अन्तमें गुरु होता है। १८ पूजाविषयमें अनुराग भक्ति। शाण्डिल्य सूत्रमें भक्तिका लक्षण इस प्रकार लिखा है।

"अथातो भक्तिजिज्ञासा सा परानुरक्तिरीश्वरे॥" (शा० सू०)

ईश्वरमें परानुरक्तिका नाम भक्ति है। आराध्यविषय में जो अनुराग है, वही भक्ति है। 'आराध्यविषयकरागत्वमेव भक्तित्व' भक्तिसूत्रसे ईश्वरमें परानुरक्ति ही भक्ति है। परा शब्द द्वारा परा और गौणी यही दो प्रकारकी भक्ति समझनी चाहिए। परमेश्वर विषयमें अन्तःकरणकी वृत्ति ही परानुराग कहलाती है और यही भक्ति है। उपासना, परमेश्वरमें परमप्रेम 'नहोष्टदेवात् परमस्ति किञ्चित्' इष्टदेवसे और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है, ऐसी चित्त वृत्तिका नाम भक्ति है। यह प्रीतिके अधीन है।

"नाथ। योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वच्युता भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि।
या प्रीतिरविवेकानां विषयेष्वनपायिनी।
त्वामनुस्मरतः सा मे हृदयान्मापसर्पतु॥"

(विष्णु १।२०।१६ २०)

"धर्मार्थकामैः किं तस्य मुक्तिस्तस्य करे स्थिता।
समस्तजगतां मूले यस्य भक्तिः स्थिरा त्वयि॥"

(विष्णु १।२०।२७)

हे भगवन्! मैं जिस किसी योनिमें जन्मग्रहण क्यों न करूं किन्तु आपमें मेरी अटल भक्ति बनी रहे। अविवेकियोंकी विषयवासनाओंमें जैसी प्रीति रहती है, आपमें मेरी वैसी ही अविचलित प्रीति हो। समस्त ब्रह्माण्डके मूलीभूत कृष्णमें जिनकी प्रगाढ़ भक्ति है, उनकी मुक्ति करस्थित है—उन्हें धर्म अर्थकामसे और कोई प्रयोजन नहीं।

यहां पर जिस प्रीतिपदका उल्लेख किया गया है, उसे सुखनिरत राग समझना चाहिए। कारण, यदि वह सुखनिरत न हो, तो उसमें आसक्ति हो ही नहीं सकती अर्थात् जो कुछ भी क्यों न किया जाय, उसका मूल सुख ही है, ऐसा समझना आवश्यक है अन्यथा कोई किसी काममें प्रवृत्त नहीं हो सकता। अतएव यह प्रीति सुखनिरत राग कहलाती है। पातञ्जलमें उसका लक्षण इस प्रकार कहा गया है—'सुखानुशयी राग' (पात २।७६) यह स्मरण तथा कीर्त्तनादि द्वारा हुआ करती है। भक्तगण भगवान् के नामकीर्त्तन या उनके नाम स्मरणसे सुख अनुभव करते हैं। इसीलिए वे बारम्बार ऐसा किया करते हैं। भक्तिका वेग जितना ही बढ़ता है, भक्तोंकी कीर्त्तनादिमें उतनी ही आसक्ति होती है। उस समय भक्त अनन्यकर्मा हो भगवच्चरणमें मन प्राण समर्पण कर उनके नामादि कीर्त्तनमें लगे रहते और तद्गतचित्त हो कर केवल उन्हीं का भजन करते हैं।

'जो मच्चित तथा मद्गतप्राण हो कर आपसमें मेरे तत्त्वका वार्त्तालाप करते हुए एक दूसरेको समझा देते और इसीमें अधिकतर आनन्द लाभ करते हैं, जो मेरे प्रति अनुरक्त तथा योगयुक्त हो कर भक्ति पूर्वक मेरी (ईश्वरकी) उपासना करते हैं, मैं उन्हें बुद्धियोग अर्थात् तत्त्वज्ञान प्रदान करता हूं। इस तत्त्वज्ञान द्वारा वे मुझे पाते हैं। मैं उन भजनकारी व्यक्तियोंके प्रति अनुकम्पार्थ उनके अन्तःकरणमें रह कर तत्त्वज्ञानरूपी उज्ज्वल प्रदीप द्वारा अज्ञानान्धकारको दूर करता हूं। अतएव भक्तिका फल मुक्ति है, यह अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा। 'तत्संस्थस्यामृतत्वोपदेशात्' तत्संस्था 'तस्मिन् ईश्वरे संस्था भक्तिर्यस्य' जिनकी ईश्वरमें अविचलित भक्ति है, उन्हें अमृतत्व अर्थात् मोक्ष लाभ होता है।

(गीता १०।६ १०)

"तेषामहं समुद्धर्त्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि न चिरात् पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥" (गीता १२।७)

जिनका चित्त मुझमें ही निविष्ट रहता है, मैं उन्हें मृत्युरूप संसार सागरसे उद्धार करता हूं। तैत्तिरीय मन्त्र भागमें भी लिखा है,—

"त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥"

'अत्र यजनं भक्ति' इससे भी मालूम होता है, कि भक्तिका फल मुक्ति है। शाण्डिल्यसूत्रमें ज्ञान भी भक्ति का अङ्ग बतलाया गया है। भक्तिका फल मुक्ति है, यह पहले ही कहा जा चुका है; किन्तु तत्त्वज्ञान द्वारा अज्ञान की निवृत्ति नहीं होनेसे मुक्ति नहीं हो सकती, ऐसा सभी स्वीकार करते हैं। अनुरागविशेष ही अज्ञानका कार्य है; अन्तःकरणवृत्तिरूपा भक्तिमें किस प्रकार मुक्ति

मिल सकती है ? इसकी मीमांसा इस प्रकार है —चूंकि इस भक्ति रूप अन्त करणवृत्तिमें अज्ञानका कार्य है इसलिये यह अज्ञानमण्डित है। अज्ञान रहनेसे मुक्ति असम्भव है। इससे यह साबित होता है, कि मुक्तिका प्रधान कारण भक्ति नहीं, वरन् ज्ञान है। अतएव भक्तिका गौण फल मुक्ति है, यह निश्चय है। भक्ति अविच्छिन्न होनेसे ज्ञान होता है। जब ज्ञान उत्पन्न होता है, तब अज्ञानका कार्य जो अनुरागविशेष है, वह भी नहीं रहता। सुतरां मुक्तिमें और कोई बाधा नहीं होती। अतएव भक्तिका अङ्ग ज्ञान ऐसा न कह कर भक्तिको ही ज्ञानका अङ्ग कहना युक्तिसंगत है। शास्त्रमें भी लिखा है, कि 'भक्ति र्ज्ञानाय कल्पते' ईश्वरमें प्रणिधान, तपस्या और स्वाध्याय आदि कार्ययोग द्वारा भक्ति उत्पन्न होती है। अनन्तर भक्ति अचल होनेसे ज्ञान उत्पन्न होता है और इसीसे मुक्ति मिलती है।

वैष्णवगण भक्तिका फल मुक्ति है, ऐसा स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है, भक्तिका फल प्रेम है। वे मुक्तिकी प्रार्थना नहीं करते। उनके मतसे प्रेम ही परमपुरुषार्थ है। 'उपायपूर्वं भगवति मन स्थिरीकरणं भक्ति' उपायपूर्वक भगवान्में मन स्थिरीकरणका नाम भक्ति है। विहिता और अविहिताके भेदसे यह दो प्रकारकी है।

विना किसी कारणके ही देव और वैदिक कर्ममें मन की जो स्वाभाविक सात्त्विक वृत्ति उत्पन्न होती है, वही विहिता भक्ति है। मिश्रा और शुद्धाके भेदसे यह भी दो प्रकारकी है —

मिश्रा भक्ति तीन प्रकारकी है,—कर्ममिश्रा, कर्मज्ञान-मिश्रा, और ज्ञानमिश्रा। इनमेंसे कर्ममिश्रा भक्तिके तामसी, राजसी और सात्त्विकी ये तीन भेद हैं। फिर तामसी भक्तिके हिंसार्थी, दम्भार्थी और मात्सर्यार्थादि भेद हैं। हिंसा, दम्भ और मात्सर्यपूर्वक जो काम करते हैं वे ही तामस भक्त हैं। विषयार्थी, यशोऽर्थी और ऐश्वर्यार्थीके भेदसे राजसीभक्ति तीन प्रकारकी है। जो विषय, यश और ऐश्वर्यके लिए भगवान्में भक्तिपरायण होते हैं, वे राजसिक भक्त कहलाते हैं। कर्मक्षयार्था, विष्णुप्रीत्यर्था और विधिसिद्ध्यर्था प्रभृति सात्त्विकी भक्तिके लक्षण हैं। कर्मक्षयके लिए या विष्णुकी प्रीति के उद्देशसे अथवा शास्त्रमें भगवानकी आराधना कही गई है, इत्यादि कारणसे जो ईश्वरकी आराधना करते हैं, वे ही सात्त्विक भक्त हैं। कर्मज्ञानमिश्रा भक्ति तीन प्रकारकी है,—उत्तमा, मध्यमा और अधमा।

उत्तमा भक्ति—जो सब भूतोंमें अपना भगवद्भाव देखते हैं तथा जो अपनेमें और भगवान्में सब प्राणियोंका अवस्थान है, ऐसा समझते हैं, वे उत्तम भक्त हैं। मध्यम और अधम भक्तका विषय भक्त शब्दमें लिखा गया है।

ज्ञानमिश्रा भक्ति—मेरा गुण सुननेसे ही मुझमें जिनकी अविच्छिन्न मति हो जाती और पुरुषोत्तम विष्णु में जिनकी अहैतुकी मति होती है, जो मेरी सेवाके सिवा सालोक्यादि मुक्ति पा कर भी उसका अभिलाष नहीं करते, वे ही ज्ञानमिश्र भक्त कहलाते हैं।

अविहिता भक्तिके चार भेद हैं,—कामजा, द्वेषजा, भयजा और स्नेहजा।

गोपियां कामसे, कंस भयसे, शिशुपालादि राजा द्वेषसे और वृष्णि यादवगण सम्बन्ध तथा स्नेहसे भक्तिपरायण हुए थे। कर्ममिश्रा भक्ति नौ प्रकारकी है। गृहस्थगण इन्हीं नौ प्रकारकी भक्तिके अधिकारी हैं। कर्म-ज्ञानमिश्रा भक्तिके तीन भेद हैं और इसके अधिकारी वनवासी हैं। ज्ञानमिश्रा भक्ति एक प्रकारकी है। केवल भिक्षुगण ही इस भक्तिके अधिकारी हुआ करते हैं।

शाण्डिल्यसूत्र भाष्यमें लिखा है, कि फलाकांक्षासे जो कुछ भी क्यों न किया जाय, भक्त उन सबोंको भगवान् नारायणमें समर्पण करते हैं। यह भक्ति उन्नीस प्रकारकी है, यथा—१ षट्त्रिंशद् वर्ग, २ त्रिंशद्वर्ग, ३ षड्विंशति वर्ग, ४ पञ्चविंशतिवर्ग, ५ चतुर्विंशतिवर्ग, ६ त्रिंशतिवर्ग, ७ एकविंशतिवर्ग, ८ अष्टादशवर्ग, ९ पञ्चदशवर्ग, १० त्रयोदशवर्ग, ११ द्वादशवर्ग, १२ एकादशवर्ग, १३ नववर्ग, १४ नववर्ग, १५ सप्तवर्ग, १६ षड्वर्ग, १७ पञ्चवर्ग, १८ चतुर्वर्ग, और १९ त्रिवर्ग।

उक्त उन्नीसवर्ग भक्तिका विषय भागवतमें विशेष रूपसे लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यह यहां नहीं लिखा गया। भागवतके दूसरे, सातवें, दसवें और

ग्यारहवें स्कन्धमें इसके अनेक उदाहरण तथा दृष्टान्त दिये गए हैं।

नारदकृत भक्ति सूत्रमें भक्तिका विषय जो आगे लिखा हुआ है, वह भी अति संक्षिप्तभावमें नीचे लिखा जाता है। "ओं पूज्यादिष्वनुराग इति पाराशर्य", "ओं कथादिष्विति गर्ग", "ओं आत्मरत्यविरोधेनेति शाण्डिल्य", "ओं नारदस्तदर्पिताखिलाचारतातद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति।"

(नारदभक्तिसूत्र १६-१९)

भगवत् पूजादिमें अनुरागका नाम ही भक्ति है, ऐसा महर्षि वेदव्यासका मत है। इन्द्रियोंको कर्म द्वारा निवृत्त करनेके लिए विधिपूर्वक पूजादिका प्रयोजन है और इस प्रकार पूजा करते करते प्रेमोदय होता है। सम्पूर्ण प्रेमावेश होनेसे बाह्य और मानस पूजाकी निवृत्ति होती है और धीरे धीरे विशुद्ध भक्ति दिखाई पड़ने लगती है।

गर्गाचार्यके मतानुसार भगवत्कथादिमें जो अनुराग है उसीका नाम भक्ति है। भगवतगुणानुवादके श्रवण और कीर्त्तनसे ही समस्त साधनाका सार जान कर उसमें गाढ़ाभिनिवेश और श्रद्धा करने होनेसे भक्ति कहते हैं।

शाण्डिल्यके मतसे आत्मरतिके अविरोधविषयमें अनुरागका नाम भक्ति है। अगद्बोधका परित्याग करके एकमात्र आत्मचैतन्यमें अन्यान्य सभी अस्तित्वकी आहुति प्रदान कर पूर्णानन्दमें विभोर रहना ही आत्मरति कहलाता है। चाहे द्वैत भावसे हो अथवा अद्वैतसे आत्मरतिका अनुकूल, अनुराग वृत्तिका प्रभाव ही भक्ति नामसे अभिहित है। लौकिक और पारमार्थिक भेदसे कर्म दो प्रकारका है। मनुष्य यागयज्ञादि जिस किसी कर्मका अनुष्ठान क्यों न करे सभी ईश्वरार्थ या उनकी पूजा विवेचना करनेसे ही भक्ति साधित होती है।

"प्रातरुत्थाय सायाह्न सायाह्नात् प्रातरन्तत ।
यत् करोमि जगन्मात ! तदेव तव पूजनम् ॥"

प्रात कालसे सन्ध्याकाल तक और सन्ध्याकालसे पुनः प्रात काल तक 'जितने लौकिक तथा पारमार्थिक कार्य करता हूं, हे जगन्मात ! वे सभी आपकी पूजा मात्र है। "ओं यथा व्रजगोपिकानां" (नारद भक्तिसूत्र २१) वृन्दावनविहारिणी गोपरमणियोंमें ही प्रेमभक्तिकी पराकाष्ठा दिखलाई है। वस्तुत प्रेममें विभोर हो कर मद्य पायी मनुष्यकी तरह जो गृह, संसार, ऐश्वर्य, मान, सम्भ्रम, लोकलज्जा प्रभृति छोड़ देते हैं, वे ही परम भक्त हैं। स्वयं भगवान्‌ने उद्धवसे कहा है, 'हे उद्धव ! गोपियोंने मुझमें ही अपना मन समर्पण किया है—मैं उनका प्राण हूं, मेरे लिए उन्होंने सर्वस्व त्याग किया है। जिन्होंने मेरे ही लिए सब कुछ त्यागा है, मैं उनकी रक्षा करूंगा। गोपियां मुझे प्रियसे भी प्रियतम मानती हैं। जब मैं उन सबोंसे अलग रहता हूं, तब मुझे स्मरण कर वे निदारुण विरहव्यथासे व्याकुल हो अपनेको भूल जाती हैं। मुझे न पा कर वे बड़े कष्टसे प्राण धारण करती हैं। वृन्दावनमें मेरे पुनरागमनका शुभ-संवाद सुनते ही वे जीवित हो जाती हैं। मैं भी उन्हीं गोपियोंकी आत्मा हूं और वे मेरी प्रेमभक्तिको बढ़ाने वाली हैं।"

"ओं सा तु कर्मज्ञानयोगेभ्योऽप्यधिकतरा।"

(नारदसू० २५)

यह भक्ति कर्म, ज्ञान और योगसे भी श्रेष्ठ है। भगवद्गीतामें भी कहा गया है,—

"तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिक ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥
योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो मत ॥" (गीता)

उक्त वाक्यसे भगवान्‌ने ज्ञान और कर्मकी अपेक्षा योगकी प्रधानता दिखा कर भक्तको योगियोंके मध्य प्रधान बतलाया है। कर्मयोग और ज्ञानसाधनके समय वर्ण, आश्रम, अधिकार तथा अनधिकार आदिका विचार देखा जाता है; किन्तु भक्तिसाधनमें इनकी कुछ भी आवश्यकता नहीं। यत्न तथा चेष्टा द्वारा मुक्ति लाभ की जा सकती है, किन्तु भक्ति मुक्तिसे भी दुर्लभ है, 'ओं फलरूपत्वात्।' (नारदसू० २६) क्योंकि यह फलस्वरूप है। ज्ञानाभिमानियोंका कहना है, कि भक्ति साधन द्वारा ज्ञानस्वरूप फल प्राप्त हो जाता है। किन्तु नारदके मतसे ज्ञानसाधन द्वारा भक्तिरूप फल लाभ होता है। गीतामें कहा है,—

"अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥"

इस वाक्यमें भगवान् श्रीकृष्णने यह दिखाया है, कि ज्ञान, कर्म और योगसाधन द्वारा मनुष्य अहङ्कार, बल, दर्प, काम और क्रोधका परित्याग कर निर्मम, शान्त और ब्रह्मात्मज्ञान प्राप्त करते हैं। बाद परमानन्दपूर्ण हो शोक और कामनाविविहीन तथा सब प्राणियोंमें समदर्शी होनेसे उन्हें परा भक्ति लाभ होता है। सभी साधनाओंका लक्ष्य है भगवत्कृपा लाभ। किन्तु भगवान्की कृपादृष्टि न होनेसे भक्तिका सञ्चार नहीं होता, इसीलिए भक्ति सभी साधनकी फलस्वरूप है। 'ओं ईश्वरस्याप्यभिमानद्वेषित्वात् दैन्य प्रियत्वाच्च।' (नारदसू० २७) भगवान्को भी अभिमानके प्रति विद्वेष और दीनताके प्रति प्रियभाव रहता है। कर्म, ज्ञान और योग साधनके समय यदि साधकको उसका अभिमान हो जाय तो भगवान् प्रसन्न नहीं होते हैं। अभिमानी ईश्वरको प्यार नहीं कर सकते और जब तक उन्हें प्राणसे बढ़ कर प्यार न किया जाय अर्थात् अपनेको उनके चरणमें भलीभांति समर्पण न कर दे तथा 'मैं तुम्हारा और तुम मेरा' ऐसे भावमें निमज्जित न हो जाय, तब तक भगवत्प्रीति लाभ हो नहीं सकती।

किसी किसी पण्डितके मतसे ज्ञान ही भक्तिका साधन है।

भक्तितत्त्वकी आलोचना करनेसे यह मत समीचीन नहीं जान पड़ती; क्योंकि गृध्रगजेन्द्रादिने ज्ञानलाभ नहीं करके भी भक्तिपूर्वक भगवानको पुकारा था और उन्हें भगवान्के दर्शन भी मिले थे। 'ओं अन्योन्याश्रयत्वमित्यन्ये' (नारद भक्तिसू० २९) कोई कोई कहते हैं, कि भक्ति और ज्ञान परस्पर एक दूसरेका आश्रय किये हुए है और यही बात युक्तिसंगत जान पड़ती है। क्योंकि भक्तिके उत्पन्न होनेसे ज्ञानतत्त्वकी ओर प्रवृत्ति ही नहीं होती। 'ओं स्वयं फलरूपतेति ब्रह्मकुमाराः।' (नारदसू० ३०) सनत्कुमारादि और नारदके मतसे भक्ति स्वयं फलस्वरूप है कारण, किसी चेष्टा या कौशल द्वारा भक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

"ओं तस्मात् सैव ग्राह्या मुमुक्षुभिः" (नारदसू० ३३)

मोक्षार्थी केवल भक्ति ही ग्रहण करते हैं। सूत्रकार नारदने और प्रकारकी युक्ति द्वारा दिखलाया है, कि कर्म, योग और ज्ञान मुक्तिका साधन होने पर भी उसमें विघ्न विपत्ति सम्भावना है। भक्तिलाभ तथा भगवान्के दर्शन करनेका भक्ति ही निर्मल पथ है। इसीलिए वे ज्ञानके प्रति घृणा दिखला कर भक्तिसाधनमें प्रवृत्त हुए हैं। मुक्ति भक्तिका लक्ष्यार्थफल नहीं है। किन्तु भक्ति-साधन मार्ग पर अग्रसर होनेसे यथासमय मुक्ति आपे ही उपस्थित होती है और मुक्तिलाभके बाद भी भक्तिका पथ बना रहता है। मुक्तिके लिए मुमुक्षु पुरुषको स्वतन्त्र साधन करना पड़ता है। भक्ति ही समस्त परमार्थकी देनेवाली है।

"ओं तत्तु विषय त्यागात् सङ्गत्यागाच्च" (नारदसू० ३५)

भक्ति विषय और सङ्गत्याग द्वारा साधित हुआ करती है। इन्द्रियोंके विषयान्वित होनेसे मन उसीमें मग्न हो जाता है। विषयरुचि मनको हमेशा एक विषयसे दूसरे विषय में आसक्त करती है। इस प्रकार विषयका अथवा मनुष्य का सङ्ग मनको विह्वल कर देता है, अतः मन भी विक्षिप्त, चञ्चल तथा दुर्बल हो जाता है। सम्पूर्ण एकाग्र न होनेसे भक्ति आवेशकी सम्भावना नहीं। भक्ति साधन करनेमें पहले वैराग्यवान् और निःसङ्ग होना आवश्यक है। शरीर धारणके आवश्यकीय कार्यका समय छोड़ कर जब अवकाश मिले, उसी समय भगवान्का नाम जप तथा गुणगान करना चाहिए। कारण, हरिचिन्तासे विश्राम पाने पर ही मन, रज और तमोगुणके आवेगमें आमोदित होता है अन्यथा विषयचिन्ता मनको भुलानेमें डाल देती है। सभी कार्य और सभी अवस्थामें यदि इन्द्रियोंके साथ मन भगवत्पदमें लगा रहे, तो क्रमशः भक्तिका आवेश बढ़ता है। जब तक निरवच्छेदरूपसे भगवत्-भजन-साधनकी समाप्ति नहीं हो जाय, तब तक अवकाशप्राप्त मनुष्यको भगवत्कथा सुनना और स्वयं उसे मनुष्योंके निकट कीर्तन करना अच्छा है, क्योंकि ऐसा करनेसे चित्त क्रमशः भगवान्की ओर आकृष्ट होता है।

"स्मृत्याऽऽर्त्या हरौ नित्यं भक्त्यासौ यातु र् सदा।
सा तु यथा नित्य स्वभाव सदा भगवान् ॥

जब तक चित्तमें भक्तिभावका उदय नहीं होता, तब तक समयानुसार हरिकथा सुननेसे धीरे धीरे उसमें आसक्ति बढ़ती है और धीरे धीरे भक्तिका बीज भी दृढ़ हो जाता है। महात्माओंकी कृपा या भगवान्‌की कृपाकणा वृष्टि ही भक्तिका मुख्य साधन है। "ओं महत्सङ्गस्तु दुर्लभोऽगम्योऽमोघश्च।" (नारदसू० ३९) महत्सङ्ग दुर्लभ, अगम्य और अमोघ है। साधुको पहचाननेमें अपना अहोभाग्य समझना चाहिए। साधुके सामने आने पर भी मनुष्य उन्हें नहीं पहचान सकते हैं। इसीलिए महत्सङ्ग दुर्लभ है। साधुकी पहचान करने पर भी उनके साधनसिद्ध भावके मध्य प्रवेश करना मुश्किल है; अतएव महत्सङ्ग अगम्य है। किन्तु साधुसमागम कदापि व्यर्थ नहीं होता, अपने अधिकारानुरूप फल अवश्य ही मिलता है, इसी कारण महत्सङ्ग अमोघ है। "ओं लभ्यतेऽपि तत्कृपयैव" (नारदसू० ४०) भगवान्‌की कृपा होनेसे ही महत् अर्थात् सज्जनका सङ्ग होता है। "ओं तस्मिन् तज्जने भेदाभावात्" (नारदसू० ४१) भगवान् और भगवद्भक्तमें कुछ भी भेद नहीं। भगवान् भक्ताधीन हैं—भक्तियुक्त साधुका क्रिया कलाप ही उनकी लीला है। भक्तोंके द्वारा ही संसारमें उनकी महिमा प्रचारित होती है। भक्त उनमें और वे भक्तोंमें विराजमान रहते हैं।

"ओं तदेव साध्यतां तदेव साध्यताम्" (नारदसू० ४२) उनकी साधना करो, उनकी साधना करो। नारदने भक्तिलाभका दूसरा उपाय न देख और दूसरे किसी प्रकारसे जीवकी गति नहीं होगी, ऐसा जान कर तपके प्रभावसे भक्तिको ही साधन समुद्रका अमूल्यनिधि समझाया था और जीवों की भलाईके लिए बारम्बार भक्ति साधन करनेका उपदेश दिया है।

जिस जिस कारणसे भक्तिका बीज हृदयमें अंकुरित नहीं हो सकता, इसकी आलोचना नीचे की जाती है। दूषित कर्म करनेसे प्रवृत्ति दूषित होती है, अतः भक्ति लाभेच्छुकको पहले कुसङ्गका परित्याग करना चाहिए। "ओं दुःसङ्गः सर्वथैव त्याज्यः" "ओं कामक्रोधमोहस्मृतिभ्रंश बुद्धिनाशसर्वनाशकारणत्वात्।" (नारदसू० ४३, ४४)

कुसङ्ग ही काम, क्रोध, मोह, स्मृतिभ्रंश, बुद्धिनाश और सर्वनाशका कारण है। कुसङ्गीके कुपरामर्श तथा असत् आदर्शसे जीवकी इन्द्रियभोगवासना बढ़ती है और किसी कारणसे भोगेच्छातृप्तिमें बाधा पहुंचनेसे क्रोध होता है। क्रोधोदय होनेसे ही चित्त चञ्चल और सदसद्‌बुद्धि विचारहीन हो जाती है। इसीसे मोहकी उत्पत्ति होती है। मोहवशतः चित्तके तमसाच्छन्न होनेसे चित्तमें जो संस्कारावद्ध विषय हैं, वे दिखाई नहीं पड़ते। सुतरां अपने मङ्गलसाधनका उपाय भी नहीं सूझता इस प्रकार स्मृतिभ्रंश होनेसे बुद्धि विकल हो जाती और बुद्धिवैकल्य ही मनुष्यको इहलोक तथा परलोकके कल्याणमार्गसे विच्युत कर देता है। पराभक्तिका फल अनिर्वचनीय प्रेम है।

"ओं अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम्। ओं मूकास्वादनवत्। ओं प्रकाश्यते क्वापि पात्रे। ओं गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षणवर्द्धमानमविच्छिन्नं सूक्ष्मतरमनुभवरूपम्॥" (नारदभक्तिसू० ५१-५४)

प्रेमका स्वरूप मूकके रसास्वादनकी तरह अनिर्वचनीय है अर्थात् गूंगा जिस प्रकार मिष्टरस आस्वादन कर आनन्दसे गद्‌गद हो जाता और पूछने पर भी इसकी व्याख्या नहीं कर सकता है, मनुष्य उसी प्रकार प्रेमाविर्भावके समय आनन्दकी पराकाष्ठा पर पहुंच जाते हैं, किन्तु वही भाव अनुभव करके भी दूसरेको समझा देनेमें समर्थ नहीं होते। इसलिए यह अनिर्वचनीय है। यह गुणवर्जित कामनातीत, प्रतिक्षण वर्द्धमान, अविच्छिन्न, सूक्ष्म और केवल अनुभवस्वरूप है। भक्त उसे प्राप्त कर वही देखते, वही सुनते, वही बोलते और उसीकी चिन्ता करते हैं। प्रेमिकाके सामने प्रेममय भगवान्‌का स्वरूप तथा प्रेमका स्वरूप दोनों एक ही पदार्थ हैं। जिन्होंने प्रेम लाभ किया है, उन्होंने भगवान्‌को भी पाया है। सुतरां इसके सिवा उनको और कुछ देखने, सुनने बोलने या चिंता करनेकी इच्छा नहीं होती।

"ओं तत्प्राप्य तदेवावलोकयति तदेव शृणोति तदेव भाषयति तदेव चिन्तयति।" (नारदसू० ५५)

ऊपर पराभक्तिका विषय आलोचित हुआ। अब गौणभक्तिका विषय वर्णन किया जाता है।

"ओं गौणी त्रिधा गुणभेदादार्त्तादि भेदाद्वा"

(नारदसू० ५६)

गुणभेद या शान्तादिभेदसे गौणी भक्ति तीन प्रकार की है। इस भक्तिमें तमोगुणकी अपेक्षा राजसिकी और रजोगुणसे सात्त्विकी भक्ति श्रेष्ठ है। अर्थार्थीकी अपेक्षा जिज्ञासु और जिज्ञासुकी अपेक्षा आर्तभक्त श्रेष्ठ हैं। कारण, जिज्ञासु या आर्तव्यक्तिको उपासनासे विशुद्ध भक्तिके उदय होनेकी सम्भावना रहती है।

दूसरे साधनकी अपेक्षा भक्तिसाधन सुलभ है, क्योंकि इसमें आचार, विचार, वर्ण आदि कुछ भी नहीं देखना पड़ता। भक्तिके गुणसे ही गणिकाने विचारती न हो कर भी उद्धार पाया था। गोपियोंने वेदाध्ययन न कर, गृध्र और गजने मनुष्य न हो कर तथा गुहकने उच्च वर्ण न हो कर भी केवल भक्तिगुणसे ही भगवान्‌को प्राप्त किया था। भक्तिसाधनमें कायक्लेश और कातरता नहीं है—भक्तिके जैसा सुलभ साधन और देखनेमें नहीं आता। भक्तिराज्यमें वादसम्वाद कुछ भी नहीं होता। "ओं अन्यस्मात् सौलभ्यं भक्तौ। ओं प्रमाणान्तरस्यानपेक्षत्वात् स्वयं प्रमाणत्वात्। ओं शान्तिरूपात् परमानन्दरूपाच्च।
(नारदभक्तिसू० ५८-६०)

इसमें दूसरे प्रमाणका प्रयोजन नहीं, क्योंकि यह स्वयं ही प्रमाणस्वरूप है। भगवान्‌की भक्ति करनेमें जो कुछ परिश्रम और क्लेश होता है, वह किसीसे भी छिपा नहीं है; जो भक्तिके उपासक हैं वे स्वयं ही इसका अनुभव कर सकते हैं। भक्ति हुई या नहीं, वादविवाद द्वारा इसका सङ्गमसमाधान नहीं किया जाता है। भक्तिसाधनामें क्लेशका होना तो दूर रहे, वरन् सभी क्लेशोंकी निवृत्ति होती है। भक्ति शान्ति तथा परमानन्दस्वरूप है। जहां वाद विवाद, द्वेष, उद्वेग, संशय, सङ्कल्प, विकल्प और सुखदुःखादिकी तरङ्गका लेशमात्र नहीं रहता, वहीं शान्तिनिकेतन है। शान्तिमयनीमें ही परमानन्दका प्रकाश होता है।

"ओं त्रिसत्यस्य भक्तिरेव गरीयसी" (नारदसू० ८१)

भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान सभी समयमें सत्यस्वरूप भगवान्‌में भक्ति ही सर्वापेक्षा श्रेष्ठ है। भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिए शास्त्रमें जितनी प्रकारको साधनाएं कही गई हैं, उनमेंसे केवल भक्तिसाधना ही सबोंकी अपेक्षा सुगम और श्रेष्ठ है। अन्यान्य साधना कष्टसाध्य तथा अल्पजनसुलभ और सबोंमें सभी मनुष्योंका अधिकार भी नहीं है। केवल कीर्त्तनमें भक्तिपूर्वक पुकारनेसे ही भगवान् हृदयमें उपस्थित हो जाते हैं। योगसाधनासे जो युगयुगान्तमें भी नहीं होता, वह भक्तिसाधनामें क्षण भरमें हो सकता है। योगराज्यमें जो वाङ्मनके अतीत हैं, भक्तिराज्यमें वे ही हृदयकी पवित्र प्रथित और विजड़ित हैं। इसीलिए नारदने समाजमें यह घोषणा की है कि, 'भक्तिकी अपेक्षा श्रेष्ठ साधना और दूसरा नहीं है।'

यह भक्ति ग्यारह प्रकारकी है। यथा,—गुणमाहात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्मनिवेदनासक्ति, तन्मयतासक्ति और परमविरहासक्ति।

जो जिसको प्यार करता है, वह उसका सभी काम और सब अङ्ग अच्छा ही देखता है। किन्तु कोई कोई किसी अङ्गकी सुन्दरता या किसी भावमें विशेष आकृष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार भक्तगण भगवान्‌में सबोंके आसक्त होने पर भी कोई कोई भक्त किसी किसी भावमें विशेषरूपसे आसक्त हो रहते हैं। इसे केवल रुचिवैचित्र्यका फल समझना चाहिए। राजा परीक्षित्, नारद, हनुमान पृथुराज प्रभृति गुणमाहात्म्यासक्त भक्त थे। कृष्णकी बाल्यावस्थामें नन्द, उपनन्द और यशोमति तथा युवावस्थामें व्रजनारी प्रभृति उनमें अनुरागी थीं, अतएव वे सब रूपासक्त भक्त कहलाये। पृथुराजा पूजासक्त, प्रह्लाद स्मरणासक्त, हनुमान्, अक्रूर और विदुरादि दास्यासक्त, अर्जुन, सुग्रीव, उद्धव, कावेर, सुदाम, श्रीदाम आदि सख्यासक्त, व्रजगोपिकागण कान्तासक्त, नन्द, यशोदा, कौशल्या, दशरथ, कश्यप, अदिति प्रभृति वात्सल्यासक्त बलिराजा आत्मनिवेदनासक्त और कौण्डिन्य, शुकदेवादि तन्मयतासक्त भक्त थे। शुकदेव भक्तिनिष्ठाके एक प्रधानतम आचार्य थे, इसीलिए भक्तिरसप्रधान 'शुकमुखादमृतद्रवसंयुत' श्रीमद्भागवत ग्रन्थ कहा गया है :

"भक्त्या भजनोपसंहाराद्गौण्या परायै तद्धेतुत्वात्"
(शाण्डिल्य सू० ५६)

भजन या सेवा ही गौणी भक्ति है। यहां गौणी

जब तक चित्तमें भक्तिभावका उदय नहीं होता, तब तक समयानुसार हरिकथा सुननेसे धीरे धीरे उसमें आसक्ति बढ़ती है और धीरे धीरे भक्तिका बीज भी दृढ़ हो जाता है। महात्माओंकी कृपा या भगवान्‌की कृपाकणा-दृष्टि ही भक्तिका मुख्य साधन है। "ओं महत्सङ्गस्तु दुर्लभो-ऽगम्योऽमोघश्च।" (नारदसू० ३९) महत्सङ्ग दुर्लभ, अगम्य और अमोघ है। साधुको पहचाननेमें अपना अहोभाग्य समझना चाहिए। साधुके सामने आने पर भी मनुष्य उन्हें नहीं पहचान सकते हैं। इसीलिए महत्सङ्ग दुर्लभ है। साधुकी पहचान करने पर भी उनके भावाभिव्य भावके मध्य प्रवेश करना मुश्किल है, अतएव महत्सङ्ग अगम्य है। किन्तु साधुसमागम कदापि व्यर्थ नहीं होता, अपने अधिकारानुरूप फल अवश्य ही मिलता है, इसी कारण महत्सङ्ग अमोघ है। "ओं लभ्यतेऽपि तत्कृपयैव" (नारदसू० ४०) भगवान्‌की कृपा होनेसे ही महत् अर्थात् सज्जनका सङ्ग होता है। "ओं तस्मिन् तज्जने भेदाभावात्" (नारदसू० ४१) भगवान् और भगवद्भक्तमें कुछ भी भेद नहीं। भगवान् भक्ताधीन हैं—भक्तियुक्त साधुका क्रिया कलाप ही उनकी लीला है। भक्तोंके द्वारा ही संसारमें उनकी महिमा प्रचारित होती है। भक्त उनमें और वे भक्तोंमें विराजमान रहते हैं।

"ओं तदेव साध्यतां तदेव साध्यतां" (नारदसू० ४२) उनकी साधना करो, उनकी साधना करो। नारदने भक्तिलाभका दूसरा उपाय न देख और दूसरे किसी प्रकारसे जीवकी गति नहीं होगी, ऐसा जान कर तपके प्रभावसे भक्तिको ही साधन समुद्रका अमूल्यनिधि समझाया था और जीवों की भलाईके लिए बारम्बार भक्ति साधन करनेका उपदेश दिया है।

किस किस कारणसे भक्तिका बीज हृदयमें अंकुरित नहीं हो सकता, इसकी आलोचना नीचे की जाती है। दूषित कर्म करनेसे प्रकृति दूषित होती है, अतः भक्ति लाभेच्छुकको पहले कुसङ्गका परित्याग करना चाहिए। "ओं दुःसङ्गः सर्वथैव त्याज्यः" "ओं कामक्रोधमोहस्मृतिभ्रंश बुद्धिनाश सर्वनाशकारणत्वात्।" (नारदसू० ४३, ४४)

कुसङ्ग ही काम, क्रोध, मोह, स्मृतिभ्रंश, बुद्धिनाश और सर्वनाशका कारण है। कुसङ्गीके कुपरामर्श तथा असत् आदर्शसे जीवकी इन्द्रियभोगवासना बढ़ती है और किसी कारणसे भोगेच्छातृप्तिमें बाधा पहुंचनेसे क्रोध होता है। क्रोधोदय होनेसे ही चित्त चञ्चल और सदसद्बुद्धि विचारहीन हो जाती है। इसीसे मोहकी उत्पत्ति होती है। मोहवशतः चित्तके तमसाच्छन्न होनेसे चित्तमें जो संस्कारारूढ़ विषय हैं, वे दिखाई नहीं पड़ते। सुतरां अपने मङ्गलसाधनका उपाय भी नहीं सूझता इस प्रकार स्मृतिभ्रंश होनेसे बुद्धि विकल हो जाती और बुद्धिवैकल्य ही मनुष्यको इहलोक तथा पर लोकके कल्याणमार्गसे विच्युत कर देता है। पराभक्तिका फल अनिर्वचनीय प्रेम है।

"ओं अनिर्वचनीयं प्रेमरूपं। ओं मूकास्वादनवत्। ओं प्रकाश्यते क्वापि पात्रे। ओं गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षणवर्द्धमानमवि-च्छिन्नं सूक्ष्मतरमनुभवरूपम्॥" (नारदभक्तिसू० ५१-५४)

प्रेमका स्वरूप मूकके रसास्वादनकी तरह अनिर्वच नीय है अर्थात् गूंगा जिस प्रकार मिष्टरस आस्वादन कर आनन्दसे गद्गद हो जाता और पूछने पर भी इसकी व्याख्या नहीं कर सकता है, मनुष्य उसी प्रकार प्रेमाविर्भावके समय आनन्दकी पराकाष्ठा पर पहुंच जाते हैं, किन्तु वही भाव अनुभव करके भी दूसरेको समझा देनेमें समर्थ नहीं होते। इसलिए यह अनिर्वचनीय है। यह गुणवर्जित कामनातीत, प्रतिक्षण वर्द्धमान अविच्छिन्न, सूक्ष्म और केवल अनुभवस्वरूप है। भक्त उसे प्राप्त कर वही देखते, वही सुनते, वही बोलते और उसीकी चिन्ता करते हैं। प्रेमिकाके सामने प्रेममय भगवान्‌का स्वरूप तथा प्रेमका स्वरूप दोनों एक ही पदार्थ है। जिन्होंने प्रेम लाभ किया है, उन्होंने भग वान्‌को भी पाया है। सुतरां इसके सिवा बाकी और कुछ देखने, सुनने बोलने या चिंता करनेकी इच्छा नहीं होती।

"ओं तत्प्राप्य तदेवावलोकयति तदेव शृणोति तदेव भाषयति तदेव चिन्तयति।" (नारदसू० ५५)

ऊपर पराभक्तिका विषय आलोचित हुआ। अब गौणभक्तिका विषय वर्णन किया जाता है।

"ओं गौणी त्रिधा गुणभेदादार्त्तादि भेदाद्वा"

(नारदसू० ५६)

गुणभेद या आर्तादिभेदसे गौणी भक्ति तीन प्रकारकी है। इस भक्तिमें तमोगुणकी अपेक्षा राजसिकी और रजोगुणसे सात्त्विकी भक्ति श्रेष्ठ है। अर्थार्थीकी अपेक्षा जिज्ञासु और जिज्ञासुकी अपेक्षा आर्तभक्त श्रेष्ठ है। कारण, जिज्ञासु या आर्तव्यक्तिकी उपासनासे विशुद्ध भक्तिके उदय होनेकी सम्भावना रहती है।

दूसरे साधनकी अपेक्षा भक्तिसाधन सुलभ है, क्योंकि इसमें आचार, विचार, वर्ण आदि कुछ भी नहीं देखना पड़ता। भक्तिके गुणसे ही गणिकाने विद्यावती न हो कर भी उद्धार पाया था। गोपियोंने वेदाध्ययन न कर, गृध्र और गजने मनुष्य न हो कर तथा गुहकने उच्च वर्ण न हो कर भी केवल भक्तिगुणसे ही भगवान्‌को प्राप्त किया था। भक्तिसाधनमें कायक्लेश और काल रता नहीं है—भक्तिके जैसा सुलभ साधन और देखनेमें नहीं आता। भक्तिराज्यमें वादसम्वाद कुछ भी नहीं होता। "ओं अन्यस्मात् सौलभ्यं भक्तौ। ओं प्रमाणान्तरस्यान पेक्षत्वात् स्वयं प्रमाणत्वात्। ओं शान्तिरूपात् परमानन्दरूपात्।

(नारदभक्तिसू० ५८-६०)

इसमें दूसरे प्रमाणका प्रयोजन नहीं, क्योंकि यह स्वयं ही प्रमाणस्वरूप है। भगवान्‌की भक्ति करनेमें जो कुछ परिश्रम और क्लेश होता है, वह किसीसे भी छिपा नहीं है जो भक्तिके उपासक हैं वे स्वयं ही इसका अनुभव कर सकते हैं। भक्ति दुरूह या नहीं, वादविवाद द्वारा इसका सद्भावसमाधान नहीं किया जाता है। भक्तिसाधनमें दुःशङ्का होना तो दूर रहे, वरन् सभी दुःखोंकी निवृत्ति होती है। भक्ति शान्ति तथा परमानन्दस्वरूप है। जहां वाद विवाद, द्वन्द्व, उद्वेग, संशय, सङ्कल्प, विकल्प और सुखदुःखादिकी तरङ्गका लेशमात्र नहीं रहता, वही शान्तिनिकेतन है। शान्तिभवनमें ही परमानन्दका प्रकाश होता है।

"ओं त्रिसत्यस्य भक्तिरेव गरीयसी" (नारदसू० ८१)

भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान सभी समयमें सत्यस्वरूप भगवान्‌में भक्ति ही सर्वापेक्षा श्रेष्ठ है। भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिए शास्त्रमें जितने प्रकारके साधन कहे गए हैं, उनमेंसे केवल भक्तिसाधना ही सबोंकी अपेक्षा सुगम और श्रेष्ठ है। अन्यान्य साधना कष्टसाध्य तथा बहुयत्नसुलभ और सबोंमें सभी मनुष्योंका अधिकार भी नहीं है। केवल दीनवेशमें भक्तिपूर्वक पुकारनेसे ही भगवान् हृदयमें उपस्थित हो जाते हैं। योगसाधनासे जो युगयुगान्तमें भी नहीं होता, वह भक्तिसाधनासे क्षण भरमें हो सकता है। योगराज्यमें जो वाङ्मनके अतीत हैं, भक्तिराज्यमें वे ही हृदयकी पति तक प्रत्यक्ष और विलक्षित हैं। इसीलिए नारदने सभामें यह घोषणा की है कि, 'भक्तिकी अपेक्षा श्रेष्ठ साधना और दूसरा नहीं है।'

यह भक्ति ग्यारह प्रकारकी है। यथा,—गुणमाहात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्मनिवेदनासक्ति, तन्मयतासक्ति और परमविरहासक्ति।

जो जिसको प्यार करता है, वह उसका सभी काम और सब अङ्ग अच्छा ही देखता है। किन्तु कोई कोई किसी अङ्गकी सुन्दरता या किसी भावमें विशेष आकृष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार भक्तगण भगवान्‌के सभी भावसे आसक्त होने पर भी कोई कोई भक्त किसी किसी भावमें विशेषरूपसे आसक्त हो रहते हैं। इसे केवल रुचिवैचित्र्यका फल समझना चाहिए। राजा परीक्षित् नारद, हनुमान, पृथुराज प्रभृति गुणमाहात्म्यासक्त भक्त थे। कृष्णकी बाल्यावस्थामें नन्द, उपानन्द और यशोदादि तथा युवावस्थामें व्रजनारी प्रभृति उनमें रूपासक्त थे सब रूपासक्त भक्त कहलाये। पृथुराजा पूजासक्त, प्रह्लाद स्मरणासक्त, हनुमान, अक्रूर और विदुरादि दास्यासक्त अर्जुन, सुग्रीव, उद्धव, कपिल, सुबल, श्रीदाम आदि सख्यासक्त, व्रजगोपिकागण कान्तासक्त, नन्द, यशोदा, कौशल्या, दशरथ, कश्यप, अदिति प्रभृति वात्सल्यासक्त, बलिराजा आत्मनिवेदनासक्त और कौण्डिन्य शुकदेवादि तन्मयतासक्त भक्त थे। शुकदेव भक्तिशिक्षाके एक प्रधानतम आचार्य थे, इसीलिए भक्तिरसप्रधान 'शुकमुखादमृतद्रवसंयुतं' श्रीमद्भागवत ग्रन्थ कहा गया है।

"भक्त्या भागवतं ग्राह्यं न बुद्ध्या न च टीकया।"

(भक्तिरत्नाकर १६)

अपना या मेरा ही गौणी भक्ति है। यहां गौणी

भक्ति पराभक्तिकी सिद्धिस्वरूप है। पराभक्तिकी साधना करनेमें जो नाना प्रकारके विघ्न उपस्थित हो कर साधकको भक्तिमार्गसे विच्युत कर देते हैं, गौणीभक्ति उन्हीं विघ्नराशियोंको विनष्ट कर पराभक्तिलाभका पथ प्रस्तुत करती है। यहां पर जो भक्तिपद व्यवहृत हुआ है, वह गौणी भक्तिका प्रतिपादक है।

"रागार्थप्रकीर्तिसाहचर्याच्चेतरेषाम्" (शाण्डिल्यसू० ५७)

नमस्कार, नामकीर्त्तनादिका फल केवल अनुराग है। भगवान्‌की लीलाभूमिका दर्शन, भगवन् मूर्त्ति की सेवा, अङ्गराग प्रभृति सब प्रकारकी सेवा केवल ऐकान्तिक अनुराग लाभ करनेके लिए है। गौणी भक्ति द्वारा पवित्रता लाभ होती है। श्रद्धापूर्वक भगवत्सेवा करते करते अन्तःकरणकी वृत्तियां परिशुद्ध हो जाती हैं और चित्तशुद्ध होनेसे निर्मल भक्तिका अभ्युदय होता है। इसीलिए किसी किसी आचार्यने गौणीभक्तिकी प्रधानता स्वीकार की है।

बहुतेरे ज्ञान बड़ा है या भक्ति इस विषयको ले कर तर्क वितर्क करते हैं। शाण्डिल्य सूत्रमें इसका सिद्धान्त इस प्रकार देखनेमें आता है,—ज्ञानादि सभी साधन ही भक्तिसाधनके उपादानस्वरूप हैं। ज्ञान और भक्ति दोनों ही साधन तथा साध्यके भेदसे दो प्रकारके हैं। ज्ञान द्वारा वस्तुका जो परिचय उपलब्ध होता है, वह 'साधनज्ञान' और ज्ञान, ज्ञेय तथा ज्ञाताके अतीत जो ज्ञान है, वह 'साध्यज्ञान' है, वह ज्ञानस्वरूप ही ब्रह्म है। भक्ति द्वारा शास्त्रादि पाठ और देवार्च्चनादिमें जो प्रवृत्ति होती है वह साधनभक्ति या गौणी भक्ति कहलाती है तथा ज्ञानयोगादि द्वारा भगवत्‌दर्शनके बाद मुक्तिलाभ करने पर भगवान्‌की पादपद्ममें जो प्रीतिका सञ्चार होता है, उसका नाम पराभक्ति या साध्यभक्ति है। साधन द्वारा साध्यभक्ति लाभ और साधन भक्ति द्वारा साध्य ज्ञान लाभ होता है। अवस्थाके भेदसे दोनोंके ही लाघव तथा गौरव है। यथार्थमें साध्यज्ञान और पराभक्तिमें कुछ भी विभेद नहीं—वह भक्ति और ज्ञान दोनों ही एक हैं।

"द्वेषप्रतिपक्षभावाद्रसशब्दाच्च रागः"

(शाण्डिल्य सूत्र ६)

अनुरागका नाम भक्ति है। किसी किसी ऋषिका मत है, कि अनुराग दुःखका कारण है, सुतरां इसे त्याग करना ही श्रेय है। कारण, सत्सङ्गकी तरह इसका आश्रय उत्तम है। मनुष्योंके मध्य परस्परमें अनुरागका जो सञ्चार है, उससे वियोगजन्य दुःख हुआ करता है, किन्तु ईश्वरानुरागमें इसके होनेकी सम्भावना नहीं, क्योंकि ईश्वरके न वियोग है और विच्छेद ही। कुसङ्ग करनेसे दुःख मिलनेकी सम्भावना रहती है, परन्तु सत्सङ्गमें दुःखकी कुछ भी आशङ्का नहीं है। स्त्री पुरुषके अनुरागमें दुःखकी आशङ्का है, किन्तु उसका त्याग करना उचित नहीं। ईश्वरानुराग परम सुखकर और मनुष्यका एकान्त प्रार्थनीय है। अतएव भक्ति ही एक मात्र श्रेष्ठ है।

"नैव श्रद्धा तु साधारण्यात्" 'तस्यां तत्त्वे चानवस्थानात्"

(शाण्डिल्यसू० २४,२५)

भक्ति और श्रद्धा एक नहीं हैं क्योंकि श्रद्धाका साधारणत्व दिखलाई पड़ता है। कर्ममें श्रद्धा, उपासनामें श्रद्धा, शास्त्र वाक्यमें श्रद्धा इत्यादि प्रकारसे श्रद्धाका साधारणत्व नजर आता है। किंतु भक्ति भगवान्‌को छोड़ कर और कहीं भी नहीं रह सकती। श्रद्धा और भक्तिकी एकता सम्पादन करनेमें अनवस्थाका दोष हुआ करता है। अमुक व्यक्तिने श्रद्धापूर्वक देवपूजा की है, ऐसा कहनेसे श्रद्धा देवपूजाका एक प्रधान अङ्ग समझा जाता है। किंतु भक्ति वैसी नहीं, वह सभी साधनका एकमात्र शेष फल है। अतएव सभी साधनाओंकी अपेक्षा केवल भक्ति ही श्रेष्ठ है। गीतामें स्वयं भगवान्‌ने कहा है, कि ज्ञान और कर्मसे मेरी भक्ति ही श्रेष्ठ है।

हरिभक्तिविलासमें भक्तिका विषय इस प्रकार लिखा है—

भक्तिका सामान्य लक्षण—जो सब इन्द्रिय बाहर हैं और जिनकी सहायतासे शब्द, रूप और रस प्रभृतिका बोध होता है, सत्त्वमूर्त्ति हरिके प्रति उन सबोंका जो स्वाभाविक वृत्तिस्फुरण है वही भगवद्भक्ति है। इन्द्रियोंका यह वृत्तिस्फुरण वेदप्रतिपादित कर्मानुष्ठानके सिवा प्रादुर्भूत नहीं होता।

साधनभक्तिका लक्षण भगवद्भक्तोंके प्रति वात्सल्य, उनकी अर्चनाका अनुमोदन दम्भरहित हो कर श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा, उनकी लीलाएं सुननेमें

अनुरक्ति, उनके आगे नृत्यगीतादि, प्रतिदिन उनका नाम-स्मरण और उन्हींके नामसे जीवनधारण करना जो इन आठ प्रकारके भक्तियोगका अनुष्ठान करते हैं, वे नीच होने पर भी श्रेष्ठ हैं। जिनको-देवतामें, मन्त्रमें और मन्त्रदाता गुरुमें उन आठ प्रकारकी भक्ति है भगवान् उन्हींके प्रति प्रसन्न होते हैं। विष्णुका नाम, लीलादि श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पदसेवा, अर्चन, वन्दन, कर्मार्पण, सख्य तथा आत्मनिवेदन यह नवलक्षणान्विता भक्ति यदि भगवान्में समर्पित हो, तो भक्त कृतकृतार्थ होते हैं। हरिका शङ्खचक्र लिखन ऊर्द्ध्वपुण्ड्र धारण, विष्णुमन्त्र ग्रहण, उनकी अर्चना, जप, ध्यान, स्मरण, नामकीर्त्तन, श्रवण, वन्दन, पदसेवा, पादोदक धारण, उनका निवेदित प्रसादग्रहण, वैष्णवोंकी सेवा, द्वादशी व्रतमें निद्राभाव और तुलसीरोपण भगवान् विष्णुमें ये सोलह प्रकारकी भक्तिव्यवस्था कही गई है। भगवान् का मूर्त्तिसन्दर्शन, मथुरा, वृन्दावन आदि तीर्थक्षेत्रमें गमन, भ्रमण और अवस्थिति, धूपावशेषादिका आघ्राण, निर्माल्यग्रहण, भगवान्के आगे नृत्य, वीणावादन, कृष्ण लीला आदिका अभिनय, भगवान्के नामश्रवणमें तत्परता, पद्म और तुलसीमाला धारण, एकादशी प्रभृति रात्रिमें जागरण, भगवान्के उद्देश्यसे गृहनिर्माण तथा यात्रामहोत्सव प्रभृति भी भक्तिके लक्षण कहे जाते हैं।

श्रवणादि विषयक जिन सब भक्तिके लक्षण लिखे गए हैं उनमेंसे कुछ प्रधान और कुछ अप्रधान हैं। कारण, प्रेमसाधन सम्बन्धमें पूर्वोक्त लक्षणसमूहके मध्य कितनेको तो बहिरङ्ग और कितनेको अन्तरङ्ग समझना चाहिए। जिस प्रकार सत्त्व, रज और तमोगुणके भेदसे जीवकी विभिन्नता देखी जाती है, उसी प्रकार भक्तों की भक्तिके अनुष्ठानकी भिन्नता होती है। प्रेमभक्ति सिद्ध होनेसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप सभी प्रकारके पुरुषार्थ सेवककी तरह काम करते हैं।

प्रेमभक्तिके लक्षणके विषयमें नारदपञ्चरात्रमें लिखा है, कि जिस काममें अपनापन भाव न रहे, जिसमें भगवान्में सरस ममता अर्थात् भगवान् ही मेरे इस आकार परिचय हैं, उसीको भीष्म, प्रह्लाद, उद्धव और नारदादि भक्तोंने प्रेमभक्ति बतलाया है। प्रेमभक्तिका माहात्म्य मुक्तिके माहात्म्यकी अपेक्षा श्रेष्ठ है।

प्रेमभक्तिका चिह्न—जब आनन्दातिशय्यनिबन्धन पुलक और प्रेमाश्रु प्रकाशित होता है, जब मनुष्य गद्गदचित्त हो ऊर्ध्वकण्ठसे कभी आनन्दध्वनि, गीत, रोदन और नृत्य; कभी ग्रहाभिभूतकी तरह हास्य, रोदन, ध्यान और वन्दना करते अथवा कभी दीर्घनिःश्वासका परित्याग कर हे हरे! हे जगत्पते! हे नारायण! यह नाम उच्चारण करते हुए लज्जारहित हो रहते हैं, तब भक्त सभी बन्धनोंसे मुक्त हो जाते हैं। भगवद्भावमें उनका अन्तःकरण और बाह्य शरीर लगा रहता है। यहां तक, कि उस समय भावातिशय भक्तिनिबन्धन उस व्यक्तिका अज्ञानभाव और वासना एकबारगी निःशेषरूपसे दग्ध हो कर भक्तिपथमें गमनपूर्वक भगवान्को प्राप्त करते हैं। (हरिभक्तिविलास ११ वि०)

उत्तमा भक्तिका लक्षण—श्रीकृष्णसम्बन्धी अनुकूल अनुशीलनको भक्ति कहते हैं। यह अनुशीलन ज्ञान और कर्मादि द्वारा अनावृत तथा अन्य वस्तुके प्रति स्पृहा शून्य होनेसे उत्तमा भक्ति कही जाती है। (भक्तिर० सि०)

इन्द्रिय द्वारा तत्परत्वरूप अर्थात् अनुकूलतारूपसे हृषीकेशकी सेवाको भक्ति कहते हैं। इस सेवाका सर्वोपाधि-रहित अर्थात् अन्याभिलाषिता शून्य तथा निर्मल अथवा ज्ञानकर्मादिसे अनावृत होना आवश्यक है। भक्तिशास्त्रमें यह षड्गुणान्वितके जैसा कीर्त्तित हुआ है। यथा—

क्लेशघ्नी, शुभदा, मोक्षलघुताकृत्, सुदुर्लभा सान्द्रानन्दविशेषात्मा और श्रीकृष्णाकर्षणी ये सब उत्तमा भक्ति हैं। पाप, पापके बीज और अविद्याके भेदसे क्लेशगण तीन प्रकारके हैं। जो भक्ति अप्रारब्ध और प्रारब्ध पापरूप क्लेशसमूह नष्ट करती है, वह क्लेशघ्नी कहलाती है।

सम्पूर्ण जगत्का प्रीतिविधान, सबोंमें अनुराग, सद्गुण और सुख इत्यादि शुभदान करनेका नाम शुभदा भक्ति है। भक्तिसे 'सुखं वैषयिकं ब्राह्ममैश्वरञ्चेति तत्त्रिधा।' वैषयिक सुख, ब्रह्मसुख और ऐश्वरसुख लाभ होता है।

जिनके हृदयमें थोड़ी-सी भी भगवद्भक्ति उदित हुई है, वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थको

तृणतुल्य समझते हैं। भक्तकी मोक्षकामना नहीं रहने पर भी भक्तिकी मोक्षलघुकारिताका लक्षण प्रकाशित होता है।

भक्ति सुदुर्लभा है। सङ्गरहित हो कर चिरकाल साधन करने पर भी अलभ्या और श्रीकृष्ण द्वारा आशु अदेयाके भेदसे सुदुर्लभा दो प्रकारकी है।

साधनसमूह द्वारा भी भक्ति लाभ नहीं होती। ज्ञानसे मुक्ति और यज्ञादि पुण्यकार्यसे भुक्ति लाभ होती है, किन्तु हजारों साधन द्वारा भी हरिभक्ति मिलना बड़ो मुश्किल है। यही अलभ्या भक्ति है।

भागवतके पांचवें स्कन्धमें श्रीकृष्ण द्वारा अदेया भक्तिका विवरण इस प्रकार लिखा है - शुकदेवने परीक्षित्से कहा, 'हे राजन् ! भगवान् मुकुन्दने आपके और यादवोंके पति, गुरु, दैव, मित्र, कुलपति तथा कभी कभी दासत्व तक स्वीकार भी किया है। वे भजनशील मनुष्योंको मुक्ति देते थे पर भक्ति नहीं।' इससे भक्तिकी सुदुर्लभता ही प्रतिपादित होती है। (भाग० ५।६।१८)

प्रह्लादने श्रीनृसिंहदेवसे कहा था 'हे जगद्गुरो ! मैं आपके दर्शन पा कर विशुद्ध आनन्दसागरमें डूब गया हूं, अभी ब्रह्मानन्द सुख भी मुझे गोष्पदके समान मालूम होता है।' इसके द्वारा ब्रह्मानन्द सुखसे सान्द्रानन्द विशेषात्मा भक्तिसुखकी प्रधानता साबित हुई।

श्रीकृष्णने उद्धवसे कहा था,—'हे उद्धव ! भक्ति जितनी विशुद्ध भक्ति मुझे जैसा वशीभूत कर देती है योग, सांख्य, धर्म, वेदाध्ययन, तपस्या और दान प्रभृति वैसा वशीभूत नहीं कर सकता।' यही श्रीकृष्णाकर्षिणी भक्ति है।

भक्तिके [illegible] भेद हैं, जैसा [illegible] लिखा है।

"सा भक्तिः साधनं भावः प्रेमा चेति त्रिधोदिता।"

साधनभक्ति, भावभक्ति और प्रेमभक्ति ये तीन भेद [illegible] हैं। "कृतिसाध्या भवेत् साध्यभावा सा साधनाभिधा।" इन्द्रिय प्रेरणा द्वारा जो भक्ति साधित होती है उसे साधनभक्ति कहते हैं। इस साधनभक्तिके वैधी और रागानुगा नामक दो भेद हैं।

"वैधी रागानुगा चेति सा द्विधा साधनाभिधा।"

भक्तिरसामृतसिन्धुवर्णित उक्त ६४ प्रकारकी वैध भक्ति ये हैं, यथा—

"गुरुपादाश्रयस्तस्मात् कृष्णदीक्षादिशिक्षणम्।
विश्रम्भेण गुरोः सेवा साधुवर्त्मानुवर्त्तनम्॥
सद्धर्मपृच्छा भोगादित्यागः कृष्णस्य हेतवे।
निवासो द्वारकादौ च गङ्गादेरपि सन्निधौ।
व्यवहारेषु सर्वेषु यावदर्थानुवर्त्तिता।
हरिवासरसम्मानो धात्र्यश्वत्थादिगौरवम्।
एषामत्र दशाङ्गानां भवेत् प्रारम्भरूपता।
सङ्गत्यागो विदूरेण भगवद्विमुखैर्जनैः।
शिष्याद्यननुबन्धित्वं महारम्भाद्यनुद्यमः।
बहुग्रन्थकलाभ्यास-व्याख्यावादविवर्जनम्॥
व्यवहारेऽप्यकार्पण्यं शोकाद्यवशवर्त्तिता।
अन्यदेवानवज्ञा च भूतानुद्वेगदायिता॥
सेवानामापराधानामुद्भवाभावकारिता।
कृष्णतद्भक्तविद्वेषविनिन्दाद्यसहिष्णुता॥
व्यतिरेकतयामीषां दशानां स्यादनुष्ठितिः।
अस्यास्तत्र प्रवेशाय द्वारत्वेऽप्यङ्गविंशतेः।
त्रयं प्रधानमेवोक्तं गुरुपादाश्रयादिकम्।
धृतिर्वैष्णवचिह्नानां हरेर्नामाक्षरस्य च॥
निर्माल्यादेश्च तस्याग्रे ताण्डवं दण्डवन्नतिः।
अभ्युत्थानमनुव्रज्या गतिः स्थाने परिक्रमः॥
अर्चनं परिचर्या च गीतं सङ्कीर्त्तनं जपः।
विज्ञप्तिः स्तवपाठश्च स्वादो नैवेद्यपाद्ययोः॥
धूपमाल्यादिसौरभ्यं श्रीमूर्त्तेः स्पृष्टिरीक्षणम्।
आरात्रिकोत्सवादेश्च श्रवणं तत्कृपेक्षणम्॥
स्मृतिर्ध्यानं तथा दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।
निजप्रियोपहरणं तदर्थेऽखिलचेष्टितम्॥
सर्वथा शरणापत्तिस्तदीयानाञ्च सेवनम्।
तदीयास्तुलसीशास्त्रमथुरावैष्णवादयः।
यथा वैभवसामग्री सद्गोष्ठीभिर्महोत्सवः॥
ऊर्जादरो विशेषेण यात्रा जन्मदिनादिषु॥
श्रद्धा विशेषतः प्रीतिः श्रीमूर्त्तेरङ्घ्रिसेवने।
[illegible] रसिकैः सह।
[illegible]

नामसङ्कीर्तौ श्रीमन्मथुरामण्डले स्थितिः ॥

सर्वाधीभक्तिविषये केञ्चित्सम्यादामाग उच्यते ।"

इस वैधी भक्तिको कोई कोई मर्यादा मार्ग कहते हैं।

रागानुगाभक्ति,—व्रजवासियोंमें प्रकाश्यरूपसे विराज मान जो भक्ति है उसे रागात्मिका भक्ति कहते हैं। इस रागात्मिका भक्तिकी अनुगता जो भक्ति है उसका नाम रागानुगा भक्ति है। यह रागानुगा भक्ति निर्णय करनेके निमित्त है। पहले रागात्मिका भक्तिका वर्णन किया जाता है।

"इष्टे स्वारसिकी रागः परमाविष्टता भवेत्।

तन्मयी या भवेद् भक्तिः सात्र रागात्मिकोदिता ॥"

अभिलषित वस्तुकी स्वाभाविकी आवेशमयी तृष्णा का नाम राग है। वही रागमयी भक्ति रागात्मिका भक्ति कहलाती है।

यह रागात्मिका भक्ति कामरूपा और सम्बन्धरूपाके भेदसे दो प्रकारकी है।

जो भक्ति सम्भोग तृष्णाको प्रेमसय रूपमें परिणत करती है, उसका नाम कामरूपा भक्ति है क्योंकि इस कामरूपा भक्तिमें केवल कृष्णसुखके निमित्त उद्यम देखनेमें आता है।

श्रीकृष्णमें पितृ आदि अभिमान हो अर्थात् मैं कृष्णका पिता हूं, मैं उनकी माता हूं मैं उनका भाई हूं, इत्यादि अभिमानका नाम सम्बन्धरूपा भक्ति है।

रागात्मिका भक्ति दो प्रकारकी होनेके कारण रागानुगा भक्ति भी कामानुगा और सम्बन्धानुगाके भेदसे दो प्रकारकी है।

केवल रागानुगाभक्तिनिष्ठ व्रजवासियोंकी भक्ति-प्राप्तिके लिए जिनका चित्त लुब्ध होता है, उन्हींकी भक्तिको कामानुगा या सम्बन्धानुगा कहते हैं।

कामरूपा भक्तिकी अनुगामिनी जो तृष्णा है, उसका नाम कामानुगाभक्ति है। यह सम्भोगेच्छामयी और तत्तद्भावेच्छामयीके भेदसे दो प्रकारकी है।

भक्तोंने पितृत्व, सख्य तथा मातृत्व सम्बन्धको पण्डितोंने सम्बन्धानुगा भक्ति बतलाया है।

शुद्धसत्त्वविशेषस्वरूप प्रेमरूप सूर्यकी किरणसादृश्य आत्मा और भगवत्प्राप्त्यभिलाष, उनके आनुकूल्याभिलाष तथा सौहार्द्राभिलाष द्वारा जिसकी स्निग्धता उत्पन्न होती है उसका नाम भावभक्ति है।

भक्तके हृदयमें इस भावभक्तिका अङ्कुर उत्पन्न होनेसे—

"क्षान्तिरव्यर्थकालत्वं विरक्तिर्मानशून्यता।

आशाबन्धः समुत्कण्ठा नामगाने सदा रुचिः ।

आसक्तिस्तद्गुणाख्याने प्रीतिस्तद्वसतिस्थले।

इत्यादयोऽनुभावाः स्युर्जातभावाङ्कुरे जने ॥"

प्रेमभक्ति—जिससे समस्त प्रकारसे चित्त निर्मल हुआ है और जो अत्यन्त ममतापूर्ण है, उस भावको पण्डितगण प्रेम कहते हैं।

माधवाचार्य प्रेमभक्तिके प्रादुर्भावके विषयमें भक्ति रसामृतसिन्धुमें इस प्रकार लिखा है,—

आदौ श्रद्धा ततः साधुसङ्गोऽथ भजनक्रिया।

ततोऽनर्थनिवृत्तिः स्यात्ततो निष्ठा रुचिस्ततः ॥

अथासक्तिस्ततो भावस्ततः प्रेमाभ्युदञ्चति।

साधकानामयं प्रेम्णः प्रादुर्भावे भवेत्क्रमः ।

विशेष विवरण प्रेम शब्दमें देखो।

ऊपरमें ईश्वरानुग परानुरक्तिको ही भक्ति कहा गया है। आराध्यदेवताके प्रति आन्तरिक अनुराग और उनकी भजनसाधनादि सेवादिमें आन्तरिक प्रीति ही भक्तिका लक्षण है। श्रवणादि नौ प्रकारकी भक्तिके एक एक अङ्गका रसास्वादन तथा शुकपाराशरादि चौंसठ प्रकारके भक्त्यङ्गका पालन करना भी भक्तका एकान्त कर्त्तव्य है। इसके अलावा कृष्णार्थ अखिलचेष्टा समर्पण, सब विषयोंमें उनका कृपावलोकन, जन्म, और यात्रादिका महोत्सव पालन, नियम, पूर्वक कार्त्तिकव्रतादि समापन साधुसङ्ग, भागवत आस्वादन, मथुरामण्डलमें वास, नामसङ्कीर्तन, श्रद्धा और प्रीतिके साथ श्रीमूर्त्तिसेवन प्रभृति पञ्चाङ्ग भक्तकी अशेष महिमा कही गई है।

भक्तकवि तुलसीदासजीने मूर्त्तिमती भक्तिका वर्णन कर गए हैं, प्रियदासजीकी टीकामें उसका आभास मिलता है। उस देवीप्रतिमाके श्रीअङ्गमें श्रद्धा, दया, निष्ठा, मन, हरिसेवा, साधुसेवा, स्मरण और अनुरागादिके लक्षण दिखाई पड़ते हैं *। इससे द्वारा केवल भक्तिका ही

* "भक्ति दौ प्रेम श्री चरणा ....

मैन अभिमान .... दूराये ।

उत्पन्न निर्वेद हुआ। उपर्युक्त आनुषङ्गिक लक्षणोंके परस्पर सन्निविष्ट नहीं होनेसे मनुष्यके हृदयमें कदापि भक्तिका सञ्चार नहीं हो सकता। अनन्तर उत्पन्न होनेसे आसक्त्यादिकी परिलिप्सा जाती रहती है और अज्ञानान्ध निरस्त होनेसे निष्ठा किन्तु श्रवणादिकी रुचि होती है। क्रमशः रुचिके विकाससे हृदयमें आसक्ति बलवती हो जाती और रतिका अङ्कुर निकल आता है। बाद वह रति प्रेममें परिणत हो जाती है। यह चैतन्यात्मक प्रेमालोक ही अज्ञानान्धकार दूर करनेमें समर्थ है। आशामूलक अनुरक्त सोपानश्रेणीका पार कर प्रेममार्गमें पहुंचनेसे नरकपार लाभ होता है। भक्ति सम्मिश्रणके सिवा केवल कर्म या ज्ञान द्वारा सायुज्य लाभ नहीं हो सकता। जिसका ज्ञान भक्तियुक्त है, उसकी मुक्ति करतलगत है।

अभीष्ट और आराध्य देवताके प्रति ऐकान्तिक अनुरक्ति केवल साधुसङ्गसे प्रबल होती है। निरन्तर साधुसेवारूप जलसेचनसे नवलक्षणाक्रान्त भक्तिवृक्षकी शाखा प्रशाखा हृदयाकाशमें परिव्याप्त हो कर स्निग्ध छाया वितरण करती है। बाद हृदयमें एक सार्वभौम कोमलता आ उपस्थित होती है, वह ईश्वरप्रेमके सिवा और दूसरा कुछ नहीं है। यही एकमात्र भगवत्प्रेम जीवोंके पाप, ताप माया और दुःखको दूर करनेमें समर्थ है।

उपादानभूत अङ्गप्रत्यङ्गादिके अलावा भक्तिमें शान्ति, दास्य, सख्य, वात्सल्य और शृङ्गार ये पञ्चरसात्मक भाव विद्यमान हैं। इनके सिवा शास्त्रमें भक्तिका प्रभेद कल्पित हुआ है —

भक्ति आठ प्रकारकी है—यथा १ विष्णुके नाम और कर्मादि कीर्त्तन करते करते अश्रुविसर्जन, २ श्रीहरिके चरणयुगल ही मेरे नित्यकर्म हैं ऐसा निश्चय और

स्नान गुर्वीर महयार भगुजाय दया
तानि सम्म प्रननो धोले लगारपे।
भागवय नाम हरि साधुमा कया पूज
मानजी सुख मन करा दागपे।
भक्ति महरानीकी अ नार चार मैं री
चाह रंग या निहारि छई काज प्यारा पारन।

तदनुरूप अनुष्ठान, ३ प्रगाढ़पूर्वक भक्तिके साथ भगवत कथित शास्त्रका कीर्त्तन, ४ भगवान्‌के भक्तवात्सल्य गुणकी पूजा कर उसका अनुमोदन, ५ भगवत्कथा सुननेमें प्रीति, ६ विष्णुमें आत्मनिवेश, ७ स्वयं विष्णुकी अर्चना और ८ विष्णु ही मेरे उपजीव्य हैं, ऐसा ज्ञान।

"भक्तिरष्टविधा ह्येषा यस्मिन् म्लेच्छेऽपि वर्त्तते।
स विप्रेन्द्रो मुनिः श्रीमान् स यतिः स च पण्डितः ॥
तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा हरिः।"

(गरुडपुराण पू० ख० २१९।१०-११)

म्लेच्छमें भी यदि उक्त आठ प्रकारकी भक्ति वर्त्तमान रहे, तो उसकी गिनती विप्रेन्द्र, मुनि, श्रीमान्, यति और पण्डितोंमें होती है—वह व्यक्ति श्रीहरिके जैसा पूजनीय है। जिसके हृदयमें हरिभक्ति विद्यमान है, वह मुक्तिसे भी श्रेष्ठ है।

ऊपरमें भक्ति प्रकरणके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा गया है, वह सब धर्मशास्त्रसम्मत है। सम्प्रदायभुक्त नहीं होनेसे मनुष्यके हृदयमें कदापि भक्तिका उद्रेक नहीं होता। साधकको गुरुवाक्य और सम्प्रदायका आश्रय कर दीक्षा लेनी चाहिए; अन्यथा उनकी दीक्षा निष्फल हो जाती है। पद्मपुराणमें लिखा है, कि कलिकालमें श्री, माध्वी, रुद्र और सनक नामक चार सम्प्रदायी वैष्णवोंका आविर्भाव होगा और यही चार वैष्णवसम्प्रदाय पृथिवीके पवित्रताविधायक होंगे। वैष्णवसम्प्रदायी कृष्णनिष्ठ भक्तियुक्त पुण्यात्मा ही भक्तिके अधिकारी हैं। असाम्प्रदायिक तथा अवैष्णवके निकट मन्त्रग्रहीताके हृदयमें भक्ति नहीं आ सकती, वरन् उससे उसका दीक्षाविपर्यय ही घट जाता है। कृष्णनिष्ठ कदापि व्यभिचारी नहीं होते हैं। भक्तिमार्गारोही भागवतगण अपने अपने सिद्धिपथका आश्रय कर साम्प्रदायिक धर्ममतका प्रवर्त्तन कर गए हैं। श्रीधरस्वामीने अपनी भागवतटीकामें इस साम्प्रदायिक वैशिष्ट्यका उल्लेख किया है। सम्प्रदाय देखो।

पहले ही कहा जा चुका है, कि भक्तिका फल ज्ञान है और इससे मनुष्यको मुक्ति मिलती है। वैष्णव साधकोंने एकमात्र प्रेमको ही भक्तिका मुख्य सोपान बतलाया है। साधना और भजना द्वारा जो सर्वप्राप्त होता,

भक्ति रहनेसे यह इष्टवस्तु अनायास मिल जाती है। तव साधनापरम्परा भक्ति सोपानारोहणकी अवलम्बिका मात्र है।

भक्तिकर (स० त्रि०) १ भक्तियोग्य। २ भक्तित्युत्पादक, जिसे देख कर भक्ति उत्पन्न हो।

भक्तिच्छेद (स० पु०) १ विष्णुभक्तके विशेष चिह्न। जैसे,—तिलक, मुद्रा आदि। २ रचना या रेखाभङ्गविशेष, वह चित्रकारी जो रेखाओं द्वारा की जाय।

भक्तिपूर्वम् (सं० अव्य०) भक्ति या सम्मानके साथ।

भक्तिभाज् (स० त्रि०) भक्तिः भजते भज् ण्वि। भक्तिके पात्र।

भक्तिमत् (सं० त्रि०) भक्तिरस्यास्तीति भक्ति-मतुप्। भक्तियुक्त।

भक्तिमहत् (स० त्रि०) १ अतीव भक्ति-सम्पन्न। २ निष्ठावान् भक्त।

भक्तियोग (स० पु०) भक्तेर्योग भक्त्या वा योग। १ भक्तिका साधन। २ सदा भगवानमें श्रद्धापूर्वक मन लगा कर उनकी उपासना करना।

गीताके १२वें अध्यायमें भक्तियोगका विषय इस प्रकार लिखा है।

"एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः॥" (गीता १२।१)

अर्जुनने भगवान्से पूछा था, "भगवन्! निर्गुण और सगुण ब्रह्मकी जो उपासना करते हैं उनमें कौन श्रेष्ठ है?" उत्तरमें भगवान्ने कहा, "जो व्यक्ति एकाग्र चित्त और सात्त्विक श्रद्धायुक्त हो मेरे सगुण स्वरूपकी आराधना करते हैं, वे ही श्रेष्ठ हैं।' इसका तात्पर्य यह, कि सगुण वा साकाररूपमें जिसके चित्तका एकाग्र आवेश होता है अर्थात् जो एकमात्र 'गतिस्त्वं' ऐसा कह कर अनन्यभावसे प्रीति पूर्णचित्तसे भगवान्के शरणागत होते हैं, वे ही भगवत्का स्वरूप लाभ करते हैं। 'मैं भगवान्की उपासना करता हूं, निश्चय है, वे मेरा उद्धार करेंगे' इस प्रकार आस्तिक्य बुद्धिसे जिनको सात्त्विक श्रद्धाका उदय होता है और जो नित्य आराध्यरूपको सर्वेश और सर्वकल्याणविधाता जान कर उन्हींको भक्तिपूर्णचित्तसे भजना करते हैं, वे ही श्रेष्ठ अर्थात् भक्तयोगी हैं।

जो सर्वदा सन्तुष्ट, समाहित चित्त, संयतात्मा और दृढनिश्चय हैं तथा जिन्होंने अपनी मनोबुद्धि हममें अर्पण कर दी है, वे ही श्रेष्ठ हैं अर्थात् जो प्राप्ति या अप्राप्तिमें, सम्पद् या विपद्में सन्तुष्ट रहते हैं जो सर्वदा भगवानमें निविष्टचित्त हैं, शरीर और इन्द्रियादि जिन्होंने अपने वशमें कर लिये हैं जिनका भगवानमें दृढविश्वास है अर्थात् जिनका चित्त भगवद्भावसे विचलित नहीं होता और जिन्होंने सङ्कल्प विकल्पका परित्याग कर अपने मन और बुद्धिको भगवान्में अर्पण कर दिया है, वे ही भक्त भगवान्के प्रिय हैं। जिनके द्वारा कोई मनुष्य सन्तप्त नहीं होता अथवा जो दूसरेसे खुद भी सन्तप्त नहीं होता तथा जिसने हर्ष, विषाद, भय और उद्वेगका परित्याग कर दिया है, वे ही भगवान्के प्रिय हैं। जो निरपेक्ष, शुचि, दक्ष, उदासीन, व्यथावर्जित और सर्वारम्भ परित्यागी हैं तथा जो इष्ट लाभ करके सन्तोष या दुःखके कारण द्वेषको प्रकाश नहीं करते, जो शोक या आकाङ्क्षा परिशून्य और शुभाशुभ परित्यागी हैं वे ही भक्त भगवान्के प्रिय हैं। जिनके लिये शत्रु और मित्र, शीत, उष्ण, मान और अपमान, सुख और दुःख सभी समान हैं वे ही भक्त भगवान्के प्रिय हैं।

भक्तिरस (स० पु०) भक्ति ईश्वरविषया रतिरेव रस। तत्स्थायिभावक रसभेद वह रस जिसका स्थायिभाव भक्ति है।

"विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः।
स्वाद्यत्वं हृदि भक्तानामानीता श्रवणादिभिः॥
एषा कृष्णरतिः स्थायिभावो भक्तिरसो भवेत्॥"
(भक्तिरसामृतसिन्धु)

ईश्वरमें रति स्थायिभाव प्राप्त होनेसे भक्तिरसका उदय होता है। यह स्थायिभाव विभाव, अनुभाव, सात्त्विक और सञ्चारिभावके सहयोगसे भक्तिरसरूपमें परिणत होता है। उस समय भक्त एक अपूर्व भक्ति रसका स्वाद पाता है। ईश्वर और उनका भक्त आलम्बन विभाव, ईश्वरके गुणादि और भक्तकी ईश्वर हेतु चेष्टादि उद्दीपन विभाव, स्तम्भ स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभेद, कम्प, वैवर्ण्य अश्रु प्रलय (सुख दुःखादि बोधशून्यता) ये सब सात्त्विक भाव; निर्वेद, विषाद, दैन्य, ग्लानि आदि

से तीस सञ्चारी भाव हैं। इनमें रति पात्रके भेदसे भिन्न होती है। शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य, प्रियता इन पाँच प्रकारोंमें यह प्रकाश पाता है। किसी साधक में क्रमशः एक एक भाव प्रकाश पानेसे उसे क्रमागति और उसके विभिन्नभावमें उपस्थित होनेको समुच्चागति कहते हैं। किन्तु इनमेंसे जो प्रधानतः प्रकाश पाता है उसीके अनुसार साधकका भाव निरूपित होता है।

(भक्तिचैतन्यचन्द्रिका)

भक्तिरसामृतसिन्धुमें यों लिखा है—

विभाव, अनुभाव, सात्त्विकभाव और सञ्चारिभाव द्वारा अभिव्यक्त श्रीकृष्णविषय-स्थायिभाव, श्रवणादि द्वारा भक्तोंके हृदयमें आस्वादयोग्यता प्राप्त हो कर भक्ति रसरूपमें परिणत होता है।

भक्तिरसके अधिकारी—

जिनके हृदयमें प्राक्तनी और आधुनिकी सद्भक्ति वासना विराज करती है, उन्हीके हृदयमें इस भक्तिरस का आस्वादन उत्पन्न होता है।

भक्तिरसका विभाव—आस्वादनके कारणोंको विभाव कहते हैं। यह विभाव आलम्बन और उद्दीपनके भेदसे दो प्रकारका है। इनमेंसे कृष्ण और कृष्णभक्तगण आलम्बन विभाव हैं।

जो भावको प्रकाश करता है, उसे उद्दीपनविभाव कहते हैं। श्रीकृष्णका गुण, चेष्टा प्रसाधन, स्मित, अङ्ग सौरभ, वंश, शृङ्ग, नूपुर, शङ्ख, पदाङ्क, क्षेत्र, तुलसी, भक्त और तद्वासरादि उद्दीपन विभाव हैं।

भक्तिरसका अनुभाव—चित्तगत भावके बोधकको अनुभाव कहते हैं। यह अनुभाव कैसा है, उसका विवरण निम्नश्लोकमें किया गया है।

"नृत्यं विलुठितं गीतं क्रोशनं तनुमोटनम्।
हुङ्कारो जृम्भणं श्वासभूमा लोकानपेक्षिता।
लालास्रावोऽट्टहासश्च घूर्णा हिक्कादयोऽपि च।"

सात्त्विकभाव—साक्षात् या व्यवधानमें कृष्णसम्बन्धिभाव द्वारा आक्रान्त चित्तको सत्त्व कहते हैं। इस सत्त्वसे उत्पन्न भावका नाम सात्त्विकभाव है। यह सात्त्विकभाव स्निग्ध, दिग्ध और रूक्षके भेदसे तीन प्रकारका है।

जब भगवद्भावमें आकर चित्त अधीर हो कर अपनेको प्राणवायुमें अर्पण कर देता है, तब प्राण दूसरी अवस्था में आ कर देहको अत्यन्त क्षोभित कर डालता है। उस समय भक्तके शरीरमें स्तम्भादि सभी भाव उत्पन्न होते हैं।

स्तम्भादि भाव—स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभेद, वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय ये आठ सात्त्विक भावके लक्षण हैं।

निर्वेद, विषाद, दैन्य, ग्लानि, श्रम, मद, गर्व, शङ्का, त्रास, आवेग, उन्माद, अपस्मृति, व्याधि, मोह, मृति, आलस्य, जाड्य, व्रीडा, अवहित्था, स्मृति, वितर्क, चिन्ता, मति, धृति, हर्ष, औत्सुक्य, औग्र्य, अमर्ष, असूया, चापल्य, निद्रा, सुप्ति और बोध ये तीस व्यभिचारी भाव हैं।

श्रीकृष्णविषयिणी रतिको स्थायीभाव कहते हैं। इसका विशेष विवरण भक्तिरसामृतसिन्धु और हरिभक्ति विलास आदि ग्रन्थोंमें लिखा है।

भक्तिरसामृतसिन्धु—श्रीरूप गोस्वामिकृत ग्रन्थविशेष। यह ग्रन्थ चार भागोंमें विभक्त है। प्रथम भागका नाम पूर्वविभाग है। इस पूर्वविभागमें चार लहरी हैं। यथा—सामान्यभक्तिलहरी, साधनभक्तिलहरी, भावभक्तिलहरी और प्रेमभक्तिलहरी।

द्वितीयका नाम दक्षिणविभाग है। इसमें पाँच लहरी हैं—विभावलहरी, अनुभावलहरी, सात्त्विक लहरी, व्यभिचारिलहरी और स्थायिभावलहरी।

तृतीय भागका नाम पश्चिमविभाग है। इसमें शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर यह पञ्च मुख्य भक्तिरस पाँच लहरीमें वर्णित है।

चतुर्थ भागका नाम उत्तरविभाग है। इसमें नौ लहरी है। पहलेसे ले कर सात लहरीमें हास्यादि सात गौणरसका वर्णन है। अष्टम लहरीमें रसकी मैत्रीवैरस्थिति और नवम लहरीमें रसाभास वर्णित है।

इस ग्रन्थका श्लोकसंख्या मूल ३३२५, टीका ३६५४ है। इसके टीकाकार जीव गोस्वामी हैं। ग्रन्थरचना का काल

"रामाङ्गशक्रगणिते शाके गोकुलमधिष्ठितेनायम्।
भक्तिरसामृतसिन्धुर्विटङ्कितः क्षुद्ररूपेण॥"

यहाँ अङ्क हो कर रा राम (३) अङ्ग (६) शक्र (१४)

अर्थात् १४६३ शकमें गोकुलमें रह कर इस भक्तिरसामृत सिन्धुको उत्तम रूपसे उट्टङ्कित किया।

भक्तिराग (सं० पु०) भक्तिका पूर्वानुराग।

भक्तिल (सं० पु०) भक्त भक्तिं लातीति ला-क। १ साधु घोटक, उत्तम घोड़ा (त्रि०) २ भक्तिदाता।

भक्तिवाद (सं० पु०) भक्तिविषयिणी कथा।

भक्तिसूत्र (सं० क्ली०) वैष्णव सम्प्रदायका एक सूत्र ग्रन्थ। यह ग्रन्थ शाण्डिल्य मुनिके नामसे प्रख्यात है। इसमें भक्तिका वर्णन है।

भक्तोसरीय (सं० क्ली०) औषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—अभ्र, गन्धक, पीपल, पञ्चलवण, यवक्षार, सर्जिक्षार, सोहागा, त्रिफला, हरिताल, मैनसिला, पारद, बनयमानी, यमानी, सोया, जीरा, हिंगु, मेथी, चितामूल, चई, वच, दन्तीमूल, निसोथ, मोथा, सिलाजित, लौह, रसाञ्जन, निम्बबीज, पटोलपत्र और विडङ्ग प्रत्येक दो दो तोला और शोधित धतूरा १००, इन्हें चूर्ण करके भोजन करनेके बाद सेवन करे। इससे अग्निवृद्धि होती तथा शलोपद और अन्त्रवृद्धि आदि नाना रोग प्रशमित होते हैं (भैषज्यरत्ना०)

भक्तोद्देशक (सं० पु०) बौद्धसंघारामादिमें नियुक्त कर्मचारिविशेष। ये लोग इस बातकी जांच करते हैं, कि आज कौन क्या भोजन करेगा।

भक्तोपसाधक (सं० पु०) १ पाचक, रसोइया। २ परिवेशक।

भक्ष (सं० पु०) भक्ष भावे कर्मणि वा घञ्। १ अशन, खानेका काम। २ भक्षणीय वस्तु, खानेका पदार्थ।

भक्षक (सं० त्रि०) भक्षयतीति भक्ष (ण्वुल्तृचौ। पा ३।१।१३३) १ खादक, खानेवाला। पर्याय—घस्मर, अद्मर।

भक्षकार (सं० पु०) भक्ष करोति कृ अन्। भक्ष्यविक्रेता। मोदी, हलवाई।

भक्षटक (सं० पु०) भक्ष अटन, ततः स्वार्थे कन्। क्षुद्र गोक्षुरक, छोटा गोखरू।

भक्षण (सं० क्ली०) भक्ष भावे ल्युट्। किसी वस्तुको दांतोंसे काट कर खाना, भोजन करना। पर्याय—स्वाद, खदन, खादन, अशन, निघस, वल्भन, अभ्यवहार, जग्धि, जक्षण, लेह, प्रत्यवसान, घसि, आहार, प्सान, भरणान, विष्वाण, भोजन, जेमन, अदन।



भक्षणीय (सं० त्रि०) भक्ष अनीयर्। १ भक्ष्य द्रव्य। २ भक्षण योग्य, खाने लायक। भक्षणीय द्रव्य किस जगह रखना चाहिये, पाकराजेश्वरमें उसका विषय इस प्रकार लिखा है। सामने भोजन पात्र, उसके मध्य भागमें अन्न, दाल तरकारी मछली मांस दहिनी ओर, पलेहादि द्रव्य, पाणीय, पानक और चोष्य आदि बाईं ओर तथा इक्षुविकार, पक्वान्न, पायस और दधि सामने रखना चाहिये। इस प्रकार भक्षणीय द्रव्य रख कर भोजन करना उचित है। (पाकराजेश्वर)

भक्षपत्रा (सं० स्त्री०) भक्ष भक्षणीय पत्रमस्या। नागवल्ली।

भक्षयितृ (सं० त्रि०) भक्षि तृण्। भक्षणकारी, खानेवाला।

भक्षयितव्य (सं० त्रि०) भक्ष णिच् तव्य। भक्षणीय, खाद्योपयोगी।

भक्षालि (सं० पु०) भक्षाणामालिर्यत्र। १ देशभेद। ततो भवार्थे बुञ्। भक्षालिक तद्देशभव।

भक्षित (सं० त्रि०) खाया हुआ।

भक्षितृ (सं० त्रि०) भक्ष तृच्। भक्षक, खानेवाला।

भक्षितव्य (सं० क्ली०) भक्ष तव्य। भक्ष्य, खानेका पदार्थ।

भक्षिन (सं० त्रि०) भक्ष अस्त्यर्थे इनि। भक्षणकारी, खानेवाला।

भक्षिवस् (सं० त्रि०) भक्ष वसु वेदे न द्वित्व। भक्षण, खाना। वैदिक प्रयोगमें ही यह पद सिद्ध होता है, लौकिक प्रयोगमें 'बिभक्षिवस्' पद होता है।

(मथर्व० ६।७३।३)

भक्ष्य (सं० त्रि०) भक्ष्यते इति भक्ष ण्यत्। भक्षितव्य, खानेके योग्य। 'अतिरदि कुल्माषः न भक्ष्य दन्न्या कल्मषी न भक्ष्या' (स्मृतिवाक्य)

सुश्रुतमें भक्ष्यद्रव्य और उसके गुणादिका उल्लेख है। रस, वीर्य और विपाकके अनुसार भक्ष्य द्रव्योंके गुणादि नीचे लिखे जाते हैं।

क्षीरजात समस्त भक्ष्यद्रव्य—बलकर, शुक्रवृद्धिकर, मुखप्रिय, सुगन्धी, अग्निकर और पित्तनाशक। इनमेंसे घृतपक्व पिष्टकादि बलकर, मुखप्रिय, रुचिकर, वातपित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, गुरुपाक और रक्तमांस वर्द्धक है।

गुड़मान भक्ष्यद्रव्य—पुष्टिकर, गुरुपाक, वायुनाशक, अदाही, पित्तनाशक, शुक्र और कफवर्द्धक है। घृतादि द्वारा पक्व गोधूमचूर्णजात पिष्टक और मधुमिश्रित पिष्टक विशेषरूपसे गुरुपाक और बलवृद्धिकारक है। मोदक द्रव्य अति दुर्जर अर्थात् सहजमें जीर्ण नहीं होता। मट्ठा या जीरा मिला हुआ मट्ठा—रुचि, अग्नि और स्वरका हितकर, पित्त और वायुनाशक, गुरुपाक तथा बलवृद्धिकारक। विस्यन्दन अर्थात् पक्का गोधूम चूर्ण घृत और दुग्धके साथ प्रस्तुत खाद्य—सुगन्धि, सुगन्धा, मधुर, स्निग्ध, कफकर, गुरुपाक, वायुनाशक, तृप्ति और बलकर। गोधूम चूर्ण द्वारा प्रस्तुत भक्ष्य द्रव्य—बृंहण, वायु और पित्तनाशक तथा बलकर; इनमेंसे फेनक अर्थात् गुड़मिश्रित खाद्य द्रव्य अतिशय मुखप्रिय हितकारक और लघुपाक है। मुद्ग प्रभृति वेसवार - विष्टम्भी और वेसवार मांसके साथ होनेसे गुरुपाक और बृंहण। पालल अर्थात् तिल गुड़ादि द्वारा प्रस्तुत पिष्टक श्लेष्मजनक, शंकुलि, कफ और पित्तका प्रकोपकर, विदाही और अतिशय गुरुपाक। वैदल (पिष्टक-भेद)—लघुपाक, कषायरसविशिष्ट एवं वायुसञ्चारक; उरद मसाला पिष्टक विष्टम्भी, पित्तगुणविशिष्ट, श्लेष्मनाशक, मलवृद्धिकर, बल और शुक्रवर्द्धक तथा गुरुपाक। कुर्चिका अर्थात् दुग्ध विकारजात खाद्यद्रव्य-गुरुपाक और नातिपित्तकर। घृतपक्व खाद्यद्रव्य—हृद्य, सुगन्धी, शुक्रवर्द्धक, लघुपाक, पित्त और वायुनाशक, बलकर, वर्ण और दृष्टिका प्रसन्नताकारक। तैलपक्व खाद्यद्रव्य—विदाही, गुरुपाक, परिपाकमें कटुरसविशिष्ट, वायु और दृष्टिनाशक, पित्तकर और त्वक्का दोषनाशक। फल, मांस, चीनी, तिल और उरद द्वारा प्रस्तुत तैल संस्कृत भक्ष्य द्रव्य—बलकर, गुरुपाक, बृंहण, हृद्य और प्रिय। खर भक्ष्यद्रव्य—अतिशय लघुपाक, किलाट (छेना) आदि दुग्धविकार और कफवर्द्धनकर। कुल्माष अर्थात् अल्पसिद्ध यव गोधूमादि वातकर, रूक्ष, गुरुपाक और मलका हितकर; भृष्टयव और गोधूमादिका मण्ड उदावर्त्तरोगनाशक और कास, पीनस तथा मेहनिषेधक। यव प्रभृतिका सत्तू—बृंहण, हृद्य, तृष्णा, पित्त और कफनाशक, बलकर, भेदक और वायुनाशक। यह सत्तू तरल और पिण्डाकृति होनेसे गुरुपाक तथा कठिन होनेसे लघुपाक होता है। सत्तका अवलेह मृदुता प्रयुक्त बहुत जल्द पचता है। लाज (खील)—सर्दी और अतिसारनाशक, अग्निकर, कफनाशक, बलकर, कषाय और मधुररसविशिष्ट, लघुपाक, तृष्णा और मलनाशक। लाज या खीलका सत्तू—तृष्णा, सर्दी, दाह, घर्म रक्तपित्त और ज्वरनाशक। पृथुक—गुरुपाक, स्निग्ध, बृंहण और कफवर्द्धनकर। दुग्धमिश्रित पृथुक—बलकर, वायुनाशक और मलभेदक। नूतन तण्डुल—अतिशय दुर्जर, मधुररसविशिष्ट और बृंहण, पुरातन तण्डुल—भग्नसन्धानकर और मेदनाशक माना जाता है। चिकित्सक को चाहिये, कि वे भक्ष्यद्रव्यका इस प्रकार गुणागुण स्थिर करके भोक्ताके इच्छानुसार भक्ष्यद्रव्य निर्देश कर दे। (सुश्रुत सूत्रस्था० ४६ अ०)

भक्ष्यकार (सं० त्रि०) भक्ष्य भक्ष्यद्रव्य करोतीति कृ (कर्मण्यण्। पा ३।२।१) इति अण्। पिष्टकविक्रय जीवी, हलवाई। पर्याय—आपूपिक, कान्दविक पूपिक, पूपविक्रयी, मोदकादिविक्रयी। (शब्दरत्ना०)

भक्ष्याभक्ष्य (सं० क्ली०) भक्ष्यमभक्ष्यञ्च। खाद्याखाद्य द्रव्य, खाद्य और अखाद्य।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें भक्ष्याभक्ष्यका इस प्रकार विवरण लिखा है,—

लौहपात्रमें पय, गव्य, मिष्टान्न, मधु, गुड़, नारियल का जल, फल और मूल अभक्ष्य है। ताम्रपात्र, कदलीपत्र, कांस्यपात्रमें नारिकेलोदक, ताम्रपात्रमें मधु और गव्य अभक्ष्य है किन्तु घृत भक्ष्य है। ताम्रपात्रमें पय पान, उच्छिष्ट घृत भोजन, सलवण दुग्ध मधुमिश्रित घृत या तैल और गुड़युक्त आर्द्रक, पात्रोत्थ जल, माघमासमें मूलक अभक्ष्य है। [illegible]ताल, प्रतिपद्में कूष्माण्ड, द्वितीयामें बृहती, तृतीया और चतुर्थीमें मूलक, पञ्चमीमें बिल्व, षष्ठीमें निम्ब, सप्तमीमें ताल, अष्टमीमें नारिकेल, नवमीमें तुम्बी, दशमीमें कलम्बी, एकादशीमें शिम्बा, द्वादशीमें पूतिका, त्रयोदशीमें वार्त्ताकु, चतुर्दशीमें माष, पूर्णिमा और अमावस्यामें मांस तथा रविवारको आर्द्रक अभक्ष्य है। ब्राह्मणोंके लिये हविष्यान्न भक्ष्य है। भक्ष्याभक्ष्यका विषय ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ब्रह्मखण्डके २७वें अध्यायमें

और कृष्णजन्मखण्डके ८७वें अध्यायमें सविस्तार लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यह कुछ नहीं लिखा गया।

मक्षालाबु (स० स्त्री०) भक्ष्या भक्षार्हा अलाबुः। बड़ा कद्दू।

भखना (हिं० क्रि०) १ भोजन करना, खाना। २ निगलना।

भर्वा (हिं० स्त्री०) दलदलोंमें होनेवाली एक प्रकारकी घास। यह छप्पर छाने और टट्टियां बनानेके काममें आती है। नैनीतालमें इस प्रकारकी घास बहुत पाई जाती है। इसके फलमें नारंगीकी सी महक होती है। पकने पर यह घास लाल रंगकी हो जाती है। इसे चौपाए बड़े चावसे खाते हैं। इसका दूसरा नाम 'पनी' भी है।

भग (स० पु० क्लो०) भज्यतेऽनेनास्मिन् वेति एतद्वाभित्येव भजप सेवने इति भाव। भज सेवायां (पुंसि संज्ञायां घ प्रायेण। पा ३।३।११८) इति घ। १ स्त्री चिह्न, योनि। पर्याय—वराङ्ग उपस्थ, स्मरमन्दिर, रतिगृह, जन्मवर्त्म, अधर, अवाच्यदेश, प्रकृति, अपथ, स्मरकूप अप्रदेश पुष्पी, संसारमार्ग, गुह्य, स्मरागार, स्मरध्वज, रत्यङ्ग, रतिकुहर, कलत्र, अध। (शब्दरत्नावली)

भगशब्दसे लिङ्ग और योनि दोनोंका ही बोध होता है।

> भगान्यवनी भगो महा, भगन्त्यस्मिनिति भग यानि।
> (भावप्र० मध्यम०)

रतिमञ्जरीमें विस्तीर्ण और गम्भीर इन दो प्रकारके भगोंका उल्लेख है—

> 'विस्तार्णश्च गभीरश्च द्विविधं भगलक्षणम्।'' (रतिम०)

कूर्मपृष्ठ, गजस्कन्ध, पद्मगन्ध अथवा सुकोमल, अश्लोमल, और सुविस्तीर्ण ये पांच प्रकारके भग उत्तम हैं।

> ''कूर्मपृष्ठं गजस्कन्धं पद्मगन्धं सुकोमलम्।
> अकामलं सुविस्तीर्णं पञ्चैव च भगाःशुभाः॥'' (रतिम०)

शीतल, निम्न, अत्युष्ण और गोजिह्वा सदृश भग निन्दित बतलाया गया है।

> ''शीतलं निम्नमत्युष्णं गोजिह्वासदृशं परम्।
> इत्युक्तं कामशास्त्रे भगदोषस्तुदुष्टकम्॥ (रतिम०)

भगके शुभाशुभ लक्षणादि सामुद्रिकमें इस प्रकार लिखा है—

कच्छप पृष्ठके जैसा विस्तृत और हस्ती स्कन्धके जैसा उन्नत भग ही स्त्रियोंके लिये मङ्गलदायक है। भगका वाम भाग उन्नत होनेसे कन्या और दक्षिण भाग उन्नत होनेसे पुत्र जन्म लेता है। जो भग दृढ़, अवयवमें विस्तृत, परिमाणमें वृहत् और उन्नत होता है, जिसका ऊपरी भाग मूषिक नाकवत् विरल लोमयुक्त, मध्यभागमें अपराजित, दोनों पार्श्वमें मिलित प्राय, गठन और वर्णमें कमलदलके सदृश, क्रमशः अधोदिक सूक्ष्म और सुन्दर तथा जो आकृतिमें पीपलके पत्तेके जैसा तिकोना होता है, वही भग मङ्गलप्रद और प्रशस्त है। जो भग हरिणके खुरकी तरह, अल्पायत चूल्हेमें भीतरी भागके जैसा गह्वरविशिष्ट, लोमपूर्ण और जो मध्यभागमें प्रकाशित तथा अनावृतप्राय है यह भग अशुभदायक माना गया है। इस प्रकार योनिविशिष्ट स्त्रीका गर्भ अकसर नष्ट हुआ करता है*।

(पु०) भज्यते इति घ। २ रवि, सूर्य। ३ द्वादशादित्य भेद, बारह आदित्योंमेंसे एक। ४ ऐश्वर्यादि षट्क, छः प्रकारकी विभूतियां जिन्हें सम्यक् ऐश्वर्य, सम्यक वीर्य, सम्यक् यश, सम्यक्श्रिय और सम्यक् ज्ञान कहते हैं। ५ भोगास्पदरत्न। ६ सूर्यमण्डलाभिमानी। (रामायण ३।१४।१८) ७ इच्छा। ८ माहात्म्य। ९ यत्न। १० धर्म। ११ मोक्ष। १२ सौभाग्य। १३ कान्ति। १४ चन्द्र। १५ ज्योतिषोक्तयोनि नक्षत्रदैवत पूर्वफल्गुनीनक्षत्र। १६ धन। १७ पद। १८ गुह्यदेश गुदा। १९ एक देवताका नाम। पुराणानुसार वृक्षके यज्ञमें वीरभद्रने इनकी आंख फोड़ दी थी। (क्लि०) २० अमनीय।

> * ''शुभः कमठपृष्ठाभो गजस्कन्धोपमा भगः।
> वामोन्नतेन्तु कन्याच पुत्रो दक्षिणोन्नत॥
> आखुरोमा गूढ़मणिः सुश्लिष्टः संहतः पृथु।
> तुङ्गः कमलवर्णोभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः॥
> कुरङ्गखुररूपो यश्चुल्लिकोदरसन्निभः।
> रोमशो विवृतास्यश्च गम्भीरश्चाशुभो भगः॥''
> (भविष्य सामुद्रिक)

भगघ्न (सं० पु०) भगं तन्नेत्रं हन्ति हन्-टक्। महादेव। दक्षयज्ञमें रुद्रने भगकी आँखें फोड़ दी थीं, इसीसे इनका नाम भगघ्न पड़ा है।

"नमस्ते त्रिपुरघ्नाय भगघ्नाय नमोऽस्तु ते।"

(भारत ७।२०२ अ०)

भगण (सं० पु०) भानां नक्षत्राणां गणः समूहः। १ नक्षत्रसमूह। किसी ग्रहके एक बार बारह राशि भ्रमण करनेका नाम एक भगण है अर्थात् किसी ग्रहके मेषादि बारह राशियोंका अतिक्रम करनेमें जो समय लगता है, उसीको भगण कहते हैं। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है, कि साठ विकलाकी एक कला, साठ कलाका एक अंश, तीस अंशकी एक राशि और बारह राशिका एक भगण होता है।

"विकलानां कला षष्ट्या तत्षष्ट्या भाग उच्यते।
तत्त्रिंशता भवेद्राशिर्भगणो द्वादशैव ते॥" (सूर्यसि०)

इस प्रकार एक एक ग्रह सभी नक्षत्रोंमें रह कर बारह राशिका भोग करता है। नक्षत्रमें भोग होनेके कारण उसका नाम भगण पड़ा है।

"शीघ्रगस्तान्यथाल्पेन कालेन महताल्पगः।
तेषान्तु परिवर्तेन पौष्णान्ते भगणः स्मृतः॥" (सूर्यसि०)

महार्णवमें इस प्रकार लिखा है,—पहले देशान्तर स्थिर करके, पीछे भगणका निरूपण करना आवश्यक है। सुमेरु पर्वत और लङ्काकी मध्यगत भूमिके ऊपर हो कर उत्तरदक्षिण विस्तीर्ण जो एक रेखा कल्पित हुई है, उसका नाम मध्यरेखा है। उस मध्यरेखासे अपना देश जितना योजन दूर होगा उतने योजनको दशसे गुणा करके तेरहसे भाग दो। भागफल जो निकलेगा वही पल होगा। यह पल यदि ६०से अधिक हो, तो उसे दण्डमें ला कर मध्य रेखाके पूर्वदेशमें जोड़ो और मध्यरेखाके पश्चिमदेशमें घटाओ।

विषुव दिनका अहोरात्र ६० दण्डसे जितना अधिक होगा उसे धन चरार्द्ध और जितना न्यून होगा, उसे ऋण चरार्द्ध कहते हैं। धनचरार्द्ध जितना होगा, उसे विषुवसंक्रान्तिके वारादिमें योग और ऋणचरार्द्धको वियोग करना होगा। वैसा करनेसे चरार्द्ध संस्कृत विषुवध्रुव निकल आयेगा। जिस वारमें जितने दण्ड समयमें विषुवध्रुव होगा, उस समय सूर्य मेषमें जावेंगे। इस प्रकार सूर्य बारह महीनोंमें एक एक करके मेषादि बारह राशियोंका भोग करते हैं। इन बारह राशियोंका भोग करनेसे एक भगण होता है।

चतुर्युगमें सूर्य, बुध और शुक्रका मध्य (ग्रहोंकी यथार्थ गतिका नाम मध्य है) तथा मङ्गल, शनि और बृहस्पतिका शीघ्र ४३२०००० भगण, चन्द्रका ५७७५३३३६ भगण, चन्द्रकेन्द्रका मध्य ५७२६५१३३ भगण है। मङ्गलका मध्य २२९६८३२ भगण है। बुधका शीघ्र १७९३७०६०, बृहस्पतिका मध्य ३६४२२० भगण, शुक्रका शीघ्र ७०२२३७६ भगण, शनिका मध्य १४६५६८ भगण और राहुका मध्य २३२२३८ भगण है।

ग्रहोंके मध्य भगण और शीघ्र भगण जो ऊपर बतलाये गये हैं, उन्हें कल्पाब्दसे गुणा करके तैंतालीस लाख बीस हजारसे भाग दो, भागफल भगण होगा। भागशेषको १२ से गुणा करके उक्त भाजक द्वारा भाग देनेसे जो लब्धि होगी वह राशि और भागशेषको ३० से गुणा करके भाजक द्वारा भाग देनेसे अंश; फिर शेषको ६०से गुणा करके भाजक अङ्क द्वारा भाग देनेसे लब्धि कला होगी। पीछे इसी प्रकार प्रक्रिया द्वारा विकलादि भी निकाली जायेंगी। इस लब्धिमें भगणका त्याग करना होगा। अनन्तर राश्यादिमें अपना अपना मध्य, शीघ्र, क्षेपाङ्क जोड़नेसे जिस समय सूर्य मेषराशिमें जायेंगे, उस समयका मध्य शीघ्र होगा।

लब्ध शीघ्र क्षेपाङ्कको स्वीय शीघ्रमें जोड़नेसे स्वीय शीघ्र होगा। क्षेपाङ्क राश्यादि—रविका मध्य ११।२७।५१।४१।०, चन्द्रका मध्य ११।११।२४।३३।२२, चन्द्रकेन्द्रका मध्य ८।१।३६।३।२४, मङ्गलका मध्य ११।२८।११।४३।२८, बुधका शीघ्र ११।२१।७।१२।४८, बृहस्पतिका मध्य ११।२१।४३।१०।२६, शुक्रका शीघ्र ११।२४।३३।२४।१४, शनिका मध्य ११।२३।५७।२८।४६, राहुका मध्य ५।२६।२३।६।३७ इस क्षेपाङ्कका योग करनेसे सूर्य जिस समय मेषराशिमें आयेंगे उस समयका मध्य होगा।

जिस वर्षके जिस दिनके जिस समयका मध्य लाना होगा, पहले उस वर्षके विषुवदिनका मध्य स्थिर कर विषुवदिनसे वह अभीष्ट दिन गत्य जितना होगा उसे

ग्रहोंके अपने अपने भगण द्वारा गुणा करके उस युदिन अर्थात् चतुर्युग परिमित दिन १५७७९१७८२८ अङ्क द्वारा भाग देनेसे जो भागफल होगा, वही भगण है। पीछे ऊपर बताये गये नियमसे राश्यादि निकाल कर भगणको अलग कर दो और राश्यादिको पूर्वाङ्कमें जोड़नेसे विषुव दिनके जितने दण्डादिमें सूर्य मेषराशिमें गये हैं, उस दिनके भी उतने दण्डादिका मध्य होगा ●।

ग्रहस्फुट और ग्रहणादि गणनामें भगण स्थिर करके गणना करनी होती है। (ग्रहार्णव) राशिचक्र देखो।

२ छन्द शास्त्रानुसार एक गण। इसमें आदिका एक वर्ण गुरु और अन्तके दो वर्ण लघु होते हैं।

भगत (हिं० वि०) १ सेवक, उपासक। २ साधु। ३ जो मांस आदि न खाता हो, सरटका उलटा। ४ विचारवान्। (पु०) ५ वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो। ६ भूत प्रेत उतारनेवाला पुरुष, ओझा। ७ वेश्याके साथ तबला आदि बजानेका काम करनेवाला पुरुष, सफरदाई। ८ राजपूतानेकी एक जातिका नाम। इस जातिकी कन्याएं वेश्यावृत्ति और नाचने गानेका काम करती हैं। विशेष विवरण भगतिया शब्दमें देखो। ९ होलीका वह स्वांग जो भगतका किया जाता है। स्वांगमें एक आदमी सफेद बालोंकी दाढ़ी मोंछ लगाता और सिर पर तिलक, गलेमें तुलसी या किसी और काठकी माला पहनता है। सारे शरीरमें वह राख लगा कर हाथमें एक तूंबी और सोंटा ले लेता है। इस प्रकार अपनेको सजा कर यह स्वांगी जोगीड़ेमें नाचनेवाले लौंडेके साथ मिल जाता है और बीच बीचमें नाचता और भांड़ोंकी तरह मसखरापन करता जाता है।

---

● "युग रदुग्णशुष्काश्या मधुपुत्करदायोश।
शुक्रार्किगुरुलीमाया भगणा पूर्वयायिनाम्॥
इन्दो रवाग्निरिनेषु सतभूपमाय या।
सप्तैकेन्द्रद्विरागैर [illegible]॥
कुजस्य दन्तागाव्'कन्यानागनदस्रका।
बुध [illegible]॥" इत्यादि।
(ग्रहार्णव ६, ७, ८)

भगतिया (हिं० पु०) राजपूतानेकी एक जातिका नाम। इस जातिके लोग वैष्णव साधुओंकी सन्तान हैं जो अब गाने बजानेका काम करते हैं। इस जातिकी कन्याएं वेश्यावृत्ति करके अपने कुटुम्बका भरण-पोषण करती हैं और भगतिन कहलाती हैं।

भगदत्त (सं० पु०) भगमैश्वर्यं दत्तं यस्मै इति। १ नरकराजके ज्येष्ठ पुत्र। ये प्राग्ज्योतिषपुरके राजा थे।

भगवान् श्रीकृष्णने नरकको मार कर इन्हें राजा बनाया था। राजसूययज्ञके समय अर्जुनके साथ इनका आठ दिन युद्ध हुआ था। पीछे इन्होंने युधिष्ठिरकी वश्यता स्वीकार की थी। इनके साथ राजाका अच्छा सद्भाव था। महाभारत युद्धमें ये कौरवोंकी ओर थे। युद्धस्थलमें इन्होंने विराट, भीम, अभिमन्यु, घटोत्कच और अर्जुन आदिके साथ लड़ कर वीरताकी पराकाष्ठा दिखलाई थी। द्रोणने जब दुर्योधनका सेनापति होना मंजूर किया, तब एक दिन भीमके साथ इनका युद्ध आरम्भ हुआ। उस दिन कुछ समय तक युद्ध करनेके बाद सामने अद्भुतकारिविद्याप्रभावसे अपने गज शरीरमें लीन हो गजको यन्त्रणा देना शुरू किया। इधर पाण्डव सेनाने, भीम मारे गये हैं ऐसा जान कर भगदत्तके साथ युद्ध ठान दिया। पीछे युधिष्ठिर, सात्यकि, अभिमन्यु आदिके साथ भी इनका तुमुल संग्राम हुआ। युद्धमें सैकड़ों सेना निहत हो रही है, यह देख कर महावीर अर्जुनने युद्धमें प्रवेश किया। उस समय दुर्योधन और कर्ण दोनों ओरसे अर्जुन पर टूट पड़े। अर्जुनने थोड़े ही समयके अन्दर उन्हें परास्त कर भगदत्त पर आक्रमण किया। भगदत्तने अर्जुन पर जब वैष्णवास्त्र फेंका, तब श्रीकृष्णने उसे अपने वक्षमें धारण कर लिया। पीछे बड़ी वीरताके साथ लड़ कर ये अर्जुनके हाथसे मारे गये। (शान्तिपर्व० ३६ अ०, भारत सभा और द्रोणपर्व०)

२ एक राजा। ये गौड़, पौण्ड्र, कलिङ्ग और कोशल राज्यके अधिपति थे।

भगदर (हिं० स्त्री०) भगदड़, बहुत से लोगोंका किसी कारणसे एक ओर व्याकुल हो कर भागना।

भगनहा (हिं० पु०) बरेदका नामक कटीली बेल। छ्यदका देखो।

भगना (हिं० पु०) बहिनका लड़का, भानजा।
भगनी (हिं० स्त्री०) भगिनी देखो।
भगांधन (हिं० पु०) भगन्दरका नामान्तर।
भगन्दर (सं० पु०) भगं गुदगुह्यस्थानं दारयतीति दृ-णिच् (पृः सर्वयोर्दारिसहोः । पा ३।२।४१) इत्यत्र 'भगे च दारेरिति वक्तव्यम्' इति काशिकोक्तेः खच् (खरि ह्रस्वः । पा ६।४।९४) इति ह्रस्व मुमच। भगन्दरसंज्ञक व्रणरोग विशेष, एक रोगका नाम।

वैद्यकशास्त्रमें इस रोगके निदान और चिकित्सादि का विषय इस प्रकार लिखा है—

गुह्यदेशके दो अंगुल परिमित पार्श्ववर्ती स्थानमें नाडि व्रणकी भांतिका जो क्षत उत्पन्न होता है, उसे भगन्दर कहते हैं। कुपित वातादिदोष प्रथमतः उस स्थानमें एक व्रणशोथ उत्पन्न करता है, बादमें उसके पक कर फूट जाने पर वहांसे सुर्ख रंगका फेन और पीब आदि निकलने लगते हैं। क्षत अधिक होनेसे वहांसे मल और मूत्रादि भी निकला करता है। गुह्यदेशमें किसी प्रकारका क्षत हो कर पक जाय, तो उसे भी भगन्दर रूपमें परिणत होते देखा गया है। सुश्रुतके पढ़नेसे मालूम होता है कि, वात, पित्त, कफ, सन्निपात और आगन्तु इन पांच कारणोंसे शतपोनक, उष्ट्रग्रीव, परिस्रावी, शम्बूकावर्त्त और उन्मार्गी ये पांच प्रकारके भगन्दररोग उत्पन्न होते हैं। भग, मलद्वार और वस्तिदेशका विदारण करता है, इस लिए इसका नाम भगन्दर पड़ा है। भगद्वारमें जो व्रण होता है, वह नहीं पका तो 'पीड़का' और पक गया तो 'भगन्दर' कहलाता है। कटि और कपालमें वेदना तथा मलद्वारमें कण्डु, दाह और शोथ ये भगन्दरके पूर्व लक्षण हैं।

शतपोनक भगन्दरके लक्षण—अपथ्य सेवनशील वायु कुपित हो कर मलद्वारके चारों तरफ एक या दो अंगुलि प्रमाण स्थानके मांस और शोणितको दूषित कर रक्तवर्णकी पीड़का उत्पन्न करता है। उसके द्वारा मलद्वारमें तोद आदि यातनाएं होती हैं। शीघ्र ही इसका प्रतीकार न किया जाय, तो वह पक जाती है। मूत्राशयके साथ संयोग रहनेसे व्रण क्लेद युक्त तथा शतपोनकका अति छोटे छोटे छिद्रोंसे व्रण परिपूर्ण हो जाता है। उस समय उन छिद्रोंसे फेनयुक्त लगातार आस्राव निकलता रहता है और चुनचुनाहट मालूम पड़ती है। पीछे मलद्वार विदीर्ण होने पर उन छिद्रोंसे वात, मूत्र, पुरीष और रेत निःसृत होता रहता है।

उष्ट्रग्रीव भगन्दरके लक्षण—पित्त कुपित और वायु द्वारा अधोभागमें सञ्चालित हो कर पूर्वकी भांति मलद्वारमें अवस्थित रह कर रक्तवर्ण, सूक्ष्म, उन्नत और उष्ट्रग्रीवा सदृश पीड़का उत्पन्न होती है। उसमें उष्णता, दाह आदिकी वेदना होती और प्रतीकार न करनेसे पक जाती है। उस व्रणमें अग्नि और क्षारसे जल जानेके जैसा दाह होता है तथा उष्ण और दुर्गन्धयुक्त आस्राव निकलता रहता है। उसका प्रतीकार न की जाय, तो वात, मूत्र, पुरीष और रेतः भी निःसृत होने लगता है।

परिस्रावी भगन्दरके लक्षण—श्लेष्मा कुपित और वायु द्वारा अधोभागमें सञ्चालित हो कर पूर्ववत् गुह्यदेशमें अवस्थान पूर्वक शुक्लवर्ण कण्डुयुक्त पीड़का उत्पन्न करता है। प्रतीकार न करनेसे पक जाती है। पहले व्रण कठिन और कण्डुयुक्त होता है, पीछे उससे अधिकतासे पिच्छिल आस्राव निकलता है। ऐसी अवस्थामें लापरवाही करनेसे व्रणसे वात, मूत्र, पुरीष और रेतका निकलना आरम्भ हो जाता है। इसे परिस्रावी भगन्दर कह सकते हैं।

शम्बूकावर्त्त भगन्दर—वायु कुपित हो कर कुपित पित्त और श्लेष्माको ले कर अधोभागमें जाती है और वहां पूर्ववत् अवस्थित रह कर पादांगुष्ठ परिमित विविध प्रकार लक्षणविशिष्ट पीड़का उत्पन्न करती है। उसमें तोद, दाह और कण्डु आदि पीड़ा होती है। उपयुक्त प्रतीकार नहीं करनेसे पक जाती है और व्रणसे नाना वर्णका आस्राव निकला करता है।

उन्मार्गी भगन्दर—मांस लोलुप व्यक्ति यदि अन्नके साथ अस्थिखण्डको भी खा जाय, तो वह मलके साथ मिश्रित हो कर अपानवायु द्वारा अधोभागमें सञ्चालित होता और निकलते समय मलद्वारको क्षत उत्पन्न करता है। आर्द्र भूमिमें जैसी कृमि होती है उसी तरहकी कृमि उस क्षतस्थानमें हो जाती है। कृमियां मलद्वारके पार्श्व

पर्दी स्थानको गला कर विदीर्ण कर देती है। उन गलाये हुए छेदोंसे क्रमशः वात, मूत्र, पुरीष और रेत निःसृत होते हैं। इसे उन्मार्गी भगन्दर कहते हैं।

सभी प्रकारके भगन्दर अत्यन्त यन्त्रणादायक और कष्टसाध्य होते हैं। जिस भगन्दरमेंसे अधोवायु, मल, मूत्र और कृमि निकलना शुरू हो गया हो, उससे फिर रोगीके बचनेकी कोई आशा नहीं। जो भगन्दर पहले स्तनकी भाँति उन्नत हो कर उत्पन्न होता है और बादमें विदीर्ण होने पर नदीके आवर्त्तकी भाँति आकार धारण करता है उसे असाध्य समझना चाहिए।

वायु निर्गमन स्थानमें जो कुछ कुछ उपद्रव और शोफ विशिष्ट रोग उत्पन्न हो कर शीघ्र ही उपशमित हो जाते हैं, उनका नाम 'पीड़का' है। पीड़का भगन्दरसे भिन्न है। जिस पीड़कासे भगन्दर हो जाता है, वह इससे विपरीत है। जिस पीड़कासे भगन्दर होता है, वह पायुके दो अंगुल प्रमाण स्थानमें उत्पन्न होता है। वह गूढ़मूल, वेदना और ज्वरविशिष्ट हुआ करता है। किसी सवारीमें बैठ कर जाते समय या मलत्याग करते समय पायुदेशमें कण्डू, वेदना, दाह, शोफ और कटिमें वेदना होना भगन्दरके पूर्वलक्षण हैं। सभी प्रकारके भगन्दरमें घोर दुःख होता है। उनमें भी त्रिदोष और क्षतजन्य भगन्दर असाध्य है। (सुश्रुत निदानस्था० ४ अ०)

भावप्रकाशमें इस रोगके उत्पत्तिका कारण और चिकित्साप्रकरण तथा पूर्वरूप और लक्षण इस प्रकार लिखा है—भगन्दर होनेसे पहले कटीकपालमें सूचीविद्धवत् वेदनादि तथा गुह्यमें दाह, कण्डु और वेदनादि उपस्थित हुआ करती है। गुह्यके एक पार्श्वमें दो अंगुलि परिमित स्थान पर वेदनान्वित पीड़का हो कर फट जाने पर उसे भगन्दर कहते हैं। यह भगन्दर पाँच प्रकारका होता है—वातज, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक और शल्यज। वातजन्यको शतपोनक भगन्दर, पित्तजन्यको उष्ट्रग्रीव भगन्दर, श्लेष्मजको परिस्रावी भगन्दर, सन्निपातजको शम्बूक भगन्दर और शल्यजको उन्मार्गी भगन्दर कहते हैं। इनके लक्षण सुश्रुतोक्त भगन्दरोंके सदृश हैं। गुह्यदेशमें कण्टकादि द्वारा या नख द्वारा क्षत हो कर जो शोथ उत्पन्न होता है, उपेक्षाहेतु उसकी चिकित्सा न करनेसे क्रमशः वह बढ़ता जाता है और उसमें कृमि उत्पन्न हो जाते हैं। ये कृमि मांसको विदार कर छिद्रविशिष्ट और व्रण उत्पन्न कर देते हैं जिससे उन्मार्गी भगन्दर हो जाता है।

भगन्दररोग मात्र ही अति भयङ्कर अतिकष्टसाध्य है। उसमें सन्निपातज और क्षतज भगन्दर सर्वप्रकारसे असाध्य है। जिस भगन्दरसे मूत्र, पुरीष, शुक्र और कृमि निकलते हों, उसे भी असाध्य समझना चाहिए।

इसकी चिकित्सा गुह्यदेशमें पीड़का होनेसे बड़े यत्नके साथ उसकी चिकित्सा करनी चाहिए। वह पीड़का जिससे पकने न पावे, वैसा प्रयत्न करना ठीक है तथा जिससे अधिकतासे रक्तस्राव न हो, यह भी करना आवश्यक है।

वटपत्र, इष्टक, सोंठ, गुरुच और पुनर्णवा पीस कर उसका पीड़कावस्थामें गला कर लेप करनेसे भगन्दररोग नष्ट होता है। पीड़काकी अपक्वावस्थामें प्रथमतः अति तर्पण, पीछे क्रमशः विरेचन पर्यन्त एकादश क्रियाएँ करनी चाहिए। विरेचनादि क्रियाओंका विवरण 'व्रण' शब्दमें देखो।

उस पीड़काके भिन्न या फट जाने पर एषणी द्वारा नाड़ीका अन्वेषण, छेदन, क्षारप्रयोग और अग्निकर्म आदि क्रियाएँ करके दोषानुसार विवेचना पूर्वक व्रणकी भाँति चिकित्सा करनी चाहिए। तिल, त्रिवृत और यष्टिमधु, इनका समभागमें दूधके साथ पीस कर शीतल प्रलेप देनेसे सरक्त वेदना युक्त भगन्दर नष्ट होता है। जातीपत्र, वटपत्र, गुरुच, सोंठ और सैन्धव इनको तक्रके साथ पीस कर प्रलेप करनेसे भगन्दर शीघ्र ही प्रशमित होता है। त्रिवृत्, तिल, नागदन्ती, और मजीठ इनको पीस कर घी, मधु और सैन्धवके साथ प्रलेप करनेसे भगन्दररोग जाता रहता है। खदिरकाष्ठका क्वाथ, त्रिफला, गुग्गुल या विडङ्गका क्वाथ पानेसे भी दुष्ट भगन्दर अच्छा हो जाता है। न्यग्रोधादिगणका क्वाथ और उसके कल्कके साथ तैल या घृत पाक करके सेवन करनेसे भी यह रोग प्रशमित होता है। तिल, लता, फिटकरी, कूट, चित्रकाङ्कुला, हापरमाला, मोथा, निसोथ और दन्ती इनका प्रलेप भी फायदेमन्द है। इस रोगके शोधन और रोपणार्थ तिल, हरितकी, लोध, निम्बपत्र, हरिद्रा, दारु

हरिद्रा, बेटेला लोध तथा गृहधूम इनका प्रयोग भी करते हैं। गौर या सरसबके गोंदके साथ क्षारादिके चूर्णको पाक करके उससे वत्ति बना कर शोथमें प्रविष्ट करानेसे भगन्दर या सर्वशरीरका शोथ निवारित होता है, तथा सिरप्पोंके काथके साथ त्रिफलादिकको घोल कर प्रलेप देनेसे भी भगन्दर आरोग्य हो जाता है। विडङ्गसार, त्रिफला, छोटी रसायनी और पिप्पलीचूर्ण इनको मधु और तेलके साथ चाटनेसे भगन्दर शीघ्र ही प्रशमित होता है। इसके सिवा विष्यन्दन तैल, निशाद्य तैल, करवीरादि तैल और नवकार्षिक गुग्गुल आदि औषध भी विशेष उपकारक है।

शतपोनक भगन्दरमें नाड़ीके बाहर क्षत करके दूषित रक्तको निकाल देना चाहिए। पीछे उस क्षतके भर जाने पर नाड़ीव्रणकी भांति चिकित्सा करना उचित है। बहु छिद्रविशिष्ट शतपोनकरोगमें चिकित्साकी विवेचना पूर्वक अर्द्धलाङ्गलक, लाङ्गलक, सर्वतोभद्रक या गोतीर्थक छेदन करना चाहिए। मलद्वारके दोनों ओर समान छेदन करनेको लाङ्गलक छेदन और एक तरफ ह्रस्वछेदन करनेको अर्द्ध लाङ्गलक छेदन कहते हैं। सेवनीका परित्याग पूर्वक गुह्यद्वारको चार खण्डोंमें छेदन करना सो सर्वतोभद्रक छेद है। सब छिद्रमार्गकी तरफ न करके बगलसे छेदन करना गोतीर्थक छेद है। शतपोनकरोगमें पूयादि स्रावके सभी मुखोंको अग्निकर्म द्वारा दग्ध करना चाहिए।

उष्ट्रग्रीव भगन्दररोगमें शोथके बीचमें एषणी प्रविष्ट करके छेदन किया जाता है। पीछे उसमें क्षार प्रयोग तथा पूतिमांस निवारणार्थ अग्निकर्म भी हितकर है। स्रावमार्गको शस्त्रसे छेद कर क्षार या अग्निकर्म द्वारा दग्ध करना चाहिए। शोथका अन्वेषण करके शस्त्र द्वारा छेदन करना उचित है। छेदनके लिए खर्जूर पत्रिक, अर्द्धचन्द्र, चन्द्रचक्र, सूचीमुख और अवाङ्मुख शस्त्रोंका प्रयोग हितकर है। छेदनके बाद अग्नि या क्षार द्वारा दग्ध करना चाहिए।

शस्त्रप्रयोग द्वारा यदि अत्यन्त वेदना उपस्थित हो तो कुछ गरम तेलका परिषेक करना ... भगन्दरमें बगलके साथ शोथको छेदन

अग्निप्रयोग या क्षार ... द्वारा दग्ध करना उचित है। भगन्दर रोगी आरोग्य होने पर भी एक वर्ष तक उसे व्यायाम, स्त्री गमन, युद्ध, हस्त्यादि पर आरोहण और गुरुद्रव्य भोजन त्याग देना चाहिए।

(भावप्र० भगन्दर रोगाधि०)

सुश्रुतमें भी भगन्दररोगकी चिकित्सा प्रणाली लिखी है। इन पांच प्रकारके भगन्दरोंमें शम्बूकावर्त्त और शल्यज भगन्दर ही असाध्य हैं। अवशिष्ट तीन कष्टसाध्य हैं। भगन्दर होने पर अपक्व अवस्थामें रोगीको अपतर्पणसे ले कर विरेचन पर्यन्त एकादश प्रकार प्रतिकार करना विधेय है। पीड़का पक जाने पर स्नेह मर्दन और अवगाहन करना उचित है। स्नेह या क्वाथ आदि किसी प्रकार तरल पदार्थमें शरीरको डुबो देना अवगाहन कहलाता है। पश्चात् रोगीको शय्या पर लिटा कर अर्शरोगीकी भांति यन्त्र या शाटक वस्त्रसे बांध कर भगन्दर अधोमुख है या ऊर्द्ध्वमुख है, भली भांति परीक्षापूर्वक एषणीसे उन्नत करके पूयाशय सहित छेदन कर उठा देना चाहिए। अन्तर्मुख भगन्दर होने पर रोगीको भलीभांति बांध कर प्रवाहण अर्थात् मलद्वारमें वेग देना पड़ता है। इस प्रकारकी प्रक्रियासे भगन्दरका मुख दीखने पर, यथा प्रकार पूर्वक शस्त्रपात करना उचित है। अग्नि या क्षारका प्रयोग सभी भगन्दर रोगोंमें होगा।

शतपोनक भगन्दरमें मलद्वारके बीच पहले क्षुद्र व्रणोंको छेदना चाहिए। उन घावोंके भर जाने पर फिर मलद्वारकी सूक्ष्मनाड़ीकी चिकित्सा की जाती है। जो शिराएं परस्पर सम्बद्ध हैं उनमेंसे प्रत्येकको पारी पारीसे छेदन करना उचित है। जो नाड़ियां परस्पर संबंध नहीं हैं, उन्हें भी एक साथ छेद देनेसे उनका मुख अत्यंत वृहत् हो जाता है। इसलिए उस प्रशस्त मुखसे मलमूत्र निकला करता है, तथा वायु द्वारा आटोप और मलद्वारमें पीड़ा होने लगता है। इस प्रकारके भगन्दरको मुख [redacted] करके छेदन नहीं करना चाहिए।

[redacted] भगन्दर रोगमें खार्जूर लाङ्गलक, [redacted] गोतीर्थक छेदन किया जा... [redacted] द्वारा जला देना

चाहिए। भीरु या कोमलप्रकृति व्यक्तिको शतपोनक भगन्दर होने पर आरोग्य होना दुष्कर है। इस रोग में शीघ्र ही वेदना और आस्राव नाशक स्वेदका प्रयोग करना उचित है। रसरा या पोटला स्वेद अथवा लाव, तित्तिर आदि जाङ्गल और सजलदेश पशुके मांस के सहयोगसे वृश्चादनी, एरण्ड और बिल्वादिगणका क्वाथ या चूर्ण स्नेह कुम्भमें रख कर व्रणमें स्वेद दिया जाता है। तिल, एरण्ड, तीसी, उड़द, जौ, गेहूं सरसों, नमक और अम्लवर्ग, इन सबको स्थालीमें रख कर रोगीको स्वेद दे सकते हैं। स्वेद दिये जाने के बाद कुष्ठ, नमक, वच हिंगु और अजमोदा आदि को समान भागमें घृत, द्राक्षा या अम्लरस, सुरा अथवा काञ्जीके साथ सेवन कराओ। उसके बाद व्रणमें मधुकतैल सेचन और मलद्वारमें वायुरोग नाशक तैलका परिषेचन करो। इस प्रकार प्रतीकार करनेसे मलमूत्र अपने मार्गसे निकलेंगे तथा अन्यान्य तीव्र उपद्रवोंकी भी शान्ति हो जायगी।

उष्ट्रग्रीव नामक भगन्दरमें एषणी द्वारा छेदन कर क्षार दे देना चाहिए। पश्चात् उसमेंसे पूति मांसको निकाल डालो और अग्निदग्ध करो। पूति मांसके निकल जाने पर तिल पीस कर घीके साथ उस पर प्रलेप दो और बांध कर घी परिषेचन करो। तीन दिन बाद खोलो, यदि व्रणमें कोई दोष दिखाई दे तो पहले उसका संशोधित होने पर यथाविधि रोपण करना उचित है।

परिस्रावी भगन्दरमें रसरक्तादि आस्राव होता रहे तो उसके मार्गको छेद कर क्षार या अग्नि द्वारा दग्ध करो। पीछे उसमें कुछ उष्ण अणुतैलका प्रयोग कर वमनीय औषध द्वारा अल्प परिमाणमें परिषेचन करो। इस प्रकार के प्रतीकारसे व्रण कोमल तथा वेदना और आस्राव ह्रास होने पर उसके मुखतोरणको अन्वेषण पूर्वक छेदन कर अग्नि द्वारा भली भांति दग्ध करो। खर्जूरपत्र, अर्द्धचन्द्र, चक्र, सूचीमुख और अवाङ्मुख आदिके आकार में भगन्दर छेदन किया जाता है। प्रयोजन होने पर पुनः क्षार द्वारा भी दग्ध कर सकते हैं। उसके बाद व्रण जब कोमल हो जाय तब उसका संशोधन करना चाहिए।

बालकको बाह्यमुख या अन्तर्मुख किसी भी प्रकार भगन्दर होने पर विरेचन, अग्नि, क्षार या शस्त्र हितकर नहीं है। जो औषध कोमल और तीक्ष्ण हों, उनका ही प्रयोग करना उचित है। आरग्वध हरिद्रा और नील चूर्णको मधु और घृतमें फेंट कर वत्तिराके आधारमें व्रण पर प्रयोग कर शोधन करना चाहिए। इस प्रयोगसे व्रणकी नाड़ी शीघ्र ही आरोग्य हो जाती है। आगन्तुक भगन्दरमें नाड़ी होनेसे शस्त्र द्वारा छेद कर जाम्बोष्ठ शलाका द्वारा पूर्वक अग्निवर्ण करके व्रणस्थानको दग्ध करे, तथा आवश्यक होने पर कृमिनाशक और शल्य अपनयनविधिके अनुसार कार्य करे। भ्रमणशील व्यक्ति के लिए यह रोग असाध्य है। भगन्दरमें शस्त्रपात जन्य यदि वेदना हो, तो उस पर उष्ण अणुतैल परिषेचन करना चाहिए, अथवा स्थालीमें वातघ्न औषध भर कर उसके मुखको छिद्रयुक्त ढक्कनसे ढक दे, पीछे रोगीको बिठा कर और उसके मलद्वारमें घृत लगा कर उसमें स्थालास्थ द्रव्यका उष्ण स्वेद देना चाहिए। अथवा रोगीको लिटा कर नाड़ी द्वारा वेदना शान्ति कर नाड़ी स्वेद भी दिया जा सकता है।

त्रिवृत्, वच, हिङ्गु, लवण, श्यामा, दन्ती, तिल, कुष्ठ, शतमूली, गोलोमी, गिरिकर्णिका, कासीस, काञ्चनवृक्ष और क्षीरी वर्ग, इनसे भगन्दर व्रण संशोधित किया जाता है। त्रिवृत्, तिल, नागदन्ती और मञ्जिष्ठा इनको दुग्धके साथ पीस कर मधु और सैंधव सहित प्रयोग करनेसे भगन्दर व्रणका नाश होता है। रसाञ्जन, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, मञ्जिष्ठा, निम्बपत्र, त्रिवृत् गण पिप्पली और दन्ती इनके कल्क प्रयोगसे भगन्दरका नालीव्रण आरोग्य होता है। कुष्ठ, त्रिवृत्, तिल, दन्ती, पिप्पल, सैंधव, मधु, हरिद्रा, त्रिफला और तुत्थ आदि व्रण शोधनके लिए लाभकारी हैं। पीपल, यष्टिमधु, लोध, कुन्द, इलायची, रेणुका, मजीठ, धातकी पुष्प, श्यामलता, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, प्रियङ्गु, सर्जरस, पद्मकाष्ठ, पद्मकेशर, वल्लिचूर्ण, वच, लाङ्गली, मांस और सैंधव आदिका तैल पाक करके प्रयोग करनेसे भगन्दररोग शीघ्र प्रशमित होता है। (सुश्रुत चिकि० ८ अ०)

भैषज्य रत्नावलीमें भगन्दररोगाधिकारमें सप्तविंशतिक

हरिद्रा, येङ्गेला, लोध्र तथा गृहधूम इसका प्रयोग भी कार्य कारी है। सीज या अकवनके गोंदके साथ दारुहरिद्राके चूर्णका पाक करके उससे वर्त्ति बना कर शोथमें प्रविष्ट करानेसे भगन्दर या सर्वशरीरगत शोथ निवारित होता है, तथा त्रिफलाके काथके साथ विडालास्थिको पीस कर प्रलेप देनेसे भी भगन्दर आरोग्य हो जाता है। विडङ्गसार, त्रिफला, छोटी इलायची और पिप्पलीचूर्ण इनको मधु और तेलके साथ चाटनेसे भगन्दर शीघ्र ही प्रशमित होता है। इसके सिवा विष्यन्दन तैल, निशाद्य तैल, करवीरादि तैल और नवकार्षिक गुग्गुल आदि औषध भी विशेष उपकारक हैं।

शतपोनक भगन्दरमें नाड़ीके चारों क्षत करके दूषित रक्तको निकाल देना चाहिए। पीछे उस क्षतके भर जाने पर नाड़ीव्रणकी भांति चिकित्सा करना उचित है। बहु छिद्रविशिष्ट शतपोनकरोगमें चिकित्साकी विवेचना पूर्वक अर्द्धलाङ्गलक, लाङ्गलक, सर्वतोभद्रक या गोतीर्थक छेदन करना चाहिए। मलद्वारके दोनों ओर समान छेदन करनेको लाङ्गलक छेदन और एक तरफ ह्रस्वछेदन करनेको अर्द्ध लाङ्गलक छेदन कहते हैं। सेवनीस्थान परित्याग पूर्वक गुह्यद्वारको चार खण्डोंमें छेदन करना भी सर्वतोभद्रक छेद है। मल निर्गममार्गकी तरफ न करके बगलसे छेदन करना गोतीर्थक छेद है। शत पोनकरोगमें पूयादि स्रावके सभी मुखोंको अग्निकर्म द्वारा दग्ध करना चाहिए।

उष्ट्रग्रीव भगन्दररोगमें शोथके बीचमें एषणी प्रविष्ट करके छेदन किया जाता है। पीछे उसमें क्षार प्रयोग तथा पूतिमांस निवारणार्थ अग्निकर्म भी हितकर है। स्रावमार्गको शस्त्रसे छेद कर क्षार या अग्निकर्म द्वारा दग्ध करना चाहिए। शोथका अन्वेषण करके शस्त्र द्वारा छेदन करना उचित है। छेदनकेलिए खर्जूर-पत्रिक, अर्द्धचन्द्र, चन्द्रचक्र, सूचीमुख और अवाङ्मुख शस्त्रोंका प्रयोग हितकर है। छेदनके बाद अग्नि या क्षार द्वारा दग्ध करना चाहिए।

शस्त्रप्रयोग द्वारा यदि अत्यन्त वेदना उपस्थित हो तो उष्ण तैलका परिषेचन करना चाहिए। शम्बूक भगन्दरमें मलके साथ शोथको छेदन कर अग्नि या उत्तप्त या तप्त लौहशलाका द्वारा दग्ध करना उचित है। भगन्दर रोगी आरोग्य होने पर भी एक वर्ष तक उसे व्यायाम, स्त्री संसर्ग, युद्ध, अश्वादि पर आरोहण और गुरुद्रव्य भोजन त्याग देना चाहिए।

(भावप्र॰ भगन्दर रोगाधि॰)

सुश्रुतमें भी भगन्दररोगकी चिकित्सा प्रणाली लिखी है। इन पांच प्रकारके भगन्दरोंमें शम्बूकावर्त्त और शल्यज भगन्दर ही असाध्य हैं। अवशिष्ट तीन कष्ट-साध्य हैं। भगन्दर होने पर अपक्व अवस्थामें रोगीको अतितर्पणसे ले कर विरेचन पर्यन्त एकादश प्रकार प्रतिकार करना विधेय है। पीडका पक जाने पर स्नेह-मर्दन और अवगाहन करना उचित है। स्नेह या क्वाथ आदि किसी प्रकार तरल पदार्थमें शरीरको डुबो देना अवगाहन कहलाता है। पश्चात् रोगीको शय्या पर लिटा कर अर्शरोगीकी भांति सूत्र या शाटकयन्त्र से बांध कर भगन्दर अधोमुख है या अर्द्धमुख है, भली भांति परीक्षापूर्वक एषणीसे क्षतस्थानको ऊंचा करके पूयाशय सहित छेदन कर उठा लेना चाहिए। अन्तर्मुख भगन्दर होने पर रोगीको भलीभांति बांध कर प्रवाहण अर्थात् मलद्वारमें वेग देना पड़ता है। इस प्रकारकी प्रक्रियासे भगन्दरका मुंह दीखने पर, एषणी प्रदान पूर्वक शस्त्रपात करना उचित है। अग्नि या क्षारका प्रयोग सभी भगन्दर रोगोंमें होगा।

शतपोनक भगन्दरमें मलद्वारके बीच पहले क्षुद्र व्रणोंको छेदना चाहिए। उन घावोंके भर जाने पर फिर मलद्वारकी मूलनाड़ीकी चिकित्सा की जाती है। जो शिराएं परस्पर सम्बद्ध हैं उनमेंसे प्रत्येकको प्रान्तदेशमें छेदन करना उचित है। जो नाड़ियां परस्पर सबध नहीं है, उन्हें भी एक साथ छेद देनेसे व्रणका मुख अत्यंत वृहत् हो जाता है, इसलिए उस प्रशस्त मुखसे मलमूत्र निकला करता है, तथा वायु द्वारा आटोप और मल द्वारमें पीड़ा होने लगती है। इस प्रकारके भगन्दरमें मुख प्रशस्त करके छेदन नहीं करना चाहिए।

इस बहुछिद्र युक्त भगन्दर रोगमें सार्द्धलाङ्गलक, लाङ्गलक, सर्वतोभद्र अथवा गोतीर्थक छेदन किया जा सकता है। रक्तादिस्रावके मार्गोंको अग्नि द्वारा जला देना

चाहिए। भीरु या कोमलप्रकृति व्यक्तिको शतपोनक भगन्दर होने पर आरोग्य होना दुष्कर है। इस रोग में शीघ्र ही वेदना और आनाह नाशक स्वेदका प्रयोग करना उचित है। कृशरा या खीरका स्वेद अथवा लाव, तित्तिर आदि ग्राम्य और जलजदेश पशुके मांस के सहयोगसे वृक्षादनी, एरण्ड और बिल्वादिगणका क्वाथ या चूर्ण स्नेह कुम्भमें रख कर व्रणमें स्वेद दिया जाता है। तिल, एरण्ड, तीसी, उड़द, जौ, गेहूं सरसों, नमक और अम्लवर्ग, इन सबको स्थालीमें रख कर रोगीको स्वेद दे सकते हैं। स्वेद दिये जाने के बाद कुष्ठ, नमक, वच हिंगु और अजमोदा आदि को समान भागमें घृत, द्राक्षा या अम्लरस, सुरा अथवा कांजीके साथ सेवन कराओ। उसके बाद व्रणमें मधुरतैल सेचन और मलद्वारमें वायुरोग नाशक तैलका परिषेचन करो। इस प्रकार प्रतीकार करनेसे मलमूत्र अपने मार्गसे निकलेंगे तथा अन्यान्य तीव्र उपद्रवोंकी भी शान्ति हो जायगी।

उष्ट्रग्रीव नामक भगन्दरमें एषणी द्वारा छेदन कर क्षार दे देना चाहिए। पश्चात् उसमेंसे पूति मांसको निकाल डालो और अग्निदग्ध करो। पूति मांसके निकल जाने पर तिल पीस कर घीके साथ उस पर प्रलेप दो और बांध कर घी परिषेचन करो। तीन दिन बाद खोलो; यदि व्रणमें कोई दोष दिखाई दे तो पहले उसका संशोधित होने पर यथाविधि रोपण करना उचित है।

परिस्रावी भगन्दरमें रसरक्तादि आस्राव होता रहे तो उसके मार्गको छेद कर क्षार या अग्नि द्वारा दग्ध करो। पीछे उसमें कुछ उष्ण अणुतैलका प्रयोग कर वमनोपग औषध द्वारा अल्प परिमाणमें परिषेचन करो। इस प्रकार के प्रतीकारसे व्रण कोमल तथा वेदना और आस्राव ह्रास होने पर उसके मुखशोषके अनुसार पृथक् छेदन कर अग्नि द्वारा भली भांति दग्ध करो। खर्जूरपत्र, अर्द्धचन्द्र, चक्र, सूचीमुख और अवाङ्मुख आदिके आकार से भगन्दर छेदन किया जाता है। प्रयोजन होने पर पुन क्षार द्वारा भी दग्ध कर सकते हैं। उसके बाद व्रण जब कोमल हो जाय तब उसका संशोधन करना चाहिए।



बालकको बाह्यमुख या अन्तर्मुख किसी भी प्रकार भगन्दर होने पर विरेचन, अग्नि, क्षार या शस्त्र हितकर नहीं है। जो औषध कोमल और तीक्ष्ण हों, उनका ही प्रयोग करना उचित है। आरग्वध हरिद्रा और सोंठ चूर्णको मधु और घृतसे पेस कर वर्तिकाके आकारमें व्रण पर प्रयोग कर शोधन करना चाहिए। इस प्रयोगसे व्रणकी नाली शीघ्र ही आरोग्य हो जाती है। आगन्तुक भगन्दरमें नाली होनेसे शस्त्र द्वारा छेद कर जाम्बोष्ठ शलाका द्वारा पूर्वक अग्निवर्ण करके व्रणस्थानको दग्ध करे, तथा आवश्यक होने पर कृमिनाशक और शल्य अपायनविधिके अनुसार कार्य करे। भ्रमणशील व्यक्ति के लिए यह रोग असाध्य है। भगन्दरमें शस्त्रपात जन्य यदि वेदना हो, तो उस पर उष्ण अणुतैल परिषेचन करना चाहिए, अथवा स्थालीमें वातघ्न औषध भर कर उसके मुखको छिद्रयुक्त ढक्कनसे ढक दे, पीछे रोगीको बिठा कर और उसके मलद्वारमें घृत सेचन कर उसमें स्थालीस्थ द्रव्यका उष्ण स्वेद देना चाहिए। अथवा रोगीको लिटा कर नलक द्वारा वेदना शान्ति कर नाड़ी स्वेद भी दिया जा सकता है।

त्रिकटु, वच, हिङ्गु, लवण, श्यामा, दन्ती, त्रिवृत, तिल, कुष्ठ, शतमूली, गोलोमी, गिरिकर्णिका, करीस, काञ्चनवृक्ष और क्षीरी वर्ग, इनसे भगन्दर व्रण संशोधित किया जाता है। त्रिवृत, तिल, नागदन्ती और मञ्जिष्ठा इनको दुग्धके साथ पीस कर मधु और सैन्धव सहित प्रयोग करनेसे भगन्दर व्रणका नाश होता है। रसाञ्जन, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, मञ्जिष्ठा, निम्बपत्र, त्रिवृत नत पिप्पली और दन्ती इनके एक प्रयोगसे भगन्दरका नालीव्रण आरोग्य होता है। कुष्ठ, त्रिवृत, तिल, दन्ती, पिप्पल, सैन्धव, मधु, हरिद्रा, त्रिफला और तुत्थ आदि व्रण शोधनके लिए लाभकारी है। चन्दन, यष्टिमधु लोध, कुन्द, इलायची, रेणुका, मपाद, धातकी पुष्प, श्यामलता, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, प्रियङ्गु, सर्जरस, पद्मकाष्ठ, पद्मकेशर, वल्लिचूर्ण, वच, लाङ्गली, मोम और सैन्धव आदिका तैल पाक करके प्रयोग करनेसे भगन्दररोग शीघ्र प्रशमित होता है। (सुश्रुत चिकि॰ ८ अ॰)

भैषज्य रत्नावलीमें भगन्दररोगाधिकारमें सप्तविंशतिक

हरिद्रा, येहेला, लोध्र तथा गृहधूम इनका प्रयोग भी कार्यकारी है। सीज या अश्वत्थके गोंदके साथ दारुहरिद्राके चूर्णका पाक करके उससे वर्त्ति बना कर शोथमें प्रविष्ट करानेसे भगन्दर या सर्वशरीरगत शोथ निवारित होता है, तथा त्रिफलाके काथके साथ बिडालास्थिको पीस कर प्रलेप देनेसे भी भगन्दर आरोग्य हो जाता है। विडङ्गसार, त्रिफला, छोटी इलायची और पिप्पलीचूर्ण इनको मधु और तेलके साथ चाटनेसे भगन्दर शीघ्र ही प्रशमित होता है। इसके सिवा विष्यन्दन तैल, निशाद्य तैल, करवीरादि तैल और नवकार्षिक गुग्गुल आदि औषध भी विशेष उपकारक हैं।

शतपोनक भगन्दरमें नाडीके अग्रभागमें क्षत करके दूषित रक्तको निकाल देना चाहिए। पीछे उस क्षतके भर जाने पर नाडीव्रणकी भांति चिकित्सा करना उचित है। बहु छिद्रविशिष्ट शतपोनकरोगमें चिकित्साकी विवेचना पूर्वक अर्द्धलाङ्गलक, लाङ्गलक, सर्वतोभद्रक या गोतीर्थक छेदन करना चाहिए। मलद्वारके दोनों ओर समान छेदन करनेको लाङ्गलक छेदन और एक तरफ ह्रस्वछेदन करनेको अर्द्ध लाङ्गलक छेदन कहते हैं। सेवनीस्थान परित्याग पूर्वक गुह्यद्वारको चार खण्डोंमें छेदन करना भी सर्वतोभद्रक छेद है। अन्त्र निर्गममार्गकी तरफ न करके बगलसे छेदन करना गोतीर्थक छेद है। शतपोनकरोगमें पूयादि स्रावके सभी मुखोंको अग्निकर्म द्वारा दग्ध करना चाहिए।

उष्ट्रग्रीव भगन्दररोगमें शोथके बीचमें एषणी प्रविष्ट करके छेदन किया जाता है। पीछे उसमें क्षार प्रयोग तथा पूतिमांस निवारणार्थ अग्निकर्म भी हितकर है। स्रावमार्गको शस्त्रसे छेद कर क्षार या अग्निकर्म द्वारा दग्ध करना चाहिए। शोथका अन्वेषण करके शस्त्र द्वारा छेदन करना उचित है। छेदनके लिए खर्जूर पत्रिक, अर्द्धचन्द्र, चन्द्रमुख, सूचीमुख और अवाङ्मुख शस्त्रोंका प्रयोग हितकर है। छेदनके बाद अग्नि या क्षार द्वारा दग्ध करना चाहिए।

शस्त्रप्रयोग द्वारा यदि अत्यन्त वेदना उपस्थित हो तो उष्ण तैलका परिषेचन करना चाहिए। शल्यज भगन्दरमें यत्नके साथ शोथको छेदन कर अग्नि या जम्बोष्ठ या तप्त लौहशलाका द्वारा दग्ध करना उचित है। भगन्दर रोगी आरोग्य होने पर भी एक वर्ष तक उसे व्यायाम, स्त्री संसर्ग, युद्ध, अश्वादि पर आरोहण और गुरुद्रव्य भोजन त्याग देना चाहिए।

(भावप्र० भगन्दर रोगाधि०)

सुश्रुतमें भी भगन्दररोगकी चिकित्सा प्रणाली लिखी है। इन पांच प्रकारके भगन्दरोंमें शम्बूकावर्त और शल्यज भगन्दर ही असाध्य हैं। अवशिष्ट तीन कष्टसाध्य हैं। भगन्दर होने पर अपक्व अवस्थामें रोगीको अपतर्पणसे ले कर विरेचन पर्यन्त एकादश प्रकार प्रतिकार करना विधेय है। पीड़का पक जाने पर स्नेह मर्दन और अवगाहन करना उचित है। स्नेह या काथ आदि किसी प्रकार तरल पदार्थमें शरीरको डुबो देना अवगाहन कहलाता है। पश्चात् रोगीको शय्या पर लिटा कर अर्शरोगीकी भांति सूत्र या शाटक यन्त्रसे बांध कर भगन्दर अधोमुख है या ऊर्द्ध्वमुख है, भली भांति परीक्षापूर्वक एषणीसे क्षतस्थानको ऊंचा करके पूयाशय सहित छेदन कर उठा लेना चाहिए। अन्तर्मुख भगन्दर होने पर रोगीको भलीभांति बांध कर प्रवाहण अर्थात् मलद्वारमें वेग देना पड़ता है। इस प्रकारकी प्रक्रियासे भगन्दरका मुख दीखने पर, एषणी प्रदान पूर्वक शस्त्रपात करना उचित है। अग्नि या क्षारका प्रयोग सभी भगन्दर रोगोंमें होता।

शतपोनक भगन्दरमें मलद्वारके बीच पहले क्षुद्र व्रणोंको छेदना चाहिए। उन घावोंके भर जाने पर फिर मलद्वारकी मुख्यनाडीकी चिकित्सा की जाती है। जो शिराएं परस्पर सम्बद्ध हैं उनमेंसे प्रत्येकका अलगदेशमें छेदन करना उचित है। जो नाड़ियां परस्पर संबंध नहीं हैं, उन्हें भी एक साथ छेद देनेसे व्रणका मुख अत्यंत वृहत् हो जाता है, इसलिए उस प्रशस्त मुखसे मलमूत्र निकला करता है, तथा वायु द्वारा आटोप और मलद्वारमें पीड़ा होने लगता है। इस प्रकारके भगन्दरमें मुख प्रशस्त करके छेदन नहीं करना चाहिए।

इस बहुछिद्र युक्त भगन्दर रोगमें अर्द्ध लाङ्गलक, लाङ्गलक, सर्वतोभद्र अथवा गोतीर्थक छेदन किया जा सकता है। रक्तादिस्रावके मार्गोंको अग्नि द्वारा दग्ध देना

उत्पत्ति, प्रलय, आगति, गति, विद्या और अविद्या को ये जानते हैं, इसीसे उनका भगवान् नाम पड़ा है। ज्ञान, शक्ति, बल, ऐश्वर्य, वीर्य और तेज आदि भगवत् शब्दके वाच्य हैं। ब्रह्म—शब्दादिके अगोचर हैं, उनकी पूजाके लिये ही केवल भगवत् शब्द द्वारा उनका कीर्त्तन किया जाता है। अतएव एक मात्र परमब्रह्म ही भगवत् शब्दके वाच्य हैं। सर्वदा भगवन्नाम कीर्त्तन, भगवत्सेवा आदि करना सबोंका अवश्य कर्त्तव्य है। ३ शिव। (भारत १३।१७।१२७) ४ विष्णु। ५ कार्त्तिकेय। ६ जिनेन्द्र। ७ सूर्य। ८ व्यास देव। ९ पूजनीय गुरु पुरोहित। (त्रि०) १० ऐश्वर्ययुक्त, पूजनीय।

भगवत्—वाराणसीके दक्षिण भागमें अवस्थित एक परगना। गोतमोंके आक्रमण कालमें यह स्थान जामियात् खाँ गहरवाड़के अधिकारमें था। जामियात् ने प्रजावर्गकी सहायतासे यहांके पटीट दुर्गकी रक्षा की थी। इस परगनेका प्राचीन नाम हतोरा है।

भगवत्—विष्णु उपासक बनिया सम्प्रदायविशेष।

भगवत्त्व (सं० क्ली०) भगवतो भाव, त्व। भगवानका भाव या धर्म।

भगवत्दास—साधारण श्रेणीके एक ग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने रामरसायन पिंगल और भगवत्चरित्र ग्रन्थोंकी रचना की है।

भगवत्पदी (सं० स्त्री०) गङ्गाका नामान्तर। विष्णु पदसे निकलनेके कारण गङ्गाका यह नाम पड़ा है। भागवतमें लिखा है, कि बलियज्ञमें दानग्रहणके समय भगवान्‌के वामपदाङ्गुष्ठ नखसे अण्डकटाह भिन्न हो कर जो जलधारा निकली वही जाह्नवी, भागीरथी आदि नामोंसे प्रसिद्ध है। (भाग० ५।१७।१)

भगवत्पादाचार्य—तन्त्रसार और प्रातःस्मरणस्तोत्र नामक दोनों ग्रन्थोंके प्रणेता।

भगवत्पुर—एक प्राचीन जनपद। यह परमाभट्टारक महाराज वाक्पतिराजदेवके राज्यभुक्त था।

भगवत्पुराण—एक महापुराण जिसमें १८ हजार श्लोक हैं। वैष्णवोंके मतसे विष्णुभागवत और शाक्तोंके मतसे देवीभागवत ही इस नामसे प्रसिद्ध है। विशेष विवरण पुराण शब्दमें देखो।

भगवत्मुदित—एक भाषा कवि। इन्होंने हितचरित्र, सेवकचरित्र और रसिक अनन्य माला बनायी थी। इनकी कविता साधारण होती थी। ये राधावल्लभी सम्प्रदायके थे।

भगवत्रसिक—वृन्दावन निवासी एक कवि। इनका जन्म सं० १६०१में हुआ था। ये माधवदासजीके पुत्र और हरिदासजीके शिष्य थे। इनकी बनाई कुण्डलियों का कवि समाजमें बड़ा आदर है।

भगवतादास—एक भाषाके कवि। ये जातिके ब्राह्मण थे। इनका जन्म सम्वत् १६८८में हुआ था। इनका बनाया भाषामें 'नचिकेतोपाख्यान' है जिसकी कविता मनोरम है।

भगवदानन्द—१ गौड़पादीयव्याख्याके प्रणेता। इनका दूसरा नाम आनन्दतीर्थ है। २ स्वप्रकाशरहस्यके प्रणेता।

भगवदीय (सं० पु०) विष्णुके उपासक।

(भाग० ५।८।१७)

भगवद्गीता (सं० स्त्री०) भीष्मपर्वके अन्तर्गत अष्टादशाध्यायात्मक कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग सूचक ग्रन्थ। इसमें उन उपदेशों और प्रश्नोत्तरोंका वर्णन है जो भगवान् कृष्णचन्द्रने अर्जुनका मोह छुड़ाने के लिये उससे युद्धस्थलमें किये थे। यह ग्रन्थ प्रस्थानचतुष्टयमें चौथा है और बहुत दिनोंसे महाभारतसे पृथक् माना जाता है। विशेष विवरण गीता शब्दमें देखो।

भगवद्द्रुम (सं० पु०) महाबोधिवृक्ष।

भगवद्भक्त (सं० पु०) १ भगवानका भक्त, ईश्वर भक्त। २ विष्णुभक्त। ३ दक्षिण भारतके वैष्णवोंका एक सम्प्रदाय।

भगवद्भट्ट—नूतनतरिरसनरङ्गिणीटीकाके प्रणेता।

भगवद्भास्कर—छान्दोग्योपनिषद्वृत्तिके रचयिता।

भगवद्विग्रह (सं० पु०) भगवानका विग्रह, भगवान्‌की मूर्त्ति।

भगवल्ल—मुकुन्द विजयकाव्यके प्रणेता।

भगवन्तदेव—तंजोरराजके अधिपति। ये सेङ्गर (शृङ्गवेर) जातीय स्मृतिभास्कर ग्रन्थके रचयिता नीलकण्ठके प्रतिपालक थे। उक्त ग्रन्थकारने अपने ग्रन्थमें इस सेङ्गर राज

गुग्गुल, विष्यन्दन तैल, करवीराद्यतैल, निशाद्य तैल, सैन्धवाद्य तैल, नारायण रस, चित्रविभाण्डक रस, ताम्र प्रयोग तथा विविध मुष्टियोग लिखे हुए हैं। रसेन्द्र सारसंग्रहमें इस रोगके प्रकरणमें नारिकेलाण्डयम्म और भगन्दरहर रसका उल्लेख है।

प्रस्तुत प्रणालियां उन्हीं ग्रन्थोंमें देखो।

गरुड़ पुराणमें अर्श और भगन्दर रोगोपशमकी औषधि इस प्रकार कही गई है —

"अश्वगन्धतिला घृतं गुडेन पाचयेत्।
चूर्णं कृत्वा तु लोकोऽयं भगन्दरं परं ॥
गुग्गुलु त्रिफलायुक्तं पीत्वा भगन्दरम् ॥"

(ग० १८८।१४)

भगन्दरहररस (स० पु०) रसौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा एक भाग और गन्धक दो भाग इन्हें धतुरा मारीके रसके साथ तीन दिन घोंट कर ताम्र और लौहको तुल्यरूपमें मिश्रित करे। पीछे एक बरतनमें रख कर दो पहर तक स्वेद दे। बादमें उस भस्मको कागजी नींबूके रसमें सात बार भावना दे कर पुटपाक करे। रत्ती भर गोलीका सेवन करनेसे भगन्दर बहुत जल्द जाता रहता है। चिकित्सक सोच विचार कर अनुपानकी व्यवस्था दे। (रसेन्द्रसार० भगन्दर चिकि०)

भगपुर (स० क्ली०) मुलतानके अन्तर्गत एक नगर।

भगमस्त (स० त्रि०) भगे नते मस्त। धनाढ्य, धनके पीछे लगा हुआ।

भगभक्षक (स० पु०) भग योनिस्तामुपाश्रित्य भक्षयति जीविका निर्वाहयतीति भक्ष-ण्वुल्। नायक और नायिकाका मेलक, दोगलेका अन्न खानेवाला। इसका अन्न खानेसे चान्द्रायण करना होता है।

"यो वान्यं ... ... ...।
पुंश्चली ... ... चान्द्रायणम् ॥"

(मार्कण्डेयपु० सदाचाराध्या०)

भगयुग (स० पु०) बृहस्पतिके बारहयुगोंमेंसे अन्तिम युग। इसके पांच वर्ष दुर्दुभि, उद्गारी रक्ता, क्रोध और क्षय हैं। इनमें पहलेको छोड़कर शेष चार वर्ष उत्तरोत्तर भयावह माने जाते हैं।

भगर (हिं० पु०) सड़ा हुआ अन्न।

भगरना (हिं० क्रि०) रत्तेमें गर्मी पा कर अनाजका सड़ने लगना।

भगल (स० त्रि०) भग तद्व्यापार लाति ला-क। भग व्यापारग्राहक।

भगल (हिं० पु०) १ कपट, ढोंग। २ जादूकी मकारी जादू।

भगली (हिं० पु०) १ छली, ढोंगी। २ बाजीगर।

भगवती (स० स्त्री०) भग मतुप् तत स्त्रियां ङीप्। १ पूज्या। २ गौरी। ये प्रकृतिस्वरूपिणी महामाया देवी हैं।

"ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥"

(मार्कपु० ८१।४२)

३ सरस्वती। ४ गङ्गा। ५ दुर्गा।

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं सर्वं मिथ्यैव कृत्रिमम्।
दुर्गा सत्यस्वरूपा सा प्रकृतिर्भगवान् यथा ॥
सिद्धैश्वर्यादिकं सर्व यस्यामस्ति युगे युगे।
सिद्ध्यादिके भगो ज्ञेयस्तेन भगवती स्मृता ॥"

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्रकृति० ५४ अ०)

६ दाक्षिणात्यमें प्रचलित भगवतीचित्राङ्कित पगोदा, स्वर्णमुद्राविशेष।

भगवतीपुर—दरभंगा जिलेके मनोहरशाही परगनेके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यह अक्षा० २३ ४२´ उ० तथा देशा० ८८ ५´ ३०´´ पू०के मध्य विस्तृत है।

भगवत् (स० पु०) भग षडैश्वर्यं अस्त्यस्य नित्य योगे मतुप्, मस्य व। १ ऐश्वर्यादियुक्त या षडैश्वर्य सम्पन्न परमेश्वर। २ बुद्ध। परमेश्वर ही भगवच्छब्दवाच्य हैं। विष्णुपुराणमें लिखा है, कि विशुद्ध और सर्वकारणके कारण महाविभूतिशाली परब्रह्म ही भगवत् शब्द प्रयुक्त होता है। भगवत् शब्दके भ कारके दो अर्थ हैं, पहला वे ही सबोंके भरणकर्त्ता और सबोंके आधार हैं; दूसरा ग कारका अर्थ गमयिता, समस्त धर्म और ज्ञान फलका प्रापक और स्रष्टा है। समस्त ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छःका नाम भग है। परम ब्रह्ममें ही यह भगवत् शब्द सार्थक होता है। दूसरी जगह इसका प्रयोग गौणरूपसे होता है। भगों

मिल कर जिन सब शिलालिपि तथा ताम्रशासनादिकी प्रतिलिपि पढ़ते थे, उसकी शङ्का दूर करनेके लिए भगवान लाल मूलफलकका पाठ मिलाया करते थे। इसी उद्देशसे पहले सारे बम्बई प्रान्तसे आरम्भ कर पण्डित भगवानलाल गुजरात, काठियावाड़, उज्जयिनी, विदिशा, इलाहाबाद, भितरी, सारनाथ और नेपाल तक पहुंचे थे। वे केवल उक्त कई प्रदेशोंमें जा कर चुपचाप बैठे रहे सो नहीं, कार्यानुसार उन्होंने पूर्व और पश्चिम राज पूताना, जयसलमीर तक सारी मरुभूमि, मध्यभारत मालव, भूपाल, सिन्देराज्य, मध्यप्रदेश, आगरा, मथुरा, वाराणसी प्रभृति स्थान, तद्रु, विहार और उड़ीसा तथा उत्तरभारतके यूसुफजई जिलेके शाहबाजगढ़से पूर्व नेपाल तक हिमालय प्रदेशमें परिभ्रमण कर नाना स्थानोंके शिलाफलक और मुद्रादिकी प्रतिलिपिका पाठ तथा ग्रन्थ पत्र मुद्रादिकी प्रतिलिपिका पाठ तथा ग्रन्थ पत्र मुद्राका संग्रह किया था। इसके अलावा अपने भ्रमणकालमें प्राप्त विभिन्न जाति, धर्मसम्प्रदाय और व्यवसाय सुप्राचीन कीर्ति समूहका आमूल वृत्तान्त वे अपनी पुस्तकमें लिख गये हैं। १८७५-७६ ई०में इन्होंने अङ्गरेजी और प्राकृत भाषाम शिक्षा प्राप्त की। अंगरेजीभाषामें विशेष अभिज्ञ नहीं होने पर भी ये वैज्ञानिक ग्रन्थादि अनायास पढ़ लेते थे।

इस प्रकार प्रत्नतत्त्वानुसन्धानमें रह कर उन्होंने शिलालिपिके पढ़नेमें विशेष दक्षता लाभ की। नेपालका काम समाप्त कर वे लौट ही रहे थे कि उसी समय १८७४ ई०को २१ वीं मईको डा० भाऊदाजीकी मृत्यु हो जाने और उनके वंशधरोंके अर्थसाहाय्य अस्वीकार करने पर उन्हें स्वतन्त्रभाव तथा पाण्डित्यसे ऐतिहासिक तत्त्वोंकी आलोचना करनेका अवसर मिला। १८७७ ई०से 'इण्डियन एण्टिक्वारी' और 'बम्बई ब्रांच आव रायल एशियाटिक सोसाइटीकी पत्रिकामें' उनके लिखे प्रबन्ध प्रकाशित होने लगे। इन्होंने उक्त दोनों पत्रिका में जो अद्वितीय प्रबन्ध लिखे थे उनमें बहुतसे मूल्यवान् ऐतिहासिक सत्य आविष्कृत हुए हैं। इसके सिवा डा० बर्जेसकी आर्किलाजिकल सर्वे रिपोर्ट और 'बम्बई गैजेटियर' नामक पुस्तकमें भी उन्होंने कई एक महामूल्य प्रबन्ध प्रकाशित किये।

१८८३ ई०में इन्होंने लिडेन युनिवरसीटीसे Doctor of Philosophy की उपाधि पाई। इसके कुछ दिन बाद ही वे Koninklijk Instituut voor de Taal Landen Volken Kunde van Nederlandsch Indie और Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland नामक दो सभाके अवैतनिक सभ्य चुने गए। डा० वार्गेस, डा० कार्नेल, डा० सेनार्ट, डा० कोल्हन, डा० बूलर और प्रोफेसर कार्ण आदि महामना यूरोपीय पण्डितोंके साथ सर्वदा पत्रव्यवहारसे प्रत्न तत्त्व सम्बन्धीय महामतका निर्द्धारण देते थे। बम्बई नगरके अपने वाल्केश्वर प्रासादमें सहृदय यूरोपीय अतिथिके समागम पर वे बड़े ही आनन्दित होते और उन लोगोंके सन्देहपूर्ण प्रत्नतत्त्वानुसन्धानफलके प्रकृत उत्तरदानसे उन्हें उपकृत तथा तुष्ट करते थे। दुःखकी बात है कि ऐसे उद्यमशील भारतसन्तानने, भारत इतिहासकी गम्भीर गवेषणामें नियुक्त रह कर जिस वृक्षको लगाया, उसका सुमधुर फल और उन्हें अधिक दिन तक नहीं भोगना पड़ा। १८८८ ई०की १६ मईको ४६ वर्षकी उम्रमें वे भवलीला शेष कर स्वर्गधामको चल बसे *।

आजीवन परिश्रम करके भी वे कभी सांसारिक सुख स्वच्छन्दलाभ न कर सके। उनकी आर्थिक दशा उतनी अच्छी न थी। ऐतिहासिक गवेषणामें उनका मस्तिष्क आलोड़ित होने पर भी उन्हें उदरपूर्त्तिके लिए व्यतिव्यस्त होना पड़ता था। बुलर साहब (G. Buhler)-का कहना है, कि जिस समय भगवानलालसे उनका परिचय हुआ था उस समय वे किसी देशीय वणिकके आफिसमें काम करते अथवा उसके हिस्सेदार थे। जीवन भर उसी

* खदार और स्कन्दगुप्त शिलालिपि प्रसङ्गकी अनुसन्धिकामें Jour. Bom. Br. R. A. S. vol. XII, 113 और vol. XVIII, IX. XI भागमें इस कथाका उल्लेख मिलता है। मृत्युके चार मास पहले उनकी कनिष्ठा स्त्रीने बुलर साहबको पत्र देकर और शारीरिक अस्वस्थताके बारेमें एक पत्र लिख कर जिसमें भूगोलवृत्त दीवानसे कुछ मदद मांगी थी।

यहाँको नालिका प्रदान की है। राजा कर्णके पुत्र त्रिलोक, त्रिलोकके सहदेव, सहदेवके राय, रायके वैरटराज, वैरटके वीरराज, वीरके नक्षत्रदेव, नक्षत्रके मनुष्यदेव, मनुष्यके चन्द्रपाल, चन्द्रपालके शिवगण, शिवके रोलिचन्द्र, रोलिके दर्भसेन, दर्भके रामचन्द्र, रामके यशोदेव, ताराचन्द्र, यशोदेवके ताराचन्द्रके पुत्र चन्द्रसेन, पौत्र राजसिंह और प्रपौत्र माहिदेव थे। इन्हीं माहिदेवके पुत्र भगवन्तदेव विशेष विद्योत्साही और सज्जनप्रतिपालक थे।

भगवन्तनगर—अयोध्या प्रदेशके हर्दोई जिलान्तर्गत एक नगर। प्रायः ३०० वर्ष हुए, सम्राट् औरङ्गजेबके हिन्दू दीवान राजा भगवन्तराय अपने नाम पर यह नगर स्थापित कर गए हैं।

भगवन्तराय—भाषाके एक कवि। इन्होंने तुलसीदासकृत मानस रामायणके सातों काण्डोंका कवित्तोंमें अनुवाद किया है। इनकी रचना अद्भुत है।

भगवन्तसिंह खीचर—गाजीपुरके एक हिन्दू नरपति। इन्होंने राजद्रोही हो कर कोरा पर अधिकार जमाया और वहाँके शासनकर्त्ता जानीसर खाँको भगा दिया। अन्तमें वे युद्धमें मारे गए। यह खबर दिल्ली पहुँचते ही राजमन्त्री कमरुद्दीन खाँने अपने बहनोईके हत्यापराधका बदला चुकानेके लिए उनके विरुद्ध युद्धयात्रा की; किन्तु युद्धमें हार खा कर वे लौट गए। मन्त्रिवरके आदेशसे फर्रुखाबादके नवाब महम्मद खाँने कोरा पर चढ़ाई की, किन्तु वे भी विफलमनोरथ हो अपने राज्यमें लौट आये। अन्तमें दिल्लीश्वर द्वारा यह राज्य बुर्हान उल मुल्कके हाथ सौंपा गया। नवाब और भगवन्तमें घोरतर लड़ाई छिड़ी। युद्धक्षेत्रमें विशेष योग्यता दिखा कर भगवन्त कोराके चौकीदार दुर्जन सिंहके हाथसे मारे गए।

भगवन्मय (सं० त्रि०) एकार्पितचित्त, जो निश्चितरूपसे भगवान्‌के ध्यानमें लगा हो, ईश्वरमें तल्लीन रहने वाला।

भगवा (हिं० वि०) भगवा रंग।

भगवानगञ्ज—अयोध्या जिलान्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यहाँ एक अति प्राचीन भग्न स्तूप और भग्नावशिष्ट मन्दिरका निदर्शन पाया जाता है। प्रत्नतत्त्वविद्गण इस स्तूपको ईसा सन् छठी शताब्दीके पहलेका बना हुआ बौद्धस्तूप ऐसा अनुमान करते हैं।

भगवानलाल इन्द्रजी—ख्यातनामा एक प्रत्नतत्त्वविद्। इन्होंने अपनी विद्यापराकाष्ठाके लिए पण्डित तथा डाक्टरकी उपाधि प्राप्त की थी। इनके पूर्वपुरुषगण सौराष्ट्र (सौराष्ट्र)-के नवाब सरकारके अधीन काम कर अथवा देशीय राजन्यवर्गकी सहायता पा कर विशेष प्रतिष्ठाशाली हुए थे। उक्त ब्राह्मण-वंशके प्राचीन प्रथानुसार शैशवावस्थामें ही बालक भगवान्‌को संस्कृतभाषा सीखनी पड़ी। इसके अलावा उन्हें विद्यालयके निर्दिष्ट पाठ्य अध्ययन करने पड़ते थे। अपनी धीशक्तिके प्रभावसे और असाधारण अध्यवसायसे वे शीघ्र ही साहित्य, काव्य, दर्शन तथा शास्त्रमूलक संस्कृत ग्रन्थादिमें पारदर्शी हुए। ज्ञानवृद्धिके साथ साथ उनकी ऐतिहासिक अनुशीलनी शक्ति भी दिनों दिन बढ़ती गई। स्वदेशस्थ गिर्नार पर्वत पर छिपी हुई प्राचीनतम गौरवकीर्त्तियोंकी ऐतिहासिक भूमिका अवलम्बन कर वे प्रत्नतत्त्वविषयक यथेष्ट अनुसन्धानका परिचय दे गये हैं।

बाल्यकालसे ही उनके हृदयमें यह अनुसन्धित्सा प्रवृत्ति प्रबल हो उठी। उस समयकी आन्तरिक श्रद्धा तथा भक्तिके कारण वे गिर्नार-पर्वत पर घण्टे पर प्रायः इधर उधर घूमनेमें ही समय बिताते थे। पर्वतके ऊपर सम्राट् अशोककी प्रशस्ति और रुद्रदाम तथा स्कन्दगुप्तकी सामयिक शिलालिपि खोदित देख कर उनके हृदयमें बड़ा ही कौतूहल उत्पन्न हुआ। प्रस्तरगात्रमें खोदी हुई उस विचित्र लेखमालाका समावेश देख कर पहले वे चमत्कृत हो गए। उसे पढ़ने पर सम्भवतः उससे कोई अलौकिक तत्त्व आविष्कृत हो सकता है, यही चिन्ता उनके सुकुमार हृदयमें निरन्तर जागरूक रही। धीरे धीरे वे प्रिन्सेप साहबकृत 'भारतीय अक्षरमालिका' संग्रह कर उसीकी सहायतासे उसे पढ़ 'जनसाधारणको समझा देनेमें समर्थ हुए। बालककी इस अद्भुत प्रतिभाको देख कर फार्बस साहब (Mr Kinloch Forbes) ने भगवानको पण्डितकार्यमें नियुक्त करनेके लिए डा० भाउदाजीसे विशेष अनुरोध किया। तदनुसार वे १८६१ ई०में भाउदाजी पण्डितके अधीन रह कर प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्साके अनुशीलनमें अग्रसर हुए। डा० भाउदाजी और पण्डित गोपालपाण्डुरङ्ग एक साथ

भगवानमित्र—वङ्गालके प्रथम तथा प्रधान कानूनगो। काटोयाके निकटवर्ती मण्डुडिहीके मित्रवंश तथा उत्तर राढ़ीय कायस्थ कुलमें इनका जन्म हुआ था। भगवानके बाद उनके छोटे भाई वङ्गविनोद बहुत दिनों तक कानूनगो पद पर प्रतिष्ठित रहे। विनोद उदार प्रकृतिके मनुष्य थे, आत्मीय स्वजनका प्रतिपालन करना उनके जीवनका महा व्रत था। उनके ही मानगुणमें मित्रवंशने 'वङ्गाधिकारी' आख्या प्राप्त की है। उनके स्वनामचिह्नित विनोदनगर और औरङ्गाबाद परगना वङ्गाधिकारीवंशकी प्राचीन भूसम्पत्ति है।

भगवानसिंह—आमावंशके एक राजा। आमा देखो।

भगवेदन (सं० त्रि०) ऐश्वर्य ज्ञापक।

भगशास्त्र (सं० क्ली०) भगव्यापारबोधक शास्त्र मध्य पदलोपि कर्मधा०। कामशास्त्र।

भगस् (सं० क्ली०) भग, योनि।

भगहन् (सं० पु०) भग ऐश्वर्य सहायत्वात् हन्ति हन क्विप्। विष्णु।

भगहारी (सं० त्रि०) शिव, महादेव।

भगाक्षिहन् (सं० त्रि०) शिव।

भगाङ्कुर (सं० पु०) भगे गुह्यस्थाने अङ्कुर इव। अर्श रोग, बवासीर।

भगाधान (सं० क्ली०) भगस्य आधान। १ माहात्म्याधान। २ सौभाग्य।

भगाना (हिं० क्रि०) १ किसी दूसरेको भगानेमें प्रवृत्त करना, दौड़ाना। २ हटाना, खदेड़ना।

भगाल (सं० क्ली०) भजति सुखदुःखादिक कर्मजन्य मनेनेति भज्यतेऽनेनेति वा भज (भीपुत्राभिभ्यां कालन्। उण् ३।३६) इति बाहुलकात् भजेरपीति उज्ज्वलदत्त इति कालन्, न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वञ्च। नृकरोटि, आदमीकी खोपड़ी।

भगालिन् (सं० पु०) भगालं नृकपालं भूषणत्वेनास्त्यस्येति इनि। १ नृकपालधारी, आदमीकी खोपड़ी धारण करनेवाला। २ शिव, महादेव।

भगाव (सं० पु०) प्राचीन कालका एक अस्त्र।

भगिनी (सं० स्त्री०) भगं यत्नः पित्रादितो द्रव्यदाने विद्यतेऽस्या इति इनि, ततो ङीप्। १ सहोदरा, बहन। भग योनिरस्या अस्तीति भग इनि ङीप्। २ स्त्रीमात्र। मनुमें लिखा है, कि पर स्त्री अथवा जिन स्त्रीसे साथ किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं है, उसे भवति, सुभगे या भगिनिसे सम्बोधन करना उचित है।

"परपत्नी तु या स्त्री स्यादसम्बन्धा च योनितः।

तां ब्रूयाद्भवतीत्येवं सुभगे भगिनीति च॥" (मनु २।१२९)

भगिनीपति (सं० पु०) भगिन्याः पतिः। स्वसृपति, बहनोई। पर्याय—आवुत्त, भाम।

भगिनीय (सं० पु०) १ भगिनी सम्बन्धीय या भगिनी जात पुत्र। २ भागिनेय, भानजा।

भगीरथ (सं० पु०) भं ज्योतिर्मण्डलं गार्ग्यादिप्रमथनत्व रथ इन्द्रियाणि रथ इव यस्य। सूर्यवंशीय नृपभेद। ये सूर्यवंशीय अंशुमानके पौत्र, दिलीपके पुत्र थे। कपिलके शापसे भस्म जानेके कारण सगरवंशीय राजाओंने गङ्गाको पृथ्वी पर लानेका बहुत प्रयत्न किया था, पर उनको सफलता नहीं हुई। अन्तमें भगीरथ घोर तपस्या करके गङ्गाको पृथ्वी पर लाये थे। इस प्रकार उन्होंने अपने पुरखाओंका उद्धार किया था। इसी लिये गङ्गाका एक नाम भागीरथी भी है।

(मत्स्यपु० १२ अ० रामा० १।४२, ४३, ४४ स०)

गङ्गा और भागीरथी देखो।

(त्रि०) २ भगीरथकी तपस्याके समान भारी, बहुत बड़ा। जैसे भगीरथ प्रयत्न।

भगीरथ ठक्कुर—एक विख्यात टीकाकार। ये पौरकुलकी यशोधर ठाकुरके पुत्र और वल्लभद्र पण्डितके प्र शिष्य थे। कुमारस्वामिपर जगद्धरके आश्रयमें रह कर इन्होंने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। ये काव्यादर्शटीका, किरणा वलीप्रकाशटीका, विजयदेवीमाहात्म्यटीका, नैषधीयटीका, महिम्नस्तवटीका, तत्त्वदीपिका नामक मेघदूतटीका, अम रुदीपिका नामक रघुवंश टीका और न्यायकुसुमाञ्जलिकी टीका लिख गये हैं।

भगीरथमिश्र—वर्द्धमानाचार्यकृत न्याय लीलावतीकी टीकाके रचयिता।

भगीरथमेत्र—एक ग्रन्थकार, ये रामचन्द्रके पुत्र और जयदेवके पौत्र थे। लोग इन्हें भगीरथ ठक्कुर भी कहा करते थे। जयदेव पण्डितके निकट इन्होंने विद्या

कार्टमें लिप्त रह कर वे अपना मसारिक कार्य चुगाते थे। स्वभावतः स्वाधीन प्रकृतिके पक्षपाती होने पर भी उन्होंने कभी भी गवर्मेण्टके अधीन काम करना स्वीकार नहीं किया। कई बार ये बार्गेस और फैम्बेल साहबके अनुरोधसे बम्बई गैजेटियर पत्रिकाके सम्पादकत्वमें लगे थे। इनके अलावा काठियावाड प्रभृति देशीय राजाओं की वदान्यतासे उन्हें विशेष कष्ट भोगना नहीं पड़ा। मृत्युके पहले ही उन्होंने अपनी संगृहीत प्राचीन मुद्रादि वृटिश म्युजियममें दे दी थीं।

भगवान गोला—बङ्गालके मुर्शिदाबाद जिलान्तर्गत गङ्गा नदीके किनारे एक वाणिज्य स्थान। यह अक्षा० २४ २०´ ३० और देशा० ८८ २०´ ३८´´ पू०के मध्य कलकत्ते से ६० कोस उत्तर अवस्थित है। नये और पुरानेके भेद से इसी नामके दो ग्राम ढाई कोसकी दूरी पर बसे हैं। मुसलमानी अधिकारमें पुराने ग्रामका भाग मुर्शिदाबाद का वाणिज्यकेन्द्र था और गंगाकी बाढसे डूब जाने पर भी अभी यहां बहुत से मनुष्य इकट्ठे होते हैं। यहां पुलीस रहती है। दूसरे समय जब नदीकी जलगति परिवर्तित हो जाती है, तब मनुष्य नये नगरमें चले आते हैं। कारण, उस समय पुराने भागमें पण्यवाही नौकादि नहीं आ जा सकती।

शोभासिंहके विद्रोहका दमन करनेके लिए बादशाही सेना जब बङ्गालकी ओर चली तब विद्रोहिनेता रहीम शाहने इसी भगवान गोलाके निकट समावेश हो कर जबरदस्त थीं और बादशाही सेनाके विरुद्ध घोरतर युद्ध किया था।

भगवान दास—एक निष्ठावान् वैष्णव साधु। एक समय राजाने आज्ञा घोषित कर दी, कि जो कोई वैष्णव तिलक और तुलसी माला धारण करेंगे, तीन दिन बाद उनका सिर काट लिया जायगा। इस कठिन दण्डाज्ञाको सुनते ही अनेकोंके मनमें भय उत्पन्न हुआ और उन्होंने कण्ठी तथा तिलकका परित्याग किया। किन्तु भगवानदासने उस प्रमादकालमें मृत्युका निश्चय जान सारे शरीरमें तिलक लगा लिया। तीन दिन बाद राजकर्मचारीगण उन्हें पकड़ कर राजाके समीप ले गये। अनन्तर राजाने उनकी विमल भक्ति निष्ठासे सन्तुष्ट हो कर उनको छोड़ दिया। ( भक्तमाल २५ )

भगवानदास (राजा)—अम्बराधिपति राजा बिहारीमल्लके पुत्र और सुप्रसिद्ध सेनापति राजा मानसिंहके पिता। ये कच्छवाह वंशके थे। ९६९ हि०में सम्राट् अकबरशाह जब अजमेर देखने गये, उस समय पिता और पुत्र दोनोंने मिल कर सम्राटसे आश्रय मांगा था *।

९८० हि०में सर्णालके समीप इब्राहिम हुसैन मिर्जाके साथ युद्धके समय उन्होंने अकबरशाहकी जान बचाई थी। अनन्तर वे राणा अमरसिंहको दिल्लीमें पकड़ लाये और इसीसे उनकी यश ख्याति चारों ओर फैल गई। सम्राट्के राज्यकालके तेरहवें वर्षमें कच्छवाहगण उनका हुकुम पञ्जाब ले गए, तदनुसार राजा भगवानदास भी उक्त प्रदेशके शासनकर्त्ता बनाये गए। २९वें वर्षमें भगवानकी कन्याके साथ सम्राट-पुत्र सलीमका विवाह हुआ †। ३३वें वर्षमें वे पांच हजारी सेनानायक और जावुलिस्तानके शासनकर्त्ताके पद पर अभिषिक्त हुए। खैराबादमें रहनेके समय उनका मस्तिष्क खराब हो गया और उन्होंने आत्मग्लानिकी इच्छासे अपने शरीरमें अस्त्राघात किया। अनन्तर आरोग्यलाभ करने पर उनके परिवारवर्गके भरणपोषणके लिए सम्राट्ने (३२वें वर्षमें) बिहारमें एक जागीर प्रदान की और मानसिंह वहांके राजप्रतिनिधि बनाये गए।

९९८ हिजरीमें राजा टोडरमलकी मृत्युके बाद ही लाहोर नगरमें उनका देहान्त हुआ। प्रवाद है, कि टोडरमलकी अन्त्येष्टिक्रियाके बाद वे घर लौटते ही मूत्रकृच्छ्र रोगसे आक्रान्त हुए और इसके पांच दिन बाद ही १५८९ ई०की १५वीं नवम्बरको उन्होंने मानवलीला संवरण की।

उनकी मृत्युके समय सम्राट् काबुलमें थे। उन्होंने वहीं से बङ्ग बिहारके अधिपति कुमार मानसिंहके ऊपर राजाकी उपाधि और पांच हजारी सेनानायक का पद अर्पण किया। राजा भगवानदासने जीवित कालमें लाहोर नगरकी जुम्मा मसजिद बनवाई।

---

* राजा बिहारीमल्लने अपनी कन्या दे कर अकबर शाहके साथ कुटुम्बिता की थी। राजपूतोंमें इन्होंने ही सबसे पहले मुगलबादशाहके अधीन नौकरी कर ली। बिहारीमल्ल देखो।

† राजपुत्र खुसरु इन राजपूत-कन्याके गर्भसे उत्पन्न हुए थे।

कहते हैं। इनमेंसे चूर्णित, छिन्न, अतिपातित और मज्जानुगत कृच्छ्र साध्य हैं। कृश, वृद्ध, क्षीण और क्षयगामी कुष्ठ और श्वास रोगियोंके सन्धिभङ्ग होनेसे यह कष्टसाध्य समझा जाता है।

जिसका कपाल बिलकुल फट गया हो तथा कटिदेशकी सन्धि मुक्त या भ्रष्ट हो और जघनदेश प्रतिपिष्ट हो गया है, उसके जीवनकी कोई आशा न रखें। चिकित्सक ऐसे रोगियोंका परित्याग कर दें। जिसके कपालकी अस्थि विश्लिष्ट और ललाट चूर चूर हो गया है, स्तन, शङ्ख, पृष्ठ और मस्तक टूट गया है तथा जिसकी अस्थि और सन्धि स्थान पहलेसे ही विरत हो गया है, वैसे रोगीके भी जीवनकी आशा न रखें, चिकित्सकके लाख प्रयत्न करने पर भी वह आरोग्य नहीं हो सकता। (सुश्रुत नि० १५ अ०)

इस रोगकी चिकित्साके सम्बन्धमें निम्नलिखित प्रकरणोंके प्रति विशेष लक्ष्य रखना कर्त्तव्य है।

अल्पाहारी, अमिताचारी, अथवा वायुप्रकृति व्यक्तिके भग्नरोग होनेसे अथवा भग्नरोगमें किसी प्रकारका उपद्रव होनेसे वह बड़ी मुश्किलसे आरोग्य होता है। मैथुन, सूर्यताप, व्यायाम, अथवा रूक्ष अन्नका भग्नरोगीको कदापि सेवन नहीं करना चाहिये। अभिज्ञ चिकित्सकको चाहिये कि वे भग्नरोगीको शालि धान्यका तण्डुल, मांस रस, दुग्ध, घृत, छोटे मटरका जूस तथा अन्यान्य पुष्टिकर आहार खानेको दें। मधुक, उडुम्बर, अश्वत्थ, पलाश, अर्जुन, वंशसाल अथवा वटके त्वक्‌का भग्नस्थानमें प्रलेप दे कर उसे बांध दे। मजिष्ठा, यष्टिमधु अथवा रक्तचन्दन वा घृतको सौ बार धो कर पिष्ट शालितण्डुलके साथ मिला कर प्रलेप देनेसे भग्न आरोग्य होता है। हेमन्त और शिशिर कालमें प्रति ७ दिनके अन्तर पर, शरत् और वसन्त कालमें ५ दिनके अन्तर पर तथा आग्नेय ऋतुमें प्रति तीन दिनके अन्तर पर प्रलेप बदल कर फिरसे बांध देना उचित है। भग्न स्थानमें कोई दोष होनेसे बन्धनको खोल कर फिरसे बांध देना आवश्यक है। उस बन्धनके शिथिल होनेसे सन्धिस्थान स्थिर नहीं रहता। बन्धन दृढ़ होनेसे वह जगह सूज जाती और वेदना होती है। पीछे वह स्थान पक जा सकता है। अत एव इस प्रकार रहना चाहिये कि किसी प्रकारकी तकलीफ न मालूम पड़े। न्यग्रोधादिका शीतल कषाय उस बन्धन स्थान पर सींच दे। भङ्गस्थानमें वेदना मालूम होनेसे पञ्चमूलीके साथ दुग्धको पाक कर उस दुग्ध अथवा चक्रतैलका उस पर सेक दे। काल और दोषका विचार कर दोषघ्न औषधके साथ सेक और प्रलेपका शीतल अवस्थामें भङ्गके ऊपर प्रयोग करना उचित है। बराह या शूकरके दुग्धको घृत और मधुर औषधके साथ पका कर जब वह ठंढा हो जाय, तो उसे लाक्षारसके साथ भग्नरोगीको सवेरे पीनेको दे। भङ्गस्थानमें फोड़ा होनेसे उसमें प्रतिसारणीय द्रव्यका प्रचुर परिमाणमें घृत और मधुके साथ सेक दे तथा यथाविधि भङ्गकी चिकित्सा करे। बालकको अस्थि या सन्धि भङ्ग सहजमें आरोग्य होता है। किसी रोगीके यह भङ्गरोग यदि अल्पदोषविशिष्ट तथा शिशिर कालमें हो, तो बचपनमें एक मासमें और बुढ़ापेमें तीन मासमें सन्धि दृढ़ हो जाती है। भङ्गस्थानकी अस्थि टेढ़ी हो जानेसे उसे अवमित और उन्नमित होनेसे उसे अवनमित करके बन्धन करे। अस्थि यदि सन्धिस्थानसे हट जाय, तो उस स्थानको अच्छी तरह खींच कर भग्न अस्थिके साथ मिला देना उचित है। सन्धिस्थानसे अस्थिके अधोगत होनेसे उसे ऊपर उन्नत करके पीछे बन्धन और लेपादिका प्रयोग करे।

प्रत्यङ्ग भङ्गकी चिकित्सादि नीचे लिखी जाती है। नखसन्धि उत्पिष्ट हो कर रक्तके सञ्चित होनेसे आरा नामक शस्त्रद्वारा उस स्थानको मथित कर सञ्चित रक्त बाहर निकाल दे। पीछे उसमें पीसे हुए शालितण्डुलका लेप दे। उंगली टूटने या संधिविश्लिष्ट होनेसे सन्धि स्थानको समभावमें स्थापित करके उसे बारीक कपड़ेसे लपेट दे और ऊपरसे घोका सेक दे। जांघ या उसके ऊपर होनेसे उसे दीर्घभावमें खींच कर सन्धिस्थान पर पूर्वोक्त प्रकारसे वृक्षकी छाल रख दे और ऊपरसे बारीक कपड़े द्वारा बन्धन कर दे। कटीके भङ्ग होनेसे कटीके ऊर्द्ध और अधोभागको खींच कर सन्धिभागको अपने स्थानमें संयोजित करे। सन्धिको अपने स्थानमें संयोजित करनेमें वस्तिक्रिया करनी होती है।

होती थी। किरणावलीप्रकाश व्याख्या, द्रव्यप्रकाशिका, न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाश प्रकाशिका और न्यायलीलावती प्रकाशव्याख्या नामक न्यायग्रन्थ इनके बनाये हुये मिलते हैं।

भगेड़ (हिं० वि०) १ भागा हुआ, जो कहींसे छिप कर भागा हो। २ जो काम पड़ने पर भाग जाता हो, कायर।

भगेड़ू (हिं० वि०) भगेड़ देखो।

भगोचित (स० त्रि०) धनविषय लक्षणयुक्त।

भगेश (स० पु०) भगस्य ईशः ६ तत्। ऐश्वर्यादि के ईश्वर।

भगोड़ा (हिं० वि०) १ भागा हुआ। २ भागनेवाला, कायर।

भगोल (स० पु०) भानां नक्षत्राणां गोलः नक्षत्रसमूहसे घिर स्थित गोलाकार पदार्थ। खगोल, नभस्तल। खगोल देखो।

भगौहां (हिं० वि०) भागनेको उद्यत। २ कायर। ३ गेरूमें रंगा हुआ, भगवा।

भग्गू (हिं० वि०) जो विपत्ति देख कर भागता हो, कायर।

भग्न (सं० त्रि०) भञ्ज-क्त, सङ्गात्, विञ्चित्वात् नत्वं। १ पराजित, जो हारा या हराया गया हो। २ चूर्णित, टूटा हुआ। (क्ली०) भज्यते आमर्दते विञ्चिन्द्यते इति भञ्ज-क्त। ३ रोगविशेष। हड्डीके स्थानच्युत होने अथवा टूटनेसे शरीरमें जो व्याधि उत्पन्न होती है, उसे भग्नरोग कहते हैं। सुश्रुतमें इसके निदानादि इस प्रकार लिखे गये हैं—उच्च स्थानसे पतन, प्रहार, आक्षेपण, हिंस्रजन्तुके दंशन आदि नाना कारणोंसे अस्थि और अस्थिसन्धि भग्न हो जाती है। एक सन्धिबन्धनसे दूसरे सन्धिबन्धनके मध्यवर्ती अस्थिखण्डको काण्ड कहते हैं। इस प्रकारको दो काण्डास्थि जिस संयोगस्थान पर आबद्ध है, उसीका नाम अस्थिसन्धि है। अतएव भग्नरोग दो प्रकारका है—सन्धिभङ्ग (Dislocation) और काण्डभङ्ग (Fracture)। कारण भेदसे सन्धिभङ्ग ६ प्रकारका है—उत्पिष्ट, विश्लिष्ट, विवर्त्तित, तिर्य्यग्गत, क्षिप्त और अधोगत। साधारणतः इन छः प्रकारके सन्धिभग्नोंमें ही मनुष्य प्रसारण, आकुञ्चन, परिवर्त्तन, आक्षेपण, और स्पन्दन निरोध तथा सन्धिस्थानमें उन सब सन्धियोंकी शक्तिहीनताका बोध, अतिशय यातना और स्पर्श करनेसे असह्य वेदना का अनुभव होता है।

सन्धिके उत्पिष्ट होनेसे दोनों ही पार्श्व सूज जाते हैं और साथ साथ वेदना भी होती है। विशेषतः रातको यह वेदना और भी बढ़ जाती है। सन्धिके विश्लिष्ट होनेसे थोड़ी सूजन और सतत वेदना तथा सन्धिकी विकृति होती है। सन्धिके विवर्त्तित होनेसे भाग विषम और दोनों पार्श्वमें तीव्र वेदना मालूम होती है। तिर्य्यग्गत होनेसे भी इसी प्रकारकी वेदनाका अनुभव होता है। सन्धिस्थलमें अस्थिके क्षिप्त होनेसे शूलवत् वेदना और अधोभग्न होनेसे वेदना तथा सन्धिका विघटन होता है।

काण्डभङ्ग साधारणतः १२ प्रकारका है—१ कर्कटक, २ अश्वकर्ण, ३ चूर्णित, ४ पिच्चित, ५ अस्थिच्छल्लित, ६ काण्डभग्न, ७ मज्जानुगत, ८ अतिपातित, ९ वक्र, १० छिन्न, ११ पाटित और १२ स्फुटित। इस रोगमें अवयव अतिशय श्वयथु, स्पन्दन, विवर्त्तन, स्पर्श करनेसे असह्य वेदना, दबानेसे शब्दानुभव तथा अङ्गस्रस्त शान्त और नाना प्रकारकी वेदना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। ऐसी अवस्थामें रोगी कभी भी सुखलाभ नहीं कर सकता।

१ अस्थिकाण्डके दोनों ओर टूट कर मध्यस्थलमें ग्रन्थिकी तरह उन्नत हो जानेसे उसको कर्कटक, २ दोनों भग्नास्थि घोड़ेके कानकी तरह उन्नत हो जानेसे अश्वकर्ण, ३ अस्थिके चूरचूर हो जानेसे चूर्णित, अतिशय स्थूल और अधिक सूज जानेसे पिच्चित, दोनों पार्श्वकी छोटी हड्डियोंके उठ जानेसे अस्थिच्छल्लिका, ६ प्रसारण करनेसे कम्पित होनेसे काण्डभग्न, ७ किसी अस्थिखण्डके अस्थिके मध्य प्रवेश कर मज्जाको बिद्ध करनेसे उसे मज्जानुगत, ८ अस्थिके सम्पूर्ण तरह छिन्न हो जानेसे अतिपातित, ९ अस्थिके कुछ नत हो कर भग्न या विश्लिष्ट होनेसे वक्र, १० अस्थिखण्डके भग्न हो कर एक पार्श्वमें कुछ लगे रहनेसे छिन्न, ११ नाना प्रकारसे विदीर्ण हो कर वेदनाविशिष्ट होनेसे पाटित और १२ शूकपूर्णके सदृश सूज जानेसे उसको स्फुटित

कहते हैं। इनमेंसे चूर्णित, छिन्न, अतिपातित और मज्जानुगत कृच्छ्र साध्य हैं। कृश, वृद्ध, क्षीण और क्षयरोगी कुष्ठ और श्वास रोगियोंके सन्धिभङ्ग होनेसे यह कष्टसाध्य समझा जाता है।

जिसका कपाल बिल्कुल फट गया हो तथा कटिदेशकी सन्धि मुक्त या भ्रष्ट हो और जघनदेश प्रतिपिष्ट हो गया है, उसके जीवनकी कोई आशा न रखें। चिकित्सक ऐसे रोगियोंका परित्याग कर दें। जिसके कपालकी अस्थि विश्लिष्ट और ललाट चूर चूर हो गया है, स्तन, शङ्ख, पृष्ठ और मस्तक टूट गया है तथा जिसकी अस्थि और सन्धि स्थान पहलेसे ही विकृत हो गया है, वैसे रोगीके भी जीवनकी आशा न रखें, चिकित्सकके लाख प्रयत्न करने पर भी यह आरोग्य नहीं हो सकता।

(सुश्रुत नि० १५ अ०)

इस रोगकी चिकित्साके सम्बन्धमें निम्नलिखित प्रकरणोंके प्रति विशेष लक्ष्य रखना कर्त्तव्य है।

अल्पाहारी, अमिताचारी, अथवा वायुप्रकृति व्यक्तिके भग्नरोग होनेसे अथवा भग्नरोगमें किसी प्रकारका उपद्रव होनेसे यह बड़ी मुश्किलसे आरोग्य होता है। मैथुन, धूपताप, व्यायाम, अथवा रूक्ष अन्नका भग्नरोगीको कदापि सेवन नहीं करना चाहिये। अभिज्ञ चिकित्सकको चाहिये कि वे भग्नरोगीको शालि धान्यका तण्डुल, मांस रस, दुग्ध, घृत, छोटे मटरका जूस तथा अन्यान्य पुष्टिकर आहार खानेको दे। मधुर, उडुम्बर, अश्वत्थ, पलाश, अर्जुन, वंशसाल अथवा वटके त्वक्‌का भग्नस्थानमें प्रलेप दे कर उसे बाँध दे। मञ्जिष्ठा, यष्टिमधु अथवा रक्तचन्दन या घृतको सौ बार धो कर पिष्ट शालितण्डुलके साथ मिला कर प्रलेप देनेसे भग्न आरोग्य होता है। हेमन्त और शिशिर कालमें प्रति ७ दिनके अन्तर पर, शरत् और वसन्त कालमें ५ दिनके अन्तर पर तथा आग्नेय ऋतुमें प्रति तीन दिनके अन्तर पर प्रलेप बदल कर फिरसे बाँध देना उचित है। भग्न स्थानमें कोई दोष होनेसे बन्धनको खोल कर फिरसे बाँध देना आवश्यक है। उस बन्धनके शिथिल होनेसे सन्धिस्थान स्थिर नहीं रहता। बन्धन दृढ़ होनेसे वह जगह सूज जाती और वेदना होती है। पीछे वह स्थान पक जा सकता है। अतः बंधन इस प्रकार रखना चाहिये कि किसी प्रकारकी तकलीफ न मालूम पड़े। न्यग्रोधादिका शीतल कषाय उस बन्धन स्थान पर सींच दे। भङ्गस्थानमें वेदना मालूम होनेसे पञ्चमूलीके साथ दुग्धको पाक कर उस दुग्ध अथवा चक्रतैलका उस पर सेक दे। काल और दोषका विचार कर दोषघ्न औषधके साथ सेक और प्रलेपका शीतल अवस्थामें भङ्गके ऊपर प्रयोग करना उचित है। लाह या शूकरके दुग्धको घृत और मधुर औषधके साथ पका कर जब वह ठंढा हो जाय तो उसे लाक्षारसके साथ भग्नरोगीको सवेरे पीनेको दे। भङ्गस्थानमें फोड़ा होनेसे उसमें प्रतिसारणीय द्रव्यका प्रचुर परिमाणमें घृत और मधुके साथ लेप दे तथा यथाविधि भङ्गकी चिकित्सा करे। बालकको अस्थि या सन्धि भङ्ग सहजमें आरोग्य होता है। किसी रोगीके यह भङ्गरोग यदि अल्पदोषविशिष्ट तथा शिशिर कालमें हो, तो बचपनमें एक मासमें और बुढ़ापेमें तीन मासमें सन्धि दृढ़ हो जाती है। भङ्गस्थानकी अस्थि टेढ़ी हो जानेसे उसे उन्नमित और उन्नमित होनेसे उसे अवनामित करके बन्धन करे। अस्थि यदि सन्धिस्थानसे हट जाय, तो उस स्थानको अच्छी तरह खींच कर भग्न अस्थिके साथ मिला देना उचित है। सन्धिस्थानसे अस्थिके अधोगत होनेसे उसे ऊपर उन्नत करके पीछे बन्धन और लेपनादिका प्रयोग करे।

प्रत्यङ्ग भङ्गकी चिकित्सादि नीचे लिखी जाती है। नखसन्धि उत्पिष्ट हो कर रक्तके सञ्चित होनेसे आरा नामक शस्त्रद्वारा उस स्थानको मथित कर सञ्चित रक्त बाहर निकाल दे। पीछे उसमें पीसे हुए शालितण्डुलका लेप दे। उंगली टूटने या संधिविश्लिष्ट होनेसे सन्धिस्थानको समभावमें स्थापित करके उसे बारीक कपड़े-से लपेट दे और उपरसे घीका सेक दे। पाँव या उसके भग्न होनेसे उसे दीर्घभावमें खींच कर सन्धिस्थान पर पूर्वोक्त प्रकारसे वृक्षकी छाल रख दे और ऊपरसे बारीक कपड़े द्वारा बन्धन कर दे। कटीके भङ्ग होनेसे कटीके ऊर्द्ध और अधोभागको खींच कर संधिभागको अपने स्थानमें संयोजित करे। सन्धिको अपने स्थानमें यथोचित करनेमें वस्तिक्रिया करनी होती है।

पार्श्वदेशकी अस्थिके भङ्ग होनेसे रोगीको खड़ा करके धारे मालिश करे। पीछे दक्षिण या वाम पार्श्वको भग्नास्थिके ऊपर प्रलेप बाँध दे। ग्रीवा व्यक्तिके दाँत टूटे न हो, पर हिलते हों और रक्त निकलता हो, तो उस दाँतको अच्छी तरह बैठा दे और बाहरसे मधावीय द्रव्यका शीतल आलेपन प्रयोग करे। दूधके दाँत हिलनेसे वह कदापि नहीं बैठता।

अधिक कालकी सन्धि यदि विश्लिष्ट हो जाय, तो स्नेह प्रयोग करके स्वेद दे तथा मृदु प्रक्रिया करे। काण्डभङ्ग हो कर यदि विपरीत भावमें सलग्न हो कर जाय तो फिरसे समभावमें सलग्न कर उसका प्रतीकार करे। व्रणके मध्य शुष्क अस्थि रहनेसे उसे निकाल कर फिरसे स्थापन कर दे। शरीरका ऊर्ध्वदेश (मस्तिष्क) टूटने पर कर्णपूरण घृतपान और नस्य उपकारक है। किसी प्रकारके टूटने पर अनुपानका कर्त्तव्य है।

(सुश्रुत चिकि० अ०)

भावप्रकाशमें इसकी चिकित्साका विषय इस प्रकार लिखा है—बबूलकी छालके चूर्णको मधुके साथ खानेसे तीन दिनके अन्दर टूटी हुई हड्डी जुड़ कर वज्र सदृश दृढ़ हो जाती है। इसलीके फलको पीस कर तेल और सौवीरके साथ मिला कर स्वेद देनेसे टूटी हुई हड्डी पहलेकी तरह जुड़ जाती है। पहलौठी गायके दूधको काकोल्यादिगण द्वारा पाक करे। पीछे ठंढा होने पर उसमें घृत और लाक्षा डाल दे। सबेरे इसका पान करनेसे भङ्गरोग जाता रहता है। अस्थिसंहार, लाक्षा, गेहूं और अर्जुनकी छाल, इन्हें एक साथ हो या पृथक् पृथक्, घृत या दुग्धके साथ पान करनेसे विमुक्तसंधि और अस्थिभङ्ग जुड़ जाता है। लहसुन, मधु, लाक्षा, घृत और चीनीको एक साथ पीस कर खानेसे सब प्रकारका भङ्ग आरोग्य होता है। अर्जुन और लाक्षाचूर्ण, घृत और गुग्गुलके साथ लेहन करके पीछे दुग्ध और घृत भोजन करनेसे भङ्ग संयोजित होता है। पिठवनके मूलको कूट कर मांस इसके साथ खानेसे तीन सप्ताहके अन्दर अस्थिभङ्ग जाता रहता है। अलावा इसके लाक्षागुग्गुल, आभागुग्गुल और गन्धतैल आदि औषध विशेष उपकारी हैं।

भङ्गरोगीको लवण, कटु, क्षार, अम्ल, रूक्षद्रव्य, परिश्रम, स्त्रीसङ्ग और व्यायाम आदिका परित्याग करना चाहिये। भावप्रकाशादि वैद्यक ग्रन्थोंमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है, विस्तार होनेके भयसे यहां पर संक्षेपमें लिखा गया।

भग्नदूत (सं० पु०) रणक्षेत्रसे हार कर भागी हुई वह सेना जो राजाको पराजयका समाचार देने आती हो।

भग्नपाद (सं० क्ली०) १ फलितज्योतिषके अनुसार पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, उत्तरफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद और विशाखा ये छः नक्षत्र। इनमेंसे किसीमें मरनेसे मनुष्यके मरनेसे द्विपाद दोष लगता है। इस दोषकी शान्ति अशौचकालके अन्दर ही करनेका विधान है। २ वह जिसके पैर टूट गये हों।

भग्नपार्श्व (सं० क्ली०) भग्नपार्श्व शब्द। कुक्कुराण्ड छः नक्षत्र। भग्नपाद देखो।

भग्नपृष्ठ (सं० पु०) भग्नपृष्ठस्थित। १ सम्मुख। २ मुद्रित मेरुदण्ड। (त्रि०) भग्नं पृष्ठं यस्य। ३ जिसकी पीठ टूट गई हो।

भग्नप्रक्रम (सं० पु०) भग्नः प्रक्रमो यत्र। काव्यगत वाक्य दोष भेद। दोष शब्द देखो।

भग्नप्रक्रमता (सं० स्त्री०) काव्यका दोष, रचनाका क्रम भङ्ग।

भग्नसंधि (सं० पु०) भग्नः संधिरस्मात् वा। संधिस्थान भङ्गरोगविशेष। भग्न शब्द देखो।

भग्नसंधिक (सं० क्ली०) भग्नो विश्लिष्ट संधि यस्य तोड़ल। तक्र, मट्ठा।

भग्नांश (सं० पु०) १ मूल द्रव्यका विभाग या भाग। २ गणित शास्त्रोक्त अङ्कविशेष। किसी वस्तु या संख्या या उससे अधिक समान भागोंमें बाँटनेसे उसके भाग विभागको, अथवा जिस राशि द्वारा वस्तुका अंश प्रकट किया जाय उसे भग्नांश कहते हैं। इस प्रकार किसी एक अविच्छिन्न राशिके समान अंश करके उन भागों में से एक भागको भग्नांश कहते हैं।

विशेष विवरण भिन्न शब्दमें देखो।

भग्नात्मा (सं० पु०) भग्नः क्षीण हीन आत्मा यस्य। कृष्ण प्रतिपदादि क्रमेणैकैककलाक्षयेण भग्नदेहत्वात् तथात्वं। चन्द्रमा।

भग्नावशेष (सं० पु०) १ किसी टूटे-फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्तीका बचा अंश, खंडहर। २ किसी टूटे हुए पदार्थके बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश (सं० त्रि०) भग्ना आशा यस्य। जिसकी आशा भग्न हो गई हो, हताश।

भग्नी (सं० स्त्री०) भगिनी पृषोदरादित्वात् साधु। भगिनी, बहन।

भङ्कारी (सं० स्त्री०) भमित्यव्यक्तशब्दं करोतीति कृ अन्, गौरादित्वात् ङीष्। दंश, मच्छड़।

भङ्क्तृ (सं० त्रि०) भनज् कर्त्तरि तृण्। भङ्गकर्त्ता, तोड़ने फोड़नेवाला।

भङ्ग (सं० पु०) भज्यते इति भञ्ज कर्मणि घञ्। १ तरङ्ग, लहर। २ पराजय, हार। ३ खण्ड। ४ रोगविशेष। ५ भेद। ६ कौटिल्य, कुटिलता। ७ भय, डर। ८ विच्छित्ति, बाधा। ९ रोगमात्र। १० निर्गम। ११ गमन। १२ पक्षाघात नाम। १३ टूटनेका भाव, विनाश। १४ टेढ़े होने या झुकनेका भाव। १५ लकवा नामक रोग। इसमें रोगीके अंग टेढ़े और बेकाम हो जाते हैं।

भङ्गकार (सं० पु०) १ अनिविशिन् नृपपुत्रभेद। २ सत्राजित्पुत्रभेद।

भङ्गक्षत्रिय—उत्तर और पूर्वबङ्गवासी राजवंशी और पलीया लोगोंकी एक संज्ञा।

भङ्गवास (सं० त्रि०) भङ्गेन वासः सौरभमस्या। हरिद्रा, हल्दी।

भङ्गसार्थ (सं० त्रि०) भङ्ग यत्नभाव अनार्जवत्वमित्यर्थः स्यति व्यवस्यति यत् या क्रिया इति यावत्, भङ्गमयथ तीति अर्थं अच्, कौटिल्यव्यवसायक्रियार्थित्वादस्य तथात्वं। कुटिल।

भङ्गा (सं० स्त्री०) भज्यते इति भनज (उणाद। पा ३।३। १२१) इति बाहुलकात् घञ्, टाप्। वृक्षविशेष, भाग। पर्याय—गञ्जा, मातुलानी, मादिनी, विजया, जया। गुण—कफघ्न, तिक्त, ग्राहक, पाचक, लघु, तीक्ष्णोष्ण, पित्तवर्द्धक, मोह, मन्दवायु और अग्निवर्द्धक (भावप्रका० पू०) सिद्धि देखो।

भङ्गाकट (सं० क्ली०) भङ्गाया रजः भङ्गा-रजसि कटच्। भङ्गीरेणु।

भङ्गास्न (सं० पु०) भङ्गेन अनिति इति अन् अच्। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। पर्याय—दीर्घवृन्त।

भङ्गारी (सं० स्त्री०) भङ्गारी पृषोदरादित्वात् साधु। दंश मच्छड़।

भङ्गास्वन—एक राजा। इन्होंने पुत्रकी कामनासे इन्द्र विद्विष्ट अग्निष्टुत् यज्ञका अनुष्ठान किया। यज्ञके फल से उनके एक सौ पुत्र हुए। किसी कारणसे इन्द्र उन पर बड़े कुपित हुए और बदला लेनेका मौका ढूंढ़ने लगे। एक दिन राजा जब शिकारको बाहर गये, तब इन्द्रने मायाजाल फैला कर उन्हें मोह लिया। जब राजा माया मोहित हो इधर उधर भ्रमण करते करते बहुत थक गये तब प्यास बुझानेकी इच्छासे एक तालाबके किनारे उपस्थित हुए। तालाबमें ज्यों ही उन्होंने डुब लगाया, त्यों ही वे स्त्री रूपमें परिणत हो गये। अब वे घर लौट अपने पुत्रोंके ऊपर राज्यभार सौंप निश्चिन्त मनसे जङ्गल को चल दिये। वहां एक तपस्वीके साथ उनकी मुलाकात हुई। दोनोंके सहवाससे स्त्रीरूपी राजाके गर्भसे पुनः सौ पुत्र उत्पन्न हुए। राजाने इन पुत्रोंको औरसपुत्रोंके साथ सुखसे रहनेका हुकुम दिया। इन सब राजकुमारों को एक साथ रहते देख इन्द्रने उनमें बीज भ्रातृविरोध पैदा कर दिया। उस विरोधने ऐसा भयंकररूप धारण किया, कि वे सबके सब एक दूसरेके हाथ मारे गये। यह संवाद पा कर राजा रोदन करने लगे। इस समय ब्राह्मणरूपमें पहुंच कर इन्द्रने उनसे कहा, 'तुमने अनादर करके मेरे विद्विष्ट अग्निष्टुत् यज्ञका अनुष्ठान किया था। उसीके फलसे तुम्हारे सभी पुत्र विनष्ट हुए हैं।' अब इन्द्रके चरणोंमें गिर कर राजाने उन्हें प्रसन्न किया। इन्द्र बोले, 'मैं तुम्हारे दो सौ पुत्रोंमेंसे केवल एक सौको प्राणदान करूंगा, सो तुम पुरुषावस्थाके या स्त्री अवस्थाके सौ पुत्रोंका प्राणदान चाहते हो, साफ कहो।' उत्तरमें राजाने स्त्री अवस्थाके सौ पुत्रोंके प्राणदानके लिये प्रार्थना की। इन्द्रके इसका कारण पूछने पर राजाने कहा, 'स्त्रियोंको मनुष्यगणके पुरुषकी अपेक्षा बहुत ज्यादा है, इसीसे मैं स्त्री-अवस्थाके पुत्रोंके प्राणके लिये प्रार्थना करता हूं।' इस पर इन्द्रने उनके सभी पुत्रोंको जिला दिया और बादमें राजासे पूछा, 'तुम अभी पुरुष या स्त्री इनमेंसे किस रूपमें रहना चाहते हो?

पार्श्वदेशकी अस्थिके भङ्ग होनेसे रोगीको खड़ा करके घीसे मालिश करे। पीछे दक्षिण या वाम पार्श्वकी भङ्गास्थिके ऊपर प्रलेप बाँध दे। युवा व्यक्तिके दांत टूटे न हों, पर हलते हो और रक्त निकलता हो, तो उस दांतको अच्छी तरह बैठा दे और वाहरसे सधानीय द्रव्यका शीतल आलेपन प्रयोग करे। वृद्धके दांत हलनेसे वह कदापि नहीं बैठता।

अधिक कालको सन्धि यदि विश्लिष्ट हो जाय, तो स्नेह प्रयोग करके स्वेद दे तथा मृदु प्रक्रिया करे। काण्डभङ्ग हो कर यदि विपरीत भावमें सलग्न हो भर जाय तो फिरसे समभावमें सलग्न कर उसका प्रतीकार करे। व्रणके मध्य शुष्क अस्थि रहनेसे उसे निकाल कर फिरसे स्यन कर दे। शरीरका ऊर्द्ध्वदेश ( मस्तिष्क ) टूटने पर कर्णपूरण घृतपान और नस्य उपकारक है। किसी प्रशाखाके टूटने पर अनुवासन कर्त्तव्य है।

( सुश्रुत चिकि० अ० )

भावप्रकाशमें इसकी चिकित्साका विषय इस प्रकार लिखा है—बबूलकी छालके चूर्णको मधुके साथ खानेसे तीन दिनके अन्दर टूटी हुई हड्डी जुड कर वज्र सदृश दृढ हो जाती है। इमलीके फलको पीस कर तेल और सौवीरके साथ मिला कर स्वेद देनेसे टूटी हुई हड्डी पहलेकी तरह जुड जाती है। पहलौठी गायके दूधको काकोल्यादिगण द्वारा पाक करे। पीछे ठढा होने पर उसमें घृत और लाख डाल दे। सवेरे इसका पान करनेसे भङ्गरोग जाता रहता है। अस्थिसहार, लाक्षा, गेहू और आककी छाल, इन्हे एक साथ हो या पृथक् पृथक्, घृत वा दुग्धके साथ पान करनेसे विमुक्तसधि और अस्थिभङ्ग जुड आता है। लहसुन, मधु, लाक्षा, घृत और चीनीको एक साथ पीस कर खानेसे सब प्रकारका भङ्ग आरोग्य होता है। अर्जुन और लाक्षाचूर्ण, घृत और गुग्गुलके साथ लेहन करके पीछे दुग्ध और घृत भोजन करनेसे भङ्ग सयोजित होता है। पिठवनके मूलको चूर कर मास रसके साथ खानेसे तीन सप्ताहके अन्दर अस्थिभङ्ग जाता रहता है। अलावा इसके आभागुग्गुल, लाक्षागुग्गुल और गन्धतैल आदि औषध विशेष उपकारी हैं।

भङ्गरोगीको लवण, कटु, क्षार, अम्ल, रूक्षद्रव्य, परिश्रम, स्त्रीसङ्ग और व्यायाम आदिका परित्याग करना चाहिये। भावप्रकाशादि वैद्यक ग्रन्थोंमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है, विस्तार होनेके भयसे यहा पर सक्षेपमें लिखा गया।

भग्नदूत ( स० पु० ) रणक्षेत्रमे हार कर भागी हुई वह सेना जो राजाको पराजयका समाचार देने आती हो।

भग्नपाद ( स० क्ली० ) १ फलितज्योतिषके अनुसार पुनर्वसु, उत्तराषाढा, कृत्तिका, उत्तरफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद और विशाखा ये छ नक्षत्र। इनमेंसे किसी एकमें मनुष्यके मरनेसे द्विपाद दोष लगता है। इस दोषकी शान्ति अशौचकालके अन्दर ही करनेका विधान है। २ वह जिसके पैर टूट गये हों।

भग्नपादर्क्ष ( स० क्ली० ) भग्नपाद ऋक्ष। पुष्कराख्य छ नक्षत्र। भग्नपाद देखो।

भग्नपृष्ठ ( स० पु० ) भग्नपृष्ठस्मिन्। १ सम्मुख। २ मुदित मेवदण्ड। ( त्रि० ) भग्न पृष्ठ यस्य। ३ जिसकी पीठ टूट गई हो।

भग्नप्रक्रम ( स० पु० ) भग्न प्रक्रमो यत्र। काव्यगत वाक्य दोष भेद। दोष शब्द देखो।

भग्नप्रक्रमता ( स० स्त्री० ) काव्यका दोष, रचनाका क्रम भङ्ग।

भग्नसधि ( स० पु० ) भग्न सधिरस्मात्माइ वा। संधि स्थान भङ्गरोगविशेष। भग्न रोग देखो।

भग्नसधिक ( स० क्ली० ) भग्नो विश्लिष्ट सन्धि संघा तोऽत्र। तक्र, मट्ठा।

भग्नांश ( स० पु० ) १ मूल द्रव्यका विभाग या खण्ड। २ गणित शास्त्रोक्त अङ्कविशेष। किसी वस्तुको दो तीन या उससे अधिक समान भागोंमें बांटनेसे उसके एक एक विभागको, अथवा जिस राशि द्वारा एकका अंश व्यक्त किया जाय उसे भग्नांश कहते हैं। इस प्रकार विभक्त किसी एक अवच्छिन्न राशिके समान अंशके दो भागोंमें से एक भागको अर्द्धक कहते हैं।

विशेष विवरण भिन्न शब्दमें देखो।

भग्नात्मा ( स० पु० ) भग्नः क्रमेण हीन आत्मा देहो यस्य, कृष्ण प्रतिपदादि क्रमेणैककलाच्छेदेन भग्नदेहत्वादस्य तथात्व। चन्द्रमा।

भग्नावशेष (सं० पु०) १ किसी टूटे-फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्तीका बचा अंश, खंडहर। २ किसी टूटे हुए पदार्थके बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश (सं० त्रि०) भग्ना आशा यस्य। जिसकी आशा भंग हो गई हो, हताश।

भग्नी (सं० स्त्री०) भगिनी पृषोदरादित्वात् साधु। भगिनी, बहन।

भङ्कारी (सं० स्त्री०) भमित्यव्यक्तशब्द करोतीति कृ अन् गौरादित्वात् ङीष्। दंश, मच्छड़।

भङ्क्तृ (सं० त्रि०) भञ्ज् कर्त्तरि तृण्। भङ्गकर्त्ता, तोड़ने फोड़नेवाला।

भङ्ग (सं० पु०) भज्यते इति भञ्ज कर्मणि घञ्। १ तरङ्ग, लहर। २ पराजय, हार। ३ खण्ड। ४ रोगविशेष। ५ भेद। ६ कौटिल्य, कुटिलता। ७ भय, डर। ८ विच्छित्ति, बाधा। ९ रोगभाव। १० निर्गम। ११ गमन। १२ एक नागका नाम। १३ टूटनेका भाव, विनाश। १४ टेढ़े होने या झुकनेका भाव। १५ लकवा नामक रोग। इसमें रोगीके अंग टेढ़े और बेकाम हो जाते हैं।

भङ्गकार (सं० पु०) १ अनिमित्र नृपपुत्रभेद। २ सत्राजित्पुत्रभेद।

भङ्गक्षत्रिय—उत्तर और पूर्वबङ्गवासी राजवंशी और पलीया लोगोंकी एक संज्ञा।

भङ्गवास (सं० त्रि०) भङ्गेन वास्यं सौरभमस्या। हरिद्रा, हल्दी।

भङ्गसार्थ (सं० त्रि०) भङ्गं यमभाव अनार्जवत्वमित्यर्थः स्यति व्यवस्यति यत् या क्रिया इति यावत्, भङ्गसमर्थ सोति अर्थ अच्, कौटिल्यव्यवसायक्रियार्थिनयादन्य समालत्वं। कुटिल।

भङ्गा (सं० स्त्री०) भज्यते इति भञ्ज (हलश्च। पा ३।३।१२१) इति बाहुलकात् घञ्, टाप्। वृक्षविशेष, भांग। पर्याय—गञ्जा, मातुलानी, मादिनी, विजया, जया। गुण—कफघ्न, तिक्त, ग्राहक, पाचक, लघु, तीक्ष्णोष्ण, पित्तवर्द्धक, मोह, मन्दवायु और अग्निवर्द्धक (भावप्रका० पू०) विजि देखो।

भङ्गाकट (सं० स्त्री०) भङ्गाया रजः भङ्गा-रजसि कटच्। भङ्गोपध।

भङ्गान (सं० पु०) भङ्गेन अनिति इति अन् अच्। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। पर्याय—दीर्घजङ्घ।

भङ्गारी (सं० स्त्री०) भङ्कारी पृषोदरादित्वात् साधु। दंश, मच्छड़।

भङ्गाश्वन—एक राजा। इन्होंने पुत्रकी कामनासे इन्द्र विद्विष्ट अग्निष्टुत् यज्ञका अनुष्ठान किया। यज्ञके फलसे उनके एक सौ पुत्र हुए। किसी कारणसे इन्द्र उन पर बड़े कुपित हुए और बदला लेनेका मौका ढूंढने लगे। एक दिन राजा जब शिकारको बाहर गये, तब इन्द्रने मायाजाल फैला कर उन्हें मोह लिया। जब राजा माया मोहित हो इधर उधर भ्रमण करते करते बहुत थक गये तब प्यास बुझानेकी इच्छासे एक तालाबके किनारे उपस्थित हुए। तालाबमें ज्यों ही उन्होंने डुब लगाया, त्यों ही वे स्त्री रूपमें परिणत हो गये। अब वे घर लौट अपने पुत्रोंके ऊपर राज्यभार सौंप निश्चिन्त मनसे जङ्गल को चल दिये। वहां एक तपस्वीके साथ उनकी मुलाकात हुई। दोनोंके सहवाससे स्त्रीरूपी राजाके गर्भसे पुनः सौ पुत्र उत्पन्न हुए। राजाने इन पुत्रोंको औरसपुत्रोंके साथ सुखसे रहनेका हुकुम दिया। इन्द्र सब राजकुमारों को एक साथ रहते देख इन्द्रने उनके बीच भ्रातृविरोध पैदा कर दिया। उस विरोधने ऐसा भयङ्कररूप धारण किया, कि वे सबके सब एक दूसरेके हाथ मारे गये। यह संवाद पा कर राजा रोदन करने लगे। इस समय ब्राह्मणरूपमें पहुंच कर इन्द्रने उनसे कहा, 'तुमने अनादर करके मेरे विद्विष्ट अग्निष्टुत् यज्ञका अनुष्ठान किया था। उसीके फलसे तुम्हारे सभी पुत्र विनष्ट हुए हैं।' अब इन्द्रके चरणोंमें गिर कर राजाने उन्हें प्रसन्न किया। इन्द्र बोले, 'मैं तुम्हारे दो सौ पुत्रोंमेंसे केवल एक सौको प्राणदान करूंगा, सो तुम पुरुषावस्थाके या स्त्री अवस्थाके सौ पुत्रोंका प्राणदान चाहते हो, साफ साफ कहो।' उत्तरमें राजाने स्त्री अवस्थाके सौ पुत्रोंके प्राणदानके लिये प्रार्थना की। इन्द्रके इसका कारण पूछने पर राजाने कहा, 'स्त्रियोंके स्नेह पुरुषकी अपेक्षा बहुत ज्यादा है, इसीसे मैं अङ्गनावस्थाके पुत्रोंके प्राणके लिये प्रार्थना करता हूं।' इस पर इन्द्रने उनके सभी पुत्रोंको जिला दिया और बादमें राजाने पुरुष, पुरुष अभी पुरुष या स्त्री इनमेंसे किस रूपमें

राजाने उत्तर दिया, 'स्त्रीरूप ही मुझे पसन्द आता है। इसलिये मैं फिर पुरुष होना नहीं चाहता।' इसका कारण पूछने पर राजाने जवाब दिया, 'देवराज ! संसर्ग-कालमें स्त्री पुरुषके मध्य स्त्रीको ही विशेष आनन्दलाभ होता है, इस कारण मैं स्त्रीभावमें ही रहना चाहता हूं। सच कहता हूं, जबसे मैंने स्त्रीत्वलाभ किया है, तबसे मैं बड़ा ही आनन्द लाभ करता आया हूं, इसीसे इस रूपके परित्याग करनेकी मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है।' तभीसे राजा स्त्रीरूपमें ही रहने लगे। (भारत अनुशा० १२ अ०)

भङ्गि ( सं० स्त्री० ) भज्यते इति भनज इन् न्यङ्क्वादित्वात् कुत्व। १ विच्छेद। २ कुटिलता, टेढ़ाई। ३ विन्यास, अंदाज। ४ कल्लोल, लहर। ५ भङ्ग। ६ व्याज। ७ प्रतिकृति। ८ अवयवादिके भङ्गयत् विकृतभावके अनुकरण-रूप कार्य।

भङ्गिन् ( सं० त्रि० ) भङ्ग-अस्त्यर्थे इनि। भङ्गप्रवण, भङ्गशील, नष्ट होनेवाला।

भङ्गिभाव ( सं० पु० ) वक्रभाव।

भङ्गिमत् ( सं० त्रि० ) भङ्गि विद्यतेऽस्य मतुप्। भङ्गियुक्त।

भङ्गिमन् ( सं० पु० ) भङ्ग-बाहुलकात् स्वार्थे इमनिच्। १ भङ्गि, शोभा। (त्रि०) २ तद्युक्त।

भङ्गी ( सं० स्त्री० ) भङ्गि कृदिकारादिति पक्षे ङीप्। १ भङ्गि। (पु०) २ भङ्गशील, नष्ट होनेवाला। ३ भङ्ग करनेवाला, भंगकारी। ४ रेखाओंके झुकावसे खींचा हुआ चित्र या बेलबूटा आदि।

भङ्गी—( मिसल ) सिखोंका एक सम्प्रदाय। पाञ्जाबवासी अग्रवंशीय छज्जासिंह इस दलके प्रतिष्ठाता हैं। इन्होंने सिख गुरु वैरागी बन्दासे 'पहाल' ग्रहण किया था। बन्दाकी मृत्युके बाद भीमसिंह, मल्लसिंह और जगत्सिंह नामक तीन आत्मीयोंने उनके निकट दीक्षा ली। परस्पर-प्रीति-सौहार्दसे और आत्मोपकतामें सम्बद्ध हो कर ये लोगों दस्युवृत्ति करनेकी आशासे एक दल बांधनेकी कोशिश करने लगे। धीरे धीरे गिरधारीसिंह, गुलाबसिंह, चक्करसिंह, और गुरुबक्ससिंह, आगरसिंह, पञ्जेरा और आदि सरदारोंने उक्त छज्जासिंहके निकट सिखधर्म ग्रहण किया। ये सभी भङ्गसिंहको गुरुकी तरह मानते थे। इस दलके सभी भङ्ग पीनेमें मस्त रहते हैं। इसलिए इस सम्प्रदायके सिख गण भङ्गी नामसे प्रसिद्ध हुए।

इस प्रकारसे नाना स्थानोंके सिख सम्प्रदायिकोंके द्वारा पुष्ट हो कर भङ्गी सरदारने रात्रिके समय दस्यु-वृत्ति करना प्रारम्भ कर दी। लूट-खसोटमें कृतकार्य होने पर एक दिन उनके हृदयमें गुरुगोविन्दके भविष्यत् वाक्यका स्मरण हो आया। धीरे धीरे उनके हृदयमें राज्य करनेकी इच्छा हुई और इसके लिए वे अपना बल बढ़ाने लगे। इसी बीचमें छज्जासिंहकी मृत्यु हो गई और भीमसिंहने उस दलका नेतृत्व ग्रहण किया। उन्हींकी अधिनायकतामें भंगी सम्प्रदायको सुश्रृङ्खलता और बलाधिक्य सम्पादित हुआ। नादिरशाहके भारत आक्रमणके बाद, भीमसिंह अपने सहकारी मल्लसिंह और जगत्-सिंहको ले कर इस बलशाली सिखसम्प्रदायकी स्थापना कर गये।

भीमसिंहकी मृत्युके बाद उनके दत्तक पुत्र हरिसिंह इस मिसलके सरदार चुने गये। इस निर्भीक और साहसी नेताके नीचे रह कर भङ्गीगणोंने लूट पाट कर बहुत अर्थोपार्जन किया। इन्होंने करीब २० हजार अनुचर ले कर सियालकोट, रड़ियाला और मोरोवाल नामके स्थान अधिकार किये। गिलवाली ग्राममें इन्होंने अपना प्रधान अड्डा कायम किया। चिनिओत और भग लूटनेके बाद इन्होंने आवदाली राज अहमदशाहके विरुद्ध युद्ध किया। १७६२ ई०में कोट ख्वाजा सैद आक्रमण करके ये लाहोरके अफगान शासनकर्त्ता ख्वाजा ओबेदाका यथासर्वस्व हरण कर लाये।

उसके बाद हरिसिंह द्वारा परिचालित भंगियोंने सिन्धुसमतट और डेराजात प्रदेशमें लूट मचाई तथा अन्यान्य सेनाओंने रावलपिण्डी, मालवा और माँझा प्रदेश जय कर जम्मू लूटा। जम्मूराज रणजितदेव इनकी अधीनता स्वीकार करनेके लिए बाध्य हुए। यमुनाके समीप भंगी सरदार रायसिंह और भगतसिंहने रोहिला और महाराष्ट्र सेनाका सामना कर नाजिब उद्दौलाको विपर्यस्त और विहत किया। १७६३ ई०में रामगढिया और कन्हियावालके सहयोगसे उन्होंने कसूर आक्रमण

किया था। दूसरे वर्ष वे पटियाला राज अमरसिंहके विरुद्ध युद्ध करते समय मारे गये।

हरिसिंहके दो स्त्री थीं। पहली स्त्रीसे झण्डासिंह तथा दूसरीसे छरतसिंह, दीवानसिंह और वासुसिंह, इस तरह पांच पुत्र थे। झण्डासिंहने दलपतित्व ग्रहण कर चारों भाइयों तथा साहवसिंह, रायसिंह, भागसिंह, सुधासिंह, दोधिया और निधानसिंह आदि सरदारोंकी सहायतासे भंगि शक्तिको शीर्ष स्थान तक पहुंचा दिया।

१७६६ ई०में झण्डासिंह बहुत सेनाके साथ मूलतान के शासनकर्त्ता सुजा खां और बहवलपुरके दाउद पुत्रोंके साथ शतद्रु नदीके किनारे इनका जो युद्ध हुआ था, उसमें पाकपत्तन तक स्थान सिख राज्यकी सीमा स्थिरी कृत हुई थी। बादमें कसूरके पठानोंको पर जित कर उन्होंने पुनः १७७१ ई०में मूलतान आक्रमण किया। करीब डेढ़ मास तक मुलतान दुर्ग घेरे रहनेके बाद ये भाग आनेके लिए वाध्य हुए। उस समय अफगान सेनापति जहान खाँ और दाउद-पुत्रोंने विशेष रण निपुणताका परिचय दिया था।

१७७२ ई०में झण्डासिंहने लहनासिंह आदि सिखसरदारोंके सहयोगसे पुनः मूलतान आक्रमण किया और वहांके शासनकर्ता और दाउद पुत्रोंको पराजित कर मुलतान प्रदेश अपनेमें बांट कर दीवानसिंहको किलेदार बना दिया। मूलतानसे लौट कर इन्होंने बेलूच प्रदेश, झङ्ग, मानगेड़ा और काल बाग अधिकार किया। उसके बाद ये अमृतसर देखने गये, तो वहां भङ्गी किला * और एक बाजार बसा गये। फिर रामनगरकी तरफ अग्रसर हो कर इन्होंने छट्ठ लागोंसे प्रसिद्ध जमजमा † नामक तोप पर कब्जा किया। जम्मूके सुकेर्चकिया सरदार चरत्सिंह और कन्हियापति जयसिंह ब्रजराजदेवके पक्षमें हो कर उनके विपक्ष आचरण करनेसे वे सेना सहित जम्मूकी तरफ अग्रसर हुए। वहां कई दिन तक घोरतर युद्ध होनेके बाद चरत्सिंह और खुद उनकी मृत्यु हो जानेसे ¶ जयसिंहने जयपताका फहराई।

झण्डासिंहकी हत्याके बाद उनके भाई गण्डासिंह दल-पति चुने गये। इन्होंने अपने दलकी विशेष अध्यवसायसे पुष्टि की। इन्हींके उद्यमसे भङ्गी दुर्गका निर्माण कार्य सम्पादित हुआ और अमृतसरनगरी सौधमालासे विभूषित हुई।

कन्हिया सरदार जयसिंहकी विश्वासघातकतासे अपने भाईकी मृत्यु पर गण्डासिंहके हृदयकी आग जोरोंसे धधक रही थी। वे विवादके लिए छिद्रान्वेषण करने लगे। आखिर पठानकोटजागीरके सम्बन्धमें झगड़ा खड़ा हुआ। + पठान-कोट लौटाया नहीं गया, यह देख वे सेना सहित पठान-कोटकी तरफ अग्रसर हुए।

तारासिंह उनके आनेकी खबर पा कर बड़े घबराये और अपने दल पति गुरुबख्शसिंहकी सहायतासे आत्मरक्षाकी चेष्टा करने लगे। दीनानगरके सामने दोनों दलोंमें १० दिन तक भारी युद्ध हुआ, परन्तु सहसा गण्डासिंहकी मृत्यु हो जानेसे युद्धकी फल निष्पत्ति न हो सकी। उनके पुत्र देशासिंह नाबालिग थे, अत भतीजे चरत्सिंहने अधिनायकता ग्रहण की। इस युद्धमें शत्रुओं के हाथसे चरत्सिंहकी मृत्यु होने पर भङ्गी दल छत्रभङ्ग हो कर पठानकोट छोड़ गया।

अमृतसरमें आ कर भङ्गी-दलने बालक देशासिंहको अपना सरदार घोषित किया। धीरे हरिसिंह और झण्डासिंह द्वारा परिचालित भङ्गि सेना और सरदारगण क्रमशः बालककी अधीनताकी उपेक्षा करते हुए स्वाधीन होनेकी चेष्टा करने लगे। १७७७ ई०में मूलतानके राजा

* लोन-मण्डीके पीछे अब भी उस ध्वसावशिष्ट किलेका चिह्न पाया जाता है।

† अंग्रेज-सेनापति सर हनरी हार्डिञ्जने १८४५ ई०में फिरोजशहरके युद्धमें यह तोप प्राप्त की थी। लाहोरके सेन्ट्रल-म्युजियमके सामनेके दरवाजे पर अब भी यह रखी गई है।

¶ अपने ही एक सैनिकसे मृत्यु हुई थी।

+ झण्डासिंहने नन्दसिंह नामक एक मिसलदारको पठानकोट दिया था। उसकी विधवा स्त्रीने तारासिंह कन्हियाको अपनी कन्या समर्पित की थी, इसलिए शीघ्र ही वह सम्पत्ति जमाईके हाथ लगी। भङ्गीकी सम्पत्ति कन्हियाओंके हाथ लगते, देख कर झण्डा सरदारने उसे लौटा देनेको कहा। इसी परसे दोनोंमें विवाद हो गया।

राजाने उत्तर दिया, 'स्त्रीरूप ही मुझे पसन्द आता है। इसलिये मैं फिर पुरुष होना नहीं चाहता।' इसका कारण पूछने पर राजाने जवाब दिया, 'देवराज! संसर्गकालमें स्त्री पुरुषके मध्य स्त्रीको ही विशेष आनन्दलाभ होता है, इस कारण मैं स्त्रीभावमें ही रहना चाहता हूं। सच कहता हूं, जबसे मैंने स्त्रीत्वलाभ किया है, तबसे मैं बड़ा ही आनन्द लाभ करता आया हूं, इसीने इस रूपके परित्याग करनेकी मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है।' तभीसे राजा स्त्रीरूपमें ही रहने लगे। (भारत अनुशा० १२ अ०)

भङ्गि (सं० स्त्री०) भज्यते इति भनज इन् न्यङ्क्वादित्वात् कुत्व। १ विच्छेद। २ कुटिलता, टेढ़ाई। ३ विन्यास, अंदाज। ४ कल्लोल, लहर। ५ भङ्ग। ६ व्याज। ७ प्रतिकृति। ८ भनयवादिके भङ्गवत् विरतभावके अनुकरणरूप कार्य।

भङ्गिन् (सं० त्रि०) भङ्ग-अस्त्यर्थे इनि। भङ्गप्रवण, भङ्गशील, नष्ट होनेवाला।

भङ्गिभाव (सं० पु०) वक्रभाव।

भङ्गिमत् (सं० त्रि०) भङ्गि विद्यतेऽस्य मतुप्। भङ्गियुक्त।

भङ्गिमन् (सं० पु०) भङ्ग बाहुल्कात् स्वार्थे इमनिच्। १ भङ्गि, शोभा। (त्रि०) २ तरङ्गयुक्त।

भङ्गी (सं० स्त्री०) भङ्गि कृदिकारादिति पक्षे ङीप। १ भङ्गि। (पु०) २ भङ्गशील, नष्ट होनेवाला। ३ भङ्ग करनेवाला, भंगकारी। ४ रेखाओंके झुकावसे खींचा हुआ चित्र या बेलबूटा आदि।

भङ्गी—(मिसल) सिखोंका एक सम्प्रदाय। पाञ्जारवासी जाठवंशीय छज्जासिंह इस दलके प्रतिष्ठाता हैं। इन्होंने सिख गुरु बैरागी बन्दासे 'पहाल' ग्रहण किया था। बन्दाकी मृत्युके बाद भीमसिंह, मल्लसिंह और जगतसिंह नामक तीन आत्मीयोंने उनके निकट दीक्षा ली। परस्परप्रीति सौहार्दसे और आत्मीयतामें सम्बद्ध हो कर ये तीनों दस्युवृत्ति करनेकी आशासे एक दल बांधनेकी कोशिश करने लगे। धीरे धीरे मिहासिंह, गुलाबसिंह, करूरसिंह, और गुरबक्ससिंह, आगरसिंह, गङ्गोरा और मनवनसिंह आदि सरदारोंने उक्त छज्जासिंहके निकट 'पहल' ले कर सिख धर्म धारण किया। ये सभी छज्जासिंहको गुरुकी तरह मानते थे। इस दलके सभी भङ्ग पीनेमें मस्त रहते हैं। इसलिए इस सम्प्रदायके सिख गण भङ्गी नामसे प्रसिद्ध हुए।

इस प्रकारसे नाना स्थानोंके सिख-सम्प्रदायिकोंके द्वारा पुष्ट हो कर भङ्गी सरदारने रात्रिके समय दस्युवृत्ति करना प्रारम्भ कर दी। लूट-खसोटमें कृतकार्य होने पर एक दिन उनके हृदयमें गुरुगोविन्दके भविष्यत् वाक्यका स्मरण हो आया। धीरे धीरे उनके हृदयमें राज्य करनेकी इच्छा हुई और इसके लिए वे अपना बल बढ़ाने लगे। इसी बीचमें छज्जासिंहकी मृत्यु हो गई और भीमसिंहने उस दलका नेतृत्व ग्रहण किया। उन्हींकी अधिनायकतामें भंगी सम्प्रदायकी सुश्रृङ्खलता और बलाधिक्य सम्पादित हुआ। नादिरशाहके भारत आक्रमणके बाद, भीमसिंह अपने सहकारी मल्लसिंह और जगत्सिंहको ले कर इस बलशाली सिखसम्प्रदायकी स्थापना कर गये।

भीमसिंहकी मृत्युके बाद उनके दत्तक पुत्र हरिसिंह इस मिसलके सरदार चुने गये। इस निर्भीक और साहसी नेताके नीचे रह कर भङ्गीगणोंने लूट पाट कर बहुत अर्थोपार्जन किया। इन्होंने करीब २० हजार अनुचर ले कर सियालकोट, कड़ियाला और मोरोवाल नामके स्थान अधिकार किये। गिलवाली ग्राममें इन्होंने अपना प्रधान अड्डा कायम किया। चिनिओत और झंग लूटनेके बाद इन्होंने आवदाली राज अहमदशाहके विरुद्ध युद्ध किया। १७६२ ई०में कोट ख्वाजा सैद आक्रमण करके ये लाहोरके अफगान शासनकर्त्ता ख्वाजा ओबेदाका यथासर्वस्व हरण कर लाये।

उसके बाद हरिसिंह द्वारा परिचालित भंगियोंने सिन्धुसमतट और डेराजात प्रदेशमें लूट मचाई तथा अन्यान्य सेनाओंने रावलपिण्डी, मालवा और मांझा प्रदेश जय कर जम्मू लूटा। जम्मूराज रणजितदेव इनकी अधीनता स्वीकार करनेके लिए बाध्य हुए। यमुनाके समीप भंगी सरदार रायसिंह और भगतसिंहने रोहिला और महाराष्ट्र सेनाका सामना कर नाजिब उद्दौलाको विपर्यस्त और निहत किया। १७६३ ई०में रामगढ़िया और कनहियादलके सहयोगसे उन्होंने कसूर आक्रमण

किया था। दूसरे चप ये पटियाला राज अमरसिंहके विरुद्ध युद्ध करते समय मारे गये।

हरिसिंहके दो स्त्री थीं। पहली स्त्रीसे झण्डासिंह तथा दूसरीसे छरतसिंह, दीवानसिंह और वागुसिंह, इस तरह पांच पुत्र थे। झण्डासिंहने दलपतित्व ग्रहण कर चारों भाइयों तथा साहबसिंह, रायसिंह, भागसिंह, सुधासिंह, दोधिया और निधानसिंह आदि सरदारोंकी सहायतासे भंगि शक्तिको शीर्ष स्थान तक पहुंचा दिया।

१७६६ ई०में झण्डासिंह बहुत सेनाके साथ मुल्तान के शासनकर्त्ता सुजा खां और बहवलपुरके दाउद पुत्रोंके साथ शतद्रु नदीके किनारे इनका जो युद्ध हुआ था, उसमें पाकपत्तन तक स्थान सिख राज्यकी सीमा स्थिरी कृत हुई थी। बादमें कसूरके पठानोंको परजित कर उन्होंने पुन: १७७१ ई०में मूल्तान आक्रमण किया। करीब डेढ़ मास तक मुलतान दुर्ग घेरे रहनेके बाद ये भाग आनेके लिए वाध्य हुए। उस समय अफगान सेनापति जहान खां और दाउद-पुत्रो ने विशेष रण निपुणताका परिचय दिया था।

१७७२ ई०में झण्डासिंहने लहनासिंह आदि सिखसरदारो के सहयोगसे पुन: मूलतान आक्रमण किया और वहाके शासनकर्त्ता और दाऊद पुत्रोंको पराजित कर मुल्तान प्रदेश अपनेमें बांट कर दीवानसिंहको किलेदार बना दिया। मूल्तानसे लौट कर इन्होंने बेलूच प्रदेश, झङ्ग, मानखेडा और कालबाग अधिकार किया। उसके बाद ये अमृतसर देखने गये, तो वहां भङ्गी किला * और एक बाजार बसा गये। फिर रामनगरकी तरफ अग्रसर हो कर इन्होंने छट्ठ लोगोंसे प्रसिद्ध जमजमा † नामक तोप पर कब्जा किया। जम्मूके सुकेर्चकिया सरदार चरत्‌सिंह और कन्हियापति जयसिंह ब्रजराजदेवके पक्षमें हो कर उनके विपक्ष आचरण करने से वे सेना सहित जम्मूकी तरफ अग्रसर हुए। वहां कई दिन तक घोरतर युद्ध होनेके बाद चरत्‌सिंह और खुद उनकी मृत्यु हो जानेसे ¶ जयसिंहने जयपताका फहराई।

झण्डासिंहकी हत्याके बाद उनके भाई गण्डासिंह दल पति चुने गये। इन्होंने अपने दलकी विशेष अध्यवसायसे पुष्टि की। इन्हींके उद्यमसे भङ्गी दुर्गका निर्माण कार्य सम्पादित हुआ और अमृतसरनगरी सौधमालासे विभूषित हुई।

कन्हिया सरदार जयसिंहकी विश्वासघातकतासे अपने भाईको मृत्यु पर गण्डासिंहके हृदयकी आग जोरोंसे धधक रही थी। ये विवादके लिए छिद्रान्वेषण करने लगे। आखिर पठानकोटजागीरके सम्बन्धमें झगडा खड़ा हुआ।+ पठान-कोट लौटाया नहीं गया, यह देख ये सेना सहित पठान कोटकी तरफ अग्रसर हुए।

तारासिंह उनके आनेकी खबर पा कर बड़े घबराये और अपने दल पति गुरुबख्‌सिंहकी सहायतासे आत्म-रक्षाकी चेष्टा करने लगे। दीनानगरके सामने दोनों दलोंमें १० दिन तक भारी युद्ध हुआ, परन्तु सहसा गण्डासिंहकी मृत्यु हो जानेसे युद्धको फल निष्पत्ति न हो सकी। उनके पुत्र देशासिंह नावालिग थे, अत: भतीजे चरत्‌सिंहने अधिनायकता ग्रहण की। इस युद्धमें शत्रुओं के हाथसे चरत्‌सिंहकी मृत्यु होने पर भङ्गी दल छत्रभङ्ग हो कर पठानकोट छोड गया।

अमृतसरमें आ कर भङ्गी-दलने बालक देशासिंहको अपना सरदार घोषित किया। और हरिसिंह और झण्डासिंह द्वारा परिचालित भङ्गि-सेना और सरदारगण क्रमश: बालककी अधीनताकी उपेक्षा करते हुए स्वाधीन होनेकी चेष्टा करने लगे। १७७७ ई०में मूल्तानके राजा

* लोन-मण्डीके पीछे अब भी उस ध्वसावशिष्ट किलेका चिह्न पाया जाता है।

† अंग्रेज-सेनापति सर हनरी हार्डिञ्जने १८४५ ई०में फिरोज-शहरके युद्धमें यह तोप प्राप्त की थी। लाहोरके सेन्ट्रल-म्युजियमके सामनेके दरवाजे पर अब भी वह रखा गया है।

¶ अपने ही एक सैनिकसे मृत्यु हुई थी।

\+ झण्डासिंहने नन्दसिंह नामक एक सिखसर्दारको पठान-कोट दिया था। उसकी विधवा स्त्रीने तारासिंह कन्हियाको अपनी कन्या समर्पित की थी, इसलिए शीघ्र ही यह सम्पत्ति जमाईके हाथ लगी। भङ्गीका सम्पत्ति कन्हियाओंके हाथ लगते, देख कर झण्डा सरदारने उसे लौटा देनेको कहा। इसी सूत्रसे दोनोंमें विवाद हो गया।

मुजफ्फर खाके विद्रोही होने पर दीवानसिंहने विशेष निपुणताके साथ उनका दमन किया था। इसी बीचमें अहमदशाहके पुत्र तैमूरशाह काबुलके सिंहासन पर बैठ कर पञ्जाबराज्य दखल करनेकी आशासे सेना तयार करने लगे। उधर सिखोंने भी विपत्तिकी सम्भावना देख तयारियां करनी शुरू कर दी। १७७७-७८ ई०में मुल्तान प्रदेशमें अफगान और सिख सेनामें घोरतर युद्ध हुआ। अफगानीसेनापति हाजीखाँ इस युद्धमें बन्दी हुए। सिखोंने बड़ी निपुणताके साथ उन्हें तोपसे उड़ा दिया। इस प्रकार कठोर अत्याचारसे प्रपीड़ित हो कर शाह तैमूरने पुन दूसरे वर्ष शीतकालमें भङ्गीदलका दमन करनेके लिए जङ्गीखाँको भेजा। इस दुरानी सरदारने युसुफजै, दुरानी, मुगल और फाजलवासियोंकी सहायतासे सिखोंको परास्त कर मुलतान पर अधिकार कर लिया और सुजाखाको वहांका शासनकर्त्ता बना दिया। अफगान विप्लव शान्त होने पर भङ्गी सरदार देशासिंह चिनिओत-वासीयोंके दमनार्थ अग्रसर हुए। शुकेर्चकिया सरदार महासिंहके साथ किसी एक खण्ड युद्धके बाद १७८२ ई०में रणक्षत्रमें उनकी मृत्यु हो गई।

भङ्गी सरदार हरिसिंहके प्रसिद्ध सेनापति गुरुबक्स सिंहने कुछ समय तक अपने उपद्रवादि द्वारा भङ्गी गौरव की रक्षा की थी। उनकी मृत्युके बाद दत्तक पुत्र लहना सिंह और उनके दौहित्र गूजरसिंहमें विरोध खड़ा हुआ। पीछे उस सम्पत्तिके समानरूपसे विभक्त हो जाने पर दोनों सरदारके झण्डासिंह और गण्डासिंहके सहयोगसे युद्ध विग्रहादि करने पर भी उन्होंने स्वतन्त्ररूपसे जो कार्यादि किये थे, भङ्गी-इतिहासमें वे भी उल्लेख योग्य हैं।

अहमदशाह भारतसे लौटते समय लाहोरमें काबुली मल्ल नामक एक हिन्दूको शासनकर्त्ता नियुक्त कर गये थे। लहना सिंह और गूजर सिंहने दल सहित आक्रमण कर लाहोर लूट लिया। १७६५ ई०में गूजर सिंहने उत्तर पञ्जाब अधिकार करनेकी चेष्टा की। लाहोरमें दो वर्ष रहनेके बाद, १७६७ ई०में अहमदशाहके आखिरी बार भारत आक्रमणके समय, वे अफगानी-सेनाके आनेकी खबरसे डर कर लाहोर छोड़ पञ्जाबकी तरफ भागे, परन्तु अहमदशाह उक्त दोनों भङ्गी सरदारोंके हाथ लाहोरका कर्त्तृत्व सौंप कर काबुल चले गये। बादमें ३० वर्ष तक इन्होंने शान्तिसे लाहोर राजधानीमें रह कर राज्य भोगा था। पीछे शाह जमानने काबुलसिंहासन पर बैठ कर भारत साम्राज्य स्थापनके लिए १७९३, १७९५ और १७९६ ई०में लगातार तीन बार पञ्जाब पर आक्रमण किया। पहलेके दोनों युद्धमें वे सफल न होने पर भी तीसरे युद्धमें उन्होंने लाहोर पर कब्जा कर ही लिया। १७९७ ई०में ३री जनवरीको लहनासिंह नगरकी चाबी दे कर भाग गये। शाह जमानके लौट जाने पर उसी वर्ष लहनासिंह और शोभासिंहने लाहोर अधिकार कर लिया, किन्तु थोड़े ही समय बाद उन दोनोंकी मृत्यु हो जानेसे लहनाके पुत्र चेत् सिंह और शोभाके पुत्र मोहरसिंहने शासनकर्त्ताका पद प्राप्त किया। राज्यशासनमें अक्षमता और मद्यपानादि दोषसे उनके राज्यमें विशृङ्खलता होने लगी। मौका देख प्रसिद्ध शुकेर्चिया सरदार रणजित्सिंहने लाहोर आक्रमण का सङ्कल्प किया। १७९९ ई०में अन्यान्य भङ्गी सरदारोंके षड्यन्त्रसे बुलाये जाने पर उन्होंने सेना-सहित लाहोरमें प्रवेश किया, इससे चेत्सिंह और मोहरसिंह भाग गये।

उधर भङ्गी मिसलके दलपति देशासिंहकी मृत्युके बाद उनके नाबालिग पुत्र गुलाब सिंहने १७८२ ई०में पितृ पद प्राप्त किया। उनकी बुद्धिवृत्ति विशेष परिस्फुट न होने से उनके भाई करम सिंह मिसलका सब काम काज देखते थे। गुलाब सिंहने पहले ही कसूर पर कब्जा कर लिया था, परन्तु वे ज्यादा दिन उसका शासन न कर सके। १७९४ ई०में कसूरके पठान सरदार निजामउद्दीन खाँ ने उसे पुन अपने अधिकारमें कर लिया। १७७७ ई०में रणजित् सिंहकी लाहोर विजयसे डर कर गुलाबसिंह भङ्गी, जेसासिंह रामगडिया और निजामउद्दीनने एक साथ मिल कर रणजित्सिंहके प्रभावको खर्वित करनेकी चेष्टा की। लाहोर और अमृतसरके बीचके भसिन नगरमें दोनों दलोंकी मुठभेड़ हुई। इस युद्धमें मिलित सरदार सेनादलको पराजय स्वीकार करनी पड़ी। यहीं पर मद्य पान जनित कम्पप्रलाप रोगसे गुलाबसिंहकी मृत्यु हुई।

गुलाबकी मृत्युके बाद १० वर्षके पुत्र गुरुदीतसिंहने

पितृसिंहासन प्राप्त किया। परन्तु मिसल परिचालना का भार उनकी माता और मुसम्मात सुखान पर दिया गया। भङ्गियोंके अमृतसर दुर्गकी अभिलाषासे रणजित् सिंह विवादके लिए छिद्रान्वेषण करने लगे। आखिर जमजमा तोप मांगी, और उसके न मिलने पर भङ्गी दुर्ग पर धावा बोल दिया। भङ्गी सेनादल ५ घण्टा तक युद्ध करनेके बाद रणमें भंग डाल कर भाग गया। रानीमाता निरुपाय हो कर पुत्र गुरुदीतको ले रामगढ भाग गई। (१८०२ ई०)।

लाहोर विजयके बाद गूजरसिंहने दलबल सहित उत्तरकी ओर प्रस्थान किया। उनकी वीर वाहिनीने विशेष उद्यमके साथ एक एक कर क्रमशः गुजरात, जम्मू, इसलामगढ, पञ्च और देव भताला, गरड, भीमबेर और भौंका प्रदेश अधिकारपूर्वक लूटे। बादमें मक्करोंके प्रसिद्ध रोहतास (रोटस) दुर्गको जीत कर अपना प्रसिद्धि की। इनके मध्यमपुत्र साहबसिंहके साथ शुकेरचकिया चरतसिंहकी कन्या राजकौरका विवाह हुआ। ज्येष्ठपुत्र सूरतसिंह पिताके साथ कलहमें मारे गये और मध्यमपुत्र अपने साले महासिंहके लिए पिता अपमान करनेके कारण पितृस्नेहसे वञ्चित रहे। वृद्ध गूजरसिंह अन्तमें कनिष्ठ फतेसिंहको अपनी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी स्थिर कर लाहोर लौट आये। वहां १९८८ ई० में उनकी मृत्यु हुई।

अब पितृसम्पत्तिके लिए दोनों भाइयोंमें विवाद उपस्थित होते देख, महासिंहने फतेसिंहका पक्ष लिया। इस सूत्रमें साले बहनोई दोनोंमें झगडा उठ खडा हुआ। करीब २ वर्ष इसी प्रकार मनोमालिन्यमें बीतने पर, १७९२ ई०में दोनों शत्रुओंके हृदयोद्दीप्त अग्नि प्रज्वलित हो उठी। महासिंहने दलसहित आ कर सोधरादुर्गमें साहबसिंहको घेर लिया, परन्तु दैववशात् उनकी मृत्यु होने पर भी भङ्गियोंकी ही विजय हुई। १७९८ ई०में जब शाह जमानने चौथी बार पञ्जाब पर आक्रमण किया, तब भी इस सिखसम्प्रदायने विशेष रणनिपुणताका परिचय दिया था।

शाह जमानके भेजे हुए दुर्रानी सेनापति सहित ५ हजार सेना नष्ट कर देने और अन्यान्य साहसिकताके परिचयोंसे साहिबसिंहकी वीरत्वप्रभा किसी समय समग्र पञ्जावप्रदेशमें विभासित हो गई थी। परन्तु धीरे धीरे घोर मदिरासक्त हो कर वे इतने निकम्मे बन गये कि उनका उद्यम, साहस, वीरत्व आदि एक साथ ही लुप्त हो गया। प्रतिद्वन्द्वी सामन्त और सरदारोंके विरोधी हो कर वे अपना ही बल घटाने लगे। रणजित् सिंहने मौका समझ उनकी समस्त सम्पत्ति पर आक्रमण किया और उनका भूसंस्थ अपने नव साम्राज्यमें मिला लिया। १८१० ई०में साहिबसिंहकी माता लछमीमाई-की प्रार्थना पर रणजित्सिंहने उनके भरणपोषणके लिए साहिबसिंहको एक लाख रुपयेकी जागीर दे दी। मुलतान विजयके बाद, उन्होंने उक्त महात्माकी विधवा पत्नी दयाकुमारी और रतनकुमारीके साथ चादरान्दजी प्रथासे विवाह किया। गूजरसिंहके कनिष्ठ पुत्रने कपूरथलाके अहलूवलिया सरदारके अधीन कर्मग्रहण किया। उनके एकमात्र वंशधर जयमलसिंहने पितृसम्पत्तिसे वञ्चित रह कर रामगढमें जीवन बिताया। इस प्रकार पञ्जाब-केशरी रणजित्सिंहके अभ्युदयसे यह महाप्रभावशाली भङ्गीसम्प्रदाय छिन्नभिन्न हो कर लोपको प्राप्त हुआ।

भङ्गी—उत्तर-पश्चिम और दक्षिण भारतवासी एक निकृष्ट जाति। झाड़ूदारीका काम ही इनका जातीय व्यवसाय है। इस जातिकी उत्पत्तिके विषयमें विशेष मतभेद है। कोई कोई मेहतर, चण्डाल या डोमसे इस जातिकी उत्पत्ति मानते हैं। मुसलमानोंके अधिकारमें ये लोग मेहतर, हलालखोर, खाकरोब, दाहरवाला, मुसल्ली आदि नामों-से पुकारे जाते थे। पञ्जाबप्रदेशके भङ्गी लोग चुहारा नामसे प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा लालबेगी, शेख आदि स्वतन्त्र भङ्गियोंके धर्मसम्प्रदाय या उनके प्रवर्तकों के नामसे पैदा हुए हैं। किसीका मत है कि, भङ्ग पीनेके कारण इनका नाम भङ्गी पडा है। बनारसके रहनेवाले झाड़ूदारोंका कहना है, कि 'सर्वभङ्ग' अर्थात् सम्पूर्णरूपसे हिन्दू समाजसे विच्युत, इस अर्थसे भङ्गी नाम पडा है।

बनारसके लालबेगी लोग ४र्थ पाण्डव नकुलमें ही अपने पूर्वपुरुषकी कल्पना करते हैं। इस उद्देशकी सिद्धिके लिये उन्होंने पाण्डवका महाप्रस्थान, बादमें

मुजफ्फर खांके विद्रोही होने पर दीवानसिंहने विशेष निपुणताके साथ उनका दमन किया था। इसी बीचमें अहादशाहके पुत्र तैमूरशाह काबुलके सिंहासन पर बैठ कर पञ्जाबराज्य दखल करनेकी मनशासे सेना तयार करने लगे। उधर सिखोंने भी विपत्तिकी सम्भावना देख तयारियां करनी शुरू कर दीं। १७७७-७८ ई०में मुल्तान प्रदेशमें अफगान और सिख सेनामें घोरतर युद्ध हुआ। अफगानीसेनापति हाजीखां इस युद्धमें बन्दी हुए। सिखोंने बड़ी निपुणताके साथ उन्हें तोपसे उड़ा दिया। इस प्रकार कठोर अत्याचारसे प्रपीड़ित हो कर शाह तैमूरने पुन दूसरे वर्ष शीतकालमें भङ्गीदलका दमन करनेके लिए जङ्गीखांको भेजा। इस दुरानी सरदारने युसुफजै, दुरानी, मुगल और काजलवासियोंकी सहायतासे सिखोंको परास्त कर मुलतान पर अधिकार कर लिया और सुजाखांको वहांका शासनकर्त्ता बना दिया। अफगान विप्लव शान्त होने पर भङ्गी सरदार देशासिंह चिनिओत-चामीयोंके दमनार्थ अग्रसर हुए। शुकेर्चकिया सरदार महासिंहके साथ किसी एक खण्ड युद्धके बाद १७८२ ई०में रणक्षत्रमें उनकी मृत्यु हो गई।

भङ्गी सरदार हरिसिंहके प्रसिद्ध सेनापति गुरुबक्स सिंहने कुछ समय तक अपने उपद्रवादि द्वारा भङ्गी गौरव की रक्षा की थी। उनकी मृत्युके बाद दत्तक पुत्र लहना सिंह और उनके दौहित्र गूजरसिंहमें विरोध खड़ा हुआ। पीछे उस सम्पत्तिके समानरूपसे विभक्त हो जाने पर दोनों सरदारके भण्डासिंह और गण्डासिंहके सहयोगसे युद्ध विग्रहादि करने पर भी उन्होंने स्वतन्त्ररूपसे जो कार्यादि किये थे, भङ्गी-इतिहासमें वे भी उल्लेख योग्य हैं।

अहादशाह भारतसे लौटते समय लाहोरमें काबुली मल्ल नामक एक हिन्दूको शासनकर्त्ता नियुक्त कर गये थे। लहना सिंह और गूजर सिंहने दल सहित आक्रमण कर लाहोर लूट लिया। १७६५ ई०में गूजर सिंहने उत्तर पञ्जाब अधिकार करनेकी चेष्टा की। लाहोरमें दो वर्ष रहनेके बाद, १७६७ ई०में अहादशाहके आखिरी वार भारत आक्रमणके समय, वे अफगानी-सेनाके आनेकी खबरसे डर कर लाहोर छोड़ पञ्जाबकी तरफ भागे, परन्तु अहमदशाह उक्त दोनों भङ्गी-सरदारोंके हाथ लाहोरका कर्त्तृत्व सौंप कर काबुल चले गये। बादमें ३० वर्ष तक इन्होंने शान्तिसे लाहोर राजधानीमें रह कर राज्य भोगा था। पीछे शाह जमानने काबुलसिंहासन पर बैठ कर भारत साम्राज्य स्थापनके लिए १७६३, १७६५ और १७६६ ई०में लगातार तीन बार पञ्जाब पर आक्रमण किया। पहलेके दोनों युद्धमें वे सफल न होने पर भी तीसरे युद्धमें उन्होंने लाहोर पर कब्जा कर ही लिया। १७६७ ई०में ३री जन वरीको लहनासिंह नगरकी चाबी दे कर भाग गये। शाह जमानके लौट जाने पर उसी वर्ष लहनासिंह और शोभा सिंहने लाहोर अधिकार कर लिया, किन्तु थोड़े ही समय बाद उन दोनोंकी मृत्यु हो जानेसे लहनाके पुत्र चेत् सिंह और शोभाके पुत्र मोहरसिंहने शासनकर्त्ताका पद प्राप्त किया। राज्यशासनमें अक्षमता और मद्यपानादि दोषसे उनके राज्यमें विशृङ्खलता होने लगी। मौका देख प्रसिद्ध शुकेर्चिया सरदार रणजित्सिंहने लाहोर आक्रमण का सङ्कल्प किया। १७६६ ई०में अन्यान्य भङ्गी सरदारोंके षड्यन्त्रसे बुलाये जाने पर उन्होंने सेना-सहित लाहोरमें प्रवेश किया, इससे चेत्सिंह और मोहरसिंह भाग गये।

उधर भंगी मिसलके दलपति देशासिंहकी मृत्युके बाद उनके नाबालिग पुत्र गुलाब सिंहने १७८२ ई०में पितृ पद प्राप्त किया। उनकी बुद्धिवृत्ति विशेष परिस्फुट न होनेसे उनके भाई करम सिंह मिसलका सब काम-काज देखते थे। गुलाब सिंहने पहले ही कसूर पर कब्जा कर लिया था, परन्तु वे ज्यादा दिन उसका शासन न कर सके। १७६४ ई०में कसूरके पठान सरदार निजामउद्दीन खांने उसे पुन अपने अधिकारमें कर लिया। १७७७ ई०में रणजित् सिंहकी लाहोर विजयसे डर कर गुलाबसिंह भंगी, जेसासिंह रामगड़िया और निजामउद्दीनने एक साथ मिल कर रणजित्सिंहके प्रभावको खर्वित करनेकी चेष्टा की। लाहोर और अमृतसरके बीचके भसिल नगरमें दोनों दलोंकी मुठभेड़ हुई। इस युद्धमें मिलित सरदार सेनादलको पराजय स्वीकार करनी पड़ी। यहीं पर मद्य पान जनित कम्पप्रलाप रोगसे गुलाबसिंहकी मृत्यु हुई।

गुलाबकी मृत्युके बाद १० वर्षके पुत्र गुरुदीतसिंहने

पितृसिंहासन प्राप्त किया। परन्तु मिसल परिचालना का भार उनकी माता और मुसम्मात सुखान पर दिया गया। भङ्गियोंके अमृतसर दुर्गकी अभिलाषासे रणजित् सिंह विवादके लिए छिद्रान्वेषण करने लगे। आखिर जमजमा तोप मांगी, और उसके न मिलने पर भङ्गी दुर्ग पर धावा बोल दिया। भङ्गी सेनादल ५ घण्टा तक युद्ध करनेके बाद रणमें भंग डाल कर भाग गया। रानीमाता निरुपाय देख कर पुत्र गुरुदीतको ले रामगढ भाग गई। (१८०२ ई०)।

लाहोर विजयके बाद गुजरसिंहने दलबल साहत उत्तरकी ओर प्रस्थान किया। उनकी वीर वाहिनीने विशेष उद्यमके साथ एक एक कर क्रमशः गुजरात, जम्मू, इसलामगढ, पञ्च और देव मताला, मरुड, मोमनेर और भीम्बा प्रदेश अधिकारपूर्वक लूटे। बादमें मकरोंके प्रसिद्ध रोहतास (रोटस) दुर्गको जीत कर अपना प्रसिद्धि की। इनके मध्यमपुत्र साहबसिंहके साथ शुकेरचकिया चरतसिंहकी कन्या राजकौरका विवाह हुआ। ज्येष्ठपुत्र सूरतसिंह पिताके साथ कलहमें मारे गये और मध्यमपुत्र अपने साले महासिंहके लिए पिता अपमान करनेके कारण पितृस्नेहसे वञ्चित रहे। वृद्ध गुजरसिंह अन्तमें कनिष्ठ फतेसिंहको अपनी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी स्थिर कर लाहोर लौट आये। यहां १७८८ ई० में उनकी मृत्यु हुई।

अब पितृसम्पत्तिके लिए दोनों भाइयोंमें विवाद उपस्थित होते देख, महासिंहने फतेसिंहका पक्ष लिया। इस सूत्रमें साले बहनोई दोनोंमें झगडा उठ पडा हुआ। करीब २ वर्ष इसी प्रकार मनोमालिन्यमें बीतने पर, १७९२ ई०में दोनों शत्रुओंके हृदयोद्दीप्त अग्नि प्रज्वलित हो उठी। महासिंहने दलसहित आ कर सोधरादुर्गमें साहबसिंहको घेर लिया, परन्तु दैववशात् उनकी मृत्यु होने पर भी भङ्गियोंकी ही विजय हुई। १७९८ ई०में जब शाह जमानने चौथी बार पञ्जाब पर आक्रमण किया, तब भी इस सिखसम्प्रदायने विशेष रणनिपुणताका परिचय दिया था।

शाह जमान्के भेजे हुए दुर्रानी सेनापति सहित ५ हजार सेना नष्ट कर देने और अन्यान्य साहसिकताके परिचयोंसे साहिबसिंहकी वीरत्वप्रभा किसी समय समग्र पञ्जाबप्रदेशमें विभासित हो गई थी। परन्तु धीरे धीरे घोर मदिरासक्त हो कर वे इतने निकम्मे बन गये कि उनका उद्यम, साहस, वीरत्व आदि एक साथ ही लुप्त हो गया। प्रतिद्वन्द्वी सामन्त और सरदारों के विरोधी हो कर वे अपना ही बल घटाने लगे। रणजित् सिंहने मौका समझ उनकी समस्त सम्पत्ति पर आक्रमण किया और उनका सर्वस्व अपने नव साम्राज्यमें मिला लिया। १८१० ई०में साहिबसिंहकी माता लछमीमाई की प्रार्थना पर रणजित्सिंहने उनके भरणपोषणके लिए साहिबसिंहको एक लाख रुपयेकी जागीर दे दी। मुलतान विजयके बाद, उन्होंने उक्त महात्माकी विधवा पत्नी दयाकुमारी और रतनकुमारीके साथ चादरान्दाजी प्रथासे विवाह किया। गुजरसिंहके कनिष्ठ पुत्रने कपूरथलाके अहलूवलिया सरदारके अधीन कर्मग्रहण किया। इनके पश्चात् वंशधर जयमलसिंहने पितृसम्पत्तिसे वञ्चित रह कर रामगढमें जीवन बिताया। इस प्रकार पञ्जाब-केशरी रणजित्सिंहके अभ्युदयसे यह महाप्रभावशाली भङ्गीसम्प्रदाय छत्रभङ्ग हो कर लोपको प्राप्त हुआ।

भङ्गी—उत्तर पश्चिम और दक्षिण भारतवासी एक निकृष्ट जाति। झाड़ुदारीका काम ही इनका जातीय व्यवसाय है। इस जातिकी उत्पत्तिके विषयमें विशेष मतभेद है। कोई कोई मेहतर, चण्डाल या डोमसे इस जातिकी उत्पत्ति मानते हैं। मुसलमानोंके अधिकारमें ये लोग मेहतर, हलालखोर, खाकरोब, बाहरवाला, मुसल्ली आदि नामोंसे पुकारे जाते थे। पञ्जाबप्रदेशके भङ्गी लोग चुहारा नामसे प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा लालबेगी, शेख आदि स्वतन्त्र भङ्गियोंके धर्मसम्प्रदाय या उनके प्रवर्तकों के नामसे पैदा हुए हैं। किसीका मत है कि, भङ्ग पीनेके कारण इनका नाम भङ्गी पडा है। बनारसके रहनेवाले झाड़ुदारों का कहना है, कि 'सर्वभङ्ग' अर्थात् सम्पूर्णरूपसे हिन्दू समाजसे विच्युत, इस अर्थसे भंगी नाम पडा है।

बनारसके लालबेगी लोग ४र्थ पाण्डव नकुलमें ही अपने पूर्वपुरुषकी कल्पना करते हैं। इस सिद्धिके लिये उन्होंने पाण्डवका महाप्रस्थान,

सीताकी खोजमें रामचन्द्रके साथ नकुलका साक्षात्कार, रामानुचर द्वारा नकुलकी पूजा, नकुल-का ब्राह्मणवध और चण्डाल ख्याति तथा चण्डालरूपी नकुलको पापमुक्तिके लिए गुरुनानकका मर्त्यगमन आदि विविध प्रसङ्गोंकी अवतारणा की है। जहां पर वह चण्डाल ईश्वर चिन्तामें रत था, वही स्थान चण्डाल-गढ़ ( वर्तमान चुनार ) नामसे प्रसिद्ध हुआ। मुसलमान लोग उन्हें गढ़ नामसे पुकारते हैं। उनका आस्थाना गढ़पहाड़ मुसलमान और भंगियों का पवित्र तीर्थस्थान है।

उस चण्डालके कालू और जीवन नामके दो पुत्र थे। कालूके वंशधर लोग डोम और चण्डाल कहलाये, तथा जीवनके वंशसे भंगियोंकी उत्पत्ति हुई। लालबेग नामक एक साधुपुरुषकी कृपासे जीवनको ७ पुत्रोंकी प्राप्ति हुई। साधुपुरुषके कृपालब्ध होनेसे उसकी सन्तान परम्परा लालबेगी कहलाई। किम्वदन्ती इस प्रकार है— माकिदन वीर आलेकसन्दरके भारतमें किसी अभावनीय कारणसे जीवनको उत्पीडित करने पर जीवन अपने पुत्रों सहित भागा। उसका प्रथम पुत्र ग्रीक वीर द्वारा यवन धर्ममें दीक्षित होने पर उसके वंशधर शेख वा मुसलमान भंगी, द्वितीयका पुत्रगण रावतभंगी, तृतीय-का वंश धानुक, चतुर्थका वंश वासफोड़, पञ्चमकी सन्तान हेला, छठेकी सन्तति डाडी और सातवें का वंश लालबेगी नामसे परिचित हुआ *। इसके सिवा इनकी उत्पत्तिकी और भी अनेक किम्वदन्तियां हैं।

भंगियों की उत्पत्तिके विषयों में जो आख्यान सुनने में आते हैं, उनसे अनुमान होता है, कि यह झाड़ूदार-वंश पहले हिन्दू था, बादमें कोई कोई मुसलमानों के अधिकार-कालमें इसलामधर्ममें दीक्षित हुआ है। यही कारण है, कि इनके उपाख्यानों में हिन्दू और बौद्ध पुरा-णोक्त पाण्डव, वाल्मीकि, शिव, गोरक्षनाथ, मत्स्ये न्द्रनाथ, शर्कन्दनाथ आदि नाम और मुसलमान इतिहा-सोक्त गजनीराज, पीराण पीर, अवदुल कादेरजिलानी, सेयसरम आदिके प्रसङ्ग पाये जाते हैं।

इस भंगीजातिकी हिन्दूशाखामें १३५६ और मुसल-मानशाखामें ४७ थोक हैं, ऐसी प्रसिद्धि पाई जाती है। उनमें वागड़ी, वाई, वाइसवार, वालकचमरिया, वड़गूजर, भदौरिया, विमेनशोव, बुन्देलिया, चमरिया, चन्देला, चौहान, छोपी, घेलफोड़, गदरिया, जादौन, यदुवंशी, जैसवार, जोगिया, कछवाह, कायस्थवंशी, किन्नर, सकर-वार, टाक, ठाकुरवाई, तुर्किया, अन्तर्वेदी, विलखरिया, वनौध, वरनवार, भोजपुरी, रावत, गाजीपुरी रावत, जमालपुरिया, जमुनापारी, जनकपुरी, जौनपुरी, कानपुरी, कनपुरिया, काठोरिया, मगलौरी, मुलतानी, नानकपुरी, सैयदपुरी, शर्करिया, उज्जैनवाल, बदलान, धारसेंग, नानकशाही, चनहिया, भिलौर, मचाल, देशवाल, गह लोत, सोध, वचनवार, भगवतिया, मोकर, चौहेला, चुनार, धकौलिया, गरौठिया, जघारे, अण्णुवली, नौरतन, निरवानो, पानवाड़ी, फूलपानवार, राठौ, गोलपाल, सेखा-वत, तरवारिया, चुतेले, कलावत, खरौतिया, कोठिया, कौशिकिया, मथुरिया, पथरवाड़, चुरेली पथरघोटी, दड्डूमर्दन, राजौरिया, गगावनी, वरची, भूमियान, वसोर, डोमर, रूपभगत, औसियार, देशी डोम, वासफोड़ और तुरैहा इत्यादि शाखाएं ही प्रधान हैं।

इनमें हिन्दू और मुसलमानका निर्णय करना कठिन है। लालबेगी और शेख मेहतर लोग अपनेको हिन्दू वा मुसलमान बतलाने पर भी मन्दिर या मसजिदमें प्रवेश नहीं कर पाते। धर्ममतके प्रभेदके कारण इनमें भी थोड़ा बहुत मतपार्थक्य देखा जाता है। मजहबी नामके नानकशाही लालबेगी भंगी शेख मेहतरोंके साथ बैठ कर भोजन करते हैं। ये सभी हिन्दू और मुसलमानों का जूंठा खा सकते हैं। अपनेसे भिन्न श्रेणीमें ये अपक्व द्रव्य ग्रहण करते हैं और अपनी श्रेणीमें कच्ची रसोई खानेमें कोई दोष नहीं मानते। मुसलमानी त्वक्छेदन ( सुन्नत ) कराते हैं और सूअरका मांस अस्पृश्य समझते हैं। हेलभंगी कुत्तोंको नहीं छूते। लालबेगी और शेख मेहतर लोग अन्य हीन सम्प्रदायके लोगोंको अपनी श्रेणीमें मिला सकते हैं। ये लोग साधारणतः दूसरोंके मुर्देको नहीं जलाते, परन्तु दिल्लीके पश्चिममें रहनेवाले भंगी शवदाह और झाड़ूदारके कामसे

* एक एक थोकके विषयमें ऐसे ही पृथक् आख्यान हैं।

घृणा नहीं करते। अन्यत्र चमार लोग ही झाड़ू देते हैं और प्राय डोम लोग ही मुर्दें जलाते हैं। मजहवी और रगरेटा भंगी सिखधर्मको मानते हैं। पहाल लेनेके बाद ये लोग सिर पर बड़े बड़े बाल रखते हैं। ये साधारणत सफाईसे रहना पसन्द करते हैं। कभी भी दूसरेके मलमूत्र आदिका स्पर्श नहीं करते। ताम्रकूट सेवन सभीमें निषिद्ध है।

ये सिख सम्प्रदायमें शामिल होने पर भी नीचत्वके कारण अन्यान्य सिख इनके साथ नहीं रहते। गुरु लोग बहादुरको ये अपना प्रधान गुरु कहते हैं। लालबेगी और हिन्दू छुहराओंमें इनके शादी-ब्याह होते हैं। सैनिक वृत्तिमें ये विशेष पटुता रखते हैं। रगरेटा लोग अपनेको मज़हबियोंसे ऊंचा बतलाते हैं। दस्युवृत्तिके लिए इनकी विशेष ख्याति है।

भंगी जातिकी उत्पत्ति और विस्तृतिका कोई धारावाहिक इतिहास न रहने पर, भी वर्तमानमें इनकी जातीय भित्ति अपेक्षाकृत प्रशस्ततर हो गई है। निम्नश्रेणीमें जन्म लेने पर भी इनके हृदयमें धर्मभाव प्रबल है। अमृतसर, नरहरपुरके मकदुम शाहकी कब्र, बान्दा जिलेकी कालिकामाई, विन्ध्याचलकी विन्ध्यावासिनी और गढ़पहाड़ी आदि तीर्थोंमें इनका समागम होता है। चैत्र मासके अन्तमें ये लोग महासमारोहसे उक्त शक्तिमूर्त्तियोंकी पूजा किया करते हैं। उस दिन ये लोग वहां पुत्रपौत्रादिका चूड़ाकरणादि करते और देवीके समक्ष यथायोग्य पूजा बलि आदि चढ़ाते हैं।

बनारसके मिरालय (शियालय) घाटमें गुरुनानकके नामसे पवित्र पञ्चायत अखाड़ा है, वहां इनके सामाजिक झगड़ोंका निवटारा होता है। इनमें भी समाज परिचालक एक चौधरी होता है और उसके नीचे और भी कई कर्मचारी होते हैं। इस प्रकारसे इनकी सभा संगठित है और उनके नीचेके कर्मचारीगण साधारण लोगोंमें सम्मानार्ह होते हैं। अंग्रेजी सेना निवासमें काम करते रहनेके कारण, इन लोगोंने भी अपने अपने दलपति आदिके अंग्रेजी नाम रख लिये हैं। आवश्यक होने पर उन कर्मचारियोंका चुनाव हो जाता है। चौधरी या दलपति 'ब्रिगेडियर जमादार' और उसके नीचेके कर्मचारी 'मुन्सिफ' और 'नायव' आदि कहलाते हैं। उक्त पदोंके ग्रहण करते समय उस शाखाके तमाम लोगोंको एक भोज देनेसे पद प्राप्तिमें फिर कोई बाधा नहीं रहती।

इस सामाजिक सभामें किसी विषयकी नालिश रुजू करनी हो तो पहले १।) सवा रुपया तलबाना देना पड़ता है। मामला संगीन होने पर सभापति और उसे श्रेणीके तमाम आदमियोंको खबर देनी पड़ती है, तथा जहां जिस समय विचार होगा उसकी भी इत्तला दी जाती है। विचार-क्षेत्रमें एक बहुत लम्बी चौड़ी चारपाई पर, एक तरफ पहले जमादार, उसके बाद चारों कर्मचारी और फिर साधारण पुरुष बैठते हैं। *

इस भावमें साधारणत तीन प्रकारके विचार होते हैं,—१ अर्थदण्ड, २ बल पूर्वक भोग या खाना वसूली और ३ जातिच्युति (कुजात) करना। यदि कोई इस सभाके विचारको अग्राह्य कर अर्थदण्ड न दे, तो उसे समाजसे बहिष्कृत कर दिया जाता है। असती स्त्रियोंके लिए बड़ी भारी सजाकी व्यवस्था थी। बहुधा स्त्री हत्याजनित पातक भोगना पड़ता था, इस कारण यह व्यवस्था अब उठा दी गई है। जातिसे बहिष्कृत व्यक्ति यदि फिर कभी

* बनारसके लालबेगियोंमें ८ श्रेणी हैं। १ सदर या सनानिवासके साधारण कर्मचारी द्वारा रक्षित, २ काली-पल्टन या बङ्गाल पदातिक सेनादलके अधीन, ३ खास कुरती या अंग्रेजी सेनाके परिचारक, ४ बेगम या राजघाट मुगलसराय आदि रेल्वे-स्टेशनके कर्मचारी, ६ रामनगर या वाराणसी सरकारके कर्मचारी, ७ कोठीवाल अर्थात् मद्र साहब आदिके घरमें काम करनेवाले और जनरली यानी अंग्रेजी सेनादलमें बनारसी शासनके समय अंग्रेजोंके अधीन काम करनेवालोंके वंशधर। एक समाजगत होने पर भी इन ८ सम्प्रदायोंमें परस्पर कुछ भिन्नता है, और इसलिए उनमें स्वतन्त्र धर्मचारी नियोगकी व्यवस्था है। सामाजिक झगड़े मिटाने समय दलपतिके सामने उक्त कर्मचारीयोंको स्थान दिया जाता है। उसके बाद साधारण लोगोंका स्थान है। अंग्रेजी सेनामें काम करते रहनेसे इन लोगोंने अपनेमें भी उसी तरहके नाम रखे हैं। साधारण लोग सिपाही और दूत-रूपसे साधारणके निकट सचनादि पहुंचानेवाले प्यादा कहलाते हैं।

उपयुक्त अर्थदण्ड या भोजन दे कर समाजमें प्रवेश करना चाहता है, तो यह सभा उसे जातिमें शामिल कर सकती है।

ये अपनी अपनी श्रेणीमें विवाह करनेके लिए बाध्य हैं, परन्तु स्वगोत्र ( तर )में नहीं। किन्तु यदि अन्य श्रेणीकी स्त्री पहले लालबेगी-समाजमें शामिल हो जाय, तो फिर उसके ग्रहण करनेमें कोई आपत्ति नहीं। इस प्रकारसे ये डोम, चमार आदिकी कन्या भी ग्रहण करते हैं। पहली स्त्रीकी अनुमतिके बिना, अथवा उसके बांझपनेको साबित किये बिना ये लोग दूसरा विवाह नहीं कर सकते। फुफेरी या मौसेरी बहन और बड़ी सालीके साथ विवाह करना निषिद्ध है। अन्यान्य थोकोंमें भी ऐसे ही कुछ नियम बने हुए हैं। परन्तु हेलाके सिवा अन्य साधारण लोग स्वश्रेणीके अतिरिक्त अन्य श्रेणीमें विवाह नहीं कर सकते। सवर्णविवाहको ये लोग 'शादी' कहते हैं। डोम, धोबी आदि निम्न श्रेणीकी कन्या यदि यथाविधि भंगी दीक्षा ले कर विवाह करे तो उस असवर्ण विवाहका नाम 'सगाई' होगा। वह स्त्री धर्मान्तर ग्रहण करने पर भी 'परजात' समझी जायगी, परन्तु उसकी सन्तान भंगी होगी। शेख लोग इस्लाम धर्ममें दीक्षिता भद्रवंशीया स्त्रियोंका पाणिग्रहण कर सकते हैं। परन्तु वह स्त्री कुनबी, अहीर, कोइरी आदि जातिकी होने पर विवाह नहीं हो सकता।

लालबेगी-दलमें शामिल करनेकी दीक्षा प्रणाली इस प्रकार है —जो व्यक्ति इस धर्मान्तर ग्रहणको इच्छुक है, उसे सामर्थ्यानुसार १। सवा मनसे ले कर ५० सेर तक मिठाई बनवा कर जातीय सभाके समक्ष एक चौकी पर रखनी होगी। फिर यथापूर्व कुर्सीनामा वंशावली और नानकवाणी कीर्त्तनके बाद दलपति उस व्यक्तिको चरणामृत और प्रसाद खाने देते हैं। पञ्जाबके भंगियोंमें धर्मदीक्षाके समय यह मन्त्र पढ़ा जाता है —

"यही सत्ययुगकी कुर्सी है। त्रेता, द्वापर और कलयुगमें सोनेके स्थानमें क्रमसे चांदी, तांबा और मिट्टीका उल्लेख है। इसके बाद चिउड़ा, घी, पान, लौंग, और दालचीनी आदि सुगन्ध द्रव्योंमेंसे लालबेगकी पूजा की है।"

शेख भंगियोंका विवाह अनेकांशमें मुसलमानोंकी शादी या निकाहके सदृश है। हिंदूशाखामें पहले घटक ( बिचधरिया ) द्वारा सम्बन्ध और कन्या पण स्थिर होने पर शुभ लग्न ठहराई जाती है। उस दिन भोज होता है। दूसरे दिन वरके यहां और उसके एक दिन कन्याके यहां भी एक विवाह मञ्च बनाया जाता है। ब्राह्मणों द्वारा 'साइत' ( शुभदिन ) पोथी आनेके बाद, वरपक्षके लोग वरको ले कर लड़कीवालेके यहां जाते हैं। उस समय लड़कीवाला उनके बैठनेके लिए स्थान दे कर एक हंडी अन्न वरके सामने रखता है। वरके मित्रों द्वारा उसका आस्वाद लिये जानेके बाद लड़कीवाला उसके बाद दुआरचार प्रथा अर्थात् दरवाजेके एक तरफ खड़े हो कर वर और कन्या परस्परको अवलोकन करते हैं। दोनोंमें चादर मात्रका व्यवधान रहता है। पश्चात् यथारीति वरण प्रारम्भ होता है और तिलकदानके बाद गँठजोड़ हो कर विवाहकार्य समाप्त होता है। बाबाजी कहलानेवाला साधुचेता कोई एक भंगी अथवा वरका बहनोईको ही गँठजोड़ा करनेका अधिकार है। इसके दूसरे ही दिन सुबह वरकन्याकी विदा होती है। उस समय वरके कन्यापक्षीय गुरुजनोंको नमस्कार करने पर उस अवस्थानुसार 'बिदाई' मिला करती है। उसके बाद वहांके नाइ, धोबिन और दाइयोंको कुछ कुछ इनाम दिया जाता है। घर आनेके बाद ४ दिन वर और कन्याकी परस्पर भेंट नहीं होती। चौथे दिन वरपक्षीय नारी स्त्रियां इकट्ठी हो कर एक कम्बल पर दूल्हा और दुलहिनको आमने सामने बिठा कर शर्म छुड़ा देती हैं।

इनमें भी विवाह-बंधन-छेदनकी व्यवस्था है। स्वामिके धर्मभंग, कुष्ठ वा उन्मादरोगग्रस्त होने पर स्त्रीसबध विच्छेदकी अर्जी पेश कर सकती है। परन्तु इस विच्छेदके लिए उसे ५ या १० रुपये नगद और सामाजिकसभाको भोज देना पड़ता है। इनकी सभा ही विवाह बखेड़ा चुका करानेमें एकमात्र अधिकारिणी है, परन्तु सब जगहके भंगियोंमें ऐसी प्रथा नहीं है। शरीरगत रोगके कारण पतिका त्यागना विहित नहीं है। स्त्रीका चरित्र दुष्ट होनेसे उसका त्याग किया जा सकता है। कभी कभी उस स्त्रीको जातिसे पृथक् कर दिया जाता है।

विधवा स्त्रीको उसका देवर ब्याह सकता है। यदि कोई विधवा स्त्री अन्य किसीके साथ विवाह करे, तो वह अपने पूर्व पतिकी सम्पत्तिकी भी अधिकारिणी होती हैं, परन्तु शेख और गाजीपुरी रावतो में ऐसा नियम नहीं है अर्थात् ऐसी विधवा स्त्री अपने पूर्व पतिकी जायदादकी हकदार नही होती।

गर्भावस्थामें स्त्रिया गलेमें एक रुपया बाधे रहती हैं। उनका विश्वास है, कि इससे उपदेवताओंका उस गर्भिणी पर फिर किसी प्रकार अत्याचारका भय नहीं रहता। पाचवे या सातवें महीनेमें वे सतीपूजा करती हैं। प्रसव के समय चमारिन ही इनके यहा दाईका काम करती है। बच्चा पैदा होनेके बाद उसकी नाल काट कर उसी सोवर-वाले घरमें गाड़ दी जाती है और उस पर आग जलती रखते हैं। छठे दिन प्रसूति स्नानके बाद पवित्र हो जाता है। हेलाओंमें बारहवें दिन पवित्र होनेका नियम है। उसके बाद ब्राह्मणको बुला कर बच्चेका नाम रखते हैं और उसी समय सिर भी मुडा देते हैं। बालक ५ या ६ वर्ष होने पर उसे कालिकामाई या विन्ध्यवासिनी देवीके पास ले जाते हैं और कर्णवेद एव चूडाकरणादि करनेके बाद पूजा चढाते हैं। मिरजापुर-के हेला लोग सूतिकागृह त्यागनेके बाद काले डोम और गङ्गामाईकी पूजा करते हैं।

इनमें शवदेहके दाह करने वा गाडनेके कोई विशेष नियम नही है। कोई कोई तो मुर्देको गाड देते हैं और कोई मुखाग्नि या हाथ पर जला कर उसे दफ्न देते हैं। इसके बाद उस शवदेहकी तृप्तिके लिए उसकी कब्र पर खाद्यादि पदार्थ चढाते हैं। अपेक्षाकृत उन्नत हिन्दू भाड़ूदार लोग निम्न श्रेणीके ब्राह्मण द्वारा मुखाग्नि मन्त्र पढवा कर अपने अपने शवका दाह करते हैं और अवस्थानुसार श्राद्ध भी किया करते हैं। शेख भङ्गियोंके बालकगण प्रेतात्माकी तृप्तिके लिए कलमा पढते और तीज तथा बरसी उत्सव मनाते हैं। लालबेगी और गाजीपुरी रावत लोग पितर पक्षमें श्राद्ध और पिण्ड देते हैं।

दाक्षिणात्यके अहमदनगर, सतारा, बेलगाम और धारवाड आदि जिलो मे भी यह भङ्गी जाति बसती है। इनके आचार व्यवहार और कुलप्रथा परस्परमें विभिन्न होने पर भी इनको उत्तरभारतीय भङ्गियो की श्रेणीमें शामिल किया जा सकता है। बेलगामके हलालखोर भङ्गी मद्य और माससेवी हैं। अम्बा भवानी येलम्मा और महादेव इनके उपास्य देवता हैं। ये हिन्दुओं के त्योहारो मे उपवासादि नहीं करते हैं, फिर भी त्योहार मनानेमें कोई कसर नही रखते। इनमें विधवा विवाह प्रचलित है। सद्यजात बालकके ५वे दिन पाचभाई पूजा और १२वें दिन नामकरण होता है। तीसरे दिन ये लोग मृतके कलेवरके ऊपर पिण्ड देते हैं। १० दिन में अशौच दूर होता है और उसके बाद ११वे दिन ज्ञाति कुटुम्बका भोज भी होता है। सभी तरहके ब्राह्मण इनका पौरोहित्य कर सकते हैं।

सतारा जिलेके भङ्गियो के दशहरा और दिवाली ये दो त्योहार ही प्रधान हैं। ये स्थानीय हिंदूदेव देवियों की पूजा किया करते हैं। बहिरोबा, देवकाई, जनाई, ज्योतिबा और खण्डोबा आदि इनके कुलदेवता हैं। इन देवमूर्तियो को ये अपने घरमें रख कर उनकी पूजा किया करते हैं। बाल्यविवाह, बहुविवाह और विधवा विवाह इनमें प्रचलित है। नगरका मैला साफ करना ही इनका प्रधान कार्य है। जब सरकारी कार्यमें नियुक्त रहते हैं तब इनकी पोशाक बहुत ही मैली रहती है, परन्तु दिनका काम खतम कर शामको ये स्त्री पुरुष मिल कर अच्छी पोशाकमे घूमा करते हैं। मास और मादक द्रव्य मात्र ही इनकी खास प्रीतिकी वस्तु है।

अहमदनगरके भङ्गी आषाढ और कार्तिककी शुक्ला एकादशी, दशहरा, दिवाली, गोकुलाष्टमी और शिव रात्रि आदि पर्वो में विशेष श्रद्धा रखते हैं। दुसेनी ब्राह्मण-गण हिन्दू भङ्गियो के और काजीलोग शेख भङ्गियो के विवाह कार्यमें याजकता करते हैं। शवदेह गाडनेके बाद २० या ४० दिनमें ये ज्ञाति कुटुम्ब वालो को भोज दिया करते हैं। यहाके भङ्गी हिन्दू और मुसलमानो के सभी पर्वोंका लक्ष्य रख कर चलते हैं।

धारवाडके भङ्गी प्राय सभी विषयोंमें दाक्षिणात्यके अन्य भङ्गियोंका अनुकरण करते हैं। दक्षिण भारतके भङ्गियोंका कहना है, कि वे गुजरात और उत्तर भारतसे आ कर बसे हैं। स्थानीय कुछ आचार-व्यवहारोंका

अनुकरण करने पर भी उनके अन्य आचार व्यवहार प्राय उत्तर पश्चिमभारतके भ गियोंके अनुरूप हैं।

भट्टीभीर दीक्षित—सोमप्रयोग नामक ग्रन्थके प्रणेता।

भङ्गील ( स ० क्ली० ) ज्ञानेन्द्रियकी विकलता।

भङ्गुर ( स० त्रि० ) भज्यते स्वयमेवेति भन्ज ( भञ्जभास-भिदोघुरच्। पा ३।२।१६१ ) इति कर्मकर्त्तरि घुरच्, घित्वात् कुत्वमिति काशिका । १ स्वय भञ्जनशील, नाशवान्। २ कुटिल, टेढा। (पु० ) ३ नदीका मोड या घुमाव।

भङ्गुरा ( स० स्त्री० ) भगुर टाप्। १ अतिविषा, अतीस। २ प्रियगु।

भङ्गुरता ( स० स्त्री० ) भ गुरस्य भाव तल् टाप्। भगुर का भाव।

भङ्गुरावत् ( स ० त्रि० ) १ पापी, राक्षसादि। २ अनवस्थितचित्तवृत्ति।

भङ्गोद—मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलान्तर्गत एक भूमिभाग। यहा खोण्डजातिका वास है। पहले यहा नरबलि होती थी। विसमकटक देखो।

भङ्ग्य ( स० क्ली० ) भङ्गाया भवन क्षेत्रमिति भङ्ग ( धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्। ... पा ५।२।४ ) इति पक्षे यत्। १ भङ्गाक्षेत्र, वह खेत जिसमें भाग होती हो। (त्रि० ) भङ्गमर्हतीति भङ्ग-द ण्डादित्वात् यत्। २ भङ्गार्ह, टूटने लायक।

भङ्गा—अयोध्याप्रदेशके बहराइच जिलान्तर्गत एक नगर। यह राप्ती और भाकला नदीके दोआबके ऊपर अवस्थित है। इसके चारों ओर विस्तीर्ण आम्रवन है।

भचक ( हिं० स्त्री० ) भचक कर चलनेका भाव, लँगडा पन।

भचकना ( हिं० क्रि० ) १ आश्चर्यमें निमग्न हो कर रह जाना। २ चलनेके समय पैरका इस प्रकार रुक कर या टेढा पडना कि देखनेमें लँगडापन मालूम हो।

भचक्र (स ० क्ली०) भाणा राशीना चक्र । १ राशिचक्र। २ नक्षत्रचक्र। ३ नक्षत्रसमूह।

भज—पश्चिमघाट पर्वतमालाके अन्तर्गत एक प्राचीन स्थान। यह भोरघाटसे दो कोस दक्षिणमें अवस्थित है। यहा पर ईसा जन्मके पहलेके बने हुए एक प्राचीन चैत्य (गुहामन्दिर) का निदर्शन पाया जाता है।

भजक ( स ० त्रि० ) भजतीति भज ण्वुल्। १ भजनकारी, भजनेवाला। २ विभाजक, विभाग करनेवाला।

भजग ( स ० पु० ) रोमक सिद्धात-वर्णित जनपदभेद।

भजत् (स० त्रि०) भजति विभजतीति वा भज् लट शतृ। १ भागकर्त्ता, विभाग करनेवाला। २ सेवक, भजन करनेवाला।

भजन (स० क्ली०) भज-भावे ल्युट्। १ भाग, खड। २ सेवा, पूजा। वैष्णवोंका भजन साधनाका एक अङ्ग है। देवादिके उद्देशसे जो गीत और स्तव किया जाता है, उसे भजन कहते हैं। ३ बारबार किसी पूज्य या देवता आदिका नाम लेना, स्मरण।

भजनता ( स० स्त्री० ) भजनस्य भाव तल् टाप्। भजनका भाव या धर्म।

भजना ( हिं० क्रि० ) १ सेवा करना। २ आश्रय लेना, आश्रित होना। ३ देवता आदिका नाम रटना। ४ भागना भाग जाना। ५ प्राप्त होना, पहुचना।

भजनानन्द—अद्वैतदर्पणके रचयिता। ये भुजाराम नामसे भी प्रसिद्ध थे।

भजनानन्द ( स० पु० ) वह आनन्द जो परमेश्वरका नाम स्मरण करनेसे प्राप्त होता है, भजनसे मिलनेवाला आनन्द।

भजनानन्दी ( स ० पु० ) वह जो दिनरात भजन करनेमें मस्त रहता हो, भजन गा कर सदा प्रसन्न रहनेवाला।

भजनी ( हिं० पु० ) भजन गानेवाला।

भजनीय ( स० त्रि०) भज अनीयर्। १ भजनयोग्य, विभाग करने लायक। २ सेवनीय, सेवा करने लायक। ३ आश्रय लेने योग्य।

भजमान (स० त्रि०) भजते फलमनुबध्नातीति भज ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्। पा ३।२।१२९) इति चानश्, शानच् वा। १ न्याय। २ न्यायागत द्रव्यादि। ३ भज कर्त्तरि शानच्। ३ विभागकारी, भाग करनेवाला। ४ सेवक, सेवा करनेवाला। ( पु० ) सात्वतनृपके एक पुत्रका नाम। ( भाग० ९।२४।६ )

भजाना ( हिं० क्रि० ) १ दौडना, भागना। २ भगाना, दूर कर देना।

भजि ( सं० पु० ) भज धातुनिर्द्देशे इन्। १ भजधातु। २ सात्वतनृपके एक पुत्रका नाम। (भा० ९।२४।६)

भजियाउर ( हिं० स्त्री० ) चावल, दही, घीआ आदि एक साथ पका कर बनाया हुआ भोजन। इस प्रकारके भोजनमें नमक भी डाला जाता है। इसे उभिया और भिजियाउर भी कहते हैं।

भजेन्य ( सं० त्रि० ) भज बाहु कर्मणि एन्य। भजनीय।

भजेरथ ( सं० पु० ) राजभेद।

भज्जि—पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत एक छोटा पहाड़ी राज्य। यह अक्षा० ३१ ७´ से ३१ १७´ उ० तथा देशा० ७७ २´ से ७७ २३´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ९६ वर्गमील और जनसंख्या प्राय १३३०६ है। यहांके सरदार राजपूत वंशीय और राणा उपाधिधारी हैं। काङ्गड़ा राजवंशके किसी वंशधरने इस स्थानको जीत कर वर्त्तमान राजवंशकी प्रतिष्ठा की है। १८०३ और १८१५ ई०में गुरखा लोगोंने इस स्थानको लूटा। पीछे अंगरेजोंने गुरखाओंको यहांसे मार भगाया और राणाको उस सम्पत्तिका भोगाधिकार प्रदान किया। इसी उपकारके लिये यहांके राणा वृटिशसरकारको वार्षिक १४४० रु० कर दिया करते हैं। वर्त्तमान सरदार राणा दुर्गा सिंह १८७५ ई०में राजगद्दी पर बैठे। आय २३००० रु०की है जिसमेंसे १४४० रु० वृटिशसरकारको करमें देने पड़ते हैं। यहां अफीम बहुतायतसे उपजती है। राणाको फांसी देनेका अधिकार नहीं है।

भज्य ( सं० त्रि० ) भज यत्। विभागयोग्य। २ सेवनीय, सेवा करनेयोग्य। ३ भजनेके योग्य।

भञ्ज—एक प्राचीन राजवंश। ये लोग उड़ीसा प्रदेशमें राज्य करते थे। शिलालिपिसे इस भञ्जवंशकी जो दो तालिका पाई गई है वह इस प्रकार है।

शत्रुभञ्जदेव या कोट्टभञ्ज
|
दिग्भञ्ज
|
रणभञ्जदेव
|
राजभञ्जदेव — नेत्तिभञ्जदेव

दूसरी शिलालिपिसे इस वंशके कुछ राजाओंकी वंशावली इस प्रकार पाई गई है—

ब्रह्मभञ्जदेव
|
दिग्भञ्जदेव
|
शिलाभञ्जदेव
|
महाराजविद्याधरभञ्जदेव

भञ्जक (सं० त्रि०) भञ्ज ण्वुल्। १ भञ्जनकर्त्ता, निरासक। २ भङ्गकारक, तोड़नेवाला।

भञ्जन ( सं० क्ली० ) भनज-ल्युट्। १ भङ्गकरण, भग करना। २ भङ्ग, ध्वंस, नाश। ४ अर्कवृक्ष, मदार। ५ शिर कर्णादिका आमर्दन। ६ वायु जन्य व्रणवेदना विशेष, व्रणकी वह पीड़ा जो वायुके कारण होती है। ७ सिद्धि भाग। ( त्रि० ) भञ्जक, तोड़नेवाला।

भञ्जनक ( सं० पु० ) भनक्ति आमर्द्दयतीति भञ्ज ल्यु, ततः स्वार्थे संज्ञायां वा कन्। मुखरोगविशेष। लकवा। इसमें मुंह टेढ़ा हो जाता है। मुखरोग देखो।

भञ्जनागिरि ( सं० पु० ) पाणिनिके किंशुलुकादिगणोक्त पर्वतभेद।

भञ्जर (सं० पु०) भनक्तीति भञ्ज बाहुलकात् अर। देवकुलोद्भूत तरु।

भञ्जा ( सं० स्त्री० ) भनक्ति भयादिकमिति भञ्ज अच्, टाप्। अन्नपूर्णाका एक नाम।

भट ( सं० पु० ) भट्यते म्रियते, वा भटतीति भट् अच्। १ योद्धा, युद्ध करने या लड़नेवाला। २ म्लेच्छभेद। ३ वीर। ४ पामरविशेष। ५ रजनीचर। ६ वर्णसङ्कर जातिविशेष।

भटकटाई ( हिं० स्त्री० ) एक छोटा और कांटेदार क्षुप। यह क्षुप बहुधा औषधके काममें आता है। इसके पत्तों पर भी कांटे होते हैं। इसमें बैंगनीरंगके फूल लगते हैं और फूलका जीरा पीला होता है। कहीं कहीं सफेद फूलकी भटकटैया मिलती है। विशेष विवरण कण्टकारी शब्दमें देखो।

भटकना ( हिं० क्रि० ) १ व्यर्थ इधर उधर घूमते फिरना। २ रास्ता भूल जानेके कारण इधर उधर घूमना। ३ भ्रममें पड़ना।

भटकना (हिं० क्रि०) १ गलत रास्ता बताना, ऐसा रास्ता बताना जिसमें आदमी भटके। २ धोखा देना, डालना।

भटतीतर ( हिं० पु० ) उत्तर पश्चिम भारतमें मिलनेवाला एक प्रकारका पक्षी। यह प्राय १ फुट लवा होता है। इसकी मादा एक वारमें तीन अंडे देती है। लोग प्राय इसके मासके लिये इसका शिकार करते हैं।

भटधर्मा (हिं० वि०) वीर धर्मका पालन करनेवाला, सच्चा वहादुर।

भटनास ( हि० स्त्री० ) चीन, जापान और जावामें वहुत अधिकतासे मिलनेवाली एक प्रकारकी लता। अव ब्रह्म, पूर्व वङ्गाल, आसाम तथा गोरखपुर वस्ती आदिमें भी इसकी खेती होने लगी है। इसमें एक प्रकारकी फलियां लगती हैं और उन्हीं फलियोंके लिये इसकी खेती की जाती है। फलियोंके दानोंकी दाल भी वनाई जाती है और सत्त भी। ये फलियां वहुत पुष्ट होती हैं और पशुओं को भी खिलाई जाती हैं। इसके दो भेद हैं, सफेद और दूसरी काली। मैदानो में यह प्राय खरीफ की फसलके साथ वोई जाती है।

भटनेर—एक प्राचीन राज्यका मुख्य नगर। यह सिंध नदीके पूर्वी तट पर स्थित था। इस नगरको तैमूरने अपनी चढ़ाईके समय लूटा था।

विशेष विवरण भाटनेर शब्दमें देखो।

भटनेरा ( हि० पु० ) १ भटनेर नगरका निवासी। २ वैश्यों की एक उपजाति।

भटवलाग्र ( स० पु० ) १ वीरपुरुष, सेनापति। ( क्ली० ) २ सेना समूह।

भट भटमातृतीर्थ ( स० क्ली० ) तीर्थभेद।

भटभेरा ( हिं० पु० ) १ दो वीरोंका सामना, मुकावला। २ आकस्मिक मिलन, ऐसी भेंट जो अनायास हो जाय। ३ धक्का, टक्कर।

भटा ( स० स्त्री० ) भट टाप्। इन्द्रवारुणी।

भटा ( हि० पु० ) वैंगन देखो।

भटार्क ( स० पु० ) वल्लभी राजवंशके प्रतिष्ठाता। ये पहले सेनापति आख्यासे भूषित थे। मैत्रक जातिको परास्त करनेके कारण उनका वंश मैत्रक कहलाया।

वलभी देखो।

भटित्र ( स० क्ली० ) भटति भट्यते वेति भट इत्र। शूल-पक्व मासादि, कवाव।

भटियारा ( हि० पु० ) भठियारा देखो।

भटियारी ( स० स्त्री० ) रागिणीविशेष। यह संस्कृत मतानुयायी प्राचीन रागिणी नहीं है। कहते हैं, कि विक्रमादित्यके भाई भर्तृहरिने इसका सङ्कलन किया, इसीसे यह भर्तृहारिका, भटियारी या भाटियारी नामसे प्रसिद्ध है। यह रागिणी ललित और परजयोगसे उत्पन्न है। सा वादी, म सम्वादी है, स्वरग्राम यों है—

"ऋ ग म प ध नि सा" ( संगीतरत्ना० )

भटियाल ( हि० क्रि० वि० ) धारकी ओर, धारके साथ साथ।

भट्टू ( हि० स्त्री० ) १ स्त्रियों के संवन्धके लिये एक आदर सूचक शब्द। २ सखी, गोइया। ३ प्रिय व्यक्ति।

भटेरा ( हि० पु० ) वैश्यों की एक जाति।

भटेश्वरी ( स० स्त्री० ) राजपूतानेके आवूपर्वतस्थ शक्ति मूर्त्तिविशेष। दाभि शाखाभुक्त किसी राजपूतने उनकी आराधना करके श्रीसमृद्धि प्राप्त की। तभीसे उनके वंशधर भटेश्वरिया कहलाते हैं। आज भी दवेला सरोली नामक स्थान उनके अधिकार में है।

भटैया ( हि० स्त्री० ) भटकटैया।

भटोट ( हि० पु० ) यात्रियों के गलेमें फांसी लगानेवाला ठग।

भटोला ( हि० वि० ) १ भाट सवधी, भाटका। २ भाटके योग्य ( पु० ) ३ वह भूमि जो भाटको इनामके तौर पर दी गई हो।

भट्कला ( स० स्त्री० ) तीर्थविशेष।

भट्ट ( स० पु० ) भटतीति भट वाहुलकात् तन्। १ जातिविशेष।

"वैश्यायां शूद्रवीर्येण पुमानेको वभूव ह।
स भट्टो वावदूकश्च सर्वषा स्तुतिपाठक ॥"

( ब्रह्मवैवर्त्तपु० ब्रह्मख० १० अ० )

वैश्याके गर्भ और शूद्रके औरससे इस जातिकी उत्पत्ति हुई है। ये लोग स्तुतिपाठक हैं। कोई कोई क्षत्रिय और विप्र कन्याके संयोगसे भट्टजातिकी उत्पत्ति वतलाते हैं।

२ स्वामित्व। ३ वेदाभिज्ञ। ४ पण्डित। ५ योद्धा,

सूर। ६ भाट। ७ ब्राह्मणोंकी एक उपाधि। इस के धारण करनेवाले दक्षिण भारत, मालव आदि कई प्रान्तों में पाये जाते हैं। ८ महाराष्ट्र ब्राह्मणोंकी एक उपाधि। इसके धारण करनेवाले दक्षिण भारत, मालव आदि कई प्रान्तो में पाये जाते हैं। ९ महाराष्ट्र ब्राह्मण। १० तुतातभिध मीमांसक भेद। इसका मत मीमांसा दर्शनमें लिखा गया है। मीमांसा देखो।

भट्ट—१ मीमांसा मीमांसाके प्रणेता। आलङ्कारिक, अलङ्कार सर्वस्वमे उनका नामोल्लेख है। ३ संस्कृतज्ञ और वेदपारग ब्राह्मणोंकी उपाधि।

भट्ट—सुमित्राद्वीपकी मान्देलिङ्ग उपत्यकावासी जातिविशेष। इस जातिके लोग जिस भाषामें बोलते हैं, वह मलय वासी भाषासे भिन्न है। किन्तु निकटवर्ती स्थानोंकी भाषा इसके साथ बहुत कुछ मिलती जुलती है। लिपि द्वारा भाषाको व्यक्त करनेके लिये इन्होंने अपनी उपयोगी एक वर्णमालाकी सृष्टि की है। भारतीय द्वीपपुञ्जस्थ इस असभ्य जातिके मध्य अक्षरमालाका आविष्कार और भाषातत्त्वका उज्ज्वल आलोक प्रसारित होने पर भी नर मांस भोजनरूप जघन्यवृत्तिने इनके हृदयको बहुत दिनों से कलुषित कर रखा है। ये लोग व्यभिचार और दोपहर रातको लूट पाट मचाते हैं, रणमें बन्दी, जात्यन्तरमें दार परिग्रहकारी हैं अथवा विश्वासघातकता पूर्वक अन्य ग्राम, गृह या मनुष्यको आक्रमण और ग्रामादि दाहन प्रभृति दोष दुष्ट व्यक्तिको ये लोग मार कर खा जाते हैं।* भूत योनि पर इनका विश्वास नहीं है।

भट्टकेदार—वृत्तरत्नाकरके प्रणेता।

भट्टनायक—एक आलङ्कारिक। मल्लिनाथने इनका नामोल्लेख किया है।

भट्टनारायण—महाराज आदिशूर द्वारा वङ्गमें लाये गये पांच कन्नौजी ब्राह्मणोंमेंसे एक। इनके पिताका नाम क्षितीश था। ये शाण्डिल्य गोत्रीय थे। आदिशूरके लड़के भूशूरके साथ राढदेशमें आ कर ये मन बस गये। तभीसे उनकी सन्तान राढीय संज्ञासे भूषित हुई थी। राजा क्षितिशूरने उनके वराह, वटु, राम, नान, निपो, गुञि, गुण, गूढ निक, गुरुठ, निरो, मधु, देवा, सोम, काम और दीन नामक सोलह पुत्रोंको १६ ग्रामोंका अधिकार प्रदान किया। ये सब पुत्र वर्त्तमान १६ ब्राह्मणवंशके आदिपुरुष हैं। उक्त सोलह पृथक् पृथक ग्राममें बस जानेके कारण उसी ग्रामके नाम से पुकारे जाने लगे। यथा,—वराह—वाडुरी, राम—गड गडी, निपो—केशरकोणी, नान—कुसुमकुली, वाटु—पारिहाल, गुञि—कुलभी, गुरुठ—दीर्घाङ्गी, गुण—घोषाली, निकृत्तन—वटव्याल (वडाल,) गढ—मास चटक, निरो—वसुयाडी, मधु—कडियाल, देव—सेऊ, सोम—पोषड़ाल, दीन—कुशि (कुशारी) और काम—भिरराडी।

२ वेणी संहार नामक नाटकके प्रणेता। ३ रघुनाथ दीक्षित। उन्होंने १६८६ विक्रमाब्दमें 'अपेक्षित व्याख्यानम्' नामक उत्तररामचरितकी एक टीका लिखी है। ४ प्रयोगरत्नके प्रणेता, श्रीभट्टरामेश्वर सूरिके पुत्र। काशी धाममें रह कर उन्होंने इस ग्रन्थका सम्पादन किया। ५ एक काश्मीरी पण्डित, स्तव चिन्तामणि विवृति नामक एक ग्रन्थके रचयिता। ये महामहेश्वरकी उपाधिसे भूषित थे।

भट्टप्रयाग (सं० पु०) गङ्गा और यमुनाका सङ्गम स्थान।

भट्टबलभद्र (सं० पु०) ब्रह्मसिद्धान्तके एक टीकाकार।

भट्टवीजक (सं० पु०) एक कवि। शार्ङ्गधर पद्धतिमें इन का उल्लेख है।

---

* १२९० ई०में मार्कपोलो और १८७० ई०में सर ष्टामफोर्ड रैफल्सने अपने भ्रमणवृत्तान्तमें तथा मार्सडेन साहबने अपने सुमात्रा इतिवृत्तमें इस बीभत्स व्यापारका उल्लेख किया है। १८३५ ई०में अमेरिकावासी भ्रमणकारी प्रोफेसर विकोमर जब सुमात्रा देखने आये थे, तब उन्हें इस भट्टजातिके नरमांस खानेका विषय मालूम हुआ था। उन्होंने लिखा है, कि ओलन्दाजोंके मान्देलिङ्ग उपत्यका जीतने पर जो पर्वतगुहामें छिप रहे थे, वे आज भी नरमांस खाते हैं। किन्तु जो ओलन्दाजके साथ मिल कर रहने लगे थे, उन्होंने इस निकृष्ट प्रवृत्तिको बिलकुल छोड़ दिया है। सिपिरोकके राजाने भट्टके ओलन्दाज [illegible] कहा था, कि उन्होंने [illegible] नरमांस [illegible] है और उसका [illegible] इन्होंकी [illegible]

भट्टभास्कर मिश्र ( स० पु० ) एक टीकाकार।
भट्टमदन ( स० पु० ) एक ग्रन्थकर्त्ता।
भट्टभीम—रावणार्जुनीय नामक काव्यके प्रणेता। ये वलभी स्थान निवासी थे।
भट्टमूर्त्ति—एक तेलगू-कवि। ये राजा कृष्णरायकी सभा में विद्यमान थे। इनके बनाये हुए नरेशभूपालियम् और वसुचरित्रम् नामक दो अत्युत्कृष्ट काव्य मिलते हैं।
भट्टमल्ल ( स० पु० ) एक वैयाकरणिक। इन्होंने अख्यात चन्द्रिका वा एकार्थादयनिघण्टु, शब्दार्थ वृत्ति और क्रियानिघण्टु नामक कई एक व्याकरण लिखे हैं।
भट्टयशस् ( स० पु० ) एक कवि।
भट्टविश्वेश्वर ( स० पु० ) मिताक्षराके सुबोधिनि नामक टीकाकार, पेद्दिभट्टके पुत्र।
भट्टशिव ( स० पु० ) एक दार्शनिक पण्डित। शङ्करदिग्वि में इनका नामोल्लेख है। इन्होंने सांख्यमतका खण्डन किया है।
भट्टशङ्कर—वैद्यविनोद नामक वैद्यकग्रन्थके सङ्कलन कर्त्ता। ये अनन्तभट्टके पुत्र थे। अम्बरपति जयसिंहके पुत्र राजा रामसिंहकी अनुमति ले कर इन्होंने उक्त ग्रन्थकी रचना की।
भट्टश्रीशङ्कर ( सं० पु० ) एक ज्योतिषी। वृहज्जातकमें इन का नामोल्लेख है।
भट्टसोमेश्वर—१ एक ग्रन्थकार। कमलाकरभट्टके शूद्रधर्म तत्त्वमें इनका उल्लेख है। २ कुमारिलकृत तन्त्रवार्त्तिककी टीकाके रचयिता, माधवभट्टके पुत्र। 'न्यायसुधा' उनकी उपधि थी।
भट्टस्वामिन् ( स० पु० ) एक कवि। शार्ङ्गधरपद्धतिमें इन का उल्लेख है।
भट्टाचार्य ( स० पु० ) भट्ट तुतातभट्टः आचार्यउदयनाचार्य तौ तुल्यतया तन्मताभिज्ञत्वेनास्त्य स्येति अच्। १ तुतातभट्ट और उदयनाचार्यकी तरह जो पण्डित हैं, वे ही भट्टाचार्य हैं। २ तुतात भट्ट और उदयनाचार्यके मताभिज्ञ।

"नास्तिकानां निग्रहाय भट्टाचार्यो भविष्यत ॥"

( प्राचीनशास्त्र )

जो ब्राह्मणतुतात भट्टकी मीमांसा और उदयनाचार्यका न्यायसंग्रह अध्ययन करके कृतविद्य हुए हैं, वे ही यह उपाधि पानेके योग्य हैं। दर्शनशास्त्रज्ञ, अध्यापक, वेदाध्यायी ब्राह्मणोंकी भी यह उपाधि है।
भट्टाचार्य— १ अशौचविंशच्छ्लोकी टीका, अशौचसंग्रह और उसकी विवृति तथा त्रिंशच्छ्लोकी आदि कुछ ग्रन्थोंके प्रणेता।

२ काव्य प्रकाशके रचयिता। ३ पद्ममञ्जरी, शाण्डिल्य सूत्रदीपिका और सिद्धान्त पञ्चानन नामक न्यायग्रन्थके प्रणयनकर्त्ता। ४ मुक्तावली और तट्टीकाके प्रणेता। ५ नाददीपक नामक सङ्गीतग्रन्थके रचयिता।
भट्टाचार्यचूडामणि ( स० पु० ) न्यायसिद्धान्तमञ्जरीके रचयिता। इनका पूर्ण नाम जानकीनाथ भट्टाचार्य चूडामणि था।
भट्टाचार्यतर्कालङ्कार—द्रव्यभाष्यटीका नामक प्रशस्तपदाचार्यकृत वैशेषिकद्रव्यलक्षणभाष्यकी व्याख्याके प्रणेता। ये महामहोपाध्याय उपाधिसे भूषित थे।
भट्टाचार्य शतावधान ( स० पु० ) राघवेन्द्रका नामान्तर।
भट्टाचार्यशिरोमणि—नैयायिक रघुनाथका नामान्तर।
भट्टार ( स० त्रि० ) भटतीति क्विप्, भट् चासौ तारश्चेति कर्मधा पृषोदरादित्वात् साधु यद्वा भट्ट स्वामित्व मृच्छतीति अण्। पूज्य।
भट्टारक ( स० पु० ) भट्टार सञ्ज्ञायां कन्। नाट्योक्तिमें राजा भट्टारक नामसे अभिहित होते हैं। २ तपोधन। ३ देव। ४ सूर्य ( त्रि० ) ५ पूज्य।
भट्टारक—गुप्तराज स्कन्दगुप्तके एक सामान्तराज। ये सेनापति भटार्क वा भट्टारक नामसे प्रसिद्ध थे। सौराष्ट्र के सामन्तपद पर अधिष्ठित रह कर ये धीरे धीरे वलभीके अधीश्वर हो गये थे। इनकी प्रचलित मुद्रा पर "महाराज्ञो महाक्षत्र परमादित्य राज्ञोसामन्त महाश्री भट्टारकस्य" ऐसा पाठ लिखा है।

२ प्रभासखण्ड वर्णित गुजरात प्रदेशके एक राजा।

( प्रभासख० २८।२।१३ )

३ जैनोंके सारस्वत-गच्छके अन्तर्गत १म आचार्य धर्मभूषणका नामान्तर।
भट्टारकमुनि—सारस्वतगच्छके अन्तर्गत वर्द्धमानशिष्य २य धर्मभूषणका नामान्तर।

भट्टारकवार ( स० पु० ) भट्टारक सूर्य तस्य वार। रविवार।

भट्टारिका (स० स्त्री०) १ नदीभेद। (कालिकापुराण २३।८० ११) २ अनहिलवाड पत्तनके अन्तर्गत एक प्राचीन स्थान।

भट्टि—पञ्जाबवासी राजपूतजातिकी एक शाखा।

भाटि देखो।

भट्टि—भट्टिकाव्यके प्रणेता भर्तृहरिका नामान्तर। ये भर्तृस्वामिन्, भट्टस्वामी या स्वामिभट्ट नामसे भी जन साधारणमें परिचित थे। वलभीराज भट्टारकपुत्र श्रीधरसेनकी सभामें ३८० सम्वत्को ये विद्यमान थे।

भर्तृहरि देखो।

भट्टिक (स० पु०) चित्रगुप्तके एक पुत्रका नाम।

भट्टिकदेवराज—एक हिंदूराज। ये प्रतिहारराज सिलुकसे परास्त हुए थे।

भट्टिकाव्य—भर्तृहरि प्रणीत एक महाकाव्य। यह काव्य रसभावमय रामायणकी प्रसिद्ध घटनाके आधार पर लिखित होने पर भी कविने इसे व्याकरणकी विविध प्रक्रिया द्वारा सुन्दरभावसे सज्जित किया है। रचना कालमें व्याकरणके प्रति ही कविकी सुतीक्ष्ण दृष्टि थी। व्याकरणमें स्थिर-व्युत्पत्ति लाभ करनेके पक्षमें भट्टिकाव्य विशेष उपयोगी है। ग्रन्थके शेषमें कविने स्वयं एक जगह लिखा है—

"दीपतुल्य प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम्।
हस्तामर्ष इवान्धानां भवेद्व्याकरणादृते॥"

(भट्टि २२।३३)

प्रवाद है, कि कवि भर्तृहरि एक राजाके यहां रह कर उन्हें प्रति दिन व्याकरण पढ़ाते थे। एक दिन राजा व्याकरण पढ़ रहे थे, कि उसी समय एक हाथी गुरु और शिष्यके मध्य हो कर चला गया जिससे उनके पाठमें बाधा पहुंची। प्रचलित नियमके अनुसार उस घटनासे ठीक एक वर्ष तक व्याकरणका पढ़ना बंद रखा गया। उस समय राजाके व्याकरणकी व्युत्पत्ति स्थिर रखनेके लिये कवि भर्तृहरि काव्यच्छलसे व्याकरणकी रचना कर राजा को वही व्याकरण पढ़ाने लगे। भट्टिकाव्य अध्ययन कर राजाको फिर अन्य व्याकरण पढ़नेका प्रयोजन नहीं पड़ा। यह काव्य केवल व्याकरणकी काठिन्यपूर्ण नीरसपद परम्परा द्वारा ही रचा गया है, सो नहीं। इसमें कई जगह उस रसकदम्बकल्लोलमय कवित्वपूर्ण कोमलकान्त पदावलीकी भी अति सुन्दर अवतारणा देखी जाती है तथा इसमें सहृदयवेद्य शब्द और अर्थालङ्कारादिका भी अभाव नहीं है।

यह ग्रन्थ पढ़नेसे व्याकरणके अलावा छन्द और अलङ्कारशास्त्रमें भी विशेष व्युत्पत्ति लाभ की जाती है। संस्कृत काव्यके मध्य भट्टि भिन्न ऐसा कोई काव्य ही नहीं है जिसमें ऐसे सुन्दर भावमें और सुश्रृङ्खलाके साथ व्याकरण, छन्द तथा अलङ्कारसमुच्चयका एकत्र समावेश हो। इसके द्वितीय सर्गका शरद्वर्णन और दशमका काव्यालङ्कार बड़ा ही रमणीय है।

ग्रन्थके शेषमें ग्रन्थकर्त्ताने अपना जो परिचय दिया है वह इस प्रकार है—

"काव्यमिदं विहितं मया वलभ्यां
श्रीधरसेननरेन्द्रपालितायाम्।
कीर्त्तिरतो भवतान्नृपस्य तस्य
क्षेमकरः क्षितिपो यतः प्रजानाम्॥"

वलभीराज श्रीधरसेनके आश्रयमें रह कर उन्होंने इस काव्यकी रचना की।

भट्टिनी ( स० स्त्री० ) १ नाटककी भाषामें राजाकी वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो। २ ब्राह्मणभार्या।

भट्टिप्रोल—दाक्षिणात्यकी कृष्णा नदी तीरवर्त्ती एक प्राचीन नगर। यह बेल्लुर नगरसे १ कोस पश्चिममें अवस्थित है। यहांका लञ्जादिब्ब नामक सुदृढ़ इष्टकस्तूप इसके प्राचीनत्वका निदर्शन है। यह स्तूप प्रायः १७०० वर्गगज स्थान तक फैला हुआ है।

भट्टियाना—पञ्जावप्रदेशके शीर्षा जिलान्तर्गत एक भूभाग। भट्टि (भाटी) नामक दुर्द्धर्ष राजपूतजातिके वाससे इस स्थानका भट्टियाना नाम पड़ा है। एक समय हरियाना बीकानेर और बहावलपुर आदि स्थान इसी भट्टिराज्यके अन्तर्गत थे। आज भी घाघरकी उपत्यका के उभय पार्श्ववर्त्ती स्थानोंके ध्वंसावशिष्ट अट्टालिका और जनशून्य ग्रामादि उस प्राचीनसमृद्ध जातिके गौरव का परिचय देते हैं। मुगलराज तैमूर शाहने भारतकी

चढाईके समय इस प्रदेशको लूट कर बिलकुल जनहीन कर डाला था। अङ्गरेजी अधिकारमें आनेके बादसे यहां पञ्जाब और राजपूतानेके बहुतसे लोग आ कर बस गये। उस समय घग्गरा नदी बहवलपुरके निकट शतद्रु के साथ मिलती थी। अभी वह बीकानेरकी मरुभूमि पर बह कर सूख गई है। १८वीं शताब्दीमें यह स्थान भाटि दस्युदलके आवासरूपमें गिना जाता था। इस समय उन लोगोंने विपदसे अपनेको बचानेके लिये कई एक ग्राम दुर्गादिसे सुदृढ कर लिये थे। १७९५ ई०में उन्होंने यद्यपि जार्ज टामसकी वश्यता स्वीकार कर ली थी, तो भी वे कभी भी अङ्गरेजोंके पदानत नहीं हुए। १८०३ ई०में लार्ड लेकको विजयके बाद दिल्लीप्रदेशके साथ साथ समूचा भट्टियानराज्य अङ्गरेजोंके दखलमें आ गया। किन्तु १८१० ई० तक अङ्गरेजराज उक्त प्रदेशका पूर्णाधिकार प्राप्त न कर सके थे। भट्टिसरदार बहादुर खां और जाबता खांका दमन करनेके लिये उसी साल अङ्गरेजी सेना भेजी गई। बहादुर खां राज्यसे भगा दिया गया और जाबता खांने अवनत मस्तकसे अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार कर ली। ७८१८ ई०में जाबता खांने चुपकेसे जब अङ्गरेजाधिकृत फतेहाबाद पर चढाई की तब वृटिशसरकारने उसे राज्यच्युत करके उसके राज्य पर अपना दखल जमा लिया। १८३७ ई०में भट्टियाना एक स्वतन्त्र जिलारूपमें गिना जाने लगा। पीछे यह १८५८ ई०में पञ्जाबके अन्तर्भुक्त हो कर शीर्षा नामसे बजने लगा।

भट्टिवार—श्रीरङ्गस्तवके प्रणेता। ये वेङ्कटाचार्यके शिष्य थे।

भट्टी (हि० स्त्री०) भट्ठी देखो।

भट्टीय (स० त्रि०) भट्टसम्बन्धीय, आर्यभट्ट सम्बन्धीय।

भट्टवाण—एक राजा या उनका वंश। जैन हरिवंशमें लिखा है, कि इस राजवंशने गुप्तराजाओं के पूर्व प्राय २४० वर्ष तक भारतका शासन किया था।

(जैनहरि ६०।५६ ८)

भट्टोजिदीक्षित—एक विख्यात पण्डित, लक्ष्मीधर सूरिके पुत्र। ये भानुजी (वीरेश्वर) दीक्षितके पिता और हरिहरके पितामह तथा कुरुक्षेत्रप्रदीपके प्रणेता कृष्णदत्तके गुरु थे। रामाश्रम शिष्य वत्सराज (१६४१ ई०में) और नीलकण्ठने आचारमयूखमें इनका उल्लेख किया है। अद्वैतकौस्तुभ, आचारप्रदीप, अशौचविंशच्छ्लोकी, अशौचनिर्णय, आह्निककारिका, कालनिर्णयसंग्रह, गोत्रप्रवरनिर्णय, चतुर्विंशतिमुनिमतव्याख्या, चन्दनधारणविधि, तत्त्वकौस्तुभ, तत्त्वविवेकदीपन व्याख्या, तन्त्रसिद्धान्तदीपिका, तन्त्राधिकारनिर्णय, तर्कामृत, तिथिनिर्णय, तिथिनिर्णयसंक्षेप, तिथि प्रदीपक, तीर्थयात्राविधि, त्रिस्थलीसेतु और त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रह, दशश्लोकीटीका, धातुपाठ, प्रायश्चित्तविनिर्णय, प्रौढमनोरमा, बालमनोरमा, मासनिर्णय, लिङ्गानुशासनसूत्रवृत्ति, शब्दकौस्तुभ, श्राद्धकाण्ड, सन्ध्यामन्त्रव्याख्यान, सर्वसारसंग्रह, सिद्धान्तकौमुदी (पाणिनि व्याकरणकी वृत्ति), स्नानप्रयोग, भट्टोजिदीक्षितीय प्रभृति ग्रन्थ इनके बनाये हुए मिलते हैं। सिद्धान्तकौमुदी व्याकरण लिख कर इन्होंने अष्टाध्यायी पाणिनिसूत्रको प्राञ्जल और सहजबोध कर दिया है।

भट्टोत्पल—एक ज्योतिर्विद्। इन्होंने ७८८ शकमें वृहज्जातककी जगच्चन्द्रिका नामक एक विवृति लिखी है। अलावा इसके योगयात्राविवरण, लघुजातकटीका, वृहत्संहिताविवृति और बादरायण प्रश्नटीका नामक कई एक ग्रन्थ भी इनके रचित मिलते हैं। किसी ग्रन्थमें इनका उत्पल आचार्य नाम भी लिखा हुआ देखनेमें आता है।

भट्टोद्भट—एक प्रसिद्ध काश्मीरी पण्डित। राजतरङ्गिणीमें लिखा है, कि ये राजा जयापीडके सभापण्डित थे और प्रतिदिन १ लाख दीनार पाते थे। इनका बनाया हुआ कुमार सम्भव तथा एक अलङ्कार शास्त्र मिलता है।

(राजतरङ्गिणी ४।४९४)

भट्टोपम (सं० पु०) एक बौद्धाचार्य।

भट्ठा (हिं० पु०) १ बड़ी भट्ठी। २ ईंट या खपड़े आदि पकानेका पजावा।

भट्ठी (हिं० स्त्री०) १ विशेष आकार और प्रकारका ईंटों आदिका बना हुआ बड़ा चूल्हा। इस पर हलवाई पकवान बनाते, लोहार लोहा गलाते, वैद्य लोग रस आदि फूकते अथवा इसी प्रकारके और काम करते हैं। २ देशी मद्य टपकानेका कारखाना, वह स्थान जहां देशी शराब बनती हो।

भटारा—दाक्षिणात्यवासी मुसलमान जातिकी एक शाखा। ववर्चीका काम या दूकानदारी इनकी प्रधान उपजीविका है। ये लोग दिल्लीसे आ कर यहां निम्नश्रेणी के हिन्दूधर्मत्यागी मुसलमानोंके मध्य विवाह शादी करके निम्नश्रेणीमें गिने जाने लगे हैं। ये लोग स्वभावतः ही अपरिष्कार हैं। इनको सम्प्रदायी सुन्नी मुसलमान कह कर अपना परिचय देने पर भी ये कभी भी कलमा पाठ नहीं करते।

भठियाना (हिं० क्रि०) समुद्रमें भाटा आना, समुद्रके पानी का नीचे उतरना।

भठियारपन (हिं० पु०) १ भठियारका काम। २ भठियारोंकी तरह लड़ना और अश्लील गालियाँ बकना।

भठियारा (हिं० पु०) सरायका प्रबन्ध करनेवाला भाटियारा देखो।

भठियाल (हिं० पु०) ज्वारका उलटा, भाटा।

भठुली (हिं० स्त्री०) ठठेरोंकी मिट्टीकी बनी हुई वह छोटी भट्ठी जिसमें किसी चीजको गढ़नेसे पहले तपाते या लाल करते हैं।

भड़वा (हिं० पु०) आडम्बर, दिखौआ शान।

भड (सं० पु०) भड परिहासे परिभाषणे वा अच्। वर्ण सङ्कर जातिविशेष। इसकी उत्पत्ति लेट पिता और तीवर मातासे हुई थी।

"लेटस्तीवर कन्यायां जनयामास षड्सुतान्।
माल्ल मल्ल मातरञ्च भड कोलञ्च कन्दरम्।
(ब्रह्मवैवर्तपु० ब्रह्मख० १० अ०)

भड़ (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी बहुत हलकी नाव। २ वीर, योद्धा।

भड़क (हिं० स्त्री०) १ दिखाऊ चमक दमक, चमकीला पन। २ भड़कनेका भाव, सहम।

भड़कदार (हिं० वि०) १ जिसमें खूब चमकदमक हो, चमकीला। २ रोबदार।

भड़कना (हिं० क्रि०) १ प्रज्वलित हो उठना, तेजीसे जल उठना। २ क्रुद्ध होना। ३ बढ़ जाना, तेज होना। ४ डर कर पीछे हटना, चौंकना। इस शब्दका प्रयोग विशेषतः घोड़े आदि पशुओंके लिये होता है।

भड़काना (हिं० क्रि०) १ प्रज्वलित करना, जलाना। २ उत्तेजित करना, उभारना। ३ किसीको इस प्रकार भ्रम में डालना, कि वह कोई काम करनेके लिये तैयार न हो। ४ चमकना। ५ बढ़ावा देना।

भड़कीला (हिं० वि०) भड़कदार, चमकीला। २ डर कर उत्तेजित होनेवाला, चौंकना होनेवाला।

भड़कीलापन (हिं० पु०) चमक दमक, भड़कीले होनेका भाव।

भड़भड़ (हिं० स्त्री०) १ भड़भड़ शब्द जो प्रायः एक चीज पर दूसरी चीज जोर जोरसे पटकने अथवा बड़े बड़े ढोल आदि बजानेसे उत्पन्न होता है, आघातोंका शब्द। २ व्यर्थकी और बहुत अधिक बात चीत ३ जनसमूह, जिसमें छोटे बड़े या खोटे खरेका विचार न हो, भीड़।

भड़भड़ाना (हिं० क्रि०) १ भड़भड़ शब्द करना। २ किसी चीजमेंसे भड़भड़ शब्द उत्पन्न होना।

भड़भड़िया (हिं० वि० बहुत अधिक और व्यर्थकी बातें करनेवाला, गप्पी।

भड़भाँड़ (हिं० पु०) एक कटीला पौधा। घमोय देखो।

भड़भूँजा—हिन्दुओंकी एक छोटी जाति जो अन्न भूननेका काम करती है। इनके दो थोक हैं, परदेशी और मराठा। मराठा बहुत कुछ महाराष्ट्रियोंसे मिलते हैं। परदेशी उत्तर भारतसे दक्षिणापथमें आ कर जुन्नर, खेड़ सिरूर, बीजापुर, पुरन्धर आदि स्थानोंमें बस गये हैं।

परदेशी भड़भूजा अपनेको साधारणतः कनौजिया और काश्यपगोत्रीय बतलाते हैं। ये लोग आपसमें पुत्र कन्याका आदान प्रदान तथा भोजनादि करते हैं। मांस मछली इनको बहुत प्रिय है। शीतलादेवीकी पूजामें छाग बली देते हैं। परिश्रमी होने पर भी ये लोग अपरिच्छन्न हैं, किन्तु देवता ब्राह्मणमें इनकी विशेष भक्ति देखी जाती है। प्रत्येक घरमें खण्डोबा, भवानी, सतदोबा, और महादेव आदिकी मूर्त्तियां रहती हैं। परदेशी ब्राह्मण सभी कर्मोंमें उनकी याजकता करते हैं। आलन्दी, कोन्दनपुर, पण्ढरपुर और तुलजापुर आदि इनके प्रधान पवित्र तीर्थ स्थान हैं। ये शिवरात्रि, आषाढ़ी एकादशी, गोकुलाष्टमी, अनन्तचतुर्दशी, कार्त्तिक एकादशी तथा 'प्रदोष' अर्थात् प्रतिमासके कृष्णात्रयोदशी आदि पर्व-दिनोंमें उपवास करते और सिमगा, नागपञ्चमी, [illegible] तथा दीवालीके दिन उत्सव मनाते हैं।

जातवालकके १२वें दिन प्रसूतिका अशौचान्त होता है। इस दिन सन्ध्या समय पुरोहित आ कर वालकका नामकरण करते हैं। एकसे सात वर्षके मध्य शुभ दिनमें बालकका मुण्डन होता है। युवकोंका ३० वर्षमें और युवतियोंका १२ १६ वर्षमें शुभ विवाह होता है। जब कन्या व्याहने योग्य होती है तब कन्याकर्त्ता वरकर्त्ताके पास जा कन्याग्रहणकी प्रार्थना करते हैं। वरकर्त्ताके स्वीकार करने पर एक दो रुपये या एक वरतनमें थोडी चीनी वरके हाथ दे कर कन्याकर्त्ता अपने घरको लौटते हैं। विवाहके पहले वर और कन्याके घरमें एक विवाह मण्डप बनाया जाता है। उस दिन एक कुमारी वर और कन्याके शरीरमें उवटन लगाती है। विवाहके दिन एक तालपत्रका मौर वरके सिर पर रख कर वारात वरको ले कन्याके घर जाती है। कहीं कहीं कन्या ही वरके घर लाई जाती है। जहां कहीं भी क्यों न हो, वर और कन्याके विवाहस्थल पर उपस्थित होनेसे उनके माथेके ऊपर रोटी और जल परछन कर स्नान कराया जाता है। इसके वाद एक लोहार वर और कन्याके दहिने और वायें हाथमें लोहेका कङ्कण दे कर सूता बांध जाता है। तदन्तर वर और कन्याको चौकी पर विठा पुरोहित सम्प्रदान कार्य शुरू करते हैं। वाद कन्याकर्त्ता वरके दोनों पैर जलसे धो कर पूजा करता है। उठनेके समय वर और दम्पतीके सिर पर हाथ रख आशीर्वाद देता तथा दो या पांच रुपये यौतुक दे जाता है। यही इन लोगोंके कन्या दानकी प्रथा है। विवाह हो जाने पर जाति-कुटुम्बको खिलाया जाता है। वादमें वारात विदा होती है, किन्तु वरका वह मौर कन्याके पितालयमें ही रहता है। जब तक एक और शुभ विवाह नहीं हो जाता तब तक माङ्गलिक जान कर उसे घरमें यत्नपूर्वक रखते हैं। वाद वह नदीके किनारे अथवा तालावमें फेंक दिया जाता है। साधारणतः ये लोग शवदेहको जलाते हैं। वसन्तरोगसे यदि किसीकी मृत्यु होती है तो लाशको जमीनमें गाडते हैं। मृत-व्यक्तिके ऊपर गरम जल डाल कर नये वस्त्रसे उसकी देह ढक देते हैं। विधवा होनेसे उजला थान, पुरुष होनेसे उजला धोती और सधवा रमणी होनेसे हरा कपडा पहना दिया जाता है। उसके वाद उस शवके ऊपर फूल और पान छिडक कर सभी उसे प्रणाम करते तथा उसके दोनों हाथोंमें गेहूँके पिण्ड देते हैं। श्मशानमें शवको चिता पर रख कर मुखाग्निके मुख्य अधिकारी मुंहमें जल और अग्नि देते हैं, वादमें शवदेह जलाई जाती है। अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त होने पर सब कोई स्नान कर घर लौटते हैं। तीन दिनके वाद उस भस्मको साफ कर दाहस्थानको गोवर और चूनेसे परिष्कार करते तथा वहां मृतकी प्रेतात्माकी तुष्टिके लिये खाद्यादि रख देते हैं। स्त्री होनेसे ६ दिनमें और पुरुषको मृत्यु होनेसे १० दिनमें अशौचान्त हो कर श्राद्धादि करते हैं।

वोजापुरके भडभूंजे एक स्वतन्त्र श्रेणीके हैं। ये लोग अपनेमें ही कन्यापुत्रका विवाहादि करते हैं। प्रवाद है, कि स्थानीय भोई नामक जातिकगण इसलाम धर्ममें दीक्षित हो कर इस प्रकार अवस्थान्तरको प्राप्त हुये हैं। अन्य विषयमें मुसलमानोंका अनुकरण करने पर भी हिन्दू देवीकी पूजा और पार्वणादि प्रतिपालनसे ये पराङ्मुख नहीं हैं। किन्तु विवाह या सत्कार्य होने पर काजीको वुला कर कार्य सम्पादन करते हैं। ये लोग हनफी सम्प्रदायी सुन्नी मुसलमान हैं।

हिंदू भडभूंजोंमें कहीं कहीं वाल्य विवाह, विधवा विवाह और वहु विवाह प्रचलित है।

भडवा (हि० पु०) भड़ुआ देखो।

भडसार (हि० स्त्री०) भोज्यपदार्थ रखनेके लिये कियाडीदार आला या ताक, भंडरिया।

भडहर (हि० स्त्री०) भँडेहर देखो।

भडाल (हि० पु०) योद्धा, सुभट।

भडित (सं० पु०) पाणिनिके गर्गादिगणोक्त ऋषिभेद। (पा० ४।१।१०५)

भडियाद—वम्बई प्रदेशके अहमदाबाद जिलेके धन्धुका तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन स्थान। यह धोलेरा नगरसे १ कोस उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहांकी पीर भडियादु रोजा नामक विख्यात अट्टालिका मुसलमान और गुजरातवासी निम्नश्रेणीके हिन्दुओंका पवित्र तीर्थस्थान है। उस रोजाके मध्य सैयद वोखारी महमूद शाह वालिस सैयद अवदुल रहमानकी कव्र है। प्रायः ६ वर्ष पहले उक्त महात्मा १५वें

यमें तीर्थयात्राके उद्देश्यसे अपनी जन्मभूमि उच्छ (पञ्जावके अन्तर्गत) का परित्याग कर इधर उधर भ्रमण को निकले। इस समय घन्धुकासे ७ कोस दक्षिण चोकि (चक्रावर्ती) नामक स्थानमें एक राजपूत राज्य करते थे। कहते थे, कि उक्त राजा उपवासके बाद पारणके दिनमें एक मुसलमानकी हत्या किये विना जलग्रहण नहीं करते थे। एक समय किसी बुढ़ियाका एकलौता इसी प्रकार मारा गया। शोकसे विह्वल हो उस बुढ़ियाने महम्मद शाहके निकट अपना दुखड़ा रोया। साधुहृदय इस निष्ठुर संवादसे उद्वेलित हो उठा। उन्होंने मुसलमानोंको उत्तेजित कर राजाके विरुद्ध हथियार उठाने कहा। युद्धमें राजाके निहत होने पर भी उनके पुत्रके प्रबल कोपानलसे महम्मद शाहने परित्राण नहीं पाया। रणक्षेत्रमें राजपुत्रके हाथसे वे मारे गये। उनकी अन्तिम प्रार्थनाके अनुसार मुसलमानोंने गजवनशाह नामक स्थानमें उनका दफन किया। उसी समाधिके ऊपर भडियादका रोजा विद्यमान है। उक्त घटनाके दो सौ वर्ष बाद काम्बेके नवाबने रोजा भवन बनवा कर उसके खर्चके लिये वार्षिक ३००) रु० का प्रबन्ध कर दिया। प्रतिवर्ष यहां सैकड़ों मुसलमान इकट्ठे होते हैं। दरगाहके मध्य १। मन वजनका एक लौहश्टङ्खल है। कहते हैं, कि एक समय उस लौहश्टङ्खलमें ऐसा प्रभाव था, कि अनपराधीकी कमरमें वह बांध देनेसे ७ कदम आगे बढ़ने पर दो खण्ड हो जाता था। जिसके स्पर्शसे वह खण्ड नहीं हो सकता था, वह व्यक्ति अपराधी या दोषी समझा जाता था और तदनुसार उसे सजा मिलती थी।

भडिल (सं० पु०) भडतीति भडि (सलिकल्यनिमहिभडि भण्डाति। उण् १।५५) इति इलच्। १ सेवक। २ शूर।

भंडिहा (हिं० पु०) तस्कर, चोर।

भडी (हिं० स्त्री०) वह उत्तेजना जो किसीको मूर्ख बनाने या उत्तेजित करनेके लिये दी जाय, झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ (हिं० पु०) १ वह जो वेश्याओंकी दलाली करता हो, पुंश्चली स्त्रियोंकी दलाली करनेवाला २ वेश्याओंके साथ तबला या सारंगी आदि बजानेवाला, सफरदाई।

भड्डुर (हिं० पु०) ब्राह्मणोंमें बहुत निम्नश्रेणीकी एक जाति। इस जातिके लोग महादिकका दान लेते अथवा यात्रियोंको दर्शन आदि कराते हैं, भडर।

भणन (सं० क्ली०) भण ल्युट्। कथन।

भणित (सं० त्रि०) भण क्त। १ शब्दित, ध्वनित। २ कथित, जो कहा गया हो। (स्त्री०) ३ कही हुई बात, कथा।

भणिति (सं० स्त्री०) भण्यते इति भण क्तिन्। वाक्य।

भण्टक (सं० पु०) मारिष क्षुप, मरसा नामका साग।

भण्टा (सं० स्त्री०) १ विस्फोटक, चेंच साग। २ वार्त्ताकी, बैगन।

भण्टाकी (सं० स्त्री०) भण्टते भण्यते वा भट भृती भण शब्दे वा (पिनाकादयश्च। उण् ४।१५) इति निपात्यते च, गौरादित्वात् ङीष्। १ वार्त्ताकी, बैगन। २ बृहती, वनभण्टा। ३ कुलटार, पोईका साग।

भण्डुक (सं० पु०) भडतीति भडि-उकञ्। श्योनाकवृक्ष। किसी किसी पुस्तकमें 'भण्टुक' ऐसा भी पाठ देखनेमें आता है।

भण्ड (सं० पु०) भण्डते इति भडि प्रतारणे अच्। १ अश्लीलभाषी, वह जो गंदी बातें बकता हो। २ भांड। (त्रि०) ३ वृथा धर्माभिमानी, धूर्त।

भण्डक (सं० पु०) भण्ड-संज्ञायां कन्। १ खञ्जन पक्षी। २ एक कवि।

भण्डतपस्विन् (सं० त्रि०) भण्ड तपस्वी कर्मधा०। भक्त विटेर, कपट-तपस्वी, निडाल-धार्मिक।

भण्डन (सं० क्ली०) भडि भावादौ ल्युट्। १ छलाकार, प्रतारणा। २ कवच। ३ युद्ध। ४ क्षति, हानि।

भण्डनादित्य—चालुक्यराज विजयादित्य कलिमर्त्यङ्कका एक सेनापति और सामन्त। ये पट्टवर्द्धिनीवंशीय काल कम्पके वंशधर थे। शिलालिपिमें इनकी वीरत्वकाहिनी कीर्त्तित हुई है।

भण्डहासिनी (सं० स्त्री०) भण्डेन खलीकारेण हसति या, हस् णिनि ङीप्। गणिका, वेश्या।

भण्डारी—बम्बई प्रेसिडेन्सीमें रहनेवाली एक जाति। मद्य बनाना और ताड़वृक्षोंसे ताड़ी संग्रह कर बेचना ही इनका प्रधान व्यवसाय है। इनमें कोते और सिंदे नामकी दो श्रेणियां हैं, उनमें परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध

या भोजनादि नहीं होता। साधारणत ये साफ सुथरे और विलासो होते हैं। प्राय सभी मद्य, ताडी और गाजा पीते हैं। मादकताके वशीभूत होने पर भी ये मिताचार और आतिथ्यादि गुणोंसे भूषित हैं। पुरुषवर्ग सिर घुटाते और चोटी रखते ह। स्त्रिया और बालकगण नाना कार्यों में पुरुषोंको सहायता करते हैं। भूतपति महादेव ही इनके प्रधान उपास्यदेव हैं। देशी और पहाडि ब्राह्मण इनके सभी कार्यों में पौरोहित्य करत हैं। हिन्दुओंकी भाति प्राय सभी पर्वोंमें ये उपवासादि करते हैं। पण्ढरपुर, गोकर्ण और बनारस आदि तीर्थस्थानोंमें जानेके लिये इनमें विशेष उत्सुकता पाई जाती है। जन्म और विवाहकार्यमें ये ब्राह्मणके परामर्शानुसार कार्य करते हैं। अन्यान्य जातीय वा सामाजिक झगडों का निपटेरा इनकी जातीय सभा ही कर दिया करती है। ये मुर्दोको जलाते भी हे और गाड भी देते हैं।

भण्डि (स ० स्त्री० ) भडि इन्। वीचि, लहर।

भण्डिका ( स ० स्त्री० ) मञ्जिष्ठा, मजीठ।

भाण्डिजङ्घ ( स ० पु० ) पाणिन्युक्त ऋषिभेद।

भण्डित ( स० पु० ) भडि-क्त। ऋषिभेद, एक गोत्रकार ऋषिका नाम।

भण्डिन्—हर्षचरित प्रणेता कवि वाणभट्टका नामान्तर।

भण्डिर ( स ० पु० ) भण्डिल रलयोरैक्यम्। शिरीषवृक्ष, सिरसा।

भण्डिल ( स ० पु० ) भण्ड्यते परिहसतीवेति भाषते इवेति वा, भडि ( सलिकल्यनिमहिभडिभण्डीति। उणा० १।५५ ) इति इलच्। १ शिरीषवृक्ष, सिरसका पेड। २ दूत। ३ शिल्पी। ( त्रि० ) ४ शुभ, अच्छा।

भण्डी (सं० स्त्री०) भण्ड्यते इति भडि इन् कृदिकारादिति पक्षे ङीष्। १ मञ्जिष्ठा, मजीठ। २ शिरोषवृक्ष, सिरसा। ३ श्वेत त्रिवृत, सफेद निशोथ।

भण्डीतकी ( स० स्त्री० ) भण्डी सती तकतीति तक अच्, गौरादित्वात् ङीष्। मञ्जिष्ठा, मजीठ।

भण्डीर ( स० पु० ) भण्डि बाहुलकात् ईरन्। १ समष्ठिल क्षुप, भँडभाँड। २ तण्डुलीय शाक, चौलाई। ३ शिरीष वृक्ष, सिरसा। ४ वटवृक्ष।

भण्डीरलतिका (सं० स्त्री०) भण्डीर इव लतते इति लति अच् स्वार्थे कन् टाप् अत इत्व। मञ्जिष्ठा, मजीठ।

भण्डीरी ( स० स्त्री० ) भण्डीर गौरादित्वात् ङीप्। मञ्जिष्ठा, मजीठ।

भण्डील ( स ० पु० ) भण्डीर-रलयोरैकत्व। मञ्जिष्ठा, मजीठ।

भण्डुक ( स ० पु० ) भडि-उक्। १ मत्स्यविशेष, भाकुर नामक मछली। गुण– मधुर, शीतल, वृष्य, श्लेष्मकर, गुरुविष्टम्भी और रक्तपित्तहर। २ श्योनाकवृक्ष।

भतरौड ( हिं० पु० ) १ मथुरा और वृन्दावनके बीचका एक स्थान। इसके विषयमें यह प्रसिद्ध है, कि यहा श्रीकृष्णने चौबाइनोंसे भात मगवा कर खाया था। २ ऊँचा स्थान। ३ मन्दिरका शिखर।

भतवान ( हिं० पु० ) विवाहकी एक रीति। इसमें विवाह के एक दिन पहले कन्यापक्षके लोग भात, दाल आदि कच्ची रसोई बना कर वर और उसके साथ चार और कुआरे लडकोंको बुला कर भोजन कराते हैं।

भतार ( हि ० पु० ) पति, खाविद।

भताला—मध्यप्रदेशके चान्दा जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह भाण्डक नगरसे १३ कोस उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यह स्थान प्राचीन भद्रावती राज्यके अन्तर्भुक्त था। निकटवर्ती पर्वतके ऊपर सुरक्षित प्राचीन देवमन्दिर और दुर्गादि स्थानीय प्राचीन कीर्तिका परिचय प्रदान करते हैं। पर्वतके पादमूलस्थ सुरम्य पुष्करिणी आदिसे इस स्थानकी शोभा अनिर्वचनीय हो रही है। यहा पत्थरकी एक उत्कृष्ट खान है।

भतीजा ( हि० पु० ) भाईका पुत्र, भाईका लडका।

भतुआ ( हि ० पु० ) सफेद कुम्हडा, पेठा।

भतुला ( हि ० पु० ) गकरिया, बाटी।

भतोली—मुजफ्फरपुर जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह मुजफ्फरपुर नगरसे ६ कोसकी दूरी पर अवस्थित है। यहा 'भेवरि दी' नामक एक १०० फुट उच्च सुवृहत् स्तूप है। स्थानीय प्रवाद है, कि उस स्थान पर चेरू राजाओंका एक दुर्ग था। मुसलमान अमलदारीसे बहुत पहले यह आगसे बिल्कुल बरबाद हो गया था। स्तूप खनते समय देखा गया है, कि उसका गठनकार्य और इष्टकादि प्राचीन हिन्दू ढगकी बनी हुई हैं। अलावा

इसके उस स्तूपमें और भी कितनी हिन्दू देवमूर्त्तियां पाई गई हैं। इस स्थानके अनेक निदर्शन आज भी कलकत्ते-के जादूघरमें सुरक्षित हैं।

भत्ता (हिं० पु०) दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारीको यात्राके समय दिया जाता है।

भथान—बम्बइप्रदेशके काठियावाड राज्यान्तर्गत झलावर जिलेका एक छोटा सामन्तराज्य। यह अक्षा० २२ ४१´ उ० तथा देशा० ७१ ५४´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां के सरदार वृटिश सरकारको तथा जूनागढके नवाबको कर देते हैं।

भदई (हिं० वि०) भादों सम्बन्धी, भादोंका। (स्त्री०) २ वह फसल जो भादोंमें तैयार होती है।

भदन्त (सं० पु०) भदन्ते इति भदि कल्याणे (भन्देर्नलो-पश्च। उण् ३।१३०) इति भच् नलोपश्च। १ सौग तादिबुद्ध, मायादेवीके पुत्र। २ सुतेज। (त्रि०) ३ पूजित। ४ प्रव्रजित।

भदन्त—एक ज्योतिर्विद्। वराहमिहिरने इनका नामो ल्लेख किया है।

भदन्तगोपदत्त (सं० पु०) एक बौद्धाचार्य।

भदन्तज्ञानवर्मन—एक कवि। शार्ङ्गधरपद्धतिमें इनका उल्लेख है।

भदन्तधर्मत्रात—एक बौद्धाचार्य।

भदन्तराम—एक बौद्धाचार्य।

भदन्तवमन—एक कवि। शार्ङ्गधरपद्धतिमें इनका उल्लेख है।

भदन्तशीलाभ—एक बौद्धाचार्य।

भदभद (हिं० वि०) बहुत मोटा। २ भद्दा।

भदयल (हिं० पु०) मेंढक।

भदर्वा—बम्बई प्रदेशके रेवाकान्थ राज्यके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। भूपरिमाण २७ वर्गमील है। यहांके सरदार राणा उपाधिधारी हैं। ये लोग गायकवाडराजको कर देते हैं।

भदर्शा—अयोध्या प्रदेशके फैजाबाद जिलान्तर्गत एक नगर जो मरहानदीके किनारे अवस्थित है। इस स्थानका प्राचीन नाम भायादर्शी है। प्रवाद है, कि दशरथ तनय भरत इसी स्थान पर अपने बडे भाई श्रीरामचन्द्रजीके साथ मिले थे।

भदवरिया (हिं० वि०) भदावर प्रान्तका।

भदाक (सं० पु० क्लो०) भन्दते इति भदि (पिनाकादयश्च। उण् ४।१५) इति आक, नलोपश्च। मङ्गल।

भदारि—पञ्जावप्रदेशके अन्तर्गत एक प्राचीन राजधानी। राजा चोवनाथ यहां पर राज्य करते थे। भेराके पार्श्ववर्त्ती अहमदाबाद नगरके समीप उसका ध्वंसाव शेष आज भी विद्यमान है।

भदावर—एक प्रान्त जो आज कल ग्वालियर राज्यमें है। यहांके क्षत्रियोंका एक विशिष्ट वर्ग है। यहांके बैल भी बहुत प्रसिद्ध होते हैं।

भदेस (हिं० वि०) कुरूप, भद्दा।

भदेल (हिं० पु०) मेंढक।

भदैला (हिं० वि०) भादों मासमें उत्पन्न होनेवाला, भादोंका।

भदौंह (हिं० वि०) भादों मासमें होनेवाला।

भदौर—पञ्जावके पतियाला राज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० ३० २८´ उ० तथा देशा० ७५ २३´ पू० बड-नालासे १६ मील पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या साढ़े सात हजारसे ऊपर है। १७१८ ई०में पतियालाके राजा आलसिंह भाई सरदार दुन्नासिंहने इसे बसाया। यह सदर दिन पर दिन उन्नति कर रहा है।

भदौरा—ग्वालियर राज्यके गुणा सब एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य। जनसंख्या २२७५ और भूपरिमाण ५० वर्गमील है। इसमें इसी नामका एक शहर और १६ ग्राम लगते हैं। स्थानीय डकैतोंके उपद्रवादिसे देशकी रक्षा करनेके कारण १८२० ई०में सिन्देराजने मानसिंह नामक किसी सरदारको यह सम्पत्ति प्रदान की। यहांके सरदार उदयपुर घरानेके सिसोदिया राजपूत हैं और 'राजा' इनकी उपाधि है। उमरीके हिम्मतसिंहके लडके जगत् सिंहने १७२० ई०में राजसिंहासन पर अधिकार जमाया। उनकी मृत्युके बाद रणजितसिंह गद्दी पर बैठे। ये ही वर्त्तमान सरदार हैं। राजस्व ५०००) रु०के करीब है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४ ४८´ उ० तथा देशा० ७७ २४´ पू०के मध्य विस्तृत है। जन-संख्या सात सौके करीब है।

भदौरिया—राजपूत-जातिकी एक शाखा। चमुला (चम्बल)

नदीके-दक्षिणतीरमें आगरानगरके दक्षिण पूर्वस्थ भदावर जिलेमें रहनेके कारण ये 'भदौरिया' कहलाये। जो भदौरिया पूर्वमें रहते हैं, वे अपनेको भिड-वंशीय कहते हैं। परन्तु अन्यान्य भदौरियाओंके अपनेको चौहान वंशी ही बताने पर भी चौहान लोग उनके ज्ञातित्व स्वीकार नहीं करते। कुछ भी हो, वर्त्तमानमें उन्होंने परस्परमें विवाह सम्बन्ध द्वारा कुटुम्बिता स्थापन कर ली है।

इनमें ६ श्रेणियां पाई जाती हैं, जैसे—अठभइया, कुलहिया, मैनू, तसेली, चन्द्रसेनिया और रावत।

इस जातिकी सामाजिक उन्नति और प्रतिष्ठाके सम्बन्धमें अनेक तरहकी किम्बदन्तियां सुननेमें आती हैं। गोपालसिंह नामक सरदार मुसलमान बादशाह महम्मद शाहके बड़े प्रिय थे, इसलिए उन्हें कई जागीरें मिली थीं। तभीसे यह सरदारवंश पार्श्ववर्त्ती राजन्यवर्गका विशेष सम्मानार्ह हो गया है।

चन्द्रसेनिया, कुलहिया अठभइया और रावतगण चौहान, कछवाह, राठौर, चन्देल, शिग्नेल, पानवार, गौतम, रघुवंशी, गहरवाड, तोमर और गहलोत वंशीय राजपूतोंकी कन्या ग्रहण करते हैं, तथा चौहान, कछवाह और राठौर श्रेणीके उच्च राजपूतवंशमें अपनी कन्या देते हैं। तसेली राजपूत निम्नश्रेणीके राजपूतवंशमें विवाह करते हैं। 'आईन-इ अकबरी'के पढ़नेसे मालूम होता है, कि उक्त जिलेकी हरकारा नगरमें इनकी राजधानी थी। ये दिल्लीके निकट रह कर दस्युवृत्ति द्वारा मुगलशक्तिकी भी उपेक्षा करते हुए स्वाधीनभावसे अपने राज्यमें विचरण किया करते थे। सम्राट् अकबरशाहने इनके अत्याचारोंसे उकता कर भदौरिया सरदारको हाथीके पैरों तले दबा कर मरवा दिया था। फिर इन्होंने दिल्लीकी वश्यता स्वीकार कर ली।

परवर्त्ती भदौरिया सरदार राजा मुकुतमनने मुगल-सम्राट्के अधीन कार्य किया था और वे १ हजारी मनसबदार पदके अधिकारी हुए थे। वे हिजरी सन् ६६२में युद्धार्थ गुजरात भेजे गये थे। बादशाह जहांगीरके समयमें राजा विक्रमजित्ने मुगल-सेनाके सहकारी रूपमें युद्ध किया था। उनकी मृत्युके बाद उनके पुत्र भोज राजा हुए थे। सम्राट् शाहजहांके राजत्वकालमें भदौरिया सरदार राजा किसनसिंहको मुगलोंके पक्षसे भाफरसिंह, खान् जहान् लोदी, निजाम-उल-मुल्क और साहू भोंसले आदिके विरुद्ध युद्ध करना पड़ा था। दौलताबादके अवरोधके समय उनकी वीरता चारों ओर व्याप्त हो गई थी। हिजरी सन् १०५३में उनकी मृत्यु होनेसे उनके चचेरे भाई बदन (बुध) सिंहको राज्य मिला। सम्राट् शाहजहां (२१वें वर्षमें) एक दिन राज-दरबारमें बैठे हुए थे, कि इतनेमें वहां एक मत्त हस्ती चला आया और उसने दरबारके एक व्यक्तिको दांतोंसे घायल कर दिया। यह देख बदनसिंहने शस्त्रसे उस हाथीको मार डाला। सम्राट्ने उनके वीरत्वसे सन्तुष्ट हो कर उन्हें एक खिलअत दी और भदावर-राज्यका ५० हजार रु०का कर मौकूफ कर दिया। उसके बाद इन्हें डेढ़ हजारी सेनानायकका पद मिला था। शाहजहांके २५वें वर्षमें ये औरङ्गजेब और दाराशिकोहकी तरफसे कान्दाहार-युद्धमें गये थे। इसके दूसरे ही वर्ष इनकी मृत्यु हो गई। उनके पुत्र मानसिंह १ हजार पदाति और ८ सौ अश्वारोही सेनाके नायक हुए। औरङ्गजेबके राज्यमें बुन्देला-विद्रोह और युसुफजैको दमन कर ये बादशाहके बड़े प्रियपात्र बन गये थे। इनके पुत्र ओदत (रुद्र) सिंह चित्तोरके सेनापति हुए थे।

'तवारीख इ हिन्द' नामक मुसलमान इतिहासमें लिखा है कि, सम्राट् महम्मदशाहके समयमें महाराष्ट्र सेनाके भदावरमें घुस पड़ने पर सरदार अमरू (अमरत) सिंहने स-सैन्य अग्रसर हो कर उससे युद्ध किया था। युद्धमें जयी होने पर भी महाराष्ट्रोंने लूट कर उनके राज्यको तहस नहस कर दिया था।

भदौरिया (हिं० नि०) भदावर प्रान्तका, भदावर सम्बन्धी।

भदगाँव—बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २० ४०´ उ० तथा देशा० ७५ १४´ पू० गिरना नदीके बाएं किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ७६५६ है। १८६९ ई०में यहां म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है। रुई, नील और तीसीका वाणिज्य जोरों चलता है। १८७२ ई० को इस नगरका अर्द्धांश बह गया था। अधिवासियोंकी महती क्षति हुई थी। शहरमें सब जजकी अदालत, अस्पताल और चार स्कूल हैं।

भद्दा (हिं० पु०) १ जिसकी बनावटमें अंग प्रत्यंगकी सापेक्षिक छोटाई बड़ाईका ध्यान न रखा गया हो। २ जो देखनेमें मनोहर न हो, बेढंगा।

भद्दापन (हिं० पु०) भद्दे होनेका भाव।

भद्र (सं० क्ली०) भन्दते इति भदि कल्याणे (ऋज्रेन्द्राग्र वज्र विप्र कुत्र चुम्र खुर भद्रोग्रेति। उणा २।२८) इति रन् निपात्यने च। १ मङ्गल, क्षेमकुशल। २ ज्योतिषोक्त वव आदि करके सप्तम करण। ३ महादेव। ४ खञ्जरीट, खञ्जन पक्षी। ५ वृषभ, बैल। ६ कदम्बक, कदम्ब। ७ करिजात विशेष, हाथियोंकी एक जाति जो पहले विन्ध्याचलमें होती थी। ८ नवशुक्रा-वलान्तर्गत जिनभेद। ९ चामचर। १० सुमेरु। ११ स्नुही। १२ चन्दन। १३ साध्य मौक्तिकों का पद्धतिविशेष। (पु०) १४ वसुदेवके एक पुत्रका नाम। (भाग ९।२४।४६) १५ सरोवरविशेष। १६ तृतीय उत्तममनुके अन्तरमें देवगणभेद। १७ पुराणानुसार स्वाय म्भुव मन्वन्तरके विष्णुसे उत्पन्न एक प्रकारके देवता जो तुषित भी कहलाते हैं। १८ पर्वतभेद। १९ कूर्मविभाग स्थ मध्यदेशवासी मनुष्य। २० सुवर्ण, सोना। २१ मुस्तक, मोथा। २२ दिक्हस्तिविशेष, उत्तरदिशाके दिग्गजका नाम। २३ रामचन्द्रकी सभाका वह सभासद जिसके मुंहसे सीताजी निन्दा सुन कर उन्होंने सीताको वनवास दिया था। २४ विष्णुका वह द्वारपाल जो उनके दरवाजे पर दाहिनी ओर रहता है। २५ एक चोलराजका नाम। २६ बलदेवजीके एक सहोदर भाई। २७ एक प्राचीन देशका नाम। २८ विष्णुके एक पारिषदका नाम। २९ रामजीके सालाका नाम। ३० स्वरसाधनकी एक प्रणाली जो इस प्रकार है—सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध, नि सा नि, सा रे सा। सा नि सा, नि ध नि, ध प ध, प म प, म ग म, ग रे ग, रे सा रे, सा नि सा। ३१ व्रजके ८४ वनोंमेंसे एक वन। (त्रि०) ३२ सभ्य, सुशिक्षित। ३३ कल्याणकारी। ३४ श्रेष्ठ। ३५ साधु।

भद्र (हिं० पु०) सिर, दाढ़ी, मूछों आदि सबके सब बालोंका मुंडन।

भद्रक—१ बङ्गालके बालेश्वर जिलान्तर्गत एक उप विभाग। यह अक्षा० २० ४४´ से २१ १५´ उ० तथा देशा० ८६ १८´४०´´ से ८७ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ९०६ वर्गमील है। भद्रक, वासुदेवपुर, धर्मनगर और चाँदवाली यहांके प्रधान वाणिज्यस्थान हैं।

२ उक्त विभागका सदर और प्रधान नगर। यह अक्षा० २१ ३´१०´´ उ० तथा देशा० ८६ ३३´२५´´ पू०के मध्य विस्तृत है। कलकत्तासे कटक जानेके रास्ते पर स्थापित होनेके कारण यह एक वाणिज्यकेन्द्रमें गिना जाता है।

भद्रक—सह्याद्रिवर्णित एक हिन्दूराजा। ये लोग अस्थादेवो-के भक्त और वृद्धविष्णु मुनिके कुलजात थे।
(सह्याद्रिख० ३३।७८)

भद्रक—दाक्षिणात्यके सुङ्गवंशीय एक राजा।

भद्रक (सं० क्ली०) भद्र सज्ञायां स्वार्थे वा कन्। १ भद्रमुस्तक, नागरमोथा। २ देवदारु। ३ वृत्तरत्नाकरोक्त छन्दोभेद। इसके प्रति चरणमें २२ अक्षर रहते हैं। इस छन्दके १, ४, ६, १२, १६, १८, २२ अक्षर गुरु, शेष लघु होते हैं। ४ एक प्राचीन देशका नाम। ५ चना, मूंग इत्यादि अन्न।

भद्रकण्ट (सं० पु०) भद्रः कण्टो यस्य। गोक्षुर, गोखरू।

भद्रकन्या (सं० स्त्री०) मौद्गल्यायनकी माता।

भद्रकपिल (सं० पु०) शिव, महादेव।

भद्रकर्ण (सं० पु०) भद्रस्य वृषस्य कर्णौ यत्र। गोकर्ण रूपतीर्थभेद।

भद्रकर्णिका (सं० स्त्री०) गोकर्णकी दाक्षायणीका एक नाम।

भद्रकर्णेश्वर (सं० पु०) भद्रकर्णस्य ईश्वर। १ गोकर्ण-तीर्थस्थित शिवलिङ्गभेद। स्त्रियां ङीप्। २ तीर्थभेद।

भद्रकल्पिक (सं० पु०) एक बोधिसत्त्वका नाम।

भद्रका (सं० स्त्री०) इन्द्रयव।

भद्रकाम—मणिकूट पर्वतके पूर्वदिक्स्थ तीर्थभेद।

भद्रकाय (सं० पु०) १ नाग्नजितीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। (त्रि०) २ मङ्गलदेहक। ३ सुन्दर आकृतियुक्त।

भद्रकार (सं० त्रि०) भद्र करोति कृ अन उपपद स०। १ मङ्गलकारक। (पु०) २ एक प्राचीन देशका नाम जिसका उल्लेख महाभारतमें आया है।

भद्रकारक (सं० त्रि०) भद्रस्यकारक। मङ्गलकारक, कल्याण करनेवाला।

भद्रपाणि—एक प्राचीन राजा। कश्यपमुनिके गोत्रसम्भूत और महालक्ष्मीपाद पदसेवक ऋतुपर्णराजवशजातस रुचिरके एक पुत्रका नाम।

भद्रपाद (स० त्रि०) भद्रपदासु जात अण्, उत्तरपदवृद्धि। भद्रपदानक्षत्रजात, पूर्वभाद्रपद और उत्तर भाद्रपाद नक्षत्र जात।

भद्रपाल (स० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

भद्रपीठ (स० पु० क्ली०) भद्रार्थं पीठ। १ वह सिंहासन जिस पर राजाओं या देवताओंका अभिषेक होता है। २ आसन जिस पर बैठा जाय।

भद्रपीठ—एक हिन्दू राजा।

भद्रपुर (स० क्ली०) प्राचीन नगरभेद। अरिष्टनेमिके पुत्र मत्स्यने इस नगरको जीता था।

(जैन हरिवं॰ १७।३०)

भद्रवत्रा (स० स्त्री०) इन्द्रजौ।

भद्रवन (स० पु०) मथुराके पासका एक वन।

भद्रबन्धु—एक बौद्धभिक्षु। इन्होंने बजएटा गुहामन्दिरस्थ सौगत गृहका निर्माणकार्य शेष किया था।

भद्रवलन (स० पु०) भद्र महत् बलन बलमस्य। बलराम।

भद्रवला (स० स्त्री०) भद्रा बला। १ लताविशेष। पर्याय—सरणा, प्रसारणी, कटम्भरा, राजबला। २ गन्धिका, माधवीलता।

भद्रवल्लभ (स० पु०) बलराम।

भद्रबाहु (स० पु०) १ रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके एक पुत्रका नाम। २ मगधराजभेद।

भद्रबाहुस्वामिन् (स० पु०) एक ग्रन्थकार। चारित्रसिंहगणिरत्न षड्दर्शनवृत्तिमें इनका नामोल्लेख है।

भद्रबाहुस्वामी—एक प्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार, छठे श्रुतकेवली। श्वेताम्बरके मतानुसार इन्होंने आवश्यकसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, सूत्रकृताङ्गसूत्र, दशाश्रुतस्कन्धसूत्र, कल्पसूत्र, व्यवहारसूत्र, सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र, आचाराङ्गसूत्र, और ऋषिभाषितसूत्र नामक १० निर्युक्ति ग्रन्थ रचे थे। श्वेताम्बर जैनग्रन्थोंमें इन्हें श्रुतपारग और योगप्रधान कहा गया है। मुनिरत्नसूरिने उनकी इन दश निर्युक्तियोंकी तुलना ऋग्वेदके दशमण्डलसे की है। इसके सिवा इनके रचे हुए ज्ञातकाम्भोनिधि, भद्रबाहुसंहिता और नर्मदासुन्दरीकथा नामक कई ग्रन्थोंमें जैनधर्मका माहात्म्य बतलाया गया है। खरतर और तपोगच्छकी पट्टावलिमें इनका जीवन काल दिया गया है। ये प्राचीनगोत्रसम्भूत थे। ४५ वर्ष गृहवासमें रह कर इन्होंने उपसर्गहरस्तोत्र, कल्पसूत्र, शत्रुञ्जयकल्प और १० निर्युक्ति ग्रन्थ प्रणयन किये और १७ वर्ष ब्रह्मचारी रहे। उसके बाद १४ वर्ष तक योगप्रधान रूपमें अवस्थित कर वीर नि० स० १७० में ७६ वर्षकी अवस्थामें इनका शरीरान्त हुआ। जैनधर्म देखो।

धर्मघोषकगणि कृत ऋषिमण्डलप्रकरण नामक श्वे० जैन ग्रन्थमें लिखा है कि, दाक्षिणात्यके प्रतिष्ठान नगरमें * भद्रबाहु और वराह नामके दो भ्राता राज्य करते थे। यशोभद्र नामक एक जैनाचार्यका धर्मोपदेश सुन कर दोनों भाइयोंने जिन दीक्षा ले ली। भद्रबाहुके पाण्डित्य पर प्रसन्न हो कर गुरु यशोभद्रने उन्हें सूरि प्रदान किया। इसी समय भद्रबाहुने पूर्व कथित दस निर्युक्ति और भद्रबाहवीसंहिताकी रचना की। उसके बाद यशोभद्रके स्वर्गपुरी गमन करने पर, उनके प्रधान शिष्य आर्यसम्भूति और भद्रबाहुने आचार्यपद ग्रहण कर भारतके नाना स्थानोंमें धर्मप्रचारार्थ भ्रमण किया।

राजावली कथा नामक कर्नाटी इतिहासमें भद्रबाहुका इस प्रकार जीवनवृत्तान्त लिखा है—भारतखण्डके पुण्ड्रवर्द्धन राज्यके अन्तर्गत कोटिकपुर नगरमें पद्मरथ नामक एक राजा राजत्व करते थे। उनके राज्यकालमें राजपुरोहित सोमशर्माकी पत्नी सोमश्रीने एक सर्वसुलक्षण सम्पन्न पुत्र प्रसव किया। पिताने शुभलक्षणोंके सन्दर्शनसे प्रीत हो कर अपने पुत्र कोष्ठीफलका निर्णय कर देखा कि, समयान्तरमें यह बालक जैनधर्म परिरक्षक होगा। तदनुसार उन्होंने जैन प्रथासे बालकका चौल

* किन्हींका मत है कि ये आनन्दपुर (बड़नगर) निवासी और वल्लभीराज ध्रुवसेनके समसामयिक थे। Ind Ant vol II p 139, और किसी किसीका यह कहना है कि वे सम्राट् चन्द्रगुप्त वा अशोकके समकालीन थे।

और उपनयन-संस्कार कराया। एक दिन बालक भद्रबाहु अपने साथियोंके साथ क्रीडा कर रहे थे, कि उसी समय महामुनि गोवर्द्धनस्वामी, नन्दिमित्र और अपराजित नामक चार श्रुतिकेवली ५ सौ शिष्योंके साथ जम्बूस्वामीके समाधि सन्दर्शनको कोटिक्पुर आये। महामुनि गोवर्द्धनने बालक भद्रबाहुके शुभचिह्नोंको देख कर अनुमान किया कि यही बालक अन्तिम श्रुतिकेवली होगा। अतएव इसके लिए शिक्षाविधानकी आवश्यकता है। ऐसा विचार कर वे बालकका हाथ पकड कर उसे सोमशर्माके पास ले गये और बालकको शिक्षाका भार अपने ऊपर लेनेका अभिप्राय प्रकट किया। पिताको पहलेसे ही मालूम था कि पुत्र जैनधर्मका प्रचारक होगा। गोवर्द्धनस्वामीके शुभागमनसे उनके हृदयमें पूर्वस्मृति जाग उठी। उन्होंने गद्गद् कण्ठसे प्रणतिपूर्वक आचार्यवरकी आज्ञा स्वीकार की। परन्तु माता सोमश्रीने दीक्षाके पहले एक बार पुत्रदर्शनको प्रार्थना की थी। दोनोंके वाक्य और सम्मतिसे सन्तुष्ट हो कर गोवर्द्धनस्वामी भद्रबाहुको ले कर अक्षश्रावकके घर पहुंचे और वहां उनके अवस्थान, भोजन और अध्ययनकी व्यवस्था कर दी।

स्वामीजीके तत्त्वावधानमें रह कर भद्रबाहुने शीघ्र ही योगिनी, मन्त्रिनी, प्रज्ञा और प्रज्ञप्ति नामक वेदोंके चारों अनुयोग, व्याकरण और चतुर्दश विज्ञानका अभ्यास कर लिया। ज्ञान मार्गमें जितना ही ये अग्रसर होने लगे, उतना ही उन्हें सांसारिक विषयोंसे विरक्ति बढ़ने लगी। दीक्षाग्रहणके बाद वे यथाक्रमसे ज्ञान, ध्यान, तप और संयमादिमें अभ्यस्त हो कर आचार्योंमें परिगणित हो गये। इनके आचार्यपद प्राप्त करनेके बाद गोवर्द्धन श्रुतिकेवलीका तिरोधान हुआ।

एक दिन पाटलिपुत्रके राजा चन्द्रगुप्तने कार्त्तिककी पूर्णिमा रात्रिको निद्राके आवेशमें १६ स्वप्न देखे *। निद्राभङ्ग होने पर उनका हृदय बहुत ही उद्वेलित हो उठा। किसी प्रकार भी उनका चित्त स्थिर नहीं हुआ। प्रातःकृत्यादि-सम्पन्न करके वे मन्त्रणागृहमें चुपचाप जा बैठे। इतनेमें प्रतिहारीने आ कर संवाद दिया कि, भद्रबाहुमुनि नाना दिग्देशोंमें परिभ्रमण करते हुए राजोद्यानमें आ पहुंचे हैं। राजा अमात्यवर्गसे परिवृत हो कर मुनिके समीप उपस्थित हुए। राजाकी अभिवन्दनासे सन्तुष्ट हो कर मुनिश्रेष्ठने उन्हें धर्मोपदेश दिया। तदनन्तर राजाने अपने १६ स्वप्नोंका हाल सुनाया, जिनका फल मुनिने इस प्रकार कहा,—१ सम्यग्ज्ञान तमसाच्छन्न होगा, २ जैनधर्मकी अवनति होगी और तुम्हारे वंशधरगण सिंहासन पर बैठे हुए ही दीक्षा ग्रहण करेंगे, ३ देवतागण अब भारतवर्षमें नहीं आवेंगे, ४ जैनगण विभिन्न सम्प्रदायोंमें विभक्त हो जायगे, ५ वर्षाके मेघ जलवर्षण न करेंगे और उसी अनावृष्टिके कारण शस्यादिकी उत्पत्ति नहीं होगी, ६ सत्यज्ञान लोपको प्राप्त होगा और कई एक क्षाणज्योति इतस्ततः विकीर्ण होंगी, ७ आर्यखण्डमें जैनधर्मका प्रसार बहुलतासे न होगा, ८ असतको प्रतिष्ठा और सतका लोप होगा, ९ लक्ष्मी निम्नगामिनी होगी, १० राजा राजस्वके षष्ठांशसे तृप्त न हो कर अर्थलोलुप होंगे और अधिक लाभको आशासे प्रजाकी पीडावृद्धि करेंगे, ११ मनुष्य यौवनावस्थामें धर्मप्राण हो कर वार्द्धक्यमें सब कुछ विसर्जन कर देंगे, १२ उच्चवंशीय राजा नीचोंके सहवाससे कलुषित होंगे, १३ नीच उच्चको नष्टभ्रष्ट कर समता प्रतिपादनका प्रयास करेंगे, १४ राजागण अयथा कर ग्रहण कर प्रजाको दुर्दशाग्रस्त करेंगे, १५ निम्नश्रेणीके मनुष्य अन्त सार

* १ सूर्य अस्त हो रहे हैं, २ कल्पवृक्षकी शाखा टूट कर गिर पड़ी है, ३ स्वर्गीय रथ शून्यमें अवतीर्ण हुआ है और ऊपरको जा रहा है, ४ चन्द्रमण्डल मानो इतस्ततः भिन्न हो गया है, ५ दो काले हाथी लड़ रहे हैं, ६ उपाशोकमें खद्योत दीप्ति दे रहे हैं, ७ एक तालाब सूखा पड़ा है, ८ आकाश धूमाच्छन्न हो गया है, ९ वानर सिंहासन पर बैठा हुआ है, १० स्वर्णपात्रमें कुक्कुर खीर खा रहे हैं, ११ बैल लड़ रहे हैं, १२ क्षत्रिय गधे पर भ्रमण कर रहे हैं, १३ वानर मरालोंको भगा रहे हैं, १४ गायके बछड़े समुद्रमें कूद रहे हैं, १५ पर्णपान वृद्ध बैलोंको मार रहे हैं और १६ एक सर्प बाहर फनोंको फैला कर अग्रसर हो रहा है। चन्द्रगुप्त देखो।

दिगम्बर मतानुसार १४ स्वप्न देखे थे।

शून्य वाक्यालापसे ज्ञानियोंकी उपेक्षा करेंगे और १६ द्वादश वार्षिकी अनावृष्टिके कारण वसुन्धरा शस्य शून्य हो जायगी।

इसके कुछ दिन बाद उन्होंने शिष्योंको विदा कर दिया और एकाकी भ्रमण करते हुए एक बालकका आर्त्त नाद सुना। पुकारने पर कोई उत्तर नहीं मिला, इससे समझ लिया कि अब द्वादशवार्षिकी अनावृष्टिका सूत्रपात हो गया *। राजाचन्द्रगुप्तने इस दैवप्रकोपकी शान्तिके लिए विविध अनुष्ठान किये। किन्तु किसी प्रकार भी शान्ति न हुई, यह देख वे दीक्षा ग्रहण कर वानप्रस्थाचारी हो कर भद्रबाहुस्वामीके सहचर हो गये।

भद्रबाहुने ज्ञानदृष्टिसे देखा कि, उक्त महामारीके समयमें विन्ध्यापर्वतसे ले कर नीलगिरि पर्यन्त समग्र भारतमें किसी प्रकार शस्यादि न होंगे। अनाहारसे लोग प्राण त्याग करेंगे और धर्म भी कलुषित होगा। तब वे अपने १२ हजार शिष्यों और अन्यान्य लोगोंके साथ दक्षिणापथको चल दिये। मार्गमें अपना मृत्यु समय उपस्थित जान उन्होंने एक पर्वत शिखर पर चढ़ कर अन्तिम ध्यानमें निमग्न होनेकी इच्छा प्रकट की। उस स्थानमें भी दुर्भिक्षका पूर्ण प्रकोप देख कर उन्होंने प्रियशिष्य विशाख मुनिको संघ सहित चोलमण्डलमें चले जानेके लिये आदेश दिया। उनकी अनुमतिके अनुसार एकमात्र चन्द्रगुप्त ही उनके साथ रहे। उन्होंने गुरुकी मृत्युके बाद उनकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न कर, उनके पादपद्मकी पूजामें निरत रहे*।

भद्रसोमा (सं० स्त्री०) पुराणानुसार कश्यपकी एक कन्याका नाम जो दक्षकी कन्या क्रोधाके गर्भसे उत्पन्न हुई थी।

---

* राजावली-वर्णित चन्द्रगुप्तका स्वप्न सत्य न होने पर भी द्वादशवार्षिकी अनावृष्टिकी बात शिलालेखोंसे प्रमाणित हो जाती है। दाक्षिणात्यके श्रवणबेलगोलाके निकटवर्त्ती इन्द्रगिरि शिखरस्थ प्राचीन कनाडी अक्षरोंमें संस्कृत भाषामें लिखित शिलालेखके पढ़नेसे मालूम होता है कि, गौतमगणधरके शिष्य भद्रबाहुस्वामीको उज्जयिनीमें ही ज्ञानयोगसे इस द्वादशवर्षव्यापी अकालका परिज्ञान हो गया था। जनसाधारणको इस भारी विपत्तिका हाल सुना कर वे अनेक मनुष्योंके साथ दाक्षिणात्यको चल दिये। नाना ग्राम और जनपदोंको अतिक्रम करते हुए वे कोटब पर्वत पर पहुंचे और अपनी मृत्यु निकटवर्ती जान वहीं रह गये। यहां पर अन्तिम समाधिमें निमग्न होनेसे पहले उन्होंने सबको विदा कर सिर्फ एक शिष्यको अपने पास रखा। उसके बाद संन्यास मताचरण पूर्वक उन्होंने सतशत ऋषियोंके अभीष्ट पदको प्राप्त किया था।
*Ind Ant* vol III, p. 153

इस सुप्राचीन शिलालिपिमें लिखी हुई भद्रबाहुकी दक्षिणयात्राका समर्थन राजावलीमें भी किया गया है। विशाखका चोलमण्डलमें गमन और चन्द्रगुप्तके गुरुके साथ अवस्थानका आभास भी नितान्त अप्रासङ्गिक नहीं जान पड़ता।

* पाटलिपुत्रके राजा ये चन्द्रगुप्त मौर्यवंश थे। राजावलीकथा नामक कनाडी ग्रन्थसे इस ऐतिहासिक सत्यका अंकुर उत्पन्न होता है। यदि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्तका आख्यान रूपक न हो, और श्रवणबेलगोलाके निर्जन पर्वतशिखरस्थ शिलालेखके मौलिकत्वमें सन्देह हो, तो इस विचित्र आख्यान पर विचार करनेकी आवश्यकता ही न था। जब चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्रके सिंहासन पर उपविष्ट थे, उस समय जैनधर्म लुप्त होनेका अवसर आ पहुंचा था इस बातको सभी स्वीकार करते हैं। सम्भवतः उसी समय जैनोंके शेषतम ६ष्ठ श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामीका आविर्भाव हुआ था। कारण, उसके बाद फिर कोई उस पद पर अधिष्ठित नहीं हुए। इधर देखते हैं कि चन्द्रगुप्तके बाद बौद्धधर्मका पुनर्विस्तार हुआ था। भद्रबाहुस्वामीके गुणकीर्त्तनकारी जैनग्रन्थकारगण अवश्य ही ऐसे प्रबलप्रताप नरपतिके जैनपादाश्रय ग्रहणसे गौरवान्वित हुए होंगे, इसमें सन्देह नहीं। यही कारण है, कि उन्होंने तत्सामयिक राजा चन्द्रगुप्तको भद्रबाहुके अनुचर शिष्यरूपमें ग्रहण किया है। राजा चन्द्रगुप्त ३७२ ई०में विद्यमान थे। प्रियदर्शी और चन्द्रगुप्त देखो।

इधर भद्रबाहु वीर नि० सं० १७०में ७६ वर्षकी अवस्थामें मोक्ष गये हैं। ऐतिहासिक आलोचनासे खृष्टपूर्व सन् ५२७ को वीर निर्वाण काल स्थिर हुआ है। अब ५२७—१७०=३५७ खृष्ट पूर्वमें, मतान्तरसे श्रुतकेवलीगण वीरनिर्वाणके बाद १६२ वर्ष तक थे, तो शेष श्रुतकेवली भद्रबाहु अवश्य ही ३६५ खृष्टपूर्वाब्द तक विद्यमान थे। इससे प्रमाणित होता है कि दोनों एक समयमें ही भारतभूमिमें विद्यमान थे।

भद्रभुज ( स० पु० ) १ कल्याणविधायक भुज। ( त्रि० ) २ मङ्गलजनक भुजशाली। ३ प्रशस्त बाहुयुक्त।

भद्रभूषण ( स० स्त्री० ) देवीमूर्त्तिभेद।

भद्रमनस् (स० स्त्री०) १ ऐरावत हाथीकी माता। (त्रि०) २ मनस्वी, प्रशस्तचेता।

भद्रमन्द ( स० पु० ) हाथियोंकी एक जाति।

भद्रमन्द्रमृग ( स० पु० ) हाथियोंकी एक जाति।

भद्रमल्लिका ( स० स्त्री० ) भद्रमल्लिका। १ गवाक्षी। २ मल्लिकाभेद, नवमल्लिका।

भद्रमातृ ( स० स्त्री० ) स्नेहमयी माता।

भद्रमुख ( स० त्रि० ) भद्रं मुखं तद्व्यापारोऽस्य। १ सुनक्ता। २ सुन्दरमुखविशिष्ट। ( पु० ) ३ नागभेद।

भद्रमुञ्ज ( स० पु० ) भद्रो मुञ्ज इति कर्मधा०। मुञ्जशर, सरपत। पर्याय—शर, बाण तेजन, इक्षुवेष्टन। गुण—मधुर और शिशिर, दाह और तृष्णानाशक, विसर्प, अस्र, मूत्र, वस्ति और चक्षुरोगमें हितकर, त्रिदोषनाशक तथा वृष्य।

भद्रमुस्तक ( स० पु० ) भद्रो मुस्तक। नागरमुस्तक।

भद्रमुस्ता ( स० स्त्री० ) भद्रा मुस्ता, नागरमुस्तक, नागर मोथा। पर्याय—वराही, गुन्द्रा, ग्रन्थि, भद्रकाशी, कशेरु, कोडेष्टा, कुरुविन्दाख्या, सुगन्धि, ग्रन्थिला, हिमा, वन्या, राजकशेरु, कच्छोत्था, मुस्ता, अणाद, वारिद, अम्भोद मेघ, जीमूत, अब्द, नीरद, अभ्र, घन, गाङ्गेय। गुण—कषाय, तिक्त, शीतल, पाचन, पित्तज्वर और कफनाशक। (राजनि०) भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—कटु, हिम, तिक्त, दीपन, पाचन, कषाय और कफ, पित्त, असृक, ज्वर, अरुचि तथा वमिनाशक। अनुपदेशजात भद्रमुस्ता ही सर्वोत्कृष्ट है। ( भावप्र० )

भद्रमृग ( स० पु० ) हाथियोंकी एक जाति।

भद्रयव ( स० पु० क्ली० ) भद्रं शुभदो यव। इन्द्रयव, इन्द्रजौ।

भद्रयान ( स० क्ली० ) उत्तम यान, बढ़िया सवारी। ( पु० ) २ शाखाप्रवर्त्तक एक बौद्ध आचार्य।

भद्रयोग ( स० पु० ) १ शुभ समय, माहेन्द्रयोग वा क्षण। २ पुराण सर्वस्वका एक अङ्ग।

भद्ररथ ( स० पु० ) यदुवंशीय हर्यङ्ग राजाके एक पुत्र का नाम।

भद्रराम—एक ग्रन्थकार। इन्होंने राजा अनूपसिंहकी अनुमतिसे अयुत होमलक्षहोमकोटिहोम नामक एक ग्रन्थ लिखा था। जनसाधारणके निकट ये होमगोप नामसे प्रसिद्ध थे।

भद्ररुचि ( स० त्रि० ) १ सत्प्रवृत्तिशाली। २ पश्चिम भारतवासी एक बौद्धभिक्षु। ये हेतुविद्या तथा महायान सम्प्रदायके अपरापर शास्त्रोंमें विशेष पारदर्शी थे। मालवराज शिलादित्यकी सभामें इन्होंने विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

भद्ररूपा ( स० स्त्री० ), रमणीयाकृति रमणी। २ सुरूपा।

भद्ररेणु ( स० पु० ) भद्रा रेणवोऽस्य। ऐरावत हस्ती।

भद्ररोहिणी ( स० स्त्री० ) भद्रार्थं रोहति रुह णिनि-ङीप्। कटुरोहिणी।

भद्रवट ( स० पु० ) १ आश्रमभेद। २ तीर्थभेद।

भद्रवत् ( स० त्रि० ) भद्रमस्त्यस्मिन्निति मतुप्, मस्य व। १ कल्याणविशिष्ट, मङ्गलयुक्त। ( क्ली० ) २ देवदारु।

भद्रवती ( स० स्त्री० ) भद्रवत् स्त्रियां ङीप्। १ भद्रपर्णी। २ कल्याणविशिष्ट। ३ नाग्नजितीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णकी एक कन्याका नाम। ४ मधुकी माता। ५ चण्डमहासेनकी पालिता हथनी। इसका वेग असीम था। वासवदत्ता इसी हथनीकी पीठ पर सवार हो उदयनके साथ भागे थे। हथनी जब विन्ध्याटवी तक पहुंची, तब वहांका गरम जल पी कर पञ्चत्वको प्राप्त हुई।

( कथासरित्सा० )

भद्रवन ( स० क्ली० ) वृन्दावनस्थित श्रीकृष्णका केलिकाननविशेष। यह बारह केलिकाननोंमेंसे एक है और नन्दघाटके अग्निकोणमें यमुनाके पूर्वकिनारे अवस्थित है। एक समय निदाघ समयमें सखियोंके साथ कौतुहल करनेके लिये श्रीकृष्णने यहां मल्लयुद्ध किया था।

भद्रवर्म ( स० पु० ) भद्रेण वृणोति आत्मानमिति वृ मनिन्। नवमल्लिका।

भद्रवल्लिका ( स० स्त्री० ) भद्रा वल्लिका। गोपवल्ली, अनन्तमूल।

भद्रवल्ली (सं० स्त्री०) भद्रा चासौ वल्ली चेति कर्मधा०। १ मल्लिका। २ माधवीलता। ३ लताविशेष। पर्याय—गातभीरु, भूमिमण्डा, अष्टपादिका।

भद्रवसन (सं० क्लो०) उत्कृष्ट परिच्छद, बढ़िया पहनावा।

भद्रवाच् (सं० त्रि०) १ साधुवक्ता। २ साधु कथा या प्रसङ्ग।

भद्रवाच्य (सं० क्लो०) बोलने योग्य शुभवाक्य।

भद्रवादिन् (सं० त्रि०) मृदुभाषी।

भद्रविन्द (सं० पु०) श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश ६१९७ श्लो०)

भद्रविराट (सं० पु०) एक अर्द्धसम वृत्तका नाम। इसके पहले और तीसरे चरणमें १० और दूसरे तथा चौथे चरणमें ११ अक्षर होते हैं।

भद्रविहार (सं० पु०) बौद्धसङ्घाराममेद।

भद्रशर्मन् (सं० पु०) भद्रं शर्म सुख यस्य। पुत्राद्यानन्द युक्त।

भद्रशाख (सं० पु०) भद्रा शाखा, सहाया यस्य। कार्त्तिकेय।

भद्रशील (सं० त्रि०) सच्चरित्र, साधुशील।

भद्रशोचि (सं० त्रि०) १ कल्याणदीप्ति। (पु०) २ अग्नि।

भद्रशौनक (सं० पु०) चिकित्साशास्त्रके प्रणेता। चौडवानन्दने इनका नामोल्लेख किया है।

भद्रश्रय (सं० क्ली०) भद्राय श्रीयते गृह्यते इति श्रि-कर्मणि अच्। चन्दन।

भद्रश्रवस् (सं० पु०) धर्मका पुत्रभेद।

भद्रश्री (सं० पु०) भद्रा श्रीर्यस्य। चन्दनवृक्ष।

भद्रश्रुत (सं० त्रि०) मधुर शब्द श्रोता। २ सम्यक् श्रवणकारी। (क्ली०) ३ मिष्टशब्द श्रवण। (हरिवंश २९ अ०)

भद्रश्रेण्य (सं० पु०) हरिवंशके अनुसार वाराणसीके एक प्राचीन राजा जो दिवोदाससे भी पहले हुए थे।

भद्रषष्ठी (सं० स्त्री०) दुर्गादेवी।

भद्रसरस् (सं० क्ली०) भद्रं सरः कर्मधा०। सुपार्श्व-पर्वतस्थित सरोवरभेद। २ उत्तम सरोवर।

भद्रसार (सं० पु०) राजाविन्दुसारका एक नाम।

भद्रसालवन (सं० क्ली०) भद्रसालस्य वन ६ तत्। भद्राश्ववर्षस्थित वनभेद (भारत भीष्मप० ७ अ०)

भद्रसेन (सं० पु०) १ देवकी गर्भ सम्भूत वसुदेवके एक पुत्रका नाम। असुरपति कंसने इसे मारा था (भाग० ९।२४।२५) २ ऋषभके एक पुत्रका नाम। ३ कुन्तिराजके एक पुत्रका नाम। ४ महिष्मतके एक पुत्रका नाम। ५ काश्मीरके एक राजा। ६ बौद्धोंके अनुसार 'मारपापीय' आदि कुमतिके दलपतिका नाम। ७ अजातशत्रुका गोत्रापत्य। ८ सह्याद्रि-वर्णित दो राजा।

भद्रसोमा (सं० स्त्री०) भद्रं सोमं इत्यास्या द्रव इति टाप्। १ गङ्गा। २ कुरुवर्षस्थ नदीविशेष।

भद्रहर्ष (सं० पु०) सह्याद्रिखण्ड वर्णित जाङ्गलिक-राजवंशीय एक राजा।

भद्रा (सं० स्त्री०) भद्र अज्ञादित्वात् टाप्। १ रास्ना। २ व्योमनदी, आकाशगङ्गा। ३ कृष्णानी। ४ द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियोंकी संज्ञा।

"प्रतिपदेकादशी षष्ठी नन्दा ज्ञेया मनीषिभिः।
द्वितीयाद्वादशी चैव भद्रा प्रोक्ता च सप्तमी॥"
(ज्योति सारस०)

बुधवारके दिन भद्रातिथी होनेसे सिद्धियोग होता है। सिद्धियोग सभी कामोंमें शुभ है। ५ प्रसारिणी। ६ कट्फल। ७ अनन्ता। ८ जीवन्ती। ९ अपराजिता। १० नीली। ११ अतिबला। १२ शमी। १३ वचा। १४ दन्ती। १५ हरिद्रा। १६ श्वेतदूर्वा। १७ काश्मरी, पुष्कर मूल। १८ चन्द्रशूर, चसुर। १९ मारिषविशेष। २० गाभि, गाय। २१ भद्राश्ववर्षस्थित नदीभेद। यह नदी गङ्गाकी एक शाखा है और उत्तर कुरुवर्षमें बहती है। २२ कारिका। २३ बुद्धशक्तिविशेष। पर्याय—तारा, महाश्री, ओङ्कार, स्वाहा श्री, मनोरमा, तारिणी, जया, अनन्ता, शिवा, लोकेश्वरात्मजा, खदूरवासिनी, वैश्या, नीलसरस्वती, शङ्खिनी, महातारा, वसुधारा, धनन्ददा, त्रिलोचना, लोचना। २४ छायाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यकी एक कन्या। २५ एक विद्याधरतनया। विदूषकने बड़े कष्टसे इसको पाया था। २६ केकयराजकी एक कन्या जो श्रीकृष्णजीको व्याही थी। इसके गर्भसे संग्रामजित्, बृहत्सेन, शूर, प्रहरण, अरिजित्, जय, सुभद्र, राम, आयु और सत्य

उत्पन्न हुए थे। (भाग०) २७ काक्षीवानकी एक कन्या जो व्युषिताश्वको व्याही थी। विवाहके कुछ समय बाद ही ये विधवा हुईं। व्युषिताश्वने अपने शवमें आविर्भूत हो कर अपुत्रवतीके गर्भमें पुत्र उत्पादन किया था। (भारत आदिपर्व १।१२१ अ०) २८ सुभद्राका एक नाम। २९ विष्टिभद्रा। कृष्णपक्षकी तृतीया, दशमीके शेषार्द्ध, सप्तमी और चतुर्दशीके पूर्वार्द्ध, शुक्लपक्षकी एकादशी और चतुर्थीके शेषार्द्ध तथा अष्टमी और पूर्णिमाके पूर्वार्द्धको विष्टिभद्रा कहते हैं। कर्कट, सिंह, कुम्भ और मीनराशिमें भद्रा होनेसे पृथ्वीमें, मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिकराशिमें होनेसे स्वर्गलोकमें तथा कन्या, धनु, तुला और मकरराशिमें होनेसे पाताललोकमें विष्टिभद्रा का अवस्थान होता है। स्वर्गमें विष्टिभद्राके रहनेके समय जो कोई कार्य किया जाता है, वह अवश्य सिद्ध होता है, पातालमें रहनेके समय धनागम और मर्त्यलोकमें रहनेके समय सभी कार्य विनष्ट होते हैं। भद्राके शेष तीन दण्डका नाम पुच्छ है। इस पुच्छमें समस्त कार्योंकी सिद्धि होती है। विष्टिभद्राके समय यात्रा अथवा और कोई शुभकार्य नहीं करना चाहिये।

विष्टिभद्रा देखो।

३० पिङ्गलमें उपजाति वृत्तिका दशवां भेद। ३१ कामरूप प्रदेशकी एक नदीका नाम। ३२ वाधा, अड चन।

भद्रा—१ महिसुरराज्यके अन्तर्गत एक नदी। तुङ्गानदीके साथ मिल कर यह तुङ्गभद्रा नामसे बहती है। पश्चिम घाट पर्वतमालाके गङ्गामूलाशिखरके पार्श्वदेशको धोता हुआ यह कदूर जिलेमें आई है और दक्षिणकी ओर घूम कर कुदालीके समीप तुङ्गामें मिलती है। इसके दोनों पार्श्ववर्त्तीस्थान वनमाला और पर्वतपरिशोभित है। बेङ्कीपुरके निकट इस नदीके ऊपर एक पुल बनाया गया है। पुराणादिमें भी इस भद्रा नदीका उत्पत्ति आख्यान देखनेमें आता है। वराहरूपी विष्णुके दक्षिण दन्त द्वारा भद्राकी उत्पत्ति हुई है। तुङ्गभद्रा देखो।

२ कामरूपके अन्तर्गत एक महानदी। यह भजद-नदके ऊर्द्ध्वमें अवस्थित है। इस नदीमें भाद्रमासकी शुक्ला चतुर्दशीको स्नान करनेसे स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है। (कालिकापु० ७८।३२) ३ नदीविशेष।

भद्रा—मध्यप्रदेशके बालाघाट जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य। भूपरिमाण १२८ वर्गमील है। १८वीं सदीके शेष भागमें लञ्जीके सूबादारने यह भूसम्पत्ति पठान वंशीय जैनउद्दीन खाँको जमींदारी शर्त्त पर प्रदान की। वह सरदारवंश आज भी इस सम्पत्तिका भोग कर रहा है। बेला ग्राममें सरदारका आवास भवन विद्यमान है।

भद्रारुच्छाना—एक बौद्ध भिक्षु धर्माचारिणी।

भद्राकरण (स० क्ली०) भद्र डाच्, कृ ल्युट्। मुण्डन, सिर मुँडाना।

भद्राकापिलानी—बौद्धधर्मावलम्बिनी एक भिक्षु रमणी। ये सभी मठस्थोंको धर्मोपदेश दिया करती थीं।

भद्राकुण्डलकेशा—बौद्धभिक्षुणीभेद।

भद्राङ्ग (स० पु०) भद्रमङ्गमस्य। बलराम।

भद्राचल—१ मन्द्राज प्रदेशके गोदावरी जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १७ २७´से १७ ५७´ उ० तथा देशा० ८० ५७´ से ८१ ४६ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ९११ वर्गमील और जनसंख्या ५० हजारके करीब है। इसमें भद्राचलम नामक एक शहर और ३२० ग्राम लगते हैं।

१८६० ई०में जब निजामने इस स्थानको अङ्गरेजोंके हाथ समर्पण किया, तब यह गोदावरी कलेक्टरीकी एजेन्सीमें मिला लिया गया। १८७४ ई०में रेकपल्ली और रम्पाप्रदेश इसके अन्तर्भुक्त हुए।

२ उक्त तालुकका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० १७ १४´ उ० तथा देशा० ८१ पू०के मध्य अवस्थित है। इस नगरकी तटभूमि हो कर खरस्रोता गोदावरी नदी बहती है। निकटस्थ एक पर्वतशिखर भद्रहर यक्षकुण्ड नामसे प्रसिद्ध है। यहां जो रामचन्द्रजीका मन्दिर है, वह दाक्षिणात्य वासियोंके निकट एक पवित्र तीर्थ समझा जाता है। प्रवाद है, कि कपिकुलको साथ ले कर भगवान् रामचन्द्र लङ्का जाते समय गोदावरी पार कर इस स्थान पर ठहरे थे। उन्होंके उस शुभागमनके स्मरणार्थ आज भी नगरवासिगण वर्षमें एक बार महामेला का आयोजन करते हैं। ऋषि प्रतिष्ठ नामक किसी साधुपुरुषने चार सदी पहले इस मन्दिरको पहिले पहल

प्रतिष्ठा की। बाद व बीचमें सत्कारादि द्वारा उसका आयतन भी बढ़ाया गया। देवताके आभरणोंमें कितने बहुमूल्य हीरकादि भी देखे जाते हैं। इस देव मूर्त्तिके खर्चवर्चके लिये निजाम सरकारसे प्रति वर्ष १३ हजार रुपये मिलते हैं। यहां जो मेला लगता है, वह वैशाखमासमें आरम्भ होता है। रामचन्द्रजीके मन्दिरको छोड़ कर यहां मरकताम्बिका नामक एक और शक्तिमूर्त्ति स्थापित है।

ये सब मन्दिर स्थानीय जमींदार और निजामसैन्यके अहल्हा युद्धमें नष्ट हो गये। निजामने जब देखा कि, वे यहांका सम्पूर्ण राजस्व वसूल करनेमें बिल्कुल असमर्थ हैं, तब उन्होंने १८६० ई०में इस सम्पत्तिको अङ्गरेजोंके हाथ सौंप दिया। प्राय २०० वर्ष पहले रामदास नामक एक निजाम-कर्मचारी राजस्व-संग्रह करनेके लिये यहां भेजे गये। जो कुछ रुपये उन्होंने वसूल किये उसे राजसरकारमें न भेज कर एक मन्दिर और गोपुर निर्माणमें लगा दिया। रामदासके ऐसे व्यवहार पर निजाम सरकार बड़ी बिगड़ी और उन्हें कैद कर लिया। पीछे तीरुम लक्ष्मी नरसिंह राव नामक एक दूसरा व्यक्ति राजस्व संग्रहमें नियुक्त हुए। उन्होंने भी निजामको थोड़ी सी रकम भेज कर बाकी मन्दिरके सत्कार कार्यमें खर्च कर डाला था। इस समय मन्द्राजवासी धनी वरदरामदासने मन्दिर बनानेमें उन्हें मदद पहुंचाई। वरदरामकी मृत्युके बाद उन्होंने भी अपनी प्राणरक्षाका कोई उपाय न देखा और निजामके भयसे गोदावरी नदीमें कूद प्राण त्यागा।

इस तीर्थके समीप ही पर्णशाल तीर्थ है। कहते हैं, कि राक्षसपति रावण इसी स्थानसे सीतादेवीको चुरा ले गया था। यहांके पण्डा तीर्थवासियोंको सीताके पदचिह्न, उनके बैठनेके कितने प्राचीन स्थान बतलाते हैं।

भद्रात्मज (स ० पु०) भद्र हितकर आत्मज इव रक्षाकरत्वात्। खड्ग।

भद्रानगर (स ० क्ली०) नगरभेद।

भद्रानन्द—शिवार्चामहोदधिके प्रणेता।

भद्रानन्द (स ० पु०) एक प्रकारकी स्वर साधना प्रणाली जो इस प्रकार है—आरोही—सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा।

भद्रायुध (स ० पु०) राक्षसभेद।

भद्रारक (स ० पु०) पुराणानुसार अठारह क्षुद्र द्वीपोंमेंसे एक द्वीपका नाम।

भद्रापत्रिका (स ० स्त्री०) भद्राय अलति पर्याप्नोतीति अल अच् भद्राल पत्र यस्याः कप्, टाप् अत इत्व। गंधाली।

भद्राली (स ० स्त्री०) भद्र अल् अच् भद्राल गौरादित्वात् ङीष्। १ गंधाली। २ भङ्गश्रेणी।

भद्रावकाशा (स ० स्त्री०) पुण्यसलिला नदीभेद।

भद्रावती (स ० स्त्री०) भद्रमस्या अस्तीति मतुप् मस्य व संज्ञायां पूर्वपदस्य दीर्घ। १ कटहलका पेड़। २ महाभारतके अनुसार एक प्राचीन नगरी। पाण्डवगण यहांसे युवनाश्वका अश्वमेधका घोड़ा चुरा ले गये थे।

भद्रेश्वर देखो।

भद्राव्रत (स ० क्ली०) विधिव्रत।

भद्राश्रय (स ० पु०) भद्रस्य आश्रयः। चन्दन।

भद्राश्व (स ० क्ली०) भद्रा अश्वा अत्र। जम्बूद्वीपके अन्तर्गत एक वर्ष या क्षेत्र। भागवतमें इस वर्षका विवरण इस प्रकार लिखा है,—इलावृत्तवर्षके पूर्व और पश्चिममें यथाक्रमसे माल्यवान् और गन्धमादन पर्वत, उत्तरमें नील पर्वत और दक्षिणमें निषधाचल पर्यन्त दो हजार योजन विस्तीर्ण केतुमाल और भद्राश्ववर्षकी सीमा निर्दिष्ट हुई है। सुमेरुके चारों ओर मन्दर मेरुमन्दर, सुपार्श्व और कुमुद नामक चार अवष्टम्भ पर्वत हैं। उन पर्वतोंका विस्तार और उच्चता अयुत योजन है। चारों पर्वतों पर आम्र, जम्बू, कदम्ब और न्यग्रोध नामक चार प्रधान वृक्ष हैं; जिनका विस्तार भी सौ योजनका है। इनकी शाखाएं भी सौ सौ योजन विस्तृत हैं।

उक्त चारों वृक्षोंके निकट ही चार ह्रद हैं। जिनमेंसे एकमें दुग्धजल दूसरेमें मधुजल, तीसरेमें इक्षुरसजल और चौथेमें शुद्धजल है। इन चारों ह्रदोंका जल अति शय आश्चर्यकारी है। उपदेवतागण उसका सेवन कर

स्वाभाविक योगैश्वर्यको धारण करते हैं। इसके सिवा उक्त स्थानमें चार उत्कृष्ट उद्यान भी हैं, जिनका नाम नन्दन, चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र है। इन उपवनोंमें प्रधान देवगण और उत्तमा रमणीगण विहार करती हैं।

मन्दर पर्वत पर देवचूत नामक एक वृक्ष है, जो ग्यारह सौ योजन ऊंचा और सर्वदा भूरि भूरि अमृततुल्य फलोंसे सुशोभित रहता है। ये फल पर्वतशृङ्गके समान स्थूल और अपने आप गिरते हैं। उन फलोंके रससे एक अरुणोदा नामक नदी उत्पन्न हुई है, जो मन्दरपर्वतके शिखरसे निकल कर पूर्वको ओर इलावृत वर्ष तक विस्तृत है। इस नदीका जल सेवन करनेसे भवानीकी अनुचरी यक्षाङ्गनाओंके अङ्ग सुगन्धित होते हैं। पवन इस सुगन्धको दश योजन फैलाती है। इसी प्रकार जम्बूफलोंके रससे जम्बू नदीकी उत्पत्ति हुई है। यह नदी मेरुमन्दरके शिखरसे निकल कर अयुत योजन अन्तरमें पृथिवी पर गिरी है, जिससे समग्र इलावृतवर्ष व्याप्त हो रहा है।

इस नदीके दोनों किनारेकी मिट्टी प्रवाहित जल और रससे अनुविद्ध हो कर वायु और सूर्यके संयोगसे विशेष पाकको प्राप्त हुई है, जिससे जाम्बूनद नामक सुवर्ण उत्पन्न हुआ है।

सुपार्श्वपर्वतके पार्श्वदेशमें महाकदम्ब नामका जो प्रकाण्ड कदम्बतरु है, उसके कोटरोंसे पांच मधु धाराएं निकली हैं, जो उस पर्वतके शिखरदेशको निषिक्त करती हुई पश्चिममें अपनी सुगन्ध द्वारा इलावृतवर्षको आमोदित कर रही हैं। कुमुदपर्वत पर शतवर्ण नामक जो एक विस्तीर्ण वट विटपी है, उसके स्कन्धसे अधोमुख उक्त पर्वतके अग्रभागमें दधि, दुग्ध, घृत, मधु, गुड, अन्न तथा वसन भूषण शयन आसनादि समस्त अभिलषित वस्तुओंको देनेवाले नद निकले हैं। इसलिये यहांके लोगोंको कभी अङ्गशैथिल्य, क्लान्ति घर्म, जरा, रोग, अपमृत्यु, शीत या उष्णजन्य वैवर्ण्य तथा अन्यान्य उपसर्ग नहीं सहने पड़ते। वे यावज्जीवन केवल सुख सम्भोगमें ही काल व्यतीत करते हैं। (भागवत० ५।१६ अ०)

वराहपुराणके मतसे यह जम्बूद्वीपके अन्तर्गत नव वर्षोंमें एक वर्ष है। माल्यवान् पर्वतके पूर्वपार्श्वमें भद्रशालवनसे सुशोभित यह वर्ष अवस्थित है। यहांके पुरुष श्वेतवर्ण और स्त्रियां कुमुदवर्णा हैं। इस वर्षमें शैलवर्ण पर्वत, मालापर्वत, वरजस्क, त्रिपर्ण और नील नामक ५ कुलपर्वत हैं। यहां सीता, सुवाहिनी, हंसवती, कावेरी, सुरसा, शाखावती, इन्द्रनदी, अङ्गारवाहिनी, हरितोया, सोमावर्त्ता शतह्रदा, वनमाली, वसुमती, हंसा, पर्णा, पञ्चाङ्ग, धनुष्मती, मणिवप्रा, सुब्रह्मभागा, विलासिनी, कृष्णतोया, पुण्योदा नागवती, शिवा, शैवालिनी, मणितटा, क्षीरोदा, वरुणावती, विष्णुपदी, महानदी, हिरण्यस्कन्धवाहा, सुरावती, वामोदा आदि प्रधान नदियां हैं, तथा इनके सिवा बहुत सी छोटी छोटी नदियां भी हैं। (वराहपु०)

२ महाभिषण्डोक्त पाश्च राजा। (महाभिष० ३३।४४, ७७, ६५, १४० १५३)

भद्रासन (सं० क्ली०) भद्राय लोकहिताय आस्यते आस-आधारे ल्युट्। १ नृपासन, राजासन, अभिषेकके समय राजाको जिस आसन पर बिठा कर अभिषेक किया जाता है, उसे भद्रासन कहते हैं। वृहत्संहितामें लिखा है,—प्रशस्त लक्षण युक्त वृषचर्म पूर्वकी ओर दे कर उस पर सिंह और वृषचर्मका आस्तरण करना चाहिए, फिर उस पर कनक, रजत और ताम्र द्वारा प्रस्तुत आसन या क्षीरतरुनिर्मित आसन रखना चाहिए। यह आसन तीन प्रकार परिमाणविशिष्ट होता है—एकहस्त प्रमाण, पादाधिक एकहस्त प्रमाण और डेढ हस्त प्रमाण। इस प्रकारका आसन भद्रासन कहलाता है।

२ तन्त्रसारोक्त योगियोंका एक आसन। दोनों गुल्फोंको स्थिर कर उन्हें सीवनीके पार्श्वमें रखनेसे यह आसन बन जाता है।

३ वासगृह, वह घर जिसमें वास किया जाता है, रहनेका घर। वास्तु देखा।

भद्राह (सं० क्ली०) भद्र अह कर्मधा०। पुण्याह, पुण्य दिन।

भद्रि—अयोध्याप्रदेशके प्रतापगढ जिलेका एक नगर। यहां एक प्राचीन दुर्गका ध्वंसावशेष देखा जाता है।

भद्रिका (सं० स्त्री०) भद्रा स्वार्थे कन् टाप्। १ भद्रा तिथि। २ योगिनी दशान्तर्गत पञ्चमी दशा।

"मङ्गला पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिका तथा।
उल्का सिद्धा सङ्कटा च योगिन्यष्टौ प्रकीर्त्तिता ॥"
(बृहज्जातक)

भरणी, मघा, ज्येष्ठा और उत्तरभाद्रपद नक्षत्रमें जन्म होनेसे भद्रिकाकी दशा होती है। इस दशाका भोगकाल ५ वर्ष है। इस दशाकालमें मनुष्य सुख, लाभ, यश, सन्तोष, धर्म, भोग, स्त्री और पुत्रसम्पन्न होता है। इन सब दशाओंकी भी फिर अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा है। तदनुसार फल स्थिर करना होगा। (फ० ज्योति०)

३ वृत्तरत्नाकरोक्त नवाक्षर पादक छन्दोभेद। इसका लक्षण—"भद्रिका भवति रो नरौ" (वृत्तरत्ना०) ४ गुरु।

भद्रिलपुर—एक प्राचीन नगर। (जैनहरि १८।११)

भद्रेश (सं० पु०) शिवलिङ्गभेद।

भद्रेश्वर (सं० पु०) भद्र शुभदश्चासावीश्वरश्चेति भद्रात्मक मङ्गलमय ईश्वरो वेति। १ कल्पग्रामस्थित शिव मूर्त्ति। इस भद्रेश्वर शिवके दर्शन करनेसे चक्रतीर्थ गमनका फल प्राप्त होता है। २ महादेवको पानेके लिये पार्वती द्वारा आराधित हिमालयस्थित पार्थिव शिवलिङ्ग। (वामनपु० ४६ अ०)

३ गङ्गाके पश्चिमी किनारे गरिटाख्य ग्रामके उत्तरमें अवस्थित पाषाणमय शिवलिङ्ग और ग्राम। ४ तीर्थ विशेष।

"श्रीशैले माधवी नाम भद्रा भद्रेश्वरे तथा।" (मत्स्यपु०)

यहां पर भद्रा नामक शक्तिमूर्त्ति विद्यमान है।

भद्रेश्वर—महार्थमञ्जरी टीकाके प्रणेता।

भद्रेश्वर—राजतरङ्गिणी वर्णित एक राज कर्मचारी। ये कायस्थ कुलोद्भव थे। राजकर्ममें नियुक्त हो कर इन्होंने जनसाधारणके ऊपर अत्याचार आरम्भ कर दिया था। (राजतर० ७।३८-४४)

भद्रेश्वर—बम्बई प्रदेशके कच्छ प्रदेशके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह भद्रावती नामसे प्रसिद्ध है। यहांकी सुप्राचीन ध्वंसावशिष्ट अट्टालिकाओंके प्रस्तरादि ले कर दूसरी जगह गृहादि बनाये गये हैं। दो ध्वस्तप्राय मसजिद और एक शिवमन्दिरका स्तम्भ तथा गुम्बज आज भी इसकी प्राचीन स्मृतिका परिचय देते हैं। निकट वर्त्ती एक कुण्डके सामने माता आशापुरीका मन्दिर विद्यमान है। बहुत पहले बौद्ध और जैनधर्मने यहां पर प्रतिष्ठालाभ किया था। यहांका जैनमन्दिर जनसाधारणके विशेष आदरकी सामिग्री है। जो सब प्राचीन निदर्शन आज भी मन्दिरादिके गात्रमें ग्रथित देखे जाते हैं वे १२२५ ई०के परवर्त्तीकालमें जगडू व शाह नामक किसी बनियेसे रक्षित हुए थे। उक्त महाजन भद्रेश्वर नगरको दानमें पा कर उसके मन्दिरादिका जीर्णोद्धार किया था। उसी समय प्राचीन निदर्शन यहांसे हटा लिये गये थे।

१२वीं और १३वीं शताब्दीमें यह स्थान तीर्थक्षेत्ररूपमें गिना जाने लगा। इसी समयसे यहां तीर्थ यात्रियोंकी भारी भीड़ होने लगी, शिलालिपिसे इसका प्रमाण मिलता है। ११वीं शताब्दीके शेषभागमें मुसलमानोंने इस मन्दिरको लूटा। इस समय जैन-तीर्थङ्करोंकी अनेक मूर्त्तियां नष्ट कर डाली गईं। मुसलमानोंके इस उपद्रवके बादसे यह स्थान बिलकुल जनशून्य हो गया है। अभी इसके मन्दिर और दुर्गादिका ध्वंसावशेष वर्त्तमान मुन्द्रा बन्दरका घर बनानेमें व्यवहृत होता है। स्थानीय पीर लालशोयकी दरगाहमें अरबी भाषामें लिखित एक शिला फलक देखा जाता है। प्राचीन भद्रावतीका कुछ अंश वर्त्तमान नगरप्रान्तमें अवस्थित है।

भद्रेश्वर—बङ्गालके हुगली जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २४ १६ उ० तथा देशा० ८७ ५७ पू० ईष्ट इण्डियन रेलवेके मवाद्या ष्टेशनसे ४ मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या चार सौके करीब है। यहां रेशमका कारबार होता है।

भद्रेश्वर आचार्य—एक ग्रन्थकार। गणरत्नमहोदधिमें इनका नामोल्लेख है।

भद्रेश्वरसूरि—१ एक वैयाकरण, दीपक नाम व्याकरण ग्रन्थके प्रणेता। २ चन्द्रगच्छके अन्तर्गत सूरिभेद। ये अभयदेव और देवभद्रके गुरु थे। सिद्धसेनकृत प्रवचन सारोद्धार और बालचन्द्रकी विवेक मञ्जरीटीका पढ़नेसे मालूम होता है, कि ये १२ सम्वत्के शेषभागमें विद्यमान थे। ३ एक जैनसूरी। ये राजा जयसिंहके समसामयिक जैनाचार्य देवसूरिके शिष्य थे। उनको सतीर्थ रत्नप्रभा

सूरिकृत धर्मदासगणिकी उपदेशमालाटीकासे जाना जाता है, कि वे सम्भवत १२३८ सम्वत्के सन्निकट वर्त्ती किसी समयमें जीवित थे।

भद्रैला (स० स्त्री०) भद्रा एला। स्थूलैला, बड़ी इलायची।

भद्रोत्कट (स० पु०) भद्रमुस्त, भदाढ़िया मोथा।

भद्रोदनी (स० स्त्री०) भद उदर्नाति अनयेति, उद् अन् अच्, गौरादित्वात् ङीष्। १ बला। २ नागबला।

भद्रोदय (स० क्ली०) सुश्रुतोक्त औषधभेद।

भद्रोपवास व्रत (स० क्ली०) व्रतभेद।

भटूरी—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य। यहांके सरदार वृटिश सरकार और जूनागढ़के नवाबको कर देते हैं।

भड़ुवा—बम्बई प्रदेशके हल्लार जिलान्तर्गत एक छोटा राज्य। यहांके सामन्त राज जूनागढ़के नवाव तथा वृटिश सरकारको कर देते हैं। भागवा नगर यहांका प्रधान स्थान है।

भड़वाना—बम्बई प्रदेशके झलावर जिलान्तर्गत एक सामन्त राज्य।

भनक (हिं० स्त्री०) १ धीमा शब्द, ध्वनि। २ अस्पष्ट या उड़ती हुई खबर।

भनकना (हिं० क्रि०) बोलना, कहना।

भनभनाना (हिं० क्रि) भन भन शब्द करना, गुंजारना।

भनभनाहट (हिं० स्त्री०) भनभनानेका शब्द, गुंजार।

भन्दिष्ठ (स० त्रि०) स्तुतिरूपा इष्टियुक्त।

भन्दन (स० त्रि०) कल्याणकारी।

भन्दिल (स० क्ली०) १ शुभ। २ कम्प। ३ दूत।

भन्दिष्ठ (स० त्रि०) अतिशय स्तोता, अत्यन्त स्तवकारी।

भभ्रुक (स० पु०) भारतवर्षके अन्तर्गत जनपदविशेष।

भनूसाली—कच्छप्रदेशवासी राजपूत जातिकी एक शाखा। ये लोग सोलाङ्की वंशीय हैं, किन्तु आचार भ्रष्ट होनेके कारण ये अभी सोलाङ्कियोंके साथ नहीं मिल सकते। सभी जनेऊ पहनते हैं और अपनेको क्षत्रिय बतलाते हैं। प्रवाद है, कि ये लोग आड़े आदिके साथ यहां आ कर बस गये हैं, कृषि-कार्य और वाणिज्य इनका प्रधान व्यवसाय है। यहां पर ये लोग वेगू नामसे परिचित हैं।

भपञ्जर (स० क्ली०) भानां नक्षत्राणां पञ्जरम्। नक्षत्रचक्र।

भपति (स० पु०) भानां नक्षत्राणां पतिः। चन्द्रमा।

भप्पट (स० पु०) एक आचार्य। इन्होंने काश्मीरमें भप्पटेश्वर नामसे शिवमूर्ति स्थापित की।

भबका (हिं० पु०) अर्क उतारने या शराब चुआनेका बंद मुंहका एक प्रकारका बड़ा घड़ा। इसके ऊपरी भागमें एक लम्बी नली लगी रहती है। जिस चीजका अर्क उतारना होता है, वह चीज पानी आदिके साथ इसमें डाल कर आग पर चढ़ा दी जाती है और उसकी भाप बनती है। तब वह भाप उसी नलीके रास्तेसे ठंढी हो कर अर्क आदिके रूपमें पास रखे हुए दूसरे बरतनमें गिरती है।

भभक (हिं० स्त्री०) किसी वस्तुका एकाएक गरम हो कर ऊपरको उबलना, उबाल।

भभकना (हिं० क्रि०) १ उबलना। २ गरमी पा कर किसी चीज का फूटना। ३ प्रज्वलित होना, जोरसे जलना, भड़कना।

भभका (हिं० पु०) भबका देखो।

भभकी (हिं० स्त्री०) झूठी धमकी, घुड़की।

भभूका (हिं० पु०) ज्वाला, लपट।

भभूत (हिं० स्त्री०) १ वह भस्म जो शिवजी लगाया करते थे। विभूति देखो। २ शिवकी मूर्त्तिके सामने जलने वाली अग्निकी भस्म जिसे शैव लोग मस्तक और भुजा आदि पर लगाते हैं।

भभूवर (हिं० स्त्री०) भूभल देखो।

भम्भड़ (हिं० स्त्री०) अव्यवस्थित जन समुदाय, भीड़ भाड़।

भमण्डल (स० क्ली०) भानां नक्षत्राणां मण्डलं। नक्षत्र चक्र, राशिचक्र।

भम्भ (स० पु०) भम् इत्यव्यक्त शब्देन भातीति भा क। १ मक्षिका मच्छड़। २ धूम, धूआं।

भम्भरालिका (स० स्त्री०) भम् इत्यव्यक्त शब्दस्य भव बाहुल्य मालाति गृह्णातीति आ ला क गौरादित्वात् ङीष् तत स्वार्थे कन्-टाप्, पूर्वस्य ह्रस्वत्व। भङ्कारी, मच्छड़

भम्भराली (स० स्त्री०) भम्भराल गौरादित्वात् ङीष्। मक्षिकाभेद।

भम्भासार (स० पु०) मगधराजविशेष। पर्याय—श्रेणिक।

भय (सं० क्ली०) भी (एरच्। पा ३।३।५६) इत्यत्र 'भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादि निवृत्त्यर्थम्' इति वार्त्तिकोक्त्यादि अपादाने अच्। १ भय हेतु। २ एक प्रसिद्ध मनोविकार जो किसी आनेवाली भीषण आपत्ति अथवा होनेवाली भारी आशङ्कासे उत्पन्न होता है। पर्याय—दर, त्रास, भीति, भी, साध्वस, रुत्रास, साधु सम्भय, प्रतिभय, आतङ्क, आशङ्का, भिया।

परसे अनिष्ट सम्भावनाका नाम भय है। यथा— 'व्याघ्राद्बिभेति' यहा पर—व्याघ्रसे भय होता है, अर्थात् व्याघ्रसे मृत्युकी आशङ्का होती है—इसी अनिष्टाशङ्काका नाम भय है। इसका लक्षण—

"रौद्रशक्त्या तु जनितं चित्तवैक्लव्यदं भयम्"
(साहित्यद० ३ प०)

रौद्ररसकी शक्तिसे भय उत्पन्न होता है। इससे चित्तमें विकलता उत्पन्न होती है।

भयके उपस्थित होने पर अभीत व्यक्तिकी तरह रहना चाहिये। भय उपस्थित होनेके पहले भय करना उचित नहीं है। ३ भयानक रसका स्थायी भाव भय। ४ कुब्जक पुष्प, मालती। ५ बालकोंका वह रोग जो उनके कहीं डर जानेके कारण होता है। इस समय उसे हृदयहृत्कम्प (Palpitation) रोग और साथ साथ शारीरिक उत्तापजनित ज्वरका आविर्भाव होता है। ६ निर्ऋतिके एक पुत्रका नाम। ७ द्रोणके एक पुत्रका नाम जो उनकी अभिमति नामक स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। ८ यवनराजविशेष। (त्रि०) ९ घोर, भीषण।

भयकर (सं० त्रि० करोतीति कृ अच्, भयस्य कर। भयकारक, जिसे देख कर भय लगे।

भयकर्तृ (सं० त्रि०) भयस्य कर्त्ता। भयकारक, भय उत्पन्न करनेवाला।

भयकृत (सं० त्रि०) भयं करोति कृ क्विप्। १ भय कारक, भयं कृन्तति कृत-छेदने क्विप्। २ परमेश्वर।

भयङ्कर (सं० त्रि०) भयं करोतीति भय-कृ (मेघर्त्तिभयेषु कृञः पा ३।२।४३) इति खच्, मुमच। भयजनक, जिसे देखनेसे भय लगे। पर्याय—भैरव, दारुण, भीषण, भीष्म, घोर, भीम, भयानक, प्रतिभय, भयावह। (पु०) २ डुडुल पक्षी। ३ एक अस्त्रका नाम।

भयचक (हिं० वि०) भौचक देखो।

भयजात (सं० त्रि०) भयसे उत्पन्न।

भयडिण्डिम (सं० पु०) भयाय शत्रुभयजननाय डिण्डिम। प्राचीनकालका एक बाजा जो लड़ाईमें बजता था।

भयन (हिं० पु०) चन्द्रमा।

भयत्रातृ (सं० त्रि०) भयस्य त्राता तृच्। भयसे बचानेवाला।

भयद (सं० त्रि०) भय दा क। भयदानकारी, भय उत्पन्न करनेवाला।

भयदा (सं० स्त्री०) भूधात्री, भुआवला।

भयदायिन् (सं० पु०) भय-दा णिनि। भयदाता, डरावना।

भयदोष (सं० पु०) जैनोंके अनुसार एक प्रकारका दोष। यह दोष उस समय लगता है जब मनुष्य अपनी इच्छासे नहीं बल्कि लोकापवादके भयसे सामयिक कर्म आदि करता है।

भयद्रुत (सं० त्रि०) द्रु कर्त्तरि क्त भयेन द्रुतः। भीति द्वारा पलायित, जो डरके मारे भाग गया हो। पर्याय— कान्दिशीक।

भयनाशन (सं० त्रि०) भयं नाशयति नाशि ल्यु। १ भयनिवारक (पु०) २ विष्णु।

भयनाशिन् (सं० त्रि०) भयं नाशयतीति भय नश णिच्, णिनि। १ भयनाशकारक। स्त्रियां ङीप्। २ त्राय माणा लता।

भयप्रद (सं० त्रि०) भयं प्रददातीति दा-क। भयद, जिसे देख कर भय उत्पन्न हो।

भयब्राह्मण (सं० पु०) भयेन ब्राह्मणः स्वमन्यते। वह जो डरके मारे अपनेको ब्राह्मण बतलाता है।

भयभञ्जन—रमल-रहस्य और रमल रहस्यसग्रहके प्रणेता।

भयभीत (सं० त्रि०) भयेन भीत। जिसके मनमें भय उत्पन्न हो गया हो, डरा हुआ।

भयभ्रष्ट (सं० त्रि०) भयेन भ्रष्ट। भयद्रुत, जो डरके मारे भागा हो।

भयमोचन (सं० त्रि०) भय छुड़ानेवाला, डर दूर करने वाला।

भयवर्जिता (सं० स्त्री०) व्यवहारमें दो गावोंके बीचकी वह सीमा जिसे वादी और प्रतिवादी आपसमें मिल

कर ही मान ले और जिसका निर्णय किसी दूसरेको न करना पड़ा हो।

भयवाद ( हिं० पु० ) एक ही गोत या वंशके लोग, भाई बन्द। २ विरादरीका आदमी, सजातीय।

भयव्यूह ( सं० पु० ) भये सति व्यूह। राजाओंका व्यूहभेद। युद्धकालमें भयव्यूह रचना चाहिये, क्योंकि भय उपस्थित होने पर इस व्यूहमें आश्रय ले कर प्राण-रक्षा की जा सकती है। व्यूह देखो।

भयहरण ( सं० त्रि० ) भयका नाश करनेवाला, भय दूर करनेवाला।

भयहारी ( हिं० वि० ) डर छुडानेवाला, डर दूर करनेवाला।

भया ( सं० स्त्री० ) एक राक्षसी जो कालकी वहन और हेतिकी स्त्री थी। विद्युत्केश इसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था।

भयाकुल ( सं० पु० ) भयसे व्याकुल, डरसे घबराया हुआ।

भयातिसार ( सं० पु० ) अतिसारका एक भेद। इसमें केवल भयके कारण दस्त आने लगते हैं।

भयातुर ( सं० त्रि० ) भयातुर, डरसे घबराया हुआ।

भयानक ( सं० पु० ) बिभेत्यस्मादिति भी ( भीह् मिय। उण् ३।८२ ) इति आनक। १ व्याघ्र, बाघ। २ राहु। ३ शृङ्गारादि आठ रसोंके अन्तर्गत छठा रस। इसमें भीषण दृश्यों ( जैसे—पृथ्वीके हिलने या फटने, समुद्रमें तूफान आने आदि ) का वर्णन होता है। इसका वर्ण श्याम, अधिष्ठाता देवता यम, आलम्बन भयङ्कर दर्शन, उद्दीपन उसके घोर कर्म और अनुभाव कंप, स्वेद, रोमाञ्च आदि माने गये हैं। जुगुप्सा, वेग, संमोह, सन्त्रास, ग्लानि, दीनता, शङ्का, अपस्मार, भ्रान्ति और मृत्यु आदि इस रसके व्यभिचारिभाव हैं।

( त्रि० ) २ भयङ्कर, डरावना।

भयापह (सं० पु०) भयमपहन्तीति हन् ( अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते पा ३।२।१०१ ) इति। १ राजा। ( त्रि० ) २ भयनाशक।

भयावह ( सं० त्रि० ) आवहतीति आ वह अच् भयस्य। आवह। भयङ्कर, डरावना।

भयावहा ( सं० स्त्री० ) रात्रि, रात।

भय्य ( सं० क्ली० ) भी भावे यत्, वेदे निपातनात् साधु। भय, डर।

भय्या ( हिं० पु० ) भैया देखो।

भर ( सं० त्रि० ) भरतीति भृ पचाद्य च्। १ अतिशय, बहुत। २ भरणकर्त्ता, भरणपोषण करनेवाला। (पु०) ३ भार, बोझ। ४ संग्राम। ५ दो सौ पलका एक परिमाण।

भर ( हिं० पु० ) १ भार, बोझ। २ पुष्टि, मोटाई। (वि०) ३ कुल, पूरा, तमाम।

भर—युक्तप्रदेश, अयोध्या और पश्चिम बङ्गाल वासी निम्नश्रेणीकी एक क्षत्रिय जाति। जातितत्त्वविद्गण इस जातिको द्राविड़ीय शाखाके अन्तर्गत समझते हैं *। इस जातिके लोग साधारणतः राजभर, भरत या भरत पुत्र नामसे परिचित होते हैं।

इस जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें नाना स्थानोंमें नाना प्रकारकी किम्वदन्तियां प्रसिद्ध हैं। सामाजिक और कौलिक आचारादिमें समुन्नत हो कर ये क्रमशः उच्चश्रेणीके हिंदू समझे जाने लगे हैं। कोई कोई कहते हैं, कि ये क्षत्रियराज भरद्वाजके वंशधर हैं। अयोध्या और युक्तप्रदेशके भरोंका कहना है, कि, उनके पूर्वपुरुष अयोध्याके पूर्वांशमें राज्य करते थे। अयोध्याके उस

---

* अनार्य आकृति-विशिष्ट इस जातिने किसी समय भारतक्षेत्रमें प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। पुराणादिमें भी इस भर जातिकी प्रतिष्ठाका कोई उल्लेख नहीं है। जातितत्त्वविदोंका अनुमान है कि, यह जाति टलेमी द्वारा वर्णित वरहई (Burrhai) या प्लिनीसे उवारी ( Ubarae ) होगी। किन्हींने ब्रह्मपुराण-वर्णित जयध्वज वंशानतर भारतोंको अथवा महाभारतोक्त भीमसेन द्वारा पराजित भर्गजातिको वर्तमान भरजातिका पूर्वपुरुष माना है। और कोई कोई कहते हैं, कि पार्वतीय भरत ( शबर बर्बर आदि ) जातिसे भरजातिका अभ्युदय स्वीकार करते हैं। शेरिंग् सा०ने लिखा है कि हिन्दूशास्त्रोंमें दस्यु और असुर शब्दसे अनार्य जातिका उल्लेख हुआ है। अनार्य द्वारा विताड़ित हो कर आर्योंका इतस्ततः गमन और उपनिवेश स्थापन उनके प्रदेशके इतिहास-वर्णित फलतः उनका पराभव और पलायन उसका समर्थन कर रहा है।

प्राचीन और प्रसिद्ध सूर्यवंशीय राजाओंका शासन प्रभाव विलुप्त होने पर यहां भरजातिका आधिपत्य विस्तृत हुआ। सूर्यवंशीय राजा कनकसेनके राजत्वकालमें इस अनार्य भरजातिने हिमालयके पावनीय निवाससे अवतीर्ण हो कर अयोध्यामें प्रतिष्ठा प्राप्त की। राजा कनकसेन दुर्द्धर्ष भरोंका आक्रमण सह न सके जिससे वे गुजरातकी तरफ भाग गये। उनके साथ हीनवल क्षत्रिय-सन्तानगण भी नाना स्थानोंमें फैल गये हैं। दस्युवृत्ति और लूट मार आदि इनका प्रधान कार्य है। अपनेमें किसीको धर्मचर्चा करते हुए देखते हैं, तो उसे विशेष लाञ्छित करते हैं। गाजीपुर, बस्ती, मीर्जापुर, भरोंच आदि जिले के दुर्गादिके ध्वंसावशेषसे प्रमाणित होता है, कि इस दुर्द्धर्ष जातिने किसी समय सुदूर विस्तृत युक्तप्रदेशमें आधिपत्य विस्तार किया था। कौशिक राजपूतों द्वारा ये भारखण्डपुरसे भगाये गये थे। विन्ध्याचलके निकटवर्त्ती पम्पापुरमें इनकी राजधानी थी।

प्रत्नतत्त्वविद्गण केवलमात्र किम्वदन्तियों पर आस्था स्थापन कर भरजातिकी पूर्व-प्रतिपत्ति स्वीकार करनेमें सहमत नहीं हैं। शाहबुद्दीन गोरीके भारता-क्रमण और कन्नोज पति जयचन्दके अधःपतनके समय राजपूतजाति पूर्व प्रान्तमें अभ्युदित हुई। उस समय भर लोग राजपूतों से पराजित हुए थे। ये आजमगढ़ और गाजीपुरसे सैनगरों द्वारा, मिर्जापुर और इलाहा-बादके आसपाससे गहरवारों द्वारा, गोरखपुरसे कौशिकों द्वारा, फैजाबाद और अयोध्यासे वाई तथा भदोही और प्रयागके पश्चिमभागसे मौना, वाई, सोनक आदि जातियों द्वारा भगाये गये थे।

इस प्रकारसे भर जातिके अधःपतन होनेके बाद समग्र युक्तप्रदेश राजपूतजातिकी विभिन्न श्रेणियों के सरदारोंके शासनाधीन हो गया था। उक्त राजपूतगण 'छत्री' नामसे परिचित हुए*। उपर्युक्त घटना परम्परा द्वारा किसी ऐतिहासिक सत्य पर नहीं पहुंचा जा सकता। कारण, सिवा एक किम्वदन्तीके इस विषयमें और कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

इनमें भरद्वाज, कनौजिया और राजभर नामक तीन स्वतन्त्र श्रेणियां हैं। मिर्जापुरी भर भुंइहार, राज भर और दुसाद नामक तीन श्रेणियोंमें विभक्त हैं। भुंइहार लोग अपनेको उन लब्धप्रतिष्ठ भरराजों के वंशधर और सूर्यवंशीय राजपूत कहा करते हैं।

ये सगोत्रमें, अथवा पितृ या मातृ कुलमें विवाह नहीं करते, किन्तु यदि ४ या ५ पीढ़ीमें पिण्ड बाधक न हो, तो ये लोग फूआकी कन्याके साथ भी विवाह कर लेते हैं। अपने घरमें विवाह करना ही इनको विशेष अभिप्रेत है। आजमगढ़के राजभर वास्तवमें हिंदू हैं। इनके सम्पूर्ण क्रियाकलाप हिंदुओंके समान हैं। ये हिंदू भरगण 'पतेत' कहलाते हैं। निम्नश्रेणीके भरों को 'रवुनैत' कहते हैं। पतैतों ने अपने आचारादि द्वारा समाजमें उच्च स्थान प्राप्त किया है, और रवुनैत लोग शूकर पालन जैसे निकृष्ट व्यवसायमें जीवन बिताते हैं। उक्त दोनों श्रेणियों में परस्पर आदान प्रदान प्रचलित रहने पर भी शूकर-व्यवसायियों के साथ उन्नत व्यक्ति अपनी सन्तान का विवाह सम्बन्ध नहीं करते। शूकर पालन भर समाज-में नीच समझा जाता है। यदि कोई अविवाहिता बालिका सजातीय किसी युवकके साथ अवैध प्रणयसे आसक्त हो, तो जातीय सभा उस कन्याके पितासे जुर्माना ले कर लड़कीको जातिमें ले लेती है। दस वर्षसे बड़ी कन्याका विवाह निषिद्ध है। यह कन्या समाजमें 'रजस्वला' होनेके कारण निन्दनीय है, उसके साथ कोई भी

---

† वर्तमान प्रत्नतत्त्वविद्गण भरजातिकी इस पुरातन गौरव-वार्त्ताको स्वीकार नहीं करते। पहले जो ध्वंसावशेष भरजातिके कीर्त्तिस्तम्भ समझे गए थे, अब उनमें बहुतेरे विभिन्न राजाओं द्वारा आरोपित प्रमाणित हुए हैं।

* काशी साहबका कहना है कि पुराभिमुखी विशाल राज-पूतवाहिनी नागवंशीय राजाओं द्वारा पराजित हुई थी। जो दुर्ग अब तक प्रदेशमें अवस्थित हैं वे भरोंके सिवा और कोई नहीं हो सकते। भारतमें आर्योंके प्रभावके समय इनका प्रभाव घट गया था। अन्य विद्वान् इनको अग्नि साहबका अनुमान करते हैं, कि ये द्राविड़ीय शाख अथवा नागजातिके होंगे। विन्ध्याचलके कैमूर अधित्यकावासी अनार्यजातिके साथ इनका बहुत कुछ सुसादृश्य है।

सम्बन्ध करनेको राजी नहीं होता। साधारणतः ५ या ७ वर्षकी कन्या ही विवाह योग्य समझी जाती है।

पहली स्त्रीके रहते हुए दूसरा विवाह करना निषिद्ध नहीं है। परन्तु बन्ध्यादि कारण बिना दिखाये वह विवाह ग्राह्य नहीं होता। यदि कोई स्त्री अपनी इच्छासे पतिको दूसरा स्त्रीके लिए अनुमति दे तो फिर उसे घरका कोई काम नहीं करना पड़ता, सपत्नी ही सब करनेके लिए बाध्य है। दूसरी स्त्री वही हो सकती है, जो पहली स्त्रीकी रिश्तेमें छोटी बहन या वैसी ही कोई लगती हो। विधवाएं चाहे तो सगाईके प्रथानुसार विवाह कर सकती हैं। सामाजिक सभी विषयोंका फैसला पञ्चायत सभाके प्रतिनिधि चौधरी द्वारा होता है। स्त्री अथवा पतिके स्वाभाविक दौर्बल्य, शरीरगत रोग वा व्यभिचार आदि कारणों पर विवाह बन्धन तोड़ा जा सकता है, परन्तु उसमें भी पञ्चायत सभाकी अनुमतिकी आवश्यकता है।

विवाहमें वरके मामा ही घटक बनते हैं। कन्याका पिता १) रु० दे कर वरका मुंह देखता और विवाह पक्का करता है। 'पानीके दिन' कन्याका पिता स्वजनोंसे परिवृत हो कर वरके घर जाता है और आंगनके चौकमें घरके सामने बैठ कर वह अपने जमाईके मस्तक पर चावल और दही लगाता है। ब्राह्मणके द्वारा शुभ दिनका निश्चय होने पर उस दिन वर और कन्याके घर विवाह मञ्च बनता है। विवाहके पहले दम्पतिकी मङ्गलकामनाके लिए अधवान देव, पाच पीर और फूलमतीदेवीकी पूजा होती है। कन्याके घर पर पहुंचते ही पुरोहित पहले गौरी और शङ्करकी पूजा करता है। उसके बाद वर और कन्याको (गांठ बंध जानेके बाद) विवाह मञ्चस्थ मध्य दण्डके चारों ओर पांच बार प्रदक्षिण कराया जाता है।

किसी स्त्रीके गर्भवती होने पर, घरकी मालकिन उसके सिर पर पैसा और चावल फेरती हैं तथा प्रसव अच्छी तरह हो इसके लिए फूलमतीदेवी और ग्राम्य देवताकी पूजा करती हैं। प्रसूतिके छठे दिन छठी वा षष्ठीपूजा और १२वें दिन अशौचान्त होता है। ५वें या ६ठे वर्ष कर्णवेध होनेके बाद बालकको समाजके समस्त नियमोंका पालन और भोज्यादिका भी विचार करना पड़ता है।

ये विसूचिका, चेचक या अविवाहित दशामें मृत्यु होने पर मुर्देको जलाते हैं, परन्तु अन्य अवस्थाओंमें गाड़ते या पानीमें बहा देते हैं। ६ महीनेके भीतर शेषोक्त प्रेतोंके उद्देशसे प्रतिकृति बना कर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पादित की जाती है। इनमें मृताशौच १० दिन तक माना जाता है। अशौचके प्रधान अधिकारीको उक्त दशों दिन कुशतृण द्वारा पानी और मृतकी प्रेतात्माके लिए पिण्डदान देना पड़ता है। दशवें दिन क्षौरकर्मके बाद पिण्डदान और श्राद्ध होता है। उस दिन ब्राह्मणको अवश्य द्रव्य और ज्ञाति कुटुम्बादिको भोज दिया जाता है।

पहले ही लिखा जा चुका है कि ये प्रायः सभी कार्यों-में अधवानदेव, फूलमतीदेवी और पांच पीरकी पूजा करते हैं। इसके सिवा ये कालिका और काशीदास बाबाको पूजा भी विशेष धूमधामके साथ करते हैं। फगुआ, दशहरा, दिवाली, खिचड़ी और तीज आदि इनके प्रधान पर्व हैं। ग्रामस्थ वट वृक्षके नीचे प्रेतयोनिकी पूजामें ये लोग शूकरकी बलि चढ़ाते हैं। कोई कोई गयाजी जा कर पिण्डदान करते हैं। प्रत्येक पीपलके पेड़को नारायणकी वासभूमि समझ कर ये उसकी पूजा करते हैं और स्त्रियां पीपलके पेड़को लाज मारती हैं।

पश्चिम-बङ्गाल और छोटा नागपुरके भर प्रधानतः कृषिजीवी होते हैं। बहुतसे पञ्चकोट (पचेट) राजसरकारमें कार्य करते हैं। इनमें मघया और बङ्गाली नामके दो थोक हैं, जिनका परस्परमें विवाहादि सम्बन्ध नहीं है। लगभग सभी विषयोंमें ये हिन्दुओंका अनुकरण करना सीख गये हैं। इनमें बाल्यविवाह प्रचलित है, परन्तु अवस्थाके भेदसे वयस्था कन्याका विवाह भी ग्राह्य है। विधवा विवाह बिलकुल नहीं होता। मृतदेहका दाहकर्म और १३वें दिन श्राद्ध आदि हिन्दुओंकी पद्धतिके अनुसार होता है। पचेट राजसरकारमें कार्य ग्रहण कर ये समाजमें बहुत उन्नत हो गये हैं। मानभूममें ये तमोली और हलवाइयोंकी श्रेणीमें गिने जाते हैं। उच्च श्रेणीके हिन्दूमात्र इनके हाथका पानी पीते हैं।

भरई (हिं० पु०) भरदूल पक्षी।

भरक (हिं० पु०) पञ्जाब और बङ्गालमें अधिकतासे मिलने

वाला एक प्रकारका पक्षी। यह अकसर झुण्डोंमें ही रहता है और अकेला। कभी कभी दो तीन भी एक साथ दिखाई देते हैं। मांसके लिये इसका शिकार किया जाता है। (स्त्री०) २ भड्डर देखो।

भरका (हिं० पु०) १ वह जमीन जिसकी मट्टी काली और चिकनी हो। सूखने पर यह सफेद और भुरभुरी हो जाती है। यह प्राय जोती नहीं जाती। २ भरत देखो।

भरकी (हिं० स्त्री०) भरका देखो।

भरकूट (हिं० पु०) मस्तक, माथा।

भरके (हिं० अव्य०) वह रूबेन जो पालकी ढोनेवाले कहार नाली आदिसे बच कर चलनेके लिये करते हैं।

भरचिटो (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी घास जो हिमालय प्रान्तमें होती है। वर्षाऋतुमें यह अधिकतासे उगती है। पशु इसे बड़े चावसे खाते हैं और यह पुष्टिकारक भी है।

भरट (स० पु०) बिभर्त्ति भृ (भीवाच्युमृभ्रमिदरमिनभ-भमृभ्य इत्येनिति। उण् ४।१०४) इति अटच्। १ कुम्भ-कार, कुम्हार। २ सेवक, नौकर।

भरटक (स० पु०) सन्यासि सम्प्रदायविशेष।

भरटिक (स० त्रि०) भरटेन हरति भस्त्रादित्वात् ष्ठन् (पा ४।४।१६) १ भरट द्वारा हरणकारी। स्त्रियां ङीष्। २ भरटिकी।

भरण (स० क्ली०) म्रियतेऽनेनेति भृ करणे ल्युट्। १ वेतन, तनख्वाह। भृ भावे ल्युट्। २ पोषण, पालन। ३ भरणी नक्षत्र। ४ किसीके बदलेमें जो कुछ दिया जाय, भरती।

भरणी (स० स्त्री०) भरण-गौरादित्वात् ङीष्। १ घोषक-लता। २ अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे द्वितीय नक्षत्र। पर्याय—यमदैवत। (हम) इस नक्षत्र का अधिष्ठात्री देवता यम है। इसकी आकृति त्रिकोण है, और तीन कोणोंमें तीन दीप्यमान तारका हैं।

"तारकात्रयमिते त्रिकोणके सम्भवो दिविषदध्वगो यदि।
पङ्कजादिगन्धिना कुलीरतः सायकाग्निभुजसन्मिता कला ॥"
(कालिदासकृत रात्रिलग्नमान)

यह नक्षत्र उग्रगण और अधोमुखगणोंके अन्तर्गत है। शतपदचक्रानुसार नामकरणके स्थानमें इस नक्षत्रमें प्रथमादि चार पदोंमें लि, लू, ले, लो इत्यादि अक्षर होंगे। इस नक्षत्रमें जन्म लेनेसे मेषराशि और शुक्रकी दशा होती है। यह व्यक्ति सर्वदा धान्यादि वस्तुके क्रय विक्रयमें नियुक्त, क्रूरस्वभाव, दीर्घशरीर सम्पन्न, उत्तम गन्धवान्, विदेशवासी और वैरपक्ष विजयी हुआ करता है। (कोष्ठीप्रदीप)

भरणीभू (स० पु०) भरणी भूरुत्पत्तिस्थानं यस्य। राहुग्रह।

भरणीय (स० त्रि०) भृ कर्मणि अनीयर्। भरणपोष्य, पालने पोसनेके लायक।

भरण्ड (स० पु०) बिभर्त्तीति भृ (भृमृदृशि यजि पर्वि पच्यमितमिनमिहर्यिभ्योऽण्डच्। उण् ३।१२८) १ स्वामी, मालिक। २ भूपाल, राजा। ३ वृष, बैल। ४ भू, पृथ्वी। ५ कृमि, कीड़ा।

भरण्य (स० क्ली०) भरणे साधु (तत्र साधु। पा ४।४।९८) इति यत्। १ मूल्य, दाम। २ वेतन, तनख्वाह।

भरण्यभुज् (स० त्रि०) भरण्यं वेतनं भुनक्ति इति भुज् क्विप्। कर्मकर, वह जो मजदूरी ले कर काम करता हो।

भरण्या (स० स्त्री०) भरण्य अजादित्वात् टाप्। वेतन, तनख्वाह।

भरण्याह्वा (स० स्त्री०) भरण्या आह्वा यस्याः। वच पुष्पी, रामदूती।

भरण्यु (स० पु०) कण्ड्वादि गणीय भरण्य धातु बाहुलकात् उण्। १ शरण्यु, मेघ। २ मित्र। ३ अग्नि। ४ इन्द्र। ५ ईश्वर। ६ वृष, बैल।

भरत (स० पु०) बिभर्त्ति स्वाङ्गमिति बिभर्त्ति लोका निति वा (भृ-मृदृशियजीति। उण् ३।११०) इति अतच्। १ नाट्यशास्त्र। २ मुनिविशेष। ये सङ्गीतादि शास्त्रोंके रचयिता थे। भरतस्य शिष्य तस्येदमित्यण्, अणो लुक्। ३ नट। ४ रामचन्द्रजीके छोटे भाई। ५ दुष्मन्तके पुत्र। ६ शबर। ७ तन्तुवायु, जुलाहा। ८ क्षेत्र, खेत। ९ भरतात्मज। दुष्मन्तराजपुत्र भरतके पर्याय - शाकुन्तलेय, दौष्यन्ति, सर्वदमन। १० वह्निपुत्रभेद। ११ मौत्य मनुके एक पुत्रका नाम। १२ आयुध जीविसङ्घभेद। १३। जडभरत।

भरत (स० पु०) कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न राजा दशरथके पुत्र। रामायणके पढ़नेसे मालूम होता है कि

अपुत्रक राजा दशरथने वशिष्ठके परामर्शानुसार पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। लोमपादके पुत्र ऋष्यशृङ्ग इस यज्ञमें अध्वर्यु बने थे। यज्ञ समाप्त होने पर स्वयं अग्निदेवने वह्निकुण्डसे आविर्भूत हो कर दशरथके हाथमें खीर दी, जिसे राजाने अपनी रानियोंमें बांट दिया।

उस खीरको पा कर कौशल्या देवीने रामचन्द्रको, कैकयीने भरतको और सुमित्राने लक्ष्मण और शत्रुघ्नको प्रसव किया। भरतने मीनलग्न और पुष्यानक्षत्रमें तथा लक्ष्मण और शत्रुघ्नने कर्कलग्न और अश्लेषानक्षत्रमें जन्म ग्रहण किया। लक्ष्मणके कनिष्ठ भ्राता शत्रुघ्न भरतके अतिशय प्रिय थे। भरत अपनी ननसारमें रहते थे। कुशध्वजकी कन्या माण्डवीके साथ उनका विवाह हुआ। विवाहके बाद भरत शत्रुघ्नके साथ पुन ननसार चले गये। रामके पितृसत्य पालनार्थ वनवास करने पर पुत्रशोकमें दशरथकी मृत्यु हो गई। उस समय भरतको ननसारमें अत्यंत दु स्वप्न दिखाई दिये, बादमें अयोध्यासे दूत गया और वह भरतको ले आया। भरतने अयोध्या आ कर पिताके और्ध्वदेहिकार्य सम्पन्न किये। कैकयीके आदेशसे राम निर्वासित हुए हैं, सुन कर भरतने माता कैकयीका अत्यन्त तिरस्कार किया। विमातृ तनय होने पर भी ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्रके प्रति उनकी अचला भक्ति थी। उसी प्रगल्भभक्तिके वश ही अपने ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्रको वापस लानेके लिए चित्रकूट पर्वत पर पहुंचे। वहां जटाधारी रामचन्द्रको देख कर वे शोकसे मुह्यमान हो गये और रामचन्द्रसे अयोध्या लौट चलनेके लिए उन्होंने बहुत अनुनय विनय की। रामचन्द्रने सत्यभङ्ग कर लौटना किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं किया। तब भरतने वहांसे रामचन्द्रकी पादुका ला कर ब्रह्मचारीके वेशमें नन्दीग्राममें रह कर राज्यशासन किया था। चौदह वर्ष बाद रामचन्द्रके अयोध्या लौटने पर इन्होंने ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्रको राज्य लौटा दिया।

भरतके तक्ष और पुष्कर नामके दो पुत्र थे। भरतने अपने दोनों पुत्रोंको साथ ले कर सपुत्र गन्धर्वराज शैलूषसे युद्ध कर सिन्धुनदके उत्तरस्थित गन्धर्वदेश जय किया और उस प्रदेशको दो भागोंमें विभक्त कर अपने दोनों पुत्रोंको बांट दिया। पुत्रोंने तक्षशिला और पुष्करावती नामक दो नगर स्थापित किये और वहीं रहने लगे। पीछे भरतने रामचन्द्रके साथ स्वर्गारोहण किया। रामचन्द्र देखो। (रामायण, विष्णुपु०, भाग०)

जैनमतानुसार भरत जैनधर्मके परमभक्त थे और जीवनके शेषभागमें उन्होंने दिगम्बरी दीक्षा ग्रहण की थी। भरत और रामचन्द्रके मोक्षकालमें बहुत अन्तर है।

२ ऋषभदेवके पुत्र। भागवतमें लिखा है कि ये विष्णुभक्ति परायण थे। राजा हो कर इन्होंने विश्वरूपात्मजा पञ्चजनाके साथ विवाह किया था। उनके गर्भसे सुमति, राष्ट्रभृत, सुदर्शन, आवरण और धूम्रकेतु नामक पांच पुत्र उत्पन्न हुए थे। राजाने पुत्रोंको राज्य बांट कर स्वयं तपस्या धारण की थी। एक दिन ये नदीके तट पर स्नान करनेके बाद सन्ध्या-वन्दनादि कर रहे थे, कि इतनेमें वहां एक आसन्नप्रसवा हरिणी आ कर जलपान करने लगी। मृगीको देख कर नदी तटवर्त्ती अरण्यस्थित सिंह गर्जन करने लगा। सिंहकी गर्जना सुन कर मृगी वहांसे भागी और भय एवं शीघ्रताके कारण फिसल कर गिर पड़ी, जिससे उसकी उसी क्षण मृत्यु हो गई और गर्भभ्रष्ट हो गया। भरत उस मृगशिशुको अपने आश्रममें ले आये और उसे पालने लगे। मायाका कैसा आश्चर्य प्रभाव है। नि सङ्ग तापस भी मृगके मोहमें क्रमश तपको भूल गये और मृगकी चिंता करते करते मृत्युको प्राप्त हुए। दूसरे जन्ममें वे मृग हुए, किंतु भगवत् प्रसादसे जातिस्मरण हो जानेसे कालञ्जर पर्वत पर पुलहाश्रममें देह त्याग किया। जन्मान्तरमें वे आङ्गिरसगोत्र और ब्राह्मकुलमें उत्पन्न हुए थे। उस जन्ममें उनके ६ वैमात्रेय अग्रज और एक सहोदरा भगिनी थी। ये लोकसङ्गविवर्जित रहनेके अभिप्रायसे जड़वत् रहते थे। कालान्तरमें इनके मातापिताकी मृत्यु हुई। इनके साथ किसीका कैसा ही व्यवहार क्यों न हो, ये उस पर ध्यान नहीं देते थे। इनकी भौजाइयां इनका बहुत अनादर करती थीं। यहां तक कि अखाद्य तक खिला देती थीं। अंतमें उनके ज्येष्ठ भ्राताने अपनी स्त्रीके कहे अनुसार उन्हें खेत रखानेका काम सौंप दिया।

एक दिन चौरराजने पुत्रकी कामनासे नरपशुबलि देने का सङ्कल्प किया। बलि देनेके लिए जिस मनुष्यको लाया गया था वह भाग गया, जिससे उनके अनुचर जड़रूपी भरतको पकड़ लाये। देवी भद्रकाली इस बातसे अत्यन्त कुपित हुईं और उन्होंने चौर दलका ध्वंस कर डाला। एक दिन सिन्धु सौवीरोंके राजा रहूगण इक्षुमती के किनारे उपस्थित हुए। उनके शिविकावाहकोंमेंसे एक बीमार पड़ गया, इससे उन्होंने भरतको हृष्टपुष्ट देख कर उन्हें ही उस कार्यमें नियुक्त कर दिया। भरत शिविका वहनके समय, पैरोंके नीचे दब कर कहीं जाव न मर जाय इस ख्यालसे बहुत ही सावधानीसे चलने लगे और बीच बीचमें सामने आये हुए जीवोंको हाथसे हटाने लगे। यह देख कर राजाने उनका उपहास किया। राजाके उपहास पर कुछ ध्यान न दे कर उन्होंने उन्हें तत्त्वोपदेश दिया। राजाने उनके प्रति परमभक्तिमान हो कर उन्हें छोड़ दिया। इसके बाद वे देश पर्यटनके लिए निकले थे और कुछ दिन बाद मुक्ति प्राप्त की थी। (भाग० )

जड़भरत देखो।

३ जैनमतानुसार आदि तीर्थङ्कर ऋषभनाथ भगवान् के पुत्र। ये छ खण्डके अधिपति चक्रवर्त्ती थे। संसार-से परम विरक्त रहते थे। भरतचक्रवर्त्ती देखो।

४ शकुन्तलाके गर्भसे उत्पन्न दुष्मन्तके पुत्र। महा भारतमें लिखा है कि,—चन्द्रवंशीय महाराजा दुष्मन्तने कण्वाश्रममें शकुन्तलाके साथ गन्धर्व विवाह किया था। उस समय शकुन्तला गर्भवती हुई थीं। उस गर्भसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। महर्षि कण्वने इस बालकका सर्वदमन नाम रख कर शकुन्तलाके साथ उसे राजा दुष्मन्तके पास भेज दिया। शकुन्तलाने राजाके समक्ष सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया, पर राजाको विस्मृतिवश कोई भी बात याद नहीं आई। उन्होंने पुत्रसहित शकुन्तलाको वापस कर दिया। उस समय वहां यह दैववाणी हुई, "राजन्! शकुन्तलाने जो कुछ कहा है वह सत्य है, आप हमारे कहे अनुसार इस बालकका भरणपोषण करें।" इस भरणपोषणसे बालकका नाम भरत पड़ गया। महाराजा दुष्मन्तने फिर पत्नी और पुत्रको ग्रहण कर प्रियतम भरतको यौवराज्यसे अभिषिक्त किया। राजा भरत समस्त राजाओंको परास्त कर सार्वभौम राजा हुए। इन्होंने यमुना-तीर पर एक सौ, सरस्वती तीर पर तीन सौ और गङ्गातीर पर चार सौ अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान किया। पश्चात् पुनः सहस्र अश्वमेध और सौ राजसूययज्ञ सम्पन्न कर अग्निष्टोम, अतिरात्र, उक्थ्य, विश्वजित् और हजारों वाजपेय यज्ञ सम्पन्न किये थे। उनके नामसे भारतवर्षका नामकरण हुआ था। यह भारतीकीर्ति भरतसे ही हुई है भरतका वंशधर गण भारत नामसे प्रसिद्ध हुए थे। ये भगवान् विष्णुके अंशमें आविर्भूत हुए थे। विदर्भराजकी तीन कन्याओं-के साथ उनका विवाह हुआ था इन्होंने बृहस्पतिके तनय भरद्वाजका पालन किया था।

( भारत १।७३ अ०, विष्णुपु०, भाग० )

भरत—मेवाड़के एक राजा। मेवाड़के राजा समरसिंहके भ्राता सूर्यमल्लके पुत्र। समरसिंहकी मृत्यु होने पर उन के पुत्र कर्ण पितृ सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। कर्णके सिंहासन पर बैठने पर भरत शत्रुके षड्यन्त्रमें पड़ कर चित्तोर छोड़ सिन्धुदेशको चले गये। वहां पहुंचनेके कुछ दिन बाद ही उन्हें मुसलमान राजासे आरोर नगर प्राप्त हुआ। इन्होंने पुगलको भट्टिवंशीय किसी राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण किया था। उसी स्त्रीके गर्भसे राहुप नामक उनके एक पुत्र हुआ था, जो ननसालमें रहता था।

इधर राजा कर्ण प्रियतम भ्राता भरतके देशान्तर चले जाने और पुत्र माहुपकी अयोग्यताको विचारते हुए बड़े कष्टसे कालयापन करने लगे और थोड़े ही समय बाद उनका देहान्त हो गया।

झालोरके शणिगुरु वंशाय सरदारने कर्णकी कन्या का पाणिग्रहण किया था। उस कन्याके गर्भसे रणधवल नामक एक पुत्र हुआ। झालोर पतिने जघन्य विश्वास घातकता करके चित्तोरके प्रधान गिहलोटोंको मार कर वहांके सिंहासन पर अपने पुत्र रणधवलको बिठा दिया। कर्णके पुत्र माहुप अपने स्वत्वाधिकारकी रक्षामें सर्वथा असमर्थ थे। पिताका राज्य अन्य व्यक्तियों द्वारा अधिकृत हुआ, परन्तु फिर भी उन्होंने उसके उद्धारार्थ कुछ भी कोशिश नहीं की। बप्पाका सिंहासन चौहान कुलके हस्त

गत हो गया, बप्पाका कीर्त्तिस्तम्भ उन्मूलितप्राय हो चुका, आश्चर्य नहीं कि कुछ दिनोंमें चित्तोरसे बप्पा रावलका नाम तक मिट जाय, यह चिन्ता एक उन्नतमना कुलपाठकाचार्य (राजभाट) के हृदयमें समुत्थित हुई। उन्होंने इस अनिष्टपातके प्रतिविधानके लिए भरतके पास जा कर उन्हें सारा वृत्तान्त कह सुनाया। अपने पूर्वपुरुषोंके प्रनष्ट राज्य और गौरवके उद्धारके लिए भरत सिंधुदेशीय सेनादलके साथ मेवाडराज्यकी तरफ अग्रसर हुए। चित्तोरेश्वरके अधोनस्थ समस्त सरदारगण इस शुभ समाचारको सुन कर बड़े आनन्दके साथ अपने उद्धारकर्त्ताकी प्रोड्डीन पताकाके नीचे आ इकट्ठे हुए। पल्ली नामके स्थानमें प्रतिद्वन्द्वी शणिगुहय शौर्योको युद्धमें पराजित कर भरतने सिंहासन अधिकार किया।

इस घटनाके कुछ दिन बाद भरतके पुत्र राहुप चित्तोरके सिंहासन पर अधिष्ठित हुए। राज्याभिषिक्त होनेके कुछ ही दिन बाद नागौर नामक स्थानमें यवनसेनापति समसुद्दीनके साथ उनका युद्ध हुआ, जिसमें वे पराजित हो गये। राहुपके राजत्वकालमें उनके राज्यमें दो प्रधान घटनाएं हुई थीं। इससे पहले, मेवाडके राजपूतगण गिह्लोट कहलाते थे, परन्तु अबसे वे इस नामके बदले सिसोदिया नामसे प्रसिद्ध हुए। इसके सिवा बप्पाके वंशधरोंकी उपाधि 'रावल' के बदले "राणा" प्रचलित हुई।

राहुपने अत्यन्त दक्षताके साथ ३८ वर्ष तक अपने राज्यका शासन किया था। राहुप देखो।

भरत—एक टीकाकार। इन्होंने अपने ज्येष्ठ रामचन्द्र कृत समरसार और समरसार-संग्रह ग्रन्थकी टीकाएं लिखी हैं।

भरत (हिं० स्त्री०) मालगुजारी। इस शब्दका प्रयोग दोआबवासी करते हैं।

भरतआचार्य—एक सङ्गीताचार्य। इन्होंने नाट्यशास्त्र या भरतशास्त्र और सङ्गीतनृत्याकर नामके दो ग्रन्थ रचे हैं।

भरतखण्ड (सं० क्ली०) १ भारतवर्षके अन्तर्गत कुमारिका खण्ड। २ राजा भरतके लिए हुए पृथ्वीके नौ खण्डोंमेंसे एक खण्ड, भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

भरतगढ़—बम्बई प्रदेशके रत्नगिरि जिलेका एक गिरिदुर्ग। यह वाल्वलि खाडाके दक्षिणी किनारे अवस्थित है। इस दुर्गके शिखर पर खड़ा होनेसे मसूरका मालवन ग्राम दृष्टिगोचर होता है। गढ़के चारों ओर जो प्राकार है वह १८ फुट ऊंचा और ५ फुट मोटा है। उसके उत्तर पूर्व और दक्षिण पश्चिम कोणमें दो बुर्ज हैं। एतद्भिन्न गढ़के वहि प्राचीरके ऊपर प्राय १२ अर्द्धगोलाकार बुर्ज देखनेमें आता है। यह प्राचीर भी चौड़ाईमें १२ फुट है। प्राचीरके सामनेमें एक बहुत लम्बी चौड़ी खाइ है।

भरतद्वादशाह (सं० पु०) भरत कृत द्वादशाहसाध्य यज्ञभेद। कात्यायन श्रौतसूत्रमें इस यज्ञका विधान विशेष रूपसे लिखा है। इस यज्ञमें सभी प्रकारके अग्निष्टोम करने होते हैं।

"सर्वाग्निष्टोम भरतद्वादशाह" (कात्या० श्रौ० २४।७।१२)

भरतपक्षी—स्वनाम प्रसिद्ध पक्षि जाति विशेष (Alauda gulgula)। विज्ञानविदोंने इस जातिको (Alaudidæ) श्रेणीमें शामिल किया है। साधारणतः धानके खेतोंमें इस जातिके पक्षी विचरण करते हैं। कृषकोंसे भगाये जाने पर यह जितना ही ऊंचा ऊपर उठता है उतना ही उसकी सुमधुर कलध्वनि मानवके श्रुतिगोचर होती है। यह गीतध्वनि मानव हृदयको मोहित कर डालती है।

इङ्गलैण्डमें इस जातिके पक्षीको Sky Lark (Alauda arvensis), फ्रान्समें *Alouette*, इटलीमें Lodola, जर्मनीमें Feld Lerche, स्काटलैंडमें—*Laverock*, पश्चिम भारतमें—भरत, भरुत, बंगालमें भरई, तैलङ्गमें बयतपिट्ट, तामिलमें मनप वडि, ब्रह्ममें बिलोन और सिंहलमें गोमरिट कहते हैं। सारे भारत साम्राज्य, सिंहल, अन्दमन और निकोबर द्वीप, हिमालय पर्वत और यूरोपमें जगह जगह इस जातिके पक्षी देखनेमें आते हैं। स्थान विशेषमें उनके शरीरका रंग भी पलट जाता है।

भारतमें सब जगह वैशाखसे आषाढ़ मासमें और ब्रह्ममें पौषसे चैत्रमासमें मादा एक बारमें प्रायः ४ या ५ अंडे देती है। इस समय ये मट्टीके ऊपर घासके घोंसले बनाती हैं। इङ्गलैण्डके भी A. arvensis पक्षियोंके अंडे पीलापन लिये सफेद और धूसर विन्दुयुक्त होते हैं।

ये सब दल बांध कर रहना पसन्द करते हैं। युरोपीय 'स्टार्-लार्'में जो सब गुण पाये जाते हैं, भारतके भरतपक्षीमें उन सब गुणोंका अभाव नहीं है। शीतकालमें धानके खेतोंमें ये अकसर पाये जाते हैं। ये अनाजके बन और कीड़े मकोड़ेको खाना बहुत पसन्द करते हैं।

भरतपुत्रक (सं० पु०) भरतस्य नाट्यशास्त्रप्रणेतुः पुत्रकः। भारतमें नाट्य करनेवाला पुरुष, नट।

भरतपुर—राजपुतानेके अन्तर्गत एक हिंदूराज्य। यह अक्षा० २६ ४३´ से २७ ५०´ उ० और देशा० ७६ ५३ से ७७ ४६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १९८२ वर्गमील है। इसके उत्तरमें अङ्गरेजाधिकृत गुड़गांव जिला, पूर्वमें मथुरा और आगरा, दक्षिणमें धौलपुर, करौली और जयपुरराज्य तथा पश्चिममें अलवारप्रदेश है।

समुद्रपृष्ठसे इस स्थानकी ऊंचाई प्रायः ६०० फुट है सब जगह प्रायः समतल है, केवल उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सीमान्तदेशमें गण्डमालाके विराजित रहनेसे देशका प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बन आता है। सारा स्थान पलिमय होने पर भी यहां वनमालाका अभाव नहीं है। यह पलिमय मट्टी कठिन और रूखी है तथा कहीं कहीं मरुभूमि सदृश बालुकाराशिसे परिपूर्ण है। देशीय अधिवासियोंके यत्नसे ऐसे स्थानमें भी प्रचुर शस्यादि उत्पन्न होता है। वृष्टिके समय बाढ़ इतनी उमड़ आती है, कि आस पासके निम्नतम स्थान जलमग्न हो जाते हैं।

भरतपुर, फिरोजपुर, कलवार, गोपालगढ़ और पहाड़ी आदि स्थानोंके निकटवर्ती उत्तर दक्षिणमें विस्तृत गिरिमालाके कई एक शृङ्ग बहुत उन्नत हैं। कालापहाड़ नामक पर्वतका आलिपुर शिखर (१३५१ फुट) भरतपुरमें सबसे ऊंचा है। अलावा इसके अलारका छपरा १२०० फुट, दमदमा १२१५, रमिया १०५६, मथोना ७१४ और उपेराशृङ्ग ८१७ फुट ऊंचा है। उपेरामें बंधी पहाड़पुरका विख्यात पत्थर अवस्थित है।

यहांके पर्वतों पर गृहनिर्माणयोग्य पत्थरके अलावा अन्य कोई भी मूल्यवान पत्थर नहीं है। मुगलबादशाहोंके आगरा, दिल्ली और फतेपुर सिकरीके कीर्त्तिस्तम्भ तथा मथुरा, दीग और भरतपुरकी अट्टालिकादि यहांके सगृहीत प्रस्तर स्तम्भसे बनाई गई है।

इस राज्यमें ऐसी एक भी नदी नहीं जिसमें नाव आ जा सके। बाणगङ्गा या उतङ्गन, रूपरेल, गम्भीरा और काकन्द नामक नदी प्रधान हैं। जब कभी इन नदियोंमें बाढ़ आ जाती है, उस समय भी पैदल पार कर सकते हैं। बाणगङ्गानदी भरतपुरके मध्य हो कर बह गई है। इस राज्यमें ७ शहर और १२६५ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े छः लाखके करीब है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ८१ हिंदू १८ मुसलमान और शेषमें अन्यान्य जातियां हैं। यहांकी भाषा ब्रज है।

इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि यहां एक समय जाट लोगोंने अपना आधिपत्य फैलाया था। किन्तु यथार्थमें किस समयसे उन्होंने यहांका शासनदण्ड धारण किया था इसका कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता। फिरिस्तामें लिखा है, कि गजनीपति महमूदके १०२६ ई०में गुजरातसे लौटते समय जाट दलने उन पर चढ़ाई कर दी। १३९७ ई०में दिल्ली आक्रमणकालमें तैमूरलङ्गने जाटदस्युगणके साथ युद्ध किया। इस युद्धमें जाट लोग दलबल समेत मारे गये। १५९६ ई०में जाट लोगोंने मुगल सम्राट् बाबरको पञ्जाबप्रदेशमें तंग तंग कर दिया। जाट सरदारोंके ऐसे उपद्रवसे उत्यक्त हो कर मुगल सम्राटने कठोर शासनसे उन्हें दमन किया था। किंतु औरङ्गजेबकी मृत्युके बाद जब राज्यमें विप्लव खड़ा हुआ, तब जाट लोगोंने पुनः अपना मस्तक उठाया। इस समय जाट सरदार चूड़ामनने मुगल सम्राट् आलमगीरके दाक्षिणात्यगामी सेनादलको लूट कर मोटी रकम इकट्ठी की। उस रकमसे वे थुन, सिनसिनियार और भरतपुरमें दुर्ग बना कर दलबल समेत आत्मरक्षा करनेको प्रस्तुत हुए। उनकी इस प्रकारकी वीरता पर प्रसन्न हो कर जाट लोगोंने उन्हें दलपति बनाया। उनके वंशधरोंने राजाकी उपाधिसे भूषित हो भरतपुर राज्यका शासन किया था।

चूड़ामनके भाई बदनसिंहकी प्ररोचनासे जाटदलने चूड़ामनका प्रभुत्व त्याग दिया। उन लोगोंकी सहायतासे बदनसिंहने 'ठाकुर'-की उपाधि ग्रहण कर डीग नगरमें स्वतन्त्र राजपाट जमाया। १७२० ई०में सम्राट् महम्मद शाह और कुतब उल मुल्क सैयद अब्दुल्ला खांके युद्धमें चूड़ामन मारे गये। पीछे उनके लड़के बदनसिंह भरतपुरके सिंहासन पर बैठे।

बदनसिंहके पुत्र सूर्यमल्लके राजत्वकालमें भरतपुरका वीरत्व गौरव चारों ओर फैल गया था। सूर्यमल्लने जयपुर राज्यकी सहायतासे दीगराज्य पर अधिकार जमाया था।

१७३० ई०से भरतपुर दुर्गकी दुर्भेद्यता और जाट सैनिकोंकी वीरत्व काहिनी विघोषित होती आ रही है। १७५४ ई०में सूर्यमल्लने अकेले वजीर गाजीउद्दीन, महाराष्ट्र और जयपुरराजकी सेनावाहिनीकी सम्मिलित शक्तिको परास्त किया था। इस युद्धमें फिरसे जब उन्होंने अपने अधिक बलक्षयकी सम्भावना देखी, तब ७ लाख रुपये दे कर मेल कर लिया। इसके ६ वर्ष बाद उन्होंने महाराष्ट्र सेनापति शिवदास भावके साथ मिल कर अहमद शाह दुराणीके विरुद्ध कूच किया। किन्तु महाराष्ट्र सेनापतिकी अवाध्यता और सेनापरिचालन शक्तिकी अक्षमण्यता देख कर वे लौट आनेको बाध्य हुए*।

इधर पानीपतकी लड़ाईमें जब सभी उलझे हुए थे, उसी समय सूर्यमल्लने आगरेको अधिकार कर लिया, किन्तु उनके भाग्यमें इस सुख-राज्यका भोग अधिक दिन न बदा था। १७६३ ई०में वे आक्रान्त और निहत हुए। उनके पांच पुत्रोंमेंसे तीनने यथाक्रम भरतपुरके सिंहासनको सुशोभित किया। ३य पुत्र नवालसिंहके राजत्वकालमें उनके भतीजे रणजित्सिंह बागी हो गये। रणजित्के मुगलसेनापति नजफ खाँसे मदद मांगने पर, नजफने जा कर आगरे पर अधिकार कर लिया। उन्हें रोहिला विद्रोह दमनमें जाना था, इस कारण बेशी दिन ठहर न सके। नवालसिंहने भी मौका पा कर शत्रु नजफ खाँके राज्य पर चढ़ाई कर दी। नजफको इसकी खबर लगते ही वे आगबबूला हो गये और रणजित्सिंहको साथ ले भरतपुर राज्य पर टूट पड़े। भरतपुर उनके हाथ लगा, साथ साथ नगद रुपये भी काफी मिले। भरतपुर दुर्ग और ६ लाखकी सम्पत्ति रणजित्को मिली और बाकी सभी स्थान नजफने अपना लिये। नजफकी मृत्युके बाद सिन्दराजने इस राज्यको फतह किया। उन्होंने रणजित्की वयोवृद्ध माताके प्रार्थनानुसार उक्त सम्पत्ति पुनः उसे लौटा दी। अंगरेज सेनापति पेरों (General Perron)की मदद पहुंचानेके कारण अङ्गरेजराजने पारितोषिक स्वरूप उन्हें तीन परगने दान दिये।

उत्तर भारतके मध्य एकमात्र रणजित्सिंह ही एक ऐसे थे जिन्होंने अङ्गरेजोंके साथ मित्रता की थी। लासवारीके युद्धमें सिन्दे राजके साथ अङ्गरेजोंकी जो तलवार चली थी उसमें रणजित् अश्वारोही सेनादलने लार्ड लेकको विशेष सहायता पहुंचाई थी। अङ्गरेज-राज महाराष्ट्र युद्धके प्रारम्भ (१८०३ ई०) में कृतज्ञता स्वरूप उन्हें सात लाख रुपये रानस्वके पांच जिले दिये थे, किन्तु होलकर-राजके साथ अङ्गरेजोंका जो युद्ध हुआ था उसमें सहायताकी बात तो दूर रहे, वरन् उनसे शत्रुता ही की थी। होलकर सेनादलके लड़ाईमें पीठ दिखाने पर अङ्गरेजी सेनाने उनका पीछा किया। इस समय दीग दुर्गमें रह कर उनकी सेना अङ्गरेजों पर गोला बरसाने लगी। भरतपुर राजके ऐसे आचरणसे विरक्त हो लार्ड लेक दीगको अधिकार कर भरतपुरकी ओर बढ़े। यहां उन्होंने जाट लोगों पर लगातार चार बार आक्रमण कर दिया, किन्तु जाटसेनाका एक बाल भी बाँका न हुआ। उस दुर्द्धर्ष सेनादलके सामने ठहर कर अङ्गरेजी सेनाको नगर प्राचीर भेदनेका साहस न हुआ। इस युद्धमें अङ्गरेजसेनापति पराजित और विशेष क्षतिग्रस्त हुए। इस समय कालूघोष नामक किसी बंगाली कायस्थने अङ्गरेजोंकी ओरसे लड़ कर विशेष वीरताका परिचय दिया था। कालुघाट देखो।

राजाकी जीत तो हुई, पर अंगरेजोंका डर उनके हृदयसे दूर नहीं हुआ था। अब दोनोंमें शान्ति स्थापनके लिये सन्धिकी बात छिड़ी। रणजित्सिंहने लड़ाईके क्षतिपूरण स्वरूप अंगरेजोंके हाथ दीगदुर्गको समर्पण किया।

१८०५ ई०में रणजित्की मृत्यु हुई। उनके बड़े लड़के रणधीरने १८ वर्ष और पीछे मझले बल्देवसिंहने १८ मास राज्य किया। बल्देवकी मृत्युके बाद उनके लड़के

* सौभाग्य वश उन्होंने लौट कर दुराणीके हाथसे रक्षा पाई थी, नहीं तो पानीपतकी लड़ाईमें महाराष्ट्र-सेनाके शिकार बन जाते।

ये सब दल बाँध कर रहना पसन्द करते हैं। यूरोपीय 'स्काई-लार्क'में जो सब गुण पाये जाते हैं, भारतके भरतपक्षीमें उन सब गुणोंका अभाव नहीं है। शीतकालमें धानके खेतोंमें ये अकसर पाये जाते हैं। ये अनाजके कन और कीड़े मकोड़ेको खाना बहुत पसन्द करते हैं।

भरतपुत्रक (स० पु०) भरतस्य नाट्यशास्त्रप्रणेतुः पुत्रक। नाटकमें नाट्य करनेवाला पुरुष, नट।

भरतपुर—राजपुतानेके अन्तर्गत एक हिंदूराज्य। यह अक्षा० २६ ४३´ से २७ ५०´ उ० और देशा० ७° ५३ से ७७ ४६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १९४२ वर्गमील है। इसके उत्तरमें अङ्गरेजाधिकृत गुरुगाँव जिला, पूर्वमें मथुरा और आगरा, दक्षिणमें ढोलपुर, करौली और जयपुरराज्य तथा पश्चिममें अलवारप्रदेश है।

समुद्रपृष्ठसे इस स्थानकी ऊँचाई प्रायः ६०० फुट है सब जगह प्रायः समतल है, केवल उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सीमान्तदेशमें गण्डमालाके विराजित रहनेसे देशका प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बन आता है। सारा स्थान पलिमय होने पर भी यहाँ वनमालाका अभाव नहीं है। यह पलिमय मट्टी कठिन और सूखी है तथा कहीं कहीं मरुभूमि सदृश बालुकाराशिसे परिपूर्ण है। देशीय अधिवासियोंके यत्नसे ऐसे स्थानमें भी प्रचुर शस्यादि उत्पन्न होता है। वृष्टिके समय बाढ़ इतनी उमड़ आती है, कि आस पासके निम्नतम स्थान जलमग्न हो जाते हैं।

भरतपुर, फिरोजपुर, कलवार, गोपालगढ़ और पहाड़ी आदि स्थानोंके निकटवर्ती उत्तर दक्षिणमें विस्तृत गिरिमालाके कई एक शृङ्ग बहुत उन्नत हैं। कालापहाड़ नामक पर्वतका आलिपुर शिखर (१३५१ फुट) भरतपुरमें सबसे ऊँचा है। अलावा इसके अलवारका छपरा १२०० फुट, दमदमा १२१५, रसिया १०५६, मघोना ७१४ और उपेराशृङ्ग ८१७ फुट ऊँचा है। उपेरामें घशी पहाड़पुरका विख्यात पत्थर अवस्थित है।

यहाँके पर्वतों पर गृहनिर्माणयोग्य पत्थरके अलावा अन्य कोई भी मूल्यवान् पत्थर नहीं है। मुगलबादशाहोंके आगरा, दिल्ली और फतेपुर-सिकरीके कीर्त्तिस्तम्भ तथा मथुरा, दीग और भरतपुरको अट्टालिकादि यहाँके संगृहीत प्रस्तर स्तबकसे बनाई गई हैं।

इस राज्यमें ऐसी एक भी नदी नहीं जिसमें नाव आ जा सके। बाणगङ्गा वा उत्तङ्गन, रूपरेल, गम्भीरा और काकन्द नामक नदी प्रधान हैं। जब कभी इन नदियोंमें बाढ़ आ जाती है, उस समय भी पैदल पार कर सकते हैं। बाणगङ्गानदी भरतपुरके मध्य हो कर बह गई है। इस राज्यमें ७ शहर और १२१५ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या साढ़े छः लाखके करीब है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ८१ हिंदू १८ मुसलमान और शेषमें अन्यान्य जातियाँ हैं। यहाँकी भाषा व्रज है।

इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि यहाँ एक समय जाट लोगोंने अपना आधिपत्य फैलाया था। किन्तु यथार्थमें किस समयसे उन्होंने यहाँका शासनदण्ड धारण किया था इसका कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता। फिरिस्तामें लिखा है, कि गजनीपति महमूदके १०२६ ई०में गुजरातसे लौटते समय जाट दलने उन पर चढ़ाई कर दी। १३९७ ई०में दिल्ली आक्रमणकालमें तैमूरलङ्गने जाटदस्युगणके साथ युद्ध किया। इस युद्धमें जाट लोग दल-बल समेत मारे गये। १५९६ ई०में जाट लोगोंने मुगल सम्राट् बाबरको पञ्जाबप्रदेशमें तंग तंग कर दिया। जाट सरदारोंके ऐसे उपद्रवसे उत्यक्त हो कर मुगल सम्राटने कठोर शासनसे उन्हें दमन किया था। किंतु औरङ्गजेबकी मृत्युके बाद जब राज्यमें विप्लव खड़ा हुआ, तब जाट लोगोंने पुनः अपना मस्तक उठाया। इस समय जाट सरदार चूड़ामनने मुगल सम्राट् आलमगीरके दाक्षिणात्यगामी सेनादलको लूट कर मोटी रकम इकट्ठी की। उस रकमसे ये थुन, सिनसिनिवार और भरतपुरमें दुर्ग बना कर दलबल समेत आत्मरक्षा करनेको प्रस्तुत हुए। उनकी इस प्रकारकी वीरता पर प्रसन्न हो कर जाट लोगोंने उन्हें दलपति बनाया। उनके वंशधरोंने राजाकी उपाधिसे भूषित हो भरतपुर राज्यका शासन किया था।

चूड़ामनके भाई बदनसिंहको प्ररोचनासे जाटदलने चूड़ामनका प्रभुत्व त्याग दिया। उन लोगोंकी सहायतासे बदनसिंहने 'ठाकुर'-की उपाधि ग्रहण कर दीग नगरमें स्वतन्त्र राजपाट बसाया। १७२० ई०में सम्राट् महम्मद शाह और कुतब उल मुल्क सैयद अबदुल्ला खाँके युद्धमें चूड़ामन मारे गये। पीछे उनके लड़के बदनसिंह भरतपुरके सिंहासन पर बैठे।

बदनसिंहके पुत्र सूर्यमल्लके राजत्वकालमें भरतपुरका वीरत्व गौरव चारों ओर फैल गया था। सूर्यमल्लने जयपुर राज्यकी सहायतासे दीगराज्य पर अधिकार जमाया था।

१७३० ई०से भरतपुर दुर्गकी दुर्भेद्यता और जाट सैनिकोंकी वीरत्व-कहानी विघोषित होती आ रही है। १७५४ ई०में सूर्यमल्लने अकेले वजीर गाजीउद्दीन, महाराष्ट्र और जयपुरराजकी सेनावाहिनीको एकत्रित शक्तिको परास्त किया था। इस युद्धमें फिरसे जब उन्होंने अपने अधिक बलक्षयकी सम्भावना देखी, तब ७ लाख रुपये दे कर मेल कर लिया। इसके ६ वर्ष बाद उन्होंने महाराष्ट्र सेनापति शिवदास भावके साथ मिल कर अहमद शाह दुराणीके विरुद्ध कूच किया। किन्तु महाराष्ट्र सेनापतिकी अवाध्यता और सेनापरिचालन शक्तिकी अकर्मण्यता देख कर वे लौट जानेको वाध्य हुए*।

इधर पानीपतको लड़ाईमें जब सभी उलझे हुए थे, उसी समय सूर्यमल्लने आगरेको अधिकार कर लिया, किन्तु उनके भाग्यमें इस क्षुद्र राज्यका भोग अधिक दिन न बदा था। १७६३ ई०में वे आक्रान्त और निहत हुए। उनके पांच पुत्रोंमेंसे तीनने यथाक्रम भरतपुरके सिंहासनको सुशोभित किया। ४थ पुत्र नवालसिंहके राजत्वकालमेंउनके भतीजे रणजित्सिंह वागी हो गये। रणजित्के मुगलसेनापति नजफ खाँसे मदद मांगने पर, नजफने आ कर आगरे पर अधिकार कर लिया। उन्हें रोहिला विद्रोह दमनमें जाना था, इस कारण बेशी दिन ठहर न सके। नवालसिंहने भी मौका पा कर शत्रु नजफ खाँके राज्य पर चढ़ाई कर दी। नजफको इसकी खबर लगते ही वे आगबबूला हो गये और रणजित्सिंहको साथ ले भरतपुर राज्य पर टूट पड़े। भरतपुर उनके हाथ लगा, साथ साथ नगद रुपये भी काफी मिले। भरतपुर दुर्ग और ६ लाखकी सम्पत्ति रणजित्को मिली और बाकी सभी स्थान नजफने अपना लिये। नजफकी मृत्युके बाद सिन्द्राजने इस राज्यको फतह किया। उन्होंने रणजित्की वयोवृद्ध माताके प्रार्थनानुसार उक्त सम्पत्ति पुनः उसे लौटा दी। अंगरेज सेनापति पेरों (General Perron)को मदद पहुंचानेके कारण अङ्गरेजराजने पारितोषिक स्वरूप उन्हें तीन परगने दान दिये।

उत्तर भारतके मध्य एकमात्र रणजित्सिंह ही एक ऐसे थे जिन्होंने अङ्गरेजोंके साथ मित्रता की थी। लासवारीके युद्धमें सिन्द्राजके साथ अङ्गरेजोंकी जो तलवार चली थी उसमें रणजित् अश्वारोही सेनादलने लार्ड लेकको विशेष सहायता पहुंचाई थी। अङ्गरेजराज महाराष्ट्र युद्धके प्रारम्भ (१८०३ ई०) में कृतज्ञता स्वरूप उन्हें सात लाख रुपये राजस्वके पांच जिले दिये थे, किन्तु होलकर-राजके साथ अङ्गरेजोंका जो युद्ध हुआ था उसमें सहायताकी बात तो दूर रहे, वरन् उनसे शत्रुता हो की थी। होलकर सेनादलके लड़ाईमें पीठ दिखाने पर अङ्गरेजी सेनाने उनका पीछा किया। इस समय दीग दुर्गमें रह कर उनकी सेना अङ्गरेजों पर गोला बरसाने लगी। भरतपुर राजके ऐसे आचरणसे विरक्त हो लार्ड लेक दीगको अधिकार कर भरतपुरको ओर बढ़े। यहां उन्होंने जाट लोगों पर लगातार चार बार आक्रमण कर दिया, किन्तु जाटसेनाका एक बाल भी बाँका न हुआ। उस दुर्द्धर्ष सेनादलके सामने ठहर कर अङ्गरेजी सेनाको नगर प्राचीर भेदनेका साहस न हुआ। इस युद्धमें अङ्गरेजसेनापति पराजित और विशेष क्षतिग्रस्त हुए। इस समय कालूगोप नामक किसी वंगाली कायस्थने अङ्गरेजोंकी ओरसे लड़ कर विशेष वीरताका परिचय दिया था। कालुपाप देखो।

राजाकी जीत तो हुई, पर अंगरेजोंका डर उनके हृदयसे दूर नहीं हुआ था। अब दोनोंमें शान्ति स्थापनके लिये सन्धिकी बात छिड़ी। रणजित्सिंहने लड़ाईके क्षतिपूरण स्वरूप अंगरेजोंके हाथ दीगदुर्गको समर्पण किया।

१८०५ ई०में रणजित्की मृत्यु हुई। उनके बड़े लड़के रणधीरने १८ वर्ष और पीछे मझले वल्देवसिंहने मास राज्य किया। वल्देवकी मृत्युके

* सौभाग्य वशतः उन्होंने लौट कर दुराणीके हाथसे रक्षा पाई थी, नहीं तो पानीपतकी लड़ाईमें महाराष्ट्र-सेनाके शिकार बन जाते।

बल्वन्त सिंहासनके प्रकृत उत्तराधिकारी हुए। किन्तु रणजित्के पौत्र दुर्जनशालने १८२६ ई०में भरतपुर दुर्गको अधिकार कर बलवन्तको कैद रखा। इस अन्याचारको रोकनेके लिये लार्ड कम्बरमियर (Lord Combermere) २५ हजार सेनाके साथ भरतपुरकी ओर दौड़ पड़े। अवरोधके समय जब उन्होंने देखा, कि दुर्गका प्राकार दुर्भेद्य है, तब नीचे सुरंग खोदनेका विचार किया। २३वीं दिसम्बरसे १७वीं जनवरी तक एक सुरंग खोदी गई। १८वीं जनवरीको उसी सुरंगसे जा कर अंगरेजों की सेनाने दुर्गको फतह किया और दुर्जनशाल अंगरेजों के हाथ बन्दी हुए।

अंगरेजोंके अनुग्रहसे बालक बल्वन्तसिंहने पितृपद और मर्यादाको प्राप्त किया और उनकी माता राजकार्यकी परिदर्शक हुई। १८३५ ई०में बालिग हो कर उन्होंने शासनभार अपने हाथ लिया। १८ वर्ष राज्य करनेके बाद ही वे इहलोकसे चल बसे। बादमें उनके पुत्र महाराज यशोवन्त सिंह पितृसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। इस समय उनकी उमर सिर्फ एक वर्षकी थी। इस कारण अंगरेजोंके राजकीय कर्मचारी और ७ सामन्तगण गठित एक सभा द्वारा राजकार्यकी पर्यालोचना होने लगी। १८६१ ई०में बालिग हो कर उन्होंने कुल शासनभार अपने हाथ लिया। १८७७ ई०में उन्हें जी सी एस आई की उपाधि मिली और सलामी तोपें १७ से बढ़ा कर १९ कर दी गई। इनके राजत्वकालमें जो सब घटना घटी वह यों हैं—१८७३ ४ ई०में रेल्वे लाइन खोली गई, १८७७ ई०में दुर्भिक्ष पड़ा, नमकका कारबार बंद कर दिया गया, शराब, अफीम तथा अन्य मादक वस्तुको छोड़ कर शेष पण्यद्रव्य परसे महसूल उठा दिया, अश्वारोही और पदाति सेनाकी संख्या बढ़ा दी गई। १८९३ ई०में यशोवन्त सिंह इस धराधामको छोड़ सुरधामको सिधारे। पीछे उनके बड़े लड़के रामसिंह राजतख्त पर बैठे। ये कड़े मिजाजके थे, प्रजा इनसे तंग तंग रहती थी, राज-कार्यकी ओर ध्यान भी कम था। इन सब कारणोंसे १८९५ ई०में इनका अधिकार छीन लिया गया। पीछे दीवान और पालिटिकल एजेण्ट द्वारा राजकार्य चलने लगा। १९०० ई०में रामसिंहने गुस्सेमें आ कर अपने एक नौकरको जानसे मार डाला। इस पर वृटिश सरकारने इन्हें सिंहासन परसे हटा दिया और उनके लड़के किशेनसिंहको राजगद्दी पर बिठाया। इनका जन्म १८९९ ई०में हुआ। ये ही वर्त्तमान महाराजा हैं। इनका पूरा नाम है—एच, एच महाराजा श्रीबृजेन्द्र सवाई किशेन सिंह साहब बहादुर जङ्ग। चूड़ामन जाट कर्त्तृक भरतपुर राज्यकी प्रतिष्ठा होनेके बाद यहां निम्नलिखित राजाओंने शासनदण्ड धारण किया था—

भरतपुरके राजगण।

चूड़ामनजाट—

राजा बदनसिंह—चूड़ामनके पुत्र।
" सूर्यमल्ल—बदनके पुत्र
" जवाहिर सिंह } सूर्यमल्लके पुत्र।
" रावरतन सिंह }
" खड्गसिंह—रतनसिंहके पुत्र।
" नवाल सिंह—सूर्यमल्लके तृतीय पुत्र और रतन के भाई।
" रणजित् सिंह—नवालके भतीजे।
" रणधीर—रणजित्के पुत्र।
" बल्देव—रणधीरके भाई।
" बलवन्त—बलदेवके पुत्र।
महाराज यशोवन्त—बल्वन्तके पुत्र।
राजा रामसिंह—यशोवन्तके ज्येष्ठ पुत्र।
महाराज किशेन सिंह—रामसिंहके पुत्र।
(वर्त्तमान शासनकर्त्ता)

यह जाटराज्य चूड़ामनके पहले ब्रज नामक किसी जाट सरदार द्वारा डीगके अन्तर्गत सिनसिनी ग्राममें बसाया गया था। चूड़ामनिने अपने वीरोचित साहससे लूट पाट द्वारा काफी रकम इकट्ठी कर ली थी। उसी रकमसे उन्होंने एक दुर्ग बनवाया और जाटजाति तथा भरतपुर राज्यकी रक्षा की थी।

यहांके कमान नगरमें श्रीकृष्णकी जो मूर्त्ति है वह हिन्दुओंके निकट पवित्र तीर्थमें गिनी जाती है। कुम्भार नगरके पास भी बल्देव, रोहिणी, युधिष्ठिर, आदि कई महापुरुषोंकी मूर्त्ति विद्यमान है। बयाना तहसीलसे

१ कोस दक्षिण पश्चिममें विजयगढ नामक एक दुर्ग है जहा यौधेय राजवंशकी एक शिलालिपि देखनेमें आती है। रूपेरल नदीके दूसरे किनारे सिकरी नामका जो बांध है वह बहुत पुराना है। कहते हैं कि १८४० ई०में महाराज बलवन्त सिंहने उस बांधको बनवाया था। पीछे उस बांधका हाता और भी बढ़ाया गया जिसमें डेढ़ लाखसे ऊपर रुपये खर्च हुए थे।

वृटिश शासनप्रणालीके अनुसार राजकार्य चलाया जाता है। सबसे निम्नश्रेणीकी अदालत नायब तहसीलदारकी है। ये तृतीय श्रेणीके मजिस्ट्रेट हैं और दीवानी ५० रु० तकके मामले पर विचार करते हैं। इनके ऊपर तहसीलदार हैं जिन्हें द्वितीय श्रेणीके मजिस्ट्रेटका अधिकार है। ये २००) रु० तकके दीवानी मामले पर विचार कर सकते हैं। दोनों अदालतकी अपील जिलेके नाजिम अदालतमें सुनी जाती है। इन्हें डिष्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेटका सा अधिकार है। इनसे भी ऊपर सिभिल और सेसन जज है। कौंसिल ही सबसे बड़ी अदालत है। इन्हें मृत्युदण्ड भी देनेका अधिकार है, पर इसमें गवर्नर जनरलके एजेण्टकी अनुमति लेनी पड़ती है। राज्यकी कुल आय मिला कर ३१ लाख रुपयेकी है। राज्यमें सरकारी सिक्का ही चलता है। पहले यहां दो टकसाल थी एक डीगमें और दूसरी राजधानीमें, पर दोनों ही क्रमशः १८७८ और १८८३ ई०में बंद कर दी गई। पहले यहां जो सिक्का चलता था, उसे 'हाली' कहते थे। उसका मान सरकारी दश आनेके बराबर था।

राजपूतानेके बीस राज्योंके मध्य विद्याशिक्षामें इस राज्यका स्थान ग्यारहवां पड़ता है। अभी कुल मिला कर ६६ स्कूल हैं जिनमेंसे ६६ दरबार द्वारा और ३ चर्चमिसनरी सोसाइटी द्वारा परिचालित होते हैं। उक्त स्कूलोंमें से हाई स्कूल, संस्कृत स्कूल और पहली वर्नाक्युलर स्कूल प्रधान हैं। चार बालिका स्कूल भी हैं। विद्याशिक्षामें स्टेटके करीब पचास हजार रुपये वार्षिक व्यय होते हैं। स्कूलके अलावा ७ अस्पताल और १० चिकित्सालय भी हैं।

२ उक्त राज्यकी राजधानी। यह दुर्ग द्वारा सुरक्षित है और अक्षा० १७ १३´ उ० तथा देशा० ७७ ३०´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या प्रायः ४३६०१ है। यहां राजपूतानेकी राजकीय रेलवे लाइनके खुल जानेसे आनेजानेकी विशेष सुविधा हो गई है।

यहांका वर्त्तमान दुर्ग १७३३ ई०में राजा बदनसिंहने बनवाया था। १८०५ ई०में लार्ड लेक और १८२७ ई०में कम्बरमियरके अवरोधके लिये इस दुर्गने भारतवर्षमें विशेष प्रसिद्धि लाभ की है।

शहरमें बहुत बढ़िया चामर तैयार होता है जो दूर दूर देशोंमें भेजा जाता है। भरतपुरके प्रायः सभी अधिवासी कृष्णभक्त हैं और श्रीकृष्णको 'विहारी' नामसे पूजते हैं। निरीह स्वभाव परमवैष्णव होने पर भी जरूरत पड़ने पर शत्रुके साथ हिंसावृत्तिका आचरण करते हैं। यहांके जेलमें उत्कृष्ट कम्बल तैयार होता है। शहरमें कुल मिला कर आठ स्कूल हैं जिनमेंसे पांच दरबारके द्वारा और तीन चर्च मिशनरी सोसाइटीके द्वारा परिचालित होते हैं। दरबार हाई स्कूलमें मैट्रिक तककी शिक्षा दी जाती है और वह इलाहाबाद विश्वविद्यालयके अधीन है। स्कूलके अलावा पांच अस्पताल और एक चिकित्सालय है।

भरतपुर—मध्यप्रदेशके चाङ्गभकार राज्यका सदर। यह अक्षा० २३ ४४´ उ० तथा देशा० ८१ ४६´ पू०के मध्य बनास नदीसे २ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या ६३५ है।

भरतप्रसू (सं० स्त्री०) प्रसूते इति सू क्विप् प्रसू, भरतस्य प्रसू। भरतकी माता कैकयी।

भरतरी (हिं० स्त्री०) पृथ्वी।

भरतवर्ष (हिं० पु०) भारतवर्ष देखो।

भरतवीणा (सं० स्त्री०) वीणायन्त्र विशेष, एक प्रकारकी वीणा। भरतवीणाका नाम सुन कर बहुतसे इसका यौगिक अर्थ—भरतऋषि प्रणीत वीणा—ग्रहण कर इसे प्राचीन सङ्गीतशास्त्रानुमत अति प्राचीन यन्त्र समझ सकते हैं, परन्तु वास्तवमें यह बात नहीं है। यह वीणा अत्यन्त आधुनिक है। रुद्रवीणा और कच्छपीवीणाके मिश्रणसे इसकी उत्पत्ति हुई है। भरतवीणाका ध्वनिकोष अविकल रुद्रवीणाके समान काष्ठनिर्मित और चर्माच्छादित है तथा दन्त, कीलक, तारोंकी संख्या, स्वरबन्धन, वारण और वादनप्रणाली आदि सभी कच्छपीवीणाके हैं।

कुल मिला कर, इसमें पीतलकी बनी हुई कई पार्श्वतन्त्रि-काए रहती हैं, जो पृथक्‌रूपसे बजाई न जा कर प्रधान तारोंके कम्पनसे स्वत ध्वनित होती हैं। भरतवीणा-का नायकी तार लोहेका होता है, अन्य तार धातुके न हो कर तन्तुमय होते हैं। इस वीणाकी ध्वनिकी मधु-रता रवाब या कच्छपीके समान नहीं, बल्कि अपेक्षाकृत कुछ नीरस सी मालूम होती है। (यन्त्रकोष)

भरतमल्ल (स० पु०) एक वैयाकरण।

भरतमल्लिक—वैद्यकुलोत्पन्न एक सुविज्ञ पण्डित। संस्कृत भाषामें इनकी विलक्षण व्युत्पत्ति थी। करीब दो शताब्दी पहले आप जीवित थे। आप कल्याणमल्लके आश्रित और वैद्यकुलतिलक हरिहरखानके वंशधर गौराङ्गमल्लिक के पुत्र थे। उपसर्गवृत्ति, एकवर्णार्थसंग्रह, कारकोल्लास, किरातार्जुनीयटीका, कुमारसम्भव टीका, घटकर्परटीका, द्रुतबोधव्याकरण और द्रुतबोधिनी नामक उसकी व्याख्या, भट्टिकाव्य टीका, अमरकोष टीका, सुखेपन नामके आपके रचे हुए कई ग्रन्थ पाये जाते हैं। वैद्य कुल पञ्जिका भी आप ही की बनाई हुई है।

भरतसेन देखो।

भरतसेन—प्रसिद्ध वैयाकरणि भरतमल्लिकका नामान्तर। ये गौराङ्गसेनके पुत्र और हरिहरखानके वंश सम्भूत थे। अपनी विद्यावत्ताके कारण इन्होंने महामहोपाध्याय और यशश्चन्द्र रायकी उपाधि पाई थी। ये राढ़ीय वैद्योंके एक प्रधान कुलीन थे। उनकी बनाई हुई वैद्यकुल-पञ्जिका पढ़नेसे मालूम होता है, कि वे द्विज और वैद्योंके सेवक तथा राजपण्डित थे। उनकी उपसर्गवृत्तिके शेष श्लोकसे पता चलता है, कि वे १७५८ शकमें विद्य-मान थे।

भरतस्वामी—एक प्राचीन पण्डित, नारायणके पुत्र। ये होसलाधीश्वर रामनाथके प्रतिपालित थे। १३वीं शताब्दीके शेषभागमें श्रीरङ्गमें रह कर इन्होंने सामवेद विवरण (देवराजने इस वेद भाष्यका उल्लेख किया है) और बौधायनकल्पसूत्र विवरण नामक दो ग्रन्थ लिखे थे। २ एक ज्योतिर्विद्। आल्लरुणीने इनका उल्लेख किया है।

भरता (हिं० पु०) एक प्रकारका सालन। यह बैंगन, आलू या अरई आदिको भून कर उसमें नमक मिर्च आदि डाल कर बनाया जाता है। कभी कभी उसे घी या तेल आदिमें भी छौंकते हैं।

भरताग्रज (स० पु०) भरतस्य अग्रज। दाशरथि, श्रीराम।

भरतार (हिं० पु०) १ पति, खसम। २ स्वामी, मालिक।

भरताश्रम (स० पु०) भरतस्य आश्रम। भरतमुनिका आश्रम।

भरतिया (हिं० वि०) १ भरत अर्थात् कसकुट धातुका बना हुआ। (पु०) २ कसकुटके बर्तन या घंटे आदि ढालनेवाला, भरत धातुसे चीजें बनानेवाला।

भरती (हिं० स्त्री०) १ किसी चीजमें भरे जानेका भाव, भरा जाना। २ दाखिल या प्रविष्ट होनेका भाव, प्रवेश लेना। ३ वह नाव जिसमें माल लादा जाता हो। ४ नक्काशी, चिलकारी या कशीदे आदिमें बीच बीचका खाली स्थान इस प्रकार भरना जिसमें उसका सौंदर्य बढ़ जाय। ५ समुद्रके पानीका चढ़ाव, ज्वार। ६ वह माल जो नावमें भरा या लादा जाय। ७ जहाज पर माल लादने की क्रिया। ८ नदीके पानीकी बाढ़। ९ पशुओंके चारे-के काममें आनेवाली एक प्रकारकी घास। १० सावाँ नामक कन्न।

भरतेश्वरतीर्थ (स० क्ली०) एक तीर्थका नाम।

भरतोद्धता (स० पु०) केशवके अनुसार एक प्रकारके छन्दका नाम।

भरथ (स० पु०) बिभर्त्तीति भृ भृ (भृञ्श्चित्। उण् ३। ११५) इति अथ, स च चित्। लोकपाल।

भरथ (हिं० पु०) भरत देखो।

भरथरी (हिं० पु०) भर्तृहरि देखो।

भरदूल (हिं० पु०) भरतपक्षी देखो।

भरद्वाज (स० पु०) द्वाभ्यां जायते इति जन् ड तत पूर्वो दरादित्वात् द्वाजः सङ्कर, भ्रियते मरुद्भिरिति भृ अप् भर, भरश्चासौ द्वाजश्चेति कर्मधा०। मुनिभेद, एक मुनि। इनके जन्मका विवरण भागवतमें इस प्रकार लिखा है,—एक दिन उतथ्यकी पत्नी ममताकी ससत्वावस्थामें बृहस्पतिने छिप कर अपनी भ्रातृभार्याके साथ मैथुन किया। परन्तु उस समय ममताके गर्भमें एक सन्तान

थी, दूसरे गर्भके लिए वहां स्थान न था, अत गर्भस्थित बालकने वृहस्पतिको वीर्यसेक करनेके लिए निषेध किया। वृहस्पति कामान्ध हो रहे थे, गर्भस्थ बालकके निषेध करने पर उन्होंने क्रुद्ध हो कर "अन्ध हो" कह कर उसे शाप दिया और बलपूर्वक वीर्यसेक किया। वृहस्पतिके शापसे वह पुत्र अन्धा हो गया। बादमें गर्भस्थित बालकने पार्ष्णि प्रहार द्वारा वृहस्पतिके वीर्यको योनिसे बाहर कर दिया। उस शुक्रके बाहर गिरते ही उससे उसी क्षणमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

पति व्यभिचारिणी जान कहीं परित्याग न कर दें इस भयसे उतथ्य-वनिता ममताने उस पुत्रको त्यागना चाहा, किन्तु वृहस्पतिके निषेध करने पर उनके साथ ममताका विरोध उपस्थित हुआ। तब वृहस्पतिने ममतासे कहा कि, 'यह बालक एकके क्षेत्रमें दूसरेके वीर्यसे उत्पन्न हुआ है, सुतरां यह तुम्हारे स्वामीका भी पुत्र हुआ। अतः तुम डरो मत, तुम इसका भरण पोषण करो' इस पर ममताने कहा, 'तुम भी इसका पोषण करो। हम दोनोंसे अन्यायरूपमें इस बालकका जन्म हुआ है, अत मैं अकेली क्यों पोषण करूं?' पिता और माता अर्थात् वृहस्पति और ममता एक प्रकारसे विवाद करते करते उस बालकको छोड़ कर चले गये। इस कारण बालकका नाम भरद्वाज हुआ। वृहस्पति और ममताके छोड़ कर चले जाने पर मरुद्गण उस बालकको उठा ले गये और उन्होंने उसका प्रतिपालन किया।

भरतके पुत्र सम्भावना वितथ होने पर अर्थात् पुत्र होनेकी सम्भावना न रहने पर उन्होंने मरुत्स्तोम यज्ञका अनुष्ठान किया। मरुद्गण इस यज्ञसे बहुत सन्तुष्ट हुए और उन्हें पुत्रदान दिया। इसलिए भरद्वाजका नाम वितथ हुआ। इनके पुत्र मनु थे।

(भाग० ६।२०, २१ अ०, विष्णुपु० ४।१६ अ०)

महाभारतमें लिखा है—किसी समय ये हिमालय पर तपस्या करने गये। इसके कुछ दिन बाद एक दिन ये गङ्गामें स्नान करने गये, उस समय घृताची अप्सरा वहांसे जा रही थी, दैवसे हवाके झकोरेसे उसके वसन खुल गये। घृताचीको नग्नावस्थामें देख कर मुनिका रेतःस्खलन हो गया। उस रेतको द्रोणमें रखा गया, बादमें उसीसे द्रोणाचार्यका जन्म हुआ था।

द्रोणाचार्य देखो।

रैभ्यके साथ इनकी सातिशय बन्धुता थी। भरद्वाजके पुत्र यवक्रीतके द्वारा रैभ्यकी पुत्रवधूका सतीत्व नष्ट होने पर रैभ्यने उसे मार डाला। भरद्वाजने इस भीतरी वृत्तान्तोंको बिना जाने ही रैभ्यको शाप दे दिया कि वह बिना अपराधके ज्येष्ठ पुत्र द्वारा मारे जावें। बादमें सब हाल मालूम होने पर ये दुःखित हृदयसे अनलमें जल कर मर गये, किन्तु रैभ्यके पुत्र अर्वावसुके तप प्रभावसे पुनर्जीवित हुए प्रयागमें इनका आश्रम था। द्वादश द्वापरमें भरद्वाज व्यास थे। (दवीभा० १।३।२६)

भावप्रकाशमें भरद्वाजका ऐसा प्रसङ्ग पाया जाता है—दैवयोगसे एक दिन बहुसंख्यक महर्षि हिमालय पर्वत पर किसी एकान्त स्थानमें मिल कर प्राणियोंके व्याधिप्रशमनको उपाय चिन्तामें निरत थे। परन्तु कोई भी इसके लिए सद्युक्ति स्थिर न कर सके। तब सबने मिल कर भरद्वाज मुनिसे कहा—'भगवान्! आप ही इस विपत्तिसे उद्धार करनेमें एकमात्र समर्थ हैं। अतएव आप सुरपुरमें जा कर सहस्रलोचन इन्द्रके निकट आयुर्वेद शास्त्र अध्ययन कर हमलोगोंको शिक्षा दीजिए, तभी हम सब आयुर्वेदका मर्म समझ सकते हैं और जगत्‌का कल्याण साधन करनेमें समर्थवान् हो सकते हैं।

भरद्वाज ऋषियोंके प्रस्ताव पर सम्मत हो कर सुरपुर गये। वहां कुछ समय रह कर इन्द्रसे लिस्कध-हेतु, लिङ्गोपज्ञ और ज्ञानात्मक अर्थात् रोगका निदान, रोगका लक्षण और औषधज्ञापक समस्त आयुर्वेदका यथाविधि अध्ययन कर मर्त्यधाममें आये और उन ऋषियोंको शिक्षा दी। उनका उस शिक्षासे ही क्रमशः आयुर्वेदका प्रचलन हुआ। (भावप्रकाश)

२ पक्षीविशेष, एक चिड़िया। पर्याय—व्याघ्रराट्, भरद्वाजक। ३ गोत्रभेद, एक गोत्रका नाम। (मनु)

(त्रि०) ४ सम्भ्रियमाण हविर्लिङ्गक्षणान्नयुक्त यजमानादि।

(शतपथ)

५ मनोरूप सचेतन ऋषिभेद। (शतपथब्रा० ८।१।१।६) प्रजाजनोंका भरण करते थे, इसलिये भरद्वाज नाम पड़ा। (भारतअनु० ९० ६३ अ०)

भरद्वाज—१ कालेयकुतूहलप्रहसनके प्रणेता। २ वास्तुतत्त्वके रचयिता। ३ वेदपादस्तोत्रके प्रणयनकर्त्ता।

भरद्वाजक (स० पु०) भरद्वाज स्वार्थे-कन्। १ व्याघ्राटपक्षी। २ भरद्वाज देखो।

भरना (हिं० क्रि०) १ पूर्ण करना, खाली जगहको पूरा करनेके लिये कोई चीज डालना। २ रिक्त स्थानको पूर्ण अथवा उसकी अंशतः पूर्त्ति करना, स्थानको खाली न रहने देना। ३ उलटना, डालना। ४ ऋणका परिशोध या हानिकी पूर्त्ति करना, चुकाना। ५ पद पर नियुक्त करना, रिक्त पदकी पूर्त्ति करना। ६ तोप या बंदूक आदिमें गोली बारूद आदि डालना। ७ दो पदार्थोंके बीचके अवकाश या छिद्र आदिमें कुछ डाल कर उसे बंद करना। ८ काटना। ९ निर्वाह करना, निवाहना। १० खेतमें पानी देना। ११ गुप्त रूपसे किसीकी निंदा करना अथवा कोई बुरी बात मनमें बैठाना। १२ धातुके छड़ आदिको पीट कर अथवा और किसी प्रकार छोटा और मोटा करना। १३ किसी प्रकार व्यतीत करना, कठिनतासे बिताना। १४ सारे शरीरमें लगाना, पोतना। १५ सहना, झेलना। १६ पशुओं पर बोझ आदि लादना। (क्रि० अ०) १ किसी रिक्त पात्र आदिका कोई और पदार्थ पड़नेके कारण पूर्ण होना। २ उंडेला या डाला जाना। ३ ऋण आदिका परिशोध होना। ४ तोप या बंदूक आदिमें गोली बारूद आदिका होना। ५ मनमें क्रोध होना। ६ रिक्त स्थानकी पूर्त्ति होना, स्थानका खाली न रहना। ७ पदार्थोंके बीचके छिद्र या अवकाशका बंद होना। ८ जितना चाहिये, उतना हो जाना, कुछ भी कमी या कसर न रह जाना। ९ पशुओंका गर्भ धारण करना। १० चेचकके दानोंका सारे शरीरमें निकल आना। ११ धातुके छड़ आदिका पीट कर मोटा और छोटा किया जाना। १२ घावका ठीक और बराबर होना। १३ किसी अङ्गका बहुत काम करनेके कारण दर्द करने लगना। १४ शरीरका हृष्टपुष्ट होना।

भरना (हिं० पु०) १ भरनेकी क्रिया या भाव। २ रिश्वत, घूस।

भरनी (हिं० स्त्री०) १ करघेमेंकी ढरकी, नार। २ छछूंदर। ३ मोरनी। ४ गारुडी मन्त्र। ५ एक प्रकारकी जंगली बूटी।

भरपाई (हिं० क्रि० वि०) १ भलीभांति, पूर्णरूपसे। (स्त्री०) २ भर पानेका भाव, जो कुछ बाकी हो, वह पूरा पूरा पा जाना। ३ वह रसीद जो पूरी पूरी वसूली हो जाने पर दी जाय, कुल बाकी चुक जाने पर दी जानेवाली रसीद।

भरपुरसिंह—नाभा राजवंशके एक राजा। ये १८५६ ई०में अपने पिताके सिंहासन पर अधिष्ठित हुए थे। सन् १८५७ ई०के सिपाही विद्रोहके समय आपने दिल्ली, लुधियाना, जालंधर आदि स्थानोंमें अंग्रेजोंकी तरफसे युद्ध किया था। अम्बाला दरबारमें लार्ड कैनिंगने आपकी उपकारिताकी विशेष सुख्याति की थी। १८६३ ई०में भारतके वायसराय लार्ड एलगिनने इनको लेजिस्लेटिव कौन्सिलका सदस्य चुना था। उसी वर्ष ९वीं नवेम्बरको अत्यधिक परिश्रमजनित ज्वररोगसे आपकी मृत्यु हो गई। आपके कोई पुत्र न होनेसे भतीजे राजा भगवानसिंह सिंहासन पर बैठे। नाभा देखो।

भरपूर (हिं० वि०) १ जो पूरी तरहसे भरा हुआ हो, पूरा पूरा। २ परिपूर्ण, जिसमें कोई कमी न हो। (क्रि० वि०) ३ पूर्णरूपसे, अच्छी तरह पूरा करके। ४ भलीभांति। (पु०) ५ समुद्रकी तरङ्गोंका चढ़ाव, ज्वार।

भरभराना (हिं० क्रि०) १ रोआं खड़ा होना, घबराना।

भरभूंजा (हिं० पु०) भड़भूँजा देखो।

भरम (स० त्रि०) भृ बाहुलकात् अमच्। भरणकर्त्ता, पालन पोसन करनेवाला।

भरम (हिं० पु०) १ भ्रान्ति, संशय। २ रहस्यभेद।

भरमना (हिं० क्रि०) १ घूमना, चलना। २ मारा मारा फिरना, भटकना। ३ धोखेमें पड़ना। (स्त्री०) ४ भूल, गलती। ५ भ्रान्ति, भ्रम।

भरमाना (हिं० क्रि०) १ भ्रममें डालना, चक्करमें डालना। २ व्यर्थ इधर उधर घुमाना, भटकाना।

भरमार (हिं० स्त्री०) अत्यन्त अधिकता, बहुत ज्यादती।

भरराना (हिं० क्रि०) १ भरर शब्दके साथ गिरना, भरराना। २ पिल पड़ना, टूट पड़ना। ३ भरर शब्दके साथ गिराना। ४ दूसरोंको पिलने अथवा टूट पड़नेमें प्रवृत्त करना।

भरल ( हि० स्त्री० ) नीले रंगकी एक प्रकारकी जंगली भेड़। यह हिमालयमें भूटानसे लद्दाग तक होती है।

भरवाइ ( हि० स्त्री० ) वह डलिया या टोकरी जिसमें बोझ रखा जाता है। २ भरवानेकी क्रिया या भाव। ३ भरवानेकी मजदूरी।

भरवाना ( हि० क्रि० ) भरनेका काम दूसरेसे कराना, दूसरेको भरनेमें प्रवृत्त करना।

भरसक ( हि० क्रि० वि० ) यथाशक्ति, जहां तक हो सके।

भरसन ( हि० स्त्री० ) फटकार, डांट।

भरसाइ ( हि० पु० ) भाड़ देखो।

भरस ( स० पु० ) भृ असुन्। मरण।

भरहपाल—थानाके एक अधिपति। ये राष्ट्रवंशीय थे।

भरहरना ( हि० क्रि० ) भरभराना देखो।

भरहराना ( हि० क्रि० ) भहराना देखो।

भरहुत—मध्यप्रदेशके नागोदराज्यके अन्तर्गत एक प्राचीन जनस्थान(१)। यह उचहरसे ३ कोस उत्तर पूर्व तथा प्रयागसे ६० कोस दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। सुतना रेल स्टेशनसे ४॥ कोस दक्षिण पूर्व पड़ता है।

बहुत पहलेसे यह प्राचीन नगर निविड़ जंगलोंसे परिपूर्ण था। डा० कनिंहम आदि प्रत्नतत्त्वविदोंके अनुसन्धानके फलसे इसके भीतर छिपा हुआ ऐतिहासिक रत्न आविष्कृत हुआ है। ईसा जन्मके ४ सदी पहले यह स्थान बौद्धकीर्त्तिका केन्द्रस्थल था। यहांकी बौद्धकीर्त्ति जगत्‌का एक प्राचीन रत्न है। इस स्तूप साथ शिल्प कीर्त्तिस्तूपका व्यास प्राय ६८ फुट और चारों ओरके प्राचीरका व्यास ८८ फुट है। प्रस्तरगठित बाहरवाली दीवार टूट फूट गई है और उसका कुछ अंश आस पासके ग्रामवासी उठा ले गये हैं।

इसके भीतरकी स्तम्भश्रेणी, द्वारदेश और चतुर्दिकस्थ प्राचीरका शिल्पनैपुण्य देखने योग्य है। डाक्टर कनिंहम उसके द्वार परकी शिलालिपिकी अक्षरमाला देख कर अनुमान करते हैं, कि सिन्धुपारस्थित वैदेशिक कारीगरोंको शुङ्गराजने मध्यभारतसे बुलाया था। उनकी वह अमरकीर्त्ति आज भी अक्षुण्ण रह कर पूर्वगौरवकी घोषणा करती है। बहुतोंका अनुमान है, कि इस सुबृहत् बौद्धकीर्त्तिका महि प्राचीर सम्राट् अशोकके राज्यकाल में बनाया गया होगा।

इस प्राचीर मन्दिरमें जो सब खोदित चित्र हैं, वे बौद्धोंके जातक ग्रन्थसे गृहीत हुए हैं *। एतद्भिन्न कुछ चित्रोंके नीचे उसका विवरणज्ञापक लिपि खोदित है। बौद्धचित्रको छोड़ कर यहां हिन्दू चित्रका भी अभाव नहीं है। अयोध्यापति रामचन्द्र, जनकराज, शीतलादेवी, यक्ष और यक्षिणी आदि मूर्त्ति तथा अन्यान्य नानाचित्र परिशोभित हैं। इन चित्रोंकी वेशभूषासे उस समयके परिच्छदपारिपाट्य उपलब्ध हो सकता है। इस ध्वंसावशेषके कुछ अंशको ले कर पास हीमें एक और भी बढ़िया आधुनिक मन्दिर बनाया गया है। उसमें भी अनेक हिन्दू देवदेवियोंकी मूर्त्ति देखनेमें आती हैं।

भराँति ( हि० स्त्री० ) भ्रान्ति देखो।

भराई ( हि० स्त्री० ) १ एक प्रकारका कर जो पहले बना रसमें लगता था। इस करमेंसे आधा कर संग्रहकरनेवाले राजकर्मचारीको मिलता और आधा सरकारमें जमा होता था। २ भरनेकी क्रिया या भाव। ३ भरनेकी मजदूरी।

भराडी—दाक्षिणात्यवासी एक जाति। ये कुनबीजातिके वंशधर कहे जाते हैं। यत्र तत्र सड़कों पर डमरू बजा कर ये अम्बाबाई या सप्तशृङ्गदेवीकी महिमा गाते फिरते हैं। भिक्षा ही इनकी प्रधान उपजीविका है। इनमें दो स्वतन्त्र थोक हैं, एक गद अर्थात् शुद्ध भराडी और दूसरा कडु अर्थात् सङ्कर भराडी। इन दोनों श्रेणियोंमें परस्पर विवाहादि सम्बन्ध नहीं होता। ये साधारणतः काले और बलिष्ठ होते हैं। गाय और सुअरके मांसको छोड़ कर अन्य मांस, मत्स्य और मद्यमें इनकी विशेष प्रीति है। आकारानुरूप भोजन करनेमें समर्थ होने पर भी ये रन्धनकार्यमें विशेष निपुण होते हैं। मद्यके सिवा गांजा और तम्बाकू भी इन्हें प्रिय है।

(१) भौगोलिक टलेमीने इस स्थानको *Bardaotis* नामसे उल्लेख किया है। मानचित्रमें इसका बर्दाद नाम लिखा है।

* हंसजातक, किन्नरजातक, मृगजातक, मखादेवियजातक, यवमझकिय जातक विधुरपण्डित जातक, दशरथजातक प्रभृति।

ये मराठी भाषामें बात करते हैं और साधारणत इनकी पोशाक महाराष्ट्रीयोंकी तरह होती है। स्त्री और पुरुष दोनों ही गहने पहनते हैं। पुरुष सिर घुटा कर चोटी रखते हैं। 'गोन्धल' नाचके समय ये लोग नाना अलङ्कारोंसे सुसज्जित हो कर गाजे बाजेके साथ तुलजा भवानी और भैरवनाथके गीत गाते हैं। नवरात्रउत्सवके समय इस नृत्यगीतके लिए प्रत्येक रूपकसे इन्हें धान्यादि की कुछ न कुछ वार्षिक सहायता प्राप्त होती है। यह नृत्य और देवदेवीका सङ्गीत सूर्यास्तसे ले कर प्रात काल तक होता है। इस तरह नाच गा कर ये जो कुछ भी अर्थ उपार्जन करते हैं, उसीसे इनकी गुजर हो जाती है। भविष्यके लिए ये कभी भी अन्न इकट्ठा करके नहीं रखते। ये लोग साफ सुथरे होते हुए भी आलसी बहुत हैं।

दरिद्र होने पर भी इनकी धर्ममें मति पूर्णत है। ये सभी हिन्दू देवदेवियोंकी भक्ति करते हैं। प्रत्येक पूजा और पर्वादिके समय उपवास करते हैं। जेजुरि, माहुर, पण्ढरपुर, सोनारी, तुलजापुर आदि तीर्थस्थ देव दर्शनके लिए इनमें बड़ी उत्सुकता पाई जाती है। सर्वसाधारण इन्हें नाथ सम्प्रदायी समझते हैं। ग्रामके जोशी लोग इनके यहा पौरोहित्य करते हैं, फिर भी 'कनफटा' गुसाँई-से मन्त्र ग्रहण करते हैं। गुरुके प्रति इनकी अचला भक्ति है।

डाइन, प्रेतयोनि आदि पर इनका विश्वास है। जन्म, कर्णवेध, विवाह और मृत्यु विषयक चार संस्कार इनमें यथारीति पाये जाते हैं। ५से ८ वर्ष तक बच्चेके कान छेद दिये जाते हैं। उस समय गुरुके सामने बालक या बालिकाको कान छिदा कर पीतल या सींगकी बाली पहनायी जाती है।

इनमें बालविवाह, बहुविवाह और विधवा विवाह प्रचलित है। विवाह संस्कार लगभग अन्यान्य निकृष्ट जातियोंके समान है। सामाजिक झगड़ा उपस्थित होने पर इन लोगोंको पचायत सभाका आदेश मानना पड़ता है। चौगुला, पाटील और खारभरी लोग इनके नेता हैं। अन्यान्य सभी लोग उक्त नेताओंका विशेष सम्मान करते हैं।

इनमें शवदेहको थैलेमें भर कर समाधि क्षेत्रमें ले जाने का प्रथा है। उस समय अशौचका प्रधान अधिकारी मिट्टीके बरतनमें आग रख कर आगे आगे और अन्यान्य लोग सिङ्गा बजाते हुए पीछे पीछे चलते हैं। समाधि स्थान आने पर, शवदेह पर भस्म लपेट कर उसे जमीन में गाड़ देते हैं। गाड़नेसे पहले मृतदेह पर फूल, बिल्वपत्र और पानी भी देते हैं। अशौचाधिकारी धूप ले कर तथा और सब उसके पीछे पीछे कब्रकी प्रदक्षिणा देते हैं। शववाहिगण मृतके घर आ कर नीमके पत्ते चबानेके बाद अपने अपने घर चले जाते हैं। तीसरे दिन अशौचाधिकारी फिर समाधिस्थानमें जाते और पूर्ववत् कब्रमें फूल आदि चढ़ा आते हैं। उसके बाद उसे शव वाहियों-का कँधा मलना पड़ता है। इनमें प्रकृत अशौच या पिण्डदानादिकी व्यवस्था नहीं है। तीन दिनके बाद किसी भी दिन भोज देने मात्रसे ये सब कार्यसे निवृत्त हो जाते हैं।

**भरापूरा** ( हिं० पु० ) १ सम्पन्न, जिसे किसी चीजका अभाव न हो। २ जिसमें किसी बातकी न्यूनता न हो।

**भराव** ( हिं० पु० ) १ भरनेका भाव, भरत। २ भरनेका काम। ३ कसीदा काढ़नेमें पत्तियोंके बीचके स्थानको तागोंसे भरना।

**भरिणी** ( सं० स्त्री० ) मनो विभर्त्ति हरतीति भृ णिनि गौरादित्वात् ङीप्, पृषोदरादित्वात् पूर्वदीर्घे साधु। हरिद्वर्ण, पीला।

**भरित** ( हिं० त्रि० ) भरोऽस्य जात इतच्, पृषोदरादित्वात् साधु। १ हरिद्वर्ण, पीला। २ पुष्ट, भरा हुआ। ३ जिस का भरण या पालन पोषण किया गया हो।

**भरिमन्** ( सं० पु० ) भृ ( हृ भृ धृ सृ स्तृशृभ्य इमनिच्। उण् ४।१४७ ) इति भावे इमनिच। १ भरण। २ कुटुम्ब।

**भरिया** ( हिं० वि० ) १ पूर्ण करनेवाला, भरनेवाला। २ ऋण भरनेवाला, कर्ज चुकानेवाला। ( पु० ) ३ वह जो बरतन आदि ढालनेका काम करता हो, ढलाई करने वाला।

**भरित्र** ( सं० स्त्री० ) भरणकुशल।

**भरी** ( हिं० स्त्री० ) एक तौल जो दस माशे या एक रुपये के बराबर होती है।

**भरु** ( सं० पु० ) भरति विभर्त्ति जगदिति भृञ भरणे

( भृमृशीङ् त्सरितसरितनिधनिमिमस्निम्य उ । उण् १।७ ) १ विष्णु । २ समुद्र । ३ स्वामी । ४ स्वर्ण ५ शिव ।

भरु ( हिं० पु० ) बोझ, वजन ।

भरुआ ( हिं० पु० ) १ टसर २ । भड़आ देखो ।

भरुक ( सं० पु० ) दक्षिणदेशभेद ।

भरुकच्छ ( सं० पु० ) प्राचीन देशभेद । यह भरोच नामसे ही प्रसिद्ध है । भरोच देखो ।

भरुका ( हिं० पु० ) पुरवेके आकारका चुक्कड़ ।

भरुज ( सं० पु० ) भेति शब्देन रजतीति रुज क । क्षुद्र शृगाल, छोटा गीदड़ ।

भरुटक ( सं० क्ली० ) भृ बाहुलकात् उट, सञ्ज्ञायां कन् । भृष्टामिष, भूना हुआ मांस ।

भरुहाना ( हिं० क्रि० ) १ घमण्ड करना, अभिमान करना । २ बहकाना, धोखा देना । ३ उत्तेजित करना, बढ़ावा देना ।

भरुही ( हिं० स्त्री० ) १ कलम बनानेकी एक प्रकारकी कच्ची किलक । २ भरतपक्षी देखो ।

भरेंड ( हिं० पु० ) रेंड देखो ।

भरे ( सं० अव्य० ) भृ बाहुलकात् ए । सङ्ग्राम ।

भरेङ्ग—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक उपत्यका विभाग । यह अक्षा० ३३ २०´ से ३३ ३०´ उ० तथा देशा० ७१ १०´ से ७५ ३६´ पू०के मध्य अवस्थित है । यह स्थान सुरम्य गिरिकन्दर और निर्झरादिसे परिशोभित है । आवाबाद नामक विख्यात प्रस्रवणसे भरेङ्गी नदी निकली है । मोरवल नामक गिरिसङ्कट हो कर इस उपत्यकामें पहुंचते हैं ।

भरेङ्गी—काश्मीरराज्यमें प्रवाहित एक नदी । भरेङ्ग उपत्यका देशमें प्रवाहित होनेके कारण इसका भरेङ्गी नाम पड़ा है ।

भरेठ ( हिं० पु० ) दरवाजेके ऊपर लगी हुई वह लकड़ी जिसके ऊपर दीवार उठाई जाती है । इसे 'पटाव' भी कहते हैं ।

भरेपुत्र ( सं० पु० ) सोमका नामान्तर ।

भरेहनगरी ( सं० स्त्री० ) चर्मण्वती नदीके सङ्गम पर अवस्थित एक नगर । यहांके राजा भगवन्तदेवके राज्य कालमें पण्डितवर नीलकण्ठ द्वारा श्राद्धमयूख रचा गया ।

भरैया ( हिं० वि० ) १ पोषक, पालन करनेवाला । २ भरने वाला, जो भरता हो ।

भरोच—बम्बई प्रदेशका एक जिला । यह अक्षा० २१ २५´ से २२ १५´ उ० तथा देशा० ७२ ३१´ से ७३ १०´ पू०के मध्य अवस्थित है । भूपरिमाण १४६७ वर्गमील है । इस के उत्तरमें माही नदी, पूर्वमें बड़ोदा और राजपिप्पली रा सामन्तराज्य, दक्षिणमें किम नदी तथा पश्चिममें कोम्ब ( खम्भात उपसागर है ।

खम्भात उपसागरवर्त्ती स्थान पलिमय मट्टीसे गठित है । बीचमें बालुकास्तूपकी तरह इतस्ततः विक्षिप्त कितने गण्डशैल सागराक्रमणके बाधरूपमें दण्डायमान हैं । माही और किम नदीके अलावा यहां धाधर और नर्मदा नामकी और दो नदी बहती हैं । किनारा अधिक ऊंचा होनेसे नदीके जल द्वारा खेतीबारीमें सुविधा नहीं होती । समतल जमीनका जल गड्ढेमें गिर कर नदीमें अथवा स्वयं पश्चिमउपकूलवर्त्ती ढालू जमीनसे खाड़ीमें गिरता है । धाधर नदीके विस्तृत मुहानेके सिवा यहां मोटा, भूखी और जद नामक कितनी खाड़ियां हैं ।

यहांकी मिट्टी काली होनेसे रूई बहुतायतसे उपजती है । इसके अलावा यहां आम, ताड़, इमली, बबूल आदि वृक्ष भी हैं । इस ताड़ पेड़मे रससे एक प्रकारकी शराब तैयार होती है । भरोच नगरसे ६ कोस उत्तर नर्मदा नदीके किनारे पर छोटे द्वीपमें 'कबीरवट' नामका एक बड़ा वटवृक्ष है । साधुश्रेष्ठ कबीरने इस वृक्ष-की डालसे दतवन किया था, ऐसा सुना जाता है *।

वर्त्तमान भरुच ( *Broach* ) जिलेका प्राचीन नाम

---

* यूरोप भ्रमणकारीके बयानसे मालूम होता है, कि १७८० ई०में इस वृक्षमें ३५० बड़े और ३ हजार छोटे छोटे तने थे । मूल तनेकी परिधि प्राय २००० फुट था । एक समय इस वृक्षके नीचे ७ हजार मनुष्योंने आश्रय ग्रहण किया था । १८२६ ई०में विशप हेवर ( *Bishop Heber* ) ने इस वृक्षको देख कर लिखा है, कि कुछ दिन हुए, नदीकी बाढ़से इसका कुछ अंश बह गया है । अभी भी जो मौजूद है उसके नीचेका घुमाव कम नहीं है । काल और बन्याके प्रभावसे इसका पूर्वगौरव जाता रहा है ।

भरुकच्छ है। पाश्चात्य भौगोलिक टलेमी तथा पेरीप्लस ने 'वरगज' ( Barugaza ) शब्दसे इस स्थानका नामोल्लेख किया है। हिन्दुओंके प्राचीनपुराणमें इन लोगों का तथा उस देशके वासियोंका उल्लेख रहने पर भी इन का उस प्राचीनतम समयका इतिहास नहीं पाया जाता। शिलालिपि पढ़नेसे जाना जाता है, कि ४थी या ५वीं शताब्दीमें गुर्ज्जरवशीय दद्दवशधरोंने भरुकच्छमें अपना राजत्व फैलाया था *। वलभीराज ४र्थ ध्रुवसेनने ३३० शकमें भरुकच्छको विजय कर शासन विस्तार किया था।

गुर्जरराज जयभट्ट और दद्द १म पहले सामन्तराज कह कर परिचित हुये थे ¶। ४०० ४१७ शकमें उत्कीर्ण २य दद्द ( प्रशान्तराग ) की शिलालिपिमें एकमात्र महाराजाधिराज नाम मिलता है। बाद इसके यहां राष्ट्रकूट राजवंशका अभ्युदय हुआ। कावी नगरसे प्राप्त राजा ३य गोविन्दकी ७४६ शकमें उत्कीर्ण शिलालिपिसे जाना जाता है, कि भरोचनगरमें उन लोगोंकी राजधानी थी (१)।

१६१६ ई०में वाणिज्य विस्तार हेतु अङ्गरेजोंने यहां एक कोठी खोली। इससे पहले यह स्थान देशीय सामन्तों और मुसलमान नवाबोंके अधिकारमें था, किंतु उस समय यहां कोई उल्लेखयोग्य घटना न घटी। १७५९ ई०में सुराष्ट्र दुर्ग पर चढ़ाईके बाद, अङ्गरेजोंने पहले स्थानीय शासनकर्त्ताओंके साथ राजकीय सम्बन्ध जोड़ा था किंतु सुराष्ट्रमें राजकीय शासनदण्ड धारण करनेके कुछ दिन बाद राजस्वसक्रान्त प्रश्नोत्तरमें अङ्गरेजों और भरोचपतिके बीच विरोध खड़ा हुआ। तदनुसार १७७१ ई०में सूरतके नवाबके विरुद्ध अङ्गरेजी सेना भेजी गई। अङ्गरेजी सेना इस युद्धमें पराजित हो वापस आई, किंतु दूसरे वर्ष भरोच नवाबके अङ्गरेजोंको स्वीकृत चार लाख रुपये देनेमें अक्षम होने पर १७७२ ई०में अङ्गरेजोंने पुन भरोचपतिके विरुद्ध युद्धयात्रा कर दी। इस युद्धमें भरोच नगर और १६२ गाव अङ्गरेजोंके हाथ लगे तथा अङ्गरेज सेनापति ओडारवरण मारा गया। १७८३ ई०में अंकलेश्वर, हसोंत, देहेजवाड और आमोद आदि प्रदेश अङ्गरेजाधीन रहे; सालवाईकी सन्धिमें अङ्गरेजोंने पूर्वजित राज्य महादजी सिन्धियाको और परवर्त्ती अधिकृत स्थान पेशवाके हाथ सौंपा। १६ वर्ष तक यह स्थान महाराष्ट्रोंके अन्तर्भुक्त था। १८०३ ई०में अङ्गरेजी सेनाने सिन्देराजके अधिकृत गुजरात प्रदेश पर चढ़ाई की और भरोच नगर अधिकार कर लिया। १८१८ ई०में पूनाकी सन्धिके बाद तीन और उपविभाग इसके अधीन हुए। १८२३ ई०का कोलिविद्रोह और १८५७ ई०का मुसलमान तथा पारसीगणोंका परस्पर विवाद यहांकी उल्लेखयोग्य घटना है।

विचार विभागकी सुविधाके लिये यह जिला आमोद, भरोच, अंकलेश्वर, जम्बूसर और वग्रा नामक पाच प्रधान नगरोंके नाम पर हो उक्त पाच तहसील सगठित की गई। यहां १५ प्रधान तीर्थ हैं जिनमें ११ हिन्दूके और शेष मुसलमानके हैं। शुक्रतीर्थ, भारभूत और करोड नामके स्थानमें बड़ा मेला लगता है। इसमें कभी कभी लाखसे भी ऊपर मनुष्य समागम होते हैं।

१८२० ई०में यहां देगम, टकारी, गन्धार, देहेज भरोच नामक पाच वन्दरगाह थे। उनमेंसे भरोच और टकारी वन्दरमें आज भी वाणिज्य चलता है।

२ उक्त जिलेका एक उपविभाग। भू परिमाण ३०२ वर्गमील है। यहांका नर्मदानदी तीरवर्त्ती स्थान उर्वरा है।

३ गुजरात प्रदेशके भरोच जिलेका प्रधान नगर। यह नर्मदा नदीके दक्षिण किनारे मुहानेसे १५ कोसकी दूरी पर अवस्थित है। यह अक्षा० २१ ४३´ उ० तथा देशा० ७३ २´ पू०के मध्य अवस्थित है। नर्मदा नदीके उस पारसे देखनेसे नगरकी शोभा अति मनोरम जान पड़ती है। स्थानीय प्रवाद है, कि अनहिलवाड़पति सिद्धराज जयसिंहने १२वीं शताब्दीमें नदीके किनारे प्रस्तर-प्राचीर तथा अपर तीन दिशाओंमें प्राकार और परिखादि निर्माण किये थे। मिरट्इ सिके

* Indian Antiquary vol V p, 110 115

¶ कावी, शिलालिपिमें उनकी ठाकुर, समधिगत पञ्चमहाशब्द और महासामन्ताधिपति आदि उपाधि दी जाती है। Ind, Ant, vol III, p 633 vol vII p, 199

( १ ) Indian Antiquary vol, v, p, 151

रुदि नामक मुसलमानी इतिहास पढनेसे मालूम होता है, कि अहमदनगरराज सुलतान वहादुरकी आज्ञासे १५२६ ई०में यहाका गढ और परिखा आदि निर्मित हुए थे। १६६० ई०में मुगल सम्राट औरङ्गजेबने नगर प्राचीर नष्ट कर दिया था। इसके २५ वर्ष बाद मराठीसेनाके आक्रमणसे नगर रक्षाके लिये उन्होंने फिर इस प्राचीरका पुनर्निर्माण कराया था। भूमिभागके प्राकारादि-कालक्रमसे विलय हो गया है, यहा तक कि कहीं कहीं उसका चिह्न-मात्र भी नहीं है। नर्मदाके गढसे नगररक्षार्थ दक्षिणकी ओर जो प्राचीर है वह प्राय ४० फुट ऊंचा और १ मील लम्बा है। वह प्रस्तर प्राचीर अब भी पूर्णसंस्कारमें है। इसका कोई स्थान भग्न नहीं हुआ है। इस प्राचीरमें पाच बड़े द्वार हैं। प्राचीरका उपविभाग ऐसा प्रशस्त है कि इसके ऊपर आ जा सकते हैं। इस दीवारका मध्यस्थल ६०से ले कर ८० फुट ऊंचा है।

किंवदन्ती इस प्रकार है, कि भृगु नामक एक महा मुनि यहा वास करते थे। उन्हींके नामानुसार यह स्थान भृगुपुर नामसे ख्यात है *।

१ली शताब्दीमें यह स्थान वरुगजा या वडगज नामसे घोषित हुआ। उस समय यह नगर पश्चमी भारतमें एक प्रधान बन्दरगाह और राजधानीरूपमें परि गणित था। २री शताब्दीके बाद यहा राजपूत राज वशका राजपाट स्थापित हुआ। ७वीं शताब्दीमें चीन परिव्राजक यूएनचुअङ्गकी वर्णनासे ज्ञात होता है, कि यहा १० बौद्धसङ्घाराम, १० मन्दिर और ३ सौ भिक्षु रहते थे। इसके अर्द्ध शताब्दीके बाद भरोच नगरका समृद्धि गौरव चारों तरफ फैल गया। वाणिज्यसमृद्धिके लोभमें पड़ कर मुसलमानोंने उस समय पश्चिम भारतमें युद्धके लिये प्रस्थान किया। अनहिलवाडके राज पूतराजाओंके राजत्वकाल (७४६—१३०० ई०)में इसका वाणिज्य प्रभाव अक्षुण्ण था। अनहिलवाडराज वशका अधःपतन होनेसे भरोचराज्य विभिन्न राजाओंके हाथ लगा तथा उस विशृङ्खलताके समय वाणिज्यका भी ह्रास हुआ। १३९१—१५७२ ई० तक यह स्थान अहमदाबादके मुसलमान राजवंशके अन्तर्भुक्त रहा। उसमेंसे १५३४—३६ ई० दो वर्ष तक सम्राट् हुमायू का एक सेनापति यहाका शासनकर्त्ता हुआ था। उस समय १५३६ और १५४६ ई०में पुर्त्तगीजोंने दो बार इस नगरको लूटा*। १५७३ ई०में अहमदनगरके अन्तिम मुसलमानराज ३य मुज फ्फरशाहने सम्राट् अकबर शाहको भरोच समर्पण किया। दश वर्ष बाद मुजफ्फर स्वाधीन होने पर भी मोगल-राजके करायत्त हुए। १६१६ ई में अङ्गरेज वणिकोंने तथा १६१७में ओलन्दाज वणिकोंने यहा कोठी खोली। औरङ्ग जेबके समय मुगलशक्ति हीन होती देख महाराष्ट्रोंने १६७५ और १६८६ ई०में इस स्थान पर आक्रमण किया और लूटा। दूसरी बार उनकी चढाईके बाद सम्राट् औरङ्ग-जेबने इसके प्राकारादि पुनर्निर्माणकी आज्ञा दी। नगरके सुरक्षित होनेसे उन्होंने इसका सुखाबाद नाम रखा था। निजाम उल मुल्कने १७३६ ई०में भरोचके मुसलमान शासनकर्त्ताको नवाबकी उपाधिसे भूषित किया। १७७१ ई०में विफलमनोरथ हो पुनः नए उद्यमसे अंगरेजोंने १७७२ ई०में भरोच बन्दरको दखल किया। १७८३ ई०में अंगरेजोंने सिन्देराजके हाथ इसे समर्पण कर फिर १८०३ ई०में छीन लिया।

समुद्रतीरवर्त्ती इस भरुकच्छनगरने बहुत प्राचीन कालसे वैदेशिक वाणिज्यमें विशेष उन्नति की थी। ईसा जन्मके बहुत पहलेसे पश्चिम एशियाके साथ भारतीय वाणिज्यका सम्बन्ध था। इस भरोच नगरसे पण्यद्रव्यादि की जहाज द्वारा पश्चिममें आदेन और लालसागर तीर-वर्त्ती बन्दरोंमें तथा पूर्व बगाल, यवद्वीप, सुमात्रा और बहुत दूर चीन तक रफ्तनी होती थी। अभी बम्बई, सुराष्ट्र और कच्छदेशके माण्डवी बन्दर तक भरोचके जलपथका वाणिज्य फैला हुआ है। सूती कपड़े, लौह, काष्ठ, सुपारी

* यहा बहुसख्यक भार्गव ब्राह्मणोंका वास है। वे अपनेको महर्षि भृगुके वशधर बतलाते हैं।

* पुर्त्तगीजगण इस नगरकी समृद्धिकी कथा उल्लेख कर गये हैं। यह नगर अट्टालिकाओंसे परिशोभित तथा हस्तिदन्त द्वारा निर्मित चित्रों द्रव्य और सुदमयन्त्रसमूहोंसे पूर्ण था। इस समय यहाके जुलाहे उत्कृष्ट वस्त्र बुन सकते थे। Decadas de conto v, p. 325

गुड, चावल आदि यहाका प्रधान वाणिज्य द्रव्य है। यहाका 'वास्ता' नामक सूक्ष्म वस्त्र और अन्यान्य प्रकारके केलिको खरीदनेके हेतु ओलन्दाज और अङ्गरेज वणिक् यहा कोठी खोलनेको बाध्य हुये हैं। वम्बई, सुराष्ट्र, अहमदावाद आदि स्थानोंमें कपड़े बुननेकी कल आदि स्थापित होने पर भी यहाका हाथका ताल (देशीय वस्त्रवयनयन्त्र) आज भी अप्रतिहत है। केवलमात्र कुछ जुलाहे उन्नतिकी आशासे वम्बई गये हैं। इस प्राचीन नगरमें बहुत सी प्राचीन हिन्दू और मुसलमान कीर्त्तिया रक्षित हैं। मुसलमानोंके आधिपत्यकालमें बहुत से प्राचीन हिन्दू, जैन या बौद्ध मन्दिर विध्वस्त हुए तथा उसी जगह उसके प्रस्तरादि द्वारा मुसलमानकी मसजिद बनाई गई हैं।

१ जमा मसजिद, २ बाबा रहन साहबकी दरगाह, ३ इद्रूस मसजिद, ४ छत्रपीरका समाधि मन्दिर, ५ माद्रासा मसजिद, ६ शेठकी हवेली, ७ भृगुस्थान या आश्रम, ८ कबीरस्थान, ९ गङ्गानाथ महादेव, १० अम्बाजीमाता, ११ पिङ्गलेश्वर (दशाश्वमेध तीर्थ), १२ लालुभाईका वाव, १३ वेदहीनका वाव, १४ ओलन्दोंका कब्रिस्तान, १५ आदीश्वर भगवान्, १६ बहुचाराजी माता, १७ नारायणस्वामी, १८ साहू धोबनकी धर्मशाला, १९ सोमनाथ, २० भृगुभास्करेश्वर, २१ भूतनाथ, २२ काशीविश्वम्भर, २३ मनसुव्रतस्वामी, २४ देरासर (जैनमन्दिर), २५ चोविवहो मन्दिर, २६ पार्श्वनाथमन्दिर, २७ सागरगच्छका आदीश्वर, २८ ओलन्दाजोंकी कोठी, २९ भीडभञ्जन कूप, ३० नीलकण्ठ महादेव और ३१ सिन्दवाई माताका मन्दिर आदि देखनेकी चीज हैं। पारसियोंकी श्मशानपुरी (Tower of silence) देखनेसे अनुमान होता है, कि पारसियोंने यहा ११वीं शताब्दीके प्रारम्भमें आ कर वास किया है।

भरोष्टी—षाडवजातीय रागविशेष। यह पूरिया, गौरी और श्यामयोगसे उत्पन्न है।

भरोसा (हिं० पु०) १ आश्रय, आसरा। २ अवलम्ब, सहारा। ३ आशा, उम्मेद। ४ दृढ़विश्वास, यकीन।

भरोसी (हिं० वि०) १ भरोसा या आसरा रखनेवाला, जो किसी बातकी आशा रखता हो। २ आश्रित, जो आश्रयमें रहता हो। ३ विश्वसनीय, जिसका भरोसा किया जाय।

भरौंट (हिं० पु०) राजपूतानेमें अधिकतासे मिलनेवाली एक प्रकारकी जङ्गली घास। पशु इसे बड़े चावसे खाते हैं। इसमें छोटे छोटे दाने या फल भी लगते हैं जिनके चारों ओर कांटे होते हैं।

भरौती (हिं० स्त्री०) वह रसीद जिसमें भरपाई की गई हो, भरपाईका कागज।

भरौंना (हिं० वि०) बोझल, वजनी।

भर्ग (स० पु०) भृज्यते कामादिरनेनेति भृज 'हलश्चेति' घञ्। १ शिव। २ वीतिहोत्रके पुत्र। ३ आदित्यान्तर्गत तेज। ४ भर्जन भाड़में भूना हुआ अन्न। ५ धृष्टकेतु वंशीय नृपभेद। ६ देशभेद।

भर्गतीर्थ (स० क्ली०) तीर्थभेद।

भर्गभूमि (स० पु०) नृपपुत्रभेद।

भर्गस् (स० क्ली०) भर्जत इति भृज भर्जने (अञ्च्यञ्जियुजीभृजिभ्य कुश्च। उण् ४।२१५) इति असुन्, कवर्गश्चान्तदेशः। ज्योति, दीप्ति, चमक।

भर्गस्वत् (स० त्रि०) दीप्तिमत्, मधुर।

भर्गादि (स० पु०) पाणिन्युक्त शब्द गण। यथा—भर्ग, करूष, केकय, कश्मीर, साल्व, उरस्, कौरव्य।

भर्गायन (स० पु०) एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

भर्ग्य (स० पु०) भृज् (ऋहलोर्ण्यत्। पा ३।१।१२४) इति ण्यत्, चजोःकुघिति कुत्व। भर्ग।

भर्च्छु—एक कवि। शार्ङ्गधरपद्धतिमें इनका उल्लेख है।

भर्जन (स० क्ली०) भृज ल्युट्। भृष्टि, भुना हुआ अन्न।

भर्णस् (स० त्रि०) भृ असुन्, नुगागम। भरणकारक।

भर्त्तव्य (स० त्रि०) भृ-तव्य। भरणीय, भरण पोसन करने योग्य।

भर्त्ता (हिं० पु०) भर्तृ देखो।

भर्त्तार (हिं० पु०) स्वामी, खाविन्द।

भर्त्तृ (स० पु०) बिभर्त्ति, पुष्णाति, पालयति धारयतीति वा भृञ् धारणपोषणयो (ण्वुल्तृचौ। पा ३।१।१३३) इति तृच्। १ अधिपति, मालिक। पर्याय—अधिप, ईश, नेता, परिवृढ, अधिभू, पति, इन्द्र, स्वामी, नाथ, आर्य,

प्रभु, ईश्वर, विभु, ईशितृ, इन, नायक। २ स्वामी, खाविन्द। ३ विष्णु। (ति०) ४ धाता और पोषा।

भर्तृकृत्य (स० क्ली०) स्त्रीके प्रति स्वामीका कर्त्तव्य, पत्नीकी स्वास्थ्यरक्षा और गर्भाधानादिके सम्बन्धमें पतिका कर्त्तव्याकर्त्तव्य भावप्रकाशमें इस प्रकार लिखा है—

"आयु क्षयमयाद्भर्त्ता प्रथमे दिवस स्त्रियम्।
द्वितीयेऽपि दिन रत्यै त्यजेदृतुमतीं तथा॥
तत्र यश्चाहितो गर्भो जायमानो न जीवति।
आहितो यस्तृतीयेऽह्नि स्वल्पायुर्विकलाङ्गक ॥
अनश्चतुर्थी षष्ठी स्यादष्टमा दशमी तथा।
द्वादशी चापि या रात्रिस्तस्या तां विधिना भजेत्॥"

भर्तृघ्नी (स० स्त्री०) भर्त्तार हन्तीति हन टक् ङाप्। पतिघातिनी।

भर्तृत्व (स० क्ली०) भर्तुर्भावः त्व। पतित्व, पतिका भाव या धर्म।

भर्तृदारक (स० पु०) भर्त्ता ध्रियते इति दृङ् आदरे कर्मणि घञ् तत स्वार्थे कन। नाट्योक्तिमें युवराज। नाटकमें युवराजको भर्तृदारक नामसे सम्बोधन किया जाता है।

भर्तृप्राप्तिव्रत—स्वामिलाभके लिये स्त्रियोंका आचरणीय व्रतभेद। वराहपुराणमें लिखा है, कि वासन्ती शुक्ल पक्षकी द्वादशी तिथिको यह व्रत किया जाता है।

(वराहपु० २६६ अध्याय)

भर्तृभट्ट—गुहिलवंशीय एक राजपूत राजा। ये मह्ललके बाद चित्तोरके सिंहासन पर बैठे। उनके द्वारा प्रतिष्ठित भत्रपगढ़ और धरणगढ़ आज भी विद्यमान हैं। उनके १३वें पुत्र मालव और गुर्जरराज्यमें राज्यप्रतिष्ठा करके भाट्टेया निह्वोट नामसे परिचित हुए थे।

भर्तृमती (स० स्त्री०) भर्त्ता विद्यतेऽस्य मतुप्। स्वामियुक्ता स्त्री, सधवा स्त्री।

भर्तृमेण्ठ—एक प्राचीन कवि। श्रीकण्ठरचित शार्ङ्गधरपद्धति और सुवृत्तितिलकमें इनके रचित श्लोक उद्धृत हुए हैं।

भर्तृयज्ञ—एक प्राचीन पण्डित। इन्होंने कात्यायन श्रौत सूत्रका एक भाष्य और श्राद्धकल्प प्रणयन किया। कात्यायन श्रौतसूत्रभाष्यके प्रणेता अनन्त और याज्ञिकदेव तथा हेमाद्रि, शूलपाणि आदिने इनका नामोल्लेख किया है।

भर्तृव्रता (स० स्त्री०) भर्त्ता एव व्रत यस्या। पतिव्रता स्त्री।

भर्तृसात् (स० अव्य) भर्तृ साति। भर्त्ताके अधीन।

भर्तृस्नान (स० क्ली०) १ तीर्थभेद। २ पतिस्थान।

भर्तृस्वामिन्—एक प्राचीन कवि। भट्टि देखो।

भर्तृहरि (सं० पु०) स्वनामख्यात एक वैयाकरण और कवि। आप उज्जयिनी-राज विक्रमादित्यके भ्राता थे। राजावलीमें लिखा है गन्धर्वसेनके औरस और दासीके गर्भसे इनका जन्म हुआ था।

"अथ कालेन कियता रसमाख्ये महीतले।
दास्यां गन्धर्वसेनस्तु पुत्रमेकमजीजनत्॥
तस्य भर्तृहरीत्येवं नाम चक्रे महामति।"

(राजावली ४।१-२)

बत्तीस सिंहासनमें इनका विवरण इस प्रकार मिलता है —विक्रमादित्यके पिताके औरस और उनकी मातृ सपत्नीके गर्भसे भर्तृहरिने जन्मग्रहण किया था। विक्रमादित्यके परामर्शसे उनके मातामहने उन्हें राजसिंहासन सौंप दिया। ये अत्यन्त स्त्रैण थे। पीछे स्त्रीकी दुश्चरित्रताको देख कर संसार त्यागी हुए। इनके द्वारा प्रणीत हरिकारिका, वाक्यप्रदीप और शृङ्गारशतकादि ग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध हैं। बहुतसे विद्वान् इनके इस राज भ्रातृत्वको अनुमान सापेक्ष समझते हैं। प्रवाद है, कि राजा भर्तृहरि अपनी प्रियतमा पत्नीके चरित्रमें सन्देह हो जानेसे राजपाट छोड़ कर काशी चले गये थे। वहां सन्यासव्रत ले कर उन्होंने योगधारण किया था। उसी समय उन्होंने शृङ्गारशतक, नीतिशतक और वैराग्यशतक नामक सौ सौ श्लोकोंके तीन ग्रन्थ रचे थे। इन ग्रन्थोंका अनुवाद १६७० ई०में पहले फरासी भाषामें, फिर लैटिन, जर्मन और अङ्गरेजी भाषामें हुआ। व्याकरण शास्त्रमें भी इनकी विशेष व्युत्पत्ति थी। इनका वाक्यप्रदीप या हरिकारिकासूत्र पाणिनिकी तरह आदर पाता है। इसके सिवा आपने महाभाष्यदीपिका और महाभाष्यत्रिपदी व्याख्या नामक दो ग्रन्थ और भी लिखे

हैं। किसी किसीका कहना है, कि भट्टकाव्यके प्रणेता ये ही थे। प्रवाद है, कि ये अपने भाई विक्रमादित्यके जरिये मारे गये थे। विक्रमादित्य देखो।

२ रागिणीविशेष, एक रागिणीका नाम। इसे भटियारी या भटियाला भी कहते हैं। यह रागिणी ललित और परजयोगसे उत्पन्न है। सा वादी है और न सम्वादी। सरगम इस प्रकार है—"स ग म प ध नि सा" (सङ्गीतरत्ना०)

भर्त्तृहरियोगी—साधुसम्प्रदायविशेष। विक्रमादित्यके भाई भर्त्तृहरिने इस सम्प्रदायको परिवर्त्तन किया। राजा भर्त्तृहरिने किसी योगीका शिष्यत्व ग्रहण किया था, इस कारण उनके प्रवर्तित सम्प्रदायिकगण भी योगी नामसे अभिहित हुए हैं। ये लोग हाथमें वाद्ययन्त्र लिये भर्त्तृराजके गुणकीर्त्तन किये घूमते हैं। काशीधामके रावरी तलाव नामक स्थानमें उनका प्रधान अड्डा है। ये लोग गेरुआ वस्त्र पहनते और शवदेहको समाधिस्थ करते हैं।

भर्त्तृहेम—'शृङ्गारशतक' नामक ग्रन्थके प्रणेता, भर्त्तृहरिका एक नाम।

भर्त्सक (सं० त्रि०) भर्त्स ण्वुल्। भर्त्सनाकारी, तिरस्कार करनेवाला।

भर्त्सन (सं० क्ली०) भर्त्स ल्युट्। अपकार वचन, निन्दा, शिकायत। पर्याय—कुत्सा, निन्दा, जुगुप्सा, गर्हा, गर्हण, निन्दन, कुत्सन, परिवाद, परीवाद, जुगुप्सन, आक्षेप, अवर्ण, निर्वाद, अपक्रोश। २ डाट डपट।

भर्त्सपत्रिका (सं० स्त्री०) भर्त्सते क्मेति भर्त्स घञ्, भर्त्सं निन्दितं पत्रं यस्याः, कप् टाप् अत इत्वं। महानीली।

भर्थना—१ युक्तप्रदेशके इटावा जिलान्तर्गत एक तहसील। चम्बल और कुमारी नदीके तीरवर्ती वन्यप्रदेश, यमुना उपत्यका और उत्तर दोआबको ले कर यह उपविभाग गठित है। भूपरिमाण ४१५ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान ग्राम और तहसीलका सदर। यह इटावा नगरसे ६ कोस दूर अवस्थित है। यहां ईष्ट इण्डियन रेलवेका एक स्टेशन है।

भर्थर—गुजरातवासी जातिविशेष। इस जातिके लोग शस्यादि बेच कर जीविका निर्वाह करते हैं

भर्नगढ—मध्यप्रदेशके छिन्दवाडा जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। कोई गोंड सरदार यहांके जागीरदार हैं। टोकघाना वा पाँजरा ग्राममें इनका वास भवन विद्यमान है।

भर्म—राष्ट्रकूटवंशीय एक राजा। ये वाजर्षीके अधिपति थे। प्रभासमें इनकी राजधानी थी। इनके राज्यकालके १४३७ और १४४२ संवतमें उत्कीर्ण शिलालेख मिलते हैं।

भर्म (सं० क्ली०) स्त्रियतेऽनेनेति भृ बाहुलकात् मन्। १ स्वर्ण, सोना। २ भृति, नौकरी। ३ नाभि।

भर्मण्या (सं० स्त्री०) भर्माणि भरणे साधुरिति भर्मन् यत् टाप्। वेतन, तनखाह।

भर्मन् (सं० क्ली०) भरति भ्रियते वेति भृञ् (सर्वधातुभ्यो मनिन्। उण् ४।१४४) इति मनिन्। १ वेतन, तनखाह। २ स्वर्ण, सोना। ३ धुस्तूर, धतूरा। ४ नाभि। ५ भरण, पालन पोसन।

भर्म्यश्व (सं० पु०) भरतवंशीय नृपभेद। (भाग० ९।२१।२४)

भर्रा (हिं० पु०) १ पक्षियोंकी उडान। २ एक प्रकारकी चिड़िया।

भर्राना (हिं० क्रि०) भर्र भर्र शब्द होना, आवाज भर्राना।

भर्सन (हिं० स्त्री०) १ निन्दा, अपवाद। २ फटकार, डांट डपट।

भर्सियान—सुल्तानपुरवासी राजपूत जातिकी एक शाखा। भैंसोल ग्राममें वास करनेके कारण इनका भैंसोलियान वा भर्सियान नाम पडा। ये मैनपुरवासी चौहानोंके वंशधर कहलाते हैं। बरणसिंह नामक इस शाखाके एक सरदारने अयोध्या प्रदेशमें आ कर यहां कन्याका पाणिग्रहण किया था। उनके एक वंशधर राजसिंहने शेरशाहके राजत्वकालमें इसलाम धर्ममें दीक्षित हो कर खान [illegible] आजम भैंसोलियन नाम पाया था। आईन-ई अकबरीमें वर्णित चौहान ई-नौ-मुस्लिम नामक मुसलमान [illegible] आते हैं।

भल (सं० [illegible]) [illegible] दान।

[illegible]

भलका ([illegible] विशेष [illegible] हुआ

सोने या चाँदीका टुकड़ा। इसे शोभाके लिये नथ पर जड़ते हैं। २ एक प्रकारका बाँस।

भलगमडा—बम्बईप्रदेशके काठियावाड़ विभागके कठार जिलान्तर्गत एक छोटा सामन्तराज्य। यहांके सरदार वृटिश-सरकार और जूनागढ़के नवावको कर देते हैं।

भलगाम बुलदोइ—दाक्षिण काठियावाड़ विभागके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। भलगाम नामक ग्राम इसका प्रधान स्थान है। यह अक्षा० २२ २७´ उ० तथा देशा० ७० ५४´ पू०के मध्य विस्तृत है।

भलटी (हि० स्त्री०) हँसिया नामक लोहेका औजार।

भलता (सं० स्त्री०) भातीति भा बाहुलकात् ड, भा चासौ लता चेति कर्मधा०। राजवल्ली।

भलन्दन—१ कान्यकुब्जदेशके एक राजा। इन्होंने योगाव सानमें अयोनिसम्भवा कलावतीको प्राप्त किया था। (ब्रह्मवैवर्त्तपु० श्रीकृष्णजन्मख० १७ अ०)

२ दिष्टवंशीय नृपभेद, नाभागके पुत्र। नाभाग देखो।

मार्कण्डेयपुराणमें इनका भनन्दन नामसे वर्णन किया गया है। नाभागमें सुप्रभा नामक वैश्यकन्याके रूप लावण्यमें मुग्ध हो कर पिताके आज्ञाके विरुद्ध उसके साथ विवाह किया था, इसलिए वे पितृसिंहासनसे वञ्चित रहे थे। उनके पुत्र भनन्दन माताके आदेशसे गोपालनार्थ हिमालय शैल पर गये थे और वहां पर तपःपरायण नीप नृपतिके अनुग्रहसे विविध अस्त्रविद्याओंसे बलवान् हो कर स्वदेश लौटने पर उन्होंने पुनः पितृ-सिंहासन अधिकार किया था। इन्हींके औरससे प्रसिद्ध वत्सप्री राजाका जन्म हुआ था। (मार्क०पु० ११४-११६)

भलपति (हिं० पु०) भाला रखनेवाला, नेजेबरदार।

भलमनसत (हिं० स्त्री०) सज्जनता, शराफत।

भलमनसाहत (हि० स्त्री०) भलमनसत देखो।

भलमनसी (हि० स्त्री०) भलमनसत देखो।

भलला—बम्बई प्रदेशके झलावर जिलान्तर्गत एक छोटा राज्य। भलला ग्राम ही यहांका प्रधान स्थान है। यह अक्षा० २२ ५१´ उ० तथा देशा० ७१ ५६ पू०के मध्य विस्तृत है।

भला (हिं० वि०) १ जो अच्छा हो, उत्तम श्रेष्ठ। २ बढ़िया, अच्छा। (पु०) ३ कल्याण, भलाई। ४ लाभ, नफा। (अव्य०) ५ अस्तु, खैर।

भलाई (हिं० स्त्री०) अच्छापन, भलापन। २ उपकार नेकी। ३ सौभाग्य।

भलानस—ऋग्वेद वर्णित एक प्राचीन जाति। जातितत्त्वविद् औपर्ट (Dr. Oppert) का अनुमान है, कि यह बोलन गिरिसङ्कटमें वास करनेवाली ब्राहुई जाति है। (ऋक् ७।१८।७)

भलापन (हिं० पु०) भलाई देखो।

भले (हिं० क्रि० वि०) १ भलीभांति, अच्छी तरह। (अव्य०) २ खूब, वाह।

भलोट—निम्नश्रेणीकी एक राजपूत जाति। पूर्वमें भलोट ग्राममें इस जातिकी वासभूमि थी, इसीलिए इसका भलोट नाम पड़ा है।

भल्ल (सं० पु०) भल्लते इति भल्ल अच्। १ भल्लूक, भालू। २ देशभेद ३ शस्त्रभेद। हारीतमें लिखा है, कि इस शस्त्र द्वारा शरीरमें धँसा हुआ तीर निकाला जाता था। ४ वध, हत्या। ५ दान। ६ एक प्रकारका वाण। ७ प्राचीन कालकी एक जाति। ८ पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ। ९ सन्निपातविशेष। १० भल्लातक वृक्ष।

भल्लक (सं० पु०) भल्ल-स्वार्थे कन्। १ भल्लूक, भालू। २ पक्षिभेद। एक प्रकारकी चिड़िया। ३ इंगुदीवृक्ष। ४ भल्लातकवृक्ष, भिलावा। ५ सन्निपातविशेष।

भल्लकिमत्स्य (सं० पु०) मत्स्यविशेष। इसका गुण शीतल, गुरु, बलकर, मधुर और श्लेष्मवर्द्धक माना गया है।

भल्लकीय (सं० त्रि०) भल्लस्य अपत्यं छ। भल्लकका अपत्य।

भल्लट—काश्मीर-निवासी एक कवि। ये राजा शङ्करवर्माके आश्रित थे। (राजत० ५।२०४)

इनके बनाए हुए भल्लाटशतक और पद्ममञ्जरी नामक दो ग्रन्थ देखनेमें आते हैं। औचित्यविचारचर्चा कविकण्ठाभरण और शार्ङ्गधरपद्धतिमें इनके रचे हुए श्लोक उद्धृत किये गये हैं।

भल्लतीर्थ—प्राचीन तीर्थभेद।

भल्लपाल (सं० पु०) भल्लं पालयति पालि अण् उप पद स०। भल्लपालक, भल्लदेशपालक।

भल्लपुच्छी (सं० स्त्री०) भल्लस्य पुच्छमिव पुच्छं यस्याः। गवेधुका नामक तृणभेद।

हैं। किन्हीं किन्हींका कहना है, कि भट्टिकाव्यके प्रणेता ये ही थे। प्रवाद है, कि ये अपने भाई विक्रमादित्यके जरिये मारे गये थे। विक्रमादित्य देखो।

२ रागिणीविशेष, एक रागिणीका नाम। इसे भटियारी या भटियाला भी कहते हैं। यह रागिणी ललित और परजयोगसे उत्पन्न है। सा वादी है और म सम्वादी। सरगम इस प्रकार है—"ऋ ग म प ध नि सा" (सङ्गीतरत्ना०)

भर्तृहरियोगी—साधुसम्प्रदायविशेष। विक्रमादित्यके भाई भर्तृहरिने इस सम्प्रदायको परिवर्त्तन किया। राजा भर्तृहरिने किसी योगीका शिष्यत्व ग्रहण किया था, इस कारण उनके प्रवर्त्तित सम्प्रदायिकगण भी योगी नामसे अभिहित हुए हैं। ये लोग हाथमें वाद्ययन्त्र लिये भर्तृराजके गुणकीर्त्तन किये घूमते हैं। काशीधामके बावरी तलाव नामक स्थानमें उनका प्रधान अड्डा है। ये लोग गेरूवस्त्र पहनते और शवदेहको समाविष्ट करते हैं।

भर्तृहेम—'शृङ्गारशतक' नामक ग्रन्थके प्रणेता, भर्तृहरिका एक नाम।

भर्त्सक (सं० त्रि०) भर्त्स-ण्वुल्। भर्त्सनाकारी, तिरस्कार करनेवाला।

भर्त्सन (सं० क्ली०) भर्त्स-ल्युट्। अपकार वचन, निन्दा, शिकायत। पर्याय—कुत्सा, निन्दा, जुगुप्सा, गर्हा, गर्हण, निन्दन, कुत्सन, परिवाद, परीवाद, जुगुप्सन, आक्षेप, अवर्ण, निर्वाद, अपक्रोश। २ डाट डपट।

भर्त्सपत्रिका (सं० स्त्री०) भर्त्सं दे भ्मेति भर्त्स घञ्, भर्त्स निन्दित पत्र यस्या, कप् टाप अत इत्व। महा नीला।

भर्थना—१ युक्तप्रदेशके इटावा जिलान्तर्गत एक तहसील। चम्बल और कुमारी नदीके तीरवर्त्ती वन्यप्रदेश, यमुना उपत्यका और उत्तर दोआबको ले कर यह उपविभाग गठित है। भूपरिमाण ४१५ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागका एक प्रधान ग्राम और तहसील का सदर। यह इटावा नगरसे ६ कोस दूर अवस्थित है। यहां इष्ट इण्डियन रेलवेका एक स्टेशन है।

भर्थर—गुजरातवासी जातिविशेष। इस जातिके लोग शस्यादि बेच कर जीविका निर्वाह करते हैं।

भर्दागढ—मध्यप्रदेशके छिन्दवाडा जिलान्तर्गत एक भूसम्पत्ति। कोई गोंड-सरदार यहांके जागीरदार हैं। टोकधाना या पाँजरा ग्राममें इनका वास भवन विद्यमान है।

भर्म—राष्ट्रकूटवंशीय एक राजा। ये बाजकोंके अधिपति थे। प्रभासमें इनकी राजधानी थी। इनके राज्यकालके १४३७ और १४४२ संवतमें उत्कीर्ण शिला लेख मिलते हैं।

भर्म (सं० क्ली०) ब्रियतेऽनेनेति भृ बाहुलकात् मन्। १ स्वर्ण, सोना। २ भृति, नौकरी। ३ नाभि।

भर्मण्या (सं० स्त्री०) भर्मणि भरणे साधुरिति भर्मन्-यत् टाप्। वेतन, तनखाह।

भर्मन् (सं० क्ली०) भरति भ्रियते येति भृञ् (सर्वधातुभ्यो मनिन्। उण् ४।१४४) इति मनिन्। १ वेतन, तनखाह। २ स्वर्ण, सोना। ३ धुस्तूर, धतूरा, । ४ नाभि। ५ भरण, पालन पोसन।

भर्माश्व (सं० पु०) भरतवंशीय नृपभेद।
(भाग० ९।२१।२४)

भर्रा (हिं० पु०) १ पक्षियोंकी उडान। २ एक प्रकारकी चिडिया।

भर्राना (हिं० क्रि०) भर्र भर्र शब्द होना, आवाज भर्राना।

भर्सन (हिं० स्त्री०) १ निन्दा, अपवाद। २ फटकार, डाट डपट।

भर्मियान—सुल्तानपुर वासी राजपूत जातिकी एक शाखा। भैंसोल ग्राममें वास करनेके कारण इनका भैंसोलियान वा भर्मियान नाम पडा। ये मैनपुर वासी चौहानोंके वंशधर कहलाते हैं। बरणसिंह नामक इस शाखाके एक सरदारने अयोध्या प्रदेशमें आ कर वाई कन्याका पाणिग्रहण किया था। उनके एक वंशधर राजसिंहने शेरशाहके राजत्वकालमें इसलाम धर्ममें दाक्षित हो कर खान इ आजम भैंसोलियन नाम पाया था। आईन इ अकबरीमें वर्णित चौहान इ नौ-मुस्लिम नामक मुसल्मान इसी वंशके समझे जाते हैं।

भल (सं० पु०) १ मार डालनेकी क्रिया, वध। २ दान। ३ निरूपण।

भल्का (हिं० पु०) १ एक विशेष आकारका बना हुआ

सोने या चाँदीका टुकड़ा। इसे शोभाके लिये नथ पर जड़ते हैं। २ एक प्रकारका बाँस।

भलगमडा—बम्बईप्रदेशके काठियावाड़ विभागके झालावाड़ जिलान्तर्गत एक छोटा सामन्तराज्य। यहांके सरदार वृटिश-सरकार और जूनागढ़के नवाबको कर देते हैं।

भलगाम बुलदोई—दाक्षिण काठियावाड़ विभागके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। भलगाम नामक ग्राम इसका प्रधान स्थान है। यह अक्षा० २२ २७´ उ० तथा देशा० ७० ५४´ पू०के मध्य विस्तृत है।

भलटी (हि० स्त्री०) हँसिया नामक लोहेका औजार।

भलता (स० स्त्री०) भातीति भा बाहुलकात् ड, भा चासो लता चेति कर्मधा०। राजबला।

भलन्दन—१ कान्यकुब्जदेशके एक राजा। इन्होंने योगाव सानमें अयोनिसम्भवा कलावतीको प्राप्त किया था। (ब्रह्मवैवर्त्तपु० श्रीकृष्णजन्मख० १७ अ०)

२ दिष्टवंशीय नृपभेद, नाभागके पुत्र। नाभाग देखो। मार्कण्डेयपुराणमें इनका भनन्दन नामसे वर्णन किया गया है। नाभागमें सुप्रभा नामक वैश्यकन्याके रूप लावण्यमें मुग्ध हो कर पिताकी आज्ञाके विरुद्ध उसके साथ विवाह किया था, इसलिए वे पितृ सिंहासनसे वञ्चित रहे थे। उनके पुत्र भनन्दन माताके आदेशसे गोपालनार्थ हिमालय-शैल पर गये थे और वहां पर तपःपरायण नीप नृपतिके अनुग्रहसे विविध अस्त्रविद्याओंसे बलवान् हो कर स्वदेश लौटने पर उन्होंने पुनः पितृ सिंहासन अधिकार किया था। इन्हींके औरससे प्रसिद्ध वत्सप्री राजाका जन्म हुआ था। (मार्क०पु० ११४-११६)

भलपति (हिं० पु०) भाला रखनेवाला, नेजेबरदार।

भलमनसत (हिं० स्त्री०) सज्जनता, शराफत।

भलमनसाहत (हि० स्त्री०) भलमनसत देखो।

भलमनसी (हि० स्त्री०) भलमनसत देखो।

भलला—बम्बई प्रदेशके झालावाड़ जिलान्तर्गत एक छोटा राज्य। भलला ग्राम ही यहांका प्रधान स्थान है। यह अक्षा० २२ ५१´ उ० तथा देशा० ७१ ५६ पू०के मध्य विस्तृत है।

भला (हिं० वि०) १ जो अच्छा हो, उत्तम श्रेष्ठ। २ बढ़िया, अच्छा। (पु०) ३ कल्याण, भलाई। ४ लाभ, नफा। (अव्य०) ५ अस्तु, खैर।



भलाई (हिं० स्त्री०) अच्छापन, भलापन। २ उपकार नेकी। ३ सौभाग्य।

भलानस—ऋग्वेद वर्णित एक प्राचीन जाति। जातितत्त्वविद् औपर्ट (Dt, Oppert) का अनुमान है, कि यह बोलन गिरिसङ्कटमें वास करनेवाली ब्राहुइ जाति है। (ऋक् ७।१८।७)

भलापन (हिं० पु०) भलाई देखो।

भले (हिं० क्रि० वि०) १ भलाभांति, अच्छी तरह। (अव्य०) २ खूब, वाह।

भलोट—निम्नश्रेणीकी एक राजपूत जाति। पूर्वमें भलोट ग्राममें इस जातिकी वास भूमि थी, इसीलिए इसका भलोट नाम पड़ा है।

भल्ल (स० पु०) भल्लते इति भल्ल अच्। १ भल्लूक भालू। २ देशभेद ३ शस्त्रभेद। हारीतमें लिखा है, कि इस शस्त्र द्वारा शरीरमें धँसा हुआ तीर निकाला जाता था। ४ वध, हत्या। ५ दान। ६ एक प्रकारका वाण। ७ प्राचीन कालकी एक जाति। ८ पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ। ९ सन्निपातविशेष। १० भल्लातक वृक्ष।

भल्लक (स० पु०) भल्ल-स्वार्थे कन्। १ भल्लूक, भालू। २ पक्षिभेद। एक प्रकारकी चिड़िया। ३ इङ्गुदीवृक्ष। ४ भल्लातकवृक्ष, भिलावा। ५ सन्निपातविशेष।

भल्लकिमत्स्य (स० पु०) मत्स्यविशेष। इसका गुण शीतल, गुरु, वल्कर, मधुर और श्लेष्मवर्द्धक माना गया है।

भल्लकीय (स० त्रि०) भल्लस्य अपत्य छ। भल्लका अपत्य।

भल्लट—काश्मीर-निवासी एक कवि। ये राजा शङ्करवर्माके आश्रित थे। (राजत० ५।२०३)

इनके बनाए हुए भल्लटशतक और पद्मञ्जरी नामक दो ग्रन्थ देखनेमें आते हैं। औचित्यविचारचर्चा कविकण्ठाभरण और शार्ङ्गधरपद्धतिमें इनके रचे हुए श्लोक उद्धृत किये गये हैं।

भल्लतीर्थ—प्राचीन तीर्थभेद।

भल्लपाल (स० पु०) भल्ल पालयति पालि अण् उप पद स०। भल्लपालक, भल्लदेशपालक।

भल्लपुच्छी (स० स्त्री०) भल्लस्य पुच्छमिव पुच्छ यस्याः। गवेधुका नामक क्षुपभेद।

भल्लय (स० पु०) ईशान दिशाका एक प्राचीन प्रदेश।
भल्लवि (स० पु०) ऋषिभेद।
भल्लाक—राजपुत्रभेद। (वायुपु०)
भल्लाक्ष (स० त्रि०) भल्लस्येवाक्षि यस्य भल्लसमास्त। १ मन्दद्रष्टि, जिसे कम दिखाई देता हो। (पु०) २ हंसभेद।
भल्लाट (स० स्त्री०) १ शशिध्वजराजपुर। भगवान् विष्णु कल्कि अवतार धारण कर पहले सेनाके साथ इसी नगरमें गये थे। (कल्किपु० २२ अ०) (पु०) २ दण्ड सेनके पुत्र। ३ पर्वतभेद।
भल्लात (स० पु०) भल्ल भल्लास्त्रमिव अनति आत्मानं ज्ञापयतीति अत अच्। भल्लातकवृक्ष, भिलावाँ।
भल्लातक (स० पु०) भल्ल इव अततीति अत क्वुन वा भल्लात स्वार्थे कन्। स्वनामख्यात वृक्षविशेष, भिलावे-का पेड़। (Semecarpus Anacardium या The marking nut tree) वस्त्रादिमें चिह्न देनेके लिए, विशेषतः रजकगण, इसका व्यवहार करते हैं। इसके रससे सूती कपड़े कालेरंगसे रंग जाते हैं। शतद्रुसे आसाम तक पर्वतके निम्नतट पर या आसपास, भारतमहासागरके पूर्वद्वीपपुञ्जमें तथा उत्तर अष्ट्रेलियामें यह वृक्ष काफी तौर पर होता है।

स्थानविशेषमें यह वृक्ष विभिन्न नामसे परिचित है। जैसे, हिन्दीमें—भेला, भिलावा, भिलवन, भ्योला, बैलतक; बङ्गलामें—भेला, भेलतकि, सन्थाल—सोसो, कोल--लोसों, उड़िया—भलिया, गारो बवरी, आसाम—भोलगुटी; नेपाल—भलैयो, भलै, लेपचा—कोट्टी, मलया—चेरुपाद्रुग, कम्पिरा; गोंड—कोका, बिबा, युक्त प्रदेश—भिलावा, भाल, भलियान, पञ्जाब—भिलाव, भेला भिलादर; मध्यप्रदेश—भिलावा, कोक, भल्लिया, बम्बई—बिब, बीब, भीलम, बिल्म्बी; मराठी—बिब्ब, बिब्बू, बिभ, गुजराती—भिलामृ, दाक्षिणात्य—भिलावन, बेल्तक; तामिल—शनकोट्टई, सेरमकोट्टै, सैङ्कू, सेयरङ्ग, तेलगु—जिडि विट्टुलु, जिडि, नेल्लजीडि, नल्ल जिडि, चेट्टु, जीडिचेट्टु, तुमदा, मामिडि, कनडी—गेरु, गेर, गेरु; ब्रह्म—चेंचेन, थिसि; सिंहल—किरि बदुल्ल, फारसी—भिलादुर, अरब—भिलदिन, हब्बुल कहम, हबेल्कल्ब। संस्कृत पर्याय—अरुस्कर, भल्लात, शोफकृत्, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत्, भूतनाशन, भल्लातकी, अग्निमुखी, वीरवृक्ष, निर्दहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलबीज, वातारि, स्फोटबीजक, पृथक्-बीज, धनुर्वृक्ष, बीजपादप और वह्नि। इसके गुण—कटु, तिक्त, कषाय, उष्ण, कृमि, कफ, वात, उदर, आनाह और मेहनाशक। फलगुण—कषाय, मधुर, कोष्ण, कफ, श्रम, श्वास, आनाह, विबन्ध, शूल, जठर, आध्मान और कृमिनाशक।

इसका मज्जगुण विशेषरूपसे दाह और पित्तनाशक, तर्पण, वात और अरुचिनाशक तथा प्रीतिजनक है। (राजनि०)

भावप्रकाशमें लिखा है,—भल्लातक शब्द तीनों लिङ्गोंमें व्यवहृत होता है। अरुष्क, अरुस्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफकृत्, ये भल्लातकके प्रसिद्ध नाम हैं। इसका पका फल मधुरकषायरस, मधुरविपाक, लघु, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, छेदी, भेदक, मेधाजनक अग्निकारक तथा कफ, वायु, व्रण, उदर, कुष्ठ अर्श, ग्रहणी, गुल्म, शोथ, आनाह, ज्वर और कृमिनाशक है। इसकी मज्जा—मधुरस, शुक्रवर्द्धक, मांसवर्द्धक, वायु और कफनाशक है। भल्लातक—कषाय, मधुरस, उष्णवीर्य, शुक्रवर्द्धक, लघु, वायु, श्लेष्मा, उदरानाह, कुष्ठ, अर्श, ग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्र, अग्निमान्द्य, कृमि और व्रणनाशक होता है।

इस वृक्षसे एक प्रकारका काले रंगका गोंद सा निकलता है। उससे वार्निशका काम होता है। इसका बीजकोष तिक्त और धारकगुणविशिष्ट है। उसमें जो काले रंगका गोंद सा रहता है, उसे कपड़े पर लगा कर ऊपरसे चूनेका पानी डाल देनेसे फिर वह कभी भी नहीं छूटता। इसके काले रसमें फिटकरी मिला कर उससे कपड़े रंगे जाते हैं। बालेश्वर जिलेमें ऊपरकी हँड़ियामें भिलावाँ रख कर नीचेकी हँडिया आग पर रखी जाती है। क्रमशः गरम होने पर ऊपरकी हड़ियाके छेदोंसे रस टपक कर नीचेकी हँडियामें इकट्ठा होता रहता है। तब उस रसमें तेल और चूनेका पानी मिला कर कपड़े रंगे जाते हैं। हजारीबागमें पहले कपड़ोंको अच्छी तरह

धोकर फिटकरीके पानीमें भिगो देते हैं, पीछे उसे सुखा कर भिलावाके रसमें डुबो देते हैं। इस तरह कपड़ेमें रंग अच्छी तरह भिद आने पर उसे सुखा कर धो लेना पड़ता है। सरसोंके तेलमें भिलावाका चूरा मिला कर उसे चमड़े पर लगाया जाय, तो चमड़ा सड़ कर नष्ट नहीं होता। गेंडे और भैंसेके चमड़ेको साफ करनेमें प्रधानतः भिलावाका व्यवहार होता है।

इसकी गरी और बीजकोषसे एक प्रकारका मीठा तेल पाया जाता है। वायुके संयोगसे वह काला पड़ जाता है। पोटासियम मिलानेसे यह स्वच्छ हो जाता है। इस फलकी गरी चरपरी होती है, पर आगमें जला कर खानेसे अच्छी लगती है। इसका गोंद अगर देहसे लग जाय, तो घाव हो जाता है। हाथ पैरोंकी गांठोंमें इसके तेलकी मालिश करके उस पर धूआं दिया जाय तो सूजन हो जाती है। वायुरोगसे फूले हुए स्थान पर तथा डाढ़ोंमें लगानेसे फायदा होता है। परन्तु अच्छा भली जगहमें लगा देनेसे घाव हुए विना न रहेगा। इसके प्रयोगसे चमड़ी लाल हो कर फूल जाय, तो नारियलका तेल या इमलीके पानीसे उस स्थानको धो डालना चाहिए। इससे आराम पड़ता है।

इसके पत्तोंसे पत्तले बनती हैं, और लकड़ी सिर्फ जलानेके ही काम आती हैं।

**भल्लातकगुड** (सं० पु०) अर्शोरोगाधिकारमें एक गुड़ौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—भिलावा २००, जल ६४ शराव, शेष १६ शराव, गुड १२॥ शराव, छिन्नभल्लातक ५००, त्रिफला, त्रिकटु, मोथा और सैंधव प्रत्येक २ तोला। इन सब द्रव्योंका यथानियम पाक करनेसे गुड प्रस्तुत होता है। अर्शारोगमें इसका सेवन करनेसे अर्श रोग अति शीघ्र जाता रहता है। (चक्रदत्त अर्शोरोगाधि०)

भैषज्य रत्नावलीके कुष्ठाधिकारमें एक महाभल्लातक गुड़ौषधकी व्यवस्था लिखो है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—नीमकी छाल, श्यामलता, अतीस, कटकी, इन्द्रजव, त्रिफला, मोथा, पितपापड़ा, अनन्तमूल, वच, खदिर काष्ठ, रक्तचन्दन, अञ्जन, सोंठ, कपूर, वरुण, अड़ूस मूलकी छाल, चिरायता, कुटज मूलकी छाल, विड़ङ्ग, गोपालकर्कटीकी जड़, मुरगामूल, चिड़ङ्ग, इन्द्रयव, त्रिफ, चितामूल, हस्तिकर्णपलाशकी छाल गुलञ्च, घोड़ानीम छाल, पटोलपत्र, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, पिपुल, अमलतास फलकी मज्जा, कलियारता, ओल, बीनाघास, मजीठ, चाकुन्दुका बीज, तालमूली, प्रियंगु, कायफल, शरपुङ्ख, शिरीषकी छाल, प्रत्येक दो पल, भिलावा तीन हजार, जल ६४ सेर, शेष १६ सेर। इन दोनों काढ़ेको छान कर एक साथ मिलावे। पीछे उसमें पुराना गुड १२॥० सेर और एक हजार भिलावाकी मज्जा दे कर पाक करे। तदन्तर त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, सैन्धव, यमानी, प्रत्येक १ पल, गुडत्वक्, तेजपत्र, इलायची, नागेश्वर, प्रत्येक २ तोला और गन्धक ४ पल डाल दे। इन्हें यथाविधि पाक करके घृतभाण्डमें रख छोड़े। इसका अनुपान गुलञ्चका क्वाथ और दूध है। पथ्य उष्ण अन्न बतलाया गया है। इस औषधका सेवन करनेसे कुष्ठ, वातरक्त आदि जाते रहते हैं। (भैषज्यरत्ना० कुष्ठाधि०)

**भल्लातकघृत** (सं० क्लो०) घृतौषधविशेष। चक्रदत्तके चिकित्सित स्थानके ५म अध्यायमें इस घृतकी प्रस्तुत प्रणाली लिखी है। इसके सेवनसे गुल्मरोग जाता रहता है।

भैषज्यरत्नावलीमें अमृत भल्लातक नामक घृतौषधका उल्लेख है। यह अमृतके समान उपकारक है, इसीसे इसका नाम भल्लातक रखा गया है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—वृक्षसे गिरा हुआ भू पक्व भिलावा ८ सेर, इसे ईंटके चूरमें मिला कर पीछे जलमें धो ले और धूपमें सूखने दे। सूख जाने पर उन भिलावोंको दो खण्ड करके ६४ सेर जलमें पाक करे। जब १६ सेर जल रह जाय, तब उसे उतार कर ठढा होने दे। बादमें उसे छान कर फिर आठ सेर दूधमें पाक करे। इसके बाद पादशेष रह जाने पर उसे फिर आठ सेर घीमें पाक करे। सिद्ध हो जाने पर उसे उतार ले और चार सेर चीनी डाल कर अच्छी तरह मिलावे। चिकित्सक स्वास्थ्यकी विवेचना करके यथायोग्य मात्रामें इसका व्यवहार करे। यह घृत प्रातःकालमें सेवनीय है। सेवनावस्थामें आहार विहारादि करना बिल्कुल मना है। इसकी मात्रा ॥०) आनासे २ तोला निश्चित है। इसके सेवनसे कुष्ठादि नानारोगोंका ध्वंस हो कर बलवीर्य और बुद्धिकी वृद्धि होती है। (भैषज्यरत्ना० कुष्ठाधिका०)

पंक्तिपावन, पञ्चाग्निक और सोमयज्ञकारी ब्रह्मवादी ब्राह्मणोंका वास था। उनके वंशमें वाजपेययज्ञके सम्पादनकारी पूज्य महाकवि गोपाल भट्टका जन्म हुआ। उन्हीं गोपालके पौत्र और पवित्रकीर्त्ति नीलकण्ठके पुत्र रूपमें भवभूतिने जन्मग्रहण किया।*

आपके पितृपुरुषगण वेदविद्यामें सुपण्डित थे। वंशगत विद्यानुशीलन तथा अपनी असाधारण प्रतिभा और अध्यवसायसे ये संस्कृत-रचनामें पारदर्शिता प्राप्त करनेके कारण अनन्य साधारण श्रीकण्ठ उपाधिसे समलङ्कृत हुए थे। आपकी माताका नाम जातुकर्णी था†। बाल्यकालमें आप सर्वशास्त्रज्ञ ज्ञाननिधि नामक एक उपाध्यायके निकट अध्ययन करते थे।×

विदर्भदेशमें¶ जन्मग्रहण करनेके बाद भवभूतिने अपना बाल्यजीवन कहां और किस प्रकार बिताया इसका कोई विशेष विवरण नहीं मिलता। मालतीमाधवके प्रकरणको पढ़ कर हम इतना तो जान सकते हैं, कि उनके समयमें कुण्डिनपुरमें विदर्भकी राजधानी थी।+ जिस पद्मपुरमें कविका जन्म हुआ था, वह स्थान अब जनशून्य घोर अरण्य हो गया है।

ऐतिहासिकोंने भवभूतिके आविर्भाव-कालके निर्णयार्थ गभीर गवेषणा पूर्वक जो प्रमाण संगृहीत किये हैं, उनसे मालूम होता है, कि भवभूति ८म शताब्दीमें हुए हैं। अयोध्यापति रामचन्द्रके चरिताख्यानको ले कर जितने भी नाटक रचे गये हैं, उनमें कविका उत्तरचरित और वीरचरित सर्वापेक्षा प्राचीन है, इसमें सन्देह नहीं।× कालिदास और भवभूतिके काव्योंकी परस्पर तुलना करनेसे कालिदासको ही श्रेष्ठ मानना पड़ता है। कालिदासकी कविता सरल और स्वाभाविक है, भवभूतिका काव्य दीर्घ समासके कारण जटिल हो गया है, परन्तु उनकी स्वभाववर्णना प्रकृतिकी विशेष अनुकारिणी है।

कविकी रचनाशक्ति और वर्णनाशक्ति युगपत् विस्मयोद्दीपक है। इस प्रकारका भाषाधिपत्य अन्य किसी भी कविके काव्यमें नहीं देखा जाता। आपकी लेखनीसे निकला हुआ दुरूहपद समन्वित दीर्घसमास विन्यास मेघमन्द्रके समान स्निग्ध, गम्भीर और चित्तग्राही है। मालतीके प्रणयसे निराश हो कर माधव आत्मविसर्जनके लिए श्मशान घाटमें उपस्थित हुए हैं। कविने विभीषिका पूर्ण उस श्मशानका जो चित्र अङ्कित किया है, उसे हम उदाहरणार्थ यहां उद्धृत करते हैं:—

' गुञ्जत्कुञ्जकुटीरकौशिकघटा
घुत्कारवत्कीचक क्रन्दत् फेरव
चण्डात्कृतिभृतप्राग्भारभीमैस्तटैः ।
अन्तःशीर्णकरङ्क कर्परचयः संरोधकूलङ्कषा
स्रोतोनिर्गमघोरघर्घरवा पारे श्मशानं सरित् ।"

निशीथ समयमें भीषण श्मशान भूमिमें आनेवाले मनुष्यके हृदयमें स्वभावतः ही भीतिभाव उत्पन्न हुआ करता है। उस पर भी नैशान्धकार विजड़ित उस चिताग्निकी क्षीणदीप्त प्रभामें गाढ़ अन्धकारमय श्मशानपुरीका दृश्य

---

* "अस्ति दक्षिणापथे पद्मपुरं नाम नगरम्। तत्र केचित्तैत्तिरीयिणः काश्यपाश्चरणगुरवः पंक्तिपावनाः पञ्चाग्नयो धृतव्रताः सोमपीथिन उदुम्बरा ब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति। तदामुष्यायणस्य तत्र भवतो वाजपेययाजिनो महाकवेः पञ्चमः सुगृहीतनाम्नो भट्टगोपालस्य पौत्रः पवित्रकीर्त्तेर्नीलकण्ठस्यात्मसम्भवः श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिर्नाम जातूकर्णीपुत्रः कविर्मित्रधेयमस्माकमित्यत्र भवन्तो विदाङ्कुर्वन्तु।"

† भवभूतिकी माता जातुकर्णगोत्रसम्भूता थीं। जातुकर्णीगोत्रसम्भवत्वात् भवभूतिजननी जातुकर्णी इत्यभ्यधायि।'

( उत्तर० टीका )

× "श्रेष्ठः परमहंसानां महर्षीणामिवाङ्गिराः।
यथार्थनामा भगवान् यस्य ज्ञाननिधिर्गुरुः ॥" ( वीर० )

¶ वर्त्तमान बरार प्रदेश।

\+ अब विदार नामसे प्रसिद्ध है।

× अध्यापक विल्सन, आनन्दराम बड़ुआ आदि मनीषियोंने नाना युक्तियोंसे यह बात प्रमाणित कर दी है। बालरामायण और प्रचण्डपाण्डव नाटकके प्रणेता राजशेखरने रामचरित-रचकोंका इस प्रकार पौर्वापर्य लिखा है —

"बभूव वल्मीकिभवः कविः पुरा
ततः प्रपेदे भुवि भर्त्तृमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया
स वर्त्तते सम्प्रति राजशेखरः ॥" ( प्रचण्डपाण्डव )

और विभीषिकामय हो गया है। भूतसङ्ग प्रभूत भय, क्षीणालोक प्रकटित पिशाचोंकी अमानुषिक आकृति, वेगसे चलनेवाली वायुका साथ साथ शब्द, शवोंके कङ्काल, प्रतिहतप्रवाहा शैवलिनीका घोर घर्घर नाद, उल्लुओंका उद्यामकारी रव और शृगालोंके दीर्घ शब्द इन सबोंने उस भीषण श्मशान प्रदेशको और भी भया वह कर दिया है।* उक्त श्लोकके दीर्घ समास तथा सर लित, घुत्कार, चण्ड, तारस्तत भूत, प्राग्भार, भीम, घोर घर्घर और श्मशान आदि पद भीति सञ्चारके प्रधान सहा यक हो गये हैं।

भवभूतिके काव्यमें दीर्घसमासका प्रयोग देख कर कोई कोई प्रत्नतत्त्वविद् उन्हें बाणभट्ट, दण्डी आदि के समयुगवर्त्ती समझते हैं†। राजतरङ्गिणीके पढ़नेसे मालूम होता है, कि कवि भवभूति कान्यकुब्जराज यशोवर्माकी सभामें विद्यमान थे‡। वाक्पतिराज कृत गौड़वध नामक ग्रन्थमें भवभूति समुद्रसे काव्यामृत मन्थनकी कथाका उल्लेख है।

शाङ्गधरपद्धति, प्रचण्डपाण्डव, बालरामायण, भोज

* एतिहासिक एल्फिन्स्टोनने इनकी श्मशान वर्णनाको सर्व-श्रेष्ठ समझा है —

Among the most impressive descriptions is one where his hero repairs at midnight to a field of tombs, scarcely lighted by the flames of the funeral pyres and evokes the demons of the place whose appearance filling the air with shrill cries and unearthly forms is painted in dark and powerful colours, while the solitude, the moaning of the wind, the hoarse sound of the brook, the wailing owl and the longdrawn howling of the jackals which succeed on the sudden disappearance of the spirits, almost surpass in effect, the presence of their supernatural terrors

† बाणभट्ट, मयूर आदि सम्वत्की पञ्चम शताब्दीके शेष भाग में विद्यमान थे।

‡ "कविर्वाक्पतिराज श्रीभवभूत्यादि सेवित ।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुति वन्दिताम् ॥"
(राजतर० ४।१४४)

राजा यशोवर्मा सम्वत्की छठी शताब्दीके शेषभागमें कान्य कुब्ज सिंहासन पर अधिष्ठित हुए थे। भवभूति इनके राजत्व-कालमें विद्यमान थे, इस बातका प्रमाण इसमें काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तिके रचयिता वामन प्रणीत ध्वन्यालोक लोचनमें मिल सकता है। वामनने उक्त ग्रन्थमें उत्तरचरितके श्लोक उद्धृत किये हैं। आलोचना करनेसे मालूम होता है, कि वामन ७वीं शताब्दीके शेषभागमें या ८वीं सदीके आरम्भमें जीवित थे।

इन्दौरसे प्राप्त मालतीमाधवकी हस्तलिखित प्रतिके अङ्कोंके अन्तमें 'इतिकुमारिलशिष्यकृत', 'इति कुमारिलस्वामीप्रसादप्राप्त वाग्वैभव श्रीमदुम्बेकाचार्यविरचित' और 'इति भवभूतिविरचित' इत्यादि पाठ रहनेसे कोई कोई विद्वान् भवभूतिको कुमारिलका शिष्य समझते हैं। यह बात नितान्त अयौक्तिक नहीं जान पड़ती। कुमारिल-कृत साङ्ख्यकारिका भाष्य ५५७—५८३ ई०-के मध्य चीनी भाषामें अनुवादित हुआ था। भवभूतिके नाटकमें जो बौद्धविरोध है, उससे प्रतिपन्न होता है कि वे कुमारिलके मता-नुयत हुए थे।

मालतीमाधवकी भूमिकामें डा० भण्डारकरने लिखा है, कि "पण्डितसमाजमें प्रवाद है, कि भवभूति कालिदासके समसामयिक थे।" यह प्रवाद इस प्रकार है,—भवभूतिने उत्तररामचरितकी रचना करके कालिदाससे उसके विषयमें उनका अभिमत पूछा था। कालिदासने उस समय चतुरङ्गक्रीड़ामें रत होनेसे, ग्रंथको उच्चस्वरसे पढ़नेके लिये कहा। आद्योपान्त श्रवण कर कालिदास ने सन्तोषके साथ कहा कि ग्रंथ उत्तम है, परन्तु—

"किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगा
दविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण।
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णो
रविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत् ॥" (उत्तर १)

"इस श्लोकके ४र्थ चरणमें एक शब्दमें एक अनुस्वार अधिक हो गया है।" उनके उपदेशानुसार भवभूतिने यहां "रात्रिरेव व्यरंसीत्" पाठ बना लिया। पर इस जरा-सी बात पर, जोकि जनसमाजमें प्रवाद है, भवभूतिको कालिदासका समसामयिक नहीं कहा जा सकता।

प्रबन्ध, प्रौढमनोरमा, सरस्वतीकण्ठाभरण और साहित्य-दर्पण आदि ग्रन्थोंमें भवभूतिका उल्लेख है, परन्तु उससे कविके काल निर्णयमें विशेष सहायता नहीं मिलती।

भवभूति कृत मालतीमाधवप्रकरणको अभिनिवेश-पूर्वक पढ़नेसे तत्सामयिक बौद्ध और तान्त्रिक समाजकी आभ्यन्तरीण अवस्थाका आभास पाया जाता है। कुमारिल आदि उस बौद्धमत प्लावित भारतमें ब्राह्मण्य धर्म और वैदिक क्रियाकलापादिके स्थापनमें जैसे बद्धपरिकर हुए थे, कवि भवभूतिने अपने नाट्यकाव्यमें परोक्षभावसे उसी मतका पोषण किया है। परिव्राजिका कामन्दकीके कार्यकलापका अवलोकन करनेसे, उस समयकी बौद्ध समाजकी भग्नावस्थाका परिचय मिलता है। मालती माधवको विवाहसूत्रमें आबद्ध करना और मालतीका सौभाग्यवृद्धिके लिए कृष्णचतुर्दशीमें शिवपूजनार्थ पुष्प चयन देख कर अनुमान होता है, कि उस समय हिन्दू धर्म पुनरभ्युदित हुआ था। वस्तुतः उस समयके बौद्ध गण शिवाराधना करें या बुद्धमार्गका अनुसरण करें, कुछ स्थिर न कर सके थे। उस समय बौद्ध और हिंदू सम्प्रदायमें परस्पर वैरभाव नहीं था। ब्राह्मणमन्त्री भूरिवसु और देवरातने बौद्ध-कन्या कामन्दकी और सौदामिनी आदिके साथ एक ही गुरुकी पाठशालामें अध्ययन किया था। द्वितीय अङ्कके "गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा" इत्यादि वाक्यमें बौद्धोंके हिंदूसंहिताका अध्ययन सूचित हुआ है।

भवभूतिके समसामयिक तान्त्रिक समाजकी अवस्था अतीव शोचनीय थी। सौदामिनी, कपालकुण्डला और अघोरघण्टके चरित्रमें सम्पूर्णतः इसका प्रतिभास है। सौदामिनीचरित्रमें बौद्धोंके स्वधर्मत्याग पूर्वक अघोरी शैव या तान्त्रिक उपासनाका आभास पाया जाता है। पहले सौदामिनी बौद्धधर्मावलम्बिनी थीं, पश्चात् उन्होंने अघोरघण्टको शिष्या हो कर गुरुचर्या, तपस्या, तन्त्र, मन्त्र, योग, अभियोग आदिके अनुष्ठान द्वारा सिद्धिलाभ किया। उनके तान्त्रिकधर्म ग्रहण करने पर बौद्धोंने विशेष विद्वेषभाव नहीं प्रकट किया था।

पञ्चमाङ्कमें चामुण्डाके सम्मुख बलिदानकी व्यवस्था देख कर अनुमान किया जा सकता है, कि उस समय दाक्षिणात्यमें नर बलि प्रचलित थी। अघोरघण्ट और कपालकुण्डला इस पिशाच प्रकृतिके चरम निदर्शन हैं।

कविके वीरचरित और उत्तरचरितके पढ़नेसे वैदिक समाजके विशिष्ट लक्षणोंका परिज्ञान हो जाता है। लव और कुशका जातकर्म, चूडाकरण, उपनयन और वेदाध्ययन, रामचन्द्रका दीक्षा ग्रहण, गोदान मङ्गल और विवाहाग्नि सत्कार तथा आण्डायनादिका ब्रह्मचर्य, अतिथिसत्कार और उसकी प्रयोजनीयता आदि वैदिक आचार विशदरूपसे विवृत हुआ है। भवभूति द्वारा अङ्कित प्राचीन समाज चित्रका धर्मशास्त्रकारोंने भी अनुमोदन किया है। किस प्रकार उनका पालन किया जाता है, ग्रन्थकारने दोनों ही राम चरित्रोंमें इस बातका आभास दिया है। इसके सिवा वेद, उपनिषद्, धर्मसंहिता, पुराण, रामायण, महाभारत आदिसे मत उद्धृत कर उन्होंने वैदिक समाजका आदर्श गठन किया है। बौद्ध और तान्त्रिक धर्मसे प्रतिनिवृत्त हो कर जनसाधारण जिससे वैदिक आचार व्यवहारका अनुवर्त्तन कर सके, यह गूढ़ उद्देश तीनों ही नाटकोंमें विमिश्रित है। कवि द्वारा वर्णित वैदिक समाजकी पवित्रता, महत्ता तथा तान्त्रिक क्रियाकलापकी भीषण नीति भ्रष्टता और हिंसाप्रवणताका अनुधावन करनेसे मालूम होता है कि, वे सनातन आर्यधर्मके विशेष पक्षपाती थे।

काव्य, अलङ्कार और व्याकरण शास्त्रकी भांति वेदान्तादि दर्शनशास्त्रोंमें भी आपकी विलक्षण व्युत्पत्ति थी।* उत्तररामचरितको जरा ध्यानसे पढ़ा जाय तो मालूम हो सकता है कि भवभूति शङ्कराचार्यके पूर्व प्रादुर्भूत हुए थे।†। भवभूतिका विद्याप्रभाव चारों ओर

* "विद्याकल्पेन मरुता मेघानां भूयसामपि।
ब्रह्मणीव विवर्त्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः॥"

( उत्तरच० ६ )

इसमें विवर्त्तवादका कुछ कुछ आभास दिया गया है।

† उक्त ग्रन्थके ४र्थ अङ्कके "अन्धतामिस्रा ह्यसूर्या नाम ते लोकाः प्रेत्य प्रतिनिर्धीयन्ते ये आत्मघातिन इत्येवं ऋषयो मन्यन्ते" इस वाक्यको देख कर अनुमान होता है कि, ग्रंथकारने वाजसनेय संहितोपनिषदके निम्नलिखित श्लोकोंका आश्रय ग्रहण किया था—

व्याप्त होने पर वे क्रमसे उज्जयिनी राजाके सभापण्डित नियुक्त हुए थे। यहीं पर कविके जीवनका अधिकाश समय व्यतीत हुआ था। आपके उक्त तीनों ही नाटक उज्जयिनीके अधिष्ठातृदेव कालप्रिय नाथके समक्ष अभिनीत हुए थे *।

"असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्मनो जना॥"
(वाजसनेय उ०)

वर्त्तमान उक्त श्लोकके शब्दार्थ पर लक्ष्य कर भवभूतिने उस अपने ग्रन्थमें समाविष्ट किया है। महर्षि शङ्कराचार्यने अपने वाजसनेयोपनिषद् भाष्यमें इसकी विवृति दी है जो इस प्रकार है—"अथ इदानीं अविद्वन्निन्दार्थोऽयं मन्त्र आरभ्यते। असुर्या परमात्मभावमद्वयमपेक्ष्य देवादयोऽपि असुरास्तेषां च असुर्या। नाम शब्दोऽनर्थको निपातः। ते लोका कर्मफलानि लोक्यन्ते भुज्यन्त इति जन्मानि। अन्धेन अदर्शनात्मकेन अज्ञानेन तमसा आवृता आच्छादितास्तान् स्थावरान्तान् प्रेत्य त्यक्त्वा इमं देहं अभिगच्छन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्। ये के चात्महनः। आत्मानं घ्नन्तीति आत्महनः। के ते ये अविद्वांसः। कथं ते आत्मानं नित्यं हिंसन्ति। अविद्यादोषेण विद्यमानस्य आत्मनस्तिरस्करणात्। विद्यमानस्य आत्मनो यत् कार्यं फलं अजरामरत्वादिसंवेदनादिलक्षणं तत् तस्यैव तिरोभूतं भवतीति प्राकृता अविद्वांसो जना आत्महन उच्यते। तेन हि आत्महननदोषेण संसरन्ति ते।' (शाङ्करभाष्य ३)

भवभूति और शङ्करकी व्याख्यामें वैषम्य देख कर कोई अनुमान करते हैं कि उत्तरचरितकी रचनाके समय उक्त उपनिषद्का शांकरभाष्य नहीं था। शङ्करकी अभिनव एवं मनोरम व्याख्या मिलने पर भवभूति कभी भी उक्त उपनिषद्-वाक्यके आक्षरिक अर्थको ग्रहण नहीं करते। भवभूति शङ्कराचार्यके पूर्ववर्त्ती थे, इस बातको बहुतसे विद्वान् स्वीकार करते हैं। वर्तमान अनुसन्धान से प्रमाणित होता है कि शङ्कराचार्य ईसाकी ६ठी शताब्दीके निकटवर्ती किसी समयमें विद्यमान थे। इसलिए उनका शङ्कराचार्यके परवर्त्तित्वका मानना किसी प्रकार असमीचीन नहीं मालूम होता।

* भवभूति द्वारा प्रकटित कालप्रियनाथ कौन-सी देवमूर्ति है और वह कहां प्रतिष्ठित थीं, इसका विशेष विवरण कुछ नहीं मिलता। स्वर्गीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागरने जगद्धरके मतानुसरण कर उन्हें पद्मनगरस्थ देवमूर्ति विशेष बतलाया है। परन्तु वामनरामायण, कथासरित्सागर, रघुवंश (६।३४) और मेघदूत (१।३५) आदि ग्रन्थोंमें उज्जयिनी नगरीमें प्रतिष्ठित शिवमूर्तिका ही महाकालनाथ, महाकाल-निकेतन, महाकालपुर आदि नाममें उल्लेख किया गया है। भवभूति जिस समय उज्जयिनी राजसभाके पण्डित थे, तब सम्भवतः वे उज्जयिनीके अधिष्ठातृदेवका कालप्रियनाथ नामसे सम्बोधन करते होंगे। उज्जयिनी नगरीकी शिप्रा नदीके पूर्वतीरस्थ पिशाच-मुक्तेश्वर घाटके पूर्व-दक्षिणमें महाकालका बड़ा भारी मन्दिर [illegible]

भवमय (सं० त्रि०) भव स्वरूपे मयट्। भव स्वरूप।
भवमोचन (सं० त्रि०) संसारके बंधनोंसे छुड़ानेवाला, भगवान्।
भवरुद् (सं० स्त्री०) भवे जन्मादिप्रदे संसारे रोदिति अनेनेति भवे जन्मान्ते रोदित्यनेनेति वा रुद् क्विप्। प्रेत पटह, एक प्रकारका बाजा जो मृतककी अन्त्येष्टि क्रियाके समय बजाया जाता है।
भवर्ग (सं० पु०) नक्षत्रवर्ग।
भववामा (सं० स्त्री०) शिवजीकी स्त्री, पार्वती।
भवविलास (सं० पु०) १ माया। २ संसारके सुख जो अज्ञानके अन्धकारसे उदित होते हैं।
भवशर्मन्—मिथिलावासी एक पण्डित। इन्होंने मिथला राज नृसिंहके मन्त्री रामदत्तके आदेशसे षोडश महादान पद्धति प्रणयन की।
भवशूल (सं० पु०) सांसारिक दुःख और क्लेश।
भवसम्भव (सं० त्रि०) सांसारिक, संसारमें होनेवाला।
भवसार—गुजरातवासी निम्न जातिविशेष। वस्त्रादि रंगाना इनका जातीय व्यवसाय है।
भवस्वामी—१ कल्पविवरणके प्रणेता। २ बौधायन श्रौत सूत्रके भाष्य, अग्निष्टोमप्रयोग, बौधायनचातुर्मास्यसूत्र भाष्य और बौधायनदर्शपूर्णमास प्रभृति ग्रन्थोंके प्रणेता। केशवकृत प्रयोगसारमें इनका मत उद्धृत हुआ है।
भवसृक् (सं० पु०) १ निखिल ब्रह्माण्डके सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा। २ विष्णु।
भवाँ (हिं० स्त्री०) भकर, भाँरी।
भवाँना (हिं० क्रि०) घुमाना, फिराना।

भवा (स ० स्त्री० ) पार्वती, दुर्गा।

भवाचल ( स ० पु० ) भवस्य महादेवस्य अचल। मन्दर पर्वतके पूर्ववर्त्ती शैलभेद।

भवात्मजा ( स ० स्त्री० ) भवस्य शिवस्य आत्मजेति। मनसादेवी।

भवादृक्ष ( स ० वि० ) भवानिव दृश्यते य इति व्युत्पत्त्या भवच्छब्दपूर्वक दृश् धातोः कर्मणि क्रमेण सक् क्विप् टक् प्रत्ययेन निष्पन्न। युष्मन् सदृश, आपके जैसा।

भवादृश ( स ० वि० ) भवादृक्ष देखो।

भवानन्द —१ एक प्राचीन कवि। पद्यावलीमें इनकी रचना उद्धृत हुई है। २ एक वैदान्तिक। इन्होंने कल्पलता नामक वेदान्तग्रन्थ सङ्कलन किया। ३ सद्दर्पकन्दर्पकाव्यके प्रणेता।

भवानन्द तर्कवागीश—नवद्वीपवासी एक पण्डित। इन्होंने रघुनाथ शिरोमणिकृत आख्यातवादकी एक टिप्पनी लिखी है।

भवानन्दपुर—बङ्गालके दिनाजपुर जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह पुलिकनदीके पश्चिमी किनारे पाव भरकी दूरी पर अवस्थित है। यहां एक आम्र-काननके मध्य पीर नेकमर्दकी समाधि है। प्रति वर्ष वैशाखमासमें उक्त पीरके उद्देश्यसे मेला लगता है।

भवानन्द मजूमदार—कृष्णनगर राजवंशके प्रतिष्ठाता। भट्टनारायणसे अधस्तन विंशतितम पुरुष रामचन्द्र समादारके ज्येष्ठपुत्र। इन्होंने बाल्यकालमें ही संस्कृतविद्यामें विशेष पारदर्शिता प्राप्त की थी। १४ वर्षकी उम्रमें एक मुसलमान फौजदारको हुगलीका मार्ग दिखा देनेके कारण फौजदार इन पर बहुत खुश हुए और इनकी सरलता और साहसको देख कर वे इन्हें सप्तग्राममें ले गये। यहां इन्होंने पारसी भाषा और राजकार्यको शिक्षा पाई। उक्त हुगलीके फौजदारके प्रयत्नसे बंगालके नवाबने इन्हें कानूनगोका पद दे कर सम्राट्के यहांसे सनद और मजूमदार उपाधि दिला दी। प्रतापादित्य विजयके समय इन्होंने सैन्य सहित मानसिंहको लगातार सात दिन तक होनेवाली आंधीमें भोजनादि दे कर उनकी रक्षा की थी। प्रतापादित्यको पराजित कर दिल्ली जाते समय मानसिंह भवानन्दको अपने साथ लेते गये। वहां उन्होंने जहांगीर बादशाहसे अनुरोध कर भवानन्दको महतपुर, नदीया, मरूपदह, लेपा, सुलतानपुर, कासिमपुर, बयसा, मसुण्डा आदि १४ परगनोंका फरमान दिलाया था। ( हिजरी १०१५, ई० १६०६ )

सम्राट्से फरमान पाते समय इन्हें नौबत, डङ्का, घड़ी, निशाने आदि मिली थी। स्वदेश लौट कर आपने मटियारीमें राज-भवन बनवाया और वहीं वे राजकार्य करते रहे। आपके कार्यसे परितुष्ट हो कर सम्राट्ने सात वर्ष बाद पुनः इन्हें उखड़ा आदि कई परगने दिये (१६१३ ई०)। श्रीकृष्ण, गोपाल और गोविन्द नामक आपके तीन पुत्र थे। गुण ज्येष्ठ मध्यमपुत्र गोपाल पितृ-राज्यके अधिकारी हुए थे। (क्षितीश वंशावलि)

पञ्चदश भाग सम्पूर्ण